Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

227

श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप लीला

प्रभुपाद हरिदास गोस्वामी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीपलीला

●

श्रीश्रीमन्महाप्रभु एवं उनके परिकरोंकी लीलासे सम्बन्धित
तथा अन्य अनेक भक्ति-ग्रन्थोंके प्रणेता

एवं

प्रसिद्ध पदकर्ता
श्रीपाद द्विज बलरामदास ठाकुर-वंशीय

प्रभुपाद श्रीहरिदास गोस्वामीकृत

अब तौ हरी नाम लौ लागी ।
सब जग को यह माखन-चोरा, नाम धर्‌यौ बैरागी ॥१॥
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी ।
मूँड़ मुँड़ाइ डोरि कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ॥२॥
मात जसोमति माखन-कारन, बाँधे जाके पाँव ।
स्यामकिशोर भयो नव गौरा, चैतन्य जाको नाँव ॥३॥
पीतांबर को भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै ।
गौर-कृष्ण की दासी मीरा, रसना कृष्ण बसै ॥४॥

●

(इस पुस्तकको या इसके किसी अंशको प्रकाशित करने, उद्धृत करने अथवा
किसी भी भाषामें अनूदित करनेका अधिकार सबको है ।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीचैतन्यमहाप्रभु पञ्चशतवर्ष आविर्भाव-समितिकी प्रेरणासे—
श्रीकृष्ण-जन्मस्थान,
मथुरा (उत्तर प्रदेश)
द्वारा प्रकाशित व प्रचारित

●

व्रजका खेल कुलेल-मगन-मन ।
नदियाका रज-लुण्ठित-तन ।।
व्रजका खेल मुरलिका-वादन ।
नदियाका हरिनाम-भजन ।।
व्रजका खेल कुसुम-वन-विहरण ।
नदियाका दृग-जल-वर्षण ।।

●

प्रकाशन-तिथि : आश्विन शुक्ल १५ वि० सं० २०३८, मंगलवार,
दिनांक १३ अक्टूबर, १९८१
प्रथम आवृत्ति : ११०० प्रतियाँ
न्यौछावर : ५०) पचास रुपये मात्र

●

मुद्रक—
शैलेन्द्र वी. माहेश्वरी,
नवज्योति प्रेस, सेठ भीकचन्द मार्ग,
मथुरा २८१००१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

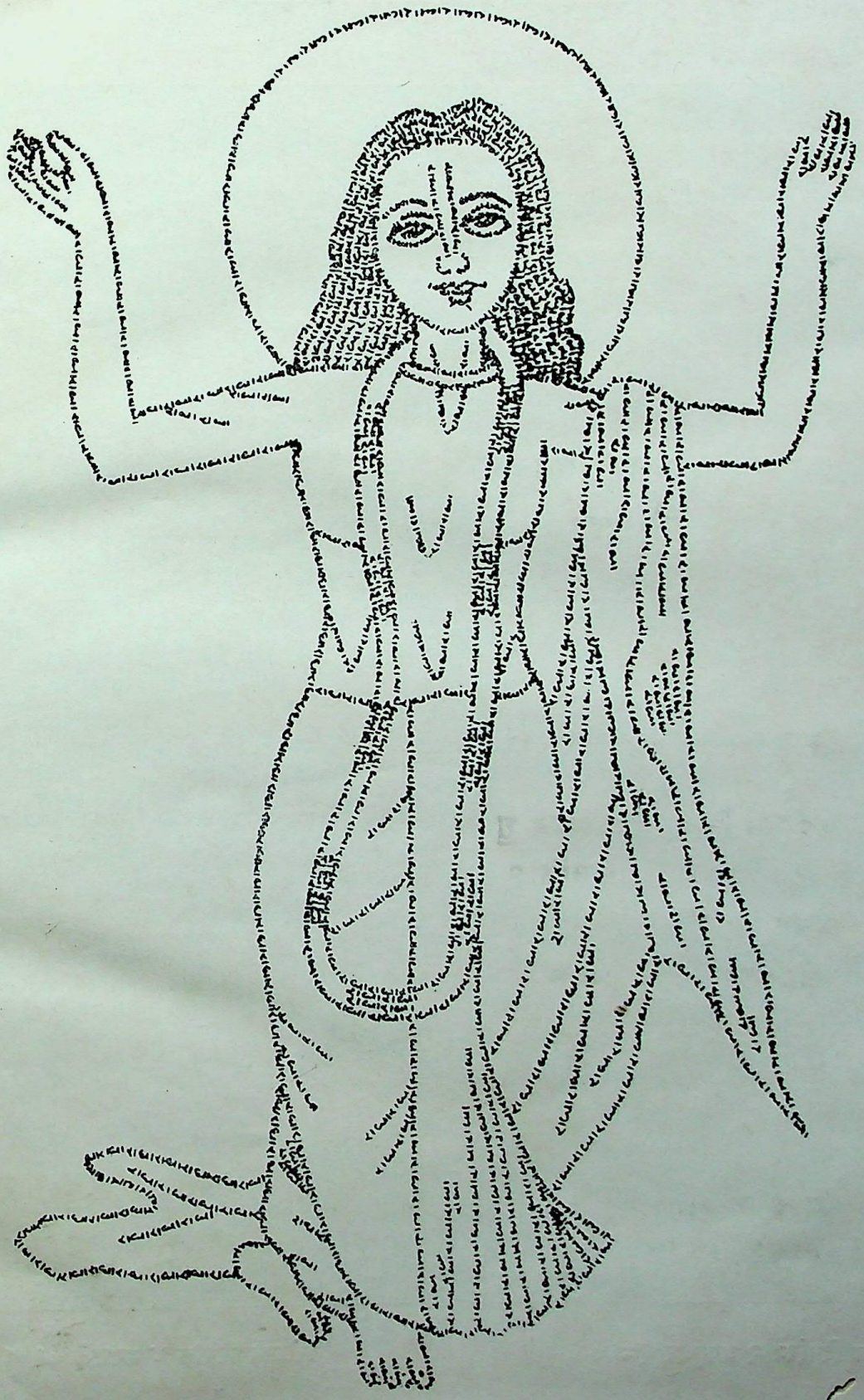

'राधा' अंकित श्रीगौराङ्ग

चित्रकार—सुश्री संगीता डालमिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीहरिदास गोस्वामी, ग्रन्थकार

जन्म दिनांक: २ अक्तूबर १८६७

तिरोधान दिनांक ४ जनवरी १९४६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परमधामगत प्रभुपाद श्रीहरिदास गोस्वामि ग्रन्थकार-चरण-कमलेषु

देव,

आपकी आत्मकथा पढ़नेसे पता लगता है कि आपकी संसार-यात्रा कितनी दुष्कर थी। साधारण संसारी जनोंके देखनेमें वह बहुत कष्टप्रद रही, यद्यपि आपके मानसपर उसका कोई प्रभाव न था। आजीविका-उपार्जनके लिए भगवान्‌ने आपको डाक-विभागकी सेवामें लगाया, जहाँ आपने आरम्भमें अवैतनिक उम्मीदवारकी तरह काम किया और बादमें आपको पन्द्रह रुपये मासिक वेतनपर डाकमें जानेवाले पत्रोंपर डाकखानेका नाम अंग्रेजीमें लिखनेका काम दिया गया। इसके बाद आपको तार-बाबूका काम सिखाया गया और धीरे-धीरे आप पोस्ट-मास्टर बने और फिर इंस्पैक्टर बने।

इस कार्यमें आपका समय-समयपर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर स्थानान्तरण होता रहा, जिसमें कितनी असुविधा होती होगी? ऐसी जगह जहाँ प्लेगकी बीमारी फैल गयी और कोई जाना नहीं चाहता था, आपको भेजा गया और आपने सहर्ष वहाँ जाकर डाक-विभागकी सेवाएँ कीं।

उन दिनों सेवा-कार्यके लिए समय नियत नहीं था। सदा ही समय-असमय आपको बहुत परिश्रम करना पड़ता था। जहाँ रात्रिके समय डाक भेजनी या लेनी पड़ती थी तो रात्रिको भी काम करना पड़ता था। रात्रि-विश्रामके लिए जो भी समय बचता था, उसीमें विश्रामको तिलाञ्जलि दे आप धर्मशास्त्रोंका अध्ययन एवं लेखन-कार्य करते थे।

आपके लेखन-कार्योंमें अधिकतर करुण कथा ही रहती थी, जिसके अध्ययन, मनन और लेखनमें अश्रुप्रवाहसे आपके कपड़े भीग जाया करते थे। आपका लेखन-कार्य तो एक प्रकारसे अश्रु-निर्मित स्याहीसे ही हुआ।

चरित्र-कथा लिखनेमें आपने जितने ग्रन्थोंके उद्धरण और प्रमाण दिये हैं, उनसे आपके बृहद् अध्ययन और ज्ञानका पता लगता है।

सेवाके कार्यद्वारा आजीविका उपार्जनसे कुटुम्ब-पालन, कन्या-विवाह तथा अतिथि-सत्कारके बाद कितनी बचत हो सकती है, इसका अनुमान सेवा-कार्यके द्वारा आजीविका चलानेवाले सहज ही कर सकते हैं। तो भी आपने उसीकी बचतसे तीर्थाटन भी किया। उसी बचतसे ग्रन्थ-प्रकाशन भी किये, जिसका विशेष वर्णन आपकी आत्मकथा पुस्तकके अन्तमें 'ग्रन्थ-प्रणयन और वैष्णव-साहित्य-सेवा-प्रकरण' में है।

आपके द्वारा प्रणीत मुख्य-मुख्य ग्रन्थ हैं—श्रीश्रीविष्णुप्रियाचरित, श्रीश्रीलक्ष्मीप्रियाचरित, श्रीश्रीविष्णुप्रिया नाटक, श्रीगौर-गीतिका, नांगालीर ठाकुर श्रीगौराङ्ग, श्रीश्रीविष्णुप्रिया-विलाप-गीति, शची-विलाप-गीति, श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया अष्टकालीय लीला स्मरण-मनन-पद्धति, श्रीश्रीविष्णुप्रिया-सहस्रनामस्तोत्र, श्रीमुरारि गुप्त प्रतिष्ठित श्रीनिताई-गौर-विग्रहकी लीला-कथा, द्विज बलरामदास ठाकुरकी जीवनी और पदावली, गजपति प्रतापरुद्र नाटक, गम्भीराय विष्णुप्रिया, नवद्वीप-लीला और नीलाचल-लीला आदि-आदि।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीधाम वृन्दावनमें बंगाब्द संवत् १३१८ सालकी शुभ कार्तिक पूर्णिमा तिथिको लालाबाबूके मंदिरमें श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीप्रणीत आनन्द-वृन्दावनचम्पूवर्णित श्रीकृष्ण-जन्म-लीला-कथा सुनाते-सुनाते श्रीगौराङ्ग महाभारत लिखनेकी आपके मनमें भावना उठी। श्रीग्रन्थके लेखन-कार्य-का शुभारंभ हुआ बंगाब्द १३१९ सालकी फाल्गुनी (गौर) पूर्णिमाके दिन मध्यभारतके भोपाल नगरमें और शेष हुआ १३२२ सालके कार्तिक मासकी २८ वीं तारीखको लगभग ३॥ वर्षमें। ग्रन्थकी पाण्डुलिपिका वजन था लगभग एक मन।

स्वनामधन्य मध्वगौड़ेश्वराचार्य श्रीमधुसूदन गोस्वामी सार्वभौम दत्तने इस सुवृहत् ग्रन्थको नाम दिया 'श्रीगौराङ्ग महाभारत', जो पूर्णरूपसे सार्थक है। चरित-ग्रन्थोंमें और महाजन पदावलीमें वर्णित प्राय. सारी कथाएँ इसमें आ गयी हैं। इस ग्रन्थके प्रथमांशका नाम श्रीनवद्वीप-लीला एवं अपरांशका नाम श्रीनीलाचल-लीला है।

नवद्वीपलीलाके प्रथम चौदह अध्यायका प्रकाशन आपके अपने अर्थ-व्ययसे होकर काम बन्द हो गया। सेवा-वृत्तिकी आयसे और निवृत्त होनेके बाद जो पेन्शन मिलती थी उससे, जीविका आदिका निर्वाह करनेके बाद जो बचता था, वह सब ग्रन्थ-प्रकाशनमें ही व्यय होता था। इसके सात-आठ वर्ष बाद बिना जाने-पहचाने स्वतःप्रेरित राजशाही, नालन्दाके परम गौरभक्त श्रीललितमोहन मैत्रेयकी अर्थ-सहायतासे आपने इस ग्रन्थके प्रकाशनका काम फिर आरम्भ किया। १५ से २३ वें अध्यायतकका मुद्रण-कार्य कलकत्तामें श्रीगौराङ्गप्रेसको दिया गया, जिन्होंने एक महीनेका आश्वासन देकर काम दस महीनेमें भी पूरा नहीं किया; तब २४ वें अध्यायसे सामग्री कलकत्ताके रुद्रप्रेसको दी गयी। इस प्रकार सम्पूर्ण नवद्वीप-लीला-ग्रन्थका प्रकाशन खण्ड-खण्ड करके लगभग १० वर्षमें पूरा हुआ था।

लीलाओंके वर्णनमें एक लीला-लेखकके विवरण-से दूसरेके विवरणमें कहीं-कहीं भिन्नता देखनेमें आती है। आपने उनका समन्वय करनेकी चेष्टा करके जहाँतक सम्भव हुआ है, सभीके मुख्य वर्णनको लेनेकी चेष्टा की है। लीला पढ़ते समय वर्णनकी भिन्नताकी ओर दृष्टि न रखकर भावकी ओर ही लक्ष्य रखकर पाठकको उसका आस्वादन करना चाहिये।

नीलाचल-लीलाके प्रकाशनके लिए भी श्रीयुत ललितमोहन मैत्रेय महाशय अर्थ-सहायताके लिए प्रस्तुत थे। इसी बीच कलकत्ताके सुप्रसिद्ध लाहा-वंशधर शिमला-सुकिया स्ट्रीटके गौरभक्त श्रीगौरचरण लाहाने श्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप-लीला पढ़कर, मुग्ध होकर स्वेच्छासे नीलाचल-लीला-प्रकाशनके लिए पाँच सौ रुपयोंकी अर्थ-सहायता आपके पास भेज दी और सात सौ पचास रुपये पीछे और दिये। इस प्रकार लगभग एक हजार रुपयोंकी सहायता श्रीललितमोहन मैत्रेय महोदयसे मिली और बारह सौ पचास रुपयोंकी सहायता श्रीगौरचरण लाहा महोदयसे मिली। लगभग छब्बीस सौ रुपये आपने इन ग्रन्थोंके प्रकाशनमें अपने पाससे व्यय किये। इस प्रकार कुल व्यय लगभग चार हजार आठ सौ पचास रुपयोंका हुआ था।

आपने अपने निवेदनमें एक जगह उल्लेख किया है कि इस विराट् श्रीग्रन्थका एक परिशिष्ट लिखा जा रहा है, उसके पूरा होनेमें कुछ समय लगेगा। लेकिन वह देखनेमें नहीं आया। सम्भव है, वह पूर्ण न हो पाया हो या उसकी पाण्डुलिपि कहीं खो गयी हो।

आपके ग्रन्थोंमें-से सबसे पहले 'श्रीश्री विष्णुप्रिया-विलाप-गीति' पुस्तिका किन्हींके द्वारा मुझे प्राप्त हुई। उसको पढ़कर जो होना था, सो हुआ। उसको मैं गोरखपुर, गीतावाटिकामें वहाँके सन्त स्वामी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीचक्रधरजी महाराज, जो उन दिनों काष्ठमौन-व्रतका अवलम्बन किये हुए थे, के पास ले गया। उस समय गीताप्रेससे प्रकाशित मासिक-पत्र कल्याणके यशस्वी संस्थापक और प्रवर्तक-सम्पादक श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार (श्रीभाईजी) उन्हीं सन्तके पास थे। श्रीश्रीविष्णुप्रिया-विलाप-गीति-में-से कुछ गीत पूज्य श्रीभाईजी उन काष्ठमौनी सन्तको सुनाने लगे। दो-चार गीत पढ़नेके बाद उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। वे और आगे नहीं पढ़ सके।

उसी पुस्तिकामें दिये विज्ञापनके आधारपर श्रीविष्णुप्रियाचरित नाटक, गम्भीराय विष्णुप्रिया, श्रीलक्ष्मीप्रियाचरित आदि ग्रन्थ मँगाकर मैंने पढ़े। जितना समय उनको पढ़नेमें बीता, उसके आनन्दका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस तरह श्रीमन्महाप्रभुजीने आपसे केश पकड़कर अपना कार्य कराया, उसी तरह श्रीविष्णुप्रियाचरित और श्रीलक्ष्मीप्रियाचरितका हिन्दी अनुवाद वाराणसीके श्रीगौरीशंकरजी द्विवेदीसे करवाकर, श्रीराम-निवासजी ढंढारियाका एवं श्रीहितशरणजी शर्माका मुद्रण-कार्यमें सहयोग दिलाकर उन ग्रन्थोंके हिन्दीमें भी प्रकाशनका कार्य करवाया।

श्रीविष्णुप्रिया नाटक एवं श्रीविष्णुप्रिया-विलाप-गीतिका हिन्दी अनुवाद बंगलाकी लेखन-शैलीमें ही गीतावाटिकाके श्रीमाधवशरणजी श्रीवास्तव, एम० ए०, एल०-एल० बी० ने करके दिया और इन ग्रन्थोंका एक तरफ मूलग्रन्थकी बंगला भाषा देवनागरी (हिन्दी) लिपिमें देकर, उसके ठीक सामने उसी शैलीका हिन्दी अनुवाद देकर प्रकाशन हुआ, जिससे कि बंगाक्षरोंसे अनभिज्ञ बंगला भाषा समझनेवाले हिन्दी पाठक उसके मूलको पढ़कर उसका वास्तविक रसास्वादन कर सकें।

हिन्दीके राष्ट्रकवि परमधामगत श्रीमैथिली-शरणजी गुप्तने भी इन ग्रन्थोंका अवलोकन करके हिन्दीमें 'विष्णुप्रिया' काव्यका प्रणयन किया है।

श्रीनवद्वीपधामस्थित आपके स्थान श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग-कुञ्जमें आपकी सुपुत्री श्रीमती सुशीलासुन्दरी देवीके दर्शनका सौभाग्य भी मिला; लेकिन आपके दर्शन केवल चित्रमें ही हो सके, जिसकी छवि कभी-कभी मानसमें आ जाती है। आपके जीवनकालमें आपके प्रत्यक्ष दर्शन और सत्संगका लाभ न हो सका, इसका बड़ा क्षोभ है।

आपके द्वारा सम्पादित और प्रकाशित 'श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग',-मासिक पत्रिकाके भी श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग-कुञ्जमें दर्शन हुए और उसके प्रकाशनका पूरा सैट भी मिला। उसीमें भक्तोंके आग्रहपर आपके अपने जीवनके अनुभवोंको प्रकाशित करना पड़ा, उनको एकत्र करके उसका बंग-भाषामें ग्रन्थाकार प्रकाशन हुआ तथा उसके हिन्दी अनुवादका भी प्रकाशन हुआ। उसीमें-से सिद्ध चैतन्यदासबाबाकी भी संक्षिप्त जीवनी तथा गजपति प्रतापरुद्र नाटक भी बंगला भाषामें प्रकाशित हुए।

आपने एक जगह नवद्वीप-लीला और नीलाचल-लीला ग्रन्थके हिन्दी संस्करण होनेकी भावना प्रकट की है। इन ग्रन्थोंका तथा गम्भीराय विष्णुप्रियाका हिन्दी अनुवाद वाराणसीके स्वर्गीय श्रीगौरीशङ्करजी 'द्विवेदीने अनेक वर्षों पूर्व करके दिया था; किन्तु प्रमादवश उनका अभीतक उपयोग नहीं हो पाया। एक बार तो हिन्दी अनुवादकी पाण्डुलिपिके कागजों-का भार देखकर ऐसा लगा कि इतना बड़ा काम पूरा नहीं हो पायेगा। तब इन कागजोंको हटाकर भीड़ क्यों न मिटा दी जाय, यह सोचकर पाण्डुलिपि-के कागजोंको रद्दीके कागजोंके साथ बेच देनेको दे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीधाम वृन्दावनमें बंगाब्द संवत् १३१८ सालकी शुभ कार्तिक पूर्णिमा तिथिको लालाबाबूके मंदिरमें श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीप्रणीत आनन्द-वृन्दावनचम्पूवर्णित श्रीकृष्ण-जन्म-लीला-कथा सुनाते-सुनाते श्रीगौराङ्ग महाभारत लिखनेकी आपके मनमें भावना उठी। श्रीग्रन्थके लेखन-कार्य-का शुभारंभ हुआ बंगाब्द १३१९ सालकी फाल्गुनी (गौर) पूर्णिमाके दिन मध्यभारतके भोपाल नगरमें और शेष हुआ १३२२ सालके कार्तिक मासकी २८ वीं तारीखको लगभग ३॥ वर्षमें। ग्रन्थकी पाण्डुलिपिका वजन था लगभग एक मन।

स्वनामधन्य मध्वगौड़ेश्वराचार्य श्रीमधुसूदन गोस्वामी सार्वभौम दत्तने इस सुबृहत् ग्रन्थको नाम दिया 'श्रीगौराङ्ग महाभारत', जो पूर्णरूपसे सार्थक है। चरित-ग्रन्थोंमें और महाजन पदावलीमें वर्णित प्राय. सारी कथाएँ इसमें आ गयी हैं। इस ग्रन्थके प्रथमांशका नाम श्रीनवद्वीप-लीला एवं अपरांशका नाम श्रीनीलाचल-लीला है।

नवद्वीपलीलाके प्रथम चौदह अध्यायका प्रकाशन आपके अपने अर्थ-व्ययसे होकर काम बन्द हो गया। सेवा-वृत्तिकी आयसे और निवृत्त होनेके बाद जो पेन्शन मिलती थी उससे, जीविका आदिका निर्वाह करनेके बाद जो बचता था, वह सब ग्रन्थ-प्रकाशनमें ही व्यय होता था। इसके सात-आठ वर्ष बाद बिना जाने-पहचाने स्वतःप्रेरित राजशाही, नालन्दाके परम गौरभक्त श्रीललितमोहन मैत्रेयकी अर्थ-सहायतासे आपने इस ग्रन्थके प्रकाशनका काम फिर आरम्भ किया। १५ से २३ वें अध्यायतकका मुद्रण-कार्य कलकत्तामें श्रीगौराङ्गप्रेसको दिया गया, जिन्होंने एक महीनेका आश्वासन देकर काम दस महीनेमें भी पूरा नहीं किया; तब २४ वें अध्यायसे सामग्री कलकत्ताके रुद्रप्रेसको दी गयी। इस प्रकार सम्पूर्ण नवद्वीप-लीला-ग्रन्थका प्रकाशन खण्ड-खण्ड करके लगभग १० वर्षमें पूरा हुआ था।

लीलाओंके वर्णनमें एक लीला-लेखकके विवरण-से दूसरेके विवरणमें कहीं-कहीं भिन्नता देखनेमें आती है। आपने उनका समन्वय करनेकी चेष्टा करके जहाँतक सम्भव हुआ है, सभीके मुख्य वर्णनको लेनेकी चेष्टा की है। लीला पढ़ते समय वर्णनकी भिन्नताकी ओर दृष्टि न रखकर भावकी ओर ही लक्ष्य रखकर पाठकको उसका आस्वादन करना चाहिये।

नीलाचल-लीलाके प्रकाशनके लिए भी श्रीयुत ललितमोहन मैत्रेय महाशय अर्थ-सहायताके लिए प्रस्तुत थे। इसी बीच कलकत्ताके सुप्रसिद्ध लाहा-वंशधर शिमला-सुकिया स्ट्रीटके गौरभक्त श्रीगौरचरण लाहाने श्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप-लीला पढ़कर, मुग्ध होकर स्वेच्छासे नीलाचल-लीला-प्रकाशनके लिए पाँच सौ रुपयोंकी अर्थ-सहायता आपके पास भेज दी और सात सौ पचास रुपये पीछे और दिये। इस प्रकार लगभग एक हजार रुपयोंकी सहायता श्रीललितमोहन मैत्रेय महोदयसे मिली और बारह सौ पचास रुपयोंकी सहायता श्रीगौरचरण लाहा महोदयसे मिली। लगभग छब्बीस सौ रुपये आपने इन ग्रन्थोंके प्रकाशनमें अपने पाससे व्यय किये। इस प्रकार कुल व्यय लगभग चार हजार आठ सौ पचास रुपयोंका हुआ था।

आपने अपने निवेदनमें एक जगह उल्लेख किया है कि इस विराट् श्रीग्रन्थका एक परिशिष्ट लिखा जा रहा है, उसके पूरा होनेमें कुछ समय लगेगा। लेकिन वह देखनेमें नहीं आया। सम्भव है, वह पूर्ण न हो पाया हो या उसकी पाण्डुलिपि कहीं खो गयी हो।

आपके ग्रन्थोंमें-से सबसे पहले 'श्रीश्री विष्णुप्रिया-विलाप-गीति' पुस्तिका किन्हींके द्वारा मुझे प्राप्त हुई। उसको पढ़कर जो होना था, सो हुआ। उसको मैं गोरखपुर, गीतावाटिकामें वहाँके सन्त स्वामी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीचक्रधरजी महाराज, जो उन दिनों काष्ठमौन-व्रतका अवलम्बन किये हुए थे, के पास ले गया। उस समय गीताप्रेससे प्रकाशित मासिक-पत्र कल्याणके यशस्वी संस्थापक और प्रवर्तक-सम्पादक श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार (श्रीभाईजी) उन्हीं सन्तके पास थे। श्रीश्रीविष्णुप्रिया-विलाप-गीति-में-से कुछ गीत पूज्य श्रीभाईजी उन काष्ठमौनी सन्तको सुनाने लगे। दो-चार गीत पढ़नेके बाद उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। वे और आगे नहीं पढ़ सके।

उसी पुस्तिकामें दिये विज्ञापनके आधारपर श्रीविष्णुप्रियाचरित नाटक, गम्भीराय विष्णुप्रिया, श्रीलक्ष्मीप्रियाचरित आदि ग्रन्थ मँगाकर मैंने पढ़े। जितना समय उनको पढ़नेमें बीता, उसके आनन्दका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस तरह श्रीमन्महाप्रभुजीने आपसे केश पकड़कर अपना कार्य कराया, उसी तरह श्रीविष्णुप्रियाचरित और श्रीलक्ष्मीप्रियाचरितका हिन्दी अनुवाद वाराणसीके श्रीगौरीशंकरजी द्विवेदीसे करवाकर, श्रीराम-निवासजी ढंढारियाका एवं श्रीहितशरणजी शर्माका मुद्रण-कार्यमें सहयोग दिलाकर उन ग्रन्थोंके हिन्दीमें भी प्रकाशनका कार्य करवाया।

श्रीविष्णुप्रिया नाटक एवं श्रीविष्णुप्रिया-विलाप-गीतिका हिन्दी अनुवाद बंगलाकी लेखन-शैलीमें ही गीतावाटिकाके श्रीमाधवशरणजी श्रीवास्तव, एम० ए०, एल०-एल० बी० ने करके दिया और इन ग्रन्थोंका एक तरफ मूलग्रन्थकी बंगला भाषा देवनागरी (हिन्दी) लिपिमें देकर, उसके ठीक सामने उसी शैलीका हिन्दी अनुवाद देकर प्रकाशन हुआ, जिससे कि बंगाक्षरोंसे अनभिज्ञ बंगला भाषा समझनेवाले हिन्दी पाठक उसके मूलको पढ़कर उसका वास्तविक रसास्वादन कर सकें।

हिन्दीके राष्ट्रकवि परमधामगत श्रामैथिली-शरणजी गुप्तने भी इन ग्रन्थोंका अवलोकन करके हिन्दीमें 'विष्णुप्रिया' काव्यका प्रणयन किया है।

श्रीनवद्वीपधामस्थित आपके स्थान श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग-कुञ्जमें आपकी सुपुत्री श्रीमती सुशीलासुन्दरी देवीके दर्शनका सौभाग्य भी मिला; लेकिन आपके दर्शन केवल चित्रमें ही हो सके, जिसकी छवि कभी-कभी मानसमें आ जाती है। आपके जीवनकालमें आपके प्रत्यक्ष दर्शन और सत्संगका लाभ न हो सका, इसका बड़ा क्षोभ है।

आपके द्वारा सम्पादित और प्रकाशित 'श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग',-मासिक पत्रिकाके भी श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग-कुञ्जमें दर्शन हुए और उसके प्रकाशनका पूरा सैट भी मिला। उसीमें भक्तोंके आग्रहपर आपके अपने जीवनके अनुभवोंको प्रकाशित करना पड़ा, उनको एकत्र करके उसका बंग-भाषामें ग्रन्थाकार प्रकाशन हुआ तथा उसके हिन्दी अनुवादका भी प्रकाशन हुआ। उसीमें-से सिद्ध चैतन्यदासबाबाकी भी संक्षिप्त जीवनी तथा गजपति प्रतापरुद्र नाटक भी बंगला भाषामें प्रकाशित हुए।

आपने एक जगह नवद्वीप-लीला और नीलाचल-लीला ग्रन्थके हिन्दी संस्करण होनेकी भावना प्रकट की है। इन ग्रन्थोंका तथा गम्भीराय विष्णुप्रियाका हिन्दी अनुवाद वाराणसीके स्वर्गीय श्रीगौरीशङ्करजी 'द्विवेदीने अनेक वर्षों पूर्व करके दिया था; किन्तु प्रमादवश उनका अभीतक उपयोग नहीं हो पाया। एक बार तो हिन्दी अनुवादकी पाण्डुलिपिके कागजों-का भार देखकर ऐसा लगा कि इतना बड़ा काम पूरा नहीं हो पायेगा। तब इन कागजोंको हटाकर भीड़ क्यों न मिटा दी जाय, यह सोचकर पाण्डुलिपि-के कागजोंको रद्दीके कागजोंके साथ बेच देनेको दे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दिया गया। किन्तु दूसरे दिन ही श्रीमन्महाप्रभुजी-की प्रेरणा हुई कि ऐसा करना बड़ी भारी भूल होगी। पाण्डुलिपिके सब कागज रद्दी कागजोंमें-से वापस मँगवाये, उनको ठीक क्रमसे लगाकर रखा। जिनका काम था, उन्होंने ही प्रेरणा करके उसपर काम आरम्भ करवाया, जो आज पाठकोंके सम्मुख उपस्थित है।

मूल बंगला ग्रन्थमें, प्रत्येक लीला-वर्णनके साथ, जिस ग्रन्थ या महाजन पदावलीसे लीला ली गयी है, उसके प्रमाणमें बंगलाके पयार छन्दों या पदोंका उद्धरण आपने दिया है। हिन्दी संस्करणमें उन प्रमाणोंके उद्धरण प्रायः छोड़ दिये गये हैं। जो बंगला भाषा जानते हों, वे उन्हें मूल-ग्रन्थमें देख ले सकते हैं।

हिन्दी अनुवादके प्रकाशनमें लीलाक्रममें औचित्यके अनुसार कहीं-कहीं परिवर्तन कर दिया गया है, जैसे—

१. 'श्रीकृष्णचैतन्योदयावली' श्रीग्रन्थका वर्णन प्रथम अध्यायके अन्तसे उठाकर आरम्भमें कर दिया गया है। अठारहवें अध्यायमें भी इस ग्रन्थका उल्लेख है, जहाँ इस ग्रन्थको प्रभुके वंशके आदि-पुरुष प्रभुपाद मधुकर मिश्रके-वंश-सम्भूत प्रभुके चचेरे भाई श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्रद्वारा रचित बताया है। इस ग्रन्थके अनुसार महाप्रभु श्रीहट्टमें अपने पितामह और पितामहीके पास संन्यासके बाद भी गये थे। अन्य चरित-ग्रन्थोंमें संन्यासके बाद महाप्रभुका पूर्व बंगाल जानेका कोई उल्लेख देखनेमें नहीं आया।

२. मिट्टी-भक्षण-लीलाका वर्णन मूल-ग्रन्थमें सातवें अध्यायमें है, उसको हिन्दी संस्करणमें छठे अध्यायमें बाल-लीलाके अन्तर्गत दे दिया है।

३. निमाईचाँदकी धृष्टताकी लीलाका मूल-ग्रन्थमें कुछ वर्णन छठे अध्यायमें है, कुछ सातवेंमें। हिन्दीमें सब एक जगह छठे अध्यायमें कर दिया है।

४. नवें अध्यायमें शचीमाताके मस्तकपर ईंटसे प्रहार करनेकी एक घटनाका वर्णन है, जिसका आधार महाकवि कर्णपूरका 'श्रीकृष्णचैतन्य-चरितामृत' महाकाव्यका २.७९ श्लोक (इतीह लोष्ट्रेन जघान मातरम्) एवं श्रीमुरारिगुप्त-कड़चाका श्लोक १.६.२२ (इत्युक्त्वा वदने तस्याः इष्टके प्राहिणोद् रुषा। तदाघातेन व्यथिता मूर्छिता निपपात सा।) हैं। प्राकृत शिशु-इव लीलामें भी महाप्रभु माताके मस्तकपर ईंटसे प्रहार करें, यह बात समझमें नहीं आती। इस प्रकारका कार्य श्रीमद्भागवत-माहात्म्यकी कथामें वर्णित धुन्धुकारी-जैसे व्यक्ति ही माता-पितापर जघन्य प्रहार कर सकते हैं और कोई नहीं। महाकवि कर्णपूर और मुरारिगुप्तकी मूल पाण्डुलिपिके अभावमें यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि आजकल उपलब्ध मुद्रित पुस्तकोंमें जो वर्णन प्राप्त है, वह कहाँतक उनका अपना है? अतः इस संदिग्ध घटनाका वर्णन छोड़ दिया गया है।

५. सतरहवें अध्यायके अन्तमें एक प्रसंग 'कुब्जपर कृपा' का, और एक प्रसंग 'कुलवधुओंके प्रति भाव' का और 'मार्गमें श्रीवासपण्डितसे मिलन' का है। इनका क्रम उसी अध्याय 'नगर-भ्रमणसे प्रत्यावर्तन' के पूर्व लगा दिया है। इसी अध्यायमें 'रजक-उद्धार-लीला' का वर्णन है। यह लीला सन्यासके बाद शान्तिपुरसे नीलाचल जाते समय मार्गमें घटित हुई है। इसको नीलाचल-लीलाके प्रथम अध्यायमें जोड़ दिया है।

६. सतावनवें अध्यायमें प्रभुके गृहत्यागके समय उनके साथ श्रीनित्यानन्दप्रभु और श्रीपाद

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्द्रशेखर आचार्यके जानेका उल्लेख कवि कर्णपूरके श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकके अनुसार है। किन्तु श्रीचैतन्यभागवत, श्रीचैतन्यमंगल आदि ग्रन्थोंके अनुसार ये लोग पीछे गये थे, अतः इसी प्रकार इसका भी उल्लेख किया गया है।

७. अठावनवें अध्यायमें राढ़देश भ्रमणके समय श्रीनित्यानन्दजीद्वारा संकेत करके चन्द्रशेखर आचार्यरत्नको शान्तिपुर और नवद्वीप भेजनेका उल्लेख है और श्रीचैतन्यचरितामृतके अनुसार श्रीनित्यानन्दजीका प्रभुके साथ शान्तिपुर जानेका उल्लेख है। उनसठवें अध्यायमें श्रीनित्यानन्दप्रभुका नवद्वीप जाना हुआ है; अतः अठावनवें अध्यायमें श्रीचैतन्यभागवत और श्रीचैतन्यमंगलके अनुसार नित्यानन्दजीको प्रभुके द्वारा नवद्वीप जानेका आदेश दिखा दिया गया है।

आशा है, हिन्दीभाषी गौरभक्तोंको यह प्रकाशन पसन्द आयेगा और वे इसको पढ़कर इसका आनन्द उपभोग करेंगे। इस ग्रन्थके मुद्रणमें प्रमादवश फ्रूफ संशोधनमें तथा मुद्रण कार्यके समय टाइप आदि टूट जानेसे जो भूलें हो गयी हों, उसके लिए सबसे क्षमा-याचना है।

अन्तमें आपसे भिक्षा प्रार्थना है—श्रीमन्महाप्रभुके पावन पाद-पद्मोंमें, उनकी रागानुगा-भक्तिमें आप-सदृश निष्ठापूर्ण लगन इस दासकी भी बन पड़े। अपने उज्ज्वल अश्रुबिन्दुका कृपा-भाजन इस दासको भी बनायेंगे न ?

आपका दासानुदास,

— * —

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

॥ श्रीहरि: ॥

ज्येष्ठ भ्राता श्रीरामकृष्णजी डालमियाके प्रति

प्रेममय भैयाजी,

जब पूज्यपाद पिताजीका परलोकवास हुआ, तब मैं नितान्त बालक ही था। उनकी केवल धुँधली-सी स्मृतिमात्र है। आपने भी उस समय अपनी किशोरावस्थाको पार ही किया था। परिवारके पालन-पोषणका सारा भार आपपर आ पड़ा। घरकी आर्थिक स्थिति भी बहुत ही नाजुक थी। पिताजीने सेवा-वृत्तिसे कुटुम्बका पालन, बच्चोंकी शिक्षा-दीक्षा तथा विवाह आदि सब काम किये। भगवान्‌ने आपको प्रतिभा दी, जिसके बलसे कुछ भी अर्थका सहारा न होते हुए भी आपने इतने व्यवसाय-उद्योग खड़े किये कि जिनकी तुलना देशके दिग्गज व्यवसायियों और उद्योगपतियोंके साथ होने लगी।

आपके आर्थिक जीवनमें कितने उतार-चढ़ाव आये, जिसकी तुलना नहीं। प्राय: देखा जाता है कि जिसका एकबार आर्थिक पतन हो गया, वह प्राय: दुबारा नहीं उठता। लेकिन आपमें यह विशेषता थी कि कितनी बार आप गिरे और उठे। इसमें प्रधान कारण आपकी भगवत्-निष्ठा थी। जब आपने युवावस्थामें प्रवेश किया था और मैं स्कूलमें पढ़ा करता था, तब आप प्रतिदिन १ मील लगभग पैदल चलकर कलकत्तामें गंगा-स्नान करने जाते थे, मुझे भी साथ ले जाते थे, तब मैं देखा करता था, आते-जाते समय आप निरन्तर मुँहसे उच्चारण करते हुए राम-नाम जपते रहते थे।

आप केवल अर्थ-व्यवसाय और उद्योगोंमें ही लिप्त नहीं रहे, आपका शास्त्रोंका अध्ययन भी बहुत गहरा था। आपने प्राय: सारे तो पुराण पढ़ डाले, रामायण और भागवतकी तो कितनी आवृत्तियाँ कीं, वेदान्त-ग्रन्थ भी बहुत पढ़े। ग्रन्थोंका पठन-पाठन अधिकतर बँगला, गुजराती और हिन्दी भाषामें ही होता था, लेकिन कुछ विशिष्ट पुस्तकें अँग्रेजीमें भी आपको बहुत प्रिय थीं।

बचपनमें मेरा पढ़ना आरम्भमें कलकत्ताके निकट उत्तरपाड़ामें रहनेके कालमें बंगाक्षरोंद्वारा आरम्भ हुआ। इससे मुझे भी बँगला पढ़नेका कुछ अभ्यास बन गया। आप जब 'अमृतबाजारपत्रिका'के अधिष्ठाता महात्मा शिशिरकुमार घोषद्वारा रचित 'अमिय-निमाइ-चरित' पढ़ा करते थे, तब आपके निरन्तर अश्रु-वर्षणको मैं देखा करता था। इससे मुझे भी वह ग्रन्थ पढ़नेकी इच्छा हुई और मैंने भी उसको पढ़ा। उसका मेरे जीवनपर भी कुछ प्रभाव पड़ा।

गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित 'कल्याण' मासिक-पत्रके अधिष्ठाता एवं यशस्वी सम्पादक श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार (श्रीभाईजी) से आपकी घनिष्ठता थी। जब आप बम्बई रहते थे और वे भी वहाँ थे, तब आपने मुझे उन्हींके पास रखा। आपकी ही तरह वे भी मुझे औरस पुत्रवत् प्यार किया करते थे। जब वे गोरखपुर आ गये, तब भी उनके पास जानेका, रहनेका अवसर तो प्राप्त हुआ, लेकिन उनके संगका जो लाभ उठाना चाहिये था, वह न उठा पाया, जिस अभावका आज पता लगता है।

श्रीचैतन्यमहाप्रभुकी ओर आकर्षण करानेमें आप ही निमित्त रहे हैं। अत: उनके चरित्रके 'नवद्वीप-लीला तथा 'नीलाचल-लीला' के ये हिन्दी संस्करण आपकी स्मृतिमें प्रकाशित आपके कर-कमलोंमें समर्पित है।

आपका

(पुत्रवत्) छोटा भैया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सेठ श्रीरामकृष्णजी डालमिया

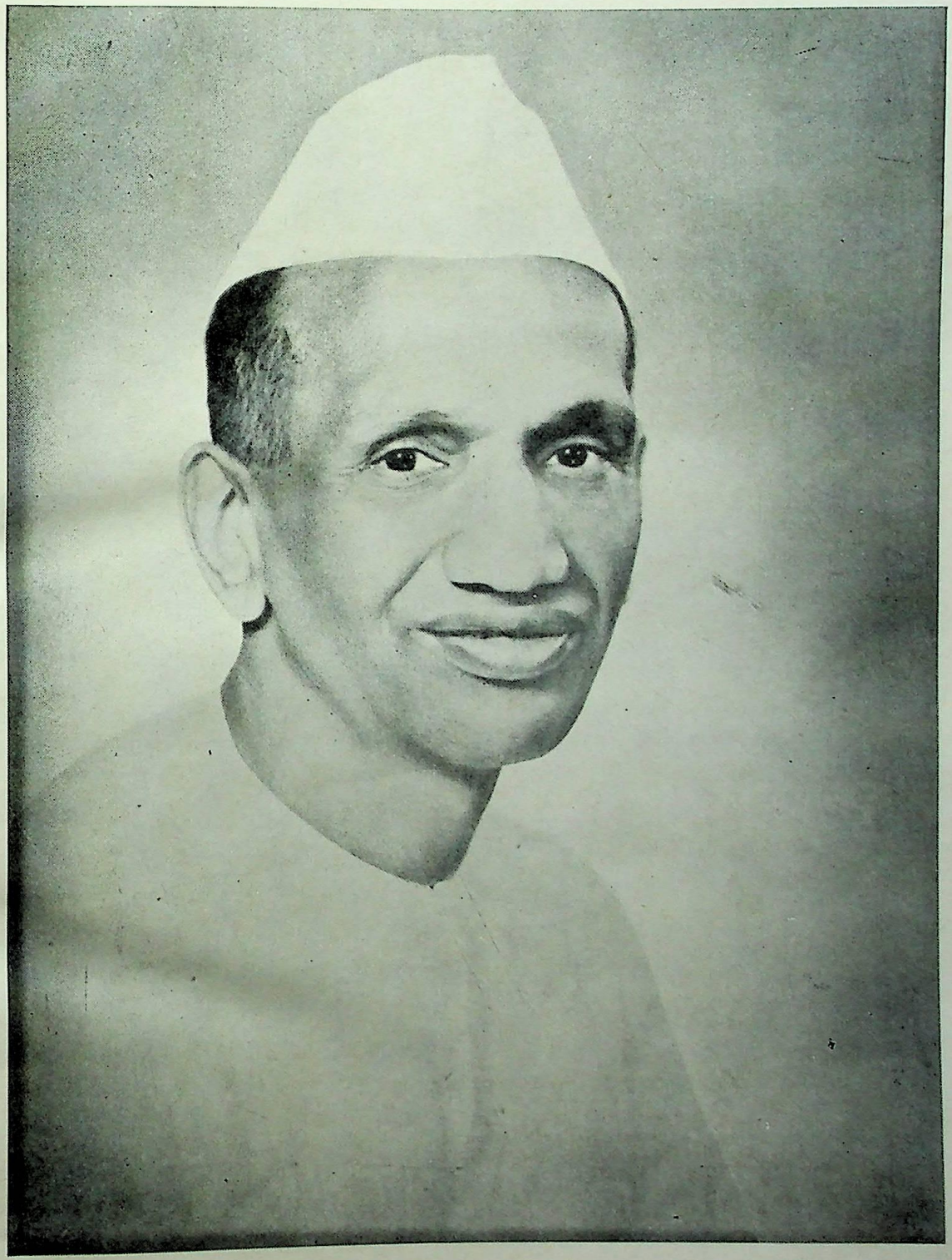

जन्म-तिथि—
७ अप्रैल, १८९३
शुक्रवार, बैशाख कृष्णा ६,
वि० सं० १९५०

तिरोभाव-तिथि—
२६ सितम्बर, १९७८
मङ्गलवार, आश्विन कृष्णा १०,
वि० सं० २०३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमन्महाप्रभुजीकी आविर्भाव-तिथि एवं धराधाम पर प्रकट-काल

अविर्भाव

विक्रम-संवत् १२४२ (शकाब्द १४०७, बंगाब्द ८९२, ईस्वी सन् १४८६) फाल्गुन मास, शुक्लपक्षकी पूर्णिमा तिथिको संध्या-समय महाप्रभुका आविर्भाव हुआ, इस सम्बन्धमें कोई मतभेद नहीं है।

आविर्भाव-कालके सम्बन्धमें किसीने ग्रहणका समय लिखा है, किसीने ग्रहणके पूर्वका।* महाप्रभुके सम-सामयिक लोगोंका मत है कि श्रीमन्महाप्रभुका आविर्भाव पहले हुआ, चन्द्रग्रहणका आरम्भ पीछे। प्रमाणमें महाप्रभुके समकालीन मुरारिगुप्तके कड़चाका निम्न श्लोक उद्धृत किया जाता है—

तस्य जन्मसमयेऽनु शशाङ्कं
राहुरग्रसदलं एपयैव।
कृष्णपद्मवदनेन निर्जितः
प्राविशत् सुररिपोर्मुखं विधुः॥

१.५.२३

फाल्गुन मासकी तारीख तथा वारके सम्बन्धमें भी सब एक मत नहीं है।

(क) 'नित्यानन्द-चरित' (द्वितीय खण्ड, पृष्ठ २१) के अनुसार तारीख १९वीं फाल्गुन, बार शुक्रवार है;

(ख) श्यामलाल गोस्वामीके 'श्रीगौर-सुन्दर' ग्रन्थ (पृष्ठ १२) के अनुसार २०वीं फाल्गुन, शुक्रबार है;

(ग) 'श्रीचैतन्य-संगीत' के अनुसार २२वीं फाल्गुन है;

(घ) 'प्रवासी' (१३२७, ज्येष्ठ, १७२ पृष्ठ) के अनुसार २५वीं फाल्गुन, ईस्वी सन् १४८६ की १९वीं फरवरी है।

(ङ) नवद्वीपनिवासी श्रीयुत फणिभूषण दत्त महाशयने 'श्रीचैतन्य जातक' पुस्तकमें विशद भावसे गणना करके दिखाया है कि उस दिन १४०७ शककी २३वीं फाल्गुन, शनिवार था।

(च) जुलियान कैलेण्डरके अनुसार ईस्वी सन् १४८६ की १८ फरवरी थी और आजकल प्रचलित ग्रेगरियान कैलेण्डरके अनुसार सन् १४८६ की २७वीं फरवरी थी।

(छ) श्रीचैतन्यचरितामृतके टीकाकार डा० राधागोविन्दनाथने 'श्रीचैतन्यचरितामृतकी भूमिका' चतुर्थ संस्करणके पृष्ठ ४३४-४३५ पर ज्योतिष-गणना देकर बतलाया है कि वह दिन फाल्गुनकी २३वीं तारीख, शनिवार था।

संन्यास-ग्रहण-तिथि एवं गृह-आवास

'श्रीचैतन्य-चरितेर उपादान' ग्रन्थके पृष्ठ २५–२७ के अनुसार श्रीमन्महाप्रभु गया-यात्रा करके

---

*देखिये श्रीविमानबिहारी मजूमदारका 'श्रीचैतन्य-चरितेर उपादान,' पृष्ठ १९—२१।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शकाब्द १४३० के पौष मासके अन्तमें घर आये (कवि कर्णपूरका श्रीचैतन्यचरितामृत महाकाव्य ४.७६)[1] एवं माघ मासमें कीर्तन एवं भावप्रकाश आरम्भ हुआ। माघसे वैशाख पर्यन्त चार महीने-तक किसी प्रकार अध्यापन कार्य चला पाये। वैशाखके उपरान्त अध्यापन-कार्य करनेमें असमर्थ हो गये। इसके बाद उन्होंने ज्येष्ठसे पौषके शेष पर्यन्त आठ महीने नृत्य-रसमें बिताये (महाकाव्य ५.१२५)[2]। तेरह महीने नवद्वीपमें रहकर १४३१ शकाब्द, माघ पूर्णिमाके दिन मकर-संक्रान्तिके समय 'संन्यास-दीक्षा' ग्रहण की। सौर मासके अनुसार महाप्रभु लगभग २३ वर्ष, ११ मास घरमें रहे।[3]

संन्यास-ग्रहणके दिन सारे दिन-रात गुरुके साथ नृत्य-कीर्तनमें बिता अगले दिन वहाँसे विदा हुए। तीन दिन राढ़-प्रदेशमें भ्रमण किया। चौथे दिन गंगा-तीरपर पहुँचे। वहाँसे नित्यानन्दजीको भक्तगणोंकी सूचना देनेके लिए नवद्वीप भेजकर नवद्वीपके भक्तों और शचीमाताके आनेके पूर्व स्वयं कुलिया नगर होते हुए शान्तिपुर पहुँच गये। शान्तिपुर तीन दिन* रहकर नीलाचलके लिए प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर फाल्गुनके शेषमें दोलयात्राका दर्शन किया।

श्रीचैतन्य महाप्रभुका प्रकट-काल

श्रीचैतन्य महाप्रभु कितने दिनोंतक इस धराधामपर रहे, इसका अब निर्णय करनेकी चेष्टा की जाय। कवि कर्णपूरने बतलाया है कि वे ४७ वर्ष तक इस धराधामपर रहे। यथा—

इत्थं चत्वारिंशता सप्तमाजा
श्रीगौराङ्गो हायनानां क्रमेण।
नाना-लीला-लास्यमासाद्य भूमौ
क्रीड़न् धाम स्वं ततोऽसौ जगाम्॥

चै. च. महा २० ४१

अर्थात्—श्रीगौराङ्गने इस प्रकार ४७ वर्ष नाना लीला-नृत्य-विधानपूर्वक पृथ्वीपर क्रीड़ा कर स्वधाम गमन किया।

कृष्णदास कविराज कहते हैं—

श्रीकृष्णचैतन्य नवद्वीपे अवतरि।
अष्टचल्लिश वत्सर प्रकट विहरि॥

---

[1] गयाया इत्येवं स्वगृहमगमद्भूरिकरुण-
प्रभु पौषस्यान्ते सकलतनुमृत्तापशनः॥
ततो माघस्यादौ निरवधि निजैः कीर्तनरसैः
प्रकाशं चावेशं भुवि विकिरति स्यानुदिवसम्॥
—महाकाव्य ४.७६

[2] इत्येवं प्रचुरकृपामृतं वितन्वन्
ज्येष्ठाद्यैरष्टभिरति-सन्मदेन मासैः।
पौषान्तं नटन-रसैर्निदाघवर्षै-
र्हेमन्तं सह शरदा निनाय नाथः॥
महाकाव्य ५.१२५

[3] चान्द्र-मासके अनुसार फाल्गुन पूर्णिमाके जन्म-दिवससे माघ पूर्णिमा संन्यास-ग्रहणके कालतक २३ वर्ष, ११ महीने होते हैं।

*ततो जनन्या तेषां च प्रमोदार्थं त्रीणि दिवसानि तत्र स्थित्वा पूर्वमिव भगवत्या जनन्या अच्युतानन्दजनन्या च पाचितमन्नं सर्वैः सह भुक्त्वा ताननुरज्य चतुर्थे दिवसे गन्तुं प्रवृत्ते सर्वैर्मन्त्रित्वा नित्यानन्द-जगदानन्द-दामोदर-मुकुन्दा-सङ्गे दत्ताः। (चै. च. ना. ६.५ निर्णयसागर संस्करण, पृष्ठ १०२.)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौद्दशत सात शके जन्मेर प्रमाण।
चौद्दशत पञ्चान्ने हइल अन्तर्धान॥

चै. च. आ. १३.७.८

लोचनदासके चैतन्यमङ्गलके शेष खण्डसे जाना जाता है कि श्रीचैतन्य महाप्रभु

आषाढ़ मासेर तिथि सप्तमी दिवसे।
निवेदन करे प्रभु छाड़िया निश्वासे॥
तृतीय प्रहर बेला रविवार दिने।
जगन्नाथे लीन प्रभु हइला आपने॥

चै, मं, (श्रीमृणाल कान्ति घोष सम्पादित तृतीय संस्करण) पृष्ठ २१०—२११

लोचनदासके वर्णनसे यह जाननेमें नहीं आता कि उस दिन शुक्ल पक्ष अथवा कृष्ण पक्षकी सप्तमी थी; किन्तु जयानन्दने इस अभावको पूर्ण कर दिया है। यथा—

आषाढ़ सप्तमी तिथि शुक्ला अङ्गीकार करि।
रथ पाठइह जाब बैकुण्ठपुरी॥

लोचनदासके मतसे तृतीय प्रहरके समय तिरोधान है, जयानन्दके मतसे १० दण्ड रात्रि बीतनेपर है।

'कालि दश दण्ड रात्रे चलिब सर्वथा'
(उत्तर खण्ड पृष्ठ ५०)

श्रीयुक्त फणिभूषण दत्त महाशयने गणना करके निकाला है कि यह दिन १४५५ शकाब्द आषाढ़ ३१ १५३३ इस्वी जून २९ था।

(श्रीचैतन्यजातक, पृष्ठ १८)

श्रीचैतन्य महाप्रभुका तिरोभाव—

१५३३ ईस्वी २९ जून जुलियन कैलेंडर
१५३३ ईस्वी ९ जुलाई ग्रेगरियान कैलेंडर

श्रीचैतन्य महाप्रभुका आविर्भाव—

१४८६ ईस्वी २७ फरवरी ग्रेगरियान कैलेंडर

श्रीचैतन्य महाप्रभुका जीवनकाल—

४७ वर्ष ४ महीना १२ दिन*

और भी सूक्ष्म हिसाबसे दिन गणना करनेपर—

शत १४५५/३/३१ (वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ ९३ दिन थे)
३६५+९३=४५८

शक १४०७/११/२३ (२३ वाँ फाल्गुन पर्यन्त ३२८ दिन हुए थे)।

४७ वर्ष १३० दिन (३० दिनका महीना माननेपर ४ महीना १० दिन)।

इस प्रकार गणनाके द्वारा पाया गया कि श्रीचैतन्य महाप्रभु ४७ वर्ष, ४ महीना, १० दिन या १२ दिन धराधामपर रहे। इस समयको कवि कर्णपूरने ४७ वर्ष एवं एवं कृष्णदास कविराजने ४८ वर्ष बतलाया है।

*२७ फरवरी से २७ जून तक ४ महिने, २७ जून से ९ जुलाई तक १२ दिन।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीकृष्ण-जन्मस्थानके अपने अन्य नये प्रकाशन एवं अन्य पुस्तकें

आकार– क्राउन/चार पेजी	बँधाई	मूल्य
१. श्रीचैतन्य प्रहाप्रभुकी नवद्वीप-लीला (बंगला संस्करण) पृष्ठ संख्या ६४०	रेक्सीन जिल्द प्लास्टिक जाकेट	५०-००
२. श्रीचैतन्य महाप्रभुकी नीलाचल-लीला (बंगला संस्करण) पृष्ठ संख्या ६१४	,, ,,	५०-००
३. श्रीचैतन्य महाप्रभुकी नव-द्वीप लीला (हिन्दी संस्करण) पृष्ठ संख्या ६४४	,, ,,	५०-००
४. श्रीचैतन्य महाप्रभुकी नीलाचल-लीला (हिन्दी संस्करण) पृष्ठ संख्या ६१६	,, ,,	५०-००
५. सनातन शिक्षा–श्रीचैतन्य-चरितामृतमें श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा श्रीसनातन गोस्वामीको दी गयी शिक्षा, डा० राधागोविन्दनाथकी टीकासे अनूदित—पृष्ठ संख्या ६१०	रेक्सीन जिल्द साधारण जाकेट	३०-००
६. श्रीमद्भागवत पादानुक्रमणिका—पृष्ठ संख्या ६०४	रेक्सीन जिल्द प्लास्टिक जाकेट	१००-००
आकार—क्राउन/आठ पेजी		
१. श्रीमद्भगवद्गीता पदच्छेद अन्वय, अर्थ सहित—पृष्ठ संख्या ४६८	रेक्सीन जिल्द राज संस्करण	१०-००
	,, साधारण संस्करण	८-००
२. प्रबोध-सुधाकर (श्रीशंकराचार्यजी) पृष्ठ संख्या ८०	साधारण	१-५०
आकार—डिमाई/आठ पेजी		
१. The Philosophy of Love—Pages 303 ('नारद-भक्तिसूत्र'की नित्यलीलालीन श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारकी टीकाका अँग्रेजी अनुवाद)	Rexine Bound	
	Royal Edition	१८-००
	Paper Back	१२-००
२. श्रीविष्णुप्रिया-चरित (बंगलासे अनूदित) पृष्ठ संख्या ५३२	रेक्सीन जिल्द जैकेट सहित	१२-५०
३. श्रीलक्ष्मीप्रिया-चरित (बंगलासे अनूदित) पृष्ठ संख्या २२६	साधारण जिल्द	६-५०
४. आत्माराम आकर्षक हरिके गुण (श्रीमद्भागवत १.७.१० श्लोकके श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा किये गये ६१ अर्थ) पृष्ठ संख्या २८४	साधारण जिल्द	७ ७५
५. श्रीरूप-शिक्षा—श्रीचैतन्य-चरितामृतमें श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा श्रीरूप गोस्वामीको दी गयी शिक्षा डा० राधागोविन्दनाथकी टीकासे अनूदित—पृष्ठ संख्या १४२	पेपर बैक	३-२५
६. वैष्णव-स्मृति (श्रीचैतन्य-चरितामृतमें श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा श्रीसनातन गोस्वामीको शिक्षा दी गयी उसके अन्तर्गत अंशका डा० राधागोविन्दनाथकी टीकासे अनूदित) पृष्ठ संख्या ७५	अजिल्द	०-७५
७. शिक्षाष्टक (श्रीचैतन्य-चरितामृतसे डा० श्रीराधागोविन्दनाथकी टीकासे अनूदित) पृष्ठ संख्या १४४	रेक्सिन जिल्द राज संस्करण	१०-००
	साधारण अजिल्द	५-००

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

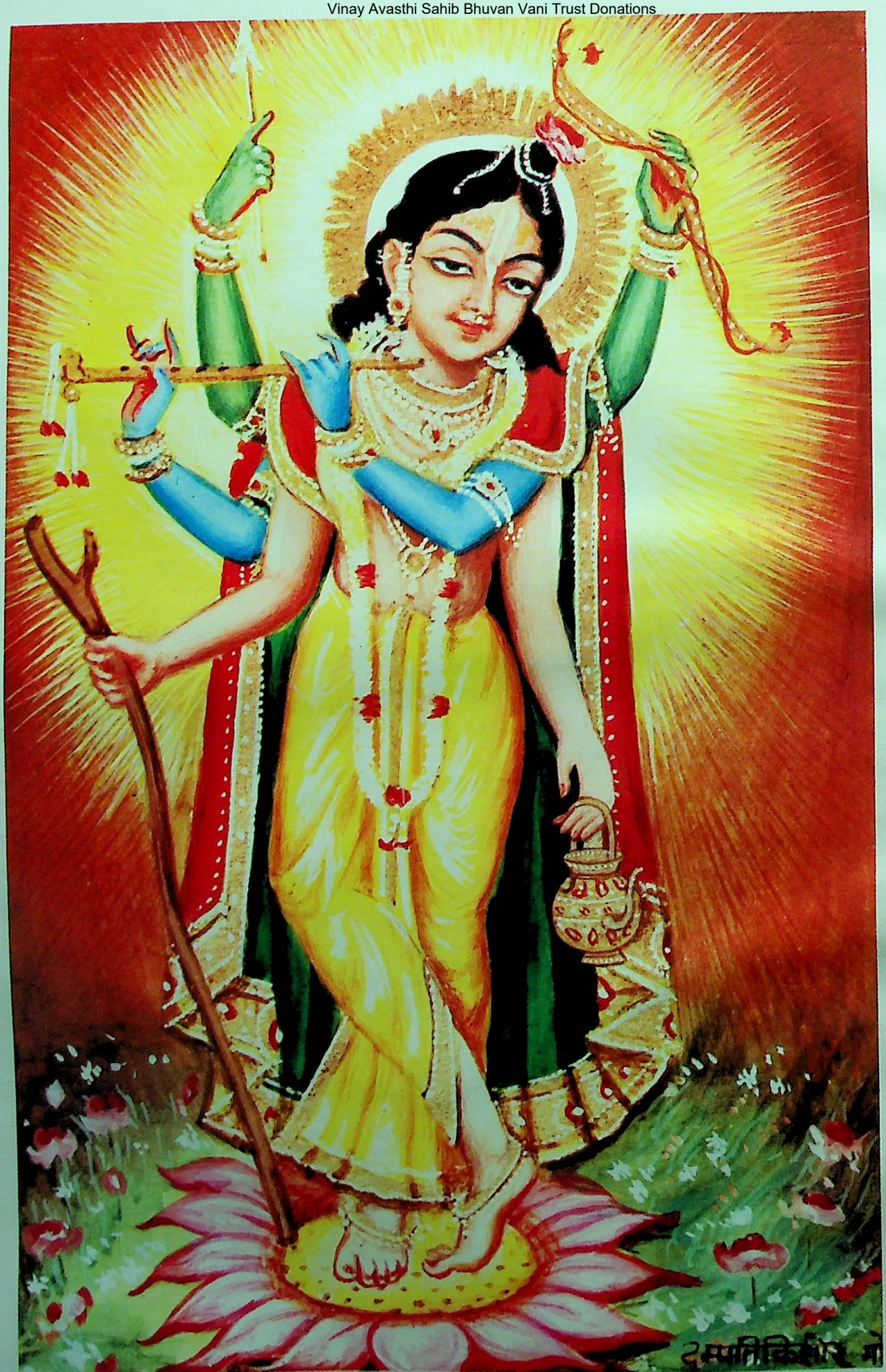

षड्भुज श्री चैतन्य महाप्रभु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमन्महाप्रभुके षड्भुजादि रूप

१. संन्यास-ग्रहणके पूर्व श्रीनवद्वीपधाममें श्रीमन्महाप्रभुने श्रीवासके गृहमें व्यास-पूजाके अवसर-पर श्रीनित्यानन्दप्रभुको षड्भुज-रूप दिखाया था। गौराङ्गलीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर श्रीचैतन्यभागवतमें लिखते हैं—

छय-भुज विश्वम्भर हइला तत्काल ॥
शंख, चक्र, गदा, पद्म, श्रीहल, मुषल।
देखिया विस्मित हैला निताइ विह्वल ॥
षड्भुज देखि मूर्च्छा पाइला निताइ।

चै. भा. म. ५.८९—९१

अर्थ—विश्वम्भरने नित्यानन्दके सम्मुख अपना षड्भुज रूप प्रकट किया। शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, श्रीहल, मूसल (६ आयुध ६ हाथोंमें) दर्शनकर निताई विस्मित और विह्वल होकर मूर्च्छित हो गये।

प्रायः इसी प्रकारका विवरण श्रीवृन्दावनदास ठाकुरद्वारा रचित तथा श्रीकिशोरदास बाबाजी (श्रीचैतन्यडोबा, हालीसहर) द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित श्रीश्रीनित्यानन्द-चरितामृतके मध्य खण्डके तृतीय अध्यायमें भी मिलता है।

२. श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने श्रीचैतन्य-चरितामृतमें श्रीवासगृहमें व्यास-पूजनके पूर्व श्रीनित्यानन्दप्रभुको अपने षड्भुज, चतुर्भुज और द्विभुज मुरलीधर रूपोंका दर्शन करानेका विवरण इस प्रकार दिया है—

तबे नित्यानन्द स्वरूपेर आगमन।
प्रभुके मिलिया पाइल षड्भुज-दर्शन ॥
प्रथमे षड्भुज ताँरे दिखाइल ईश्वर।
शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-शार्ङ्ग-वेणुधर ॥
तबे चतुर्भुज हैला तिन अङ्ग वक्र।
दुइ हस्ते वेणु बाजाय दुइये शंख चक्र ॥
तवे त द्विभुज केवल वंशीवदन।
श्याम अंग पीत-वस्त्र ब्रजेन्द्रनन्दन ॥

आदिलीला १७.१०—१३

अर्थ—श्रीनित्यानन्द आकर प्रभुसे मिले तब उन्हें प्रभुने शङ्ख-चक्र, गदा-पद्म, शार्ङ्ग (भगवान्का धनुष)—वेणुधारी षड्भुज रूप दिखाया। इसके बाद तीन अंगोसे वक्र (दो हाथोंमें वेणु और दो हाथोंमें शङ्ख-चक्र लिये) चतुर्भुज-रूप दिखाया। इसके बाद श्याम अंग, पीतवसनधारी, वंशीवदन, व्रजेन्द्रनन्दन रूप दिखाया।

३. श्रीमुरारिगुप्तने अपने कड़चामें लिखा है—

ततः संदर्शयामास नित्यानन्दाय स प्रभुः।
स्ववैभवं स्वमाधुर्यं कौतुकायाखिलेश्वरः ॥
सददर्श ततो रूपं कृष्णस्य षड्भुजं महत्।
क्षणाच्चतुर्भुजं रूपं द्विभुजश्च ततः क्षणात् ॥
अत्यद्भुतं ततो दृष्ट्वा हर्षेण विस्मयेन च।
जहास च पुनर्द्धीमान्नर्त च मुदा सकृत् ॥

२.८.२६—२८

अर्थ—तब उन सर्वाधीश्वर प्रभुने नित्यानन्दको अपना ऐश्वर्य, माधुर्य और कौतुकपूर्ण रूप दिखाया ॥२६॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसके बाद उन (श्रीनित्यानन्द) ने पहिले श्रीकृष्णके षड्भुज-रूपके, फिर क्षणकाल पश्चात् चतुर्भुज-रूपके और फिर द्विभुज-रूपके दर्शन किये ॥२७॥

अति अद्भुत वह रूप दर्शन कर वे बुद्धिमान (नित्यानन्द) प्रभु हर्ष और विस्मयसे अभिभूत हो पुनः-पुनः हँसने लगे एवं आनन्दसे विह्वल हो नृत्य करने लगे ॥२८॥

४. महाकवि कर्णपूर अपने श्रीकृष्णचैतन्य-चरितामृत महाकाव्यमें लिखते हैं—

पुरः षड़भिर्दोर्भिः परमरुचिरं तत्र च पुन-
श्चतुर्णां बाहूनां परमललित तत्वेन मधुरम्।
तदीयं तद्रूपं सपदि परिलोच्याशु सहसा
तदाश्चर्यं भूयो द्विभुजमथ भूयोऽप्यकलयत् ॥
विलोक्येत्थं तत्तत् परमरमणीयं सुमधुरं
कृपासिन्धो रूपामृतमिदममन्दं प्रमुदितः।
जहासोच्चैर्नृत्यन्नतिशयसुखास्फालनपरो
भृशं नित्यानन्दः सुखजलधि सम्प्लाविततनुः ॥
चै. च. महाकाव्य ६. १२२,१२३

अर्थ—(श्रीनित्यानन्दप्रभुने) पहिले परम रुचिर षड्भुज मूर्ति देखी। फिर उसीको चार बाहुवाली मनोहर मूर्ति होते देखा और फिर तत्क्षण उसीको प्रसिद्ध अत्याश्चर्यमय द्विभुज-मूर्ति होते देखा ॥१२२॥

कृपासिन्धु गौराङ्गदेवके इस प्रकार परम रमणीय सुमधुर रूपके दर्शन करके नित्यानन्द अतिशय प्रमुदित हो उच्च हास्य और नृत्य करने लगे। बाहु आस्फालन करके नृत्य करते-करते उनका शरीर सुख-समुद्रमें सम्प्लावित हो गया ॥१२३॥

५. ठाकुर श्रीलोचनदासने अपने श्रीचैतन्य-मंगल ग्रन्थके मध्य खण्डमें इसी प्रसंगके बारेमें लिखा है—

षड्भुज शरीर प्रभु देखाइल आगे।
तवे चतुर्भुज, दुइभुज तवे ॥
देखिला आमार प्रभु प्रकाश हइला।
एक अंगे तिन अवतार देखाइला ॥
राम, कृष्ण, गौराङ्ग देखिया दिव्य तनु।
पश्चाते देखिल नव केशोर राधाकानु ॥*

६. महात्मा शिशिरकुमार घोषने अपने श्रीअमिय-निमाइ-चरितके प्रथम खण्डके १३ वें संस्करणके १४ वें अध्यायके पृष्ठ १७१-१७२ पर इसी प्रसंगमें लिखा है—

"..... तब निताईके आनन्दकी सीमा न रही। हाथमें जो व्यास-पूजाके लिए माला थी, शीघ्र

---

* डा० श्रीराधागोविन्द नाथके श्रीचैन्तन्यचरितामृतकी भूमिका ग्रन्थके चतुर्थ संस्करणके 'श्रीमन् महाप्रभुके षड्भुज' शीर्षक प्रबन्धके पृष्ठ ४०१-४०२ के अनुसार श्रीचैतन्य-मंगलके बंगवासी संस्करणके मध्य खण्डके पृष्ठ १०६ पर प्रथम दो पंक्तियोंके बादकी चार पंक्तियाँ कोष्ठकमें बतायी हैं, जिसका अर्थ उन्होंने ऐसा अनुमान किया है कि ये अन्य सब संस्करणोंमें नहीं हैं।

श्रीमृणालकान्ति घोषद्वारा सम्पादित तृतीय संस्करणके मध्य खण्डके पृष्ठ ११४, कालम १ में ये सब पंक्तियाँ सहज रूपमें किंचित पाठभेदसे मिलती हैं, कोई भी पंक्ति कोष्ठकमें नहीं हैं।

अन्य एक श्रीचैतन्यमङ्गल मुद्रित ग्रन्थमें डा० श्रीराधागोविन्द नाथने भूमिका-ग्रन्थके पृष्ठ ४०२ पर निम्नलिखित पंक्तियोंके होनेका उल्लेख किया है—

"ऊर्द्धे दुइ हस्ते देखे धनु आर शर।
मध्य दुइ हस्त वक्षे—मुरली अंधर ॥
अन्य दुइ हस्ते शोभे कमण्डलु दण्ड। इत्यादि
ये पंक्तिया सब संस्करणोंमें नहीं हैं।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निमाईके गलेमें पहना दी। तभी एक अद्भुत घटना हुई। निमाई षड्भुज रूप हो गये। निमाईकी इसी षड्भुज मूर्तिके श्रीवासुदेव सार्वभौमने बादमें दर्शन किये, एवं दर्शन कर वही मूर्ति उन्होंने श्रीजगन्नाथ-मन्दिरमें अंकित करवा दी। वह मूर्ति इस समय भी वहाँ विद्यमान है।" *

संन्यास-ग्रहणके बाद, श्रीमन्महाप्रभुने वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्यको श्रीमद्भागवत १।७।१० (आत्मारामाश्च मुनयो·····) श्लोककी व्याख्या करते समय जो षड्भुज-रूप दिखाया था, उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है—

(१) व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरद्वारा श्रीचैतन्यभागवतमें—

श्लोक व्याख्या करे प्रभु करिया हुंकार।
आत्म भावे हइला षड्भुज अवतार॥ ९४
अपूर्व षड्भुज मूर्ति — कोटि सूर्यमय।
देखि मूर्च्छा गेला सार्वभौम महाशय॥ १०१
श्री हस्त परशे विप्र पाइला चेतन। १०४
परम सुबुद्धि सार्वभौम महामति।
श्लोक पढि-पढि पुनः-पुनः करे स्तुति॥ १०५
एइ मत सार्वभौम शत श्लोक करि।
काकु करे चैतन्येर पादपद्म धरि॥ १२१

चै. भा. म. ३.९४ १०१, १०४, ११५. १२१

(२) श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने इस प्रसंगमें लिखा है—

देखाइल आगे तारे चतुर्भुज रूप।
पाछे श्याम वंशीमुख—स्वकीय स्वरूप॥
देखि सार्वभौम पड़े दण्डवत करि।
पुनः उठे स्तुति करे दुह कर जुड़ि॥
प्रभुर कृपाय तारे स्फुरिले सब तत्त्व।
नाम-प्रेमदान-आदि वर्णेन महत्व॥
शत श्लोक केल एक दण्ड ना जाइते।
बृहस्पति तैछे श्लोक ना पारे करिते॥

चै. च. म. ६. १८३—१८६

(३) श्रीमुरारि गुप्तके कड़चामें इस विषयमें कोई उल्लेख नहीं है।

(४) वेदान्त-व्याख्याके समयका वर्णन करते हुए महाकवि कर्णपूरने अपने श्रीकृष्णचैतन्य-चरितामृतम् महाकाव्यमें लिखा है—

प्रदर्शयामास चतुर्भुजत्वं
दिवाकराणां शतकोटिभास्वत्।
ततोऽधिकं सोऽपि ननन्द विप्र-
स्ततोधिकं च स्तवमव्यकायात्॥

१२·३३

अर्थ—महाप्रभुने अपना शतकोटि दिवाकरके समान दीप्तिशाली चतुर्भुज-रूपका दर्शन कराया एवं सार्वभौमने ततोधिक आनन्दित होकर समधिक स्तव भी किया।

(५) महात्मा शिशिरकुमार घोषने अपने अमिय निमाइचरितके तृतीय खण्ड, दशम संस्करणके अध्याय ३ के पृष्ठ १३१ पर भागवतके इसी (१।७।१०) श्लोककी व्याख्याके प्रसंगमें लिखा है—

"उन्होंने देखा कि उनके सम्मुख उस नवीन संन्यासीकी जगह विद्युल्लता-मण्डित सुवर्ण-वर्णके अंगवाले एक अति सुन्दर पुरुष त्रिभंग होकर खड़े हैं। उनके षड्भुज हैं। उर्ध्व दोनों बाहुओंका दुर्वादल वर्ण है और उनमें धनुर्वाण हैं। मध्य दोनों बाहु नीलकान्तमणिकी तरह हैं, उनमें मुरली है। और नीचेके दोनों बाहु सुवर्ण-वर्णके हैं, उनमें दण्ड-कमण्डलु हैं। उन सुन्दर मूर्तिका श्रीवदन मुरली-रन्ध्रसे चुम्बित है। उनके मुखपर मधुर हास्य है, मस्तकपर चूड़ा है और अंगकी ज्योति सुशीतल,

* नीलाचलक्षेत्र (पुरी) में श्रीजगन्नाथजीके मन्दिरमें जो षड्भुज-विग्रह हैं, उसके ऊपरके दोनों हस्तकमलमें धनुष-वाण, मध्यके-में वंशी और नीचेके-में दण्ड-कमण्डलु हैं। वहाँ अन्य तीन स्थानोंमें भी षड्भुज विग्रह हैं। उनके हस्तकमलोंमें भी इसी प्रकारके आयुध हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्निग्धकारी एवं आनन्दप्रद है। इसे देख वे मूर्च्छित हो गये।"

पृष्ठ १३२ पर उल्लेख है—

"सार्वभौमने षड्भुज मूर्तिके जिस रूपमें दर्शन किये, उसको उन्होंने जगन्नाथजीके श्रीमन्दिरमें और अपने वास-गृहमें अंकित करके रखा है। वह आज भी वहाँ विद्यमान है।"(पूर्व पृष्ठपर पादटिप्पणी लिखिये)

\+ \+ \+

राजा प्रतापरुद्रके षड्भुज-दर्शनके सम्बन्धमें डा० राधागोविन्द नाथने श्रीचैतन्यचरितामृतकी भूमिकामें निम्न प्रकारसे पृष्ठ ४०३ पर उल्लेख किया है, जिसका वर्णन केवल श्रीमुरारिगुप्तके कड़चा (श्रीश्रीकृष्णचैतन्यचरितामृतम्) में ४।१६ सर्गमें मिलता है, और किसी ग्रन्थमें नहीं। वृन्दावनसे प्रत्यावर्तन करके जब महाप्रभु नीलाचल आ गये थे, उसके पीछेकी बात है। घटना क्रम इस प्रकार है—

"राजा प्रतापरुद्र क्रमसे तीन बार महाप्रभुके स्वप्नमें दर्शन करके साक्षात्में दर्शन करनेको इतने अधीर हो गये कि तृतीय बारके स्वप्न-दर्शनके बाद उठकर शीघ्र प्रभुके समीप जाकर साष्टाङ्ग प्रणामपूर्वक अश्रु-वर्षण करते-करते प्रभु-के-चरण-कमल अपने हृदयपर धारण करके प्रभुका स्तव करने लगे। तब प्रभुने उनके प्रति प्रसन्न होकर उनको अपना षड्भुज-रूप दिखाया—

एवं स्तुवन्तं नृपतिं जगत्पतिः
भृङ्गार पोषं निज वैभवं प्रभुः।
श्रीविग्रहं षड्भुजमद्भुतं महत्
प्रदर्शयामास महाविभूतिः॥

मुरारिगुप्त कड़चा ४.१६.१३

इस षड्भुज-रूपके उर्ध्व दो बाहुओंमें धनुर्वाण, मध्य दोनों बाहु वक्षःस्थलमें वंशीवादनमें नियुक्त एवं शेष दोनों बाहु नृत्यभंगी-प्रकाश कर रहे थे—

उर्ध्वं हस्तद्वयमपि धनुर्वाणयुक्तं च मध्यं
वंशी वक्षःस्थलविनिहितमुत्तमं गौरचन्द्रः।
शेषहस्तद्वयं च परमसुमधुरं नित्यवेशं स बिभ्रत्
एवं श्रीगौरचन्द्र नृपपतिरखिलं प्रेमपूर्ण ददर्श॥

मुरारिगुप्त कड़चा ४.१६.१५

श्रीराधागोविन्द नाथ श्रीचैतन्यचरितामृतकी भूमिकाके पृष्ठ ४०२-४०३ पर लिखते हैं कि "आधुनिक चित्रकारगण षड्भुज-रूपका चित्र बाजारमें विक्रय करते हैं, (जिसमें ऊपरकी दो भुजाओंमें धनुष-वाण, मध्यकी दो भुजाओंमें वंशी तथा नीचेकी दो भुजाओंमें दण्ड-कमण्डलु हैं।) यह संदेहमूलक है। यह चित्र वैष्णवशास्त्र-सम्मत नहीं है।" वे आगे और लिखते हैं कि "यदि महाप्रभुने सार्वभौमको इस प्रकारका षड्भुज-रूप दिखाया होता तो सार्वभौमके स्तवमें (जिसका उल्लेख चै. भा. म. ३.१२१ में तथा चै. च. म. ६.१८६ में है, जो 'सार्वभौम-शतक' नामसे विख्यात है) इस रूपका उल्लेख या संकेत मिलता; लेकिन वास्तवमें ऐसा नहीं मिलता। विशेषतः प्रभुके स्वरूपके सम्बन्धमें सार्वभौमके मनमें जो संदेह उत्पन्न हुआ था, इस रूपके दर्शनसे उस संदेहके निवारणकी कोई सम्भावना नहीं दीखती।" 'सार्वभौम-शतक' में कहीं भी षड्भुज-रूप-दर्शनका कोई उल्लेख देखनेमें नहीं आता। जब कोई उल्लेख ही नहीं, तब भुजाओंके आयुधके सम्बन्धमें भी उल्लेख कहाँसे होता। हाँ, सार्वभौमरचित 'सर्वापराधभञ्जनं श्रीगौराङ्गाष्टोत्तर-शतनामस्तोत्रम्' में इसका कुछ वर्णन इस प्रकार है—

.....षड्भुजोऽथ चतुर्भुजः॥
द्विभुजश्च गदापाणिः चक्री पद्मधरोऽमलः।
पाञ्चजन्यधरः शार्ङ्गी वेणुपाणिः सुरोत्तमः॥

इस उल्लेखसे इतना ही संकेत मिलता है कि श्रीमन् महाप्रभु षड्भुज हैं, चतुर्भुज हैं, और द्विभुज भी हैं; उनके आयुधोंमें (१) गदा, (२) चक्र, (३) पद्म, (४) पाञ्चजन्य-शङ्ख, (५) शार्ङ्ग-धनुष और (६) वेणु हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीनित्यानन्दप्रभुद्वारा दर्शित षड्भुज-रूपके आयुध

श्रीवृन्दावनदासके चै. भा. म. ५.८९—९१ के अनुसार षड्भुज-रूपके आयुध हैं—शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, हल, मूसल।

श्रीकृष्णदास कविराजके चै. च. आ. १७.११-१३ के अनुसार षड्भुज-रूपके आयुध हैं—शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, शार्ङ्ग, वेणु।

श्रीचैतन्यचरितामृतका वर्णन सार्वभौमके अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रसे मिलता है।

ठाकुर लोचनदासके चैतन्यमङ्गल, मध्य खण्डके अनुसार षड्भुज रूपके आयुध है—श्रीरामके धनुष-वाण, श्रीकृष्णका वेणु, एवं श्रीगौराङ्गके दण्ड-कमण्डलु।

महात्मा शिशिरकुमार घोषके अमियनिमाइ-चरितका वर्णन ठाकुर लोचनदासके चैतन्य-मङ्गलसे मिलता है।

श्रीसार्वभौम भट्टाचार्यद्वारा दर्शित षड्भुज-रूपके आयुधोंके सम्बन्धमें किसी चरित-लेखकने किसी प्रकारका वर्णन नहीं किया, केवल महात्मा शिशिरकुमार घोषने उस रूपके सम्बन्धमें उन्हीं आयुधोंका वर्णन किया है. जिसका उन्होंने श्रीनित्यानन्दप्रभुके द्वारा दर्शित षड्भुज-रूपके सम्बन्धमें किया है।

राजा प्रतापरुद्रद्वारा दर्शित षड्भुज-रूपके सम्बन्धमें केवल मुरारिगुप्तने अपने कड़चा (श्रीकृष्णचैतन्यचरितामृत) में वर्णन किया है। उसमें ऊपरके दो हाथोंमें धनुष-वाण, मध्यके दो हाथोंमें वेणु हैं और नीचेके दो हाथ नृत्यभङ्गीमें हैं।

क्रम संख्या ६ के उल्लेखकी पाद-टिप्पणीमें पुरीमें चार स्थानोंपर षड्भुज-विग्रहके हस्तकमलोंमें आयुधोंका विवरण आ चुका है। वृन्दावनमें श्रीराधारमण मार्गपर एक मन्दिरमें षड्भुज-विग्रह है, जो सन् १९३२ के पूर्व ढाकासे वृन्दावन आये और सन् १९३२ में उस मन्दिरमें स्थापित हुए। उनके हस्तकमलोंमें भी ठाकुर लोचनदासके श्रीचैतन्य-मङ्गलके वर्णनके अनुसार ही आयुध हैं। वाराणसीमें श्रीचैतन्य-वट (जिस स्थानपर श्रीमन्महाप्रभुने काशीसे पुरी लौटते समय ग्वालोंका मट्ठा पीया था) पर षड्भुज मन्दिर है। वहाँ ऊपरके हाथोंमें वैसे ही आयुध हैं, जैसे पुरी और वृन्दावनमें हैं, लेकिन नीचे दाहिने हाथमें गदा और बायेंमें पद्म हैं। वाराणसीवालोंकी भावना है कि वहाँ मायावादी सन्यासियोंके दमनके लिए गदा आवश्यक है। उन्होंने अपनी भावनाके अनुसार ही महाप्रभुके षड्भुज श्रीविग्रहको गदा धारण करवाया है। अपनी भावनाके अनुसार उन्होंने जो किया, ठीक किया, पर महाप्रभुजीने कभी भी गदा या चक्रका उपयोग अपनी लीलामें नहीं किया।

इस सम्बन्धमें मुख्य बात यह है कि भगवान् अनन्त हैं और उनके अनन्त रूप हैं। उनका जो भी रूप भक्तकी भावनाके अनुरूप होता है, उसी रूपमें वे दर्शन देते हैं। षड्भुज महाप्रभुके भी विभिन्न रूप हों और उनमें विभिन्न प्रकारके आयुध हों तो इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं। भक्त अपनी भावनाके अनुसार उन्हें कोई भी आयुध धारण करानेमें स्वतन्त्र है।

मुरारिको भी महाप्रभुजीने रघुनाथ-रूपमें दर्शन दिये थे—

मुरारिरे आज्ञा हैल 'मोर रूप देख'।
मुरारि देखये — रघुनाथ परतेख॥
दुर्व्वादलश्याम देखे सेइ विश्वम्भर।

चै. भा. म. १०.६,७

आमि सेइ राघवेन्द्र,.... .....

चै. भा. म. १०.१३

—※—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवद्वीप-लीलाकी
विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१. मंगलाचरण	१
२. पितृपुरुष वन्दना	२
३. उत्सर्ग-पत्र	४
४. उपक्रमणिका	५-१६
५. गौरांग अवतार-तत्त्व	१७-२७
६. श्रीगौरांग महाप्रभुका वंश-परिचय तथा पूर्वजोंका पूर्व-निवास वृतान्त	२८-३२
७. नवद्वीप-माहात्म्य	३३-४२
८. श्रीमन्महाप्रभुकी अष्टकालीय लीला	४२-६१
(१) रात्र्यान्त - प्रथमकालीय लीला	४३
(२) प्रातः - द्वितीयकालीय लीला	४६
(३ पूर्वाह्न - तृतीयकालीय लीला	४९
(४) मध्याह्न - चतुर्थकालीय लीला	५०
(५) अपराह्न - पंचमकालीय लीला	५२
(६) सायाह्न - षष्ठकालीय लीला	५५
(७) प्रदोष - सप्तकालीय लीला	५५
(८) निशान्त - अष्टकालीय लीला	५७
(९) फलश्रुति	६०
(१०) ठाकुर नरहरिकृत अष्टकालीय लीला-वर्णन	६०
९. श्रीरूपगोस्वामिकृत अष्टकालीय-लीला-स्मरणमंगलस्तोत्रम्	६१
१०. श्रीरूपगोस्वामिकृत श्रीचैतन्याष्टकम् (१)	६३
११. श्रीरूपगोस्वामिकृत श्रीचैतन्याष्टकम् (२)	६४

विषय	पृष्ठ
पहला अध्याय	**६५-८०**
(प्रभुकी जन्म-यात्रा)	
१. श्रीकृष्णचैतन्योदयावली-श्रीग्रन्थ, प्रभुके पूर्वजोंका निवास-स्थान, प्रभुका गर्भ अधिष्ठान, पितामहीकी आकांक्षा	६५
२. शची देवीको गर्भ-संचार, अलौकिक दर्शन और स्वप्न	६८
३. श्रीअद्वैताचार्यका आगमन, गर्भ-प्रदक्षिण व पूजन	६९
४. आविर्भाव काल	७०
५. नवजात शिशुको देखनेकी उत्सुकता	७३
६. ज्योतिष गणना	७५
७. आनन्दोत्सव	७७
८. जातकर्मसंस्कार	७७
९. गौरपूर्णिमा	७८
१०. श्रीगौर-भगवान्‌की जन्म-कुण्डली	७९
दूसरा अध्याय	**८०-८३**
(शिशु गौरांगका अपरूप रूप)	
१. रूपका वर्णन	८०
२. राधाभावद्युति सुवलित तत्त्व	८२
३. ग्रन्थकारका निवेदन	८२
तीसरा अध्याय	**८४-१०१**
(सूतिकागृहमें शिशु गौरांग)	
१. शची-आँगनका अपूर्व दृश्य	८४
२. शुभ जन्मोत्सव-लीला	८५
३. विश्वरूपका भ्रातृ-प्रेम	८६
४. श्रीवत्स पण्डितका भाव	८७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
५. शान्तिपुरमें आनन्दोत्सव	८७
६. श्रीसीतादेवीका जन्म-रहस्य	८८
७. श्रीसीतादेवीकी नवद्वीप-यात्रा	८९
८. नवद्वीपमें सीतादेवी—शिशु गौरांगके लिए उपहार	९१
९. छः दिनके शिशु गौरांग—विप्र-पद-रज-द्वारा आशीर्वाद	९२
१०. अष्टम दिवस उत्सव	९५
११. नवरात्रि-उत्सव	९६
१२. सीतादेवीका शिशु गौरांगको अलंकारसे सजाना	९७
१३. सीतादेवीका शान्तिपुर प्रत्यावर्तन	१००
चौथा अध्याय	**१०१–११०**
(शिशु गौरांगकी षष्ठी पूजा)	
१. निमाईचांदका हरिनाम-प्रेम	१०१
२. नदियावासियोंका सौभाग्योदय	१०२
३. गौरांगदर्शनसे शचीगृहमें अलक्ष्यमें देवगणके कौतुक रंग	१०२
४. षष्ठी पूजा (उत्थान पर्व)	१०३
५. गंगातटपर	१०४
६. षष्ठी पूजा करके गृह-प्रत्यावर्तन	१०५
७. सीतादेवी एवं अद्वैतप्रभुमें बातचीत	१०६
८. शचीनन्दकी बाल-क्रीड़ा	१०६
९. बाल गौरांगके पद्-चिह्न	१०७
१०. चार महीनेके बाल-गौरांग और उनकी लीलाएँ	१०९
११. छः महीनेके निमाई	११०
पाँचवाँ अध्याय	**१११–१२०**
(अन्न-प्राशन और बाललीला)	
१. निमाईचाँदका अन्नप्राशन	१११
२. जानु-चङ्क्रमण-लीला	११५
३. दन्तोद्गम	११६
४. सर्प-लीला	११६
५. चलना-बोलना सीखना	११७
६. चन्द्र-खिलौना	११८
छठवाँ अध्याय	**१२१-१५५**
(बाल-गौर)	
१. बाल्य लीला प्रकाश	१२१
२. मिट्टी भक्षण	१२१
३. ऐश्वर्य लीला	१२३
४. तैथिक विप्रके साथ लीला	१२४
५. तैथिक विप्रका वंश-परिचय	१३२
६. नूपुर-ध्वनि और वज्राँकुश-चिह्न-दर्शन	१३३
७. धूलि-कीचड़से खेल	१३४
८, दो चोरोंके साथ लीला	१३५
९. मर्कट-लीला	१३७
१०. बालूमय ठाकुर पूजा एवं अन्य लीलाएँ	१३८
११. दूसरी सर्प-लीला	१४०
१२. निमाईचाँदकी धृष्टता	१४१
१३. शचीमाताका दुःख	१४३
१४. निमाईका विश्वरूपके प्रति भाव	१४५
१५. विश्वरूप और अद्वैत-सभा	१४५
१६. एकादशी-प्रसाद-भोजन-लीला	१४७
१७ षष्ठी नैवेद्य-भक्षण	१४८
१८. मुरारिगुप्तके भोजन-पात्रमें मूत्र-त्याग	१५१
१९. शचीमाताका दुःख	१५४
२०. अद्वैत-सभामें मुरारिगुप्त	१५४
सातवाँ अध्याय	**१५५-१६७**
(बाल गौरांगके हाथमें खड़िया)	
१. विद्या-आरम्भ	१५५
२. पाठशालामें रंग	१५७
३. पाठशालाका दृश्य	१५८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
४. श्वान-शावक-लीला	१६२
५. दूसरे श्वानकी कथा	१६४
६. शचीमाताद्वारा विश्वरूपको निमाईकी शिकायत	१६५
७. विश्वरूपके जानेके बाद निमाईके रंग	१६६
८. नीलाचलमें की हुई माताके प्रति कृतज्ञताका वर्णन	१६७
आठवाँ अध्याय	**१६८–१८३**
(गंगाघाटपर बाल गौरांग)	
१. सुरसरि और बाल गौरांग	१६८
२. गंगा-तटपर	१६९
३. गंगामें स्नान-लीला	१७०
४. ब्राह्मण पंडितोंकी शिकायत	१७१
५. बालिकाओंकी शिकायत	१७२
६. मिश्र पुरन्दरका क्रोध	१७४
७. निमाईकी चतुराई	१७४
८. मिश्र-दम्पतिका चिन्तन	१७६
९. गंगाघाटकी एक अन्य लीला और मिश्र पुरन्दरका क्रोध	१७७
१०. पिताकी सीख	१८०
११. मिश्र पुरन्दरका स्वप्न	१८०
१२. गंगाघाटकी लीला	१८२
नवाँ अध्याय	**१८४–१९२**
(विश्वरूपका गृहत्याग और गौरांगका भ्रातृ-शोक)	
१. विश्वरूपका गृहत्याग	१८४
२. आत्मीयजनोंद्वारा मिश्र पुरन्दरको सांत्वना	१८५
३. शान्त निमाई	१८६
४. निमाईके विद्या-व्यसनपर पिताकी चिन्ता	१८६
५. निमाईकी पढ़ाई बन्द और पुनः उद्धता	१८७
६. पढ़ाई पुनः आरम्भ करनेके लिए निमाईका उपाय	१८८
७. श्रीधरके साथ रंग	१९१
दसवाँ अध्याय	**१९२–२०४**
(उपनयन और अध्ययन)	
१. उपनयन	१९२
२. गायत्री मन्त्र-प्रदान और मूर्च्छा	१९६
३. भिक्षा	१९७
४. ब्रह्मचारीके नियम पालन—मौनव्रती निमाई	१९८
५. माताको एकादशी-व्रत पालनका आदेश	१९८
६. अन्य अपूर्व घटना	१९९
७. उपनयनके बादका भोज	२००
८. गंगादास पंडितके विद्यालयमें पठन	२००
९. विद्यार्थियोंके साथ तर्क-वितर्क और ऊधम	२०१
१०. निमाईके धर्मानुराग तथा विद्यानुरागसे पिताका आनन्द	२०२
११. निमाईके अनुपम रूप-लावण्यके कारण डाकिनी-दानवसे अमंगलकी आशंका	२०२
१२. मिश्र पुरन्दरका दुःस्वप्न	२०३
ग्यारहवाँ अध्याय	**२०५–२११**
(पितृ-वियोग)	
१. मिश्र पुरन्दरका देहान्त ज्वर	२०६
२. मिश्र पुरन्दरको अन्तर्जली	२०८
३. बाल-गौरांगका विलाप	२०९
४. कर्तव्य-पालन	२०९
५. शचीमाता और निमाईका क्रन्दन	२१०
६. पितृ-श्राद्ध	२११
बारहवाँ अध्याय	**२१२–२१३**
१. पितृहीन प्रभु और उनकी दुःखी माता	२१२
२. माताको स्वर्ण देना	२१२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
तेरहवाँ अध्याय	**२१४–२२४**
१. प्रभुका विद्या-विलास	२१४
२. व्याकरणपर टिप्पणी	२१६
३. न्यायशास्त्रका अध्ययन	२१७
४. न्यायशास्त्रपर टिप्पणी और रघुनाथ	२१९
५. मुरारिगुप्त और प्रभु	२२१
चौदहवाँ अध्याय	**२२५–२३३**
(अध्यापक निमाई पण्डित)	
१. शास्त्रार्थमें प्रवृत्त निमाई पण्डित	२२५
२. मुकुन्द दत्त	२२६
३. श्रीवास पण्डित	२२९
४. गदाधर पंडित	२३१
५. मुकुन्द संजय	२३२
६. अध्यापकशिरोमणि निमाई पंडित	२३३
पन्द्रहवाँ अध्याय	**२३४–२५४**
(श्रीगौरांगसुन्दरका शुभ-परिणय)	
१. श्रीवल्लभाचार्य और उनकी कन्या लक्ष्मी प्रिया	२३४
२. शचि-नन्दनमें नवयौवन उद्गम माताकी चिन्ता	२३५
३. प्रथम मधुर-मिलन	२३६
४. घटक वनमाली आचार्य और विवाह-सम्बन्धकी चर्चा	२३६
५. परिणयकी मंगल तैयारियाँ	२३९
६. बारात	२४१
७. कन्या-द्वार	२४२
८. विवाह-मण्डपमें कन्याका आगमन	२४३
९. कन्यादान	२४४
१०. महिला-आचार	२४४
११. वर-कन्यामें बड़ा कौन ?	२४५
१२. वासर-गृह	२४७
१३. विदाई	२४८
१४. शची माँका आनन्द और गृह-प्रवेश	२४९
१५. सबमें अधिक सुन्दरी कौन ?	२५२
सोलहवाँ अध्याय	**२५५–२६४**
(नवद्वीपमें श्रीपाद ईश्वरपुरीके साथ प्रभुका प्रथम मिलन)	
१. तत्कालीन वैष्णव समाज	२५५
२. ईश्वरपुरीका आकर्षण	२५६
३. नवद्वीपमें ईश्वरपुरीका आगमन	२५७
४. ईश्वरपुरीका प्रेमावेश	२५८
५. श्रीपाद माधवेन्द्रपुरीका संक्षिप्त इतिहास	२५९
६. ईश्वरपुरी और निमाई-मिलन	२६१
७. निमाई पंडितमें परिवर्तन और वैष्णवोंकी प्रसन्नता	२६२
सत्रहवाँ अध्याय	**२६५–२८३**
(नदिया-विहारीका नदिया-विहार)	
१. विद्यार्थियोंसे परिवेष्टित-निमाईपण्डित	२६५
२. वायुप्रकोप-लीला	२६६
३. नगर-भ्रमण—	
(१) जुलाहेकी दुकानपर	२६८
(२) गोपोंके घर	२६९
(३) गन्धीके यहाँ	२६९
(४) मालीके पास	२७०
(५) पानवालेके घर	२७०
(६) शंखवालेकी दुकानपर	२७१
(७) दैवज्ञके यहाँ	२७१
(८) श्रीधरकी कुटीमें	२७२
(९) कुब्जपर कृपा	२७९
(१०) कुलवधुओंके प्रति भाव	२८०
(११) मार्गमें श्रीवास पंडितसे मिलन	२८०
४. नगर-भ्रमणसे प्रत्यावर्तन और व्रजभाव	२८१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
अठारहवाँ अध्याय	**२८३–२९४**
(पूर्व बंग-भ्रमण)	
१. पूर्वाचल-यात्राकी तैयारी	२८४
२. लक्ष्मीप्रियाका पति-विरह	२८५
३. यात्राके मार्गमें	२८६
४. पद्मावतीके तीरपर	२८७
५. पूर्व बंगालका विद्वत्-समाज	२८७
६. महाप्रभुकी रचनाओंका उल्लेख	२८८
७. पद्मावतीके पास नरोत्तमके लिए प्रेमथाती	२८९
८. पद्मावतीके दूसरे पार— पितामह-पितामही-से मिलन	२९०
९. तपन मिश्रसे भेंट	२९१
१०. नवद्वीप-प्रत्यावर्तन	२९३
उन्नीसवाँ अध्याय	**२९५–३०१**
(श्रीश्रीलक्ष्मीप्रिया-अन्तर्धान)	
१. विरह-सर्प और निजधाम-गमन	२९५
२. शचीमाताका शोक	२९६
३. पूर्व बंगसे प्रभुका आगमन	२९७
४. प्रभुके सम्मुख शोक-समाचारका उद्घाटन	२९८
५. पुनः कार्यमें संलग्न प्रभु और माताका उद्वेलन	३००
बीसवाँ अध्याय	**३०२–३१६**
(दिग्विजयी पंडित-उद्धार)	
१. पंडित केशव काश्मीरीका नवद्वीप-आगमन	३०२
२. निमाई पंडितकी सूचना	३०२
३. गंगातट और गंगाजीकी शोभा	३०३
४. दिग्विजयीका गंगातटपर आगमन	३०४
५. प्रभुसे वार्तालाप और गंगा-महिमाका वर्णन	३०४
६. एक श्लोककी व्याख्या	३०५
७. श्लोकके गुण-दोषपर विचार और दिग्विजयीका पराभव	३०६
८. स्वप्नमें सरस्वती देवी	३११
९. दिग्विजयीकी शरणापन्नता	३१२
१०. दिग्विजयीपर कृपा	३१३
११. पंडित-समाजद्वारा निमाई पंडितका सत्कार	३१५
इक्कीसवाँ अध्याय	**३१७–३४१**
(प्रभुकी द्वितीय बार दार-परिग्रह-लीला)	
१. वयोवृद्ध लोगोंद्वारा वाहनसे उतरकर अभिवादन	३१७
२. प्रभुके यहाँ अतिथि-सत्कार	३१७
३. निमाई पंडितकी ख्याति	३१८
४. शची-माँकी निताईके विवाहकी चिन्ता	३१८
५. सनातन मिश्रकी कन्या विष्णुप्रिया	३१९
६. घटक काशीनाथ पंडित और सम्बन्ध निश्चित	३२०
७. बुद्धिमन्त खाँ और मुकुन्द संजय विवाहकी तैयारियाँ	३२२
८. रंगमें भंग	३२२
९. शुभ अधिवास	३२६
१०. विवाहके अन्य कार्य	३२७
११. तेल-हरिद्रा-मर्दन और अभिषेक	३२८
१२. वर-सज्जा	३२९
१३. बारात	३३०
१४. कन्या-द्वारपर स्वागत	३३१
१५. विवाह-मण्डपमें शास्त्रार्थ	३३१
१६. वरण-कार्य	३३२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
१७. शुभ दृष्टि-मिलन और पुष्पार्पण	३२
१८. कन्यादान	३३४
१९. वासर-गृह	३३४
२०. विदाई	३३६
२१. शची माँके द्वारा स्वागत	३३९
२२. पुष्प शैया	३४०
२३. पाक-स्पर्श—महाभोज	३४०

बाईसवाँ अध्याय ३४१–३५५

(नवद्वीपमें प्रभुकी गार्हस्थ्यलीला, श्रीश्रीविष्णुप्रिया, श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-विलास और उपासना)

१. प्रभुके गार्हस्थ्यका दिग्दर्शन	३४१
२. युगल भजन—श्रीगौर-गोविन्द मूर्ति	३४३
३. श्रीगौर-गोविन्द रूपके प्रकाश और विलास-रूप	३४४
४. प्रभुका गार्हस्थ्य जीवन	३४५
५. मस्तकपर तिलककी महत्ता	३४९
६. मधुर उपासना	३४९
७. पार्षदोंद्वारा युगल-भजन-प्रचार	३५१

तेइसवाँ अध्याय ३५६–३७०

(प्रभुकी गयाधाम-यात्रा)

१. गया-यात्राकी तैयारी	३५६
२. विदाईके पूर्व श्रीमतीजीसे मिलन	३५७
३. मन्दारमें मधुसूदन भगवान्‌के दर्शन और ज्वर-लीला	३५९
४. गयाधाममें	३६०
५. श्रीपाद ईश्वरपुरी	३६१
६. ईश्वरपुरी और प्रभुका मिलन	३६२
७. पितृ-श्राद्ध तर्पण आदि	३६३
८. प्रभुको प्रेमावेश	३६४

विषय	पृष्ठ
९ प्रभुद्वारा स्वयं पाक और पुरी गोसाईंकी भिक्षा	३६५
१०. मन्त्र-दीक्षा	३६६
११. दो अन्य घटनाएँ	३६७
१२. तिलोत्तमा-उद्धार	३६८
१३. कृष्ण-विरह	३६८

चौबीसवाँ अध्याय ३७१–३७५

(गयासे प्रभुका नवद्वीपमें लौटना)

१. प्रत्यावर्तनके समय मंदार और वैद्यनाथ-दर्शन	३७१
२. नवद्वीपमें आनन्दोत्सव	३७१
३. जननीके चरणोंमें	३७२
४. अन्तरंग भक्तोंके साथ	३७२
५. माता और विष्णुप्रियाके साथ	३७३
६. दूसरे दिन	३७४

पचीसवाँ अध्याय ३७५–३८३

(नदियामें प्रभुका प्रेमभक्ति-प्रकाश, शचीमाताका उद्वेग)

१. शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटियामें	३७५
२. गृह-मंदिरमें प्रभु	३७७
३. पाठशालामें	३८०
४. माताके पास	३८१

छब्बीसवाँ अध्याय ३८३–३९८

(नदियामें प्रभुका आगमन, युगधर्म संकीर्तन-आरम्भ)

१. विद्यार्थियोंका अध्यापन	३८३
२. नदिया-भ्रमण-रत्नगर्भ आचार्यके द्वारपर	३८५
३. गृह-आगमन	३८७
४. छात्रगण और प्रभु	३८८
५. संकीर्तन-महायज्ञका आरम्भ	३९१
६. गोवर्द्धन-लीलाका रूपक	३९४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
सताइसवाँ अध्याय	**३९९–४१०**
(श्रीश्रीअद्वैतप्रभु और हरिदास ठाकुर)	
१. अद्वैताचार्य	३९९
२. हरिदास ठाकुर	४०२
३. वेश्या-उद्धार	४०५
४. वैष्णव-अपराधका फल	४०८
अठाइसवाँ अध्याय	**४११–४२८**
(श्रीअद्वैतप्रभु, गदाधरपण्डित और श्रीवासपण्डितके निकट प्रभुका आत्म-प्रकाश और पूजा-ग्रहण)	
१. प्रभुका दैन्य भाव	४११
२. शची-माँकी चिन्ता	४१३
३. श्रीअद्वैतप्रभु	४१५
४. आत्मप्रकाश	४१९
५. श्रीवासके यहाँ	४२३
उनतीसवाँ अध्याय	**४२९–४४७**
(श्रीगौर-नित्यानन्द-मिलन)	
१. श्रीनित्यानन्द-परिचय	४२९
२. श्रीनित्यानन्द-तत्व	४३०
३. व्रजभ्रमण—नवद्वीप-आगमन	४३३
४. श्रीनित्यानन्द और प्रभुका मिलन	४३८
तीसवाँ अध्याय	**४४८–४५७**
(नदियामें अवधूत नित्यानन्द, प्रभुके आत्मप्रकाशमें आनन्दोत्सव)	
१. शची-माँके पास नित्यानन्द	४४८
२. जन्माष्टमी-महोत्सव	४४९
३. रामदास अभिराम	४५१
४. गोष्ठ-लीला	४५२
५. गंगा-लीला	४५५

विषय	पृष्ठ
इकतीसवाँ अध्याय	**४५८–४६८**
(श्रीअद्वैतप्रभुका नवद्वीपमें पुनरागमन श्रीवास-आँगनमें श्रीगौरांग-पूजा)	
१. रामाईपण्डितद्वारा अद्वैत प्रभुको बुलाना	४५८
२. प्रभुके ज्येष्ठ भ्राता श्रीमद्विश्वरूप	४६०
३. अद्वैतप्रभुका नवद्वीप-आगमन	४६१
४. श्रीअद्वैतप्रभुद्वारा महाप्रभुकी पूजा	४६३
५. वर-याचना	४६७
बत्तीसवाँ अध्याय	**४६९–४८३**
(श्रीनित्यानन्दप्रभुकी व्यास-पूजा, षड्भुज-दर्शन)	
१. श्रीवास-आँगनमें व्यास-पूजाका अधिवास कीर्तन	४६९
२. श्रीनित्यानन्दकी दण्ड-भंग-लीला	४७२
३. दण्ड-भंग-लीलाका रहस्य	४७३
४. व्यास-पूजा	४८०
तेतीसवाँ अध्याय	**४८४–४८८**
१. श्रीअद्वैतप्रभुप्रोक्त विष्णुप्रिया-तत्त्व	४८४
चौंतीसवाँ अध्याय	**४८८–५००**
(पुण्डरीक विद्यानिधि और गदाधर पण्डित)	
१. प्रभुद्वारा पुण्डरीकका आकर्षण	४८८
२. गदाधर और पुण्डरीक	४९०
३. पुण्डरीककी प्रेम-विह्वलता	४९१
४. गदाधरका मन्त्र-दीक्षाके लिए संकल्प	४९२
५. पुण्डरीकद्वारा प्रभु-दर्शन	४९३
६. पुण्डरीक विद्यानिधिका पूर्व वृतान्त	४९५
७. श्रीराधाष्टमी-महोत्सव	४९६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
पैंतीसवाँ अध्याय	**५००–५०९**
(श्रीनित्यानन्द-माहात्म्य)	
१. श्रीनित्यानन्दप्रभुके रूपके प्रति आकर्षण	५००
२. श्रीवास पण्डितकी परीक्षा	५०२
३. शची-माँका स्वप्न	५०४
४. शची-माँके घर नित्यानन्दकी भिक्षा	५०६
छत्तीसवाँ अध्याय	**५०९–५१५**
(आत्मप्रकाशके बाद नदियामें प्रभुके अलौकिक लीला-रंग)	
१. हरिनाम-महिमा	५१०
२. आम्रवृक्ष-लीला	५१०
३. शुक्लाम्बरके घर प्रसाद-ग्रहण	५११
४. विजय लिपिक	५१२
५. मुसलमान दर्जी	५१४
सैंतीसवाँ अध्याय	**५१६–५३९**
(संकीर्तन-महारास-लीला)	
१. संकीर्तन-महारासमें गदाधर और नरहरि सरकार	५१६
२. नरहरि सरकारका गौराङ्गाष्टक	५१८
३. पार्षदोंद्वारा संकीर्तन-महारासका वर्णन	५२१
४. श्रीवास-आँगनमें संकीर्तन-महारास	५३१
५. ऐश्वर्य-महाप्रकाश	५३५
अड़तीसवाँ अध्याय	**५४०–५५१**
१. नदियामें निताईचाँदका लीलारंग	५४०
२. प्रभुद्वारा नित्यानन्द-कोपीन-खण्ड और पादोदक-वितरण	५४२
३. नित्यानन्दप्रभुका मालिनीदेवीके प्रति मातृ-भाव	५४४
४. दोनों प्रभुओंके द्वारा एक-दूसरेका तत्त्व-प्रचार	५४६

विषय	पृष्ठ
उनचालीसवाँ अध्याय	**५५२–५६२**
(श्रीपाद मुरारिगुप्त और प्रभु)	
१. मुरारिगुप्त-महिमा	५५२
२. मुरारिगुप्तको वराह-दर्शन	५५३
३. मुरारिको स्वप्नमें नित्यानन्द-स्वरूप-दर्शन	५५५
४. प्रभुका चर्वित ताम्बूल और प्रकाशानन्दके प्रति आक्रोश	५५६
५. मुरारिकी भाव-विह्वलता और प्रेम-सेवा	५५७
६. मुरारिमें गरुड़-भाव	५५९
७. मुरारिका प्राण-विसर्जन-संकल्प	५६०
चालीसवाँ अध्याय	**५६३–६१०**
(श्रीमन्महाप्रभुकी महाप्रकाश-लीला)	
१. श्रीवास-आँगनमें अभिषेककी तैयारी	५६४
२. महाभिषेक आरम्भ	५६५
३. महाभिषेकके पश्चात्	५६७
४. स्त्रियोंपर कृपा	५६८
५. भक्तोंद्वारा अर्चना	५७०
६. श्रीवासपंडितकी प्राचीन घटनाका प्रभु-द्वारा उद्घाटन	५७२
७. गंगादासपण्डितकी घटनाका उद्घाटन	५७५
८. शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीपर कृपा	५७५
९. संध्या-आरती	५७६
१०. अद्वैताचार्यकी स्वप्न घटना	५७७
११. मुरारि और मुकुन्दपर कृपा	५७९
१२. हरिदासपर कृपा	५८२
१३. अयाचित कृपा	५८८
१४. श्रीधरपर कृपा	५९१
१५. अन्य भक्तोंकी वर-याचना	५९५
१६. मुकुन्द दत्तके साथ लीला	५९६
१७. शचीमातापर कृपा	६०१
१८. ऐश्वर्य-भाव-संवरण	६०३
१९. प्रभुकी दारुण मूर्च्छा	६०६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
सताइसवाँ अध्याय	**३९९–४१०**
(श्रीश्रीअद्वैतप्रभु और हरिदास ठाकुर)	
१. अद्वैताचार्य	३९९
२. हरिदास ठाकुर	४०२
३. वेश्या-उद्धार	४०५
४. वैष्णव-अपराधका फल	४०८
अठाइसवाँ अध्याय	**४११–४२८**
(श्रीअद्वैतप्रभु, गदाधरपण्डित और श्रीवासपण्डितके निकट प्रभुका आत्म-प्रकाश और पूजा-ग्रहण)	
१. प्रभुका दैन्य भाव	४११
२. शची-माँकी चिन्ता	४१३
३. श्रीअद्वैतप्रभु	४१५
४. आत्मप्रकाश	४१९
५. श्रीवासके यहाँ	४२३
उनतीसवाँ अध्याय	**४२९–४४७**
(श्रीगौर-नित्यानन्द-मिलन)	
१. श्रीनित्यानन्द-परिचय	४२९
२. श्रीनित्यानन्द-तत्व	४३०
३. व्रजभ्रमण—नवद्वीप-आगमन	४३३
४. श्रीनित्यानन्द और प्रभुका मिलन	४३८
तीसवाँ अध्याय	**४४८–४५७**
(नदियामें अवधूत नित्यानन्द, प्रभुके आत्मप्रकाशमें आनन्दोत्सव)	
१. शची-माँके पास नित्यानन्द	४४८
२. जन्माष्टमी-महोत्सव	४४९
३. रामदास अभिराम	४५१
४. गोष्ठ-लीला	४५२
५. गंगा-लीला	४५५

विषय	पृष्ठ
इकतीसवाँ अध्याय	**४५८–४६८**
(श्रीअद्वैतप्रभुका नवद्वीपमें पुनरागमन श्रीवास-आँगनमें श्रीगौरांग-पूजा)	
१. रामाईपण्डितद्वारा अद्वैतप्रभुको बुलाना	४५८
२. प्रभुके ज्येष्ठ भ्राता श्रीमद्विश्वरूप	४६०
३. अद्वैतप्रभुका नवद्वीप-आगमन	४६१
४. श्रीअद्वैतप्रभुद्वारा महाप्रभुकी पूजा	४६३
५. वर-याचना	४६७
बत्तीसवाँ अध्याय	**४६९–४८३**
(श्रीनित्यानन्दप्रभुकी व्यास-पूजा, षड्भुज-दर्शन)	
१. श्रीवास-आँगनमें व्यास-पूजाका अधिवास कीर्तन	४६९
२. श्रीनित्यानन्दकी दण्ड-भंग-लीला	४७२
३. दण्ड-भंग-लीलाका रहस्य	४७३
४. व्यास-पूजा	४८०
तेतीसवाँ अध्याय	**४८४–४८८**
१. श्रीअद्वैतप्रभुप्रोक्त विष्णुप्रिया-तत्त्व	४८४
चौंतीसवाँ अध्याय	**४८८–५००**
(पुण्डरीक विद्यानिधि और गदाधर पण्डित)	
१. प्रभुद्वारा पुण्डरीकका आकर्षण	४८८
२. गदाधर और पुण्डरीक	४९०
३. पुण्डरीककी प्रेम-विह्वलता	४९१
४. गदाधरका मन्त्र-दीक्षाके लिए संकल्प	४९२
५. पुण्डरीकद्वारा प्रभु-दर्शन	४९३
६. पुण्डरीक विद्यानिधिका पूर्व वृतान्त	४९५
७. श्रीराधाष्टमी-महोत्सव	४९६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
पैंतीसवाँ अध्याय	**५००–५०९**
(श्रीनित्यानन्द-माहात्म्य)	
१. श्रीनित्यानन्दप्रभुके रूपके प्रति आकर्षण	५००
२. श्रीवास पण्डितकी परीक्षा	५०२
३. शची-माँका स्वप्न	५०४
४. शची-माँके घर नित्यानन्दकी भिक्षा	५०६
छत्तीसवाँ अध्याय	**५०९–५१५**
(आत्मप्रकाशके बाद नदियामें प्रभुके अलौकिक लीला-रंग)	
१. हरिनाम-महिमा	५१०
२. आम्रवृक्ष-लीला	५१०
३. शुक्लाम्बरके घर प्रसाद-ग्रहण	५११
४. विजय लिपिक	५१२
५. मुसलमान दर्जी	५१४
सैंतीसवाँ अध्याय	**५१६–५३९**
(संकीर्तन-महारास-लीला)	
१. संकीर्तन-महारासमें गदाधर और नरहरि सरकार	५१६
२. नरहरि सरकारका गौराङ्गाष्टक	५१८
३. पार्षदोंद्वारा संकीर्तन-महारासका वर्णन	५२१
४. श्रीवास-आँगनमें संकीर्तन-महारास	५३१
५. ऐश्वर्य-महाप्रकाश	५३५
अड़तीसवाँ अध्याय	**५४०–५५१**
१. नदियामें निताईचाँदका लीलारंग	५४०
२. प्रभुद्वारा नित्यानन्द-कोपीन-खण्ड और पादोदक-वितरण	५४२
३. नित्यानन्दप्रभुका मालिनीदेवीके प्रति मातृ-भाव	५४४
४. दोनों प्रभुओंके द्वारा एक-दूसरेका तत्त्व-प्रचार	५४६

विषय	पृष्ठ
उनचालीसवाँ अध्याय	**५५२–५६२**
(श्रीपाद मुरारिगुप्त और प्रभु)	
१. मुरारिगुप्त-महिमा	५५२
२. मुरारिगुप्तको वराह-दर्शन	५५३
३. मुरारिको स्वप्नमें नित्यानन्द-स्वरूप-दर्शन	५५५
४. प्रभुका चर्वित ताम्बूल और प्रकाशानन्दके प्रति आक्रोश	५५६
५. मुरारिकी भाव-विह्वलता और प्रेम-सेवा	५५७
६. मुरारिमें गरुड़-भाव	५५९
७. मुरारिका प्राण-विसर्जन-संकल्प	५६०
चालीसवाँ अध्याय	**५६३–६१०**
(श्रीमन्महाप्रभुकी महाप्रकाश-लीला)	
१. श्रीवास-आँगनमें अभिषेककी तैयारी	५६४
२. महाभिषेक आरम्भ	५६५
३. महाभिषेकके पश्चात्	५६७
४. स्त्रियोंपर कृपा	५६८
५. भक्तोंद्वारा अर्चना	५७०
६. श्रीवासपंडितकी प्राचीन घटनाका प्रभु-द्वारा उद्घाटन	५७२
७. गंगादासपण्डितकी घटनाका उद्घाटन	५७५
८. शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीपर कृपा	५७५
९. संध्या-आरती	५७६
१०. अद्वैताचार्यकी स्वप्न घटना	५७७
११. मुरारि और मुकुन्दपर कृपा	५७९
१२. हरिदासपर कृपा	५८२
१३. अयाचित कृपा	५८८
१४. श्रीधरपर कृपा	५९१
१५. अन्य भक्तोंकी वर-याचना	५९५
१६. मुकुन्द दत्तके साथ लीला	५९६
१७. शचीमातापर कृपा	६०१
१८. ऐश्वर्य-भाव-संवरण	६०३
१९. प्रभुकी दारुण मूर्च्छा	६०६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
२०. मूर्च्छा-भङ्ग	६०७
२१. उपसंहार	६०९
इकतालीसवाँ अध्याय	**६११-६२५**
(शान्तिपुरमें श्रीअद्वैताचार्यके साथ प्रभुका लीला-रंग)	
अद्वैताचार्यके प्रति प्रभु-वाक्य	
१. महाप्रकाशके पश्चात्	६११
२. श्रीअद्वैताचार्यके द्वारा ज्ञानका प्रचार	६१२
३. प्रभुका शान्तिपुर-गमन और मार्गमें वामाचारी संन्यासीका उद्धार	६१३
बयालीसवाँ अध्याय	**६२६-६४२**
१. प्रभुकी गृहस्थी	६२६
२. ब्रजलीला रंग—बसन्तोत्सव	६३३
३. झूलन-लीला	६३६
४. नौका-विहार	६३७
५. वासक-सज्जा	६३८
६. पाशा-क्रीड़ा	६३९
७. जल-केलि	६४०
८. महाकवि कर्णपूर	६४१
तेतालीसवाँ अध्याय	**६४३-६६१**
(श्रीकृष्णलीला-अभिनय)	
१. श्रीवासके द्वारा वृन्दावन-लीलाका वर्णन	६४३
२. श्रीकृष्णलीला-अभिनयकी तैयारी	६४४
३. अभिनय आरम्भ	६४६
४. रंगमंचपर कोतवाल-वेषमें ठाकुर हरिदास और नारद-वेषमें पं० श्रीवत्स	६४७
५. रंगगृहमें प्रभु	६४८
६. रंगमंचपर रुक्मिणी-वेषमें गदाधर; आदि-शक्ति जगज्जननी-रूपमें स्वयं प्रभु	६४९
७. जगज्जननी-रूपमें प्रभुकी स्तुति	६५४
८. प्रभुका मातृभाव	६५५
९. लीलाका उपसंहार	६५६
१०. वैष्णव-विरोधी चापाल गोपाल	६५८
चौवालीसवाँ अध्याय	**६६२-६८०**
(जगाई-माधाई-उद्धार-लीला)	
१. नाम-प्रचार	६६२
२. जगाई-माधाईका परिचय	६६४
३. नित्यानन्द और हरिदासकी मन्त्रणा	६६५
४. जगाई-माधाईके पास गमन	६६७
५. प्रभुके पास प्रत्यागमन	६६८
६. जगाई-माधाई उद्धारकी तैयारी	६६९
७. उद्धार-लीला	६७१
पैंतालीसवाँ अध्याय	**६८१-७०१**
(उद्धारके बाद जगाई-माधाई)	
१. देवगणका उल्लास	६९१
२. जगाई-माधाईकी हालत	६९३
३. श्रीनित्यानन्द और माधाई	६९४
४. गंगाघाटपर जगाई-माधाई	६९६
५. जगाई-माधाई-उद्धार-लीलाका प्रभाव	६९७
छियालीसवाँ अध्याय	**७०२-७१३**
(शचीमाता और उनका वैष्णवापराध)	
१ शची माताका परिचय और माहात्म्य	७०२
२. शचीमाताको ऐश्वर्य-दर्शन	७०३
३. मानसिक वैष्णवापराध	७०४
४ अपराध-भंजन	७०६
५. माताके साथ अन्य लीलारंग	७१०
सैंतालीसवाँ अध्याय	**७१३-७३४**
(श्रीवास-आँगनमें प्रभुकी अपूर्व लीलाएँ)	
१. तत्कालीन नदिया-नगरी	७१३
२. वनमाली विप्रपर कृपा	७१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
३. नृसिंहावेश	७१६
४. शिवावेश	७१७
५. ब्रह्माणीद्वारा चरण-धूलि	७१८
६. गृहत्याग-संकेत	७२०
७. देव-मन्दिर-मार्जन	७२१
८. ब्रह्मशाप-लीला	७२२
९. बलरामावेश	७२५
१०. ब्रह्मचारी विप्र	७२७
११. पं० श्रीवासकी सास	७२९
१२. पञ्चत्वको प्राप्त श्रीवास-शिशु	७३०
अड़तालीसवाँ अध्याय	**७३४–७५९**
(काजी-उद्धार लीला)	
१. ग्रामवासियोंको महामन्त्र	७३४
२. चाँद काजीके अत्याचार और उसका उद्धार	७३७
३. प्रभुका रोष और काजीके निरोधकी योजना	७३८
४. प्रभुका सदल-बल प्रस्थान	७४१
५. संकीर्तन-रणवीरोंका दल	७४३
६. काजीके घरकी ओर प्रस्थान	७४९
७. काजीसे मिलन और वार्तालाप	७५१
८. काजीके घरसे प्रत्यावर्तन और श्रीधरके घर आगमन	७५६
उनचासवाँ अध्याय	**७५९–७६४**
(विश्वरूप-दर्शन-लीला)	
१. श्रीअद्वैतप्रभुको विश्वरूप-दर्शन	७६०
२. श्रीनित्यानन्दप्रभुको विश्वरूप-दर्शन	७६१
३. अद्वैतप्रभु और नित्यानन्दप्रभुका प्रेम-कलह	७६२
पचासवाँ अध्याय	**७६५–७७०**
१. प्रभुके प्रेम-विकार-लक्षण और संसारसे वैराग्य	७६५

विषय	पृष्ठ
इक्यावनवाँ अध्याय	**७७१–७८२**
(प्रभु और प्रियाजी, वैराग्य-शिक्षा)	
१. भक्तोंको वैराग्य-शिक्षा	७७१
२. प्रियाजी और प्रभु	७७५
बावनवाँ अध्याय	**७८३–८००**
(प्रभुके संन्यासकी सूचना)	
१. नवद्वीपमें केशव भारती	७८३
२. कृष्णानन्द आगमवागीश	७८६
३. संन्यासकी सूचना	७८९
तिरपनवाँ अध्याय	**८००–८०७**
१. माता और पुत्र	८००
चौवनवाँ अध्याय	**८०८–८१६**
१. प्रभु और प्रियाजी	८०८
पचपनवाँ अध्याय	**८१७–८२२**
(वैराग्य-धर्म और संसार-आश्रम)	
१. प्रभुका सत्यपालन	८१७
२. निमाईके लिए दी हुई विश्वरूपकी पुस्तक	८१९
३. प्रियाजीका नकबेसर खोना	८२०
छप्पनवाँ अध्याय	**८२३–८२९**
(युगल-विलास-लीला-रंग)	
१. गृह-त्यागकी तैयारी	८२३
२. युगल-विलास-लीला	८२४
सत्तावनवाँ अध्याय	**८३०–८५४**
(प्रभुका गृह-त्याग और संन्यास-ग्रहण)	
१. काल-रात्रि—गृह-त्याग	८३१
२. गोविन्द कर्मकार	८३२
३. कण्टकनगरकी ओर	८३४
४. कण्टकनगरमें	८३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय	पृष्ठ
५. केशव भारतीकी कुटियापर	८३६
६. संन्यास-कर्म-विधिका भार	८४२
७. मुण्डन-कार्य	८४५
८. संन्यास-वेश-धारण, मन्त्र-दीक्षा और नामकरण	८४७
९. बिदाई	८५१
अट्ठावनवाँ अध्याय	**८५५–८६४**
१. राढ़देश-भ्रमण	८५५
२. शान्तिपुरकी ओर	८५६
३. गोप-बालकोंसे मिलन	८५७
४. नित्यानन्दजीका चन्द्रशेखर आचार्यरत्नको शान्तिपुर-नवद्वीप भेजना	८५९
५. अद्वैतप्रभुका आकर शान्तिपुर ले जाना	८६०
उनसठवाँ अध्याय	**८६५–८९०**
(गृहत्यागके पश्चात् नदियाकी अवस्था)	
१. प्रियाजीकी निद्राभंग और हाहाकार	८६५
२. भक्तोंकी करुण दशा	८७०
३. आचार्यरत्नका नवद्वीप-आगमन	८७७
४. नित्यानन्दप्रभुका नवद्वीप-आगमन	८८२
५. शचीमाताका शान्तिपुर-गमन	८८६

विषय	पृष्ठ
साठवाँ अध्याय	**८९०–९१०**
(शान्तिपुरके अद्वैत-भवनमें महाप्रभु और उनकी नीलाचल-यात्रा)	
१. प्रभु शान्तिपुरमें	८९०
२. अच्युतानन्द बालकके मुँह गूढ़-तत्व	८९१
३. दर्शनार्थियोंको दर्शन	८९२
४. प्रभुकी प्रथम भिक्षा	८९३
५. भोजनके बाद कीर्तनानन्द	८९३
६. माता और नदियाके भक्तगण शान्तिपुरमें	८९४
७. नीलाचल-प्रस्थानकी तैयारी	९००
८. कुछ काल शान्तिपुरमें और रुकना	९०१
९. नीलाचल-प्रस्थानके समय भक्तोंसे विदाई	९०२
१०. मातासे विदाई	९०५
११. अद्वैत-प्रभुसे बिदाई	९०६
१२. उपसंहार	९०८
१३. प्रार्थना	९०९
—संदर्भ ग्रन्थों की सूची	९११

— * —

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवद्वीप-लीलाका शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१७	२	अन्तिम	वि. पु. ६.५.७४	वि. पु. ६.५.७४
४८	१	नीचेसे ४	योगका	भोगका
६५	—	२	जेइ जाने	जेइ जनै
६६	१	पाद-टिप्पणी नीचेसे २	सम्पत्ति	सम्मति
९३	२	७	हँसको	हँसीको
१२९	१	नीचेसे ६	भोजन नाना	भोजन बनाना
२०३	१	नीचेसे १२	छोड़कर	घेरकर
२१९	२	७	शचीनन्दन प्रतिभा	शचीनन्दनकी प्रतिभा
२३९	१	१७	३.३९	३.३७
२३९	१	नीचेसे ५	चै. भा. आ. ९.९१.९३	चै. भा. आ. ७.७१.७३ चै. च. महाकाव्य ७.६३-६४
२४३	१	पाद-टिप्पणी-की अन्तिम		
२४३	२	,,	श्रीचैतन्य चरितामृत महाकाव्य	श्रीचैतन्यचरितामृत-महाकाव्य ३.६६,६७
२४४	१	,,	,,	श्रीचैतन्यचरितामृत-महाकाव्य ३.६४
२४९	१	७	भावरशमें	भाववश्य रसमें
२५२	२	१६		चै. च. महाकाव्य ३.८१
३०५	२	पाद-टिप्पणीकी पंक्ति ३	दैवीप्यमान रही है	देदीप्यमान हो रही है।
३३७	२	१०	आलम	आलय
४७८	१	१२	धर्म-विर्यय	धर्म-विपर्यय
४८६	२	नीचेसे ६	पाकया	पकाया
५२२	१	७	आलिकुलके	अलिकुलके
५५०	२	९	सुवासमम्	सुवाससम्
५५२	२	११	खलनं	स्खलनं
५५३	२	श्लोकके बाद जोड़ दिया जाये		२.२.१८,१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
५५७	२	नीचेसे १४	वे कहते हैं। कुछ हैं	वे कहते कुछ हैं
५५९	१	१०	ब्रह्मपुराण	ह. म. वि. १०.३६० (ब्रह्मपुराण-वचन)
५६२	१	दूसरे श्लोकके बाद संख्या लगा दी जाय		६५
५६२	२	नीचेसे ४ पंक्तिके ऊपर संदर्भ संख्या लगा दी जाय		चै. च. महा. २०.४३
५६६	१	श्लोकके बाद संदर्भ संख्या लगा दी जाय		चै. च. महा. ५.६०,६१
५६९	१	पाद-टिप्पणीके बाद संदर्भ संख्या लगा दी जाय		चै. च. महा. ५.७०
५७१	२	अन्तमें जोड़ दिया जाय		चै. च. महा. ५.८०
६०२	१	१४	श्रीचैतन्यचरित	चै. च. ना. १.६७
६०५	२	पाद-टिप्पणीकी पंक्ति ३	विलम्बितै	विलम्बितैस्तद्
६०५	२	पाद-टिप्पणीकी पंक्ति ४	स्तच्छामीत्य·····	गच्छामीत्य·····
६०५	२	पाद-टिप्पणी पंक्ति ७	चेदयमपि	चेद्वयमपि
६०५	२	पाद-टिप्पणीकी पंक्ति ८	वद्धै वतत्	वद्धेतत्
६०५	२	पाद-टिप्पणीके अन्तमें जोड़िये		चै. च. महा. ५.९४,९५
६०६	२	१६	श्रीचैतन्य चरित	चै. च. महा. ५.१०२
६०८	२	पंक्ति ११ के बाद जोड़िये		चै. च. महा. ५.११६
६०८	२	नीचेसे पंक्ति ५ के ऊपर जोड़िये		चै. च. महा. ५.११७
६१७	१	१४	सर्वश्री नित्यानन्दप्रभु	सर्वज्ञ श्रीनित्यानन्दप्रभु
६१९	१	नीचेसे ५	(चै. भा. म. १४५—१४९)	(चै.भा.म. ११.१४५-१४९)
६१९	२	२	नखपुधारी	नर-वपुधारी
६३३	१	२०	प्रेमिका रूपमें	प्रेमिक रूपमें
६४१	१	पंक्ति १६—१७ के बीच जोड़िये		चै. च. महा. ७.६६
६४१	१	अन्तिम	नोविदम्यु	नो विदन्तु
६४१	२	अन्तिम पंक्तिके बाद जोड़िये		चै. चं. ना. उपसंहार २

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
६४१	२	पंक्ति १८-१९ के बीच जोड़िये		चै. चं. ना. उपसंहार २
६४६	२	१२	बहिद्वारि	बहिर्द्वारि
६५०	१	१३	परमरिसका	परमरसिका
६५१	२	६	उरोजद्वन्दोपरि	गुरूरोजद्वन्दोपरि
६५१	२	१३ में जोड़ दीजिये		११.२५—२७
६५४	२	४	ब्रह्मा	श्रद्धा
६५५	२	पंक्ति २-३ के बीच शीर्षक जोड़िये		प्रभुका मातृभाव
६५६	२	पंक्ति १४-१५ के बीच शीर्षक जोड़िये		लीलाका उपसंहार
७०२	२	पाद-टिप्पणीकी अन्तिम	चैतन्यचरित महाकाव्य	चै. च. महा. १३.११७
७०३	१	अन्तिम	पुत्रको जिसको जिससे	पुत्रको जिससे
७११	१	११	चै. च. म. ९.३—११	चै. च. महा. ७.३—११
७१४	१	पंक्ति १० के बाद जोड़ दिया जाय		चै. च. महा. ११.८७—८९
७१६	१	पाद-टिप्पणीकी अन्तिम	श्रीचैतन्यचरित महाकाव्य	चै. च. महा. ७.७७,७८
७१६	२	१६	उनकी	अपनी
७१७	१	८	कदापि	क्वचापि
७१७	१	१२	चै. च. महा.	चै. च. महा. ७ ८५
७२१	१	२२	हे	बहे
७२४	१	पंक्ति २३ के बाद जोड़ दिया जाय		चै. च. महा. ८.१६
७२५	२	पंक्ति १ के बाद जोड़ दिया जाय		चै. भा. म. ९.१८७
७२५	२	नीचेसे	(चै. च. महा. ८.२८)	(चै. च. महा. ८.२१-२८)
७२५	२	नीचेसे १३	(चै. च. महा. ८.२३)	इसको निकाल दिया जाय
७७४	१	९	विष्णुपुराण	वि. पु. ६.५.७४
७७४	२	नीचेसे ४	चै. ज. म.	ज. चै. म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
७७७	२	८	हरे हरे हरे।	हरे हरे। हरे
७८२	१	नीचेसे २	जाह्यवी	जाह्नवी
७८२	२	अन्तिम	चै. भा.	चै. भा. म. ३.१०५
७८४	१	नीचेसे ७ और ८	श्रीपाद मुरारिगुप्तने अपने करचामें किया है	महाकवि कर्णपूरने किया है
७८४	१	नीचेसे पंक्ति २ और ३ के बीचमें जोड़ दिया जाय		चै. च. महा. ११.४४
७८६	१	नीचेसे २	मतसे	मतके अनुसार
७८६	२	१०	नाप	नाम
७९२	१	अन्तमें जोड़ दिया जाय		चै. भा. म. २५.२२६
७९२	१	१६	चै. भा. म. २५.२२४	चै. भा. म. २५.२३४
७९६	१	३	पन्रतु	परन्तु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राधाभावाभि पूर्णं व्रजरसमयनोद्भुतघूर्णं सुतूर्णं ।
नृत्यन्तं भक्तमध्ये निरुपममधुरे कीर्तने कृष्णनाम्नाम् ॥
वर्षन्तं प्रेमसिन्धुं परमकरुणयाप्लावयन्तं त्रिलोकीं ।
वन्दे चैतन्यदेवं परिजनसहितं चारुचामीकराभम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्राय नमः ।

मङ्गलाचरणम् ।

नमश्चैतन्यचन्द्राय कोटिचन्द्राननत्विषे ।
प्रेमानन्दाब्धिचन्द्राय चारुचन्द्रांशुहासिने ॥
यस्यैव पादाम्बुज-भक्तिलभ्यः
प्रेमाभिधानः परमः पुमर्थः ।
तस्मै जगन्मङ्गल मङ्गलाय
चैतन्यचन्द्राय नमो नमस्ते ॥
उच्चैरास्फालयन्तं करचरणमहो
हेमदण्डप्रकाण्डौ
बाहू प्रोद्धृत्य सत्ताण्डवतरलतनुं
पुण्डरीकायताक्षम् ।
विश्वस्यामङ्गलघ्नं किमपि हरिहरी-
त्युन्मदानन्दनादै-
र्वन्दे तं देवचूडामणिमतुलरसा-
विष्टचैतन्यचन्द्रम् ॥
आनन्दलीलामय विग्रहाय
हेमाभदिव्यच्छविसुन्दराय ।
तस्मै महाप्रेमरसप्रदाय
चैतन्यचन्द्राय नमो नमस्ते ॥
प्रवाहैरश्रूणां नवजलदकोटी इव दृशौ
दधानं प्रेमर्द्ध्या परमपदकोटीप्रहसनम् ।
वमन्तं माधुर्यैरमृतनिधिकोटीरिव तनू-
च्छटाभिस्तं वन्दे हरिमहह संन्यासकपटम् ॥
—श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम् ८-१२

अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ
समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वलरसां स्वभक्तिश्रियम् ।
हरिः पुरटसुन्दरद्युतिकदम्बसन्दीपितः
सदा हृदयकन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः ॥
राधाकृष्णप्रणयविकृति-
र्ह्लादिनीशक्तिरस्मा-
देकात्मानावपि भुवि पुरा
देहभेदं गतौ तौ ।
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना
तद्द्वयं चैक्यमाप्तं
राधाभावद्युतिसुवलितं
नौमि कृष्णस्वरूपम् ॥
श्रीचैतन्यचरितामृत आ० १.४, ५

नित्यानन्दमहं वन्दे कर्णे लम्बितमौक्तिकम् ।
चैतन्याग्रजरूपेण पवित्रीकृतभूतलम् ॥

अद्वैतं हरिणाद्वैतादाचार्यं भक्तिशंसनात् ।
भक्तावतारमीशं तं अद्वैताचार्यमाश्रये ॥
चैतन्यचरितामृत आ० १.१३

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च ।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पितृ पुरुष-वन्दना

(पूज्यपाद पितृदेवके संस्मरणमें उनके तिरोभावके दिन रचित)

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमंतपः ।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः ॥

गोलोकगत परमाराध्य
श्रीसीतानाथ गोस्वामी
पितृदेवके प्रति—

पितः,

तोमारि कृपाय, ए दास तोमार,
बूझेछे तत्त्व गूढ़ ।
तोमार चरण- कृपार प्रसादे,
बड़ हइयाछे मूढ़ ॥
भक्तिर सोपान, तोमारि गठित,
हृदय मरुते तार ।
तोमारि रचित, भक्ति लताय,
धरियाछे फल - भार ॥
तोमारि दत्त, मधु उपदेश,
जीवने करिया सार ।
मधुमय हेरि, जगत संसार,
गेछे मोर हाहाकार ॥
मोर सीतानाथ, तुमि पितृदेव,
तव डाके गौर एल ।
गौर-निताइ- कृपाय आमार
हृदय शीतल भेल ॥
बलराम दास, ठाकुर प्रधान,
निताइर प्रिय दास ।
मधुमाखा पदे, मधु वरषिये,
(मोरे) शिखाइल मधुभाव ॥
मुञि कुलाङ्गार, दुष्ट दुराचार,
तवू मोरे कृपा करि ।
लये गेला मोरे, कत ना आदरे,
गोरा पाछु हाते धरि ॥

निताइ कृपाय, गौर मिलिल,
बलराम वंश बले ।
कुलाङ्गारे दिला, जयमाला शिरे,
पितृ पुण्यफल - बले ॥
गौराङ्ग आमार, कृपार निधान,
दयामय नित्यानन्द ।
कृपा करि दिला, अकृती अधमे,
अर्नपित प्रेमानन्द ।
श्रीवासेर जत, दास-दासी छिल,
गौरहरि कृपा कैल ।
कुलीन ग्रामेर, अधम कुकुर,
गौराङ्ग - प्रिय हैल ॥
भकतवत्सल, गौराङ्ग आमार,
पूर्व्व सम्बन्ध माने ।
एइ आशाटुकु, हृदये पूरिये,
(आमि) मरे जाइ अभिमाने ॥
बलरामे दिया, निताइ दीक्षा,
उद्धारिला वंश ताँर ।
(ताँर)मस्तकेर पाग, प्रेमे उघाड़िया,
बलिलेन बारंबार ॥
"लह बलराम, गुरुदत्त एइ
कृपार आशीर्व्वाद ।
कृपाचिह्न बलि, राखिओ जतने,
पूरिबे मनेर साध ॥"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोगाछि श्रीपाटे, बालगोपाल-
उपासक बलराम ।
नित्यानन्द दास, गौरगत-प्राण,
पदकर्त्ता गुणवान ।।
निताइर पाग, जीर्ण पुरातन,
एखनओ विराजे जथा ।
सेइ दोगाछिया, सेइ से गोपाल,
कि कब दुःखेर कथा ।।
ए हेन वंशे, कुकुर जन्मिल,
परापेक्षी नराधम ।
वंशेरे गुणेते, केशेते धरिया,
(तारे) उठाइल गोरा-धन ।।
सर्व्वदुःखहारी, पितृपद-धूलि,
धरिया मस्तक परे ।
(से) बलराम स्मरि, डाके गौरहरि,
सतत कातर स्वरे ।।

बलराम दास, आर सीतानाथ,
पदधूलि माथे धरि ।
पितृपुण्यफले, आर गुरुबले,
हरि पाइयाछे हरि ।।
देव वनयारी, आमार कान्तारी,
गौरहरि पितामह ।
गौर निताइ नाम करि सार,
गान गाइ अहरह ।।
सार्व्वभौम, दास घनश्याम,
वंशेर उज्ज्वल मणि ।
पण्डित प्रधान, प्रेम परवीण,
ताँर पदे आमि नमि ।।
पितृ पुरुषेर, चरणे काँदिया,
करि पदे कोटि नति ।
कुलेर अङ्गार, हरि दुराचार,
गाय एइ दुखस्मृति ।।

श्रीधाम वृन्दावन, श्रीएकादशी
पितृदेवका तिरोभाव दिवस
२८ कार्तिक, १३२२ बंगाब्द

भाग्यहीन अधम पुत्र,

हरिदास

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उत्सर्ग-पत्र

श्रीश्रीमन्नित्यानन्द प्रभुके

मन्त्रशिष्य

श्रीपाट दोगाछिया निवासी

प्रसिद्ध पदकर्त्ता

परम पूज्यपाद, परमाराध्य श्रीश्रीपाद द्विज

बलरामदास ठाकुर

महाशयके परम पवित्र नामपर

उनके पवित्र वंशके अधम अकृती कुलाङ्गार

दीन-हीन भजनविहीन ग्रन्थकार-रचित

श्रीश्रीमन्महाप्रभुका

यह नवद्वीप लीला श्रीग्रन्थ

उत्सर्ग किया गया ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीविष्णुप्रियावल्लभाय नमः ।

उपक्रमणिका

कलियुगावतार, पतित-पावन श्रीश्रीमन्महाप्रभु-की नवद्वीप-लीलामें इतनी माधुरी, इतनी आकर्षण-शक्ति क्यों ?—इस प्रश्नका उत्तर देनेकी चेष्टा करता हूँ । श्रीभगवान्‌की नरलीला लौकिकी लीला है । उनकी अलौकिकी लीलाकी अपेक्षा लौकिकी लीला अधिक माधुर्यमय और चित्ताकर्षक है । श्रीभगवान्‌के लीलावतारकी लौकिकी लीला-कहानी हृत्कर्ण-रसायन है । श्रीभगवान्‌की विश्वसृष्टि आदि लीलाओंकी कथा अति प्राचीन है, पर उसमें वैसा रस-माधुर्य नहीं है । यह बात श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामी अपने श्रीचैतन्य-चन्द्रोदय नाटकमें लिख गये हैं । यथा,

अलौकिकीतः किल लौकिकीयं
लीला हरेरेति रसायनत्वम् ।
लीलावतारानुकथातिमृद्वी
विश्वस्य सृष्ट्यादिकथा पलिक्नी ।।
३.२१

अतएव कलिके जीवके लिए श्रीश्रीमन्महाप्रभु-की नवद्वीप-लीला ही अनुशीलनीय और स्मरणीय है । श्रीगौर भगवान्‌के लीला-समुद्र-रसमें जो डुबकी लगा सके हैं, उनके समान सुकृतिवान् महापुरुष दूसरा कौन होगा ?

महामुनि वेदव्यास नाना प्रकारके तत्त्वपूर्ण शास्त्रोंकी रचना करके तथा चिरकाल तक कठोर तपस्या करके भी मनमें शान्ति प्राप्त न कर सके । अपने मनकी अशान्तिका कारण उन्होंने नारदजीसे पूछा । नारदजीने उत्तर दिया—

भवतानुदितप्रायं यशो भगवतोऽमलम् ।
येनेवासौ न तुष्येत मन्ये तद्दर्शनं खिलम् ।।
यथा धर्मादयश्चार्था मुनिवर्यानुकीर्तिताः ।
न तथा वासुदेवस्य महिमा ह्यनुवर्णितः ।।
—श्रीम० भा० १.५.८,९

अर्थ—देवर्षि नारद मुनिने कहा, 'आपने भगवान्‌के निर्मल यशोराशिका कीर्त्तन नहीं किया, इसी कारण उनके प्रीति-पात्र न बन सके । श्रीभगवान्‌के लीला, गुण, यश आदिके वर्णनसे शून्य धर्मादिका ज्ञान आपके चित्तमें अभाव-रूपमें खटक रहा है, और यही अशान्तिका कारण बन रहा है । आपने अपने ग्रन्थोंमें धर्मादि कल्याण-साधक साधनोंका जिस प्रकार भूरि-भूरि कीर्त्तन किया है ,भगवान् वासुदेवकी महिमा और लीला-का उस प्रकार कहीं कीर्त्तन नहीं किया ।'

देवर्षि नारद मुनिने और भी कहा—

विचक्षणोऽस्यार्हति वेदितुं विभो-
रनन्तपारस्य निवृत्तितः सुखम् ।
प्रवर्त्तमानस्य गुणैरनात्मन-
स्ततो भवान् दर्शय चेष्टितं विभोः ।।
श्रीम० भा० १.५.१६

अर्थात्—'यद्यपि आपने निवृत्ति मार्गमें ज्ञान और वैराग्य आदि विषयोंका विशेष रूपसे वर्णन किया है, परन्तु सब इन्द्रिय-वृत्तियोंकी निवृत्ति करके तादृश निष्काम धर्मकी आलोचनाके द्वारा केवल विवेकी पुरुष ही उस अनन्त और अपार विश्वव्यापी श्रीभगवान्‌के निरुपाधिक आनन्दका अनुभव कर सकते हैं । अतएव पारमार्थिक बुद्धिसे हीन, भोगाभिलाषी, प्रवृत्तिरत, अनन्योपाय जनगणके उद्धारके लिए भगवान् वासुदेवकी लीलाका वर्णन करो ।'

देवर्षि नारद मुनिके इस परामर्श पर महामुनि वेदव्यासने परम मङ्गल श्रीमद्भागवतकी रचना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

की। इस श्रीग्रन्थमें उन्होने श्रीभगवान्‌की महिमा, गुण और लीलाका वर्णन कर अन्तःकरणमें सब प्रकारकी शान्ति प्राप्त की थी।

देवर्षि नारद मुनिने इसी सिलसिलेमें वेदव्यास मुनिसे एक और बात कही। महामुनि वेदव्यासने अपने मनकी अशान्तिको दूर करनेके लिए नारदजी-से उपदेश ग्रहण करनेकी इच्छा प्रकट की—उनके लिए क्या कर्त्तव्य है? क्या करनेसे उनके मनको शान्ति प्राप्त होगी? तीर्थ-भ्रमण, योग-साधन, कठोर तपश्चर्या आदि किस धर्मका अनुष्ठान करने-से उनके मनमें परमानन्द और शान्तिकी प्राप्ति होगी?—इसका उन्होंने उपाय जानना चाहा। इसके उत्तरमें देवर्षि नारदने कहा, 'हे महाभाग! अच्युतमें अच्युता-भक्ति ही भवसागर पार करनेका एकमात्र उपाय है। आपके समान चक्षुष्मान् व्यक्तिके लिए और लोगोंकी तरह इधर-उधर भटकना ठीक नहीं। आप भगवान्‌की लीला-वर्णन करनेमें लग जाइये। आपको और कोई भी उपदेश देनेकी आवश्यकता नहीं। समाहित चित्तसे श्रीभगवान्‌के शरणापन्न हो जाइये। भक्त-बाञ्छा पूर्ण करनेवाले श्रीभगवान् आपके निष्पाप चित्तमें आरोहण कर और स्वतः गुरु-रूपमें अपनी अनुपम लीला-माधुरीका प्रकाश कर आपको कृतार्थ करेंगे। केवल आपको ही क्यों? आपके द्वारा वर्णित श्रीभगवान्‌की लीला-गाथा श्रवण कर समस्त जीव सहज ही भव-रोगसे मुक्त होकर अपार आनन्द-रसमें निमग्न हो जायेंगे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।'*

देवर्षि नारदके उपदेशसे महामुनि वेदव्यासकी तीर्थ-भ्रमण, कठोर तपश्चर्या, अष्टाङ्ग योगसाधन आदिकी वासनाएँ दूर हो गयीं। नारदजीके उपदेश-से यह सिद्ध हुआ कि श्रीभगवान्‌ने जिसको जो शक्ति प्रदान की है, वह उस शक्तिके सम्यक् उपयोगके द्वारा भगवत्-सेवामें अपनेको लगा दे। महामुनि वेदव्यास परम प्रतिभाशाली शास्त्र-रचयिता थे। उनके लिए देश-देश-भ्रमण तथा कठोर व्रत-नियमके द्वारा तपश्चर्या करना ठीक न था। वे यदि भ्रमणमें रास्ता न नापकर श्रीभगवान्-के लीला-ग्रंथ और भक्ति-शास्त्रका प्रणयन करें तो उनका और जगत्‌के जीवोंका महान् कल्याण होगा,—ऐसा सोचकर देवर्षि नारदने उनको यह सदुपदेश दिया। महामुनि वेदव्यास देवर्षि नारदके उपदेशसे जिन भक्ति-शास्त्र और लीला-ग्रंथोंकी रचना कर गये हैं, उनका अनुशीलन करके सारे जगत्‌के लोगों-के हृदय भक्ति-रससे द्रवित होकर भगवद्भजनके लिए उपयोगी हो रहे हैं। परम-मङ्गल भक्ति-शास्त्र श्रीमद्भागवत कलिग्रस्त जीवके भव-दुःख-मोचनका एकमात्र उपाय है। महामुनि वेदव्यास इस भक्ति-ग्रंथके प्रणेता हैं। ब्रह्मशाप-ग्रस्त राजा परीक्षित इसके श्रोता हैं। शुकदेवजी इसके वक्ता हैं। महा-मुनि वेदव्यासने लिखा है—

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं
शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्।
पिबत भागवतं रसमालयं
मुहुरहो रसिका भुविभावुकाः॥

श्रीम० भा० १.१.३

अर्थात्—कल्पवृक्षके समान वेदवृक्षके सुपक्व फल-स्वरूप यह परम मङ्गल भागवत शास्त्र शुकदेवके मुखारविन्दसे विनिःसृत होकर अखण्डरूपमें मर्त्य-लोकमें गिर रहा है। अतएव हे रसज्ञ, चिन्तनशील रसिकवृन्द! इस अनायास-लब्ध दुर्लभ अमृतका निरन्तर, यहाँ तक कि मोक्षकालमें भी पान करो।

सर्वशास्त्र-श्रेष्ठ होनेके कारण श्रीमद्भागवत केवल पठितव्य और श्रोतव्य ही नहीं, सर्वशास्त्रोंका फल-स्वरूप है। अतएव इसका भक्ति और श्रद्धापूर्वक पाठ करना आवश्यक है। सर्वपुरुषार्थप्रद कल्पवृक्ष-के समान वेदोंके फलके रूपमें यह भागवत शास्त्र पहले वैकुण्ठमें अधिष्ठित था। सर्वभूतोंके कल्याण-

* श्रीखगेन्द्रनाथ शास्त्रीकृत भागवतीय श्लोकका आभास।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कामी देवर्षि नारदने इस अत्युत्तम भक्ति-शास्त्रको वैकुण्ठसे लाकर महामुनि वेदव्यासको प्रदान किया। कल्पवृक्षके सुपक्व फलके साथ इसकी तुलना करनेका तात्पर्य यह है कि, जैसे वृक्षस्थ सुपक्व फल ऊपरसे भूमिपर गिरते समय निम्न भागके शाखा-पल्लवादिसे संलग्न होनेपर भी पृथ्वीपर गिरकर विकृत नहीं होता, उसी प्रकार वैकुण्ठका अपूर्व लीलारसमय यह भागवत शास्त्र भी शिष्य-प्रशिष्य परम्परासे इस मर्त्यलोकमें आकर भी न विकृत हुआ है और न होगा। यह 'अमृतद्रवसंयुतं' है, अर्थात् इसमें परमानन्द-रस सर्वत्र व्याप्त है। अतएव शास्त्र-प्रतिपाद्य परम देवता यहाँ आनन्दरस शब्दसे अभिहित हुए हैं। वे आनन्दरसविग्रह हैं—'श्रीकृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।' उन्हींकी लीलाका ग्रंथ यह भागवत है। फलके छिलके और गुठली आदिके समान इसमें त्यागने योग्य कोई सामग्री नहीं है। यह केवल रसमय है। इस भागवत-लीलामृतका पान करके जीव कभी निवृत्त नहीं होता। मुक्तावस्थामें जैसे स्वर्गादि तुच्छ जान पड़ने लगते हैं, वैसे यह किसी भी अवस्थामें हेय प्रतीत नहीं होता। यह सतत उपादेय बना रहता है।

श्रीमद्भागवत भक्ति-ग्रंथ और लीला-ग्रंथ है। श्रीकृष्णलीलाका रसास्वादन करके भक्तितत्त्वके व्याख्यानके द्वारा श्रीकृष्णावतारका श्रेष्ठत्व-प्रतिपादन और भक्तिमार्गकी उत्कृष्टताका प्रदर्शन इस भक्ति-ग्रंथका प्रतिपाद्य विषय है। श्रीकृष्ण और श्रीगौराङ्ग एक ही तत्त्व हैं। वृन्दावनविहारी नन्द-नन्दन और नदिया-विहारी शचीनन्दन एक वस्तु हैं। जिन लोगोंने गोस्वामी शास्त्रोंको पढ़ा है, उन्हें इस विषयमें कोई सन्देह नहीं होता। श्रीमद्भागवत-में पूर्णब्रह्म सनातन श्रीकृष्णका लीला-विलास वर्णित है। भक्ति-मार्गके पथिकोंके लिए उपदेशावली अङ्कित है, भक्त और भक्तिका माहात्म्य कीर्त्तित है। यह श्रीग्रंथ कलिग्रस्त जीवके भव-दुःख-मोचनका एकमात्र उपाय है।

श्रीचैतन्यभागवत, श्रीचैतन्यचरितामृत आदि श्रीगौराङ्ग प्रभुके लीला-विषयके ग्रंथ हैं। ये ग्रंथ श्रीमद्भागवतके समान कलिग्रस्त अधम जीवोंके त्रिताप-नाशक तथा भव-रोगकी एकमात्र औषधि हैं। दोनों ही ग्रंथ तुल्यवस्तु हैं। जिन लोगोंने श्रीश्रीमहाप्रभुकी कृपासे श्रीकृष्ण और श्रीगौराङ्ग-तत्त्व समझा है, उनको दोनों ही ग्रंथराज एक समान जान पड़ेंगे। क्योंकि श्रीग्रंथद्वयके (श्रीमद्-भागवत व श्रीचैतन्य-भागवतके) प्रतिपाद्य वस्तु और उद्देश्य एक है और ग्रंथकार भी एक है। श्रीकृष्ण भगवान्की पूर्वलीला श्रीमद्भागवतमें वर्णित है, और उनकी पर-लीला श्रीचैतन्य-भागवतमें वर्णित है। इन दोनों ही भक्ति-ग्रंथके रचयिता महामुनि वेदव्यास हैं। गौड़ीय वैष्णव श्रीचैतन्य-भागवतकार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरको श्रीगौराङ्गलीलाके व्यासावतारके रूपमें जानते और स्वीकार करते हैं। श्रीभगवान्के लीला-लेखकगण त्रिकालज्ञ ऋषि हैं। कलिकालोपयोगी भजन-प्रणालीका विधान कर, सहज साधन-पथ प्रदर्शित कर तथा भक्ति-ग्रंथ प्रणयन कर उन्होंने कलिग्रस्त जीवोंका महान् उपकार किया है। उन्होंने श्रीचैतन्य-भागवत, श्रीचैतन्य-चरितामृत आदि श्रीगौराङ्ग लीला-विषयक भक्ति-ग्रंथोंको बङ्गलाके अति सुगम पयार छन्दमें लिखकर कलिके दुर्बल जीवके लिए सुगम और सहज बना दिया है। संस्कृत भाषा अति कठिन भाषा है। त्रिकालज्ञ ऋषियोंने योगबलसे जाना था कि कलिकालमें इस देवभाषाका आदर नहीं रहेगा, इसलिए उन्होंने सहज भाषामें श्रीगौराङ्ग लीलाका वर्णन कर अपने मूल्यवान् लीलाग्रन्थको सबके उपयुक्त बना दिया है। कलिका जीव बड़ा सौभाग्यशाली है। उसकी दुर्गति देखकर करुणामय श्रीगौर भगवान्ने अपने अपने अन्तरङ्ग भक्तोंके द्वारा बङ्गला भाषामें इस लीलाग्रन्थको प्रकाशित कर अपने जीवोद्धारके कार्यके पथको सुगम बना लिया है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीभगवान्‌की लीलाके लेखक उनके प्रसिद्ध दास हैं, साधकाग्रगण्य हैं। श्रीभगवान्‌का तत्त्व-निरूपण करनेकी चेष्टा करना व्यर्थ है। ईश्वर-तत्त्व ज्ञान-बुद्धिके लिए अगम्य है। मनुष्यकी बुद्धि सीमित है। मनुष्यका ज्ञान अपूर्ण है। ईश्वर-तत्त्व-के निरूपणमें वह पूर्णतः अशक्त है। श्रीभगवान्‌की मधुमय लीलाका अनुशीलन मनुष्यके लिए सर्वथा कर्त्तव्य है। श्रीभगवान्‌के अवतार असंख्य हैं। उनके अपार लीला-समुद्रकी लहरें अनन्त हैं। उनकी एक-एक लीला-तरंगसे शत-शत लीला-रस-कथामृत-की धाराएँ प्रवाहित होती हैं और लीलारसके आधार भक्तवृन्दके हृदयको अनवरत प्रेम-रससे सिञ्चित करती रहती हैं। श्रीकृष्णलीलामृत-सिन्धुका सार श्रीगौराङ्गलीलारस है। इसी कारण श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने लिखा है—

कृष्णलीलामृतसार, तार शत शत धार,
दश दिगे बहे जाहा हैते।
से चैतन्यलीला हय, सरोवर अक्षय,
मन-हंस चराह ताहाते॥
चै०च०म० २५.२२३

श्रीभगवान्‌की लीलाके श्रवण और कीर्त्तनके माहात्म्यका उल्लेख करके राजा परीक्षितने शुकदेव-जीसे कहा था,

शृण्वतः श्रद्धया नित्यं गृणतश्च स्वचेष्टितम्।
कालेन नातिदीर्घेण भगवान् विशते हृदि॥
श्रीम०भा० २.८.४

अर्थात्—जो व्यक्ति श्रीभगवान्‌के अमृतोपम निर्मल चरित्रको आचार्यगणके मुखसे नित्य श्रद्धापूर्वक श्रवण करता है, अथवा भक्तवृन्दके सम्मुख कीर्त्तन करता है, भगवान् श्रीहरि शीघ्र ही उसके हृदयाकाशमें उदय होते हैं, इसमें सन्देह नहीं।

सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माने श्रीकृष्णलीलाका प्रचार करनेके लिए देवर्षि नारदजीको उपदेश दिया। उन्होंने समझा था कि श्रीभगवान्‌की मधुर-लीलाको प्रकाशित करना ही सर्वश्रेष्ठ कार्य है। श्रीभगवान्-की लीलाका श्रवण और कीर्त्तन सदा श्रद्धा-भक्ति-पूर्वक करनेसे श्रीभगवान्‌के पादपद्ममें चित्तको समर्पण करनेकी अपेक्षा नहीं रहती। विशेष यत्न और चेष्टा किये बिना ही करुणामय श्रीभगवान् अपने लीलानुसरणकारी भक्तके हृदयमें अनायास प्रवेश करते हैं। क्योंकि, श्रीभगवान्‌की लीला-कथा श्रवण या कीर्त्तन करते रहने पर भगवद्भाव और भक्ति सर्वदा हृदयमें जागरूक रहती है। इसका निर्देश भागवतके अगले श्लोकमें विशेष रूपसे किया गया है—

प्रविष्टः कर्णरन्ध्रेण स्वानां भावसरोरुहम्।
धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा शरत्॥
श्रीम० भा० २.८.५

अर्थात्, जिस प्रकार शरत् कालके आने पर सारे जलाशय स्वच्छ रूप धारण करते हैं, उसी प्रकार श्रीभगवान् नामरूपमें श्रवणेन्द्रियके द्वारा अपने भक्तजनके हृदयमें प्रवेश कर उनके काम-क्रोधादि दोषोंको दूर करते हैं। श्रीभगवान् कथारूपमें अपने भक्तजनके श्रवणेन्द्रिय द्वारा उनके अन्तःकरण-में प्रविष्ट होते हैं, उनके दास्य-सख्य आदि भाव-विशिष्ट हृदय-पद्मको सूर्योदयके कमलके समान विकसित कर काम-क्रोधादि मनके मालिन्यको दूर करते हैं और इस प्रकार उन्हें अपनेमें आसक्त कर लेते हैं। भक्तिके प्रवाहमें भगवद्भावके आविर्भावसे जीवका चित्त जैसा निर्मल होता है, ज्ञान-वैराग्य आदि योगानुष्ठानमें वैसा नहीं होता। घड़ेका पानी निर्मली आदि द्रव्योंके मिश्रणसे परिष्कृत होकर भी पूर्णरूपसे परिष्कृत नहीं होता। क्योंकि पानीमें मिली मिट्टी आदि घड़ेके भीतर पेंदीमें बैठ जाती है। घड़े-के हिलाने-डुलानेसे वह फिर पानीमें मिलती हुई दीख पड़ती है। विशेषतः नदीका जल पूर्णतः परिशुद्ध करनेका कोई उपाय नहीं दीखता। पर शरत् कालके आते ही जलाशयका जल सहज ही स्वच्छ रूप धारण कर लेता है। उसी प्रकार भक्ति-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूर्वक श्रीभगवान्‌की लीला-कथाका श्रवण और कीर्त्तन करनेसे जीवका हृदय निर्मल हो जाता है। भगवत्कथाके प्रभावसे स्वतः ही हृदयमें भगवद्भाव प्रकट होता है। भगवद्भावके प्रकट होनेके साथ-साथ मनमें सत्सङ्गकी वासनाका उद्रेक होता है। सत्सङ्गकी प्राप्ति होनेपर मानो सब सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

महाजनगणके वाक्यमें सुदृढ़ विश्वास स्थापित करके श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीपलीलाके रसमें मन-प्राणको सिञ्चित करते रहनेसे परानन्द प्राप्त होता है। परानन्दकी यह प्राप्ति ही वैष्णव साधु-वृन्दके पञ्चम पुरुषार्थ प्रेमधनकी प्राप्ति है। श्रीगौराङ्ग लीला-रसामृत, प्रेमीभक्त महाजनगणके द्वारा रचित श्रीग्रन्थों और पदावलियोंमें सराबोर है। इन सब महापुरुषोंके द्वारा रचित एक-एक पद-में श्रीगौराङ्ग-लीलाका जो मधुर प्रवाह दृष्टिगोचर होता है, उसमें लीला-रस-लोलुप भक्त-भ्रमरगण अनन्तकाल तक निमग्न रह सकते हैं। लीला-रस मधुसे भी मधुर है। उसका जितना आस्वादन करो, उतनी ही उसके लिए प्यास बढ़ती जाती है, उतना ही उस लीला-मधु-सिन्धुमें मन-प्राण और देहको एक साथ डुबा देनेकी इच्छा होती है। श्रीगौराङ्ग लीला-विषयक ग्रन्थ और पदावलीमें रसके अनन्त स्रोत परिदृष्ट होते हैं, प्रभुकी अनन्त लीला-कथा मानो उनके भीतर गुप्त भावसे छिपी हुई है। अतएव ठाकुर नरहरि बड़े दुःखके साथ लिख गये हैं—

गौर लीला दरशने, बड़ बाञ्छा हय मने,
भाषाय लिखिया सब राखि।
मुञि त' अति अधम, लिखिते ना जानि क्रम,
केमन करिया ताहा लिखि॥

× × ×

किछु किछु पद लिखि, यदि इहा केह देखि
प्रकाश करये प्रभुलीला।
नरहरि पावे सुख, घूचिबे सब दुख,
ग्रन्थगाने दरबिबे शिला॥
—पद-समुद्र।

वस्तुतः भक्त-कवि महाजन-कृत एक पदमें जो मधुलीलारस सञ्चित है, उसके आधारपर एक-एक सुबृहत् ग्रन्थ लिखा जा सकता है।

श्रीगौराङ्ग-लीला-माधुरीकी तुलना नहीं है। नवद्वीप रस सब रसोंमें श्रेष्ठ है। क्योंकि यह व्रज-रस-माधुर्य-मिश्रित है। प्रभुकी नवद्वीप लीला-माधुरी गौर-भक्त-वृन्दका निजस्व और सर्वस्व धन है। नदिया-माधुरी उनकी प्राणप्रिय वस्तु है, कण्ठका हार है, मुकुटमणि है। श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप-लीलाके समान प्राणोन्मादक सर्वचित्ताकर्षक अपूर्व माधुर्य और कारुण्य-रस-पूर्ण लीला और नहीं है। हमारे प्रभु करुणारस-कल्पतरु, रस-सिन्धु तथा रसिक-चूड़ामणि है। वे सब अवतारोंके अवतारी हैं, उनकी मधुर लीला-कथाएँ भी सब विषयोंके सार-तत्त्वसे परिपूर्ण हैं। इसी कारण साधक महाजन कविने बड़े चावसे गाया है—

ओ मन! गौराङ्ग बिने नाहि आर।
हेन अवतार, हबे कि हयेछे
हेन प्रेम परचार॥
दुरमति अति, पतित पाखण्डी
प्राणे ना मारिल कारे।
हरिनाम दिये, हृदय शोधिल
याचि गिया घरे घरे॥
भव-विरिञ्चिर, बाञ्छित जे प्रेम,
जगते फेलिल टालि।
काङ्गाल पाइये, खाइल नाचिये
बाजाइये करतालि॥
हासिये काँदिये, प्रेमे गड़ागड़ि
पुलके व्यापिल अङ्ग।
चण्डाल ब्राह्मणे करे कोला-कोलि,
कबे वा छिल ए रङ्ग॥
डाकिये हाँकिये, खोल करताले
गाइये धाइये फिरे।
देखिये शमन, तरास पाइये
कपाट हानिल द्वारे॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ए तिन भुवन, आनन्दे भरिल
उठिल मङ्गल सोर।
कहे प्रेमानन्द एमन गौराङ्गे
रति ना जन्मिल मोर॥

साधक भक्त कविके सुरमें सुर मिलाकर एक दिन लेखकने श्रीधाम वृन्दावनमें बैठकर लिखा था—

नाइरे नाइरे ओरे, श्रीगौराङ्ग-धन बिने,
कलिर जीवेर गति आर।
हय नाइ हय नाइ, हबे नाइ हबे नाइ,
एमन दयार अवतार॥
कलिर जीवेर दुःखे, गोलोकेर सुख छाड़ि
जिनि आसिलेन धराधाम।
विलाइते हरिनाम, तराइते पापी-तापी
करिलेन श्रम अविराम॥
सर्व्व जीवे सम दया, प्रकाशिये अकातरे,
पतितेरे धरि दिला कोर।
प्रेमभक्ति शिखाइते, हरिनामामृत पाने
कृष्णप्रेमे हइलेन भोर॥
स्वयं धर्म्म आचरिये शिखालेन भक्तगणे
प्रेमभक्ति किवा वस्तु हय।
अर्नपितचरी आनि, विलाइया सर्व्व जीवे
करिलेन हृदि रसमय॥
अन्य अन्य अवतारे, भगवान अस्त्र धरे
पाखण्डी रे करिला संहार।
ना मारिया पाखण्डी रे, हरिनाम मंत्र दिये
(गौर) उद्धारिला पापी-दुराचार॥
पतित पाखण्डी जत, हइला मुनिर मत
दूरे गेला दुःख हाहाकार।
दीन हरिदास भणे, श्रीगौराङ्ग धन बिने
पतितेर गति नाहिं आर॥

ऐसी मधुमय गौराङ्ग-लीला यदि कलिग्रस्त अधम जीवको चित्ताकर्षक नहीं होती है तो उसका पाखण्डी मन और पाषाण हृदय द्रवित कैसे होगा ? नवद्वीप-लीला श्रीगौर भगवान्‌की नरलीला है। चार सौसे अधिक वर्ष पूर्व श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने नदिया धाममें शचीगर्भमें अवतीर्ण होकर इस सर्वोत्तम मधुर नर-लीलाको प्रकट किया। भाग्यवान गौरभक्त महाजनगण श्रीगौराङ्ग प्रभुकी इस अपूर्व नर-लीलाको अपनी आँखों देखकर लीला-ग्रन्थकी रचना कर गये हैं, पदावली लिख गये हैं। उसे देखकर परवर्ती महाजनगणने सारे अनर्थोंको दूर करनेवाली मधुर गौर-लीलाका यथाशक्ति विस्तार किया है और कर रहे हैं।

अद्यापि ओ सेइ लीला करे गोरा राय।
कोन कोन भाग्यवाने देखिवारे पाय।*

नवद्वीप लीला श्रीगौराङ्ग प्रभुकी नित्य लीला है। श्रीधाम नवद्वीप उनकी नित्य लीला स्थली है। गौर भक्त वृन्द उनके नित्य दास हैं। पूर्ववर्ती महाजनगणकी गौराङ्गलीला लोलुप पवित्र आत्माएँ परवर्ती महाजनगणके हृदयमें प्रवेश कर और उनमें शक्ति संचार कर गौरलीलाका क्रमशः विस्तार कर रही हैं। शास्त्रमें लिखा है कि जो जिस वासनाको लेकर देह त्याग करता है, उसको वही वासना लेकर पुनः इस जगतमें आना पड़ता है। लीला रस-विस्तार-क्षेत्रकी भी यही बात है। श्रीगौराङ्गलीला लोलुप भाग्यवान् लीला-लेखक भक्तवृन्द अनन्त गौराङ्गलीलाका वर्णन कर समाप्त नहीं कर पाते उसे। गौर - लीला - समुद्र अनन्त अपार असीम और अतल-स्पर्शी है। इसी कारण लीला-लेखकोंकी कामना अपूर्ण रहती है, लीला वर्णनकी वासना अतृप्त रह जाती है। अपूर्ण कामना और अतृप्त वासनाको लेकर देह-त्याग करनेपर उसी वासनासे युक्त होकर पुनः आना पड़ता है। उपयुक्त आधार समझकर महात्माओंकी पवित्रात्मा शुभ संयोग देखकर भाग्यवान् जीवोंके देहमें प्रवेश करती हैं, और उनके द्वारा अपना कार्य सिद्ध करती हैं। गौर-भक्तवृन्दको मुक्तिकी आकांक्षा

* वंशी-शिक्षा, चतुर्थोल्लास—पाठ-भेद
अद्यावधि करे लीला श्रीगौराङ्ग राय।
रसिक भक्तगणे देखिबारे पाय॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं होती। वे श्रीगौराङ्ग प्रभुके नित्य सेवक होते हैं। श्रीगौराङ्गकी सेवा, उनका गुणगान, उनकी लीलाका अनुशीलन उनके जीवन-मरणके कर्म हैं। ये कर्म उनके नश्वर जीवनके साथ समाप्त नहीं होते, मृत्युके साथ भी लयको प्राप्त नहीं होते। ये उनके नित्य सनातन, अनन्त कालके कर्म हैं। श्रीगौराङ्ग लीला-रस-पान करनेकी तृषाकी निवृत्ति कभी नहीं होती। श्रीगौराङ्ग-गुण-गानका ताल भङ्ग नहीं होता।

श्रीगौर भगवान्के लीला-ग्रन्थोंकी कमी नहीं है। तथापि गौर-भक्तगण लीला-कथा लिखने, तथा लीला-ग्रन्थ प्रणयन करनेमें इतने उत्सुक क्यों हैं? श्रीगौराङ्ग प्रभुकी मधुर लीला श्रवण और वर्णन करनेका लोभ बड़ा प्रबल होता है। इस लोभको संवरण करना बड़ा कठिन है। प्रभुने जिसको जैसी शक्ति दी है, वह उस शक्तिको पूर्णतः सञ्चालन करके लीला समुद्रमें सन्तरण करता है। सन्तरणमें वह पटु है या नहीं, यह समझनेकी क्षमता उसमें नहीं होती। लीला-रस-समुद्रके स्रोतमें एक बार शरीरको छोड़ देनेपर कृपारूपी पवन धीरे-धीरे उसे लीला तरङ्गमें बहाते हुए गन्तव्य स्थानको ले जाता है। लीला-कीर्त्तन-रस-सुखमें लीन होकर तब वह भाग्यवान् जीव असाध्य साधन कर सकता है। यह सब श्रीभगवान्की लीलाका माहात्म्य है, लीला-लेखकगणका इसमें कुछ भी कृतित्व नहीं है।

श्रीगौराङ्गप्रभुकी नवद्वीपलीला एक मधुर-रस-समुद्र है। इस अपूर्व और मधुर रस-समुद्रको मंथन कर साधक-भक्त महाजनगण कलस-कलस अमृत भरकर कलिके जीवों के लिए लीला-रसका भण्डार पूर्ण कर गये हैं। कलिके जीव बड़े भाग्यवान् हैं कृपालु महाजनगणके द्वारा सञ्चित श्रीगौराङ्गलीला-रस-भण्डारमें लीला-रस-ग्रन्थ-रत्न-की कमी नहीं है। नवद्वीप लीलारस-सुधा-भण्डार अनन्त, अक्षय और अव्यय है। जैसे-जैसे दिन बीतते हैं, श्रीगौराङ्ग-लीला-रस गाढ़से गाढ़तर और गाढ़तरसे गाढ़तम होकर आनन्दघनरूप धारण करता जाता है। श्रीगौराङ्ग प्रभु आनन्द-चिद्घन-मूर्त्ति हैं। उनका मधुर भुवन-मङ्गल लीला-रस भी आनन्दघन मधु है। इस मधुका पान करनेमें भक्त-भ्रमरगण सर्वदा आनन्दमें विभोर रहते हैं। नवद्वीप-लीलारस-सिन्धु अनादि और अनन्त है। हम इस लीला-समुद्रके तटपर खड़े होकर केवल बालुका-कण गिन रहे हैं, केवल तरङ्गोंको देख रहे हैं, एक बिन्दु भी वारि स्पर्श करनेकी क्षमता हममें नहीं है। इसी कारण महाजनगण लिख गये हैं—

से लीला अमिय सिन्धु दुर्गम्य दुष्पार।
अनन्त ना पाय अन्त मुञि कोन छार॥

श्रीगौराङ्ग प्रभुके इस अपार और अनन्त लीला समुद्रमें डूबकर मरनेकी साध क्यों होती है? यह दुःसाहस क्यों होता है? इसका उत्तर भी महाजन-गण दे गये हैं—

आत्म शोधिवार तरे दुःसाहस कैनु।
लीला-सिन्धुर एक बिन्दु छूँइते नारिनु॥

नवद्वीप लीला रस इतना मधुर है, गौराङ्ग-लीला इतनी रसमय और मधुमय है कि कलिके शुष्क हृदय जीव उसका लोभ संवरण नहीं कर पाते। यह लोभ ही उनके उद्धारका एक मात्र उपाय है। श्रीगौर भगवान् चतुर चूड़ामणि हैं। कलिके जीवके कठिन हृदयको द्रवित करनेके लिए इस करुण लीला-रसकी सृष्टि करके उन्होंने जो प्रेम जाल फैलाया है, उसमें कलिग्रस्त जीव अनायास फँस जायगा। यह बन्धन ही उसकी भव-व्याधिसे मुक्तिका एक मात्र उपाय है। श्रीगौराङ्ग अवतार सब अवतारोंका सार है। जीवके प्रति इतनी दया, इतनी करुणा, इतनी कृपा श्रीभगवान्ने किसी अवतारमें प्रकट नहीं की। ऐसी मधुर सर्वचित्ताकर्षक लीला भी किसी अन्य अवतारमें प्रकट नहीं हुई। श्रीगौर भगवान्की नवद्वीप लीला गुप्त लीला है। श्रीनवद्वीप धाम नव वृन्दावन है। श्रीश्रीगौर-गोविन्द कलिके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रच्छन्न रसराज अवतार हैं। मधुर नवद्वीप-लीलाको प्राचीन साधक कवि महाजनगणने नाना भावमें नाना छन्दोंमें, मनोज्ञ भाषामें लिपिबद्ध किया है। नदिया-माधुरीको लेकर प्राचीन पद कर्त्ताओंने सहस्रों मधुर पदोंकी रचना कर वैष्णव-ग्रन्थ-भण्डारको परिपूरित किया है। वे जो-जो मनोरम, मधुमय, सौन्दर्य और माधुर्यमय प्रेमचित्र अङ्कित करके छोड़ गये हैं, उनकी इयत्ता नहीं। इन सब प्रेमभक्तिपूर्ण मधुर रसात्मक लीला ग्रन्थोंके होते हुए भी मेरेमें प्रभुकी नवद्वीप लीलाको विस्तार-पूर्वक लिखनेकी वासना क्यों हुई ?

इसका एकमात्र उत्तर है— 'आत्म शुद्धिके लिए।' यह मैं पहले कह चुका हूँ। अब फिर कहता हूँ।

" जानि वा जानि करि आपन शोधन।"

प्रभुकी प्रकटावस्थामें श्रीगौराङ्गलीला ग्रन्थ-आकारमें बहुत कम प्रकाशित हुई थी। प्रकटावस्थामें अपनी लीला प्रकट करनेका उन्होंने निषेध किया था। श्रीभगवान्‌की लीला और उनके लीला-परिकर वृन्दके चरितका वर्णन, स्मरण, मनन, पठन, लिखन—सब आत्म शुद्धिके लिए है। प्रभुने जिसको जिस परिमाणमें शक्ति दी है, वह उसी परिमाणमें उस प्रभु-दत्त शक्तिका उपयोग करके श्रीभगवान्‌के लीला-रसका गान करके और उनके मधुमय नामका प्रचार करके आत्मशुद्धि करता है। श्रीगौराङ्ग-लीला-रस-समुद्र बहुमूल्य लीला-रत्नोंसे परिपूर्ण है। प्रभुके वैकुण्ठवासी लीला परिकर-वृन्द उनके नित्य-दास हैं। उनके भक्तगण एक-एक ध्रुव प्रह्लाद हैं। यह ग्रन्थकारकी बात नहीं है। समस्त भारत-प्रसिद्ध, सर्वशास्त्र-विशारद, दश सहस्र मायावादी संन्यासियोंके गुरु श्रीप्रकाशानन्द सरस्वतीने भी लिखा है। यथा,

भ्रान्तं यत्र मुनीश्वरैरपिपुरा यस्मिन् क्षमा मण्डले,
कस्यापि प्रविवेश नैव धिषणा यद्वेद न वा शुकः।
यन्न क्वापि कृपामयेन च निजेऽप्युद्घाहितं शौरिणा
तस्मिन्नुज्ज्वलभक्तिवर्त्मनि सुखं खेलन्ति गौरप्रियाः॥

श्रीश्रीचैतन्यचन्द्रामृतम् १८

अर्थ—जिस मधुर भक्ति पथमें व्यास आदि मुनीन्द्रगण भी भ्रान्त हो गये हैं, जिसमें पहले भूतलपर किसीकी बुद्धिने प्रवेश नहीं किया, जिसके विषयमें शुकदेवको भी जानकारी न थी, तथा कृपामय श्रीकृष्णने अपने निजजनके सामने भी जिसे प्रकट नहीं किया उस चिर अपरिदर्शित भक्ति मार्गमें गौर-भक्तगण सुखसे क्रीड़ा करते हैं।

प्रभुके नित्य पार्षदगण त्रिकालज्ञ ऋषि थे। श्रीगौराङ्गलीलाके साथ इन सब महापुरुषोंकी पुण्य-चरित-कथा ओत-प्रोत है। उनके साथ प्रभुका जैसा प्रीति-सम्बन्ध था, साधन-शक्तिसे उन्होंने श्रीगौराङ्गचरण-सेवाका जितना अधिकार प्राप्त किया था, उसका विस्तारपूर्वक वर्णन किये बिना श्रीगौराङ्गलीलाका वर्णन अधूरा रह जाता है। ये सब महापुरुषगण प्रभुकी श्रीमूर्त्तिका साक्षात् दर्शन प्राप्त कर धन्य हो चुके हैं, उनका जयगान करनेसे ही श्रीगौराङ्ग सुन्दरकी कृपा प्राप्त हो सकती है। श्रीभगवान्‌के श्रीमुखकी वाणी है—

'मद्भक्तपूजाभ्यधिका'। श्रीम०भा० ११.१९.२१

श्रीचैतन्य भागवतकारने इसीको प्रभुके श्रीमुखसे इस प्रकार कहलाया है—

'आमार भक्तेर पूजा आमा हैते बड़।'
सेइ प्रभु वेदे भागवते कैला दृढ़॥

चै०भा०आ० १.३

प्रभुने कृपा कर जिनसे दो मधुर बातें कीं, एक बार भी जिनको दर्शन देकर कृतार्थ किया, प्रभुकी लीलाके प्रसङ्गमें उन पुण्य-चरित पुरुषोंका कीर्त्तन कर आत्मशुद्धि करनेकी हार्दिक अभिलाषा इस अकृती ग्रंथकारकी है। हमारे प्रभु दयाके अवतार तथा भक्तबाञ्छा-कल्पतरु हैं। गौरभक्तवृन्दके चरणोंमें मेरा यह निवेदन है कि वे आशीर्वाद दें, जिससे मेरी यह अभिलाषा पूरी हो। यह अत्यन्त दुष्कर कर्म है। इसके लिए बड़ी सुकृतिकी आवश्यकता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है, यह मैं खूब जानता हूँ। भक्तवृन्दकी कृपाका लेश भी प्राप्त हो जाय तो सारे कार्य सिद्ध हो सकते हैं, सारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो सकती हैं—यह मेरा अटल विश्वास है। केवल इस सरल विश्वासके ऊपर निर्भर कर मैं इस गुरुतर कार्यमें हाथ दे रहा हूँ। कृपालु गौरभक्तवृन्द कृपा प्रदान करनेमें कोताही न करेंगे, यह जानकर उनके चरणोंमें मैं यह विनीत निवेदन करता हूँ।

श्रीगौराङ्गलीला प्रकाशित करनेका मैं दुःसाहस नहीं करता। प्रभुकी लीला स्वप्रकाश्य वस्तु है। प्रभुने उसे स्वयं प्रकाशित किया है। उनके नित्य-सिद्ध परिकरवृन्द भी उसे प्रकाशित कर गये हैं। प्रभुकी नित्यलीला नित्य प्रकाशित रहती है, और रहेगी। परन्तु प्रभुकी लीलाका प्रचार आवश्यक है। प्रभुकी इच्छासे उनके भक्तवृन्द नाना प्रकारसे श्रीगौराङ्ग-लीलाका प्रचार करते रहते हैं। भाव-ग्राही श्रीगौर भगवान्‌ने कृपा कर जिसको जो भाव प्रदान किया है, वही भाव उसके लिए सर्वोत्तम है। भावुक भक्त भावके ठाकुरको अपने भावमें गठित करते हैं, प्रभु-प्रदत्त अपने भावमें विभावित होकर वे जो करते हैं, जो बोलते हैं, अथवा जो लिखते हैं, वह उसी भावमय, भावग्राही, भावके ठाकुर श्रीगौराङ्ग प्रभुके द्वारा अनुमोदित होनेके कारण स्वीकार करने योग्य है। श्रीभगवानकी लीला-कथा-में भक्ति-भावके सिवा अन्य कोई भाव नहीं आ सकता। अन्य भावसे श्रीभगवानकी लीला-कथाका चिन्तन करनेपर भी वह भाव भगवत्कथा प्रसङ्गमें शुद्धभाव धारण करके भावुकके चित्तको शुद्ध कर देता है। यह भगवत्कथाकी चर्चाका फल है, श्रीभगवान्‌की लीलाके श्रवण करने, पढ़ने और लिखनेके लिए श्रीभगवान्‌के द्वारा प्रदत्त कृपा-पुरस्कार है। शुभ कर्म करने पर दासको प्रभु पारितोषिक प्रदान करते हैं। सत्कर्ममें पुरस्कारकी प्राप्ति बहुत प्राचीन प्रथा है। लीला-लेखकगणकी चित्तशुद्धि केवल लीलाके अनुशीलनसे होती है। इसके लिए उन्हें अन्य किसी उपायका सहारा नहीं लेना पड़ता।

लीला-प्रकाश और लीला-प्रचार दो स्वतन्त्र वस्तुएँ हैं। स्वप्रकाश्य लीलाके प्रकाशनकी आवश्यकता नहीं। परन्तु लीलाके प्रचारका प्रयोजन है। यह प्रचार कार्य भी एक साधना है। साधन दो प्रकारका होता है—प्रचार और उपासना। जैसा प्रभुने राय रामानन्दसे कहा है—

साधना द्विविध हय शुन महाशय।
प्रचार ओ उपासना एइत निश्चय॥

यह प्रचार कार्य नाना प्रकारके उपायोंसे अनेकों भक्तोंके द्वारा प्रभुकी इच्छासे अनन्तकालसे सम्पन्न होता आ रहा है। लीला-ग्रंथका प्रकाशन उनमें प्रधान उपायके रूपमें गिना जाता है। भक्ति-पथावलम्बी करंग-कौपीनधारी संन्यासीसे लेकर राज-राजेश्वर पर्यन्त श्रीभगवान्‌के लीला-ग्रंथके प्रकाशनमें यत्नशील देखे जाते हैं। श्रीगौराङ्ग-परिकरगण कन्थाधारी, कुटीरवासी, अकिञ्चन वैष्णव थे। वृक्षतले उनका वास था। उनके दो ही संवल थे—छिन्न कन्था और भिक्षाकी झोली। श्रीगौराङ्ग प्रभुके अन्तरङ्ग परिकर छः गोस्वामी श्रीधाम वृन्दावनवासी कन्थाधारी वैष्णव-विग्रह थे। परन्तु वे भी प्रभुकी लीलाके प्रचारके उद्देश्यसे लीला-ग्रन्थ लिखकर प्रचार और उपासना—उभय विध कार्य कर गये हैं। प्रचार कार्य उपासनाकी अपेक्षा किसी अंशमें न्यून है, यह नहीं कहा जा सकता। परन्तु जो लोग यह दोनों कार्य कर सकते हैं, उनकी साधन शक्ति कितनी प्रबल है, इसका कृपालु पाठक सहज ही अनुमान कर सकते हैं। जगद्‌गुरु हमारे प्रभुने श्रीसनातन गोस्वामीके द्वारा ठाकुर हरिदासको कहलाया है—

आपनि आचरे केहो—ना करे प्रचार।
प्रचार करये केहो—ना करे आचार॥
आचर प्रचार नामेर कर दुइ कार्य्य।
तुमि सर्व्व गुरु, सर्व्व जगतेर आर्य्य॥

चै०च०अ० ४.९७.९८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगौराङ्ग प्रभुकी लीलाके प्रकारका कार्य उनके भक्त वृन्दके द्वारा पहले जिस प्रकारसे परिचालित होता था, अब उस प्रकारसे नहीं होता। कालकी गतिके अनुसार प्रचार कार्यकी गतिमें भी परिवर्तन हो गया है। आधुनिक शिक्षित समाजकी रुचिके अनुयायी लीला-लेखकगण आधुनिक पद्धतिका अवलम्बन कर श्रीगौराङ्गप्रभु-की लीला सम्बन्धी ग्रन्थोंका प्रचार करते हैं। गोलोक-गत महात्मा श्रीशिशिरकुमार घोष इसी नवीन पद्धतिके प्रचारक और साधक थे। इस नवीन पद्धतिसे श्रीगौराङ्गलीलाके प्रचारका फल देखकर जान पड़ता है कि श्रीगौराङ्ग-धर्म और नवद्वीप-लीलाने शिक्षित समाजको बहुत अधिक प्रभावित किया है। पाश्चात्य शिक्षित नवयुवक सम्प्रदायोंके लोगोंमें सनातन वैष्णव धर्म धीरे-धीरे प्रवेश कर रहा है। श्रीगौराङ्ग प्रभुको उन्होंने जगद्गुरुके रूपमें स्वीकार कर उनके द्वारा प्रवर्त्तित विशुद्ध धर्म नीतिको जगत्के धर्मतत्त्वके सार रूपमें ग्रहण किया है। इस नवगठित शिक्षित गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायके द्वारा श्रीगौराङ्ग धर्म दूर-दूर तक प्रचारित हुआ है। अंग्रेज, मुसलमान, सिख, मद्रासी, महाराष्ट्री प्रभृति सभी जातियोंके शिक्षित लोग श्रीगौराङ्ग धर्मसे आकृष्ट होकर गौड़ीय वैष्णव समाजमें प्रवेश प्राप्त करनेकी चेष्टा कर रहे हैं। श्रीगौराङ्ग चरित और लीला विभिन्न भाषाओंमें अनूदित होकर गौर-धर्म प्रचारमें सहायता कर रहे हैं। सुदूर अमेरिकामें भी श्रीगौराङ्गके धर्मका प्रचार हुआ है। श्रीवृन्दावन-दास ठाकुरकी भविष्यवाणी सफल हो रही है—

अन्येर कि दाय विष्णुद्रोही जे यवन।
ताहाराओ ए शिशुर भजिबे चरण॥

चै०भा०आ० २.२५०

समय आनेपर समस्त जगत्की धर्मनीति नदियाके अवतार श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दरके द्वारा प्रवर्तित धर्म-शिक्षाकी मूल भित्तिके आधारपर गठित और दृढ़कृत होगी, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। अवतारोंके अवतारी श्रीश्रीमन्महाप्रभुके परम मङ्गल नाम और धर्मका पृथ्वीमें सर्वत्र प्रचार होगा, यह प्रभुके श्रीमुखकी वाणी है।

पृथिवी-पर्य्यन्त जत आछे देश ग्राम।
सर्वत्र सञ्चार हइबेक मोर नाम॥

चै०भा०अं० ४.१२६

यह नवद्वीप लीला श्रीग्रन्थ आधुनिक पद्धतिके अनुसार लिखा गया है। यह लीला ग्रन्थ है, विचार ग्रन्थ नहीं। प्रभुकी लीला-कथा जहाँ-जहाँसे प्राप्त हुई है, उसे धारावाहिक रूपमें सजाकर इस ग्रन्थमें ग्रथित किया गया है। महाजनगण द्वारा वर्णित लीलाएँ जो अक्षरशः सत्य हैं उनको बहुत लोग उपलब्ध नहीं कर पाते—यह उनका दुर्भाग्य है। लीला लेखक महाजन वैष्णव कविगण साधक और भक्त थे। उनके साधनके बलसे जब जिस भावमें मनमें श्रीभगवान्की जिस लीलाकी स्फूर्ति हुई है, उसी भावसे प्रभावित होकर आविष्ट चित्तसे उन्होंने अपने अभीष्ट देवकी लीला-कथा लिखी है। भिन्न-भिन्न भक्त साधकोंके विभिन्न भाव हैं। अपने अपने भावके अनुसार लीला वर्णन करके उन्होंने परम आनन्द प्राप्त किया है। अतएव एक आदमीके द्वारा लिखित लीला-कथाके साथ दूसरेके द्वारा वर्णित लीला-कथामें ऐक्य नहीं हो सकता है। स्थान-काल-पात्रके विषयमें भी असामञ्जस्य दिखलायी दे सकता है, इस कारण इस समस्त लीला-कथाको असत्य या अलीक नहीं कह सकते। महाजनगणके वाक्यको ध्रुव सत्य माने बिना हृदयमें श्रीभगवान्की लीलाकी स्फूर्ति नहीं होती। जिनकी कृपाका भिखारी बनकर लीला कथाके वर्णनमें प्रवृत्त हो रहा हूँ जिनके शुभ आशीर्वादके बलसे श्रीभगवान्की लीला कथाकी मनमें स्फूर्ति होगी, उनके इस पवित्र कार्यमें दोष दृष्टि, उनकी लेखन प्रणालीको लेकर व्यर्थ तर्क-वितर्क करना तथा उनके पवित्र हृदयके पवित्र भाव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तरङ्गोंके रङ्गको देखकर कटाक्ष करना—ये साधारण अपराध नहीं हैं। जिस प्रकार सब नामापराधोंसे बचकर श्रीभगवान्‌का नाम लेना पड़ता है, वैसे सब अपराधोंसे बचकर यदि लीला लेखकगण लीला-ग्रन्थ लिखते हैं तो वह ग्रन्थ श्रीभगवान्‌के मनके अनुरूप होता है, सर्व चित्ताकर्षक होता है, तथा उसके द्वारा साधक लेखकगण लीला लिखनेका साधन-फल प्राप्त करते हैं। इन सब विषयों पर ध्यान देकर पूज्यपाद लीलालेखक महाजनगणके चरण चिह्नोंका अनुसरण कर यह सुवृहत् लीला-ग्रन्थ लिखा जा रहा है। इस ग्रन्थका उद्देश्य श्रीगौर भगवान्‌की मधुर नवद्वीप-लीलाका प्रचार है। प्रभुका अपूर्व नवद्वीप-लीला-मधु वैष्णव-ग्रन्थ भण्डारमें बिखरा पड़ा है। उनको एकत्र जुटाकर ग्रन्थ-कलश पूर्ण करना ही दीन ग्रन्थकारके हृदयकी अभिलाषा है। भक्त भ्रमरगणको लीला-मधु आस्वादन करनेके लिए नाना स्थानोंमें भ्रमण करनेका कष्ट न उठाना पड़े, एक स्थानपर वे प्रभुकी अपूर्व लीला-कथाका आकंठ पान कर सकें इसके लिए इस ग्रन्थमें यथा साध्य चेष्टा की गयी है। इसमें अनेक स्थानोंमें लीलाका अलक्षित भावसे विस्तृत वर्णन हो गया है। विभिन्न लीला लेखकोंके द्वारा वर्णित लीला-कथाके संयोगमें पुनरुक्ति हो गयी है। परन्तु श्रीभगवान्‌की लीला-कथाकी पुनरुक्ति या अत्युक्ति दोषको दोष मानना ठीक नहीं; क्योंकि लीला-कथा नित्य नवीन है। कोई किसी भावसे कितनी बार वर्णन या पाठ क्यों न करे, भक्तका मन उससे आकर्षित होगा ही। यह श्रीभगवान्‌की लीला-कथाका स्वधर्म है।

इस ग्रन्थमें नवीन कथा कुछ भी नहीं है। अकृती अधम ग्रन्थकार श्रीगौराङ्गलीला-लेखक पूज्यपाद महाजन और पदकर्त्तागणका उच्छिष्ट-भोजी है। **श्रीगौराङ्गलीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर द्वारा रचित श्रीचैतन्य-भागवत श्रीग्रन्थ श्रीगौराङ्गलीलाका आदि ग्रन्थ है। श्रीचैतन्यचरितामृतकार श्रीकृष्णदास कविराज** गोस्वामी इस परम मङ्गल श्रीग्रंथके सम्बन्धमें लिखते हैं—

कृष्णलीला भागवते कहे वेदव्यास।
चैतन्यलीलार व्यास—वृन्दावनदास॥
वृन्दावनदास कैल चैतन्यमङ्गल।*
जाहार श्रवणे नाशे सर्व्व अमङ्गल॥
चैतन्य-निताइर जाते जानिये महिमा।
जाते जानि कृष्णभक्ति सिद्धान्तेर सीमा॥
भागवते जत भक्ति सिद्धान्तेर सार।
लिखियाछेन इहा जानि करिया उद्धार॥
चैतन्यमङ्गल शुने यदि पाखण्डी यवन।
सेह महावैष्णव हय ततक्षण॥
मनुष्य रचिते नारे ऐछे ग्रन्थ धन्य।
वृन्दावनदास मुखे वक्ता श्रीचैतन्य॥
वृन्दावनदास पदे कोटि नमस्कार।
ऐछे ग्रन्थ करि तेँहो तारिला संसार॥
नारायणी—चैतन्येर उच्छिष्ट-भाजन।
ताँर गर्भे जन्मिल श्रीदास वृन्दावन॥
ताँर कि अद्‌भुत चैतन्यचरित-वर्णन।
जाँहार श्रवणे शुद्ध कैल त्रिभुवन॥

चै०च०आ० ८.३०–३८

श्रीवृन्दावनदास ठाकुर कलिके व्यासावतार हैं। उनके द्वारा रचित श्रीचैतन्यभागवत श्रीग्रन्थ कलि-ग्रस्त जीवके लिए श्रीमद्भागवतके तुल्य है। किसी भी अंशमें उससे न्यून नहीं है। कलिके अवतार श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी मधुर लीला-कथा सरल मधुर भाषामें वर्णन करके कलिके व्यासावतार श्रीवृन्दा-वनदास ठाकुरने अमरत्व प्राप्त किया है। श्रीपाद मुरारिगुप्तके करचाका मूल-सूत्र पकड़कर वे इस परम

* श्रीवृन्दावनदास ठाकुरकृत श्रीचैतन्यभागवतका पूर्व नाम था श्रीचैतन्यमङ्गल। ठाकुर लोचनदासकृत श्रीचैतन्य-मङ्गल प्रकाशित होनेपर उसे देखकर श्रीवृन्दावनदास ठाकुर-की मातृदेवी "गौराङ्गकी 'अवशेष' पात्र" परम वैष्णवी नारायणीदेवीके आदेशसे श्रीचैतन्यमङ्गलका नाम श्रीचैतन्य भागवत रक्खा गया। तभीसे इस श्रीग्रन्थका नाम श्रीचैतन्य भागवत पड़ा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उपादेय भक्ति ग्रन्थकी रचना कर गये हैं। प्रभुके नित्य पार्षद स्वरूपदामोदर गोस्वामीके द्वारा लिखित प्रभुकी लीलासे सम्बन्धित एक और करचा है।* श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने अपने श्रीचैतन्य-चरितामृतग्रन्थकी सूचनामें कहा है कि श्रीपादमुरारि गुप्त और स्वरूपदामोदरके करचाका सूत्र पकड़कर, तथा श्रीरघुनाथदास गोस्वामी आदि प्रभुके अन्तरङ्ग भक्तोंके मुखसे सुनकर श्रीबृन्दावनदास ठाकुरके श्रीचैतन्यभागवत श्रीग्रन्थमें अवर्णित प्रभुकी लीलाएँ उन्होंने विस्तारसे लिखी हैं। इन दोनों श्रीग्रन्थोंमें प्रभुकी अधिकांश लीला-कथा वर्णित है। इसके सिवा ठाकुर लोचनदास और ठाकुर जयानन्दकृत श्रीचैतन्य मङ्गल श्रीग्रन्थमें भी श्रीमन् महाप्रभुकी सब लीला-कथाएँ विस्तारसे लिखी गयी हैं। श्रीपाद कविकर्णपूर गोस्वामीकृत संस्कृत-ग्रन्थ श्रीचैतन्यचरितामृत और श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकमें भी प्रभुकी बहुत-सी लीला-कथाएँ वर्णित हैं।

श्रीपाद प्रद्युम्नमिश्र ठाकुर द्वारा रचित श्रीकृष्ण चैतन्योदयावली सरल संस्कृतमें एक छोटा ग्रन्थ है। श्रीप्रद्युम्न मिश्र प्रभुके आत्मीय हैं। प्रभुके पूर्वबङ्ग-की भ्रमण कहानी, उनका श्रीहट्टगमन, पितामह पितामहीको दर्शन प्रदान करना, आदि लीला-कथाएँ इस छोटे ग्रन्थमें वर्णित हैं। प्राचीन पदकर्त्ता-गण अपनी पदावलीमें प्रभुकी अनेक लीला-कथाएँ लिख गये हैं। इन समस्त ग्रंथोंसे धारावाही रूपमें श्रीगौराङ्गप्रभुकी आद्यन्त लीला कहानी अति सरल भाषामें विस्तारपूर्वक लिखनेकी अभिलाषा कृपा करके प्रभुने अधम ग्रन्थकारके हृदयमें जागृतकी है। दीनदयाल, भक्तवत्सल, करुणावतार प्रभु मेरी इस अभिलाषाको पूर्ण करेंगे या नही मैं नहीं जानता। तथापि गौरभक्तबृन्दकी कृपा प्राप्त होनेपर सर्वसिद्धि प्राप्त होती है, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। यह ग्रन्थ बहुत बड़ा होगा। प्रभुकी नवद्वीप-लीला समाप्त होनेपर उनकी नीलाचल-लीला भी इसी प्रकार विस्तारसे लिखी जायगी। इस कार्यमें बहुत दिन लगेंगे और अर्थ भी बहुत व्यय होगा। श्रीगौराङ्ग लीला लेखक महाजनगणके चरण चिह्नोंका अनुसरण कर केवल आत्मशुद्धिके लिए इस दुःसाहसपूर्ण कार्यमें हाथ डालनेके लिए गौरभक्त वैष्णवगणका आदेश हुआ है। उनका आदेश शिरोधार्यकर और श्रीनित्यानन्द प्रभुके पाद-पद्मका स्मरणकर कार्यक्षेत्र-में उतर रहा हूँ। भरोसा है केवल गौर-भक्तबृन्दकी कृपा और आशीर्वादका।

एइ भिक्षा मागो श्रोता वैष्णव-चरणे।
मो अधमेर अपराध क्षम निज गुणे॥

जय श्रीश्रीगौर नित्यानन्दकी जय!
जय श्रीगौर विष्णुप्रियाकी जय!!
जय गौर भक्तवृन्दकी जय!!!

—दीन ग्रन्थकार।
(श्रीहरिदास गोस्वामी)

* यह श्रीग्रन्थ अब दुष्प्राप्य है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगौराङ्ग अवतार-तत्त्व

"सर्व अवतार-सार गोरा अवतार।"
(श्रीचैतन्य मङ्गल)

श्री-श्रीमन्महाप्रभुके लीला-ग्रन्थमें उनके प्रच्छन्न अवतार तत्वके विषयमें कुछ न लिखना ही ठीक होगा। उनके अवतार-तत्त्व विषयक यथेष्ट प्रामाणिक श्रीग्रन्थ हैं। शास्त्रीय प्रमाणका कोई अभाव नहीं है। जो लोग श्रीगौराङ्ग प्रभुके अवतार तत्त्व-का शास्त्रीय प्रमाण चाहते हैं, उनके लिए इस ग्रन्थ-का निर्माण नहीं किया जा रहा है।* वे लोग विचार तर्क, प्रमाण प्रयोगको लेकर सदा माथापच्ची करें तो करते रहें। मेरी भगवानसे यह प्रार्थना है कि हम उनकी दुर्दशा देखकर कातर-कण्ठसे श्रीगौराङ्ग प्रभुके चरण-कमलमें रोकर निवेदन करते रहें कि, "हे दयानय पतित-पावन गौर भगवान! इनके प्रति एकबार कृपादृष्टि करो, कृपा करके इनके नीरस हृदयको सरस करो। हे प्रभु! अपनी मधुर लीला-कथाके गानमें इनके मनको मत्त कर दो।" इस रोगकी यही औषधि है। तर्क और विचार-निष्ठ मन लीला-रस गानके लिए अयोग्य और अनुपयुक्त है।

श्रीगौराङ्ग प्रभु सब अकतारोंके अवतारी हैं, इस बातको उनके भक्तवृन्दके सिवा और कोई नहीं मानता। श्रीगौराङ्ग अवतारकी श्रेष्ठताके प्रतिपादक अनेक श्रीग्रन्थ हैं। महाजन लोग एक स्वरसे नदिया अवतारकी श्रेष्ठता स्वीकारकर गये हैं। इस संबंधमें दो चार बातें लिखनेकी प्रबल उत्कण्ठा हो रही है। प्रभुके अवतारकी श्रेष्ठताकी बात लिखनेकी लालसा-को त्यागना गौरभक्तके लिए सहज नहीं है। इस लालसाके वशवर्ती होकर ही कुछ लिखनेकी इच्छा हो रही है। कृपामय पाठकवृन्द चाहे तो इस नीरस विषयको छोड़ भी सकते हैं।

श्रीगौराङ्ग अवतार सब अवतारोंमें श्रेष्ठ तथा सारभूत है—यह बात महाजनगण क्यों कह गये हैं? इस धराधाममें श्रीभगवानके असंख्य अवतार हो गये हैं। इस नदिया अवतारमें ऐसी कौन-सी विशेषता है जिसके कारण महाजनगणने इसे सर्वश्रेष्ठ घोषित किया है? इस प्रश्नका उत्तर देनेकी चेष्टा करूँगा।

श्रीभगवानके षड्ऐश्वर्यमें वैराग्य अन्तिम और सर्वप्रधान ऐश्वर्य है।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसश्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणाः॥
वि०पु० ६.५.७४

---

* 'ग्रन्थ-निर्माण' शब्दकी कुछ व्याख्या प्रयोजनीय है। श्रीधाम वृन्दावनमें रहते समय पूजनीय श्रीगौड़ माध्वेश्वराचार्य प्रभुपाद श्रीमधुसूदन गोस्वामी सार्वभौम महाशयने स्वलिखित एक बङ्गला ग्रन्थकी भाषा संशोधन करनेका भार मेरे ऊपर दिया था। इस ग्रन्थमें उन्होंने एक जगह 'ग्रन्थ-निर्माण' शब्दका प्रयोग किया था। मैंने उसे काटकर 'ग्रन्थ-रचना' शब्द बैठा दिया था, और उनसे कहा था कि 'निर्माण' शब्द ग्रन्थके विषयमें प्रयुक्त नहीं होता। गृह, यन्त्र, काष्ठके आसन आदिका मनुष्य निर्माण करता है, और ग्रन्थकी रचना करता है। श्रीपाद गोस्वामी प्रभुने मुझे समझा दिया था कि श्रीग्रन्थ भी निर्मित हो सकता है। मेरी हस्तलिखित मूल कापीमें इस स्थानमें स्पष्टतः 'लिखित' शब्द था। प्रूफमें मैंने देखा कि वह आश्चर्य रूपसे 'निर्मित' शब्दमें परिणत हो गया है। इससे मैंने समझा कि पूजनीय गोस्वामी प्रभुके उपदेशका प्रभाव मेरे पक्षमें कार्यकारी नहीं हुआ, अतएव श्रीगौराङ्ग प्रेसके भाग्यवान मुद्रक महाशयके द्वारा प्रभुने मुझे अच्छी शिक्षा दी है। यह देखकर मेरे दयालु प्रभुकी कृपानुभूति मेरे हृदयमें उदय हुई। इससे मन बड़ा ही आनन्दित हुआ प्रभुपाद गोस्वामी महाशयके उपदेशामृतकी स्मृति-स्वरूप श्रीग्रन्थके प्रारम्भमें भक्ति-पूर्वक प्रभुकी इस कृपानुभूतिकी बात यहाँ लिपिबद्धकर दी गयी है।

—जीवाधम ग्रन्थकार।
(श्रीहरिदास गोस्वामी)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीभगवानके किसी अवतारमें उनके षड् ऐश्वर्यमें प्रधान ऐश्वर्य वैराग्यका पूर्ण विकास नहीं हुआ। श्रीगौराङ्ग अवतारमें श्रीभगवानने अपने इस सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्यके पूर्ण प्रकाशसे कलिग्रस्त जीवोंके कलुषित चित्त तथा पाषाण हृदयको द्रवितकर और इस प्रकार उनके उद्धारका साधन उपस्थित कर स्वयं अपने अवतारकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन किया है। इसके लिए भक्त साधक महाजन कविने उनकी वन्दना की है—

वैराग्यविद्यानिज भक्तियोग
शिक्षार्थमेकः पुरुषः पुराणः।
(चै० चं० ना० ६.४४)

वैराग्य विद्या श्रीभगवानका सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य है—यह मान्यता क्यों हुई ? इसे समझने और समझानेकी चेष्टा करूँगा।

श्रीभगवान सर्वशक्तिमान सर्वसिद्धिदाता सर्व-नियन्ता निर्गुण परमेश्वर हैं। उनका ऐश्वर्य समस्त सांसारिक वस्तुओंमें परिदृश्यमान हो रहा है। उनके ऐश्वर्यकी पूजा सब जीव करते हैं। त्रिलोकीमें ऐसा कोई नहीं है जो श्रीभगवानके ऐश्वर्यको देखकर विमुग्ध न होता हो, उनके ऐश्वर्यभावसे विभावित होकर उनके चरणोंकी ओर आकृष्ट न होता हो। शङ्ख-चक्रगदा-पद्मधारी श्रीभगवानकी अपूर्व तेजो-मयी ऐश्वर्यपूर्व चतुर्भुज मूर्त्तिको देखकर किसके मनमें उनके ऐश्वर्य भावका उदय नहीं होता ? कौन उस अद्भुत—विभूतिशाली षडैश्वर्यपूर्ण श्रीभगवानके ऐश्वर्यकी पूर्ण विकसित ज्योतिर्मयी श्रीमूर्त्तिके सामने सम्मानपूर्वक सिर झुकाये बिना रह सकता है ? दर्शन तो दूर रहे, उस ऐश्वर्यमयी विश्व विमोहनी मूर्त्तिका ध्यान चिन्तन करनेसे ही श्रीभगवानके ऐश्वर्य-भावका उद्रेक होता है। समस्त सांसारिक जीव भीत-चकित नेत्रों द्वारा श्रीभगवानकी ऐश्वर्य और विभूतिपूर्ण षडैश्वर्यमयी चतुभुज मूर्त्तिके सामने हाथ जोड़कर खड़े होते हैं, और स्तुति-वन्दना आदि करके अपने अभीष्टकी प्राप्तिके लिए प्रार्थना करते हैं।

परन्तु श्रीभगवानका एक भाव उनका मधुरभाव भी है, ऐश्वर्य भावकी अपेक्षा यह श्रेष्ठ है। श्रीभग-वानकी विभूतिपूर्ण ऐश्वर्य भावकी श्रीमूर्त्ति पूजा करनेकी वस्तु है, दूरसे ही सम्मानपूर्वक प्रणाम करनेकी वस्तु है, पर उनकी माधुर्यमयी सर्वसुलक्षण युक्त श्रीमूर्त्ति नर-लीलाके उपयुक्त है। यह सबके चित्तको आकर्षण करनेवाली नर-वपु-अनुरक्त होनेकी, प्रेमकी वस्तु है।

भगवान जीवोंके कल्याणकी साध लेकर जीव देह धारण करते हैं, नर रूपमें आविर्भूत होते हैं। जगतके जीवोंके आत्मीय बनकर जीवोद्धारका कार्य करते हैं। उनकी माधुर्यमयी मूर्त्ति ही प्रीतिकी चरम मूर्त्ति है।

इसके अतिरिक्त यदि उनकी वैराग्योद्दीपक कारुण्य रसपूर्ण जीव-दुःख कातर श्रीमूर्तिका समावेश हो जाय तो जीवके परित्राणके लिए फिर अन्य किसी उपायकी चिन्ता नहीं रहती। श्रीभगवानकी वैराग्य-पूर्ण जीव-दुःख-कातर श्रीमूर्त्तिको देखनेपर, उनके आर्त्तमय कातर मधुर कण्ठ-स्वरको सुननेपर, उनके विषादपूर्ण नेत्रोंसे झर-झर आँसू बहते देखकर जीव-का हृदय तो क्या, काष्ठ-पाषाण आदि भी द्रवित हो उठते हैं। तब जीव अपने निजी दुःखको भूल जाते हैं, त्रिताप सन्तापको भूल जाते हैं, इस संसारको भूल जाते हैं, अपने अस्तित्व तकको भूल जाते हैं! तब श्रीभगवान्‌के दुःखसे कातर होकर उनका सम्पूर्ण हृदय भगवद्भावसे, भगवद्-दुःखसे परिपूर्ण हो जाता है। इस प्रक्रियाका नाम है प्रेम साधना। किस प्रकार उनके प्राण-प्रिय श्रीभगवान्‌का (काल्पनिक कपट) दुःख दूर होगा, उनकी अश्रुधाराका निवारण होगा, इसके लिए उपाय सोचने लगते हैं। इस प्रक्रियाका नाम है दास्य-भाव। सब प्रकारकी चेष्टा करके भी श्रीभगवान्‌के दुःख दूर करनेका जब कोई उपाय वे निर्धारित नहीं कर पाते, तब व्याकुल हो निराश्रय बालकके समान रो-रोकर परम पिता परमेश्वरके चरण-प्रान्तमें गिर-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर आत्म समर्पण करते हैं। इस प्रक्रियाको ही साधनामें सिद्धि-प्राप्तिके नामसे पुकारते हैं। सिद्धि प्राप्त होते ही श्रीभगवानकी शरणागति प्राप्त होती है। जब श्रीभगवान देखते हैं कि उनके सृष्ट सब जीव उनके सुख-दुःखके भागी बनकर उनमें आत्म-समर्पण करते हैं, तो वे उन्हें अपना बना लेते हैं। शास्त्र-युक्ति सङ्गत भजन-साधनकी प्रक्रिया यह नहीं है। वेद-विधिमें ये सब गुह्य भाव लक्षित नहीं हो सकते। परन्तु कलिग्रस्त जीव वेदोक्त तथा शास्त्र-युक्ति-सम्मत भजन न करके भी श्रीगौराङ्ग अवतार-में बिना साधना और बिना भजनके इस प्रकार श्रीगौर भगवानका कृपापात्र हुआ है। यही ठाकुर नरोत्तमदासने लिखा है—

नरोत्तम दास कय, गोरा सम केह नय,
ना भजिते देन प्रेम धन।

नदिया अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुने जीवोद्धार कार्य सम्पन्न करनेके लिए यह कौशल जाल प्रसारित किया था। अपने षडैश्वर्यमें प्रधान ऐश्वर्य वैराग्यकी सहायतासे इस प्रकार उन्होंने कलिग्रस्त अधम जीव-का बिना भजन-साधनके ही उद्धार किया है। इस कार्यके लिए ही वे अवतार ग्रहण करते हैं। इसी उद्देश्यकी सिद्धिके लिए उनका नदियामें शचीके गर्भ-से आविर्भाव हुआ है।

गृह-त्याग, संन्यास-ग्रहण, नीलाचलमें बैठकर कठोर नियम पालन, कृष्ण-प्रेमके उद्वेगमें अद्‌भुत भावोद्‌गम, कूर्माकृति-धारण, समुद्रमें पतन, गम्भीराकी भीतसे मुख-घर्षण आदि लौकिक दुःख-मूलक भाव-प्रदर्शनके द्वारा प्रभुने कलिके पाषाण-हृदय जीवोंके हृदयमें अपने लिए एक विषम चिन्ता, उद्वेग और दुःखका प्रबल तूफान पैदा कर दिया। उनकी उस असीम दुःख-राशिको जीवनमें वे जीव भूल नहीं सकते। अपनी आँखों किसी निजजनको इस प्रकार दुःखी देखकर उस दुःखको उसका आत्मीय स्वजन जिस प्रकार जीवनभर भूल नहीं सकता, कलिका जीव उसी प्रकार श्रीगौराङ्ग प्रभुके कपट दुःखको देखकर भूल नहीं सकता और न भूलेगा। सदा ही उनका चित्त प्रभुके दुःखसे द्रवीभूत होता रहा। दूसरी बात उनके कानोंमें नहीं घुसती थी। इससे बढ़कर उत्कृष्ट भजन-मार्ग और क्या हो सकता है? श्रीगौर भगवान् कलिके पाषाण हृदय अधम जीवको शिक्षा देकर, उनके कठिन चित्तको भगवद्भजनोन्मुखी करके उसे यह नवीन भजन-पथ प्रदान कर गये हैं। यही है श्रीभगवान्‌का माधुर्य-भजन। इस माधुर्य-भजनसे ही श्रीभगवत्-प्राप्ति होती है।

श्रीगौराङ्ग प्रभुने संन्यास ग्रहण करते समय अपने भक्तगणसे कहा था—

देख कालि शिखा सूत्र सब मुँड़ाइया।
भिक्षा करि बेड़ाइमू सन्न्यास करिया॥
तबे मोरे देखि से-इ धरिबे चरण।
एइमते उद्धारिब सकल भुवन॥

चै० भा० म० २५. २२३, २२५

"देखना, कल मैं शिखा-सूत्र मुँड़ाकर संन्यास लेकर भिक्षा माँगते हुए भ्रमण करूँगा। तब मुझे देखकर सब लोग मेरे चरण पकड़ेंगे, इस प्रकार मैं सारे लोकका उद्धार करूँगा।"

श्रीचैतन्य चरितामृतमें प्रभुवाक्य, यथा—

अतएव अवश्य आमि सन्न्यास करिब।
सन्न्यासीर बुद्धये मोरे प्रणत हइब॥
प्रणतिते हइबे इहार अपराध क्षय।
निर्म्मल हृदये भक्ति करिब उदय॥
ए-सब पाखण्डीर तबे हइबे निस्तार।
आर कोन उपाय नाइ, एइ युक्ति सार॥

चै० च० आ० १७. २५८-२६०

"अतएव मैं अवश्य ही संन्यास ग्रहण करूँगा। संन्यासी जानकर लोग मेरे सामने प्रणत होंगे। प्रणत होनेसे उनके सारे पाप नष्ट हो जायँगे। उनके निर्मल हृदयमें मैं भक्तिका आविर्भाव करूँगा। इस प्रकार सब पाखण्डियोंका उद्धार होगा, इसके सिवा कोई दूसरा उपाय नहीं है, यही श्रेष्ठ युक्ति है।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगौराङ्ग अवतारमें श्रीभगवानको निरुपाय होकर अपने सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य वैराग्य-विद्याका आश्रय लेना पड़ा था। इसी वैराग्य-विद्याके बलसे वे सब जीवोंके मनको हरनेमें सक्षम हुए थे। कलिके कठिन-हृदय जीवके उद्धारके लिए उन्होंने अपने सर्वश्रेष्ठ परम प्रिय इस ऐश्वर्यको अति यत्नपूर्वक हृदयमें पोषित कर रक्खा था। कलिके पतित अधम जीव उनको बहुत प्रिय हैं, इसी कारण उन्होंने अपने हृदय-के गुप्त धनका उनके सामने प्रदर्शन कर उनके चित्तको आकर्षित किया।

योग-याग, तप करके योगी ऋषिगण जिसको प्राप्त नहीं होते, श्रीभगवान्के वैराग्यका दर्शन करके इन भाग्यवान् कलिके जीवोंने उनको प्राप्त किया था। श्रीगौर भगवान्ने वैराग्यकी पराकाष्टा दिखलायी थी। दयामय भगवान् अपने सृष्ट जीवके प्रति कितने दयालु और कृपाशील हैं, जीवके मङ्गलके लिए वे कितना उद्विग्न और चिन्तित रहते हैं, जीवोद्धारका कार्य सिद्ध करनेमें वे कितना तत्पर रहते हैं, यह श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु कलिग्रस्त जीवको विशेषरूपसे दिखला गये हैं। इसी कारण कलिग्रस्त जीवोंका चित्त प्रभुके लिए इतना आकृष्ट रहता है, उनका मन श्रीगौराङ्ग-लीलारूपी मधुका पान करने-में इतना निविष्ट होता है। अयाचित कृपावारि वर्षण करके हमारे दीनदयाल प्रभुने कलिग्रस्त जीवों-के दुष्ट मन और कलुषित हृदयको शुद्ध करके अपने चरणोंमें आकृष्ट किया था। परम कौशली श्रीगौर भगवान्ने अत्यन्त आश्चर्यजनक रूपसे अपना कर्त्तव्य साधन किया था। जीवोद्धार कार्य श्रीभगवान्के सब कार्योंमें श्रेष्ठ कर्मके रूपमें परिगणित होता है। श्रीभगवान्का यदि कोई धर्म है तो यह कर्म ही उनका सर्वश्रेष्ठ धर्म है। इस कर्मको सम्पन्न करनेके लिए, इस धर्मका पालन करनेके लिए लीलामय श्रीभगवान्-को अनेक बार भूतलमें अवतीर्ण होना पड़ा है। पृथ्वी जब पापके भारसे भाराक्रान्त हो जाती है, धर्म जब लयोन्मुख हो जाता है तो साधुवृन्दके परित्राणके लिए, धर्मध्वजी पाखण्डियोंका विनाश करनेके लिए, पुनः सनातन धर्म संस्थापन करनेके लिए लीलारङ्ग-प्रिय श्रीभगवान्को इस धराधाममें अवतीर्ण होना पड़ता है।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥
गीता ४.८

इस जीवोद्धार-कार्यमें जीवके साथ श्रीभगवान्-का संघर्ष होता है, इस संघर्षके फलस्वरूप भीषण संग्राम होता है। उसमें अस्त्र-शस्त्रकी आवश्यकता पड़ती है। सुदर्शन चक्र, त्रिशूल, गदा, खड्ग आदि अस्त्रकी सहायतासे श्रीभगवान्को दुष्कृति पाखण्डियों-का दमन और विनाश साधन करना पड़ता है। भू-भार-हरणके निमित्त उनको महाकाल रूपमें सृष्ट जीवोंके शोणित-पातमें वसुन्धराको रञ्जित करना पड़ता है। श्रीभगवान्की कालरूपी प्रलयङ्करी शक्ति-की सहायतासे इस प्रकार सदासे जीवोद्धारका काम सम्पन्न होता आ रहा है। परन्तु श्रीगौराङ्ग-अवतार-में श्रीगौर भगवान् जीवन संहारकारी इन सब अस्त्रोंमें-से किसीकी सहायता ग्रहण नहीं करते। मधुर हरिनाम महामन्त्र दान करके कलिग्रस्त महा-पाखण्डी जीवोंका उन्होंने किस प्रकार केश पकड़कर उद्धार किया था, यह किसीको अविदित नहीं।

श्रीचैतन्यमङ्गल श्रीग्रन्थमें प्रभुका वाक्य है—

आर अवतार हेन अवतार नहे।
असुर संहार हेतु पृथिवी-विजये॥
महाकाय महासुर महा-अस्त्र मोर।
महारणे संहार करिया कर चूर॥
एबे सर्व्व जन सेइ हृदय आसुरि।
खड्ग अस्त्रे छेद्य नहे रणे किवा करि॥
नामगुण संकीर्त्तन वैष्णवेर शक्ति।
प्रकाश करिब आर निज प्रेम भक्ति॥
एइ मते कलि पाप करिब संहार।
सबे चल आगे पाछे ना कर विचार॥
एबे नाम सङ्कीर्त्तन खड्ग तीक्ष्ण लइया।
अन्तर-आसुर जीवेर फेलिब काटिया॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यदि पापी छाड़ि धर्म दूर देशे जाय।
मोर सेनापति भक्त जाइबे तथाय॥
निज प्रेमे भँसाइब ए ब्रह्माण्ड सब।
कभू ना राखिब दुःख शोक एक लव॥

श्रीगौर भगवान्के इस अद्भुत जीवोद्धार कार्य-में उनके अवतारका श्रेष्ठत्व प्रतिपादन होता है। पतित-अधमको उन्होंने गोदमें उठाकर, आदरपूर्वक हरिनाम महामन्त्र प्रदान करके, उनका उद्धार करके अपना जन बना लिया। उनके दुर्बल प्राणमें निज शक्तिका संचार करके उनको ऐसा शक्तिशाली बना दिया था कि, उनमें-से प्रत्येकने पृथ्वीका भार हरनेकी शक्ति और क्षमता प्राप्त की थी। यह बात महाजनगण कह गये हैं।

'ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने जने।'

श्रीगौराङ्ग प्रभुके परम प्रिय पार्षद वासुदेव घोष, जिन्होंने स्वयं अपनी आँखों प्रभुकी लीलाका दर्शन किया था, यथार्थ ही अपने हृदयकी बात कहते हैं—

गोरा गुणे प्राण काँदे कि बुद्धि करिब।
गौराङ्ग गुणेर निधि कोथा गेले पाव॥
के आर करिबे दया पतित देखिया।
दुर्लभ हरिर नाम के दिबे याचिया॥
अकिञ्चन देखे केवा उठिबे कान्दिया।
गौर बिनु शून्य हइल सकल नदीया॥

यह मर्मान्तिक बातें वासुदेव घोषने प्रभुके अन्तर्धानकी बात सुनकर दुःखके आवेगमें लिखी थीं।

"अकिञ्चन देखे केवा उठिबे कान्दिया।"

यह बात बड़ी ही निगूढ़ है। श्रीभगवान्का पतितपावन नाम उनके इसी कार्यके कारण है। वे दरिद्रके सहायक हैं, दुर्बलके बल हैं। जीवोंके दुःखको वे कभी सहन नहीं कर सकते, त्रितापदग्ध जीवके कातर-क्रन्दनको सुनकर वे कभी स्थिर नहीं रह सकते। कातर-चित्तसे श्रीभगवान्को पुकारनेसे वे दौड़े आते हैं, आर्त्त, दुःखी जीवको दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं। यह श्रीभगवान्का स्वभाव है। यह किये बिना उनसे रहा नहीं जाता। यह किये बिना वे ईश्वरत्वकी रक्षा नहीं कर सकते। परंतु श्रीगौराङ्ग अवतारमें वह अन्यान्य अवतारोंकी अपेक्षा कुछ विशेषत्व दिखलाकर जीवके मनको श्रीभगवान्के चरणोंमें आकृष्ट कर गये हैं। उन्होंने जीवके दुःख-से दुःखित होकर स्वयं गृह-त्याग करके, संन्यासी वेषमें करङ्ग-कौपीन धारण किया है। जीवोंकी दुर्गति देखकर रो-रोकर वे व्याकुल हुए हैं, संसार-तापसे सन्तप्त जीवका दुःख दूर करनेके लिए अपने निजस्व गुप्त धन प्रेमको गोलोकसे लाकर अकातर होकर पात्रापात्रका विचार न कर सबको प्रदान किया है। श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी लिख गये हैं—

चिराददत्तं निजगुप्तवित्तं
स्वप्रेम-नामामृतमत्युदारः।
आपामरं यो वितनार गौरः
कृष्णो जनेभ्यस्तमहं प्रपद्ये॥

चै०च०म० २३.१

पतितपावन, दीनदयाल श्रीगौराङ्ग प्रभुकी इस अपार कृपाका कार्य देखकर कलिके अधम जीवके मनमें आशाका सञ्चार हुआ है। इसीकारण वे नदियाके अवतार श्रीगौरचन्द्रको सङ्कीर्तन यज्ञमें दिन-रात पुकारते हैं। अनाथोंको शरण देनेवाले मेरे प्रभु आज भी उसी प्रकार अपने अनुगत और आश्रित भक्तजनको अपनी शक्ति प्रदानकर कृपाकर रहे हैं, पूर्ववत् इस समय भी भक्त वृन्दके द्वारा जीवोद्धार कार्य सम्पन्न करा रहे हैं; श्रीगौराङ्ग अवतारका यह निगूढ़ तत्त्व जिन्होंने समझा है, वे उनको अवश्य ही सब अवतारोंके अवतारी रूपमें स्वीकार करेंगे।

कलिग्रस्त जीव अति अल्पायु है, रोगी, आलसी, भजनहीन और दुःखी है। शास्त्राध्ययन, जप-तप, ध्यान-योग, याग-यज्ञका अनुष्ठान करके भजनानन्द

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्राप्त करना उनके लिए असंभव है। यह बात श्रीमद्भागवतमें लिखी है। यथा,

प्रायेणाल्पायुषः सभ्य कलावस्मिन् युगे जनाः।
मन्दाः समन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः॥
श्रीम०भ० १.१.१०

इन सब कलिग्रस्त जीवोंके उद्धारका क्या उपाय होगा? इनकी क्या गति होगी? किस प्रकार ये भव-व्याधिसे मुक्त होंगे, इसी चिन्तामें कातर होकर श्रीगौर भगवान इनके उद्धारके लिए नदियाये विप्र-कुलमें अवतीर्ण हुए थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी।

कलिलोक निस्तारिब निज भक्ति प्रचारिब
अवतार करिमु मो तथा।
दान व्रत तपधर्म आर जत-जत कर्म
सब आरोपिया निज नामे।
कलि महादोष देख एक महागुण लेख
मुक्त मोर नाम संकीर्तने॥ (चै०मं०)

इसमें एक विशेष बात है। श्रीगौर भगवानके श्रेष्ठत्वके सम्बन्धमें एक और प्रमाण है। वह है षडैश्वर्य-सम्पन्न श्रीभगवानका दीन-भाव प्रकट करना। सर्वनियन्ता श्रीभगवानका दीन-भाव मधुर से भी मधुर है। जीवके चित्तको आकर्षण करने-वाली ऐसी वस्तु दूसरी नहीं है। कलिग्रस्त जीवकी दुर्गतिको दूर करके उनका केश पकड़कर भवसागर-से उद्धार करना ही श्रीगौराङ्ग अवतारका मुख्य उद्देश्य है। यह बात वे श्रीमुखसे अनेक बार कह गये हैं। इस जीवोद्धार कार्यमें अति उदार दीन भाव प्रकट करनेका भी हेतु है, जिसे वे स्वयं बतला गये हैं। जैसे श्रीचैतन्य-मङ्गलमें प्रभु वाक्य—

भुञ्जिब प्रेमेर सुख भुञ्जाइब लोके।
दीनभावे प्रकट करिब कलियुगे॥

अन्य किसी अवतारमें श्रीभगवानका यह मधुर दीन भाव प्रकट नहीं होता। श्रीगौराङ्ग प्रभु जगद्-गुरु हैं। जगद्गुरु होकर जगतके जीवोंके द्वार-द्वार वे अति दीन-हीन-कङ्गालके वेषमें भिक्षा माँगते हुए घूमते हैं। उनके मधुर दीन भाव पर जगत् मुग्ध है। लोग उनको दैन्यका अवतार कहते हैं। वे नदियाके अवतार, दयाके अवतार, प्रेमके अवतार और दैन्यके अवतार कहलाते हैं। इसी कारण महाजनगण उनके अवतारको सर्वावतारसार कह गये हैं, कलिके जीवों-का हृदय पाषाणसे भी कठोर होता है, उनका कलु-षित चित्त सर्वदा पाप चिन्तासे पूर्ण तथा मग्न होता है। श्रीगौराङ्ग प्रभुका कङ्गाल वेष देखकर कलिके जीवोंका पाषाण हृदय भी द्रवित हो गया था। हृदय द्रवित होकर जब तक सरस नहीं होता, तब तक भगवद्भक्ति रसमें आप्लुत नहीं हो सकता। हृदय-को द्रवित करानेके लिए उपयुक्त औषधि लेकर ही हमारे प्रभु कलिके जीवोंको भव-व्याधिसे मुक्त करनेके लिए नदियामें अवतीर्ण हुए थे। उनका दीन भाव बड़ा ही माधुर्यमय था। षडैश्वर्यमय पूर्णब्रह्म सनातन श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने पथका भिखारी बन कर जो अपूर्व लीला प्रकट की थी, उससे कलिग्रस्त जीवोंका कठिन हृदय द्रवित हो गया था। श्रीगौर-भगवान भक्तरूपमें जीवका सङ्ग करते थे, भगवान रुपमें उनके हृदयके भीतर प्रवेश करते थे, तथा जगद्गुरुके रूपमें उनको धर्मोपदेश देते थे। इसी प्रकार जीव-जगत् जब उनकी ईश-शक्तिकी उपलधि करता, तब उनके चरणोंमें आत्म समर्पण किये बिना नहीं रहता। जगद्विख्यात पण्डित-शिरोमणि वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्य और सर्वशास्त्र-विशारद वेदान्तनिष्ठ संन्यासी-सम्प्रदायके गुरु श्री पाद प्रकाशानन्द सरस्वती महाराजको उन गौर भगवानने इसी दीन भावसे अपना बना लिया था। दीन भाव सर्वोत्तम भाव है, और यह माधुर्यमयका परिपोषक है। श्रीगौराङ्ग प्रभु माधुर्यके अवतार थे, और उनका यह दीन भाव ही उनके अवतार-तत्त्वके निगूढ़ रहस्यका बोधक है। ऐश्वर्यमय श्रीभगवानमें दीन भाव बिल्कुल ही नहीं होता, माधुर्यमय श्री-भगवानमें यही भाव सर्वोत्तम है। हमारे श्रीगौराङ्ग प्रभु इस सर्वोत्तम भावको लेकर ही नवद्वीपमें अवतीर्ण हुए थे। उनके सारे कर्मोमें, सारी बातोंमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह मधुर भाव मानो मिश्रित रहता है। दृष्टान्तके द्वारा इसको समझानेके लिए यहाँ स्थान नहीं है। इस ग्रन्थमें यथा स्थान प्रभुकी दैन्य-लीला वर्णित होगी।

श्रीराधिका श्रीकृष्णकी कान्ता-शिरोमणि हैं, साक्षात् भक्ति स्वरूपिणी हैं। राधा-भाव या भक्त-प्रेम क्या वस्तु है, उसमें कैसी उन्मादिनी शक्ति है—यह राधाभाव या भक्तभाव और उसकी प्रकृति-को प्राप्त हुए बिना समझमें नहीं आ सकता। श्रीभगवान राधाभाव कान्तिको लेकर श्रीगौराङ्ग सुन्दरके रूपमें राधा-प्रेम-रस-लोलुप प्रमत्त मधुकरके समान भूमण्डलमें अवतीर्ण होकर स्वयं आचरण करके कलिके जीवोंको प्रेम भक्तिकी शिक्षा दे गये हैं। यह प्रेमभक्ति ही कलि-ग्रस्त जीवके लिए साध्य साधन वस्तु है। भक्त और भगवानके बीच जो प्रीति सम्बन्ध होता है, जो प्रेम बन्धन होता है, जो मधुर प्रेमाह्वान होता है, उसीका अन्यतम नाम है प्रेमभक्ति।

भक्त श्रीभगवानको किस प्रकार प्राणपनसे मानता है, किस प्रकार प्रीति-चक्षुसे उनकी अपूर्व रूप माधुरी-राशिका दर्शन करता है, वह किस प्रकार उनकी अनन्तगुण-राशिको सुनते-सुनते विह्वल हो उठता है, क्षणमात्र भी उनके सङ्गकी प्राप्तिके लिए प्रकृत भगवद्भक्तका हृदय किस प्रकार लालायित रहता है, श्रीभगवान यही देखनेके लिए भक्तरूप धारण करके नदियामें अवतीर्ण हुए थे।

भक्तकी महिमाका प्रचार करनेके लिए हमारे प्रभु सदासे ही मुक्तकण्ठ हैं। उसी भक्त महिमाका मर्म समझनेके लिए, भक्तके भजनानन्दका अनुभव और आस्वादन करनेके लिए उनका भक्तरूपमें नदियामें आविर्भाव हुआ। श्रीभगवानको प्राणपनसे सरल हृदयसे पुकारनेपर भक्तके मनमें जो एक अभूतपूर्व आनन्द-रसका सञ्चार होता है, भगवत्प्रेम-से जो भक्त हृदय उन्मत्तहो उठता है, इसको भक्त-के बिना और कोई नहीं समझ सकता, श्रीभगवान भी इसको नहीं समझ पाते, उस सुख और उस आनन्दके लिए श्रीभगवानके मनमें भी लोभ होता है। यह बात वे स्वयं कह गये हैं; और उसी सुखास्वादन तथा आनन्दके उपभोगके लिए श्रीगौराङ्गका अवतार हुआ, यह बात गोस्वामी शास्त्र-सम्मत है।

श्रीराधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा
स्वाद्यो येनाद्भुत-मधुरिमा कीदृशो वा मदीयः।
सौख्यं चास्याः मदनुभवतः कीदृशं वेति लोभात्
तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भ सिन्धौ हरीन्दुः॥

चै०च०आ० १.६

अर्थ—श्रीराधाके प्रेमको महिमा कैसी है? मत्सम्बन्धी प्रणयके द्वारा श्रीराधिका जो मेरी अद्भुत मधुरिमाका आस्वादन करती हैं, वह मेरा माधुर्य कैसा है? एवं मेरा अनुभव करते हुए श्रीराधिकाको जो सुखातिशय प्राप्त होता है, वह सुख कैसा है?—इन तीन विषयोंके अनुभवके लोभके कारण श्रीराधाका भाव अङ्गीकार करके श्रीशचीके गर्भ-समुद्रसे हरि (श्रीगौराङ्ग) रूप चन्द्रमा प्रकट हुए।

यह राधाभाव या भक्तभाव एक ही वस्तु है। राधाभावमें विह्वल होकर प्रभुने कहा था—

पूर्णानन्दमय आमि चिन्मय पूर्णतत्त्व।
राधिकार प्रेमे आमा कराय उन्मत्त॥
ना जानि राधार प्रेमे आछे कत बल।
जे बले आमारे करे सर्वदा विह्वल॥
राधिकार प्रेम—गुरु, आमि—शिष्य नट।
सदा आमा नाना नृत्ये नाचाय उद्भट॥
निजप्रेमास्वादे मोर हय जे आह्लाद।
ताहा हते कोटिगुण राधाप्रेमास्वाद॥

चै०च०आ० ४.१०६–१०९

इसी कारण भक्तभाव अङ्गीकार कर प्रभुने नदियामें अवतार ग्रहण किया, इसी कारण श्रीगौराङ्ग रूपमें शचीके गर्भसे उनका आविभवि हुआ। प्रभुके भक्तिभाव अङ्गीकार करनेमें एक और निगूढ़ उद्देश्य था। यह भी उनकी स्वमुख निःसृत वाणीसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकट होता है। श्रीचैतन्य चरितामृतमें लिखा है—

आपनि करिब भक्तभाव अङ्गीकारे।
आपनि आचरि भक्ति शिखाइनु सभारे॥
आपनि ना कैले धर्म्म शिखान ना जाय।
एइत सिद्धान्त गीता-भागवते गाय॥
चै०च०आ० ३.१८.१९

अंशावतारसे युगधर्म प्रवर्त्तनका कार्य सम्पन्न होता है। परन्तु प्रेम-दानका कार्य स्वयं श्रीभगवान्‌के सिवा अन्य किसीसे सम्पन्न नहीं हो सकता। श्रीगौराङ्ग अवतारमें गोलोककी सम्पत्ति—व्रजप्रेम दान करनेका कार्य अत्यन्त आश्चर्य-रूपमें सम्पन्न हुआ था। यह जो श्रीभगवानका निजस्व गुप्तधन है, चिर-अदत्त वित्त है, गोलोककी सम्पत्ति अमूल्य प्रेमधन है, वह केवल कलि-अवतार श्रीगौरभगवान अपने नित्य पार्षद भक्तोंकी सहायतासे कलिग्रस्त जीवको अकातर भावसे दान करनेके लिए नदियामें अवतीर्ण हुए थे। यह प्रभुवाक्य श्रीचैतन्य चरितामृतमें इस प्रकार लिखा है—

युगधर्म्म प्रवर्त्तन ना हय अंश हैते।
आमा बिना अन्ये नारे व्रजप्रेम दिते॥
ताहाते आपन भक्तगण करि सङ्गे।
पृथिवीते अवतरि नाना रङ्गे॥
चै०च०आ० ३.२०,२१

नित्यसिद्ध ऋषि महाजन यही कह गये हैं—

एइ भावि कलिकाले प्रथम सन्ध्याय।
अवतीर्ण हैला कृष्ण आपनि नदीयाय॥

श्रीगौराङ्ग अवतारका यह नूतनत्व, यह श्रेष्ठत्व यह महत्त्व सर्ववादि-सम्मत है। अन्यान्य अवतारों-में श्रीभगवानने मुखसे भक्त महिमाका कीर्तन किया है, श्रीगौराङ्ग अवतारमें उन्होंने इसका स्वयं आचरण कर कार्यमें इसे दिखला दिया है। इस अवतारमें भक्त और भगवानका जिस प्रकार अवाध और असंकुचित मिलन हुआ है, तथा निर्भय प्रीति सम्मिलन हुआ है, भक्तके मनके भावको समझकर भाव ग्राही श्रीभगवानने जिस प्रकार भक्तकी मनो-कामना पूर्ण की है, श्रीभगवानके मनके भावके अनुसार कार्य करके भक्त बृन्दने जिस प्रकार निर्वेद परमानन्द प्राप्त किया है, अन्यान्य अवतारोंमें उस प्रकारके भावोंका समावेश देखनेमें नहीं आता। इसी कारण श्रीगौराङ्ग-अवतारका श्रेष्ठत्व स्वीकार करना पड़ता है।

ऐसे दयाके अवतार, ऐसे करुणाके अवतार कभी हुए नहीं और न होंगे। ठाकुर नरोत्तमदासने इसी कारण लिखा है—

एमन दयाल ठाकुर हय नाइ हबे नाइ।
कि साधने ताँहार चरणे स्थान पाइ॥

ऐसे दयालु प्रभुका, ऐसे कृपासे अवतारका श्रेष्ठत्व प्रमाणित करनेके लिए शास्त्रीय प्रमाणकी आवश्यकता नहीं है, विशेष विचार-तर्ककी आवश्यकता नहीं है। साधारण बुद्धिका आदमी भी इसे समझ सकता है। साधक भक्त कवि ज्ञानदास लिख गये हैं—

कि कहव शत-शत तुमा अवतार।
एकेला गौराङ्ग चाँद जीवन आमार॥

श्रीभगवानके अवतार-तत्त्वको लेकर जो तर्क और विवाद करते हैं, तथा इस विषयको लेकर व्यर्थ समय गँवाते हैं, कलिके जीवके स्वभावतः सन्दिग्ध मनको वे और अधिक सन्दिग्ध बनाकर उसे भजन,साधनके लिए अनुपयोगी कर डालते हैं, उनके प्रति अधम अकृती ग्रन्थकारका करवद्ध विनीत निवेदन है कि वे कलियुगावतार, सर्व अवतार-सार श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दरका पवित्र नाम लेकर, 'हा गौराङ्ग' उच्चारण करते हुए एकान्तमें बैठकर मन-क्रम-बचनसे निष्कपट होकर एक बार उनको पुकारें। सर्व अवतारके अवतारी, कारुण्य रस-कल्पतरु श्री-श्रीमहाप्रभुका एकबार गुणगान करके देखें, मनमें कैसी शान्ति मिलती है, प्राण किस प्रकार शीतल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हो जाते हैं। इसी हेतु महाजन कविने गाया है—

"गाओ रे गौराङ्ग-गुण गाओ।
गेये देख केमन जुड़ाओ॥"

अवतार-तत्वको लेकर व्यर्थकी माथा-पच्ची करनेसे कुछ लाभ न होगा। अवतारके गुणोंका विचार कीजिये, मधुर-लीलाका अनुशीलन कीजिये, दुःखी-तापी जीवोंके प्रति उनकी अद्भुत कृपाका चिन्तन कीजिये, उनके नित्य पार्षद भक्तवृन्दकी पुण्य चरित-कथाका पाठ कीजिये तो श्रीगौरांग अवतार-का महत्व और श्रेष्ठत्व स्वतः हृदयये परिस्फुटित होगा। श्रीगौरांग अवतारमें श्रीभगवानके पार्षद भक्तवृन्द एक-एक अवतार स्वरूप हैं। जगतके इतिहासमें अनुसन्धान करके देखिये, ऐसे उज्ज्वल चरितके महापुरुष, ऐसे स्वार्थ-त्यागी निष्कपट भगवद्भक्त, ऐसे विनय और दीनताके अवतार कहीं नहीं मिलेंगे। प्रभुके पास इनकी वर-प्रार्थनाकी कहानी संसारके इतिहासमें अभिनव और अतुलनीय है। पुत्रं देहि, धनं देहि, ऐश्वर्यं देहि—इत्यादि 'देहि देहि' शब्द इनके मुँहसे कभी सुननेको न मिलेंगे। मोक्ष-मुक्ति त्रिवर्ग-फलको ये तुच्छ समझते है। प्रभुने जब ऐश्वर्यभावमें विभावित होकर महाप्रकाशके समय अपने भक्तगणको वर प्राथंना करनेके लिए कहा, उस समय उनको अपने भक्तोंसे क्या उत्तर मिला—इस पर स्थिर चित्तसे विचार करके देखें। वासुदेव दत्तने समस्त जगत्के जीवोंके पाप-भारको लेकर अनन्त नरकमें वास करनेकी वर प्रार्थना की थी। बेंतकी मारसे जर्जरित तथा यवनोंके द्वारा लाञ्छित और उत्पोड़ित हरिदास ठाकुरने उत्पीड़नकारी लोगोंके उद्धारके लिए श्रीभगवान्से कातर कण्ठसे प्रार्थना की थी। श्रीअद्वैत प्रभुने वर माँगा था, कि स्त्री-शूद्रको कृष्णभजनमें अधिकारी बनाकर उनका उद्धार करो। सारी बातें यथास्थान विस्तारपूर्वक लिखी जाँयगी। अवतारका श्रेष्ठत्व समझनेके समय सबसे पहले उनकी कृपाके विषयमें विचार करना होगा। श्रीश्रीमन्महाप्रभुके समान दयालु अवतार और पतितका बन्धु क्या कहीं किसीने देखा है? ऐसे पतित-पावन, दीन-तारण कङ्गालोंके नाथ कहाँ मिलेंगे?" कलिके जीवका सौभाग्य है, कि श्रीभगवान श्रीगौराङ्ग रूपमें नदियामें अवतीर्ण हुए। बड़ी सुकृतिके बलसे श्रीगौराङ्गमें रति-मति होती है। कोटि-कोटि जीवोंमें कहीं एक जन गौरभक्त दीख पड़ते हैं। श्रीगौराङ्ग प्रभु जैसे सर्वश्रेष्ठ अवतार हैं, गौर-भक्त वैष्णवगण भी उसी प्रकार सर्वश्रेष्ठ साधक भक्त हैं। उनका सङ्ग होते ही यह बात समझमें आ जाती है। बड़े भाग्यसे गौर-भक्तका सङ्ग प्राप्त होता है।

श्रीगौराङ्ग अवतार जैसे सर्वोत्तम है, उनकी लीला भी तद्रूप ही है। श्रीभगवान्की नरलीला सर्वोत्तम है। नरलीलामें श्रीगौराङ्ग लीलाका कुछ विशेषत्व है। श्रीगौराङ्ग-लीला दो भागोंमें विभक्त है—नवद्वीप-लीला और नीलाचल-लीला। प्रभुकी नवद्वीप-लीला माधुर्य-रसमयी लीला है उनकी नीलाचल-लीला ऐश्वर्यमयी लीला है। नर-लीलामें श्रीभगवान् गृहस्थ वनकर माता-पिता, आत्मीय स्वजन, स्त्री-परिवार, भाई-बन्धुके साथ प्रीति-बन्धनमें आवद्ध होते हैं, उनके सुख-दुःखके भागी बनकर, तथा उनको अपने सुख-दुःखका भागी बनाकर प्रेम-सम्बन्ध स्थापन करते हैं। नवद्वीप-लीलामें श्रीगौर भगवान हमारे समान गृहस्थ हैं, हमारे समान संसारी हैं, नदियावासीके निज-जन, तथा परम उपकारी बन्धु हैं। सारी नदियाके लोग उनके रूप और गुणसे आकृष्ट हैं, समस्त नर-नारी उनके दर्शनके भिखारी हैं। वे जिसके साथ कुछ बात कर लेते हैं, जिसके ऊपर एक बार कृपा-कटाक्ष कर देते हैं वह फिर जीवनमें उनको भूल नहीं सकता। श्रीभगवान्की नरलीलामें आकर्षण शक्ति अति प्रबल हैं। स्थावर-जङ्गम, पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग तक श्रीगौराङ्ग प्रभुका दर्शन कर पुलकित हो उठते हैं उनकी वनके मार्गसे श्रीबृन्दावनकी यात्राके समय सिंह-व्याघ्र आदि हिंस्रजन्तु, गो-मृग आदि पशुवृन्द, वृक्ष-लता आदि उद्भिज काष्ठ-पाषाण आदि स्थावर—सभी उनकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपरूप श्रीमूर्तिका दर्शनकर, उनके श्रीमुखसे मधुमय कृष्णनाम श्रवण कर, उनके श्रीअङ्गके स्पर्शसे पुलकित हो, उनके सङ्ग ही, उनके साथ आनन्दसे नृत्य करने लगते हैं।

श्रीभगवान्‌की नरलीलाके माधुर्यके रसास्वादन-का सभी सांसारिक प्राणियोंको सौभाग्य प्राप्त होता है। इसी कारण यह सर्वोत्तम है। श्रीगौराङ्ग लीला अनुशीलन करनेसे समझमें आ जाता है कि नदियाके अवतार श्रीश्रीमन्महाप्रभुने नरबपु धारण कर जो मधुर लीलाएँ कीं, उनमें नवद्वीप लीला अनुपम, माधुर्यमय और अत्यन्त चित्ताकर्षक है। क्योंकि वह प्रकृत नरलीला है। हम जो कुछ करते हैं, वह सर्व भूतोंके अधिपति श्रीगौर भगवान् कर गये हैं, इसका स्मरण करते ही मन आनन्दसे भर जाता है, सारे अङ्ग पुलकित हो उठते हैं। श्रीभगवान् मनुष्यके रूपमें भूतलमें अवतीर्ण होकर मनुष्यके समान ही सांसारिक कार्य कर गये हैं-यह मनुष्यके लिए कम सौभाग्यकी बात नहीं है, मानव जातिके कम गोरवकी बात नहीं है।

श्रीभगवानकी नरलीला श्रीगौराङ्ग प्रभुकी नवद्वीप-लीलामें पूर्ण विकसित हुई थी। पूर्व लीलाओंमें जो कमी रह गयी थी, श्रीगौराङ्ग-लीलामें वह पूर्ण हो गयी। इसी कारण श्रीगौराङ्ग प्रभुकी नवद्वीप लीला श्रीभगवान्‌की सर्वोत्तम नर-लीला है। श्रीगौराङ्ग-चरित अति अद्‌भुत है। उनकी मधुर-लीला अतिशय गम्भीर है। इसको समझनेके लिए, लीला-समुद्रमें प्रवेश करनेके लिए प्रभुका कृपाकटाक्ष आपेक्षित है, गौरभक्तवृन्दके अनुग्रहकी आवश्यकता है।

लीला-रहस्यको कोई समझे या न समझे, केवल लीला मात्रके श्रवणसे मनुष्यका पूर्ण कल्याण होगा, श्रीभगवान्‌में प्रीति उत्पन्न होगी। श्रीगौराङ्ग-प्रभुकी परम पवित्र अद्‌भुत चरित-कथाके श्रवण और अनुशीलनका यही फल है, यही स्वधर्म है। जैसा चैतन्य चरितामृतमें लिखा है—

जेवा नाहि बूझे केहो, शुनिते शुनिते सेहो,
कि अद्‌भुत चैतन्य-चरित।
कृष्णे उपजिवे प्रीति, जानिबे रसेर रीति,
शुनिलेइ बड़ हय हित॥

चै. च. आ. २. ७६

यह आश्वासन वाणी प्रभुके नित्यदास श्रीचैयन्य-चरितामृतकार श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीके श्रीमुखसे निःसृत है। इसी विश्वासके वशवर्ती होकर उन्होंने वृद्धावस्थामें श्रीचैतन्य चरितामृत श्रीग्रन्थकी रचना की थी। श्रीगौराङ्ग-लीला-कथाका प्रचार होने पर उसका श्रवण करनेसे कलिके जीवोंका उद्धार होगा, जगतका हित होगा, इसी आशासे कलेजा बाँधकर अति जरठ कविराज गोस्वामीने वृद्धावस्थाके शुभक्षणमें लेखनी उठायी थी। यह बात उन्होंने ही लिखी है—

आमि बृद्ध जरातुर लिखिते काँपये कर,
मने किछु स्मरण ना हय।
ना देखिये नयने ना शुनिये श्रवणे
तबू लिखि, ए बड़ विस्मय॥

चै. च. भ. २.७९

इस जीवाधम ग्रन्थकारने श्रीकविराज गोस्वामी के चरण-चिन्हका अनुसरण करके इस सुवृहत् कार्यमें हाथ डाला है। प्रभुकी नवद्वीप-लीलाका वर्णन समाप्त करके उनकी नीलाचल-लीलाका वर्णन प्रारम्भ करनेमें बहुत समय लगेगा। जिस प्रकार विस्तृत रूपमें प्रभुकी नवद्वीप-लीला लिखी जा रही है, इससे आशा नहीं बनती कि मैं इसे समाप्त कर पाऊँगा। पचास बर्षकी अवस्थामें ऐसा सुवृहद् लीला-ग्रन्थ आरम्भ करके समाप्त करना संभव नहीं जान पड़ता। परन्तु दयामय प्रभुकी कृपा होने पर असंभव भी संभव हो जाता है। पूज्यपाद कविराज गोस्वामीके सुरमे सुर मिलाकर मैं भी कहता हूँ—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थाके यदि आयुः शेष, विस्तारिब लीला शेष,
यदि महाप्रभुर कृपा हय।"

चै. च. म. २.७८

श्रीगौराङ्ग-लीलाका वर्णन करूँगा-यह अत्यन्त ही दुःसाहसकी बात है। परन्तु लीला-रस-पान करनेकी जिसको जैसी तृष्णा होती है, वह उसी परिमाणमें श्रीगौराङ्ग-लीला-रसामृत पान करके परितृप्त होता है। जीवाधम ग्रन्थकार क्षुद्रसे भी क्षुद्र, कीटसे भी हीन है। तदनुरूप उसकी लीलारस-तृष्णा भी स्वल्प ही है। तृष्णानुरूप लीलारस पान कर आनन्दसे प्राण परिपूर्ण हो गये हैं। यही आनन्द हृदयमें उद्वेलित होकर अब इस ग्रन्थरूपमें परिणत हो रहा है। उत्तम वस्तु स्वयं खाकर जो आनन्द प्राप्त होता है, दूसरोंको बाँटकर खानेमें तदपेक्षा अधिक आनन्द होता है। श्रीगौराङ्ग-लीलाके गुणगानमें, तथा नवद्वीप-लीला-मधु-पानमें मैंने जो अपार आनन्द प्राप्त किया है, तथा कर रहा हूँ, कृपालु पाठकवृन्द तदपेक्षा अधिक आनन्द प्राप्त करेंगे, इसमें सन्देह नहीं। क्योंकि उनमें अधिक शक्ति, अधिक सुकृति है। वे श्रीगौराङ्गकी नवद्वीप-लीला पढ़ेंगे, प्रभुकी नदिया-विलास-लीला श्रवण करेंगे, इससे बढ़कर सुकृति और क्या हो सकती है? श्रीगौराङ्ग-लीला कथाका जो पाठ या श्रवण करते हैं, उनको लक्ष्य कर श्रीकविराज गोस्वामीने लिखा है—

"जा सभार चरण-कृपा शुभेर कारण।"

चै. च. अं. २० १४१

मैं उनके चरणोंकी वन्दना करता हूँ, जिनकी कृपासे मेरा सारा अभीष्ट पूर्ण होगा। यह मेरा अटल विश्वास है। श्रीकविराज गोस्वामीने एक और बड़ी ही मधुर बात लिखी है—

चैतन्य चरितामृत जेइ जन शुने।
ताँहार चरण धुञा करों मुञि पाने॥"

चै. च. अं. २०.१४२

कैसी निष्कपट गौर-भक्ति है! कैसी अपूर्व प्रेमपूर्ण सरल दैन्योक्ति है! श्रीकविराज गोस्वामीके सरल हृदयके सरल भावसे विमुग्ध होकर भक्ति-जगत उनके रचित श्रीचैतन्य-चरितामृत श्रीग्रन्थरूपी श्रीगौर भगवानको जगदुरुके रूपमें पूज रहा है।

इस सयत्न-ग्रथित श्रीश्रीमहाप्रभुके नवद्वीप लीला-ग्रन्थके कृपालु पाठकोंकी चरणधूलिसे अपने मस्तकको विभूषित कर उनके प्रत्येकके सम्मुख हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ कि वे कृपा कर श्रीगौरांग लीला-रसामृत पान कर हृदयको परितृप्त करें, तभी इस जीवाधम अकृती ग्रन्थकारका सारा परिश्रम और अर्थ-व्यय सफल होगा। मेरी लेखनीमें लालित्य न हो, भाषामें माधुर्य न हो, परन्तु इसमें गौरकथा है। श्रीगौराङ्गके सम्पर्कसे यह ग्रन्थ कृपालु पाठक-वृन्दके द्वारा आदरणीय होगा, हृदय ठोककर यह आशा मैं कर सकता हूँ। पूज्यपाद श्रीरूप गोस्वामी-ने अपने विदग्ध-माधव नाटक श्रीग्रन्थमें यही बात लिखी है। मैंने केवल उसकी पुनरुक्तिकी है।

ममास्मिन् सन्दर्भे यदपि कविता नातिललिता
मुदं धास्यन्त्यस्यांतदपि हरिगन्धाद्बुधगणाः।
अपः शालग्रामस्नयन – गरिमोद्गार– सरसाः
सुधीः को वा कौपीरपि नमितमूर्द्धा न पिबति॥१.६

अर्थ—कूपका जल भी नारायणको स्नान कराने पर लोग जैसे नतमस्तक होकर सिर पर धारण करते हैं, उसी प्रकार कूपोदक तुल्य मेरी हीन कवितामें कोई भी लालित्य गुण नहीं है, यह सत्य है; तथापि श्रीगौर भगवानके सम्पर्कसे इसका आस्वादन करके गौरभक्त सुधीगण अवश्य ही आनन्दका अनुभव करेंगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगौराङ्ग प्रभुका वंश-परिचय तथा पूर्वजोंका पूर्वनिवास वृत्तान्त

एइ त दारुण शेल रहिल सम्प्रति।
पृथिवी ते ना रहिल तोमार सन्तति ॥
—श्रीश्रीविष्णुप्रियादेवीकी उक्ति।

श्रीभगवान्‌का वंश-परिचय प्रदान करनेकी चेष्टा धृष्टता मात्र है। तथापि जब वे नरवपु धारणकर नरलोकमें आविर्भूत हुए थे जब उन्होंने मनुष्यके समान सारे कर्म किये थे, माता-पिता, भाई-बन्धु, पुत्र-कलत्रके सम्बन्ध सूत्रमें आबद्ध होकर, संसार बसाकर गार्हस्थ्य-लीला की थी, तब उनकी नरलीलाकी सारी कथा ही वर्णनीय, स्मरणीय और श्रवणीय हैं। नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभु उच्च ब्राह्मणकुलमें जन्म लेकर अपने अवतारका श्रेष्ठत्व तथा श्रीभगवान्‌की नरलीलाका उत्कर्ष प्रदर्शन कर गये हैं। वर्णश्रेष्ठ विप्रकुलमें श्रीभगवानका यह प्रथम अवतार है। कलि-ग्रस्त जीव श्रीभगवान्‌के विशेष कृपा-पात्र हैं। किस प्रकार उनके कलुषित मन, चित तथा कठोर हृदय भगवद्भावमें विभावित होंगे, किस उपायसे उनका श्रीभगवान्‌के अवतारमें सुदृढ़ विश्वास होगा, इन चिन्ताओंसे कातर हो कलि-पावनावतार श्रीगौर भगवान् सर्वोत्कृष्ट भावसे सब प्रकारके उपायोंके द्वारा कलिग्रस्त जीवोंके मनोरञ्जन के लिए वर्णश्रेष्ठ ब्राह्मणकुलमें, श्रेष्ठधाम नवद्वीपमें, पतित-पावनी गङ्गाके तीर पर सर्वचित्ताकर्षक अपरूप रूपराशि लेकर अवतीर्ण हुए। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रके नन्दन, नदियाके सुन्दर ब्राह्मणकुमार ही वह कलियुग-पावनावतार हैं। अधम कलिके भजन-साधन-हीन जीवके लिए वे एकमात्र उपास्य हैं, एकमात्र गति हैं। श्रीगौर भगवान्‌को सभी प्रकारसे कलिके जीवके मनोनुकूल बनकर आना पड़ा। प्रभुका वंश-परिचय लिखनेके पूर्व ये सब बातें आवश्यक समझकर लिखी गयीं। कहीं कृपालु पाठकवृन्द अधीर न हों, इस आशङ्कासे इनका और बिस्तार नहीं किया जा रहा है।

बङ्ग देशमें वैदिक श्रेणीके ब्राह्मणोंकी संख्या पहले अधिक न थी, अब भी अधिक नहीं है। वैदिक श्रेणीके ब्राह्मण दो भागोंमें विभक्त हैं—दाक्षिणात्य और पाश्चात्य। वात्सगोत्रीय ★सामवेदी पाश्चात्य श्रेणीके वैदिक ब्राह्मण श्रीपाद जित मिश्र ठाकुर नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभु के बृद्ध प्रपितामह थे। कहा जाता है कि जित मिश्र ठाकुरका आदिम निवास श्रीवाराणसी क्षेत्रके पश्चिम कर्णावती नामक ग्राममें था। १००१ शकाब्दमें श्यामल वर्मा नामक एक चन्द्रवंशी राजाने दक्षिणात्यसे आकर पूर्व-बङ्गमें कुछ दिन राज्य किया। विजय सेनने

★ महात्मा शिशिरकुमार घोषने अपने 'अमिइनिमाह-चरित' के प्रथम खण्डकी उपक्रमणिकामें श्रीमन्महाप्रभुके वंशजोका गोत्र 'भरद्वाज' बताया हैं; किन्तु वहीं पर पाद टिप्पणीमें यह भी उल्लेख किया है कि 'अमृत बाजार पत्रिका' कार्यालयसे प्रकाशित 'मुरारि गुप्तके कड़चा' में 'वात्स्य' गोत्र बताया गया है।

वात्स्य' गोत्रका उल्लेख और ग्रन्थोंमें भी मिलता है, यथा 'श्रीप्रेमविलास' ग्रन्थमें—

वात्स्य मुनि वंश्य वैदिक विशुद्ध मिश्र नाम।
ताँर पुत्र मधु मिश्र श्रीहट्ट कैल धाम।"

'श्रीचैतन्यविलास' ग्रन्थमें—

श्रीमधुकर मिश्र नाम विप्रवर।
पाश्चात्य वैदिक श्रेणी गुनेर आकर ॥
सामवेद वात्स्य गोत्र पञ्चम प्रवर।
सत्यवादी जितेन्द्रिय स्वधर्म तत्पर ॥

'श्रीचैतन्य रत्नावली' ग्रन्थ में—

श्रीशच्यागर्भसम्भूतं दयार्द्रं करुणामयम्।
वत्स गोत्रावतंसं श्रीगौरचन्द्रं भजे ॥

जो हो, श्रीभगवान्‌के गोत्रके विषयमें विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है। सभी गोत्र उन्हींसे उद्‌भूत है और सर्वव्यापी होनेसे सभी गोत्रोंमें वे विद्यमान् है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

राजा श्यामल वर्मा तथा तद्वंशीय राजाओंके राज्य पर अधिकार कर लिया। राजा श्यामल वर्माने बहुत थोड़े दिन पूर्वबङ्गमें राज्य किया था। इसीं कारण उनका और उनके राजत्वका विवरण साधारण लोगोंको अविज्ञात है।

राजा श्यामल वर्माने काशीपति महाराज जयचन्द्रकी कन्यासे व्याह किया। इस कन्याका नाम सुशीला था। यशोधरा नामक एक धर्म-निष्ठ ब्राह्मणको राजा श्यामल वर्मा कर्णावतीसे पूर्वबङ्ग लाये, और उन्हें वृत्तिमें बहुत भूमि दान कर बङ्ग देशमें वास करनेके लिए उनसे अनुरोध किया। यशोधर वैदिक श्रेणीके ब्राह्मण थे। उन्होंने बङ्ग देशमें अकेले आत्मीय-स्वजन-विहीन होकर निवास करनेमें असम्मति प्रकाश की, तब राजा श्यामल वर्माके आदेशेसे कर्णावतीसे चार और ब्राह्मण पूर्वबङ्गमें बुलाये गये। उन्हीं चार ब्राह्मणोंमें नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके वृद्धप्रपितामह श्रीपाद जित मिश्र ठाकुर भी थे। वे कर्णावतीसे तीन पुत्रोंके साथ बङ्गदेश आये। उनके दो पुत्रोंका वंश नहीं चला, इस कारण उनका नामोल्लेख नहीं किया जाता। तृतीय पुत्र श्रीपाद मधुकर मिश्र ठाकुरके चार पुत्र थे।

मधुमिश्रेर चारि पुत्र पण्डित प्रधान।
उपेन्द्र, रङ्गद, कार्तिक, कीर्तिवास नाम॥
—प्रेमविलास

श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुर नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके पितामह थे। श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुरके सात पुत्र थे। उनके नाम क्रमशः—

कंसारि, परमानन्द आर जगन्नाथ।
पद्मनाभ, सर्वेश्वर, जनार्दन, त्रैलोक्यनाथ॥
—प्रेमविलास

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र ठाकुर श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके पिता थे। श्री उपेन्द्र नाथ ठाकुरकी पत्नीका नाम था कलावती या कमलावती। उनका एक नाम शोभादेवी भी था। वे परम सुन्दरी रमणी थीं। इसी कारण उनके माता-पिता शैशवसे ही उन्हें शोभावती कहकर पुकारते थे।

राजा श्यामल वर्माने कर्णावतीसे आये श्रीपाद जित मिश्र ठाकुर आदि चारों ब्राह्मणोंको यथेष्ट कर विहीन भूमि और ग्राम दान किये थे। राजा श्यामल वर्मासे फरीदपुरके दक्षिण चन्द्रद्वीप परगना, नवद्वीप कोटालिपाड़ा आदि स्थानों पर उनके पुत्र-पौत्रादिको क्रमसे निवास करने और दखलमें रखनेका अधिकार प्राप्त हुआ था। कोटालिपाड़ा ग्राममें बहुतेरे वैदिक ब्राह्मण वास करते हैं।

श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुर श्रीअद्वैतप्रभुके पिता श्रीपाद कुवेर पण्डितके प्रियबन्धु थे। दोनों जन समवयस्क थे, दोनोंमें विशेष बन्धुत्व और सहृदयता थी। प्रियबन्धुके अनुरोधसे और विशेष आग्रहसे श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुर श्रीहट्टमें उनके घर कभी कभी दीर्घकाल तक वास करते थे, कभी कभी सपरिवार वहाँ जाकर रहते थे। इसी कारण जान पड़ता है कि उन्हें श्रीहट्टवासीके रूपमें सब जानते थे। श्रीपाद कुवेर पण्डित अपने पुत्र श्री अद्वैत प्रभुको लेकर जब शान्तिपुरमें वास करते थे, उसी समय श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुर भी अपने पुत्रोंके साथ नवद्वीपमें आकर गङ्गा सेवन करने लगे। उस समय नवद्वीप समृद्धिशाली एक वृहत नगर था, और विद्याके गौरवकी दृष्टिसे भारतमें प्रसिद्ध था। विद्योपार्जनके लिए सब देशोंसे लोग आकर नवद्वीपमें वास करते थे। श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुर भी अपने पुत्रोंके विद्याध्ययनके लिए नवद्वीपमें आकर बस गये।

यह ऐतिहासिक तथ्य और मन्तव्य श्रीयुत रासबिहारी सांख्यतीर्थ द्वारा लिखित 'गौड़भूमि' पत्रिकामें प्रकाशित एक पुराने लेखसे संग्रह किया गया है। ऐतिहासिक तथ्य प्राचीन ताम्र-शासनसे लिया गया है। अन्यत्र हम ठाकुर जयानन्द-रचित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीचैतन्य-मङ्गल श्रीग्रन्थमें देखते हैं कि श्रीश्रीगौराङ्ग महाप्रभुके पूर्व पुरुषगण श्रीहट्टमें वास करनेके पूर्व उत्कलके याजपुर ग्राममें वास करते थे। अतएव वाराणसी क्षेत्रके निकट कर्णावती ग्राममें श्रीश्रीगौरांग महाप्रभुके पूर्वपुरुषोंके आदिम वास स्थानके सम्बन्धमें मतभेद पाया जाता है। साधक भक्त कवि जयानन्द ठाकुरने लिखा है—

चैतन्य गोसाञि पूर्वपुरुष आछिल याजपुरे।
श्रीहट्टदेशेते पलाइया गेल राजा भ्रमरेर डरे॥
सेइ वंशे परम वैष्णव कमल लोचन ताँर नाम।
पूर्व जन्मेर तपे गोसाञि तार घरे करिल विश्राम॥

जयानन्द ठाकुरके मतसे श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके पूर्वपुरुष उत्कल प्रदेशके याजपुर गाँवमें वास करते थे, राजा भ्रमरके भयसे उस स्थानसे वे श्रीहट्टसे भाग आये थे।

उत्कलके इतिहासमें भ्रमर नामके किसी राजाका उल्लेख स्पष्टरूपमें नहीं मिलता। ठाकुर जयानन्दको यह सूचना कहाँसे मिली? जयानन्द ठाकुर श्रीगौरांग महाप्रभुके साक्षात् कृपापात्र हैं। वे साधक भक्त, और प्राचीन लीला-लेखक हैं। मनमानी कोई बात वह अपने ग्रन्थमें लिखें, यह संभव नहीं है। कटक जिलाके अन्तर्गत गोपीनाथपुरमें उत्कल प्रदेशके राजा कपिलेन्द्र देवका शिलालेख मिला है। उससे जान पड़ता है कि महाराज कपिलेन्द्र देवकी 'भ्रमर' उपाधि थी। जिस समय मुसलमान राजाओंके प्रबल प्रतापसे सारा भारतवर्ष उत्पीड़ित हो रहा था, उसी समय इन्हीं 'भ्रमर' उपाधिधारी महाराज कपिलेन्द्र देवने मालव, गौड़ और दिल्लीश्वरके गर्वको खर्व करके स्वाधीनता और हिन्दू गौरवकी रक्षा की थी। यह बात सुविख्यात विश्वकोष-प्रणेता, प्राच्य विद्या महाकवि श्रीयुत नगेन्द्रनाथ वसु द्वारा सम्पादित जयानन्द ठाकुरके श्रीचैतन्य मङ्गल श्रीग्रन्थके मुखबन्धमें लिखी है।

श्रीगौराङ्ग महाप्रभुका आदि निवास स्थान कर्णावती था या याजपुर?—इस विषयको लेकर विचार और तर्क करना अनावश्यक है। ऐतिहासिक तथ्य पर विचार करना इस ग्रन्थका उद्देश्य नहीं है। प्रभुके लीला-लेखक भक्तवृन्द लीला-रस-सुधा-पानमें मत्त थे। ऐतिहासिक तथ्यको नीरस और निष्प्रयोजन समझकर छूते तक नहीं। महाजनगण श्रीहट्टप्रदेशको ही प्रभुके पूर्वजोंका आदि वास-स्थान निर्दिष्ट कर गये हैं। उन्होंने श्रीहट्टकी शतमुखसे प्रशंसा की है। श्रीहट्ट-निवासी प्रभुके बड़े ही प्रियपात्र थे। श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके प्रधान प्रधान पार्षदगणका आदिम निवास स्थान श्रीहट्ट प्रदेशमें ही था। श्रीहट्टवासी बड़े भाग्यवान हैं। ★ पूर्वबंगमें आज भी गौरभक्तोंकी संख्या अधिक दीख पड़ती है। श्रीहट्ट जिलाके लोगोंमें विशेषरूपसे श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके अनुरागी भक्त मिलेंगे। हम श्रीहट्टसे ही प्रारम्भ करते हैं। जिनको उससे पूर्वके ऐतिहासिक तथ्योंका अनुसन्धान करना हो, वे करें। इस सम्बन्धमें मैं जो कुछ संग्रह हो सका, उसे कृपालु गौरभक्त पाठकोंके सामने उपस्थित किया जा रहा है।

नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुके पितृदेव श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र ठाकुर सर्वशास्त्र-विशारद पण्डित थे। इसी कारण नदियाकी पण्डित मण्डलीने उन्हें 'पुरन्दर' उपाधिसे विभूषित किया था। मिश्र पुरन्दरकी परम सौभाग्यवती पत्नी श्रीशचीदेवीके एक एक कर आठ कन्याएँ उत्पन्न हुई। ये आठो कन्याएँ दैव दुर्विपाकसे परलोक-गत हुई। शचीदेवी-के श्रीगर्भसे श्रीगौर भगवान् उत्पन्न होंगे, यह जानकर हमारे गौर-आना गोसाई श्रीअद्वैत प्रभु मिश्रपत्नीको गर्भवती देख गर्भस्थ शिशुरूपी अपने

★ पूर्व बङ्ग पाकिस्तान बनकर पृथक होजानेसे अत्याचारसे पीड़ित हो प्रायः लोग वहाँसे भागकर भारत आगये हैं और जहाँ तहाँ बस गये हैं।

—प्रकाशक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अभीष्ट देवको उद्देश्य कर गर्भ-वन्दना और प्रणाम करते थे। श्रीअद्वैत प्रभु महाविष्णुके अवतार थे। पूर्ण ब्रह्म सनातनके सिवा उनका प्रणाम और कौन ग्रहण कर सकता था? इसी कारण शची-देवीके एक एक करके आठ गर्भ नष्ट हो गये।

जगन्नाथ मिश्र पत्नी शचीर गर्भगण।
अद्वैतेर प्रणामे क्रमे हइला पतन॥
(अद्वैत प्रकाश।)

श्रीगौराङ्ग महाप्रभु शचीमाताके अन्तिम पुत्र थे। श्रीश्रीमद्विस्वरूप प्रभु उनके ज्येष्ठ भ्राता थे। वे सोलह वर्षकी आयुमें गृहत्याग करके संन्यासी हो गये। उनके संन्यासका नाम था श्रीशङ्करारण्य प्रभु।

प्रभुके नानाका नाम था श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती। वे भी श्रीहट्टवासी थे। वे ज्योतिष शास्त्रके महा पण्डित थे श्रीहट्टदेशमें जब दुर्भिक्ष पड़ता था, तब नाना प्रकारके दुर्दैव वश लोग अत्यन्त पीड़ित होते थे। ऐसे ही समय श्रीपाद-नीलाम्बर चक्रवर्ती श्रीहट्ट देश छोड़कर गङ्गाके किनारे नवद्वीपमें आकर बस गये। कहा जाता है कि श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर ठाकुर भी उन्हींके साथ नवद्वीपमें आकर बस गये।

श्रीहट्टदेशे अनाचार दुर्भिक्ष जन्मिल।
डाका चोरी अनावृष्टि मड़क लागिल॥
उच्छन्न हइल देश अरिष्ट देखिया।
नाना देशे सर्वलोक गेल पलाइञा॥
नीलाम्बर चक्रवर्ती मिश्र जगन्नाथे।
सबान्धवे जयपुर छाड़िल उत्पाते॥
× × × ×
दिव्य दोला चढ़ि मिश्र सबान्धवे आसि।
गङ्गा नवद्वीप देखे प्रेमानन्दे भासि॥
जयानन्द, चैतन्य मङ्गल

श्रीगौरांग प्रभुके पूर्वपुरुष श्रीहट्ट वासी थे—यह उनके पुण्य चरितके लेखकगण लिख गये हैं। परन्तु वे किस ग्रामके वासी थे, यह बात किसीने नहीं लिखी। श्रीजयानन्द ठाकुरने अपने श्रीचैतन्य मंगल श्रीग्रन्थमें स्पष्ट लिखा है—

श्रीहट्ट देशेर मध्ये जयपुर ग्राम।
सर्व्व सुखमय स्थान क्षिति अनुपाम॥
पूर्व्वे सरस्वतो उत्तर दिगेते गोमती।
पश्चिमे ढोल समुद्र दक्षिणे कराति॥
जयपुरे शत शत ब्राह्मणेर घर।
दिव्य मूर्ति महाविद्या महा धनेश्वर॥
रविर महाकुल महावंश प्रसूत।
दिग्विजयी निज दर्शन व्याख्या चतुर्म्मुख॥
हेन वंशे जगन्नाथ मिश्रेर उत्पत्ति।
शची बिभा दिल नीलाम्बर चक्रवर्ती॥
वासुदेव चक्रवर्ती जन्मिला श्रीहट्टे।
शची जगन्नाथ नाम धरिला निकटे॥

इस वर्णनसे पता चलता है कि श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके पूर्वज श्रीहट्ट प्रदेशके अन्तर्गत जयपुर नामक स्थानमें वास करते थे। प्रभुके आत्मीय श्रीहट्ट निवासी श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्र ठाकुरने अपने लिखे हुए श्रीकृष्ण चैतन्योदयावली नामक संस्कृत ग्रन्थमें लिखा है कि, श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके पूर्वपुरुष श्रीपाद मधुकर मिश्र ठाकुर श्रीहट्टमें आकर वरगङ्गा नामक स्थानमें बस गये।

आसीच्छीहट्ट मध्यस्थो मिश्रो मधुकरामिधः।
पाश्चात्यो वैदिकश्चैव तपस्वी विजितेन्द्रियः॥
वारणाप्तैव तेनेह कियद्भूमिः करोत्करा।
वरगङ्गेत्यतोदेशः सजनैः परिगीयते॥
— श्रीकृष्ण चैतन्योदयावली

श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुरने अपने पुत्र श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरको असाधारण प्रतिभावान बालक देखकर नवद्वीपमें विद्याभ्यासके लिए भेजा।

श्रीधाम नवद्वीपमें ही श्रीशचीदेवीके साथ श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरका शुभ विवाह संस्कार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सम्पन्न हुआ। बहुतोंका मत है कि श्रीउपेन्द्र मिश्रका निवास स्थान श्रीहट्ट जिलामें बरगङ्गाके निकट दक्षिण ढाका गाँवमें था। श्रीगौरांग महाप्रभुने अपने पूर्वबगके परिभ्रमणके समय यहाँ आकर अपने पितामह और पितामहीको दर्शन देकर कृतार्थ किया था। जयपुर, बरगङ्गा, ढाका दक्षिण, ये सारे गाँव श्रीहट्ट जिलामें अवस्थित हैं। प्रभुके पूर्वज इन्ही स्थानोंके निवासी थे, इसमें कोई सन्देह नहीं है। श्रीहट्ट जिलाके ढाका दक्षिण ग्राममें प्रभुके द्वारा प्रदत्त श्रीश्रीगौरकृष्ण श्रीविग्रहद्वय अब तक पूजित होते आरहे थे। कहते हैं कि श्रीगौरांग महाप्रभुने अपनी पितामही शोभादेवीको यह श्रीविग्रहद्वय प्रदान किये थे। ऐसा सर्वाङ्ग सुन्दर विग्रह कहीं किसीके देखनेमें नहीं अया।

श्रीहट्ट जिलाके अनेकों ब्राह्मणोंने गङ्गासेवन और विद्याभ्यासके लिए नवद्वीपमें आकर वास किया। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नने श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीकी द्वितीय कन्या सर्वजयादेवीका पाणिग्रहण किया। वे भी श्रीहट्ट निवासी थे। श्रीहट्टवासी ब्राह्मण-गण नदियाके दक्षिण पाड़ामें वास करते थे। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती बिल्व-पुष्करणी ग्राममें वास करते थे।

श्रीहट्ट जिलाके नवग्राम-निवासी श्रीअद्वैतप्रभुके पिता श्रीपादकुवेर पण्डितके साथ प्रभुके पितामह श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुरकी बड़ी मैत्री थी। कहा जाता है कि मित्रवरके अनुरोधसे ऊन्होने ढाका-दक्षिण ग्राममें अपना वास-स्थान निर्माण किया था। इसी ढाका दक्षिण ग्राममें श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके पिता श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरका जन्म हुआ था। श्रीगौराङ्ग महाप्रभु अपनी बाल्यलीलामें श्रीहट्टवालोंको बंगाली कहकर उनकी बातोंका अनुकरण करके हँसी किया करते थे।

"विशेष चालेन प्रभु देखि श्रीहट्टिया।
कदर्थेन सेइमत वचन शुनिया॥"

चै० भा० आ० १०. १६८

प्रभुके पितृव्यके वंशज कौन कहाँ हैं; इसका पता नहीं। इस विषयमें अनुसन्धान करनेसे कुछ कुछ तथ्य संग्रहीत हो सकते हैं। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरके सात भाईयोंमें किसीके भी वंशज नहीं है, यह बात विश्वास योग्य नहीं है। श्रीगौरांग महाप्रभुके वंशजोंके विषयमें अनुसन्धान करनेकी इच्छा करने वाले सुधीजन इस अनुसन्धानमें प्रवृत हो सकते हैं।

पहलेही कहा जाचुका है कि श्रीभगवान्का वंश-परिचय देनेकी चेष्टा करना केवल धृष्टतामात्र है। कृपालु पाठकवृन्द इस अधम ग्रन्थकारकी धृष्टता अपने गुणोंको दृष्टिगत रख क्षमा करें। प्रभुके पूर्वज कर्णावतीके निवासी थे या याजपुरके ?—इस शुष्क मीमांसासे कोई लाभ नहीं। श्रीगौर-भगवान्के लीलाग्रन्थमें उनकी लीलाकथा ही प्रधान रूपसे वर्णनीय है। इस ग्रन्थमें इसी ओर लक्ष्य रक्खा गया है।

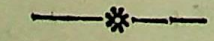

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीनवद्वीपधाम--माहात्म्य

मधुपुरी-प्राय जेन नवद्वीप-पुरी ।
एको जाति लक्ष लक्ष कहिते ना पारि ॥
प्रभुर विहार लागि पूर्व्वेइ विधाता ।
सकल सम्पूर्ण करि थूइयाछे तथा ॥

चै० भा० आ० ८. १४३, १४४

नदियाके अवतार श्रीश्रीगौराङ्ग महाप्रभुकी लीलास्थली श्रीधाम नवद्वीप नित्य चिन्मय धाम है। श्रीश्रीगौर-गोविन्द इसी नित्यधाममें सपार्षद नित्य विहार करते हैं। श्रीअद्वैत-तनय श्रीअच्युतानन्द प्रभुने श्रीधाम नवद्वीपको भक्ति-व्रजके नामसे अभिहित किया है। गोपीव्रज श्रीधाम वृन्दावन है, और भक्तिव्रज श्रीधाम नवद्वीप है। गोपीव्रजका उत्तमाङ्ग भक्तिव्रज है। यथा अच्युतानन्दवाक्य,

यद्यपि श्रीगोपीव्रज नित्यानन्दमय ।
तार उत्तमाङ्ग एइ भक्तिव्रज हय ॥

श्रीधाम नवद्वीपको महाजनगणने गुप्त वृन्दावन नाम भी प्रदान किया है। श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र कलिके प्रच्छन्नावतार हैं, और गुप्त वृन्दावन उनकी लीला स्थली है। श्रीकृष्ण भगवान्‌की गोलोकधामकी लीला गुप्त नहीं, व्यक्त है। श्रीगौर-भगवान्‌की नवद्वीपलीला गुप्त है। श्रीकृष्ण भगवान् श्रीराधाकी कान्ति और भावको लेकर प्रेमधाम नदियामें शचीके गर्भमें अवतीर्ण हुए थे। श्रीराधा-कृष्ण-मिलित-तनु श्रीगौराङ्ग प्रभु सब अवतारोंके अवतारी हैं। श्रीगौराङ्ग अवतार सर्वश्रेष्ठ अवतार है। इस अवतारमें श्रीगौर भगवान्‌ने गोलोंककी अपनी सम्पत्ति प्रेमधनको भूलोकमें लाकर कलिग्रस्त त्रितापदग्ध जीवोंको अकातर भावसे प्रदान किया है। इसी कारण इस अपूर्व सौन्दर्यमय नववृन्दावन नामक नित्यधाम नवद्वीपका माहात्म्य और रस-माधुर्य श्रेष्ठ है। कलिके कलुषित और पतित जीवके लिए सर्वतोभावेन इस परम प्रेमधामका आश्रय लेना श्रेयस्कर है।

श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रका लीला-रहस्य अत्यन्त ही निगूढ़ है। उनके नित्यदास और पार्षद लोगोंमें यह निगूढ़ लीलारहस्य परिज्ञात था। नवद्वीप-लीला श्रीगौर भगवान्‌के ऐश्वर्यकी लीला नहीं है। यह उनकी माधुर्य-लीला है। इसी कारण नवद्वीप-रस इतना मधुर, इतना प्राणस्पर्शी और भावोद्दीपक है। श्रीभगवान्‌के माधुर्य-लीला-रस-संभोगके अधिकारी साधारण जीव नहीं हो सकते, इसलिए प्रभुकी यह मधुर नवद्वीप-लीला रस-तरङ्ग सदा ही उनके अन्तरङ्ग भक्तोंके हृदयमें सीमाबद्ध थी और रहेगी। यही प्रभुकी इच्छा है। इच्छामय प्रभुकी इस इच्छाका कारण गौरभक्तवृन्दको समझानेकी आवश्यकता नहीं श्रीगौर भगवान् सच्चिदानन्द लीला-रसमय विग्रह हैं। नवद्वीप-रस श्रेष्ठ रस है। इस रसके आस्वादन और उपभोग करनेकी शक्ति कोटि-कोटि मनुष्योंमें किसी एकको प्राप्त है या नहीं—इसमें सन्देह है। व्रजरस सम्बन्धमें भी यही बात है। इसी कारण इच्छामय प्रभुकी इच्छासे उनका नवद्वीप–लीलारस-गुप्त-भण्डार नवद्वीपमें ही गुप्तभावसे अवस्थित है। प्रभुके अन्तःपुर-लीला-रसके ज्ञाता श्रीवंशीवदन ठाकुर कहते है—

कर्म्मी ज्ञानी अरसिक जेइ दुराचार ।
तार काछे एइ तत्व ना कर प्रकाश ॥

(वंशी शिक्षा)

ज्ञानमार्गी, कर्ममार्गी, तार्किकोंके लिए नवद्वीपरस सृष्ट नहीं हुआ है। सरल, विश्वासी गौराङ्ग-गतप्राण भक्तगण इस लीला-मधुको पान कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उन्मत्त हो दिन-रात प्रेमानन्दमें डूबे रहते हैं । उस प्रेमानन्दके सामने ब्रह्मानन्द अति तुच्छ है । वे रसज्ञ और रसिक भक्त हैं । तभी इस अपूर्व रसका मर्म उन्होंने समझा है । अरसज्ञ जीव इसका मर्म क्या समझेंगे ? अतएव कविराज गोस्वामीने लिखा है—

अरसज्ञ काक चूषे ज्ञान-निम्बफले ।
रसज्ञ कोकिल खाय प्रेमाम्र-मुकुले ॥
अभागिया ज्ञानी आस्वादये शुष्कज्ञान ।
कृष्णप्रेमामृतपान करे भाग्यवान ॥
चै. च. म. ८. २१२, २१३

नवद्वीप लीला मधुसे भी मधुर है । इसका आदिसे अन्त मधुर रसमय है । प्रभुकी लीलास्थली नवद्वीपधाम सर्व सम्पद्-युक्त, प्रेमानन्द वर्द्धनकारी, ब्रह्मादि देवगण-वन्दित तथा नवधा-भक्ति-भूषणसे भूषित नित्य चिन्मय धाम है ।

श्रीनवद्वीप-आनन्द-वर्द्धनं सर्वसम्पदम् ।
ब्रह्मादि वन्दितं नित्यं नवधाभक्तिभूषितम् ॥
(पद्धति प्रदीप)

नवबृन्दावन नामक नवद्वीपधाम ध्यानगम्य, तथा शिवशक्ति-प्रभृतिके द्वारा सुशोभित है । नौ द्वीपों द्वारा यह दिव्य धाम परिवेष्टित है । ये नौ द्वीप हैं नवधा भक्ति । इसी कारण इस नित्यधामका नाम नवद्वीप है ।

येन स्वयं प्रकटितो हरिभक्तिसिन्धु-
र्यत्र स्वयं विगलितं मधुरामृतेन ॥
श्रवणं कीर्तनं विष्णोरित्यादि भक्तिलक्षणम् ।
नवधा दीप्यते यत्र नवद्वीप इतीर्यते ॥
अथो नवविधानान्तु-भक्तिप्रवहतामपाम् ।
द्वीपवत् शोभते यत्र नवद्वीप इतीङ्गना ॥

नवद्वीप धामके नवधा भक्तिके सारे लक्षण प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते थे ।

इन नवद्वीपोंके नाम क्रमशः अन्तद्वीप, सीमन्तद्वीप, गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप, कोलद्वीप, ऋतुद्वीप, जह्नूद्वीप, मोहद्रुम द्वीप और रुद्रद्वीप है । इन सब स्थानोंके आधुनिक नाम पाद टिप्पणीमें दिये जाते हैं ?* अन्तर्द्वीपका जो अंश गङ्गाके पश्चिम भागमें पड़ता है वही स्थान बृन्दावन परमधाम प्रभुकी लीला-स्थली है ।

---

* (१) अन्तद्वीप—पद्मकी कर्णिका, गङ्गाके पूर्व पारमें हैं । इसके मध्य स्थलमें श्रीमायापुर है जहाँ श्रीपाद जगन्नाथमिश्र पुरन्दरका निवास स्थान है । यही महायोग पीठ है ।

(२) सीमन्तद्वीप—पूर्व ग्राम नष्ट हो गया है । गङ्गाके दक्षिण तटपर सीमली (सीमन्तिनी) देवीकी पूजा होती है । रुकुणपुर ग्राम तक इस द्वीपके अन्तर्गत है । शरडाङ्गा या शबर-डाङ्गा और विश्राम स्थल इनके दक्षिण भाग है

(३) गोद्रुमद्वीप—गादिगाछी—सुवर्ण-विहार, नरसिंह क्षेत्र, हरिहरक्षेत्र, अलकनन्दा तीर पर काशीधाम इसके अन्तर्गत है ।

(४) मध्यद्वीप—माजिदाभालुका, पर्णशिला, हाटडेङ्गा इसके दक्षिण है ।

(५) कोलद्वीप—कुलिया, पाहागड़, समुद्रगड़, आदि इसके अन्तर्गत है ।

(६) ऋतुद्वीप—राहुतपुर, विद्यानगर इसके अन्तर्गत है ।

(७) जह्नुद्वीप—जान्नगर ।

(८) मोहद्रुमद्वीप—माडगाछी, अर्कटीला (सूर्यक्षेत्र-आकडाला), महत्पुर (मातोपुर) पाण्डव निवास इसके अन्तर्गत है ।

(९) रुद्रद्वीप—रुद्रपाड़ा, शङ्करद्वीप, पूर्वस्थली, चूपी, कोक्षशाली, मड़तला इसके अन्तर्गत है ।'

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगौड़मण्डल इक्कीस योजनमें परिवृत पुण्यभूमिके बीचसे पतित पावनी सुरसरि प्रवाहित हो रही हैं। नवद्वीप धामकी सीमा कोई कोई पाँच योजन बतलाते हैं। कोई सोलह कोस बतलाते हैं।

तत्पञ्च योजनं केचित् वदन्ति क्रोशषोडशम्।
मायापुरञ्च तन्मध्ये यत्र श्री भगवद्गृहम्॥
(पद्धतिप्रदीप)

श्रीगौड़ मण्डलका आकार शतदल पद्मके समान हैं। उसके मध्य भागमें नवद्वीप धाम विराजित है। जैसा श्रीनवद्वीप माहात्म्यगें लिखाहै-

ए गौड़ मण्ड़ल एकविंशति योजन।
मध्यभागे गङ्गादेवी बहे अनुक्षण॥
शतदल पद्म सम मण्डल आकार।
मध्यभागे नवद्वीप अति शोभा तार॥
पञ्चक्रोश हय तार केशर आधार।
परिमल पूर्ण पुष्प योजन चत्वार॥
बाहिर पापड़ि तार शतदल हय।
एकाधिक योजन विंशति विस्तारय॥
मण्डल परिधि हय सेइ परिमाण।
योजन सप्तक व्यास शास्त्रेर विधान॥
व्यासार्द्ध प्रमाण सार्द्ध तृतीय योजन।
मध्य बिन्दु हैते तार हइबे गणन॥
मध्य बिन्दु नवद्वीप धाम मध्यस्थल।
योगपीठ हय ताहा चिन्मय विमल॥
चिन्तामणि रूप हय ए गौड़ मण्डल।
चिदानन्दमय धाम चिन्मय सकल॥
जल भूमि वृक्ष आदि सकलि चिन्मय।
सदा विद्यमान तथा कृष्णशक्तित्रय॥
स्वरूपशक्तिर जेइ सन्धिनी प्रभाव।
तार परिणति एइ धामेर स्वभाव॥★

★ तथापि श्री उर्द्धाम्नाय महातन्त्रमें लिखा है—
पद्माकार नवद्वीपं अन्तर्दीपञ्च कर्णिकाम्।
सीमन्तादि स्थलाँस्तत्र दलानष्ट स्वरूपकान्॥
कर्णिका मध्यभागेषु पीठं रत्नमयं परम्।
पञ्चतत्वान्वितं तत्र गौरं पुरटसुन्दरम्॥

श्रीमायापुर महायोग पीठ है। जितने भगवद्धाम हैं, सबमें मोक्षदायिका शक्ति है। पद्मपुराणमें श्रीगौराङ्ग लीलास्थली नित्यधाम श्रीमायापुरका नामोल्लेख देखनेमें आता है। यथा,

अयोध्या मथुरा 'माया' काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

श्रीगौर भगवान्के साक्षात् कृपापात्र श्री कवि कर्णपूर गोस्वामीने श्रीगौरगणोद्देशदीपिका श्रीग्रन्थमें नवद्वीपधामकी नित्यताके सम्बन्धमें निम्नलिखित श्लोक लिखे हैं—

रसज्ञाः श्रीवृन्दावनमिति यमाहुर्बहुविदो
यमेतं गोलोकं कतिपयजनाः प्राहुरपरे।
सितद्वीपं प्राहुः परमपि परव्योम जगदु—
र्नवद्वीपः सोऽयं जयति परमाश्चर्यमहिमा॥

तस्मिन् वासमुरीचकार नृहरिर्विश्वम्भराख्यां दधत्
तच्चेष्टावशतः समस्तमहतां वासोऽपि तत्राभवत्।
तैः साकं महती हरेरनुगुणाकारापि लीलाभवद्
यत्रासीज्जगतां मनोऽपि परमानन्दाय मग्नं यतः॥
गौ. ग, दी. १८, १९

अर्थात् अपने अपने भावके अनुरूप अनुभवके अनुसार, जिस परम पुण्यधामको कोई गोलोक कहता है, कोई सितद्वीप कहता है, कोई परव्योम कहता है। तथापि रसज्ञ भक्तवृन्द जिस पुण्यधामको नववृन्दावन कहकर पुकारते हैं, उस परमानन्दमयी श्रीगौराङ्ग महाप्रभुकी नित्य-लीलास्थली श्रीधाम नवद्वीपकी जय हो। इस नित्यधाममें कलि-कल्मष-हारी नृहरि विश्वम्भर नाम धारण करके नित्य लीला करते हैं, समस्त संसारके प्राणी इस परम पवित्र नित्यधाममें वास करनेकी अभिलाषा करते हैं, क्योंकि इस नित्यधाम नववृन्दावनमें श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र धाम-वासियोंके साथ श्रीहरिके प्रत्येक गुण और आकृतिके अनुरूप लीला करते हैं। इस नित्यधाममें निखिल जगत्के निवासियोंका वास हो सकता है, क्योंकि यह चिन्मय नित्यधाम है। इस परम पवित्र श्रेष्ठधाममें समस्त जगके जीवका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मन परमानन्दमें नृत्य करता है। इस आनन्दमें सदा नित्यानन्द विराजता है। इस धाममें निरानन्द नहीं हैं, क्योंकि यह प्रेमधाम सर्व-मङ्गलमय सच्चिदानन्द अखिल-रसामृत-सिन्धु आनन्द-रस-विग्रह श्रीनवदीप-चन्द्रकी नित्य लीलास्थली है।

पहले वर्णन आ चुका है कि नवद्वीपलीला गुप्त लीला है। श्रीभगवानका एक नाम त्रिजुग है। क्योंकि सत्ययुग, त्रेता और द्वापर युगमें वे प्रकट अवतार हैं और उनकी लीला स्वयं प्रकाशित है। कलियुगमें श्रीभगवान् प्रच्छन्न अवतार लेते हैं, अतः उनकी लीला भी गुप्त होती है। यह भागवतीय कथा है।

धर्मं महापुरुष पासि युगानुवृतं।
छन्नः कलौ यद्भव स्त्रियुगोऽथ सत्यम्॥

श्रीम. भा. ७. ९. ३८

श्रीभगवान्ने पूर्व अवतारोंमें जो जो लीलाएँ प्रकाश की हैं वे सब लीलाएँ श्रीगौराङ्ग अवतारमें प्रच्छन्न भावसे की गयी हैं।

पूर्व्व पूर्व्व अवतारे जे धामे जे लीला।
गुप्ते नवद्वीपे ताहा सब प्रकाशिला॥

भक्तिरत्नाकर

इस नित्यधाम नवद्वीपकी शक्ति अचिन्त्य है।

नदीया बसति अष्टक्रोश केह कय।
अचिन्त्य धामेर शक्ति सब सत्य हय॥
नवद्वीप धाम पद्मपुष्प प्राय रीत॥
क्षणेके सङ्कोच क्षणे हय विस्तारित॥

नवद्वीप परिक्रमा।

विष्णुपुराणमें भी श्रीधाम नवद्वीपके नामका उल्लेख मिलता है। यथा—

भारतस्यास्य वर्षस्य नवभेदान्निशामय।
इन्द्रद्वीपः कसेरुश्च ताम्रपर्णो गभस्तिमान्॥
नागद्वीपस्तथा सौम्यो गान्धर्वस्त्वथ वारुणः।
अयं तु नवनस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः॥

वि. पु.. २. ३. ६-७

छान्दोग्य उपनिषद्के अष्टम प्रपाठकमें व्रजधाम अर्थात् गोलोक, वृन्दावन, नवद्वीप आदि संज्ञाविशष्ट अप्राकृत चिन्मय धामोंका वर्णन देखनेमें आता है। मुण्डक उपनिषदमें भी श्रीमायापुर धामके नामका उल्लेख है।★

अपराधशून्य होकर तीर्थमें वास करना शास्त्रका विधान है। श्रीगौराङ्ग-भजन-निष्ठ कलिके जीवके सब अपराध श्रीगौराङ्ग नामकी महिमा कीर्तन करनेसे दूर हो जाते हैं। दूसरे तीर्थोंमें अपराधी दण्डभाजन होता है। श्रीधाम नवद्वीपमें जीवके सब अपराध प्रभु क्षमा कर देते हैं। इसके साक्षी जगाइ-माधाइ हैं। उन लोगोंने इस धाममें अपराध करके श्रीगौराङ्गकी और श्रीनित्यानन्द प्रभुकी कृपा प्राप्त की थी। इससे श्रीनवद्वीप धामका महात्म्य प्रकट होता है। श्री ऊर्द्धाम्नाय संहिता महातन्त्रमे पार्वतीसे श्रीशिवजी कहते हैं—

पृथिव्यां यानि तीर्थाणि रसाय दिवि वा प्रिये।
तानि सर्वाणि तिष्ठन्ति नवद्वीपे सुरेश्वरि॥
नाहं वसामि कैलासे न त्वं वससि मद्गृहे।
न देवो दिवि तिष्ठन्ति ऋषयो न वने वने॥
सर्वे वयं नवद्वीपे तिष्ठामः प्रेमलालसाः।
गौर गौरेति गायन्तः संकीर्तन-पराभुवि॥
ये नरा कृतिनो देवि नवद्वीपे वसन्ति ते।
जीवने मरणे तेषां पतिरेको महाप्रभुः॥
पञ्च तत्त्वात्मकं गौरं कृष्ण चैतन्य संज्ञकम्।
ये भजन्ति नवद्वीपे ते मे प्रियतमः किल॥

★ मुण्डके कथितं यत्तु ब्रह्मधाम हिरण्मयम्।
मायापुरगतं तद्धि योगपीठं सुनिर्मलम्॥
हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम्।
तच्छुभ्रं ज्योतिषांज्योतिस्तद् यदात्मविदोविदुः॥ ※

मुण्डके २. २. ९.

※ विरजं विरजा सेवित। ब्रह्म निष्कल कला विभाग-रहित ब्रह्म अर्थात् शक्ति राधा, और शक्तिमान् कृष्ण अविभिन्न रूपमें श्रीगौराङ्ग।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अन्यान्य तीर्थ भुक्ति-मुक्ति प्रदाता है। श्रीधाम नवद्वीप साक्षात् कैवल्य-भक्ति प्रदान करता है। यथा ऊर्ध्वाम्नाय संहितामे—

अन्यतीर्थमृतिः पुंसो भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनो।
नवद्वीपमृतिः साक्षात् कैवला-भक्ति दायिनी॥

महाजनगणने श्रीधाम नवदीपके माहात्म्यका वर्णन शतशत मुखसे किया है। श्रीगौराङ्गलीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावन दास ठाकुर ने लिखा है—

प्रभुर श्रीधाम भक्ति नित्य परिकर।
इथे अन्य मत जार सेइत पामर॥

श्रीमन्नरहरिदास ठाकुरने लिखा है—

नवद्वीप वृन्दावन दुइ एक हय।
गौरश्याम रूपे प्रभु सदा विलसय॥

श्रीमन्नरोत्तम ठाकुरने लिखा है—

श्रीगौड़मण्डल भूमि, जेवा जाने चिन्तामणि,
तार हये ब्रजभूमे वास।

श्रीपाद प्रबोधानन्द सरस्वतीने अपने श्रीचैतन्य चन्द्रामृत श्रीग्रन्थके प्रथम श्लोकमें श्रीधाम नवद्वीपकी वन्दना की है—

स्तुमस्तं चैतन्याकृतिमतिविमर्यादपरमाद्-
भुतौदार्यं वर्यं व्रजपतिकुमारं रमयितुम्।
विशुद्ध स्वप्रेमोन्मद-मधुर - पीयूषलहरीं,
प्रदातुं चान्येभ्यः परपद-नवद्वीप-प्रकटम्॥

अर्थ—जिन ब्रजपतिकुमार स्वरूपने अपने आपको राधारसमाधुरी आस्वादन करानेके लिए एवं सीमाहीन अद्भुत उदारता प्रकट कराके विशुद्ध निज-प्रेमकी उन्मद-मधुर अमृत-लहरी जगतको दान करनेके लिए नवद्वीप नामक परपद (जनपद) में प्रकट हुए, उनका हम स्तवन करते हैं।

श्रीश्रीनवद्वीपधाम माहात्म्य-गान करते करते गौर-भक्त-चूड़ामणि गोलोकगत श्रीकेदारनाथ दत्त भक्तिविनोदने लिखा है—

सर्व्व तीर्थ भ्रमिया तैर्थिक जाहा पाय।
नवद्वीप स्मरणे से लाभ शास्त्रे गाय॥
नवद्वीप दर्शन करे जेइ जन।
जन्मे जन्मे लभे सेइ कृष्णप्रेम धन॥
कर्मबुद्धि योगेओ जे नवद्वीपे जाय।
नर जन्म आर सेइ जन नाहिं पाय॥
नवद्वीप भ्रमिते से पदे पदे पाय।
कोटि अश्वमेध फल सर्व्व शास्त्रे गाय॥
नवद्वीपे वसि जेइ मन्त्रजप करे।
श्रीमन्त्र चैतन्य हय अनायासे तरे॥
अन्य तीर्थे योगी दश वर्षे लभे जाहा।
नवद्वीपे तीन रात्रि साधि पाय ताहा॥
अन्य तीर्थे ब्रह्मज्ञाने जेइ मुक्ति हय।
नवद्वीपे भागीरथी स्नाने ता घटय॥
सालोक्य सारूप्य सार्ष्टि सामीप्य निर्व्वाण।
नवद्वीपे मुमुक्षु लभय बिना ज्ञान॥
नवद्वीपे शुद्धभक्त चरणे पड़िया।
भुक्ति मुक्ति सदा रहे दासीरूप हैया॥
भक्तगण लाथी मारि से दुये ताड़ाय।
भक्तपद छाड़ि दासी तबू ना पलाय॥
शतवर्ष सप्ततीर्थे मिले जाहा भाइ।
नवद्वीपे एक रात्र बासे ताहा पाइ॥
हेन नवद्वीप धाम सर्व्वधाम सार।
कलिते आश्रय करि जीव हय पार॥
तारक पारक विद्याद्वय अविरत।
नवद्वीप - वासीगणे सेवे रीतिमत॥
निताइ जाह्नवा पद छाया जार आश।
से भक्तिविनोद गाय पाइय उल्लास॥

श्रीधाम नवद्वीप ध्यानगम्य है. यह बात पहले ही कह चुका हूँ। महाजन लोगोंने इस नित्यधामका ध्यान करके अभीष्टकी प्राप्ति की है। इस परम धामके दो ध्यान नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

१. दिव्यकल्पतरुद्यानं मधुपावलि झंकृतम्।
नाना पक्षिरुतं शश्वत् चारुषड्ऋतुरञ्जितम्॥
जाह्नवीजलसंसर्गि - मलयानिलसेवतम्।
परमाश्चर्यमाधुर्यं ध्यायेत् त्रैलोक्य मङ्गलम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२. स्वर्धुन्याश्चारु तीरे स्फुरित मतिवृहत्कूर्मपृष्टाभगात्रं,
रम्यारामावृतं सन्मणिकनक महासद्मसद्यैः परीतम् ।
नित्यं प्रत्यालयोद्यत्-प्रणयभर-लसत् कृष्णसंकीर्तनाढयं
श्रीवृन्दाटव्यभिन्नं त्रिजगदनुपमं श्रीनवद्वीपमीडे ।।

श्रीचैतन्यार्चनचन्द्रिकोक्त श्रीमन्नवद्वीपधामका एक और वृहत् ध्यान है, वह नीचे उद्धृत किया जाता है ।

फुल्ल-श्रीमद्--द्रुमवल्लि-तल्लजलसत्तीरात रङ्गावली-
रम्या ममन्दरूपन्मरालजलजश्रेणीषु भृङ्गास्पदम् ।
सद्रत्नाचिततीर्थदिव्यनिवहा श्रीगौरपादाम्बुज-
धूलिधूसरिताङ्गभाव-निचिता गङ्गास्ति या पावनी।।१।।

तस्यास्तीरसुरम्य-हेममुरसा मध्ये लसच्छ्रीनव-
द्वीपो भाति सुमङ्गलो मधुरिपोरानन्द-वन्यो महान् ।
नाना-पुष्पफलाढय-वृक्षलतिका रम्यो महत्सेवितो
नाना-वर्ण-विहङ्गमालि-निनदैहृत्कर्णहारी हि यः ।।२।।

तन्मध्ये द्विजभव्यलोक-निकरागारालि-रम्याङ्गण-
मारामोपवनालि-मध्यविलसद्वेदी विहारास्पदम् ।
सद्भक्ति प्रभया विराजित महद्भक्तालि नित्योत्सवं
प्रत्यागारमघारिमूर्ति-सुमहत् भातीह यत्पत्तनम् ।।३।।

तन्मध्ये रविकान्ति-निन्दि कनक-प्राकार-सत्तोरणं
श्रीनारायणगेहमग्रविलसत् - संकीर्त्तन - प्राङ्गणम् ।
लक्ष्म्यन्तः पुर-पाकभोगशयन श्रीचन्द्रशालं पुरं
यद्गौराङ्गहरेर्विभाति सुखदं स्वानन्द संबृंहितम्।।४।।

तन्मध्ये नवचूड़रतन-कलसं वज्रेन्दुरत्नान्तरा
मुक्तादाम विचित्रहेमपटलं सद्भक्तिरत्नाचितम् ।
वेदद्वारसदष्टमृष्ट - मणिरूट् - शोभा - कवाटान्वितं
सच्चन्द्रातप-पद्मराग विधुरत्नालम्बि यन्मन्दिरम् ।।५।।

तन्मध्ये मणिचित्र हेमरचिते मन्त्रार्ण - यन्त्रान्विते
षट्कोणान्तर-कर्णिकार-शिखर-श्रीकेशरे सन्निभे ।
कूर्माकारमहिष्ठ-योगमहसि श्रीयोगपीठेऽम्बुजे
आकाशातपचन्द्र-पत्र-विमले यद्भाति सिंहासनम्।।६।।

पार्श्वाधः पद्मपट्टि-घटित हरिमणिस्तम्भवैदूर्यपृष्ठं
चित्रच्छादावलम्बि प्रवरमणि-महामौक्तिकं
कान्त्युज्ज्वलम् ।
तुलान्तश्चीन-चेलासनमुडुप-मृदुप्रान्त पृष्टोपधानं
स्वर्णान्तश्चित्रमन्त्रं वसुवरिचरणध्यान-गम्याष्ट
कोणम् ।।७।।

सिंहासनस्य मध्ये श्रीगौरकृष्णं स्मरेत्ततः ।
दक्षिणे बलदेवं श्रीगौरसुन्दर विग्रहम् ।।८।।

देवस्याग्रे कर्णिकायामद्वैतं विश्वपावनम् ।
तद्दक्षिणे भक्तवर्यं श्रीवासं क्षत्रहस्तकम् ।
चतुर्दिक्षु महानन्दमयं भक्तगणं तथा ।।९।।

गोलोकगत श्रीपाद नवद्वीपचन्द्र गोस्वामीकृत वैष्णवाचार दर्पणमें उपर्युक्त श्लोकोंका अति सुन्दर भावार्थ पयार छन्दमें लिखा है वह यहाँ उद्धृत किया जाता है—

वृन्दावनधाम सम नवद्वीप धाम ।
जाहार स्मरणे सिद्ध हय मनस्काम ।।
ध्यान यथा श्रीचैतन्यार्चन चन्द्रिकाते ।
अति मनोरम ताहा लिखि संक्षेपेते ।।
पतित पावनी सुरधुनि सुवेष्टित ।
प्रफुल्लित द्रुमवल्ली तरु विराजित ।।
मन्द पवनेते उठे तरङ्ग आवलि ।
चतुर्व्विध कमले झङ्कार करे अलि ।।
हंस-चक्रवाक-पक्षी मिलि क्रीड़ा करे ।
पुलिन मण्डलीमध्ये झलमल करे ।।
नाना रत्न विनिर्मित विचित्र सोपान ।
स्थल-जल-द्विज-शब्दे हरे मनः प्राण ।।
गौर-पादाम्बुज धूलि-धूसरित अङ्गा ।
नाना भावावलि युक्ता शोभे देवी गङ्गा ।।
तार तीरे सुन्दर सुवर्ण भूमि शोभे ।
सुप्रकाश नवद्वीप मध्ये मन लोभे ।।
श्रीकृष्णेर सुमङ्गल आनन्देर वन्या ।
ताहातेइ व्याप्त पुर-नगरी से धन्या ।।
नाना पुष्प फले युक्त वृक्षलता सब ।
नाना वर्ण विहङ्गादि ध्वनिर वैभव ।।
तार मध्ये द्विज भव्य लोकेर निकर ।
निकेतन उपवन आराम विस्तर ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तार मध्ये वेदीशाला विहारेर स्थान ।
जाहार स्वरूपे भक्त हयेन अज्ञान ॥
शुद्धभक्ति प्रभावेते विराजित सब ।
भक्तगण गृहे हय आनन्द उत्सव ॥
प्रतिगृहे श्रीकृष्णेर मूर्ति जे शोभन ।
उत्सव आनन्द सब करे उच्चाटन ॥
तार मध्ये रविकान्ति निन्दे कान्ति जार ।
तोरण बन्धन माला सकलेर सार ॥
श्रीनारायण गृह अग्रे सुशोभन ।
श्रीगौराङ्ग महाप्रभुर नर्तन-प्राङ्गण ॥
लक्ष्मी अन्तःपुर पाक भोगेर आलय ।
शयन श्रीचन्द्रशाला पुर मणिमय ॥
गौराङ्गेर सुखद स्वानन्द परिष्कृत ।
मध्ये नवचूड़ रत्नघट विराजित ॥
हीरा हरि रत्नान्तर मन्दिर विराजे ।
मुक्ता दाम लम्बि हेम पटल सुसाजे ॥
शुद्ध भक्तिरत्ने विनिर्मित वेद-द्वार ।
अष्टमणियुक्त अष्ट कवाट ताहार ॥
चन्द्रातप मध्ये पद्म किवा शोभा करे ।
मुक्तार झालर जाहा चतुर्दिक धरे ॥
पद्मराग विधुरत्ने भित्ति सुशोभन ।
तार मध्ये मणिचित्र हेम सिंहासन ॥
मन्त्रवर्ण-यन्त्रान्वित षटकोण अन्तरे ।
कर्णिकार शेखर तुलना श्रीकेशरे ॥
कूर्माकार महिष्ठ श्रीयोग महोत्सव ।
योग पीठाम्बुजे सर्वानन्देर उद्भव ॥
कोटि सूर्य हइते सिंहासनेर प्रकाश ।
कोटि चन्द्रमार न्याय शीतल विलास ॥
दुइ पार्श्व पद्मराग मणिते घटित ।
हरिन्मणि स्तम्भ वैदूर्य्य पृष्ठे विराजित ॥
चित्र छादालम्बि-मणि-मुक्ता कान्ति जाल ।
तुला अन्ते चीन-चेलासन शोभे भाल ॥
उडुप मृदुल प्रान्त-श्रेष्ठ उपाधान ।
स्वर्णान्त चित्रित ध्यान-गम्य अष्टकोण ॥
तबे सिंहासन मध्ये गौर कृष्ण स्मरे ।
दक्षिणे श्रीनित्यानन्दचन्द्र शोभा करे ॥
वामे गदाधरानन्द शक्तिर स्वरूप ।
अग्र कर्णिकाते श्रीअद्वैत भक्ति-भूप ॥
पार्श्वे छत्र हस्त भक्तवर्य्य श्रीश्रीवास ।
चतुर्दिक महानन्द भक्तेर प्रकाश ॥

श्रीचैतन्यतत्वदीपिकामें उक्त श्रीधाम नवद्वीपका प्रमाण नीचे लिखा जाता है—

ॐ नमो नवद्वीपं स्थितं वृक्षवल्लीपुष्प खगादिकम् ।
गौर प्रेम रसोन्मत्ता वन्दे तच्चरणाम्बुजम् ॥
नमामि श्रीनवद्वीपं श्रीगौराङ्ग-पदाङ्कितम् ।
जाह्नवीजलं वैजयन्ती-शोभितं सर्वदैव यत् ॥
नवद्वीपाराम-प्रवर - कुसुमामोद - वलिता
स्फुरद्रत्न श्रेणी चिततटसु - तीर्थावलियुतां ।
हरेगौराङ्गस्यतुल - चरणेरेणूक्षित - तनुं ।
समुद्यत्प्रेमोर्मिं तुमुल हरि-संकीर्तन रसैः ॥

श्रीपादकविकर्णपूर गोस्वामी श्रीधाम नवद्वीपके माहात्म्यका वर्णन करते हुए लिखते हैं—

गौड़क्षौणी जयति कतमा पुण्यतीर्थावतंस-
प्रायायासौ वहति नगरीं श्रीनवद्वीप - नाम्नीम् ।
यस्यां चामीकरवर - रुचेरीश्वरावतारो
यस्मिन् मूर्ता पुरि पुरि परिस्पन्दते भक्तिदेवी ॥
चै० चं० ना० २.१२

अर्थ—अहा ! जिस स्थानमें स्वयं भगवान श्रीकृष्णचन्द्र स्वर्ण-विनन्दित अपूर्ण कान्ति धारण करके अवतीर्ण हुए हैं तथा जिस स्थानमें घर-घरमें भक्ति देवी विचरण करती हैं, इस प्रकारकी नवद्वीप नामकी नगरी पवित्रतम तीर्थ स्थान समूहकी शिरोमणि है। उस गौडभूमि नवद्वीप धामकी जय हो !

उन्होंने एक और श्लोक लिखा है—

नवद्वीपे नासीदहह स जनो यस्य न पुरे
हरेर्गेहं नो तद्यदपि भगवन्मूर्तिरहितम् ।
न सा यस्याः सेवा न भवति न सा या न सरसा
रसो नासौ संकीर्तन-नटन -मुख्यो न खलु यः ॥
चै० चं० ना० २.१६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्थ— श्रीनवद्वीप धाममें सब लोग अपने अपने भवनमें श्रीमन्दिर बनवाकर उनमें श्रीभगवानकी श्रीमूर्तिकी प्रतिष्ठा कर भक्तिपूर्वक उनकी सेवा करते हैं, तथा प्रेमरसमें निमग्न होकर स्वरसे मधुर हरिनाम संकीर्तन करते हैं। श्रीमद् रुप गोस्वामी कृत श्रीनवद्वीप स्तोत्र नीचे उद्धृत किया जाता है—

श्रीमन्नवद्वीप स्तौत्रम्

श्रीगौडदेशे सुदीर्घिकाया-
स्तीरेऽतिरम्ये पुर पुण्यमय्या ।
लसन्तमानन्दभरेण नित्यं
तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥१॥
यस्मै परव्योम वदन्ति केचित्
केचिच्च गोलोक तीरयन्ति ।
वदन्ति बृन्दावनमेव तज्ज्ञा-
स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥२॥
यः सर्वदिक्षु स्फुरितैः सुशीतै-
र्नानाद्रुमैः सुपवनैः परीतः ।
श्रीगौरमध्याह्न विहार पात्रै-
स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥३॥
श्रीस्वर्णदी यत्र विहारिता च
सुवर्णसोपान - निवद्धतीरा ।
व्याप्तोर्मिभिर्गौरव गाहमध्ये-
स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥४॥
महान्त्यनन्तानि गृहाणि यत्र
स्फुरन्ति हैमानि मनोहराणि ।
प्रत्यालयं यं श्रयते सदा श्री-
स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥५॥
विद्या दयाक्षान्तिसुखैः समस्तैः
सद्भिर्गुणैर्यत्र जनाः प्रपन्नाः ।
संस्तूयमाना ऋषिदेवसिद्धै-
स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥६॥
यस्यान्तरे मिश्र पुरन्दरस्य
स्वानन्द-गम्यैकमपदंनिवासः ।
श्रीगौर-जन्मादिक-लीलयाढ्य-
स्तं श्रीनवद्वीपमतं स्मरामि ॥७॥
गौरो भ्रमन् यत्र हरिः स्वभक्तैः
संकीर्तन-प्रेमभरेण सर्वम् ।
निमज्जयत्युज्जलभावसिन्धौ
तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥८॥
एतन्नद्वीप-विचिन्तनाढयं
पद्यष्टिकं प्रीतमना पठेत् यः ।
श्रीमच्छचीनन्दन पादपद्मे
सुदुर्लभं प्रेममवान्पुया त्सः ॥९॥

इति श्रीमद् रूपगोस्वामिना विरचितं
श्रीमन्नवद्वीपाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीनवद्वीपधामके नित्यत्वके सम्बन्धकी कहोनियाँ श्रीनित्यानन्द प्रभुने श्रीजीवगोंस्वामीको सुनायी थी। श्रीजीवगोस्वामी श्रीधामवृन्दावनसे नवद्वीप धाम दर्शन करने आये थे। श्रीनित्यानन्द प्रभुने उनको साथ लेकर नवद्वीप धामकी परिक्रमा करायी थी । इस परिक्रमाके समय उन्होंने कृपाकर श्रीजीवगोस्वामीको नवद्वीपधामका निगूढ़ तत्व तथा इस परम श्रेष्ट धामके नित्यत्वके सम्बन्धमें पौराणिक कहाँनियोंका वर्णन किया था । श्रीकेदारनाथ दत्त भक्तिविनोद द्वारा सम्पादित श्रीश्रीनवद्वीपधाम माहात्म्य श्रीग्रन्थमें ये सब अलौकिक पौराणिक कहानियाँ विस्तारसे वर्णित है। विस्तारके भयसे वे कहानियाँ यहाँ नहीं लिखी जा रही है । नवद्वीप-लीला-रसज्ञ कृपालु पाठकवृन्द अवश्य ही इस भक्तिग्रन्थका पाठ करेंगे।

ठाकुर नरहरि चक्रवर्ती प्रणीत नवद्वीप परिक्रमा श्रीग्रन्थमें प्राचीन नवद्वीपकी सारी कथाएँ लिखी हुई है। व्रज-परिक्रमाके समान नवद्वीप परिक्रमा गौरभक्तोंको अवश्य करनी चाहिये । इसके विधि-नियम भी है। श्रीगौर मन्त्र नित्यसिद्ध मन्त्र है। श्रीअद्वैत प्रभुने श्रीपाद जगन्नाथमिश्र-पुरन्दर और शचीदेवीको चार अक्षरका गौर-गोपाल-मन्त्र प्रदान किया था । प्रभुके आमिर्भावके बहुत पहले महाविष्णुके अवतार श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौराङ्गके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

माता-पिता को गौर-मन्त्रमें दीक्षित करके उनके मनमें श्रीगौराङ्गकी मूर्त्तिकी स्फूर्त्ति पहलेसे ही कर दी थी। यह सारी बातें श्रीअद्वैत प्रकाश ग्रन्थमें लिखी हुई हैं। श्रीअद्वैत प्रभुके बाल्य सहचर तथा मन्त्र-शिष्य श्रीईशान नागर इस श्रीग्रन्थके रचयिता हैं। उन्होंने अपनी आँखों से देखकर इस श्रीग्रन्थमें श्रीअद्वैत प्रभुकी लीलाका वर्णन किया है। यह प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थ है। सभी गौरभक्तोंको गौर-मन्त्रसे दीक्षित होना चाहिये। नवद्वीप-लीलारस-भण्डार अक्षय स्रोत है। नवद्वीप धाम इस अक्षय-स्रोतकी केन्द्रभूमि है। नवद्वीप-रस-लोलुप रसिक भक्तवृन्द नवद्वीप धामको आश्रय करके गौरमन्त्रमें दीक्षित होकर श्रीनवद्वीपचन्द्र श्रीगौर भगवानके भजनमें प्रवृत्त होते हैं। श्रीमन्महाप्रभुकी कृपासे और गौरमन्त्रके प्रभावसे उनके मनमें एक साथ नवद्वीपलीला और ब्रजलीलाकी स्फूर्त्ति होती है। श्रीश्रीराधाकृष्ण-मिलितवपु श्रीगौराङ्ग सुन्दर नवद्वीप धाममें नित्य लीला करते हैं। ये सब भाग्यवान् वैष्णव साधकवृन्द अबतक प्रभुकी इस नित्यलीलाका दर्शन करते हैं।

अद्यापीह सेइ लीला करे गौरराय।
कोन कोन भाग्यवाने देखिवारे पाय॥

सङ्कीर्तन महायज्ञके पुरोभागमें सङ्कीर्तनके पिता नदियाके अवतार श्रीश्रीगौरचन्द्र अद्यापि प्रकट हो भक्तवृन्दको दर्शन प्रदान कर कृतार्थ करते हैं। सङ्कीर्तन यज्ञमें ही उनका आविर्भाव होता है।

सङ्कीर्तन-यज्ञेश्वर श्रीमन्महाप्रभुकी उनके भक्त-वृन्द यह कहकर वन्दना करते हैं—

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ
सङ्कीर्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ॥

वन्दनाके बाद प्रणाम करते हैं—

नमश्चैतन्यचन्द्राय कोटिचन्द्राननत्विषे।
प्रेमानन्दाब्धिचन्द्राय चारुचन्द्रांशुहासिने॥
यस्यैव पादाम्बुजभक्तिलभ्यः
प्रेमाभिधानः परमः पुमर्थः।
तस्मै जगन्मङ्गलमङ्गलाय
चैतन्यचन्द्राय नमो नमस्ते॥

सङ्कीर्तन यज्ञकी समाप्ति पर घर आकर एकान्तमें बैठकर ध्यान करते हैं—

ध्यायेत् श्रीगौरचन्द्रं शशधरविलसत् क्षौमवासौ दधानं-शुभ्रं नीलोत्पलाक्षं-मणि-मकरलसत्-कर्णमाजानुबाहुम्।
अंशे न्यसौपवीतं बहुशतदिनकृद्दीप्ति-प्रोद्दीप्त-कान्ति
देवं हेमाचलाभं सुरगणनमितं विश्वबीजादिबीजम्॥

ध्यानके पश्चात् स्तुति करते हैं—

य आदिदेवो भगवान् सर्वकारण कारणम्।
एक एवाद्वितीयो यस्तस्मै गौरत्विषे नमः॥१॥
यो लीलसृजत् पूर्वं गोलोकं रासमण्डलम्।
यो लीलया द्विधा भूतस्तस्मै गोरत्विषे नमः॥२॥
यो लीलया परव्योम ह्यनन्तमसृजद्विभुः।
मूलसङ्कर्षणो देवस्तस्मै गौरत्विषे नमः॥३॥
यदंशः स्याद् महाविष्णुः कारणाब्धि-पतिर्विभुः।
यदङ्गभा परंब्रह्म तस्मै गौरत्विषे नमः॥४॥
यं वेदवादिनः सर्वे परंब्रह्म वदन्ति वै।
प्रधानं पुरुषञ्चान्ये तस्मै गौरत्विषे नमः॥५॥
यमाहुः परमात्मानमन्तर्यामिनमीश्वरम्।
यमाहुः पुरुषं श्रेष्ठं तस्मै गौरत्विषे नमः॥६॥
सत्ये नारायणं देवं त्रेतायां यज्ञरूपिणम्।
यं कृष्णं द्वापरे प्राहुस्तस्मै गौरत्विषे नमः॥७॥
कलौ यो निजरूपेण प्रादुर्भूयो धरातले।
प्रदास्यति निजां भक्तिं तस्मै गौरत्विषे नमः॥८॥
यो देवो विविधं रूपं धृत्वा पालयति स्वकान्।
हर्तिं यश्चासुरान् सर्वान् तस्मै गौरत्विषे नमः॥९॥

स्तुतिके पश्चात् कीर्तन करते हैं—

जय जय श्रीनदीया सुखधाम।
अद्भुत वसति वसत चतुराश्रम।
यँहि निति निति उत्सव अनुपाम॥टेक॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह प्रभुकी प्रथमकालीय लीला है। श्रीगौराङ्ग लीलामृत श्रीग्रन्थमें प्रभुकी अष्टकालीय लीलाका विस्तृत विवरण है। यहाँ उसका कुछ आभास दिया गया है।

निशाके अन्तमें श्रीनवद्वीपचन्द्र युगल रूपमें अपने मन्दिरमें शयन कर रहे हैं। दिव्य ज्योतिसे प्रभुका प्रत्येक अङ्ग झलमल कर रहा है। प्रभु प्रियाजीके साथ युगल रूपमें स्वर्ण खचित पलङ्ग पर शयन कर रहे हैं। पलंगके चारों पायोंमे प्रवाल जड़ित हैं। रङ्गीन रेशमके डोरे पलंगके चारों कोनोंमें बँधे हैं। उनके ऊपर अरुण वर्णका मणिमय गुच्छ दोलायमान है। पलङ्गके ऊपरी भागमें चारों कोनोंमें चार स्वर्ण-निर्मित दण्ड सुशोभित हैं। उनके ऊपर सुरञ्जित चन्द्रातप झूल रहा है। चन्द्रातप-के झालरमें मणिमुक्तामय हार लटक रहे हैं। जान पड़ता है मानो स्वर्गसे मन्दाकिनी धारा गिर रही है। पलङ्गके ऊपर शुभ्र चीनांशुककी चादर बिछी है। उसके ऊपर उपाधान नवनीत-पिण्डके समान दीख रहा है। दुग्ध फेनके समान उज्जवल शय्याके ऊपर श्रीनवद्वीपचन्द्र युगल रूपमें शयन कर रहे हैं। तप्त काञ्चन वर्णकी आभासे दसों दिशाएँ आलोकित हैं। सुवलित सुन्दर श्रीअङ्ग निद्रालस्यके वशवर्ती हो रहा है। भ्रमरके समान कृष्ण कुटिल कुन्तल राजिसे सुशोभित मुखमण्डल अपनी अपूर्व शोभासे घरके अन्धकारको दूर कर रहा है। मल्लिका-पुष्पकी मालिका निद्रावेशमें गलेमें शिथिलित हो रही है। प्रभुके प्रशस्त ललाटमें चन्दनका तिलक अब भी सुशोभित है। कुङ्कुम-कस्तूरीके मनोहर बिन्दु समस्त कपोल देशमें सुशोभित हैं। गण्डस्थलमें चिकने केश शोभा पा रहे हैं। उनकी युगल भ्रूभङ्गकी तुलना जगतमें नहीं हैं। प्रभुके कनक-केतकीके समान नयनद्वय ईषत् उन्मीलित हैं। पके विम्वाफलको भी लज्जित करने वाले सुन्दर अधर शोभा पा रहे हैं। श्रीवदन पर मधुर हास्यकी रेखा मानो चिर अङ्कित है। उन्नत वक्षःस्थल पर आजानुलम्बित वाहुद्वय रक्षा कर रहे हैं। श्रीभुजद्वयमें नव रत्न-जटित वलय सुशोभित हैं। चन्दन-चर्चित श्रीअङ्गकी शोभासे गृह आलोकित हो रहा है। वे लाल किनारीकी अत्यन्त महीन शुभ्र धोती पहने हैं। गलेमें शुभ्र वर्णकी चादर है। सूक्ष्म यज्ञोपवीत उनके वक्षः-स्थल पर सुशोभित है। उनके श्रीहस्त तथा पदतल मानो हिङ्गूलसे रञ्जित हैं। स्वर्ण-मन्दिरमें मणिमय रत्नसिंहासन पर श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र सोये हुए हैं। शयन-मन्दिरके चारों ओर सुवर्णमयी प्राचीर है। श्रीमन्दिरके ध्वजाके ऊपर सुवर्ण कलस स्थापित है। उसके ऊपर पूर्णचन्द्राकृति मणिमय स्थूल मुक्तहार है। श्रीमन्दिरके दोनों पार्श्वमें आठ मणिमय स्तम्भ विराजित हैं। ये स्तम्भ रजत-हंस-पंक्ति पर अवलम्बित हैं। चारों ओर चार रत्नद्वार हैं। उनमें स्वर्ण कपाट और प्रवालमयी अर्गला है। स्फटिक-निर्मित दीपाधार पर स्वर्ण-प्रदीप जल रहा है। श्रीमन्दिरके भीतर दीवालोंमें बड़े-बड़े रङ्गविरङ्गे स्वर्णमय दर्पण सुसज्जित हैं। उनमें श्रीराधाकृष्ण रसकेलि-संवलित चित्र सुचित्रित हैं। कृत्रिम कुसुम, वृक्ष, पद्म, लता आदिका प्रतिबिम्ब इन दर्पणोंमें प्रतिफलित देखकर शत-शत भ्रमर उनके चारों ओर गुन-गुन गुञ्जार करते हुए भ्रमण कर रहे हैं। शयन-मन्दिरके चारों ओर आठ खिड़कियां हैं। खिड़कियों पर सूर्य-कान्त मणि जटित हैं। बाहर मणि-माणिकासे खचित खिड़कियोंके किवाड़ हैं। श्रीमन्दिरके प्राङ्गणमें वेदिका और चत्वर सुशोभित हो रहे हैं। उनकी सीढ़ियोंमें स्फटिक पत्थर जटित हैं। श्रीमन्दिरके प्रान्त भागमें मनोरम पुष्पोद्यान है। वह उद्यान नाना प्रकारके सुरम्य वृक्षोंसे परिपूर्ण है। वृक्षोंकी शाखाओं पर शुक-पिक आदि पक्षी बैठकर मधुर स्वरसे गीत गा रहे हैं। सुशीतल प्रातः समीर मृदु मन्द प्रवाहित हो रहा है। प्रभुके पलङ्गके दोनों पार्श्वमें दो स्वर्णमयी तश्तरियाँ हैं। उनके ऊपर रत्नमय पात्रमें पानके बीड़े सजाकर रखे हैं। पलङ्गके नीचे सुवासित जलसे पूर्ण सोनेकी झारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शोभा दे रही है । कीर्तन-विलासमें थके प्रभु आलस्य-युक्त होकर सुखसे सो रहे हैं। शयन मन्दिरके एक पार्श्वमें सोनेके पिंजड़ोंमें शुक-सारिका निशिके अवसानमें सुमधुर स्वरमें 'उठो-उठो गोरा राय' कहकर प्रभाती गीतकी तान छेड़ रहे हैं।

पिक-कुक्कुट आदिके निनादसे प्रभुकी निद्रा भङ्ग हुई। उन्होंने अपने कमल नयनोंको ईषत् उन्मीलित कर श्रीवृन्दावनकी कुञ्जलीलाका स्मरण किया। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी झटपट शय्यासे उठ प्रभुकी चरण-धूलि ले शयन गृहसे निकलनेको हुई तो प्रभुने उन्हें रसकी बातोंसे सन्तुष्ट किया। प्रियाजीके चरणोंकी नूपुर ध्वनि सुन शचीमाता जाग गयीं। उन्होंने शय्यासे उतर कर द्वार खोला। पुत्रबधूको गृहकार्य करके गङ्गास्नान करनेके लिए जानेकी आज्ञा दे शचीमाता शीघ्रतापूर्वक व्याकुल चित्तसे प्रभुके शयन मन्दिरमें प्रविष्ट हुईं। निद्रित पुत्रके शरीर पर धीरेसे हाथ रखकर मृदु स्वरसे बोलीं—

उठ बाप् गोराचाँद प्रभात हइल।
नगर निवासीगण जागिया बसिल ॥
श्रीवासादि करिया जतेक भक्तगण।
तोमार दर्शने सबार उत्कण्ठित मन ॥
अति शीघ्र करि पथे करिल गमन।
निद्रा त्यजि उठि कर मुख प्रक्षालन ॥

प्रभु माताकी बात सुनकर अँगड़ाइया लेते हुए उठ बैठे। इसी समय सीता ठकुरानी मालिनी देवी आदि पतिव्रता रमणीगणके साथ शयन-मन्दिरमें प्रभुकी मंगल आरती करनेके लिए प्रविष्ट हुईं।

सुवर्ण थालीते घृत कर्पूर सहित।
प्रदीप ज्वालिया शची हइ हरषित ॥
आनि समर्पिला ताहा मालिनीर करे।
निर्म्मञ्छन कैल तेंह गौराङ्ग सुन्दरे ॥
स्वर्णपादपीठ आर जलपूर्ण झारी।
रसना-मार्ज्जनी दन्तकाष्ठ आदि करि ॥

प्रभु शय्या त्याग कर प्राङ्गणमें आये। घरके भीतर जाकर प्रातः कृत्य समाप्त किया। पादपीठके ऊपर बैठ कर दन्तधावन आदि क्रिया समाप्तकी। उसी समय श्रीअद्वैत प्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीवास पण्डित, गदाधर पण्डित मुकुन्द, मुरारी, हरिदास, वक्त्रेश्वर, शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी, श्रीधर आदि भक्तवृन्दने आकर प्रभुकी वन्दनाकी। श्रीनित्यानन्द प्रभु श्रीश्रीमन्महा प्रभुके दाहिने बैठे। सामने शान्तिपुर नाथ और बायें गदाधर पण्डित बैठे। शचीके आङ्गनमें उस समयकी सोभा वर्णनातीत है। प्रभु अपने आँगनमें बैठ कर भक्तगणके साथ कृष्ण-कथा-रस-रङ्गमें मग्न हैं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी गङ्गा स्नान करने गयी हैं। उनके साथ काञ्चना, अमिता आदि सखियाँ हैं। श्रीमन्महाप्रभुके इस प्रथम अष्टकालीय लीला-स्मरण-मनन-कालमें गौरवक्ष-विलासिनी श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके रूप-ध्यानको आवश्यक समझ कर महाजनगण भक्ति-स्वरूपिणी प्रियाजीके अपूर्व रूपका वर्णन कर गये हैं। उसे यहाँ उद्धत करता हूँ। यथा श्रीगौराङ्गलीलामतमें—

तबे विष्णुप्रिया देवी सखीगण सङ्गे।
सुरधुनि सिनाने चलिला बहु रङ्गे ॥
कनक-दामिनी जिनी अङ्गेर वरण।
कत कोटि चाँद सोभा सुचारु वदन ॥
वेणी-भुजङ्गिनी शोभे नितम्ब ऊपरे।
ग्रन्थित कनक झाँप बकुलेर हारे ॥
कुटिल कुन्तल जेन भ्रमरेह पाँति।
दुइ गण्डे झलमल मुकुरेर भाँति ॥
कर्णे साजे मणिमय कणिका-भूषण।
निम्ने दोले क्षुद्र झाँपा मुकुता खिचन ॥
कर्णभूषा भार भये सुवर्ण शिकले।
शलाका सहिते बद्ध करि श्रुति मूले ॥
स्वर्ण सूत्रे सूक्ष्म मुक्ता करिया रचन।
पद्मराग मणि माझे सिंथार बन्धन ॥
कपाले सिन्दूरबिन्दु प्रभात अरुण।
कस्तूरी चित्रित तारा पाशे सुशोभन ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मृगमद बिन्दु शोभे चिबुक ऊपरे ।
सुरङ्ग अधरे मृदु हास मनोहरे ॥
चकित चाहनि जेन चञ्चल खञ्जन ।
भूरुर भङ्गिमा देखि काँपये मदन ॥
तिलफल जिनि नासा गजमुक्ता दोले ।
गले चन्द्रहार ताहि मालतीर माले ॥
छोट बड़ क्रम करि वर्णेर हारे ।
कण्ठ देश शोभा धरियाछे थरे थरे ॥
कुचयुग शोभा स्वर्ण कलस जिनिया ।
कनक चम्पक कलि ऊपरे बेड़या ॥
चन्दनेर पत्रावली ताहाते लिखन ।
गज मति हारे मणि चतुष्कि शोभन ॥
सुवर्ण मृणाल भुजयुगेर वलन ।
शङ्खमणि कङ्कणादि ताहे विभूषण ॥
बाजूबन्द बलया बलया बन्धन भुजमूले ।
तहि बद्ध पट्ट आदि स्वर्ण झाँपा दोले ॥
राङ्गा करतलाङ्गुलि मुद्रिका मण्डित ।
तर्ज्जनीते शोभे हेम मुकुरे जड़ित ॥
परिधान शोभे दिव्य पट्ट मेघाम्वरे ।
अञ्चल निर्म्माण मणि मुकुता झालरे ॥
गुरुया नितम्ब आर क्षीण मध्यदेशे ।
किङ्किणी रसना मणि ताहाते विलासे ॥
रातुल चरण युग यावक मण्डित ।
बङ्कराज - रतन - नूपुर विभूषित ॥
मधुर गमन गति हंसराज जिनि ।
चटक गुञ्जये जेन नूपुरेर ध्वनि ॥
नवनीत जिनिया कोमल तनु खानि ।
हास परिहासे स्नान करि सुर धुनि ॥
गृहे आसि वस्त्र परिवर्त्त जे करिला ।
विष्णुपूजा लागि सज्जा करिते लागिला ॥

प्रातः द्वितीय कालीय लीला

प्रियाजीने गङ्गा स्नान कर प्रभुकी विष्णुपूजाका सारा प्रबन्ध कर दिया । इधर श्रीश्रीमन्महाप्रभु सपार्षद गङ्गा स्नान करने चले । इस प्रकार प्रभुकी द्वितीय कालीयलीला आरम्भ होती है । श्रीपाद चक्रवर्ती महाशयने चतुर्थ श्लोकमें इसका वर्णन किया है—

४. प्रातः स्वः सरिति स्व पार्षदवृतः स्नात्वा प्रसूनादिभिस्तां संपूज्य गृहीत-चारुवसनः स्रक्चन्दनालंकृतः । कृत्वा विष्णु समर्चनादि सगणो भुक्त्वान्नमचम्य च द्वित्रं चान्यगृहे क्षणं स्वपिति यस्तं गौरमध्येम्यहम् ॥

भावार्थ—श्रीश्रीमन्महाप्रभु सपार्षद गङ्गास्नानके लिए चले । यथाविधि गङ्गापूजा करके माल्य, चन्दन, गन्ध, वस्त्र आदिसे श्रीअङ्गको सुशोभित किया । जलक्रीड़ा कर सपार्षद अपने श्रीमन्दिरको लौटे । प्रभुने विष्णु मन्दिरमें जाकर विधिपूर्वक विष्णुकी पूजा की । ठाकुरको भोग लगाया । भक्तगणके साथ प्रसाद भोजन किया । प्रियाजीके दिये पानको चबाते हुए शयन मन्दिरमें जाकर कुछ विश्राम किया ।

प्रभुकी इस द्वितीय कालीय लीलाका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है । प्रियाजी गङ्गास्नान करके घर लौटी । गीले वस्त्र उतार कर विष्णु मन्दिरकी पूजाकी सामग्री तैयार की और रसोईघरके कार्यमें लग गयीं । इस बीच शची माता भी गङ्गा स्नान करके आ गयीं । सीता ठाकुरानी, मालिनी देवी आदि वैष्णव स्त्रियाँ भी स्नान करके प्रभुके घर आयीं । जिनके घरमें जो उत्तम सामग्री थी उसे वे साथ लायीं । दास-दासियाँ सब सामग्री लेकर आयीं । शचीमाताने आनन्दित चित्तसे सब सामग्री ग्रहण की । उन्होंने पैर धोकर रसोईघरमें प्रवेश किया । साथमें प्रियाजीको ले गयीं ।

मालिनीदेवी रसोई बनाने लगी । सीतादेवी देख भाल करने लगी । शचीमाताने आकर उसमें योग दिया । श्रीमती विष्णुप्रिया देवी भी सासुके साथ रसोई बनानेमें जुट गयीं । कौन-कौन व्यञ्जन तैयार किया गया ? किस प्रकार रसोई घरमें भोग सजाया गया ? सुनिये—

प्रथमेते परमान्न करिया रन्धने ।
पूर्ण करि थूइलेन नूतन भाजने ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विविध प्रकार शाक करिया रन्धन ।
मानकंचू वार्त्ताकिवादि लाफरा व्यञ्जन॥
सुकुतादि मोचाघण्ट मरिचेर झाले ।
मुद्‌ग सूपे शुखा आम्र करिया मिसाले ॥
घृतसिक्त सूप वहु पृथक् करिला ।
मासबड़ा मुग्दबड़ा घृतेते भाजिला ॥
नारिकेल शस्यभाजा फूलबड़ा आर ।
तिलमिश्र वार्त्ताकिवादि विविध प्रकार ॥
अम्ल राँधिलेन वहु यतन करिया ।
मधुराम्ल धरिलेन पृथक् करिया ॥
अम्ल दधि मासबड़ासह सिक्त करि ।
जिरा मरिचादि दिया रन्धन जे करि ॥
गोधूम चूर्णेर पिष्ठक अनेक करिला ।
घृतसिक्त करि ताहा जतने धरिला ॥
माठा शिखरिणी आदि सरपूली करि ।
अनेक करिला ताहा बलिते ना पारि ॥
उत्तम तण्डुल बहु करि सुसंस्कार ;
जतने करने पाक करिया अपार ॥
अन्य घरे करे केह दुग्ध आवर्त्तन ।
मिष्ठान्न पक्वान्न आदि करे कोन जन ॥
गोधूमेर चूर्णसह शर्करा माखिया ।
लाडू बाँधलेन बहु जतन करिया ॥
गोधूम चूर्णेर करि कुण्डली आकृति ।
घृते भाजि राखिलेन रसरे संहति ॥
छेना क्षीर सरादि माखि शर्करा सहिते ।
लाडू बाँधिलेन करि दाड़िम आकृते ॥
सीतामिश्र करि आर चक्राकृति खाजा ।
पटोल चनक बहु करि घृते भाजा ॥
दुग्ध आवर्त्तिया क्षीर करिलेन घन ।
पूरिया राखिला नव मृत्तिका-भाजन ॥
एलाची कर्पूर मरिचादि ताहे दिया ।
शीतल करिते शीघ्र राखिला धरिया ॥
दुग्धलाउ दधिलाउ करिलेन पाक ।
लवण विहीन घृते भाजि दिव्य शाक ॥
तिला लाडू नवादादि रसाला करिया ।
घृत सिक्त दधि मृत् कुण्डिका पूरिया ॥
घनावर्त्त दुग्ध दिव्य चाँपा कला आर ।
काल अनुचित फल अनेक प्रकार ॥
दाड़िम्ब कमला इक्षु चिनि पाना करि ।
विविध संस्कार नारिकेल तदुपरि ॥
नारङ्ग वादाम आर सुपिण्ड खर्ज्जूर ।
लेबू द्राक्षा सीता मिश्रि नवनी प्रचुर ॥
मुद्‌ग चनकादि शस्य जतन करिया ।
पूर्व रात्रे थूयाछिला जले झिजाइया ॥
लवण माखिया ताहा पृथक् धरिल ।
आचार आनिल गृहे जतेक आछिल ॥
पक्व आम्रफल चिनी रसे डुबाइया ।
बहु दिन हैते शचो राखिला धरिया ॥
कासनादि धात्री हरितकीर आचारे ।
सब निकसिया आनि दिलेन वाहिरे ॥

शचीमाता बीच बीचमें प्रियाजीको लक्ष्य कर कहने लगीं, "भोगमें अब कितनी देर है ?" प्रियाजी लज्जाके कारण उत्तर न दे पायीं ।

बधूरे कहये कत बिलम्ब रन्धन ।
लज्जाय आकुला देवी ना कहे वचन ॥

मालिनी देवीने उत्तर दिया—"भोगमें अब देरी नहीं है ।" शचीमाताने प्रियाजीसे कहा–"भोगके लिए मैंने अपने हाथों घरको मार्जन किया है, इसी घरमें भोगके लिये प्रबन्ध करो ।" इतना कह शचीमाता बाहर जाकर ईशानसे बोलीं—"निमाइको स्नान करनेके लिए जानेको कहो, भोग तैयार है, अन्न-व्यञ्जन आदि ठण्डे हो जायंगे ।" प्रभुके पुराने सेवक ईशानने प्रभुसे शचीमाताका आदेश जा कहा । प्रभु भक्तगणके साथ आनन्दपूर्वक गंगास्नानके लिए चले । ईशानने प्रभुको सुगन्धित तेल लगा दिया । धौतवस्त्र ले लिया । भक्तवृन्द पुष्पमाला, और चन्दन घिसकर ले चले । श्रीवासादि भक्तवृन्दके साथ कृष्णकथा कहते हुए प्रभु नदियाके रास्ते गङ्गा स्नानके लिए चले । श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी गङ्गास्नान लीलाका श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने इस प्रकार वर्णन किया है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदीयार सम्पत्ति वा के बलिनेपारे ।
असंख्यात लोक एक-घाटे स्नान करे ॥
कतेक वा शान्त दान्त गृहस्थ संन्यासी ॥
ना जानि कतेक शिशु मिले तहि आसि ।

—चै० भा० म० ४, ४६, ५०

गङ्गाजले केलि करे प्रभु विश्वम्भर ।
समुद्रेर माझ जेन पूर्ण-शशधर ॥
गङ्गाजले केलि करे विश्म्वभर-राय ।
परम-सुकृति-सब देखे नदीयाय ॥
गङ्गाघाटे स्नान करे जत जन ।
सभेइ चाहेन गौरचन्द्रेर बदन ॥
तरङ्गेर छले नृत्य करये जाह्नवी ।
अनन्त ब्रह्माण्ड जार पदयुग-सेवी ॥
चतुर्दिके प्रभुरे बेड़िया जह्नुसुता ।
तरंगेर छले जल देह अलक्षिता ॥

—चै० भा० म० १, १७४, १७५, १७७, १८०, १८१,

स्नानके पश्चात् किसी सेवकने प्रभुका अंग पोंछा, केशोंका सुसंस्कार किया, वस्त्र परिवर्तन कराके माला-चन्दन धारण कराया, सब अङ्गोंके भूषण धारण कराये। इसके बाद घर आकर पाद-प्रक्षालन करके प्रभुने विष्णु-मन्दिरमें प्रवेश किया ।

प्रभुने यथा 'विधि विष्णु-आङ्गनमें स्थित श्रीतुलसी वृक्षमें जल डाला । विष्णु भगवानको निवेदन किया हुआ कुछ मिष्ठान शचीमाताके हाथसे लेकर प्रसाद ग्रहण किया। स्वर्णपात्रमें शचीमाताने प्रभुको जलपान करनेके लिये दिया। जलपान करनेके वाद प्रभु कुछ देर एकान्तमें बैठे। इधर श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु तथा श्रीवास, नरहरि, मुरारी, गदाधर, रामाई वक्केश्वर, हरिदास आदि भक्तवृन्द गङ्गास्नान करके अपने-अपने घर लौटे और नित्यकृत्य समाप्त करके मध्याह्नमें प्रभुके घर आकर उपस्थित हुए। योगका समय हो आया । प्रियाजीने शचीमाताके आदेशसे ठाकुरका भोग लगाया। उन्होंने भोगको किस प्रकार सजाया इसका वर्णन इस प्रकार हैं—

विष्णुप्रिया देवी तबे समापि रन्धने ।
शचीर आदेशे गेला भोगेर सदने ॥
उभारिला भात बहु सुवर्ण थालीते ।
सारि-सारि राखिलेन सिक्त करि घृते ॥
व्यञ्जनादि जत किछु रन्धन करिल ।
क्रम करि ताहा सब पाशेते धरिल ॥
पक्वान्नादि करि आर जतेक आचारे ।
नि-सकड़ि प्रथम धरिल थरे थरे ॥
सुवर्ण भाजने जल सुवासित करि ।
कर्पूर सहित छानि राखिलेन धरि ॥
रतन—सम्पुटे धरि उत्तम ताम्बूल ।
लवङ्ग एलाची आदि जत अनुकूल ॥

प्रभुने स्वयं नवीन तुलसी-मञ्जरीके साथ ठाकुरको भोग लगाया। शचीमाताने प्रभुको भक्तगणके साथ प्रसाद ग्रहण करनेके लिए बुलाया । सब लोग चरण धोकर दिव्यासन पर जा बैठे। प्रभु सबके बीचमें बैठे। उनके सामने बैठे श्रीअद्वैत प्रभु। श्रीनित्यानन्द प्रभु तथा श्रीगदाधर पण्डित दोनों बगलमें बैठे। श्रीवास पण्डित श्रीअद्वैत प्रभुके बगलमें बैठे । अन्यान्य भक्तवृन्द आङ्गनमें बैठे। शचीमाता बहुत ही आनन्दपूर्वक परोसने लगीं। अन्न व्यञ्जन, पावस, मिष्ठान्न आदि बारम्बार लाकर सबको देने लगीं। भीतरसे श्रीमती विष्णुप्रिया देवी तथा पतिव्रता वैष्णव-ग्रहिणीगण प्रभुके भोजन-विलासका दर्शन करने लगीं। प्रभु भोजन करते समय नाना प्रकारका हास-परिहास करते हैं । परमानन्दपूर्वक भोजन समाप्त होने पर सबने आचमन किया। ईशान जलपूर्ण झारी लेकर खड़े हुए। एक-एक कर सब हाथ-मुँह प्रक्षालन कर प्रभुके साथ दिव्यासन पर जा बैठे। प्रभु मधुर-मधुर हँस रहे हैं, और पान चबा रहे हैं। भक्तगण चँवर डुला रहे हैं । शचीमाताने सुस्थिर हो सीता ठकुरानी, मालिनी देवी तथा अन्यान्य पुर-स्त्रीगणको भोजन कराया। जब वे अपने-अपने घर चली गयीं श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके साथ उन्होंने भोजन किया। उनके भोजन कर लेनेके बाद ईशान आदि भृत्यगणने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रसाद ग्रहण किया। उसके बाद रसोई घरके बर्तन तथा रसोई घरको दास-दासियोंने परिष्कृत किया।

श्रीअद्वैत और श्रीनित्यानन्द प्रभु आदि भक्तवृन्द विश्राम करनेके लिए अपने घर गये। सबको बिदा कर प्रभुने अपने शयनगृहमें प्रवेश किया। सुवर्णके पलङ्ग पर प्रभुने शयन किया। गदाधर पण्डित, नरहरि आदि मर्मी अन्तरङ्ग भक्तवृन्दने प्रभुके घरमें शयन किया। कोई प्रभुकी चरण सेवा करने लगा, कोई उनको पंखा झलने लगा। इस प्रकार मध्याह्न भोजनके बाद प्रभुने कुछ देर विश्राम किया। श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी यह द्वितीय कालीय लीला है।

पूर्वाह्न-तृतीय कालीय लीला

तृतीय कालीय लीलाका श्लोक यह है—

५. पूर्वाह्ने शयनोत्थितः सुपयसा प्रक्षाल्य वक्त्राम्बुजं
भक्तैः श्रीहरिनामकीर्तनपरैः साङ्गं स्वयं कीर्त्तयन्।
भक्तानां भवनेऽपि च स्वभवने क्रीड़न्नृणां वर्द्धय-
त्यानन्दं पुरवासिनां य उरुधा तं गौरमध्येम्यहम्॥

भावार्थ—श्रीश्रीमन्महाप्रभुने भोजन-विलासके बाद कुछ देर विश्राम किया, शयनसे उठकर सुवासित जलसे मुख प्रक्षालन किया, अपने मन्दिरमें कीर्तन प्रारम्भ किया। भक्तवृन्दने आकर उसमें योग दिया। कभी-कभी प्रभु भक्तगणके घर जाकर इसी समय कीर्तन करते थे। इससे पुरवासीवृन्द आनन्दसे विह्वल हो उठते।

प्रभुकी इस पूर्वाह्न-लीलाका विस्तृत विवरण स्मरण-मननके हेतु महाजनगणके द्वारा लिखित वर्णनके अनुसार नीचे दिया जाता है।

श्रीश्रीमन्महाप्रभु भोजन-विलासके अन्तमें कुछ देर विश्राम कर उठ बैठे। गदाधर, नरहरि आदि भक्तवृन्द भी विश्राम करके उठ बैठे। ईशानने सुवर्ण झारीमें सुवासित जल लाकर दिया। प्रभु पलङ्गसे उठकर श्रीमुख प्रक्षालन कर हास्य मुखसे दिव्यासन पर जा बैठे। भक्तवृन्द प्रभुको चारों ओरसे घेर कर बैठ गये। कृष्ण-कथा-रङ्गमें कुछ समय बीत गया। इसके बाद भक्तवृन्दमें कोई-कोई अपने कार्यवश घर चले गये। कुछ लोग श्रीअद्वैत प्रभुके घर जा इकट्ठे हुए। वहाँ श्रीमद्भागवतके श्लोकके अर्थ पर विचार करने लगे। पाँच-सात जन मिलकर किसी स्थान पर कीर्तन करने लगे। श्रीवास आदि भक्तगणने प्रभुके घर जाकर उनकी चरण-वन्दना की। प्रभुने एक-एक कर सबको प्रेमालिङ्गन प्रदान कर अपने पास बैठाया। उन्हें कृष्णकथा सुनाकर परितुष्ट किया। तत्पश्चात् गदाधर पण्डितके साथ प्रेमानन्दपूर्वक शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके घर चले। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी प्रभुका दर्शन पाकर कृतार्थ हुए और उनकी वन्दना की। उन्होंने प्रभुके श्रीचरणयुगलको धोकर प्रभुको दिव्यासन पर बैठाया। प्रभुके दोनों बगलमें श्रीनित्यानन्द प्रभु और गदाधर पण्डित बैठे। सामने श्रीअद्वैत प्रभु बैठे। गङ्गा तीर पर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटिया है। उस कुटियाके समीप कदम्बके वृक्ष विराजते हैं। लक्ष-लक्ष शिखी, पिक और भ्रमर गङ्गातटके उस मनोरम अपूर्व उद्यानमें गुन-गुन स्वरसे गीत गा रहे हैं। प्रभु उस उद्यानके मध्य स्थित कुटीरमें भक्तगणके साथ विलास कर रहे हैं। प्रभुके मनमें श्रीयमुनाकी स्मृति उदय हो गयी है, श्रीवृन्दावन भावमें उनका अन्तःकरण और हृदय गद्गद् हो उठे हैं। नन्दनन्दन श्रीकृष्णकी गोचारण-लीला उनके स्मृति-पथमें उदय हुई। श्रीदाम, सुदाम, दादा बलराम कहकर प्रभु प्रेमावेशमें उच्चस्वरमें बारंबार पुकारने लगे। प्रभुके व्रजभावावेशको देख गदाधर आदि भक्तवृन्दके नेत्र प्रेमाश्रुसे भर गये। पश्चात् प्रभु पार्षदोंके साथ श्रीधरकी कुटियामें गये। खोल-विक्रेता दरिद्र श्रीधरने प्रभुका दर्शन प्राप्त कर, उन्हें पाद्य-अर्घ्य प्रदान किया। उनके चरणोंकी वन्दना की और उन्हें दिव्यासन पर बैठाया। भक्तवृन्द चारों ओर बैठ गये। प्रभु श्रीधरके साथ नाना प्रकारके कौतुक करने लगे। श्रीधर प्रभुके मुँहकी ओर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक टक देख रहे हैं और जड़वत् निष्पन्द भावसे खड़े हैं। उनके मुँहसे बात नहीं निकल रही है। वे हाथ जोड़े प्रभुके सामने खड़े हैं। प्रभु श्रीधरको तुष्ट कर उनकी कुटियासे उठे। एक-एक कर गङ्गादास पण्डित, मुरारी गुप्त तथा चन्द्रशेखर आचार्यके घर जाकर कीर्तन-विलास-रङ्गसे सबको सन्तुष्ट किया। इसके बाद प्रभु भक्तगणके साथ गङ्गातट पर मनोहर पुष्पोद्यानमें जाकर उपविष्ट हुए। यह श्रीमन्महाप्रभुकी तृतीय कालीय पूर्वाह्णिक लीला है।

मध्याह्न—चतुर्थ कालीय लीला

पूज्यपाद श्रीपाद चक्रवर्ती महाशय द्वारा लिखित प्रभुकी चतुर्थकालीय मध्याह्न लीलाका श्लोक यह है—

६. मध्याह्ने सह तैः स्वपार्षदगणैः संकीर्तनादीदृशं साद्वैतेन्दु - गदाधरः किल सहश्रीलावधूतप्रभुः। आरामे मृदुमारुतैः शिशिरितैर्भृङ्गद्विजैर्नादिते स्वं वृन्दाविपिनं स्मरन् भ्रमति यस्तं गौरमध्येम्यहम्॥

भावार्थ—श्रीमन्महाप्रभु मध्याह्न लीलामें श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु, गदाधर पण्डित आदि भक्तवृन्दके साथ संकीर्तनके आनन्दमें मत्त हो उठे। कभी गङ्गाके तीर, कभी उपवनमें भ्रमण कर, और गङ्गाकी मनोहर तरङ्ग भङ्गिमा देखकर, तथा मृदु-मन्द वायुका सेवन कर परितृप्त हो गये। वहाँ पक्षीगण मधुर स्वरसे गान कर रहे थे। भ्रमरोंका मधुर झङ्कार सुन पड़ता था, इससे प्रभुके मनमें श्रीवृन्दावनकी स्मृति उदय हो गयी। प्रभु राधा-भावमें उन्मत्त होकर प्रेमावेशमें नृत्य करने लगे। इस मध्याह्न लीलाका विस्तृत विवरण इस प्रकार है—

पूर्वाह्न लीलाके अन्तमें श्रीश्रीमन्महाप्रभुने गङ्गाके तीर उपवनमें आकर विश्राम किया। गङ्गाके तीर एक मनोहर पुष्पोद्यान है। इस अपूर्व पुष्पोद्यानका विवरण श्रीगौराङ्ग-लीलामृत श्रीग्रन्थमें इस प्रकार लिखा हुआ है—

यह मनोहर सुविस्तीर्ण पुष्पोद्यान गङ्गाके तीर पर अवस्थित है। इसके चतुर्दिक बहुत ऊँचे-ऊँचे कदम्ब वृक्षोंकी पंक्तियाँ शोभा दे रही हैं। वृक्षोंके अधः प्रदेशमें घने कण्टकावृत्त केतकीके वन हैं; उसमें लोगोंके आने-जानेका मार्ग बन्द हो गया है। दूरसे वह कण्टक वन जैसा लगता है। समस्त कदम्ब वृक्षोंको घेरकर मालती लताके कुञ्ज निर्मित हो गये हैं। पुष्प-परागवाही समीरण मृदु मन्द प्रवाहित हो रहा है। पुष्पोद्यानमें फैले हुए रास्ते मणिरत्नों द्वारा सुबद्ध हैं। रास्तेके दोनों ओर बकुल वृक्षोंकी कतार शोभा दे रही है। उसके बगलमें कुन्द, कवरी, कुरुवक, गन्धराज, नागेश्वर, यूथी, जाति, मल्लिका, मालती पुष्पवृक्षोंकी पंक्तियाँ सुशोभित हैं। बीच-बीचमें केसर, लवङ्गलता, अशोक, चम्पक, किंशुक वृक्ष आदि विराज रहे हैं। पुष्पोद्यानमें स्थान-स्थान पर मनोहर रत्नवेदीसे परिशोभित निभृत विश्राम स्थल हैं। उनके ऊपर छत्राकृति आच्छादनमें तरुलता-सुशोभित कुञ्ज हैं। तमाल वृक्षके घने नवपल्लवकी शोभा अत्यन्त मनोमुग्धकारिणी है। उसमें मालतीकी कनक-लता लिपटी है। स्थान-स्थान पर मुकुलित आम्रवृक्षकी पंक्ति शोभा दे रही है। सब वृक्षोंके तल सुन्दर-सुन्दर पत्थरोंसे आबद्ध हैं। इससे वृक्षोंकी शोभा वृद्धि हो रही है। जम्बू, पनस, जम्बीर आदि फलोंके वृक्षोंकी पंक्तियाँ भी उपस्थित हैं। इस सुरम्य पुष्पोद्यानका प्रान्त भाग कदली वृक्षसे परिवेष्टित है। वृक्षोंमें फल लगे हैं। कुछ पके हैं, कुछ हरे हैं। कुछ दूर पर श्रेणीबद्ध नारकेलके वृक्ष शोभा पा रहे हैं। उनमें बहुत फल लगे हैं। सुपारी वृक्षोंके बीच-बीचमें खजूर और श्रीफलके वृक्ष सुशोभित हैं। मीठे बेर, कमला नीबू, नारङ्गी, धात्री, हरीतकी, एलायची, लवङ्ग आदिके वृक्ष फलोंसे लदे झुक कर भूतलको स्पर्श कर रहे हैं। अनारके फल पक कर फट रहे हैं और उनसे रस निकल कर भूतलको सिक्त कर रहा है। इस प्रकार जितने वृक्ष हैं, उनका वर्णन नहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किया जा सकता । इस सुरम्य पुष्पोद्यानके बीच एक मणिमय विचित्र मन्दिरके सामने सुशीतल निर्मल जलसे पूर्ण एक विस्तृत दीर्घिका (तलैया) है। स्फटिक पत्थरसे उसकी सीढ़ियाँ बँधी हैं। चारों ओर मणिरत्नमय घाट हैं । इस सुदीर्घिकाके चारों ओर स्थलपद्म, सेफालिका, कनकचम्पा, चन्द्र-मल्लिका आदि पुष्प वृक्षोंकी पंक्तियाँ शोभा दे रही हैं। वे श्रेणीबद्ध होकर सरोवरकी शोभा संवर्द्धित कर रही हैं। तीरस्थ वृक्ष, फल-फूलसे लदे, सलिलको स्पर्श कर रहे हैं। सरोवरके बीचमें श्वेत, नील, रक्त पद्म पुष्प प्रफुल्लित हो रहे हैं। मृदु-मन्द मलय पवन बह रहा है। पद्म पुष्प मन्द-मन्द वायुके झोंकेसे जलके ऊपर डोल रहे हैं। मृदु पवनके द्वारा आन्दोलित पद्म पुष्पके दल पर भ्रमर वृन्द स्थिर हो बैठ नहीं पा रहे हैं. प्रस्फुटित कमलदलके चारों ओर मधुर झंकार कर गुन-गुन गान कर रहे हैं। हंस, सारस, बक आदि जलके पक्षी जलकेलि कर रहे हैं । उस मनोहर सुरम्य पुष्पोद्यानमें कनक-मन्दिरमें कनक-मयी वेदीके ऊपर कनक-कान्ति श्रीश्रीमन्महाप्रभु बैठे हैं। उनके चारों ओर अन्तरङ्ग पार्षदगण बैठे हैं। सबके अङ्ग प्रेम-पुलकित हो रहे हैं, सबके नेत्र सजल हैं। श्रीमन्दिरके द्वादश द्वार पर कनक स्तम्भ परिशोभित हैं। बहिर्भागमे स्वर्ण-दण्डके ऊपर चन्द्रातप सुशोभित है। प्रत्येक द्वार देशमें सुगन्धित मल्लिका पुष्पके हार डोल रहे हैं। ऊपर नीलमणि-मुक्ताके गुच्छ पृथक्-पृथक् झूल रहे हैं। श्रीमन्दिरके पूर्व प्राङ्गणमें दिव्य श्रीतुलसी वन सुशोभित है। पश्चिम दिशामें मल-दमनक वन है। उत्तर-दक्षिण श्यामवर्णका दूर्वादलसे शोभित विस्तृत भूमिखण्ड है । जान पड़ता है, मानो हरितवर्णका दिव्यासन फैला हुआ है। पालतू हरिण-हरिणी तृणकी आशामें स्वच्छन्द इतस्ततः विचरण कर रहे हैं। वे श्रीमन्दिरके समीप आकर श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी अपरूप रूपराशिको देखकर मुग्ध होकर श्रीवदनकी ओर एकटक ताक रहे हैं, आँखें फिरा नहीं पा रहे हैं। कदम्ब वृक्षसे मयूर-मयूरी उतर कर प्रभुकी अपरूप रूपमाधुरीको देख आनन्दसे मधुर नृत्य कर रहे हैं। द्रुमलता आदि कनकपुष्पसे पुष्पित हैं। यह अपूर्व पुष्पोद्यान षड्ऋतुओंके द्वारा सदा सेवित है । षड् ऋतुएँ यहाँ बराबर विराजमान रहती हैं। कोकिलकी कुहू-ध्वनि, चातककी ध्वनि यहाँ नित्य श्रवण गोचर होती है । डाहुक-डाहुकी यहाँ नित्य विचरण करते हैं। कपोत-कपोती उद्यानके वृक्षोंकी शाखाओं पर परम आनन्दपूर्वक वास करते हैं। शुक-सारिका वृक्षकी शाखाओं पर बैठ कर श्रीश्रीनवद्वीप चन्द्रका नित्य जयगान करते हैं। वे क्या कहकर जयगान करते हैं, सुनिये—

सारी-शुक डाके जय श्रीशचीनन्दन ।
जय नरहरि - गदाधरेर जीवन ॥
जय जय नदीया-नागर पुरन्दर ।
जय जय लक्ष्मी-विष्णुप्रिया-प्राणेश्वर ॥
जय जय राधाकृष्ण मिलि एक तनु ।
जय जय प्रकट कल्पतरु जनु ॥
वृन्दावनवासी मोरा पुरुषे पुरुषे ।
अधिक बाड़ये प्रेम नदीया-विलासे ॥

श्रीमन्दिरकी रत्नवेदीपर बैठकर शुक-सारिकाकी वन्दना गीति सुनते - सुनते श्रीश्रीमन्महाप्रभुको श्रीराधाकुण्डकी लीला स्मरण हो आयी । श्रीवृन्दारण्यकी सारी पूर्व स्मृति प्रभुके मनमें जागृत हो उठी । तब वे वृन्दावन-रसमें मग्न होकर क्या कहने लगे ? सुनिये—

क्षणे कहे केवा मोर वंशी कैला चुरि ।
क्षणे कहे खेलि पाशा देखि जिनि हारी ॥
क्षणे कहे ए कुण्डे हय जल-केलि ।
क्षणे बले चल जाइ सूर्य्य-पूजास्थली ॥
क्षणेके चलये धरि गदाधर करे ।
गण-सह प्रभु पुष्प कानने विहरे ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उस समय श्रीश्रीमन्महाप्रभु पुष्पवेषमें थे। पुष्पोंका हार, पुष्पोंका अंगद, पुष्पोंका त्रलय श्रीअंगमें सुशोभित हो रहा था, तथा सिर पर पुष्प-मुकुट सुशोभित था। उपवनके पुष्पोंसे विच्छिन्न उद्यान-पथमें वह अपने गणके साथ प्रेमानन्दमें भ्रमण कर रहे हैं। कुसुम सौरभसे दसों दिशाएँ आमोदित हैं। प्रत्येक वृक्षके नीचे प्रभु कुछ देर विश्राम करते हैं। शीतल वृक्षकी छायामें बैठकर भक्तवृन्दके साथ कीर्तनके आनन्दका अनुभव करते हैं। खोल, करताल, मृदंग, वीणायन्त्रके संयोगसे सुमधुर संगीत रसमें सभी उन्मत्त हो जाते हैं। प्रभुके साथ सभी नित्य आनन्दानुभव करते हैं। श्रीवृन्दावनके समान उस अपूर्व वनमाधुरीसे सब मुग्ध हैं।

श्रीश्रीगौर भगवान्का यह नित्य विहार स्थल है। प्रभुके नित्य दासगण इस अपूर्व वनकी देखभाल करते हैं। प्रभुकी यह वन-विलास-लीला कहानी वर्णनातीत है। इस पुष्पोद्यानमें बैठकर वह भक्त-वृन्दके साथ कीर्तनके आनन्दका उपभोग करते हैं; और उस परमानन्दको भक्तगणके घर जाकर मुक्त हस्तसे वितरण करते हैं। इस चतुर्थ कालीय लीलाके पश्चात् उनकी अपराह्नलीला वर्णित होगी।

अपराह्न-पञ्चम् कालीय लीला

यह प्रभुकी पञ्चम कालीय लीला होगी। श्रीपाद चक्रवर्ती महाशयके सप्तम श्लोकोंमें प्रभुकी इस लीलाका आभास है।

७. यः श्रीमानपराह्णके सहगणैस्तैस्तादृशैः प्रेमवां-स्तादृक्षु स्वयमप्यलं त्रिजगतां शर्माणि विस्तारयन्। आरामात्तत एति पौरजनता चक्षुश्चकोरोडुपो मात्रा दूरमुदेक्षितो निजगृहं तं गौरमध्येम्यहम्॥

भावार्थ—श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी अपराह्न लीलामें निज जनके साथ पुष्पोद्यानसे निजमन्दिरमें शचीमाताके निकट आगमनका वृत्तान्त वर्णित है। प्रभु निज गणके साथ कीर्तनानन्दमें प्रेमोन्मत्त भावसे अपने मन्दिरमें पधार रहे हैं। नदियावासी नर-नारी वृन्द उनकी अपूर्व रूप-राशिको देख आनन्दमें विभोर हो रहे हैं। नदियाका सुप्रशस्त राजपथ दर्शकोंसे ठसाठस भर गया है। प्रभुके कीर्तन-विहारका दर्शन कर वे परमानन्द प्राप्त कर रहे हैं। प्रभुके अपने मन्दिरमें पधारने पर स्नेहमयी शचीमाता बहुत देरके बाद पुत्रका मुँह देखकर आनन्द सागरमें निमग्न हो जाती है।

प्रभुकी इस पञ्चम कालीय अपराह्न लीला-माधुरीके विस्तृत विवरणका आभास नीचे दिया जाता है—

मनोहर पुष्पोद्यानमें श्रीश्रीमन्महाप्रभु व्रजसुखके आनन्दमें विभोर होकर नित्यदासगणके साथ विराजमान हैं। अपराह्न हो गया है, परन्तु इसका प्रभुको ज्ञान नहीं है। शचीमाता बहुत देरसे उनको देख नहीं रही हैं। समय देख कर गदाधर पण्डित मुस्कराते हुए प्रभुसे कहते हैं—

तबे गदाधर आसि कहे मृदु भाषे।
अपराह्न काल आसि हैल प्रवेशे॥
तोमा लागि शचीमाता अति व्यग्र मन।
भक्ष्य द्रव्य कैला बहु करिया जतन॥
स्वर्ण थाली परे ताहा सुसज्ज करिया।
आछेन तोमार पथपाने निरखिया॥

प्रभुने गदाधरकी बात सुनकर भक्तवृन्दकी ओर देखकर कहा, "चलो नगर भ्रमणके लिए चलें।" इतना कहकर प्रभु उठे। उनके साथ दोनों बगल श्रीनित्यानन्द प्रभु और गदाधर पण्डित चले। उनके पीछे अन्यान्य भक्तवृन्द हैं। नदियाके मार्गमें कोटि-कोटि चन्द्र उदित हो गये हैं। श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी अपरूप रूपराशि देखकर कोई आँखें फेर नहीं रहा है। वह रूप कैसा है ?—

नदियार पथे गोरा करिला विजय।
देखि से मोहन रूप सबे फिरि चाय॥
सुवलन सुदीर्घ से कनक शरीर।
से रूप निछनि काम कमल सुनीर॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आजानुलम्बित बाहु दुलि चलि जाय ।
मृणाल द्विरद शुण्ड वर्णन ना जाय ॥
कुञ्चित चिकन चारु जगत मोहन ।
युवतीजनेर लज्जा सहिते बन्धन ॥
कुटिल कुन्तल जेन भ्रमरेर पाँति ।
झलके चन्दन भाले सुधाकर ज्योति ॥
चञ्चल लोचन भूरु कुसुम सन्धान ।
दृष्टि मात्र हाने द्रुत नागरी पराण ॥
मुखचन्द्रे हास मृदु सुधा बरिषय ।
लोभे कुलवती-चित्त चकोरिणी धाय ॥
कुन्तल—हिल्लोल कर्णे रतन मकरी ।
धाइये गिलये नारी पराण शफरी ॥
ग्रीवा कटिदेश शोभा मृगराज जिनि ।
नाशये युवती कुलधरम काहिनी ॥
सुविस्तार वक्षे रतन मुकुतार दाम ।
मालतीर माला दोले अति अनुपाम ॥
मलय चन्दन घन अङ्गे सुलेपन ।
वसन भूषण वेश भुवन मोहन ॥
नदीयार राजपथे प्रभु चलि जाय ।
स्त्री-पुरुष बालवृद्ध सबे शुनि धाय ॥

श्रीश्रीमन्महाप्रभु त्रिभुवनको मोहित करने वाले नदिया नागरवेषमें नदियाके पथसे अपने मन्दिरको जा रहे हैं। श्रीधाम नवद्वीप ध्यानगम्य है। महाजन गणने नित्यधाम नदियाकी शोभाका वर्णन इस प्रकार किया है—

नदियार पथ बालू सुश्वेत कमल ।
दुइ पार्श्वे अट्टालिका श्वेत निरमल ॥
सुवर्ण कमल ध्वज परशे गगने ।
श्वेत पीत पताकादि उड़ये पवने ॥
चन्द्रशाला झाँपि कहाँ उड़े इन्द्रजाल ।
ग्रन्थिते तोरण दोले मल्लिकार माल ॥
गौराङ्ग - गमन - पथे नगर - नागरी ।
दरशन लोभे उठे अट्टालि ऊपरि ॥
सुधाकर माला किवा उदय आकाशे ।
विगलित केशभार मेघ गण्ड पाशे ॥
मणि हार गले जेन नक्षत्र उदय ।
हासिर हिल्लोले किवा विजुरी पड़य ॥
मृदु सुआलाप हय मधुर गर्ज्जन ।
अनुराग नीरे पूर्ण पुष्कर नयन ॥
गौराङ्ग सुतनु जेम सुवर्ण शेखरे ।
वरिषे पिरीति धारा ताहार ऊपरे ॥
नयन युगल केह गवाक्षे सँपिया ।
थाकये गौराङ्ग - पथ - पाने निरखिया ॥
चतुर्योजन सीमा नदीया - नगर ।
स्थाने स्थाने पुष्पोद्यान दिव्य मनोहर ॥
देउल प्रासाद कत देवता मन्दिर ।
सुपाँति शोभये दिव्य विचित्र प्राचीर ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र चारि जाति ।
सारि सारि शोभे गृह सुन्दर वसति ॥
योगी न्यासी ब्रह्मचारी असंख्य वैसय ।
कोन स्थाने गीता पुराणादि पाठ हय ॥
कोन स्थाने, नृत्य गीत वाद्य कोलाहल ।
शिशुगण कोन स्थाने बाजये कोन्दल ॥
सहस्र सहस्र शिशु खेले कोन स्थाने ।
कत लक्ष विप्रगणे करे अध्ययने ॥
यूथे यूथे भट्टाचार्य एकत्र हइया ।
नदीयार बाटे सबे जायेन चलिया ॥
विविध प्रकार लोक पथे चलि जाय ।
देखिया गौराङ्ग मुख अनिमिखे चाय ॥
कदम्ब बकुल वृक्ष आछे स्थाने स्थाने ।
तार तले पिण्डा बाँधा परम शोभने ॥
नगर बाजार आर चत्तर प्राङ्गण ।
सकल पूरित दिव्य मनुष्य गहन ॥
ग्रामेर अन्तरे बहु आम्र वृक्षगणे ।
माझे प्रफुल्लित सब कुसुम कानने ॥
नगर बेड़िया बहे सुरधुनि धार ।
तार तटे गौराङ्गेर मोहन विहार ॥

श्रीचैतन्य भागवतमें लिखा है—

नवद्वीप हेन ग्राम त्रिभुवने नाइ ।
जँहि अवतीर्ण हैला चैतन्य गोसाञि ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अवतरिवेन प्रभु जानिया विधाता ।
सकल सम्पूर्ण करि थूइलेन तथा ॥

—चै० भा० आ० २.५१.५२

श्रीश्रीनवद्वीप चन्द्र इस प्रकार नगर परिभ्रमण कर सपार्षद गङ्गाके तीर पर आकर उदित हुए । जाह्नवीतट ऐसा लगा कि जैसे वह यमुनातट हैं । प्रभु भक्तवृन्दके साथ वहीं बैठ गये । गङ्गाके घाटका वर्णन देखिये—

पाथर बन्धन सब घाट थरे थरे ।
लक्ष लक्ष शिवालय ताहार ऊपरे ॥
बसिवार स्थाने स्थाने अपूर्व मन्दिर ।
निकटे प्रवाह अति सुनिर्मल नीर ॥
गङ्गघाटे बसि आछे गौराङ्ग सुन्दर ।
मदन मोहन रूप सर्व्व मनोहर ॥
अविरत हासी माखा सुचारु वदने ।
वाक् वाक्य परिहास निजजन सने ॥

गङ्गातीर पर बैठकर प्रभु कृष्ण-कथा कह रहे हैं, तथा शास्त्रतत्वकी व्याख्या कर रहे हैं । उनके चारों ओर शिष्यगणके साथ अध्यापक-मण्डली बैठी हुई है । उनके प्रति कटाक्ष कर प्रभु शास्त्रके अर्थकी व्याख्या कर रहे हैं । यथा श्रीचैतन्य भागवतमें—

गङ्गातीरे बसिलेन श्रीशचीनन्दन ।
चतुर्दिके बेड़िया बसिला शिष्यगण ॥
कालिन्दीर तीरे जेन श्रीनन्दकुमार ।
गोपवृन्द-मध्ये बसि करेन विहार ॥
सेइ गोपवृन्द लइ सेइ कृष्णचन्द्र ।
बुझि द्विजरूपे गङ्गातीरे करे रङ्ग ॥
गङ्गातीरे जे जे जने देखे प्रभुर मुख ।
सेइ पाये अति अनिर्व्वचनीय सुख ॥
देखिया प्रभुर तेज अति-विलक्षण ।
गङ्गातीरे काणाकाणि करे सर्व्वजन ॥
अध्यापक प्रति सब कटाक्ष करिया ।
व्याख्या करे प्रभु गङ्गा समीपे बसिया ॥
चतुर्दिके देखे सब भाग्यवन्त लोक ।
सर्व्व नवद्वीप प्रभु प्रभावे अशोक ॥

—चै. भा. आ. ८. २५५, २६४-२६७, २७१, २८१

प्रभुने गङ्गाजीका दर्शन और वन्दना कर घरके लिए प्रस्थान किया । गोधूलिके समय प्रभु अपने मन्दिरमें आये । सैकड़ों गायों और बछड़ोंको लेकर झुण्डके झुण्ड गोपशिशु रङ्गरेलियाँ करते हुए घर जा रहे हैं । यह देखकर प्रभुके मनमें बड़ा उल्लास है । रास्तेमें जाते-जाते वृन्दावन भावमें विभावित हो 'श्यामली, धवली' कह कर जोर-जोरसे पुकारने लगे । उसी समय रास्तेमें सहस्रों ब्राह्मण पण्डित संध्या कृत्य करने गङ्गा तटकी ओर जा रहे थे । पाठ समाप्त कर उधर ब्राह्मण कुमार पोथी हाथमें लिये कोलाहल करते चले जा रहे थे । उसी समय प्रभु जनसंघके बीच होते हुए स्वजन गणके साथ अपने घर पधारे । भक्तवृन्द प्रभुको उनके मन्दिरमें पहुँचा कर अपने-अपने घर गये । पुत्रके मुँहको देख शचीमाताके हृदयमें आनन्द सिन्धु उमड़ उठा । वह अत्यन्त व्यस्त-सी होकर प्रभुके पास आकर बैठ गयीं । स्नेहवश शचीमाताने अपने आँचलसे पुत्रके कीर्तनसे श्रान्त स्वेदकी बूँदोंसे युक्त चन्द्रवदनको पोंछा । जिस प्रकार माता यशोदा श्रीकृष्णचन्द्रके गोचारणसे घर लौटने पर उनका लाड़-प्यार करती थीं, उसी प्रकार सन्ध्या कालमें प्रभुके लौटने पर शचीमाताने यशोदा भावमें विभावित हो उनको गोदमें ले लाड़-प्यार किया । ईशानने जलपूर्ण झारी लाकर प्रभुके सामने रखी । प्रभुके सुस्ता लेने पर भाग्यवान ईशानने उनके पैर धोये । किसी सौभाग्यवान भक्तने आकर प्रभुका केश-संस्कार कर दिया । किसीने सुवासित जलसे उनके श्रीअङ्गको धोकर सूक्ष्म वस्त्र द्वारा गात्र-संमार्जन किया । प्रभुने कपड़े बदले । यह हुई प्रभुकी अपराह्न लीला ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सायाह्न--षष्ठ कालीय लीला

इसके बाद सायाह्न लीला हुई। यह प्रभुकी षष्ठ कालीय लीला है। श्रीपाद चक्रवर्ती महाशय कृत: अष्टम श्लोकमें इस लीलाका सूत्र है। वह श्लोक इस प्रकार है—

८. यस्त्रिस्रोतसि सायमाप्तनिवहै: स्नात्वा प्रदीपालिभि:
पुष्पाद्यै श्च समर्चित: कलित-सत्पट्टाम्बर: स्रग्धर:।
विष्णोस्तत्समयार्चनं च कृतवान् दीपालिभिस्तै: समं
भुक्त्वान्नानि सुवीटिकामपि तथा तं गौरमध्येम्यहम्॥

भावार्थ—श्रीमन्महाप्रभु सायाह्नमें पार्षदोंको साथ ले पुन: गङ्गास्नान करके आये। भक्तवृन्दने प्रदीप जलाकर पुष्पचन्दनके द्वारा उनकी पूजा की। प्रभुने पट्टवस्त्र धारण कर विष्णु मन्दिरमें गमन किया। धूप-दीप-नैवेद्य आदिके द्वारा विष्णुकी पूजा हुई। पश्चात् उन्होंने सुवासित ताम्बूल चबाते हुए भक्तोंके साथ कृष्ण-कथा प्रारम्भ की।

प्रभुकी इस सायाह्न लीलाका विस्तृत विवरण इस प्रकार है। श्रीमन्महाप्रभु अपने मन्दिरसे भक्तवृन्दके साथ सन्ध्या कालमें गङ्गास्नान करने चले। नदियाके मार्गमें नदिया-नागर श्रीमन् महाप्रभु कृष्ण-कथा कहते प्रेमानन्दमें रंगे चले जा रहे हैं। उन्होंने गङ्गाके तीर पर जाकर जी भर गङ्गाजीका दर्शन किया। तीर पर बैठ कर सन्ध्या वन्दन आदि समाप्त किया। स्नान करके वे अपने मन्दिर लौटे। ईशान जलपूर्ण झारी तथा शुष्क वस्त्र हाथमें लेकर आया। प्रभुके वस्त्र बदल लेने पर भाग्यवान् ईशानने प्रभुके चरण धोये। प्रभुने विष्णु मन्दिरमें प्रवेश किया। धूप-दीप-पुष्प-नैवेद्य सब कुछ सुसज्जित था। श्रीमती विष्णुप्रिया देवीने आरतीका सब प्रबन्ध कर रखा था। प्रभुने ठाकुरकी सन्ध्या आरती समाप्त कर साष्टाङ्ग प्रणाम किया। शचीमाताने नाना प्रकारके फल-मूल, मिष्ठान्न आदिका विष्णु भोगके लिए आयोजन कर दिया। प्रभुने भोग लगाकर ठाकुरको शयन कराया। फिर वे घरके बाहर जाकर दिव्यासन पर बैठे। शचीमाता पुत्रके पास बैठीं उनके मनमें अपार आनन्द था। विष्णुका नैवेद्य लाकर उन्होंने प्रभुके सामने रखा। प्रभुने बड़े आनन्दसे प्रसाद ग्रहण किया। शचीमाताने भक्तवृन्दको प्रसाद बाँटा। प्रभुकी अनुमति लेकर भक्तवृन्द अपने-अपने घर गये। शचीमाता अपने कार्यमें लग गयीं। प्रभु अकेले दिव्यासन पर बैठे हैं उसी समय श्रीमती विष्णुप्रिया देवी पनबट्टा हाथमें लिये प्रभुके चरणोंमें आकर बैठीं।

आचमन करिया बसिला गौर राय।
विष्णुप्रिया देवी रहि ताम्बूल जोगाय॥

माताके मनको आनन्द प्रदान करनेके उद्देश्यसे प्रभुने प्रियाजीके साथ हँसते-हँसते रसकथा प्रारम्भकी।

मायेर चित्तोर सुख ठाकुर जानिया।
लक्ष्मीर संगेने प्रभु थाकेन बसिया॥

—चै० भा० म. ११. ६६

कुछ देर तक प्रभु प्रियाजीवे साथ रसकी बातें कर श्रीवास-आङ्गनमें जानेकी तैयारी करने लगे। उसी समय भक्तवृन्द आकर उपस्थित हुए। अब सन्ध्याकाल बीत रहा है। चारों ओर शङ्ख-ध्वनि हो रही है। उज्ज्वल दीपमालिका नदियाके मार्गमें पंक्ति बद्ध जल रही है। दीपालोकसे राह-घाट आलोकित हो रहे हैं। मत्तसिंहकी गतिसे सपार्षद श्रीमन् महाप्रभु कृष्ण-कथा-रङ्गमें श्रीवास भवनमें जा उपस्थित हुए। यही प्रभुकी सायाह्न लीला है।

प्रदोष--सप्त कालीय लीला

इसके बाद प्रदोष लीला प्रारम्भ होती है। श्रीपाद चक्रवर्ती ठाकुरने नवम श्लोकमें प्रभुकी प्रदोष-लीलाका इस प्रकार आभास दिया है—

९. य: श्रीवास-गृहे प्रदोषसमये ह्यद्वैत चन्द्रादिभि:।
सर्वैर्भक्तगणै: समं हरिकथा-पीयूषमास्वादयन्।
प्रेमानन्दसमाकुलश्च चलधी: सङ्कीर्तने लम्पट:
कर्त्तुं कीर्त्तनमूर्द्ध्व मुद्यभुपरस्तं गौरमध्येम्यहम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भावार्थ—श्रीमन्महाप्रभु ने प्रदोषकालमें पार्षदों सहित श्रीवास पण्डितके घर गमन किया। श्रीअद्वैताचार्य, श्रीनित्यानन्द प्रभु आदि अन्तरङ्ग भक्तवृन्द उनके साथ थे। पहले श्रीवास-भवनमें हरिकथाके प्रसङ्गमें भक्तवृन्दके साथ इष्टगोष्ठी हुई। प्रभुके श्रीमुखसे हरिकथाके अपूर्व प्रेमरसका आस्वादन कर भक्तवृन्द विह्वल हो उठे। उसके बाद कीर्तन-लम्पट श्रीगौराङ्गप्रभुने उच्च हरि-सङ्कीर्तन आरम्भ किया। परमानन्दमें भक्तवृन्दने प्रभुके साथ कीर्तनमें योगदान किया।

प्रभुकी इस प्रदोष लीलाका विस्तृत विवरण नीचे दिया जाता है—

जब श्रीमन्महाप्रभुने श्रीवास भवनमें पदार्पण किया, तो गोष्ठी सहित श्रीवास पण्डित परम आनन्दित हुए। झट घरसे बाहर आकर उन्होंने प्रभुकी चरण-वन्दनाकी और चरण धोये। दिव्यासन पर उन्हें बैठाया। एक-एक करके अन्यान्य भक्तवृन्द आकर वहाँ उपस्थित हुए। प्रभु सिंहासन पर विराजमान हैं। श्रीनित्यानन्द प्रभु सिंहासनके दाहिने विराज रहे हैं। श्रीअद्वैत प्रभु, गदाधर पण्डित, नरहरि, मुकुन्द, श्रीधर, वक्रेश्वर, हरिदास आदि भक्तवृन्द एकत्रित हो उनकी आरतीकी तैयारी करने लगे। गदाधर पण्डित प्रभुके वाम भागमें खड़े हो गये। नरहरि चँवर डुलाने लगे। अन्यान्य भक्तवृन्द कोई आनन्दमें नृत्य करने लगे, कोई सुमधुर गीत गाने लगे, कोई रत्नप्रदीप जलाने लगे। मृदंग, मंजीरा, शङ्ख, झाँझ और घण्टेकी ध्वनिसे श्रीवासका आङ्गन ध्वनित हो उठा। घरके भीतरसे वैष्णव-गृहिणी-जनने शुभ हुलूध्वनि प्रारम्भ की। श्रीअद्वैत प्रभुने पञ्च-प्रदीप जलाकर प्रभुकी आरती आरम्भ की। भक्तवृन्द सब एक साथ समस्वरसे आरतीका गीत गाने लगे।

गौरी राग

जय जय आरति गौर-किशोर।
विलसत सिंहासन जनु कनकाचल
डगमग जगति युवतिचितचोर॥ ध्रुव॥
श्री अद्वैत-प्रेम भरे गर गर
आरति करु निजनाथ नेहारि;
दक्षिण भागे भाति रीति अद्भुत
नित्यानन्द चन्द्र रसे भोर।
बामे गदाधर सरस भङ्गी तहि
कोइ धरत नवछत्र उजोर॥
श्रीवास वरषत कुसुमावली
चामर करु नरहरि अनिवार।
शुक्लाम्बर चरचत चन्दन,
गुप्त मुरारी करत जयकार॥
माधव वासुघोष पुरुषोत्तम
विजय मुकुन्द आदि गुणी भूप।
गायत मधुर राग श्रुति मुरछन
ग्राम सप्तस्वरो भेद अनूप॥
बाजत मुरज मृदङ्ग चङ्ग डम्फ
वेणु निशान-रेणु चलु ओर।
घन घन घण्टा झम झम झमकत
झालरि झाँज गरजे घनघोर॥
नाचत परम हर्षे वक्रेश्वर
सरस भाति गति नटन सचार।
उघटन विधि किटतक थेइ थेइ
थैति विविध परकार॥
विवश पूरब रसे रसिक गदाधर
श्रीधर गौरीदास हरिदास।
को विरचब सब भगत मत्त अति
गौर मुख मधुरिम हास॥
सुरगण गगने मगन गण सह सुरपति
कत जतने करत परिहार।
पार्वती-पति चतुरानन पुलकित
झर झर नयने झरत जलधार॥
त्रिभुवन उलस शेष यश वरणत
स्तुति करु मुनि नर नाम उचारि।
नरहरि पहुँ व्रजभूषण रसमय
नदीयापुर परमानन्दकारी॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शान्तिपुरनाथ श्रीअद्वैत प्रभु आरती समाप्त कर प्रेमानन्दमें विभोर हो नृत्य करने लगे। उसी समय अन्यान्य भक्तवृन्द आकर कीर्तनमें योगदान करने लगे। श्रीमती विष्णुप्रिया देवीको साथ ले शचीमाता श्रीवास-भवनमें आयीं। सीता ठाकुरानी भी आयीं। श्रीवास-गृहिणी मालिती देवी बहुत आदरपूर्वक उनको अन्तःपुरमें ले गयीं। प्रभुके आदेशसे उनके निजजनके सिवा अन्य बहिरङ्ग लोगोंको श्रीवास-मन्दिरमें प्रवेश करनेकी मनाही थी।

कवाट पड़िल नबे प्रभुर आज्ञाय।
आप्तगण बिने आर जाइते ना पाय॥

—चै. भा. म. २, १८

श्रीश्रीमन्महाप्रभु श्रीवासके आङ्गनमें दिव्य सिंहासन पर बैठे मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं। उनके सर्वचित्ताकर्षक रूपसे सभी मुग्ध हो रहे हैं। सब भक्तोंकी मनोवाञ्छा प्रभु पूर्ण कर रहे हैं। जिस भक्तका जो भाव है उसीके अनुरूप वह प्रभुका दर्शन और उनकी वन्दना कर रहा है। कोई हाथ जोड़कर सजल-नयन प्रभुकी स्तुति वन्दना कर रहा है। कोई उनके चरणकमलमें पुष्पाञ्जलि प्रदान कर भूतल पर लेटकर साष्टाङ्ग प्रणाम कर रहा है। कोई सुवासित ताम्बूलका जोगाड़ कर रहा है। प्रभुने कृष्ण-कथाका प्रसङ्ग छेड़ा है। चारों ओर मीनों सुधावृष्टि हो रही है। प्रभुके श्रीमुखसे निःसृत् अमृतमें सनी मधुमय वाणी सुनकर भक्तवृन्दके प्राण शीतल हो रहे हैं। अब संकीर्तन यज्ञका अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। मुकुन्द इसके प्रबन्धकर्ता हैं। प्रभुके सभी अन्तरङ्ग भक्तवृन्द श्रीवासके आङ्गनमें आये हुए हैं। उनके पवित्र नामका स्मरण करनेसे सब पाप दूर हो जाते हैं।

कीर्त्तनेर शुभारम्भ करिला मुकुन्द।
'रामकृष्ण नरहरि गोपल गोविन्द॥'
नित्यानन्द, गदाधर अद्वैत, श्रीवास।
विद्यानिधि, मुरारि, हिरण्य, हरिदास॥
गङ्गादास, वनमाली, विजय, नन्दन।
जगदानन्द, बुद्धिमन्त खान, नारायण॥
काशीश्वर, वासुदेव, राम, गरुड़ाइ।
गोविन्द, गोविन्दानन्द, सकल तथाइ॥
गोपीनाथ, जगदीश श्रीमान् श्रीधर॥
सदाशिव वक्रेश्वर, श्रीगर्भ, शुक्लाम्बर॥
ब्रह्मानन्द, पुरुषोत्तम, संजयादि जत।
अनन्त चैतन्य-भृत्य—नाम जानि कत॥
सभेबइ प्रभुर नृत्ये थाकेन संहित।
परिषद बइ आर केह नाहि तथि॥

—चै. भा. म. १८, ३८, ११२-११७

महासंकीर्तन यज्ञका आयोजन हुआ। कौन भक्त किस प्रकारके भावमें संकीर्तन यज्ञमें योग देवे, इसकी व्यवस्था कर दी गयी। मृदङ्ग और करतालके निनादसे श्रीवासका आङ्गन प्रकम्पित हो उठा। संकीर्त्तन यज्ञेश्वर श्रीश्रीमन्महाप्रभुने सबकी ओर शुभ दृष्टिपात करके संकीर्तन आरम्भ करनेका आदेश दिया। यही प्रभुकी प्रदोष लीला है।

निशान्त-अष्टकालीय लीला

इसके बाद उनकी निशान्त लीला प्रारम्भ होती हैं। यही प्रभुकी नैश-संकीर्तन-लीला है। रास लीला और इस संकीर्तन लीलामें कुछ भेद नहीं है। श्रीपाद विश्वनाथ चक्रवती ठाकुरकृत दशम श्लोकमें प्रभुकी इस मधुर नैश संकीर्तन लीलाका सूत्र वर्णित है।

१०. श्रीवासादिभिरावृतोनिजगणैः साद्धं प्रभूभ्यां नटन् उच्चैस्ताल-मृदङ्ग वादनपरैर्गायद्भिरुल्लासयन्। श्रीमान् श्रीलगदाधरेण सहितो नक्तं विभात्यद्भुतं स्वं गौरः शयनालये स्वपिति यस्तं गौरध्येम्यहम्॥

भावार्थ—निशाकलमें श्रीवासके आङ्गनमें अपने गणके साथ श्रीश्रीमन्महाप्रभु उच्च स्वरसे संकीर्तन तथा उद्दण्ड नृत्यावेशमें प्रमत्त हो रहे हैं। मृदङ्ग, वेणु और वीणा आदि वाद्य समूहके सुस्वर सुर-तालके साथ मधुर कीर्तन गानसे प्रभुका मन बड़ा उल्लसित है। उल्लास भरे मनसे प्रभु मधुर नयन-रञ्जन-अङ्ग-भङ्गिमाके साथ रङ्ग करते हुए गदाधरके साथ हाथमें हाथ मिलाकर अत्यद्भुत नृत्यविलास कर रहे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संकीर्तनके पश्चात् निशाकालमें प्रभु अपने घर आकर शयन करने लगे। भक्तवृन्द प्रभुको घर पहुँचाकर अपने-अपने घर चले गये।

प्रभुकी इस अष्टम-कालीय निशान्त लीलाका विस्तृत विवरण दिया जाता है :

श्रीवासके आङ्गनमें कीर्तन आरम्भ हो गया है। बाह्य द्वार प्रभुके आदेशसे बन्द है। संकीर्तन यज्ञेश्वर श्रीगौराङ्ग प्रभु संकीर्तन यज्ञमें अधिष्ठित हो गये हैं। प्रभुके उद्धत नृत्यसे पृथ्वी प्रकम्पित हो रही है। कीर्तन-विलासमें प्रभु उन्मत्त हो रहे हैं। भक्तवृन्द आनन्दके कारण अपने आपेमें नहीं हैं। कीर्तनके चार सम्प्रदाय हो गये हैं। सब सम्प्रदायोंके बीच श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रका अद्भुत नृत्यविलास हो रहा है। श्रीवास-आङ्गनमें प्रभुके निशाकालीन कीर्तन-विलासका वर्णन ग्रन्थोंमें इस प्रकार पाया जाता है।

पुण्यवन्त-श्रीवास-अङ्गने शुभारम्भ।
उठिल कीर्तन ध्वनि 'गोपाल गोविन्द'॥
श्रीवास पण्डित लइया एक सम्प्रदाय।
मुकुन्द लइया आर जन कथो धाय॥
लइया गोविन्द दत्त आर कथो जन।
गौरचन्द्र-नृत्ये सभे करेन कीर्त्तन॥
धरिया बुलेन नित्यानन्द महाबली।
अलक्षिते अद्वैत लयेन पदधूलि॥
गदाधर-आदि जत सजल-नयने।
आनन्दे विह्वल हैला प्रभुर कीर्त्तने॥
जखन उदण्ड नाचे प्रभु विश्वम्भर।
पृथ्वी कम्पित हय, सभै पाय डर॥
कखन वा मधुर नाचये विश्वम्भर।
जेन देखि नन्देर नन्दन नटवर॥
क्षणे ध्यान करे कर मुरलीर छन्द।
साक्षात् देखिये जेन वृन्दावन चन्द्र॥
जखन जे भाव हय, सेइ अदभुत।
निज-नागानन्दे नाचे जगन्नाथ सुत॥
क्षणे क्षणे महास्वेद हय कलेवरे।
मूर्तिमती गङ्गा जेन आइला शरीरे॥
प्रभुर आनन्द देखि भागवतगण।
अन्योऽन्ये गला धरि करये क्रन्दन॥
सभार श्रीअङ्गे शोभे श्रीचन्दन-माला।
आनन्दे गायइ कृष्ण रसे होइ भोला॥
मृदङ्ग मन्दिरा बाजे शङ्ख करताल।
संकीर्तन-सङ्गे सब हइल मिशाल॥
ब्रह्माण्डे उठिला ध्वनि पूरिया आकाश।
चौदिकेर अमङ्गल जाय सब नाश॥
ए कोन अद्भुत—जार सेवकेर नृत्य।
सर्व विघ्न नाश हय जगत् पवित्र॥
से प्रभु आपना नाचे आपनार नामे।
इहार कि फल—किबा बलिब पुराने॥
चतुर्दिके श्रीहरि-मङ्गल संकीर्त्तन।
माझे नाचे जगन्नाथ मिश्रेर नन्दन॥
जार नामानन्दे शिव वसन ना जाने।
जार नामे नाचे शिव, सै नाचे आपने॥
जार नामे वाल्मिकी हइला तपोधन।
जार नामे अजामिल पाइला मोचन॥
जार नाम लइ शुक नारद बेड़ाय।
सहस्र वदन प्रभु जार गुण गाय॥
निजानन्दे नाचे महाप्रभु विश्वम्भर।
चरणेर ताल शुनि अति-मनोहर॥
सकल-वैष्णव प्रभु देखि एके एके।
भावावेशे पूर्व-नाम धरि-धरि डाके॥
'हलधर, शिव, शुक, नारद, प्रह्लाद।
रमा, अज, उद्धव' बलिया करे नाद॥
पूर्व्वे जेइ साँभाइला बाड़ीर भीतरे।
से-इ मात्र देखे, अन्ये प्रवेशिते नारे॥
जेन महारास-क्रीड़ा—कत जुग गेल।
'तिलार्द्धेक' हेन सब गोपिका मानिल॥

—चै. भा. म. ८.१३९, १४१-१४४, १६६, १६७, १७७, १८०, १५८, १८६-१३४, १९६, २००, २२४, २२५, २२६, २८०

"पुण्यात्मा श्रीवासके आँगममें 'गोविन्द-गोपाल' कीर्त्तन-ध्वानिका शुभारम्भ हो गया है। श्रीवास

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पण्डितके साथ (कीर्त्तनकारियोंका) एक सम्प्रदाय (दल) है, मुकुन्दके साथ दूसरा दल है। गोविन्द दत्तके साथ एक और दल है। गौरचन्द्रके साथ नृत्य करते हुए सब कीर्तन कर रहे हैं। महाबली नित्यानंद गौरचन्द्रको पकड़े घूम रहे हैं, अद्वैत चुपकेसे गौरचन्द्रकी पदधूलि ले लेते हैं। प्रभुके कीर्तनमें गदाधर आदि सब लोग सजल-नयन और आनन्द-विह्वल हो रहे हैं। विश्वम्भर प्रभु जब उद्दण्ड नृत्य करते हैं तब पृथ्वी काँपने लगती है और जब मधुर नृत्य करते हैं तब नटवर नन्दनन्दन जैसे लगते हैं। दूसरे क्षणमें जब वे ध्यान करके मुरलीका भाव दिखाते हैं तो लगता है मानो साक्षात् वृन्दावनचन्द्र हैं। जब जिस भावमें आते हैं तब वही अद्भुत लगने लगता है। श्रीजगन्नाथके पुत्र गौराङ्ग अपने नामके आनन्दमें मत्त हैं। क्षण-क्षण उनके शरीरसे स्वेद प्रवाहित होता है, मानो गङ्गाजी मूर्तिमान् हो उनके देह पर आ गयी हों। प्रभुके आनन्दको देख भागवत-गण एक दूसरेके गलेमें हाथ डालकर क्रन्दन करने लगते हैं। सबके श्रीअङ्ग पर श्रीचन्दनकी माला शोभती है। सब सुध-बुध खोकर आनन्दसे कृष्ण-गान कर रहे हैं। मृदङ्ग, मन्दिरा, शङ्ख, करताल आदि वाद्य संकीर्त्तनके साथ एक हो रहे हैं। आकाश में फैलती हुई उनकी ध्वनि ब्रह्माण्डमें छा रही है। चारों ओर सब अमङ्गलका नाश हो रहा है। यह कैसी अद्भुत बात है कि जिस प्रभुके दासके नृत्यसे सारे विघ्न नष्ट हो जाते हैं, और जगत् पवित्र हो जाता है, प्रभु स्वयं अपने नाम संकीर्तनके साथ नाच रहे हैं। इसका फल पुराण भी कहाँ तक कह सकते हैं ? चारों ओर मङ्गलमय श्रीहरिकीर्तन हो रहा है। बीचमें श्रीजगन्नाथ मिश्रके नन्दन श्रीगौराङ्ग नाच रहे हैं। जिनके नाम स्मरणके आनन्दमें शिवको अपने वस्त्रादिका भी भान नहीं रहता, जिनके नाम स्मरणमें ब्रह्मा नाचते हैं, वे प्रभु स्वयं नाच रहे हैं, जिनका नाम लेनेसे बाल्मीकि तपस्वी हो गये, जिनके नामसे अजामिलको सद्गति प्राप्ति हुई जिनका नाम लेते हुए श्रीशुकदेवजी और नारद मुनि भ्रमण करते रहते हैं, सहस्रवदन शेषनाग जिसका गुण गाते हैं, वे प्रभु विश्वम्भर अपने नामानन्दमें नृत्य कर रहे हैं। उनके चरणोंकी ताल सुननेमें अति मनोहर लगता है। प्रभु सब वैष्णवोंको एक-एक करके देखते हैं और भावावेशमें उनका पूर्ण नाम लेकर पुकारते हैं। हलधर, शिव, शुक, नारद, प्रह्लाद, रमा, अज, उद्धव आदि नाम लेकर पुकारते हैं। पहले जिन्हें भीतर आने दिया गया था, वे ही इस संकीर्तनको देख रहे हैं, दूसरा कोई प्रवेश नहीं कर पा रहा है। जिस प्रकार महारासमें न जाने कितने युग बीत गये, पर गोपियोंको ऐसा लगा कि एक क्षण ही बीता हो, उसी प्रकार इस संकीर्तन महायज्ञमें न जाने कितने युग बीत गये हैं पर महाप्रभुके पार्षदोंको ऐसा लग रहा है कि एक क्षण ही बीता हो।"

शचीमाता प्रभुको उद्दण्ड नृत्य करते और भूतल पर पछाड़ खाकर गिरते देख गोविन्दको स्मरण कर अपनी आँखें मूँद लेती हैं।

से कोमल शरीरे आछाड़ बड़ देखि।
'गोबिन्द' स्मरये आइ बुंजि दुइ आँखि॥

—चै. भा. म. ८,१२५

दो पहर रात तक प्रभु इस प्रकार श्रीवासके आँगनमें महा-संकीर्तन करते हैं। संकीर्तन यज्ञ समाप्त होने पर श्रीवासके आङ्गनमें भक्तोंके साथ बैठकर कीर्तन-श्रम दूर करते हैं। परिकरवृन्द चँवर ढुलाते हैं। शचीमाता श्रीमती विष्णुप्रिया देवीको लेकर तुरन्त घर लौट जाती हैं।

और भी सब वैष्णव गृहणियाँ अपने-अपने घर लौट जाती हैं। प्रभु ग्रीष्मकालमें कीर्तनके पश्चात् पुनः गङ्गास्नान कर घर लौटते हैं। भक्तवृन्द उन्हें घरमें पहुँचाकर अपने घर जाते हैं।

शचीमाता घर पर आकर घरका द्वार खोलकर पुत्रके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगती हैं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी प्राणबल्लभके लिए रात्रिमें भोजनका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रबन्ध करती हैं । प्रभुके अपने घर आने पर ईशान जलपूर्ण झारी और गमछा लेकर प्रभुके पैर धो देते हैं । प्रभु वस्त्र बदलकर दिव्यासन पर भोजनके लिए बैठते हैं। शचीमाता सुवर्णके पात्रमें नाना प्रकारके भोजनोपहार प्रभुके सामने रखती हैं। प्रभु प्रसन्न चित्तसे भोजन करते हैं। शचीमाता पुत्रके पास बैठकर भोजन कराती हैं । प्रियाजी घूँघट देकर भोजन परोसती हैं। प्रभु भोजन करते हैं, शचीमाता नयन भर प्रभुके भोजन-विलासका दर्शन करती हैं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी अन्तरालमें खड़ी होकर प्राण-वल्लभके भोजन-विलासका दर्शन कर कृतार्थ होती हैं।

प्रभुका भोजन-विलास समाप्त होता है । वे आचमनकर शयन-मन्दिरमें जाकर बैठते हैं और आनन्दपूर्वक स्वर्ण-पर्यङ्क पर सो जाते हैं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी प्रभुका प्रसाद पाती हैं। भाग्यवान् ईशान श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाके अधरामृतका प्रसाद ग्रहण करता है। उसके बाद पाकशालाको परिष्कार कर यथा समय ईशान श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियके पाद-पद्मका स्मरण कर शयन करते हैं । शचीमाता अपने घरमें शयन करती हैं । शचीमाताके शयन करने पर श्रीमती विष्णु प्रियादेवी चुपकेसे प्राणबल्लभके शयन-मन्दिरमें प्रवेश कर प्रभुकी पाद-सेवा करने लगती हैं। यथा श्रीचैतन्य भागवतमें—

भोजन-अन्तरे करि ताम्बूल-भक्षण।
शयन करेन, लक्ष्मी सेवेन चरण॥
—चै. भा. म. ८।१०३

प्रभुके गृहमें कभी-कभी हरिदास, गदाधर आदि भक्तगण शयन करते हैं। श्रीनित्यानन्द प्रभु भी निशाकालमें कभी-कभी प्रभुके घर शयन करते हैं। दूसरे भक्तवृन्द अपने-अपने घर गमन करते हैं।

प्रभुकी यह निशान्तलीला उनकी अष्टकालीय लीलाकी अन्तिम लीला है। नवद्वीपलीला नित्यलीला है, नवद्वीपधाम नित्यधाम है, प्रभुके परिकरवृन्द उनके नित्य-दास हैं। अद्यापि प्रभु नित्यधाम नदियामें वही नित्यलीला करते हैं। भाग्यवान् गौर भक्तवृन्द आज भी उसके दर्शन करते हैं।

अद्यापिह सेइ लीला करे गोरा राय।
कोन कोन भाग्यवाने देखिबारे पाय॥

श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र परम आनन्दमें निज मन्दिरमें प्रियाके साथ युगल विलास कर रहे हैं। सुखकी नींद सो रहे हैं। यही उनकी निशान्त लीला है।

फलश्रुति

पूज्यपाद श्रीपाद विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुरने स्वरचित इस अष्टकालीय स्मरण-मङ्गल-स्तोत्रके एकादश अर्थात् अन्तिम श्लोकमें लिखा है कि श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी यह अष्टकालीय लीला ब्रज-लीला स्मरण-मननके आदिमें स्मरणीय है। ऐसा करनेसे साधक श्रीश्रीराधाकृष्णकी युगल सेवाका अधिकारी और प्रभुका कृपापात्र बनता है। प्रीति पूर्वक और भक्ति पूर्वक श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी इस अष्टकालीय लीलाका नित्य पाठ करनेसे सर्वाभीष्टकी प्राप्ति होती है। अन्तिम श्लोक यह है—

११. श्रीगौराङ्गविधोः स्वधामनि नवद्वीपेऽष्टकालोद्भवां
भाव्यां भव्यजनेन गोकुल-विधोर्लीलास्मृतेरादितः।
लीलां द्योतयदेतदत्र दशकं प्रीत्यन्वितो यः पठेत्
तं प्रीणाति सदैव यः करुणया तं गौरमध्येम्यहम्॥

इति श्रीपाद विश्वनाथचक्रवर्ती ठाकुर विरचितं श्रीगौराङ्गाष्टकालीय लीला-स्मरण-मङ्गल-स्तोत्रं समाप्तम्।

ठाकुर नरहरिकृत अष्ट-कालीय लीला वर्णन

ठाकुर नरहरिकृत श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी अष्ट-कालीय लीलासे सम्बन्धित एक पद इस प्रकार है—

राग तोड़ी

निशि शेषे गोरा घूमेर आवेशे शयन पालङ्कोपरे।
हेन जन नाहि जे बारेक से शोभा हेरिया पराण धरे॥
प्रभाते जागिया निज परिकर वेष्टित अंगने बसि।
जग-जन-मन हेलाय हरिया हियाते थाकये पशि॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दन्त धावनादि सारि सुरनदी-स्नानादि आनन्दावेशे ।
निजगृह गणसह जे भोजन कौतुक शयन शेषे ॥
पूर्वाह्न समये शुक्लाम्बर आदि भगतणेर घरे ।
प्रेमेर आवेशे अवश हइया विविध विलास करे ॥
मध्याह्नकालेते अति मनोहर पुष्पेर कानन माझे ।
कत कर रङ्गे तरङ्गे विभोर सङ्गे पारिषद साजे ॥
अपराह्न काले प्रियगण मिलि भुवन मोहन वेश ।
नदीया नगरे फिरे घरे घरे शोभार नाहिक शेष ॥
सन्ध्याकाले निज भवने गमन अति अपरूप रीति ।
देववन्दनादि करये यतने जाहाते मायेर प्रीति ॥
प्रदोषे श्रीवासमन्दिरे प्रवेश अधिक उल्लास हिया ।
तथा प्रियगण मन अनुरूप करये अद्भुत क्रिया ॥
निशाये सकल परिकर सह सुखे संकीर्तन करि ।
पुनः आसे निज प्रियार मन्दिरे भणे दास नरहरि ॥

यह प्रभुकी एक दिवसकी लीला है । नवद्वीपलीला प्रभुकी माधुर्य लीला है । नवद्वीप लीला माधुरीका वर्णन किया नहीं जा सकता । श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

एक दिवसेर जत चैतन्यविहार ।
कोटि वत्सरेओ ताहा नाहिं वर्णिवार ॥

गौरभक्तकी एकमात्र प्राथना है कि—

जनम जनम प्रभु एइ देह दान ।
हृदये रहूक एइ केलि अविराम ॥

—※—

श्रीमन्महाप्रभोरष्टकालीय-लीलास्मरणमंगल-स्तोत्रम्

लीलामाहात्म्यम्

श्रीगौरांगमहाप्रभोश्चरणयोर्या केश-शेषादिभिः
सेवागम्यतया स्वभक्तविहिता सान्यैर्यया लभ्यते ।
ता तन्मानसिकीं स्मृतिं प्रथयितुं भाव्यां सदा सत्तमैः-
नौमि प्रात्यहिकं तदीयचरितं श्रीमन्नवद्वीपजम् ॥ १ ॥

संक्षिप्त लीलासूत्रम्

रात्र्यन्ते शयनोत्थितः सुरसरित्स्नातो बभौ यः प्रगे
पूर्वाह्ने स्वगणैर्लसत्युपवने तैर्भाति मध्याह्नके ।
यः पुर्यामपराह्नके निजगृहे सायं गृहेऽङ्गने
श्रीवासस्य निशामुखे निशि वसन् गौरः स नो रक्षतु ॥२॥

निशान्तलीला

प्रगे श्रीवासस्य द्विजकुलरवैर्निष्कुटवरे
श्रुति—ध्वान—प्रख्यैः सपदि गतनिद्रं पुलकितम् ।
हरेः पार्श्वे राधास्थितिमनुभवन्तं नयनजै-
र्जलैः संसिक्तांगं वरकनकगौरं भज मनः ॥ ३ ॥

प्रातर्लीला

प्रभाते प्रक्षाल्य स्ववदनविधुं केशव-कथां
गृहालिन्दे प्रेमाकुलित-हृदयं यः प्रियजनैः ।
ब्रुवन्नास्ते राधारस-कलन-फुल्लो वरतनु-
र्भज त्वं तं गौरं निरविधि मनः प्रेम-वलितम् ॥ ४ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूर्वाह्णलीला

हरि - वनगति - लीलां व्याकुलीभूत - गोष्ठां
स्मृतिविषय - गतां यः कारयामास साक्षात् ।
तदनुकरणकारी भक्तवृन्दस्य मध्ये
तमहमनुभजामि श्रील-गौरांगचन्द्रम् ॥ ५ ॥

मध्याह्नलीला

सहालि-श्रीराधा-सहित-हरिलीलां बहुविधां
स्मरन् मध्याह्नीयां पुलकित - तनुर्गद्गदवचाः ।
ब्रुवन् व्यक्तं तां च स्वजनगण-मध्येऽनुकुरुते
शचीसूनुर्यस्तं भज मम मनस्त्वं बत सदा ॥ ६ ॥

अपराह्णलीला

परावृत्ति गोष्ठे व्रजनृपतिसूनोर्विपिनतो
महानन्दांभोधेः सपदि जनयित्रीं स्वहृदये ।
स्मरन् श्रीगौरांगो नटति वलते निःश्वसिति च
क्षणं मुह्यन् सर्वान् विवशयति यस्तं भज मनः ॥ ७ ॥

सायंलीला

सायन्तनीं कृष्ण - मनोज्ञ - लीलां
स्नानाशनाद्यां हि मुहुर्विचिन्त्य ।
स्वभक्त-मध्येऽनुकरोति नित्यं
तां यो मनस्त्वं भज गौरचन्द्रम् ॥ ८ ॥

प्रदोषलीला

समुत्कंठासन्नाकलित-हरिवार्ता बत यथा-
भिसृत्यासौ राधा हरिमपि निकुंजे गतवती ।
तथात्मानं मत्वा कटिनिहित-पाणिर्विशति च
स्खलन् गच्छन् गौरो नटति धृत-कंपाश्रुपुलकः ॥ ९ ॥

निशालीला

श्रीश्रीवासगृहे मुदा परिवृतो भक्तैः स्वनामावलीं
गायद्भिर्गलदश्रुकंपपुलको गौरो नटित्वा प्रभुः ।
पुष्पारामगते सुरत्न-शयने ज्योत्स्ना-युतायां निशि
विश्रान्तः स शचीसुतः कृतफलाहारो निषेव्यो मम ॥ १० ॥

(इति श्रीमद्रूपगोस्वामि-कृतं-श्रीमन्महाप्रभोरष्टकालीय-लीलास्मरणमंगल-स्तोत्रं संपूर्णम् ।)

—+—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीचैतन्याष्टकम् (१)

सदोपास्यः श्रीमान् धृत - मनुज - कायैः प्रणयितां
बहिर्द्भिर्गीर्वाणैर्गिरिश - परमेष्ठिप्रभृतिभिः ।
स्वभक्तेभ्यः शुद्धां निज - भजन - मुद्रामुपदिशन्
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ १ ॥

सुरेशानां दुर्गं गतिरतिशयेनोपनिषदां
मुनीनां सर्वस्वं प्रणतपटलीनां मधुरिमा ।
विनिर्यासः प्रेम्णो निखिल - पशुपालाम्बुज - दृशां
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ २ ॥

स्वरूपं बिभ्राणो जगदतुलमद्वैत—दयितः
प्रपन्न-श्रीवासो जनित-परमानन्द-गरिमा ।
हरिर्दीनोद्धारी गजपति-कृपोत्सेक-तरलः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ३ ॥

रसोद्गामा कामार्बुद-मधुर-धामोज्ज्वल-तनु-
र्यतीनामुत्तांसस्तरणि-कर - विद्योति - वसनः ।
हिरण्यानां लक्ष्मीभरमभिभवन्नाङ्गिक-रुचा
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ४ ॥

हरे कृष्णेत्युच्चैः स्फुरित - रसनो नामगणना-
कृत - ग्रन्थिश्रेणी-सुभग - कटिसूत्रोज्ज्वल - करः ।
विशालाक्षो दीर्घार्गल - युगल - खेलाञ्चित - भुजः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ५ ॥

पयोराशेस्तीरे स्फुर दुपवनाली-कलनया
मुहुर्वन्दारण्य - स्मरण - जनित - प्रेम - विवशः ।
क्वचित् कृष्णावृत्ति-प्रचल-रसनो भक्ति-रसिकः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ६ ॥

रथारूढस्यारादधिपदवि नीलाचल - पतेः
रदभ्र - प्रेमोर्मि - स्फुरित - नटनोल्लास - विवशः ।
सहर्षं गायद्भिः परिवृत - तनुर्वैष्णव - जनैः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ७ ॥

भुवं सिञ्चन्नश्रु - स्तुतिभिरमितः सान्द्र - पुलकैः
परिताङ्गो नपी-स्तवक-नव - किञ्जल्क - यायिभिः ।
घन - स्वेद - स्तोम - स्तिमित - तनुरुत्कीर्तन - सुखी
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ८ ॥

अधीते गौराङ्ग - स्मरण - पदवी - मङ्गलतरं
कृती यो विश्रम्भ - स्फुरदमलधीरष्टकमिदम् ।
परानन्दे साद्यस्तदमल - पदाम्भोज - युगले
परिस्फारा तस्य स्फुरतु नितरां प्रेमलहरी ॥ ९ ॥

[इति श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचित-स्तवमालायां श्रीचैतन्याष्टकं (१) सम्पूर्णम् ।]

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीचैतन्याष्टकम् (२)

कलौ यं विद्वांसः स्फुटमभियजन्ते द्युतिभरा-
दकृष्णाङ्गं कृष्णं मखविधिभिरुत्कीर्तनमयैः ।
उपास्यं च प्रहुर्यमखिल-चतुर्थाश्रमजुषां
स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥ १ ॥

चरित्रं तन्वानः प्रियमघवदाह्लादन-पदं
जयोद् घोषैः सम्यग्विरचित-शची-शोकहरणः ।
उदञ्चन्मार्तण्ड-द्युतिहर-दुकूलाञ्चित-कटिः
स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥ २ ॥

अपारं कस्यापि प्रणयि-जन-वृन्दस्य कुतुकी
रसस्तोमं हृत्वा मधुरमुपभक्तुं कमपि यः ।
रुचिं स्वामावव्रे द्युतिमिह तदीयां प्रकटयन्
स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥ ३ ॥

अनाराध्यः प्रीत्या चिरमसुर-भाव-प्रणयिनां
प्रपन्नानां दैवीं प्रकृतिमधिदैवं त्रिजगति ।
अजस्रं यः श्रीमान् जयति सहजानन्द-मधुरः
स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥ ४ ॥

गतिर्यः पौण्ड्राणां प्रकटित-नवद्वीप-महिमा
भवेनालंकुर्वन् भुवन-महित श्रोत्रियकुलम् ।
पुनात्यङ्गीकारद्भुवि परमहंसाश्रम-पदं
स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥ ५ ॥

मुखेनाग्रे पीत्वा मधुरमिह नामामृतरसं
दृशोर्द्वाभ्यां यस्तं वमति घन-बाष्पाम्बु-मिषतः ।
भुवि प्रेम्णस्तत्त्वं प्रकटयितुमुल्लासित-तनुः
स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥ ६ ॥

तनूमाविष्कुर्वन् नव-पुरट-भासं कटि-लसत्
करङ्कालङ्कारस्तरुण-गजराजाञ्चित - गतिः ।
प्रियेभ्यो यः शिक्षां दिशति निजनिर्मात्सर्यरुचिभिः
स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥ ७ ॥

स्मितालोकः शोकं हरति जगतां यस्य परितो
गिरां तु प्रारम्भः कुशल-पटलीं पल्लवयति ।
वदालम्बः कं वा प्रणयति न हि प्रेम-निवहः
स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥ ८ ॥

शचीसूनोः कीर्ति-स्तबक-नवसौरभ्य-निबिडं
पुमान् यः प्रीतात्मा पठति किल पद्याष्टकमिदम् ।
स लक्ष्मीवानेतं निजपद-सरोजे प्रणयितां
ददानः कल्याणीमनुपदसबाधं सुखयतु ॥ ९ ॥

इति श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचित-स्तवमालायां श्रीचैतन्याष्टकं (२) सम्पूर्णम् ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीमन् महाप्रभुकी नवद्वीपलीला

प्रथम अध्याय—प्रभुकी जन्मयात्रा

स प्रसीदतु चैतन्य देवो यस्य प्रसादतः। तल्लीला वर्णने योग्यः साद्यः स्यादधऽमोप्ययम् ॥

—चै. च. आ. १३.१.

गौरचन्द्र-आविर्भाव शुने जेइ जाने। कभो दुःख नाहिं तार जन्मे वा मरणे ॥

—चै. भा. आ. २.२७६

(श्रीकृष्णचैतन्योदयावली श्रीग्रन्थ, प्रभुकेपूर्वजोंका निवास स्थान, प्रभुका गर्भ-अधिष्ठान, पितामहीकी आकाँक्षा)

श्रीकृष्णतचैन्योदयावली* एक प्राचीन वैष्णव ग्रन्थ है। प्रभुके पितामह श्रीहट्टनिवासी श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुरके वंशज प्रभुके कनिष्ट पितृव्य-पुत्र श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्र ठाकुर इस श्रीग्रन्थके ग्रन्थकार हैं। श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्र श्रीश्रीमन्महाप्रभुके समसामयिक लोग हैं और सम्बन्धमें उनके चचेरे भाई हैं। श्रीचैतन्यचरितामृत श्रीग्रन्थकी अन्य लीलामें श्रीकविराज गौस्वामीने प्रद्युम्न मिश्र नामके दो आदमियोंका उल्लेख किया है। उनमें एक उत्कलवासी हैं, और दूसरे अपरिचित कहे गये हैं। ये अपरिचित प्रद्युम्न मिश्र ही श्रीश्रीमन्महाप्रभुके आत्मीय हैं।

जब प्रभु नीलाचल धाममें विराजमान थे तो नाना देशोंसे वैष्णव लोग उनका दर्शन करनेके लिए वहाँ आते थे। श्रीहट्टवासी वैष्णवगण भी वहाँ आते थे। उनके साथ प्रभुके चचेरे भाई श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्र नीलाचलमें प्रभुके दर्शन करनेके लिए गये थे। प्रभुके मुखसे श्रीकृष्ण-कथा श्रवण करनेकी लालसासे श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्र ठाकुर श्रीहट्टसे नीलाचल गये। प्रभुके पास जाकर उन्होंने अपने मनकी बात खोलकर कह दी।

उस समय श्रीश्रीमन्महाप्रभुको समस्त भारतवासी हिन्दू श्रीजगन्नाथजीका साक्षात् सचल विग्रह मानकर पूजा करनेमें दुविधा नहीं करते थे। एक पूर्णतः अपरिचित आदमी अचानक प्रभुके पास जाकर उनके श्रीमुखसे श्रीकृष्णकथा सुननेकी अभिलाषा प्रकट करेगा, यह बड़ी ही आश्चर्यकी बात है। क्योंकि उनके एकान्त अनुगत भक्तगण भी उनके साथ बातें करनेका साहस नहीं करते थे। नितान्त आत्मीय जनके सिवा प्रभुके श्रीमुखसे कृष्ण-कथा सुननेका साहस और कोई नहीं

---

*ग्रन्थकारने नवद्वीपलीलाके अठारवें अध्यायमें एक जगह यह उल्लेख किया है कि श्रीमन् महाप्रभुके ज्येष्ठ पितृव्य श्रीपाद परमानन्द मिश्र वंशीय श्रीयुक्त रामसदय मिश्र महाशयने उनको 'श्रीचैतन्योदयावली' श्रीग्रन्थकी पाण्डुलिपि भेजी थी, जिसके लिए ग्रन्थकारने कृतज्ञता प्रकटकी है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर सकता था। श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्रका यह स्वजनोचित साहस उनके साथ प्रभुके घनिष्ठ सम्बन्ध और विशेष आत्मीयताका परिचायक है।

श्रीश्रीमन्महाप्रभुने उनको विशेष आत्मीय जानकर ही राय रामानन्दके पास श्रीकृष्ण-कथा सुननेके लिए भेजा। अत्यन्त आत्मीयजन समझकर ही प्रभुने उनके ऊपर विशेष कृपा की थी। श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्र जानते थे कि प्रभुके साथ उनका क्या सम्बन्ध है। परन्तु किसीके पास इसे प्रकट नहीं किया।

श्रीचैतन्योदयावली श्रीग्रन्थके अन्तिम श्लोकमें उन्होंने लिखा है कि इस श्रीग्रन्थकी रचना उन्होंने श्रीश्रीमन्महाप्रभुके आदेशसे* की थी।

तस्यैवादेशतः कृष्णचैतन्यस्य दयानिधेः।
प्रद्युम्नाख्येन मिश्रेण कृतेयमुदयावली ॥

"यह छोटा-सा ग्रन्थ सहज संस्कृतमें रचा गया है। उसके केवल ५३ श्लोक हैं। श्रीश्रीमन्महाप्रभुके पूर्व पुरुषोंका विस्तृत विवरण इस ग्रन्थमें प्राप्त होता है। प्रभुके आत्मीय होनेके कारण ही, जान पड़ता है कि, प्रभुने इस कार्यका भार इनके ऊपर सौंपा है।

इस श्रीग्रन्थमें लिखा है कि श्रीश्रीगौर भगवान् अपने पूर्वजोंके आदि निवास-स्थान श्रीहट्टजिलाके ढाकामें दक्षिण ग्रामके शचीमाताके श्रीगर्भके अधिष्ठित हुए। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरका व्याह शचीदेवीसे हुआ और उनको लेकर नवद्वीपके दक्षिण पाडाके गङ्गाके तीर पर घर बनाकर गृहस्थी चलाने लगे। क्रमशः उनकी आठ कन्याएँ होकर जाती रहीं, नवें गर्भमें श्रीश्रीमद् विश्वरूप प्रभु उत्पन्न हुए। उन्होंने अल्पावस्थामें ही संसार त्याग कर संन्यास ग्रहण कर लिया।

आठ कन्याओंकी अकालमृत्युसे तथा वंशनाशके भयसे श्रीपादजगन्नाथ मिश्रने मनमें सोचा कि उनके वृद्ध माता-पिता स्वदेशमें ही हैं और इनकी सेवा-शुश्रूषामें त्रुटि होनेके कारण ही जान पड़ता है कि उनको इस प्रकारका दुर्भाग्य भोगना पड़ा है। ऐसा सोचकर माता-पिताके चरण-दर्शनकी अभिलाषा करके वे सपरिवार श्रीहट्ट जानेके लिए तैयार हो गये। उसी समय उनके वृद्ध पिता श्रीउपेन्द्र मिश्रने भी उनको घर आनेके लिए पत्र लिखा। अतएव मिश्रपुरन्दर ठाकुर शचीमाताको लेकर नवद्वीपसे कुछ दिनके लिए स्वदेश चले गये।*

श्रीहट्टमें जाकर शचीमाताका गर्भाधान हुआ। इसी श्रीगर्भमें श्रीगौराङ्ग प्रभु अधिष्ठित हुए। शचीमाताके श्रीगर्भमें श्रीगौर भगवान्का अधिष्ठान होने पर उनके श्रीअंगमें अपूर्व कान्ति विराजमान हो गयी।

श्रीपाद उपेन्द्रमिश्र ठाकुरकी गृहिणी (प्रभुकी पितामही) का नाम था शोभादेवी (उनका एक नाम कमलावती भी था)। उन्होंने एक दिन रातमें स्वप्न देखा कि, श्रीभगवान् आकाशवाणीके द्वारा सम्बोधन करके उनसे कह रहे हैं—"हे अनघे! सुन, तुम्हारी पुत्र-वधूके गर्भमें मैं आविर्भूत होऊंगा। अतएव अपने

---

*श्रीमन्महाप्रभुने अपने निजके सम्बन्धमें कुछ उल्लेख करनेका किसीको भी आदेश दिया हो, यह बात कम समझमें आती है। श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्रने अपने थोड़ेसे श्लोकोंकी रचना श्रीमन्महाप्रभुको दिखायी हो और उस पर वे मौन रहे हों, उसी मौनको उनने सम्पति या आदेश मान लिया हो यह संभव हो सकता है।

*अष्टौ कुमारिकास्तस्याः क्रमाद्भूत्वा दिवं ययुः।
ततः श्रीविश्वरूपाख्यः पुत्रो जात उदारधीः॥
तस्य वैषयिके कर्मण्येव स्वान्तं न मुह्यति।
इति दृष्ट्वा तु भीतः श्रीजगन्नाथः सुपण्डितः॥
चिन्तामाप्नोति महतीं वर्तते पितरौ मम।
ताभ्यां दत्तेन शापेन मादृशमीदृशी गतिः॥

(क्रमशः)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुत्र और पुत्रवधूको नवद्वीप भेज दो। इससे तुम्हारा मंगल होगा। अन्यथा आचरण करनेसे परिणाम तुम्हारे लिए विपद्जनक होगा।" शौभादेवीने यह अद्भुत स्वप्न देखकर आश्चर्यसे भय-विह्वल होकर अपने पतिसे सारा स्वप्नवृत्तान्त कह सुनाया। मिश्र-पुरन्दर ठाकुर इसके बाद माता-पिताके आदेशसे सपरिवार नवद्वीप चले आये। शचीमाताकी सास शोभादेवीने विदा करते समय पुत्र-वधूसे विशेष रूपसे अनुरोध किया कि तुम्हारे इस गर्भसे जो सन्तान हो उसको मुझे एक बार दिखा जाना। शचीमाताने इसका वादा करके पतिके साथ श्रीहट्टसे नवद्वीपके लिए प्रस्थान किया।

श्रीचैतन्यभागवत तथा श्रीचैतन्यचरितामृतमें ये सब बातें नहीं मिलतीं। इस कारण इनको कदापि अप्रामाणिक नहीं कह सकते। प्रभुके लीला-लेखक साधकगणने लीलाके सम्बन्धमें जिसको जो ज्ञात था, उन्होंने वह कलिग्रस्त जीवोंके उद्धारके लिए लिपिबद्ध कर दिया है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुर या श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीके लिए प्रभुके पूर्वजोंका विशेष विवरण संग्रह करना विशेष कठिन था। प्रभुके पूर्वजोंके आदि निवास स्थान श्रीहट्टका समाचार उनको उतना ज्ञात न था।

शचीमाताका नवद्वीपसे श्रीहट्ट जाना, वहाँ ही उनका गर्भाधान, उस श्रीगर्भसे श्रीश्रीगौर भगवान् उदय आदि पूर्वलीलाकी कथाएँ श्रीहट्टवासी प्रभुके आत्मीय श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्रने जो लिखी हैं, उन पर अविश्वास करनेका कोई कारण नहीं है। जो कुछ महाजनगण लिख गये हैं, उसमें तनिक भी असत्य नहीं हो सकता। वे लोग साधक भक्त थे, श्रीमन्महाप्रभुके अन्तरंग निजजन थे। प्रभुकी लीलाके सम्बन्धमें उन्होंने जो सुना है, या देखा है, उसे कलिग्रस्त जीवोंके मंगलके लिए लिपिबद्ध कर दिया है।

श्रीपाद प्रद्युम्न मिश्र कृत श्रीकृष्णचैतन्योदयावली श्रीग्रन्थ एक प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें वर्णित श्रीगौरांग प्रभुके पूर्वजोंके आदि निवास स्थान श्रीहट्टमें श्रीशची-

---

ततो यास्यामि ते द्रष्टुं भार्यया सहितस्त्वरम्।
एतस्मिन्नेव समये श्रीमदुपेन्द्र मिश्रराट्॥
पत्रं प्रस्थापयामास पुत्रागमन कारणात्।
पत्रं प्राप्य जगन्नाथो भार्यया सहितो लघु॥
स्वदेशमगमद्विद्वान् पित्रोः प्रीतिं विवर्द्धयन्।
अथागत्य जगन्नाथः पितृसेवापरायणः॥
तस्य पत्नी शची सापि श्वश्रूसेवनतत्परा।
आसीत् श्वश्रू समीपे च धन्या मान्या च योषिताम्॥
श्वश्रोराज्ञानुसारेण सर्वं कृत्वा सुशोभना।
परमानन्दपत्नी च सुशीलाख्यातिहर्षिता॥
श्रीशचीं मातरं नित्यं पुत्रैकावदयालयत्।
गते कियति काले च श्रीशची सर्वदेवता॥
ऋतुस्नाता बभूवात्र सुन्दरी पूर्वतोऽधिका।
तस्मिन्निशीथे भगवान् वाचमाहाशरीरिणीम्॥
शोभादेवीं समाभाष्य नित्यधर्मपरायणाम्।
शृणु शोभे स्नुषायान्ते प्रादुर्भवामि चानघे॥
ततः पुत्रं स्नुषां चैव नवद्वीपे मनोरमे।
शीघ्र प्रस्थापयास्मात्त्वं तव श्रेयो भविष्यति॥
अन्यथाचरणाद्भद्रे भविष्यन्ति विपत्तयः।
इति श्रुत्वा तु सा भीता प्रतिगत्वा निजं पतिम्॥
वृत्तान्तं वेदयामास रजनीजं महाद्भुतम्।
पितृभ्यान्तु समादिष्टो जगन्नाथाख्य भूसुरः॥
प्रयाणं कर्त्तुमुद्युक्तो भार्यया स्वल्पगर्भया।
पितरावभिवन्द्याथ ज्येष्ठं ज्येष्ठप्रियां तथा॥
लौकिकं कारयामास विहितं यस्य यत्स्थितम्।
प्रयाणसमये शोभा शचीं सम्बोध्य चाब्रवीत्॥
सुन्दरीं सद्गुणयुतां श्वश्रोराज्ञानुकारिणीम्।
शृणु चार्वङ्गि ते गर्भे पुरुषो संभविष्यति॥
प्रस्थापन्निच्छसि च तंद्रष्टुमिक्षा मयि वर्त्तते।
इति स्वीकृत्य शच्या सहितो द्विजसत्तमः॥
मिश्रवरो जगन्नाथो नवद्वीपमगात्पुनः।
—श्रीकृष्णचैतन्योदयावलिः

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गर्भमें अधिष्ठानके वृत्तान्तके सम्बन्धमें व्यर्थ तर्क और विवाद करना अनावश्यक है। श्रीहट्टवासियोंके प्रति प्रभुकी विशेष कृपादृष्टि रही, जो अब तक अक्षुण्ण बनी रही। प्रभुके प्रमुख पार्षदगणने श्रीहट्टप्रदेशमें जन्म ग्रहण किया था। उन्होंने स्वयं श्रीहट्ट प्रदेशमें जाकर वृद्धा पितामहीको दर्शन देकर माताके सत्य-वचनका पालन किया था। यह सब लीलाकथाएँ विस्तार रूपमें यथास्थान लिखी गयी हैं। यहाँ प्रसंग-वश अति संक्षेपमें उल्लेख किया गया है—

चैतन्य-कथार आदि अन्त नाहि जानि।
जे ते मते चैतन्येर यश जे बाखानि॥
—चै० भा० आ० १२. १४६

शचीदेवीको गर्भ सञ्चार, अलौकिक दर्शन और स्वप्न

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरकी परम सौभाग्यवती पत्नी श्रीशचीदेवीके श्रीगर्भसे श्रीश्रीगौर भगवान्‌का आविर्भाव हुआ। यह उनका दसवाँ गर्भ था। नवम गर्भसे श्रीमद्विश्वरूप प्रभुका आविर्भाव हुआ था। इसके पूर्व शचीमाताके श्रीगर्भसे आठ कन्या सन्तान उत्पन्न हुई थीं। वे अकालमें ही नष्ट हो गयीं।

१४०६ शकाब्दके माघ मासके बीतते-बीतते शचीमाताके श्रीअंगमें श्रीभगवत-प्रकाशके सारे शुभ लक्षण दिखलायी देने लगे। उनके श्रीअङ्गके लावण्यकी छटासे मिश्र-भवन दीपित हो उठा। मिश्रपुरन्दरने देखा कि उनके घरमें मानो साक्षात् लक्ष्मीदेवीका अधिष्ठान हो गया है। इस समय शचीमाताको जिसने देखा वही उनकी दिव्य ज्योतिर्मय अङ्ग-कान्ति-छटासे मुग्ध होकर उनके प्रति भक्ति और सम्मान करने लगा। नदियावासी सब गृहस्थ-लोग मिश्रके घर वस्त्र, भोजनके समान—धन, धान्य, मिष्ठान्नादि भेजने लगे।

"शचीमाताके प्रत्येक अंगसे मानो दिव्य ज्योति फूट कर निकल रही है। इस वृद्धावस्थामें उनकी रूपराशि मानो उमड़ी पड़ती है। उनको जो देखता उसके आनन्दकी सीमा नहीं रहती। नदियावासी सब नर-नारी मन ही मन सोचने लगे कि शचीमाताके श्रीगर्भसे इस बार निश्चय ही किसी महापुरुषका आविर्भाव होगा। मिश्रपुरन्दर और उनकी भाग्यवती गृहणीमें इस सम्बन्धमें एक दिन एकान्तमें बातें हुईं। मिश्रपुरन्दर बोले—"गृहिणी! इस बार यह क्या आश्चर्य देख रहा हूँ? तुम्हारा यह दशम गर्भ है, परन्तु तुम्हारे अंगके लावण्य और सौंदर्यकी सीमा नहीं है। तुम्हारे प्रत्येक अंगसे मानो दिव्य-ज्योति बिखर रही है। यह देखकर मैं विस्मित हो रहा हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे इस गर्भमें किसी महापुरुषका अधिष्ठान हुआ है। तुम्हारी ऐसी रूप-कान्ति तो मैंने पहले कभी नहीं देखी।"

शचीमाता पतिकी बात सुनकर लज्जित हो गयीं। मुँह नीचा करके वे कुछ देर तक चुपचाप खड़ी रहीं। पश्चात् हाथ जोड़कर उन्होंने पतिसे निवेदन किया, "स्वामिन्! मैं तो इस विषयमें कुछ नहीं जानती। परन्तु तुम जो कह रहे हो, वही बात सब लोग बोल रहे हैं। तुमसे मैं कुछ छिपाती नहीं। जब यह बात तुमने उठायी है तो मैं अपने मनकी बात कहती हूँ, सुनो। मैं कभी-कभी आकाशमें देखती हूँ, मानो दिव्य मूर्ति वाले लोग मेरी स्तुति कर रहे हैं।"

मिश्रपुरन्दरने स्थिरता पूर्वक गृहिणीकी बातें सुनीं। मन ही मन कुछ देर विचार किया। फिर गृहिणीको सम्बोधन करके बोले, "गृहिणी! तुम जो कहती हो, वह सत्य है। उस दिन मैंने भी एक अपूर्व स्वप्न देखा था। ऐसा जान पड़ा मानो कोई ज्योतिर्मय वस्तु मेरे हृदयके भीतर प्रवेश कर गयी। मेरे हृदयसे वह पुनः तुम्हारे हृदयमें प्रविष्ट हुई। इससे यह ज्ञात होता है कि तुम्हारे गर्भमें इस बार किसी महापुरुषका आवर्भाव हुआ।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मिश्र दम्पति उद्विग्न चित्तसे उस शुभ दिनकी वाट जोह रहे हैं। श्रीगौर भगवान्‌का जबसे शचीके गर्भमें अधिष्ठान हुआ, उस दिनसे नदिया नगरीका प्राकृतिक सौन्दर्य बढ़ने लगा। नदियाके आकाशमें अनेक देवी-देवताओंकी श्रीमूर्तिका आविर्भाव दीखने लगा। गन्धर्व, देवता, स्वर्गकी विद्याधरी अलक्ष्यरूपमें नदियामें आकर आनन्दसे नृत्य-गीत करने लगे। शचीमाताके गर्भके लक्षण देखकर सारी नदियाके नर-नारी आनन्दसे मतवाले हो उठे। सबके मुखसे जय-जय ध्वनि सुनायी देने लगी।

क्रमशः एक-एक मास करके शचीमाताके श्रीगर्भके पूरे छः महीने बीत गये। उस समय उनके अङ्गके लावण्य और आभाकी छटा मानों दूनी बढ़ गयी। शचीमाताकी अंगज्योतिसे मिश्रपुरन्दरका गृह झलकने लगा।

छय मास पूर्व हइल शचीर उदर।
अंगेर छटाय झलमल करे घर॥
—चै. म.

श्रीगौर भगवान्‌के उद्देश्यसे देवता और गन्धर्वगण श्रीगर्भकी स्तुति करने लगे।

क्रमशः नव-दस मासका गर्भ पूरा हो गया। इसी समय एक दिन शचीमाताने दिनमें तन्द्राके आवेशमें एक अपूर्व स्वप्न देखा। ठाकुर जयानन्दने अपने श्रीचैतन्यमंगल श्रीगन्थमें इस अपूर्व स्वप्न-वृत्तान्तकी कहानी लिखी है। शचीमाताने स्वप्न देखा कि "समुद्रके तटपर मानो नदिया नगरी है। वे मानो श्रीक्षेत्रमें अक्षय वटके नीचे बैठी हैं। सामने इन्द्रद्युम्न सरोवर, गरुडस्तम्भ, रोहिनीकुण्ड, मार्कण्डेयेश्वरका मन्दिर आदि सब कुछ दिखलायी दे रहे हैं। इसके बाद वे श्रीजगन्नाथजीके नाटमन्दिरमें गयीं। वहाँ जगन्नाथ, बलराम सुभद्राका दर्शन किया। स्वप्नावस्थामें उन्होंने देखा कि श्रीजगन्नाथजी अपना श्रीहस्त फैलाकर उनकी गोदमें आगये।"

मिश्रपुरन्दरको शचीमाताने यह स्वप्नवृत्तान्त कह सुनाया। सुनकर वे आनन्दसे पुलकित हो उठे।

शचीमाताकी इस स्वप्न कहानीका कुछ गूढ़ मर्म है। श्रीगौरांग प्रभुको उनके भक्तवृन्द सचल जगन्नाथ कहते थे। नीलाचलवासी वैष्णववृन्द प्रभुको तथा श्रीश्रीजगन्नाथजीको पृथक् विग्रह नहीं मानते थे। श्रीगौरांग प्रभु श्रीजगन्नाथजीकी श्रीमूर्तिमें लीन हो गये हैं। यहाँ उन्होंने अपनी माताको दिखलाया है कि वे नीलाचलनाथ हैं, और इस समय पुत्ररूपमें उनके श्रीगर्भमें अधिष्ठित हो गये हैं। अतएव स्वप्न कहानी सुनकर मिश्रपुरन्दरने गृहिणीसे कहा—

"आमार मन्दिरे जगन्नाथेर प्रकाश।"

श्रीअद्वैताचार्यका आगमन

(गर्भ प्रदक्षिण व पूजन)

इसी समय शान्तिपुरसे श्रीअद्वैताचार्यने एक दिन अचानक नवद्वीपमें मिश्रपुरन्दरके घर आकर आतिथ्य ग्रहण किया। उनको देखकर मिश्रपुरन्दरने आदर पूर्वक उठकर उनका यथाविधि स्वागत किया, आसन लाकर बैठनेके लिए दिया। उनको साष्टांग प्रणाम करके चरणधूलि लेकर सिर पर धारण किया। शचीमाताने झटपट पाद-प्रक्षालनके लिए जल लाकर दिया। गर्भवती शचीमाताको देखते ही श्रीअद्वैतप्रभु आसनसे आदरपूर्वक उठकर खड़े हो गये। श्रीअद्वैतप्रभुका एक और नाम है कमलाक्ष। कमलाक्ष महाशयके दोनों कमलनयन अनुरागसे रक्तवर्ण हो गये। वे प्रेमसे पुलकित हो उठे। उनके मुखचन्द्रने अपूर्व रक्तिम आभा धारणकी। दोनों विशाल अरुण नेत्र आँसुओंसे भर गये। श्रीअद्वैतप्रभुके अधरोष्ठ प्रेमावेगसे मृदुमन्द कम्पित होने लगे। प्रेमानन्दसे उनका कण्ठस्वर गद्‌गद् हो उठा। प्रेमसे भरकर उनका सर्वांग पुलकित हो रहा है। प्रेमानन्दके वश अधीर होकर वे खड़े रहनेमें असमर्थ हो रहे हैं। मिश्रपुरन्दर और उनकी भाग्यवती गृहिणी श्रीअद्वैत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु का ऐसा अपूर्व प्रेमावेश भाव देखकर स्तम्भित और विस्मित होकर चित्रलिखित से खड़े रह गये।

श्रीअद्वैतप्रभुने प्रेमपूर्ण नृत्यावेशमें श्रीशची-देवीकी प्रदक्षिणा करके प्रणाम किया। मिश्रदम्पति श्रीअद्वैताचार्यके इस नीतिविरुद्ध विस्मयजनक कार्यको देखकर किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो खड़े रहे। क्या करें, क्या बोलें, कुछ समझ न पानेके कारण विस्मयापन्न हो उठे। उनके मनमें नाना प्रकारके सन्देह उपस्थित हो गये। शचीमाताके बारम्बार पूर्व गर्भ नष्ट होनेकी बात स्मरण करके पति-पत्नी दोनों विशेष चिन्तित हुए। उन्होंने 'क्या करते हैं, क्या करते हैं' कहकर अत्यन्त सशंकित होकर झटपट श्रीअद्वैतप्रभुका हाथ पकड़कर उनको हटाया। उनकी चरण-धूलि लेकर अपराधके लिए अतिकातर भावसे क्षमा-याचना की। तब श्रीपाद जगन्नाथमिश्र पुरन्दरने हाथ जोड़कर कातर स्वरमें श्रीअद्वैतप्रभुसे कहा, "गोसाईं! आज आपने यह क्या किया? आपका चरित्र समझनेकी शक्ति हमारे भीतर नहीं है। हम अज्ञानान्ध जीव हैं। कैसे आपके अगाध चरितको समझ सकते हैं? कृपा करके यह विषम समस्या समझाकर कृतार्थ करें। आपके आजके कार्यको देखकर हमारे हृदयमें भीषण चिन्ता उत्पन्न हो गयी है। कृपा करके इसकी शान्तिका उपाय करके हमारी प्राण-रक्षा करें।"

श्रीअद्वैतप्रभुने शान्तिपूर्वक मिश्रपुरन्दरकी बातें सुनीं, परन्तु उनका मर्म समझमें न आया। कारण यह है कि प्रेमानन्दमें बाह्य-ज्ञान-शून्य हो रहे थे। आत्म संवरण करके उन्होंने किसी प्रकार प्रकृतिस्थ होकर मिश्रपुरन्दरको एकान्तमें बुलाकर कहा, "मिश्रपुरन्दर! यह सब अति गुह्य बातें हैं, पीछे ज्ञात हो जाँयगी।"

मिश्रपुरन्दर श्रीअद्वैतप्रभुकी बात कुछ भी समझ न पाये। शचीमाताका मन और भी उत्कण्ठित हो उठा। मिश्रपुरन्दरने गृहिणीको समझाया कि, उसके गर्भस्थ शिशुरूपी महापुरुषको लक्ष्य करके श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगर्भको प्रणाम किया है। इसमें चिन्ताका कोई विशेष कारण नहीं है। क्योंकि उन्होंने शचीमाताको प्राणाम नहीं किया।

श्रीअद्वैतप्रभुने सातबार शचीमातके श्रीगर्भकी प्रदक्षिणाकी तथा गन्ध-चन्दन-पुष्पसे श्रीगर्भकी यथाविधि अर्चना और वन्दना की। और कुछ न कहकर वे केवल एक दिन नवद्वीपमें रहकर दूसरे दिन अपने घर शान्तिपुर लौट गये।

शचीमाताके सारे पूर्व गर्भ श्रीअद्वैतप्रभुके प्रणामसे नष्ट हो गये थे। यह बात श्रीअद्वैत प्रकाश श्रीग्रन्थके प्रणेता श्रीईशान नागर ठाकुर लिख गये हैं। क्योंकि उन सब गर्भोंमें श्रीभगवान्का आविर्भाव नहीं हुआ। मिश्र दम्पति यह बात जानते थे। उनके मनमें विषम भयका उद्रेक हुआ कि कहीं इस बार भी वैसा ही दुर्भाग्य न घटित हो। परन्तु शीघ्रही उनके मनकी आशङ्का दूर हो गयी क्योंकि इस बार उनको विपरीत भाव दीख पड़े। जिस शुभ दिनको, जिस शुभमुहूर्त्तमें श्रीअद्वैत प्रभुने शचीमाता-के श्रीगर्भकी वन्दना, और गर्भस्थ शिशुकी अर्चना की थी, तभीसे मिश्रदम्पतिके अंग-प्रत्यंगमें तेज और लावण्य सौगुना बढ़ने लगा। उनको सारा जगत सुखमय लगने लगा, सब कुछ आनन्दमय लगा। उनके गर्भके ऊपर मानो देवी-देवताओंकी शुभदृष्टि पड़ी। दुःख ताप किसे कहते हैं, यह वे भूल गये। उनमें एक और आश्चर्यजनक परिवर्तन दीख पड़ा। शचीमाताके हृदयमें सब जीवोंके प्रति समान रूपसे दयाका उद्रेक हुआ। वे सब जीवोंमें ईश्वरका दर्शन करने लगीं।

आविर्भावका काल

क्रमशः शचीमाताका दस मास गर्भका समय व्यतीत होगया। उनकी अंगकान्ति दिन-प्रति दिन बढ़ने लगी। प्रसवका समय समीप आता देखकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सब लोग विशेष चिन्तित हुए। क्रमशः ग्यारहवाँ महीना पूरा हुआ। मिश्रपुरन्दरके मनमें नाना प्रकारके सन्देह होने लगे। हृदयमें आशंका भी हुई। क्या करें, निश्चित नहीं कर पाते थे। इधर आत्मीय स्वजन और नदियावासी नर-नारी-वृन्दके मनमें शची-गर्भ-सिन्धु-समुत्थित शिशु-गौर-चन्द्रके दर्शनकी लालसा दिन-दिन प्रबल होने लगी। सभी अत्यन्त उत्कण्ठित हैं। द्वादश मास प्रायः गत हो गये, तथापि प्रसवके कुछ लक्षण दिखलायी न दिये। इससे मिश्र-पुरन्दरके मनमें भीषण भय उत्पन्न हुआ। शची-माताके पिता श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती ज्योतिष शास्त्रके परम पण्डित थे। उनके पास जाकर मिश्र-पुरन्दरने सारी बातें कहीं। उन्होंने गणना करके देखा कि तेरहवें महीनेमें गर्भस्थशिशु उत्पन्न होगा।

यह शुभ संवाद विद्युतकी गतिके समान क्षण-भरमें सारे नदियामें फैल गया। नदिया-वासिनी कुल कामिनीगण झुण्डकी झुण्ड शचीमाताका दर्शन करनेके लिए मिश्रगृहमें पधारीं। शचीमाता सदा आनन्दमयी, सर्वदा हास्यमुखी, सबके सङ्ग समभावसे प्रीति-प्रफुल्ल-मुखसे स्वागत सत्कारमें लगी हैं, मधुरवाणीसे उनको परितुष्ट कर रही हैं। श्रीगर्भस्थ शिशुकी बात पूछने पर उन्होंने कातर स्वरमें कहा, "अहा! मेरा बच्चा कितना कष्ट भोग रहा है?" उनकी निजी शारीरिक अवस्थाके बारेमें यदि कोई पूछता तो कहतीं, "मैं ठीक हूँ।" शचीमाताके हास्यमय प्रफुल्ल वदनको देखकर सभी आश्चर्य करते थे। तेरह महीनेकी पूर्णगर्भवती स्त्रियाँ उठकर बैठ नहीं सकतीं; परन्तु शचीमाता स्वच्छन्द उठकर घूमती हैं। सबका आदर सत्कार करती हैं। सबको हाथ पकड़कर पास बैठाती हैं, उनके साथ बातें करती हैं, और जाते समय उनको घरके बाहरी द्वार तक सप्रेम विदा कर आती हैं। शचीमाताको मानो कोई कष्ट नहीं है। नदियावासी सभी नर-नारी अत्यन्त आग्रहके साथ उत्कण्ठित चित्तसे श्रीगर्भस्थ बालकके शुभ जन्मके दिन गिन रहे हैं। प्रतिदिन दोनों बेलामें नदियावासी असंख्य नर-नारी मिश्रजीके घर आकर संवाद ले जाते हैं।

१४०७ शककी फाल्गुन पूर्णिमा तिथि जगत्में बड़ा ही शुभ दिन था। जगत्के जीवोंके भाग्यमें ऐसा भुवन-मङ्गल शुभ दिन कभी नहीं आया। २२ फाल्गुन शनिवार, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र, सिंह राशि, सिंह लग्न, दण्डादि २८/५५ शुभ मुहूर्तमें शुभ चन्द्र-ग्रहणके समय श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र शचीगर्भसिन्धुसे सकल कला समन्वित पूर्ण चन्द्रके समान नदिया धाममें अवतीर्ण हुए। सारा जगत् आनन्द-विह्वल हो उठा, सारी दिशाएँ प्रसन्न हो उठीं।

वैवस्वत मन्वन्तरमें २८वें युगका १४०७ शक जगतके इतिहासमें चिरकाल तक सुवर्णाक्षरोंमें अङ्कित रहेगा। आज तक यही मन्वन्तर, वही युग वर्तमान हैं। कलिके जीवोंका बड़ा सौभाग्य है। उनके सौभाग्यके फलस्वरूपही श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र कलियुगमें नदिया-अवतारके रूपमें भुवनमङ्गल श्रीगौरङ्ग नामसे जगतको आलोकित किया था। श्रीश्रीगौराङ्ग प्रभुके कलियुगमें अवतीर्ण होनेके कारण ही इस युगका इतना माहात्म्य है। श्रीमद्-भागवतमें लिखा है—

नानुद्वेष्टि कलिं सम्राट् सारङ्ग इव सारभुक्।
कुशलन्याशु सिध्यन्ति नेतरानि कृतानि यत्॥
श्रीम. भा. १. १८. ७

अर्थात् कलियुगका यह एक प्रधान गुण है कि इस युगमें सङ्कल्प मात्रसे पुण्यका फल प्राप्त होता है, परन्तु मानसिक पापका फल नहीं होता। पापकर्मका आचरण करने पर उसका फल होता है। राजा परीक्षितने भृङ्गके समान इस कलिके गुणभागको ग्रहण करके ही इसका नाश नहीं किया।

अब समझ लीजिये कि कलियुगकी इतनी महिमा क्यों हुई? इस प्रश्नके उत्तरमें श्रीमद्भागवतके टीका-कार पूज्यपाद श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती महाशयने जो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिखा है, उससे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता । उन्होंने लिखा है कि सर्व अवतारके अवतारी पूर्ण ब्रह्म सनातन श्रीश्रीगौर भगवान् कलियुगमें अवतीर्ण होकर आपामर सब जीवोंको अपने गोलोककी सम्पत्ति अमूल्य प्रेमधन अयाचित भावसे दान करेंगे, इसी उद्देश्यसे यह सब सुव्यवस्था हुई। पतित अधम कलिके जीवके प्रति कृपा प्रदर्शित करना ही उनके अवतारका मुख्य उद्देश्य है। कलियुगावतार श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने इसी कारण पूर्वसे ही कलियुगको इतना महिमान्वित बनया। यह देवताओंके लिए भी स्पृहणीय बन गया। इसी कारण ब्रह्मा आदि देवता-गण नरवपु धारण करके श्रीगौराङ्ग लीलारसास्वादन करनेके लिए भुवनमें अवतीर्ण हुए थे। इस कलिके माहात्म्यको कीर्तन करके श्रीमद्भागवतके टीकाकारने श्रीश्रीमन्महाप्रभुके अवतारको इतनी महिमा गायी है।

कलिके जीव परम सौभाग्यवान् हैं । उन्होंने अपनी आँखों श्रीश्रीगौर-भगवान्‌की अपरूप भुवन मोहन रूपराशिका दर्शन करके नेत्रोंको सफल किया है। उनके मधुर-वचनसुधाको पान करके कानोंको परितृप्त किया है । उनके अज-भव-वाञ्छित पद-रजके स्पर्शसे देहको पवित्र किया है। इतने सौभाग्यको देखकर देवगण भी ईर्ष्या करते हैं। उन्होंने नररूप धारण करके नदियामें जन्म ग्रहण किया था।

फाल्गुन मासकी बेला बीतनेको है । सूर्यदेव लाल होकर पश्चिमके आकाशमें डूबना चाहते हैं । सुशीतल, सुगन्धित मलय समीर सब प्रकारके कुसुम सौरभको लेकर नयन-रञ्जन प्रियतम पूर्णचन्द्रके उदयकी प्रतीक्षा कर रहा है । सुरसरि मानसिक आनन्दके उद्वेगमें उछल रही हैं। आज वे अपूर्व तरङ्ग भङ्गिमा प्रदर्शित कर मृदु मधुर नृत्यकर रही हैं । सारे पशु-पक्षी मानो आनन्द-विह्वल होकर मानसिक सुख प्रदानकर जगत्‌को मुग्ध करने वाले प्रेम-सङ्गीतकी तान छेड़ रहे हैं। वृक्ष-लता-तृणावली मृदु-मन्द वसन्त-मारुतसे आन्दोलित हो प्रेमानन्दमें झूमकर एक दूसरेके ऊपर गिर रहे हैं। प्रकृति देवी आज अपूर्व शोभा धारण करके आनन्दमय परम पुरुषके शुभागमनकी प्रतीक्षाकर रही है । सूर्यदेव धीरे-धीरे अस्ताचलकी ओर जा रहे हैं। रँभाती हुई गौएँ आनन्दसे पूँछ उठाकर नदियाके रास्ते चल पड़ी हैं। उनके खुरसे उठी धूलिसे गगन-मण्डल आच्छादित हो गया है। गोधूलिका समय है।

आज भुवन-मंगल शुभ पूर्णिमा तिथि है। शुभ समय समझकर शन्ध्यादेवीने अर्द्ध अवगुण्टनमें मुँह ढँककर मृदु मधुर मुस्कानके साथ पदार्पण किया। पूर्णचन्द्र नवद्वीप गगनमें उदित होते ही राहुके द्वारा ग्रसित हो गये। फाल्गुन पूर्णिमा तिथिमें चन्द्र-ग्रहण लग गया। इस शुभ संयोगमें नदियावासी सभी नर-नारी श्राद्ध, तर्पण, पुरश्चरण आदि धर्म-कर्मके उपलक्षमें गंगाके तीर चल पड़े। नदियाके पथ पर लाखों आदमी हरिध्वनि करते हुए ग्रहण-स्नान करने जा रहे हैं। शङ्ख, घण्टा और काँस्यकी मंगलध्वनि से नदियाका प्रत्येक गृह भर गया है। दिव्य गन्धसे चतुर्दिक आमोदित हो रहा है। गंगातट पर वसन्तका मृदु-मंद समीर सबके मनको हर रहा है । घनघोर हरिध्वनिसे सारी नदिया शब्दायमान हो रही है ।

ऐसे शुभ संयोगमें सन्ध्याकालमें अपूर्व चन्द्र-ग्रहण नदियावासी लोगोंको दृष्टिगोचर हुआ। सहस्र-सहस्र घण्टा, शङ्ख और काँस्य-ध्वनिसे गगन-मण्डल भर गया। दिव्य गन्ध चतुर्दिक फैल गया। मानो छः ऋतुओंका एक साथ आविर्भाव हो गया।

इसी शुभ मुहूर्त्तमें भुवन-मङ्गल युगधर्म श्रीहरिकीर्तनको साथ लेकर संकीर्तन-यज्ञेश्वर श्रीनवद्वीपचन्द्र नदिया धाममें अवतीर्ण हुए । सकलङ्क पूर्णिमाका चाँद जब राहुग्रस्त हो गया तो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अकलङ्क गौर-चन्द्र नदिया धाममें उदित हो गये। जान पड़ा मानो चन्द्रदेवने लज्जासे मुँह छिपा लिया। चन्द्रदेवके मनके दुःखको देखकर राहुने उनको अपने शरीरके द्वारा आच्छादित कर दिया। अकलङ्क गौरचन्द्रकी अपरूप रूपराशिके सामने पूर्णिमाके चन्द्रने निष्प्रभ होकर धीरे-धीरे अपना मुँह छिपा लिया। नदियावासी नर-नारीवृन्दने अकलङ्क गौर शशिको प्राप्तकर सकलङ्क चन्द्रके अभाव पर ध्यान न दिया।

अन्तरिक्षसे देवगण अलक्ष्य रूपसे वृष्टि करने लगे। सर्व अवतारके अवतारी श्रीश्रीनवद्वीप-चन्द्रका दर्शन करनेके लिए वे दिव्य यान पर चढ़कर नदिया गगनमें बिहार कर रहे हैं। नदियाके पथमें, घाट पर, घरमें, गुफामें एक मात्र भुवन-मङ्गल हरिध्वनिके सिवा और कोई शब्द नहीं सुन पड़ता।

अनन्त ब्रह्माण्डमें जो कुछ मङ्गल सूचक वस्तु है, शुभ फाल्गुनी पूर्णिमा तिथिमें सब आकर इकट्ठी हो गयी। सबके मुँहसे भुवन-मङ्गल मधुर हरिनाम ध्वनि सुनायी देने लगी। यहाँ तक कि यवनके मुखसे भी हँसी उड़ाते हुए यह शुभ हरिनाम ध्वनि सुन पड़ी। हरिनामके माहात्म्यसे सब जीवोंका मन प्रसन्न हो गया। ग्रहणके बहाने प्रभुने इस प्रकार दिखला दिया कि भुवन-मङ्गल संकीर्तनके साथ ही उनका नदियामें अवतार हुआ।

नदियावासीके आनन्दको आज सीमा नहीं है। सारी नदियामें आज शुभ दिनमें जो भुवन-मङ्गल हरिध्वनि उठी, वह उसी क्षण विश्व ब्रह्माण्डमें व्याप्त हो गयी। सब लोग मन ही मन सोचने लगे कि इस प्रकाकार चन्द्रग्रहण निरन्तर हो।

इस प्रकार सर्वजगत्व्यापी भुवन-मङ्गल हरिसंकीर्तन यज्ञके बीच अवतार-सार श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र नदियाधाममें शुभलग्नमें शुभक्षणमें अवतीर्ण हुए।

नवजात् शिशु देखनेकी उत्सुकता

नवद्वीपकी आबाल वृद्ध जनता गङ्गातीरसे दक्षिण पाड़ाकी ओर चली। "मिश्रपुरन्दर ठाकुरकी गृहणीने तेरह महीनेमें पुत्र प्रसव किया है, नवजात शिशुके अपरूप रूपसे भुवन आलोकित हो रहा है, ऐसा रूपवान् पुत्र किसीने नहीं देखा, मानो साक्षात् नारायण हैं"—इस प्रकारकी बातें कहते हुए सब लोग मिश्रजीके घरकी ओर चल पड़े हैं। इनमें श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरके प्रिय मित्र परम कृष्णभक्त वैष्णव श्रीवास पण्डित हैं। उनकी पत्नी मालिनी देवी भी हैं।

आज मिश्रजीके घरमें अनगिनत लोग जुट गये हैं। ग्रहण-स्नान करके लौटते समय सभी लोग नदियामें दक्षिणपाड़ा होकर अपने घर जाते हैं। नदियाके सभी रास्तों पर भीड़ लगी है। मिश्रजीके घरके बाहरी द्वारको अवरुद्ध करके लोगोंकी भीड़ खड़ी है। चतुर्दिक आनन्द और कोलाहल छा गया है। बारंबार गगनभेदी हरिध्वनि उठ रही है। अगणित बालक-बालिका दलके दल आकर आनन्दसे ताली बजा-बजाकर नृत्य कर रहे हैं। नदियाके अतिवृद्धि-लोग कह रहे हैं कि ऐसा शुभ संयोग, ऐसा आनन्दोत्सव उन्होंने कभी नहीं देखा। पुत्रके जन्मोत्सव पर इतनी भीड़, नवजात शिशुको देखनेके लिए लोगोंकी इतनी उन्मत्तता, इतनी व्याकुलता कभी किसीने देखी नहीं।

मिश्रपुरन्दर महाशय दरिद्र गरीब ब्राह्मण हैं। उनके पुत्रके जन्मोत्सवमें इतनी भीड़-भाड़, इतनी धूमधाम होगी—यह कौन जानता था ? सबके मुहँसे एक ही बात निकल रही है, मिश्रपुरन्दरको एक अपूर्व रूप-लावण्य-सम्पन्न पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ है। कोई कहता है, साक्षात् नारायण आकर उनके घर अवतीर्ण हुए हैं; कोई कहता है, स्वयं कामदेव आकर आविर्भूत हुए है। नवद्वीपके रास्ते पर जन-समूह विराम नहीं ले रहा है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृपालु पाठकवृन्द ! बाहरके सब लोगोंको बाहर ही रख कर एक बार मिश्र-दम्पतिके समीप आइये, उनकी क्या अवस्था है—देखिये ! शचीमाता सूतिका गृहमें नवजात सुतको गोदमें लेकर जगज्जननीके समान बैठी हुई हैं । अपरूप रूप-सम्पन्न दिव्य ज्योतिर्मय नवजात शिशुका मुखचन्द्र अनिमेष नेत्रोंसे देख रही हैं। शचीमाताने आनन्दसे गद्‌गद् होकर स्वामीको निकट बुलाया। उनके मुँहसे बात नहीं निकल रही है। प्रेमानन्दमें गद्‌गद् होनेके कारण उनकी वाणी अवरुद्ध हो गयी है। कुछ देरके बाद प्रकृतिस्थ होकर शचीमाताने पतिसे मृदु वचनमें कहा, "ठाकुर ! बहुत पुण्यके फलसे हमको यह अपूर्व पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ है। पुत्रके मुखचन्द्रका दर्शन कर जीवनको सार्थक करो।" मिश्रपुरन्दरके हृदयके भीतरसे मानो एक आनन्दका प्रवाह बह गया। पुलकाश्रु-नयन, प्रेमानन्दमें विभोर होकर ज्योतिर्मयी पत्नीकी गोदमें ज्योतिर्मय नवजात शिशुका दर्शन करके वे मानो आनन्द स्वरूप हो गये।

शचीमाता सूतिका-गृहमें पुत्रको गोदमें लेकर बैठी हैं, और द्वारदेशमें मिश्रपुरन्दर ठाकुर निष्पन्द भावसे खड़े हैं। दोनों ही मौन, बाह्यज्ञान-शून्य हैं। ठाकुर लोचनदासने शची-जगन्नाथके इस समयके एक सप्रेम कथोपकथनको लिखा है।

शचीर उदरे यथा बैकुण्ठ सम्पद्।
आनन्दे विह्वल देवी बोले गद्‌गद ॥
जगन्नाथ पण्डितेरे डाके हात साने।
जनम फसल देख पत्रेर वदने। —चै० मं०

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर नर-नारायण रूपी*पुत्रका मुख देखकर प्रेमानन्दमें मानो समाधिस्थ हो रहे हैं। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है कि वे आनन्दस्वरूप हो गये। उनको बाह्यज्ञान नहीं रहा। बाहरी लोगोंकी ताड़नासे उनको चेतनता आयी।

पुर-नारीवृन्द झुण्डकी झुण्ड आकर सूतिकागृहके द्वार पर खड़ी होकर बारंबार आनन्दसूचक हुलु ध्वनि कर रही हैं। सबकी यही कामना है कि नवजात अपूर्व शिशुके मुखचन्द्रका एकबार दर्शन करके जीवनको सार्थक करें, नयनोंको परितृप्त करें।

श्रीवास पण्डितकी स्त्री मालिनीदेवीने सूतिकागृहके द्वार पर जाकर मिश्रपुरन्दर ठाकुरसे कहा, "ठाकुर महाशय ! आप यहाँसे अभी बाहर जाँय। द्वार पर डटे रहने पर और लोग कैसे तुम्हारे पुत्र-रत्नका दर्शन कर पावेंगे ?" मिश्रपुरन्दर लज्जित होकर बाहर आये।

प्रभुकी धात्री माता नारायणीदेवीके साथ मालिनीदेवी सूतिका गृहमें प्रविष्ट हुईं। नारायणीदेवी शचीमाता की सखी हैं। उनकी बड़ी साध है कि श्रीगौराङ्गकी धात्रीमाता बनें। पहले उन्होंने शचीमाताको कह रखा था। प्रभुने जबसे शचीके गर्भमें अधिष्ठान किया है, नारयणीदेवी तभीसे शचीमाताकी सर्वविधि सेवा करती आ रही हैं।

पुरवासिनी कुलललनाएँ दल बाँधकर सूतिका गृहके द्वारको घेरकर खड़ी हैं। सरोवरमें विकसित पद्मपुष्पके समान सुन्दरी कुल-कामिनियाँ मिश्र-गृहकी शोभा बढ़ाने लगीं। इनमें देव-कन्याएँ भी हैं।

---

* महापुरुषके लक्षण सामुद्रिक शास्त्रके अनुसार ये हैं—
पञ्चदीर्घ पञ्चसूक्ष्म सप्तरक्तं षडुन्नतः।
त्रिह्रस्व पृथु गम्भीरो द्वात्रिंशल्लक्षणो महान्॥
शिशु गौराङ्गकी नासिका, दोनों बाहु, हनु चक्षु, और जानु—ये पाँच दीर्घ थे। त्वक्, केश अंगुलि, ग्रन्थि दन्त और रोम—ये पाँच सूक्ष्म थे। चक्षु, पदतल, करतल, तालू, अधर, ओष्ठ और नख—ये सात अङ्ग रक्तवर्णके थे। वक्षःस्थल, कन्धे, नख, नासिका, कटि और मुख—ये छः अङ्ग उन्नत थे। ग्रीवा, जङ्घा, मेहन—ये तीन अंग ह्रस्व थे। कटि, ललाट, वक्षःस्थल—ये तीन अंग विस्तृत थे। नाभि, स्वर और सत्व—ये तीन गम्भीर थे। इसी कारण उनका नाम नर-नारायण है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देवाँगनाएँ भी पुर-नारीवृन्दके साथ मिलकर शचीमाताके अङ्कमें स्थित गौराङ्ग—बालचन्द्रको देखती हैं। देव-कन्याएँ छद्मवेषमें हैं। कोई किसीको पहचान नहीं पा रहा है।

पुर-नारीवृन्दकी शिशु-गौरांगके दर्शनकी लालसा परितृप्त होने पर शचीमाताके पिता श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती श्रीवास पण्डितके साथ सूतिका गृहके द्वार पर आकर उपस्थित हुए। इतनी भीड़ इकट्ठी हुई है, इस ओर उनका ध्यान नहीं है। श्रीवास पण्डित परम कृष्णभक्त नैष्ठिक ब्राह्मण हैं। उन्होंने सूतिका गृहके द्वारके भीतर सिर डालकर जो देखा, उसे वे फिर छिपा न सके। श्रीकृष्णचन्द्रमें उनका सहज प्रेम है। शिशु-गौरांगका दर्शन करते ही कृष्ण-भक्त ब्राह्मणके मनमें सहज ही प्रेम-भक्तिका स्रोत उमड़ने लगा। वे नर-नारायणरूपी शचीनन्दनको सहज स्वरूपमें दर्शन करके प्रेमानन्दमें गद्‌गद् होकर सूतिका द्वार पर खड़े होकर जोड़कर कर स्तुति करने लगे—

जय शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म चतुर्भुजधारी।
राम नारायण ब्रह्म मुकुन्द मुरारी॥

श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती श्रीवास पण्डितका काण्ड देखकर विस्मित हो उठे। उनका हाथ पकड़ कर बाहर खींच लाये और उनको प्रकृतिस्थ किया।

ज्योतिष गणना

श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने देखा कि उनकी कन्याके गर्भसे सारे सुलक्षणोंसे युक्त एक महापुरुषका आविर्भाव हुआ है। वे श्रीवास पण्डितको लेकर नवजात शिशुकी कुण्डलीके फलकी गणना करने लगे। वे ज्योतिष शास्त्रके भारी विद्वान हैं। गणना करके देखा कि प्रति लग्नमें नवजात शिशुके अति अद्‌भुत महा राजयोग दिखलायी दे रहे हैं। वह देखकर वे हर्ष और विस्मयसे अभिभूत हो गये। पुनः सूतिका-गृहके द्वार पर जाकर कन्यारूपी जगज्जननीकी गोदमें दौहित्ररूपी नर-नारायणके अपरूप रूप-सौंदर्यको देखकर अत्यन्त विस्मययुक्त होकर श्रीवास पण्डितको लक्ष्य करके बोले, "गौड़-देशमें ब्राह्मण राजा होगा, ऐसी जनश्रुति है। इस अपूर्व शिशुके शरीरमें चक्रवर्ती राजाके सारे लक्षण विद्यमान हैं। शचीका यह बालक वृहस्पतिके समान विद्वान् होगा, थोड़ी ही अवस्थामें सर्वगुणोंका आकार बन जायगा।

श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती जिस समय जामाताके घरमें बैठकर कुण्डलीका फल बतला रहे थे, उसी समय वहाँ और एक अज्ञात-कुलशील विप्ररूपी महापुरुष उपस्थित थे। चक्रवर्ती महाशयने कुण्डलीकी गणना करके जो फल वतलाया उससे उस ब्राह्मणकी मनस्तुष्टि न हुई। उन्होंने स्वयं गणना करके जो देखा, उसे सबके सामने प्रकट किये बिना नहीं रह सके। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीकी गणनाके फलस्वरूप उस विप्ररूपी साक्षात् वृहस्पति-देवने परितृप्त न होकर कलिग्रस्त जीवके प्रति कृपा करके श्रीगौरांग प्रभुके स्वरूप-तत्त्वका निर्देश कर दिया। प्रभु शुभ जन्म-दिवसको जगतके जीवोंने जान लिया कि वे क्या वस्तु हैं। छद्मवेषी वृहस्पति-देवने शचीके आंगनमें बैठकर उसी समय सबके सामने इस नवजात अपूर्व शिशुके सम्बन्धमें कहा था—

विप्र बोले—"ए शिशु साक्षात् नारायण।
इहा हैते सर्वधर्म्म हइबे स्थापन॥
इहा हैते हइबेक अपूर्व्व प्रचार।
ए शिशु करिबे सर्व्व-जगत्-उद्धार॥
ब्रह्मा शिव शुक जाहा बाञ्छे अनुक्षण।
इहा हैते ताहा पाइबेक सर्व्वजन॥
सर्व्वभूते-दयालु निर्व्वेद दरशने।
सर्व्व जगतेर प्रीत हइबे इहाने॥
अन्येर कि दाय विष्णु-द्रोही जे यवन।
ताहाराओ ए शिशुर भजिबे चरन॥
अनन्त-ब्राह्माण्ड कीर्ति गाइबे इहान्।
आदि विप्र ए शिशुरे करिबे प्रणाम॥
भागवत-धर्म्ममय इहान् शरीर।
देव-द्विज-गुरु-पितृ-मातृ-भक्त धीर॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विष्णु जेन अवतरि लओयायेन धर्म्म ।
सेइ मत ए शि करिबे सर्व्व-कर्म्म ॥
लग्ने जत कहे शुभ लक्षण इहान् ।
कार शक्ति आछे ताहा करिते आख्यान ।

—चै० भा० आ० २.२४६-२५४

श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने इस अज्ञात-कुल-शील ब्राह्मणकी बात अत्यन्त मनोयोगके साथ सुनी। जब तक इस दिव्य-ज्योतिपूर्ण ऋषितुल्य विप्रराजने उनके नवजात दौहित्रका गुणगान किया, तब तक चक्रवर्ती महाशय उनके स्वर्गीय तेजःपूर्ण मुखमण्डलकी ओर देखकर कुछ और ही सोच रहे थे। वे सोच रहे थे कि ये कौन हैं ? ये तो नवद्वीपके पण्डित नहीं हैं। क्योंकि नवद्वीपके सब पण्डितोंको वे विशेषरूपसे जानते थे। यह आगन्तुक ज्योतिष शास्त्रवेत्ता परम पण्डित कौन हैं ? यही चक्रवर्ती महाशयके मनका भाव है। उनके मनका भाव मनमें ही रह गया। बहुत बड़ी भीड़में जब वह विप्ररूपी बृहस्पति लुप्त होनेकी चेष्टा करने लगे तो श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर दौड़ कर उनके पास गये और उनका रास्ता रोककर हाथ जोड़ कर सामने खड़े हो गये। मिश्रपुरन्दर वहाँ उपस्थित थे। अपने नवजात पुत्रके सम्बन्धमें विप्रकी सारी बातें उन्होंने सुनी थीं। विप्रने मिश्रपुरन्दरको देखकर समझ लिया कि वे शिशु गौराङ्गके पिता हैं। उन्होंने मिश्रपुरन्दरसे हाथ जोड़कर निवेदन किया—"मैं भाग्यशाली हूँ जो ऐसी कुण्डलीकी गणना मैंने की है। इनका नाम श्रीविश्वम्भर होगा। इनको लोग श्रीनवद्वीपचन्द्र कहेंगे। बालकको केवल परानन्द रूप समझो।"

श्रीभगवानका वेदोक्त नाम श्रीविश्वम्भर है। बृहस्पति देवके सिवा श्रीभगवानका यह वेदोक्त आदिनाम दूसरा कैसे जानेगा ? नवजात शिशुकी कुण्डलीकी गणनाका फल देखकर जो उनकी समझमें आया है, सब उनके पिताको कह दिया है।

इस अज्ञात नाम विप्रके मुखसे नवजात शिशुके भावी नाम और अपूर्व आख्यानाको सुनकर मिश्र-पुरन्दर आनन्दसे विह्वल होकर उस विप्रको कुछ दान करनेके लिए उद्यत हो गये। दरिद्र विप्ररूपी बृहस्पति देवने ससम्मान उसे अस्वीकार कर दिया। मिश्रपुरन्दर तब प्रेमानन्दमें विह्वल होकर विप्रका चरण पकड़ कर दीनभावसे रोने लगे। अज्ञातनाम विप्रभी विषम विपदमें पड़कर मिश्रपुरन्दर चरण पकड़ कर रोने लगे। उपस्थित लोग यह अपूर्व दृश्य देखकर आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे।

इसको ही प्रेम-क्रन्दन कहते हैं। दोनों ही प्रेमानन्दमें गद्गद् हो रहे हैं। विप्ररूपी बृहस्पति देवने अपनी विद्याबुद्धि श्रीगौर-भगवान्की कुण्डली-गणनाके कार्यमें नियोजित कर अपने आपको कृतार्थ माना। भाग्यवान् विप्र अपने अभीष्ट देवताका दर्शन करके आनन्दमें विभोर हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त श्रीगौर भगवान्के भाग्यवान् पिताके साथ उनका सङ्ग हुआ। इससे उनके आनन्दकी सीमा न रही। इधर मिश्रपुरन्दर ठाकुर इस अज्ञातकुलशील विप्रके मुखसे नवजाता शिशुके प्रकृत तत्व तथा परिचय प्राप्त कर आनन्दसे अपने आपको भूल गये। प्रेमानन्दमें मतवाले होकर दोनों एक दूसरेके चरण पकड़ कर रोने लगे। दो पूर्णतः परस्पर अपरिचित विप्रके अपूर्व प्रेमभाव और प्राणकी व्याकुलता देखकर सभी उपस्थित लोग विस्मित हो उठे।

श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती स्तब्ध होकर खड़े-खड़े सब देखते रहे। उनके मुँहसे कोई बात न निकली। उन्होंने सोचा कि ज्योतिष शास्त्रमें उनकी कोई विशेष जानकारी नहीं है। इस अज्ञात नाम विप्रके साथ उनकी तुलना नहीं हो सकती।

उस अज्ञात-कुलशील विप्रवरने प्रभुके संन्यास ग्रहणकी घटनाको भी गणनाके द्वारा जान लिया। परन्तु इस आन्दोत्सवके दिन यह बात प्रकट करके किसीके दिलको दुखानेकी चेष्टा नही की।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विप्ररूपी वृहस्पति देव लोगोंकी भीड़में घुसकर अदृश्य हो गये।

आनन्दोत्सव

मिश्रपुरन्दरके घरमें आज बड़ा आनन्दोत्सव है। अगणित लोग नवजात शिशु गौराङ्गको देखने आये हैं। दो पहर रात हो गयी है, तथापि लोगोंका समागम चल रहा है। गृहके प्राङ्गणमें बड़ी भीड़ है।

बाजा बजाने वाले यथासमय आकर मङ्गलध्वनि बजाने लगे। पुर-नारीवृन्दकी हुलुध्वनिसे गृह-प्राङ्गण पूर्ण हो गया। शत-शत शुभ - शङ्ख - निनादसे शचीनन्दनके शुभ जन्मकी सूचना घोषित हुई। नदिया-वासी पुरनारियोंके बीच देवकन्या और देवाङ्गनाएँ छद्मवेषमें धान्य-दूर्वा लेकर नवजात शिशु गौराङ्गको देखनेके बहाने शुभाशीर्वाद देने आयी हैं। मिश्रके प्राङ्गणमें देव और नर एकत्र मिल गये हैं। दवाङ्गनाएँ परम सुन्दरी हैं। ऐसी सर्वाङ्ग सुन्दरी नारियाँ कभी किसीने नहीं देखीं। नदियावासी कुल-कामिनियाँ अपरिचिता देवाङ्गनाओंको देखकर पहचान नहीं पा रही हैं। एक दूसरेके मुहँकी ओर देखकर गात्रस्पर्श करके इशारे से कुछ कह रही हैं। कोई-कोई स्पष्ट कहती हैं—"ये लोग कौन हैं? नदियामें तो इनको कभी देखा नहीं।" इस बातको लेकर बहस करनेका यह समय नहीं है। सब शिशु गौराङ्गको देखनेमें व्यस्त हैं। देवाङ्गनाओंमें सावित्री, गौरी, सस्वती, शची, रम्भा, अरुन्धती आदि सब उपस्थित हैं।

देवाङ्गनाएँ और नदियावासी कुल-ललनाएँ एकत्र होकर सहास्य वदन शचीमाताके क्रोडस्थ शिशु गौराङ्गके मस्तक पर धान्य-दूर्वा देकर 'चिरंजीवि हो' कहकर आशीर्वाद दे रही हैं।

शचीमाताने इन नवागता परम सुन्दरी अपरूप-रूप-लावण्यमयी रमणीगणको कभी पहले नहीं देखा था। वे किसीको पहचान नहीं रही हैं। कोई बात पूछ नहीं रही हैं। आनन्दमें अपने आपको भूलकर वे पुत्रको गोदमें लिये जड़वत् बैठी हैं। आगन्तुक रमणीवृन्द शचीमाताकी चरणधूलि ले रही हैं। वे यह देखकर भी नहीं देख रही हैं। अभूतपूर्व आनन्दरसमें वे हतप्रभ हो गयी हैं। हृदयके आनन्दके वेगमें उनका कण्ठस्वर अवरुद्ध हो गया है। वे अवाक् और स्तब्ध होकर इन सब अलौकिक कार्योंको देख रही हैं।

सूति-कागृह आज आनन्दका स्रोत बन गया है। सारी नदियामें आनन्दोत्सवकी लहर फैल गयी है। प्रत्येक गृहमें, चबूतरे पर, गङ्गातट पर उच्छलित तरङ्ग राजिके घात-प्रतिघात लग रहे हैं। आनन्द-ध्वनि हरि-ध्वनि और जय-ध्वनिका विराम नहीं हैं। शचीके आङ्गनमें पैर धरनेकी जगह नहीं है। सूतिका-'गृहके द्वार पर सहस्रों आदमी एकत्रित हैं।

जातिकर्म संस्कार*

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर स्नान करके नवजात शिशुका जातकर्म करनेके लिए सूतिका गृहमें प्रविष्ट हुए। विधिपूर्वक पुत्रका जातकर्म सम्पन्न किया।

---

* महात्मा शिशिरकुमार घोषने अपने 'अमिय-निमाइ-चरित' के प्रथम खण्डकी उपक्रमणिकामें महाप्रभुके वंशको भारद्वाज गोत्रीय बताया है। उन्होंने वहीं पर पाद टिप्पणीमें यहभी उल्लेख किया है कि अमृत बाजार पत्रिका कार्यालयसे प्रकाशित 'मुरारि गुप्तके कड़चा' में वात्स्य-गोत्रीय बताया गया है। श्रीहरिदास गोस्वामीने नवद्वीपलीलाके अठारहवें अध्यायमें श्रीचैतन्य-विलास और श्रीचैतन्य-रत्नावली ग्रन्थोंके उद्धरण वात्स्य-गोत्रके दिये हैं। भगवद्-अवतारों और महापुरुषोंके गोत्रको लेकर माथापच्ची करना व्यर्थ-सा है। उनके अनुकरणीय चरित्र और उपदेशोंको मनन करके उनके अनुसार अपना जीवन बनानेकी चेष्टा करना मात्र सबका कर्त्तव्य है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शचीमाताकी प्रिय सखी नारायणीदेवीने शुभ-कामना करके मन्त्रपूत कुश-मूलसे घृत-मधु लगाकर नवजात शिशुके जिह्वा पर दिया।

चतुर्दिक मङ्गलवाद्य बज उठे। सूतिका-गृहमें खड्ग, कोदण्ड, अष्टधातु, शिला आदि द्रव्य रखे गये। गोबर, गोमूत्र, गङ्गाजल और शिला-जलमें मङ्गलकामना करके नारायणीदेवीने शिशु गौराङ्गके नवीन श्रीअङ्गको सिञ्चित किया। शुभ क्षणमें नवजात बालकका नाड़ी-छेदन-कर्म सुसम्पन्न हुआ। निम्ब-पत्रके द्वारा शिशु गौराङ्गके सर्वाङ्गमें रक्षाकवच बाँध दिया।

शिशु गौराङ्गको देखनेके लिए नदिया-नागरीगण झुण्डकी झुण्ड मिश्रके घर आयी हैं। उन्होंने नवजात शचीनन्दनका दर्शन करते ही समझ लिया कि यह सर्वाङ्गसुन्दर अपूर्व शिशु नागरीका प्राण-स्वरूप है। नरशिशुका ऐसा अपरूप रूप तो किसीने कभी देखा नहीं। बालकका रूप देखकर उनके नयन जुड़ा गये। वे शिशु गौरांगका दर्शन करते ही उनके रूपपर मुग्ध हो गयीं। शिशु-गौरांग उनके प्राण-स्वरूप हो गये। नदियाके अवतार श्रीगौरांग प्रभु भुवनमें अवतीर्ण होते ही रसराज नदिया-नागर बन गये। नदिया-नागरीवृन्दने दर्शन मात्रसे उनको अपना मन-प्राण अर्पण कर दिया।

गौर पूर्णिमा

श्रीगौर-भगवान्‌की जन्मतिथि है सर्वमंगलदायिनी फाल्गुनी पूर्णिमा। गौड़ीय वैष्णवोंने इस मंगलमयी सर्वसिद्धिप्रदा तिथिका नाम रखा है 'श्रीश्रीगौर पूर्णिमा'। श्रीश्रीगौरांगावतारको महाजनगण सर्व अवतारोंका सार कह गये हैं। इसके प्रमाणमें यह भी कहा जा सकता है कि पूर्णिमा तिथि तिथिराज है। इसी शुभ तिथिमें श्रीगौरांगप्रभु भूतलमें अवतीर्ण हुए थे। श्रीरामनवमी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, नृसिंह चतुर्दशी, वामन द्वादशी आदि तिथियाँ श्रीभगवान्‌के अवतारकी मंगलमयी जन्मतिथियाँ हैं। सब तिथियोंमें श्रेष्ठ है पूर्णिमा तिथि। इस सर्वश्रेष्ठ तिथिमें श्रीगौरभगवान् नदियामें अवतीर्ण हुए थे, इसी कारण महाजनगण इसे सर्व अवतार-सार कह गये हैं।

एक और बात है। श्रीगौर भगवान् अपरूप रूपलावण्य लेकर ब्राह्मण वंशमें बंगदेशमें अवतीर्ण हुए थे। श्रीभगवान्‌के पूर्व अवतारोंमें कोई विप्रकुलमें अवतीर्ण न था। इस कारणसे भी श्रीगौरांगप्रभुको महाजनगण सर्वश्रेष्ठ अवतार कहकर वर्णन कर गये हैं।

श्रीगौरांगप्रभुकी शुभ जन्मतिथि गौरपूर्णिमा पुण्यतिथि है। इसकी आराधना ब्रह्मादि देवगण भी करते हैं।

चैतन्येर जन्मयात्रा फाल्गुनी पूर्णिमा।
ब्रह्मा आदि ए तिथिर करें आराधना।
परम पवित्र तिथि मुक्तिस्वरूपिणी।
यँहि अवतीर्ण हइलेन द्विजमणि॥

—चै. भा. आ. २. २७३, २७४

गोस्वामी शास्त्रमें श्रीगौर-पूर्णिमा तिथिको व्रताचरण करनेकी व्यवस्था है। श्रीमद्भागवतके प्रसिद्ध टीकाकार श्रीपाद विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुरने 'श्रीवंशीलीलामृत' ग्रन्थमें लिखा है—

गौरजन्मतिथिं पुण्यां भक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
प्रत्यब्दं पूजयेद् भक्त्या कृष्णजन्माष्टमीं यथा॥
ये कुर्वन्ति नरा भक्त्या गौरजन्मव्रतं परम्।
ते गच्छन्ति परं धाम सदानन्दमयं हरेः॥
नाह्वयेन्नास्तिकान् तत्र गौरजन्मव्रते व्रती॥

श्रीश्रीगौरांगप्रभुकी शुभ जन्म-यात्रा-लीला श्रवणका फल श्रीगौरांग लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर जो लिख गये हैं, उसके ऊपर और कुछ कहना नहीं है। उनकी रचित फलश्रुतिका पयार श्लोक इस अध्यायके ऊपर लिखा गया है। यहाँ उसे फिर लिखते हैं—

गौरचन्द्र-आविर्भाव शुने जेइ जने।
कभू दुःख नाहि तार जन्मे वा मरणे॥

—चै. भा. आ. २. २७९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीचैतन्य चरितामृतकार श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी ने लिखा है—

ऐछे प्रभु शची-घरे, कृपाय कैल अवतारे,
जेइ दूहा करये श्रवण ।
गौर प्रभु दयामय, तारे हयेन सदय,
सेइ पाय ताँहार चरण ॥
पाइया मानुष जन्म, जे ना शुने गौर गुण,
हेन जन्म ताँर वृथा गैल ।
पाइया अमृतधुनी, पिये विषगर्त्त-पानी,
जन्मियासे केन नाहि मैल ॥

—चै. च. आ. १३. १२१, १२२

श्रीगौर भगवानका शुभ आविर्भाव पुण्यदिन गौरभक्तवृन्दके लिए बड़ा ही शुभ दिन है । साल भर वे लोग इस शुभ दिन, इस शुभ तिथिके शुभागमनकी प्रतीक्षा करते हैं । शास्त्रोक्त समस्त यागयज्ञका फल उनको इस श्रीगौर-पूर्णिमा शुभतिथिकी आराधनासे प्राप्त होता है ।

श्रीगौरभगवानकी-जन्म कुण्डली

श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने अपने दौहित्र रूपी श्रीगौर भगवानकी कुण्डलीकी गणना की थी । इस कुण्डलीकी गणनाके फलस्वरूप उन्होंने कहा था कि बङ्गमें विप्र राजा होंगे । उस कुण्डलीकी गणनाका फल इस प्रकार था—

७	११	१८
१५	१६	४
३१	०	०
०	०	२३

शाके मुनि व्योम-युगेन्द्र-गण्ये
पुण्ये तथा फाल्गुण पौर्णमास्याम् ।
त्रलोक्य-भाग्योदय-पुण्यकीर्त्तिः
प्रभुः शचीमन्दिरमाविरासीत् ॥

शकनरपतेरतीताब्दा १४०७ फाल्गुणस्य त्रयोविंशति वासरे सिंहलग्ने राहुग्रस्तनिशाकरे उत्तर फाल्गुन्यां सिंहराशौ चन्द्रे श्रीमद्वृन्दावन पुरन्दरः पुरन्दर शचीमन्दिरमाविरासीत् इति ।

श्रीपाद विश्वनाथ चक्रवर्तीने लिखा है—

वैवस्वतमनोरष्टाविंशति - युगसंभवे ।
चतुर्दश-शताब्दे वै सप्तवर्षसमन्विते ॥
फाल्गुने मासि संप्राप्ते त्रयोविंशति वासरे ।
दण्डाष्टविंशतेः पञ्चपञ्चाशत् पलगेक्षणे ॥
पूर्णेन्दौ राहुणा ग्रस्ते सन्ध्यायां सिंहलग्नके ।
नक्षत्रे पूर्वफल्गुन्यां राशौ च पशुराजके ॥
सर्वे लक्षगैः पूर्णे सप्तमें वासरे तथा ।
मिश्रपत्नी शचीगर्भादुदितो भगवान् हरिः ॥
कलाभिरेव सर्वाभि क्षीरोदादिव चन्द्रमाः ॥

नदियाके अवतार जगद्गुरु श्रीगौराङ्ग-प्रभुकी शुभ जन्म-तिथि श्रीश्रीगौरपूर्णिमाकी आराधना और पूजा करना सब लोगोंके लिए आवश्यक कर्त्तव्य है । यह पुण्यमयी तिथि सर्वमङ्गलदायिनी भक्ति-स्वरूपिणी है । श्रीश्रीगौरपूर्णिमा तिथिमें हिन्दूमात्रको विधिपूर्वक व्रतोपवास करना चाहिये । इस सर्व-मङ्गलमयी तिथिका अनादर करनेके कारण हिन्दू-जातिका बड़ा अमङ्गल हुआ है । श्रीगौराङ्ग महाप्रभुकी शुभ जन्मतिथि दुर्गोत्सवकी अपेक्षा भी अधिक आदरणीय और आराधनीय है । जिस दिन हम इस पुण्यमयी शुभदायिनी तिथिका मर्म समझेंगे, पूजा और आराधना करेंगे, उसी दिन जगत्पूज्य बन जायेंगे । श्रीगौराङ्ग-प्रभु हमारे गौरव हैं, हमारे एक-मात्र आराध्यदेव श्रीगौराङ्ग महाप्रभु हैं । इस बातको जिस दिन हम समझेंगे, उसी दिन हमारे त्रितापकी ज्वाला शान्त हो जायेगी, संसारका हाहाकार दूर हो जायगा, सारी विपदा-आपदा दूर हो जायेगी ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जगद्गुरु श्रीगौराङ्ग महाप्रभुका शुभ जन्म-दिन समस्त जगतके लिए शुभ दिन है। जगत्के जीवोंके भाग्यमें ऐसा शुभ दिन, ऐसा परम मङ्गल शुभ संयोग, ऐसा भुवन मङ्गल शुभकाल कभी नहीं आया। नदियाके अवतार श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके शुभ आविर्भावके दिन भक्तिपूर्वक जो जिस वस्तुकी कामना करेगा उसे उसकी सिद्धि प्राप्त होगी, जय गौराङ्ग कहकर जो जिस काममें हाथ डालेगा, उसका वह कार्य सफल होगा। श्रीगौर-पूर्णिमा तिथि सर्वसिद्धि प्रदायिनी भक्तिमयी तिथि है। हिन्दू भाई, इस मङ्गलमयी पुण्यतिथिका अनादर न करो। जो जहाँ रहते हों वहीं इस शुभदिनको 'हा गौराङ्ग' कहकर हृदयसे दीनदयाल नदियाके अवतार श्रीनवद्वीप चन्द्रको कपट रहित होकर प्रेमसे पुकारो, उनकी जन्मलीला कथा पाठ करो, श्रवण करो, उनके भक्तवृन्दका सङ्ग करो। इससे तुम्हारे सारे अमङ्गल नष्ट हो जाँयगे, सर्वार्थ सिद्धि प्राप्त होगी। सब मिलकर बोलो—

जय श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी जय।

—☼—

दूसरा अध्याय

शिशु गौरांगका अपरूप रूप

"कि जानि कि रूपसागरे डूब दिये ओ गौर हये छै।"

रूपका वर्णन

शचीनन्दन तेरह महीने तक मातृगर्भमें अधिष्ठित रहे। वे जब श्रीशचीगर्भसिन्धुसे भूतलमें अवतीर्ण हुए तो सबने देखा कि उनके सारे श्रीअङ्ग-प्रत्यङ्ग अतिशय हृष्ट-पुष्ट हैं। नवप्रसूत साधारण नर शिशुकी आकृति-प्रकृतिकी अपेक्षा शिशु गौराङ्गकी आकृति प्रकृति सर्वथा भिन्न थी। उनकी अपरूप रूप-राशिने सूतिका-गृहको आलोकित कर दिया। ऐसी जगको आलोकित करनेवाली रूपराशि कभी किसीने देखी नहीं। इतना रूपवान् नर शिशु अब तक किसीके दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। शची माताकी गोदमें मानो कोटिचन्द्र उदित हो गये हैं। ऐसा सर्वाङ्ग सुन्दर, ऐसा सारे सुलक्षणोंसे युक्त शिशु मनुष्यके गर्भसे पैदा नहीं हुआ। इस अपरूप रूप सम्पन्न अलौकिक ज्योतिः पूर्ण अपूर्व शिशुको एक बार भी जिसने देख लिया, वह उनके रूपफाँसमें बँध गया। शिशु गौराङ्गको नदियावासी नर-नारी जितनी बार देखते हैं उतनी ही उनकी रूप-तृषा बढ़ती जाती है उनका हृदय वात्सल्य-रसमें द्रवित होकर श्रीगौराङ्गके रूपसिन्धुमें निमज्जित होता जाता है। बाल-ब्रह्मरूपी शिशु गौराङ्गके अपरूप रूपरससे मुग्ध होकर वे उन्मत्त-प्राय हो जाते हैं।

पदकर्त्ता वासुदेव घोषने ठीक ही लिखा है—

"गोरारूपेर नाहिक तुलना।"

ठाकुर लोचनदास शिशु गौराङ्गके रूपका वर्णन करते समय आनन्दसे विह्वल होकर लिखते हैं—

एहेन बालक कभू नाहि देखि शुनि।
बालक देखिया हिया करये कि जानि॥

उस सर्वाङ्ग सुन्दर, ललित लावण्यमय, कषित कनक-द्युतिकान्ति-विशिष्ट शिशु गौराङ्गके प्रत्येक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अङ्गकी अपूर्व शोभाका वर्णग वाणीके द्वारा नहीं हो सकता। वह जगतकी देदीप्यमान करने वाली अपरूप रूपराशि देखनेकी वस्तु है, देखकर नयनको परितृप्त करनेकी वस्तु है; भाषामें वर्णन करनेकी, समझानेकी वस्तु नहीं है। अकलङ्क नवद्वीपचन्द्रकी उस अपरूप रूपराशिकी अनुभूति तक मनुष्यके मनमें उदय होनेकी संभावना नहीं है। वह अपूर्व रूपानुभूति हृदयमें नहीं होती, मनश्चक्षुमें नहीं होती। इस कार्यमें प्रत्यक्ष दृष्टिकी आवश्यकता है। जो लोग जगत्को आलोकित करने वाले उस विश्वविमोहन अपरूप रूपको अपनी आँखोंसे दर्शन करके कृतार्थ हो गये हैं, वे ही कह सकते हैं कि वह कैसा रूप है। तथापि जिसमें जैसी शक्ति है, वह अपने भावके अनुसार मनोज्ञ भाषामें शिशु गौराङ्गके अपरूप रूपका वर्णन करके आत्मशोधन कर गये हैं।

नवजात शिशु-गौराङ्गके नयनरञ्जन रूप-राशिका दर्शन करके मानो सबकी आँखोंमें अमृतका अञ्जन लग गया। वह प्रेमानुरागाञ्जनकी रेखा उनके नेत्रोंसे इस जन्ममें दूर न हुई। मरने पर भी वह सङ्ग चली गयी।

उन्होंने समझा कि पूर्वजन्ममें उनका शचीके बालकके साथ कोई न कोई प्रेम-सम्पर्क या प्रेम सम्बन्ध था। नहीं तो, उनके रूपके साथ इतना आकर्षण क्यों है?

जो एक बार देखता है, वह शचीनन्दनके रूप समुद्रमें तत्काल निमज्जित हो जाता है। फिर उठना नहीं चाहता, उठ सकता भी नहीं। श्रीभगवान्का रूप सर्वचित्ताकर्षक और मनः-प्राणहारी है। इसका साक्षात् प्रमाण और परिचय भाग्यशाली नदिया वासियोंको आज प्राप्त हो गया। रूपका समुद्र लेकर श्रीगौर भगवान् नदियामें अवतीर्ण हुए थे। उनकी अपूर्व रूपराशि देखकर सब जीवोंके प्राणोंमें एक महान् भक्तिभावका उद्रेक हुआ। रूपका आकर्षण अति तीव्र और तीक्ष्ण होता है। पतित पावन नदियाके अवतार श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र वेदोक्त रुक्माङ्ग पुरुष हैं। विश्व ब्रह्माण्डपति आदि पुराण-पुरुष स्वर्ण-वर्ण लेकर नदियाके विप्रके घर उदय हुए हैं। इसीलिए लोग कहते हैं कि नर शिशुका ऐसा रूप कहीं हुआ नहीं। परन्तु श्रीभगवान्की मायाकी ऐसी लीला है कि वे लोग उस समय सब कुछ भूलकर शचीनन्दनको प्राकृत बालक समझ कर ही आनन्दसे अधीर हो रहे हैं। उनमें जो लोग विज्ञ हैं, वे सोचते हैं कि,

स्वरूपे मानुष नहे शचीर तनय।"

शिशु गौराङ्गके अपरूपका वर्णन करते समय साधक महाजनगण प्रभुके रूप-सागरमें डूबकर गोता खातेहैं। इस रूप समुद्रमें जो पड़ा है, उसमें फिर उठने की शक्ति नहीं रही। गौराङ्ग रूप-समुद्रके अगाध सलिलके उछलते हुए तरङ्गोंके आघातसे उनका सारा अङ्ग चूर-चूर हो गया। रूप-समुद्रमें उनकी अनादि और अनन्त कालसे स्थिति है। श्रीभगवान्की रूप-सुधाका पान उनके लिए सदाका आहार बन गया। गौराङ्ग रूप रस-सिन्धुमें जो गोते लगाया, वह डूब गया। प्रसिद्ध पदकर्त्ता वासुघोष अपनी आँखों इस अपरूप रूपसागरका दर्शन करके लिख गये हैं कि—

"विधि निरमिल कि दिया
गौर बड़इ रसेर सिन्धुया।"

शास्त्रमें श्रीभगवान्को अखिल रसामृतसिन्धुमूर्त्ति कहकर वर्णन किया गया है। वह मूर्त्ति है क्या? कभी किसीने देखा नहीं। उस आनन्दघन विग्रहके नाम और रूपकी केवल बात सुनी है। अब शचीके बालकमें उसी अखिलरसामृतसिन्धु श्रीभगवानकी आनन्दघनमूर्तिके दर्शन करके वे सब लोग कृतार्थ हो रहे हैं। उज्ज्वल मधुर रसकी उपासनाकी बात उन्होंने महाजनके मुखसे केवल सुनी थी। शचीनन्दनकी रसराज मूर्त्तिका दर्शन करके उनको इस उज्ज्वल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मधुर रसकी उपासनाका मर्म समझनेकी शक्ति प्राप्त हुई। रसराज अखिल-रसामृतमूर्त्तिकी उपासनाकी प्रबल वासना उनके मनमें उदय हुई। यही है नदियानागरी भावका मूल सूत्र। अतएव सूक्ष्म दर्शी मधुर रसके साधक भक्त श्रीलोचनदास ठाकुरने लिखा है—

"सभार मने हैल एइ नागरीर प्राण।"

गोपीभजन और नदियानागरी भजन एक तत्त्व है, एक वस्तु है। यही श्रेष्ठ भजन है। ब्रजकी उपासना और नदियानागरी भावमें श्रीगौराङ्ग भजन एक ही तत्व है। श्रीगौराङ्गप्रभुका विश्व-विमोहन रूप इस श्रेष्ठ उपासनाका मूल मन्त्र है।

'राधाभावद्युति सुवलित' तत्व

शचीनन्दन रूपके सागर थे, यह बात तो सबने एक स्वरसे स्वीकारकी है। इतना रूपवान् मनुष्य हो सकता है, यह पहले कभी किसीको ज्ञात न था। इसी रूपके फन्दमें पड़े थे—भारतवर्षके तात्कालिक सर्वप्रधान पण्डित, असाधारण धीशक्ति-सम्पन्न, सर्वपूज्य, सर्वशास्त्र-विशारद वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्य। इसी रूपके फन्दमें पड़े थे—शङ्कराचार्यके प्रधान शिष्य, मायावादी संन्यासी गुरु, काशीवासी, वेदान्तशास्त्रविशारद, भारत-विख्यात प्रकाशानन्द सरस्वती। महाजनगण शचीनन्दनको 'नौमिकृष्ण स्वरूपं' कहकर स्तुति कर गये हैं। श्रीश्यामसुन्दर मदनमोहन श्रीकृष्णके रूपके साथ शचीनन्दनके स्वर्ण-वर्ण अपरूप रूपकी तुलना करके सिद्ध महाजन-गण, उनको 'राधाभावद्युति-सुवलितं' कहकर स्तुति कर गये हैं। श्रीकृष्णका रूप उज्ज्वल श्यामवर्ण, और श्रीगौरांगका रूप कषित-काञ्चन वर्ण है। इस कारण श्रीगौराङ्गमूर्त्ति श्रीराधाकृष्ण युगल रूपकी प्रकाशमूर्त्ति है। नन्दनन्दन श्रीकृष्ण अपरूप-रूप सौन्दर्यसे त्रिलोकी मुग्ध है और वे श्रीराधाके रूप पर मुग्ध हैं। वे सर्वसौन्दर्यमय, पूर्णानन्दमय, पूर्ण-तत्व हैं। परन्तु श्रीमती राधिकाकी अङ्गकान्तिसे लोलुप होकर उनके प्रेमकी महिमा समझनेके लिए 'राधाभावद्युति सुवलितम्' अपूर्व रूपराशि लेकर राधाकृष्ण मिलित तनु होकर नदियाधाममें श्रीगौराङ्ग रूपमें अवतीर्ण हुए थे। यथा श्रीचैतन्य चरितामृतमें श्रीकृष्ण वाक्य—

पूर्णानन्द मय आमि चिन्मय पूर्णतत्व।
राधिकार प्रेमे आमा कराय उन्मत्त॥
ना जानि राधार प्रेमे आछे कत बल।
जे बले आमारे करे सर्वदा विह्वल॥
राधिकार प्रेम—गुरू, आमि—शिष्य नट।
सदा आमा नाना नृत्ये नाचाय उद्भट॥

—चै० च० आ० ४. १०६-१०८

यह राधाकान्ति और कृष्णकान्ति मिलितवपु श्रीगौराङ्ग-मूर्ति है। इसी कारण कहता हूँ कि श्रीकृष्णके रूपकी अपेक्षा श्रीगौराङ्गके रूपकी महिमा अधिक है। विश्व ब्रह्माण्ड-पतिका ऐसा अनुपम रूप हुए बिना माया-मुग्ध कलिके अधम जीव मोहित कैसे होंगे ?*

ग्रन्थकारका निवेदन

श्रीगौराङ्ग रूप वर्णनका अन्त नहीं है। वे जैसे गुणके निधि थे, वैसे ही रूपके सागर थे। नदियामें लाख लाख नर-नारी, कीट-पतङ्ग, पशु-पक्षी, स्थावर-जङ्गम मिश्रगृहमें शिशुगौराङ्गकी अपरूप रूपराशिका

---

* महाजन पदकर्ताओंने अनेक प्रकारके बंगला छन्दोंमें श्रीगौराङ्ग रूपका वर्णन किया है; लेकिन कलेवर बढ़नेके डरसे उन सबका यहाँ समावेश नहीं किया जा रहा है। जिनको बंगला पढ़नेका अभ्यास हो वे मूल बंगला ग्रन्थमें उसको पढ़कर आस्वादन करें।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दर्शन करके धन्य हो गये। जीवाधम ग्रन्थकारने उस समय नरकका कीट बनकर नदियामें क्यों नहीं जन्म लिया ? इसी कारण मनके दुःखसे एकपदकी भणितामें लिखा था—

साधल विधि वाद, ना पूरल मन-साध,
रइल बड़ विषाद, करम अति मन्द।
केंदे प्राण गेल रे, जनम ना भेल रे,
जनमिल जबे रे, पहूँ गौरचन्द्र ॥

और एक पदके प्रारम्भमें लिखा था—

गौर हे !
कि दिये तोमा, साजाब आमि,
चिरदिन तुमि सुन्दर ॥
बस हे आसि, उजल करि,
मम मानस-मन्दिर ॥

ग्रन्थकारके परमाराध्य, पूज्यपाद पूर्वपुरुष, श्रीनित्यानन्द-परिकर पदकर्त्ता द्विज बलरामदास ठाकुरने अपने एक पदमें लिखा था—

एमन नयान निधि जेवा ना भजिल।
आपनार हाते तुलि गरल खाइल ॥
जे जन बञ्चित हैल हेन अवतारे।
कोटि कोटि कल्पे तार नाहिक उद्धारे ॥
मुञि से अधम हेन प्रभु ना भजिया।
कहे बलरामदास एबे मरिनु पूड़िया ॥

"ऐसे नयन-निधिकी जिसने भक्ति नहीं की, उसने मानो अपने हाथ उठाकर विष खा लिया।

इस अवतारमें जो जन वञ्चित हुआ, उसका उद्धार कोटि-कोटि कल्पमें भी नहीं हो सकता।

बलराम दास कहते हैं कि मेरे जैसा अधम कौन होगा जो ऐसे प्रभुका भजन न करके दग्ध होकर मर रहा है।"

जीवाधम ग्रन्थकार उसी वंशका कुलांगार है। गौराङ्ग-भजनसे विमुख होकर यह जीवन्मृत हो रहा है। कृपालु गौर-भक्तवृन्दकी कृपा कटाक्ष ही इसका एकमात्र सबल है। केवल आत्म-शुद्धिके लिए इस दुष्कर कार्यमें यह प्रवृत्त हुआ है।

"आत्मशोधिवार तरे दुःसाहस कैनु।"

मैं शचीके बालकके रूपकी बात कह रहा था। सूतिका-गृहको आलोकित करके शिशु गौराङ्ग मातृ-क्रोड़में सुशोभित हो रहे हैं। रूपमुग्ध नदियावासी नर-नारी आहार-निद्रा त्याग करके इस अपूर्व बालककी रूपसुधाका पान कर रहे हैं। यह रूपतृषा निवृत होने वाली नहीं है। जितना ही इस रूपके विषयमें चिन्तन किया जाय, उतनी ही रूपतृषा बढ़ती जाती है। नदियावासी नर-नारी शिशु-गौराङ्गकी रूपसुधा दिवारात्रि पान करके भी तृप्त नहीं हो रहे हैं। शिशु-गौराङ्गके रूपसिन्धुमें सारा नदिया गोते खा रहा है। रुपसागरमें मानो लावण्यका ज्वार आ गया है। शिशु-गौराङ्गके अङ्ग प्रत्यङ्गके अपूर्व लावण्यको देखकर नदियावासी आनन्दके समुद्रमें डूब रहे हैं। महाजन कविने कितनी साधसे लिखा है—

"कि जानि कि रुपसागरे डूब दिये ओ गौर हयेछे।"

शचीबालक रूपका सागर, उसके प्रत्येक अङ्गकी शोभा लावण्यका समुद्र है। उनका चन्द्र-मुख सौन्दर्य सिन्धु है। कोटिचन्द्रके सौन्दर्यकी तुलना शचीबालकके एक नखचन्द्रके सौन्दर्यके साथ नहीं की जा सकती।

—※—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तीसरा अध्याय

सूतिकागृहमें शिशु-गौरांग

छय दिवसे लइया जत बन्धुगणे। करिल सूतिका पूजा विविध विधाने ।।

—श्रीचैतन्य मङ्गल

शची आङ्गनका अपूर्व दृश्य

प्रभुके शुभ जन्मदिवसकी रातमें श्रीपाद मिश्र पुरन्दरके घरमें लोक-समागम रुकता नहीं दीखता। रातभर अनगिनत लोग आ रहे हैं,जा रहे हैं। बहुतसे लोगोंने उस शुभ रातको शचीके आंगनमें ही बिताया। पूर्णिमाकी रात है, स्निग्ध चन्द्रालोकमें चारों दिशाएँ उद्भासित हो रही हैं, बसन्तकी मृदुमन्द वायु बह रही है। गङ्गातीरवर्ती शचीके आँगनमें बहुतसे नदियावासी सोये हुए हैं। मनके आनन्दमें वे घर और परिवारकी बातें एकदम भूल गये हैं। कई आदमी भयानक भीड़में खोगये अपने आत्मीय बन्धुको खोजते-खोजते मिश्रगृह पहुँचे हैं, और उस रातमें उनको वहाँ उपस्थित देखकर आनन्दसे प्रफुल्लित होकर हरिध्वनि कर रहे हैं। उस रातको मिश्र-गृहके प्राङ्गणमें लोगों का जमाव बना रहा।

श्रीवास पण्डित और उनकी गृहिणी मालिनीदेवी सारी रात मिश्र-गृह रहे। शचीके गर्भसे उनके अभीष्ट देवका आविर्भाव हुआ है—यह समझना उनके लिए शेष न रहा। श्रीवास पण्डितने गृहिणीको बुलाकर एकान्तमें कुछ कहा। श्रीवास-गृहिणी आनन्दसे गद्गद् होकर सूतिका-गृहमें जा बैठीं। वह शचीमाताकी अन्तरङ्गा प्रियसखी हैं। उनके पति मिश्र-पुरन्दरके अन्तरङ्ग मित्र हैं। शचीमाताके सब कार्योंका भार मालिनी देवीके ऊपर है। वह शचीमाताके पास बैठकर शिशु-गौराङ्गके अपरूप रूपका दर्शन कर रही हैं। शिशुके चन्द्रमुखके ऊपर मानो मुँह लगाकर पड़ी हैं। यह देखकर श्रीवास पण्डित सूतिका-गृहके द्वार पर आकर गृहिणीको लक्ष्य करके बोले—"अब केवल शिशुका मुँह देखते रहनेसे काम न चलेगा। जातकर्म आदिका प्रबन्ध करो।" पतिकी बात सुनकर मालिनी देवीकी निद्रा भंग हुई। शिशु-गौराङ्गकी धात्रीमाता नारायणी देवीको भी बाह्य ज्ञान हुआ। वह भी शिशु-गौराङ्गकी रूपसुधा पान करनेमें मत्त थी। उस समय नरसुन्दरको खबर मिली। श्रीवास पण्डितके पुराने सेवक गोपीनाथ उनके साथ थे। सौभाग्यवान् गोपीनाथने गौराङ्गका जातकर्म संस्कार सुसम्पन्न किया।

पुत्रके जन्मोत्सवमें शुभ दानकार्य दूसरे दिन प्रातःकाल हुआ। मिश्रपुरन्दरने यथाशक्ति दीन-दरिद्र और ब्राह्मण-वैष्णवको दान दिया।

शिशु-गौराङ्गकी शुभ जन्मरात्रिका प्रभात होने पर वसन्तका मृन्दु-मन्द प्रातः समीरण बहने लगा, और उसमें पद्म-गन्धकी अनुभूति होने लगी। नवीन तरु-शिखर पर बैठकर पक्षीगण मधुर सुस्वरमें गौर-नाम गान करने लगे। अरुण-रवि तरुण-साजमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनहला रङ्ग मिलाकर नदियावासीके हृदयमें शिशु-गौराङ्गकी कषित-कनक-कान्तिका उज्ज्वल वर्ण प्रतिबिम्बित करने लगा। स्वच्छ नीलाकाशमें तरुण अरुणोदय देखकर गौररूपमें मुग्ध होकर स्थावर-जङ्गम आनन्दसे नृत्य करने लगे। गौर-नाममें और गौर-गानमें समस्त जगत् मत्त हो उठा।

शुभ-जन्मोत्सव-लीला

मिश्रपुरन्दर दरिद्र ब्राह्मण हैं। पुत्रके शुभ जन्मोत्सवके उपलक्षमें उनके घरमें जो धन-सम्पत्ति थी सब कुछ ब्राह्मण, वैष्णव और दुःखी-दरिद्रोंको अकातर-भावसे दान कर दिया। प्रातःकाल नदियाके सब लोग, क्या धनी, क्या दरिद्र, जिसकी जैसी सामर्थ्य थी, नाना प्रकारकी सामग्री लाकर मिश्रगृहको भरने लगे। खोला बेंचने वाले श्रीधरसे लेकर बुद्धिमन्त खाँ जमीदार पर्यन्त मिश्रपुरन्दरके नवजात शिशु-गौराङ्गके शुभजन्मोत्सव पर नानाप्रकारके भोज्य-पदार्थ, वस्त्राभूषण आदि उपहार लेकर उपस्थित हुए। शचीमाताका अक्षय भण्डार द्रव्य-संभारसे परिपूर्ण हो गया। मिश्रपुरन्दरने नवजात पुत्रकी मङ्गलकामनासे जो कुछ उपहार मिला था, तथा अपने घरमें जो कुछ था—सब दोनों हाथोंसे दीन-दुःखी ब्राह्मणों और साधुओंको दानकर दिया।

प्रातःकाल पुनः मिश्र-गृह जन-समागम से परिपूर्ण हो गया। जो रातको नहीं आसके थे, वे सूर्योदय होते न होते शचीके आँगनमें इकट्ठे हो गये। रातमें उनको नींद नहीं आयी। आत्मीय स्वजनके मुँहसे शिशु गौराङ्गके अपरूप रूपकी बात सुनकर वे सारी रात गौराङ्गके रूपका ही स्वप्न देखते रहे। प्रातःकाल चारपाईसे उठते ही मिश्र-गृहकी ओर उन्मत्तके समान दौड़ पड़े। जिन्होने रातको देखा है, वे भी फिर आये हैं। क्योंकि वे कहते हैं कि रातमें भली भाँति शचीके बालकको देख नहीं पाये। सभी सूतिका-गृहके द्वार पर शिशु गौरांगके दर्शनके लोलुप बनकर खड़े हैं।

जगत-जननी शचीमाताकी गोदमें नदियावासीके प्राण गौरांग सुखसे सोये हुए हैं। उनके अपूर्वरूपकी विचित्र आभा सूतिकागृहके बाहर तक प्रसरित हो रही है। धात्रीमाता नारायणी और मालिनीदेवी पास ही बैठी हैं। मालिनी देवीने शिशु-गौरांगके आकर्ण-विश्रान्त कनक-केतकी-सदृश नयन-युगलमें कज्जलकी उज्ज्वल रेखा खींचकर उनके सोनेके अंगको और अधिक उज्ज्वल कर दिया है। सुन्दर क्षीण कटिमें नीले रंगके सूतका रक्षाबन्धन बाँध दिया है। रक्तवर्णके कम्बुकण्ठमें पीत वस्त्रखण्डसे रक्षाकवच बाँध दिया है। जो नवनीतसे भी कोमल चौड़े वक्षः स्थल पर पड़कर बालककी अपरूप शोभाकी वृद्धि कर रहा है। शिशुके सुन्दर प्रशस्त ललाट पर गोरोचनाकी टीका लगा दी है।

जितना समय चढ़ने लगा, उतनी ही लोगोंकी भीड़ बढ़ने लगी। शचीके आँगनमें आजकी भीड़ पूर्वरात्रिकी अपेक्षा कहीं अधिक है। बालक-बालिकाओंकी संख्या बहुत बढ़ गयी है। बड़े आनन्दसे वे शचीके आँगनमें खड़े होकर आनन्दित हो नृत्य कर रहे हैं, और बारम्बार मधुर हरिध्वनि करते हैं।

विश्वरूपका भ्रातृ-प्रेम

इनके बीच सदा आनन्दमय अपरूप रूपसम्पन्न एक बालकका आज विशेष आनन्दका दिन है। इस अपूर्व बालविग्रहकी अवस्था केवल आठ वर्ष है। उसके रूपकी सीमा नहीं है। मस्तक पर घने काले कुञ्चित-केश सुन्दर मुखचन्द्रको आवृत कर रहे हैं। पद्मपत्रके समान विशाल दोनों नेत्रोंसे दिव्यज्योति विकीर्ण हो रही है। चौड़े वक्षःस्थल पर स्वर्ण-कवच शोभा पा रहा है। सुन्दर लावण्यमय सुवलित करमें सुवर्ण-विलय और क्षीण कटिमें नीला वस्त्र है। सदा मुस्कानमय मुख-मण्डल है।

कृपालु पाठकवृन्द इस अपूर्व बालकको पहचान रहे हैं या नहीं? यह मिश्रपुरन्दर महाराजके ज्येष्ठ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुत्र शिशु गौरांगके अग्रज श्रीमद्विश्वरूप प्रभु हैं। बालक विश्वरूपके आनन्दकी आज सीमा नहीं है। उनके सुन्दर मुखमण्डल पर आज हँसी रुकती नहीं। वे एक-एक करके सब बालकोंको पकड़कर सूतिका-गृहके द्वार पर लाकर 'रक्त शिशु' का दर्शन करा रहे हैं, और मधुर हँसी हँस कर मधुर वचनोंसे कह रहे हैं, "देखो भाई ! हमारे घर कैसा माणिक वर्णका सा बच्चा हुआ है। ऐसा सुन्दर बच्चा क्या कभी तुमने देखा है ?"

बालक विश्वरूपके एक और कार्यमें नदियावासी नर-नारीका मन विशेष आकृष्ट हो रहा है। वह घरके भीतरसे नाना प्रकारके भोजनके पदार्थ लाकर दोनों हाथोंसे बालक-बालिकाओंमें बाँट रहा। आज मिश्र-गृहमें मिठाई और फल-मूलकी कोई कमी नहीं है। बालक विश्वरूप जी भरके अपने छोटे भाईकी मङ्गल-कामनासे दोनों हाथोंसे मिठाई लुटा रहे हैं। इस मिठाईकी लूटमें बालक-बालिका युवा-वृद्ध सभी योगदान करके अपार आनन्द लूट रहे हैं। बालक विश्वरूपको सभी आदर करके, गोदमें लेकर मुँह चूम रहे हैं।

सदा आनन्दमय, सहास्य वदन, अष्टवर्षीय बालक विश्वरूपके लिए आज बड़ा ही आनन्दका दिन है। वे एक-एक बार दौड़कर सूतिकागृहमें जाकर माताके पास खड़े होते हैं। उनकी अत्यन्त इच्छा है कि शिशु भाईको एकबार गोदमें ले लें। माताको इसके लिए बहुत परेशान कर रहे हैं। दुलारसे शचीमाताकी गर्दन जकड़कर सुधा-मधुर वाणीमें बालक विश्वरूप कहते हैं—"माँ ! अपने लाल-लाल शिशुको एकबार मेरी गोदमें दे। मैं बाहर ले जाकर उन लोगोंको भलीभाँति शिशुका दर्शन करा दूँ।" पुत्रकी बात सुनकर शचीमाता हँसती हुई व्यग्र हो उठीं। मालिनी और नारायणीदेवी भी वहाँ बैठी थीं। वे दोनों विश्वरूपको पकड़ कर रख नहीं पा रही हैं। शचीमाताने पुत्रका मुख चुम्बन करके मधुर वाणीमें कहा—"नहीं बेटा ! ऐसा नहीं किया जाता, अभी बच्चा बहुत ही नाजुक है, माँकी गोदसे उतारने योग्य नहीं है। जब यह कुछ बड़ा हो जायगा तो बेटा ! तुम गोदमें लेकर जो चाहो सो करना।"

विश्वरूप माताकी बात सुनकर मान तो गये, परन्तु उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने मन मारकर गम्भीर भावसे मातासे पूछा—"माँ ! बच्चा कब बड़ा होगा ? कल मेरी गोदमें दोगी न ?" शचीमाता सखी मालिनीकी ओर देखकर कुछ मुस्करायीं और दुलार करके पुत्रको एक और स्नेह-चुम्बन प्रदान करके प्रेमपूर्वक उत्तर दिया, "मेरे पगले लड़के ! बच्चा क्या दिनमें बड़ा होता है ? षष्ठी पूजाके बाद बच्चेको तेरी गोदमें दूँगी।" सरल सदानन्द बालक विश्वरूपने आह्लादसे गद्गद् होकर पुनः पूछा—"माँ ! बालककी षष्ठी पूजा कब होगी ?" शचीमाता विपदमें पड़कर बोलीं—"शीघ्र ही होगी।" इतना कहकर मालिनी देवीको इशारा किया, "विश्वरूपको सूतिकागृहसे बाहर ले जाओ।" मालिनी देवी प्रभुके अग्रजको गोदमें उठाकर मुख-चुम्बन करते हुए बाहर ले गयीं।

शिशु गौराङ्ग मातृक्रोडमें आनन्दसे सोये हैं। अग्रजको देखकर उनकी ओर एकटक देखने लगे। दोनोंकी आँखें चार हुईं तो जान पड़ा कि कितने दिनोंकी जान पहचान है। पूर्व सम्बन्ध समझकर दोनों ही मन-ही-मन आनन्द विह्वल हो उठे। बहुत दिनके बाद प्रेमालिङ्गनकी प्रबल इच्छा होनेके कारण ही बालक विश्वरूपने जननीके पास इतना हठ-दुराग्रह किया था।

छोटा लाल-लाल भाई बालक विश्वरूपकी प्राण-प्रिय वस्तु हो गया। उनका भ्रातृस्नेह और अनुराग दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा। प्राणगौराङ्ग विश्वरूपके प्राण बन गये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवास पण्डितका भाव

प्रभुके शुभ जन्मदिनके दूसरे दिन श्रीपाद जगन्नाथमिश्र पुरन्दरने उपयुक्त ब्राह्मणके द्वारा नवजात पुत्रकी मङ्गलकामनामें गृहमें शान्ति-स्थापनाकी व्यवस्थाकी। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती, चन्द्रशेखर आचार्य, श्रीवास पण्डित आदि आत्मीय जनके द्वारा यह शुभकार्य अनुष्ठित हुआ। श्रीवास पण्डितने भीष्म-स्तवराज पाठ करके शिशुगौराङ्गको सुनाया। वृद्ध ब्राह्मण स्तव पाठ कर रहे हैं और शचीके बालकके चन्द्रमुखकी ओर एक-एक बार देख लेते हैं। सबने देखा कि पण्डितकी दोनों आँखोंसे झर-झर प्रेमाश्रु धारा बह रही है। वह व्याकुल चित्तसे बाल-गौराङ्गके रूपका दर्शन कर रहे हैं और रूपसे मुग्ध होकर आकुल हृदय होकर बालब्रह्मरूपी शची बालकको अपना अभीष्ट देव मानकर स्तव कर रहे हैं। स्तव पाठ समाप्त होने पर श्रीवास पण्डितने अपने इष्टदेवके उद्देश्यसे शचीके बालकको साष्टाङ्ग प्रणाम किया।

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

श्रीवास पण्डितके मनकी बात किसीको ज्ञात न हुई। उन्होंने किस उद्देश्यसे प्रणाम किया, यह भी किसीने नहीं समझा। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती सर्वज्ञ हैं। उन्होंने कुछ-कुछ समझा, क्योंकि पूर्वरात्रिमें श्रीवास पण्डितको सूतिकागृहमें शिशुके प्रथम दर्शनके अवसर पर उन्होंने श्रीकृष्णका स्तव पाठ करते सुना था। उन्होंने कुछ कहा नहीं, परन्तु मिश्रपुरन्दर ठाकुरके मनमें एक खटका पैदा हो गया। वे वात्सल्य-प्रेममें अन्धे होकर अपने मनकी बातको छिपा न सके। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने अपने प्रिय मित्र श्रीवास पण्डितसे पूछा, "पण्डित, तुमने नवजात शिशुको प्रणाम और स्तव क्यों किया? मेरा बालक तुम्हारे आशीर्वादका पात्र है। इससे उसका अकल्याण होगा।" श्रीवास पण्डितका मुँह सूख गया। वे क्या उत्तर देते? कुछ स्थिर न करके सिर नीचे झुका लिया। कुछ देर वे निस्तब्ध हो रहे। पश्चात् सिर उठाकर धीरे-धीरे उन्होंने मिश्रपुरन्दरसे कहा, "मिश्र! तुम्हारे पुत्रको मैंने प्रणाम नहीं किया। तुम्हारे बालकको देखते ही मुझे नंदनंदनकी बालमूर्त्ति याद आगयी, अतएव उनके उद्देश्यसे प्रणाम किया।" मिश्रपुरन्दर लम्बी साँस लेकर शान्त हुए। उनके मनका उद्वेग दूर हो गया। वे पण्डितको प्रगाढ़ आलिङ्गन देकर बोले, "पण्डित! तुम शिशुको शुभ आशीर्वाद दो कि वह चिरंजीवि होवे। देव-द्विजमें उसकी भक्ति हो।" श्रीवास पण्डितने मुस्कराकर उत्तर दिया—"मिश्र! तुम्हारा यह अपूर्व बालक जगत्को भक्तितत्त्वकी शिक्षा देगा। इस शिशुको तुम साधारण शिशु मत समझो।" मिश्रपुरन्दर पुनः उदास हो गये, और कोई बात बोल न सके। उनका वात्सल्य-रस-समुद्र उमड़ आया। वे प्रेमवश होकर आँसू बहाने लगे।

शान्तीपुरमें आनन्दोत्सव

शान्तीपुरनाथ महाविष्णुके अवतार श्रीअद्वैत प्रभु अपने घर बैठे-बैठे नदियामें श्रीनवद्वीपचन्द्रका आविर्भाव ध्यानमें देखकर प्रेमानन्दमें विभोर होकर नृत्य करने लगे। हरिदास ठाकुर उस समय उनके पास शान्तिपुरमें थे। उनको साथ लेकर उस दिन श्रीअद्वैतप्रभुने नृत्यावेशमें बारम्बार हुँकार भरते हुए कीर्तनके रङ्गमें शान्तिपुर धामको उन्मत्त कर दिया। शान्तिपुरनाथको आज अकस्मात् इतना आनन्द, इतना नृत्य, इतना प्रेम-विह्वल भाव क्यों हुआ है? दूसरा कोई इसे कैसे समझ सकता है? हरिदास ठाकुर सर्वज्ञ हैं, वे सब कुछ जानते हैं। उनके भी आज आनन्दकी सीमा नहीं है। गौरकृष्ण नदियामें अवतीर्ण हुए हैं, इससे ही उनको आज इतना आनन्द है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

फाल्गुनी पूर्णिमा है; सन्ध्याकाल है, ग्रहण लगनेका समय हो गया है। चारों ओर हरिध्वनि सुनायी दे रही है। शान्तिपुरवासी नर-नारी श्रीअद्वैतप्रभुके घर एकत्र होकर हरिनाम संकीर्तनके आनन्दमें विभोर होकर गङ्गातटकी ओर चल पड़े हैं।

श्रीअद्वैतप्रभु और हरिदास ठाकुरके उद्दण्ड नृत्यसे शान्तिपुरमें धूम मच गयी है। इस हरिनाम महासंकीर्तन यज्ञमें आबालवृद्ध सब योग दे रहे हैं। शान्तिपुरनाथ हमारे गौर-आना-गोसाईं हैं। उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है। प्रेमानन्दमें अधीर होकर वे आज बालकके समान संकीर्तनमें नृत्य करते-करते शान्तिपुरके प्रशस्त पथसे सुरसरिके तीर जा रहे हैं।

आज उनके अभीष्टदेव कलिग्रस्त जीवोंके उद्धारके लिए नदियाधाममें मिश्रगृहमें अवतीर्ण हुए हैं—यह शुभ संवाद मानो विद्युतकी चमकके समान नवद्वीपसे शान्तिपुरमें फैल गया है। शान्तिपुरमें गङ्गाके तट आज अपूर्व दृश्य है। सभी प्रेमानन्दमें उन्मत्त हैं, सबके प्राणोंमें एक नवीन भाव उदय हो गया है। सभी नवोत्साह से प्रेरित होकर श्रीअद्वैतप्रभुको घेरकर प्रेमानन्दसे नृत्य करने लगे। श्रीअद्वैतप्रभु आज प्रेमविह्वल भावमें इतना क्यों नाच रहे हैं—इसे कोई समझ नहीं पा रहा है।

सभी श्रीअद्वैतप्रभुकी जय बोल रहे हैं। "जय श्रीश्रीअद्वैतप्रभुकी जय" की ध्वनिसे दिगन्त परिपूर्ण हो रहा है। वे तत्कालीन कृष्णभक्त वैष्णववृन्दके अधिनायक तथा सर्वशास्त्र-पारदर्शी पण्डित थे। शान्तिपुर धाममें उनका निवास मन्दिर था। नवद्वीपमें भी उनकी एक पाठशाला थी, इसी सूत्रसे वहाँका आना-जाना होता था। श्रीअद्वैतप्रभुके प्रेमहुङ्कारसे और भक्ति-आह्वानसे कलिग्रस्त दुःखी-तापी जीवोंके उद्धारके लिए श्रीगौर भगवान्‌को नदियामें अवतीर्ण होना पड़ा था।

महाविष्णुके अवतार श्रीअद्वैतप्रभुकी शक्ति और भक्ति दोनों ही अद्‌भुत थीं। वे ज्ञान, भक्ति और वैराग्यके परम गुरू थे। उनके समान एकनिष्ठ, तेजस्वी, कृष्णभक्त परम वैष्णव, भक्तिशास्त्रमें अद्वितीय पण्डित उस समय दूसरा कोई न था। महाजनगण उनको शंकरका अवतार भी कह गये हैं।

श्रीअद्वैतप्रभु-आदि भक्तवृन्द ग्रहणका स्नान करके कीर्तन करते हुए घर लौटे। शान्तिपुरमें सब लोग जान गये कि नवद्वीपमें श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरके घर शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी चतुर्भुज नारायणका आविर्भाव हुआ है। कोई-कोई कहते हैं कि द्विभुज-मुरलीधर नवजलधररूप श्रीश्रीश्यामसुन्दर देवका आविर्भाव हुआ है। शुभ चन्द्रग्रहणकी उस रात शान्तिपुरके प्रत्येक घरमें कुल-नारियोंने शुभ शङ्ख बजाकर, शुभ हुलूध्वनि करके शची-बालककी मङ्गल-प्रार्थनाकी। दूसरे दिन इस अपूर्व बाल-विग्रह दर्शनकी लालसासे शान्तिपुर-वासी सब लोग नवद्वीपकी यात्रा करनेकी तैयारी करने लगे। श्रीअद्वैतगृहिणी योगमाया सीतादेवी पतिका आदेश प्राप्तकर उनके साथ नदियाके लिए चल पड़ीं।

श्रीसीतादेवीका जन्म-रहस्य

यहाँ सीतादेवीका कुछ परिचय आवश्यक है। महाजनगणके मतसे यह साक्षात् योगमाया भगवती हैं। जैसे गौरगणोद्देशदीपिकामें लिखा है—

योगमाया भगवती गृहिणी तस्य साम्प्रतम्।
सीतारूपेण अवतीर्णा श्रीनाम्नी तत्प्रकाशकः॥

श्रीअद्वैतप्रभुकी दो स्त्रियाँ थीं सीतादेवी और श्री। दोनों ही नारायणपुर निवासी वारेन्द्र श्रेणीके ब्राह्मण श्रीपाद नृसिंह भादुड़ीकी कन्या थीं। दोनों यमज कन्याके नामसे परिचिता थीं। परन्तु वस्तुतः सीतादेवी अयोनि-संभवा थी। श्रीअद्वैतप्रभुके शिष्य और बाल्य सहचर श्रीईशाननागर ठाकुर-प्रणीत अद्वैत प्रकाश श्रीग्रन्थमें श्रीपाद नृसिंह भादुड़ीकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस अयोनि-संभवा कन्याकी प्राप्तिका विवरण लिखा हुआ है। उसी श्रीग्रन्थसे निम्नलिखित संक्षिप्त विवरण संग्रह किया गया है।

नारायणपुरके समीप एक सरोवरमें बहुतसे पद्मपुष्प विकसित थे। भादुड़ी महाशय अति निष्ठावान् परोपकारी विष्णु-भक्त ब्राह्मण थे। उन्होंने उसी सरोवरमें गृह-देवता नारायणकी पूजाके लिए पत्र-पुष्प लानेके लिए जाकर एक शतदलपद्मके बीच अङ्गुष्ठ प्रमाण एक परम सुन्दरी कन्याको देखा। उन्होंने उस अपूर्व कन्याको घर लाकर गृहिणीसे सारा वृत्तान्त कह सुनाया। दैवयोगसे उसी दिन भादुड़ी-गृहिणीने एक कन्या-सन्तान प्रसव किया। उस नवप्रसूत कन्याके पास इस अयोनिसंभवा अङ्गुष्ठ-प्रमाणा कन्याको रखते ही यह नवजात शिशुकन्याके आकारकी हो गयी। अतएव लोगोंने समझा कि दोनों यमज कन्याएँ हैं। श्रीअद्वैत-गृहिणी श्रीसीतादेवी वही अयोनि-संभवा कन्या हैं। यह श्रीपाद नृसिंह भादुड़ी महाशयकी ज्येष्ठ कन्याके नामसे प्रसिद्ध हुईं।

श्रीसीतादेवीकी नवद्वीप-यात्रा

सीतादेवी शचीमाताकी समवयस्का थी। दोनोंमें विशेष प्रीतिभाव था। नवद्वीप जाने पर सीतादेवी शचीमाताका सङ्ग नहीं छोड़ती थीं। दोनों एकात्मा, एक प्राण थीं। उनकी प्रिय सखी शचीदेवीके गर्भसे जो इस बार श्रीगौर भगवान्का आविर्भाव होगा, यह साक्षात् योगमाया-स्वरूपा सीतादेवीको अविज्ञात न था। श्रीगौर भगवान् नदियामें भूमिष्ठ होते ही शचीमाताके आदेशके अनुसार तत्काल शान्तिपुरमें सीतादेवीके पास यह शुभ समाचार पहुँचानेके लिए आदमी भेजा गया था। सीतादेवी यह शुभ समाचार पाकर आनन्दसे अपने आपेमें न रहीं, और शिशु-गौराङ्गका दर्शन करनेके लिए नवद्वीप जानेकी तैयारी करने लगीं।

श्रीअद्वैतगृहिणीने पतिसे कहा—"ठाकुर! तुम भी चलो।" श्रीअद्वैतप्रभु मुस्कराकर बोले—"गृहिणी! तुम अतिशय सौभाग्यवती रमणी हो। तुम्हारे प्रभुने तुम्हारे ऊपर कृपा करके आह्वान किया है। तुम जाओ। तुम्हारे समान भाग्यवती पत्नीकी कृपासे यदि मेरा भाग्य समुज्ज्वल हुआ तो मुझे प्रभुके चरणोंका दर्शन अवश्य होगा। नहीं जानता, मेरे भाग्यमें वह शुभ दिन कब आवेगा।"

सीतादेवी सर्वज्ञ आचार्यजीका रङ्ग देखकर कुछ हँसी। उस हँसीका मर्म श्रीअद्वैतप्रभुने जान लिया। उस हँसीका मर्म इस प्रकार जान पड़ता है—"चतुर चूड़ामणि! तुम्हारी चतुराई मैंने समझी। तुम्हारे अभीष्ट देव जब तक तुम्हारा आह्वान नहीं करेंगे, तब तक तुम नवद्वीप नहीं जाओगे। तुम्हारे ही आकुल प्रेमाह्वानसे कलिग्रस्त-जीवोंके उद्धारके लिए श्रीगौरभगवान् शची-गर्भसे नदियामें अवतीर्ण हुए हैं। तुम शक्तिमान् हो। इसी कारण उनके श्रीचरण-दर्शनकी आकांक्षाको इस समय रोक सके।" ये भाव सीतादेवीके मन ही में रह गये। खुलकर प्रकट नहीं किया। वह पतिसे हँसकर बोलीं—"अच्छा ठाकुर! मैं भी देखूँगी कि तुम शचीके बालकको देखे बिना कैसे रहते हो।" श्रीअद्वैतप्रभुने इस बातका कोई उत्तर नहीं दिया।

सीतादेवी पतिके श्रीचरणोंकी धूलि लेकर नवद्वीप जानेके लिए उद्योग करने लगीं।

श्रीअद्वैतप्रभु शान्तिपुरके सर्वश्रेष्ठ सर्वमान्य पंडित हैं। उनके द्वार पर नित्य सैकड़ों आदमी उनकी चरणधूलि लेनेके लिए आते हैं। आज श्रीअद्वैत गृहणी शिशु-गौराङ्गका दर्शन करने नवद्वीप जायँगी। शान्तिपुरके सब लोग उनके साथ जानेके लिए उन्मत्त हो रहे हैं। द्वार देश पर लोगोंकी भीड़ लगी है। सुसज्जित डोली तैयार है। सीतादेवी घरके भीतर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बैठकर झाँपी सजा रही हैं। श्री अद्वैतप्रभुका सोनेका संसार अक्षय-भण्डार है। उनके घरमें किसी वस्तु का अभाव नहीं है। क्षणभरमें वस्त्राभूषण, मिष्ठान्न आदि सबकुछ बाँधकर झाँपीमें भर लिया।

सीतादेवीं पहलेसे ही शची-बालकके लिए गलेके, बाहोंके और पैरोंके सब सुवर्णके अलङ्कार आदि बनाकर रखी थीं। क्योंकि, वह साक्षात् योग-माया भगवती हैं, सर्वज्ञा हैं। शचीबालकके लिए अलङ्कार बनवानेकी बात उन्होंने किसीसे नहीं कही। श्री अद्वैत प्रभु भी यह नहीं जानते हैं। शानिपुरके सुदक्ष स्वर्णकारके द्वारा बालविग्रहोपयोगी सुन्दर-सुन्दर आभूषण बनवा रखे थे। उनको बहुत यत्न पूर्वक एक पोटलीमें बाँधकर झाँपीमें डालकर चाबीसे बन्द कर दिया। झाँपीमें बन्द करनेके पूर्व सीतादेवीके मनमें बड़ी साध थी कि उनको एक बार आचार्य महाशयको दिखावें। श्रीअद्वैत प्रभुकी महलके अन्दर पुकार हुई। उनको देखकर सीतादेवीने हँसते-हँसते अत्यन्त आनन्द पूर्वक कहा—"तुम्हारे नवद्वीप चन्द्रके लिए क्या-क्या लेजा रही हूँ, एक बार देख तो लो। यह देखो कितने आभूषण हैं, कैसे सुन्दर वस्त्र हैं, कितने मिष्ठान्न हैं"—इतना कहकर सीतादेवीने झाँपी खोलकर सब आभूषण पतिको एक एक करके दिखा दिये।

श्री अद्वैतप्रभु ग्रहिणीके इन सब कार्योंको देखकर आनन्दसे अधीर होकर व्यग्र हो उठे। उनके उज्ज्वल नयनद्वयसे झर-झर आनन्दाश्रु बहने लगा। वह प्रेमगद्गद कण्ठसे गृहिणीके दोनों हाथ पकड़कर रोते-रोते बोले—साध्वि! तुम धन्य हो! धन्य है तुम्हारा वात्सल्य प्रेम! धन्य है तुम्हारी प्रेम भक्ति! इस प्रकारकी प्रेम भक्तिसे ही श्रीभगवान् भक्तके वशीभूत होते हैं। मेरे समान पाण्डित्याभिमानी ज्ञान-गर्वी ब्राह्मण तुम्हारे जैसे भक्तिमतीकी प्रेमभक्तिका मर्म क्या समझेगा? आशीर्वाद देता हूँ, तुम्हारी मनो-कामना पूर्ण हो।

सीतादेवी लज्जित होकर पतिके चरण-रजको लेकर दास-दासियोंकेसाथ नदियोंकी ओर चल पड़ीं। सोलह कहारोंकी डोली सीतादेवीको लेकर द्रुतवेगसे नवद्वीपकी ओर चली।

'जय शान्तिपुरनाथकी जय! जय श्री अद्वैत प्रभुकी जय!'—की ध्वनिसे गगन प्रतिध्वनित हो उठा। सीतादेवीके मनमें आज बड़ा आनन्द है। उनका नारी-जाति-सुलभ लज्जाभाव आज दूर हो गया है। डोलीके दोनों बगलके वस्त्रके घेरेको ऊपर उठा-कर राजराजेश्वरी वेषमें योगमायारूपिणी सीतादेवी पथके दोनों ओरकी प्राकृतिक शोभा देखती हुई आनन्दित चित्तसे नदिया जा रही हैं। डोलीके दोनों ओर लोग दौड़ रहे हैं। नदिया-शान्तिपुरके रास्तेमें लोगोंकी भीड़ लगी है। श्रीअद्वैतप्रभुके महामतिम नामसे नम्रतापूर्वक सब लोग मार्ग छोड़ देते हैं।

रास्तेमें लोग नाना प्रकारकी बातें करते हैं। जो लोग शची-बालकका दर्शन करके लौट रहे हैं, वे कहते हैं—"ऐसा सर्वाङ्ग सुन्दर शिशु कभी कहीं देखा गया। "ऐसा कच्चे सोनेके वर्णका शरीर नरशिशुका कभी नहीं देखा गया। शिशुके मुँहकी ओर ताकनेका साहस नहीं होता। मानो उसके तेजसे आँखें झपी जा रही हैं। कोई कहता है—"सूतिका गृहसे मानो पद्म गन्ध निकलता है।" दूसरे कहते हैं—"अहा! शिशुके लाल दोनों पैर मानो शतदल पद्म हैं।"

शिशु गौराङ्गके हृदयोन्मादकारी अपरूप रूपका वर्णन सुनते हुए सीतादेवी आनन्द-उन्मत्ता होकर नदियाकी ओर जा रही हैं। कितनी देरमें शचीके घर पहुँचूगी, कब इस रूपके सागर शची-बालकका दर्शनक रके मन और नेत्र परितृप्त होंगे, इस उत्कण्ठासे उन्होंने कहारोंको कहा—"जल्दी-जल्दी चलो। दोपहरके पहले यदि पहुँच गये तो नवीन वस्त्र पुरस्कारमें मिलेगा।"

डोली ढोने वाले कहार पुरस्कारक नाम सुनकर प्राणपनसे वायुवेगसे दौड़ने लगे। यथा समय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सीतादेवीकी डोली नवद्वीपमें जा पहुँची। शान्तिपुरके बहुतसे लोग पहले आचुके थे,। बहुतसे पीछे रह गये थे। अब सब लोग इकट्ठे हो गये। सभी सीतादेवीकी डोलीके साथ नवद्वीपमें प्रविष्ट हुए। सबके मुँहसे 'जय अद्वैतप्रभुकी जय! जय सीतादेवीकी जय!'--ध्वनि निकल रही थी। सीतादेवीकी डोली नदियाके जनाकीर्ण राजपथसे होकर दक्षिणपाड़ामें जा पहुँची। नवद्वीपके लोग शान्तिपुरसे आये हुए जनसमूहको देखकर विस्मित हो उठे। वे भी उनके साथ होकर मिश्रगृहकी ओर अग्रसर हुए। नदियाका पथ पुनः जनाकीर्ण हो गया। मिश्रपुरन्दरके गृहद्वार पर प्रवेश पाना कठिन था।

नवद्वीपमें सीतादेवी, शिशु-गौरांगके लिए उपहार

मिश्रपुरन्दरने सुना कि श्रीअद्वैतप्रभु शान्तिपुरसे सपरिवार आ रहे हैं। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती, श्रीवास पण्डित आदि सब लोग व्यग्र होकर उनका स्वागत करनेके लिए मिश्रपुरन्दरके साथ द्वार देश पर जाकर उपस्थित हो गये। किस प्रकार इस भीषड़ भीड़को हटाकर उनका स्वागत करें, इस चिन्तासे वे व्यग्र हो उठे।

श्रीअद्वैतप्रभुके नामकी ऐसी महिमा है योगमाया सीतादेवीका ऐसा माहात्म्य है कि वह भयानक भीड़ श्रीअद्वैत-ग्रहिणीकी डोली देखकर आदर पूर्वक रास्तेसे हट गयी। साक्षात् भगवती-रूपिणी सीतादेवी दास-दासीके सहित हँसती-हँसती आनन्दसे आकुल होकर जगज्जननी-रूपमें शचीमाताके आङ्गनमें खड़ी हो गयीं। तब सबने देखा कि अद्वैतप्रभु नहीं आये हैं, उनकी ग्रहणी आयी हैं।

बालक विश्वरूपने सीतादेवीको देखते ही दौड़ कर हँसते हुए उनकी गोदमें चढ़कर स्वर्णनथसे युक्त उनके सुन्दर श्रीमुखके चिबुकको अपने भोले सुकुमार हाथोंसे स्पर्श करते हुए कहा—"बड़ी माँ! तुम हमारे लाल-लाल बच्चे देखने आयी हो? बच्चे को अपने घर तो नहीं ले जाओगी?"

श्रीअद्वैत-गृहिणी विश्वरूपसे अपरिचित नहीं है। वह अनेक बार नवद्वीप आ चुकी हैं। अपनी प्रियसखी शचीमाताके साथ बहुत दिन चौबीसों घण्टे एक साथ रह चुकी हैं। बालक विश्वरूपको सीतादेवीसे बहुत लाड़प्यार मिल चुका है। सीतादेवीने विश्वरूपको स्नेहपूर्वक गोदमें लेकर सैकड़ों बार मुख चुम्बन किया। वे अपने आँचलमें मिष्ठान्न बाँधकर साथ लायी हैं। आँचलसे खोलकर उसे विश्वरूपके दोनों हाथोंमें दिया।

विश्वरूप सीतादेवीके गोदमें बैठे-बैठे मिठाई खाने लगे। तब अद्वैत-गृहिणीने बालक विश्वरूपके सुन्दर मुखचन्द्रकी ओर देखकर स्नेहपूर्वक मुख चुम्बन करके कहा—"हाँ रे! क्या बच्चा तेरेसे भी अधिक सुन्दर है?" बालक विश्वरूपने मिठाई खाते हुए हँसते हुए उत्तर दिया—"मैं तो बच्चेके सामने काला हूँ। बच्चेके पैरके तले भी मैं बैठ नहीं सकता। तुम जाकर देखो न?" इतना कहकर विश्वरूप सीतादेवीकी गोदसे झटपट उतर पड़े। और श्रीअद्वैतगृहिणीका हाथ पकड़कर खींचते हुए सूतिकागृहकी ओर ले चले।

सीतादेवी अब अपनेको रोक न सकी। वात्सल्यरससे उनका कोमल हृदय द्रवित हो गया और दोनों आँखोंसे झर-झर प्रेमाश्रु बहने लगे। वह बालक विश्वरूपके साथ चित्र लिखित-सी होकर सूतिकागृहके द्वार पर खड़ी हो गयीं। द्वारदेशसे जो देखा उससे उनको मूर्च्छा-सी आ गयी। सूतिकागृहमें स्थित शची-बालककी अपरूप रूप-ज्योतिसे उनकी दोनों आँखें मानो चुंधिया गयीं।

वे सूतिका-गृहमें घुसकर जड़वत् बैठ गयीं, शचीमाताने उनकी अवस्था समझकर शिशु-गौराङ्गको उनकी गोदमें दे दिया। श्रीअद्वैत-गृहिणीके प्रेमाश्रु भरे नयन-द्वयका लक्ष्य था शचीनन्दनके दो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रक्त-चरण। सीतादेवीके मुँहसे बोली नहीं निकल रही है। उनके विशाल नयनद्वयसे अविरल प्रेमाश्रु-धारा बह रही है। चुपकेसे उन्होंने अञ्चलसे अपने आँसू पोंछ लिये, और मन ही मन सोचने लगीं, "ऐसे समय इन निगोड़ी आँखोंमें जल कैसे आया? यह उष्ण जल एक बिन्दु भी सोनेके लालके ऊपर पड़ेगा तो क्या गति होगी? प्रिय सखी क्या सोचेगी? यह रोनेका समय भी नहीं है।"

श्रीअद्वैत गृहिणी इस प्रकार सोच रही हैं; और देख रही हैं शचीबालककी अपरूप रूपराशि। सखीके भाग्यको हजार बार धन्यवाद दे रही हैं। सर्वान्तर्यामी नरशिशु पूर्णब्रह्म सनातन यह देखकर मन-ही-मन हँस रहे हैं। वे सदाके रंगीले हैं। इस समय भी उनको लीला करनेकी इच्छा हुई। वे सीतादेवीकी गोदमें सोये थे, अचानक चौंक उठे और रोने लगे। यह देखकर सीतादेवीने घबराकर शचीके बालकको सखीकी गोदमें देकर हँसते हुए कहा, "सखि! तुम अपने बालकको आप ले लो। यह अमूल्य माणिक तुम्हारी ही गोदके उपयुक्त है।" शचीमाताने अप्रतिभ और लज्जित होकर पुत्रको गोदमें लेकर जब स्तन पिलाया तो शिशु गौराङ्ग शान्त हुए।

शचीमाताने सीतादेवीसे कहा, "दीदी! तुम्हारी ही आशामें मैं बैठी हुई हूँ। अब तुम आ गयी हो, जो करना हो करो। मेरे दुर्भाग्यकी सारी बातें तो तुम्हें मालूम हैं। यह अमूल्य धन क्या मेरे भाग्यसे जीवित रहेगा? दीदी! तुम अपने पैरकी धूलि दो, आशीर्वाद दो। आचार्य ठाकुर आये हैं क्या?" सीतादेवीने हँसकर उत्तर दिया, "बहिन! तुम व्याकुल मत हो। मैं सब कार्य करूँगी। इसी कारण झटपट आयी हूँ। तुम्हारे दुर्भाग्यको जानकर इस बालकको आप देवतासे रक्षा करनेके लिए स्वामीके पाससे रक्षा-कवच लायी हूँ। वह आ नहीं सके हैं, बादमें आवेंगे।" यह सुनकर शचीमाताका मन प्रफुल्लित हो गया।

सीतादेवीके दिये हुए रक्षा-कवचको शिशु-गौराङ्गके चौड़े वक्षःस्थल पर लाल सूतसे बांध-कर झुला दिया। सीत ठकुरानी पक्की गृहिणी हैं। उन्होंने पहलेसे ही डाकिनी-शाकिनी-योगिनी-सिद्ध अभिमन्त्रित रक्षा-कवच संग्रह करके रक्खा था। वह जानती थीं कि सखीकी आठ कन्या सन्तान गर्भमें ही नष्ट हो चुकी हैं। पीछे कहीं इस बालकका अमङ्गल न हो, इस आशङ्कासे उन्होंने सबसे पहले सूतिकाग्रहके द्वार पर छाँटा हुआ झाड़ू टँगवा दिया। कण्टकारिका पौधा सिन्दूर लगाकर गोबरके पिण्डके ऊपर गाड़कर सूतिकागृहके ऊपर रख दिया। लाल सूतके द्वारा सूतिकाग्रहका द्वार बांध दिया। गोबरके पिण्डके ऊपर सात कानी कौड़ी रखकर उसे अभि-मन्त्रित कर दिया। और जो-जो मङ्गल अनुष्ठान करना था, सब करनेका आदेश दिया।

शचीनन्दनका निमाइ नाम सीतादेवीका ही रक्खा हुआ है। अतएव सीतादेवीने शचीबालकका नाम रक्खा 'निमाइ'। तिक्त समझकर डाकिनी-शाकिनीगणमें कोई बालकको स्पर्श न करेगा। यम भी स्पर्श नहीं करेंगे।

कोई-कोई कहते हैं कि निम्बके वृक्षके नीचे शचीनन्दनका जन्म हुआ था, इसलिए शचीमाताने उनका नाम 'निमाइ' रख दिया था। जिस प्रसूतिके बालक होकर मर जाते हैं, उसकी अन्तिम सन्तानका नाम स्त्रियाँ निमाइ रखती हैं।

शचीबालकको मिश्रगृहमें भूमिष्ठ हुए आज तीन दिन हो गये। इन तीन दिनों तक मिश्रगृहमें लोगोंकी भीड़ बनी रही। तीसरे दिन नवजात शिशु गौराङ्गको सूतिका स्नान कराकर विधिपूर्वक जात-कर्म आदि संस्कार सम्पन्न किये गये। सीतादेवी, मालिनीदेवी, और नारायणीदेवी—सबने मिलकर अभिमन्त्रित जलसे शचीबालकको भली भाँति स्नान कराया।

तीन दिवसके शिशु गौराङ्ग शचीमाताकी गोद आलोकित करके सो गये। उनके कोटिचन्द्र-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विनिन्दित अति सुन्दर मुखकमलमें मधुर मुस्कान दीख रहा है। कुसुम कोमल रक्ताभ रदनच्छद लघु-लघु स्पन्दित हो रहे हैं। आकर्णविश्रान्त पद्मपत्रवत् लोचनद्वय तिरछी मधुर मनमोहन चितवनिसे सबके मन-प्राणको आकर्षित कर रहे हैं। सभी अनिमेष-नेत्रोंसे शचीबालककी इस अपूर्व शोभाको देख रहे हैं।

सीतादेवीने नाना प्रकारकी सुगन्धिसे युक्त स्वर्ण-घटपूर्ण अभिमन्त्रित सलिल द्वारा मन्त्र पढ़कर धीरे-धीरे शिशु गौराङ्गके सर्वाङ्गको अभिसिक्त किया। बालककी भूत-प्रेत आदिसे रक्षाके निमित्त उनके चारों ओर वह जल-धारा गिरायी। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने आकर अपनी कन्याके क्रोड़में स्थित शिशुके सर्वाङ्गमें मन्त्र पढ़कर शान्तिवारि सिञ्चन किया। उस समय सब लोग हरि-हरि ध्वनि करने लगे। शान्तिजलके द्वारा स्नान करते समय शची-नन्दन दो एक बार चौंक उठे। एक बार रो पड़े। शचीमाताने पुत्रको गोदमें उठाकर प्यार पूर्वक शान्त किया।

शचीबालक सूतिकागृहमें पूर्णशशिकलाके समान दिन-दिन बढ़ने लगे। प्रतिदिन उनके प्रत्येक अङ्गकी नव नव अपरूप सौन्दर्य-छटासे नदियावासी नर-नारी मुग्ध होने लगे। सीतादेवी शचीबालकके समीपसे हटती नहीं हैं। शिशु गौराङ्गके अतिसुन्दर कनक-केतकी सदृश आकर्णविश्रान्त नयनद्वयमें अञ्जन लगा दिया। सुन्दर ललाट देशमें गोरोचना-की तिलक-रचना कर दी। शचीबालक कुछ-कुछ हाथ-पैर संचालन कर रहे हैं, सीतादेवी एक दृष्टिसे यही देख रही हैं। शिशु हँसना सीख रहा है। शचीके बालककी उस मृदु मधुर अपूर्व मधुमय हँसीकी तुलना नहीं है। पक्व-बिम्बाफलको लज्जित करने वाले अधरोष्ठमें मधुमय हँसीकी सुवर्णोज्ज्वल रेखा मानो लगी ही रहती है। शची-जगन्नाथ, मालिनी और नारायणी देवी सर्वदा शिशुके समीप बैठकर रूपसुधाका पान करते हैं। वे सब काम छोड़कर सदा सूतिकागृहके द्वार पर बैठे रहते हैं।

शचीबालकके चन्द्रवदनकी इस अपूर्व हँसीमें विशेषता है। यह चित्त-प्राण-मनको अपहरण करने वाली तथा सर्व अमङ्गलका नाश करने वाली है। जिसने एक बार उस मधुसे भी मधुर अखण्ड अमृत-मयी हँसको देखा है, उनकी आँखोंमें वह अञ्जनके समान लिप्त हो गयी है। सदा शिशुके मुँहमें अमृत मयी हँसीकी उज्ज्वलरेखा लगी ही रहती है। उस अमृत हँसीको देख लेने पर आहार-निद्रा, पूजा-पाठ, जप-तप, ध्यान-धारणा कुछ भी करना अच्छा नहीं लगता। शिशु गौराङ्गके रूपसिन्धुके जलसे शची-जगन्नाथ, सीतादेवी और मालिनी देवीके दैनिक-धर्म-कर्म, विधि-नियम तथा देह-धर्म सब मानो धुल गये हैं। इस अपूर्व बालकके रूप सागरकी तरङ्गोंमें पड़कर वे गोते खा रहे हैं। इस रूपकी तुलना नहीं है।

धन्य हैं जगज्जननी पुण्यवती शचीमाता! धन्य हैं महाभाग्यवान् मिश्र-पुरन्दर! तुम्हारी कृपासे कलि-ग्रस्त अधम जीवोंको जिस अमूल्य निधिका दर्श मिला, वह शिव-विरिञ्चिको भी दुर्लभ है। जगत्में दुर्लभ अतुल सम्पत्ति हैं तुम्हारे बालकके ये रक्तकमल चरण द्वय! तुम्हारे घरमें आज त्रिलोकीनाथ विराजमान हैं। तुम्हारे चरणोंमें कोटि प्रणिपात! तुम्हारी कृपासे कलिके अधम जीवोंको उनके भजनधन अभीष्टदेव प्राप्त हो गये! जय शची-जगन्नाथकी जय! जय शचीनन्दन की जय! जय नवद्वीपधामकी जय!

छः दिनके शिशुगौङ्ग—विप्र-पद-रज द्वारा आशीर्वाद

आज शची-बालक छः दिनके शिशु हो गये हैं। स्त्रियाँ उनको छः वर्षका बालक कहती हैं। उनका विश्वास है कि ऐसा कहने पर शिशुकी आयु वृद्धि होती है। मिश्रपुरन्दरके आङ्गनमें आज बड़ी धूम-धाम है। नवजात शिशुकी मङ्गल कामनासे आज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूतिका गृहके द्वार पर गृहदेवताकी पूजा होगी। सन्ध्याकालमें विप्र-पदरजसे शिशु-गौराङ्गका मङ्गलाचरण अनुष्ठित होगा।

मिश्रपुरन्दर ठाकुर आज बहुत व्यस्त हैं। सीता ठकुरानी और मालिनी देवी, दोनों मिलकर देव पूजाकी सारी सामग्री तैयार कर रही हैं। शची-माता पुत्रको गोदमें लेकर सूतिका-गृहके द्वार पर बैठी हैं। पास ही धात्रीमाता नारायणी शचीमाताकी अङ्ग-सेवा कर रही हैं। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती, श्रीवास पण्डित, चन्द्रशेखर आचार्य आदि सभी हैं। मिश्र-भवनमें आज बड़ी भीड़ है। पड़ोसकी सारी पुरनारियाँ आयी हैं। विधिपूर्वक देवपूजा समाप्त हुई।

श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने अपनी कन्याको ठाकुरका चरणामृत दिया। शचीमाताने शिशु-पुत्रके वदन और मस्तक पर चरणामृत देकर कहा, "ठाकुर! मेरे बच्चेकी रक्षा करो।"

सीतादेवीने उपस्थित कुल-ललनाओंको प्रचुर परिमाणमें तेल, हल्दी, पान-सुपारी और मिष्ठान्न बाँटा। श्रीअद्वैत-गृहिणीके आदर-सत्कारसे सन्तुष्ट होकर सब लोग प्रसन्न चित्तसे शची-बालकको आशीर्वाद देकर अपने-अपने घर लौट गये। जाते समय एक बार आँखें भर कर शिशुकी अपरूप रूप राशिको देखते गये लेकिन तृप्ति नहीं हुई। रूपकी तृषा, रूपका आकर्षण बड़ा ही विषम होता है। मन और प्राण शिशुके पास रखकर नदियावासिनी पुरनारियाँ केवल अपने देहका भार लेकर घर लौटीं।

बाहरी द्वारको पार करते-करते कोई-कोई पुनः लौट कर शची-बालकके मुखचन्द्रका दर्शन करने लगी। शची माताने मधुर वचनमें पूछा, "माताएँ! आप लोग फिर क्यों लौट आयीं? बहुत देर हो गयी है, स्नान-भोजन करनेका समय हो गया है। जाओ आप लोग घर जाओ। फिर दूसरे वेला आना।" उनमें-से एक सुन्दरी रमणीने उत्तर दिया—"माँजी! तुम्हारे इस अपूर्व बालकको देखकर भूख-प्यास मिट गयी है। देह धर्म, गृहकर्म सब कुछ हम भूल जाते हैं।" शचीमाता नम्रतापूर्वक बोलीं—"तुम लोग साध्वी, पतिव्रता हो। सब मिलकर आशीर्वाद दो कि मेरा बच्चा चिरंजीवि हो।"

नारीगण और कुछ उत्तर न दे सकीं। वे अपने घर चलीं गयीं। जाते समय कोई तेलकी बाटी छोड़ गयी, कोई गमछा रखकर चली गयी, किसीका गोदको लड़का शचीके आङ्गनमें पड़ा रह गया। किसीको द्वार पर गहरा झटका लगा। नदिया-वासिनी कुलनारी-वृन्दके मन-प्राण शची-बालकके अपरूप रूपपर मुग्ध हो गये हैं, मानो उसके रक्तकमल चरण पर न्यौछावर हो रही है। उनका बाह्यज्ञान खो गया है, बाह्य दृष्टि खो गयी है। ये नदिया नागरी हैं। गौराङ्ग-रूपसे मुग्ध नदिया नागरीगणने शची-बालकको जन्म भर अपने प्राणोंके समान देखा। अतएव ठाकुर लोचनदास लिख गये हैं—

"सभार मने हैल एइ नागरीर प्राण।"

उस दिन सन्ध्याकालके पूर्व मिश्रपुरन्दर ठाकुरके बैठक खानेमें नदियाके विप्रगण और पण्डितगण निमन्त्रित होकर इकट्ठे हुए। गङ्गाजीके तटके ऊपर मिश्रपुरन्दर ठाकुरका घर है। घरमें पाँच कमरे हैं। ठाकुरगृह, शयनगृह, पाकशाला, भण्डारघर और बैठक खानेमें चण्डीमण्डप है। इसी चण्डीमण्डप-गृहमें नदियाके ब्राह्मण पण्डित एकत्रित हुए हैं। दूसरे लोग भी हैं। घरके भीतर-बाहर आदमी हैं। सभी प्रसन्न चित्त हैं।

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर स्वयं उपस्थित विप्रवर्गकी पदधूलि ले रहे हैं। अति दीनभावसे सबके निकट एक रजत-पात्र हाथमें लेकर बालककी मंगलकामनाके लिए शुभ-आशीर्वादकी भीख माँग रहे हैं। पात्रमें एक ओर कुछ मृत्तिका है। सब लोग उससे एक बिन्दु रज लेकर अपने पदाङ्गुष्ठसे स्पर्श

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करके पुनः पात्रमें दूसरी ओर रख देते हैं। इस प्रकार उपस्थित विप्रवर्गका पदरज संग्रह करके मिश्रपुरन्दर ठाकुरने सूतिका-गृहके द्वार पर आकर शचीमाताके हाथमें देकर कहा—"ब्राह्मणोंका पदरज बालकके सिर पर स्पर्श करा दो, सर्वाङ्गमें लेपन करो, इससे सब आपद-विपद दूर हो जायगी।"

श्रीभगवानकी अपूर्व लीलाके रहस्यको समझना बड़ा कठिन है। उनके अज-भव-बाञ्छित रक्त-कमल-चरण आज जगतके प्रत्येक जीवके लिए करतलगत हैं। शिव-विरिञ्चि और लक्ष्मीदेवीके साधनधन आज कलिग्रस्त मानवके हस्तगत हैं, परन्तु मायामुग्ध जीवको वह इसका भान नहीं होने देंगे। शची-जगन्नाथ माया-मुग्ध हैं। उनके मनः प्राण विशुद्ध वात्सल्य—रससे आप्लुत हैं। त्रिलोकीनाथ उनके घर पुत्ररूपमें आविर्भूत हुए हैं। वे नहीं जानते कि विप्रोंके पदकी धूलि किसके अङ्गमें लगा रहे हैं। मायामय श्रीभगवान्‌की नरलीला मनुष्यकी बुद्धिके लिए अगम्य है। उन्होंने किसीको यह समझने नहीं दिया कि वह सर्वश्रेष्ठ, सर्वपूज्य और सर्व-वन्द्य हैं। प्रच्छन्न अवतारीकी प्रच्छन्नता प्रकट नहीं हुई। इच्छामय श्रीगौरभगवान्‌की यही इच्छा थी। उन्होंने इच्छा करके भृगुपद-चिह्नको अपने वक्षः-स्थलपर धारण करके ब्राह्मणके माहात्म्यको बढ़ाया था। श्रीगौराङ्ग अवतारमें विप्र-पद-रज शिरपर धारण करके ब्राह्मणकी गौरव-वृद्धिकी। उन्होंने गया धामके मार्गमें विप्रका चरणोदक पान किया था।

सन्ध्याके बाद यथा समय सूतिका गृहके द्वारपर षष्ठी पूजाका आयोजन हुआ। गोमय-निर्मित षष्ठी देवी श्रीगौरभगवान्‌के सूतिका गृहकी रक्षा करने लगी। शचीमाता और सीता ठकुरानीने शिशु गौराङ्गके सर्वाङ्गमें विप्र-पद-रज लगाया। षष्ठी पूजाका निर्माल्य शिशुके वक्षः-स्थलसे स्पर्श कराया। पड़ोसी पुरनारियोंकी शुभ शङ्खध्वनि तथा मंगलसूचक हुलूध्वनिसे गृहका प्राङ्गण ध्वनित हो उठा। सबने दूर्वा-धान्य लेकर शची-बालकको आशीर्वाद दिया।

मिश्रपुरन्दरने उपस्थित ब्राह्मण वर्गको परितोष पूर्वक मिष्ठान भोजन कराया। सीतादेवीने पुरकी नारियोंको शुभ सिन्दूर तथा मिष्ठान्न देकर परितुष्ट किया। बड़े समारोहके साथ षष्ठीके दिन शिशु-गौराङ्गके जातकर्मादि संस्कार सुसम्पन हो गये। सुन्दरी कुल-ललनाएँ एक साथ सूतिका-गृहके द्वार पर जाकर खड़ी हो गयीं। एक-एक करके सबने शचीके बालकका आँखें भरकर दर्शन किया।

शचीमाताके मनमें आज बड़ा आनन्द है। पुत्रवत्सला शचीमाता सबसे बालकके लिए पद-धूलिकी याचना कर रही हैं। सभी उनके सोनेके लालको शुभाशीर्वाद दे रही हैं, पाँवकी धूलि दे रही हैं।

धन्य है शचीमाताका पुत्र-वात्सल्य। यदि ऐसा न होता तो त्रिलोकीके पतिको वह पुत्ररूपमें कैसे पातीं ?

अष्टम दिवस उत्सव

आज शचीनन्दनका 'अष्टकलाइ'* है। नदियाके बालकवृन्द मिश्र-गृहमें एकत्रित हुए हैं। खील, कौड़ी, बताशा घरमें ढेरका ढेर रखा हुआ है। प्रभुके बड़े भाई विश्वरूपके मनमें आज बड़ा आनन्द है। वे क्षीणकटिमें नील धोती बाँधे हुए हैं, भ्रमरके समान काले कुञ्चित केश उनके मुखचन्द्रको आच्छादित कर रहे हैं। शत-शत बालवृन्दमें भी उनको पहचाननेमें किसीको कठिनाई नहीं हो रही है। वह आनन्दोत्फुल्ल चित्तसे आँगनमें चारों ओर दौड़धूप कर रहे हैं। सबके साथ मधुर बातें करते हैं। सबको आँचल भरकर खील-बताशा बाँट रहे हैं। बालवृन्दके बाल-कण्ठकी मधुर हरि-ध्वनिसे शचीका आङ्गन मुखरित

*बंगालमें बालकके जन्मसे आठवें दिन एक रस्म होती है जिसमें पास-पड़ोसके बालकगण एकत्र होकर नाचते-गाते हैं और शिशुकी मंगलकामना करते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हो रहा है। पड़ोसी कुल नारियोंकी मांगलिक हुलध्वनि, मधुर हरिध्वनिके साथ मिलकर एक अपूर्व श्रवण-मधुर ध्वनिमें परिणत हो रही है। उससे पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग, स्थावर-जङ्गमके मनःप्राण आकर्षित हो रहे हैं। शुभ शङ्ख, घण्टा, कांस्यध्वनि आदि मधुमय हरिध्वनिके साथ मिलकर उसको और अधिक मधुमय बना रही है। मिश्रगृहमें आज पूर्णानन्द विराजमान है। बाजा बजाने वाले ताल-सुरसे बाजे बजा रहे हैं। और विश्वरूपके साथ नदिया बालकवृन्द मधुर नृत्य करते हुए उच्च स्वरसे कह रहे हैं—

आट्कलूये फूट् कलूये, खोका आछे भाल।
मार कोल जोड़ा हये खोका थाकूक भाल॥

नदियाके बालकोंकी यह निष्कपट प्रेममयी प्रार्थना शचीबालकके कानमें प्रविष्ट हुई। मातृक्रोड़में सुखसे शयन करके वह अपने मनसे मृदु-मन्द मुस्करा रहे हैं। बालवृन्दकी कोमल मधुर कण्ठ-ध्वनि उनके मनको हर रही है। मनमें आनन्दित होकर वह सोये-सोये दिल खोलकर हँस रहे हैं। शचीमाता आनन्दसे विह्वल होकर पुत्रका मुख देख रही हैं, और मनही मन सोच रही हैं, "यह अमूल्य निधि क्या इस अभागिनीके भाग्यसे जीवित रहेगी ?" सूतिका-गृहमें इस समय कोई दूसरा नहीं है। वह शिशु पुत्रके मुखचन्द्रकी ओर एकटक देख रही हैं।

नवरात्रि-उत्सव

दूसरे दिन शचीबालकका नवरात्रि उत्सव है। आज सूतिका गृहसे जगज्जननी शचीमाता त्रिभुवन-मङ्गल शिशु-पुत्रको लेकर बाहर आवेंगी। मिश्रगृहमें आज भी लोक समागम कम नहीं है। सभी आज भलीभाँति शची-बालकको आँखें भरकर देख सकेंगे। इसी आनन्दसे नदियावासी नर-नारी उन्मत्त होकर झुण्डके झुण्ड मिश्रगृह आ रहे हैं। सूतिका-गृहके भीतर शची-बालकको देखकर उनको उतना सुख नहीं प्राप्त हुआ था ; क्योंकि आँखें भरकर शची-बालककी अपूर्व रूपराशिका वह अवलोकन नहीं कर सकीं। इसी कारण आज सब मिलकर शचीके आङ्गनमें एकत्रित हुई हैं। नदियाके चारों ओरसे लोग आ रहे हैं। शची आँगनके चतुर्दिक आनन्द ही आनन्द छाया है। प्रभातकी सूर्यकिरण मानो आनन्दमें सनी जान पड़ती है। मधुर वसन्त-प्रभात-समीकरणका मृदु मन्द झकोरा परम आनन्द प्रदान कर रहा है। मिश्रभवन मानो आनन्दधाममें परिणत हो गया है।

एक पहर दिन चढ़ गया है। शचीमाता दिव्य जगदानन्द-मूर्ति शिशु-गौराङ्गको गोदमें लेकर आङ्गनको आलोकित करके बैठी हुई हैं। जगज्जननीकी गोदमें जगत्पति सुशोभित हो रहे हैं। धात्रीमाता नारायणी सूतिका-गृहकी सफाईमें लगी हैं। सीता-ठकुरानी, मालिनी देवी तथा शचीमाताकी बहिन सर्वजयादेवी शचीमाताके पास बैठी हुई हैं।

आज वे अपने मनकी साधसे शचीबालकको तेल-हल्दी लगावेंगी। प्रसूतिको उबटन लगावेंगी। नवीन वस्त्र पहनाकर प्रसूतिके साथ शिशु-गौराङ्गको घरमें लवेंगी। इसीसे उनके मनमें आज अपार आनन्द है।

सीता ठकुरानीके आनन्दका एक और विशेष कारण है। वह आज शची-बालकके नवनीतमय कुसुम-कोमल अङ्गमें छोटे-छोटे आभूषण पहना कर जीवनकी साध मिटायेंगी। शची-बालकके लिए वे शान्तिपुरसे फरमाइस देकर पसन्दके अनुसार ठाकुर जीके अलंकारके समान छोटे-छोटे नाना प्रकारके आभूषण बनवाकर लायी हैं। इस सम्बन्धमें इन दिनों उन्होंने किसीसे कुछ कहा नहीं। उनकी मनकी साध मन-ही-में रही है। आज उस साधको पूरा करने का शुभ समय आ गया है। उन्होंने शची-देवीसे आज मनकी बात खोलकर कह दी। शचीमाता हँसकर बोली, "षष्ठी पूजाके दिन आभूषणादि पहनाना ठीक होगा। सीता ठकुरानीने सखीकी बात न सुनी। अपनी बहुत दिनोंकी साध मिटानेके लिए उनको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और विलम्ब सहन न हो सका। शची-बालकके नवरात्रि-उत्सवमें उन्होंने अपने मनकी साध पूरी की।

शचीके आङ्गनमें आज बड़ी भीड़ है कुल कामिनीगणकी संख्या अधिक है। शचीमाता नवीन वस्त्र धारण करके पुत्रको गोदमें लेकर आङ्गनमें राजमाताके समान बैठी हैं। सीता ठकुरानी सखीको गोदसे शिशु-गौराङ्गको लेकर गणेश-जननी जगदम्बाके समान आङ्गनको आलोकित करके बैठ गयीं। मालिनीदेवी और सर्वजयादेवीने पहले शचीमाताका श्रीअङ्ग मार्जन करके तेल-हल्दी लगायी। सीता-ठकुरानी शचीनन्दनको श्रीअङ्गराग कर रही हैं। धीरे-धीरे शिशुके कोमल अङ्गमें तेल-हल्दी मल रही हैं। नवनीतके समान कोमल श्रीअङ्गके स्पर्शसे इनको जो आनन्दानुभूति हो रही है, उसका वर्णन नहीं हो सकता। शची-बालक कभी-कभी बीचमें रो उठते हैं। उनके मधुर क्रन्दनसे मानो अमृतका स्रोत बह रहा है।

सीतादेवी रूपी योगमायाकी गोदमें आज शची-बालक अपूर्व शोभा धारण कर रहे हैं। सूतिका स्नान कराके सोनेके शरीरमें तेल-हल्दी लगी है। इससे उनकी अपरूप रूपराशि मानो उमड़ी पड़ती है। उज्ज्वल आकर्णविस्तृत सुन्दर नयनद्वयमें सीता ठकुरानीने खूब सुन्दरतापूर्वक अञ्जन लगा दिया है। सुन्दर चौड़े ललाटमें गन्ध-चन्दन कुंकुम-सिक्त गोरोचनासे अलका-तिलककी रचना कर दी है। उन्मुक्त प्राङ्गणमें प्रातः सूर्यकी रश्मिमें शिशु-गौराङ्गकी अपरूप रूपराशि लोगोंकी आँखोंमें चौगुनी उद्भासित हो रही है। शचीमाताका सूतिका स्नान समाप्त होने पर सीता-ठकुरानीने उनकी गोदमें शिशु-गौराङ्गको देकर कहा, "बच्चेको जरा पकड़ो, मैं अभी आ रही हूँ।" इतना कहकर वे द्रुतगतिसे जाकर तत्काल एक वस्त्रकी पोटली हाथमें लेकर पुनः आङ्गनमें आकर शची-माताके पास बैठ गयीं। शची-माताने इसका कुछ मर्म न समझा। सीता ठकुरानीने सर्वप्रथम शची-माताको एक लाल पाड़का नवीन रेशमी वस्त्र पहनाया। उनके लिए सोनेका कङ्कण ले आयी थीं, उसको हाथोंमें पहना दिया। सखीके ललाटमें शुभ सिन्दूर लगा दिया। अलक्तक-रागसे शची-देवीके चरणद्वय रञ्जित करनेके लिए बैठनेकी चेष्टा करते देखकर शची-माताने "दीदी! क्या करती हो, क्या करती हो"—कहकर उनके हाथ पकड़ लिये और अलक्तक लगानेसे उनको रोक दिया। तब शची-माताकी छोटी बहिन सर्वजया देवीने सीतादेवीके इस कार्यका भार लिया।

सीतादेवीका शिशुगौराङ्गको अलंकारोंसे सजाना

सीता ठकुरानी शची-नन्दनको गोदमें लेकर फिर शचीके आङ्गनमें बैठ गयीं। वस्त्रके आँचलमें छिपायी आभूषणोंकी पोटली खोलकर मनके साधसे शची-बालकको सजाने लगीं। शान्तिपुरसे शिशुके उपयुक्त सारे आभूषण वे लायी थीं। शची-माता सखीकी इस समस्त कार्यवाहीको देखकर अवाक् हो गयी। सीता ठकुरानी शीघ्रतापूर्वक शची-बालकको अलङ्कारोंसे अलङ्कृत कर रही हैं। परन्तु वह बड़ी विपदमें पड़ गयी हैं। वे साधारण शिशुके पहनने योग्य आभूषणादि लायी हैं। अब देखती हैं कि वे शची-बालकके अङ्गोंमें छोटे हो रहे हैं। तेरह महीनेके गर्भके शची-बालक जब भूमिष्ठ हुए, तब उनको सबने देखा मानो हृष्ट-पुष्ट छः महीनेका बालक हो। वस्तुतः शिशु गौराङ्गकी आकृति देखकर सभी स्तम्भित हो गये थे।

सीता ठकुरानीने किसी प्रकार शची-बालकको आभूषण पहना तो दिये, परन्तु उससे उनकी मनस्तुष्टि नहीं हुई; क्योंकि शची-बालकके सारे अङ्ग अर्द्ध-सज्जित ही हुए। हाथमें स्वर्णवलय छोटा हो गया। लज्जित होकर सीता ठकुरानीने वलयके दोनों सिरोंको जोरोंसे खींचकर बड़ा कर दिया। कटिका कमर-बन्द करीब आधा रह गया। खाली जगहमें लाल सूत्रने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अधिकार किया । हाथका बाजू खींचकर बड़ा करते समय थोड़ा टूट गया । यह किसीकी समझमें न आया । चरणके वलय जोरसे खींचकर बड़े किये गये । यह सब काम सीता ठकुरानीने क्षणभरमें कर डाले । कोई न जान सका, न देख सका और न समझ सका । परन्तु उनके मनमें बड़ी लज्जा और बड़ा दुःख हुआ । पर क्या करें, अब कोई उपाय न था ।

सीता ठकुरानीने मन ही मन सङ्कल्प किया कि कुछ दिनके बाद षष्ठी पूजाके समय वे पुनः नवीन अलङ्कार गढ़वाकर ले आवेंगी ।

स्वर्ण मुद्राका हार बनवा कर लायी थीं, उसे शिशुके कोमल कण्ठमें पहना दिया । हेम जड़ित व्याघ्र-नख चौड़े वक्षःस्थलपर झुला दिया । सोनेका कमरबन्द क्षीण कटिदेशमें बाँध दिया । स्वर्ण-नूपुर चरण-युगलमें पहना दिये । बहुमूल्य मुक्तामय स्वर्ण-चूड़ा लाल सूत्रमें बाँधकर भ्रमरके समान कुञ्चित कृष्ण-केश-दाम युक्त ललाटमें लटका दिया । एक रक्तवर्णके रेशमी वस्त्रकी धोती कमरमें बाँध दी । इस प्रकार जहाँ जो सजा, वहाँ वह वस्त्र और आभूषण पहना कर श्रीअद्वैत गृहिणीने शची बालकका सर्वाङ्ग अलंकृत कर दिया । शिशु-गौराङ्ग स्वर्णाभूषणोंसे अपूर्व शोभा धारण करने लगे ।

सीता ठकुरानीने शिशु-गौराङ्गको मनके साधसे सजाकर शचीमाताकी गोदमें दे दिया । माताकी गोदमें जाकर शचीबालक आनन्दसे कुछ-कुछ हाथ-पैर सञ्चालन करते हुए मृदु मधुर मुस्कानसे अलङ्कार-प्रदायिनीके चित्तको हरण कर रहे हैं ।

सीता ठकुरानीका मन कुछ क्षुब्ध है, क्योंकि आभूषण कुछ छोटे हो गये हैं । श्रीगौर भगवान्‌ने जो यह रङ्ग किया है, इसका कुछ मर्म है । सीता ठकुरानी-की तीव्र अभिलाषा है कि त्रिजगत्पति शचीबालकको अलङ्कारोंसे भूषित करें । उनकी यह बड़ी उच्चाभिलाषा है । विराट्-रूप श्रीभगवान्‌के श्रीअङ्गोंको अलङ्कारसे भूषित करनेकी साध पूर्ण करना विफल प्रयास मात्र है । किसी विषयकी उच्चाशा या अति तीव्र आकांक्षा अच्छी नहीं होती । इसी कारण श्रीगौर भगवान्‌ने इस कार्यसे सीता ठकुरानी-को यह दिखला दिया कि उनकी वासनामय भगवत्प्रीतिमें भी विघ्न है । नरवपुधारी श्रीभगवान्‌के श्रीअङ्ग पार्थिव अलङ्कारसे बद्ध नहीं हो सकते । वे सर्वश्रेष्ठ हैं । सारे जगतके जीव और वस्तुएँ उनके अधीन हैं । वे किसीके अधीन नहीं हैं । वे अपने श्रीअङ्गकी शोभा और सौन्दर्यको स्वर्णालङ्कारके अधीन क्यों करेंगे ? यह श्रीअद्वैतगृहिणीका भ्रम है । इस भ्रमको समझानेके लिए ही श्रीगौर भगवान्‌ने सीता ठकुरानीके साथ यह रङ्ग कर दिखाया । वे रङ्गीले प्रभु हैं; रङ्गराज हैं, इस प्रकारका रङ्ग ही उनकी लीला है ।

शची-जगन्नाथके आज बड़े ही आनन्दका दिन है । सीता ठकुरानीके मनकी साध पूर्णतः पूरी न हुई । तथापि वह आनन्दमें बेसुध होकर आभूषण पहनाते हुए शची बालककी अपरूप रूपराशिको देख रही हैं ।

आभूषण पहने हुए शचीबालकको लेकर अब सब लोग दुलार-प्यार करने लगे । शिशु-गौराङ्ग आभूषण पहनकर माताकी गोदमें सोकर मृदु मधुर मुस्कान कर रहे हैं, तथा सब जीवोंके प्रति शुभ दृष्टिपात कर रहे हैं ।

सबके मनमें हो रहा है कि इतने आभूषण पहनकर शिशुको कष्टकी अनुभूति हो रही होगी । कोमल शिशुके बदनपर निश्चय ही इतने अलङ्कारोंका भार सुखदायी नहीं है ; क्योंकि इससे शिशुको सुख नहीं मिलता है । माताके स्तनका दुग्ध पान करनेके सिवा शिशुको दूसरी कोई साध नहीं होती । परन्तु शची-बालककी बात ही और है । वे स्वतन्त्र ईश्वर हैं, इच्छामय हैं । भक्तका आनन्द बढ़ानेके लिए वे सब कष्ट उठानेके लिए तैयार रहते हैं । जब मालिनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देवी शची-बालकके श्रीअङ्गसे आभूषण उतारने लगीं तो मानो शिशुके सुन्दर मुखचन्द्रपर भौंएँ कुछ तनी-सी दीख पड़ीं। इसको सबने स्पष्ट रूपसे समझा। आभूषण शिशुके अङ्गोंपर ही रहे, खोले नहीं गये। भक्तवत्सल श्रीगौरभगवान्‌की भक्तवत्सलताका पूर्ण परिचय उनके शैशवमें ही प्राप्त हो गया।

नदियावासी नर-नारीके आनन्दकी आज सीमा नहीं है। उन्होंने आज आँखें भरकर आभूषणोंसे भूषित शचीके अपूर्व बालकको देखकर जीवन सार्थक कर लिया। वृक्षके पक्षी, वनके पशु, स्थावर-जङ्गम आदि सभी आज आभूषणोंसे सजे हुए शिशु गौराङ्गके रूप-सागरमें डूब रहे हैं। शची-बालकके अपरूप भुवन-मोहन रूपसे दशो दिशाएँ आलोकित हो रही हैं। सीता ठकुरानी, मालिनी देवी, नारायणी देवी, सर्वजया देवी, आदि पुर-नारियाँ अनिमेष नयनोंसे शची-बालककी अपरूप रूपराशिका दर्शन कर रही हैं।

सीता ठकुरानीका बाह्य ज्ञान जाता रहा। बालक विश्वरूप उनका आँचल पकड़कर रो रहे हैं। और बारम्बार कातर भावसे सीतादेवीसे कह रहे हैं—"बड़ी माँ! आभूषण पहने हुए लाल शिशुको एक बार मेरी गोदमें दो।" सीता ठकुरानीको होश नहीं हैं। शची-बालकके रूप-सागरमें वे डूबी हुई हैं। शचीमाताने भाव गति देखकर पुत्रको पास बुलाया। तब अद्वैत गृहिणीको चेतना आयी। वे प्रेमाश्रु भरे नयनोंसे विश्वरूपको गोदमें खींचकर वहाँ बैठ गयीं। शचीमाता उनकी अवस्था देखकर शिशु गौराङ्गको उनकी गोदमें बैठे विश्वरूपकी गोदमें देकर उन्हें पकड़े हुए बैठी रहीं। तबतक सीता ठकुरानीके मुँहसे बात न निकली।

बालक विश्वरूपके गोदमें शिशु-गौराङ्गकी रूप-माधुरी मानो सौगुना बाहर फूट पड़ी। प्रभुके बड़े भाई विश्वरूप आनन्दित मनसे अपने छोटे भाईको नाना प्रकारसे दुलार-प्यार करने लगे। कभी चिबुक-पर हाथ देकर स्नेह चुम्बन प्रदान करते हैं, कभी बालकके सुकोमल रक्तपद्म-विनिन्दित हाथ-पैरको सुहलाते हैं। कभी शिशुको अपने वक्षःस्थलमें लेकर अपने हृदयको शीतल करते हैं। सीता देवी अब प्रकृतिस्थ हुई हैं। वे अब दोनों भाइयोंको अत्यन्त सावधानीसे गोदमें बैठाकर यह अपूर्व लीलारङ्ग देख रही हैं।

विश्वरूप बाल शिशुको छोड़कर बड़ी माँकी गोदसे उठना नहीं चाहते। शचीमाताने बहुत भुलावा डालकर शिशु गौराङ्गको अपनी गोदमें लिया। विश्वरूप इससे क्षुब्ध हो उठे। सीतादेवीके मुखकी ओर देखकर वे रोने लगे। सीता ठकुरानीने विश्वरूपको गोदमें लेकर आदरपूर्वक कहा—"बेटा विश्वरूप! तुम मेरे यदुमणि बच्चे हो, तुम पहिले और बच्चे पीछे हैं। बच्चा माँके पास रहे, चलो हम गाना सुनें।"

घरके बाहर खँजड़ी बजाकर दो वैष्णव मधुर स्वरसे गा रहे थे—

हरे देखसिया, नयन भरिया, कि आर पूछसि आने।
नदीया नगरे, शचीर मन्दिरे, चाँदेर उदय दिने॥
किये लाखवान्, कषित काञ्चन, रूपेर निछनि गोरा।
शचीर उदरजलदे निकषिल, स्थिर बिजुरी पारा॥
कत विधुवर वदन उजोर, निशिदिशि सम शोभे।
नयान भ्रमर, श्रुति सरोरुहे, धाय मकरन्द लोभे॥

बालक विश्वरूप गीत सुनकर मुग्ध हो उठे। वे यह न समझ सके कि उनके ही घरके लाल-लाल शिशुकी बात लेकर इस गीतकी रचना हुई है। सीता ठकुरानीकी गोदसे वे न उतरे। अपने छोटे भाईको पुनः गोदमें लेनेका हठ करने लगे। सीता ठकुरानी उनको गोदमें लेकर शचीमाताके पास ले गयीं। विश्वरूप माताके पास धैर्य पूर्वक बैठकर छोटे भाईको देखने लगे।

शचीबालक आभूषण पहनकर सुकोमल हाथ-पैर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संचालन करते हुए माताकी गोदमें लेटे हुए क्रीड़ा कर रहे हैं। नदियावासी नर-नारी वृन्द एकटक हो उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गको निहार रहे हैं। धीरे-धीरे पहर भर दिन निकल आया। शचीमाता शिशु गौराङ्गको गोदमें लेकर घरमें गयीं। सीता ठकुरानी स्वयं शङ्ख बजाती हुई साथ चलीं। पुरनारीवृन्दकी हुलुध्वनिसे मिश्र-भवन ध्वनित हो उठा। सबके मुखसे जयध्वनि होने लगी।

घरके भीतर आकर अद्वैत-गृहिणीने शची-बालकके लिए शान्तिपुरसे लायी हुई उत्तम शय्या बिछा दी; शचीमाताने हँसकर पुत्ररत्नको उसी शय्या पर सुला दिया। चित्र-विचित्र रेशमी झालरसे युक्त छोटे तकियापर सिर रखकर आभूषण पहने हुए शिशु गौराङ्ग सुखसे सो गये। सीता ठकुरानी निद्रित शिशुकी रूपसुधा पान करने लगीं।

रातमें विधिपूर्वक नवग्रहकी पूजा करके शिशु-गौराङ्गकी नवरात्रिका उत्सव सुसम्पन्न हो गया। पुरनारीवृन्द कहने लगीं कि आज शचीका बालक नववर्षका हो गया।

सीतादेवीका शान्तिपुर-प्रत्यावर्तन

दूसरे दिन सीता ठकुरानी अपने घर लौट गयीं। आठ-नौ दिनसे वह अपनी गृहस्थी छोड़कर मिश्रगृहमें रह रही थीं। उन्होंने शचीमातासे एकान्तमें कहा "सखि! तुम्हारे इस अपूर्व बालकको छोड़कर घर जानेका मन नहीं कर रहा है। परन्तु गये बिना भी काम चलनेवाला नहीं है। आचार्य ठाकुरसे कह आयी हूँ कि तीन दिनके भीतर ही लौट आऊंगी। देखते-देखते आज नौ दिन हो गये। उनकी गृहस्थीको तो तुम जानती हो। श्री अकेली सँभाल नहीं पाती है। मुझको आज अब विदा करो। मैं शिशुकी षष्ठी पूजाके दिन जैसे होगा एक दिनके लिए आऊँगी। शची माता रुआँसे स्वरमें बोलीं—"दीदी! तुम्हीं शिशुकी वास्तविक माँ हो। इस पुत्रको अपना ही समझना। तुम्हारा जाना सुनकर, यह देखो, बच्चा रो रहा है। दीदी! तुम आशीर्वाद दो कि बच्चा मेरा चिरंजीवी हो।"

वस्तुतः उसी समय शिशु गौराङ्ग चिल्लाकर रो उठे। सीता ठकुरानीने झटपट जाकर अपने चित-चोर हृदयधनको वक्षःस्थलमें ले लिया। बहुत लाड़-प्यार करके उनके मुखचन्द्रको शत-शत चुम्बन दिया। आँसूकी धारामें अद्वैत-गृहिणीका वक्षःस्थल डूब गया। शची-बालक सीता ठकुरानीके नयन-जलमें स्नान करने लगा। इसमें ही उनको आनन्द है। अब वह रोता नहीं है। वह आनन्दमें उत्फुल्ल होकर सीता ठकुरानीके मुखकी ओर एक टक देख रहा है।

सीता ठकुरानीने बड़े कष्टपूर्वक हृदयधनको हृदयसे उतारकर शचीमाताकी गोदमें दे दिया। तब बालक विश्वरूप उनका आँचल पकड़कर खड़े हो गये। उनको घर नहीं जाने देंगे। विश्वरूपकी दोनों आँखें छलछला गयी हैं। सीता ठकुरानीने उनको गोदमें उठाकर आदरपूर्वक स्नेहपूर्ण मुख-चुम्बन किया। उनके दोनों हाथ मिष्ठान्नसे भर दिये, और आशा दिलायी कि घरसे लौटकर आने-पर और भी मिष्ठान्न दूँगी।

सीता ठकुरानी विदा होते समय फिर एक बार आँखें भरकर शचीबालकका दर्शन कर रही हैं। उसी समय विश्वरूप दौड़े हुए आये, और उनका आँचल पकड़कर बड़ी उद्विग्नतापूर्वक बोले, "बड़ी माँ! तुम मेरे लाल-लाल शिशुको मत ले जाना।" सीता-ठकुरानीके मुँहपर इस समय भी मुस्कराहट दीख पड़ी। वह एक बार विश्वरूपके मुँहकी ओर ताकती हैं, और फिर शिशु-गौराङ्गके मुँहकी ओर एक बार देखती हैं। उनके मुँहसे अब वाणी नहीं निकल रही है। उनके दोनों नेत्र प्रेमाश्रुपूर्ण हो गये। रोते-रोते सीतादेवीने सबसे बिदा लेकर दास-दासीके साथ शान्तिपुरके लिए प्रस्थान किया। शचीमाता पुत्रको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गोदमें लेकर अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे, जब तक आँखसे ओझल न हुई, तब तक सीतादेवीकी डोलीकी ओर ताकती रहीं।

बालक विश्वरूप 'बड़ी माँ चली गयीं' कहकर माताके अञ्चलमें मुँह छिपाकर रोने लगे। बाल ब्रह्मरूपी शिशु-गौराङ्ग माताकी गोदमें रहकर सब कुछ देख रहे हैं। योगमायारूपी साक्षात् भगवती श्रीअद्वैत-गृहिणीका संग छूटनेसे वे उदास हो गये हैं। उनका सुन्दर मुख-चन्द्र मलिन लग रहा है। वे एक बार रो पड़े, एक बार चौंक उठे। शचीमाता 'षाट् षाट्' कहकर षष्ठीदेवीका स्मरण कर वस्त्राञ्चलसे पुत्रको ढँक कर घरमें चली गयीं।

—★—

चौथा अध्याय

शिशु-गौरांगकी षष्ठी पूजा

बाल लीलाका आभास—हरिनाम-प्रेम

बालक-उत्थान पर्वे जत नारीगण। शचीसङ्गे गंगास्नाने करिला गमन॥

—चै. भा. आ. ३. १८

निमाइचाँदका हरिनाम-प्रेम

शचीमाताने शिशु-गौराङ्गका लाड़-प्यारका पुकारका नाम रक्खा निमाइचाँद। श्रीअद्वैतगृहिणीके दिये हुए पुत्रके केवल 'निमाइ' नामसे उनको सन्तोष न हुआ। निमाइचाँद कहकर शिशुको नहीं पुकारना उनको अच्छा नहीं लगता था। वे सबसे कहा करती थीं कि निमाइ मेरा चाँद है। चाँदकी हँसी मैं निमाइके मुँहपर देखती हूँ। चाँदकी सुधासे मेरे निमाइका सर्वाङ्ग गठित है। शची बालकको अब कोई बच्चा नहीं कहता, सब निमाइचाँद कह-कर पुकारते हैं। निमाइचाँद माताके बड़े दुलारका नाम है। अब मैं शचीनन्दनको शिशु-गौराङ्ग या बच्चा न कहकर निमाइचाँदके नामसे सम्बोधित करूँगा।

निमाइचाँदकी बाल-ब्रह्ममूर्ति दिन-प्रतिदिन सब लोगोंके मनको हरण करने लगी। सर्वनयन-रञ्जन सर्वचित्ताकर्षक सबके मन-प्राणको मोहित करने वाला, मिश्रपुरन्दर ठाकुरका यह अपूर्व बालक जब रोता है तो सब देखकर आश्चर्य करते हैं। हरिनाम लेनेपर ही रोना बन्द होता है। सुन्दर मुख-मण्डल-पर अमृतमें सनी हास्य-रेखा दृग्-गोचर होती है। सबसे पहले शचीमाताने इस गूढ़ तत्वको समझा है, और इसको दैव-सङ्केत माना है। पश्चात् यह बात उन्होंने सबको समझायी और सिखायी है।

निमाइचाँदने अब रोना खूब सीख लिया है। इस क्रन्दनका भी मर्म है। शचीनन्दनके इस पल-पल-पर रोनेका उद्देश्य है—लोगोंसे अपना नाम-कीर्तन कराना। रोते समय वे कदापि समझाने-बुझानेसे चुप नहीं होते। केवल हरिध्वनि सुनते ही उनका रोना बन्द होता है, और चन्द्रवदनपर हँसीकी रेखा झलक उठती है। शिशुका मन देखकर सभी लोग उनके पास सदा भुवन-मङ्गल हरिनाम कीर्तन करते हैं। अतएव निमाइचाँदके रोनेपर शचीमाताको कोई चिन्ता नहीं होती। रोनेकी दवा हरिनाम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कीर्तन करते ही शिशु शान्त हो जाता है। इससे शचीमाताके मनमें बड़ा आनन्द है। प्रसूतिको इसमें सुविधा भी बहुत है। नदियामें इस प्रकार श्रीगौर-भगवानके शुभ आविर्भावके दिनसे ही भुवन-मङ्गल हरिनाम-सङ्कीर्तन-यज्ञका शुभ अनुष्ठान हुआ। सारा नवद्वीप मधुर हरिनाम ध्वनिसे पूर्ण हो गया।

नदिया-वासियोंका सौभाग्योदय

नदियाके घर-घरमें परम मङ्गल हरिध्वनि उठी। प्रत्येक नर-नारीके मुँहसे मधुर हरिनाम सुना गया। नदियावासी सब लोग परम सुख अनुभव करने लगे। किसीके घर किसी वस्तुकी कमी नहीं है, किसीको कोई दुःख नहीं है, धन-धान्यसे सबका घर पूर्ण है। नदिया नगरीकी शोभा और समृद्धि वृद्धिपर है।

नदिया नगरी और नदियावासीके इस आकस्मिक परिवर्तनको देखकर सब लोग विस्मित हो उठे। शचीगर्भसे श्रीगौर भगवान्‌के अविर्भाव होनेके पश्चात् ही ये सारे शुभ लक्षण और आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखायी देने लगे। नदियावासी भाग्यवान् नर-नारी-वृन्द सदा ही शचीके दुलारे निमाइचाँदको घेर कर बैठे रहते हैं।

सभी लोग शचीबालकके प्रेममें उन्मत्त हैं। बाल-वृद्ध-युवा सभी निमाइचाँदके प्रेम-पाशमें बँधे हैं। वे सदा शचीके आँगनमें आकर शची-बालककी अपरूप रूपराशिका दर्शन करते हैं। दिन-रात, धूप-शीत, वृष्टि-वर्षा, समय-असमयका उन्हें ज्ञान नहीं रहता। सभी इस अपूर्व बालकके प्रेममें मतवाले हो रहे हैं। निमाइचाँदके श्रीअङ्गकी ज्योति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शचीमाता प्रतिदिन तेल-हल्दी मिलाकर शिशुके अङ्गोंमें मलती हैं। उनकी अङ्गज्योतिसे मानो आँखें चोंधिया जाती हैं।

गौराङ्ग-दर्शनसे शची-गृहमें अलक्ष्यमें देवगणके कौतुक-रंग

पूर्ण शशिकलाके समान निमाइचाँद दिन-प्रतिदिन सुन्दरसे भी सुन्दर होते जा रहे हैं। अब वे बीस दिनके शिशु हो गये हैं। इस समय मिश्रगृहमें दो अलौकिक घटनाएँ घटीं। रसिक देवगणने शची-बालकके साथ एक तमाशा किया। अपने अभीष्ट देवको देखनेके लिए विशेष लालायित होकर वे अदृश्य रूपमें शचीमाताके घरमें प्रविष्ट हो गये। नरचक्षुसे देवदर्शन करना संभव नहीं है।

शचीमाताके घरमें मालिनी देवी, धात्रीमाता नारायणी, शचीमाताकी बहिन सर्वजयादेवी आदि सब सोयी हुई हैं। निमाइ-चाँदको वे क्षणभरके लिए भी अपनी आँखोंसे ओझल नहीं करतीं। इसी बीच किसी सौभाग्यवतीकी आँखोंमें देव-देहच्छाया पड़ी। वह भयसे चकित होकर 'चोर! चोर!!' कहकर चिल्ला उठी। शचीमाता अत्यन्त भयभीत होकर नृसिंह भगवानका नाम स्मरण करने लगीं और झटपट निमाइ चाँदको उठाकर हृदयसे लगा लिया। और शिशुको अपदेवताकी दृष्टिसे रक्षा करनेके लिए मालिनीदेवीने अपराजिताका स्तोत्र पाठ करना प्रारम्भ किया। धात्रीमाता नारायणीदेवीने मन्त्रपाठ करके शयन गृहके चारों ओर अभिमन्त्रित जल सिञ्चन कर दिया।

देवतागण शिशु-गौराङ्गका दर्शन करके जब घरसे बाहर निकलने लगे तो उस समय शचीमाताकी बहिन चिल्लाकर कहने लगी, "यह डाकिनी जा रही है, यह जातहारिणी भाग रही है, पकड़ो, पकड़ो।" उनके चिल्लानेसे सब लोग सशङ्कित हो उठे। मालिनीदेवी इस मनःकल्पित डाकिनी-शाकिनीको गाली देते हुए बोलीं—"अरी डाकिनी! अरी शाकिनी! तेरा भाग्य है जो आज बच गयी। नृसिंह भगवान्‌का प्रबल प्रताप क्या तुझको ज्ञात नहीं।"

शचीमाता विशेष रूपसे भयभीत हुईं। सबने मिलकर उनको समझाया कि निमाइचाँदकी शुभ षष्ठी पूजा हो जानेपर ये सारी आपद्-विपद् नहीं रहेगी। अब भी सूतिकाका अशौच है, इसी कारण इन अपदेवताओंका यह उपद्रव हो रहा है। वात्सल्य-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रेमसे मुग्ध माताने यही समझा। निमाइचाँदकी शुभ षष्ठी पूजाका दिन आ गया। मालिनीदेवी सब प्रबन्ध करने लगीं।

षष्ठी-पूजा (उत्थान पर्व)

आज शचीनन्दनकी षष्ठी-पूजा है। श्रीचैतन्य भागवतकारने इस षष्ठी-पूजाको निमाइचाँदका उत्थानपर्व नाम दिया है। मिश्र-भवनमें आज बड़ी धूमधाम है। गृह-प्राङ्गणमें नदिया सुन्दरीगण इकट्ठी हुई हैं। नदियाके अगणित बालकोंका जमघट लगा है। सबके मनमें आनन्द और मुँहपर हँसी है। सुन्दरी नदिया-नागरीवृन्द नाना प्रकारके वस्त्रालंकारसे विभूषित होकर शची-बालककी शुभ षष्ठीपूजा देखने आयी हैं। उनके हाथोंमें नाना प्रकारकी पूजाकी सामग्री है। कोई शुभ शङ्ख बजा रही है, किसीके हाथमें फूलोंकी डलिया है, किसीके हाथमें चाँदीके पात्रमें चन्दनकी डिबिया और धान्य-दूर्वा है।

मिश्र-भवन श्रुतिसुखद वाद्यध्वनिसे ध्वनित हो उठा। मृदङ्ग, शहनाई, जयढाक, करताल, कांस्य, घण्टा सब एक साथ एक सुरमें बज उठे। पुरनारी वृन्दकी शुभ हुलुध्वनिसे दिग्-मण्डल परिपूर्ण हो गया। सबके मनप्राण आनन्दसे नाच उठे। नदिया-बालवृन्द शचीके आङ्गनमें आनन्दसे दौड़-धूप कर रहे हैं।

इसी शुभ समयमें शान्तिपुरसे सीता ठकुरानीकी डोली आकर मिश्रपुरन्दर ठाकुरके द्वारपर खड़ी हुई। दास-दासी और नाना प्रकारकी सामग्रीके साथ योगमाया सीता ठकुरानी हँसते-हँसते शचीके आङ्गनमें प्रविष्ट हुईं। अपने हाथकी वस्त्रोंकी एक पोटली एक दासीके हाथमें थमाकर वह एकबारगी शची माताके पास जाकर निमाइ चाँदको गोदमें लेकर बैठ गयी। उनके चन्द्र-वदनपर शत-शत बार चुम्बन प्रदान किया। नाना प्रकारके आभूषणोंमें सजकर शचीबालक माताके गोदमें सोये थे। वे सीता ठकुरानीकी गोदमें आकर हँसने लगे। बालक विश्वरूप दौड़कर आये, और सीता ठकुरानीके पीछे जाकर उनका गला जकड़कर आनन्दसे नाचने लगे। श्रीअद्वैत-गृहिणी एक-एक बार पीछे मुँह फेरकर विश्वरूपका मुख चूम लेती हैं, और फिर गोदमें स्थित शचीबालकके चन्द्रमुखको प्रेम-चुम्बनसे सिक्त करती हैं। नदियावासी नर-नारीवृन्द यह मधुर दृश्य देखकर आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे।

इसी बीचमें उसी घरमें बैठे-बैठे सीता ठकुरानीने उस पोटलीको खोलकर नये-नये सुन्दर स्वर्णालङ्कारोंसे शचीनन्दनके सारे अङ्गोंको भूषित कर दिया। पुराने आभूषणोंको खोलकर रख दिया। शची-बालकको आभूषण पहनानेकी उनकी कामना उस बार पूर्ण नहीं हुई थी, यह बात कृपालु पाठक-वृन्दको ज्ञात है। इस बार बड़े बनवाकर सारे आभूषण पुनः तैयार कराकर लायीं, बहुत-से नये आभूषण भी लायी हैं। इस बार गौर भगवान्‌ने और कोई रङ्ग नहीं दिखलाया।

सर्वाङ्ग अलङ्कारोंसे अलंकृत होकर शची-बालक अद्वैत-गृहिणीके गोदमें शयन करके मधुर-मधुर मुस्करा रहे हैं। यह देखकर शचीमाताके मनमें जो आनन्द हुआ, उसका वर्णन नहीं हो सकता।

मालिनी देवी आज बहुत व्यस्त हैं। वे सबका आदर-सत्कार करके खुले हाथ तेल-हल्दी बाँट रही हैं। वह इन सब कार्योंके बीच एक बार झटपट घरमें आकर लालशिशुकी माँको वस्त्रालङ्कारसे सजा गयीं। शचीमाताके सिरपर शुभ सिन्दूर लगाया। उपस्थित सभी स्त्रियोंके सिरपर शुभ सिन्दूर लगाकर प्रत्येकसे शचीबालकके लिए शुभ आशीर्वाद देनेकी प्रार्थना की।

सोनेके निमाइ चाँदकी षष्ठी पूजाकी सारी तैयारी हो गयी। नाना प्रकारके बाजे एक साथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बज उठे। पुरनारीवृन्दसे परिवृत होकर शचीमाता निमाइ चाँदको गोदमें लेकर बाजे-गाजेके साथ गङ्गाजीके तीरकी ओर चलीं। सहचर नदियाके बालवृन्दके कोमल कण्ठकी सुधामधुर ध्वनिसे नदिया-गगन परिपूर्ण हो उठा। रास्तेके दोनों ओर लोग आदर पूर्वक खड़े हो गये। शचीमाताकी गोदमें स्थित बाल-ब्रह्मरूपी शिशु-गौराङ्गका दर्शन करके सभी जय ध्वनि करने लगे। सारी नदिया आनन्दसे पूर्ण हो गयी।

गङ्गा-तटपर

श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती तथा श्रीवास पण्डित-ने पहले-से ही जाकर गङ्गाजीकी पूजाका सारा प्रबन्ध कर रखा था। वहाँ भी बहुत-से लोग एकत्रित हुए थे। सभी शचीनन्दनके शुभागमनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। ऐसे समयमें बाजे-गाजेके साथ शचीमाता पुत्रको गोदमें लेकर गङ्गाके किनारे आकर उपस्थित हुई। साथमें सीता ठकुरानी, मालिनी देवी, नारायणी देवी, सर्वजयादेवी, शर्वाणी आदि सभी हैं। उनके पीछे-पीछे अगणित नदिया-सुन्दरीगण आज गङ्गाके तीर आयी हैं।

सुरसरि आज आनन्दसे तरङ्गित हो रही है। जिनके चरण-कमलसे वह उद्भूत हुई है, आज उनके श्रीचरणोंका दर्शन प्राप्त होगा, यह सोचकर जाह्नवी देवीके प्राण आनन्दसे उच्छ्वसित है, हृदय प्रेम भक्तिसे उद्वेलित हो रहा है। आज उनका 'विष्णु पादोद्भवा' नाम सार्थक होगा, अतएव पतितोद्धारिणी तरल-तरङ्गा गङ्गादेवीके मुँहसे आज हँसी छूटती नहीं है। उच्छ्वसित तरल-तरङ्गोंकी भङ्गिमा देखकर जान पड़ता है कि आज मानो वह आनन्दसे फूली नहीं समाती। प्रभुके पद-रज-स्पर्शकी लालसासे लालायित होकर वह मानो तरङ्गित वारिफेन-पुञ्जसे अर्घ्य-रचना करके पूजाके लिए अभीष्ट देवके शुभागमनकी प्रतीक्षा कर रही हैं।

कालिन्दी तटपर ब्रजराज नन्दनन्दनके लीला-विलास देखकर गङ्गाजीके मनमें बहुत दिनोंसे यह साध थी कि क्या ऐसा भाग्य उनको भी कभी प्राप्त होगा। आज वही शुभ दिन उपस्थित है। भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान् आज भक्तकी मनोकामना पूर्ण करेंगे।

गङ्गाके घाटपर आज लोगोंके पैर रखनेकी जगह नहीं है। बड़े जन समारोहमें गङ्गातटपर निमाइ-चाँदको गोदमें लेकर गाजे-बाजेके साथ नदिया-सुन्दरी गणसे परिवेष्टित होकर शचीमाता आ उपस्थित हुईं। गङ्गातट पर योगासनपर बैठी जगन्माताकी गोदमें त्रिजगत्पति शिशुरूपी बालब्रह्म सुशोभित हो रहे हैं। चारों ओर नदिया-सुन्दरीगण उनको घेरकर खड़ी-खड़ी मङ्गल-सूचक शुभ हुलूध्वनि दे रही हैं। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती गङ्गातट पर गङ्गाजीकी पूजाके लिए बैठे हैं। सामने नाना प्रकारकी पूजाकी सामग्री सजाकर रखी है। गङ्गाजीका घाट आज अपूर्व शोभा धारण कर रहा है। शचीमाता आज गङ्गा-स्नान करके शुद्ध होंगी। उनका आज सूतिका-अशौच चला जायगा।

श्रीगौर भगवान्की लौकिकी लीलाका रहस्य याद आनेपर बड़ी हँसी छूटती है। श्रीगौराङ्ग प्रभु साक्षात् शुद्धसत्व पूर्णब्रह्म सनातन हैं। फिर उनकी माताको सूतिका-अशौच हो? नित्यशुद्ध और शुद्ध-सत्व परम वस्तुके आविर्भावमें शुद्धि-कार्यका अनुष्ठान एक मनका भ्रम मात्र है। जिनके नामाभाससे सर्व-अशौच, सर्व कलमष नष्ट हो जाते हैं, उनको तथा उनकी माताको सूतिका-अशौच हो? इसीसे कहता हूँ कि श्रीभगवान्की लौकिकी लीलाके रहस्यका उद्घाटन करना बड़ी दुष्कर बात है। वे नरवपु धारण करके नरलोकमें नरबुद्धि, नर-प्रकृति लेकर आते हैं, नरोचित लौकिकी लीला करते हैं। और यह नरलीला ही उनकी सर्वोत्तम लीला है। यह केवल आलोचनाका विषय नहीं है, आस्वादनकी वस्तु है,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अनुभवकी वस्तु है। एक ओरसे सीता ठकुरानी, और दूसरी ओरसे मालिनी देवी, शचीमाताको सङ्गमें लेकर गङ्गाजीके जलमें उतरीं। पुत्रको गोदमें लेकर शचीमाताके गङ्गाजलमें उतरते ही विष्णु-पादोद्भवा गङ्गाने प्रशान्तआकार धारण किया। उनकी उच्छ्वसित तरङ्गावली क्षणमात्रमें न जाने कहाँ चली गयी। श्रीभगवान्‌के साक्षात्कारसे भक्तहृदयमें भावोंका स्रोत उठकर जैसे भक्तगणको समाधिस्थ कर देता है, जाह्नवीकी अवस्था भी आज उसी प्रकारकी हुई। वह प्रभु-पदरजके स्पर्श-सुखकी वासनासे प्रेमानन्दमें अधीर होकर मानो ध्यानमग्न और स्थिर हो गयीं। गङ्गाजीके इस आकस्मिक अपूर्व भाव-परिवर्तनको देखकर सब लोग विस्मित होकर शची-बालककी महिमाका कीर्तन करने लगे।

शचीमाता धीरे-धीरे अवगाहनके लिए गङ्गा-जलमें उतरी हैं। उनका सर्वाङ्ग गङ्गाजलमें मग्न है। गोदमें निमाइचाँद हैं, दोनों पार्श्वमें सीता ठकुरानी और मालिनी देवी उनको तथा गोदमें स्थित शिशुको पकड़े खड़ी हैं। चारों ओर नदिया-नारीवृन्द इनको घेर कर खड़ी है। उनमें धात्रीमाता पुरनारायणी, शचीमाताकी बहिन सर्वजया देवी भी हैं। नारायणी देवी शचीमाताके सामनें शिशु गौराङ्गको पकड़कर खड़ी हैं।

श्रीगौर भगवान्‌के अज-भव-वन्दित रक्त कमल चरणने जैसेही गङ्गाजलको स्पर्श किया, वैसे ही गङ्गाजी आनन्दसे प्रफुल्लित होकर उछलने लगीं। मन्द वसन्त-पवन-सञ्चालित मृदु-तरल-तरङ्गायित उच्छ्वसित-फेन-पुष्पाञ्जलि देकर वह अपने अभीष्ट-देवकी पाद्य-अर्घ्यके द्वारा पूजा कर रही हैं। शची-माता, सीता ठकुरानी, मालिनी देवी आदि सब लोग अकस्मात् गङ्गाजीको किञ्चित विचलित भावमें देखकर सशङ्कित हो उठीं। गङ्गातटके ऊपरसे श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती उच्चस्वरसे शचीमाताका नाम पुकार कर बोले, "शचि! शीघ्र शिशुको लेकर तीर पर आ। गङ्गाका रङ्ग ढङ्ग उतना अच्छा नहीं जान पड़ता।"

शचीमाता झटपट निमाइचाँदको गङ्गाजल स्पर्श कराकर सीता ठकुरानीकी गोदमें देकर बोलीं—"दीदी! तुम बच्चेको लेकर तनिक खड़ी रहो, मैं एक डुबकी लगाकर निकलती हूँ।" इतना कहकर शचीमाता झटपट गङ्गास्नान करके तीर पर आ गयीं और अङ्ग मार्जन करके वस्त्रालङ्कार पहनकर निमाइचाँदको गोदमें लेकर पिताके समीप बैठकर पुत्रकी मङ्गल-कामनासे गङ्गापूजाका निर्माल्य हाथमें लिया। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने दुलार करते हुए दौहित्रके गलेमें एक अति सुन्दर मालती पुष्पकी माला पहना दी।

उस समय सैकड़ों शुभशङ्ख एक साथ बज उठे। शत-शत पुरकामिनीगणके कण्ठसे शुभ हुलुध्वनि निकल कर गङ्गातटको ध्वनित करने लगी। गङ्गा-तीरस्थ उपस्थित अगणित नर-नारीकी दृष्टि एक-मात्र शची-बालककी ओर थी। सबके मुखसे शची-बालकका जय-मङ्गल-गान सुना गया। नदियाकी सुन्दरी बालिकाएँ ललित मधुर छन्दमें गङ्गाभक्ति-तरङ्गिणी गीत गाने लगीं। ताल-ताल पर गङ्गातट पर नदिया बालकवृन्द मधुर नृत्य करने लगे। गाजे-बाजेके साथ वह मधुर गीतध्वनि नदिया-गगन भेद करके स्वर्गकी ओर उठी। गगन-मण्डलमें देव-गण शिशु-गौराङ्गकी षष्ठीपूजाका गङ्गा-स्नान देखने आये हैं। मधुर-कण्ठ नदियाबालवृन्दकी मधुर सङ्गीतसे वे मुग्ध हो रहे हैं।

इस प्रकार सर्व मनोरञ्जनकारी आनन्दोत्सवके साथ गङ्गा-पूजा और गङ्गा-स्नान समाप्त करके सब एकत्रित होकर शचीमाताके साथ निमाईचाँदकी षष्ठी-पूजा करने चलीं।

षष्ठी-पूजा करके गृह-प्रत्यावर्तन

गङ्गाके समीप वटवृक्षके नीचे ग्राम्य षष्ठी स्थान है। बाजे-गाजेके साथ सब आकर वहाँ उपस्थित हुए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

षष्ठी देवीकी षोडशोपचार पूजा समाप्त करके शची-माता ग्रामके दूसरे देव-देवियोंके मन्दिरमें जाकर विधिपूर्वक पूजा करके घर लौटीं। उनके साथ-साथ नदियाकी सुन्दरी नारियाँ पुनः मिश्रपुरन्दरके घर चलीं।

अब तक शचीमाताकी गोदमें निमाईचाँद थे। शचीमाता दाहिने हाथसे विश्वरूपका हाथ पकड़ कर धीरे-धीरे नदियाके रास्ते चलीं। रास्तेमें लोग नम्रतापूर्वक उठकर सिर झुकाकर शिशु गौराङ्गको अभिवादन कर रहे हैं। घर पर आकर शचीमाताने निमाइचाँदको सीतादेवीकी गोदमें देकर परम आदर-सत्कारके साथ सबको खील, केला, तेल सिन्दूर, पान, सुपारी, मिष्ठान्न आदि प्रचुर परिमाण-में देनेकी व्यवस्थाकी। सभी शचीमाताके चरणोंकी वन्दना करके निमाइचाँदको शुभाशीर्वाद देकर अपने-अपने घर लौट गयीं। घर लौटनेके समय सबने एक बार निमाइचाँदको गोदमें लेकर अपना हृदय शीतल करना चाहा। शचीमाताकी अनुमति लेकर सीतादेवीने एक - एक करके सबकी साध पूरी की। जिनको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनका मानव-जन्म सफल हो गया। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात!

सीतादेवी एवं अद्वैत प्रभुमें बात-चीत

शची-बालककी शुभ षष्ठीपूजाके कर्म सुसम्पन्न होने पर सीता ठाकुरानी शान्तिपुर लौट गयीं। परन्तु उनका प्राण शचीके गृहमें पड़ा रहा। वह महीनेमें दो बार आकर शची-बालकको देख जाती हैं। श्रीअद्वैत प्रभुने बारंबार गृहिणीको नदिया जाते देखकर उपहास करते हुए कहा, "गृहिणी! शचीके बालकने तुमको पागल बना दिया है। तुमसे अब मेरी गृहस्थी नहीं चलेगी।"

यह बात सुनकर सीता ठाकुरानी मन ही मन हँसीं, और पतिसे बोलीं, "तुम्हारी गृहस्थीमें मेरा क्या काम है? शचीके दुलारेको देखने पर मुझे यह गृहस्थी अच्छी नहीं लगती। तुमने तो देखा नहीं कि शची बालक क्या वस्तु है। तुम मुझको संसारसे निष्कृति प्रदान करो। मैं नवद्वीप जाकर शचीके पास बैठकर उसके बालकका केवल रूप देखूँगी। शची-बालकका रूप-दर्शन करने पर संसारसे विरक्ति होती है।"

वृद्ध ब्राह्मण श्रीअद्वैत प्रभुने हँसकर ग्रहिणीसे झूठ-मूठका असन्तोष प्रकट करते हुए कहा, "शचीका बालक मेरी इतने साधकी गृहस्थी बिगाड़ देगा। तुम महीनेमें दो बार नवद्वीप जाओगी, और दो दिनमें लौटनेके लिए कहकर दस दिनसे कममें नहीं लौटोगी। ऐसा करनेसे क्या गृहस्थीकी गृहस्थी चलेगी? मैं देखता हूँ कि शान्तिपुरसे डेरा-डण्डा उठाकर अब हमको नदियामें वास करना पड़ेगा।"

सीता ठकुरानी पतिकी बात सुनकर दिल खोल-कर हँस पड़ीं और बोलीं, "यह तो बड़ी अच्छी बात होगी, यह सत्परामर्श है। ठाकुर इतने दिनोंके बाद तुम्हारे मनकी बात बाहर हुई है। तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, बतलाओ, तुम कब नवद्वीप वास करोगे।"

श्रीद्वैत प्रभुने गंभीरता पूर्वक उत्तर दिया, "शान्तिपुरका इतने दिनोंका वास क्या एक बातसे उठाया जा सकता है? दोनों ओर रहना होगा। शान्तिपुरका मकान रहेगा, नवद्वीपमें एक पाठशालाका मकान और सभा स्थापित करनेकी इच्छा हो रही है।" इसी समयसे श्रीअद्वैत प्रभुके मनमें भक्ति-चर्चाके लिए अद्वैत-सभा स्थापित करनेका सङ्कल्प उदित हुआ।

शचीनन्दनकी बाल-क्रीड़ा

शचीनन्दन इस समय दो महीनेके शिशु हैं। दिन-प्रतिदिन, क्षण-क्षण शची बालकके रूप-लावण्यकी छटा तथा सर्व अङ्गकी शोभा बढ़ती जा रही है। दो महीनेका शिशु देखनेमें मानो आठ महीनेका बालक जान पड़ता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निमाइ चाँदने अब बहुत हँसना सीख लिया है। कभी हँसते हैं, कभी रोते हैं। इस छोटी उम्रमें ही आँखें लगाना सीख गये हैं। अभीसे धृष्ट बालकके सब लक्षण दृष्ट हो रहे हैं।

दोनों रक्तकमलचरण मातृ-स्तन-युगल पर रख कर धीरे-धीरे माताके वक्षःस्थलके ऊपर डोलना सीख रहे हैं। रक्तोत्पलके समान अपने पैरके अंगूठे-को मुँहमें लेकर बड़े आनन्दसे चूसते हैं। पक्के बिम्बा फलको भी तिरस्कृत करने वाले सुकोमल अधरोष्टके दोनों ओरसे उनके मुखचन्द्रसे द्रवित सुधाधारा रक्ताभ गण्डस्थलको पार करके उनके चौड़े वक्षःस्थल पर गिर रही है। जान पड़ता है मानो सुधाकर चन्द्रदेव शचीबालकके वदन पर अमृत ढाल रहे हैं।

हिल-डुलकर शिशु-गौराङ्ग माताके वक्षः स्थल स्थल पर क्रीड़ा कर रहे हैं। शचीमता आँखें भरकर पुत्रके बाल रूपको देखती हैं और हृदयको शीतल कर रही हैं, मिश्रपुरन्दर ठाकुर गृहिणीके पास बैठ कर पुत्रके अपरूप रूपसुधाका पान कर रहे हैं। निमाई चाँद माताके स्तनमें मुँह लगाकर धीरे-धीरे दूध पी रहे हैं; और धीरे-धीरे हँसते-हँसते आनन्दसे अपने पैर अङ्गूठेको स्पन्दित कर रहे हैं।

शची - बालकका वह अपरूप बालरूप देखनेसे जान पड़ता है कि मिश्रपुरन्दर का यह बालक सर्वदेव शिरोमणि है। इस नर शिशुका स्थान सब देवताओंके ऊपर है। बाल ब्रह्म रूपमें शचीबालक नदियाके ब्रह्मणके घरमें अवतीर्ण हुए हैं।

बाल-गौराङ्गके पद-चिन्ह

शची बालकने क्रमशः तृतीय मासमें पदार्पण किया। बाल - गौराङ्गकी मधुर बाल-लीलाका यही प्रारम्भ काल है। इसी समयसे उन्होंने अपने माता-पिताको कुछ-कुछ अपना ऐश्वर्य दिखलाना प्रारम्भ किया।

एक दिन शची-जगन्नाथ घरमें ध्वज-वज्राङ्कुश-चिन्हसे युक्त छोटे-छोटे सुन्दर अपूर्व लक्षण युक्त पद-चिन्हको देखकर विस्मित हो उठे। ऐसा सर्व सुलक्षण युक्त पद-चिह्न उन्होंने इसके पहले कभी कहीं नहीं देखा था। मिश्रपुरन्दरने घरमें ऐसा पद-चिन्ह देखकर गृहिणीको बुलाकर चुपकेसे कहा, "घरमें बाल गोपाल हैं। जान पड़ता है कि वह अलक्षित रूपसे गृहमें विहार करते हैं। ऐसा पद-चिन्ह मनुष्यका नहीं हो सकता। हमारे घरके बाल गोपाल जाग्रत देवता हैं।" शची माता भी सारे पद चिन्होंको देखकर विस्मित होकर कुछ भी उत्तर न दे सकीं

इसी समय पलङ्ग पर सोये गौराङ्ग जागकर रोने लगे। शचीमाता झटपट जाकर पुत्रको गोदमें लेकर स्तन-पान करानेके लिए बैठ गयीं। पुत्रके रक्त कमल चरणके ऊपर उनकी दृष्टि पड़ी। घरमें-उन्होंने जैसे चरण चिन्ह देखे थे, पुत्रके चरणतले अविकल उन्हीं शुभ चिन्होंको देखकर विस्मित होकर मिश्रपुरन्दर ठाकुरको बुलाकर कहा, "यह देखो, मेरे निमाई चाँदके लाल पैरोंके चिन्हि ठीक उसी प्रकारके हैं। ऐसा क्यों हुआ? यह तो मुझको अच्छा नहीं जान पड़ता। तुम ठीक-ठीक देखो तो।"

पति और पत्नी दोनोंने एक जगह बैठकर पुत्रके लाल चरणोंको आँखके पास लाकर बहुत देर तक ध्यानसे देखा। ध्वजा, वज्र, शङ्ख, चक्र, पताका मीन आदि एक-एक करके मिश्र पुरन्दर ठाकुरने मिलाकर देखा। श्रीगौर भगवान्के सारे चरण-चिह्न एक-एक करके आश्चर्यजनक रूपमें मिल गये। इससे मिश्रपुरन्दर ठाकुरके मनमें नाना प्रकारके सन्देह उत्पन्न होने लगे। वे शास्त्र-विशारद पण्डित थे। श्रीभगवानके चरण-चिह्न देखकर वे आनन्दसे विह्वल हो उठे।

शचीमाताने भयभीत होकर पतिसे कहा, "पिताजी-को एक बार बुलाकर दिखाना ठीक होगा। देखिये, वे क्या कहते हैं।" मिश्र पुरन्दर चपचाप श्रीपाद

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नीलाम्बर चक्रवर्तीको बुलाने गये। शची माताका मन बड़ा चञ्चल हो रहा था। वे यह सब अद्भुत बातें देखकर भयभीत हो रही हैं। पुत्रवत्सला जननी पुत्रके किसी प्रकारके ऐश्वर्यको देखकर विपद्की आशङ्का करने लगती है। शचीमाताकी दशा भी यही है।

कुछ देरमें श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती जामाताके साथ कन्याके घर आये। पिताको देखते ही शची-माताकी आँखें भर आयीं। उन्होंने गद्गद स्वरमें कहा, "बाबा! मैं अपने निमाई चाँदके चरणोंमें ये कैसे चिह्न देख रही हूँ। इससे मेरा मन बड़ा आशङ्कित हो रहा है। वृद्ध ब्राह्मण श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने कन्याके पास बैठकर शिशु गौराङ्गके दोनों रक्त चरण अपनी आँखोंके पास लाकर अति सूक्ष्म दृष्टिसे जो कुछ देखा उससे विह्वल होकर बोल उठे—

नारायणेर चिह्नयुक्त श्रीहस्त चरण ।
एइ शिशु सब लोकेर करिवे तारण ॥

—चै. च. आ. १४. १३

पिताके मुखसे यह सब बातें शचीमाताको बिल्कुल ही अच्छी न लगीं। उन्होंने रोते-रोते रोष और अभिमान पूर्वक पितासे कहा—"बाबा! आप प्राचीन और विज्ञ होकर यह क्या कह गये? निमाई चाँद मेरा दूधका पूत है, इसको आपने नारायण कह दिया। यह भी कहा कि यह सब लोगोंका उद्धार करेगा। यह भी क्या कहनेकी बात है? वृद्धावस्थामें लोगोंको बुद्धिभ्रम हो जाता है। मैं देखती हूँ आपको बुद्धि नहीं रह गयी है। ऐसी बात फिर मुँह पर न लावें। मेरे बच्चेका अकल्याण होगा। आशीर्वाद दीजिये कि मेरा सोनेका लाल निमाईचाँद सबका उच्छिष्ट खाकर जीवित रहे।"

कन्याकी बात सुनकर पिताको ज्ञान हुआ। वह अप्रतिभ होकर बात बदलकर शचीमातासे आदर पूर्वक बोले, "बेटी! तुम्हारा निमाई सर्वसुलक्षण युक्त शिशु है। इसके सारे अङ्गोंमें महापुरुषके लक्षण दृष्ट होते हैं। यह शिशु बड़ा हरिभक्त होगा। इसके मुखसे सुधा-मधुर हरिनाम सुनकर जगत्के जीवोंके सारे पाप नष्ट हो जाँयगे। हरिनाम सुननेसे उनका उद्धार होगा।"

गौराङ्ग-जननी पुत्रका गुण कीर्तन सुनकर शान्त और सुस्थिर चित्त हो गयीं। पिताकी पदधूलि लेकर निमाईचाँदके मस्तक पर देकर कहा, "बाबा! तुम मेरी बातसे रुष्ट न होना। मेरे निमाइचाँदको आशीर्वाद दो, जिससे मेरा लाल चिरंजीवि हो। बहुतसे लोग मेरे सोनेके लालको तुम्हारे ही तरह न मालूम क्या-क्या बताते हैं, मुझको वह एक भी बात अच्छी नहीं लगती।"

शचीमाताका वात्सल्य प्रेम अतुलनीय है। पिताकी बातका जो उन्होंने उत्तर दिया, उसके प्रत्येक शब्दसे श्रीगौर भगवान्के प्रति शचीमाताके विशुद्ध वात्सल्य भाव परिस्फुट होते हैं। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने कन्याके मनके भावको समझकर ही अपनी बात बदल दी। शचीमाताके श्रीगौराङ्ग-प्रेममें ऐश्वर्यका लेश भी नहीं दिखलायी देता। उनका पुत्रस्नेह विशुद्ध माधुर्यमय है।

यहाँ एक बात कहूँगा। श्रीभगवान्ने अनेक बार नरलीला प्रकट की है। श्रीरामावतारमें, श्रीकृष्ण-अवतारमें तथा श्रीगौराङ्गावतारमें उन्होंने अपनी गर्भ-धारिणी माताके द्वारा पूर्ण मात्रामें स्नेह-वात्सल्य-रसके माधुर्यका आस्वादन किया था। हृदयकी अतिशय प्रबल आकांक्षा हुए बिना, अप्राप्त वस्तुके अभावकी पूर्ण अनुभूति हुए बिना, तथा प्राप्तिकी आशाके अत्यन्त ध्वंशका बोध हुए बिना, प्राप्त धनकी उपयुक्त मर्यादा एवं प्राप्त वस्तुकी मधुरता पूर्णरूपेण तथा सम्यक् प्रकारेण उपलब्ध नहीं होती।

श्रीकृष्णावतारमें देवकी माताको बड़ा दुःख था, अनेक कष्ट सहन करके यदि पुत्रधन प्राप्त भी हुआ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तो कंस राजाके अत्याचारसे उसका भोग वह न कर सकीं। तथापि वह पुत्रधनकी लालसा परित्याग न कर सकीं। उनकी हृदयकी वासनाको श्रीभगवान्‌ने पूर्ण किया।

यशोदा माताको वृद्धावस्थामें पुत्रकी प्राप्ति हुई थी। शचीमाताको आठ कन्याओंके नष्ट होनेके बाद वृद्धावस्थामें पुत्र प्राप्त हुआ। श्रीभगवान्‌को लालसा नहीं होती, यह बात मैं नहीं कह सकता। वह भक्तके आदर-सोहागको लेकर कंगाल बने रहते हैं, स्नेह और प्रेमके भिखारी हैं। वृद्धावस्थामें माताको पूत्रकी प्राप्ति होती है तो उसके पुत्रका बड़ा लाड़-प्यार होता है। उस समय पुत्रके लाड़-प्यार तथा स्नेह और प्रेमकी सीमा नहीं रहती। उस समय उसका लालन-पालन प्राणपनसे किया जाता है। जननीके अन्तिम जीवनमें पुत्रस्नेहकी परिपाकावस्था आती है।

श्रीभगवान् इस उपयुक्त समयको देखकर भक्तके स्नेह-वात्सल्यके भावकी पूर्णमात्रामें प्राप्तिकी आशासे इस समय अपनी नरलीलाके प्रधान सहायक भक्त-रूपी जननीके गर्भमें अधिष्ठान करते हैं। इसीकारण शचीमाताका स्नेह-वात्सल्य अपने पुत्ररूपी श्रीगौर-भगवान्‌के प्रति इतना अधिक है।

चारमहिनेके बाल-गौराङ्ग और उनकी लीलाएँ

शचीबालक इस समय चार महीनेके सुन्दर शिशु हैं। दिन-प्रतिदिन उनकी सौन्दर्य छटा उनकी रूपमाधुरी नदिया-निवासियोंके मनमें अभूतपूर्व आनन्द प्रदान कर रही है। मिश्रभवनमें दोनों समय नदियाके सब लोग आकर शचीबालकके अपरूप रूपका दर्शन करके अपने हृदयको शीतल करते हैं। इसी समय शचीनन्दन अपने भाग्यवान माता-पिताको एक-एक करके गुप्तलीला दिखाने लगे।

उनकी एक और गुप्त लीलाकी बात सुनिये। श्रीचैतन्यभागवतकार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर अपने श्रीचैतन्यभागवतमें इस अपूर्व लीलाका वर्णन कर गये हैं। शचीनन्दन जब घरमें अकेले निद्रासुखका उपभोग करते हैं, जिस समय घरमें और कोई नहीं रहता तो वह चारपायी पर सोये-सोये घरकी सारी वस्तुओंको विशेष ध्यान पूर्वक देखते हैं; और मन ही मन सोचते हैं कि किस वस्तुको फेंक देनेसे अधिक हानि होगी।

निमाईचाँद चार महीनेके शिशु हैं। अभीसे वे विचार करके कार्य करते हैं। वे छिपकर शय्यासे उठते हैं; तेल, दूध, मट्ठा, घृत आदि पात्र तोड़-फोड़कर ढरका देते हैं। उसके ऊपर धान-चावल-मूंग आदि सारे अन्न बिखेर देते हैं। शची-बालककी धृष्टना अति शिशुकालसे ही आरम्भ हो गयी। यह बात इन सब कार्योंसे स्पष्ट हो जाती है। ज्यों ही माता घरमें आती हैं, वैसे ही अतिशान्त शिष्ट शिशुके समान शय्या पर सोकर रोने लगते हैं।

पुत्रका रोना सुनकर एक दिन शचीमाताने 'हरि हरि' कहकर सान्त्वना देनेके लिए जाते समय देखा कि घरके सारे पदार्थ जमीनपर बिखरे पड़े हैं। भूतलपर दूध, दही, घीकी नदी बह रही है। घरमें केवल चार महीनेका बालक, उनका जीवन-सर्वस्व निमाईचाँद सोया है। वह अभी अच्छी तरह घुटनेके बल चलना नहीं जानता। यह कार्य किया किसने? यह किसकी करनी है?

शचीमाता इसका कुछ मर्म न समझ कर निमाइ-चाँदको गोदमें लेकर महल्लेकी पड़ोसिन एक स्त्रीको बुलाने गयीं। सबने आकर देखा कि गृहके सारे पदार्थ नष्ट-भ्रष्ट हो रहे हैं। घरमें मनुष्यका पदचिह्न भी नहीं है। वे कुछ भी निश्चय न कर सकीं। किसीने कहा, "घरमें दानवका आविर्भाव हो गया है।" दूसरेने कहा, "यह अप-देवताका कार्य है। रक्षावद्ध होनेके कारण निमाईचाँदका बालबाँका न कर सकनेके कारण क्रुद्ध होकर सारे पदार्थोंको तोड़-फोड़ गया है। सोनेके लालकी आजा रक्षा हो गयी।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ये सारी बातें सुनकर स्नेहमयी माताके प्राण उड़ गये। उन्होंने षष्टीदेवीका स्मरण करके 'षष्ठीका दास मेरा लाल' कह कर निमाइचाँदको हृदयमें छिपा लिया और अनेक देव-देवियोंकी मनौती करने लगीं।

यह सब अद्भुत काण्ड देखकर श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरके मनमें पुत्रके सम्बन्धमें नाना प्रकारके सन्देह होने लगे। उनको भी यह समझमें आया कि यह सब देव-कार्य है। उनके पुत्रकी अवस्था केवल चार मासकी है। यह सब दुष्कर कार्य उनके बालक पुत्रके द्वारा सम्पन्न हुआ है, इसको वे समझ न सके।

मिश्र-दम्पति सामान नष्ट होनेपर कुछ भी दुःखित न हुए। उनके मनमें विषम भावना उत्पन्न हुई कि कहीं इन सब विषम दुर्दैव घटना-चक्रसे सोनेके लालका किसी प्रकार अमङ्गल न हो। उस दिन ठाकुर-घरमें श्रीभगवान्के ध्वज-वज्राङ्कुशादि चिन्हित चरणचिन्हका दर्शन, और आज घरके सामानका आश्चर्यजनक-रूपसे तोड़-फोड़—इन दोनों घटनाओंसे मिश्र-दम्पत्तिके मनमें बड़ी आशङ्काका संचार हुआ। वे पुत्रके प्रति तीव्र दृष्टि रखने लगे। निमाइचाँदके सो जानेपर भी शचीमाता उनके पाससे दूर न जातीं।

छः महिनेके निमाई

क्रमशः पाँचवाँ मास बीत गया, शचीनन्दन छठे मासमें अवतीर्ण हुए। छः महीनेका शिशु देखनेमें एक वर्षका बालक जान पड़ता था। बाल-गौराङ्गके रूपकी सीमा नहीं है। सारे सुडौल अङ्गोंसे कषितकाञ्चन वर्ण फूटा पड़ता है। सिरपर भ्रमरके समान कृष्ण-कुञ्चित-केशपाश अपूर्व शोभा दे रहा है। अब शची-बालकने बहुत सुन्दर हँसना सीखा है। सुमधुर कण्ठस्वर मधुमें सना हुआ-सा लगता है।

शचीबालकने अब अपने आप उलटना सीखा है, छातीके बल चलनेकी चेष्टा कर रहा है। उसके अपरूप रूपसे नदियावासी मुग्ध हैं। शची-जगन्नाथके आनन्दकी सीमा नहीं है। सब लोगोंके नयनोंको आनन्द देनेवाला पुत्ररत्न प्राप्त कर उनके दुःख दूर हो गये हैं। मिश्र-दम्पत्ति परस्पर वार्तालाप करते हैं, उनके समान सुखी तीनों लोकमें कोई नहीं है। परम आनन्दपूर्वक इस अपूर्व पुत्ररत्नको लेकर सुखसे गृहस्थी कर रहे हैं। सारे नदियाके लोग उनके सुखसे सुखी हैं, उनके आनन्दसे आनन्दित हैं। दिनमें अनेक बार शचीनन्दनके अपरूप रूपका दर्शन कर जीवन सार्थक करते हैं। शचीके आङ्गनमें वे दिनमें दस बार जाते हैं।

माता-पिताका श्रीगौरभगवानने पहले ही अपने ध्वज-वज्राङ्कुश आदि अज-भव-वन्दित चरणके चिन्होंका दर्शन कराकर ऐश्वर्यसे मुग्ध करनेकी चेष्टा की थी। शची-जगन्नाथका विशुद्ध वात्सल्य भाव है। ऐश्वर्य-गन्ध शून्य श्रीभगवान् किसीको भी परीक्षा किये बिना नहीं छोड़ते। इस प्रथम परीक्षाके फल-स्वरूप प्रभुके प्रति माता-पिताका वात्सल्य प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ने लगा। वे निमाइचाँदकी मङ्गल-कामनासे नित्य शान्ति स्वस्त्ययन करने लगे। नित्य ब्राह्मण-वैष्णवको दान, दीन-दरिद्रको भोजन, विष्णुकी पूजा आदि मङ्गल-कर्मोंका अनुष्ठान करने लगे। बाल-विग्रह शचीनन्दन माता-पिताके हृदयको जुड़ाने लगे। उनके पूजा-पाठ, भजन-पूजन, जप-तपके समय पर भी यह अपूर्व बाल-विग्रह क्रमशः अधिकार कर बैठा। निमाईचाँद शची-जगन्नाथके ध्येय वस्तु बन गये, श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र माता-पिताकी जयमाला बन गये।

—×—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाँचवाँ अध्याय

अन्न-प्राशन और बाल-लीला

वन्दे चैतन्यकृष्णस्य बाललीलां मनोहराम् । लौकिकीमपि तामीशचेष्टया वलितान्तराम् ॥

—चै० च० आ० १४.२

अर्थ—चैतन्यकृष्णस्य मनोहरां बाल्यलीलां वन्दे । किम्भूतां लौकिकीं लोकानुसारिणीमपि ईश्वर चेष्टया वलितः अन्तरो यस्यास्तां ईश्वर व्यवहार गर्भा मित्यर्थः ।

अर्थात् जो लीला लौकिकी होते हुएभी ईश्वर चेष्टायुक्त है, श्रीगौराङ्ग प्रभुकी उस मनोहर बाल्य-लीलाकी वन्दना करता हूँ ।

निमाइचाँदका अन्न-प्राशन

श्रीभगवान्‌की मधुर बाल्यलीला बड़ी ही मनोमुग्ध-कारिणी है । एक-एक लीलाकथा सूत्ररूपमें महाजन लिखे गये हैं । उनको विस्ताररूपसे लिखें तो एक-एक ग्रन्थ हो जाय । श्रीभगवान्‌के लीला-विस्तारका कार्य उनके अवतारकी महिमाको प्रकाशित करता है । श्रीगौराङ्ग अवतार-तत्त्व और महिमाका प्रसार करनेके उद्देश्यसे भक्त महाजनगण प्रभुकी छोटी-छोटी लीला-कथाओंको सूत्ररूपमें ग्रथित करके रख गये हैं । उसी सूत्रके आधारपर परवर्ती भाग्यवान् लीला-लेखकगण क्रमशः श्रीगौराङ्ग-लीलाको विस्तृत रूपमें लिखकर कलिग्रस्त जीवोंका परम उपकार कर रहे हैं ।

गौरभक्तोंकी कृपा और आशीर्वाद सिर पर धारण करके उनकी अनुमति लेकर प्रभुकी नवद्वीप-लीलाकी कथा कुछ विस्तार पूर्वक लिखनेका दुःसाहस किया जा रहा है । यह अतिशय दुष्कर कार्य है, यह मुझे पद-पद पर समझमें आ रहा है । तथापि मैंने इस दुरूह कार्यमें हाथ क्यों डाला है ? इसका उत्तर महाजनकी वाणीमें इस प्रकार है—

"आत्मशोधिबार तरे दुःसाहस कैनु ।"

कृपालु पाठकवृन्द धृष्टताको क्षमा करेंगे ।

श्रावणका महीना है । वर्षाकी जलधार गिर रही है । गृह-प्राङ्गणमें कीचड़ हो रहा है । वर्षामें गङ्गाकी शोभा अत्यन्त मनोरम लग रही है । मिश्र-भवनमें बैठकर गङ्गाकी अपूर्व शोभा अति सुन्दर रीतिसे देखी जा सकती है । अपरान्ह काल है । घरमें बैठकर मिश्र-दम्पति गङ्गादेवीकी अपूर्व शोभा दर्शनकर रहे हैं । छः मासके शिशु-गौराङ्ग माताकी गोदमें बैठकर हिल-डुलकर बाल्य क्रीड़ा कर रहे हैं । शचीमाता आदर पूर्वक पुत्रको गोदमें ऊँचा उठाकर गङ्गा-दर्शन करा रही हैं । बालगौर वर्षाकालकी शोभामयी गंगाका दर्शन करके मृदु-मधुर हास्यकी लहरीके साथ नन्हें-नन्हें सुन्दर कोमल हाथोंको उठाकर आनन्दसे माताकी गोदमें मधुर नृत्य कर रहे हैं । गंगाकी अपूर्व तरङ्गावलीको देखकर उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है । श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र-पुरन्दर ठाकुर पुत्रकी अपरूप रूपसुधा पानकर मत्त हो रहे हैं । शचीमाता आनन्दमें तन्मय होकर निमाई-

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चाँदके चन्द्रवदनके प्रति अनिमेष नयनसे देख रही हैं। दोनों आँखों ही आँखोंसे बाल-गौराङ्गकी रूप-सुधा पान करके प्राणोंको परितृप्त कर रहे हैं।

वृष्टिकी वारि-धारा रुक गयी है। शचीमाताने पतिसे हँसते-हँसते कहा, "हमारा निमाइचाँद षष्ठी-की कृपासे छः मासका हो गया है। इस महीनेके अन्तमें सोनेके लालके मुँहमें प्रसाद देना ठीक होगा।" मिश्रपुरन्दर गृहिणीकी-रायसे सहमत होकर श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीके पास परामर्श लेनेके लिए गये। जाते समय रास्तेमें सोचने लगे कि यह घोर वर्षा ऋतु है। निमाइचाँदके अन्न-प्राशनका भोज भली भाँति देना चाहियें। इन कठिन दिनोंमें कैसे सब प्रबन्ध हो सकेगा ?

यथासमय शुभ अन्नप्राशनका दिन ठीक हुआ। नदियाके सब लोगोंको इसकी सूचना मिली। कहाँसे सारा प्रबन्ध हो गया, मिश्रपुरन्दर और उनकी पत्नीको कुछ भी ज्ञात न हुआ। श्रीवास पण्डित शचीनन्दनके शुभ अन्न-प्राशनकर्त्ता बने। नदियाके सब लोग नाना प्रकारकी सामग्री लाकर मिश्र महाशयके घरमें एक-एक करके पहुँचाने लगे। शाँति पुरसे बहुत सी द्रव्य सामग्री लेकर सीता ठकुरानी आ गयीं। वे भण्डारी बनीं। मालिनीदेवी उनकी सहायता करने लगीं। नदिया-सुन्दरीगणने बिना पूछे ही इस शुभ कार्यमें योग दिया है। मिश्र-भवनमें निमाइचाँदके शुभ अन्नप्राशनकी धूम मच गयी।

अन्न-प्राशनके शुभ दिन श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती, चन्द्रशेखर आचार्य, श्रीवास पण्डित आदि आत्मीयजन तथा नदियाके ब्राह्मण पण्डितवर्ग उपस्थित हो गये। शुभ सिन्दूर-भूषिता पतिव्रता नदिया-सुन्दरीवृन्द वस्त्रालंकारसे सज-धजकर शची-बालकके शुभ अन्नप्राशनका उत्सव देखने आयी हैं। मिश्रपुरन्दर ठाकुर नान्दीमुख श्राद्धकर्म समाप्त करके शुभ अन्नप्राशनके कालकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सीता ठकुरानी पुनः शचीनन्दनके लिए शुभ अन्नप्राशनके अवसरके लिए उपयोगी नये आभूषण बनवा कर लायी हैं। सबने यथासाध्य शचीबालकको वस्त्राभूषण दिया है। जगज्जननी शचीमाता जगत्पति पुत्रको गोदमें लेकर आँगनमें बैठी हैं। श्रीअद्वैतगृहिणी जी भरकर निमाइ-चाँदको आभूषणों-से सजा रही हैं। पहले उन्होंने तेल-हल्दी लगाकर शची-बालकको स्नान कराया, उसके पश्चात् अच्छी प्रकार दोनों सुन्दर नेत्रोंमें अञ्जन लगा दिया, सुन्दर चौड़े ललाट पर अगुरु-चन्दनकी तिलक रचना करदी। सखीके लाल लल्लाको लाल रङ्गका रेशमी वस्त्र पहना दिया। क्षीण करितटमें सुनहले पाड़की रेसमी धोती बाँध दी, और उसके नीचे स्वर्णनिम्बफल अटका कर बाँध दिया। रक्ताभ सुकोमल कण्ठदेशमें बहुमूल्य गजमुक्ताका हार पहना दिया। सुन्दर कटि-देशमें सुनहली पाड़ पर सोनेकी सीकड़ झुला दी। शची-नन्दनके रक्त-चरणों पर कङ्कण सुशोभित हो उठा, और उसके नीचे स्वर्णनुपुर। दोनों हाथोंमें स्वर्ण-वलय, सुवलित सुन्दर बाहु युगलमें सुवर्ण-बाजू और अङ्गद और वलयके नीचे कङ्कण सुशोभित होने लगा। गलेमें आवेष्टित गजमुक्ताकी मालाके नीचे स्वर्णपदक डोल रहा है। द्युतिमान मणिमुक्ताकी छटासे आँखोंमें चका चौंध हो आता है।

षष्ठ मासके शची-बालकके सिर पर भ्रमरके समान काले बाल उग आये हैं। फणि-विनिन्दित स्वभाव-कुञ्जित केश-गुच्छ सुन्दर आकर्ण-विश्रान्त युगलके ऊपर पड़ रहे हैं। सामनेके केश-पाशमें शची-माताने बड़े साधसे तीन झोंटी बांध दी है। प्रत्येकके नीचे सोनेकी सीकड़से बँधा एक-एक बहुमूल्य मुक्ताफल सुशोभित हो रहा है। मालिनी देवीने अपने कृष्णभक्त पतिके अनुरोधसे किसीको बतलाये बिना उन तीनों झोंटियोंके बीच एक सुन्दर मोरपंख बाँध दिया है। 'व्रजेन्द्रनन्दन जेइ, शचीसुत हइल सेइ'—यह बतलानेके लिए श्रीवास पण्डितने यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कार्य किया है। उज्ज्वल श्यामवर्णकी अङ्गकान्ति गौरवर्णसे आच्छादन करके श्रीकृष्ण भगवान नदिया-में अवतीर्ण हुए थे। 'कृष्णस्तु भगवान स्वयम्'—यह गौरवर्ण वेदोक्त रुक्माङ्ग पुरुष हैं। यह स्वर्ण-वर्ण ही श्रीभगवान्का आदि वर्ग है।

श्रीवास पण्डित निविष्ट चित्तसे बालगौराङ्गके अपरूप रूपको निरख रहे हैं, और मन ही मन सोचते हैं, "आज मेरा मानव जन्म सफल हो गया।'

शचीमाता रेशमी वस्त्र पहन कर अलङ्कारोंसे आभूषित होकर श्रीनिमाई-चाँदको गोदमें लेकर शुभ अन्नप्राशन-यज्ञस्थलमें दिव्यासन पर बैठीं। अन्न-प्राशनका शुभ समय उपस्थित है। शचीमाताके पिता श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने शुभलग्नकी गणना करके जामाताको दौहित्रके शुभ अन्न-प्राशन कर्मका अनुष्ठान करनेकी सम्मति दी। उपस्थित आमन्त्रित विप्रगणमें कोई वेद, कोई भागवत, कोई गीताका पाठ कर रहे हैं। अन्तरीक्षमें देवगण अन्तर्हित होकर पुष्प-वृष्टि करने लगे। नदिया-सुन्दरीवृन्द आनन्दके रङ्गमें शुभ शङ्ख बजाने लगी तथा शुभ हुलूध्वनि करने लगी। ब्राह्मणोंके द्वारा गीता, भागवत, वेद पाठ हो रहा है। सबके मुँहसे हरिध्वनि निकल रही है। जय-जय ध्वनिसे मिश्रगृह पूर्ण हो गया है। शुभलग्नमें, सर्वशुभ संयोगमें, सहस्र-कण्ठ-निनादित मधुर हरि-हरि ध्वनिके बीच श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने अपने इस अपूर्व रूप-सम्पन्न दोहित्रके मुख-कमलमें शुभ अन्न-प्राशन प्रदान किया। निमाई-चाँदने अपने नानाके हाथसे परम आनन्द-पूर्वक अन्न-प्राशन ग्रहण कर उनको कृतार्थ किया।

इसके बाद मिश्रपुरन्दरने पुत्रको गोदमें लेकर जहाँ धान्य, पोथी, खड़िया, स्वर्ण, रजत आदि सज्जित थे वहाँ लेजार हँसते-हँसते कहा, "बेटा निमाई! तुम्हारी जो इच्छा हो वह वस्तु उठा लो।" शचीनन्दनने पिताकी बात सुनकर क्या किया?

सकल छाड़िया प्रभु श्रीशचीनन्दन।
'भागवत' धरिया दिलेन आलिङ्गन॥—चै०भा० आ० ३.५५

शची बालककी भागवत-प्रीति देखकर उपस्थित पुर-नारीवृन्द आनन्दसे जयध्वनि करने लगे। पण्डितों-ने कहा, 'यह शिशु परम पण्डित होगा।' कोई बोला, 'बहुत अल्पावस्थामें ही इस बालकको सारे शास्त्रोंका अनुभव हो जायगा।' श्रीवास पण्डित आदि कृष्णभक्त विप्रगण बोले, 'शचीबालक परम वैष्णव होगा।'

शचीनन्दनका शुभ नामकरण हुआ 'श्री विश्वम्भर'। यह नाम श्रीभगवान्का वेदोक्त नाम है। वृहस्पति रूपधारी अज्ञातनामा गणक विप्र शची-बालकके शुभ जन्मके समय मिश्रपुरन्दरसे कह गये थे कि इसका वेदोक्त विश्वम्भर नामकरण होगा। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने शिशुके कुण्डलीके फलकी गणना करके यही नाम रखनेके लिए कहा।

शचीनन्दनका विश्वम्भर नाम रखनेका तात्पर्य श्रीचैतन्य भागवतकार लिख गये हैं। प्रभुके शुभ जन्मतिथिसे ही दुर्भिक्ष समाप्त हो गया। कृषक लोगोंके घर धन-धान्यसे पूर्ण हो गये। सर्वत्र सुन्दर वृष्टि हुई। अखिल विश्वके जीवोंके मन स्वस्थ हो गये। अतएव पण्डित लोगोंने विचार करके बालकका नाम रक्खा 'श्रीविश्वम्भर।' ठाकुर लोचनदास लिखते हैं—

विश्व पालन हेतु भूतल विश्वम्भर नाम।
सरस्वती संवाद जे पुरुष प्रधान॥
शचींबालकके अन्यान्य अनेक नाम हैं,* किन्तु

---

*शचीबालकके अन्यान्य शाशस्त्रीय नाम हैं; श्रीगौराङ्ग, श्रीगौरदीप्ताङ्ग, श्रीशचीनन्दन, श्रीगौर-चन्द्र, श्रीगौरहरि, श्रीगौरसुन्दर, श्रीगौराङ्गसुन्दर, श्रीकृष्णचैतन्य, श्रीश्रीमहाप्रभु। शचीनन्दनके और

(क्रमशः)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'श्रीविश्वम्भर' नाम उनके अन्न-प्राशन विधिके नियमके अनुसार रक्खा हुआ नाम है।

श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने लिखा है—

प्रथम लीलाय ताँरि 'विश्वम्भर' नाम।
भक्तिरससे भरिल धरिल भूतग्राम॥
'डु भृड' धातुर अर्थ—पोषण धारण।
पुषिल धरिल प्रेम दिया त्रिभुवन॥

चै. च. आ. ३.२५, २६

श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने लिखा है—

भविष्यतीदं निजकीर्तनादिभि—
र्विलासलावण्य सुधामयैर्जगत्।
इतीव विश्वम्भर इष्युदारधी
रचीक्लपन्नाम मनोरमाशयः॥

शुभ अन्नप्राशन कर्मानुष्ठानके बाद शची-बालकको सर्वप्रथम उनके मातामह श्रीपाद नीलम्बर चक्रवर्तीने धान्य-दूबकि द्वारा शुभाशीर्वाद देकर गोदमें ले लिया। नानाके गोदमें बैठकर अलङ्कारोंसे आभूषित निमाइचाँद अपने चन्द्रवदनमें, चम्पककली विनिन्दित पादांगुष्ठको चालकर प्रसन्न मनसे चारों ओर दृष्टिपात करने लगे, और मृदु-मृदु मुस्काने लगे। उस मृदु मधुर मुस्कानसे, उस चंचल दृष्टिसे मानो सबके प्राणमें अमृत-सिञ्चन करने लगे, सबका मन आनन्दरससे आप्लुत हो उठा।

अब शचीबालकको एक बार गोदमें लेनेके लिए सभी आतुर हो उठे। नानाकी गोदसे विश्वम्भर पिताकी गोदमें उछल कर गये। मिश्रपुरन्दरका हृदय शीतल हो गया। उनका सर्वाङ्ग पुलकित हो उठा। क्रमशः सभीने शचीनन्दनको एक-एक बार गोदमें लेकर अपने हृदयको शीतल किया, जीवनको सार्थक किया। जिसने गोदमें लिया, फिर छोड़ना नहीं चाहता। नदिया-सुन्दरीवृन्दके गोदमें जाकर शची-बालक परम आनन्दित हो हँसने लगे।

बालक विश्वरूप बड़े आनन्दपूर्वक अन्न-प्राशन-सभाके चारों ओर दौड़धूप कर रहे हैं। आज उनके आनन्दकी सीमा नहीं है। वह भी बीच-बीचमें पुर-नारीगणके समीप आकर लाल भाईको एक-एक बार गोदमें लेते हैं। अपने भ्रातृ-रत्नको सबको दिखला रहे हैं। सीता ठकुरानीके पास दौड़कर जाते हैं और हाँफते-हाँफते आनन्दमें गद्‌गद होकर कहते हैं, "बड़ी माँ! देखो, मेरा लाल मुन्ना कितना बड़ा हो गया है? मुन्ना बड़ा भारी है। तुम गोदमें लो।" सीता ठकुरानीने विश्वरूपके चन्द्रवदनकी ओर देखकर

भी दो शास्त्रीय नाम हैं नादगम्भीर और स्वनामामृत लालस। कषितकाञ्चन वर्ण श्रीअङ्गज्योतिके कारण उनके नाम श्रीगौराङ्ग, श्रीगौरदीप्ताङ्ग, श्री गौरचन्द्र इत्यादि हैं। जन्मवश उनके नाम हैं श्रीशची नन्दन,शचीसुत। गौरवर्ण कलिकलुषहारी होनेके कारण उनका नाम श्रीगौरहरि है। नदियावासिनी कुलनारी-वृन्दने उनका यही नाम रक्खा था। संकीर्तनके समय गुरुगम्भीर हुँकार नाद करनेके कारण उनको नाद-गम्भीर कहते थे। निमाइचाँद स्वयं श्रीकृष्ण होकर कृष्णनामरूपी अमृत पान करते थे और मत्त रहते थे, इस कारण उनका नाम 'स्वनामामृत-लालस' पड़ा। संन्यास-ग्रहणके पश्चात् उनके संन्यास-गुरुका दिया हुआ संन्यासनाम 'श्रीकृष्णचैतन्य' था। वेदके मतसे 'श्रीकृष्ण' शब्दका अर्थ है 'ब्रह्म', और 'चैतन्य' शब्दका अर्थ है 'चित्स्वरूप' या 'परमात्मा'। अतएव "श्रीकृष्ण चैतन्य" शब्दका अर्थ हुआ "परम पुरुष परमात्मा"। इसका शास्त्रीय प्रमाण यथा—

कृषिर्भूवाचकः शब्दो णश्च निर्वृत्तिवाचकः।
तयोरैक्यं परंब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते॥

पुनश्च—

चैतन्यं परमाणूनां प्रधानस्यापि नेष्यते।
ज्ञानक्रिये जगत्कर्त्र्ये दृश्यते चेतनाश्रये॥

भक्तगणके द्वारा दिया हुआ श्रीगौराङ्गका बड़े साधका नाम था—'श्रीश्रीमहाप्रभु'।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्नेहपूर्वक एक चुम्बन देते हुए कहा, "छिः बेटा ! ऐसा नहीं बोलना। नन्हा मुन्ना क्या भारी होता है ?" इतना कहकर निमाइचाँदको विश्वरूपकी गोदसे लेकर अपने कलेजेसे लगा लिया। दोनों भुजाओंके बीचमें लेकर उत्तोलन करके प्यार करने लगीं। बालक विश्वरूप विश्वम्भरके विषम भारसे घबरा रहे थे।

मिश्रपुरन्दर ठाकुर निमन्त्रित आत्मीय कुटुम्बी-जनके भोजनके आयोजनमें लगे हैं। निमाइचाँदके शुभ अन्न-प्राशनके उत्सवमें मिश्र-भवन आज निमन्त्रित और अनिमन्त्रित सब प्रकारके लोगोंसे भरा हुआ है। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती स्वयं देखभाल कर रहे हैं। श्रीवास पण्डितने पत्तोंका आसन देकर ब्राह्मण वर्गको भोजनके लिए बैठा दिया। सीता ठकुरानी और मालिनी देवीने स्त्रियोंको भोजन करानेका भार अपने ऊपर लिया। पड़ोसकी स्त्रियाँ उनको परोसने लगीं। चर्व्य-चोष्य-लेह्य-पेय नाना प्रकारके अन्न-व्यञ्जन, पायस-मिष्ठान्नसे सबको परितुष्ट किया।

विदा होनेके समय सबने एक बार फिर शची-नन्दनको गोदमें ले लिया। अपरिचिता नदिया-सुन्दरी-वृन्दकी गोदमें जाकर शचीबालक एक बार रो पड़े। तुरन्त सब हाथोंसे ताली बजाकर 'हरि हरि' ध्वनि करने लगे। सभी जानते हैं कि शची-बालकका रोना हरिध्वनि करनेसे बन्द हो जाता है। जैसे ही हरिध्वनि निमाइचाँदके कानोंमें प्रविष्ट हुई वह गोदमें ही मधुर मुस्कानके साथ नृत्य करने लगे। उस मधुर नयन-रञ्जन अपूर्व नृत्यको देखकर नदियासुन्दरीवृन्द अपने आपमें न रहीं। वे भी लज्जा-शर्म त्यागकर निमाइचाँदको गोदमें लेकर नृत्यावेशमें मग्न हो गयीं। भगवत्प्रेममें मग्न होनेपर जीवकी लज्जाका बाँध टूट जाता है। स्त्रियोंके पक्षमें इस नियमका व्यतिक्रम क्यों होवे ?

शचीनन्दनका शुभ अन्न-प्राशन उत्सव सुसम्पन्न हो गया। सीता ठकुरानी अपने घर लौट गयीं।

जानु-चङ्क्रमण-लीला

जानु-चङ्क्रमणका अर्थ है घुटनेके बल चलना। शचीबालकने अब घुटनेके बल चलना सीखा है। उनकी कटिकी स्वण-किङ्किणीकी रुनुझुनुकी मधुर ध्वनि शची-जगन्नाथके कानोंमें मानो अमृत ढाल देती है। निमाइचाँद जब घुटनेके बल घरमें चलते हैं, तब शची-जगन्नाथ सब काम छोड़कर पुत्रकी इस घुटनेके बल चलनेकी क्रीडा देखते रहते हैं।

शची-बालकके गलेमें मणिमुक्ता-जटित स्वर्णपदक डोल रहा है। मोटे लाल सूतेसे पदक गुँथा हुआ है। पीछे वेणीके समान पाटकी कबरी शोभा देती है। घुटनेके बल बालगौर घरमें घूमते रहते हैं। मिश्र-पुरन्दर ठाकुर अन्यमनस्क होकर पुत्रके अपरूप रूपको देखते हैं। पुत्रके इस भुवन मोहन बालरूपको देखकर उनका चित्त आनन्दसे विह्वल हो जाता है। वे आहार निद्रा भूल जाते हैं। दिन-रात यह बालरूप उनके हृदयमें जागता रहता है। वह खाते-पीते सोते-जागते केवल 'बेटा निमाई !' पुकारते रहते हैं।

शचीमाता अपने जीवन-सर्वस्व आँचलके धनको क्षण मात्रके लिए भीअ ँखोंसे ओझल नहीं होने देतीं। निमाईचाँद जब घुटनेके बल घरमें घूमते हैं तो वह दौड़कर उनको दुलार करते हुए गोदमें झटपट उठा लेती हैं। बालगौराङ्गके सुकोमल कर-पदतलमें मानो हिंगूल मला हुआ है। आकर्ण-विश्रान्त सुविशाल सुन्दर नयनद्वय मानो दो प्रफुल्ल रक्तोत्पल हैं। विद्युतके द्वारा मानो किसीने निमाइचाँदके सर्वाङ्गको माँज दिया है। स्थान-विशेषमें शरीरका वर्ण मानो रक्त जवाकुसुमके वर्णके समान फूट निकलता है। अङ्गकी ज्योतिसे चतुर्दिक दीप्यमान हो रहा है। शचीबालकके दिव्य तेज पूर्ण ज्योतिर्मय मुखचन्द्रके प्रति अधिक क्षण तक कोई देख नहीं पाता।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बालगौराङ्गकी घुटनेके बल चलनेकी लीला जो एक बार देख लेता है, वह फिर शचीमाताके घरको छोड़कर कहीं जा नहीं सकता। शचीमाता पुत्रको अधिक घुटनेके बल चलने नहीं देतीं। उनके मनमें भय होता है कि कहीं घरकी भूमि पर पुत्रके सुकोमल कर-पद-तल और नवीन जानुदेशके घिसनेसे उसके सोनेके अङ्गमें आघात न पड़े। परन्तु शचीमाता पुत्रके इस कार्यमें बाधा देने जाती हैं, तो वह भूतल पर पड़ जाते हैं। धूलमें लोटने लगते हैं और रोते हैं। यह देखकर शची-जगन्नाथके मनमें हर्ष-विषाद उत्पन्न होता है। धूलि धूसरित सोनेके जादू को गोदमें लेकर वे बहुत लाड़ प्यार करते हैं, और मुखचन्द्रमें शत-शत स्नेह चुम्बन प्रदान करते हैं।

इस प्रकार शचीनन्दन घुटनेके बल चलते हुए कुछ दिन नदियाके लोगोंको उन्मत्त करते रहे। शचीमाताके आँगनमें भीड़से पैर रखनेकी जगह नहीं है। निमाईचाँद चलना सीख रहे हैं, वह घुटनेके बल घरसे निकल कर आँगनमें आ जाते हैं, यह संवाद नदियामें महल्ले-महल्लेमें फैल गया है। सभी प्रभुकी इस अद्‌भूत बाल्य-लीलाको देखकर कृतार्थ हो रहे हैं। जैसे-जैसे दिन बीतने लगे, नदियाके सारे नर-नारी बालगौरकी नित्य अभिनव लीला माधुरी दर्शन करके अपने मनुष्य जन्मको सफल समझने लगे।

दन्तोद्‌गम

सातवें महीनेमें शचीबालकको दाँत उग आये। पक्व-विम्व-विनिन्दित सुन्दर ओष्ठके नीचे कुन्दकलिकाके समान दो दाँतोंका उद्‌म हुआ।

शिशु दाँत निकलनेके समय अस्वस्थ हो जाता है। श्रीगौरभगवान् नररूप धारण करके नदियामें अवतीर्ण हुए थे। नर-प्रकृतिके वशीभूत होकर उनको भी इस अति शैशव कालमें देह-धर्मके फल भोगने पड़े थे। वे बारंबार दूध फेंक देते हैं, माताकी गोदमें स्थिरता पूर्वक नहीं रहते हैं, भलीभाँति आँखें नहीं मिलाते, निरन्तर रोते रहते हैं। स्तनसे दुग्धपान नहीं करते। उनका शीतल शरीर तापयुक्त जान पड़ता है। शची-बालक मानो बहुत व्यथित हैं। स्नेहमयी शचीमाताके प्राण व्याकुल हैं। मुँह सूख गया है। वह पुत्रको गोदमें लेकर न जाने क्या-क्या सोचती हैं, और निमाईचाँदको लाड़-प्यार करती हैं।

शचीमाताके मनमें आशङ्का हुई, समझा कि किसी अपदेवताकी हवा पुत्रके शरीरमें लग गयी है। पुत्र-वत्सला जननीके मनमें शिशुपुत्रकी पीड़ाका नाम सुनते ही सर्वप्रथम इसी प्रकारके भाव उदय होते हैं। कुछ थोड़ा भी कष्ट होनेसे पुत्र-वत्सला जननीके प्राण में सबसे पहले अमङ्गलकी आशङ्का उत्पन होती है। वात्सल्य-रसाश्रिता श्रीगौराङ्गा-जननीके मनमें नाना प्रकारकी आशङ्काएँ उदय हुईं। उनको व्याकुल देख-कर भक्त-वत्सल श्रीगौर भगवानके मनमें दया उत्पन्न हुई। वे निस्तब्ध होकर माताकी गोदमें सुखपूर्वक सो गये। शचीमाताका मन शान्त हो गया।

प्रभुके दन्त-उद्‌गम-जनित देह-रोगकी शान्ति हुई। शचीमाता और मिश्रपुरन्दर ठाकुरने निमाई-चाँदकी इस सामान्य अस्वस्थताके कारण नदियाके सारे वैद्य-कविराज और ओझा लोगोंको इकट्ठा किया था। वात्सल्य प्रेमसे अन्धे माता-पिताको श्रीगौरभगवानने व्याकुल कर डाला था।

सर्प-लीला

अब शचीनन्दनने घुटनेके बल घरसे आँगन आना सीखा है। कुछ सुयोग पाते ही निर्भय होकर सीधे आँगनमें आकर लीला-विलास करते हैं। आङ्गनमें जो वस्तु देखते हैं उसीमें हाथ लगा देते हैं। अग्नि, सर्प, कुत्ता, बिल्ली-जिसे सामने पाते हैं, शचीबालक उसीको पकड़कर खेलते लगते हैं।

इस समयकी प्रभुकी एक दिनकी बाल्यलीला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कथा सुनिये । निमाइचाँदने आङ्गनमें घुटनेके बल चलते समय एक दिन एक अजगर सर्पको पकड़ लिया। सर्प प्रभुको देखकर कुण्डली मार-कर स्थिरता पूर्वक आङ्गनमें बैठा था। आज उसका बड़ा सौभाग्य था। प्रभु-पद-रज-स्पर्शकी कामनासे उसने अपना भयङ्कर फण झुकाकर बालगौराङ्गको प्रणाम किया। शचीनन्दन उस भयानक कुण्डलीकृत अजगरके ऊपर चढ़कर निर्भय शयन किये हैं। श्रीभगवान् मानो अनन्तशय्या पर सोये हैं।

घरके सब लोग यह देखकर 'हाय क्या हुआ ? हाय क्या हुआ !' चिल्ला उठे । सभी 'गरुड़-गरुड़' कह कर उच्च स्वरसे पुकारने लगे। शचीमाता यह सुनकर भयसे व्याकुल होकर रोते हुए घरसे आङ्गनमें आयीं । मिश्रपुरन्दर बाहर दालानमें थे। वह भी 'क्या हुआ ! क्या हुआ !' कहते हुए दौड़े आये। उस समय सबने देखा कि वह बड़ा अजगर धीरे-धीरे निमाइचाँदको आङ्गनमें छोड़ कर भयसे भाग गया। बालगौर पुनः उसको पीछेसे पकड़नेकी चेष्टा करने लगे। शचीमाताने दौड़कर पुत्रको पकड़कर गोदमें ले लिया । उनके देहमें मानो प्राणका सञ्चार हुआ । मिश्रपुरन्दरने लम्बी साँस लेकर धैर्य धारण किया। सभी आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे।

शचीमाताने ठाकुर-मन्दिरसे विष्णुपादोदक लाकर पुत्रको पान कराया । उपस्थित नारीवृन्द 'चिरञ्जीवि हो' कहकर शचीनन्दनको आशीर्वाद देने लगीं। मालिनी देवीने कहा, "निमाइचाँदका आज एक बड़ा ग्रह कट गया।" धात्री माता नारायणीने शचीनन्दनके हाथमें रक्षा - कवच बाँध दिया । किसीने कहा, "जाति सर्प होनेके कारण दंशन नहीं किया।"

सब मिलकर निमाइचाँदको गोदमें लेकर लाड़-प्यार कर रही हैं। वह मधुर-मधुर हँस रहे हैं; और सबकी ओर दृष्टिपात करते हैं तथा गोदसे उतरनेकी चेष्टा करते हैं। उस हँसीका मर्म यह है कि, "मैं फिर सर्प पकड़ूँगा, तुम लोग मुझे छोड़ दो ।" इस भयसे कोई उनको गोदसे उतारता नहीं है। यदि उतरने दिया तो वह आङ्गनमें जाकर उसको पकड़ लावेंगे, इससे निमाइचाँद रूष्ट हो गये। लाल-लाल ओठ फुलाकर अभिमानमें भर कर वह रोने लगे। उनके क्रन्दनसे मानो अमृत स्रवित होने लगा। सबने एक साथ ताली बजा-बजाकर हरिनाम कीर्तन करके उनको शान्त किया।

श्रीवृन्दावनदास ठाकुर बालगौरकी सर्पधारण-बाल्य-लीलाकी फलश्रुति लिख गये हैं—

"भक्ति करि जे ए सब बेदगोप्य शुने।
संसार-भुजङ्ग तारे ना करे लङ्घने ॥

—चै. भा. आ. २.७६

चलना-बोलना-सीखना

क्रमशः निमाइचाँदने चलना सीखा। माता-पिता-का हाथ पकड़कर घरमें डगमगाते हुए दो कदम चलते हैं, और फिर गिर पड़ते हैं।

शचीमाताने उसी समय दुलार करते हुए गोदमें लेकर पुत्रका मुख चूम लिया। अब वह एक आध मधुर बोली बोलना सीख रहे हैं। 'मा-मा' 'दा-दा' 'बा-बा' आदि सुधामधुर बाल भाषा माता-पिताके प्राणोंमें मानो अमृत वर्षा करती है।

शची-जगन्नाथ निमाइ-चाँदके मुँहसे यह सुधा मधुर बाल-भाषा सुनकर मानो अमृत समुद्रमें तैर रहे हैं। माताके प्राण सदा ही सशंकित रहते हैं कि धृष्ट निमाईचाँद चलते-चलते गिर न जाय और पुत्रके कुसुम कोमल नवनीत तुल्य हाथ-पैरमें चोट न लगे। क्योंकि चलते समय ऐसा लगता था मानो शचीनन्दनके कोमल हाथ-पैरसे रक्त निकला जाता है।

अब शचीबालकी रूप-छटा दशो दिशाओंको आलोकित कर रही है। सारे आङ्गनमें वे अब स्वच्छन्द घूमते हैं कोटि कन्दर्पतुल्य उनकी अपरूप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रूपराशि मानो शचीके आङ्गनमें बिखर रही है। पुत्रके सिर पर भ्रमरके समान काले कुञ्चित घुँघरालेकेश-पाश, पद्म-पत्रके समान विशाल नयनद्वयकी दिव्य आभा, आजानुलम्बित सुगठित मृणालके समान भुजद्वयकी दिव्य कान्ति, रक्तवर्ण अधर और ओष्ठकी सुविमल ज्योति, उन्नत और चौड़े वक्षःस्थलकी अपूर्व शोभा, सर्वलक्षण युक्त तप्त काञ्चन वर्ण-विनिन्दित अङ्ग-कान्ति, चम्पक कलिका-विनिन्दित हाथ और पैरकी अंगुलियाँ, विकसित रक्तकमलके समान सुन्दर चरणद्वय देखकर मिश्रदम्पति एकान्तमें बैठकर कानाफूशी करते हैं—"निश्चय ही कोई महापुरुष आकर हमारे घरमें जन्मा है। जान पड़ता है इसबार हमारी भव-बाधा दूर हो जायेगी।"

निमाईचाँद थोड़ा-थोड़ा चलना सीखकर माताकी अंगुली पकड़ कर आङ्गनमें माताके साथ धीरे-धीरे पाये-पा चले जाते हैं। कभी-कभी उतान होकर गिरनेके समान हो जाते हैं; और कभी आङ्गनके बीच धूलमें गिरकर बैठ जाते हैं। तब शचीमाता दुलार करके गोदमें उठा लेती हैं। सोनेके अङ्गसे धूल झाड़ देती हैं। रोष और अभिमानसे निमाइचाँद पुनः धूलमें लोटने लगते हैं। शचीमाता फिर गोदमें उठाकर अपने वस्त्रके आँचलसे पुत्रके सोनेके अङ्गसे धूल झाड़ देती हैं। मुखकमल पर सैकड़ों चुम्बन देती हैं।

श्रीगौराङ्ग-परिकर वृन्द त्रिकालज्ञ ऋषि थे। पद-कर्त्ता वासुदेव घोषने एक पदकी भणितामे जो भविष्यवाणीका आभास दिया है, उससे उनकी सर्वज्ञताका विशेष परिचय मिलता है। वह शचीमाताको सम्बोधन करके कहते हैं—"माँ री! तुम्हारा यह पुत्र सदा धूलमें लोट-पोट करेगा, तुम स्नेहवश उसे कहाँ तक रोकोगी?" प्रभुकी दोनों आँखोंके आँसू कभी सूखे नहीं, श्रीअङ्गकी धूल कभी मिटी नहीं। कलिके जीवोंके दुःखसे वे अजस्र आँसू बहाते हुए सदा रोते रहे, उनके कल्याणके लिए सोनेका शरीर धूलमें लोटाते रहे। इसी कारण पतित-पावन श्रीगौराङ्गके नामसे इतना प्रेमोन्माद होता है, उनकी मधुरलीला स्मरण करके गौरभक्तगण इतना तल्लीन होते हैं, उनकी गुण-राशिका स्मरणकर हृदय इतना प्रेमानन्दसे भर जाता है।

चन्द्र खिलोना

श्रीगौराङ्ग प्रभुकी बाल-लीला-कथा मधुसे भी मधुर है। नवद्वीप लीला-रस-समुद्रमें वह एक-एक बहुमूल्य रत्न है। प्रभुके लीला-लेखक भक्तवृन्द उनके लीला-समुद्रमें डुबकी लगाकर बहुत यत्नपूर्वक इन बहुमूल्य रत्नोंका उद्धार कर गये हैं। कृपालु पाठक-वृन्दको एक और लीलारत्न प्रेमोपहार देता हूँ।

पूर्णिमाकी रात है। पूर्णचन्द्र आकाशमें उदय हुआ है। मृदु मन्द वायु बह रही है। शचीनन्दन सन्ध्याकालमें माताकी गोदमें सोये हैं। आकाशमें सुधामय पूर्वचन्द्रको देखकर 'मैं चाँद लूँगा' कहकर हठ करने लगे। बालगौराङ्ग आकुल होकर रोने लगे। शचीमाता पुत्रको गोदमें लेकर "चाँद आ, चाँद आ" कहकर आकाशकी ओर ताककर निमाई-चाँदको झूठमूठ फुसलानेकी चेष्टा कर रही हैं। निमाई-चाँदका चाँद लेनेका हठ रुकता नहीं है। वे लगातार रोते रहे। माताकी गोदसे उतर कर जमीन पर लोटने लगे। क्रोधमें भरकर नन्हें-नन्हें सुन्दर लाल कोमल करद्वय द्वारा अपने मस्तकके घने काले घुँघराले बाल नोचने लगे।

शचीमाता पुत्रको कदापि पकड़कर रख नहीं पाती है। वे बड़ी विपदमें पड़ गयी हैं। पड़ोसकी नदिया-सुन्दरीगण आकर हरिनाम कीर्तन करने लगीं। प्रभु आज हरिनामसे भी शान्त न हुए—यह देखकर शचीमाता झटपट गृह-स्थित श्रीश्रीराधा-कृष्णके युगल चित्रपटको लाकर निमाईचाँदके हाथमें दे दिया। चित्रमें श्रीमूर्ति देखकर उनका रोना बन्द हो गया, मनमें बड़ा आनन्द हुआ। चित्रपटको यत्नपूर्वक वक्षःस्थल पर धारण करके वे उठ बैठे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ठाकुर लोचनदासने शचीमाताकी उक्तिके एक सुन्दर पदमें निमाइचाँदको सन्ध्याकालमें चाँद देखाकर सुलानेका गीत गा कर अमरत्व लाभ किया है। उस पदको यहाँ उद्धृत करते हैं।

चान्दा-चान्दा-चान्दा, गगन उपरे,
के पाड़ि आनिया दिब ।
कलङ्क मुछिया, मोर गौरचाँदेर,
कपाले चित्र लिखिब ॥
लुओ लुओ लुओ, आय आय आय,
सोनार निमाइ निंदे कान्दे ।
आखटि करिते, एकटि बोल निमाइर,
अमिया अधिक लागे ॥ ध्रु० ॥
एखनि आसिब निमाइर बाप,
क्षीर कदलक लइया ।
हेरे आसितेछे, दुरन्त ताइ,
निंद जाह आँखि बुझिया ॥
सोनार पद्ममुख, राता पदुम आँखि,
आध मुदित तारा ।
हेन बुझिपारा, महुर पाथारे,
डुविल आध भ्रमरा ॥
पाटेर गेलाप, नेतेर तुलि,
रचिया शय्याखनि ।
पाथालि हइया, पुत्र कोले लइया,
शुतिला देवी शचीरानी ॥
एक स्तनमुखे, रहि-रहि चाखे,
अङ्गुलि नाड़ये आर ।
लोचन बले, सब देव शिरोमणी,
बालक रूपते बिहार ।

शचीमाता पुत्रको गोदमें लेकर लेटकर सो रही हैं। अपने एक हाथको गालके नीचे रखकर तथा दूसरे हाथसे निमाईचाँदके सुन्दर ललाट पर धीरे-धीरे ठोंकते हुए उपर्युक्त पदको सुरमें बोल रही हैं। शचीनन्दन माताके एक स्तनको हाथसे ढँककर दूसरे स्तनका दूध पी रहे हैं। स्तनका दूध धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा करके पी रहे हैं और पैरकी अङ्गुलिको हिला रहे हैं। कनक केतकीके समान उनके दोनों नेत्र निद्रायमाण होकर झपकी ले रहे हैं। शचीमाता धीरे-धीरे उपर्युक्त गीत गाकर पुत्रको सुला रही हैं और उनकी अर्द्धनिद्रित सुन्दर मुखछवि देखकर प्राणोंको परितृप्त कर रही हैं। श्रीभगवान्‌की नर लीलाका ऐसा मधुरमय सुन्दर दृश्याङ्कन ध्यानस्थ होकर करना पड़ता है। विशेष सुकृतिके बिना यह सब अपूर्व लीला-दर्शन जीवके भाग्यमें कहाँ? नदियावासी लोगोंके चरणोंमें कोटि प्रणिपात। उन्होंने श्रीगौरभगवानकी यह सारी मधुर लीलाएँ अपनी आँखों देखकर जीवनको सार्थक किया है।

निमाइचाँद अब कुछ अधिक आधी-आधी मधुमयी वाणी बोलना सीख गये हैं। 'हरिबोल' कहते समय 'हलि बोल" कहते हैं। सुन्दर सुगठित कोमल बाहु-द्वय ऊपर उठाकर धीरे-धीरे नाचना सीख रहे हैं, मधुर हरिनाम सुनते ही हँसकर अधीर होकर आनन्द नृत्य करनेकी चेष्टा करते हैं, नाचते नाचते भूमि पर गिर जाते हैं और रोने लगते हैं। जब तक सब लोग ताली बजाकर उच्चस्वरसे हरिध्वनि नहीं करते, तब तक उनका रोना बन्द नहीं होता। नदियासुन्दरी पुर-नारीवृन्द शचीनन्दनको घेरकर ताली बजाते हुए मधुर स्वरसे 'हरि-हरि' बोलकर कीर्तन करती हैं। हरिनाम-कीर्तन सुनकर निमाइचाँद झटपट माताकी गोदमें जा बैठते हैं। नाना प्रकारके हावभावसे नृत्य करनेकी चेष्टा करते हैं। शिशुभावमें श्रीगौरभगवान् इसी प्रकार अपना नाम-कीर्तन कराकर सबको परमानन्द प्रदान करते हैं। यह सब प्रच्छन्न अवतारकी प्रच्छन्न लीला है। इसका मर्म समझनेकी शक्ति कितने लोगोंमें है?

बाल गौराङ्गकी एक और दूसरे दिनकी चाँदको लेकर बाल्यलीला करनेकी कथा सुनिये। पूर्णचन्द्र गगनमें उदय हो गया है। पूर्णिमाके चाँदकी लावण्य-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मय हास्य-राशि देखकर बालक निमाइचाँदका मन व्यग्र हो उठा। उनके मनमें जो भाव उदय हुआ, उसके समझनेकी शक्ति किसीमें नहीं है। बालगौर 'माँ-माँ' कहकर व्याकुल होकर रोने लगे। पुत्र इतना रो क्यों रहा है? क्या हो गया? यह सोचकर शचीमाता दौड़कर निमाइचाँदके पास आयीं। पुत्रको गोदमें उठाकर प्यार करती हुई बोलीं, 'बेटा निमाइ! सोनेके चाँद! सन्ध्याके समय रोना नहीं चाहिये। चुप रहो, तुम जो माँगोगे, मैं दूँगी। बाल-गौर रोते रोते माताके मुँहकी ओर देखकर चाँदके लिए कनक-चम्पक-सी अंगुलीके द्वारा निर्देश करके अर्द्ध-अर्द्ध मधुर भावसे बोले, "मेरे लिए चाँदको पकड़ ले। मैं चाँद लूँगा।"

शचीमाता हँसकर पुत्रको गोदमें उठाकर मुख चुम्बन करके बोलीं, "मेरे अबोध लाल! आकाशके चाँदको क्या कोई पकड़ सकता है? ऐसा अबूझ बालक भी कहीं किसीके घर पैदा होता है?"

रोते हुए बालगौर माताकी बात सुनकर क्रोधसे लाल हो गये और बोले, "तुमने कैसे कहा कि जो माँगोगे, वही दूँगी।"

माताका आँचल पकड़कर उच्चस्वरसे रोने लगे। हठ करते हैं, और पैर पटकते हैं, कभी रुष्ट होकर कनक-केतकी सदृश नेत्रद्वयको मलते हैं, कभी माताका गला पकड़कर व्याकुल होकर रोते हैं। आकाशका चाँद बाल-गौरकी क्रीड़ाकी सामग्री है। वह चाँदको लेकर खेलेंगे, इसी कारण मातासे इतना हठ कर रहे हैं। कभी अभिमानमें भरकर माताके केशपाश पकड़कर खींचते हैं नोचते हैं। उनके सारे अङ्ग धूलि धूसरित हैं। क्रोधमें भरकर कभी अपने मस्तकको हाथसे पीटते हैं।

शचीमाता आज विषम विपदमें पड़ी हैं। कैसे निमाइचाँदको सान्त्वना दें, कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रही हैं। पुत्रको 'जो माँगोगे, वह दूँगी' कहकर कितनी गल्ती करली हैं। ऐसा अबूझ हठी बालक कभी कहीं किसीने नहीं देखा। क्या कोई कभी आकाशके चाँदको पकड़ सकता है? कैसे निमाईचाँदको समझावें, इस चिन्तासे घबरा कर शचीमाताने निमाइचाँदसे कहा, "बेटा निमाइ! यदुराय! तू आकाशके चाँदके लिए रो रहा है, तुम्हारे सोनेके अङ्गमें कितने कोटि-कोटि चाँद सुशोभित हो रहे हैं। तुम्हारे मुखचन्द्रके सामने आकाशके चाँदकी शोभा मलिन हो गयी है।" इतना कहकर शचीमाताने पुत्रका मुख चूम लिया।

निमाइचाँद माताके लाड़-प्यारसे राजी नहीं हुए तब शचीमाताने हौवाका डर दिखाकर पुत्रको शान्त करनेका प्रयास किया। हौवाकी बात सुनकर धृष्ट निमाइचाँदका रोना कुछ बन्द हुआ। माताकी गोदसे डरते-डरते आकाशके चाँदकी ओर देखते हैं, और कहते हैं—"माँ! क्या हौवा चाँदके भीतर बैठा है? वह चाँदके भीतर क्या है?" शचीमाताने पुत्रके सिरको धीरे-धीरे थपथपाते हुए कहा, "बेटा! चुप रह, बातें करनेपर चाँदके भीतरसे हौवा नीचे उतर आयेगा।" धृष्ट शिशु गौराङ्ग डरते-डरते माताकी गोदमें सो गये। शचीमाताकी जानमें जान आयी।

—※—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छठा अध्याय

बाल-गौर

स प्रसीदतु चैतन्यदेवो यस्य प्रसादतः। तल्लीला वर्णने योग्यः सद्यः स्यादधमोऽप्ययम् ॥

—श्रीचै. च. आ. १३.१

बाल्य-लीला प्रकाश

निमाईचाँद अब परम चञ्चल दो वर्षके बालक हैं। निरन्तर घरमें और बाहर दौड़धूप करते रहते हैं। किसका मजाल जो उनको पकड़ कर घरमें रक्खे। अकेले घरसे बाहर निकल जाते हैं, बाहर रास्ते-पर चले जाते हैं। जिसके हाथमें जो देखते हैं, वही माँगते हैं। खील, केला, सन्देश किसीके हाथमें देखते ही निमाईचाँद दौड़कर जाते हैं, और हाथ फैला देते हैं। उनके भुवनमोहन रूपसे सभी मुग्ध और वशीभूत हैं। सभी शचीनन्दनको प्राणतुल्य मानते हैं। सभी उनके हाथमें सन्देश, केला आदि खानेकी वस्तु देकर अपनेको कृतार्थ समझते हैं। पुर-नारियाँ जहाँ बैठकर हरिनाम लेती हैं, वहाँ जाकर वे सब केला-सन्देश उनको बाँट देते हैं।

अर्द्ध भुक्त वदन-सुधा-सिञ्चित केला और सन्देश प्रसादसे पुण्यवती, महासौभाग्यशालिनी पुर-स्त्रीगण-को अनुगृहीत करते हैं। कारण यह है कि वे हरिनाम लेती हैं। उनके सौभाग्यको देखकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वरके मनमें भी ईर्ष्या उत्पन्न होती है। निमाईचाँदके इस भिक्षा-लब्ध केला-सन्देशके दानमें कुछ विशेषत्व है। सबपर वे यह अयाचित कृपा नहीं करते हैं। इसका कारण कृपालु पाठकवृन्दको समझाना नहीं है। नदिया-सुन्दरी-वृन्द व्रज-गोपिका हैं। व्रज-गोपिकाओंसे बढ़कर श्रीकृष्ण भगवान्का प्रियजन और कोई न था। वे ही उनकी सर्वश्रेष्ठ कृपा-पात्री थीं।

बालक निमाईचाँदकी बुद्धि देखकर सभी हँसती हैं, तथा हाथसे ताली बजाकर सभी मिलकर हरिनाम-सङ्कीर्तन करती हैं।

नदिया-वासियोंके ऊपर बालगौराङ्गकी कृपाकी सीमा नहीं है। बाल-गौराङ्गके बाल-चरितकी कथा अति मधुमय, अति अनुपम और वेद-गोप्य है। श्रीगौर भगवान् नरशिशुके रूपमें नदियामें अवतीर्ण होकर लौकिकी-लीला आचरण करके भुवनको पवित्र कर गये हैं। उनकी लीला-कथा-मधु हृत्कर्ण-रसायन है। ये सारी अपूर्व लीला कथाएँ कलिके अधम जीवके लिए नित्य स्मरणीय हैं। इनके अनुशीलनसे हृदय पवित्र होता है, चित्तवृत्ति शुद्ध होती है।

मिट्टी-भक्षण

शची-नन्दन एक दिन न जाने क्या सोचकर दही, मिठाई, केला छोड़कर मिट्टी खाने लगे। इच्छामय स्वतन्त्र ईश्वरके मनकी बात कौन बूझेगा? शचीमाताने पुत्रको दूरसे ही मिट्टी खाते देखकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

झटपट आकर उसके हाथसे मिट्टी छीनकर वात्सल्य स्नेहसे द्रवित होकर "क्या किया बेटा ? मेरे सोनेके चाँद ! मिट्टी क्यों खायी ? मेरा कपाल फूट गया। हाय हाय !"—कहकर पुत्रको गोदमें उठा लिया।

अभिमानी बाल-गौराङ्गने रोते-रोते उत्तर दिया—"तुम मिट्टी खानेको देती हो तो मेरा क्या दोष है ?"

शचीमाता आश्चर्य-चकित हो कर बोलीं—"बेटा ! मैंने तुमको कब मिट्टी खानेके लिए कहा ? बालक निमाईचाँदने गंभीरतापूर्वक उत्तर दिया—

रवै सन्देश अन्न जत—माटिर विकार ।
एहो माटि सेहो माटि—कि भेद इहार ।।
माटि देह माटि भक्ष्य—देखह विचारि ।
अविचारे देह दोष, कि करिते पारि ? ।।

—चै० च० आ० १४.२५,२६

शचीमाता बालक पुत्रके मुखसे इस प्रकार ज्ञान योगकी बात सुनकर विस्मित होकर उसका मुँह ताकने लगी। इस अल्पावस्थामें शिशुके मुखसे इस प्रकार अपूर्व ज्ञानयोगकी गम्भीर तत्त्वकी बात उन्होंने पहले-पहल सुनी। शचीमाता नीलाम्बर चक्रवर्तीकी कन्या हैं। वे पण्डितकी पत्नी हैं। उनका शास्त्रज्ञान साधारण नहीं है। वे साधारण स्त्रियों-के समान न थीं। बालक निमाईचाँदके मुखसे तत्वकी बात सुनकर शचीमाता बड़ी विस्मित हुई और पुत्रसे कहने लगीं—

माटि खाइते ज्ञानयोग के शिखाल तोरे ।।
माटिर विकार अन्न खाइले देह पुष्ट हय ।
माटि खाइले रोग हय—देह जाय क्षय ।।
माटिर विकार घटे पानि भरि आनि ।
माटि पिण्डे धरि जबे—शोषि जाय पानि ।।

—चै० च० आ० १४.२७-२९

बाल-गौराङ्ग माताकी बात सुनकर कुछ निरुत्तर हो गये और कोई ज्ञानयोगके तत्वकी बात न उठाकर सरल ज्ञानहीन बालकके समान माताके मुखकी ओर देखकर स्नेह-पूर्वक बोले, "माँ ! पहले तुमने यह बात मुझको क्यों नहीं बतलायी ? बतलायी होती तो मैं मिट्टी नहीं खाता। अब तुमसे ज्ञात हुआ कि मिट्टी खानेसे क्या फल होता है। अब मैं मिट्टी न खाऊँगा। भूख लगनेपर तुम्हारा दूध पिऊँगा। इतना कहकर हँसते-हँसते माताकी गोदमें चढ़कर स्तन-पान करने लगे।

शचीमाता वात्सल्य रसमें द्रवित होकर पहलेकी बातें भूल गयीं। पुत्रका मुख-चुम्बन करके वस्त्रके अञ्चलसे उनके हाथ-पैर और मुँह पोंछकर घर ले गयीं। मिश्रपुरन्दर ठाकुरको सब बातें कह सुनायीं। वे इतनी छोटी उम्रमें पुत्रकी यह अद्भुत ज्ञानकी बात सुनकर चकित हुए, पर गृहिणीसे कुछ न बोले। अपने श्वशुरके सामने यह बात एक दिन उन्होंने उठायी। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती यह सुनकर हँसते हुए बोले, "तुम लोग विश्वम्भरको साधारण बालक न समझना। इसकी कुण्डली देखकर जहाँ तक मैंने समझा है, इससे ज्ञात होता है कि शची के इस बालकमें ईश्वरका अंश वर्तमान है।"

मिश्र पुरन्दर ठाकुरने कोई उत्तर न दिया। रास्तेमें सोचते-विचारते घर लौटे। वे मनमें सोचने लगे, "सब लोग मेरे विश्वम्भरके विषयमें यही एक बात बोलते हैं। श्री अद्वैताचार्य भी कहते हैं कि निमाईचाँद साधारण शिशु नहीं है। तब वह है कौन ? मैं तो इसके बारेमें कुछ भी नहीं समझ पाता। यह सब बातें समझनेकी मुझे आवश्यकता ही क्या है ? निमाई मेरा पुत्र है, यही सम्बन्ध मुझे बड़ा प्रिय है। वह चाहे जो हो, मेरा पुत्र है। मैं उसका लालन-पालन और ताड़न करूँगा।" इस प्रकार सोचते हुए मिश्रपुरन्दर घर आये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐश्वर्य-लीला

ठाकुर लोचनदासने अपने श्रीचैतन्य-मङ्गल श्रीग्रन्थमें निमाईचाँदके बाल-ऐश्वर्यकी एक कथा लिखी है। एक दिन बाल गौराङ्गने माताको घबराहटमें डाल दिया था। ऐश्वर्य दिखलाकर परम स्नेहमयी शचीमाताको बड़ा भय दिखलाया। एक दिन रातमें पुत्रको गोदमें लेकर शचीमाता घरमें सोयी थीं। केवल तन्द्राके आवेशमें थीं। घरके भीतर मिश्र पुरन्दर सोये हुए थे। शचीमाताके शयन-गृहके निकट ही एक अन्य प्रकोष्ठ शून्य पड़ा था। शचीमाताने देखा, मानो उस शून्य घरके भीतर अनेक सैनिक-सामन्त प्रविष्ट हो रहे हैं। यह देखकर उनके मनमें बड़ा भय हुआ। उन्होंने यह भी देखा कि सुन्दर आकृति वाले देवता आकर बहुत आदरपूर्वक उनकी गोदसे निमाईचाँदको उठा ले रहे हैं। वह सूना घर अब देवाकृतिके लोगोंसे भर गया है। घरके भीतर एक सुसज्जित रत्नसिंहासन स्थापित हो गया। पूजाकी विविध सामग्री लेकर देवगण चारों ओर खड़े हो गये। सोनेके निमाईचाँदको उस मणिमय रत्न-सिंहासनपर बैठाकर सब देवगण मिलकर अभिषेक कर रहे हैं। गङ्गाजल, पुष्पमाला, गन्ध-चन्दनसे निमाईचाँदके पादपद्मकी पूजा हुई। उन्होंने शङ्ख, घण्टा, करताल बजाकर शचीनन्दनकी आरती की और सबने मिलकर जय-जयकार करते हुए उनकी स्तुति की।

स्वप्न-दृष्टवत् यह सारी अपूर्व घटना देखकर शचीमाता चकित और भयभीत होकर निमाईचाँदको हृदयसे लगाकर शय्यासे उठीं और चकित-सी होकर घरमें इधर-उधर देखने लगीं। पर कुछ भी दीख न पड़ा। यह सारी अलौकिक घटना देखकर शचीमाताके मनमें विशेष आशङ्का हुई। नाना प्रकारके सन्देहसे उनका मन आन्दोलित होने लगा। निमाईचाँदको गोदमें लेकर मुख चुम्बन करके प्यारसे कहने लगीं, "बेटा निमाई! तू उस ठाकुरघरमें अपने बाबाके पास जाकर सो जा।" माताकी बात सुनकर निमाईचाँद 'बाबा, बाबा' कहकर मधुर स्वरसे पुकारते हुए ठाकुर-घरकी ओर पिताके पास जानेके लिए जैसे ही बाहर आये, वैसे ही उनके चरणोंकी मधुर नूपुर ध्वनि सुन पड़ी। देवगण आकर हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े हो गये। देवगणके साथ निमाईचाँदने श्रीराधा-कृष्णकी लीलाकी कथा कहकर सबको रुलाया और आप भी रोये।

शचीमाता पुत्रके इस अद्भुत और अलौकिक लीलारङ्गको देखकर मूर्छित होकर भूतलपर गिर पड़ीं। मिश्रपुरन्दर ठाकुरकी नींद टूटी। ये सब अलौकिक शब्द उनके कानोंमें पहुँचे। इसीसे उनकी नींद उचट गयी। "अरी! यह किसके शब्द सुनायी दे रहे हैं?"—कहकर वह गृहिणीके उद्देश्यसे बाहर आये। इधर शचीदेवीने भयभीत अन्तःकरणसे, "अजी! इधर आओ"—कहकर मिश्रपुरन्दरको उच्च स्वरसे पुकारा। दोनों त्रस्तसे होकर घरके बाहर आये और निमाईचाँदको गोदमें उठा लिया। अब उनकी जानमें जान आयी। निमाईचाँदका हास्य-वदन, प्रफुल्ल भाव देखकर माता-पिताका सब भय दूर हो गया। मिश्र-दम्पति तब पुत्रको गोदमें लेकर घरके भीतर बैठकर इस अद्भुत घटनाके विषयमें आलोचना करने लगे। शचीमाताने जो-जो देखा था, सब पतिके सामने दिल खोलकर कह दिया। मिश्रपुरन्दने भी जो-जो देखा या सुना था, जिस मधुर शब्दके श्रवणसे उनकी निद्रा भङ्ग हुई थी, वह सब गृहिणीके सामने वर्णन कर दिया। विघ्न और विपत्तिके नाशके लिए शचीमाताने पतिसे नारायणकी पूजा और सदनुष्ठान करनेके लिए विशेष अनुरोध किया।

शचीमाताने कहा, "ठाकुर! मेरे मनमें बड़ा भय हो गया है। यह सब क्या देखती हूँ! क्या निमाई हमारा बच्चा नहीं है?" मिश्रपुरन्दर ठाकुरने कहा, "गृहिणी! तुम्हारा यह पुत्र साधारण बालक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं है। मेरे मनमें होता है कि किसी महापुरुषने आकर हमारे घरमें जन्म ग्रहण किया है।"

मिश्र-दम्पति समझकर भी नहीं समझते हैं कि उनका पुत्र भुवन-पावन सनातन पूर्णब्रह्म है। श्रीभगवान्‌की मायासे अभिभूत होकर वे उनको पहचान नहीं पा रहे हैं। प्रच्छन्न अवतार श्रीगौराङ्ग-सुन्दरका यही लीला-रहस्य है।

तैर्थिक-विप्रके साथ लीला

शचीनन्दन अब नदियाके मार्गपर बाहर निकलना सीख रहे हैं। अब वे आङ्गनमें बद्ध रहनेके लिए तैयार नहीं हैं। साक्षात् और असाक्षात् रूपमें वे भागकर घरसे बाहर निकल जाते हैं। माता-पिता दृष्टि पड़ते ही उनको पकड़कर घरके बाहरी द्वारकी अर्गला बन्द कर देते हैं।

धृष्ट निमाईचाँद तृतीय वर्ष व्यतीत करके चतुर्थ वर्षमें पदार्पण कर चुके हैं। वे बड़े ही धृष्ट हैं। अब उनको कोई पकड़कर नहीं रख सकता। गृहद्वारकी अर्गला खोल लेना वे जान गये हैं। लाठी लेकर सबको मारना सीख लिया है। शची-बालकके हाथमें एक लाठी दिन-रात दीख पड़ती है। रास्तेमें किसीको देखते तो लाठीसे स्पर्श करके उसका आदर-सत्कार करते थे, परन्तु उनको देखकर कोई उन्हें कुछ नहीं कहता था। उनके अपरूप बालरूपसे मुग्ध होकर सभी उनको गोदमें उठाकर मुँह चूम लेते थे। शचीबालकके सुकोमल कर-कमलकी लाठीके स्पर्शका आनन्द उठाकर नदियाके बहुत लोग धन्य हो गये थे।

प्रभुकी बाल्य-लीला एक समुद्र विशेष है। उसमें बहुत-से रत्न हैं। उनकी बाल्य-लीलाके समुद्रमें अतिथि तैर्थिक विप्रका अन्न-भोजन-लीला-रत्न एक अमूल्य धन है। श्रीगौराङ्ग प्रभुने त्रिजगत्‌के इस ऐश्वर्य और माधुर्यको एकत्रित करके यह लीला-वैभव नदियामें प्रकट किया था। नदियावासी बड़े भाग्यवान् हैं. इसी कारण वे इस अपूर्व लीला-वैभवका दर्शन करके धन्य हो गये।

षडक्षर बालगोपाल मन्त्रके उपासक एक तैर्थिक ब्राह्मणने नाना तीर्थ भ्रमण करके नवद्वीपमें श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरके घर आकर एक दिन आतिथ्य स्वीकार किया। विप्रके कण्ठमें शालग्राम शिला थी, सर्वाङ्ग ब्रह्मतेजोमय था, मुखमें अविरत हरिनाम, कृष्ण-प्रेममें सारा अङ्ग पुलकायमान था, कृष्ण प्रेमरसमें नयनद्वय डूबे रहते थे।

मिश्रपुरन्दर ठाकुरने इस ब्रह्मतेजपूर्ण अतिथि विप्रको देखकर सत्कार पूर्वक उठकर नमस्कार किया, और विधिपूर्वक स्वागत करके बैठनेके लिए आसन दिया। अपने हाथसे विप्रके पैर धो दिये। अतिथि विप्र स्वस्थ होकर मिश्रभवनके बाहरी बैठकमें विश्राम करने लगे। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने हाथ जोड़कर उनसे प्रश्न किया, "ठाकुर! आपका आश्रम कहाँ है?" अतिथि विप्रने हँसकर उत्तर दिया—"मैं तैर्थिक उदासीन हूँ। मेरा आश्रम कैसा? चित्त-विक्षेपके कारण यत्र-तत्र भ्रमण करता हूँ।

मिश्रठाकुरने समझा कि विप्र कृष्णप्रेममें उन्मत्त होकर अपने अभीष्ट-देवके उद्‌देश्यसे नाना स्थानमें पर्यटन करते हैं। उन्होंने अतिथिको सम्बोधन करके अति विनम्र वचनोंसे कहा, "ठाकुर! आज हमारा बड़ा शुभ दिन है। आपके चरण-रजसे मेरी कुटी पवित्र हो गयी। आज्ञा दीजिये, सेवाके लिए उद्योग करके कृतार्थ होऊँ।" विप्र बोले—'तुम्हारी जो इच्छा हो करो।"

मिश्रपुरन्दर घरके भीतर जाकर गृहिणीसे अतिथि विप्रके लिए रसोई बनानेका सब प्रबन्ध करनेके लिए कहा। अतिथि-सेवा-परायण शचीमाताने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परम आनन्द पूर्वक पाकशालाको परिष्कृत करके रसोईके लिए सारा प्रबन्ध कर दिया।

विप्रने मिश्र-गृहमें बैठकर भोजन तैयार करके यथा समय अपने अभीष्ट देव बालगोपालको भोग लगाया। ठाकुरको भोग लगाते समय जैसे ही विप्र ध्यानमें बैठे, वैसे ही कहींसे सर्वाङ्ग धूलि-धूसरित दिगम्बर मूर्त्ति बाल-गौराङ्ग उस स्थानमें आकर दोनों हाथसे ठाकुरके भोगका अग्रभाग भोजन करने लगे। मोहवश वे विप्र बालब्रह्म रूपी शचीबालकको पहचान न सके। वे आँखें खुलनेपर जगन्नाथ-नन्दनको गोपालका भोगाग्रभाग खाते देखकर हाय-हाय करने लगे। चिल्लाकर मिश्रपुरन्दरको बुलाया और उनको पुत्रका करतब दिखलाया। मिश्रपुरन्दरने आकर देखा कि गौरसुन्दर भोग खाकर हँस रहे हैं।

धृष्ट पुत्रकी धृष्टता देखकर मिश्रपुरन्दर ठाकुरके मनमें अतिशय क्रोधका उद्रेक हुआ। वे निमाई-चाँदको पकड़कर मारनेके लिए तैयार होगये। अतिथि विप्रने आदर पूर्वक उठकर उनका हाथ पकड़ कर कहा—"मिश्रजी! आप तो समझदार हैं, बालक तो अज्ञान होता है, उसको मारनेसे क्या लाभ है? जिसको अच्छे-बुरेका ज्ञान हो उसको भलेही मारा जाय। आप इस बालकपर हाथ उठायेंगे तो आपको मेरी सौगन्ध है।" मिश्रपुरन्दर ठाकुर मनमें दुःखित होकर सिरपर हाथ देकर वहाँ बैठ गये। उनके मुँहसे कोई बात न निकली।

अतिथि विप्रके ठाकुरके भोगका अन्न धृष्ट निमाईचाँदने उच्छिष्ट कर दिया है। घरमें अतिथि सेवामें विघ्न पड़ गया। इससे मिश्रपुरन्दर ठाकुरके मनमें बड़ा दुःख हुआ है। उनके दुःख-व्यञ्जक म्लान-मुखका भाव देखकर विप्र पुनः उनसे बोले, "मिश्र! तुम दुःख न करो। जब जो होता है, वह श्रीभगवान्‌की इच्छासे होता है। आज मेरे भाग्यमें अन्न नहीं बदा है। तुम्हारे घरमें यदि फल-मूल कुछ हो तो ले आओ।"

मिश्रपुरन्दर हाथ जोड़कर अति विनीत भावसे बोले, "ठाकुर, यदि भृत्य समझकर इस दासकी कुटीमें पदार्पण किया हैं तो कृपा करके कष्ट उठाकर फिर एक बार पाकका प्रबन्ध करनेकी आज्ञा दीजिये। घरमें भोजन बनानेकी सारी सामग्री है। कृपा करके आप एक बार फिर भोजन बनाकर मेरे मनके दुःखको दूर कीजिये।" दूसरे आत्मीय स्वजनोंने भी विप्रसे विशेष अनुरोध किया। अतिथि विप्र करते क्या, पुनः भोजन बनाना उन्होंने अङ्गीकार किया।

शचीदेवीने तब रसोई बनानेका स्थान परिष्कृत करके तत्काल पुनः रसोई बनानेका प्रबन्ध कर दिया। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने इस बार गृहिणीसे कह दिया कि "धृष्ट निमाईको तुम अपनी बहिनके घर भेज दो, जिससे वह पुनः कोई उपद्रव न करे।" शचीमाता पुत्रकी दुष्टतासे विशेष संक्षुब्ध थीं, अब पतिकी सावधान रहनेकी बात सुनकर निमाईचाँदको गोदमें लेकर घरसे चली गयीं। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने स्वयं इस बार अतिथि सेवाका भार उठाया।

शचीमाताके बहनोई श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यका घर मिश्र-गृहके समीप ही था। धृष्ट निमाईचाँदको गोदमें लेकर शचीमाता अपनी बहिनके घर जाकर बैठ गयीं। पड़ोसकी कई पुरनारियाँ भी वहाँ जाकर बैठ गयीं। धात्रीमाता नारायणी वहाँ हैं। सर्वजया देवीने निमाईचाँदको देखकर झटपट आकर उनको गोदमें ले लिया। सबने धृष्ट बालककी आजकी करतूत सुन ली। सब मिलकर शची-बालकको घेर कर बैठी हुई नाना प्रकारकी बातें पूछने लगीं। उनकी धात्रीमाता आदि पुरनारीगणने एक साथ उनसे पूछा, "बेटा निमाई! तुमने अतिथि ठाकुरका भोग क्यों खाया? तुम्हारी जात चली गयी।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शचीबालक हास्यमुख हैं, वे सदा आनन्दमय हैं। दुष्टता करके भी लापरवाह दीखते हैं। लज्जाका लेश भी नहीं है। मानो कुछ जानते ही नहीं। माताकी गोदमें बैठकर अपने मनमें डोल रहे हैं और हँस रहे हैं। बीच-बीचमें 'हरि बोल, हरि बोल' कहकर नन्हें-नन्हें दो सुन्दर सुकोमल हाथोंसे ताली देते हैं। सुधामय मुखचन्द्रके द्वारा सुधाधारा स्रवित होकर उनके प्रशस्त वक्षःस्थलको आर्द्र कर रही है। उपस्थित पुरनारीवृन्द बालगौराङ्गकी रूप सुधा पान कर रही हैं।

पहले निमाईचाँदने उनकी बातका कोई उत्तर नहीं दिया। पुनः जब उन्होंने उनको उत्तर देनेके लिए परेशान किया तो शचीनन्दन हँसते-हँसते अस्फुट मधुर शब्दोंसे बोले, "बाम्हनने मुझको खानेके लिए बुलाया क्यों ?" बुलाने पर मैं रुक सकता हूँ ?"

निमाईचाँदकी बातका मर्म किसीने भलीभाँति समझा नहीं। मायामय बालगौराङ्गने अपनी मायासे उनको मुग्ध कर रक्खा है। उनकी बातके गम्भीर मर्मको भला वे क्या समझतीं ?

शचीमाताकी बहिन सर्वजयादेवीने निमाईचाँदको गोदमें लेकर प्यार करते हुए पूछा ! "अरे डकैत, अरे चोर ! तुमने चोरी करके दूसरेका अन्न खाना सीखा है ? और तेरे पेटमें इतनी बुद्धि है ? कहाँका बाम्हन, कैसी जात—कौन उसको पहचानता है ? तूने उसका अन्न खा लिया। तुम्हारी जात चली गयी है। अब तुम्हारी माँ तुमको घरमें नहीं रक्खेगी।"

बालगौरने सुचारु चन्द्रवदनसे एक बार मधुर हास्यके साथ उत्तर दिया, "मैं ग्वाला जो हूँ। बाम्हनका भात खानेसे क्या ग्वालेकी जात जाती है ? बाम्हनका भात तो मैं सदा ही खाता हूँ।"

इतना कहकर शचीबालकने ठहाका मारकर सबकी ओर एक बार शुभ दृष्टिपात किया। उन्होंने वाक्छलसे निज तत्वको प्रकट कर दिया, इसको वे कोई समझ न सकीं। कैसे समझतीं ? वे श्रीगौर-भगवान्‌के माया-जालमें बँधी हैं। श्रीगौर-भगवान्‌ने अपनी मायाके आवरणसे उनकी ज्ञान-बुद्धि, विवेक-बुद्धि सब आच्छादित कर रक्खी है। उनकी सुधा-मधुर बालभाषासे, उनकी प्रेम परिपूर्ण विलोल दृष्टिसे, उनकी अपरूप अङ्ग-भङ्गिमासे, सर्वोपरि उनकी भुवन-मोहन मधुर हँसीसे शचीमाता और उपस्थित पुरनारीवृन्द मन्त्रमुग्ध फणिनीके समान निस्पन्द होकर उनके मुखचन्द्रकी ओर अनिमेष नेत्रोंसे देख रही हैं। वे एक बार एककी गोदमें और दूसरी बार अन्यकी गोदमें कूदते हुए सबको अपार आनन्द-सागरमें निमग्न कर रहे हैं। उनकी भुवन-मोहिनी सुधामयी हँसीसे सब मुग्ध हो गयी हैं।

प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर वे अपने आपको भूल गयीं। उनका बाह्यज्ञान लुप्त हो गया। इस प्रकार भुवन-विमोहन रूपके फन्देमें डालकर बालगौराङ्ग उनको भुलावेमें डालकर घर जानेकी तैयारी करने लगे।

इधर मिश्रभवनमें अतिथि विप्र पुनः पाक करके बालगोपालको भोग लगाकर ध्यानमें बैठे हैं। ध्यानमें यशोदा-नन्दनका वह अपरूप बालब्रह्मरूप मानो विप्र सामने देख रहे हैं। केवल वर्णका अन्तर है। श्याम-सुन्दरके स्थानमें वह गौरसुन्दरको देख रहे हैं। इधर भक्तवत्सल शचीनन्दन अपनी मौसीके घरमें स्थिर रह न सके। भक्तके हृदयकी पुकारपर कभी भक्तवत्सल श्रीभगवान् स्थिर नहीं रह सकते। उनकी मोहिनी मायामें त्रिलोकी मुग्ध है। फिर इन कतिपय अबला रमणीवृन्दको मुग्ध करनेमें उनको कितनी देर लगती ? शचीबालक सबको अपनी वैष्णवी मायामें मुग्ध करके चुपचाप हँसते-हँसते अपने घर अतिथि-विप्रके भोजनके स्थानमें उपस्थित हो गये। यह कोई जान न सका। किधरसे, किस दिशासे कब धृष्ट निमाईचाँद भोजनके स्थानमें पहुँचे, किसीको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पता न लगा । शचीमाताको ज्ञान नहीं है । सब मिलकर आचार्यरत्नके घर बैठकर विह्वल चित्तसे निमाईचाँदके रूपकी चर्चा कर रही हैं । किसीके भी ध्यानमें नहीं है कि निमाईचाँद कहाँ गया ? इसको ही कहते हैं श्रीभगवान्‌का मायाजाल !

मिश्रपुरन्दर ठाकुर-मन्दिरमें थे । निमाईचाँदके घरमें आनेकी कोई सूचना उनको न थी । वे भी प्रभुकी वैष्णवी मायासे अभिभूत थे । पाकशालामें अतिथि-विप्र ध्यानस्थ हैं । सामने बाल-गोपालका भोग सजा है । निमाईचाँद दौड़कर गये और उस भोग-पात्रसे एक मुट्ठी अन्न लेकर मुँहमें डालकर हँसने लगे । उसी समय विप्रका ध्यान टूट गया । उन्होंने देखा कि फिर वही पूर्व परिचित धृष्ट मिश्र-नन्दन उनके ठाकुरके भोगको उच्छिष्ट कर रहा है । ब्राह्मण हाय-हाय करने लगा ।

धृष्ट बाल-गौर अन्न मुँहमें डालकर वहाँसे भाग चले । उनके मस्तकका भ्रमर-सा काला कुञ्चित, घना केशपाश कपोलोंपर पड़कर मुखचन्द्रकी अपरूप शोभा बढ़ा रहा है । पीठपर लटकता हुआ व्याघ्र-नखका लाल सूतका गुच्छ झूल रहा है । चरणद्वयमें मोगराके कङ्कन और नूपुरकी ध्वनि सुन पड़ती है । धृष्ट शचीबालक झूमता हुआ आँगनमें भाग रहा है । वह खूब समझ रहा है कि उसने दुष्टता की है, कहीं पीछे पिताके द्वारा पकड़े जानेपर मार न खानी पड़े, इस डरसे वह भागा जा रहा है ।

मिश्रपुरन्दर ठाकुरने अतिथि विप्रका चिल्लाना सुनकर रसोई घरमें जाकर जो देखा, उससे क्रोध और क्षोभसे उनका सारा शरीर थर-थर काँपने लगा । आँखें लाल करके निमाईचाँदको झटपट इधर-उधर खोजने लगे । लाठी हाथमें लेकर दौड़कर पुत्रको मारनेके लिए तैयार हो गये । निमाईचाँद भयसे घरके भीतर जाकर छिप रहे । मिश्रपुरन्दर ठाकुर क्रोधसे गरजते-तरजते कहने लगे, "आ, आज तेरेको एक लाठी मारूँगा । तेरे जैसा अबूझ महा-चोर लड़का और किसीके घर नहीं है । तुमने ठाकुरका भोग दो बार नष्ट कर दिया । तेरे कारण मेरे घरमें आज अतिथि उपवास करेगा ।" इतना कहकर क्रोधान्ध मिश्र ठाकुरने धृष्ट पुत्रको उपयुक्त दण्ड देनेके लिए घरमें प्रवेश किया ।

इधर शचीमाता निमाईचाँदको न देखकर झटपट अपने घर आयीं । उनके साथ उनकी बहिन सर्वजया देवी भी आयीं । धात्रीमाता नारायणी भी आयीं । मिश्रपुरन्दरको लाल-लाल आँखें और क्रोधान्ध मूर्त्ति देखकर उन्होंने समझ लिया कि पुनः अनर्थ हो गया है, वे जो सोच रही थीं, वही हो गया । धृष्ट निमाई-चाँदने फिर अतिथि विप्रका भोग नष्ट कर दिया है । सबने मिलकर क्रोधान्ध मिश्रठाकुरको पकड़ लिया । मिश्रपुरन्दर दुःख और क्षोभसे बोले, "तुम लोग छोड़ दो, आज मैं उसको विशेष दण्ड दूँगा । तुम लोगोंके ऊपर इस शिशुकी रक्षाका भार सौंपकर मैंने बड़ी गलती की है ।" शचीमाता क्षोभ और लज्जाके वश कुछ बोल न सकीं । उनकी बुद्धि जाती रही । दूसरी पुरनारियोंने मिश्रपुरन्दर ठाकुरको नाना प्रकारसे समझाया ।

शचीमाताकी बहिन सर्वजया देवीने हँसकर कहा, "मिश्रठाकुर, तुम्हारे समान अबोध आदमी मैंने नहीं देखा । तुम पण्डित होकर इस अबोध शिशुको मारनेके लिए तैयार हो गये हो ? क्या यह नन्हा दुधमुँहा मारनेसे ही नीति सीखेगा ?" अपनी पत्नीकी बहिनके मुखसे तीव्र श्लेषात्मक बात सुनकर मिश्र-पुरन्दर शान्त तो हुए, परन्तु मनके दुख और क्षोभसे वह जमीन पर बैठ गये ।

उस समय वह तैथिक विप्र रसोईघरसे निकल कर आये, और मिश्रपुरन्दरका दोनों हाथ पकड़कर मधुर विनीत वचन बोले, "बालकका कोई दोष नहीं है । जैसा होना होता है वैसा होता है । आज भगवान्‌ने मेरे भाग्यमें अन्न नहीं लिखा है ।"

मिश्रपुरन्दर फिर मुँह उठाकर कुछ बोल न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सके। मनमें दुःखित होकर सिर नीचा करके आङ्गनमें बैठकर चिंतामें पड़ गये।

शचीमाता निमाईचाँदको गोदमें लेकर घरमें बैठी हैं। सब लोग उदास हैं। अब क्या करना चाहिये, इसी चिन्तामें सब लीन हैं। इसी समय प्रभुके ज्येष्ठ भ्राता श्रीमद् विश्वरूप प्रभु अद्वैत सभासे घर आये। वे इस समय किशोरावस्थाके बाल-ब्रह्मचारी हैं। उनका उपनयन हो गया है। ब्रह्मतेजसे उनका सर्वाङ्ग ज्योतिर्मय हो रहा है। इस अल्प वयसमें ही वे सर्व शास्त्रोंमें निष्णात हो गये हैं। उनकी प्रशान्त सुन्दर मूर्ति है, और सदा आनन्द भावपूर्ण सुन्दर मुख-मण्डल है। श्रीकृष्ण-कथा-रसमें वे सदा निमग्न रहते हैं। कृपालु पाठकवृन्द कई दिनोंसे भगवान् श्रीश्रीमद् विश्वरूप प्रभुका दर्शन नहीं कर पाये हैं। प्राणपनसे इस सुन्दर ज्योतिर्मय सदानन्द, पवित्र बालब्रह्मचारी मूर्तिको एक बार मनश्चक्षुसे दर्शन करके जन्मको सार्थक करें, त्रितापदग्ध प्राणको शीतल करें।

श्रीश्रीमद् विश्वरूप प्रभु अद्वैत सभासे डेढ़ पहर रात बीतनेपर घर आते हैं। उनको घरका समाचार कुछ भी ज्ञात नहीं। उनको यह सब वृत्तान्त मालूम नहीं। घर आकर उन्होंने जो देखा और सुना, उससे उनको समझमें आया कि उनके छोटे भाईका कुछ दोष नहीं है। वे सर्वज्ञ हैं, उनको कुछ भी अज्ञात नहीं है। क्षण मात्रमें ही सारी बातें उनकी समझमें आ गयीं।

अतिथि विप्र भगवान् विश्वरूपकी अपूर्व तेजपूर्ण परम ज्योतिर्मय मधुर मूर्तिकी ओर एकटकसे देर तक देखते रह गये। बाल ब्रह्मचारी विश्वरूपके अपरूप रूपसे मुग्ध होकर विप्रने पूछा, "ये किसके पुत्र हैं?" सभी बोल उठे, "ये मिश्रपुरन्दर ठाकुरके ज्येष्ठ पुत्र हैं।" परिचय पाकर अतिथि विप्रने विश्वम्भर प्रभुको प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन देकर कहा, "धन्य हैं वे माता-पिता, जिनके ऐसे कुमार हैं।"

विश्वरूप प्रभु अत्यन्त सत्कार पूर्वक तथा स्वाभाविक नम्रतासे अतिथि विप्रको प्रणाम करके उनके साथ वार्तालापमें जुट गये। उनकी सुधामधुर बातें विप्रके कानोंमें मानो अमृत वर्षा करने लगीं। विश्वरूपने अतिथिसे कहा, "आज हमारे लिए बड़ा शुभ दिन है। आपके जैसे अतिथिका दर्शन पाकर हम कृतार्थ हो गये हैं। आपके चरण-रजके स्पर्शसे हमारी कुटी पवित्र हो गयी है। हमारा अत्यन्त दुर्भाग्य है जो आज उपवासी हैं। जिसके घर अतिथि उपवासी रहता है, उसका कदापि कल्याण नहीं होता। आपके दर्शनसे मुझे बड़ा आनन्द हुआ, परन्तु यह सब बातें सुनकर बड़ा दुःख हुआ है।"

अतिथि विप्र भगवान् विश्वरूपके दैन्य और विनयपूर्ण मधुर वचनको सुनकर आनन्दित होकर बोले, "वत्स! तुम मनमें कुछ भी दुःख न मानो। मैं वनवासी हूँ। फलमूल ही मेरा आहार है। कदाचित् ही किसी दिन भाग्यसे अन्न प्राप्त होता है। इससे मुझको कुछ भी कष्ट नहीं होता। तुम्हें देखकर मुझे जो सुख मिला, उससे ही मुझे कोटि बार भोजनकी तृप्ति हो गयी। फलमूल नैवेद्य जो कुछ तुम्हारे घरमें हो, लाकर दो, मैं परम सन्तोष पूर्वक आहार करूँगा।"

मिश्रपुरन्दर पास ही बैठे सब सुन रहे थे। वे सिरपर हाथ देकर जड़वत् बैठे हैं। उन्होंने अतिथि विप्रकी बातका कोई उत्तर नहीं दिया। परन्तु विश्वरूप प्रभु अतिथिको छोड़ने वाले पात्र न थे। माता-पिता और आत्मीय स्वजनके दुःखसे उनके कोमल हृदयमें भारी चोट लगी है। उनके मनमें बड़ा ही दुःख हुआ है। डरते-डरते अत्यन्त विनीत भावसे उन्होंने अतिथि विप्रको पुनः हाथ जोड़कर निवेदन किया। "ठाकुर! आप साधु पुरुष हैं। सहज करुणामय हैं! आपसे अधिक कुछ कहनेका साहस नहीं होता। साधु लोग पर-दुःख-कातर होते हैं। वे लोग अपने कष्टको तुच्छ समझकर दूसरोंके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आनन्द को बढ़ाते हैं। आप यदि कृपा करके आलस्य छोड़कर और एक बार भोजन बनाकर श्रीश्रीकृष्णको भोग लगावें तो हमारी गोष्ठीके सारे लोगोंके मनसे दुःख दूर हो जाय, और हमको आनन्द प्राप्त हो।"

भगवान् विश्वरूप जितना ही अतिथि विप्रको कातरभावसे पुनः भोजन बनानेका अनुरोध करते हैं, उतना ही श्रमक्लान्त और क्षुब्ध विप्र नाना प्रकारके बहाने करने लगते हैं। इधर रात डेढ़ पहर बीत चली है। इतनी रातको पुनः भोजन बनाकर ठाकुरको भोग लगाना संभव नहीं। ये सारी बातें अतिथि विप्रने प्रभुके ज्येष्ठ भ्राताको समझाकर बड़े दुःखसे कहा, "वत्स ! मैंने दो-दो बार भोजन बनाया, तथापि श्रीकृष्णने आज प्रसाद नहीं दिया। कृष्णकी इच्छा है। तुम लोग यत्न करके क्या करोगे ? घरमें प्रचुर भोजन-सामग्री होनेपर भी कृष्णकी आज्ञाके बिना कोई भोजन करनेमें समर्थ नहीं हो सकता। रात प्रायः डेढ़ पहर बीत रही है अब क्या फिर भोजन बनाकर भोग लगाना हो सकता है ? वत्स ! तुम अब यत्न और अनुरोध न करो। घरमें जो कुछ हो, लाकर दो। मैं कृष्णको भोग लगाकर प्रसाद पा लूँगा !"

भगवान् विश्वरूप अतिथि विप्रकी पुनः भोजन बनानेकी अनिच्छा देखकर बहुत ही चिंतित हुए। अन्य अनुरोध-उपरोध कुछ सफल न होते देखकर वे अतिथि विप्रके चरण पकड़कर रोते-रोते बाल-मधुर भावसे कहने लगे, "ठाकुर ! आपके भोजन बनानेसे हम सबके दुःख दूर हो जायेंगे। अतएव आपको भोजन नाना ही पड़ेगा, नहीं तो मैं आपके चरण न छोड़ूँगा।" विप्रवर और कुछ बोल न सके। स्नेह पूर्वक उन्होंने विश्वरूप प्रभुको हाथ पकड़कर उठाया और प्रेमालिङ्गन देकर मुख चूम लिया। उनको शत सहस्र शुभाशीर्वाद देते हुए गद्गद स्वरसे कहा, "वत्स ! धैर्य धारण करो। तुम्हारे दुःखको देखकर मेरे प्राण विदीर्ण हो रहे हैं। तुम लोगोंकी मनस्तुष्टिके लिए मैं पुनः भोजन बनाऊँगा। अपनी माताको शीघ्र प्रबन्ध करनेके लिए कहो।

भगवान् विश्वरूपने दौड़कर माताके पास जाकर यह शुभ समाचार दिया। मिश्रपुरन्दर ठाकुरका विषण्ण मुख प्रसन्न हो गया। पुरनारीवृन्द आनन्दसे हरि ध्वनि करने लगीं। शचीमाताने निमाईचाँदको बहिनकी गोदमें देकर झटपट रसोईघर साफ-सुथरा करके पुनः रसोईका प्रबन्ध कर दिया। अतिथि विप्र पुनः रसोई घरमें गये।

कृपालु पाठकवृन्द ! बहुत देरसे निमाईचाँदको आपने नहीं देखा। पिताकी डाँट-डपटसे अत्यन्त भयभीत होकर वे माताकी गोदमें घरमें छिपे रहे। एकाध बार गोदसे उतरकर घरके द्वारपर खड़े होकर भयसे चकित नेत्रोंके द्वारा आङ्गनमें बैठे क्रुद्ध और क्षुब्ध पिताकी ओर देख लेते हैं। क्षुब्ध पिताके दुःखपूर्ण रोष-कषायित नयन निमाईचाँदके भयभीत-दृष्टि-पथमें पड़ते ही वे अपराधीके समान सुन्दर मुखचन्द्रको लज्जासे झुकाकर माताकी गोदमें छिप जाते थे। घरके भीतरसे बाहर निकलकर आङ्गनमें आनेका उनको साहस नहीं होता था।

शचीमाता जब उनको बहिनके पास रखकर रसोईघरकी सफाईमें लग गयीं, तब मिश्रपुरन्दर ठाकुर आङ्गनसे उठकर क्रोधमें भरे स्वयं गृहद्वारको रोककर बैठ गये। इस बार वे स्वयं निमाईचाँदके रक्षक बने। पुरनारीगण निमाईचाँदको घेरकर बैठ गयीं। शचीमाताने पुनः रसोईका सारा प्रबन्ध कर दिया, और घरमें आकर निमाईचाँदको गोदमें लेकर बैठ गयीं।

धृष्ट निमाईचाँद बहुत देरके बाद माँको देखकर अभिमानमें भरकर रो पड़े। शचीमाताने पतिसे कहा, "तुम अतिथिके पास जाओ। तुम्हारे क्रुद्ध भावको देखकर मेरा लाल भयभीत हो रहा है। अब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैं घरका द्वार बन्द करके निमाईचाँदको सुलाती हूँ।" मिश्रपुरन्दर ठाकुरने गृहिणीकी बातपर कान नहीं दिया, बल्कि क्रुद्ध होकर बोले, "तुम लोगोंकी बातपर अब विश्वास नहीं है। मैं स्वयं द्वारकी रक्षा करूँगा।" शचीमाता और कुछ न बोल सकीं।

निमाईचाँद माताकी गोदमें भयसे काँप रहे हैं। माताके वक्षःस्थलमें मुखचन्द्रको छिपाकर स्तनपान करने लगे। पुत्रको भयभीत देखकर शचीमाताका कोमल हृदय उन्मथित हो गया। उनके नयनद्वयसे झरझर प्रेमाश्रु बहने लगे। माताकी आँखोंके आँसू बहकर स्तनदुग्धमें मिलकर जब नमकीन लगने लगे तो निमाईचाँद माताका स्तन छोड़कर अपने मुक्ताफल सदृश दाँतोंको दिखलाकर हँसने लगे। पुत्रके मुँहपर हँसी देखकर शचीमाताके सब दुःख दूर हो गये। उन्होंने पुत्रको गोदमें उठाकर सौ बार मुख-चुम्बन किया। अब सब मिलकर उन्हें सुलाने-की चेष्टा करने लगीं।

मिश्रपुरन्दर ठाकुर द्वारपर बैठकर द्वार रक्षा कर रहे हैं। विश्वरूप प्रभु अतिथि-विप्रके पास बैठकर कृष्णकथा कह रहे हैं। जिस घरमें निमाईचाँद हैं, उस घरमें अन्यान्य पुरनारियाँ भी हैं। खुले द्वारपर जब मिश्रपुरन्दर स्वयं बैठे हैं तो उसको बन्द करनेकी आवश्यकता किसीके ध्यानमें क्यों आती? घरके भीतर सर्वजया देवीने मिश्रठाकुरको पुकारकर कहा, "ठाकुर, गृहका द्वार बन्द कर दो। निमाईके लिए असाध्य कार्य कुछ नहीं है।" मिश्रपुरन्दरको होश हुआ। वह द्वार बन्द करके बैठ गये।

कुछ देरके बाद शचीमाताने स्वामीको उद्देश्य करके कहा, "निमाईचाँद सो गया है, अब कोई चिंता नहीं। मिश्रपुरन्दर ठाकुर यह सुनकर निश्चिन्त तो हुए, परन्तु द्वार-रक्षाका कार्य न छोड़ सके।

इस प्रकार धृष्ट शचीबालकको घरमें बन्द करके सब मिलकर पहरा देने लगे। सभी सतर्क थे। इधर अतिथि विप्रका तीसरी बार भोजन तैयार हुआ। वह अपने बाल-गोपाल अभीष्ट देवको पुनः भोग लगाकर ध्यान करने बैठे। भक्तवत्सल शचीनन्दन घरमें स्थिर न रह सके। भक्तकी भक्तिपूर्ण पुकार उनके कानोंमें पहुँची। वे अन्तर्यामी हैं, सब कुछ जानते हैं। वे स्वतन्त्र ईश्वर हैं, इच्छामय भगवान् हैं।

श्रीगौर भगवान्की मोहिनी मायासे सभी योग-निद्राके अभिभूत हो गये। इतना सतर्क रहनेपर भी योगमायाके हाथसे उनमें-से किसीको परित्राण प्राप्त न हुआ। मिश्रपुरन्दर ठाकुर घरके द्वारपर शयन करके प्रगाढ़ निद्राके अभिभूत हो गये। समय देख-कर निमाईचाँद माँकी गोदसे धीरे-धीरे उठे, अपने हाथों द्वार खोल लिया। निद्रित, क्रुद्ध और क्षुब्ध पिताके ऊपर शुभ दृष्टिपात किया, झटपट अतिथि विप्रके रसोई-स्थलमें जा उपस्थित हुए। उनके अभीष्ट देवका भोग उठाकर दोनों हाथोंसे भोजन कर लिया।

विप्रका ध्यान भङ्ग हुआ और वे पुनः मिश्र-नन्दनको ठाकुरका भोग उच्छिष्ट करते देख-कर पूर्ववत् हाय-हाय करके चिल्ला उठे। सभी योगनिद्राके अभिभूत थे। विप्रका चिल्लाना कोई सुन न सका। इस बार बाल-ब्रह्म-गोपाल रूपी शचीनन्दन भाग्यवान् अतिथि विप्रको सम्बोधन करके सुधामय वचन बोले, "विप्र महाराज! तुम बड़े उदार हो, मेरा मन्त्र जपकर तुम ही मेरा आवाहन करते हो, जिसके कारण तुम्हारे पास आये बिना मैं रह नहीं सकता। इसमें मेरा क्या दोष है? तुम सर्वदा मेरा ध्यान करते रहते हो, अतएव तुमको दर्शन दे रहा हूँ।"

मिश्र-नन्दनके कोटिचन्द्र विनिन्दित सुन्दर मुखकी ओर अनिमेष नयनोंसे देखकर विप्र जड़वत् स्पन्दन-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रिहत होकर उनकी अमृतमयी बालवाणीको सुन रहे हैं। इसी समय उनके सम्मुख एक परम अद्भुत अपरूप अष्टभुज दिव्यमूर्त्तिका आविर्भाव हो गया। उस अपूर्व दिव्य मूर्त्तिकी ज्योति छटासे विप्रके नयन-द्वय मानो झपक-से गये। शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी दिव्य मूर्त्तिके एक हाथमें नवनीत है, दूसरे हाथके द्वारा उसको खा रहे हैं। अन्य दो हाथोंसे मधुर मुरलीवादन कर रहे हैं। सुन्दर विशाल वक्षःस्थल-पर श्रीवत्स-चिन्ह और कौस्तुभ मणिका हार सुशोभित हो रहा है। सारे अङ्ग मणि-मुक्तासे विभूषित है। नवगुञ्जा-मालासे आवेष्टित शिखिपुच्छ सिरपर सुशोभित हो रहा है। कोटिचन्द्र विनिन्दित सुन्दर वदन है। तरुण अरुणवर्ण अधरोष्ठ हैं। उसपर क्या ही सुधामयी मुस्कान है! मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं, और पद्मपलाश-विनिन्दित सुन्दर नयनद्वयको झपक रहे हैं। गलेमें वैजयन्तीकी माला झूल रही है, कानोंमें मकरकुण्डल डोल रहे हैं। चरणारविन्दमें मणिरत्नमय नूपुर शोभा पा रहे हैं। कोटि-कोटि चन्द्र मानो उनके पदनखपर गिरकर लोट रहे हैं। कोटि-चन्द्रके आलोकसे घरका अन्धकार दूर हो रहा है। एक अपूर्व कदम्ब वृक्षके मूलमें वे त्रिभङ्गी रूपमें खड़े हैं। विहङ्गम वृन्दका मधुर कलनाद सुनायी पड़ रहा है। वृन्दारण्यके समान चारों ओरसे गोप-गोपीवृन्दसे परिवेष्टित श्यामली, धवली गायें चारों ओर विचरण कर रही हैं। अतिथि विप्रके साधक जीवनकी साध्य वस्तुएँ एक-एक करके साक्षात् गोचरीभूत होने लगीं।

सौभाग्यवान विप्र मिश्र-नन्दनकी यह अपूर्व ऐश्वर्यपूर्ण परम सुन्दर मूर्ति दर्शन करके प्रेम विह्वल भावमें मूर्छित होकर गिर पड़े। भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान् करुणाके सागर हैं। उन्होंने हँसते-हँसते अपने पद्महस्त विप्रके अङ्गोंपर फेर दिये। प्रभुके श्रीहस्तके स्पर्श मात्रसे विप्रको चेतना हो आयी। परन्तु प्रेमानन्दमें विभोर होकर वे जड़वत् निश्चेष्ट हो रहे। उनके मुँहसे बात न निकली। उनको बार-बार मूर्छा आने लगी। विप्र पृथ्वीपर उठनेकी चेष्टा करते थे, परन्तु आनन्दमें गद्गद होकर पुनः भूतलपर मूर्छित होकर गिर पड़ते थे।

अपने अभीष्ट देवकी स्वरूपमूर्ति देखकर* विप्रके अङ्गोंमें अष्ट-सात्विक भावोंका उदय हुआ। पुलकाश्रुपातसे उनका वक्षःस्थल डूब गया। परम करुणामय श्रीगौरभगवान्के श्रीचरणकमल-युगल धारण करके भाग्यवान् विप्रवर अजस्र अश्रुपात करते हुए रोते रहे। भक्तवत्सल कृपामय शचीनन्दन भक्तके आर्त्त स्वरूपको देखकर स्थिर न रह सके। वह स्वप्रकाशरूपमें भाग्यवान् अतिथि विप्रको सम्बोधन करके मधुर बचन बोले—"हे विप्रवर! तुम मेरे जन्म-जन्मके किंकर हो। मुझे देखनेको लालायित रहते हो; इसीलिए मैंने तुमको दर्शन दिया। जब मैं गोकुलमें अवतीर्ण हुआ था, तब तुम तीर्थ करके नन्दबाबाके घर आये थे, तब भी ऐसा ही कौतुक हुआ था, उसको स्मरण करो। इस गुप्त रहस्यको किसीके सामने प्रकट नहीं करना।"

प्रेमोन्मत्त बाह्यज्ञान-शून्य अतिथि विप्र निस्पन्द और निर्वाक होकर मन्त्रमुग्धवत् अपने अभीष्टदेवकी सुधामयी सारी बातें सुनते रहे। चक्षुके एक निमेषमें श्रीगौर-भगवान्ने अपने ऐश्वर्यभावको संवरण कर

---

* श्रीमद्भागवतमें श्रीभगवान्की अष्टभुज मूर्त्तिका दो बार उल्लेख मिलता है। प्रथम, दक्षयज्ञ-विध्वंसके बाद श्रीभगवन् जब विष्णुमूर्तिमें यज्ञ-स्थलमें अवतीर्ण हुए, तब सबने उनका अष्टभुजरूप देखा (४.७.२०)। द्वितीय, प्रचेतागण जब समुद्रमें बैठकर दस हजार वर्ष श्रीभगवान्का ध्यान कर रहे थे, उस समय उन्होंने उनको इस अष्टभुजमूर्तिका दर्शन कराया था (४. ३०. ६)।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिया, और आत्म गोपन करके क्षणमात्रमें अलक्षित भावसे घरमें जाकर माताकी गोदमें सो गये। योगनिद्राके प्रभावसे कोई कुछ जान न सका। इधर अतिथि विप्र प्रेमानन्दमें आत्म-विस्मृत हो रहे हैं। उनके प्रत्येक अङ्गमें अष्ट सात्त्विक भाव उदय हो रहे हैं। वह अपने अभीष्ट देवके प्रसादान्नको प्रेमानन्दसे सर्वाङ्गमें लेपन करके रोते-रोते प्रसाद ग्रहण कर रहे हैं। 'जय बाल गोपाल, जय बाल-गोपाल' कहकर उच्चस्वरसे कीर्तन प्रारम्भ कर दिया है। कीर्तन करते-करते आविष्ट भावमें उद्दाम नृत्य करने लगे। प्रेमानन्दमें विह्वल होकर बीच-बीचमें हुङ्कार ध्वनि कर रहे हैं। कभी अट्टहास कर उठते हैं। विप्रकी प्रेम-हुङ्कारसे घरके सब लोगोंकी नींद उचट गयी। सबको जगाकर विप्रने आत्म संवरण करके आचमन किया। मिश्रपुरन्दर आदि सबने सोचा कि नारायणकी कृपासे इस बार अतिथि-की निर्विघ्न सेवा हो गयी। इससे सबका मन बड़ा आनन्दित हुआ।

भगवान् विश्वरूपने छिपे-छिपे प्रभुकी इस मधुर बाल्य-लीलाका दर्शन किया। अतिथि विप्र यह नहीं जान सके। भगवान् विश्वरूप बलरामके अवतार हैं। प्रभुकी कोई लीला उनको अज्ञात नहीं रह सकती। प्रभुकी वे इच्छा शक्ति हैं। प्रभुकी इच्छा होते ही उस इच्छाको वह कार्यरूपमें परिणत करते हैं। प्रभुकी इच्छा हुई कि अतिथि विप्रको स्वरूप दर्शन करावें। भगवान विश्वरूपने कौशल-पूर्वक प्रभुकी इच्छा पूर्ण की।

तैर्थिक विप्र मिश्रपुरन्दरके भाग्यबलको जानकर मन ही मन सोचने लगे।

सभारे कहिते मने चिन्तये ब्राह्मण।
"ईश्वर चिनिया सभे पाउक मोचन ॥
ब्रह्मा शिव जाहार निमित्त काम्य करे।
हेन प्रभु अवतरि आछे विप्र-घरे ॥
से प्रभुरे लोक सब करे शिशु-ज्ञान।
कथा कहि सभेइ पाउक परित्राण ॥"

चै. भा.आ. ३.३०३-३०५

प्रभुने निषेध किया था, इस कारण वे सारी गुप्त बातें किसीसे प्रकट न कर सके। ये तैर्थिक विप्र तीर्थराज श्रीनवद्वीप धाममें तीर्थभ्रमणका फल प्राप्त कर वहाँ ही रह गये। गुप्त भावसे उन्होंने नवद्वीपमें वास किया। विप्रवर जहाँ-तहाँ भिक्षा करते और प्रतिदिन मिश्रगृह जाकर शचीनन्दनका चरण-रज ग्रहण करते। इस प्रकार भक्त और भगवानका शुभ मिलन प्रतिदिन होने लगा। परन्तु कोई इसे जान न सका।

भगवान विश्वरूपको भी प्रभुकी कृपासे तैर्थिक विप्रने पहचान लिया। अद्वैतसभामें बीच-बीचमें तैर्थिक विप्र उनका दर्शन करने जाते थे। गुप्तरूपसे दोनोंमें कभी-कभी बातें हो जाती थीं। परन्तु दूसरा कोई इसको नहीं जान पाता। विप्रका भजन श्रीधाम नवद्वीपमें आकर सिद्ध हो गया।

तैर्थिक-विप्रका वंश-परिचय

इस अतिथि विप्रका नाम ठाकुर सत्यभानु उपाध्याय था। श्रीहट्ट उनका आदि निवास था। वे तीर्थ-भ्रमणके उदेद्श्यसे नवद्वीप आये थे। ठाकुर सत्यभानु उपाध्याय श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर ठाकुर और श्रीवास पण्डित आदिके समसामयिक थे और प्रभुकी कृपा-प्राप्तिके बाद उनके साथ विशेष रूपसे परिचित हो गये थे। वे बाल गोपालके उपासक थे। नवद्वीपमें वास करते समय प्रभुके कृपादेशसे उन्होंने गृहस्थधर्म अवलम्बन किया था। उनके तीन पुत्र थे—बलराम, जनार्दन और मुरारि। पदकर्त्ता द्विज बलरामदास ठाकुर, ठाकुर सत्यभानु उपाध्यायके प्रथम पुत्र थे। येह वैष्णव जगत्में विशेष प्रसिद्ध श्रीनित्यानन्द प्रभुके मन्त्र-शिष्य थे। श्रीपाट दोगाछिया ग्राममें बाल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गोपाल मूर्त्ति स्थापित करके वे भजनानन्द करते हुए गृहस्थाश्रम चलाते थे। श्रीनित्यानन्द प्रभु समय-समयपर दोगाछिया श्रीपाटमें शुभागमन करते थे। उनके साथ श्रीगौराङ्ग प्रभुने भी एक बार वहाँ जाकर बलरामदास ठाकुरके ऊपर कृपा की थी। इस महापुरुषकी वंशावली आज तक श्रीपाट दोगाछिया ग्राममें वास कर रही है तथा बलरामदास ठाकुरके द्वारा प्रतिष्ठित बाल गोपाल विग्रहकी सेवा करती आरही है। जीवाधम ग्रन्थकार इसी वंशका कुलाङ्गार है। मत्प्रणीत 'द्विज बलराम दास ठाकुरकी जीवनी और पदावलीमें' ये सब बातें विस्तार रूपसे वर्णित हैं।

जनार्दन और मुरारि श्रीअद्वैत प्रभुके शिष्य थे। उनका नाम श्रीचैतन्य चरितामृतके १२वें परिच्छेदमें अद्वैत-शाखाके वर्णनमें आता है। जनार्दनका श्रीमद्-भागवतमें विशेष अनुराग और अधिकार था। मुरारि भी परम पण्डित थे। जनार्दनके वंशज नदिया जिलाके मेहेरपुर ग्राममें, तथा मुरारिके वंशज भालुका ग्राममें वास करते हैं।

श्रीगौराङ्ग-प्रभु कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। उनकी लीला-कथा वेद-गोप्य है। नवद्वीप धाम गुप्त श्रीवृन्दावन है। श्रीगौर भगवान्‌की बाल्य-लीला-कथाका अन्त नहीं है। इस मधुर लीला-कथाको जो भक्ति-पूर्वक पाठ और श्रवण करते हैं, उनका भजन-पथ अति सुगम हो जाता है, उनको सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। श्रीचैतन्यभागवतकार श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासा-वतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर लिख गये हैं—

वेद-गोप्य ए सकल महाचित्र कथा।
इहार श्रवणे कृष्ण मिलये सर्वथा॥
—चै० भा. आ० ३.३०९

पहले लिख आया हूँ कि इस तैर्थिक अतिथि विप्रकी कहानी श्रीगौराङ्ग प्रभुके बाल्य-लीला-सिन्धुका एक बहुमूल्य रत्न है। इस लीला-रत्नको कृपालु पाठकवृन्द गलेका हार बनाकर रख लें।

नूपुर-ध्वनि एवं ब्रजांकुश चिह्न दर्शन

शचीनन्दनके दूसरे एक दिनकी प्रच्छन्न लीलाकी और कथा सुनिये। अपराह्ण काल है। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुर अपने घरमें बैठकर भक्तिग्रन्थका पाठ कर रहे हैं। शचीमाता पतिके पास बैठकर कृष्ण कथा श्रवण कर रही हैं। मिश्र-पुरन्दरके पोथी-पत्र ठाकुर घरमें रहते थे। उनको एक पोथीकी आवश्यकता हुई। निमाईचाँद आङ्गनमें खेल रहे थे। पुत्रको प्रेमपूर्वक पास बुलाकर मुखचुम्बन करके मिश्र-ठाकुर बोले, "बेटा निमाई! ठाकुर-घरसे मेरी मोटी पोथी लाओ तो।"

पिताका आदेश प्राप्त होते ही दिगम्बर बाल-गौर हिलते-डुलते नाना प्रकारसे मधुर अङ्ग-भङ्गिमा करते देवमन्दिरमें गये। मिश्रपुरन्दर और शची-माता पुत्रके अङ्ग माधुर्यका पीछेसे अवलोकन करके आनन्द विह्वल हो उठे। उनका भक्ति ग्रन्थ पढ़ना और सुनना बन्द हो गया। बालगौराङ्गकी रूपसुधाका पान करनेमें उन दोनोंका मन उन्मत्त है।

अकस्मात् मिश्रपुरन्दर ठाकुरके कानोंमें कहींसे मधुर नूपुर-ध्वनि सुन पड़ी। वह चकित होकर चारों ओर देखने लगे। कहीं कुछ न देखकर गृहिणी-की ओर आश्चर्यपूर्वक देखकर कहने लगे, "गृहिणी! सुमधुर नूपुर-ध्वनि अभी-अभी कहाँसे आयी? हमारे निमाईके पैरमें तो नूपुर नहीं हैं।" शचीमाता भी चारों ओर ताकने लगीं।

मिश्रदम्पतिके मुँहसे बात नहीं निकल रही है। इस अति अद्भुत और अलौकिक घटनासे दोनों अवाक् हो गये। धृष्ट निमाईचाँदने दोनों हाथसे पोथी लेकर मस्तकपर रखकर हँसते-हँसते पिताके हाथमें दे दी। मिश्रपुरन्दरने पुत्रको प्यार करके मुखमें शत-शत चुम्बन देते हुए गोदमें लेकर आशी-र्वाद दिया। निमाईचाँद फिर खेलने चले गये।

मिश्रपुरन्दरके मनका सन्देह दूर नहीं हुआ। उनका चित्त विषम सन्देहके झूलेमें झूल रहा है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उन्होंने अपने कानों मधुर नूपुरध्वनि श्रवण की है। ग्रन्थपाठ करना बन्द कर दिया। पति-पत्नी दोनोंने जाकर घरके भीतर इधर-उधर देखते हुए अपरूप पदचिह्नोंको देखा। यह देखकर उनका सन्देह और भी दृढ़ हो गया। वे आनन्दसे गद्‌गद हो उठे। दोनोंकी आँखोंसे झरझर पुलकाश्रु प्रवाहित होने लगे। दोनों पति-पत्नीने भक्तिपूर्वक उन अपूर्व पद-चिह्नों को दण्डवत् प्रणाम किया। उन्होने मन ही मन सोचा कि आज बड़ा शुभदिन है। उनका मानव-जन्म सार्थक हो गया।

श्रीगौर भगवान्‌की मायासे मुग्ध माता-पिता वात्सल्य प्रेममें विभोर होकर अपने पुत्रका तत्त्व कुछ भी समझ न सके। अपने गोदमें स्थित बाल ब्रह्मरूप श्रीभगवान्‌को देखकर भी नहीं देख पा रहे हैं। पहचानते हुए भी नहीं पहचान रहे हैं। जानते हुए भी नहीं जान पा रहे हैं। श्रीगौर-भगवान्‌की वैष्णवी-मायासे अभिभूत होकर वे उनके स्वरूपतत्त्वके निरूपणमें असमर्थ हैं।

मिश्रपुरन्दरने गृहिणीसे कहा, "आज घृत पायसान्न तैयार करो। गृहमें दामोदर शालग्राम शिला हैं। आज उनको पायसान्न भोग लगाकर ब्राह्मण-वैष्णवोंको भोजन करावेंगे। इस अलौकिक कार्यसे जान पड़ता है कि वे ही गृहमें पद-चारण करते हैं, और उन्हींके पद-पङ्कजके नूपुरकी सुमधुर ध्वनि श्रुति-गोचर होती है।"

पतिकी बात सुनकर शचीमाताने उस दिन एक मन दूधका पायसान्न तैयार करके ब्राह्मण-वैष्णवको भोजन कराया। निमाईचाँदको नारायणका प्रसाद दिया। उन्होंने दोनों हाथोंसे पायसान्न भोजन किया, सर्वाङ्गमें पायसान्न लेप लिया। उनको आज बड़ा आनन्द है। मुखसे हँसी छूटती नहीं है। शालग्रामकी पूजा हुई है, भोग लगा है, इसीसे निमाईचाँदको इतनी हँसी आ रहीहै।

उस मधुर हँसीका मर्म कौन समझेगा? बाल गौराङ्गरूपी सचल नराकार नारायणकी हँसीका मर्म समझनेकी शक्ति किसमें है? प्रच्छन्न अवतार श्रीगौर भगवान् इसी प्रकार माता-पिताके सामने कभी-कभी कुछ-कुछ ऐश्वर्य प्रकट करते हैं। माया-मुग्ध पुत्र-वत्सल शची-जगन्नाथ इसका कुछ मर्म नहीं समझ पाते।

शचीनन्दन जब चार महीनेके शिशु थे, उस समय भी उन्होंने एक बार माता-पिताको चरण-चिह्न दिखलाया था। बारंबार इन अलौकिक घटनाओंको देखकर भी शची-जगन्नाथके मनमें पुत्रके ऐश्वर्य भाव की प्रतीति न हुई। अपने पुत्रको वे निमाईचाँद ही देखते थे, और उनकी मङ्गल कामनाके लिए नाना प्रकारके देव-देवियोंकी पूजा करते थे। इसे ही विशुद्ध वात्सल्य प्रेम कहते हैं। इससे ही श्रीभगवान् वशीभूत होते हैं।

धूलि-कीचड़से खेल

वयोवृद्धिके साथ-साथ निमाईचाँदका चञ्चल स्वभाव भी दिन-दिन अधिक चञ्चल होता गया। वे अब नवद्वीपमें सबसे बढ़कर धृष्ट बालक हैं। कोई उनको पकड़कर रख नहीं पारहा है। रात-दिन खेदकूद दौड़धूपमें लगे रहते हैं। किसका मजाल जो उनको रोक रक्खे? कभी भागकर गङ्गाके तीर चले जाते हैं, कभी रास्तेमें दौड़ लगाते हैं। सारे अङ्गमें धूलि लपेटकर नदियाके रास्तेमें दौड़ते हुए दोनों हाथ ऊपर उठाकर "हरि-हरि" बोलकर नयन-रञ्जन मधुर नृत्य करते हैं। वे जब घरपर रहते हैं, सदा ही आङ्गनकी धूलि वदनमें लगाते देखे जाते हैं। धूलि धूसरित अङ्गसे आङ्गनमें बैठकर घरके धातुके पात्र लेकर कीचड़से खेलते हैं, आङ्गनके बीचमें गड्ढा करके उसमें जल डालकर शरीरमें कीचड़ लेपन करके बालकण्ठसे मधुर हरिनामकी सुधामयी ध्वनि करते हैं। शचीमाताके मना करनेपर प्रभु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनके शरीरपर धूलि और कीचड़ छींट देते हैं। अनन्त-ब्रह्माण्डदेव श्रीगौर-भगवान् इस प्रकार शिशु-भावमें शची-आङ्गनमें बाल्यक्रीड़ा करते हैं। उनके भक्तवृन्द तृप्त नयनोंसे बाल-गौराङ्ग लीला दर्शन करके जीवनको सार्थक करते हैं।

शचीनन्दनने धूलि और कीचड़ बिखेरकर शचीके आङ्गनको उज्ज्वल कर रक्खा है। पड़ोसके दो-एक समवयस्क बालक सङ्गमें जुट गये हैं। उनके साथ निमाईचाँद मनमें आनन्दित हो आङ्गनमें बैठकर धूलि-धूलि खेल रहे हैं, जी भरके धूलि-कीचड़ लपेट रहे हैं। उनका सोनेका शरीर धूलि-धूसरित और कीचड़से लथपथ हो रहा है। शचीमाताको वह अच्छा नहीं लगता है। वे घरका काम छोड़कर झटपट पुत्रके पास आकर लाड़-प्यार करके उसके शरीरसे धूलि-कीचड़ पोंछ रही हैं। शचीमाता गमछा हाथमें लेकर खड़ी हैं। पुत्रके सोनेके अङ्गसे धूलि पोंछ देंगी। धृष्ट निमाईचाँद कदापि आङ्गनसे उठना नहीं चाहते। शचीमाता पुत्रको गोदमें उठाने जा रही हैं, और निमाईचाँद भ्रमरके समान काले केश-पाशसे भरे सिरको हिलाकर दोनों हाथोंसे धूलि-कीचड़ वदनपर छिड़ककर माताको परेशान कर रहे हैं। शचीमाताने प्यार करते हुए कहा, "मेरे सोनेके चाँद! मेरे यदुमणि! इस सोनेके शरीरमें तुम्हारा धूलि-कीचड़ लगाना क्या शोभा देता है? अपनी माँका सिर पचाकर धूल-कीचड़ लगानेमें तुम्हें क्या सुख मिलता है? सोनेके लाल! आओ बेटा, गोदमें आओ!" इस बार बाल-गौराङ्ग माताके प्यार-दुलारसे द्रवित हो गये। धूल-धूल खेलना भूल गये। धूलि और कीचड़ लिपटे शरीरसे कूदकर माताकी गोदमें जाकर स्तन-पान करने लगे। अब तक निमाईचाँदने स्तन-पान करना नहीं छोड़ा है। वे किशोरावस्थामें भी माताका स्तन-पान करते थे। शचीमाताने पुत्रके सोनेके अङ्गसे धूलि अपने वस्त्रके अञ्चलसे पोंछ दी, तथा मुखचन्द्रपर शतशः स्नेह चुम्बन प्रदान किया। उनका सारा अङ्ग पुलकायमान हो उठा। वह सजल नयनोंसे पुत्रके मुखचन्द्रकी ओर देखने लगी।

दो चोरोंके साथ लीला

शचीबालकके रूपकी अवधि नहीं है। उनको शचीमाता सदा अलंकृत करके रखना पसन्द करती हैं। एक दण्डके लिए भी श्रीगौराङ्ग-जननी पुत्रके अङ्गोंसे स्वर्णालङ्कार उतारने नहीं देती। हाथमें सोनेका कड़ा, पैरोंमें पद-कङ्कण और स्वर्णनूपुर, गलेमें व्याघ्रनखयुक्त स्वर्णहार, बाहुओंमें बाजूबन्द, कमरमें सोनेकी करधनी आदि आभूषण निमाई-चाँदके अङ्गोंमें सदा दीखते थे।

एक दिन निमाईचाँद बाहरी दालानके सामने सड़कपर अकेले खेल रहे थे। वे सर्वाङ्गमें अलंकार धारण किये थे। दो चोर उनके शरीरपर स्वर्णाभूषण देखकर लोभके वश होकर शचीनन्दनके पास आकर मन ही मन सोचने लगे, "यह अपूर्व बालक किसका पुत्र है? स्वर्णालङ्कारसे आभूषित होकर अकेला सड़कपर क्यों घूम रहा है?"

एक चोर बालगौराङ्गके पास आकर चिर-परिचित आत्मीयके समान प्यारपूर्वक अति मधुर वचन बोला, "आओ बेटा! गोदमें आओ। यहाँ रास्तेमें अकेले क्या करते हो? कुछ देरके बाद दूसरा चोर कपट-स्नेह प्रकट करके बोला, "बेटा! इतनी देर तक कहाँ थे? शीघ्र घर चलो। तुम्हारी माँ बुला रही है।" निमाईचाँद हँसकर चोरकी गोदमें चढ़कर बोले, "चलो, मुझको माँके पास ले चलो।"

दोनों चोर अत्यन्त सावधानीसे प्रेमपूर्वक निमाई-चाँदको गोदमें लेकर चले। बाल गौराङ्ग हँसते-हँसते चले। नवद्वीपकी सड़कपर लाखों लोग चले जा रहे हैं। कौन किसको पहचानता है? कौन किससे परिचय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूछता है ? जो देखता है, वही समझता है कि जिसका पुत्र होगा, उसीकी गोदमें चढ़कर घर जा रहा होगा।

दोनों चोरोंके मनमें आज बड़ा आनन्द है। बालकके सब अङ्गोंपर बहुमूल्य स्वर्णालङ्कार हैं। दोनों चोर मन ही मन सोच रहे हैं, "मैं बाजू-बाला लूँगा।" दूसरा सोचता है, "मैं सोनेकी करधनी लूँगा।" निमाईचाँदके हाथमें उन्होंने सन्देश खरीदकर दे दिया है। निमाईचाँद दोनों हाथोंमें सन्देश पा गये हैं, वे भी खूब प्रसन्न हैं। वे चोरके कन्धेपर बैठकर सन्देश खा रहे हैं और मधुर-मधुर हँस रहे हैं। चोरोंसे कहतेहैं, "घर और कितना दूर है ?" चोर कहते हैं, "बेटा ! यह आ गये। तुम्हारा घर दिखलायी देता है।" चोरके कन्धेपर चढ़कर बाल-गौराङ्ग बहुत दूर आ गये हैं। हास्यमुख सन्देश खाते-खाते रास्तेके लोगोंको, घर-द्वार दुकान-पसारी आदि देखते-देखते आनन्दपूर्वक चले जा रहे हैं। बीच-बीचमें बाल-भाषामें चोरको सम्बोधन करके पूछते हैं, "हमारा घर कितना दूर है ?"

इधर शचीमाता निमाईचाँदको बहुत देर तक न देख पानेपर व्याकुलचित्त होकर रास्ता देखने लगीं। उनके प्राण निमाईचाँदके पास हैं, केवल शरीर घरमें है। सभी आत्मीय स्वजन बहुत उद्विग्न-चित्तसे निमाईचाँदको खोजनेमें लगे हैं। कहीं भी उनका पता नहीं पा रहे हैं। सभी 'निमाई' 'निमाई' नाम लेकर जोरसे पुकार रहे हैं। मिश्रपुरन्दर उन्मत्तके समान चारों ओर दौड़धूप कर रहे हैं। निमाईचाँदको न पाकर उनको संसार अन्धकारमय दिखलायी दे रहा है। कहीं कुछ पता न पाकर ठाकुर-घरके द्वारपर आकर सर्वविपत्तिनाशक श्रीमधुसूदन नाम जप रहे हैं। शचीमाता बिखरे केश पागलिनीके समान ठाकुर-घरके द्वारपर सिर पटक रही हैं, और रोते-रोते कह रही हैं, हे मधुसूदन ! हे नारायण ! हमारे निमाईको ला दो।"

उधर दोनों चोर प्रभुकी वैष्णवी मायासे अभिभूत होकर रास्ता भूलकर प्रभुको कन्धेपर लेकर सारी नदिया नगरी घूमते हुए अपना घर समझकर मिश्रपुरन्दर ठाकुरके घर आ उपस्थित हुए। अपना घर समझकर अलङ्कार हरण करके उन्होंने सावधानीपूर्वक निमाईचाँदको वहाँ उतारा और बोले—"बेटा ! यही तुम्हारा घर है।" गोदमें बैठे निमाईचाँद हँसते-हँसते बोले, "यही मेरा घर है, यहाँ मुझको उतार दो, वही तो मेरे बाबा हैं।"

मिश्रपुरन्दर वहाँ खड़े थे, निमाईचाँद पिताको देखते ही दौड़कर उनकी गोदमें चढ़ गये। पुत्रको कलेजेसे लगाकर प्रेमानन्दके वश होकर मिश्रठाकुर रोने लगे। निमाईचाँदको देखकर सब लोग आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे। शचीमाताके देहमें प्राणका सञ्चार हुआ।

अब दोनों चोरोंका मोह टूटा। उन्होंने देखा कि यह उनका घर नहीं है। कहाँ आ गये, यह समझमें न आनेपर उन्होंने मन ही मन सोचा, "यह कैसी आश्चर्यकी बात है ? यह कैसा जादू है !" यह सोचकर उस शोरगुलमें भयभीत होकर इधर-उधर देखकर वे भागनेके लिए तैयार हो गये। कुछ दूर जाकर कुछ स्वस्थ होकर वे दोनों चोर आपसमें बातें करने लगे, "आज हमारा परम सौभाग्य है ! माँ चण्डीने आज हमारी प्राण-रक्षा की है !"—इतना कहकर दोनोंने रास्तेमें एक-दूसरेको आलिङ्गन किया। ये चोर अति नीच प्रकृतिके होनेपर भी परमार्थरूपमें बड़े भाग्यवान् थे। क्योंकि उनके कन्धोंपर श्रीगौरभगवान्‌के श्री चरणोंकी धूलि लग गयी। उनके समान सौभाग्यवान् जीव त्रिलोकीमें कितने होंगे ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शिवगीता श्रीग्रन्थमें मेघमाली नामके एक चोरका उल्लेख है। दस्यु मेघमाली इस अपूर्व घटनाके बाद गृहस्थाश्रम त्यागकर परम साधु हो गये। श्रीश्रीगौराङ्ग-प्रभुके कृपापात्रके रूपमें देव-पूज्य हो गये।

इधर निमाईचाँदको देखकर सबके मनमें आनन्द हुआ। सभी अपने मनमें सोच रहे हैं, "निमाईको इस प्रकार यहाँ कौन रख गया?" कोई कहता है, "दो आदमी निमाईको यहाँ रखकर कहाँ चले गये?" कोई-कोई आदमी बहादुरी लेनेके लिए बोले, "मैं निमाईको खोजकर लाया हूँ।"

मिश्रपुरन्दर दालानमें खड़े होकर लोगोंके साथ आनन्दमें सुधबुध खोकर पुत्रका मुँह देख रहे हैं, और उनके चन्द्रवदनमें बारंबार स्नेह-चुम्बन कर रहे हैं। शचीमाता कुछ दूर खड़ी होकर ललचायी हुई आँखोंसे पुत्रके चन्द्रवदनकी ओर देख रही हैं। वह मन ही मन सोच रही हैं, "मिश्रठाकुर बाहर सोनेके लालको लेकर क्यों खड़े हैं? घरमें आनेपर लालको एक बार हृदयसे लगाकर प्राणको शीतल करती, बहुत देरसे लालको देखा नहीं है।" दालानमें बहुत-से लोग हैं, सारी नदियाके आदमी मिश्रठाकुरके गृहद्वारपर एकत्रित हैं। मिश्रपुरन्दर पुत्रको गोदमें लेकर उनके साथ बातें कर रहे हैं।

शचीमाता बाहर नहीं जा पा रही हैं। उनको विलम्ब असह्य हो रहा है। उन्होंने विश्वरूपके द्वारा कहला भेजा, "निमाईचाँदको शीघ्र घरके भीतर भेजा जाय।" तब मिश्रपुरन्दर ठाकुरके ध्यानमें आया। निमाईको उन्होंने विश्वरूपके साथ अन्तः-पुरमें भेज दिया। निमाईचाँद हँसते-हँसते कूदकर माताकी गोदमें जा बैठे। शचीमाताका हृदय शीतल हो गया। पुत्रके मुखचन्द्रपर शत-शत चुम्बन देकर प्यार करते हुए पूछा, "बेटा निमाई! बतला तो दे, तुझको कौन कहाँ ले गया था? और कौन तुझको घर पहुँचा गया?" चतुर निमाईने हँसते-हँसते उत्तर दिया— 'मैं गंगा किनारे गया था, वहाँ रास्ता भूलकर नगरमें जहाँ-तहाँ चक्कर काट रहा था, तब कोई दो जन मुझे गोदी चढ़ाकर यहाँ पहुँचा गये।"

निमाईचाँदके मुखसे यह बात सुनकर पुरनारी-गण बोल उठीं, "शास्त्र कहते हैं कि शिशु और वृद्धकी रक्षा भगवान करते हैं। यह बात अति सत्य है। निमाईकी रक्षा आज दैवने की है।"

उस दिन शचीमाताने निमाँईचाँदकी मङ्गल कामनासे भगवानका प्रसाद वितरण किया। नदियाके बालकोंने एकत्रित होकर मिश्र-गृहको परम मङ्गल हरिध्वनिसे पूर्ण कर दिया। निमाई-चाँदने भी उनके साथ 'हरि-हरि' बोलते हुए दोनों बाहु उठाकर मधुर नृत्य करके सबके मनको मोहित कर दिया। शचीमाताके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। मिश्र पुरन्दरने आनन्दित हो पुत्रकी मङ्गलकामनासे घरमें नित्य शान्ति-स्वस्त्ययनकी व्यवस्था की।

मर्कट लीला

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरका घर गङ्गाके घाटके ऊपर अवस्थित है। धृष्ट निमाईचाँदने भाग कर गङ्गाके तीरके वृक्षोंके नीचे पड़ोसी बालकोंके साथ खेलने जाना सीख लिया है। शचीमाताके मनमें बड़ा भय है कि धृष्ट निमाईचाँद कहीं किसी दिन गङ्गामें डूब न जाय। इसी कारण वे पुत्रको आँखोंसे ओझल नहीं होने देतीं। परन्तु किसी प्रकार रोक भी नहीं पाती हैं।

एक पैरसे दौड़-धूप करनेकी क्रीड़ाका नाम है मर्कट लीला। बालुकामय गङ्गातटपर वृक्षके नीचे नदियाके सब बालक एकत्रित होकर यह मर्कट लीला करते थे। यह देखकर शचीबालकके मनमें बड़ी इच्छा हुई कि वे भी मर्कट लीला करेंगे। इच्छामयकी इच्छा मात्रसे उनकी इच्छाशक्ति लीलामें सहायक बनी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भगवान् विश्वरूप बलरामके अवतार हैं। उनमें श्रीनित्यानन्द शक्ति निहित है। वह एक दिन गङ्गाके तीर अपने छोटे भाईको लेकर भ्रमण करने गये। शचीमाताको इसका ज्ञान न था। निमाईचाँद बड़े भाईके साथ बालुकामय गङ्गातटपर एक पैरसे कूद-फाँद, दौड़-धूप लीला रङ्गमें रहते थे। एक पैरके ऊपर दूसरा पैर रखकर बड़े भाईका हाथ पकड़कर कूद-कूदकर दौड़ लगाते और गिर-गिर पड़ते थे। विश्वरूप प्रभु उनको गोदमें उठाकर स्नेहपूर्वक चुम्बन प्रदान करते थे। विश्वरूप प्रभु सङ्ग हैं, यह शचीमाता नहीं जानती थी। वे निमाइचाँदको घरपर न देखकर गङ्गातटपर गयीं। माताको देखकर विश्वरूप प्रभु एक ओर छिप गये, क्योंकि वे ही निमाईचाँदको गङ्गातीर पर लाये थे।

शचीमाता दूरसे ही 'निमाई-निमाई' कहकर उच्च स्वरसे पुकारती हैं। उनके हाथमें एक लाठी है। स्नेहमयी माँकी कण्ठ-ध्वनि सुनकर और उनके हाथमें लाठी देखकर बालगौर द्रुतगतिसे घरकी ओर भाग चले। अब वह अच्छा दौड़ना जान गये हैं। दौड़ते जा रहे हैं, और एक-एक बार भय चकित होकर पीछे देखते हैं। शचीमाता 'पकड़ो-पकड़ो' कहकर पुत्रके पीछे जा रही हैं। परन्तु निमाईचाँदको पकड़ नहीं पा रही हैं। वे बहुत दूर चले गये हैं।

निमाईचाँदने भागकर पहले घरमें प्रवेश किया। उनको बड़ा रोष हो गया है। रोषमें भरकर उन्होंने हाँड़ी-वर्तन एक-एक करके पटककर फोड़ दिये। शचीमाता गालपर हाथ रखकर आङ्गनमें खड़ी-खड़ी धृष्ट निमाईचाँदकी धृष्टताकी बात सोच रही हैं, और एक-एक बार क्रोधभरे नेत्रोंसे पुत्रकी ओर देखती हैं। शचीनन्दन लज्जा और अभिमानसे अपने सुन्दर मुखचन्द्रको झुकाकर भयभीत होकर घरके द्वारपर खड़े हो गये। शचीमाताके हाथमें उस समय भी लाठी थी। निमाईचाँदके कनक-केतकी सदृश नयनद्वयसे मुक्ताफल-सदृश अश्रु-बिन्दु गिरते देखकर शचीमाताका कोमल हृदय स्नेहरससे द्रवित हो उठा। वे अब स्थिर न रह सकीं। दौड़कर घरके भीतर जाकर अभिमानी धृष्ट पुत्रको स्नेहपूर्वक गोदमें लेकर आदर करती हुई बोलीं—"बेटा मेरे! मेरे चौदह पुरुषोंके ठाकुर! मेरे लाल! अच्छा कर रहे हो, हाड़ी फोड़ रहे हो। हमारे घरका सर्वस्व चला जाय, उससे मुझे तनिक भी दुःख नहीं है। मेरे बेटा! तुम सुखसे रहो। रोना मत।" इतना कहकर शचीमाताने पुनः-पुनः पुत्रके मुख-कमलपर स्नेह चुम्बन प्रदान किया। धृष्ट अभिमानी निमाईचाँद तब शान्त हुए।

बालूमय ठाकुर पूजा एवं अन्य बाल-लीलाएँ

एक दिन प्रातः काल शचीनन्दन पड़ोसके बालकोंके साथ गङ्गाके किनारे खेलने गये हैं। बालुका तटपर बैठकर शचीबालक बालुकासे देवालय, देवमन्दिर, सिंहासन ठाकुर, अन्न-व्यञ्जन आदि बनाकर बालुकाके गोपीनाथको भोग लगाकर बाल्यलीला कर रहे हैं। शचीनन्दनके साथी नदिया-बालवृन्दमें कोई कह रहा है, "आओ हम महाप्रसाद खावें।" कोई कहता है, "आओ हम जलमें केलि करें।" शचीनन्दनने बालुकाके ठाकुरकी पूजा करके, भोग लगाकर आनन्दित मनसे बालुका महाप्रसाद ग्रहण किया। अपने साथियोंको भी दिया।

बालुकाके गोपीनाथकी पूजा और भोग समाप्त होनेपर सब बालक मिलकर गङ्गाजलमें केलि करने लगे। सबने बालगौरको पकड़कर गङ्गाजलमें उतारा। उनको बीचमें करके नदियाके बालकवृन्द गङ्गाजलमें केलि करने लगे। शचीनन्दनको वक्षः-स्थलमें प्राप्तकर गङ्गाजीने प्रेमानन्दमें स्थिरमूर्ति धारण करली। तरङ्गके बहाने उनकी प्रदक्षिणा की।

इधर शचीमाता घरमें पुत्रको न देखकर व्याकुल हो उठीं। उन्होंने सुना कि निमाईचाँद गङ्गातटपर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खेल रहे हैं। वह सब कर्म छोड़कर दौड़ती हुई गङ्गाके तीर पहुँची। वहाँ निमाईचाँदको देखकर दुःखसे आकुल होकर कहने लगीं—"बेटा निमाई, प्रातःकालसे ही तू यहाँ क्रीड़ामें लगा है। सात घड़ी समय बीत गया, अभी तक घर नहीं लौटा।"

माताकी स्नेहमयी प्रेमकी बात सुनकर निमाई-चाँदके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। जननीके प्रति दया हुई। वे गङ्गाजलसे तीरपर आये और कूदकर माँकी गोदमें चले गये। शचीमाताको जानमें जान आ गयी। वे पुत्रको गोदमें लेकर घर चली आयीं। दुलार करते हुए शचीमाताने निमाईचाँदको घर लाकर सुलाया। दिव्य शय्यापर शयन करके बाल-गौर योग-निद्रामें मग्न हो गये। त्रिजगत् शान्त हो गया, शचीमाताकी जानमें जान आयी।

बालगौराङ्गकी एक और बाल्यलीला सुनिये। प्रभुका बाल्य-लीला-सागर अपार है। उस अपार लीला-समुद्रमें कितने रत्न हैं, यह कोई नहीं कह सकता। एक दिन प्रातः शचीमाताने निमाईचाँदको भली भाँति सजाया। मस्तकपर तीन झूटी बाँध दी, प्रशस्त ललाटमें तिलक रचना कर दी, कमरमें नीली धोती पहना दी। सारे अङ्ग अलङ्कारोंसे सजा दिये। निमाईचाँदने बाहर रास्तेमें जाकर धूलिसे सब अङ्ग विभूषित कर लिया, सिरके कुञ्चित केशपाशको दोनों हाथोंसे रास्तेकी धूलि उठाकर रञ्जित कर दिया।

शचीमाताने किसी कार्यवश घरसे बाहर आकर पुत्रको उस अवस्थामें देखकर दुःखित मन होकर 'हाऊ'का डर दिखाया। धृष्ट निमाईचाँद 'हाऊ' से बहुत डरते हैं। 'हाऊ'का नाम लेते ही वे भयसे सकपका जाते थे। बड़ा होनेपर भी उनका यह भय नहीं गया। शचीमाता पुत्रको 'हाऊ'का डर दिखाकर सुलाती थीं। चाँद देखते ही शिशु-गौराङ्ग 'चाँद लूँगा' कहकर हठ करते थे। शचीमाता कहती थी कि चाँदके भीतर 'हाऊ' है। यह सुनकर वे फिर चाँद लेनेका हठ नहीं करते थे। इस समय वे उसी 'हाऊ'की बात सुनकर धूलि-धूसरित अङ्गसे भागकर घर पहुँचे। मिश्र-पुरन्दर ठाकुर उस समय भोजनके लिए बैठनेकी तैयारीमें थे। तभी निमाई-चाँद घर आये। घरमें पहुँचकर दौड़कर दुलारसे, धूलि-धूसरित अङ्गसे पिताकी गोदमें चढ़ गये। मिश्र-पुरन्दर ठाकुरने पुत्रको हृदयसे लगाकर सैकड़ों बार उनके मुखचन्द्रमें स्नेहचुम्बन प्रदान किया।

धृष्ट निमाई अब बहुत ही चञ्चल, बड़े ही अस्थिर हो गये हैं। क्षण भरके लिए भी स्थिर होकर किसी स्थानपर बैठ, या किसीकी गोदमें रह नहीं सकते। वे पिताकी गोदमें चढ़कर उनके यज्ञसूत्रको खोलकर उतर पड़े, और दौड़कर भाग चले! देखते-देखते वे फिर नदियाके पथपर बाहर निकले, और एक बार दौड़ते-दौड़ते मामाके घर जा उपस्थित हुए। जाकर मामासे हँसकर बोले, 'मामा! तुम्हें देखने आया हूँ। तुम्हें देखे बिना मुझसे नहीं रहा जाता।"

शचीमाताका नैहर बेलपुथुरिया गाँवमें था। मायापुर और बेलपुथुरिया आस-पास थे। निमाई-चाँद सर्वदा इस घरसे उस घर घूमते रहते थे। शचीमाता निमाईचाँदको घरपर न देखकर सबसे पहले अपने पिताके घर उनको खोजने जाती थीं। शचीनन्दन अपने नाना श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती और नानी विलासिनी देवीके प्राण थे। शचीमाताके दो भाई थे योगेश्वर और रत्नगर्भ। निमाईचाँदको उनके दोनों मामा अपने प्राणोंसे भी अधिक प्रिय मानते थे। शचीनन्दनको मामाके घर जाना बहुत पसन्द था। अवसर पाते ही दौड़कर मामाके घर जाते और जो कुछ खानेके लिए मिलता, खाकर चले आते थे।

शचीमाता पुत्रको ढूँढ़ती हुई पिताके घर गयीं। श्रीपाद जगन्नाथमिश्र ठाकुर अब भोजनके लिए बैठ न सके। परोसा भात जहाँ था वहाँ ही पड़ा रह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गया। पुत्रकी अपेक्षामें गृहिणीके लौटनेकी बाट जोहने लगे। प्रायः दोपहर हो गया। शचीमाता पुत्रको गोदमें लेकर तब घर आयीं। मिश्रपुरन्दर निमाई-चाँदको गोदमें लेकर दोपहरका भोजन करने बैठे। भोजनोपरान्त शचीनन्दन सो गये। शचीमाताने उनको पुनः हाऊका डर दिखाकर सुलाया। अपराह्न कालमें प्रभुकी नींद टूटी। शचीमाताने आनन्दित मनसे पुनः उनका शृङ्गार कर दिया।

एक दिन सन्ध्याकालमें शचीमाता पुत्रको गोदमें लेकर सुलाने बैठीं। शचीनन्दनकी आँखोंमें नींद नहीं है। उनको कहानीसे बड़ा प्रेम था। शचीमाता प्रतिदिन उनको कोई न कोई पौराणिक कथा सुनाती थीं। आज उन्होंने श्रीकृष्णके द्वारा कंसबधकी कथा शुरू की।

"साज सजाकर कृष्ण-बलराम दोनों भाई मथुरामें कंसकी सभामें उपस्थित हुए। सभामें सब लोग उनकी भुवनमोहिनी बालमूर्तिकी ओर देख रहे हैं। कंस राजाके मल्लगण प्रबल पराक्रमपूर्वक दोनों भाईके साथ मल्लयुद्ध करके हार गये। तब कृष्ण-बलराम, दोनों भाइयोंने कंस राजाको सिंहासनसे भूमिपर खींचकर सभाके बीच बध कर डाला।" निमाईचाँद कंसबधकी कहानी माताके मुखसे ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं, और बीच-बीचमें हुंकार गर्जन करते हैं। मल्लयुद्धमें श्रीकृष्णके द्वारा कंसबधका वृत्तान्त सुनकर उनका क्रोधानल प्रदीप्त हो उठा। वे माताकी गोदसे कूदकर उठे, तथा अत्यन्त उत्तेजित भावमें पुनः पुनः कहने लगे—"और जो बचे हैं, सबका संहार कर डालूँगा।"

शचीमाता पुत्रके भावको देखकर शङ्कित हो उठीं। स्नेहमयी जननीने सोचा कि कंसासुर-बधकी कहानी बालक पुत्रके सामने वर्णन करना अच्छा न था। तब प्यार करके उन्होंने पुत्रको गोदमें छिपा लिया। मायामुग्ध शचीमाताने नहीं समझा कि उनके पुत्रके मनमें पूर्वस्मृति उदय हो गयी है। वात्सल्य-रसाश्रिता गौराङ्गजननी ऐश्वर्यकी दृष्टिसे नहीं देखतीं। उनका पुत्र स्वयं नन्दनन्दन श्रीकृष्ण हैं, यह उनके मनमें नहीं आता। श्रीगौर भगवान्‌की मायासे मुग्ध होकर उनको पुत्र समझकर वे लालन-पालन करती हैं।

पुत्रका स्वरूप ज्ञान होनेपर माताका वात्सल्य प्रेम भाव लुप्त हो जाता है और ऐश्वर्य ज्ञान हो जाता है। इसी कारण प्रभुने अपनी मायासे स्नेहमयी जननीको मुग्ध कर रक्खा है। श्रीभगवान् अवतारके उद्देश्यसे नरवपु धारण करके भी पूर्व लीलास्मरणसे आविष्ट होकर इच्छा न होते हुए भी कभी-कभी आत्मप्रकाश करते हैं। श्री गौराङ्गलीलाका अनुशीलन करनेपर ज्ञात होता है कि अनेक वार उनके ऐसे भाव हुए हैं। महाप्रकाशके समय उनके इस भावका पूर्ण परिचय मिलता है। प्रच्छन्न अवतारका प्रच्छन्न भाव बड़ा मधुर है। इसी कारण गौराङ्गलीला इतनी मधुमय है।

दूसरी सर्प-लीला

शचीमाता पुत्रको सुलाकर सन्ध्याके बाद रसोई-घरमें रसोईके काममें लगी हैं। निमाईचाँदकी धात्री माता नारायणी किसी कार्यवश शयनगृहमें गयीं। वे निमाईचाँदके पलङ्गके ऊपर साँप देखकर चिल्ला उठीं। उन्होंने देखा कि एक भयानक श्वेतवर्ण अजगर उज्ज्वल फण फैलाकर मानो निमाईचाँदके मस्तकके ऊपर छत्र लगाये हुए है। शचीमाताके दौड़कर आते-आते सर्प धीरे-धीरे सरक गया। शचीमाताने उस भयङ्कर सर्पका आकार मात्र देखा। देखते ही वे घरके द्वारपर मूर्छित होकर गिर पड़ीं।

नारायणी देवीने पहले शचीनन्दनको गोदमें उठाया, पश्चात् शचीदेवीके मुँह और आँखोंपर जल छींटकर उनकी मूर्च्छा दूर की। शचीमाताकी मूर्च्छा तो दूर हुई, परन्तु उनके मुँहसे बात नहीं निकल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रही है। वे अब भी थर-थर काँप रही हैं। माताकी दशा देखकर प्रभुके मनमें बड़ा दुःख हुआ। वे कूदकर माताकी गोदमें गये और उनके गलेको अपनी सुकोमल सुवलित बाहुओंके द्वारा वेष्टित कर आदरपूर्वक बोले, "माँ! तुम कथा कह रही थी न? तुमको क्या हो गया?" शचीमाता बहुत देर बाद प्रकृतिस्थ हुईं।

शचीनन्दनकी यह बाल्यलीला नारायणी देवीने चुपकेसे श्रीवास पण्डितसे कही। शची-बालक क्या हैं, यह बात श्रीवास पण्डित उनके जन्म-दिवससे ही जानते थे। नारायणीके मुखसे यह सर्पलीला-कहानी सुनकर वे मुस्कराये। नारायणीसे कुछ नहीं बोले। परन्तु नारदके अवतार श्रीवास पण्डितने नवद्वीपमें शचीनन्दनकी सर्पलीलाका ढोल बजाया। प्रभुकी जो भी बाल्य-लीला श्रीवास पण्डित सुनते थे, नदियाके सब लोगोंके सामने उसका कीर्तन करते थे। इससे उनको बड़ा सुख मिलता था। अपने पूर्व चरितकी मर्यादाकी उन्होंने रक्षा की थी। श्रीभगवान्‌की लीलाका कीर्तन उनका स्वधर्म है।

शचीमाता उस दिनसे निमाईचाँदको अकेले घरमें शयन नहीं कराती थीं।

निमाईचाँदकी धृष्टता

मिश्रपुरन्दर ठाकुर और शचीमाता दोनों ही धृष्ट निमाईचाँदके कारण बहुत परेशान थे। असाध्य साधनकी इच्छा करके हठ करते, दुष्कर कार्य करना चाहते, मनचाही वस्तुके न मिलनेपर रास्तेकी धूलमें गिरकर लोटने लगते, हाथ-पैर और सारा अङ्ग पटककर चिल्लाते हुए करुण क्रन्दन करते थे। आकाशमें पक्षी उड़ता जा रहा है, उसको पकड़कर दो, आकाशसे चन्द्र और तारे उतार कर ला दो—इस प्रकारके अद्‌भुत हठ करते थे। वे बड़े ही चञ्चल थे। किसीके समझाने-बुझानेपर नहीं मानते थे। केवल कहते थे—'दो—दो'।

उनको सान्त्वना देनेकी एक मात्र औषधि थी मधुर हरिनाम। हरिनाम-कीर्तन सुननेपर उनका रोना बन्द हो जाता था। इस महौषधिको नदिया-वासी सब लोग जानते थे। शचीमाताका आङ्गन सर्वदा हरिनामसे मुखरित रहता था; क्योंकि निमाईचाँद कोई न कोई हठ करके आङ्गनमें पड़कर बराबर रोते थे। मधुर हरिनाम सुननेपर शान्त होते थे। इस कारण शचीके आङ्गनमें सदा हरिनाम कीर्तन होता था। मिश्रभवन वैकुण्ठधाम जान पड़ता था।

इस समय बालगौराङ्ग पञ्चम वर्षकी अवस्थामें चल रहे थे। बाल्य लीला-रङ्ग प्रकट करनेका यह प्रकृत काल होता है। शचीबालकके अपरूप रूपमें इस समय सारी नदिया आलोकित है। नदियावासी नर-नारी निमाईचाँदकी धृष्टता देखकर बहुत प्रसन्न होते थे। बालगौर दुराग्रह कर रहे हैं, यह सुनकर मुहल्ले भरके लोग आकर मिश्रभवनमें एकत्रित हो जाते थे। परन्तु यह शचीमाताको अच्छा नहीं लगता था। वे इससे सबके सामने अपनेको लज्जित समझती थीं। धृष्ट पुत्रकी माता होनेके कारण सबके सामने अपनेको अपराधिनी समझती थीं।

शचीमाता पुत्रको लेकर गङ्गा-स्नान करने जाती हैं। मनमें सोचती हैं कि गङ्गा मैयाकी कृपासे उनके निमाईचाँदकी मति-गति सुधर जायगी, चञ्चलता दूर हो जायगी। परन्तु गङ्गा मैयाने भी पुत्रकी धृष्टतासे पीड़ित शचीमाताके दुःखको दूर नहीं किया। माताके साथ निमाईचाँद गङ्गा-स्नान करने जा रहे हैं। रास्तेके किनारे जूठी फूटी हुई हाँड़ियाँ पड़ी हैं, जाते समय उनको स्पर्श करते हैं। जहाँ अपवित्र वस्तु देखते हैं, खेलते-खेलते पहले वहीं जाते हैं। यह देखकर शचीमाता हाय-हाय करके सिर पीटती हैं, पुत्रको कड़ी बात बोलती हैं। परन्तु किसी प्रकार कुछ फल नहीं निकलता।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार शचीमाता धृष्ट पुत्रकी दुष्टतासे घबरा उठीं। क्या करें ? निमाईचाँद बात सुननेवाला नहीं है। शचीमाता पुत्रसे डरती हैं। पतिसे भयके कारण पुत्रकी धृष्टताकी बात बोलनेका साहस नहीं होता, कि कहीं वे उसके अङ्गपर हाथ न उठावें।

निमाईचाँद इधर धृष्टताकी पराकाष्ठाका परिचय दे रहे हैं। उनकी दुष्टतासे नवद्वीपके सब लोग घबराते हैं। परन्तु कोई उनको कुछ कहता नहीं है। सबको ही उनकी दुष्टता अच्छी लगती है, वे प्राणसमान सबको लगते हैं। जिनके घर शची-बालक उपद्रव करते हैं, जिनकी हाँड़ी फोड़ते हैं, जिनके बछड़े खोल देते हैं, वे ही निमाईचाँदको प्यार करके गोदमें लेते हैं, और क्षीर-मिठाई खानेको देते हैं। सर्वचित्ताकर्षक बाल गौराङ्ग नदियाके नर-नारियोंके प्राण स्वरूप हैं। उनके बाल-भाषित सुधा वचनसे, उनके अपरूप सौन्दर्यसे, उनकी नयन-रञ्जन अङ्ग-भङ्गिमासे, तथा सर्वोपरि प्राण और मनको हर लेने वाले उनके सुमधुर बाल-नृत्यके दर्शनसे नदियाके नर-नारीकी तो बात ही क्या, पशु-पक्षी, स्थावर-जङ्गम तक वशीभूत और मन्त्र-मुग्ध हैं। इसको ही कहते हैं भगवानकी आकर्षण शक्ति। यह शक्ति दूसरे किसीमें नहीं होती।

शचीनन्दनने छठे वर्षमें पदार्पण किया है। उनके रूपकी सीमा नहीं है। दुर्धर्षताकी भी सीमा नहीं है। निमाईचाँदके उपद्रवसे पड़ोसी लोग सदा आतङ्कित और सशङ्कित रहते हैं। किसीके घरमें घुसकर भातकी हाँड़ी फोड़ देते हैं, किसीके घरसे चोरी-चोरी दूध पी आते हैं, किसीके रसोई-घरमें घुसकर अन्न-व्यंजन खा आते हैं। जिसके घरमें बच्चा होता है उसे चूँटी काट कर रुला देते हैं। यदि कोई देख लेता है तो हँसते-हँसते वहाँसे भाग जाते हैं। किसकी मजाल जो उनको पकड़ ले ? यदि दैवात् किसीने पकड़ लिया तो भयसे सिकुड़ कर शत-अपराधीके समान उसको पैर पकड़ कर क्षमा माँगने लगते हैं। भयसे विह्वल-से होकर कनक-केतकी सदृश नेत्रोंके द्वारा एक बार उसकी ओर देखते हैं। शचीनन्दनकी अपरूप रूपराशिको देखकर कोई उनको कुछ बोल नहीं पाता। उसका प्राण आनन्दसे थिरकने लगता है। वे सब कुछ भूलकर निमाईचाँदको गोदमें लेकर मुख चुम्बन करते हैं और बिल्कुल ही भूल जाते हैं कि निमाईचाँदने कोई अपराध किया है ; बल्कि प्यार करके उनको संदेश खानेको देते हैं।

बालक निमाईचाँदकी बुद्धि देखकर सबके मनमें आश्चर्य होता है। सभी सोचते हैं कि यह बालक साधारण बालक नहीं है। इतनी दुष्टता करनेपर भी निमाईचाँदके ऊपर कोई रुष्ट या क्रुद्ध नहीं होता। सब लोग शचीनन्दनके सर्वचित्त-विनोदन सरल बालभावसे मुग्ध होकर उनको अपने पुत्रसे भी बढ़कर मानते हैं और स्नेह करते हैं। सर्वचित्ताकर्षक मन-मोहन रूपमें शचीनन्दन नदियामें इस प्रकार नाना-विधि बाल्य-लीला करते हैं। उनकी मधुर बाल्य-लीलाकी तरङ्गमें नदियाके बाल-वृद्ध-युवक, सबके हृदयमें आनन्दकी लहरें उठती हैं।

निमाईचाँद एक स्थानमें स्थिर होकर बैठने वाले नहीं हैं। नदियाके दक्षिणपाड़ा मुहल्लेमें निमाई-चाँद बिना बुलाये घर-घर चिर-परिचितके समान जाकर खानेके पदार्थ छल-बलपूर्वक खाते रहते हैं, और गुप्तरूपसे सबको अपना प्रसाद प्रदान कर कृतार्थ करते हैं। नदियावासी नर-नारीवृन्दके भाग्यकी सीमा नहीं है। उनके भाग्यकी कामना देवगण करते हैं। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात।

शचीमाताके कानोंमें निमाईचाँदकी दुष्टताकी बात पहुँची। पड़ोसियोंके घरसे दही, दूध, मिठाई चोरी करके खानेकी बात सुनकर शचीमाताके मनमें बड़ा दुःख हुआ, कुछ क्रोधका भी उद्रेक हुआ। जिसका पुत्र चोरी करके खाता है, निश्चयपूर्वक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वह घरपर खाना नहीं पाता, उसके माँ बाप उसको खाना नहीं देते, साधारण लोगोंके मनमें स्वतः इस प्रकारकी धारणा होती है। पुत्र-वत्सला स्नेहमयी श्रीगौराङ्ग-जननीके मनमें भी यही भाव उदय हुआ। उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ। पुत्रके ऊपर उनको क्रोध भी बहुत हुआ।

दूसरेकी माँ होती, पुत्रकी ऐसा निन्दा सुनकर उसको ताड़ना देती। परन्तु शचीमाताने ऐसा नहीं किया। उन्होंने उस दिन थालीमें भरकर सन्देश (मिठाई) और कठोरेमें दही-दूध तथा नाना प्रकारके फल-मूल एकत्र करके लाड़-प्यारके साथ अपने सोनेके लाल निमाईचाँदको खानेके लिए दिया। शचीनन्दन परम आनन्दपूर्वक हँसते हुए दोनों हाथोंसे दही और सन्देश खाने लगे और माताके मुँहकी ओर स्नेहपूर्वक देखने लगे। शचीमाताने पास बैठकर स्नेहपूर्वक पुत्रके शरीर पर हाथ फेरते हुए कहा—"बेटा निमाई! बता तो, तू दूसरेके घर जाकर चोरी करके क्यों खाता है? क्या तुमको घरमें खानेके लिए नहीं मिलता?"

शचीनन्दनके मुँहसे कोई उत्तर न बन पड़ा। लज्जासे उनका सुन्दर मुखमण्डल लाल हो गया। सिर नीचा करके वे भोजन कर रहे हैं, और एक-एक बार माताकी ओर तिरछी नजरोंसे देख लेते हैं। उस कटाक्षका मर्म यह है कि, "माँ! मैं तो सदाका चोर हूँ। दूसरेका द्रव्य चुराकर खाना तो मेरा काम है। जो सदासे करता आ रहा हूँ, उसे कैसे छोड़ूँगा। शचीमाताने पुत्रके सलज्ज भावको देखकर सोचा कि निमाईचाँद बहुत उदास हो गया है, अब मेरा बेटा ऐसा काम नहीं करेगा। उसको और कुछ कहना ठीक नहीं है। यह सोचकर वे घरके काममें लग गयीं।

शचीमाताका दुःख

निमाईचाँदकी धृष्टता और दुष्टता देखकर शचीमाताके मनमें बड़ा दुःख होता है। वे मन ही मन सोचती हैं, तथा पड़ोसकी पुरस्त्री वर्गके सामने भी कभी-कभी कहती हैं कि कितनी आरजू-मिन्नत-पर विधाताने यह पुत्ररत्न दिया है, परन्तु इसका आचरण पागलके समान है। कुछ भी बुद्धि नहीं है, बोलता कुछ है, करता कुछ है। आचार-विचार नहीं है, देवता-ब्राह्मणका ज्ञान नहीं है। इस धृष्ट पुत्रसे मैं कैसे पार पाऊँ?

शचीमाताके दुःखकी बात सुनकर वृद्धा कुलांगना-वृन्दने निमाईचाँदको गोदमें उठाकर प्रेमपूर्वक पूछा—"बेटा! ऐसा अमंगल कार्य क्यों करते हो?"

यह बात सुनते ही धृष्ट निमाईचाँद गोदसे भूतलपर उतरकर अभिमानमें भरकर चिल्लाकर रोने लगे, और धूलमें लोटने लगे। कोई उनको किसी भी प्रकारसे शान्त न कर सका। बहुत उपाय किया, पर किसी प्रकारसे भी निमाईचाँदका रोना बन्द न हुआ। तब एक बूढ़ी स्त्रीने शचीमातासे गम्भीरतापूर्वक पूछा—"तुम्हारा पुत्र ऐसा कबसे हो गया?"

शचीमाताने दुःखित होकर उत्तर दिया, "एक दिन मैं रातमें सोनेके बाछाको गोदमें लेकर सोयी थी। स्वप्नमें देखा, मानो शयनगृहमें सब देवता लोग आये हैं। मेरे सोनेके बाछाको दिव्य सिंहासनपर बिठाकर वे दण्डवत् प्रणामकर रहे हैं और स्तुति कर रहे हैं। तब मेरी नींद टूट गयी। पुत्रके अमङ्गलकी आशङ्कासे मेरे सारे अङ्ग थर-थर काँपने लगे। उसी समयसे मेरे सोनेके बाछाकी यह हालत हो गयी है।" इतना कहकर शचीमाता मनमें दुःखित होकर रो पड़ीं। निमाईचाँदका रोना अभी तक बन्द नहीं हुआ था।

वृद्धा स्त्रियोंने परामर्श करके शचीमाताको आश्वासन देते हुए कहा—"इसमें कोई देव आगया लगता है। मिश्रजीसे कहकर ब्राह्मणको बुलाकर सब देवोंके नाम एक यज्ञ कराया जाय। अपनी पूजा प्राप्त करके ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचनसे देव अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्थानपर चला जायगा और बच्चेका कल्याण होगा।"

यह बात सुनकर शचीमाताके मनका दुःख दूना हो गया। वह दुःखसे मृतवत् हो गयीं। कोई बात बोल न सकीं। आँखोंकी अश्रुधारसे श्रीगौराङ्गकी माताका वक्षःस्थल भीग गया। दारुण मनःकष्टसे शचीमाता रोते हुए निमाईचाँदको गोदमें लेकर घरमें बैठ गयीं।

जिस बूढ़ी स्त्रीने निमाईचाँदसे कहा था कि, "तुम इतना अमङ्गल क्यों कर रहे हो" वह भी शचीमाताकी वैसी अवस्था देखकर अत्यन्त अप्रतिभ होकर उनके पास बैठी है। अभिमानी शचीनन्दन एक-एक बार उस लज्जित वृद्धाके मुखकी ओर रोषपूर्वक ताकते हैं, और फूलकर माताकी गोदमें बैठकर रोते हैं। लोगोंका कहना कि 'उनमें उपदेवताने आश्रय लिया है,' उनके दुःखका कारण नहीं है। परन्तु माताके मानसिक कष्टसे उनका बाल-हृदय उन्मथित हो रहा हैं। भक्तके दुःखसे श्रीगौरभगवान्का करुण हृदय द्रवित हो उठा। बालगौराङ्ग रो नहीं रहे हैं। माताकी गोदमें बैठकर माताके गलेमें अपने कोमल कर-पल्लवको वेष्टन करके मधुर वाणीमें कह रहे हैं, "माँ! मैं और कुछ न करूँगा, और धूल-मिट्टी न लपेटूँगा, और न रोऊँगा, तू रो मत।" यह कहकर वे रोते-रोते हँस पड़े। उनके नयन-जलके साथ मधुर हँसीके मिश्रणने एक अपूर्व शोभा धारण की।

बालगौराङ्ग माताकी गोदसे कूदकर उस बूढ़ी स्त्रीकी पीठपर चढ़ गये। उसके गलेमें अपनी भुजाएँ डालकर मुँहके पास अपने मुखकमलको ले जाकर मधुर शब्दोंमें बोले—"मेरे नामसे तुम झूठ-मूठ दोषारोपण क्यों कर रही हो? क्या तुम नहीं जानती हो कि मेरी हँसी सारे अमङ्गलोंका नाश करती है।" इतना कहकर व अट्टाहास करके वहाँसे भाग चले।

बूढ़ी स्त्री एक तो बहुत अप्रतिभ होकर बैठी थी। शचीबालकके मधुर श्लेषात्मक वचनसे मर्म-पीड़िता तथा विशेष लज्जिता हुई। उसके मुखके भावको देखकर शचीमाताकी समझमें यह आ गया। उन्होंने वृद्धा स्त्रीसे आदरपूर्वक कहा. "माँ! तुम दुःखी मत हो। निमाई मेरा पागल लड़का है। किससे क्या बोलना चाहिये, जानता ही नहीं। मैं नहीं जानती कि इससे कैसे पार पाऊँ? बूढ़ी स्त्री शचीमाताकी बात सुनकर बहुत लज्जित हुई। उस दिनसे शचीनन्दनको उसने फिर कुछ न कहा।

श्रीगौर-भगवान्ने बूढ़ी स्त्रीको यह शिक्षा दी कि उनके कार्यमें किसीको आलोचना करनेका अधिकार नहीं है, वे स्वतन्त्र ईश्वर हैं। उनके सारे कार्य मङ्गलकारी हैं। सर्व मङ्गलमय श्रीभगवान्के सारे कार्य मङ्गलमय होते हैं। उनकी दुष्टतामें उनके क्रन्दनमें, उनके अभिमानमें, उनके हठमें—उनके सभी कामोंमें माधुरी है, उनकी सब बातोंमें कोई-न-कोई रहस्य छिपा रहता है। सब लोग जो कुछ करते हैं, उसकी अपेक्षा वे कुछ अधिक करेंगे। श्रीभगवान्ने मानव शरीर धारण करके यदि कुछ विशेषत्व नहीं दिखलाया तो अवतारवादकी सार्थकता क्या होगी?

इस प्रकार निमाईचाँदने माताके सारे दुःख दूर किये। पुरनारियाँ शची-बालकके भाव और गतिको देख कर अवाक् हो गयीं। कोई मनमें सोचने लगीं कि यह कैसा मनुष्य है? शचीके बालकका सब कुछ अद्भुत है। बालक होकर वृद्धके समान ज्ञानकी बात करता है। इसके द्वारा हम बहुत शिक्षा प्राप्त करती हैं।

उस दिन रातमें शचीमाताने पुत्रको बहुत समझाया। दूसरे दिन उनने अपने घर पुत्रके मंगलके लिए शान्ति-स्वस्त्ययन कराया। मिश्र-पुरन्दर ठाकुरने सर्वदेव-प्रीत्यर्थं विष्णु भगवान्की पूजा की।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शचीनन्दन किसी से तनिक भी नहीं डरते। केवल बड़े भाई विश्वरूपको देखकर वे नम्रभाव धारण करते हैं।

निमाईके प्रति विश्वरूपके भाव

विश्वरूप प्रभु निमाईचाँदको प्राणतुल्य मानते हैं। माताके पास बैठकर निमाईचाँदके सम्बन्धमें वे बहुत बातें करते हैं। एक दिन मातासे बोले—"इसकी अपार महिमाका लोग वर्णन करेंगे, इसीसे सब जीवोंका निस्तार होगा।"

शचीमाता इस बातका कुछ अर्थ न समझ सकीं। वे विश्वरूप प्रभुसे बोलीं, "बेटा विश्वरूप! तू यह सब क्या कहता है? मैं तो कुछ भी समझ नहीं पाती मेरा निमाई दूधका बालक है। तुम लोग इसको पागल मत बनाओ।" भगवान् विश्वरूपने मुस्करा कर उत्तर दिया, "माँ! तुम्हारा यह पुत्र जगत्को पागल बना देगा।" शचीमाताने क्रोधित होकर पुत्रसे कहा, "झूठ मत बक। सब लोग ऐसी बात कहते हैं तो तू भी ऐसा ही कहेगा?"

भगवान् विश्वरूप सर्वज्ञ हैं। उन्होंने शचीमाताके हृदयके भावको समझा। वात्सल्य-प्रेमसे मुग्ध जननीके हृदयको चोट पहुँचानेके कारण वे दुःखित हुए। परन्तु उनके मनमें एक और बात रह गयी। वही बात कहनेके लिए माताके पास यह सारी बातें कह गये थे। माताका उत्तर सुनकर उस दिन वह बात बोल न सके। दूसरे मौके पर बोलनेका इरादा करके वे चुप हो गये।

वह बड़ी भारी बात थी। निमाईचाँद बालक हैं। माता-पिता, आत्मीय स्वजन आदिका उच्छिष्ट भोजन करते हैं, यह भगवान् विश्वरूपको अच्छा नहीं लगता। शचीबालकका तत्त्व उन्होंने जान लिया है, प्रच्छन्न अवतारके प्रच्छन्न भावकी रक्षा करनेके लिए भगवान् विश्वरूप उतने उत्सुक नहीं हैं। जिस बातको कहनेके उद्देश्यसे मातासे इतनी बातें कर गये, वह बात कहनी चाहिये, यह सोचकर पुनः रातमें माताके साथ उन्होंने गौर-कथा प्रारम्भ की। बहुत बातें हुई। अन्तमें भगवान् विश्वरूपने मनमें सोचा कि स्नेहमयी जननीको कुछ सावधान कर देना चाहिये। निमाईचाँदको साधारण शिशु समझ कर माता उसको उच्छिष्ट भोजन करने देती हैं, यह काम अच्छा नहीं है। यह सोचकर वे मातासे कह बैठे—"इसके द्वारा दोनों कुलोंका उद्धार होगा। इसको उच्छिष्ट मत दिया करो।"

इस बार शचीमाताने विश्वरूपको खूब फटकारा। उन्होंने रुष्ट होकर कहा, "विशो! तुझे हो क्या गया है? तेरी बात मुझे कुछ भी अच्छी नहीं लगती। आज प्रातः तू पागलके समान क्या-क्या बोल गया। और अब फिर वही बात! मेरा सोनेका लाल ब्राह्मण-वैष्णवका उच्छिष्ट खाकर चिरंजीवि होवे—यही बोल। भगवान् विश्वरूप माताकी बात सुनकर अप्रतिभ होकर कुछ और न बोल सके। श्रीगौर भगवान्के प्रति माताके वात्सल्य प्रेम-भावकी प्रगाढ़ताका अनुभव करके उनको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। शचीमाता यशोदा-भावमें विभावित होकर श्रीगौर भगवान्को पुत्ररूपमें पालन-पोषण करती हैं। उनके शुद्ध वात्सल्य-प्रेममें ऐश्वर्यका लेश भी नहीं है। भगवान् विश्वरूप माताको प्रणाम करके वहाँसे चल दिये। उसी दिनसे वे इस सम्बन्धमें मातासे कोई बात नहीं बोलते।

विश्वरूप और अद्वैत-सभा

विश्वरूप प्रभु रात दिन अद्वैत सभामें रहते हैं, दिन-रात कृष्ण-कथामें मग्न रहते हैं, केवल भोजनके समय घर आते हैं, और संसारसे कोई सम्बन्ध नहीं रखते। वे आजन्म विरक्त महापुरुष हैं। उनकी इस नयी उम्रमें संसारसे वैराग्य देखकर माता-पिताके मनमें भय हो गया है। प्रातःकाल गङ्गा-स्नान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करके वे अद्वैत सभामें जाते हैं, और दो पहर होने पर वहाँसे भोजन करनेके लिए एक बार घर आते हैं।

अद्वैत सभा मिश्रभवनके पास ही है। श्रीअद्वैत-प्रभु इस सभाके प्रतिष्ठाता हैं। नवद्वीपमें भक्तितत्व-की चर्चा करनेके लिए वैष्णवोंका कोई स्थान न था। कृष्णभक्त वैष्णवोंके लिए श्रीअद्वैत प्रभुने इस सभाकी स्थापना की थी। भागवत-पाठ. श्रीकृष्ण-कीर्तन, भक्तितत्व-व्याख्यान तथा कृष्ण-लीला-कथा इस सभामें प्रतिदिन होती है। श्रीविश्वरूप प्रभु इस सभाके प्राण-स्वरूप हैं। श्रीअद्वैत प्रभु आदि नदियाके वैष्णव-वृन्द विश्वरूप प्रभुको अत्यन्त प्रेमकी दृष्टिसे देखते हैं और सम्मान करते हैं। अति अल्पावस्थामें विश्वरूप प्रभु सर्वशास्त्र-निष्णात हो गये हैं। सब शास्त्रोंमें वे कृष्णभक्तिका व्याख्यान करते हैं। श्रीअद्वैत-प्रभु सुनकर प्रेमानन्दसे हुङ्कारी भरते हैं और विश्वरूपको गोदमें उठाकर नृत्य करते हैं। पूजापाठ छोड़कर वे आसनसे उठकर विश्वरूप-प्रभुको प्रेमपूर्वक सभामें बुलाते हैं। उनको देखकर सभी आनन्दसे हरिध्वनि करने लगते हैं।

प्रतिदिन शचीमाता उसी धूपमें बालक निमाई-चाँदको भेजकर अद्वैत सभासे विश्वरूपको बुलवाती हैं। भोजन तैयार करनेके बाद शचीमाताको विश्वरूपके लिए बैठे रहना पड़ता है।

शचीनन्दन माताके आदेशसे इस सभामें प्रतिदिन बड़े भाईको बुलाने जाते हैं। उनकी अवस्था अभी पाँच वर्षसे ऊपर नहीं है। दिगम्बर वेशमें धूलि-धूसरित अङ्गसे शचीबालक बड़े भाईको बुलानेके बहाने अद्वैत सभामें जाकर भक्त मण्डलीको दर्शन देते हैं। वहाँ अपनी कथा सुनकर श्रीगौर-भगवान्‌के मनमें बड़ा आनन्द होता है। अतः सबके प्रति वे प्रतिदिन शुभ दृष्टिपात करते हैं। उनकी अपरूप रूपराशि देखकर सभामें सब मन्त्र-मुग्ध हो एकटक उनके चन्द्रवदनकी ओर देखते हैं।

निमाईचाँद वहाँ अपने अग्रजसे कहते हैं, "भैया भोजनके लिए चलो, माँने बुलाया है।" इतना कह-कर सभा-स्थलसे बड़े भाईका वस्त्र पकड़ खींचते हुए नदियाके रास्ते दिगम्बर निमाईचाँद निकले। विश्वरूप प्रभु पोथी हाथमें लेकर छोटे भाईको गोदमें लेकर घर आये। दोनों भाई एकत्र बैठकर भोजन करते थे।

शचीमाता विश्वरूप प्रभुसे कहतीं, "बेटा विश्व-रूप! तू घर पर रहता है तो निमाईचाँद कोई उपद्रव नहीं करता। तुमको जब घरपर नहीं देखता है तो यह मुझे बड़ा परेशान करता है। निमाई जितना तुमसे डरता है, उतना ही प्रेम भी करता है।" विश्वरूप माताकी बात सुनकर मुस्करा उठे। शची-माता निमाईचाँदको विश्वरूप प्रभुके पास रखकर अन्य कार्यसे घरके भीतर गयीं। उस दिन विश्वरूप प्रभु फिर अद्वैत सभामें नहीं गये। घर पर रहकर छोटे भाईके साथ धूल-धूल खेलकर माताको प्रसन्न किया। शचीमाताने निश्चन्त होकर उस दिन गृह-कार्य सम्पन्न किया।

श्रीअद्वैत प्रभु शान्तिपुरसे नवद्वीपमें आकर वास करते हैं। अद्वैत सभामें ही उनका शचीबालकोंके साथ प्रथम परिचय हुआ है। सुन्दर गठन, दिगम्बर शिशुको देखकर वृद्ध ब्राह्मणके मनमें नाना प्रकारके सन्देह उठते हैं। वे किसीको कुछ नहीं बोलते। वे मनमें सोचते हैं—

"प्राकृत मानुष कभु ए बालक नय।"

—चै० च० आ० ५ ६४

श्रीअद्वैत प्रभु हमारे गौर-आना गोसाईं हैं, उन्हींके प्रेम-हुङ्कारसे तथा तुलसी गङ्गाजलके द्वारा श्रीकृष्णार्चन करनेसे श्रीगौरभगवान् गोलोककी सुख-सम्पत्ति छोड़कर नदियामें अवतीर्ण हुए थे। प्रभुकी वैष्णवी मायासे अभिभूत होकर श्रीअद्वैत प्रभु अपने अभीष्ट देवको पहचान करके भी पहचान न सके।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"क्या ये वही हैं ?" इस सन्देहमें वे अनेक बार लाञ्छित भी हुए। महाप्रकाशके समय उनका सारा सन्देह दूर हुआ। उसके पश्चात् वे शचीनन्दनको व्रजेन्द्रनन्दन समझकर उनके चरणोंमें तुलसी-चन्दन देकर पूजा करते थे। उनको अलग भोग लगाते थे। श्रीअद्वैत प्रभु अपने गृहदेवता श्रीश्रीमदनगोपालको तथा श्रीश्रीगौराङ्गसुन्दरको पृथक् विग्रह नहीं मानते थे। सारी बातें यथासमय विस्तारपूर्वक वर्णन की जायँगी।

एकादशी-प्रसाद-भोजन-लीला

शचीनन्दनकी एक और बाल्यलीला सुनिये। एक दिन निमाईचाँदने प्रातःकाल विषमरूपसे रोना प्रारम्भ किया। आङ्गनमें धूलमें पड़कर लोटने लगे। उनका सर्वाङ्ग धूलि-धूसरित हो गया। शचीमाता बड़ी विपदमें पड़ीं। निमाईचाँदको वे किसी भी प्रकारसे शान्त नहीं कर पा रही हैं। सब मिलकर हरिनाम कीर्तन करते हैं, परन्तु निमाईचाँद कदापि शान्त नहीं हो रहे हैं, उनका रोना बन्द नहीं हो रहा हैं। शचीमाता बहुत उद्विग्न हैं। उन्होंने पुत्रको गोदमें लेकर प्यार करते हुए पूछा—"बेटा विश्वम्भर ! आज तुम इतना क्यों रो रहे हो ? तुम क्या चाहते हो ? तुम जो माँगो, मैं दूँगी। मेरे सोनेके लाल ! रोओ मत।"

निर्भय, धृष्ट, दुर्द्धर्ष उद्दण्ड पुत्रका उत्तर सुनिये। वे पसीनेसे लथपथ, धूलि-धूसरित अङ्गसे रोते-रोते माताके उत्सुक मुखकी ओर नेखकर दुलारसे हठ करते हुए बोले—"यदि मेरे प्राणोंकी रक्षा चाहती हो तो जगदीश पण्डित और हिरण्य भागवतके घर जाकर इनने एकादशीके उपलक्ष्यमें जो नैवेद्य विष्णु भगवान्‌के लिए बनाया है, वह मुझे खानेको लाकर दो, तब मैं स्वस्थ होकर चल-फिर पाऊँगा।

पुत्रकी यह लज्जाप्रद हठकी बात सुनकर शचीमाताके मनमें बड़ा दुःख हुआ।" सोनेका बच्छा निमाई मेरा आज विष्णुका नैवेद्य खानेका हठ क्यों कर रहा है ? इसको यह कुमति कैसी हुई ? इससे तो अकल्याण होगा। ठाकुर ! मेरा निमाई अबोध बालक है, इसके अपराधको न गिनना।" इतना कहकर धर्मप्राणा शचीमाता ठाकुर-मन्दिरके द्वारपर जाकर सिर लटकाकर बैठ गयी। अन्यान्य पड़ोसी स्त्रियाँ शचीबालकके इस हठको सुनकर हँस पड़ीं और घबरा उठीं।

निमाईचाँदका रोना बन्द नहीं हो रहा है, बल्कि उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। वे रोते हुए हठपूर्वक अपना केश नोचते हैं, कभी सिर पटकनेके लिए तैयार हो जाते हैं। यह देखकर मालिनी देवी आदि बड़ी बूढ़ी स्त्रियोंने निश्चय किया कि निमाईको शान्त करनेके लिए कहा जाय कि उसको विष्णुका नैवेद्य लाकर दिया जायगा। शचीमाताको यह बात किसीने नहीं कहा। शचीमाताकी बहिन सर्वजयादेवीने निमाईचाँदको गोदमें उठाकर, दुलार करते हुए कहा, 'बेटा ! निमाईचाँद ! अब मत रोओ। एकादशीका विष्णुका नैवेद्य तुम्हारे लिए मैं अभी ला देती हूँ। यह सुनकर शचीनन्दन कुछ शान्त हुए।

जगदीश पण्डित और हिरण्य भागवत नवद्वीपमें परम वैष्णवके रूपमें प्रसिद्ध थे। मिश्रपुरन्दरके साथ उनका विशेष परिचय था। एक ही मुहल्लेमें रहते हैं। उन्होंने लोगोंके मुँहसे जगन्नाथ-नन्दनके इस हठकी बात सुनी। निमाईचाँदको वे लोग विशेष रूपसे जानते हैं। वे विष्णु नैवेद्य खाना चाहते हैं, यह सुनकर उन लोगोंके मनमें परम आनन्द हुआ। उनके सारे अङ्ग पुलकित हो उठे।

जगदीश पण्डितके घर आज श्रीहरिवासर है। बड़े धूम-धामसे श्रीएकादशी व्रतका अनुष्ठान किया गया है, नाना प्रकारके फल-मूल नैवेद्य आदि प्रस्तुत हैं। यह संवाद शचीबालकको कहाँसे मिला ? यह सोचकर दोनों विप्र चकित हो आपसमें बातें करते हैं, "यह शचीबालक कोई साधारण शिशु नहीं है। इस बाल-विग्रहमें निश्चय ही गोपालका अधिष्ठान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। इस बालकके हृदयमें बैठकर नारायण जो बोलाते हैं, वही यह बोलता है। चलो, विष्णुका नैवेद्य देकर इस बालकको शान्त कर आवें।' यह कहकर वे दोनों विप्र अपने घरसे विष्णु नैवेद्य लेकर मिश्र-भवनमें उपस्थित हुए।

शचीनन्दन उस समय भी धूलमें पड़े रो रहे थे। सुकृतिशील विप्रगणने आदरपूर्वक उनको गोदमें उठा लिया। जगदीश पण्डितने अपनी चादरसे शची-नन्दनके शरीरकी धूल झाड़ दी, वस्त्रके अञ्चलसे आँखके आँसू पोंछकर स्नेहपूर्वक बोले, "बापू निमाई! तुम्हारे लिए यह नैवेध लाया हूँ। भोजन करो। तुम्हारे खानेसे कृष्ण सेवा हो जायगी।"

शचीबालकका रोना अब बन्द हुआ। वह आनन्द पूर्वक जगदीश पण्डितके दिये हुए विष्णु-नैवेद्यमें-से हाथमें पूजोपहार लेकर कुछ भोजन किया, कुछ-कुछ छींट दिया। इस समय उनके मुँहसे हँसी नहीं छूट रही है।

शचीमाता भयसे व्याकुल हो गयी हैं। धृष्ट निमाईने आज यह क्या किया? श्रीहरिवासरके विष्णु-नैवेद्य का अग्रभाग भोजन किया? क्या होगा? इसी चिन्तासे वे घबरा उठीं। इधर सब लोग निमाईचाँदको लेकर आनन्द कर रहे हैं। धूलि-धूसरित अङ्गसे शचीनन्दन नैवेद्य उपहारसे कुछ खाते हैं, तथा कुछ दूसरोंको प्रसाद-रूपमें वितरण कर रहे हैं। वह आँगनके बीचमें होकर प्रेमानन्दमें 'हरि-हरि' कहकर नृत्य कर रहे हैं।

जगदीश पण्डित और हिरण्य भागवतके भाग्य बड़े उज्ज्वल हैं। इच्छामय श्रीगौरभगवानकी इच्छा उन्होंने पूर्ण की। वे प्रभुके नित्य पार्षद और अन्तरङ्ग भक्त हैं। प्रभुकी कृपा हुए बिना मनुष्यकी ऐसी सुबुद्धि नहीं होती। प्रभुके चिह्नित निज-जन होनेके कारण नदियावासी विप्रद्वयकी ऐसी बुद्धि हुई। उनने शचीबालकके तत्वको जानकर ही यह कार्य किया था। नदियाके लोग उनको धन्य-धन्य कहने लगे। उनके ऊपर प्रभुकी अपार कृपा थी। इसी कारण इच्छामय श्रीगौरभगवानने अपनी इच्छा उनके सामने प्रकट करके अपने तत्त्वका ज्ञान प्रदान किया।

विप्रद्वय शचीबालकको इस प्रकार शान्त करके अपने घर गये। शचीमाता उनके कार्यसे चकित और चिन्तित हो उठीं। मालिनी देवी आदि पड़ोसी स्त्रियोंने उनको समझाया कि, विप्रद्वय विष्णुको निवेदन किया हुआ नैवेद्य भोग लेकर आये थे। निमाईचाँदको शान्त करनेके लिए ही उन्होंने दयावश होकर कार्य किया है। शचीमाताने सोचा, "हाँ! यह हो सकता है। वे लोग ठाकुरका अनिवेदित नैवेद्य मेरे सोनेके लालको देकर क्यों अपराध करेंगे? वे ब्राह्मण पण्डित हैं, सब कुछ जानते हैं।" पुत्र-वत्सला स्नेहमयी जननीने यह कहकर मनको सन्तुष्ट किया।

षष्ठी-नैवेद्य-भक्षण

शचीनन्दनको ठाकुरका नैवेद्य खानेका लोभ अत्यन्त शैशव-कालसे ही था। तैथिक अतिथि ब्राह्मणके बालगोपालका भोग खाकर देव-द्रव्यमें उनका लोभ कुछ प्रबल हो गया था। शचीमाता एक दिन षष्ठी व्रत करनेके लिए पुरनारियोंके साथ पूजाका नैवेद्य लेकर षष्ठी मन्दिरमें जा रही थी। वस्त्रके अञ्चलसे नैवेद्यको ढँक कर हाथमें अन्यान्य पूजाकी सामग्री लेकर सबके साथ जा रही हैं। मिश्र-भवनके पास ही गङ्गा तट पर वट-वृक्षके मूलमें षष्ठी देवी प्रतिष्ठित हैं। पड़ोसकी स्त्रियोंके साथ शचीमाता पूजाकी सामग्री लेकर पुत्रके मङ्गलके लिए षष्ठी देवीकी पूजा करने वहाँ जा रही हैं।

धृष्ट निमाईचाँद रास्तेमें खेल कर रहे थे। माताको देखकर दौड़े आये, हँसते-हँसते दोनों हाथ फैलाकर राह रोक कर खड़े हो गये। माताके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वस्त्रके अञ्चलसे ढँके नैवेद्यकी ओर देखकर वे मधुर वचनसे दुलारके स्वरमें मातासे बोले, "माँ ! तुम्हारे हाथमें क्या है ?"

शचीमाता रास्तेमें बड़ी विपदमें पड़ी। रास्तेकी धूल हाथमें लगाये निमाईचाँदने उनको जकड़ रक्खा है। षष्ठी-पूजाकी नैवेद्य-आदि सारी सामग्री उनके पास है। कैसे धृष्ट पुत्रको हटावें, कुछ भी सोच नहीं पा रही हैं। पुत्रके सिर पर हाथ रखकर शचीमाताने दुलार करते हुए सस्नेह कहा, "मेरे हृदय-धन। तुम्हारे मङ्गलके लिए षष्ठी-पूजा करने जा रही हूँ। शीघ्र पूजा करके मैं तुम्हारे लिए मीठा-मीठा सन्देश प्रसाद लाऊँगी। मेरे लाल ! तुम यहाँ ही खेलो। मैं शीघ्र ही आ रही हूँ।"

माताके केवल मौखिक दुलारसे निमाईचाँदका मन नहीं भरा। षष्ठीदेवीका नैवेद्य खानेका लोभ उनका इतना बढ़ा कि बलपूर्वक माताके हाथसे षष्ठीका नैवेद्य ले लेनेमें वे तनिक भी कुण्ठित न हुए। शचीमाताके दोनो हाथ बँधे हैं। निमाई-चाँदने अचलका वस्त्र पकड़ कर इतना खींचा कि वस्त्रसे ढँका नैवेद्यका उपहार रास्तेमें उनके सामने गिर पड़ा। शचीमाता 'हाय-हाय' करने लगीं। और अबोध पुत्रको हाथ उठाकर पीटनेके लिए तैयार हो गयीं। यह देखकर रोष भरे नेत्रोंसे माँको सम्बोधन करके निमाईचाँद बोले, "भूखसे मेरा पेट जल रहा है और तू अबोधिनी कुछ समझती नहीं। बार-बार मैंने तुझसे कहा कि मुझे भूख लगी है, पर तुमने कुछ नहीं दिया, इसी कारण तेरे ठाकुरका नैवेद्य मैं खा गया।" इतना कहते हुए शचीनन्दन रास्तेमें बैठकर दोनों हाथसे नैवेद्यका उपहार उठा-उठा कर खाने लगे।

शचीमाता धृष्ट पुत्रके रंग-ढंग को देखकर दंग होकर रास्तेमें खड़ी हैं। उनकी साथकी पुरनारियाँ निमाईचाँदकी धृष्टता देखकर देखकर विस्मित हो रही हैं। कोई-कोई अबोधिनी नारी कहती है, "बाबा ! ऐसा लड़का तो मैंने कभी नहीं देखा।" शचीमाता क्रोध, दुख और लज्जासे रो पड़ीं। देव-द्रव्यमें पुत्रका परम लोभ देखकर विशेष लज्जित और भयभीत हो उठीं। दुखके मारे उनका हृदय जल उठा। निमाईचाँदमें लज्जा और भयका लेश भी नहीं हैं। वह नदियाके मार्गमें बैठकर प्रसन्न चित्तसे नैवेद्यकी सामग्री दोनों हाथोंसे खा रहे हैं। और मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं।

शचीमाताने क्रोधमें भर कर पुत्रको सम्बोधन करके कहा—"मूर्ख बच्चे ! तुमको कहाँ तक समझाऊं, तुम देवताको भी नहीं मानते, तुम्हारे जैसे ब्राह्मण-कुमारका ऐसा दुराचार देख कर मैं तो दुखःके मारे मर जाऊँगी।"

माताके मुखसे कटु वाणी सुनकर वे क्रोधसे उन्मत्त हो गये। श्रीगौरभगवान्ने स्वयं माताको अनेक बार नीति शिक्षा दी है। इन्होने माताको ऐश्वर्य दिखलाकर अनेक वार भुलानकी चेष्टाकी है। वात्सल्य-स्नेहसे विह्वल माता अबोध-पुत्रकी बात हँसकर उड़ा देती है। परन्तु मनमें उनके एक सन्देह रह जाता है। अकेले मिश्रपुरन्दर ठाकुरके सामने वे बात कहती हैं। स्त्री-पुरुष एकान्तमें बैठ कर इस सम्बन्धमें तर्क-वितर्क करते हैं; परन्तु कुछ सिद्धान्त निश्च य नहीं कर पाते। इस बार भी शचीनन्दनने माताको अपने ऐश्वर्यकी बात कहकर भुलानेकी चेष्टा की।

शुनि गौरमणि, जननीर वाणी,
अन्तर भरिल कोपे।
कहिल से सब, ना बूझसि तबू,
कुबोल बलसिमौके ॥
शुन अबोधिनी; आमि सब जानि,
अमि तिन लोके सार।
जत-जत देख, आमि मात्र एक,
त्रिजगते नाहि शाखा ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वृक्षमूले जेन, जल निषेचन,
उपरे सिञ्चित शाखा ।
प्राण-निषेवन, इन्द्रिय से हेन,
ऐछन आमार लेखा ॥
—चै. म.

शचीमाता देखती हैं कि उनके पुत्रके मुखचन्द्रसे अपूर्व दिव्य ज्योति विकीर्ण हो रही है। उनकी सुधामधुर वाणी मानो ऋषिमुख-निःसृत देववाणी-सी सी जान पड़ती है। क्षणभरके लिए शचीमाता अपने आपको भूल गयीं। वे विह्वल होकर पुत्रके मुखचन्द्रकी ओर एकटक देखती रह गयीं। अन्तर्यामी श्रीगौर भगवान्‌ने माताके मनोभावको समझ कर अपना भाव संवरण किया। उन्होंने हँसते-हँसते माताका गला जकड़कर सुधामधुर स्वरसे 'माँ' कह कर जैसे ही पुकारा, शचीमाताका सारा सन्देह दूर हो गया। पुत्र-स्नेहसे विह्वल माताने सब कुछ भूल कर पुत्रको गोदमें ले लिया, और शत-शत बार मुख-चुम्बन किया। षष्ठी देवीका नैवेद्य खानेकी बात, षष्ठी पूजाकी बात—सब कुछ भूलकर बाल-गौराङ्गकी रूपसुधाके पानमें मत्त हो गयीं।

श्रीगौर भगवान् माताको भुलावेमें डालकर भी भुला न सके। चतुर-शिरोमणिकी चातुरीके जालमें मायामुग्ध जीव किस प्रकार जड़ बन जाता है, यह शचीमाताकी अवस्था देखकर सहज ही समझमें आ सकता है। अबोध जीव श्रीभगवान्‌की मोहिनी मायासे सर्वथा आबद्ध रहता है। वे जीवको अपना स्वरूप दिखलाते हैं तो भी मोहिनी माया उनको पहचानने नहीं देती। भगवान् और जीवके बीच जो प्रकृतिका घना आवरण है, उसीका नाम माया है। यह माया जगद्व्यापी है। यह माया ही जीवका शत्रु है। इस मायाके कारण, इस अविद्याके प्रभावसे ही जीव-जगत परमेश्वरका साक्षात्कार पानेमें असमर्थ हो रहा है। शचीमाता श्रीगौराङ्गकी माता होकर भी जगत्‌की जीव हैं। उनका पुत्र त्रिलोकीनाथ है, सारे देव-देवियोंका पूज्य है, यह जानते हुए भी वे नहीं जान पा रही हैं, समझते हुए भी समझनेमें असमर्थ हैं। इसको कहते हैं श्रीभगवान्‌का मायाजाल।

साथमें मालिनी देवी थी। उन्होंने पुनः शची-माताको षष्ठी पूजाके लिए नैवेद्य तैयार करके ले आनेके लिए सचेत कर दिया। निमाईचाँदके मङ्गलके लिए पुनः शचीमाता उत्तम-उत्तम पूजोपहार लेकर षष्ठी पूजा करने चलीं।

शचीमाता पुत्रकी बात सुनकर चकित हो गयीं अपने धृष्ट पुत्रकी धृष्टताके लिए षष्ठी देवीके सामने कितनी ही मिन्नते कीं। गलेमें वस्त्र डालकर कातर भावसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगीं, "माँ षष्ठी ! मेरा धृष्ट बालक अबोध हैं। तुम दया करके उसका अपराध क्षमा करना।"

पुत्र-वत्सला जननी केवल षष्ठी देवीके सामने प्रार्थना करके ही निश्चिन्त न रह सकीं। पुत्रके अपराध जनित अमङ्गलकी आशंकसे उनका कोमल हृदय बड़ा ही व्यथित है। इसलिए षष्ठी-मन्दिरमें आयी हुई वृद्धा नारियोंके चरणोंमें गिर कर कातर भावसे हाथ जोड़कर उनके निकट निमाईचाँदकी मङ्गल-कामनासे आशीर्वादकी भिक्षा माँगने लगी। इससे भी उनका मन न भरा। उन्होंने वृद्धा ब्राह्मणियोंकी चरण-धूलि लेकर निमाईचाँदके मस्तक पर लगायी, और अति विनीत भावसे उनसे बोलीं, "आप सब मिलकर मेरे अबोध निमाईचाँदको आशीर्वाद दें, जिससे उसका कोई अमङ्गल न हो।"

धन्य है शचीमाताका वात्सल्य प्रेम ! धन्य है उनका पुत्र-स्नेह ! जिसके श्रीचरण धूलिके एक कणको पानेके लिए शिव-विरञ्चि लालायित रहते हैं, लक्षकोटि देवता जिनकी चरण-धूलिकी प्राप्तिकी आशामें अनन्त कालसे आराधना कर रहे हैं, आज पुत्र स्नेहविह्वला, वात्सल्य प्रेम-रस-निगग्ना शचीमाता उसी त्रिलोकीनाथ विश्व ब्रह्माण्डके पूर्णब्रह्म सनातन श्रीगौर भगवान्‌के मस्तक पर प्रसन्न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चित्तसे पतिव्रता कुलनारियोंकी चरण धूलि प्रदान कर रही हैं। षष्ठी देवीका नैवेद्य खाकर अबोध पुत्रने विषम अपराध किया है, पीछे कहीं उसका अमङ्गल न हो, इस भयसे भीत होकर पुत्रवत्सला जननीने उपयुक्त कार्य करके जगत्को यह दिखलाया है कि श्रीभगवान् प्रेमके अधीन हैं, स्नेहके वशीभूत हैं। यह सर्वोत्तम भाव है। भावग्राही श्रीभगवान् इस भावभक्तिसे वशीभूत होते हैं।

शचीमाताने जब वृद्धा ब्राह्माणियोंकी चरण-धूलि लेकर निमाईचाँदके मस्तक पर लगायी, तब शचीनन्दन मृदु-मन्द मुस्काये। उस हँसीका मर्म न समझ सकनेके कारण शचीमाताने सोचा कि जान पड़ता है धृष्ट पुत्र व्यङ्ग कर रहा है। वे कुछ रुष्ट होकर पुत्रको सम्बोधन करके बोलीं, "दुष्ट बालक! धृष्टता करके हँस रहा है! इनको प्रणाम कर। इनके आशीर्वादसे तेरा सब मङ्गल होगा।" निमाईचाँद माँकी बात सुनकर जोरसे हँसते हुए वहाँसे भाग गये।

शचीमाताने लज्जित होकर विनीत-भावसे सबसे कहा, "मेरा निमाई बड़ा धृष्ट बालक है। इसको मैं शासनमें नहीं रख पाती। यह किसीसे भी नहीं डरता। केवल विश्वरूपसे कुछ डरता है। विश्वरूप घर पर एक दण्ड भी नहीं रहता। वह दिन-रात अद्वैत-सभामें रहता है। केवल भोजन करने घर आता है। आज विश्वरूपके द्वारा निमाई-चाँदको शासन कराऊँगी। तुम्हीं बतलाओ, ऐसे धृष्ट बालकको मैं कैसे सुधारूँ?"

रमणीवृन्दने हँसकर उत्तर दिया, "अरी निमाईकी माँ! उसको तुम कुछ न बोलना। तुम्हारा यह बालक साधारण बालक नहीं है। इसे देखकर ही सब लोगोंको आनन्द मिलता है, इसकी धृष्टता उनको अच्छी लगती है।"

शचीमाताको यह सब बातें पसन्द न आयीं। वे निमाईचाँदको पकड़कर षष्ठीमन्दिरसे घर लौटीं। घर आकर मिश्रपुरन्दर ठाकुरको पुत्रके गुणोंकी सारी गाथा उन्होंने कह सुनायी। उन्होंने गम्भीरता पूर्वक उत्तर दिया, "ठीक तो, ब्राह्मणके लड़केकी ऐसी बुद्धि क्यों हुई? देव-द्रव्यमें लोभ होना तो अच्छी बात नहीं है।" शचीमाताने दुःखी होकर उत्तर दिया, "तुम आज घरमें नारायणका स्वस्त्ययन करो, जिससे मेरे लालका अमङ्गल न हो।"

मुरारि गुप्तके भोजन-पात्रमें मूत्र-त्याग

श्रीपाद मुरारी गुप्त श्रीगौराङ्ग लीलाके सूत्र लेखक हैं। इन महापुरुषने श्रीगौराङ्गप्रभुकी बाल्य-लीला अपनी आँखों देखकर सूत्ररूपमें अपने करचामें जो लिखा है उसका नाम है श्रीकृष्ण चैतन्य-चरिता-मृत। यह ग्रन्थ अति सहज संस्कृत श्लोकोंमें ग्रथित है। प्रभुके अन्तरङ्ग पार्षद श्रीस्वरूप दामोदर तथा श्रीपाद मुरारि गुप्तके करचाका अवलम्बन करके पूज्यपाद श्री वृन्दावनदास ठाकुर और श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी महाशय अपने श्रीग्रन्थद्वयका सङ्कलन करके गौड़ीय वैष्णव जगतमें अतुल कीर्ति रख गये हैं। पूज्यपाद श्रीमुरारी गुप्तके साथ शची-नन्दनने जो बाल्यलीलारङ्ग किया था, उसीका इस समय वर्णन होगा।

श्रीपाद मुरारिगुप्त श्रीगौराङ्ग प्रभुकी अपेक्षा उम्रमें कहीं बड़े थे। निमाईचाँद जब पाँच वर्षके शिशु थे, उस समय मुरारी गुप्तकी अवस्था अनुमानतः १८/२० वर्षकी थी। उनका श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरके साथ विशेष परिचय था। वे चिकित्सका व्यवसाय करते थे। नदियाके गङ्गादास पण्डितकी पाठशालामें पढ़ते थे। नवद्वीपके सब लोग उनका सम्मान करते थे। वे ज्ञानचर्चाके बड़े पक्षपाती थे। योगवासिष्टका पाठ करते थे। तर्क-वितर्क करते थे। भक्ति-मार्गके पथिक नहीं थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक दिन मुरारि गुप्त पाठशालेके छात्रोंके साथ जीव और भगवान्‌के अभेद भावके सम्बन्धमें विचार और तर्क करते-करते नदियाके मार्ग पर चले जा रहे थे। कर और शिर दोनोंका सञ्चालन करते हुए वे तर्कयुद्धमें रत थे। उनका किसी ओर ध्यान न था, अत्यन्त संलग्न भावसे छात्रोंको 'सोऽहं', 'सोऽहं' तत्व समझाते चले जा रहे थे। पीछेसे अकस्मात् ताली और हँसीकी ध्वनि सुनकर उन्होंने मुँह फेरकर देखा कि, श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रके नन्दन नदियाके सखावृन्दके साथ उनके पीछे दौड़ते आ रहे हैं। उनका कर-शिर-चालन, काव्य-विन्यास अविकल अनुकरण करके व्यङ्ग करते आ रहे हैं। अन्यान्य शिशुगण भी उनके पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं। सब लोग हँस रहे हैं। यह देखकर ज्ञानगर्वी मुरारि गुप्तके मनमें बड़ा रोष हुआ। उन्होंने क्रुध होकर शचीनन्दको कटु वचन कहा। उन्होंने शचीबालकको क्रोधित होकर कटु वचन से शासन करते हुआ कहा, "तुम मिश्र कुरन्दरके अकाल कुष्माण्डके समान पुत्र पैदा हुए हो। माता पिताके दुलारसे बिल्कुल उच्छङ्खल हो रहे हो।"

शचीनन्दन उस समय पाँच वर्षके धृष्ट बालक थे। वे मुरारि गुप्तकी बात सुनकर पहले तो मुस्कराये, पश्चात् क्रोधान्ध होकर भौएँ टेढ़ी करके गर्व सहित बोले, "तुम जाओ, भोजनके समय आज तुम्हें उचित दण्ड दूँगा"

ज्ञान-बुद्धि-गर्वित मुरारि गुप्त शचीनन्दनकी यह बात सुनकर विस्मित हो उठे। बालककी बात कह कर हँसीमें उड़ा दिया। परन्तु आज वे कुछ विशेष अनमना होकर घर गये। शची बालककी वह क्रोधान्ध सुन्दर मुखछवि उनके चित्तसे दूर नहीं हुई। उनके मनमें वह मधुर बालमूर्ति मानो आसन जमा कर बैठ गयी।

श्रीपाद मुरारि गुप्त घर आकर मध्याह्न भोजनके लिए बैठे। उसी समय धृष्ट शचीनन्द मधुर बाल-वेषमें सजकर अचानक भोजन-गृहमें आकर उपस्थित हो गये, और मेघ-गम्भीर नादसे 'मुरारि-मुरारि' कहकर उच्च स्वरसे पुकारने लगे। वैद्यराज मुरारि गुप्त अभी गम्भीर नाद सुन कर शचीनन्दनके चन्द्रवदनकी ओर दृष्टिपात करने भी न पाये थे कि वे सीधे उनके भोजनके पात्रके सामने आकर खड़े हो गये। मुरारि गुप्तको कोई बात कहनेका अवसर न देकर दिगम्बर बालगौर हँसकर बोले, "मुरारि! क्या करते हो? घबराओ मत, भोजन करो।" मुरारि गुप्त शचीनन्दनके इस काण्डको देखकर अवाक हो गये। प्रातःकालकी बात उनको याद पड़ी। वे निमाई चाँदको सिरसे पैर तक निरखते हैं और मन ही मन सोच रहे हैं कि, "ऐसा रूप तो कभी मैंने नहीं देखा। शचीबालक सामान्य बालक नहीं है।" मन-ही-मन इस प्रकार रहे हैं, और प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर एक टक निहार रहे हैं। इस अवसर पर हमारे रङ्गीले प्रभुने उनके साथ एक रङ्ग किया। श्रीपाद मुरारि गुप्तके भोजनके पात्रमें उन्होंने हँसते-हँसते मूत्र-त्याग कर दिया।

ज्ञानगर्वी मुरारि गुप्त 'छिः छिः! राम राम।।' कहकर भोजनसे उठ पड़े। शचीनन्दको बड़ा आनन्द हो रहा है। भर थाली मूत्रत्याग करके मुरारिके घरमें आनन्दित हो मधुर नृत्य करने लगे। उनमें भय और लज्जाका लेश भी नहीं है। वे ताली बजाकर नृत्य करते-करते हँसकर मुरारिगुप्तको सम्बोधन करके बोले, "मुरारि! तुम हाथ चलाना, सिर चलाना छोड़ दो। ज्ञानचर्चा छोड़ दो। भक्ति-योग साधन करो। मन लगाकर कृष्ण भजनकरो। जीवमें भगवान बुद्धि मत करो। तुम जो कहते हो उससे मेरे मनमें व्यथा होती है। तुम बड़े मन्द बुद्धि हो, ऐसा काम मत करना।"

श्रीगौर भगवान् श्रीपाद मुरारिगुप्तसे यह सब गूढ़ उपदेशपूर्ण बात कहकर उस स्थानसे अन्तर्धान हो गये। शचीनन्दन जब मुरारि गुप्तसे ये सब बातें कर रहे थे, उस समय मुरारि गुप्तने देखा कि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जगन्नाथ मिश्र-नन्दनके सुन्दर नयनद्वयसे मानो अङ्गस्फुलिङ्ग निकल रहा है। दिव्य ज्योतिसे उनका सुन्दर मुख-मण्डल अपूर्व शोभा धारण कर रहा है। पञ्च-वर्षीय शचीबालककी ज्योति-पूर्ण दिव्य मूर्त्तिका दर्शन करके युवक मुरारिके मनमें महाभीतिक उद्रेक हुआ।

उन्होंने सोचा कि जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरका यह शिशु कदापि साधारण शिशु नहीं हो सकता। यह साक्षात् पूर्णब्रह्म सनातन हैं, मेरे जन्म-जन्मान्तरके प्रभु हैं। यह सोचकर वैद्यराज मुरारि प्रेमके वश व्याकुल होकर रो पड़े। उनके सर्वाङ्ग पुलकायमान हो उठे। नयनद्वयसे प्रेमाश्रुके शतशः स्रोत बह चले। वे प्रेमानन्दनमें अपने आपको भूलकर मिश्रभवनकी ओर चल पड़े।

इधर निमाईचाँद घर आकर माताकी गोदमें चढ़कर आनन्दसे नृत्य कर रहे हैं। उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है। आज वे मुरारि गुप्तके घरमें जो काण्ड कर आये हैं, उसे कोई नहीं जानता। शची-माता पुत्रको गोदमें लेते ही सब दुःख भूल जाती हैं।

मिश्रपुरन्दर ठाकुर घरपर हैं। गृहिणीकी गोदसे पुत्रको अपने वक्षःस्थलमें लेकर उनके चन्द्रमुखमें शतशः स्नेह चुम्बन प्रदान करते हैं। जीवन-सर्वस्व हृदय-धनको लेकर पति-पत्नी जी भरकर लाड़-प्यार कर रहे हैं। दोनों मिलकर सोनेके लालके दोनों गालपर दो-दो चुम्बन प्रदान कर अपनी-अपनी गोदमें खींचा-खींची कर रहे हैं। शचीनन्दनके आनन्दकी सीमा नहीं है। मिश्र-दम्पति सब कुछ भूलकर निमाईचाँदके वात्सल्य प्रेममें उन्मत्त हैं। शचीनन्दन बीच-बीचमें सुधासे सनी हँसीकी लहरी उठाकर माता-पिताके उत्फुल्ल प्राणमें आनन्दका फव्वारा छोड़ रहे हैं। मिश्र-भवनमें वैकुण्ठके सुखकी अनुभूति हो रही है। शची-जगन्नाथ अपने आपमें नहीं है।

इसी समय वहाँ मुरारि गुप्त आकर उपस्थित हुए। उनके मुँहसे बात नहीं निकल रही है। सारा अङ्ग पुलकित है। नयनोंमें अविरल प्रेमाश्रुकी धारा है। चक्षुद्वय प्रेमानन्दमें अरुण वर्ण हो रहे हैं। वे स्थिर होकर खड़े नहीं हो पा रहे हैं। प्रेमोन्मत्त भावसे गद्गद वाणीमें जो कुछ बोल रहे हैं उसको समझनेकी क्षमता किसीमें नहीं है। वे शचीमाताकी गोदके बाल-गौराङ्गकी मूर्त्तिकी ओर एकटक देख रहे हैं। उनकी अपरूप रूपराशि देखकर उन्मत्त हो रहे हैं। उनकी रूप तृष्णा मानो मिट नहीं रही है। वे अब स्थिर न रह सके और शचीबालकके चरणोंमें गिरकर बार-बार प्रणाम करने लगे।

वे मानो कुछ भी नहीं जानते। मिश्र-दम्पतिने मुरारि गुप्तको यथाविधि अभ्यर्थना करके बैठनेका अनुरोध किया। उन्हें निमाईचाँदको प्रणाम करते देखकर 'क्या करते हो, क्या करते हो' कहकर मिश्रपुरन्दरने उनका हाथ पकड़ कर उठाया। शचीमाताने दुःखित होकर उनसे कहा, "मुरारिबाबू! मेरा निमाईचाँद दुधमुँहा बालक है। तुम्हारे आशीर्वादके योग्य है। तुमने इसको क्या समझकर प्रणाम किया? इससे मेरे सोनेके लालका अमङ्गल होगा। तुम आशीर्वाद दो जिससे मेरे लालकी आयु-वृद्धि हो, जिससे यह चिरंजीवि हो।"

श्रीपाद मुरारिगुप्त तब प्रकृतिस्थ हो चुके थे। उन्होंने अत्यन्त नम्रतापूर्वक दोनों हाथ जोड़कर विनीत भावसे उत्तर दिया, "माँ यह तुम्हारा पुत्र सामान्य धन नहीं हैं। यह देवाधिदेव जगत्पिता विश्वम्भर हैं। तुम इनको इस समय बालक समझकर लालन-पालन कर रही हो। इनका तत्व कुछ भी समझ नहीं पा रही हो। यह पीछे तुम जान सकोगी। माँ! तुम बड़ी भाग्यवती हो।"

मुरारि गुप्तकी बात शचीमाताको बिल्कुल ही अच्छी न लगी। वह क्षण भरके लिए कुछ अनमनी हो गयीं। मिश्रपुरन्दर ठाकुर भी मुरारिकी ये बातें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुनकर कुछ सोचने लगे। दोनों ही अन्यमनस्क हैं। यह सुयोग पाकर प्रभुको पुनः प्रणाम करके मुरारिने वहाँसे प्रस्थान किया। जाते समय शचीनन्दनकी ओर एक बार और देख लिया। माताकी गोदसे वस्त्राञ्चलके भीतरसे उन्होंने इस समय एक बार मुरारिके ऊपर कृपादृष्टि डाली, और मुस्करा उठे। इस मुस्कराहटका मर्म यह था—"मुरारि! सावधान! फिर ज्ञानचर्चा मत करना।"

शचीनन्दन इस प्रकार मुरारि गुप्तके ऊपर कृपा करके माताकी गोदमें सो गये। शची-जगन्नाथ इनके भीतरकी बात कुछ भी नहीं जानते। केवल मुरारि गुप्तके दैन्य भाव और क्रन्दनको देखकर जो समझा उससे उनके मनमें सन्तोष न हुआ। मुरारि गुप्त नदियामें एक सम्भ्रान्त व्यक्ति हैं। उन्होंने दुधमुँहे बालक निमाईचाँदको प्रणाम क्यों किया? उन्होंने सोनेके लालको भगवान् क्यों कहा? इस चिन्तामें मिश्रदम्पतिका चित्त बड़ा व्याकुल हो उठा। वे स्त्री-पुरुष बैठकर निमाईचाँदके चन्द्रसुखको देखते हैं, और कई बातोंपर विचार करते हैं, पूर्वकी घटनाओंका स्मरण करके उनका चित्त सन्देहके झूलेमें झूलने लगा। उस दिन रातको उन्हें नींद न आयी।

अद्वैत-सभामें मुरारि गुप्त

श्रीपाद मुरारि गुप्त मिश्र-भवनसे चलकर सीधे अद्वैत-सभामें उपस्थित हुए। श्रीअद्वैतप्रभु भक्त-मण्डलीसे परिवेष्टित होकर कृष्ण-कथा सुन रहे थे। श्रीविश्वरूप प्रभु वक्ता थे। वैष्णवगण तल्लीन होकर बालब्रह्मचारी रूपी भगवान् विश्वरूपके मुखसे मधुर कृष्ण-कथा सुन रहे थे। इसी समय आनन्द-गद्गद होकर, पुलकित शरीर श्रीपाद मुरारि गुप्त वहाँ जाकर श्री अद्वैत प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। अद्वैत सभामें मुरारि गुप्तका यह प्रथम आगमन था। वे ज्ञानचर्चा किया करते थे। भक्तिमें श्रद्धा न थी। इस कारण अद्वैत सभासे उनका सम्पर्क न था। शचीनन्दनकी कृपासे सत्सङ्गमें उनकी यह प्रथम बुद्धि हुई।

मुरारि गुप्तने रोते-रोते अद्वैत सभाकी वैष्णव-मण्डलीको दण्डवत् प्रणाम किया। उनको देखकर श्रीअद्वैत प्रभुने आदरपूर्वक समीप बैठाया। मुरारि-गुप्तके मुखसे शचीबालककी अपूर्व लीला सुनकर श्रीअद्वैत प्रभु प्रेमानन्दमें द्रवित होकर हुङ्कार करने लगे। उनका सारा शरीर पुलकित होने लगा।

उन्होंने मुरारि गुप्तका हाथ पकड़कर एकान्तमें लेजाकर कहा—

"रहस्य-रहस्य एइ, तोमारे निभृते कइ,
सेइ ब्रह्म रसिक श्रीरङ्ग।"

इतना कहकर उन्होंने प्रेमानन्दमें भाग्यवान् मुरारि गुप्तको प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान किया। श्रीअद्वैत प्रभुके चरणोंमें पड़कर मुरारि अजस्र रुदन करने लगे। ज्ञानगर्वी मुरारि गुप्तका शुष्क हृदय सरस हो गया। ज्ञानचर्चा छोड़कर अब उन्होंने भक्तिकी चर्चा प्रारम्भ की। उनका यह आकस्मिक परिवर्तन देखकर सभी नदियावासी विस्मित हो उठे। वैष्णव-मण्डली हरिध्वनि करने लगी। उसी दिनसे मुरारि गुप्त अध्यात्म-चर्चा छोड़कर सरस भक्ति पथके पथिक हो गये।

शचीनन्दनकी लीलाका रहस्य मानव बुद्धिके लिए अगम्य है। यह जो लीला वर्णित हुई है, इसके द्वारा श्रीगौर भगवान्ने दिखला दिया है कि ज्ञानकी अपेक्षा भक्तिका माहात्म्य अधिक है, तथा ज्ञानका फल भक्तिकी प्राप्ति है। मुरारि अपनी ज्ञान-चर्चाका फल प्राप्त करके कृतार्थ हुए। श्रीपाद मुरारि गुप्तका करचा श्रीगौराङ्ग लीलाका आदि ग्रन्थ है। कवि कर्णपूर गोस्वामीने इस ग्रन्थकी सहायतासे श्रीचैतन्य चरितामृत महाकाव्य लिखा है। मुरारि गुप्त हनुमानके अवतार हैं। वे रामभक्त वैष्णव थे। प्रभुने उनकी विशेष परीक्षा लेकर उनको निजजन बना लिया था। ये लीला—कथाएँ यथास्थान वर्णन की जायँगी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुरारि गुप्त प्रभुके अन्तरङ्ग भक्त और प्रिय पार्षद थे। उन्होंने अपनी आँखों श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी लीला प्रत्यक्ष कर लिपिबद्ध किया था। ठाकुर लोचनदासकृत श्रीचैतन्यमंगल श्रीग्रन्थ प्रधानतः मुरारि गुप्तके करचाके आधारपर लिखा गया है। श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावन दास ठाकुरने अपने श्रीचैतन्य भागवत श्रीग्रन्थमें अनेक स्थलों पर मुरारि गुप्तके करचाका विशुद्ध बङ्गानुवाद दिया है। इस अपूर्व श्रीग्रन्थसे एक श्लोक यहाँ उद्धृत कर कृपालु पाठकवृन्दको प्रेमोपहार दिया जाता है। श्रीपाद मुरारि गुप्तने प्रभुके मधुर नवद्वीप-लीलारसका उपयोग करके लिखा है—

सौन्दर्यमाधुर्य - विलास - विभ्रमै
रराज राजस्वर हेमगौरः ।
विष्णुप्रिया-लालित पादपङ्कजो
रसेन पूर्णो रसिकेन्द्र मौलिः ॥

इससे जाना जा सकता है कि श्रीपाद मुरारि गुप्त भी प्रभुके रसिक भक्त थे। उनके इस एक ही श्लोकमें प्रच्छन्न अवतार श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी रसराज मूर्त्तिका पूर्ण विकास दृष्टिगोचर होता है।

—※—

सातवाँ अध्याय

बाल गौरांगके हाथमें खड़िया

पौगण्डलीला चैतन्यकृष्णस्यातिसुविस्तृता । विद्यारम्भमुखा पाणिग्रहणान्ता मनोहरा ॥

—श्री चै. च. आ. १५.२

शुभदिन शुभक्षणे मिश्र-पुरन्दर । हाते खड़ि पुत्रर दिलेन विप्रवर ॥

—चै० भा० आ० ४.२

विद्या-आरम्भ

निमाईचाँदकी उम्र पाँच वर्ष बीतते देखकर श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरने शुभ दिन देखकर उनके हाथमें खड़िया दी। शचीमाताने हाथमें खड़िया देनेके शुभ दिन पुत्रको भलीभाँति वस्त्र-अलङ्कार आदिके द्वारा सजा दिया। धोतीके रूपमें निमाईचाँदको लाल रेशमी वस्त्र पहना दिया। सोनेके अङ्गमें सुगन्ध-चन्दनादि लेप कर दिया। भ्रमरके समान काले केश-पाशमें तीन झोंटी बाँध दी। उसमें सोनेकी काँटी झुला दी। लाल सूतमें सोनेकी काँटी बँधी थी। बालक गौरके प्रशस्त सुन्दर ललाटके ऊपर सोनेकी काँटीसे बँधी तीन झोंटी सुशोभित हो रही हैं। शचीमाताने पुत्रके सारे अङ्गोंको आभूषणोंसे अलंकृत कर दिया है। निमाईचाँदके गलेमें मणि-मुक्ता-प्रवालका हार सुशोभित हो रहा है। उनके हाथमें मदन-मोहन यष्टि (लाठी) है। कनक-चम्पाके समान उनके अङ्गकी ज्योति है। उनके अपरूप रूपको देखकर नदियावासी नर-नारी आनन्द-सागरमें निमग्न हो रहे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शचीमाताने पुत्रके सोनेके अङ्गोंका नवनीतसे मर्दन किया। शचीनन्दन अलङ्कारोंसे आभूषित हो घरके भीतर दिव्यासनपर बैठे हैं। वे योगासनमें बैठकर मृदु-मृदु मुस्कान कर रहे हैं, और डोल रहे हैं। बैठे रहना धृष्ट निमाईचाँदको कष्टकर प्रतीत हो रहा है। उनके सामने दावात, कलम, तालपत्र, खड़िया आदि वस्तुएँ सजाकर रक्खी हैं। मिश्र-पुरन्दर ठाकुरने सरस्वती देवीकी पूजा समाप्त करके पुत्रके हाथमें खड़िया दी। निमाईचाँदका हाथ पकड़कर भूमिपर खड़ीके द्वारा पुत्रसे क, ख, ग, घ लिखाया। उन्होंने पुत्रके मुखसे सुन्दर स्वरमें बालभाषामें क, ख, ग, घ का जो मधुर उच्चारण सुना, उससे वे अत्यन्त मुग्ध हो गये। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती, श्रीवास पण्डित, चन्द्रशेखर आचार्य आदि आत्मीय स्वजन वहाँ उपस्थित थे। शची-बालककी बालभाषामें क, ख, ग, घ की सुमधुर ध्वनि जिसने सुनी, उसका कान पवित्र हो गया। उस अपूर्व मधुर ध्वनिको वे जीवन भर न भूले।

शचीनन्दनके हाथमें खड़िया देखनेके लिए नदियाके बहुत लोग मिश्र-भवनमें आये हैं। पड़ोसकी कुलनारियाँ एकत्रित हुई हैं। शचीमाता सबको स्वागत-सत्कारके द्वारा सन्तुष्ट कर रही हैं। विश्व-रूप प्रभु उस दिन घर थे। पिताके पास बैठकर कनिष्ट भ्राताको क, ख, ग, घ सिखला रहे हैं। नवद्वीपके सुदर्शन पण्डित मिश्रपुरन्दरके घरके कुल-पुरोहित हैं। उनकी उपाधि है ओझा। वे भी इस शुभकार्यमें निमन्त्रित होकर उपस्थित हुए हैं। उनकी एक पाठशाला हैं। नदियाके बालक उसी पाठशालामें पहले पाठ आरम्भ करते हैं। इस कारण सुदर्शन पण्डितको सब लोग गुरु महाशय कहकर सम्बोधन करते हैं। नवद्वीपमें विष्णु पण्डित नामके एक और गुरु महाशय थे।

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरने अपने पुत्रके लिखने-पढ़नेका भार विष्णु और सुदर्शन पण्डितके हाथोंमें दिया। उनके साथ निमाईचाँदका परिचय करा दिया। धृष्ट निमाईचाँदने उनकी ओर कटाक्ष करते हुए देखा। प्रभुके इस देखनेका मर्म यह था कि, "तुम लोग मुझको विद्या पढ़ाओगे? तुम लोगोंको मैं शिक्षा दूँगा।"

मिश्रपुरन्दर ठाकुर स्वयं प्रतिदिन प्रातःकाल धृष्ट निमाईचाँदको लेकर क, ख, ग, घ सिखलानेके लिए बैठते हैं। शचीनन्दनने केवल एक बार सुनकर क, ख से लेकर ह, ज्ञ पर्यन्त सारे व्यञ्जन-वर्णोंको सीख लिया। एक दिनमें ही सारे अक्षर लिखना सीख गये। जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर यह देखकर अतिशय विस्मित हुए। यह जिन्होंने देखा या सुना वे ही चकित हो गये। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने गृहिणी-को पुकारकर हँसते हुए कहा, "तुम्हारा निमाईचाँद बड़ा बुद्धिमान है। एक दिनमें ही यह क, ख से ह, ज्ञ पर्यन्त लिखना सीख गया। यह असाधारण पण्डित होगा।"

शचीमाता यह सुनकर आनन्दसे गद्गद हो उठीं, और पुत्रको प्यार करते हुए गोदमें लेकर मुख चूम लिया। शचीनन्दन मन लगाकर पिताके पास लिखते-पढ़ते हैं। यह देखकर शचीमाताके मनमें बड़ा आनन्द होता है। निमाईचाँदने पहले कृष्णनाम लिखना सीखा। तालपत्रपर बाँसकी कलमसे बड़े-बड़े अक्षरोंमें राम, कृष्ण, मुरारी, मुकुन्द, वनमाली आदि नाम दिन-रात लिखा करते थे। लिखने-पढ़नेमें शची-बालकका बड़ा मन लगता था।

पड़ोसी आत्मीयजनके समवयस्क शिशुगण भी निमाईचाँदके पास आकर लिखनेके लिए बैठते थे। क्या लिखना-पढ़ना, और क्या बुद्धि, किसी भी बातमें निमाईचाँदके समान कोई न था। नदिया-वासी नर-नारियोंके आनन्दकी सीमा न थी। वैकुण्ठनाथ पूर्ण ब्रह्म सनातन बाल-गौराङ्गकी बाल्य-लीला देखकर उनके चित्तमें परम सुख प्राप्त होता था। नदियावासियोंके भाग्यको देखकर देवता लोग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लालायित रहते हैं । उनके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात !

पाठशालामें रंग

प्रभुके पाठशालामें पढ़ते समयकी एक कहानी है । ठाकुर जयानन्दने अपने श्रीचैतन्य मङ्गल श्रीग्रन्थमें यह कहानी लिखी है । एक दिन प्रातःकाल नदियाके बालवृन्दके साथ शचीनन्दन सुदर्शन पण्डितके घर गये । नदियाके मार्गमें अपने वयस्क सङ्गी-साथियोंमें नाना प्रकारसे हँसी-खेल करते जा रहे हैं । गुरु महाशयकी पाठशालामें जाकर सर्वप्रथम निमाईचाँदने देखा कि क, ख आदि चौंतीस अक्षर पटरीपर लिखे हैं । सुदर्शन पण्डित वहाँ बैठे हैं । उनकी पत्नी भी वहाँ हैं । निमाईचाँदने गुरुपत्नीको देखकर घुटनेके बल होकर प्रणाम किया । गुरुजीके समीप जाकर निर्भयतापूर्वक पूछा, "इसका नाम क्या क, ख है ? इसको क, ख क्यों कहते हैं ? मुझे तो सब अक्षर एक-से 'क' ही दीखते हैं । आप मुझको ठगते क्यों हैं ? आजसे फिर क, ख मत पढ़ावें, । मेरे बताये अनुसार सबको 'क' पढ़ावें ।"

कृपालु पाठकवृन्द ! क्या आपने शचीबालककी बातके मर्मको समझा ? इन सब बातोंको समझनेके लिए शास्त्र ज्ञानकी आवश्यकता है । निमाईचाँद बालक होकर भी विज्ञके समान बातें करते हैं, जिसे सुनकर माता-पिता और नदियाके सब लोग अवाक् हो जाते हैं । यहाँ शचीनन्दनने सुदर्शन पण्डितको कुछ ब्रह्मतत्त्वकी शिक्षा दी । कमलयोनि ब्रह्माका वास 'क' है । * ब्रह्मज्ञान 'क' से उत्पन्न होता है अतएव केवल 'क' अक्षर पढ़नेसे ही ब्रह्मविद्या हो जाती है। शचीनन्दनने इस प्रकार चतुराईसे सुदर्शन पण्डितको ब्रह्मतत्त्व और ब्रह्मविद्याकी शिक्षा दी ।

---

* यथा श्रीमद्भागवते—
मेढ्रं तस्य विनिर्भिन्नं स्वधिष्ण्यं 'क' उषाविशत् ।
रेतसांशेन येनासावानन्दं प्रतिपद्यते ॥
—श्रीम. भा. ३.६.१६

सुदर्शन पण्डित इन सारे गूढ़ तत्त्वोंको क्या जानें ? बालकके मुखसे इस प्रकार वृद्धके समान बातें सुनकर वे क्रोधित हो उठे । गुरुजीने अपना कर्त्तव्य शचीबालककी पीठपर चपेटा मारकर दण्ड देकर पूरा किया । यह देखकर उनकी गृहिणी निमाईचाँदको लेकर घर जानेके लिए तैयार हो गयीं। सुदर्शन पण्डितने इसके बाद एक 'श्री' लिखकर उसके ऊपर खड़िया रख दी । गुरुमाताकी गोदमें बैठकर शचीनन्दन गुरुजीके कार्यको देखकर हँसने लगे । झटपट गुरुमाताकी गोदसे उतरकर सुदर्शन पण्डितके लिखे हुए 'श्री' को अपने कोमल कर-पल्लव द्वारा मिटाकर उसके ऊपर एक सुन्दर 'क' लिख दिया, और उसके ऊपर सो रहे । उनके नाभि-पद्ममें उस 'क' चिह्नित खड़ियाने स्पर्श किया । इसी अवस्थामें शयन करके वे कहने लगे—

के मोर नाभिते बैसे प्रलयावसाने ।
के मोरे चिन्तये पद्मासने ब्रह्मध्याने ॥
के मोर गोकुले वत्स बालक हरिल ।
के मोर क्षीरोदे स्तुति विस्तर करिल ॥
आर जिज्ञासि ओझा कह दृढ़ मने ।
य, र, ल, व, प, फ, ब, भ, हइब केमने ॥
सर्व विद्या आदि अक्षर काइन्ना से छाड़ि ।
आमार मत 'क' ए श्रीलइ थूइल खड़ि ॥
'क' आमार प्रतिलोम कूपेर भितरे ।
'क' हैते सर्व विद्या अक्षर निकरे ।
—ज० चै० म०

सुदर्शन पण्डित धृष्ट शचीबालककी बातका मर्म न समझकर क्रुद्ध होकर बोले, "मिश्र-नन्दनके कारण मुझे बड़े कर्म भोगने पड़ रहे हैं । यह बालक बड़ा ही उद्धत है, इसकी बात मैं कुछ भी नहीं समझ पाता । सब उल्टा ही बोलता है, इसके कारण मैं बड़ी विपदमें पड़ा हूँ । आज मिश्रपुरन्दरसे कहना ही पड़ेगा ।" ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इतना कहकर उन्होंने उस दिन क्रोधमें आकर पाठशाल बन्द कर दी। नदियाके बालक-वृन्द निमाईचाँदकी बुद्धिकी कुशलतासे छुट्टी पानेके कारण उनको घेर करके सब 'हरि-हरि' बोलते हुए आनन्दसे नृत्य करने लगे। शचीनन्दन पाठशालासे बाहर आकर रास्तेमें खड़े होकर आजानुलम्बित सुवलित बाहुद्वयको ऊपर उठाकर 'हरि-हरि' कहते हुए मधुर नृत्य करने लगे। नदियाके सब लोग उनकी अपरूप रूप-सुधा पान करने लगे।

प्रिय सखागणके साथ खेल करते-करते वे धूलि-धूसरित अङ्गके साथ यथासमय घर पहुँचे। शची-माताने प्यारपूर्वक पुत्रको गोदमें लेकर अङ्ग झाड़-पोंछ दिया। खीर और सन्देश मिठाई खानेको दी। माता मन-ही-मन बड़ा आनन्दित हो रही हैं कि पुत्र पाठशालासे पढ़कर आ गया है। मिश्रपुरन्दर ठाकुर घरपर न थे। मध्याह्न कालमें भोजनके समय घर आकर उन्होंने निमाईचाँदको बड़ा लाड़-प्यार किया।

शचीके दुलारेकी पाठशालाकी एक और विद्या सीखनेकी लीला ठाकुर जयानन्दने वर्णन की है। वह लीला और भी मधुर है। इसके साथ ही उस लीलाको भी विस्तार पूर्वक लिखा जा रहा है।

एक दिन प्रातःकाल बाल-गौर भोजनादि करके सखा-वृन्दके साथ काँखमें ताड़पत्र दबाये, हाथमें दवात लिये सुदर्शन पण्डितकी पाठशालामें पढ़नेके लिए गये। निमाईचाँदकी विद्या-बुद्धिकी परीक्षा लेकर गुरुजीने देखा कि पाठशालाकी पढ़ाई उनकी समाप्त हो गयी है। पाठशालाकी पढ़ाई छुड़ाकर किसी प्रकार शचीनन्दनको विद्यालयमें भेज सकें तो गुरुजीका प्राण बचे। ऐसा धृष्ट छात्र उन्होंने जीवनमें कहीं नहीं देखा था।

निमाईचाँदने पाठशालामें जाकर अपनी स्वाभाविक चपलता दिखलाते हुए गुरुजीसे पूछा, "अब मैं विद्यालयमें व्याकरण पढ़ूँगा। क, ख, आङ्ग, आस्व सिद्धि मैंने सब सीखली है।' सुदर्शन पण्डित शचीनन्दनके मुँहसे यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। वे मन-ही-मन सोचने लगे, "यह बड़ा शुभ सुयोग प्राप्त है। इस धृष्ट बालकको किसी भी प्रकार पाठशालासे विदा कर सकूँ, तो प्राण बचे"। यह सोचकर निमाई चाँदको सम्बोधन करके बोले, "निमाई! तुम्हारे समान बुद्धिमान बालकको पढ़ानेकी शक्ति मुझमें नहीं है। तुमने इस अल्पावस्थामें जो सीखा है, बहुत बड़ा होने-पर भी कोई इतना नहीं सीख पाता। तुम्हारे पितासे कहकर मैं तुमको गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें कलाप व्याकरण पढ़नेके लिए भेज दूँगा। तुम बड़े पण्डित हो जाओगे। निमाईचाँद अपने गुरुजीके मुँहसे यह बात सुनकर आनन्दसे नृत्य करने लगे। उनका पाठशालाका विद्या-वैभव यहाँ ही समाप्त हुआ।

सुदर्शन पण्डितने दूसरे दिन श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरके घर जाकर उनके पुत्रके सारे गुणोंका कीर्तन किया। सुदर्शन पण्डित उनके घरके पुरोहित हैं। उनका हाथ पकड़कर बोले, "पण्डित! मेरे निमाईचाँदको आप लोग आशीर्वाद दें कि यह चिरंजीव हो। पढ़ना-लिखना हो या न हो, इसमें कोई हानि नहीं। शान्त-शिष्ट बन सके, इसकी आप व्यवस्था करें।" सबकी रायसे यह निश्चित हुआ कि निमाईचाँदको गङ्गादासके विद्यालयमें भेजना ठीक होगा। यहाँ छात्रोंपर कठोर शासन है, तथा व्याकरणकी पढ़ाई अच्छी होती है।

पाठशालाका दृश्य

शचीनन्दन अब पाठशाला जाते हैं। सुदर्शन पण्डित को परेशान करनेमें उनको बड़ा मजा मिलता है। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरने पुत्रको विद्यालयमें प्रवेश करानेकी बातपर स्वीकृति दी है, परन्तु पुत्र अभी विद्यालयमें पढ़ने जाने योग्य नहीं हुआ है। इसपर भी गङ्गादासका विद्यालय है जहाँ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुरारि गुप्तके समान छात्र पढ़ते हैं। इसी कारण बालगौराङ्ग अभी भी पाठशालामें ही जाते हैं।

तालपत्रके गुच्छ को सुगठित बाहुसे दबाकर एक हाथमें लेखनी और दावात, दूसरे हाथमें एक बाँसका दण्ड लेकर अपने सखावृन्दके साथ पाठशाला जानेके लिए शचीनन्दन नदियाके पथपर निकल पड़े हैं। उनकी क्षीण कटिमें नीले रङ्गकी धोती बँधी है। गलेमें व्याघ्रनख झूल रहा है, मस्तकपर तीन झोंटे बँधे हैं। मधुर अङ्ग-भङ्गिमा प्रदर्शित करते हुए नदियाके बालकोंके साथ नाचते हुए पाठशाला जा रहे हैं।

रास्तेके दोनों ओर लोग एकटकसे मधुर बाल रूप-सुधा पान कर रहे हैं। दुकानके मालिकके हाथका तेलका पात्र हाथमें ही है. दृष्टि शचीनन्दनके सुन्दर मुखचन्द्रकी ओर है। कुल-ललनाएँ काँखमें घड़े लेकर रास्तेके बीच जनसमूहके भीतर खड़ी होकर एक दृष्टिसे निमाई चाँदकी अपूर्व नृत्य-भङ्गिमा देख रही है, पुरुषोंके साथ रास्तेमें उनके अङ्गसे जो धक्का लग रहा है, उस ओर उनकी दृष्टि नहीं है।

सदाचार-निष्ठ ब्राह्मण पण्डित लोग गङ्गा-स्नान करके कोशा-कुशा हाथमें लिये रास्तेमें एक बगलसे घर जा रहे हैं। वे लोग डरते हुए जा रहे हैं कि पीछेसे रास्तेमें किसी अस्पृश्य जातिके आदमीसे वदन न छू जाय। रास्तेमें तालपत्र हाथमें लिये बालगौराङ्गको देखकर उनकी क्षिप्रगति रुद्ध हो गयी। शचीनन्दनके आनन्दमय मुखचन्द्रकी ओर देखकर ब्राह्मण पण्डितगण आत्मविस्मृत हो गये। कितने ही अस्पृश्य लोगोंसे उनका अङ्ग स्पर्श हो गया, परन्तु ब्राह्मणोंका इस ओर ध्यान ही नहीं था।

सबके मनमें यही साध थी कि एक बार बाल-गौराङ्गका दर्शन करके आँखोंको परितृप्त कर लें। अतएव लोगोंकी भीड़ हो गयी। किसका किससे अङ्ग स्पर्श हो रहा है—इसका ध्यान न रहा। शचीनन्दन नदियाके मार्गमें नदियाके बालवृन्दके साथ 'हरि हरि' ध्वनि करते हिलते-डुलते मधुर नृत्यावेशमें चले जा रहे हैं।

पाठशालामें जाकर सबसे पहले निमाईचाँदने वस्त्र खोलकर रख दिये। एक ओर तालपत्रके गुच्छे और दूसरी ओर दवात-कलम रखकर बालवृन्दके साथ खेल-कूद, लड़ाई-झगड़ा करने लगे। हँसमुख, प्रतिभावान, धृष्टताके शिरोमणि, चपल-चूड़ामणि निमाईचाँदके कारण विष्णु पण्डित और सुदर्शन ओझा घबरा उठे। परन्तु अब गुरुजी शचीबालकके ऊपर हाथ नहीं उठा सकते। उनके कुसुम-कोमल अङ्गमें एक दिन एक बार हाथ लगानेसे गुरुजीके मनमें दिव्यज्ञानका उदय हुआ है।

शचीनन्दनके मुख-चन्द्रके प्रति देखते ही सुदर्शन पण्डित अपने आपको भूल जाते हैं, आनन्द-विह्वल होकर उनको हृदयसे लगाकर बहुत लाड़-प्यार करते हैं। दूसरे छात्रगण गुरुजीके इस व्यवहारसे बड़े असन्तुष्ट हैं; क्योंकि निमाईचाँद सबके साथ लड़ते-झगड़ते हैं, सबके ऊपर प्रहार करते हैं। वे अपराधी हैं, उनको दण्ड न मिलकर लाड़प्यार मिलता है, यह बालकोंको कैसे अच्छा लगे। वे गुरुजीसे शिकायत करते हैं कि निमाईने मेरी कलम तोड़ दी, दवातकी स्याही गिरा दी, वस्त्र फाड़ दिये, वदनपर धूल-मिट्टी डाल दी, और आप उनको प्यार करते हैं, कुछ भी बोलते नहीं। निमाईके अत्याचारसे हम लोग अब पाठशाला नहीं आवेंगे।"

सुदर्शन ओझा बड़ी विपदमें पड़े। शचीनन्दनको दण्ड देनेकी बात भी मुँहपर नहीं ला सकते। वे बालकोंपर क्रुद्ध होकर बोले, "तुम लोग निमाईको बहुत परेशान करते हो, इसी कारण वह तुम लोगोंके साथ ऐसा करता है। निमाई बड़ा अच्छा लड़का है बड़ा ही शान्त और शिष्ट है।" यह कहकर गुरुजी सबके सामने पाठशालामें शचीनन्दनको गोदमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर दुलार करते हुए कहने लगे, "निमाई ! तुम किसीसे झगड़ा मत करना। मैं तुमको क्षीर और सन्देश खानेके लिए दूँगा।" क्षीर-सन्देशका नाम सुनकर निमाईचाँद बहुत प्रसन्न हुए। उनके मुँहमें हँसी रोके नहीं रुकती। यह देखकर नदियाके बालवृन्द और भी क्षुब्ध हो उठे। सुदर्शन पण्डितने समझाया था कि शचीनन्दन दण्डके पात्र नहीं हैं, आदरकी वस्तु हैं।

गुरुजीका दुलार पाकर निमाईचाँदकी धृष्टता और बढ़ गयी। इसका वर्णन ठाकुर जयानन्दने अपने चैतन्य मंगलमें किया है, यथा—

"किसी दिन बालगौराङ्ग पढ़ते हुए बालकोंके साथ झगड़ पड़े और गुरुजीके पानीके घड़े फोड़ दिये, जिससे विद्यार्थियोंकी पुस्तकें भीग गयीं।

"किसीके देव मन्दिरमें प्रवेश करके सिंहासनपर बैठकर देव प्रतिमाको आंगनमें फेंक देते।

"किसीके मन्दिरके ऊँचे स्थानसे लुढककर भूमि-पर गिरते, जिससे लगता कि कि भू-कम्प हो रहा है।

"पद-तलसे ऐसी ताल लगाते मानो ढफ बज रहा है।

"किसीके मन्दिरमें देवताका भोग खा जाते और द्वार बन्द करके हँसते हुए लोट-पोट होने लगते। कहीं संध्याका दीपक बुझाकर हँसते।

'किसी मन्दिरमें मोर देखने के बहाने घुस पड़ते, किसी मन्दिरमें घुसकर 'कुहू-कुहू' ध्वनि करते मानो हंस-रव हो रहा है।

"किसीकी रंधनशालामें अशुचि हालतमें घुस जाते।

"किसीकी देव-पूजाकी सामग्री गन्ध, माल्य धूप आदि उठाकर कुएँमें फेंक देते।"

इनको कोई बहुत उद्धत बताता, कोई कहता कि ब्रजकी कृष्ण-लीलाकी तरह यह भी बहुत सुहावनी है।

निमाईचाँद और उनके प्रिय सखावृन्दका एक दल था। उस दलके नदिया-बालकोंके साथ उनकी बड़ी प्रीति थी। प्रतिदिन रास्तेमें रीतिके अनुसार दोनों दलोंमें युद्ध होता था। निमाईचाँदका दल युद्धमें विजयी होता था। गुरुजी देखकर हँसते थे। नदियाके लोग एकत्र होकर शचीनन्दनकी इस अपूर्व युद्धलीलाका दर्शन करते थे।

शचीनन्दनका युद्धवेष अति सुन्दर था। वे पहने हुए वस्त्रसे सिरपर पगड़ी बाँधते थे। ताल-पत्रके गुच्छे उनके बाहुमें तृणके समान शोभा देते थे। दावात उनका ब्रह्मास्त्र था। युद्धकालमें क्रुद्ध होकर वे इस ब्रह्मास्त्रके द्वारा शत्रुदलके बालकोंके वस्त्रादि स्याहीसे रङ्ग देते थे। शचीनन्दनके हाथकी बाँसकी लाठी उनका सुर्शदन चक्र था। उसके भयसे कोई उनके पास अग्रसर नहीं हो पाता था। बीच-बीचमें प्रबल पराक्रमसे कूदकर हुंकार करते हुए जब वे विपक्षियोंके सामने होते थे तो उनको देखकर सब भाग जाते थे। वह मुक्का और चपेटाका प्रयोग युद्धमें नहीं करते थे। चरणाघातसे शत्रुको पराजित करनेमें वे सिद्ध-हस्त थे। जिन बालकोंको उनके कोमल चरणोंका आघात प्राप्त हुआ, उसको वे जन्म-भर न भूले। इस प्रकार बालगौराङ्गकी बाल-वीरतासे नदियाके बालक पराजित होकर उनके शरणापन्न हो जाते थे।

निमाईचाँद जब इस प्रकार पाठशालासे घर लौटते थे, तो अपने दलबलके साथ आते थे। हाथ और मुँहमें स्याही, सारे अङ्गोंमें धूल-मिट्टी लपेटे, दिगम्बर, वस्त्रको कभी सिरपर बाँधे, कभी काँख तले तालपत्र-गुच्छको लपेटे, दावात फूटी, लेखनी गायब—इस भावमें शचीनन्दन अपने वयस्यगणसे परिवेष्टित होकर घरपर आते थे। नये वृक्षोंकी डाली हाथमें लेकर वे रास्तेमें उसको घुमाते हुए चलते थे और उसके द्वारा रास्तेमें चलते समय परिचित-अपरिचित सबको समानरूपसे आप्यायित करते थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जिनके प्रति शचीनन्दन यह अयाचित कृपा करते थे उनकी दृष्टि तत्काल बालगौरके चन्द्रवदनकी ओर आकृष्ट होती थी, वे मुँह फिराकर शचीनन्दनकी अपरूप रूपराशिको देखकर उनको प्यार करके हृदयसे लगाकर अपने प्राण शीतल करते करते थे। निमाईचाँद एकमात्र लाड़-प्यारसे ही मुग्ध होते थे। जिसकी गोदमें जाते थे, उसके भाग्यकी सीमा न होती। श्रीगौर भगवान्‌की चरण-धूलि उसके अङ्गमें लगकर उनके नर-देहको देव-देह बना देती। अज-भव-वाञ्छित श्रीचरण-रज प्राप्त कर उनका सर्वाङ्ग पुलकित हो उठता। नदियाके नर-नारी श्रीगौर भगवान्‌के विशेष कृपापात्र थे। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात!

निमाईचाँद पाठशालामें गये हैं, शचीमाता उनके आनेकी बाट जोह रही हैं। वह घर-द्वार एक कर रही हैं। हाथमें क्षीर-सन्देश, केला लेकर द्वारपर खड़ी हैं। पुत्रके आनेमें विलम्ब होता देख स्नेहमयी माताके प्राण छटपटाने लगे। उसी समय दोपहरको हिलते-डुलते नाचते-नाचते प्रिय सखागणके साथ धूलिधूसरित दिगम्बर वेषमें शचीनन्दन घरपर आये। शचीमाता दौड़कर आगे गयीं, और रास्तेमें ही पुत्रको गोदमें उठाकर उनके हाथमें सबसे पहले क्षीर-सन्देश देकर मुख चूमकर लाड़-प्यार किया। निमाईचाँदके चन्द्रवदनमें हँसी देखकर माताके प्राण जुड़ा गये। पुत्रके मुखसे मधुर 'माँ' शब्द सुनकर उनके प्यासे कान जुड़ा गये। हृदयके धनको हृदयसे लगाकर घरमें आकर उन्होंने उनके अङ्ग पोंछ डाले। तेल-हल्दी मलकर उनको स्नान कराया। सिरकी तीनों झूटियाँ बाँध दीं। सुन्दर चौड़े ललाटमें चन्दन अलका-तिलककी रचना कर दी। श्रीगौर-भगवान्‌के शची-दुलाल नामको सार्थक किया। सजधजकर आङ्गनमें खड़े होकर वे मधुर नृत्य करने लगे, शचीमाता नयन भरकर देखने लगीं।

बालगौराङ्गकी बाल्य-लीला रूपी समुद्रकी तरङ्गोंमें पड़कर किधर निकल जाऊँगा, यह निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ। लीला-तरङ्गकी रचना देखकर इतना आनन्द हो रहा है कि एक-एक लीला-तरङ्गको गोदमें लेकर जीवन-भर बैठा रहूँ! लीला-तरङ्गके उच्छ्वसित वारि-पुञ्ज मानो आनन्दके एक-एक स्रोत हैं। ये लीला-स्रोतकी मधुर धाराएँ एक-एक अमृत-सरिता हैं। लीला-प्रसङ्गके वर्णन उनकी धाराएँ हैं। इस लीला-प्रसङ्ग स्रोतमें पड़नेपर भी निस्तार कहाँ? ये एकबारगी प्रबल वेगमें बहाते हुए समुद्र-गर्भमें जा गिराती हैं। इस लीला समुद्रके गर्भमें अनेक अमूल्य रत्न हैं। श्रीगौर भगवान्‌की लीला-तरङ्गमें निमज्जित भाग्यवान् जीव समुद्र-गर्भमें जाते ही प्रेमानन्दमें मत्त होकर उस अतल-स्पर्श समुद्र वारिमें डूबकर रत्नान्वेषणमें प्रवृत्त होता है। उस समय उसे जीवन-मरणका ज्ञान नहीं रहता, अच्छे-बुरेका विचार नहीं होता, अतल वारिधि-तलमें जो पाता है उसे ही लेकर ऊपर आ जाता है। श्रीगौराङ्ग प्रभुका बाल्य-लीला-समुद्र अत्यन्त गम्भीर है, अतल-स्पर्श तथा नाना रत्नोंसे पूर्ण है। सभी रत्न सर्वोत्तम हैं। उनमें कोई भी अपकृष्ट या निकृष्ट नहीं हैं। इन सब रत्नोंको चुन लेनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। सबका संग्रह करनेकी अभिलाषा होती है, सबको लीला-भण्डारमें सजाकर रखनेकी इच्छा होती है। सजानेके लिए क्रम-अनुक्रम करनेकी आवश्यकता नहीं होती। जब जो लीलारत्न संग्रहीत हुआ, उसी समय उसे आत्मसात् कर रखनेकी इच्छा होती है। यह लीलाग्रन्थ लिखते समय मेरे मनमें बड़ा गोलमाल हो रहा है। किस लीलाके बाद कौन लीला लिखूँ, किस प्रकार अध्याय समाप्त करूँ, लीलाकी सामग्रीमें सामञ्जस्य स्थापित कैसे करूँ, कुछ बूझ नहीं पड़ता। इसीलिए महाजन साधक कविगणके वचनके ऊपर निर्भर करके जैसे-तैसे करके श्रीगौराङ्ग-लीलाका वर्णन कर केवल आत्मशुद्धि करता हूँ। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"ए सब कथार अनुक्रम नाहिं जानि।
जे ते मते चैतन्येर यश से बाखानि॥
—चै. भा, अं. ४.५१४

श्रीगोराङ्ग प्रभुकी एक दिनकी लीलाका रहस्य कोटि-कोटि वर्षोंमें भी वर्णन नहीं किया जासकता। प्रभुकी एक-एक लीलाको लेकर एक-एक साधक सारे जीवनको बिता डालें तो भी उनका पूर्ण रसास्वादन न होगा। इस क्षेत्रमें वर्णन करके परितृप्ति प्राप्त करनेकी आशा वामनके द्वारा चाँदको पकड़नेकी आशाके समान निष्फल है।

श्वान-शावक-लीला

बाल गौराङ्गकी श्वान-शावकके सङ्गकी बाल्य-लीला अत्यन्त मधुर है। ठाकुर लोचनदास उनकी इस मधुर लीलाका विस्तार-पूर्वक वर्णन कर गये हैं। कृपालु पाठकवृन्द प्रभुकी सब लीलाओंसे अवगत हैं। लीला वर्णनके प्रसङ्गमें चर्वित-चर्वण दोषको ग्रहण नहीं करेंगे। श्रीभगवानकी लीलाकी तुलना महाजन-गणने ईखके रसके साथ की है। ईखको चबाते रहनेपर भी उसमें मिठास आना बन्द नहीं होता। लीलामधु जितना ही आस्वादन करेंगे, लीला कथामृतकी जितनी ही चर्चा करेंगे उतना ही वह मधुर से, मधुरतर मधुरतम अनुभूत होगा। श्री-भगवान् की लीला कथाका यह स्वधर्म है।

शचीनन्दन अब छः वर्ष के बालक हैं। एक दिन वयस्यगणके साथ नदियाके पथमें खेलते-खेलते एक भाग्यवान् कुत्तेके बच्चेको पकड़कर उसके गलेमें रस्सी बाँधकर घर ले आये। वयस्यगणसे परिवेष्टित होकर निमाईचाँद कुत्तेके बच्चेको बीचमें करके घर आकर खेल करते हैं। उस समय शचीमाता गङ्गा स्नान करने गयी थीं। इसी बीच धृष्ट निमाईचाँदने कुत्तेके बच्चेको घरके बरामदेमें बाँध दिया, और उसको लेकर साथियोंके साथ क्रीड़ा करने लगे। उनका सारा अङ्ग धूलिधूसरित था। कुत्तेके बच्चेको कभी गोदमें उठाते हैं, कभी सिरके ऊपर रखते हैं। उसका मुँह अपने कोमल हाथों से पकड़कर प्यार करते हैं। इस प्रकार अपने घरमें बैठकर बाल और प्रिय सखावृन्दके साथ खेलमें उन्मत्त हैं।

इसी बीच कुत्तेके बच्चेको लेकर किसी एक साथीके साथ उनका झगड़ा हो गया। क्रोधित होकर शचीनन्दनने उसको पिल्ला-चोर कह दिया। चोरीका अपराध लगानेपर उनका प्रिय सखा आगबबूला हो गया। वह अभिमानके वश होकर वहाँसे चला गया। गङ्गाके तीर जाकर रोष-पूर्वक शचीमातासे बोला, "माँ! तुम्हारे निमाई-ने एक कुत्तेका छौना लेकर घरके भीतर बाँध रक्खा है। उसको कभी गोदमें लेता है, कभी गला पकड़कर उसके मुँहमें मुँह मिलाता है। तुम आकर एक बार देखो तो सही।

शचीमाता यह बात सुनकर झटपट स्नान करके घर आयीं। आकर जो देखा, उसस उनकी आँखोंमें आँसू आ गये। वे रसोई घर बरामदेको भलीभाँति गोबरके द्वारा लीप गयी थीं। उसी बरामदेमें निमाईचाँद कुत्तेके बच्चेको बाँधकर सखावृन्दके साथ धूल धूल खेल रहा है।

शुद्ध आचार-विचार रखनेवाली शचीमाताने धृष्ट पुत्रके इस काण्डको देखकर अपने हाथों शिर पीटकर अस्पृश्य कुत्तेके बच्चेको छोड़ देनेके लिए पहले तो डाँटा फटकारा, पश्चात् बहुत अनुनय-विनय करने लगीं। वह गङ्गास्नान करके आयी हैं, अस्पृश्य कुत्तेके बच्चेको छू सकती नहीं। पुत्रको डाँटते हुए कहा, "बेटा निमाई! इतनी वस्तुओंके रहते कुत्तेके बच्चेको लेकर यह तेरा कैसा खेल? तू ब्राह्मणका लड़का है, तेरे पिता-पितामह परम विशुद्ध आचारवाले हैं, तू ही ऐसा कदाचारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्यों हुआ ? यह सब देखकर लोग तुझे क्या कहेंगे ? छि: मेरे बेटे ! मेरे सोनेके चाँद ! ऐसे सोनेके अङ्गमें क्या तूने स्वयं धूल-मिट्टी लपेटी है ? नीच सङ्गसे तेरी नीच प्रवृत्ति हुई है। आ बेटा, गोदमें आ, कुत्तेके बच्चेको छोड़ दे। मेरे साथ आ, गङ्गास्नान करा दूँ। दो पहर बीतनेको है। तुझे क्या भूख-प्यास नहीं लगती ? यदि कुत्तेके बच्चेको छोड़ना नहीं चाहता तो आङ्गनमें बाँध दे। तीसरे पहर खेलना। अब कुछ भोजन कर।"

निमाईचाँद खेलमें उन्मत्त हैं। सारी बातें उनके कानोंमें न पहुँचीं। शचीमाताकी केवल अन्तिम बात उनके कानमें गयी। बाल गौरने हँसकर माताको धमकाते हुए उत्तर दिया—"मेरा कुत्तेका बच्चा यहाँ बँधा रहेगा। यदि कहीं गया तो मैं तुमको देख लूँगा।" इतना कहकर दौड़कर निमाईचाँदने माताके गलेमें बाँह डालकर प्यार करते हुए तेल लगानेके लिए कहा। वे अपने साथियोंके सङ्ग गङ्गा-स्नान करने जाँयगे।

शचीमाताने पुत्रके अङ्गोंसे धूलि झाड़कर मुख चन्द्रको आँचलसे पोंछकर शरीरमें सुगन्धित तेल मर्दन किया। निमाईचाँद साथियोंके सङ्ग स्नान करने चले। गङ्गातटपर शचीनन्दनको कौन पकड़े ? बालूके ऊपर दौड़ रहे हैं, एक-एक बार जलमें कूदते हैं। सबकी दृष्टि उनके ही ऊपर है ; क्योंकि क्या नारी, क्या पुरुष, क्या बालक और क्या बालिका, सबको ही उन्होंने परेशान कर रक्खा है, उनके उपद्रवसे किसीको भी त्राण नहीं।

शचीमाता निमाईचाँदको अकेले गङ्गास्नान करने नहीं जाने देती थीं। उस दिन सोचा कि पुत्र जब स्नान करने चला जाये तो कुत्तेके बच्चेको खोलकर वे भी पुनः स्नान करने चली जाँयगी। यही सोचकर निमाईचाँदको अकेला छोड़ दिया। निमाईचाँदके घरसे निकलते ही शचीमाताने कुत्तेके बच्चेको बन्धन-मुक्त कर दिया। कुत्तेके बच्चेकी माँ आङ्गनमें बैठी थी। उसके सङ्ग वह तत्काल ही कहीं चला गया। इसे निमाईचाँदके एक प्रिय सखाने देख लिया। वह दौड़कर गङ्गाके किनारे गया और शचीनन्दनसे बोला—"तुम्हारी माँने कुत्तेके बच्चेको छोड़ दिया है।"

यह बात सुनते ही निमाईचाँद दौड़ते हुए घर आये। जहाँ उन्होंने कुत्तेके बच्चेको बाँध रक्खा था, वहाँ जाकर देखा कि वह नहीं है। आङ्गनमें चारों ओर ताककर देख लिया, कहीं भी अपने प्यारे कुत्तेके बच्चेको न पाकर व्याकुल होकर रोते हुए माताको कोसने लगे और रोते-रोते धूलमें लोट-पोट करने लगे।

शचीमाता बड़ी विपदमें पड़ीं। दोपहर बीत गया है। भोजन अभी बना नहीं। इसी असमयमें धृष्ट निमाईचाँदने हठ किया है। वे क्या करतीं, पुत्रको सान्त्वना देती हुई कहने लगीं—"मुझे क्या पता तुम्हारे कुत्तेके बच्चेको कौन लेगया, तुम्हारे ही किसी संगी बालकने चुरा लिया होगा। अब रोनेका क्या काम है ? अपनी सौगन्ध, कल उसको खोजकर ला दूँगी। रोओ नहीं।"

इतना कहकर शचीमाताने पुत्रको गोदमें उठाकर उनके सोनेके अङ्गको वस्त्रके आञ्चलसे पोंछ दिया। मुखचन्द्रमें शत बार स्नेह-चुम्बन प्रदान किया। क्षीर, सन्देश, केला आदि पुत्रके हाथोंमें देकर बहुत कठिनाईसे उसे शान्त किया।

माताके लाड़-प्यारसे निमाईचाँदका कुत्तेके बच्चेका शोक दूर हो गया। वह क्षीर-सन्देश खाकर शान्त हो गये। शचीमाता पुनः घर-आङ्गन शुद्ध करके गङ्गा-स्नान कर आयीं। फिर रसोई आदिका प्रबन्ध करने लगीं। उस दिन अपराह्नमें शचीमाताने निमाईचाँदके सोनेके अङ्गको भलीभाँति मार्जन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करके अलङ्कारसे सजा दिया ; क्योंकि निमाईचाँद कुत्तेके बच्चेकी याद आते ही बड़ा उत्पात आरम्भ कर देगा । यह सोचकर वे पुत्रको लाड़-प्यार करके सजाने बैठीं ।

बालगौराङ्गके इस अपरूप रूपसे मोहित होकर नदियावासी सारे नर-नारी उनके अङ्ग-अङ्गको अनिमेष नयनोंसे देखने लगते थे । शचीमाताको यह अच्छा नहीं लगता था । इसी कारण वे पुत्रको सजाकर घरसे बाहर भेजना पसन्द नहीं करती थीं । उस दिन बाध्य होकर पुत्रकी मनस्तुष्टिके लिए उसे वस्त्रालंकारसे सजाकर गोदमें लेकर नदियाके रास्ते बहिनके घर जाने लगीं । रास्तेमें लोग शचीनन्दनके अङ्गकी शोभासे आकृष्ट होकर उनके मुखचन्द्रकी ओर एकटक देख रहे हैं । शचीमाताको यह अच्छा नहीं लगता है । उसी दिनसे उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि अब निमाईचाँदको सजा-धजाकर बाहर न निकलूँगी । पुत्र रास्तेकी धूल-मिट्टी लपेटे रहता है, वही ठीक है । बुरे लोगोंकी कुदृष्टिसे स्नेहमयी शचीमाता बहुत डरती थीं । धन्य था उनका वात्सल्य स्नेह ! इस वात्सल्य स्नेहकी अधिकताके फलस्वरूप ही श्रीगौर भगवान्ने उनके पुत्रके रूपमें जन्म ग्रहण किया था ।

श्रीचैतन्य मङ्गल ग्रन्थमें लिखा है कि उस कुत्तेके बच्चेने श्रीगौर भगवान्के स्पर्शसे अपना स्वभाव त्यागकर दिव्य ज्ञान प्राप्त किया, तथा वह 'राधाकृष्ण और गौराङ्ग' नाम उच्चारण कर परम आनन्दपूर्वक नृत्य करने लगा । नदियाके लोग यह देखकर उस भाग्यवान् कुत्तेके बच्चेके पीछे-पीछे चले । ऐसी अद्भुत घटना उन्होंने कभी नहीं देखी थी, न सुनी थी । देखते-देखते वह महाभाग्यवान् कुत्तेका बच्चा पशु देह त्यागकर दिव्य यानपर सवार होकर सबके सामने गोलोक धाममें चला गया । देवदूतगण आकर उसको रथपर चढ़ाकर ले गये ।

श्रीगौराङ्ग प्रभुकी कृपासे सब संभव है । उनके स्पर्शसे कुत्तेके बच्चेको गोलोकधामकी प्राप्ति कोई आश्चर्यकी बात नहीं है । श्रीभगवान्की अलौकिकी लीलामें निष्कपट विश्वास करना चाहिये । अतएव कविराज गोस्वामीने लिखा है—

अलौकिक लीलाते जार ना जन्मे विश्वास ।
इहलोक परलोक तार हय नाश ॥
—चै. च. म. ७.१०८

श्रीगौर भगवान् जब नदियाधाममें आविर्भूत हुए थे, उसी समय देव-देवीवृन्दने नर-नारीरूपमें उनकी नवद्वीप-लीलाका दर्शन करनेके लिए नदियामें जन्म-ग्रहण किया था । श्रीगौराङ्ग-लीला-लोलुप ऋषि-महाजनगण पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग, वृक्ष-लता, तृण आदिके रूपमें नदियाकी पुण्यभूमिमें गुप्तरूपमें प्रकट होकर प्रभुकी नवद्वीपलीला दर्शन करके कृतार्थ हुए थे । इस श्रीगौराङ्ग-कृपा-प्राप्त श्वान-शिशुरूपी महापुरुषके चरणोंमें कोटि प्रणिपात ।

दूसरे श्वानकी कथा

ठाकुर जयानन्दने अपने श्रीचैतन्य मंगल ग्रन्थमें प्रभुकी एक और कुक्कुर-लीला लिखी है । उन्होंने लिखा है कि शचीनन्दनने एक कुत्तेका बच्चा पोसा था । उसके साथ वे खेलते थे । उसका नाम रखा था गङ्गादास । घृतयुक्त प्रसादान्न उसको खिलाते थे । उसको हरिनाम बोलना सिखाया था । शचीनन्दन जब 'हरि बोल' कहकर पुकारते थे तो वह कुत्ता कहीं रुकता न था । दौड़कर प्रभुके चरणोंमें आकर लोटने लगता था । जहाँ-जहाँ निमाईचाँद जाते थे, कुत्ता भी उनके साथ जाता था ।

शचीनन्दन सबके सामने कहते थे कि यह कुत्ता पूर्वजन्ममें वेद-परायण ब्राह्मण था । परन्तु वैष्णव-निन्दापराधसे इसका अधःपतन हुआ है । इसके घर वैष्णव अतिथि आया था । उसे वेद-निन्दक शूद्र कहकर इस ब्राह्मणने उसका आतिथ्य-सत्कार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं किया। प्रतारणा करके उसे उच्छिष्ट अन्न प्रसाद दिया। अतएव क्रुद्ध होकर वैष्णव अतिथिने विप्रको अभिशाप दे दिया। उसी अभिशापसे वेद-परायण द्विजने नदियामें कुत्तेके रूपमें जन्म ग्रहण किया है।

शचीनन्दन अपने इस विप्र श्वानशिशुको अपना भोजनावशेष देते थे। इससे कुत्तेका कर्मबन्धन छूट गया, उसका सारा वैष्णवापराध नष्ट होगया। कुछ दिनके बाद उस भाग्यवान कुत्तेने अपना देह त्याग किया।

नवद्वीपके सब लोग इस कुत्तेके भाग्यको देखकर विस्मित हो गये। श्रीगौराङ्ग प्रभुका विशेष कृपा-पात्र यह कुत्तारूपी महापुरुष पशुदेह त्याग करके जब नित्यधाममें गमन करने लगा तो देवदूत आकर उसको दिव्य यानपर चढ़ाकर ले गये। नदीयावासी नर-नारी यह अलौकिक घटना अपनी आँखों देखकर कृतार्थ हुए।

श्रीगौर भगवान्‌की एक और श्वान-लीला कथा ग्रन्थों में वर्णित है। नीलाचलमें रहते समय उन्होंने शिवानन्द सेनके कुत्तेसे कृष्ण-कृष्ण कहलाया था। कृष्णभक्तके सत्सङ्गके प्रभावसे नीच कुत्ता भी प्रभुका कृपापात्र हो गया था। वह कथा विस्तारपूर्वक लिखनेका यहाँ अवकाश नहीं है। प्रभुकी नीलाचल लीलामें यह कथा वर्णित होगी।

शचीमाता द्वारा विश्वरूपसे निमाईकी शिकायत

शचीनन्दनकी दुष्टतासे शचीमाताने परेशान होकर एक दिन विश्वरूपसे पुत्रकी धृष्टताकी बात सुनायी। प्रभुके ज्येष्ठ भ्राता अब चतुर्दश वर्षीय परम तेजस्वी बालब्रह्मचारी थे। नदियामें श्रीअद्वैतप्रभुके विद्यालयमें वे भक्तिशास्त्रका अध्ययन करते थे। अद्वैत-सभामें सदा-सर्वदा कृष्ण-कथाके रङ्गमें उन्मत्त रहते थे। वे जन्मसे ही संसारसे विरक्त थे। इस अल्पावस्थामें वे सर्वशास्त्र पारंगत हो गये थे। उनके रूपकी इयत्ता न थी।

निमाईचाँद संसारमें किसी से डरते न थे। केवल अपने बड़े भाईको देखकर नम्र हो जाते थे। शचीमाताने एक दिन भोजन करते समय विश्वरूप प्रभुसे कहा, "बेटा विश्वरूप! तुम्हारे घरपर रहते समय मेरा निमाई कोई दुष्टता नहीं करता। देखो न, कैसा शान्त-शिष्ट होकर तुम्हारे पास बैठकर भोजन कर रहा है। तुम्हारे न रहनेपर इस भोजनको लेकर मेरी जान खा लेता है।"

विश्वरूप प्रभुने सिर झुकाये विनीत भावसे उत्तर दिया, "माँ! अद्वैत-सभामें सर्वदा कृष्ण-कथा होती है, भक्तितत्त्वका व्याख्यान होता है। वहाँ मैं बड़े आनन्दसे रहता हूँ। माँ! उस आनन्द-सुधासे मुझे वञ्चित न करो। निमाईचाँद बड़ा अच्छा लड़का है। तुम इसको पहचान नहीं पा रही हो। इसको अच्छी बात कहो, आदर-सत्कार करो। इस पुत्रके द्वारा तुम्हारा सर्वकार्य सिद्ध होगा। मैं निमाईको विषेष रूपसे कहता जा रहा हूँ, वह तुम्हारी आज्ञाका उल्लङ्घन न करेगा।" इतना कहकर भगवान् विश्वरूपने छोटे भाईको प्रेमपूर्वक गोदमें लेकर कहा, "भैया निमाई! तुम लक्ष्मीपुत्र हो। माँके साथ धृष्टता न करना, उसकी बात मानना, घरसे बाहर मत जाना।"

धृष्ट निमाईचाँद भैयाके मुँहकी ओर ताककर मृदु-मृदु मुस्काने लगे, कोई उत्तर नहीं दिया। उस हँसीका मर्म भगवान् विश्वरूप समझ न सके, परन्तु शचीमाता समझ गयीं; क्योंकि उस समय निमाईचाँदने रोष-कषायित नेत्रोंसे माताकी ओर फिर एक बार देखा। शचीनन्दनके मनका भाव यह था, "तुमने भैयाको मेरी दुष्टताकी बात कह दी है, भैयाको जाने दे, तब मजा चखाता हूँ।"

विश्वरूप प्रभु निमाईचाँदके चन्द्रवदनमें स्नेह-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूर्वक चुम्बन देकर घरसे बाहर निकले । उनका छोटा भाई प्राकृत बालक नहीं है, यह बात सर्वदर्शी नित्यसिद्ध बालयोगीवर विश्वरूपप्रभु बहुत पहलेसे ही जानते थे । भगवान् विश्वरूप बलरामके अवतार थे। उनके लिए त्रिलोकीमें कुछ भी अज्ञात न था ।

विश्वरूपके जानेके बाद निमाईके रंग

भैयाके घर चले जानेपर श्रीगौर भगवान्ने अपनी माताके साथ एक रङ्ग किया । रङ्गीले प्रभुको रङ्ग करना बड़ा अच्छा लगता है । परन्तु वे जिसके साथ यह लीलारङ्ग करते हैं, उसका प्राण निकलने लगता है। आज शचीमाताकी अवस्था भी ठीक इसी प्रकारकी है ।

निमाईचाँदने भोजन करलिया है, परन्तु अबतक आचमन नहीं किया है। भोजनके पात्रके पास बैठे हैं। विश्वरूप प्रभु उनको इसी अवस्थामें लाड़-प्यार करके चले गये। शचीनन्दन कुछ देर तक निस्तब्ध बैठे रहे। मन-ही-मन कोई मतलबकी बात सोचते रहे। शचीमाता जैसे ही पुत्रको हाथ-मुँह धोनेके लिए उठाने आयीं, वैसे ही धृष्ट निमाईचाँदने दोनों हाथसे उच्छिष्ट अन्न-व्यञ्जन लेकर माताके सर्वाङ्गमें छींट दिया। केवल यही कार्य करके वे शान्त न हुए, रसोईघरके सारे पदार्थोंमें दोनों हाथसे उच्छिष्ट अन्न-व्यञ्जन छींट दिया।

शचीमाता क्रोधान्ध पुत्रके मुखकी ओर देखकर कुछ बोल न सकीं। उनको रुलायी आ गयी। ठाकुर का भोग, रसोईघरका सारा सामान उच्छिष्ट हो गया। उनका कितना कार्य बढ़ गया, कितना नुकसान हो गया! इस अवस्थामें साधारण स्त्रीकी जो अवस्था होती है, वही शचीमाताकी हुई । दारुण मानसिक व्यथासे वे रो पड़ीं। परन्तु पुत्रको कुछ कहनेका साहस न हुआ, कदाचित् निमाईचाँद और क्रुद्ध होकर दूसरे घरके पदार्थोंको उच्छिष्ट न कर दे।

स्नेहमयी माताने धीरे-धीरे उग्र तथा मधुर मूर्ति पुत्रके पास आकर स्नेहपूर्वक स्वरमें कहा, "बेटा निमाई ! जो किया सो अच्छा किया, अब हाथ-मुह धोदूँ।" निमाईचाँदने क्रोध तथा अभिमान मिश्रित मधुर और गम्भीर स्वरमें उत्तर दिया, "भैयाको तुमने मेरी बात क्यों कही ?"

तब शचीमाताने समझा कि विश्वरूपसे निमाई-चाँदकी दुष्टताकी बात कहकर उन्होंने गलती की है। उन्होंने प्यारसे पुत्रको गोदमें लेकर स्नेहपूर्वक कहा, "बेटा निमाई ! अब कभी तेरे सम्बन्धमें भैयासे न कहूँगी। तुम भैयासे इतना डरते हो, यह मैं पहले नहीं जानती थी।"

धृष्ट निमाईचाँदने सुन्दर मुखचन्द्रको अवनत करके मृदु स्वरमें उत्तर दिया, "भैया तो मुझको कुछ नहीं कहते हैं, परन्तु उनको देखते ही मुझे बड़ा डर लगने लगता है।"

शचीमाताने पुत्रको हाथ-मुँह धुलाकर रसोई घरको शुद्ध किया। निमाईचाँद पुनः आनन्दित मनसे आङ्गनमें खेलने लगे ।

उनके गुण इस समय सारी नदियामें प्रचारित हो गये हैं। उनके समान धृष्ट बालक आजतक किसीने कभी देखा नहीं और न ऐसा रूपका सागर बालक ही कभी किसीने देखा। अवस्थाके साथ-साथ निमाईचाँदके प्रत्येक अङ्गके सौन्दर्य और माधुर्यकी छटा भी दिन-दिन बढ़ती जारही है । उनके भुवन-मोहनरूपको देखकर लोग उनकी दुष्टताकी बात भूल जाते हैं।

शचीमाताको बड़ा दुःख है कि उनका पुत्र पागल है। ऐसे रूपके सागर पुत्रको विधाताने पागलके समान बुद्धि क्यों दी है ? यही शचीमाताको दुःख है । इस दुःखमें भी उनको एक आनन्द है। वे निमाईचाँदको नित्य मनःतुष्टिपूर्वक नये-नये साजसे सजाती थीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुत्रको सजाना उन्हें बड़ा अच्छा लगता था। परन्तु निमाईचाँद एक क्षणमें धूल-मिट्टी लगाकर शचीमाताके सारे परिश्रमको व्यर्थ कर देते थे। तथापि शचीमाता पुत्रको सजाना नहीं छोड़ती थीं।

पुत्रको सजाकर, कपड़ा पहनाकर, आभूषण पहनाकर उन्हें जो सुख मिलता, ठाकुरजीकी पूजा करके वैसा सुख नहीं मिलता था। इसमें उनका बहुत समय लग जाता था; क्योंकि दिनमें कितनी ही बार उन्हें निमाईचाँदका शरीर मार्जन करना पड़ता था, अलका-तिलक लगाना पड़ता था, आँखोंमें अञ्जन लगाना पड़ता था, बाल सँवारकर तीन झुँटिया बाँधनी पड़ती थीं। इस कार्यमें शचीमाताको बड़ा आनन्द मिलता था, पुत्रके हँसते मुखचन्द्रको देखकर वे सब कुछ भूल जाती थी।

नीलाचलमें की हुई माताके प्रति कृतज्ञताका वर्णन

माताके इस निष्कपट वात्सल्य प्रेमकी डोरमें बँधे श्रीगौर भगवान्‌ने एक दिन नीलाचलमें बैठे हृदयावेगमें श्रीवास पण्डितको पास बुलाकर दोनों हाथों उनका गला जकड़कर रोते-रोते कहा था—

"यह वस्त्र-प्रसाद माताको देना। उनकी सेवा रूपी धर्मको छोड़कर मैंने संन्यास लेकर जो पागलपन किया उसके लिए उन्हें दण्डवत् करके मेरे अपराधके लिए क्षमा याचना करना। संन्यास-ग्रहणके समय मेरा मन ठिकाने नहीं था। प्रेम मेरा निज-धन है, मुझे संन्याससे क्या प्रयोजन। नीलाचलमें उन्हींकी आज्ञासे हूँ। बीच-बीचमें उनके चरण-दर्शन करने जाता हूँ। किन्तु वे उसको स्फूर्ति मानकर सत्य नहीं मानतीं। एक दिन वे शालान्न तथा केलेके फूल परबल, निम्बू, अदरख आदि पाँच-सात प्रकारके साग-दही, दुग्धखण्ड आदि अनेक व्यञ्जन शालग्रामको समर्पण करके उन्हें गोदमें लेकर क्रन्दन कर रही थीं कि ये सब व्यञ्जन निमाईको बहुत प्यारे हैं, लेकिन वह तो घरमें है नहीं, तो इसको खाता। इस प्रकार ध्यानमें उनके नयन अश्रु-जलसे भर गये थे, तब मैंने वहाँ पहुँचकर सब व्यञ्जनोंका भोजन किया। पात्रोंको खाली देखकर उनने सोचा—बालगोपाल भगवान्‌ने ही सब व्यञ्जन खाये हैं, अथवा कोई जीव-जन्तु आकर खागया, या मुझे भ्रम होगया, मैंने पात्रमें प्रसाद परोसा ही नहीं। यह विचार करके माताने पाक-पात्रोंको जाकर देखा, उनको भी अन्न-व्यञ्जनसे पूर्ण पाया। यह देखकर उनको कुछ संशय हुआ, कुछ चमत्कार लगा। ईशानसे पुनः स्थान लिपवा-पुतवाकर फिरसे रंधन करके गोपालको भोग लगाया। इस विजयादशमीके दिन इस प्रकार हुआ था। उनसे पूछकर उनको इसकी प्रतीति करा देना।"

मेरे मातृभक्त प्रभु यह बात कहते-कहते मातृप्रेमसे विह्वल होकर गिर पड़े। इसी समय नदियाके भक्तवृन्दको वे विदा कर रहे थे। अतएव उन्होंने धैर्य धारण किया।

"एतेक कहिते प्रभु विह्वल हैला।
लोके विदाय करिते प्रभु धैर्य धरिला॥"*

—चै. च. म. १५.६८

शचीमाता यशोदा-भावमें विभोर होकर सर्वदा पुत्र-प्रेममें मग्न रहती थीं। शुद्ध वात्सल्य-प्रेमकी रस्सीसे उन्होंने श्रीगौरभगवान्‌को कितना दृढ़ बाँधा था, यह कृपालु पाठक उपर्युक्त घटनासे खूब समझ सकते हैं। अतएव श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर शची-महिमा लिख गये हैं।

'प्राकृत शब्दे ओ जेवा बलिबेक आइ।
'आइ' शब्द प्रभावे ताहार दुःख नाइ॥" *

प्रसङ्गवश श्रीगौराङ्ग-जननीकी महिमा कीर्तन करके मैंने आत्मशुद्धि की। इस ग्रन्थमें यथास्थान विस्ताररूपमें श्रीगौराङ्ग-जननीके पुण्य चरितकी कथा वर्णित होगी।

*चै. भा. म. १३.३७२, २२.४१; अं. ४.२६८, १०.१०२

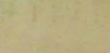

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आठवाँ अध्याय

गंगाके घाटपर बाल गौरांग

वाञ्छा कल्पतरु प्रभु श्रीगौर-सुन्दर । जाह्नवीर वाञ्छा पूर्ण करे निरन्तर ।।
श्रीचै. भा. आ. ६.६९

सुरसरि और बाल-गौराङ्ग—

पतित पावनी सुरसरिके प्रति शचीनन्दनकी अति बाल्यकालसे ही अतिशय प्रीति थी। विष्णु-भक्ति प्रदायिनी सुरसरिकी तरल तरङ्गोंको देखकर बाल-गौराङ्गके मनः प्राण आनन्दसे उछलने लगते थे। नित्यधाम नवद्वीपके पादमूलमें पवित्र सलिला भागीरथी निरन्तर प्रवाहित होती हुई नदियाके अवतार श्रीश्री-गौराङ्ग सुन्दरके दर्शन-सुखकी प्राप्तिसे अपनेको गौरवान्वित समझती थीं।

मोक्षदायिनी जाह्नवीदेवीका पवित्र तट शची-नन्दन की बाल्य-लीला-स्थली है। नन्दनन्दन श्रीकृष्णका मधुर वृन्दावन-लीलाकी सर्वप्रधान रसमय लीलास्थली थी यमुनातट। शचीनन्दन श्रीविश्वम्भरकी मधुर नवद्वीप-लीलाकी सर्व प्रधान लीलास्थली थी गङ्गातट। इस सुरम्य गङ्गातटपर बैठकर बालगौराङ्गने अपने प्रिय सखावृन्दके साथ बाल्य-लीला रङ्गमें नदियावासी नर-नारीके मनमें एक दिन जो आनन्दकी तरंग उठायी थी वह आजतक गौरभक्तवृन्दके हृदयमें घात-प्रतिघात कर रही है।

इस गङ्गातटपर बैठकर निमाई पण्डितने शास्त्र-तत्वकी गम्भीर आलोचनामें दिग्विजयी पण्डितवर्गको पराजित करके जो अतुल कीर्तिकी पताका फहरायी थी, उसकी छाया आज तक भारत गगनमें दीख पड़ती है। इसी गङ्गातटपर बैठकर नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग-प्रभुने मधुर हरिनाम-माहात्म्यकी व्याख्या करके सुमधुर कृष्ण-कथाकी तरङ्गके द्वारा महापाखण्डी लोगोंके मनमें जो विष्णु-भक्तिका बीज वपन किया था, उसका फल आज तक कलिग्रस्त जीवके उद्धारका उत्कृष्ट मार्ग समझा जाता है।

इसी गङ्गातटपर बैठकर श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने जिस विश्वविमोहन रूपकी अपरूप छटा विकीर्ण की थी, उसके प्रभावसे आजतक सारा भारत आलोकित है। श्रीगौराङ्गचन्द्रके आलोकमें समस्त जगतके निवासियों-के हृदयके अन्धकारके दूर होनेका समय आरहा है। श्रीगौर भगवान्के कृपाकटाक्षसे द्रवमयी कलिकलुष-नाशिनी भागीरथीका माहात्म्य सौ गुना बढ़ गया है, नदियाका गङ्गातट सर्वतीर्थश्रेष्ठ कहलाने लगा है।

सभी नदियावासी गङ्गाके किनारे आते थे। गङ्गा-के तीर आये बिना वे रह नहीं सकते थे। उनका सर्व-प्रधान आकर्षण था सर्वचित्ताकर्षक सर्वाङ्ग सुन्दर प्रेम-मय बालमूर्ति शचीबालककी भुवनमोहन अपरूप रूपराशि। सबकी दृष्टिधृष्ट निमाईचाँदके ऊपर थी। क्या बालक-बालिका, क्या युवक-युवती, क्या वृद्ध—सबके मनको हरते हुए शचीनन्दन गङ्गाके घाटपर मधुर नृत्य करते थे; जलक्रीड़ा करते थे, सभी लोगोंके साथ लड़कपनका खिलवाड़ करते थे। उनकी दुष्टतासे कोई सुस्थिर होकर काम नहीं कर पाता था, सबके ऊपर धृष्ट निमाईचाँदकी प्रखर और मधुर करुण दृष्टि समान भावसे पड़ती थी।

गङ्गाके घाटकी शचीनन्दनकी बाल्यलीला कहानी बड़ी मधुर और अति अद्भुत है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुर तथा लोचनदास ठाकुरने गङ्गाके घाटकी बाल-गौराङ्गकी जिन मधुर और मनोहर बाल्य-लीलाओंका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चित्रण किया है, उनमें-से एक-एकको कृपालु पाठक-वृन्दके नयन-पथके सम्मुख लानेका मैं प्रयास करूँगा। कृपा करके अपने नयन उन्मीलित रक्खेंगे।

धृष्ट निमाईचाँद पाठशालासे घर आकर क्षणभर भी देर न करके प्रिय सखागणके साथ गङ्गास्नान करने जाते थे। शचीमाता किसी-किसी दिन उनको पकड़कर तेल-हल्दी लगा देती थीं। किसी-किसी दिन चुपकेसे निमाईचाँद किस रास्ते चलेगये, यह उनको पता भी नहीं लगता था। किसी-किसी दिन तेल-हल्दीकी बाटी लेकर पुत्रके साथ-साथ दौड़ते हुए आधे रास्तेमें जाकर बलपूर्वक उन्हें पकड़कर तेल लगा देती थीं। महीनेमें दस दिन शचीनन्दनके शरीरमें तेल नहीं लग पाता था। धूलिधूसरित अङ्ग, सारे अङ्गमें लिखनेकी स्याहीका दाग, पाठशालेसे पोथी हाथमें लिये बाल गौराङ्ग नदियाके पथमें मधुर नर्तन की मुद्रामें मदल-वल चले आ रहे हैं। उनकी अपरूप रूपराशिसे दशो दिशाएँ मुखरित सारी नदिया आलोकित हो रही है। रास्तेमें जो ही उनको देखता है, वही न्यौछावर होकर उनकी भुवन-मोहन रूपसुधा पान करके सन्तप्त प्राणको शीतल करता है। उनकी आँखें बाल गौराङ्गके मुख-चन्द्रको छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहतीं। कृपालु प्रिय पाठकवृन्द! शचीबालकके तत्कालीन रूपका एक बार ध्यान करें। श्रीवृन्दावन दास ठाकुरने लिखा है—

धूलाय धूसर प्रभु श्रीगौरसुन्दर।
लिखन-कालिर बिन्दु शोभे मनोहर॥

—चै०भा०आ० ४. ४६

गंगा-तटपर

निमाईचाँद पाठशालेमें पढ़-लिखकर प्रिय सखा-गणको साथ लेकर गंगास्नान करने जा रहे हैं। रास्तेमें नाना प्रकारकी क्रीड़ा करते हैं। गंगा-तटपर जाकर बालगौराङ्ग मधुर बाल्यलीलाके रङ्गमें विभोर होकर प्रेमके फाँसमें पड़ गये। उनको घेरकर नदियाके बालवृन्द गङ्गाकी बालुकाके ऊपर मधुर नृत्य कर रहे हैं। बीचमें शचीनन्दन बालुकाके ऊपर लोटने लगते हैं, और 'हरि-बोल' —हरि बोले' कहते हैं। नदियाके बालकवृन्द उनके साथ उच्चस्वरसे हरिनामका सुर पकड़कर गङ्गा-तट के सब लोगोंके कानोंमें अमृत सिञ्चन करते हैं।

गङ्गा-स्नान करके ब्राह्मण पण्डितगण उसी रास्तेसे जा रहे थे। वे लोग शचीनन्दनके अपूर्व लीला-रङ्गको देखकर वहाँ खड़े हो गये। नदियाके बालक-वृन्दके साथ वे लोग भी मधुर हरिनाम-कीर्तनमें योग देने लगे। शचीनन्दनके अपरूप रूपसे मुग्ध होकर विप्रगणने उनके गलेमें पुष्पमाला पहना दी। ठाकुरजीकी पूजाके लिए वे लोग पुष्पमाला ले जा रहे हैं, यह बात उनको याद न रही। उसी मालाको शचीनन्दनके गलेमें पहनाकर पण्डितगण उनके साथ आनन्द कर रहे हैं। कुलाङ्गनाएँ घड़े काँखमे दाबे वहाँ खड़ी होकर धृष्ट निमाईचाँदकी अपरूप रूपराशि-का दर्शन कर रही हैं। पुरुषोंकी ओर ध्यान ही नहीं है। वृद्ध ब्राह्मण पण्डितोंको देखकर लज्जा करना भूल गयीं। वे अनिमेष नयनोंसे बालगौरचन्द्रकी रूपसुधा पान कर रही हैं। नदियाके बालकवृन्दके बालमुखसे निःसृत उच्च हरिध्वनिके साथ कुलनारीवृन्दकी मंगलमय हुलूध्वनि मिलकर मधुर रवसे गंगाके बालुकामय तटको मुखरित कर रही है। जो स्नान करने आ रहा है, वही वहाँ दो दण्ड खड़ा होकर शचीनन्दनकी अपूर्व बाल्य-लीलाके रंगको देखकर मुग्ध हो रहा है।

उच्च स्वरमें हरिध्वनि सुनकर तथा वहाँ लोगों-की भीड़ देखकर शचीमाता पुत्रकी खोजमें वहाँ ही आयीं। आकर जो देखा उससे उनके मनमें सुख नहीं हुआ। सबके ऊपर वे क्रुद्ध हो उठीं। विशेषतः वृद्ध ब्राह्मणोंके ऊपर वे अधिक क्रोधित हुईं। उनके प्रिय पुत्र निमाईचाँदको बूढ़े-बूढ़े पण्डित लोग तथा मुहल्ले-की स्त्रियाँ पागलके समान नचा रही हैं। अपने सोनेके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाछेका धूलि-धूसरित अङ्ग देखकर कोई उसको गोदमें लेकर धूल नहीं झाड़ता, यह देखकर पुत्र-वत्सला स्नेहमयी जननीके हृदयमें बड़ी चोट लगी। क्रुद्ध होकर शचीमाताने रोष भरे कर्कश स्वरमें उपस्थित वृद्ध ब्राह्मणोंको कहा, "वृद्ध ब्राह्मण पण्डित-गणकी ऐसी दशा क्यों हुई ? तीन अवस्था बीत गयी, चौथी अवस्था आ गयी है, केश पक गये, दूसरेके लड़केको नचानेसे आपको क्या सुख मिलता है ? एक तो मेरा निमाईचाँद पागल लड़का है, आप लोग उसको और पागल क्यों बना रहे हैं ?" इतना कहकर शचीमाताने सबके बीच अपने पुत्ररत्नको प्यार करते हुए गोदमें ले लिया।

शचीमाताकी बात सुनकर ब्राह्मण पण्डितोंको होश आया। वे सब उदास और लज्जित होकर अपने घर चले।

शचीमाता पुत्रको गंगास्नान कराकर घर ले आयीं। शचीमाताकी समझमें यह नहीं आया कि उनके पुत्रको पागल बनानेकी क्षमता त्रिलोकीमें किसीकी नहीं है। उनके गर्भसे उत्पन्न धृष्ट बालकने सारे जगत्के लोगों-को पागल कर डाला है। शचीनन्दनके सुन्दर मुख-चन्द्रकी ओर जिसने एक बार देखा, उनके मुखकमल-की मधुर हास्य राशिका जिसने एक बार अवलोकन किया, उनके चन्द्र-वदनकी सुधामयी मधुर भाषा जिसने एक बार सुनी, वही शचीदुलालके प्रेम फाँसमें पड़कर पागल हो गया। कलिके अधम जीवको प्रेममें पागल करनेके लिए ही वे नदिया में शचीके गर्भसे अवतीर्ण हुए थे।

गंगामें स्नान-लीला

गंगा-स्नान शची-दुलालका नित्यकर्म था। कभी-कभी दिनमें दो-तीन बार वे गंगास्नान करते थे। उनका आधा दिन गङ्गाके घाटपर ही बीतता था। गङ्गाजलमें तैरनेमें उनको जो आनन्द मिलता था, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जलमें उतरने पर वे अपने आपको भूल जाते थे।

नदियामें गंगाके घाटपर उस समय असंख्य नर-नारी प्रतिदिन स्नान करने जाते थे। बाल, वृद्ध, युवा, साधु-संन्यासी आदि सभी गंगाके घाटपर बालगौरांग-की मधुर बाललीलाके रंगको देखकर मन ही मन सोचते थे कि यह दिव्य-मूर्ति बालक है कौन ?

गंगाजीके पानीमें श्रीगौर भगवान्की जल-केलि देखकर जान पड़ता था कि गङ्गादेवीने बहुत साधन-शक्तिके द्वारा यमुनाके भाग्यको प्राप्त किया था। श्रीयमुनाके कूलपर श्रीवृन्दावन बिहारी नन्दनन्दनकी बाल-बिहार-लीलाकी कथा सुनकर गङ्गादेवी मन ही मन सोचती थीं कि उनके भाग्यमें ऐसा शुभ दिन कब आवेगा। भक्तवाञ्छा-कल्पतरु श्रीगौरभगवानने नव-द्वीपलीलामें गंगादेवीकी मनोवाञ्छा पूर्ण की थी।

शचीनन्दन अपने प्रिय सखावृन्दके साथ गंगाजीमें जल कीड़ा कर रहे हैं, सबके शरीरपर जल छिड़क रहे हैं। सबकी दृष्टि उनके ऊपर है। किसीके मना करनेपर वे माननेवाले नहीं हैं। जो मना करता है, उसके ऊपर शचीके दुलालकी अधिक कृपा होती थी। उनको कोई पकड़ भी नहीं पाता था। गंगाजलमें हाथमें उपवीत धारण करके ध्यानमें मग्न निष्ठावान् ब्राह्मण पण्डितोंके ऊपर शचीनन्दनकी विशेष कृपा होती थी। एक तो द्रवमयी पतित पावनी गंगाका जल, दूसरे उसमें श्रीगौर भगवान्का पादस्पर्श हुआ है। उस देव दुर्लभ अज-भव-वाञ्छित परम वस्तुसे अनवरत उनका मस्तक सिञ्चित हो रहा है। इससे उनके ध्यानमें विघ्न होता है, जपमें बाधा पड़ती है। यह तो होना ही है। वह जिनका ध्यान कर रहे हैं, जिसका पवित्र नाम जप कर रहे हैं, वही सर्वदेव शिरोमणि परमपुरुष श्रीगौर भगवान् साक्षात् दर्शन प्रदान करके भक्तोंपर कृपा कर रहे हैं। सर्वजीवोंके साधन-धन, नदियावासीके सर्वस्व धन, ब्रह्मादि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देवगणके आराध्यधन नदियामें गंगाके घाटपर स्वयं अधिष्ठित हैं। परन्तु चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर भगवान् अपनी वैष्णवी मायाके बलसे किसीको यह समझने नहीं दे रहे हैं।

परम निष्ठावान् ब्राह्मण पण्डितगण शचीनन्दनके ऊपर कड़ी दृष्टि रखते हैं, धृष्ट निमाईचाँद उनके ऊपर कुल्ला करके मृदु मुस्कानके साथ जलमें डुबकी लगा जाते हैं। जलसे निकलकर किसीको छूकर भाग जाते हैं। ब्राह्मण पण्डितोंको बारम्बार स्नान करना पड़ता है, और जगन्नाथ मिश्रके कुपुत्रके प्रति रोष-कषायित नेत्रोंसे देखकर कटूक्ति बोलते हैं। शचीनन्दन यह सुनकर दिल खोलकर हँसते हैं। कटूक्ति सुननेमें उनको बड़ा आनन्द मिलता है। अनुरागी भक्तकी कटूक्ति श्रीभगवान्‌को बड़ी प्रिय लगती है।

ब्राह्मणोंकी गाली खाकर शचीदुलाल अधिक उत्साहपूर्वक रमणीवृन्दके संग क्रीड़ा करने लगे। तीरपर जाकर स्त्रियोंके वस्त्रके साथ पुरुषोंके वस्त्र बदलकर कौतुक करते हैं। स्नान करके सब लोग जब वस्त्र पहनने जाते हैं, तब लज्जासे व्याकुल हो उठते हैं।

ब्राह्मण पण्डितोंकी शिकायत

ब्राह्मण पण्डितगण जब किसी भी प्रकारसे निमाईचाँदको निरस्त न कर सके, तो सब मिलकर मिश्रपुरन्दरके घर चले। प्रत्येकने जगन्नाथ-मिश्र-पुरन्दरको उनके पुत्रका गंगाके घाटपर-का कीर्ति-कलाप एक-एक करके विस्तारपूर्वक कहा—"इसके कारण शान्तिपूर्वक स्नान भी नहीं कर पाते; ध्यान करते हैं तो यह जल छिड़ककर हमारा ध्यान भंग कर देता है और कहता है—किसका ध्यान करते हो कलियुगमें मैं प्रत्येक्ष नारायण हूँ, मेरा दर्शन करलो; शिवलिंग चुरा लेता है; मेरा उत्तरीय वस्त्र लेकर भाग जाता है; पुष्प, दूर्वा, नैवेद्य, चन्दन विष्णु-पूजाके लिए सजाकर विष्णु-आसन रखकर स्नान करने जाता हूँ, तो यह विष्णु आसनपर बैठ जाता है, और नैवेद्य आदि ग्रहण करके भाग जाता है और कहता है—दुखी क्यों होते हो, जिसके लिए नैवेद्य बनाया, उसीने स्वयं खा लिया है; जलमें उतरकर संध्या करता हूँ तो यह डुबकी लगाकर मेरे पैर खींचने लगता है; मेरी धोती आदि नहीं छोड़ता; गीता पुस्तक चुरा लेता है; मेरे छोटे बालकके कानमें जल डालकर उसको रुलाता है; मेरी पीठ पकड़कर कन्धेपर चढ़ जाता है और—मैं ही महेश हूँ—ऐसे कहकर जलमें कूद पड़ता है; मेरे आसनपर बैठकर नैवेद्य खा जाता है और स्वयं विष्णु-पूजन करने लगता है. स्नान करके गंगासे बाहर निकलता हूँ, तो मेरे शरीरपर बालुका डाल देता है; सब चपल बालक इसके साथ लगे रहते हैं।"

नदियाके सभी ब्राह्मण पण्डित श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरके परम मित्र हैं। शचीनन्दनको सभी पुत्रवत् स्नेह करते हैं, प्रेम करते हैं। अन्तमें उन्होंने मिश्रपुरन्दरसे कहा, "तुम्हारा पुत्र दोपहर तक गंगाके जलमें पड़ा रहता है। इस प्रकार शरीरपर अत्याचार करनेसे उसका स्वास्थ्य कैसे ठीक रहेगा?"

गंगाके घाटपर शचीनन्दनकी दुष्टतासे वे घबरा उठे हैं। क्या करें, किसी प्रकार भी निमाई-चाँदको रास्तेपर नहीं ला सकते। बहुत अच्छी बातें बोलते हैं, लाड़-प्यार करते हैं, परन्तु वह कदापि अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। इसी कारण पण्डित-मण्डली मन्त्रणा करके मिश्रपुरन्दर ठाकुरके पास उनके गुणवन्त पुत्रकी गुणगाथा सुनाने आयी है। परन्तु ये सब बातें कहनेमें भी उनके मनमें दुःख होता है, कहीं मिश्रपुरन्दर अपने पुत्रकी अधिक ताड़ना न करें। धृष्ट निमाईचाँद सबके अतिशय स्नेहका पात्र है। अतएव पण्डितोंने मिश्र-पुरन्दरसे कहा, "यदि इस प्रकार आपका पुत्र रात-दिन गंगाजलमें पड़ा रहेगा तो कैसे बचेगा?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र अतिशय धीर स्वभावके थे। वे अपने पुत्रके गङ्गा-तीरके कीर्ति-कलापको सुनकर लज्जित हो गये। अतिशय दुःखित चित्तसे विनीत होकर नम्र वचनोंसे ब्राह्मणोंसे बोले, "महाशय मेरा पुत्र पागल है, जितना ही वह बड़ा होता जा रहा है उतनी ही उसकी धृष्टता बढ़ती जा रही है। आप लोग अबोध पागल बालकके अपराधपर ध्यान न दें। मैं आज उसको उपयुक्त दण्ड दूँगा।"

ब्राह्मण पण्डितोंमें किसी-किसीने शचीनन्दनको दण्ड देनेकी बात सुनकर नाक-भौं सिकोड़ ली। एक वृद्ध पुरुष बोल उठे, "निमाई दुधमुँहा बालक है। उसके शरीरपर हाथ उठानेसे महापाप लगेगा। मिश्र! तुम ऐसा कार्य न करना। बालक धृष्टता करते ही हैं। कुछ बुद्धि होनेपर ये सब दोष दूर हो जायँगे।"

दूसरे पण्डितोंने वृद्ध ब्राह्मणकी बातमें अपना समर्थन प्रदान करके मिश्रपुरन्दरके दोनों हाथ पकड़ कर मना किया, जिससे वे निमाईचाँदके ऊपर हाथ न उठावें। मिश्रपुरन्दर चुप हो गये और ब्राह्मण लोग अपने-अपने घर गये।

बालिकाओंकी शिकायत

इधर दूसरे मार्गसे गङ्गा-तटसे कुछ नदियाकी बालिकाएँ शचीमाताके पास जाकर क्रोधमें आकर उनके धृष्ट पुत्रकी गङ्गा-तटकी कीर्तिगाथा गाकर उनकी निन्दा करने लगीं। निमाईचाँदकी दुष्टतासे गङ्गाके घाटपर कोई भी प्रसन्न नहीं है। नदियाकी सरल बालिकाएँ गंगाके घाटपर शचीनन्दनकी दुष्टतासे उत्पीड़ित होकर शचीमाताके पास बाल-गौराङ्गके नाम नालिश करने आयी हैं। एक किशोरी सुन्दरी नदियाबाला क्रोध और अभिमानमें चूर होकर श्रीगौरांगकी माँसे बोली,—"ठकुरानीजी! अपने पुत्रकी करनी सुनो। हमारे वस्त्र चुरा लेता है, चाहे सो बकता है, कोई कुछ कहे तो, उसपर जल छींटने लगता है, व्रत करनेके जो फल-मूल लाती हैं उनको छीनकर फेंक देता है, स्नान करके निकलती हैं तो शरीरपर बालू फेंकने लगता है, सब चपल बालक उसके साथ लगे रहते हैं।"

एक दूसरी अति नम्र और धीर स्वभाववाली नदिया-बाला शचीमाताका अञ्चल पकड़कर मृदु-मधुर वचन बोली "अरी, आपका निमाई मेरे पास आकर कानके पास जोरसे चिल्लाकर भयभीत कर गया। मैं भयसे घबरा गयी।" तीसरी नदिया-बाला बोली, "अरी! आपका दुष्ट बालक मेरे मुँहपर कुल्ला कर गया।" चौथी नदिया-बाला शचीमाताका हाथ पकड़कर हँसती हुई बोली, "अरी? मेरी बात तो सुनो। तुम्हारे लड़केके समान दुष्ट लड़का जगत्में हुआ ही नहीं। उसने मेरे बालोंमें कण्टकारि लगा दिया है। यह देखो, अब भी वह कंटीला फल मेरे सिरमें लगा हुआ है।" इतना कहकर उस बालिकाने शचीमाताका हाथ पकड़कर अपने सिरपर रख दिया। पञ्चम नदियाबाला बड़ी रसिका थी। उम्रमें निमाईचाँदसे दो-एक वर्ष छोटी होगी। वह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी। उसने हँसते-हँसते मृदु मधुर वचनोंसे शचीमातासे कहा, "अजी! तुम्हारा लड़का मुझसे ब्याह करना चाहता है।"

शचीमाता इस बालिकाकी बात सुनकर कुछ मुस्करायीं। उन्होंने मन ही मन सोचा कि "मेरे इस फूटे कपालमें ऐसा शुभ दिन कब आयेगा।" बालिकाको गोदमें लेकर प्यार करती हुई बोलीं, "बेटी! तुमको एक शान्त, शिष्ट और बहुत सुन्दर वर प्राप्त होगा। आज घर आनेपर मैं निमाईचाँदको बाँधकर रक्खूँगी।"

अन्तमें दो-चार नदिया-बालिका एकत्रित होकर शचीमाताको घेरकर क्रुद्ध होकर कहने लगीं, "तुम्हारा निमाई प्रतिदिन ऐसा व्यवहार करता है मानों राजाका बेटा है। सुना है कि पुराने जमानेमें नन्द-कुमार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसा किया करते, वैसे ही तुम्हारा निमाई करता है। दुःखी होकर हम लोग अपने माता-पितासे यह बात कह देंगी तो उसी समय लड़ाई-झगड़ा हो जायगा। अपने बेटेको ऐसे कामोंसे निवारण करो। नदियामें यह सब ठीक नहीं।"

इसका मर्म यह है कि नदियाकी बालिकाएँ शची-दुलालसे बड़ा प्रेम करती हैं। उनकी दुष्टताकी बात अपने माँ-बापसे नहीं कहतीं। इस डरसे कि कहीं वे लोग आकर शचीमातासे झगड़ा न करें, निमाईचाँदको तकलीफ न दें। नदिया-बालिका वृन्द नवद्वीपचन्द्रके अपरूप रूपपर मुग्ध हैं। उनका कहीं अमङ्गल न हो, इस भयसे वे सब अपने माता-पितासे ये बातें छिपा कर रखती हैं। तब फिर वे शचीमाताके पास नालिश करने क्यों आयी हैं? इसका भी मर्म है। नदिया-बालावृन्द भली-भाँति जानती हैं कि शचीमाता अपने प्यारे दुलालको कुछ कहती नहीं हैं, और न कहेंगी। शची-दुलाल शची-माताके जीवन-सर्वस्व हैं, बड़े ही प्यारकी वस्तु हैं। उनके पास पुत्रकी दुष्टताकी बात बोलनेपर उनके प्राण-प्रियतमके अमङ्गलकी कोई आशङ्का नहीं है। इसी कारण वे दल-बलके साथ शची-दुलालकी गङ्गा-तटकी गुण-कीर्ति शचीमाताको सुनाने आयी हैं।

शचीमाताने नदिया-बालावृन्दको बड़े प्यारसे मधुर वचन कहकर परितुष्ट किया। बहुत शान्ति-पूर्वक प्रत्येककी नालिश सुनी, सबके साथ प्यारकी बातें कीं। उन्होंने सबसे हँसकर कहा--"मेरा निमाई-चाँद बड़ा धृष्ट बालक है। उसको अबसे घरमें बाँध कर रक्खूँगी। अब गंगास्नान करने न जाने दूँगी।" यह बात सुनकर नदिया-बालावृन्द प्रसन्नचित्त होकर शचीमाताको प्रणाम करके पुनः गंगातटपर गयीं। जाते समय वे शचीमातासे बोलीं—"माँ! तुम अपने पुत्रको बाँधकर मत रखना, गंगाके घाटपर जाने देना, मना कर देना कि इस प्रकार उपद्रव न करें।" शचीमाताने इस बातका मर्म कुछ न समझकर कहा, "अच्छा! उसको डाँट दूँगी। अब तुम्हारे साथ उपद्रव न करेगा।"

नदियाकी बालाओंकी मर्मकी बात शचीमाता क्या समझें? शचीनन्दन उनके भजन-धन हैं, नित्य दर्शनकी वस्तु हैं। उनको देखे बिना उन्हें त्रिभुवन अन्धकारमय दीखने लगेगा। शची-दुलालके दर्शनकी लालसा लेकर वे गंगाजीके घाटपर स्नान करने आती हैं। उनकी दुष्टतासे यद्यपि उनको दुःख होता है, परन्तु मन ही मन उनको बड़ा सुख मिलता है। शचीनन्दनको देखते ही उनके हृदयमें आनन्दकी तरंग उठने लगती है। शची-दुलालके इतनी धृष्टता करनेपर भी नदियाकी बालाएँ अपने प्रति उनमें आन्तरिक प्रेम, प्रीति और स्नेह-भाव देखती हैं। उनकी इतनी दुष्टता सहन करके भी नदियाकी बालाएँ माता-पिताको कुछ नहीं कहतीं। नदिया-नागरी भावसे उनका मन विभावित है। अतएव वे अपने माता-पिता, गुरुजनके सामने कैसे अपने प्राणरमण शची-दुलालकी दुष्टताकी बात कह सकती हैं? शची-माताके सामने माता-पिताकी दोहाई देकर अपने प्राणकी बातें कहकर उन्होंने हृदयको खाली कर लिया। इसी समयसे नदिया-नागरी भावका अंकुर नदियाके बालावृन्दके हृदयमें अंकुरित हो गया।

श्रीगौरांगका रूप सबके चित्तको आकर्षण करने वाला तथा सबके मनः प्राणको हरनेवाला है। गंगाके घाटपर यदि नदिया-बालावृन्द बाल-गौरांगके अपरूप रूपके आकर्षणमें पड़कर उनके चरणोंमें आत्मसमर्पण करें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? सूतिकागृहमें शचीबालककी रूपराशि देखकर सबके मनमें हुआ था कि यह बालक नागरीगणका प्राण है।

नदिया-बालिकावृन्द निमाईचाँदकी दुष्टताकी बात श्रीगौरांग-जननीसे कौतुक-वश कहने आती हैं। प्रकृत पक्षमें यह शचीनन्दनका गुणगान है। साधु-भाषामें इसको व्याजस्तुति कहते हैं। प्रभुकी दुष्टतासे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वे अपने मनमें असीम सुख अनुभव करती हैं, इसी कारण वे शचीमाताके पास ये सब बातें कहनेके लिए आती हैं।

मिश्र पुरन्दरका क्रोध

मिश्र पुरन्दर ठाकुर पुत्रकी गुण-कीर्ति सुनकर विशेष क्षुब्ध हुए। जब सब लोग चले गये तो गृहिणीको डाँटते-फटकारते कहने लगे, "आज मैं तुम्हारे लड़केको समुचित दण्ड दूँगा। गङ्गाके घाटपर उसके उपद्रवसे कोई स्नान-सन्ध्या नहीं कर पा रहा है। यह तो बड़ी विलक्षण बात है। इसका कोई उपाय करना पड़ेगा।"

यह कहते हुए श्रीपाद जगन्नाथमिश्र पुरन्दर लाठी हाथमें लेकर पुत्रको ढूँढ़ने गंगाके तीर चले। बालिकावृन्दको पहले ही ज्ञात हो गया कि मिश्रपुरन्दर निमाईचाँदको दण्ड देनेके लिए घरसे बाहर निकले हैं। उन्होंने दौड़कर वहाँ जाकर अपने जीवन-सर्वस्व-धन, प्राण-रमण शचीनन्दनको सावधान कर दिया। उनको वहाँसे भाग जानेकी राय दी।

नदिया-बालिका वृन्दका शची-बालकके प्रति कैसा प्रगाढ़ प्रेम था, यह इस कार्यसे खूब जाना जा सकता है। इन्होंने ही शचीमाताके सामने अभी निमाईचाँदकी दुष्टताकी बात कहकर उनको डराने-धमकानेके लिए अनुरोध किया है। फिर जब देखा है कि मिश्रपुरन्दर क्रोधान्ध होकर आरहे हैं, तो दौड़कर निमाईचाँदको सावधान कर दिया है। यही कहलाता है आन्तरिक प्रेम। श्रीगौरभगवान् नदिया-बालाओंके प्राण हैं, साधनके धन हैं, भजनीय वस्तु हैं, अति शैशव कालसे उनके प्रति प्रेमभक्तिका अंकुर प्रभुने ही उनके बालहृदयमें रोपण कर दिया है।

निमाईचाँद प्रिय सखावृन्दके साथ गङ्गाजलमें अपूर्व जल-केलि कर रहे हैं। उनके भुवन-मोहन रूपको देखकर नदियावासी नर-नारी निर्निमेष नयनोंसे उनकी ओर ताकते हैं। शची-दुलालके गङ्गा-स्नानके पश्चात् दिव्य मुख कमलकी ओर ताक कर वे अपनी आँखें नहीं लौटा पाते। सब बालकोंके बीचमें शचीकुमार पूर्णचन्द्रके समान सुशोभित होते हैं।

निमाईकी चतुराई

नदियाकी बालाओंके मुखसे पिताके आगमनकी बात सुनकर शचीदुलाल गङ्गाजीके भीतरसे निकल-कर भयके कारण भागने लगे। शठ-शिरोमणि शचीनन्दनने अपने सखाओंसे कह दिया—"बाबाके आनेपर तुम लोग कह देना कि तुम्हारा पुत्र आज गङ्गा नहाने नहीं आया। पढ़ करके वह अभी इस रास्तेसे घर गया है।"

प्रिय सखावृन्दको यह सिखा-पढ़ाकर वे दूसरे रास्ते भागकर घर चले गये। मिश्रपुरन्दर ठाकुर दूसरे रास्ते गङ्गाके घाटपर आये। वहाँ पहुँचकर वे चारों ओर खोजने लगे। बालकोंके बीच निमाई-चाँदको न देखकर वे अत्यन्त व्यग्र होकर उनसे पूछने लगे, "विश्वम्भर कहाँ है, बता सकते हो ?" निमाईचाँदके प्रिय सखागणने स्पष्ट शब्दोंमें उत्तर दिया—"आज तो निमाई गङ्गा-स्नानके लिए आया ही नहीं।"

मिश्रपुरन्दर हाथमें लाठी लिये गङ्गाके इस घाट उस घाट पुत्रको खोजने लगे। परन्तु कहीं भी उनको न देखकर क्रुद्ध होकर गर्जन-तर्जन करने लगे। जो ब्राह्मण पण्डित लोग मिश्रपुरन्दरके पास निमाईचाँद-की दुष्टताकी बात कहने गये थे, वे आकर मिश्रसे कहने लगे—"डरके मारे विश्वम्भर घर भाग गया है, तुम घर जाओ, उसको कुछ कहना नहीं। यदि वह फिर कभी चपलता करेगा तो हम लोग ही उसको पकड़वा देंगे।"

यह कहकर मिश्रपुरन्दरके क्रोधको ब्राह्मणोंने शान्त किया। उन्होंने यह भी कहा, "मिश्र ! कौतुक-वश हम तुम्हारे पास पुत्रकी दुष्टता की बात कहने गये थे। तुम बड़े भाग्यवान् पुरुष हो। तुमने यह सर्वचित्ताकर्षक परम रूपवान् पुत्ररत्न प्राप्त किया है। तुम्हारा पुत्र यदि कोटि अपराध भी करे, तथापि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हम उसको अपने हृदयसे लगाकर अपना प्राण जुड़ावेंगे।"

मिश्रपुरन्दर यह बात सुनकर मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने बन्धुवर्गको प्रेमालिङ्गन प्रदान कर वात्सल्य रससे गद्‌गद होकर कहा, "विश्वम्भर आप लोगोंका ही पुत्र है, मेरी शपथ, बालकका अपराध आप लोग न लेंगे।"

इधर धृष्ट निमाईचाँद चतुराईसे पिताको धोखा देकर दूसरे रास्ते भले मानसके समान घर गये। उनके हाथमें पुस्तक थी सोनेके अङ्गमें स्थान-स्थान-पर स्याहीके बिन्दु सुशोभित हो रहे थे। ऐसा जान पड़ता था मानो चम्पाके फूलोंपर चतुर्दिक भ्रमर मँडरा रहे हैं।

घर जाकर चतुर चूड़ामणि निमाईचाँदने मातासे कहा, "माँ री! तेल दे, स्नान करने जाऊँगा।" शचीमाताने सोचा था कि पुत्रको देखकर डाँट-फट-कार करेंगी, परन्तु ऐसा कर न सकीं; क्योंकि निमाईचाँदके अङ्गमें स्नानका कोई चिह्न न देख-कर विस्मित होकर मन ही मन सोचने लगीं, "यह क्या बात है? अभी-अभी ब्राह्मण पण्डितगण आकर गृहस्वामीके सामने निमाईचाँदको गंगाके घाटकी दुष्टताकी बात कह गये हैं। मेरा सोनेका बच्छा तो अभी गंगास्नान करने गया ही नहीं। बालिकाओंने भी मेरे सामने इसकी गंगाके घाटकी नाना प्रकारकी कीर्ति कहानी सुनायी है। अब भी मेरे बच्छाके सोनेके अङ्गमें स्याही लगी है, वही वस्त्र पहने है, वही पोथी हाथमें है। इन बूढ़े लोगोंके फूटे कपालमें क्या आँखें नहीं हैं।" यह सोचकर स्नेहमयी जननी निमाईचाँदको लाड़-प्यार करके गोदमें लेकर सुगन्धित तेल लगाने लगीं। पुत्रके सामने वे सब बातें नहीं रखीं।

इसी समय श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र ठाकुर घर लौटे। अब भी उनके हाथमें लाठी थी और क्रोधान्ध चेहरा था। चतुर निमाईचाँद पिताको घर आते देखकर दौड़कर उनके पास गये और मधुर शब्दोंमें 'बाबा' कहकर भुवनमोहन सुधामयी हँसीकी तरङ्गमें कूदकर उनकी गोदमें चले गये। पुत्रके अङ्गस्पर्शके आनन्दसे मिश्रपुरन्दरका सारा क्रोध दूर हो गया। वे प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर अपने जीवन सर्वस्वधन निमाईचाँदको हृदयसे लगाकर मुख चूमकर प्राणको शीतल करने लगे। उनका सारा अङ्ग पुलकित हो उठा। उन्होंने देखा कि पुत्रका सर्वाङ्ग धूलि-धूसरित है, हाथ-मुँह और शरीरमें स्याहीके चिह्न हैं, स्नान करनेका कोई लक्षण नहीं दीखता। यह देखकर शचीमाताके समान वे भी विस्मित हो उठे। कुछ देरके बाद उन्होंने निमाईचाँदसे पूछा, "बेटा निमाई! यह तुम्हारी बुद्धि क्या है? गङ्गाके घाट-पर जाकर तुम किसीको स्नान नहीं करने देते हो। विष्णुपूजाके सब सामान गड़बड़ कर देते हो. ठाकुरजीसे भी तुमको कुछ भय नही होता? तुम सात वर्षके बालक हुए, अब तुमको कब बुद्धि होगी?"

शठ-शिरोमणि बाल गौरांग पिताके सामने भी अपनी चतुराई प्रकट करनेसे बाज न आये। चतुर भगवान्‌की चातुरीका जाल ही उनका लीला-रहस्य है। शचीनन्दनने अपना लीला-रहस्य माता-पिताको बूझने नहीं दिया। चतुर शिरोमणि श्रीगौर-भगवान्‌ने पिताकी बातका उत्तर दिया, "बाबा! आज तो मैं गांगा-स्नान करने गया ही नहीं। मेरे पहले बहुत-से बालक गंगा-स्नान करने गये हैं, उन्होंने ही यह सब बदमाशी की होगी। लोग झूठ-झूठ मेरी बदनामी करते हैं, न जानेपर भी यदि लोग मेरा नाम बदनाम करते हैं तो मैं अब सचमुच दुष्टता करूँगा।"

चतुर निमाईचाँदने अन्तिम बात पक्व-बिम्बाफल-विनिन्दित ओष्ठको फुलाकर अभिमान भरे छल्-छल् नेत्रोंसे पितासे कही। कृपालु पाठकवृन्द! आपने शठ-शिरोमणि धृष्ट शचीनन्दनका उत्तर तो सुन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिया न ? पिताकी बातसे चतुर चूड़ामणिके अभिमानमय क्रन्दनका मर्म समझा ? उन्होंने अपने पितासे स्पष्ट कह दिया कि वे गङ्गा-स्नान करने नहीं गये थे, गङ्गाके घाटपर दुष्टताकी बात वह कुछ नहीं जानते, उनके सखा-लोग दुष्टता करते हैं, और नाम होता है उनका, इससे उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ है। झूठी निन्दासे सचमुच सबके मनमें दुःख होता है, परन्तु चतुर चूड़ामणि प्रभुने सत्यको मिथ्याके रूपमें अभिनय करके पिताके सामने जो लीला-रहस्य प्रकट किया, वह श्री-भगवान्‌को ही शोभा देता है।

अब शचीनन्दन पुनः गङ्गा-स्नान करनेके लिए जानेकी तैयारी करने लगे। शचीमाताने उनका शरीर पोंछकर सुगन्धित तेल मर्दन कर दिया। बड़े आनन्दसे प्रिय सखाके संग निमाईचाँद पुनः गंगा-स्नान करने गये। माता-पिता उनकी चतुराई कुछ भी समझ न सके। प्रभु बीच-बीचमें इसी प्रकार उनको वैष्णवी मायामें मुग्ध कर देते थे। कलिके प्रच्छन्न अवतार श्रीगौरांगकी बाल्यलीला-कथा परम अद्‌भुत है, उनका बालचरित अपूर्व रहस्यसे भरा है।

निमाईचाँद गंगाके घाटपर जाकर पुनः प्रिय सखा वृन्दमें मिल गये। उनको अपनी चतुराईकी बात बतायी। नदियाके सब बालक हँसकर शची-बालकको आलिंगन करके बोले, "निमाई ! तुम बड़े चतुर हो। पिताके हाथसे आज तुमने अपनी रक्षा कर ली। तुम्हारे पिता आज तुमको बड़ी मार मारते।"

मिश्रदम्पतिका चिन्तन

निमाईचाँदके गंगा-स्नानके लिए जानेपर मिश्र-दम्पति मन ही मन सोचने लगे, "जो ब्राह्मण पण्डित निमाईचाँदके नामपर नालिश करने आये थे, वे तो झूठ बोलनेवाले लोग नहीं हैं। तब निमाईके शरीरपर स्नानका चिह्न क्यों नहीं दीख पड़ा ? प्रातःकाल जिस रूपमें उसको पाठशालामें भेजा था, वही पोथी, वही वस्त्र, वही केशपाश, वही वेष, वही अंगमें धूल—सब कुछ वही देखा। तब कैसे हमारे सोनेके बच्छाने गंगाके घाटपर लोगोंके साथ दुष्टता की ? ऐसा सन्देह मिश्रदम्पतिके मनमें बीच-बीचमें उठता था। साथ ही साथ पुत्रके ऐश्वर्यकी बात भी मनमें उदय होती थी। यहाँ भी वैसा ही हुआ।

इस प्रकारका ऐश्वर्यभाव देर तक शची-जगन्नाथके मनमें स्थान न पाता। वात्सल्य-प्रेममें विभोर होकर जब वे पुत्रके किसी अलौकिक कार्यके विषयमें सोचते थे तो उनके मनमें एक विषम आशंका उठ खड़ी होती। वे सोचते कि उनके मनमें पुत्रके प्रति इस प्रकारका ऐश्वर्य भावका उदय क्यों होता है ? तब वे सोचते कि निमाई क्या उनका पुत्र नहीं है ? श्रीभगवान्‌में पुत्र-बुद्धि प्रत्येक अवतारमें उनको परम सौभाग्यवती माताएँ करती आ रही हैं, श्रीगौरांग अवतारमें शची-जगन्नाथ ही इसका अपवाद क्यों होंगे ? नन्द महाराजने जो किया है, मिश्रपुरन्दर भी वही करते हैं। माँ यशोदाने जो किया है, शचीमाता भी वही करती हैं।

वात्सल्य प्रेमकी प्रखरतामें ऐश्वर्य ज्ञान दूर हो जाता है। शची-जगन्नाथका भी वही हुआ। माता-पिताके मनमें इस भावके उदय होते ही अन्तर्यामी श्रीगौरभगवान् गंगा-स्नान करके झटपट घर लौटे। पुत्रके चन्द्रवदनको देखकर मिश्रदम्पतिकी सारी चिन्ता, सब सन्देह दूर हो गया। दोनोंने मिलकर पुत्रको गोदमें लेकर निमाईचाँदके चन्द्रवदनपर शत-शत स्नेह-चुम्बन प्रदान किया। उनके सारे विचार, तर्क और सन्देह वात्सल्य-प्रेमरसमें घुल गये।

निमाईचाँद जब घरमें आकर मधुर स्वरसे माताको 'माँ' कहकर पुकारने लगे तो पुत्रस्नेहसे मुग्ध शचीमाताने सोचा कि 'निमाई तो मेरा पुत्र है, मेरे इस पाप मनमें क्यों ऐसी कुबुद्धि आती है ? इससे मेरे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोनेके बच्छाका अमङ्गल तो नहीं होगा ? हे मधुसूदन ! हे नारायण ! इस पाप बुद्धिके द्वारा बीच-बीचमें मुझको क्यों अभिभूत करते हो ? मेरा निमाईचाँद मेरा प्रतिपाल्य पुत्र है, मेरे लाड़-प्यारकी वस्तु है। ईश्वर-बुद्धिसे इसका चिन्तन करनेपर मेरे प्राण व्याकुल हो उठते हैं। लोग चाहे जो कहें, हे भगवान् ! मेरे सोनेके बच्छाको चिरंजीवि रखना।"

मिश्रपुरन्दरको निमाईचाँद जब 'बाबा' कहकर मधुर वाणीमें सम्भाषण करते हैं, तब वृद्ध ब्राह्मणका बाह्य ज्ञान लुप्त हो जाता है। वे जब इष्ट देवताका ध्यान करने बैठते हैं, निमाईचाँद आकर उनके सामने खड़े हो जाते हैं। पुत्रको देखते ही वे अपने इष्ट देवताको भूल जाते हैं। इससे उनको सन्देह होता है—

"माया-रूपे कृष्ण वा जन्मिल मोर घर।"

—चै. भा. आ. ४.१३२

इस प्रकार विपदमें पड़कर मिश्रपुरन्दर ठाकुर अपने अभीष्टदेवसे प्रार्थना करते हैं, "हे कृष्ण ! करुणासिन्धु। यह कैसी तुम्हारी अद्भुत लीला है। निमाईचाँद मेरा पुत्र है, स्नेहकी वस्तु है, प्राणकी वस्तु है। तुम मेरे साध्यवस्तु षडैश्वर्यपूर्ण परमेश्वर हो। तुम्हारे साथ मेरे दूधके पुत्रकी तुलना नहीं हो सकती। तुम्हारे पदरजके एक कणके तुल्य भी वह नहीं है। हे दीनबन्धु कृष्ण ! कृपा करके हमारी कुबुद्धि दूर करो। लोग चाहे जो कहें, मेरे मनमें कभी इस प्रकारकी कुबुद्धि उत्पन्न न हो। इससे मेरे निमाईचाँदका अमङ्गल हो सकता है।"

धन्य हैं शची-जगन्नाथ ! धन्य है तुम्हारा वात्सल्य-प्रेम-रस-सिक्त हृदय ! तुम्हारे चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात ! अनन्त ब्रह्माण्डके स्वामी श्री श्रीगौर भगवान् तुम्हारे पुत्ररूपमें आनन्दवर्द्धन कर रहे हैं। तुम्हारे समान भाग्यवान् नर-नारी त्रिलोकीमें नहीं है।

शचीमाता और मिश्रपुरन्दर उस दिनकी गङ्गातटकी पुत्रकी दुष्टताकी बात विश्वास न कर सके। विप्रों और बालिकाओंका अभियोग कौतुक मात्र समझकर पुत्रको लेकर परम आनन्दपूर्वक लाड़-प्यार करने लगे।

निमाईचाँद जितनी देर पाठशालामें रहते हैं, शची-जगन्नाथके मनमें वह समय कोटि युग-सा बीतता है।

श्रीगौरभगवान् माता-पिताके समस्त हृदयको घेरकर बैठे हैं। उनको इष्टदेवताका नाम लेनेके लिए भी समय नहीं मिलता, ध्यानमें बैठते हैं तो पुत्रकी मूर्ति सामने देखते हैं। निमाईचाँद उनके सर्वस्व धन हैं। इसको ही कहते हैं एकनिष्ठा, एकप्राण, ऐकान्तिकता। समस्त हृदय, सारा मन-प्राण श्रीभगवान्के चरणोंमें अर्पण किये बिना वे निज जन नहीं होते, अपना नहीं बनते। शची-जगन्नाथ सर्वकर्म त्याग करके बालगौराङ्गके मङ्गलकी चिन्ता करते हैं। उनको दूसरी चिन्ता नहीं, दूसरी कामना नहीं। पुत्ररूपी गौरभगवान् उनके हृदयाकाश-में सतत पूर्णचन्द्रके समान समुदित होकर विराजते हैं। क्या रात, क्या दिन, क्या जागरण, क्या स्वप्न—निमाईचाँदकी भुवनमोहन रूपछटासे उनका हृदय सदा आलोकित रहता है। सोनाके बच्छा निमाई उनकी चिन्ताकी वस्तु हैं, ध्यानकी वस्तु हैं ज्ञानकी वस्तु हैं, दर्शनकी वस्तु है, अनुभवकी वस्तु हैं और अनुशीलनकी वस्तु हैं।

गंगा-घाटकी एक अन्य लीला और मिश्रपुरन्दरका क्रोध

ठाकुर लोचनदास बालगोराङ्गकी गङ्गाके घाटकी एक और लीला-कथा लिख गये हैं ! गङ्गाके घाटपर बालुकामय तटपर शचीनन्दन प्रियसखावृन्दके साथ दोपहर तक धूपमें खेल खेलते हैं। तप्त बालुकाके ऊपर पक्षीके पदचिह्नके सहारे निमाईचाँद सखावृन्दके साथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहुत दूर तक जाते हैं। प्रखर धूपमें उनके रक्ताभ मुखमण्डलसे मानो रक्त फूट पड़ता है। सबका शरीर पसीने-पसीने हो रहा है। इस लीलाके सम्बन्धमें ठाकुर लोचनदासने लिखा है कि गङ्गाके बालूपर पक्षीके पद-चिह्नको जो बालक फाँदेगा, वही इस अद्भुतक्रीड़ामें पराजित होगा। और जो बालक आगे जाकर पराजित बालकको दौड़कर पकड़ेगा वह जीतेगा। उस पराजित बालकके कन्धेपर चढ़कर वह उसकी पीठपर हाथसे पीटते हुए निमाईचाँदके बताये हुए घाटपर ले जायगा।

यह शचीनन्दनकी स्व-कपोल-कल्पित लीला थी। इस तेज धूपमें शारीरिक परिश्रम-साध्य यह खेल करते-करते निमाईचाँदके कोमल अङ्ग पसीनेसे लथपथ हो गये हैं। सारा अङ्ग धूपमें सन्तप्त होकर लोहितवर्ण हो गया है। इसी समय मिश्रपुरन्दर ठाकुर गङ्गास्नान करनेके लिए उसी घाटपर आये। आकर जो देखा, उससे उनका हृदय क्रोध और दुःखसे दग्ध हो गया। उन्होंने निमाईचाँदको देखा, मानो स्वर्ण-पद्म धूपसे मुरझा गया है और पसीना मानो उस पद्मसे मधु बह रहा है।

पिताको देखते ही गौराङ्ग प्राणपनसे भागे। सखावृन्द भी उनके साथ भागे। उस तेज धूपमें तप्त गङ्गाके बालूपर मिश्रपुरन्दर 'निमाई' 'निमाई' उच्चस्वरसे पुकारते हुए पुत्रके पीछे-पीछे दौड़े। वात्सल्य प्रेमका ऐसा ही प्रभाव होता है। पुत्र-प्रेमके प्राबल्यमें वृद्ध ब्राह्मणको जीवन-मरणका ज्ञान नहीं। वे उच्चस्वरसे धृष्ट पुत्रको पुकारते हैं—"निमाई रे! बाछा रे! घर आ रे! इस तप्त बालुकामें धूपमें तेरे कोमल रक्त पाँव दोनों जल गये। तेरा सोनेका रङ्ग काला हो गयाहै।" इतना कहकर वृद्ध ब्राह्मण दौड़ते-दौड़ते हाँफते हुए पुत्रके पास पहुँचे।

पिताको उस अवस्थामें देखकर निमाईचाँद बहुत लज्जित हुए। उनका चन्द्रवदन सूख गया था; अब वह भाग न सके। लज्जासे सिर झुकाकर खड़े हो गये। शचीनन्दनके मनमें बड़ा भय पैदा हो गया था। परन्तु मिश्रपुरन्दरका क्रोध दूर हो गया था। पुत्रके धूपसे जलते हुए मुखकमलको देखकर उसके मनमें बड़ा दुःख हुआ। उनका कलेजा फट गया। पहले पुत्रका हाथ पकड़कर पास लाकर अपने वस्त्रके द्वारा उसके चन्द्रवदनको पोंछा। प्यार करके गोदमें उठा लिया, और उसी धूपमें उनको गोदमें लेकर घर आये। उस दिन उनका गङ्गास्नान नहीं हुआ। घरमें आकर स्वस्थ होकर मिश्रपुरन्दरने पुत्रको मृदु भर्त्सना करते हुए कहा, "पढ़ना-लिखना सब चौपट होगया, तेरी कैसी कुबुद्धि है। ब्राह्मण-कुमार होकर भी तेरेमें कोई आचार नहीं है।"

इतनेमें उनको क्रोध जागृत हुआ और गरजते-गरजते मिश्रपुरन्दरने हाथमें लाठी लेकर निमाई-चाँदको मारनेका भय दिखाया। धृष्ट निमाईचाँद भयसे सिकुड़कर क्रोधान्ध पिताके मुखकी ओर ताकने लगे। त्रिभुवनके अधीश्वर विश्व-ब्रह्माण्डपति मिश्रपुरन्दरकी ताड़नासे सशङ्कित होकर त्रस्त भावमें एक तरफ चोरके समान खड़े हैं। उनके सुन्दर कमल-नयन छलछला गये हैं। त्रस्त-से होकर इधर-उधर ताक रहे हैं कि स्नेहमयी माँ कहाँ हैं? माताको न देखकर वे भयसे और अधीर हो रहे हैं।

उसी समय स्नेहमयी शचीमाता घरसे शोरगुल सुनकर बाहर दौड़ी आयीं। माताको देखकर पिताके क्रोधसे पीड़ित कम्पायमान निमाईचाँदके मनमें कुछ साहस आया। वे क्रन्दनके स्वरमें 'माँ' कहकर दौड़कर माताकी गोदमें छिप गये। श्रीपाद जगन्नाथमिश्रने गृहिणीको देखकर अब तर्जन-गर्जनकी मात्रा बढ़ा दी। और अधिक उत्तेजित होकर माताकी गोदमें भयसे विह्वल निमाईचाँदको लक्ष्यकर अपने हाथकी लाठी उठाकर झूठ-मूठ चलाने लगे। त्रस्त निमाईचाँद माताकी गोदमें भयसे सिकुड़कर छिप गये हैं। मिश्रपुरन्दर जब गृहिणीके पास गये, तब माताके वस्त्रके अञ्चलके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भीतरसे धीरे-धीरे भीतिसे काँपते हुए स्वरमें डरते-डरते क्रोधान्ध पिताके मुखकी ओर देखकर शचीनन्दन बोले, "बाबा ! मैं अब खेल नहीं खेलूँगा।"

धृष्ट निमाईचाँदकी तत्कालीन भयभीत मूर्त्तिका चित्र सुविज्ञ गौरभक्त चित्रकारके लिए चित्रित करनेकी वस्तु है । यदि मैं चित्रकार होता तो बाल-गौराङ्गके इस मधुमय बालचित्रको चित्रित कर कृपालु पाठकवृन्दको उपहार देता ।

शचीमाताने पुत्रको गोदमें छिपाकर पतिको भलीभाँति समझाकर कहा—"मेरे बच्चेको मारना मत, अब खेलने नहीं जायगा, सर्वदा तुम्हारे पास रहकर पढ़ा करेगा।"

माँने जब देखा कि निमाईचाँद भयसे उनकी गोदमें काँप रहा है, सोनेके बालकके सोनेका अङ्ग पसीने-पसीने हो रहा है, तब अपने पतिके ऊपर उनको बड़ा क्रोध हुआ । वे पुत्रको गोदमें लेकर पतिकी ओर पीठ करके बैठ गयीं । वस्त्रके अञ्चलसे पुत्रके मुखचन्द्रको पोंछ दिया । पुत्रके-वात्सल्य-प्रेममें विभोर होकर वे कर्त्तव्य-ज्ञान-शून्य हो गयीं । उन्होंने अभिमानमें भरकर पतिको लक्ष्य करके कहा—"मेरा पुत्र नहीं पढ़ता है तो न सही, मूर्ख ही रहे, चिरञ्जीवि होकर सौ वर्ष जीता रहे।"

गृहिणीकी ऐसी बात सुनकर मिश्रपुरन्दरका क्रोध बढ़ गया । अत्यधिक स्नेह और दुलार करके गृहिणी पुत्रके भविष्यको बिगाड़ रही है, यह देखकर वे क्रुद्ध स्वरमें बोले—"नहीं पढ़ेगा तो कैसे जीवन निभायगा ? कौन ब्राह्मण इसको अपनी कन्या देगा ?"

शचीमाता पतिकी बात सुनकर हँसी न रोक सकीं । वे पुत्रके मुखकमलमें स्नेह चुम्बन देकर चिबुक पकड़कर दुलार करते हुए रुष्ट पतिको सुनाकर कहने लगीं, "मेरा सोनेका बच्चा पहले जीवित तो रहे, पश्चात् विवाहकी बात होगी ।" यह कहकर पुत्रकी ओर देखकर दुलार करते हुए कहा, "मेरे सोनेके चाँद ! सात राजाके धन मेरे माणिक्य ! बहुत लोग ऐसे सोनेके बालकको पैर पकड़कर खुशामद करके अपनी कन्या देंगे । ठीक है न मेरे सोनेके यदुमणि !"

बाल-गौराङ्ग सात वर्षके बालक हैं । विवाह क्या वस्तु है, यह कुछ नहीं जानते । उन्होंने सोचा, मानो माँ कोई उत्तम खानेकी वस्तुकी बात कह रही है । यह सुनकर वे हँस पड़े । अब उनका भय दूर हो गया था । माताकी बातसे उनके मनमें बड़ा आनन्द हुआ । विवाहकी बातका मर्म न समझनेपर भी इतने आनन्दित थे, समझनेपर तो आनन्दसे नृत्य करते, इसमें सन्देह नहीं है । वे दोनों भुजाओंसे माताका गला पकड़कर चुपकेसे कानोंमें बोले, "माँ मुझे कब विवाह दोगी।"

शचीनन्दन विवाहको उत्तम खानेकी वस्तु समझते हैं—यह शचीमाता समझ न सकीं । उन्होंने उत्तर दिया, "बेटा ! कुछ बड़ा होते ही तुमको विवाह दूँगी।" निमाईचाँदने कहा, "माँ ! मुझको अभी दे विवाह।" शचीमाता हँसते हुए बोलीं, "मेरे पागल लड़के ! गोरी बहू खोजनी पड़ेगी । बाजा-गाजा करना पड़ेगा, लोगोंको निमन्त्रित करना पड़ेगा । तब न ब्याह होगा।"

निमाईचाँद इसका मर्म कुछ न समझे । परन्तु उन्होंने मुहल्लेके लोगोंका ब्याह देखा था । मन ही मन निश्चय कर लिया कि माँ किसी खानेकी वस्तुकी बात नहीं करती है । तब उनका वह आनन्द फीका पड़ गया । तब भी विवाहके नामपर उनका हृदय मानो नाच उठा । उन्होंने 'बहू' देखी है, पर उसका मर्म नहीं जानते ।

शचीमाताने दुलार करते हुए कहा, "बेटा निमाई ! तुम्हारी गोरी चिट्टी बहू होगी।" निमाईचाँदके मुखसे हँसी नहीं रुकती । उन्होंने अत्यन्त शान्त और शिष्ट बालकके समान माताके कानके पास चन्द्रवदन लेजाकर चुपके-चुपके पूछा, "माँ !

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहू आकर मुझे क्या कहकर पुकारेगी ? मुझको क्या खानेको देगी ?"

स्नेहमयी शचीमाता हँसी रोक न सकीं। वे जोरसे हँसती हुई पुत्रका मुख चुम्बन करके दुलारसे दोनों हाथों गला पकड़कर बोलीं, "बेटा निमाई ! तुम्हारी बहू आकर तुझको 'बाबा' कहकर पुकारेगी और खूब क्षीर-सन्देश देगी।"

निमाईचाँद माताकी हँसीका मर्म कुछ न समझ सके ; परन्तु क्षीर-सन्देशकी बात सुनकर बहुत आनन्दित हुए। वे अब भी माताकी गोदमें छिपे हैं। क्रुद्ध पिताको नहीं देख पा रहे हैं। इसलिए अब उनको कोई डर नहीं है। आनन्दसे माताके सङ्ग क्रीड़ा करते हैं।

मिश्रपुरन्दरने गृहिणीके भयसे हाथकी लाठी फेंककर उस दिन घरपर ही स्नान किया। स्नान करके गृहिणीके पास आकर पुत्रके साथ उनके गुप्त कथोपकथनका कुछ-कुछ आभास प्राप्त किया। उसे सुनकर मिश्रपुरन्दरका हृदय आनन्दसे उछल पड़ा। वे तब मन ही मन पश्चात्ताप करने लगे कि क्यों क्रोधोन्मत्त होकर अपने ऐसे सोनेके बच्छाके कोमल अङ्गपर हाथ उठानेके लिए तैयार हो गये थे। उनकी दोनों आँखोंसे आँसूकी धार बह चली।

पिताकी सीख

गृहिणीकी गोदसे पुत्रको अपनी गोदमें लेकर मिश्रपुरन्दर लाड़-प्यार करने लगे। उनके चन्द्रवदनको सैकड़ों स्नेह चुम्बन प्रदान करके सिक्त कर दिया। मिश्रपुरन्दरका क्रोध बाहरी था। वे पुत्र-बुद्धिसे गौर भगवान्‌पर शासन कर रहे थे। पिताके इतने लाड़-प्यारपर भी निमाईचाँदका भय अब भी पूर्णरूपसे दूर नहीं हुआ था। तब मिश्रपुरन्दर प्यार करते हुए पुत्रसे बोले—"पढ़ने-लिखनेसे सब तुमको अच्छा बालक कहेंगे और मैं तुमको रेशमके वस्त्र दूँगा और केला दूँगा।"

पिताके दुलारसे बाल गौराङ्ग द्रवित हो उठे। केलाका नाम सुनकर उनको बड़ा आनन्द हुआ। वे अपने पिताकी गोदसे उतरकर आँगनमें खड़े होकर ताली बजा-बजाकर मधुर नृत्य करने लगे। मुखसे सुधामधुर हरिनाम, छोटे-छोटे लाल कर-कमलके द्वारा ताली, चरणोंसे नूपुरकी रुनझुन ध्वनि, नाच-नाचकर शचीनन्दनने आङ्गनमें माता-पिताकी प्रदक्षिणा की।

शची-जगन्नाथके आनन्दकी सीमा न रही। दोनोंने मिलकर पुत्ररूपी गौरभगवान्‌को लाड़-प्यार करके गोदमें उठा लिया। एक बार उनको शचीमाता गोदमें लेती हैं, और दूसरी बार माताकी गोदसे कूदकर वे पिताकी गोदमें चले जाते हैं। निमाईचाँदके दोनों हाथमें क्षीर और सन्देश है, मनमुग्ध करनेवाला मनोहर मधुर नृत्य वेष है। भ्रमरके समान काले केशपाश सुन्दर चौड़े ललाटपर बिखर रहे हैं। कटिमें नीलाम्बरकी कछनी है। वे शचीके आङ्गनमें खड़े होकर मनोहर नृत्य कर रहे हैं। नदियावासी नर-नारी, जिन्होंने उनकी अपरूप रूपराशिका दर्शन किया था, कह रही हैं—"क्या हमने शचीके आँगनमें नाचते धूलि-धूसरित कनकी पुतलीको देखा है ?"

मिश्रपुरन्दरका स्वप्न

जिस दिन श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर क्रोधान्ध होकर लाठी हाथमें लेकर श्रीगौर भगवान्‌को प्रहार करनेके लिए उद्यत हुए थे, उस दिन रातमें उन्होंने एक अद्‌भुत स्वप्न देखा। ठाकुर लोचनदासने अपने श्रीग्रन्थ श्रीचैतन्यमंगलमें उस स्वप्न-वृत्तान्तका वर्णन किया है—"निद्रागत रात्रि तीन पहर बीतनेपर स्वप्न देखकर मिश्रपुरन्दर पागल-से हो गये, और सबको बुलाकर कहने लगे—स्वप्नमें एक दिव्य पुरुषको देखा, जो सूर्यकी किरणोंके समान उज्ज्वल थे, रत्न-अलङ्कारसे विभूषित उनका देह था, अङ्गकी छटासे सारा घर झलमल कर रहा था। उनने मेघ-गम्भीर वाणीमें मुझे कहा—'तुम विश्वम्भरको अपना पुत्र क्यों मानते हो ? मैं देव भगवान् हूँ, यह तुम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं जानते ? स्पर्शमणिका प्रभाव पशु नहीं समझता। तुम्हारा इतना बड़ा साहस कि मुझको पुत्र मानते हो। मैं सब शास्त्रोंका ज्ञाता हूँ, सबका शिक्षा-गुरु हूँ। मुझे पढ़ानेको हाथमें लेकर छड़ी क्यों दिखाते हो ?"

मिश्रपुरन्दर यह अद्‌भुत स्वप्न देखकर बड़े चक्करमें पड़े। उनका सन्दिग्ध मन और भी सन्दिग्ध हो उठा। उनके मनमें एक विषम समस्या उठ खड़ी हुई। हमारे प्रभु कलिके प्रच्छन्न अवतार होकर भी बीच-बीचमें अपने माता-पिताके सामने इसी प्रकार आत्म-प्रकाश करते थे। यह केवल उनकी परीक्षा करनेके लिए। नाना प्रकारके उपायसे वे शचीजगन्नाथकी विशेष रूपसे परीक्षा करते थे। मिश्रपुरन्दर मन ही मन सोचते हैं, "निमाई मेरा पुत्र है। मैंने उनको पुत्र समझकर दण्ड दिया है। स्वप्नमें जो कुछ मैंने देखा है, उससे निश्चय ज्ञात होता है कि निमाई मेरा पुत्र नहीं है। क्या पुत्र रूपमें श्रीभगवान् हमको ठगने आ ये हैं।" यह बात प्रकट-रूपमें बोलने योग्य नहीं है। मिश्रपुरन्दर बड़ी विपदमें पड़े। उनके प्राणोंमें शान्ति नहीं है। "तो क्या निमाई हमारा पुत्र नहीं है ?" इस चिन्तामें वृद्ध ब्राह्मणका चित्त व्याकुल हो उठा। उन्होंने स्वप्नकी बात गृहिणीसे कही।

शचीमाता स्वप्न वृत्तान्त सुनकर सशंकित हो उठीं। पुत्रके चन्द्रवदनकी ओर देखकर अन्यमनस्क होकर सोचने लगीं। माता-पिता दोनोंको ही अन्यमनस्क देखकर बालगौराङ्गने समझा कि स्वप्न-दर्शनका फल उनके लिए विशेष कष्टप्रद हुआ है। सन्तप्त माता-पिताको मायामुग्ध करनेके लिए चतुर चूड़ामणिने प्रेम-जाल बिछाया। आङ्गनमें वह धूल-धूल खेल रहे थे। दौड़कर धूलि-धूसरित अङ्गसे सुधामधुर वाणीमें 'माँ' कहकर मधुर बातें करके कूदकर माताकी गोदमें चढ़ गये। माताकी गोदसे पिताके मुँहकी ओर देखकर सप्रेम नेत्रोंसे एक स्नेह-दृष्टिपात किया। उसका मर्म यह था, "बाबा ! तुम भी आओ, दोनों जने मिलकर मुझे लाड़-प्यार करो।"

मिश्र पुरन्दरका मन बड़ा उदास था। गत रातकी बात स्मरण करके वे अत्यन्त विषाद-ग्रस्त थे। पुत्रके प्रेमकी पुकारका मर्म वे समझ नहीं सके। शचीमाता पुत्रके मनके भावको समझकर पतिसे बोलीं, "अजी ! तुम क्या सोच रहे हो ? निमाईचाँद तुम्हारी गोदमें जानेके लिए बहुत व्यग्र है। आज एक बार भी तुमने इसे गोदमें नहीं लिया।"

मिश्रपुरन्दरको तब होश आया। वे श्रीगौर भगवान्‌की अपूर्व आकर्षण-शक्तिसे आकृष्ट होकर मन्त्रमुग्धवत् गृहिणीके पास आकर खड़े हो गये। पिताको निकट देखकर चतुर-चूड़ामणि निमाईचाँद माताकी गोदसे कूदकर उनकी गोदमें चढ़ गये। पिताके गलेमें अपने सुकोमल सुवलित बाहुद्वयको वेष्टन करके मृदु हँसीकी तरङ्गमें मधुर वाणीमें बोले, "मैं आजसे मन लगाकर पढ़ूँगा—लिखूँगा, गङ्गाके घाटपर नही जाऊँगा। मुझको आप अब न मारें।"

मिश्रपुरन्दरकी दोनों आँखें छलछला आयीं। वात्सल्य-प्रेमके आनन्दमें सारे अङ्ग पुलकित हो उठे। वे आनन्दमें विह्वल होकर पुत्रके मुखचन्द्रपर शत-शत स्नेह-चुम्बन प्रदान कर गद्‌गद भाषामें कुछ बोलने लगे, परन्तु हृदयके अत्यधिक आनन्दके आवेगमें कुछ बोल न सके। उनके मनमें पुत्रके सम्बन्धमें जो ऐश्वर्य भाव उदय हुआ था, वह प्रभुकी वैष्णवी मायासे दूर हो गया।

दोनों मिश्रदम्पत्ति अब मिलकर अपने जीवन-सर्वस्व-धन निमाईचाँदको लेकर लाड़-प्यार करने लगे। मनकी साधसे पति-पत्नी पुत्रके संगके सुखसे आनन्द सागरमें डूबने लगे। गत रातकी स्वप्नकी सारी बातें भूल गये। मायामय चतुर शिरोमणि श्रीगौरभगवान्‌की वैष्णवी मायामें उनका ऐश्वर्यभाव माता-पिताके हृदयसे एकबारगी दूर हो गया। वे श्रीगौर भगवान्‌के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परम सुन्दर माधुर्य भावमें विभोर होकर उनके रूप-सागरमें डूब गये। यही श्रीगौराङ्ग प्रभुकी नवद्वीप लीलाका चमत्कार है। उनके प्रच्छन्न अवतार तत्व-का गूढ़ रहस्य है। यह रहस्य अन्तरङ्ग भक्तके सिवा और कोई समझ नहीं सकता।

गंगाघाटकी लीला

निमाईचाँदकी गङ्गाके घाटकी बाल-लीला कहानी मधुसे मधुर है—यह बात मैं पहले ही कह चुका हूँ। इस मधुर लीलाकथाका अन्त नहीं है। बालगौराङ्ग-की गङ्गाके घाटकी दुष्टतासे नदियाकी बालाएँ बहुत ही उत्पीड़ित हुई थीं। गङ्गा-स्नान करना, घाटपर बैठकर पूजा करना, उनके लिए दुष्कर हो गया था। स्नानके समय केवल गङ्गाजलमें दुष्टता करके ही निमाईचाँद शान्त नहीं होते थे। सबके शरीरमें जलका छींटा देना, डूबकर पैर पकड़कर खींचना, शरीरपर कुल्ला कर देना, पुरकी स्त्रियोंके सिरसे वस्त्र हटा देना आदि दुष्टताकी लीलाएँ गङ्गाजलमें नहाते समय ही करते थे। नदियाकी उत्पीड़िता बालाएँ झटपट स्नान करके गङ्गाघाटसे ऊपर चली जाती थीं। तुलसी, चन्दन, फूलमाला, नैवेद्य लेकर देवपूजामें बैठती थीं। उस समय भी उद्धत चूड़ामणि धृष्ट शचीनन्दन सबके बीचमें आकर महा उपद्रव करते थे। वे दम्भपूर्वक सब कन्याओंसे कहते थे— "मेरी पूजा कर, मैं वर दूँगा। गङ्गा,दुर्गा तो मेरी दासियाँ हैं और महेश मेरे किंकर हैं।"

इतना कहकर निमाईचाँद बालिकावृन्दके पाससे फूलोंकी माला लेकर अपने गलेमें पहन लेते थे, पूजा-का चन्दन लेकर अङ्गमें लेप कर लेते थे। ठाकुरजीके नैवेद्यका सन्देश, केला लेकर खा लेते थे।

सरल धर्मनिष्ठ नदियाकी बालाएँ दुःख और क्रोधसे आकुल होकर शचीनन्दनसे बोलीं, "भाई निमाई! एक बात सुनो। तुम गाँवके सम्बन्धसे हमारे भाई लगते हो। हमारे साथ ऐसी दुष्टता करना तुम्हें उचित नहीं। देवांशमें हाथ न लगाओ, ऐसा अन्यायका कार्य तुम्हें नहीं करना चाहिये।"

रसिकराज श्रीगौर भगवान्ने इस छोटी उम्रमें भी नदियाकी बालाओंके साथ रसिकता करना नहीं छोड़ा। शचीनन्दनके मुखसे रसिकताकी बातें बालिका-वृन्दको बहुत अच्छी लगतीं। अतएव वे बाहरी क्रोध प्रकट कर बालगौराङ्गको रस-रंग करनेके लिए उकसातीं। इससे उनके मनमें बड़ा आनन्द मिलता। बालिका-वृन्दकी बातें सुनकर शचीनन्दन बोले—"मैं तुमको यह वर देता हूँ—तुम्हारे भर्ता परम सुन्दर, धुरन्धर पण्डित, युवा, धन-धान्य सम्पन्न होंगे और तुम्हारे चिरायु और बुद्धिमान सात-सात पुत्र होंगे।"

शचीनन्दनके मुँहसे मनमाँगी वर-प्राप्तिकी बात सुनकर बालिकावृन्द हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयीं। उनमें कोई-कोई लज्जावश पूजाकी सामग्री लेकर वहाँसे चली जानेके लिए तैयार हो गयीं। रसिक-शेखर शचीनन्दनने बाहरी क्रोध प्रदर्शित करते हुए लक्ष्य करके उच्चस्वरसे कहा—"यदि कृपण बनकर मुझे नैवेद्य नहीं दोगी तो तुमको बूढ़ा भर्त्ता मिलेगा और चार-चार सौतिन होंगी।"

जो निमाईचाँद एक वर्ष पहले जानते न थे कि ब्याह क्या वस्तु है, 'ब्याह दूँगा' कहनेपर वे उत्तम खाद्य वस्तु समझकर, 'अभी दो' कहकर हठ करते थे, उन्हीं बालगौराङ्गके मुखसे वृद्धके समान रसिकताकी बातें सुनकर गङ्गाघाटके लोग अवाक् हो गये। नदियाकी सरल बालिकागणने श्रीगौरभगवान्के वरदानकी बात भी सुनी, और अभिशापकी बात भी सुनी। सुनकर उनके मनमें भय हो गया। उन्होंने सोचा कि आगे चलकर कहीं शचीनन्दनकी बात सत्य न हो जाय। बूढ़ा वर होगा, चार-चार सौतिन होंगी—यह बड़ी विकट बात है। अतएव भयभीत होकर उन्होंने पूजाका नैवेद्य लाकर शचीनन्दनके सामने रख दिया। चतुर चूड़ामणि गौरगोपालने हँसते-हँसते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परम आनन्दपूर्वक नैवेद्यके सारे उपकरण भोजन करके पेट भर लिया, तथा बालिकाओंको अभीष्ट वर प्रदान करके सुखी किया।

अन्तर्यामी श्रीश्रीगौरगोविन्दने नदियाकी बालाओंके मनके गुप्त संकल्पको समझ लिया था। उनके अपरूप रूपसे नदियावासी सारे नर-नारी मुग्ध थे। नदियाकी बालिकावृन्द भी मुग्ध हैं। रूपका आकर्षण बड़ा तीव्र होता है। श्रीगौराङ्ग भजन, श्रीगोर-गोविन्दार्चन जो नदियाके बालिकावृन्दका सङ्कल्प था, यह सर्वज्ञ श्रीगौरभगवान्‌के जाननेसे बाकी न रहा। नदिया-बाला और ब्रजबाला एक ही वस्तु हैं। शचीनन्दन और नन्दनन्दन श्रीकृष्ण एक ही वस्तु हैं। ब्रजगोपी और नदिया-नागरी एक ही तत्व हैं। श्रीगौर भगवान् कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। इस प्रकारके प्रीति-भजनमें ही उनकी प्रीति थी। यह सब बातें वेद-गोप्य तथा अतिगुह्य हैं। श्रीकृष्ण भगवान्‌ने ब्रजगोपियोंको यह बात स्पष्ट रूपसे कही थी। यथा—

सङ्कल्पो विदितः साध्व्यो भवतीनां मदर्चनम्।
मयानुमोदितः सोऽसौ सत्यो भवितुमर्हति॥

—श्रीम. भा. १०.२२.२५

अर्थात् हे साध्वीगण! मुझको पतिरूपमें प्राप्त करनेकी कामनासे जो तुमने यह कात्यायनीकी अर्चनाका व्रत किया है, इससे मैं अवगत हूँ। तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी, तुम्हारी कामना कभी विफल नहीं हो सकती।

श्रीगौराङ्ग-लीला-तत्व अति गम्भीर है। किसीमें भी यह शक्ति नहीं कि इसके गूढ़ रहस्यको सहज ही अनुभव करे। श्रीगौराङ्गप्रभुकी कृपा हुए बिना इन सब रस तत्वोंको हृदयङ्गम करना बड़ा कठिन है।

नदिया-नागरी-तत्वकी व्याख्या दूसरे ग्रन्थमें विस्तारपूर्वक मैंने की है। यह लीला-ग्रन्थ है, तत्व-ग्रन्थ नहीं है। तथापि प्रसङ्गवश कुछ आभास दिया है।

—✶—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवाँ अध्याय

विश्वरूपका गृह-त्याग और गौरांगका भ्रातृ-शोक

'भाइर विरहे मूर्च्छा गेला गौरराय ।' —चै. भा. आ. ५.७५

विश्वरूपका गृह-त्याग

पहले कहा जा चुका है कि निमाईचाँद एकमात्र अपने बड़े भाई श्रीश्रीमद्विश्वरूप प्रभुसे डरते थे, माता-पितासे वह उतना भय नहीं खाते थे। शची-माताने विश्वरूप प्रभुके सामने निमाईचाँदकी दुष्टताकी बात कहकर कैसा सङ्कट मोल ले लिया था। धृष्ट निमाईचाँद अपनी स्नेहमयी माताको किस प्रकार तङ्ग करते थे, यह सब बातें पहले कही जा चुकी हैं।

शचीमाता विश्वरूप प्रभुको केवल भोजन करते समय तथा रातमें देख पाती थीं; क्योंकि वे दिन-रात अद्वैत सभामें रहते थे। भक्तिशास्त्रका अध्ययन, भक्तितत्वका व्याख्यान, कृष्णलीला-वर्णन, कृष्णकथा-श्रवण—ये ही उनके कार्य थे। वे दिन-रात कृष्ण-कथामें मग्न रहते थे।

श्रीमद्विश्वरूपकी अवस्था इस समय सोलह वर्ष-की थी। नवयौवनका उद्गम हो रहा था। उनके रूप-लावण्यकी सीमा न थी। विश्वरूप प्रभुके समान सर्व सुलक्षण-युक्त, सर्वगुणसम्पन्न, सर्वविद्यामें पारदर्शी पुत्र कभी किसीने देखा न था। यह सुनकर शची-जगन्नाथके मनमें आनन्द न समाता। पुत्रका शुभ-विवाह कर देनेका समय उपस्थित था। पुत्रको विवाह योग्य देखकर मिश्र-पुरन्दर गृहिणीके परामर्शसे उपयुक्त कन्याकी खोज में लग गये।

विश्वरूप प्रभुके कानोंमें यह बात पहुँची। उनका मन बहुत व्यथित हुआ; क्योंकि वे आजन्म संसारसे विरक्त थे। माता-पिता उनको विवाह-बन्धनमें आबद्ध करके संसारी बनाना चाहते हैं, कामिनी-काञ्चनके प्रलोभनमें डालकर उनके हृदयके आजन्म-पोषित चिरकौमार-व्रतको भङ्ग करना चाहते हैं, चिरवैराग्य-सुखके आनन्दको नष्ट करना चाहते हैं, इस चिन्तासे विश्वरूप प्रभुका बाल हृदय उन्मथित हो गया। परन्तु तत्काल मनको स्थिर करके वे अपने कर्त्तव्य-साधनमें लग गये। दृढ़ प्रतिज्ञ, स्थिर सङ्कल्प विश्वरूप प्रभुने यह निश्चय किया कि मेरे लिए विवाह करना उचित नहीं है, भले ही माताको दुःख हो। ऐसा सोचकर उन्होंने गृह-त्याग करनेका सङ्कल्प किया।

मन ही मन इस प्रकार स्थिर सङ्कल्प करके श्रीमद्विश्वरूप प्रभुने एक दिन चुपचाप उषाकालमें माता-पिताके अच्छेद्य मायाजालको काटकर भ्रातृ-स्नेहको तिलाञ्जलि देकर गृहत्याग कर दिया। उनके साथ उनके मामाके पुत्र लोकनाथने भी गृह-त्याग किया। दोनों भाइयोंमें बड़ा प्रेम था। दोनों ही आदमी आजन्म संसार-विरक्त थे। श्रीमद्विश्वरूप प्रभुने संन्यास आश्रम ग्रहण करनेके बाद श्रीशङ्करानन्द नाम ग्रहण करके सारे तीर्थोंका परिभ्रमण किया था।

शची-जगन्नाथ पुत्रके गृह-त्यागकी बात सुनकर हाहाकार करके रोने लगे। मिश्र-भवनमें कुहराम मच गया। नदियावासी जिसने जहाँ यह बात सुनी, वह वहीं रोने लगा।

निमाईचाँद उस समय केवल आठ वर्षके बालक थे। उनको ज्ञान-बुद्धि हो गयी थी। माता-पिताके क्रन्दनसे जब उनको ज्ञात हुआ कि उनके भैया उनको सदाके लिए छोड़कर चले गये, उनसे फिर भेंट होनेकी संभावना नहीं है तो उनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कनक-केतकी सदृश नयनयुगलसे अश्रुधारा बह चली। हृदयावेगसे उनके मुँहसे बात न निकल सकी। भ्रातृ विरह-तापसे व्याकुल होकर बालगौराङ्ग मूर्च्छित होकर आङ्गनमें धूलमें गिर पड़े। उनके बाल हृदयमें भ्रातृ-विरहका शूल गहरा चुभ गया। यह देखकर शची-जगन्नाथके हृदयमें शूलके ऊपर शूल लगा। सारी गोष्ठीके साथ वे लोग उच्चस्वरसे रोने लगे। सारी नदिया शोकाकुल हो गयी।

सोनेके निमाईचाँदकी मूर्च्छा देखकर शचीमाता-का रोना-धोना बन्द हो गया। वे दौड़ी आयीं, और पुत्रको गोदमें उठाकर आँख और मुँहमें जलका छींटा देकर उनकी मूर्च्छा भङ्ग की। मूर्च्छा भङ्ग होनेपर शचीनन्दन चकित हो उठे। माता-पिताके दुःख और शोकका विचार करके भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान् अपना शोक भूल गये। वे माताके गलेमें लिपटकर आँखोंके आँसू रोककर प्रेम भरे मृदु मधुर वचनोंमें आश्वासन देते हुए बोले, "माँ! तुम मत रोओ। भैया चले गये, मैं तो हूँ। तुमको क्या चिन्ता है? मैं तुमको सब प्रकार सुखी करूँगा।"

शचीमाता निमाईचाँदके चन्द्रमुखकी ओर देख-कर इस असह्य घोर पुत्रशोकको संवरण करके कलेजा थाम कर रह गयीं।

आत्मीयजनों द्वारा मिश्रपुरन्दरको शान्त्वना

मिश्रपुरन्दर ठाकुर विश्वरूप प्रभुके गृह-त्यागसे मृतवत् हो गये। अब वे वृद्ध हो गये हैं। उन्होंने सबसे कह दिया कि इस शोकसे निश्चय ही उनका प्राण नहीं बचेगा। वे सर्वशास्त्र-विशारद परम पण्डित, अति धीरस्वभाव, तथा भगवत्सेवा-परायण थे। परन्तु विश्वरूपके वियोगसे वे अतिशय कातर हो गये। शचीमाताकी दुःखकी कहानी लिखते हृदय विदीर्ण हो जाता है। उनके हृदयमें पुत्र-विरहकी अग्नि दहक उठी। उस अग्निमें उनके मर्मका अन्त-स्तल तक दग्ध होने लगा। निमाई रोने लगेगा, उसका मन दुःखित होगा—यह सोचकर उन्होंने अपने दुःखको मनहीमें दबा रखा।

समस्त आत्मीय स्वजन बन्धु-बान्धवगण एकत्रित होकर मिश्र पुरन्दरको समझाने-बुझाने लगे। वे लोग बोले, "मिश्रपुरन्दर! तुम धैर्य धारण करो। क्यों व्यर्थ इतना दुःखी हो रहे हो। तुम्हारे सुयोग्य पुत्र विश्वरूपने सारी गोष्ठीका उद्धार कर दिया है। जिस गोष्ठीमें एक आदमी संन्यास ग्रहण करता है उस गोष्ठीके तीन कोटि कुल श्रीवैकुण्ठ धाममें वास करते हैं।"

मिश्रपुरन्दर यह बात सुनकर रोने लगे। कोई उत्तर न दे सके। आत्मीय जनोंमें श्रीचन्द्रशेखर आचार्यरत्न, श्रीवास पण्डित, प्रभुके मामाके दलके सब लोग हैं। श्रीअद्वैतप्रभु विश्वरूपके विरह-शोकमें व्याकुल हैं। विश्वरूप प्रभु उनके द्वारा स्थापित अद्वैत-सभाके भूषण थे, उनके प्राणोंसे भी प्रिय थे। श्री-अद्वैत प्रभु भी मिश्र-भवनमें आये हैं। सबने निमाई-चाँदको उपलक्ष्य करके मिश्रपुरन्दरको सान्त्वना देते हुए कहा—"तुम्हारा विश्वम्भर इस कुलका भूषण होगा। इससे तुम्हारे सब दुःख दूर होंगे। जिनके घरमें विश्वम्भर-सा पुत्र उसके कोटि पुत्र होकर भी क्या करेंगे?"

मिश्रपुरन्दर ठाकुरने चुपचाप सारी बातें सुन लीं। विश्वरूपके गुणोंका स्मरण करके वे अपने आँसू रोक न सके। निमाईचाँद वहाँ खड़े थे। उनके क्लान्त मुखचन्द्रकी ओर देखकर मिश्रपुरन्दर अत्यन्त दुःखित हो धीरे-धीरे बोले—"यह पुत्र भी घरमें रहेगा—इसका कैसे विश्वास हो। भगवान्ने जो पुत्र दिया था वह ले लिया। जो भगवान्की इच्छा। जीवकी स्वतन्त्र शक्ति जरा भी नहीं है, अतएव हे भगवान्। यह देह इन्द्रियाँ तुम्हारे समर्पण हैं।"

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर पण्डित, ज्ञानी, कृष्णभक्त और धीर प्रकृतिके मनुष्य हैं। सब कर्म कृष्णकी इच्छासे होते हैं। जीवमें कोई शक्ति नहीं है। मिथ्या जगतकी मायामें बद्ध होकर जीव नित्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हाहाकार करता रहता है। जो कुछ श्रीभगवान् करते हैं, जीवके मङ्गलके लिए करते हैं। उनके कार्यमें दोषारोपण करके वह क्यों अपराधी बनें? वे विज्ञ हैं और शास्त्रज्ञ हैं। धीरे-धीरे अपनी चित्तवृत्तिको उन्होंने शान्त किया। गृहिणीको यथासाध्य उपदेश दिया, तथा निमाईचाँदको लेकर पुनः गृहस्थाश्रमके व्यापारमें रत हो गये।

शान्त निमाई

श्रीश्रीमद्विश्वरूप प्रभुके गृहत्यागके दिनसे सबने देखा कि निमाईचाँद शान्त और शिष्ट होते जा रहे हैं, उनकी दुष्टता बन्द होती जा रही है। वे बुद्धिमान हो गये हैं। सदा सर्वदा माता-पिताके समीप रहते हैं। लिखने-पढ़नेमें विशेष मनोयोग देते हैं। क्षणभरके लिए भी पोथी-पन्ना नहीं छोड़ते। उन्होंने धूलमें खेलना बन्द कर दिया है।

सब लोग धृष्ट शचीनन्दनके स्वभावमें यह परिवर्तन देखकर आनन्दित हो रहे हैं। अब सबके मुँहसे निमाईचाँदका गुणगान और प्रशंसा सुननेमें आ रही है। इससे उनके माता-पिताके मनमें भी इतने दुःखमें भी आनन्दका अनुभव होने लगा है।

शचीनन्दन अब गङ्गादासके विद्यालयमें व्याकरण-सूत्र पढ़ रहे हैं। एक बार जिस सूत्रको पढ़ते हैं, उसी सूत्रके द्वारा दूसरेको परास्त करते हैं। पाठके साथ उसके मर्मार्थसे भी अवगत होते हैं। वे स्वयं सूत्रके सब अर्थोंकी व्याख्या करते हैं। उनकी पहेलीका उत्तर देना किसीके लिए साध्य नहीं है।

एक दिन मिश्र-भवनमें नदियाकी मण्डली एकत्रित हुई। उन्होंने शत-मुखसे शचीनन्दनकी बुद्धिकी तीक्ष्णताकी प्रशंसा करते हुए कहा, "मिश्रपुरन्दर! तुम बड़े भाग्यवान् हो। तुम्हारे पुत्रके समान सुबुद्धि बालक त्रिभुवनमें दूसरा नहीं है।" यह बालक बृहस्पतिके समान विद्वान् होगा।

निमाईके विद्या-व्यसनपर पिताकी चिन्ता

शचीमाता पुत्रकी गुणगाथा और प्रशंसा सुनकर विशेष रूपसे आनन्दित हुईं। परन्तु मिश्रपुरन्दर यह सब बातें सुनकर अन्यमनस्क और गम्भीर हो उठे। सबके चले जानेपर शचीमाताने अभिमान पूर्वक पतिसे पूछा, "तुम ऐसे क्यों हो रहे हो? मेरे निमाईचाँदकी प्रशंसा क्या तुमको अच्छी नहीं लगती?"

मिश्रपुरन्दर ठाकुरने गृहिणीकी व्यंग्योक्तिपूर्ण बातसे कुछ दुःखित होकर गृहिणीके मुँहकी ओर देख कर गम्भीरतापूर्वक कहा, "तुम स्त्रीजाति हो, अल्पबुद्धि रखती हो। पढ़-लिखकर मेरा सोनेका चाँद विश्वरूप हमारे गार्हस्थ्य सुखको अनित्य समझकर गृहत्याग करके चला गया। निमाईचाँद भी कहीं-वही न करे—इसी चिन्तामें बड़ा कातर हो रहा हूँ। इसके पढ़ने-लिखनेकी आवश्यकता नहीं है। मूर्ख रहकर जीवित रहे। मेरा निमाई मेरे घर रहे। यह भी अच्छा है, मुझको अब पण्डित पुत्र नहीं चाहिये।"

शचीमाताने अवाक् होकर अब तक धैर्यपूर्वक पतिकी बातें सुनी। यह सब बातें सुनकर उनके मनमें विश्वरूपका शोक उमड़ आया। वे अत्यन्त व्यथित हुईं। निमाईचाँद मूर्ख होकर रहेगा, इससे भी उनके मनमें विषम दुःखका उद्रेक हुआ। पति दरिद्र ब्राह्मण है। जीविका कुछ नहीं है, निमाई कैसे खायेगा? कौन उसे अपनी कन्या देगा? इस चिन्तासे स्नेहमयी माताका मन व्याकुल हो गया। उन्होंने कुछ देर तक सोचकर पतिसे धीरेसे कहा, "तुम जो इतनी बात बोल गये, लड़का मेरा मूर्ख रहेगा तो कैसे खायेगा? मूर्ख पुत्रको कौन कन्या देगा?"

गृहिणीकी बात सुनकर मिश्रपुरन्दर ठाकुरके मुखपर इतने दुःखके बीच भी मुस्कराहट दीख पड़ी। तब वे गृहिणीको धर्म-तत्व समझाते हुए कहने लगे। "तुम तो अबोध ब्राह्मणी हो। भगवान कृष्ण ही सबके कर्त्ता, भर्त्ता और धर्त्ता हैं, वे ही सारे जगत्का पोषण करते हैं। पाण्डित्य पोषण करता है—यह तुमको किसने बताया। मूर्ख हो या पण्डित, जिसके भाग्यमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो कन्या है, वह उसको अपने-आप मिल जायगी। प्रत्यक्ष प्रमाण देखलो, मेरे पण्डित होनेपर भी घरमें खानेको दाने भी नहीं हैं। जिनको अक्षर-ज्ञान भी नहीं है, सहस्रों पण्डित उसके द्वारका मुख देखते हैं। अतएव विद्यासे पोषण नहीं होता। भगवान् ही सबके पोषणकर्त्ता हैं। विद्या और कुल सम्पन्न होनेपर भगवान्‌की कृपाके बिना दुःख-मोचन नहीं होता। जिसके घरमें सब उपभोग सामग्री है, वह रोगी होनेसे उसको बिलस नहीं सकता, और दुःखमें जलता रहता है। जिसके पास कुछ भी नहीं है, उससे भी अधिक दुःखी होता है सम्पन्नतावाला ऐसा व्यक्ति। इसलिए पुत्रके लिए तुम कोई चिन्ता मत करो, भगवान् कृष्ण उसका पालन-पोषण करेंगे। जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक तो उसको कोई दुःख नहीं है। निमाईके लिए पढ़नेकी कोई आवश्यकता नहीं है। वह मूर्ख ही रहे, लेकिन घरमें बना रहे।"

शचीमाता पतिके धर्मोपदेशका कुछ उत्तर न दे सकीं। ये सारी बातें निमाईचाँदके सामने हुईं। शचीमाता दुःखित भावसे एक बार पतिके मुखकी ओर देखती हैं, और एकबार पुत्रके मलिन मुखचन्द्रकी ओर करुण दृष्टि डालती हैं। किसीको कुछ कह नहीं पा रही हैं।

निमाईकी पढ़ाई बन्द और पुनः उद्धता

शचीनन्दनने शान्तिपूर्वक ध्यान देकर पिताकी सारी बातें सुनी। वे भी गम्भीर रूपसे माताके मुखकी ओर देख रहे हैं। कोई कथा-वार्त्ता नहीं हो रही है। यह देखकर मिश्रपुरन्दरने पुत्रको सम्बोधन करके कहा, "बेटा निमाई! आजसे तुम्हारा पाठ बन्द है। मेरी शपथ जो इसकी अवज्ञा की। तुम जो चाहोगे वह मैं तुमको दूँगा। तुम आनन्दके साथ घरपर बैठे रहो।"

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरके अपूर्व पुत्र-वात्सल्य भावका इसकी अपेक्षा उज्ज्वल दृष्टान्त और क्या हो सकता है? वात्सल्य प्रेमकी अधिकतासे वे विह्वल हो गये हैं। साधारणतः स्त्रियाँ पुत्रकी पढ़ाईका विरोध करती हैं। निमाईचाँदका पाठ बन्द करके मिश्रपुरन्दर ठाकुरने मातृ-पितृस्नेहकी समष्टि करके दिखला दिया कि वात्सल्य-प्रेम-सुधा केवल रमणीवृन्दकी सम्पत्ति नहीं है, पुरुषका भी इसके ऊपर पूर्ण अधिकार है। पढ़-लिखकर, शास्त्रचर्चा करके प्राण तुल्य पुत्र विश्वरूपके मनमें वैराग्यका उदय हुआ था। उन्होंने यौवनके प्रारम्भमें ही माता-पिताके हृदयमें शूल चुभोकर संन्यास ग्रहण करनेकी अभिलाषासे गृह-त्याग किया था।

परम विद्वान् सर्वदर्शी मिश्रपुरन्दर ठाकुरने समझ लिया था कि उनका यह पुत्र भी पढ़-लिखकर अपने ज्येष्ठ भ्राताका पदानुसरण करेगा। मिश्रपुरन्दर ठाकुरके मनका भय निराधार न था, इसे कृपालु पाठकवृन्द निश्चय ही जानते हैं। इसी भयसे उन्होंने पुत्रका पढ़ना-लिखना बन्द करा दिया। पुत्र मूर्ख रहे तो भी अच्छा है, कमसे कम पढ़-लिखकर वैरागी होकर गृहत्याग तो नहीं करेगा। जहाँ जिसको आघात होता है, वहाँ उसको पीड़ा होती है। मिश्रपुरन्दर भुक्तभोगी हैं। विश्वरूप प्रभुके गृह-त्यागसे उन्होंने निमाईचाँदके सम्बन्धमें यह व्यवस्था की।

पितृभक्त निमाईचाँदने पिताके आदेशको शिरोधार्य करके पढ़ना-लिखना छोड़ तो दिया, परन्तु इससे उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ। साधारण बालकके समान पढ़ना लिखना-छोड़कर वे आनन्दसे फूले नहीं। मनका दुःख वह किसीके सामने प्रकट न कर सके। उनकी दुष्टता अब कुछ कम हो चली थी। श्रीमद्विश्वरूप प्रभुके गृह-त्यागके पश्चात् उन्होंने शान्त - शिष्ट होकर पढ़ने-लिखनेमें मन लगाया था। परन्तु पिताके आदेशसे पढ़ना-लिखना बन्द हो जानेपर उनका उद्धत स्वभाव और दुष्टता फिर उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। वे फिर नदियाके बालवृन्दके साथ पूर्ववत् क्रीड़ारत हो गये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसबार पूर्वापेक्षा कहीं अधिक उग्ररूपमें शची-नन्दनकी दुष्टतासे नदियाके नर-नारी घबड़ा उठे। दिन-रात प्रिय सखावृन्दके साथ जहाँ-तहाँ, घर-घर निमाईचाँद दुष्टता करते-फिरते थे। गङ्गाके घाट-पर उनकी दुष्टता बेहद बढ़ गयी। रातमें भी उनकी दुष्टतासे किसीको छुटकारा नहीं। डेढ़ पहर रातके पहले वे घर नहीं आते थे। मिश्रपुरन्दर ठाकुर पुत्रको कुछ बोलते नहीं है, शची माता क्या करें? किसी प्रकार भी अपने धृष्ट पुत्रको शासनमें नहीं रख पातीं। उनसे निमाईचाँद कुछ भी डरते नहीं। पिताके दुलार और उदासीनताके कारण वे दुर्द्धर्षताके अवतार बन गये। नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग बाल लीलामें उद्धत-शिरोमणि थे, यह बात महाजनगण कह गये हैं। इन उद्धत-शिरोमणि-की चपलता और धृष्टताने नवद्वीपमें हुल्लड़ मचा दी।

अपना घर हो चाहे पराया, जहाँ जो वस्तु मिलती है, उसको तोड़-फोड़कर नष्ट कर देते हैं। दो बालककोंको मिलाकर कम्बलसे ढककर बैलकी तरह चलते हैं। किसीके घरका दरवाजा बाहरसे बन्द कर देते जिससे बेचारे रातको मल-मूत्र त्याग करनेको भी बाहर नहीं निकल पाते और चिल्लाते।

निमाईचाँदकी धृष्टताकी बात आपने सुन ली? इस प्रकारकी दुष्टताकी कहानी कभी किसीने न सुनी होगी। प्रभुके सारे ही कार्य अति अद्भुत थे। उनकी दुष्टता भी अद्भुत थी। पड़ोसके आत्मीय-जन नित्य आकर मिश्रपुरन्दरके पास उनके पुत्रकी शिकायत करते थे। और कहा करते थे कि उसकी पढ़ाई रोकनेका ही यह सब दुष्परिणाम है। पुत्र मर्ख रहनेपर जो कुछ करता है, मिश्रपुरन्दरका पुत्र भी वही कर रहा है। सब मिलकर श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरकी निन्दा करने लगे। परन्तु फिर भी मिश्रपुरन्दर ठाकुरने पुत्रको पढ़ने नहीं जाने दिया। वे पुत्रकी दुष्टताकी बात-पर कान नहीं देते। शचीमाता पतिके आदेशके विरुद्ध कोई बात बोल नहीं सकतीं। दोनों ही चुप-चाप पुत्रकी निन्दाकी सारी बातें सुन लेते हैं और मन ही मन सोचते हैं, "कुछ बड़ा होनेपर निमाई-चाँदका व्याह कर देंगे। तब उसकी बुद्धि ठीक हो जायेगी।" वात्सल्य प्रेमाधिक्य रसमें विभोर होकर मिश्रदम्पति भूल गये हैं कि अब तक पुत्रका उपनयन नहीं हुआ है। विवाह तो बादकी बात है। बाल-गौराङ्ग इस समय पूरे आठ वर्षके धृष्ट बालक हैं। निमाई-चाँदके रूप-लावण्यकी छटासे सारी नदिया नगरी चमत्कृत है, शची-जगन्नाथ पुत्रके मुखचन्द्रकी ओर देख-देखकर सारे दुःख भूलकर आनन्दसे दिन-यापन कर रहे हैं।

पढ़ाई पुनः आरम्भ करनेके लिए निमाईका उपाय

कृपामय प्रिय पाठकवृन्द! प्रभुकी इस समयकी एक अपूर्व लीला कहानी सुनिये। एक दिन श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुर किसी कार्यवश घरसे बाहर गये थे। शचीमाता गृह-कार्यमें व्यस्त थीं। उस दिन निमाईचाँद बहुत रुष्ट थे; क्योंकि उनके पिताने उनका पढ़ना-लिखना बन्द कर दिया था। वह रोष शचीनन्दनने माताके ऊपर उतारनेका विचार करके एक चक्र रचा। मिश्र-भवनके निकट एक गर्त्तमें मुहल्लेके लोग उच्छिष्ट और अपवित्र हाँड़ी फेंकते थे। वह स्थान अत्यन्त अपवित्र था। घर-आङ्गनकी जितनी कूड़ा-करकट, जूठन आदि अपवित्र वस्तुएँ थीं, सब उसी गर्त्तमें फेंकी जाती थीं। वहाँ कोई जाता न था। इस कारण वहाँ नाना प्रकारकी झाड़ियाँ उग गयी थीं। उसके बीच-बीचमें अस्पृश्य हाँड़ी आदि वस्तुएँ पड़ी रहती थीं। शचीनन्दनका क्रोध माताके ऊपर था। वे बालक होते हुए भी सब कुछ समझते हैं। उनकी माता अत्यन्त शुद्ध आचार-विचार रखती हैं; किसी अपवित्र वस्तुका संस्पर्श हो जानेपर बिना गङ्गा-स्नान किये घरमें नहीं घुसती हैं। माताको परेशान करनेके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिए धृष्ट निमाईचाँद उस अपवित्र गर्त्तकी उच्छिष्ट हाँड़ीपर जाकर बैठ गये । अस्पृश्य फेंकी हुई हाँड़ीके ऊपर बैठकर चतुर शिरोमणि शचीनन्दन मृदु मन्द मुस्करा रहे हैं । उच्छिष्ट हाँड़ीका कालिख लेकर दोनों हाथसे सारे अङ्गमें लगा रहे हैं । इससे उनके सोनेके रङ्गकी अपरूप शोभा हो रही है ।

उनके प्रिय सखावृन्द साथ ही हैं । वे दूरसे रास्तेमें खड़ा होकर निमाईचाँदकी लीला देख रहे हैं । उनमें-से एकने जाकर शचीमाताको इसका समाचार दिया ।

शचीमाता घरसे दौड़ी आयीं और अपवित्र गर्त्तकी अस्पृश्य उच्छिष्ट हाँड़ीके ऊपर निमाईचाँद-को बैठे देखकर हाथसे कपाल पीटकर हाय-हाय करने लगीं । दुःखसे शचीमाताकी आँखोंमें आँसूकी धारा बह निकली । उन्होंने अत्यन्त कातर स्वरमें पहले दुलार करते हुए मृदु वचनोंमें पुत्रसे कहा, "बेटा निमाई ! यही क्या तुम्हारे बैठनेकी जगह है ? अपवित्र उच्छिष्ट हाँड़ीका स्पर्श करनेपर स्नान करना पड़ता है, इतने दिनोंमें तुमको इतना भी ज्ञान नहीं हुआ है ।"

शचीनन्दन क्रोधसे लाल हो रहे थे । माताको देखकर उनका क्रोध और दूना बढ़ गया । वे क्रोधसे काँपते हुए मधुर स्वरमें मातासे बोले—"तुम लोग मुझे पढ़ने तो देते नहीं, तब मैं अच्छे-बुरेको कैसे जानूँ ? मैं तो मूर्ख हूँ, मुझे पवित्र-अपवित्रका क्या पता, मेरे लिए तो सभी एक-से हैं ।"

इतना कहकर शचीनन्दन हाँड़ीके आसनपर बैठे-बैठे हँसने लगे । उनका हृदय उस समय दत्तात्रेय भावसे पूर्ण था । माताको कुछ तत्त्वोपदेश देनेके उद्देश्यसे ही शचीनन्दन अब तक सुयोग ढूँढ़ रहे थे । इस समय वही शुभ सुयोग उपस्थित है । शुद्धाचारवाली शचीमाता बड़ी विपदमें पड़ी हैं । किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर वे विनम्र वचनसे पुत्रको दुलार करती हुई कहने लगीं—"तुम तो गन्दे स्थान-पर बैठे हो, अब तुम पवित्र कैसे होओगे ?"

श्रीगौर भगवान् इस समय अवसर पाकर दत्तात्रेय भावमें विभावित होकर शुचि-अशुचि सम्बन्धी गूढ़ तत्व एक-एक करके माताको समझाने लगे—"माँ ! तुम तो बच्चोंकी-सी बात करती हो । मैं अपवित्र स्थानोंमें कभी नहीं रहता, जहाँ रहता हूँ वही स्थान पवित्र हो जाता है, गङ्गा आदि सब तीर्थोंका वहीं अधिष्ठान है । शुचि-अशुचि सब काल्पनिक हैं । लोक-वेदमतसे जो अशुद्ध है, मेरे स्पर्शसे उसमें अशुद्धता क्या ठहर सकती है ? जिस हँड़ियामें तुमने भगवान विष्णुके लिए रंधन किया है वह कभी अशुद्ध नहीं हो सकती । उस हँड़ियाके स्पर्शसे अशुद्ध स्थान भी शुद्ध बन जाता है । इसलिए जहाँ मैं बैठा हूँ, वह मन्द स्थान नहीं हो सकता । मेरे स्पर्शसे ही सब कुछ शुद्ध हो जाता है ।"

पुत्रके मुखसे यह शास्त्रीय गम्भीर तत्वकी बात सुनकर इतने दुःखके बीच भी शचीमाताके मुँहपर हँसीकी रेखा दीख पड़ी । सब उपस्थित नर-नारी-बालक निमाईचाँदके मुखसे तत्वकी बात सुनकर हँसी रोक न सके । सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये । परन्तु शचीनन्दन उच्छिष्ट हाँड़ीके ऊपर बैठे-बैठे गम्भीर भावसे सबकी ओर शुभ दृष्टिपात करके मृदु मन्द मुस्कानके साथ यह तत्वोपदेश देते रहे । शचीमाता पुनः अत्यन्त कातरभावसे पुत्रको पुकार कर कहने लगीं—"आ बेटा निमाई ! अपवित्र गर्त्त-से निकल आ । तुझको स्नान करा दूँ ।" परन्तु धृष्ट निमाईचाँदने माँकी बातपर ध्यान नहीं दिया । वह जिस काली हाँड़ीपर बैठे थे, उसी हाँड़ीको उठाकर सिरपर रखनेकी चेष्टा करने लगे । यह देख-कर शचीमाता पुत्रके अमङ्गलकी आशङ्कासे घबरा उठीं । वे अन्य उपाय न देखकर इस बार पुत्रको भय दिखाकर बोलीं, "आ बेटा ! शीघ्र उठकर आ । तेरे पिता यह बात सुनेंगे तो तुझको बड़ा दण्ड देंगे । मैं उनको बुलाकर लाती हूँ ।"

शचीनन्दन इसपर भी भयभीत न हुए । पिताने उनको लिखना-पढ़ना मना कर दिया है । उनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऊपर भी निमाईचाँदको क्रोध हो गया । वह क्रोधसे कम्पित स्वरमें अभिमानपूर्वक तब मातासे बोले, "यदि मुझको तुम लोग पढ़ने नहीं देते हो तो मैं इस गर्त्तमें-से नहीं निकलूँगा ।"

वहाँ आत्मीय स्वजन और पड़ोसी लोग एकत्रित हो गये थे । पुरनारीवृन्द निमाईचाँदकी लीला देखकर मुँहपर वस्त्र डालकर हँस रही हैं । इसी बीचमें एक बड़ी-बूढ़ी स्त्री शचीमाताको फटकारती हुई कहने लगीं, "लडकेका दोष क्या है ? दोष तो तुम लोगोंका है । तुम लोग निमाईचाँदको पढ़ने-लिखने क्यों नहीं देते हो ? और लोग तो अपने बालकको यत्नपूर्वक पढ़ाते हैं, यह बालक पढ़ना चाहता है, इसको तुम लोग पढ़ने नहीं देते । किस शत्रुने तुमको ऐसी बुद्धि दी कि अपने पुत्रको मूर्ख ही रहने दो ।"

सब मिलकर शचीमाताकी ही निन्दा करने लगीं । शचीमाताने चुपचाप सारी बातें सुन लीं । पड़ोसी पुरनारियोंने तब शचीनन्दनको लक्ष्य करके कहा, "बेटा निमाई ! उठ आओ । आजसे तुमको पढ़ने जानेमें कोई रोके तो तुम्हारी जो इच्छा हो करना । सब नष्ट कर देना ।" धृष्ट निमाईचाँदने तब भी नहीं सुना । उसी उच्छिष्ट हाँड़ीपर बैठकर सबको लेकर लीला कर रहे हैं और मृदु-मन्द मधुर-मधुर मुस्करा रहे हैं । उच्छिष्ट हाँड़ीको कभी सिर-पर उठाते हैं, कभी गोदमें ले लेते हैं । स्नेहमयी शचीमाताके लिए अब असह्य हो गया । वह स्वयं गर्त्तमें उतर गयीं । निमाईचाँदका हाथ पकड़कर ऊपर उठाया । उनके सारे अङ्गमें कालिख लगी है, स्वर्ण बाल गौराङ्गकी अपरूप शोभा हो रही है । माताको देखकर वे मधुर-मधुर मुस्कराने लगे । ठाकुर श्रीवृन्दावन दासने लिखा है कि उच्छिष्ट हाँडीका कालिख सर्वाङ्गमें लगाये बालगौराङ्गने उस समय इन्द्रनीलमणिकी शोभा धारण की ।

शचीमाता पुत्रको गङ्गा-स्नान कराकर घर ले आयीं । इसी समय श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र घर लौटे। शचीमाताने पतिसे पुत्रकी दुष्टताकी बातें बतलायीं, और कहा, "पुत्रका लिखना-पढ़ना बन्द करा दिया गया है, इससे उसके मनमें बड़ा दुःख है । इसी दुःखसे मेरा सोनेका बच्छा यह सब दुष्टता करता है ।"

पुत्रको मूर्ख बनाये रखनेकी बात कहकर श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरकी अब सब लोग निन्दा करने लगे । मिश्रपुरन्दरने सब कुछ सुना । इच्छामय प्रभुकी इच्छासे उनका मन बदल गया । उन्होंने निमाईचाँदको बुलाकर प्रेमपूर्वक कहा, "बेटा निमाई ! तुम कलसे फिर पढ़नेके लिए जाओगे ।" पिताका आदेश पाकर शचीनन्दन आनन्दसे नृत्य करने लगे ।

श्रीगौर भगवान्‌ने इस अद्‌भुत लीलासे दो कार्य सिद्ध किये । पहले तो उन्होंने दत्तात्रेय भावसे माता तथा आत्मीय स्वजनोंको शुचि-अशुचिका तत्व समझाया । वे स्वयं भगवान् हैं, उनका जहाँ चरण-स्पर्श हुआ, वह शुचि हो गया ; दूसरे, अपने पिताको समझाया कि वे स्वेच्छामय स्वतन्त्र ईश्वर हैं । उनकी इच्छाके विरुद्ध कोई कुछ कर नहीं सकता । उनकी इच्छा है कि वह अद्वितीय पण्डित बनेंगे । निमाई-पण्डितके पाण्डित्यसे जगत् चकित हो जायेगा । दिग्विजयी पण्डित नवद्वीपमें आकर उनके पादमूलमें अपने विद्या-गौरवकी जयध्वजाको स्थापित करके आत्मसमर्पण करेंगे । वे नदियामें विद्या-विलास लीला करेंगे । इच्छामय श्रीभगवान्‌की इच्छाको रोकनेकी शक्ति श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रमें नहीं है । यह बात श्रीगौर भगवान्‌ने उनको समझा दी ।

बालगौराङ्गकी सारी लीला अपूर्व और अद्‌भुत है । उनके लीलारङ्गको देखकर नदियावासीके मनमें समय-समयपर विकट सन्देह उपस्थित होता था । किसी-किसी भाग्यवान् पुरुषने मनके भावको छिपा सकनेमें असमर्थ होकर मिश्रपुरन्दरसे कहा—"यह बालक साधारण प्राकृत बालक नहीं है । यत्नपूर्वक इसको हृदयमें रखो ।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार दुष्टताकी बात सुनकर श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरने पुत्रको पुनः पढ़ने जानेका आदेश दिया। यह आदेश पाकर बालगौराङ्गने कुछ शान्त भाव धारण किया। और पढ़नेमें खूब मन लगाया। उनके पिताने उनको गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें प्रवेश करा दिया। उन्होंने कलाप व्याकरण पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। बालगौर बृहस्पतिके समान बुद्धिमान् थे। जो एक बार सुनते या पढ़ते थे, श्रुतधरके समान वह उनको कण्ठस्थ होजाता था। सब नदियावासी कहते थे कि शचीनन्दन सरस्वतीके साक्षात् वरपुत्र हैं। गङ्गादास पण्डित निमाई-चाँदको प्राण तुल्य प्रिय समझते थे। शची-जगन्नाथका मन बड़ा आनन्दित हुआ। सभी पुत्रका यशोगान कर रहे हैं। उनकी दुष्टता अ कुछ शान्त हो गयी है।

श्रीधरके साथ रंग

शचीनन्दनकी एक और पौगण्ड लीलाका वर्णन करके इस अध्यायको पूर्ण करूँगा। खोला बेंचनेवाले श्रीधरके नामसे सभी गौर-भक्त परिचित हैं। बालगौराङ्ग अपनी बाल्यलीलाके प्रारम्भमें इस परम सुकृतिमान् नदियाके दरिद्र ब्राह्मणके साथ परिचित थे। उनके साथ उन्होंने जो लीलाएँ की थीं, उनका वर्णन यथास्थान किया जायगा। यहाँ बालगौराङ्गके साथ श्रीधरकी बाललीला रस-रङ्गसे पूर्ण एक अपूर्व कहानी वर्णित होगी। ठाकुर जयानन्दने इस लीलाका वर्णन अपने श्रीचैतन्य मङ्गल श्रीग्रन्थमें किया है।

शचीनन्दनकी अवस्था इस समय आठ वर्ष बीत चुकी है। नदियाके सारे स्थान उनके पदरजसे पवित्र हैं। बाजार, हाट, मन्दिर, नाला, खेत, घाट इत्यादि सभी स्थानोंमें बालगौराङ्गका शुभागमन होता है। बाजारमें केलेका पत्ता, खोला, थम्भ, केला आदिकी श्रीधरकी दूकान है। शचीनन्दन इस दरिद्र ब्राह्मणकी दूकानपर जाकर प्रतिदिन उनके साथ केलेका खोला, मोचा, केला आदिको लेकर झगड़ते हैं। उनकी दूकानकी वस्तुएँ उठाकर लेजाते हैं और श्रीवास पण्डितके घरके कुएँमें डाल देते हैं। दरिद्र श्रीधरकी समझमें यह बात कुछ भी नहीं आती। दुकानकी वस्तुएँ घट जाती हैं। कौन चुराता है, कहाँ ले जाता है—यह कुछ भी समझ नहीं पाते।

उनकी पूँजी बहुत थोड़ी है। दरिद्र ब्राह्मण श्रीधरने एक दिन अपनी पूँजीका हिसाब करके देखा कि लाभ होना तो दूर रहा, पूँजी खत्म हो रही है। यह देखकर श्रीधरके मनमें बड़ा दुःख हुआ। वह सोचते हुए देव-मन्दिरकी ओर चले। रास्तेमें शचीनन्दनके साथ उनकी भेंट हो गयी। उद्धत-शिरोमणि बालगौराङ्गने मुस्कराकर श्रीधरसे पूछा—"अरे खोला बेंचनेवाले बाम्हन! तुम मुझको धोखा देकर मन्दिर जारहे हो? आज पत्ता बेंचकर तुम्हें कितना लाभ हुआ? तुम्हारे दूकानकी सारी वस्तुएँ चुराकर मैंने श्रीवासके घरके कुँएमें डाल दी है। मेरे साथ झगड़ा करनेसे तुम्हारी पूँजी भी चली जायगी। मेरा भजन करो। देखो, फिर तुम्हें कितना लाभ होता है। मैं सबका ईश्वर हूँ। तुम खोला बेचवाले दुःखिया बाम्हन हो। तुम मेरे साथ आओ। आज मैं तुमको कुछ दूँगा।"

यह कहकर धृष्ट शचीनन्दन गङ्गाके जलमें कूद पड़े। कुछ देर बाद निकलकर गङ्गाके किनारे एक स्थानमें श्रीधरको लेजाकर हुँकार करके बोले: "श्रीधर! तुम यहाँ कुछ पाओगे।" यह कहकर बालगौराङ्ग हँसते-हँसते घर चले गये।

दरिद्र श्रीधरने गङ्गाके तीर उस स्थानपर चिह्न कर दिया। रातमें वहाँ जाकर खोदनेपर उनको कुछ धन मिला। तब उनकी समझमें आया कि शचीनन्दन सामान्य बालक नहीं हैं। इस परम सुकृतिवान् श्रीधरके ऊपर प्रभुकी बड़ी कृपादृष्टि थी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इनकी ही पर्णकुटीके लोहेके बर्तनसे प्रभु जल पीते थे। महाप्रकाशके समय श्रीवासके आङ्गनमें इन्होंने भक्तवृन्दके द्वारा बुलाकर उनको स्वप्रकाश-रूपमें दर्शन देकर कृतार्थ किया था! श्रीधर शचीनन्दनकी सारी दुष्टता सहन कर लेते थे। इस अल्पावस्थासे ही प्रभु उनके ऊपर कृपादृष्टि रखते थे।

मिश्रपुरन्दरके घरमें इस प्रकार हमारे त्रिजगन्नाथ प्रभु नाना प्रकारकी बाल-क्रीड़ा रससे नदियाके निवासियोंके मन-प्राणको मुग्ध करने लगे। कोई उनको पहचान नहीं पा रहा है। कलिके प्रच्छन्न अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुकी सारी लीलाएं प्रच्छन्न हैं। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

हेन मते महाप्रभु जगन्नाथ-घरे।
निगूढ़े आछेन केहो चिनिते ना पारे॥

—चै. भा. आ. ६.४

—×—

दसवाँ अध्याय

उपनयन और अध्ययन

जे शुने प्रभुर यज्ञसूत्रेर ग्रहण। से पाय चैतन्यचन्द्र चरणे शरण॥ —चै. भा. आ. ६. २३

उपनयन

शचीनन्दनका गौरहरि नाम नदियावासी पुर-नारीवृन्दने दुलारसे रखा था। शैशवमें हरिनाम लेते ही उनका रोना बन्द हो जाता था। चम्पक-कलिकाके समान उज्ज्वल गौरवर्णके बाल-विग्रह शचीनन्दन सबके प्राण थे। उनके श्रीअङ्गके वर्णकी तुलनामें कषित-काञ्चन निष्प्रभ लगता था। इसी कारण पुरकी नारियाँ दुलार करके उनको गौर-हरि कहा करती थीं। नदियावासिनी रमणी-वृन्दके मनको चुरानेवाले गौरहरि दिन-दिन नित्य अभिनव रूपकी छटा प्रकाशित करके नदिया-वासीके मन-प्राणको आकर्षित करने लगे।

उन्होंने अष्टम वर्ष बिताकर नवम वर्षमें पदार्पण किया है। शचीमाताने मन-ही-मन सोचा कि, "ब्राह्मण वृद्ध हो गये हैं। विश्वरूपके शोकसे उनका शरीर टूट गया है। कब उनके भाग्यमें क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। सोनेके बच्छा निमाईचाँदका उप-नयन कराकर शीघ्र विवाह करा देनेपर वृद्ध ब्राह्मण-के भाग्यसे पुत्रबधूका मुख-दर्शन प्राप्त हो सकता है। विश्वरूपके विवाहकी सारी तैयारी हुई थी। अदृष्टवश बच्छाको बुरे लोगोंने मन्त्रणा देकर गृह-त्याग कर दिया।"

इन सारी बातोंको याद करके शचीमाताके प्राण रो पड़े। हृदय उन्मथित हो उठा। उन्होंने मनके दुःखको मनमें ही दबाकर, मनकी व्यथाको छिपाकर एक दिन पतिके सामने निमाईचाँदके शुभ उपनयनका प्रस्ताव रखा।

शचीमाताने मिश्रपुरन्दर ठाकुरसे कहा—"देखो, मेरा सोनेका बच्छा निमाईचाँद षष्ठीदेवीके अनुग्रहसे नव वर्षमें पदार्पण कर रहा है। अब उसके शुभ-उपनयनका उपयुक्त समय आ गया है। ब्राह्मणका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लड़का है। इसको देव-ब्राह्मणका ज्ञान नहीं है। आचार-विचार नहीं है। उपनयन संस्कार होने पर देव-द्विजमें भक्ति होगी, शुचि-अशुचिका ज्ञान होगा, एक शुभ दिन देखकर इसका उपनयन करा दो।"

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरने गृहिणीकी रायमें राय मिलाकर आत्मीय-स्वजनके साथ परामर्श करके निमाईचाँदके शुभ उपनयनका शुभदिन निश्चय किया। शुभ माघ मासमें बालगौराङ्गका शुभ उपनयन संस्कार हुआ। १४१६ शकाब्दमें माघ मासमें सारे नवद्वीपमें आनन्दकी तुमुल ध्वनि सुनायी पड़ने लगी सारी नदियाके लोग इस आनन्दोत्सवमें योग दान करके कृतार्थ हुए थे।

शची-जगन्नाथके हृदयमें आज बड़ा आनन्द है। मिश्र-भवनमें बहुतसे लोगोंका समागम हुआ है। इष्ट कुटुम्बीजन सभी निमन्त्रित हुए हैं। जिसका जो कार्य है उसी कार्यमें वह नियुक्त हो गया। मिश्र-भवनमें आनन्दकी तरङ्गें उठीं। उस आनन्द-तरङ्गमें सारे नदियावासी सुखसे सन्तरण करने लगे।

नदियामें घर-घर आनन्दोत्सव हो रहा है। शचीके आङ्गनमें सुवृहत् चन्द्रातप सुशोभित हो रहा है। शङ्ख, घण्टा, मृदङ्ग आदि मधुर बाजे बज रहे हैं। मधुर वाद्योंके जयनादसे दिगन्त कम्पित हो रहा है। दिन-रात बाजे बज रहे हैं। आङ्गनमें विचित्र चित्र अङ्कित किये गये हैं। गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य, सारी शुभ उपनयनकी सामग्री यज्ञस्थलमें सजायी गयी है। 'जौ' दूर्वा, धान्य, दही, खील, सिन्दूर, शिला, रजत, काञ्चन—सब कुछ यथा-स्थान सज्जित हैं। शचीनन्दनके शुभ उपनयन यज्ञस्थलमें नदियाकी पण्डित-मण्डलीका अधिष्ठान हुआ है। विप्रगण वेदपाठ कर रहे हैं। नदियावासी नर-नारी-वृन्द एकत्रित होकर हीरध्वनि कर रहे हैं। शुभ उपनयन संस्कारकी सारी तैयारी हो गयी है।

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरने निमाई-चाँदके शुभ उपनयन-कर्ममें उपयुक्त आचार्यके द्वारा विधिपूर्वक वेद विहित यज्ञानुष्ठान किया। गुरु-पुरोहित यज्ञस्थलमें आकर बैठे हैं। ब्राह्मणोंको सुपारी, चन्दन और पुष्पमाला देकर सत्कृत किया गया। शची-माताने पुरनारीवृन्दको तेल-हल्दी, खील, केला, मिष्टान्न आदि प्रदान किये, तथा सधवा स्त्रियोंको शुभ सिन्दूर लगाया। शुभ शङ्खध्वनि तथा पुरस्त्री-गणकी मङ्गलसूचक हुलूध्वनिसे मिश्रगृह पूर्ण हो गया। निमाईचाँदके शुभ अधिवास उत्सवमें नदिया-निवासी सब लोगोंने मिलकर आनन्द उठाया*।

अब शुभ उपनयन यज्ञ प्रारम्भ हुआ। शची-आङ्गनमें सुविस्तृत सुन्दर चन्द्रातपके नीचे नदियाकी पण्डित मण्डली बैठी है। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने नांदी-मुख श्राद्ध किया। विधिपूर्वक सङ्कल्प करके पञ्च-देवताकी पूजा की। गौरी आदि मातृका पूजा करके वसुधारा प्रदान की।

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर यज्ञ करने बैठे। इधर पुरनारीवृन्द बालगौरांगको लेकर शचीके आङ्गनमें उनका श्रीअंग मार्जन करनेके लिए बैठीं।

भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान्ने उनकी मनोकामना पूरी की। वे सब मिलाकर बाल-गौरांगके सोनेके अङ्गमें हल्दी और आँवलेके रससे युक्त सुगन्धित तेल मर्दन करने बैठीं। आज आङ्गनमें पिँड़ाके ऊपर खड़ा कराकर शचीनंदनको स्नान कराया जायगा। नदियावासिनी परम सौभाग्यवती कुल-कामिनीवृंद आनन्दित मनसे निमाईचाँदको घेर कर बैठी हैं, मानो नक्षत्रमालिकाने पूर्णचन्द्रको वेष्टन किया है। शचीके आंगनमें आज चाँदकी हाट लग गयी है। सुन्दरी पुरनारीवृन्दमें कोई शचीनन्दनकी सुवलित दोनों

* श्रीपाद विष्णु पण्डित और सुदर्शन पण्डित मिश्रवंशके गुरु-पुरोहित थे। इसी सुदर्शन पण्डितकी पाठशालामें शचीनन्दन पहले पढ़ने जाते थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भुजाओंको पकड़ कर सुगन्धित तेल और हल्दी मल रही हैं। कोई उनकी चम्पककी कलीके समान हाथकी अंगुली लेकर उसमें हल्दी मिला तेल मल रही हैं, और मन ही मन सोचती हैं कि ऐसा कुमुम-कोमल रक्त मृदुल करपल्लव तो कहीं देखा नहीं है। अहा ! चम्पकांगुलिके अग्रभागके नख-पद्ममें मानो कोटि-कोटि शशि प्रकाशित हो रहे हैं। कोई भाग्यवती निमाई-चाँदकी कनक-कान्ति विशिष्ट चौड़ी पीठ पर सुगन्धित तेल और हल्दी मल रही है।

सर्वापेक्षा सौभाग्यशालिनी रमणी गौर-हरिके दोनों रक्तकमल चरणको गोदमें लेकर आँचलसे पोंछ कर एक बार वक्षःस्थलमें लेनेके लिए सोच रही है, और फिर नीचे रखती है। प्रेमानन्दमें उसके नेत्रद्वय छलछला उठे हैं। दोनों हाथोंसे भव-विरञ्चि-बाञ्छित श्रीगौर-भगवानके रक्तकमल-चरणको बड़े आनन्द-पूर्वक तेल-हल्दी मल रही है, और मन ही मन सोच रही है कि एक बार इस ब्रह्मादि-देवताओंके द्वारा वन्दित चरण-युगलको मस्तक पर धारण करके जीवनको सार्थक करती। सुविधा होने पर भी अपने मनकी वासनाको कार्यरूपमें परिणत नहीं कर पा रही है। निगोड़ी लज्जा आकर उनकी परमानन्द प्राप्तिमें बाधक बन रही है। निमाईचाँद दूधके बालक हैं, उनके प्रेम और दुलारकी वस्तु हैं। वे उनके पूज्य नहीं हैं कि उनके रक्तकमल चरणको किस प्रकार सबके सामने सिर पर उठालें। यह सोचकर उनका मन बड़ा दुखित हो रहा है।

चतुर शिरोमणि अन्तर्यामी श्रीगौर भगवान्‌ने भक्तके मनको जानकर उनकी मनोबाञ्छा पूरी करदी। बहुत देरसे उनको पकड़ कर सब मिलकर तेल-हल्दी लगा रही हैं, चञ्चल निमाईचाँदको यह असह्य हो गया। फिर चपल-चूड़ामणि कब तक स्थिर रहें ? जब पुरकी स्त्रियाँ उनके सिर पर आँवला मिश्रित सुगन्धित तेल मल रही थीं, उसी समय तेल हल्दीसे लिप्त कनक-कान्ति श्रीगौर हरि अचानक पिड़ा परसे उठकर एक छलाङ्गमें नारी-मण्डलीसे दूर भाग गये। उनकी पद-रज-भिखारीणी जो परम सोभाग्यवती रमणी पदतलमें बैठकर पदसेवा कर रही थी, भागते हुए निमाईचाँदका उसके सिरके ऊपर पाद- स्पर्श हो गया। वह कृतार्थ हो गयी। उसकी मनो बाञ्छा पूर्ण हो गयी। वह आनन्दमें अपने आपको भूल गयी।

निमाईचाँदकी दुष्टताकी बात नदिया-रमणी वृन्दको अज्ञात नहीं है। इस समय शचीनन्दनकी यह लीला देखकर वे हँसती-हँसती लोट पोट हो गयीं। निमाईचाँद आङ्गनमें एक ओर कुछ दूर पर खड़ा होकर मृदु मन्द मुस्करा रहे हैं, और नदिया-नागरी वृन्दके मनोभावका निरीक्षण कर रहे हैं।

जिस सौभाग्यवती रमणीके मस्तकपर शचीनन्दन-का श्रीचरण-स्पर्श हुआ, वह प्रेमानन्दमें बाह्यज्ञान-शून्य हो गयी। इस गुप्त कृपाकी बात उन्होंने किसीके सामने प्रकट नहीं की। भक्तके प्रति भगवान्‌-की इस प्रकार अयाचित कृपाका प्रदर्शन कोई नयी बात नहीं। परन्तु जिस भावसे श्रीगौर भगवान्‌ने इस सौभाग्यवती रमणीके ऊपर कृपाकी, वह भाव पूर्णतः अभिनव है। और यह कलिके प्रच्छन्न अवतारके उपयुक्त ही है।

शचीमाता और मालिनी देवी दौड़कर गयीं और तेल-हल्दी लगे हुए बाल-गौराङ्गको पकड़ कर पुनः पिड़ा पर बैठाया। तब समस्त पुर नारियोंने मिलकर बड़े आनन्दके साथ गङ्गाजलके द्वारा उनको स्नान कराकर अभिषेक किया।

निमाईचाँदके उपनयनमें अद्वैत गृहिणी सीता ठकुरानी आयी हैं। उनके ही उद्योगसे शचीनन्दनके शुभ उपनयनमें नाना प्रकारके सुमधुर वाद्यका आयोजन हुआ है। वाद्यकार लोग नाना प्रकारसे बाजे बाजा रहे हैं। नर्तकगण हाव भावसे सुमधुर नृत्य कर रहे हैं। गायकगण ललित मधुर छन्दमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ताल-मान-लयसे युक्त गीतिका सुर पकड़े हुए हैं। शचीमाताके मनमें आज बड़ा आनन्द है। मिश्रभवन आज नदियावासी सब प्रकारके लोगोंके आनन्द कोलाहलसे पूर्ण है।

मस्तक मुण्डनका समय उपस्थित है। शची-आङ्गनके बीच प्रभुके कृपापात्र रत्नाकर नाई विचित्र क्षुर हाथमें लेकर निमाईचाँदके भ्रमरके समान काले कुञ्चित केशपाशको मुण्डन करनेके लिए प्रस्तुत हैं। यह देखकर शचीमाताके मनमें दुःख हुआ। निमाईचाँदके मस्तकको मुँड़नेकी क्रिया उनको बिल्कुल ही अच्छी न लगी। वह घरके भीतर जाकर बैठ गयीं। चपल-चूड़ामणि निमाईचाँदके मस्तक-मुण्डनका कार्य अति कष्टपूर्वक समाप्त हुआ। उनको पञ्चामृतसे स्नान कराके रक्तवस्त्र पहनाकर बाल-ब्रह्मचारीके वेशमें यज्ञस्थलमें ले आये।

निमाईचाँद माताके मनका भाव जान गये। वे अन्तर्यामी भगवान् जो हैं। माताका दुःख दूर करनेके लिए उन्होंने एक लीला की। यज्ञ स्थलसे बाल-ब्रह्मचारीके वेशमें एक लम्बी छलाङ्ग मार कर निमाईचाँद एकबारगी माताके पास जाकर उनका गला जकड़ कर दुलारके मधुर स्वरमें बोले, "माँ! बतला न, मैं कैसा लगता हूँ? मुझको कान छेदवानेके लिए लोग कहते हैं, परन्तु मैं कान नहीं छेदवाऊँगा। तू मेरे पास बैठ। तुझे देखे बिना मुझको बड़ा डर लगता है।"

पुत्र-वत्सला शचीमाता पुत्रके कोमल अङ्ग स्पर्शसे दुलारकी मधुर बातचीतसे आनन्दमें विह्वल होकर उनको गोदमें लेकर पुनः यज्ञस्थलमें आयीं। धृष्ट निमाईचाँदको इस समय यज्ञस्थलसे जानेके कारण मिश्रपुरन्दरने मधुर वचनसे डाँटा। श्रीअद्वैत-गृहिणी सीतादेवीने शचीनन्दनका मुँह चूमकर लाड़-प्यार करते हुए कहा, "छिः! बेटा निमाई! इस समय इस प्रकार कहीं न जाना। लक्ष्मीके बालक! स्थिर होकर पिंड़ा पर बैठो मैं और तुम्हारी माँ पास बैठेंगी। तुम्हारा कर्णवेध होगा।" निमाईचाँद एक हाथसे माताका, और दूसरे हाथसे सीता ठकुरानीका वस्त्राञ्चल पकड़ कर पिंड़ा पर बैठे। उनकी धात्री माता नारायणी, उनकी मौसी सर्वजया देवी पास ही हैं। कर्णवेधके समय निमाई-चाँदको सब घेरकर बैठ गये।

सुकृतिशील रत्नाकर-नाई दुःखित भावमें बैठा है। वह किसी प्रकार भी निमाईचाँदका कर्णवेध करनेके लिए राजी न हुआ। उसने रोते हुए हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि यह कार्य उससे नहीं होगा। सब उपस्थित मण्डली मयभीय नाईकी बात सुनकर हँस पड़ी। किसी किसीने उसको धमकाया भी। उसको आश्वासन देते हुए श्रीनीलाम्बर चक्रवर्तीने कहा, "अरे रत्नाकर! यह कार्य तेरा ही है। तुझको डरनेकी जरूरत नहीं है। निमाईचाँद तुमको कुछ न कहेंगे।" उन्होंने सोचा कि शचीनन्दन बड़े धृष्ट बालक हैं, कान छेदाना नहीं चाहते, नाईकी ओर रोष भरे नेत्रोंसे भौंए टेढ़ी करके देखते हैं। इसीसे जान पड़ता हैं, उसके मनमें भय हो रहा है।

परन्तु रत्नाकरके मनका भाव और ही था। शचीनन्दनके सोनेके अङ्गमें उसका हृदय शलाका बींधनेके लिए कैसे तैयार होगा? क्या नाई होनेके कारण वह हृदय नहीं रखता? जिसके सर्वचित्ताकर्षक सुधामय मुखचन्द्रकी ओर एक बार भी देखने पर सारे दुःख दूर हो जाते हैं, जिनको हृदयसे लगाये रखने पर भी निरापद बोध नहीं होता, लगता है कि कठिन हृदयके स्पर्शसे कुसुम कोमल निमाईचाँदके नवनीत-निर्मित अङ्गमें चोट लगेगी, उनके अङ्गमें किस प्रकार धातु निर्मित शलाका बींधूँ? रत्नाकर प्राण रहते यह काम नहीं कर सकता। इसी भयसे उसने इस कठिन कार्यमें असम्मति प्रदान की। यह सब अनुभवकी बातें हैं। यह भजन-तत्वका सारांश है, अति निगूढ़ तत्व है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अन्तर्यामी श्रीगौर भगवानने भक्तके मनके भावको समझा और भक्तके मनोभावको समझकर कार्य किया। उपस्थित ब्राह्मण पण्डित मण्डलीकी ताड़नासे महासौभाग्यवान् रत्नाकरने जब निमाई-चाँदके कान पर हाथ रखा तो उसको उनके कानकी पल्ली पर छिद्र दिखायी दिया।

नाईके आश्चर्यकी सीमा न रही। श्रीगौर-भगवान्‌की इस अद्‌भुत और अलौकिक लीलाको देखकर वह जडवत् स्तम्भित हो रहा। बालगौराङ्गने इशारेसे यह बात प्रकट करनेका निषेध कर दिया। प्रछन्न अवतार प्रभुके आदेशको मानकर उसने यह बात किसीसे न कही। प्रभुका यह अद्‌भुत लीलारङ्ग और किसीने नहीं देखा।

परम सुकृती रत्नाकर नाईने मनही मन शचीनन्दनके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणाम किया। उसी दिनसे वह अपना व्यवसाय छोड़कर बाल-गौराङ्गकी सेवामें लग गया। प्रभुने उनको निजजन बना लिया।

श्रीअद्वैत गृहिणी सीतादेवी बालगौराङ्गके लिए शान्तिपुरसे नाना प्रकारके स्वर्णाभूषण बनवाकर लायी हैं। शचीमाताके साथ एक जगह बैठकर उन्होंने सोनेके निमाईचाँदको रत्नालङ्कारसे भूषित किया। गन्ध-चन्दन मालासे उनका श्रीअङ्ग शोभित हो उठा। उनका अपूर्व बालब्रह्मचारी वेष, रक्त-वस्त्र, परिधान, मस्तक मुण्डित, हाथमें विल्व वंश-दण्ड तथा गलेमें शुभ यज्ञसूत्र सुशोभित हो रहा है। उस समय उनका रूप बामन भगवान् जैसा लगने लगा।

शुभ उपवनके बाद शचीनन्दनकी अपरूप रूप राशि देखकर नदियावासी नरनारीवृन्द आनन्द सागरमें निमग्न हो गये। उस रूपकी कोई तुलना नहीं। अपूर्व ब्रह्मण्य तेजसे निमाईचाँदके सारे अङ्ग अपूर्व ज्योतिर्मय दीख पड़ने लगे। रूपकी आभासे चतुर्दिक मानो विद्युत्‌के समान झलकने लगा। सबके मनमें लगता है कि शचीदुलाल निमईचाँद मनुष्य नहीं हैं।

गायत्री मंत्रप्रदान और मूर्च्छा

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुर अन्य-मनस्क भावसे पुत्रके मुखचन्द्रकी ओर देखकर कुछ सोच रहे हैं। यह भूल गये हैं कि उनको पुत्रके कानोंमें गायत्री वेदमन्त्र देना है। पुरोहित सुदर्शन पण्डितने उनके शरीरमें हाथ लगाकर इशारेसे कहा, "मिश्र! शुभलग्नमें पुत्रको गायत्री मन्त्र प्रदान करो।" तब मिश्रपुरन्दर ठाकुर सचेत हुए। तब उन्होंने दण्ड-उपवीतधारी बालब्रह्मचारी श्रीगौरभगवान्‌के कानमें शुभक्षणमें गायत्री वेद मन्त्र प्रदान किया।

इसी समय अपूर्व घटना घटी। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने जब श्रीगौरभगवान्‌के कानमें गायत्रीमन्त्र प्रदान किया, तब निमाईचाँद अकस्मात् आविष्ट होकर यज्ञस्थलमें मूर्छित होकर गिर पड़े। उनके सारे अङ्ग पुलकित हो गये। दोनों दीर्घ नयन अरुण वर्ण हैं। बाल सूर्यके समान अङ्गकी किरणच्छटा है। है, मुखसे बारं-बार हुँकार ध्वनि निकल रही है। सभी उपस्थित लोग यह अद्‌भुत काण्ड देखकर चकित हो उठे। शशीमाता बहुत भयभीत हुई।

शचीनन्दनका यही सर्व प्रथम प्रेमाविष्टभाव था। वे कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। युगधर्म प्रवर्त्तन करनेके लिए संन्यास ग्रहण करनेकी उनकी बड़ी साध है। कलिग्रस्त जीवके त्रिताप-दुःख-निवारणका एक मात्र उपाय युगधर्म हरिनाम-सङ्कीर्तन महायज्ञका अनुष्ठान है। संन्यासाश्रम ग्रहण करके हरिनामका प्रचार करके जीवोद्धार करूँगा, इस भावनाके आनन्दमें प्रभु प्रेमाविष्ट हो गये। मस्तक-मुण्डनके समय यही बात उनके मनमें आयी। प्रभुको अवतार रहस्य स्मरण हुआ।

सबने मिलकर बालगौराङ्गकी मूर्च्छा दूर की। नवद्वीप पण्डितोंकी भूमि है। उपस्थित पण्डित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब ब्राह्मण पण्डितोंने यह विचार करके स्थिर किया तो नदियावासी सब नर-नारी कहने लगे कि शची-नन्दन कदापि मनुष्य नहीं है। इस समयसे ही शचीकुमारकी 'गौरहरि' नामसे प्रसिद्धि होने लगी। मण्डलीने बालगौराङ्गके इस समयके इस प्रकारके अपूर्व भावको देखकर विचार करके निश्चय किया कि इस बालकके देहमें श्रीकृष्ण भगवान् विराजते हैं। प्रभुके गौरहरि नामका अर्थ है गौरवर्ण हरि अर्थात् श्रीकृष्ण। केवल वर्णकी पृथकता हैं। रुक्म वर्ण वेदोक्त पुराण पुरुष ही श्रीगौराङ्ग हैं।

भिक्षा

गौरहरि अब प्रकृतिस्थ होकर दण्ड कन्धे पर रख कर बालब्रह्मचारी वेषमें भिक्षाकी झोली हाथमें लेकर यज्ञस्थलमें खड़े हैं। लाल कपड़ेसे मुण्डित मस्तकको ढँककर मधुर वचनमें सवप्रथम मातासे बोले, "भवति भिक्षां देहि मातः"। तत्काल चतुर्दिक जय जय ध्वनि उठी। ठाकुर जयानन्दने अपने श्रीचैतन्यमङ्गल श्रीग्रन्थमें प्रभुकी भिक्षाग्रहण-लीला अति सुन्दर वर्णन किया है। वह पद यहाँ उधृत किया जाता है। किसने क्या भिक्षादी सुनिये।

जय जय जय जय।

झूलि कान्धे भिक्षा मागे विस्मित देवता।
रजत काञ्चन भिक्षा दिल शचीमाता॥
प्रवाल मौक्तिक माला भिक्षा दिल मनोहर।
रजत काञ्चन दिला मिश्रपुरन्दर।
ताड़ वलया दिल ग्याँठा सुवर्ण मादुलि।
मातामह भिक्षा दिला अञ्जलि-अञ्जलि॥
नारायणी धात्रीमाता भिक्षा दिला रङ्गे।
गुरुपत्नी सुलोचना सत्यभामा संगे॥
सत्यवती भिक्षा दिल रजत काञ्चन।
सर्वानी मालिनी दिल दिव्य आभरण॥
स्त्री पुरुष जत-जत नवद्वीपे बसे।
एके-एके भिक्षा दिल मनेर सन्तोषे॥
त्रिजगत्नाथ भिक्षा लैल गुरुस्थाने।
मुञ्जमेखला आदि करिल मोचने॥

देव-देवीगण नर-नारी वेषमें शचीके आङ्गनमें आकर श्रीश्रीगौर भगवान्की भिक्षा-झोलीमें भिक्षा देकर कृतार्थ हो रहे हैं। सब सेवकोंसे आज प्रभु भिक्षा ले रहे हैं। सेवकवृन्दके आनन्दकी सीमा नहीं है। सबके मुँहमें मधुर हँसी है, सबके मुँहसे जय-ध्वनि निकलती है। कलिग्रस्त जीवोंके उद्धारके लिए प्रभुकी यह भिक्षा-ग्रहण-लीला है।

रूपका ऐसा ही आकर्षण है। श्रीभगवान् जब नररूप धारण करके भूमण्डलमें आविर्भूत होते हैं, तो वह सर्वचित्तार्षक भुवन-मोहन अपरूप-सम्भार लेकर आते हैं! श्रीगौराङ्ग प्रभु स्वयं व्रजेन्द्रनन्दन हैं। वह रूपके अवतार। सौन्दर्यके अवतार और सारे गुणोंके अवतार हैं। ऐसी अवस्थामें सारे जीव उनको प्राण-भिक्षा न देंगे तो और क्या देंगे? प्राण-भिक्षा देकर सब लोग उसके बदलेमें उनकी पदरजकी भीख चाहते हैं। सबके मुँह पर यह जयध्वनि है—

जय जय श्रीवामन-रूप गौरचन्द्र।
दान देह हृदये तोमार पद द्वन्द॥
—चै० भा० आ० ६.२२

यह सब देखकर बालब्रह्मचारी शचीनन्दन गौरहरि मृदुमन्द मुस्कान कर रहे हैं। और सोचते हैं—

"संन्यास आश्रम सब आश्रमेर सार।" चै० म०

मुण्डितमस्तक बाल-संन्यास वेशमें हाथमें दण्ड धारण करने पर प्रभुके मनमें यह भाव आया। उन्होंने सोचा, कलिग्रस्त जीवके उद्धारका कार्य संन्यास वेशमें ही सिद्ध होगा। यह भाव इस समय उनके मनमें आया ही क्यों? यह कृपालु पाठक स्वयं समझें।

जिन नदियावासी नर-नारीयोंने शचीनन्दन गौरहरिको भिक्षा दी, उनके सौभाग्यकी सीमा नहीं है। ठाकुर जयानन्दने लिखा है—

गौरचन्दे भिक्षा दिल जे वा नर-नारी।
जन्म जन्म लक्ष्मी तार ना छाड़िब बाड़ी॥

इस बातमें तनिक भी सन्देह नहीं है। नदिया-वासी बड़े ही सुकृती हैं, तभी उनको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके चरणोमें कोटि-कोटि प्रणिपात।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुके मातामह श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने निमाईचाँदके शुभ उपनयन यज्ञके अनुष्ठानके अन्तमें दक्षिणा बाँट कर यज्ञ समाप्त किया।

ब्रह्मचारीके नियम-पालन—मौनव्रती निमाई

शचीमाता बाल ब्रह्मचारी पुत्रको गोदमें लेकर घरमें ले गयी। एक सुन्दर सुसज्जित एकान्त कक्षमें निमाईचाँदको ब्रह्मचर्यके आसन पर आसीन किया। शचीनन्दन हँसते-हँसते उसके ऊपर बैठे। उनके अपरूप रूपसे अँधेरा गृह आलोकित हो गया। बालब्रह्मचारी निमाईचाँदने सात दिन मौनव्रत अवलम्बन किया। उनकी मातामहीने उनको उस दिन हविष्यान्न भोजन करया।

इन सात दिनों तक प्रभुने किस प्रकार ब्रह्मचर्य व्रतका पालन किया था, यह भी ठाकुर जयानन्द लिखे गये हैं। जैसे श्रीचैतन्यमङ्गलमें—

दिव्य सिंहासने निद्रा गेला विश्वम्भर।
प्रातः सन्ध्या कराइल मिश्र-पुरन्दर॥
दैव-रमणी द्विज-रमणी अनेक।
पञ्चकषाये पञ्चामृते करि अभिषेक॥
मध्याह्न समये करि हविष्य भोजन।
अपराह्णे संध्या कुशशय्याय शयन॥
हविष्यान्न भोजन त्रिसन्ध्या प्रतिदिने।
पासरिला बाल्यक्रीड़ा कीर्तने श्रवणे॥

निमाईचाँदके बहुतसे प्रिय वयस्य थे। उनके बाल्यक्रीड़ाके सब साथी उनको न देखकर घबराने लगे। शचीनन्दनके प्रिय वयस्यगणमें ब्राह्मण-शूद्र सभी थे। सात दिन तक शूद्रका मुख दर्शन निषेध था। धृष्ट चञ्चल-चूड़ामणि निमाईचाँद अब ब्राह्मण हो गये हैं, वह बालब्रह्मचारी हैं, गृहके भीतर ही आबद्ध हैं। प्रिय वयस्य गणसे मिले कई दिन हो गये। वे शचीनन्दनके प्रिय मित्र हैं। उनको देखनेके लिए प्रिय सखावृन्द छटपटा रहे हैं। सड़कसे लगा हुआ मिश्र-भवन है। जिस घरमें निमाईचाँद हैं, वह घर सड़कके ऊपर है। घरके ऊपरी भागमें खिड़की है। निमाईचाँदके प्रिय वयस्यगण उसी खिड़कीके पास खड़े होकर उनको लक्ष्य करके उच्च स्वरसे 'निमाई, निमाई' कहकर पुकारते हैं। एक दिन उनका प्रिय सखा एक शूद्र बालक दुखित चित्तसे उनको कहने लगा—

कोन शिशु राजपथे डाके हे निमाञि।
पासरिला आमा सभा क्रीड़ा उद्धताइ॥
ब्रह्मचारी हैला तुमि हविष्यान्न खाओ।
आमि सब पड़ि तुमि पड़िते ना जाओ॥
आमि शिखि तुमि केने पुस्तक ना शेख।
तिन दिन हैल शूद्र मुख नाहि देख॥
—ज० चै० म०

यह सुनकर निमाईचाँदने हँसकर माताको इशारेसे कहा, "माँ! इनको तिल, नोदक, दुग्ध, लड्डू तथा माला-चन्दन देकर तुष्ट करो।" स्नेहमयी शचीमाताने पुत्रके इशारेको समझ कर उनके इच्छानुसार कार्य किया। इससे शचीनन्दनको बड़ा आनन्द हुआ। इस प्रकार सात दिन मौनी रहकर बालगौराङ्गने ब्रह्मचर्य व्रत पालन किया। आठवें दिन गुरुकी आज्ञा प्राप्त कर मौनव्रत भङ्ग किया।

बालगौराङ्गके दो विद्या-गुरु थे—सुदर्शन पण्डित और गङ्गादास पण्डित। दोनोंने उस दिन मिश्र-भवनमें आकर निताईचाँदको शुभाशीर्वाद दिया। गुरुपत्नियाँ भी आयीं। शचीनन्दनने उनको प्रणाम किया। उनको देखकर सबका मन प्रफुल्लित हो गया। उनको ज्योतिर्मय दिव्य मूर्तिका दर्शन कर सबको आश्चर्य हुआ।

माताको एकादशी-व्रत-पालनका आदेश

प्रभुकी ब्रह्मचर्य पालनावस्थामें घर रहते समय दो-एक दिनके बाद ही अपूर्व घटना घटी। शचीनन्दन दण्ड और भिक्षाकी झोली गङ्गाजीमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहानेके लिए घरसे बाहर निकले हैं। अब भी उनका ब्रह्मचारी वेष है। लाल वस्त्र पहने हैं। वे उसी ब्रह्मचर्य वेषमें घरमें बैठे हैं। शचीमाता पास ही बैठी हैं। उन्होंने देखा कि पुत्रका सारा अङ्ग दिव्य तेजसे पूर्ण है। दिव्य ज्योतिसे गृह आलोकित हो गया है।

शचीनन्दनने गम्भीर भावसे माताको आदेश दिया, "माँ! तुम अब एकादशीके दिन अन्न ग्रहण मत करना।"

बालक पुत्रके मुखसे यह बात सुनकर शची-माता विस्मित हो उठीं। निमाईचाँदके तेजपूर्ण वदन और गम्भीर भावको देखकर वह कुछ आशङ्कित होकर घबराती हुई बोलीं—"बेटा निमाई! तेरा यह आदेश मैं अवश्य पालन करूँगी।" यह सुनकर श्रीगौर भगवान् अतिशय सन्तुष्ट हुए।

जननीके प्रति यह श्रीगौर भगवान्का उपदेश गुरुजनके समान, और जननीका दोष-दर्शन हितकारी धर्मोपदेष्टा बन्धुजनके समान था। शचीमाता देख रही हैं कि बालक ब्रह्मचारी निमाईचाँद उनका पुत्र होकर भी गुरु है। गुरूकी आज्ञा जैसे अलङ्घनतीय होती है, वृद्धा शचीमाताके लिए पुत्रकी आज्ञा भी तद्रूप ही है। श्रीगौर भगवान्ने यहाँ जननीको नीति और धर्मकी शिक्षा देकर जगत्के जीवोको यह बतलाया है कि धर्म और नीतिके सम्बन्धमें माता-पिताका मार्ग दर्शन करना दूषणीय नहीं है। जगद्गुरु श्रीगौराङ्ग प्रभु माता-पिताके भी गुरु हैं।

अन्य अपूर्व घटना

इसी समय एक और अद्भुत् घटना घटी। एक सदाचारनिष्ठ शुद्धचित्त ब्राह्मणने आकर शचीनन्दन-को अचानक पान-सुपारी भिक्षा दिया। निमाईचाँदने तत्काल उसे खा लिया। कुछ देरके बाद उन्होंने माताको पुनः पुकार कर उनसे गम्भीरता पूर्वक कहा—

मायेरे कहिल प्रभु आमि जाइ देह।
जतने पालिह तुम निज सुत एह॥
— चै० म०

इसका मर्म यह है कि, माँ! मैं यह शरीर छोड़कर चला। मैं फिर आऊँगा। यह मेरा शरीर अब यहाँ रहा, यही तुम्हारा पुत्र है। तुम इसका यत्नपूर्वक पालन करना। यह कहकर निमाईचाँद क्षण भर निश्चेष्ट और निस्पन्द भावमें रहे। मानो वह माताके चरणोंमें प्रणाम करनेके लिए आगे बढ़े और मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़े। शची-माताका कोमल हृदय काँप उठा। वह भयसे कुछ बोल न सकीं। क्षणभर चुप चाप वह क्या सोचती रहीं, इसे वही जानें। पश्चात् घबराकर पुत्रके मुँह पर गङ्गाजलका छींटा देकर उनको सचेत किया। उनको गोदमें लेकर बैठ गयीं। पुनः निमाईचाँदकी अपरूप सहज रूपकी प्रभासे घर आलोकित हो गया।

अब शचीनन्दनका वह पूर्वका भाव न रहा। अब उनकी स्वाभाविक सहज अवस्था आ गयी। शचीके दुलाल निमाचाँद अब माताकी गोदमें उठ बैठे। शचीमाता उनके मुखकमल पर स्नेह चुम्बन प्रदान करके लाड़-प्यार कर रही हैं। शचीमाता कुछ समझ न सकीं कि प्रभुकी इस रहस्यमयी लीलाका अर्थ क्या है!

प्रभुकी इस बातका निगूढ़ तात्पर्य श्रीपाद मुरारि गुप्तने अपने करचामें सूत्र रूपमें लिखा है। प्रभुके मर्मी भक्त दामोदर पण्डितने श्रीपाद मुरारि गुप्तसे इस लीला-रहस्यका मर्म पूछा था। दामोदर पण्डितके प्रश्नका उत्तर और उसका विचार ठाकुर लोचनदासने अपने श्रीचैतन्यमङ्गल श्रीग्रन्थमें लिखा है।

श्रीपाद मुरारि गुप्त कहते हैं कि श्रीभगवान्ने जीवोंको शिक्षा देनेके निमित्त शचीके उदरसे जन्म-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ग्रहण किया। इसी कारण वह कभी भक्तभाव, कभी भगवद्भाव अवलम्वन करते थे। भक्त होकर उन्होंने जीवोंको सिखलाया कि भक्ति क्या वस्तु है। श्री-गौराङ्गने इस लीलाके द्वारा दिखलाया था कि श्रीभगवान् मनुष्यके हृदयमें प्रवेश करते हैं, और जिसके हृदयमें प्रवेश करते हैं वह भगवद्भावको प्राप्त होता है। यह देख कर कोई-कोई उनको भगवान् मानकर पूजते हैं।"

प्रभुकी इस अपूर्व लीलाके रहस्यके सम्वन्धमें श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने लिखा है—

तदाशयं तच्चरितं तदिङ्गितं
विदन्ति तद्विभ्रममत्र के जनाः।
नहि स्वयंभूः श्रुतयश्च ताः स्वयं
भवोऽपि तावत् प्रभवोभविष्णवः॥

यही सार वस्तु है। श्रीभगवान्का चरित लोक-बुद्धिके परे है। उनकी लालीका रहस्य ज्ञान-बुद्धिके लिए अगम्य है।

उपनयनके बादका भोज

शचीनन्दनका शुभ उपनयनोत्सव सुसम्पन्न हो गया। सारी नदियाके लोग मिश्र-भवनमें आमन्त्रित हुए और नाना प्रकारके व्यञ्जन परम आनन्द पूर्वक भोजन करके सन्तुष्ट हुए। प्रभुके मातामह श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने स्वयं खड़े होकर ब्राह्मणसे लेकर पथके भिखारी तक सबको दही, दूध घृत-पायसान्न परम सन्तोष पूर्वक भोजन कराया। इस महोत्सवकी विशेषता यह थी कि, श्रीगौराङ्ग भगवान्ने स्वयं अन्न व्यञ्जन मिष्ठान्न आदिका पात्र हाथमें लेकर परोसनेका कार्य किया तथा अनेक अपरिचित और अज्ञात नर-नारी शचीके आँगनमें बैठकर प्रभुके श्रीहस्तसे प्रसाद पाये। किसीने उनको नही पहचाना, पहचाननेकी चेष्टा भी नहीं। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र ठाकुरने अपने श्वशुरसे एक बार पूछा—"बहुतसे नये अपरचित ब्राह्मण अनिमन्त्रित होकर हमारी कुटीरमें आज पदार्पण किये हैं। मेरा बड़ा सौभाग्य है, निमाईचाँदको उन्होंने देखकर आशीर्वाद दिया है।" श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्तीने हँसकर उत्तर दिया, "वे लोग आपके निमाईचाँदके दर्शनाकांक्षी हैं। वे निमाईचाँदको बहुत प्यार करते हैं। वे निमन्त्रणकी अपेक्षा क्यों करेंगे? वे दूर-दूरसे आपके पुत्रको देखने आये थे। आपके पुत्रकी आकर्षण शक्तिमें इतना अधिक बल है कि स्वर्गके देवता भी अलक्षित भावसे आपके घर आकर विश्वम्भरको देख जाते हैं।" मिश्रपुरन्दर ठाकुर कुछ उत्तर न दे सके। श्रीपाद नीलाम्बर चक्रवर्ती ज्योतिष-शास्त्रके परम पण्डित हैं। उन्होंने गणना करके जान लिया कि देव-देवियोंने मनुष्य शरीर धारण करके आकर श्रीशचीनन्दनके श्रीहाथसे प्रसाद पाया।

गंगादास पण्डितके विद्यालयमें पठन

उपनयनके पश्चात् शचीनन्दनका पढ़ने-लिखनेमें खूब मन लगा। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने पहलेसे ही पुत्रके विद्याभ्यासका सुन्दर प्रबन्ध कर दिया था। नवद्वीपके सर्वप्रधान वैयाकरण पण्डित गंगादास भट्टाचार्यके विद्यालयमें निमाईचाँदको भेजा। गंगादास पण्डितप्रभुके मनोनीत अध्यापक थे। उन्होंने इशारेसे पितासे कहा, "मैं गंगादासके विद्यालयमें पढ़ूँगा।"

अब गङ्गादासके विद्यालयमें निमाईचाँद नियमानुसार कलाप-व्याकरण अध्ययन करने लगे। वह जो कुछ एक बार पढ़ लेते हैं, या सुन लेते हैं, वह उसी समय उनको कण्ठस्थ हो जाता है। गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें सैकड़ों छात्र व्याकरण अध्ययन करते हैं। शचीनन्दनकी प्रतिभा देखकर अध्यापक और छात्र सभी विस्मित हो उठे। शचीनन्दन अपने विद्यागुरुकी व्याख्याका खण्डन करके अपना सिद्धान्त स्थापित करते हैं। गङ्गादास पण्डित यह देखकर मन ही मन सोचते हैं—"मैं वृद्ध हो गया हूँ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सैकड़ों छात्र मेरे विद्यालयमें पढ़कर महामहोपाध्याय पण्डित हो गये । परन्तु ऐसा तीक्ष्ण-बुद्धि छात्र कभी देखनेमें नहीं आया । क्या यह साक्षात् वृहस्पति देवता हैं ? नर रूपमें मिश्रगृहमें जन्म ग्रहण किया है ?"

शचीनन्दनके समान छात्र पाकर गङ्गादास पण्डितके मनमें बड़ा ही आनन्द है। सब छात्रोंमें निमाईचाँदके साथ उनकी अधिक घनिष्टता है। गुरु महाशयके पास शचीनन्दनका बड़ा आदर है। सर्वश्रेष्ठ शिष्य समझकरके गङ्गादास पण्डित नवम् वर्षीय बालक शचीनन्दनका सम्मान करते हैं। वह निमाईचाँदको पुत्रके समान स्नेह करते हैं, मानते जानते हैं। शचीनन्दन सदा ही गुरुजीके पास रहते हैं। पाठमें इस समय उनका बड़ा मन लगता है। उनकी अध्ययन करनेकी प्यास दिन-प्रतिदिन बढ़ही जा रही है ।

विद्यार्थियोंके साथ तर्क-वितर्क और ऊधम

जिस समयकी बात लिखी जा रही है उस समय नवद्वीपमें सहस्रों विद्यालय थे, लाखों विद्यार्थी पढ़ते थे । विद्याचर्चाके लिए भारतवर्षमें नवद्वीप प्रथम स्थानके रूपमें प्रसिद्ध था। नदियामें गङ्गाके घाट पर अपराह्नमें सहस्रों विद्यार्थी एकत्र होकर मण्डली बनाकर बैठकर केवल विद्याकी आलोचनाकी बातें करते हैं। सूत्रोंकी व्याख्या, खण्डन-मण्डन तर्क-वितर्क, और अन्तमें शास्त्रार्थमें हाथा-पाई तक करते हैं। इनमें नवम् वर्षीय शचीनन्दन भी दीख पड़ते हैं। प्रत्येक घाट पर जाकर वह विद्यार्थियोंके साथ झगड़ोंमें योगदान करते हैं । तैरकर एक घाटसे दूसरे घाट पर चले जाते हैं। थोड़ी उम्रसे ही वह तैरने में विशेष पटु हो गये थे।

शचीनन्दनकी बाल्य-लीला रङ्गमें गङ्गाके घाट पर दुष्टताकी कहानी वर्णित हो चुकी है। यहाँ पौगण्ड लीलारङ्गका वर्णन किया गया है। गङ्गाके तीरपर आनेपर प्रभु लीला-रसमें विभोर हो जाते हैं। सुरसरिके तीरपर शचीनन्दनने विद्या-रसमें उन्मत्त होकर विद्यार्थियोंके साथ नाना प्रकारकी सूत्र-व्याख्या, खण्डन-मण्डन और निज मत स्थापन करके नदियाकी पण्डित मण्डली और छात्रोंके बीच इस अल्पावस्थामें ही विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की है। कलाप व्याकरणकी वृत्ति, पञ्जी और टीकाकी व्याख्या लेकर तर्क-वितर्क उपस्थित होने पर शचीनन्दन गर्व पूर्वक कहते हैं, "दूसरोंकी टीका-पञ्जीकी आवश्यकता क्या है ? सूत्रकी व्याख्या आदि मैं स्वयं करूँगा, कहीं दूसरेकी टीका अशुद्ध हो।" यह कहकर श्रीगौरभगवान्ने सूत्रकी अपनी व्याख्या की । उनकी व्याख्या सुनकर मुख्य छात्रगण अत्यन्त आश्चर्य चकित होकर शचीनन्दनकी बहुत प्रशंसा करने लगे। तब प्रभुने जो व्याख्या की थी, स्वयं उसमें दोष दिखलाकर खण्डन किया और सब विद्यार्थियोंको पुकार कर कहा कि किसीमें शक्ति हो तो इसकी पुनः स्थापना करके दिखाये।

सभी निर्वाक् हैं ! सभी मन-ही-मन सोच रहे हैं, जगन्नाथ मिश्र-नन्दनमें कैसा विलक्षण विद्याबल है ? बालक मानो साक्षात् सरस्वतीका वर-पुत्र है ! बड़े-बड़े छात्रोंने आकर बालक शचीनन्दनको गोदमें उठाकर आलिङ्गन किया। निमाईचाँद आनन्दमें गद्गद होकर गङ्गा-तटपर अपरूप रूपछटा छिटकाकर खड़े हैं। सन्ध्याकाल उपस्थित देखकर छात्रोंने उनसे घर जानेके लिए अनुरोध किया।

इस प्रकार प्रतिदिन शचीनन्दन गङ्गा-तटपर विद्यारसमें मत्त होकर विद्या-विलास-लीला करते हैं। इस विद्यारस-रङ्गलीलाके सम्भोगके लिए ही मानो स्वयं भगवान् वृहस्पति रूपमें शिष्योंके साथ नवद्वीपमें उदय हुए हैं। नवद्वीपमें गङ्गा-तट प्रभुके विद्या-विलासकी लीला-स्थली है। गङ्गा-तट पर ही उनकी नवद्वीपलीलाका पूर्ण विकास हुआ। सुरधुनि गङ्गाके मनमें बड़ी साध थी कि श्रीयमुनाके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तटपर नन्द-नन्दन श्रीकृष्णने जैसे बाल्यलीला-विलास रङ्ग प्रदर्शन करके उनको कृतार्थ किया था, वह उनके भाग्यमें कब घटित होगा ? भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान्ने गङ्गाकी मनोकामना पूर्ण करदी।

निमाईचाँद तैरनेमें बड़े पटु थे। वे अकेले गङ्गाके इस पारसे उस पार तैर जाते थे। कोई तैरनेमें उनका मुकाबला नहीं कर सकता था। गङ्गाजी मनके साधसे तरङ्गरङ्गमें श्रीगौर भगवान्को वक्षःस्थलपर उठाकर नचाती हैं। शचीनन्दन गंगाके भीतर भासमान स्वर्ण-कमलके समान सुशोभित होते हैं।

निमाईचाँदके धर्मानुराग तथा विद्यानुरागसे पिताका आनन्द

इस प्रकार गङ्गाजीमें जलक्रीड़ा करके शचीनन्दन विष्णु पूजाके समय घर लौटते थे। उपनयन हो जानेके बाद वे नित्य गृह-देवताकी पूजा करते थे। तुलसीको बिना जल चढ़ाये वे भोजन नहीं करते थे। भोजनके उपरान्त घरमें बैठकर पोथी लेकर मनोयोगपूर्वक पाठ अभ्यास करते थे। व्याकरण-सूत्रोंपर टिप्पणी करते थे। शची-जगन्नाथको इससे बड़ा आनन्द मिलता था। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र-पुरन्दर ठाकुर पुत्रकी अनिर्वचनीय रूप सुधाका पान करके निरन्तर प्रेमानन्दमें मग्न रहते थे। शचीमाताके आनन्दकी सीमा न थी। अब मिश्रपुरन्दर कहीं जाते नहीं हैं। वे वृद्ध हो गये हैं। निमाईचाँदके मुखचन्द्रको अवलोकन किये बिना उनको संसार सूना लगता है। सदा पुत्रके समीप वे उपस्थित रहते हैं।

मिश्रपुरन्दर ठाकुरके वात्सल्य प्रेमकी प्रगाढ़ताकी तुलना नहीं है। वे सर्वशास्त्र-विशारद पण्डित और वृद्ध तथा विज्ञ पुरुष हैं। पुत्रके प्रति वात्सल्य प्रेमकी अधिकताके कारण उनके मनमें स्त्रियोंके समान पुत्रके सम्बन्धमें नाना प्रकारके भाव उद्दीपित होते थे। श्रीचैतन्य भागवतमें उनके असाधारण पुत्र-वात्सल्य भावकी एक अपूर्व कहानी वर्णित है। उसका यहाँ उल्लेख किया जाता है।

निमाईके अनुपम रूप-लावण्यके कारण डाकिनी-दानवसे अमंगलकी आशंका

निमाईचाँदकी अवस्था इस समय दश वर्षकी है। उनके रूपकी सीमा नहीं है। प्रत्येक अङ्गकी सौन्दर्य-छटासे नदियावासी नर-नारी विमुग्ध हैं। निमाईचाँदकी सोनेकी अङ्ग-छटासे सारी नदिया मुखरित है। मिश्र पुरन्दर पुत्रके अपरूप रूप-सौन्दर्यको देखकर वात्सल्य रसकी अधिकतासे स्त्री-बुद्धिको प्राप्त होकर मन-ही-मन सोचने लगे—"मेरा निमाई रूपका समुद्र है। कहीं डाकिनी या दानवकी दृष्टि बच्चेको न लगे। इस भयसे मिश्रपुरन्दर ठाकुरने पुत्रको श्रीकृष्णको समर्पण कर दिया। अन्तरालमें खड़े होकर प्रभु अपने पिताके मनोभावको देखकर हँसने लगे।

पुत्रकी मङ्गलकामनाके लिए पुत्र-वत्सल वृद्ध ब्राह्मण हाथ जोड़कर रोते-रोते अभीष्ट देवसे प्रार्थना करने लगे—"हे कृष्ण ! तुम सबके रक्षक हो, जो तुम्हारे चरण-कमलका स्मरण करते हैं, उनको कोई विघ्न-बाधा नहीं होती। तुम्हारे स्मरण-विहीन स्थानोंमें ही डाकिनी-भूत-प्रेत रहते हैं। मेरे बच्चेकी अपनी शुभ दृष्टिसे रक्षा करते रहना। उसके निकट कोई विघ्न या संकट नहीं आने पावे।"

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरके पुत्र-स्नेहकी गम्भीरता उपर्युक्त घटनासे उपलब्धकी जा सकती है। वे शास्त्रज्ञ पण्डित थे, परम निष्ठावान् साधु पुरुष थे। श्रीभगवान्के चरणोंमें उनकी अचल भक्ति थी। स्त्रियोंके समान कुसंस्कारसे अन्धेसे होकर-उन्होंने अपने पुत्र-स्नेहकी अधिकतासे जो किया, उससे उनके अपूर्व वात्सल्य-प्रेमका पूर्ण परिचय मिलता है। इस प्रकारकी वात्सल्य-प्रेम-भक्तिके बलसे ही श्रीगौर भगवान्को उन्होंने पुत्र रूपमें प्राप्त किया है। शचीमाताका और मिश्रपुरन्दरका वात्सल्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रेम एक ही वस्तु है। कुछ भी भेद नहीं है। इस घटनासे ही इसका यथार्थ पता लग जाता है। श्रीभगवान् प्रेमके वशीभूत हैं। मिश्र-दम्पतिने इस प्रेमका उच्चादर्श दिखलाया है।

मिश्रपुरन्दरका दुःस्वप्न

इसी समय एक दिन मिश्रपुरन्दर ठाकुर एक दुःस्वप्न देखकर बहुत घबराये। उनका हर्ष विषादमें बदल गया। वे भयभीत होकर नींद टूटनेपर शय्यापर बैठकर हाथ जोड़कर इष्ट देवताकी स्तुति करने लगे—"हे भगवन् ! मैं आपसे यही प्रार्थना करता हूँ कि मेरा निमाई गृहस्थ होकर घरमें ही रहे।"

शचीमाता सोयी थीं। नींदसे जगे हुए पतिके कातर कण्ठसे दैन्यकी बात सुनकर उनकी नींद टूट गयी। उन्होंने पतिके मुखकी ओर देखकर विस्मित होकर जिज्ञासा की—"इस प्रकारकी वर-कामना क्यों कर रहे हो ?"

मिश्रपुरन्दरने उत्तर दिया—"आज मैंने स्वप्न देखा कि निमाईने शिखा मुण्डन कराके संन्यासवेश ले लिया है, 'कृष्ण-कृष्ण' कहकर कभी हँसता है, कभी नाचता है, कभी रोता है। अद्वैताचार्य आदि भक्तगण भी उसको छोड़कर नृत्य-कीर्तन कर रहे हैं। कभी निमाई विष्णु सिंहासनपर बैठकर सबके मस्तकपर अपना चरण-प्रदान कर रहा है। चतुर्मुख-पञ्चमुख ब्रह्मा, सहस्रवदन शेष सभी 'जय शचिनन्दन' गा रहे हैं और स्तुति कर रहे हैं। यह देखकर मेरे मुखसे वाक्य नहीं निकल पा रहा है। कुछ देरमें देखता हूँ कि लाखों लोग निमाईके पीछे हरि ध्वनि करते जा रहे हैं। चारों ओर निमाईकी स्तुति सुनायी पड़ती है। इस प्रकार सब भक्तोंको लेकर वह नीलाचल जा रहा है। इसको देखकर मुझे चिन्ता होने लगी कि यह भी विरक्त होकर कहीं घरसे न चला जाय।"

शचीमाताने पतिकी सारी बातें सुनीं। मिश्रपुरन्दरकी व्याकुलता और उदासीनता देखकर बुद्धिमती शचीमाताने उनको आश्वासन देते हुए कहा, "ठाकुर ! तुम चिन्ता मत करो। मेरा निमाई पोथी छोड़कर अन्य विषयमें मन नहीं लगाता, विद्याभ्यासके सिवा उसका दूसरा कोई कर्म नहीं है। विद्यारस उसके लिए सर्व-धर्म-कर्मका सार बन गया है। मेरा निमाई विद्यारसमें उन्मत्त है। तुम चिन्ता न करो। वह कहीं न जायगा।"

यह शचीमाताके मुखकी बात थी, हृदयकी बात न थी। स्वप्न-वृत्तान्त सुनकर उनका मन भी घबरा गया। उन्होंने केवल पतिके मुँहको देखकर अपने मनका भाव छिपाया। उस रातको मिश्रदम्पतिको फिर नींद नहीं आयी। पुत्रके सम्बन्धमें नाना प्रकारकी बातें करते-करते सबेरा हो गया। बालगौराङ्ग नींदसे उठे। माता-पिता उनके चन्द्रवदनको देखकर सब दुःख भूल गये। पुत्रके चन्द्रवदनके दर्शनसे तथा उनके मुँहकी मधुर वाणी सुनकर उनको कोई दुःख नहीं रहता था।

यह मिश्रपुरन्दर ठाकुरकी स्वप्नदर्शन कहानी भी रङ्गीले प्रभुका एक लीलारङ्ग है। इसका भी मर्म है। मिश्रपुरन्दर ठाकुर प्राकृत शरीरके द्वारा प्रभुकी संन्यास-लीला तथा संकीर्तन-लीला-विलास नहीं देख पावेंगे। पुत्रका ऐश्वर्य-विलास देखकर पिताके मनमें बड़ा आनन्द होता है। हमारे पितृभक्त प्रभुने पिताको अपना ऐश्वर्य दिखलाया। स्वप्न दर्शन बहाना मात्र था। मिश्रपुरन्दरने समझा कि उनका पुत्र सामान्य बालक नहीं है। वह उनकी निजस्व सम्पत्ति भी नहीं है, वह सर्वलोक पूज्य, सर्व चिन्ताकर्षक, परम वैराग्यपूर्ण जगद्गुरु रूपमें पिताके हृदयमें उदित हुआ है। वह परमेश्वर, सर्वदेव-वन्द्य है, बहु बल्लभ है—यह भी पिताको दिखलाया और समझा दिया। वह गृह-त्याग करके कलिग्रस्त जीवके उद्धारके लिए जगद्गुरु वेषमें वैष्णव संन्यासीका रूप धारण करेगा, यह भी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पिताको समझा दिया। मिश्रपुरन्दर ठाकुरने स्वप्न देखकर अपने अभीष्ट देवसे जो वर माँगा, वह श्रीगौर भगवान्‌के प्रति उनके गम्भीर वात्सल्य प्रेम भावका पूर्ण परिचायक है। स्नेहमयी पति-प्राणा शचीमाताकी सान्त्वनाकी बात उनकी प्रगाढ़ पति-भक्तिका परिचायक है। पतिके मनके भावको समझकर उन्होंने अपने मनोभावको छिपाकर जिस प्रकार पति-देवताको सान्त्वना दी, वह अति उच्च भाव है। साधारण स्त्रीजनके मनमें इस प्रकारके महान् भावका उदय नहीं होता।

निमाईचाँद अब पाठाभ्यासमें मत्त हैं। उस समय नवद्वीप विद्याके गौरवकी उच्च श्रेणी पर पहुँचा था। नवद्वीपके अति हीन जातिके लोग भी विद्याका आदर करते थे। अध्यापकोंकी संख्या सहस्रसे अधिक थी, छात्रोंकी संख्या लाखसे अधिक थी। रास्तेमें, खेतमें और घाटपर सर्वत्र विद्याकी चर्चा होती थी। जहाँ ही दस आदमी एकत्रित हुए विद्याकी चर्चा होने लगी। गो-पाल, गाड़ीवान्, दुकानदार, रास्ते चलनेवाले राही—ब्राह्मण पण्डित और छात्रोंके विद्या-विचार तथा तर्क-वितर्कको सुननेके लिए कान खोलकर खड़े हो जाते थे। शचीनन्दन नदियाकी सारी विद्या सम्बन्धी चर्चाओंमें उपस्थित रहते थे। जहाँ विद्या विषयक तर्क होता था, जहाँ सूत्र-विचारकी वितण्डा चलती थी, जहाँ व्याकरणमें शास्त्रार्थका तुमुल संग्राम उपस्थित होता था, कहीं न कहींसे निमाईचाँद वहाँ आकर उपस्थित हो जाते थे, और सबके बीचमें जाकर प्रवीण पण्डितके समान स्वमत स्थापन करके नदियावासी अध्यापकगण और छात्रमण्डलीको स्तम्भित और विस्मित कर देते थे। यह देखकर सबके मुखसे वही एक बात, वही एक भाव उदय होते थे। उनकी अपरूप रूप-राशि, बाल चापल्य और अलौकिक कार्य देखकर जो बात एक दिन श्रीअद्वैत प्रभु बोले थे, जो भाव उनके मनमें उदय हुआ था, वही भाव अब नदियाके आबाल-वृद्ध सबके मनमें उदय हो रहा है।

"प्राकृत मानुष कभू ए बालक नय।"

—चै०मा०आ० ५. ६४

प्रभुकी विद्या-विलास-लीलाका यह केवल सूत्रपात मात्र है। शचीनन्दनकी अवस्था अब दस वर्ष पूर्ण हो गयी है। अब भी वह पौगण्ड लीलाके अधिनायक हैं। किशोरावस्थामें ही वह देश-प्रख्यात निमाई पण्डितके नामसे नदियाकी पण्डित मण्डलीके शिरोमणि हो गये थे। वह सब लीला-कथा यथास्थान वर्णित होगी।

—※—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ग्यारहवाँ अध्याय

पितृ-वियोग

मिश्रेर विजये प्रभु कान्दिला विस्तर। दशरथ-विजये जेहेन रघुवर॥
दुर्निवार श्रीगौर चन्द्रेर आकर्षण। अतएव रक्षा हैल आदूर जीवन॥

—श्रीचैतन्य भागवत आ० ६. १०८, १०९

श्रीगौराङ्गलीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरके तिरोभावका अतिसंक्षिप्त वर्णन किया है। कारण यह है कि प्रभुके पितृ-वियोगकी कथा अत्यन्त दुःखपूर्ण है। यह दुःख कहानी लिखते, कहते या सुनते हृदय विदीर्ण होने लगता है। इसी कारण उन्होंने यह दुःख कहानी विस्तार पूर्वक नहीं लिखी है।

चार पयार छन्दमें श्रीचैतन्य भागवतकारने मिश्र-विजय-गीति गायी है। उनमें दो पयार इस अध्यायमें ऊपर लिखे गये हैं। इनमें ही सारी बातें कह दी गयी हैं। पितृ-शोकमें हमारे पितृभक्त प्रभु बहुत रोये। राजा दशरथके शोकमें जैसे रामचन्द्रजी विह्वल हो गये थे, शचीनन्दन उससे भी अधिक विह्वल हुए। शचीमाताने निमाईचाँदका मुख देखकर इस असह्य पति-शोकको सहन करके प्राण-रक्षा की। इन दोनों पयारोंको सूत्र बनाकर ठाकुर लोचनदासने प्रभुकी पितृ-वियोग लीला कुछ विस्तार पूर्वक लिखी है। ठाकुर जयानन्दने अपने श्रीचैतन्यमङ्गल ग्रन्थमें पितृ-शोकाकुल प्रभुकी विलाप कहानी वर्णित की है। इस अध्यायमें वही लीलाकथा विस्तार पूर्वक वर्णित होगी।

पाषाण-हृदय कलिग्रस्त जीवका हृदय बड़ा कठिन है। उसके कठिन हृदयको द्रवित कराकर, श्रीगौराङ्ग-लीला-रस-सिन्धुमें उनके नीरस मनको निमज्जित करके सरस करनेके लिए ही ठाकुर लोचनदास और ठाकुर जयानन्दने पितृशोक सन्तप्त प्रभुकी इस दुःख पूर्ण लीला कहानीको विस्तृत करनेका प्रयास किया है। साधक भक्त-लीला-लेखकगण सतत लीला-तरङ्गमें भासमान रहते हैं; कभी-कभी लीला-तरङ्गमें एकबारगी डूब जाते हैं। उनके मन-बुद्धि उनके वशमें नहीं रहते, वे क्या लिख रहे हैं, स्वयं नहीं समझ पाते। उनके निर्मल हृदयमें श्रीभगवान्‌की सारी लीलाएँ समान रूपसे स्फुरित होती हैं। श्रीभगवान्‌की नरलीला सुख-दुःख-मिश्रित होती है। दुःखमयी लीलाओंको हटा देनेसे लीला-ग्रन्थ अधूरा रहता है। प्रेमाश्रु बहने पर जैसे मनमें सुखका अनुभव होता है, श्रीभगवान्‌की दुःख-पूर्ण लीलाके आस्वादनसे भी हृदयमें प्रेमसुधाकी अनुभूति उदय होती है। ऐसा न होता तो इन सब दुःखमयी लीला-कथाओंको महाजनगण कभी लिख नहीं पाते।

हमारे दयामय प्रभुने कलिके जीवोंका दुःख देखकर गृहस्थाश्रमको त्यागकर संन्यास ग्रहण किया था। करङ्ग-कौपीन धारण करके घर-घर घूमकर भिक्षा ग्रहण की थी। जीवके दुःखसे बहती हुई अश्रु-धारसे उनका वक्षःस्थल भीगा रहता था। यह देख-कर भी कठिन हृदय कलिके जीवका दुष्ट मन द्रवित नहीं हुआ। कलिग्रस्त जीवके कठिन हृदयको द्रवित करनेके लिए करुणाके अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभु कारुण्य रसमें जगत्‌को डुबा गये हैं। उस कारुण्य रस कल्प-तरु श्रीगौराङ्ग-सुन्दरकी पितृवियोगकी कथा अतिशय कारुण्य रसपूर्ण है। ये कारुण्य रसपर्ण दुःखमय लीला-कथाएँ जैसी प्रेमभक्ति-उद्दीपक तथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हृदयोन्मादकारी हैं, वैसी दूसरी लीला-कथाएँ नहीं हैं। प्रभुकी संन्यास-लीला कहानी पढ़कर महान् पाखण्डीका हृदय भी द्रवित हो उठता है। पाषाण हृदय भी पसीज उठता है।

प्रभुकी पितृ-वियोग-लीला कहानी लिखनेसे भक्तोंके मनको दुःख होगा, यह सोचकर जो इसे अपराध समझते हैं वे भ्रममें हैं। श्रीभगवान् सुख-दुःखके परे हैं। वे सदा आनन्दमय लीला-विग्रह हैं। उनको फिर दुःख कहाँ? उनका नर-शरीर धारण, देहधर्म रक्षण केवल लीलाके लिए है, तथा उनका लौकिक आचरण लोक-शिक्षाके लिए है।

नवम वर्षमें शचीनन्दनका शुभ उपनयन संस्कार हुआ। दशम वर्षमें उनके पितृदेव श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरका देहान्त हुआ। प्रभु उस समय नितान्त बाल-स्वभाव थे, संसारकी कोई बात समझ नहीं पाते थे। अध्यापकके विद्यालयमें रात-दिन पाठाभ्यास करते रहते थे। नदियाकी सारी विद्वन्मण्डलीमें उनका अबाध प्रवेशाधिकार है। नदियाके सब अध्यापक पण्डित और विद्यार्थीगण शचीनन्दनको विशेष रूपसे जानते हैं। निमाईचाँद सदा विद्यालयमें ही रहते हैं। घर पर अधिक देर वे नहीं ठहरते। वह विद्याविलास-रसमें उन्मत्त हैं।

ऐसे ही समय ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमीको श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरका देहावसान हो गया। उस दिन भयानक तूफान और भकम्प आया।

मिश्रपुरन्दरका देहान्त ज्वर

मिश्रपुरन्दर ठाकुरका देहान्त ज्वर-रोगसे हुआ। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुर एक दिनके ज्वरमें ही बेहोश हो गये। उनको बारम्बार मूर्च्छा आने लगी। विश्वरूपके वियोगसे उनका हृदय शोकाकुल हो उठा। वे अवसन्न होकर गिर पड़े। वात, कफ, ऊर्ध्वश्वास, रक्तस्राव आदि सारे दुर्लक्षण दीख पड़े। नवद्वीपवासी सब वैष्णव लोग उनको देखनेके लिए आये। मिश्र-भवन लोगोंसे खचाखच भर गया।

शचीमाता व्याकुलतापूर्वक बिखरे केशमें वैद्यराज मुरारिके दोनों हाथ पकड़ कर कातर वचनसे रोती हुई बोलीं, "मुरारि! क्या देखा? बच तो जायँगे न?" मुरारि गुप्तने सतर्क होकर उत्तर दिया, "माँ! आजकी रात बीतनेके पहले मैं कुछ नहीं कह सकता। आप चिन्ता न करें। उत्तम औषधि मैंने दी है।" शचीमाता व्याकुल चित्त हो मुरारि गुप्तके मुखकी ओर देखकर रोने लगीं।

गत रात्रिमें मिश्रपुरन्दर ठाकुरने एक अपूर्व स्वप्न देखा था। ज्वरावस्थामें प्रलाप करते हुए उन्होंने वह वृत्तान्त सबको बताया—"कल रात्रिके तीसरे पहरमें स्वप्नमें श्यामसुन्दरने प्रकट होकर कहा कि शीघ्र बैकुण्ठ चलो, तभीसे मुझे ज्वर हो गया है। आप सब वैष्णव मेरी बातका विश्वास करें और मुझे आशीर्वाद करें कि मुझे शीघ्र गंगा-प्राप्ति हो।"

इतना कहते-कहते प्रबल ज्वरके प्रकोपसे वृद्ध ब्राह्मण पुनः मूर्छित हो गये। उनकी बोलनेकी शक्ति क्रमशः ह्रासको प्राप्त हो गयी। उनके मनमें कई बातें उठीं। सबसे बोलनेकी बड़ी इच्छा हुई। इच्छामयकी इच्छासे उनकी वाक् शक्ति अवरुद्ध न हुई। उन्होंने एक बार शचीमाताकी ओर देखा। सब वैष्णव-जनको घरमें उपस्थित देखकर बड़े दुःखसे कहने लगे—"मेरे हृदयमें एक दुःख रह गया कि मैं गौराङ्गकी ठकुराई नहीं देख सका। एक बहुत बड़े यतिने कहा था कि तुम्हारा छोटा पुत्र सारे संसारको आलोकित करेगा, सब लोग तुम्हारी महिमा गायेंगे। सबका निस्तार करनेके लिए ही वह अवतीर्ण हुआ है।"

श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुर जानते थे कि उनका कनिष्ठ पुत्र क्या वस्तु है। जगतके उद्धारके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिए उसका शचीके गर्भमें आविर्भाव हुआ है। सारे संसारमें उसकी महिमाका गुणगान होगा, वह सारे जगत्के जीवोंका पूज्य बनेगा। मिश्रपुरन्दरके भाग्यसे 'श्रीगौराङ्गकी ठकुराई' देखनेको न मिली, इसी दुःखसे उन्होंने सबके सामने अपने मनकी यह गुप्त बात आज प्रकट करदी। अब वे अपने पुत्रके तत्वको छिपाना नहीं चाहते थे।

नदियाके लोगोंके मनमें 'श्रीगौराङ्गके ईश्वरत्व' के विषयमें सन्देह था। वे लोग बीच-बीचमें आकर शची-जगन्नाथसे उनके पुत्रकी भगवत्ताके विषयमें बातें करते थे। जभी इस सम्बन्धमें कोई बात उठती थी, तभी वात्सल्यरसाश्रित शची-जगन्नाथ ये सारी बातें हँसकर उड़ा देते, तथा पुत्रके अमङ्गलकी आशङ्कासे नाना प्रकारके दैविक अनुष्ठान करते थे। इससे लोगोंके मनका सन्देह बढ़ जाता था। इस समय श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरने मृत्युशय्या पर शयन करके जो बात कही, उससे उनका सन्देह दूर हो गया।

नदियावासी वैष्णव मण्डलीने मिश्रपुरन्दरके मुखसे यह बात सुनकर इस समय भी आनन्दकी हँसी हँसकर उनको सम्बोधन करके मधुर बचनोंसे कहा—"तुम्हारी बातोंसे हमारा सन्देह दूर हो गया। तुम्हारा बालक हम सबका परित्राण करने वाला होगा, जाति-समाजका प्राण होगा, विद्या-अर्थ ज्ञानमें बड़ा शीलवान होगा। तुमने पूर्वकालमें द्वारिकामें देह-त्याग करते समय यह वर माँगा था कि मेरे द्विज-देहमें कृष्ण मेरा पुत्र हो। उसी कामनासे तुमने नवद्वीपमें जन्म पाया है और शची कृष्ण-गर्भा हुई हैं। जब कृष्ण तुम्हारे पास हैं तो बैकुण्ठ तुम्हारे घरमें हैं और तुम गंगा-लाभ चाहते हो। जो हो, हमारा तुमको आशीर्वाद है कि तुमको बैकुण्ठ-प्राप्ति हो।"

इस वैष्णव-मण्डलीमें भी श्रीअद्वैत प्रभु श्रीवास पण्डित, मुरारि गुप्त, चन्द्रशेखर आचार्यरत्न सभी हैं। इस समय उन्होंने भी अपने मनकी बात नहीं छिपायी। मिश्रपुरन्दरने जब दिल खोलकर उनके पुत्रके सम्बन्धमें निगूढ़ तत्व कहा, तब महा-विष्णुके अवतार श्रीअद्वैत आदि सर्वज्ञ वैष्णव लोगोंने भी अपने मनके भावको नहीं छिपाया। जगन्नाथ मिश्र-तत्व, शची-तत्व, श्रीगौराङ्ग-तत्व, सब कुछ उन्होंने तब सबके सामने व्यक्त कर दिया। यह सुनकर मृत्युशय्या पर पड़े श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर आनन्दित होकर ठहाका मारकर हँसने लगे। उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है। जिसको इतने दिन तक यत्नपूर्वक गुप्त रखा था, आज वह व्यक्त हो गया। कलिके प्रच्छन्न अवतारका प्रच्छन्नत्व अब न रहा, इसी कारण वे आनन्दमग्न हो रहे हैं। नवद्वीपमें श्रीगौर भगवान्का पूर्ण आत्मप्रकाश हुआ। कलिके जीवोंके उद्धारके कार्यमें प्रयोजनवश श्रीगौरभगवान्ने कौशल पूर्वक ये सारी बातें इस समय अपने पिताके मुखसे व्यक्त करादीं।

कृपालु पाठकवृन्द पूछ सकते हैं कि उस समय शचीमाताके अञ्चलकी निधि, मिश्रपुरन्दरके हृदय-सर्वस्व-धन, नदियावासियोंके प्राणधन निमाईचाँद कहाँ थे? हमारे प्रभु इस समय विद्यारसमें उन्मत्त हैं, यह बात मैं पहले कह चुका हूँ। वे रात-दिन गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें रहते हैं। आकस्मिक ज्वरसे ग्रस्त होकर पिता मरण-शय्या पर पड़े हैं—यह उनको पता नहीं है। यह भी कैसे कहें कि उनको पता नहीं है। इस समय वे उपस्थित न थे, इसका भी कुछ मर्म है। जो गुप्त बातें नदियाकी वैष्णव-मण्डलीने उनके पिताको बतलायीं, और श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र ठाकुरने उनके सम्बन्धमें जो गुह्य तत्व सबके सामने प्रकट किया, उनके वहाँ उपस्थित रहने पर यह सब गुप्त तत्वकी बातें तथा वे सब गूढ़ रहस्य सभवतः प्रकाशमें नहीं आते। इन सब बातोंके प्रचार और प्राकट्य का प्रयोजन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखकर चतुर चूड़ामणिने कौशलसे वहाँसे अपने आपको छिपा रखा।

मिश्रपुरन्दरको अन्तर्जली

मिश्रपुरन्दर ठाकुरको जब अन्तर्जली* करनेका समय उपस्थित हुआ। दिव्य पलङ्ग, पुष्पमाला, चन्दन, नववस्त्र सब कुछ प्रस्तुत था, सारी वैष्णव-मण्डली उपस्थित थी। उसी समय सर्वज्ञ हरिदास ठाकुरने श्रीअद्वैत प्रभुके सङ्केतसे दौड़कर गङ्गादास पण्डितकी पाठशालामें जाकर शचीनन्दनको उनके पिताकी आसन्नमृत्युका समाचार दिया। प्रभु उस समय पोथी लिख रहे थे। शचीनन्दन यह संवाद सुनते ही पोथी रखकर लम्बी साँस लेकर गङ्गाके तीरकी ओर दौड़े।

इधर मिश्र-भवनमें गंभीर आर्त्तनाद उठा है। मिश्रपुरन्दर ठाकुरको आत्मीय स्वजन और वैष्णव जन सब मिलकर पुष्पमालासे विभूषित करके सिंहासन पर उठाकर गङ्गातीर पर ले आये हैं। शचीमाताके आर्त्तनादसे नदियावासियोंका हृदय विदीर्ण हो रहा है। वे पतिके चरणोंके पास बैठकर उनके दोनों चरण पकड़कर रोते-रोते कह रही हैं—"तुम मुझको अपने साथ लेते चलो, मैं तुमको छोड़कर कैसे रहूँगी ? तुम्हारे साथ सहमरणमें जाऊँगी, यही मेरी चिर दिनकी अभिलाषा है। मुझको निराश न करना।"

मिश्रपुरन्दर ठाकुरको दिव्यज्ञान है। गङ्गाके तीरपर दिव्य सिंहासनपर शयन करके गङ्गाका दर्शन करते हुए शचीमातकी ओर देखकर हँसते-हँसते मृदु वचनसे बोले—

"हे गृहिणी ! तुम पुण्यवर्ती कृष्ण-गर्भा हो। तुम जो कह रही हो वह उचित कर्म नहीं है। तुम मेरे साथ जाओगी तो मेरा सोनेका गौराङ्ग अनाथ हो जायगा। माता-पितासे विहीन पुत्रके दुःखकी सीमा नहीं रहती है। पितृहीन बालकका दुःख मातृस्नेहसे दूर हो जाया करता है। मातृ-पितृ-विहीन अनाथ बालकका दुःख बड़ा भीषण होता है। तुम्हारे अभावसे मेरे गौराङ्गका गृह शून्य हो जायगा। मेरे सङ्ग जाने पर तुमको क्या पुण्य होगा ? तुम पुण्यवती हो गौराङ्गको गर्भमें धारण करके तुम धन्य हो गयी हो। यह सब जञ्जाल तुम न उठाना। इस नवद्वीपमें बैठकर गौराङ्गके ईश्वरत्वको देखो। तुम भाग्यवती हो, मैं अभागा हूँ, मेरे भाग्यमें गौराङ्गका प्रभुत्व देखना नहीं बदा है। यह दुःख ही हृदयमें शूल बन रहा है।"

मिश्रपुरन्दर ठाकुरकी अन्तिम समयकी बात सुनकर सभी उपस्थित लोग व्याकुल होकर रो पड़े। शचीमाता भूमि पर पछाड़ खाकर गिर पड़ीं और रोने लगीं। उनके आर्त्तनादसे पशु-पक्षी सब रोने लगे।

कृपालु प्रिय पाठकवृन्द ! इस समय निमाईचाँद-की मनकी अवस्था पर एक बार स्थिर चित्तसे सोचिये। हरिदास ठाकुरके मुँहसे गङ्गाके तीरपर पिताकी अन्तर्जलीकी बात सुनकर वे गङ्गादास पण्डितके विद्यालयसे ऊर्ध्वश्वास दौड़ पड़े। उनके कमल-नयनसे अविरत अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। वे प्राणपनसे दौड़ते हुए उच्च स्वरसे रोते-रोते गङ्गाके किनारे पहुँचे। हरिदास ठाकुर उनके सङ्ग थे, परन्तु उनके साथ कदम बढ़ा न सके।

बाल-गौराङ्गका विलाप

शचीनन्दनने गङ्गा-तटपर आकर जो देखा, उससे उनका कोमल हृदय विदीर्ण हो गया। पिताको गङ्गाजीमें अन्तर्जली करायी गयी है, स्नेहमयी माता

---

* हिन्दू शास्त्रानुसार गङ्गादि पवित्र नदीके जलमें मुमुर्षुके देहका अधोभाग नाभि पर्यन्त डुबाकर तारकब्रह्म-नाम सुनाना आदि पारलौकिक कार्यको अन्तर्जली कहा जाता है। इस प्रथाका पालन बङ्ग प्रदेशमें बहुत है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गा-तीरपर बालुकाके ऊपर पछाड़ खाकर करुण स्वरमें क्रन्दन कर रही है। सब आत्मीय स्वजन विषण्ण-वदन खड़े हैं। पिताकी दशा देख कर उन्होंने समझ लिया कि उनकी अन्तिम दशा उपस्थित है। निमाईचाँद किसी ओर न देखकर सीधे पिताके चरण प्रान्तमें जाकर बैठ गये। पिताके दोनों चरणोंको गोदमें उठा लिया। पिताके चरणोंकी धूलि मस्तक पर धारण की। आँखोंके अश्रुजलसे उनका वक्षः-स्थल बह चला।

मिश्रपुरन्दर ठाकुरको उस समय तक दिव्य ज्ञान था। अन्तिम कालमें जगत्-ब्रह्माण्डपति बाल ब्रह्मरूपी पुत्रका मुख देखकर उनके मनको बड़ा आनन्द हुआ। स्नेह पूर्वक दोनों हाथ फैलाकर उन्होंने पुत्रको वक्षः-स्थलमें धारण किया। पिता-पुत्रमें यह अन्तिम प्रेमालिङ्गन हुआ।

अविरल अश्रुधारसे पिताके पाद-पद्मको सिक्त करते हुए वे पितृदेवको सम्बोधन करके नाना प्रकार से विलाप करने लगे—

कोथाय चलिले पिता फेलिये आमाय।
अनाथिनी करे मोर अभागिनी माय॥
के मोरे पड़ाबे आर करिया आदर।
कार सङ्गे बाड़ी जाब धरिये चादर॥
पितृहीन बले लोके कथा ना कहिबे।
अनाथिनी मार ताते यातना बाड़िबे॥
आशा छिल मोर मने धन रत्न आनि।
पितृ सेवा करिबाङ बड़ हले आमि॥
कत दुःखे पिता तुमि पालियाछ मोरे।
कोन गुण नाइ मोर ऋण शोधिबारे॥
तोमार स्नेह भाल बासा कभू ना भूलिब।
तोमार गुणेर कथा सदाइ गाहिब॥
बड़ दुःख रैल मने ना करिलूँ सेवा।
अबोध बालक बले दोष ना लइबा॥
अनाथ बालक आमि दुःखिनी मातार।
मोर शिरे दिले तुमि संसारेर भार॥
आशीर्वाद कर पिता अनाथ बालके।
धन्य धन्य बले जेन नदियार लोके॥
पितृ आशीर्वादे हय पुत्रेर मङ्गल।
ना करिनू सेवा तव किवा हबे फल॥
दशम वत्सर हैल वयस आमार।
एक दिन ओ सेवि नाइ चरण तोमार॥
ए बड़ विषम दुःख रहिल हृदये।
अकाले चलिया गेले आमारे फेलिये॥
अनाथिनी माता मोर हल पागलिनी।
कि करे बुझाइ माँरे आमि किवा जानि॥
आमि त आपनि शिशु पितृहीन ताते।
किसेर वयस मोर कि जानि बुझाते।
दीन हरिदास भणे प्रभु पितृशोक।
जाहा देखि हाहाकार करे सर्व्वलोक॥

इतना कहकर पिताका चरण पकड़ कर शचीनन्दन व्याकुल होकर रोने लगे। शचीमाता पास ही धूलमें पछाड़ खाकर उच्च स्वरसे क्रन्दन कर रही हैं। आत्मीय स्वजन चुप-चाप रुदन कर रहे हैं। सबके मुखसे 'हाय-हाय' शब्द निकल रहा है।

कर्त्तव्य-पालन

शचीनन्दन अतिशय बुद्धिमान् बालक हैं। उन्होंने देखा कि स्नेहमयी जननी धराशायिनी हैं, पिता मुमूर्षु अवस्थामें हैं। इस समय रोनेका अवसर नहीं है। पुत्रका कर्त्तव्य करना होगा। दस वर्षके बालक निमाईचाँदने दुर्जय पितृशोकके आवेगको संवरण करके माताकी ओर करुण नेत्रोंसे देखकर रुद्ध-कण्ठसे कहा, "माँ! इस समय रोना मत। सब आत्मीय-स्वजन मिलकर कृष्ण नाम लो। सब मिलकर इस समय वास्तविक बान्धवका कार्य करो।"

प्रभु इतना कहकर ही शान्त नहीं हुए। माताकी आँखोंमें आँसू देखकर वह अपना दुःख भूल गये। बालक निमाईचाँद तत्त्वज्ञ पण्डितके समान माताको उस समय सर्वग्रासी कालका तत्त्व समझाने लगे। पिताके पास बैठकर स्नेहमयी जननीकी ओर देखकर उन्होंने कहा—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मरण सभार माता आछये निश्चय ।
ब्रह्मा, रुद्र, समुद्र पर्व्वत हिमालय ॥
इन्द्र वरुण अग्नि काले सर्वनाशे ।
मरण लागिया केन पाइछ तरासे ॥
—चै० म०

पुत्रके मुखसे इस समय यह तत्त्व पूर्ण बातें सुनकर शचीमाता विस्मित हो उठीं । उपस्थित आत्मीय स्वजन अवाक् हो उठे । शचीमाताने अनेक बार पुत्रके मुखसे तत्वकी बात सुनी है । परन्तु इस विपद्के समय बालकके धैर्य और सहिष्णुताको देखकर उन्होंने शोक संवरण किया ।

इधर मुमूर्षु मिश्रपुरन्दर ठाकुर पुत्रके परम सुन्दर मुखचन्द्रकी ओर अनिमेष नयनसे देख रहे हैं । उन्होंने पुत्रका हाथ पकड़कर वक्षःस्थल पर खींचकर दृढ़रूपसे धारण किया । उस समय भी उनको दिव्य ज्ञान था । चारों ओर हरिध्वनि होती थी । हरिनाम सङ्कीर्तनसे गङ्गा-तट आज मुखरित है । निमाईचाँद विलाप करके पितासे कह रहे हैं—"मुझको आप कहाँ रख गये ? मेरी माँको किसके हाथमें समर्पण किया ?" मिश्रपुरन्दर ठाकुरकी वे दो बातें याद हैं । उन्होंने पुत्रको वक्षःस्थलमें धारण करके धीरे-धीरे कहा—

"तुमा सर्मपिल आमि प्रिय जगन्नाथे ॥
आमार वचने बापू कर अवधान ।
तुमार मायेर जेन नहे अपमान ॥
तुमार अवतारे सर्व्वलोक परित्राण ।
गयाते आमार बापू दिओ पिण्डदान ॥"
—ज०चै०म०

प्रभुने देखा कि पिताका अन्तिम काल उपस्थित है । इस समय स्त्रीका कर्त्तव्य है, पुत्रका कर्त्तव्य है, रोने-धोनेका यह समय नहीं है । यह सोचकर शोकार्त्त माताका हाथ पकड़कर पास ले आये । इशारेसे माँको कहा कि अब देर करनेकी आवश्यकता नहीं है । माता-पुत्र दोनों मिलकर पिताके चरण पकड़कर उनको गङ्गाके भीतर ले गये ।

इतने आत्मीय स्वजन और कुटुम्बीजनके गङ्गा-तटपर रहते शचीमाता और प्रभुने ही इस कार्यमें हाथ क्यों डाला ? इसका एक तात्पर्य है । माता-पिता अथवा पतिके अन्तिम समयका कार्य स्वयं करना आवश्यक है । इसके करनेपर पीछे मनमें एक प्रकार-के अपूर्व शान्तिकी अनुभूति होती है । पुत्रका कर्त्तव्य निमाईचाँदने किया । पत्नीका कर्त्तव्य शचीमाताने किया । लोक-शिक्षाके लिए प्रभुने अवतार लिया था । इस कार्यके द्वारा भी प्रभुने लोक-शिक्षा प्रदान की ।

इसी समय सबने मिलकर उच्च हरि-सङ्कीर्तन प्रारम्भ किया । इसी समय एक बार और शचीनन्दन-का कोमल हृदय पितृ-वियोगसे उन्मथित हो उठा । वे पिताका चरण पकड़कर व्याकुल होकर रोने लगे । वे अपने आपको रोक न सके । शोकसे विह्वल होकर प्रभुने आर्त्तनाद करके उच्च विलाप ध्वनिसे गङ्गा-तट और आकाशको पूर्ण कर दिया ।

उस समय तक मिश्रपुरन्दर ठाकुरको परिपूर्ण दिव्य ज्ञान था । उनको शिवचक्ष प्राप्त है, परन्तु दृष्टि श्रीगौर भगवान्के मुखचन्द्रकी ओर स्थिर-भावसे लगी है । उनके मुँहसे 'हरि-हरि', 'कृष्ण-कृष्ण' शब्द मृदु और मन्द ध्वनिमें निकल रहा है ।

पिता-पुत्रके झरझर बहती हुई अश्रु धारासे पुण्यतोया गङ्गाका जल बढ़ गया । अपूर्व तरङ्ग भङ्गिमाके द्वारा गङ्गाजीने श्रीगौर भगवान्के चरणों-की वन्दना की । मिश्रपुरन्दर ठाकुरकी दृष्टि मानो श्रीगौर भगवान्के मुखकमल पर आबद्ध हो गयी । 'हरि-हरि', 'कृष्ण-कृष्ण', 'राम-राम' बोलते-बोलते दिव्यज्ञानमें उनका प्राणवायु निकल गया । गगन-मण्डलसे दिव्य रथ आकर गङ्गाके किनारे उपस्थित हुआ । गलेमें वनमाला पहने चतुर्भुजी विष्णुके दूत आकर उनको घेर कर खड़े हो गये ।

अन्तरिक्षमें देवगण अलक्षित होकर पुष्प वर्षा करने लगे । चतुर्दिक उच्च हरिनाम संकीर्तनसे गङ्गा-तट मुखरित हो उठा । प्रभुने भी उन्मत्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होकर कीर्तनमें योग दिया। पिताके गलेमें पुष्प-तुलसीकी माला है, तुलसीके दामसे सर्वाङ्ग सुशोभित है। चतुर्दिक भक्तवृन्द हरिनाम संकीर्तनमें उन्मत्त हैं। इस शुभ समयमें द्विजकुल-शिरोमणि श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरने बैकुण्ठको गमन किया।

शचीमाता और निमाईका क्रन्दन

शचीमाताके व्याकुल क्रन्दन और हाहाकारसे मानो पृथिवी विदीर्ण होने लगी। वह गङ्गाके तीर पछाड़ खाकर गिरने लगीं और पतिके शोकमें हाहाकार करके क्रन्दन करने लगीं। पति देवताका पैर पकड़कर पाषाणभेदी कातर स्वरसे करुण विलाप करने लगी। शचीमाताके हृदय-विदारक करुण विलापको सुनकर पशु-पक्षी, वृक्ष-तृण-लता पर्यन्त शोकाभिभूत हो गए। ठाकुर लोचनदासने अपने श्रीग्रन्थमें शची-विलापकी जो ध्वनि उठायी है, उसका तरङ्ग आज तक गौर भक्तवृन्दके हृदयको उन्मथित कर रहा है। कृपालु पाठकवृन्द ! शचीमाताकी इस हृदय-विदारक विलाप-कहानी पढ़कर दो बिन्दु अश्रुपात करके आत्मशोधन करें।

माताकी हृदयविदारक करुण विलाप ध्वनिको सुनकर बालक निमाईचाँदका पितृशोक-सिन्धु एकबारगी उथल उठा। वे व्याकुल होकर रोने लगे। उनके कमल नयनद्वयसे झर-झर अश्रुधार प्रवाहित हो उठी। आँखोंके आँसूसे उनका विशाल वक्षःस्थल तर हो गया, परिधान वस्त्र भीग गये। आत्मीय स्वजनके हाहाकारसे, माताके करुण रुदनसे निमाईचाँद आत्मसंवरण न कर सके। ऐसा लगा मानो उनके व्यग्र क्रन्दनसे सारा संसार रो रहा है। श्रीगौर भगवान्‌के क्रन्दनके साथ स्थावर-जङ्गम योग दे रहे हैं, गङ्गाकी तरङ्गराजि मृदुमन्द स्वरमें प्रभुकी करुण रुदन-ध्वनिको प्रतिध्वनित कर रही है। वायु उनके अन्तस्थलके आवेगपूर्ण दीर्घश्वासके शब्दको वहन करके जगतके जीवोंके मर्मस्थलको स्पर्श कर रहा है।

प्रभुकी करुण रुदन ध्वनिसे सारी नदिया प्रकम्पित हो उठी। नदियावासीका हृदय उन्मथित हो उठा, शचीमाताने अपने दुर्जय पतिशोकको संवरण किया। सब लोग मिलकर निमाईचाँदको गोदमें लेकर सान्त्वना देने लगे। आत्मीय रमणीवृन्द अपने अञ्चलसे उनके आँसू पोंछकर उनको गोदमें लेकर शचीमाताके पास ले गयीं। श्रीगौराङ्गकी माताने रोते हुए पुत्रका मुख देखकर किसी प्रकार धैर्य धारण किया।

श्रीगौर भगवान्‌की वैष्णवी मायाके प्रभावसे शचीमाता उठ बैठीं। पुत्रको गोदमें लेकर उसको सान्त्वना देने लगीं। गङ्गाके घाटपर बैठकर माता-पुत्रमें नानाप्रकारकी बातें हुईं। थोड़े ही समयमें भागवती-शक्तिके प्रभावसे दोनोंने आत्मसंवरण किया। प्रभु अब शोक-सन्तप्त माताको सान्त्वना देने लगे। पतिविहीना जननीको इस प्रकार कथञ्चित शान्त करके पिताकी अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त की। परम चञ्चल शचीनन्दन अब अति शान्त और धीर बालक हैं। उनमें अब कोई चञ्चलता नहीं है।

दश दण्ड काल तक उच्च हरिसङ्कीर्तनसे गङ्गा-तट मुखरित हो उठा। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दर ठाकुरकी चिताको घेर कर नदियाके वैष्णवोंने हरिनाम सङ्कीर्तन किया। पिताकी अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त करके प्रभु अपनी गोष्ठीके साथ गङ्गा-स्नान करके माताको लेकर घर लौटे। मालिनी देवी, सीता ठकुरानी सर्वजया देवी, नारायणी देवी आदि आत्मीय रमणीवृन्द शचीमाताको पकड़कर घर लेकर आयीं। प्रभुके इशारेसे श्रीवास पण्डित उनके साथ चले।

घर सूना देखकर शचीमाताका शोक सिन्धु पुनः उथल उठा। निमाईचाँदने इस बार अपने कलेजेको बाँधा। वे दुःखी माताकी गोदमें जाकर बैठ गये, तथा अपने वस्त्रके छोरसे माताकी आँखोंके आँसू पोंछने लगे। इससे शचीमाताका दुर्जय पति-शोक बहुत कुछ शान्त हुआ। निमाईचाँदके मुखचन्द्रकी ओर देखकर वह अपना सारा दुःख भूल गयीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पितृ-श्राद्ध

प्रभुने विधिपूर्वक पितृ-श्राद्ध करके कुटुम्बीजनको भोजन कराया। दरिद्र ब्राह्मण और वैष्णवोंको घरके धातुके पात्र दान किये।

शचीमाताके अञ्चलके धन, मिश्रपुरन्दरके हृदय-सर्वस्व, पितृविहीन होकर अनाथ बालकके समान नदियामें रहते हैं। उनका मन अब सब प्रकारसे विद्यारसमें मत्त हो गया। उनका मन पाठमें लगता देखकर शचीमाताने सोचा कि उनका अञ्चलका धन यदि विद्यारसमें मत्त होकर दुर्जयक पितृशोको भूल जाता है, तथा संसारी बनता है, तो बड़ा कल्याण होगा। तभी उसको सुख होगा।

शचीमाताकी चिन्ताका फल फला। विद्यारसमें उन्मत्त होकर प्रभु पितृशोकको भूल गये।

प्रभुकी पितृ-वियोग लीलाकी फलश्रुति ठाकुर लोचनदासने लिखी है—

श्रद्धावन्त जन यदि एइ कथा शुने।
वैकुण्ठे चलये सेइ गङ्गार मरणे॥

—✱—

बारहवाँ अध्याय

पितृविहीन प्रभु और उनकी दुःखिनी माता

पितृहीन बालक देखिया शची आइ। सेइ पुत्र सेवा बाइ आर कार्य नाञि॥

—श्रीचै० भा० आ० ६. १११

शचीनन्दन जब दस वर्षके थे तभी उनको पितृ-वियोग हुआ। उनकी शोकातुर वृद्धा माताके सिरपर मानो वज्रपात हुआ। पितृविहीन बालकके पालन और उसकी शिक्षा-दीक्षाके गुरुतर भारसे वह पीड़ित हो उठीं, और उनको चतुर्दिक अन्धकार दीखने लगा। एक तो शचीमाता वृद्धा हो गयी हैं, दूसरे वे पति-विरहसे कातर हैं, दुःसह पतिशोकसे उनका हृदय जर्जरित है। परन्तु निमाईचाँदके चन्द्रवदनकी ओर देखते ही वह सब दुःख भूल जाती हैं, उनका सब सन्ताप उपशम हो जाता है।

शचीमाता अब बालगौराङ्गकी केवल माता ही नहीं हैं, उनको उनके पिताका कार्य भी करना पड़ता है। अतएव इस समय उनको पुत्र-सेवाके सिवा दूसरा कार्य नहीं है। निमाईचाँद कैसे मनुष्य बनेगा, कैसे विद्या प्राप्त करेगा, इसी चिन्तामें शचीमाता सदा व्याकुल रहती हैं। एक दण्डके लिए भी वे पुत्रको आँखसे ओझल नहीं होने देतीं। क्षणभर भी पुत्रका मुख न देख पानेपर उनको मूर्च्छा आ जाती है।

बालगौराङ्ग माताके दुःख दूर करनेके उद्देश्यसे सदा उनके पास रहते हैं, मधुर वचनसे जननीको नाना प्रकारसे प्रबोधित करते हैं—"मैया! तुम कुछ चिन्ता नहीं करना ब्रह्मा, महेश्वर भी जिसको दुर्लभ समझते हैं, वह वस्तु मैं तुमको लाकर दूँगा।"

प्रभुकी ऐसी बातोंको सुनकर शचीमाताको इतने दुःखके बीच भी हँसी आती है। वे बहुत कष्टपूर्वक हँसीको रोक पाती हैं। पुत्रकी बाल-भाषामें मधुमय आश्वासनकी बात सुनकर उनके मनमें बड़ा आनन्द होता है। जिसके चन्द्रवदनको देखकर शचीमाता अपने आपको भूल जाती हैं, उस जीवन-सर्वस्व पुत्ररत्नकी मधुमय बाल-भाषा सुनकर उनके मनमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो आनन्द होता है, उसको उनके सिवा दूसरेमें समझनेकी शक्ति नहीं है। उनका सारा दुःख-सन्ताप दूर हो जाता है। आत्मस्मृति भी नहीं रहती। वे देहकी सुधि भूल जाती हैं। निमाईचाँदके मुँहसे यह आश्वासनकी बात सुनकर शचीमाता आनन्दमग्न हो जाती हैं। मातृभक्त प्रभु उनको आनन्दस्वरूप बना देते हैं।

पुत्रकी सेवाके सिवा शचीमाताको इस समय अन्य कार्य नहीं है। पति-सेवाके कार्यसे वञ्चित होकर वे अब पुत्र-सेवाके कार्यमें नियुक्त हो गयी हैं। यह भी प्रभुकी इच्छा है। जान पड़ता है कि श्रीगौर भगवान्‌ने माताको एकनिष्ठ रति प्रदान करनेके लिए ही यह लीलारङ्ग प्रदर्शित किया।

माताको स्वर्ण देना

शचीनन्दन गङ्गादासके विद्यालयमें जाकर दैनिक पाठाभ्यास करने लगे। वहाँसे गङ्गाके किनारे जाकर सहपाठी सखावृन्दके साथ विद्याकी चर्चा करते। पश्चात् यथासमय सन्ध्याकालमें घर आकर अकेलेमें माताको पुकारकर उनके हाथमें दो तोला सोना देने लगे और मातासे कहते—"भगवान्‌ने यह संबल दिया है, इसको खर्च करके काम चलाओ।" इतना कहकर प्रभु अपने कामपर चले जाते।

शचीमाता सोनेके टुकड़ेको देखकर परम विस्मित होकर सोचने लगीं, "मेरा निमाई बालक है, दूधमुँहा है। बारंबार सोना कहाँसे लाता है? इससे कहीं पीछे मेरा सोनेका बच्छा विपदमें न पड़ जाय। जब मेरे घरमें जिस वस्तुका अभाव होता है तो मेरा बच्छा बारंबार मुझको सोना लाकर देता है। किसीसे उधार लेता है, या किसी सिद्धिके बलसे पाता है, यह मैं कदापि समझ नहीं पाती हूँ।"

इस प्रकारकी चिन्तासे शचीमाता बहुत कातर हो उठीं। सोना भँजानेमें भी उनके मनमें बड़ा भय होता है। जिसको भँजाने देती हैं, उससे कह देती हैं कि दस जगह दिखला करके सोना भँजाना। इसका तात्पर्य यही है कि यदि सोना चोरीका माल हो तो इसमें विपदकी संभावना है। दूसरोंकी अपहृतकी हुई वस्तुका व्यवहार करना धर्म-विरुद्ध है। स्नेहमयी शचीमाताके सरल मनमें पुत्रके प्रति वात्सल्य प्रेमकी अधिकतासे इस प्रकार अनेक दुश्चिन्ताएँ उठा करती हैं। क्योंकि, यही एक बार नहीं बारंबार निमाईचाँद इसी प्रकार आश्चर्यपूर्वक सोना लाकर उनके हाथमें देता है।

सरल, वृद्ध गौराङ्ग-जननी इसका मर्म कुछ भी न समझकर चिन्तित होती हैं। वे किसीको कुछ कहती नहीं हैं। प्रभु इसी प्रकार माताको अपना ऐश्वर्य दिखलाते हैं, स्नेहमयी जननी पुत्र-स्नेहके वश यह समझ नहीं पातीं। शचीमाताका शुद्ध वात्सल्य भाव है। वे माधुर्य भावमें विभोर हैं। उनका भजन माधुर्य है। उसमें ऐश्वर्यका लेश भी नहीं है। प्रभु जननीको बीच-बीचमें इसी प्रकार ऐश्वय दिखलाकर परीक्षा लेते हैं। परन्तु उनका ऐश्वर्यभाव स्नेहमयी जननीके माधुर्यभावके सामने पराजित हो जाता है। भक्तके सामने श्रीभगवान् इस प्रकार सदा ही पराजित होते आये हैं। श्रीभगवान्‌के ऐश्वर्यको देखकर अनुरागी भक्त भुलावेमें नहीं पड़ सकता।

इस प्रकार गुप्तभावसे श्रीगौर भगवान् नदिया-धाममें विहार कर रहे हैं, परन्तु कोई उनको पहचान नहीं रहा है। प्रच्छन्न अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुका प्रच्छन्न भाव बड़ा मधुर है। प्रभुकी नवद्वीपलीला इसी कारण इतनी मधुर है। इसे प्रकट करते हैं, फिर भी कोई जान नहीं पाता। आनन्दमय लीलारस-विग्रह शचीनन्दनका तत्व कौन जान सकता है? उनके विशेष कृपापात्रके सिवा अन्य कोई उनको जान नहीं सकता।

—※—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेरहवाँ अध्याय

प्रभुका विद्या-विलास

एइ मत गुप्तभावे आछे विप्रराज। अध्ययन बिना आर नाहिं कोन काज॥
—चै. भा. आ. ७. १३१

शचीनन्दन गङ्गादासके विद्यालयमें विद्याभ्यास करते हैं। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरने अपने पुत्रको अपने प्रियबन्धु गङ्गादास पण्डितके हाथोंमें समर्पण कर दिया था। शचीमाता स्वयं गङ्गादास पण्डितके घर जाकर निमाईचाँदका सब भार उनके ऊपर देकर निश्चिन्त हो गयी हैं।

प्रभु अब विद्यारसमें उन्मत्त हैं। एक क्षण मात्रके लिए भी पोथी नहीं छोड़ते। चाहे कोई भी कार्य करते हों, हाथमें पोथी अवश्य रहती है।

अब शचीनन्दनकी अवस्था बारह वर्षकी हो गयी है। उनके रूपकी सीमा नहीं है। वे जब विद्यालयमें पठाभ्यास करने बैठते हैं तब उनको देखकर जान पड़ता है कि साक्षात् कामदेव हैं। शचीनन्दन अध्यापकके साथ छात्रवृन्द द्वारा परिवेष्टित होकर पोथी हाथमें लिये पाठ-चर्चा कर रहे हैं। उनकी अपरूप रूपछटासे विद्यालय आलोकित हो रहा है।

ललाट पर सुन्दर ऊर्ध्व तिलक है, सिरके घुँघराले बाल बड़े मनोहर हैं। कन्धे पर यज्ञोपवीत शोभित है। प्रसन्न हास्य मुखमें दाँतोंकी निराली शोभा है अद्‌भुत कमलनयन है। कच्छा, धोती और उत्तरीय वस्त्र शोभायमान हैं। जो देखता है वह देखता ही रह जाता है और 'धन्य धन्य' ध्वनि करता जाता है।

शचीनन्दन विद्यालयमें बैठकर अध्यापकके सामने ऐसी सुन्दरतापूर्वक सूत्रकी व्याख्या करते हैं कि उसे सुनकर गङ्गादास पण्डित के मनमें बड़ा आनन्द होता है। छात्रकी बुद्धि और विद्याके गौरवसे वे अपनेको गौरवान्वित समझकर अपने आसनसे उठकर प्रभुका हाथ पकड़कर सब विद्यार्थियोंके बीच उनको ले आते हैं। सर्व-प्रधान बनाकर उनको अपने सामने बैठाते हैं। प्रभुके विद्यागुरु गङ्गादास पण्डित बृहस्पतिके समान पण्डित हैं। उन्होंने स्नेह पूर्वक आशीर्वाद देते हुए शचीनन्दनसे कहा—"बेटा ऐसे ही मन लगाकर पढ़ते रहे तो तुम भट्टाचार्य बन जाओगे।"

प्रभुने इस पर लज्जित होकर नम्र भावसे निवेदन किया—"आप जिसको आशीर्वाद दें उसके लिए भट्टाचार्य पद क्या दुर्लभ है।"

धर्मरक्षक हमारे गुरूभक्त प्रभु सब प्रकारसे गुरूकी मर्यादाकी रक्षा करते थे। धर्म-संस्थापक प्रभु सर्वधर्म-नीतिके गौरवकी रक्षा कर गये हैं। विद्यागुरू, दीक्षागुरू, शिक्षागुरू, माता-पिता, गुरूजन आदिकी मर्यादा और गौरवकी रक्षा करके शचीनन्दनने जगद्‌गुरू पदको प्राप्त किया। लोक-शिक्षाके लिए सर्वधर्म-संस्थापक प्रभुका नदियामें आविर्भाव हुआ। नदियाके अवतार, लोकशिक्षाके अवतार, धर्मशिक्षाके अवतार और प्रेम-शिक्षाके अवतार हैं। स्वयं आचरण करके श्रीगौराङ्ग प्रभु सर्वधर्मकी शिक्षा दे गये हैं।

शचीनन्दन गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें पढ़ते हैं। प्रधान छात्रोंमें बहुतसे अध्यापकके समान पण्डित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हैं। परन्तु प्रभु जिससे जो कूट प्रश्न पूछते हैं, उसका कोई उत्तर नहीं दे पाता। तब प्रभु अपने प्रश्नका आप उत्तर देते हैं, अपने प्रश्नकी मीमांसा आप करते हैं। अपनी व्याख्या आप स्थापन करते हैं, और पीछे स्वयं उसका खण्डन करते हैं। यह देखकर सब छात्र चकित हो जाते हैं। यह सुनकर गङ्गादास पण्डितके मनमें भय और हर्ष होता है। प्रभुको गोदमें लेकर वे सबके सामने आनन्दसे नृत्य करते हैं, शचीनन्दन इस समय विद्यारसमें, उन्मत्त हैं, शास्त्र-चर्चाके सिवा और कोई चेष्टा नहीं अन्य कोई कार्य नहीं है। स्नान, आहार और पर्यटनमें विद्या-चर्चाके सिवा अन्य कोई बात नहीं करते।

तेरह वर्षकी उम्रके बालकके मुखसे शास्त्र तत्त्व सुननेमें बड़ा ही मधुर लगता है। नदियाके अध्यापक-गण निमाईचाँदको लेकर शास्त्रतत्त्वकी आलोचना करके बड़ा सुख पाते हैं। सभी उनको प्रेम पूर्वक बुलाकर अपने-अपने विद्यालयमें ले जाते हैं, और छात्रोंके साथ शचीनन्दनका परिचय करा देते हैं, छात्रोंसे भेंट होने पर विद्यारसमें उन्मत्त हमारे प्रभु उनके साथ शास्त्र-चर्चा प्रारम्भ कर देते। कूट प्रश्न पछते हैं। कोई उनके प्रश्नका उत्तर नहीं देता। तब शचीनन्दन मधुर हँसी हँसकर अपने प्रश्नका उत्तर आप ही देते हैं, और प्रतिकूल व्याख्या करके सबको विस्मितकरते हैं। उन दिनों नवद्वीपमें सहस्रों विद्यालय, सहस्त्रों अध्यापक, और लाखों छात्र थे। ऐसा कोई विद्यालय न था, जहाँ श्रीपाद जगन्नाथ-मिश्रनन्दनका आना-जाना न होता हो। ऐसा अध्यापक न था, जो शचीनन्दनको न जानता हो। ऐसा कोई विद्यार्थी न था, जिसके साथ निमाईचाँदका परिचय न हो। गङ्गादास पण्डितको इससे बहुत आनन्द मिलता है। सारी नदियाके लोग शचीनन्दनकी विद्या-बुद्धिकी प्रशंसा करते हैं। सब अध्यापक पण्डित लोग निमाई-चाँदकी तीक्ष्ण बुद्धि-वृत्ति देखकर परस्पर चर्चा करते हैं कि मिश्रपुरन्दर-नन्दन नदियामें सर्वप्रधान पण्डित होंगे। शचीमाताके कानोंमें ये सब बातें जाती हैं। व आनन्दसे आत्मविभोर होकर ठाकुरद्वारेपर जाकर माथा टेकती हैं और कहती हैं, "ठाकुरजी! मेरे सोनेके बच्छाको दीर्घजीवि बनाये रक्खो। उसकी सांसारिक बुद्धि कुछ सुधर जाय।"

घरपर आकर भी निमाईचाँद माताके साथ पाठकी बात करते हैं, शास्त्र-चर्चा करते हैं। स्नेहमयी जननी पुत्रके मुँहसे मधुमय धर्मतत्व सुनकर मनमें बड़ा आनन्द पाती हैं, सारे दुःख भुल जाती हैं। प्रभु घर-गृहस्थीकी कुछ परवा नहीं करते। सदा ही विद्यारसमें निमग्न रहते हैं। उनके पाण्डित्य और प्रतिभाका पूर्ण विकास होने लगा है। चौदह वर्षके बालक शचीनन्दनको अभीसे नदियाके लोग निमाई पण्डित कहकर पुकारने लगे हैं। निमाईचाँद यह सुनकर मृदु-मधुर मुस्कानके साथ प्रेमपूर्वक उनको करुण दृष्टिसे देखते हैं। इस मृदु हास्यका मर्म यह है कि "तुम लोग मेरा उपहास करते हो? अच्छा, फिर देखोगे कि निमाई पण्डित नवद्वीपमें सब पण्डितोंका शिरोमणि होगा।"

प्रभुके विद्या-विलासका प्रधान स्थान गङ्गाका घाट है। गङ्गाजीके घाटपर क्या स्नानके समय, क्या सन्ध्याकालमें भ्रमणके समय शचीनन्दन छात्र-गणसे वेष्टित होकर विद्याचर्चा करते हैं। चौदह वर्षके निमाईचाँद बड़े-बड़े नामी विद्वानोंके साथ जिस प्रकार विद्या-चर्चा और तर्क-वितर्क करते थे, उनको देखकर नदियाके लोगोंके मनमें होता था कि मानो साक्षात् वृहस्पतिने शचीनन्दनके रूपमें मिश्रगृहमें जन्मग्रहण किया है। सहस्रों छात्रोंके बीच गङ्गाके तीरपर खड़े होकर अति गम्भीर भावसे, कठिन व्याकरणके सूत्र, अलङ्कार शास्त्रके कूटार्थ, धर्म-शास्त्रका मर्म, आजानुलम्बित भुजाओंको आन्दोलित करके नदियाके अवतार श्रीनवद्वापचन्द्र उपस्थित श्रोतृ और विद्यार्थीवृन्दको अति प्राञ्जल भावसे अति सहज मधुर भाषामें समझा देते थे। सब लोग कान लगाकर उनके श्रीमुखकी व्याख्या सुनते थे,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोई कुछ कहता न था। उनके अपरूप रूपसे सभी मुग्ध थे। उनकी अपूर्व पाण्डित्य-प्रतिभासे सभी स्तम्भित थे। नवद्वीपमें गङ्गाके अनेक घाट थे। प्रतिदिन लाखों आदमी गङ्गाके घाटपर स्नान करते थे। प्रत्येक घाटपर पण्डित और विद्यार्थीगण स्नान करते थे। शचीनन्दन एक घाटसे दूसरे घाटपर शास्त्रार्थ करने जाते थे। प्रत्येक घाटपर छात्रोंके साथ उनका शास्त्रार्थ और वाग्युद्ध होता था। पण्डितोंके साथ शास्त्र-चर्चा होती थी। इस छोटी अवस्थामें निमाईचाँद वृद्ध पण्डितोंके साथ भी शास्त्रार्थ करनेमें नहीं हिचकते थे। बहुत लोग उनको बहुत उद्धत स्वभावका बालक कहकर निन्दा करते थे। शचीनन्दन उन सब बातोंको सुनकर तनिक भी परवा नहीं करते थे।

विद्या-चर्चा और शास्त्रार्थ करते हुए किसी-किसी दिन निमाईचाँद छात्रोंके साथ गङ्गापार होकर कुलियाके घाटपर जा उपस्थित होते। वहाँ भी वही वाग्युद्ध, वहाँ भी वही विद्या सम्बन्धी वाद-विवाद, वहाँ भी वही शास्त्रार्थ समान रूपसे चलता था। गङ्गाके उसपार शास्त्रार्थ समाप्त करके फिर इस पार आते थे।

स्नान करके घर लौटनेके समय भी मार्गमें यदि किसीसे भेंट हो जाती तो भीगे कपड़े निमाईचाँद उसे रास्तेमें पकड़कर बैठ जाते और शास्त्र-चर्चा करने लगते। सिरपर गमछा बाँधकर प्रशस्त वक्षः-स्थलके ऊपर शुभ धवल उपवीत गुच्छसे शोभित 'हेमाभदिव्यछविसुन्दर' शचीनन्दन नदियाके मार्गमें वृक्षके तले खड़े होकर प्रिय सखावृन्दके साथ दिन दोपहर तक विद्यारसके आनन्दमें लगे रहते, पण्डितोंके साथ शास्त्रार्थ करते थे। विद्या-चर्चा उठनेपर उनकी आहार-निद्रा तक बन्द हो जाती थी।

प्रातःकाल शचीनन्दन विद्यालयमें जाते थे, केवल भोजनके समय घर आते थे। भोजनके अन्तमें पुनः पोथी काँखमें लेकर गुरुके घर चले जाते थे। अपराह्णमें गङ्गाके तटपर छात्र सम्मेलन होता था। वहाँ निमाईचाँद सर्वेसर्वा होते थे।

गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें बहुत वृद्ध छात्र पाठाभ्यास करते थे। शचीनन्दनकी प्रतिभाके सामने सबको पराजय स्वीकार करनी पड़ती थी। प्रभुकी आयु उस समय पन्द्रह वर्ष थी। तीस-बत्तीस वर्षके छात्र गंगादास पण्डितके विद्यालयमें पढ़ते थे। उनमें कमलाकान्त, कृष्णानन्द और मुरारिगुप्त प्रधान थे। अलङ्कार शास्त्रमें कमलाकान्त अद्वितीय थे; तन्त्रसार कर्त्ता कृष्णानन्द अतिशय प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। मुरारि गुप्त सारे शास्त्रोंमें पारदर्शी थे। प्रभुको बालक समझकर वे लोग उनके साथ शास्त्र-चर्चा या तर्क-वितर्क नहीं करना चाहते थे, परन्तु शची-नन्दन उनको छोड़ने वाले नहीं थे। इसी कारण उनके साथ प्रभुका वाग्युद्ध होता था। मुरारि गुप्तके साथ प्रभुका एक दिन प्रबल शास्त्रार्थ हुआ था। उसका विवरण आगे आयगा।

व्याकरणपर टिप्पणी

इसी समय शचीनन्दनने घरपर बैठकर व्याकरणकी एक सुन्दर टिप्पणी लिखी। व्याकरण पढ़ते-पढ़ते प्रभुने यह टिप्पणी लिखकर विद्यागुरूके हाथमें दी। गङ्गादास पण्डित वह टिप्पणी देखकर आश्चर्य चकित हो उठे। उनके समान वैयाकरण पण्डित उस समय नवद्वीपमें दूसरा कोई न था। उन्होने सबके सामने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया कि वे स्वयं भी वैसी टिप्पणी नहीं लिख सकते। नदियाके समस्त अध्यापक वर्गको उन्होंने अतिशय आग्रह-पूर्वक शचीनन्दनकी लिखी व्याकरणकी टिप्पणी दिखलायी। सभी निमाईचाँदको धन्य-धन्य कहने लगे। नवद्वीपके विद्यालयोंमें किसी ग्रन्थको प्रचलित करना उस समय अत्यन्त कठिन कार्य था। परन्तु शचीनन्दनकी टिप्पणी नवद्वीपके आध्यापक और छात्र-समाजमें बिना प्रयास प्रचलित हो गयी। इससे प्रभुका पाण्डित्य-प्रतिभा-सौरभ और यश-गौरव सर्वत्र व्याप्त हो गया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने जब बङ्गदेशमें शुभयात्राकी थी, पूर्वबङ्ग-वासियोंको प्रेम-दान और विद्या-दान उनके दो उद्देश्य थे। उस समय वहाँके छात्रों और अध्यापकोंने मिलकर प्रभुसे कहा था—"हम लोगोंका एक निवेदन है, हम लोगोंको भी कुछ विद्या-दान दीजिये। इसी उद्देश्यसे हम लोग आपकी टिप्पणी पढ़ते और पढ़ाते हैं। हम लोगोंको आप अपना शिष्य बनालें। आपकी कीर्ति सारे संसारमें बनी रहे।"

यह टिप्पणी प्रभुकृत कलाप व्याकरणकी टिप्पणी है। इसका प्रचार केवल नवद्वीप तक ही सीमित न था, सम्पूर्ण बङ्गालके विद्यालयोंके अध्यापकों और छात्रोंमें इसका प्रचार हुआ था।

न्यायशास्त्रका अध्ययन

व्याकरण और साहित्यकी पढ़ाई समाप्त करके शचीनन्दनने न्यायशास्त्र पढ़नेकी इच्छा प्रकट की। नवद्वीपके सुप्रसिद्ध नैयायिक पण्डित श्रीवासुदेव सार्वभौमके विद्यालयमें प्रभुने प्रवेश प्राप्त किया। यह वासुदेव सार्वभौम मिथिला देशसे सारा न्याय-शास्त्र कण्ठस्थ करके नवद्वीपमें आकर उसका प्रचार कर रहे थे। उनकी अपूर्व प्रतिभाके बलसे नवद्वीपमें न्यायशास्त्रका विद्यालय नया-नया संस्थापित हुआ था। देश-विदेशमें उसकी ख्याति बढ़ रही थी। उड़ीसाके अधिपति महाराजा प्रताप रुद्रने वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्यको श्रीपुरुषोत्तम तीर्थमें बुला लिया था। वहाँ उन्होंने उनको राजपण्डितके पदपर आसीन किया था। संन्यास-ग्रहणके बाद नीलाचलमें जाने पर प्रभुने वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्य पर कृपा करके उनको आत्मीय बना लिया था। इन सब लीलाओंके वर्णनका यहाँ स्थान नहीं है। प्रभुकी नीलाचल लीलाके वर्णनके समय यह सब लीला-कथाएँ विस्तार पूर्वक वर्णित होंगी।

वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्यके न्यायशास्त्रके विद्यालयमें अनेक छात्र थे। वे सभी वृद्ध थे। अल्पवयस्क छात्र उनके विद्यालयमें नहीं थे। निमाईचाँद पन्द्रह वर्षकी आयुमें इस विद्यालयमें प्रविष्ट हुए, तथापि अध्यापक शिरोमणि सार्वभौम भट्टाचार्यने उनको बालकवत् नहीं देखा। वृद्ध छात्रोंके बीचमें जाकर प्रभु बैठते थे। सबका लक्ष्य उनके अपूर्व प्रतिभापूर्ण सुन्दर मुखचन्द्रकी कान्ति पर था, उनकी सुवलित लावण्यमय अङ्ग-ज्योति पर था।

शचीनन्दन न्यायकी पोथीकी डोर खोलकर पाठाभ्यास करते, और भट्टाचार्यके मुखसे न्याय-शास्त्रका विचार श्रवण करते। कभी-कभी वृद्ध छात्रोंके साथ कूट तर्क लेकर स्वयं शास्त्रार्थमें प्रवृत्त होते। अध्यापक सार्वभौम भट्टाचार्य शचीनन्दनके साहसको देखकर विस्मित होते। वे अपनी हँसी रोक नहीं पाते।

गाँवके सम्बन्धसे वे शचीमाताको बुआ कहकर सम्बोधन करते। शची बुआके पुत्रकी तीक्ष्ण बुद्धि तथा अद्भुत तर्क और विचार-शक्ति देखकर वे मनमें बहुत आनन्द अनुभव करते। परन्तु अपने मुखसे शचीनन्दनको कुछ नहीं कहते। अपने इस नवीन विद्यार्थीके साथ वृद्ध छात्रोंका तर्कयुद्ध देखते और मन ही मन हँसते।

मीमांसाके लिए बीच-बीचमें वृद्ध छात्रगण भट्टाचार्यके पास जाते। शचीनन्दन सबसे पहले जाकर अध्यापकके सामने खड़े होते। सार्वभौम भट्टाचार्य दोनों पक्षकी बात सुनकर नवीन छात्र शचीनन्दनके पक्षका समर्थन करते। इससे निमाई-चाँदके मनमें बड़ा आनन्द होता। वे दूने उत्साहके साथ पाठमें मनोयोग प्रदान करने लगे। वृद्ध छात्र-गण शचीनन्दनकी असाधारण बुद्धि और प्रतिभा देखकर उनके साथ तर्क और शास्त्रार्थ करनेका साहस नहीं करते।

इन सब वृद्ध छात्रोंमें दीधितिके सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार रघुनाथ तर्कशिरोमणि भी थे। रघुनाथके मनमें बड़ी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आशा थी कि वह भारतवर्षमें सर्वश्रेष्ठ न्यायके पण्डित होंग। शचीनन्दनकी प्रतिभा देखकर उनकी यह आशा धूमिल हो गयी। शचीनन्दनके साथ रघुनाथकी घनिष्ठता हो गयी। दोनों एक विद्यालयमें एक अध्यापकके पास पाठाभ्यास करते हैं। दोनोंमें मित्रताका बन्धन हो गया है।

शचीनन्दनके मधुर चरित्रमें, सुमिष्ठ आलापमें रघुनाथ मुग्ध तो होते थे, परन्तु उनकी अपूर्व प्रतिभा देखकर ईर्ष्यासे वे दिन-प्रतिदिन निष्प्रतिभ होने लगे। विद्यालयके छात्रगण रघुनाथके म्लान-मुखको देखकर उनसे पूछते—"रघुनाथ! तुमको क्या कोई रोग हो गया है? तुम दिन-प्रतिदिन इस प्रकार मलिन क्यों होते जा रहे हो? तुम्हारे मनमें स्फूर्त्ति क्यों नहीं है?"

रघुनाथ कोई उत्तर नहीं देते। मनकी बात मनमें ही रखते। रघुनाथ अध्यापकके अति प्रिय छात्र थे। वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्य उनको प्राण-तुल्य देखते थे। रघुनाथको हतोत्साह देखकर वे भी बीच-बीचमें इसका कारण पूछते। परन्तु रघुनाथ मनकी बात खोलते नहीं। वे दिन-रात सिर-तोड़ परिश्रम करके पाठाभ्यास करते, जिससे शचीनन्दनके समान उनकी बुद्धि तीक्ष्ण हो, इसके लिए प्राणपनसे चेष्टा करते।

निमाईचाँद चञ्चल बालकके समान रास्ते-रास्ते खेल करते घूमते। विद्यालयमें आकर एकबार पोथी लेकर बैठते ही उनका पाठाभ्यास पूर्ण हो जाता। यह देखकर रघुनाथके मनमें बड़ी ईर्ष्या होती। वे निमाईचाँदसे प्रेम करते हैं। उनके अलौकिक गुण और अपरूप रूप पर रघुनाथ मुग्ध हैं।

एक दिन रघुनाथने शचीनन्दनसे मित्रतापूर्वक पूछा,—"बन्धुवर! बतलाओ तो रातको चुपके-चुपके तुम किसके पास पढ़ते हो?" निमाईचाँदने हँसते हुए उत्तर दिया—"सरस्वतीके पास मैं पढ़ता हूँ।" यह सुनकर दोनों उस दिन खूब हँसे।

उस दिन सार्वभौम भट्टाचार्यने रघुनाथको बुलाकर एक न्यायके कूट प्रश्नका समाधान करनेके लिए कहा। रघुनाथ वह किसी भी प्रकारसे न कर सके। इससे दुःखी होकर रघुनाथने उस दिन भोजन नहीं किया। तीसरे पहर अति कष्टपूर्वक उसका उत्तर ठीक करके रघुनाथने अपने विद्यागुरुको जाकर सुनाया।

तत्पश्चात् दिनभरके बाद अपराह्णमें अपने घर जाकर रसोई बनाने बैठे। उसी समय पोथी हाथमें लिये शचीनन्दन अचानक हँसते हुए वहाँ पहुँच गये। बन्धुवर रघुनाथको असमय रसोई बनाते देखकर प्रभुने उसका कारण पूछा। रघुनाथने निष्कपट भावसे सारी बात शचीनन्दनको बतला दी। यह सुनकर सर्वज्ञ प्रभुने रघुनाथसे मधुर-मधुर मुस्काते हुए पूछा, "वह प्रश्न क्या है? मुझको एक बार सुनाओ तो?" रघुनाथने बताया, और सुनते ही सरस्वती-पुत्र हमारे प्रभुने तत्काल उसका उत्तर दे दिया।

रघुनाथ चकित होकर प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर ताकने लगे। रसोई बनाना छोड़कर रघुनाथने उठकर प्रभुके दोनों हाथ पकड़कर निष्कपट भावमें कातर स्वरसे पूछा, "विश्वम्भर! ठीक बतलाओ। तुम मनुष्य हो कि देवता? मनुष्यको तो इतनी बुद्धि नहीं होती। तुम निश्चय ही साक्षात् सरस्वतीके वरपुत्र वृहस्पति हो।"

शचीनन्दन यह सुनकर मचककर हँसे और रघुनाथको भोजन कराकर गङ्गा-तीरपर ले गये। गङ्गा-तीरपर बैठकर दोनों आदमी बहुत देर तक विद्या-चर्चा करते रहे।

रघुनाथने देखा कि शचीनन्दन सामान्य पण्डित नहीं हैं। विद्वत्ता ही उनका प्रधान गुण नहीं है। इसके अतिरिक्त उनमें कुछ ऐसी बात है जो मनुष्यमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संभव नहीं है। इस प्रकारकी असाधारण प्रतिभासे सम्पन्न लोग मनुष्योंमें नहीं मिलते। शचीनन्दन नर रूपमें साक्षात् वृहस्पति हैं। इतना बड़ा तीक्ष्ण-बुद्धि सम्पन्न विद्यार्थी अब तक नदियामें कोई कभी देखने में नहीं आया।

रघुनाथकी बात ध्रुवसत्य थी। वे प्रभुको पहचान करके भी पहचान नहीं पा रहे हैं। यही तो प्रभुकी लीलाका रहस्य है। श्रीगौराङ्ग प्रभु कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। उनकी लीलामें यही माधुरी है।

न्यायशास्त्रपर टिप्पणी और रघुनाथ

शचीनन्दन अब न्यायशास्त्र पढ़ रहे हैं, साथ ही न्यायपर एक टिप्पणी लिखना प्रारम्भ कर दिया है। रघुनाथने भी इसी समय अपने दीधिति ग्रन्थकी रचना प्रारम्भ कर दी है। टिप्पणी और ग्रन्थ-लेखनके बारेमें कोई किसीको कुछ नहीं कह रहा है। यह सब कार्य बहुत गुप्त रूपमें सम्पन्न हो रहा है। क्योंकि न्यायशास्त्रकी टिप्पणी लिखना बड़ा कठिन कार्य है।

निमाईचाँद और रघुनाथ दोनों ही विद्यार्थी हैं। बड़े-बड़े अध्यापकगण इस विषम दुरूह कार्यमें हाथ डालनेका साहस नहीं करते। ये नवीन छात्र होकर इस दुरूह कार्यमें हाथ डाल रहे हैं, इसी कारण यह बात कोई किसीसे प्रकट नहीं कर रहा है। यह कोई व्याकरणकी टिप्पणी नहीं है। यह न्यायशास्त्रके कूट तर्क और शास्त्रार्थकी टिप्पणी है, वृद्ध लोगोंका काम है।

प्रभुकी इच्छासे रघुनाथको किसी प्रकार पता लग गया कि निमाईचाँद न्यायशास्त्रपर एक टिप्पणी लिख रहे हैं। अपने सहपाठीकी प्रतिभा और विद्याबुद्धि वे भलीभाँति जानते थे। यह समाचार सुनकर वे निराश हो गये। उनका मुँह सूख गया। उन्होंने सोचा कि निमाईचाँदके ग्रन्थके सामने उनका ग्रन्थ स्थान पाने योग्य न होगा।

रघुनाथ पाण्डित्याभिमानी हैं। उनकी उच्च-अभिलाषा है कि न्यायशास्त्रमें वे जगत्में अद्वितीय पण्डित होंगे। उनके जीवनकी आशा है कि उनका दीधिति ग्रन्थ जगत्में न्यायशास्त्रका सर्वप्रधान ग्रन्थ होगा। उन्होंने जब सुना कि शचीनन्दनने न्यायकी टिप्पणी लिखना प्रारम्भ किया है, तब उनकी सारी आशा चूर हो गयी। रघुनाथकी विद्वत् समाजमें प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त करनेकी बड़ी इच्छा थी। शचीनन्दन प्रतिभा और विद्या बुद्धि उनकी प्रतिष्ठा प्राप्तिके मार्गमें कण्टक बन गये।

एक दिन विद्यालयमें रघुनाथने शचीनन्दनको पकड़कर पूछा—"बन्धुवर! तुम न्यायपर एक टिप्पणी लिख रहे हो?" निमाईचाँदने हँसकर उत्तर दिया, "यह बात तुमको कैसे ज्ञात हुई? मैं नाम-मात्रके लिए टिप्पणी लिखता हूँ, परन्तु कुछ-कुछ लिखना प्रारम्भ किया है।"

रघुनाथ दीधिति ग्रन्थ लिख रहे हैं, यह शची-नन्दन जानते न थे। अथवा जानकर भी उन्होंने यह बात नहीं उठायी। हमारे सर्वज्ञ प्रभु सब कुछ जानते हैं। रघुनाथके साथ कुछ रङ्ग करनेकी इच्छासे प्रभुने यह बात उस समय नहीं उठायी। रघुनाथकी बड़ी इच्छा थी कि निमाईचाँदकी टिप्पणी एक बार देखें। वे प्रभुसे बोले—"बन्धुवर! तुम्हारी टिप्पणी मैं एक बार देखना चाहता हूँ।" प्रभुने उत्तर दिया—"बहुत अच्छा! कल मैं साथ लाऊँगा।"

दूसरे दिन प्रभु अपनी टिप्पणी लेकर विद्यालयमें आये। रघुनाथसे बोले, "आज नावसे गङ्गा-पार चलेंगे, उसी समय अपना ग्रन्थ पढ़कर तुम्हें सुनाऊँगा। रघुनाथ और शचीनन्दन उस दिन नौकापर चढ़कर गङ्गाके दूसरे पार कुलियाके लिए रवाना हुए। नौकापर बैठकर दोनों आदमी बीच गङ्गामें उस न्यायकी टिप्पणीकी आलोचना करने लगे। उस नौकापर और कोई न था। दोनों आदमी एकत्र विद्यारसमें उन्मत्त होकर न्यायके कूट तर्कपर विचार करने लगे। शचीनन्दन अपनी टिप्पणीको पढ़ रहे हैं और व्याख्या कर रहे हैं। रघुनाथ सुन रहे हैं।

प्रभुकृत अति संक्षिप्त तथा प्राञ्जल भाषामें लिखित कठिन न्यायशास्त्रकी टिप्पणी सुनकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रघुनाथका मुँह एकबारगी सूख गया। उनका विद्याका गर्व चूर्ण हो गया। वे दस पृष्ठ लिखकर भी जिस बातको सुस्पष्ट व्यक्त नहीं कर सकते थे, निमाईचाँदने उसकी दो-तीन वाक्योंमें अति परिष्कार पूर्वक व्याख्याकर दी थी। अन्तर्यामी प्रभु सब जानते हैं। रघुनाथके मनकी अवस्था वे समझ गये। जितनो ही वे अपनी टिप्पणी पढ़ते थे, उतना ही रघुनाथका मुँह सूखता जाता था।

रघुनाथ कुछ बोलते तो न थे, परन्तु हृदयमें दारुण व्यथा थी। क्योंकि उन्होंने जान लिया कि शचीनन्दनकी इस टिप्पणीका प्रचार होनेपर उनके ग्रन्थको कोई न पढ़ेगा। विद्वत् समाजमें उनकी प्रतिष्ठा प्राप्ति दूरकी बात हो जायगी। प्रतिष्ठा-प्राप्तिकी आशा उनके मनमें इतनी बलवती हुई कि उनके प्रतिष्ठा-लाभमें विघ्नस्वरूप शचीनन्दनकी न्यायकी टिप्पणी उनकी आँखोंमें शूलके समान चुभने लगी। प्रभुके हाथमें स्थित उस ग्रन्थको वे देख न सके। दारुण मनोव्यथासे ईर्ष्याग्निमें दग्ध होकर मर्म-व्यथासे व्यथित रघुनाथ दोनों हाथोंसे आँखें मूँदकर बालकके समान रोने लगे।

प्रभु मानो कुछ जानते नहीं हैं, उन्होंने ग्रन्थपाठ करना बन्दकर दिया और झटपट अपनी कोमल भुजाओंको फैलाकर अपने प्रियबन्धु रघुनाथको दृढ़ आलिङ्गन प्रदानकर विस्मयपूर्वक पूछा—"बन्धुवर! तुम्हारे दुःखका कारण क्या है? तुम रोते क्यों हो? मैंने क्या तुम्हारे मनको कोई कष्ट दिया? भाई! तुम्हारा मलिन मुख देखकर, तुम्हारी आँखोंमें जल-धारा देखकर मेरे मनमें बड़ा दुःख हो रहा है।" यह कहते निमाईचाँद बन्धुप्रेममें गद्गद हो उठे, उनके कमलनयनमें भी अश्रु-बिन्दु दिखलायी देने लगे।

रघुनाथने रोते हुए अपने मनके गुप्त भावको व्यक्त कर दिया। निमाईचाँदको सारी बात खोलकर कह दी। रघुनाथने प्रभुसे स्पष्ट कहा—"बन्धुवर! तुम्हारी न्यायकी टिप्पणी सुनकर मेरा मन बड़ा विचलित हो गया। बहुत परिश्रम करके मैंने अपना ग्रन्थ लिखा है। अब देख रहा हूँ कि वह श्रम विफल हो रहा है। तुम्हारे ग्रन्थकी तुलनामें मेरा ग्रन्थ अति तुच्छ है। मेरी बड़ी आशा थी कि न्यायशास्त्रमें मैं जगत्प्रसिद्ध पण्डित होऊँगा। मेरा ग्रन्थ सर्वोत्तम ग्रन्थ होगा। तुम्हारे इस ग्रन्थके रहते मेरी जीवनकी साध पूरी नहीं हो सकती।" यह कहते-कहते रघुनाथकी आँखोंमें पुनः आँसू आ गये।

शचीनन्दन उनके प्रियबन्धु हैं। वे रघुनाथके दुःखसे दुःखित हो उठे। बन्धुवरके जीवनकी साध पूरी करनेकी उनकी इच्छा हुई। अपने बन्धुवरकी प्रतिष्ठाकी प्राप्तिके मार्गमें कण्टक स्वरूप अपने ग्रन्थको बीच गङ्गामें फेंक दिया, और रघुनाथको आश्वासन देते हुए कहने लगे—"बन्धुवर! इसके लिए दुःख क्यों करते हो? इतनी चिन्ताकी क्या बात है? तुम मनमें दुःख न मानना और व्यर्थ मनको व्यथित न करना। तुम्हारी प्रतिष्ठा-प्राप्तिके मार्गमें मैं किसी प्रकार विघ्न प्रदान करना नहीं चाहता।" इतनी बात कहते-कहते प्रभुके कमलनयनमें जल आ गया।

शचीनन्दनकी इस प्रकारकी बात सुनकर, उनके अपूर्व स्वार्थ-त्याग और उदारताको देखकर रघुनाथ स्तम्भित और लज्जित हो उठे। वे मन-ही-मन सोचने लगे, "निमाईचाँद क्या मनुष्य है? मनुष्य तो ऐसा काम नहीं कर सकता। शचीनन्दन निश्चय ही मनुष्य नहीं है।"

शचीनन्दनने पुनः रघुनाथसे कहा—"रघुनाथ! न्यायशास्त्र निष्फल शास्त्र है। इसको पढ़कर या इसकी आलोचना करके परमार्थ प्राप्त नहीं होता। आजसे मैंने न्यायशास्त्र पढ़ना छोड़ा। तुम इसमें मजा लेते हो, तुम्हीं इसे पढ़ो।" शचीनन्दनकी ऐसी बात और कार्यसे रघुनाथ बहुत लज्जित हुए। प्रभुके प्रति रघुनाथकी जो श्रद्धा थी, वह उस दिनसे सौगुनी बढ़ गयी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दोनों मित्रोंने मिलकर गङ्गाजीके बीच जो कार्य किया, उसे नदियाके लोग जान न सके। रघुनाथ और प्रभुके सिवा इन बातोंको दूसरा कोई न जान सका।

इस लीलासे प्रभुके अपूर्व स्वार्थत्याग और उदारताका पता चलता है। उन्होंने इससे कलिके जीवोंको यह शिक्षा दी कि लोभ, पूजा-प्रतिष्ठा, ये अति तुच्छ पदार्थ हैं। विद्या गर्वित रघुनाथको मर्माहत कर दिया। प्रतिष्ठा-प्राप्तिके मोहसे अत्यन्त मुग्ध होनेके कारण पाण्डित्याभिमानी विद्यागर्वित रघुनाथ श्रीगौर भगवान्‌का साक्षात् दर्शन प्राप्त करके भी विशेष कृपापात्र न हो सके।

इस घटनाके दूसरे ही दिनसे शचीनन्दनका न्यायशास्त्र पढ़ना बन्द हो गया। अब वे इस निष्फल न्यायशास्त्रकी चर्चा नहीं करते। इस समय प्रभुकी अवस्था केवल सोलह वर्षकी है। इस अल्पावस्थामें ही उन्होंने न्यायका विद्यालय छोड़कर स्वयं एक विद्यालय खोला।

मुरारि गुप्त और प्रभु

प्रभु जब गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें पढ़ते थे, मुरारि गुप्तके साथ समय-समयपर उनकी झड़प हो जाती थी। मुरारि गुप्तकी अवस्था प्रभुसे आठ-दस वर्ष अधिक थी। वे विद्यालयके पुराने और प्रधान छात्र थे, सब शास्त्रोंमें उनका अधिकार था।

विद्यारसमें उन्मत्त होकर प्रभु दिन-रात शास्त्र-चर्चामें ही समय व्यतीत करते हैं। ऊषाकालमें जागकर विद्यालयमें जाते हैं, साथमें अनेक छात्र होते हैं। गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें जब प्रभु छात्रोंसे परिवेष्ठित होकर योगपट्टपर वस्त्र परिधान करके वीरासनमें बैठते हैं, तब उनकी अङ्गकान्ति और वेश-भूषाको देखकर सब मुग्ध हो जाते हैं।

गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें जाकर प्रभु राजपुत्रके समान वीरासन पर बैठे हैं। अपना विद्यालय खोला तो है, परन्तु प्रभु पढ़ना नहीं छोड़ रहे हैं। सब छात्र उनको घेरकर बैठे हैं। सब उनके पास जाकर पाटकी बात, फाँकी (गूढ़ प्रश्न) की बात पूछते हैं। शचीनन्दन सबको यथार्थ उत्तर देकर सन्तुष्ट करते हैं। उनके पास जो छात्र पोथी लेकर कुछ पूछने नहीं आते, उनका प्रभु नानाप्रकारसे उपहास करते हैं।

मुरारि गुप्त प्रधान छात्र हैं। वे विद्यालयमें किनारे एक स्थानमें बैठकर पाठाभ्यास कर रहे हैं। दूसरी ओर उनकी दृष्टि नहीं है। पाठमें उनकी प्रगाढ़ अभिरुचि है। प्रभुकी तीक्ष्ण दृष्टि मुरारिगुप्तके ऊपर पड़ी। वे मुरारिके ऊपर कटाक्ष करने लगे।

प्रभुका यह लीलारङ्ग है। जो उनसे स्वतन्त्र रहकर पाठाभ्यास करते हैं, उनके पास कुछ पूछने नहीं आते, उनके ऊपर प्रभु उपहास-वाण-वर्षा करते हैं, और उनकी ओर देख-देखकर मधुर मृदु मुस्कान करते हैं। शचीनन्दन पाण्डित्यमें वृहस्पतिके समान हैं।

यह मुरारि गुप्तके समान प्रधान छात्रोंको अच्छा नहीं लगता। अच्छा न लगनेकी बात भी है। शचीनन्दन आयुमें उनसे बहुत छोटे हैं, विद्यालयमें वे नवागत छात्र हैं। उनको विद्या-बुद्धि हो सकती है, परन्तु उनके उद्धत स्वभावके प्रति सभी आक्षेप करते हैं। यह बात एक दिन अध्यापकके कानमें पहुँची। गङ्गादास पण्डित हँसकर बोले—"शचीनन्दनकी बुद्धि-शक्ति असाधारण है, वह बिना पढ़े पण्डित बनेगा और तुम लोगोंको पढ़ावेगा। अध्यापकका उत्तर सुनकर वृद्ध छात्रगण चुप हो रहे।

प्रभुने मुरारि गुप्तको लक्ष्य करके कहा—"यहाँ जो बड़ा विद्वान् है। वह आकर मेरी स्थापनाका खण्डन करके दिखा दे।"

मुरारि गुप्तने उसे सुनकर अनसुनी कर दी। वे विद्यालयमें एक ओर बैठकर अपने मनसे पाठाभ्यास

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करते हैं। परन्तु प्रभु उनको छोड़ने वाले नहीं हैं। मुरारिके ऊपर उनकी बड़ी कृपा है। प्रधान छात्र कृष्णानन्द और कमलाकान्तके साथ वे इस प्रकारका रस-विग्रह नहीं करते। मुरारि गुप्तके साथ ही उनकी ऐसी खटपट चलती थी। कारण यह था कि श्रीगौर भगवान्‌की अपने नित्य दास मुरारि गुप्तके प्रति अपार करुणा थी। इस कृपाके निदर्शनके रूपमें उनके साथ प्रभुका यह प्रेम-कलह चलता था।

मुरारि गुप्त जब किसी प्रकार भी बातें करने पर राजी न हुए तो चतुर शचीनन्दन उनके ऊपर मधुर कटाक्ष-वाण चलाकर उनका हृदय जर्जरित करने लगे। मुरारि गुप्त जातिके वैद्य थे। वे अपने चिकित्साके व्यवसायको छोड़कर शास्त्रालोचनामें प्रवृत्त हुए थे। इस बातको लक्ष्य करके प्रभुने उनसे कहा—"वैद्यजी महाराज! आप यहाँ क्या पढ़ते हैं? लता-पत्ता लेकर अपने रोगियोंको ठीक करिये। व्याकरण-शास्त्रमें कफ, पित्त, अजीर्णकी व्यवस्थाका वर्णन नहीं है। घर जाकर अपने रोगीको सम्हालिये।

धीर बुद्धि मुरारि गुप्तका धैर्य टूट गया। मुरारि गुप्त नवद्वीपमें एक प्रमुख विद्वान् थे, सब लोग उनको प्रतिभापूर्ण सुशिक्षित छात्र मानते थे। नदियाकी पण्डित मण्डली और अध्यापकगण सभी मुरारि गुप्तकी विद्वत्ताकी प्रशंसा करते थे। गङ्गादास पण्डितके विद्यालयके प्रधान छात्र थे। प्रभुके जैसे नये छात्र द्वारा इस प्रकार उपहासके पात्र वे नहीं थे। शचीनन्दन अभी बालक थे। उनके मुखसे इस प्रकार व्यंग्यकी बात सुनकर मुरारि गुप्तके मनमें क्रोध उत्पन्न हुआ। वे पोथीपरसे आँखें हटाकर प्रभुके मुखचन्द्रको ओर एक बार तीक्ष्ण दृष्टिसे देखने लगे। प्रभु और सेवककी आँखें चार हुईं। प्रभु ठहाका मारकर हँस पड़े, और सेवकके क्रोधको भड़का दिया।

मुरारिगुप्तका क्रोध आन्तरिक नहीं, बाह्य था। प्रभुके हास्यमय सुधामधुर मुखचन्द्रको देखकर क्या किसीके मनमें क्रोधका भाव टिक सकता है? प्रभुके सुधामिश्रित वचन सुनते ही मानो मुरारिके कानोंमें किसीने अमृत डाल दिया। उनके मुखचन्द्रकी ओर देखते ही मुरारिके प्यासे नयन जुड़ा गये। वे क्या प्रभुके प्रति क्रोध प्रदर्शित कर सकते थे? यह क्रोध नहीं, भक्तका अनुरागमय अभिमान था।

इसी अभिमानमें मुरारिगुप्तने प्रभुसे कहा—"ठाकुर! तुम ब्राह्मण हो, मैं तुमको क्या कहूँ? सूत्र, वृत्ति, पञ्जी, टीका कुछ भी करते रहो, लेकिन मुझसे प्रश्न किये बिना और मेरा उत्तर पाये बिना, इस तरह मजाक उड़ाना अच्छा नहीं।"

मुरारि गुप्तको अभिमान हो गया, क्योंकि प्रभुने बिना कोई विद्या-चर्चा या शास्त्र-चर्चा किये उनका उपहास क्यों किया?

मुरारिकी बात सुनकर प्रभु बहुत सन्तुष्ट हुए। भक्तने अभिमानमें भरकर भगवान्‌को क्रोध भरी बात सुनायी। इससे प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ।

मुरारि जातिके वैद्य थे। प्रभुने जो उनका उपहास किया, वह यदि कोई अन्य आदमीने किया होता तो मुरारिगुप्त निश्चय ही उसे पकड़कर मारते। मुरारिने शचीनन्दनको ब्राह्मण समझकर छोड़ दिया।

मुरारिकी बातसे सन्तुष्ट होकर प्रभु उनके साथ शास्त्रतत्वकी आलोचनामें प्रवृत्त हुए। प्रभु बोले—"मुरारि! तुमने जो आज पढ़ा है, उसकी व्याख्या करो।" मुरारि गुप्त अपूर्व पाण्डित्य पूर्वक प्रभुके साथ शास्त्र-व्याख्या करने लगे। प्रभु एक-एक करके सारी व्याख्या खण्डन करने लगे। मुरारि एक अर्थ करते और प्रभु उसका दूसरा ही अर्थ करते थे। प्रभु और सेवकमें नियम पूर्वक शास्त्रार्थ चलने लगा।

विद्यालयके सब छात्र आवाक् होकर सब सुनते रहे। प्रभुकी कृपासे मुरारि गुप्त परम् पण्डित हैं, प्रभु और सेवकके शास्त्रार्थमें किसका जय-पराजय हो रहा है, इसको कोई समझ नहीं पा रहा है। प्रभुके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुख-मण्डलकी ज्योति और प्रतिभा देखकर मुरारि गुप्तने समझ लिया कि शचीनन्दन साधारण मनुष्य नहीं हैं। प्रभुने भी देखा कि उनकी कृपासे मुरारि गुप्तका पाण्डित्य और विद्या-बुद्धि भी सामान्य नहीं है। मुरारिके मुखसे शास्त्रकी व्याख्या सुनकर प्रभुके मनमें बड़ा हर्ष हुआ।

सेवकके विद्या-गौरवको देखकर प्रभुने आनन्दसे गद्‌गद होकर अपने श्रीहस्तसे उनका अङ्ग-स्पर्श किया। तत्क्षण मुरारिके शरीरमें मानो आनन्दका स्रोत फूट पड़ा। सारा अङ्ग पुलकित हो उठा, वे आनन्दसे पूर्ण हो गये।

मुरारिने मन-ही-मन सोचा--"ये तो प्राकृत पुरुष नहीं दीखते। ऐसा पाण्डित्य क्या मनुष्यमें सम्भव है? इनसे हारनेमें मुझे क्या लज्जा है?"

मुरारिगुप्तको सेवक समझकर प्रभुने यहाँ विशेष रूपसे कृपा की है। कृपा करके उनके विद्यागर्वको खर्व करके दैन्यकी शिक्षा दी है। मुरारिके मनमें विश्वास था कि वे पुराने छात्र और विद्वान् हैं। और नवीन छात्र निमाईचाँदने केवल व्याकरणकी पढ़ाई पूरीकी है। उनसे पाठके विषयमें क्या पूछना है? उनके इसी ज्ञानगर्वको खर्व करनेके लिए प्रभुका यह लीला-रङ्ग हुआ। विद्यागर्व चूर्ण करनेके लिए ही प्रभुका नदियामें आविर्भाव हुआ था। मुरारि उनके नित्यदास हैं। दासके दोषको देखकर प्रभु उसका सुधार करते हैं। यह प्रभुका स्वकार्य है। श्रीगौर भगवान्‌ने स्वकार्य साधन करके अपने दासको प्रकृत भजन-पथमें आकर्षित किया। इस गुणके कारण ही उनका नाम दयामय है, इसी गुणसे उनके भक्तवृन्द उनको कृपानिधि कहते हैं।

मुरारि गुप्तने मनकी बात मन ही में रखी। उनके साथ शचीनन्दनकी बाल्य-लीलाकी रङ्गीली कथा मुरारिको याद आयी। प्रभुने मधुर दिगम्बर वेषमें जिस दिन मुरारि गुप्तके घर जाकर उनके भोजनके पात्रमें मूत्र-त्याग कर दिया था उस दिनकी सारी शुभ स्मृति मुरारिके मनमें उदय हुई।

अब सबके सामने प्रभुसे उन्होंने कहा—"आजसे तुम्हारे पास पाठ या शास्त्र-तत्वके सम्बन्धमें प्रश्न पूछूँगा। आजसे मैं तुम्हारा शिष्य हुआ और तुम मेरे गुरु हुए।"

मुरारि गुप्तके साथ इस प्रकार लीला-रङ्ग करके शचीनन्दन छात्रोंके साथ शास्त्र-चर्चा करते-करते गङ्गा-स्नानके लिए चले।

गङ्गा-स्नान करके प्रभु यथासमय घर आये। प्रभुकी इस लीलासे मुरारि गुप्तकी समझमें आ गया कि प्रभु मनुष्य नहीं हैं। नररूपमें साक्षात् श्रीभगवान् नदियामें शचीके गर्भसे अवतीर्ण हुए हैं। मुरारि गुप्त नदियामें प्रौढ़ बुद्धिमान् और सर्वपरिचित छात्र थे। अध्यापक और विद्यार्थी, दोनों ही समाजमें उनकी प्रतिष्ठा थी। वे अब सबको बतलाने लगे कि शचीनन्दन मनुष्य नहीं हैं, मनुष्यमें ऐसी असाधारण प्रतिभा नहीं होती, ऐसी तीव्र बुद्धि मनुष्यमें सम्भव नहीं है। ऐसा मनुष्यमें नहीं देखा जाता, ऐसा पाण्डित्य, ऐसी विचार-शक्ति मनुष्यमें कभी किसीने नहीं देखी। अतएव सबका कर्त्तव्य है कि शचीनन्दन-का मान-सम्मान करे। सबका कर्त्तव्य है कि गुरुवत् उनकी पूजा करे। उनका चरणामृत पान करनेसे सारे कर्म सिद्ध हो जायँगे। उनके कृपा-कटाक्षसे सारे कर्म सफल होंगे।"

मुरारि गुप्तने इस प्रकार श्रीगौराङ्ग प्रभुकी भगवत्ताका प्रचार नदियाके सब लोगोंमें करना प्रारम्भ कर दिया। अबसे यही उनके जीवनका प्रधान कार्य हो गया। उनके विद्याध्ययनका फल फलने गया।

अब मुरारि गुप्तका एक संक्षिप्त परिचय दूँगा। वे वैद्यवंशावतंस नवद्वीपवासी चिकित्सा-व्यवसायी थे। वेदान्तमें वे विशेष रूपसे पारङ्गत थे। वे अवस्थामें प्रभुसे बड़े थे। नवद्वीपमें सर्वत्र लोग मुरारि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गुप्तको जानते थे। वे प्रभुके पड़ोसी थे। वे श्रीगौराङ्ग प्रभुकी लीला अपनी आँखों देखकर एक करचा लिख गये हैं। इस ग्रन्थका नाम श्रीचैतन्य चरितामृत है। यह अत्यन्त सहजगम्य संस्कृत श्लोकमय श्रीगौराङ्ग लीला ग्रन्थ है। गौड़ीय वैष्णव-वृन्द इस ग्रन्थको श्रीमुरारिगुप्तका करचा कहते हैं*। श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने इस ग्रन्थकी सहायतासे श्रीचैतन्यचरितामृत महाकाव्य नामक श्रीग्रन्थ लिखा है। ठाकुर लोचनदास कृत श्रीचैतन्यमङ्गल श्रीग्रन्थ मुरारि गुप्तके करचाके आधारपर लिखा गया है। यहाँ तक कि श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने इस ग्रन्थके बहुतसे स्थलोंका विशुद्ध बङ्गानुवाद करके अपने श्रीचैतन्य भागवतके कलेवरको अलङ्कृत किया है। श्रीगौरांगके समस्त लीला-लेखक श्रीपाद मुरारि गुप्तके ऋणी हैं। श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने भी इस करचासे बहुत सामग्री संग्रह करके अपने श्रीचैतन्य चरितामृत श्रीग्रन्थमें सन्निवेशित किया है।

मुरारि गुप्त प्रभुके अन्तरङ्ग प्रिय पारिषद् थे। प्रभुकी कृपा प्राप्त करके उन्होंने नवद्वीपमें श्रीगौराङ्ग नामका प्रचार किया। प्रभुने उनमें शक्ति सञ्चार करके उनके द्वारा आद्यलीला लिखायी है। श्रीपाद मुरारि गुप्तके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात्।

श्रीकविकर्णपूर गोस्वामी अपने श्रीकृष्ण चैतन्य चरितामृत महाकाव्यमें लिखते हैं—

बद्धाञ्जलिः शिरसि निर्भरकाकुवादै-
र्भूयो नमाम्यहमसौ स मुरारि संज्ञम्।
तं मुग्धकोमलधियं ननु यत्प्रसादा-
च्चैतन्य चन्द्र चरितामृतमक्षि पीतम्॥

अर्थात् मैं मस्तक पर अञ्जली बाँधकर अतिशय विनीत वचनोंसे बारम्बार उस मनोहर व कोमल बुद्धि मुरारि नामक महात्माको प्रणाम करता हूँ, जिनके प्रसादसे श्रीचैतन्य चन्द्रके चरितरूप अमृतको मैंने साक्षात्कार किया है।

—※—

*श्रीचैतन्यचरित् श्रीग्रन्थ श्रीगौराङ्ग लीलाका आदि ग्रन्थ है। श्रीपाद मुरारि गुप्त इस अपूर्व लीला कथाके वक्ता हैं, और श्रीदामोदर पण्डित इसके लेखक हैं। उन्होंने मुँहसे सुनकर इसे श्लोकबद्ध किया है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौदहवाँ अध्याय

अध्यापक निमाई पण्डित

नवद्वीपे हेन नाहिं पण्डितेर नाम । जे आसिया बूझिबेक प्रभुर व्याख्यान ।।

—श्री चै० भा० आ० ७.१३६

शास्त्रार्थमें प्रवृत निमाई पण्डित

पहले बताया जा चुका है कि जिस दिन प्रभुने अपने बन्धुवर और सहपाठी रघुनाथकी प्रतिष्ठा-हानिके भयसे अपनी लिखी हुई न्यायकी टिप्पणीको गङ्गाजीको समर्पित कर दिया। उसी दिनसे उन्होंने निष्फल न्यायशास्त्रका पाठ बन्द कर दिया, उसी दिनसे उनका विद्यालयमें पढ़ना प्रायः बन्द हो गया। उस समय उनकी अवस्था सोलह वर्षकी थी। वे नवयुवक थे। इस अल्पावस्थामें ही उन्होंने अपना विद्यालय खोला। प्रभुके अपने घरपर स्थानकी सङ्कीर्णताके कारण नवद्वीपवासी महाभग्यवान् मुकुन्द सञ्जय नामक एक धनी ब्राह्मणके चण्डी-मण्डपमें निमाई पण्डितने अपना विद्यालय खोला। मुकुन्द सञ्जयके पुत्रको उन्होंने पढ़ाया। पिता-पुत्र दोनों ही प्रभुके अति प्रिय भक्त थे।

इस नवीन विद्यालयमें नवद्वीपके बहुतसे विद्यार्थी आकर निमाई पण्डितके छात्र बने। शचीनन्दन छात्र-वृन्दसे परिवेष्ठित होकर इस स्थानमें बैठकर विद्या-चर्चा करने लगे। मुकुन्द सञ्जयका चण्डी-मण्डप प्रभुके विद्या-विलासका स्थान बन गया।

मुकुन्द सञ्जयके चण्डी-मण्डपमें बैठकर नवीन अध्यापक निमाई पण्डित छात्रवृन्दको सम्बोधन करके आक्षेप करते हैं—जिसको सन्धिका भी ज्ञान नहीं है, वही कलियुगमें भट्टाचार्य बन जाते हैं। मेरे प्रश्नका उत्तर दें तो मैं जानूँ कि वे भट्टाचार्य हैं।

नवद्वीप पण्डितोंकी जगह है। सहस्रों अध्यापक विद्यालय चलाकर चिरकालसे देश-विदेशसे आये हुए विद्यार्थियोंको विद्या-दान करते आ रहे हैं। शचीनन्दन सोलह वर्षकी अवस्थामें अध्यापक हो गये हैं। नवद्वीपमें इतनी छोटी अवस्थामें कभी किसीने अध्यापकके गुरुतर भारको ग्रहण नहीं किया था। निमाई पण्डित सर्व-प्रथम-बालक अध्यापक हैं। उनके मुखसे इतनी बड़ी अहङ्कारकी बात सुनकर छात्रोंको कोई आश्चर्य न हुआ। नदियाकी छात्र-मण्डलीने अपनी आँखों निमाई पण्डितकी असाधारण तीक्ष्ण बुद्धि और पाण्डित्य प्रतिभा देखकर सब पण्डितोंकी अपेक्षा उनको उच्च पदपर वरण किया है। बहुतेरे विद्यार्थियोंने अपने-अपने अध्यापकोंके विद्यालयोंको छोड़कर निमाई पण्डितके विद्यालयमें प्रवेश प्राप्त किया है।

शचीनन्दन जब किसी भी अध्यापकको देखते हैं तो उनसे शास्त्रार्थ प्रारम्भ कर देते हैं, प्रश्न पूछ बैठते हैं। किसीमें ऐसी शक्ति नहीं है कि वह निमाई पण्डितके साथ तर्कयुद्धमें विजय प्राप्त करे। शचीनन्दन इन अध्यापकोंको तृणवत् भी नहीं समझते थे। इनको ही लक्ष्य करके उन्होंने उपर्युक्त आक्षेप किया था।

प्रभुकी छात्रावस्थामें गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें मुरारि गुप्तके साथ जो शास्त्रार्थ हुआ था, उसके फलस्वरूप मुरारि गुप्त अब प्रभुके एक प्रधान पृष्ठ-पोषक हो गये हैं। गदाधर और मुकुन्द दोनों, पण्डित हैं, मुकुन्द उम्रमें प्रभुकी अपेक्षा कुछ बड़े हैं। परन्तु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गदाधर कुछ छोटे हैं। निमाई पण्डितके साथ दोनोंका विशेष परिचय है। जब नदियाके मार्गमें इन दोनोंके साथ प्रभुका साक्षात्कार होता, तो वे उनको पकड़कर फाँकी (प्रश्न) पूछते, उनके साथ शास्त्रार्थ करते। प्रभुके साथ वाग्युद्धमें पराजित होकर भाग जाते। निमाई पण्डितको आते देखकर उनसे बचकर भागनेकी चेष्टा करते। हमारे चतुर-चूड़ामणि प्रभु इसको समझते और सुविधा मिलते ही उनका हाथ पकड़कर रास्तेमें ही शास्त्रार्थ प्रारम्भ कर देते। कभी-कभी गङ्गाके किनारे ले जाकर नियमानुसार शास्त्रार्थ करते।

मुकुन्द दत्त

यहाँ मुकुन्दका कुछ परिचय दिया जाता है। इनका नाम था मुकुन्द दत्त, निवास स्थान था नवद्वीप। उनके पूर्वज चट्टग्राम चक्रशालामें रहते थे। इसके बाद काञ्चनपाड़ामें वे वास करते थे। मुकुन्ददत्त जातिके कायस्थ थे। वे वासुदेव दत्त के सहोदर भाई थे। वासुदेव दत्त प्रभुके अन्तरङ्ग प्रिय भक्त थे। उन्होंने प्रभुसे प्रार्थना की थी, "प्रभु तुम सब पापियोंका नरककी यन्त्रणासे उद्धार करो। मैं उनके लिए अनन्त नरक-यन्त्रणा भोग करूँगा, तुमको फिर कभी जीवोद्धार कार्यके लिए इतना कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। प्रभुने वासुदेवकी प्रार्थना सुनकर उनको अपना एकान्त भक्त बना लिया था।

मुकुन्द शैशवसे ही प्रभुके प्रिय भक्त थे। प्रभुके साथ वे गङ्गादासके विद्यालयमें एक जगह पाठाभ्यास करते थे। मुकुन्दके सुमधुर कण्ठ-स्वरको सुनकर प्रभुने मुग्ध होकर उनको अपना दास बना लिया था। मुकुन्दका गाना सुनकर अति कठिन हृदय भी द्रवित हो उठता था। प्रभु मुकुन्दका गाना सुनना बहुत चाहते थे। अद्वैत सभामें श्रीकृष्णमङ्गल गीत गाकर मुकुन्द श्रोताओंको रुला देते थे। प्रभु जिस समय व्याकरण पढ़ते थे, उस समय मुकुन्द अलङ्कार-शास्त्र पढ़ते थे। श्रीवासके आङ्गनमें महाप्रकाशके समय प्रभुने मुकुन्दके साथ एक विशेष रङ्ग किया था। प्रभुने श्रीवास पण्डितसे कहा—"उसका सिद्धान्त स्थिर नहीं है, जहाँ जैसा देखता है, वहाँ वैसी बातें करता है। अद्वैतके पास भक्तिको श्रेष्ठ कहता है, और दूसरी जगह ज्ञानको श्रेष्ठ बतलाता है। उसको मेरे पास न लाना।" प्रभुके इस प्रकार उपेक्षा करने पर मुकुन्द बाहर धूलिमें गिरकर रोने लगे। श्रीवास पण्डितके द्वारा प्रभुसे पूछा—"क्या कोटि जन्मके बाद भी प्रभुके श्रीचरणोंका दर्शन न पाऊँगा।" प्रभुने उत्तर दिया—"पाओगे।" यह सुनकर मुकुन्द भूमिसे उठकर बोले—"पाऊँगा तो? कोटि जन्म अब कितने दिन हैं"—यह कहकर आनन्दसे नृत्य करने लगे। अनुगत भृत्यके मुखसे तीव्र अनुरागपूर्ण यह दृढ़ भक्तिकी बात सुनकर उनको बुलाकर प्रभुने वरदान देकर कृतार्थ किया।

जिन दिनों प्रभु नीलाचलमें विराजते थे, मुकुन्द ही उनके द्वारी रहे। मुकुन्द प्रभुके द्वारकी रखवाली करते थे, और उनको भजन गाकर सुनाते थे। मुकुन्दका भजन सुनकर प्रभु आनन्दसे नाचे बिना नहीं रहते। मुकुन्दके ज्येष्ठ भ्राता वासुदेव दत्तने प्रभुसे कहा था कि "मुकुन्द यद्यपि मेरा छोटा भाई है, तथापि मुझसे पहले आपकी कृपा प्राप्त करनेके कारण वह मुझसे ज्येष्ठ है।"

इसी मुकुन्द दत्तको लेकर अपनी छात्रावस्थामें प्रभुने नदियाके मार्गमें एक रङ्ग किया था। निमाई-पण्डित सखावृन्द और छात्रगणके साथ नदिया-भ्रमण करनेके लिए निकले। दैवात् रास्तेमें मुकुन्दसे उनकी भेंट हो गयी। प्रभुको देखकर मुकुन्द भागनेकी चेष्टा करने लगे। प्रभुने तत्काल उनका हाथ पकड़ा। हँसते-हँसते निमाई पण्डित मुकुन्दसे बोले, "मुकुन्द! मुझको देखकर तुम भागते क्यों हो? आज तुमको मैं न छोड़ूँगा। आओ मेरे साथ शास्त्रार्थ करो, मेरे प्रश्न का उत्तर दो।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुकुन्द बड़ी विपदमें पड़े और मन-ही-मन सोचने लगे—"निमाई पण्डितके हाथसे आज कैसे छुटकारा मिलेगा? यह तो व्याकरण-शास्त्रके पण्डित हैं। अलङ्कार-शास्त्रमें अभी इनका अधिकार नहीं है। आज मैं अलङ्कारका प्रश्न करके इनको छकाऊँगा। इससे यह मेरे सङ्ग विद्याका घमण्ड नहीं करेंगे। यह सोचकर मुकुन्द प्रभुके साथ तर्क-युद्धमें प्रवृत्त हो गये। वे निमाई पण्डितसे बोले—"व्याकरण शिशु शास्त्र है, बालक लोग इससे शास्त्रार्थ करते हैं। आपके साथ मैं आज अलङ्कार-शास्त्रमें तर्क करूँगा।" प्रभुने हँसकर उत्तर दिया, तुम जो चाहो, वही प्रश्न कर सकते हो।

मुकुन्द व्याकरण-शास्त्र और अलङ्कार-शास्त्रके परम पण्डित थे। काव्य और अलङ्कार उनका प्रिय विषय था। वह काव्यालङ्कारके परम कठिन प्रश्न प्रभुसे पूछने लगे। निमाई पण्डितने क्षणभरमें अलङ्कारके दोष दिखलाकर मुकुन्दके प्रश्नोंका खण्डन-कर दिया। मुकुन्द कदापि अपना मत स्थापित न कर सके। तब प्रभुने हँसकर मुकुन्दसे कहा—"आज घर जाकर ठीकसे ग्रन्थ देखना और कल बात करना।"

मुकुन्द लज्जित होकर प्रभुकी पद-धूलि लेकर उस दिन घर चले गये। निमाई पण्डितकी पठित और अपठित सारे शास्त्रोंमें असाधारण पाण्डित्य और प्रतिभा देखकर मुकुन्दके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। वे बालक-अध्यापकसे शास्त्रार्थमें पराजित हुए, इसका उनके मनमें कुछ भी दुःख न हुआ। वे मन-ही-मन कुतूहलपूर्वक सोचने लगे—"मनुष्यमें इतना पाण्डित्य कैसे हो सकता है कि जो शास्त्र पढ़े नहीं उनमें भी गति हो। ऐसी बुद्धि तो कृष्ण-भक्तकी ही हो सकती है।"

मुकुन्द परम वैष्णव हैं। उनके मनमें हुआ कि निमाई पण्डित असाधारण प्रतिभा-सम्पन्न ज्ञान-वीर हैं। ये यदि कृष्णभक्त हो जायँ तो बड़े ही आनन्दकी बात हो। नवद्वीपके पण्डित लोग शुष्क विचार और तर्कको लेकर व्यर्थ जीवन अतिवाहित करते हैं। भक्तिशास्त्रकी चर्चा बिल्कुल ही नहीं करते, तब कृष्ण-भक्ति कहाँसे होगी? अद्भुत विद्याबलसे युक्त, तथा अपूर्व प्रतिभाशाली निमाई पण्डित यदि कृष्ण-भक्त हो जायँ तो क्षणभरके लिए भी मैं इनका सङ्ग न छोड़ूँ।

मुकुन्दकी इस कामनाको भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने पूर्ण किया था। निमाई पण्डितको कृष्ण-प्रेममें उन्मत देखकर मुकुन्ददत्त उनका सङ्ग प्राप्त कर धन्य हो गये। आजीवन प्रभुके सङ्गमें रहते हुए उन्होंने श्रीचरण-सेवाका अधिकार प्राप्त किया था।

मुकुन्ददत्त प्रतिदिन अपराह्णमें अद्वैत सभामें जाते थे। वे सब वैष्णवोंके प्रिय थे, उनके श्रीकृष्ण मङ्गल-गीतसे सब मुग्ध थे, उनका कण्ठस्वर बड़ा ही मधुर था। अद्वैत-सभामें उनका गान सुनकर भक्तगण प्रेमानन्दसे मग्न होकर हँसते, रोते, नाचते और धूलमें लोटने लगते। कोई-कोई मुकुन्दके चरणोंपर गिर पड़ते। उनके गानेमें इतनी मादक शक्ति थी। उनके मधुर कण्ठ-स्वरमें मानो वीणाका-झङ्कार उठता था।

प्रभु भी मुकुन्दका गान सुनकर बड़ा आनन्द प्राप्त करते थे। इसी प्रकार नदियाके मार्गमें मुकुन्दको देखते तो दौड़कर उनका हाथ पकड़ते थे। पकड़ते ही प्रभु और सेवकमें शास्त्रार्थ शुरू हो जाता था।

अपने सखा छात्रवृन्दके साथ एक दिन निमाई पण्डित नदियाके मार्गमें जा रहे थे। प्रभुका उद्धत स्वभाव अभी गया न था। जिसको देखते हैं उसीके साथ औद्धत्य प्रकट करते हैं। मुकुन्द उसी समय गङ्गा-स्नान करने जा रहे थे, प्रभुके देखते ही वे छिपकर दूसरी ओरसे भाग निकले। प्रभुने उनको देखकर हँसते हुए गोविन्दसे कहा—"यह मुझको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखकर भागता क्यों है ?" गोविन्दने उत्तर दिया—"मुझे तो पता नहीं कि किस कार्यसे भागे जा रहे हैं।"

भक्तवत्सल श्रीगौरभगवान् भक्तके द्वारा उपेक्षित होकर अभिमान पूर्वक बोले—"मैं बहिर्मुख हूँ। मेरे साथ मुकुन्द बातें क्यों करें ? मुकुन्द वैष्णव-शास्त्र पढ़ता है। मैं पाँजि, वृत्ति, टीका लेकर पण्डितका व्यवसाय करता हूँ। मेरे साथ तो कृष्ण-कथा हो नहीं सकती। इसी कारण मुकुन्द मुझे देखकर भागता है।"

यह कहकर प्रभु बनावटी क्रोध करके मुकुन्दको नाना प्रकारकी बात कहने लगे। प्रभु और सेवकका यह रस-द्वन्द्व बड़ा ही मधुर है। मुकुन्दने दूरसे ही सब कुछ सुन लिया। प्रभुने उन्हें देखकर गुरु गम्भीर स्वरमें कहा—"मैं देखता हूँ, कितने दिन मुझसे दूर रहते हो।"

मुकुन्द दूरसे ही सब कुछ सुन रहे हैं और आड़े-आड़े रुष्ट प्रभुके सुन्दर मुखचन्द्रकी शोभा निरख रहे हैं। भक्तके सामने श्रीभगवान्का अभिमान अतिशय मधुर तत्व है, अति दुर्लभ वस्तु है। भक्तके अभिमानको श्रीभगवान् प्रेमके साथ तोड़ देते हैं। श्रीभगवान्के सामने भक्तके अभिमानकी अनेक कथाएँ सुननेमें आती हैं। परन्तु श्रीभगवान्का अभिमान भक्तके सामने, प्रभुका अभिमान सेवकके सामने एक नवीन तत्व है, अपूर्व वस्तु है। प्रभुको देखकर जो मुकुन्द भागनेके लिए तैयार हुए थे, इससे गौर भगवान्के हृदयमें जो अभिमानका भाव उदय हुआ था, सेवककी उपेक्षा करके प्रभुके मनमें जो अभिमानका तरङ्ग उठा था उसके फलस्वरूप उनको आत्म-प्रकाश करना पड़ा। भक्तके सामने प्रच्छन्न अवतारका प्रच्छन्नत्व रहा नहीं; वे अब अपनेको छिपा न सके। निमाई पण्डित मुकुन्दको लक्ष्य करके अभिमान-मिश्रित क्रोधमें भरकर हँसते हुए बोले—"कुछ दिन और ठहर जाओ। मैं ऐसा वैष्णव होऊँगा कि ब्रह्मा-महेश तक मेरे पास आयेंगे।"

मुकुन्दको इतना कहकर प्रभुने चतुर्दिक शुभ दृष्टिपात करके उपस्थित दर्शक-मण्डलीको उपलक्ष्य करके उच्च स्वरसे कहा—

"शुन भाइ सब एइ आमार वचन।
वैष्णव हैब मुञि सर्वविलक्षण॥
आमारे देखिया एबे जे सब पलाय।
ताँहाराओ जेन मोर गुणकीर्ति गाय॥"

—चै. भा. आ., ७. १७७, १७८

इतना कहकर निमाई पण्डित हँसते-हँसते शिष्य और छात्रवर्गके साथ अपने घरकी ओर चले। मुकुन्द ने कान लगाकर प्रभुकी बात सुनी, उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ। वे रास्तेमें खड़े होकर मनमें दुःखी होकर बालकके समान रोने लगे। मुकुन्दके दुःखका कारण यह था कि वे प्रभुकी उपेक्षा करके नहीं भागते थे, प्रभुका सङ्ग छोड़नेका उद्देश्य वैसा नहीं, जैसा प्रभु सोचते हैं। रास्तेमें भेंट होनेपर प्रभु उनसे फाँकि पूछते हैं, उसका वे जवाब नहीं दे पाते, प्रभु उनका हाथ पकड़कर खींचकर सबके सामने उसको उपहासास्पद करते हैं। इसी कारण भयसे प्रभुके सामने आनेका साहस नहीं करते। प्रभुने जो बात कही, वह ठीक नहीं थी। मुकुन्दके मनका भाव वह न था, यह बात प्रभुको समझाना था। वे यदि नहीं समझते तो क्या किया जाय ? 'प्रभुके मनको कष्ट देनेसे क्या मेरा मङ्गल होगा ?' इसी चिन्तासे कातर होकर मुकुन्द रास्तेमें खड़े होकर चुपचाप बहुत देर तक रोते रहे। पश्चात् धीरे-धीरे घर चले गये।

इसके बाद मुकुन्दने एक दिन निमाई पण्डितके घर जाकर उनको एकान्तमें ले जाकर ये सारी बातें कहीं। सर्वज्ञ प्रभुने मधुर मुस्कानके साथ उनको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। यहाँ भक्त और भगवान्की मान-भञ्जन लीला समाप्त हुई। अभिमानी भगवान् भक्तके प्राणकी सत्कारमयी वन्दनासे द्रवीभूत हो उठे। यह जो भक्त और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भगवान्‌का मिलन हुआ, वह अति सुन्दर था। दुर्भाग्यवश इसको किसीने नहीं देखा। यह जीव-जगत्‌के गोचर होनेकी वस्तु नहीं है। मुकुन्दके सामने श्रीगौरभगवान् इसी समयसे व्यक्त हो गये। परन्तु उनकी वैष्णवी मायाके बलसे मुकुन्द इसे समझकर भी समझ न सके। अथवा प्रभुने उनको अपना तत्व समझा करके भी समझने न दिया। यही प्रभुकी लीलाका रहस्य है।

श्रीवास पण्डित

निमाई पण्डित शास्त्रार्थमें किसीको छोड़ते न थे। वृद्ध श्रीवास पण्डित उनके पिताके समवयस्क थे। उनसे भी प्रभु फाँकि पूछ लेते थे। श्रीवास पण्डित शचीनन्दनको परम् चञ्चल और उद्धत युवक समझते थे। व्यर्थके बकवादके भयसे वे निमाई पण्डितकी बातका उत्तर न देकर निकल भागते थे।

श्रीवास पण्डित परम् भक्त और निष्ठावान् वैष्णव हैं, सदा कृष्ण-कथा-प्रसङ्गमें काल व्यतीत करते हैं; उनका मन भला व्यर्थकी शास्त्र-चर्चामें क्यों लगता? निमाई पण्डितके मुँहपर केवल शास्त्र-चर्चा रहती है, वे जिसको देखते हैं, उसीसे फाँकि पूछते हैं। कृष्ण-कथा या भक्तिका व्याख्यान नहीं करते। इससे वैष्णव लोगोंके मनमें बड़ा दुःख हुआ है।

इसी कारण सबके मनमें हर्ष-विषाद है। सभी प्रभुकी विद्वत्ताकी प्रशंसा करते हैं। उनके पाण्डित्य और प्रतिभाको देखकर धन्य-धन्य करते हैं। इसी समय शचीनन्दनकी अपरूप रूपछटा नदियामें विभासित हो उठी। प्रभुकी जैसी अपरूप रूपराशि थी, वैसे ही उनमें असाधारण गुण थे। वे जब नदियाके मार्गमें आजानुलम्बित, भुवलित दोनों भुजाएँ डुलाते-डुलाते निकलते थे, तो नदिया-सुन्दरी-गणको ऐसा लगता था मानो साक्षात् कामदेव जा रहे हैं। पण्डित लोगोंको लगता था मानो साक्षात् वृहस्पति जा रहे हैं। पाखण्डी लोगोंको वे यमके समान भयङ्कर लगते थे।

श्रीवास आदि वैष्णवगण आपसमें कहते थे—"ऐसे दिव्य शरीरमें कृष्ण-रस नहीं होनेसे कालके वशीभूत होते समय विद्या क्या काम आयेगी।"

श्रीगौर भगवान्‌की वैष्णवी-मायासे अभिभूत होकर कोई उनको पहचान नहीं पाता है, इसी कारण सब लोग ऐसी बात बोलते हैं तथा मन-ही-मन सोचते हैं। मनके भावको गुप्त न रख सकनेके कारण कोई-कोई दुःखी होकर प्रभुके सामने ही ये सब बोलते हैं। निमाई पण्डित उनकी बातें सुनकर हँसते हैं, और कहते हैं कि, "मेरे भाग्य अच्छे हैं जो आप लोग मुझको उपयुक्त शिक्षा दे रहे हैं।"

इस प्रकार गुप्त भावमें श्रीगौर भगवान् निमाई पण्डितके रूपमें नवद्वीपमें विराज रहे हैं। अध्ययन और अध्यापनके सिवा इस समय उनका और कोई कार्य नहीं है।

उनके रूपकी सीमा नहीं है। उनकी कन्दर्प-दर्प-हारी अपूर्व रूप-लावण्यकी शोभासे नवद्वीपवासी नर-नारी विमुग्ध हैं। सहस्रों छात्रोंके साथ साक्षात् सरस्वती-पुत्र अपनी पुस्तक हाथमें लिये सारे नवद्वीपमें परिभ्रमण करते हैं। उनकी अपरूप रूपराशि देखकर नदियावासीका मन आनन्दसे भर जाता है। उनका सन्तप्त हृदय जुड़ा जाता है।

सारी नदिया नगरी निमाई पण्डितकी अपरूप रूपछटासे आलोकित है। सारी नदियाके लोग उनके विद्या-गौरवसे गौरवान्वित हैं, तथा सारा जगत् उनके यशः-सौरभसे परिपूरित है। इस समय देश-विदेशमें नदियाके निमाई पण्डितका नाम और यश प्रख्यात हो रहा है। अनेक देशोंसे छात्र आकर उनके विद्यालयमें प्रवेश कर रहे हैं।

श्रीवास पण्डित प्रभुके पिताके समवयस्क थे। पहले ही कह चुका हूँ कि निमाई पण्डितको देखकर वे भी बगलसे निकल जाते थे। प्रभु अध्यापकके पद पर आसीन होते हुए भी परम चञ्चलता और औद्धत्य प्रकट करते हैं। श्रीवास पण्डित जैसे गण-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मान्य वृद्ध ब्राह्मणको भी नदियाके मार्गमें देखकर वे फाँकि पूछनेसे नहीं चूकते। श्रीवास पण्डित परम वैष्णव हैं; व्यर्थ वार्तालाप करना वे भक्ति-बहिर्मुख गर्हित कार्य मानते हैं, इसीलिए वे प्रभुकी बातका कोई उत्तर न देकर चले जाते हैं। वे खूब जानते हैं कि शचीनन्दन उद्धत शिरोमणि नवीन युवक हैं। वे कौन सी बात कह जाँयगे, कहीं कोई अपमानजनक बात न कह डालें—इस भयसे श्रीवास पण्डित निमाई पण्डितके पास नहीं आते हैं। परन्तु उनके मनमें बड़ा दुःख है, उनके मित्र जगन्नाथ मिश्रपुरन्दरका पुत्र इतना बड़ा शास्त्रवीर हो गया है, इसके साथ ही उसके हृदयमें कृष्णभक्ति उदय होती तो मणि-काञ्चन संयोग होता।

एक दिन पाँच-सात साथी छात्रोंके साथ निमाई पण्डित नदियाकी सड़क पर भ्रमण करनेके लिए निकले। शरीरमें एक साधारण व्यवहारकी लाल पाढ़की धोती पहने थे। गलेमें चादर थो। ताम्बूल-राग-रञ्जित मधुर अधर-प्रान्तमें मधुर मनको मोहने वाली हँसी थी। चौड़े ललाटपर ऊर्ध्वतिलक-रेखा, और हाथमें पोथी थी। आजानुलम्बित सुबलित बाहु-युगल डुलाते हुए चञ्चल-चूड़ामणि निमाई पण्डित् सङ्गी-साथियोंके साथ विद्या-विलास-रङ्गमें उन्मत्त होकर नदियाके मार्ग पर चले जा रहे थे। दैवात श्रीवास पण्डितके साथ रास्तेमें उनकी भेंट हो गयी। प्रभुको देखते ही श्रीवास पण्डित हँस पड़े। प्रभुने उनको नमस्कार किया। श्रीवास पण्डितने आशीर्वाद दिया—"चिरंजीवि रहो।"

इस बार प्रभुने उनसे कोई फाँकि नहीं पूछी। यह देखकर श्रीवास पण्डितके मनमें आनन्द हुआ। उन्होंने सुविधा और सुयोग पाकर प्रभुसे दो एक उपदेशकी बातें कीं। उनके मनमें जो दुःख था, उसे इस बार प्रकट कर दिया। श्रीवास पण्डितने शची-नन्दनसे हँसते हुए कहा—"उद्धत-चूड़ामणि! कहाँ जा रहे हो? कृष्ण-भजनके बिना किस काममें समय नष्ट कर रहे हो? केवल पढ़नेमें लगे रहते हो। पढ़नेका क्या अर्थ है? कृष्ण-भक्ति जानना। यदि कृष्ण-भक्ति न हुई तो विद्यासे लाभ? व्यर्थमें समय नष्ट नहीं करो। बहुत पढ़ चुके, अब श्रीकृष्ण-भजन करो।"

श्रीवास पण्डितके मुखसे यह उपदेशकी बात सुनकर प्रभु दिल खोलकर ठहाका मारकर हँस पड़े। हँसकर अति नम्रतापूर्वक बोले—"तुम्हारी कृपासे यह निश्चित होगा।"

इतना कहकर प्रभु हँसते-हँसते गङ्गा-तीरकी ओर चले। श्रीवास पण्डितके मनमें आज बड़ा आनन्द है। उन्होंने सुयोग पाकर प्रभुको अपने मनकी बात कह दी, और निश्चिन्त हो गये। बहुत दिनोंसे उनके मनमें हो रहा था कि यह बात प्रभुसे कहूँगा। परन्तु अब तक बोलनेका साहस नहीं होता था। क्योंकि वे जानते थे कि निमाई पण्डित उद्धत शिरमोणि हैं, सर्वदा शास्त्रार्थ लिये चलते हैं। भक्तिकी बात, कृष्ण-चर्चा उनको कहना आता नहीं, अथवा कहते नहीं, या कहनेका समय नहीं पाते। केवल फाँकि पूछना जानते हैं।

इसी कारण श्रीवास पण्डितको उनसे अपने मनकी बात कहनेका साहस नहीं होता था। आज कृष्णकी इच्छासे सुस्थिर होकर निमाई पण्डितने उनकी बात सुनी है, इसीसे उनको इतना आनन्द है। घर जाकर गृहिणीको उन्होंने यह शुभ संवाद सुनाया।

निमाई पण्डितके अध्यापनकी प्रशंसा देश-विदेशमें फैल रही है। बहुतसे देशोंके छात्र आकर उनके विद्यालयमें प्रविष्ट हो रहे हैं। निमाई पण्डितके विद्यालयमें छात्रोंकी भर्तीके लिए जगह नहीं है। नवद्वीपमें सहस्रों विद्यालय हैं। परन्तु इतने छात्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दूसरे किसी विद्यालयमें नहीं हैं। प्रतिदिन दस-बीस विदेशी छात्र आकर प्रभुके पादपद्मकी वन्दना करते हैं। इस प्रकार प्रभुके छात्रोंकी संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी।

गदाधर पण्डित

उन्हीं दिनों नगर भ्रमण करते-करते प्रभुने एक दिन मार्गमें गदाधरको आते हुए देखा। गदाधर परम रूपवान्, शान्त स्वभाव, नवद्वीपके ब्राह्मण हैं। प्रभुके प्रिय सखा हैं। उनके पिताका नाम माधव पण्डित है। व्याकरण, साहित्य और अलङ्कारशास्त्र समाप्त करके गदाधर उस समय न्यायशास्त्र पढ़ रहे थे। निमाई पण्डितको देखकर दूसरे लोगोंके समान वे भागते न थे। प्रभुके समाने अपने अति सुन्दर मुखको अवनत करके स्त्रीके समान एक ओर खड़े हो जाते थे। गदाधरका रूप और यौवन देखनेकी वस्तु थी। उनका सर्वाङ्ग सुन्दर मुखचन्द्र, उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गकी लावण्य-छटा, तप्त काञ्चन-वर्णकी अङ्गकान्तिके साथ स्त्री-जन सुलभ उनका सलज्ज भाव सबके चित्तको आकर्षित करता था। रूप और गुणसे उन्होंने प्रभुके मनको हरण कर लिया था। रास्तेमें उनको देखकर उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गपर एक दृष्टि डालकर घने काले घुँघराले बालसे आच्छादित उनके मुखचन्द्रको देखकर प्रभु मुग्ध हो जाते थे।

गदाधर बाल्यकालसे ही प्रभुके अतिशय प्रिय थे। प्रभुके घर वे सदा-सर्वदा जाते थे। शचीमाता उनसे पुत्रवत् स्नेह करती थी। प्रभु उनको साथ लकर कभी-कभी एक साथ भोजन और शयन करते थे। महाजनगणने गदाधरको राधाशक्तिके रूपमें वर्णन किया है।

नदियाके मार्गमें निमाई पण्डितने गदाधरको देखकर उनके दोनों हाथ दबाकर पकड़ लिये। गदाधर अपने स्वभाव-सुलभ मधुर लज्जावनत भावमें प्रभुके सामने सिर नीचा करके खडे हो गये। प्रभुने हँसते हुए उनसे पूछा—"गदाधर! तुम न्यायशास्त्र पढ़ते हो, मेरे साथ शास्त्रार्थ करो।" गदाधर क्या करते, प्रभुने उनके दोनों हाथ पकड़ रखे थे। वे डरते-डरते मृदु मधुर वचन बोले—"आप प्रश्न करें।" प्रभुने पूछा—"मुक्तिका लक्षण क्या है, बतलाओ तो?" गदाधरने नियमपूर्वक शास्त्र-तत्वकी व्याख्या कर दी। यह सुनकर प्रभु बोले, "तुम शास्त्रके अर्थकी व्याख्या नहीं कर सके।" प्रभुके पुनः प्रश्न करनेपर वे बोले—"आत्यन्तिक दुःख-नाशको ही शास्त्रमें मुक्ति बताया है।"

प्रभुने नाना प्रकारकी तर्कयुक्ति प्रदर्शन करके इसका खण्डनकर दिया। गदाधर क्या करते? प्रभुके सामने तर्कयुद्ध करके कभी कोई जीत नहीं सकता। वे चुप हो रहे। गदाधर मन-ही-मन सोच रहे हैं कि किसी प्रकार निमाईके हाथसे त्राण मिलता प्रभु अच्छा था।

हमारे अन्तर्यामी प्रभुने गदाधरके मनको देखकर हँसते हुए कहा—"अच्छा गदाधर! आज तो घर जाओ, कल आना, तब तुमको समझूँगा।"

गदाधरके देहमें प्राण आया, उन्होंने एक लम्बी साँस लेकर छुटकारा पाया। प्रभुने उनका हाथ छोड़ दिया और वे प्रभुको नमस्कार करके घर गये।

यही गदाधर प्रभुके प्रिय पार्षद श्रीगदाधर पण्डित गोस्वामी हैं। गोस्वामी शास्त्रने इनको श्रीराधा शक्तिके रूपमें वर्णन किया है। वे प्रभुके एकान्त अतरङ्ग भक्त और प्रियतम दास थे। वे आजन्म संसारसे विरक्त रहे, और भक्तिशास्त्रके प्रसिद्ध पण्डित थे। नीलाचल क्षेत्रमें संन्यास ग्रहण करके वे प्रभुके साथ वास करते थे। गदाधर गोस्वामीकी श्रीगौराङ्ग एकनिष्ठता सर्वजन विदित है। श्रीगौराङ्ग-के चरणोंके सिवा वे और कुछ नहीं जानते थे। प्रभुने जब नीलाचलसे श्रीवृन्दावनकी यात्रा की तो श्रीगदाधर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गोस्वामी उनके साथ जाने लगे। प्रभुने बहुत मना किया कि शास्त्रके मतसे क्षेत्र-संन्यास* छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहिये। प्रभुभक्त पण्डित-गोस्वामी इससे बहुत दुःखी हुए और प्रभुसे स्पष्ट बोले—"जहाँ तुम रहो, वही नीलाचल है, मेरा क्षेत्र-संन्यास रसातलको चला जाय।"

श्रीगौराङ्ग प्रभु भक्तकी ऐसी एक-निष्ठता देखकर परम प्रसन्न हुए। क्षेत्र-संन्यासकी बात फिर न उठाकर उन्होंने और ही बात कही। प्रभु बोले—"यहाँ रहकर गोपीनाथकी सेवा करो।"

गदाधर गोस्वामीने निष्कपट भावसे उत्तर दिया—"तुम्हारे चरण-दर्शन ही कोटि सेवाके बराबर हैं।"

यह सुनकर प्रभु और कोई बात न कह सके। श्रीचैतन्यचरितामृतकार कविराज गोस्वामीने लिखा है—

पण्डितेर चैतन्यप्रेम बूझन ना जाय।
प्रतिज्ञा श्रीकृष्णसेवा छाड़िल तृणप्राय॥
—चै. च. म. १६, ३६

श्रीगदाधरके साथ नवीन अध्यापक निमाई पण्डित नदियाके मार्गमें इसी प्रकार शास्त्र-चर्चा-रङ्ग करते थे। बाल्यकालसे गदाधरको प्रभु अत्यन्त प्रेम करते थे। पति और पत्नीमें जिस प्रकारका प्रणय होता है, गौर-गदाधरमें भी उसी प्रकारका भाव दीख पड़ता था। श्रीराधाशक्ति गदाधर गोस्वामी श्रीश्रीगौरकृष्णके प्रेममें उन्मत्त होकर उनकी प्रेमसेवा करते थे। इन दोनोंके बीच व्रजका मधुर भाव दृष्टिगोचर होता था। उसी मधुर व्रजभावसे विभावित होकर नदियाके पथमें, घाटपर श्रीगदाधरको देखते ही प्रभु दोनों भुजाएँ फैलाकर आलिङ्गन करनेके लिए उद्यत हो जाते थे। श्रीराधाशक्ति गदाधर लज्जासे पलायनके लिए तत्पर हो जाते थे। यह उनकी पूर्वलीलाका स्वभाव सिद्ध सहजभाव था। व्रजभावमें प्रभु जब नदियाके पथमें प्रिय वस्यगणके साथ विहार करते थे तो गदाधरको देखते ही उनके मनमें वृन्दावन-विलासिनी श्रीराधाका भाव उदय हो जाता था। तब वे प्रेमानन्दमें स्थिर नहीं रह सकते थे। गौर-गदाधर-लीला-रङ्ग व्रज-रस-माधुरीसे पूर्ण है। इन सब बातोंपर यथास्थान विचार किया जायगा।

मुकुन्द सञ्जय

नवद्वीपमें निमाई पण्डितका नाम, यश और पाण्डित्यका प्रचार घर-घरमें हो गया। मुकुन्द सञ्जयका विशाल चण्डीमण्डप नवद्वीपके सर्वश्रेष्ठ विद्यामन्दिरमें परिणत हो गया। मुकुन्द सञ्जय प्रभुके परमभक्त और पृष्ठपोषक हैं। वे धनी ब्राह्मणकी सन्तान हैं। प्रभुके छात्रोंके भरण पोषणका भार उन्हींके ऊपर था।

मुकुन्द सञ्जयका निवास नवद्वीपमें था। उनके पिता-पितामह सञ्जय उपाधिधारी थे। उनके निवास स्थानपर निमाई पण्डितकी पहली पाठशाला स्थापित हुई। उनके पुत्र पुरुषोत्तमको प्रभु स्वयं पढ़ाते थे। प्रभु जब गया-धामसे कृष्णप्रेममें उन्मत्त होकर नवद्वीपमें आये, तो पहले स्नेहमयी माँको प्रणाम करके उनकी मुकुन्द सञ्जयके घर जानेकी इच्छा हुई। क्योंकि वह स्थान, उनके विद्या-विलासकी लीला-स्थली होनेके कारण बहुत प्रीतिप्रद थी। प्रभु सर्वप्रथम अपने विद्या-विलासकी लीला-स्थली मुकुन्द सञ्जयके चण्डीमण्डपमें गये। उनके प्रेमोन्मत्त भावको देखकर मुकुन्द सञ्जय और उनके घरके लोगोंने शङ्ख, घण्टा, झाँझ, करताल और काँस्य बजाकर मङ्गलाचरण करके प्रभुकी अभ्यर्थना और पूजा की।

* एक ही तीर्थस्थानमें वासका नियम लेनेका नाम क्षेत्र-संन्यास है। गदाधर पण्डितने नीलाचल क्षेत्रमें क्षेत्र-संन्यास ग्रहण किया था। नीलाचल छोड़कर अन्यत्र जानेका उनका अधिकार न था। श्रीपुरुषोत्तम धाम उनके लिए क्षणभरके लिए भी त्याज्य न था। यही क्षेत्र-संन्यासकी विधि है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने प्रेमावेशमें मुकुन्द सञ्जयको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। मुकुन्द सञ्जय और उनके पुत्र पुरुषोत्तम प्रभुके अतिशय प्रिय पात्र थे। प्रभुके द्वितीय विवाहमें इसी मुकुन्द सञ्जय तथा बुद्धिमन्त खाँने शुभ-विवाहका सारा व्ययभार वहन किया था। श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके साथ प्रभुका शुभविवाह बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ था। मुकुन्द सञ्जय प्रभुके नित्यपार्षद रूपमें नवद्वीपमें सब प्रकारसे उनकी गार्हस्थ्य-लीलामें सहायता करते थे।

अध्यापक-शिरोमणि निमाई पण्डित

निमाई पण्डित कुछ ही दिनोंमें नवद्वीपमें सर्व-श्रेष्ठ अध्यापक-शिरोमणि हो गये। बड़े-बड़े अध्यापक पण्डित उनके पास आते। उनको देखकर आदर पूर्वक खड़े हो जाते हैं। प्रभुकी अवस्था उस समय अठारह वर्षकी थी। नवीन यौवन विकसित हो रहा था, दिव्य तेजसे सर्वाङ्ग ज्योतिर्मय था, सुधामधुर वाणी थी, सर्व शास्त्रोंमें सुविज्ञ, अद्वितीय विद्यावीर श्रीनिमाई पण्डितको नदियाका सर्वश्रेष्ठ अध्यापक कहकर श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने वन्दना की है। प्रिय पाठक-वृन्द ! आइये, श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासावतारके सुरमें सुर मिलाकर हम सब मिलकर दिल खोलकर उस जगद्गुरु अध्यापक-शिरोमणि श्रीश्रीगौराङ्ग प्रभुका जयगान करें।

जय अध्यापक शिरोरत्न विप्रराज।
जय जय चैतन्येर श्रीभक्त-समाज॥

प्रभुका यह विद्याविलास-लीला-रङ्ग भी कलि-कल्मष-नाशके लिए है। उनके छात्रोंने केवल विद्याकी शिक्षा ही नहीं प्राप्त की, बल्कि प्रभुकी कृपासे विद्या-शिक्षाका फल उनको प्राप्त हुआ। श्रीगौर भगवान्के श्रीमुखसे निःसृत मधुमय उपदेश वाणी सुनकर उन शिष्यों और छात्रोंकी जन्म-जन्मान्तरकी सञ्चित समस्त पापराशि सदाके लिए एक-एक करके ध्वंस हो गयी। श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने श्रीकृष्ण चैतन्यचरितामृतमहाकाव्यमें लिखा है— प्रभुमुखेन्दुगलद्वचनामृतं
मृतजनस्य च जीवितदायि तत्।
श्रुतिपथेन निपीय चिरेन ते
मुदमिता दमिताखिलकल्मषाः॥

प्रभुका यह अध्ययनाध्यापन-लीलारङ्ग भी कलिकृष्ट जीवके भवतापके विनाशके लिए था। यह बात भी श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने स्पष्ट रूपमें लिखा है—

इति कियन्ति दिनानि महाप्रभुः
समनयत् परिपाठ्य कृपानिधिः।
निजतनोर्महसास दिनन्दिनं
प्रभवता भवताप चयानपि।

श्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप लीलाके रससे अनभिज्ञ विद्याभिमानी पण्डितवृन्द उनको नदियाके नवीन अध्यापक निमाई पण्डितके नामसे ही जानते थे। प्रभुकी भगवत्ताका विश्वास उन्हींको हुआ जिनके ऊपर प्रभुकी कृपा हुई, और तब उन्होंने ही इस विद्या-विलास-लीलारङ्गके प्रकृत मर्मको समझा।

—×—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पन्द्रहवाँ अध्याय

श्रीगौरांगका शुभ-परिणय

किछु मात्र देख आइ पुत्रेर यौवन । विवाहेर कार्य मने चिन्ते अनुक्षण ॥

—श्री चै० भा० आ० ७.४६

श्रीबल्लभाचार्य और उनकी कन्या लक्ष्मीप्रिया

श्रीबल्लभाचार्य नवद्वीपवासी पाश्चात्य वैदिक श्रेणीके ब्राह्मण पण्डित थे। वे अति निष्ठावान् परम सदाचारी कृष्णभक्त विप्र थे। भक्तिशास्त्रके परम विद्वान होनेके कारण उनको नवद्वीपके पण्डितोंने आचार्य उपाधिसे भूषित किया था।

उनकी आर्थिक अवस्था उतनी ठीक न थी। बल्लभाचार्य ठाकुर यजमानीसे जीविका अर्जन करते थे। नवद्वीपके कुलीन विप्रवंश उनके यजमान थे। उनके शिष्य भी थे और घर पर लक्ष्मी-नारायणकी सेवा-पूजा होती थी।

उनका कोई पुत्र न था, एकमात्र कन्या सन्तान श्रीलक्ष्मीप्रिया थी। गृहकी अधिष्ठात्री देवता श्रीलक्ष्मीजीके प्रति इस बालिकाकी अतिशय प्रीति देखकर माता-पिताने उसका नाम लक्ष्मीप्रिया रखा था।

बल्लभाचार्य ठाकुरके साथ श्रीजगन्नाथ मिश्रपुरन्दरकी मैत्री थी। उनका एक दूसरेके घर आना जाना होता था। दोनों एक साथ बैठकर भक्ति-चर्चा करते थे, इष्ट गोष्ठी करते थे। श्रीनिमाई-चाँद उस समय आठ-दस वर्षके बालक थे, और लक्ष्मीप्रिया दो-तीन वर्षकी बालिका थी। मिश्रपुरन्दर ठाकुर बालिका लक्ष्मीप्रियाको गोदमें लेकर बहुत लाड़-प्यार करते थे, बालिकाके अपरूप रूपसे मुग्ध होकर मन ही मन कितनी ही आशाएँ, कितनी ही जल्पना-कल्पना करते रहते थे। परन्तु वह मनकी बात अपनी पत्नीके सिवा और किसीको नहीं कहते थे। उनकी यह आशा उनके जीवनकालमें पूर्ण न हुई। इसके कुछ ही दिन बाद उनका स्वर्गवास हो गया।

श्रीगौर-गणोद्देशदीपिका श्रीग्रन्थके मतसे राजा जनकने श्रीगौराङ्गावतारमें श्रीपाद बल्लभाचार्यके रूपमें नदियाके विशुद्ध ब्राह्मण कुलमें जन्मग्रहण किया था। किसी-किसी श्रीगौराङ्ग पार्षद महाजनने इस विप्रवरको भीष्मक राजाके नामसे प्रसिद्ध किया है। श्रीलक्ष्मीप्रिया देवीको इसी कारण जानकी अथवा रुक्मिणीका अवतार कहते हैं।

सब अवतारोंके अवतारी श्रीश्रीमन्महाप्रभुने नदियाधाममें अवतारके समय अपने पूर्व अवतारके नित्य-दासी-दासी और पार्षदोंको नर-नारी रूपमें भूतलमें अवतरित कराया था। परिपूर्ण स्वयं भगवान् श्री-श्रीगौराङ्ग सुन्दर नित्यधाम श्रीनवद्वीपमें अपनी परिपूर्ण लीला व्यक्त करते हैं। सर्व अवतारसार श्रीगौराङ्ग प्रभुके स्वयं प्रकाश अपूर्वरूप और नित्य-नवद्वीप-लीलाके दर्शनकी लालसासे पूर्व अवतारके नित्य-दास-दासी, पार्षद और निजजनको नर-नारी रूप धारण करके भूतलमें अवतीर्ण होना पड़ा। देवता और देवाङ्गनाओंने श्रीनवद्वीप धाममें मनुष्य-देह धारण करके प्रभुकी नवद्वीपलीलाका दर्शन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किया था। पूर्णब्रह्म सनातन स्वयं श्रीभगवान् जब नदियाके ब्राह्मण बालक शचीनन्दन हो सकते हैं, तो श्रीपाद बल्लभाचार्यके जनक या भीष्मक होनेमें आश्चर्य ही क्या है ?

शचीनन्दनमें नवयौवन-उद्‌गम—माताकी चिन्ता

शचीनन्दनके श्रीअङ्गमें अब यौवनके सारे चिह्नोंका प्रथम विकास होने लगा है। उनकी अवस्था अठारह वर्षकी है। प्रथम यौवन विकासके चिह्न बड़े ही मधुर और हृदयोन्मादक होते हैं। स्नेहमयी माताकी आँखोंमें पुत्रके नवयौवनका प्रथम विकास अतिशय मधुमय तथा मन, प्राण और हृदयको अनुरञ्जक होता है। शचीमाताकी आँखोंमें निमाईचाँद सदा ही बालक हैं, पुत्रके शरीरमें यौवनके सारे चिह्नोंको देखकर शचीमाताके आनन्दकी सीमा न रही। बड़े साधके निमाईचाँद बड़े हो गये हैं। उनके विवाहकी ठीक अवस्था हो गयी है; इससे वे आनन्दित हैं।

शचीमाताके सर्वस्व धन नीलमणि श्रीनिमाईचाँद हैं। कितनी ही साधन-भक्तिसे उनको यह पुत्ररत्न प्राप्त हुआ है। यह उनका सागर-सिञ्चित धन है, वृद्धावस्थाका एकमात्र संबल है; अन्धेकी लकड़ी है। किस प्रकार उसके दोनों हाथ एक करें—यही चिन्ता उनको सदा लगी रहती है। पितृहीन पुत्र है, कौन खड़ा होकर इसका विवाह करायेगा, कौन सुन्दर कन्या ढूँढ़ेगा, इसी चिन्तामें स्नेहमयी शचीमाता सदा व्यस्त रहती हैं।

श्रीगौर-किशोरके नवयौवनके उद्‌गममें कन्दर्प विनिन्दित श्रीअङ्गकान्ति, जगमन-मोहन अपूर्व रूपराशि, तथा रमणीजन-मन-मुग्धकारी मधुर हास्य देखकर नवद्वीपके आबाल-वृद्ध-वनिता विमुग्ध हैं; वह जब नदियाके राजपथमें आजानुलम्बित हेमदण्डवत् बाहु युगलको हिलाते-डुलाते घूमनेके लिए निकलते हैं, तो सबकी दृष्टि उनके श्रीअङ्ग-माधुर्य-राशिके ऊपर पड़ती है। किसीकी आँखोंमें और कुछ अच्छा नहीं लगता। सब कहते हैं कि शचीनन्दन रूपकी डाली लेकर नदियानगरमें शचीगृहमें उदित हुए हैं। शचीमाताके मनमें आनन्द नहीं समा रहा है। उनके प्राण-प्रिय निमाईचाँदके लिए उपयुक्त सर्वाङ्ग सुन्दरी कन्यारत्नकी आशामें मन उत्कण्ठित होता है, हृदय विलोडित होता है।

श्रीपाद बल्लभाचार्यकी दस-वर्षीया कन्या श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी परम रूपवती, सर्वगुण सम्पन्न, सर्वजन-आदृत तथा सर्वसुलक्षण युक्त हैं। माताके साथ यह परम सुन्दरी बालिका नदियाके राजपथको आलोकित करके नित्य गङ्गा-स्नान करने जाती है। इस सर्वसौन्दर्यमयी देवी-प्रतिमा बालिकाको जो देखता है, वही उनके अनिन्दित सुन्दर लावण्यमय रूपसिन्धुमें मग्न होकर सुधि-बुधि खो बैठता है। वह फिर दूसरी ओर आँखें नहीं फेर पाता। गङ्गाके घाट पर योगासनमें आर्द्रवस्त्रमें बैठकर जब बालिका लक्ष्मीप्रिया शिव-पूजन करती हैं तो गङ्गाके घाटके सारे नर-नारी उनकी अपरूप रूपराशिकी विशेष प्रशंसा करते हैं।

बालिकाका वर्ण कच्चे सोनेसे भी दीप्त है। सर्वाङ्ग सुगठित तथा अपूर्व ज्योतिपूर्ण है। देखने पर जान पड़ता है कि मानो विधाताने अपने हाथों उनके श्रीअङ्गोंके सौष्ठवको निर्दोष रूपमें परिपूर्ण किया है। इस बालिकाके अपूर्व हाथों और चरणोंके तलवे मानो हिंगूल रङ्गसे रंगे हैं। दोनों रक्तकमल चरणोंको देखनेसे पदतलमें लोट जानेकी इच्छा होती है। पद-नखमें जान पड़ता है मानो कोटि-कोटि चन्द्र विकसित हो रहे हैं।

गौर-वक्ष-विलासके पूर्ण उपयुक्त साक्षात् लक्ष्मीस्वरूपा यह बालप्रतिमा नदियावासी नर-नारीके ध्यानकी वस्तु हो गयी। एक ओर शचीनन्दन श्रीगौर किशोर नदियावासीके मनको हरकर अपूर्व केलि करते हैं, दूसरी ओर बल्लभाचार्यकी दुहिता श्रीलक्ष्मीप्रिया देवी उनके हृदय पर पूर्णतः अधिकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करके आसन लगाये बैठी है। नवद्वीपवासीके सौभाग्यकी कोई सीमा नहीं है। वे नवद्वीप-रससिन्धुमें डूब रहे हैं, श्रीगौराङ्ग सुन्दरकी मधुर लीलामें प्रवेशका अधिकार प्राप्त किया है।

श्रीगौराङ्ग सुन्दरकी मधुर लीला वर्णन करनेकी शक्ति जीवाधम ग्रन्थकारमें नहीं है। नवद्वीप विलासिनी, नवद्वीपमयी श्रीश्रीगौराङ्ग शक्तिके कृपाकटाक्षके बिना इस परम चमत्कारिणी लीलाके वर्णनमें प्रवृत्त होना दुःसाध्य है। गौरवक्षविलासिनीकी कृपासे जीवाधम ग्रन्थकार श्रीश्रीलक्ष्मीप्रिया-चरित श्रीग्रन्थमें प्रभुकी मधुर नवद्वीपलीलाका किञ्चित् आभास देनेमें समर्थ हुआ है।

श्रीगौराङ्ग-जननी अतिशय बुद्धिमती हैं। उन्होंने अपने मनकी बात मनमें ही रखी, उनके प्राणकी आशा प्राणके भीतर ही रही। कैसे पुत्रका व्याह करें? कौन दरिद्रके घर अपनी कन्या देगा? इनसब चिन्ताओंसे शचीमाता कातर हो रही हैं। परन्तु भक्त-वत्सल, भक्त-वाञ्छा-कल्पतरु श्रीगौर-भगवान् भक्तके मनोभावको समझकर उसकी मनोवाञ्छा पूर्ण करनेकी अभिलाषा करते हैं। इच्छामयकी इच्छा-शक्तिसे उनके नित्यपार्षद प्रभुकी इच्छा होते ही उसको पूर्ण करनेके लिए व्यग्र हो उठे।

प्रथम मधुर-मिलन

बालिका लक्ष्मीप्रिया अपनी प्रिय सखी-सहेलियोंके सङ्ग एक दिन गङ्गा-स्नान करने जा रही थी। गङ्गाके घाटके मार्गमें दैवात् श्रीगौर-किशोरके साथ उनका शुभ मिलन हो गया। निमाई पण्डित गङ्गाके घाटसे घर आ रहे थे। लक्ष्मीप्रिया देवी वस्त्र, पुष्प और नैवेद्य हाथमें लेकर प्रिय सखियोंके सङ्ग गङ्गा-स्नान करने जा रही थी। दोनोंकी आँखें चार होते ही दोनोंने एक दूसरेको पहचाना। बैकुण्ठनाथ श्रीगौर भगवान्ने अपनी लक्ष्मीको देखकर पहचाना और मृदु,-मधुर मुस्करा उठे। लक्ष्मीदेवी भी अपने प्राण-वल्लभको देख मृदुमन्द भावसे मुस्करायीं। लज्जासे सिर झुकाकर पति देवताकी वन्दना की। नदियाके राजपथमें श्रीश्रीगौर-लक्ष्मीप्रियाके मधुर-मिलनमें जो आनन्दका तरङ्ग उठा, जो प्रेमका ज्वार आया, उसमें सारी नदिया डूब गयी। खुले राजपथमें खड़े होकर श्रीगौर किशोरने जो मधुर लीला की, वह भाग्यवान् नदियावासी नर-नारीके नयनगोचर हुई। इस अपूर्व मिलनका प्रेमानन्द सब लोगोंके हृदयमें समा गया। दोनों हँसते-हँसते प्रेमानन्दमें विह्वल हो अपने-अपने घर गये।

यह श्रीश्रीगौर-लक्ष्मी शुभ मिलन नदियावासी नर-नारीके लिए अत्यन्त शुभ और मङ्गलजनक हुआ। किस प्रकारसे और क्यों हुआ, यह बात पीछे कही जायगी।

घटक वनमाली आचार्य और विवाह-सम्बधकी चर्चा

नवद्वीपके वनमाली आचार्य प्रभुके इस शुभ-विवाहके * घटक थे। इच्छामय श्रीगौर भगवान्के मनमें श्रीलक्ष्मीप्रिया देवीके साथ मिलनेकी इच्छा होते ही उसी दिन उनकी प्रेरणासे उनके नित्यदास वनमाली आचार्यने श्रीगौर-किशोरका शुभ विवाह-सम्बन्ध स्थिर करनेके लिए शचीमाताके पास जाकर इस शुभ विवाहकी बात चलायी।

गाँवके सम्बन्धसे वनमाली आचार्य शचीमाताको माता कहकर पुकारते हैं। शचीमाता भी उनको पुत्रवत् स्नेह करती हैं। वनमाली आचार्य विवाहकी घटकाली कर रहे हैं। उन्होंने उसी दिन शचीमाताके पास आकर हँसते-हँसते कहा—"माँ! निमाईचाँदके विवाहके लिए क्या कर रही हैं? बल्लभाचार्य आप लोगोंके स्वघर, कुल-शील आदि सब बातोंमें श्रेष्ठ हैं उनकी कन्या लक्ष्मीप्रिया सब प्रकारसे आपके

* विवाह सम्बन्ध जुटाने वालेको बंगालमें 'घटक' कहते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निमाईचाँदके योग्य पात्र है। यह शुभ सम्बन्ध यदि आपको पसन्द हो तो मैं सर्वकार्यका भार लेनेके लिए तैयार हूँ। शचीमाताने रङ्गीले प्रभुकी प्रेरणासे अपने मनोभावको छिपाकर सोच-विचार करके उत्तर दिया—"पितृहीन मेरा बच्चा चिरंजीवी हो, अभी उसको पढ़ने दो, पीछे विवाहकी बात होगी।"

घटक महाशय शचीमाताकी बातसे निराश हो गये। उनको बहुत समझाया परन्तु कोई फल न निकला। यह देखकर वे दुःखी होकर घर लौटे। वे मन ही मन सोचने लगे कि यह क्या हो गया? प्रभुके मनका भाव वे जानते थे। उन्होंने अपनी आँखों श्रीगौर-लक्ष्मीप्रिया शुभ मिलन देखा था। शचीमाताकी इस विवाहमें सम्मति नहीं है, यह बात प्रभुको बतलानी होगी। यह सोचते हुए वे अन्य-मनस्क होकर नदियाके प्रशस्त राजपथ पर चले जा रहे हैं, दैवात् उसी समय रास्तेमें श्रीगौर-किशोरके साथ उनकी भेंट हो गयी। रङ्गीले प्रभुने हँसते हुए घटक महाशयसे पूछा—"घटक-चूड़ामणि! कहाँसे आ रहे हैं? उदास क्यों हैं?" वनमाली आचार्यने उदास चित्तसे उत्तर दिया—"निमाई पण्डित! तुम्हारीमाताके पास गया था। बल्लभाचार्यकी परम सुन्दरी कन्याके साथ तुम्हारे शुभ विवाहकी बात चलायी, परन्तु बड़े दुःखकी बात है कि उन्होंने बिना सोचे-समझे मेरे इस प्रस्तावको अस्वीकार कर दिया।"

वनमाली आचार्य प्रभुके मनका भाव जानते हैं। प्रभुने ही कृपा करके अपने मनोभाव अपने भक्तके सामने प्रकट किये हैं। पुत्रके मनके भावको बिना जानेबूझे शचीमाताने इस शुभ विवाहके सम्बन्धकी बातमें श्रद्धा नहीं प्रदर्शितकी। इस बातको चतुर घटक-शिरोमणिने प्रभुको सुना दिया। सर्वज्ञ प्रभु सब जानते हैं। लीलामयकी लीला कौन समझ सकता है

रङ्गीले प्रभु घटक महाशयकी बातका कोई उत्तर न देकर कुछ देर मौन रहे। पश्चात् उनके मुखकी ओर शुभदृष्टिपात करके मृदु मधुर मुस्कानके साथ घरकी ओर लौटे। प्रभुकी इस मृदु मुस्कानका अर्थ उनके मर्मी भक्त और नित्यदास वनमाली आचार्यने समझा। 'अच्छा, माँको यह बात मैं स्वयं बोलूँगा'—यही प्रभुकी मृदु हँसीका मर्म था। इच्छा-मय श्रीगौर-भगवान्‌की नदियामें लक्ष्मीनारायण-रूपमें बैकुण्ठलीला करनेकी साध हुई है, लीलामय भगवान्‌के लीलारङ्गमें कौन बाधा दे सकता है?

हमारे सदानन्द प्रभु आनन्दसे हँसते-हँसते घर लौटे। श्रीपाद प्रबोधानन्द सरस्वतीने उनकी आनन्दलीलामय विग्रहके रूपमें स्तुतिकी है। श्रीगौर-किशोर आनन्दकी खानि हैं, वे आनन्दमें मग्न हो हिलते-डुलते दोनों सुबलित भुजाओंको डुलाते हुए सब जीवोंके प्रति शुभ दृष्टिपात करते जब घर लौटे, तो शचीमाता रसोई बना रही थीं। आनन्द-मय प्रभु सीधे रसोईघरमें माताके पास जाकर बैठ गये। माताके मुँहकी ओर न देखकर सिर झुकाये सलज्ज भावसे धीरे-धीरे बोले—"माँ! आज वनमाली आचार्य मेरे घर आये थे, तुमने उनकी बात नहीं सुनी, उनके साथ भलीभाँति बातें नहीं कीं। ब्राह्मणको मैंने बड़ा दुःखी देखा। उनका मुँह देख-कर मुझे दुःख हुआ है। साधु-सज्जनसे प्रेम करना ही सद्‌गृहस्थका कार्य है। माँ! तुमने यह ठीक नहीं किया।

गौराङ्गकी माता अतिशय बुद्धिमती हैं, इशारेसे पुत्रके मनका भाव समझकर तत्काल एक अपने विश्वस्त आदमीके द्वारा वनमाली आचार्यको बुला भेजा। घटक महाशयने समझा कि उनका कार्य सिद्ध हो गया है; वे दौड़ते हुए शचीमाताके पास आये और उनको प्रणाम करके बोले—"माँ! कहिये, क्या आज्ञा है? मैं आपका आज्ञाकारी सेवक हूं, आपके आदेशको मैं सिर पर धारण करके पालन करूँगा।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्नेहमयी गौराङ्ग-जननीने ब्राह्मणके दोनों हाथ पकड़ कर गद्‌गद स्वरमें कहा—"बच्छा वनमाली ! तुम कल मेरे निमाईचाँदके शुभविवाहका जो सम्बन्ध लेकर आये थे, उसे शीघ्र स्थिर करो । तुम इस कार्यका सम्पूर्ण भार उठाओ । मेरा और कोई नहीं है । मेरा निमाई पितृविहीन बालक है । जिस प्रकार यह शुभकार्य सुसम्पन्न हो, वही तुम करो।" वनमाली आचार्य यह बात सुनकर आनन्दसे गद्‌गद हो उठे, और शचीमाताकी चरणधूलि लेकर तत्काल श्रीपाद बल्लभाचार्यके घरकी ओर चले ।

अब वनमाली आचार्यका कुछ परिचय सुनिये। इस महापुरुषका तत्त्व कहूँगा । यह घटक महाशय जो प्रभुके शुभपरिणयके लिए इतना उद्योगशील हैं, शचीमाताकी इस शुभ कार्यमें पहले असम्मतिसे जिनको इतना दुःख हुआ था, पुनः प्रभुकी इच्छासे उनकी सम्मति प्राप्त कर उनके मनमें जो इतना आनन्द हुआ है, इसमें अवश्य ही एक निगूढ़ रहस्य है। वनमाली आचार्य अपने व्यवसायके अनुसार केवल स्वार्थ साधनके उद्देश्यसे इस कार्यमें प्रवृत्त होते तो ऐसा न होता । उनके हृदयमें एक आनन्दकी तरङ्ग उठी है । शचीनन्दनके शुभपरिणयका भार प्राप्तकर उनका हृदय और मन मानो अभूतपूर्व आनन्द रससे आप्लुत हो गया है, आज ब्राह्मण मानो आनन्द-सागरमें निमग्न हो गया है । इसका मर्म सुनिये ।

पूर्वलीलामें यह वनमाली आचार्य चित्रासखो थे। श्रीश्रीराधाकृष्णके युगल-विलास रसमें सतत मग्न रहते थे । श्रीश्रीराधाकृष्णकी वेश-विन्यास रचना उनका कार्य था । वे श्रीगौर भगवान्‌की युगल-सेवाके भिखारी थे । इसीकारण उनको श्रीगौर-लक्ष्मी मिलनके उद्योगमें इतना आनन्द है । व्रजलीलाकी चित्रासखीके भावमें वे विभावित हैं, युगल विलास-रस-सम्भोग ही उनकी साधना है । श्रीगौर किशोरके हृदयकी बात और मनके भावको जानकर उनकी प्रेरणासे ही वे इस शुभकार्यके व्रती हुए हैं। वे भक्तिशास्त्रके अच्छे ज्ञाता थे, इसीकारण नदियाकी पडिण्त-मण्डलीने उनको कविराजकी उपाधिसे विभूषित किया था ।

वनमाली आचार्य मिश्रभवनसे निकलकर आनन्दित मनसे अपने आपेसे बाहर होकर दौड़ते हुए बल्लभाचार्यके घर जा पहुँचे । घटक महाशयको देखकर श्रीवल्लभाचार्यने ससम्मान उठकर विनय-पूर्वक आसन दिया और कुशल-वार्त्ता पूछी । दोनोंमें मैत्री थी । वनमाली आचार्यने अन्य किसी बातका उत्तर न देकर सीधे अपने मनकी बात खोलकर कह दी —"मिश्रपुरन्दरके पुत्र विश्वम्भर परम पण्डित और सर्व गुणोंके सागर हैं । तुम्हारी कन्याके योग्य वर हैं । यदि तुमको ठीक लगता हो तो कन्याके लग्नकी तैयारी करो ।"

श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने अपने श्रीचैतन्य चरितामृत महाकाव्यमें वनमाली आचार्यके मुखसे उनके इस घटक-कार्यके सम्बन्धमें कुछ श्लोक कहलाये हैं जो बहुत सुन्दर हैं । कृपालु पाठक वृन्दके आस्वादनके लिए नीचे उद्धत हैं ।

गुणैर्वरो मिश्रपुरन्दरात्मजः
शरीरवत्तामतनुः किमाश्रितः ।
य एष सौन्दर्यमयीं तनूमिमां
जगत्त्रयीलोकविमोहिनीं श्रितः ॥
य एल निष्णाततया विधे
विधेर्विधानदक्षस्य विधानकर्मणि ।
विधाय सौन्दर्यं समूहमग्रतः
सुधामयः कोप्यतनुर्विनिर्ममे ॥
यदास्यचन्द्रं विधिना विधाय तं
चिराय भूयिष्ठमिवात्म सौष्ठवम् ।
विदाम्बभूवे गदता प्रतिक्षणं
चतुर्भिरास्यैरपि साधु साध्विति ॥
अतः सुतायास्तव योग्यविभ्रमः
स कल्पवल्या इव कल्पभूरुहः ।
योगोस्तु मुक्तामणिवर्ण्ययोरिव
प्रियाकरः सर्वजगज्जनस्य सः ॥ ३.३०-३३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीपाद बल्लभाचार्य कन्यादाय-ग्रस्त हैं। यह शुभ संवाद सुनकर वे आनन्द सागरमें मग्न हो गये। मित्रवर घटक शिरोमाणिको प्रेमानन्दमें गाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान कर उनकी अनुमतिसे तत्काल अन्तःपुरमें जाकर गृहिणीको यह शुभ समाचार दे आये। आचार्य-गृहिणी आनन्द विह्वल होकर पति-देवताके दोनों हाथ पकड़कर गद्‌गद स्वरसे कहने लगी—"अजी ! जिस प्रकार यह शुभ सम्बन्ध शीघ्र स्थिर हो वही उपाय तुम करो। अहा ! मैं समझती हूँ कि मेरी लक्ष्मीप्रियाका अब भाग्य लौटा है। ऐसा वर बहुत भाग्यसे प्राप्त होता है।" श्रीपाद बल्लभाचार्य हँसते हुए अपने मित्रवरके पास आकर बोले—यथा श्रीचैतन्य चरितामृत महाकाव्यमें—

यथा गुणैः काञ्चनहारवल्ली
रत्नेन सन्नायकतां गतेन।
निष्पन्नतां याति तथा त्वदीयै-
र्गणैस्तयोः संघटना घटेत ।। ३.३९

भावार्थ—"हे महाशय ! गुण-गुम्फित स्वर्णहारमें नायक मणिके सहयोगसे जैसे अपूर्व शोभा होती है, उसी प्रकार आपके गुणसे यदि गौर-लक्ष्मीप्रियाका शुभमिलन संघटित होता है तो इसमें सन्देह नहीं कि इससे तद्रूप शोभा होगी।

श्रीचैतन्य भागवतोक्त श्रीपाद बल्लभाचार्यकी उक्ति और भी मधुर है। यथा,

"सेहेन कन्यार पति मिले भाग्यवशे ।।
कृष्ण यदि सुप्रसन्न हयेन आमारे ।
अथवा कमला गौरी सन्तुष्ट कन्यारे ।।
तबे से सेहेन आसि मिलिबे जामाता ।
अविलम्बे तुमि इहा कराह सर्वथा ।।
—चै. भा० आ० ९-९१-९३

घटक महाशय अपने मित्रकी सम्मति प्राप्त कर परम आनन्द पूर्वक वहाँसे उठकर शचीमाताको यह शुभ संवाद देनेके लिए पुनः मिश्र-भवनकी ओर चले। उठते समय श्रीपाद वल्लभाचार्यने उनके दोनों हाथ पकड़कर कातर स्वरसे कहा—"एक बात कहते बड़ी लज्जा होती है। मैं तो निर्धन हूँ, मेरी कुछ भी देनेकी शक्ति नहीं है। केवल पाँच हरितकीसे कन्या-दान करूँगा। यह आज्ञा उनसे लेने आना।"

घटक-शिरोमणि यह बात सुनकर हँसे। मित्रवर-को प्रेमालिङ्गन प्रदान करके बोले—"मित्रवर ! इसकी कोई चिन्ता नहीं। शचीमाता तुम्हारे कन्या-रत्नको पाकर ही कृतार्थ हो जाँयगी।" यह सुनकर बल्लभाचार्यके मनमें बड़ा भरोसा हुआ।

घटक-शिरोमणि शचीमाताके पास चले। वे स्वभावतः धीरे-धीरे चलते हैं, परन्तु मनमें आनन्दित होकर आज दिशा-ज्ञान-शून्य होकर द्रुत गतिसे चले जा रहे हैं। रास्तेमें श्रीवास पण्डितके साथ भेंट हो गयी। उन्होंने डरते-डरते पूछा, "घटक महाशय ! भागे क्यों जा रहे हो ? घर पर कोई विपदकी आशङ्का तो नहीं है ?" घटक महाशयके पास उत्तर देनेके लिए समय नहीं है। वे मृदु मन्द मुस्कानके साथ 'पीछे बतलाऊँगा' कहते हुए नदियाके जनाकीर्ण राजपथ पर द्रुत गतिसे चल पड़े। उनके मुँह पर हँसी देखकर श्रीवास पण्डितके मनकी आशङ्का तो दूर हुई किन्तु बात क्या है, यह जाननेके लिए उद्विग्न हो उठे।

वनमाली आचार्य शचीमाताके पास आकर उनको प्रणाम करके हँसते-हँसते सब बात कह गये। श्रीगौराङ्गकी माताके मन और प्राण आनन्दसे भर गये। उन्होंने उनको दिल खोलकर आशीर्वाद दिया। तब शचीमाताने आत्मीय स्वजनों तथा पड़ोसके कुटुम्बीय जनको यह समाचार सुनाया। शचीनन्दनके शुभ परिणयका शुभ संवाद सुनकर सभी आनन्दसे नाच उठे।

परिणयकी मङ्गल तैयारियाँ

माताके आदेशसे अपने इस शुभ विवाहका दिन निमाई पण्डितने स्वयं निश्चय किया। निमाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पण्डितके शुभविवाहका सुसंवाद उनके सखावृन्द तथा छात्रोंने सुना। उनके आनन्दकी सीमा न रही। प्रभुके शुभ विवाहके उद्योगकर्त्ता वे स्वयं थे। अपनी माताके आदेशसे उन्होंने अपने विवाहकी सारी सामग्री जुटायी।

शुभक्षणमें शुभ विवाहका शुभ अधिवास कर्म सुसम्पन्न हुआ। इस माङ्गलिक कार्यमें नदिया-सुन्दरी वृन्द मिश्र-भवनमें एकत्रित हुई। उनके मनमें आज आनन्दकी सीमा नहीं है, नदिया-सुन्दरियोंके सुन्दर-वदन पर आज हास्य छटा बिखर रही है। शचीमाताने बहुत आदरपूर्वक उनको तेल-हल्दी तथा मिष्टान्न आदि प्रदान कर सन्तुष्ट किया।

शचीनन्दन गन्ध-माला-चन्दनसे आभूषित हुए। विधिपूर्वक माङ्गलिक कर्मोंका अनुष्ठान किया गया। मिश्र-भवन बहुत दिनोंके बाद माङ्गलिक वाद्यध्वनिसे मुखरित हो उठा। शचीमाताका हृदय आनन्दसे उमड़ उठा। वे पड़ोसकी पुरनारी-वृन्दके साथ पुत्रके शुभ-विवाहकी चर्चामें मिश्रपुरन्दर ठाकुरके देहान्तकी बात उठाकर अजस्र अश्रुपात करने लगीं। इस शुभ दिवसमें यदि वे रहते तो कितना आनन्द होता। पति-वियोग-विधुरा गौराङ्ग-जननीने अपने जीवन-सर्वस्व-धन निमाईचाँदका मुँह देखकर अपने आँचलसे आँखोंके आँसू पोंछकर सारे दुःखोंको भुला दिया। उन्होंने सजल नयन होकर पड़ोसकी स्त्रियोंसे कहा—'माताएँ! आप लोग मेरे निमाईचाँदके माङ्गलिक अधिवास कर्मको सुसम्पन्न करें। इन सब मङ्गल कार्योंमें मेरा अधिकार नहीं है।"

श्रीनिमाईचाँद वहाँ उपस्थित थे। माताके मुखसे यह दुःखकी बात सुनकर वह बहुत मर्माहत हुए। कनक-केतकीके समान विशाल नयनोंसे मुक्ता-फलके समान अश्रुबिन्दु टपकने लगे, और उनका वक्षःस्थल भीग गया। शचीमाता सब कुछ समझ गयीं, और उन्होंने यह भी समझा कि अपने पुत्रके मनमें यह दुःख इस असमयमें उत्पन्न करने वाली वे स्वयं हैं, यह सोचकर वे लज्जित और दुःखित हो उठीं और पुत्रको नाना प्रकारसे समझाने लगीं। उन्होंने निमाईचाँदको गोदमें लेकर बैठकर स्नेहपूर्वक मुख चुम्बन करके कातर स्वरसे कहा,- "मेरे जीवन-सर्वस्व-धन निमाई! शुभ कर्ममें क्या आँखोंमें आँसू लाते हैं? तुम रोते हो क्यों बेटा?"

माताकी इस बातसे पितृहीन प्रभुका पितृवियोग दुःखसमुद्र और भी उथल उठा। वे अत्यन्त उदास मुखसे लम्बी साँस छोड़ते हुए बोले—"माँ! तुमने ही तो मुझे इस दुःखका रास्ता दिखलाया। तुमने यह क्यों कहा? क्या पितृविहीन होनेके कारण मेरे पास धन-जन-बल-शक्ति कुछ नहीं है? ऐसी बात तुम फिर मुँह पर मत लाना। माँ! मैं दैवकार्यमें समर्थ हूँ, साधारण इस लौकिक कार्यकी तो बात ही क्या? देखना, तेरे घरमें लक्ष्मीका भण्डार हो जायगा। तुम अकातर भावसे जिसको जो चाहोगी, दान करोगी।"

स्नेहमयी शचीमाता पुत्रकी बात सुनकर अप्रतिभ और लज्जित हो गयी। उन्होंने प्रेमपूर्वक पुत्रको गोदमें लेकर स्नेहके साथ मुख चुम्बन करके मधुर शब्दोंमें कहा—"बेटा निमाई! तुम्हारे जैसा पुत्ररत्न प्राप्त कर मैं सारे सन्ताप भूल गयी हूँ। बेटा! तुम सब कार्यमें समर्थ हो, यह मैं जानती हूँ। तुम मेरे विश्वदुर्लभ धन हो। तुम्हारे चन्द्रमुखको देखते ही मेरी सारी कमी पूरी हो जाती है।" इतना कहकर स्नेहमयी गौराङ्ग जननीने पुत्रके चौड़े वक्षः स्थल पर सुवासित अगरू-चन्दन लेपन कर दिया। उस समय शची-नन्दनकी जो शोभा हुई, उसका वर्णन करते हुए श्रीपाद कविकर्णपूर गोस्वामी कहते हैं—

त्रैलोक्यमाधुर्यमयार्यकान्तिः
प्रसूनमाल्याभरणानुलेपैः।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विभूषितः स्मेरमुखो विरेजे
सौन्दर्यलक्ष्म्येव वृतः स्वयं सः
—चै. च. महाकाव्य ३.५८

अर्थात् त्रैलोक्यकी माधुरीकी राशि लेकर मानो स्वयं लक्ष्मी देवीने उनको सजाया हो। उनके सुन्दर सहास्य वदनकी शोभा अपूर्व भाव धारण करके जगत्के लोगोंका मन हरती है।

नदिया-सुन्दरीगण श्रीगौराङ्ग नागरके रूपसे मुग्ध होकर उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गकी माधुरीको मानो सतृष्ण नयनोंसे पान कर रही हैं। उनका मन श्रीगौराङ्ग-रूप-सुधा-रसमें निमग्न है। उनको बाह्य ज्ञान नहीं है। शचीमाताने जब उनको शुभ अधिवास-कर्म आरम्भ करनेका आदेश दिया तो उनको निद्रा टूटी।

श्रीनिमाईचाँदका शुभ अधिवास-कर्म बड़े समारोहके साथ सुसम्पन्न हुआ। उधर श्रीपाद वल्लभाचार्यके भवनमें भी नदिया सुन्दरीगणने एकत्रित होकर कन्याके शुभ अधिवास-कर्मको सुसम्पन्न किया। वहाँ भी आनन्द-कोलाहल, माङ्गलिक हुलूध्वनि, तैल-हरिद्रा तथा मिष्ठान्न वितरण आदि शुभ अनुष्ठानमें कोई त्रुटि नहीं हुई।

नवबाला श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीने वस्त्रालङ्कारसे भूषित होकर अपरूप शोभा धारण की है। सब कहते हैं कि ऐसी रूपवती कन्या कभी किसीने नहीं देखी। देवी-प्रतिमाकी रूपराशि मानो उमड़ी पड़ती है। अङ्गोंकी लावण्यच्छटासे दशो दिशाएँ उद्भासित हैं। सबके मुँहपर एक ही बात है—'योग्यः योग्येन युज्यते।' जैसा वर है, वैसी ही कन्या है। मानो साक्षात् लक्ष्मी-नारायण हैं।

बारात

अधिवासके दूसरे दिन शुभ विवाह था। श्रीपाद वल्लभाचार्यने शुभ बारातकी अभ्यर्थना करते हुए ब्राह्मण भेजा। विप्रगण शचीनन्दनके घर जाकर उनसे बोले—

"विधीयतां सम्प्रति वत्स यात्रा
पन्थान एते शुभदा भवन्तु।"

श्रीगौराङ्ग-भवनमें आज आनन्दका स्रोत फूट पड़ा है। नाना प्रकारके बाजे नाना रङ्गमें बज रहे हैं। सुसज्जित पालकी द्वारपर तैयार खड़ी है। आत्मीय स्वजन, जाति-कुटुम्ब, बालक-बालिका और पुरनारीवृन्द सभी बारात देखने आये हैं। निमाई पण्डितके प्रिय सखावृन्द उनको वरसज्जासे सजा रहे हैं। ठाकुर लोचनदासने इस वरसज्जाका चित्र अति सुन्दर भाषामें वर्णन किया है—

गन्ध चन्दने अङ्ग करिल लेपन।
ललाटे तिलक जेन चाँदेर किरन॥
मकर कुण्डल कर्णे करे झलमल।
मुकुतार हार शोभे हृदय ऊपर॥
काजरे उजोर राता कमल नयान।
भूरु युग जेन दुइ कामेर कामान॥
अङ्गद किङ्कण दिव्य रतन अंगूरी।
झलमल अङ्ग तेज चाहिते ना पारि॥
दिव्य माल्य गले शोभे रक्तप्रान्त वास।
गन्धे महमह करे अङ्गेर बातास॥
सुवर्ण दर्पण करे जेन पूर्णचन्द्र।
हेरि लोक निज हिया ना हय स्वतन्त्र॥

सारी नदियाके लोग श्रीगौराङ्ग-भवन-द्वारपर इकट्ठे हुए हैं। आनन्द कोलाहलसे नवद्वीपका राजपथ आज मुखरित है। सबकी दृष्टि प्रभुकी जग-मन-मोहन अपरूप रूपराशिपर पड़ी रही है। सर्वचित्ताकर्षक विश्व विमोहन श्रीगौराङ्ग-रूपके आलोकसे दशों दिशाएँ मुखरित हैं। सारे नवद्वीपमें सब लोगोंके मुखसे प्रभुके इस अपरूप रूपकी बात लेकर एक ध्वनि चल पड़ी है। प्रेममय प्रेमके प्रभु सबके प्रति शुभ प्रेम दृष्टि रखते हैं। उनकी आनन्दमय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमूर्त्ति दर्शन करके नदियावासी नर-नारीवृन्द आज मानो आनन्द-सिन्धुमें निमग्न हैं। आनन्दधाम नवद्वीपमें आज मानो आनन्दलीलामय विग्रहका अधिष्ठान हुआ है।

श्रीपाद प्रबोधानन्द सरस्वतीको प्रभुके नवद्वीप-लीलारसके आस्वादन करनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। उनके नदिया-नागर भाव और रूपका भी दर्शन वे न कर सके। तथापि उनके द्वारा रचित प्रभुके प्रणाम-वन्दना सम्बन्धी श्लोकमें जो देखनेमें आता है उससे स्पष्ट समझा जा सकता है कि वे श्रीगौर नागर भावमें विभावित थे। उन्होंने भी प्रभुको कपट-संन्यासी कहा है। उनके द्वारा रचित श्लोक यह है—

आनन्दलीलामयविग्रहाय
हेमाभदिव्यच्छविसुन्दराय।
तस्मै महाप्रेमरसप्रदाय
गौराङ्गचन्द्राय नमो नमस्ते॥ *

श्रीगौराङ्ग भवनमें आज बड़ी धूम है। नदिया की पण्डित मण्डली एकत्रित होकर नवीन अध्यापक निमाई पण्डितको शुभाशीर्वाद देने आये। सभी बारात जाँयगे।

श्रीनवद्वीपचन्द्रने नदिया-नागर-भावमें वरके वेषमें सुसज्जित होकर उपस्थित नर-नारीवृन्दके प्रति शुभदृष्टिपात किया। सुसज्जित पालकी पर बैठनेके पूर्व शचीनन्दनने माताको प्रणाम किया, उपस्थित विप्रमण्डलीको नमस्कार किया। बाजे बज उठे, नदिया-सुन्दरी पुरनारीवृन्दके माङ्गलिक हुलूध्वनिसे मिश्र-भवन पूर्ण हो गया।

इष्ट कुटुम्ब और ब्राह्मण सज्जन साथमें बाराती सखावृन्द तथा छात्रवृन्दसे परिवेष्टित होकर नवीन अध्यापक निमाई पण्डित शुभलग्नमें क्षुभक्षणमें हँसते हुए पालकी पर चढ़े। नदियाकी चौड़ी सड़क पर आज काफी भीड़ है। दीपावलीसे शोभित आनन्द और कोलाहलसे नदिया-नगरी परिपूर्ण हो गयी। प्रभुकी पालकीके सामने नट लोग मधुर नृत्य करने लगे। बारातके सङ्ग चलनेवाले विप्रगण वेद-ध्वनि कर रहे हैं। भाट लोग सुललित स्वरमें स्तुति पढ़ रहे हैं। चौड़ी सड़कके दोनों ओर रास्ते पर सुरम्य अट्टालिकाके ऊपर नदिया-सुन्दरीवृन्द कतार बाँधकर नव वरकी अपरूप रूपसुधा पान करनेके लिए ग्रीवा उठाये हुए हैं। अन्यान्य पुरनारीवृन्द अपने आपको भूलकर लज्जा-शर्म त्यागकर जनाकीर्ण राजपथमें पुरुषोंके साथ ठेला-ठेली करते हुए समीपकी किसी अट्टालिका या उच्च प्राचीर पर चढ़कर नव वरको देखनेके लिए बहुत आतुर हो रही हैं।

कन्या-द्वार

नदिया नगर परिभ्रमण करके गंगाके किनारेके रास्तेसे निमाई पण्डित विवाहके बारातीके साथ शुभक्षणमें श्रीपाद बल्लभाचार्यके घरके द्वार पर आ उपस्थित हुए। बारंबार मांगलिक शङ्खध्वनि और पुरनारीवृन्दकी हुलूध्वनिसे आचार्यका गृह परिपूर्ण हो गया। वर और कन्यापक्षके बाजा बजानेवाले एक साथ बाजे बजाने लगे। श्रीपाद बल्लभाचार्यने सत्कारपूर्वक जामाताको पालकीसे गोदमें लेकर विवाह-सभामें दिव्यासन पर बैठाया। सभा आलोकित करके नदियाके निमाई पण्डित सुसज्जित वरासन पर बैठे। उनकी अपरूप रूपछटाकी आलोक मालासे मानो सब निष्प्रभसे लगने लगे। नव वरके मुख-कमलमें मृदु-मृदु मुस्कान है। अंगकी किरण छटासे चतुर्दिक आलोकित है। सबकी दृष्टि उनके श्रीमुख-चन्द्रके ऊपर पड़ रही है। श्रीपाद कवि कर्णपूर

---

* मूल श्लोकमें 'चैतन्यचन्द्राय' पाठ लिखा है। प्रभुके संन्यासका नाम शुभ विवाहके समय शुभकर नहीं होनेके कारण पाठ परिवर्तन करनेके लिए बाध्य हुआ। —ग्रन्थकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गोस्वामीने दो श्लोकोंमें प्रभुकी इस वरसज्जाकी शोभासे सम्पन्न अपरूप रूपछटाका सुन्दर वर्णन किया है जो नीचे पाद टिप्पणीमें उद्धृत किया जाता है।* इसके बाद श्रीपाद बल्लभाचार्यने यथाविधि पाद्यार्घ्य प्रदान कर जामाताको वरण किया—

इतना रूपवान् वर अबतक किसीने कहीं देखा नहीं, यही बात सबके मुँह पर है। यह कभी किसीने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि ऐसी सर्वचित्ताकर्षक रूपमाधुरी मनुष्यमें भी हो सकती है। भाग्यवान् नदियावासी नर-नारियोंने ऐसा रूपवान् व्यक्ति पहली बार देखा। श्रीभगवान् केवल जगत्के जीवोंका चित्त आकर्षण करनेके लिए नर-रूप धारण करते हैं। रूपका आकर्षण अतिशय प्रबल होता है। जीवोंके नेत्र रूपतृष्णाके लिए कातर होते हैं, उनके हृदय और मन रूप पर मुग्ध होते हैं। इसी कारण श्रीगौराङ्ग सुन्दरने रूपका सागर लेकर शचीके गर्भसे आविर्भूत होकर सब जीवोंको रूपसे मुग्ध करके निःसीम कृपा प्रदर्शितकी है।

नदिया-नागरके इस अपूर्व रूपसागरमें आज नदियावासी पूर्णतः निमग्न हो रहे हैं। गोते खा रहे हैं। श्रीगौरकिशोरको अपने हृदय दर्पणमें सदाके लिए आवद्ध कर रखनेकी आशासे आज वे आनन्दोन्मत्त हो रहे हैं। नदियावासीकी इस आशाको नदियाके अवतारने पूर्ण किया है। धन्य हैं नदियावासी! तुम्हारे चरणोंमें कोटि-कोटि नमस्कार! तुम्हारी कृपा होने पर ही इस आनन्दकी उपलब्धिके लिए शक्ति प्राप्त होगी।

विवाह-मण्डपमें कन्याका आगमन

तब श्रीपाद बल्लभाचार्यने विवाह-मण्डपमें कन्याको लानेकी अनुमति दी। सुसज्जित और पत्रपुष्पसे सुशोभित, दीपमालासे युक्त, दिव्य सिंहासन पर बैठी, नाना रत्नालङ्कारसे आभूषित, दिव्य वस्त्र धारण करके नववाला श्रीमती लक्ष्मीप्रिया तब विवाह-मण्डपमें लायी गयीं। देवीकी रूपछटासे सभास्थल झलमला उठा। श्रीगौराङ्ग सुन्दरकी रूपमाधुरीके साथ देवीकी दिव्यज्योतिसे पूर्ण अङ्ग-कान्तिकी छटा मिलकर विवाह-मण्डपको अपूर्व शोभासे युक्त कर दिया। उसका वर्णन भाषाके द्वारा नहीं किया जा सकता।

श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने दो श्लोकोंमें इसका वर्णन किया है।* सभाके सब लोगोंने बारंबार जय-जयकार करके श्रीश्रीगौर-लक्ष्मी शुभ युगलको आह्वान किया।

जय गौरघरणी, प्रेमरुपिणी जगत जननी,
तुमि माँ।
तुमि नारायणी, तुमि माँ लछिमी,
पतितपावनी शुभदां॥

---

* पाद्यादिना तं वरयाम्बभूव स
द्विजो नवद्वीपमहौषधीश्वरम्।
वभौ वृतस्तेन महाप्रभुस्तदा
त्रैलोक्यलक्ष्मी ललितां तनुं श्रितः॥
स गौरचन्द्रः कनकाङ्गदादिभि-
र्विराजमानोरुभुजान्तरः स्वयम्।
कल्पद्रमु श्रीरुचिरस्य विभ्रमं
जहार हारी तपनीय भूभृतः॥

* चिराय सा लब्ध फलं मनोरथं
विलोक्य वाला चरणाम्बुजं प्रभोः।
समाश्रिता दीप्तिमुवाह भूयसीं
सौन्दर्यलक्ष्मीरिव सा स्वयम्बरा॥
परस्परं तौ सुमनः समूहौ
विचक्रतुः प्रेमरसेन सार्द्धम्।
तयोरभिक्षा सममाविरासीत्
तदैव चित्राशशिनोरिवासौ॥

—श्रीचैतन्य चरितामृत महाकाव्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कलिर जीवेर बड़, आदरेर मातृमूर्त्ति,
तुमि गो।
नदियावासीर, हृदयेर धन,
हरिदासे कृपाकर गो ।।

—ग्रन्थकार

कन्या-दान

श्रीपाद बल्लभाचार्य कन्यादान करने बैठे। वे हाथमें पाद्यार्घ्य लेकर प्रभुके शिव-विरिञ्चि-वाञ्छित रक्तकमल चरणको देखकर प्रेम-विह्वल होकर अश्रु प्रवाह करने लगे। उन्होंने नयनोंके प्रेमश्रु जलसे श्रीगौर भगवान्‌के चरणकमल पर अर्घ्य प्रदान किया। यथा, श्रीचैतन्य-चरित महाकाव्यमें—

अथोपविश्य प्रभवे प्रदातुं
सुतां द्विजासौ विधिना विधिज्ञः।
वराय पाद्यं विनिवेद्य हृद्यं
हृदिस्थितं प्रेम विलोचनाभ्याम् ।।

कुछ देरके बाद ब्राह्मणने आत्मसंवरण करके विधिपूर्वक पाद्यअर्घ्य, आसन, मधुपर्क आदिके द्वारा जामाताका पूजन करके कन्यादान दिया। उनका सारा अङ्ग प्रेम पुलकित हो उठा।* वह आनन्दमें गद्‌गद होकर पुलकाश्रु विसर्जन करने लगे।

महिला-आचार

अब स्त्री-आचारका शुभ समय आया। नदियाके नवीन अध्यापक-शिरोमणि निमाई पण्डित विचित्र रङ्गसे रङ्गे पीढ़े पर विवाहके आङ्गनमें नदिया-सुन्दरीवृन्दसे परिवेष्टित होकर खड़े हैं। उनके प्रिय सखागण नदिया-सुन्दरीवृन्दके पीछे पंक्तिबद्ध होकर खड़े-खड़े रङ्ग देख रहे हैं।

नव वरके सामने घूँघट काढ़े नवबाला श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी विचित्र वस्त्रालङ्कारसे आभूषित होकर एक रङ्ग रञ्जित दूसरे पीढ़े पर बैठी हैं। उनको कन्यापक्षके दो बलवान युवक पीढ़ा पकड़ कर धीरे-धीरे उठा रहे हैं। मृदु मधुर बाजे बज रहे हैं। नदिया सुन्दरीगण रह-रहकर हुलूध्वनि कर रही हैं, कोई-कोई शुभ शंख बजा रहे हैं।

धीरे-धीरे वरके चौड़े वक्षःस्थल तक पीढ़ा उठा, रत्नखचित अन्तःपट द्वारा वर-कन्याका मुखचन्द्र आच्छादित कर दिया गया। उसी समय शत-शत शंख बज उठे। अगणित नदिया-सुन्दरीवृन्दकी माङ्गलिक हुलूध्वनि बारंबार सुनायी पड़ने लगी। बाजे मधुर स्वरसे बज उठे। लज्जाशीला नवबाला श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीने पहले प्राणबल्लभके रक्त कमल चरणों पर पुष्पमाल्य अर्पित कर प्रणाम किया। उसी समय शुभ सुयोग पाकर घूँघटके भीतरसे दिल भर अपने प्राणवल्लभके कोटि चन्द्र-विनिन्दित मुखचन्द्रको दर्शन करके उन्होंने अपने हृदयकी प्यास मिटायी। वे मृदु मधुर भावमें मुस्काने लगीं, उस मुस्कानका मर्म यह था—"प्राणबल्लभ! बड़े भाग्यसे तुम्हें मैंने पतिरूपमें प्राप्त किया है। आज मेरी शिव-पूजाका फल प्राप्त हो गया।"

कन्याओंने देवीको वरकी सात बार प्रदक्षिणा कराकर पुनः शुभदृष्टिके लिए ऊपर उठाने पर वर-कन्याका माल्य परिवर्तन हुआ। नदियासुन्दरीगण प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर शत कण्ठसे माङ्गलिक हुलूध्वनि करने लगीं।

यहाँ विवाद उठा कि वर-कन्यामें बड़ा कौन? इसका सरस वर्णन निम्नोद्धृत छोटी-सी कवितामें देखिये—

---

* दत्त्वा तनूजां महिताय तस्मै
वभार हर्षं सदृशं समुत्सुकः।
श्मानि चासौ मनसि प्रकामं
बहिर्विभेदाथ तनूरुहेषु ।।
—श्रीचैतन्य चरित महाकाव्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वर-कन्यामें बड़ा कौन ?

नव दुलहिन श्रीलक्ष्मिप्रिया,
श्रीगौरचन्द्र नव-नव दुलहा ।
मधुर वेष वय, मधुर रूप रंग,
सजित युगल छवि मधुर महा ।।
चन्द्र-चन्द्रिका, रति-रतीश भी
होते पल-पल बलिहारी ।
विश्व विमोहित, मोहित अग-जग,
मोहित सारे नर-नारी ।।
मङ्गल मण्डपकी मङ्गलमय
शोभा, मङ्गल सिंहासन ।
मङ्गल वेला, मङ्गल परिणय,
मङ्गल विधि, मङ्गल दर्शन ।।
मङ्गल माला युगल करोंमें,
मङ्गलमय अर्पण-धारण ।
मङ्गल गायन ललनाओंका,
मङ्गल भाँवर गँठ-बन्धन ।।
गौरचन्द्रकी नवल चन्द्रिका-
को न मिला क्या ? कर अर्पण ।
आज हुई अति सफल जीवना
पाकर 'उनसा' जीवन-धन ।।
लक्ष्मिप्रिया-जीवन भी पुलके,
लक्ष्मिप्रिया-सी पा वामा ।
आज होगया सभी सुदक्षिण,
मिली सङ्गमें अभिरामा ।।
प्रमुदित माता, अलियाँ, सखियाँ,
आज हृदयकी कली खिली ।
प्रमुदित सब साथी वर-यात्री,
आज सिन्धुको सरित मिली ।।
कहते-कहते लोग न थकते—
विधिने कैसी करी भली ?
शुभ आशीष सतत सब देते,
'युग-युग जीवे कुसुम कली' ।।

मधुरोत्सवके मधुर रंगमें,
जब जन-मन था डूब रहा ।
तभी हुआ प्रारम्भ वहाँ पर,
प्रिय कोलाहल एक महा ।।
'वर कन्यामें कौन बड़ा है ?'
छिड़ा हुआ था प्रश्न यही ।
कर न सका कुछ कोई निर्णय,
सूझ किसीको रहा नहीं ।।
वर कन्या दोनों पक्षोंके
प्रखर कुशाग्र कुशल पण्डित ।
वयोवृद्ध मीमांसक तार्किक,
सबकी प्रतिभा थी कुण्ठित ।।
सौंप दिया फिर इस निर्णयका
भार भवन ललनाओं पर ।
बोल उठा—'कन्या महान् है',
सुन्दरियोंका कोकिल स्वर ।।
थे अवाक् सुन, मौन अधर पर,
गौर पक्ष पण्डित सबही ।
कौन करे इसका विश्लेषण,
किञ्चित साहस शेष नहीं ।।
गौरचन्द्रके सखा गदाधर
पण्डितको यह मान्य नहीं ।
एक वृद्ध मातासे पूछा—
कैसे है यह बात सही ?
रूप रङ्ग विद्या सुयोग्यता,
करें विवेचन किसी तरह ।
गौरचन्द्रकी सर्वश्रेष्ठता,
सिद्ध हो रही सभी तरह ।।
अन्या वृद्धा किन्तु सुरसिका-
ने मुसकाकर बात कही—
"कठिन समझना इस रहस्यको—
कौन बड़ा है कौन नहीं ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है न नया निर्णय यह निर्णय
युगों पूर्वसे ऋषियोंका ।
नारी नित ही श्रेष्ठ पुरुषसे,
सत्य सनातन शास्त्रोंका ।।

यदि 'इकार' का साथ न होता,
'शिव' रह जाते 'शव' केवल ।
शिवकी शिवताका कारण,
है शक्ति-तत्व अनुपम अविरल ।।

इसीलिए शंकरसे पहले,
गौरी नाम लिया जाता ।
इसीलिए है राधा-माधव,
सिता-राम कहा जाता ।।

और बताती एक बात हूँ,
अति रहस्यतम अति गोपन ।
जिससे सीता-राधाकी
गरिमाका होता उद्घाटन ।।

कौन गया था जनकपुरीको
प्रेम-भिखारी बने हुए ?
कौन मुदित होता निकुंजमें
राधा-पद पर पड़े हुए ?

उसी तरह श्रीलक्ष्मिप्रियाका
मङ्गल द्वार किसे भाया ?
प्रणय याचना लिये नयनमें
कौन यहाँ पर है आया ?

तनिक विचारें, दाता-भिक्षुक-
में होता है कौन बड़ा ?
तनिक देखलें, आज यहाँ पर
हाथ पसारे कौन खड़ा ?

इसीलिए मेरे समान ही,
सहज सत्य स्वीकार करो ।
'लक्ष्मिप्रिया गौराङ्गचन्द्र जय',
मुदित हृदयसे घोष करो ।।

चरण-धूलि ली बृद्धा माँकी,
ग्रन्थि हृदयकी गयी निकल ।
झुकी विद्वता शक्ति-चरण पर,
नयन सजल अति मन विह्वल ।।

'लक्ष्मिप्रिया गौराङ्गचन्द्र जय'
बोले अन्तर अधर युगल ।
कण्ठ-कण्ठके जय निनादसे,
हुआ सुगुञ्जित नभ मण्डल ।।

हुआ घोष जिस अमर सत्यका
लक्ष्मिप्रियाके आँगनमें ।
उसी सत्यकी आवृति होती
सदा-सर्वदा युग-युगमें ।।

जैसे प्रतिदिन फूल विहँसते,
जैसे प्रतिदिन रवि आता ।
उसी तरह यह सत्य सनातन
घर-घर सौरभ फैलाता ।।*

अपनी लक्ष्मीको सामने पाकर श्रीगौर-नागर आज आनन्दविह्वल होकर अतृप्त नयनोंसे प्रियतमाकी रूप-सुधा पान कर रहे हैं। निमाई पण्डितके मुखसे आज हँसी रुक नहीं रही है। उनकी लज्जाका बाँध टूट गया है । वे सबके सामने दिल खोलकर हँस रहे हैं। उस सुधामयी हँसीसे द्युलोककी अमियराशि उमड़ पड़ी, गोलोकसे सुधावृष्टि हुई । भाग्यवान् नदियावासी उस सुधाको पान करके सदाके लिए अजर-अमर हो गये ।

प्रभुकी इस हँसीका मर्म यह था, "अपनी वक्ष-विलासिनी लक्ष्मीको भूतलपर लाया हूँ, अपनी सर्व-श्रेष्ठ नरलीला, अपूर्व माधुरी इसे दिखाऊँगा । बैकुण्ठकी लक्ष्मीको नदियाकी प्रेमसम्पत्ति दिखाऊँगा।" परन्तु रङ्गीले प्रभुने कार्यवश इसके विपरीत किया । यह लीला रहस्य पीछे समझाया जायगा ।

---

* श्रीराधेश्याम बंका, गीता-वाटिका गोरखपुर द्वारा रचित ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्त्री आचार शुभकर्म समाप्त हो जानेके बाद निमाई पण्डित विवाह-मण्डपमें पुनः वरासन पर उपविष्ट हुए । नववाला श्रीगर्ती लक्ष्मीप्रियादेवी वस्त्रालङ्कारसे आभूषित होकर प्रभुके वामभागमें बैठीं ।

सारी नदियाके लोगोंने देखाकि श्रीबैकुण्ठके नारायण बैकुण्ठेश्वरी श्रीश्रीलक्ष्मीदेवीके सहित युगल रूपमें बैठे हैं । यह युगल विलास श्रीभगवान्‌की अपूर्व मधुमय लीला है। यह अवर्णनीय है, अनुभवगम्य है । महाभाग्यवान् नदियावासी नर-नारीवृन्दने साक्षात् पूर्णब्रह्म सनातन श्रीश्रीगौर भगवान्‌की शुभ विवाहलीला अपनी आँखों देखकर जीवन सार्थक किया, यह उनके प्रति प्रभुकी अपार करुणाका परिचय है । कृपानिधि श्रीगौराङ्ग सुन्दरने कृपाकरके नदियावासीको यह शुभ सुयोग प्रदान किया था, अतएव उनकी इतनी महिमा है, इतना गौरव है। व्रजवासी और नदियावासी एक तत्त्व हैं, एक वस्तु हैं। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि नमस्कार।

वासर-गृह

श्रीश्रीगौर-लक्ष्मीप्रिया अब सुसज्जित वासर गृहमें युगल होकर बैठे हैं। युगल रूप छटा से वासर गृह आलोकित हो गया। नदिया सुन्दरीवृन्दसे परिवृत होकर निमाई पण्डित आज बड़े विपदमें पड़े हैं। वे मस्तक अवनत करके बैठे हुए हैं। उनके बायें भागमें घूँघट काढ़े नववाला श्रीमती लक्ष्मीप्रियादेवी लज्जाशील होकर चित्रलिखित-सी बैठी हैं। कौतुक-प्रिय सखियाँ उनका अङ्ग-स्पर्श करके नाना प्रकारका रङ्ग कर रही हैं, नाना प्रकारकी बातें कर रही हैं। देवी मन ही मन आनन्द पूर्वक हँस रही हैं। उस हँसीसे सुधावृष्टि हो रही है। उनकी प्रिय सखियोंके पास आज निमाई पण्डितके लिए कोई खातिर नहीं है। वे नव वरके साथ किस प्रकार कौतुककर रही हैं।

किसी प्रगल्भा नदिया सुन्दरीके मनमें इच्छा हुई कि प्रभुके भ्रमरके समान काले कुञ्चित केशपाशको बाँध दे तो बड़ी शोभा हो। वह प्रभुके पीछे जाकर उनके सुन्दर केश-पाशमें कोमल कर-पल्लवद्वारा केश-विन्यास करने लगी।

किसी रङ्गिनी सखीने प्रभुके श्रीअङ्गमें अङ्ग सटाकर हाथ स्पर्श करके परिहास पूर्वक पूछा, "वर ! तुम्हारा नाम निमाई किसने रखखा ? तुम्हारा नाम मैं कन्हाई रखती हूँ।" प्रभुके श्रीअङ्गके स्पर्शसे उसका हृदय प्रेमानन्दसे परिपूर्ण हो गया। शरीर रोमाञ्चित हो उठा, वह आत्मविभोर होकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़ी ।

किसी रसिका नदिया-सुन्दरीने ताम्बूल लेकर अपने हाथसे प्रभुके श्रीमुखमें अर्पण किया। नवीन अध्यापक-शिरोमणि निमाई पण्डितके साथ इस प्रकार हास-परिहास करते समय नदिया बालाओंके मनमें किसी प्रकारका सङ्कोच नहीं हो रहा है । आज श्रीपाद बल्लभाचार्यके घरमें महारासलीलाका अभिनय हो रहा है। निःसङ्कोच भक्त और भगवान्‌के अबाध मिलनका नाम रासलीला है। आज वासर-गृहमें नदिया सुन्दरीवृन्दका निःसङ्कोच भावसे नदिया-के सर्वश्रेष्ठ पण्डितके साथ कौतुक और हास्यके रङ्गमें मिलन हो रहा है। आज भक्त और भगवान् लीला रङ्गमें उन्मत्त होकर एकीभूत हो गये हैं। जय गौर लक्ष्मीप्रिया !

किसी चतुर रङ्गीली सखीने श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीको उठाकर प्रभुके अङ्कमें बैठा दिया। तत्काल नदिया-सुन्दरी-गणके मुखसे उच्च हँसीकी ध्वनि उठी, सब प्रेमानन्दमें ताली बजाकर नाचने लगी। श्रीमतीजी लज्जावश प्राणवल्लभके अङ्कसे जोर करके उतर पड़ीं। रङ्गीली सखियोंने पुनः उनको उठाकर प्रभुके अङ्कमें बैठा दिया। फिर देवी उतर गयीं। फिर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबने मिलकर देवीको प्रभुके अङ्कमें बैठाकर पकड़े रक्खा ।

निमाई पण्डित मानो आज चोरके समान विपद-ग्रस्त हो गये हैं । उन्होंने चुपचाप अपनी प्रियतमाकी प्रिय सखियोंके सारे उपद्रव सहन कर लिये । वे मृदु-मन्द मुस्कान कर रहे हैं; और एक-एक करके सबकी ओर शुभ दृष्टिपात कर रहे हैं । इससे वासर-गृह विलासिनी रङ्गीली नवद्वीप-सुन्दरियोंके मनमें आनन्दका तरङ्ग उठ रहा है । वे सोच रही हैं कि उनकी प्रिय सखीको गोदमें पाकर वरके मनमें बड़ा सुख हो रहा है । यह सोचकर उन्होंने श्रीमतीजीको बहुत देर तक उसी अवस्थामें पकड़े रक्खा । श्रीमतीजी बड़ी विपदमें पड़ी हैं, उनके प्राणवल्लभको कष्ट हो रहा है, यह उनके कोमल हृदयमें सहन नहीं हो रहा है । वे हाथ जोड़कर अपनी सखियोंसे विनती करके बोलीं, "तुम लोग दया करके मुझको छोड़ दो ।" रसिका सखीवृन्दने इसबार श्रीमतीजीकी बात मान ली । श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी पुनः श्रीगौराङ्ग सुन्दरके बाम भागमें बैठ गयीं । तब वासरगृहमें पुनः आनन्दकी तरङ्ग उठी ।

कोई एक गौराङ्ग-रूप-मुग्धा मर्मपीड़िता नदिया-नागरी श्रीमतीको सुनाकर मृदु मधुर स्वरमें कहने लगी—"ऐसा सौभाग्य किसका है कि गौरचन्द्र जैसा पति मिले । हमारी इस सखीने कौनसा जप किया है और कौनसे व्रतदान तथा देवाराधन किये हैं ?

विदाई

इस प्रकार कौतुक हास-परिहासके साथ श्रीगौराङ्ग-सुन्दरने श्वशुरके घर शुभ वासरलीला समाप्त करके दूसरे दिन प्रातःकाल कुश-कण्डि कादि शुभ कर्म सम्पन्न किया । अपराह्नमें नववधूके साथ सुसज्जित पालकोमें सवार होकर अपने घरकी यात्रा की । वर-कन्याके विदाके समयका दृश्य जिसने देखा, वही भाव-विभोर हो उठा ।

आचार्य-दम्पति आज वर-कन्याके मुँहकी ओर देख नहीं पा रहे हैं, दोनों ही अपने वस्त्राञ्चलसे अविरत आँसू पोंछ रहे हैं । श्रीमती लक्ष्मीप्रिया-देवीकी आँखोंमें भी अश्रु प्रवाह लक्षित हो रहा है । इतने सुख और आनन्दके बीच भी दुःख है । सुख सिन्धुके भीतर भी मानो दुःखकी रेखा छिपी है, यह इस कार्यसे ज्ञात हो गया । मिलनके सुख और आनन्द जैसे विरहमें घनीभूत होते हैं, सब प्रकारके सुख और आनन्द भी उसी प्रकार दुःखमें गाढ़े हो जाते हैं । यहाँ आचार्य दम्पतिको जो दुःख है, वह उनके सुखका विरोधी नहीं है । उनके आनन्दमें बाधक नहीं है । उनकी प्राण-प्रियतमा कन्याके विरहसे उत्पन्न जो दुःख है, वह तो क्षणिक है । यदि कहें कि कन्याकी भावी सुख-सम्पत्ति उनके इस दुःखका अवश्यम्भावी फल है, तो कुछ अत्युक्ति न होगी । अतएव इस दुःखको प्रकृत दुःख नहीं कह सकते ।

श्रीपाद वल्लभाचार्य जब कन्या और जामाताको आशीर्वाद देने गये तो उनके दोनों नेत्रोंमें आँसू छल-छला आये । उन्होंने बड़े कष्टसे हृदयावेगको संवरण करके प्रियतमा कन्याका हाथ प्रभुके कर-पल्लवमें समर्पण करके रुद्ध कण्ठ गद्गद स्वरसे कहा, "बेटा निमाई ! आज अपनी अत्यन्त दुलारी लक्ष्मी-को तुम्हारे हाथमें समर्पण किया, तुम समझ-बूझकर इसका भरण-पोषण करना । अकेले घरमें मेरी लक्ष्मी एकेश्वरी थी, आजसे यह दुलारी बिटिया तुम्हारी दासी बनी । मेरी लक्ष्मी स्वतन्त्रता पूर्वक घरमें स्वच्छन्द आहार-विहार करती थी । खुशामद करनेसे माँके पास भोजन करती थीं । जहाँ कहींसे मैं घरमें आता तो मेरी बेटी मेरा गला धरकर गोदमें बैठ जाती थी । मुझे कोई पुत्र नहीं है, लक्ष्मीही मुझे शतपुत्र सी लगती थी । अब तुम्हारे हाथमें इसे समर्पण कर रहा हूँ । तुम अब इसके निजजन हो, और अधिक मैं अब क्या कहूं ? मैं माया-मुग्ध जीव हूँ, इसीलिए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इतनी बात कह गया। तुम लक्ष्मीपति हो, तुम्हीं लक्ष्मीका मर्म समझोगे।"

नवीन अध्यापक निमाई पण्डितने सिर झुकाकर सब सुन लिया। श्रीपाद वल्लभाचार्यकी प्रत्येक बात-में उनके हृदयमें गम्भीर वात्सल्य भावकी पराकाष्ठा प्रदर्शित हो रही है। श्रीभगवान् इस प्रकारके प्रेम-प्राचुर्य भावरशमें भक्तके वशीभूत होते हैं। वृद्ध ब्राह्मणके इस शुद्ध वात्सल्य प्रेमके पुरस्कारस्वरूप उनकी स्नेहमयी कन्या श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीको अङ्कलक्ष्मी बनाकर प्रभुने उनको कृतार्थ किया। श्रीपाद वल्लभाचार्य प्रभुकी इस अयाचित कृपाका निदर्शन प्राप्त करके प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर पुनः कहने लगे—"मैं निर्धन व्यक्ति हूँ, मैं तुमको क्या दे सकता हूँ। तुमने तो अपने गुणसे अनुग्रह करके मेरी कन्याका पाणि-ग्रहण किया है। मुझमें तो कुछ कहनेकी भी योग्यता नहीं है। तुम अपने ही गुणसे मेरे जामाता बने हो। जब मैंने तुमको कन्या समर्पण की, तब मेरे देव-पितर सब प्रसन्न हो गये।"

श्रीपाद वल्लभाचार्यने ये सब बातें प्रभुको निर्जनमें नहीं कही। सबके सामने पुलकाश्रु नयनसे उन्होंने इस प्रकार आत्मनिवेदन करके श्रीगौराङ्ग-महिमाका कीर्तन किया। उनकी बातें अभी समाप्त नहीं हुई थीं। श्वशुर होकर उन्होंने अन्तमें जामाता-को कहा—"तुम्हारे अभय पाद-पद्मके स्मरणसे दुःख नहीं रहता।"

श्रीगौराङ्ग भगवान् भक्तके कातर आत्म-निवेदन-पर मुग्ध हो गये, उनका करुण हृदय द्रवित हो गया, कमल नयनमें अश्रु बिन्दु दीख पड़े। उन्होंने अति कष्टसे अपनेको सँभालकर मर्म-पीड़ित भक्तकी ओर करुण नयनसे एक बार शुभ दृष्टिपात किया। इसके प्रभावसे श्रीपाद वल्लभाचार्यके हृदयमें परमानन्दकी लहर उठी, उनका सारा दुःख दूर हो गया। प्रभुके इस कृपा कटाक्षका मर्म यह था कि "तुम्हारी यह कन्या मेरी शक्ति है, इसकी शक्तिसे ही मैं शक्तिमान् हूँ, इसके ऐश्वर्यसे ही मैं ऐश्वर्यवान् हूँ। युग-युगसे तुम मेरे नित्य पार्षद हो, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करनेके लिए ही नदियामें मैंने यह अवतार ग्रहण किया है।"

श्रीपाद वल्लभाचार्यकी गृहिणीने लौकिक आचार-के अनुसार अपने वस्त्राञ्चलसे पालकीपर चढ़े वर-कन्याके चरण पोंछकर माङ्गलिक कर्मानुष्ठान किया। सुसज्जित पालकीमें श्रीश्रीगौर-लक्ष्मीप्रियाके युगल-विलासके दर्शनकी लालसासे नदिया नगरीके राज-पथमें आज लोगोंको खड़ा होनेकी भी जगह नहीं मिल रही है। नदिया-सुन्दरीवृन्द घरके झरोखोंसे पुष्प वृष्टि कर रही हैं और बारम्बार हुलूध्वनि करती हैं। देव-देवीगण अलक्ष्य भावसे आकाश मार्गमें दिव्य विमानपर आरोहण करके पुष्पवृष्टि कर रहे हैं। नदियाका राजपथ आज पुष्पमय हो रहा है। इतने पुष्प कभी किसीने नहीं देखे। मार्गमें मानो पुष्पवृष्टि हुई हो, यह देखकर सब लोग विस्मित हैं।

सब लोग श्रीपाद वल्लभाचार्यके सौभाग्यकी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं। पुरनारीवृन्द कह रही हैं कि लड़की बड़ी सौभाग्यवती है। मानो युगलरूप-में साक्षात् शिव-पार्वती जा रहे हैं। ऐसे रूपसम्पन्न वर-कन्या तो कभी किसीने नहीं देखे। श्रीश्रीगौर-लक्ष्मीप्रिया नदियावासीके प्रति शुभ दृष्टिपात कर रहे हैं; और मृदु-मन्द मुस्करा रहे हैं। उस अमृतमें सनी मधुर मुस्कानके प्रभावसे सारे जीव परम आनन्दका अनुभव कर रहे हैं।

शची-माका आनन्द और गृह-प्रवेश

सन्ध्याकालमें श्रीगौर सुन्दर नव वधूको साथ लेकर अपने घर आये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शचीमाता पड़ोसकी आत्मीय पुरनारीवृन्दको लेकर द्वारपर नव विवाहित पुत्र और पुत्रवधूके शुभागमनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। बाहर द्वारपर आम्र-पल्लवके साथ शुभ मङ्गल कलश स्थापन करके उसके ऊपर एक नारियलका फल रखकर नव वर-वधूके मङ्गलके लिए हाथ जोड़कर देव-देवीको प्रणाम और स्तुति कर रही थी।

शचीमाता पुर नारीवृन्दके साथ मिलकर नव-वधूको क्रोड़में लेकर पुत्रका हाथ पकड़कर घरमें ले आयीं। श्रीश्रीगौर-लक्ष्मीप्रियाकी युगलरूप माधुरीकी छटासे शचीभवन ज्योतिर्मय लगने लगा। यह ज्योति थी बैकुण्ठका ऐश्वर्य। बैकुण्ठनाथ श्रीगौर भगवान्ने जिसको कृपा करके दिव्यचक्षु प्रदान किया, उनको ही यह ऐश्वर्य लीला दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

शचीमाताने प्राणपनसे श्रीगौराङ्ग-लक्ष्मीप्रिया युगल रूप राशिका दर्शन कर बहुत दिनोंके सन्तप्त हृदयको शीतल किया। उनके जीवनकी साध इतने दिनोंके बाद प्रभुने पूर्ण की। वे प्रेमानन्दमें अपने आपको भूलकर उन्मादिनीके समान सारे आङ्गनमें डोलने लगीं। जिसको ही देखती हैं उसीको हाथ पकड़कर लाती हैं और आदरपूर्वक अपने सोनेके निमाईचाँद और नव वधूको दिखलाती हैं। शची-आङ्गन आज लोगोंसे ठसाठस भरा है। उनमें नदिया सुन्दरीवृन्दकी ही संख्या अधिक है।

शचीमाता नवद्वीपके नवीन अध्यापक-शिरोमणि निमाई पण्डितकी जननी हैं। उनके घरमें इस समय किसी वस्तुका अभाव नहीं है। निमाई पण्डितने स्वयं अर्थोपार्जन करना सीख लिया है। यद्यपि वह नवीन अध्यापक हैं तथापि उनके विद्यालयमें छात्र-संख्या सर्वापेक्षा अधिक है। उनके विद्यालयका आय-व्यय भी कम नहीं है। पुत्रके शुभविवाहके उपलक्षमें गौराङ्ग-जननीने ब्राह्मण-ब्राह्मणीको धन-वस्त्र दान किया, दीन-दरिद्रोंको अन्न-वस्त्र दान किया, सबको पुष्प-चन्दन आदिके द्वारा विभूषित किया। आनन्दोत्सवके साथ विधिपूर्वक वर-वधूको वरण करके शचीमाताने उनका गृह-प्रवेश कराया। शत-शत शुभ शङ्ख समान स्वरमें बज उठे, सहस्रों कण्ठोंसे माङ्गलिक हुलूध्वनि सुन पड़ी। मधुर बाजे-गाजे एक साथ एक तालमें बज उठे। उपस्थित नर-नरीवृन्दका मन आनन्दसे नाच उठा। शचीका आँगन सब सुखोंका आगार बन गया। सब पुरनारियोंने मिलकर श्रीश्रीगौर-लक्ष्मीप्रियाकी परछावन की।

शचीमाताने पुत्र और पुत्रवधूको गोदमें लेकर दूर्वा-धान्य देकर चिरंजीवी होनेका आशीर्वाद दिया। एक दूसरेको देखकर कभी पुत्रका मुख चुम्बन करती हैं और कभी वधूका। शचीके आङ्गनमें आज परमानन्दका स्रोत बह रहा है, इस स्रोतकी तरङ्गका घात-प्रतिघात जगतके जीवोंके हृदयमें हो रहा है। शची-आङ्गनमें आज श्रीगौराङ्ग प्रभुने बैकुण्ठका वैभव दिखला दिया है। शची-आँगन महायोगपीठ है। श्रीगौर भगवान् इसी योगपीठमें बैठकर बैकुण्ठकी लीला, गोलोककी लीला, सारी लीलाएँ प्रकट करके नवद्वीपवासी नित्य दास-दासियोंकी मनोकामना पूर्ण कर रहे हैं। उनकी गोलोककी सम्पत्ति, निज गुप्तवित्त प्रेमधन इसी शची-आङ्गनमें उद्भूत हुआ है, तथा इसी पवित्र स्थानमें बैठकर प्रेमावतार श्रीगौराङ्ग हरिने आचाण्डाल कलिग्रस्त जीवोंको पूछ-पूछकर अकातर भावसे प्रेम-दान किया था और कर रहे हैं।

शची-आङ्गनकी महिमा-कीर्तन करके जीवाधम ग्रन्थकारने बहुत दिन पूर्व एक पद लिखा था, उसे यहाँ उद्धृत करते हैं—

मर्त्ते सुरपुरी, नदिया-नगरी,
मुनिजन मनोहरा।
शचीर आङ्गन, महापीठ स्थान,
गोरा पदरजे भरा॥
एइ स्थाने बसि, गौराङ्ग शशी,
खेलियाछे कत खेला।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एइ स्थाने एसे, देवदेवी बसे,
देखे छे गौर लीला ॥
से लीला रङ्गे, प्रेमतरङ्गे,
भेसे छे गौड़ देश ।
विश्वभुवन, देखिल स्वपन,
सोनार वरन वेश ॥
अरुण तपन, लाजे पलायन,
करिल से रूप हेरि ।
चाँदेर किरन, हइल मलिन,
तारा गेल लाजे मरि ॥
एइ निम्बतले, देवता सकले,
मण्डली करिया बसि ।
कत आराधना, कत वा साधना,
करिल गौर शशी ॥
तबे त आइल, गौर-गोपाल,
गोलोकेर सुख छाड़ि ।
आनिल स्वजन, जत परिजन,
आर जत देव नारी ॥
नदिया नगरे, ताहारा विहरे,
नाना रूप-नाम धरि ।
शचीर अङ्गने, आसि पीठस्थाने,
हासे नाचे प्राण भरि ॥
एइ गृहमाझे, बाल ब्रह्मसाजे,
विराजिल गोरा चाँद ।
एइ आँगिनाय, रूपेर छटाय,
पातिला पिरिति फाँद ॥
जे ताँरे देखिल, से फाँदे पड़िल,
नर-नारी एकाकार ।
रूपेर माणिक, विश्व प्रेमिक,
धरेछिल नराकार ॥
संसार धरम, प्रीति मरम,
माखामाखि भाल बासा ।
एइ स्थाने बसि, निमाइ उदासी,
दिये छिल कत आसा ॥

शची प्राणधन, रमणी मोहन,
एइ आङ्गिनाय बसि ।
लक्ष्मीप्रियार, पीरिति माखान,
हेरितेन मुख शशि ॥
ए गृहे शयन, ओ खाने भोजन,
कीर्त्तन आङ्गिनाय ।
विश्व महिमा, शचीर आङ्गिना,
दास हरिदास गाय ॥

निमाई पण्डित नवद्वीपमें सर्वश्रेष्ठ अध्यापक हैं। सब लोग उनका सम्मान करते हैं, नयी उम्र होनेपर भी उनका आदर-सत्कार अधिक है।

नदियाके सब लोग नववधूके श्रीमुखके दर्शनके समय वस्त्र-आभूषण, धन-धान्य आदि दान करके धन्य हो गये। जिसकी जैसी संगति थी वह उस प्रकारकी सम्पत्ति लाकर शचीमाताके लक्ष्मी भण्डारको पूर्ण करने लगा। शचीमाता मनचाही पुत्र-वधू पाकर आनन्दसे गद्‌गद होकर मधुर शब्दोंमें सबसे कहती हैं—"आप सब लोग मिलकर आशीर्वाद दें कि मेरा सोनेका निमाईचाँद चिरंजीवि होकर गृहस्थाश्रमका पालन करे।" वे जिसको देखती हैं, उसका ही हाथ पकड़कर यही एक बात बोलतीं।

बड़े समारोहके साथ उस दिन रातमें निमाई पण्डितकी पुष्पशय्या रची गयी। प्रभुकी पुष्पशय्या लीला-कथा मत्प्रणीत श्रीलक्ष्मीप्रियाचरित* ग्रन्थमें विस्तारपूर्वक लिखी गयी है। कृपालु पाठकवृन्द कृपा करके प्रभुकी यह लीला-रस कथा उसी ग्रन्थमें पाठ करें।

निमाई पण्डितके घर पाक-स्पर्शके भोजमें नवद्वीपके सारे नर-नारी निमन्त्रित हुए थे। दीन-दरिद्र या दुःखी कोई भी आदमी छूटने न पाया।

---

* श्रीलक्ष्मीप्रियाचरितका हिन्दी संस्करण श्रीकृष्ण जन्मस्थान, मथुरासे प्राप्त किया जा सकता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लक्ष्मीका भण्डार परिपूर्ण था। जिनके घरमें साक्षात् श्रीश्रीलक्ष्मीदेवी विराजमान हैं; उनके भण्डारमें किसी भी वस्तुकी कमी नहीं हो सकती। लक्ष्मीके भण्डारके अन्न-वस्त्रके वितरणका भार लक्ष्मीकान्त श्रीगौराङ्गने स्वयं अपने ऊपर लिया है। प्रभुके इस कार्यमें प्रधान सहायक उनकी परम दयावती जननी हैं। वैष्णवोंके प्रति प्रभुकी अधिक प्रीति है, उनको उन्होंने भली-भाँति भोजन कराया। वैष्णव लोगोंने परम परितुष्ट होकर माला-चन्दनसे प्रभुको आभूषित किया। सभीने प्रेमानन्दमें मत्त होकर प्रभुको प्रणाम किया। कृपानिधि श्रीगौराङ्ग प्रभुने उनको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया।

नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग सुन्दर अब प्रकृत अर्थमें गृहस्थ बन गये, अब वे गृहधर्म पालन करनेमें तत्पर हो गये। श्रीगौराङ्ग भवनमें श्रीश्रीलक्ष्मीदेवीके आविर्भावके बाद नवद्वीप-निवासियोंके घर-घर लक्ष्मीका अधिष्ठान हो गया। श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने तत्कालीन नवद्वीप और नवद्वीपवासीकी अवस्था दो श्लोकोंमें अति सुन्दर भावसे वर्णित की है। उन दोनों श्लोक रत्नोंको उद्धृतकर कृपालु पाठकवृन्दकी सेवामें भेंट किया जा रहा है—

गेहे गेहे समजनि सदा मूर्त्तिमत्येव लक्ष्मीः
स्थाने स्थाने सुखसमुदयो मूर्त्तिमानेव भूतः।
नित्यं नित्यं नव नवमभूत् प्रेमसर्वस्व नाथे
स्वैरं स्वैरं विलसति तदा श्रीनवद्वीप भूमौ॥
नासीन्निद्रा न भयमभवत् ना भवत् क्षुत्पिपासा
न स्वैरत्वं न च यमगता कालदण्डादि भीतिः।
एकस्यापि प्रभुकरुणया यस्य कस्यापि तस्मिन्
नेवं क्रीडत्यतिसुललितं श्रीनवद्वीप भूमौ॥

भावार्थ--श्रीगौराङ्ग सुन्दर जिस समय श्रीनवद्वीप भूमिमें युगलविलास कर रहे थे, उस समय लक्ष्मी-देवी मूर्त्तिमती होकर सर्वदा घर-घरमें विराजमान हो रही थीं, और स्थान-स्थानमें समस्त सुख सम्पद मानो मूर्त्तिमान हो रहे थे। नित्य नव-नव प्रेमका आविर्भाव हो रहा था। उनके नवद्वीप भूमिमें युगल विहार करते समय उनकी अपार कृपाके बलसे किसी आदमीको निद्रा, भय, क्षुधा, पिपासा, स्वेच्छाचारिता तथा यमभय—ये कोई भी त्रास नहीं देते थे।

नदियायुगल श्रीगौर-लक्ष्मीप्रियाने शचीभवनमें परमानन्दका स्रोत बहा दिया। श्रीगौराङ्ग सुन्दर प्रियतमा लक्ष्मीके संसर्गसे अधिकतर उज्ज्वल और ज्योतिपूर्ण लगने लगे। शक्तिके साथ मिलकर शक्तिमान पूर्ण हो गये। श्रीपाद कविकर्णपूर गोस्वामी अपने ग्रन्थमें लिख गये हैं। यथा—

तदङ्गसंसर्गसुधाम्बुराशेः
प्रवाह संगाहन शीतलस्य।
लावण्यमत्यन्त नितान्तकान्तं
वभूव गौराङ्ग महाप्रभोस्ततः॥

शचीमाताके इतने दिनोंके जीवनकी आशा पूरी हुई। भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान्ने जननीकी आशा पूर्ण करके भक्तवात्सल्यकी पराकाष्ठा दिखला दी। भक्तके भगवानने भक्तकी मनोवाञ्छा पूर्ण की।

लक्ष्मीप्रियाके साथ विवाह होनेके बाद एक बार श्रीगौराङ्ग श्वशुरालय गये हुए थे, उस समय लक्ष्मी-प्रियाकी सहेलियोंके विनोदका एक वर्णन श्रीशङ्कर-लाल गौतमकी कवितामें पढ़िये—

सबमें अधिक सुन्दरी कौन

सदा सुकोमल कर-पल्लवसे
करते इस जगपर छाया।
प्रेम-पराजित वही गौर-हरि,
कैसी अद्भुत यह माया!!
लक्ष्मिप्रियाका पाणिग्रहण कर
मुदित हुए नदिया-नागर।
रसकी धार बहाते मानो
करुणा - जल - पूरित जलधर॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गये शयन - गृहमें प्रभु
तबही वे कन्दर्प-दर्प हारी।
भुवन-विमोहनकी अतुलित छबि
तीन लोकसे थी न्यारी ॥
सुन्दरताके सागर हरिकी
दृष्टि लगी थी तब भूपर।
घिरे लाज - मर्यादासे, थे
मोह - कामनासे ऊपर ॥
अणु - अणुको निहारने वाले
स्वयं दृश्य बन गये वहाँ।
तीनों कालोंसे अतीत सुखमय
भविष्य बन गये वहाँ ॥
थकित हुई श्रीलक्ष्मिप्रियाकी
सब सखियाँ दर्शन करके।
हुई कमलिनी सहज - सुखारी,
ज्यों समीप हो मधुकर के ॥
सखी चित्रलेखाके सँग थीं
मोद - मग्न श्रीलक्ष्मिप्रिया।
धीमी मृदु मुस्कानोंने सबहीका
पुलकित किया हिया ॥
निम्न दृष्टि कर बैठे थे
'वर', आई तभी चित्रलेखा।
प्रभुने मुख-शशि और झुकाया,
रसिकाने अवसर देखा ॥
पीछे जाकर गौर - कृष्णके,
साड़ी एक उढ़ा दी तब।
कहने लगी "अनोखे वर हैं,
इस घूँघटकी आभा नव ॥
आँख मिलाकर देख न पाते
सखी हमारी ही वर है।
बहू बने बैठे हैं, इनको
ज्ञात नहीं, किसका घर है ॥"
प्रभुने कहा—"सुनो सजनी,
बस वर तो सखी तुम्हारी है।
'वर' का अर्थ बड़ा होता,
यों इनकी महिमा भारी है ॥"
सुनी बात यह गौर-कृष्णसे,
सखियाँ खिल-खिल मुसकाईं।
कहा एकने लक्ष्मिप्रियासे,
"तूने कैसी निधि पाई ॥
सच बतला, क्या तेरे चरण
पकड़ते हैं यह तेरे वर ?"
सुने शब्द यह लक्ष्मिप्रियाने,
कहा जीभ दाँतोंमें धर—
"सखी ! मत कहो ऐसे,
इनकी चरणधूलि मेरा जीवन।
जन-जनका मन पावन करते,
मुझको भी करते पावन ॥"
इसी बीच इक प्रश्न किया
तब एक बालिका चतुराने—
"हम सबमें है कौन सुन्दरी ?
बतलाओ तो हम जानें ॥"
पड़े प्रीति - संकटमें, सबके
संकट विघ्न - ताप - हारी।
बोले—"तुम सबमें हैं सुन्दर
सखी तुम्हारी ही प्यारी ॥"
बात सुनी यह, सभी
बालिका डूबीं हर्ष लहरियोंमें।
निश्छल प्रिय विनोद छाया,
उन नवल नेह - आगरियोंमें ॥
इतनेमें इक बाला बोली—
"कैसे यह प्रिय सखि भाई ?
अपनी बहू सुन्दरी कहते,
तुमको लाज नहीं आई !"
सरल वचन सुन तुष्ट हुए प्रभु,
फिर सरलाने कहा यही—
"वर तुम भी अति सुन्दर हो,
है वधू सुन्दरी तभी सही ॥"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भय न मानती थी वह बाला,
सम्मुख थे भवभयहारी ।
कृपा और करुणाके आगर,
नदिया - नागर सुखकारी ॥
चरण - स्पर्श हुआ जब प्रभुका,
सर्वसिद्धि लीं सरलाने ।
कमला - सेवित चरण-कमलकी
रज पायी उस अमलाने ॥
चरणोंमें लोटनें लगी प्रभुके,
वह प्रेम - व्यथित होकर ।
गौरकृष्णकी सहज कृपासे
धन्य हुई पावन सुन्दर ॥
प्रभुकी उजली लीलाएँ
सुन्दर लगतीं शुचि आँखोंसे ।
आँखें भी जो रक्षित रहतीं
सदा प्रीतिकी पाखोंसे ॥
काम - भाव - पूरित नरको,
दिख रही कामिनी सुन्दरतम ।
कुण्ठित मनको वही रूप
लगता है कोरा भ्रम ही भ्रम ॥
सत्के नयनोंसे ही सुन्दर
शिवके होते हैं दर्शन ।
भौतिकताकी सतहोंमें
सुन्दरता करती है क्रन्दन ॥
प्यारे तुम भी यह आशा
है भाव - डगर अपनाओगे ।
भाव - दृष्टि सुन्दर रखकर ही,
सब कुछ सुन्दर पाओगे ॥

—★—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सोलहवाँ अध्याय

नवद्वीपमें श्रीपाद ईश्वरपुरीके साथ प्रभुका प्रथम मिलन

जे शुनये ईश्वर पुरीर पुण्यकथा । तार वास हय कृष्ण पादपद्मे यथा ॥

—श्रीचै. भा. आ. ७.२५२

तत्कालीन वैष्णव समाज

अब प्रभु विद्यारसमें उन्मत्त रहते हैं, अध्ययन और अध्यापनके सिवा उनको और कोई काम नहीं है। निमाई पण्डितका नाम और यशःसौरभ सारे देशमें व्याप्त हो गया है। श्रीअद्वैत प्रभु आदि नदियाके कृष्णभक्त वैष्णवोंकी ऐकान्तिक अभिलाषा है कि निमाई पण्डित उनका सत्सङ्ग करें, कृष्ण-भक्तिकी शिक्षा दें, और कृष्णभक्त बन जाँय। इतने बड़े पण्डित, ऐसे सुन्दर नवीन युवक तथा पाण्डित्य-का गौरव रखनेवाले नदियामें निमाई पण्डितके समान सर्वशास्त्र विशारद, अध्यापक शिरोमणि दूसरे कोई पण्डित नहीं हैं। ये यदि भक्तिशास्त्रकी आलोचना करें, भक्ति तत्वकी व्याख्या करें, भक्ति-कथा कहें, तो इससे बढ़कर सुखको बात और क्या हो सकती है? अतएव सब लोग चर्चा करते हैं कि, ऐसे दिव्य शरीरमें कृष्णरस नहीं आया तो जब काल आयगा तब यह विद्या क्या काम आयगी।

प्रभुके कानोंमें यह सारी बातें गयीं। उनके सामने भी नदियाके वैष्णव लोग ये सारी बातें कहने लगे। श्रीवास पण्डित आदि विज्ञ और पुराने कृष्ण भक्तगण प्रभुको रास्तेमें पकड़कर ये सारी बातें सुनाने लगे। सुनकर प्रभुने हँसते हुए विनीत भावसे कहा—"आप लोगोंकी कृपा होगी, और मेरा भाग्य उज्ज्वल होगा तो मैं भी एक दिन वैष्णव बनूँगा।"

इस समय नवद्वीपमें बहिर्मुख पाखण्डी लोगोंकी संख्या बढ़ रही थी। कीर्तन सुनकर वह लोग हँसी-मजाक करते थे। वैष्णवको देखकर नाना प्रकारसे मुँह बनाते थे। धनके मदसे उन्मत्त होकर वे धर्म-विरुद्ध काम करते हैं। पुत्र-कन्याके विवाहमें तथा कौतुक-उत्सवमें धनका अपव्यय करते हैं। श्रीवास आदि वैष्णवगण यह देखकर मनमें बहुत दुःख पाते हैं। श्रीअद्वैत-सभामें इन सब बातोंकी आलोचना होती है। निमाई पण्डितकी बात उठाकर वैष्णवगण आक्षेप करते हुए श्रीकृष्णके चरणोंमें निवेदन करते हैं—"हे भगवान! जगन्नाथ-नन्दन और बातोंको छोड़कर तुम्हारे रसमें मत्त हो जायें, निरन्तर प्रेम भावसे तुम्हारा भजन करें और हम लोगोंको उनका सत्संग प्राप्त हो, ऐसी कृपा करिये।"

श्रीअद्वैत प्रभु सबको आश्वासन देते हुए कहते हैं—"निमाई पण्डितने उच्च वंशमें जन्म ग्रहण किया है। वे नीलाम्बर चक्रवर्तीके दौहित्र हैं, मिश्रपुरन्दर-के पुत्र हैं, अवश्य ही श्रीकृष्ण चरणमें उनकी रति-मति होगी। तुम देखोगे कि एक दिन पण्डित निमाई अपूर्व वैष्णव बनेंगे, अपूर्व कृष्णभक्त हो जाँयगे और उनके प्रभावसे सारे नदियाके लोग भक्तिमान बनेंगे।" यह सुनकर वैष्णव वृन्दके मनमें बड़ी आशा हुई, हृदयमें बड़ा आनन्द हुआ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाखण्डी लोगोंके अत्याचारकी बात, उनकी वैष्णव-निन्दाकी बात वैष्णवगण आकर श्रीअद्वैत प्रभुके निकट निवेदन करते हैं। ये सारी बातें सुनकर वृद्ध ब्राह्मण क्रोधसे उन्मत्त हो उठते हैं। हुँकार और गर्जन करते हुए काँपने लगते हैं और दोनों हाथ उठाकर दर्पके साथ उच्च स्वरसे सबसे कहते हैं—"मेरे चक्रधारी प्रभु नदियामें आ रहे हैं। तुम लोग देखना, वे क्या-क्या करते हैं। सबको श्रीकृष्णके दर्शन कराऊँ तब मेरा नाम श्रीकृष्णका दास अद्वैत समझना। कुछ दिन और प्रतीक्षा करो, यहीं तुम सबको श्रीकृष्णका अनुभव होगा।"

महाविष्णुके अवतार सर्वज्ञ श्रीअद्वैत प्रभु इस बातके द्वारा कौशलपूर्वक श्रीगौराङ्ग अवतारके प्राकट्यकी सूचना दे रहे हैं। प्रभु नदियाके प्रच्छन्न अवतार हैं, अप्रकट हैं। श्रीअद्वैत प्रभु उनको प्रकट करेंगे। इस आश्वासन वचनसे सब भक्तोंका हृदय प्रेमानन्दसे पूर्ण हो गया। वे सब दुःख भूल गये। पाखण्डियोंके विषदग्ध वाणसे उनका हृदय छलनी हो रहा था। श्रीअद्वैत प्रभुकी आश्वासन वाणीसे उनके सन्तप्त हृदय शीतल हो गये। अद्वैत-सभामें सब मिलकर आनन्दसे कृष्ण सङ्कीर्तन करने लगे।

ईश्वर पुरीका आकर्षण

नवद्वीपमें प्रभुके प्राकट्यका समय आया देखकर महाविष्णुके अवतार श्रीअद्वैत प्रभुने कृष्णभक्त चूड़ामणि श्रीपाद माधवेन्द्र पुरीके प्रिय शिष्य कृष्ण प्रेमिक श्रीपाद ईश्वरपुरीको इसी समय नवद्वीपमें आकर्षण किया। ये महापुरुष श्रीअद्वैत प्रभुके गुरु-भाई थे। इस समय श्रीपाद ईश्वरपुरीके नदिया-आगमनकी कहानीका एक गूढ़ मर्म है। वह कहता हूँ।

श्रीभगवान् नर शरीर धारण करके नवद्वीपमें शचीके गर्भसे आविर्भूत हुए हैं। उनकी लौकिकी नर-लीला है। श्रीभगवान्‌की अलौकिक लीलाकी अपेक्षा लौकिक लीला श्रेष्ठ है। नर-लीलामें श्रीभगवान् नर-प्रकृति ग्रहण करके लीला करते हैं। नदियाके निमाई पण्डित विद्यारसमें उन्मत्त हैं, विद्याकी चर्चा और शास्त्रार्थके सिवा वे और कोई बात नहीं करते। बहुत थोड़ी अवस्थामें ही वे पण्डित-शिरोमणि हो गये हैं, सर्वमान्य बन गये हैं।

नदियाके वैष्णवगण सनातनी, विज्ञ और सुविचारक हैं। उन्होंने विचारा कि निमाई पण्डितके समान विद्यावीर यदि कृष्ण-भक्त हो जाय तो उनके द्वारा विशुद्ध वैष्णवधर्म तथा युगधर्मका प्रचार होगा, लुप्तप्राय भक्तिधर्म पुनः प्रतिष्ठित होगा। श्रीअद्वैत प्रभु हमारे 'गौर-आना-गोसाईं' हैं। वे सर्वज्ञ हैं, वे श्रीगौराङ्ग अवतारके मूल हैं, तथा प्रभुकी नर लीलाके प्रधान उद्योगी हैं। वृद्ध ब्राह्मण आजन्म श्रीकृष्णकी अर्चना करके अपने हृदयके धन नन्द-नन्दन श्रीकृष्णको नदियामें लाये हैं। उनको इतने दिनतक गुप्त रखा था। लीलारस-पुष्टिके लिए, गूढ़ उद्देश्यसे प्रभुकी इच्छासे श्रीअद्वैत प्रभुने मनकी बात अबतक गुप्त रक्खी थी।

श्रीभगवानकी सृष्टिके श्रेष्ठ जीव नर हैं। नर-लीला श्रीभगवान्‌की बड़ी प्रिय वस्तु है। नर-प्रकृति, नर-भाव आलम्बन करके श्रीगौर भगवान् प्रच्छन्न भावसे नवद्वीपमें लौकिकी लीला कर रहे हैं। इस समय उनकी नयी उम्र है, अपरूप रूपराशि है। नया-नया व्याह किया है। विद्यागौरवमें वे नदियामें सर्वश्रेष्ठ पण्डित हैं। नर-प्रकृतिका यह कर्म-जीवनका समय भक्ति शिक्षाके उपयुक्त नहीं है। इसी कारण नर-रूपी श्रीगौर भगवान् नर-प्रकृतिके वशीभूत होकर विद्या-विलास-रसमें उन्मत्त हैं, विद्यागर्वसे गर्वित हैं।

श्रीअद्वैत प्रभु सर्वज्ञ और सर्वद्रष्टा है। उन्होंने देखा कि नदिया-अवतारका मूल हेतु है भक्ति-शिक्षा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रदान करना। भक्ति और प्रेमधन-वितरणके कार्य विद्या-विलास-रसोन्मत्त निमाई पण्डितके लिए अनुकूल नहीं हैं। भक्तवशी श्रीभगवान्‌को भक्तकी इच्छाके अनुसार कार्य करना पड़ता है। श्रीअद्वैत प्रभुने सोचा कि इस समय उनको साधु-सङ्गकी आवश्यकता है, वास्तविक कृष्ण प्रेमीसे प्रेम-शिक्षा लेनेकी आवश्यकता है। नररूपी श्रीगौर भगवान्‌के लिए भी साधुसङ्ग आवश्यक हो गया, क्योंकि उन्होंने नर-प्रकृति लेकर भूतलमें अवतार लिया है। नर-प्रकृतिकी जो आकांक्षा होती है, जो चाह होती है, उनके लिए भी वही आवश्यक है। यह सोचकर श्रीअद्वैत प्रभुने श्रीगौर भगवानको लौकिकी नरलीलाकी पुष्टिके लिए साधुश्रेष्ठ विश्वप्रेमी कृष्णभक्त-शिरोमणि श्रीपाद ईश्वरपुरीको नदियामें आकर्षण किया।

जीवश्रेष्ठ मानवके लिए साधुसङ्ग प्रयोजनीय है, भक्तसङ्ग प्रार्थनीय है, नररूपी श्रीभगवान् भी इच्छा करके उसी लौकिक नियमके वशीभूत हुए। निमाई पण्डित विद्या-रसमें दिन-रात उन्मत्त रहते हैं, विद्या-चर्चा छोड़कर धर्मचर्चा करनेका उनको अवसर नहीं मिलता। यह देखकर वैष्णवोंके मनमें दुःख होता है। सर्वज्ञ श्रीगौर भगवान् यह समझते हैं। परन्तु वे तो नरलीलाका सुधास्वादन करनेके लिए नरशरीर धारण करके नदियामें आविर्भूत हुए हैं, नरप्रकृति लेकर नरभावमें विभावित होकर नरबुद्धिसे परिचालित क्रिया-कर्ममें अनुरक्त हैं। कारण यह है कि वे इस समय नरभावापन्न हैं।

श्रीअद्वैत प्रभु आदि कृष्णभक्त वैष्णवगण उनके नित्यदास हैं। वे भी नदियामें नररूपमें जन्म लेकर उनकी नरलीलामें सहायक हो रहे हैं। प्रभुकी नरलीलाकी पुष्टि करना ही उनका कार्य है। इस कार्यको करनेके लिए ही उनका नदियामें आविर्भाव हुआ है। श्रीअद्वैत प्रभु श्रीगौराङ्ग अवतारके मूल कर्त्ता हैं। उन्होंने प्रभुकी नरलीलाकी पुष्टिके लिए नदियामें श्रीपाद ईश्वर पुरीका आकर्षण किया।

ये श्रीपाद ईश्वर पुरी नदियाके अवतारके भावी दीक्षागुरु हैं। इससे ही कृपालु पाठकवृन्द उनकी शक्तिका अन्दाज लगा सकते हैं, उनके कृष्णप्रेमकी गम्भीरताकी थाह लगा सकते हैं। ऐसा न होता तो श्रीगौर भगवान् उनको गुरुरूपमें वरण क्यों करते?

ईश्वर पुरी नवद्वीपमें अलक्षित भावमें आये। छद्मवेष धारण करके अति दीनभावमें वे अपने अभीष्ट देवके अनुसन्धानमें नदियामें आये। लोक-शिक्षाके लिए प्रभुने उनको गुरुरूपमें वरण किया। प्रकृत पक्षमें पुरी गोसाईं श्रीगौर भगवान्‌के नित्यदास तथा पार्षद हैं। श्रीकृष्णान्वेषणमें वे नदियामें आये हैं। वे जानते हैं कि उनके हृदयके धन प्रच्छन्न वेषमें नदियामें शचीके आङ्गनमें विराज रहे हैं। अतएव वे भी अति अलक्षित वेष धारण करके नवद्वीपमें आये। कलिके प्रच्छन्न अवतारके नित्य पार्षदगणका भी प्रच्छन्न-भाव होता है।

नवद्वीपमें ईश्वर पुरीका आगमन

कृष्ण-प्रेममें एकान्त विह्वल-चित्त, कृष्ण-कथा रस-रङ्गमें उन्मत्त दीन-हीन श्रीपाद ईश्वर पुरी नवद्वीपमें आकर दैवयोगसे श्रीअद्वैत प्रभुके भवनमें उपस्थित हुए।

वे पहले जाकर श्रीअद्वैत प्रभुके मन्दिरमें जो उपस्थित हुए, इसमें भी कुछ रहस्य है। पहले कहा जा चुका है कि श्रीअद्वैत प्रभुके आकर्षणसे उनका नवद्वीपमें शुभागमन हुआ। किसलिए श्रीअद्वैत प्रभुने उनको नवद्वीपमें आकर्षण किया, यह भी बताया जा चुका है। शक्ति-सञ्चार, आवाहन आदि भक्तितत्त्वके मर्म साधारण लोगोंकी समझमें नहीं आवेंगे। भक्त महात्माओंमें असीम शक्ति होती है। वे ऐशीशक्ति-विशिष्ट तथा श्रीभगवान्‌के निजजन होते हैं। इस शक्तिकी सहायतासे वे असाध्यको भी साध्य बना देते हैं। सर्वद्रष्टा करुणामय श्रीभगवाके ईक्षण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मात्रसे जैसे कार्य-सिद्धि होती है, उनकी इच्छा-शक्तिके प्रभावसे उनके अनुगत भक्त महात्मा लोग भी जब जो चाहते हैं, वह कर लेते हैं। श्रीअद्वैत प्रभुके मनमें इच्छा हुई, उसी समय नवद्वीपमें श्रीपाद ईश्वर पुरीका शुभागमन हुआ, और एक बार निमाई पण्डितका उनके साथ सत्सङ्ग हुआ। इच्छामात्रसे भक्त-वाञ्छा-कल्पतरु श्रीभगवान्‌ने अपनी उस इच्छाको पूर्ण करके भक्तवत्सलताका पूर्ण परिचय दिया। भक्तके भगवान्‌ने भक्तकी इच्छा पूर्ण की। श्रीअद्वैत प्रभुके आकर्षणसे श्रीपाद ईश्वर पुरीको नदियामें आना पड़ा। केवल नदियामें आये ही नहीं, उनके घर जाकर उनको दर्शन दिया।

इन सब भक्तिकी बातोंका रहस्य अनुभवगम्य है। श्रीभगवान्‌की लीला-कथाका रहस्योद्‌घाटन करनेके लिए लीलानुभूति आवश्यक है। रात-दिन भगवत्-लीलाका पठन, स्मरण, मनन और अनुशीलन करनेसे भक्तके हृदयमें लीलानुभूतिका उदय होता है। इस लीलानुभूतिकी सहायतासे लीला-लेखक महाजनगण श्रीभगवान्‌की लीला विस्तृत रूपमें वर्णन करके भक्तोंका चित्त विनोदन करते हैं और कर रहे हैं। श्रीगौराङ्ग प्रभुकी नवद्वीपलीला सूत्ररूपमें लिखी गयी है। पूर्वकालीन महाजनगणने जो कुछ लिख रक्खा है, वह सब सूत्र है। इसका अवलम्बन करके लीला-लेखक महाजनगणने अपनी निजी लीलानुभूतिकी सहायतासे लीलाका विस्तार किया है, कर रहे हैं, और करते रहेंगे।

जीवाधम ग्रन्थकारमें वह शक्ति नहीं है, श्री-भगवान्‌की लीलाका रहस्य समझनेकी क्षमता नहीं है। इन सब विषयोंकी आलोचना करना धृष्टता मात्र है। तथापि कृपालु गौरभक्तवृन्दकी कृपा होने-पर पंगु भी गिरिशृङ्गको लाँघ सकता है, मूक भी बोलने लगता है, अन्धेको भी सूझने लगता है। उनकी कृपासे अधम ग्रन्थकार को भी लीलाकी अनुभूतिकी शक्ति प्राप्त होगी, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। हे कृपालु गौरभक्तवृन्द! कृपा करके यह शक्ति प्रदान कीजिये। आप लोगोंकी कृपा-प्राप्तिके बिना गौराङ्ग-लीलामधुका पान करनेमें आसक्ति और आनन्द प्राप्त करना दुष्कर है। लीलानुभूति-शक्तिकी प्राप्ति और लीला-स्फूर्ति तो दूरकी बात है। आप लोगोंकी शक्ति असीम है, महिमा अपार है। गौरभक्तवृन्दके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात! आप लोगोंकी जय हो, जिससे हम सदा आपलोगोंका जय-गान करते हुए अपने जीवनको सार्थक करें।

श्रीपाद ईश्वर पुरीजी श्रीअद्वैत प्रभुके मन्दिरमें जाकर जहाँ वे पूजा करने बैठे थे, वहीं अति संकुचित भावसे उनके सामने जाकर बैठे।

अकस्मात् श्रीवैष्णव ज्योतिसे श्रीअद्वैत भवन उद्भासित हो उठा। वैष्णव तेज वैष्णवके सामने छिपा नहीं रह सकता। श्रीअद्वैत प्रभु श्रीपाद ईश्वर पुरीकी श्रीमूर्त्तिका दर्शन करते ही जान गये कि वे महाभागवत तथा वैष्णव संन्यासी हैं। वे इस अपरिचित वैष्णव संन्यासीकी ओर बारम्बार देखने लगे।

कुछ देरके बाद श्रीअद्वैतने प्रभु आगन्तुक वैष्णव संन्यासीसे परम आदर और स्नेहपूर्वक पूछा—"आप कौन हैं? मुझे आप वैष्णव संन्यासी लगते हैं।"

श्रीपाद ईश्वर पुरीने वैष्णवोचित दैन्यपूर्वक उत्तर दिया—"मैं आपके चरण-दर्शनाभिलाषी क्षुद्राधम हूँ।"

ईश्वर पुरीका प्रेमावेश

अद्वैत-भवनमें उस समय मुकुन्द आदि भक्तगण उपस्थित थे। सबकी दृष्टि श्रीपाद ईश्वर पुरीकी तेजोमयी मूर्त्तिके ऊपर पड़ी। तेजस्वी वैष्णव संन्यासीके ज्योतिर्मय रूपको देखकर सबके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। मुकुन्द गायक हैं। उनका कण्ठ-स्वर मधुमय है। समय देखकर मधुरकण्ठ मुकुन्दने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मीठे स्वरमें कृष्ण-सङ्गीतका सुर पकड़ा—

जय-जय जगजन लोचन फाँद ।
राधारमण वृन्दावन चाँद ॥ ध्रुव ॥
अभिनव नील, जलद तनु ढर-ढर
मुकुट शिरे साजनि रे ।
काञ्चन वसन, रतनमय आभरण
नूपुर रणरणि बाजनि रे ॥
इन्दीवर युग सुभग विलोचन
चञ्चल अञ्चल कुसुम-शरे ।
अविचल कूल, रमणिगण मानस
जर-जर अन्तर मदन भरे ॥
वनि वनमाल, आजानु-विलम्बित
परिमले अलिकुल माति रहूँ ।
बिम्बाधर पर, मोहन मुरली
गायत गोविन्ददास पहूँ ॥

मुकुन्दका गान पाषाण-द्रव होता है । उन्होंने जब प्रेमोन्मत्त भावसे मधुर कृष्ण-सङ्गीतका सुर पकड़ा, तब आगन्तुक वैष्णव संन्यासी अधीर हो उठे । वे कृष्णप्रेममें विह्वल होकर भूतलपर लुढ़क गये । उनकी आँखोंसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा बह चली । जैसे-जैसे मुकुन्दका गान जमने लगा, वैसे-वैसे श्रीपाद ईश्वर पुरीके नयनोंसे प्रेमाश्रुधारा-का वेग भी द्रुततर होता गया । यह देखकर श्रीअद्वैत प्रभुने आकुल होकर उनको स्वयं गोदमें उठा लिया । उनके नयन-जलमें श्रीपाद ईश्वर पुरीका नयन-जल मिलकर गङ्गा-यमुनाका सङ्गम हो गया । दोनोंकी प्रेम-विह्वलता क्रमशः बढ़ती देखकर मुकुन्द प्रेमानन्दमें गीत गाने लगे, और उच्च स्वरमें भक्ति-उद्दीपन भागवतीय श्लोक पाठ करने लगे । यह देखकर उपस्थित वैष्णवगणके प्राणमें कृष्णप्रेमका स्रोत उमड़ आया । वे प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य करने लगे । उस दिन अद्वैत भवनमें जो आनन्दकी तरङ्ग उठी, उससे नदियाके कृष्णभक्त वैष्णववृन्द अश्रुप्रवाहमें डूब गये । उस समय श्रीपाद ईश्वर पुरीको कोई पहचान न सका । सर्वज्ञ श्रीअद्वैत प्रभुने भी भीतरकी बात प्रकट नहीं की । प्रच्छन्न अवतारकी प्रच्छन्न लीलाका रहस्य बड़ा ही मधुर है । इसी कारण नवद्वीपलीलाका माधुर्य इतना अधिक है ।

नदियाके मार्गमें श्रीपाद ईश्वर पुरी आत्म-गोपन करके वैष्णव संन्यासीके वेषमें भ्रमण कर रहे हैं । कोई उनको पहचान नहीं पा रहा है । वे कृष्णप्रेममें रात-दिन विभोर रहते हैं । आहार-निद्राकी भी खोज खबर नहीं रहती । पश्चात् भक्त लोगोंको पता चला कि ये महापुरुष श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी गोसाईंके प्रिय शिष्य श्रीपाद ईश्वर पुरी हैं ।

श्रीपाद माधवेन्द्र पुरीका संक्षिप्त इतिहास

श्रीपाद माधवेन्द्र पुरीके कृष्ण प्रेमकी बात सर्व-जन-विदित है । मेघको देखकर उनके मनमें कृष्ण-भक्तिका उदय हो जाता था । कृष्ण प्रेममें उन्मत्त होकर उन्होंने भारतवर्षके सारे तीर्थोंमें परिभ्रमण करके श्रीधाम वृन्दावन आनेके पूर्व कुछ समय नीलाचलमें वास किया था । श्रीश्रीवृन्दावनचन्द्रने रेमुनाके गोपीनाथ श्रीविग्रह बालगोपाल वेषमें उनको साक्षात् दर्शन देकर अपने हाथसे क्षीरका पात्र देकर उन पर कृपाकी थी । यह क्षीरका पात्र श्रीकृष्ण भगवान्ने सेवकोके यहाँसे चोरी करके श्रीपाद माधवेन्द्र पुरीके लिए यत्न पूर्वक रक्खा था । श्री-चैतन्य चरितामृतमें रेमुनाके 'क्षीर-चोरा गोपीनाथ' की कथा कृपालु पाठक अवश्य पढ़े होंगे । भक्तके लिए श्रीभगवानने क्षीर चोरी की थी, अतएव उनका नाम 'क्षीर चोरा गोपीनाथ' हो गया था । इस कारणसे श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने पुरी गोसाईकी वन्दना की है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यस्मै दातुं चोरयन् क्षीरभाण्डं
गोपीनाथः क्षीरचोराभिधोऽभूत् ।
श्रीगोपालः प्रादुरासीत् वशः सन्
यत्प्रेम्ना तं माधवेन्द्रं नतोऽस्मि ।।

महाजन कविने जयगान करते हुए लिखा है—

जय-जय गोपीनाथ प्रभु प्राण मोर ।
पुरी गोसाई लागि जाँर नाम क्षीरचोर ।।

श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी जगद्गुरु हैं । उन्होंने ही जगत्में कृष्ण प्रेमको अंकुरित किया है । उसी प्रेम-अंकुरके फलवान वृक्ष श्रीगौराङ्ग प्रभु हैं ।

श्रीपाद माधवेन्द्र पुरीका जब देहावसान हुआ तो उनके श्रीमुखसे श्रीराधिकाकी उक्तिका निम्न-लिखित कृष्ण-प्रेमपूर्ण पुण्य श्लोक उच्चारित हुआ था, जिसका आस्वादन करके श्रीमन् गौराङ्ग प्रभु अतुल आनन्द प्राप्त करते थे, तथा पाठ करते ही प्रेमानन्दमें मूर्छित हो जाते थे ।

अयि दीनदयार्द्र नाथ ! हे
मथुरानाथ ! कदावलोक्यसे ।
हृदयं त्वदवलोक कातरं
दयित भ्राम्यति किं करोम्यहम् ।।

—श्री चै. च. म. ४. २. (पद्यावली ३३४)

श्रीचैतन्य चरितामृतकारने इस अपूर्व भक्ति-रसपूर्ण श्लोककी महिमाका वर्णन करते हुए लिखा है—"यह चन्द्रमाकी तरह जगतको आलोक करता है । जिस प्रकार चन्दन घिसते-घिसते उसकी सुगन्ध बढ़ती जाती है, वैसे ही यह श्लोक है । रत्नोंमें जैसे कौस्तुभ मणि है, इस काव्यमें वैसे ही यह श्लोक है । यह श्लोक श्रीराधा ठाकुरानी द्वारा कथित है, उन्हीं की कृपासे श्रीपाद माधवेन्द्र पुरीकी वाणीमें स्फुटित हुआ । श्रीगौरचन्द्र भी इसका आस्वादन किया करते इसके सिवाय कोई चौथा व्यक्ति इसका आस्वादन करने वाला नहीं हुआ । अन्तमें इसी श्लोकको पढ़ते पढ़ते श्रीपाद पुरी गोसाईने सिद्धि प्राप्तकी थी ।

—श्री चै. च. म. ४. १८९-१९४ ।

श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी गोस्वामी कृत और एक श्लोकरत्न कृपालु पाठकवृन्दको उपहार दिया जाता है । कृष्णप्रेमी पुरी गोस्वामीने कृष्णप्रेममें उन्मत्त होकर कहा था—

सन्ध्यावन्दन भद्रमस्तु भवते
भोः स्नान तुभ्यं नमो
भो देवाः पितरश्च तर्पणविधौ
नाहं क्षमः क्षम्यताम् ।
यत्र क्वापि निषद्य यादवकुलोत्तं-
तं सस्य कंसद्विषः
स्मारं स्मारमघं हरामि तदलं
मन्ये किमन्येन मे ।।

इन्हीं कृष्ण प्रेमी महापुरुषके प्रिय शिष्य हैं श्रीपाद ईश्वर पुरी गोसाई । उपयुक्त शिष्य पाकर श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी गोसाईने अपना अमूल्य कृष्णप्रेमधन श्रीपाद ईश्वर पुरी गोसाईको प्रदान किया था । गुरुदत्त प्रेमधनसे धनी होकर उपयुक्त शिष्य कलिके जीवोंको अकातर भावसे प्रेमदान कर गये हैं । श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने लिखा है, "श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी कृष्ण प्रेमके समुद्र हैं और भक्ति कल्पतरुके प्रथम अंकुर है । श्रीपाद ईश्वर पुरीके रूपमें अंकुर पुष्ट हुआ । श्रीचैतन्य महाप्रभु अपनी अचिन्त्य शक्तिसे भक्ति कल्पतरुके माली और स्कन्ध हुए । भक्ति प्रेमकी सब शाखाओंका मूल आश्रय स्कन्ध ही होता है । श्रीचैतन्य महाप्रभुरूपी मालीने इस भक्ति कल्पतरुका नवद्वीपमें रोपण किया और इच्छारूपी जलसे इसका सिंचन किया ।

(चै. च. आ. ९. ७-१०) ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ईश्वर पुरी और निमाई मिलन

यही कृष्ण प्रेमदाता शिरोमणि श्रीपाद ईश्वर पुरी नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुके दीक्षागुरु थे। जीवके साथ श्रीभगवान्‌का यह जो गुरु-शिष्य सम्बन्ध है, यह उनकी लौकिकी लीलाका एक रङ्ग मात्र है। श्रीपाद ईश्वर पुरीके अभीष्ट देव थे शची-नन्दन श्रीगौराङ्गसुन्दर। जिनको खोजते हुए वैष्णव संन्यासीके वेषमें वे नाना तीर्थोंका पर्यटन करके अन्तमें श्रीअद्वैत प्रभुके कृपा-आकर्षणसे नदियामें आये थे, तथा गुप्तरूपसे अपने प्राणधन, हृदयरत्नको खोजते-फिरते थे। प्रच्छन्न अवतार श्रीश्रीगौरचन्द्र नदियामें गुप्त रूपसे विराजते थे। श्रीपाद ईश्वर पुरीने देशपूज्य, लोकमान्य, सर्वाङ्ग सुन्दर, रूपके सागर नदियाके निमाई पण्डितका नाम सुना था। परन्तु अब तक प्रभुका साक्षात्कार करनेका भाग्य उनको प्राप्त नहीं हुआ था। शचीनन्दनका नाम सुनकर ही पुरी महाशयका मन उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उनके दर्शनकी अभिलाषासे वैष्णव संन्यासी व्याकुल होकर नदियाके पथ-पथमें भटक रहे हैं। वे मन ही मन सोच रहे हैं—

तोमार पेले दुःखेर निशि
हइबे मोर भोर।
(आमार) आँधार प्राणे आलोक ऐसे
करिबे उजोर॥
(तोमार) नामेइ एत प्रेमलालसा,
पराण भरा भालबासा
देखते पेले बूझते पारि,
केमन चित्त-चोर॥
नामटि शुने तोमार प्रेमे
हयेछि आमि भोर।
देखिनि रूप चित्त हरा,
शुनि नि कथा सुधार धारा,
शुनि मात्र नाम टि तव
बहिछे आँखि लोर॥
तोमार सङ्गे कबे वा देखा
हबे हे प्राण चोर॥ (ग्रन्थकार)

भक्तका करुण रुदन श्रीगौर भगवान्‌के कानोंमें पहुँचा, वे अब स्थिर न रह सके। एक दिन प्रभु अध्यापन करके पुस्तक हाथमें लेकर छात्रवृन्दके साथ मुकुन्द सञ्जयके घरसे अपने घर आ रहे थे। रास्तेमें श्रीपाद ईश्वर पुरीके साथ उनका प्रथम साक्षात्कार हुआ। वैष्णव संन्यासी देखकर प्रभुने उनको पहले नमस्कार करके बन्दना की। पुरी गोस्वामी शची-नन्दनकी अपरूप रूपराशिको देख मुग्ध होकर उनके मुखचन्द्रकी ओर एक टक देखने लगे। कुछ देरके बाद पुरी गोस्वामीने स्नेहपूर्वक प्रभुसे पूछा—"विप्रवर आपका क्या नाम है? कौनसा ग्रन्थ पढ़ाते और पढ़ते हो? घर कहाँ पर है?"

प्रभु महान् पण्डितके समान परम गम्भीर भावसे रास्तेमें खड़े हैं। उनके शिष्योंने उत्तर दिया—"यही नदियाके निमाई पण्डित हैं।" प्रभुने मुँह नीचा कर लिया। रङ्गीले प्रभुका इस समयका भाव अति मधुर था। भक्तवत्सल श्रीगौर भगावान्‌ने प्रियतम भक्तकी प्रार्थनासे उनको दर्शन देकर कृतार्थ किया; परन्तु दिल खोलकर उनके साथ बातें नहीं कर पा रहे हैं। क्योंकि वह प्रच्छन्न अवतार हैं। उनके मनमें बड़ा आनन्द हैं, परन्तु मुँहसे बात नहीं निकल रही है। कितनी बातें, कितने भावके तरङ्ग उनके मनमें उदय हो रहे हैं, परन्तु रास्तेमें सबके सामने प्रभु उसे प्रकट नहीं कर पा रहे हैं। इसी कारण वे सिर अवनत करके रास्तेमें गम्भीर भावसे खड़े हैं। उनके मनमें यह विचार है कि वैष्णव संन्यासीको निमन्त्रित करके घर ले जाकर मनकी बातें कहें।

प्रच्छन्न अवतारकी प्रच्छन्न लीलाके रहस्यका उद्‌घाटन करके लीला-लेखक गण मनमें बड़ा ही आनन्द अनुभव करते हैं। भक्त महाजनगण श्रीभगवन्‌के सारे तत्वको जानते हैं। श्रीभगवान्

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जैसे भक्तके मनके भाव समझकर कार्य करते हैं, भक्त भी उसी प्रकार श्रीभगवान्‌के मनके भाव समझकर अपनी उनकी अति गम्भीर लीलाके रहस्यको प्रकट करते हैं।

उद्धत-शिरोमणि निमाई पण्डित रास्तेके बीच चुप होकर खड़े रहनेवाले पात्र नहीं थे। विशेषत: उनकी एक पण्डित आगन्तुक वैष्णव-संन्यासीसे भेंट हुई थी। पण्डित पण्डितका मिलन कहिये या भक्त-भगवान्‌का मिलन कहिये अथवा गुरु-शिष्यका मिलन कहिये, इस समय निमाई पण्डितके लिए इस प्रकार गम्भीर भाव धारण करना गूढ़ रहस्यपूर्ण है। इस गूढ़ रहस्यको भक्त भावोचित भाषामें व्यक्त करना अतिशय कठिन कार्य है। कृपालु गौरभक्तवृन्द कृपा करके मन ही मन इस विषयमें अपनी-अपनी भावानुभूतिके अनुरूप शक्ति सञ्चालन करके आनन्दोपभोग करें। जीवाधम ग्रन्थकारके हृदयमें भावका बड़ा अभाव है। भगवान् श्रीगौराङ्ग प्रभुके मनके भावको लेकर मनगढ़न्त कल्पना करना धृष्टता मात्र है। तथापि उनके लीला-लेखक भक्तमहाजनगण कह गये हैं कि जिस प्रकार बाजीगर काठकी पुतलीको जैसा चाहता है, वैसे नचाता है, इसी प्रकार गौर-चन्द्र जो लिखवाते हैं वही लिख रहा हूँ।

इस महाजन उक्तिके ऊपर विश्वास स्थापित करनेसे कोई गड़बड़ी नहीं रहती। भक्तके हृदयमें स्थित भागवती शक्ति द्वारा प्रेरित होकर जीव श्रीभगवान्‌के मनोभावको प्रकट करनेकी शक्ति प्राप्त करता है।

मूल कथा छोड़कर मैं बहुत दूर चला आया। मानस-समुद्रमें भाव-तरङ्गके उठने पर ऐसा ही होता है। जब श्रीपाद ईश्वर पुरीने सुना कि ये ही निमाई पण्डित हैं, तो उन्होंने अत्यन्त हर्षयुक्त होकर गम्भीर भावापन्न शचीनन्दनकी ओर देखकर विस्मय पूर्वक पूछा था—"तुम्हीं निमाई पण्डित हो?" लेकिन प्रभुने कोई उत्तर नहीं दिया।

प्रभुके मनमें बड़ी इच्छा हुई कि इस वैष्णव संन्यासीको घर ले जा कर इनके साथ मनचाही बात करूँ। मनके भावको छिपाकर वे संन्यासी ठाकुरको निमन्त्रित करके उसी दिन अपने घर ले गये। श्रीपाद ईश्वरपुरीकी मनोकामना पूर्ण हुई। भक्त जो कामना करते हैं, श्रीभगवान् उसे पूर्ण करके मनमें अपार आनन्द प्राप्त करते हैं।

घर जाकर प्रभुने मातासे कहा—"माँ! एक वैष्णव ठाकुर हमारे घर अतिथि आये हैं। सुन्दरता पूर्वक आज भगवान्‌का भोग तैयार करो।" शची-माताने परम आनन्द पूर्वक भगवान्‌को भोग लगाकर परम आदर पूर्वक अतिथिका सत्कार किया। भोजनके अन्तमें भक्त और भगवान् एक साथ विष्णु-गृहमें बैठकर कृष्ण-कथा-रसमें मग्न हो गये। श्रीपाद ईश्वर पुरी गोसाई वक्ता थे और प्रभु श्रोता। पुरी गोसाई कृष्ण कथा कह रहे हैं और उनकी दोनों आँखोंसे अजस्र प्रेमाश्रुधारा बह रही है। यह देखकर प्रभु प्रेमानन्दमें मग्न हो गये। परन्तु खुलकर कुछ न बोले।

निमाई पण्डितमें परिवर्तन और वैष्णवोंकी प्रसन्नता

श्रीअद्वैत प्रभुके आकर्षणसे पुरी गोसाईंने नवद्वीपमें आकर उनके ही गुप्त परामर्शसे विद्या-विलासी और पाण्डित्याभिमानी निमाई पण्डितको कृष्ण-प्रेम-सुधा-रससे सींच दिया। यहाँसे ही कृष्ण-प्रेम-रूपी अंकुरके उद्‌गमका सूत्रपात हुआ। श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी गोस्वामी द्वारा प्रदत्त कृष्ण-प्रेमके अंकुरको उनके प्रिय शिष्य श्रीपाद ईश्वर पुरी गोस्वामीने भक्ति-सलिलसे परिपुष्ट करके श्रीगौराङ्ग प्रभुके हृदयमें मूल वृक्षरूपमें उगानेके हेतु श्रीअद्वैत प्रभुने यह कौशल-जाल बिछाया था।

कृष्णभक्त महाजनके सत्सङ्गसे पाण्डित्याभिमानी, विद्यावीर, उद्धत-शिरोमणि निमाई पण्डित कृष्ण-प्रेममें उन्मत्त हो उठे। भक्तितत्वकी आलोचना,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तिशास्त्रका पठन-पाठन, भक्तिसूत्रोंकी व्याख्या—ये अब निमाई पण्डितको बहुत प्रिय लगने लगे। यह देखकर नदियाके वैष्णवोंके आनन्दकी सीमा न रही। वे लोग पुरी गोसाईको धन्य धन्य कहने। लगे, और मन-ही-मन सोचने लगे कि इसी कृष्णभक्त वैष्णव महात्माके सत्सङ्गसे निमाई पण्डित परम कृष्ण भक्त हो गये हैं।

श्रीपाद ईश्वरपुरी गोस्वामी कुछ दिन नवद्वीपमें गोपीनाथ आचार्यके घर रहे। गोपीनाथ आचार्य प्रभुके एक प्रधान भक्त थे। वे पूज्यपाद वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्यके बहनोई थे। निमाई पण्डित उनके घर जाकर नित्य पुरी गोस्वामीके साथ सत्सङ्ग करते थे। नदियावासी सभी कृष्ण-भक्त वैष्णव वहाँ इकट्ठे होते थे और पुरी गोस्वामीके सङ्ग कृष्ण-कथा-रस-रङ्गमें परम आनन्द पूर्वक दिन यापन करते थे।

इनमें प्रभुके अति प्रियतम मित्र गदाधर भी थे। वे नदियाके सब वैष्णवोंके प्रिय पात्र थे। सब उनसे बहुत प्रेम करते थे। वे शैशवसे ही संसारसे विरक्त थे। श्रीपाद ईश्वर पुरी गोस्वामी भी गदाधरसे विशेष स्नेह रखते थे। गदाधरने बाल्यकालमें ही 'श्रीकृष्णलीलामृत' नामक एक ग्रन्थ लिखा था। प्रभु इस ग्रन्थका स्वयं आस्वादन करते थे, और दूसरोंको भी पढ़ाते थे।

एक दिन सन्ध्या कालमें इस भक्ति-ग्रन्थका पठन-पाठन समाप्त करके प्रभु गदाधरके साथ श्रीपाद पुरी गोस्वामीके दर्शनके लिए गोपीनाथ आचार्यके घर गये। पुरी गोस्वामी उनको देखकर परम आनन्दित हुए। प्रभुने उनको नमस्कार किया और उन्होंने प्रेमालिङ्गन प्रदान कर उनको अपने पास बैठाया। तब दोनों आदमियोंमें कथा-वार्त्ता शुरू हो गयी।

श्रीपाद ईश्वर पुरी गोस्वामीने एक श्रीकृष्ण-चरित लिखा था *। वे उसे अपने साथ नदियामें लाये थे। उनकी इच्छा थी कि नदियाके सर्वश्रेष्ठ पण्डितके द्वारा इसका संशोधन करालेंगे। निमाई पण्डित इस समय नवद्वीपके सर्वश्रेष्ठ पण्डित थे, अतएव उन्होंने उनसे इसके लिए अनुरोध किया।

चतुर चूडामणि निमाई पण्डितने उत्तर दिया—"भक्तके द्वारा लिखित और वह भी श्रीकृष्णचरित; उसमें जो दोष देखता है, वह निश्चय ही बड़ा पापी है। भक्तका कवित्व चाहे जैसा क्यों न हो, वह तो भगवानको प्रिय ही होगा।

मूर्खो वदति विष्णाय बुधो वदति विष्णवे।
उभयस्तु समं पुण्यं भावग्राही जनार्दनः॥

प्रभुके मुखसे इस प्रकार उच्च भक्तितत्वपूर्ण बात सुनकर पुरी गोसाईंके आनन्दकी सीमा न रही, उनका सर्वाङ्ग पुलकित हो उठा। वे परम कृष्णभक्त थे और भक्तिशास्त्रमें सुविज्ञ थे। उनकी समझमें सारी बात आ गयी। नदियाके लोग निमाई पण्डितको पहचान नहीं रहे हैं। लोग नहीं समझ पा रहे हैं कि निमाई पण्डितके रूपमें भगवान्‌ने प्रच्छन्न भक्तावतार लिया है। यह सोचकर उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ। वे मनके भावको छिपाकर मुस्कराते हुए पुनः निमाई पण्डितसे बोले—"इसमें कहीं कोई दोष हो तो अवश्य बताओ, इसमें तुमको कोई दोष नहीं होगा।" तब निमाई पण्डितने हाथ जोड़ कर क्षमा प्रार्थना करते हुए वैष्णवोचित दैन्यके साथ कहा—"श्रीपाद! यह कार्य मेरे द्वारा नहीं होगा।"

---

*श्रीगदाधर पण्डित कृत 'श्रीकृष्णलीलामृत' और और श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईं कृत श्रीकृष्णचरित' अब दुष्प्राप्य हैं। कब ये दोनों श्रीग्रन्थ प्रकाशित हुए थे, कुछ भी ज्ञात नहीं। इन सब प्राचीन श्रीग्रन्थोंकी खोज होनी चाहिये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुरी गोसाई अब और कुछ न कह सके। कुछ देरके बाद प्रभु वहाँसे उठे। गदाधर भी उनके साथ ही उठे। नदियाके अन्यान्य भक्तवृन्द पुरी गोसाईके पास बैठे रहे। तब श्रीपाद ईश्वर पुरी गोसाईने सबको सम्बोधन करके कहा—"हे नदियाके कृष्णभक्त वैष्णवगण! तुम लोग निमाई पण्डितको बिल्कुल ही नहीं पहचान पाये हो। वे प्रच्छन्न भक्तावतार हैं। आजके वार्त्तालापसे संभवतः तुम लोगोंने समझ लिया होगा। मेरा अनुरोध है कि तुम लोग कदापि इन भक्तचूड़ामणिका सङ्ग न छोड़ो। इन महापुरुषके द्वारा जगत्में भक्तितत्वका प्रसार होगा। ये युग-धर्म हरिनाम सङ्कीर्तनका प्रचार करेंगे। इससे अधिक कुछ मैं कहना नहीं चाहता। पश्चात् सब कुछ ज्ञात हो जायगा।" नदियाके कृष्णभक्त वैष्णवोंके मनमें आनन्दकी तरङ्गें उठीं, उन्होंने उस दिन प्रेमानन्दमें गोपीनाथ आचार्यके घर आनन्दोत्सव मनाया।

श्रीगोर सुन्दरने यह लीलारङ्ग प्रकट करके नदियाके भक्तिधर्मावलम्बी नये और पुराने कृष्ण-भक्त वैष्णवोंको जो उपदेश दिया, वह विद्यागर्वित, पाण्डित्याभिमानी, पुराने ब्राह्मण-पण्डितोंके लिए भी प्रयुज्य था। भक्तपद अति उच्चपद है, भगवत्-कृपासे जो इस उच्चपदको प्राप्त हैं, जिनकी भाव-भक्ति और प्रेमभक्तिके प्रभावसे श्रीभगवान स्वयं जिनकी अधीनता करते हैं, उनके श्रीमुखसे निकले वाक्यमें या लिखित भक्तिग्रन्थमें, जिसमें श्री-भगवान्के रूप-गुण, महिमा और लीलाका वर्णन हो, यदि कोई किसी प्रकारका दोष देखता है, तो उसके अपराधकी कोई सीमा नहीं। 'स्वयं आचरिया प्रभु जीवेरे शिखाय'—यहाँ प्रभुने इस महाजन वाक्यकी सार्थकता सम्पादन की है। कोटि-कोटि पुरुषोंमें कोई एक भगवद्भक्तके पदको प्राप्त होता है। इन सब भगवद्भक्तोंमें-से सब लीला लेखककी योग्यता नहीं रखते। अतिशय भाग्यवान् श्रीभगवान्के चिह्नित नित्यदास भक्तगण उनकी कृपाके आदेशसे भगवत्-लीलाकथासे पूर्ण श्रीग्रन्थ लिखकर जीवके कल्याणके लिए प्रकाशित करते हैं। उनकी भाव और भाषा साधारण लोगोंके भाव और भाषाके समान नहीं होती। वे लोग प्राकृत भावराज्यके लोग नहीं हैं, भाषा-व्याकरण-अलङ्कार आदि साहित्यिक बन्धनसे वे मुक्त होते हैं। पूज्यपाद लीला-लेखक महाजन ऋषिगण श्रीभगवान्के रूप-गुण और लीला-कथाको चाहे जिस भावमें लिपिबद्ध क्यों न करें, उसको सर्वोत्तम समझ करके जो ग्रहण करते हैं, वे ही भक्त मर्यादा-रक्षक प्रकृत वैष्णव साधक हैं। श्रीगौराङ्ग प्रभुने यह लीलारङ्ग प्रकट करके नदियाके वैष्णवोंको यही शिक्षा दी है। पूज्यपाद लीला लेखक भक्तसाधकको भावलीला-कथा-पूर्ण भक्ति-ग्रन्थावली साधारण समालोचनाकी वस्तु नहीं है। यह भक्तके आस्वादनकी वस्तु है। साधककी आत्मशुद्धिका उपकरण है, भक्ति-जगतके गौरवकी सामग्री है।

श्रीगौराङ्ग लीला अनन्त है, तथा गूढ़ रहस्यपूर्ण है। एक-एक लीलातरङ्गिणीके शत-शत शाखाएँ, सहस्र-सहस्र धाराएँ प्रवाहित होती हैं। लीलामयकी लीलाका रहस्य उनके लीला-मधु-लोलुप भक्तभृङ्ग-गण ही जानते हैं। भगवल्लीला भी भगवत्स्वरूप है। भक्त और भगवान्के समान अभेद तत्त्व है। जो भक्तकी महिमाको नहीं समझता, भक्तकी मर्यादाकी रक्षा नहीं कर सकता, उनके लिए भक्तिपथ नितान्त निरुद्ध है।

इस प्रकार कुछ दिन श्रीपाद ईश्वर पुरी गोसाई नवद्वीपमें रहकर तीर्थाटनमें चले गये। श्रीचैतन्य भागवतकार ठाकुर वृन्दावन दासने प्रभुके साथ श्रीपाद ईश्वर पुरी गोसाईके मिलनकी लीला कथा श्रवण और पठनको फलश्रुति लिखी है—

जे शुनये ईश्वर पुरीर पुण्य कथा।
तार वास हय कृष्णपादपद्म यथा॥

चै. भा. आ. ७. २५२.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सत्रहवाँ अध्याय

नदिया-विहारीका नदिया-विहार

जखन जे रूप लीला करेन ईश्वर। सेइ सर्वश्रेष्ठ तार नाहिक सोसर ॥

—श्री चै. भा. आ. ८. २५५.

विद्यार्णियोसे परिवेष्टित निमाई पण्डित

निमाई पण्डित इस समय सर्वापेक्षा बड़े अध्यापक हैं, गणमान्य पण्डित हैं। नदियाके सब लोग उनका सम्मान करते हैं, रास्तेमें उनको आते देखकर बड़े-बड़े लोग हाथी, घोड़ा, पालकीसे उत्तर कर रास्तेमें एक ओर खड़े होकर हाथ जोड़कर उनको अभिवादन करते हैं। अपराह्नमें निमाई पण्डित अपने अनगिनत छात्रोंको साथ लेकर गङ्गातट पर जाकर बैठते हैं। अगणित शिष्य और छात्रवृन्दके बीच जब वे विद्या-विलास रङ्गमें मग्न होते हैं, हँसते हुए प्रशान्त भावसे शास्त्र-चर्चा करते हैं तो गङ्गातट पर आये हुए वैष्णव लोग दूर खड़े होकर उनके भुवन-मोहन अपरूद रूपराशिका दर्शन करके, उनके श्रीमुखसे मधुमय वचन सुनकर विमुग्ध होकर मन ही मन सोचते हैं—"ऐसा रूप, ऐसी विद्या और ऐसा पाण्डित्य तो मनुष्यमें देखनेमें नहीं आया, लेकिन कृष्ण-भजन बिना सब व्यर्थ है। बड़े दुःखकी बात है कि ये कृष्ण-कथा नहीं करते।"

प्रिय वयस्य और छात्रगणसे परिवेष्टित होकर नदियामें सुरसरिके तट पर सर्वलोकमान्य नवीन पण्डित श्रीशचीनन्दन प्रतिदिन सन्ध्याकालमें तारका वेष्टित पूर्णचन्द्रके समान विराजते थे। जगत्को आलोकित करने वाली उनकी अपरूप रूपराशिसे गङ्गातट दीप्त हो जाता था। पतित पावनी सुरसरिके आनन्दोच्छवासमें गङ्गापुलिनकी अपूर्व शोभा दृष्टि गोचर होती थी। गङ्गाके विस्तृति तट प्रदेशमें असंख्य जनसमूहकी भीड़ लगती थी। उनके भुवनमोहन रूपसे मुग्ध होकर, उनकी श्रुतिमधुर अपूर्व वचनसुधा पान करके नदियाके नर-नारीवृन्द गङ्गाके घाटसे घर लौटना नहीं चाहते। श्रीवृन्दावन दास ठाकुरने प्रभुके इस समयके रूपका वर्णन करते लिखा है—

सिन्धुसुता सेवित प्रभुर कलेवर।
त्रिभुवने अद्वितीय मदन-सुन्दर ॥

—श्री चै. भा. आ. ८.३१

इस पयार श्लोककी अन्तिम पंक्ति पढ़ककर ग्रन्थकारके तनमें जो भाव-तरङ्ग उठा था, वह निम्नलिखित पदमें लिपिबद्ध हुआ है।

(नदिया नागरीकी उक्ति)

सखिरे !

कि हेरिनू रूपसिन्धु सोनार वरन।
रूप हेरे गृहे जेते चलेना चरण ॥
चाचर चिकुर दोले, सुशोभन गण्डमूले,
तिलफूल जिनि नासे तिलक शोभन।
कुकुंम चर्चित देहे,
मल्लिकार माल्य शोभे।
आजानुलम्बित सखि बाहुर बलन ॥
के आछे रमणि कुले,
तिलाञ्जलि कुल शीले।
ना दिये थाकिते पारे, हेरिले बदन ॥
दास हरिदासे भणे, छाइ दिये कुलमाने,
धर गिये मन-चोरार राङ्गा चरण ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दर अपराह्नमें इसी प्रकार अपूर्व विद्या-विलास-लीला-रङ्ग करते है। कभी-कभी नदिया-विहारी गौरहरि नगर-भ्रमणके लिए भी निकलते हैं। प्रातःकाल भी वे नदिया-विहारलीला-रङ्ग करते थे। वे सदा ही अपने प्रिय सखावृन्द तथा प्रिय छात्रों द्वारा परिवेष्टित रहते थे। श्रीश्रीनवद्वीपधाम पाँच योजन विस्तारमें था। कुछ लोगोंने सोलह कोस व्यापी भी कहा है।* इस सुवृहद् नदिया-नगरीमें नदिया विहारी गौरहरिके लिए कोई अगम्य स्थान न था। कृपानिधि श्रीगौराङ्ग सुन्दर कृपा परवश होकर सारे भाग्यवान् नवद्वीप-वासियोंके नित्य नयन गोचर होते थे। नवद्वीप-वासियोंके भाग्यकी तुलना नहीं है। वे लोग शिव-विरिञ्चि-अभिवाञ्छित देव-दुर्लभ प्रभुके श्रीचरणोंका नित्य दर्शन करके कृतार्थ होते थे।

सारे नदियावासी परम प्रीतिपूर्वक प्रभुके श्रीचरणोंकी वन्दना करते। उस समय शचीनन्दनके यौवनका प्रारम्भ हो रहा था। उनकी अद्वितीय मदनमोहन अपरूप रूपराशि देखकर नारियाँ कहती थीं कि ये साक्षात् मदन हैं, पण्डितगण देखते थे मानो वे साक्षात् वृहस्पति हैं, योगी और संन्यासीगण उनको योगसिद्ध परमपुरुषके रूपमें देखते थे। दुष्ट दुराचारी पाखण्डी लोग उनको देखकर भयभीत होकर काँपते हुए किनारे खड़े हो जाते थे, उनसे ऐसा डरते थे मानो यमराज आ गये हों। श्रीकृष्ण-भगवान् जब कंसवधके लिए मथुरामें वीरवेषमें उदय हुए, तब उनको देखकर मथुरावासी नर-नारीवृन्द तथा कंसराजके अनुचरोंने ठीक ऐसा ही सोचा था, यथा श्रीमद्भागवतमें—

मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः
स्त्रीणां स्मरो मूर्त्तिमान्।
गोपानां स्वजनोऽसुतां क्षितिभुजां
शास्ता स्वपित्रोः शिशुः॥
मृत्युर्भोजपतेर्विराड्विदुषां
तत्त्वं परं योगिनाम्।
वृष्णीनां परदेवतेति विदितो
रङ्गं गतः साग्रजः॥
—श्रीम. भा. १०. ४३. १७

अतिवृद्ध लोग भी नदियाविहारी गौरहरिको देखकर उनके श्रीचरणोंकी धूलि लेकर अपनेको कृतार्थ समझते थे। प्रभु एक दिन एक बार भी जिसके साथ वार्त्तालाप करते हैं, वह उनके दुर्भेद्य प्रेमपाशमें बद्ध होकर वन्दी हो जाता है, उनके श्रीचरणोंका भृङ्ग बन जाता है, कदापि उनका सङ्ग नहीं छोड़ता। प्रभु विद्यारसमें उन्मत्त होकर चाहे कितने ही उद्धत क्यों न बनें, नदियावासी सब लोगोंकी उनके प्रति अतिशय प्रीति है। यहाँ तक कि म्लेच्छ, यवन तथा दुष्ट प्रकृतिके लोग भी उनका बहुत सम्मान करते हैं।

वायु-प्रकोप-लीला

एक दिन श्रीगौराङ्ग-सुन्दरने नदियावासियोंको एक अपूर्व लीलारङ्ग दिखलाया। छलपूर्वक सबसे कहा कि उनको अग्निमान्द्य होनेके कारण शरीरमें वायुका प्रकोप हो गया है। प्रभु स्वतन्त्र ईश्वर हैं, वे इच्छामय हैं, इच्छामयकी इच्छा-शक्तिको रोकनेकी सामर्थ्य किसमें है?

श्रीपाद ईश्वर पुरी गोसाईंके सत्सङ्गसे प्रभुके हृदयमें जो प्रेमभक्तिका बीज अंकुरित हुआ था, उसके सारे विकासके लक्षण उनके शरीरमें उनकी इच्छासे दृष्टिगोचर होने लगे।

क्षणे क्षणे सर्व अङ्ग स्तम्भाकृति हय।
हेन मूर्च्छा हय लोक देखि पाय भय॥
—चै. भा. आ. ८.७०

नदियाके प्रसिद्ध पण्डित निमाईचाँदकी अकस्मात् ऐसी अवस्था देखकर उनके आत्मीय स्वजन, वयस्य,

---

*तत्पञ्चयोजनं केचिद्वदन्ति क्रोशवोडशम्। पद्धति प्रदीप।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बन्धुगण और छात्रगण सभी भयभीत हो उठे। प्रभुने अपने मन्दिरमें ही यह अपूर्वलीला प्रकट की। शचीमाता भय और चिन्तासे बेसुध होकर नदियाके मार्गपर बाहर निकलीं। जिसे देखा, उसीसे पूछा, "हाँ री! मेरे निमाईचाँदको यह क्या रोग हो गया है? यह दूर कैसे होगा?"

नदियाके धनी जमीदार बुद्धिमन्त खाँ तथा मुकुन्द सञ्जय प्रभुकी ऐसी अवस्था सुनकर अपनी-अपनी गोष्ठीके साथ उनके घरपर आ उपस्थित हुए। कोई विष्णु तेल, कोई मध्यम नारायण तेल प्रभुके सिरपर मर्दन करने लगा। कोई-कोई उनके श्रीअङ्गको हाथसे सुहलाते हुए मन ही मन भूत निवारक मन्त्र पढ़ने लगे। तान्त्रिक पण्डितोंने भूत-निवारणका उद्योग करनेकी राय दी। जिसके मनमें जो आया, वह वही कहने लगा। प्रभुके शरीरमें वारंवार कम्पका आना रुकता नहीं, उनके प्रचण्ड हुङ्कार और गर्जनसे जान पड़ता था कि ब्रह्माण्ड काँप रहा है।

वे बीच-बीचमें चित्कार करते हुए, हाथ डुलाते हुए कहते—"मैं ही सब लोकोंका ईश्वर हूँ। मैं विश्वको धारण करता हूँ। मेरा नाम विश्वम्भर है। मैं वही हूँ, मुझे कौन नहीं पहचानता?"

इस प्रकार वायुका बहाना करके प्रच्छन्न अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुने नदियावासीके सम्मुख सर्वप्रथम अपने मुखसे यहीं अपने तत्त्वको प्रकट किया। नदियावासी भक्तवृन्दके सामने आत्म-प्रकाश किया। परन्तु उनकी वैष्णवी मायाके वशमें पड़कर कोई उनकी लीलाका रहस्य न समझ सका।

प्रभुकी ऐसी अवस्था देखकर कलिके मोहान्ध जीव कोई कहते—कि इनमें दानवका वास हो गया है; कोई कहते कि यह डाकिनीका काम है; कोई कहते कि यह बहुत बक-बक करते हैं इसलिए इनपर वायुका प्रकोप है, आदि आदि।

श्रीगौर भगवान्के इस लीलारङ्गका मर्म न समझकर इस प्रकार सब लोगोंमें नाना प्रकारकी कल्पना करके अन्तमें परामर्श करके तैल-द्रोणमें उनको बैठाया। प्रभु तैलद्रोणमें बैठकर प्रेमानन्दमें अट्टहास करने लगे। इससे लोगोंको ज्ञात हो गया कि सचमुच ही उनको वायु-रोग लग गया है। शचीमाता सब देख रही थी। नाना लोगोंकी नाना बातें सुनकर वह किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर गृहद्वारपर खड़ी होकर अजस्र आँसू बहाने लगीं।

इस प्रकार रङ्गीले प्रभुने कुछ देर लीलारङ्ग करके अपनी इच्छासे अपने भावको संवरण किया। इच्छामय प्रभु स्वेच्छासे प्रकृतिस्थ हुए। नदियावासी भक्तगण, प्रभुके आत्मीय स्वजन, उनके वयस्य और छात्रवृन्द सभी प्रभुको रोगमुक्त देखकर उत्फुल्ल हो उठे। बुद्धिमन्त खाँ और मुकुन्द सञ्जयने शचीमाताके द्वारा दीन-दुःखियोंको दान कराया। शचीमाताके आनन्दकी सीमा न रही। उन्होंने अन्न महोत्सव करके दीन-दरिद्रको परम परितोषपूर्वक भोजन कराया। प्रभुने स्वयं परोसा। शचीमाताने पुत्रके मङ्गलके लिए ब्राह्मणों और वैष्णवोंको भोजन और वस्त्र दान दिया। शची आङ्गनमें कई दिन आनन्दका स्रोत बहता रहा। प्रभुकी रोग-शान्तिका समाचार सुनकर सारी नदियाके लोग आनन्दोत्सव मनाने लगे। सब कहने लगे—"अहा! इतने बड़े पण्डित, ऐसे भुवन-मोहन रूपवान् पुरुष, ऐसे सर्व-लोक-रञ्जन विप्रकुमार चिरंजीवि हों।"

इस प्रकार कलिके प्रच्छन्न अवतार शचीनन्दन गौरहरिने नदियावासीको बात-रोगके बहाने प्रेमभक्तिके विकारके सारे लक्षण दिखलाये। माया-मुग्ध जीव करुणामयके करुणा-विकासकी लीला समझ न सके। इच्छामय स्वतन्त्र ईश्वर श्रीगौर-भगवान् अपनेको न बतलावें तो उनको जाननेकी सामर्थ्य किसीमें नहीं है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु प्रतिदिन सब शिष्योंको लेकर गङ्गास्नान करने जाते हैं। गङ्गास्नान करके घर आकर विष्णु पूजा, तत्पश्चात् प्रभुका भोजन-विलास-रङ्ग मधुसे भी मधुर है। गौर वक्षविलासिनी श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी अन्न-व्यञ्जन परोसती हैं। शचीमाता पास बैठकर पुत्रको प्राण भरकर भोजन कराती है और पुत्रके भोजनविलासको देखकर आनन्द-सागरमें निमग्न हो जाती हैं।

भोजनके बाद प्रभु ताम्बूल सेवन करके अपने मन्दिरमें शयन करते हैं। गौरवक्षविलासिनी लक्ष्मी-प्रिया देवी उनके श्रीचरणोंकी सेवा करती हैं।

नगर-भ्रमण

अपराह्नमें पोथी हाथमें लेकर प्रभु अपने प्रिय शिष्यगणके साथ पुनः नगर-भ्रमणके लिए निकले। शचीनन्दनकी नदिया-बिहार लीला अतिशय मधुमय है। श्रीगौराङ्गलीलाके व्यासावतार इन लीला कथाओंको श्रीचैतन्य भागवतमें अति सुललित भाषामें ललित मधुर छन्दमें वर्णन कर गये हैं। श्रीवृन्दावन ठाकुरका उच्छिष्ट चर्वित चर्वण करके प्रभुकी मधुमय नदिया विहार लीला कहानी यहाँ विस्तार रूपसे वर्णित हुई है। श्रीभगवान्‌का लीलामधु कभी प्राचीन नहीं होता, कभी पुनरुक्ति दोषसे दूषित नहीं होता। उसका जितना अनुशीलन किया जायगा, जितना आस्वादन किया जायगा, उतना ही मधुमय और स्वादु जान पड़ेगा। इक्षुदण्डके चवर्णके समान इससे परम सुखानुभूति होगी। श्रीगौरांग प्रभुकी नवद्वीप लीला-रस-मधु-पानमें मत्त सुधी भक्त-भ्रमरगण अवश्य इस आकृति अधम ग्रन्थकारको इस लीला वर्णनके सम्बन्धमें 'चर्वित-चर्वण' दोषका दोषी नहीं बनावेंगे। लीला-कथा रसका चर्वण सुखकर और सुस्वादु है। भक्तका प्राण इस उच्छिष्ट रसका आस्वादन करके आनन्दसे गद्‌गद हो जाता है, उन्मत्त हो उठता है। भक्त महाजनगण जो सूत्ररूपमें लिख गये हैं, भावुक भक्तगण उसका रसास्वादन करके विस्तार रूपसे व्याख्या करनेकी चेष्टा करते हैं। अपने अपने भावके अनुसार भक्ति-परिपोषक भाषा और छन्दमें लीला-लेखकगण श्रीभगवानके रूप और गुणका वर्णन करके लीला विस्तार करते हैं। इसी प्रकारसे श्रीभगवानके लीला ग्रन्थकी सृष्टि और पुष्टि होती है। श्रीभगवान्‌के लीलाग्रन्थ इसी भावसे सदा लिखे जाते रहे हैं। ऋषि महाजनगणके चरणचिह्नोंका अनुसरण करके यह श्रीग्रन्थ लिखा जा रहा है। कृपामय गौर-भक्तवृन्दकी कृपासे सारी अभीष्ट-सिद्धि होती हैं, यह बात ध्रुव सत्य है। इस जीवाधम ग्रन्थकारकी यही प्रार्थना है कि वे अपनी कृपासे बञ्चित न करें।

जुलाहेकी दूकानपर

प्रभु नगर भ्रमणके लिए बाहर निकले हैं। नदियाके बाजारमें किसी वस्तुकी कमी नहीं है। इतना बड़ा बाजार कभी किसीने नहीं देखा। तत्कालीन नवद्वीप नगरी आधुनिक कलकत्ताकी अपेक्षा भी बड़ी नगरी थी। गङ्गाके एक-एक घाटपर लाखों आदमी स्नान करते थे। बाजारमें वस्त्रकी सहस्रों दूकानें थीं। नाना जातिके लोग नवद्वीपमें आकर नाना प्रकारके वाणिज्य व्यवसाय करते थे, प्रभुके सङ्ग उनकी प्रिय छात्र-मण्डली है। उनको सङ्ग लिये बिना प्रभु कहीं नहीं जाते। नवीन छात्र-गणसे परिवेष्टित होकर नदियाके नवीन अध्यापक निमाई पण्डित अपनी अपरूप रूपछटाको विकर्ण करते आजानुलम्बित बाहुयुगल डुलाते हुए नदियाके प्रशस्त बाजारमें हँसते हुए प्रविष्ट हुए।

पहले सामने एक जुलाहेकी दुकान देखकर प्रभु वहाँ जाकर बैठ गये। नदियामें ऐसा कोई नहीं जो उनको पहचानता न हो। जुलाहेने प्रभुको देखकर सत्कार पूर्वक उठकर प्रणाम किया। प्रभु हँसकर मीठे वचन बोले, "ताँती (जुलाहा) भैया! अच्छे-अच्छे वस्त्र निकालो तो।"

जुलाहेने झटपट बहुमूल्य सूक्ष्म उत्तम-उत्तम वस्त्र लाकर प्रभुके सामने रख दिये। प्रभुने छाँटकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दो जोड़े उत्तम वस्त्र हाथमें लेकर पूछा—"इन वस्त्रोंका क्या मूल्य लोगे।" जुलाहेने उत्तर दिया—"तुम जो भी स्वेच्छासे दोगे, वही ले लूँगा।"

वस्त्रका मूल्य निरूपण करके सदानन्दमय प्रभुने मधुर-मधुर मुस्कानके साथ जुलाहेसे कहा, "ताँती भैया! आज तो हाथमें पैसा-कौड़ी कुछ भी नहीं है।" जुलाहेने उत्तर दिया, "आपकी जब इच्छा हो, दाम चुकावें, वस्त्र आप ले जाँय, प्रसन्नतापूर्वक इनका उपयोग करें।"

गोपोंके घर

भाग्यवान जुलाहेके ऊपर शुभ दृष्टिपात करके प्रभु हँसते-हँसते उसकी दूकानसे वस्त्र लेकर चल पड़े। नदियाके बाजारसे कुछ दूर पर ग्वालोंकी वस्ती है। प्रभु भ्रमण करते हुए गोप-पुरीमें प्रविष्ट हुए। इस गोप-पुरीमें घूमना प्रभुको बहुत पसन्द था। गोपबृन्दके साथ शचीनन्दनकी सदासे प्रीति रही, वे उनके नित्यदास हैं। नदियाके गोपवृन्द प्रभुको मामा कहा करते थे। इससे प्रभुको अतिशय आनन्द होता था।

नन्द-नन्दन श्रीकृष्णके समान शचीनन्दन गौरहरि नदियाके गोप-गोपीवृन्दके प्राणस्वरूप थे। जिसके घरमें अच्छा दूध-दही होता था, क्षीर-छाना, मक्खन होता था, पहले वह शचीमाताके घर ले जाकर बोलता था, "माँ! यह अपने पुत्रको देना।" पूर्वलीलाके सम्बन्धसे गोप-लोग प्रभुके निज-जन थे। वे बीच-बीचमें ग्वालोंके घर बैठकर क्षीर-छाना, मक्खन, दूध-दही चुप-चाप खाकर आते थे। तैंथिक विप्रके बालगोपाल देवके भोगके अग्रभागको भोजन करते समय प्रभुने स्वमुखसे कहा था—

'आमि जे गोपाल।' चै. भा. आ. ३. १९९

शचीनन्दन ही व्रजेन्द्रनन्दन हैं। इसी कारण गोपजातिके साथ उनका विशेष प्रीति सम्बन्ध है। प्रभु ग्वालोंके द्वारपर बैठकर नानाप्रकारके हास परिहास करने लगे। गोप-गोपीवृन्दने प्रेमानन्दमें मत्त होकर सुन्दर आसन लाकर उसपर प्रभुको आदर पूर्वक बैठाया। प्रभुने हँसते हुए कहा—"लाओ दूध दही, आज तुमसे ही दान लिया जायगा।"

प्रभुने अपरूप भुवन-मोहन मदन-मोहन रूपसे मुग्ध होकर गोपवृन्द निःसंकोच भावसे मामा कहकर हास-परिहास करने लगे। कोई बड़े उल्लासमें उनको कन्धे पर उठाकर अपने घर ले गया, कोई हँसकर बोला, "मामा! चलो हमारे घर चलकर भात खाओ। पहले जो तुम हमारे घर भात खाते थे, वह क्या भूल गये?

शचीनन्दन समस्त गोप-गोपीगणकी बातें सुनकर हँसने लगे। उनके साथ नानाप्रकारके कौतुक किये। आनन्दके साथ उन्होंने दधि, दुग्ध, घृत, मक्खन, छाना-क्षीर लाकर प्रभुके हाथमें दिया। प्रभुने ग्वालेके घर बैठकर उन सब पदार्थोंको स्वच्छन्द पूर्वक प्रीतिसे भोजन किया। महाभाग्यवान् नदियाके गोपगण उनका प्रसाद पाकर कृतार्थ हो गये। इसी प्रकार बीच-बीचमें शचीनन्दन नदियावासी गोपवृन्दके साथ इस प्रकारकी अपूर्व लीलाएँ करते थे तथा व्रजरसका आस्वादन करते थे।

गन्धीके यहाँ

गोपवृन्दके साथ आनन्द लेकर प्रभु वहाँसे एक गन्धीके घर जा पहुँचे। गन्धीने प्रभुको देखकर आसन देकर आदरपूर्वक श्रीचरण-धूलि ग्रहण करके हाथ जोड़कर पूछा—"इस दासके घर गोसाईंका आगमन किस लिए हुआ है? आज हमारा बड़ा शुभ दिन है।" रङ्गीले प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"अरे भैया! बढ़िया-सा इतर लाओ।"

गन्धीने झटपट घरसे उत्तम-उत्तम सुगन्ध-पदार्थ लाकर प्रभुके सामने रखे। प्रभुने चुन-चुनकर उत्तम सुगन्ध-पदार्थ श्रीहस्तसे उठाकर हँसते हुए गन्धीसे पूछा, "गन्धी भैया! इसका मूल्य कितना है?"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गन्धीने उत्तर दिया—"तुमसे क्या छिपा है। मैं मूल्य क्या बताऊँ। आज शरीरपर लगाकर देखो, कल धोनेपर भी शरीरसे गन्ध नहीं जाय तो जो तुम्हारी इच्छा हो मूल्य दे देना।"

इतना कहकर उस भाग्यवान् गन्धीने अपनी दूकानमें प्रभुको बैठाकर उनके श्रीअङ्गोंमें परम आनन्दपूर्वक सर्वोत्तम गन्ध अपने हाथों मल दिया।

नदियावासीके भाग्यकी सीमा नहीं है। प्रिय पाठकवृन्द! इनको साधारण गन्धी न समझें। यह प्रभुके अन्तरङ्ग नित्यदास हैं। प्रभुके श्रीअङ्गकी सेवा करनेके लिए ही प्रभुकी इच्छासे नदियामें उत्पन्न हुए हैं। अपनी मनोवाञ्छित सेवा प्राप्त करके आज प्रेमानन्दसे बाह्यज्ञान-शून्य होकर प्रभुके दिव्य अङ्गोंका स्पर्श और सेवा करके जीवनको सार्थक किया। धन्य हो गन्धी! तुम्हारे चरणोंमें कोटि-कोटि प्राणिपात।

मालीके पास

शचीनन्दनकी नदिया-विहार-लीलाकी कहानी अभी प्रारम्भ हो रही है। अपने नित्यदासवृन्दपर कृपा करनेसे निमित्त प्रभुका यह नगर-भ्रमणका केवल बहाना मात्र था। गन्धीपर कृपा करके प्रभु एक भाग्यवान् मालीके पास पहुँचे। माली प्रभुको देखकर आदरपूर्वक उनको आसन देकर उनको दण्डवत् प्रणाम करके हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। प्रभु मालीके घर आसनपर बैठकर मुस्कराते हुए उसकी ओर शुभदृष्टिपात करके बोले—"माला-कारजी! सुन्दर-सी ऐसी माल दीजिये, जिसका एक कोड़ी भी मूल्य न देना पड़े।"

मालीने प्रभुके अपरूप रूपको देखकर मन्त्र-मुग्धवत् उनके चरणोंमें आत्म-समर्पण कर दिया। तुच्छ माला तो सामान्य वस्तु है। अपना सर्वस्व प्रभुके चरणोंमें सौंपनेपर भी उनके मनमें तृप्ति नहीं हुई। प्रभुके शिव-विरिञ्चि-वन्दित पादपद्ममें उसके लिए अदेय कुछ भी नहीं है। मालीने हँसकर प्रभुसे कहा, "गोसाईं! तुम्हें कुछ देना न पड़ेगा। आओ आज फूलोंकी मालासे मैं अपने मनकी साधसे तुमको सजा दूँ।" यह कहकर परम सौभाग्यवान् माली सर्वोत्तम पुष्पोंकी मालाके द्वारा प्रभुके श्रीअङ्गोंको सजाकर उनके भुवन-मोहन अपरूप रूपराशिको नयन भरकर दर्शन करने लगा। देखते-देखते वह प्रेमानन्दमें विह्वल होकर प्रभुके चरणोंमें गिरकर रोने लगा। प्रेममय प्रभुने मधुर मुस्कानके साथ उसको अपने श्रीहस्तसे पकड़कर उठाया, और उसके ऊपर शुभदृष्टिपात किया। मालीके सारे अङ्ग पुलकित हो उठे, और वह कृतकृत्य हो गया। तब प्रभु छात्रों और सखावृन्दके साथ हँसते-हँसते पुष्पोंकी मालासे सज्जित होकर मालीके घरसे निकले।

पानवालेके घर

अब नदियाविहारी गौरहरि एक सौभाग्यवान् ताम्बूलीके घर जा पहुँचे। ताम्बूल-सेवन प्रभुको बहुत प्रिय है—यह बात परम सुकृतिवान् वह ताम्बूली जानता था, और प्रभुके लिए सुवासित ताम्बूल लगाया करता। प्रभुको अपने घर देखकर उसे अपने जीवनकी साध पूरी करलेनेकी इच्छा हुई। उसके चिर-जीवनकी साध थी कि प्रभु एकबार उसकी कुटीमें पदार्पण करते, और उसके हाथका ताम्बूल सेवन करते। भक्तकी मनोवाञ्छा भक्तवत्सल श्रीभगवान्‌ने आज पूरी की। ये महापुरुष प्रभुके नित्यदास थे ताम्बूलीके रूपमें नदियामें जन्म ग्रहण किया था। ताम्बूलीने प्रभुको देखते ही आनन्दविह्वल होकर आसन दिया, चरणकी धूलि ग्रहण करके हँसते-हँसते निवेदन किया—"मेरे बड़े भाग्य हैं कि आप मुझ क्षुद्रके द्वारपर पधारे हैं।"

इतना कहकर वह दौड़ते हुए घरके भीतर गया और उत्तम ताम्बूल लाकर प्रभुके श्रीहाथोंमें दिया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने हँसते हुए उससे कहा—"बिना कोड़ी पैसा लिये ताम्बूल कैसे दे रहे हो ?' प्रभुके नित्यदास चतुर ताम्बूलीने उत्तर दिया—"मुझे ऐसा ही अच्छा लगा।"

प्रभु ताम्बूलीकी बात सुनकर मृदु-मधुर मुस्कानके साथ उसके दिये हुए सुगन्धित ताम्बूलको हुँकारके साथ चवाने लगे। यह देखकर भाग्यवान् ताम्बूलके हृदयमें आनन्दका फौव्वारा छूटने लगा। आह्लादसे गद्गद होकर घरसे कर्पूर, इलायची, लवङ्ग, पान, सुपारी आदि प्रचुर परिणाममें लाकर प्रभुके चरणोंमें भेंट करके ताम्बूली अपनेको कृतकृत्य समझने लगा। प्रभुसे किसी वस्तुका मूल्य नहीं लिया। नदियाके विप्रकुमार शचीनन्दन अपने हाथसे चादरमें सारी वस्तुएं बाँधकर ताम्बूलको कृपाशीर्वाद प्रदानकर वहाँसे चले।

शङ्खवालेकी दुकानपर

इसके बाद प्रभु एक शङ्ख बेचने वालेकी दूकानपर गये। शङ्ख-विक्रेताने झटपट उठकर उनको प्रणाम करके बैठनेके लिए आसन दिया। प्रभुने हँसकर उससे कहा—"भाई शङ्ख-वणिक ! एक जोड़ा अच्छा शङ्ख लाओ तो। घरके लिए चाहिये। परन्तु सुनो, पैसा-कौड़ी तो मेरे पास नहीं है। कैसे काम चलेगा ?

प्रभुकी बात सुनते ही लक्ष्मी-नारायण युगल-सेवामें अनुरक्त परम सौभाग्यवान् शङ्खवणिकने मन-ही-मन सोचा कि, "लक्ष्मी ठकुरानीके लिए गोसाईंको शङ्ख चाहिये। उसके बड़े भाग्य है जो स्वयं नारायण उसके घर आकर इस सामान्य वस्तुकी कामना कर रहे हैं।" शङ्ख-वणिकने आनन्द गद्गद होकर दो जोड़े अत्युत्तम दिव्य शङ्ख लाकर प्रभुके श्रीहस्तमें देकर हँसते हुए कहा—शङ्ख घर ले जाइये। पीछे मूल्य दे देना, न भी दो तो तुम्हारा कोई दायित्व नहीं।"

प्रभुका मनोभाव समझकर उनका निजदास परम सुकृतिवान् शङ्ख-वणिकने यह बात कही। प्रभु और सेवक, दोनोंने इशारेसे अपने-अपने मनकी बात व्यक्त की। उसका मर्म प्रभु समझ गये, और प्रभुके निज दासने भी समझा। श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीके लिए प्रभुने शङ्ख-वणिकसे शङ्ख माँगा। भक्तके भगवान् भक्तकी मनस्तुष्टिके लिए क्या नहीं कर सकते ?

दैवज्ञके यहाँ

शङ्ख-वणिककी बातसे परम सन्तुष्ट होकर प्रभु शङ्ख लेकर हँसते-हँसते पुनः नदियाके पथपर नगर भ्रमण करनेके लिए निकले। साथमें प्रिय वयस्कगण हैं। नदियाका मार्ग आलोकित करके शचीनन्दन आजानुलम्बित बाहु डुलाते हुए परम आनन्दपूर्वक सड़कपर चले जा रहे हैं। रास्तेमें एक दैवज्ञ ब्राह्मण-का घर है। वे कर-कुण्डली-कपाल देखकर सारी भूत, भविष्यत्, वर्तमानकी बात बतला सकते हैं। इच्छामय स्वतन्त्र पुरुष श्रीगौरभगवान् अचानक उस दैवज्ञ ब्राह्मणके घर जा पहुँचे। उनकी अपूर्व ज्योति-पूर्ण श्रीअङ्गमाधुरी और रूपराशि देखकर दैवज्ञ विप्रने झटपट उठकर उनको नमस्कार करके बैठनेके लिए आसन दिया। वे विप्र गोपालमन्त्रके उपासक, सदाचारी, इष्ट-निष्ठ और भगवद्भक्त थे। प्रभुने मधुर मुस्कानके साथ उनसे पूछा—"तुम भूत-भविष्यकी सब बातें जाननेवाले हो, बताओ तो सही कि मैं अन्य जन्मोंमें कौन था।"

दैवज्ञ विप्र प्रभुकी बातके उत्तरमें 'अच्छा मैं गणना करके देखता हूँ' कहकर अपने इष्ट मन्त्रका जप करके ध्यानस्थ हो गये। उन्होंने ध्यानमें देखा, कि रात्रिके समयमें बन्दीघरसे महाज्योति-धाम शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी चतुर्भुज श्यामरूपके वक्षपर श्रीवत्स और कौस्तुभ है, पिता-माता देखकर स्तुति कर रहे हैं। उसी क्षण देखा कि पिताने पुत्रको लेकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसी रात्रिको गोकुलमें पहुँचा दिया है। फिर देखा कि वे द्विभुज दिगम्बर हैं, कटिमें किङ्किणी है, दोनों हाथोंमें नवनीत हैं, अपनी इष्ट-मूर्तिके सारे लक्षण दीख रहे हैं। फिर देखा कि त्रिभंगीरूप, मुरली-वन्दन, चारों ओर गोपीगण मन्त्र-गीत गा रही हैं। बहुत अद्‌भुत-सा लग रहा है।

दैवज्ञ विप्र इन सब परम अद्‌भुत भावोंको देख-कर विस्मय विह्वल नेत्रसे एक बार प्रभुके मुखचन्द्र-की ओर देखते हैं, पुनः आँखें मूँदकर ध्यानस्थ हो जाते हैं, और मन ही मन गोपाल मन्त्र जप करके अपने इष्ट देवको स्मरण करते हैं, "हे अभीष्ट देव ! हे अन्तर्यामिन् ! यह क्या देखता हूँ ? यह विप्रराज अन्य जन्ममें क्या थे, यह कृपा करके मुझे दिखा दो। भक्तवत्सल श्रीभगवान्‌ने भक्तकी मनोकामना पूर्णकी। दैवज्ञ विप्रने पुनः ध्यानस्थ होकर देखा—धनुर्द्धर दूर्वादल श्यामरूपमें वीरासनसे प्रभु विराज रहे हैं। पुनः प्रभुको प्रलयजलमें देखा। फिर अद्‌भुत वराह मूर्त्ति दन्तपर पृथ्वी उठाये देखा। पुनः प्रभुको नृसिंह अवतारमें देखा—महाउग्र रूप है और अपार भक्त वत्सलता है। फिर देखा—वामन रूप धारण कर रक्खा है और बलिको यज्ञमें छलनेके लिए माया रची है। पुनः देखो—प्रलय-जलमें मत्स्यरूप है और जल क्रीड़ा कर रहे हैं। सुकृती सर्वज्ञने पुनः देखा—प्रभु मत्त हलधर रूपमें श्रीमुसल धारण किये हैं। फिर देखा—जगन्नाथ मूर्त्तिके रूपमें, मध्यमें सुभद्रा और दक्षिणमें बलराम शोभायमान हैं।

ध्यानमें ये अद्‌भुत और अलौकिक श्रीभगवत्-स्वरूप-मूर्त्तियाँ देखकर विप्रके मनमें विशेष सन्देह उत्पन्न हुआ। वे मन ही मन सोचने लगे कि इस विप्रके शरीरमें दैवी तेज और ज्योति दीख पड़ती है। जान पड़ता है कि मनुष्यरूपी कोई देवता छद्म वेषमें आकर सर्वज्ञ बनकर मेरे साथ कौतुक कर रहा है। छल पूर्वक परीक्षा कर रहा है। अथवा यह विप्र निश्चय पूर्वक मन्त्रवेत्ता है, मन्त्रके बलसे मुझे इस प्रकारके अलौकिक रूप दिखला रहा है। देवज्ञ मनही मन इस प्रकार चिन्तन कर रहे थे, उसी समय सर्वज्ञ प्रभुने उनके मनका भाव समझकर हँसकर कहा—"मेरे लिए आपने क्या देखा—यह स्पष्ट खोलकर क्यों नहीं बताते ?"

विप्र प्रभुको पहचान करके भी नहीं पहचान रहे हैं। प्रभुकी वैष्णवी मायाके प्रभावसे उनके मनमें नाना प्रकारके सन्देह उत्पन्न हुए। वे सोचने लगे, "यह निमाई पण्डित कौन है ? यह क्या मनुष्य नहीं हैं ? इसके विषयमें चिन्तन करनेके लिए बैठते ही मेरे मनमें क्यों इष्टमूर्तिकी स्फूर्ति हुई है ?"

इस प्रकारके सन्देहसे ब्राह्मणका मन विषमरूपसे आन्दोलित हो उठा। प्रभुकी इच्छासे विप्रके मनमें इस प्रकारके सन्देहके तरङ्ग उठे। अतएव उन्होंने प्रभुसे कहा, "पण्डित ! अभी तुम जाओ, मैं भलीभाँति इष्टमन्त्र जप करके पश्चात् बतलाऊँगा कि पूर्वजन्म-में तुम क्या थे।" "अच्छा, पश्चात् हो बतलाना"—यह कहकर प्रभु हँसते हुए वहाँसे चल पड़े। उनके वयस्य और छात्रगण भी उन्हींके साथ गये।

श्रीधरकी कुटीमें

अब प्रभु एक बारगी अपने चिर-परिचित परम कृपापात्र, दरिद्र ब्राह्मण, खोला (केलेके गाछका आवरण) बेचनेवाले श्रीधरकी जीर्ण कुटीमें जा पहुँचे। शचीनन्दन गौरहरि श्रीधरके ऊपर अतिशय कृपा करते हैं। नाना प्रकारके बहानेसे वे प्रतिदिन उस दरिद्र ब्राह्मणकी कुटीमें पदार्पण करके उसके साथ हास-परिहास करते हैं। कभी-कभी दो चार दण्ड तक प्रभु इस दरिद्र भक्तकी कुटीमें अवस्थान करते हैं।

दरिद्र श्रीधरने प्रभुको देखकर साष्टाङ्ग प्रणाम करके बैठनेके लिए कुशासन दिया। वे प्रभुको देखकर किं कर्त्तव्य विमूढ़ हो जाते हैं कि कैसे उनका आदर सत्कार करें, कहाँ उनको बैठावे। प्रभुको देखकर वे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हाथ जोड़कर खड़े हो गये। श्रीधर जैसे शान्त प्रकृतिके आदमी थे, शचीनन्दन वैसे ही उद्धत-शिरोमणि थे। इस दरिद्र निरीह ब्राह्मणको कृपावश होकर रङ्गीले प्रभु समय-समयपर बहुत हैरान करते थे।

खोला बेंचनेवाले श्रीधरके पवित्र नामसे सभी गौरभक्त अवगत हैं। उनके तत्वको भी सब लोग जानते हैं। पूर्व लीलामें वे व्रजके श्रीकृष्णके रङ्गीले प्रिय सखा मधुमङ्गल थे। प्रभु इस दरिद्र निरीह ब्राह्मणके साथ जो लीलारङ्ग करते थे, वह रङ्गीले लीलामय प्रभुके लिए प्रीतिप्रद होते हुए भी दरिद्र ब्राह्मण सदा सब समय उस लीलाके मर्मको समझ नहीं पाते। इसी कारण प्रभु और भृत्यमें सदा ही कलह होता रहता था। प्रभुको यह बहुत अच्छा लगता था, इसी कारण वे प्रायः श्राधरकी पर्णकुटीमें पदार्पण करते थे। नदियाके परम सुन्दर यह ब्राह्मण-कुमार श्रीधरके समस्त हृदयपर अधिकार करके बाहरसे उसके साथ इस प्रकार क्रीड़ा करते हैं।

नदियाके इस अपूर्व ब्राह्मण कुमारके ऊपर श्रीधरका एक अपूर्व प्रेमाकर्षण था। जब वे उस सर्वगुणनिधि, सर्वाङ्ग सुन्दर, सर्वचित्ताकर्षक प्रेममय विप्रकुमारकी जग-जन-मन-लोभा अपरूप रूपराशिको देखते थे तो तत्काल विह्वल चित्त हो जाते थे। उनके साथ बातें नहीं कर पाते। उनको देखते ही घबराकर कुछ निश्चय नहीं कर पाते थे कि क्या करें, क्या बोलें? श्रीधर दरिद्र थे, उनकी उपजीविका थी केलेका थोड़ (केलेके पेड़में मध्यस्थित खोलासे लगा दण्डवत् अंश) पत्ता, मोचा (केलेका पुष्पकोष), खोला आदि बेंचकर किसी प्रकार जीवन धारणका उपाय करना। प्रभु उस समय नदियामें सर्वश्रेष्ठ अध्यापक थे, देशमान्य पण्डित थे, उनको देखते ही नदियाके मार्गमें सब लोग एक ओर खड़े होकर सम्मान प्रदान करते थे। नदियाके मार्गमें जब वे बाहर निकलते थे तो अनेक आदमी, अनेक शिष्य तथा अनेक छात्र उनके साथ चलते थे। निमाई पण्डितके साथ दरिद्र खोला-विक्रेता श्रीधरका हँसी-खेल, हास-परिहास शोभा नहीं देता। वयस्य और छात्रगणके साथ प्रभु श्रीधरकी कुटियामें उनके साथ बैठकर दो-चार दण्ड समय बिता ही देते। नदियाके लोग आश्चर्यचकित होकर रास्तेमें खड़े होकर इस अपूर्व रङ्गको देखकर हँसते और मन ही मन सोचते हैं कि इतने बड़े पण्डितके साथ खोला-विक्रेता श्रीधरकी इतनी प्रीति क्यों है? श्रीधरका सौभाग्य देखकर उनके मनमें ईर्ष्या होती थी।

इस परम सुकृतिवान् दरिद्र ब्राह्मणके प्रति प्रभुकी अपार कृपाकी बात यथास्थान फिर कही जायगी। शचीनन्दनके नगर-भ्रमणके प्रसङ्गमें उनके साथ श्रीधरकी जो कौतुक-क्रीड़ा होती थी उसीका वर्णन यहाँ किया जायगा।

श्रीधरकी कुटीमें बैठकर प्रभुने हँसते हुए उनसे पूछा—"श्रीधर! तुम निरन्तर हरिनाम स्मरण करते हो, तब भी तुम्हारे दुःखका क्या कारण है? लक्ष्मीकान्तकी सेवा करके भी अन्न-वस्त्रके लिए दुःख क्यों पाते हो? इसका कारण बताओ।"

भक्तप्रवर श्रीधरको यह समझना बाकी न रहा कि श्रीगौर भगवान् अब भक्तकी परीक्षा ले रहे हैं। श्रीभगवान् अन्तर्यामी हैं। वे भक्तके हृदयमें बैठकर उसके मनोभावको समझकर कार्य करते हैं। भक्त भी श्रीभगवान्की कृपासे उनके हृदयकी बात समझ लेते हैं, और उन्हींकी प्रेरणासे उनके भावोंके अनुसार कार्य करके उनको तुष्ट करते हैं। भक्त चूड़ामणि श्रीधरने प्रभुकी बातका उत्तर देते हुए कहा—"ठाकुर! तुम्हारी कृपासे मुझे उपवास नहीं करना पड़ता, छोटा-मोटा एक कपड़ा भी पहननेको मिल ही जाता है। फिर मुझे दुःख क्या है?"

नदियाके ब्राह्मण-कुमार अतिशय विचक्षण और प्रवीण परीक्षक हैं। उन्होंने तर्क करते हुए कहा—"तुम्हारे कपड़ेमें जगह-जगह गाँठे लगी हुई हैं, घरके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छप्परमें तिनके भी नहीं हैं। देखो, जो लोग चण्डी और विषहरीकी पूजा करते हैं, वे कैसे अच्छे घरोंमें रहते हैं और कैसा अच्छा भोजन करते हैं।"

भक्त और भगवान्‌में वाक्-युद्ध चलने लगा। श्रीभगवान्‌के तर्कसे भक्त पराजित न हुआ। श्रीभगवान् जैसे सुचतुर चूड़ामणि हैं, उनके प्रिय भक्तवृन्द भी वैसे ही सुचतुर हैं। यहाँ चतुर चतुरमें शास्त्रार्थ हो रहा है। दोनोंके मनके भाव दोनों ही जानते हैं। प्रभुके मनके भावको समझकर भक्त चूड़ामणि श्रीधरने निर्भयतापूर्वक कहा—"विप्र शिरोमणि! आपने जो कहा सो ठीक है, राजा रत्नसिंहासन, महल और दिव्य भोजनका उपभोग करता है, पक्षी वृक्षपर घोंसला बनाकर, दाने चुगकर रहता है, दोनोंका समय एक ही प्रकार कट जाता है, सब भगवदिच्छासे अपने-अपने प्रारब्ध कर्मोंका फल भोगते हैं।"

इसके ऊपर प्रभुको और कहना ही क्या था? उन्होंने देखा कि श्रीधरका तत्वज्ञान अति परिमार्जित, परिपक्व और परिपूर्ण है। अब इस सम्बन्धमें उनसे कोई बात न करके चतुर चूड़ामणि प्रभुने और ही बात उठायी। श्रीभगवान्‌की परीक्षामें भक्त उत्तीर्ण हो गया। इससे भक्त और भगवान् दोनोंके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। इस आनन्दके फलस्वरूप दोनोंमें जो रस-द्वन्द्व चला, वह बड़ा ही प्रीतिप्रद और आनन्ददायक था। प्रभुने तब धर्मकी बात छोड़कर मुस्कराते हुए श्रीधरसे कहा—"तुम्हारे पास बहुत धन सम्पत्ति है, उसको तुमने गुप्तरूपसे रख छोड़ा है और उसका उपभोग करते हो। मैं तुम्हारी सब पोल खोल दूँगा, तब देखूँगा कि तुम लोगोंको कैसे छकाते हो।"

भक्तशिरोमणि श्रीधरके मनमें इस बार साध हुई कि रङ्गीले प्रभुके साथ एक भलीभाँति कौतुक करें। श्रीभगवान्‌की प्रेरणासे भक्तके हृदयमें श्रीभगवान्‌की परीक्षा करनेकी साध पैदा हुई। श्रीभगवान् जिस प्रकार भक्तकी परीक्षा करते हैं, भक्त भी उसी प्रकार श्रीभगवान्‌की परीक्षा करता है, कोई किसीको छोड़नेवाला नहीं है। दोनोंका प्रभाव अक्षुण्ण है। श्रीभगवान्‌ने स्वमुखसे कहा है कि भक्तकी मर्यादाकी रक्षा वे सर्वतोभावेन स्वयं करते हैं। भक्तकी परीक्षामें वे अपनी पराजय स्वीकार करते हैं। श्रीभगवान् भक्तके सामने नाना प्रकारकी परीक्षाके लिए स्वयं प्रस्तुत रहते हैं। यथा-

"भद्भक्तानां विनोदार्थं करोसि विविधा क्रिया।"

प्रभुके प्रेरणासे श्रीधरने बनावटी क्रोध प्रकट करके उनसे कहा, "गोसाईं! अब तुम घर जाओ। तुममें और मुझमें ऐसा द्वन्द्व शोभा नहीं देता।"

भक्तकी बात सुनकर भगवान्‌को अभिमान हो गया। भक्त-भगवान्‌की परीक्षाका यही फल फला। भक्त श्रीभगवान्‌का नाम लेकर अतुल-आनन्द अनुभव करता है। उनके अपरूप रूपका चिंतन करके सुखी होता है। परन्तु यदि वह कभी अपनी कुटीमें भगवान्‌का साक्षात्कार प्राप्त करता है, कृपा करके भक्तके भगवान् यदि भक्तकी कुटीमें आकर स्वयं उदित होते हैं, तो फिर भक्तके मनमें आनन्दकी सीमा नहीं रहती। श्रीधरके मनकी एकान्त वासना है कि प्रभु उनकी कुटिया छोड़कर न जायँ। बात-चीतके द्वारा जब तक प्रभुको कुटीमें रख सकें तब तक ही उनको सुख है। श्रीधर जानते हैं कि वह एक बात बोलेगा तो प्रभु उसको दस बात सुनायेंगे। प्रभुकी यह कौतुक-रङ्ग-लीला उनको बड़ी मीठी लगती है। श्रीधरके मनकी ऐकान्तिक वासना यही है कि किसी प्रकार प्रभुको अपनी कुटियामें फँसाये रखें, और अमृतोपम उनकी मधुमय वाणी तथा हास-परिहासको सुनते रहें। यह उनकी चिरकाल-व्यापी साधनाका फल है। श्रीधर प्रभुके नित्य पार्षद है। भक्त चूड़ामणि श्रीधरने प्रभुको अपनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

कुटियामें अटका रखनेके लिए यह जाल बिछा दिया।

इच्छामय भक्तवत्सल भगवान् भक्तक जालमें फँस गये। भक्तने कहा,—'प्रभु, घर जाओ।' भगवान् बोले,—'ना, मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुमको छोड़कर मैं कहीं नहीं जा सकता।' भक्तको छोड़कर भगवान कैसे जायेंगे ? उन्होंने जो अपने श्रीमुखसे कहा है,—'अहं भक्तपराधीनः।' वह तो भक्तके प्रेमपाशमें सदासे आबद्ध रहते हैं। भगवान्‌को भक्तिकी डोरसे भक्तने अपने द्वारपर सदाके लिए बाँध रखा है। अतएव दयामय भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान् भक्तकी बातसे सन्तुष्ट होकर बोले—"मैं तुमको ऐसे छोड़ने-वाला नहीं हूँ, बताओ, मुझे दोगे क्या ?"

भक्त-प्रवर श्रीधरने श्रीगौर भगवान्‌की परीक्षा लेकर यह फल प्राप्त किया। श्रीभगवान् भक्तके सामने भिखारीके वेशमें खड़े हैं। भक्तने बनावटी क्रोध करके श्रीभगवान्‌को अपने घर जानेके लिए कहा। श्रीभगवान् बोले—"नहीं, ऐसा न होगा। तुम्हारे पास मैं भिखारीके रूपमें आया हूँ। तुम्हारे घरमें जो है। वह मुझको दो मैं भूखा हूँ।" कैसा मधुमय दृश्य है। भक्तकी महिमा प्रकट करनेका कैसा उज्ज्वल दृष्टान्त है ! भक्तके ऊपर श्रीभगवान्‌की अपार करुणाका कैसा निदर्शन है ! भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान्‌ने भक्त चूड़ामणि श्रीधरकी प्रेम-भक्तिके वशमें होकर जो उनके प्रति अपनी अपार करुणाका परिचय दिया है, संसारमें वैसा दृष्टान्त विरल ही है।

भक्तके भगवान् नदियाके सुप्रसिद्ध निमाई पण्डित एक खोला-विक्रेता दरिद्र ब्राह्मणकी कुटियाके द्वारपर सारी नदियाके लोगोंके सामने भिखारीके रूपमें खड़े हो गये। वे दरिद्र खोला-विक्रेता श्रीधरके सामने अति तुच्छ वस्तु केलेका खोला माँग रहे हैं, थोड़की भीख माँग रहे हैं, यह दृश्य अभिनव और बड़ा ही मधुर है। द्वापर युगमें श्रीकृष्ण भगवान्‌ने अपने प्रिय सखा विदुरके घर पदार्पण करके तुच्छवस्तु साग माँग करके खाया था, और इस कलियुगमें श्रीगौर भगवान् अपने नित्यदास भक्त चूड़ामणि श्रीधरसे अति तुच्छ वस्तु थोड़ और खोला माँग रहे हैं। श्रीकृष्ण भगवान्‌ने विदुरसे एक ही दिन साग माँगा था। परन्तु श्रीगौर भगवान् प्रतिदिन श्रीधरके पास जाकर अपनी इस भिक्षावृत्तिका परिचय देते थे। श्रीधरके थोड़, केला और खोलाके बिना प्रभुका भोग नहीं लगता था।

जब श्रीगौर भगवान्‌ने जब श्रीधरसे भिक्षा माँगी कि "कि आमारे दिबा ताहा बोल एइ क्षणे।"

मुझे दोगे क्या ?—यह बताओ। तब श्रीधरने आनन्दमें गद्‌गद होकर हाथ जोड़कर निवेदन किया, "प्रभो ! मैं बड़ा दरिद्र हूँ। खोला, केलाका पत्ता बेंचकर किसी प्रकार दिन काटता हूँ। तुम जगत्‌के स्वामी हो, तुमको कितने आदमी, कैसी-कैसी उत्तम सामग्री देते हैं, मैं यह तुच्छ वस्तु तुम्हें कैसे दूँ, बतलाओ न ?"

श्रीभगवान् चतुर शिरोमणि हैं। उन्होंने भक्तके मनके भावको समझकर मुस्कराते हुए कहा। इसका भावार्थ यह है कि "श्रीधर ! तुम दरिद्र नहीं हो। तुम भक्त-धनसे धनी हो, प्रेम-धनसे धनी हो। वह धन मैं पीछे तुमसे लूँगा। अभी तुम्हारे घरमें थोड़, केला, मोचा आदि जो कुछ है, वही दो। उसीसे मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा। तुमसे बिना मूल्य दिये ही ये सब पदार्थ मैं लूँगा। यह भक्तके द्वारा दी गयी प्रेम भेंट मेरी बड़ी प्रिय वस्तु है। यह अमूल्य है। जिसका मूल्य नहीं हो सकता, उसका मूल्य मैं क्या दूँगा ? तुम्हारे घरमें जो है, वही यदि तुम भक्तिपूर्वक मुझको दो तो उससे मुझे परम सन्तुष्टि प्राप्त होगी।"

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रेमके ठाकुर श्रीगौराङ्गने भक्तको यहाँ प्रेमका उच्च आदर्श दिखलाया। श्रीभगवान् प्रीतिकी वस्तु हैं, प्यारकी वस्तु हैं। जिसके घरमें जो है, उसके द्वारा ही वह श्रीभगवान्‌की प्रसन्नता प्राप्तकर सकता है। श्रीभगवान्‌की प्रसन्नताके लिए कोई विशेष उद्योग करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। जो प्राण-धन हैं, उनको घरकी वस्तु देकर ही सन्तुष्ट करूँगा। हमारे घरमें जो कुछ है, अपने प्राण-धनको वही दूँगा, उसीसे वे प्रसन्न होंगे—यह विश्वास ही प्रीतिभाजनका मूलमन्त्र है। श्रीगौर भगवान्‌ने भक्तचूड़ामणि श्रीधरको इसी भक्तितत्त्वकी शिक्षा दी है।

निमाई पण्डितको श्रीधर विशेष रूपसे जानते हैं। वे उद्धत शिरोमणि हैं। उनके साथ विशेष बातें करनेका साहस उनको नहीं हुआ। उनके मनमें डर हुआ कि कहीं पण्डित उनको पटककर मार-पीट न करें। वे जानते हैं कि निमाई पण्डितमें ये गुण हैं। परम सुकृतिवान् श्रीधरके प्रति जान पड़ता है, बीच-बीचमें प्रभु कृपा करके इस प्रकारका दण्ड विधान करते रहे हैं। इससे श्रीधर बहुत सन्तुष्ट हैं।

इस प्रकार सोचते-सोचते श्रीधरके मनमें एक दूसरा भाव उदय हुआ। भावुक भक्त श्रीधरने सोचा—

मारिलेओ ब्राह्मणेर कि करिते पारि।
कड़ि बिनि प्रतिदिन दिवारेओ नारि॥

—चै० भा० आ० ८. १९९

श्रीभगवान्‌के पास भक्त अपने प्रेम-भजनके बदलेमें कुछ प्रतिदान चाहता है। श्रीधर प्रभुकी कृपा प्राप्त करके सन्तुष्ट हैं। प्रभु जो उनके साथ द्वन्द्व करते हैं, उनको जो समय-समयपर चपत लगा देते हैं, इससे श्रीधर समझते हैं कि प्रभुकी उनके ऊपर अपार करुणा है। सर्वज्ञ श्रीधरके मनमें पूर्ण विश्वास है कि प्रेमावतार शचीनन्दन गौरहरि साक्षात् गोलोक पति हैं, अपना गुप्त-वित्त प्रेमधन अयाचित भावसे आपामर वितरण करनेके लिए नदियामें अवतीर्ण हुए हैं। प्रकट रूपमें उस प्रेमधनके वितरणका शुभ-दिन अभी नहीं आया। वह शुभ दिन कब आयेगा, यही सोचकर गौरहरिके प्रेमभिखारी नित्यदास श्रीधर समय-समय आकुल होकर रो पड़ते हैं। प्रभु प्रतिदिन उनकी सेवा ग्रहण करके उनको कृतार्थ करते हैं। उनको दर्शन देकर धन्य बनाते हैं, उनके साथ बातें करके उनके प्राणोंमें सुधावृष्टि करते हैं, यह सब उनकी कृपाका निदर्शन है। उदार-चरित श्रीधर इसके ऊपर और भी कुछ चाहते हैं, कलिग्रस्त जीवके दुःखसे उनका हृदय बड़ा ही कातर होता है। इसी प्रकार जब देखते हैं कि प्रभुकी कृपा-दृष्टि सब जीवोंके ऊपर है तो उनके मनकी साध पूर्ण हो जाती है। कलिके अधम जीवोंके प्रति प्रभु कब शुभ दृष्टिपात करेंगे, कब वह शुभ दिन आवेगा, यह सोचकर श्रीधरके प्राण अस्थिर हो उठते हैं, मन व्याकुल हो जाता है। अतएव उन्होंने कातर भावसे श्रीगौर भगवान्‌के चरणोंमें मन ही मन निवेदन किया—

"कड़ि बिना प्रतिदिन दिवारेओ नारि।"

दूसरे ही क्षण भावुक भक्तके मनमें एक अन्य ही भाव उदय हुआ। भावग्राही श्रीभगवान्‌की प्रेरणासे भक्तचूड़ामणि श्रीधरके मनमें बारंबार भावोद्गम होने लगा। भक्त-हृदयके भाव-समुद्रमें भाव-तरङ्ग ऊपर ही उठ रहे हैं—श्रीधरने पुनः मन ही मन सोचा—

तथापिह बले छले जे लय ब्राह्मणे।
से आमार भाग्य से दिवाङ् प्रतिदिने॥

—चै० भा० आ० ८.२००

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीभगवान् सब जीवोंके हृदयके सर्वस्व धन हैं। प्रीतिबन्धनमें वे सबके वशीभूत हैं। अनुरागी भक्त प्रीतिपूर्वक श्रीभगवान्‌को जो देते हैं, भगवान्‌को वह बड़ा ही प्रीतिकर जान पड़ता है। इस प्रीतिके वशीभूत होकर ही वे भक्तके हृदयसे बाहर आकर उनको दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं। छल-बल और कौशलसे भक्तकी सम्पत्तिको निजस्व बनाकर वे उसको आत्मसात् कर लेते हैं। इसी कारण महाजन-गण उनका स्तवन करते हुए कहते हैं—'चौराग्रगण्यं पुरुषं नमामि।' यह परम सौभाग्य कोटि-कोटि लोगोंमें किसी एकको भी प्राप्त होता है या नहीं, सन्देह जनक है। दरिद्र ब्राह्मण श्रीधरने अपने इस सौभाग्यकी बात याद करके परमानन्दपूर्वक श्रीगौर भगवान्‌की सेवाके कार्यमें आत्मोत्सर्ग कर दिया, अपना सर्वस्व-धन प्रभुके पादपद्मने समर्पण करनेका सङ्कल्प किया। दरिद्र श्रीधरका सर्वस्व-धन है थोड़, केलेका पत्ता और मोचा। इसी कारण उन्होंने श्रीगौर भगवान्‌के चरणोंमें निवेदन किया—"तुमको कोड़ी-पैसा मूल्यमें कुछ नहीं देना होगा, थोड़, केला, खोला आदि जो चाहिये सो ले जाओ, मुझसे झगड़ा नहीं करो।"

श्रीधरकी अन्तिम बातका कुछ गूढ़ मर्म है। उन्होंने अपने अभीष्ट देवसे कहा—"प्रभो! दरिद्र ब्राह्मणके साथ छल क्यों करते हो। तुमको तो मैंने पहचान लिया है। तुम प्रेमदाता हो। कृपा करके अपने इन रक्तकमल चरणोंमें स्थान दो। यही मेरी ऐकान्तिक अभिलाषा है। भव-विरिञ्चि-वन्दित इन रक्तकमल चरणोंमें स्थान पा जाने पर तुम्हारे साथ मेरा कोई झगड़ा न रहेगा। तुम जो मेरे साथ झगड़ा करते हो, उसके मूलमें भी तुम्हारे इन अभय चरणोंमें एक स्थान प्राप्तिकी आशा है। तुम उसे नहीं दोगे तो भी मैं उसे छोड़ने वाला नहीं हूँ। इसी कारण हम दोनोंके बीच यह प्रेम-कलह है! तुम कृपा करके यदि अपने चरण-कमलमें तनिक स्थान प्रदान करोगे तो यह सारा झगड़ा, यह सारा गोलमाल मिट जायगा। मैंने तुम्हारे अभय पादपद्ममें अपना सर्वस्व धन तथा मन और प्राण प्रदान कर आत्म-समर्पण किया, तुम एक बार मेरे मस्तक पर अपने रक्त-कमल चरणोंको प्रदान कर मुझे आत्मसात् करो। तब तुम्हारे और मेरे बीच कोई झगड़ा न रहेगा।"

भक्तप्रवर श्रीधरकी बात सुनकर भक्त-प्रेमी प्रभु विशेष परितुष्ट हुए। भक्त जब दिल खोलकर निष्कपट भावसे भगवान्‌के सामने आत्म-निवेदन करता है, उनके पादपद्ममें अपने सर्वस्व धनको अर्पण करके 'मैं तुम्हारा हो गया' –कहकर कृपाकी भिक्षा माँगता है तब श्रीभगवान् आनन्दमें विभोर होकर भक्तकी मनोकामना पूरी करते हैं। भक्त तब जो चाहता है, वही पाता है। श्रीधरने कहा, "प्रभु! तुम मेरे साथ अब झगड़ा मत करना, बिना दाम तुम्हें थोड़, केला और मोचा दूँगा।" तब प्रभुने हँस कर कहा—"बहुत ठीक, अब कोई झगड़ा नहीं रहा।"

प्रभुने श्रीधरकी प्रार्थना स्वीकार करली। भक्तके भगवान्‌ने भक्तकी मनोकामना पूर्ण की। श्रीभगवान्‌से भक्त उनकी कृपाकी प्रार्थना करता है, और भक्तसे श्रीभगवान् निष्कपट प्रेमभक्तिकी आशा करते हैं। यहाँ भक्तकी प्रार्थना और श्री-भगवान्‌की आशा दोनों ही पूर्ण हुईं। अतएव और कोई द्वन्द्व नहीं रहा।

श्रीधर प्रभुको केवल थोड़, केलेका पत्ता और मोचा देकर ही निश्चिन्त नहीं होते। उनकी कुटिया छप्पर पर कद्दूकी लतामें कद्दू फलता है। कच्चे-कच्चे कद्दू हाथमें लेकर वह प्रभुके घर जाकर चुपचाप शचीमाताको दे आते हैं। शचीमाता उसके द्वारा पुत्रके लिए दूध और गोल-मिर्च मिलाकर रसा (झोल) तैयार करती हैं। प्रभु परम सन्तोष-पूर्वक भोजन करते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीधरने सोचा कि अब प्रभु उठेंगे, क्योंकि उनके साथ सब विषयोंकी एक प्रकारसे मीमांसा हो गयी। प्रभु और सेवकके बीचका झगड़ा तय हो गया। दोनोंमें ही सन्धि हो गयी। चाहे जो हो भक्तकी अपेक्षा श्रीभगवान् निश्चय ही चतुर हैं। भक्त भगवान्‌को छोड़ दे तो भी भगवान् भक्तको नहीं छोड़ सकते।

भक्तको छोड़कर श्रीभगवान् क्षण भरके लिए भी निश्चिन्त नहीं रह सकते। भक्त ही उनका प्राण है। भक्त-श्रेष्ठ श्रीधरको छोड़कर घर जानेकी प्रभुकी इच्छा नहीं हो रही है। इन सब बातोंके बाद प्रभुने श्रीधरसे फिर पूछा—"श्रीधर! बतलाओ तो तुम मुझे क्या समझते हो? इस बातका उत्तर सुनकर ही मैं घर जाऊँगा।"

प्रभुका उद्देश्य कृपालु पाठकवृन्दने अवश्य ही समझा होगा। भक्तकी निष्कपट प्रीतिसे प्रसन्न होकर श्रीभगवान्‌के मनमें बड़ी साध हुई कि भक्तके सामने वे अपने स्वरूप तत्त्वको प्रकट कर दें। इच्छामय श्रीगौरभगवान्‌के मनकी इच्छा समझकर उनकी प्रेरणासे भक्तवर श्रीधरने उत्तर दिया—"तुम विष्णु-अंश विप्र हो।"

तब श्रीभगवान् आत्मपरिचय दिये बिना नहीं रह सके। भक्तके भयको दूर करते हुए श्रीगौर भगवान्‌ने हँस कर कहा—"मैं तो गोप-वंशी हूँ, तुम मुझे ब्राह्मण समझते हो, मैं तो अपनेको ग्वाला मानता हूँ।"

भक्त श्रीभगवान्‌की वैष्णवी मायाके प्रभावसे उनके स्वरूपको जानकर भी अनजान बन रहा है, अथवा श्रीभगवान् उनको जानने नहीं दे रहे हैं। श्रीधर प्रभुकी बात सुनकर आकुल होकर हँसने लगे। अपने अभीष्ट देवको पहचानते हुए भी वे नहीं पहचान रहे हैं।

परन्तु कृपालु श्रीगौर भगवान् छोड़ने वाले नहीं हैं। भक्तके सामने वे कुछ भी छिपाते नहीं हैं। भक्तको उनके लिए कुछ भी अदेय नहीं है। उन्होंने भक्तचूड़ामणि श्रीधरसे और भी स्पष्ट रूपमें आत्म-तत्वकी बात कह सुनायी। श्रीधर अतिशय गङ्गा-भक्त थे। प्रभुने मधुर मुस्कानके साथ कहा—"श्रीधर! तुमको तत्वकी बात बताता हूँ। मैं ही गंगाके महत्वका कारण हूँ।"

रङ्गीले प्रभुकी लीला-भङ्गिमा देखकर हँसी रोकी नहीं जाती। एक ओर जैसे वे भक्तके सामने आत्मतत्त्व प्रकट करनेके लिए उत्सुक हैं, वैसे ही दूसरी ओर आत्मगोपन करनेमें भी सिद्ध-हस्त हैं। यही कहलाती है चतुर चूड़ामणिकी चतुराई। यही उनका महत्व है। परन्तु यह चतुराई भक्तके सामने नहीं चलती।

भक्तके साथ भगवान्‌की लीलाभङ्गिमा अति मधुमय है। नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग सुन्दरकी मधुर नवद्वीप-लीलाके भक्त और भगवान्‌के बीच इस प्रकारका रहस्य-प्राकट्य-अप्राकट्य सर्वत्र चलता है। अतएव नवद्वीप लीलारसकी माधुरी अधिक है। भक्त और भगवान्‌के बीच एक प्रकारका चिरकालीन गुप्तप्रेम भाव, लुक-छिपकर प्रीति-प्रदर्शनकी लीला तथा एक गुप्त प्रणय सम्बन्ध होता है। प्रकट रूपमें खुलकर कोई किसीको कुछ नहीं बोलता। परन्तु भीतर ही भीतर दोनों ही एक-दूसरेको जानते और पहचानते हैं। कलिके प्रच्छन्न अवतारका प्रच्छन्नत्व अतिशय मधुमय और सर्वचित्ताकर्षक होता है। उनकी यह गुप्तलीला कथा हृत्कर्ण-रसायन है। नवद्वीपलीला इसी कारण इतनी मधुर है, इतनी महिमान्वित है।

भक्त चूड़ामणि श्रीधरने प्रभुकी प्रेरणासे उनको उत्तर देते हुए अभीष्टदेवके प्रेमकी अधिकताके कारण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनकी तीव्र भर्त्सनाकी। उन्होंने लाल-लाल आँखें करके निमाई पण्डितसे कहा—"निमाई पण्डित! तुमको गङ्गाजीसे भी भय नहीं। बड़े होने पर लोगोंमें स्थिरता आती है, लेकिन तुम्हारा चापल्य तो दूना हो गया।"

श्रीधरकी तीव्र भर्त्सनाकी बात प्रभुको बहुत अच्छी लगी। भक्तकी भर्त्सना सुनकर श्रीभगवान्‌के मनमें बड़ा आनन्द होता है। उन्होंने स्वयं कहा है—

प्रिया यदि मान करि करये भर्त्सन।
वेदस्तुति हैते ताहा हरे मोर मनं॥

—चै. च. आ. ४.२३

यहाँ भी यही बात हुई। श्रीधरकी यह बात सुनकर प्रभु अट्टहास करके आनन्दसे द्रवित हो उठे। प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर श्रीधरके प्रति शुभ दृष्टिपात करके उनकी कुटीरसे उठे। श्रीधरने प्रभुकी पदधूलि लेकर सिर पर रक्खी। जहाँ तक प्रभु दृष्टिसे ओझल नहीं हुए, श्रीधर उनकी ओर ताकते रह गये। प्रभु जब आँखोंसे ओझल हो गये, तब प्रभुकी कृपासे श्रीधरको अन्तर्दृष्टि हो गयी। उन्होंने ध्यानस्थ होकर देखा कि निमाई पण्डित मनुष्य नहीं हैं। नरवपु धारण करके स्वयं नन्दनन्दन श्रीकृष्ण नदियामें शचीके गर्भमें अवतीर्ण हुए हैं। अपनी पहलेकी बात स्मरण करके मनमें बड़ा पश्चात्ताप हुआ। अपने साधन धनको न पहचान कर क्या कहना चाहिये था और मैं क्या कह गया, तथा क्या करना चाहिये और क्या कर गया। इसी चिन्तासे कातर होकर श्रीधर अजस्र आँसू बहाते रोने लगे।

भक्तवत्सल दयालु प्रभुकी अयाचित कृपाकी अनुभूतिकी स्मृति एक-एक करके उनके हृदय-पटल पर उदित होने लगी। वे ध्यानानन्दमें विभोर होकर अपनी कुटियामें सो गये। उस समय वे गोलोकके प्रेमानन्दका अनुभव करने लगे। उनके सारे अङ्ग पुलकित हो उठें। धीरे-धीरे बाह्यज्ञान हुआ। साक्षात् भगवद्दर्शनकी प्राप्तिसे उनके मनमें जो आनन्द हुआ था, ध्यानानन्दमें तदपेक्षा सौ गुना प्रेमानन्द प्राप्त करके वे दोनों भुजाएँ ऊपर उठाकर घरमें उद्दण्ड नृत्य करने लगे। उच्च सङ्कीर्तन और उद्दण्ड नृत्य करते-करते वे पागलके समान नदियाके मार्गमें निकल पड़े। उनके मुँहसे केवल यही एक बात निकल रही थी—

"दयार सागर मोर श्रीगौराङ्ग राय।
के ताये जानिते पारे यदि ना जानाय॥"

कुब्जपर कृपा

ठाकुर जयानन्दने एक और कथा लिखी है। वह भी श्रीकृष्ण-लीलाका अङ्ग है। पहसे कह चुका हूँ कि श्रीगौराङ्ग अवतारमें प्रभुने श्रीकृष्ण अवतारकी सारी लीलाओंका अभिनय किया था। ठाकुर जयानन्दने लिखा है—

(प्रभु) "कुबुज वामन देखि कान्दे अनुरागे।"

नदियाके रास्ते पर कुब्ज-पीठ वाले एक वृद्धको देखकर प्रभुके मनमें पूर्वलीला-स्मृति उदय हुई। श्रीकुब्जा सुन्दरीकी उद्धार लीलाकी कहानीके साथ, नदियावासी अतिवृद्ध रोगीके प्रति श्रीगौराङ्गकी प्रीति और उसके फलस्वरूप प्रभुकी कृपा प्राप्तिका सुन्दर सादृश्य लक्षित होता है। प्रभु जब नदियामें भ्रमण करनेके लिए निकलते थे, कुबड़े वृद्ध नागरिकको देखकर उसके पास बैठते थे, और प्रेमके रङ्गमें मधुर-मधुर वार्तालाप करते थे, उसके शरीर पर श्रीहस्त स्पर्श करते थे। वृद्ध रोगीके दुःखसे करुणामय प्रभुका कोमल हृदय द्रवित हो जाता था। उनके दोनों कमल नयनोंसे अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती थी। वृद्ध रोगीके प्रति प्रभुकी बड़ी दया थी। प्रभुके श्रीअङ्गके स्पर्शसे कुब्ज-देह, कुब्ज-पीठ-वृद्ध

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विप्रका अन्तःकरण प्रेमसे भर जाता था। वृद्धा कुब्जाने श्रीकृष्ण भगवान्‌के कर-स्पर्शसे दिव्य देहमें नवयुवतीके बाह्य सौन्दर्यको प्राप्त किया था। नदियाके वृद्ध रोगी कुबड़े नागरिकने प्रभुके श्रीकरके स्पर्शसे दिव्य दैहिक सौन्दर्यके स्थानमें चित्त-वृत्तिकी शुद्धि स्वरूप आन्तरिक सौन्दर्यको प्राप्त होकर धन्य हुए थे। हमारे दयालु प्रभुने व्रजभावमें विभावित होकर नदियाके वृद्ध रोगी दुःखी आर्त पुरुषके त्रिताप को दूर करके, उसके हृदयकी पाप-वृत्तिको निर्मूल करके अन्तः करणको निर्मल कर दिया। वह ऋषि-मुनिके समान हो गया। श्रीमन्महा-प्रभुकी नवद्वीपलीलाका कुब्ज-उद्धार यही कहलाता है।

श्रीगौराङ्ग- लीलामें श्रीकृष्णलीलाके सारे अङ्ग लक्षित होते हैं। यहाँ भी उनकी वस्त्र-हरण लीला और रजक-उद्धार लीला भी अभिनीत हुई थी। अपने संगी साथियोंके वस्त्र ले लिये थे, इस लीलाका वर्णन ठाकुर लोचनदासके चैतन्यमङ्गल श्रीग्रन्थमें है। रजक-उद्धार लीलाका वर्णन गोविन्ददासके कड़चामें है जो प्रभुके साथ नीलाचल गये थे। यह लीला संन्यास-ग्रहणके बाद नीलाचल जाते समय मार्गमें अनुष्ठित हुई थी। अतः इसका समावेश नीलाचल-लीलाके प्रथम अध्यायमें किया गया है।

कुल-बधुओंके प्रति भाव

नवद्वीपलीलामें श्रीगौर भगवान् बाल्यावस्थाके उपरान्त परस्त्रीके साथ बातें नहीं करते हैं। रास्तेमें स्त्रीजनको देखते ही वे सिर अवनत करके एक ओर खड़े हो जाते थे।

सबे परस्त्रीर प्रति नाहिं परिहास।
स्त्री देखिले दूरे प्रभु हय एक पाश॥
—चै. भा. आ. १०. ९७

नदिया-सुन्दरीगण प्रभुके श्रीमुखसे हरिनाम सुधा पान करके उनको दूरसे ही प्रणाम करती थी। प्रभुके दर्शन मात्रसे उनको जान पड़ता था कि सुप्रभात हो गया। ठाकुर जयानन्दने लिखा है—

कुल बधू जाय गृहे गङ्गास्नान करि।
रभस बञ्चिया तारे बोले हरि-हरि॥
ताहा शुनिया केहो-केहो करे नमस्कार।
केह बोले सुप्रभात हइल आमार॥

वे लोग घर जाकर श्रीगौराङ्गके रूपका ध्यान करती थीं, और प्रभुके लिए पुष्प-माला, अबीर, चन्दन-कुंकुम-कस्तूरी आदि उनके घर शचीमाताके पास भेज देती थीं। प्रभु उसको व्यवहारमें लाकर नदिया-सुन्दरीवृन्दकी मनकी अभिलाषा पूर्ण करते थे।

आबिर चन्दन माल्य कुंकुम कस्तूरी।
गौरचन्द्रे देय नवद्वीप पुरनारी॥

श्रीश्रीनवद्वीप चन्द्र इसी प्रकार नदिया-विहार लीला-रङ्गसे नवद्वीपवासियोंके हृदयमें परम आनन्द प्रदान करते थे। उस आनन्दकी तुलनामें ब्रह्मानन्द अति तुच्छ पदार्थ है।

मार्गमें श्रीवास पण्डितसे मिलन

एक दिन निमाई पण्डित नदियाकी सड़कपर जा रहे थे। दैवयोगसे श्रीवास पण्डितके साथ उनकी भेंट हो गयी। प्रभुको इस प्रकार जाते देख श्रीवास पंडित के मुँह हँसी दीख पड़ी। प्रभुने उनको नमस्कार किया। उन्होंने भी 'चिरञ्जीव रहो' कहकर आशीर्वाद दिया। इसके बाद प्रभुके श्रीअङ्गपर स्नेहपूर्वक हाथ फेरते हुए श्रीवास पण्डितने हँसकर पूछा—"उद्धत शिरोमणि पण्डित! आज कहाँ जा रहे हो? दिन-रात केवल पढ़ने-पढ़ानेमें लगे रहते हो। पढ़ने-पढ़ानेका अर्थ तो श्रीकृष्ण भक्ति है। श्रीकृष्ण-भजनके बिना समय व्यर्थ क्यों बरबाद कर रहे हो?"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निमाई पण्डितने आदरपूर्वक उत्तर दिया—"पण्डितजी यदि आपकी मुझ पर दया रही तो निश्चय ही श्रीकृष्ण भी कृपा करेंगे।"

नगर-भ्रमणसे प्रत्यावर्तन और व्रजभाव

प्रभुकी आजकी नदिया-विहार लीलाका रङ्ग यहाँ ही समाप्त हो गया। श्रीधरकी कुटीसे प्रभु सपरिवार अपने मन्दिरमें आये। वयस्य और छात्र-गण प्रभुको घर पहुँचाकर अपने-अपने घर गये। सन्ध्याका समय था, पूर्णिमा तिथि थी, पूर्णचन्द्र नदिया-गगनमें उदित हो गये हैं। स्निग्ध ज्योत्स्ना लोकमें नदियाके सब जीवोंके हृदय स्निग्ध हो रहे हैं। चन्द्रालोकमें स्थावर-जङ्गम आदि सब उद्भासित हो रहे हैं। मृदु-मन्द सान्ध्य-समीरण बह रहा है। गङ्गाके तट पर प्रभुका विलास मन्दिर है। मधुर कल-कल स्वरमें सुरसरि मृदु-मन्द समीरणके साथ प्रेम-सङ्गीतका तान भर रही है। तरङ्गोंके बहाने उच्छलित होकर प्रेमानन्दके विकासको प्रदर्शित कर रही हैं। प्रभु अपने मन्दिरके विष्णु-द्वारपर बैठकर गङ्गाका दर्शन कर रहे हैं।

सुरसरिके तटके अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य तथा तरङ्गिणीके तरङ्ग-भङ्गकी मनोहर माधुरीका दर्शन करके प्रभुके मनमें श्रीयमुनाकी स्मृति और श्रीवृन्दा-वनका भाव उदय हुआ। वे विष्णुद्वार पर बैठकर प्रेम-विह्वल-भावमें मधुर मुरली-ध्वनि करने लगे। हृत्कर्ण रसायन प्राणोन्मादकारी जिस मधुर वेणुरवको श्रवण करके व्रज सुन्दरियोंका घरमें रहना दूभर हो जाता, जिस मधुर वेणु-झङ्कारको सुनकर व्रजके पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग पर्यन्त आनन्दमें अधीर होकर नृत्य करने लगते, जिस मधुर मुरलीके गानसे स्थावर-जङ्गम सबके मनमें आनन्दकी अनुभूति होती, व्रज-भावमें विभावित होकर शचीनन्दन गौर-हरि अपने गृह-द्वारपर बैठकर प्रेम-विह्वल भावमें वही मधुर मुरली-ध्वनि कर रहे हैं।

उस मधुर वंशी-रवको सुना एकमात्र यशोदा रूपिणी प्रभुकी स्नेहमयी जननी शचीमाताने। व्रजेन्द्रनन्दन शचीनन्दन रूपमें प्रच्छन्न भावसे कलिहत जीवके भाग्यसे कृपा करके उनके गर्भमें उदय हुए हैं, उनको मातृ-सम्बोधनके द्वारा कृतार्थ कर रहे हैं। उनके समान व्रजभावाश्रिता सौभाग्यवती नारी त्रिलोकीमें और कोई नहीं है। शचीमाता घरके भीतर सांसारिक कार्यमें व्याप्त थीं। उनके कानोंमें वही अपूर्व मधुमय मुरली-ध्वनि प्रविष्ट हुई। उस जग-जन-मन-मोहन अपूर्व मधुर ध्वनिको सुनकर शचीमाता चेतना-शून्य हो गयीं। चेतना आनेपर पुनः वही हृत्कर्ण-रसायन श्रीगौरकृष्णकी अपूर्व मधुर मुरली-ध्वनि उनके कर्णरन्ध्रमें प्रविष्ट हुई। मन स्थिर करके सुनते-सुनते वे पुनः विह्वल हो उठीं। घरसे बाहर जाकर, जो कुछ देखा था वह एकमात्र अपनी अन्तरङ्गा प्रिय सखी मालिनी देवीको कह सुनाया।

शचीमाताने देखा कि पुत्रके सर्वाङ्गसे अपूर्व ज्योति निकल रही है। उस ज्योतिसे उनके दोनों नेत्र चौंधिया गये। स्नेहमयी श्रीगौराङ्ग-जननी पुत्रके ऐश्वर्यको देखकर शङ्कित हो उठीं। वह सोचने लगीं कि सोनेके निमाई चाँदके सोनेके अङ्गमें इतनी ज्योति क्यों दीख पड़ी? इससे मेरे बच्चाका कोई अमङ्गल तो न होगा? यह सोचते-सोचते वह व्याकुल होकर रोने लगीं। प्रभुने ऐश्वर्यको समेटकर माताके पास आकर मधुर वचन बोलते हुए पूछा—"माँ! तुम रोती हो क्यों? शचीमाता इस प्रश्नका क्या उत्तर देतीं? उन्होंने वस्त्रके आञ्चलसे आँखें पोंछकर पुत्रको गोदमें लेकर मुख चूम लिया।

श्रीगौराङ्ग प्रभुने अपनी स्नेहमयी जननीको पूर्वलीलाका ऐश्वर्य दिखलाया। शचीमाताके सिवा और किसीको भी इस प्रकारका ऐश्वर्य वे नहीं दिखलाते। इस समय मधुर-मुरलीकी ध्वनि माताके सिवा और किसीको न सुनायी दी।

श्रीगौर-गणोद्देश-दीपिकामें शचीजगन्नाथके तत्व

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निर्णयमें लिखा है—

पुरा यशोदा व्रजराज नन्दौ
बृन्दावन प्रेम रसाकरौ यौ।
शचीजगन्नाथपुरन्दराभिधौ
वभूयतुस्तौ नचसंशयोऽत्र ॥

श्रीचैतन्य चरितामृतकारने लिखा है—

सेइ व्रजेश्वर इहाँ—जगन्नाथ पिता।
सेइ व्रजेश्वरी इहाँ—शचीदेवी माता॥
—चै. च. आ. १७. २८५

तथा,

"नन्दसुत' बलि जा रे भागवते गाइ।
सेइ कृष्ण अवतीर्ण चैतन्य गोसाञि॥
—चै. च. आ. २. ६

अतएव श्रीगौराङ्ग-जननी पुत्रकी पूर्वलीलाकी स्वरूप मूर्त्तिको देखती हैं, अथवा वंशीध्वनि सुनती हैं, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? स्नेहमयी शचीमाता पुत्रके ऐश्वर्य भावसे कभी मुग्ध नहीं होती थीं। उनका विशुद्ध माधुर्य भाव था। उनका निमाईचाँद दूधका पूत था। नदियाके लोगोंने उसको भगवान् कहकर पागल बना दिया है, ऐसी उसकी धारणा थी। इससे उनके पुत्रका अकल्याण होगा। नदियाके लोग यह नहीं समझते, इस दुःखसे शचीमाता मन ही मन बहुत त्रस्त रहती हैं। यही विशुद्ध वात्सल्य भाव है। इस वात्सल्य प्रेम-बन्धनमें बँधकर प्रभुने शचीमाताके गर्भमें अवस्थान किया था। शचीमाताके मनके भाव मनमें ही रहते हैं। वात्सल्य रसाश्रिता शचीमाता सदा ही वात्सल्य भावमें विभोर रहती हैं। श्रीगौरभगवान् बीच-बीचमें माताको ऐश्वर्य प्रदान करके परीक्षा लेते हैं, परन्तु सदा ही श्रीगौर-जननी परीक्षामें उत्तीर्ण होती हैं। तथापि बड़े ऐश्वर्यवान् श्रीगौरभगवान् उनकी परीक्षा लेते ही रहते हैं। श्रीभगवान्के सामने भक्ति-परीक्षा बड़ी कठिन होती है।

प्रभुने नीलाचल पर बैठकर एक दिन माताको उपलक्ष्य करके दामोदर पण्डितसे पूछा था—

प्रभु बोले तुमि जे आछिला तान काछे।
सत्य कह आइर कि विष्णु-भक्ति आछे॥
—चै. भा. अं. १०. ९३

प्रभुके संन्यास-ग्रहणके कुछ ही दिन बादकी यह बात है। इसीसे कृपालु पाठकवृन्द समझलें कि प्रभुने अपनी माताकी कैसी परीक्षा ली थी। दामोदर पंडित जैसे प्रभुके अन्तरङ्ग भक्त थे, वैसे ही उनकी माता और गृहिणीके उपयुक्त अभिभावक और रक्षक थे। वे अत्यन्त स्पष्टवादी थे। वे प्रभुको डाँट देते थे। प्रभुकी बात सुनकर क्रोधसे उनका सर्वाङ्ग थर-थर काँपने लगा, वे क्रोधवश होकर प्रभुको फटकारते हुए बोले—

कि बलिला गोसाञि ! आइर कि भक्ति आछे ?
इहाओ जिज्ञास प्रभु तुमि कोन लाजे॥
आइर प्रसादे से तोमार विष्णुभक्ति।
जत किछु तोमार सकल ताँर शक्ति॥
जतेक तोमार विष्णुभक्तिर उदय।
आइर प्रभावे सब जानिह निश्चय॥
—चै. भा. अं. १०. ९५-९७

प्रभु अपने अन्तरङ्ग भक्तके मुखसे इस प्रकार स्पष्ट बात सुनकर बहुत सन्तुष्ट हुए। तब चतुर चूड़ामणि प्रभुने अप्रतिभ भावसे हँसकर दामोदर पंडितसे कहा—

आजि दामोदर तुमि आमारे किनिला।
मनेर वृत्तान्त सब आमारे कहिला॥
—चै. भा. अं. १०. १०५

पहले कहा जा चुका है कि श्रीभगवान्के भक्तकी परीक्षा अतिशय कठिन होती है। वे सब प्रकारसे भली भाँति भक्तको बजाकर देख लेते हैं। भक्त पदवी अति उच्च पदवी है, श्रीभगवान् स्वयं भक्तका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चरित्र गठन करते हैं। बहुत परीक्षा लेनेके बाद उनको निजजन बनाते हैं। भक्तकी अपेक्षा श्रीभगवान्‌का प्रियजन दूसरा कोई नहीं है। यह उनके श्रीमुखसे निःसृत वाणी है। यथा श्रीमद्‌भागवतमें उद्धवके प्रति श्रीकृष्ण वाक्य—

न तथा मे प्रियतम आत्मयोनिर्न शङ्करः।
न च सङ्कर्षणो न श्रीर्नैवात्मा च यथा भवान्॥
—श्रीम. भा. ११. १४. १५

प्रभुकी नीलाचल लीलामें ये सारी लीला-कथाएँ विस्तृत रूपमें लिखी गयी हैं।

प्रभुका नगर-भ्रमण और गङ्गा-दर्शन नित्य-नैमित्तिक कार्य थे। नगर-भ्रमण करके जब वे प्रिय वयस्य तथा छात्र मण्डलीसे परिवेष्टित होकर सन्ध्या-कालमें गङ्गातट पर बैठते थे, उस समय उनकी कैसी अपरूप शोभा होती थी, इसका वर्णन ठाकुर वृन्दावनदासने तथा ग्रन्थकारने बड़े मार्मिक छन्दोंमें दिया है। जो पाठक बँङ्गला भाषासे परिचित हैं, उनको वह मूल ग्रन्थमें पढ़ना चाहिए।

—★—

अठारहवाँ अध्याय

पूर्वबंग-भ्रमण

बङ्गदेशे महाप्रभु हइला प्रवेश। अद्यापिह सेइ भाग्ये धन्य बङ्ग देश॥
—श्रीचै. भा. आ. १०. ६५

कोई-कोई कहते हैं कि दिग्विजयी पण्डित केशव काश्मीरीके नवद्वीपमें आवागमनके पूर्व श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दरने पूर्व देशमें गमन किया था। नदियाके निमाई पण्डितकी विद्या, गौरव और पाण्डित्य-प्रतिभा केवल नदियावासी पण्डित-मण्डलीके भीतर ही छिपी न रही। अठारह वर्षकी अवस्थामें नदियाके नवीन अध्यापक निमाई पण्डित पूर्वदेश-यात्राके लिए निकले। पूर्व देशके पण्डितों और छात्रोंने उनका नाम और उनकी असाधारण पाण्डित्य-प्रतिभाकी बात केवल लोगोंके मुखसे सुनी थी। पूर्वबङ्गके अध्यापक लोग अपने विद्यालयोंमें निमाई पण्डित कृत कलाप-व्याकरणकी टिप्पणीका पठन-पाठन कराते थे। इसी कारण नदियाके निमाई पण्डितका नाम और यश देश-विदेशमें व्याप्त हो गया था। उन्होंने पूर्वबङ्गमें जिस प्रकार अपने विद्या-विलासके ऐश्वर्यको प्रकट किया था उससे उनका यश-सौरभ दिग्दिगन्त व्याप्त हो गया था। दिग्विजयी पण्डित केशव काश्मीरीने यह सुनकर ही नदियाके पण्डितोंसे जय-पत्र लिखवानेके लिए नवद्वीपमें आगमन किया था।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूर्वाञ्चल-यात्राकी तैयारी

श्रीश्रीमन्महाप्रभुके मनमें पूर्वदेश-यात्राकी वासना क्यों पैदा हुई ? श्रीचैतन्य भागवतकारने इस विषयमें कुछ विशेष उल्लेख नहीं किया है। प्रभुकी नवद्वीप-लीलाके अनुरागी साधक और रसिक भक्त ठाकुर जयानन्दने प्रकट कारणका उल्लेख किया है। लेकिन वास्तविक कारण तो इस ग्रन्थके प्रथम अध्यायमें 'चैतन्योदवाली श्रीग्रन्थ' शीर्षकके अन्तर्गत बताया गया है।

एक दिन श्रीगौराङ्ग सुन्दर वयस्यगणके साथ अपने मन्दिरमें बैठे थे। पान चबाते हुए उन्होंने हँसकर कहा—"लक्ष्मीसे विवाह करके मैं संसारी हो गया हूँ। परिवार और दास-दासियोंके रक्षण-पोषणका कर्तव्य पालन करना उचित है। अर्थ उपार्जनके बिना संसार यात्रा संभव नहीं। अतः मैं अर्थ-उपार्जनके लिए पूर्वबङ्गदेश जाऊँगा।

लीलामय श्रीभगवान् नर-शरीर धारण करके सर्वोत्तम नर-लीलाका रसास्वादन करनेके लिए शचीगर्भसे नदियामें अवतीर्ण हुए थे। उनके मनमें बड़ी इच्छा हुई कि अर्थोपार्जन करके भलीभाँति गृहस्थी चलावें, अपने कुटुम्बका भरण पोषण करें, स्त्री-परिवारका पालन करे। षड़ैश्वर्यपूर्ण श्रीभगवान्‌की बड़ी इच्छा हुई कि मनुष्यके समान सांसारिक लीला करें।

प्रभुके पूर्वदेश गमनका मुख्य तात्पर्य और यथार्थ उद्देश्य था जीवोद्धार करना। विद्याविलास, अर्थोपार्जन तो केवल बहाना था। नदियाके गणमान्य निमाई पण्डितने निज-जनको साथ लेकर प्रवास-गमन करनेका सङ्कल्प किया। उनके भक्तवृन्द यह समाचार सुनकर प्रसन्न नहीं हुए। उस समय प्रभु नदियाके कृष्णभक्त वैष्णवोंके लिए प्राण-स्वरूप थे। एक दिन उन्होंने शचीमाताको अपने मनका संकल्प खोलकर कह दिया। स्नेहमयी शचीमाताका मन बड़ा ही व्याकुल हो गया। वे यह सोचकर व्याकुल हो उठीं कि किस प्रकार निमाईचाँदका मुँह देखे बिना वह घर पर रहेंगी ?

प्रभुने माताको समझाते हुए कहा—"माँ ! घर आये हुए वैष्णवोंका अन्न-जलसे सत्कार करना, तुलसी पूजा करना और कीर्तन-महोत्सव भी करतीं रहना।"

वैष्णव-शिरोमणि निमाई पण्डितकी वैष्णव-प्रीति और वैष्णवताकी गम्भीरताका अनुमान इसी एक बातसे किया जा सकता है। भक्तके दयामय भगवान् भक्तका पोषण करते हैं, इसी कारण प्रभुने अपनी भक्तिमती माताके ऊपर भक्तोंको पोषण करनेका भार देकर प्रवासकी तैयारी की।

श्रीवास पण्डितने प्रभुके साथ जानेकी इच्छा प्रकट की। प्रभुने उनके दोनों हाथ पकड़कर मना करते हुए कहा—"तुम नवद्वीपमें रहकर मेरी माता और गृहिणीकी देखभाल करना।" श्रीवासके ऊपर प्रभुकी बड़ी कृपा थी, इसीकारण उनको श्रीगौराङ्गकी जननी और गृहिणीकी सेवाका भार प्राप्त हुआ।

श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी उस समय तेरह या चौदह वर्षकी बालिका थीं। उनकी अपरूप रूपराशिसे शचीमाताका घर आलोकित था।

श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीने भी सुना कि उनके प्राणवल्लभ विदेश जा रहे हैं। वे पति-वियोगकी आशङ्कासे अतिशय म्रियमाण हो गयीं। प्रभुने उनको अति मधुर वचनसे तुष्ट करते हुए कहा—"प्रियतमे ! तुम्हारे हाथोंमें मैं अपनी वृद्धा माताको सौंपकर जा रहा हूँ। तुम सर्वदा इनकी सेवा-शुश्रूषा करना।"

प्रभुके आदेशसे पतिप्राणा श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी वृद्धा सासुकी सेवा करनेके लिए पतिगृहमें रह गयीं। श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीको शुभ विवाहके दिनसे एक दिनके लिए भी पति-विरहका दुःख नहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भोगना पड़ा था। उन्होंने जबसे पतिके प्रवास गमनकी बात सुनी है आहार-निद्रा त्याग दिया है, उनके हृदयमें एक विषम अशान्तिका स्रोत बह रहा है, उनके प्राणोंमें एक विषम ज्वाला उत्पन्न हो गयी है, उनको संसार सूना दीख रहा है। विदा होते समय प्रभुने उनको बहुतेरा समझाया, परन्तु सरला लक्ष्मीप्रियाके मनका उद्वेग, हृदयका ताप, भावी विरहकी उत्कण्ठा किसी प्रकार भी शमन नहीं हुई। उनको चारों ओर अन्धकार दीखने लगा, मानो एक भावी अमङ्गलकी आशङ्का उनके कोमल हृदयको व्यथित करने लगी।

पतिप्राणा सरला बालिकाके मुँहसे बोली न निकली, आँखोंमें अश्रुधारा बह रही थी। विदा होते समय विषाद-विह्वल चित्तसे वे अपने प्राणबल्लभके चरणोंमें गिर पड़ीं और पद-धूलिकी याचना की। दयामय प्रभुने अपनी पदधूलि उनकी दी, और उसके साथ ही अपना पुरातन यज्ञसूत्र देवीके हाथमें दे दिया। प्रभु चाहते थे कि उनकी प्रियतमा उनको लक्ष्य करके इस परित्यक्त यज्ञोपवीतको पतिदेवके रूपमें मानते हुए यत्नपूर्वक रक्षा करेगी और उनकी पदधूलिका नित्य तिलक लगायगी। पतिभक्ति-परायणा श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी बालिका होते हुए भी प्रभुके मनोभावको समझनेमें असमर्थ न थी। उन्होंने बहुत यत्नपूर्वक प्रभु-प्रदत्त दोनों अमूल्य रत्नोंको तत्काल खूँटमें भरकर बाँध लिया।

उसी समय प्रभुने अपनी प्राण-बल्लभाको धर्म-तत्त्वकी शिक्षा दी, तथा हरिनाम महामन्त्रमें दीक्षित किया। क्योंकि सर्वज्ञ प्रभु जानते थे कि उनकी प्रियतमाके साथ यह अन्तिम भेंट है।

लक्ष्मीप्रियाका पति-विरह

शुभ दिन निश्चय करके निमाई पण्डित माता और गृहिणीसे बिदा लेकर कुछ वयस्य तथा छात्रगणको साथ लेकर प्रवासके लिए निकल पड़े। श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी काय, मन और वाणीसे पूजनीया सासुकी सेवा करने लगी। निरन्तर पतिके चरणोंमें ध्यानके सिवा उनका और कोई काम न था। प्रभुके दिये यज्ञसूत्रको उनका श्रीविग्रह समझकर उसे चन्दन-मालासे विभूषित करके देवी पाद्य-अर्घ्य आदि प्रदान करके नित्यपूजा करती थीं, नित्य एक लाख हरिनाम महामन्त्रका जप करती थीं। तीनों सन्ध्याके उद्देश्यसे पतिदेवताके चरणोंमें भक्तिपूर्वक असंख्य प्रणाम करती थीं। यत्नपूर्वक रखी हुई पति देवताको श्रीचरण-धूलिके द्वारा भक्तिपूर्वक ललाटमें तिलक लगाती थीं। प्रतिदिन प्राणबल्लभकी दोनों काष्ठपादुकाको प्रणाम करके जल ग्रहण करती थीं। अपने प्रवासी प्राणबल्लभकी श्रीमूर्त्तिका चित्र अङ्कित करके हरिद्रा वसन और दर्पणके संयोगसे दर्शन करके पतिविरहकी ज्वालाको शान्त करती थीं।

श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीको प्रिय सखीका नाम था चित्रलेखा। अपने हृदयकी मर्मव्यथा सखी चित्रलेखाके सामने कभी-कभी प्रकट करके वे पति-विरहकी ज्वालाको शान्त करती थीं। चित्रलेखा उनकी अन्तरङ्गा सखी थी। उसके पास एकान्तमें बैठकर वे पति-विरह-व्यथाको प्रकट करतो थीं, और अजस्र आँसू बहाती थीं। इस प्रकार कुछ दिन कट गये। एक दिन रातके अन्तमें देवीने रोते-रोते सखीसे कहा—

कतदिने सम्पात घूचिबे चित्रलेखा।
आमार ठाकुर सने ना हइल देखा॥
—ज. चै. म.

पति-विरह-विषसे जर्जरित होकर देवीने देहत्याग किया था। यह बात उनके देहत्यागकी पूर्वरात्रिकी बात है। श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीके अन्तर्धानकी कहानी अत्यन्त ही विषादपूर्ण है, इस विषादमयी लीला कहानीके पाठ करने या सुननेसे पाषाण हृदय भी द्रवित हो जाते हैं। यह सारी मर्मान्तिक लीला कहानी मत्प्रणीत श्रीलक्ष्मीप्रिया-चरितमें विस्तार-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूर्वक वर्णित है। कृपालु पाठक-पाठिकागणको वह श्रीग्रन्थ पढ़नेका मैं अनुरोध करता हूँ। ठाकुर वृन्दावनदासने लिखा है—

ए सकल लीला जीव उद्धार कारणे।
महाकाष्ठ द्रवे जेन इहार श्रवणे॥

—चै. भा. म. ३. १०५

प्रभुने शिष्य और छात्रवर्गके साथ प्रवासके लिए गमन किया। प्रभुके बिना सारा नवद्वीप अन्धकारमय लगने लगा। नदियाके आकाशमें नवद्वीपचन्द्रका उदय नहीं होगा, इसी कारण सारी नदिया अन्धकाराच्छन्न है। नदियाके भक्तवृन्द श्रीश्रीनवद्वीप-चन्द्रके विरहमें जीवन्मृत हो गये, प्रभु-विरहमें वे दिन-रात क्रन्दन करते रहते थे। वृद्धा शचीमाता अपने नयनोंकी मणि और आँचलकी निधि निमाई-चाँदको न देखकर पागलिनीके समान हो गयीं। गौरवक्ष-विलासिनी श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी पति-विरहमें मृतवत् हो गयीं। प्रभुके लौटनेकी आशामें उन्होंने केवल जीवन धारण किया। नवद्वीपमें प्रभुके श्रीमन्दिरमें मूर्त्तिमान निरानन्द विराजने लगा। सारी नदियामें मानो निरानन्दका एक स्रोत बहने लगा।

यात्राके मार्गमें

नदियाके सर्वश्रेष्ठ अध्यापक-शिरोमणि निमाई पण्डितकी नयी उम्र है, अपरूप रूपराशि, असाधारण पाण्डित्य-प्रतिभा और अलौकिक क्षमता है। इन सब गुणोंको लेकर वह धन और यश उपार्जनके लिए प्रवासमें बाहर निकले हैं। नगरके पथमें, घाट-बाटमें जो उनको एक बार देखता है, वही उनकी भुवन-मोहन अपरूप रूपराशिका दर्शन करके मुग्ध होकर उनके श्रीचन्द्रवदनकी मधुमय कथारूप सुधाराशि पान करके परम सन्तुष्ट होकर उनके सर्वलोक-रञ्जन, सर्वमन-मोहन वदन-सुधाकरके प्रति एक-टक होकर देखता रह जाता है। उनके मुखचन्द्रकी ओरसे आँखें नहीं हटा पाता। कन्दर्प दर्पहारी प्रभुकी मदनमोहन अपूर्व श्रीमूर्त्ति दर्शन करके ग्रामवासी स्त्रियाँ कह रही हैं—

हेन पुत्र जार।
धन्य तार जन्म तार पाये नमस्कार॥
जे वा भाग्यवती हेन पाइलेन पति।
स्त्री जन्म सार्थक करिलेन सेइ सति॥

—चै. भा. आ. १०. ५३, ५४

कलिके प्रच्छन्न अवतार पतित पावन श्रीगौर भगवान कलिग्रस्त जीवोंके उद्धारके लिए विप्ररूपमें शचीके गर्भसे अवतीर्ण हुए थे। उनकी प्रेममयी परम सुन्दर श्रीमूर्त्तिका एकबार भी दर्शन करके त्रितापदग्ध जीवके सब दुःख दूर हो गये, उनके जीवनका हाहाकार चला गया, सारांश यह कि वे जीवन्मुक्त हो गये। प्रभु जिसके साथ दो बातें करते थे, एकबार जिसके ऊपर कृपादृष्टि डालते थे, उसको मानो हाथोंहाथ स्वर्ग मिल जाता था। वे कृपा करके जिसका अङ्गस्पर्श करते थे, उसको गोलोकका सुख अनुभव होने लगता। यह सब कलिग्रस्त, संसारके त्रितापदग्ध जीवोंके प्रति प्रभुकी अपार करुणाका निदर्शन है। अति कष्ट साध्य साधन और भजन-क्रियाके द्वारा कलिग्रस्त जीवके उद्धार पानेकी संभावना नहीं है, यह सोचकर परम करुणामय प्रभु कृपा परवश होकर श्रीगौराङ्ग रूपमें नदियामें उदय होकर जीव-जगतके गोचरीभूत हुए थे। ब्रह्मादि देवतागण, मुनि-ऋषिगण युग-युगान्तरकी ध्यान-धारणा, जप-तप-यज्ञके द्वारा जिसका दर्शन नहीं पाते, चारों वेद भी जिनके अपरूप रूप और महिमाका अनुभव करनेमें असमर्थ हैं, वे सर्वभूतेश्वर, सर्वलोकपालक, सर्वदेवमय श्रीगौराङ्ग श्रीहरि केवल कृपा परवश होकर जीव-जगतके गोचरीभूत हुए थे। कलिके जीव बड़े ही भाग्यवान् हैं, इसी कारण वे वेदगुह्य श्रीगौराङ्ग लीलामृत पान करके गोलोकके आनन्दका उपभोग कर रहे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पद्मावतीके तीरपर

प्रभु पूर्वदेश भ्रमण करते - करते यथा समय पद्मावती नदीके तीर आकर उपस्थित हुए। स्वच्छ-सलिला स्रोतस्विनी भाग्यवती पद्मावतीकी अनुपम प्राकृतिक शोभा देखकर प्रभुके मनमें आनन्दकी तरङ्ग उठी। अत्यन्त चौड़ी पद्मावती नदीकी धवल फेन-पुञ्जसे विस्फारित उच्छलित तरङ्ग राजि, सुदृश्य मनोरम पुलिनके पार्श्वमें देशस्थ मुकुलित पुष्पोंसे सुरम्य वनराजिकी अपूर्व शोभा, तदतिरिक्त नाना जातिके पक्षीगणकी सुमधुर कलध्वनिसे निनादित, मृदु-मन्द सुस्निग्ध समीरणसे सेवित स्वच्छ आकाश मण्डलकी विचित्र शोभा देखकर प्रभुके मनमें श्रीवृन्दावनकी स्मृति उदय हुई। उन्होंने प्रेमानन्दमें विह्वल होकर निजजनके साथ पद्मावती नदीमें स्नान और जल क्रीड़ाकी। वह पद्मावतीके लिए बड़ा शुभ दिन था। बड़े भाग्यसे गौर भगवान्के श्रीचरण-रजके स्पर्शसे वह तीर्थ योग्य हो गयी, कलि-कलुषित जीवको पवित्र करनेका अधिकार पाकर धन्य हो गयी।

पूर्वदेश पाण्डुवर्जित देशके रूपमें विख्यात है। इस देशको अ-गङ्गा देश भी कहते हैं। श्रीश्रीमन्महाप्रभुने इस अ-गङ्गा देशमें पदार्पण करके इसको धन्य कर दिया। इसीलिए पतित-पावन प्रभुके मनमें पूर्वदेश जानेकी वासना उत्पन्न हुई थी। ठाकुर लोचनदासने लिखा है कि प्रभुने कहा था—

"आमार प्रसादे पद्मावती हैबे धन्य।
सर्व लोक आमा बहि ना जानिबे अन्य॥"

—चै० म०

प्रभु वाक्य ध्रुव सत्य है, इसी कारण पूर्वबङ्गके लोग विशेषतः गौरभक्त हैं।

"प्रभुने कुछ दिन पद्मावतीके तटपर वास किया। वह शिष्योंके साथ परम आनन्द पूर्वक नित्य पद्मावतीमें स्नान क्रीड़ा करते थे। नदीमें जल क्रीड़ा करना प्रभुकी बड़ी ही प्रिय लीला थी। नदियामें गङ्गाके किनारे वे जो अपूर्व लीलाएँ करते थे, यहाँ भी उनका पुनः अभिनय किया।

पूर्व बंगालका विद्वत् समाज

पूर्वबङ्गके सब लोग उनके श्रीचरण कमलकी ओर आकृष्ट हुए, अनेक स्थानोंसे नित्य नये-नये लोग आकर उनके दर्शन करके कृतार्थ होते थे। नदियाके भुवन विजयी अद्वितीय अध्यापक शिरोमणि निमाई पण्डित पूर्वबङ्गमें विद्यादान करने आये हैं—यह समाचार सर्वत्र प्रचलित हो गया। वहाँ जितने ब्राह्मण पण्डित और अध्यापक थे, सबने आकर प्रभुसे भेंट की। दलके दल छात्रोंके झुण्ड आकर निमाई पण्डितके चरण कमलमें नत-मस्तक हुए। अन्य लोगोंकी तो बात ही क्या है ? नदियाके निमाई पण्डितका नाम और यश पहलेसे ही पूर्वबङ्गमें सर्वत्र व्याप्त हो चुका था। उनके शुभागमनकी बात सुनकर दूर-दूरसे आवाल-वृद्ध-वनिता उनके श्रीचरणोंके दर्शनके भिखारी बनकर पद्माके तटपर आकर उपस्थित हुए। कषित काञ्चनके समान प्रभुके श्रीअङ्गके वर्णको देखकर, उनकी सुगठित और सुवलित अपूर्व श्रीअङ्ग-माधुरी देखकर भाग्यवान् पूर्वबङ्ग निवासियोंने बहुत पहलेसे ही प्रभुके तत्त्वको मन ही मन स्थिर कर लिया था। यथा, श्री चैतन्य मङ्गलमें—

देखि जेन राधार नागर हेन ठाम।
राधार वरण गाय देखि विद्यमान॥

पूर्वबङ्ग-निवासी अत्यन्त धी-शक्ति-सम्पन्न पुरुषके रूपमें प्रसिद्ध हैं। इस श्रीगौराङ्ग तत्वके निर्द्धारणके विषयमें भी इसका पूर्ण परिचय प्राप्त हुआ।

"राधाभावद्युति सुवलितं नौमि कृष्णस्वरूपम्।"

यह तत्त्व प्रभुके अन्तर्धान होनेके बाद निर्णीत हुआ है। किन्तु भाग्यवान् पर्वबङ्ग निवासियोंके हृदयमें प्रभुकी कृपाके बलसे पूर्वसे ही यह तत्व स्वतः स्फुरित हुआ था। धन्य हैं पूर्वबङ्गके निवासीगण!

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबने प्रभुके सम्मुख आकर उनके शिव-विरिञ्चि-अभिवाञ्छित श्रीचरणोंका आश्रय ग्रहण कर अपने-को धन्य माना। अध्यापक ब्राह्मण पण्डितों तथा छात्रोंके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। उन्होंने सभा करके निमाई पण्डितकी यथोचित अभ्यर्थना करके उनके चरणोंमें विनीत भावसे निवेदन किया—

"हम लोग तो नवद्वीप पढ़ने जाया करते हैं, जो बहुत व्यय-साध्य है। भगवान्‌ने अब वह विद्या हमारे द्वार पर सुलभ करदी। आपका यहाँ पदार्पण हमारे भाग्यसे ही हुआ है। आपके जैसा अध्यापक कोई नहीं है। आप मूर्तिमान बृहस्पति हैं। बृहस्पतिका दृष्टान्तभी आपके उपयुक्त नहीं लगता। आपके जैसा पाण्डित्य तो ईश्वरमें ही संभव है। आपकी टिप्पणीको आधार बनाकर हमलोग पढ़ते-पढ़ाते हैं। अब आप स्वयं हमलोगोंको विद्यादान देकर हम सबको अपना साक्षात् शिष्य बनाइये, जिससे सबकी कीर्ति-ध्वजा संसारमें फहराती रहे।"

प्रभुने यह सारी बातें सुनकर मृदु मधुर मुस्कानके साथ सबको मधुर वचनोंसे आश्वासन प्रदान किया। पूर्वबङ्गमें प्रभुके सहस्रों शिष्य हो गये। वहाँ प्रभुके पाण्डित्यके गौरव और यश-सौरभका कोई भी विरोधी या प्रतिद्वन्द्वी न था। उनके सार्वजनीन प्रेमभाव तथा सर्वलोक-रञ्जक मधुर व्यवहारसे मुग्ध होकर सब लोग अपनेको नदियाके भुवन-विजयी प्रख्यात अध्यापक निमाई पण्डितका छात्र कहकर परिचय देनेमें गौरवान्वित समझते थे।

श्रीगौराङ्ग सुन्दर स्वयं भगवान् हैं। उनके कृपा कटाक्षसे असाध्य साधन हो सकता है। दो ही महीने के भीतर उनकी कृपाके बलसे परम सौभाग्यवान् पूर्वबङ्गवासी छात्रगण महान् बन गये। विद्यालङ्कार, विद्यानिधि, विद्यारत्न, विद्यावागीश आदि महान् विद्वत् पदवी प्राप्त कर वे अपने-अपने घर लौट गये, तथा प्रभुके नाम-रूप और गुण, तथा पाण्डित्य-प्रतिभाका प्रचार करने लगे। वे लोग अपने-अपने गाँवोंमें पृथक्-पृथक् पाठशालाएँ खोलकर अध्यापन कार्य करने लगे। यह देखकर अगणित छात्रवृन्द प्रभुके चरणोंमें नित्य आकर आत्म समर्पण करने लगे।

महाप्रभुकी रचनाओंका उल्लेख

निमाई पण्डित-कृत व्याकरणकी टिप्पणीकी बात पहले ही कही जा चुकी है। साधारण लोगोंका विश्वास है कि श्रीगौराङ्गने कोई ग्रन्थ नहीं लिखा। यह बात सत्य नहीं है। नदियाके भुवन-विजयी निमाई पण्डितने बाल्यकालमें पहले 'श्रीगोपाल चरित' नामक एक श्रीकृष्ण लीलाविषयक भक्ति-ग्रन्थ लिखा था। यह श्रीग्रन्थ चार खण्डोंमें समाप्त हुआ है। प्रथम खण्डमें वस्त्रहरण लीला, और शेष तीन खण्डोंमें दानलीला वर्णित है। यह चम्पू ग्रन्थ है। ग्रन्थ-विघ्न-निवारणार्थ नमस्कार रूपमें श्रीमद्भागवतका 'यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र' इत्यादि श्लोक लिखा गया है। आरम्भवाक्य इस प्रकार है—

"तत्र तावदेकदा राधा यमुनां गन्तुकामा रामा समाहकर्पूर मञ्जरि ! कलावति ! चन्द्रलेखे मुग्धाननि ! सुमुखि ! सुन्दरि ! कम्बुकण्ठि ! आगच्छताम्बुहरणाय गृहीतकुम्भाः सम्भूयमन्द पवनां यमुनां व्रजामः।"

समाप्ति वाक्य इस प्रकार है—

"इति श्रीचैतन्यचन्द्रविरचितं
श्रीगोपालचरित्रं समाप्तम्।"

श्रीगौराङ्ग प्रभुकृत एक और ग्रन्थका नाम है 'विद्यासागार'। प्रभुकी उपाधि भी विद्यासागर थी। निमाई पण्डित उनके पुकारका नाम था। श्रीविश्वम्भर विद्यासागर उनका प्रकृत अध्यापक नाम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

था। यह 'विद्यासागर' ग्रन्थ कलाप-व्याकरणकी टीका है। नवद्वीप-निवासी गोपीनाथ तर्काचार्यने श्रीपति दत्त कृत परिशिष्ट ग्रन्थकी एक टीका लिखी है, उसमें अनेक स्थलोंमें कलाप व्याकरणके टीकाकार वैयाकरण-प्रवर महात्मा दुर्गा सिंहके मतका खण्डन हुआ है। कलाप-व्याकरणके अध्यापक निमाई पण्डितने उस महात्मा दुर्गा सिंहके अपमानको न सहन करके गोपीनाथ तर्काचार्यके गर्वको खर्व करनेके लिए बद्ध-परिकर होकर इस ग्रन्थमें उनके मतका खण्डन करके प्राचीन दौर्ग-मतको ही संस्थापन किया है। श्रीचैतन्य भागवत तथा श्रीअद्वैत प्रकाशमें इसका आभास मिलता है। इस विद्यासागर ग्रन्थका आदि श्लोक यह है—

विकसतु नखकुसुमाली मम
हृदि हरिपाद पारिजातस्य।
राहुभयादिव विधुना कायव्यूहो
विनिर्मितो वियति ॥

श्रीगौराङ्ग प्रभुकृत तृतीय ग्रन्थका नाम है 'प्रेमामृत स्तोत्र'। जैसे सारे प्राणी पञ्चभूतात्मक हैं, उसी प्रकार यह श्रीग्रन्थ भी पञ्च प्राणान्वित है। यथा—(१) श्रीभावताष्टकम् (२) श्रीकिशोराष्टकम् (३) श्रीविश्वमोहनाष्टकम् (४) श्रीकृष्णन्युताष्टकम् तथा श्रीप्रेम रसायनम्। तथा ग्रन्थका समाप्ति-वाक्य इस प्रकार है—

इति श्रीचैतन्यचन्द्रविरचितं प्रेमामृतस्तोत्रं समाप्तम्।

उनके चतुर्थ ग्रन्थका नाम है 'श्रीराधारसमञ्जरी'। यह भी स्तवमिश्रित भक्तिग्रन्थ है। इसका आदि श्लोक यह है—

कुचकलस भराढया केशरी क्षीण मध्या
विपुलतरनितम्बी पक्वविम्बाधरोष्ठी।
प्रणयतर वयस्या स्कन्धविन्यस्त हस्ता
निधुवन रसपुञ्जं याति राधा निकुञ्जम्॥

इस ग्रन्थका समाप्ति-वाक्य इस प्रकार है—'इति श्रीकृष्ण चैतन्य विरचिता श्रीराधारसमञ्जरी समाप्ता।'

श्रीगौराङ्ग प्रभुके द्वारा प्रणीत एक और ग्रन्थ है 'श्रीमद्राधाकृष्ण युगलपरिहार स्त्रोत्र।'

श्रीराधिकाका अष्टोत्तर शत नाम स्त्रोत्र उनका ही रचा है।

श्रीगौराङ्ग प्रभु रचित श्रीश्रीजगन्नाथाष्टक बहुत दिनोंसे नित्यकर्म नामक पुस्तकमें मुद्रित होता आ रहा है।

उनके द्वारा रचित 'शिक्षाष्टक' सर्वजन विदित ग्रन्थ है।

उनके रचित अनेका श्लोक यत्र-तत्र देखनेमें आते हैं।

श्रीगौराङ्ग लीला रसका आस्वादन करने वाले कृपालु गौरभक्तगण जीवाधम ग्रन्थकारके अपराधको क्षमा करेंगे। लीलारस-भङ्ग करके अवान्तर शुष्क विषयकी अवतारणा हो गयी है, यह मैं समझ रहा हूँ। परन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि श्रीगौराङ्ग प्रभु कृत ग्रन्थोंका परिचय गौरभक्तके द्वारा अनादृत न होगा।

पद्मावतीके पास नरोत्तमके लिए प्रेम-थाती

इस प्रकार पद्मानदीके तट पर नदियाके निमाई पण्डितने विद्या-विलास ऐश्वर्यका प्रदर्शन करके सब लोगोंका मन हर लिया। पूर्वबङ्गमें उनकी पाण्डित्य-प्रतिभा पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गयी। पद्मानदीके इसपार जो गाँव प्रभुके श्रीचरण-रजकी प्राप्तिसे गौरवान्वित और धन्य हुए थे, उनमें प्रधान गड़ेर-हाट और कुतुबपुर थे।

नदियाके निमाई पण्डित केवल विद्या-विलास ऐश्वर्य दिखलानेके लिए ही पूर्वबङ्ग गये, ऐसी बात

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं है। कलियुगावतार श्रीगौराङ्ग प्रभुके मनमें युगधर्म श्रीहरिनामके प्रचारका उद्देश्य भी छिपा था। कलिके प्रच्छन्न अवतारका यही प्रच्छन्नत्व है। इसी पुण्यतोया पद्मावती नदीके तट प्रेमावतार श्रीगौराङ्ग-प्रभु ठाकुर-नरोत्तमके लिए प्रेम रक्षा करने आये थे। प्रेम-विलास श्रीग्रन्थमें प्रभुकी यह अपूर्व लीलाकथा वर्णित है।

पद्मावती नदीके तीर प्रभु अपने अन्तरङ्ग भक्त-वृन्दके साथ नित्य हरि सङ्कीर्तन करते थे। कीर्तनसे श्रान्त होकर सब लोग एक साथ नदीमें स्नान करते, प्रभु भक्तवृन्दके साथ प्रेमानन्दमें जलक्रीड़ा करते थे। पुण्यतोया पद्मानदी श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके शिव-विरञ्चि अभिवाञ्छित पदरजको प्राप्त कर प्रेमानन्दमें तरङ्ग भङ्गिमा प्रदर्शित करके उच्छ्वसित वारि-पुञ्जसे प्रभुके पादपद्मको धो धोकर धन्य हो गयी।

एक दिन गौर-प्रेमोन्मत्ता रङ्गिणी तरङ्गिणीके प्रबल प्रेमतरङ्गोच्छ्वासकी उद्वेलित वारिराशिसे तीरवर्ती जनपद समूह अकस्मात् प्लावित हो उठे। परम भाग्यवती पद्मावती नदीसे प्रेम-प्लावन प्रवाहित हो उठा। प्रेमसिन्धु श्रीगौराङ्ग प्रभुने कृपा करके पद्मावतीको प्रेम प्रदान किया। प्रभुके पद-रजके स्पर्श-से पद्मावतीका प्रबल स्रोतावेग प्रशमित हुआ। तब प्रभु मधुर-मधुर मुस्काते हुए बोले—

प्रभु कहे पद्मावती धर प्रेम लह।
नरोत्तम नामे पात्र प्रेम ताँरे दिह॥ प्रे० वि०

भाग्यवती पद्मावतीने मूर्तिमन्त होकर प्रभुके सामने खड़े होकर हाथ जोड़कर निवेदन किया—

—"प्रभु करों निवेदन।
केमले जानिब कार नाम नरोत्तम॥" प्रे० वि०

प्रेममय प्रभुने पुनः मधुर मुस्कानके साथ उत्तर दिया—

जाँहार परशे तुमि अधिक उछलिवा।
सेइ नरोत्तम, प्रेम ताँरे तुमि दिबा॥ प्रे० वि०

अर्थात् 'जिसके स्पर्शसे तुम्हारे हृदयमें अधिक आनन्दोच्छ्वासकी तरङ्ग उठे वही नरोत्तम होगा, उसीको तुम प्रेम-दान देना।' प्रभुने फिर कहा—

"एइ घाटे रेख प्रेम आज्ञा दिल आमि।" प्रे० वि०

पद्मावती प्रभुकी आज्ञा शिरपर धारण करके उनके पैरोंमें गिर पड़ी। यह गुप्त लीलारङ्ग और किसीको दिखायी न दिया।

प्रभुके आदेशसे पद्मावती देवीने प्रभुके प्रेमपात्र नरोत्तमको प्रभु-प्रदत्त यह धरोहर प्रेमधन प्रत्यर्पण करके प्रभुकी कृपाके ऋणसे उद्धार प्राप्त किया था। यह सब अपूर्व लीला कहानी 'ठाकुर नरोत्तम चरित' में वर्णित है। ठाकुर नरोत्तम दासने इस पुण्यतोया नदीके तीर आकर गौर-प्रेममें उन्मत्त होकर प्रेमानन्दमें मधुर हरिकीर्तनका जो अपूर्व तरङ्ग उठाया था, उससे समस्त प्लावित होगया। उसका घात-प्रतिघात पूर्वबङ्ग-वासीके घर-घरसे प्रतिध्वनित होता रहा है।

यह प्रभुकी अलौकिक लीला है। श्रीभगवान्‌के लिए असाध्य कर्म कुछ भी नहीं है। उनकी अलौकिक लीलाकी कहानियाँ संसारमें भरी पड़ी हैं। उनसे उनके भक्तवृन्द मुग्ध हैं। इन सब ऐश्वर्यपूर्ण अलौकिक लीला कहानियोंमें भगवद्भक्तके लिए निष्कपट भावसे विश्वास करना आवश्यक है। श्री-भगवान्‌की अलौकिक कथाओंमें जिनका विश्वास नहीं होता, उनका इहलोक और परलोक दोनों ही नष्ट हो जाता है। यह पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है। यथा,

अलौकिक लीलाय जार ना हय विश्वास।
इहलोक परलोक तार हय नाश॥
चै. च. म. ७.१०८

पद्मावतीके दूसरे पार—पितामह-पितामहीसे मिलन

पद्मावती पार होकर निमाई पण्डित शिष्यवर्गके साथ अपने पूर्व-पुरुषोंके आवास स्थान श्रीहट्ट पर्यन्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गये। प्रभुके प्रधान-प्रधान पार्षदोंका निवासस्थान श्रीहट्ट प्रदेशमें था।

श्रीवास पण्डित आर श्रीराम पण्डित ।
श्रीचन्द्रशेखर देव त्रैलोक्यपूजित ॥
भय रोग वैद्य श्रीमुरारि नाम जाँर ।
श्रीहट्टे ए सब वैष्णेर अवतार ॥
चै. भा. आ. २.३०,३१

इसके सिवा श्रीचैतन्य भागवतोक्त तैर्थिक विप्र सत्यभानु उपाध्याय, रत्नगर्भ आचार्य, जगन्नाथ आचार्य, वाणीनाथ, गदाधर पण्डित, प्रद्युम्न मिश्र, श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासवतार श्रीवृन्दावन दास ठाकुर आदिका जन्म श्रीहट्टमें उनके ननिहालमें हुआ था। श्रीहट्ट वासियोंके समान गौरभक्त प्रायः देखनेमें नहीं आते। उनके प्रति प्रभुकी अपार करुणा लक्षित होती है।

श्रीगौराङ्ग प्रभुने श्रीहट्टमें दो बार पदार्पण किया था ऐसा लगता है। एक तो 'प्रेमविलास' श्रीग्रन्थके अनुसार यही संन्यास-ग्रहणके पहिले पूर्व-बङ्ग यात्राके समय और दूसरा *'चैतन्योदयावली' श्रीग्रन्थके अनुसार संन्यास लेनेके लगभग पाँच वर्ष बाद। उन्होंने श्रीहट्टमें जाकर माताके आदेशसे वृद्धा पितामहीको दर्शन दिया था। यह लीला प्रभुने संन्यासाश्रम ग्रहणके पूर्व या पश्चात् प्रकट की थी, इस विषयमें निश्चिय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। 'चैतन्योदयावली' ग्रन्थके अनुसार शान्तिपुरमें श्रीद्वैत भवनमें शचीमाताने नवीन संन्यासी पुत्रको वृद्धा पितामहीको एक बार दर्शन देनेके लिए आदेश दिया था। इसके कारणका वर्णन प्रथम अध्यायके आरम्भमें आ चुका है।

महाप्रभुके पितामह और पितामही अपने पूर्वजोंके वास-स्थान श्रीहट्ट जिलाके ढाका-दक्षिण ग्राममें रहते थे। माताके आदेशके अनुसार प्रभु यहाँ आये थे। प्रेम-विलास ग्रन्थके वर्णनके अनुसार जब प्रभु अपना परिचय बताकर पितामह और पितामहीके पास बैठे, उस समय प्रभुके पितामह श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुर ताड-पत्र पर श्रीचण्डी पुस्तकका प्रथम श्लोक लिख रहे थे पुस्तक अलग रखकर पौत्रको अपनी ग्रहणी शोभादेवीके पास ले गये। शोभादेवीने एकान्तमें अपने पतिदेवको अपना अद्भुत स्वप्न सुनाया। मिश्र महाशयने भी विस्मय पूर्वक कहा कि मुझे भी इसकी आकृति-प्रकृति देखकर यही लगता है कि यह साक्षात् नारायण है, इसका खूब आदर करना। इतना कहकर वे बाहर आये तो देखा कि जिस चण्डी पुस्तकका प्रथम श्लोक उनने लिखा था, वह पुस्तक पूर्ण लिखी पड़ी है। इससे उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और उनने समझ लिया कि उनका पौत्र साक्षात् नारायण है।

पितामही पोत्रका अपरूप रूप देखकर आनन्दमें डूबी जा रही थीं। उनने पौत्रसे कहा—"तुमने स्वप्नमें मुझे जिस रूपमें दर्शन दिया वह रूप मैं एक बार साक्षात्में देखना चाहती हूँ।" प्रभुने कृपा करके पितामहीको अपने गौर-कृष्ण रूपके दर्शन कराकर कृतार्थ किया।

चलते समय पितामहीके आग्रह पर प्रभुने उनको बालकृष्ण और *बाल-गौराङ्ग मूर्ति प्रदानकी, जिनकी वे नित्य सेवा किया करतीं।

तपन मिश्रसे भेंट

पूर्वबङ्गसे विद्या-विलास-ऐश्वर्य-लीलारङ्ग प्रदर्शित करके प्रभु जब घर लौटे तो तपन मिश्र नामक एक सुकृतिवान् विप्रने साधन-तत्त्व जाननेके लिए

*दूसरी यात्राका वर्णन नीलाचललीलाके २८ वें अध्यायमें देखिये—प्रकाशक

*ये श्रीविग्रह श्रीपाद उपेन्द्र मिश्र ठाकुर के वंश-धरों द्वारा अब तक पूजित होते आरहे थे। पाकिस्तान होनेके बाद कौन कहाँ छिन्न-भिन्न हो गये, कुछ पता नहीं।—प्रकाशक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमन्महाप्रभुके पादपद्ममें आश्रय ग्रहण किया था। यह भाग्यवान् विप्र प्रभुके नित्यपार्षद श्रीपाद रघुनाथ भट्ट गोस्वामीके पिता थे। तपन मिश्रने एक दिन स्वप्नमें देखा कि एक देवरूपी महापुरुष उनके सामने आकर कह रहा है—"हे परम सुधीर द्विज ! चिन्ता न करो, मनको स्थिर करो, निमाई पण्डितके पास जाओ, वे तुमको साध्य-साधन बनायेंगे। वे मनुष्य नहीं हैं। जगतके हितके लिए नर-रूपमें लीला कर रहे हैं। वेदगम्य यह बात किसको नहीं कहता।"

यह बात कहकर स्वप्न-दृष्ट देवपुरुष अन्तर्धान हो गये। तपन मिश्र जागने पर यह सोचकर कि मैंने सुस्वप्न देखा है प्रेमानन्दमें व्याकुल होकर रोने लगे। क्योंकि वह साध्य-साधन तत्त्व निरूपण करनेमें असमर्थ होकर बड़े ही उद्विग्न चित्तसे कालयापन कर रहे थे। वे अब अधिक विलम्ब न करके तत्काल निमाई पाण्डितके पास गये। उनकी भुवन-मोहन अपरूप-रूपछटासे दशो दिशाएँ आलोकित हो रही थीं। उनके दिव्य लावण्यपूर्ण श्रीअङ्गोंकी ज्योतिसे वह स्थान उद्भासित हो रहा था। उनके श्रीअङ्गके पद्म-गन्धसे वह स्थान महँ-महँ कर रहा था। तपन मिश्र प्रभुके ऐश्वर्यसे मुग्ध होकर दौड़कर उनके श्रीचरणोंमें गिर पड़े और साष्टाङ्ग दण्डवत् करके हाथ जोड़कर बोले —"मैं बहुत दीन-हीन प्राणी हूँ, कृपा-दृष्टि करके मेरा संसारसे उद्धार करें। मुझे साध्य-साधन तत्त्व बताइये जिससे विषय आदि दुखोंसे मेरा छुटकारा हो।"

दयामय सर्वज्ञ प्रभुने तपन मिश्रके अङ्गको अपने पद्महस्तसे स्पर्श करके मधुर मुस्कानके साथ उसके भाग्यकी सराहना करते हुए आश्वासन दिया—

"कलियुगे धर्म हय नाम संकीर्तन।
चारि युगे चारि धर्म जीवेर कारण॥
अतएव कलियुगे नाम-यज्ञ सार।
आर कोन धर्म कैले नाहि हय पार॥
रात्रिदिन नाम लय खाइते शुइते।
ताहार महिमा वेदे नाहि पारे दिते॥
शुन मिश्र कलियुगे नाहि तप यज्ञ।
जेइ जन भजे कृष्ण सेइ महाभाग्य॥
अतएव गृहे तुमि कृष्ण भज गिया।
खूटि नाटि परिहरि एकाग्र हइया॥
साध्य-साधन तत्त्व जे किछु सकल।
हरिनाम सङ्कीर्तने मिलिबे सकल॥
—चै. भा. आ. १०, १३४–१३९

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येवगति अन्यथा॥

प्रभुके श्रीमुखसे यह सुनकर तपन मिश्र प्रेमानन्दमें गद्गद हो गये। उन्होंने हाथ जोड़कर आँखोंमें आँसू भरकर प्रभुसे दीक्षाकी प्रार्थना की। प्रभुने उनको तत्काल सोलह नाम बत्तीस अक्षर हरिनाम महामन्त्रमें दीक्षित किया और उपदेश दिया—

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥"
एइ श्लोक नाम बलि लय महामन्त्र।
सोल नाम बत्रिश अक्षर एइ तन्त्र॥
साधिते साधिते जबे प्रेमाङ्कुर हबे॥
साध्य-साधन-तत्व जानिवा से तबे।
चै. भा. आ. १०. १४०, १४१.

प्रभुके श्रीमुखके मधुर उपदेशकी वाणी सुनकर परम परितृप्त हो तपन मिश्रने पुनः पुनः उनको दण्डवत् प्रणाम और प्रदक्षिणा की। फिर परमानन्दमें उच्च स्वरसे 'हरे कृष्ण' नाम सङ्कीर्तन करने लगे तथा प्रेमानन्दमें प्रभुके सम्मुख सब लोगोंके सामने नृत्य करने लगे। आज उनके आनन्दकी सीमा न रही। वे विह्वल होकर प्रभुके चरणोंमें गिरकर रोते रोते बोले—"प्रभो ! मुझको अपना दास समझकर साथमें ले लो। आपके श्रीचरणोंकी सेवा करके यह दास धन्य हो जायगा।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कलिपावनावतार श्रीगौर भगवान्‌ने मुस्कराकर कहा—"तुम वाराणसी जाओ, वहीं मेरा तुमसे मिलन होगा तब साध्य-साधन तत्व बताऊँगा।"

इतना कहकर प्रभुने उस भाग्यवान् विप्रको प्रेमालिङ्गन प्रदान कर कृतार्थ किया। तब तपन मिश्रने प्रभुकी आज्ञा शिरोधार्य करके अपना स्वप्न-वृत्तान्त एकान्तमें प्रभुसे निवेदन किया। श्रीगौराङ्ग प्रभुने सुनकर हँसते हुए समझाया कि यह वृत्तान्त और किसीके सामने नहीं कहना।

तपन मिश्र रोते रोते प्रभुके रक्त-कमल-चरणमें लुढ़क गये। दयामय प्रभुने पुनः उनके शरीरमें अपने करकमल फेरकर उनको पकड़कर उठाया, और प्रेमालिङ्गन प्रदान करके उन्हें कृतार्थ कर बिदा किया। तब तपन मिश्र प्रभुके आदेशसे सपत्नीक काशीयात्राके लिए उद्योग करने लगे। यथा समय वे काशी-धाममें जाकर वहाँ श्रीगौराङ्ग भजन और हरिनाम मन्त्रका साधन करने लगे।

इस लीलाके द्वारा श्रीमन्महाप्रभुने समझाया कि सबसे पहले जीवको हरिनाम महामन्त्र ग्रहण करना चाहिये। हरिनाम महामन्त्र जप और कीर्तन करने योग्य है। यह महामन्त्र जप और कीर्तन करते-करते जीवके हृदयमें जब भगवत्प्रेमका अंकुर उगेगा, तब उसको साध्यसाधन तत्त्व समझनेका अधिकार प्राप्त होगा। युगधर्म है हरिनाम सङ्कीर्तन और हरिनामका आश्रय। इससे ही कलिके जीवका सब अभीष्ट सिद्ध होगा। दूसरा कोई धर्मानुष्ठान नहीं करना पड़ेगा।

प्रभुने तपन मिश्रको काशी जानेके लिए क्यों कहा था? इसका भी निगूढ़ तात्पर्य है। काशीधाममें इसी तपन मिश्रके घरमें बैठकर प्रभुने श्रीपाद सनातन गोस्वामीको वैष्णव धर्मके निगूढ़ तत्त्व और साध्य-साधनके सम्बन्धमें शिक्षा दी थी। इस उद्देश्यसे उन्होंने काशीधाममें दो महीने वास किया था। बारह वर्षके बाद सर्वज्ञ प्रभु काशीधाममें यह सनातन-शिक्षा-लीला प्रकट करेंगे, इसका आभास अभी उन्होंने भाग्यवान् तपन मिश्रको दिया, तथा सङ्केत पूर्वक उनसे कहा कि साध्य-साधन-तत्त्व बारह वर्ष हरिनाम साधनाके बाद जाना जा सकेगा, अर्थात् प्रभुने हरिनाम-साधनाका समय निर्देश कर दिया।

इस प्रसङ्गमें प्रभुने यह भी समझाया कि हरिनाम महामन्त्र ग्रहण किये बिना वैष्णवका अन्य मन्त्रकी दीक्षामें अधिकार नहीं होता। अतएव सबसे पहले हरिनाम महामन्त्र ग्रहण करना आवश्यक है। हरिनाम महामन्त्रकी साधनाके द्वारा जीवके हृदयमें अभीष्ट देवकी स्फूर्ति होती है तथा इष्टकी प्राप्तिके लिए मनमें तीव्र आकांक्षा उत्पन्न होती है। तब श्रीभगवान् कृपावश होकर जीवको गुरुरूपमें दर्शन देकर अधिकारी भेदसे यथारीति और यथायोग्य इष्टमन्त्र प्रदान करके साधन-पथमें अग्रसर होनेका सुयोग प्रदान करते हैं। अतएव श्रीमन्महाप्रभुने तपन मिश्रसे कहा—

"ईश्वर भजन अति दुर्गम अपार।"
—चै. भा. आ. १०. १३२

जगद्गुरु श्रीमन्महाप्रभुने कलिग्रस्त जीवके लिए इस-सहज साध्य भजन-मार्गका निर्देश कर दिया। इसके साथ ही हरिनाम महामन्त्रके साधनका काल-निर्देश भी कर दिया। श्रीमन्महाप्रभुके धर्मका यह प्राथमिक साधन है। श्रीमन्महाप्रभुका यह उपदेश आचार्य-सन्तान गोस्वामीगण तथा महन्त बाबाजी लोगोंके लिए अवश्य पालनीय है।

नवद्वीप प्रत्यावर्तन

इस प्रकार नदियाके अवतार विद्या-विलास-लीलारङ्गके बहाने पूर्ववङ्ग-वासियोंको विद्या, और धर्मकी शिक्षा प्रदान करके और उनमें श्रीहरि नाम संकीर्तनका प्रचार करके अपने घर लौट आये। वह न्यूनाधिक छः महीने तक पूर्वबङ्गमें अध्यापनके सिलसिलेमें विद्या और नामप्रेमके प्रचार कार्यमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संलग्न रहे। समस्त पूर्वबङ्गके नर-नारी प्रभुकी अपरूप रूपराशि तथा अलौकिक पाण्डित्य प्रतिभासे मुग्ध होकर उनके शरणापन्न हुए थे।

जगतमें रूपका आकर्षण अतिशय प्रबल होता है। सर्वचित्ताकर्षक अपरूप रूपके सागर थे नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभु। उनके इस अपरूप रूप-सागरमें इच्छासे या अनिच्छासे जगत्के जीवोंने दिग्-विदिग्-शून्य होकर डुबकी लगायी। स्त्री, वृद्ध, बालक, युवा कोई बच न सका। श्रीगौराङ्गके रूपके फन्देमें फँसकर सारे जगत्के जीव उनके सुशीतल चरणोंकी छायामें आकृष्ट हुए थे। वे स्वयं भगवान् थे, इसका यही सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है। श्रीगौराङ्ग अवतारका यह प्रमाण गोपीनाथ आचार्यने अपने बहनोई वासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्यको दिखलाया था। उन्होंने यह भी कहा था कि शास्त्रीय प्रमाणकी अपेक्षा यह प्रमाण बलवान है।

अवतार नाहिं कहे आमि अवतार।
मुनिजन जानि करे लक्षण विचार॥
—चै० च० म० २०. २९४

धन, वस्त्र, अलङ्कार, मणिरत्न आदि तथा नाना प्रकारके बहुमूल्य द्रव्य संभार एवं बहुतसे लोगोंको साथ लेकर नावोंके द्वारा निमाई पण्डित प्रवाससे नवद्वीपमें लौटे। सन्ध्याकालमें अपने मन्दिरमें जाकर अपनी पूजनीया माताके चरणोंमें समस्त धनराशि भेंट करके उन्होंने उनको साष्टाङ्ग प्रणाम किया।

सारी नदियाके लोग नवद्वीपचन्द्रके नवद्वीप लौटनेका समाचार सुनकर आनन्दोन्मत्त हो गये। घर-घर आनन्दका स्रोत बहने लगा, आनन्दोत्सवमें सारी नदिया मुखरित हो उठी। श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र पुनः नवद्वीप-गगनमें समुदित हुए। नवद्वीप वासियोंका हृदयान्धकार दूर हो गया। शची-भवन जगमगाने लगा। शचीमाताको पुत्रका चन्द्रमुख देखकर मानो आकाशका चन्द्र हाथमें आ गया, परन्तु उनके हृदयका अन्धकार दूर न हुआ। उनकी लक्ष्मीके समान पुत्रवधू उससे कुछ ही दिन पूर्व पति-विरह-विषसे जर्जरित होकर इह लोकसे तिरोहित हो चुकी थी, उनकी गृहलक्ष्मी गृह-द्वारको अन्धकारमय करके स्वधामको चली गयी थी। यह सारी दुःख-लीलाकी कहानी अगले अध्यायमें वर्णित होगी। श्रीगौराङ्ग-लीलाकी कथाओंका अन्त नहीं है। यह मधुर अमृतमयी लीला-कथा जीवोंका जीवन है।

जनम जनम प्रभु एइ देह दान।
हृदये रहूक एइ केलि अविराम॥
—चै० भा० म० २३. २६२

—★—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उन्नीसवां अध्याय

श्रीश्रीलक्ष्मीप्रिया अन्तर्धान

पत्नीर विजय शुनि गौराङ्ग श्रीहरिः । क्षणेक रहिला किछु हेठँ माथा करि ।।

—श्रीचै. भा. आ. १०. १७३

विरह-सर्प और निज धाम गमन

श्रीलक्ष्मीप्रिया देवीको सर्पने दंश लिया, और इससे उनका देहान्त हो गया—यह बात श्रीगौरवक्ष-विलासिनीके सम्बन्धमें प्रयुज्य नहीं है। उनको पति-विरह रूपी सर्पने दंश लिया था, अर्थात् पति-विरहमें कातर होकर देवी देहत्याग करके स्वधाम चली गयीं। यही तात्पर्य है। ठाकुर लोचनदासने यह बात सुस्पष्ट भाषामें लिखी है—

विरह हइल मूर्त्ति सर्पेर आकार।
लक्ष्मी ठाकुरानी ताहा जानिल अन्तर ।।

श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीके कोमल हृदयमें प्रभुकी विरह-यन्त्रणा कितनी प्रबल हुई, किस प्रकार उन्होंने पति विरहाग्निसे जर्जर होकर देह त्यागका सङ्कल्प किया, यह मत्प्रणीत 'श्रीश्रीलक्ष्मीप्रिया चरित' श्रीन्थमें विस्तारपूर्वक वर्णित है। यह सारी करुण-रसात्मक लीला-कहानी पाठ करनेपर पाषाण-हृदय भी द्रवित हो जाता है।

ए सकल लीला जीव-उद्धार कारणे।
महाकाष्ठ द्रवे जेन इहार श्रवणे ।।

—चै० भा० म० ३. १०५

यहाँ मैंने उन सारी लीला-कथाओंकी पुनरुक्ति नहीं की है। कृपालु पाठकवृन्द श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीकी मर्मान्तिक विरह-लीला-कथा उसी ग्रन्थसे पाठ करके आत्मशोधन करें।

श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीकी अन्तर्धानलीला-कहानी निगूढ़ रहस्योंसे पूर्ण है। श्रीश्रीलक्ष्मीप्रिया देवी साक्षात् वैकुण्ठकी लक्ष्मी है। गोस्वामी शास्त्रमें इसके प्रमाणका अभाव नहीं है*। गोस्वामी शास्त्रके मतसे श्रीगौराङ्ग प्रभुके द्वारा प्रवर्त्तित सङ्कीर्तन लीला ही महारास लीला है। श्रीवृन्दावनकी रासलीलामें श्रीश्रीलक्ष्मीदेवीके प्रवेशका अधिकार न था, क्योंकि उन्होंने व्रज गोप-बधुओंकी अनुगामिनी होना स्वीकार नहीं किया। इसी अभिमानके कारण वे महारास लीला-दर्शनसे बञ्चित हो गयीं। आज तक श्रीश्रीलक्ष्मीदेवीका श्रीमन्दिर श्रीवृन्दावनसे दूर श्रीयमुनाके उस पार वेल-वनमें अवस्थित है।

श्रीश्रीलक्ष्मीनारायणकी वैकुण्ठलीला ऐश्वर्यलीला है। श्रीवृन्दावनकी श्रीश्रीराधाकृष्णलीला माधुर्य-लीला है। उनमें रासलीला व्रजरसकी अवधि और माधुर्यकी सीमा है। श्रीनवद्वीप-लीलाकी सङ्कीर्तन-लीला ही रासलीला है। यथास्थान इसकी विस्तृत व्याख्या लिपिबद्धकी जायगी। श्रीधाम नवद्वीपमें नदियानागर श्रीश्रीगौराङ्गसुन्दरके द्वारा यह सङ्कीर्तन

*पुरासीज्जनको राजा मिथिलाधिपतिर्महान्।
अधुना बल्लभाचार्यो भोष्मकोऽपि च सम्मतः ।।
श्रीजानकी रुक्मिणी च रुक्मिणीनाम्नी च तत्सुता।
चैतन्यचरिते व्यक्ता लक्ष्मीनाम्नी च सा यथा ।।

—गौरगणोद्देशदीपिका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रासलीला प्रकट होनेके पूर्व ही श्रीश्रीलक्ष्मीदेवीने प्रभुकी इच्छासे इहलोकलीला संवरण की। श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने अपने ग्रन्थमें इशारेसे इसका आभास दिया है।

विज्ञायकालादयथा विहारिणः
प्रभोर्मतं सा निजचित्तवृत्तिभिः।
तामेव विच्छेदरुजं वताश्रिता
तदातिरोधात्तमिहाकरोन्मनः ॥
—श्रीचै० च० महाकाव्य ३. १००

शचीमाताके प्रति प्रभुवाक्यम्—

वधूस्तवासौ परलोकमागता
मातस्तदत्रास्ति महद्विकारणम्।
इयं कदाचिन्नहि मानुषी भवेत्
कस्यापि हेतोः पृथिव्यां समागता ॥
—श्रीचै०च० महाकाव्य ३. १२४

शचीमाताका शोक

गौरवक्ष विलासिनी श्रीश्रीलक्ष्मीप्रिया देवीकी अन्तर्धान लीला कहानी अत्यन्त करुण-रसात्मक है। कवि कर्णपूर गोस्वामीपाद रचित शचीमाताके मुखसे निःसृत इन करुणरसात्मक श्लोकोंका पाठ करके पाषाण भी द्रवित हो जाता है श्रीचैतन्यचरित महाकाव्यका अंश नीचे उद्धृत किया जाता है।

गतः सुतोये भवतीं समर्प्य
प्रियस्तवासौ मयि दुःखभाजि।
हीना तया तस्य मुखं कथं वा
द्रक्ष्यामि दुःखैक निवासभूमिः ॥
त्वया कृता प्रीतिरतीव गौरवं
निरन्तरं यत्र विशेष भक्तया।
कथन्त्विदानीं परिदेवनान्वितो
विलोक्यते न क्षणमप्ययं जनः ॥
आहूत मात्रैव मया ददासि
प्रहर्षभीति-स्मित-भक्ति-लज्जम्।
प्रत्युत्तरं हन्त कथंन्त्विदानी
न भाषसे मा रुदतीं सशोकाम् ॥
यद्वा मयि प्रीतिलवोऽपि नास्ति
ते बभूव दैवेन यदीदृशी गतिः।
अमुं तव प्राणपतिं ममात्मजं
न वीक्ष्य किंवा व्रजसि प्रियम्वदे ॥
असौ तव प्राणपतिः प्रियंकरो
निरन्तरं प्रेमनव प्रकाशिनि।
अमुं प्रति प्रीतिलवोऽपि नास्ति
ते किं मातरित्थं क्रियते यतस्त्वया ॥
निरन्तरं या गमनाय पत्यु-
र्विचिन्तयन्ती त्वमुदश्रु सुभ्रू।
विलोक्य मा साध्वस पूर्वमासीः
सलज्जम श्रूण्यपसारयन्ती ॥
या त्वं त्रपायै मयि साध्वसाय
स्वजीवितेशस्य वियोगदुःखम्।
दत्त्वा बहिश्चेतसि तप्यमाना
लज्जावती प्रत्यहमेवमासीः ॥
सा त्वं तदीपास्यसुधामयूखं
तवैव चेतः कुमुदैककान्तम्।
कठोरचित्ते तमवीक्ष्य साक्षात्
कथं कुतो वा व्रजति प्रसह्य ॥
कथं महाक्रूरमते विहाय मां
स्वभावमृद्वी भवता बधूरियम्।
अदंशि सर्प क्षणमप्यसौदया
त्वामेव स्पर्श न सांप्रतं ननु ॥
यदङ्गमेतत् कुसुमैः सुदूयते
वाष्पोष्मणा चापि शिरीषकोमलम्।
कथं नु वा तेऽसहतातिदुःसहं
विषाग्नितेजस्तदिदं हस्तास्मि तत् ॥
—श्रीचै. च. महाकाव्य ३. १०७-११६

ठाकुर जयानन्द अपने श्रीचैतन्यमङ्गल श्रीग्रन्थमें श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीके अन्तर्धान कालमें शचीमाता-की विलापोक्तिकी एक मर्मभेदी विलाप गीति लिख गये हैं। कृपालु पाठकवृन्दके आस्वादनके लिए वह करुण रसात्मक पद नीचे उद्धृत किया जाता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पट मञ्जरी राग।

आर ना जाइब घर, ना देखिब विश्वम्भर,
गङ्गाय मरिब लक्ष्मी सङ्गे।
पुत्रेर कराइल बिभा, केमने जानिब इहा,
गौराङ्ग रहिल गिया बङ्गे॥
कान्दे कान्दे शची ठाकुरानी॥ ध्रुव॥
ओहे श्रीनिवास, केमने बंचिब एकाकिनी॥
आमा हेन अभागिनी, नाहि देखि नाहि शुनि,
जत दूरे जाय लोन पाणि।
मिश्रपुरन्दर मइला, विश्वरूप संन्यास कइला,
गौराङ्गेर कि हय ना जानी॥
दारुण विषेर ज्वाले, प्राण दिल गङ्गाजले,
के आर करिबे मोर सेवा।
लक्ष्मीर चरित्र जत, स्वप्न हेन मोर मत,
छाड़ि गेला क्षीरोदसंभवा॥
हेनइ समय ध्वनि, हइल आकाशवाणी,
विष्णुप्रिया गौराङ्ग गृहिणी।
एइ मधु मास शेषे, गौराङ्ग आसिबे देशे,
जयानन्द मुखे दैववाणी॥

गङ्गाके तीरपर श्मशान घाटपर बैठकर शचीमाता विलाप कर रही हैं। श्रीवास पण्डित वहाँ उपस्थित हैं। उनको उद्देश्य करके वह इस प्रकार विलाप करती हैं। वहाँ नवद्वीपवासी सब लोग उपस्थित थे। पुत्रबधूके पार्थिव शरीरको वक्षःस्थलमें धारण करके गङ्गाके किनारे शचीमाताने जो हृदय विदारक आकुल-क्रन्दनकी करुण ध्वनि उठायी, उससे सारे नदियावासीके हृदयमें शूल बेधने जैसी वेदना हुई। आज तक यह विलापगीति पाठ करके गौर-भक्तगण व्याकुल होकर रो पड़ते हैं। इससे उनके सारे पाप धुल जाते हैं और उनका हृदय पवित्र और निर्मल हो जाता है। कलिका भजन रुदन है। श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दर कलिग्रस्त जीवोंके दुःखसे रो-रोकर प्रेमाश्रुसे पृथिवीको प्लावितकर गये हैं। श्रीगौर भगवान्‌ने स्वयं रोकर जगत्‌के जीवोंको रुलाया है। वह रोकर विजयी हुए हैं। कृष्ण-प्रेममें क्रन्दनका नाम ही प्रेमभक्ति है। शास्त्रकार कहते हैं—

सहजेइ वैष्णवेर रोदन उचित।
जन्म जन्म जाने जाँरा कृष्णेर चरित॥
—चै. भा. म. १८. १९८

अतएव यह करुण रसात्मक भगवत-लीला पाठके द्वारा जीवका रुदन ही कलिग्रस्त जीवका भजनाङ्ग है। महाजनगण यही कहते हैं—

"कलिर भजन केवल रोदन।"

यह रुदन चित्तशुद्धिका प्रधान उपाय है। अतएव हे कलिग्रस्त जीव! तुम हृदय खोलकर 'हा गौराङ्ग' कहकर एक बार रोओ। रोकर देखो, कितना सुख पाते हो, कितना आनन्द पाते हो।

पूर्वबङ्गसे प्रभुका आगमन

मातृभक्त प्रभुने शिष्यगणके साथ नौकासे उतर कर एक बार अपने घर आकर अपनी पूजनीया जननीको दण्डवत् प्रणाम किया। तत्पश्चात् वे अपने परिकरवृन्दके साथ गङ्गास्नान करने गये।

पुत्रबधूके शोकसे मर्माहत शचीमाता मनके दुःखको मनमें ही दबाकर सारा काम छोड़कर पुत्रके लिए रन्धन करने गयी। क्योंकि उनका निमाईचाँद अपराह्नमें घर आया है, मध्याह्नमें भोजन नहीं हुआ है। बहुत दिनोंसे पुत्रको उन्होंने अपने हाथसे पाक करके नहीं खिलाया है। आज पुत्रबधू जीवित रहती तो ये सारे गृहकार्य वही करती, शचीमाताको कितना आनन्द होता?

पुत्रका मुँह देखकर वृद्धा शचीमाताने पुत्रबधूके दुर्जय शोकको संवरण किया। उन्होंने एक बार भी क्रन्दन नहीं किया। कहीं उनके प्राणप्रिय निमाईको दुःख न हो जाय, इसलिए आँखोंके आँसू उन्होंने चुपचाप अञ्चलसे पोंछ लिये। उन्होंने अकेले ही सारा रन्धनकार्य किया। पुत्रके साथ बहुत लोग आये हैं वे सभी प्रसाद पायेंगे। शचीमाताने जल्दी-जल्दी सारे कार्य सँभाल लिये। मालिनी देवी और सर्वजया देवीने आकर प्रभुकी लायी हुई सारी सामग्री

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उठाकर घरमें रखी। सबका मन उदास था, आँखोंमें आँसूकी धाराएँ थी, परन्तु कोई कुछ खुलकर बोल नहीं रहा था।

यथा समय प्रभु गङ्गास्नान करके गङ्गामें केलि करके घर लौटे। प्रभुके पुराने सेवक ईशानने उनके भव-विरिञ्चि-अभिवाञ्छित श्रीचरणकमल-युगलको धोकर सूखे वस्त्र पहननेके लिए दिये। ईशानके मुँहसे भी कोई बात नहीं निकल रही है।

प्रभुने तब विष्णु-मन्दिरमें जाकर पूजा आदि कृत्य समाप्त किये और ठाकुरको भोग लगाकर प्रसाद पानेके लिए बैठे। स्नेहमयी शचीमाताने नाना प्रकारके शाक व्यञ्जनादिके द्वारा पुत्रको परम परितोषपूर्वक भोजन कराया। भोजनके बाद ईशानने प्रभुको ताम्बूल दिया।

प्रभुने एकबार ईशानकी ओर तीक्ष्ण दृष्टिसे देखा, कोई बात नहीं बोले। इसका मर्म कृपालु पाठक समझ लें। प्रभुको आशा थी कि उनकी प्राणबल्लभा आकर अपने हाथसे उनको ताम्बूल देगी। उस आशासे निराश होकर ताम्बूल चर्वण करते-करते दुःखित अन्तःकरणसे वे विष्णुमन्दिरके द्वारपर जा बैठे। उस समय उनके आत्मीय स्वजन, पड़ोसी लोग आकर उनको चारों ओरसे घेर कर बैठ गये। सबके साथ वह मौखिक हास-परिहासके साथ बङ्ग देशकी बातोंका अनुकरण करके अपने पूर्वबङ्ग यात्राकी लीला-कथा कहने लगे।

प्रभुके साथ-साथ सभी हँस रहे थे, परन्तु वह हँसी उनकी बाहरी हँसी थी। कहीं प्रभुके मनमें कष्ट न हो, इसलिए अब तक नदियावासी कोई उनको उनकी पत्नी-वियोगका संवाद देनेका साहस न कर सका। शचीमाता घरके भीतर बैठकर सब देख-सुन रही हैं, वे पुत्रसे छिपाकर प्राणतुल्य पुत्रबधूके शोकमें अजस्र आँसू बहा रही हैं, परन्तु पुत्रके पास नहीं आ रही हैं। अन्तर्यामी प्रभु सब समझते हैं, और जानते हैं।

प्रभुके सम्मुख शोक-समस्याका उद्‌घाटन

प्रभु माताको पास न देखकर कुछ अस्थिर हुए। वहाँसे उठकर माताके पास घरमें गये। स्नेहमयी जननीको दुःखी देखकर उनकी आँखोंमें अश्रुप्रवाह देखकर श्रीगौराङ्ग सुन्दरने उनकी गोदमें सिर रखकर दोनों बाँह उनके गलेमें डालकर स्नेहपूर्वक पूछा—"मां! तुम दुःखिता-सी क्यों हो? क्या कारण है इसका? इतने दिनोंके बाद मैं दूरदेशसे कुशल-पूर्वक घर आया हूँ, तुमको अच्छी तरह मङ्गल मनाना चाहिये, लेकिन तुम्हारा उदास मुख देख रहा हूँ। मुझे सत्य-सत्य बताओ, इसका क्या कारण है?"

सर्वज्ञ प्रभुकी लीलाभङ्गी देखकर हँसी आती है। रङ्गीले प्रभुकी लीला भक्तके मनोरञ्जनके लिए होती है। वे सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, साक्षात् भगवान् हैं। उनको कुछ भी अविदित नहीं। तथापि वे जो छल करके अपना मनोभाव छिपाते हैं, यही उनकी लीला है। यही उनके प्रच्छन्न अवतारका प्रछन्नत्व है।

शोकाभिभूता शचीमाता पुत्रकी बातका क्या उत्तर देतीं? वे अपने प्राणप्रिय निमाईचाँदको गोदमें लेकर अजस्र आँसू बहाने लगीं। उनकी आँखोंके दो उष्ण बूँद प्रभुके श्रीअङ्गपर पड़ते ही, उनका सारा शरीर रोमाञ्चित हो गया। वे उठ बैठे और सिर नीचा करके अत्यन्त मृदु स्वरमें रुँधे कण्ठसे बोले—"मां! मुझे लगता है तुम्हारी बधुका कुछ अमङ्गल हुआ है।"

प्रभुके निजमुखसे उनके पत्नी-वियोगकी बात सुनकर वहाँ उपस्थित उनके आत्मीय स्वजन और पड़ोसी लोग आँखोंमें आँसू भरकर साहसपूर्वक बोले—"पण्डितराज! आपकी पत्निको गङ्गा-प्राप्ति हो गयी।"

अब प्रभुने स्पष्ट सुना कि उनकी प्राणप्रियाको गङ्गा प्राप्ति हो गयी है, वे स्वधामको चली गयी हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह शोक-संवाद सुनकर प्रभु सिर नीचा करके कुछ देर चुप रहे।

श्रीश्रीगौर भगवान् नर-शरीर धारण करके हमारे समान मनुष्य बनकर बहुत साधसे विवाह करके गृहस्थ बने थे। बड़ी आशा करके गृहस्थाश्रमके सुखकी लालसासे धनोपार्जनके लिए दूरदेशमें प्रवास-यात्रा उन्होंने की थी। बड़ी आशा करके वे कुछ धनरत्न आदि वस्तुएँ लेकर प्रवाससे घर लौटे थे। उनको बड़ी आशा थी कि अपनी प्रियतमाको यह सब ऐश्वर्य दिखावेंगे, उनको सुख देंगे। श्रीभगवान्की आशा धूलमें मिल गयी।

इस बातकी व्याख्या करनेपर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ तैयार हो जायगा। श्रीभगवान् जब नरवपु धारण करके सर्वोत्तम नरलीला करनेके लिए विप्रगृहमें शचीके गर्भमें उदय हुए हैं तो उनको नरलीलाके सारे अङ्गोंका अभिनय करना पड़ेगा। लीलाके सारे अङ्ग परिपूर्णरूपसे अभिनीत हुए बिना लीलारस संभोग पूर्ण नहीं होता। नरलीलाके सुख और दुःख, दोनों ही रस श्रीभगवान्के आस्वादनकी वस्तु हैं, लीलाके उपकरण हैं। लीलामाधुर्य रसकी पुष्टिके लिए ही सुख-दुःखकी सृष्टि होती है। त्रितापदग्ध दुःखी और सन्तापी मनुष्यकी भव-दावानलकी प्रखरता केवल आँखसे देखने, और कानसे सुनने-से ही अनुभूत नहीं होती। स्वयं उस दुःखी-तापी जीवके स्थानका अधिकार प्राप्त किये बिना उसकी मर्म-व्यथाकी अनुभूति नहीं होती, उनकी हृदय-वेदना हृदयङ्गम नहीं की जा सकती। इसीकारण जीव-सखा, जीव-बन्धु श्रीभगवान्ने नरवपु धारण करके इस दुःखमयी नरलीलाको प्रकट किया। इस दुःख-पूर्ण लीलारङ्गको प्रकट करते समय श्रीभगवान्ने जीव-प्रकृतिके वशीभूत होकर जीव-दुःख अनुभव करके मनमें दुःख पाया। इसी कारण सर्वसुखमय आनन्दस्वरूप हमारे प्रभुने क्षणभरके लिए दुःखको अङ्गीकार किया। पतित-पावन श्रीगौराङ्ग सुन्दरने जगाई-मधाईके सारे पापोंको ग्रहण करके क्षणभरके लिए कालीयवर्ण धारण करके जीव-जगतको दिखाया था कि वे पापीके पापको भी ग्रहण करते हैं। फिर दुःख ग्रहण करनेमें आश्चर्यकी बात ही क्या है?

प्रभु स्वयं धैर्य धारण करके शोकातुरा जननीको सान्त्वना देते हुए उपदेश देने लगे। वे पहले स्नेहमयी जननीसे बोले—"माँ! तुम शोक मत करना, तुम्हारी पुत्रबधू किसलिए पृथिवीपर आयी थी, और क्यों वह स्वधामको चली गयी—यह सब मैं जानता हूँ।" तदुपरान्त भागवतका श्लोक—

"कस्य के पति-पुत्राद्या मोह एवहि कारणम्।"

—श्रीम. भा. ८. १६. १९

पाठ करके प्रभुने माताको तत्त्वकी बात समझाते हुए कहा—"माँ! दुःख न करो। जो भवितव्य होता है वह टाला नहीं जा सकता। कालकी ऐसी ही गति है। कौन किसका है? इसलिए वेद संसारको अनित्य बताते हैं। सारा संसार भगवान्के आधीन है, दूसरा कौन संयोग-वियोगकर सकता है? अतएव जो कुछ हुआ है, सब भगवानकी इच्छासे हुआ है। उसमें दुःख क्यों मानना चाहिये? स्वामीके रहते ही जिस भाग्यवान रमणीको गङ्गा प्राप्ति हो जाय उससे बढ़कर भाग्यशाली और कौन होगा?"

प्रभु माताको इस प्रकार उपदेश दे रहे हैं, और उनके गलेमें अपनी सुवलित दोनों भुजाएँ डालकर आदर कर रहे हैं। शोकातुरा शचीमाता पुत्रस्नेहसे विह्वल होकर कुछ समयके लिए प्राणाधिका पुत्रबधूके दुर्जय शोकको भूल गयीं। उन्होंने अपने सोनेके निमाईचाँदके मुखचन्द्रको बारम्बार चुम्बन प्रदान करते हुए स्नेहपूर्वक मृदु मधुर वचनोंसे कहा—"बेटा निमाई! सोनेके चाँद! मेरे अँधेरे घरके माणिक्य! तुम घर आ गये हो, बहुत दिनोंके बाद मैंने तुम्हारे चन्द्रमुखको देखा है, यह मेरा परम भाग्य है। मेरे घरकी लक्ष्मी घरमें ही है, वह कहीं नहीं गयी। इसी नवद्वीपमें हैं, फिर आवेगी। शीघ्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ही हमारा अँधेरा घर पुनः आलोकित होगा।" प्रभु और कुछ बोल न सके। शचीमाताके मनका भाव समझकर वे मन ही मन मुस्कराने लगे।

मैने स्वरचित 'श्रीश्रीलक्ष्मीप्रिया चरित' में लिखा है कि श्रीश्रीलक्ष्मीप्रियाका तेज श्रीश्रीविष्णुप्रिया देवीमें प्रवेश किया, गौर श्रीभगवान्‌की ऐश्वर्य-लीलाकी अधिष्ठात्री देवी, वैकुण्ठकी लक्ष्मीदेवी उनकी माधुर्यलोलाकी अधिष्ठात्री देवी, स्वरूपशक्ति साक्षात् भक्तिदेवी श्रीश्रीविष्णुप्रियाके साथ मिलकर श्रीगौराङ्ग प्रभुकी पूर्ण शक्तिके रूपमें श्रीधाम नवद्वीपमें विराजने लगी। इसी कारण शची माताने कहा कि, लक्ष्मी नवद्वीपमें ही है।

पुनः कार्यमें संलग्न प्रभु और माताका शोक उद्वेलन

प्रभु स्वतन्त्र पुरुष हैं; वे शोक और दुःखके परे हैं। वे पत्नीका शोक भूलकर पुनः विद्या-विलासरसमें मत्त हो गये। पूर्वबङ्ग देशकी यात्रा करके नवद्वीप आने पर निमाई पण्डित दूने उत्साहके साथ अगणित-छात्र मण्डलीको लेकर अध्ययन-अध्यापन कार्य करने लगे। उनका सुप्रसिद्ध विद्यालय अब तक मुकुन्द सञ्जयके चण्डीमण्डपमें अवस्थित था। प्रातःकाल गङ्गास्नान करके अपने मन्दिरमें बैठकर सन्ध्यावन्दन आदि नित्य नैमित्तिक क्रिया करके विद्यालयमें जाते हैं। वहाँ जानेके पहले प्रतिदिन माताको प्रणाम करके उनकी चरणधूलि ग्रहण करते हैं।

उनके विद्यालयमें असंख्य छात्र हैं। पूर्वबङ्गसे अब दलके दल छात्र आ रहे हैं। मुकुन्द सञ्जयका पुत्र पुरुषोत्तम उनका प्रिय भक्त और शिष्य है। पिता-पुत्र काय-मन-वचनसे प्रभुके विद्या-विलासमें सहायता करते हैं। मुकुन्द सञ्जयकी गोष्ठी प्रभुको बहुत प्रिय है। उनका घर प्रभुका विद्याविलास-मन्दिर है।

प्रभु तो विद्या-विलासके रङ्गमें व्यस्त हो गये। परन्तु शचीमाताका मन बड़ा व्याकुल है। बहुत दिनके बाद पुत्रका मुख देखकर उनके मनमें आनन्द तो हुआ, परन्तु उनके हृदयमें शान्ति नहीं है, उनको गृहस्थीमें सुख नहीं है। नित्यधामको प्राप्त पुत्रबधूके परम पवित्र चरित्र और अनुपम गुणराशिको वे जितना ही याद करती है, उतना ही उनका हृदय उन्मथित होता है, एक एक करके सारी पूर्व स्मृति स्मृतिपथमें आती है। श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीकी अपरूप रूपराशि तथा उनकी पवित्र चरित्र-कथा स्मरण करके शचीमाता व्याकुल होकर रोने लगती हैं। निमाईचाँदके विवाह की बात उनको याद हुई, जिस दिन साक्षात् बैकुण्ठको लक्ष्मीदेवी उनके घर आयी, उनका घर वैकुण्ठ जान पड़ने लगा, घरमें दिव्य-ज्योतिका आविर्भाव हुआ, पुत्रबधूके अङ्गसे एक अपूर्व ज्योति निकली। शचीमाताने यह सब अपनी आँखों देखा था। पुत्रबधूके सर्वाङ्गमें पद्मगन्ध महँ-महँ करता था, जहाँ वह रहती थी, वह स्थान पद्मगन्धसे आमोदित हो उठता। शचीमाताने ये सारे सुलक्षण देखकर समझा था कि उनके घरमें कमलका अधिष्ठान हुआ है। वह सबसे कहती थीं —

—"बूझिलाम कारण इहार।
ए कन्यार अधिष्ठान आछे कमलार॥"

चै० भा० आ० ७.२४

उन्होंने यह भी देखा कि जिस दिनसे उनकी यह सर्व-सुलक्षणा पुत्रबधू घरमें आयी थी, उस दिनसे उनका दारिद्र्य दुःख नष्ट हो गया था। उनके घरमें लक्ष्मीका भण्डार हो गया था। अब यह सब पूर्व-स्मृति एक एक करके शचीमाताके मनमें उदय होने लगी, और वे व्याकुल होकर रोने लगी।

पुत्रको वे इस विषयमें कुछ नहीं कहती थीं। क्योंकि इससे उनके जीवन-सर्वस्व निमाईचाँदके मनमें दुःख होगा। शचीमाता पुत्रका हृदय समझती थीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निमाईचाँदका मन अब गृहस्थीमें उतना नहीं लगता। पहले निमाई घर पर बहुत देर रहते, अब वे विद्यारसमें दिन-रात उन्मत्त रहते हैं। घर पर भोजन और शयनके सिवा अन्य समय माता पुत्रको नहीं देख पाती थी। शचीमाता अतिशय चतुर और बुद्धिमती थीं; पुत्रका हृदय पत्नी-वियोगसे व्यथित है, उसका मन गृह कर्मसे उदास रहता है, यह समझना उनके लिए शेष न रहा। वे इन सारी बातोंको सोचती हैं और एकान्तमें बैठकर अजस्त्र आँसू बहाती हैं। अपनी प्रिय सखी श्रीवासकी पत्नी मालती देवीको बीच बीचमें मर्म वेदनाकी बातें कहकर हृदयके भारको हल्का करतीं हैं।

इस प्रकार प्रभु विद्यारसमें उन्मत्त होकर नवद्वीपमें विद्या-विलास कर रहे हैं। उनके छात्र असंख्य हैं, दिन-प्रतिदिन उनमें वृद्धि ही हो रही है।

सारे नवद्वीपके लोग प्रभुकी अद्भुत पाण्डित्य-प्रतिभा देखकर मुग्ध हैं, सभी उनके गौरवसे गौरवान्वित हैं, सबके मनमें अतुल आनन्द है। नदियावासी बड़े ही भाग्यवान् हैं, इसीकारण उनको यह अपूर्व आनन्द उपभोग करनेका सुयोग और सौभाग्य प्राप्त है। पूज्यपाद श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने ठीक ही लिखा है—

से आनन्द देखिलेक जे सुकृतिजन।
ताने देखिलेओ खण्डे संसार-बन्धन॥

—चै. भा. आ. ८. २८३

परन्तु जीवाधम ग्रन्थकार ऐसा पापिष्ठ, ऐसा अभागा है कि उस समय इस अभागेका जन्म न हुआ, उस सुखसे बञ्चित होकर आज जीते जी भी मृतवत् है।

हइल पापिष्ठ जन्म नहिल तखने।
हइलाम बञ्चित से सुख दरशने॥

—चै. भा. आ. ८. २८४

परन्तु इसकी एक सान्त्वना है, श्रीगौराङ्गलीला-रसास्वादनका उसने परम सौभाग्य प्राप्त किया है। श्रीगौराङ्ग प्रभु पूर्व सम्बन्ध मानते हैं। परम पूजनीय नित्यसिद्ध ठाकुर बलराम दासके वंशका कुलाङ्गार समझकर परम दयालु श्रीनिमाईचाँदने केश पकड़कर कृपालेश दान करके कृतार्थ किया है।

—★—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बीसवाँ अध्याय

दिग्विजयी पण्डित उद्धार

"जे शुनये गौराङ्गेर दिग्विजयी जय। कोथाओ ताहार पराभव नाहिं हय॥"

—श्रीचै. भा. आ. ९. २०७

पं० केशव काश्मीरीका नवद्वीपमें आगमन

जिस समय निमाई पण्डित पूर्वबङ्गकी यात्रा करके नवद्वीपमें विद्या-विलास-रसमें मग्न थे, उनकी असाधारण पाण्डित्य-प्रतिभासे भारतवर्षकी सारी पण्डित-मण्डली मुग्ध थी, उनका यश सौरभ और विद्यागौरव सारे देशमें व्याप्त हो रहा था, उसी समय नवद्वीपमें एक दिग्विजयी पण्डित आकर उपस्थित हुए। वे काश्मीरके प्रसिद्ध पण्डित थे, सर्वशास्त्र-विशारद थे, सरस्वतीके वरपुत्रके रूपमें सबके द्वारा सम्माननीय थे। इस स्वधर्मनिष्ठ पण्डित-शिरोमणिके वचनोंको हमारे गोस्वामीपाद-गणने प्रामाणिक मानकर ग्रहण किया है। उनका नाम श्रीकेशव आचार्य था, लोगोंमें केशव काश्मीरीके नामसे प्रसिद्ध थे। उनकी रची एक श्रीमद्भागवतकी टीका भी है। वह विद्याके बल दिग्विजय करनेके उद्देश्यसे सारे भारतवर्षके विद्यापीठोंमें पर्यटन करके अन्तमें नवद्वीपके पण्डित समाजको अपनी विद्या-गौरव-परीक्षाका स्थल चुना। उन्होंने सोचा था कि नवद्वीपके पण्डित समाजको जीत लेनेपर उनका दिग्विजयी नाम सार्थक होगा।

केशव काश्मीरी महान् पुरुष थे। उनके साथ बहुतसे लोग, हाथी, घोड़ा, पालकी, कहार, झण्डा, नगारा आदि सब कुछ था। गङ्गाके किनारे एकान्तमें एक घर भाड़ा करके वे कुछ दिन वहाँ रहे। पाण्डित्यके अभिमानमें तथा विद्यागर्वमें गर्वित होकर वे छाती ऊँची करके कपोतके समान नवद्वीपके राजपथमें भ्रमण करते थे, और अपने विद्या-गौरवकी डींग मारते थे।

पण्डितोंके समाजमें उन्होंने डङ्का पिटवाकर प्रचार कर दिया, कि "नवद्वीपके पण्डितोंके साथ मेरा शास्त्रार्थ होगा, शास्त्रार्थमें परास्त होनेपर मुझको विजयपत्र लिखकर देना पड़ेगा। यदि कोई मुझे परास्त कर देगा तो मैं अपना सारा सम्पत्ति उसको दे दूँगा।"

दिग्विजयी पण्डित सरस्वती-मन्त्रके उपासक और सरस्वतीके वरपुत्र थे। सरस्वती देवीने उनको प्रत्यक्षरूपमें दर्शन देकर वर प्रदान करके कृतार्थ किया था। उनके साथ विद्यायुद्धमें विजय प्राप्त करना नितान्त दुष्कर समझकर नदियाकी पण्डित मण्डली बड़ी भयभीत हुई, और किसीको साहस न हुआ कि उनके सामने जाय। पण्डित मण्डलीमें खलबली मच गयी। उस समय सब काम छोड़कर लोग इस दिग्विजयी पण्डितकी ही बात सोचने लगे।

निमाई पण्डितको सूचना

निमाई पण्डितके कानोंमें यह बात पहुँची। उनके छात्रोंने नवद्वीपमें दिग्विजयी पण्डितके आगमनका सारा विवरण सुनाया।

प्रभुने यह सुनकर मुस्कराते हुए मधुर शब्दोंमें उत्तर दिया—"भगवान् किसीका अहङ्कार सहन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं करते। जो मत्त होकर अहंकर करता है, उसके अहंकारका भगवान् नाश कर देते हैं। फलोंवाले वृक्ष और गुणवान् व्यक्तिके स्वभावमें सदा नम्रता रहती है। हैहय, नहुष, वेणु, नरकासुर, रावण आदि महा-दिग्विजयो जो सुननेमें आये हैं, उनमें-से किसका गर्व चूर्ण नहीं हुआ।"

इस प्रकार बातें करते-करते सरस्वतीपति प्रभुने दर्पहारी श्रीभगवान्‌की बात कहकर विद्यागर्वसे गर्वित दिग्विजयी पण्डित केशव काश्मीरीके विद्या-गर्वको खर्व करनेका सङ्कल्प किया। मनके भावको छिपाकर श्रीगौर भगवान्‌ने अपने छात्रोंको इशारेसे दिग्विजयो-उद्धार-लीलाका एक आभास दिया। वे हँसकर बोले—"तुम लोग देखना, उनका अहंकारका यहीं संहार होगा।"

गङ्गा तटपर निमाई पण्डित और गङ्गाजीकी शोभा

उस दिन सन्ध्याकालमें निमाई पण्डित शिष्य और छात्रगणके साथ गङ्गातट पर गये। गङ्गाके किनारे बैठकर विद्याचर्चा करना उनका नित्य कर्म था। परन्तु उस दिन उनके विद्या-विलास-ऐश्वर्यको देखकर नदियावासी सब लोग मुग्ध और स्तम्भित हो गये थे। पूर्णिमाकी रजनीके ज्योत्स्नामय आकाशमें हीरक-खण्डके समान क्षुद्र-क्षुद्र असंख्या तारक-राजि शोभा दे रही थी।

गङ्गाके तीर मृदु-मन्द सान्ध्य समीरण बह रहा था। मृदुल हिलोरसे गङ्गाकी तरङ्गें उच्छ्वसित धवल वारिपुञ्जसे सुशोभित होकर प्रभुकी चरण-वन्दनाके उद्देश्यसे बारंबार तीर स्पर्श कर रही थी। कमल-लोचन प्रभु उच्च बेलाभूमि-खण्डके ऊपर योगपट्टके ढङ्गसे वस्त्र पहनकर योगासनपर बैठे थे। जान पड़ता था कि शुभ्रफेनपुञ्जसे पण्डित सुरसरिकी लघु लघु बीचि मालाएँ एकके बाद एक मानो पुष्प हाथमें लिये झुण्डकी झुण्ड मुनिबालिकाओं-के समान प्रभुके श्रीपाद पद्ममें अर्घ्य प्रदान करनेके लिए धीरे-धीरे अग्रसर हो रही हैं। उनकी प्रीति पुष्पाञ्जलि और प्रेम-अर्घ्यके निर्मल वारिबिन्दु धीरे धीरे प्रभुका पाद-स्पर्श कर रहे हैं। विष्णु पादोद्भवा गङ्गादेवी यह देखकर प्रेमानन्दमें आकुल होकर हँस रही हैं। उनकी अपूर्व तरङ्ग-भङ्गिया देखकर जान पड़ता है, मानो वह आज आनन्दमें विभोर होकर परम सुन्दरी मुनि-कन्याओंके द्वारा अपने अभीष्ट देव श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी श्रीचरणसेवा-का आयोजन कर रही है। भाग्यवती मुनिकन्याओंके सौभाग्यकी सीमा नहीं है। गङ्गा देवीके भी आनन्दकी सीमा नहीं है। गङ्गा देवीको आज इतना आनन्द क्यों है? उनके हृदयमें आज इतना आनन्दोच्छावस क्यों है? उनके अभीष्ट देवकी पूजाका इतना आयोजन क्यों है?

प्रभु आज दिग्विजयी पण्डितके द्वारा अपनी पादोद्भवा तथा श्रीचरणाश्रिता गङ्गाजीकी महिमा कीर्तन करायेंगे। और पतितोद्धारिणी गङ्गाकी महिमाके कीर्तनके बलसे सरस्वतीके वर पुत्र केशव काश्मीरीको सर्वार्थ सिद्धि प्राप्त होगी। उनका उद्धार होगा। पतित-पावनी गङ्गाकी महिमा कीर्तनका फल दिखानेके लिए उनकी महिमा बढ़ानेके लिए ही प्रभुकी आजकी यह गङ्गा-तीरकी लीला थी, दिग्विजयीका जय तो एक बहाना मात्र था। देवी सुरसरि पतितोद्धारिणी है, कृष्ण-भक्ति प्रदायिनी हैं। वे नित्य प्रभुकी सेवा करती हैं, उनके श्रीचरणोंका स्पर्श करती हैं। प्रभु उनकी सेवासे सन्तुष्ट होकर आज दिग्वजयी पण्डितके द्वारा उनका गुण-गान करायेंगे। शत श्लोकोंके द्वारा, उनकी स्तुति करायेंगे।

भक्तके भगवान् सदासे ही भक्तका गुणगान करते आ रहे हैं, भक्तके भगवान् भक्तका मान बढ़ाने के लिए शतमुख हो जाते हैं। इससे भक्तकी अभिमान वृद्धि नहीं होती। गङ्गा देवीको प्रभुके श्रीचरणोंकी सेवा प्राप्त है, इसी आनन्दसे वे विभोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होकर अपूर्व तरङ्ग भङ्गिमाके द्वारा अपने मनका भाव प्रकट कर रही हैं। उनकी महिमाका कीर्तन किया जायगा, इस अभिमानसे वे आनन्दमें नृत्यकर रही हैं।

पूर्णिमाका चन्द्र नवद्वीप-गगनमें मनः प्राणको मुग्ध करनेवाली किरणोंका जाल फैलाकर नवद्वीप-वासी नर-नारीके मन-प्राणको शीतल कर रहा है। भागीरथके तटपर ज्योत्स्नाका आलोक उद्भासित हो रहा है। गङ्गाका तट उज्ज्वल चन्द्रकिरणोंसे विधौत हो रहा है। श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र अपरूप रूपका जाल बिछाकर गङ्गातट पर छात्रमण्डलीके साथ बैठे हैं। जान पड़ता है कि आकाशका पूर्ण चन्द्रमा तारक-राशिके साथ नीचे गङ्गातट पर आकर उदय हो रहा है। आज गङ्गाके घाटपर बड़ी शोभा है।

दिग्विजयीका गङ्गातट पर आगमन

निमाई पण्डित अपनी सर्वचित्ताकर्षक भुवनमोहन अपरूप रूपराशिकी अपूर्व किरण-रश्मि विकीर्ण करके गङ्गाके तटपर विद्याविलास रङ्गमें उन्मत्त हैं। सारी नदियाके सब भाग्यवान् लोग एक टकसे उनकी अपरूप रूपसुधा पान कर रहे हैं, और कान लगाकर उनके श्रीमुखकी अपूर्व सुधावाणी श्रवण कर रहे हैं। उसी समय उस स्थानमें अचानक दिग्विजयी पण्डित आकर उपस्थित हुए। प्रभु विद्याचर्चामें उन्मत्त थे, किसी दूसरी ओर उनका ध्यान न था। दिग्विजयी पण्डित पहले गङ्गाकी स्तुति करके अलक्षित रूपमें एक टकसे उस नवीन पण्डितके कन्दर्पदर्पहारी भुवन-मोहन अपरूप रूपराशिको देखने लगे। वे इतने देशोंमें भ्रमण कर चुके थे, इतने लोगोंको देखा था, परन्तु ऐसा रूपवान् मनुष्य उनको कहीं दृष्टिगत नहीं हुआ था। जीवनमें आज वह एक अपरूप रूपवान् मनुष्यको देखकर रूप-मुग्ध तरुणीके समान एक टक प्रभुके श्रीवदनकी ओर देखते रहे।

श्रीगौराङ्गके रूपकी ज्योतिसे उनकी आँखें चौंधिया गयीं। वे गोरा रूपके फन्देमें फँस गये। उनके मनमें हुआ, 'यह क्या हुआ? यह कौन हैं?, इस प्रकार विचार करते हुए अत्यन्त उत्कण्ठित चित्तसे उनने निमाई पण्डितके किसी छात्रसे पूछा—"इनका क्या नाम है?"

उनको उत्तर मिला—"प्रसिद्ध निमाई पण्डित"

दिग्विजयी पण्डितने नदियाके निमाई पण्डितका केवल नाम सुना था, और सुना था कि वे केवल नवीन व्याकरणके पण्डित हैं। उनके मनमें यह भाव था कि व्याकरण शिशु-शास्त्र है, उसमें है ही क्या? प्रभुके गङ्गातटस्थ विद्यापीठमें दिग्विजयी पण्डितके आने पर प्रभुने आदर पूर्वक उठकर उनको सम्मान पूर्वक पास बैठाया। श्रीगौराङ्ग सुन्दर सदासे ही मानीका मान रखते हैं। और मर्यादाकी रक्षा करते हैं।

प्रभुसे वार्तालाप और गङ्गा-महिमाका वर्णन

दिग्विजयी पण्डितने निमाई पण्डितकी छात्र सभामें बैठकर प्रभुको सम्बोधन करके उपेक्षा पूर्वक पूछा—"तुम्हारा ही नाम निमाई पण्डित है? तुम कलाप व्याकरण पढ़ाते हो? इस बाल्य शास्त्रोंमें तुम्हारा बड़ा नाम सुना है। तुम्हारे शिष्योंको आपसमें [1]फाँकि और संलाप सुना है मैंने।"

प्रभु दिग्विजयी पण्डितके मुखसे इस प्रकार पाण्डित्याभिमानपूर्ण विद्यागर्व सुनकर कुछ मुस्कराये। उद्धत-शिरोमणि हमारे प्रभुने अपने औद्धत्यका कुछ भी परिचय नहीं दिया। उन्होंने अत्यन्त नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—

---

१. संगत विषयको असंगति दिखाकर संगतिके उद्देश्यसे प्रश्न किया जाता है उसको फाँकि कहते हैं।

२. उक्ति प्रत्युक्तिमय वाक्यको संलाप कहते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"मैं नवीन छात्र हूँ, और आप प्रवीण पण्डित हैं। मैं आपके सामने शिशुके समान हूँ। मैं व्याकरण पढ़नेका केवल अभिमान करता हूँ, परन्तु व्याकरणके निगूढ़ तत्त्वको नहीं समझता, मेरे छात्र भी नहीं समझते।"

दिग्विजयी पण्डित प्रभुकी दैन्योक्ति सुनकर हँस उठे। प्रभुकी बातका मर्म समझनेकी शक्ति उनमें नहीं थी। वे विद्या-विद्यागर्वसे गर्वित थे। हृदयमें अभिमान रहने पर श्लेषपूर्ण दैन्य वाक्य समझनेकी क्षमता नहीं रहती। चतुर चूड़ामणि प्रभुने जब देखा कि उनके दैन्य वाक्यसे दिग्विजयी पण्डितके मनमें विद्याभिमान और अधिक उल्लसित हो रहा है, तब उन्होंने अतिशय नम्रतापूर्वक कहा—"आप दिग्विजयी पण्डित हैं, आपके कवित्वका यश-सौरभ सारे देशमें व्याप्त है। कृपा करके यदि आप कुछ गङ्गाका माहात्म्य वर्णन करें तो सुनकर मेरे पाप नष्ट हो जाँय और मैं कृतार्थ हो जाऊँ।"

प्रभुके श्रीमुखसे आत्मप्रशंसा और गुण-गरिमाकी बात सुनकर दिग्विजयी पण्डित बहुत आनन्दित हुए और शत श्लोककी माला तत्काल रचना करके बड़े गर्वके साथ गङ्गाकी महिमा कीर्तन करने लगे। एक घटिकाके भीतर उन्होंने बड़ी शीघ्रतापूर्वक शतश्लोक समन्वित गङ्गाके स्तोत्रका पाठ किया।

प्रभुने गङ्गास्तोत्र सुनकर परम आनन्द प्राप्त किया। उपस्थित श्रोतओंको बड़ा आश्चर्य हुआ। प्रभुने सबके सामने दिग्विजयी पण्डितको सम्बोधन करके कहा—"आपके समान पृथिवी-पर और कोई भी कवि नहीं है। उपस्थित पण्डित मण्डलीने एक स्वरसे स्वीकार किया कि, मनुष्यको ऐसी स्फुरणा नहीं हो सकती।

दिग्विजय पण्डितकी स्वभाव-सिद्ध-द्रुत कवित्व शक्ति देखकर सबको आश्चर्य सा-लगा, और स्तम्भित भावसे अवाक् होकर कठपुतलीके समान सब खड़े रह गये।

एक श्लोककी व्याख्या

चतुर चूड़ामणि दर्पहारी श्रीगौर-भगवान्ने दिग्विजयी पण्डितको बहुत सम्मान करके हँसते हुए कहा—"आपके श्लोकोंका अर्थ समझनेकी शक्ति किसमें है? या तो आप हो उनका अर्थ जानते है या सरस्वती देवी। यदि किसी एक श्लोकका अर्थ श्रीमुखसे वर्णन करें तो सबको बड़ा सुख मिलेगा।"

दिग्विजयी पण्डित प्रभुकी बात सुनकर हँसकर बोले—"निमाई पण्डित! तुम किस श्लोककी व्याख्या सुनना चाहते हो, कहो।" चतुर चूड़ामणि प्रभुने हँसते हँसते उस दिग्विजयी पण्डितके कण्ठसे उच्चारित शत-श्लोकोंमें-से निम्नलिखित श्लोककी पुनरावृत्ति कर दी—

महत्त्वं गङ्गायाः सततमिदमाभाति नितरां
यदेषा श्रीविष्णोश्चरणकमलोत्पत्तिसुभगा।
द्वितीय-श्रीलक्ष्मीरिव सुरनरैरर्च्यचरणा
भवानीभर्तुर्या शिरसि विभवत्यद्भुतगुणा॥*

---

* अन्वय—गङ्गाया (गङ्गाकी) इदं (यह) महत्वं (महिमा) सततं (सर्वदा) नितरां (निश्चयरूपसे) आभाति (देदीप्यमान रही है); यत् (क्योंकि) एषा (यह गङ्गा) श्रीविष्णोः (श्रीविष्णुके) चरणकमलोत्पत्तिसुभगा (चरणकमलसे उत्पन्न होनेके कारण अत्यन्त सौभाग्यवती हैं), द्वितीय-श्रीलक्ष्मीरिव (द्वितीय-श्रीलक्ष्मीकी तरह) सुरनरैः (देव-मनुष्यादि द्वारा) अर्च्यचरणा (पूजितचरणा—पूजिता हैं), या च (एवं जो) भवानीभर्तुः (भवानी-भर्ता महादेवके) शिरसि (मस्तकपर) विभवति (विराज रही हैं) [अतः] (इसलिए) [या] (जो) अद्भुतगुणा (अद्भुत गुणशालिनी हैं)।

अनुवाद—जो श्रीविष्णुके चरणकमलसे उत्पन्न होनेके कारण परम सौभाग्यवती हैं, सुर-नर द्वारा द्वितीय—लक्ष्मीके चरणोंकी तरह जिनके चरण पूजित हैं, एवं जो भवानीके भर्ता (महादेवके) मस्तक पर विराजित होनेके कारण अद्भुत गुणशालिनी हुई हैं, उन गङ्गकी यह महिमा निरन्तर निश्चय रूपसे देदीप्यमान रही है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुके श्रीमुखसे अपने द्वारा रचित श्लोककी पुनरावृत्ति सुनकर दिग्विजयी पण्डित एक बारगी विस्मित और स्तम्भित होकर प्रभुके श्रीमुखचन्द्रकी ओर देखने लगे। उन्होंने प्रभुसे कहा—"मैं झझावतके समान द्रुत गतिसे श्लोक रचना करके पढ़ता गया, तुमने उनमें-से यह श्लोक कण्ठस्थ कैसे कर लिया।"

प्रभुने मृदु मधुर मुस्कानके साथ उत्तर दिया—"पण्डितवर! आप देवताके वरसे जैसे कविवर हो गये हैं, उसी प्रकार उसी देवताके वरसे कोई श्रुतिधर भी तो हो सकता है।"

दिग्विजयी पण्डितने प्रभुके उत्तरसे सन्तुष्ट होकर निजकृत श्लोककी व्याख्या प्रारम्भ कर दी।

श्लोकके गुण-दोष पर विचार और दिग्विजयीका पराभव

श्लोककी व्याख्या सुनकर प्रभु गम्भीरतापूर्वक बोले-"पण्डितवर! आपके मुखसे आपके रचित श्लोककी व्याख्या सुनकर मुझे परम सन्तोष प्राप्त हुआ। अब आप इसके दोष-गुणका विचार करें, और मैं सुनूँ।',

दोषकी बात सुनते ही अभिमानी दिग्विजयी पण्डित एक बारगी तप्त तेलमें पड़े बैंगनके समान जल उठे। वे रोषान्वित दृष्टिसे प्रभुकी ओर देखकर बड़े गर्वके साथ बोले, "मेरे रचे श्लोकमें दोषका आभास भर नहीं। इस श्लोकमें उपमा अलङ्कार, गुण है और अनुप्रास भी हैं।"

दिग्विजयी पण्डितकी बात समाप्त होने पर प्रभुने अति नम्रतापूर्वक उनसे कहा—"आप दिग्विजयी पण्डित हैं। आपके रचे श्लोकमें दोष है, यह कहते भी भय लगता है। परन्तु कहे बिना नहीं रहा जाता।"

पाण्डित्याभिमानी दिग्विजयी पण्डित प्रभुकी बात सुनकर अभिमान और क्रोधसे जल उठे। वे रोषमें भरकर प्रभुसे बोले—"तुम केवल व्याकरणी हो, अलङ्कार तुमने नहीं पढ़े, तुम इस कवित्वके सारको क्या समझ सकते हो।"

प्रभुने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—"मैं अलङ्कार पढ़ूँ या न पढ़ूँ, लेकिन पण्डितोंके मुखसे अलङ्कारकी चर्चा सुनता आया हूँ। आप पण्डित हैं, मैं आपसे ही पूछता हूँ, अपने श्लोकका दोष-गुण आप स्वयं विचार करें। आपने केवल गुणकी बात कही है, दोषकी बात तो कुछ कही नहीं।"

विद्यागर्वसे उन्मत्त दिग्विजयी पण्डितका क्रोध यह सुनकर और बढ़ गया। उन्होंने गर्वके साथ उत्तर दिया, "जो मैंने कहा है, वह निर्भ्रान्त है और वह वेदका सार है।"

प्रभुने पुनः हँसकर कहा, "आप क्रोध न करें। आपके श्लोकमें बहुत दोष और बहुत गुण भी हैं।"

दिग्विजयी पण्डितने बहुत सोच विचारकर प्रभुको उनके श्लोकोंके गुण-दोषपर विचार करनेकी अनुमति दी।

दिग्विजयी पण्डितकी अनुमति पाकर निमाई पण्डित उनके श्लोकके गुण-दोषका विचार करने लगे। गुणी पुरुषकी मर्यादाकी रक्षा करनेमें प्रभु कितना तत्पर रहते थे, कृपालु पाठकवृन्द इसीसे समझ लें। दिग्विजयी पण्डितकी अनुमतिके बिना प्रभु उनके रचे श्लोकके गुण-दोष पर विचार करनेको प्रवृत्त नहीं हुए। धर्म-प्रवर्त्तक और मर्यादा-रक्षक प्रभुने लोक शिक्षाके लिए दिग्विजयी पण्डितकी मर्यादाकी सम्यक प्रकारसे रक्षा की।

प्रभुने कहा, "इस श्लोकमें पाँच दोष हैं और पाँच अलङ्कार गुण हैं। एक-एक करके मैं आपसे कहता हूँ, आप सुनिये। आपके श्लोकमें दो स्थान 'अविमृष्ट विधेयांश' दोषसे युक्त है। (१) गङ्गाका महत्त्व, यह श्लोकका 'विधेय' है। 'इदं' पदका प्रयोग करके आप 'अनुवाद' का भाव लाये हैं। पहले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'अनुवाद' कहकर पीछे 'विधेय' कहा जाता है* । आपके श्लोकमें अनुवादके पहले ही विधेय वर्णित हुआ है। अतएव यह श्लोक 'अविमृष्ट विधेयांश'** दोषसे दूषित है। (२) 'द्वितीय-श्रीलक्ष्मीः' है, 'द्वितीय' शब्द विधेय (अज्ञान वस्तु ज्ञापक) है। अतः 'श्रीलक्ष्मी'के साथ समास करके 'द्वितीय' शब्द पहले रखनेसे 'अविमृष्ट-विधेयांश' दोष तो हुआ ही है, लक्ष्मीकी समता अर्थ भी नष्ट हो गया है। श्लोकस्थ 'सुरनरैरर्च्य-चरणा' शब्दसे आपका भाव है—'लक्ष्मीदेवीकी तरह गङ्गादेवी भी देव-मनुष्य द्वारा अर्च्य-चरणा है।' 'द्वितीय-श्रीलक्ष्मीरिव' कहनेसे यह भाव प्रकट नहीं होता। इससे यह भाव प्रकट होता है कि गङ्गा द्वितीय लक्ष्मीके तुल्य है। 'द्वितीय-लक्ष्मी' शब्द लक्ष्मीको नहीं बताता, परन्तु लक्ष्मीके समान गुणयुक्त कोई अन्य स्वरूपको बताता है। लक्ष्मीकी अपेक्षा द्वितीय लक्ष्मीन्यून है; अतः द्वितीय-लक्ष्मी तुल्य कहनेसे लक्ष्मीसे समता नहीं रहती। द्वितीय शब्दके साथ समास करनेसे लक्ष्मीकी समताका अर्थ नष्ट हो गया। लक्ष्मीके कुछ गुणोंसे उपयुक्ता द्वितीय लक्ष्मीके तुल्यत्वके सूचित होनेसे शब्दार्थ गौणत्वको प्राप्त हुआ है।

इतना कहकर प्रभुने जब अन्य दोषकी बात उठायी, तब दिग्विजयी पण्डितका मुखमण्डल मानो लज्जा और अपमानसे स्याह हो गया। वे कोई बात न कहकर मुँह नीचा करके विमर्ष भावसे प्रभुके श्रीमुखसे अपने रचित श्लोकके दोषोंकी व्याख्या सुनने लगे। प्रभु तीसरा दोष कहने लगे—

"आपके रचे 'भवानी भर्त्तुः' पदमें एक अन्य दोष स्पर्श कर रहा है। इस दोषका नाम है 'विरुद्ध-मतिकृत्'*। इस दोषसे पदविन्यासके प्रकृत अर्थमें विरुद्ध प्रतीति उत्पन्न होती है। 'भवानी भर्त्ता' शब्दका अर्थ 'भवकी पत्नी भवानीका भर्त्ता' जान पड़ता है। उसके आगे भर्त्ता पदका व्यवहार करनेपर द्वितीय भर्त्ता अर्थकी प्रतीति होने लगती है। यह दोष सामान्य दोष नहीं है।

दिग्विजयी पण्डितके पाण्डित्याभिमानमें बड़ा आघात लगा। वे लज्जा और अपमानसे मस्तक अवनत करके मृतवत् बैठे रहे। उनके मुँहसे बात न निकली।

---

* अनुवादमनुक्त्वातु न विधेयमनुदीरयेत्।
न ह्यलब्धास्पदं किञ्चित् कुत्रचित् प्रतितिष्ठति॥

अर्थात्—अनुवाद (ज्ञात वस्तु) न कहकर विधेय (अज्ञान वस्तु) कहना उचित नहीं। क्योंकि, जिस वस्तुका आश्रय निर्दिष्ट नहीं हुआ, ऐसी कोई भी वस्तु किसी भी स्थानपर प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकती। दृष्टान्त—'यह विप्र बहुत विद्वान् है'—इसमें 'विप्र' ज्ञात वस्तु है और 'बहुत विद्वान' अज्ञात वस्तु है। वाक्य निर्माणमें पहिले 'विप्र' और पीछे 'बहुत विद्वान' कहना ठीक है पहले विद्वान और पीछे विप्र कहना ठीक नहीं है। बहुत विद्वान है यह विप्र—कहना अलङ्कार शास्त्रके अनुसार ठीक नहीं है।

** अविमृष्ट विधेयांश दोषका नाम काव्यप्रकाशमें भी पाया जाता है, यथा—"सन्दिग्धमप्रतीतम्, ग्राम्यनैयार्थमथ भवेत् क्लिष्टम्, अविमृष्य विधेयांशम्।"

अविमृष्यः प्राधान्येन अनिर्दिष्टो विधेयांशो यत्र तस्य भाव अविमृष्य विधेयांशता। अर्थात् जिस स्थलमें प्राधान्यतः विधेयांश निर्दिष्ट नहीं होता, उसका नाम है 'अविमृष्य विधेयांशता'। इस दोषका दूसरा नाम है 'विधेयाविमर्श'।

* 'विरुद्धमति' या 'विरुद्ध मतिकृत्'—विरुद्धमतिं विरुद्धबुद्धिं कारयतीति विरुद्ध मतिकारी, तस्यभावः विरुद्धमतिकारिता। अर्थात् जिस शब्दके प्रकृत अर्थसे विरुद्ध अर्थकी प्रतीति हो जाय, तथा श्रोता-गणके हृदयमें विरुद्ध बुद्धि उत्पादन कराकर श्लोकके प्रकृत रसास्वादनसे उन्हें वञ्चित करे, उस दोषका नाम विरुद्धमतिकारिता है। यथा साहित्यदर्पणे—"भवानीशः शब्दो भवान्यां पत्यन्तर प्रतीतिं कारयित्वा विरुद्धमवगमयति।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने पुनः विनीत भावसे कहा—"आपके श्लोकमें एक और चौथा दोष है, उसका नाम है 'पुनरात्त (भाषामें समाप्त पुनरात्त)'।

क्रिया, कारक, विशेषण प्रभृतिके परस्परके साथ अन्वययुक्त कोई भी वाक्य समाप्त हो जानेपर भी इस वाक्यके अन्तर्गत किसी भी शब्दके साथ अन्वय-युक्त किसी भी पदका पुनः प्रयोग करनेसे पुनरात्त दोष होता है।

श्लोकके चतुर्थ पदमें 'विभवत्यद्भुतगुणा' वाक्य इस दोषसे दूषित है। विभवत्यद्भुनगुणा=विभवति +अद्भुतगुणा। 'विभवति' क्रिया पद है; श्लोकस्थ 'भवानीभर्त्तुर्या शिरसि' इस अंशके अन्तर्गत 'या' पदके साथ इस 'विभवति' क्रियाका अन्वय है—'या भवानीभर्त्तुः शिरसि विभवति—जो महादेवके मस्तकपर विराजित हैं'—इससे स्पष्ट दिखायी देता है कि 'विभवति' क्रियाके उल्लेखसे वाक्य समाप्त हो गया। इसके बाद 'अद्भुतगुणा' विशेषणका प्रयोग किया गया है। वाक्य समाप्तिके बाद इस विशेषणका प्रयोग करना 'पुनरात्त' दोष हुआ है।

दिग्विजयी पण्डित सिर अवनत करके प्रभुके श्रीमुखसे अपने रचे श्लोकके दोषोंकी व्याख्या सुनते जा रहे हैं। उनकी अब कुछ बोलनेकी शक्ति नहीं है। प्रभु भी उनको सहज ही छोड़ने वाले न थे। वे फिर बोले, "आपके श्लोकमें एक पाँचवाँ दोष और देख रहा हूँ। इस दोषका नाम है 'भग्नक्रम'। इसके तीन चरणोंमें अनुप्रास है, परन्तु एक चरणमें नहीं है। इस कारण इसमें क्रमभङ्ग दोष हैं।"

गुण-दोषके विचारके सम्बन्धमें प्रभुने अन्तिम बात कही। "यद्यपि आपके श्लोकमें पाँच अलङ्कार हैं, किन्तु पाँच दोषोंसे वे सब क्षय हो जाते हैं। यदि एक श्लोकमें दस अलङ्कार हों और एक दोष हो तो उससे सब अलङ्कारोंकी शोभा नष्ट हो जाती है। जैसे अनेक भूषणोंसे भूषित सुन्दर शरीरकी शोभा एक श्वेत कुष्टके निशानसे नष्ट हो जाती है। प्रमाण—

भरतमुनि वाक्यम्

रसालङ्कारवत् काव्यं दोषयुक् चेद्विभूषितम्।
स्याद्वपु सुन्दरमपि श्वित्रे नैकेन दुर्भगम्॥

दिग्विजयी पण्डित प्रभुके श्रीमुखसे अपने श्लोकका इस प्रकारसे दोष-गुण वर्णन सुनकर एक बारगी स्तम्भित हो गये। प्रभुने उनके मुखको देखकर ही समझ लिया कि उनका विद्यागर्व चूर्ण होगया है। वे इस प्रकार अपमानित होकर अपराधीके समान प्रभुके श्रीमुखकी ओर दीन-हीन असहायके समान एक-एक बार देख रहे हैं, और लज्जासे सिर अवनत कर रहे हैं। उनके मुखसे बात नहीं निकल रही है, उनकी पाण्डित्य-प्रतिभा निष्प्रभ हो रही है, बुद्धिवृत्ति निस्तेज हो गयी है। लोग आश्चर्यचकित हो देखते हैं कि इतने बड़े सरस्वती पुत्र दिग्विजयी पण्डितको उत्तर देनेके लिए सिद्धान्तकी स्फुरणा नहीं हो रही है, बुद्धि कहाँ चली गयी।

हमारे प्रभु दर्पहारी भगवान् हैं। दिग्विजयी पण्डित विद्यागर्वसे उन्मत्त होकर नवद्वीप जय करने आये थे। दर्पहारी श्रीगौर भगवान्ने उनके विद्या-दर्पको चूर्ण करनेकी इच्छा की। सर्वज्ञ प्रभु सब कुछ समझते हैं, परन्तु वे अभिमानी भक्तके सारे गर्वको एक बारगी चूर्ण-विचूर्ण किये बिना उनके ऊपर कृपा नहीं कर सकते। दिग्वजयी पण्डितको एक बारगी दीनाति दीन बनाकर उनको अहङ्कार-पापके गर्त्तसे केश पकड़कर उद्धार करनेकी इच्छा दर्पहारी भगवान्को हुई। अतएव प्रभुने पुनः उनसे पूछा, "दिग्विजयी पण्डित महाशय! अच्छा यह श्लोक रहने दीजिये। आप और कुछ बोलिये, जिसको लेकर विचार किया जाय।"

"प्रभु बोले ए थाकूक पड़ किछू आर।"

—चै. भा. आ. ९. १००

दिग्विजयी पण्डितके मुँहसे बात न निकली, बोलनेकी शक्ति न रही। वे निस्तब्ध, निर्वाक और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निस्पन्द भावसे बैठे रहे। वे मानो एक वारगी जड़ प्रकृतिको प्राप्त हो गये और प्रभुके सामने मोहग्रस्त हो गये।

दिग्विजयी पण्डितकी तत्कालीन अवस्था देखकर प्रभुके कोई-कोई शिष्य उनका उपहास करनेके लिए तैयार हुए। प्रभुने उनको इशारेसे मना कर दिया।

अब दिग्विजयी पण्डितने मन-ही-मन समझ लिया कि नदियाके निमाई पण्डित कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं। वे प्रभुके श्रीमुखचन्द्रकी ओर एक एक बार सप्रेम साश्रु-नयनोंसे देखने लगे। और मन ही मन सोचने लगे कि, "क्या यह मनुष्य हैं ? ऐसा रूप और गुण तो मनुष्यमें नहीं होता।"

नदियाके अवतार श्रीगौर भगवान् दयाके अवतार, करुणाके महासागर हैं,। दिग्विजयी पण्डितका मलिन मुख देखकर प्रभुके हृदयमें करुणाका उद्रेक हुआ। उन्होंने सोचा, "इतने बड़े जगन्मान्य दिग्विजयी पण्डित इस प्रकार विमर्श भावसे, म्लान मुख, अपमानित भावमें मेरे सामने बैठे हैं, इनके श्लोककी व्याख्या करके मैंने इनके मनको व्यथित किया है। अब इनके मनके दुःखको निवारण करनेके लिए कुछ स्तुति और प्रशंसा करनेकी आवश्कता है। यह सोचकर करुणामय श्रीगौर भगवान् अति विनीत भावसे मधुर वचन बोले, "दिग्विजयी पण्डित महाशय ! आपके श्लोकमें गुणोंकी भी कमी नहीं हैं। यह शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कारसे आभूषित है। 'पुनरुक्तवदाभास' काव्य शास्त्रका एक प्रधान प्रशंसनीय शब्दालङ्कार है। विरोधाभास अलङ्कारका आपने अत्यन्त आश्चर्यजनक रूपसे इस श्लोकमें प्रयोग किया है। आपके श्लोकका माधुर्य और लालित्यगुण सर्वत्र ही परिलक्षित हो रहा है।

इतना कहकर प्रभुने दिग्विजयी पण्डितके श्लोकके गुण बताने आरम्भ किये उनने कहा—"इस श्लोकमें पाँच अलङ्कार गुण हैं, दो शब्दालङ्कार और तीन अर्थालङ्कार।"

शब्दालङ्कार—

(१) पहिले चरणमें पाँच न-कार, तृतीय चरणमें पाँच र-कार और चतुर्थ चरणमें चार भ-कार हैं। ये अनुप्रास नामक शब्दालङ्कार हैं।

(२) 'श्रीलक्ष्मी' शब्दमें 'पुनरुक्तवदाभास' अलङ्कार है। यदि किसी वाक्यमें इस प्रकारके दो शब्द व्यवहृत हो, जो एकार्थ-वाचक-से लगे, किन्तु वास्तवमें वे एकार्थवाचक न हों, बल्कि विभिन्न अर्थमें व्यवहृत हुए हों, तब उन शब्दोंके व्यवहारमें 'पुनरुक्तवदाभास' अलङ्कार होता है। पुनरुक्तवदाभासः पुनरुक्तवदेव यः—अलङ्कार-कौस्तुभ ७. १९। श्री—शब्दका एक अर्थ है लक्ष्मी। अतएव 'श्रीलक्ष्मी' कहनेसे एक लक्ष्मी शब्द ही दो बार कहा गया (पुनरुक्त)-सा प्रतीत होता है; किन्तु वास्तवमें पुनरुक्ति नहीं है, कारण 'श्रीलक्ष्मी' शब्दमें लक्ष्मी-अर्थमें श्री-शब्द व्यवहृत नहीं हुआ है। यहाँ पर 'श्री' शब्दका अर्थ है शोभा, सौन्दर्य। श्रीलक्ष्मीका अर्थ है—श्रीयुक्त (शोभायुक्त—शोभा-सम्पन्न) लक्ष्मी ! श्री और लक्ष्मी शब्द-द्वयके अर्थमें विभिन्नता है, एकार्थता नहीं। इस प्रकार श्रीलक्ष्मी शब्दमें पुनरुक्ति-सी प्रतीत होनेपर भी वास्तवमें पुनरुक्ति नहीं है। इसलिए यहाँपर पुनरुक्तवदाभास-अङ्कार हुआ है।

ये तो हुए दो शब्दालङ्कार, अब तीन अर्थालङ्कार सुनिये। इन तीन अर्थालङ्कारोंमें एक है उपमा, एक है विरोधाभास एवं एक है अनुमान।

उपमालङ्कार—श्लोकस्थ 'लक्ष्मीरिव' पदमें उपमालङ्कार है। समानधर्म-स्थलमें उपमालङ्कार होता है। 'लक्ष्मीरिव सुरनरैरर्च्यचरणा' वाक्यसे जाना जाता है कि देव-मनुष्यगण लक्ष्मीके चरणोंकी जिस प्रकार अर्चना करते हैं, गङ्गाके चरणोंकी भी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वैसे ही अर्चना करते हैं। अतएव अर्चनीयत्व अंशमें लक्ष्मी और गङ्गा समान हैं; उमपान-लक्ष्मीमें एवं उपमेय-गङ्गामें अर्चनीयत्वरूप समान धर्मका सम्बन्ध रहनेसे 'लक्ष्मीरिव' पदमें उपमालङ्कार हुआ।

विरोधाभास-अलङ्कार—जहाँपर वास्तवमें कोई विरोध न हो, तथापि देखनेमें विरोध-सा प्रतीति हो, वहाँपर विरोधाभास अलङ्कार होता है। विरोधः स विरोधाभः। विरोधाभः इति वस्तुतो न विरोधः विरोध इव भासत इत्यर्थः—अलङ्कार कौस्तुभ ८.२६। श्लोकस्थ 'एषा श्रीविष्णोश्चरणकमलोत्पत्ति-सुभगा—श्रीविष्णुके चरणकमलसे उत्पन्न होनेके कारण यह गङ्गा सौभाग्यवती है'—इस वाक्यके अन्तर्गत 'कमलोत्पत्ति' पदमें विरोधाभास अलङ्कार हुआ है। उक्त वाक्यमें कहा है (विष्णुके चरणरूप) कमलसे (जलरूपा) गङ्गाकी उत्पत्ति ; किन्तु साधारणतः गङ्गासे ही (जलसे ही) कमल उत्पन्न होता है, कभी भी कमलसे गङ्गा (या जल) उत्पन्न नहीं होता ; अतएव कमलसे (पद्मसे) गङ्गाकी (जलकी) उत्पत्ति कहनेसे, सर्वजन विदित सत्यके साथ विरोध प्रतीत होता है ; किन्तु वास्तवमें यहाँ कोई भी विरोध नहीं है, कारण, साधारण कमलसे साधारण जलकी उत्पत्ति असम्भव होनेपर भी ईश्वरकी अचिन्त्य-शक्तिके प्रभावसे श्रीविष्णुके चरणरूप कमलसे जलकी अधिष्ठात्री देवी गङ्गाका जन्म सम्भव हुआ है ; अतएव, श्लोकस्थ वाक्यमें साधारण सत्यके साथ मनमें विरोध-सा प्रतीति होनेपर भी वास्तवमें कोई विरोध नहीं है, इसलिए यहाँपर विरोधाभास अलङ्कार हुआ है।

अनुमान-अलङ्कार—'महत्वं गङ्गायाः' श्लोकके प्रथम दो चरणोंमें अनुमान-अलङ्कार हुआ है। साध्य और साधनके कथनको अनुमान-अलङ्कार कहते हैं। साध्यसाधनसद्भावेऽनुमानमनुमानवत् —अलङ्कार-कौस्तुभ ८. ३८। साध्य—प्रतिपाद्य विषय, जो प्रमाण करना है साधन-हेतु, कारण। गङ्गाका महत्व ही इस श्लोकका प्रतिपाद्य विषय है, गङ्गाका महत्व स्थापन करना ही इस श्लोकका उद्देश्य है; अतएव गङ्गाका महत्व ही यहाँपर साध्यवस्तु है। विष्णु-पादोत्पत्ति ही हुआ उसका (महत्वका) साधन (या हेतु)। विष्णुके पाद-पद्मसे उत्पन्न होनेके कारण ही गङ्गाका यह महत्व है ; अतएव विष्णुके पाद-पद्मसे उत्पत्ति होना ही हुआ गङ्गाके महत्वका कारण (साधन)। साध्य और साधन एक साथ उल्लिखित होनेसे ही अनुमान अलङ्कार होता है।

प्रभुके मतसे यह स्थूल विचार हुआ। इस श्लोकका सूक्ष्म विचार करने पर और भी अनेकों गुण-दोष दिखलायी दे सकते हैं।

दिग्विजयी पण्डित प्रभुके श्रीमुखसे सूक्ष्य विचारकी बात सुनकर और अधिक विस्मित हुए। इसकी अपेक्षा और भी सूक्ष्म विचार हो सकता है, यह उनके मनमें न जँचा। वे जडवत् स्तम्भित हो रहे। और मन ही मन सोचने लगे—

जे व्याख्या करिल मनुष्येर नहे शक्ति।
निमाइ मुखे रहि बोले आपने सरस्वती॥

चै० च० आ० १६. ८४

दिग्विजयी पण्डित महाशय मन ही मन सोचने लगे। किस दैवी कारणसे वह सरस्वती देवीके कोपसे पतनको प्राप्त हुए हैं। ऐसी बात यदि नहीं है तो इस बालक वैयाकरणी निमाई पण्डितके सामने उनकी बुद्धि क्यों लुप्त हो गयी ? निमाई पण्डित बालक हैं तौ भी इनके जिह्वा पर सरस्वतीका अधिष्ठान है, किसी दुर्दैववश सरस्वती देवीने मुझको छोड़कर इस नवीन पण्डितकी जिह्वा पर आश्रय लिया है। अपने मनको इस प्रकार प्रबोध देकर इतनी देरके बाद साहस करके उन्होंने अति विनीत भावसे प्रभुसे कहा—"निमाई पण्डित ! तुम्हारी व्याख्या सुनकर मैं विस्मित हो गया है। तुमने अलङ्कार शास्त्र नहीं पढ़ा है और न उसका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अभ्यास किया है। सब अर्थोंका तुमने कैसे प्रकाश किया ?"

हमारे रङ्गीले प्रभुने यह सुनकर दिग्विजयी पण्डितके साथ एक रङ्ग किया। सर्वज्ञ प्रभुने दिग्विजयी पण्डितके मनकी बात समझकर कहा—

शास्त्रेर विचार भाल मन्द नाहिं जानि।
सरस्वती जे बोलाय सेइ बलि बाणी॥

चै० च० आ० १६. ८८

प्रभुकी बात सुनकर दिग्विजयी पण्डितके मनका विश्वास दृढ़ हो गया। उन्होंने सोचा कि निश्चय ही सरस्वती देवीके सामने उनसे कोई अपराध हो गया है, जिससे मुझसे ऐसा अशुद्ध श्लोक कहवाकर, उनने एक शिशु-पण्डितके द्वारा मेरा पराजय करवा दिया।

यह सब दिग्विजयी पण्डितके मनकी बात है। उन्होंने खुल कर कुछ प्रकट नहीं किया। धर्मरक्षक प्रभु सदासे ही मानीकी मर्यादाकी रक्षा करते आये हैं। उन्होंने सम्मान पूर्वक अन्तमें दिग्विजयी पण्डितसे कहा—"आप महापण्डित कवि-शिरोमणि हैं, जिनके मुखसे ऐसी काव्य वाणी प्रकट होती है। आपका कवित्व गंगाजलकी धाराके समान है। आपके जैसा कवि कहीं देखने-सुननेमें नहीं आया। भवभूति, जयदेव, कालीदास—इन सबके कवित्वमें दोष मिल सकते हैं। दोष-गुणका विचार तो साधारण बात है, कवित्व-शक्ति बखानने योग्य है। मेरे शैशव-चापल्यको आप ग्रहण न करे, मैं तो आपके शिष्यके बराबर भी नहीं हूँ।"

दिग्विजयी पण्डितको प्रभुके श्रीमुखसे आत्मस्तुति सुनकर मनमे कुछ सुख तो मिला, परन्तु कोई उत्तर न दे सके। प्रभुने पुनः उनको नम्रतापूर्वक कहा—"बहुत रात बीत चुकी है, आप भी श्रान्त हो गये है, अतः अब आप विश्रामके लिए अपने वास स्थान पर पधारिये, कल आपके साथ और बातचीत होंगी।"

प्रभुके व्यवहार और मधुर वचनसे दिग्विजयी पण्डितका अभिमानी मन कुछ शान्त तो हुआ, परन्तु अपमान और लज्जाके वश होकर किसीसे कुछ बात न कर सके, और न किसीकी ओर मुँह उठाकर देख सके। वे दुःखित मनसे वहाँसे उठे। उठनेके पूर्व प्रभुके पादपद्मसे सिर पर्यन्त वे अनिमेष दृष्टिसे देखते रहे। उनके मनमें कितने भाव उदय होने लगे, यह कहा नहीं जा सकता। उनके हृदय-समुद्रमें भाव-तरङ्ग मधुर लीलाएँ करने लगी। सर्वप्रधान भावका विषय था कि "यह हैं कौन ? मनुष्यमें तो ऐसा रूप, ऐसी पाण्डित्य-प्रतिभा नहीं देखी जाती। तो क्या ये मनुष्य नहीं हैं ?" यह सोचते-सोचते दिग्विजयी पण्डित उस रातमें अपने वास स्थानकी ओर चले। रास्तेमें रँगीले प्रभुकी इच्छासे उनके मनके भावमें परिवर्तन हुआ। वे दुःखित अन्तःकरणसे सोचने लगे—"सरस्वतीने स्वयंने मुझे वर दिया है कि न्याय, सांख्य, पातञ्जल; मीमांसा-दर्शन, वैशेषिक, वेदान्तमें निपुण जितने लोग हैं उनमें-से किसीका भी मुझको जीतना तो दूर रहा, मेरे समकक्ष भी नहीं हो सकेंगे। ये ब्राह्मण (निमाई पण्डित) तो बालकोंको व्याकरण पढ़ाते हैं, इनने मुझे जीत लिया, ऐसी विधिकी घटना है। सरस्वतीका दिया हुआ वरदान भी बदल गया, यही संशय मुझे लग रहा है। मुझसे तो देवीके प्रति कोई दोष हुआ दीखता नहीं, फिर मेरी प्रतिभाका संकोच कैसे हो गया ?"

इस प्रकार चिन्तासे कातर होकर दिग्विजयी पण्डित अपने वास स्थानकी ओर चले। उस समय डेढ़ पहर रात बीत चुकी थी।

स्वप्नमें सरस्वती देवी

दिग्विजयी पण्डित घर जाकर एकान्तमें अपने इष्ट-चिन्तनमें लग गये। वे सरस्वती मन्त्र-उपासक और मन्त्र-सिद्ध थे। जप समाप्त करके ब्राह्मण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रात्रिके अन्तिम पहरमें सोये। निद्रा आते ही उन्होंने स्वप्न देखा कि साक्षात् सरस्वती देवी उनके सिरके पास बैठकर कह रही हैं—"विप्रवर ! तुमको वेद गोप्य बात बता रही हूँ। यदि इसको किसीके सम्मुख प्रकट करोगे तो तुम्हारी आयुकी हानि होगी। जिनसे तुमको पराजय मिली है, वे अनन्त ब्राह्मण्ड-नाथ हैं। मैं तो निरन्तर उनके चरणोंकी दासी हूँ। उनके सम्मुख होनेमें भी मुझे लज्जा आती है। मैं जो तुम्हारी जिह्वा पर बैठती हूँ, उनके सामने मेरी शक्ति नहीं ठहर सकती। मेरी तो बात ही क्या है, शेष भगवान सहस्र जिह्वासे वेदका बखान करते हैं, ब्रह्मा-शिव आदि जिनकी उपासना करते हैं, ऐसे शेष भी उनके सामने मोहित हो जाते हैं। जो परब्रह्म नित्य, शुद्ध, अखण्ड, अव्यय, परिपूर्ण होकर सबमें विराजते हैं, भक्ति-ज्ञान-विद्या-शुभ-अशुभ-दृश्य-अदृश्य जितने भी पदार्थ हैं, सबका प्रलय जिनके द्वारा होता है; उन्हीं प्रभुको तुमने विप्र-रूपमें साक्षात् देखा है। ब्रह्मादि जो भी सुख-दुःख पाते देखनेमें आते हैं, वह सब उन्हींकी आज्ञासे होता है। मत्स्य-कूर्म आदि जितने अवतार हैं वे सभी ये विप्र हैं और कोई नहीं है। उन्हींके बाराह रूपसे पृथ्वीकी स्थापना हुई है। वे ही नृसिंह रूपसे प्रह्लादके रक्षक हैं। वे ही वामन रूपसे बलिके जीवन हैं। उन्हींके पद-नखसे गङ्गाका जन्म है। उन्हींने अयोध्यामें अवतीर्ण होकर रावण आदि दुष्टोंका वध किया है। वे ही बसुदेव नन्दपुत्र अब विप्रपुत्र होकर विद्या रसमें कुतुहली हैं। बेद भी उनके अवतारको क्या जानेंगे। जनाने पर ही जान सकते हैं, नहीं तो किसकी शक्ति है जो उनको जान सके। तुमने जितने मेरे मन्त्र जपे हैं, उनका फल दिग्विजयी होना न होगा। मन्त्रका जो फल होता है, उसको अब तुमने प्राप्त कर लिया है कि अनन्त ब्रह्माण्ड नाथको साक्षात्में देख पाये हो। अब तुम शीघ्र जाकर अपने आपको उनके चरणोंमें समर्पण करदो। इसको स्वप्न नहीं समझना, मन्त्रके वश होकर मैं तुमको वेद गोप्य-बात बता रही हूँ।"

इतना कह कर सरस्वती देवी अन्तर्धान हो गयी।

दिग्विजयीका शरणापन्न होना

भाग्यवान् दिग्विजयी पण्डित स्वप्न टूटने पर जागकर आनन्दमें गद्गद होकर बहुत शीघ्र प्रभुके सन्निधानमें आकर उपस्थित हुए। उस समय प्रातः काल हो गया था। प्रभु अपने मन्दिरमें अकेले विराजमान थे। दिग्विजयी पण्डितने आकर एक बारगी प्रभुके चरणोंमें गिरकर रो-रोकर सम्पूर्ण भावसे आत्मसमर्पण किया। प्रभुने उनको छातीसे लगाकर प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया।

प्रभु मानो कुछ भी नहीं जानते। चतुर चूड़ामणि प्रभुने अपने स्वभावसिद्ध वाक्-चातुर्यके साथ दिग्विजयी पण्डितसे पूछा—"क्यों भाई ! यह क्या व्यवहार है।"

दिग्विजयीने उत्तर दिया—"तुम्हारी कृपादृष्टि जो हुई है।"

प्रभु पुनः हँसकर बोले—"आप दिग्विजयी पण्डित हैं, फिर मेरे साथ ऐसा क्यों करते हैं ?"

दिग्विजयी पण्डितने हाथ जोड़कर उत्तर दिया—"विप्रराज ! आपको भजनेसे ही सब कार्य सिद्ध होते हैं। कलियुगमें विप्ररूपमें आप ही साक्षात् नारायण हैं। आपको पहचाननेकी शक्ति किसमें है ? मुझे उसी समय संशय हुआ था। आपके पूछनेपर भी मुझे वाक्यकी स्फुरणा नहीं हो रही थी। आपको ही वेद 'गर्वशून्य सर्वेश' कहते हैं, आपने तीन बार मेरा पराभव किया, तो भी मेरा गौरव बनाये रक्खा। यह क्या ईश्वरके बिना कोई कर सकता है ? अतएव आप निश्चय ही नारायण हैं। गौड़, तिरुहुत, दिल्ली, काशी, गुजरात, विजयनगर, काञ्ची, हेलग, तैलङ्ग, उड़िशा आदि स्थानोंमें जितना पण्डित समाज है, उनके लिए मेरे वाक्योंमें दूषण निकालना तो दूर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रहा, मेरे वाक्य समझ लेनेकी भी उनमें शक्ति नहीं है। ऐसी मैं आपके साथ सिद्धान्त-चर्चा नहीं कर सका, मेरी सारी बुद्धि कहाँ चली गयी? आपकी ऐसी शक्ति है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। सरस्वती देवीने स्वयंने मुझे बताया है कि आप ही उनके स्वामी हैं। बड़े शुभलग्नमें मेरा नवद्वीपमें आगमन हुआ कि भवकूपमें डूबे हुए मुझको आपके दर्शन हुए। अविद्या-वासनाके बन्धनसे मोहित होकर, तत्त्वकी बात भूलकर, अपने आपकी वञ्चना क के अब तक डोलता रहा। सौभाग्यसे अब आपके दर्शन मिले, अब मेरे प्रति शुभ-दृष्टि करके मेरा उद्धार कीजिये। दूसरेके उपकार करना आपका स्वभाव-धर्म है। आपके अतिरिक्त दयालु शरण्य और कोई नहीं है। मुझे ऐसा उपदेश कीजिये जिससे मेरे चित्तमें फिर कभी दुर्वासना न हो।"

ये अन्तिम बात कहते-कहते पाण्डित्याभिमानी, विद्यागर्वसे गर्वित दिग्विजयी पण्डितकी दोनों आँखोंसे छल-छल आँसू बहने लगे। वे और कुछ न बोल सके। कण्ठ गद्गद हो गया। प्रभुके चरणोंमें गिरकर दीन-हीन दुर्बल, असहाय बालकके समान रोने लगे। प्रभुने देखा कि दिग्विजयी पण्डितका पाण्डित्य गर्व पूर्णतः चूर्ण-विचूर्ण हो गया। उनका शुष्क हृदय करुणा रससे द्रवित होकर श्रीभगवानके वास-स्थानके उपयुक्त हो गया।

दिग्विजयीपर कपा

श्रीकृष्ण-भजनोपदेश देनेका उपयुक्त समय और सुयोग देखकर सर्वज्ञ प्रभु हँसकर बोले—"विप्रवर! आप बड़े भाग्यवान हैं, जिनकी जिह्वापर सरस्वतीका अधिष्ठान है। विद्याकी सार्थकता दिग्विजय करनेमें नहीं है, ईश्वर-भजन ही विद्याकी सार्थकता सब बताते हैं। विचारकर देखिये, देह छोड़कर जानेपर धन या पौरुष कोई साथ नहीं जाता। इसलिए महा-पुरुष सब कुछ छोड़कर दृढ़ चित्तसे ईश्वर-सेवा करते हैं। आप भी सब जंजाल छोड़कर श्रीकृष्ण चरणोंका भजन करिये। जब तक मरणकाल नहीं आ पहुँचता, तब तक निश्चयपूर्वक श्रीकृष्ण-सेवन करिये। यदि श्रीकृष्ण-पादपद्मोंमें चित्त-वृत्ति लग जाय, तो वही विद्याका फल है। यह महोपदेश मैंने आपको बताया कि अनन्त संसारमें विष्णु-भक्ति ही सत्य है।"

इतना कहकर करुणासागर हमारे प्रभुने दिग्विजयी पण्डितको प्रेमालिङ्गन प्रदान कर कृतार्थ करके अपने वक्षःस्थलमें कसकर पकड़ लिया। पण्डितका सर्वाङ्ग पुलकित हो गया, आँखोंसे अश्रु-धारा बह चली, वे सब प्रकारके बन्धनसे मुक्त हो गये। वे जीवन्मुक्त होकर प्रभुके नित्य दास हो गये। प्रभुने उनको आत्मसात् कर लिया।

दर्पहारी श्रीगौर भगवान्ने देखा कि अब ज्ञान-गर्वित पाण्डित्याभिमानी विप्रको उद्धार करनेका यही ठीक समय है। उन्होंने उनको हरिनाम महा-मन्त्रमें दीक्षित करके गुरुके समान उपदेश दिया—

"विप्र! सब दम्भ परिहरि।
भज गिया कृष्ण सर्व भूते दया करि॥"
—चै. भा. आ. ९. १८२

तब दयामय प्रभुने उनको वैष्णव धर्मका सार-तत्त्व समझाया। 'जीवे दया, नामे रुचि, वैष्णव सेवन'—यही मूलतत्व है, यह उन्होंने बतलाया। 'सब दम्भ परिहरि' इस वाक्यमें प्रभुने अपने 'तृणादपि सुनीचेन' श्लोकका मर्म समझाया। दिग्विजयी पण्डितने प्रभुके उपदेशको गलेका रत्नहार बना लिया। प्रभुकी कृपा प्राप्त करके दिग्विजयी पण्डित विश्व-विजयी हो गये। उन्होंने तब अपना सारा स्वप्न-वृत्तान्त प्रभुके श्रीचरणोंमें निवेदन किया। कलिके प्रच्छन्न अवतार श्रीगौर भगवान्ने उनको एकान्तमें ले जाकर कानोंमें चुपचाप कहा—"आपको सरस्वतीने जो कुछ बताया है, उसको किसीके सामने प्रकट न करना। यह वेद गुह्य बात प्रकट करनेसे परमायुका क्षय और परलोकमें हानि होगी, यह निश्चय जानना।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदियाके अवतार कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। प्रकट कालकी उनकी सारी लीलाएँ गुप्त हैं। अपनी गुप्त लीलाओंका सारा रहस्य प्रकट कालमें व्यक्त न करनेका आदेश अपने भक्तवृन्दको देकर वे अपने प्रच्छन्न अवतारत्वकी महिमा और मर्यादाकी रक्षा कर गये हैं। उन्होंने जब जहाँ अपनी ऐश्वर्य लीला प्रकटकी है, वहाँ ही इस प्रकारका निषेध* वाक्य प्रयुक्त किया है।

---

*(क) तैथिक ब्राह्मणके प्रति प्रभु वाक्य (बाल्य लीला)

कहिलाय तोमारे ए सब गोप्य कथा।
कति स्थाने इहा नाहि कहिबे सर्वथा॥
यावत थाकिबे मोर एइ अवतार।
तावत कहिले कारे करिनु संहार॥
—चै. आ. भा. ३. २९१-२९२

(ख) तपन मिश्रके प्रति (पूर्वबङ्ग यात्रा-लीलामें)

वेद गोप्य ए सकल ना कहिबे कारे।
कहिले पाइबे दुःख जन्म-जन्मान्तरे॥
—चै० भा० आ० १०. १२३

(ग) सार्वभौम भट्टाचार्यके प्रति (नीलाचल लीलामें)

जे किछु देखिला तुमि प्रकाश आमार।
संगोप करिबा पाछे जाने केह आर॥
—चै० भा० अं० ३. १३९

(घ) राजा प्रतापरुद्रके प्रति (नीलाचल-लीलामें)

सबे मात्र एक वाक्य राखिबा आमार।
मोरे ना करिबा तुमि कोथाओ प्रचार॥
एबे यदि आमारे प्रचार कर तुमि।
तबे हेथा छाड़ि सत्य चलिब्राङ् आमि॥
—चै०भा०अं० ९ ५. २०२, २०३

(ङ) श्रीवास पण्डितके प्रति (नीलाचल लीलामें)

प्रभु बोले तुमि सब हइबा पण्डित।
लुकाय जे केन पारे करह विदित॥
—चै० भा० अं० १०. १९८

प्रभुका आदेश और उपदेश शिरोधार्य करके भाग्यवान् विप्रने पुनः पुनः प्रभुके श्रीचरण कमलमें सिर रखकर उनकी भव-विरिञ्चिवाञ्छित चरणधूलि ग्रहण की। करुणासागर प्रभुने उनको श्रीहस्तसे पकड़ कर उठाया और परम आदरपूर्वक पास बैठनेकी आज्ञा दी। दिग्विजयी पण्डितने परम नम्रतापूर्वक प्रभुके पादपद्मकी वन्दना करके प्रश्न किया—"प्रभो! अब मेरा कर्त्तव्य क्या है?" प्रभुने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया, "पण्डितवर! तुमसे

(च) श्रीवास पण्डितके प्रति (स्वरूप दर्शन देनेके बाद नवद्वीपलीलामें)

श्रीवासेरे आज्ञा कैला प्रभु विश्वम्भर।
ना कह ए सब कथा काहार गोचर॥
—चै० भा० म० २. २३५

(छ) श्रीरङ्ग क्षेत्रमें गीता पाठकारी विप्रके प्रति—(दक्षिण भ्रमण लीलामें)

तबे महाप्रभु तारे कराइल शिक्षण।
एइ बात ना करिबे प्रकाशन॥
—चै० च० म० ९. १००

(ज) राय रामानन्दके प्रति (रसराज महाभाव दर्शन लीलामें)

गुप्ते राखिओ कथा ना करिह प्रकाश।
आमार बातुल चेष्टा लोके उपहास॥
—चै० च० म० ८. २४१

(झ) राजा प्रतापचन्द्रके प्रति (नीलाचल लीलामें)

तबे महाप्रभु ताँरे ऐश्वर्य देखाइल।
काहे ना कहिबा इहा निषेध करिल॥
—चै० च० म० १४. १७

(ञ) रत्नबाहु विजयके प्रति (नवद्वीपलीलामें)

प्रभु बोले जत दिन मुञि थाकि हेथा।
तावत् काहारो पाछे कह एइ कथा॥
—चै० भा० म० २५. १३६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैंने कहा है न, कि सब प्रकारके अभिमानका त्याग करके, सर्वस्व विसर्जन करके श्रीकृष्णके पादपद्मोंका आश्रय ग्रहण करो। वे तुम्हारे ऊपर कृपा करेंगे।" दिग्विजयी पण्डित और कोई बात न कहकर प्रभुके श्रीचरणोंकी धूलिको ग्रहण करके तथा संबल बनाकर रोते-रोते घर लौटे। घरपर आकर उन्होंने हाथी, घोड़ा आदि सारी सम्पत्ति वितरण करदी और एकाकी चले गये।

वे कहाँ गये, किसीको पता न चला, किसीने न देखा। वे निःसङ्ग होकर दीन-हीन कङ्गालके वेषमें किसी अनिर्दिष्ट पथमें चले। उनका कोई समाचार ग्रन्थोंमें नहीं मिलता। श्रीश्रीमन्महाप्रभुके इस प्रकारके कृपापात्र बहुतेरे भाग्यवान् लोग श्रीवृन्दावनमें जाकर एकान्तमें भजन करते थे। वे लोग अपने पूर्वाश्रमका कुछ परिचय नहीं देते थे। इतने बड़े दिग्विजयी पण्डित दर्पहारी श्रीगौराङ्ग प्रभुकी कृपासे दीनातिदीन कङ्गालके वेषमें 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण'—नाम जप करते हुए पथके भिखारी बन गये। श्रीभगवान्‌की कृपादृष्टिका यही फल होता है। उनकी कृपाका स्वाभाविक धर्म यही है। भगवत्-कृपा-प्राप्त महापुरुष लोग विषय-वैभव, धन-जन, ऐश्वर्य कुछ नहीं चाहते, उनके लिए प्रतिष्ठा शूकरीकी विष्ठाके समान तथा मानापमान उनके लिए एक समान होता है। दिग्विजयी पण्डितका जो कुछ हुआ, उससे उनका परम मङ्गल हुआ। श्रीभगवान्‌की कृपाका लक्षण हो यही है। जिसके प्रति श्रीभगवान्‌की कृपादृष्टि होती है, उसकी अवस्था ठीक इसी प्रकारकी होती है। संसारासक्त अज्ञ जीवमें यह समझनेकी शक्ति नहीं होती। विज्ञजन यह देखकर शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

पंडित समाज द्वारा निमाई पंडितका सत्कार

सारी नदियामें निमाई पण्डितके द्वारा दिग्विजयी पण्डितके पराजयकी बात विद्युद्गतिसे फैल गयी। सब लोग निमाई पण्डितका जयजयकार करने लगे। नवद्वीपकी पण्डित मण्डलीने एकत्रित होकर सभा करके प्रभुको माला चन्दनसे विभूषित करके धन्यवाद दिया। सबने एकमत होकर कहा कि "निमाई पण्डितने असम्भवको सम्भव कर दिया। उनका विद्यागर्व सार्थक है।" किसी-किसी पण्डितने कहा कि "यदि निमाई पण्डित न्यायशास्त्र पढ़ें, तो इनके समान पण्डित दूसरा कोई नहीं हो सकता।" कोई बोला—इनको 'वादी सिंह' की पदवी देनी चाहिये। इस प्रकार सब लोग सब जगह प्रभुकी पाण्डित्य-प्रतिभा और यश-गौरवकी घोषणा करने लगे। प्रभुके छात्रों और शिष्योंके आनन्दकी सीमा न रही। इस दिग्विजयी-उद्धार-लीलाके प्रसङ्गमें हमारे लीलामय प्रभुने जगत्‌के जीवको शिक्षा दी है कि—

(१) ईश्वर कदापि अहङ्कारको सहन नहीं करते। —चै. भा. आ. ९. ४३

(२) ईश्वरकी भक्तिको ही सब लोग विद्या कहते हैं। —चै. भा. आ. ९. १७३

(३) विद्याका निश्चित फल कृष्ण-पादपद्मोंमें चित्तवृत्तिका लगना है। —चै. भा. आ. ९. १७८

अर्थात् प्रभुने बतलाया कि अभिमान शून्य होकर श्रीकृष्णका भजन करना चाहिये। विद्या लाभका फल प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं है। श्रीभगवान्‌के चरणोंमें भक्तिका होना ही विद्या लाभका फल है। विद्या लाभके लिए विद्याकी अधिष्ठात्री देवी सरस्वतीकी उपासना गौण फल है, मुख्य फल नहीं है। विद्या प्राप्त करके यदि विद्वान् मनुष्यका मन श्रीभगवान्‌के पादपद्मके मधुपानमें लोलुप नहीं होता, यदि चित्तवृत्ति अभिमान शून्य नहीं होती, तो समझना चाहिये कि विद्या प्राप्तिसे कुछ फलोदय नहीं हुआ। ज्ञान प्राप्ति या विद्या प्राप्तिके मूलमें ईश्वर-ज्ञान और भक्ति लाभ तथा अन्तमें ईश्वरकी प्राप्तिका भाव निहित रहता है। दिग्विजयी पण्डितको विद्याकी प्राप्ति तो हुई थी, परन्तु कोई फलोदय नहीं हुआ था। इसी कारण वे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभिमानी हो गये थे जब प्रभुने उनको विद्या-प्राप्तिका फल समझा दिया, और वह फल जब उनको हाथों-हाथ मिल गया, तब उनका चित्त ईश्वरोन्मुखी हुआ, उनको दिव्यज्ञान हो गया। वे तब प्रभुके उपदेशके अनुसार सर्वत्यागी होकर श्रीकृष्ण भजन करनेमें प्रवृत्त हो गये।

श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने दिग्विजयी उद्धार-लीलाकी फलश्रुति लिखी है—

जे शुनये गौराङ्गेर दिग्विजयी-जय।
कोथाओ ताहार पराभव नाहिं हय॥

—चै. भा. आ. ९. २०७

यह दिग्विजयी-उद्धार-लीला प्रकट करके कलिके प्रछन्नावतार श्रीगौराङ्ग प्रभुने भक्तिप्राप्तिकी प्राथमिक अवस्था साधन-साध्यको दिखलाया है। दिग्विजयी पण्डितके द्वारा गङ्गा महिमाका कीर्तन कराकर उनकी चित्तवृत्तिका शोधन करके भगवान्‌ने उनके ऊपर कृपा की है। इस प्रकारका चित्तवृत्ति-शोधन भी कृपा-सापेक्ष है। चित्त शुद्धि हुए बिना उपदेश देनेसे फलोदय नहीं होता। जगद्‌गुरु श्रीमहाप्रभुने पहले दिग्विजयी पण्डितको कोई उपदेश नहीं दिया। गङ्गा-महिमा-कीर्तनके द्वारा पहले उनके हृदयको पवित्र करके, तथा निजगुणसे उनके ऊपर कृपा करके, उनके विद्यागर्वको दूरकर तब उनको उपदेश प्रदान किया, और तब उस उपदेशका यथार्थ फल फला। श्रीभगवान्‌की शक्ति सरस्वती देवीके मन्त्र-साधकने शक्तिकी कृपाके बलसे शक्तिमान्‌की कृपा प्राप्त की, शाक्त वैष्णव हो गया। शक्ति उपासनाकी परिणति विष्णु-उपासना है। वैष्णव-चूड़ामणि श्रीनिमाई पण्डितने इस लीलाके प्रसङ्गमें अपने भक्तवृन्दको यही तत्त्व समझाया है। उन्होंने देवी सरस्वतीके श्रीमुखसे यह तत्त्व कहलाया था। यथा—

जत किछु मन्त्र तुमि जपिले आमार।
दिग्विजयी पद फल ना हय ताहार॥
मन्त्रेर जे फल ताहा एबे से पाइला।
अनन्त ब्रह्माण्डनाथ साक्षाते देखिला॥

—चै. भा. आ. ९. १४५, १४६

उसके बाद दिग्विजयी पण्डितने प्रभुको पहचान कर ठीक ही अनुमान किया था—

"कलियुगे विप्ररूपे तुमि नारायण।"

—चै. भा. आ. ९. १५५

—★—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इक्कीसवाँ अध्याय

प्रभुकी द्वितीय बार दार-परिग्रह-लीला

जय जय श्रीगौराङ्ग विष्णुप्रिया नाथ। जीव प्रति कर प्रभु शुभ दृष्टिपात ॥

वयोवृद्ध लोगों द्वारा वाहनसे उतरकर अभिवादन

प्रभुने जब दिग्विजयी पण्डितको पराजित करके नवद्वीपके पण्डित-समाजके विद्या-गौरवकी रक्षा की, उस समय उनकी अवस्था उन्नीस वर्षकी थी। वे अभी नवयुवक थे, परन्तु वयोवृद्ध अध्यापक पण्डित लोग भी उनके सामने सिर झुकाने लगे। उनकी सर्वाङ्ग सुन्दर सर्वमनोरञ्जन, मदनमोहन श्रीमूर्त्ति नदियावासी नर-नारीके ध्यानकी वस्तु हो गयी। दिनमें जब वे लोग श्रीगौराङ्ग सुन्दरका साक्षात् दर्शन प्राप्त करते थे, तो अनिमेष नयनसे उस भुवन मोहन अपरूप रूप-सुधाका प्राण भरकर पान करके अपने हृदयको परितृप्त करते थे। रातमें भी श्रीगौराङ्गके उस अपरूप रूपके ध्यानके सिवा उनका और कोई काम न था। आँखें मूँदते ही श्रीश्रीनवद्वीप-चन्द्रकी वही जगत्को आलोकित करनेवाली अपरूप रूपराशि उनके नयन-पथमें मानो घूमने लगती थी। निद्रित अवस्थामें भी वे लोग श्रीश्रीशचीनन्दनके उस मदन-मोहन अपरूप रूपराशिका सुख स्वप्न देखते थे। नदियावासीके भाग्यकी सीमा नहीं है। कोटि जन्मार्जित सुकृतिके फलसे भी स्वयं भगवान्की लीला और रूप-दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। श्रीगौराङ्ग सुन्दरकी कृपासे नदियावासी नर-नारी, कीट-पतङ्ग, स्थावर-जङ्गम सब परम सुकृतिवान् और बहुत सौभाग्यशाली हैं। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि नमस्कार।

जब दिग्विजयी पण्डितके पराजयकी बात सारी नदियामें फैल गयी तो अध्यापक पण्डितोंकी मण्डली एक-एक करके प्रभुके श्रीमन्दिरमें आकर उनके साथ मिलकर उनको सम्मान पूर्वक अभिवादन करने लगी। नदियाके सब लोग नवीन अध्यापक निमाई पण्डितका जय-जय गान करने लगे।

प्रभु जब नदिया-भ्रमणके लिए निकलते हैं तो बड़े-बड़े धनी लोक अपनी पालकीसे उतरकर बहुत सम्मान पूर्वक उनकी वन्दना और प्रणाम करते हैं।

अब प्रभु नवद्वीपमें सर्वप्रधान गणमान्य अध्यापक पण्डित हैं। जहाँ कहीं कोई कर्मकाण्ड होता है, सबसे पहले निमाई पण्डित आमन्त्रित होते हैं। जिस किसीके घर कर्मानुष्ठान होता है, वह पहले निमाई पण्डितके घर भोज्यवस्तु, वस्त्र, मिष्ठान्न आदि भेज देता है।

प्रभुके यहाँ अतिथि-सत्कार

प्रभुके घरमें लक्ष्मीका भण्डार है। दीन-दरिद्र, अन्धे-लूलेके प्रति करुणामय प्रभुकी बड़ी दया रहती है। वे अपने हाथों उनको अन्न-वस्त्र, धनादि दान करते हैं। ऐसा कोई दिन नहीं, जब प्रभुके श्रीमन्दिरमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दस-बीस अतिथि न आते हों। शचीमाता वृद्ध हो गयी हैं, परन्तु वे अतिथि-सेवाके लिए भोजन बनानेमें तनिक भी नहीं हिचकिचातीं। प्रभुके घरमें गृहलक्ष्मी नहीं है, यही शचीमाताके दुःख और मनस्तापका कारण है। अतिथि-सत्कार कार्यमें प्रभु स्वयं माताकी सहायता करते हैं। वे स्वयं पास बैठकर साधु-संन्यासियोंको परम सन्तोषपूर्वक भोजन कराते हैं। उनके साथ मधुर भाषामें वार्तालाप करते हैं। स्वयं आचरण करके प्रभु गृहस्थोंको अतिथि-सत्कार-धर्मकी शिक्षा देते हैं। वे सबको उपदेश देते हैं--"गृहस्थ होकर जो अतिथि-सत्कार नहीं करता वह पशु-पक्षीसे भी अधम है। अतिथि-सत्कारके लिए और कुछ न हो तो—

तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सुनृता।
एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन॥
—मनुस्मृति ३. १०१

तृणासन, विश्रामके लिए, भूमि जल और मिष्ठ-भाषण—इनकी सत्पुरुषोंके पास कमी नहीं होती, इतनेसे ही अतिथि-सत्कार करे।

प्रभुकी यह अतिथि-सेवा भी जीवोद्धारके लिए थी। स्वयं भगवान् अपने श्रीहस्तसे जिनको अन्न, वस्त्र आदि दान करते हैं, उनके समान भाग्यवान् जीव जगतमें दूसरा कौन है? जो लोग दीन-दरिद्र भिक्षुकके वेशमें प्रभुके द्वारपर आते हैं, वे दरिद्र नारायणके वेशमें ब्रह्मा, शिव, नारदादि मुनि-ऋषिगण नहीं हैं—यह कौन कह सकता है?

गौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

ब्रह्मा शिव शुक व्यास नारदादि करि।
सुरसिद्ध आदि जत स्वच्छन्द विहारी॥
नर-नारायण अवतीर्ण नवद्वीपे।
जानि सबे आइसेन भिक्षुकेर रूपे॥
—चै. भा. आ. १०. ३०, ३१

व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर भी इनके बीचमें रहे होंगे। त्रिकालज्ञ ऋषि-महाजनगणके वचनमें अविश्वास नहीं करना चाहिये।

निमाई पण्डितकी ख्याति

सारे नवद्वीपमें प्रभुका इस समय प्रचुर सम्मान है। उनके विद्यालयमें सहस्रों विद्यार्थी पाठाभ्यास करते हैं। अब भी उनका विद्यालय मुकुन्द सञ्जयके सुवृहत् चण्डीमण्डपमें लगता है। प्रभु प्रतिदिन उषाकालसे दो पहर तक अध्यापन करके दल बलके साथ गङ्गा-स्नान करने जाते हैं। गङ्गा-स्नान करके तीसरे पहर घर आकर भोजनके पश्चात् सामान्य विश्राम करके पुनः विद्यालय जाते हैं। आधी रात तक वे वहाँ विद्यारसमें मग्न रहते हैं। प्रभुके विद्या-विलास लीला-रङ्गके पूर्ण विकासका यह समय है। नवद्वीपके सुवृहत् पण्डित समाजमें उनका एकाधिपत्य पूर्णरूपसे स्थापित हो गया था। देश-विदेशमें उनकी अलौकिक पाण्डित्य-प्रतिभा प्रतिष्ठित हो गयी थी। दिग्विजयी पण्डितके पराजयकी बात सारे भारतवर्षमें सर्वत्र फैल गयी थी। नदियाके निमाई पण्डितका नाम और यश मिथिला, काशी, काञ्ची तथा गोदावरी प्रदेश तक फैल गया था।

प्रभुके विद्या-गौरवसे नदियावासी गौरवान्वित थे। प्रभुकी पाण्डित्य-प्रतिभासे नवद्वीपके अध्यापक पण्डितवृन्दका मुख उज्ज्वल हो गया था। प्रभुकी ज्ञान-गरिमासे सारा भारतवर्ष गौरवान्वित था, बंगालके लोग महा-महिमान्वित हो गये थे।

शचीमाँकी निमाईके विवाहकी चिन्ता

नदियावासी नर-नारी प्रभुका घर गृहिणी-शून्य देखकर मनमें बड़ा दुःख पाते हैं, प्रभुकी वृद्धा माताके दुःखसे मर्माहत होते हैं। सबके मुँहसे प्रभुके पुनः शुभविवाहकी ही चर्चा सुननेमें आती है। क्या स्त्री, क्या पुरुष, सभी कहते हैं कि जो भाग्यवान् पुरुष होगा, वही निमाई पण्डितको कन्यादान करके धन्य हो जायगा।" शचीमाता मन-ही-मन दिन-रात इसी चिन्तामें घुलती रहती हैं कि पुत्रके योग्य कन्या कब मिलेगी, कब अपने निमाईचाँदके दोनों हाथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक कर पाऊँगी ? शचीमाता इसी खोजमें सदा लगी रहती हैं कि सारे नवद्वीपमें कहाँ, कौन, किसके योग्य कन्या है ?

आत्मीय स्वजन, वन्धु-बान्धव, कुटुम्बके लोग, सबके सामने शचीमाता निमाईचाँदके शुभविवाहकी बात चलाती हैं। सब मिलकर प्रभुके उपयुक्त पात्रीके अनुसन्धानमें व्यस्त हो जाते हैं।

सनातन मिश्रकी कन्या—विष्णुप्रिया

नवद्वीपमें श्रीपाद सनातन मिश्र नामके एक पाश्चात्य वैदिक श्रेणीके ब्राह्मण वास करते हैं। वे भी प्रसिद्ध अध्यापक पण्डित हैं। उनकी उपाधि है राजपण्डित। नवद्वीपमें वे एक धन-सम्पत्तिशाली विशिष्ट ब्राह्मण पण्डित हैं। स्वभावसे अति दयालु हैं। परम विष्णुभक्त और उदार चरित हैं। परोपकारी तथा अतिथि-सेवा-परायण हैं। उच्च ब्राह्मण वंशके हैं। सत्यवादी और जितेन्द्रियके रूपमें नवद्वीपमें प्रसिद्ध हैं। उनकी एक परम सुन्दरी कन्या है। कन्या बड़ी ही सुचरित्र, सर्वलक्षण सम्पन्न और साक्षात् लक्ष्मीरूप है।

इस सर्वाङ्ग सुन्दरी और सर्वलक्षण सम्पन्न बालिकाका नाम है—'विष्णुप्रिया'। यह बालिका शैशवसे ही धर्म-प्राणा है। दिनमें तीन बार गङ्गा-स्नान करती है पितृ-मातृ-भक्तिके सिवा और कुछ नहीं जानती। माता-पिताकी सेवा और देव-पूजाकी सजावटके कार्यके सिवा उसका अन्य कोई कार्य नहीं है।

इस बालिकाका स्वभाव और प्रकृति बड़े ही मधुमय है। श्रीविष्णुप्रिया मानो साक्षात् सरलताकी मूर्ति हैं। अति नम्र और धीर प्रकृति की हैं। वह माताके साथ नित्य स्नान करने गङ्गा जाती हैं। आगे माता और पीछे विष्णुप्रिया माताका अञ्चल पकड़कर धीरे-धीरे गङ्गाके रास्ते पर जा रही हैं। बालिका विष्णुप्रियाका ध्यान किसी ओर नहीं है, उनकी दृष्टि नीचे अपने पैरके अँगूठों पर है। हाथमें पहननेका वस्त्र, फूलोंकी डलिया और उसमें गन्ध-चन्दन-नैवेद्य आदि देव-पूजाकी सामग्री है। गङ्गा-स्नान करके बालिका विष्णुप्रिया नित्य गङ्गाके तीर बैठकर देवपूजा करती हैं। सिर खुला है, भ्रमरके समान काले केशपाश नितम्बको अतिक्रम करके जानुदेश तक गिर रहे हैं; प्रफुल्ल कमलको भी मात करनेवाला सुन्दर सुडौल मुखचन्द्र अवनत करके बालिका अपने मनसे माताके साथ गङ्गा-स्नानके लिए जारही हैं।

बालिकाकी रूप छटासे नदियाका पथ आलोकित हो रहा है। पथसे जो जाता है, वही बालिकाकी अपरूप रूपराशि देखकर मुग्ध होकर क्षणभरके लिए वहाँ ही स्तम्भित होकर खड़ा हो जाता है। इससे बालिकाके रक्तिमाभ-मुख-कमलपर ईषत् लज्जाका भाव प्रकट हो आता है। वह मुँह नहीं उठाती है। गङ्गाके घाटके पुरुष-स्त्रीके मनकी वासना, प्राणकी आशा होती है कि बालिका एक बार मुखचन्द्रको ऊपर उठाकर उनके प्रति करुणा दृष्टिसे देख लेती। परन्तु लज्जाशीला बालिका विष्णुप्रिया इसके लिए कदापि तैयार नहीं।

विवश होकर विष्णुप्रियाकी रूपतृषासे कातर नदियावासी नर-नारी उनके पास आकर प्रत्येक ससम्मान सिर झुकाकर चकित होकर एक बार बालिकाके मुखचन्द्रको दर्शन करके अपने पिपासित प्राणको शीतल कर रहे हैं। इससे बाला विष्णुप्रियाके व्रीड़ाकुञ्चित रक्तिमाभ मुख पर अधिकाधिक सौन्दर्यका भाव प्रकटित हो रहा है, उनको मन ही मन कुछ रोष भी हो रहा है। इस रोष और लज्जा-का प्रभाव बालिकाके मुँहपर अति सुन्दर रूपसे परिस्फुट होकर उनके मुखचन्द्रको रक्ताभ बना रहा है। इससे उनके मुखकमलकी शोभा सौगुनी बढ़ गयी है। अतएव लोग अधिक आग्रहके साथ उनके मुख-चन्द्रकी ओर ताकते हैं। इससे बाला विष्णुप्रियाक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रोध और लज्जा क्रमशः अधिक वृद्धिगत होरहा है। उसके साथ ही उनका मुख-मण्डल उत्तरोत्तर अपरूप शोभा धारण कर रहा है। उस शोभाको जो एकबार देखता है, वह फिर आँखें फिरा नहीं पाता। बालिका विष्णुप्रिया बीच-बीचमें विरक्त होकर माताके आँचल-में मुँह छिपा लेती हैं।

बालिका विष्णुप्रियाकी माताका नाम है महामाया देवी। शचीमाताके साथ, प्रतिदिन गङ्गा-स्नानके लिए जाते समय उनकी भेंट हो जाती है, घर-गृहस्थीकी बातें भी होती हैं; बालिका विष्णुप्रिया शचीमाताको देखते ही प्रतिदिन रास्तेमें रुककर प्रणाम करती हैं, और अपने सुन्दर मुखचन्द्रको अवनत करके बहुत आदर पूर्वक एक तरफ खड़ी हो जाती हैं।

शचीमाता स्नेह पूर्वक बालिकाका चिबुक पकड़-कर स्नेह चुम्बन प्रदान करके आशीर्वाद देती हैं।

'योग्य पति कृष्ण तोमार करुन प्रदान।'

—चै०भा०आ० १०. २२८

शचीमाताने जिस दिन इस सर्वसुलक्षण-सम्पन्न बालिकाको देखा है, उसी दिन मन ही मन सङ्कल्प कर लिया है कि यह कन्या उनके निमाईचाँदके योग्य पात्र है। वे गङ्गा-स्नान करके मन ही मन कामना करती हैं—

"ए कन्या आमार पुत्रे हउक घटना।"

—चै. भा. आ. १०. २२८

श्रीपाद सनातन मिश्र और उनकी पत्नीकी भी इच्छा है कि निमाई पण्डितके हाथमें विष्णुप्रियाको प्रदान करें। परन्तु इस बातको किसीने अब तक प्रकट नहीं किया है। शचीमाता मनकी बात मनमें ही रख रही हैं। मिश्र-दम्पतिकी मनोकामना भी उनके मनमें ही पड़ी है।

शचीमाता सोचती हैं कि वह दरिद्र है, निमाई-चाँद पितृहीन बालक है। सनातन मिश्र राजपण्डित हैं, बड़े लोग हैं, कैसे वह इस सम्बन्धकी चर्चा करे! उधर सनातन मिश्र सोचते हैं कि निमाई पण्डित नव-द्वीपके सर्वश्रेष्ठ अध्यापक हैं, सर्वलोक पूज्य हैं, सारे देशमें उनकी पाण्डित्य-प्रतिभाका विस्तार है, सभी उनके रूपगुणकी प्रशंसा करते हैं। मेरी कन्याको क्या वे ग्रहण करेंगे? इस प्रकार उभयपक्षके लोग इस शुभ सम्बन्धमें पहले प्रस्ताव करनेमें सङ्कोच करते हैं। अन्तमें शचीमाता अपने मनके भावको अधिक दिन छिपा न सकीं।

घटक काशीनाथ पण्डित और सम्बन्ध निश्चित

काशीनाथ पण्डित प्रभुके पड़ोसी हैं, विवाहकी घटकाली करना उनका व्यवसाय है। शचीमाता उनको पुत्रवत् स्नेह करती हैं। काशीनाथ परम वैष्णव हैं, प्रभुके नित्यदास हैं। श्रीगौर गणोद्देश-दीपिकामें लिखा है—

यश्च सत्राजिता विप्रः प्रहितो माधवं प्रति।
सत्योद्वाहाय कुलकः श्रीकाशीनाथ एव सः॥

—५०.

अर्थात् राजा सत्राजितने सत्यभामाके विवाहके लिए जिस कुलक नामक ब्राह्मणको श्रीकृष्णके पास भेजा था, श्रीगौराङ्ग अवतारमें उन्होंने ही नवद्वीपमें श्रीकाशीनाथ विप्रके नामसे जन्म-ग्रहण किया था।

काशीनाथ पण्डित श्रीश्रीराधा-कृष्णके युगल-मन्त्रके उपासक हैं, अतएव श्रीभगवान्‌की युगल-सेवाके भिखारी हैं। वनमाली आचार्य प्रभुके प्रथम विवाहके घटक थे। वे भी प्रभुके युगल सेवानुरक्त मर्मीभक्त थे।

काशीनाथ पण्डित सोच ही रहे थे कि श्रीपाद सनातन मिश्रकी दुहिता श्रीविष्णुप्रिया देवीको प्रभुके उपयुक्त पात्र निश्चय करके शचीमाताके पास इस शुभपरिणयका प्रस्ताव करें, इसी समय उनको राजपण्डित श्रीसनातन मिश्रने आदमी भेजकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बुलवाया। काशीनाथ पण्डित विवाहको घटकाली करते हैं, इस बातको राजपण्डित विशेष रूपसे जानते हैं। विष्णुप्रिया विवाह योग्य हो गयी है। किसके हाथमें इस स्वर्ण प्रतिमाको समर्पण करें, इसी चिन्तामें मिश्रदम्पति सदा व्यग्र रहते हैं। इसी कारण आज निश्चय किया है कि घटक महाशयको बुलाकर उनसे परामर्श करें।

काशीनाथ पण्डित समझ गये कि राजपण्डितने उनको किस उद्देश्यसे बुलाया है। वे तत्काल उनके घर गये। राजपण्डितने अतिशय सम्मानपूर्वक काशीनाथ पण्डितको हाथ पकड़कर कहा—'घटक महाशय! जगन्नाथ देवकी प्रीतिके लिए मैं सोच रहा हूँ कि अपनी कन्या विष्णुप्रियाका शुभविवाह कर दूँ। अपनी विष्णुप्रियाके उपयुक्त पात्र नहीं देख पा रहा हूँ। मेरी बड़ी इच्छा है कि निमाई पण्डितके हाथमें कन्याको समर्पण करके कृतार्थ हो जाऊ। क्या वे मेरी कन्याको ग्रहण करेंगे? अपने मनकी बात मैंने आपसे कह दी। क्या जानूँ, कब क्या हो? आप हमारे मित्र हैं, इसलिए मनकी बात आपको कह रहा हूँ।"

काशीनाथ पण्डित सब जानते हैं। उन्होंने हँसकर उत्तर दिया—"राजपण्डित महाशय! आप चिन्ता न करें, जगन्नाथ देव आपकी मनोकामना पूर्ण करेंगे। निमाई पण्डित आपकी कन्याको ग्रहण करेंगे।" इतना कहकर काशीनाथ पण्डित हँसते-हँसते विदा हुए।

उसी दिन राजपण्डितने दिनमें तन्द्राके आवेशमें स्वप्न देखा कि वे समुद्रके तटपर जगन्नाथ देवके सामने हाथ जोड़कर खड़े हैं, उसी समय जगन्नाथ देवकी आज्ञा हुई—"विष्णुप्रिया मेरी दासी है।" राजपण्डितने स्वप्नमें श्रीश्रीगौरचन्द्र रूपी जगन्नाथ देवको हँसते देखा। उन्होंने आनन्दसे गद्गद होकर भूतलपर पड़कर उनको साष्टाङ्ग प्रणाम किया।

इधर काशीनाथ पण्डित अपने घर अभी पहुँचे ही थे कि शचीमाताकी बुलाहट हो गयी।

प्रभुकी प्रेरणासे, एक ही समय श्रीपाद सनातन मिश्र और शचीमाताके मनमें, उनकी सर्वोत्तम नरलीलाके शुभ-विवाह सम्बन्धकी लीलाके रसास्वादनकी इच्छा बलवती होनेके कारण, उस रसकीपुष्टिके लिए दोनों ही उनकी पूर्वलीलाके घटक काशीनाथ पण्डितकी शरण लेनेके लिए बाध्य हुए। काशीनाथ पण्डित दोनों ही पक्षके घटक थे। शचीमाताने उनको बुलाकर कहा—"बापु! मेरी एक बात सुननी पड़ेगी। तुम राजपण्डितके पास जाकर उनकी कन्याके साथ मेरे निमाईचाँदके शुभ विवाहका सम्बन्ध स्थिर करो।"

काशीनाथ पण्डित प्रभुके अन्तरङ्ग मर्मी भक्त हैं। वे प्रभुके लीला-रङ्गको स्मरण करके हँसते-हँसते तत्काल ही श्रीकृष्णका स्मरण करके राजपण्डितके घर पुनः गये। राजपण्डितने उनको देखकर आदर-पूर्वक पूछा—"घटक महाशय! किस उद्देश्यसे आपका पुनः आगमन हुआ?" काशीनाथने हँसकर उत्तर दिया, "वही कार्य, वही बात—निमाई पण्डितकी माता शचीदेवीने पुत्रका विवाह-सम्बन्ध करनेके लिए मुझको आपके पास भेजा था। आपकी कन्याके लिए निमाई पण्डित ही योग्य पति हैं और उनके लिए आपकी कन्या ही योग्य पत्नी है जैसे कृष्ण और रुक्मिणी आपसमें एक दूसरेके योग्य थे।"

राजपण्डित सनातन मिश्र इस शुभसंवादको सुनकर आनन्द विह्वल होकर काशीनाथ पण्डितकी अनुमति लेकर दौड़कर अन्तःपुरमें गृहिणीके पास गये। मिश्र और मिश्रगृहिणीके आज आनन्दकी सीमा नहीं है। इतने दिनोंमें विधाताने उनके ऊपर दया करके स्वर्ण प्रतिमा विष्णुप्रियाके उपयुक्त पात्र मिला दिया, यह सोचकर वे आनन्दविभोर हो गये। कुछ देरमें राज-पण्डितने आकर इस शुभविवाहके घटक चूड़ामणिसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहा—"घटक महाशय ! आप शचीदेवीसे कहें कि मेरी कन्या विष्णुप्रियाको ग्रहण करके इसके विष्णुप्रिया नामको सार्थक करें।"

यह सुनकर काशीनाथ पण्डित शचीमाताके पास पुनः दौड़े। उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है। क्योंकि उनकी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण होगी। श्रीगौर भगवान् अपनी पूर्णशक्ति श्रीश्रीविष्णुप्रियाके साथ नदिया युगलरूपमें बैठेंगे। युगलसेवा-निष्ठ रसिक भक्त काशीनाथ पण्डित प्रभुके युगल-मिलन-दर्शनके भिखारी हैं। शचीमाताके पास आकर उन्होंने यह सुसंवाद दिया कि कार्य-सिद्धि हो गयी है। यह सुनकर शचीमाताके आनन्दकी सीमा न रही। वह पुत्रके शुभविवाहके उद्योगमें व्यस्त हो गयीं।

बुद्धिमन्त खाँ और मुकुन्द सञ्जय—विवाहकी तैयारियाँ

प्रभुके शुभविवाहके सम्बन्धका समाचार विद्युत् गतिसे सारी नदियामें परिव्याप्त हो गया है। सारे नदियावासी आनन्दमें उन्मत्त हो उठे। बुद्धिमन्त खाँ नवद्वीपमें प्रधान धनी जमीदार थे। प्रभुके एकान्त भक्त थे। उन्होंने जब इस शुभ सम्बन्धके विषयमें सुना, तब उनके आनन्दकी सीमा न रही। मुकुन्द सञ्जय भी, जिनके घरपर प्रभुका विद्यालय था, नवद्वीपमें एक बड़े धनी मनुष्य थे। मुकुन्द सञ्जय और बुद्धिमन्त खाँ दोनों मित्र थे। प्रभुके विवाह कार्यके सम्बन्धमें दोनोंने मिलकर विचार किया। बुद्धिमन्त खाँने पहले ही कहा कि, "निमाई पण्डितके इस विवाहका सारा व्यय-भार मैं ग्रहण करूँगा।" यह सुनकर मुकुन्द सञ्जय बोल उठे—"मित्र ! यदि तुम्हीं सब भार ले लोगे, तो मैं क्या करूँगा ? यह नहीं हो सकता।" बुद्धिमन्त खाँने उत्तर दिया—"देखो भाई ! यह विवाह दरिद्र ब्राह्मणके समान न होगा। निमाई पण्डितको राजकुमारके समान सजाऊँगा। वैसा ही सारा आयोजन करना पड़ेगा। सब मिलकर ऐसा उद्योग करो कि बड़े-बड़े राजाके समान इस विवाहमें धूमधाम हो।"

इस प्रकार परामर्श करके सब मिलकर प्रभुके शुभविवाहका उद्योग करने लगे। नवद्वीपमें जिसके घर जितने बड़े-बड़े चन्द्रातप थे, वे लाकर प्रभुके आङ्गनमें टाँगे जाने लगे। चतुर्दिक मार्गमें कदली-वृक्ष-रोपन करके प्रत्येक गृहके द्वारपर आम्र पल्लवसे युक्त पूर्णघट स्थापन होने लगे। घरका सारा स्थान लिपा-पोता जाने लगा। जो कुछ माङ्गलिक कर्म हैं, जितने माङ्गलिक द्रव्य हैं, सबका अनुष्ठान संग्रह होने लगा। सारा नदियानगर आनन्द-कोलाहलसे पूर्ण हो गया। ब्राह्मण, वैष्णव, आत्मीय कुटुम्ब-स्वजन सबको यथाविधि प्रभुके शुभविवाहके अधिवासका निमन्त्रण भेजा गया, प्रातःकाल विधिपूर्वक निमन्त्रण देकर सब लोग बुलाये गये—

रङ्गमें भङ्ग

अधिवासके पहले दिन रंगीले प्रभुने अपने भावी सासु-ससुर और उनकी गोष्ठीके साथ एक लीला-रङ्ग किया। रङ्ग-प्रिय रसिक शेखर भगवान् अपने भक्तके साथ किस प्रकार लीलारङ्ग करते हैं, यह इस लीला कहानीसे प्रकट हो जायगा।

श्रीपाद सनातन मिश्र राजपण्डित हैं। उनके घर पर शुभ विवाहकी सारी आयोजना होने लगी। उनके सारे आत्मीय-कुटुम्ब और पड़ोसी लोग आने आरम्भ हो गये। शुभ विवाहका दिन स्थिर हो गया है। शुभ अधिवासका लग्न स्थिर करनेके लिए श्रीपाद सनातन मिश्रके बुलाने पर ज्योतिषीजी अपने घरसे द्रुत गतिसे मिश्र-भवनकी ओर जा रहे थे। रास्तेमें निमाई पण्डितके साथ उनका साक्षात्कार हुआ। निमाई पण्डित आजानुलम्बित बाहुयुगल डुलाते हुए, गमछा कन्धे पर डाले, विद्याचर्चा करते हुए अपने वयस्य और छात्रगणके साथ गङ्गा स्नानके लिए जा रहे थे। ज्योतिषीने उनको देखकर हँसते हुए कौतुक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूर्वक पूछा—"कल तुम्हारा शुभ अधिवास होगा, अब तुम्हारा विवाह होने जा रहा है।"

यह बात सुनकर हास्यप्रिय प्रभु चकित हो हो उठे, मानो वे कुछ जानते ही न हो। प्रभुने गम्भीर भावसे उत्तर दिया—"कहाँ विवाह है, कौन कन्या और कौन वर है ?"

वरके मुखसे इस प्रकारकी बात सुनकर ज्योतिषी महाशयके मनमें बड़ा सन्देह पैदा हुआ। उन्होंने सोचा, यह क्या बात है ? जिसका विवाह है वह कुछ जानता ही नहीं, इधर विवाहका दिन स्थिर हो गया है।" इच्छामय प्रभुकी इच्छासे ज्योतिषीजीके मनमें दृढ़ विश्वास हो गया कि इस विवाहमें निमाई पण्डितकी सम्मति नहीं है। ज्योतिषीजीने श्रीपाद सनातन मिश्रके घर जाकर नाना प्रकारकी कहावतों-के साथ सबके सामने यह बात भी प्रचलित कर दी। यह सुनकर पण्डितके हृदयपर मानो वज्राघात हुआ। गोष्ठीके सहित वह दुःख सागरमें डूब गये। उनके घर हाहाकार मच गया। वृद्ध ब्राह्मणका धैर्य छूट गया। वे बालकके समान रोने लगे।

राज पण्डितके मनमें आज जो दुःख-तरङ्ग उठा है, वह वर्णनातीत है। वे नदियाके सर्वप्रधान हैं, कुल-शील और मानमें वे समाजमें सर्वश्रेष्ठ हैं। वे सबके सामने बालकके समान आकुल होकर रो पड़े। इसका कारण यह था कि उनके हृदयको बड़ा आघात लगा था। उनको बड़ी आशा थी कि निमाई पण्डित कृपा करके उनकी बड़ी प्यारी एकलौती कन्या विष्णुप्रियाको पत्नीरूपमें ग्रहण करेंगे। वे शचीनन्दनके द्वारा उपेक्षित होकर अपने मर्म स्थलमें वेदना अनुभव करने लगे। राजपण्डित-के मनकी तत्कालिक अवस्था इतनी शोचनीय जान पड़ी कि वे खड़े न रह सके, 'हा गोविन्द !' कहकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

मिश्र-गृहणी मायादेवीने भी सब कुछ सुना। स्त्रियाँ रोकर दुःख प्रकट करती हैं। परन्तु पुरुष हृदयमें दुःखको दबाकर हृदयाग्निमें जलकर दग्ध होते रहते हैं। श्रीपाद सनातन मिश्रकी अवस्था उसके विपरीत हुई। वृद्ध ब्राह्मण व्याकुल होकर रो पड़े। परन्तु उनकी पत्नी उनके पास बैठकर उनको सान्त्वना देने लगी। उन्होंने पतिसे कहा "देखो, इस विषयमें लज्जा और अपमान कुछ नहीं है। शचीनन्दनने स्वयं इस सम्बन्धमें अन्यथा किया है। वे स्वतन्त्र पुरुष हैं, ब्रह्मादि देवगण उनके दास हैं, वे हमारे जामाता होंगे, इस प्रकारकी आशा पोषण करना ही हमारा भ्रम है। अब स्थिर होकर मनको शान्त करो। श्रीकृष्ण का स्मरण करो ! अकारण दुःख न करो।"

गृहिणीके सान्त्वना देने पर राजपण्डितका मन कुछ शान्त तो हुआ, परन्तु उनको दारुण मनःकष्ट प्राप्त हुआ। श्रीगौर भगवान्‌के द्वारा उपेक्षित, लाञ्छित और अपमानित होकर भक्त-वत्सल श्रीपाद सनातन मिश्रने उन्हींके चरणोंका आश्रय लिया। इसको ही दृढ़ाभक्ति कहते हैं। वे मन ही मन श्रीगौर भगवान्‌की स्तुति करने लगे। ऐसे समयमें प्रकृत भक्तके लिए इसके सिवा अन्य उपाय ही क्या रह जाता है ? ठाकुर लोचनदासने अपने श्रीचैतन्य मङ्गल श्रीग्रन्थमें राजपण्डितके इस स्तुति-गानको इस प्रकार लिखा है—

जय पाण्डवेर परित्राण विश्वम्भरे।
राखिले भीष्मक वाञ्छा विदर्भ नगरे॥
जय रुक्मिणीर बाञ्छा-रक्षक मुरारि।
आनिलेन अकुमारी जतेक सुन्दरी॥
ता सभारे करिल बिभा जानि तार मर्म।
मोर कन्या विभा कर तुमि सत्य धर्म॥
मोरे घृणा ना करिबे पतित बलिया।
कत कत पतितेरे लैयाछ तारिया॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जय विश्वम्भर जगजनत्राण-दाता।
जय सर्वेश्वरेश्वर विधिर विधाता॥
मुञ्जि से अधमाधम मति अति मन्द।
कभू ना पाइल तोर भजनेर गन्ध॥

राजपण्डित इस प्रकार कातर कण्ठ से श्रीगौर भगवानको करुण स्वरमें पुकारने लगे। भक्तके भगवान् अब निश्चिन्त न रह सके, भक्तकी कातर कण्ठध्वनि श्रीगौर भगवान्के कानोंमें पहुँची। भक्त-गोष्ठीकी हाहाकार ध्वनिसे करुणामय श्रीगौराङ्ग प्रभुका करुण हृदय उन्मथित हुआ। वे अब स्थिर न रह सके। भक्त दुःखहारी श्रीगौर भगवान्ने अपने एक प्रिय वयस्यको किसी बहाने राजपण्डितके घर जानेको कहा और यह भी कहा कि उनसे यह नहीं कहना कि मैंने तुमको भेजा है। उनसे जाकर कहना—"इस विवाहमें निमाई पण्डितका कोई अमत नहीं है। उनकी माताने जो सम्बन्ध स्थिर किया है, उसमें पुत्रका अमत हो ही नहीं सकता।" उनने तो हँसी-हँसीमें ज्योतिषीजीके साथ कौतुक करके जो कहा था, उसे सोचकर आप जैसे बुद्धिमान् पुरुषको इतना दुःखित होना ठीक नहीं।"

प्रभुके प्रिय वयस्य यह शुभसंवाद लेकर राज-पण्डितके घर उपस्थित हुए। रङ्गीले प्रभुकी प्रेरणासे उन्होंने निरानन्दमय मिश्रभवनमें पुनः आनन्दका स्रोत बहा दिया। इस शुभसंवादसे मिश्र गोष्ठीका निरानन्द दूर हुआ। राजपण्डितके घरमें पुनः आनन्दकी ध्वनि उठी। मिश्र-गोष्ठी पुनः शुभ विवाहोत्सवकी तैयारीमें मत्त हो उठी।

श्रीपाद सनातन मिश्रकी श्रीगौर भगवान्ने परीक्षा ली। श्वशुर समझकर भी उनपर कसर न रखी। श्रीभगवान् किसीकी परीक्षामें कोर-कसर नहीं रखते। इसी सिलसिलेमें प्रभुने अपनी प्राणबल्लभा नववाला श्रीमती विष्णुप्रिया देवीकी भी परीक्षा ले ली। निमाई पण्डितने इस विवाह सम्बन्धकी उपेक्षा की है, यह बात बाला विष्णु-प्रियाके कानोंमें जब पहुँची तो उनका सिर चकरा गया। बालिकाके सुन्दर कमलनयन द्वयमें अलक्षित रूपमें मोतीके समान अश्रुबिन्दु आकर वक्षःस्थल पर जा गिरे। बालिकाका बाल-हृदय उन्मथित हो गया। यह मर्मवेदना वे किससे कहतीं? बोलनेका यह समय भी न था।

वह दस वर्षकी नववाला हैं। परन्तु गौराङ्ग-प्रेमका अंकुर उनके हृदय-क्षेत्रमें बहुत पहलेसे उदय हो चुका है। बहुत यत्नपूर्वक वह इस नवांकुरके मूलमें आशा-वारि सिञ्चन करती आ रही हैं। अंकुर क्रमशः बढ़ रहा था। अकस्मात् निमाई पण्डितके द्वारा इस शुभविवाहके सम्बन्धमें उपेक्षारूपी वायुके झोंकेसे बालिकाका यह सयत्न-पोषित और आशा-वारि-सिञ्चित नवप्रेमांकुर उन्मूलनोन्मुख हो गया। इससे बाला विष्णुप्रियाके हृदयमें जो व्यथा हुई, वह वर्णनातीत है। उस व्यथाका व्यथी कोई नहीं। वह मर्मवेदना किसीसे कहने योग्य नहीं, वह बालिकाके अन्तरकी वस्तु अन्तरमें ही रही।

बाल हृदयकी इस प्रकारकी मर्म व्यथा बाह्य-जगतमें प्रकट नहीं होती। अन्तर्यामी भगवान्के सिवा बालिकाकी इस विषम मर्मवेदनाको समझनेकी शक्ति अन्य किसीमें नहीं। यह दारुण हृदय-वेदना उन्होंने बालिका विष्णुप्रियाको जानबूझकर दी। कारण, श्रीभगवान् विशेष परीक्षा बिना किये अपने श्रीचरणोंमें किसीको भी स्थान नहीं देते।

बालिका विष्णुप्रियाने जब सुना कि उनके प्राणबल्लभने उनकी अस्वीकार किया है, तो वह शयनगृहमें जाकर तकियेमें मुँह छिपाकर चुपचाप अजस्र अश्रु बहाने लगी। गौरभक्त कवि श्रीअच्युत-चरण चौधरी तत्वनिधि महाशयने स्वरचित एक पदमें बालिका विष्णुप्रियाकी तत्कालिक अवस्था अति सुन्दर भावसे चित्रित किया है। वह पद यहाँ उद्धत किया जाता है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हाय ! हाय ! विष्णुप्रिया कि यातना सहेरे ।
एकाकी एकाकी केन झुरे ?
एक दिगे चेये थाके पलक ना फेले रे,
कि जानि हृदये भावे कारे ?
सुन्दर वदन शोभा केमन हयेछे रे,
क्षणे शुभ्र क्षणे रक्ताकार'
अवश अवश अङ्ग करखन नेहारि रे
कभू ना चञ्चल आरबार ।।
आपन अङ्गेर भार सहिते ना पारि रे,
शुये थाके बिछाना ऊपर ।
क्षणेक बिछाना त्याजि उठिया से धाय रे,
आपन सङ्गिनो बराबर ।।
बालिकार दशा भावि श्रीवैष्णव दासे रे
बड़इ यातना पैल मने ।
एक टि कल्पना तार हृदये जागिछे रे
शुन काने बलि सावधाने ।।
पीड़ार अछिला करि आपन शय्याय गो
शुइया भावह निजजने ।
एरूप करिले तुमि काँदिते पारिवे गो
पीड़ाय यातना करि भाने ।।

बाला विष्णुप्रियाकी इस अकथनीय व्याधिकी बात उनके सिवा अन्य कोई नहीं जानता। घरके किसीने कुछ पूछा नहीं, बालिका शयनगृहमें तकियेमें मुँह छिपाकर रो रही है। एक बार उठकर बैठ रही है, और अस्फुट स्वरमें रोते रोते मन ही मन कह रही है—"हा विधाता ! तुम्हारे मनमें क्या यही था ? हा प्राणबल्लभ ! तुम क्यों निष्ठुर हो गये ?" बालिकाकी मर्मवेदनाकी बात मुँहमें ही रही, बाहर प्रकट न हो सकी। केवल उनके मुख पर और आँखोंमें उनको मर्म-व्यथाका भाव कुछ-कुछ प्रकट हो रहा है। सुन्दर डबडबाए चारु नयन-प्रान्तमें जलधारा दीख पड़ी। उससे ही जान पड़ता था—

"अकथन व्याधि कहिते नारे ।
झूरिया झूरिया झूरिया मरे ।।"

बाला विष्णुप्रिया जब इस प्रकारकी अवस्थामें थी, उसी समय निमाई पण्डितके प्रिय सखाने आकर राजपण्डितके घरपर यह सुसंवाद दिया। शचीनन्दनको इस शुभविवाहमें विमति नहीं है, यह बात मिश्रगृहमें प्रचारित होते ही श्रीपाद सनातन मिश्रकी विधवा भ्रातृवधू विधुमुखी दौड़कर आयी और बालिका विष्णुप्रियाके शयनगृहमें प्रवेश किया।

विधुमुखी देवी अल्पवयस्का विधवा हैं। राजपण्डितके छोटे भाई कालिदासकी पत्नी हैं। उनका एकलौता बेटा माधव है, विष्णुप्रिया देवीकी अपेक्षा उम्रमें छोटा है। विधुमुखी देवी विष्णुप्रियाको अपने पुत्रकी अपेक्षा अधिक स्नेह करती हैं। बहुत देर तक उनको न देख पाने पर वह व्याकुल होकर दौड़ी आयी हैं। घरमें शय्याके ऊपर उनको देखकर एकबारगी गोदमें उठा लिया।

विष्णुप्रिया चाचीके वक्षःस्थलमें चन्द्रवदन छिपाकर रोने लगी। विधुमुखीने देखा कि बालिकाकी आँखोंमें आँसू हैं, नासिकामें ऊर्ध्वश्वास है, हृदय धक्-धक् कर रहा है। विधुमुखी अतिशय बुद्धिमता हैं। उनके समझनेके लिए कुछ बाकी न रहा। उन्होंने प्यार करके विष्णुप्रियाको गोदमें उठाकर मुख चूमकर उसको कहा—

"विष्णुप्रिये ! तुम्हारी मनोवेदनाका कारण दूर हो गया है। तुम्हारा बर बड़ा ही रङ्गीला है। इसी कारण उसने यह तमाशा किया है। अभी सूचना मिली है कि इस विवाहमें उनकी विमति नहीं है। ऐसे समयमें क्या कोई आदमी ऐसी हँसी करता है ? तुम्हारा बर बच्छा* है, मनुष्य नहीं है।"

विष्णुप्रियाने लज्जासे सिर झुका लिया। उनको इस अवस्थामें देखकर परिवारके सब लोग हँसने लगे। इससे बालिका विष्णुप्रियाको और भी लज्जा हुई। वह वहाँसे भाग खड़ी हुई। सबने देखा कि

*प्यारका सम्बोधन।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बालिकाके व्रीड़ाकुञ्चित सुन्दर मुखकमलपर हँसी दिखायी दे रही है। उनका शुष्क मुखकमल प्रफुल्लित हो गया है। अब बाला विष्णुप्रियाको कोई दुःख नहीं है। वह अपनी रङ्गीली सहेलियोंके पास जाकर खेल करने लगी।

रङ्गीले प्रभुने जो यह लीलारङ्ग किया, इसका उद्देश्य केवल भक्तकी परीक्षा करनी थी। भक्तपद अति उच्चपद है। इस उच्चपद पर अधिष्ठित होनेके लिए श्रीभगवान्‌के पास अनेक परीक्षाएँ देनी पड़ती हैं। विशेष रूपसे परीक्षा लिये बिना वे यह उच्च पदवी किसीको नहीं देते। प्रभुने यहाँ श्वसुर-गोष्ठीके सब लोगोंकी विशेष रूपसे परीक्षा करके निजजन बनाया।

बाला विष्णुप्रिया बालावस्थासे ही श्रीगौराङ्ग-मूर्त्तिकी हृदयमें पूजा करती आ रही हैं। गङ्गाके किनारे एक दिन बालावस्थामें विष्णुप्रियाने श्रीगौराङ्ग प्रभुका दर्शन किया। दर्शनमात्रसे ही श्रीगौराङ्ग प्रभु उनके हृदयमें घुस गये। उसी दिनसे उनको जगत् गौरमय दीखने लगा। बालिका होनेपर भी उनके हृदयमें नवानुरागका अंकुर उगा। 'श्रीगौराङ्ग-उदय' श्रीग्रन्थमें इन सारी बातोंका उल्लेख है। नवद्वीपवासी मुकुन्द पण्डित इस श्रीग्रन्थके रचियता हैं।

कृपालु पाठकवृन्दको स्मरण होगा कि प्रभुके अधिवासकी बात कहते-कहते उनकी अपूर्व लीला-रङ्गका यह तरङ्ग उठा है। अधिवासके पूर्व दिन हमारे रङ्गीले प्रभुने यह लीला प्रकट की थी। शुभ-विवाहका सारा उद्योगपूर्ण हो गया था। राजपण्डित श्रीपाद सनातन मिश्रने आत्मीय स्वजनोंको निमन्त्रित किया था, ऐसे समय उनको मेरे रङ्गीले प्रभुने इस प्रकार परेशान किया। प्राणप्रियतमा विष्णुप्रियाको रुलाया। भक्तगोष्ठीकी विषय परीक्षा ली। इच्छामय प्रभुकी इच्छा पूर्ण हुई। उनका शुभ अधिवास कार्य आरम्भ हुआ।

शुभ अधिवास

प्रभुके निवास मन्दिरमें आज बड़ी धूमधाम है। सारे नवद्वीपके लोग आज प्रभुके शुभ अधिवासमें निमन्त्रित होकर माला-चन्दन और सुपारीका प्रसाद लेने आये हैं। प्रभुके बाहरी घरमें वृहत् चन्द्रातपके नीचे शुभ अधिवासकी वृहत् सभाका अनुष्ठान हुआ है। अपराह्न काल हो गया है। मधुर ध्वनिमें बाजे बज रहे हैं, शुभ शङ्खध्वनिसे गृह प्राङ्गण मुखरित है। नदियाकी सुन्दरियोंके बारंबार हुलूध्वनि करनेसे प्रभुका निवास-मन्दिर ध्वनित हो रहा है। भाट लोग एक स्वरमें स्तुति पाठ कर रहे हैं, विप्रगण वेद पाठ कर रहे हैं। नदियाकी ब्राह्मण पण्डित-मण्डली घेरकर सभा स्थलमें विराजमान है। सभाके मध्य स्थलमें दिव्य आसनपर द्विजेन्द्रकुल-चूड़ामणि रूपका समुद्र लेकर सभाको आलोकित कर रहे हैं।

सभी प्रफुल्ल चित्त हैं सबके मुँहपर हँसी है। सारी नदियामें मानो एकतान आनन्दका स्रोत बह रहा है। नदियावासी नर-नारीवृन्द उस आनन्द स्रोतमें डूब रहे हैं। नदियाधाम आज आनन्दधाम बन गया है। आनन्दमय श्रीशचीनन्दनके शुभ-अधिवास कर्ममें आज परानन्दकी वृष्टि हो रही है। चारों ओर आनन्द कोलाहल है, नदिया-गगन आनन्द-ध्वनिसे परिपूर्ण है। सारी दिशाओंमें पूर्ण आनन्द विराज रहा है।

माला-चन्दन, पान-सुपारी बँटने लगी। नदियामें ब्राह्मण वंशकी भरमार है। अगण्य और असंख्य विप्र-सन्तान प्रभुके शुभ अधिवासमें निमन्त्रित होकर आये हैं। प्रत्येकको माला-चन्दनसे विभूषित करके एक बीड़ा पान हाथमें देकर बिदा किया जाता है। मुकुन्द सञ्जयने स्वयं इस कार्यका भार लिया है, बुद्धिमन्त खाँ देखभाल कर रहे हैं। प्रभुके वयस्क और छात्रवृन्द विप्रोंके सारे अङ्ग चन्दनसे विभूषित करते जा रहे हैं, और उनके गलेमें पुष्पमाला पहनाते जा रहे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इनमें लोभी ब्राह्मण भी हैं, जो एक बार पान लेकर फिर ले रहे हैं। कोई-कोई दो तीन बार पान ले रहे हैं। कौन किसको पहचानता है? नदिया नगरके ब्राह्मणोंका गिनती कौन करे? कितने आ रहे हैं, कितने जा रहे हैं, इसका हिसाब कौन रखे? परन्तु सर्वद्रष्टा प्रभुने यह देख लिया। देखकर मुकुन्द सञ्जय और बुद्धिमन्त खाँकी ओर ताककर मुसकराते हुए बोले—

सभारे ताम्बूल माला देह तिन वार।
चिन्ता नाहिं व्यय कर जे इच्छा जाहार॥
—चै. भा. आ. १०. २३०

द्विजेन्द्र कुलमणि हमारे प्रभु सदाके विप्रप्रिय हैं। उनकी इस प्रकारकी आज्ञासे लोभी ब्राह्मणोंके लोभका और कोई कारण न रहा। इसके बाद जब उनको तीन बार माला-चन्दन और पान-सुपारी मिली तो उनकी शठता छूट गयी। ऐसी सुव्यवस्था कभी किसीने कहीं नहीं देखी थी, ऐसा दानकर्म भी कभी नहीं देखा था। नदियावासीने आज जो अपनी आँखोंसे देखा, वह उनको जीवन-मरणमें सदा याद रहेगा। पान-सुपारी आदि जो जमीन पर गिरी रही, उसीसे पाँच सात गृहस्थके विवाह हो जायँगे। सब लोग आनन्दसे धन्य-धन्य करने लगे। सबके मुँहसे यही बात सुनी जाती है—"यहाँ नवद्वीपमें लक्षेश्वरोंके विवाह देखे हैं; किन्तु ऐसा अधिवास किसीके बापने भी अपने बेटेके विवाहमें नहीं किया।"

बड़े धूमधामसे प्रभुके शुभ अधिवासका उत्सव सम्पन्न हो गया। उसके बाद श्रीपाद सनातन मिश्र आत्मीय-स्वजनके साथ नाना प्रकारके द्रव्य संभार लेकर जामाताके घर जाकर शुभ अधिवास कर्म समाप्त करके अपने घर लौट आये। वरपक्षके यहाँकी विधि पूर्ण करके राजपण्डित सनातन मिश्र अपने घर पर आकर विष्णुप्रियाके अधिवास-कार्यमें संलग्न हुए। उनके घर आज बड़ी धूमधाम है। वहाँ भी सारी नदियाके नर-नारीवृन्द एकत्रित होकर आनन्द-उत्सवमें मत्त हो रहे हैं। राजपण्डित बड़े लोग हैं। उद्योग आयोजनमें कोई कमी नहीं है। आदर-सत्कारमें कोई त्रुटि नहीं है। उन्होंने आज अपना लक्ष्मीका भण्डार खोल दिया है। श्रीश्रीगौर-विष्णु-प्रियाके शुभ अधिवास कर्ममें नदियावासी लोगोंने जिस प्रकार आनन्दका उपभोग किया, ब्रह्मानन्दकी भी उसके साथ तुलना नहीं हो सकती।

यह आनन्द वेद-गोप्य वस्तु है। साधारण लोग इस आनन्दका मर्म नहीं समझ सकते। जिन लोगोंने श्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-विग्रहके पाद-पद्ममें मन-प्राणको समर्पण कर दिया है, जो नदिया युगल-भजनके रससिन्धुमें डूब गये हैं, उन्हीं भाग्यवान् रसिक भक्तवृन्दके लिए यह आनन्द परानन्द है। रसिक भक्त ठाकुर जयानन्दने श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके दासाभिमानमें अभिमान होकर प्रभुकी शुभ अधिवास लीलाके गानकी समाप्तिमें लिखा है—

अधिवास गोप्यानन्द पूर्व दिवसे।
चैतन्य मङ्गल गाय विष्णुप्रिया दासे॥

विवाह के अन्य कार्य

दूसरे दिन प्रभात कालमें प्रभुने गङ्गास्नान करके सबसे पहले विष्णु-पूजा की। उसके बाद आत्मीय स्वजनके साथ विधिपूर्वक नान्दीमुख आदि सारे क्रियाकर्म सम्पन्न किये। प्रातःकाल होते ही प्रभुके निवास स्थान पर बाजे बजाने वाले आ गये। सुमधुर तानमें वे लोग नाना रङ्गमें बाजे बजाने लगे। चारों ओर आनन्द ध्वनि सुन पड़ी। नदियाके आबाल-वृद्ध-वनिताने शचीके आङ्गनमें आकर आनन्दोत्सवमें योगदान किया।

नदियाके प्रत्येक घरके द्वार पर पूर्णकुम्भ स्थापित हुए। नदियाके रास्ते-रास्ते नाना रङ्गके ध्वजापताका फहराने लगे। आम्र-पल्लव और कदली वृक्षसे नदियावासियोंके गृहद्वार सुशोभित हो उठे। आज प्रभुका शुभ विवाह है। नदियावासी नर-नारियोंके आनन्दकी सीमा नहीं है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुरनारीवृन्दको साथ लेकर शचीमाताने लोकाचारके सारे कर्म एक एक करके सम्पन्न किये। पहले वह सधवा स्त्रीगणको साथ लेकर गङ्गापूजा करने आयी, उसके बाद षष्ठी पूजा सम्पन्न की। तत्पश्चात् पड़ोसी आत्मीय स्वजनके घर स्वयं जाकर पुत्रके शुभ विवाहोत्सवको देखनेके लिए निमन्त्रण दे आयीं। घर आकर शचीमाताने सधवा स्त्रियोंको तेल-सिन्दूरसे विभूषित करके खील, केला, पान और मिष्ठान्न देकर प्रसन्न किया। पाँच-सात बार करके सबके हाथोंमें प्रचुर परिमाणमें मिष्ठान्न पदार्थादि दिये।

इसके बाद नदिया सुन्दरीगणके महलमें प्रभुके शुभ विवाहका जल संग्रह करनेकी धूम मच गयी। नदियाकी सुन्दरियाँ वस्त्रालङ्कारसे भूषित होकर प्रभुके निवास मन्दिरमें आयी हैं। उनके मनमें बड़ी साध है कि निमाई पण्डितके शुभ विवाहमें आनन्दोत्सव करेंगे। शचीमाताने परम आदर पूर्वक उनको साथ लेकर शुभ विवाहके सारे माङ्गलिक कार्योंका अनुष्ठान किया।

इस समय शचीमाता शुभविवाहके कार्यमें अत्यन्त व्यस्त है। जलसंग्रह विधिका समय आ गया हैं। नदिया-सुन्दरीवृन्द इस विचारसे झुण्ड-की-झुण्ड शची-आङ्गनमें आकर उपस्थित हुई हैं।

महा-महोत्सवमें नदिया-सुन्दरीवृन्दने जल-संग्रह शुभकर्मको सम्पन्न किया। और शची आङ्गनमें लौट आयीं। शचीमाताने उनको परम आदर पूर्वक पुनः तेल, हल्दी, सुपारी और मिष्ठान्न देकर प्रसन्न किया। इनके साथ नदियाके बालक, वृद्ध, युवा श्रीनवद्वीपचन्द्रको देखने आये।

तेल हरिद्रा-मर्दन और अभिषेक

प्रभुकी शुभ गात्र-हरिद्राका अब शुभकाल उपस्थित है। वस्त्रालङ्कारसे आवृत समस्त सधवा स्त्रियाँ शचीके आँगनमें प्रभुको घेरकर बैठ गयी हैं। शचीके आङ्गनमें मानो आज चाँदकी हाट लग गयी है। प्रभु उसी चाँदकी हाटके बीचमें खुले बदन आलेपनसे चित्रित पीढ़ा पर बैठे हैं, उनके प्रत्येक अङ्गकी रूप-छटासे दशो दिशाएँ आलोकित हो रही हैं। नदिया-सुन्दरीवृन्द आँख भरकर प्रभुके श्रीअङ्ग-दर्शनके सुखका अनुभवन कर रही हैं। प्राण भरकर वे गौराङ्ग-रूप-सुधा पान कर रही हैं। उस अपरूप रूपकी कोई तुलना नहीं है, और उस रूप-रसास्वादनके आनन्दकी भी सीमा नहीं है।

परम सौभाग्यवती नदियावासी पुरनारीवृन्द आज मनके साधसे प्रभुके श्रीअङ्गका स्पर्श करके आँवला और हल्दी मिश्रित सुगन्धित तेल मर्दन कर रही हैं। कोई पाद-संमार्जन कर रही हैं। प्रभुने लज्जासे सिर अवनत कर लिया है। अब प्रभुको स्नान करा देनेका शुभ समय उपस्थित है। नदिया सुन्दरीवृन्द ठेलाठेली करके प्रभुके श्रीमस्तक पर और अङ्गों पर कलसी कलसी गङ्गाजल गिरा रही हैं।

वे सारी सौभाग्यवती नदिया-सुन्दरीवृन्द प्रभुके श्रीअङ्ग स्पर्शकी अधिकारिणी बनीं। उनके इस अपूर्व प्रेमानन्दमें कामगन्धका लेश भी नहीं। श्रीभगवान्‌के श्रीअङ्ग स्पर्शसे उनके मनकी सारी मलिनता तत्काल दूर हो गयी। उनकी चित्तशुद्धि हो जानेके कारण वे प्रभुकी श्रीअङ्ग-सेवाका अधिकार प्राप्त कर कृतार्थ हो गयी, और गोलोकका आनन्द अनुभव करने लगी।

प्रभुका शुभ गात्र हरिद्रा कर्म सुसम्पन्न होनेपर शचीमाताने पुरोहितके द्वारा प्रभुकी प्रसादी तैल-हरिद्रा राजपण्डितके घर भेज दी। राजपण्डितके घरमें भी बड़ी धूमधामके साथ उनकी परम सुन्दरी कन्याका शुभ गात्र हरिद्रा कर्म सुसम्पन्न हुआ। बाला विष्णुप्रियाके अङ्गमें जब सधवा स्त्रियोंने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेल-हरिद्रा लगायी, तब उनकी सर्व सौन्दर्यमय सुललित और लावण्यमय अङ्गकी शोभासे चतुर्दिक आलोकित हो गया।

विष्णुप्रियार अङ्ग जिनि लाख बान् सोना।
झलमल करे जेन तड़ित प्रतिमा॥

—चै० म०

प्रभुकी प्रसादी तेल-हरिद्रा लगाने पर देवीकी अपरूप रूप-राशि मानो उमड़ आयी। उनके मनमें आज अपार आनन्द है। अपने प्राणवल्लभको प्रसादी तेल-हरिद्रा प्राप्त कर वे आनन्दसे अपने आपको भूल गयीं। उनकी सखियाँ उनके साथ नाना प्रकारसे हास-परिहास कर रही हैं। बालिका विष्णुप्रियाके मुख कमलमें और आँखोंमें मृदु हँसीकी तरङ्ग खेल रही है। उस तरङ्गका घात-प्रतिघात नदियावासी प्रत्येक नर-नारीके हृदयमें लग रहा है। नदियाके पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग, स्थावर-जङ्गम पर्यन्त उस हँसीके मर्मका अनुभव कर रहे हैं। सारी नदिया आनन्दधामके रूपमें प्रतीयमान हो रही है। आनन्द-मयी जगन्माता श्रीश्रीविष्णुप्रिया देवीके श्रीमुख-कमलकी सुधा मिश्रित हँसीकी राशिने जगतके सब अमङ्गलका नाश करके जगत्के जीवके प्राणमें आनन्दका तूफान खड़ा कर दिया है।

श्रीश्रीविष्णुप्रिया देवीके शुभ गात्र-हरिद्रा कर्मके उपलक्ष्यमें राजपण्डित श्रीपाद सनातन मिश्रने मनमें आनन्दित होकर नदियावासी ब्राह्मणों और दीन-दरिद्रोंको सर्वस्व दान कर दिया।

इधर प्रभुने स्वयं अपने मन्दिरमें बैठकर अपने शुभविवाहके दिन यथा विधि दान-कर्म सम्पन्न किया। शचीमाताने दीन-दुःखियोंको मुक्त हस्त होकर भोज्य-वस्त्रादि दान किया। प्रभुने स्वयं ब्राह्मण-वैष्णव आदिको वस्त्रादि वितरण किया। वे परम आनन्दित होकर प्रभुको आशीर्वाद देकर अपने घर गये।

वर-सज्जा

धीरे-धीरे दिन बीत चला। अपराह्न कालमें प्रभुके प्रिय वयस्यगण उनको वरके साजमें सजाने लगे। वदनको चन्दनसे चर्चित करके गन्ध लगायी। मस्तक पर अर्द्ध-चन्द्राकार चन्दन लगाकर गन्ध लगायी। सिरपर अद्भुत मुकुट सजाया। सुगन्धित पुष्पोंकी माला पहनायी। बारीक पीत वस्त्र पहना-कर नयनोंमें कज्जल दिया। कानोंमें सुवर्ण कुण्डल लटकाये। नवरत्न हार पहिनाया। इस प्रकार सारे अङ्गोंको सजाया।

नदियावासी सब नर-नारी आज प्रभुके आङ्गन-में एकत्रित हुए हैं, वर-सज्जामें सज्जित प्रभुके अप-रूप रूपका दर्शन करके सब लोग अपार आनन्द-सागरमें डूब रहे हैं। बाल-वृद्ध-युवा, पुरुष-नारी सभी अतृप्त नयनोंसे श्रीश्रीनवद्वीप चन्द्रके अपरूप रूपका दर्शन कर रहे हैं। नव नटवर वेषमें श्री-गौराङ्ग नागर-वर शची-आङ्गनको आलोकित करके बैठे हैं। सब देख रहे हैं कि शचीनन्दन मानो एक आनन्दलीलामय-विग्रह हैं, नदिया मानो आनन्दधाम है। नदियावासी नर-नारीके भाग्यको क्या पूछना? उनके चरणोंमें कोटि-कोटि नमस्कार! रसिक शेखर भगवान्के उज्ज्वल रसमय नवीन नागर रूपको देखकर वे अपूर्व आनन्दका अनुभव कर रहे हैं, जिसकी तुलनामें ब्रह्मानन्द अति तुच्छ पदार्थ है।

ठाकुर वृन्दावन दासने क्या ही प्रेमपूर्वक लिखा है—

से अनिन्द देखिलेक जे सुकृतिजन।
ताने देखिलेओ खण्डे संसार बन्धन॥

—चै. भा. आ. ८. २८३

और बड़े दुःखसे उन्होंने कहा है—

हइल पापिष्ठ जन्म नहिले तखने।
हइलाङ् वञ्चित से सुख दरशने॥

—चै. भा. आ. ८. २८४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हे नदिया नागर गौरचन्द्र ! कृपा करके इस जीवाधम ग्रन्थकारको यह आशा दो कि वह तुम्हारी मधुमय लीलाको स्मरण करते हुए प्राण त्याग करे। इसके जीवनमें दूसरी कोई साध नहीं है। अन्तिम कालमें केवल तुम्हारी मधुर लीलाकी स्मृति इस जीवाधमके हृदयमें उदय हो जाय। नवद्वीपलीला ध्यान करते हुए इसके प्राणवायु निकलें, 'हा गौराङ्ग ! हा नवद्वीपचन्द्र !' कहते-कहते यह भवरोगसे मुक्त हो सके। इसकी अपेक्षा दूसरी उच्चाशा इसको नहीं है। एक दिन हृदयावेगसे एक पद लिखा था—

गौराङ्ग बलिया पराण त्यजिब
ए बड़ उच्च आशा।
हबे कि कपाले ए हेन सुदिन
हरि जे करम नाशा॥

बारात

बुद्धिमन्त खाँ और मुकुन्द सञ्जयने शुभविवाहकी बारातके सारे प्रबन्ध किये हैं। सुसज्जित चार कहारका डोला प्रभुके द्वारपर उपस्थित हुआ। बाजे-गाजेकी ध्वनिसे नदिया नगरी कम्पित हो उठी। नृत्य-गीत और वाद्यसे मिश्र भवन मुखरित हो उठा। अपराह्नमें प्रभुकी शुभ बारात निकलेगी। नवद्वीपके सब लोग आनन्द कोलाहलमें उन्मत्त हैं। लाखों बालक बाजेके साथ नाच रहे हैं।

नदियाकी पण्डित मण्डली और बड़े-बूढ़े लोग प्रभुके शुभ विवाहके बाराती हैं। इनमें श्रीअद्वैत प्रभु हैं, श्रीवास पण्डित हैं। प्रभुके मौसा श्रीचन्द्रशेखर आचार्य विवाहके वर-कर्त्ता हैं। चतुर्दिक शुभ मङ्गल ध्वनि सुनायी दे रही है।

पुरनारियाँ झुण्डकी झुण्ड असंख्य शुभ-शङ्खनाद कर रही हैं, गगनभेदी शुभ-हुलूध्वनि दे रही हैं। विप्रगण उच्चस्वरसे वेद-ध्वनि कर रहे हैं। चतुर्दिक सबलोग आनन्द-सागरमें डूब रहे हैं।

प्रभुने माताको प्रणाम करके विप्रवर्गको नमस्कार करके शुभक्षणमें शुभलग्नमें सुसज्जित डोलापर आरोहण किया। चारों ओर हरिध्वनि उठी, जय-जयकारसे नदिया-गगन प्रकम्पित हो उठा। नदियाके राजपथमें श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र नवनटवर नागर वेषमें सज्जित होकर मदन-मोहन रूपमें नदियावासीके मनको हरते हुए नगर-भ्रमणके लिए बाहर निकले हैं। नगरके राजपथमें, प्राचीर और अट्टालिकाके ऊपर लाखों आदमी सतृष्ण नयनोंसे नदिया नागर प्रभुके नवनटवर विवाह-वेश दर्शनार्थ एकत्रित हुये हैं। उन्मुक्त वातायनके पासे नदिया-सुन्दरीगण प्रभुकी वर सज्जा-दर्शनकी आकाँक्षासे सिर खुले निर्निमेष आँखोंसे रास्ता देख रही हैं।

इसी भावमें जगज्जीवन, नदियावासीके प्राण श्रीगौराङ्ग सुन्दर नदियाके पथपर नवनटवर नागर वेशमें बाहर निकले हैं। सबसे पहले डोला प्रभुकी इच्छासे गङ्गातटकी ओर चला। प्रबल जनस्रोत गङ्गातटकी ओर बह चला। नाना वर्णोंके पताके हाथमें लिये सहस्रों लोग नाचते-गाते-बजाते, उन्मत्त हुए प्रभुके डोलाके साथ जारहे हैं। गङ्गातटपर डोलेके साथ प्रभुने कुछ देर विश्राम किया। मन भरकर प्रभुने गङ्गाजीका दर्शन किया, प्रणाम किया और गङ्गाजल स्पर्श किया। गङ्गातीरसे प्रभुका डोला असख्य बारातियोंके साथ राजपण्डित श्रीपाद सनातन मिश्रके घरकी ओर चला। घोर निनादसे बाजे बज उठे। बाजा बजाने वालोंकी गिनती नहीं है। नदियाके सारे बाजा बजानेवाले प्रभुके शुभ विवाहोत्सवमें एकत्रित हुए हैं।

उन अनगिनत बाजोंके साथ लाखों नदिया-बालक आनन्दके रङ्गमें बड़े उल्लासके साथ नृत्य कर रहे हैं। प्रभु डोलेके ऊपरसे उनको देखकर मन्द मुस्करा रहे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उस अपूर्व भुवन-मङ्गल हँसीमें जगत्का सर्वप्रकारका मङ्गल-साधन हो रहा है। बालककी तो बात ही क्या ? ज्ञानी व्यक्ति भी लज्जा-शर्म छोड़कर नदिया-बालकोंके साथ नृत्य-गीत-कोलाहलमें योग दे रहे हैं।

नदियाके प्रशस्त राजपथसे प्रभुका सुसज्जित डोला जा रहा है। साथमें लोगोंका समुद्र उमड़ पड़ा है। नदियाके लोगोंकी आँखोंमें ताक लग गयी है। सभी कह रहे हैं, बहुतसे बड़े-बड़े विवाह हमने देखे ऐसी धूमधामका विवाह तो कभी नहीं देखा।

नदियावासिनी कन्यादायग्रस्त कुलकामिनियाँ दुःखित मनसे विचार कह रही हैं ऐसे वरको अपनी कन्या नहीं दे पाये, हमारा दुर्भाग्य।

कन्या-द्वारपर स्वागत

उस अगणित लोगोंके समूहके साथ प्रभुका डोला धीरे-धीरे राजपण्डितके घरके पास पहुँचा। गौधूलि लग्नमें प्रभु प्रिय वयस्य और स्वजन गणके साथ श्रीपाद सनातन मिश्रके गृह-द्वारपर आकर उपस्थित हुए। कन्या और वर पक्ष, दोनोंके बाजे एक साथ जोरसे बज उठे। चारों ओर महा जय जयकार ध्वनि उठी। पुरनारियोंने शतकण्ठसे शुभशङ्ख बजाकर प्रभुके शुभागमनका आवाहन किया। सहस्रों कुल-ललनाओंके कण्ठसे निःसृत शुभ हुलुध्वनिसे राजपण्डितका गृह-प्राङ्गण भर गया।

राजपण्डित श्रीपाद सनातन मिश्रने गृह-द्वारसे कुछ दूर आकर जामाताको अभिवादन करके लाये। प्रभुको डोलेसे बड़े आदर-सत्कारके साथ उतारकर गोदमें करके राजपण्डित घर लेगये। उन्होंने अपने हाथों पुष्पवृष्टिकी, प्रेमानन्दसे जयध्वनि की। सुसज्जित विवाह-मण्डपमें बहुमूल्य सुचित्रित दिव्य वरासन पर आनन्द-रसमय-विग्रह प्रभु उपविष्ट हुए।

राजपण्डितने बहुत अर्थ व्यय करके बहुमूल्य द्रव्योंके द्वारा विवाह-मण्डप सजाया है। प्रभुका विवाह-मण्डप राजसभाके समान लग रहा है। मण्डपके बीचमें रत्नालङ्कार जड़ित दिव्य उच्च वरासन है। उसके ऊपर नवनागर वेषमें प्रभु मण्डपको आलोकित करके बैठे हैं। उनके शुभ दृष्टि-पातसे मण्डपमें सबके मनमें अपार आनन्द अनुभूत हो रहा है। सभी एक अभूतपूर्व आनन्द रसमें मग्न होकर प्रभुके चन्द्रवदनकी ओर देख रहे हैं। सब मन ही मन सोच रहे हैं कि ऐसा अपरूप रूपका मनुष्य तो कभी देखा नहीं। मनुष्यको भी इतना रूप होता है, यह पहले किसीने नहीं जाना।

विवाह-मण्डपमें शास्त्रार्थ

प्रभुके चारों ओर प्रियवयस्यगण उनको घेरकर बैठे हैं। उनके छात्रवृन्द दल बाँधकर एक ओर बैठकर कन्यापक्षके वयस्यवृन्दके साथ शास्त्रार्थ कर रहे हैं। पण्डित लोग नसदानीसे नस लेकर नासिकाके अग्रभागमें सूँघ रहे हैं, और न्यायशास्त्रके कूट प्रश्न उठाकर बड़ा तर्क कर रहे हैं। छात्रोंके साथ शास्त्रार्थका रंग जमते देखकर प्रभुने अपने प्रिय छात्रोंकी ओर स्नेह और प्रेमपूर्ण दृष्टिसे देखा। प्रभुके विद्यार्थी अपने अध्यापकका इशारा पाकर सावधान हो गये। पण्डित लोगोंने आपसमें शास्त्रार्थ प्रारम्भ किया। विद्याके गर्वसे क्रोधित पण्डितगण तर्क करते-करते समय-समय पर हिताहित-विचार-शून्य हो जाते हैं। प्रभुके विवाह-सभामें नदियाके सारे पण्डितोंका शुभागमन हुआ है। शास्त्रार्थ करनेका ऐसा शुभ संयोग कहीं भी संघटित नहीं होता। अतएव बड़े आनन्द और बड़े उत्साहसे नदियाके सर्वविद्या विशारद पण्डितगण सर्वशास्त्रोंमें कूट तर्क उठाकर विचाराकांक्षी हो रहे हैं। वे जानते हैं कि आज निमाई पण्डित शास्त्रार्थमें योग न देंगे, क्योंकि वे विवाहमें वर हैं। इसी कारण पण्डित मण्डली आज इतनी फूली हुई है। विचार और तर्कयुद्ध प्रबल वेगसे चलने लगा। वरासन पर बैठकर निमाई पण्डित सब देख रहे हैं और सुन रहे हैं, और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मृदुमन्द मुस्करा रहे हैं। उनके मनमें बड़ी इच्छा हो रही है कि एक बार इस शास्त्रार्थमें योगदान करें। परन्तु आँखमें लज्जा होनेके कारण ऐसा नहीं कर पारहे हैं, उनका मन छटपट कर रहा है। वे सतृष्ण नेत्रोंसे बारंबार पण्डित मण्डलीकी ओर देख रहे हैं। पण्डितगण प्रभुका मन बूझकर उनको सुना-सुनाकर फाँकी पूछ रहे हैं। निमाई पण्डित अब वरासन पर अधिक देर बैठ नहीं पा रहे हैं। वे सभामें गुरुजन और पण्डित मण्डलीकी अनुमति लेकर वरासन त्यागकर विचार-सभामें जा बैठे। उनको विचार सभामें देखकर पण्डित मण्डलीको और कुछ बोलनेका साहस नहीं हुआ। सबने अपने प्रश्न तथा उनके उत्तरोंकी मीमांसाका भार प्रभुके ऊपर दे दिया। अध्यापक-शिरोमणि निमाई पण्डितने सब प्रश्नोंकी सार मीमांसा, और विचार फलका सामञ्जस्य करके सबको सन्तुष्ट किया। उनको यह असाधारण पाण्डित्य-प्रतिभा देखकर सभामें सब लोग विस्मित हो उठे, और उनको धन्य-धन्य कहने लगे। प्रभु हँसते-हँसते प्रेमानन्दसे पुनः वरासन पर बैठ गये। श्रीपाद सनातन मिश्र अपने जामाताके पाण्डित्य और प्रतिभाको देखकर आनन्दसे गद्‌गद हो गये।

वरण-कार्य

इसके बाद सपत्नीक राजपण्डितने पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, वस्त्र और अलङ्कार देकर विधिपूर्वक जामाताको वरण किया। इस उद्‌देश्यसे प्रभुके लिए यथोचित स्थानमें उपयुक्त आलेपनसे युक्त चित्र-विचित्र पोढ़े सजाये गये थे। श्रीगौराङ्ग सुन्दर उनके ऊपर वर वेशमें खड़े हुए। पुरकी स्त्रियाँ उनको घेरकर खड़ी हो गयीं। तारका-वेष्टित पूर्णचन्द्रके समान प्रभु सुशोभित होने लगे। राजपण्डितकी गृहिणी मायादेवीने नवागत स्त्रियोंके साथ विधिपूर्वक जामाताको वरण किया। प्रभुके सिरपर धान्य दूर्वा देकर आशीर्वाद दिया। सप्त घृतदीपसे जामाताकी आरती की। खील, कौड़ी, पुष्प आदि माङ्गलिक द्रव्य छींटे गये। वर वरणके बाद स्त्री आचारके लिए राजपण्डितने कन्याको लानेका आदेश दिया।

श्रीमती विष्णुप्रिया देवी घरके भीतर वस्त्रालङ्कारसे विभूषित होकर सहचरीगणके साथ दिव्यासन पर बैठी हैं। सखियाँ देवीके साथ नाना प्रकारके कौतुक कर रही हैं। कन्यापक्षके लोग देवीको दिव्यासनके साथ पकड़कर वरके पास लाये। सभाके सब लोग स्त्री-आचार दर्शनकी अभिलाषासे वहाँ खड़े हो गये।

श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके अपरूप रूप लावण्यकी सीमा नहीं है। नव-बाला विष्णुप्रिया रूपमें त्रैलोक्य मोहिनी हैं। बिना वेशभूषाके ही बालिका विष्णु-प्रियाकी अपूर्व रूपलावण्यराशि मानो फूटकर बाहर निकलती थी। इस समय वस्त्रालङ्कारसे विभूषित होकर उनकी अपरूप रूपराशि मानो उमड़ रही है। सभामें सभी सनातन-सुताके अपरूप रूप लावण्यको देखकर मन्त्रमुग्ध होकर खड़े रहे।

नदिया सुन्दरीवृन्दके शुभ शङ्ख बजाकर और बारंबार हुलुध्वनि देकर शुभदर्शनकी मङ्गलकामना की।

शुभदृष्टि-मिलन और पुष्पार्पण

शुभ क्षणको शुभदर्शनका समय आया। प्रभुके गण प्रभुको घेरकर खड़े हो गये। कन्यागणने पीढ़ाके साथ कन्याको ऊपर उठाया। प्राणवल्लभके सामने आधा घूँघट काढ़े नव-बाला विष्णुप्रियाने लज्जासे सिर झुका लिया। बहुमूल्य रेशमी वस्त्रसे वर-कन्याका सिर आच्छादित किया गया। प्रभुको सात बार प्रदक्षिणा कराकर कन्यागणने नव-बाला विष्णुप्रियाको वरके समान करके ऊपर उठाया। अन्तःपट गिरा दिया गया। चतुर्दिक शुभ शङ्ख बज उठे। पुरनारी-गणने शुभ हुलूध्वनिसे राजपण्डितके घर-आङ्गनको पूर्ण कर दिया। बाजे मधुर स्वरसे बज उठे। शुभ लग्नमें शुभक्षणमें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाकी चार आँखोंका शुभ मिलन हुआ। यह पराशक्ति जगत्माताके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साथ परम पुरुष जगत्पिताका शुभ मिलन था, यह परमेश्वरके साथ परमेश्वरीका शुभ मिलन था, यह भुवन मङ्गल विश्वप्रेमदाता श्रीश्रीनदिया युगलकी प्रथम शुभदृष्टि थी, इसमें जीव-जगतके सारे अनर्थोंका नाश करने वाली,सर्व विघ्नोंको हरने वाली, सर्व पापोंका नाश करने वाली महाशक्ति निहित थी। उस महाशक्तिके पूर्ण विकासका दर्शन जीव-जगतका प्रधान साधन यज्ञ है। यह शुभ घटना, यह शुभ दिन, जीव-जगतके मङ्गलके लिए भारतके पुण्यधाम नदिया-में उदय हुआ। नदियावासी बड़े भाग्यवान् हैं, इसीसे उन्होंने श्रीश्रीगौरविष्णुप्रियाके इस भुवन मङ्गल शुभ दृष्टि-उत्सवको देखकर जीवनको सफल किया। धन्य नदियावासी! तुम्हारे चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात!

नव-बाला विष्णुप्रियाके मुखचन्द्रमें सलज्ज मृदु हँसी दीख पड़ी। नागर चूड़ामणि प्रभुके मुखचन्द्र पर मृदु मधुर मुस्कानकी तरङ्ग खेलने लगी। एक जगतमें मानो दो चन्द्र उदित हुए। प्रभुके अपरूप रूपकी आलोकछटाके साथ तड़ित-प्रतिमा विष्णु-प्रियाका रूपालोक मिश्रित होकर एक अपूर्व मधुर दर्शनमें प्रकट हुआ, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह अनुभवमें ही आ सकता है। बाला विष्णुप्रियाने अपने दोनों कर-कमलोंको लज्जा पूर्वक जोड़कर भक्तिभावसे प्राणबल्लभको प्रणाम किया। उनके हाथोंमें पुष्पमाला थी। वही माला उनके प्राणवल्लभके गलेमें दी जाने वाली थी। वैसा न करके देवीने वह पुष्पमालिका उनके श्रीचरण-कमलमें समर्पित कर दी। वे प्रभुकी पदसेवा-भिखारणी थीं। उनके हृदयकी आन्तरिक कामना थी प्रभुकी चरण-सेवाकी प्राप्ति। इसलिए उन्होंने पतिदेवताके चरण कमलमें पुष्पमाला देकर आत्मसमर्पण किया।

आनन्द लीलामय-विग्रह रसिक शेखर श्रीगौर-सुन्दरने तब मधुर मुस्कानके साथ प्रियतमाके गलेमें पुष्पमाला प्रदान करके उनको अपनी दासीके पद पर वरण किया, अङ्कलक्ष्मीके रूपमें अङ्गीकार किया।

उसके बाद उसी अन्तःपटके भीतर अलक्षित भावसे नव-वर और नव-बाला दोनोंमें पुष्प फेंकनेकी कौतुक लीला अभिनीत हुई। यह किसीने न देखा। श्रीगौर-विष्णुप्रियाके इस मधुर प्रेमलीला रङ्गके दर्शनके अधिकारी कोटिमें एक आदमी भी हैं या नहीं, इसमें सन्देह है। इस शुभ समयमें चतुर्दिकसे पुष्पवृष्टि होने लगी। नदिया सुन्दरीवृन्दकी शुभ हुलू-ध्वनिसे दिङ्मण्डल परिपूर्ण हो गया। ब्रह्मादि देवगण अलक्षित भावसे आकाशसे पुष्प वृष्टि कर रहे हैं।

इसी समय प्रभुके गण और कन्या-गणमें 'वर बड़ा या कन्या' के प्रश्नको लेकर रस-द्वन्द्व मच गया। कन्यागणके लोग विष्णुप्रिया देवीको एक एक बार ऊँचा उठाने लगे। प्रभुके गणने भी प्रभुको पीढ़ः पकड़कर ऊँचा उठानेकी चेष्टा की, वे सफल न हुए। इसलिए कन्या वरकी अपेक्षा बड़ी हो गयी। यह सुनकर प्रभु मृदु मधुर मुस्कान करने लगे। वह सुधामयी हँसी जिसने देखी, उनको और कुछ देखना शेष न रहा, त्रिलोकीका सार वस्तु देख ली, ब्रह्मादि देवगणोंकी दुष्प्राप्य वस्तु देख ली।

इसी समय घोर निनादसे नदिया नगरीको प्रकम्पित करते हुए बाजे बज उठे। चतुर्दिक जय जय मङ्गल ध्वनि सुन पड़ी। आलोक-मालासे चतुर्दिक आलोकित हो उठा। बाजोंकी गगन-स्पर्शी ध्वनिसे तथा जय ध्वनिसे किसीको कानोंसे दूसरी बात नहीं सुनायी पड़ती है।

प्रभुके इस शुभ विवाहमें बुद्धिमन्तखाँने नदियाके सब बाजा बजाने वालोंको बुलाया था। राजपण्डितने अन्यान्य जगहोंसे बाजा बजाने वालोंको बुलाया था। जब दोनों ओरके बाजे घोर निनाद करके बज उठे तो जान पड़ा मानो वाद्य ध्वनि ब्रह्माण्डको भेद करके ऊपर उठ रही है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कन्या-दान

महा आनन्दसे सौभाग्यवान् नदियावासी नर-नारी वृन्दने श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाके मुखचन्द्रिका-दर्शनोत्सव देखकर जीवनको सार्थक किया। अब वर-कन्या पुनः विवाह-सभामें दिव्यासन पर बैठे। अब कन्या-दानका शुभ लग्न आ गया। श्रीपाद सनातन मिश्र कन्यादान करनेके लिए बैठे। पाद्य, अर्घ्य, आचमनोके द्वारा उन्होंने यथाविधि जामताको वरण करके उनकी पूजा की। श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं राज-पण्डितने शुभ लग्नमें श्रीश्रीनवद्वीप चन्द्रके श्रीकरकमलमें श्रीश्रीनवद्वीपेश्वरी श्रीमती विष्णुप्रिया देवीको अर्पण किया। राजपण्डितने जामाताको सामग्री दानमें दी। दास-दासी, धेनु, भूमि-शय्या, वस्त्र-अलङ्कार आदि विवाहमें दहेज दिये गये।

प्रभुके बायें श्रीमती विष्णुप्रिया देवी युगलरूपमें बैठी हैं। राजपण्डितने विवाह-कार्य समाप्त करके यथाविधि होम किया।

होम समाप्त होने पर माङ्गलिक लोकाचार आदि शुभकर्म सम्पन्न करके राजपण्डितने वर-कन्याको घरमें ले जानेका आदेश दिया।

बारातियोंको राजपण्डितने परम परितोषपूर्वक खूब भोजन कराया। राजपण्डितके घरमें किसी वस्तुकी कमी न थी। उनके यहाँ लक्ष्मीका भण्डार था 'दीयतां भोज्यतां' की ध्वनिके साथ बड़े समारोहसे प्रभुके शुभ विवाहकी रातमें बारातवालोंका भोजन-कर्म सुसम्पन्न हुआ। विप्रगण, पण्डित-मण्डली तथा अन्यान्य निमन्त्रित व्यक्ति परम परितोषपूर्वक राज-पण्डितके घर भोजन करके वर-कन्याको शुभाशीर्वाद देते हुए अपने-अपने घर गये।

नदियायुगल श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया राजपण्डितके घर आज युगल रूपमें बैठे हैं। सनातन-मिश्र-भवन मानो वैकुण्ठधाम जान पड़ता है।

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाकी अपरूप युगल-रूप-माधुरी दर्शन करके सब लोगोके मन मुग्ध हो गये। गृहद्वार पर लोगोंकी काफी भीड़ है। स्त्री-पुरुष-बालक प्रेमानन्दमें एकाकार हो गये हैं। युगल-रूप दर्शनकी अभिलाषिणी नदिया-सुन्दरियाँ पुरुषोंको ठेलकर घरमें प्रवेश कर रही हैं। मनमें अत्यन्त आनन्द होनेके कारण लज्जा-शर्मकी ओर उनकी दृष्टि नहीं है।

वासर-गृह

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया नदिया-सुन्दरीगणसे परिवेष्ठित होकर वासर-गृहको आलोकित करके दिव्यासन पर युगल-रूपमें बैठे हैं। आज स्त्रियोंने देखा मानो वासर-गृहमें साक्षात् लक्ष्मीनारायणका अधिष्ठान हुआ है।

वासर-गृहमें वर-कन्याके रात्रि भोजनका आयोजन किया गया प्रभु उपवासी थे। उन्होंने परम परितोषपूर्वक आहार किया। आहारके समय प्रभुकी लज्जा-शर्म दूर हो गयी। महामाया देवीने पास बैठकर जामाताको भोजन कराया। शचीमाताके समान पुत्रस्नेहमें विभोर होकर उन्होंने जामात को 'यह लो, वह लो' कहकर स्नेहपूर्वक बड़े आदरसे भली-भाँति भोजन कराया। प्रभुने बिना कुछ कहे सब पदार्थोंको ग्रहण किया। नववाला विष्णुप्रिया देवी प्रभुके अवशेष पात्रसे उनका अधरामृत पाकर कृतार्थ हो गयीं। भोजनके उपरान्त वर-कन्या वासर-गृहमें बैठे।

ठाकुर लोचनदास प्रभुके युगल-भजन निष्ठ रसिक भक्त थे। उन्होंने लिखा है कि विवाहकी रातमें वासर-गृहमें वर-कन्याने एकत्र भोजन किया था। यथा श्रीचैतन्य मङ्गलमें—

"विवाह अन्तरे दोहे, सनातन द्विज गृहे।
एक काले करिला भोजन॥"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाका युगल-विलास लीला-रङ्ग अतिशय मधुमय है। यह भगवान्‌की बड़े साधकी गार्हस्थ्य-लीला है, प्रेमलीला है। प्रेमलीला रङ्ग शास्त्र, युक्ति, सदाचारके परे है। नदियावासिनी पुर-नारीवृन्दने वर-कन्याको एकत्र भोजन कराकर मनमें जो आनन्द प्राप्त किया, ब्रह्मानन्द उसके सामने अति तुच्छ पदार्थ है। इसका ही नाम पूर्ण प्रेमानन्द है। रसज्ञ पाठकवृन्द वासरगृहमें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाके इस एकत्र भोजन-लीलारंगका आस्वादन करके आनन्द प्राप्त करें। वासरगृहकी भाग्यवती नदिया-सुन्दरीवृन्दने श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाके अधरामृत प्रसादको न छोड़ा। सबने धक्कम-धक्का करके इस महाप्रसादको लूटकर बाँट लिया। शिव-विरिञ्चि-अभिवाञ्छित यह महाप्रसाद प्रभुकी कृपासे उनको केवल प्रेमभक्ति साधनासे प्राप्त हुआ। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात! वे प्रभुकी कृपापात्र नित्य दासी थीं। उनमें सखी ललिता, विशाखा हैं, चित्रा-भद्रा हैं, ब्रजलीलाका रसास्वादन करनेके लिए वे नदियाधाममें शचीनन्दनके संग अवतीर्ण हुई हैं। नवद्वीपधाम ब्रजधाम है। नदिया सुन्दरीवृन्द ब्रज-बालाएँ हैं। नवद्वीपरस ब्रजरस है।

ब्रजेन्द्र नन्दन जेइ, शचीसुत हइल सेइ।

इसीकारण प्रभुकी ब्रजलीलाके अन्तरङ्ग लीला-परिकर-वृन्दको नदियामें आना पड़ा। प्रभुने रस-रङ्गमें श्रीविष्णुप्रियाजीके साथ परमानन्दमें वासर-गृहमें सारी रात जागकर बितायी।

सगोष्ठी सनातन मिश्रके आनन्दकी सीमा नहीं है। श्रीगौराङ्गलीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावन दास ठाकुरने लिखा है—

सनातन पण्डितेर गोष्ठीर सहिते।
जे सुख हइल ताहा के पारे कहिते॥
लग्नजित, जनक, भीष्मक जाम्बवन्त।
पूर्वे ताना जे हेन हैला भाग्यवन्त॥
सेइ भाग्य एवे गोष्ठी सह सनातन।
पाइलेन पूर्व विष्णु-सेवार कारण॥
—चै. भा. आ. १०. ३७४-३७६

प्रभुके शुभ वासर-लीला-रङ्गका विस्तृत विवरण मत्प्रणीत 'श्रीश्रीविष्णुप्रिया चरित' एवं 'श्रीश्रीविष्णुप्रिया नाटक' ग्रन्थके अवलोकनसे ज्ञात होगा। इन दोनों* श्रीग्रन्थमें श्रीमती विष्णुप्रिया देवीकी आद्यन्त लीला-कहानी विस्तृत रूपसे लिखी गयी है। विरहिणी श्रीराधिकाका कृष्ण-विरह और गौर-विरहिणी श्रीमती विष्णुप्रिया देवीका गौर-विरह दोनों पूर्णतः विभिन्न वस्तुएँ हैं, श्रीराधिकाके कृष्ण-विरहकी अपेक्षा श्रीमती विष्णु-प्रिया देवीकी गौर-विरह-ज्वाला अधिक मर्मभेदी और हृदयस्पर्शी है। श्रीराधिकाको प्राणवल्लभके साथ मिलनकी आशा थी, श्रीमती विष्णुप्रिया देवीको वह आशा न थी, क्योंकि प्रभुने संन्यासाश्रम ग्रहण कर लिया था। संन्यासीके लिए स्त्रीमुख-दर्शन निषिद्ध है। श्रीश्रीविष्णुप्रिया नाटक श्रीग्रन्थमें वर्णित देवीकी विरह-कहानी पढ़कर काष्ठ-पाषाण भी द्रवित हो जाते हैं। कृपालु पाठकवृन्दको यह श्रीग्रन्थ एक बार पढ़नेका मैं अनुरोध करता हूँ। श्रीग्रन्थमें वर्णित देवीके विरहकी कथा पाठ करके बहुतसे पाषाण हृदय द्रवित होकर सरस हो गये हैं, बहुतसे लोग नवद्वीपमें मग्न हो चुके हैं, इसका काफी प्रमाण प्राप्त है। श्रीभगवान्‌की लीला-कथासे जब हृदय द्रवित होता है, तब वह भजनोपयोगी बनता है। शुष्क हृदय भगवत्-भजनके लिए उपयोगी नहीं होता।

श्रीविष्णुप्रिया चरित और नाटकमें कलिके जीवके कठिन हृदयको द्रवित करनेके लिए उपयोगी सामग्री संग्रहीत हुई है। श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके कठोर भजन वृत्तान्तको पढ़कर कोई भी रोये

* इन दोनों ग्रन्थोंका हिन्दी संस्करण श्रीकृष्ण जन्मस्थान, मथुरासे उपलब्ध है।
—प्रकाशक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बिना नहीं रह सकता। यह ग्रन्थकारकी बात नहीं है।

इस आनन्दोत्सवमें देवीकी दुःख-कथा कैसे आगयी ? यह भी प्रभुकी इच्छा है।

प्रभु जब विवाह करके वासर घरमें चले तो उस समय एक दुर्दैव घटना घटी। इस घटनाको गोलोक गत महात्मा श्रीशिशिरकुमार घोषने अपने 'श्री अमिय निमाई चरित' श्रीग्रन्थमें लिखा है। इस कहानीके मूलमें ठाकुर लोचनदास हैं। श्रीखण्डके प्राचीन गोस्वामीगण कहते हैं कि ठाकुर लोचनदास-का श्रीचैतन्य-मङ्गल श्रीग्रन्थ श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके प्रकट कालमें लिखा गया था। इस श्रीग्रन्थके प्रचारार्थ देवीकी अनुमतिकी प्रार्थना करके ठाकुर लोचनदासने उनके पास यह श्रीग्रन्थ तथा इसके साथ एक पत्र भेजा था। उस पत्रमें ठाकुर लोचन दासने देवीके चरणोंमें निवेदन किया था कि, "माँ ! इस ग्रन्थमें आपके सम्बन्धमें बहुत वर्णन किया है। परन्तु एक विषय अति गुह्य होनेके कारण उल्लेख नहीं कर पा रहा हूँ। इस कारण मुझको अत्यन्त मनोवेदना हुई है। विवाह करके जब प्रभु आपको वासर गृहमें ले गये, उस समय आपके पैरकी अंगुलीमें ठेस लगी थी। उससे थोड़ा रक्तपात भी हुआ था। उस समय प्रभुने अत्यन्त आकुल होकर अपने दाहिने पैरके अँगूठेसे उसे दाब रक्खा, और तब आपका सारा दुःख दूर हो गया। शुभविवाह रातमें इस प्रकारकी दुर्घटना होनेके कारण आप मानसिक क्लेशसे निश्चेष्ट हो गयीं। प्रभुने तब आपको अभय करके आनन्द सागरमें डुबाते हुए वासर गृहमें पहुँचाया।" देवी ठाकुर लोचनदासके इस पत्रको पढ़कर स्तम्भित और विस्मित हो उठीं। क्योंकि यह गुप्त बात प्रभु और उनके सिवा और कोई नहीं जानता था। देवीने ठाकुर लोचनदासको कहला भेजा कि "वे जब इस गुह्य बातको जान पाये हैं तो प्रभुके द्वारा आदेश पाकर ही उन्होंने इस श्रीग्रन्थकी रचनाकी होगी।"* इस बातका प्रचार होनेपर श्रीमती विष्णुप्रिया देवीकी कृपाके बलसे ठाकुर लोचन दासका श्रीचैतन्य मङ्गल श्रीग्रन्थ वैष्णव समाजमें बड़े आदर पूर्वक ग्रहण किया गया।

प्रभुकी इच्छासे जब इस शुभ समयमें दैव दुर्घटनावश देवीके श्रीअङ्गमें अमङ्गल सूचक आघात लगा, तो उन्हींकी इच्छासे यहाँ भी युगल मिलन आनन्दोत्सव-वर्णनके प्रबन्धमें देवीकी विरह-कथाका प्रसङ्ग आ गया। प्रभु जीवाधम ग्रन्थकारका केश पकड़कर अपनी लीलाकथा लिखा रहे हैं। इसमें ग्रन्थकारका कुछ भी कृतित्त्व नहीं है। वे जो लिखा रहे हैं, वही लिखता हूँ।

"लिखिब लिखाबे जाहा बसि मोर चिते।"

विदाई

रसिक शेखर प्रभुने प्रेमलीलारस रङ्गमें वासर-निशि जागकर कटायी। दूसरे दिन प्रातःकाल लोकाचार सम्मत शुभ कुशकण्डिका कार्य आदि सम्पन्न करके अपराह्ण कालमें प्रभु युगल वेषमें अपने घर आवेंगे। श्रीपाद सनातन मिश्रके घरमें वर-कन्याकी विदाईकी धूम पड़ गयी। वर-कन्या वरणका समस्त आयोजन हो गया है। सधवा स्त्रियाँ एकत्रित हुई हैं। वाद्यगीत और कोलाहलसे राजपण्डितका गृह-प्राङ्गण मुखरित है। शुभ शङ्खध्वनि तथा पुरनारीगणकी माङ्गलिक हुलुध्वनि बार-बार सुनायी पड़ रही है। चारों ओर केवल जयध्वनि हो रही है। राजपण्डितके विस्तृत आङ्गनके बीचमें चित्र-विचित्र आलिपनसे युक्त पीढ़ाके ऊपर श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके साथ युगलमें खड़े हैं। श्रीश्रीगौर विष्णुप्रियाके अपरूप युगलरूपकी माधुरी देखकर सब लोग आनन्दसे विह्वल होकर बारम्बार जयध्वनि कर रहे हैं।

---

* श्रीश्रीविष्णुप्रिया पत्रिका कार्यालयसे मुद्रित श्रीचैतन्य मङ्गलकी भूमिका।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीभगवान्‌की युगल विलास-माधुरीकी तुलना नहीं है। प्रभुके युगल भजनगीत लिखते समय मैंने एक दिन हृदयके आवेगमें लिखा था—

युगल माधुरी, जगते अतुल,
मधुरिमा परकाशे।
गोलकेर मुख, करिया तुच्छ
नदिया आनन्दे भासे॥

परम सुकृतिवान् नदियावासी आज इस गोलोकके आनन्द सुख—परानन्दका उपभोग कर रहे हैं, और जगतके जीवको प्रेममें भरकर पुकार पुकार कर वह युगल लीलामधु कलस-कलसमें बाँट रहे हैं। नदियावासी प्रेमानन्दमें विभोर होकर गा रहे हैं—

तोरा देखबि यदि आय।
नदियार राजा नदियार रानी
बसेछेन नदियाय।
आय सबे आय पतित अधम
समय बहिया जाय॥

राजपण्डित और उनकी गृहिणी महामाया देवीके मनकी अवस्था आज उनका मुख देखनेपर स्पष्ट ही प्रतीयमान हो जाती है। आँखोंके आँसू वे बारंबार अपने वस्त्रोंके अञ्चलसे पोंछ रहे हैं, और वर-कन्याकी तैयारी कर रहे हैं। प्रियतमा कन्याके मुखकी ओर आज वे देख नहीं पा रहे हैं। बाला विष्णुप्रिया घूँघट काढ़कर प्रभुके वाम पार्श्वमें स्थिरतापूर्वक खड़ी हैं, उनके नयनद्वयमें आँसू छलछला रहे हैं। माता-पिताके मुखकी ओर देखती हैं, और उनका कोमल हृदय मानो टूक-टूक हुआ जा रहा है। वर-कन्याकी विदाईका दृश्य करुण-रसात्मक है। उन सब दृश्योंको जिन्होंने देखा, वे ही व्याकुल होकर रो पड़े। ठाकुर जयानन्दने लिखा है—

गौरचन्द्र हाथे विष्णुप्रिया समर्पिल।
बाल वृद्ध युवा सब कान्दिते लागिल॥

श्रीपाद सनातन मिश्रने वात्सल्य प्रेममें गद्‌गद होकर छलछलाती आँखोंसे इस समय प्रभुको सम्बोधन करके जो कहा, वह ठाकुर लोचनदासकी भाषामें सुनिये—

सनातन द्विजवर बोले हिया कातर
तोरे आमि कि बलिते जानि।
आपनार निजगुणे लैले मोर कन्या दाने,
तोर योग्य किवा दिव आमि॥
आर निवेदि जे कथा, तुम मोर जामाता,
धन्य आमि, आमार आलम।
धन्य मोर विष्णुप्रिया, तोर पादपद्म पाइया,
इहा बलि गद्‌गद हय॥
बाष्प छल छल आँखि, अरुण वरण देखि,
गद्‌गद आध - आध बोले।
विष्णुप्रियार कर लैया, विश्वम्भर करे दिया
ढल ढल नयनेर जले॥

प्रेमानन्दमें विह्वल होकर राजपण्डितकी वाक्-शक्ति अवरुद्ध हो गयी। वे कोई बात न बोल सके। महामाया देवी पार्श्वमें बैठकर अविरल प्रेमाश्रु वर्षण कर रही हैं। कुछ देरके बाद राजपण्डित प्रकृतिस्थ हुए। उनका एकमात्र पुत्र यादव उस समय आठ वर्षका था। श्रीपाद सनातन मिश्र शचीनन्दनको केवल कन्यादान करके निश्चिन्त न रह सके। अपने पुत्र यादवको भी प्रभुके हाथोंमें सौंपकर कहा, "बेटा विश्वम्भर! अपने इस अयोग्य पुत्रको तुम्हारे हाथोंमें सौंप रहा हूँ, तुम ही इसका सारा-भार ग्रहण करोगे।" प्रभुने हँसकर स्नेहपूर्वक हाथ पकड़कर यादवको पास खींच लिया। यादव बालकपनसे ही प्रभुके दास बन गये। प्रभुने उनका सारा भार ग्रहण किया। वे ही श्रीश्रीविष्णुप्रिया-परिवार नवद्वीपके श्रीपाद गोस्वामीगणके आदि पुरुष थे। उन महापुरुषके वंशज श्रीश्रीमन्महाप्रभुके सेवक नवद्वीपके गोस्वामी प्रभुगण हैं। प्रभुकी कृपासे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनके सालेके वंशजोंको अन्न-वस्त्रकी कभी कमी नहीं होती, और न होगी। आज तक नवद्वीपके गोस्वामी प्रभुगण ज्येष्ठ मासमें जामाई-षष्ठीके दिन प्रभुको षष्ठी-बाटा देकर पूजा करते हैं।

राजपण्डितके घरसे बड़े समारोहके साथ बर-कन्या विदा हुए। श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके साथ प्रभु पुष्पमालासे सुसज्जित होकर डोलापर युगलरूपमें बैठे। आत्मीय वर्गको तथा उपस्थित विप्रवर्गको प्रभुने यथा योग्य प्रणाम और नमस्कार किया। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाके युगल विलासके दर्शनके आकांक्षी होकर राजपण्डितके द्वारपर सारे नवद्वीपके लोग एकत्रित हुए हैं। प्रभु जब सपत्नीक नदियाके पथपर युगलरूपमें बहिर्गत हुए तो उनके भुवन मोहन युगलरूपसे मुग्ध होकर सब लोग जय-जय ध्वनि करने लगे।

उस समय नदियावासिनी पुरनारीवृन्द आपसमें कहने लगीं—इस भाग्यवतीने कितने जन्मोंमें कमला-पार्वतीकी सेवा की होगी। एकने कहा—ये हर-गौरी-से लगते हैं; दूसरीने कहा—कमला-श्रीहरि हैं; तीसरी बोली—ये कामदेव-रति हैं; चौथी ने कहा—ये इन्द्र और शची जैसे लगते हैं; पाँचवीने कहा—मुझे तो ये राम-सीता जैसे प्रतीत होते हैं। इस प्रकार सब बातें कर रही थीं।

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाके शुभ दृष्टिपातसे सारे नदियावासियोंके मन, प्राण और देह सुखमय हो गये, हृदय पवित्र हो गया।

नदियावासी नर-नारीवृन्द चतुर्दिकसे नदिया-युगल विग्रहकी अभ्यर्थनाके उद्देश्यसे पुष्पवृष्टि करने लगे। पुरनारीवृन्द वातायन-पथसे पुष्पमालिका प्रक्षेप करने लगीं। कुंकुम, कस्तूरी और चन्दनसे नदियाका माग पङ्किल हो उठा।

नदियावासी प्रभुका युगल-आवाहन-गीत गाने लगे—

(१)

एस एस एस, शचीनन्दन,
परकाशि नव रूप।
नदीपार रानी, देवी विष्णुप्रिया,
एस नदियार भूप॥
युगल रूपेते दाओ दरशन
अगतिर गति प्राण-रमण।
युगल रूपेर माधुरी तुमि हे
रसराज रसकूप।
एस एस एस गौर सुन्दर,
परकाशि नव रूप॥

(२)

एस एस एस, नदिया नागर
नव नटवर वेशे।
सङ्गे लइया, बाला विष्णुप्रिया
कथा कह हेसे हेसे॥
उज्ज्वल करिया निखिल भुवन
छड़ाये माधुरी जुड़ाये पराण,
रसराज रूपे रसकथा कह,
सकलेरे भाल वेसे।
एस एस एस नदिया नागर
नव नटवर वेशे॥

(३)

एस एस एस, शचीनन्दन,
एस मा विष्णुप्रिये।
युगले एस गो! युगलविग्रह
पूजि सबे माला दिये॥
तड़ित जड़ित कषित काञ्चन
जिनिया वरण नयन रञ्जन,
उछलि उछलि भरिया भुवन
शीतल करिया हिये।
एस एस एस, शचीनन्दन,
एस मा विष्णुप्रिये॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(४)

एस एस एस, नदियार चाँद,
नदिया-राइर साथे।
सर्वसिद्धि सार भुवन मङ्गल,
पदरज दाओ माथे॥
युगल रूपेर माधुरी हेरिया
बल सबे "जय गौर विष्णुप्रिया"
जगतेर माता एसेछे नदीया
कलिजीवे प्रेम दिते।
एस एस एस नदियार चाँद,
नदिया-राइर साथे।

—ग्रन्थकार॥

शची-माँके द्वारा स्वागत

नदिया भ्रमण करके प्रभु युगल रूपमें आकरशची-आङ्गनमें पहुँचे। विवाहका दहेज, बहुमूल्य दान-सामग्री, दास-दासी लेकर नदियाके चाँद अपने मन्दिर-में आये। शचीमाता पड़ोसी सधवा स्त्रीयोंको साथ लेकर द्वारपर खड़ी हैं। उनके साथ श्रीवास पण्डितकी गृहिणी मालिनीदेवी, श्रीअद्वैत गृहिणी सोतादेवी हैं, प्रभुकी धात्रीमाता नारायणीदेवी हैं; सर्वजया देवी हैं। उनके साथ सुलोचना देवी, वैष्णवी देवो आदि वैष्णव-गृहिणीगण भी हैं। बहुत दिनोंके बाद शचीमाताके मुखसे आज हँसीकी रेखा दिखलायी दी है। श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीके अन्तर्धानके बादसे उनके मुँहमें कभी किसीने हँसीके चिन्ह नहीं देखे थे।

शचीमाताने आनन्द विभोर होकर एक बार पुत्रके चन्द्रवदनको चूम लिया, फ़िर पुत्रबधूके मुखकमलपर चुम्बन प्रदान किया। सधवा स्त्रियाँ श्रीश्रीगौर विष्णुप्रियाको विधिपूर्वक वरण करके घरमें ले गयीं। प्रभु प्रियाजीका करकमल धारण करके युगल-रूपमें अपने मन्दिरमें गये।

शचीमाता उस समय आनन्दमें गद्‌गद होकर पुत्रबधूको गोदमें लेकर प्रेमानन्दमें बोलीं—

आजि मोर घर द्वार सम्पूर्ण हइल।
आजि लक्ष्मी वधूर से शोक पासरिल॥

—ज० चै० म०

इतना कहकर वे आनन्दसे नृत्य करने लगीं। शचीमाताकी यह आनन्द-नृत्य-कहानी ठाकुर लोचन दासने लिखी है, यथा श्रीचैतन्य मङ्गलमें—

प्रेमानन्दे गरगर; कोले करि विश्वम्भर,
चुम्ब देइ से चाँद वदन।
आनन्दे विभोर हइया, आइह गग माझे गिया,
बधूकोले शचीर नाचन॥

आनन्द जब हृदयमें भरपूर होता है, तब लज्जाका बाँध टूट जाता है। इस वृद्धावस्थामें सबके सामने शचीमाताने नववधूको गोदमें लेकर नृत्य किया, इससे उनके मनका तात्कालिक आनन्दभाव प्रकट हुआ। वह भाव लज्जाकी परवा नहीं करता।

नदिया-युगल आज अपने मन्दिरमें युगल रूपमें विराज रहे हैं। शची आँगनमें लोगोंकी बड़ी भीड़ है। श्रीश्रीगौर विष्णुप्रियाका युगल विलास दर्शन करके नदियावासी नर-नारीवृन्दने नयन सार्थककिये,। चतुर्दिक मङ्गल सूचक अगणित शुभ शङ्ख-ध्वनि सुन पड़ी। पुर-स्त्रीगण बारंबार हुलूध्वनि देने लगीं। सबने देखा, शचीके घरमें साक्षात् श्रीश्रीलक्ष्मी-नारायणका आविर्भाव हुआ है।

नदियावासी नर-नारीके प्राण शीतल हो गये, नयन परितृप्त हो गये; उन्होंने जो अभूतपूर्व आनन्दरस उपभोग किया, उसका वर्णन नहीं हो सकता।

नदियावासीके भाग्यकी बात स्मरण होनेपर मनमें ईर्ष्याका उद्रेक होता है। हृदयमें आत्मग्लानि उत्पन्न होती है, रोते-रोते कहनेको इच्छा होती है—

हइल पापिष्ट जन्म नहिल तखने।
हइलाङ् वञ्चित से सुख दरशने॥

चै. भा. आ. ८. २८४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ठाकुर श्रीवृन्दावनदासजीने यथार्थ ही लिखा है—

जाँहार मूत्तिर विभा देखिले नयने।
सर्व पापयुक्तो जाय बैकुण्ठ भुवने॥
से प्रभुर विभा लोक देखये साक्षाते।
तेइ तान नाम दयामय दीननाथे॥

चै. भा. आ. १०.३९६,३९७

कङ्गालके ठाकुर हमारे प्रभु दीन-शरण, पतित-पावन हैं। पतित-पाखण्डीके उद्धारार्थ ही उन्होंने नदियामें अवतार ग्रहण किया। श्रीगौराङ्ग-अवतार करुणाके अवतार हैं। हमारे प्रभु कारुण्य-रस-कल्पतरु हैं। कलिग्रस्त जीवके प्रति करुणा करके वे नर-शरीर धारणकर नदियामें शचीगर्भमें उदय हुए थे। कलिके सारे जीव पतित और अधम हैं। हमारे करुणामय प्रभु पतित-पावन जगद्गुरु हैं। स्वयं भगवान्‌के शुभ-विवाहोत्सवके आनन्दका सम्भोग बड़े भाग्यकी बात है। कलिके जीव अतिशय भाग्यवान् हैं। इसी कारण प्रभुने उनके भाग्यमें यह शुभ संयोग घटा दिया। प्रभुके युगल-विलासको देखकर उनको सर्वसिद्धि प्राप्त हुई, उनके सारे पाप ध्वंस हो गये।

विवाहके बाद प्रभुने स्वयं भाट, वाद्यकार, नट और विप्रगणको यथायोग्य पुरस्कार प्रदान कर विदा किया। दयामय प्रभुकी कृपाका अन्त नहीं है। नदियाके जमीदार गौर-भक्तवर बुद्धिमन्त खाँ प्रभुके विवाहके उद्योगकर्त्ता हैं। उन्होंने इस पुण्यकार्यमें सब प्रकारका व्यय भार अपने सिर लिया था। कहा जाता है कि प्रभुके शुभविवाहमें उन्होंने दस सहस्र स्वर्णमुद्रा व्यय किया था। प्रभुने उनको प्रेमालिङ्गन प्रदान कर कृतार्थ किया। इसकी अपेक्षा उच्च पुरस्कार और क्या हो सकता है? प्रभुकी यह अयाचित कृपा प्राप्त करके बुद्धिमन्त खाँ आनन्द-सागरमें डूब गये।

पुष्प शैया

उसके दूसरे दिन रातमें प्रभुकी फूलशैया-लीला बड़े समारोहके साथ सम्पन्न हुई। सारी नदियाकी सब सुन्दरीवृन्दने इस आनन्दोत्सवमें योगदान किया। प्रभुके उसी शयन-मन्दिरमें जहाँ उन्होंने श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीके साथ युगल-विलास किया था, उसी स्थानमें आज पुष्पशैया पर शयन करके हमारे रसराज प्रभुने पुनः श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके साथ उसी प्रकार मधुर युगल-विलास लीला की।

विष्णुप्रिया सङ्गे लक्ष्मी-विलास-मन्दिरे।
पुष्प शय्याये शयन कराइल विश्वम्भरे॥

—ज. चै. म.

पाक स्पर्श—महाभोज

विवाहके तीसरे दिन प्रभुके घरमें पाकस्पर्शका महाभोज हुआ। सारी नदियाके लोग उसमें निमन्त्रित हुए। शचीमाताके घर लक्ष्मीका भण्डार था। न मालूम कहाँसे भारका भार दही, दूध, मिठाइयाँ कौन भेज रहा है। किसीको पता नहीं है। नाना प्रकारकी सामग्रियोंसे घर भर गया है। नदियाके ब्राह्मण और गृहिणीगण दलके दल पाकशालामें पाक तैयार कर रहे हैं।

शचीमाता स्वयं पाकशालाकी देखभाल कर रही हैं। प्रभु स्वयं निमन्त्रित और अनिमन्त्रित समस्त अभ्यागत लोगोंका आदर-सत्कार कर रहे हैं। श्रीअद्वैत-गृहिणी सीतादेवीके हाथमें भण्डारका भार है। मालिनी देवीने निमन्त्रिता पुर-स्त्रीवृन्दके आदर-सत्कारका भार ग्रहण किया है। श्रीवास पण्डित ब्राह्मण पण्डितोंके सत्कारके कार्यमें व्यस्त हैं। श्रीअद्वैत प्रभुने स्वयं सब विषयोंके कर्त्तृत्वका भार ग्रहण किया है। चन्द्रशेखर आचार्य द्वारपर खड़े होकर अतिथि-अभ्यागतके सत्कारमें लगे है। शची-आङ्गनमें विस्तृत चन्द्रातपके तले अगणित निमन्त्रित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ब्राह्मण वर्ग इकट्ठे हुए हैं। प्रभु कटिदेशमें वस्त्र बाँधकर स्वयं परोसनेका कार्य कर रहे हैं। उनके प्रिय वयस्य-गण भी परोसनेमें सहायता कर रहे हैं। गदाधर पण्डित उनमें प्रधान हैं।

बड़े समारोहके साथ प्रभुके विवाहके पाकस्पर्शका भोजन-लीलाका रङ्ग सुसम्पन्न हो गया। सबने चव्य, चोष्य, लेह्य और पेय पदार्थ भरपूर भोजन किये। माता और पुत्र दोनोंने मिलकर दीन-दरिद्रको भलीभाँति भोजन कराया। सब कहने लगे, ऐसा सुन्दर भोज नदियामें कभी नहीं हुआ। इतनी द्रव्य-सामग्रीका आयोजन कभी कहीं किसीने नहीं देखा। शचीमाताके मनमें आज बड़ा आनन्द है। लोगोंको भलीभाँति खिलानेसे मनमें जो आनन्द होता है, वैसा आनन्द और किसी प्रकार नहीं होता। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी साक्षात् लक्ष्मी हैं। उनके शुभ दृष्टिपातसे सारे कर्म सुचारु रूपसे सम्पन्न हो गये। उन्होंने घरमें बैठकर सबके ऊपर शुभदृष्टिपात किया। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-मिलनोत्सवमें नदियाके लोगोंने जो आनन्दोपभोग किया, उसकी तुलना नहीं है। सभी प्रेमानन्दमें कहने लगे—जय गौर-विष्णुप्रियाकी जय।

—★—

बाईसवाँ अध्याय

नवद्वीपमें प्रभुकी गार्हस्थ्य लीला

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-विलास और उपासना

"सर्व सुखमय हइल शचीर आवास।"

प्रभुके गार्हस्थ्यका दिग्दर्शन

प्रभु दूसरी बार विवाह करके बिल्कुल पक्के गृहस्थ बन गये। स्नेहमयी जननी और प्रेममयी गृहिणीको लेकर, आत्मीय स्वजन और दास-दासीसे परिवेष्टित होकर वे परम आनन्दमें संसार-रसमें मत्त हो गये। विद्या-रस और संसार-रसने एक साथ मिलकर एक अपूर्व रसकी सृष्टि की। रसिकशेखर रसराज श्रीगौराङ्ग सुन्दरने नदियावासी भक्तवृन्दके प्राणोंमें एक अभूतपूर्व आनन्द-रसको प्रवाहित कर दिया। उस प्रवाहमें नदियाके गृहस्थ वैष्णव निमज्जित हो उठे। यदि कहें कि उस समय ऐसा गृही-वैष्णव कोई न था जो उस प्रवाहमें वह न गया हो, तो अत्युक्ति न होगी।

उस समय श्रीगौराङ्ग सुन्दर नवद्वीपमें प्रधान अध्यापक थे। इतनी नयी उम्रमें इतनी बड़ी उच्च-विद्या-पदवी-लाभ नवद्वीपके पण्डित-मण्डलीमें किसीके भाग्यमें बदा न था। ऐसा कोई दिन न था जिस दिन प्रभुके विद्यालयमें दस-बीस नये छात्र न आते हों। उनके घर अतिथि-अभ्यागतकी संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नव-वधू श्रीमती विष्णुप्रिया देवीने श्वशुरके घर आकर वृद्धा सासुके पास क्रमशः गृहस्थीके सारे काम-काजका भार ले लिया है। शचीमाताके पास गृहस्थीका सर्वश्रेष्ठ कार्य रसोई बनाना उन्होंने भली-भाँति सीख लिया है।

यौवनोद्गममें श्रीमतीकी अपरूप रूपलावण्य राशि मानो अर्द्ध प्रस्फुटित कमल पुष्पके समान विकासोन्मुखी होकर प्रभुके मनमें अपार आनन्द प्रदान कर रही है। उनका वर्ण कच्चे सोनेके समान सूक्ष्म वस्त्रके भीतरसे फूटकर मानो बाहर निकल रहा है। नवीना प्रियाजीके सारे अङ्ग सुबलित हैं। प्रत्येक अङ्ग मानो सर्वसौष्ठवपूर्ण हैं, एक-एक अङ्ग परिपूर्ण लावण्यके समुद्र हैं। अपरूप सौन्दर्य, माधुर्य और लावण्यके संमिश्रणसे नवीना प्रियाजीका रूप-सागर प्रेम-तरङ्गकी हिलोरोंसे सदा तरङ्गित रहता है। उनकी सुबलित और सुगठित प्रत्येक अङ्गकी अपूर्व माधुरी राशि परिपूर्ण भावसे सारे अङ्गमें छिटक रही है। गौरवक्ष-विलासिनी श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके अपरूप रूपकी तुलना नहीं है, उनके सौन्दर्यकी सीमा नहीं है। वेरूपमेंजिस प्रकार अनुपम हैं, गुणमें भी उसी प्रकार निरुपम हैं। नवीना प्रियाजो अब तक दिनमें तीन बार गङ्गास्नान करती हैं, यह अभ्यास उनका बाल्यपनसे ही है।

प्रभुकी इस समय तरुण यौवनावस्था है, वे रूपके सागर हैं। ऐसा अपरूप रूपका मनुष्य किसीने कभी नहीं देखा। नदियावासी सब लोग प्रभुके रूपपर मुग्ध हैं। अपरूप और अलौकिक रूपकान्ति लेकर चिर-सुन्दर हमारे प्रभु नवद्वीपमें शचीके गर्भमें उदय हुए थे। सारे जगत्के जीवोंके चित्त आकर्षण करनेके लिए हमारे रूपके सागर प्रभुने नदियाको अपने अपरूप रूपके जालमें फँसा लिया था।

श्रीमती विष्णुप्रिया देवी श्रीगौराङ्ग प्रभुकी परिपूर्णतमा शक्ति हैं। श्रीगौराङ्ग-शक्ति और श्रीगौराङ्ग एक ही वस्तु हैं, एक ही तत्त्व हैं। शक्ति और शक्तिमान् अभेद तत्त्व हैं। शक्तिके रूपमें शक्तिमान् रूपवान् हैं, और शक्तिके गुणसे शक्तिमान् गुणवान् हैं। शक्ति ही शक्तिमान्का सर्वस्व है।

श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके रूपको लेकर श्रीगौराङ्ग प्रभुको रूपका इतना गर्व है। इसी कारण पूज्यपाद श्रीगोस्वामीपादगणने निर्णय किया है कि श्रीराधिकाकी अङ्गकान्ति चोरी करके नन्द-नन्दन श्रीकृष्ण श्रीगौराङ्गरूपमें नदियामें अवतीर्ण हुए थे। केवल अङ्गकान्ति चोरी करके प्रभुके मनको साध नहीं मिटी, प्राणोंकी आकांक्षा पूरी न हुई। वे श्रीराधाके भाव तककी चोरी करके परिपूर्णतम भावमें श्रीगौराङ्ग रूपमें शचीगर्भमें नदियामें उदय हुए थे। इसी कारण प्रभुको महाजनगणने 'राधाभाव द्युति सुबलितं' कहकर वन्दना की है।

श्रीविष्णुप्रिया देवीकी अपरूप रूप कान्तिकी छटा उनके प्राणबल्लभकी श्रीअङ्गकान्तिमें परिपूर्ण रूपमें परिदृष्ट होती थी। प्रेममयी प्रियाजीके प्रेमभावमें प्रभुका प्रेमभाव परिस्फुटित होता था। एकके अभावमें अन्यका रूप-माधुर्य तथा श्रीअङ्ग सौन्दर्य मानो निष्प्रभ जान पड़ता था।

नदियावासीकी सुकृतिके बलसे शुभसंयोग और सौभाग्यका दिन आ उपस्थित हुआ। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-मिलन-लीलारङ्ग देखकर भाग्यवान् नदिया-वासीके प्राणमें एक अभूतपूर्व प्रेमानन्दकी तरङ्ग उठी। नदिया-युगल भावके अपूर्व समावेशमें नदियावासी नर-नारीवृन्दके मनमें परानन्दका स्रोत बह चला। नदियाधाम नदिया-युगल-रसमें प्लावित हो गया।

श्रीभगवान्की युगल रूप माधुरीमें उनके परिपूर्णतम रूपका विकास हुआ। नदिया-युगल श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया नदियामें प्रकट हुए। प्रभुके आत्मप्रकाशके साथ-साथ उनकी परिपूर्णतम युगल परमैश्वर्य मूर्त्तिको प्रकट करके उन्होंने अपने युगल-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भजननिष्ठ नवद्वीप रस-रसिक भक्तवृन्दके मनकी अभिलाषा पूर्ण कर दी। पूर्ण ब्रह्म सनातन, स्वयं भगवान् हमारे प्रभु भक्तके वशी हैं, उन्होंने सब भक्तोंकी मनोकामना पूरी की।

युगल भजन—श्रीगौर-गोविन्द मूर्ति

नदिया-युगल-भजननिष्ठ रसिक भक्तगण अपने प्राणवल्लभ नदिया-नागरको नवद्वीप छोड़ने देना नहीं चाहते। उनके मतसे नन्दनन्दन श्रीकृष्ण जैसे व्रज छोड़कर कहीं नहीं जाते, उसी प्रकार शचीनन्दन गौराङ्ग नागर नवद्वीप छोड़कर कहीं नहीं जाते। वे श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभुके उपासक नहीं हैं, वे श्रीविष्णुप्रिया-वल्लभ श्रीगौराङ्ग-नागरके उपासक हैं। नवद्वीप नित्यधाम है, और इस नित्यधाममें श्रीगौर-गोविन्द प्रभुका नित्य युगल विलास होता है, नित्य रासलीला अनादि अनन्त कालसे प्रकट हो रही है। नवद्वीपधाम श्रीश्रीगौर-गोविन्द देवकी नित्य लीलास्थली, तथा चिन्मय प्रेमधाम है।

श्रीश्रीगौर-गोविन्द मूर्त्ति श्रीगौर-भगवान्‌की आदि श्रीमूर्ति है। श्रीश्रीगौर-गोविन्द रूप श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दरका आदि और स्वयं रूप है। श्रीश्रीगौर-गोविन्द रूपमें श्रीगौराङ्ग प्रभु नित्यधाम नदियामें नित्य रासलीला करते हैं। उनके बाम और दक्षिण पार्श्वमें ह्लादिनी शक्तिरूपिणी श्रीश्रीलक्ष्मी और विष्णुप्रिया देवी विराजमान रहती हैं।

सिंहासनोपरि गौरचन्द्र विलसय।
लक्ष्मी-विष्णुप्रिया बाम दक्षिणे शोभय॥
भक्तिरत्नाकर

लक्ष-लक्ष नदियानागरी श्रीगौर-गोविन्दकी सेवाके कार्यमें व्यस्त हैं। कोई माला गूँथ रही है, कोई चँवर डुला रही है, कोई पान लगा रही है।

नित्यधाम नदियामें श्रीगौर-गोविन्द विचित्र मणि-रत्नमय मन्दिरमें श्रीलक्ष्मी और विष्णुप्रिया देवीके साथ नित्य रासलीला करते हैं। मन्दिरके बीचमें रत्नमय चन्द्रातप झिलमिला रहा है। उसके नीचे परम शोभा विशिष्ट रत्न-सिंहासन है। नाना प्रकारके वस्त्रालङ्कारसे भूषित होकर उस अपूर्व रत्नसिंहासनके ऊपर श्रीगौर गोविन्द श्रीलक्ष्मी-विष्णुप्रियाके साथ आनन्दमें विराज रहे हैं। वे लोग विचित्र वस्त्र पहने हुए हैं। रूपके आलोकमें मन्दिर आलोकित हो रहा है। श्रीगौराङ्गकी रसराज मूर्त्तिकी ज्योति और लावण्यमें त्रिभुवन मोहित हो रहा है।

श्रीगौर गोविन्दके चारों ओर पुष्पोद्यान हैं। इस सुरम्य पुष्पोद्यानमें नाना प्रकारके फूल खिले हैं। कुसुम-सौरभसे चारों दिशाएँ पूर्ण हैं। यह मनोहर पुष्पोद्यान चतुर्दिक सुवर्णमय प्राचीरसे आवेष्टित है। पुष्पोद्यानके पृथक्-पृथक् खण्ड हैं। इसके द्वारपर प्रकाण्ड सुवर्णमय तोरण है। इसको सिंह-द्वार कहते हैं। इस सिंह-द्वारसे लगा हुआ सुरसरिके तट सुवर्णमय पक्का घाट है। उस पक्के घाटके असंख्य मणिरत्न खचित सोपान-राशिके ऊपर नित्यधामवासी श्रीगौर-गोविन्दकी नित्य दासी नदिया नागरीगण विविध गतिसे भ्रमण करती हैं। स्वयं विश्वकर्माने आकर इस मनोरम पुरीका निर्माण करके श्रीगौर-गोविन्द देवको प्रसन्न किया है।

इस पुष्पोद्यानमें रसिक-शेखर श्रीगौर-गोविन्द सखियोंके साथ कल्पवृक्षके मूलमें सिंहासनके ऊपर बैठकर नित्य रासलीला करते हैं। इस श्रीगौर-गोविन्द रूपमें ही श्रीगौर भगवान्‌ने नित्य नदियाधाममें महा अवतारी नाम धारण किया है।

ठाकुर श्रीनिवासाचार्य जब गौरशून्य नदिया-धाममें आये थे, तब उन्होंने श्रीनवद्वीपचन्द्रके श्रीगौर-गोविन्द रूपका दर्शन किया था। नवद्वीपमें श्रीगौर-गोविन्दको नित्य रासलीला उन्होंने सर्वप्रथम देखी थी; क्योंकि वे श्रीगौर-गोविन्दकी ह्लादिनी-शक्ति-स्वरूपिणी श्रीविष्णुप्रिया देवीके साक्षात् कृपापात्र थे। श्रीविष्णुप्रिया देवीकी कृपासे उनको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था। भक्तिरत्नाकर ग्रन्थमें ये सब बातें विस्तार रूपसे वर्णित हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीराधा-गोविन्दकी वृन्दावन-लीलाके समान श्रीगौर-गोविन्दकी नवद्वीपलीला नित्य है। नवद्वीप व्रज है, पुष्पोद्यान वृन्दावन है। केवल नाम और वर्ण-भेद मात्र है। नदियामें रसराज नटवर वेषधारी श्रीगौर-गोविन्द रुक्माङ्ग पुरुष हैं; स्वर्ण-वर्णकी अङ्ग कान्ति है। वृन्दावनके श्रीश्यामसुन्दर श्रीराधा-गोविन्द, नवघनश्यामद्युति विशिष्ट ज्योतिर्मय परमपुरुष हैं। श्रीगौर-गोविन्दकी रासलीला और श्रीकृष्णकी रासलीलामें कुछ भी भेद नहीं है। लीलाभेदसे विभिन्न नाम धारण करके श्रीभगवान् भुवनमें उदित होते हैं।

श्रीगौराङ्ग अवतारमें श्रीगौर भगवान्के तीन धामानुरूप तीन लीलासूचक नाम देखे जाते हैं। सर्वप्रथम आदिमूर्ति नित्य नदियाधामके वृन्दावनस्थ पुष्पोद्यान-विहारी रास-रसिक नदिया नागरीसे परिवेष्टित श्रीगौरगोविन्द हैं। इसी रसराज रूपमें श्रीगौर-भगवान् पूर्णतम शक्तिमान् है। उनकी ह्लादिनी शक्तिका इसी रसराज मूर्तिमें पूर्ण विकास है। इसी कारण श्रीगौर भगवान्की नित्य रासलीला इस मनोरम पुष्पोद्यानमें नित्य प्रकटित होती है। यह रसराज श्रीगौर-गोविन्द मूर्ति नन्दनन्दन श्रीकृष्णके समान वंशीधारी हैं। यह रसराज रूप श्रीगौर-भगवान्का स्वयं रूप है। उनके प्रिय पार्षद श्रीरूपगोस्वामी श्रीगौर-गोविन्दके स्वयं रूपकी यह रूप-व्याख्या कर गये हैं।

अनन्यापेक्षि यद्रूपं स्वयं रूप स उच्यते।

—लघु भागवत १·१२

अर्थात् श्रीभगवान्का जो आदि रूप है, जो अन्य रूपकी अपेक्षा नहीं करता, वही उनका स्वयं रूप है। श्रीगौर भगवान् स्वयं रूपमें नित्य नदियाधाममें नित्य रासलीला कर रहे हैं; नदियाधाम गो-लोकधाम है। श्रीगौर-गोविन्द रूप श्रीभगवान्का आदि और नित्य रूप है। अतएव श्रीगौर भगवानका इस रसराज नित्य आदिरूपमें भजन करना ही श्रेष्ठ भजन है। श्रीलक्ष्मी-विष्णुप्रिया देवी और नित्यदासी नदिया-नागरीगण स्वयंरूप श्रीगौर-गोविन्दके कायव्यूह हैं, अतएव उनके समान हैं। श्रीगौर-गोविन्दके साथ नदिया नागरीगणको अभेद अंशमें देखना चाहिये। वे श्रीगौर-गोविन्दकी ह्लादिनी शक्ति हैं। श्रीलक्ष्मी-विष्णुप्रिया नागरी शिरोमणि हैं। शक्ति और शक्तिमान्के सम्बन्धसे श्रीभगवान् और उनकी शक्ति अभिन्न है।

श्रीगौर-गोविन्द रूपके प्रकाश और विलास-रूप

श्रीगौर-गोविन्द रूपका द्वितीय प्रकाश नदियाधाममें मायापुरमें है। इस स्थानमें श्रीगौर-गोविन्दका नाम श्रीगौराङ्ग है। यहाँ उनकी लीलाका नाम संकीर्तन-लीला है। यह लीला उन्होंने अपने अन्तरङ्ग भक्तोंके साथ प्रकट की थी। श्रीगौराङ्ग रूप श्रीगौर भगवान्का स्वयं रूप नहीं है। यह उनका स्व प्रकाश रूप है। यथा लघु भागवत में—

अनेकत्र प्रकटता रूप सौकस्य यै कदा।
सर्वथा तत्स्वरूपैव स प्रकाश इतीर्यते॥

—१. २१

अर्थात् प्रकाश किसी रूपभेदमें परिगणित नहीं हो सकता। क्योंकि वह किसी भी अंशमें स्व-स्वरूपसे भिन्न नहीं। आकार, गुण और लीलाका ऐक्य रखकर एक ही विग्रहका एक साथ अनेक स्थानमें आविर्भाव होने पर उसको प्रकाशरूप कहते हैं। मायापुरमें श्रीगौर भगवान्का श्रीगौराङ्ग रूपमें आविर्भावका नाम प्रकाशावतार है। श्रीगौराङ्ग श्रीगौर-गोविन्दकी द्वितीय प्रकाश मूर्त्ति हैं, अथवा वैभव प्रकाश हैं। शास्त्रमें प्रकाश मूर्त्तिकी भक्तावतार कहकर व्याख्याकी गयी है।

श्रीगौर-गोविन्दका तृतीय प्रकाश नीचाचलमें हुआ। वहाँ श्रीगौर-गोविन्दका नाम श्रीकृष्ण चैतन्य है। श्रीगौर-गोविन्दकी मूर्ति यहाँ संन्यास मूर्ति है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नीलाचल बैकुण्ठधाम है। श्रीगौर-गोविन्दके इस तृतीय रूपका नाम विलास-रूप है। यथा लघु भागवतमें—

स्वरूपमन्याकारं यज्ञस्य भाति विलासतः।
प्रायेणात्मसमं शक्तया स विलासो निगद्यते॥
१. १५

स्वयं प्रभुका जो अन्य प्रकारका स्वरूप लीला-विशेषके कारण प्रतिभात होता है, और शक्ति-प्राकट्य प्रायः उनके सदृश ही होता है, उसे विलास कहते हैं। जैसे श्रीगोविन्दके विलास परम व्योमाधिपति नारायण हैं, तथा परम व्योमनाथके विलास आदि व्यूह वासुदेव हैं। नीलाचलमें श्रीकृष्ण-चैतन्य देवने नर-नारायण रूपमें बैकुण्ठलीला प्रकट-की थी। श्रीगौर-गोविन्दकी विलासलीला उनका तृतीय प्रकाश है।

इस प्रकार नदियाके अवतार श्रीगौर-गोविन्द श्रीधाम नदियाके पुष्पोद्यानमें नित्य रासलीला कर रहे हैं। श्रीधाम नदियामें नित्य संकीर्तन-लीला कर रहे हैं, और नीलाचलमें वे नित्य बैकुण्ठ-लीला कर रहे हैं। श्रीगौर भगवान्‌की सारी लीलाएँ नित्य हैं, सारे रूप नित्य हैं। उनके सब धाम नित्य हैं। उनका आदिरूप श्रीगौर-गोविन्द रूप साधारण दृष्टिके परे है, तथा भजन-प्रणाली साधारण लोगोंके लिए अपरिज्ञात है। श्रीगौर-गोविन्दके इस आदिरूप प्रकाश, इस आदि श्रीमूर्त्तिके बिकास विलास, सेवा, भजन आदि विषयोंकी ओर गौर-भक्तोंकी दृष्टि आकर्षित हुई है—यह अति शुभ लक्षण है। श्रीश्रीनदिया-युगल भजन और उपासना आदि अनन्तकालसे प्रचलित हैं। यह नवीन नहीं हैं।

गार्हस्थ्य जीवन

श्रीश्रीगौर भगवान् नरवपु धारण करके संसारी सजकर गृही वैष्णवोंको स्वयं आचरण करके शिक्षा दे गये हैं। प्रभुकी यह गृहस्थी गार्हस्थाश्रमके लिए आदर्श धर्म शिक्षाका स्थल है। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी स्वयं आदर्श गृहलक्ष्मीके कर्तव्य-कर्मोंका आचरण करके कलिके जीवको शिक्षा दे गयी हैं। देव-सेवा, पति-सेवा, पतिको स्वजन सेवा, अतिथि सेवा आदि गृहस्थके जितने कर्तव्य-कर्म हैं, उन्होंने स्वयं आचरण करके कलिके जीवको जिस प्रकार जिस भावसे शिक्षा दी है, वैसी शिक्षा धर्मशास्त्रके शत-सहस्र उपदेशोंसे भी नहीं हो सकती।

कलिग्रस्त दुर्बल जीवको इस प्रकार प्रकृत गार्हस्थ्य धर्मकी शिक्षा देनेका एक निगूढ़ उद्देश्य भी है। सर्वज्ञ प्रभु और उनकी सर्वज्ञा गृहिणी जानते थे कि कलिग्रस्थ दुर्बल संसारी जीव कठोर भजन-साधन करनेमें, तथा अन्य तीनों आश्रमोंके कठोर नियमों और उपदेशोंको मानकर चलनेमें अनेक कारणोंसे असमर्थ हैं। वे कलियुगके भीषण प्रहारसे सब प्रकारसे परेशान और उत्पीड़ित हैं। गार्हस्थ्य-धर्मके पालनेमें कठोरता नहीं है। इसमें योगसाधन आदि अनुष्ठानोंके समान दैहिक परिश्रम और क्लेश नहीं है। अनायास लब्ध सामान्य शाकभाजी और चावल पकाकर गृहस्थ वैष्णव गृह-देवताको भोग लगाकर परम आनन्दपूर्वक कुटुम्बका भरण-पोषण और अतिथि-सेवा आदि सांसारिक कार्योंका निर्वाह कर सकता है।

इस प्रकारके गृहस्थ वैष्णव साधु प्रभुके विशेष कृपा-पात्र थे। श्रीवास पण्डित, शिवानन्द सेन, नरहरि सरकार, चन्द्रशेखर आचार्य, पुण्डरीक विद्यानिधि, मुरारि गुप्त, वासुदेव घोष, आदि प्रभुके मुख्य पार्षदगण सभी गृहस्थ वैष्णव थे।* सीता देवी, मालिनी देवी,

* जब शिवानन्द सेन परिवार प्रभुका दर्शन करनेके लिए नीलाचल पर गये, तो कृपानिधि हमारे प्रभुने अपने नित्यदास गोविन्दको पुकारकर आदेश दिया था—

शिवानन्देर प्रकृति पुत्र यावत् हेथाय।
मोर अवशेष पात्र तारा जेन पाय॥
चै. भा. अं. १२. ५२

शेष अगले पृष्ठ पर—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्वजया देवी,नारायणी देवी आदि भक्तिमती वैष्णव-गृहिणीगण प्रभुकी मातृ स्थानीया थीं । प्रभुकी गार्हस्थ्य लीलाके आदर्शमें गृही वैष्णवोंका विशुद्ध धार्मिक-जीवन संगठित हो, परम पवित्र गृहस्थ धर्मकी रक्षा करने वाली वैष्णव-गृहिणीगणके पुण्य चरितके आदर्शमें भारतीय रमणीगणका चरित्र संशोधित और संगठित हो, भारतके घर-घरमें, हिन्दूके गृह-मन्दिरमें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल सेवा प्रचलित हो तो इससे बढ़कर सौभाग्यकी बात और क्या हो सकती है ? श्रीश्रीविष्णुप्रिया गौराङ्गकी नित्य-सेवा गृहस्थ-वैष्णव श्रीश्रीनारायण भावमें करें, नदिया युगल सेवा-रसमें मग्न होकर गौर-भक्तवृन्द परमानन्द लाभ करें।

प्रभु अपने आत्मीय स्वजन, बन्धु-बान्धव, प्रिय शिष्य और छात्रगणके साथ परमानन्दमें संसार लीला-रङ्गमें मत्त हैं। इस प्रकार प्रायः दो वर्ष तक श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने संसारी रहकर स्नेहमयी जननी और प्रेममयी गृहिणीको लेकर परमसुखसे गृहस्थी की। पहले कहा जा चुका है कि प्रभुको बड़ी साध थी कि वे भलीभाँति गृहस्थी चलावेंगे, श्रीमती-लक्ष्मीप्रिया देवीसे विवाहकर जब उन्होंने पूर्वबङ्गकी यात्राकी, तो अपने मनके इस भावको उन्होंने अपनी माता और आत्मीय स्वजनके पास प्रकट किया था। प्रभुका प्रथम संसार उनकी इच्छासे नष्ट हो गया, उन्होंने दूसरी बार विवाह किया। इस लीला-रङ्गमें गृहस्थ भगवान्‌ने गृहस्थ वैष्णवको दिखलाया था कि गृहस्थके लिए नयी उम्रमें स्त्री-वियोग होनेपर द्वितीय बार व्याह करना शास्त्र-सम्मत समीचीन कर्म है। धर्म संस्थापक प्रभुने स्वयं आचरण करके सब कार्योंकी शिक्षा दी है। इस पुनर्विवाह-लीलाके मूलमेंभी यही भाव निहित था ।

अब उनके मनमें अच्छी तरह गृहस्थी चलानेकी साध पुनः जाग उठी। पहले वे गृहस्थी चलानेके उद्देश्यसे धनोपार्जन करनेके लिए विदेश गये थे।* अब हमारे इच्छामय प्रभु घरपर बैठकर ही प्रचुर धनोपार्जन करने लगे। वे नदियाके अद्वितीय पण्डित थे। उनके घरमें गृहस्थीकी किसी भी वस्तुकी कमी नहीं रही। असंख्य छात्र उनके पद-सेवी दास थे। नदियाके बाल-वृद्ध-युवक उनके निज जन थे। बड़े-बड़े धनी महाजनगण उनको सर्वस्व देकर भी परितृप्त नहीं होते थे। धन-रत्न, वस्त्र, भोजनकी सामग्री राशि-राशि प्रभुके घर भेजकर भी उनका मन नहीं मानता था। श्रीगौराङ्ग-गृहिणी श्रीमती विष्णुप्रिया-का सर्वाङ्ग मणि-मुक्ता स्वर्णालङ्कारसे आभूषित करके भी उनके मनकी साध पूरी न होती थी।

शचीमाताके घर लक्ष्मीका भण्डार था । दीन-दरिद्र, अतिथि-अभ्यागतको प्रभु स्वयं पास बैठाकर परम सन्तुष्ट करके भोजन कराते थे। दीन-दुःख-तारिणी दयामयी जगन्माता श्रीमती विष्णुप्रिया देवी अपने सन्दूकसे नये नये बहुमूल्य वस्त्र निकालकर अपनी दुःखी सन्तानको निधड़क दान करती थी। स्नेहमयी शचीमाता रास्तेसे दीन-दुःखीको परम आदर पूर्वक बुलाकर उनको भरपेट भोजन कराके सन्तुष्ट करती थी।

प्रभु जब नदियाके बाजारमें निकलते थे तो सब प्रकारके व्यवसायी परम आदरपूर्वक विशेष आग्रह करके उनको भोजनके पदार्थ, वस्त्र-अलङ्कार

प्रभुने ऐसी कृपा किसीपर नहीं की। वे प्रच्छन्न अवतार थे, अपनेको छिपाते थे। उन्होंने अपना पादोदक पर्यन्त किसीको पान करने नहीं दिया।

गोविन्देरे महाप्रभु करियाछे नियम।
मोर पादोदक जेन न लय कोन जन ॥
—चै. च. अ. १६. ४०

*अर्थ उपार्जन बिनु संसार ना चले।
बङ्गदेश जाब आमि से अर्थेर छले ॥
—ज. चै. म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आदि अच्छे-अच्छे पदार्थ भेंटमें देकर कृतार्थ होते थे। मूल्यकी बात उठानेपर वे हाथ जोड़कर निवेदन करते थे कि, "पण्डित ! वह बात पीछे होगी । इस समय कृपा करके ग्रहण कीजिये।" हमारे भक्तवत्सल प्रभु मधुर मुस्कानके साथ उनके सारे प्रेमोपहार स्वीकार कर लेते थे। प्रभुके अनुचर छात्रवर्ग इस द्रव्य सम्भारको उठाकर ले जाते थे। वे इन सब पदार्थोंको लाकर प्रभुके घर शचीमाताके हाथोंमें देते थे। शचीमाता बड़े आनन्दसे पुत्रबधूको दिखलाकर उन सब पदार्थोंको घरमें रख लेती थीं। उनके मनमें बड़ा आनन्द होता था। उनका बड़ा दुलारा निमाईचाँद कमाई करना सीख गया है । संसारमें मन लगाता है, स्वर्ण प्रतिमा पुत्र-बधूके साथ सुखसे संसार कर रहा है—इससे बढ़कर और क्या सुख उनको हो सकता था ? नदियावासी सब लोग प्रभुको धन्य-धन्य कहते हैं।

शचीमाताको अब और कोई दुःख नहीं है। लक्ष्मीके समान बधू श्रीमती विष्णुप्रिया देवीको पाकर वे लक्ष्मीप्रिया देवीके शोकको भूल गयी हैं। निमाईचाँद पितृविहीन बालक है, यह उनके मनमें नहीं है। विश्वरूप प्रभु संन्यासी हो गये हैं, यह बात भी वे भूल गयी हैं। सोनेका चाँद-पुत्र और सोनेकी प्रतिमा पुत्र-वधूके साथ वे परम आनन्दपूर्वक गृहस्थी चला रही हैं। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-विलास रसमें वे भी मत्त हो गयी हैं। उनको क्या अब कोई दुःख रह सकता है ?

प्रभुका अब यौवन-लीलारङ्ग प्रारम्भ हो गया है। पूज्य पाद कविराज गोस्वामीने प्रभुकी यौवन लीलाको सूत्ररूपमें लिखा है—

विद्यासौन्दर्यसद्वेश-सम्भोगनृत्यकीर्तनैः ।
प्रेमनामप्रदानैश्च गौरो दीव्यति यौवने ॥
—चै. च. आ. १७. २

अर्थात् विद्या, सौन्दर्य, सुन्दर वेश, ख्याति-प्रतिख्याति आदि विषयोपभोग, नृत्य, कीर्तन एवं नाम और प्रेम प्रदानके द्वारा श्रीगौराङ्ग प्रभु यौवनमें सुशोभित हो रहे थे।

अब प्रभुके यौवनका पूर्ण विकास हो गया था। उनके भुवन-मोहन अपरूप रूपकी तुलना न थी, ऐश्वर्य विलासकी सीमा न थी । प्रभुकी नदिया-विलासकी अपरूप लीलाकथा भाषामें वर्णित नहीं हो सकती।

गौरभक्त प्राचीन कवि पण्डित राधामोहनने गाया है—

मधुकर रंजित मालती मण्डित
जित धन कुञ्चित केशम् ।
तिलक विनिन्दित शशधर रूपक
युवति मनोहर वेशम् ॥
सखि कलय गौरमुदारम् ।
निन्दिक हाटक कान्ति कलेवर
गर्वित मारक मारम् । ध्रुव।
मधु मधुर स्मित लोभित तनुभृतम्
अनुपम भाव विलासम् ।
निधुवन नागरी मोहित मानस
विकथित गद्गद भाषम् ॥
परमा किञ्चन किञ्चन नरगण
करूणा वितरण शीलम् ।
क्षोभित दुर्मति राधामोहन
नाम निरूपमनीलम् ॥

प्रभुका इस समय नवयौवन है। श्रीभगवान् चिर सुन्दर हैं। उनकी श्रीअङ्ग-माधुरी मनुष्यके समान नहीं है, अर्थात् वह मनुष्यकी रूपकान्तिके समान अस्थायी नहीं है। चिरदिन, चिरकाल, एक रूपमें वह जीव-जगतके मन-प्राणको आकर्षित करती आ रही है, सारे जगके जीवोंका नयन-रञ्जन करती आ रही है। श्रीभगवान्की श्रीअङ्गकान्ति और रूपमाधुरी अनन्त कालसे जीव-समष्टिकी सर्वोत्कृष्ट ध्येय वस्तुके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रूपमें निर्दिष्ट हुई है। उस अरूप रूपकी तुलना नहीं है, उस अनुपम माधुरीकी उपमा नहीं है। वह अपरूप रूपमाधुरी लोक-चक्षुके लिए अगोचर है, क्योंकि वह ध्यान-धारणाकी वस्तु है। परन्तु नदियाके परम सौभाग्यवान् नर-नारी वृन्द, यहाँ तक कि पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग पर्यन्तने स्वयं भगवान् श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दरकी इस अपरूप रूपराशिको प्राकृत चक्षुसे दर्शन करनेका सुयोग और सौभाग्य प्राप्त किया था। नदियावासीके भाग्यकी शिव-विरञ्चि मनोकामना करते हैं। रसराज रसिक शेखर स्वयं भगवान् श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दरके युगल विलासका दर्शन करोड़ोंमें किसी एक आदमीके भाग्यमें भी बदा है कि नहीं ? कहा नहीं जा सकता। भाग्यवान् नदियावासी श्रीश्रीनदिया-युगलके उस भव-विरंचि-वाञ्छित अपरूप युगल-विलासरूपका नित्य दर्शन करके जीवन सार्थक करते हैं, त्रिताप-दग्ध मन और प्राणको शीतल करते हैं। अतएव नवद्वीपवासीके चरणोंमें कोटि-कोटि नमस्कार।

प्रभुका विद्या-विलास और ऐश्वर्य लीला रस इस समय उनके यौवन विलास-रस रङ्गके साथ साथ पूर्णरूपसे परिपुष्ट और परिस्फुट हुआ था। निमाई पण्डितके अगणित छात्रवृन्द थे, असंख्य शिष्य थे। त्रिजगत-पति गौराङ्ग सुन्दर उनके गुरु हैं। प्रभुके एक-एक छात्र साक्षात् वृहस्पति तुल्य हैं, अध्यापक शिरोमणि हैं। उनके छात्रोंकी पाण्डित्य-प्रतिभा देखकर नदियाकी पण्डित-मण्डली विस्मित होती थी।

प्रभुकी छात्र-मण्डलीमें प्रत्येक उनके नित्यदास और विशेष कृपा पात्र थे। जगद्गुरु श्रीगौराङ्ग प्रभुके श्रीचरण कमलमें उन्होंने आत्म-समर्पण करके और उनका शिष्यत्व स्वीकार करके पूर्वलीलाकी साधना और सुकृतिका परिचय दिया था। श्रीगौर भगवान्के श्रीमुखसे निःसृत मधुमय उपदेश वाणी सुनकर उनके सारे दुःख दूर हो गये थे। सारे पाप ध्वंस हो गये थे। श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने लिखा है—

प्रभुमुखेन्दु गलद्वचनामृतं
मृतजनस्य च जीवितदायि तत् ।
श्रुति पथेन निपीय चिरेण ते
मुदमिता दमिताखिलकल्मषाः ॥
चै. च. महाकाव्य ४. १५

विद्यारसमें उन्मत्त होकर उद्धत-शिरोमणि हमारे प्रभु सारी नदियाका परिभ्रमण करते थे, विद्यागर्वमें वे किसीको कुछ समझते नहीं थे। उनकी दिव्य वेशभूषा परिधानमें दिव्य कुञ्चित सूक्ष्म शुभ्रवस्त्र था, गलेमें दिव्य-मालती पुष्पकी माला डोलती थी, सारे सुगठित अङ्ग कुंकुम और चन्दनसे विभूषित थे। नवीन यौवनमें प्रभु अपने श्रीअङ्गके सौन्दर्य और लावण्य प्रभासे नवद्वीपवासी प्रत्येक नर-नारीके मन-प्राणको आकर्षित करते थे।

प्रभुकी अवस्था इस समय केवल बीस वर्षकी थी। पूर्ण यौवनके परिपूर्ण सौन्दर्य और माधुर्यमें उनको अपरूप रूपराशि मानो उछली पड़ती थी। शचीमाताके घरमें नदिया युगलके अपरूप रूप सागरमें नित्य नव मृदुल तरङ्ग उठता है, और उस तरङ्गके घात-प्रतिघातमें नदियावासी नर-नारीका मन प्रेमानन्दमें उद्भासित होता है। नदिया नागरीगणने सखियोंको सम्बोधन करके गानका सुर पकड़ा है—

(तोरा) रूप देखबि यदिआय ।
रूपेर सागर वहे शची आङ्गिनाय ॥
सोनार वरण रंग, चाहनिर किवा ढंग
(गोरा)ते रछ नयने चाहि भूरु नाचया ॥
चरणे नूपुर दिये, त्रिभङ्ग बङ्किम हये
नाचिते नाचिते से जे कटि दोलाय ॥
चाँचर चिकुर मूले, मुकुतार माला दोले,
रमणीर मन हरे अङ्ग शोभाय ।
परिसर वक्ष देश, नवीन नागर वेश,
सुवलित भुज जुग तिलक नासाय ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युग्म भूरु पद्म आँखि, सर्वाङ्गे चन्दन माखि,
मुखे हरि हरि बले मधुर भाषाय ।
नागरेर शिरोमणि, सरब रसेर खनि,
शचीर नन्दन गोरा नाचे आङ्गिनाय ।।
दास हरिदासे कय, गोरा रूप रसमय,
कुलवतो कामिनीर कुल मजाय ।।

नवद्वीप रस व्रजरसकी अपेक्षा किसी अंशमें न्यून नहीं है । प्राचीन महाजन भक्तकवियोंने असख्य नदिया नागरी भावके पद लिखे हैं । नवद्वीप रस-रसिक गौर-भक्तवृन्दने नदियाके युगल-भजनको जीवनका सार बना दिया था । श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाका युगल-विलास उनका मूल साधन-मन्त्र था ।

मस्तक पर तिलककी महत्ता

हमारे धर्म-मर्यादा-रक्षक प्रभु सदा ही सदाचार प्रिय रहे । सद्धर्म-रक्षण और सदाचार-पालन उनके जीवनका व्रत था । उनके विद्यालयमें यदि कोई बिना तिलक लगाये पढ़ने जाता तो उसको प्रभु मधुर वचनसे कौतुकके बहाने सदाचारकी शिक्षा देते थे । धर्म-संस्थापक हमारे प्रभुने धर्म-कर्मकी मर्यादाका कभी उल्लङ्घन नहीं किया । धर्म-शिक्षाके लिए ही उन्होंने नदियामें अवतार लिया था । सद्धर्मकी शिक्षा देना ही उनकी गृहस्थ लीलाका मूल उद्देश्य था । छात्रवृन्दके ललाटमें तिलक न देखकर प्रभु समझते थे कि वे सन्ध्या-वन्दन बिना किये ही पढ़ने आये हैं । भ्रमवश यदि कोई तिलक लगाना भूल जाता, अथवा असावधानीसे यदि किसीकी तिलक रेखा मिट जाती, तो प्रभु उसको सबके सामने लज्जित किये बिना न छोड़ते । वे कहा करते थे कि—

तिलक ना थाके यदि विप्रेर कपाले ।
तबे तारे श्मशान सदृश वेदे बोले ।।

चै. भा. आ. १०. १९२

जो छात्र सन्ध्या-वन्दन या तिलक धारण न करके उनके विद्यालयमें पढ़ने आते, उनको प्रभु सम्बोधन करके कौतुकमें ही मीठे वचनोंसे कहते थे—

बूझिलाङ् आजि तुमि नाहि कर सन्ध्या ।
आजि भाइ तोमार हइल सन्ध्या बन्ध्या ।।
चल सन्ध्या कर गिया गृहे पुनर्वार ।
सन्ध्या करि तबे से आसिह पड़िवार ।।

चै० भा० आ० १०. १९३-१९४

इस प्रकार सद्धर्मरक्षक प्रभु अपने छात्र और वयस्यगणको ब्राह्मणके सदाचार आदि धर्म-कर्मके विषयको लेकर लज्जित किया करते थे । किसीकी मजाल न थी कि सन्ध्या-बदन तथा तिलक धारण किये बिना प्रभुके सामने आ जाय ।

श्रीगौर भगवान् अपनी गार्हस्थ्य-लीलाके प्रसङ्गमें कलिग्रस्त जीवको सर्व प्रकारके स्वधर्माचरण करनेकी शिक्षा दे गये हैं । स्वधर्मनिष्ठ हुए बिना, सदाचारनिष्ठ हुए बिना जीव धर्मोपदेश प्रदान करनेका अधिकारी नहीं होता । प्रभुने इस लीलारङ्गके द्वारा कलिग्रस्त जीवको यही बतलाया ।

मधुर-उपासना

श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीपलीला मधुरसे भी मधुर है । उसमें उनकी यह गार्हस्थ्य-लीला अतिशय माधुर्यमय है । चौबीस वर्षकी आयु तक प्रभु गृहस्थाश्रममें आबद्ध रहे । स्वयं भगवान् संसारी होकर मायिक संसार-सुखके संभोगमें मग्न थे । यह उनकी माधुर्य लीला थी । श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती महाशयने स्वरचित श्रीश्रीमन्महाप्रभुके अष्टकालीय-लीला-स्मरण मङ्गलस्तोत्रमें उनकी नवद्वीपकी गार्हस्थ्य-लीलाको लिपिबद्ध किया है । यह मधुर लीलारस गौरभक्त वैष्णवके लिए नित्य-आस्वादनकी वस्तु है । यह मधुर नवद्वीपलीला उनके नित्य आचरणीय सर्वश्रेष्ठ भजनका अङ्ग है । श्रीश्रीराधा-माधवकी वृन्दावन लीलाके स्मरणके पूर्व श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीपलीला स्मरणीय है । पूज्यपाद दास गोस्वामी एक पहर तक नवद्वीपलीलाका स्मरण-मनन करनेके बाद श्रीश्रीराधाकृष्णकी वृन्दावन-लीला-रसका आस्वादन करते थे ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया नदिया-युगल-भजन-निष्ठ नवद्वीप-रस-रसिक भक्तवृन्द प्रभुकी इस नवद्वीप-लीलाके रसमें दिन-रात मग्न रहते हैं। सिद्ध चैतन्यदास बाबाजी महाशय इस नवद्वीप रसके रसिक भक्त थे। श्रीविष्णुप्रिया-बल्लभ उनके प्राणधन थे। वे नदिया-नागरी भावमें नदिया-नागर श्रीगौर किशोरका भजन करते थे। वे नवद्वीप छोड़कर कहीं नहीं गये। उन्होंने व्रजका भजन कभी ग्रहण नहीं किया। उन्होंने श्रीगौराङ्ग तत्त्वको जैसा समझा था, वैसा अन्य किसीने नहीं समझा। उनका श्रीगौराङ्ग भजनमें ही श्रीराधाकृष्ण भजन सिद्ध होता था। इस प्रकारके एकनिष्ठ श्रीगौराङ्ग प्रभुके रसिक भक्त गौड़ीय वैष्णव जगतमें विरले ही होंगे। श्रीधाम नवद्वीपमें श्रीगौराङ्ग मन्दिरमें यह सिद्ध चैतन्यदास बाबाजी महाशय बहुत दिन रहे। उनको न जानने वाला कदाचित् ही कोई गौर-भक्त होगा, अब वे गौर-धामको प्रयाण कर गये हैं। उनके पवित्र नामका स्मरण करनेसे सारे पाप ध्वंस होते हैं, उनके पुण्य चरितका चिन्तन करनेसे मन, चित्त और हृदय परिशुद्ध होता है, निर्मल होता है। इन महापुरुषकी पुण्य जीवन कहानी लिखी जा चुकी है।

श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी मधुर गार्हस्थ्य लीला, परमोज्वल रसपूर्ण युगल-विलास ही उनकी सर्वोत्कृष्ट नर-लीला है, यही उनकी नर-लीलाका परिपूर्ण माधुर्य है। श्रीभगवान्‌की नर-लीला ही सर्वोत्तम है, यह गोस्वामी शास्त्रके सिद्धान्तके अनुरूप है, और सारे वैष्णव सम्प्रदायोंके आचार्योंके द्वारा अनुमोदित है। श्रीमद्भागतमें यह स्पष्ट अक्षरोंमें लिखा है। श्रीभगवान् कृपा-परवश होकर सर्वोत्तम और सर्व-सौन्दर्यपूर्ण नर-वपु धारण करके जीव-जगतमें उदय होते हैं। सबके मनको अनुरंजित, तथा सबके चित्तको आकर्षित करने वाली सर्वोत्तम नर-लीला जगतमें प्रकट करके जीवके मनको अपने सुशीतल चरणोंमें आकृष्ट करते हैं, अपरूप रूपमें प्रकट होकर जीवके हृदयमें प्रवेश करते हैं। यह कृपानिधि श्रीभगवान्‌की केवल स्वरचित जीवके प्रति करुणाका प्रदर्शन मात्र है, और कुछ नहीं। स्वयं भगवान् श्रीश्रीशचीनन्दन नरवपु धारण करके जो नदियामें शची-गर्भसे प्रकट हुए थे, वह केवल उनकी कृपामात्र थी। यह उनकी कृपाकी सीमा थी।

श्रीभगवान्‌की गार्हस्थ्य लीला-स्थली उनका संसार था। श्रीगौर भगवान् जो संसारी बने थे, जो गृहस्थका बाना धारण किये थे, वह केवल लोक-शिक्षाके लिए था। गृही वैष्णवका क्या कर्तव्य था, संसारमें रहकर किस प्रकार स्वधर्माचरणकी शिक्षा दी जाती है, तथा किस प्रकार संसारमें रहकर अनासक्त भावसे ईश्वर भजन किया जाता है, अपने संसारको किस प्रकार भगवत्-संसारके रूपमें परिणत कर सकते हैं, किस प्रकार सब जीवोंको प्रेम-धर्मकी शिक्षा दे सकते हैं, कलिग्रस्त संसारी जीवको यह सब शिक्षा देनेके लिए ही प्रभुने यह गार्हस्थ्य-लीलाका अभिनय किया। श्रीभगवान्‌की इस गार्हस्थ्य-लीलामें शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और मधुर—इन पाँच भावों और रसोंका समावेश और समष्टि परिलक्षित होती है। श्रीभगवान् जीवके माता, पिता, पुत्र, भाई-बन्धु और स्वामीके समान प्रेमके पात्र हैं, प्रेमकी वस्तु हैं। वे नर-वपु धारण करके विषयके सम्बन्धसे प्रेमके आश्रयीभूत होकर कृपावश जगत्‌के जीवोंके गोचरीभूत होते हैं। उनके सृष्ट जीव अपने-अपने भावके अनुसार और अपने मनके अनुकूल रसका आश्रय लेकर प्रेम-भक्तिके द्वारा उनका भजन करते हैं। प्रीति, स्नेह, आदरके द्वारा उनकी आवभगत करते हैं, काय-मन और प्राणके द्वारा उनकी सेवा करते हैं। इसीका नाम है प्रीति-भजन या प्रेम-सेवा। इसका दूसरा नाम माधुर्य भजन है। श्रीभगवान्‌की गार्हस्थ्य-लीला ही इस प्रीति-भजन और प्रेम-सेवाका विषय है। इस प्रकारके प्रीति-भजनसे वे जैसा प्रसन्न होते हैं और वशीभूत होते हैं, जैसा अपना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बनते हैं, वैसा अन्य किसी उपायसे नहीं होते। यह बात वे बारंबार अपने श्रीमुखसे कह गये हैं। श्रीमद्भागवतमें ब्रजलीला पढ़नेसे यह जाना जा सकता है।

यह श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया नदिया-युगल-भजन और उपासना गोस्वामीशास्त्र-सम्मत और महाजन-गणानुमोदित है। श्रीपाद मुरारिगुप्त, प्रभुके नित्य पार्षद और आदि लीला-लेखक थे। उन्होंने अपनी आँखों प्रभुकी बाल्य, किशोर, पौगण्ड तथा मधुर युगलविलासकी ऐश्वर्य और माधुर्य लीला देखकर लिखी है—

सौन्दर्य माधुर्य विलास विभ्रमैः
रराज राजेश्वर हेमगौरः।
विष्णुप्रिया लालित पाद पङ्कजो
रसेन पूर्णो रसिकेन्द्रमौलिः॥

पार्षदों द्वारा युगल-भजन और प्रचार

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-भजन और उपासनाके सम्बन्धमें जीवाधम ग्रन्थकारके द्वारा सङ्कलित 'श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी अष्टकालीन लीलास्मरण-मनन-पद्धति' श्रीग्रन्थमें जो भूमिका लिखी है, वह यहाँ उद्धत की जाती है। कृपालु गौरभक्त पाठकवृन्द देखेंगे कि श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-नदिया-युगल-भजनका प्रचार श्रीमन्महाप्रभुके नित्य पार्षद कर गये हैं। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल उपासना। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया नदिया युगलकी आदि श्रीमूर्त्ति, सरकार ठाकुर नरहरि दासके आदेशसे ठाकुर कन्हाई और रघुनन्दनने श्रीखण्डमें प्रतिष्ठित करके नवद्वीप रस-रसिक गौर-भक्तगणका आनन्द वर्द्धन किया है। उसके बाद श्रीपाट खेतरीमें ठाकुर नरोत्तमदासने प्रियाजीके साथ श्रीगौराङ्गकी युगल श्रीमूर्त्तिकी प्रतिष्ठा की, तथा श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया नदिया युगल भजनका पथ-प्रदर्शन करके गौड़ीय वैष्णव मण्डलीका चित्ताकर्षण किया है। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया नदिया-युगल भजन और उपासना जो महाजनगणानुमोदित तथा गोस्वामीशास्त्र-सम्मत है, उसे पूर्वोक्त दोनों महाशयोंने स्वयं नदिया-युगल-भजन प्रणालीको ग्रहण करके सबको दिखला दिया है। ठाकुर नरहरि ब्रजकी मधुमती थे। वे श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दरको मधुर भावसे भजते थे, चँवर डुलाकर वे श्रीगौराङ्ग नागरकी अङ्गसेवा करते थे। श्रीनित्यानन्द प्रभु पूर्वलीलाके अनङ्ग मञ्जरी थे, अतएव गौरलीलामें नदिया युगल भजनमें उनकी परम प्रीति थी। यह प्रीति शचीके आङ्गनमें श्रीगौर विष्णुप्रियाको युगलमें दर्शन करके वे सबके समक्ष प्रकट कर गये हैं। श्रीनित्यानन्द प्रभु ठाकुर नरहरिकी परीक्षा करने श्रीखण्ड गये। ठाकुर नरहरिके पास एक जलपात्र था, जिसको उनने श्रीनिताईचाँदको पान करनेके लिए दिया। श्रीनित्यानन्द प्रभुने जलपान करके देखा कि, वह तो जल नहीं मधु है। इस मधुको दोनों प्रेमपूर्वक पान करके प्रेमानन्दमें विभोर हो गये। तब दोनों जनोंने बैठकर अनेक गूढ़ तत्त्वकी बातें कीं। ठाकुर नरहरिने तब अपने मनकी साध श्रीनित्यानन्द प्रभुको बतलायी, उसके फलस्वरूप श्रीपाट श्रीखण्डमें श्रीगौराङ्गके वामभागमें श्रीविष्णुप्रिया बैठेंगी, यह निश्चय हुआ। ठाकुर कन्हाईको उन्होंने इसी नदिया-युगल भजनकी शिक्षा दी, और श्रीखण्डमें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल मूर्त्ति स्थापन करनेकी आज्ञा दी। श्रीनित्यानन्द प्रभुने अपने प्रधान पार्षद श्रीउद्धारण दत्तको श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-सेवा प्रदान की। इसके फलस्वरूप उद्धारण दत्तकी श्रीपाट सप्तग्राममें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल श्रीमूर्त्ति प्रतिष्ठित होकर आज तक अर्चित होती आ रही है। नित्यानन्द प्रभुने जिस शुभकार्यके लिए मन्त्रणा प्रदान की, ठाकुर नरहरिने जिसके लिए उपदेश दिया, ठाकुर नरोत्तम जिसके स्वयं प्रतिष्ठाता थे, वह महाजन-प्रदर्शित पथ नहीं है, यह बात कोई गौरभक्त बोलनेका साहस नहीं कर सकता।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसके सिवा सारे गौरभक्त जानते हैं कि श्रीनिवासाचार्य, ठाकुर नरोत्तम और श्रीश्यामानन्दन प्रभुत्रयके द्वितीय अवतार थे। गोस्वामीपादगणने ब्रजमें बैठकर बहुत परिश्रम करके प्रभुके आदेशसे भक्तिशास्त्र प्रणयन किया। परन्तु श्रीगौड़ मण्डलमें उसका प्रचार न हुआ, यह देखकर श्रीजीवगोस्वामी पादने उपर्युक्त तीनों सज्जनोंको श्रीधाम वृन्दावनमें बैठकर सारे गोस्वामी शास्त्रमें सुशिक्षित किया, और उनके द्वारा इस भक्तिशास्त्रको श्रीगौडमण्डलमें भेजा। वे ब्रजमें बैठकर भजन करना चाहते थे, परन्तु उनके गुरुवर्गका आदेश हुआ कि गौड़ मण्डलमें भक्तिशास्त्रका प्रचार उनके लिए ब्रजके भजनकी अपेक्षा अधिक प्रयोजनीय कार्य है, अतएव उनको श्रीगौड़ मण्डलमें गोस्वामीशास्त्रका प्रचार करने जाना चाहिये। इन तीनों महापुरुषोंने अपने गुरुवर्गके उपदेशको मानकर सिरपर धारण किया, तथा ब्रजका भजन छोड़कर श्रीगौड़मण्डलके लिए प्रस्थान किया, और वहाँ रहकर भक्तिग्रन्थ और गोस्वामी-शास्त्रका प्रचार किया। ये तीनों महात्मा श्रीअद्वैत, श्रीनित्यानन्द और श्रीमन् महाप्रभुकी प्रकट मूर्त्ति थे, और सर्व-शक्ति-सम्पन्न महापुरुष थे।

गोस्वामी शास्त्रके पाण्डित्यका अभिमान करने वाले जितने महात्मा हैं, वे चाहे प्रभुपाद हों या महन्त हों, उनको याद रखना चाहिये कि जिस गोस्वामी शास्त्रको लेकर वे इतने गौरवान्वित हैं, तथा जिसके बलसे इतने बलवान् हैं उसकी शिक्षा पहले पहल गौड़ देशके गोस्वामी पाद और महन्तगणने श्रीनिवास आचार्य, ठाकुर नरोत्तम और श्रीश्यामानन्दसे ग्रहणकी थी। इन तीनों महात्माओंमें एक ठाकुर श्रीनरोत्तमने प्रियाजीके साथ श्रीगौराङ्गकी युगल श्रीमूर्ति प्रतिष्ठा की थी। जिस समय इस श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल श्रीमूर्तिकी प्रतिष्ठा हुई तो श्रीनिवास आचार्यने इस शुभ अनुष्ठानका सारा भार अपने ऊपर लिया था। ठाकुर श्यामानन्दने स्वयं उपस्थित होकर सब प्रकारसे इस शुभ कर्ममें सहायता की थी। अब देखा गया कि प्रभुत्रयके अवतार तीनों महात्मा पुरुषोंने एकत्र होकर श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दरके वाम भागमें श्रीश्रीविष्णुप्रिया देवीको बैठाया। इस नदिया युगल श्रीविग्रहकी प्रतिष्ठाके समय श्रीपाद खेतरीमें सारा गौड़ीय वैष्णव समाज निमन्त्रित हुआ। सबने वहाँ उपस्थित होकर इस भुवन-मङ्गल शुभ-कर्मको सुचारु रूपसे सम्पन्न किया, किसीके मुखसे कोई दूसरी बात न निकली। जो लोग श्रीगौड़ मण्डलमें भक्तिशास्त्रके प्राचरक थे, जिन्होंने गोस्वामी शास्त्रका प्रचार किया, उन्हीं लोगोंने उद्योग करके श्रीश्रीनदिया युगल श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाकी श्रीमूर्तिकी स्थापना और प्रतिष्ठा की। नदिया युगल भजनकी रीति और पद्धतिका प्रचार किया। यदि यह नदिया युगल-भजन पद्धति गोस्वामी शास्त्रके विरुद्ध होती, तो वे लोग ऐसा कार्य कभी नहीं करते। श्रीपाट खेतरीके इस महामहोत्सवमें जहाँ प्रियाजीके साथ श्रीगौराङ्गकी युगल श्रीमूर्ति प्रथम बार स्थापित हुई वहाँ जो-जो लोग उपस्थित थे, उनके बारेमें सुनिये—श्रीश्रीनित्यानन्दकी गृहिणी श्रीजाह्नवा गोस्वामिनी, तथा उनके पुत्र श्रीश्रीपाद वीरभद्र प्रभु, श्रीअद्वैत तनय श्रीकृष्णमिश्र, तथा उस समयके समस्त प्रधान गौड़ीय वैष्णव महन्त और साधुगण उपस्थित थे। कोई छोटा-बड़ा छूटा न था। इतना बड़ा महासमारोह पूर्वक महोत्सव पहले गौड़ मण्डलमें कभी नहीं हुआ था। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावन दास ठाकुर भी इस महोत्सवमें उपस्थित थे। श्रीश्रीजीव गोस्वामीपाद, श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामीपाद उस समय ब्रजधाममें वर्त्तमान थे, उनके अनुमोदनसे यह भुवन-मङ्गल शुभकार्य सम्पन्न हुआ। अब किस साहससे कोई गौर-भक्त या आचार्य-सन्तान नदिया-युगल भजनका विरोधी होगा? श्रीनिवास आचार्य प्रभु श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-भजन-प्रचार कार्यमें प्रधान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कार्यकर्त्ता थे, क्यों कि वह श्रीविष्णुप्रिया देवीके विशेष कृपापात्र और चिह्नित दास थे। प्रभुके आदेशसे श्रीविष्णुप्रिया देवीने जिस प्रकार विशेष रूपसे उनपर कृपा की थी, वह गौर-भक्तगणको अविदित नहीं है। श्रीनिवास आचार्य श्रीविष्णुप्रिया देवीके श्रीचरणोंके दर्शन और स्पर्श प्राप्तकर धन्य हो गये थे। ऐसी कृपा गौरगणोंमें किसीके भाग्यमें नहीं हुई।

अन्य महाजनगणमें श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती महाशयका नाम गौड़ीय वैष्णव समाजमें प्रख्यात है। उन्होने स्वचरित 'श्रीगौराङ्गकी अष्टकालीय लीला' में श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाकी रासलीला व्यक्त की है।

इस समय महाजनगणमें नवद्वीपके सिद्ध चैतन्यदास बाबाजीको न जाननेवाला कोई वैष्णव न होगा, यदि ऐसा कहें तो अत्युक्ति न होगी। श्रीनवद्वीपमें श्रीगौराङ्ग दर्शन करने जो आते थे उनमें कोई भी इस महापुरुषका दर्शन किये बिना न जाता था। उनके अङ्गकी वायु लगनेसे सारे पाप ध्वंस हो जाते थे, दर्शन करनेसे प्रेमधन अर्जन होता था। इस महापुरुषकी भजन प्रणाली भी किसीको अज्ञात न थी। वे श्रीविष्णुप्रिया-वल्लभके नामसे श्रीगौराङ्गका भजन करते थे, यह नाम ही उनका जप-तप-ध्यान था। अपने शिष्यका नाम रक्खा था श्रीविष्णुप्रिया दास। वे श्रीनवद्वीपको श्रीवृन्दावन देखते थे। श्रीगौर-युगल उनके प्राणधन थे। नवद्वीप रसके नागरीभावमें वे मत्त रहते थे। विशुद्ध नवद्वीप रसके वे रसिक भक्त थे। वे नवद्वीप-रस घूँट-घूँट आस्वादन करते थे, और कलसी-कलसी बाँटते थे। नदिया नागरी भावमें विभाजित होकर वे रसमय रसिकशेखर श्रीगौराङ्गनागरका भजन करते थे। उनके भजनमें प्रधान सहायक थीं श्रीमती विष्णुप्रिया देवी। वे देवीको 'श्रीप्रियाजी' सम्बोधन करते थे। वे उनके आनुगत्य होकर श्रीगौराङ्ग भजन करते थे और नदिया युगल प्रेममें विभोर रहते थे। उनके भजनानन्दकी तुलना न थी। उन महापुरुषकी भजन पद्धतिका अनुकरण या अनुगमन करनेमें किस गौर भक्तको आपत्ति हो सकती है? उनके साथ यदि नरक जाना पड़े तो वह भी बड़े भाग्यकी बात होगी।

कोई-कोई शास्त्राभिमानी वैष्णवाचार्य अहङ्कारके बल कहते हैं कि नदिया-नागरी भजन-पद्धति महाजनोंके द्वारा अनुमोदित नहीं है, तथा गोस्वामी शास्त्र-सम्मत नहीं है। इस बातका एक-मात्र उत्तर यह है कि यह नदिया-नागरी भजन-पद्धति न होती, तो सहस्रों नदिया-नागरी भावके पद महाजनगण क्यों रचते? इन सब पदोंके पदकर्त्ता कौन हैं? वे हैं प्रभुके नित्य पार्षद श्रीमुरारि गुप्त, ठाकुर नरहरि सरकार, वासुदेव घोष गोविन्द और माधव घोष, यहाँ तक कि श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासावतार श्रीबृन्दावन दास ठाकुर भी हैं। वे ऐश्वर्य भावके साधक होनेपर भी पश्चात् गौर-लीलाके मधुर भाव साधक हुए और पद रचना कर गये। उनके रचे नदिया-नागरी भावके भी पद पाये जाते हैं, जैसे—

(श्रीविष्णुप्रिया देवीकी उक्ति)

अलसे अरुण आँखि, कह पहुँ किवा देखि,
रजनी बञ्चिले कोन स्थाने।
वदन सरीरुह मलिन जे हइया छे,
रजनी करिया जागरणे॥
जाओ गौर तुया सने किसेर पिरीति॥ ध्रु०॥
एमन सोनार देह, परश करिल केह
ना जानि से कोन रसवती॥
नदिया नागरी सने, रसिया हयेछे ओहे,
एवे कि हे पार छाड़िबारे।
सुरधुनि तीरे जाइया, मार्जना करगे गिया
तबे से आसिते दिब घरे॥
गौराङ्ग करुणा भाषी, कहे मृदु मृदु हासि,
काहे प्रिये कह कटु भाष।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरिनामे जागि निशि, अमिय सागरे भासि
गुण गाय वृन्दावनदास ।।

अतएव नादिया-नागरी भाव नदिया युगल भजनके अनुकूल है। यह भाव नया नहीं, व्रजके गोपीभावके अनुरूप है। गोपीभाव और नदिया नागरीभाव एक वस्तु है, एकतत्त्व है। परन्तु इस मधुरभावके अधिकारी करोड़ोंमें कोई एक है। इस कारण यदि कहो कि नदिया-नागरी भावका भजन शास्त्र-विरुद्ध तथा महाजनगणके द्वारा अनुमोदित नहीं है, तो यह बात कभी ग्राह्य नहीं हो सकती।

आधुनिक कालमें दो परम गौरभक्त महात्मा श्रीशिशिरकुमार घोष और केदारनाथ दत्त भक्ति-विनोदने एक साथ मिलकर गोस्वामी और महन्तगणका मन लेकर श्रीधाम मायापुरमें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल श्रीमूर्त्तिकी स्थापना की है। ये दोनों महापुरुष अब गोलोकगत हो गये हैं, इन लोगोंने शास्त्र-विरुद्ध कार्य किया है, क्या यह कोई कह सकता है ? श्रीधाम वृन्दावनमें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल सेवाके प्रकाशमें आनेके समय श्रीश्रीराधारमणजीके सेवक पुजारी श्रीगोपाल भट्ट परिवारके गौड़ेश्वराचार्य श्रीमधुसूदन सार्वभौम गोस्वामी प्रमुख गोस्वामी प्रभुगणने श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-उपासनाके सम्बन्धमें जो मत लिपिबद्ध किया था, वह नीचे उद्धत किया जाता है—

"सम्प्रति केचनावरदर्शिनः श्रीगौर-विष्णुप्रिया-उपासना-सम्बन्धे सन्दिह्यन्ते। तदसाधु। यतस्ते गोस्वामीचरणानां सूक्ष्याशयं न विदन्ति। यथा सर्वधर्मान्परित्यज्येति चरम सिद्धान्ते सर्वगीता-शास्त्रस्य पर्यवसानं तथैव गोस्वामी प्रतिपादितस्य सर्वभक्तिशास्त्रस्य श्रीगौर-विष्णुप्रियोपासनायामेव पर्यवसानम्।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि नदिया-नागरी भावमें श्रीगौराङ्ग-भजन गौर-भक्त साधक महाजनों द्वारा अनुमोदित है। गृहस्थ वैष्णवके लिए श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-उपासना, श्रीश्रीलक्ष्मीनारायण सेवा और उपासनाके समान परम मङ्गलप्रद है। पहले गृहस्थ वैष्णवोंके घर-घरमें श्रीश्रीलक्ष्मी-नारायण युगल पूजित होते थे, अब उनके साथ-साथ श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया नदिया युगल भी पूजित हो रहे हैं। इससे बढ़कर सौभाग्यकी बात और क्या हो सकती है ? श्रीश्री गौरवक्ष-विलासिनी श्रीमती विष्णुप्रिया देवी जगत्माता है, वे जगत्कर्त्री साक्षात् भक्तिस्वरूपिणी हैं। मूर्तिमती भक्तिदेवीको यदि कोई अपनी आँखों दर्शन करना चाहता है तो वह हमारी दयामयी नवद्वीपेश्वरी श्रीश्रीविष्णुप्रिया देवीकी श्रीमूर्त्तिका ध्यान करें, आद्यन्त लीलाकथा नित्य स्मरण मनन करें, उनके श्रीचरणोंका आश्रय लेकर श्रीगौराङ्ग भजन करें। नवद्वीपके सिद्ध चैतन्यदास बाबाजीने श्रीविष्णुप्रिया देवीका अनुगा बनकर श्रीविष्णुप्रिया वल्लभका भजन किया था. वे नदिया-युगलकी श्रीमूर्त्तिका अपनी आँखों दर्शन करके उनके साथ बातें करके कृतार्थ हुए थे।

अद्यावधि करे लीला श्रीगौराङ्गराय।
रसिक भक्तगणे देखिवारे पाय ।।
—वंशीशिक्षा, चतूर्थोल्लास

भगवत्-भजन तत्त्व अतिशय निगूढ़ और दुर्बोध्य है। भजन प्रणाली भी विविध है, तथा ऋषि महाजनोंके मत भी विभिन्न भावसे शास्त्रमें लिखे हैं, एवं महन्त और आचार्यगण भी अपने-अपने भजन-साधनके अनुसार मत और उपदेश शिष्यानु-शिष्य वर्गको दिया करते हैं, इसमें किसीको आपत्ति नहीं हो सकती। परन्तु यदि एक दूसरेकी उपासना, दूसरेका साधन-भजन लेकर हँसी करे, मजाक उड़ावे तो इससे उपासकके मनमें व्यथा होगी। वैष्णव-शास्त्रका उपदेश है कि किसी भी प्राणीको उद्विग्न न करे। यह उपदेश सब वैष्णवोंके लिए पालने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

योग्य है। विशेषतः महन्त और आचार्यगण इस शास्त्रोपदेशका स्वयं आचरण करके सबको शिक्षा देवें। 'यह भजन अच्छा नहीं, वह उपासना ठीक नहीं, यह नाम कीर्तनीय नहीं, वह मूर्त्ति पूजनीय नहीं'—यह वैष्णवाचार नहीं है। श्रीगौराङ्ग सुन्दरके साथ उनकी वक्षविलासिनी श्रीविष्णुप्रिया देवीके युगल भजन और उपासनाको सिद्ध नहीं कहते, वे गोस्वामीपाद हों या अधिकारी महन्त हों, चाहे वे जो हों, वे हृदयहीन हैं, उनको माया-ममता नहीं है। श्रीगौराङ्ग प्रभुकी सर्वश्रेष्ठ भक्त श्रीविष्णुप्रिया देवी हैं, वे भक्त-गोष्ठी-शिरोमणि हैं। वे गौरवक्ष-विलासिनी हैं—इसको कोई भूले नहीं। इस कलियुगमें वे ही मूर्तिमती भक्तिदेवी हैं। यह ऋषि-महाजनके वचन हैं, मेरी बात नहीं है। भक्तिके स्थानमें अपराध करना साधारण बात नहीं है। प्रभुके श्रीमुखकी बात है—

भक्तिस्थाने इहान हैल अपराध।
एतेक उहान हैल दरशन बाद॥
—चै० भा० म० १०. १९०

महाप्रकाश लीलाके समय प्रभुने ऐश्वर्यभावमें मुकुन्दको उपलक्ष करके यह बात कही थी। उन्होंने एक और स्थानमें कहा था—

भक्तिस्थाने अपराध कैले घूचे भक्ति।
भक्तिर अभावे घूचे दरशन शक्ति॥

अतएव हे शास्त्राभिमानी प्रभुपादगण! हे पाण्डित्याभिमानी गौरभक्तगण! साक्षात् भक्ति-स्वरूपिणी गौरवक्षविलासिनी श्रीविष्णुप्रिया देवीके श्रीचरणोंमें आप अपराध अर्जन न करें। किसीके भजन-साधनमें हस्तक्षेप न करें। सब मिलकर बोलिये—

श्रीमन्त्रवद्वीप किशोरचन्द्र!
हा नाथ विशम्भर नागरेन्द्र!
हा श्रीशचीनन्दन चित्तचोर!
प्रसीद हे विष्णुप्रियेश गौर!

—★—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेईसवाँ अध्याय

प्रभुकी गयाधाम यात्रा

जे वा शुने ईश्वरेर गयार विजय । गौर चन्द्र प्रभु तारे मिलिब हृदय ॥
श्री चै. भा. आ. १२. १४१

गया यात्राकी तैयारी

गृही भगवान् श्रीगौराङ्ग प्रभुके मनमें गयाधाम दर्शन करनेकी इच्छा हुई । उन्होंने स्वयं आचरण करके सर्वधर्मकी शिक्षा दी है । पितृ-श्रद्धादि कर्म करनेके लिए प्रभु गयाधाम जायँगे । गृहस्थके लिए गयाधाममें जाकर पिता-पितामहको पिण्डदान करना एक प्रधान कार्य है । प्रभु गृहस्थ संसारी हैं, वे इस कामको करेंगे । इसीलिए सर्वधर्म-संस्थापक प्रभुको गयाभूमिके दर्शनकी इच्छा हुई ।

आश्विन मासके पितृपक्षमें उन्होंने गयाधाममें जानेका निश्चय किया । मातासे यह बात कही । शचीमाता सोचती हैं कि एक बार उनका पुत्र प्रवासमें गया तो घरपर कैसा काण्ड उपस्थित हुआ ? प्रवाससे लौटकर प्रभु अपनी प्राण-प्रतिमा श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीको न देख पाये । पतिके वियोगमें शचीमाताकी अतिप्रिय लक्ष्मी-बहूने देह त्यागकर दिया था । पुत्रके गयाधाम जानेकी बात सुनकर वह सारी स्मृति शचीमाताके मनमें एक-एक करके उदय होने लगी । वे बड़ी चिन्तित हुईं । वे खूब जानती थीं कि श्रीमती विष्णुप्रिया देवी कैसी पतिसेवा परायणा तथा पतिप्राणा हैं । क्षणभर भी पतिके चरणोंका दर्शन न हो तो श्रीमती दुःखसे विह्वल हो जाती हैं । पतिदेवताके सिवा श्रीमती अन्य देवताको नहीं जानतीं । पतिसेवा ही श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके जीवनका एक मात्र व्रत था । शचीमाता अपना दुःख भूल गयीं । पुत्र-वधूकी बात सोचकर वह अत्यन्त चिन्तित और व्यथित हुईं । क्योंकि एक बार पुत्रके प्रवास जानेपर उनके हृदय पर विषेश चोट लगी थी । वह चोट आज भी उनके मर्म-मर्ममें बिंधी हुई है । मनके भावको दबाकर उन्होंने पुत्रसे रोते-रोते कहा—"बेटा विश्वम्भर ! तुम प्रवासमें जाओगे, तो तुम्हारे बिना घर अन्धकारमय लगता है, तुम मेरे लिए अन्धेकी लकड़ीके समान और मेरे नयनोंके तारा हो । तुम्हारे सिवाय मेरे देहका आत्मा और कोई नहीं है तो भी—

पितृगण निस्तार करिते जाबे तुमि ।
आपना लागिया तोरे कि बलिब आमि ॥
चै. म.

शचीमाताकी अन्तिम बातका कुछ मर्म है । उन्होंने पुत्रसे कहा, बेटा निमाई ! "तुम पितृ-श्राद्ध करने गयाधाम जाओगे, मैं इस विषयमें तुमको क्या कह सकती हूँ ?" यह बात कहते समय शचीमाताने पुत्र-विरह-जनित अपने दुःखको दबाये रक्खा । पुत्र पितृश्राद्ध करने गया जा रहा है, क्या वह इस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कार्यमें बाधा दे सकती हैं ? अतएव वह बोली—

'आपना लागिया तोरे कि बलिब आमि ?"

परन्तु उनके पुत्रकी एक एकान्त अनुगता चरणोंकी दासी घरपर है, उसका उपाय क्या होगा ? श्रीगौराङ्गकी माताकी बातका भाव यही था। उन्होंने यह बात खोलकर न कही, अथवा न कह सकी। इस समय सारी पूर्व बातें स्मरण कराकर पुत्रके धर्म-कार्यमें बाधा देना या उसके मनमें व्यथा पहुँचाना स्नेहमयी शचीमाताने युक्ति सङ्गत न समझा। मनके दुःखको उन्होंने मनमें ही दबाये रक्खा। वह हृदयके मर्मान्तिक दुःखसे पुत्रको कहने लगी—

गया यदि जाबे बाप् शुनरे निमाइ।
मोर नामे एक पिण्ड दिसरे तथाइ ।।

चै. भ.

अर्थात् अपनी जीवित दुःखिनी माताके नामपर भी गयाधाममें विष्णुपदमें एक पिण्ड-दान कर देना। यह शचीमाताकी आन्तरिक हृदयकी बात न थी, बड़े दुःखसे उन्होंने पुत्रसे यह बात कही। सर्वज्ञ प्रभुके लिए माताके मनका भाव समझना कठिन न था। हमारे अन्तर्यामी प्रभुने सब कुछ समझ लिया। उन्होंने मधुर प्रबोध वाक्यसे माताको समझा कर कहा—"माँ ! तुम यही समझना कि मैं सदा तुम्हारे पास हूँ। पिण्ड देनेके लिए ही संसारमें पुत्रकी आवश्यकता होती है। अतः मुझ कृपा करके आज्ञा दो, और शोक नहीं करो।"

पतिभक्ति परायणा और धर्म-प्राणा शचीमाता इसका उत्तर भला क्या देतीं ? उन्होंने बाध्य होकर पुत्रको पितृश्राद्ध करनेके लिए गया जानेकी अनुमति दे दी। शचीमाताने अपने बहनोई श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यका हाथ पकड़कर कहा, "आचार्यरत्न ! मेरा सोनेका निमाई गयाधाम जायेगा। आपको उसके साथ जाना पड़ेगा। मेरा निमाई बालक है। उसको मैं अकेले दूर-देश जाने न दे सकूँगी। वह जब पूर्वबङ्ग देश गया था, मैंने वनमाली आचार्यको साथमें भेजा था। इस बार आप निमाईके साथ जाँय।" श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यने आनन्दके साथ शचीमाताके इस अनुरोधको स्वीकार किया।

चन्द्रशेखर आचार्यका प्रभुके साथ गयाधाममें जाना भी प्रभुकी इच्छासे हुआ। प्रभु उनके ऊपर विशेषरूपसे कृपा करते हैं। आचार्यरत्न प्रभुके एकान्त अन्तरङ्ग भक्त हैं। इस महापुरुषको प्रभु संन्यास ग्रहणके समय भी साथ ले गये थे, और संन्यास ग्रहण करानेका सारा भार उनके ऊपर दे रक्खा था। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्य प्रभुके पितृ-तुल्य थे। प्रभुको गोद खेलाकर तथा पीठपर घुमाकर उन्होंने बड़ा किया था। गया यात्राके समय प्रभुने उनको अपने साथ लिया, इसका कुछ गूढ़ रहस्य था। जिनको वह अपने संन्यास धर्म ग्रहणमें सहायताका भार देंगे, जिनको प्रभु काटोयाके उस दुःख-काण्डका कर्त्ता-धर्त्ता बनावेंगे, उनको पहलेसे ही इस गुरुतर कार्यका भार उठानेके लिए उपयोगी बनाना ठीक होगा। इसीलिए जान पड़ता है प्रभुकी प्रेरणासे शचीमाताने अपने बहनोईको अपने पुत्रकी गया। यात्राका सङ्गी बनाया। प्रभुके साथ कुछ शिष्य लोग भी गये। शीतप्रधान देश गयामें जानेपर शीत वस्त्रकी आवश्यकता होगी, यह सोचकर शचीमाताने पुत्रके सङ्ग शीतकालके वस्त्र बाँध दिये।

विदाईके पूर्व श्रीमतीजीसे मिलन

श्रीमती विष्णुप्रिया देवीने प्राण-बल्लभकी गया-यात्राकी बात सुनी। पति-प्राणा बालाको पति-विरह-दुःखसे बढ़कर संसारमें और कोई दुःख नहीं होता। पतिके साथ शुभ मिलन होनेके बाद देवीको एक दण्डके लिए भी पति-विरह-दुःख सहना नहीं पड़ा था। पति-विरह-व्यथा क्या वस्तु है, यह वे नहीं जानती थीं। पतिदेवताकी गया-यात्राकी बात सुनकर श्रीमती विषाद-सागरमें मग्न हो गयी। अब उनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्द्रवदन पर हँसी नहीं है। अब उनके मुखकमलका वह आनन्दोत्फुल्ल भाव नहीं है। वे इस समय निरन्तर चिन्ताग्रस्त रहती हैं। उनका सुन्दर विकसित कमलके समान मुख शुष्क हो गया है। शचीमाता सब समझती हैं। प्रभु भी सब कुछ अपनी आँखों देखते हैं। परन्तु कोई इसका उपाय नहीं कर पा रहा है।

क्रमशः प्रभुकी गया धामकी शुभ यात्राका दिन स्थिर हो गया। यात्राके पूर्व-दिवस रात्रिमें प्रभुने प्रियाजीसे विदा ली। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी छल-छल नयनोंसे प्रभुके श्रीचरणोंकी ओर एकटक देखती रहीं। कोई बात बोल न सकीं। प्रभुने प्रियाजीको प्रेम पूर्वक मधुर वचनोंसे कहा—'प्रियतमे! मैं धर्म-कार्य करने गयाधाम जा रहा हूँ। तुम मेरी सहधर्मिणी हो। तुम्हारी अनुमति बिना प्राप्त किये मेरा धर्म-कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। मैं वहाँ पितृ-श्राद्ध करने जा रहा हूँ। इसी जाड़ेमें लौट आऊँगा। तुम मेरी वृद्धा माताकी सेवा शुश्रूषा करना।" श्रीमतीजीने मुँह उठाकर एक बार अश्रुपूर्ण नयनोंसे प्राण बल्लभके मुखचन्द्रकी ओर देखा, पश्चात् परम प्रेमपूर्वक तथा उत्सुकताके साथ अश्रुभरे मुख कमलको नीचा करके उनके रक्तकमलचरणोंकी ओर देखने लगीं।

प्रभुने देखा कि उनकी प्रियतमाकी अश्रुधारसे वक्षःस्थल डूब रहा है। यह देखकर भक्तवत्सल प्रेममय प्रभुका हृदय उन्मथित हो गया। उन्होंने प्रेमपूर्वक विरह-विदग्धा प्रियाजीको हृदयसे लगाकर उनके सन्तप्त प्राणोंको शीतल किया। गौरवक्ष विलासिनी श्रीमती विष्णुप्रिया देवी स्वामीके सोहागसे सब दुःख भूल गयीं। अब वे कुछ प्रकृतिस्थ हुईं। कुछ देर बाद धैर्यधारण करके प्राणबल्लभसे कातर स्वरमें बोलीं—"प्राणबल्लभ! तुम कहते हो कि, 'धर्म-कार्य करने जा रहा हूँ'। मैं तुम्हारी सहधर्मिणी हूँ, मुझको साथ लेकर क्यों नहीं जाते हो?"

चतुर चूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌ने अपनी सुचतुरा सहधर्मिणीके सामने पराजय स्वीकार की। अब क्या उत्तर दें, यह निश्चय न कर सके। कुछ देर तक चुप रहे। तब प्रभु मधुर मुस्काते हुए सोचते-विचारते सिर हिलाते प्रियाजीसे बोले—'प्रियतमे! तुम अल्पवयस्का तरुणी युवती हो। इस नयी उम्रमें तीर्थ भ्रमण तुम्हारे लिए लोकाचारके विरुद्ध और निषिद्ध है। और एक बात है, तुम साथ चलती हो तो वृद्धा माताकी सेवा कौन करेगा? उनकी देखभाल कौन करेगा?"

अब श्रीमतीजी कुछ बोल न सकीं। वृद्धा सासुकी सेवाकी बात जब प्रभुने उठायी, तब देवीके बोलनेके लिए कुछ न रहा। तब भी बालबुद्धिके वशीभूत होकर चतुरा प्रियाजीने अपने प्राणबल्लभको और एक परम युक्तिपूर्ण अति सुन्दर बात कही। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी अवनत वदन करके दोनों हाथोंकी अंगुलियोंके नख खूँटते खूँटते अति मृदु-स्वरमें अवनत मुख करके प्राणबल्लभसे सलज्ज भावसे बोली, "तुम माँको भी साथ क्यों नहीं ले चलते?"

चतुर चूड़ामणिने समझा था कि उनकी सरला प्राणबल्लभा उनके उत्तरसे निरस्त हो जायँगी। प्रियतमाकी इस वाक् चातुरीको देखकर उन्होंने विशेष सन्तुष्ट होकर पुनः हँसते-हँसते उत्तर दिया—प्रियतमे! तुम मेरे प्रथम उपदेशको याद करो। तुम अल्पवयस्का तरुणी युवती हो। इस उम्रमें तुम्हारा घर छोड़कर कहीं जाना उचित नहीं है।"

श्रीमतीजी समझ गयीं कि, उनके प्राणबल्लभ अकेले तीर्थयात्रा करनेके लिए कृत-सङ्कल्प हैं। उन्होंने और कुछ कहनेका साहस नहीं किया। प्रभुने इस प्रकार प्रियाजीसे विदा लेकर दूसरे दिन प्रातःकाल मातासे विदा ली। रोते-रोते शचीमाता पुत्रको विदा करके राह देखती रह गयीं। प्रभुने श्रीपाद चन्द्र-शेखर आचार्यरत्नको सङ्ग लेकर दो-चार शिष्योंके साथ गयाकी यात्राकी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मन्दारमें मधुसूदन भगवान्‌के दर्शन और ज्वर-लीला

पैदल अनेक गाँव और नगरोंके बीच होते हुए नदियाके अवतार श्रीश्रीगौराङ्ग सुन्दर तीर्थयात्रामें जा रहे हैं। जिस देशमें, जिस नगरमें, जिस गाँवमें उनके श्रीचरणकी धूलि गिरती है, वह देश, वह गाँव पवित्र हो जाता है, वहाँके देशवासियोंका उद्धार हो जाता है, और उस देशके लोग वैष्णव हो जाते हैं।

कुछ दिनमें प्रभु मन्दारमें आकर पहुँचे।* मन्दारमें मधुसूदनका दर्शन करके वे आनन्द-विह्वल हो उठे। सुन्दर दृश्योंसे भरी मन्दार पर्वतश्रेणी पैदल गयाधाम जानेके मार्गमें अवस्थित है। प्रभु उस सुरम्य पर्वतके ऊपर चढ़कर ठाकुरके सामने प्रेमानन्दमें नृत्य करने लगे।

चीर नामक नदीमें स्नान करते समय प्रभुकी इच्छासे उनके शरीरमें ज्वर हो आया। प्राकृत मनुष्यके समान वे ज्वर रोगसे व्याकुल हो उठे। यह जो विदेशमें प्रभुने वनमें ज्वर-प्रकाश लीला प्रकट की, यह भी अति रहस्यपूर्ण है। प्रच्छन्न अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुकी प्रत्येक लीला कहानी गूढ़ रहस्यसे भरी होती है। रास्तेमें प्रभुको प्रबल ज्वर-ग्रस्त देखकर श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न और उनके अनुचर शिष्यगण विशेष चिन्तित हुए। उन्होंने अत्यन्त व्यस्त होकर यथासाध्य नाना उपायोंसे प्रभुके ज्वरको दूर करनेकी व्यवस्था और चेष्टा की, परन्तु किसी प्रकारसे भी प्रभुका ज्वर दूर न हुआ। सभी शङ्कित हो उठे।

धर्मसंस्थापक हमारे प्रभुने सब धर्मोंकी पूर्ण मर्यादाकी रक्षाकी है। ब्राह्मणके प्रति आदरकी मर्यादाकी रक्षा करनेके लिए ही पश्चिम देशमें प्रभुकी यह ज्वर-लीला प्रकट हुई। मधुसूदनके पुजारी पश्चिम देशीय विप्रगण सदाचार न थे। प्रभुके सङ्गी शिष्योंमें किसी-किसीने उनके आचार-व्यवहारको देखकर कटाक्ष किया था। एतद्देशीय ब्राह्मणोंका आचरण देखकर प्रभुके सङ्गी साथियोंमें उनके प्रति-विप्रबुद्धि लुप्त होने लगी थी। द्विजकुल चूड़ामणि प्रभुने यह देखकर हृदयमें दुःखित होकर शिष्यगणको कौशलपूर्वक कहा—"न जाने मेरे दोषसे या मेरे साथियोंके दोषसे मेरे इस धर्मकार्यमें विघ्न हो गया। मार्गमें ज्वर हो गया, कैसे मैं गयाधाममें जाकर पितृ-श्राद्ध सम्पन्न करूँगा?" यह प्रभुकी वाह्य उक्ति है। उनका अन्तरका भाव तो द्विज-भक्ति प्रकाश करना है। वे कुछ देरके बाद शिष्यगणसे बोले—"सब विघ्नोंके निवारणका एक ही उपाय है। विप्र पादोदककी व्यवस्था करके मुझे विप्र-पादोदक पान कराया जाय, जो सब पापोंको हरनेवाला है। इससे ज्वर तुरत भाग जायगा।"

इतना कहकर प्रभुने शय्यासे उठकर स्वयं वहाँके एक विप्रका चरण धोकर भक्तिपूर्वक उनका पादोदक पान किया। साथ ही प्रभुके देहका ज्वर दूर हो गया और वे पूर्ण स्वस्थ हो गये।

प्रभुके इस अद्‌भुत लीलारङ्गको देखकर चन्द्रशेखर आचार्य और प्रभुके शिष्यगण मन-ही-मन अपना अपराध समझकर विशेष रूपसे लज्जित और अनुतप्त हुए। तब उनके ज्ञान-चक्षु खुल गये। प्रभुके शिष्यगण उनके चरणोंमें जा गिरे। अपने अपराधके लिए क्षमा प्रार्थना करके प्रभुके चरणोंमें कातर भावसे निवेदन किया—"हमारे ही अपराधके कारण आपको कष्ट भोगना पड़ा। अब आपने ब्राह्मण-भक्ति प्रकट की। हमसे जो अपराध हुआ उसको क्षमा करें।"

इतना कहकर हाथ जोड़कर वे प्रभुका स्तवन करने लगे।

---

* मन्दार पर्वत भागलपुर जिलामें बाँका सब-डिवीजनके समीप है। इस स्थानमें पर्वतके ऊपर श्रीमधुसूदनका विख्यात मन्दिर है। यह स्थान भारतके प्रधान तीर्थस्थानोंमें एक है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नमो द्विज वल्लभ दयालु गौर हरि।
नमः धर्म संस्थापक सर्व अधिकारी ॥
चै० म०

द्विजमणि प्रभु मन्द मुस्कानके साथ अपने शिष्यगणको उपदेश देते हुए बोले—"ये भगवान् मधुसूदनके सेवक हैं, ये श्रीकृष्ण भजन करते हैं, सदाचारी निष्ठावान् विप्रसे बढ़कर पूजनीय हैं।" बङ्गालके ब्राह्मण आचारनिष्ठ होते हुए भी जो विष्णुमन्त्र उपासक नहीं हैं और श्रीकृष्ण भजन नहीं करते हैं, वे विप्र नहीं कहला सकते। प्रभुके उपदेशका यही मर्म है।*

शिष्यगणने अब प्रभुकी ज्वरलीलाके प्राकट्यका प्रकृत रहस्य समझा। उनको शिक्षा देनेके लिए ही प्रभुने ज्वरका बहाना करके विप्रपादोदक पान किया और उनकी महिमा समझायी।

प्रभु जितना ही पुण्यतीर्थ गयाधामके पास पहुँचने लगे, उतना ही प्रेमोन्मत्त होकर बाह्यज्ञान शून्य होने लगे। जब वे 'पुनपुना' तीर्थमें पहुँचे तो उनके आनन्दकी सीमा न रही। वहाँ तीर्थस्नान करके उन्होंने पितृश्राद्ध-तर्पणादि किया। उसके पश्चात् राजगिरि, ब्रह्मकुण्ड आदिका दर्शन करके चक्रवेड़के भीतर प्रवेश किया। ब्रह्मकुण्डमें स्नान करके वे बहुत देर तक प्रेमानन्दमें नृत्य करते रहे। देवार्चन और पितरपूजा समाप्त करके श्रीविष्णु पादपद्म दर्शन करने गये।

गयाधाममें

प्रेमाविष्ट भावमें आनन्दसे बाह्यज्ञान शून्य होकर नृत्य करते हुए प्रभु चले जा रहे हैं। गयाधामके प्रशस्त राजपथपर उनको जो ही देखता है वही एक टकसे उनकी ओर ताकता रह जाता है। उनकी श्रीमूर्त्तिकी ओरसे आँखें हटा नहीं सकता। आश्विनका महीना, पितृपक्ष है। गयाधाममें भी बड़ी भीड़ है। इस अगणित जनसमूहमें प्रभुकी दीर्घाकृति भुवनमोहन सुन्दर श्रीमूर्त्ति सबके दृष्टिगोचर हो रही है। सबकी दृष्टि प्रभुकी भुवनमोहन, सर्वकलमर्श-नाशक श्रीमूर्त्तिके ऊपर है। प्रभु प्रेमावेशमें मत्त हैं, भावमें गद्गद हैं, किसी ओर उनकी दृष्टि नहीं है, किसी ओर उनका लक्ष्य नहीं है। उनकी दृष्टि श्रीविष्णुमन्दिरकी गगनभेदी स्वर्णकलसकी चोटीकी ओर है। दोनों भुजाएँ उठाकर प्रेमानन्दमें प्रभु बारंबार हरिध्वनि कर रहे हैं, और मधुर प्रेमनृत्य करते हुए श्रीमन्दिरकी ओर जा रहे हैं। उनके साथ आचार्यरत्न और शिष्यगण हैं। वे उस भीषण जन-समूहके बीच प्रभुको घेरकर साथ लिये जा रहे हैं।

कुछ देरमें प्रभु श्रीमन्दिरके भीतर जा पहुँचे। श्रीमन्दिरके द्वारपर प्रभुने श्रीविष्णुपादपद्मके उद्दश्यसे साष्टाङ्ग प्रणाम किया, और वहाँकी धूलिमें लोट करके भूतलपर लम्बे पड़ गये। वह विस्तीर्ण जनसमूह स्थिर होकर प्रभुकी अद्भुत प्रेमलीलाका दर्शन करने लगा। किसीके लिए संभव न था कि प्रभुको उस अवस्थामें छोड़कर चला जाय। बहुत देरके बाद प्रभु उठे। कमलनयनकी अविरल जलधारामें उनका विशाल वक्षःस्थल बहा जा रहा है। वे प्रेमानन्दमें

विष्णुभक्तिविहीना ये चाण्डालाः परिकीर्तिनाः।
चाण्डालाअपि वै श्रेष्ठा हरिभक्तिपरायणाः ।
ह० भ० वि० १०. १५३

यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद्
यत्प्रह्वणाद्यत्स्मरणादपि क्वचित्।
श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते
कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥
अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान्
यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम्।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या
ब्रह्मानूचुर्नाम गृणान्ति ये ते ॥
श्रीम० भा० ३. ३३. ६, ७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नयन-रञ्जन मधुर नृत्य कर रहे हैं। श्रीमुखसे निरन्तर उच्च हरिध्वनि कर रहे हैं। प्रभुकी यह आनन्दमयी श्रीमूर्त्ति जिसने देखी, उनके श्रीमुखकी मधुर हरिध्वनि जिसने सुनी, उसका हृदय प्रेमानन्दमें भर गया, वह गोलोकका आनन्द अनुभव करने लगा।

प्रभुने श्रीमन्दिरके भीतर जाकर देखा श्रीचरणके स्थानको विप्रगणने घेर रखा है, श्रीचरणपर माला, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, वस्त्र, अलङ्कार कितने चढ़े हैं जिसकी कोई गणना नहीं। चारों ओर विप्रगण पाद-पद्मकी महिमा वर्णन कर रहे हैं—

विप्रगणे बेड़िया छे श्रीचरण स्थान।
श्रीचरणे माल्य जेन देउल प्रमाण॥
गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, वस्त्र अलङ्कार।
कत पड़ियाछे लेखा जोखा नाहि तार॥
चतुर्दिके दिव्यरूप धरि विप्रगण।
करितेछे पादपद्म प्रभाव वर्णन॥
चै० भा० आ० १२. १२-३४

'जिन चरणोंको काशी-विश्वनाथ हृदयमें धारण करते हैं, जो लक्ष्मीके जीवन हैं, जो बलिके सिरपर स्थापित हुए थे, वे ही ये चरण हैं। जो एक बार भी इन चरणोंका दर्शन कर लेते हैं, उन परसे यमका अधिकार उठ जाना है। योगेश्वरोंको भी ये चरण दुर्लभ हैं। ये वे ही चरण हैं, जिनसे भागीरथी गंगा प्रकट हुई हैं। भक्तगण इनको अपने हृदयसे अलग नहीं करते। अनन्त-शैयाके ये अतिप्रिय हैं। भाग्यशाली जन ही इन चरणोंके दर्शन कर पाते हैं।"

प्रभु श्रीमन्दिरके भीतर खड़े होकर गयाधामके ब्राह्मणोंके मुखसे श्रीविष्णु-पाद-पद्मकी महिमा और प्रभाव सुनकर प्रेमाविष्ट हो गये। उनको वाह्यज्ञान न रहा। आविष्ट भावमें प्रभु श्रीविष्णुपाद पद्मका दर्शन कर रहे हैं। दर्शन मात्रसे अश्रु, कम्प, पुलक, कदम्ब प्रभृति अष्ट सात्त्विक भाव उनके शरीरमें उदय हुए। उनके कमलनयन द्वयसे अविश्रान्त जलप्रवाहके समान प्रेमाश्रुधार बह चली। यह देखकर सब चकित होकर उनके श्रीमुखकी ओर एकटक ताकते रह गये।

श्रीपाद ईश्वरपुरी

दैवयोगसे उसी समय श्रीपाद ईश्वरपुरी गुसाईं गयाधाममें आये श्रीमन्दिरमें उनके साथ प्रभुकी भेंट हुई। श्रीचैतन्य भागवत कारने 'देवयोग' शब्द प्रयोग किया है। परन्तु वस्तुतः यह दैवयोग न था। इच्छामय प्रभुकी इच्छासे तथा उनकी प्रेरणासे श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईंको इसी समय गयाधाममें आना पड़ा। लीलामय प्रभुकी लीलाका रहस्य समझना बड़ा कठिन है। स्वतन्त्र ईश्वर श्रीभगवान्‌को जो करना होता है उसे पहलेसे ही निश्चय करके रखते हैं। इस पुण्यधाम गया क्षेत्रसे ही प्रेमके ठाकुर श्रीगौराङ्ग प्रभुका प्रेमभक्तियोग जगतमें प्रकाशित होने लगा। प्रेमके गुरु श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईंको इसी समय यहाँ आकर्षण करके लाये बिना कैसे प्रभुकी दीक्षा और शिक्षा लीलाका रङ्ग सम्पन्न होता? अतएव, प्रभुके आकर्षणसे श्रीपाद पुरी गोसाईं प्रभुकी प्रेमलीलाके रङ्गमें सहायता करनेके उद्देश्यसे इस समय गयाधाममें आकर उपस्थित हुए।

श्रीकविकर्णपूर गोस्वामी द्वारा रचित श्रीगौर-गणोद्देशदीपिकामें श्रीक्रेश्वर पण्डित गोस्वामीके शिष्य श्रीगोपालगुरु गोस्वामी रचित पद्यमें, श्रीनरहरि चक्रवर्तीकृत 'भक्तिरत्नाकर' के पञ्चम तरङ्गमें, श्रीबलदेव विद्याभूषणकृत 'प्रमेय रत्नावली' ग्रन्थमें, एवं श्रीगोविन्द भाष्यपीठकमें श्रीपाद ईश्वरपुरीकी गुरु परम्परा लिखी है। श्रीमन्मध्वाचार्यसे शिष्य-परम्परामें श्रीपुरी गोस्वामी सप्तदश नीचे, और श्रीमाधवेन्द्रपुरीके अनेक शिष्योंमें-से एक थे। गौड़ीय वैष्णवकी शिष्य परम्परा जो प्रत्येक शाखाकी दृष्ट होती है, सबमें एक वाक्यसे श्रीमध्वसम्प्रदायान्तर्गत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीपुरीके शिष्यके रूपमें गौड़ीयेश्वर श्रीगौर सुन्दरका उल्लेख है।

श्रीपाद ईश्वरपुरीने बङ्ग देशके अन्तर्गत चौबीस परगना जिलाके अधीन कुमारहट्ट या हालिशहर नामक गङ्गातटके गाँवमें जन्म ग्रहण किया था, अतएव वे गौड़ीय हैं, श्रीचैतन्य भागवतमें लिखा है—

आपने ईश्वर श्रीचैतन्य भगवान्।
देखिलेन ईश्वर पुरीर जन्मस्थान॥
प्रभु बले "कुमारहट्टेरे नमस्कार।
श्रीईश्वरपुरी जे ग्रामे अवतार॥
प्रभु बले "ईश्वर पुरीर जन्मस्थान।
ए मृत्तिका मोर जीवन-धन प्राण॥
चै. भा. आ. १२. ६७, ६८, १०१

श्रीअद्वैत भवनमें श्रीनवद्वीप मायापुरमें जिस समय श्रीईश्वरपुरी पहले उपस्थित हुए थे, उस समयका श्रीअद्वैत और पुरी गोसाईंके वार्तालापका श्रीचैतन्य भागवतमें इस प्रकार वर्णित है—

अद्वैत बलेन बाप तुमि कोन् जन।
वैष्णव संन्यासी तुमि हेन लय मन॥
बलेन ईश्वर पुरी आमि 'क्षुद्राधम'।
चै. भा. आ. ७. २०४, २०५

'क्षुद्राधम' का पाठ किसी-किसी हस्तलिखित प्रतिमें 'शूद्राधम' होनेके कारण पुरी पादको भ्रमवश कोई शौक्र ब्राह्मण कहनेमें भी हिचकिचाते हैं। किन्तु श्रीचैतन्य चरितामृतके पाठ करनेपर इस प्रकारके सन्देशके लिए स्थान नहीं रह जाता।

एत शुनि सार्वभाम प्रभुरे पूछिल।
पुरी गोसाईं शूद्र सेवक काहाते राखिल॥
चै० च० म० १०. १३३

स्मृतिकारके मतसे यदि ब्राह्मण दूसरे वर्णको शिष्य या सेवकके रूपमें ग्रहण करता है तो वे ब्राह्मण या संन्यासी गुरु पतनको प्राप्त होता है। ईश्वर पुरीने सदाचार और शिष्टाचार-सम्पन्न होकर भी शौक्र शूद्र गोविन्दको सेवक बनाकर स्मृति-विहित आदेशका उल्लङ्घन क्यों किया? इस वचनसे ही ईश्वर पुरीका ब्राह्मण वंशमें जन्म ग्रहण करना स्पष्टतः सिद्ध होता है, अतएव उनकी शूद्रताका अनुमान प्रमाण विरुद्ध होनेके कारण 'शूद्राधम' पाठ स्वीकार नहीं किया जा सकता। विशेषतः वैष्णवोचित दैन्यके प्रभावसे जीव श्रेष्ठ रूपसे परिचित होकर अपनेको जो अमानी कहकर प्रकट करता है, वैसी भाषाको दोषका विषय नहीं बनाया जा सकता। श्रीठाकुर नरोत्तमने 'मैं अधम चण्डाल हूँ'—इस प्रकारकी दैन्योक्ति प्रकट की है, अतएव उनको चाण्डाल कहना युक्ति नहीं है।

ईश्वरपुरी और प्रभुका मिलन

प्रभुने श्रीपाद पुरी गोस्वामीको देखते ही दण्डवत् नमस्कार किया। दोनों पूर्व-परिचित थे। पुरी गोस्वामीने प्रभुको प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान किया। दोनों एक दूसरेको देखकर प्रेमानन्द सिन्धुमें डूब गये, एक दूसरेको प्रेमाश्रुसे सींचने लगे।

यह गयाधाममें प्रभु और पुरी गोसाईंका शुभ-मिलन-दिवस जीव-जगत के लिए बड़ा शुभप्रद है। गयाधाम पुण्य तीर्थक्षेत्र है। श्रीपाद ईश्वरपुरी साक्षात् कृष्ण-प्रेमावतार कृष्णप्रेमके भण्डारी हैं। श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी गोसाईंने कृष्णप्रेमका अक्षय स्त्रोत अपने उपयुक्त शिष्यको प्रदान किया है। गुरुकी कृपासे श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईंको श्रीकृष्ण भगवान्ने एक बार आत्मसात् किया है। गुरुकी कृपासे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। अमूल्य कृष्णप्रेम गोलोकका धन है। वह भी गुरुकी कृपाके बलसे प्राप्त हो जाता है। इसके जाज्वल्यमान साक्षी श्रीपाद ईश्वरपुरी गोस्वामी हैं। नदियाके प्रेमावतार श्रीगौर भगवान्की गोलोककी सम्पत्ति प्रेमधन है। वे अपने निजी गुप्तधनको खुले हाथ कलिके जीवोंमें बाँटनेके लिए शचीगर्भसे नदियामें अवतीर्ण हुए हैं। श्रीपाद माधवेन्द्र पुरीको उन्होंने यह गुप्त प्रेमधन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पहले कुछ दान किया था। उन्होंने यह गुप्त प्रेमांकुर अपने प्रिय शिष्य ईश्वरपुरी गोसाईंके ऊर्वर हृदय-क्षेत्रमें रोपन किया था। उसमें फल लगनेका अब शुभ समय उपस्थित है। इसी कारण गयाक्षेत्रमें प्रभुके साथ उनका यह शुभ-मिलन हुआ। कलिके प्रच्छन्न अवतारकी प्रेमलीलाका रहस्य अब प्रकट होगा।

प्रभुने पुरी गोसाईंको देखकर अतिदीन भावसे हाथ जोड़कर निवेदन किया—"जिस क्षण आपके चरण-दर्शन हुए, उसी क्षण मेरी गया-यात्रा सफल हो गयी। तीर्थमें जिसको पिण्ड दिया जाता है, केवल उन्हीं पितृगणका निस्तार होता है। आपके दर्शनसे कोटि पितृगणका सब पाप-बन्धनोंसे छुटकारा हो जाता है। अतएव आपके सदृश कोई तीर्थ नहीं है। सब तीर्थोंमें आप ही प्रधान हैं। मेरा संसार-समुद्रसे उद्धार कीजिये। मैंने अपना यह देह आपको समर्पण किया। श्रीकृष्ण-पादपद्मोंका अमृतरस पान कराइये—यही दान आपसे याचना करता हूँ।"

अब तक नदियाके निमाई पण्डित लोगोंके देखनेमें अदीक्षित थे। उनकी नरलीला लौकिकी लीला है। लोकशिक्षाके लिए स्वयं आचरण करके उन्होंने कलिग्रस्त जीवको धर्मकी शिक्षा दी है। दीक्षाग्रहण मनुष्य जीवनका एक प्रधान कर्म है। उपयुक्त सद्गुणके प्राप्त हुए बिना धर्मपथमें उन्नतिकी आशा करना असंभव है। प्रभुने जीवको उपयुक्त गुरुमुख होनेकी शिक्षा देनेके लिए, श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईंको तीर्थक्षेत्रमें गुरु रूपमें वरण करनेके अभिप्रायसे कहा—"मेरा संसार-समुद्रसे उद्धार कीजिये, मैंने अपना यह देह आपको समर्पण किया।"

श्रीपाद ईश्वरपुरीने प्रभुकी विनय और आर्त्तभावसे पूर्ण स्तुति श्रवण कर बहुत लज्जापूर्वक उत्तर दिया—"पण्डित निमाई! तुम ईश्वर-अंश हो, यह सुनिश्चित है। तुम्हारा जो पाण्डित्य और चरित्र है, वह ईश्वर अंशके अतिरिक्त और किसीमें नहीं हो सकता। आज ही मैंने शुभ-स्वप्न देखा है, जिसका साक्षात् फल यही है कि तुम्हारे दर्शनसे परमानन्द सुखका अनुभव होता है। जबसे नदियामें तुमको देखा है, तबसे और कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। सत्य कहता हूँ, इसमें कुछ भी अन्यथा नहीं है कि तुमको देखकर कृष्ण-दर्शनका सुख प्राप्त होता है।"

प्रभु पुरी गोसाईंकी बात सुनकर हँसकर बोले, यह मेरा बड़ा भाग्य है।

पितृश्राद्ध-तर्पणादि

दोनोंमें परस्पर इस प्रकार प्रेम संभाषण होनेके बाद प्रभुने पुरी गोसाईंके पास पितृश्राद्ध-तर्पणादि करनेकी अनुमति माँगी। सुप्रसिद्ध फल्गु तीर्थमें बालुकाका पिण्डदान करके प्रभुने प्रेतशिला पर जाकर प्रेत-श्राद्ध किया। इसके बाद प्रभुने क्रमशः राम गया, युधिष्ठिर गया, भीम गया, शिव गया, ब्रह्म गया आदि तीर्थस्थानोंमें जाकर विधिपूर्वक पितर-कर्म समाप्त किया। गयाके विप्रगण चारों औरसे प्रभुको घेरकर श्राद्धका मन्त्र बोलने लगे। प्रभुने उनको परम परितोषपूर्वक भोजन कराकर दक्षिणा देकर मीठे शब्दोंसे परितुष्ट किया। विप्रगण दक्षिणासे जितना तुष्ट न हुए, उससे कहीं अधिक प्रभुके श्रीमुखके मधुर वचन सुनकर सुखी हुए।

पूजनीय पिता, पितामह आदिके पुण्यश्राद्ध-कार्य समाप्त हो जानेपर प्रभुने विधिपूर्वक पिण्डदान किया। श्रीगौर भगवान्के श्रीहस्तसे प्रदान किये गये पिण्ड गयालो ब्राह्मण अपने हाथों उठाकर भोजन करने लगे। यह देखकर प्रभुको बड़ी हँसी आयी। प्रभुके दिये पिण्डप्रसादको खाकर भाग्यवान् गयाली ब्राह्मणोंके सारे बन्धन टूट गये। उनके देह, चित्त और मन तत्काल शुद्ध हो गये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार प्रभुने षोडश गयाके एक-एक पिण्डदानादि कर्म विधिपूर्वक करके ब्रह्मकुण्डमें आकर पुनः स्नान किया। सबके अन्तमें गयाशिरमें श्रीविष्णुपाद-पद्ममें पिण्डदान करके पितृकर्म समाप्त किया। दिव्य पुष्पमाला और चन्दन श्रीहस्तमें लेकर प्रभुने श्रीविष्णु पादपद्म चिह्नकी भक्तिभावसे प्रेमपूर्वक पूजा की। प्रेमाश्रुधारसे उनका प्रशस्त वक्षःस्थल बह गया।

प्रभुको प्रेमावेश

प्रेमावेशमें प्रभुका सर्वाङ्ग पुलकित हो गया। श्रीपादपद्मके दर्शन और स्पर्शसे उनका बाह्यज्ञान लुप्त हो गया। श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईं, चन्द्रशेखर आचार्यरत्न तथा प्रभुके शिष्यगण साथमें थे। पुरी गोसाईं प्रेमाविष्ट प्रभुको स्नेहपूर्वक गोदमें लेकर वहाँ बैठ गये। श्रीमन्दिरके भीतर कृष्णप्रेममय वैष्णव संन्यासी पुरी गोसाईंके गोदमें प्रेमाविष्ट श्रीश्रीनवद्वीप चन्द्रकी अपरूप रूपराशिकी अपूर्व सौन्दर्यच्छटासे चतुर्दिक आलोकित हो गया। सबकी दृष्टि बाह्यज्ञान-शून्य प्रेमाविष्ट प्रभुके श्रीवदनके ऊपर पड़ी।

जो लोग श्रीपादपद्म दर्शन करनेके लिए गये थे, वे प्रभुकी इस आनन्दघन प्रेमविह्वल श्रीमूर्त्तिका दर्शन कर उनके रक्तपाद पद्मकी ओर देखते रहे। उनको मानो विष्णुपाद पद्मके स्थानमें श्रीविष्णु भगवान्‌का साक्षात् दर्शन हुआ।

बीच-बीचमें प्रभुके श्रीमुखसे हृत्कर्ण-रसायन मधुर हरि-हरि ध्वनि सुनायी पड़ रही है। कभी वह 'हा कृष्ण' कहकर प्रेमसे विह्वल हो उठते हैं। श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईं और प्रभु दोनों ही प्रेमानन्दमें अश्रु बहा रहे हैं। उनके नयन जलसे श्रीमन्दिरमें मानो प्रेमनदी प्रवाहित हो उठी। मनुष्यकी आँखोंमें इस प्रकारकी अश्रुधारा कभी किसीने कहीं नहीं देखी। मनुष्यका आँखोंमें इतना जल है, यह पहले कभी किसीने देखा नहीं। इस समय इसको गयावासी और तीर्थयात्रीगणने अपनी आँखों देख लिया। यह देखकर सभी विस्मित होकर कहने लगे कि, "यह क्या कोई मनुष्य है ?"

कुछ देरके बाद प्रभुको बाह्यज्ञान हुआ। तब उन्होंने प्रेमानन्दमें श्रीमन्दिरके भीतर ही बहुत देर तक नृत्य किया। गया-वासियोंने ऐसा नयनरञ्जन मधुर नृत्य कभी देखा न था। इतने दिन प्रभुका यह नृत्यविलास सुकृतिवान् नदियावासी लोगोंकी ही निजस्व सम्पत्ति थी। अब भाग्यवान् गयावासी वैष्णवगण उस अमूल्य सम्पत्तिका कुछ अंश प्राप्तकर कृतार्थ हो गये।

प्रभुने जब प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य प्रारम्भ किया तब श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईंने भी उनके साथ योग दिया। चन्द्रशेखर आचार्य और प्रभुके सहचर शिष्यगणने भी योग दिया। प्रभु अपने सुवलित आजानुलम्बित श्रीभुजद्वयको ऊपर उठाकर उच्च स्वरसे हरिनाम सकीर्तन करने लगे। उनके हुङ्कार गर्जन और प्रेमास्फालनसे विष्णुपदका श्रीमन्दिर प्रकम्पित हो उठा।

श्रीमन्दिरके भीतर और द्वारपर लाखों आदमी इकट्ठे हो गये। सभी प्रभुकी इस अद्‌भुत प्रेमचेष्टा और अपूर्व प्रेम विह्वलता देखकर अवाक् और स्तब्ध हो रहे हैं। पुष्पमालासे सुशोभित, चन्दन चर्चित श्रीविष्णु पादपद्म चिह्नके स्थानमें अकस्मात् मानो साक्षात् श्रीविष्णु भगवान्‌की परम् रमणीय मधुर श्रीमूर्त्ति प्रकट हो उठी। नृत्यकीर्तनमें उन्मत्त प्रभुको सब लोगोंने दण्डवत् प्रणाम किया। प्रभुकी उधर दृष्टि भी न पड़ी। प्रेमानन्दमें मतवाले होकर वे अद्‌भुत प्रेमनृत्य कर रहे हैं। उस समय उनके नयनोंसे नीर बह रहा है, अङ्ग पुलकित हो रहे हैं। वे बाह्यज्ञान-शून्य हैं, वे आत्महारा हो रहे हैं।

बहुत देरके बाद प्रभुका मधुर नृत्यविलास समाप्त हुआ। तब उनको लेकर उनके शिष्यगण बासेपर गये। प्रभुके साथ असख्य लोग चले। पुरी गोसाईं अपने आश्रममें गये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु द्वारा स्वयं पाक और पुरी गोसाईंको भिक्षा

प्रभु अपने वासेपर आकर स्वस्थ होकर स्वयं भोजन बनानेके लिए बैठे। प्रभुका अपने हाथ भोजन बनानेका कोई प्रयोजन न था। साथमें उनके परम् आत्मीय पितृतुल्य श्रीपाद आश्चर्यरत्न, थे। उनके अनुगत स्वधर्मपरायण निष्ठावान् ब्राह्मण शिष्यगण थे। तब वे स्वयं भोजन बनानेके लिए क्यों बैठे? प्रभुकी सारी लीलाएँ गूढ़ रहस्यसे भरी होती हैं। उनकी इस रसोई बनानेकी लीलामें भी निगूढ़ रहस्य निहित है।

श्रीईश्वरपुरी गोसाईंको प्रभु आज गुरु पदमें वरण करके कृतार्थ करेंगे। लोक शिक्षाके लिए प्रभुका यह दीक्षा-ग्रहण है। प्रभुका यह लीलारङ्ग जगत्में गुरुभक्ति प्रकट करनेके लिए ही था। पुरी गोसाईंको आज प्रभु अपने हाथ रसोई बनाकर भोजन करायेंगे, यही उनके मनको इच्छा है। जब श्रीगौर भगवान्के श्रीहस्तके पकाये, विष्णुको निवेदन किये प्रसादसे पुरी गोसाईंकी उदरतृप्ति होगी, तभी वे जगद्गुरुके गुरु हो सकेंगे। इसी उद्देश्यसे प्रभु आज स्वयं रसाई बनाने बैठे हैं।

प्रभुकी इस रन्धन-लीलाका और भी कुछ मर्म है। वे पितृकर्म करने गयाक्षेत्र आये हैं। प्रभु लौकिक और सदाचार सम्मत धर्माचरण करनेमें सदा यत्नशील रहते थे। वे पितृपक्षमें गयाधाममें पितरोंका पुण्य श्राद्धकर्म करने आये हैं। फिर परान्नभोजन क्यों करें? अतएव धर्ममर्यादाकी रक्षा करने वाले हमारे प्रभु स्वपाकी बनकर भोजन करेंगे। यह प्रभुकी स्वहस्त रन्धनलीलाकी एक और व्याख्या है। जिनकी जैसी अभिरुचि होती है, वह तद्रूप भावसे लीलारसका आस्वादन करते हैं।

प्रभु जब पाक करने बैठे, उस समय बेला तृतीय प्रहर था। पाककर्म प्रायः समाप्त होने जारहा था, उसी समय पुरी गोसाईं प्रेमानन्दमें हरे कृष्ण नाम लेते हुए कृष्ण प्रेममें उन्मत्त होकर वहाँ आ उपस्थित हुए। प्रभुने रसोईका काम छोड़कर उठकर आदर पूर्वक नमस्कार करके उनको आसनपर बैठाया।

पूज्यपाद पुरी गोसाईं आसनपर बैठकर हँसते-हँसते प्रभुसे बोले, "पण्डित! मैं अच्छे समयसे आया हूँ"

प्रभुने हाथ जोड़कर निवेदन किया—'मेरे भाग्यका आज उदय हुआ है, आज आप यही अन्न-भिक्षा ग्रहण कीजिये।" पुरी गोसाईंने हँसकर पूछा—"पण्डित तुम क्या खाओगे?" प्रभुने उत्तर दिया, 'मैं पुनः शीघ्र रसोई बनाऊँगा।" पुरी गोसाईंने कहा—"दुबारा रसोई बनानेकी क्या आवश्यकता है? इसीके दो भाग करलो।"

तब प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं, तो आप यह सब प्रसाद पाइये। मैं मिनटोंमें दुबारा रंधन कर लूँगा। आप बिना संकोचके भिक्षा पाइये।"

पुरी गोसाईं और कुछ बोल न सके। उन्होंने प्रभुके श्रीहस्तके पाक किये विष्णुको निवेदन किये अन्न व्यञ्जनको परम् आनन्दपूर्वक ग्रहण किया। प्रभु अपने हाथों उनको परोसने लगे, और फिर पाक करनेका प्रबन्ध करने लगे। पुरी गोसाईं प्रेमानन्दमें भोजन कर रहे हैं और मुखसे मधुर कृष्णकथा कहते जारहे हैं। इधर अलक्षित भावसे लक्ष्मीजी वहाँ आकर लक्ष्मीपति प्रभुके निमित्त क्षण मात्रमें अन्न व्यञ्जन पाक करके अन्तर्हित हो गयीं। यह किसीने न देखा। पहले पुरी गोसाईंको भोजन कराकर पश्चात् प्रभु स्वयं भोजन करने बैठे। पुरी गोसाईंके साथ प्रभुकी भोजनलीला समाप्त हुई। यह देखकर पुरी गोसाईं विस्मित होगये। इतने कम समयमें प्रभुने कैसे भोजन बना लिया? प्रभु तो स्वयं भगवान् हैं। उनकी वैष्णवी मायासे मुग्ध होकर पुरी गोसाईं उस समय भी कुछ समझ न सके।

श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईके साथ प्रभुके इस भोजन लीलारङ्गका पाठ या श्रवन करनेसे कृष्ण प्रेमधन प्राप्त होता है। श्रीगौराङ्ग लीलाके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने यह फलश्रुति लिखी है—

ईश्वर पुरीर सङ्गे प्रभुर भोजन।
इहार श्रवणे मिले कृष्ण प्रेमधन॥
—चै० भा० आ० १२. ६४

मन्त्र-दीक्षा

उस दिन आहारके उपरान्त पुरी गोसाईं प्रभुके बासेपर रहे। दोनों ही सुमधुर कृष्ण कथा रसमें मग्न हो गये। अपने हाथसे पाक करके अपने अभीष्ट गुरुदेव श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईंको भोजन कराकर भी प्रभुका मन तृप्त न हुआ। उन्होंने अपने हाथों उनके सर्व अङ्गमें गन्ध-चन्दन लेपन किया।

पुरी गोसाईंके प्रति प्रभुकी प्रीतिकी सीमा नहीं। बारंबार प्रभु पुरी गोसाईंसे कहते हैं कि, "मेरा गयाधामका आगमन सफल हो गया, क्योंकि मुझे पुनः आपका साक्षात्कार प्राप्त हुआ।"

प्रेम विह्वल हो प्रभुने पुरी गोसाईंको एकान्तमें बुलाकर कातर भावसे निवेदन किया, "मैं बिना कृष्ण दीक्षाके संसारसे कैसे तरूँगा? मुझे कृष्ण पादाम्बुज-की भक्ति प्रदान कीजिये।" प्रभुने उस दिन अपने मनकी बात पुरी गोसाईंको खोलकर कह दी। वे सचमुच उनसे मन्त्रदीक्षाके लिए प्रार्थना करेंगे--पुरी गोसाईं यह अब तक जान नहीं पाये थे। पुरी गोसाईंने प्रभुके अन्तःकरणकी बात अब स्पष्ट रूपसे समझी।

वे कृष्ण-प्रेमके भण्डारी श्रीपाद माधवेन्द्रपुरीके मन्त्र शिष्य थे। कृष्ण-प्रेम क्या वस्तु है, इसे वे खूब जानते थे। उन्होंने देखा कि नदियाका ब्राह्मण बालक सामान्य मनुष्य नहीं है। उनके निकट दीक्षा मन्त्रकी प्रार्थना केवल परीक्षा और छल था। उनपर इस प्रकार कृपा करना ही श्रीगौर भगवान्का उद्देश्य था। अतएव पुरी गोसाईंने कहा, "पण्डित! मन्त्र दीक्षा तो बहुत दूरकी बात है। मैं अपना प्राण-पर्यन्त तुमको दे सकता हूँ।"

प्रभु यह सुनकर प्रेमानन्दसे गद्गद हो उठे। दूसरे दिन शुभ क्षणमें मन्त्रदीक्षाका मुहूर्त ठीक किया गया। शुभ मुहूर्तमें जगद्गुरु श्रीगौराङ्ग प्रभुने श्रीपाद ईश्वर पुरी गोसाईंके पास पुण्य-धाम गयाक्षेत्रमें दशाक्षर गोपालमन्त्र ग्रहण किया। मन्त्रोपदेश पाकर प्रभु प्रेमानन्दमें गद्गद होकर नृत्य करने लगे तथा पुरी गोसाईंको बारम्बार प्रदक्षिणा करके हाथ जोड़कर निवेदन किया—"मैंने अपना देह आपको समर्पण किया। आप मुझपर ऐसी कृपा दृष्टि कीजिये, जिससे मैं कृष्ण-प्रेम-सागरमें डूबा रहूँ।"

पुरी गोसाईंने प्रभुके श्रीमुखसे यह अपूर्व प्रार्थनाकी बात सुन कर उनको गाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान कर सन्तुष्ट किया। प्राण-प्रियतम शिष्यको उन्होंने बहुत देर तक हृदयसे लगाये रक्खा। हृदयसे उनको हटानेकी इच्छा नहीं हो रही है। दोनों एक दूसरेको नयन-धारासे सिञ्चन कर रहे हैं। प्रेमानन्दसे दोनों ही विह्वल हो गये।

प्रभु दीक्षामन्त्र प्राप्त करते ही कृष्णप्रेममें उन्मत्त हो उठे। मन्त्ररूपी श्रीकृष्ण भगवान् प्रभुके कानोंके द्वारा जैसे ही हृदयमें प्रविष्ट हुए उनका बाह्यज्ञान जाता रहा। श्रीराधिका-भावमें आविष्ट होकर वे उच्च स्वरसे 'हा कृष्ण! हा कृष्ण!' कहकर अविरत रुदन करने लगे। कभी वे नन्द-यशोदाका नाम लेते हैं; कभी बलराम, श्रीदाम, सुदामका नाम, कभी कालिन्दी यमुना, वृन्दावन, गोवर्द्धन कहकर हुँकार गर्जन करते हैं; कभी दास्य भावमें प्रभु अपने गुरुके श्रीचरण पकड़कर बड़ा शोक प्रकट करते हैं; दैन्य और आर्त्त भावके साथ उनकी चरण-धूलि ग्रहण करते हैं। कभी प्रेमावेशमें आत्मतत्व प्रकट करके 'मैं वही हूँ, मैं वही हूँ' कहकर वज्रगम्भीर निनादमें गृह-प्राङ्गणको प्रकम्पित करते हैं।

दीक्षा ग्रहणके बाद प्रभुकी इस प्रकार अलौकिक प्रेम भक्तिके विकार भाव देखकर श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न और उनके शिष्यगण विशेष शङ्कित और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चिन्तित हुए। गयाधाममें आनेके पहले नवद्वीपमें एक दिन प्रभुने वायु रोगका बहाना करके अपने मन्दिरमें बैठकर अपनी इस अपूर्व प्रेमभक्तिके विकार भावका किञ्चित् आभास नदियाके भक्तिगणको दिया था। आचार्यरत्न और प्रभुके साथियोंने उसे अपनी आँखों देखा था। इस समय प्रभुके वे ही सब अपूर्व प्रेम-भावके विकार लक्षण देखकर उन्होंने समझ लिया कि यह प्रभुका वायु रोग नहीं है। कृष्णप्रेमकी विह्वलतामें भगवत्-विरहकी आशङ्कासे कृष्णभक्त साधक महाजनकी ऐसी अवस्था घटती है। उन्होंने पुरी गोसाईं से कुछ पूछनेका साहस न किया, क्योंकि वे भी प्रभुके समान प्रेमोन्मत्त थे, वे भी प्रभुके समान रोगग्रस्त थे। दोनों ही कृष्ण—प्रेमानन्द-रोग-ग्रस्त रोगी थे, दोनों ही बाह्यज्ञान-शून्य थे। आचार्य-रत्न और प्रभुके अनुचरोंने समझा कि सद्गुरुके पास दीक्षा ग्रहण करनेका कैसा अपूर्व प्रभाव हैं! कैसा अद्भुत माहात्म्य है! अब तक अष्ट सात्त्विक भावके सारे लक्षण केवल ग्रन्थोंमें लिखे देखे थे। अश्रु, कम्प, पुलक, कदम्ब, विवर्णादि प्रेमविकारके सारे लक्षण भक्तके शरीरमें जिस प्रकार प्रकटित होते हैं तथा उनकी क्रिया जैसी होती है वह सब उन्होंने कभी देखी न थी, और न जानते थे।

श्रीपाद ईश्वरपुरी गोसाईं के साथ प्रभु कुछ दिन गयाधाममें रहे। दोनों जने कृष्णप्रेमानन्दके समुद्रमें दिन-रात मग्न रहते। ठाकुर जयानन्दने अपने श्रीचैतन्य—मङ्गल श्रीग्रन्थमें प्रभुकी गयाधाममें अवस्थितिके समयकी दो विचित्र लीला-कथाएँ लिखी हैं। उन दोनों अपूर्व कथाओंको यहाँ वर्णन किया जाता है।

दो अन्य घटनाएँ

पहली कथामें प्रभुका स्वरूप तत्त्व वर्णित है। प्रभु जब गयाधाममें पिण्डदानादि सारे क्रिया कर्म समाप्त करके दक्षिणी पावकमें एक साधुका दर्शन करने गये तो श्रीगौर भगवानका साक्षात्दर्शन प्राप्तकर उस साधुकी समाधि भङ्ग हो गयी। एकान्तमें पर्वतकी गुफाके भीतर अपने मठमें बैठकर वे तपस्या करते थे। सौ वर्षसे वे योगसाधनमें लीन थे, प्रभुको अचानक अपनी गुफाके भीतर देखकर साधुने दण्डवत् प्रणाम करके कहा, "इस गयाक्षेत्रमें गुरुकी आज्ञासे मैं सौ वर्षोंसे समाधि योग-साधन कर रहा हूँ! मेरे गुरुदेवकी आज्ञा थी कि, "श्रीकृष्ण भगवान् नदियामें भगीरथीके तीर विप्रकुलमें अवतीर्ण होंगे। वे पितृकर्म करनेके लिए गयाधाममें आवेंगे। उनकी श्रीमूर्तिका दर्शन करके तुम्हारी समाधि भङ्ग होगी। उनकी षड्भुज मूर्त्ति देखकर तुम उनको प्रणाम करोगे। तुम्हारे आठ शिष्य उसी नदियाके अवतार गौर कृष्णके प्रधान पारिषद् होंगे। सङ्कीर्तनानन्दमें वे वैकुण्ठ-सम्पद् भोग करेंगे।" इतना कहकर वह साधु पुनः समाधिको प्राप्त हो गया। उसने उसी निर्जन गुफामें प्रभुके षड्भुज रूपका दर्शन किया। प्रभु उस साधुके पास अकेले गये थे। वह साधु ही श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी गोसाईं थे, ऐसा महाजनगणका अनुमान है।

द्वितीय कथा स्वर्ग विद्याधरी तिलोत्तमाके उद्धारके सम्बन्धकी है। श्रीरामावतारमें श्रीभगवान्ने जिस प्रकार अहल्या उद्धार किया था, श्रीगौराङ्ग अवतारमें श्रीगौर भगवान्ने उसी प्रकार तिलोत्तमाका उद्धार किया। प्रभु जिस समय ब्रह्मवेदी पर रहते थे, उसी समय एक वृद्धा ब्राह्मणीने आकर धान्य दूर्वाके द्वारा प्रभुको आशीर्वाद देकर हँसते हँसते कहा-"तुम पितृकर्म करने गयाधाममें आये हो, मैं जो माँगती हूँ वह मुझे दो। मेरे पतिका नाम शङ्कर आचार्य है, और मेरा नाम पार्वती है। पाप-ज्वरसे मेरा देह जर्जरित है। अपना पादोदक देकर मुझे पाप-ज्वरसे मुक्त करो। विप्रके पादोदककी महिमा तुम खूब जानते हो। तुम द्विजमणि हो। अपना पवित्र पादोदक देकर मेरा उद्धार करो।" इतना कहकर उस वृद्धा नारीने प्रभुका पादोदक लेकर पान किया। प्रभु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वानुभावानन्दमें हँस पड़े। वृद्धा प्रभुका पादोदक मस्तक पर लेकर प्रेमानन्दसे नृत्य करने लगी। उसका सारा शरीर पुलकित हो उठा। उसका पाप ज्वर नष्ट हो गया। उपस्थित सब लोगोंने यह देखा। वृद्धाने पुनः प्रभुसे कहा--"प्रभो! पादोदक दान करके कृयार्त किया। माधवेन्द्र पुरी तुम्हारी षड्भुज मूर्ति देखकर कृतार्थ हुए। नारदमुनिके शापसे स्वर्ग विद्याधारी तिलोत्तमा पाषण मूर्त्ति होकर इस गयाधाममें रहती है। तुम्हारे दर्शनसे वह भी मुक्त हो जायगी।" इतना कहकर वह वृद्ध वहाँसे अन्तर्धान हो गयो।

ठाकुर जयानन्दकी प्रथम कहानीके प्रतिपाद्य विषय है मुनीन्द्र श्रीपाद माधवेन्द्र पुरी गोसाई, द्वितीय कहानीकी वृद्धा ब्राह्मणी सर्व मङ्गल शिव पत्नी पार्वती हैं। देवी पार्वतीने पहले प्रभुको आशीर्वाद दिया, पश्चात् कौशलपूर्वक उनका पादोदक पान किया। अब तिलोत्तमाके उद्धारकी कहानी सुनिये।

तिलोत्तमा उद्धार

स्वर्ग विद्याधारी तिलोत्तमाकी पाषण प्रतिमाकी कथा श्रीचैतन्य मङ्गलमें वर्णित है। स्वर्गके नन्दन वनमें देवराज इन्द्र शचीके सङ्ग परमानन्दमें बैठे थे। नारद मुनि वीणा बजाते हुए हरिगुण गान और कीर्तन कर रहे थे। उसी समय स्वर्ग विद्याधरी तिलोत्तमा मनोहर वेशभूषामें नारदने तिलोत्तमाके सज्जित होकर वीणा हाथमें लिये वहाँ उपस्थित हुई। देवर्षि नारदने तिलोत्तमाके हाथमें वीणा देखकर अभिमानमें भरकर खड़ होकर कहा—"तिलोत्तमे! मेरे सामने तुमने वीणा हाथमें लेकर देवराज इन्द्रकी सभामें प्रवेश करके अच्छा काम नहीं किया। एक सरस्वतीदेवीके सिवा मेरे सामने दूसरा कोई वीणा धारण करनेका साहस नहीं करता। तुमने अपने इस कार्यसे मेरा असम्मान किया है। अतएव मेरे अभिसम्पातसे तुम्हारा शरीर पाषाणमय हो जायगा।" इतना कहकर देवर्षि नारद क्रुध होकर वहाँसे चले गये।

"देवराज इन्द्रने तिलोत्तमाको कुछ न कहा। उसके मोहिनीरूपसे मुग्ध होकर, हाथ पकड़कर आदर-पूर्वक अपने वामभागमें बैठाया। इससे इन्द्राणी शचीके मनमें भी अभिमानका सञ्चार हुआ। अभिमान और क्रोधसे कम्पित होकर स्त्री-जनोचित लज्जा परित्याग करके दिगम्बरी होकर उन्होंने भी तिलोत्तमाको अभिशाप दिया, "तुम पाषाणमयी होजाओ।"

देवर्षि नारद जब पुनः देवराज इन्द्रकी सभामें आये तो तिलोत्तमाने चरण उनके पकड़कर रोते-रोते अपने अपराधके लिए क्षमा प्रार्थना करते हुए पूछा, "प्रभो! कितने दिनोंमें मेरा शापोद्धार होगा?" सर्वज्ञ नारदने उत्तर दिया—"बहुत दिनोंके बाद जब गौर जगन्नाथ तुम्हारा स्पर्श करेंगे तब तुम्हारा शापोद्धार होगा।"

इतना कहकर नारदजी वहाँसे चल दिये। तिलोत्तमा अतिशय गुरुभार युक्त पाषाण मूर्ति होकर देवराज इन्द्र की सभामें पड़ी रही। यह देखकर देवराज इन्द्रने दुःखित चित्तसे ऐरावत हस्तीको आज्ञा दी, "इसको दूर फेंकदो।" ऐरावतने उसको शुण्डसे उठाकर वनमें फेंक दिया।

स्वर्गसे तिलोत्तमाकी पाषाणमूर्ति गयाधाममें आकर गिरी। शुभक्षणमें प्रभुके चरण कमलके स्पर्शसे इस गयाधाम में स्वर्गविद्याधरी तिलोत्तमाका उद्धार हुआ। यह तिलोत्तमा उद्धार पौराणिक कथा नहीं है। प्रभुने स्वयं यह कथा श्रीवासपण्डितसे कही थी। यह बात भी ठाकुर जयानन्द अपने श्रीग्रन्थमें लिख गये हैं।

कृष्ण-विरह

गयाधाममें वास करते समय प्रभु अपने गुरुदेवके साथ सदा कृष्णप्रेममें उन्मत्त रहते थे। सदा-सर्वदा इष्टमन्त्र जप करते थे, कीर्तनानन्दमें विभोर रहते थे। एक दिनकी प्रभुकी कृष्णप्रेमके विकारकी कथा और सुनिये। वे कृष्ण ध्यानके आनन्दमें मग्न थे। अचानक बाह्य ज्ञान होते ही अति करुण स्वरसे क्रन्दन करने लगे—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृष्ण रे बाप रे मोर जीवन श्रीहरि ।
कोन दिगे गेला मोर प्राण करि चूरि ।।
पाइलों ईश्वर मोर कोन दिगे गेला ।
श्लोक पड़ि-पड़ि प्रभु कान्दिते लागिला ।।
चै. भा. आ. १२.११५,११६

श्रीश्रीमहाप्रभुके श्रीमुखसे निकले श्लोक ये हैं—

न प्रेमगन्धोऽस्ति दरापि मे हरौ
क्रन्दामि सौभाग्यभरं प्रकाशितुम् ।
वंशी विलास्यानन लोकनं बिना
विभर्मि यत्प्राण पतङ्गकान् वृथा ।।

इसका अर्थ यह है कि, 'श्रीकृष्णमें मेरा प्रेम लेशमात्र भी नहीं है, केवल अपने सौभाग्यकी बात प्रकट करनेके लिए क्रन्दन करता हूँ। वंशीविलासी श्रीकृष्णके मुखचन्द्रके अवलोकनके बिना इस प्राण-पतङ्गको मैं व्यर्थ ही वहन कर रहा हूँ।' यह श्लोक आवृत्ति करते जा रहे हैं और अजस्र अश्रु प्रवाहित करते हुए रोते हैं तथा धूलिमें लोटते हैं। कभी-कभी प्रभु महा आर्त्तनाद करके उच्चस्वरसे चीत्कार करके रोकर कहते हैं—

"कोथा गेला बाप कृष्ण छाड़िया मोहरे ।"
चै. भा. आ. १२.११८

प्रभुके कृष्ण-विरह-दुःखकी सीमा नहीं है। जो प्रभु परम गंभीर थे, वे अब कृष्ण-विरहमें अत्यन्त अस्थिर हो रहे हैं।

प्रभुके साथी लोग बहुत यत्न करके भी उनको स्थिर नहीं कर पा रहे हैं। वे सोच रहे हैं कि यह क्या हो गया ? कैसे अब प्रभुको घर ले जाँय ? ऐसी अवस्थामें प्रभु इस कठिन मार्ग पर कैसे पैदल चलेंगे ?' साथी लोग इस प्रकार चिन्ता कर रहे हैं, इसी समय भक्त वत्सल अन्तर्यामी प्रभुने उनके मनके भावको समझ कर कातर स्वरमें रोते-रोते कहा—"तुम लोग सब घर चले जाओ मुझसे अब संसारमें नहीं चला जायेगा। मैं तो अब प्राणनाथ कृष्णको पानेके लिए मथुरा जाऊँगा ।

प्रभुके श्रीमुखसे यह विषम बात सुनकर साथी लोग बहुत चिन्तित हुए। चन्द्रशेखर आचार्यरत्न बड़ी विपदमें पड़े। शचीमाताने उनके हाथमें पुत्रको सौंप दिया है। प्रभु यदि नदिया लौट कर नहीं जाते हैं, तो वह शचीमाताके सामने क्या मुँह दिखायेंगे ? प्रभुकी जैसी अवस्था है, यदि वह इस समय श्रीवृन्दावन धाम जाते हैं, तो वे फिर घर लौटकर आवेंगे या नहीं—इसमें सन्देह है। इन चिन्ताओंसे घबराकर आचार्यरत्न हाथपर गाल रखकर उदास मुख होकर प्रभुके पास बैठे रहे। उनके मुखका भाव गंभीर चिन्ता व्यक्त कर रहा था, वे प्रभुसे कुछ कह नहीं पा रहे थे। मनके भावको मनमें ही छिपाकर भीतर ही भीतर रो रहे थे। उनकी चिन्ताकी सीमा न थी ।

इसी समय उनको कुछ तन्द्रा आ गयी। इधर प्रभु अकस्मात् भूमि शय्यासे उठकर बाह्यज्ञान शून्य होकर मथुराकी ओर चल पड़े। उस समय रात बीत रही थी। किसीको बिना कुछ कहे, वे चुपचाप मथुरा चल दिये। निःसहाय, निःसंबल, अति दीन वेशमें कृष्ण प्रेममें उन्मत्त होकर प्रभु चले जा रहे। हैं, किसी ओर ताकते नहीं हैं। केवल श्रीमुख पर यही एक बात है—

कृष्णरे ! बापरे मोर ! पाइमु कोथाय ।"

कुछ दूर जाने पर प्रभुको एक अपूर्व आकाश-वाणी सुन पड़ी—"हे द्विजमणि ! अभी मथुरा जानेका समय नहीं आया है, जब समय आवे तब जाना। अभी अपने घर नवद्वीप जाइये। आप बैकुण्ठनाथ हो, जगतका निस्तार करने आये हो। कीर्तन करके प्रेमधनका वितरण करना है आपको। हम तो आपके सेवक हैं, जो बात है वह आपके चरणोंमें निवेदन करदी है। आप ही अपने विधाता है, आपकी इच्छाका लंघन कौन कर सकता है। आप अभी घर चलिये, मथुरा तो पीछे जाना होगा।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह आकाशवाणी सुनकर प्रभु रास्तेमें कुछ देर-तक स्तम्भित होकर खड़े रहे, पश्चात् वे धीरे-धीरे वासा पर आकर अपने साथियोंसे मिले। किसीको इस विषयमें कुछ पता न चला। उन्होंने भी इस सम्बन्धमें किसीको कुछ न कहा और प्रसन्न चित्तसे घर लौट जानेके प्रस्तावका अनुमोदन किया। तब आचार्यरत्नकी जानमें जान आयी। अन्तर्यामी भक्त-वत्सल गौर भगवान्ने भक्तके कातर हृदयकी वेदनाका अनुभव करके ही यह लीला प्रकट की थी।

श्रीचैतन्यभागवतोक्त आदि खण्डका लीला वर्णन इसी अध्यायसे समाप्त होता है। श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासावतार श्रीठाकुर वृन्दावन दासने लिखा है—

आदिखण्ड कथा दिव्या ये शृण्वन्ति महात्मनः।
सर्वपापविनिर्मुक्तास्ते भवन्ति सुनिश्चितम्॥
चै. भा. आ. १८. ३

अर्थात् जो महात्मागण आदि खण्डकी प्रभुकी नवद्वीपलीलाकी अलौकिक कथा श्रवण और कीर्तन करते हैं; वे समस्त पाप और अपराधसे मुक्त हो जाते हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

ठाकुर वृन्दावनदासने इसी प्रसङ्गमें एक और बात लिखी है। वह बात इस प्रकार है—

ये पठन्ति महात्मानो विलिखन्ति परादरैः।
प्रलयेऽपि च तेषां वै तिष्ठत्येव हरेः स्मृतिः॥
चै. भा. आ १२.४

अर्थात् जो भाग्यवान् महात्मागण परम आदर-पूर्वक श्रीश्रीमन्महाप्रभुके लीलाग्रन्थके इस आदि-खण्डको अध्ययन और प्रचारके लिए विस्तार रूपमें लिपिबद्ध करते हैं, प्रलय कालमें भी उनके मनमें श्रीश्रीगौरहरिकी स्मृति बनी रहती है।

श्रीवृन्दावनदास ठाकुर श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासावतार हैं। उनकी बात वेद-वाक्य है। गौड़ीय वैष्णवगण उनकी सदासे पूजा करते आ रहे हैं, और करते रहेंगे। उनके द्वारा रचित श्रीचैतन्य भागवत श्रीग्रन्थ प्रभुकी नवद्वीपलीलाका आदि ग्रन्थ है। इस अपूर्व भक्तिग्रन्थकी कोइ तुलना नहीं है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरके मुखसे श्रीगौर भगवान् स्वयं वक्ता हैं। यह बात श्रीश्रीचैतन्यचरितामृतकार कृष्णदास कविराज गोस्वामी महाशय लिख गये हैं—

मनुष्ये रचिते नारे ऐछे ग्रन्थ धन्य।
वृन्दावन दास मुखे वक्ता श्रीचैतन्य॥
चै. च. आ. ८. ३५

—※—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौबीसवाँ अध्याय

गयासे प्रभुका नवद्वीपमें लौटना

जे प्रभु आछिला भोला महा विद्यारसे। एबे कृष्ण बिनु आर किछु नाहिं बासे॥
चै० भा० म० १. २४२

प्रत्यावर्तनके समय मन्दार और वैद्यनाथ दर्शन

प्रभु गयाधाममें पितृकर्म समाप्त करके पौषमासके अन्तमें नवद्वीप आये। आते समय मार्गमें पुनः मन्दारमें श्रीमधुसूदनका दर्शन किया। इस मन्दार पर्वतकी बात पहले ही कही जा चुकी है। शास्त्रमें लिखा है कि इस पुण्य स्थान मन्दार पर्वतपर चढ़नेसे "नरो नारायणो भवेत्।"*

मन्दारसे प्रभु वैद्यनाथमें आये। वहाँ अपने प्रिय भक्त महादेवके श्रीमन्दिरमें आजानुलम्बित दोनों भुजाओंको ऊपर उठाकर बहुत देर तक मधुर नृत्य करते रहे। प्रेमानन्दमें विभोर होकर हुङ्कारगर्जन करते रहे। वैद्यनाथके पण्डोंने प्रभुको देखकर अति आदरपूर्वक माला-चन्दनसे आभूषित किया। प्रभुने उनके प्रति शुभ दृष्टिपात करके वहाँसे कंसनदमें आकर रात बितायी।

यथा समय श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र नवद्वीपमें जा पहुँचे। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्य आदि प्रभुके संगी साथियोंके प्राण बचे। प्रभुको नवद्वीपमें लाकर आचार्यरत्न शचीमाताके प्रिय पुत्रको उनके हाथमें समर्पित कर निश्चिन्त हो गये। प्रभु जब गयाधामसे श्रीवृन्दावन यात्रा करनेके लिए तैयार हुए थे, उस समय आचार्यरत्नके मनमें बड़ा भय उत्पन्न हुआ था। वह शचीमाताके पास जाकर क्या बोलेंगे? इतने दिनोंके बाद उनका वह भय दूर हुआ। उन्होंने नदियामें आकर स्वस्थ मनसे आहार किया।

नवद्वीपमें आनन्दोत्सव

सारी नदियामें यह बात घोषित हो गयी कि प्रभु गयाधामसे लौट आये। नदियामें घर-घर आनन्द ध्वनि होने लगी। प्रत्येक घरके द्वारपर आम्रपल्लवके साथ माङ्गलिक घट स्थापित हो गये। गृहतोरण पत्र-पुष्पसे सुशोभित हो उठा। नदिया सुन्दरीगण बड़े ही समारोहसे नदियामें श्रीश्रीनवद्वीप चन्द्रके शुभागमनका उत्सव मनाने लगी। प्रति द्वारपर रमणीगण हाथमें धूप, दीप, माल्य, चन्दन, कुंकुम, कस्तूरी, दुर्बा, धान्य, दधि, लाजा आदि लिये सुशोभित हैं। शङ्ख, घण्टा, मृदङ्ग, कांस्य, करताल, भेरी, वीणा आदि शत-शत वाद्य बज रहे हैं। हाट-घाटपर प्रतिमुख हरिध्वनि सुनायी दे रही है। सैकड़ों लोग आगे बढ़कर पृथ्वीपर लेटकर चरण वन्दना कर रहे हैं। बाल, वृद्ध, युवा गंगापार होकर नवद्वीप आ रहे हैं। सब आनन्दमें डूबे जा रहे हैं, पुष्प-वृष्टि कर रहे हैं। पुरनारीगण आरती कर रही हैं।

हमारे नदिया-पुरन्दर प्रभु नदियानन्द-स्वरूप हैं। प्रभुके विरहमें नदियावासी नर-नारीवृन्द निरानन्दमें

---

* चिरचन्दनयोमध्ये मन्दार नाम पर्वतः।
तस्यारोहणमात्रेण नरो नारायणो भवेत्॥
मन्दार शिखरं दृष्ट्वा दृष्ट्वा वा मधुसूदनम्।
कामधेनुमुखं दृष्ट्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥
—प्राचीन श्लोक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Any Copyright Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मग्न थे। अब उनका दर्शन प्राप्त करके वे आनन्दोत्सवमें मग्न हो गये हैं। इतने दिन श्रीश्रीनवद्वीप चन्द्रके बिना नदियामें अन्धकार था, अब उनके पुनराविर्भावसे सारी नदिया नगरी आलोकित हो गयी। नदियावासीके हृदयका अन्धकार मिट गया। श्रीगौराङ्ग-रूपालोकमें सब जीवोंके हृदय आनन्दसे उत्फुल्ल हो उठे।

जननीके चरणोंमें

नदिया परिभ्रमण करके प्रभुका अपने मन्दिरमें शुभागमन हुआ। जननीको साष्टाङ्ग दण्डवत् करके दोनों हाथोंसे उनकी चरणधूलि ली। शचीमाताकी दोनों आँखोंसे झरझर प्रेमाश्रुधारा बह चली। उन्होंने स्नेहपूर्वक पुत्रके मस्तकको सूँघकर मुखचन्द्र पर लाखों-लाखों स्नेह चुम्बन प्रदान करके प्रभुको गोदमें ले लिया और आङ्गनमें बैठ गयी। श्रीवास पण्डितकी गृहिणी मालिनी देवी, श्रीअद्वैत-गृहिणी सीतादेवी, शचीमाताकी बहिन सर्वजया देवी आदि आत्मीय तथा पुरनारियाँ, सबने मिलकर प्रभुकी मङ्गलकामना की।

शचीमाताने नाना प्रकारके शाक-व्यञ्जन तैयार कराकर पुत्रको परम परितोषपूर्वक भोजन कराया। पुत्रके शुभागमनके उपलक्ष्यमें श्रीगौराङ्ग-जननीने ब्राह्मणों, वैष्णवों, दीन-दरिद्रों तथा वादकगणको नाना प्रकारके धन-वस्त्र आदि दान दिये। विरहिणी विष्णुप्रिया देवी बहुत दिनके बाद पति-मुख दर्शन करके आनन्दमें डूब गयीं। उनके सारे दुःख दूर हो गये। उनके पितृगृहमें आनन्द ध्वनि उठी।

उन्होंने पतिके चरणोंमें बारंबार प्रणाम करके पद धूलिलेकर सिरपर रक्खी। अपने प्राणवल्लभके साथ चार आँखें केवल हुई, उस समय और कोई बातन हो सकी। क्योंकि घरमें बहुत लोग थे, वे सब प्रभुको देखने आये थे।

उपस्थित लोगोंको तीर्थयात्राका हाल सुनाते हुए प्रभु कह रहे थे कि तुम सबके आशीर्वादसे ही गया-दर्शन करके सकुशल आया हूँ।

उद्धत शिरोमणि निमाई पण्डितके विनय-नम्र मधुर भावको देखकर सभी विस्मित होकर उनके मुखचन्द्रकी ओर एकटक देखते रहे हैं। सब गुरुजन उनका शिर स्पर्श करके आनन्दित चित्तसे आशीर्वाद देने लगे। किसीने प्रभुके चौड़े सुन्दर कक्षःस्थलको स्पर्श करते हुए आशीर्वाद दिया। हृदयके आवेशसे वृद्ध ब्राह्मणगण प्रभुके सर्वाङ्गमें हाथ फेरकर मन्त्रपाठ करके शुभाशीर्वाद देने लगे। आज शचीमाताके आनन्दकी सीमा नहीं है। बहुत दिनोंके बाद पुत्र-मुख देखकर वे अपने आपको भूल गयीं।

अन्तरंग भक्तोंके साथ

मधुर वचनोंसे सबको एक-एक करके विदा करके कुछ अन्तरङ्ग भक्तोंके साथ निर्जनमें बैठकर प्रभु मनकी बात कहने लगे कि गयामें प्रवेश करते ही सहस्र-सहस्र विप्रोंके द्वारा वेदकी मंगल-ध्वनि सुनायी देने लगी, पण्डे लोग बता रहे थे कि पूर्वकालमें जब भगवान् यहाँ आये तो उनने इस स्थान पर चरण प्रक्षालय किये, जिनके पादोदकको लेकर गंगाका महत्व है, जिनको शिवजी सिरपर धारण करते हैं। उसी पादोदकके प्रभावसे इस स्थानका नाम पादोदक-तीर्थ पड़ा।

इतना कहते-कहते प्रेममय प्रभुके दोनों कमलनयनसे अविरल प्रेमाश्रुधारा बह चली। हा कृष्ण! हा कृष्ण! कहकर अजस्र अश्रु बहाने लगे। कृष्ण-वियोगके दुःखमें हृदयको अब अधिक दबाकर न रह सके। उच्छ्वसित प्रेम तरङ्गके आघातसे उनका आवेगमय हृदय समुद्र उद्वेलित हो उठा। महाश्वासके साथ 'कृष्ण-कृष्ण' कहने लगे, सारा शरीर पुलकित हो उठा और थर-थर काँपने लगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुकी ऐसी अवस्था देखकर नदियावासी वैष्णव लोग आनन्द गद्गद हो गये। उनकी आँखोंमें भी प्रेमाश्रु-धारा दीख पड़ी। प्रभुके इस प्रेमविह्वल भावको देखकर सब लोग विस्मित होकर मन ही मन सोचने लगे कि इनकी ऐसी दशा पहिले कभी देखनेमें नहीं आयी, इन पर भगवान् कृष्णकी कृपा हुई है।

श्रीमान् पण्डित आदि उपस्थित वैष्णव वृन्द जब मन ही मन इस प्रकार सोच रहे थे, उसी समय प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। वे आत्मसंवरण करके सबको सम्बोधन करके रोते-रोते मधुर वचनोंसे कहने लगे—"बन्धुगण! आज तो आप लोग घर जाइये, कल शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके घर आवें और सदाशिव और कविराज भी आवें। वहाँ अपने दुःखकी बात निवेदन करूँगा।"

यह बात प्रभुने श्रीमान् पण्डितको लक्ष्य करके कही। सदाशिव कविराज प्रभुके एकान्त भक्त और अतिशय प्रिय पात्र थे। वे श्रीकृष्ण लीलामें चन्द्रावली थे। * अतएव प्रभुने श्रीमान् पण्डितसे कहा कि सदाशिव कविराजको साथ लेकर आवें। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके ऊपर प्रभुकी विशेष कृपा थी, श्रीवासके आङ्गनमें नृत्यावेशमें प्रभुने उनकी भिक्षाके तन्दुल निकालकर खाये थे। उनके घर बैठकर प्रभु अपने मनकी बात नदियाके भक्तों कहेंगे। वहाँ दूसरे ही दिन वे लोग इकट्ठा होंगे। प्रभु कृष्ण-विरहकी बात कहेंगे। इसी समयसे इच्छामय प्रभुने आत्मप्रकाश करनेकी इच्छा की।

माता और विष्णु प्रियाके साथ

सबको विदा करके प्रभु माताके पास जाकर बैठे। प्रभुके श्रीमुखमें और दूसरी कोई बात नहीं है, है, केवल कृष्ण-विरहकी बात, कृष्णकी लीला-स्थलीकी बात। प्रेममय प्रभु आवेशमें माताको कृष्ण-कथा सुनाने लगे। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी घरमें आड़में बैठकर निविष्ट चित्तसे सुन रही हैं; देवकी दृष्टि प्रभुके कृष्ण-विरह-दुःख-कातर मलिन मुखचन्द्रकी ओर है। शचीमाता देखती हैं कि उनका पुत्र गयासे लौटकर कैसा बन गया है। कृष्ण नाम लेते ही उनके सुन्दर कमलनयनसे आँसू निकल रहे हैं; कण्ठ स्वर गद्गद हो रहा है। कृष्ण-कथाके सिवा और कोई बात उनके मुँहमें नहीं है। शचीमाताने रसोई बनाकर भली-भाँति पुत्रको भोजन कराया। प्रभु भोजन करते समय भी कृष्ण-कथा कह रहे हैं; उनके मुँहसे कृष्ण-कथा बन्द नहीं हो रही है। पुत्रसे घर-द्वारकी बातें करनेके लिए शचीमाताको मौका ही न मिला।

भोजन करके प्रभु शयन-गृहमें गये। बहुत दिनके बाद श्रीविष्णुप्रिया देवीने पति देवताके अधरामृत प्रसादको पाकर अपनेको कृतार्थ समझा। प्रसाद ग्रहण करनेके बाद वस्त्रालङ्कारसे आभूषित होकर पानका बट्टा हाथमें लेकर पतिके शयन-गृहमें गयीं। प्रभु अपनी शय्याके एक बगल में बैठकर प्रेमाविष्ट होकर हृदयवेगमें कृष्ण नाम जप कर रहे हैं। प्रियाजी वहाँ आयी हैं—इस ओर उनका ध्यान ही नहीं है। प्रियाजी घरके द्वारपर खड़ी होकर प्राणबल्लभकी अपूर्व श्रीअङ्ग-कान्ति दर्शन कर रही हैं। पुलकित होनेके कारण प्रभुके श्रीअंगकी सुन्दर शोभा हो रहा है, आजानुलम्बित सुबलित सुन्दर भुजद्वय सुकोमल जङ्घोंपर रखकर अर्द्धनिमीलित नयन कुछ ऊपर उठाये प्रेमावेशमें शय्या पर बैठकर वे मधुर स्वरसे कृष्ण नाम ले रहे हैं; बीच-बीचमें 'हा कृष्ण! हा कृष्ण!' कहकर उद्विग्न हो रो पड़ते हैं; उनको बाह्यज्ञान नहीं है।

श्रीमती विष्णुप्रिया देवी धीरे धीरे पानका बट्टा शय्याके बगलमें रखकर प्राणबल्लभके चरणोंमें जा

---

*पुरा चन्द्रावती यासीत् व्रजे कृष्णप्रिया परा।
अधुना गौड़ देशे सा कविराजः सदाशिवः॥
—गौर गणोद्देशदीपिका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बैठीं। उस समय प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। प्रियतमाको देखकर उनका कृष्ण-विरह-समुद्र उमड़ आया। प्रियजनको देखकर सन्तप्त हृदय उद्वेलित हो जाता है, और मनका दुःख स्वभावतः बढ़ जाता है। प्रभुकी भी यही दशा हुई। वे विह्वलता पूर्वक 'हा कृष्ण ! हा कृष्ण !!' कहते हुए बालकके समान रोने लगे। नवीना प्रियाजी अपने प्राणबल्लभकी ऐसी अवस्था देखकर कुछ स्थिर न कर सकीं कि क्या करें। वे भयसे विह्वल-चित्त होकर प्रभुकी पाद-सेवामें लग गयीं। प्रभु बाह्यज्ञान शून्य थे, देखकर भी नहीं देख पाये। कुछ देरके बाद प्रभुने आत्म-संवरण करके प्रियतमाको पदतलमें आसीन देखकर मधुर स्वरसे कहा—"विष्णुप्रिये ! मैं गया-धाममें अमूल्यधन पाकर दुर्भाग्यवश खो आया। इस कारण मैं बड़ा कातर हूँ। मेरे प्राणधन श्रीकृष्ण मुझको एक बार दर्शन देकर कहाँ चले गये ? फिर किस प्रकार कितने दिनोंमें उनसे भेंट होगी, बतलाओ तो ? क्या तुमने मेरे सर्वस्वधन वृन्दावन चन्द्रको देखा है ?" इतना कहकर प्रभु व्याकुल होकर रोने लगे। नवीना प्रियाजी इस बातका क्या उत्तर दें ? कुछ समझ न पाकर वे भी प्रभुके चरण पकड़ कर रोने लगीं। यह देखकर भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान्‌के मनमें दयाका उद्रेक हुआ। प्रभुने सोचा कि अबला सरला बालिकाको रुलानेसे क्या लाभ ? बहुत दिनोंके बाद वे घर आये थे। आज उनकी प्राणबल्लभाके लिए बड़े आनन्दका दिन था। इस समय क्रन्दन शोभा नहीं देता। भक्त दुःखकातर श्रीगौर भगवान्‌ने यह सोचकर आत्मसंवरण किया। तीर्थयात्राकी अनेक बातें उठाकर प्रभुने कृष्ण-कथाके प्रसङ्गसे अपनी प्रियतमाको सन्तुष्ट किया। कृष्ण-कथाके रङ्गमें उन्मत्त हो उस दिन दोनों सारी रात जागते रहे।

दूसरे दिन

दूसरे दिन प्रातःकाल श्रीवास पण्डितके आङ्गनमें कुन्द वृक्षके नीचे नदियाके वैष्णव लोग एकत्रित हुए। उस कुन्द वृक्षमें प्रतिदिन पर्याप्त मात्रामें पुष्प खिलते थे। नदियाके वैष्णव लोग इस महान् कुन्द-पुष्प-वृक्षसे विष्णुपूजाके लिए पुष्प आहरण करते थे, तथा पुष्प चयन करते-करते नाना प्रकारकी कृष्ण-कथा कहते थे। श्रीवास पण्डित, गदाधर, मुरारि गुप्त, गोपीनाथ, रामाई पण्डित आदि सभी वहाँ गये थे। उसी समय श्रीमान् पण्डित हँसते हुए वहाँ जाकर उपस्थित हुए। सबने उनसे पूछा—"पण्डित ! आज तुम्हारे मुँहमें इतनी हँसी क्यों है ?" श्रीमान् पण्डितने हँसकर उत्तर दिया—"हँसनेका कारण है।" तब सभी उनको पकड़कर बैठ गये। "पण्डित ! बतलाओ तो इतनी हँसीका कारण क्या है ?" तब श्रीमान् पण्डितने कहा—

"बड़ी अद्‌भुत और असम्भव बात हुई है, निमाई पण्डित वैष्णव बन गये हैं। गयासे उनके सकुशल लौटनेके बाद कल सायंकाल उनसे मिलने गया तब उनको परम विरक्त पाया, जरा भी उद्धतपन नहीं था। तीर्थयात्राके अपूर्व दर्शनोंका वर्णन करते हुए पादोदक तीर्थका नाम लेते ही, नयनोंमें जल भर गया, सारे अङ्गमें कम्पन और पुलक होगया, और 'हा कृष्ण' कहकर भूमिपर गिर पड़े और मूर्छित हो गये। कुछ देरके बाद चेतना आनेपर 'कृष्ण कृष्ण' कहकर क्रदन्न करने लगे। उनके नयनोंका जैसा ढंग देखा उससे लगता है कि वे साधारण मानव नहीं हैं। सबको प्रातःकाल शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके घर मिलनेको कहा है, वहाँ अपने मनकी सब बात बतायेंगे।"

श्रीमान् पण्डितकी बात सुनकर अत्यन्त आनन्दित हो सब लोग हरिध्वनि करने लगे। सभी वयमें ज्येष्ठ और वृद्ध वैष्णव हैं। निमाई पण्डित उनके सम्मुख बालक हैं। श्रीवास पण्डित पहले ही बोल उठे—

'गोत्रं नो वर्द्धताम्'।

इतनी बात सुनकर सभी परम आनन्दपूर्वक 'तथास्तु तथास्तु' कहकर श्रीकृष्ण 'नाम कीर्तन करने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लगे। इस प्रकार पुष्प चयनका कार्य समाप्त होने पर उन्होंने घर जाकर पूजा समाप्त की। श्रीमान् पण्डित पूर्वदिनके निश्चयके अनुसार गङ्गाके किनारे शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटियाकी ओर चले। रास्तेमें उनकी गदाधर पण्डितसे भेंट हो गयी। उनके मुखसे गदाधर पण्डितने फिर सुना कि प्रभु आज शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटियामें कृष्ण कथा कहेंगे। वैष्णव शिरोमणि गदाधरके मनमें भी कृष्ण कथा सुननेकी इच्छा हुई, इसलिए वे पहिले ही जाकर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटियामें छिप गये।

सदाशिव कविराजको श्रीमान् पण्डित साथ लेकर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटियामें उपस्थित हुए। एक-एक करके मुरारि गुप्त आदि अन्तरङ्ग भक्तगण आकर वहाँ सम्मिलित हुए। सभी प्रभुकी प्रतीक्षा करने लगे। इसी समय द्विजराज विश्वम्भर भी वहाँ पहुँच गये।

—०—

पच्चीसवाँ अध्याय

नदियामें प्रभुका प्रेमभक्ति प्रकाश शचीमाताका उद्वेग

जे प्रभु आछिला अति-परम-गम्भीर। से प्रभु हैला प्रेमे परम-अस्थिर॥
चै० भा० आ० १२. ११९

शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटियामें

प्रभु कृष्ण प्रेममें मत्त यथासमय शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटियामें जा उपस्थित हुए। उपस्थित वैष्णवोंने बड़े ही सत्कारपूर्वक उनकी अभ्यर्थना की। प्रभुकी बाह्य दृष्टि न थी। साधु-वैष्णवके दर्शन मात्रसे उनके श्रीमुखसे भक्ति विषयक उत्तम-उत्तम श्लोक उच्चारित होने लगे। उसे सुनकर भक्तगण हरि-ध्वनि करने लगे। प्रभु कृष्ण-विरहमें बेसुधमें होकर "हा कृष्ण! तुम कहाँ गये?"—कहते हुए व्याकुल चित्तसे क्रन्दन करने लगे। वे कृष्ण-प्रेममें उन्मत्त थे, कृष्ण-विरहमें ज्ञानशून्य थे।

शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके घरके स्तम्भको गोदमें पकड़ कर प्रभु रोते-रोते भूतल पर गिर पड़े। प्रभुके प्रेमावेगको सहनेमें असमथ होकर स्तम्भ टूट गया। तब वह बिखरे बाल 'हा कृष्ण! कृष्ण कहाँ?' कहते हुए मूर्छित होकर पृथ्वीपर गिर पड़े। सारे भक्तगण प्रभुके साथ पृथिवी पर गिरकर रोने लगे। गदाधर घरके भीतर छिपे थे। वे भी मूर्छित होकर गिर पड़े। किसीमें किसीको देखनेकी शक्ति नहीं है। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके घरके निम्नदेशमें पवित्र सलिला सुरसरि प्रवाहित हो रही हैं। वह आज आनन्दमें उमड़कर तरङ्ग भङ्गिमा द्वारा प्रभुकी प्रेमभक्ति-विकार लीलाका रङ्ग देखकर मृदु मन्द मुस्कारा रही हैं। कुछ देरके बाद प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। वे भूतलसे उठकर 'अरे कृष्ण! मेरे प्रभु! तुम किधर गये?' कहकर पुनः व्याकुल चित्त होकर उच्च स्वरसे रोने लगे। रोते-रोते पुनः पछाड़ खाकर भूतल पर गिर पड़े।

प्रभु कृष्ण-प्रेममें पूर्ण उन्मत्त हैं। स्वानुभावानन्दमें वे पुनः-पुनः पछाड़ खाकर गिर रहे हैं, प्रेम-रङ्गमें प्रेममय प्रेमके भगवान् श्रीगौराङ्ग प्रभु यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुछ भी समझ नहीं पा रहे हैं। यह देखकर भक्त-वृन्दके प्राण फटे जा रहे हैं। प्रभु प्रेमावेशमें आकुल होकर केवल क्रन्दन कर रहे हैं। ब्रह्मचारीकी कुटिया कृष्ण-क्रन्दन-कोलाहलसे परिपूर्ण हो गयी, कृष्ण-प्रेमानन्दसे मुखरित हो उठी। बहुत देरके बाद प्रभु प्रकृतिस्थ होकर स्थिर भावमें बैठे। परन्तु उस समय भीउनकी आँखोंसे अविरल प्रेमाश्रुधार बह रही थी, उन्होंने शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीको लक्ष्य करके पूछा—"घरके भीतर कौन है?" शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीने रोते हुए उत्तर दिया—"तुम्हारा गदाधर।"

वे उन्मादीके समान एक बार उठते हैं, और फिर पछाड़ खाकर पृथ्वीपर गिर जाते हैं। दैवबलसे प्रभुके श्रीवदन और नासिका पछाड़ खानेपर चोट लगनेसे बच जाते हैं। वे आँखें नहीं खोल पाते हैं। श्रीमुखसे केवल "हा कृष्ण! कृष्ण कहाँ? कृष्णने क्या कर डाला?"—केवल इतना कहकर जिसे सामने पाते हैं उसका ही गला पकड़कर रोकर कहते हैं—"बन्धु! श्रीकृष्ण कहाँ हैं? शीघ्र बताओ।" प्रभुको ऐसा आरत देखकर किसीके मुखसे बात नहीं निकल रहा है। सभी केवल रो रहे हैं।

गदाधर प्रभुके बाल-सखा हैं। प्रभु उनको प्राणसे भी अधिक प्रिय मानते हैं। उनको देखकर प्रभुका कृष्ण विरह समुद्र उमड़ पड़ा। गदाधर पण्डित जन्मसे ही कृष्ण-भक्त हैं। अतएव प्रभुने उनके भाग्यकी प्रशंसा करके रोते-रोते कहा—"गदाधर! तुम भाग्यवान् हो, तुम बचपनसे ही कृष्ण-भक्त हो। मेरी वह सुकृति नहीं है। मेरा जन्म व्यर्थ है। विद्या और संसार-रसमें निमग्न होकर मैंने व्यर्थ ही काल व्यतीत किया है। इसी कारण अमूल्य निधि कृष्ण-धन पाकर भी मैंने भाग्यके दोषसे खो दिया। अब तुम दया करके मेरी खोयी निधि लाकर मेरा सब दुःख दूर करो।"

इतना कहकर प्रभु बारंबार लम्बी साँस छोड़ने और क्रन्दन करने लगे। क्रन्दन करते-करते भूतलपर लौटने लगे। उनके भ्रमरके समान काले घुँघराले केशपाश धूलि धूसरित देखकर भक्तगणके हृदय विदीर्ण हो गये। कोई कुछ बोल न सका, किसीको साहस न हुआ कि उनको पकड़ले। सभी अवाक् और निस्तब्ध हैं। विस्मयसे अभिभूत होकर सभी मानो जड़वत् हो गये हैं।

इस प्रकार सारा दिन बीत गया। किस प्रकार दिन चला गया, किसीको ज्ञात न हुआ।

नदियामें प्रभुकी यह प्रेमभक्ति-विकारलीला सर्व-प्रथम एकान्त अन्तरङ्ग भक्तगणके बीच प्रकट हुई। नदियावासी दूसरे भक्तवृन्दने प्रभुकी इस अपूर्व लीलाकी कहानी वैष्णवोंके मुखसे सुनी। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीकी कुटियामें प्रभुके आदेशसे श्रीमान् पण्डित, गदाधर पण्डित, सदाशिव पण्डित और मुरारि गुप्त, ये परम सुकृतिवान् चार आदमी, एकान्त अनुगत, अन्तरङ्ग भक्त उपस्थित थे। ये ही लोग सर्वप्रथम प्रभुके इस अपूर्व प्रेमभक्ति-विकार भावको देखकर धन्य हुए थे। मनुष्यके हृदयमें इस प्रकारका अपूर्व प्रेम-भक्तिभाव उदय हो सकता है, भगवद्-विरहमें मनुष्यके प्राण इतने व्याकुल हो सकते हैं, इतने कातर हो सकते हैं, इतनी आर्त्ति प्रकट हो सकती है, यह उनको पहले ज्ञात न था। श्रीमान् पण्डित आदि वृद्ध वैष्णवगणने प्रभुकी इस अपूर्व और अलौकिक प्रेमभक्ति लक्षणमयी कृष्णविरह भाव कहानी नदियाकी वैष्णव-मण्डलीके सामने क्रमशः विस्तार-पूर्वक वर्णन की।

इस अपूर्व विवरणको सुनकर सब आनन्दसे हरि-हरि ध्वनि करने लगे। किसी-किसीने कहा—"इनमें भगवान् प्रकट हो रहे हैं।" किसीने कहा—"निमाई पण्डित भक्त बन गये। अब पाखण्डियोंका दलन सरल हो जायगा।" किसीने कहा—"इसमें भगवान्का कोई गूढ़ रहस्य है। इसमें कोई सन्देह नहीं।" किसीने कहा—"ईश्वर पुरीके संगसे गयामें इनने श्रीकृष्णका प्रकाश देखा है।" और सब मिलकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुको प्रेमानन्दमें शत-सहस्र वार आशीर्वाद देने लगे। सबने कहा—"इन पर श्रीकृष्णकी कृपा हो।"

गृह-मन्दिरमें प्रभु

बेला तीसरा पहर बीतनेपर प्रभु एक-एक करके सब वैष्णवोंसे बिदा होकर उस दिन अपने घर गये। शचीमाता रसोई बनाकर और ठाकुरको भोग लगाकर पुत्रके आगमनकी प्रतीक्षा कर रही थी। नवीना प्रियाजी शुष्क वदन हो सासुके पास बैठकर गृहस्थीकी बातें कर रही थीं। शचीमाताको ज्ञात न था कि प्रभु कहाँ गये हैं, यदि ज्ञात होता तो वहाँसे पुत्रको बुला लाती।

प्रभुको गयाधामसे नवद्वीप आये दो दिन हो गये। सारी नदियामें आनन्द ध्वनि उठ रही है। सब लोग निमाई पण्डितको देखने आते हैं। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके घरमें प्रभुकी अपूर्व कृष्ण-प्रेम-भक्ति-उद्दीपक लीलारङ्ग कहानी नदियामें घर घर प्रचलित हो रही है। नदियावासी नर-नारी झुण्डके झुण्ड प्रभुके श्रीमन्दिरमें आकर उनकी प्रेमानन्दमय भुवनमङ्गल श्रीमूर्ति दर्शन करके कृतार्थ हो रहे हैं। प्रभु अपने मन्दिरमें सदा आविष्ट भावमें रहते हैं।

वे अब संसारसे विरक्त हैं। प्रेमावेशमें आविष्ट होकर केवल कृष्ण कथा कहते हैं। शचीमाता पुत्रके अद्भुत चरित्रको कुछ भी समझ नहीं पा रही हैं। पुत्रके आँसू भरे चन्द्रमुखको देखकर उनके मनमें बड़ा दुःख होता है। 'हा कृष्ण! हा कृष्ण!!' कहकर जब प्रभु करुण स्वरमें रुदन करने लगते हैं तो शचीका आङ्गन उनके करुण क्रन्दनसे भर जाता है। कृष्ण-विरहोन्मत्त प्रभुको दिन-रातका भान नहीं है। वह रातको दिन समझते हैं, दिनको रात।

शचीमाता कोई उपाय न देखकर गलेमें वस्त्र डालकर हाथ जोड़े ठाकुर मन्दिरके द्वारपर जाकर सर्व-विघ्न विनाशन नारायणकी शरण लेती हैं। वह ठाकुरके सामने रोते-रोते यह प्रार्थना करती हैं—"प्रभो! मेरे स्वामीको आपने बुला लिया, मेरे पुत्रोंको भी ले लिया, अब केवल एक जन बचा है, मुझ अनाथिनीपर यह कृपा कीजिये कि यह विश्वम्भर स्वस्थ चितसे घरमें रहे।"

शचीमाताके मनःकष्टकी सीमा नहीं है। पुत्रके इस अद्भुत चरितको वे कुछ भी समझ नहीं पा रही हैं। पुत्रके मङ्गलके लिए वह गङ्गादेवीकी पूजा करती हैं, विष्णु मन्दिरमें सिर पटकती हैं, और घरमें शान्ति स्वस्त्ययन कराती हैं। गयाधामसे आनेके बाद प्रभु माताके साथ घर-गृहस्थीके विषयमें कोई बात नहीं करते। प्रभु जब घरपर रहते हैं, शचीमाता कौशलपूर्वक पुत्रबधूको लाकर पुत्रके पास बैठाती हैं, कृष्ण-विरहमें कातर हमारे प्रभु स्वर्ण-प्रतिमा श्रीमती विष्णुप्रिया देवीको देखकर भी नहीं देखते। वे रात-दिन केवल भक्ति-विषयक श्लोक उच्च स्वरसे पाठ करते हैं; और व्याकुल चित्त होकर क्रन्दन करते हैं। कभी-कभी विरहोन्मत्त भावसे भीषण हुङ्कार गर्जन करते हैं। उसे सुनकर प्रियाजी शङ्कित होकर दूर भाग जाती हैं। शचीमाता भी भय खाती हैं।

प्रभुको रातमें नींद नहीं आती है। कृष्ण-विरह बाणसे उनका हृदय जर्जरित है। वे कभी उठते हैं, कभी बैठते हैं, मानो मनमें दारुण उद्वेग है, उनको कदापि शान्ति नहीं मिल रही है। नवीना प्रियाजी सारी रात जागकर बिताती हैं। प्राणबल्लभकी पद-सेवा करने जाती हैं तो वे उठ बैठते हैं, कोई बात करनेपर प्रभु उत्तर नहीं देते। कभी-कभी वे प्रियतमाकी ओर करुण नयनसे देखते हैं, और अजस्र आँसू बहाते हैं। उनकी इस करुणदृष्टिका मर्म यह है,—"प्रियतमे! विष्णुप्रिये! तुम मेरी खोई हुई निधि कृष्णधनको खोजकर लाओ, और मेरे प्राणोंकी रक्षा करो, मेरे दुःख दूरकरो।" नवीना प्रियाजी पतिके इस प्रकारके अद्भुत चरितका मर्म कुछ भी समझ नहीं पाती। वे सरल बालिका हैं, प्रभुके कृष्ण विरहोन्माद दशाका मर्म वे क्या समझेंगी? उनकी वृद्ध

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सासु जब इसे समझनेमें असमर्थ हैं, तब वे कैसे समझ सकती हैं ?

प्रियाजी सोचती हैं कि "मनुष्यको क्या ऐसा विषम रोग होता है ? क्या इसकी कोई दवा नहीं है ? माँ क्यों नहीं किसी अच्छे वैद्यको बुलवा भेजतीं ? क्या इस रोगकी औषधि नहीं है ?" नवीना प्रियाजी-की चिन्ता शमन नहीं होती। वे दिन-प्रतिदिन मलिन होती जारही हैं, उनके मुखचन्द्र पर भीषण चिन्ताकी रेखा दृष्ट हो रही है। शचीमाता सब समझती हैं, परन्तु क्या करें, कुछ भी निश्चय नहीं कर पातीं। श्रीवास-पण्डित, चन्द्रशेखर आचार्यरत्न, मुरारि गुप्त आदि प्रभुके शुभाकांक्षी आत्मीयजनके पास जाकर शचीमाता पूछती हैं—"अहो ! मेरे निमाईको क्या हो गया ? गयासे लौटते ही मेरे सोनेके बच्छाको यह कौनसा रोग हो गया?कैसे इस रोगका शमन होगा? मेरा बच्छा इतना रोता क्यों है ?" वे लोग शचीमाताको भाँति-भाँतिकी बातें कहकर शान्त करते हैं, समझाते-बुझाते हैं और कहते हैं, "माँ ! यह कोई रोग नहीं है। तुम्हारे भाग्यवान पुत्रको गयाधाममें श्रीकृष्णका साक्षात् दर्शन प्राप्त हुआ है, इस समय कृष्णके अदर्शन जनित विरहसे वे कातर हैं। इस नदियामें बैठकर वे कृष्ण का पुनः दर्शन प्राप्त करेंगे। यह जो क्रन्दन और आर्त्तभाव देख रही हैं, यही कृष्ण-प्राप्तिका मूलमन्त्र है। अपने पुत्रके कल्याणमें आप भी कृष्ण-दर्शनका आनन्द प्राप्त करेंगी।"

पुत्र-दुःख-कातरा स्नेहमयी शचीमाताने इन सब बातोंका कुछ भी मर्म न समझा।" क्या कलिकालमें मनुष्यको कृष्णका दर्शन होता है ? सत्ययुगमें केवल ध्रुवको दर्शन प्राप्त हुआ था। साधना करनेके लिए ध्रुवको बचपनमें ही वनमें जाना पड़ा था। उपवास करके, निरन्तर जागरण करके, कठोर तपस्याके द्वारा बालक ध्रुवने कृष्णका दर्शन प्राप्त किया था। मेरा निमाई नदियामें बैठकर कृष्णका साक्षात् दर्शन प्राप्त करेगा, यह तो होने वाली बात नहीं है। तो क्या मेरा निमाई वनमें चला जायगा ? तो क्या मेरा सोनेका बच्छा मुझे छोड़कर भाग जायगा ?"—इस प्रकारके चिन्तनसे शचीमाता व्याकुल हो उठीं। उन्होंने घरमें जाकर देखा कि निमाई नहीं है, उनको दशों दिशाएँ शून्य दीखने लगीं, पुत्रके मुखचन्द्रको न देखकर उनके प्राण व्याकुल होगये, वे बिना किसीसे कुछ कहे पुनः घरसे बाहर निकलीं।

श्रीमती विष्णुप्रिया देवी अकेली घरमें रह गयीं। सास घरमें इधर उधर देखकर क्यों चली गयीं, नवीना प्रियाजी यह समझ न सकीं। शचीमाताने रास्तेमें सुना कि प्रभु गङ्गादास पण्डितके घर गये हैं। वे वहाँ चल पड़ीं। वहाँ जाकर देखा कि उनका पुत्र गङ्गादास पण्डितके साथ बैठकर आविष्ट भावसे मधुर कृष्णकथा कह रहा है, और रो रहा है। शचीमाताकी जानमें जान आयी। उन्होंने सोचा था कि निमाई कहीं चला गया। वे ध्रुवकी बात सोच रही थी। ध्रुवने वनमें जाकर तपस्या करके साक्षात् कृष्ण-दर्शनको प्राप्त किया था। उनका पुत्र भी कृष्ण-दर्शनकी प्राप्तिके लिए प्रयास कर रहा है। कौन जाने निमाई भी कहीं ध्रुवके समान ही न करे। इस भावनासे वे इतना कातर हो उठीं कि उनको बाह्य ज्ञान न रहा।

प्रभु अपने अध्यापक गुरु गङ्गादास पण्डितका आशीर्वाद ग्रहण करने उनके घर गये हैं। गङ्गादास पण्डित परम भागवत हैं। उन्होंने अपने प्रिय छात्रकी सारी अवस्था लोगोंके मुखसे सुनी है। प्रभुने जैसे ही गुरुकी चरण-वन्दना की, वैसे ही अध्यापक शिरोमणि गङ्गादास पण्डितने सादर उठकर उनको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके स्नेहपूर्वक कहा— "बेटा ! धन्य है तुम्हारा जीवन। पितृकुल मातृकुल दोनोंका तुमने उद्धार कर दिया। तुम्हारे शिष्य तुमको छोड़कर और किसीके पास पढ़नेके लिए पुस्तक नहीं खोलते। अब तुम कलसे उनको पढ़ना आरम्भ करो। आज घर जाओ।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुकी आँखोंमें अविरल अश्रु प्रवाह है, मुखमें मधुर कृष्ण नाम है, गद्‌गद कण्ठ स्वर है। उन्होंने और कोई उत्तर नहीं दिया। अध्यापक गुरुको नमस्कार करके उनके चरण-तलमें बैठकर उनके साथ कृष्ण-कथा कहना प्रारम्भ कर दिया। तीर्थ भ्रमणकी बात उठाकर कृष्ण-दर्शनकी बात कहते-कहते प्रभु आविष्ट हो गये। उसी समय शचीमाता उनको खोजते-खोजते गङ्गादास पण्डितके घर पहुँचीं। प्रभुका ध्यान उनकी ओर न था। वे छात्रोंसे वेष्टित होकर प्रेमानन्दमें मधुर कृष्ण-कथा कह रहे थे। सब लोग बाह्यज्ञान शून्य होकर श्रवण कर रहे थे।

यह सारी घटना प्रभुके गयाधामसे नवद्वीपमें आनेपर दो-तीन दिनके बीच ही सघटित हुई थी। गयाधामसे आकर ही प्रभु इस प्रकार कृष्ण प्रेमोन्मत्त भावमें सारी नदियाके लोगोंके द्वार-द्वार भ्रमण करने लगे। वे गङ्गादास पण्डितके घरसे मुकुन्द सञ्जयके घर आये। मुकुन्द सञ्जयके चण्डीमण्डपमें प्रभुकी पाठशाला थी। वे विशाल चण्डीमण्डपमें छात्रोंसे परिवेष्टित होकर बैठ गये। सपरिवार मुकुन्द सञ्जय प्रभुका दर्शन करके आनन्द-सागरमें डूब गये। मुकुन्द सञ्जयके पुत्र पुरुषोत्तमको प्रभुने गोदमें लेकर अपने अश्रुजलसे उसके अङ्गोंको सींच दिया। ये पुरुषोत्तम सञ्जय प्रभुके अतिशय प्रिय भक्त थे। पुर-नारीवृन्द आनन्दसे शुभ हुलुध्वनि करने लगीं। प्रभुने वहाँ बैठकर उसी प्रकार कृष्ण-कथा रङ्गमें सबको सन्तुष्ट किया।

इसके बाद प्रभु अपने घर आये। आकर विष्णु-मन्दिरके द्वारपर बैठ गये। शचीमाता डरती-डरती पुत्रके पास आकर बैठीं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी घरके भीतरसे सतृष्ण नेत्रोंसे पतिके पादपद्मका दर्शन कर रही हैं। प्रभु सिर झुकाये अजस्र अश्रु बहा रहे हैं और बीच-बीचमें 'हा कृष्ण! कृष्ण कहाँ?' करुण ध्वनि करके लम्बी साँस छोड़ रहे हैं। कभी-कभी हुङ्कार गर्जन करते हैं। शचीमाता पुत्रके इस अद्‌भुत चरितको कुछ भी समझ नहीं पा रही हैं। वह सोचती हैं कि "यह क्या हो गया? मेरे सोनेके बच्छाको किसने ऐसा पागल बना दिया? कैसे अशुभ मुहूर्त्तमें मेरा बच्छा गया जोगया था?"

श्रीमती विष्णुप्रिया देवी किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर खड़ी-खड़ी अपने प्राणवल्लभके इन सारे अद्‌भुद् भाव-लक्षणोंको एक-एक करके निरीक्षण कर रही हैं। वे देखतीं हैं कि उनके प्राणवल्लभकी भावगति अच्छी नहीं है। यह उनका करुण आर्त्तभाव, अविरल क्रन्दन, तथा संसारसे विराग जो दीखता है, इसके मूलमें कोई विशेष घटना है। वे सरल बालिका हैं। पहले उनके मनमें आया कि उन्होंने तो पतिके सामने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है, जिसके कारण उनके पतिदेव संसारसे विरक्त होंगे। प्रियाजीका मन उस समय अत्यन्त चञ्चल था, नाना प्रकारकी चिन्तामें वे कातर हो रही थीं। उन्होंने फिर सोचा, जान पड़ता है प्राणवल्लभके मनमें पहली स्त्रीकी शोक स्मृति उदय हुई है। प्रियाजी जानती हैं कि प्रभुने श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीके ऊपर किस प्रकार कृपाकी थी, उनके देहावसान हो जानेपर कितना दुःख पाया था। जब तब श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवीकी बात उठाकर प्रभु दशमुखसे उनका गुणगान करते थे। श्रीमती विष्णुप्रिया देवीके मनमें हुआ कि, "सम्भवतः प्राण-वल्लभके इस संसार-वैराग्य-भावके साथ उनकी प्रथम स्त्रीकी पूर्वस्मृतिका सम्बन्ध हो। वे बालिका हैं, पतिके श्रीचरणोंकी सेवाके कार्यमें पूर्णतः अनभिज्ञ और अयोग्य हैं। जान पड़ता है कि पति-सेवामें किसी प्रकारकी त्रुटि हो गयी है, अथवा वह क्या करते हुए क्या कह जाती हैं, इनीसे प्राणवल्लभके मनमें व्यथा होती है।" यह सोचकर नवीना प्रियाजी व्याकुल हो उठीं। ये सब बातें बोलनेकी नहीं हैं। उन्होंने मनकी बात मनमें ही रक्खी। परन्तु इस चिन्तानलमें उनका कोमल हृदय दग्ध होने लगा। वे अब सीधी होकर खड़ी न रह सकीं, बैठ गयीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह किसी ने नहीं देखा, प्रियाजीके मनका भाव किसीने नहीं समझा।

श्रीगौर भगवान् सर्वज्ञ हैं, सर्वान्तर्यामी हैं, उनके लिए कुछ भी अविदित नहीं है। वें भक्त दुःखहारी हैं। प्रियाजीके मनकी अवस्था समझकर आत्मसंवरण करके माताकी ओर देखकर वे बोले,--"माँ मुझको भूख लगी है। कृष्णका भोग तैयार करो।" शचीमाता तत्काल वहाँसे उठकर पुत्रबधूका हाथ पकड़कर रसोईघर में गयीं। आज तीन दिन के बाद उनके प्राणप्रिय निमाईने मुँह खोल कर कहा है कि, उनको भूख लगी है। शचीमाता झटपट रसोई बनानेके लिए बैठीं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवीने सारा प्रबन्ध कर दिया।

प्रभु विष्णुगृहके द्वारपर बैठकर नाम जपकर रहे हैं। उनके मनमें बड़ा ही कष्ट है। कृष्ण-विरह-कातर हमारे प्रभु भक्त दुःख निवारण करनेके लिए अपने प्रकृत मनोभावको छिपानेके लिए बाध्य हो हो गये। भक्तवत्सल भगवान् भक्तके लिए सब कुछ कर सकते हैं। उन्होंने भोजन करने बैठकर आज तीन दिनके बाद माताके साथ कुछ सांसारिक बातें कीं। इससे शचीमाताके मनमें बड़ा ही आनन्द हुआ। प्रियाजीको भी मनमें आनन्द प्राप्त हुआ। भक्तवत्सल श्रीगौर भगवान्ने इस प्रकार भक्ताका दुःख दूर किया। उस दिन रातमें प्रभुने सुखकी नींद लीं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी पतिकी चरणसेवाका सुयोग पाकर आनन्द विह्वल हो उठीं।

पाठशालामें

दूसरे दिन प्रभु जैसे ही गङ्गा-स्नान करके घर लौटे तो उनके छात्रोंने आकर उनसे पाठ लिये। बहुत दिनोंसे वे प्रभुसे पाठ नहीं लेने पाये थे। बड़ी आशा करके वे लोग पोथी हाथमें लेकर प्रभुके घर पाठ लेने आये हैं। प्रभु बाहरी दालान में बैठे हैं। छात्र मण्डली उनको घेर कर बैठी है। प्रभु मानो तारक मण्डलीसे परिवेष्टित पूर्णचन्द्रके समान सुशोभित हो रहे हैं। उनके पुलकित श्रीअङ्गकी शोभासे चतुर्दिक आलोकित हो रहा है। योगपट्टके ढंगसे वस्त्र परिधान करके चन्दन और तिलक-छापसे सर्वाङ्ग विभूषित करके प्रभु योगासन पर बैठकर मृदुल स्वरसे नाम गान कर रहे हैं। प्रभुके मुखमें कृष्णनामके सिवा और कोई बात नहीं आ रही है, यह बात छात्रोंको ज्ञात नहीं है। उन्होंने प्रभुके भाव गतिको कुछ भी नहीं समझा। उनके विशेष अनुरोधसे प्रभु पढ़ानेके लिए बैठे। उनकी आँखोंसे प्रेमाश्रुधारा बह रही है, गद्गद वाणीसे पाठ बोल रहे हैं।

छात्रोंने 'हरि-हरि' बोलकर पोथी खोली। मधुर हरिध्वनि सुनते ही प्रभु आनन्दसे बाह्यज्ञान-शून्य हो गये। सबके प्रति शुभ दृष्टिपात करके आविष्ट भावसे वे सूत्रवृत्ति और टीकामें केवल हरिनामकी व्याख्या करने लगे। छात्रवृन्दको संबोधन करके प्रभु गद्गद स्वरमें बोले—"सर्वदा केवल कृष्ण-नाम ही सत्य है। सब शास्त्रोंमें कृष्णके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। कर्त्ता-हर्त्ता-धर्त्ता कृष्ण ही वे ईश्वर हैं। अज-भव-आदि सब कृष्णके ही किंकर हैं। कृष्णको छोड़कर जो अन्य चर्चा करते हैं, उनका जीवन व्यर्थ जा रहा है। आगम, वेदान्त आदि जो षड़-दर्शन हैं, उन सब शास्त्रोंमें कृष्ण-चरणमें भक्तिका ही वर्णन है। कृष्णकी मायासे जब अध्यापक मुग्ध हो रहे हैं, जो कृष्णको छोड़कर अन्य पथ ग्रहण करते हैं। करुणासागर कृष्ण ही जगतके जीवन और भक्तवत्सल हैं। वे ही नन्दगोपके नन्दन हैं ऐसे कृष्ण नाममें जिनकी रति-मति नहीं हैं, सब शास्त्रोंके बढ़ने पर भी उनकी दुर्गति होती है। दरिद्र अधम यदि कृष्ण-नामले तो अनेक दोष रहने पर भी उनको कृष्णधामकी प्राप्ति होती है। शास्त्रके इस अभिप्रायमें जिसको सन्देह है, वह दुःखोंको पाता है। कृष्ण भजन छोड़कर जो शास्त्रोंका बखान करते हैं, वे अधर्म लोग शास्त्रके मर्मको नहीं जानते। शास्त्रके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मर्मको जाने बिना जो अध्यापन करते हैं; वे गधेकी तरह शास्त्रका केवल भार ढोते हैं। जिनने पूतनाको मुक्ति दी, अघासुरका मोचन किया, जिनके नामसे जगत पवित्र होता है, किस मुँहसे लोग उनका कीर्तन छोड़ देते हैं? जिन कृष्णके महोत्सवमें ब्रह्मादि विह्वल रहते हैं, दुःखी जीव उनके चरित्रका गान करके तर जाते हैं। अजामिलका भी भगवन्नामसे उद्धार हो गया। इसलिए भाइयो! मेरी बात मानकर श्रीकृष्ण चरणोंका भजन करो। जिनका लक्ष्मी सेवन करती हैं, शङ्कर सेवन करते हैं; जिनसे जाह्नवी प्रकट हुई हैं, ऐसे पादपद्मोंके दास बनकर उनका सेवन करो। मेरी इस व्याख्याका खण्डन करनेकी नवद्वीपमें किसीमें शक्ति है तो वे सामने आयं।"

प्रभुने अपने मन्दिरमें बैठकर छात्र-मण्डलीके बीच इस प्रकार कृष्ण नाम माहात्म्यकी व्याख्या की। छात्रगणने चुपचाप एकाग्र चित्तसे प्रभुके श्रीमुखसे निकली मधुर-वाणी श्रवण करके परमानन्द प्राप्त किया। प्रभु जो व्याख्या करते थे वही छात्रोंके मनमें मानो शब्दमय ब्रह्म जान पड़ता था। वे मन्त्रमुग्धके समान प्रभुके श्रीवदनकी ओर देख रहे हैं, और उनकी वचन सुधा पानकर रहे हैं। प्रभु प्रेमाविष्ट होकर कृष्णकथा कह रहे थे। उनको बाह्यज्ञान नहीं था। कुछ देरके बाद जब उनको बाह्यज्ञान हुआ, तब कुछ लज्जित-सा होकर उन्होंने पूछा, "मैंने आज कैसी सूत्र-व्याख्याकी है?" सभी छात्रोंने उत्तर दिया, "पण्डितजी! हमारी समझमें तो आपकी व्याख्या कुछ भी नहीं आयी। जो कुछ आज आपने व्याख्या की, वह केवल कृष्णनाम-माहात्म्य था। हम बालकगण उसे क्या समझते?" प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"आज पोथी बाँधो। चलो, सब लोग गङ्गास्नानके लिए चलें।

प्रभुकी बात सुनकर छात्रगण पोथी बाँधकर गङ्गास्नानके लिए चले। नदियाके जनाकीर्ण प्रशस्त राजपथसे अगणित छात्र और वयस्यगणके साथ राजपुत्रके समान प्रभु गङ्गास्नानके लिए जा रहे हैं। आजानुलम्बित सुबलित बाहुद्वय डुलाते हुए गजेन्द्रके समान मस्त चाल चलते हुए मधुर कृष्णकथाके रङ्गमें निमाई पण्डित नदियाके मार्गपर चले जा रहे हैं। उनकी श्रीअङ्गकी ज्योतिसे नदियाका पथ आलोकित हो रहा है। सहस्रों आदमी उनका दर्शन करके भूतलपर लम्बे होकर साष्टाङ्ग दण्डवत् करते हैं। प्रभु उनके प्रति शुभ-दृष्टिपात करते हैं। गङ्गाके तीर जाकर प्रभुने गङ्गाको स्तुति करके गङ्गाजल सिरपर स्पर्श करके एक बारगी जलमें कूद पड़े। प्रभुके पदरजके स्पर्शसे गङ्गाजी आनन्दोत्फुल्ल हो उठीं। तरङ्गोंके बहाने वे आनन्दसे नृत्य करने लगीं।

गङ्गाके घाटपर जितने आदमी स्नानकर रहे थे, सबकी दृष्टि प्रभुके मुखचन्द्रपर पड़ी। वे सब एक स्वरमें बोल उठे—"धन्य हैं वे माता-पिता, जिनके ये नन्दन हैं।"

माताके पास

प्रभु गङ्गास्नान करके घर लौटे। छात्रगण प्रभुको घर पहुँचा कर अपने घर गये। प्रभुके पुराने नौकर ईशानने उनके श्रीचरण धो डाले। उन्होंने वस्त्र बदल कर तुलसीको जल दिया। उसके बाद विष्णुमन्दिरमें जाकर विधिपूर्वक विष्णु पूजा की। शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रिया देवी दोनोंने मिलकर यथा समय ठाकुरजीका भोग तैयार किया। ठाकुरजीको भोग लगा। शचीमाताने तुलसी मञ्जरीसे युक्त प्रसाद लाकर प्रभुको खानेके लिए दिया।

प्रभु भोजन करने बैठे। शचीमाता पुत्रके सामने बैठीं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी घरके भीतर बैठकर पतिदेवताकी भोजन-लीला देखने लगीं।

शचीमाताने पुत्रसे प्रेमपूर्वक पूछा—"बेटा! आज क्या पढ़ा पढ़ाया, किसके साथ शास्त्रार्थका झगड़ा किया?"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जननीकी बात सुनकर प्रभु मन्द मन्द मुस्काये । कृष्ण-कथाके सिवा और कोई बात प्रभुके मुँहपर नहीं आती । यह बात पहले ही कही जा चुकी है । वे भोजन करते करते माताको लक्ष्य करके कृष्ण नाम माहात्म्य कीर्तन करने लगे । कपिल देवके भावमें वे माताको कृष्णभक्ति मूलक उपदेश देने लगे । प्रभुने उत्तर दिया—"माँ । आज कृष्णनाम पढ़ा । श्रीकृष्णके चरण ही सत्य और गुणोंके धाम हैं । श्रीकृष्णका नाम-गुण भ्रमण और कीर्तन ही सत्य है । जो श्रीकृष्णके सेवक हैं, वे ही सत्य हैं । जो कृष्णभक्तिका वर्णन करते हैं वे ही शास्त्र सत्य हैं*। उनके अतिरिक्त और कुछ नहीं सुनना चाहिये । श्रीकृष्ण नाम लेनेसे चाण्डाल चाण्डाल नहीं रहता । श्रीकृष्णनामको छोड़कर विप्र भी अन्य असत्य पथ ग्रहण करना है तो वह विप्र नहीं है ।

इतनी बात कहकर प्रभु कपिलदेवके भावमें आविष्ट हो गये । पुनः जननीकी ओर देखकर अनुरागमें भरकर कहने लगे—"माँ! श्रीकृष्णभक्तिका प्रभाव सुनो । कृष्णके सेवकका कभी नाश नहीं होता । उससे कालचक्र भी डरता है । गर्भवासमें, जीवन और मरणमें जो दुःख है,उसका कोई प्रभाव श्रीकृष्ण-सेवक पर कुछ नहीं होता । श्रीकृष्ण जगतके पिता हैं । जो पिताको नहीं भजता उस पितृ-द्रोही पातकी-को जन्म-जन्ममें दुःख भोगना पड़ता है । कृष्णका भजन नहीं करनेसे बार-बार मरकर गर्भवासमें आना पड़ता है ।

माता जो कटु, अम्ल, लवणादि, खाती हैं, वह गर्भमें स्थित बच्चेके अंगमें लगनेसे उसको बड़ा कष्ट होता है । कृमि उसके अंगको काटते हैं, जिनको वह निवारण नहीं कर सकता, हिल-डुल भी नहीं सकता । जब जीव सात महीनेका हो जाता है, तब उसको ज्ञान होने लगता है, तब वह पश्चात्ताप करता है और भगवानका स्तवन करता है—"हे भगवान् ! मिथ्या धन-पुत्रमें फँसकर मैंने अपना जन्म वृथा खो दिया, आपके चरणोंका भजन नहीं किया, अब आप ही मुझ इस दुःखसे पार लगाइये, मेरी रक्षा कीजिये, मैं आपकी शरण हूँ, अब मैं आपको कभी नहीं भूलूँगा । हे माता ! जीव गर्भवासके समय भगवानका स्मरण करनेके कारण वहाँके दुःखोंका अनुभव नहीं करता ; किन्तु बाहर आकर फिर ज्ञान भूल जाता है, मायामें पड़कर फिर दुष्टोंका संग करता है और दुःख भोगने लगता है । इसलिए हे माता ! कृष्णका भजन और स्मरण करना चाहिये, साधु-संग करना चाहिये, मुखसे हरिनाम उच्चारण करना चाहिये ।"*

इस प्रकार त्रिलोकीनाथ हमारे प्रभुने कपिलदेवके भावमें विभाहित होकर माताको शिक्षा और उपदेश प्रदान किया । शचीमाता पुत्ररूपी श्रीभगवान्‌का उपदेश श्रवण करके आनन्दसागरमें निमग्न हो गयीं ।

प्रभुके श्रीमुखसे कृष्णकथा बन्द नहीं हो रही है । इस प्रकार वे क्या भोजनमें, क्या शयनमें, क्या जागरणमें कृष्णकथा और भक्तितत्त्वके सिवा अन्य कोई बात नहीं करते । दिन-रात वह कृष्णकथा-रङ्गमें विभोर रहते हैं । सभी नदियावासी प्रभुकी इस प्रकारकी अवस्था देखकर मन-ही-मन तर्क-वितर्क करते हैं कि साधुसंग अथवा पूर्व संस्कारोंसे इनमें श्रीकृष्णका प्रकाश हुआ है ।

---

*यस्मिन् शास्त्रे पुराणे वा हरिभक्तिर्न दृश्यते ।
श्रोतव्यं नैव तच्छास्त्रं यदि ब्रह्मा स्वयं वदेत् ।।
—जैयिनि भारत ।

*न यत्र वैकुण्ठकथासुधापगा
न साधवो भागवतास्तदाश्रयाः ।
न यत्र यज्ञेशमखा महोत्सवाः
सुरेशलोकोऽपि न वै स सेव्यताम् ।।
—श्रीमद्भागवत ५. १९. २४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार सब लोग सोचते हैं, और प्रभुके अपरूप रूपकी बात उनकी स्मृतिपथमें आती है। इतना रूपवान् तो मनुष्य नहीं होता। प्रभुकी इस समय नवयौवनावस्था है। उनकी अपरूप रूपराशि मानो उमड़ी पड़ती है। प्रभुकी रूपसुधा पान करके नदियावासीकी चित्तवृत्ति सुधामय और सुखमय हुई है। उनके सारे दुःख दूर हो गये। पाखण्डियोंके मनमें विषमत्रास उपस्थित हुआ है। प्रभुके इस आत्मप्रकाशसे नदियाके सारे विघ्न दूर हो गये हैं। नदियावासीके सब दुःख मिट गये हैं, कृष्ण बहिर्मुख पाखण्डीगण जीते ही मर गये हैं।

—❀—

छब्बीसवाँ अध्याय

नदिया प्रभुका आत्मप्रकाश। (युगधर्मसंकीर्तन-आरम्भ)

एइ हैते परिपूर्ण विद्यार विलास। सङ्कीर्तन आरम्भेर हइल प्रकाश॥

चै० भा० म० १. ३९५

विद्यार्थियोंका अध्यापन

प्रभुकी विद्या-विलास-लीला इसी समयसे परिपूर्ण-हो गयी। उन्होंने श्रीरामानन्द रायसे प्रश्न किया था कि "बतलाइये सब विद्याओंमें कौन विद्या सार है?" रामानन्दरायने उत्तर दिया—, "कृष्णभक्तिके सिवा और कोई विद्या नहीं है।"

प्रभुने स्वयं इस सत्य वाक्यकी सफलता दिखलायी गयाधामसे नदिया लौटकर। प्रभुकी विद्या-विलास-ऐश्वर्यलीला इतने दिनोंमें पूर्ण हुई। वे विद्यारसमें उन्मत्त थे अब कृष्णरसमें उन्मत्त हो गये। विद्याभ्यासका यथार्थफल जीवको दिखलानेके उद्देश्यसे ही नदियामें उनके इस अद्भुत प्रेमभक्ति-विकारलीला-रङ्गका प्रकाश हुआ। दिग्विजयी पण्डित प्रभुके पास विद्याभ्यासके यथार्थ फलको प्राप्तकर कृतार्थ हुए थे। प्रभुने उनको उपदेश देकर कहा था—

सेइ से विद्यार फल जानिह निश्चय।
कृष्ण पादपद्मे यदि चित्तवृत्ति लय॥

—चै० भा० आ० ९. १७८

नदियाके निमाई पण्डितका विद्यागौरव जगत्प्रसिद्ध है। उनकी पाण्डित्य-प्रतिभासे सारे भारतकी पण्डित-मण्डली स्तम्भित हो गयी थी। सर्वजगत-पूज्य विद्याभिमानी अध्यापक-शिरोमणि निमाई पण्डित आज अपने विद्यालयमें बैठकर छात्रवृन्दको पढ़ा रहे हैं—

शिष्य—'सिद्धवर्ण समाम्नाय' (कलाप व्याकरणका प्रथम सूत्र)—वर्णमालाके अक्षरोंका रूप और क्रम सिद्ध है—अति प्रसिद्ध है।

प्रभु—सब वर्ण 'नारायण' के द्योतक हैं—यह सिद्ध है—अति प्रसिद्ध है।

शिष्य—यह सिद्ध कैसे हुआ?

प्रभु—श्रीकृष्णके दृष्टिपातके कारण।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शिष्य—पण्डितजी ! ठीकसे व्याख्या कीजिये ।

प्रभु—सर्वदा कृष्ण का स्मरण करो, तब उनकी कृपासे इसकी यथार्थता स्वयं प्रकट हो जायगी । श्रीकृष्ण-भजन ही सम्यक् आम्नाय-समाम्नाय' हैं; आदि, मध्य और अन्त सब श्रीकृष्ण ही हैं ।

प्रभुके श्रीमुखकी व्याख्या सुनकर छात्रगण मन-ही-मन सोचते हैं कि जान पड़ता है अध्यापक महाशय-का वायुरोग पुनः प्रबल हो गया है । परन्तु प्रभुको कोई कुछ कहनेका साहस नहीं करता । एक विज्ञ छात्रने साहस करके प्रभुसे पूछा—"पण्डित महाशय ! आपके पास हम अध्ययन करने आये हैं । आप यह क्या व्याख्या कर रहे हैं, हम तो कुछ भी नहीं समझ पा रहे हैं ।" प्रभुने मुस्कराकर उत्तर दिया—"यदि अभी तुम्हारी समझमें नहीं आ रहा है, तो सायंकाल आना, तब और अच्छी प्रकार समझाकर बताऊँगा । मैं भी एकान्त में जाकर इसका अच्छी प्रकार अनु-शीलन कर लूँ ।"

प्रभुकी बात सुनकर छात्रगणने हँसते-हँसते पोथी बाँधली । सबने एक साथ गङ्गादास पण्डितके पास जाकर शिकायत की "हम लोगोंका पढ़ना बन्द होनेका ढंग हो गया है, निमाई पण्डित अच्छी तरह नहीं पढ़ाते । प्रत्येक बातकी व्याख्यामें कृष्ण ही कृष्णकी बात कहते हैं ।"

गङ्गादास पण्डित प्राचीन अध्यापक-शिरोमणि थे । छात्रोंके मुखसे निमाई पण्डितको-कृष्ण-भक्तिकी बात सुनकर हँसकर उत्तर दिया—"तुम लोग अभी घर जाओ, सबेरे आना । आज सायंकाल मैं निमाईको समझाऊँगा कि ठीकसे पढ़ाया करे ।"

प्रभु ने भी छात्रवृन्दसे कहा था—

"विकाले सकल बुझाइब भाल मते ।"

चै०भा०म०१. २५१

गङ्गादास पण्डित भी बोले—

"आजि आमि शिखाइब ताँहारे वैकाले ।

चै०भा० म० १.२६१

यह 'वैकाले' एक रहस्यपूर्ण बात है । इच्छामय प्रभुकी इच्छाशक्तिके प्रभावसे, गङ्गादास पण्डितके-मुखसे भी यही बात प्रकट हुई । आज तीसरे पहर प्रभु क्या करेंगे ? नदियाके अवतार क्या अद्भुत लीलारङ्ग प्रकट करेंगे—यह वही जाने, गङ्गादास पण्डित इसे नहीं जानते । छात्रगण अपराह्न कालमें प्रभुके घर जाकर उपस्थित हुए । निमाई पण्डितको पकड़कर गङ्गादास पण्डितके विद्यालयमें ले गये । उनका पाठ बन्द होगया है, इस कारण उनके मनमें बड़ा दुख है । वे बड़े शौकसे दूरदेशसे निमाई पण्डितके पास पढ़ने आये हैं । उनके उस शौकमें बाधा पड़ गयी । निमाई पण्डित वायुरोग ग्रस्त हो गये हैं, भली-भाँति पढ़ाते नहीं । आज प्राचीन अध्यापक गङ्गादास पण्डित इसकी सुव्यवस्था करेंगे । इसी आनन्दसे वे निमाई पण्डितको वे सङ्ग लेकर गङ्गादास पण्डितके पास उपस्थित हुए ।

प्रभुने अपने विद्यागुरुको प्रणाम करके उनकी चरण-धूलिग्रहण की । सर्वधर्म मर्यादाके रक्षक हमारे प्रभु लोकशिक्षाके लिए स्वयं आचरण करके सब प्रकारके नियम पालन करनेकी शिक्षा दे गये हैं । गङ्गादास पण्डितने प्रभुको 'विद्वान् बनो' कहकर आशीर्वाद दिया ।

सिर झुकाये प्रभु शिक्षागुरुके चरणतलमें बैठ गये । छात्रगण चारों ओरसे घेरकर बैठे । तब गङ्गादास पण्डितने प्रभुको सम्बोधन करके कहा—"बेटा विश्वम्भर ! ब्राह्मणका अध्ययन अल्प भाग्य नहीं है । तुम्हारे नाना हैं नीलाम्बर चक्रवर्ती, और पिता हैं जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर, दोनों कुलमें कोई भी मूर्ख नहीं हुआ । तुम भी व्याख्या करनेमें और टीकामें परम योग्य हो । अध्ययन छोड़नेसे ही भक्ति नहीं होती । क्या तुम्हारे पिता और नाना भक्त नहीं हैं । अतः भली प्रकारसे तुमको पढ़ाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चाहिये। अध्ययनसे ही वैष्णव ब्राह्मण होता है। बिना अध्ययनके भले-बुरेका कैसे पता लगेगा। यह जानकर भगवान्‌का नाम लेकर ठीकसे शास्त्र पढाओ, यदि अतिरिक्त अर्थ करोगे तो तुमको मेरी सौगन्ध है।"

गङ्गादास पण्डितने जो प्रभुको उपदेश दिया, उसमें दो विशेष बातें थीं। पहली बात यह है कि क्या अध्ययन-अध्यापन छोड़नेसे भक्ति प्राप्त होती है? दूसरी बात यह है कि अध्ययन करने पर मनुष्य अच्छा ब्राह्मण वैष्णव गिना जा सकता है। पहली बात दूसरीका पोषक है। विद्या प्राप्तिका मुख्य उद्देश्य है शास्त्र-ज्ञान अर्जन करना, यह पण्डित लोग विवेचना करते हैं। परन्तु प्रभुका मत यह नहीं है। उनके मतसे विद्या प्राप्तिका उद्देश्य कृष्ण-भक्ति है। ज्ञानका फल भक्ति है, यह बात पहले ही कह चुका हूँ। गङ्गादास पण्डित प्रभुके विद्यागुरु हैं। इस विषयको लेकर प्रभुने उनके साथ तर्क-वितर्क नहीं किया। मनका भाव मनहीमें रक्खा परन्तु यह बात सुनकर निमाई पण्डितके मनमें कुछ रोष उत्पन्न हुआ। वे रोष और दम्भ मिश्रित स्वरमें शिक्षागुरुको संबोधन करके बोले—"आपके चरणोंके प्रसादसे नवद्वीपमें कोई भी वाद-विवादमें मेरा सामना नहीं कर सकता। सूत्रकी जो व्याख्या मैं कर रहा हूँ, इसका खण्डन स्थापित करने वाला नवद्वीपमें कौन है? मैं तो नगरमें बैठकर यही पढ़ाऊँगा। इसमें दोष निकालनेकी शक्ति किसमें है, मैं देखता हूँ।"

प्रभुकी अन्तिम बातका कुछ गूढ़ मर्म है। प्रभुने कहा—"नगरमें बैठकर मैं सब लोगोंको भक्तिकी शिक्षा दूँगा। देखता हूँ कौन मुझको क्या कहता है?" प्रभुकी यह प्रतिज्ञा जीव-जगतके मङ्गल विधानके लिए ही थी। वे कलियुगके अवतार थे। युगधर्म हरिनामसंकीर्तनका उनको प्रचार करना करना था। इच्छामय श्रीगौराङ्ग भगवान्‌ने अपने दीक्षागुरु गङ्गादास पण्डितके सामने सबसे पहले कौशलपूर्वक अपने अवतार ग्रहणके अन्यतम उद्देश्यको प्रकट किया। प्रभुकी इस प्रतिज्ञाको कोई कुछ भी समझ न सका। पश्चात् उन्होंने कार्यमें इसे परिणत किया।

नदिया-भ्रमण, रत्नगर्भ आचार्यके द्वार पर

गङ्गादास पण्डित प्रभुके अन्तःकरणकी बात न समझ सके। वे निमाई पण्डितका उत्तर सुनकर आनन्दित हुए। छात्रगण भी प्रसन्न हुए। प्रभु अपने विद्यागुरुसे गर्वपूर्वक विदा लेकर छात्रवृन्दके साथ नदिया भ्रमके लिए निकले। कुछ देर बाद एक नदियावासीके द्वारपर जाकर योगासनमें बैठ गये। वहाँ बहुतसे लोग इकट्ठे होगये। उनमें भट्टाचार्य और पण्डितगण भी थे। प्रभु योगपट्टके ढंगसे वस्त्र बाँधकर छात्रोंके साथ बैठे हैं। सूत्रका खण्डन-मण्डन-स्थापन कर रहे हैं, और कह रहे हैं—"जिनको सन्धिका भी ज्ञान नहीं, कलियुगमें वे ही भट्टाचार्य बन रहे हैं, जिनको शब्द-ज्ञान नहीं वे तर्क करते हैं। मैं जिस वस्तुका खण्डन करता हूँ, उसको कोई स्थापन करके दिखावे तो सही।"

सब लोगोंके सामने सबको सुना-सुनाकर प्रभुने अत्यन्त गर्व पूर्वक ये सब बातें कहीं। नदियाके अन्यान्य ब्राह्मण पण्डितगण भी उसी मार्गसे गङ्गाके तीरपर जा रहे हैं। उत्तर देनेकी किसीमें न शक्ति थी, और न साहस था।

प्रभु उस दिन पहर भर रात तक वहाँ बैठकर सूत्र व्याख्या करते रहे, और नदियाके पण्डितगणको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लक्ष्य करके व्यंग्य बोलते रहे । आज मानो प्रभुके श्रीमुखसे कुछ विरक्तिका भाव दीख पड़ा। आज उनके मुँहमें कृष्णकथा न थी, आनन्द न था, उनका मन कुछ उदास उदास-सा था। पहर भर रात जानेपर प्रभु वहाँसे विषण्ण-मन होकर उठे। पासमें रत्नगर्भ आचार्य पण्डितका घर था। प्रभु उनके द्वार पर जाकर फिर बैठ गये। ये रत्नगर्भ आचार्य प्रभुके पिताके मित्र थे। मिश्र पुरन्दर ठाकुरके साथ विशेष प्रीति थी। दोनोंका एकही स्थानमें जन्म था। रत्नगर्भ आचार्य पण्डितके तीन पुत्र थे। उनके नाम थे कृष्णानन्द, जीव और यदुनाथ। रत्नगर्भ आचार्य पण्डित परम भागवत थे। भागवत शास्त्रमें उनका विशेष अधिकार था। उनके तीनों पुत्र भी परम कृष्णभक्त थे। प्रभु उनके घर जाकर जैसे ही द्वारपर बैठे, वैसे ही उस विप्रवरने उनको देखकर भागवतका एक भक्ति-उद्दीपक श्लोक आवृत्ति करके सुनाया। वह श्लोक था—

श्यामं हिरण्यपरिधिं वनमाला बर्ह-
धातु-प्रवाल-नटवेशमनुव्रतांसे।
विन्यस्तहस्तमितरेण धुनानमब्जं
कर्णोत्पलालक कपोल मुखाब्जहासम् ॥
श्रीम० भा० १०.२३.२२

यज्ञपत्नियोंने देखा कि, वह श्याम कान्ति हैं, कनकके समान सुन्दर पीतवसन धारण किये हैं, वनमाला, मयूरपंख, गैरिकादि धातु और प्रवाल समूहसे नटवर वेष सुशोभित है, वे एक हाथ अनुगत सहचरके कन्धेपर रखकर दूसरे हाथसे एक लीला-पद्म घुमा रहे हैं; उनके दोनों कानोंपर दो कमल हैं; दोनों कपोलों पर कुञ्चित कुन्तल और मुखकमलमें सुमधुर हास्य शोभायमान है।

प्रभुके कानोंमें यह श्लोक पड़ते ही उनके श्रीअङ्गमें अष्ट सात्विक भाव उदय हो गये । वे मूर्छित होकर भूतल पर गिर पड़े। छात्रगण प्रभुकी यह अवस्था देखकर विस्मित हो उठे। इसका कुछ भी कारण उनकी समझमें न आया। वे सोचने लगे कि यह क्या हुआ? सभी प्रभुको घेरकर बैठ गये और उनकी सेवा शुश्रूषामें लग गये। कुछ देरके बाद प्रभुकी मूर्छा दूर हुई। बाह्यज्ञान होने पर वे केवल 'बोलो बोलो' शब्द उच्चारण करने लगे, और प्रेमावेशमें भूतल पर लोटने लगे। रत्नगर्भ आचार्य पण्डितकी ओर देखकर प्रेमोन्मत्त प्रभु जलद-गम्भीर स्वरमें बोलने लगे, 'बोलो बोलो'। अर्थात् जो श्लोक पाठ किया था, उसीकी पुनरावृत्ति करो। प्रभु 'बोलो-बोलो' कहते हैं; और बालकके समान अजस्र आँसू बहाकर रो रहे हैं। उनके अश्रुजलसे भूतल सिञ्चित हो रहा है। प्रभुका कृष्णविरह समुद्र उमड़ रहा है। प्रभु जितना ही 'बोलो-बोलो' कहते हैं, रत्नगर्भ आचार्य पण्डित उतने ही उत्साहके साथ बारंबार 'श्यामं हिरण्यपरिधिं' श्लोककी आवृत्ति करते हैं। प्रभुने उनके मुखसे इस उत्तम भागवतीय श्लोकको मधुर पाठविधि सुनकर आनन्दसे गद्-गद् होकर बारंबार प्रेमालिङ्गन प्रदान कर उनको कृतार्थ किया। प्रभुका प्रेमालिङ्गन प्राप्त करके विप्रवरके सारे अङ्ग प्रेमपुलकित हो गये। वे प्रेममें परिपूर्ण होकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। श्रीगौर भगवान्के अज-भव-वन्दित रक्त कमलचरण-को अपने वक्षस्थलमें धारण करके वृद्ध ब्राह्मण अजस्र आँसू बहाकर रोने लगे। वे प्रेममय प्रभुके प्रेम फाँसमें पड़ गये।

प्रभु प्रेमोन्मत्त भावमें आविष्ट होकर केवल 'बोलो-बोलो' कह रहे हैं। वृद्ध ब्राह्मण प्रेमानन्दमें प्रभुके चरणोंमें गिरे पड़े हैं। वहाँ बहुत जनसमूह एकत्रित हो गया है, बड़ी भीड़ लगी है। सब लोग आश्चर्यचकित होकर प्रभुकी अद्भुत प्रेमोन्माद दशाको देखकर उनको भक्तिपूर्वक दण्डवत् कर रहे हैं। प्रभुके साथ गदाधर पण्डित भी हैं। उन्होंने उनका ऐसा प्रेमविह्वल भाव देखकर मनमें अत्यन्त व्यथित होकर हाथ जोड़कर रत्नगर्भ आचार्यको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इशारा किया कि आप अब श्लोक पाठ न करें। तब सबने मिलकर प्रभुको पकड़ लिया। गदाधर पण्डित प्रभुको गोदमें लेकर बैठ गये।

कुछ देरके बाद प्रभको बाह्यज्ञान हुआ। उन्होंने लज्जापूर्वक पूछा—"मैंने क्या कोई धृष्टता की है?" छात्रोंने उत्तर दिया—"आप कृतार्थ हो गये। आपने जो किया है, उसको कहने और समझनेकी शक्ति हमारे भीतर नहीं है।" गदाधर पण्डितने इशारेसे छात्रोंको स्तुति करनेसे रोका। प्रभु बाह्यज्ञान प्राप्तकर आत्मसंवरण करके सबको साथ लेकर वहाँसे गङ्गादर्शनके लिए चले।

परम सुकृतिमान् रत्नगर्भ आचार्यने उस दिनसे फिर प्रभुका संग न छोड़ा। प्रभुने उनको आत्मसात् करके निज जन बना लिया। यह वृद्ध ब्राह्मण प्रभुके पिताके समवयस्क थे, परम भागवत्, इष्ट-निष्ठ और सदाचारी थे। नदियामें इनका अच्छा सम्मान था। उस समय प्रभुकी अवस्था केवल बाईस वर्ष थी। सबके सामने उस वृद्ध ब्राह्मणने प्रभुके चरणोंमें गिरकर व्याकुलतापूर्वक रोते हुए उनकी कृपा प्रार्थना की। यह देखकर उपस्थित सब लोग एक-एक करके प्रभुको दण्डवत् प्रणाम करने लगे।

इस लीला-रङ्गके द्वारा प्रभुने कुछ अपना ऐश्वर्य प्रकट किया। प्रभुके आत्मप्रकाशका यह शुभ समय आ गया था। गयाधामसे आनेके बाद प्रेमप्रकाश लीला-रङ्गमें उन्मत्त रहते हैं। नदियामें उनकी प्रेमप्रकाश लीलाके रङ्गमें ही प्रभुका आत्मप्राकट्य अनुभूत होने लगा।

प्रभु गङ्गाके तटपर आकर पतित पावनी गङ्गाजीको नमस्कार करके सिर पर जलमार्जन करके छात्रों और वयस्कगणकी मण्डलीके साथ गङ्गाके किनारे बैठे। उस समय उनकी ऐसी शोभा हो रही थी मानो यमुनाके तीरपर गोपगणके साथ बैठे नन्दनन्दन आनन्द-रस लेरहे हैं।

गृह आगमन

उस दिन डेढ़ पहर रात्रि जानेपर प्रभु अपने घर आये। शचीमाता और प्रियाजी रसोई बनाकर उत्कण्ठित चित्तसे प्रभुके आगमनकी प्रतीक्षा-कर रही थीं। सासु-बहूमें बैठकर बातें हो रही थीं। दोनों चिन्ताग्रस्त थीं। किसीके मनमें सुख-शान्ति न थी। परन्तु कोई किसीको मनके दुःखको खुलकर नहीं कह रही है। शचीमाता सोच रही हैं कि पुत्रके संसार-विरक्त होनेकी बात बोलनेसे बालिका पुत्रबधूके मनमें व्यथा होगी। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी सासुके पास अपने प्राणबल्लभकी ये सारी बातें कैसे बोलतीं? बुद्धिमती प्रियाजी अपने मनकी बात मनके भीतर ही रखती हैं। क्योंकि वे जानती हैं कि इससे सासुके मनमें कष्ट होगा। इस प्रकार दोनों एक दूसरे-से अपने मनकी बात छिपाती हैं। सासु-बहूमें बाह्यरूपसे सांसारिक बातें होती रही।

उसी समय कृष्णप्रेमोन्मत्त प्रभु घरपर आये। शचीमाता उठकर पुत्रका हाथ पकड़कर प्रेमपूर्वक घरमें ले गयीं। श्रीमती विष्णुप्रिया देवी वहाँसे उठकर रसोईघरमें गयीं। पुराने सेवक ईशानने प्रभुके श्रीचरणोंको धो दिया। कुछ देरके बाद प्रभु भोजन करने बैठे। माताके साथ दो-चार सांसारिक बातें करके उनको तुष्ट किया। भोजनोपरान्त प्रभु शयन-मन्दिरमें जाकर सो गये। श्रीमती विष्णुप्रिया देवीने प्रभुका प्रसाद पाकर शयनगृहमें जाकर देखा कि प्रभु सो गये हैं। वे धीरे-धीरे प्रभुके श्रीचरणतलमें बैठकर उनकी पदसेवा करने लगीं।

प्रभुकी वह कपट निद्रा थी। वे जानते हैं कि उनकी प्रियतमा किस प्रकार मनस्तापसे दिन यापन करती है। वे अन्तर्यामी भगवान् हैं। उनके लिए अविदित कुछ नहीं है। वे कृष्णकथा-रसमें मत्त रहते हैं। सांसारिक बातों पर ध्यान नहीं देते। नवीना प्रियाजी प्रभुके मनोभावको समझ नहीं पातीं। प्रियाजीके हृदयसे कृष्ण-विरह-व्यथा समझनेकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शक्ति प्रभुने हरण करली है। प्रभुकी विरहोन्माद दशा देखकर प्रियाजीके मनमें बड़ा कष्ट होता है। भक्तवत्सल प्रभु भक्तके मनको व्यथा देना नहीं चाहते। इसी कारण प्रभु कपट निन्द्राके बहाने शय्या पर शयन किये हैं, सरला प्रियाजी प्रभुकी निद्रा टूट जानेके भयसे बहुत ही सशङ्कित होकर धीरे-धीरे पदसेवा कर रही हैं। प्रभु निद्राके बीच एक-एक बार 'हा कृष्ण ! कृष्ण कहाँ ?' कहकर उचक उठते हैं और करवट बदलते हैं, श्रीमता विष्णुप्रिया देवीके मनमें हुआ कि प्रभुकी निद्रामें बाधा पड़ रही है। वह धीरे-धीरे शय्यासे उतरकर भूतलपर आँचल बिछा कर सो गयीं। उनकी चिन्ताका पारावार नहीं है। वे भूतलपर सारी रात लेटे जागती रहीं।

छात्रगण और प्रभु

प्रभात होते ही प्रभुके छात्रगण पोथी लेकर प्रभुके घर आ उपस्थित हो गये। बाहरी दालानमें चण्डी-मण्डपमें वे लोग पोथी खोलकर पाठाभ्यास करने लगे। प्रभु गङ्गा स्नान करके आये और छात्रगणको पाठ देनेके लिए बैठ गये। प्रभुके श्रीमुखमें कृष्ण-कथाके सिवा और कोई बात नहीं आ रही है। वे प्रत्येक शब्दकी व्याख्याके साथ साथ कृष्ण-भक्ति और कृष्ण-नामकी महिमाकी व्याख्या करने लगे।

छात्रोंने प्रश्न किया—"धातु संज्ञा किसकी होती है।

प्रभुने उत्तर दिया—"जिसका नाम है श्रीकृष्णकी शक्ति।"

कृष्ण-प्रेम रसानन्दी प्रभु छात्रोंको संबोधन करके धातु-सूत्रकी व्याख्या करने लगे—'कनक गन्ध आदिसे विभूषित राजा सदृश सुन्दर देहवाले, जिनको लोग मानते हैं कि उनके संकेत पर यम और लक्ष्मी नाचते हैं, धातु चले जानेपर उनकी क्या अवस्था होती है ? सर्वाङ्गका सौन्दर्य कहाँ चला जाता है ? किसीको जलाकर भस्म कर दिया जाता है किसीको मट्टीके नीचे दबा देते हैं। सबके शरीरोंमें धातु-रूपमें कृष्णशक्ति रहती हैं, उसी धातुरूप कृष्ण-शक्तिसे सब स्नेह करते हैं। भ्रमके वशीभूत होकर अध्यापकगण इसको नहीं समझ पाते। जिसको सम्मान देकर नमस्कार किया जाता है, धातु चले जानेपर उसको स्पर्श करने पर स्नान करना पड़ता है। जिस पिताकी गोदमें पुत्र आनन्द भोगता है, धातुके चले जानेपर वही पुत्र उसके मुखमें अग्नि देता है। कृष्ण-शक्ति धातु संज्ञा ही सबका वल्लभ है। जिसमें शक्ति हो वह आकर इसका खण्डन करके दिखावे। इस प्रकारकी परम पूज्य जो कृष्णशक्ति है, ऐसे कृष्णकी सब लोग दृढ़ भक्ति करो। मुँहसे कृष्ण ही बोलो, कानसे कृष्ण ही सुनो, कृष्णको ही भजो, दिन-रात कृष्ण-चरणका ही ध्यान करो। जिनके चरणोंमें पत्र, पुष्प, तोय मात्र अर्पण करनेसे, वह यमके अधिकारका पात्र नहीं रहता, जिसने अघासुर, बकासुर और पूतनाका उद्धार किया उन्हीं नन्दनन्दनके चरणोंका भजन करो। पुत्रबुद्धिसे स्मरण करने मात्रसे अजामिल कृष्णचरणोंमें बैकुण्ठ चला गया। जिनके चरण-रससे शिव दिगम्बर बने फिरते हैं, जिन चरणोंके सेवनसे लक्ष्मीका आदर है, जिन चरणोंकी महिमा अनन्त गाते रहते हैं, ऐसे कृष्ण-चरणोंकी जब तक देहमें धातु शक्ति है भजन करना चाहिये।"

इस प्रकार कृष्ण प्रेमानन्द भावमें प्रभुने एक पहर तक छात्रोंको कृष्ण-भक्तिकी महिमा समझायी। छात्रगण स्थिर होकर एकचित्तसे प्रभुके श्रीमुखसे निकली सुधासनी कृष्ण-भक्तिकी उपदेश-वाणी सुनकर विस्मित और मुग्ध होगये। किसीके मुखसे कोई आपत्ति नहीं हुई। सभी परमानन्द रसमें मग्न हो गये। ये प्रभुके छात्रगण सामान्य मनुष्य न थे। ये जन्म-जन्मके प्रभुके नित्य दास थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसीसे स्वयं भगवान् शचीनन्दनके कृपापात्र हुए थे। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि नमस्कार। वे ही लोग आगे चल कर प्रभुके अन्तरङ्ग भक्त हुए थे। उनके प्रति प्रभुकी अपार कृपा थी। श्रीगौराङ्ग प्रभुने जिनके ऊपर कृपा करके अपना शिष्य बना लिया था, उनके भाग्यके विषयमें कहना ही क्या है? बहुत भाग्यके बलसे वे प्रभुके छात्र हुए थे।

कृष्णकथा रसमें परम आविष्ट होकर प्रभु छात्रमण्डलीके बीच बैठकर धातु-सूत्र व्याख्या कर रहे थे। उनको बाह्य ज्ञान न था। उन्होंने कुछ देरके बाद कुछ लज्जित भावमें छात्रोंके मुखकी ओर देखकर पूछा—"धातुसूत्रकी कैसी व्याख्या सुनी?" छात्रोंने उत्तर दिया—"अध्यापक महाशय! आपने जो धातु-सूत्रकी व्याख्या की, वही सत्य है। परन्तु इसको समझनेकी शक्ति हमारे भीतर नहीं है। हम जिस उद्देश्यसे आपके पास पाठाभ्यास कर करते हैं, उसके अनुकूल यह अर्थ नहीं है।

प्रभुने यह बात सुनकर हँसकर उत्तर दिया "तुम सब लोग सच-सच बतलाओ, क्या मुझको वायुरोगने पागल कर दिया है? मैं सूत्रवृत्तिकी क्या व्याख्या करता हूँ? छात्रोंने उत्तर दिया—"सूत्रवृत्ति टीका सभीकी व्याख्या केवल 'कृष्ण' ही आप बताते हैं। आपकी व्याख्याको समझनेका पात्र कौन है? भक्तिको श्रवण करके जो आपका बन जाता है, उसके मनमें नर-ज्ञान नहीं रहता।"

प्रभुने प्रेम-विह्वल भावसे फिर पूछा-"तुम लोग मुझको कैसा देखते हो? तब छात्रोंने रत्नगर्भ आचार्यके घरका पूर्व दिवसका सारा वृत्तान्त क्रमशः वर्णन करके प्रभुसेकहा--"आपकी अपूर्व लीला देखकर सभी आपको नारायण कहते हैं, कोई व्यास, शुक्र, नारद, प्रह्लाद कहते हैं।"

इतना कहकर वे फिर बोले—"आपको इस बातका पता नहीं है, इन दिनों आप जो भी व्याख्या करते हैं, सबमें कृष्ण-भक्ति और कृष्ण-नाम ही है। हमारा तो पठन बन्द होगया, डरके मारे कोई बोलता नहीं।"

प्रभु अबतक स्थिर होकर सुन रहे थे। कोई बात नहीं बोलते थे। लीलामय श्रीगौरभगवान्का यही लीलारङ्ग है। प्रभुके हृदयकी यही इच्छा थी कि अपने कृपापात्र परम सुकृतिवान् छात्रगणके मुखसे यह कहलालें कि कृष्णभक्ति सब विद्याओंका सार है। बाहरसे यह प्रकट नहीं करते हैं। विस्मयपूर्वक छात्रोंकी ओर दृष्टिपात करके प्रभु बोले—"तुम लोगोंका पाठ इन दिनोंमें व्यर्थ गया, यह बात तुम लोगोंने मुझसे नहीं कही। यह कैसी बात है?

प्रभुकी कृपाके इशारे भाग्यवान् छात्रोंको दिव्यज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रभुसे निवेदन किया,। "अध्यापक महाशय! आप ठीक व्याख्यान करते हैं, उपयुक्त पाठ देते हैं। सर्वशास्त्रका सारतत्त्व कृष्ण-कथा है, कृष्णनाम है। भक्तिशास्त्र सब शास्त्रोंका सार है। अपने दुर्भाग्यसे हमलोग भक्तिशास्त्रका पाठ लेनेके अधिकारी नहीं हैं। यह हमारा दोष है। आप जो व्याख्या करते हैं, वही मूल वस्तु है; परन्तु हमारे अपने कर्मके दोषसे उसमें चित्तवृत्ति नहीं लगती। आप कृपा करके इस विषयमें उपदेश प्रदान करें।" प्रभु अपने छात्रवृन्दके मुखसे यह बात सुनकर आनन्दमें गद्गद् होकर उनके प्रति कृपादृष्टि करके कहने लगे—"भाई, तुम लोगोंने ठीक कहा है। मैं यह बात और कहीं नहीं कह सकता। कृष्णवर्ण एक बालक मुरली बजाता हुआ मुझको दीखता है, इसीमें मुझे और कुछ कहना-सुनना नहीं सूझता। तुम सबसे मेरी यही विनती है कि मुझसे अब पाठ पढ़ाते नहीं बनता, तुम्हारी जहाँ इच्छा हो वहीं जाकर निर्भय होकर पढ़ो।"

कृष्णप्रेमोन्मादी निमाई पण्डितने अपने छात्रोंके सामने आज दिल खोलकर अपने मनकी बात कह दी। वे अपने मनकी बात छिपाकर न रख सके। नदियाके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छात्रवृन्द श्रीवृन्दावनके गोप बालक हैं। उनके प्राणोंसे भी अधिक प्रिय हैं। अनुरागी भक्त श्रीगौरभगवान्‌के प्राण होते हैं; भक्त ही उनका जीवन होता है, भक्त ही उनका स्वरूप होता है। भगवान्‌ने जब देखा कि उनके भक्तोंने निष्कपट भावसे अपने मनके भावको प्रकट कर दिया, तब उन्होंने भी भक्तोंके सामने अपने मनके भाव प्रकट कर दिये। भक्तके भगवान्‌ने भक्तके सामने अपने मनकी बात कह दी। और किसीके सामने वे ये बातें नहीं कह सकते, इसी कारण प्रभुने कहा—"मेरी ये सब बातें अन्यत्र अकथ्य हैं।"

प्रभुके छात्रवृन्द उनके नित्यदास हैं। उनके साथ प्रभुका नित्य सम्बन्ध है। प्रभुके साथ वे भूतलमें अवतीर्ण हुए हैं। लीलारस-पुष्टि-साधन उनका कार्य है। हमारे प्रभु आनन्द लीलामय विग्रह हैं। भुवनमङ्गल नवद्वीप-लीलाकी पुष्टि साधन करनेमें प्रभुके छात्ररूपी नित्य परिकरवृन्द सतत व्यग्र रहते हैं; श्रीगौरभगवान् अब क्रमशः आत्मप्रकाश कर रहे हैं। इसे उनके नित्य परिकरवृन्द समझ रहे हैं, तथा इच्छामय स्वतन्त्र ईश्वरकी इच्छासे वे उनकी लीला-पुष्टिमें सहायता कर रहे हैं। नदियामें यह छात्रोंके सामने प्रभुका अपने मनोभावको प्रकट करना तथा प्रभुके द्वारा आदिष्ट होकर उनकी विद्याभ्यासमें शिथिलता एवं उनकी ही प्रेरणासे उनके हृदयमें कृष्ण-प्रेमानुरागकी सूचना—यह नदियाके अवतार श्रीगौर भगवान्‌का लीलारङ्ग मात्र है। चतुर चूड़ामणि प्रभुने जब अपने छात्रोंसे कहा कि जहाँ तुम्हारी इच्छा हो वहाँ जाकर निर्भय होकर पढ़ो तब उन्होंने रोते-रोते पोथी बाँधते हुए प्रभुको प्रणाम करके कहा—"हम लोगोंने भी संकल्प कर लिया है कि आपके पास जो पढ़ लिया वह कहीं जहीं पढ़ा जा सकता।"

उन्होंने प्रभुसे निष्कपट भावसे कहा—"आपके पास पाठ बन्द करके हम लोग कहीं न जायँगे। हमारा भी आजसे पाठाभ्यास बन्द हुआ।" प्रभुके संङ्गसे, उनके श्रीमुखसे कृष्णकथा श्रवण करके उनको बिना साधन-भजनके ही सर्वार्थसिद्धि प्राप्त हुई। शुद्ध कृष्ण-भक्ति रससे उनका हृदय आप्लुत हो गया। उनका अन्तर-बाह्य शुद्ध हो गया। उन्होंने पोथी बाँधकर हाथ जोड़कर पुनः प्रभुके श्रीचरणकमलमें निवेदन किया—"आपके श्रीमुखसे जो व्याख्या सुनी, वह हमारे हृदयमें जन्म-जन्ममें बनी रहे।"

प्रभुके श्रीमुखसे उन्होंने जो भुवन-मङ्गल कृष्ण-नाम सुना है, भक्ति माहात्म्यका जो अपूर्व व्याख्यान सुना है, उन सब मूल धर्मतत्त्वोंका उल्लेख करके छात्रोंने उपर्युक्त बात कही। अब उनको व्यर्थ विद्या-विलास-रङ्ग अच्छा न लगा। प्रभु स्वयं विद्याविलास-रङ्गको पूर्णकरके जिस पथके पथिक बने हैं, उनके नित्य परिकर छात्रवृन्द भी उसी पथका अनुसरण करनेके लिए कृत सङ्कल्प हो गये। वे प्रभुके भक्त थे, प्रभु स्वयं आचरण करके धर्मशिक्षा देनेके लिए नदियामें अवतीर्ण हुए थे। वे जो करेंगे उनके अनुगत छात्रवृन्दके लिए वही अनुकरणीय होगा। उन्होंने यही किया।

पोथी बाँधकर छात्रवृन्द आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे। प्रभुने उनमें-से प्रत्येकको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके शक्ति-सञ्चार करके कृतार्थ किया। मनके आवेगसे तथा करुणामय प्रभुके स्नेहकी अधिकता देखकर वे सभी प्रेमानन्दमें रो पड़े। प्रभु भी सबको गोदमें लेकर प्रेमानन्दमें आकुल होकर रो पड़े।

वहाँ प्रेमका तरङ्ग उठा। सब शिष्योंके सिर झुके हैं। आँखोंमें झर-झर अश्रुधारा है, कण्ठ अवरुद्ध है। उनके हृदयमें आज एक अद्‌भुत भावतरङ्ग उठा है, एक अपूर्व परमानन्दका स्रोत उठा है, जिसे वे स्वयं ही समझ नहीं पा रहे हैं। उनके मुँहसे बात नहीं निकल रही है, शरीर निष्पन्द है, सबकी दृष्टि प्रभुके रक्तकमल चरणकी ओर है। प्रभुने आनन्द विह्वल होकर छात्रोंके सिरपर अपना वरहस्त रखकर आशीर्वाद दिया—"यदि मैं किसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भी दिन कृष्णदास बन सका तो तुम सबकी अभिलाषा भी अवश्य पूर्ण होगी। तुम सब कृष्णकी शरण लो, कृष्ण-नाम तुम्हारे मुखमें रहे, कृष्णही तुम सबका ध्यान और प्राण रहे। जो पढ़ लिया वह पर्याप्त है और पढ़नेकी अब आवश्यकता नहीं। कृष्ण-कृपासे सब शास्त्र तुम्हारे हृदयमें स्फुरे! तुम सब मेरे जन्म-जन्मके बन्धु हो।"

प्रभुके श्रीमुखकी सुधामयी मधुरवाणी सुनकर छात्रोंके प्राणमें आज एक अभिनव आनन्दका तरङ्ग उठा। प्रभुने कहा कि जो पढ़ लिया वह पर्याप्त है और पढ़नेकी आवश्यकता नहीं, इससे उन्होंने समझ लिया कि प्रभुका आदेश और उपदेश यही है कि इस नयी उम्रसे ही श्रीकृष्ण भजन कर्त्तव्य है। प्रभुका आशीर्वाद सिरपर रखकर वे साधन पथके पथिक हो गये। वे प्रभूका संग छोड़कर कहीं न गये। एकान्त मनसे उन्होंने प्रभुकी शरण ली।

संकीर्तन महायज्ञका आरम्भ

इस प्रकार नदियामें प्रभुकी विद्याविलास ऐश्वर्यलीला परिपूर्ण हुई। प्रभुके छात्रोंका भी विद्याविलास कम पूर्ण हुआ। इसी समयसे श्रीसंकीर्तनारम्भका प्राकट्य हुआ।

प्रभुने उठकर अश्रुसिक्त करुणापूर्ण कमलनयनसे अपने प्रियतम छात्रोंके ऊपर शुभ दृष्टिपात किया। छात्रगण प्रभुको घेरकर खड़े हो गये। प्रभुके घर बाहरी दालानमें मुक्त स्थानमें सब एकत्रित हुए। मध्यमें प्रेमावतार श्रीगौराङ्ग प्रभु तारवेष्टित पूर्ण शशधरके समान सुशोभित होने लगे। सभी निस्तब्ध भावसे प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर एकटक देख रहे हैं। प्रभु क्या कहते हैं, यह सुननेके लिए सभी गर्दन उठाये हैं। करुणामय प्रभु धीरे-धीरे अपने परम सुन्दर श्रीमुखको उठाकर अपने प्रियतम छात्रगणकी ओर शुभ दृष्टिपात करके प्रेमाश्रुनयन होकर गद्गद् स्वरसे बोले—"अबतक बहुत पढ़ा और सुना, अब कृष्ण कीर्तन ही करो।"

'भाग्यवान् छात्रवृन्दने अतिशय आग्रहके सहित अश्रुपूर्ण नयनोंसे प्रभुसे पूछा—"प्रभु! वह कीर्तन कैसा है?" सङ्कीर्तन-यज्ञेश्वर श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने स्वयं आचरण करके कलिके जीवको युगधर्म-संङ्कीर्तन यज्ञके अनुष्ठानकी शिक्षा दी है। प्रभुने नवद्वीपमें यह प्रथम कीर्तन प्रकाशित किया। प्रभुने हाथसे ताली देकर भुवनमङ्गल कृष्ण-सङ्कीर्तनका प्रथम सुर पकड़ा।

(केदारा राग)

"हरि हरये नमः कृष्णः यादवाय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन।"

प्रभुके श्रीमुखसे यह भुवनमङ्गल मधुर हरिनाम सङ्कीर्तन-ध्वनि उठते ही चतुर्दिक आनन्द-ध्वनि होने लगी। पुरनारियोंने माङ्गलिक हुलूध्वनि की, अन्तःपुरसे शुभशङ्ख बज उठे। छात्रवृन्दने उच्च स्वरसे प्रभुके मधुर कण्ठध्वनिके साथ स्वर मिलाकर भुवनमङ्गल हरिनाम संकीर्तनमें योग दिया। स्वनाम-गायक हमारे प्रभु प्रेमाविष्ट होकर उच्च-स्वरसे निजनाम कीर्तन करने लगे। प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर वे मधुर नृत्य करते-करते भूतलपर गिरकर धूलमें लोटने लगे। करुणामय प्रभु उनकी ओर करुण दृष्टिसे देखते हैं और ऊर्ध्ववाहु होकर हाथसे ताली देकर कहते हैं—

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन।

प्रभु एक-एक बार उठते हैं और प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य करते हैं। पुनः प्रेमावेशमें भूतलपर पछाड़ खाकर गिरनेसे पृथ्वी मानो विदीर्ण हो जाती है।

प्रभुके आवास मन्दिरमें कीर्तनका महा कोलाहल उठा। कोलाहल सुनकर नदियाके आवालवृद्ध-वनिता शचीके आङ्गनकी ओर दौड़ पड़े। सारे वैष्णवोंने आकर कीर्तनमें योगदान किया। प्रभूके श्रीमन्दिरमें आज महामहोत्सव है। प्रेममय प्रभुके प्रेमाविष्ट भावको देखकर सभी आनन्द-विह्वल हो उठे। श्रीवास आदि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वैष्णवगण आनन्दके साथ कहने लगे—"आज जो नदियानगरमें कीर्तन हुआ, ऐसा जगतमें दुर्लभ है। ऐसी भक्ति देखकर नयन सफल होगये। इन विश्वम्भरमें उद्धताकी सीमा थी, उनमें अब नारदादिकी दुष्कर भक्ति देखी। इन उद्धत शिरोमणिमें ऐसी भक्ति यदि हो जाय तो कृष्णकी इच्छासे क्या नहीं हो सकता।

प्रभु बाह्यज्ञान शून्य होकर कीर्तन कर रहे थे। बहुत देरके बाद उनको बाह्यज्ञान हुआ। बाह्यज्ञान प्राप्त करके कृष्णप्रेममें उन्मत्त होकर 'हा कृष्ण! कृष्ण कहाँ?' कहकर आकुल प्राणसे एक एक करके सारे वैष्णवोंका गला पकड़कर क्रन्दन करने लगे। सबने मिलकर प्रभुको शान्त किया। यहींसे नदियामें सर्वप्रथम संकीर्तनका आरम्भ हुआ। यहींसे संङ्कीर्तन यज्ञमें श्रीगौर भगवान्का आत्मप्रकाश प्रारम्भ हुआ। यहींसे भक्तवृन्दके सारे दुःख दूर हो गये।

श्रीमन्महाप्रभुके श्रीमुखकी वाणी है—

"सङ्कीर्तन आरम्भे प्रेमभक्तिर विलास।
अतएव कलियुगे आमार परकाश।

चै०भा०अ.१०२६०

प्रभुके अगणित छात्रवृन्दनेप्रभुका सङ्ग न छोड़ा। इस शुभ संयोगसे उनमें-से बहुतोंने उदासीनका पथावलम्बन किया। बाल-ब्रह्मचारी होकर युगधर्म हरिनाम-सङ्कीर्तन-यज्ञमें कलिग्रस्त जीवकी मङ्गल कामनाके लिए तुच्छ प्राणकी आहुति कर दी। इन सब महात्माओंके द्वारा प्रभुने विशुद्ध वैष्णवधर्मका प्रचार किया था। इन्होंने प्रभुकी कृपासे भक्तिपथका अवलम्बन कर कलिग्रस्त जीवको युगधर्मकी शिक्षा दी थी।

प्रभुका नदियामें जो यह आत्मप्रकाश तथा सङ्कीर्तनलीलाका आरम्भ हुआ, इसीमें श्रीगौरङ्ग-अवतार-तत्त्वका मूलमन्त्र निहित था। यह तत्व क्रमशः प्रकाशित हुआ। कृपालु पाठकवृन्द! कृपा करके संकीर्तन-यज्ञेश्वर श्रीगौराङ्गके रक्तकमल-चरणोंका ध्यान करके युगधर्मका आचरण करें, भगवान्के नामका कीर्तन करें। श्रीगौराङ्ग-प्रभु दीनदयाल हैं। कलिके अधमजीवके प्रति उनकी करुणाकी सीमा नहीं है। पूर्णब्रह्म सनातन स्वयं भगवान् श्रीगौरगोविन्द रूपमें नदियामें अवतीर्ण होकर स्वयं आचरण करके जिस युगधर्मका प्रचार कर गये हैं; कलिग्रस्त जीवके लिए वह सर्वथा पालनीय है। कलियुगमें एकमात्र हरि-संकीर्तनके द्वारा ही सब प्रकारके धर्माचरणका फल प्राप्त होता है। सर्वसिद्धि लाभ होती है। यह शास्त्र-वचन है, बृहन्नारद्वीप पुराणमें लिखा है—

कृते यद्ध्यायते विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात्॥
हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

धर्मसंस्थापक श्रीगौराङ्ग प्रभुनेयुगधर्म प्रवर्त्तनके लिए नदियामें यह सर्वप्रथम श्रीनाम संकीर्तन यज्ञका अनुष्ठान किया। कलिके अधम जीवको हरिनाम महामन्त्र प्रदान करनेका यह प्रथम उद्योग आरम्भ हुआ। संकीर्तनके आरम्भमें ही प्रभुका प्राकट्य और आत्मप्रकाश हुआ है। अन्तरङ्ग भक्तोंने प्रभुका आत्मप्रकाश समझकर इसी समयसे उनकी भगवद्भावमें पूजा करने करने लगे। श्रीअद्वैतप्रभु, ठाकुर हरिदास, श्रीश्रीनित्यानन्द प्रभु श्रीवासपण्डित गदाधर पण्डित तथा प्रभुके नित्य पार्षदगणने उनको अभीष्ट देवताके रूपमें पहचाना। क्रमशः एक-एक करके सबने आकर उन्होंने प्रभुके चरणोंमें शरण ली। यह सब बातें आगे लिखी जायँगी

इसी समय प्रभुकी इच्छासे श्रीअद्वैत प्रभुने शान्तिपुरसे नवद्वीपमें आकर वास किया। नवद्वीपमें उनका अत्यधिक सम्मान था। भक्तिशास्त्रकी आलोचना करनेके लिए नदियामें अद्वैत-सभा नामकी एक सभा बहुत दिन पहले स्थापित हुई थी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीश्रीमद्विश्वरुप प्रभुके गृहत्यागके बाद इस अद्वैत सभाका प्रभाव घट गया था। नाम मात्रकी सभा रही थी। अब प्रभुकी इच्छासे और अद्वैत प्रभुकी चेष्टासे इस सभाकी बहुत उन्नति हुई। संकीर्तन यज्ञेश्वर श्रीगौराङ्ग प्रभुके आत्मप्रकाशके समय नादियाके वैष्णवोंको श्रीअद्वैत प्रभुका प्रकृत तत्त्व ज्ञात हुआ। अब वे सब लोग युगधर्म प्रवर्तनमें प्रभुके सहायक बने।

पहले कहा जा चुका है 'कि पौषमासमें प्रभु गयाधामसे नदियामें लोटे। शुभ माघमासके शुरुमें ही संकीर्तन यज्ञेश्वर कलियुगावतार श्रीश्रीगौर भगवान् नित्यधाम नदियामें युगधर्मका प्रचार करनेके लिये संकीर्तन यज्ञका अनुष्ठान किया। श्रीश्रीगौर गोविन्दने मायापुर योगपीठमें बैठकर जिस दिन युगधर्म भुवनमङ्गल हरि संकीर्तनका आरम्भ किया, वह दिन जगत्के जीवोंके लिए बड़ा शुभ दिन था। विश्व-ब्रह्माण्डोंके भाग्यमें ऐसा शुभ दिन कभी किसी युगमें उदय नहीं हुआ था। कलि-कलुषित त्रिताप-दग्ध जीवकी आध्यात्मिक परम मङ्गल कामनासे श्रीगौरभगवान्ने सर्व सिद्धिप्रद, सर्वदुःखहारी, परम मङ्गल श्रीहरि-नाम संकीर्तनकी जय घोषणा करके अपने शिक्षाष्टक श्लोकोंकी प्रथम रचनाकी थी। वह भुवन-मङ्गल श्लोकरत्न नीचे उद्धृत है—

चेतो दर्पण मार्जनं भवमहादावाग्नि निर्वापणं
श्रेयः कैरवचन्द्रिका वितरणं विद्याबधूजीवनम्।
आनन्दाम्बुधिवर्द्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मास्नपनं परं विजयते श्रीकृष्ण संकीर्तनम्।

भुवन-मङ्गल यह हरिनाम सङ्कीर्तन कलिका युगधर्म है। युगधर्म प्रवर्त्तन करानेके लिए कलि-युगावतार श्रीगौराङ्ग प्रभुका नदियामें शचीके गर्भसे उदय हुआ। श्रीगौराङ्ग भगवान्के अवतार ग्रहणके बहुतसे उद्देश्य हैं। उनमें-से एक युगधर्म प्रवर्त्तन भी है।

पूर्व-पूर्व युगमें कष्ट साध्य ध्यान, यज्ञ, जप, तप, पूजा, अर्चना आदिके अनुष्ठानके द्वारा जो फल प्राप्त होता था, कलियुगमें केवल हरिनाम सकीर्तनके द्वारा ही वह फल प्राप्त हो जाता है। अतएव हरिनाम संकीर्तन ही कलिग्रस्त जीवके परित्राणका एक मात्र उपाय है। यह शास्त्र वचन है। 'हरेर्नामैव' श्लोकको व्याख्यामें प्रभुने इसे अति विशद रूपमें समझाया है। ये सब बात पीछे कही जाँयगी।

श्रीकवि कर्णपूर गोस्वामीने स्वरचित एक सुन्दर श्लोकमें प्रभुके श्रीमुखके हरिनाम संकीर्तनका माहात्म्य और जयकी घोषणा करके जो लिखा था, वह बहुत दिनों तक गौरभक्तोंके कण्ठका हार बना रहेगा। वह पुण्य श्लोक श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकसे यहाँ उद्धृत किया जाता है—

क्षोयं क्षौणी मृगाक्ष्यां स्थगनमिहरवेः कम्पमाशावधूनां
स्तन्यं वा तस्य कुर्वन्नमर परिवृढस्याश्रमक्ष्णां सहस्रं।
स्वेद सप्तर्षि गोष्ठ्याः परमरसमयोत्तानपादे-
र्ध्यानध्वस्तं विरिञ्चेः स जयति भगवत्कीर्तनानन्दनादः।
चै. चं. ना. १०. ३८

अर्थात् प्रभुके श्रीमुखसे मधुर हरिनाम सुनकर भूमण्डलकी कामिनियाँ मोहित हो जाती हैं, दिवाकर स्थगित हो जाते हैं, दिगाङ्गनाएँ कम्पित हो जाती हैं, सदागति पवनदेव गतिविहीन हो जाते हैं, तथा त्रिदिवेन्द्र पुरन्दरके सहस्रनेत्रोंसे अश्रुधारा बहने लगती है। उसी कलिपावनावतर भगवान् श्रीश्रीगौरचन्द्रके श्रीमुखसे निःसृत मधुर श्रीहरि संकीर्तन निनादसे सप्तर्षिगण पसीने-पसीने हो जाते हैं, ध्रुव परमानन्दित होते हैं और पद्मयोनिका ध्यान भी छूट जाता हैं। इस प्रकारका वह भगवत्कीर्तनका आनन्दप्रद नाद जय को प्राप्त हो।

स्वय प्रभुके श्रीमुखसे जिन्होंने सुमधुर कृष्ण-संकीर्तन श्रवण करके अपनेको कृतार्थ किया था, उनेमें-से एक श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामी भी थे। कृपालु पाठक वृन्द! कवि कर्णपूर गोस्वामी पादके वर्णनमें अत्युक्ति दोषका अरोपण कर अपराधी न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बनें। उन्होंने लिखा हैं कि श्रीगौराङ्ग लीला और कथाको उन्होंने जैसा अपनी आँखों देखा था या अपने कानों सुना था वैसा ही वर्णन करके ग्रन्थरूपमें निबद्ध किया है। उनके वर्णनको कोई कपोल-कल्पित न समझे।

उस समयकी प्रभुकी एक लीलारङ्ग कहानी श्रीचैतन्य चरित महाकाव्यमें वर्णित है।

गयाधामसे नवद्वीपमें आकर एक दिन प्रभु मुकुन्द सञ्जयके चण्डी-मण्डपमें बैठकर छात्रोंको पाठ दे रहे थे, तथा उसके साथ-साथ हरिनामकी महिमाका कीर्तन कर रहे थे। उसी समय एक ब्राह्मण बालक उनके सामने आकर बोला, "अध्यापक महाशय ! मैं आपकी बात कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ। आप जो हरिनामकी महिमाका कीर्तन करते हैं, यह निश्चय ही अर्थवाद अर्थात् प्रशंसा मात्र है।" प्रभु यह बात सुनते ही घृणासे श्रीमुख विकृत करके दोनों हाथोंसे अपने कान बन्द करके गङ्गाके तीर चल दिये। ब्राह्मण बालक उनके साथ साथ गया। गङ्गाके किनारे जाकर प्रभु स्नान करके पवित्र हुए। हरिनामका अर्थवाद श्रवण करके उनके मनमें अतिशय ग्लानि हुई थी, और उन्होंने अपनेको अशुचि समझ लिया। गङ्गास्नान करके प्रभु घर गये। इस लीलासे धर्म संरक्षक प्रभुने दिखलाया कि, खल-प्रकृति-विशिष्ट लोग जब श्रीभगवान्के नाम और रूपकी निन्दा करें तो वह भगवत्सेवकके लिए श्रोतव्य नहीं है। यदि किसी प्रकार यह निन्दाकी बात कानमें प्रवेश करे तो तत्काल उस स्थानसे उठकर चल दे और गङ्गास्नान करके उसका प्रायश्चित्त करे।

प्रभु अब कृष्णप्रेममें उन्मत्त रहते हैं। व्रजरसमें उनके हृदय, मन और तन निमग्न रहते हैं। वे एक दिन व्रजभावमें विभावित होकर भक्तगणसे कहने लगे, "चलो, आज हम सब लोग गङ्गाके तीर चलकर पशुपतिकी पूजा करें, हमारी सारी विपत्ति दूर हो जायगी।" उनके हृदयमें पूर्व लीलाकी स्मृति उदय हुई, और वे अस्थिर हो उठे। व्रजरसमें उन्मत्त हो गये। श्रीवास आदि भक्तगणने प्रभुके इच्छानुसार और भावानुसार सारी चेष्टाएँ की। गदाधर और नरहरिने उनको भली भाँति सजाया, फूल चन्दन हाथमें लेकर गोपी भावके आवेशमें श्री गौराङ्ग प्रभु मृदु मन्द पादविक्षेप करते हुए गङ्गाके तीर वृद्ध महेश्वरके श्रीमन्दिरकी ओर चले। साथमें सब भक्तगण भी चले। व्रज-बालाओंने जिस प्रकार गोपेश्वरकी पूजाका आयोजन करके व्रजनाथ यशोदा-नन्दनको पति रूपमें प्राप्त करनेकी कामनासे उनकी पूजा करने यमुनाके तीर गमन किया था, ठीक उसी भावसे शचीनन्दन निजजनके सङ्ग गङ्गाके तीर जा रहे हैं।

व्रजलीलाके प्रत्येक अङ्ग नवद्वीप लीलामें वर्तमान हैं, यह बात पूर्व ही कही जा चुकी हैं। कलिके प्रच्छन्न अवतार लीलारङ्ग-प्रिय श्रीगौराङ्ग सुन्दरने अपनी नवद्वीप-लीलामें व्रजलीलाके प्रत्येक अङ्गका अभिनय किया है। व्रजरसलोलुप-रसिक भक्तगण नवद्वीप-लीलाके अनुशीलनमें व्रजरस पान करते हैं। प्राचीन पदकर्त्तागण अपनी आँखोंसे इन लीलाओंको देखकर मधुर पद रचना कर गये हैं। पदकल्पतरुसे एक प्राचीन पदका अवलम्बन करके यह मधुर लीला वर्णित हुई है।

गोवर्द्धन-लीलाका रूपक

इसी समय नवद्वीपमें प्रभुने एक और अति सुन्दर लीला प्रकटकी। वह लीला व्रजकी गोवर्द्धन पूजा लीला क्या है—यह बहुत लोगोंको ज्ञात नहीं। उसकी यहाँ व्याख्याकी जाती है।

वंशीवदन ठाकुर श्रीगौराङ्ग प्रभुके आदेशसे उनके घरपर रहकर शची-विष्णुप्रियाकी सेवामें जीवन यापन करते थे। श्रीश्रीविष्णुप्रियादेवीके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आदेशसे नवद्वीपमें उन्होंने श्रीगौराङ्ग मूर्तिकी प्रतिष्ठा की थी। वह आदि मूर्ति आज तक नवद्वीप धाममें सर्व गौरभक्तवृन्दके द्वारा पूजित हो रही है। वंशी वदन ठाकुरके पुत्र चैतन्यदास प्रभुकी नवद्वीप लीलाके रसास्वादी थे। वे एक पदमें श्रीगौराङ्ग प्रभुकी गोवर्द्धन धारण लीलाका अति सुन्दर वर्णन कर गये हैं। उस पदका अवलम्बन करके प्रभुकी इस मधुर नवद्वीप-लीलाका कुछ विस्तार पूर्वक वर्णन करनेकी इच्छा हो रही है। श्रीगौराङ्ग चरणोंका स्मरण करके जीवाधम ग्रन्थकार इस दुःसाहसिक कार्यमें प्रवृत हो रहा हैं। कृपालु गौर भक्तगण कृपा करके शुभाशीर्वाद दें।

व्रजकी गोवर्द्धन लीलासे सब परिचित हैं अतः उसका विस्तार नहीं करके नवद्वीपकी गोवर्द्धन लीलाके रूपकका वर्णन किया जा रहा हैं।

श्रीगौराङ्ग साक्षात् व्रजेन्द्रनन्दन हैं। श्रीनवद्वीप धाम और व्रजधाम भिन्न वस्तु नहीं है। इस मधुर व्रजलीलाको श्रीश्रीगौराङ्ग प्रभुने इस समय नवद्वीप-लीलामें किस प्रकार प्रकट किया था, इसे महाजनके वाक्योंमें सुनिये—

पदकर्त्ता चैतन्यदासने लिखा है—

देख देख अपरूप गौराङ्ग विलास।
पुन गिरिधारण, पूरब लीला क्रम,
नवद्वीपे करिला प्रकाश ॥

यहाँ गोवर्द्धन पर्वत क्या हैं, तथा इन्द्रका कोप और दल-बलका विवरण क्या है, यह समझा रहे हैं—

शुद्ध भक्त गोवर्द्धन, पूजा कर जगज्जन,
एइ विधि दिला कलि माझे।
श्रवणादि नव अङ्ग, कल्पतरुमय अङ्ग।
पञ्चरस फल ताहे साजे ॥
पुलक अंकुर शोभा, अश्रुजल मनो लोभा,
मन्दवायु वेपथु सुन्दर।
निजेन्द्रिय उपचारे, सेव सेइ गिरिवरे,
प्रेममणि पाबे इष्टवर ॥
देखिया लोकेर गति, कलियुग सुरपति,
कोपे तनु कम्पित हइल।
अधरस ऐरावते, कृमति इन्द्राणी साथे,
ससैन्येते साजिया आइल ॥
काममेघ वरिषणे, क्रोधवज्र निक्षेपणे,
लोकेर हइल महाडर।
लोभ मोह शिलाघाते, मात्सर्यादि खर बाते,
धैर्य धर्म उड़े निरन्तर ॥
जानिया जीवेर दाय, श्रीगौराङ्ग दयामय,
उपाय चिन्तिला मने तने।
भक्तभाव सारोद्धार, निजे करि अङ्गीकार,
भक्तिगिरि करिला धारणे ॥
ताहार आश्रये लोक, पासरिल दुःख शोक,
कलिमय खण्डिल सकले।
तबे कलि देवराज, पाइया पराभव लाज,
स्तुति करे चरण कमले ॥
अपराध क्षमाइया, कहे किछु दीन हैया,
जत जीव प्रभुर आश्रय।
जेवा जत गुण गाय, ताहे मोर नाहि दाय,
एइ सत्य करिल निश्चय ॥
प्रभु तारे दया कैल, धन्य कलि नाम थुइल,
अद्यापिओ घोषये संसार।
चैतन्यदासेते बले, गोवर्द्धन लीला छले,
युये युगे जीवेर उद्धार ॥
पदकल्पतरु।

यह मधुर पद जो कृपालु रसज्ञ पाठकवृन्दके चित्तविनोदार्थ यहाँ उद्धृत हुआ है, इसकी कुछ विस्तृत व्याख्या आवश्यक है। गौरभक्तवृन्दकी अनुमति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लेकर जीवाधम ग्रन्थकार इस मधुर पदका भाव विश्लेषण करनेका प्रयास करेगा।

देवराज इन्द्रकी पूजाकी अपेक्षा गिरिराज गोवर्द्धनकी पूजा बड़ी है, यह श्रीकृष्णने दिखला दिया। गिरिधारी श्रीकृष्ण भगवान्‌की पूजा और गिरिराज गोवर्द्धनकी पूजा एक वस्तु है, एक तत्त्व है। यह समझानेके लिए श्रीकृष्ण गोवर्द्धन गिरिपर चढ़े, और तब गिरिराज मूर्तिमन्त हो गये। यह प्राचीन पदमें देखनेमें आता है। पदकर्त्ता सिद्ध कृष्णदासने लिखा है—

कि आनन्द आजि वृन्दावने। ध्रु०।
नन्द आदि गोप गोपी एकत्र हइया।
गिरि गोवर्द्धन पूजे निकटे जाइया॥
पक्वान्न मिष्ठान्न आनि धरिला सकले।
कृष्ण गुण गाय नाना वाद्य कोलाहले॥
हेनइ समये कृष्ण देव माया मते।
आरोहण एक रूपे करिला पर्वते॥
देखि गोपगोपीगणे प्रणाम करिला।
सभे देखे गोवर्द्धन मूर्त्तिमन्त हैला॥

—पदकल्पतरु

इन्द्रादि देवगणकी पूजाकी अपेक्षा भक्तपूजा बड़ी होती है, यह श्रीगौराङ्ग प्रभुने स्वयं आचरण करके दिखला दिया है। 'मद्भक्तपूजाभ्यधिका' इस शास्त्रवचनकी सम्पूर्ण रूपमें मर्यादा रक्षा करनेके लिए श्रीगौराङ्ग प्रभु अपने निजजनको सदा सर्वदा उपदेश देते थे—

'आमार भक्तेर पूजा आमा हैते बड़।'

भक्त और भगवान्‌में भेद नहीं है, यह समझानेके लिए महाजन कविने कृष्णके शुद्ध भक्तोंकी तुलना गिरिराज गोवर्द्धनसे की है। गिरिराज गोवर्द्धन स्वयं भगवान् हैं, और कृष्णदास शुद्ध भक्तगण भी श्रीभगवान्‌के स्वरूप हैं। देवपूजाकी अपेक्षा भक्तपूजा श्रेष्ठ है, देव-सेवाकी अपेक्षा वैष्णव-सेवामें अधिक फल हैं, इस कारण श्रीगौर भगवान्‌की प्रेरणासे महाजन कविने कहा है।

शुद्ध भक्त गोवर्द्धन, पूजा कर जगज्जन,
एइ विधि दिला कलि माझे॥

इन शुद्धभक्त गोवर्द्धन गिरिराजकी शोभा वर्णन करके साधक महाजन कवि कहते हैं कि श्रवण-कीर्तनादि भक्तिके नवअङ्ग गोवर्द्धन गिरिरूप शुद्धभक्तराजके अङ्गमें कल्पतरुके समान शोभा पारहे हैं। शान्त-दास्य आदि पञ्चरसरूप सुन्दर मीठे-मीठे फल इस कल्पवृक्षमें जगह-जगहपर सुसज्जित हैं। डाल-डाल और पत्ते-पत्तेमें अंकुर रूप पुलकावली शोभा पा रही है, शिशिर-सिक्त पत्रावलीके समान भक्तजनका अश्रुसिक्त मुखमण्डल अपूर्व शोभा धारण कर रहा है। उनके श्वासवायु रूप मन्द-समीरणसे चतुर्दिक आमोदित हो रहा है। इस भक्तरूपी गिरिराजकी पूजा व्रजवासीगणने श्रीकृष्णके आदेशसे की है। उन्होंने पुष्प, चन्दन, माला, नैवेद्य आदि उपचारोंसे गिरिराजकी पूजा की थी। उनके इस कार्यसे सन्तुष्ट होकर श्रीकृष्णने व्रजवासियोंको वर दिया था—'तुमको अभीष्ट लाभ हो।' महाजन-मुखसे श्रीगौर सुन्दरने नदियावासियोंको उपदेश दिया था—

"निजेन्द्रिय उपचारे, सेव सबे गिरिवरे,
प्रेममणि पाबे इष्टवर।"

अर्थात् काय-मन-वचनसे सर्वेन्द्रियोंके द्वारा भक्तकी पूजा करो, वैष्णवसेवा करो, इस सेवाके फलस्वरूप तुम लोग मेरे निज गुप्तधन, गोलोककी सम्पत्ति प्रेमधन पावोगे। श्रीकृष्णावतारमें भगवान्‌ने निजजनोंको जो वस्तु नहीं दी, श्रीगौराङ्ग अवतारमें कलिके जीवोंपर दया करके वे वस्तु दे दी। कलिग्रस्त जीवको दुर्बल देखकर कृपामय श्रीगौराङ्ग प्रभुने यह गोलोककी सम्पत्ति प्रेमधन अयाचितभावसे दान करनेकी व्यवस्था की। किन्तु एक शर्त्त रखी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तपूजा, वैष्णव सेवा। श्रीगौराङ्ग महाप्रभुने श्रीसनातन गोस्वामीसे कहा था—

'जीवे दया, नामे रुचि, वैष्णव सेवन।
इहा हैते धर्म नाहि शुन सनातन।।"

श्रीनपोत्तम ठाकुरने दोनों भुजाएँ उठाकर उच्चस्वरसे कीर्तन किया था—

"छाड़िया वैष्णव सेवा, निस्तार पेयेछे केवा
अनुक्षण खेद उठे मने।।"

इस वैष्णव-सेवा या भक्तपूजाके समान दूसरा कोई धर्म नहीं है। सब तीर्थोंका सार है भक्तका पादोदक। ठाकुर महाशयने लिखा है—

तीर्थजल पवित्रगुणे, लिखियाछेन पुराणे
ए सब भक्तिर प्रवञ्चन।
वैष्णवेर पादोदक, सम नहे सेइ सब
जाते हय बाञ्छित पूरण।।

इसी कारण श्रीगौराङ्ग प्रभुने उपदेश दिया कि कलियुगमें यह भक्तपूजा या वैष्णवसेवा ही व्रजवासियोंकी गोवर्द्धनगिरि-पूजाके तुल्य है। परन्तु फल उसकी उपेक्षा भी अधिक है। क्योंकि वहाँ व्रजवासियोंको इस कार्यमें अभीष्टपूर्ण हुआ था, यहाँ श्रीगौराङ्ग-सुन्दरकी कृपासे गोलोककी सम्पत्ति अमूल्यरत्न प्रेमधन प्राप्त होता है। अतएव हे कृपालु पाठकवृन्द! वैष्णवापराधसे बचकर चलो। ठाकुर नरोत्तमने वैष्णवगणको उद्देश्य करके लिखा है—

गङ्गार परश हइले पश्चात् पावन।
दर्शने पवित्र कर ये तोमार गुण।।
हरि ठामे अपराधे तारे हरि नाम।
तोमा ठामे अपराधे नाहि परित्राण।।
तोमा सबा हृदयेते गोविन्द विश्राम।
गोविन्द कहेन मोर वैष्णव पराण।।

श्रीचैतन्यभागवतकार गौराङ्गलीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

सबार करिब गौरसुन्दर उद्धार।
व्यतिरिक्त वैष्णव निन्दुक दुराचार।।
चै० भा० म० १३. ३८५; १९. ११३

उन्होंने यह भी लिखा है—

वैष्णवेर ठाञि जार हय अपराध।
कृष्णप्रेम हइलेओ तार प्रेम-बाध।।
चै० भा० म० २२. ७

श्रीगौराङ्ग प्रभुके श्रीमुखका वचन है—

प्रभु बोले 'उपदेश करिते से पारि।
वैष्णवापराध आमि खण्डाइते नारि।।'
चै० भा० म० २२. ३१

अतएव हे पाठकवृन्द! पुनः विनती करके कहता हूँ कि वैष्णव-निन्दाके पापमें लिप्त न होना, परचर्चा न करना, दोषदर्शन न करना।

मूलकथा छोड़कर मैं बहुत दूर आ गया। नवद्वीपलीलामें गोवर्द्धन-पूजाका उद्योग किस प्रकार हुआ, महाजन कविकी भाषामें उसे श्रवण कीजिये। कविके जीवकी कुमति और दुर्मति, तथा उनकी पाप-पथमें गति भगवद्दत्त और निर्दिष्ट है। कलिके धर्मराज इन्द्र कलिग्रस्त जीवकी दुर्मति देखकर क्रोधसे कम्पायमान होकर उनको दण्ड देनेके लिए तैयार हो गये। वे अधर्मरूप ऐरावतपर चढ़कर कुमतिरूप इन्द्राणीको साथ लेकर ससैन्य कलिके जीवोंको पापका दण्ड देने आये। कामरूप मेघके अजस्र वर्षणसे, क्रोधरूप व्रजके अविरत गर्जन और आघातसे कलिग्रस्त जीवके प्राणोंमें बड़ा भय हुआ। लोभ और मोहरूप शिलाघातसे, मद-मात्सर्यादिरूप तीक्ष्ण झञ्झावातसे लोगोंका धैर्य और धर्म एकबारगी उड़ गया। लोगोंकी दुर्गतिकी पराकाष्टा हो गयी। कलि पावनावतार श्रीगौराङ्ग प्रभुकी कलिग्रस्त जीवोंके प्रति बड़ी दया है। जीवके दुःखसे उनका कोमल हृदय द्रवित हो गया। तब उन्होंने क्या कहा? सुनिये—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जानिया जीवेर दाय, श्रीगौराङ्ग दयामय,
उपाय चिन्तिला मने मने ।
भक्तभाव सारोद्धार, निजे करि अङ्गीकार,
भक्ति-गिरि करिला धारणे ।।

उन्होंने भक्तभाव अङ्गीकार करके, भक्तिरूप गिरि धारण करके कलिग्रस्त जीवोंको आश्रय प्रदान किया । उनके सारे दुःख दूर हो गये, कलिका भयचूर हो गया। महा पराक्रमी कलिराजका पराभव होनेपर वह श्रीगौराङ्गके चरणोंमें स्तुति करने लगे—'हे सर्वेश्वर ! हे सर्वावतारसार ! हमारे अपराध क्षमा करो, तुम्हारे नाम और गुणका गान करनेवालोंको कोई भय नहीं है, मेरा प्रभाव उनको स्पर्श भी नहीं करेगा, निर्भय होकर वे तुम्हारा नाम गान करें। मैं अब उनके साथ कोई उपद्रव न करूँगा। तुम्हारे सामने मैं प्रतिज्ञा करता हूँ।" कलिराजकी यह दैन्योक्ति सुनकर परम दयालु श्रीश्रीगौराङ्ग प्रभुने उनपर कृपा की, तथा कृपाके वश होकर उनका नाम रखा 'धन्य कलिराज'। इसी कारण कलियुग धन्य हो गया।

प्रभुने गयाधामसे आकर अतिगुप्त भावसे यह गोवर्द्धनलीला प्रकट की। प्रेम प्रकाश, और संकीर्तन-लीलाके प्राकट्यके पूर्व जीवोद्धारके लिए यह लीला प्रकट करके, भक्तपूजा और वैष्णव-सेवाके द्वारा प्राप्त होनेवाले प्रेमधनको प्रभुने दिखलाया। अन्याय युगकी बात मैं कहना नहीं चाहता। इस कलिकालमें प्रेम-प्राप्तिका एक मात्र उपाय है वैष्णव सेवा। कृपामय साधु-वैष्णव ही प्रेमदाता हैं। श्रीगौराङ्ग प्रभु स्वयं भक्त-पूजाकर गये हैं। स्वयं भक्त-सेवा आचरणमें लाकर दिखला गये हैं, भक्तका आशीर्वाद अतिशय श्रद्धापूर्वक सिरपर धारण कर गये हैं।

भक्त-आशीर्वाद प्रभु शिरे करि लये।
भक्त-आशीर्वादे से कृष्णे ते भक्ति हये ।।
चै० भा० म० २. ७१

उन्होंने श्रीमुखसे कहा था—

कृष्ण भजिबार जार आछे अभिलाष।
से भजूक कृष्णेर मङ्गल निज दास ।।
चै० भा० म० २. ५५

भक्त ही कलियुगमें गिरि गोवर्द्धन हैं, भक्त ही भगवान्‌का स्वरूप है, भक्त ही मूर्त्तिमन्त भगवान् हैं।

—*—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सत्ताईसवाँ अध्याय

श्रीश्रीअद्वैत प्रभु और हरिदास ठाकुर

अद्वैत आचार्य गोसाञि साक्षात् ईश्वर । जाँहार महिमा नहे जीवेर गोचर ॥
चै. च. आ. ६, ३

अद्वैताचार्य

श्रीअद्वैत प्रभु हमारे गौर-आना गोसाईं हैं। इस गौर-आना-गोसाईंका तत्त्व श्रीपाद स्वरूप गोस्वामीने अपने करचामें दो श्लोकोंमें लिखा है। वे दोनों श्लोक ये हैं—

महाविष्णुर्जगत्कर्त्ता मायया यः सृजत्यदः।
तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य ईश्वरः॥
अद्वैतं हरिणाद्वैतादाचार्यं भक्ति शंसनात्।
भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्यमाश्रये॥

जो जगत्कर्त्ता महाविष्णु माया द्वारा इस चराचर विश्वका सृजन करते हैं, श्रीअद्वैताचार्य ईश्वर उन्हींके अवतार हैं। वे हरि अर्थात् श्रीगौराङ्ग प्रभुके साथ द्वैतभावरहित होनेके कारण अद्वैत हैं, वे भक्तिका उपदेश प्रदान करनेके कारण आचार्य हैं। वे भक्तरूप ग्रहण करके भूतलमें अवतीर्ण हुए थे। उनके श्रीचरणोंका आश्रय लिये बिना श्रीगौराङ्ग प्रभुकी कृपा-प्राप्ति दुष्कर है।

श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने श्रीअद्वैत प्रभुका तत्त्व विशद रूपसे श्रीचैतन्य चरितामृतके आदि-लीलाके छठे परिच्छेदमें किया है।

कृपालु गौरभक्त पाठकवृन्द ! श्रीअद्वैत तत्त्व निश्चय ही आप लोगोंको ज्ञात है। तत्त्वकथा बहुत बड़ी वस्तु है। क्षुद्र मनुष्यकी बुद्धिमें नहीं समा सकती। तत्वका सन्धान लगाने वाले गौरभक्त पाठकवृन्द सद्गुरुके निकट इन तत्वोंका अनुसंधान करेंगे। जीवाधम ग्रन्थकारने श्रीअद्वैत प्रभुके एक तत्वको खूब समझ लिया है। वे हमारे गौर-आना-गोसाईं हैं। इससे बढ़कर दूसरा कोई तत्व नहीं है। इसको छोड़कर अन्य तत्वके अनुसंधानमें प्रवृत्त होनेकी इच्छा नहीं होती। गौर-आना-गोसाईंका तत्व स्वयं श्रीगौराङ्ग प्रभुने अपनी श्रीमुख-निःसृत वाणीके द्वारा जगत्में प्रचार किया है। जब श्रीरूप सनातनने नीलाचलमें जाकर प्रभुके चरणोंमें आत्म-समर्पण कर दिया, तब प्रभुने अद्वैत प्रभुको दिखलाकर उनसे कहा—

प्रेमभक्ति बाञ्छा यदि करह एखने।
तबे धरि पड़ एइ अद्वैतचरणे॥
भक्तिर भाण्डारी श्रीअद्वैत महाशय।
अद्वैतेर कृपाये से कृष्ण भक्ति हय॥
चै० भा० अं० १०. २५१, २५२

प्रभु तब श्रीअद्वैत प्रभुकी ओर देखकर बोले—

अमायाय कृष्णभक्ति देह ए दुयेरे।
जन्म जन्म आर जेन कृष्ण ना पासरे॥
भक्तिर भण्डारी तुमि, बिने तुमि दिले।
कृष्णभक्ति कृष्णभक्त कृष्ण कारे मिले॥
चै. भा. अं. १०. २५७, २५८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवास पण्डितसे एक दिन चतुर चूड़ामणि प्रभुने कौतुक करते हुए पूछा—"श्रीवास पण्डित ! तुम आचार्यको कैसा वैष्णव समझते हो, बतलाओ तो ?" श्रीअद्वैताचार्य वहाँ उपस्थित थे। प्रभु श्रीवास पण्डितकी परीक्षा कर रहे हैं, इस बातको उन्होंने समझा नहीं। बहुत सोच-विचार करके श्रीवास पण्डितने डरते-डरते उत्तर दिया—"मुझे तो श्रीशुकदेवजी और प्रह्लादजी सरीखे लगते हैं। यह सुनकर प्रभु क्रोधलीला-से उन्मत्त-से होकर वृद्ध ब्राह्मणकी पीठपर एक प्रबल चपेटा लगाकर बोले—

कि बलिलि कि बलिलि पण्डित श्रीवास।
मोहोर नाड़ारे कह शुक वा प्रह्लाद ॥
जे शुकेरे 'मुक्त' तुमि बोल सर्व्वमते।
कालिर बालक शुक नाड़ार आगेते ॥
एत बड़ वाक्य मोर नाड़ारे बलिलि।
आजि बड़ श्रीवासिया ! मोरे दुःख दिलि ॥

चै. भा. अं १०. २८१-२८३

श्रीवास पण्डितको झापड़ लगाकर भी प्रभुने क्रोध-लीला पूरी नहीं की। वे क्रोधसे काँपतेसे दीपयष्टि (दीवट) हाथमें लेकर पुनः उनको खदेड़कर मारनेके लिए उद्यत-से हो गये। उस समय अद्वैत प्रभुने उनका हाथ पकड़कर रोक दिया। प्रभु तब शान्त होकर श्रीवास पण्डितसे बोले—

—"ओहे श्रीनिवास महाशय।
मोहोर नाड़ारे एइ तोमार विनय ॥
शुक आदि कवि सब बालक उहार।
नाड़ार पाछे से जन्म जानिह सभार ॥
अद्वैत लागि मोर एइ अवतार।
मोर कर्णे बाजे आसि नाड़ार हुङ्कार ॥
शयने आछिलूँ मुञि क्षीरोद सागरे।
जागाइ आनिल मोरे नाड़ार हुंकारे ॥

चै. भा, अं: १०, २९०-२९३

श्रीवास पण्डितने बहुत लज्जित होकर प्रभुके सामने हाथ जोड़कर अपने अपराधके लिए क्षमा प्रार्थना की। उन्होंने प्रेममें गद्गद होकर रोते-रोते भक्तिपूर्वक प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—

तोमार अद्वैत तत्व जानह तुमि से।
तुमि जानाइले से जानये अन्य दासे ॥
आजि मोर महाभाग्य सकल मङ्गल।
शिखाइया आमारे आपने कैला फल ॥

चै भा. अं. १०. २९६, २९७

श्रीवास पण्डितकी दैन्योक्तिसे सन्तुष्ट होकर प्रभुने उनको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया।

इसी कारण मैं कहता हूँ कि गौर-आना-गोसाईंका तत्व श्रीगौराङ्ग प्रभु ही जानते हैं। वे कृपा करके जनावें तो दूसरे लोग भी जान सकते हैं। उन्होंने जब कहा कि,

"मोर नाड़ा जानिवारे आछे कोन जन।"

चै. भा. अं. १०. २८९

तो अधिक कहनेकी आवश्यकता ही क्या है ?

श्रीअद्वैत प्रभुका दास्य भाव है। नवद्वीपमें प्रभुने जब सङ्कीर्तनारम्भमें आत्मप्रकाश किया तो शान्तिपुरमें गौर-आना-गोसाईंके पास सारा समाचार पहुँचा। सर्वज्ञ अद्वैत प्रभु तत्काल वहाँसे चलकर नवद्वीपमें आये। उनका स्वभाव परम गम्भीर था। यदि कभी किसीको कुछ कहते रहते थे तो तुरन्त ही उस बातको छिपाकर दूसरी बात बोलने लगते। नदियाके वैष्णवगण प्रभुके प्रेमभक्ति भावको देखकर मुग्ध हो जाते थे, और उनके श्रीमुखसे अपूर्व मधुर हरिसंकीर्तन श्रवण करके जब अद्वैत-सभामें जाकर श्रीअद्वैत प्रभुसे सारी बातें कह सुनाते तो वे स्थिर चित्तसे सब कुछ सुनते थे। प्रभुकी अपूर्व प्रेमभक्तिकी बात सुनते-सुनते वे आविष्ट होकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वैष्णववृन्दको सम्बोधन करके कहने लगे—

मोर आजूकार कथा शुन भाइ सब।
निशिते देखिलूँ आजि किछु अनुभव ॥
गीतार पाठेर अर्थ भाल ना बूझिया।
थाकिलाङ दुःख भावि उपास करिया ॥
कथो रात्रे आमारे बोलये एक जन।
उठह आचार्य ! झाट् करह भोजन ॥
एइ पाठ एइ अर्थ कहिल तोमारे।
उठिया भोजन कर पूजह आमारे ॥
आर केन दुःख भाव पाइले सकल।
जे लागि सङ्कल्प कैले, से हैल सफल ॥
जत उपवास कैले, जत आराधन।
जतेक करिले 'कृष्ण' बलिया क्रन्दन ॥
जा आनिते भुज तुलि प्रतिज्ञा करिला।
से प्रभु तोमारे एबे विदित हैला ॥
सर्वदेशे हइबेक कृष्णेर कीर्त्तन।
घरे-घरे नगरे-नगरे अनुक्षण ॥
ब्रह्मार दुर्लभ मूर्त्ति जगते जतेक।
तोमार प्रसादे मात्र सभे देखिबेक ॥
एइ श्रीवासेर घरे जतक वैष्णव।
ब्रह्मादि दुर्लभ देखिब अनुभव ॥
भोजन करह तुमि आमार विदाय।
आर बार आसिबाङ भोजन बेलाय ॥
चक्षु मेलि चाहि देखि एइ विश्वम्भर।
देखिते देखिते मात्र हइल अन्तर ॥
कृष्णेर रहस्य किछु ना पारि बूझिते।
कोन रूपे प्रकाश वा करेन काहाते ॥
इहार अग्रज पूर्व विश्वरूप नाम।
आमा सङ्गे आसि गीता करित व्याख्यान ॥
एइ शिशु परम मधुर रूपवान्।
भाइके डाकिते आसेन मोर स्थान ॥
चित्तवृत्ति हरे शिशु सुन्दर देखिया।
आशीर्वाद करों 'भक्ति हउक' बलिया ॥
आभिजात्ये आछे बड़ मानुषेर पुत्र।
नीलाम्बर चक्रवर्ती ताँहार दौहित्र ॥
आपनेओ सर्वगुणे उत्तम पण्डित।
ताँहार कृष्णेते भक्ति हइते उचित ॥
बड़ सुखी हइलाङ एकथा शुनिया।
आशीर्वाद कर सबे 'तथास्तु' बलिया ॥
श्रीकृष्णेर अनुग्रह हऊक सभारे।
कृष्णनामे मत्त हउ सकल संसारे ॥
यदि सत्य वस्तु हय तबे एइ खाने।
सभे आसिबेन एइ वामनार स्थाने ॥

चै. भा. म. २. ८-२८

अतिशय सतर्कता और चतुराईके साथ सर्वज्ञ श्रीअद्वैत प्रभु ये सब बातें कह गये। वे सारी बातें बोल गये और फिर सारी बातें छिपा लीं।

वे अपने इस अद्भुत स्वप्नका वृत्तान्त समाप्त होने पर बोले—

'चक्षु मेलि चाहि देखि एइ विश्वम्भर।'

चै. भा. म. २. १९

नदियाके इस ब्राह्मण-बालक शचीनन्दन, जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरके पुत्र विश्वम्भरने उनको स्वप्नमें दर्शन देकर क्या कहा—

आर केन दुःख भाव पाइले सकल।
जे लागि सङ्कल्प कैले जे हैल सफल ॥

चै. भा. म. २, १२

श्रीअद्वैत प्रभुका सङ्कल्प क्या था, इसे कृपालु पाठकवृन्द जानते हैं। स्वप्नदृष्ट पुरुषने और क्या कहा—

जा आनिते भुज तुलि प्रतिज्ञा करिला।
से प्रभु तोमारे एबे विदित हैला ॥

चै. भा. म. २. १४

उनके अभीष्ट देव शचीनन्दन हैं, इसको श्रीअद्वैताचार्यने खूब समझ लिया। सारी बातें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीअद्वैत प्रभुने खोलकर बोल दी, परन्तु सारी बातें साथ ही साथ छिपा ली। वे सबके अन्तमें हँसकर बोले, "निमाई पण्डित मिश्रपुरन्दरके पुत्र हैं, नीलाम्बर चक्रवर्तीके दौहित्र हैं, शास्त्रोंका अध्ययन किये हैं, उनको कृष्णभक्ति न होगी तो किसको होगी ?" इस बार श्रीअद्वैत प्रभुने अपने मनके भावको व्यक्त करके फिर छिपानेकी चेष्टा की। उपस्थित वैषाववृन्दने आनन्दसे जय-जयकार किया, श्रीअद्वैत प्रभुकी बातका यथार्थ मर्म कोई न समझ सका। शान्तिपुरनाथने आनन्दसे हुङ्कार करते हुए अन्तिम बात कही।

यदि सत्य वस्तु हय तबे एइ खाने।
सभे आसिबेन एइ वामनार स्थाने ॥

चै. भा. म. २. २८

प्रभु जब शचीगर्भसे नदियामें उदय हुए. उस समय श्रीअद्वैत प्रभु शान्तिपुरमें निवास करते थे। प्रभुके आविर्भावका शुभ समाचार सुनकर वे प्रेमानन्दमें हुङ्कार करके कृष्ण कीर्तन करने लगे। अद्वैत गृहिणी सीता ठकुरानी शचीनन्दनका दर्शन करने नदियामें आयीं। परन्तु श्रीअद्वैत प्रभु उस समय नहीं आये। सीता ठकुरानीके पूछनेपर उन्होंने कहा था, "तुमको उन्होंने कृपा करके बुलाया है तुम जाओ। हमारे प्रभु यहाँ आकर मुझको दर्शन दे जायेंगे। भक्त-वत्सल प्रभु भक्तकी मनोबाञ्छा पूर्ण करनेके लिए सदैव तत्पर रहते हैं। अभिमानी भक्तका मान और अभिमान सूचक प्रियवाक्य श्रीभगवान्‌के सामने विशेष आदरणीय होता है। श्रीअद्वैत प्रभु भक्तावतार हैं। अभिमानी भक्तकी बातका मर्म समझनेकी शक्ति हमारे भीतर नहीं है। भक्तके भगवान् भक्तकी बातका मर्म समझते हैं, क्षुद्र जीवशक्ति भक्तकी महिमाका मर्म समझनेमें असमर्थ है। श्रीअद्वैताचार्य श्रीगौराङ्ग प्रभुके अभिमान मर्मी भक्त थे। उनके इस अभिमान-मिश्रित दास्य-भावमें श्रीगौर भगवान् मुग्ध थे।

हरिदास ठाकुर

हरिदास ठाकुर श्रीअद्वैत प्रभुके साथ शान्तिपुरमें रहते थे। शान्तिपुरके पास फुलिया पहाड़की गुफामें रहकर वे भजन करते थे। दिनरात उच्च नाम-सङ्कीर्तन उनके भजनका प्रधान अङ्ग था। वे लाख नाम लिये बिना जल स्पर्श नहीं करते थे। श्रीगौराङ्ग अवतारमें प्रभुने नाम-गाह त्यका प्रचार कराया था। नाम प्रचार कार्यमें वे श्रीनित्यानन्द प्रभुके प्रधान सहायक थे। उनके पवित्र नामका स्मरण करनेपर श्रीगौर भगवान्‌के नाममें रुचि होती है, सारे पाप दूर होते हैं। श्रीगौराङ्ग लीलामें वे ब्रह्माके अवतार थे। इस कारण उनको महाजनगणने 'ब्रह्म हरिदास' आख्या दी थी। हरिदास ठाकुर ब्राह्मण सन्तान थे। परन्तु शैशवसे ही यवनके द्वारा पालन-पोषण होनेके कारण लोगोंमें यवन प्रसिद्ध थे। कुछ लोग उनको 'यवन हरिदास' कहकर पुकारते थे।

यशोहर जिलाके बूढ़न गाँवमें इस सिद्ध महापुरुष-का जन्म हुआ था। इनकी माताका नाम गौरीदेवी और पिताका नाम सुमति था। ठाकुर हरिदासके माता-पिता अत्यन्त धर्म-परायण थे। दिन-रात नाम कीर्तन रसमें दोनों मत्त रहते थे, ठाकुर हरिदास अपने पिताके वृद्धावस्थाके पुत्र थे। जब वे छः महीनेके हुए, तभी उनके पिताका देहान्त हो गया। पति-प्राणा गौरीदेवी पतिके वियोगको न सह सकनेके कारण उनकी सहगामिनी हो गयी। वहाँ उनका आत्मीय स्वजन कोई न था। बूढ़न गाँवमें उनके पड़ोसी एक धार्मिक मुसलमान थे। वे और उनकी दयालु स्त्रीने इस मातृपितृ-विहीन अनाथ बालकका प्रतिपालन किया था। परन्तु यवनान्न उनके मुँहमें प्रवेश नहीं किया। श्रीईशान नागरने अपने श्रीअद्वैत प्रकाश श्रीग्रन्थमें यह बात स्पष्ट लिखी हैं—

यवन पालित शिशु दुग्ध मात्र खाय।
दिने दिने वृद्धि हय कोटि इन्दु प्राय ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ब्रह्म हरिदास लोके जातिस्मर कय ।
पूरब संस्कारे सदा हरिनाम लय ॥

ये यवन-पालित अपूर्व शिशु अति शैशवसे ही हरिभक्ति-परायण थे। वयोवृद्धिके साथ ही वे एक सत्यनिष्ठ विशिष्ट साधु भक्तके रूपमें प्रसिद्ध हुए। साधारण लोग जानते थे कि हरिदास ठाकुर यवन वंशके बालक हैं। यवन होकर हिन्दूधर्म ग्रहण किया है, हिन्दू आचारमें हिन्दू देवताकी पूजा करते हैं, हरिनाम कीर्तन करते हैं। ये सारी बातें तत्कालीन यवनराज मुलुकपतिके कानोंमें पहुँची। उन्होंने हरिदास ठाकुरको पकड़ लानेका आदेश दिया। दुष्ट लोगोंकी कुमन्त्रणासे तथा काजीके आदेशसे हरिदास ठाकुर राजदरबारमें लाये गये। उनको पहले यवन-राजने मीठी मीठी बातें कहकर अपने धर्ममें लानेकी चेष्टाकी। पर वह इसमें कदापि सफल न हुए। तब काजीके आदेशसे उनको बाइश बाजारमें बेंत लगानेका आदेश हुआ।

राजज्ञा सुनकर हरिदास ठाकुरने निर्भय होकर उत्तर दिया—"मेरा देह खण्ड-खण्ड कर दिया जाय और प्राण भी चले जायँ, तो भी मैं मुँहसे हरिनाम नहीं छोड़ सकता।"

दुष्ट राजदूतगण हरिदास ठाकुरको लेकर बाजार-बाजारमें बेंत मारकर पीड़ित करने लगे। वे मार खा रहे हैं और मुखसे हरिनाम बोल रहे हैं, उनके अङ्ग भीषण बेंतकी मारसे क्षत विक्षत हो रहे हैं, उनका शरीर खूनसे लतपथ है, इससे उनको कुछ भी दुःख नहीं है, उधर दृष्टि भी नहीं डाल रहे हैं। उनका प्रसन्न वदन है, मुखमें हँसी है। उनके वदनसे केवल मधुर हरिनाम ध्वनि निकल रही है। उनको दैहिक क्लेशकी अनुभूति एक बारगी नहीं है। उनके मनमें केवल एक ही दुःखकी तरङ्ग उठ रही है। हरिदास ठाकुर मन ही मन सोच रहे हैं, "क्या ये दुष्ट यवन लोग पापी हैं? मैंने तो इनका कोई अपराध नहीं किया। फिर क्यों ये योग मुझपर इस प्रकार निर्दयता पूर्वक प्रहार कर रहे हैं? हा भगवान्! इनकी क्या गति होगी? हा कृष्ण! ये मेरे ऊपर अत्याचार कर रहे हैं, इस कारण इनका कोई अपराध न लेना।

हरिदास ठाकुरकी यह अपूर्व प्रार्थना केवल उनके मनकी बात न थी। उन्होंने सबके सामने श्रीभगवान्‌को उद्देश्य करके ऊर्ध्वमुख उच्च स्वरसे यह अपूर्व प्रार्थना की। उपस्थित जन समूह तथा जो उनको मार रहे थे, वे लोग भी इस अद्भुत प्रार्थनाको सुनकर कुछ देर स्तम्भित-से होकर उनके प्रसन्न और ज्योतिर्मय मुखकी ओर देखने लगे। बेंत लगाना बन्दके करके वे जड़वत् काठकी पुतलीके समान खड़े हो गये। वे थे महापाखण्डी विधर्मी यवन। उनको क्या पता कि ये भक्तिके महात्मा हैं, इनको श्रीभगवान्‌के नामका बल है। उन्होंने सोचा कि हरिदास ठाकुर एक सिद्ध पीर है। ये मर नहीं सकते। राजाका आदेश था कि इनका प्राणबध करो। परन्तु यह काम नहीं हुआ। राजाकी आज्ञा पालन नहीं करनेसे उनको प्राणदण्ड मिलेगा। इससे उनके मनमें बड़ा भय हुआ, तब उन्होंने ठाकुर हरिदासको विनयपूर्वक कहा—"हे हरिदासजी! आपके कारण हम लोगोंका सर्वनाश हो जायगा। इतने प्रहार करनेपर भी आपके प्राण नहीं निकल रहे हैं, तब काजी हम लोगोंके प्राण लिये बिना नहीं छोड़ेगा।"

हरिदास ठाकुर प्रेमानन्दमें हरिनाम ले रहे हैं। वे अत्याचारियोंके मुखसे यह बात सुनकर कुछ हँसे। 'जीवे दया नामे रुचि' हरिदास ठाकुरके भजनका मूलमन्त्र था। अत्याचारी यवनोंका उनके कारण प्राण जायगा, इस आशङ्कासे वैष्णव साधुका कोमल हृदय व्यथित हो उठा। तब उन्होंने हँसकर कहा, "मेरे बच जानेपर यदि तुम लोगोंका बुरा होता है, तो देखो, मैं तुम्हारे सामने ही मरता हूँ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इतना कहकर वे ध्यानानन्दमें मग्न हो गये। वे प्रेमावेशमें निष्पन्द और निश्चेष्ट हो गये। अत्याचारी यवनोंने सोचा कि, इनका प्राण निकल गया है। सबने मिलकर हरिदास ठाकुरके निश्चेष्ट शरीरको उठाया और यवन राजाके पास पहुँचे।

मुलुक पतिने ठाकुर हरिदासके समाधिस्थ निष्पन्द देहको कब्रमें गाड़ देनेका आदेश दिया। परन्तु उसके प्रधान-मन्त्री गोराई काजीने उसको समझाकर कहा, "मुसलमान होकर इस आदमीने हिन्दू-धर्म ग्रहणकर अतिशय नीच कर्म किया है। इसको माटी देनेसे इसकी सद्गति होगी। नीच पापकर्मका फल तब कैसे मिलेगा? इसको गङ्गामें फेंक दिया जाय, इससे इसकी सद्गति न होगी, और बादमें दुःख पायेगा।" यवनराजने मन्त्रीकी राय सुनकर हरिदास ठाकुरके समाधिस्थ देहको गङ्गाजलमें फेंक देनेका आदेश दिया। उसकी आज्ञा तुरन्त पालन की गयी। लोगोंने समझा कि हरिदास ठाकुरने इसी प्रकार देहत्याग किया।

कृष्णभक्ति-प्रदायिनी सुरसरिके परम पवित्र सलिल-स्रोतमें बहते-बहते ध्यानानन्दमें मग्न हरिदास ठाकुर कुलिया नगरमें आ उपस्थित हुए। उनकी यहाँ समाधि भङ्ग हुई। उनको बाह्य ज्ञान हुआ, और वे हरिनाम कीर्तन करते हुए किनारे निकले। नामानन्दमें विह्वल होकर वे उद्धत नृत्य करते-करते कुलिया नगरमें प्रविष्ट हुए। अत्याचारी यवनोंने यह अपनी आँखों देखा, और मुलुकपतिने भी ठाकुर हरिदासके पुनर्जीवन प्राप्त करनेकी बात सुनी। कौतूहलवश होकर वह स्वयं कुलिया ग्राममें हरिदास ठाकुरको देखने आया। परम ज्योतिर्मय प्रसन्न-मूर्त्ति हरिदास ठाकुरको देखकर यवनराजने उनको पीर समझकर बहुत सम्मान करके पहले अपराधके लिए सबके सामने हाथ जोड़कर क्षमा प्रार्थना की।

हरिदास ठाकुरने परम आदरपूर्वक यवन राजाका सत्कार करके उनके साथ तत्त्वकी बातें करने लगे। साधुकी कृपासे यवनराज मुलुकपतिको दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ। वे हरिदास ठाकुरके शरणापन्न हुए। उनके अनुचर लोग भी इस वैष्णव साधुकी कृपासे शान्तशिष्ट सज्जनके समान रहने लगे। इस प्रकार मुसलमान राज्यमें ठाकुर हरिदास निरापद और ससम्भ्रम श्रीहरि-भजन करने लगे। श्रीभगवानके नामका जय हुआ।

श्रीगौराङ्गावतारमें श्रीभगवान्‌ने एक-एक भक्तके द्वारा एक-एक भजनाङ्गकी महिमाका प्रचार किया था। हरिदास ठाकुरके द्वारा उन्होंने नाम माहात्म्यका प्रचार कराया। यह नाम माहात्म्य कैसा है, श्रीभगवान्‌के नाममें कहाँ तक बल है, यह ठाकुर हरिदासने स्वयं आचरण करके कलिके जीवोंको दिखला दिया है। श्रीभगवान्‌के नामका कीर्तन करनेवाले भक्तके मनमें कितना बल होता है, उनके हृदयमें कितनी उदारता होती है, वह ठाकुर हरिदासके आलौकिक परम पवित्र चरित्रसे पूर्णतः अभिव्यक्त होता है। मधुर हरिनामगान ठाकुर हरिदासकी अतिप्रिय वस्तु थी, उन्होंने दर्पके साथ यवनराजासे कहा था—

खण्ड खण्ड हय यदि जाय देह प्राण।
तभो आमि वदने ना छाड़ि हरिनाम॥

चै० भा० आ० ११. ९१

हरिदास ठाकुरकी महिमा वर्णनातीत है। पहले कहा जा चुका है कि श्रीगौराङ्ग लीलाके नाम माहात्म्य कीर्तनमें ये महापुरुष प्रभुके प्रधान सहायक थे। श्रीचैतन्य भागवतकार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने ब्रह्म हरिदास ठाकुरकी महिमा कीर्तन करते हुए लिखा है—

सर्वभूत वत्सल सभार उपकारी।
ईश्वरेर सङ्गे प्रतिजन्मे अवतारी॥
तिलार्द्ध उहान सङ्ग जे जीवेर हय।
से अवश्य पाय कृष्णपादपद्माश्रय॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरिदास स्पर्शे बाञ्छा करे देवगण।
गङ्गाओ बाञ्छेन हरिदासेर मज्जन॥
स्पर्शेर कि दाय? देखिलेओ हरिदास।
छिण्डे सर्वजीवेर अनादि कर्मपाश॥
हरिदास आश्रय करिबे जेइ जन।
ताने देखिलेओ खण्डे संसार बन्धन॥
शत वर्षे शत मुखे उहान महिमा।
कहिलेओ नाहिं पारि करिबारे सीमा॥
सकृत जे बलिबेक हरिदास नाम।
सत्य सत्य सेइ जाइबेक कृष्णधाम॥

चै० भा० आ० ११. २३०, २३२, २३६-२४२, २४४

नीलाचलमें हमारे प्रभुने हरिदास ठाकुरके मृत देहको कन्धेपर लेकर प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर नृत्य किया था। कविराज गोस्वामीने लिखा है—

नमामि हरिदासं तं चैतन्यं तं च तत्प्रभुम्।
संस्थितामपि यन्मूर्त्तिं स्कन्धे कृत्वा ननर्त्त यः॥

चै० च० अं ११. १

ठाकुर हरिदासका अति अद्भुत परम पवित्र चरित्रसुधा वर्णन करने या आस्वादन करानेका यहाँ स्थान नहीं है। प्रसङ्गवश आत्मशोधनके लिए यत्किञ्चित उनकी महिमा कीर्तन करके मैं धन्य हो गया।

नदियामें संकीर्तनके आरम्भमें प्रभुके आत्म-प्रकाशके समय ये महापुरुष श्रीअद्वैत प्रभुके साथ नवद्वीपमें आये थे। गौर-आना-गोसाईंके गौर-आना कार्यके प्रधान सहायक थे ठाकुर हरिदास। उनके हुङ्कार गर्जन और हरिदास ठाकुरके उच्च हरिनाम संकीर्तन यज्ञके अनुष्ठानमें गोलोकके सुखैश्वर्यको छोड़कर श्रीगौर भगवान्को नदियामें शचीके गर्भमें अवतीर्ण होना पड़ा। श्रीअद्वैत प्रभु और ठाकुर हरिदास तत्त्वमें महाविष्णु और ब्रह्मा थे। प्रभुने जब नदियामें आत्मप्रकाश किया, तो पहले इन्हीं दोनों महापुरुषोंने उनको पहचाना। प्रभुके आदेशसे ये लोग जीवोद्धारके कार्य क्षेत्रमें उतर पड़े। पश्चात् श्रीनित्यानन्द प्रभुने आकर इनके साथ योगदान किया। पूज्यपाद हरिदास ठाकुरकी पुण्य-चरित-कहानी नाना प्रकारसे नाना स्थानोंमें वर्णित है। श्रीग्रन्थमें यथास्थान प्रसङ्ग क्रमसे इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया जायगा।

वेश्या-उद्धार

यहाँ प्रसङ्गवश हरिदास ठाकुरकी वेश्या-उद्धार लीला-कथा वर्णन करनेका लोभ मैं संवरण न कर सका। कृपालु पाठक क्षमा करेंगे।

हरिदास ठाकुर गृहत्याग करके जिस समय बेनापोलके वनमें निर्जन कुटीमें वास करते थे, उसी समय यह लीला अभिनीत हुई। उनकी पर्णकुटीके चारों ओर तुलसी कानन था। वे उसी कुटीमें बैठकर तीन लाख नाम जप और कीर्तन करते थे। ब्राह्मणके घर भिक्षा करके दिन काटते थे। उस देशमें सब लोग उनका सम्मान करते थे। उस देशके जमीदार रामचन्द्र खाँ एक वैष्णव-द्वेषी चरम अधार्मिक आदमी थे। ठाकुर हरिदासको सब लोग मानते थे, यह रामचन्द्र खाँको सह्य नहीं होता था। वे नाना प्रकारसे और उपायोंसे ठाकुर हरिदासका मान घटानेकी चेष्टा करने लगे। परन्तु इस परम वैष्णव साधु पुरुषके किसी प्रकारके छिद्रान्वेषणमें समर्थ न हुए, और अन्तमें एक परम सुन्दरी वेश्याको बहुत अर्थ लोभ दिखाकर ठाकुर हरिदासकी कुटीमें भेजा। उन्होंने उस वेश्याको उनका वैराग्य-धर्म नाश करनेको कह दिया।

वह वेश्या रमणी बड़े आनन्दसे सहमत हो गयी, रामचन्द्र खाँने पुनः उससे कहा—"मेरे सेवक तुम्हारे साथ रहेंगे और तुम्हारे साथ उसको पकड़कर ले आयँगे।

अब वह सुन्दरी वाराङ्गना नाना प्रकारसे वेषभूषा सजाकर एक दिन रातके समय ठाकुर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरिदासकी कुटीमें जा पहुँची। वहाँ जाकर पहले तुलसीको नमस्कार, पश्चात् हरिदास ठाकुरको दण्डवत् प्रणाम करके नाना प्रकारकी भावभङ्गी दिखलाकर गात्रवस्त्र उन्मोचन कर कुटीके द्वारपर बैठ गयी। ठाकुर हरिदास उस समय संख्या नाम-जपमें मग्न थे। कुछ देरके बाद जब दोनोंकी आँखें चार हुईं तो वे वाराङ्गना मधुर वचनसे कटाक्षपात करते हुए ठाकुर हरिदाससे निर्लज्जता पूर्वक बोली—"ठाकुर! तुम परम सुन्दर हो। तुम्हारा नवयौवन है। तुमको देखकर कौन रमणी मनको वशमें रख सकती है। तुम्हारे संगके लिए मेरा मन लुब्ध हो रहा है। तुम्हारे बिना मेरे प्राण निकल रहे हैं।"

ठाकुर हरिदासने परम गम्भीर भावसे उत्तर दिया—"जब तक मेरा निर्धारित संख्याका नाम-जप पूर्ण न हो जाय तबतक तुम प्रतीक्षा करो। इसके बाद तुम जो कहो वह करूँगा।"

इतना कहकर वह प्रेमानन्दमें नाम संकीर्तन करने लगे। और वह सौभाग्यवती वाराङ्गना उनकी कुटीके द्वारपर बैठकर नामसंकीर्तन सुनने लगी। इसी प्रकार सारी रात बीत गयी। प्रातःकाल हुआ। यह देखकर वह वेश्या रमणी दुःखित होकर वहाँसे चली गयी। उसने जाकर जमीदार रामचन्द्र खाँसे कहा—"आज तो उसने बचनसे मेरा अंगीकार किया है, कल उससे मेरा संगम होगा।"

रामचन्द्र खाँने कहा—'अच्छा'। उसके दूसरे दिन रातके समय पुनः वह वेश्या हरिदास ठाकुरकी कुटीपर गयी। ठाकुर हरिदास उसको आश्वासन देकर परम नम्रतापूर्वक बोले—"कल तुमको कष्ट हुआ उसको क्षमा करना। तुम बैठकर नाम सुनो। नामकी संख्यापूर्ण होनेपर मैं तुमको अंगीकार करूँगा।"

तब वह वेश्या तुलसीको और ठाकुर हरिदासको नमस्कार करके कुटीके द्वारपर बैठकर हरिनाम संकीर्तन सुनने लगी, और बीच-बीचमें उसके मुखसे 'हरि-हरि' ध्वनि निकलने लगी।

इसी प्रकार उस दिन भी रात बीतते देखकर उसे वेश्या रमणीने कुछ अधैर्यभाव दिखलाया। यह देखकर ठाकुर हरिदासने उसको नम्रतापूर्वक कहा—

कोटि नाम ग्रहण यज्ञ करि एक मासे।
एइ दीक्षा करियाछि, हैल आसि शेषे॥
'आजि समाप्त ह बे' हेन ज्ञान छिल।
समस्त रात्रि निल नाम, समाप्त करिते नारिल॥
कालि समाप्त हबे, तबे हबे व्रतभङ्ग।
स्वच्छन्दे तोमार सङ्गे हइबेक सङ्ग॥
चै० च० अं ३. ११६-११८

वाराङ्गना यह बात सुनकर दुःखित मनसे उस दिन भी प्रातःकाल चली गयी, और उस दिनका समाचार रामचन्द्र खाँको दिया। रामचन्द्र खाँने कहा—"कल फिर जाना, शिकारको मत छोड़ना।" दूसरे दिन सन्ध्याकालमें पुनः वह रमणी यथाविधि वेषभूषा करके ठाकुर हरिदासकी कुटीपर गयी। उस दिन भी यथाविधि तुलसीको नमस्कार करके कुटीके द्वारपर नामसंकीर्तन सुनने बैठी। ठाकुर हरिदासने उसको बहुत आदर सत्कार पूर्वक कहा, "आज मेरा संख्या नाम व्रतपूर्ण हो जायगा। तुम्हारी अभिलाषा भी पूर्ण हो जायगी।

नाम सङ्कीर्तन करते-करते पूर्व दिनके समान रात बीत गयी, प्रातःकाल हो गया। उस दिन उस सौभाग्यवती वाराङ्गनाका मन फिर गया। उसके मनमें एक दूसरा भाव उदय हुआ। उसने सोचा, "मैं कुपरामर्शमें पड़कर क्या कर रही हूँ? इस साधु वैष्णवके अधःपतन साधनसे मेरा क्या होगा? मैं अधम, पतित, स्त्री जाति हूँ। यह महापुरुष पतित पावन और अगतिके गति हैं। इनके चरणोंमें शरणापन्न होनेपर मेरा उद्धार हो जायगा, मेरे सारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाप नष्ट हो जायँगे।" इस प्रकार पाश्चात्तापकी अग्निमें दग्ध होकर उस रमणीने तब जमीदार रामचन्द्र खाँके कुपरामर्शकी सारी बातका निष्कपट होकर ठाकुर हरिदासके चरणोंमें हाथ जोड़कर निवेदन किया। वह रोते-रोते बोली—"वेश्या होकर मैंने बहुत पाप किये हैं, आप कृपा करके मेरा उद्धार कीजिये।"

सर्वज्ञ हरिदास ठाकुरने मुस्कराकर उत्तर दिया—"मुझे इन सब बातोंका पता है। वह अज्ञ है। मैं उसका कोई दुःख नहीं मानता। मैं तो उसी दिन यह स्थान छोड़कर चला गया होता; किन्तु तुम्हारे लिए ही यहाँ तीन दिन ठहरा रहा।"

हरिदास ठाकुरकी अन्तिम बातका कुछ निगूढ़ रहस्य है। उन्होंने वेश्याको सम्बोधन करके कहा, "तुम्हारे लिए मैं यहाँ तीन दिन रहा।" इस पतिता स्त्रीका उद्धार करना ही उनका उद्देश्य था। अन्यतम उद्देश्य था इस पतिताके उद्धार साधनके द्वारा जगतमें हरिनाम सङ्कीर्तनके माहात्म्यका प्रचार करना। इस पतितोद्धार कार्यमें तीन दिन लगे। इस पतिताको महापापके लिए शास्त्र-विधिके अनुसार प्रायश्चित्त करनेका कोई प्रयोजन नहीं हुआ। केवल हरिनाम-संकीर्तन सुनकर इस पतिता स्त्रींके सारे पाप ध्वंस हो गये। नवधा-भक्तिका प्रथम अङ्ग है 'श्रवण'। उन्होंने इस कार्यके द्वारा जगतको समझाया कि अति अल्प समयमें भी नवधाभक्तिके किसी भी अङ्गके साधनके द्वारा चित्त शुद्ध होता है। जैसे अग्नि रुईके ढेरको क्षणभरमें भस्मीभूतकर देती है, उसी प्रकार नवधा-भक्तिके किसी भी अङ्गके साधनसे पुञ्जीभूत पापराशि अति अल्पसमयमें समूल नष्ट हो जाती है। इसके साथ-साथ साधुसङ्गकी महिमाकी बात भी ध्यानमें रखनी होगी। प्रकृत साधुवैष्णवके सङ्गकी बात तो दूर रहे, उनके तो दर्शन मात्रसे सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यह शास्त्रप्रणाम है। ठाकुर हरिदासकी शुभ-दृष्टिसे, तथा शुभ-इच्छासे यह पतितोद्धार कार्य सुसम्पन्न हुआ। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। साधु-सङ्गका फल ही यही है। साधुसङ्गके गुणोंका स्मरण करके साधु-वैष्णवको उपलक्ष्य करके ठाकुर नरोत्तमदासने यथार्थ ही कहा है—

गङ्गार परश हइले पश्चात् पावन।
दर्शने पवित्र कर ए तोमार गुण॥

अतएव साधुरङ्ग ही इस वेश्या-रमणीके चित्त परिवर्तनका मुख्य हेतु है।

यह पतिता नारी अब साधुसङ्ग और नाम-संकीर्तनके श्रवणके फलस्वरूप निजकृत पापोंके लिए पश्चात्ताप करने लगी। पश्चात्तापकी अग्निमें उसका हृदय धूधू करके जल उठा। तब वह वेश्या रमणी ठाकुर हरिदासके चरणोंमें जा गिरी। गलेमें वस्त्र डालकर रोते-रोते निवेदन किया, "मैं महापापी, पतिता हूँ, मेरे ऊपर तुम दया करके मन्त्रोपदेश दो, और बता दो कि अब मेरा क्या कर्त्तव्य है? जिससे मेरी सद्गति हो।"

ठाकुर हरिदासने मधुर वचनोंमें उत्तर दिया—"तुम अपना सारा द्रव्य ब्राह्मणोंको दान कर दो, इस कुटियामें आकर विश्राम करो, निरन्तर नाम जप करो और तुलसीकी सेवा करो। इससे तुमको शीघ्र श्रीकृष्णचरणकी प्राप्ति होगी।" इतनी बात कहकर उस पतिता वेश्या रमणीको हरिनाम महामन्त्रका उपदेश देकर उन्होंने उस स्थानसे 'हरि हरि' बोलते-बोलते प्रस्थान किया।

उस वेश्या रमणीने गुरु-आज्ञाका पालन करते हुए अपनी सारी सम्पत्ति ब्राह्मणोंको देदी। मस्तक मुडाकर एक वस्त्र अपने लिए रखकर उस कुटियामें रहने लगी और तीन लाख नामोंका प्रतिदिन जप करने लगी। तुलसी सेवा, व्रत-उपवास, इन्द्रिय-दमनसे उसमें प्रेमका प्रकाश हुआ प्रसिद्ध वैष्णव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हो गयी। बड़े-बड़े लोग उसके दर्शनको आने लगे। ठाकुर हरिदासकी कृपासे वेश्याका चरित्र देखकर लोग चमत्कृत होने लगे।

ठाकुर हरिदासकी महिमाकी बात और क्या कहूँ? यही वेश्या-उद्धार कहानी क्या उनकी महा महिमाका ज्वलन्त दृष्टान्त नहीं है?

केवल मात्र आत्म संशोधनके लिए इस सुबृहद् पुण्यचरित्र कहानीका कुछ अंश यहाँ विवृत हुआ है। ठाकुर हरिदासकी लीला अनन्त और अपार है।

वैष्णव-अपराधका फल

इस प्रसङ्गमें जमीदार रामचन्द्र खाँके पापके प्रायश्चित्तकी बात नहीं लिखनेसे किसीको ज्ञात नहीं होगा कि 'महान्-अपराधका फल क्या होता है?'

यह धनी-सन्तान सहज वैष्णवद्वेषी थे। ठाकुर हरिदासके चरणोंमें उन्होंने जो अपराध किया, यह उसके पापकी चरम सीमा थी। बहुत दिनोंका सञ्चित वैष्णव निन्दा एवं अपमान रूप अपराध या पापका फल फला। श्रीनित्यानन्द प्रभु जब श्रीमन्महाप्रभुके आदेशसे नीलाचलसे गौड़ देशमें आये थे तो पाखण्ड-दलन उनका एक कार्य था। प्रेम और नाम प्रचार, तथा पाखण्डी-दलन, ये दो कार्य लेकर वे गौड़ देशमें आये। सर्वज्ञ श्रीनिताई चाँद आकर पहले इसी महापाखण्डीके घरपर गये। उनके साथ कई आदमी थे। रामचन्द्र खाँ का चण्डी-मण्डप लोगोंसे भर गया। गृह-प्राङ्गणमें ठसाठस भीड़ लग गयी। रामचन्द्र खाँ घरके भीतर थे, उन्होंने भीतर से ही यह सब देखा। उनका वैष्णव-द्वेष अभीतक प्रबल था। उन्होंने लोगोंके द्वारा कहला भेजा कि, "यह घर गृहस्थका है, यहाँ स्थान सङ्कीर्ण है, आप लोग कई आदमी हैं, निकटमें एक ग्वालेकी बड़ी गोशाला है, वहीं आप लोग चलें।" श्रीनिताईचाँद दुर्गामण्डपके भीतर थे, यह बात सुनकर क्रोधित हो बाहर निकलकर उनने व्यङ्गपूर्वक कहा—"बात सत्य है, यह स्थान मेरे योग्य नहीं है, गोवध करनेवाले म्लेच्छोंके योग्य है।"

इतनी बात कहकर वे सदलबल वहाँसे उठकर चल दिये। उस ग्राममें वे रहे नहीं। इधर वैष्णवद्वेषी रामचन्द्र खाँने दुर्गामण्डपमें जहाँ श्रीनित्यानन्द प्रभुने आसन लगाया था, उस स्थानकी मिट्टी खुदवाकर आदमीसे फेंकवा दी। गोबर लगाकर उस स्थानको तथा उस घरके सारे प्राङ्गणको भली-भाति धुलवा दिया। तब भी उनका मन शुद्ध न हुआ। रामचन्द्र खाँ इतने बड़े वैष्णव-द्वेषी थे।

यह जमीदार महाशय अत्यन्त दुराचारी था। वह डकैती करके अर्थ सञ्चय करते था। तत्कालीन मुसलमान राजाकी मालगुजारी वह नहीं देता था। अतएव एक दिन राजाके वजीरने आकर उसके उसी दुर्गामण्डपमें डेरा जमाया वहाँपर अवध्यका वध करके माँस पकाया और खाया। रामचन्द्रके घर और ग्रामको लूटकर उजाड़ करके स्त्री-पुत्र सहित उसको बांधकर ले गया।

श्रीनित्यानन्द प्रभुका असम्मान करनेसे जमीदार रामचन्द्र खाँकी जो दुर्दशा हुई उसे आपने देखा। केवल उनका तथा उनके परिवारके लोगोंका ही नहीं, बल्कि उस गाँवके सभी निवासियोंकी दुर्गतिकी सीमा न रही। इसी कारण कविराज गोस्वामीने लिखा है—

महान्तेर अपमान जेइ ग्रामे देशे हय।
एक जनेर दोषे सब देश हय क्षय॥
चै० च० अं० ३ १५६

गोपाल चक्रवर्ती नामक एक धनी विप्रकुमारके साथ ठाकुर हरिदासका एक दिन 'नामाभाससे मुक्ति होती है'—इस विषयपर तर्क हुआ। ठाकुर हरिदासने शास्त्रविधिके अनुसार तर्क युक्ति द्वारा ब्राह्मणकुमारको समझा दिया कि नामाभाससे मुक्ति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होती है। परन्तु इससे ब्राह्मणकुमारकी मनस्तुष्टि नहीं हुई। उन्होंने सबके सामने उनको अपमान-सूचक बात कह दी। उसके फलस्वरूप तीन दिनके भीतर उस दम्भी विप्रकुमारको कुष्टरोग हो गया, उसकी नाक कटकर गिर गयी।

ठाकुर हरिदासने विप्रकुमारको कोई अभिशाप नहीं दिया था तो भी उसकी यह दुर्दशा हुई। इसका क्या कारण था—

भक्तेर स्वभाव—अज्ञेर दोष क्षमा करे।
कृष्णेर स्वभाव-भक्त निन्दा सहिते न पारे॥
चै. च. अं. ३.२००

अतएव साधु-वैष्णव और महत्-जनका अपमान तो दूर रहा, उनके सम्बन्धमें अमर्यादासूचक बात भी नहीं सुननी चाहिये।

श्रीचैतन्यभागवतमें लिखा है—

जे सभाय वैष्णवेर निन्दा मात्र हय।
सर्व धर्म्म थाकिलेओ तार हय क्षय॥
चै. भा. म. १३.३६

ठाकुर हरिदासके सम्बन्धमें और एक बात कहकर यह प्रसङ्ग समाप्त किया जायगा। श्रीमन्महाप्रभुके आविर्भावके पूर्व ठाकुर हरिदास जब शान्तिपुरमें आये तो वे भी अद्वैताचार्य गोसाईंसे मिले। शान्तिपुरमें गङ्गाके किनारे निर्जन स्थानमें एक गुफा बनाकर वे उच्च नाम-संकीर्तन-यज्ञमें श्रीहरिका आवाहन करने लगे।

इधर गङ्गाजल और तुलसी लेकर अद्वैताचार्य उसी गङ्गातटपर बैठकर उसी एक उद्देश्यसे श्रीकृष्ण-भगवान्‌की पूजा, आराधना और आवाहन करने लगे। इसी कारण दोनोंके बीच परम प्रीतिका सम्बन्ध था; एकत्र होनेपर दोनोंमें यही एक बात, यही एक प्रतिज्ञा होती थी।

ठाकुर हरिदास नित्य अद्वैताचार्यके घर प्रसाद पाते थे। एक दिन एक साथ प्रसाद पानेके लिए बैठे, तब श्रीहरिदास ठाकुरने श्रीअद्वैतप्रभुसे दैन्यपूर्वक निवेदन किया—

—"**गोसाञि करो निवेदन।**
मोरे प्रत्यह अन्न देह कोन् प्रयोजन॥
महा-महा विप्र हेथा कुलीन-समाज।
नीचे आदर कर, ना वासह लाज॥
अलौकिक आचार तोमार कहिते पाइ भय।
सेइ कृपा करिबे, जाते मोर रक्षा हय॥
चै. च. अं. ३.२०५-२०७

यह बात सुनकर श्रीअद्वैताचार्यने हँसते-हँसते कहा—

"**हरिदास! तुमि ना करिह भय।**
सेइ आचरिब जेइ शास्त्रमत हय॥
चै. च. अं. ३.२०८

वे फिर बोले—

तुमि खाइले हय कोटि ब्राह्मण-भोजन।
चै. च. अं. ३.२०९

एक दिन उन्होंने सबके सामने श्राद्धपात्र लेकर हरिदास ठाकुरको भोजन करनेके लिए दिया। शान्तिपुरका कुलीन ब्राह्मण-समाजने इससे महाक्रुद्ध होकर शान्तिपुरनाथको समाज-च्युत कर दिया। किन्तु अद्वैतप्रभुके ऊपर इसका तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा।

अब देखिये और सोचिये, हरिदास ठाकुरकी कैसी महिमा है? साधपूर्वक श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

हरिदास स्पर्श बाञ्छा करे देवगण।
गङ्गाओ वाञ्छेन हरिदासेर मज्जन॥
स्पर्शेर कि दाय, देखिलेइ हरिदास।
छिण्डे सर्वजीवेर अनादि कर्म्म-फाँस॥
चै. भा. म. १०.१०८,१०९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरिदास आश्रय करिबे जेइ जन।
तारे देखिलेओ खण्डे संसार-बन्धन॥
शत-वर्षे शत-मुखे उहान महिमा।
कहिलेओ नाहि पारि करिवारे सीमा।
सकृत् जे बलिबेक हरिदास नाम।
सत्य-सत्य सेइ जाइबेक कृष्णधाम॥

चै. भा. आ. ११ २४१-२४२,२४४

हरिदास ठाकुरको लोग 'यवन' कहते थे। परन्तु 'अद्वैतप्रकाश' के अनुसार उन्होंने यवन-कुलमें जन्म नहीं लिया था। प्रभुकी इच्छासे उनको लोग नीच-जातिका जानते थे। उनका नीच कुलमें जन्म था, इस बातके प्रचारका एक गूढ़ मर्म था। श्रीचैतन्य-भागवतके यह बात स्पष्ट शब्दोंमें लिखी गयी है—यथा,

'जाति कुल सब निरर्थक' बुझाइते।
जन्मिलेन नीचकुले प्रभुर आज्ञाते॥
अधम कुलेते यदि विष्णुभक्त हय।
तथापि सेइ से पूज्य सर्वशास्त्रे कय॥
उत्तम कुलेते जन्मि, श्रीकृष्ण ना भजे।
कुले तार कि करिबे, नरकेते मजे॥
एइ सकल वेद-वाक्येर साक्षी देखाइते।
जन्मिलेन हरिदास अधम कुलेते॥

चै. भा. आ. ११.२३४-२३७

कृपालु गौरभक्त पाठकवृन्द! श्रीमन्महाप्रभुकी लीला-कथा-वर्णन करते-करते उनके सर्वप्रधान भक्त हरिदास ठाकुरके कथा-प्रसङ्गमें बहुत दूर चला आया हूँ। भगवत्कथा और भक्त-चारित-कथा दोनों ही ईशकथाके नामसे शास्त्रमें उल्लिखित हैं। लीलारस-भङ्ग-दोषसे दूषित समझकर जीवाधम ग्रन्थकारके अपराधपर ध्यान न देंगे। ठाकुर हरिदासकी महिमा कीर्तन करनेका सौभाग्य और सुयोग प्राप्त हुआ है, यह केवल गौर-भक्तोंकी कृपाका फल है। गौर-भक्तोंकी कृपा ही जीवाधम ग्रन्थकारका एकमात्र सम्बल है। श्रीमन्महाप्रभु स्वयं भक्तका आशीर्वाद सिरपर धारण करते थे। यथा, श्रीचैतन्यभागवतमें,

भक्त आशीर्वाद प्रभु शिरे करि लये।
भक्त आशीर्वादे जे कृष्णेते भक्ति हये॥

चै. भा. म. ११.७४

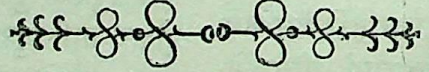

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अट्ठाइसवाँ अध्याय

श्रीअद्वैतप्रभु, गदाधरपण्डित और श्रीवासपण्डितके निकट प्रभुका आत्मप्रकाश और पूजा-ग्रहण

पाद्य, अर्घ्य, आचमनी लइ सेइ ठाञि।
चैतन्य-चरण-पूजे आचार्य्य गोसाञि॥

चै. भा. म. २.१३५

प्रभुका दैन्य-भाव

श्रीगौराङ्गप्रभु कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। नदियाके सङ्कीर्तनारम्भमें कुछ-कुछ आत्मप्रकाश करके चतुर-चूड़ामणि प्रभु उसे पुनः छिपानेकी चेष्टा करने लगे। इसी समय उन्होंने दास्य-भाव-प्रदर्शन करके भक्तवृन्दके सामने आत्मगोपन करनेका प्रयास किया। रास्तेमें वैष्णवको देखकर प्रभु दण्डवत् नमस्कार करते। श्रीवास आदि कृष्णभक्तगणको देखकर वे उनकी पदधूलि ग्रहण करते। वे अतिशय संकोचवश प्रभुका हाथ पकड़कर उनको रोकते थे और दिल खोलकर आशीर्वाद देते थे—

"तोमार हउक भक्ति कृष्णेर चरणे।
मुखे कृष्ण बोल, कृष्ण शुनह श्रवणे॥
कृष्ण भजिले से बाय! सब सत्य हय।
ना भजिलें कृष्ण, रूप विद्या किछु नय॥
कृष्ण से जगत पिता कृष्ण से जीवन।
दृढ़ करि भज बाप! कृष्णेर चरण॥"

चै. भा. म. २.३६-३८

आशीर्वचन सुनकर प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द होता है। हर्षित-मनसे वे श्रीमुखचन्द्रको ऊपर उठाकर सबके ऊपर शुभ दृष्टिपात करते हैं। उनके मुख-मण्डलका आर्तभाव, आर्तिपूर्ण नयनोंके छलछलाते आँसू देखकर श्रीवास आदि भक्तोंके मनमें बड़ा दुःख होता है। सर्वज्ञ प्रभु इसको समझते हैं। उनकी मनस्तुष्टिके लिए दीन भावसे उन्होंने उत्तर दिया—

'तोमरा से कर' सत्य करि आशीर्वाद।
तोमरा वा केने अन्य करिया प्रसाद?
तोमरा जे पार कृष्ण भजन दिबारे।
दासे सेविले से कृष्ण अनुग्रह करे॥
तोमरा जे आमारे शिखाओ विष्णुधर्म।
तेञि बुझि आमार उत्तम आछे कर्म्म॥
तोमा सभा सेविले कृष्ण भक्ति पाइ।

चै. भा. म. २.४०-४३

इस प्रकार बातें करके प्रभु उनके चरण पकड़ते हैं। गङ्गाके घाटपर प्रभु इसी प्रकारके लीला-रङ्ग करते हैं। श्रीगौर-भगवान्का यह दास्यभावका लीलारङ्ग बड़ा ही मधुर है। स्नान करते समय वे किसी वैष्णवका वस्त्र निचोड़ देते हैं, किसीको हाथसे उठाकर उसका वस्त्र देते हैं, किसीके हाथमें कुशा और गङ्गा-मृत्तिका उठाकर देते हैं, किसीके सङ्ग उसकी फूलकी डलिया उठाकर उसके घर पहुँचाते हैं। सब लोग यह देखकर बहुत संकुचित होते हैं कि इनकी ऐसी दैन्य दशा क्यों है? बहुतेरे 'क्या करते हो, क्या करते हो?' कहकर प्रभुको इस अनुचित दास्य-कर्मसे रोकते हैं। तथापि प्रभु ऐसा करते ही रहते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार प्रभु प्रतिदिन दास्यभावसे अपने भक्तोंकी सेवा करते हैं।

स्वयं वैष्णव-सेवा करके प्रभु सबको शिक्षा देते हैं। इस कार्यसे प्रभु सबको बतलाते हैं कि श्रीकृष्ण-भजनकी जिसकी अभिलाषा हो, उसे श्रीकृष्णके दासकी सेवा करनी चाहिये।

प्रभुका यह दास्यभाव और दैन्यभाव देखकर वैष्णवगण दिल खोलकर काय-मन-वचनसे निष्कपटभावसे उनको आशीर्वाद देते हैं—

भज कृष्ण, स्मर कृष्ण, शुन कृष्ण-नाम ॥
कृष्ण हओ सभार जीवन-धन-प्राण ॥
बोलह बोलह कृष्ण, हओ कृष्ण-दास।
तोमार हृदये हऊ कृष्णेर प्रकाश ॥
कृष्ण बइ आर नाहि स्फुरुक तोमार।
तोमा हैते दुःख जाऊ आमा सभाकार ॥
जे जे अज्ञ जन सब कीर्त्तनेरे हासे।
तोमा हैते ताहारा डुबूकु कृष्णरसे ॥
जेन तुमि शास्त्रे सब जिनिले संसार।
तेन कृष्ण भजि कर पाखण्डि-संहार ॥
तोमार प्रसादे जेन आमरा सकल।
सुखे कृष्ण गाइ नाचि हइया विह्वल ॥

चै. भा. म. २.५६-६४

यह कहकर वे लोग प्रभुके श्रीअङ्गपर हाथ फेरकर आशीर्वाद देते हैं। प्रभु सिर झुकाकर धीरतापूर्वक श्रवण करते हैं। इन सब बातोंसे उनके मनमें बड़ी लज्जा लगती है। इस कारण वे मुख खोलकर बातें नहीं कर पाते। नदियाके वृद्ध वैष्णवगण उनका ऐसा दैन्यभाव देखकर मुग्ध होते हैं और उनको छोड़कर कहीं नहीं जाते। प्रभुके श्रीमुखसे एक मधुमयी बात सुनकर उनका हृदय शीतल हो जाता है। वे पुनः स्नेहपूर्वक प्रभुसे कहते हैं—"नवद्वीपमें जितने अध्यापक हैं, कृष्णभक्तिका बखान करनेमें बगुलेके समान मौन-ध्यानास्थसे बने रहते हैं। बड़े-बड़े संन्यासी, तपस्वी, ज्ञानी, जितने भी नवद्वीपमें हैं, कोई कृष्णनाम-कीर्तनकी बात नहीं करता, बल्कि कृष्ण-कीर्तन करनेवालोंकी निन्दा करते हैं; कृष्ण-कीर्तन करने-वाले हम लोगोंको तो तृणके समान मानते हैं। श्रीकृष्ण-कीर्तनके अभावमें हम लोग तो सन्तापसे जले जा रहे हैं। अब भगवान् हम लोगोंपर प्रसन्न हुए हैं, जो तुमको इस मार्गमें लगा दिया है। तुम्हारेद्वारा इन पाखण्डियोंका दलन होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। तुम कृष्णनाम गाते हुए चिरंजीवी होओ, तुम्हारेद्वारा कृष्णके नाम और गुणोंका प्रचार हो!"

प्रभुने भक्तोंके आशीर्वादको सिरपर धारण किया। वैष्णवोंकी दुःख-कहानी सुनकर उनके मनमें बड़ी व्यथा हुई। भक्तके भगवान्‌ने भक्तोंके दुःख-निवारण करनेके लिए पूर्णरूपसे आत्मप्रकाश करनेकी इच्छा प्रकट की। परन्तु उसे वाणीके द्वारा व्यक्त नहीं किया। पहले अति विनम्र वचनोंसे दास्यभावमें कातर दृष्टिसे वैष्णववृन्दकी ओर देखकर उन्होंने कहा—"जो आप लोग चाहेंगे, वही निश्चय होगा। आपका आशीर्वाद मेरा सौभाग्य है। आप सुखपूर्वक श्रीकृष्ण-कीर्तन करें। पाखण्डी लोग हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। प्रभु अपने जनोंका दुःख सहन नहीं कर सकते। अपने भक्तोंके लिए वे सर्वत्र प्रकट हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आप श्रीकृष्णको अवश्य ले आयेंगे और नवद्वीपमें वैकुण्ठका-सा आनन्द होगा। मुझे अपना सेवक जानकर कभी भूलियेगा मत।" आप लोग सब कृष्णके कृपापात्र हैं।"

—इतना कहकर प्रभुने सबकी चरण-धूलि ग्रहण की। प्रच्छन्न अवतारकी इस प्रच्छन्न-लीलाका मर्म समझनेकी शक्ति हमारे भीतर नहीं है। भक्तके लिए वे अपना कर्म भी परित्याग करते हैं।

यहाँ भी प्रभुने वही किया। वे पूर्णब्रह्म, सनातन, षडैश्वर्यपूर्ण विश्व-ब्रह्माण्डके पति स्वयं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भगवान् हैं। समस्त जगत्के प्राणी उनकी पूजा करते हैं, उनकी चरण-रेणुके भिखारी बनकर शरणापन्न होते हैं। शिव-विरञ्चि उनका दासानुदास होनेपर अपनेको धन्य मानते हैं। श्रीभगवान्का कार्य है, अपने सिरजे हुए जीव-जगत्से पूजा ग्रहण करना तथा जगत्के जीवोंपर कृपा करना। इस समय वे अपने निजी कृत्यका परित्याग करके भक्तका दासत्व स्वीकार कर रहे हैं। भक्तके लिए श्रीभगवान् अकर्म करनेसे भी कुण्ठित नहीं होते। यहाँ अकर्मका कोई बुरा अर्थ न लगा ले। श्रीभगवान्का जो निजकर्म नहीं है, वही 'अकर्म' है। सेवककी चरण-धूलि लेकर अपने सिरपर धारण करना श्रीभगवान्का कर्म नहीं है। अतएव यह उनके लिए 'अकर्म' है। तब उन्होंने इसे किया क्यों? प्रभु भक्तरूप धारण करके नदियामें अवतीर्ण हुए हैं। वैष्णव-सेवा भक्तमात्रके लिए कर्तव्य है प्रभुने स्वयं आचरण करके कलिग्रस्त जीवको शिक्षा दी। जीवके मङ्गलके लिए उन्होंने यह दास्यभाव स्वीकार करके लोक-शिक्षा प्रदान की है।

शची-माँकी चिन्ता

नदियाके वैष्णवगण गङ्गा-स्नान करके प्रभुको आशीर्वाद देकर अपने घर गये। प्रभु भी मन-ही-मन मुस्कुराते हुए अपने घरकी ओर चले। परन्तु उनका बाह्य भाव अत्यन्त चिन्ताशील था। भक्तोंके दुःखसे वे कातर हो रहे थे। घरपर आकर पाखण्डियोंके प्रति उनको अत्यन्त क्रोध हुआ। प्रभुने क्रोधसे रुद्ररूप धारण किया। 'सबका संहार करूँगा'—कहकर बारम्बार हुँकार करने लगे। 'मैं वही हूँ, मैं वही हूँ'—कहकर बारम्बार गर्जने लगे। वे कभी हँसते, कभी रोते और कभी मूर्छित हो जाते थे। घरके भीतर प्रभुका यह अपूर्व काण्ड देखकर शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवी सशङ्कित होकर कुछ भी स्थिर न कर सकीं कि क्या करें? प्रभु प्रियाजीको देखकर मारनेके लिए तैयार हो गये। भयसे नवीना प्रियाजी लज्जित होकर भीतर छिप गयीं।

शचीमाता पुत्रकी ऐसी अवस्था देखकर मनमें बहुत दुःखित हुईं। आत्मीय स्वजन लोगोंसे अपने सोनेके निमाई-चाँदकी इस अकस्मात् पीड़ाकी बात कहने गयीं। उन्होंने पहले अपने बहनोई चन्द्रशेखर आचार्यरत्नके यहाँ जाकर रोते-रोते पुत्रके रोगका समाचार कहा—"विधाताने मेरा स्वामी ले लिया, मेरे पुत्रोंको भी ले लिया। अब केवल एक जन बचा है। उसकी कैसी मति है—कुछ समझमें नहीं आता। कभी हँसता है, कभी रोता है, कभी मूर्च्छित हो जाता है। अपने-आप कहता रहता है—'पाखण्डियोंका सिर फोड़ दूँगा।' आँख नहीं मिलाता, भूमिपर गिर पड़ता है, दाँत जकड़ जाते हैं, लोट-पोट होने लगता है, मुँहसे शब्द नहीं निकाल पाता।"

शचीमाताकी बात सुनकर आचार्यरत्न दौड़कर आये। बहुत-से पड़ोसीगण भी प्रभुके घर आये। सबने प्रभुको उस अवस्थामें देखकर यह निश्चय किया कि उनका वायुरोग पुनः प्रबल हो गया है। शचीमाताको किसी-किसीने चुपके-से कहा कि उनके पुत्रको बाँध रखना ठीक होगा। यह सुनकर स्नेहमयी शचीमाताके हृदयमें विषम व्यथा उत्पन्न हुई। पाखण्डीको देखकर प्रभु उसको मार भगानेके लिए तत्पर होते हैं। वे हँसकर भाग जाते हैं। वातग्रस्त निमाईपण्डितसे अब कोई डरता नहीं। शचीमाता पुत्रका हाथ पकड़कर रोकती हैं। जिसके मुँहमें जो आता है, वही बोलता है। शचीमाता लोगोंका मुँह कैसे बन्द करें? कोई कहता है—"पूर्वसञ्चित वायुरोग प्रबल हुआ है; इनके दोनों पैर बाँधकर रखो!" कोई कहता है—"तुम्हारा पुत्र पागल हो गया है; डाब (नारियल) का पानी पीनेको दो!" कोई कहता है—"यह उन्माद-रोग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छोटी-मोटी दवासे दूर न होगा। शिवाघृत प्रयोग करनेपर यह विषम उन्माद-रोग शमन होता है।" कोई कहता है—"इसके देह और मस्तकमें दिन-रात तैलपाक मालिश कराओ।"—इस प्रकार जिसके मनमें जो आता है, वह वही बोलता है।

जगन्माता शचीमाता परम शान्त-प्रकृति हैं; उनके उदार चरितमें कभी किसीने कोई दोष-दृष्टि नहीं की। जो जैसा कहता है, वे चुपचाप उसे सुन लेती हैं। परन्तु उनकी मनोव्यथाकी सीमा नहीं है। वे सर्वदा काय-मन-वचनसे गोविन्द-स्मरण करती हैं और जब-तब पुत्रकी मङ्गल-कामनासे देव-मन्दिरके द्वारपर सिर पटकती हैं।

श्रीवासपण्डितको मार्गमें देखकर शचीमाताने एक दिन रोते-रोते अपना दुःख कह सुनाया। श्रीवासपण्डित एक दिन प्रभुको देखनेके लिए उनके घरपर उपस्थित हुए। प्रभु उस समय श्रीतुलसीकी प्रदक्षिणा कर रहे थे। श्रीवासपण्डितको उन्होंने आदरपूर्वक नमस्कार किया। कृष्णभक्त वैष्णवको देखकर प्रभुका मन भक्ति-भावोद्दीप्त हो गया। सारे आठों सात्त्विक भाव उनके श्रीअङ्गमें दीख पड़े। प्रभु प्रेमानन्दमें मूर्छित हो गये। प्रभुके अश्रु, कम्प, पुलक आदि देखकर श्रीवासपण्डितने मन-ही-मन सोचा—

"महभक्तियोग ! बायु बोले कोन् जने ?"

चै. भा. म. २.१११

कुछ देरके बाद प्रभुको बाह्य ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने अपनेको सँभालकर मुस्कुराते हुए श्रीवासपण्डितसे कहा—

"लोग कहते हैं कि मुझे वायुरोग है, मुझे बाँधकर रखना चाहिये। पण्डितजी ! आप क्या समझते हैं ?"

श्रीवासपण्डित श्रीगौराङ्ग-लीलामें नारदके अवतार हैं, वे सर्वज्ञ हैं। प्रभुकी व्याधि समझनेमें उनको कोई कसर न रही। वे हँसकर प्रभुसे बोले—"बड़ी अच्छी वायु है। मुझे भी ऐसा वायु-रोग हो जाय तो मैं निहाल हो जाऊँ। तुम्हारे शरीरमें महाभक्तियोगके लक्षण हैं। तुमपर श्रीकृष्णका बड़ा अनुग्रह हुआ है।"

श्रीवासपण्डितके मुखसे 'भक्तियोग' और 'श्रीकृष्णका अनुग्रह'—ये दो बातें सुनकर आनन्दमें गद्‌गद होकर, प्रेममें भरकर प्रभुने उनको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर प्रभु श्रीवासपण्डितसे बोले—"और लोग तो वायुरोग बताते रहे हैं। आपने आश्वासन दिया। मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ। आप भी यदि वायुरोग बताते तो मैं गङ्गामें डूब मरता।"

भक्त-भगवान्‌का सम्बन्ध अति मधुमय है। श्रीगौर-भगवान्‌ने भक्तभावमें विभावित होकर भक्तके सामने मनकी बात कहकर हृदयको शीतल किया। प्रभुने मनमें बड़ा कष्ट अनुभव करते हुए श्रीवासपण्डितसे यह बात कही। यह बात कहनेके लिए उनका मन मानो विशेष उत्कण्ठित था। अब-तक कोई मनचाहा आदमी उनको मिला न था। श्रीवासपण्डित प्रभुके अन्तरङ्ग मर्मी भक्त थे। उन्होंने प्रभुके मनके कष्टको समझकर सान्त्वनाके वचन कहे थे। प्रभुने भी उनके सामने अपना हृदय खोल दिया। मनचाहा आदमी जबतक न मिले, तबतक मनकी बात खोलना ठीक नहीं। इतने आदमी प्रभुको देखने आये, नाना मुखसे नाना बातें सुनी गयीं, परन्तु प्रभुने कभी किसी दिन किसीके साथ कोई बात नहीं की। श्रीवासपण्डितने प्रभुके मनके कष्टको समझा। इसीसे प्रभुने अपने मनकी बात उनसे कही।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवासपण्डितने प्रभुको पूर्णतः शान्त करते हुए कहा—"जैसा तुम्हारेमें भक्तियोग प्रकट हुआ है, उसकी ब्रह्मा-शिव-शुकादि भी वाञ्छा करते हैं। हम-सब मिलकर एक जगह कीर्तन किया करेंगे। पाखण्डी लोग बकते रहें।"

संकीर्तन-यज्ञेश्वर हमारे प्रभुने श्रीवासपण्डितके मुखसे युगधर्म कीर्तन-यज्ञानुष्ठानकी आशाकी बात सुनकर आनन्दसे गद्गद होकर उनको बारम्बार आलिङ्गन-प्रदान करके कृतार्थ किया।

इसके बाद प्रभुसे बिदा होकर श्रीवासपण्डितने शचीमाताको एकान्तमें बुलाकर कहा—"अपने मनके दुःखको दूर कर दो! यह वायुरोग नहीं है, ये तो कृष्णभक्तिके लक्षण हैं। इनको दूसरे लोग नहीं समझ सकते। इनको दूसरोंके सामने प्रकट नहीं करना। श्रीकृष्णके रहस्य देखती जाओ!"

श्रीवासपण्डितकी बात सुनकर शचीमाताकी चिन्ता दूर हुई। पुत्रके व्याधिग्रस्त होनेका भ्रम तो दूर हुआ, परन्तु उनके हृदयमें दुःख बना ही रहा। क्योंकि उनको भारी भय हो गया कि श्रीकृष्ण-प्रेममें उन्मत्त होकर पीछे पुत्र गृह-त्याग कर सकता है। यह भय उनका दूर न हुआ।

शचीमाता अब पुत्रकी व्याधिको लेकर उतनी व्याकुल नहीं हैं। श्रीवासपण्डितने उनको पुत्रकी व्याधिके विषयमें विशेषरूपसे समझा दिया है। जो आदमी जैसा बोलता है, वे उसे केवल सुन लेती हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने भी अब समझ लिया है कि उनके प्राणबल्लभ न किसी व्याधिसे ग्रस्त हैं और न उन्माद-ग्रस्त हैं। उनको कृष्ण-विरहकी व्याधि है। यह देह व्याधि या भव-रोग नहीं है। इसकी औषधि श्रीभगवान्‌की कृपा है। इस रोगके वैद्यराज स्वयं श्रीभगवान् हैं। नवीना प्रियाजी इस नवीन वयः से ही प्रभुकी कृपासे यह समझ पाती हैं। समझ पानेपर ही श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें पूर्णरूपसे आत्म-समर्पण करना सीखा है। प्रभुका संसारसे वैराग्य तथा देवीके प्रति उनकी वैराग्योपदेश- कहानी यथास्थान वर्णित होगी।

श्रीअद्वैतप्रभु

श्रीअद्वैतप्रभु सब सुन लेते हैं। वे प्रभुके घर नहीं आते। उनके मनका भाव बड़ा गम्भीर है। उनके गम्भीर चरित्रको समझनेकी शक्ति किसीमें नहीं है। उनके मनमें दृढ़ विश्वास है कि यदि शची-नन्दन हमारे प्रभु हैं तो वे कृपा करके अवश्य ही हमसे आत्मप्रकाश करेंगे। मुझको केश पकड़कर अपने चरणोंमें खींच लेंगे। मेरे पास आकर मुझको दर्शन प्रदानकर कृतार्थ करेंगे। भक्तिका बल बड़ा बल है। भक्तिके बलसे बली होकर उन्होंने एक दिन और कहा था—

यदि सत्य वस्तु हय तबे एइ खाने।
सभे आसिबेन एइ बामनार स्थाने॥

चै. भा. म. २.२८

भक्तवत्सल प्रभु भक्तकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। भक्तका अभिमान उनको बहुत अच्छा लगता है। उन्होंने अपने श्रीमुखसे कहा—

प्रिया यदि मान करि करये भर्त्सन।
वेदस्तुति हैते हरे सेइ मोर मन॥

चै. च. आ. ४.२३

श्रीअद्वैतप्रभुके भक्ताभिमानसे श्रीगौर-भगवान् संतुष्ट होकर एक दिन गदाधरपण्डितको साथ लेकर उनको दर्शन देने गये। प्रेमानन्दमें मत्त होकर नदियाके पथपर श्रीश्रीगौर-गदाधर मनोहर वेषमें हाथमें-हाथ डाले रङ्गसे चले जा रहे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गदाधरपण्डित प्रभुकी बाँयी ओर और प्रभु दक्षिणकी ओर हैं। गौर-गदाधर युगलरूपमें नदियाका पथ आलोकित करके दोनों आदमी अद्वैत-सभाकी ओर जा रहे हैं। प्रभुके श्रीवदनमें कृष्णनाम और कमलनयनमें प्रेमाश्रुधारा है। गदाधरका सारा अङ्ग पुलकित है, प्रेम-भावमें वे प्रभुके क्षीण कटिदेशमें अपना दाहिना हाथ लगाये प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर हिलते-डुलते नदियाके राजपथपर चले जा रहे हैं। प्रभु अपने श्रीअङ्गको गदाधरके अङ्गमें सटाकर प्रेमावेशमें कभी-कभी मार्गमें त्रिभङ्गी वक्ररूपमें खड़े हो जाते हैं। वह अपरूप गौर-गदाधर-युगल-रूप-माधुरी देखकर नदियावासी नर-नारीके मन-प्राण आनन्दसे विभोर हो रहे हैं। वे इस अपूर्व गौर-गदाधररूप-सागरमें एकबारगी निमग्न हो रहे हैं। गदाधरपण्डित श्रीराधा-शक्ति हैं। श्रीश्रीगौर-गदाधर-युगल-विलास-रस व्रज-रस है। नवद्वीप-रस और व्रजरस एक ही वस्तु है। व्रज-रसके रसिक भक्तों और नवद्वीप-रसके भक्तोंमें कुछ भी पार्थक्य नहीं है।

श्रीश्रीगौर-गदाधर युगल-विलास-रङ्गमें श्रीअद्वैत-प्रभुके घर जा पहुँचे। उस समय श्रीअद्वैतप्रभु श्रीतुलसीकी अर्चा कर रहे थे। प्रेमविह्वल भावमें वे दोनों भुजाएँ आस्फालन करके श्रीतुलसीकी अर्चना करते-करते प्रेमानन्दमें 'हरि-हरि' कहकर हुंकार-गर्जन करने लगे। वे कभी हँसते, कभी रोते थे। किसी ओर उनकी दृष्टि नहीं है। महामत्त सिंहके समान उन्मत्तभावसे क्रोधपूर्वक हुंकार-गर्जन कर रहे हैं, मानो महारुद्रके अवतार हैं। अद्वैतप्रभुको इस प्रकार प्रेमोन्मत्त अवस्थामें देखकर प्रभु मूर्छित होकर भूतलपर गिर पड़े। गदाधरपण्डित उनको क्रोड़में लेकर वहाँ बैठ गये। गदाधरकी क्रोड़में श्रीगौराङ्ग-दर्शन करके भक्तियोगके प्रभावसे श्रीअद्वैतप्रभुने अपने "अभीष्ट देवको पहचानकर मन-ही-मन सोचा, ये ही तो मेरे प्राणवल्लभ हैं। अब आज प्रभुको न छोड़ूँगा। इतने दिनतक मेरे मनचोर छिपे रहे। मेरे सामने चोरकी चोरी नहीं चलेगी। आज मैंने चोरको पकड़ लिया। चोरके ऊपर मैं चोरी करूँगा।"

श्रीअद्वैतप्रभु मन-ही-मन इस प्रकार मतलब लगाकर, शुभ समय समझकर पूजाका सामान लेकर प्रभुके चरणोंमें उपस्थित हुए। गन्ध-पुष्प, धूप-दीपके द्वारा प्रभुके चरण-युगलकी पूजा करके श्रीअद्वैताचार्यने प्रणाम करते हुए कहा—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

वि. पु. १.१९.६५

विष्णुपुराणके प्रथम अध्यायमें यह भक्तवर प्रह्लादकी उक्तिका श्लोक है। इसका अर्थ यह है—"हे कृष्ण! तुम ब्रह्मण्यदेव हो तथा गो-ब्राह्मणका कल्याण करनेवाले हो! गोपालन तुम्हारी एक लीला है, इस कारण तुम्हारा एक नाम 'गोविन्द' है। तुमको नमस्कार!"

—यह श्लोक पढ़कर श्रीअद्वैतप्रभु पुनः-पुनः प्रभुको प्रणाम करने लगे तथा अजस्त्र अश्रु बहाने लगे। उनके नयन-जलसे प्रभुके दोनों रक्त-कमल-चरण धुल गये। हाथ जोड़कर प्रभुके पदतलमें खड़े होकर वे कातर नेत्रोंसे अपने प्राणवल्लभकी अपूर्व अङ्ग-शोभा निरीक्षण करने लगे।

गदाधर प्रभुको गोदमें लेकर अभी बैठे ही थे। प्रभुको बाह्य ज्ञान न था। गदाधरपण्डित वृद्ध ब्राह्मणका यह काण्ड देखकर अवाक् हो रहे थे। उनके मुँहसे कोई बात नहीं निकल रही थी; परन्तु बिना कुछ कहे रह भी नहीं सकते थे। वृद्ध ब्राह्मण अपने पुत्रतुल्य निमाईपण्डितके चरणोंमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गिरकर उनकी चरण-वन्दना कर रहे हैं, यह गदाधरपण्डितकी स्नेह-चक्षुमें अच्छा नहीं लगता। वे चुप न रह सके। मृदु मुसकानके साथ कटाक्ष करते हुए श्रीअद्वैतप्रभुसे बोले—"निमाई पण्डित बालक हैं और आप वृद्ध ब्राह्मण हैं। बालकके साथ आपका ऐसा व्यवहार शोभा नहीं देता।" श्रीअद्वैतप्रभु गदाधरपण्डितकी बात सुनकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। उनकी इस हँसीका मर्म गदाधरपण्डित कुछ भी समझ न सके। श्रीअद्वैतप्रभुके प्रसन्न, गम्भीर तथा हास्यपूर्ण मुख-मण्डलकी ओर एक टक देखते रह गये। शान्तिपुरनाथने पुनः हँसकर गदाधरपण्डितसे कहा—"अपने मित्रको बालक न समझना। इनकी गुण-कीर्ति शीघ्र ही जाननेमें आयेगी" गदाधरपण्डित यह बात सुनकर आश्चर्यपूर्वक मन-ही-मन सोचने लगे कि ऐसा लगता है कि भगवान् अवतीर्ण हुए हैं।

वे मनके भाव मनहीमें छिपाकर अपनी क्रोड़में स्थित शचीनन्दनके प्रत्येक अङ्गकी अपूर्व शोभा प्रेमपूर्वक निरीक्षण करने लगे। उनके नेत्रोंके प्रेमाश्रुकी धारासे प्रभुके श्रीअङ्ग धुल गये। कुछ देरके बाद प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ, तब वे उठ बैठे। श्रीअद्वैतप्रभु उस समय भी आविष्ट होकर प्रभुके चरणोंमें बैठे थे। पाद्य-अर्घ्य, गन्ध-पुष्प प्रभुके पदतलमें विखरा पड़ा है। श्रीअद्वैतप्रभुको प्रेमानन्दमें आषिष्ट देखकर प्रभु आत्मसंवरण करके दोनों हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे। प्रच्छन्न अवतार श्रीगौर-भगवान् श्रीअद्वैतप्रभुकी पूजासे संतुष्ट होकर कहने लगे—"आप मुझपर अनुग्रह कीजिये! मैं आपका ही हूँ। आपके दर्शन करके मैं धन्य हो गया। आपके कृपा करनेसे मेरे हृदयमें कृष्ण-नामकी स्फुरणा होती है। आपमें भव-बन्धनके नाश करनेकी क्षमता है। आपके हृदयमें श्रीकृष्णका प्रकाश है।"

भक्त-अवतारके भक्तभाव बड़े ही मधुर होते हैं। प्रभुने भक्तभावमें विभावित होकर जो अद्वैतप्रभुको कहा, वह उनके हृदयकी वात नहीं थी। सर्वभूतेश्वर श्रीगौर-भगवान् भक्तवाञ्छा-कल्पतरु हैं। भक्तका मान बढ़ानेमें सर्वदा तत्पर रहते हैं। वे भक्तभाव अङ्गीकार करके नदियामें अवतीर्ण हुए हैं। श्रीअद्वैतप्रभुका गुरुतुल्य सम्मान करते हैं। शिष्यके समान दास्यभावमें बातें कहकर उनको संतुष्ट किया; परन्तु मन-ही-मन सोचने लगे कि ये कैसी चालाकी कर रहे हैं, चोरके यहाँ चोरी कर रहे हैं।

भक्त भी भगवान्‌के मनके भावको समझ लेते हैं। यद्यपि प्रभुने अपने मनकी बात खोलकर प्रकट नहीं की, परन्तु अद्वैतप्रभुने उसे जानकर मुस्कराते हुए उत्तर दिया—

"विश्वम्भर! तुम मेरे लिए सबसे बड़े हो! कृष्ण-कथाका आनन्द लेनेको हमलोग सब साथ रहें, जिससे निरन्तर तुम्हारे दर्शन होते रहें। सभी वैष्णवोंकी इच्छा है तुम्हारे साथ श्रीकृष्ण-कीर्तन करनेकी।"

श्रीअद्वैतप्रभुके वचनसे श्रीगौर-भगवान्‌ने संतुष्ट होकर उनके अनुरोधको स्वीकार किया। गदाधरपण्डितने चुपचाप बैठकर सब बातें सुनीं। प्रभुके सम्बन्धमें उनके मनमें पहले जो भाव उदय हुआ था, श्रीअद्वैताचार्यके व्यवहारके द्वारा उसकी पुष्टि हो गयी। उनके पूर्व-भावकी बात कृपालु पाठकवृन्दको अवश्य याद होगी।

"ऐसा जान पड़ता है कि ईश्वर अवतीर्ण हुए हैं"—यही वे सोच रहे थे। श्रीअद्वैतप्रभुका काण्ड देखकर उनके मनका विश्वास दृढ़ हो गया। वे प्रभुकी ओर करुणदृष्टिसे देखते हैं और आँखें चार होनेपर सिर झुका लेते हैं। प्रभु उनके मनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भावको समझकर श्रीअद्वैतप्रभुसे विदा माँगकर उनको साथ लेकर गङ्गाके तीरपर आये। दोनों आदमी गङ्गातटपर बैठकर एकान्तमें अपने मनकी मर्मकी बातें करने लगे। श्रीगदाधरपण्डित राधा-शक्ति हैं, उनके सामने प्रभुकी लुका-चोरी नहीं चल सकती। प्रभुने निष्कपट भावसे उस दिन उनके सामने आत्मप्रकाश किया।

प्रभु जब विदा माँगकर चले तो अद्वैतप्रभुने मन-ही-मन एक विचार-विमर्श किया। उन्होंने समझा कि शचीनन्दन उनके अभीष्ट देव हैं। भक्त भी श्रीभगवान्‌की परीक्षा करते हैं। श्रीभगवान्‌की परीक्षामें जैसे भक्त विशेषरूपसे परीक्षित होकर भगवत्कृपा प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार श्रीभगवान् भी भक्तकी परीक्षामें परीक्षित होकर भक्त-प्रीति प्राप्त करते हैं। यह भक्त और भगवान्‌की परीक्षा अत्यन्त निगूढ़ रहस्यसे पूर्ण होती हैं। अद्वैत-चरितमें यह निगूढ़ रहस्य विशेषरूपसे परिस्फुटित हुआ है। यह सब लीला-कथा यथास्थान वर्णन की जायगी।

श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌की परीक्षा करनेके लिए नवद्वीपका वास छोड़कर शान्तिपुरमें रहनेका सङ्कल्प किया। उन्होंने सोचा—"यदि सचमुच शचीनन्दन मेरे प्रभु हैं तो निश्चय ही केश पकड़कर नवद्वीपमें पुनः खींच लेंगे।"

श्रीअद्वैतप्रभु हमारे गौर-आना-गोसाईं हैं। उनकी शक्ति और महिमा समझनेकी क्षमता मनुष्यमें नहीं है। अनन्त शक्तिमान् हमारे प्रभुने श्रीअद्वैतप्रभुको अनन्त शक्ति प्रदान की है। श्रीअद्वैत-चरित अतिशय गम्भीर है। मनुष्य-बुद्धिके द्वारा उसको समझनेकी चेष्टा करना वृथा आयासमात्र है। प्रभुने महाप्रकाशके समय श्रीअद्वैतप्रभुको वर दिया था—"जो आधे क्षणके लिए भी तुम्हारा आश्रय करेगा, वह पतंग-कीट, पशु-पक्षी—कोई भी हो, मेरे सैकड़ों अपराध भी कर लें, तो मैं उसपर कृपा करूँगा।"

अतएव प्रिय पाठकवृन्द! सबसे पहले श्रीअद्वैतप्रभुके चरणोंमें आत्म-समर्पण करके श्रीगौराङ्ग-लीला-समुद्रमें प्रवेशाधिकार प्राप्त करें। गौर-आना-गोसाईं भक्तिके भाण्डार हैं। प्रभुने अपने अन्तरङ्ग भक्त और प्रधान पार्षद रूप-सनातनको गौर-आना-गोसाईंके पास भक्ति-भिक्षा करनेके लिए कहा था। हे अद्वैतके आना-धन (लाये धन) श्रीगौराङ्ग! तुम अति महान् वस्तु हो! तुम्हारा अन्त पाना बड़ा ही कठिन है। जिसके प्रेम हुंकार-गर्जनमें, जिसकी कठोर साधनासे तुम्हे नदियामें अवतीर्ण होना पड़ा, हमारे वे गौर-आना-गोसाईं तुम्हारे ही समान अति महान् वस्तु हैं। उनका भी अन्त हमको नहीं मिलता। हम अति क्षुद्र जीव हैं। हमको साधन-भजनका बल नहीं है। तुम्हारी कृपा ही हमारे लिए एकमात्र सम्बल है। हम केवल तुम्हारा नाम लेकर रो सकते हैं। यह क्रन्दन, यह आर्त्ति ही हमारा भजन-पूजन है। प्रतिदिन हृदयके संतापसे हम रोते हैं, हृदयाग्निमें जलते रहते हैं और हा गौराङ्ग! हा सीतानाथ! हा नित्यानन्द! कहकर दीर्घ श्वास लेते हैं। न जाने, कब तुम्हारी कृपा प्राप्त होगी? न जाने, यह जीवनका हाहाकार कब दूर होगा? जैसे-जैसे दिन जाता है, वैसे-वैसे हाहाकार बढ़ता जाता है, वैसे ही हृदयका सन्ताप बढ़ता जाता है। तुम्हारा विरह-ताप अब सहन नहीं हो रहा है। लोग कहते हैं कि तुम बड़े दयालु हो। कलिके जीवोंके प्रति तुम्हारी असीम कृपा है। कृपानिधिकी कृपाके कणमात्रकी प्राप्तिकी आशासे जीवन-धारण कर रहा हूँ। हे दयानिधि गौरचन्द्र! हे हमारे परम दयालु निताई-चाँद! हे कृपानिधि शान्तिपुरनाथ! आप लोग एकबार भी करुण-दृष्टिसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस पतित अधमकी ओर देखें ! केवल एकबार कृपाकटाक्ष करें ! अधम-अकृति कहकर केश पकड़कर विषय-कूपसे इसका उद्धार करें ! यही हमारी एकमात्र प्रार्थना है। दीनके प्रति कृपा करके इस प्रार्थनाको पूर्ण करें। आपलोगोंसे मैं और कुछ नहीं चाहता।

आत्म-प्रकाश

प्रभुने नदियामें अब संकीर्तन-लीला प्रारम्भ की। संकीर्तनके आरम्भमें उनका आविर्भाव हुआ। उस भुवनमङ्गल संकीर्तनारम्भमें उनका आत्मप्रकाश हुआ। प्रभुका संकीर्तन-लीला-रङ्ग देखकर नदियाबासी नर-नारी विस्मित हो उठे। पहले कभी किसीने ऐसा उच्च संकीर्तन-लीला-रङ्ग नहीं देखा था। यह उनका प्रथम सौभाग्य था। भगवत्प्रेममें मत्त होकर प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य करके प्रभु जब कृष्ण-कीर्तन करते थे तो उसे देखकर कोई उनको मानव नहीं समझता था। नदियाके वैष्णवोंमें-से संकीर्तन-यज्ञेश्वर शचीनन्दनको कीर्तनानन्दमें आविष्ट देखकर—

केहो बोले—'ए पुरुष अंश अवतार।'
केहो बोले—'ए शरीरे कृष्णेर विहार॥"
केहो बोले—'ए शुक किंवा प्रह्लाद-नारद।'
केहो बोले—'हेन बूझि खण्डिल आपद॥"
जत सब भागवतगणेर गृहिणी।
ताँहारा बोलये—'कृष्ण जन्मिल आपनि॥'
केहो बोले—'एइ बुझि प्रभु-अवतार।'
एइ मत मने सभे करेन विचार॥

चै. भा. म. २.१६८-१७१

इसी प्रकार वे मन-ही-मन विचार करते हैं। विचारका फल चाहे जो कुछ भी हो, वे प्रभुको बिना देखे क्षणभर भी नहीं रह सकते। रातमें सोते समय स्वप्नमें शचीनन्दनकी अपरूप-रूपराशि उनके स्मृति-पथमें उदय होती है। नींद टूटनेपर वे व्याकुल होकर रोने लगते हैं। क्यों रोते हैं—यह उनकी समझमें नहीं आता। गौराङ्ग-रूप-सागरमें उनके चित्त निमज्जित रहते हैं। प्रभुके आत्म-प्रकाशके बाद नदियावासी वैष्णवजन नदियाके अवतार शचीनन्दनके चरणोंमें आत्म-समर्पण करनेकी चेष्टा करने लगे। प्रभुका भी दास्यभाव था और उनका भी दास्यभाव। दोनोंने एक-दूसरेके भावपर मुग्ध होकर भक्त-भगवान्‌के प्रीति-सम्बन्धको दृढ़से दृढ़तर बनाया। प्रभु जब प्रेमावेशमें बाह्य ज्ञानशून्य होकर कृष्ण-कीर्तन करते हैं तो वैष्णवगण उनकी पद-धूलि ग्रहण करके कृतार्थ होते हैं। बाह्य ज्ञान होते ही प्रभु स्नेहमें भरकर उनके गलेमें अपने सुवलित-सुकोमल बाहुयुगलको वेष्टित कर-करके जो करुण रुदन करते हैं, उसे सुनकर पाषाणहृदय भी द्रवित हो जाते हैं। प्रभु क्या कहकर रुदन करते हैं ?

'कोथा गेले पाइब से मुरलीबदन।'
बलिते छाड़ये श्वास, करये क्रन्दन॥

चै. भा. म. ७२.१७३

प्रभु कहते हैं—"भाइयो ! तुमसे और क्या कहूँ ? मेरे दुःखकी सीमा नहीं है। अपने प्राण-कन्हाईको पाकर मैंने खो दिया है।"

यही बात हमारे प्रभु बारम्बार कहते हैं और कृष्ण-विरहमें अजस्र आँसू बहाते हैं। लोग इस रहस्यका मर्म क्या समझें ? सबने उनसे विशेष अनुरोधपूर्वक कहा—"खोलकर बतलाइये, कृष्ण-विरह-बाधा कैसी होती है ?" प्रभु परम आदरपूर्वक गङ्गाके तीरपर सबको बैठाकर कृष्ण-विरह-रहस्य-कथा कहने लगे। गयाधाममें कैसे उनको अपने प्राण-कन्हाईका दर्शन प्राप्त हुआ, उसे अब सबके सामने व्यक्त किया। गयाधामसे लौटते समय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कन्हाईकी नाट्यशाला ग्राममें प्रभुको साक्षात् कृष्ण-दर्शन प्राप्त हुआ था, सुनाने लगे—"गयासे लौटते समय कन्हाई-नाट्यशाला-नामक ग्राममें श्याम-तमाल-वर्ण एक सुन्दर बालकको मैंने देखा, जिसके मनोहर कुन्तल-केशोंका गुच्छा, उसपर शोभित मयूर-पिच्छ, जिसमें मणियाँ झलमल कर रही थीं, जिनकी तरफ देखा नहीं जाता था। हाथमें मोहिनीवंशी, चरणोंमें अति मनोहर नूपुर, नील-स्तम्भ-सी भुजामें रत्नालंकार, वक्षपर कौस्तुभमणि, पीत धोतीका परिधान, कमलसे नयन एवं कानोंमें मकर-कुण्डल शोभा पा रहे थे। वह मुस्कुराता हुआ मेरे समीप आया और मुझे आलिङ्गन करके चलता बना।"

प्रभुने जिस प्रकार आत्यन्तिक प्रेम-विह्वल-भावसे कृष्ण-दर्शन-वृत्तान्तका वर्णन किया, उससे उपस्थित भक्तवृन्दका हृदय प्रेमानन्द-रसमें निमग्न हो गया। उन्होंने मानो साक्षात् कृष्ण-दर्शन-सुखका अनुभव किया। वे प्रभुके श्रीमुखसे निःसृत सुधा-निस्यन्दिनी कृष्ण-कथा एकान्तचित्तसे श्रवण कर रहे हैं। नदियामें गङ्गातटपर प्रभुको घेरकर सहस्रों आदमी गर्दन उठाये खड़े हैं और उनके श्रीमुखसे अमृतमयी मधुर कृष्ण-कथा सुन रहे हैं। प्रभु कृष्ण-कथा कहते-कहते प्रेमाविष्टभावमें मूर्छित होकर गिर पड़े। उनके श्रीमुखसे एकमात्र 'हा कृष्ण! तुम कहाँ हो?'—ये ही शब्द निकल रहे हैं।

गङ्गाके किनारे धूलिमें प्रभुके सोनेके-से अङ्ग धूसरित हो रहे हैं। सबने घबराकर प्रभुको पकड़ लिया, उनको हृदयसे लगा लिया। उनके श्रीअङ्गकी धूलि झाड़ दी। प्रभु स्थिर होकर भी स्थिर नहीं हो पा रहे हैं। कृष्ण-विरह-बाणसे उनका सर्वाङ्ग जर्जर हो रहा है। कृष्ण-विरहानलमें उनका हृदय धक्-धक् प्रज्वलित हो रहा है। वे मानो कृष्ण-विरह-सागरमें डूब रहे हैं। अति कष्टपूर्वक प्रभुने आत्मसंवरण किया और अत्यन्त दीनातिदीन भावसे सबकी ओर एकबार शुभ दृष्टिपात किया। इससे सबका मन सन्तुष्ट हो गया।

सब लोगोंने प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"हमारे बड़े पुण्य हैं, जिससे कि तुम्हारा सङ्ग पाकर हम लोग धन्य हो गये। जिनको तुम्हारा सङ्ग प्राप्त है, उनके लिये वैकुण्ठ भी कुछ नहीं। तुम्हारे क्षणमात्रके सङ्गसे भक्ति-फलकी प्राप्ति होती है। हम लोग सब तुम्हारे आनुपाल्य हैं! तुम हमारे नायक बनकर कीर्तन करो। पाखण्डियोंके वाक्यसे हमारा शरीर दग्ध हो रहा है, उसे अपने प्रेमजलसे सिंचनकर शीतल करिये।"

संकीर्तनके आरम्भमें प्रभुके आत्मप्रकाशका फल नदियामें इसी समयसे फलने लगा। उनको 'नायक' के रूपमें सबने स्वीकार किया। नदियाके ब्राह्मणकुमारका दासत्व स्वीकार करनेसे कोई कुण्ठित न हुआ। बाइस वर्षकी अवस्थाके शचीनन्दन अभीसे नदियावासी वैष्णवोंके लिए गुरुतुल्य हो गये। नदियावासी लोगोंके गुरुके जगद्गुरु बननेका सूत्रपात यहींसे हुआ।

प्रभु उस दिन गङ्गाके किनारेसे अधिक रात गये घर लौटे। घर और बाहर प्रभुके अब एक भाव हैं। वे कृष्णप्रेमोन्मत्त हैं, कृष्ण-विरह-सागरमें उनका तन-मन और हृदय मग्न है। वे चतुर्दिक् कृष्णमय देखते हैं। उनके श्रीमुखमें कृष्णके सिवा और कोई बात नहीं है। हृदयमें उनके सर्वदा कृष्णकी स्फूर्त्ति होती है। उनका मन निरन्तर कृष्णभावमें विभावित रहता है। वे परम आनन्दके आवेशमें रात-दिन यापन करते हैं। सांसारिक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व्यवहारका कोई सम्बन्ध नहीं रखते। उनके कमल-नयनद्वयसे प्रेमाश्रुधार रुकती नहीं। विष्णुपादोद्भवा गङ्गाजी मानो प्रभुका चरण छोड़कर नेत्रोंका आश्रय ले रही हैं। उनके श्रीमुखसे केवल 'हा कृष्ण ! कृष्ण कहाँ ?' शब्द निकलते हैं। यदि कोई कुछ पूछता है तो उत्तर नहीं देते। वैष्णवोंको देखकर कातरभावसे प्रभु दौड़कर जाते हैं और पूछते हैं—"भाई ! कृष्ण कहाँ है ?"

अब शचीमाता और विष्णुप्रियादेवी दोनोंने समझ लिया है कि प्रभुको कौन-सा रोग है? शचीमाताको भारी चिन्ता है कि कहीं आगे चलकर पुत्र संसारसे विरक्त होकर गृह-त्याग न करे। श्रीविश्वरूपप्रभुकी बात उनको भली-भाँति स्मरण है। वह तो कृष्ण-प्रेममें इतना उन्मत्त नहीं हुआ था, न इस प्रकार विह्वल था और न कभी 'हा कृष्ण ! कृष्ण कहाँ ?' कहकर इतना रोता था। ये सारी बातें शचीमाता अपने आत्मीय वैष्णव-गृहिणी-जनसे करती हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी घूँघट काढ़े, मुखचन्द्रको अवनत करके सासकी बातें सुनती हैं। उनके मनमें तनिक भी सुख-शान्ति नहीं है।

प्रभुको पान खाना बहुत प्रिय था। गदाधरपण्डित जब-तब उनके लिए पान जुटाते थे। रास्तेमें, घाटपर, घरमें उनके पास पान रहता था। प्रभु अपने मन्दिरमें बैठकर एक दिन कृष्ण-विरहमें कातर होकर बायें हाथपर कपोल रखकर श्रीकृष्णके चरणोंका चिन्तन कर रहे थे, उसी समय पान हाथमें लिए गदाधरपण्डित आकर वहाँ उपस्थित हुए। अपराह्णकाल है। प्रभु अकेले अपने शयनगृहमें बैठे हैं। शचीमाता पुत्रकी भाव-गतिको निरख रही हैं। गदाधरको देखकर प्रभुने एकबारगी क्रन्दन करते हुए व्याकुलतापूर्वक पूछा—"भाई गदाधर ! हमारे श्यामसुन्दर मदनमोहन श्रीकृष्ण कहाँ हैं ?"

प्रभुकी आर्ति देखकर, उनका व्याकुल क्रन्दन सुनकर, उनके प्राणकी व्याकुलता समझकर चतुर गदाधरपण्डितने समय बूझकर हँसते हुए उत्तर दिया—

"निरवधि आछे कृष्ण तोमार हृदय।"

चै. भा. म. २.२०३

यह बात सुनते ही कृष्णप्रेमोन्मत्त, विरह-कातर हमारे प्रभु अपने नखोंके द्वारा अपना हृदय चीरनेके लिए तैयार हो गये। कृष्ण-विरहमें वे ज्ञानशून्य हैं। 'कृष्ण कहाँ ?'—यही एक बात उनके मुँहसे निकलती है। गदाधरपण्डितके मुखसे सुना कि कृष्ण उनके हृदयमें हैं—यह सुनते ही वे उनके अन्वेषणमें प्रवृत्त हो गये। प्रेमावेगमें उन्मत्त होकर जब प्रभु अपने श्रीहस्तके द्वारा सुन्दर विशाल वक्षःस्थलपर नखाघात करनेके लिए उद्यत हुए तो गदाधरपण्डितने झटपट उनके दोनों हाथ पकड़ लिये। हाथ पकड़कर नाना प्रकारसे उनको समझाने-बुझाने लगे। प्रभुने गदाधरके अङ्कमें अपने श्रीअङ्गसे धक्का देकर प्रेमोन्मत्त-भावसे 'हा कृष्ण ! कृष्ण कहाँ ? तुम क्या मेरे हृदयमें हो ? एक बार दर्शन देकर मेरे संतप्त प्राणको जुड़ाओ ! तुम्हें देखे बिना मैं स्थिर नहीं हो पा रहा हूँ। हे प्राणरमण ! मेरे प्राण जा रहे हैं।'—इतना कहकर उच्चस्वरसे भीषण आर्तनाद करने लगे। उनका विशाल वक्षःस्थल नयन-जलसे आप्लुत हो उठा। वे ऊर्ध्वमुख होकर उत्तान आँखोंसे निरन्तर यह श्लोक पाठ करने लगे—

हे देव ! हे दयित ! हे भुवनैकबन्धो !
हे कृष्ण ! हे चपल ! हे करुणैकसिन्धो !
हे नाथ ! हे रमण ! हे नयनाभिराम !
हा हा कदानु भवितासि पदं दृशोर्मे॥

श्रीकृष्णकर्णामृत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गदाधरपण्डित प्रभुके कारण बड़ी विपद्में पड़े। बहुत आश्वासनकी बातें कह गये, बहुत सान्त्वना दी, परन्तु प्रभुका कृष्ण-विरहतापसे संतप्त अशान्त हृदय शान्त न हुआ। तब चतुरचूड़ामणि गदाधरपण्डित अत्यन्त आग्रहपूर्वक मधुर प्रेममय वचन बोले—"भाई ! अभी तुम्हारे कृष्ण आवेंगे। तुम स्थिर हो जाओ !"

'कृष्ण अभी आवेंगे'—यह बात सुनते ही प्रभु स्थिर हो गये। उनका मुखमण्डल प्रफुल्ल हो गया। शचीमाता घरके द्वारपर खड़ी होकर सब-कुछ देख रही थीं। गदाधरकी तीक्ष्णबुद्धि देखकर माताने परम संतुष्ट होकर कहा—"बेटा गदाधर ! तुम बालक हो ! तुम्हारी बुद्धि देखकर मैं अवाक् हो रही हूँ। मैं डरसे निमाईके सामने नहीं जा पा रही हूँ। तुमने बालक होकर ये सब सान्त्वनाके वचन कहाँ सीख लिये ? बेटा ! मेरा अनुरोध है कि तुम सदा मेरे निमाईके साथ रहो ! उसका सङ्ग कभी न छोड़ना।" शचीमाताने गदाधरका हाथ पकड़कर ये सारी बातें कहीं। उन्होंने गौराङ्ग-जननीकी आज्ञा शिरोधार्य करके उनको प्रणाम किया। जगन्माताने उनको आशीर्वाद दिया—"चिरंजीवी रहो ! चिरकालतक तुम मेरे निमाईके साथ रहो !" शचीमाताके आशीर्वादके वाक्य सुनकर गदाधर-पण्डित आनन्दसे गद्गद हो गये। चिरकालतक प्रभुका सङ्ग प्राप्त होगा—यह शुभाशीर्वाद पाकर वे कृतार्थ हो गये।

पहले कहा जा चुका है कि प्रभुने जब श्रीअद्वैत-प्रभुके निकट आत्मप्रकाश करके उनकी पूजा ग्रहण की, उस समय गदाधरपण्डित उनके साथ थे। इच्छामय प्रभुने इच्छा करके उनको साथ लेकर श्रीअद्वैतप्रभुके घर गमन किया था। प्रभु कलिके प्रच्छन्नावतार हैं। उनकी लीला प्रच्छन्न है। उनके नित्य पार्षदगणने प्रच्छन्नभावसे नदियामें जन्म-ग्रहण किया है। श्रीगदाधरपण्डित श्रीराधा-शक्ति हैं। प्रभुने उनको साथ लेकर श्रीअद्वैतप्रभुके सामने आत्मप्रकाश क्यों किया ? इसका कुछ रहस्य है। श्रीअद्वैतप्रभु श्रीश्रीराधाकृष्ण-युगल-मन्त्र-उपासक हैं। प्रभु स्वयं राधाकृष्ण-मिलित वपु हैं, तथापि राधा-शक्ति गदाधरपण्डित उनकी अन्तरङ्गा शक्ति हैं। गौर गदाधरने एकत्र होकर युगल-विलास-रङ्गमें श्रीअद्वैतप्रभुके घर जाकर उनको युगल-विलास लीलारङ्ग दिखलाया। प्रेममय प्रभु प्रेमानन्दमें राधा-शक्ति गदाधरपण्डितके क्रोड़में शयन करके मूर्च्छित हो गये हैं। गदाधरपण्डित प्रेमभावमें अपने प्राण-गौराङ्गकी प्रेम-सेवा कर रहे हैं। श्रीअद्वैतप्रभुने इसी अवस्थामें पाद्य-अर्घ्य, गन्ध-पुष्पद्वारा प्रभुकी पूजा की थी। गदाधरपण्डित अद्वैतप्रभुके सामने बालक हैं। उनके सामने शचीनन्दनको श्रीकृष्ण-भगवान् कहकर वृद्ध ब्राह्मणने पाद्य-अर्घ्यद्वारा विधिपूर्वक पूजा की—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय श्रीगोविन्दाय नमो नमः॥

—इतना कहकर प्रणाम करके दोनों हाथोंसे उनकी पद-धूलि ग्रहण की। गदाधरपण्डितकी आँखोंके सामने यह घटना हुई। वे वृद्ध ब्राह्मणके इस व्यवहारको देखकर चकित हो गये। श्रीअद्वैतप्रभु सर्वज्ञ हैं। गदाधर क्या वस्तु हैं, यह उनसे छिपा नहीं। श्रीगौर-गदाधरको युगलमें पाकर उन्होंने प्रेमानन्दसे प्रभुकी युगल-सेवा की। प्रभुने यह युगल-विलास श्रीअद्वैतप्रभुको दिखलानेके लिए ही यह लीलारङ्ग प्रकट किया।

शचीमाताने भी गौर-गदाधरका लीलारङ्ग देखा। गदाधरने कैसे प्रभुको प्रेमभावसे सान्त्वना दी, उनके पुत्रके कृष्ण-विरह-संतप्त हृदयको शान्त कर दिया। प्रभुने किस प्रकार प्रेमपूर्वक गदाधरसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बातें कीं—सबको शचीमाताने विशेष ध्यानपूर्वक देखा। प्रभुका यह अपूर्व प्रेमयोग देखकर स्नेहमयी शचीमाताको उन्हें पुत्र-रूपमें जाननेका साहस न हुआ। उन्होंने सोचा—'उनका पुत्र कोई महापुरुष या योगभ्रष्ट ऋषि है। पूर्वपुरुषोंके पुण्यके बलसे उनके गर्भमें आकर प्रादुर्भूत हुआ है। मनुष्यके नेत्रोंमें क्या इतना जल हो सकता है?' यह भाव शचीमाताके मनका स्थायी भाव नहीं है। प्रभुकी वैष्णवी मायाके बलसे कभी-कभी वे इसी प्रकार ऐश्वर्यभावसे विभावित हो जाती हैं। क्षणभरके बाद ही स्नेहमयी शचीमाताका यह भाव दूर हो जाता है। वात्सल्यरसाश्रिता माता स्नेहके वश प्रभुको पुत्र जानकर लालन-पालन करती हैं। उनके रोगकी शान्तिके लिए नाना प्रकारके देवी-देवताओंको पूजती हैं, घरमें शान्ति-स्वस्त्ययनकी व्यवस्था करती हैं। शचीमाताका शुद्ध वात्सल्यभाव है। ऐश्वर्यभावको उनके सामने एकबारगी स्थान नहीं मिलता।

प्रभुके मन्दिरमें नदियाके भक्तवृन्दका समागम होता है। संध्याकालमें वे सब आकर एकत्रित होते हैं। भक्तियोग-सम्मत श्लोकोंका पाठ होता है। मुकुन्द सुर-तान और लयसे सुन्दर श्लोक पाठ करके सबका मनोरञ्जन करते हैं। उनका अत्यन्त सुन्दर कण्ठस्वर है। मुकुन्दकी कण्ठध्वनि सुनकर प्रभु आवेशमें आ जाते हैं। प्रतिदिन सध्याकालमें प्रभुके मन्दिरमें भक्तोंका जमाव होता है, इष्ट-गोष्ठी होती है, कृष्ण-कथा होती है, कृष्ण-संकीर्तन होता है। कृष्णप्रेममें उन्मत्त प्रभुके हुंकार-गर्जनसे गृहका प्राङ्गण प्रकम्पित हो उठता है। शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवी भयसे घरके भीतर रहकर प्रभुके इस अद्भुत लीलारङ्गका दर्शन करती हैं। कीर्तन-रङ्गमें सारी रात मुहूर्तके समान बीत जाती है।

श्रीवासके यहाँ

अब संकीर्तन-समारोह श्रीवासके आँगनमें होने लगा है। प्रभुके श्रीमुखसे हरिनाम सुनकर वैष्णवगणके सारे दुःख दूर हो जाते हैं। उनके आनन्दकी सीमा नहीं रहती। किन्तु भक्तिबहिर्मुख दुर्जन पाखण्डी लोगोंके पाषाण-हृदय तथा पापाविष्ट मन उससे द्रवित न होकर उत्तेजित होते है। प्रभु सारी रात उच्च संकीर्तन-रङ्गमें बिताते हैं, इससे पाखण्डियोंकी नींदमें बाधा होती है। वे क्रुद्ध होकर जो मनमें आता है, बकते हैं। श्रीवासपण्डितके ऊपर वे सबसे अधिक रुष्ट रहते हैं; क्योंकि श्रीवासके आँगनमें प्रभुका कीर्तन-रङ्ग समारोहपूर्वक होता है। भक्ति-बहिर्मुख पाखण्डी लोग भय दिखलाते हैं कि वे श्रीवासपण्डितके विरुद्ध कचहरीमें नालिश करेंगे। कहते हैं कि उनका घर-द्वार तोड़-फोड़कर गङ्गामें बहा देंगे। एक दिन नदियामें अफवाह फैल गयी कि बादशाहकी आज्ञासे दो नौकापर सैनिकोंका दल आ रहा है, जो कीर्तनकारी बैष्णवोंको पकड़कर ले जायगा। पाखण्डी लोगोंका विश्वास है कि श्रीवासपण्डितके कारण ही उनके ऊपर यह विपदा आ रही है। श्रीवासपण्डितको कैद करा देनेसे सारी आपदा दूर हो जायगी—यह निश्चय करके पाखण्डीलोग परस्पर महा गड़बड़ी फैलाने लगे। नदियाके वैष्णवोंने ये सारी बातें सुनीं। श्रीवासपण्डितके कानोंमें भी यह बात आयी। वैष्णवगण गोविन्द-स्मरण करके बोले—"कृष्ण जो करेंगे, वही होगा।" श्रीवासपण्डित परम उदार और अतिशय सरल प्रकृतिके व्यक्ति थे। जो आदमी आकर जो कुछ बोल जाता है, उसीमें विश्वास कर लेते हैं। विशेषतः यवन-राज्य था। विधर्मी मुसलमान राजा सब प्रकारका अनाचार कर सकता था, यह सोचकर वे निराश हो गये। उनके मनमें भय पैदा हो गया। हमारे अन्तर्यामी प्रभुने श्रीवासपण्डितके भीतरकी बात समझ ली।

इसी समय प्रभुने एक लीलारङ्ग दिखलाया। उन्होंने अभी नदियामें आत्मप्रकाश करनेका सूत्रपात ही किया है। केवल युगधर्म हरिनाम-संकीर्तन-यज्ञका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अभी आरम्भ ही हुआ है। पाखण्डियोंके भयसे भीत भक्तगणको साहस देनेके लिए भक्तवत्सल प्रभु श्रीवासके घरमें जाकर आत्मप्रकाश करनेका निश्चय करके अपने मन्दिरसे निकले। प्रातःकाल सूर्य-नारायण उदय हो चुके थे। नदियाके राजपथमें श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र मदनमोहन-वेशमें अपने अपरूप-रूपकी छटासे दशदिक् आलोकित करते हुए बाहर निकले। उनका सर्वाङ्ग सुगन्धित चन्दनसे चर्चित है, दिव्य वस्त्र पहने हैं, ताम्बूल चबा रहे हैं। गर्वपूर्वक हमारे प्रभु अपनी आजानुलम्बित भुजाओंको डुलाते हुए हिलते-डोलते नदियाके राजपथमें निर्भय होकर गङ्गाके तीरकी ओर जा रहे हैं। परम सुकृतिमान् नदियावासी श्रीगौर-भगवान्‌की इस अपूर्व रूप-सुधाका पान करके कृतार्थ हो गये। इससे पाखण्डियोंका कलेजा जल-भुन गया। प्रभुकी इस ऐश्वर्यभावमय श्रीमूर्तिको देखकर उनका मन उदास हो गया।

राजपुत्रके समान स्वजनोंके सङ्ग प्रभु नदिया-विहार-लीलारङ्ग करते गङ्गाके तीरपर आये। श्रीनवद्वीपचन्द्र नदियाके राजा हैं; उनको राजभय कैसा? नदियाके भक्तगण, वैष्णवगण नदियाके राजा श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी प्रजा हैं। उनको भी राजभय नहीं है। उनके हृदयाधिपति श्रीगोराङ्ग-सुन्दर सर्वदा जिनके हृदयमें राज करते हैं, उनको फिर भय कैसा?

प्रभुने गङ्गाके तीरपर आकर गङ्गाकी शोभा देखी। दिव्यदर्शन गङ्गा-पुलिनमें मन्द-मन्द तरङ्गाघातसे शुभ्रफेन-पुञ्जकी राशि-राशि उच्छ्वसित हो रही है। जान पड़ता है; मानो गंगादेवी पुष्प-अर्घ्य लेकर प्रभुके पाद-पद्मकी अर्चना करने आ रही हैं। गङ्गा-पुलिनपर गोवत्सके झुण्ड मनोहर क्रीड़ा कर रहे हैं। पूंछ ऊपर उठाकर हम्बा-रवके द्वारा मानो वे प्रभुके दर्शनजनित अपने आनन्दको व्यक्त कर रहे हैं। पानी पीनेके बहाने गायें गंगाके किनारे आकर प्रभुका दर्शन करके आनन्दसे पूँछ ऊपर उठाकर नाच रही हैं। कोई प्रभुके पदतलमें आकर आनन्दसे सो रही हैं।

यह सब देखकर प्रभुके मनमें वृन्दावनकी स्मृति उदय हुई। वे प्रेमानन्दमें आविष्ट होकर हुंकार-गर्जन करने लगे। उनके श्रीमुखमें वही एक बात है—'मैं वही हूँ—मैं वही हूँ।' प्रभुके श्रीमुखके ये दो वाक्य आत्मप्रकाश-लीलाके मूलमन्त्र हैं। अन्तरङ्ग भक्तगण प्रभुके श्रीमुखसे यह मूलमन्त्र सुनते ही उनका अभिप्राय समझकर पाद्य-अर्घ्य, गन्ध-चन्दन, धूप-दीप-पुष्प आदि लेकर प्रभुके चरणोंकी पूजा करते थे।

गङ्गाके तीरसे श्रीवासपण्डितका घर संनिकट ही था। प्रभु 'मैं वही हूँ—मैं वही हूँ'-कहकर हुंकार-गर्जन करते हुए भक्तवृन्दके साथ दौड़कर श्रीवासके घर जा पहुँचे। श्रीवासपण्डितके गृह-देवता श्रीनृसिंह-भगवान् थे। वे गृह-द्वार बन्द करके उस समय पूजामें बैठे थे। प्रभु देवगृह-द्वारपर जाकर गर्वपूर्वक दरवाजेपर पैरोंसे धक्का मारते हुए हुंकार-गर्जन करते-करते बोले—"अरे श्रीवासिया! तू किसकी पूजा करता हैं, किसका ध्यान करता है? जिसकी पूजा करता है, वह यहाँ विद्यमान् है। आकर देख न?"

श्रीवासपण्डित ध्यानस्थ थे। उनका ध्यान टूट गया। वे चारों ओर विस्मित होकर देखने लगे। उन्होंने देखा कि उनके इष्टदेव नृसिंह-भगवान्‌के स्थानमें शचीनन्दन वीरासनमें बैठे हैं। शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी उनकी चतुर्भुज मूर्ति हैं। मत्त सिंहके समान बाँये कक्षमें ताली देकर हुंकार-गर्जन कर रहे हैं।

प्रभुकीं चतुर्भुज मूर्ति-दर्शन करके श्रीवास-पण्डितके सारे अङ्ग थर-थर काँपने लगे। वे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जड़वत् स्तम्भित होकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उनके मुँहसे बात न निकल सकी। तब श्रीगौर-भगवान्‌ने वज्र-गम्भीर निनादसे उनको सम्बोधन करते हुए कहा—

"अरे श्रीवास ! इतने दिन हो गये, तुमने मेरा प्रकाश नहीं जाना। तुम्हारे उच्च संकीर्तनसे और नाड़ा* के हुँकारसे परिकरसहित वैकुण्ठ छोड़कर आया और तुम लोग मुझे लाकर निश्चिन्त बैठे हो ! नाड़ा मुझे छोड़कर शान्तिपुर चले गये। दुष्टोंका दमन करके साधुओंका उद्धार करना है; तुम केवल स्तव-पाठमें लगे हो; तुम्हें कोई चिन्ता नहीं है।"

श्रीवासपण्डितको प्रभुकी कृपासे बाह्य ज्ञान हुआ। प्रभुके इस परम अद्‌भुत आत्मप्रकाशको देखकर उनका सारा भय दूर हो गया। प्रेमानन्दमें उनका सारा अङ्ग पुलकित हो उठा। दोनों हाथ जोड़कर श्रीवासपण्डित प्रभुके आदेशसे महामहिमामय श्रीश्रीगौर-भगवान्‌का भागवतके इस श्लोकके द्वारा रोते-रोते स्तुति करने लगे—

नौमीड्यतेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय
गुञ्जावतंस-परिपिच्छिल-सम्मुखाय ।
वन्यस्रजे कवलबेत्रविषाणवेणु-
र्लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ॥

श्रीम. भा. १०.१४.१

अर्थ—"हे प्रभो ! नवीन जलदके समान तुम्हारा शरीर है, विद्युद्‌दामके समान तुम्हारे वस्त्र हैं, गुञ्जासे बने दो कर्णाभूषण हैं और मयूरपिच्छसे रचित चूड़ा तुम्हारे मुख-मण्डलको परिदीप्त कर रही हैं; तुम वनमें उत्पन्न नाना रङ्गके पत्र-पुष्पोंसे गुँथी हुई माला कण्ठमें धारण कर रहे हो ! कवल या दधिमिश्रित ओदनका ग्रास, बेंत, वेणु और शृङ्ग आदि तुम्हारे असाधारण चिह्न हैं; यही सब तुम्हारा सौन्दर्य है; तुम्हारे दोनों चरण अत्यन्त कोमल हैं। तुम गोपालक नन्दके नन्दन हो और तुम्हीं एकमात्र स्तुति करनेयोग्य हो ! अतएव तुमको प्राप्त करनेके उद्देश्यसे मैं तुम्हारा स्तवन करता हूँ।"

भागवतके श्रीकृष्ण-स्तुतिके इस श्लोकके पाठके द्वारा प्रभुकी स्तुति करके श्रीवासपण्डितका मन तुष्ट न हुआ। तब वे अपनी भाषामें, स्वच्छन्द-रूपसे, जो उनकी वाणीमें आया, उसीके द्वारा शचीनन्दनकी स्तुति करने लगे। यथा, श्रीचैतन्य-भागवत में—

विश्वम्भर चरणे आमार नमस्कार।
नव-घन जिनि वर्ण, पीत वास जाँर ॥
शचीर नन्दन-पदे मोर नमस्कार।
नव-गुञ्जा, शिखिपुच्छ भूषण जाँहार ॥
गङ्गादास-शिष्य-पदे मोर नमस्कार।
बनमाला, करे दधि-ओदन जाँहार ॥
जगन्नाथ-पुत्र पदे मोर नमस्कार।
कोटि चन्द्र जिनि रूप वदन जाँहार ॥
शिङ्गा, वेत्र, वेणु-चिह्न भूषण जाँहार।
सेइ—तुमि, तोमार चरणे नमस्कार ॥
चारि वेदे जारे घोषे नन्देर कुमार।
सेइ तुमि, तोमार चरणे नमस्कार ॥

---

* 'नाड़ा'=नारा, संस्कृतमें ड़, र और लकारमें अभेद होनेसे नारा-शब्द 'नाड़ा' हो गया। 'नार' शब्द जीव-समष्टिका द्योतक है। उसमें अन्तर्यामीरूपसे अधिष्ठित तत्त्व ही 'नारा' शब्दवाच्य हैं। इस अर्थमें 'नाड़ा' का भाव है—महाविष्णु। यह अद्वैत आचार्यके लिए प्रयुक्त हुआ है। दूसरा अर्थ—मुण्डितःमस्तक होनेसे भी अद्वैताचार्यकी महाप्रभु 'नाड़ा' कहा करते थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुमि विष्णु, तुमि कृष्ण, तुमि यज्ञेश्वर ।
तोमार चरणोदके गङ्गा-तीर्थवर ॥
जानकी-वल्लभ तुमि, तुमि नरसिंह ।
अज-भव-आदि तव चरणेर भृङ्ग ॥
तुमि से वेदान्त-वेद्य, तुमि नारायण ।
तुमि से छलिला बलि हइया बामन ॥
तुमि हयग्रीव, तुमि जगत-जीवन ।
तुमि नीलाचल-चन्द्र संसार तारण ॥
तोमार मायायकार नाहि हय भङ्ग ।
कमला ना जाने—जार संने एकसङ्ग ॥
सङ्गी, सखा, भाइ—सर्वमते सेवे जे ।
हेन प्रभु मोह माने—अन्य जना के ॥
मिथ्या-गृहवासे मोरे पाड़ियाछ भोले ।
तोमा ना जानिआ मोर जन्म गेल हेले ॥
नाना माया करि तुमि आमारे बञ्चिला ।
साजि-धूति आदि करि आमार बहिला ॥
ताथे मोर भय नाहि, शुन प्राणनाथ ।
तुमि हेन प्रभु मोरे हैला साक्षात् ॥
आजि मोर सकल दुःखेर हैल नाश ।
आजि मोर दिवस हैल परकाश ॥
आजि मोर जन्म-कर्म्म—सकल सफल ।
आजि मोर उदय—सकल सुमङ्गल ॥
आजि मोर पितृकुल हइल उद्धार ।
आजि से बसति धन्य हैल आमार ॥
आजि मोर नयन-भाग्येर नाहि सीमा ।
ताहा देखि—जार श्रीचरण सेवे रमा ॥

चै. भा. म. २.२६६-२७४;२७६-२८८

इस प्रकार प्रेमाविष्टभावसे स्तुति करते-करते श्रीवासपण्डित प्रभुके चरणोंमें दण्डवत् गिर पड़े। प्रेमानन्दमें आकुल क्रन्दन करते-करते प्रभुके पद-रजमें पुनः-पुनः लोटने लगे। महाभाग्यवान् श्रीवासपण्डितके सारे अङ्ग पुलकित हो गये, आँखोंसे अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी, प्रेम-कम्पित कलेवर हो गया। वे बारम्बार लम्बी साँस छोड़ने लगे, मानो आज आनन्द-सागरमें गोते लगा रहे हैं। श्रीवासपण्डितके सामने आत्मप्रकाश करके प्रभु देवमन्दिरमें बैठे आनन्दसे हँस रहे हैं। भक्तके भगवान् शचीनन्दन भक्तकी निष्कपट प्रेमभक्तिपूर्ण स्तुति सुनकर सन्तुष्ट होकर मधुर वचनोंसे श्रीवासपण्डितसे बोले—

"तुम्हारे घरमें स्त्री-पुत्रादि जो हों, सबको बुला लो, जिससे वे मेरा रूप देख सकें। पत्नीसहित मेरी पूजा करो और जो चाहो वर माँग लो !"

प्रभु तबतक ऐश्वर्यभावमें चतुर्भुज मूर्तिमें वीरासनसे नृसिंहभावसे सिंहासनपर बैठे थे। श्रीवासपण्डितकी गोष्ठीके ऊपर प्रभुकी असीम कृपा थी। उनके घरके मुसलमान दर्जीतकको प्रभुने कृपा करके स्वरूप दिखलाया था। यह सब लीला-कथा आगे कही जायगी। श्रीवासपण्डित प्रभुकी आज्ञा पाकर सारे परिवारके साथ उनके सामने उपस्थित हुए। नृसिंह-पूजाके लिए धूप, दीप, गन्ध, चन्दन, पुष्प आदि जो कुछ था, उसे प्रभुके पाद-पद्ममें अर्पण करके पूजा की।

श्रीवासपण्डित सपत्नीक श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके चरणोंमें जा गिरे। भाई, बन्धु, पत्नी, दास-दासी, आत्मीय-स्वजन—सभी प्रभुका स्वरूप-दर्शन करके प्रेमानन्दमें आकुल होकर रो पड़े। भक्तवत्सल प्रभुने एक-एक करके सबके सिरपर श्रीचरण-स्पर्श कराके मधुर वचनोंसे आशीर्वाद दिया—"तुम सबकी चित्तवृत्ति मेरेमें लगी रहे !"

प्रभुके इस शुभ आशीर्वादको सुनकर सब आनन्दमें गद्गद होकर उनके चरण-कमलोंमें गिरने लगे और सब मिलकर क्रन्दन करने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने अब अपने महामहिमामय ऐश्वर्य-रूपको संवरण किया। वे भगवान्-भावमें श्रीवासपण्डितको सम्बोधन करके मधुर मुस्कानके साथ अपना तत्त्व कहने लगे—

"अरे श्रीनिवास ! राजाकी नाव तुमको पकड़ने आ रही है—इससे तुमको भय हो रहा है क्या ? अनन्त ब्रह्माण्डमें जितने जीव हैं, उन सबका प्रेरक मैं हूँ। राजा भी मेरी प्रेरणाके विना कुछ नहीं कर सकता। यदि वह अपनी स्वतन्त्र इच्छासे तुम लोगोंको पकड़ना चाहे तो सबसे पहले मैं जाकर उसकी नौकापर चढ़ जाऊँगा और राजाके सम्मुख उपस्थित होऊँगा। मुझे देखकर क्या राजा सिंहासनपर बैठा रह सकता है ? यदि वह सिंहासनपर बैठा मुझसे कोई प्रश्न करेगा तो मैं उसको अपने सारे मुल्ला और काजियोंको बुलानेको कहूँगा और हाथी-घोड़े, पशु-पक्षी, सबको लानेको कहूँगा। उसके बाद राजासे कहूँगा कि अपने मुल्ला और काजियोंसे कहकर अपने धर्मकी बात बताकर उन सबको क्रन्दन कराकर दिखावे। वे ऐसा न कर सके तो मैं 'श्रीकृष्ण-श्रीकृष्ण' कहकर उन पशु-पक्षियोंसे कृष्ण-कृष्ण कहलाकर क्रन्दन कराके दिखाऊँगा। यदि तुमको विश्वास न हो तो देखो, अभी करके दिखाता हूँ।"

श्रीवासपण्डितके मनमें यवन राजाके अत्याचारका भय उदय हुआ था, यह बात पहले कही जा चुकी है। पाखण्डीगणने उनको जो भय दिखलाया था, उस भयसे भीत होकर उन्होंने प्रभुका स्मरण किया था। भक्तवत्सल हमारे प्रभुने भक्त-दुःख दूर करनेके लिए निजतत्त्वको प्रकाशित करके सारी बात श्रीवासपण्डितको समझा दी। भक्तका कष्ट-निवारण करनेके लिए भवभय-भञ्जनकारी हमारे प्रभुने यह लीलारङ्ग प्रकट किया था। सबके अन्तमें प्रभुने श्रीवासपण्डितसे कहा—"मेरी बातका यदि तुम्हें विश्वास नहीं है तो आओ, अपना प्रभाव मैं तुमको साक्षात् दिखलाता हूँ।"—इतना कहकर श्रीगौर-भगवान्ने श्रीवासपण्डितकी भ्रातृवधूकी एक चार वर्षके उम्रकी बालिकाको सामने देखकर उसे आदरसे पास बुलाया और स्नेहपूर्वक कहा—"नारायणि ! एक बार कृष्ण कहकर रोओ तो !" प्रभुके आदेश-मात्रको सुनकर उस बालिकाके सारे अङ्ग पुलकित हो गये। "हा कृष्ण"—कहकर प्रेमानन्दमें रोते-रोते नारायणी भूतलपर गिर पड़ी। उसके नयनोंके जलसे भूतल सिक्त हो गया। प्रेमाश्रुकी धारासे उसके सारे अङ्ग प्लावित हो गये। 'हा कृष्ण'—कहकर रोते-रोते बालिका प्रभुके चरणोंमें लोटने लगी। सबको यह देखकर आश्चर्य हुआ। यह भाग्यवती बालिका श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरकी गर्भधारिणी थी। सर्व-अवतार-शिरोमणि श्रीगौर-भगवान्की लीला-रचना करके कृतार्थ होनेकी कामनासे स्वयं व्यासजी इस महाभाग्यवती रमणी नारायणीके गर्भसे उदय हुए।

प्रभुके इस लीला-रङ्गको देखकर श्रीवास-पण्डितका सारा भय दूर हो गया। उन्होंने आनन्दमें विभोर होकर प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"कालरूपी आपका विग्रह जब सारी सृष्टिका संहार करता है, तब भी आपके नामके प्रभावसे मुझे भय नहीं होता। अब तो आप स्वयं विराजमान हैं तो भय किसका ?"

आविष्ट होकर श्रीवासपण्डित यह बात बोल गये। प्रच्छन्न अवतार प्रभुने उनकी बात सुनकर मृदु-मधुर-मुस्कानके साथ उनको पास बुलाकर चुपचाप कहा—"आजकी ये सब बातें किसीसे न कहना।"

श्रीवासपण्डितने सिर झुकाकर प्रभुके आदेशको स्वीकार किया। प्रच्छन्न अवतारने यहाँ अपनेको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छिपाया । श्रीवासपण्डितकी गोष्ठीके भाग्यकी सीमा न रही । उनके दास-दासीतकने पूर्णब्रह्म सनातन स्वयं-भगवान् श्रीगौराङ्गसुन्दरके स्वरूप-ऐश्वर्यका दर्शन प्राप्त किया । श्रीवासपण्डित श्रीगौराङ्ग-लीलामें नारदके अवतार हैं । वे पञ्चतत्त्वमें एक तत्त्व हैं । इन महापुरुषके आँगनमें युगधर्म भुवनमङ्गल हरि-संकीर्तन-यज्ञका जो अनुष्ठान हुआ, उसका प्रभाव आज सारे जगत्में अनुभूत हो रहा है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने श्रीवासपण्डितकी महिमाका गान करते हुए लिखा है—

चारि-वेदे जारे देखिवारे अभिलाष ।
ताहा देखे श्रीवासेर जन दासी दास ।।
कि बलिव श्रीवासेर उदार चरित्र ।
जाहार चरण-धूलि संसार पवित्र ।।
कृष्ण-अवतार जेन वसुदेव घरे ।
जतेक विहार सब नन्देर मन्दिरे ।।
जगन्नाथ घरे हैल एइ अवतार ।
श्रीवास पण्डित गृहे सकल विहार ।।
सर्व वैष्णवेर प्रिय पण्डित श्रीवास ।
ताँर बाड़ी गेले मात्र सभार उल्लास ।।
अनुभवे जारे स्तव करें वेदमुखे ।
श्रीवासेर दास-दासी तारे देखे सुखे ।।

चै. भा. म. २.३२८-३३३

श्रीवासका आँगन प्रभुकी कीर्तन-लीला-स्थली थी । श्रीश्रीवृन्दावनचन्द्रकी रासलीला और श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी कीर्तन-विलास-लीला एक ही वस्तु है । अतएव श्रीवासका आँगन नवद्वीप-लीलाकी रास-स्थली है । श्रीवासपण्डितके घरमें प्रभुकी आत्मप्रकाश-लीला तथा श्रीवासके द्वारा प्रभुकी स्तुतिके पाठकी फलश्रुति श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने इस प्रकार लिखी है—

श्रीवास करिला स्तुति-देखिया प्रकाश ।
इहा जेइ शुने सेइ हय कृष्ण-दास ।।

चै. भा. म. २.३२८

श्रीवासके प्रति प्रभुकी अपार कृपा थी । भक्त-अवतार श्रीवासपण्डितकी पुण्य-चरित-कथाके अनुशीलन करनेका सौभाग्य यदि प्रभुने कृपा करके प्रदान किया तो यथास्थान इसका वर्णन करके कृतकृत्य होऊँगा ।

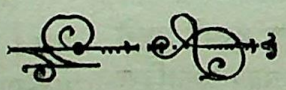

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उन्तीसवाँ अध्याय

श्रीश्रीगौर-नित्यानन्द-मिलन

नवद्वीपे नित्यानन्द-चन्द्र-आगमन ।
इहा जेइ शुने तारे मिले प्रेमधन ।।

चै. भा. म. ३.१३६

श्रीनित्यानन्द-परिचय

इससे पूर्व हरिदास ठाकुरके नवद्वीप-आगमनकी कथा कही जा चुकी है। ठाकुर लोचनदासने लिखा है कि श्रीनित्यानन्दप्रभुके नवद्वीप आनेके बाद हरिदास ठाकुरका नवद्वीपमें आगमन हुआ। श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थमें श्रीनित्यानन्दका आगमन वर्णन करनेके बाद टाकुर लोचनदासने हरिदास ठाकुरके नवद्वीपमें आगमनका वर्णन किया है। हरिदास ठाकुर श्रीअद्वैतप्रभुके पास शान्तिपुरमें रहते थे। प्रभुकी इच्छासे संकीर्तन-यज्ञके आरम्भमें नदियामें आये। हरिदास ठाकुर पहले आये या श्रीनित्यानन्दप्रभु पहले आये, इस विषयको लेकर तर्क-वितर्क करनेका कोई प्रयोजन नहीं है। लीलाग्रन्थमें पहलेकी घटना पीछे, पीछेकी घटना पहले भी वर्णन होती आयी है।

हरिदास ठाकुर श्रीअद्वैतप्रभुके अन्तरङ्ग अनुचर हैं। गौर-आना-गोसाईंके गौर-आना-कार्यके मुख्य सहायक हैं। हरिदास ठाकुरके उच्च संकीर्तनमें, श्रीअद्वैतप्रभुके प्रेम-हुंकार-गर्जनमें तथा तुलसी-गङ्गाजलसे सुदृढ़ भजनमें श्रीश्रीगौर-भगवान्‌को गोलोककी सुख-सम्पद् छोड़कर कलिके जीवोंका उद्धार करनेके लिए नदियामें शचीके गर्भसे अवतीर्ण होना पड़ा। ठाकुर हरिदास ब्रह्माके अवतार थे तथा श्रीअद्वैतप्रभु महाविष्णुके अवतार थे। दोनों एक-दूसरेके सम्बन्धको विशेषरूपसे जानते थे। दोनों एक साथ मिलकर अपना कार्य करते थे। नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग-सुन्दरने युगधर्म संकीर्तन-यज्ञके आरम्भमें हरिदास ठाकुरको अपने धामसे खींच लिया। उन्होंने यहाँ अपने अभिन्न हृदय, जीवोद्धार-कार्यके प्रधान सहायक, नवद्वीप-लीलाके सर्वप्रधान अभिनेता, अपनी पूर्वलीलाके बलरामभैया श्रीनित्यानन्दप्रभुको स्मरण किया तथा नदियामें आकर्षण किया।

श्रीश्रीगौराङ्गप्रभुके नदियामें अवतीर्ण होनेके बहुत पहले श्रीनित्यानन्दप्रभु राढ़ देशके एकचक्रा ग्राममें १३९५ शकाब्दमें माघ शुक्ल त्रयोदशी तिथिमें हाँड़ो ओझा या हाड़ाईपण्डितकी भक्तिमती स्त्री पद्मावतीदेवीके गर्भसे उदय हुए। बारह वर्षतक एकचक्रा ग्राममें बाल नित्यानन्द बाल्य लीला-रङ्गमें पिताके घरपर रहे। उसी समय एक ज्योतिर्विशिष्ट अपरूप संन्यासी उनके पिताके घर अतिथि बने। संन्यासीने विदा होते समय बालक नित्यानन्दका उनके माता-पितासे भिक्षारूपमें याचना की। श्रीनित्यानन्द प्रभुके माता-पिता अतिशय धर्मपरायण थे। यह बालक उनका एकमात्र जीवनका सहारा था। उन्होंने अतिथि संन्यासीकी प्रार्थना पूर्ण की, परन्तु पुत्रको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विदा करके पति-पत्नी दोनों म्रियमाण हो गये। श्रीनित्यानन्दप्रभुका पितृदत्त नाम था—कुबेर, गुरुदत्त नाम था—नित्यानन्द। उनके गुरुका नाम था—श्रीपाद लक्ष्मीपति। कुछ लोग कहते हैं कि वे श्रीपाद माधवेन्द्रपुरीके शिष्य थे। इस बातको लेकर तर्क करना अनावश्यक है।

श्रीनित्यानन्दप्रभु बारह वर्षकी अवस्थासे पिताका घर छोड़कर संन्यासी बनकर प्रायः बीस वर्षतक भारतवर्षके नाना तीर्थोंमें परिभ्रमण करके नवद्वीप आये। नवद्वीप आनेके पहले कुछ दिन वे वृन्दावनमें वन-वन अपने छोटे भाई प्राण-कन्हाईकी खोजमें भटकते रहे। वे बारह वर्षकी अवस्थामें ही सर्वशास्त्र-निष्णात हो गये थे। तीर्थ-पर्यटनकालमें भी उन्होंने शास्त्राध्ययनसे मुँह नहीं मोड़ा। श्रीअद्वैतप्रकाश ग्रन्थमें लिखा है—

"न्यायचूड़ामणि इहार शास्त्रेर आख्याति।"

तीर्थपर्यटनकालमें कृष्ण-प्रेमरस-सिन्धु श्रीपाद माधवेन्द्रपुरी गोस्वामीके साथ उन्होंने बहुत दिन बिताये।

श्रीनित्यानन्दप्रभुका अपरूप-रूप था। ऐसा रूपवान् मनुष्य कभी किसीने कहीं नहीं देखा। रूपका आकर्षण बड़ा तीव्र होता है। जो एक बार उनके अपरूप-रूपका दर्शन करता, वह उनके पाससे जाना नहीं चाहता। श्रीनित्यानन्दप्रभु रूपके सागर थे। उस रूपका वर्णन, अपनी आँखोंसे देखकर पदकर्ता वासुदेव घोषने इस प्रकार किया है—

अरुण वसने, विविध भूषणे,
शिरेते पाग लटपटिया।
चौदिके फिरि-फिरि, बाहु युग तुलि,
नाचत हरि-हरि बलिया।
निताई रँगिया नाचे॥ ध्रुव॥
अरुण नयने, ओ चाँद वदने,
कत ना माधुरी आछे॥
चलन सुन्दर, मत्त करिवर,
नूपुर झंकृत करिया।
भावे अवश, नाहि दिग पाश,
'गौर' बलि हुंकारिया॥

श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीगौराङ्ग-भगवान्‌के आदिभक्त थे। गौर-नामके सिवा वे और कुछ नहीं जानते थे। श्रीगौराङ्ग-लीलाकेव्यासावतार श्रीवृन्दावन ठाकुरने लिखा है—

चैतन्येर आदिभक्त नित्यानन्द राय।
चैतन्येर यश बैसे जाँहार जिह्वाय॥
अहर्निश चैतन्येर कथा प्रभु कहे।
ताने भजिले से चैतन्य-भक्ति हये॥

चै. भा. आ. ६.४१८,४१९

श्रीनित्यानन्द-तत्त्व

श्रीनित्यानन्दप्रभुकी तत्त्व-कथा अति महान् वस्तु है। वह जीव-बुद्धिके अगोचर है। महाजन ऋषिगण साधारण जीव न थे। वे त्रिकालज्ञ ऋषि थे और श्रीभगवान्‌के नित्यदास थे। उन्होंने जो तत्त्व-निर्धारण करके जीवोंके हितार्थ लिपिबद्ध कर दिया है, उससे ही यहाँ कुछ-कुछ लेकर उद्धृत किया जायगा। श्रीभगवान्‌के नित्यसिद्ध पार्षदगण उनके अवतारके साथ-साथ भूतलमें अवतीर्ण होते हैं। अवतार-तत्त्वको बतलानेके लिए ही उनका आविर्भाव होता है। वे इस गूढ़-तत्त्वको समझते हैं कि श्रीभगवान्‌के अवतार-तत्त्वको समझाये बिना जीवके लिए कुछ साध्य नहीं रहता।

श्रीचैतन्यचरितामृतकार श्रीकृष्णदास कविराज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गोस्वामी निम्नाङ्कित पाँच श्लोकोंमें श्रीश्रीनित्यानन्द-तत्त्व लिख गये हैं—

संकर्षणः कारणतोयशायी
गर्भोदशायी च पयोऽब्धिशायी ।
शेषश्च यस्यांशकला स नित्या-
नन्दाख्यरायः शरणं ममास्तु ॥
मायातीते व्यापिवैकुण्ठलोके
पूर्णैश्वर्ये श्रीचतुर्व्यूहमध्ये ।
रूपं यस्योद्भाति संकर्षणाख्यं
तं श्रीनित्यानन्दरायं प्रपद्ये ॥
मायाभर्त्ताआण्डसंघाश्रयाङ्गः
शेते साक्षात् कारणाम्भोधिमध्ये ।
यस्यैकांशः श्रीपूमानादिदेव-
स्तं श्रीनित्यानन्दरायं प्रपद्ये ॥
यस्यांशांशः श्रीलगर्भोदशायी,
यन्नाभ्यब्जं लोकसंघातनालम् ।
लोकस्रष्टुः सूतिकाधामधातु-
स्तं श्रीनित्यानन्दरायं प्रपद्ये ॥
यस्यांशांशांश परात्माखिलानां
पोष्टा विष्णुर्भाति दुग्धाब्धिशायी ।
क्षौणीभर्ता यत्कला सोऽप्यनन्त-
स्तं श्रीनित्यानन्दरायं प्रपद्ये ॥

चै. च. आ. १.७-११

अर्थ—"जो चतुर्व्यूहमध्यस्थित संकर्षण कारणाब्धिशायी महासमष्टिके अन्तर्यामी प्रथम पुरुष महाविष्णु हैं, जो हिरण्यगर्भके अन्तर्यामी गर्भोदशायी द्वितीय पुरुष सहस्रशीर्षा विराट् हैं, जो व्यष्टि जीवके अन्तर्यामी क्षीरोदशायी तृतीय पुरुष चतुर्भुज विष्णु हैं तथा जो अनन्तदेव हैं, ये सब जिनके अंश और कला हैं, उन्हीं श्रीनित्यानन्द नामक बलराम अवतार अथवा मूल संकर्षणके मैं शरणापन्न होता हूँ।"

"मायातीत, पूर्णैश्वर्य-परिपूर्ण, सर्वव्यापक वैकुण्ठलोकमें वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध—इन चार व्यूहोंमें संकर्षण-नामक जिनका रूप प्रकाशित है, उन श्रीनित्यानन्द-नामक बलराम-अवतारके मैं शरणापन्न होता हूँ।"

"जो साक्षात् मायाधीश, अर्थात् मायाके द्रष्टा हैं, ब्रह्माण्डसमूह जिनके अण्डसे अद्भूत हुआ है, जो कारणार्णवमें शयन करते हैं, वे आदि-अवतार-पुरुष महाविष्णु जिनके एकांश हैं, उन श्रीनित्यानन्द-नामक–बलराम-अवतारके मैं शरणापन्न होता हूँ।"

"चतुर्दश-भुवनात्मक सारे लोक जिनके आश्रय हैं तथा जिनका नाभि-कमल लोकपितामह ब्रह्माका उत्पत्ति-स्थान है, वे क्षीरोदशायी विराट् पुरुष जिसके अंशके अंश हैं, उन श्रीनित्यानन्द-नामक बलराम-अवतारके मैं शरणापन्न होता हूँ।"

"निखिल-जीवोंके पालनकर्ता और अन्तर्यामी विष्णु जिनके अंशांशके अंश हैं तथा धरणीधर सुप्रसिद्ध अनन्तदेव भी जिनकी कला हैं, उन श्रीनित्यानन्द-नामक बलराम-अवतारके मैं शरणापन्न होता हूँ।"

पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने अपने रचे इन पयार श्लोकोंमें भी श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभुके इस मूल-तत्त्वका निर्णय और व्याख्या करके कलिग्रस्त जीवका महान् उपकार किया है। यथा, श्रीचैतन्य-चरितामृतमें—

सर्व अवतारी कृष्ण—स्वयं भगवान् ।
ताँहार द्वितीय देह—श्रीबलराम ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एकइ स्वरूप—दुइ भिन्न मात्र काय ।
आद्य कायव्यूह—कृष्ण लीलार सहाय ॥
सेइ कृष्ण—नवद्वीपे श्रीचैतन्यचन्द्र ।
सेइ बलराम सङ्गे—श्रीनित्यानन्द ॥
श्रीबलराम गोसाञि मूल संकर्षण ।
पञ्चरूप[1] धरि करे कृष्णेर सेवन ॥
आपने करेन कृष्णलीलाय सहाय ।
सृष्टि-लीला कार्य करे धरि चारि काय ॥
सृष्ट्यादिक[2] सेवा ताँर आज्ञार पालन ।
शेष-रूपे करे कृष्णेर विविध सेवन ॥[3]
सर्वरूपे आस्वादये कृष्ण-सेवानन्द ।
सेइ राम श्रीचैतन्येर-सङ्गे नित्यानन्द ॥

चै. च. आ. ५.३-९

---

[1] पञ्च रूप=संकर्षण. कारणार्णवशायी, गर्भोदशायी, क्षीरोदशायी, शेष—ये पाँच रूप हैं। इनमें स्वयं अर्थात् संकर्षण-रूपमें कृष्णलीलामें सहायता करते हैं और कारणार्णवशायी आदि चार रूपोंमें सृष्टि-कार्यादि कहते हैं।

[2] सृष्ट्यादि कार्यके द्वारा किस प्रकार भगवत्सेवा होती है, यह कह रहे हैं—"सृष्ट्यादिके द्वारा उनकी आज्ञाका पालन होता है।" इसका अर्थ यह है कि सृष्ट्यादि कार्यके निमित्त उनकी आज्ञाका पालन करना ही उनकी सेवा है।

[3] 'विविध सेवन'=

निवासशैयासनपादुकांशुकोपाधानवर्षातपवारणादिभिः।
शरीरभेदैस्तदशेषतां गतैर्यथोचितं शेष इतीरितो जनैः॥

इस श्लोकोक्त वासस्थान, शैया, आसन, पादुका, वस्त्र, उपाधान, छत्र आदि रूप धारण करके शेषरूपमें सेवा करते हैं।

श्रीचैतन्यभागवतमें प्रभुवाक्य श्रीनित्यानन्द-प्रभुके प्रति—

नाम-रूपे तुमि नित्यानन्द मूर्त्तिमन्त ।
श्रीवैष्णवधाम तुमि—ईश्वर अनन्त ॥

जत किछु तोमार श्रीअङ्गे अलंकार ।
सत्य सत्य सत्य भक्तियोग-अवतार ॥

स्वर्ण-मुक्ता-रूपा-काँसा-रुद्राक्षादि-रूपे ।
नवविधा भक्ति धरि आछ निज सुखे ॥

नीच जाति पतित अधम जत जन ।
तोमा हैते सभार हैल विमोचन ॥

जे भक्ति दियाछ तुमि बनिक् सभारे ।
ताहा बाञ्छे सुर-सिद्ध-मुनि-योगेश्वरे ॥

'स्वतन्त्र' करिया वेदे जे कृष्णेरे कहे ।
हेन कृष्ण पार तुमि करिते विक्रये ॥

तोमार महिमा जानिवारि शक्ति कार ।
मूर्तिमन्त तुमि कृष्णरस-अवतार ॥

बाह्य नाहि जान तुमि संकीर्तन सुखे ।
अहर्निश कृष्ण-गुण तोमार श्रीमुखे ॥

कृष्णचन्द्र तोमार हृदये निरन्तर ।
तोमार विग्रह कृष्ण-विलासेर घर ॥

अत एव तोमारे जे जन प्रीत करे ।
सत्य सत्य सत्य कृष्ण ना छाड़ेन ताँरे ॥

चै. भा. अं. ८.३७-४६

प्रभुवाक्य सर्वतत्त्वसार है। श्रीश्रीमन्महाप्रभु परमेश्वर हैं, श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभु ईश्वर हैं। ईश्वर-तत्त्वको 'परमेश्वर' जानते हैं। क्षुद्र जीव अल्पबुद्धि है। ईश्वर-तत्त्वका मर्म हृदयंगम करनेमें अशक्त है। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ईश्वरे परमेश्वरे कि हइल कथा ।
वेदे से इहार तत्त्व जानेन सर्वथा ।।
नित्यानन्दे चैतन्ये जखने देखा हय ।
प्राय आर केहो नाहि थाके से समय ।।

चै. भा. अं. ८.७३,७४

प्रभु कलिके प्रछन्न अवतार हैं। उनकी नवद्वीप-लीला गुप्तलीला है। प्रभु जिस प्रकार अपने तत्त्वको प्रकट नही करते, उसी प्रकार वे और किसीको भी प्रकट नहीं करने देते। इसी प्रकार वे अपने अभिन्न-हृदय श्रीनित्यानन्दप्रभुको भी छिपाना चाहते हैं, उनके तत्त्वको भी प्रकट करना नहीं चाहते।

प्रभुके छिपानेसे क्या होगा ? उनके अन्तरङ्ग नित्यानन्दके पार्षदगणने कलिग्रस्त जीवके मङ्गलके लिए प्रभुकी इच्छासे श्रीनित्यानन्दप्रभुको भी प्रकट किया है। वे अति सुस्पष्ट शब्दोंमें लिख गये हैं–

"व्रजेन्द्रनन्दन जेइ, शचीसुत हैल सेइ,
बलराम हैल निताइ।"

यहाँतक तत्त्व-कथा हुई। पहले कह चुका हूँ कि तत्त्व-कथा बहुत बड़ी चीज है। हम क्षुद्र-बुद्धि जीव हैं। तत्त्व-कथा नहीं समझते, तथापि महाजन ऋषिगण जो उपदेश दे गये हैं, उसमें हमको निष्कपट विश्वास करना आवश्यक है। ऋषिवाक्यमें श्रद्धा और विश्वास हुए बिना भजन-पथमें कोई अग्रसर नहीं हो सकता। महाजन ऋषिवाक्यमें जिसका दृढ़ विश्वास नहीं है, वह पुरुष बड़ा अभागा है।

इस महाजन-वाक्यपर निर्भर करके भजन-पथमें अग्रसर होइये ! आप देखेंगे कि शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी। श्रीकविराज गोस्वामीने लिखा है–

तर्क ना करिह, तर्क अगोचर ताँर रीति।
विश्वास करिया शुन करिया प्रतीति ।।

चै. च. अं. ३.२१५

व्रज-भ्रमण—नवद्वीप आगमन

प्रभुके नवद्वीप-लीला-रसके लोलुप कृपालु पाठकवृन्द श्रीनित्यानन्दप्रभुके नवद्वीप-आगमनके वृत्तान्तको मन लगाकर सुनें। श्रीगौर-नित्यानन्द-मिलन-कहानी अति मधुर है। प्रभुके नवद्वीप-लीला-समुद्रका यह प्रबल प्रवाह है। शतधाराओंमें यह लीला-प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। मधुपूर्ण घट फूटनेपर जैसे शतधारामें मधु-वृष्टि होती है, उसी प्रकार श्रीगौर-नित्यानन्द-मिलन-सुधा-वृष्टि एकदिन नदियामें हुई थी। नदियावासी भक्त-भ्रमरवृन्द प्राण भरकर परम आनन्दपूर्वक उस सुधाका पान करके अजर-अमर हो गये थे। वह सुधा-तरङ्ग आज भी तरङ्गित है, वह मधु-भाण्डार आजतक अक्षय बना हुआ है। आइये, हमारे प्राणसे भी अधिक प्रिय गौर-भक्तवृन्द ! हम-सब मिलकर इस अपूर्व सुधा-रसका आस्वादन करके कृतार्थ हो जायँ। जीवनको सार्थक करें।

श्रीनित्यानन्दप्रभु बीस वर्षतक भारतवर्षके सब तीर्थोंमें घूमकर अन्तमें व्रजधाममें आये। पूर्वलीला-स्थली दर्शन करके उनके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। एक-एक करके सारी पूर्व-स्मृति उनके मनमें उदय हुई। वे कृष्णप्रेममें उन्मत्त होकर केवल हुंकार-गर्जन करने लगे उनके प्रेम-हुंकार-गर्जनके भीतरसे मानो एक मधुर प्रेमोन्मादकारी प्रियजन-आह्वान-गीतिकी सुन्दर स्वर-लहरी निकलकर व्रजवासियोंके चित्तको हरने लगी। श्रीवृन्दावनमें आकर बाल्यभावमें विभावित होकर श्रीनित्यानन्दप्रभु व्रजकी उस चिर-परिचित रजमें बालकके समान निरन्तर लोटते हुए धूलि-खेल करने लगे। उनके मुँहमें कृष्णनामके सिवा और कोई बात न थी, धूलि-खेलके सिवा अन्य कोई कार्य न था। केवल व्रजकी रजमें निरन्तर लोटने लगे, वनमें दौड़ने लगे, उनकी आहार-निद्राकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चेष्टा न रही। किसी दिन यदि कोई दे देता तो केवल दूध पी लेते थे। श्रीनित्यानन्दका यह अद्भुत चरित्र समझनेकी किसीमें शक्ति न थी। व्रजमें आकर व्रजेन्द्रनन्दन प्राण-कन्हाईको न देखकर वत्सविरहित गायके समान सारे मथुरा-मण्डलमें दौड़ लगाते रहे। कहीं भी उनको जीवन-सर्वस्व अपने प्राण-कन्हाईका दर्शन न हुआ। वे उन्मत्तके समान भावावेशमें विभोर होकर 'प्राण कन्हाई! भाई कन्हाई!' कह-कहकर कभी-कभी उच्चस्वरसे रो उठते थे। उनकी आर्त्त दशा देखकर पाषाण-हृदय भी द्रवित हो जाते थे। वे पछाड़ खा-खाकर श्रीवृन्दावनकी रजमें बाल्यभावमें निरन्तर लोटने लगे।

इधर उसी समय श्रीश्रीगौरचन्द्रने नवद्वीपमें आत्मप्रकाश किया था। कीर्तनानन्दमें विभोर होकर वे अग्रज बलरामके विरहमें कातरभावसे "भैया बलराम! भैया श्रीदाम!" आदि व्रज-सखावृन्दका नाम ले लेकर विलाप करते हैं। दोनों एक-दूसरेके आकर्षणसे आकृष्ट हुए। सर्वज्ञ श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीवृन्दावनमें रहते ही श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके आत्मप्रकाशको जान गये। उन्होंने सुना कि व्रजके कन्हाई शचीके घरमें निमाईरूपमें नदियामें अवतीर्ण हुए हैं। व्रजेन्द्रनन्दन अब शचीनन्दन हुए हैं। यह बात सुनते ही श्रीनित्यानन्दप्रभु बेतहासा श्रीवृन्दावनसे नवद्वीपकी ओर दौड़ पड़े।

यहाँ 'भैया श्रीदाम' का कुछ परिचय सुनिये! पूर्वलीलाके श्रीदाम श्रीगौराङ्ग-लीलाके अभिराम गोस्वामी हैं; उनका दूसरा नाम रामदास है। अभिराम व्रजके श्रीदाम हैं। वे बलरामावतार श्रीनित्यानन्दके पार्षद हैं। जब श्रीवृन्दावनचन्द्र नन्दनन्दन श्रीकृष्ण अन्तर्हित हो गये, तब व्रजवासी गोप-गोपिकाओंकी जो दशा हुई, उसका वर्णन करनेकी आवश्यकता नहीं। उस समय तेजस्वी श्रीदाम मन-ही-मन दृढ़ संकल्प करके गोवर्द्धन-पर्वतकी एक कन्दरामें एकान्तमें जाकर ध्यानमें बैठे और उसी अवस्थामें वे निरन्तर अपने प्रिय सखा श्रीकृष्णको देखने लगे। अतएव उनको दुःसह कृष्ण-विरह-दुःख सहन नहीं करना पड़ा। युगके बाद युग बीतते गये, परन्तु श्रीदामका ध्यान भङ्ग न हुआ। इस प्रकार कितने दिन बीत गये, यह उनको जान ही न पड़ा।

बलरामावतार श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीवृन्दावनके उस जनशून्य गोवर्द्धनगिरिकी कन्दरामें खड़े होकर 'भाई कन्हाई रे! भाई श्रीदाम रे!' कहकर प्रेमभरे उच्चस्वरसे पुकारने लगे। निर्जन गिरिकी कन्दरामें वही पूर्वपरिचित बलरामकी मधुर कण्ठध्वनि पहुँची, ध्यानमग्न जड़वत् निश्चेष्ट श्रीदामके कानोंमें वह मधुर ध्वनि प्रविष्ट हुई। तत्काल उनके जड़वत् ध्यानमग्न शरीरमें जीवनका संचार हुआ और वे आँखें खोलकर उठकर खड़े हो गये। कुछ देरतक इधर-उधर देखा, फिर उसी चिर-परिचित बलरामकी कर्णध्वनिको लक्ष्य करके निर्जन वनमें चल पड़े। गोवर्द्धन-गिरिके एक निर्जन वनमें बलरामके साथ श्रीदामका शुभ मिलन हुआ। कोई किसीको पहचान न सका। दोनों स्तम्भित होकर एक-दूसरेकी ओर एकटक देखने लगे। श्रीदामने कहा—"हे भाई! तुम कौन हो? मेरा नाम लेकर तुम्हारे पुकारते ही मेरी निद्राभङ्ग हो गयी। तुम्हारा मधुर कण्ठस्वर मुझे चिर-परिचित जान पड़ा। परन्तु बड़े ही आश्चर्यकी बात है, मैं तुमको पहचान नहीं रहा हूँ। क्या कारण है?" जब श्रीनिताई-चाँदने अपना परिचय दिया, प्राणसखा श्रीदामके सामने आत्मतत्त्व प्रकट किया, तब श्रीदाम आनन्दमें गद्गद होकर बोले—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीदमा कहेन कोथा सिङ्गा धड़ा चूड़ा।
नागरालि छड़ाइया हैयाछ नाड़ा मूड़ा॥
श्वेत-गौर लुकाइये अरुण-गौर केने।
दादा बलराम बलि ना लागये मने॥
देखि तबे तोर हस्ते करतालि दिया।
यमुना पर्यन्त आमि जाब पलाइया॥

चैतन्यभागवतका परिशिष्ट

—इतना कहकर ताली बजाकर श्रीदामने कहा—'मुझको पकड़ो तो'—और एक लम्बी दौड़ लगायी। यह वही व्रजके ग्वाल-बालकी दौड़-धूप और धूल-धूलका खेल था। यह थी पूर्वलीलाका परिचय देनेवाली परीक्षा। इस परीक्षामें श्रीनिताई-चाँद उत्तीर्ण हो गये। दस ही कदम जाते-जाते बलरामने श्रीदामको पकड़ लिया और उनके गलेमें हाथ डालकर उनको एक मधुर चुम्बन प्रदान किया तथा प्रेमगद्गदवाणीमें कहा—"भाई श्रीदाम! क्या अब भी तुझे संदेह है?" श्रीदाम आश्चर्यचकित होकर एकटक उनके श्रीमुखकी ओर देखने लगे। तब बलरामने क्या किया?

भाई रे बलिया तार कण्ठे हस्त दिया।
शुभ्र-गौर-कान्ति हल-मूसल धरिया॥
कहिलेन एइ हइयाछे कलिकाल।
घूमाये रहिलि मूर्ख जातिया गोपाल॥
तार स्कन्धे हल दिया कैल आकर्षण।
खर्व हओ बलि एइ बलिल वचन॥

चैतन्यभागवतका परिशिष्ट

अन्तिम बातकी व्याख्या यहाँ आवश्यक है। द्वापरयुगमें मनुष्यकी देह सात हाथ की थी। श्रीदाम द्वापरयुगके लोग थे। वे समाधिस्थ रहे, अतएव उनकी सात हाथकी देह वर्तमान थी। उसी पूर्व देहमें वे प्रभुकी इच्छासे बलराम अवतार श्रीनिताई-चाँदसे मिले; परन्तु निताई-चाँदकी देह कलियुगके हिसाबसे थी। अतएव उन्होंने अपने प्राण-सखाको कलिकालके योग्य देह प्रदान की, तथापि उनको चार हाथकी देह प्राप्त हुई—

तबू आपनार हाते रहे चारि हात।
सुन्दर शरीर महापुरुष विख्यात॥
सेइ शुद्ध सख्यभाव हय सर्वकाल।
अतएव नाम हैल अभिराम गोपाल॥

चैतन्यभागवतका परिशिष्ट

इन अभिराम गोस्वामीके साथ भी श्रीगौराङ्ग-सुन्दरका मिलन हुआ था, श्रीनित्यानन्दप्रभुके समान इसी एक भावमें। यह सब लीला-कथा यथास्थान वर्णन की जायगी। कहा जाता है कि श्रीनिताई-चाँदने अपने इस श्रीदामभाईसे पहले-पहल सुना कि उनके भाई प्राण-कन्हाई अब नदियामें गौर हुए हैं, अतएव वे नवद्वीपके लिए वहाँसे चल पड़े।

प्रभु नित्यानन्द गौर-प्रेममें उन्मत्त होकर गौराङ्ग-नाम-गान करते हुए मदमत्त हाथीके समान पृथ्वीपर झूमते-झामते द्रुत गतिसे नदियाकी ओर चले। प्रेमोन्मत्त हो वे कभी रोते हैं, कभी अट्टहास करते हैं। उनके कानोंमें मकर-कुण्डल है, सिरपर नानावर्णकी पगड़ी है, नाकमें नथ, पदमें नूपुर, गलेमें तुलसी और रुद्राक्षकी माला है। कृष्णप्रेममें उन्मत्त व्रजनारी जैसे पागलिनीके समान कृष्णके दर्शनके लिए मार्गमें जाती थीं, उसी प्रकार श्रीनित्यानन्दप्रभु गौर-प्रेममें सुध-बुध खोकर अवधूत वेषमें नदियामें गौर-दर्शनके लिए जा रहे हैं। अपरूप-रूप-छटासे घाट-बाटको आलोकित करते हुए वे मधुर नृत्यावेशमें डोलते परमानन्दमें चले जा रहे हैं। श्रीवृन्दावनदासने लिखा है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चले निताइ प्रेमभरे, दिग् टलमल करे,
पदभरे अवनी लोटाय।
पूर्वे जेन व्रजधाम, मधुमत्त बलराम,
नानादिके धूरिया खेलाय॥
आध-आध कथा कय, क्षणे कान्दे उच्च राय,
मकर-कुण्डल दोले काने॥
अङ्ग हेलि दुलि चले, गौर-गौर सदा बले,
दिवा-निशि आन नहि जाने॥

रास्तेमें जो लोग उनको देखते हैं, वे ही उनके अपरूप-रूपसे मुग्ध होकर उनके साथ हो लेते हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु जिनके प्रति एकबार शुभ दृष्टिपात करते हैं, उनका चित्त तत्काल शुद्ध हो जाता है। एकबार दर्शनमात्र होनेसे सब लोग उनके चरणोंमें आत्मसमर्पण करते हैं। अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ बहुत-से लोग जा रहे हैं। वे नहीं जानते कि कहाँ जा रहे हैं; जिनके साथ जा रहे हैं, उनको भी नहीं पहचानते। तथापि वे चले जा रहे हैं। बहुत दूर आ गये हैं। अपने घर-द्वारको छोड़कर, आत्मीय-स्वजनको छोड़कर—तथापि उनके मनमें तनिक भी दुःख नहीं है। सदानन्द प्रेममय श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ हँसते-हँसते, नाचते-नाचते बालकके समान बड़े आनन्दसे वे नदियाकी ओर जा रहे हैं। उन्होंने श्रीनित्यानन्दप्रभुके मुखसे सुना है कि नदियामें श्रीकृष्णभगवान्‌का पुनराविर्भाव हुआ है; उनका नाम 'श्रीगौराङ्ग' है। वे व्रजके कन्हाई हैं; अपना वर्ण छिपाकर गौरवर्णमें नदियामें विप्रकुलमें उदय हुए हैं। उन्होंने यह भी सुना है कि ये अवधूत संन्यासी नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गके बड़े भाई हैं। यह बात श्रीनित्यानन्दप्रभुने स्वयं उनसे कही है—

आमारे चेन ना भाइ, बाड़ी एबे नदियाय,
सदा नाचि ताहे नूपुर पाय।
शुनेछ नदेर अवतार, श्रीगौराङ्ग नाम जाँर,
आमि निताइ तार बड़ भाई॥

(बलरामदास)

इस प्रकार प्रेमानन्दमें नाचते-नाचते श्रीवृन्दावनसे श्रीनित्यानन्दप्रभु नदियामें आये।* उस समय श्रीगौर-भगवान्‌ने आत्मप्रकाश किया था। नदियामें युगधर्म सङ्कीर्तन-यज्ञका आरम्भ कर दिया था। श्रीवासके आँगनमें उनके अन्तरङ्ग भक्तवृन्दने उनका भगवान्‌के भावमें अभिषेक किया था। श्रीनित्यानन्दप्रभु नवद्वीपमें नन्दनाचार्यके घरमें आकर उपस्थित हुए। नदियाके रास्ते-रास्ते श्रीनिताई-चाँद अपने भाई कन्हाईका अनुसन्धान करते-करते आये हैं; वे अत्यन्त आग्रहपूर्वक नदियावासियोंको सम्बोधन करके कातर और करुण स्वरमें कह रहे हैं—

ओ भाइ बल रे नदेवासी।
निमाइ पण्डितेर कोन बाड़ी रे।
प्राणेर भाइ कानूरे आमि कोथा पाब रे।
बले दे रे आमि प्रेमेर भाइ
देखते एसेछि रे॥
(तार) व्रजे नाम छिल माखनचोरा,
नदेय एसे से जे हैछे गोर,
(तारे चेन ना, चेन ना, चेन ना रे।)
(तार) व्रजे नाम छिल व्रजेर कानूं,
एखन नदे एसे गौर-तनू॥

प्राचीन पद।

---

* श्रीनित्यानन्दप्रभुने १०३० शकाब्दके ज्येष्ठमासमें नवद्वीपमें शुभागमन किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जीवाधम ग्रन्थकार-रचित एक समयोचितपद भी यहाँ उद्धृत किया जाता है—

यथा राग।

नदेर पथे के ओइ नेचे चले जाय।

कटिते कौपीन परा, रूपे जग मनहरा,
प्रेमानन्दे बाहु तुले हरिनाम गाय॥
पथे चले नेचे नेचे, जाके देखे ताके पूछे,
निमाइ पण्डितेर बल बाड़ी कोथाय।
तेज-पुञ्ज कलेवर, अपरूप कान्तिधर,
जग जन मन हरे वदन शोभाय॥
मुखे मृदु-मृदु हाँसी, उछले सुधार राशि,
रङ्गे-भङ्गे पथे-घाटे थमके दाँड़ाय।
लम्फ झम्फ हुंहुंकारे, विश्व कम्पे पदभरे,
नदेवासी बाल-वृद्ध पिछू-पिछू धाय॥
बाल-वृद्ध-युवा नारी, सबे बले हरि हरि,
कोन् योगी-ऋषि बूझि एल नदियाय।
मुखे तार एकइ कथा, बेड़ाय बले यथा-तथा,
निमाइ पण्डितेर बल बाड़ी कोथाय॥
सबे हरि हरि बल, जीव तराते बलाइ एल,
मिलिते कनाइ सने नव नदियाय।
दास हरिदासे भणे, बलाइ एर सहाय बिने,
छोट भाइ कानाइ एर केवा लाग पाय॥
बलाइ चाँद निताइ रूपे, एसे नव नवद्वीपे,
कानाइ एर बाड़ी घर खूँजिया बड़ाय॥

नन्दनाचार्य बड़े भागवत हैं, प्रभुके विशेष कृपापात्र हैं। उन्होंने नित्यानन्दप्रभुको बड़े आदरके साथ अपने घरमें स्थान दिया। नित्यानन्दके रूपसे मुग्ध होकर नन्दनाचार्य मन-ही-मन सोचने लगे कि श्रीगौराङ्गके सिवा ऐसा रूपवान् पुरुष तो मैंने कहीं नहीं देखा। वे नहीं जानते थे कि इतना रूपवान् भी मनुष्य हो सकता है। श्रीगौराङ्ग-प्रभुको उन्होंने भगवद्भावमें अपने हृदयमें अभिषिक्त किया है। श्रीनित्यानन्दप्रभुको देखकर उनके मनमें आया कि कोई दूसरे भगवान् आकर नदियामें उदय हो गये हैं। उसी समय उनको तत्त्व-ज्ञान हो आया कि भगवान् तो अद्वितीय हैं। वे दो नहीं हैं। नन्दनाचार्यने तत्त्वज्ञानको भ्रान्त समझकर श्रीभगवान्के लीला-सिन्धुका आश्रय लिया। उन्होंने देखा कि स्वयं भगवान् श्रीकृष्णके द्वितीय रूप बलरामजी भी भगवान् हैं, तब श्रीगौराङ्गप्रभुके बड़े भाई भगवान् क्यों न होंगे? श्रीनित्यानन्दप्रभुने नन्दनाचार्यको बतलाया था कि वे श्रीगौराङ्गके बड़े भाई हैं। नन्दनाचार्यके मनमें श्रीविश्वरूप-प्रभुकी बात उदय हुई। उनकी अपरूप-रूपराशि याद आ गयी। बहुत दिनोंकी बात थी, तब भी मन-ही-मन मिलाकर देखा कि इस अवधूत संन्यासी और प्रभुके अग्रजमें अनेक बातोंमें समानता है। परन्तु इस बातको उन्होने अभी अपने मनमें ही रखा।

श्रीनित्यानन्दप्रभु नन्दनाचार्यके घरमें प्रच्छन्न रूपसे रहने लगे। उनके इस आत्मगोपनका कुछ गूढ़ मर्म था। श्रीनित्यानन्दप्रभुके मनमें यह भाव था कि देखें, हमारे भाई प्राण-कन्हाई अपने भैयाकी खोज-खबर लेते हैं या नहीं? दोनों ही भाई चतुर-चूड़ामणि हैं। अपने प्राण-कन्हाईको बलराम विशेष रूपसे जानते हैं। दोनों ही भाई रँगीले हैं। रङ्ग दिखलानेकी दोनोंकी इच्छा है।

इधर शचीनन्दनने श्रीनित्यानन्दप्रभुके नवद्वीपमें आनेका समाचार सुना। उन्होंने समझ लिया कि उनके भैया बलराम उनको खोजनेके लिए नदियामें आये हैं। प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुआ। एक दिन प्रभु श्रीवासके आँगनमें बैठकर प्रेमानन्दमें कृष्ण-कथा कह रहे थे। वहाँ सभी भक्तवृन्द उपस्थित थे। प्रभुका सहास्य वदन है, प्रफुल्ल हृदय है। उन्होंने नित्यानन्दभावमें विभोर होकर भक्तवृन्दको सम्बोधन करते हुए कहा—

आरे भाइ ! दिन दुइ तिनेर भीतरे।
कोन महापुरुष एक आसिब एथारे॥

चै. भा. म. ३.१३९

प्रभुके श्रीमुखसे यह बात सुनकर सभी परम आनन्दित हुए।

श्रीनित्यानन्द और प्रभुका मिलन

रातमें प्रभुने एक अद्‌भुत स्वप्न देखा। दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर गङ्गा-स्नान और विष्णु-पूजा करके जब वे श्रीवासके आँगनमें भक्तवृन्दके साथ मिले, तब यह अपूर्व स्वप्न-वृत्तान्त सबको कह सुनाया—

"आज मैंने स्वप्नमें एक अद्‌भुत सुन्दर रूप देखा। तालध्वज दिव्य रथ मेरे द्वारपर आया। उसमें पीछेकी तरफ एक विराट्-काय पुरुष विराजमान थे। उनके स्कन्धपर मूसल था। वे प्रेमोन्मत्त अस्थिर-से थे। उनके बाँये हाथमें कमण्डलु था। वे नीलाम्बर धारण किये थे, मस्तकपर भी नीलवस्त्र था। बाँये कानमें विचित्र कुण्डल था। ऐसे लगते थे, मानो हलधर बलराम हों। 'यह घर निमाई पण्डितका है क्या ?'—इस प्रकार बार-बार पूछते रहे। ऐसा अत्यन्त शक्तिशाली, महाप्रतापी अवधूत वेश कभी देखनेमें नहीं आया। उनको देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने उनका परिचय पूछा तो उन्होंने हँसकर उत्तर दिया—'मैं तुम्हारा भाई हूँ, कल तुम्हारा और मेरा परिचय होगा।' उनके वचन सुनकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। मुझे भी ऐसा प्रतीत होने लगा कि वे मेरे भाई ही हैं।"

प्रभु अपने स्वप्नकी बात कहते-कहते आविष्ट हो गये। उनका बाह्य ज्ञान लुप्त हो गया। उनको बलरामका आवेश हुआ। वे तब 'मय लाओ ! मय लाओ !'—कहकर हुङ्कार-गर्जन करके मस्तक डुलाने लगे। भक्तोंके मनमें विषम भयका उद्रेक हुआ। सब लोग भयसे काँपने लगे और दूर खड़े होकर प्रभुके लाल मुखचन्द्रकी ओर देखने लये। तब श्रीवासपण्डित प्रभुके समीप आकर हाथ जोड़कर बोले—

"जिस मदिराको आप चाहते हैं, वह तो आपके पास ही है। आप जिसको चाहें, वही उसको पा सकता है।"

कुछ देरके बाद प्रभु आत्मसंवरण करके स्थिर हुए। भक्तोंका भय दूर हुआ। वे प्रभुके पास आकर प्रभुको घेरकर बैठ गये। तब प्रभुने हँसकर कहा—"मैंने पहले ही तुम लोगोंसे कह दिया है कि कोई महापुरुष नवद्वीपमें आये हैं। उनका दर्शन पानेके लिए मेरा मन बड़ा चञ्चल हो उठा है।"—इतना कहकर प्रभुने हरिदास ठाकुर और श्रीनिवासपण्डितकी ओर देखकर आदेश दिया, वे जाकर उनकी खोज करें।

प्रभुका आदेश मिलते ही वे दोनों घरसे बाहर निकले। वे लोग तृतीय पहरतक नदिया-नगरीमें सर्वत्र उन महापुरुषका पता लगाते रहे, परन्तु कहीं उनका पता न लगा। रँगीले प्रभुका यह एक लीलारङ्ग था। श्रीनित्यानन्दप्रभु नन्दनाचार्यके घर छिपे हैं, सर्वज्ञ प्रभु इस बातको जानते थे। स्वयं उनके वहाँ गये बिना श्रीनित्यानन्दप्रभु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किसीसे भेंट न करेंगे, यह भी प्रभु जानते थे। फिर यह रङ्ग क्यों ? कारण यह है कि हमारे प्रभुको रङ्गबाजी अच्छी लगती है। लीलारङ्ग-रस उनको बड़ा प्रिय है। लीलारङ्ग-रसका आस्वादन करनेके लिए ही वे नररूपमें नदियामें अवतरित हुए हैं। हरिदास ठाकुर और श्रीवासपण्डितको प्रभुने दिखला दिया कि श्रीनित्यानन्दप्रभुका दर्शन प्राप्त करना सहज काम नहीं है। उनको खोजकर पता लगाना उनका काम नहीं है। यह प्रभुका स्व-कार्य है। श्रीनित्यानन्द-तत्त्व अति निगूढ़ है। प्रभु कृपा करके जिसको बतावेंगे, वही जान सकेगा।

हरिदास ठाकुर और श्रीवासपण्डितने उस दिन आहार-निद्रा त्यागकर सारी नदियामें घर-घर अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुका पता लगाया, पर असफल होकर दुःखित-चित्तसे प्रभुके पास आकर हाथ जोड़कर निवेदन किया—"प्रभो ! उन महापुरुषका पता हम कहीं भी नहीं पा सके।" प्रभु यह बात सुनकर मुस्कुराये। उनके मुस्कुरानेका मर्म कोई न समझ सका।

प्रभु और कुछ न बोलकर स्वयं उठे। उनको स्वयं उठते देखकर भक्तवृन्दने प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर विस्मयपूर्वक देखा। प्रभुने तब हँसकर कहा—"मेरे साथ चलो। हम-सब मिलकर उनकी खोज करें।"

'जय कृष्ण !' कहकर सब भक्त प्रभुके साथ चले। प्रभु श्रीवासपण्डितके घरसे निकलकर सीधे नन्दनाचार्यके घरकी ओर चले। प्रभु नदियाके राजपथपर जा रहे हैं, अपराह्न तृतीय पहर बीत गया है। ज्येष्ठका महीना है। उस समय भी धूप कड़ी थी। भक्तवृन्दके साथ प्रेमानन्दमें कृष्णनाम-कीर्तन करते-करते, प्रेममें भरे, आजानुलम्बित दोनों भुजाएँ डुलाते हुए, सारे नदियावासियोंके मनको आकर्षित करते भाई प्राण-कन्हाई अपने बड़े भाई बलरामको देखने जा रहे हैं। उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है। बहुत दिनोंके बाद आज दोनों भाइयोंका प्रेम-मिलन होगा। प्रभु प्रेमावेशमें चले जा रहे हैं। कुछ देर बाद वे भक्तवृन्दके साथ नन्दनाचार्यके घर आ पहुँचे।

नन्दनाचार्यका घर नदियाके भीतर गौराङ्ग-लीलाकी तीर्थस्थली है। श्रीअद्वैतप्रभु शचीनन्दनकी भगवत्ताकी परीक्षाके लिए नन्दनाचार्यके घरमें ही छिपे रहे। श्रीनित्यानन्दप्रभुने नदियामें आकर सर्वप्रथम इसी पुण्यक्षेत्रमें अवस्थान किया। नन्दनाचार्य प्रभुके नित्य पार्षद थे। उनके घर कलिके प्रच्छन्न अवतार श्रीगौर-भगवान्‌ने गुप्त लीला प्रकट की। यहीं उनकी भगवत्ताकी प्रथम परीक्षा हुई। प्रभुने आचार्यके घरमें जाकर देखा कि वहाँ कोटि सूर्यके समान तेजस्वी एक पुरुषरत्न विराजमान हैं और ध्यानके आवेशमें मुस्कुरा-से रहे।

प्रभुने उन महापुरुषको देखकर अपने गणके साथ भक्तिपूर्वक नमस्कार किया। सत्कारपूर्वक सब लोग हाथ जोड़कर श्रीनित्यानन्दप्रभुके सामने खड़े हो गये। किसीके मुँहसे कोई बात न निकली। सभी उनके सुन्दर ज्योतिपूर्ण मुखचन्द्रकी ओर देखने लगे।

श्रीनित्यानन्दप्रभुने शचीनन्दनको देखते ही पहचान लिया कि ये ही उनके हृदयधन व्रजके प्राण-कन्हाई हैं।

अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु देख रहे हैं कि उनके वर्णचोर प्राण-कन्हाईके गलेमें मालती पुष्पोंकी सुन्दर माला है, वे दिव्य वस्त्र पहने हैं, उनके सुवलित सारे अङ्ग सुगन्धित चन्दनसे चर्चित हैं, भ्रमरके समान काले कुञ्चित केशपाश सिरपर आभूषित हैं, आजानुलम्बित बाहु-युगलमें पुष्पोंकी माला है। पुष्पोंका वलय शोभित हो रहा है। कुन्द-विनिन्दित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुक्ताफलके सदृश दन्तराजि मानो चन्द्र-किरणके समान चमक रही है। आकर्णविश्रान्त नयनयुगलसे करुणाकी वृष्टि हो रही है। पीन वक्षस्थलके ऊपर सूक्ष्म-शुभ्र-यज्ञोपवीत सुशोभित है। सुकोमल सुन्दर कपोलकी अत्युज्ज्वल-कनक-कान्तिसे प्रशान्त मुखमण्डलकी अपूर्व शोभा-वृद्धि हो रही है। प्रसर सुन्दर ललाटपर ऊर्ध्वतिलक शोभा पा रहा है। हस्त-पद-नखराजिमें मानो कोटि-चन्द्र विकसित हो रहे हैं। मधुर हँसीसे मानो अमृत-वृष्टि हो रही है। प्रभुकी मदन-मोहन सुन्दर श्रीमूर्त्तिकी ओर अवधूत नित्यानन्दप्रभु एकटक देख रहे हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभुने अपने व्रजके उस प्राण-कन्हाईको पहचाना। परन्तु मनके अत्यधिक आनन्द और प्राणके आकुल आवेगमें उनके मुंहसे बात न निकल सकी। परानन्दमें वे स्तम्भित हो रहे।

श्रीगौराङ्गप्रभु सब देख रहे हैं, सब समझ रहे हैं। भक्तवृन्द विस्मित होकर एक बार प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर देखते हैं और दूसरी बार अवधूत नित्यानन्दप्रभुके मुखचन्द्रको अवलोकन करते हैं। नदियामें दो चन्द्रका उदय देखकर वे विस्मित हो रहे हैं। समय देखकर भक्तवत्सल प्रभुने श्रीनित्यानन्दकी महिमा दिखलानेके लिए इशारेसे श्रीवासपण्डितको भागवतका श्लोक पाठ करनेके लिए कहा। प्रभुका इशारा समझकर उन्होंने यह श्लोक पढ़ा—

बर्हापीड नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम्।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दै-
र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्त्तिः॥

श्रीमद्भागवत १०.२१.५

अर्थ—"नन्दनन्दन श्रीकृष्णने शिखिपिच्छयुक्त चूड़ा, श्रुति-युगलमें कर्णिकारके पुष्प, कनकके समान कपिश या नील-पीतमिश्रित वर्णका वस्त्र तथा पञ्चवर्ण-पुष्पोंसे ग्रथित वैजयन्तीकी माला धारण करके, नव-नटवरके समान अपने अङ्गोंको निरन्तर नये-नये ढंगसे सुशोभित करते हुए, अधरामृतसे वेणु-रन्ध्रोंको आपूरित करते वृन्दावनमें (जहाँ उनके असाधारण पद-चिह्न सबको ही निरतिशय रति या आनन्द प्रदान करते हैं) प्रवेश किया।" इधर गोपवृन्द उनका यशोगान करने लगे। शरद्के प्रथम दिन श्रीकृष्णने इस प्रकार मनोहर वन्यवेषमें बलराम, श्रीदाम, सुदामा आदि सखा-वृन्दके साथ अपनी लीलास्थली वृन्दावनमें प्रवेश किया था।

श्रीवासपण्डितके भावावेशमें इस भागवतीय श्लोकका पाठ करते ही श्रीनित्यानन्दप्रभु एकबारगी प्रेमानन्दमें मूर्च्छित होकर भूतलपर गिर पड़े। उनको बाह्य ज्ञान न रहा। प्रभुने श्रीवासपण्डितका अङ्ग-स्पर्श करके आविष्टभावसे उनको कहा—'पढ़ो! पढ़ो!' श्रीवासपण्डित प्रभुका मन देखकर आवेगमें भरकर बारम्बार उक्त श्लोककी उच्च स्वरसे आवृत्ति करने लगे। कुछ देरके बाद श्रीनित्यानन्दप्रभु मूर्च्छा टूटनेपर अपने प्राण-कन्हाईके मुखचन्द्रकी ओर देखकर अजस्र अश्रुपात करते हुए रोने लगे। श्रीवासपण्डित उस समय भी श्लोक पाठ कर रहे थे।

श्रीनित्यानन्दप्रभु जितना ही श्लोक सुनते हैं, उतना ही प्रेमानन्दमें अधीर हो रहे हैं। वे भूतलसे उठकर मत्त सिंहके समान हुंकार-गर्जन करने लगे; जान पड़ता था, मानो गगन-मण्डल फट गया। पश्चात् उन्होंने प्रेममग्न होकर उद्धत नृत्य आरम्भ किया। वे जोरसे उछलकर ऊपर जाते हैं और पछाड़ खाकर भूतलपर गिर पड़ते हैं। इससे जान पड़ता था कि उनकी हड्डी-पसली चूर-चूर हो गयी। भक्तवृन्द यह देखकर हाय-हाय करने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'हे कृष्ण ! रक्षा करो ! रक्षा करो !"—कहते हुए वे उच्च स्वरसे क्रन्दन करने लगे। सबके मनमें बड़ा भय पैदा हो गया। प्रभु पास खड़े होकर सब देख रहे हैं। उनके दोनों विशाल नेत्रोंसे अविरल प्रेमाश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। सारे अङ्गोंमें कदम्ब-पुष्पके समान पुलकावली परिदृष्ट हो रही है। वे प्रेमानन्दमें भैया बलरामके अपूर्व प्रेम-भावको देख रहे हैं। उनके प्राण-समान बलराम-भैया भूतलपर लोट-पोट कर रहे हैं, यह देखकर प्रभुका कलेजा मानो फटा जा रहा है। इसी कारण वे अजस्र अश्रु बहाते रो रहे हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभु प्रेममें भरकर भूतलपर धूलिमें लोट-पोट कर रहे हैं, यह देखकर भक्तवृन्द उनको पकड़नेके लिए गये। परन्तु कोई उनको उठा न सका। तब प्रभु उनको अपनी गोदमें लेकर बैठ गये। श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके गोदमें श्रीनित्यानन्दप्रभु बालकके समान सुखशैयापर शयन कर रहे हैं। अब उनमें किसी प्रकारकी चञ्चलता नहीं है, धूलमें नहीं लोटते। वे निस्पन्द भावसे प्रभुकी क्रोड़में शयन करके एकटक उनके मुखचन्द्रके दर्शन कर रहे हैं। मन और प्राण तो उनको पहले ही दे दिये थे, अब सुयोग पाकर देह भी उनको समर्पण कर निश्चिन्त हो गये।

श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी क्रोड़में अपूर्व शोभा धारण कर रहे हैं। भक्तवृन्द श्रीश्रीगौर-नित्यानन्द-युगलरूप-दर्शनके आनन्दमें विभोर हैं। श्रीगौर-भगवान्‌के कमल-नयनकी अविरत प्रेमाश्रुधारासे अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुके सारे अङ्ग सिक्त हो गये। श्रीरामचन्द्रकी गोदमें, रावणकी शक्तिसे आहत लक्ष्मणके समान प्रभुकी गोदमें श्रीनित्यानन्द निश्चेष्ट शयन कर रहे हैं। भाई प्राण-कन्हाईकी अपने भैया बलरामजीसे बहुत दिनोंके बाद भेंट हुई है। प्रेमाविष्ट हो उनको गोदमें लेकर नयनोंके जलसे उनका वक्षःस्थल डुबा रहे हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु अपने भाईकी गोदमें मूर्च्छित पड़े हैं। प्रभु अपने भैया बलरामके श्रीअङ्गोंपर धीरे-धीरे अपना पद्म-हस्त फेर रहे हैं। इतना प्रेम, इतनी स्नेह-माया तो कहीं किसीने देखी नहीं।

कुछ देरके बाद श्रीनित्यानन्दप्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। उन्होंने आँखें खोलकर देखा कि वे अपने प्राण-कन्हाईकी गोदमें सोये हुए हैं। उनके लिए उनके प्राण-कन्हाई रो रहे हैं? यह देखकर वे बहुत व्याकुल हुए और उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ। यह तो होनेहीवाला था। बड़ा भाई छोटे भाई की गोदमें मूर्च्छित होकर पड़ा सो रहा है और उसे देखकर छोटा भाई दुःखसे रो रहा है। यह उल्टी बात है। गदाधरपण्डित पास ही थे। वे दोनों भाइयोंकी भाव-भङ्गी देखकर मन-ही-मन हँस रहे थे। वह हँसी किसीके देखनेमें न आयी। उस हँसीका मर्म कौन समझेगा? गदाधरकी उस हँसीका मर्म श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने उद्घाटन किया है। गदाधरपण्डित क्यों हँसे? कारण सुनिये—

जे अनन्त निरवधि धरे विश्वम्भर।
आज ताँर गर्व चूर्ण—कोलेर भितर॥

चै. भा. म. ४.२८

गदाधरपण्डित श्रीनित्यानन्द-तत्त्वसे सम्यक् परिचित हैं। प्रभुने गदाधरकी ओर एक बार तिरछे नेत्रोंसे देखा। उनके मनका भाव उनके कुटिल-कटाक्षसे प्रकट हो गया। भाव यह था—"भाई गदाधर ! आज मैंने अपनी चिरकालकी साध पूरी कर ली।" श्रीनित्यानन्दप्रभुने इतने प्रेमावेशके भीतर भी एक बार गदाधरपण्डितके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऊपर प्रेम-दृष्टिपात किया। इस दृष्टिका मर्म गदाधरने समझा और उन्होंने समझा तथा हमारे सर्वज्ञ चतुर-चूड़ामणि प्रभुने समझा। श्रीनित्यानन्द-प्रभुके मनका भाव यह था—"गदाधर ! तुमने ठीक समझा है।"

इधर उपस्थित भक्तवृन्द अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुको प्रकृतिस्थ देखकर प्रेमानन्दमें जय-ध्वनि करने लगे। सभी उनके अपूर्व प्रेमभावको देखकर नित्यानन्दमय हो गये। दोनों भाइयोंमें अबतक कोई बातचीत नहीं हुई थी। दोनों एक-दूसरेको प्रेम-दृष्टिसे देख रहे हैं। दोनोंके कमल-नयनसे अविरल अश्रुधारा बह रही है। दोनों ही प्रेमानन्दमें विभोर हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभु अब कुछ-कुछ प्रकृतिस्थ हुए हैं, यह देखकर चतुर-चूड़ामणि प्रभुने शुभ समय देखकर भक्तजनोचित दैन्य प्रकाश करते हुए उनसे कहा—"आज मेरा बड़ा शुभ दिन है कि मैंने चारों वेदोंके सार भक्तियोगको प्रत्यक्ष देखा। ऐसा कम्प, ऐसे अश्रु और हुंकार-गर्जन ईश्वरीय शक्तिके बिना क्या सम्भव है ? जो ऐसे भक्तियोगका दर्शन कर ले, उसको भगवान् श्रीकृष्ण नहीं छोड़ते। मुझे विश्वास हो गया कि तुम ईश्वरकी पूर्ण शक्ति हो; तुम्हारा भजन करनेसे जीवको कृष्णभक्ति प्राप्त हो जाती है। तुमसे चौदहों भुवन पवित्र होते हैं ! तुम्हारा गूढ़ चरित्र अगम्य है, तुम्हें समझ सके, ऐसा कौन है ? तुम मूर्तिमन्त कृष्ण-प्रेमभक्तिधन हो ! जिसको तुम्हारा क्षणमात्रका सङ्ग हो जाय, उसके कोटि पाप होनेपर भी उसकी दुर्गति नहीं होती। तुम्हारा सङ्ग देकर आज कृष्णने मेरा उद्धार कर दिया। बड़े भाग्यसे तुम्हारा दर्शन पाया है।"

—इस प्रकार नित्यानन्दकी स्तुति करते-करते प्रभु प्रेमानन्दमें आविष्ट हो गये। अब श्रीनित्यानन्दप्रभु उनको पकड़कर बैठ गये। इस बार उनकी पारी थी; प्रभुके श्रीमुखसे अपनी स्तुति सुनकर उन्होंने लज्जासे सिर झुका लिया। एक बार मुँह उठाकर प्रभुके चन्द्र-वदनकी ओर देखते हैं और पुनः मुँह नीचा कर लेते हैं। प्रभु भी उनके वदनकी ओर सतृष्ण नयनोंसे देखते हैं। भैया बलरामके मुँहसे बहुत दिनोंके बाद दो मधुमिश्रित बातें सुनेंगे, प्रभु इसी आशामें हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभुके मुँहसे अबतक कोई बात नहीं निकली थी। परन्तु इशारेसे ही दोनों भाइयोंमें सारी बातें हो गयीं।

प्रभुने अतिशय दीनभावसे पुनः हाथ जोड़कर पूछा—"श्रीपाद ! आपसे कोई प्रश्न करनेमें शङ्कित हो रहा हूँ। आपका नवद्वीपमें शुभागमन कहाँसे हुआ ?"

श्रीनित्यानन्दप्रभुने उत्तर देनेकी चेष्टा की। रँगीले प्रभुका रङ्ग देखकर उनको बड़ी हँसी आयी। कलिके प्रच्छन्न अवतारको प्रकट करनेकी इच्छा श्रीनित्यानन्दप्रभुके मनमें उदय हुई। वे जानते थे कि नदियामें प्रभुने आत्मप्रकाश किया है। नदियाके अन्तरङ्ग भक्तवृन्दने प्रभुको अपने हृदय-मन्दिरमें भगवद्भावमें अभिषिक्त किया है। इस शुभ सुयोगमें कलिके प्रच्छन्न अवतारको प्रकट करना आवश्यक समझकर श्रीनित्यानन्दप्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌की ओर एक बार करुण-नयनसे देखा। इस देखनेका मर्म यह था—"भाई ! क्या बोलते हो ? गुप्तलीला प्रकट करोगे क्या ?" प्रभुने इशारेसे अनुमति दे दी। अब उनके आत्मप्रकाशका शुभ समय आ गया। उन्होंने स्वयं पहले अपना रास्ता दिखलाया है। अतएव श्रीनित्यानन्दप्रभुको मना न कर सके। तब श्रीनिताई-चाँदने प्रेमानन्दमें गाना शुरू किया—

का—का—कानाए नाकि तुमि रे।
आमाय बल रे आमि चिनेछि,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चिनेछि चिनेछि तोरे ॥
ध—ध—क—क करे ने रे वेणु रे।
दाँड़ारे त्रिभङ्ग हये ।
देखि रे कानू, बेनु गौरहाते केमन साजे।
वेणुर गान अनेक दिन शुनि नाइ,
बाजाओ वेणु हिया जुड़ाई ।
व्रजेते वेणु बाजाये छिले,
देखि एखन वेणु कि बोल बोले।

श्रीचैतन्यमङ्गल गीत

अर्थ—'क्या तुम्हीं कन्हाई हो ? बतला दो, मैंने तुमको पहचान लिया है। त्रिभङ्ग खड़े होकर हाथमें वेणु लो, देखूँ गौरे हाथोंमें वेणु कैसी सजती है। अनेक दिनोंसे वेणु-गान सुननेमें नहीं आया, वेणु बजाकर हृदयको शीतल कर दो। व्रजमें वेणु बजायी थी, देखूँ, अब वेणुसे कैसे बोल निकलते हैं।"

श्रीनिताई-चाँद कुछ तुतले थे। उन्होंने जिस स्वरमें और जिस भावमें यह अपूर्व गीत गाया, वह स्वर और भाव प्रत्यक्ष लीलादर्शकगणके कानोंमें जीवनभर लगा रहा, मन-ही-मन जीवन-मरणका साक्षी बना।

प्रभु भावावेशमें है; उनके श्रीअङ्ग निःस्पन्द हैं, कनक-केतकीके समान उनके नयन-द्वयकी दृष्टि श्रीपाद नित्यानन्दके श्रीमुखचन्द्रकी ओर मानो दृढ़बद्ध है। कुछ देरके बाद प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। सबने देखा कि उनका मुखचन्द्र लज्जासे अवनत है, मानो उन्होंने कोई बड़ा अपराध किया है।

इसके बाद श्रीनिताई-चाँद वामहस्तमें प्रभुके श्रीहस्तको धारण करके तथा दक्षिणहस्तसे चिबुक-स्पर्श करके प्रेमविस्फारित नेत्रोंसे गद्‌गद् स्वरमें बोले—

(तुई) काल रूप कारे दिलि।
का—का—का—कानाई ! तुइ नाकि भाइगौरहरि ?
काँदाये यशोदा माये शची माके मा बलिलि।
काँदाये वृन्दावन, नवद्वीपे उदय हलि॥
पीतधड़ा मोहन बाँशि भाइ रे ! तुइ कारे दिलि ?
केन धूलाय गड़ागड़ि, बनमाला कि करिलि ?

—प्राचीन पद

अर्थ—"कन्हाई भाई ! श्याम-रूप किसको दे दिया ? क्या तुम्हीं गौर-हरि हो ? यशोदा मैयाको रुलाया, अब शचीमाँको माँ बनाया; वृन्दावनको रुलाकर अब नवद्वीपमें प्रकट हुए हो। भैया ! पीताम्बर और मोहिनी वंशी किसको दे दी ? वनमाला कहाँ गयी ? यहाँ धूलमें क्यों लोट-पोट होते हो ?"

प्रभु पुनः भावावेशमें जड़वत् निःस्पन्द हो गये। तब निताई-चाँदने अपने भावको कुछ संवरण किया। प्रभुको जब बाह्य ज्ञान हुआ तो उन्होंने संयतभावसे परम नम्र होकर हाथ जोड़कर प्रभुसे निवेदन किया—

—"**तीर्थ करिल अनेक।**
देखिल कृष्णेर स्थान जतेक-जतेक॥
स्थान मात्र देखि कृष्ण देखिते ना पाइ।
जिज्ञासा करिल तबे भाल लोक ठाँइ॥
सिंहासन सब केने देखि आच्छादित।
कइ भाइ सब कृष्ण गेला कोन भित॥
तारा बोले—कृष्ण गियाछेन गौड़देशे।
गया करि गियाछेन कथोक दिवसे॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदियाय शुनि बड़ हरि-संकीर्तन।
केहो बोले तथाय जन्मिला नारायण॥
पतितेर त्राण बड़ शुनि नदियाय।*
शुनिञा आइलुँ मुञि पातकी तथाय॥"

चै. भा. म. ४.४८-५३

प्रभुने भैया बलरामके मुखसे इस प्रकार अपने आत्मप्रकाशकी बात सुनकर लज्जासे सिर झुका लिया। श्रीनित्यानन्दप्रभु यह बात कहते-कहते रोकर प्रभुके चरणोंमें जा गिरे। प्रभुने अस्त-व्यस्त होकर भागनेकी चेष्टा की, किन्तु भाग न सके। तब दोनों एक-दूसरेका चरण पकड़नेके लिए अति व्यग्र हो उठे। यह दृश्य अति मनोहर, अत्यन्त मधुर और अतिशय नयन-रञ्जन था।

दोहार चरण दोंहे धँरिबारे चाहे।
परम चतुर दोंहे—केहो नाहि पाये॥

चै. भा. म. ५.२५

यह अपूर्व मधुर दृश्य देखकर भक्तवृन्द आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे। गौर-नित्यानन्द, दोनों मिलकर एक-दूसरेकी चरण-धूलि प्राप्त करनेके लिए घोर युद्ध करते रहे। इस युद्धमें जय-पराजयका कुछ पता न लगा। दोनोंने एक-दूसरेकी पद-धूलि ली। अतएव इस भक्ति-युद्धमें दोनोंको विजय प्राप्त हुई। इसके बाद दोनों भाइयोंका प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन हुआ। जान पड़ा कि दोनों मिलकर एक हो गये। राम-कृष्ण और गौर-नित्यानन्द एक ही वस्तु हैं, एक ही तत्त्व हैं। दोनोंकी एक आत्मा है, केवल शरीरका भेद है—गौर-नित्यानन्दका यह परम प्रीतिमय प्रेमालिङ्गन-लीला-रङ्ग देखकर उपस्थित भक्तोंके मनमें यह भाव उदय हुआ। वे लोग प्रेमानन्दमें उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे। प्रेमावेशमें दोनों भाई इस प्रकार कुछ देरतक सुदृढ़ भावसे प्रेमालिङ्गनमें आबद्ध होकर जड़वत् निःस्पन्द हो रहे। दोनों भाइयोंके अश्रु-जलसे दोनोंके अङ्ग भीग गये। कुछ देरके बाद आलिङ्गन-मुक्त होकर दोनों बालकके समान अविरल क्रन्दन करने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभुने किसी प्रकार प्रकृतिस्थ होकर अपने प्राण-कन्हाईसे पुनः मधुर वाणीमें कहा—"मैं सारी पृथ्वीपर घूम आया, लेकिन तुम्हारा कहीं पता नहीं लगा। तब सुननेमें आया कि तुम गौड़देशमें छिपे हुए हो। चोरको पकड़ने मैं यहाँ आया और यहाँ चोरको पकड़ पाया। अब भागकर कहाँ जाओगे!"

श्रीनित्यानन्दप्रभुने नदियाके भक्तवृन्दके सामने श्रीगौराङ्ग-तत्त्व अति सुस्पष्टभावमें प्रकट कर दिया। प्रभुको प्रकट करनेके लिए ही उनका

---

* श्रीमन्महाप्रभुके धर्मोपदेशका जिन्होंने भली-भाँति अनुशीलन और अनुभव किया है, उन्होंने अवश्य देखा होगा कि दीनता ही उनके प्रवर्तित धर्मका मूलमन्त्र है। 'तृणादपि सुनीचेन' श्लोकके द्वारा प्रभुने अपने भक्तवृन्दको इस दीनताका चरम उपदेश दिया है। श्रीनित्यानन्द-प्रभुके—

पतितेर त्राण बड़ शुनि नदियाय।
शुनिञा आइलुँ मुञि पातकी हेथाय॥

चै. भा. म. ४.५३

—इस दैन्ययुक्त वाक्यमें श्रीमन्महाप्रभुके उपदेशका ज्वलन्त प्रमाण मिलता है। गौर-भक्तोंकी दीनता अतुलनीय होती है। वे सब दैन्यके अवतार हैं। श्रीमन्महाप्रभु और नित्यानन्दप्रभु स्वयं आचरण करके यह अपूर्व दैन्यकी शिक्षा उनको दे गये हैं। श्रीनित्यानन्द-प्रभु जब अपनेको 'पतित' कहकर परिचय दे सकते हैं तो औरोंकी तो बात ही क्या है? (ग्रन्थकार)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदियामें आगमन हुआ था। श्रीगौराङ्गप्रभु प्रच्छन्न अवतार हैं। आत्मप्रकाश करनेमें उनको अत्यन्त हिचक होती है। श्रीनित्यानन्दप्रभुने सबके सामने श्रीगौराङ्ग-प्रभुके स्वरूप-तत्त्वको कह दिया। प्रभु लज्जित होकर मुँह लटकाये खड़े रहे। उनके कमल-नयनसे प्रेमाश्रुधाराने वक्षःस्थलपर प्रवाहित होकर परिधान-वस्त्रको सिक्त करके भूतलको प्लावित कर दिया।

चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌ने देखा कि उनके बलराम भैया प्रेमोन्मत्त हैं और श्रीवृन्दावन-भावमें मत्त हैं। पश्चात् उनके अवतारकी सारी गूढ़ बातें प्रकट हो जायँगी, इस भयसे उन्होंने एक कौशल किया। गुप्त-वृन्दावन नदियामें अपनी गुप्तलीलाको अप्रकट रखनेके लिए वे विशेष व्यग्र थे। प्रभुने आत्मसंवरण करके मधुर मुस्कानके साथ प्रेमपूर्वक अपने बलराम भैयाका हाथ पकड़कर नन्दनाचार्यके घरमें मधुर नृत्य प्रारम्भ किया। प्राण-कन्हाईका मधुर नृत्य देखकर श्रीनित्यानन्द-प्रभुका प्राण आनन्दसे द्रवित हो उठा। वे भी बालकके समान प्रभुका हाथ पकड़कर मधुर नृत्य करने लगे। गौर-नित्यानन्द एक-दूसरेका हाथ पकड़कर नयन-रञ्जन मधुर नृत्य कर रहे हैं, प्रभुने अपने आदि कृष्ण-कीर्तनका सुर पकड़ा—

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन॥

प्रेमानन्दमें विभोर होकर दोनों भाई तब हाथ छोड़कर ऊर्ध्ववाहु हो गये। श्रीनित्यानन्दप्रभु उद्दण्ड नृत्य करने लगे। प्रेमावेशमें उनके वदनके आभूषण खिसककर श्रीअङ्गसे नीचे गिर गये। भक्तवृन्दने इस अपूर्व कीर्तनमें योगदान किया। नन्दनाचार्यके घरमें गोलोकका आनन्द अनुभूत हुआ। चारों ओर हरिनाम-सुधाकी वृष्टि हो रही थी। भक्तवृन्द प्राण भरकर उसे पान कर रहे थे। प्रभुने कीर्तनके रङ्गमें अपने बलराम भैयाको उन्मत्त कराकर पूर्वलीला-कथाको और प्रकट नहीं करने दिया। चतुर-चूड़ामणिकी चतुराई सर्वज्ञ श्रीनित्यानन्दप्रभुसे छिपी न रही। वे मधुर-मधुर नृत्य कर रहे हैं और प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर देखकर मृदु-मन्द मुस्कुरा रहे हैं; उस मुस्कानका रहस्य यह था—"भाई! तुम्हारी चतुराई मैं समझता हूँ।" अतएव सिद्ध-कविने श्रीनित्यानन्दके मनके भावको समझकर लिखा है—

"धरियाछि चोर आजि पलाइबा कोथा।"

कीर्तन-तरङ्गमें नदिया-नगरी प्लावित हो गयी। सारी नदियामें यह अपूर्व कीर्तन-ध्वनि सुनी गयी। इस अपूर्व संकीर्तन-यज्ञकी बात विद्युत्-गतिसे सर्वत्र फैल गयी। आगन्तुक महापुरुषकी बात, उनकी दिव्य रूप-राशिकी बात, उनके अपूर्व प्रेम-विकासका समाचार लोगोंके मुहाँ-मुहीं नदियामें घर-घर फैल गया। सारी नदियाके लोग झुण्डके-झुण्ड श्रीनित्यानन्द प्रभुका दर्शन करने आये।

यह संकीर्तन दो प्रहर राततक होता रहा। प्रेमानन्दमें विह्वल होकर दोनों प्रभु तब आसनपर बैठे। भक्तवृन्द खड़े रहे। नन्दनाचार्य कीर्तनसे श्रान्त प्रभुद्वयको पंखा झलने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभु उस समय भी प्रेमावेशमें बाह्य ज्ञान-शून्य थे। प्रभुने स्वयं पद-धूलि लेकर भक्तवृन्दको दी। भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें हरिध्वनि करके अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुके पद-रजको अपने-अपने सिरपर धारण करके कृतार्थ हुए। प्रेमविह्वल श्रीनित्यानन्द-प्रभु निःस्पन्दभावमें बैठे हैं। प्रभुको यह समझमें नहीं आ रहा है कि उनके लिए क्या करें? भक्तवृन्दके आनन्दकी आज सीमा नहीं है। प्रभुने स्वयं जिनकी पद-धूलि लेकर सबको दी, वे न-जाने कितने महान् होंगे—यह सोचकर वे प्रेमानन्दमें गद्‌गद व्याकुल चित्तसे रोने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुछ देरके बाद श्रीनित्यानन्दप्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। प्रभु उनसे दैन्य भावयुक्त होकर बोले—"तुम्हारे–जैसे भक्तकी उपस्थितिसे हम सब बड़े भाग्यशाली हैं। तुम्हारी आनन्द-वारिधारा देखकर हम कृतकृत्य हो गये।"

श्रीनित्यानन्दप्रभु चुप हैं। उस समय भी वे पूर्णरूपसे प्रकृतिस्थ नहीं हुए थे। प्रेमावेशमें उनके सारे अङ्ग काँप रहे हैं। वहाँ नदियाके सारे अन्तरङ्ग भक्तवृन्द हैं। श्रीवासपण्डित, मुरारिगुप्त, गदाधरपण्डित आदि भक्तोंके मनमें, गौर-नित्यानन्दके रङ्गको देखकर आज एक अपूर्व भाव उद्दीप्त हुआ। तब वे अपने-अपने मनके भाव व्यक्त करने लगे। प्रभुको लक्ष्य करके मुरारिगुप्तने हँसकर कहा—"प्रभो ! आप लोगोंका 'मैं-तुम' हमारी समझमें कुछ भी नहीं आया। तुम्हारा और तुम्हारे इन अवधूत भाईका मर्म समझना बड़ा कठिन है।" श्रीवासपण्डितने कहा—"ये सारी बातें हमारी बुद्धिके लिए अगम्य हैं। हमारे प्रभु माधव हैं और इनके बड़े भाई शङ्कर हैं—यही सोचकर हम इनकी पूजा करेंगे।" गदाधरपण्डित बोले—"श्रीवासपण्डितने ठीक ही कहा है। मुझे ऐसा लगता है, मानो ये दोनों भाई श्रीराम-लक्ष्मण हैं।" एक दूसरे भक्तने कहा—"ये लोग मुझे कृष्ण-बलरामस्वरूप लगते हैं।" ये ही ठाकुर हरिदास हैं। एक अन्य पुरुषने कहा—"दोनों मानो कृष्णार्जुन हैं।" इसी प्रकार भक्तवृन्द प्रभुद्वयके सम्बन्धमें अपने-अपने मनोभाव व्यक्त करने लगे।

श्रीगौर-नित्यानन्द एक आसनपर युगलरूप हो बैठे हैं। अङ्गसे-अङ्ग हिलाकर प्राण-कन्हाई अपने बड़े भाई बलरामभैयाका आदर कर रहे हैं तथा भक्तवृन्दकी बात सुनकर मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं।

रात दो प्रहर बीत गयी है, इसका किसीको ज्ञान नहीं है। नन्दनाचार्यके मनमें आज बड़ा आनन्द है। उनके घरमें श्रीगौर-नित्यानन्दका शुभ मिलन हुआ। वे इसे देख करके कृतार्थ हो गये। वे आनन्दसे अधीर होकर जड़वत् हो रहे हैं। प्रभु अपने बलरामभैयासे बिदा होकर अपने घर आये। भक्तवृन्द उनको उनके घर पहुँचाकर अपने-अपने घर गये। विदाके समयका दृश्य अत्यन्त मनोहर था। प्रभुने अपने बलरामभैयाको प्रणाम करके उनकी पद-धूलि ग्रहण की। अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु उछलकर उठे और प्रभुके चरणोंमें भूतलपर लम्बे पड़ गये। अब वे उठना नहीं चाहते। अपने प्राण-कन्हाईको वे पा गये हैं और छोड़ना नहीं चाहते। प्रभु महाविपद्में पड़े। श्रीनित्यानन्दप्रभु महाबलवान् हैं, बहुत बलपूर्वक उनके चरणोंको पकड़ रखा है। प्रभु उनको किसी प्रकारसे भी अपने पदप्रान्तसे हटा नहीं पाते हैं। भक्तवृन्द आनन्दके साथ बारम्बार हरिध्वनि कर रहे हैं। प्राण-कन्हाईकी विपद् देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभु अपने-आप उठकर खड़े हो गये। उन्होंने प्रभुको दृढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कहा—"भाई ! जाओ, घर जाओ ! तुम्हें देखे बिना माता व्याकुल हो रही हैं।" प्रभुने प्रेममें भरकर अपने बलरामभैयाको आलिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया।

उपयुक्त अवसर देखकर प्रच्छन्न अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुने बहुत गुप्तरूपसे अपने प्राणप्रिय बलरामभैयासे एक गूढ़ बात कही, जिसे दूसरा कोई न सुन सका। प्रभुकी इस गूढ़ बातको सर्वज्ञ नित्यसिद्ध महाजन कविने प्राचीन पदमें व्यक्त करके श्रीगौराङ्ग-लीलाका पूर्वाभास प्रदान किया है। वह प्राचीन पद इस प्रकार है—

कि पूछसि भाई निताई आमाय ॥ध्रु०॥
व्रजेर खेला छिल दौड़ा-दौड़ि।
(एबार) नदेर खेला धूलाय गड़ागड़ि॥
ब्रजेर खेला छिल बांशिर गान।
(एबार) नदेर खेला केवल हरिनाम॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व्रजेर खेला वनभ्रमण ।
नदेर खेला एवार केवल रोदन ।।
व्रजका खेल कुलेल-मगन-मन ।
नदियाका रज-लुण्ठित-तन ।।
व्रजका खेल मुरलिका-वादन ।
नदियाका हरिनाम-भजन ।।
व्रजका खेल कुसुम-वन-विरहण ।
नदियाका दृगजल-वर्षण ।।

श्रीनिताई-चाँद अपने प्राणाधिक भाई कन्हाईके मनका भाव समझकर मुँह नीचा करके चुप हो रहे। इस प्रकार दोनो एक-दूसरेसे विदा हुए। इस श्रीगौर-नित्यानन्दकी मिलन-लीलाकी फलश्रुति ठाकुर वृन्दावनदासने लिखी हैं—

नित्यानन्द गौरचन्द्र दोंहे दरशन ।
इहार श्रवणे हय बन्ध-विमोचन ।।
चै. भा. म. ४.६४

कृपालु गौरभक्त पाठकवृन्द ! श्रीनित्यानन्दप्रभुके नवद्वीपमें शुभागमनकी लीला-कहानी श्रवण करके प्रेमधन प्राप्त करें और कृपा करके अधम अकृती ग्रन्थकारको दिल खोलकर आशीर्वाद दें, जिससे इसका दुष्ट मन श्रीगौर-नित्यानन्दके चरण-कमल-मकरन्दका पान करनेमें आकृष्ट हो। वैष्णवके आशीर्वादसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है—

वैष्णवेर पाय मोर एइ मनस्काम ।
श्रीचैतन्य-नित्यानन्द हउ मोर प्राण ।।
चै. भा. म. ६.२४७

नवद्वीप-लीला-रस-माधुरी श्रवण करके जिनके मनमें आनन्द होता है, वे अवश्य श्रीश्रीगौराङ्ग-चन्द्रके श्रीमुखचन्द्रका दर्शन प्राप्त करेंगे। यह श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरकी बात है—

ए ऐश्वर्य शुनिते जाहार हय सुख ।
अवश्य देखिबे सेइ श्रीचैतन्य-श्रीमुख ।।
चै. भा. म. ८.३०९

श्रीनित्यानन्दप्रभुकी कृपाप्राप्त किये बिना कोई श्रीगौराङ्ग-भजनका अधिकारी नहीं होता। अतएव कृपालु पाठकवृन्द !

बन्द प्रभु नित्यानन्द, केवलि आनन्द कन्द,
झलमल आभरण साजे ।
दुइ दिके श्रुतिमूले, मकर-कुण्डल डोले,
गले एक कौस्तुभ विराजे ।।
सुबलित भुजदण्ड, जिनि करिवर-शुण्ड,
ताहाते शोभये हेम दण्ड ।
अरुण अम्बर गाय, सिंहेर गमने धाय,
देखि काँपे असुर पाखण्ड ।।
अङ्ग देखि शुद्ध स्वर्ण, दुइ आँखि रक्तवर्ण,
ताहाते झरये मकरन्द ।
सुमेरु बाहिये जेन, गङ्गा-धारा बहे हेन,
देखि सुरलोकेर आनन्द ।।
सर्वाङ्गे पुलक छटा, जेन कदम्बेर घटा,
लम्फते कम्पये वसुमति ।
वीर दर्प माल साटे, शब्दे ब्रह्माण्ड फाटे,
देखि ब्रह्मलोक करे स्तुति ।।
चैतन्येर प्रेमरत्न, जीवेरे करिया यत्न,
दिला पहूँ परम आनन्दे ।
कहे वृन्दावन दासे, आपनार कर्म्म-दोषे,
ना भजिनू निताइ पद-द्वन्दे ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तीसवाँ अध्याय

नदियामें अवधूत श्रीनित्यानन्द-प्रभुके आत्मप्रकाशमें आनन्दोत्सव

जय जय जगत-जीवन गौरचन्द्र ।
दान देह हृदये तोमार पद-द्वन्द्व ॥

चै. भा. म. ६.१

शची-माँके पास नित्यानन्द

नदियावासी भक्तवृन्दने श्रीनित्यानन्दप्रभुको प्रभुका अग्रज मानकर भक्तिपूर्वक उनकी सेवा-परिचर्या करनेका व्रत लिया। श्रीवासपण्डित प्रभुके आदेशसे उनको अपने घर ले गये। श्रीनित्यानन्दप्रभु निरन्तर बाल्यभावमें प्रेमानन्दमें मग्न रहते हैं। श्रीवास-गृहिणी मालिनीदेवी उनसे पुत्रवत् स्नेह करती हैं। अवधूत नित्यानन्द उनको माताके समान देखते हैं; वे अपने हाथसे उठाकर भोजन नहीं करते मालिनीदेवी उठाकर उनके मुँहमें अन्न डालती हैं तो वे भोजन करते हैं। कभी-कभी वे बालभावमें मालिनीदेवीका स्तन-पान भी करते हैं। श्रीवासपण्डितको वे 'बाबा' कहकर पुकारते हैं। मालिनीदेवी वृद्धा हो गयी हैं। उनकी अवस्था पचास वर्षसे अधिक है। उनके स्तनमें दूध नहीं, परन्तु श्रीनित्यानन्दप्रभुके अधरका स्पर्श होते ही उनके स्तन-युगलसे दूधकी धार निकल पड़ी। अवधूत नित्यानन्दप्रभुकी इस अचिन्त्य शक्तिको श्रीवासपण्डित और उनकी गृहिणीके सिवा और कोई नहीं जानता। प्रभुके मना करनेसे वे लोग इन बातोंको किसीके सामने प्रकट नहीं करते थे मालिनीदेवी श्रीनित्यानन्दप्रभुको निरन्तर शिशुभावमें देखती हैं और उनका लालन-पालन करती हैं। श्रीवासके आँगनमें प्रभुने भुवन-मङ्गल हरि-सङ्कीर्तन आरम्भ किया है। उनके आदेशसे श्रीनित्यानन्दप्रभु युगधर्म-प्रवर्त्तनमें बद्धपरिकर हो गये। उनका उच्च हरिनाम-सङ्कीर्तन तथा उद्दण्ड नृत्यरङ्ग देखकर नदियावासी भक्तवृन्द आनन्दमें आत्म-विस्मृत होकर 'हा गौर-नित्यानन्द' कहकर प्रेमाश्रु-विसर्जन करने लगे। उन लोगोंने गौर-नित्यानन्दके युगल-चरणमें आत्म-समर्पण किया।

श्रीगौराङ्गप्रभु एक दिन अवधूत श्रीनित्यानन्द-प्रभुको अपने घर ले गये। शचीमाताके साथ उनका परिचय करा दिया। शचीमाताने देखा कि अवधूतकी आकृति और प्रकृतिके साथ उनकी खोयी निधि विश्वरूपके अवयवसे बहुत सादृश्य पाया जाता है। बहुत दिनके बाद पुत्र-विरह-शोकसे आतुर शचीमाताका पुत्र-शोक उमड़ आया। वे श्रीनित्यानन्दप्रभुको देखकर व्याकुल होकर रोने लगीं। अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुने उन्हें माता कह-कर सम्बोधन किया और मधुर वचनसे सान्त्वना प्रदान की। स्नेहमयी शचीमाताका कोमल हृदय स्नेह-रससे द्रवित हो उठा। स्नेहाधिक्यके कारण उनके स्तन-युगलसे दूध बह चला। प्रभु वहाँ खड़े थे। उन्होंने इसे देखा। शचीमाताने रोते-रोते अवधूत नित्यानन्दके साथ स्नेह-सम्बन्धसूचक अनेक प्रकारकी बातें करके अपने संतप्त हृदयको शीतल किया। श्रीगौराङ्ग-जननी नित्यानन्दको अवधूत वेषमें देखकर मनमें बहुत दुःखी हुईं। स्नेहमयी शचीमाताने उनसे यह वेष छोड़कर पुनः यज्ञसूत्र-धारण करके विवाह करनेका अनुरोध किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ये सारी बातें ठाकुर जयानन्दने अपने लिखे हुए श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थमें लिखी हैं।

माताके इस अनुरोधको श्रीगौराङ्गप्रभुने सुनकर अपने मनमें रखा। श्रीनित्यानन्दप्रभु शचीमाताके इस स्नेहसूचक अनुरोधको सुनकर कुछ हँसे। प्रभु भी उनके साथ ही मृदु-मृदु हँसे। श्रीनित्यानन्दप्रभुकी हँसीका मर्म यह था—"माँ! तुम्हारे इस पुत्रका आदेश होनेपर मैं सब-कुछ कर सकता हूँ।" प्रभुकी हँसीका मर्म यह था—"भैया! माताके अनुरोधकी रक्षा तुम्हें करनी पड़ेगी। मेरे आदेशसे बढ़कर माताका अनुरोध है।" अवधूत नित्यानन्दके गृहस्थाश्रम ग्रहण करनेका मूलमन्त्र यही था।

श्रीनित्यानन्दप्रभु नित्य शचीमाताका दर्शन करनेके लिए प्रभुके घर आते थे। शचीमाता उनको पास बैठाकर स्नेहपूर्वक आदर करके नाना प्रकारकी भोजन-सामग्री देकर परम परितोषपूर्वक भोजन कराती थीं। सदानन्द नित्यानन्दके मुँहपर केवल हँसी रहती थी।

जन्माष्टमी-महोत्सव

इसी समय नदियाके वैष्णवगण आनन्दित चित्तसे बड़े समारोहके साथ वैष्णव तिथि, व्रत और उत्सव-पालन और उद्‌घाटन करने लगे। पहले पाखण्डी लोगोंके भयसे वे लोग इन आनन्दोत्सवोंका अनुष्ठान नहीं कर पाते थे। प्रभुके आत्मप्रकाश और श्रीनित्यानन्दप्रभुके नवद्वीपमें शुभागमनके दिनसे उनका सारा भय जाता रहा। ज्येष्ठ मासमें श्रीनित्यानन्दप्रभुका नवद्वीपमें शुभागमन हुआ। भाद्र-मासमें श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी-पूजाके उपलक्ष्यमें नदियाके वैष्णव प्रेमानन्दमें मत्त हो गये। गयाधामसे आकर प्रभु कृष्णप्रेममें उन्मत्त हो रहे हैं। अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ वे दिन-रात कृष्ण-कथा-रसमें मग्न रहते हैं। आज नदियामें श्रीकृष्णकी जन्माष्टमीका उत्सव है। नदियावासी वैष्णव-वृन्दके आनन्दकी सीमा नहीं है।

जन्माष्टमीके दूसरे दिन नन्दोत्सव हुआ। नदिया-नगरीमें आनन्दका स्रोत फूट पड़ा। सारी नदिया आनन्दमें मतवाली हो गयी। नदियावासी नर-नारीके मनमें आज बड़ा आनन्द है। शचीनन्दन पूर्वजन्म-लीला-स्मरण करके आज भावावेशमें विभोर होकर आनन्दमें नृत्य कर रहे हैं। वे गोप-वेषमें हैं। नित्यानन्दप्रभुका भी गोपवेष हैं। साथ-साथ सारे भक्तगण हैं। सब गोपवेषमें हैं। नित्यानन्दप्रभुके हाथमें लकुटिया है। वे आनन्दमें उद्दण्ड नृत्य कर रहे हैं। सबसे आगे शचीनन्दन हैं, उनके पीछे श्रीनित्यानन्द हैं और उनके पीछे सब भक्तवृन्द हैं। नदियाके मार्गमें, काँदोमें लथपथ, दधि-हल्दी लपेटे अपूर्व शोभा धारण कर रहे हैं। शचीनन्दन कृष्ण-प्रेममें विभोर हैं। मुखसे केवल "हे कृष्ण! दर्शन दो! आज तुम्हारा जन्म-दिन है। बड़ा शुभ दिन है।"—यह कहकर श्रीगौराङ्ग व्याकुल हो रहे हैं। कैसा मधुमय दृश्य है! नदियावासियोंका बड़ा सौभाग्य है। श्रीकृष्णके जन्म-दिनपर नन्दनन्दन स्वयं नृत्य कर रहे हैं और प्रेमोन्मत्त होकर रोते हैं। अपने जन्म-दिवसके उत्सवमें आप विभोर होकर "हे कृष्ण! हे कृष्ण!" कहकर आवेशपूर्ण हृदयसे नृत्य कर रहे हैं। पूर्व-जन्मकी लीला-स्मरण करके शचीनन्दन व्रजभावमें आनन्दसे आत्म-विस्मृत हो रहे हैं। इस भावको लेकर एक दिन मनके आवेगमें मैंने एक पद-रचना की थी। उसका कुछ अंश यहाँ उद्‌धृत किया जाता है—

करताल दिये, नाचिये-नाचिये,
(ऐ) आसितेछे गोरा राय।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भकत सङ्गे, नाचिछ रङ्गे,
(आजि) कि उत्सव नदियाय ।।

आपन जनम, उत्सवे माति,
(सेजे) आपनारि नाम गाय ।

ए कि ए रंग, करे गौराङ्ग,
प्रेमे ते मातिया धाय ।।

(निज) जनम तिथिर, पूजा करिबारे,
साजियाछे मनोमत ।

प्रेमधारा आँखें, हरि बोल मुखे,
बलितेछे अविरत ।।

थेके-थेके वले, कृष्णरे कृष्णरे,
आजि बड़ शुभ दिन ।

देखा देरे बाप्, प्राण गेल मोर,
आमि अति दीन-हीन ।।

ए कि रे कौतुक, करे गोरा चाँद,
निज नामे हये भोर ।

जनम अष्टमी, आजि शुभ दिने,
केन देखि आँखि लोर ।।

प्रच्छन्नावतार, गौर आमार,
निज प्रेमे निजे भोर ।।

हमारे श्रीगौराङ्ग बड़े रँगिया हैं। वे बहुत रङ्ग जानते हैं। आज उन्होंने यह लीला-रङ्ग दिखलाया। शचीनन्दनका यह लीला-रङ्ग देखकर मनमें बड़ा सुख हुआ, हँसी भी आयी। इसीसे रँगिया प्रभुको सम्बोधन करके मैंने लिखा था—

कत रङ्ग जान, तुमि रङ्गलाल,
रसराज रसमय ।

(तुमि) आपनार प्रेमे, आपनि विभोर,
किछु नाहि लाज भय ।।

चिनियाछि तोमा, धरा पड़ियाछ,
तुमि सेइ ब्रजराज ।

(आजि) जनम दिनेर, उत्सवे माति,
परियाछ नव साज ।।

(तमि) आपन पूजार, आपनि पुजारि,
दिये भोग निजे खाओ।

आपन जनम, आपन करम,
प्रेमे ते मातिया गाओ ।।

ए गभीर लीला, बूझियाछे जारा,
चिनियाछे तोमा भाल ।

हरिदास कय, ओहे रसमय,
तुमि सेइ नन्दलाल ।।

श्रीनित्यानन्द लकुटी हाथमें लिये घुमा रहे हैं, सारे अङ्गमें दधि-काँदो लिप्त है, मल्ल-वीरके समान प्रेमानन्दमें उद्दण्ड नृत्य कर रहे हैं। श्रीगौराङ्गके काँधेपर दधि-दुग्धका भार है, भावावेशमें वे भी मधुर नृत्य कर रहे हैं, उनके पीछे-पीछे गोपवेषमें श्रीवासपण्डित, रामाइ, हरिदास, गौरीदास आदि भक्तगण नृत्य करते हुए जा रहे हैं। गदाधरपण्डित और गदाधरदासका गोप-रमणी वेष हैं। मस्तकपर और काँखमें दूधकी कलसी है। साथमें अगणित नदियाके बालक काँदो-काँदो होकर हरिध्वनि करते हुए जा रहे हैं। सारी नदिया आनन्द-कोलाहलसे परिपूर्ण है। शचीमाताके घरमें महोत्सव है। वहाँ आज सब भक्तोंका निमन्त्रण है। प्रभुको कोई चिन्ता नहीं है। वे अपने आनन्दमें आप विभोर हैं। घरका समाचार उनको कुछ भी ज्ञात नहीं। सब एक साथ नाचते-नाचते गङ्गाके तीरपर उपस्थित हुए। मनकी साधसे सबने मिलकर वहाँ नृत्य और गान किया। गङ्गाके तीरपर महासंकीर्तनकी तरङ्ग उठी। उससे नदियावासी नर-नारियोंका हृदय आनन्दसे उत्फुल्ल हो उठा। वे आनन्द-सागरमें डूब गये।

शचीनन्दन सबके साथ गङ्गा-स्नान करके घर आये। साथ ही नदियाके सारे भक्तगण नाचते हुए,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आनन्दोत्सवके गीत गाते हुए प्रभुके घरमें प्रविष्ट हुए। शची–आँगनमें नन्दोत्सवकी धूम मच गयी। इस बार सबके सारे अङ्गमें दधि-दुग्ध और हल्दी प्रचुर परिणाममें ढाला गया। शची-आँगन दधि-दुग्धसे काँदो-काँदो हो गया। उसके ऊपर उनका मधुर नृत्य होने लगा। नित्यानन्दप्रभुका हाथ पकड़कर प्रभु नृत्य कर रहे हैं और चारों ओरसे भक्तगण प्रभुको घेरकर आनन्दसे नाच रहे हैं। शचीमाता रसोई-घरसे बाहर आकर श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको साथ लेकर यह अपूर्व नयन-रञ्जन दृश्य देख रही हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी घूंघटके भीतरसे प्रभुका नृत्य देखकर मृदु-मन्द मुस्कुरा रही हैं। पुर-नारियाँ हरिध्वनि कर रही हैं। प्रभुके घरमें आज महोत्सव है। अब भक्तवृन्दके साथ प्रभु प्रेमालिङ्गन कर रहे हैं। प्रेममें प्रभुके अङ्ग शिथिल पड़ रहे हैं। पूर्वलीला-स्मरण करके वे आनन्दमें मत्त हो गये हैं। उनको बाह्य ज्ञान नहीं है। गङ्गा-स्नान करके आये हैं, घरमें महोत्सव हो रहा है, भक्तवृन्द आमन्त्रित हैं, दोपहर बेला बीत रही है—ये सारी बातें उनको स्मरण नहीं है। वे प्रेममें लीन हो, कर नृत्य कर रहे हैं, भक्तवृन्द पुनः उनको लेकर गङ्गा-स्नानके लिए चले। साथमें श्रीनित्यानन्दप्रभु शचीनन्दनका हाथ पकड़कर चल रहे सभी हैं। भक्तवृन्द आनन्दमें मत्त हैं।

पुनः गङ्गाके तीरपर कीर्तन प्रारम्भ हुआ। कीर्तनकी ध्वनि सारी नदियामें भर गयी। भक्तवृन्दके उद्दण्ड नृत्य, गगन-स्पर्शी हरिध्वनि तथा प्राणस्पर्शी भावतरङ्गने नदियावासी नर-नारियोंके मनको हरण कर लिया। पुनः सबने स्नान किया। स्नानके समय भक्तवृन्दके साथ पुनः वही जलक्रीड़ा हुई। शचीनन्दनको घेरकर श्रीनिताई-चाँद अगाध जलमें खड़े हैं। भक्तवृन्द प्रबल वेगसे जलके छींटे दे रहे हैं, इससे किसीको कुछ आपत्ति नहीं। जलयुद्धमें सभी उन्मत्त हैं।

स्नान करके पुनः कीर्तन करते हुए प्रभु भक्तवृन्दके साथ घर आये। उस समय तीसरा पहर बीत रहा था। शचीमाता ठाकुरको भोग लगाकर बैठी थीं। प्रभुके घर आज महामहोत्सव है। सब भक्तोंने एक साथ नन्दोत्सवके गीत गाते हुए प्रभुके घरमें प्रसाद पाया। महोत्सवके अन्तमें प्रभुके आँगनमें प्रसाद लेकर फिर एक बार नृत्योत्सव प्रारम्भ हुआ। पवित्र अन्नक्षेत्रमें सारे वैष्णव लोट-पोट करने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभु इस अन्न-महोत्सवके मूलकर्त्ता थे। प्रभु भी उसके बीच थे। श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीवासपण्डित आदि पुराने भक्तवृन्द बालकके समान अन्न-प्रसाद लेकर क्रीड़ा करते रहे। श्रीनित्यानन्दप्रभुने श्रीअद्वैत-प्रभुको लेकर कुछ रङ्ग किया। वे उनके सारे अङ्गमें अन्न-व्यञ्जन लगाकर उनको गोदमें लेकर उद्दण्ड नृत्य करने लगे। प्रभु एक ओर खड़े होकर रङ्ग देख रहे थे और हँस रहे थे। उसके बाद फिर एक बार दो घड़ी रात जानेपर सबने एक साथ नाचते हुए गङ्गाके तीरपर जाकर स्नान किया। नदियामें प्रभुके मन्दिरमें नन्दोत्सव-लीला इस प्रकार होती थी।

रामदास अभिराम

पहले कहा जा चुका हैं कि पूर्वलीलाके श्रीदाम श्रीगौराङ्गलीलाके अभिराम गोस्वामी हैं; उनका दूसरा नाम रामदास है। वे श्रीनित्यानन्दके परिकर हैं। उनका निवास था, खानाकुल कृष्णनगर। श्रीवृन्दावनके गोवर्द्धन पर्वतकी कन्दरामें ये महापुरुष द्वापरयुगसे ध्यानमग्न थे। श्रीनित्यानन्द-प्रभुके साथ कैसे उनका मिलन हुआ था, यह पहले कह चुका हूँ। ये महापुरुष अब श्रीश्रीनवद्वीप-चन्द्रकी खोजमें नदियामें आये हैं। श्रीनिताई-चाँदके साथ मिले हैं। उन्होंने गुप्तरूपसे इनको प्रभुसे मिला दिया है। इस शुभ मिलनके समय प्रभुके मनमें पूर्वलीलाकी सारी स्मृति पूर्णरूपसे उद्दीप्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुई। पूर्वलीलाके श्रीदाम जब प्रभुसे मिले तो उन्होंने उनको पहचानकर कहा था—

फिरिते जाइ बने-बने, चराइते धेनुगणे,
बाँशि हाथे, चूड़ा माथे, गले परते वनमाले।
तुइ जे मोदेर छिले सखा, एत दिने पेलाम देखा,
सखा बले नाइ मने, नदे एसे भूले गेले।
(प्राचीन गीत)

इन महापुरुषका प्रणाम हर आदमी सहन नहीं कर पाता था। श्रीनित्यानन्दप्रभुके आठ पुत्र इन महापुरुषके प्रणामसे नष्ट हुए। उसके बाद श्रीवीरचन्द्रप्रभुका जन्म हुआ। इनके प्रणामसे वीरचन्द्रप्रभुका कुछ नहीं हुआ। श्रीखण्डके ठाकुर रघुनन्दनकी इन महापुरुषने इसी प्रकार परीक्षा ली थी। वे भी परीक्षामें उत्तीर्ण हुए थे।

वे एक दिन व्रजभावमें विभावित होकर वंशी-अन्वेषण करने लगे। पासमें ३२ बलवान् मनुष्योंके उठानेयोग्य एक सुबृहद् कण्टकवृक्ष पड़ा था। प्रेमोन्मत्त अभिरामने उस बृहत् वृक्षको वंशी समझकर अनायास हाथमें उठा लिया और दोनों हाथोंसे वंशीके समान पकड़कर उसमें फूंक दी। आश्चर्यकी बात यह हुई कि उनके फूंकते ही उस वृक्षमें रन्ध्र हो गये। यह सारी लीला-कथा भक्तिरत्नाकर-श्रीग्रन्थमें वर्णित है।

अभिरामके हाथमें सदा एक लकुटिया रहती थी। उसका नाम था, जयमङ्गल। वे कृपा करके जिसको उससे मारते, उसको उनका प्रेमधन प्राप्त हो जाता था। कविराज गोस्वामीने लिखा है कि वह,

कृष्ण दिते, प्रेम दिते धरे महाशक्ति।

अन्यत्र लिखा है—

अभिराम गोस्वामीर प्रभाव प्रचण्ड।

गोष्ठ-लीला

जन्माष्टमीके बाद गोपाष्टमी-पुण्यतिथि आती है कार्तिक मासमें। नदियाके भक्तगण इस पुण्यतिथिकी आराधनाके लिए व्यस्त हो गये। इधर प्रभुके मनमें पूर्वलीलाके भावकी तरङ्ग उठी। उन्होंने गौरीदास पण्डितके मुँहकी ओर देखकर हँसते-हँसते कहा—"पण्डित! क्या देखते हो! आज बड़ा शुभ दिन है। चलो, हमलोग गोशालामें चलें। ओढ़ना-बिछौना कहाँ है? गाय, दुहना है। धवली, श्यामली गाय कहाँ है? श्रीदाम, सुदाम सखागण कहाँ हैं? मेरे भैयाबलराम कहाँ हैं?"—इतना कहकर शचीनन्दन व्रजभावमें व्याकुल होकर इधर-उधर देखने लगे। समय जानकर श्रीनित्यानन्दप्रभुने दूध दुहनेका पात्र प्रभुके हाथमें दे दिया। प्रभुको भावावेशमें विह्वल देखकर वे उनको गोदमें लेकर बैठ गये। भक्तवृन्द चतुर्दिक् हरि-हरि-ध्वनि करने लगे। मुकुन्दने वासुघोषद्वारा रचित गोष्ठविहारका गीत प्रारम्भ किया—

गोष्ठ-लीला गोरा चाँदेर मनेते पड़िल।
धवली श्यामली बलि सघने डाकिल॥
शिङ्गा वेणु मुरली करिया जयध्वनि।
है है करिया घन घुराय पाँचनि॥
रामाई सुन्दरानन्द सङ्गे नित्यानन्द।
गौरीदास आदि सबे पाइल आनन्द॥
वासुदेव घोष गाय मनेर हरिषे।
गोष्ठलीला गोरा चाँद करिला प्रकाशे॥

श्रीगौराङ्गप्रभु किसी प्रकार भाव-संवरण करके वहाँसे उठे तो, किन्तु धवली, श्यामली, शिङ्गा, वेणू, मुरली-कह-कहकर उच्च स्वरसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बारंबार जयध्वनि करने लगे। लकुटिया ले करके बारंबार घुमाने लगे। सब भक्तवृन्द गोपवेष धारण करके नृत्य करने लगे। प्रभुका भी सुन्दर गोपवेष था। कमरमें धोती कसकर बाँधी है। मुखसे 'है है रे रे' शब्द निकल रहा है। हमारे प्रभु 'आवा आवा' शब्दसे गगन-मण्डलको प्रकम्पित करके भक्तगणके साथ गङ्गा-तीरकी तरफ मैदानमें जा रहे हैं। सारा नवद्वीप आनन्दसे मत्त हो उठा है। नदियाके नर-नारी, बालक-वृद्ध-युवा प्रभुकी अद्भुत नृत्यभङ्गिमा देखकर सोच रहे हैं कि यह मानो सचमुच द्वापरका अन्त है नवद्वीप मानो गोकुल है। सबका गोपवेष है। अभिराम स्वामी गाय-बछड़ा लेकर चल रहे हैं। गौरीदासपण्डित साथ-साथ जा रहे हैं। ये दोनों पूर्वलीलाके श्रीदाम और सुबल हैं। प्रभु सबके आगे चल रहे हैं। कभी-कभी नित्यानन्दभैया प्रभुके आगे आते हैं और दोनों आदमी हाथ पकड़कर मधुर नृत्य करते हैं। नदियाकी आज अपूर्व शोभा है। ठाकुर वंशीवदनने इस लीलाको अपनी आँखोंसे देखकर एक पदमें इस भावको सुन्दरतापूर्वक व्यक्त किया है। यथा,

श्रीनन्दनन्दन, शचीर दुलाल,
चले गोठे पाय-पाय।
रोहिणी कोङर, नित्यानन्द राय,
भायार अग्रेते धाय॥
श्रीदाम साङ्गाइत, अभिराम स्वामी,
गाभी वंश लैया चले।
सुबल पण्डित, गौरीदास आदि,
तुरित मिलित दले॥
नवद्वीप आज, गोकुज हइल,
जेन द्वापरेर शेष।
परिकर सबे, लइल पाँचनि,
धरिया राखाल वेष॥
'आवा आवा' रवे, छाइल गगन,
सुरगणे हेरि हासे।
ता सबार सङ्गे, गोठेते चलिल,
पामर ए वंशीदासे॥

श्रीनित्यानन्दप्रभुके मुखसे शिङ्गका अपूर्व शब्द सुनकर प्रेममें भरकर भक्तगण संज्ञाहीन हो गये। सभी व्रजभावमें उन्मत्त हैं। 'भैया रे! भैया रे!' कहते हुए अभिराम स्वामी बढ़े जा रहे हैं। सबने मिलकर गङ्गाके तीरपर प्रभुको सुन्दर गोपवेषमें सजाया। मस्तकपर मोरपंख बाँध दिया, चरणोंमें नूपुर पहना दिये। सर्वाङ्गमें चन्दन-लेपन कर दिया। पीताम्बर-वस्त्र पहनाया। गलेमें सुन्दर दुपट्टा झुलाया और लम्बी मालती-पुष्पोंकी माला डाल दी। भक्तगणने समय देखकर ये सब चीजें न-जाने कहाँसे जुटा दीं। प्रभुका नटवर वेष देखकर भक्तोंके हृदयमें बड़ा आनन्द हुआ। प्राणके आवेगमें प्रभुको सजाकर वे प्रेमावेशमें नाचते-नाचते गोवर्द्धनपर चले। पूर्वलीला-का अभिनय देखकर आज प्रभुके आनन्दकी सीमा नहीं है।

शचीमाता और मालिनीदेवी आदि वैष्णव-गृहिणीगण गौर-कृष्णके गोष्ठविहारी रूपको देखनेके लिए चलीं। साथमें बहुत-सी नदिया-सुन्दरी पुरनारियाँ चलीं। आनन्दित मनसे वे गङ्गाके किनारे ऊँची भूमिपर चढ़कर खड़ी हो गयीं। उन्होंने देखा—

वृन्दावनेर भावे गोरा फिराय पाँचनि।
'आवा आवा' रवे डाके गोरा गुण मणि॥
भाविछेन गोराचाँद सेइ भावावेश।
वृन्दावनेर भावे गोरार हैल आवेश॥
शची प्रति कहे चल जाइ देखिवारे।
विपिने जाइबे गोरा गोष्ठ करिवारे॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवासेर ब्राह्मणी धाइया चलिल।
वासुदेव घोष कहे जाइते हइल॥

वासुदेव घोष प्रभुका बाल्यलीला-रङ्ग अपनी आँखोंसे देखकर लिख गये हैं। प्रभुकी पूर्वलीला याद दिलाते हुए अभिराम-स्वामी शचीनन्दनको घरके द्वारपर जाकर पुकारते हैं। अभिरामस्वामी पूर्वलीलाके श्रीदाम-सखा हैं। इस लीलाको वासुघोषने अपनी आँखोंसे देखकर गाया है—

अभिराम डाके द्वारे ते,
आरे रे गौर जाबि खेलाते,
गौरव करे बैसे आछ शचीमायेर कोलेते॥

व्रजेर खेला गोचारण,
नैदार खेला संकीर्तन,
जाते मत्त शिशुगण,
हारे रे रे जाना जाबे जेये सुरधुनिर तीरेते॥

समये असमय हलो,
गोठे जाओयार समय गेल,
गौर जाबि कि ना बल्,
अभिमाने बैसे आछ शचीमायेर कोलेते॥

शुने अभिरामेर कथा,
कहिछेन शचीमाता,
तोरा जाबि रे कोथा,
गोठे जाबे गोरा चाँद, बासु जाय निया छाता॥

शचीमाताने पहले नहीं समझा था कि कौन-सा काण्ड होनेवाला है। अब जो कुछ देखा, उससे उनका हृदय आनन्दसे भर गया। नदिया-सुन्दरी कुल-ललनाएँ हुलू-ध्वनि देने लगीं। शचीमाता परमआनन्दपूर्वक श्रीगौर-कृष्णकी गोष्ठ-विहार-लीला देख रही हैं। वे आज यशोदाके भावमें विह्वल हो उठीं। मालिनीदेवी उनको गोदमें लेकर बैठ गयीं। गङ्गाके तटके मैदानकी आज अपूर्व शोभा है। उच्च हरि-संकीर्तनकी तरङ्ग उठी है। नदिया-वासियोंके आनन्दकी सीमा नहीं है। सारे नदियाके लोग आज गङ्गाके तटपर इकट्ठे हुए हैं।

गदाधर, वासुदेव, मुकुन्द—सभी कीर्तनके रङ्गमें मतवाले हो रहे हैं। सबने मिलकर धूहा पकड़ा—

लाखवान हेमबरण गौरयुति मुखवर,
सारद चाँद।
अखिल भुवनमोहन, मनमथ-मनोरथ,
राज कि छाँद॥
देख गौरचन्द्र नव काम।
आनन्दसार, मिलित नवद्वीपे,
प्रकट भाव अभिराम॥ध्रु०॥

मङ्गल सुसमय, हेरि क्षणे क्षण,
बोलत हेरब गोष्ट-विहार।
पुन तब बोलत, सकल जीवन तछु,
जे इह रूप नेहार॥
व्रजपति नन्दन, चाँद चलत वन,
सौध ऊपरे चल जाइ।
राधामोहन, ओ रस सागरे,
सोइ चरण जनु पाइ॥

उच्च अट्टालिकाके ऊपर नदिया-सुन्दरीगण गोरा-चाँदके गोष्ठ-विहारके अपरूप-रूपको देखनेके लिए व्यग्र होकर खड़ी हैं। सबके मनमें व्रज-भावका उद्रेक हो गया है। प्रभुकी गोष्ठविहारकी अपरूप-रूप-राशि देखकर नदियावासी आनन्दमें अधीर होकर कह रहे हैं—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उभ झूटी शोभे शिरे, वदने अमिया झरे,
रूप जिनि सोना शत वान।
जतन करिया माय, धड़ा परायेछे ताय,
काजरे उजोर दुनयान॥
करे शोभे ताड़ बाला, गले मुकुतार माला,
कर-पद कोकनद जिनि।
सबे कहे मरि-मरि, सागरे कामना करि,
हेन सुत पाइल शचीरानी॥

बेला बीतनेको आयी, यह देखकर गौर-चाँदका भावसिन्धु उमड़ उठा। वे भावमें गद्‌गद हो उठे। भक्तगणने उनके मनका भाव समझकर यह पद शुरू किया—

जय शचीनन्दन भुवन आनन्द।
आनन्द शकति, मिलित नवद्वीपे,
उयल नवरस कन्द॥ध्रु०॥
गोखुर धूलि, दिशह उर अम्बर,
शुनि रव-वेणु निशान।
अपरूप श्याम, मधुर मधुराधर,
मृदु-मृदु मुरलीक गान॥
एत कहि भावे, विवश गौर-तनु,
पुन कह गदगद बात।
श्याम सुनागर, वन साजे आवत,
समवयः सहचर साथ॥
मझूमन नयन, जुड़ायल कलेवर,
सफल भेल इह देह।
राधामोहन कह, इह अपरूप नह,
मूरति मत सेइ लेह॥

शचीनन्दन गोष्ठसे घर लौटे। संध्या-कालमें घर लौटती हुई गायोंके खुरसे उठती हुई धूलिके साथ भक्तोंके पद-रजने मिलकर नदिया-गगनको अन्धकारमय कर दिया। उच्च संकीर्तन-रस-तरङ्गमें नदियावासी नर-नारी गोते खाने लगे। आनन्दमें मतवाले होकर वे दिल खोलकर नृत्य करने लगे। नदियाकी आज अपूर्व शोभा है। व्रजकी गोपाष्टमी और नदियाकी गोपाष्टमी तिथिने एकत्र मिलकर भुवनमङ्गल श्रीश्रीगौराङ्गसुन्दरके चरणोंकी अर्चना की। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने दुःखित मनसे सखी काञ्चनाको सम्बोधित करके कहा—

"सजनि! बूझिये गोराङ्ग-विलास।
प्रेमहि निमगन, रहत अनुक्षण,
कतिहु नाहिं अवकाश।"

—दास भूषण

गङ्गा-लीला

पूर्वमें ही कह चुका हूँ कि प्रभुने नदियामें आत्मप्रकाश करना आरम्भ कर दिया है; परन्तु साथ ही कुछ-कुछ ऐश्वर्य लीला-रङ्ग भी वे विशेष-विशेष भक्तोंको दिखाते हैं। उस समयकी एक ऐश्वर्य-लीलारङ्गकी कहानीका यहाँ वर्णन किया जा रहा है—

नदियाका गङ्गातट श्रीगौराङ्गप्रभुके नवद्वीप लीलारङ्गका केन्द्रस्थल है। श्रीयमुनाके तटपर नन्दनन्दन श्रीकृष्ण जिस प्रकार लीलारङ्ग प्रकट करके व्रजवासियोंके मनको हरण करते थे, उसी प्रकार गङ्गाके तटपर शचीनन्दन श्रीगौराङ्गप्रभु लीला-रस-रङ्ग फैलाकर नदियावासियोंके नयन-मनको परितृप्त करते हैं। सर्व-अवतार-सार श्रीगौराङ्गकी लीलास्थली नदियाका गङ्गातट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वैष्णवोंका सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है। पतितपावनी सुरसरिके मनमें बड़ा ही दुःख था कि श्रीयमुनाका भाग्य उनको प्राप्त नहीं हुआ। भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने उनके मनकी अभिलाषा पूर्ण की थी।

श्रीधरको प्रभुने कहा था—

जे गंगा पूजह तुमि आमि तार पिता।
सत्य-सत्य तोमारे कहिनूँ एइ कथा॥

चै. भा. म. ९.१७९

और एक स्थलमें प्रभुने श्रीमुखसे कहा है—

'गंगा दुर्गा दासी मोर महेश किंकर।"

चै. च. आ. १४.४७

प्रभुकी बात उस समय श्रीधरकी समझमें नहीं आयी। पश्चात् उन्होंने प्रभुकी बातको प्रत्यक्ष होते देखकर अपनेको कृतार्थ माना। प्रभुने श्रीधरको जो कहा था, वह नवद्वीपके एक गङ्गातीरवासी निष्ठावान् गङ्गाभक्त विप्रको कृपा करके दिखला दिया था। ठाकुर लोचनदास अपने श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थमें प्रभुकी इस मधुर-लीलाको लिपिबद्ध कर गये हैं।—

"दिवसके अवसानमें एक दिन गङ्गातटको आलोकित करते हुए कुछ दूरपर भक्त-गणोंके साथ श्रीगौराङ्गसुन्दर योगपट्टासनपर बैठे हैं। अकस्मात् गङ्गादेवी तरङ्ग-भङ्गमें कल-कल स्वरमें प्रभुका गुण-गान करने लगीं। क्रमशः गङ्गाका जल बढ़ते-बढ़ते तीरको अतिक्रमण करके ऊपर उठा। गङ्गाकी तरङ्गोंके गर्जनसे उपस्थित नर-नारीवृन्द शङ्कित होकर सोचने लगे—"आज यह क्या हुआ? बादल नहीं गरजते, पवनमें वेग नहीं है, गङ्गादेवीको आज इतना आनन्द क्यों है?" गङ्गादेवी श्रीगौराङ्गसुन्दरके पद-रजके स्पर्शकी कामनासे बड़े वेगसे और अनुरागसे प्रभुके चरण-प्रान्तकी ओर बढ़ रही हैं। यह दृश्य अत्यन्त मनोहर है। परन्तु इसे समझनेकी शक्ति कितने लोगोंमें है? क्रमशः गङ्गाजल प्रभुके पद-रजको स्पर्श करके शान्त हुआ। क्रमशः गङ्गाका जल धीरे-धीरे यथास्थान उतर आया।

प्रभुके लीला-रङ्गके रहस्यको प्रभुने समझा और गङ्गाजीने समझा। परन्तु वहाँ एक और भाग्यवान् गङ्गाभक्त विप्र थे। वे गङ्गा और भगवान्‌में समबुद्धि करके गङ्गाके तटपर कुटी बाँधकर रहते थे और गङ्गाकी आराधनामें वहाँ ही दिन यापन करते थे। हरिनाम-महामन्त्रके वे साधक थे।

वे भाग्यवान् विप्र गङ्गादेवीके आजके अपूर्व उल्लासको देखकर सोचते-सोचते प्रभु जहाँ वयस्यगणद्वारा परिवेष्टित होकर बैठे थे, वहाँ आकर उपस्थित हुए। वहाँ जाकर विप्रने जो कुछ देखा, उससे उनका हृदय आनन्दसे भर गया। हमारे प्रभु अनुरागमें भरकर गङ्गा-दर्शन कर रहे हैं। करुणासे भरी उनकी आँखें छलछला रही हैं, प्रत्येक अङ्गमें कदम्ब-केशरके समान पुलकावली विराज रही है। अपूर्व-दर्शन अपरूप-रूपसम्पन्न श्रीगौराङ्गप्रभुका दर्शन करके उस गङ्गा-भक्त विप्रने उनको साक्षात् पूर्णब्रह्म सनातनके रूपमें पहचाना।

गङ्गा-भक्त भाग्यवान् विप्रने प्रभुके पास जाकर यह भी देखा कि गङ्गाकी शोभा दर्शन करते-करते विह्वल होकर, गङ्गाकी तरङ्गावली पास आती देखकर उन्होंने गङ्गाजलको कर-कमलद्वारा स्पर्श किया। परन्तु गङ्गादेवी इससे संतुष्ट न हुईं। पहले तो उन्होंने उच्छ्वसित तरङ्ग-भङ्गिमाके द्वारा प्रभुके श्रीचरणोंको स्पर्श किया, पश्चात् मूर्तिमती होकर गलेमें वस्त्र डाले प्रभुके पदरजकी प्रार्थना करने लगीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गा-भक्त विप्र इस अपूर्व गङ्गा-गौराङ्ग मिलनका साक्षात् दर्शन करके प्रेममग्न हो पुलकाश्रुपात करते हुए आनन्दसे विह्वल हो गये। विप्रका अभीष्ट पूर्ण हुआ; वे कृतार्थ हो गये।

इधर श्रीगौराङ्गप्रभु गङ्गा-दर्शन करके पुलकित हो उठे। हरिनामानन्दमें विभोर होकर वे अपने निजजनोंको प्रेमालिंगन प्रदान करके मधुर नृत्य करने लगे। उनके नयन-युगलसे शतधारा बहने लगी। उनका प्रेमसिंधु मानो उमड़ उठा। गंगाके घाटपर सब भक्तगणोंने मिलकर महा हरि-संकीर्तन आरम्भ किया। नदियाके सबलोग चकित हो उठे। इनमें गङ्गा-भक्त विप्रने जो देखा, उसे और कोई देख न सका।

गङ्गा-भक्त विप्रके आनन्दकी आज सीमा नहीं है। वे प्रभुके चरणोंमें गिरकर प्रेमानन्दमें विह्वल हो उठे। वे आज अपनी अभीष्ट देवी गंगाजीको प्रत्यक्ष मूर्तिमती देख सके। साथ ही श्रीमन्महाप्रभुका तत्त्व जान सके। उनके भाग्यकी सीमा नहीं। उनके भाग्यकी अभिलाषा शिव-विरञ्चि आदि करते हैं। वे प्रभुके पदतलमें पड़कर आर्तनाद करने लगे।

चारों ओर गङ्गाके घाटपर लोग खड़े होकर इस सौभाग्यवान् विप्रका रंग देख रहे हैं। प्रभुने इस अवसरपर वहाँसे उठकर चुपचाप गृह-गमन किया। तब भाग्यशाली विप्र हृदयावेगसे गङ्गाजीकी पूर्वजन्मकी कथा सबको सुनाने लगे और गङ्गाकी महिमा-कीर्तन करने लगे।

ग्रन्थमें इस भाग्यवान् विप्रका नामोल्लेख नहीं है। गङ्गानिष्ठ भक्त अब एकनिष्ठ गौराङ्ग-भक्त हो गये। उन्होंने फिर प्रभुका संग नहीं छोड़ा। प्रच्छन्न अवतार श्रीगौर-भगवान्ने उनको गुप्तरूपसे आदेश दे दिया कि यह बात कहीं प्रकाशित न हो। ऐश्वर्य दिखलानेपर वे इस प्रकारकी बातें करते थे; क्यों करते थे, यह विचार करनेकी यहाँ आवश्यकता नहीं है। श्रीगौराङ्गप्रभुकी प्रकट-लीला गुप्तलीला हैं; क्योंकि वे कलिके प्रच्छन्न अवतार है—

अवतार नाहि कहे आमि अवतार।
मुनि सब जानि करे लक्षण-विचार॥

चैं. च. म. २०.२९४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इकतीसवाँ अध्याय

श्रीअद्वैतप्रभुका नवद्वीपमें पुनरागमन; श्रीवास-आँगनमें श्रीगौराङ्गकी पूजा

चलह रामाइ ! तुमि अद्वैतेर वास ।
ताँर स्थाने कह गिया आमार प्रकाश ॥
आमार पूजार साज उपहार लैया ।
झाट् आसिवारे बोल सस्त्रीक हैया ॥

प्रभु-वाक्य, चै. भा. मं. ६.९,१४

रामाईपण्डितद्वारा श्रीअद्वैतप्रभुको बुलाना

श्रीअद्वैतप्रभु हमारे 'गौर-आना गोसाईं' हैं। वे अभिमानी भक्त हैं। प्रभुके ऊपर वे अत्यन्त अभिमान करते हैं। वे अभिमान करके नवद्वीपसे शान्तिपुर जाकर बैठ गये हैं। प्रभु जब आत्मप्रकाश करेंगे और उनको आदरपूर्वक बुलावेंगे तो वे आवेंगे। प्रभुके गयाधामसे नवद्वीपमें लौटनेपर श्रीअद्वैतने सभामें जाकर उनको एक बार स्वरूप दिखलाया था, उनसे पूजा-ग्रहण की थी। परन्तु प्रभुकी वैष्णवी मायाके अभिभूत होकर अब वे सारी बातें भूल गये हैं। उनके मनमें संदेह है—"क्या शचीनन्दन ही मेरे अभीष्टदेव हैं? क्या यही वे हैं?" महाविष्णुके अवतार श्रीअद्वैतप्रभु सहज ही छोड़नेवाले नहीं हैं। श्रीभगवान् जैसे भक्तकी बारंबार परीक्षा करते हैं, वैसे ही भक्त भी श्रीभगवान्‌की परीक्षा करता है। श्रीअद्वैतप्रभु श्रीश्रीगौर-भगवान्‌की परीक्षा करनेके लिए नवद्वीप छोड़कर शान्तिपुर चले गये थे। उनकी प्रतीज्ञा थी कि यदि सचमुचमें ये मेरे प्रभु होंगे तो मुझे अपने पाशसे बाँधकर स्वयं ले आवेंगे, तब उनका दास हो जाऊँगा।

इसी कारण उन्होंने नवद्वीप-वास छोड़ा था। प्रभुकी परीक्षा करनेके लिए ही वे शान्तिपुरमें रहने लगे हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभुके नवद्वीप आनेके बाद प्रभुका आत्मप्रकाश लीलारंग क्रमशः प्रकट होने लगा। हरिदास ठाकुरके त्रिभुवन-मंगल उच्च हरिनाम-संकीर्तनसे, श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीअंगकी वायुसे नदियावासी लोगोंके मन भक्तिपथकी ओर झुके। उनके उद्‌भ्रान्त चित्त सुस्थिर हो गये, कलुषित चित्त निर्मल हो गये। बहुतोंने नित्यशुद्ध भुवनमंगल नादब्रह्मका आश्रय लिया। श्रीवासके आँगनमें वैष्णववृन्दका अधिकतर समावेश होने लगा। युगधर्म संकीर्तन-यज्ञानुष्ठानके लिए अब सारे कृष्णभक्त वैष्णव कटिबद्ध हो गये। प्रभुको गयाधामसे नदियामें आये सालभरसे अधिक हो गया। कृष्णप्रेम क्या वस्तु है, उसकी कैसी अपूर्व महिमा है, यह प्रभुको देखकर नदियावासी अब कुछ-कुछ समझने लगे हैं। प्रभु कृष्णप्रेममें दिन-रात उन्मत्त रहते हैं। संसारसे वे पूर्ण विरक्त हैं। कृष्णप्रेममें विह्वल होकर, आविष्ट-भावमें व्याकुल होकर वे कभी क्रन्दन करते हैं, कभी उच्च हास्य करते हैं, कभी धूलिमें लोटते-पोटते हैं। श्रीवासके आँगनमें उनके श्रीमुखका मधुर कीर्तन सुनकर और नयन-रञ्जन नृत्य-विलास-लीलारंग देखकर भक्तवृन्दके मनमें होता है, मानो वे एक आनन्दघन लीलारसमय श्रीविग्रह हैं। वे ईश्वरावेशमें कभी-कभी विष्णु-सिंहासनपर बैठकर 'मैं वही हूँ, मैं वही हूँ' कहकर प्रचण्ड हुंकार-गर्जन करते हैं। एक दिन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु इसी प्रकार श्रीभगवद्भावमें आविष्ट होकर श्रीवासपण्डितके भ्राता रामाईपण्डितको पुकारकर बोले—"रामाई ! तुम अद्वैतके वास-स्थानपर जाकर मेरे प्रकाशकी बात कहना कि जिसके लिए तुमने इतनी आराधना की है, इतना क्रन्दन किया है, इतने उपवास किये हैं, वे ही तुम्हारे लिए प्रकट हुए हैं। भक्तियोगका वितरण करने वे आये हैं, जल्दीसे आकर उनका साथ दो ! एकान्तमें नित्यानन्दके आनेकी बात भी कहना और कहना कि मेरी पूजाकी सामग्री लेकर शीघ्र पत्नीसहित आवें।"

रामाईपण्डित श्रीवासपण्डितके छोटे भाई हैं। वे प्रभुके एकान्त अनुरक्त भक्त हैं। श्रीवासपण्डितके चारों भाई श्रीगौराङ्गके दास हैं। रामाईपण्डितपर प्रभु विशेष कृपा करते हैं। उन्होंने प्रभुकी आज्ञा सिरपर धारण करके हरिस्मरण करके तत्काल परम आनन्दपूर्वक शान्तिपुरके लिए प्रस्थान किया। आनन्दमें विह्वल होकर वे शान्तिपुरके मार्गपर नृत्य करते हुए चले जा रहे हैं। मुखसे हरे-कृष्ण-नामका निरन्तर उच्चारण हो रहा है। वे शान्तिपुर पहुँचकर श्रीअद्वैत-भवनमें गये। श्रीअद्वैतप्रभुको नमस्कार करके वे उनके सामने खड़े हो गये। उनके हृदयमें आनन्दका स्रोत बह रहा है, दोनों आँखोंसे आनन्दाश्रु प्रवाहित हो रहे हैं। प्रेमानन्दमें उनके मुखसे बात नहीं निकल रही है। सर्वज्ञ श्रीअद्वैतप्रभुने भक्तियोगके प्रभावसे सब-कुछ जान लिया है। प्रभुने उनको नवद्वीप ले जानेके लिए रामाईपण्डितको भेजा है—यह जानकर वे स्वयं हँसकर बोले—"मालूम होता है कि मुझे लिवा जानेकी आज्ञा हुई है।"

रामाईपण्डितने तब हाथ जोड़कर कहा—"आचार्य महाशय ! आप तो सब-कुछ जानते हैं, अब शीघ्र नवद्वीप चलिये, विलम्ब मत कीजिये !" श्रीअद्वैतप्रभु यह सुनकर आनन्दसे गद्गद हो उठे। उनको देहका भी भान नहीं रहा।

श्रीअद्वैत-चरित्र अतिशय गम्भीर है। उनके गम्भीर मनोभावको समझनेकी शक्ति किसमें है ? वे सब कुछ जानते हैं, परन्तु मुँहसे कुछ नहीं बोले। उस समय उन्होंने अपने मनोभावको बदल दिया। रामाईपण्डितको लक्ष्य करके वे क्रुद्ध-से होकर बोले। श्रीअद्वैतप्रभु बोले—"मनुष्यके भीतर श्रीभगवान्का अवतार कैसा ? किस शास्त्रमें नदियामें अवतारकी बात लिखी है ? मैं अध्यात्म-ज्ञान-योगी हूँ, तुम्हारे भाई श्रीवासपण्डित मुझे खूब जानते हैं।"

रामाईपण्डित श्रीअद्वैतप्रभुके चरित्रको विशेष-रूपसे जानते हैं। उन्होंने उनकी बातका कोई उत्तर न दिया और मन-ही-मन हँसे।

श्रीअद्वैतप्रभुका भाव फिर बदल गया। उन्होंने रामाईपण्डितसे हँसकर पूछा—"तुम्हारा कैसे आगमन हुआ ?"

रामाईपण्डितने जान लिया कि श्रीअद्वैतप्रभुका मन शान्त हो गया है, तब वे रोते-रोते बोले—"जिनके लिए आपने इतने क्रन्दन, आराधन, उपवास किये, वे ही भक्तियोगका वितरण करने आपके लिए प्रकट हुए हैं। षड़ङ्ग-पूजाके उपचार लेकर पत्नी-सहित पधारिये ! प्रभुके द्वितीय देह नित्यानन्द भी आ चुके हैं। आप तो सब जानते हैं, मैं क्या बताऊँ।"

यह बात सुनकर श्रीअद्वैतप्रभु दोनों हाथ ऊपर उठाकर अजस्र आँसू बहाते हुए रुदन करने लगे। प्रेमानन्दमें विभोर होकर वे मूर्च्छित होकर भूतलपर गिर पड़े। सबको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। रामाईपण्डित एक ओर खड़े होकर सब देख रहे थे और अविरल आँसू बहा रहे थे। थोड़ी देरके बाद प्रभुकी इच्छासे श्रीअद्वैतप्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। वे 'लाया-लाया' कहकर हुङ्कार-गर्जन करके भूतलसे उठकर उद्दण्ड नृत्य करने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मोर लागि प्रभु आइला वैकुण्ठ छाड़िया ।
चै. भा. म. ६,३८

—यह कहकर रोते हुए वे फिर भूतलपर गिर पड़े। अद्वैत-गृहिणी सीताठकुरानी आड़में खड़ी होकर सब-कुछ देख-सुन रही हैं। वे नदियामें प्रभुका प्रकट होना तथा उनके प्रेमाह्वानकी शुभ बात सुनकर आनन्दसे विभोर होकर रोने लगीं। श्रीअद्वैतके पुत्र-बालक श्रीअच्युतानन्द भी प्रेमानन्दमें माताके साथ रोने लगे। दास-दासी, नौकर-चाकर प्रेमानन्दमें विह्वल होकर उनको चारों ओरसे घेरकर रोने लगे। अद्वैत-भवन मानो प्रेममय हो गया। सभीको नदियामें अवतारका प्रेमाह्वान सुनकर परमानन्द प्राप्त हुआ। श्रीअद्वैतप्रभु प्रेमाविष्ट होकर स्थिरतापूर्वक खड़े नहीं हो पा रहे हैं। प्रेममें भरकर उनके सारे अङ्ग पुलकित हो रहे हैं। रामाईपण्डितकी ओर देखकर वे रोते-रोते बोले—"रामाईपण्डित ! मुझे तभी प्रतीति होगी कि ये ही मेरे प्रभु हैं, यदि ये मुझे अपना ऐश्वर्य दिखावें और मेरे मस्तकपर अपना चरण रखें।"

श्रीअद्वैतप्रभुने शचीनन्दनकी परीक्षा किस प्रकार ली, इसका आभास रामाईपण्डितको उन्होंने दिया। श्रीअद्वैताचार्य सर्वलोकपूज्य हैं, वृद्ध ब्राह्मण हैं, उम्रमें प्रभुके पितासे भी बड़े हैं। शची-जगन्नाथको उन्होंने चतुराक्षर गौर-गोपालमन्त्रसे दीक्षित किया है। अतएव वे शचीनन्दनके गुरुके भी गुरु हैं।

प्रभुके ज्येष्ठ भ्राता श्रीमद्विश्वरूप

आत्मशोधनके लिए प्रभुके ज्येष्ठ भ्राता श्रीमद्विश्वरूपप्रभुकी मधुमय चरित-कथा कुछ-कुछ लिखना शुरू कर रहा हूँ। इस प्रसङ्गमें श्रीमद्विश्वरूपका जन्म-वृत्तान्त श्रीअद्वैतप्रकाशसे सङ्कलित करते समय एक अपूर्व तत्त्व दृष्टिगोचर हुआ। अद्वैतप्रकाश प्रामाणिक ग्रन्थ है। श्रीईशान नागर इस श्रीग्रन्थके रचयिता हैं। ये महापुरुष श्रीअद्वैतप्रभुके बाल्य-सहचर और शिष्य थे। उन्होंने सीतादेवीके आदेशसे श्रीअद्वैतप्रभुकी आद्यन्त-लीला अपनी आँखोंसे देखकर इस श्रीग्रन्थको लिखा है। इन महापुरुषने श्रीअद्वैतप्रभुके आदेशसे नवद्वीप जाकर गौर-विरहिणी श्रीमती विष्णुप्रियादेवीका कठोर भजन-वृत्तान्त श्रवण करके तथा अपनी आँखोंसे उनकी गौर-विरह-विदग्ध कङ्कालावशिष्ट श्रीमूर्तिका दर्शन करके उसका प्राणस्पर्शी और मर्मभेदी भाषामें वर्णन किया है।

श्रीअद्वैतप्रकाश-ग्रन्थमें लिखा है कि शचीमाताकी आठ कन्याएँ जब एक-एक करके अकालमें काल-कवलित हो गयीं, तब एक दिन श्रीपाद जगन्नाथ मिश्रने गम्भीर दुःखसे कातर होकर श्रीअद्वैतप्रभुके श्रीचरणोंका आश्रय लिया तथा अपने वंशकी रक्षाके हेतु उनसे प्रार्थना की। श्रीअद्वैतप्रभु संतुष्ट होकर आदर-प्रेमके साथ मिश्र-पुरन्दर ठाकुरसे बोले—'तुम घर जाओ ! मैं इसका विधान करूँगा।"

श्रीअद्वैतप्रभु दूसरे दिन प्रातःकाल प्रातःकृत्य समाप्त करके मिश्रपुरन्दरके घर जाकर उपस्थित हुए। मिश्र-दम्पतिने बड़े आदर-सत्कारके साथ श्रीअद्वैतप्रभुके श्रीचरणोंकी अर्चना की। शचीमाताके प्रणाम करनेपर उनको श्रीअद्वैतप्रभुने आशीर्वाद दिया—"तुम पुत्रवती होओ।"

मिश्रपुरन्दरने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—"जिससे आपके आशीर्वचनोंकी रक्षा हो, आप वही कार्य करिये !"

तब श्रीअद्वैतप्रभु हँसते-हँसते बोले—"मैंने स्वप्नमें एक मन्त्रकी प्राप्ति की है। वह मन्त्र तुम दोनों ग्रहण करो। इससे सब अमङ्गलोंका नाश हो जायगा और परमपण्डित दिव्य तनयकी तुम्हे प्राप्ति होगी।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीअद्वैतप्रभुके इस आदेशको श्रवण करके आनन्दित चित्तसे शची-जगन्नाथ गङ्गा-स्नानको चले। गङ्गा-स्नान करके उनके घर आनेपर श्रीअद्वैतप्रभुने विधिपूर्वक नारायण-पूजा करके उन दोनोंको चतुराक्षर गौर-गोपालमन्त्रमें दीक्षित किया।

इस अपूर्व मन्त्रको प्राप्त करके मिश्र-दम्पतिके मनमें महाप्रेमभावोद्गम हुआ। दोनों श्रीअद्वैत-प्रभुको प्रणाम करके हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे। श्रीअद्वैतप्रभुने उनको **'कृष्णे मतिरस्तु'** कहकर आशीर्वाद दिया। उस दिन श्रीपाद जगन्नाथमिश्रके घर प्रसाद पाकर श्रीअद्वैतप्रभु अपने घर गये।

इसके बाद ही श्रीशचीदेवीको गर्भकी सम्भावना हो गयी। इस नवम गर्भसे श्रीमद्विश्वरूपप्रभुका आविर्भाव हुआ। पहले श्रीअद्वैतप्रभुके प्रणामसे शचीमाताकी आठ कन्याएँ क्रमश गर्भमें ही नष्ट हो गयीं।

शचीमाताकी अवस्था उस समय चालीस वर्षसे अधिक हो रही थी और मिश्र-पुरन्दरकी आयु पचास वर्षके लगभग थी। वे निश्चय ही अबतक अदीक्षित न थे। उन्होंने यथासमय कुलगुरुसे विष्णु-मन्त्रमें अवश्य दीक्षा ली थी; किन्तु श्रीअद्वैतप्रभुने उसके ऊपर पुनः इन लोगोंको चतुराक्षर गौर-गोपालमन्त्रमें दीक्षित क्यों किया? श्रीअद्वैतप्रभु साक्षात् महाविष्णुके अवतार थे। वे सर्वज्ञ थे। वे जानते थे कि श्रीशचीदेवीके गर्भसे श्रीगौर-गोविन्दका अवतार होगा। पहलेसे ही मिश्र-दम्पतिके मनमें श्रीगौर-गोविन्दकी मूर्तिकी स्फूर्ति हो, उनके हृदय, मन और तन उस गौर-गोविन्द-भावमें विभावित हों, इस उद्देश्यसे सर्वज्ञ श्रीअद्वैत-प्रभुने श्रीगौराङ्गके माता-पिताको श्रीगौर-गोपाल-मन्त्रमें दीक्षित किया।

शचीनन्दन अब बाईस वर्षके तरुण नवयुवक हैं। वे इस अल्पावस्थामें सब विद्याओंमें, सब शास्त्रोंमें परम पण्डित हो गये हैं; परन्तु अद्वैत-प्रभुका शास्त्रज्ञान उनकी अपेक्षा किसी अंशमें कम नहीं है। उनके मनमें यह सन्देह है कि शचीनन्दन क्या सचमुच उनके अभीष्टदेव नन्द-नन्दन हैं? प्रभुने ही उनके मनमें यह सन्देह पैदा कर दिया है। इसका भी गूढ़ मर्म है। ये सब बातें यथास्थान आगे कही जायँगी।

अद्वैतप्रभुका नवद्वीप-आगमन

लीला-भङ्ग करके मैं बहुत दूर आ गया हूँ। परम भागवत रामाईपण्डितने अपने स्वाभाविक दैन्यके साथ हाथ जोड़कर श्रीअद्वैतप्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"प्रभो! मैं क्या कहूँ। मेरे भाग्यमें होगा तो मैं भी देख पाऊँगा। जो आपकी इच्छा है, वही उनकी है। आपके निमित्त ही प्रभुका यह अवतार है।"

रामाईपण्डितकी बातसे श्रीअद्वैतप्रभु अतिशय संतुष्ट हुए। उनको गाढ़ालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। रामाईपण्डित आनन्दसे गद्गद होकर रो पड़े। श्रीअद्वैतप्रभुकी चरण-धूलि लेकर मस्तक-पर धारण करके वे कृतार्थ हुए।

शान्तिपुरनाथने तत्काल नवद्वीप-यात्रा करनेके लिए तैयार होनेका आदेश दिया। गृहिणीको पुकारकर कहा—"गृहिणी! कृपा करके इस अधमको प्रभुने स्मरण किया है। पूजाका सामान लेकर चलो! आज हम नदिया चलेंगे।" पतिपरायणा गौराङ्गगतप्राणा सीताठकुरानी आनन्दसे उत्फुल्ल होकर सब तैयारी करने लगीं। तत्त्व-दृष्टिमें वे सर्वज्ञा योगमाया हैं। वस्त्र, अलंकार गन्ध-माल्य, धूप-दीप, क्षीर, दही, मक्खन, मिष्टान्न, कर्पूर, ताम्बूल, फल-मूल आदि पूजाकी सारी सामग्री लेकर वे प्रस्तुत हो गयीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीअद्वैतप्रभुने चुपचाप रामाईपण्डितसे कहा—"मैं नदिया जा रहा हूँ, वहाँ जाकर यह बात प्रभुसे न कहना। प्रभुसे कहना कि अद्वैताचार्य नहीं आये। प्रभु जो कुछ बोलें, उसे सुनकर मुझे बतलाना। मैं नन्दनाचार्यके घर छिपकर रहूँगा।" रामाईपण्डित श्रीअद्वैतप्रभुकी बात सुनकर मन-ही-मन हँसे। इस बातका वे क्या उत्तर देते।

श्रीअद्वैतप्रभुने सपरिवार दास-दासी लेकर, पूजाकी सारी सामग्री साथ लेकर नवद्वीपके लिए प्रस्थान किया। सीताठकुरानीने पूजाकी सारी सामग्री अपने साथ ले ली। वे रामाईपण्डितके साथ यथासमय नवद्वीप आकर सपरिवार नन्दनाचार्यके घर जाकर ठहरे।

अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान् श्रीअद्वैतप्रभुके मनका भाव जान गये। वे अपने मन्दिरमें थे। साथमें भक्तवृन्द थे। श्रीवासके आँगनमें जाकर आविष्टभावमें प्रभु एकबार विष्णु-सिंहासनपर जाकर बैठे। प्रभुका आविष्ट भाव देखकर, तथा प्रेम-हुंकार-गर्जन-ध्वनि सुनकर भक्तवृन्द भयभीत हो गये। उन्होंने सोचा कि प्रभु आज कोई अपूर्व लीलारङ्ग करेंगे। सभी उद्विग्न चित्तसे प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर देखते हैं। हुंकार-गर्जन करते-करते प्रभु बारंबार कहने लगे—

नाड़ा आइसे, नाड़ा आइसे बोले बारंबारे।
नाड़ा चाहे मोर ठाकुराल देखिबारे॥

चै. भा. म. ६.६२

श्रीगौराङ्गप्रभु श्रीअद्वैताचार्यको 'नाड़ा' कहकर पुकारते थे। यह उनकी बड़ी प्रेमकी पुकार थी। कभी-कभी प्रभु बाहरी क्रोध दिखलाकर उनको 'नाड़ा' कहकर पुकारते थे। प्रभुके इस प्रेममय सम्बोधनको सुनकर अद्वैताचार्य बहुत प्रसन्न होते थे। ज्ञान-चर्चाको लेकर वे बीच-बीचमें प्रभुको सष्ट करके उनके मुखसे यह मधुर सम्बोधन सुनकर आप्यायित होते थे। प्रभु जब श्रीअद्वैत-प्रभुको 'नाड़ा' कहकर पुकारते, तब शान्तिपुरनाथके मनमें अपार आनन्द होता। प्रभु भगवद्भावमें ही उनको 'नाड़ा' कहकर पुकारते थे।

श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌की इच्छा-शक्ति हैं। उनके आत्मप्रकाशका भाव समझकर विष्णु-सिंहासनपर बैठे हुए श्रीनवद्वीपचन्द्रके सिरके ऊपर उन्होंने छत्र धारण किया। नरहरि चँवर डुलाने लगे। गदाधरपण्डित समय जानकर कर्पूर और ताम्बूल लेकर प्रभुके बगलमें खड़े हो गये। अन्तरङ्ग भक्तगण निज-निज अनुकूल सेवाके व्रती हो गये। कोई स्तुति-पाठ करने लगे—

जय जय सर्व-प्राणधन विश्वम्भर।
जय जय गौरचन्द्र करुणासागर॥

श्रीवासका आँगन बारंबार हरिध्वनिसे मुखरित होने लगा। पुरनारियाँ शुभ शङ्खनादके साथ श्रीगौराङ्गका जयगान करने लगीं। पुरस्त्रीगण शुभ हुलू-ध्वनिद्वारा मङ्गलगीत गाने लगीं। इसी शुभ समयमें रामाईपण्डित शान्तिपुरसे प्रभुके पास आकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उनके कुछ कहनेके पूर्व ही सर्वज्ञ प्रभुने प्रेमाविष्टभावसे उनकी ओर देखकर कहा—

जानियाओ नाडा मोरे चालये सदाय॥
एथाइ रहिल नन्दनाचार्येर घरे।
मोरे परीक्षिते नाड़ा पाठाइल तोरे॥
आन गिया शीघ्र तुमि एथाइ ताहाने।
प्रसन्न श्रीमुखे आमि बलिल आपने॥

चै. भा. म. ६.६७-६९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तवत्सल हमारे प्रभुने यहाँ एक कार्यसे दो भक्तोंकी मनोकामना पूरी की। रामाईपण्डितको श्रीअद्वैतप्रभुने अपने नवद्वीप-आगमनकी सूचना प्रभुके सामने प्रकट करनेका निषेध किया था। इससे रामाईपण्डित बड़ी विपद्में पड़ गये थे। श्रीअद्वैतप्रभुके आदेशकी रक्षा करनेसे उनको प्रभुके सामने मिथ्यावादी होना पड़ता और न करनेसे वे श्रीअद्वैतप्रभुके अप्रिय होते। वे इस विषम संकटमें प्रभुके शरणापन्न हुए। भक्तवत्सल प्रभुने भक्तके मनका भाव समझकर रामाईपण्डितके मुखसे किसी बातको प्रकट करनेका अवसर ही नहीं दिया। उन्होंने स्वयं अपनी सर्वज्ञताका परिचय देकर रामाईपण्डितका इस विपद्से उद्धार किया। रामाईपण्डित श्रीगौर-भगवान्‌की भक्तवत्सलताका परिचय पाकर आनन्दसे गद्‌गद होकर उनके चरणोंमें गिरकर आकुल होकर रोने लगे। श्रीअद्वैतप्रभुकी भी मनोकामना पूर्ण हुई। उन्होंने रामाईपण्डितको आदेश दिया था—"तुम नवद्वीपमें जाकर प्रभुसे कहना कि आचार्य नहीं आये ! इसपर प्रभु जो कुछ बोलें, आकर मुझको बतलाना।" प्रभुने रामाईपण्डितको जो कुछ कहा, उससे श्रीअद्वैतप्रभुकी मनोबाञ्छा सिद्ध हुई। प्रभु बोले—"मैं नाड़ाके मनोभावको समझ गया हूँ; वे मेरी परीक्षा करना चाहते हैं। अच्छा ! उनको नन्दनाचार्यके घरसे शीघ्र मेरे पास ले आओ। वे वहाँ छिपे हैं।" श्रीअद्वैतप्रभुकी इच्छा यही थी कि प्रभु उनका केश पकड़कर अपने चरणोंके पास खींच लें। भक्तवत्सल प्रभुने यही किया। चतुरचूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌ने एक कार्यसे दो उद्देश्य सिद्ध किये।

रामाईपण्डित प्रभुका आदेश पाते ही बड़े आनन्दसे नन्दनाचार्यके घरकी ओर चले। श्रीअद्वैतप्रभुको खोलकर सारी बात कह दी। वे अपने अभीष्टदेवकी कृपा-अनुमति पाकर पूजाका सामान तथा सारा द्रव्यादि लेकर स्त्रीके सहित स्तव-पाठ करते हुए श्रीवासके आँगनमें आकर उपस्थित हुए। बहुत दूरसे प्रभुको दण्डवत्-प्रणाम करते-करते शान्तिपुरनाथ श्रीवासके आँगनमें जा पहुँचे। वे जब प्रभुके सामने हाथ जोड़कर खड़े हुए तो देखते क्या हैं कि उनके प्रभु अपरूप-रूपकी छटा बिखेरते हुए विष्णु-सिंहासनपर विराजमान हैं। ऐसा अपरूप-रूप निखिल ब्रह्माण्डमें कहीं किसीने नहीं देखा। श्रीअद्वैत प्रभु सपत्नीक प्रभुके इस अपरूप ऐश्वर्यरूपका दर्शन करके आनन्दसे आत्मविस्मृत होकर स्तम्भितभावमें खड़े हो गये। उनके मुखसे वाक्यस्फूर्त्ति नहीं हुई। दोनोंकी आँखोंसे अविरल प्रेमाश्रुधारा बहने लगी, दोनोंके सारे अङ्ग पुलकित हो गये।

श्रीअद्वैतप्रभुद्वारा महाप्रभुकी पूजा

श्रीश्रीगौर-भगवान् तब श्रीअद्वैतप्रभुकी ओर शुभ दृष्टिपात करके मधुर स्वरमें बोले—"तुम्हारे संकल्पको लेकर मैं अवतीर्ण हुआ हूँ। तुमने बहुत आराधना की है। मैं क्षीरसागरमें विश्राम कर रहा था। तुम्हारे प्रेम-हुंकारने मेरी निद्रा भङ्ग कर दी। जीवोंका दुःख सहन नहीं होता; उनका उद्धार करने तुम मुझे ले आये। चारों ओर मेरे जितमें गण हैं, उन सबने तुम्हारे कारण जन्म लिया है। ब्रह्मादि जिन वैष्णवोंके दर्शनकी इच्छा करते हैं, तुम्हारेद्वारा सभी लोग उनका दर्शन कर पायगे।"

अद्वैतप्रभु और उनकी गृहिणी सीताठकुरानी प्रभुके मधुमय वचन सुनकर आनन्दसे गद्‌गद हो उठे। श्रीअद्वैतप्रभु ऊर्ध्वबाहु होकर क्रन्दन करने लगे। भक्तिमती सीताठकुरानीकी आँखोंकी प्रेमाश्रुधारासे उनका वक्षःस्थल भीग गया। वे दोनों एक-साथ प्रभुके चरणोंपर गिर पड़े।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शान्तिपुरनाथके सामने श्रीगौर-भगवान्‌ने इस प्रकार नदियाके सब भक्तोंके समक्ष ऐश्वर्यभावमें अपनेको प्रकट किया। श्रीअद्वैताचार्यके सामने प्रभुके इस प्रकारसे आत्मप्रकाश करनेपर उनकी भगवत्ताके सम्बन्धमें नदियाके सब भक्तोंके मनके सारे संदेह दूर हो गये। श्रीगौर-भगवान्‌ने इस प्रकार सर्वलोकपूज्य श्रीअद्वैताचार्यको अपना बना लिया।

श्रीअद्वैतप्रभुने आत्मसंवरण करके प्रेमानन्दमें विभोर होकर रोते-रोते प्रभुके चरणोंमें गिरकर हाथ जोड़कर आत्मनिवेदन किया—"आज आपके चरण-युगलोंका साक्षात् दर्शन करके मेरा जन्म, मेरी सब अभिलाषाएँ सफल हो गयीं। जिनकी वेद घोषणा करते हैं, लेकिन उनको देख नहीं पाते, ऐसे आप मेरे लिए प्रत्यक्ष हुए हैं। मेरी कोई भी शक्ति नहीं है, यह आपकी करुणा ही है। आपके सिवा जीवोंका उद्धार कौन कर सकता हैं?"

—यह बात कहते-कहते आचार्यठाकुर प्रेमविह्वल हो उठे। तब भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने मृदु-मधुर मुसकानके साथ आदेश दिया—"अद्वैत! मेरी पूजा करो!" प्रभुका कृपादेश प्राप्तकर सर्वलोकमान्य वृद्ध ब्राह्मण प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर नयन-जलसे अभिषिक्त होकर गौराङ्गकी पूजामें बैठे। सुवासित जलसे पहले उन्होंने प्रभुके श्रीचरण-कमलोंको पखारा। सूक्ष्म अभिनव वस्त्रके द्वारा दोनों चरणोंको पोंछ दिया। दिव्य तुलसी-मञ्जरी चन्दनमें डुबाकर अर्घ्यके सहित प्रभुके श्रीचरणोंके ऊपर रखी। उसके बाद उन्होंने गन्ध-पुष्प, धूप-दीप आदि पञ्चोपचारसे प्रभुकी विधिपूर्वक पूजा की। पूजा करनेके लिए बैठकर वे वृद्ध ब्राह्मण प्रेममें भरकर क्रन्दन करने लगे। नयनोंके प्रेमजलसे अपने अभीष्टदेवके पादपद्म धो डाले। पश्चात् पञ्च-प्रदीप जलाकर प्रेमपूर्वक प्रभुकी आरती करने लगे। सब भक्तगण बारंबार जय-ध्वनि करने लगे। शङ्ख-घण्टाकी ध्वनिसे श्रीवासका आँगन मुखरित हो उठा। प्रभुकी पञ्चोपचार-पूजा करके श्रीअद्वैताचार्यका मन न भरा। वे फिर प्रभुकी षोडशोपचार-पूजा करने बैठे।*

शास्त्रानुसार वस्त्र, अलंकार, दिव्य माल्य, चन्दन आदिके द्वारा प्रभुकी विधिपूर्वक षोडशोपचार-पूजा करके प्रणाम किया—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्रह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

विष्णुपुराण १.१९.६५

प्रणाम करके महाविष्णुके अवतार शान्ति-पुरनाथ श्रीअद्वैतप्रभु हाथ जोड़कर अपनी भाषामें श्रीश्रीगौर-भगवान्‌की स्तुति करने लगे—

जय जय सर्व प्राणनाथ विश्वम्भर।
जय जय गौरचन्द्र करुणा सागर॥
जय जय भकत-वचन-सत्यकारी।
जय जय महाप्रभु महा-अवतारी॥
जय जय सिंधुसुता रूप मनोरम।
जय जय श्रीवत्स-कौस्तुभ-विभूषण॥

---

* करिया चरण-पूजा षोड़शोपचारे।
आर वार दिला माल्य वस्त्र अलङ्कारे॥
शास्त्र दृष्टे पूजा करे पटोल विधाने।
एई श्लोक पड़ि करे दण्ड परनामे॥
आपन गलार माला अद्वैतेर दिया।
'वर माग वर माग' बलेन हासिया॥

चैं० भा०म० १०९,११०,१५६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जय जय हरे-कृष्ण-मन्त्रेर प्रकाश ।
जय जय निज भक्ति ग्रहण विलास ॥

जय जय महाप्रभु अनन्त-शयन ।
जय जय जय सर्व जीवेर शरण ॥

तुमि विष्णु, तुमि कृष्ण, तुमि नारायण ।
तुमि मत्स्य, तुमि कूर्म, तुमि सनातन ॥

तुमि से वराह, प्रभु तुमि से वामन ।
तुमि कर युगे-युगे वेदेर पालन ॥

तुमि रक्षःकुलहन्ता जानकी-जीवन ।
तुमि गुह-वरदाता अहल्या-मोचन ॥

तुमि से प्रह्लाद लागि कैले अवतार ।
हिरण्य बधिया नरसिंह नाम जार ॥

सर्ववेद-चूड़ामणि तुमि द्विजराज ।
तुमि से भजन कर नीलाचल माझ ॥

तोमारे से चारि वेदे बूले अन्वेषिया ।
तुमि एथा आसि रहियाछ लुकाइया ॥

लुकाइते बड़ प्रभु तुमि महावीर ।
भक्तजन धरि तोमा करये बाहिर ॥

संकीर्तन आरम्भे तोमार अवतार ।
अनन्त-ब्रह्माण्डे तोमा बइ नहि आर ॥

एइ तोर दुइखानि चरण-कमल ।
इहारि से रसे गौरी-शंकर विह्वल ॥

एइ से चरणे रमा सेवे एक मने ।
इहारि से यश गाय सहस्र-वदने ॥

एइ से चरण ब्रह्मा पूजये सदाय ।
श्रुति-स्मृति-पुराणे इहारि तत्त्व गाय ॥

सत्यलोके आक्रमिल एइ से चरणे ।
बलि-शिर धन्य हैल इहार अर्पणे ॥

एइ से चरण हैते गङ्गा अवतार ।
शंकर धरिला शिरे महा वेग जार ॥

चै. भा. म. ६.११२—१२६

स्तुतिके समाप्त होनेपर श्रीअद्वैताचार्य लम्बायमान होकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। प्रभुके श्रीचरणोंकी महिमाका गान करते हुए भावावेशमें उनके नयन-युगलसे अविश्रान्त अश्रुधारा प्रवाहित होकर प्रभुके चरणतलको अभिषिक्त करने लगी। अन्तर्यामी भक्त-वाञ्छा-कल्पतरु श्रीगौर-भगवान्‌ने भक्तके मनको देखकर श्रीअद्वैतप्रभुके मस्तकपर अपने अज-भव-वन्दित युगल-चरण-कमलको उठाकर रख दिया।

श्रीअद्वैतप्रभुकी भगवान्-परीक्षा यहाँ पूरी हुई। भक्तवाञ्छा-कल्पतरु श्रीगौर-भगवान्‌ने उनकी मनोवाञ्छा पूर्ण कर दी। उपस्थित भक्तवृन्द महा-आनन्दसे बारंबार हरिध्वनि करने लगे। सभी आनन्द-विह्वल होकर उच्च-स्वरसे जय-ध्वनि करने लगे। उसके बाद सभी प्रेमानन्दमें धूलमें लोटने और क्रन्दन करने लगे। कोई किसीका गला पकड़कर प्रेमावेशमें अजस्र आँसू बहाने लगा। आनन्द-कोलाहलसे श्रीवासका आँगन भर गया।

उनमें रामाईपण्डित भी थे। जब श्रीअद्वैतप्रभुने शान्तिपुरसे प्रस्थान करते समय कहा था कि 'यदि तुम्हारे शचीनन्दन मेरे सिरपर अपने चरण रख दें तो मैं समझूँगा कि वे मेरे अभीष्टदेव और प्राणवल्लभ हैं।" रामाईपण्डितने इसके उत्तरमें कहा था—"प्रभो! इसका उत्तर मैं क्या दूँ? यदि भाग्यमें होगा तो यह अपनी आँखोंसे देखकर मैं कृतार्थ हो जाऊँगा।" उस परम सौभाग्यवान् रामाईपण्डितका वह सौभाग्य अब उपस्थित है। उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है। प्रेमानन्दके आवेगमें भरकर वे स्त्रीजनके समान फुफकार मारकर रो रहे हैं।

अद्वैत-गृहिणी सीताठकुरानीकी भी यही अवस्था है; वे साक्षात् योगमाया हैं; श्रीगौराङ्ग-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तत्त्वकी अभिज्ञाता हैं। उनके हृदयकी वासना पूर्ण हुई, इस आनन्दमें वे खो गयीं। वह आनन्द शब्दोंके द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता; अतएव सीताठकुरानी चुपचाप प्रेमाश्रु-विसर्जन कर रही हैं। अपने पति-देवताका भाग्य देखकर उनको परमानन्द प्राप्त हुआ है। आनन्दस्वरूपा होकर वे एक बगल खड़ी हैं।

श्रीगौर-भगवान्‌ने तब श्रीअद्वैतप्रभुकी ओर शुभ दृष्टि करके आदेश दिया—

आरे नाड़ा ! आमार कीर्तने नृत्य कर।

चै. भा. म. ६.१३७

प्रभुका आदेश मिलते ही श्रीअद्वैताचार्यने प्रभुकी चरण-धूलि लेकर नम्रतापूर्वक उठकर धीरे-धीरे मधुर प्रेम-नृत्य प्रारम्भ किया। सर्वलोकपूज्य, सर्वलोकमान्य वृद्ध ब्राह्मणकी यह प्रथम नृत्य-चेष्टा थी। इसके पहले कभी-किसीने उनको नृत्य करते नहीं देखा था। उनके नृत्य प्रारम्भ करते ही मुकुन्द आदि भक्तोंने कीर्तनका धूहा पकड़ा। श्रीगौर-भगवान् विष्णु-सिंहासनपर आविष्टभावमें बैठकर कीर्तन सुन रहे हैं तथा अद्वैतप्रभुके नयनरञ्जन मधुर नृत्यको देख रहे हैं। उनके श्रीमुखचन्द्रकी मधुर हँसीसे मानो अमृत-वर्षा हो रही है। भक्तवृन्दके मधुर स्वरसे मधुमय कीर्तन-ध्वनि आकाशको भेदती हुई शून्यमें विलीन हो रही है। सारी नदियामें मानो मधु-वृष्टि हो गयी।

धीरे-धीरे नृत्य करते-करते प्रेमोन्मत्त होकर वे वृद्ध ब्राह्मण क्रमशः प्रचण्ड उद्दण्ड नृत्य करने लगे। उनके चरणोंके भारसे पृथिवी कम्पायमान हो गयी। वे कभी-कभी कमर डुलाकर मन-मोहन नृत्य करते हैं, कभी विशाल उद्दण्ड नृत्यसे भक्तवृन्दके हृदयमें महाभयका संचार कर देते हैं, कभी-कभी विशाल हुंकार-गर्जन करते हैं, दूसरे ही क्षण दाँतोंमें तृण पकड़कर अपूर्व दैन्यपूर्वक हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें गिरकर आत्मनिवेदन करते हैं। उठकर पुनः भूतलपर लोटते हैं। कभी-कभी प्रेमानन्दमें उनको बारंबार श्वास आ रही है, कभी प्रेमावेशमें मूर्च्छाभङ्ग होनेपर उठकर पुनः मधुर नृत्य करते हैं। कभी दूर खड़े होकर, ऊर्ध्ववाहु होकर उच्च कीर्तन करते-करते प्रभुके सामने दौड़कर जाते हैं और प्रभुके हास्ययुक्त मनोहर मुखचन्द्रकी छटा देखकर प्रेमानन्दमें विह्वल होकर भूतलपर गिर-गिर पड़ते हैं।

अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु यह देखकर कटाक्ष-पात करके हँसते हैं। श्रीअद्वैतप्रभुके अपूर्व प्रेमभावयुक्त मधुर मदनमोहन नृत्यविलासको देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभु और नदियाके भक्तवृन्द अपार आनन्द अनुभव कर रहे हैं। शान्तिपुरनाथने श्रीनित्यानन्दप्रभुको यहाँ ही पहले-पहल देखा है। वे प्रभुके सिरपर छत्र धारण करके खड़े होकर श्रीअद्वैतप्रभुके अपूर्व नृत्यको देखकर मृदु-मधुर-मुस्कुरा रहे हैं। वे भी प्रेमोन्मत्तभावमें प्रेममें भरे, उन्मत्त-से होकर प्रभुकी सेवामें लगे हैं। उनकी मदोन्मत्त लाल-लाल आँखोंसे अविरल प्रेमाश्रुधारा बह रही है। उनकी मदमत्तकी तरह अङ्ग-चेष्टा हो रही हैं। प्रेम-पुलकित होकर डबडबायी हुई करुण आँखोंसे एक-एक बार श्रीअद्वैतप्रभुकी ओर शुभ दृष्टिपात करते हैं। शान्तिपुरनाथ कभी उनको 'प्रभु' कहकर सम्बोधित करते हैं, कभी प्रेममें भरकर कौतुक करते हुए 'मतवाले' कहकर हँसी करते हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभु सेवानन्दमें मग्न हैं। श्रीअद्वैतप्रभुकी बात उनके कानोंमें न पड़ी। कीर्तन और नृत्य चलने लगा। भक्तगणने प्रेमोन्मत्त होकर इस कीर्तनमें योग दिया। मृदङ्ग-करतालकी मधुर-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ध्वनिसे श्रीवासका आँगन प्रकम्पित हो उठा। भक्तवत्सल प्रभुने देखा कि वृद्ध-ब्राह्मण कीर्तनसे अत्यन्त थक गये हैं, तब उन्होंने इशारेसे श्रीअद्वैतप्रभुको नृत्य-संवरण करनेका आदेश दिया। प्रभुकी आज्ञा शिरोधार्य करके वे सामने आकर हाथ जोड़कर स्थिर खड़े हो गये। तब श्रीश्रीगौर-भगवान्‌ने अपनी प्रसादी पुष्पमाला श्रीहस्तसे उनके गलेमें पहनाकर हँसते हुए वर माँगनेको कहा।

वर-याचना

श्रीअद्वैतप्रभुने कोई उत्तर न दिया, यह देखकर दयामय श्रीगौर-भगवान् बारंबार "वर माँगो, वर माँगो !" कहने लगे। तब श्रीअद्वैताचार्यने रोते हुए हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"अपनी मन-चाही वस्तु तो मिल ही गयी, अब और क्या वर माँगूँ। आपके साक्षात् दर्शन हो गये तो अब और क्या बाकी रहा।"

श्रीगौर-भगवान् श्रीअद्वैतप्रभुकी इस बातसे परम संतुष्ट हुए। श्रीभगवान्‌के साथ वैष्णवका 'प्रभु और दास'का नित्य सम्बन्ध है। दासका कार्य समझकर प्रभु पुरस्कार देगे; परन्तु दास पुरस्कार क्यों ले ? दासका कार्य तो निष्कपट प्रभु-सेवा है। और प्रभुका कर्तव्य है—उत्तरोत्तर उच्च सेवाका अधिकार प्रदान करना। भक्त और भगवान्‌के बीचका यह सेव्य-सेवक-सम्बन्ध अत्यन्त स्वार्थाभिलाष-शून्य है। दासकाय-मन प्राणसे सेवा करके प्रभुको तुष्ट करते हैं। प्रभुके तुष्ट होनेपर उनको सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। वे और कुछ नहीं चाहते। श्रीगौर-भगवान्‌ने श्रीअद्वैतप्रभुकी प्रेम-सेवासे संतुष्ट होकर वैकुण्ठके सुखको छोड़कर नदियामें शचीके गर्भसे अवतीर्ण होकर उनको स्वरूप दिखाया, उनको आत्म-तत्त्व बतलाया, उनके सम्मुख अपनेको प्रकट किया। श्रीअद्वैतप्रभुने कलिग्रस्त जीवकी मङ्गल-कामनासे कलिक्लिष्ट जीवोंके उद्धारके निमित्त व्याकुल चित्त होकर एकान्तिक भक्तिसे श्रीकृष्णचन्द्रके अवतारकी कामना की थी। प्रभुने कृपा करके उनको सर्व-अवतार-सार श्रीश्रीगौरकृष्ण-मूर्ति दिखलायी और उनकी कोई अभिलाषा थी ही नहीं। उनकी सारी अभिलाषाएँ दयामय प्रभुने पूर्ण कीं। इसी कारण उन्होंने कहा था—

"जे वर चाहिलूं ताहा पाइलूं सकल।"

च. भा. म. ६.१५८

किन्तु प्रभु छोड़नेवाले पात्र नहीं हैं। उनकी यह इच्छा थी कि श्रीअद्वैतप्रभुके मुखसे श्रीगौराङ्ग-अवतारके तत्त्वको व्यक्त करावें। वे युगधर्म-प्रचार करेंगे, अज-भव-वाञ्छित प्रेमभक्ति कलिग्रस्त जीवके घर-घरमें प्रसारित करेंगे, इसीलिये उन्होंने नदियामें अवतार ग्रहण किया है—यह मूल बात चलाकर श्रीगौर-भगवान्‌ने आविष्टभावसे सिर डुलाते हुए श्रीअद्वैताचार्यको अपने अवतारका मूलमन्त्र बतलाया—"मैं तुम्हारे निमित्त ही गोचर हुआ हूँ। घर-घरमें कीर्तन-प्रचार करना है और सारे संसारको नचाना है। जिस भक्तिके लिए ब्रह्मा-शिव-नारदादि तप करते रहते हैं, ऐसी भक्तिका सबको वितरण करूँगा।"

वैष्णवोंकी वर-प्रार्थनाका नाम है—भिक्षा। श्रीअद्वैतप्रभुने अब समय देखकर प्रभुके चरण पकड़कर रोते हुए एक भिक्षा माँगी।

कलिग्रस्त जीवोंके दुःख और नित्यके हाहाकारसे क्लिश्य होकर अद्वैतप्रभुने प्रभुसे यह भिक्षा माँगी—"हे प्रभो ! यदि उस अज-भव-वाञ्छित प्रेमभक्तिके प्रचारके लिए तुमने अवतार ग्रहण किया है तो देखना, हे पतितपावन प्रभो ! स्त्री-शूद्र, नीच जाति कोई भी छूटने न पावे। यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दुर्लभ वस्तु कृपा करके तुम उनको प्रदान करोगे। पाण्डित्याभिमानी कुल-शील-सम्पन्न विप्र या योगधर्मावलम्बी तपस्वी यह देखकर भले ही जल मरें, इसमें कोई क्षति नहीं है, चाण्डाल तुम्हारे प्रेममय नाम-गुणको गाकर कृतार्थ होवें।"

इस प्रकारका वर कलियुगमें कभी किसीने श्रीभगवान्‌से नहीं माँगा। भक्ति-जगत्‌में इस प्रकारके वरके लिए कहीं प्रार्थना करते नहीं देखा गया। जगत्‌के इतिहासको खोजकर देखिये, धर्म-जगत्‌की प्राचीन धार्मिक कहानियाँ पढ़कर देखिये, इस प्रकारकी उच्च भावपूर्ण, इस प्रकारकी उदारतापूर्ण. इस प्रकारकी सर्वजीव-हितकारिणी प्रार्थना कहीं देखनेमें नहीं आयेगी। जगत्‌में गौर-भक्त वैष्णवोंकी प्रार्थना अद्‌भुत है; उनका आत्म-निवेदन अपूर्व है; श्रीभगवान्‌के सामने उनकी भिक्षा साधारण साधकके समान नहीं है। वैष्णवकी प्रार्थनासे स्वार्थ और स्वाभीष्टकी प्राप्ति होती हैं, वासनाकी परितृप्तिका उसमें लेश भी नहीं होता; सकाम उपासना रञ्चमात्र भी नहीं होती। प्रभुकी महाप्रकाश-लीलाके वर्णन करते समय इस गुरुतर विषयकी विशेष रूपसे आलोचना करनेकी इच्छा है।

शान्तिपुरनाथकी इस अपूर्व वर-प्रार्थनाको सुनकर प्रभु प्रेमानन्दमें हुंकार करके वज्र-गम्भीर नादसे बोले—'तथास्तु' ! भक्तवृन्द आनन्दसे हरि-ध्वनि करने लगे। पुर-नारीवृन्द प्रेमानन्दमें शुभ-शङ्खध्वनि करने लगीं। श्रीअद्वैतप्रभुको सभी 'धन्य-धन्य' कहने लगे। सबके मुखसे जय श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी जय !, जय शचीनन्दनकी जय !, जय शान्तिपुरनाथकी जय !, जय श्रीअद्वैत-प्रभुकी जय ?'—इस प्रकारके जय-जयकारसे नदिया-गगन प्रकम्पित हो उठा ! श्रीवासके आँगनमें उस दिन जो आनन्द-स्रोत प्रवाहित हुआ, उसमें सारी नदिया प्लावित हो गयी। नदियावासी सुकृतिवान् नर-नारी-वृन्द प्रेमानन्दमें मग्न होकर श्रीगौर-भगवान्‌की भगवत्ताके दृढ़ विश्वासी हो गये। उन्होंने जब सुना कि सर्वलोकपूज्य, सर्व-विद्या-विशारद, सर्व शास्त्रज्ञाता वृद्ध ब्राह्मण श्रीअद्वैताचार्यके सिरपर प्रभुने श्रीचरण स्थापित करके उनपर कृपा की है, तब उनके मनसे शचीनन्दनकी भगवत्ताके सम्बन्धमें सारे संशय दूर हो गये। वे एक-एक करके आकर प्रभुके शरणापन्न होने लगे। नदियाकी वैष्णव-संख्या इस प्रकार दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी।

प्रभु आत्म-संवरण करके श्रीअद्वैतप्रभुसे बोले—"आचार्य ! आप सपत्नीक नवद्वीपमें वास करें।" श्रीअद्वैतप्रभु परम आनन्दपूर्वक नदियामें कृष्ण-कीर्तन करने लगे तथा अद्वैत-सभाका पुनर्गठन करके भक्तिमतका प्रचार करने लगे। श्रीनित्यानन्द-प्रभु और हरिदास ठाकुरने नाम-प्रचारके कार्यका व्रत लिया। प्रभुके आत्मप्रकाशके पश्चात् ही अनेक स्थानोंसे उनके नित्य दासवृन्द नदियामें आकर उनके साथ मिले। प्रभुने उनको अपनी नित्य लीलास्थली नवद्वीप-धाममें आकर्षित किया; क्योंकि वे प्रभुकी सङ्कीर्तन-रासलीलाके सहायक तथा नित्य परिकर थे। इस प्रकार नवद्वीपमें प्रभुके आत्म-प्रकाश करनेपर नदियावासी उनके यथार्थ रूपको पहचान सके। नदियाके निमाईपण्डितको बहुत लोग श्रीभगवान्‌के स्थानमें बैठाकर भक्तिपूर्वक पूजा करने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बत्तीसवाँ अध्याय

श्रीनित्यानन्दप्रभुकी व्यास-पूजा—षड्भुज-रूप-दर्शन

प्रभुरे डाकिया बोलेन श्रीवास उदार।
'ना पूजेन व्यास एइ श्रीपाद तोमार॥'

चै. भा. म. ५.८५

श्रीवासके आँगनमें व्यासपूजाका अधिवास-कीर्तन

श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीवासके आँगनमें प्रभुके साथ कीर्तन-विलास-रङ्गमें उन्मत्त हैं। श्रीअद्वैत-प्रभुने अपने घरपर अद्वैत-सभाका पुनर्गठन किया। उस सभामें नवद्वीपके वैष्णव-वृन्द एकत्रित होकर उनके पास भक्तितत्त्व और कृष्णकथा श्रवण करते थे। वहाँ भी कीर्तन होता था। श्रीवासके आँगनमें प्रतिदिन रातको कीर्तन होता था। दरवाजा बन्द रहता था। किसी पाखण्डीको प्रवेश नहीं मिलता था।

प्रभु उस कीर्तनमें मधुर नृत्य करते थे। श्रीनित्यानन्दप्रभुके उद्दण्ड नृत्यसे पृथिवी काँप उठती थी। श्रीअद्वैताचार्य सुन्दर नृत्य-लीला और हुंकार-गर्जनसे भक्तवृन्दके मनको मोह लेते थे। श्रीवासके आँगनमें आनन्दका स्रोत बहता था। एक वर्षतक प्रभु श्रीवासके आँगनमें नृत्य-कीर्तन-विलास-लीला करते रहे।

श्रीनित्यानन्दप्रभुके बाल्य-भावसे सारी नदियाके लोग मुग्ध हैं। सारी नदियामें वे अवधूत-वेशमें भ्रमण करते हैं। उनके मुँहसे केवल—

भज गौरांग कह गौरांग लह गौरांगेर नाम रे।
जे जन गौरांग भजे सेइ आमार प्राण रे॥

नदियावासियोंको वे गौराङ्ग-भजनकी शिक्षा देते थे, हरिनाम-महामन्त्रकी दीक्षा देते थे। ठाकुर हरिदास उनके इस कार्यमें प्रधान सहायक थे। दोनोंमें बड़ी प्रीति थी।

अपने मन्दिरमें बैठकर एक दिन प्रभु मधुर कृष्णकथा कह रहे थे। अवधूत नित्यानन्दप्रभु और भक्तवृन्द श्रवण कर रहे थे। सबकी आँखोंमें आनन्दाश्रु-धारा बहती थी। कृष्ण-कथा-रसमें सभी उन्मत्त थे। प्रभु आविष्ट होकर कृष्ण-गुण गाते थे। वहाँ मानो सुधा-वृष्टि हो रही थी। कृष्ण-कथाके प्रसङ्गमें सबका मन उल्लसित है। प्रभु कृष्ण-कथा समाप्त करके श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ओर देखकर बोले—"श्रीपाद! तुम्हारी व्यास-पूजा कहाँ होगी; कल पूर्णिमाको व्यास-पूजाका दिन है।"

संन्यासियोंके लिए व्यास-पूजा करना आवश्यक है। अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुने संन्यासधर्मका आश्रय लिया है, अतएव उनके लिए व्यास-पूजा आवश्यक समझकर धर्मसंस्थापक प्रभुने उनको यह शुभ तिथि याद दिला दी। श्रीवासपण्डित कुछ दूर बैठे थे। श्रीनित्यानन्दप्रभुने उठकर उनका हाथ पकड़कर प्रभुके पास ले जाकर हाजिर करके हँसते हुए कहा—"मेरी व्यास-पूजा इस ब्राह्मणके घर होगी।"

श्रीवासपण्डितके ऊपर बड़ा भार पड़ गया। श्रीनित्यानन्दप्रभु व्यास-पूजा करेंगे तो उसके लिए उपयोगी सारे प्रबन्ध करने पड़ेंगे। सारे नवद्वीपके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वैष्णवगण श्रीनित्यानन्दप्रभुकी व्यास-पूजा देखने आवेंगे। उनको प्रसाद बाँटना पड़ेगा। समय है नहीं। कल पूर्णिमा तिथि है, व्यास-पूजाका निर्दिष्ट दिन है। सर्वज्ञ प्रभु श्रीवासपण्डितका मन समझकर उनके ऊपर शुभ दृष्टिपात करते मधुर-मधुर मुस्कुराते हुए बोले—"तुमपर बड़ा भारी भार आ गया।"

करुणामय प्रभुकी कृपादृष्टिसे श्रीवासपण्डितने कृतार्थ होकर उत्तर दिया—"प्रभो! कोई भार नहीं है। आपकी कृपासे सब सामग्री घरमें है; वस्त्र, मिष्टान्न, यज्ञसूत्र, घृत, पान-सुपारी—सब विद्यमान् हैं। केवल पूजा-पद्धतिकी पुस्तक चाहिये; वह किसीसे माँगकर ले आऊँगा। मेरा बड़ा भाग्य है, जो कल मैं भी व्यास-पूजाके दर्शन कर पाऊँगा।"

व्यास-पूजा गृहस्थाश्रमका धर्म नहीं है। यह संन्यासाश्रमका धर्म है। अतएव इस पूजाकी पद्धतिकी पुस्तक गृहस्थ ब्राह्मण-पण्डितके घर कैसे रहेगी? इसलिये श्रीवासपण्डितको पोथी चाहिये, वे माँग लायेंगे और सब सामान घरमें है। श्रीवासपण्डितकी बात सुनकर प्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए। भक्तवृन्द आनन्दसे हरि-ध्वनि करने लगे। कुछ देरके बाद श्रीगौराङ्गप्रभु श्रीनित्यानन्दप्रभुको साथ लेकर श्रीवास-मन्दिरकी ओर चले। साथमें और भक्तगण भी चले। नदियाके रास्ते भक्तगणसे आवेष्टित निताई-गौर दोनों भाई हाथमें-हाथ मिलाकर रँग-रेलियाँ करते हिलते-डुलते जा रहे हैं। जान पड़ता है, मानो व्रजके पथपर राम-कृष्ण गोप-बालक-वृन्दसे परिवेष्टित होकर लीला-रङ्ग करते हुए चले जा रहे हैं। नदियावासी नर-नारीवृन्द गौर-नित्यानन्दकी रूप-माधुरीमें मग्न होकर सब काम छोड़कर युगलरूप-सुधा-पान कर रहे हैं और मन-ही-मन सोच रहे हैं कि ऐसे रूपके सागर और गुणके आगर दोनों भाइयोंको यदि एक बार वक्षःस्थलपर नचा सकते तो मनकी साध मिट जाती। नदियावासियोंके हृदयमें प्रेम-तरङ्ग पैदा करके, बहिर्मुख पाखण्डियोंके मनमें भय-संचार करके निताई-गौर गर्वके साथ नदियाके पथको आलोकित करते हुए दल-बलके साथ चले जा रहे हैं। श्रीवास-मन्दिरमें प्रवेश करते ही प्रभुकी आज्ञासे बाहरी द्वारके किवाड़ बन्द हो गये। नितान्त निज-निजके सिवा वहाँ अन्य किसीके प्रवेशका अधिकार नहीं था।

प्रभुके आदेशसे युगधर्म संकीर्तन-यज्ञ आरम्भ हुआ। मृदङ्ग-करतालकी ध्वनिसे श्रीवासका आँगन मुखरित हो गया। प्रेमानन्दमें भक्तवृन्दका शरीर पुलकित हो गया। आज श्रीनित्यानन्दप्रभुकी व्यास-पूजाका अधिवास-कीर्तन है। प्रभु अतिसुन्दर अङ्ग-भङ्गिमाके साथ सबके आगे कीर्तनमें उतरे। श्रीनित्यानन्दप्रभुने परम आनन्दपूर्वक उनके साथ योग दिया। दोनों प्रभु हाथ-में-हाथ मिलाकर पहले मधुर नृत्य करने लगे। उनको घेरकर भक्तवृन्दने कृष्ण-कीर्तनका धूहा पकड़ा। क्रमशः कीर्तनानन्द घनीभूत होनेपर दोनों प्रभु हुंकार-गर्जन करने लगे। किसीको बाह्य ज्ञान न रहा। प्रभु प्रेममें भरकर मूर्छित हो गये, श्रीनित्यानन्दप्रभु धूलमें गिरकर लोटने लगे। भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें विभोर होकर अजस्र आँसू बहाने लगे।

मूर्च्छा-भङ्ग होनेपर प्रभुने उठकर श्रीनित्यानन्द-प्रभुको प्रेममें भरकर प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान किया। उसके बाद दोनोंने फिर मधुर नृत्य प्रारम्भ किया। नृत्य करते-करते दोनों एक-दूसरेकी चरण-धूलि लेनेके लिए रणरङ्गमें मत्त हो उठे। दोनों ही चतुर-चूड़ामणि हैं, दोनों ही कीर्तन-रणवीर हैं, दोनों प्रेम-बलसे बली हैं। कोई किसीका चरण न पकड़ सका, तब आत्यन्तिक प्रेमावेषमें दोनों ही श्रीवासके आँगनकी धूलिमें लोटने लगे। किसीको भी बाह्य ज्ञान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

न था। प्रभुका परिधान-वस्त्र खिसककर गिर पड़ा, श्रीनित्यानन्दप्रभुका कोपीन शिथिल हो गया।

भक्तवृन्द दोनोंके वस्त्र सँभालनेके लिए गये; परन्तु किसीको पकड़ न सके। दोनों ही कीर्तनानन्दमें उन्मत्त हैं। मदमत्त हाथीके समान दोनों प्रभुओंके चरणोंके भारसे पृथिवी मानो डगमग कर रही है। श्रीनित्यानन्दप्रभुके उद्दण्ड नृत्यसे पृथ्वी भूकम्पके समान थर-थर काँपती है। प्रभुकी मधुर नृत्यविलास-भङ्गी देखकर भक्तवृन्दके मनमें आनन्दकी तरंगें उठ रही हैं। श्रीवासका आँगन आनन्द-ध्वनिसे परिपूर्ण हो गया। भक्तवृन्द वैकुण्ठका सुख अनुभव करने लगे।

इसी समय प्रभु भगवान्‌के भावमें आविष्ट होकर विष्णु-सिंहासनपर जा विराजे। उनमें बलरामका भाव उदित हुआ। श्रीनित्यानन्दप्रभुको नदियामें भक्तवृन्दके बीच प्रकट करनेके अभिप्रायसे प्रभुने यह आत्म-प्रकाश-लीला प्रकट की। बलराम-भावमें महामत्त होकर आँखें घुमाते हुए प्रभु मद लाओ, मद लाओ!—कहकर हुंकार-गर्जन करने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभुको सामने देखकर वे प्रेमोन्मत्त भावसे बोले—

"झाट् देह मोरे हल मुसल सत्वर।"

चै. भा. म. ५.३६

प्रभुके आदेशमात्रसे श्रीनित्यानन्दप्रभुने उनके हाथमें हल और मूसल प्रदान किया। उपस्थित भक्तवृन्द केवल प्रभुद्वयका हाथ फैलाना मात्र देख पाये। कोई-कोई सुकृतिमान् अन्तरङ्ग भक्त स्वर्गके हल और मूसलको देखकर कृतार्थ हो गये। यह सारा लीला-रहस्य जीवबुद्धिके लिए अगम्य है। प्रभुके नित्यदास कृपासिन्धु भक्तवृन्द ही इस रहस्यके मर्मको समझ पाते हैं। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

एत बड़ निगूढ़ कथा केहो मात्र जाने।
नित्यानन्द व्यक्त सेइ-सर्वजन-स्थाने॥

चै. भा. म. ५.४०

वृन्दावनदास ठाकुर श्रीनित्यानन्दप्रभुके सिद्ध-भक्त थे। उनके ही मुखसे उनकी लीला-कथा सुनकर उन्होंने लिपिबद्ध की थी। जान पड़ता है, इस गूढ़ कथाको श्रीनित्यानन्दप्रभुने ही उनके सामने व्यक्त किया था। श्रीभगवान्‌की अलौकिक लीलाकथामें सुदृढ़ विश्वास करना आवश्यक है। ऐसा कोई कर्म नहीं है, जो श्रीभगवान् न कर सकें। श्रीभगवान्‌के सारे कार्य अलौकिक होते हैं। उनके कार्य अलौकिक न हों तो उनकी भगवत्ता ही न रहेगी। इसी कारण श्रीभगवान् अपने असंख्य अवतारोंमें असंख्य अलौकिक लीलाएँ कर गये हैं। ये अलौकिक कार्य उनके लीलारङ्ग हैं। इस लीलारङ्गमें ही उनका आत्मप्रकाश दृष्ट होता है। श्रीभगवान् जिसपर कृपा करते हैं, वे ही उनकी अलौकिक लीलामें विश्वास करते हैं।

प्रभु श्रीगौराङ्ग श्रीनित्यानन्दप्रभुके हाथसे हल-मूसल लेकर प्रेमोन्मत्त भावमें 'वारुणी, वारुणी' कहते हुए प्रबल हुंकार-गर्जन करने लगे। भक्तगण प्रभुके उन्मत्त भावको देखकर भयसे स्तम्भित हो गये। कुछ स्थिर नहीं कर पा रहे हैं कि क्या करें? सब एक-दूसरेका मुँह ताक रहे हैं। सुचतुर श्रीवासपण्डितने तब गङ्गा-जलसे पूर्ण घट लाकर प्रभुके श्रीहस्तमें दिया। प्रभु बड़े आनन्दसे उसे पान कर गये। मानो वे सचमुच वारुणी-पान करके उन्मत्त हो उठे। प्रभुने अपने पिये हुए जलको भक्तोंमें प्रसादके रूपमें बाँटा। भक्तवृन्द प्रभुदत्त अमृतजल-पान करके प्रेमानन्दमें विभोर होकर श्रीबलरामजीकी स्तुति करने लगे।

इसके बाद प्रभु 'नाड़ा-नाड़ा'—कहकर उच्च स्वरसे पुकारने लगे। वे प्रेमावेशमें सिर हिला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रहे हैं और अपने प्रिय भक्त नाड़ाको पुकारते हैं। गौर-आना-गोसाईं उस समय शान्तिपुरमें थे। नदियामें भक्तोंने 'नाड़ा' शब्द पहली वार सुना। सब प्रभुके पास जाकर हाथ जोड़कर बोले—"प्रभो! 'नाड़ा' कौन है?" प्रभुने आविष्टभावमें उत्तर दिया—"जिसके हुंकारसे मैं आया हूँ, जो अद्वैताचार्य नामसे प्रसिद्ध है, उसी 'नाड़ा' के कारण मेरा यह अवतार है। मुझे तो उसने बैकुण्ठसे बुला लिया और स्वयं हरिदासको लेकर निश्चिन्त बैठा है।"

तब भक्तोंने प्रभुके मनके भावको समझा। प्रभुने यहाँ नदियाके भक्तोंके सामने आत्मप्रकाश करके अपने अवतारके सम्बन्धमें दो-एक बातें कहीं। पहली बात थी—"सङ्कीर्तन आरम्भ करनेके लिए उनका अवतार है।" दूसरी बात यह थी—"पाण्डित्य और कुल-शीलके अभिमानमें जो उनके भक्तोंके प्रति अपराध करते हैं, उनको वे इस अवतारमें प्रेमभक्ति प्रदान नहीं करेंगे।" नदियाके भक्तोंने समझा कि सङ्कीर्तन-यज्ञेश्वर प्रभुने युगधर्म-प्रवर्तनका कार्य प्रारम्भ कर दिया है। ज्ञानयोगी और कर्मयोगी यदि युगधर्म सङ्कीर्तन-यज्ञमें योग नहीं देते हैं तो उनके उद्धारका कोई दूसरा उपाय नहीं है। उन्होंने प्रभुका मन समझकर जीवोद्धार-कार्य प्रारम्भ कर दिया।

पूर्व अध्यायमें नवद्वीपमें शान्तिपुरनाथ श्रीअद्वैत-प्रभुके नवद्वीपमें आगमनकी कहानी वर्णित है। श्रीनित्यानन्दप्रभुकी व्यास-पूजाके बाद श्रीअद्वैतप्रभु नवद्वीपमें आये। प्रभुकी उपर्युक्त वाणी श्रीअद्वैतप्रभुके नवद्वीप-आगमनके पूर्व उनके श्रीमुखसे निकली थी। लीला-वर्णनमें क्रमभङ्ग-दोष मार्जनीय है; कृपालु पाठकवृन्द इससे अवश्य अवगत हो गये हैं—

ए सब कथार अनुक्रम नाहि जानि।
जे-ते-मते चैतन्येर यश से बाखानि॥

चै. च. अं. ४.५१४

प्रभुने आत्मसंवरण किया। बाह्य ज्ञान होनेपर लज्जितभावसे उन्होंने भक्तवृन्दसे पूछा—"क्या मैंने कुछ चञ्चलता दिखलायी है?" भक्तोंने हँसकर उत्तर दिया—"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं हुई।"

भक्तवृन्दकी बात सुनकर प्रभुने हँसकर सबको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। वे विनीत-भावसे सबसे बोले—"कभी मुझसे अपराध हो जाय तो उसका खयाल मत करना।"

प्रभुकी बात सुनकर भक्तगण आकुल होकर हँस पड़। श्रीनित्यानन्दप्रभु प्रेमानन्दमें भूतलपर धूलमें लोट-पोट करने लगे। रँगीले प्रभुका रङ्ग देखकर वे अपना भाव-संवरण न कर सके। वे प्रेमरसमें विह्वल होकर कभी उच्च हास्य, कभी क्रन्दन तथा कभी बाल्यभावमें दिगम्बर होकर नृत्य करने लगे। उनका दण्ड-कमण्डलु कहाँ गया, कहाँ कोपीन गिरा, इसका कुछ भी भान न रहा। वे प्रेमानन्दमें हुङ्कार-गर्जन कर रहे हैं। भक्तगण उनको पकड़ने गये, किसी प्रकार भी कोई उनको शान्त न कर सका। वे जब अत्यन्त चञ्चल हो उठे, तब प्रभुने उनके पास जाकर उनका हाथ पकड़कर शान्त किया। प्रभु बोले—"श्रीपाद! शान्त होइये! कल आपकी व्यास-पूजा है, आज अधिवास है। इतनी चञ्चलता करनेसे कल कैसे पूजा करेंगे?" प्रभुकी बातसे प्रेमोन्मत्त श्रीनित्यानन्दप्रभु कुछ शान्त हुए।

प्रभु भक्तवृन्दको विदा करके नित्यानन्दप्रभुको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके रातमें अपने मन्दिरकी ओर चले। श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीवास-भवनमें ही रह गये। भक्तवृन्द प्रभुको उनके मन्दिरमें पहुँचाकर अपने-अपने घर गये। रात उस समय दो प्रहर बीत चुकी थी। श्रीनित्यानन्दप्रभुकी व्यास-पूजाका शुभ अधिवास-कर्म इस प्रकार सुसम्पन्न हो जानेपर वे शयन करने गये।

श्रीनित्यानन्दकी दण्ड-भङ्ग-लीला

श्रीवासगृहमें श्रीनित्यानन्दप्रभु शयन किये हैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवासपण्डित अपने शयन-गृहमें शयन कर रहे हैं। रामईपण्डित पासके दालानमें सोये हैं। गम्भीर रातमें श्रीनित्यानन्दप्रभु शैयासे उठे। चाँदनीसे उनका शयन-गृह प्रकाशमान् हो रहा था। उनका ध्यान दण्ड-कमण्डलुके ऊपर गया। प्रबल हुंकार-गर्जन करके उन्होंने अपने दण्ड-कमण्डलुको तोड़-फोड़कर फेंक दिया और फिर सो गये।

रामाईपण्डित प्रातः शैया त्याग करके श्रीनित्यानन्दप्रभुके शयन-गृहमें जाकर उनका नित्य दर्शन करके उनकी पद-धूलि लेते थे। वे घरमें दण्ड-कमण्डलु टूटा-फूटा देखकर चकित हो गये। उन्होंने श्रीवासपण्डितको तत्काल यह समाचार सुनाया। श्रीवासपण्डितने आकर यह सब देखा और प्रभुको यह समाचार शीघ्र कहनेके लिए कहा। रामाईपण्डित प्रभुके पास गये। प्रभु यह सुनकर हँसते हुए श्रीवासके आँगनमें आये।

प्रभुको देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभु आनन्दमें हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। हँसते-हँसते उनका बाह्य ज्ञान लुप्त हो गया। श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ऐसी आनन्द और हँसीके तरङ्गकी छटा पहले कभी किसीने नहीं देखी थी। उनके आजके इस प्रकारके प्रेमभावको देखकर सब विस्मित हो गये। सर्वज्ञ प्रभु श्रीनित्यानन्दका सारा मर्म जानते हैं। वे और कुछ न कहकर श्रीहस्तमें टूटे हुए दण्डको उठाकर अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुको साथ लेकर गङ्गा-स्नानके लिये चले। गदाधरपण्डित और श्रीवास आदि भक्तवृन्द भी प्रभुके साथ चले। प्रभुके हाथमें भग्न दण्ड देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीवदनमें पुनः अट्टहास शुरू हो गया। वे आज क्यों इतना हँस रहे हैं, उनके मनमें आज क्यों इतना आनन्दोच्छ्वास है, कोई यह समझ नहीं पा रहा है।

प्रभुने गङ्गाके तीरपर जाकर श्रीनित्यानन्द-प्रभुके टूटे दण्डको गङ्गा-जलके अर्पण कर दिया। गङ्गाके प्रबल स्रोतमें वह कहाँ बह गया, यह कोई देख न पाया। श्रीनित्यानन्दप्रभु दण्डको अन्तर्धान होते देखकर मनमें अत्यधिक आनन्दित हुए। वे प्रेमानन्दमें कूदकर गङ्गा-जलमें जा पड़े। निर्भयचित्तसे बीच गङ्गामें जाकर वे आनन्दसे तैरने लगे। मगर देखकर उसको वे पकड़नेके लिए चले, यह देखकर श्रीवास आदि भक्तगण हाय-हाय करने लगे। अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुको कोई रोक न सका। तब प्रभुने जोरसे उनको पुकारकर कहा—"हे हे श्रीपाद! आज आपकी व्यास-पूजा है। शीघ्र स्नान करके चलिये।" प्रभुकी बात सुनकर वे गङ्गाके जलसे बाहर निकले। प्रभुके साथ श्रीवासके आँगनमें आये। वहाँ सब भक्तगण आकर एकत्रित हुए।

दण्ड-भङ्ग-लीलाका रहस्य

यह श्रीनित्यानन्दप्रभुकी दण्ड-भङ्ग-लीला निगूढ़ रहस्यपूर्ण है। यहाँ अपने दण्डको उन्होंने स्वयं तोड़ डाला। पश्चात् प्रभुके दण्डको उन्होंने ही तोड़ा। उसका भी गूढ़ मर्म था। इस अपूर्व दण्ड-भङ्ग-लीलाके विषयमें कुछ आलोचना करूँगा।

श्रीनित्यानन्दप्रभु अवधूत संन्यासी थे। दण्ड-ग्रहण और धारण उनका स्वधर्म था। दण्ड ही संन्यासीका प्राण है। बारह वर्षकी अवस्थासे ही ये दण्ड-वहन करते आ रहे थे। बीस वर्षतक जिस धर्मका आचरण करते आ रहे थे, जिस दण्डको अपने कन्धेपर धारण करते आ रहे थे, आज उन्होंने अकस्मात् उसी स्वधर्मके विरुद्धाचरण क्यों किया? उसी दण्डको आज क्यों तोड़ा? इसका अवश्य ही गूढ़ अर्थ है। श्रीनित्यानन्दप्रभुने नीलाचलके पथमें जो श्रीकृष्णचैतन्यप्रभुके दण्डको तोड़ा था, उस दण्ड-भङ्ग-लीलाका वर्णन करते हुए श्रीकविराज गोस्वामीने लिखा है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एहों केने दण्ड भाँगे, तेंहो केन भाँगाय।
भाँगाइता केने क्रुद्ध एहों त दोषाय ? ॥
दण्ड-भङ्ग-लीला एइ परम-गम्भीर।
सेइ बूझे—दोंहार पदे जार भक्ति धीर ॥

चै. च. म. ५.१५६,१५७

प्रभुकी दण्ड-भङ्ग-लीला तथा श्रीनित्यानन्द-प्रभुकी दण्ड-भङ्ग-लीलामें एक विशेषता है। श्रीनित्यानन्दप्रभुने जब नीलाचलके मार्गमें प्रभुके दण्डको तोड़ा था तो प्रभु क्रुद्ध होकर सबका सङ्ग त्यागकर सबसे पहले नीलाचल पहुँचे थे। श्रीनिताई-चाँदके इस कार्यसे प्रभुको बड़ा दुःख हुआ था। परन्तु श्रीनित्यानन्दप्रभु अपने दण्डको तोड़कर मनमें आनन्दित हो, हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये थे। उनका इतना आनन्द, उनकी इतनी हँसी पहले किसीने भी देखी न थी। अतएव मैं कहता हूँ कि श्रीनिताई-चाँदकी यह लीला बड़ी गम्भीर है। संन्यास-धर्मका प्रधान अवलम्बन, तैंतीस-कोटि देवताओंका आधिष्ठान साक्षात् नारायणस्वरूप जो दण्ड है, उसको तोड़ करके श्रीनित्यानन्दप्रभुके मनमें आज इतना आनन्द क्यों है ? यह लीला-रहस्य समझनेकी शक्ति मुझमें नहीं है। तथापि कृपालु गौरभक्तोंकी कृपाके बलसे और दयामय प्रभुकी इच्छासे जीवाधम ग्रन्थकारके मनमें दयालु निताई-चाँदने जो भाव-तरङ्ग उठाया है, उसका कुछ आभास यहाँ देनेका प्रयास करूँगा।

श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌के अभिन्न-हृदय और इच्छाशक्ति हैं। इच्छामय प्रभुकी जो इच्छा होती है, उसे वे तत्काल करते हैं। दण्ड-भङ्ग-लीला श्रीवासपण्डितके घरमें श्रीनित्यानन्द-प्रभुने प्रभुकी इच्छासे प्रकट की थी। उन्होंने व्यास-पूजाके पूर्व रात्रिमें यह लीला प्रकट की। श्रीनित्यानन्दप्रभुका भी दास्य-भाव है। बारह वर्षकी अवस्थासे बीस वर्षतक नाना तीर्थ-स्थानोंमें परिभ्रमण करके उन्होंने अपने अभीष्ट देवकी खोज की। जिनके लिए कठोर संन्यास-धर्मका आश्रय लिया था, जिनके लिए दिन-रात यह गुरु दण्डभार वहन किया था, नदियाधाममें आकर उनका साक्षात् दर्शन प्राप्त हो गया। प्राणवल्लभका दर्शन प्राप्तकर उनका जीवन सफल हो गया। इतने दिनोंके कठोर संन्यास-व्रतके अनुष्ठानका फल प्राप्त हुआ। अब व्यर्थ दण्डभार धारण करनेका क्या प्रयोजन ? वे प्रभुकी सेवामें लग गये हैं। सारी इन्द्रियोंको लगाकर सारे अङ्गोंके द्वारा मनकी साधसे वे प्रभुकी सेवा करेंगे। दण्डभार-धारण उनके इष्टदेवकी सेवाका विरोधी है, अहं-ज्ञानका परिचायक है। अहं-ज्ञान रहते भगवान्‌का दास भगवत्सेवामें पूर्ण अधिकार नहीं प्राप्त कर सकता। 'मैं दास हूँ, तुम प्रभु हो'—यह जो मधुर सम्बन्ध है, यह संन्यासीके धर्मके विरुद्ध है। श्रीनित्यानन्द-प्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीचरण-कमलमें सम्पूर्ण रूपसे आत्मसमर्पण किया है। अब अहं-ज्ञानकी इस ध्वजाको क्यों रखेंगे ? प्रभु-सेवाकी विरोधी वस्तुको हाथमें क्यों धारण करें ?

एक और बात है। हाथमें दण्ड देखकर प्रभु उनको प्रणाम करते हैं। यह श्रीनित्यानन्दप्रभुको बिल्कुल ही अच्छा नहीं लगता। तब दण्डको वे अपने लिए प्रकृत दण्ड ही समझते हैं। इसी कारण उन्होंने दण्ड-धारण-दण्डसे सदाके लिए छुटकारा पानेकी आशासे अपने दण्डको स्वयं ही तोड़ डाला। व्यास-पूजाकी अधिवास-रात्रिमें यह काम उन्होंने क्यों किया ? सर्वज्ञ श्रीनित्यानन्दप्रभुने जान लिया है कि श्रीगौराङ्गके सिवा अन्य कोई इस समय उनका पूज्य नहीं है। व्यास-पूजामें वे क्या करेंगे ?—इसका निश्चय उन्होंने मन-ही-मन कर लिया है। व्यासके बदले वे व्यासके गुरुके गुरु श्रीगौराङ्गकी पूजा करेंगे; व्यासजीके द्वारा आदिष्ट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संन्यास-धर्मके आचरणकी अब उनके लिए प्रयोजन-शीलता नहीं है, यह उन्होंने भली-भाँति समझ लिया है। यही श्रीगौराङ्गप्रभुकी इच्छा है। प्रभुकी इस इच्छाके फलसे पीछे श्रीनित्यानन्दप्रभुको पुनः गृहस्थाश्रम स्वीकार करना पड़ा था। अतएव इच्छामय प्रभुकी इच्छासे ही उनकी इच्छाशक्ति श्रीनित्यानन्दप्रभुने अपने दण्डको तोड़ा था।

इस दण्ड-भङ्ग-लीलासे प्रभुने दिखलाया कि वैष्णव-संन्यासीके लिए दण्ड धारण करना आवश्यक नहीं है। मायावादी संन्यासी और वैष्णव-संन्यासी दो पूर्णतः विभिन्न वस्तु हैं। श्रीवैष्णव-साधुगण संन्यास लेते हैं श्रीकृष्णकी सेवाके लिए, सर्वेन्द्रियों द्वारा श्रीकृष्णानुशीलनके लिए। सर्वेन्द्रियोंद्वारा श्रीकृष्णानुशीलनमें बाधक होनेके कारण दण्ड-धारण वैष्णव-संन्यासीके लिए कृष्ण-सेवाका विरोधी है; अतएव इच्छामय प्रभुकी इच्छासे अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुने निज दण्ड-भङ्ग-लीला प्रकट की और फिर उन्हींकी इच्छासे नीलाचलके मार्गमें प्रभुके दण्डको भी उन्होंने भङ्ग किया।

प्रभुकी दण्ड-भङ्ग-लीला नवद्वीप-लीलाके अन्तर्गत नहीं है; परन्तु प्रसङ्गवश यहाँ उस लीलाकी कुछ आलोचना करनेकी लालसा मैं छोड़ न सका। कृपालु पाठकवृन्द धैर्यपूर्वक ये सारी कथाएँ पाठ करके कृतार्थ होंगे।

महाजन लीला-लेखकगण प्रभुकी दण्ड-भङ्ग-लीलाके रहस्यका उद्घाटन नहीं करते। पूज्यपाद श्रीकविराज गोस्वामी यह गुरुतर भार श्रीगौर-नित्यानन्दके प्रिय भक्तवृन्दके ऊपर छोड़कर निश्चिन्त हो गये। उन लोगोंने इस परम गम्भीर लीला-रसमें मन-प्राणको निमग्न किया है। उन लोगोंके मनमें ये निगूढ़ लीला-रहस्य परिस्फुट हुए हैं। वे धन्य हो गये हैं। कविराज गोस्वामीकी मनोवाञ्छा पूर्ण हो गयी है।

इनमें कोई-कोई कहते हैं कि संन्यासीके दण्डमें तैंतीस-कोटि देवताओंका अधिष्ठान है। श्रीश्रीगौर-भगवान् सर्वदेव-शिरोमणि हैं, सर्वदेवपूज्य हैं, वे क्यों तैंतीस-कोटि देवताओंके गुरुतर भारस्वरूप इस दण्डको वहन करें? श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌के अभिन्नहृदय हैं, उनका दास्यभाव है। उन्होंने सोचा कि यह संन्यासीका दण्ड-धारण-कर्म प्रभुके लिए वस्तुतः दण्डस्वरूप है। अतएव इस दण्डभारको दूर करना आवश्यक है। यह सोचकर वे प्रभुके दण्डको सम्बोधन करके बोले—"हे दण्ड! तुम मेरे प्रभुको बहुत कष्ट देते हो! तुम्हारा स्थान मेरे प्रभुके हाथ और कंधेपर न रहा। तुम भागो!" —इतना कहकर क्रोधमें भरकर उन्होंने प्रभुके दण्डको तोड़कर उसमें तीन खण्ड करके उसे जलमें फेंक दिया।

कुछ लोग कहते हैं कि हमारे प्रभु प्रेमदाता है, दोनों हाथोंसे वे जगत्‌के जीवोंको प्रेमदान करते हैं। दण्ड-कमण्डलु उनके प्रेमदानके कार्यमें बाधक हैं; अतएव प्रेममय श्रीनित्यानन्दप्रभुने प्रेमावतार श्रीगौराङ्गप्रभुका दण्ड-भङ्ग किया था। यह युक्ति श्रीनित्यानन्दप्रभुकी दण्ड-भङ्ग-लीलामें प्रयुक्त हो सकती है। किन्तु वहाँ यह कार्य इच्छामय प्रभुकी इच्छासे स्वयं श्रीनिताई-चाँदने किया था।

कुछ लोग कहते हैं कि प्रभुके हाथमें दण्ड देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभुके मनमें शची-विष्णुप्रियाकी विषम गौर-विरहदशाका भाव उदय हुआ था। उनके मनमें आया कि इस काल-स्वरूप दण्डने ही अनाथिनी शची-विष्णुप्रियाको बिना अपराधके विषम दण्डसे दण्डित किया है। उनके हृदयमें गौर-विरह-रूप विषम शूल-प्रहार किया है। अतएव इस दण्डको अवश्य दण्ड-भोग करना पड़ेगा। इसी कारण उन्होंने क्रोधके वशीभूत होकर प्रभुके दण्डको टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

कुछ लोग कहते हैं कि प्रभु सर्वेश्वर स्वतन्त्र ईश्वर हैं। वे विधि-नियमके परे हैं; उनके लिए यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दण्डका नियम क्यों ? दण्ड-धारण करनेके कारण प्रभु कोई स्वच्छन्द कार्य नहीं कर सकते। उनके मनकी साध मनमें ही रह जाती है। अतएव यह दण्ड-नियम-भङ्ग करनेकी आवश्यकता देखकर उन्होंने श्रीनित्यानन्दप्रभुसे यह कार्य कराया। श्रीचैतन्यभागवतमें नित्यानन्दप्रभुकी उक्ति है—

अये दण्ड ! आमि जाँरे बहिये हृदये।
से तोमारे बहिबेक एत युक्ति नहे॥

चै. भा. अं. २.२०५

उनकी आत्यन्तिक श्रीगौराङ्ग-प्रीतिकी परिचायिका प्रभुके दण्ड-भङ्ग-लीला-रहस्यकी यह भी एक प्रकृष्ट युक्ति है।

यह हुआ एक पक्षका सिद्धान्त, अर्थात् श्रीनितई-चाँदने प्रभुके संन्यास-दण्डको क्यों तोड़ा ? अपर पक्षका सिद्धान्त भी अब कुछ विचार करना है। रँगीले प्रभुने श्रीनित्यानन्दप्रभुके द्वारा अपने दण्डको क्यों तुड़वाया ?—इस बातकी आलोचना अधिक सुननेमें नहीं आती। प्रभु स्वतन्त्र ईश्वर हैं, वे इच्छामय हैं। उनकी इच्छाके बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। श्रीनित्यानन्दप्रभु उनकी इच्छा-शक्ति हैं। प्रभुके मनमें कोई इच्छा होते ही श्रीनित्यानन्दप्रभुके द्वारा तत्काल उसकी क्रिया होती है, यह पहले कहा जा चुका है।

इस दण्ड-भङ्ग-लीलाके अभिनयमें प्रभुके मनमें कौन-सी इच्छा उदय हुई ? क्यों उन्होंने श्रीनित्यानन्दप्रभुके द्वारा अपने संन्यासी जीवनका एकमात्र अवलम्बन, यतिधर्मका एकमात्र सम्बल—अपने दण्डको इस प्रकार अनैधभावसे तुड़वा डाला ? उसके बाद प्रभु कुछ क्रुद्ध भी हुए। प्रभुकी यह दण्ड-भङ्ग-लीला अत्यन्त गम्भीर और निगूढ़ रहस्यपूर्ण है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं। प्रभुके अनन्त-लीला-रस-सागर-मन्थन करनेपर अत्युज्ज्वल सिद्धान्त रत्न बाहर होते हैं। भक्तवृन्द श्रीगौराङ्ग-लीला-रस-समुद्रके पक्के गोताखोर हैं। उनके द्वारा लीला-रस-सिन्धुसे बहुमूल्य सिद्धान्त-रत्नराजिका उद्धार होता है। इस दण्डभङ्ग-लीलारहस्यको लेकर जीवाधम ग्रन्थकारने श्रीधाम वृन्दावनके निवासकालमें साधक गौर-भक्तवृन्दके साथ सत्सङ्ग करके जिन सिद्धान्तरत्नोंका उद्धार किया था, उन्हींको यहाँ गौर-भक्तवृन्दके कर-कमलोंमें भेंट किया है। श्रीकृष्णचैतन्यप्रभुका 'सर्वस्व' धन एकमात्र दण्ड था। यह दण्ड-भङ्ग-लीला-रहस्य निगूढ़ होनेपर भी अति मधुमय है। श्रीकविराज गोस्वामीने लिखा है—

ए सब सिद्धान्त गूढ़—कहिते ना जुयाय।
ना कहिले केहो इहार अन्त नाहिं पाय॥
अतएव कहि किछु करिया निगूढ़।
बूझिबे रसिक भक्त ना बूझिबे मूढ़॥
हृदये धरये जे चैतन्य-नित्यानन्द।
ए सब सिद्धान्ते सेइ पाइबे आनन्द॥

चै. च. आ. ४.१८८-१९०

यह सब लीला-कथारस कृपालु गौर-भक्तवृन्दके आस्वादनके लिए लिखित हैं। बहिरङ्ग लोगोंके लिए नहीं है।

प्रभुका संन्यास कपट-संन्यास है, यह ऋषि-महाजनगण एक वाक्यसे स्वीकार कर गये हैं। इसका प्रचुर प्रमाण यथास्थान लिखा गया है। प्रभु अपने संन्यासवेष-धारण करनेका उद्देश्य स्वयं श्रीमुखसे व्यक्त कर गये हैं। जो अभागे कलिग्रस्त जीव प्रभुकी ऐश्वर्यमयी नवद्वीप-लीलाको देखकर कुबुद्धिवश उनके चरणोंमें आत्मसमर्पण न कर सके, उनको केवल निमाईपण्डित समझकर अभिमानमें स्वतन्त्र रहनेकी इच्छा की थी, उनका केश पकड़कर उद्धार करनेके उद्देश्यसे प्रभुने नदियाके अतुल ऐश्वर्यको छोड़कर,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपने सोनेके संसारको भस्मीभूत करके दण्ड-कमण्डलु धारण किया था। संन्यास-बुद्धिसे भी यदि उनके चरणोंमें कोई एक बार मस्तक अवनत करता है तो उससे ही उसका उद्धार हो जायगा। कलिग्रस्त अबोध जीव प्रभुके सांसारिक सुखमें बाधक बने। प्रभु सर्वहितकारी और सर्वमङ्गलमय हैं; उनका नदियामें अवतार-ग्रहण जीवोंके मङ्गलार्थ हुआ था। उनकी हित-कामनासे वृद्धा जननी और तरुणी भार्याकी छातीमें दारुण शूल मारकर नवीन वयमें वे भिखारीके वेषमें गृह-त्याग करके कपट संन्यासी बने थे।

ज्ञानीका ज्ञान-गर्व, पण्डितका पाण्डित्याभिमान, कलिमें ब्राह्मण्य-धर्मका अयथा शासन, जाति-कुलका वृथा अहंकार आदि भक्ति-विरोधी कुसंस्कारोंको दूर करके सर्वभूतसमदर्शी तथा हिताकाङ्क्षी प्रभु हमारे भक्तिपथका कण्टक दूर कर गये हैं। सब जीवोंको समभावसे देखकर, अपना गुप्तधन प्रेमभक्ति प्रदान करके उनका उद्धार करनेके लिए ही प्रभुका यह कपट-संन्यास ग्रहण था।

प्रभुका संन्यास-धर्म मायावादी संन्यासियोंके समान न था। दण्ड-कमण्डलु-धारण, जटा-वल्कल-परिधान, कठोर योगाभ्यास, वेदान्त-पठन और बाह्य विषयोंके प्रति लक्ष्य न रखकर श्रीगौराङ्ग-प्रभुने एक आदर्श वैष्णव-संन्यासाश्रम-सृजन करनेके उद्देश्यसे स्वयं इस संन्यासाश्रमको ग्रहण किया। कृष्ण-भक्त वैष्णव-संन्यासी शंकराचार्यमतवादी मायावादी संन्यासीसे पूर्णतः भिन्न होता है। इस अति पवित्र और विशुद्ध वैष्णव-संन्यासाश्रमधर्मका अनुष्ठान प्रभुने स्वयं करके कलिके जीवोंको शिक्षा दी है।

सोऽहं ज्ञान भागवतीय विशुद्धधर्मका विरोधी हैं; जीवमें ईश्वर-बुद्धि भक्तिपथका अन्तराय है; आत्माभिमान भक्तिपथका कण्टक है, अहंकार भक्तिपथमें बाधक है, अतएव भगवद्भक्तके लिए विषवत् परित्याज्य है। संन्यासीके हाथमें दण्ड-कमण्डलु देखते ही उनकी सबलोग पूजा करेंगे, उनको प्रणाम करेंगे। वह माता-पिताके लिए भी प्रणम्य है। कलिका युगधर्म हरिनाम-संकीर्तन है, हरिनाम-महामन्त्र कलिग्रस्त जीवकों एकमात्र साधन है। इस मन्त्र-साधनकी प्रक्रिया है—

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः॥

—यह प्रभुके श्रीमुखसे निःसृत वेदवाणी है। प्रभु धर्म-संस्थापक तथा सत्-शास्त्र-मर्यादारक्षक हैं। शास्त्र कहते हैं कि कलिमें संन्यास-ग्रहण निषिद्ध है।* शास्त्रकारगण त्रिकालज्ञ ऋषि थे। मायावादी संन्यासाश्रम-धर्म युगधर्माचरणका विरोधी है, इसी कारण उनकी यह शास्त्राज्ञा है। मायावादी संन्यासियोंका अहं-ज्ञानमय धर्म-प्रचार युगधर्म-संस्थापनके पक्षमें हितकर नहीं है, अतएव युगधर्म-संस्थापनार्थ नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग-प्रभुका आविर्भाव हुआ है।

कलिग्रस्त जीवोंकी दुर्गति, उनका वह नित्यका हाय-हाय—यह सब धर्म-विपर्ययसे उत्पन्न हुआ है। सर्वज्ञ श्रीगौर-भगवान्ने दिव्यचक्षुसे यह देखा था। जीवमें ईश्वर-बुद्धि ही भक्तिधर्मकी ग्लानिका मूल कारण है, यह देखकर श्रीगौराङ्गप्रभु कलिकालके लिए उपयोगी, उदासीन कृष्णभक्तके लिए वैष्णव-संन्यासाश्रम-धर्म, युगधर्म संकीर्तन-यज्ञानुष्ठानके साथ-साथ प्रवर्त्तन करनेके अभिप्रायसे स्वयं आदर्श

---

* अश्वमेधं गवालम्भं संन्यासं पलपैतृकम्।
देवरेण सुतोत्पत्तिः कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥
—ब्रह्मवैवर्त्तपुराण।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वैष्णव-संन्यासी बने। संन्यासाश्रम-ग्रहण करनेके बाद प्रभुकी अपूर्व दीनता, अद्‌भुत कष्ट-सहिष्णुता, अतुलनीय मानाभिमान-शून्यता आदि विषयोंकी आलोचना करके देखनेपर स्पष्ट समझा जा सकता हैं कि उन्होंने इन गूढ़ उद्‌देश्योंकी सिद्धिके लिए ही यह वैष्णव-संन्यासाश्रम-धर्म ग्रहण किया था। दीनातिदीन होकर हरिनाम-संकीर्तन करना चाहिये। आत्माभिमान छोड़कर श्रीकृष्ण-भजन करना चाहिये। मानापमान, ज्ञान-गर्व ओर वैराग्याभिमान हृदयसे दूर करना चाहिये, तभी हरिनाम-महामन्त्र-साधनाका अधिकार प्राप्त होगा। युगधर्मप्रवर्तक श्रीगौर-भगवान्‌ने देखा कि कलिमें धर्म-विर्यय हो गया है, भक्तिधर्मविरोधी मायावादी संन्यासियोंका दल बढ़ रहा है। शांकरभाष्यके सोऽहंवाद-तत्त्वमें वद्याभिमानी पण्डित लोग अयथार्थ विश्वास-स्थापन करके भ्रममें पड़कर युगधर्मका अनादर कर रहे हैं। सब मूर्ख लोग उनकी वाक्-चातुरीके जालमें पड़कर कलियुगके प्रकृत साधनपथको छोड़कर कुपथमें भटक रहे हैं। धर्मका नाश करके धर्मध्वजी लोगोंकी स्वार्थ-सिद्धिका पथ प्रशस्त कर रहे हैं। अतएव कलियुगावतार श्रीश्रीगौर-भगवान्‌ने नदियामें आत्मप्रकाशके बाद दिव्यचक्षुसे देखा कि श्रीपाद माधवेन्द्रपुरी गोसाईं आदि वैष्णव-संन्यासियोंकी संख्या बिल्कुल ही लुप्तप्राय हो गयी है। इसी कारण उन्होंने स्वयं वैष्णव-संन्यास-ग्रहण किया और स्वयं आचरण करके अधिकारी वैष्णव-साधुओंको शिक्षा दी। श्रीगौराङ्गप्रभुने स्वयं श्रीनित्यानन्दप्रभुके टूटे हुए दण्डको गङ्गाके जलमें फेंककर वैष्णव-जगत्‌को शिक्षा दी कि भगवद्‌भक्तके लिए दण्ड-धारण करना अनावश्यक है।

प्रभुकी दण्ड-भङ्ग-लीला भी इसी उद्‌देश्यसे प्रकटित हुई। श्रीगौराङ्गप्रभु यदि दण्ड-कमण्डलु धारण करके, जटाजूट, वल्कल पहनकर सोऽहंवादी संन्यासियोंके दलमें मिल जाते, सारे मायावादी धर्माधिकरणकी रक्षा करते तो उनके वैष्णव-संन्यास-ग्रहण करनेका उद्‌देश्य ही सफल नहीं होता। जगत्‌में संन्यासका गर्व, वैराग्याभिमान, सोऽहं-ज्ञान-गरिमा और भी वर्द्धित होती। प्रभुको स्वयं-भगवान् स्वीकार करके भी मायावादी संन्यासी सोचते थे कि वे उन्हींके दलके हैं, उन्हींके बीच एक हैं, अतएव वे प्रत्येक स्वयं-भगवान् हैं, पूर्णब्रह्म सनातन हैं। ज्ञान-गर्वको खर्व करके भक्ति-माहात्म्यकी प्रधानता प्रबल करनेके लिए प्रभुने नदियामें अवतार लिया। प्रभु कलिके मायावादी संन्यासी होते तो उनके अवतारका उद्देश्य पूर्ण न होता। इसलिये चतुर-चूड़ामणि प्रभुने एक नये मार्गका अवलम्बन किया। युगधर्मके अनुसार एक नये प्रकारकी संन्यास-मूर्ति धारण करनेका संकल्प किया। युगधर्मके अनुकूल वैराग्यधर्म-प्रवर्त्तन करनेकी कामना की।

संन्यास-ग्रहण करनेपर उनके मनमें आया कि भक्तिमार्ग-विरोधी दण्ड-धारण करना युगधर्म-प्रवर्तनके उपयुक्त कर्म नहीं है। इसके साथ ही प्रभुको दण्ड-त्याग करनेकी इच्छा हुई। इच्छामय प्रभुकी इच्छाके अनुरूप कार्य उनकी इच्छाशक्ति श्रीनित्यानन्दप्रभुने किया। नीलाचलके मार्गमें उन्होंने प्रभुके दण्डके तीन टुकड़े करके जलमें फेंक दिया।

प्रभुके इस कपट-संन्यासका उद्देश्य था—श्रीकृष्णानुसंधान। उनकी इस भक्तिका नाम है—'कृष्णविरहोद्दीपक वैराग्य योग'। वैष्णव-संन्यासी कृष्णप्रेममें उन्मत्त, कृष्ण-सेवानुरक्त, कृष्णानुसंधानमें तीर्थ भ्रमणाभिलाषी और कृष्ण-दास्याभिमानी होता है। वह दण्ड-कमण्डलुकी परवाह नहीं करता, जटाजूट नहीं धारण करता। उसको चर्म-वल्कल पहननेकी आवश्यकता नहीं होती। वह केवल शिखा-सूत्रका त्याग करके कौपीन धारण करता है। सदा सर्वभूतहितमें रत रहता है। आत्माभिमान-रहित होता है। हरिनाम-महामन्त्रका प्रचारक होता है। मुखसे सदा कृष्ण-नाम लेता है, निशि-दिन कृष्णानु-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शीलनमें रत, कृष्ण-लीला-गानमें उन्मत्त, कृष्ण-प्रेमानन्दमें नृत्यपरायण तथा सदा आनन्दमग्न होता है—यही वैष्णव-संन्यासीका लक्षण है।

प्रभु जब संन्यास-ग्रहणके पश्चात् नीलाचल जाने लगे तो रास्तेमें उनके मनमें आया कि कलिग्रस्त जीवोंका उद्धार करनेके लिए इस प्रकारके कितने प्रकृत अधिकारी वैष्णवोंकी आवश्यकता है ? वे स्वयं इस प्रकारके संन्यासी बन गये और स्वरूपदामोदर आदि दूसरे लोगोंको भी संन्यासी बनाया। दण्ड-कमण्डलुको हटा दिया।

श्रीगौराङ्ग-महाप्रभु संन्यास-ग्रहणके बाद जब उन्मत्तके समान बाहर निकले तो वे निम्नलिखित भागवतके श्लोककी आवृत्ति करते हुए चले—

एतां स आस्थाय परात्मनिष्ठाम्
अध्यासिता पूर्वतमैर्महर्षिभिः।
अहं तरिष्यामि दुरन्तपारं
तमो मुकुन्दाङ्घ्रिनिषेवयैव ॥

श्रीम. भा. ११.२३.५८

श्रीचैतन्यचरितामृतकारने इस प्रकार प्रभुकी इस लीलाका वर्णन किया है—

एइ श्लोक पड़ि प्रभु भावेर आवेशे।
भ्रमिते पवित्र कैल सब राढ़देशे ॥
प्रभु कहे—साधु एइ भिक्षुर वचन।
मुकुन्द-सेवन व्रत कैल निर्धारण ॥
परात्मनिष्ठा मात्र एइ वेश धारण।
मुकुन्दसेवाय हय संसार तारण ॥
सेइ वेश कैल एबे वृन्दावने गिया।
कृष्ण-निषेवन करि निभृते बसिया ॥

चै. च. म. ३.४-७

यही श्रीवृन्दावनका मार्ग है। श्रीकृष्ण-सेवा ही वैष्णव-संन्यासीको श्रीवृन्दावनके मार्गमें ले जाती है। अतएव जो धर्म या कर्म श्रीमुकुन्दसेवाके विरोधी हैं, वे परित्याज्य हैं।

नीलाचलमें जाकर जब वे सार्वभौम भट्टाचार्यके घर ठहरे तो सार्वभौम भट्टाचार्य तथा उनके मायावादी संन्यासी छात्रोंने देखा कि यह नवीन संन्यासी एक बिल्कुल स्वतन्त्र वस्तु है, नवीन तत्त्व है। उनके समान नहीं है। संन्यासी होकर भी वह कृष्णप्रेमका प्रेमी है, कृष्णसेवा इसका मुख्य उद्देश्य है, प्रेम इसका सर्वस्व-धन है, शुद्धा प्रेमभक्तिसे सम्बन्धित इसकी सारी चेष्टाएँ हैं। संन्यास-धर्माचरण इसका मूलमन्त्र नहीं है, यह कृष्णनाममें, स्वप्रेमानन्दमें मत्त है। यह मायावादी संन्यासियोंके समान शुद्ध ज्ञानी या नीरसहृदय नहीं है। सार्वभौम भट्टाचार्य महाशय इस नवीन संन्यासीको पहले पहचान न सके। इनको नयी उम्रमें संन्यासाश्रम-धर्म-ग्रहण करते देखकर भट्टाचार्यके मनमें नाना प्रकारके संशय उत्पन्न हुए। उनको वेदान्त पढ़ाकर शिक्षा देनेके लिए वे व्यग्र हो उठे। परन्तु पश्चात् जब प्रभुकी कृपासे उनकी समझमें आ गया कि वे वैष्णव-संन्यासी हैं, मायावादी संन्यासियोंसे वे पूर्णतः विभिन्न वस्तु हैं, ये भक्तियोगी या भक्तियोग-प्रवर्तक हैं तो उन्होंने प्रभुके चरणोंमें आत्मसमर्पण कर दिया। श्रीकृष्णचैतन्य-नामधारी स्वयं-भगवान्‌को, नदियाके जगन्नाथमिश्र पुरन्दरके पुत्रको उन्होंने साक्षात् भगवद्भावसे हृदयमें स्थापित करके उनकी पूजा की और वन्दना की—

वैराग्यविद्यानिजभक्तियोग-
शिक्षार्थमेकः पुरुषः पुराणः।
श्रीकृष्णचैतन्यशरीरधारी
कृपाम्बुधिर्यस्तमहं प्रपद्ये ॥

चै. च. ना. ६.४४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने अपना दण्ड क्यों तुड़वाया? कृपालु पाठकवृन्द इसका कुछ विचार करें। श्रीभगवान्‌का लीलानुशीलन, लीला-ध्यान, लीला-गान करते-करते लीलानुभूति होती है। तब प्रभु ही ये सारे तत्त्व हृदयमें अभिव्यक्त कर देते हैं, यही भक्ति-साधकका भजनाङ्ग है। लीलानुध्यान भगवत्कृपा-प्राप्तिका श्रेष्ठ उपाय है। कृपालु पाठकवृन्द इस जीवाधम ग्रन्थकारके अपराधको न गिनेंगे, धृष्टताको क्षमा करेंगे—

वैष्णवेर पदे मोर एइ मनस्काम।
मो अधम प्रति जेन ना हइओ वाम॥

व्यास-पूजा

श्रीनित्यानन्दप्रभुके व्यास-पूजा-लीलारङ्गका वर्णन करते हुए मैं लीला-तरङ्गमें पड़कर बहुत दूर आ गया। प्रभु प्रेमानन्दमें विह्वल श्रीनित्यानन्द-प्रभुको गङ्गाके भीतरसे निकालकर हाथ पकड़कर श्रीवासके आँगनमें ले आये। श्रीवासपण्डितने व्यास-पूजाकी सारी तैयारी कर ली थी। वे ही इस व्यास-पूजाके आचार्य थे। प्रभुके आदेशसे उन्होंने आचार्यपद ग्रहण किया था। श्रीवासके आँगनमें मधुर-मधुर कीर्तन प्रारम्भ हुआ। भक्तवृन्द आकर कीर्तनानन्दमें जुट गये। श्रीवास-मन्दिर आनन्दधाम वैकुण्ठ-भवनमें परिणत हो गया। प्रभु सब भक्तोंके बीचमें आँगनको आलोकित करते हुए बैठे हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु प्रेमानन्दमें आँगनके चारों ओर भ्रमण कर रहे हैं और मृदु-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। श्रीवासपण्डित यथाविधि व्यास-पूजा करके दिव्य-गन्धयुक्त एक पुष्पमाला श्रीनित्यानन्दप्रभुके हाथमें देकर बोले—"नित्यानन्द! प्रार्थनाके साथ यह माला आप व्यासदेवको अर्पण करें, यह शास्त्र-विधि है। व्यासदेव प्रसन्न होकर सब अभीष्ट पूर्ण करेंगे!"

अन्तिम वचन सुनते ही अवधूत नित्यानन्दप्रभु चौंक पड़े और मन-ही-मन सोचने लगे—"मैंने सारी इच्छाएँ त्याग करके, सारे सुखोंपर लात मारकर संन्यासीका एकमात्र जीवन-सम्बल दण्ड-कमण्डलु धारण किया था; उसको भी गत रात विसर्जन कर दिया। व्यासदेव तुष्ट होकर अब मुझे क्या देंगे? अब तो मेरा सर्वाभीष्ट पूर्ण हो गया है; फिर यह सकाम प्रार्थना क्यों? अब जिसको तुष्ट करना है, वे स्वयं सामने विराजमान हैं। जिनकी पूजा करनी है, वे तो पास ही खड़े हैं; तब फिर इस कर्मकाण्डका व्यर्थ आडम्बर क्यों?"—इस प्रकार चिन्तन करते-करते श्रीनित्यानन्दप्रभुका बाह्य ज्ञान लुप्त हो गया। श्रीवासपण्डित जितनी बार मन्त्र-पाठ करके व्यासदेवको माला अर्पण करनेके लिए कहते हैं, उतनी ही बार वे सिर हिलाकर 'अच्छा-अच्छा' बोलते हैं। वे माला हाथमें लेते हैं; मुँहमें ही बिड़-बिड़ाकर पागलके समान मन-ही-मन क्या बोल रहे हैं, कोई समझ नहीं पाता है। वे माला हाथमें लेकर आविष्टभावमें इधर-उधर देखने लगे। यह देखकर श्रीवासपण्डितने प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—

"ना पूजेन व्यास एइ श्रीपाद तोमार।"

चै. भा. म. ५.८५

श्रीवासपण्डितकी बात सुनकर प्रभु आसन छोड़कर श्रीनित्यानन्दप्रभुके सामने आये। प्रभुको सामने देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभुके आनन्दका पारावार न रहा। वे आनन्दसे नृत्य करने लगे। प्रभु धीरे-धीरे अति मधुर वचनसे विनयपूर्वक बोले—"नित्यानन्द! माला समर्पण करके जल्दीसे व्यास-पूजन करो।"

श्रीनित्यानन्दप्रभु जिनको खोज रहे थे, उनको सामने पाकर अब अधिक विलम्ब न करके वह व्यास-पूजाकी सुगन्धित पुष्पमालिका अपने अभीष्टदेव श्रीगौर-भगवान्‌के मस्तकके ऊपर फेंक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दी। प्रभुके भ्रमर-कृष्ण-कुञ्चित केशपाशके ऊपर पुष्पमालिकाकी अपूर्व शोभा हुई।

उस समय प्रभुने एक अलौकिक लीलारङ्ग प्रकट किया। श्रीनित्यानन्दप्रभुको श्रीगौर-भगवान्‌ने अपनी शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, हल और मूसलधारी षड्भुजमूर्ति दिखलायी।

प्रभुने यह अपूर्व ऐश्वर्य पूर्ण श्रीमूर्ति नीलाचलमें सार्वभौम भट्टाचार्यको एक बार दिखलायी थी। प्रभुकी षड्भुजमूर्ति सार्वभौम भट्टाचार्यने श्रीजगन्नाथदेवके मन्दिरमें अङ्कित करा दी थी। वही अपूर्व मूर्ति आज भी वहाँ विद्यमान् है।

प्रभुकी षड्भुजमूर्ति-दर्शन करके श्रीनित्यानन्द-प्रभु वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

प्रभुकी यह अपूर्व षड्भुजमूर्ति और कोई भक्त न देख पाया। श्रीनित्यानन्दप्रभुको अचानक मूर्च्छित होते देखकर उनके मनमें विषम भय उत्पन्न हुआ। सभी "कृष्ण! रक्षा करो, कृष्ण! रक्षा करो" कहकर भीति-विह्वल चित्तसे क्रन्दन करने लगे। प्रभु हुंकार-गर्जन करके कोखमें ताली बजाकर श्रीवासके आँगनमें उद्दण्ड नृत्य करने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभुको अधिक देरतक मूर्च्छित देखकर प्रभु अपने ऐश्वर्यभावको संवरण करके उनके पास आकर बैठे। धीरे-धीरे स्नेहपूर्वक उनके शरीरपर श्रीहस्तसे स्पर्श करके उनको मधुर शब्दोंमें कहने लगे—"नित्यानन्द! उठो, अपने चित्तको स्थिर करो! जिस कीर्तनके लिए तुमने अवतार लिया, वह सिद्ध हो गया; अब और क्या चाहते हो! तुम्हारी प्रेमभक्ति तुम्हारे दिये बिना किसीको प्राप्त नहीं हो सकती। तुम जिसको चाहो, इसका वितरण करो। जो तुमसे जरा-सा भी द्वेष रखेगा, वह भजन करनेपर भी मेरा प्रिय कभी नहीं होगा।"

प्रेमानन्दमय बाह्य ज्ञानशून्य अवधूत नित्यानन्द-प्रभुके सिरहाने बैठकर श्रीगौराङ्गप्रभु उनके श्रीअङ्गको अपने पद्म हस्तसे सहला रहे हैं और मधुर वाणीमें ये सब बातें बोल रहे हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु ध्यानानन्दमें मग्न हैं। वे श्रीगौर-भगवान्‌की अपूर्व षड्भुजमूर्तिके अपरूप-रूपका ध्यान कर रहे हैं। प्रभुकी बात उनके कानोंमें प्रविष्ट न हुई। तब श्रीगौर-भगवान्‌ने उनको अपनी ऐश्वर्यमयी चतुर्भुज मूर्तिका भी दर्शन कराया। पश्चात् द्विभुज गौर-कृष्ण-मूर्ति दिखलाकर उनकी समाधि-भङ्ग की। इन सब लीला-कथाओंका श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने अपने श्रीचैतन्यचरितामृत महाकाव्यमें वर्णन किया है।

श्रीनित्यानन्दप्रभुको श्रीश्रीगौर-गोविन्दकी द्विभुजमूर्तिका दर्शन होते ही बाह्य ज्ञान हो गया और भूतलसे चकित होकर उठे तथा प्रभुके श्रीमस्तकपर पुष्पवृष्टि करने लगे तथा प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर मधुर नृत्य करने लगे।

प्रभुकी यह षड्भुजमूर्ति उनके ऐश्वर्य और महिमाकी सूचक है। उनकी दक्षिण तीन भुजाओंमें शङ्ख-चक्र और निर्मल गदा है। तथा बाँयीं तीन भुजाओंमें मुरली, पद्म और शार्ङ्ग (धनुष) सुशोभित है। वक्षःस्थलमें मुक्ताकी माला शोभित है, कर्णयुगलमें मकराकृत-कुण्डल डोल रहे हैं, कम्बुकण्ठमें नीलमणिहार शोभित है, वे बालसूर्यकी किरणोंके समान लाल वस्त्र पहने हुए हैं। श्रीगौर-भगवान्‌ने अपनी यह परम ऐश्वर्यमयी अपरूप षड्भुजमूर्ति पहले-पहल श्रीनित्यानन्दप्रभुको दिखलायी। पश्चात् यह अपूर्व षड्भुज-मूर्ति उन्होंने नीलाचलमें सार्वभौम भट्टाचार्यको भी दिखलायी थी। उस मूर्तिके एक हाथमें कमण्डलु था तथा वे त्रियुगावतार-महिमासूचक रूपमें विख्यात हैं। श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीप्रभु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस षड्भुज-मूर्तिकी महिमाका वर्णन करते हुए लिखते हैं—

भुजैः षड्भिरेभिः समाख्याति कश्चिद्
निसर्गोग्रषड्वर्ग हन्तेति भोस्ताम् ।
वयं ब्रूमहे हेम हेच्छ त्वमेभि-
श्चतुर्वर्गदो भक्तिदः प्रेमदश्च ॥

अर्थात्—"हे प्रभो ! तुमने जीवोंके कामादि छः रिपुओंका नाश करनेके लिए षड्भुज-मूर्ति धारण की है, ऐसा कोई-कोई कहते हैं, परन्तु हम वैसा न कहकर यह कहते हैं कि तुम्हारी चार भुजाएँ जीवोंको चतुर्वर्ग-प्रदान करनेवाली हैं तथा शेष दो भुजाओंमें एक 'भक्ति' तथा दूसरी 'प्रेम' प्रदान करती है।

श्रीनित्यानन्दप्रभुके आनन्द-नृत्यको देखकर भक्तोंके प्राण अभूतपूर्व प्रेमरससे सिक्त हो गये। उन्होंने मनोहर नृत्यभङ्गी करते हुए सारे आँगनमें परिभ्रमण किया तथा एक-एक करके सबको प्रेमालिङ्गन प्रदान कर उनमें शक्ति-संचार किया। भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें अधीर होकर उनके चरणोंमें जा गिरे। श्रीवास-आँगन आनन्दधाममें परिणत हो गया। श्रीगौराङ्गप्रभुने तब अपनी पहली बातको फिर दुहराकर श्रीनित्यानन्दप्रभुसे कहा—"श्रीपाद ! आपकी प्रेमभक्ति अद्वितीय है। आपकी कृपासे हमने सीख लिया कि प्रेमभक्ति क्या वस्तु है ? आप यह अपूर्व प्रेमभक्ति जिसको चाहें, वितरण करें। आप सब लोगोंका कल्याण चाहते हैं। आपके प्रति जो तनिक भी द्वेष रखता है, वह कभी मेरा प्रिय नहीं हो सकता।"

प्रभुके सुधामय प्रियवचन सुनकर श्रीनित्यानन्द-प्रभु कुछ मुस्कुराये। उनकी हँसीका मर्म यह था—"ठाकुर ! तुमको मैंने पहचान लिया है। आज तुम पकड़में आ गये हो। आज मैंने अपनी व्यास-पूजाका फल हाथों-हाथ पा लिया।"

श्रीनित्यानन्दप्रभु अब प्रकृतिस्थ हो गये हैं। प्रभुके सामने आकर वे हाथ जोड़कर स्तवन करने लगे—

जय जय विश्वम्भर जनक संसार ।
जय जय संकीर्तन-हेतु अवतार ॥
जय जय वेदधर्म साधु-विप्रपाल ।
जय जय अभक्तदमन महाकाल ॥
जय जय सर्वसत्यमय कलेवर ।
जय जय इच्छामय महामहेश्वर ॥
जे तुमि अनन्त कोटि ब्रह्माण्डेर वास ।
जे तुमि श्रीशचीगर्भे करिला प्रकाश ॥
तोमार जे इच्छा, के बूझिते तार पात्र ।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय तोमार लीला मात्र ॥
तोमार आज्ञाय एक सेवके तोमार ।
अनन्त ब्रह्माण्ड पारे करिते उद्धार ॥

चै. भा. आ. १४७-१५, १५५

स्तवनके अन्तमें श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीगौराङ्ग-भगवान्‌के सामने खड़े हो गये। उनके सारे अङ्ग कदम्ब-केशरके समान रोमाञ्चित हो गये, वाणी गद्‌गद हो गयी, प्रेमसे भरे सारे अङ्ग मत्त हो गये। उनकी दृष्टि प्रभुके लाल कमल-चरणकी ओर थी। श्रीनित्यानन्दप्रभुको आज श्रीमन्महाप्रभुने नित्यानन्द प्रदान किया। इस प्रकार उस दिन श्रीवासके आँगनमें श्रीनित्यानन्दप्रभुकी व्यास-पूजा समाप्त हुई।

श्रीवासपण्डितने व्यास-पूजाकी सारी सामग्री लाकर प्रभुके सामने रख दी। प्रभुने अपने हाथोंसे उसे भक्तोंमें बाँट दिया। भक्तगण बड़े आनन्दसे प्रसाद पाकर कृतार्थ हो गये और आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे। श्रीवासपण्डितके घरके आत्मीय-स्वजन, दास-दासी आदि सबने प्रभुके हाथसे प्रसाद पाया। श्रीवासपण्डितके प्रति प्रभुकी कृपाकी सीमा नहीं है। उनके घरका यवन दर्जीतक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुकी कृपाका पात्र था। इस यवन दर्जीको प्रभुने अपना स्वरूप दिखाकर कृतार्थ किया था। यह सब लीला-कथा आगे वर्णन की जायगी।

श्रीनित्यानन्दप्रभुके दोनों कमल-नयनोंसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा वह रही है। वे प्रेमानन्दमें विह्वल होकर प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर ताक रहे हैं। श्रीगौराङ्ग प्रभुने इसके बाद सब भक्तों पर, शुभ दृष्टि-पात करके, कीर्तन आरम्भ करनेका आदेश दिया।

इस प्रकार चतुर्दिक् गगनभेदी हरि-हरि-ध्वनि उठी। भक्तवृन्दने मृदङ्ग-करतालके साथ प्रेमानन्दमें मत्त होकर सुमधुर कीर्तन आरम्भ किया। श्रीश्रीगौर-नित्यानन्द दोनों भाई युगलरूपमें कीर्तनमें उतरे। दोनों ही आज प्रेमानन्दमें उन्मत्त हैं। किसीको बाह्य ज्ञान नहीं है। प्रेमानन्दमें दोनोंहीके श्रीअङ्ग शिथिल हैं। भक्तवृन्द प्रेमोन्मत्त और नृत्यपरायण श्रीगौर-नित्यानन्द श्रीविग्रह-युगलको घेरकर नाच रहे हैं।

कीर्तनके आनन्दमें सभी विभोर हैं, कोई भूतलमें पड़कर लोटता है, कोई किसीका चरण पकड़कर रो रहा है। आज श्रीवासके आँगनमें सारे भक्तवृन्द एकत्रित हुए हैं। वैष्णव-गृहिणीगण भी आ गयी हैं।

जगन्माता शचीमाता अन्त:पुरमें निभृत बैठकर अपने पुत्ररत्नके लीलारङ्गको देख रही हैं; गौर-निताई दोनों भाई हाथमें हाथ मिलाकर प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य कर रहे हैं। यह देखकर स्नेहमयी शचीमाताके मनमें बड़ा आनन्द होता हैं। वे सोचती हैं कि ये दोनों उनके पुत्र हैं। वात्सल्य-भावमें विभावित होकर, शचीमाता श्रीनित्यानन्द-प्रभुको विश्वरूप देखती हैं। अहा! बहुत दिनोंसे उन्होंने विश्वरूपको नहीं देखा। माताका प्राण पुत्र-विरहमें आकुल है। वे सोचती हैं कि विश्वम्भर और विश्वरूप-दोनों भाई एक साथ आँगनमें नृत्य कर रहे हैं। शचीमाताकी इच्छा हो रही है कि दौड़कर दोनों भाइयोंको एक साथ गोदमें लेकर हृदयसे लगाकर अपने संतप्त प्राणको शीतल करतीं। वैष्णव-गृहिणीगण शचीमाताके पास बैठी हैं। शचीमाताकी आँखोंसे झर-झर अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है, आनन्दमें वे अपने-आपको भूलकर एकटक गौर-नित्यानन्दके मधुर नृत्यको देख रही हैं और उनकी अपरूप-रूप-सुधाका पान कर रही हैं।

प्रभुके आदेशसे अपराह्न कालमें कीर्तन बंद हो गया। उसके बाद श्रीवासपण्डितने उस दिन ब्राह्मण-वैष्णवोंको भोजन कराया। इस प्रकार श्रीनित्यानन्द-प्रभुकी व्यास-पूजा समाप्त हुई। श्रीनित्यानन्दप्रभुके षड्भुजदर्शनकी लीला-कथाके श्रवणकी फलश्रुति ठाकुर वृन्दावनदासने लिखी है—

एइ नित्यानन्देर षड्भुज-दर्शन।
इहा जे शुनये तार बद्ध विमोचन॥

चै. भा. म. ५.१९७

व्यास-पूजाके दिन श्रीनित्यानन्दप्रभुको अपनी अपूर्व षड्भुज श्रीमूर्ति दिखलाकर प्रभुने उनको संन्यास-धर्माचरणका प्रकृत फल प्रदान किया। इच्छामय प्रभुकी इच्छासे श्रीनित्यानन्दप्रभुने अपना दण्ड तोड़ डाला; क्योंकि अब दण्ड-धारणकी उनको कोई आवश्यकता न थी। वे अब विधि-निषेधके परे पहुँच गये थे। उनके दण्ड-धारणका कार्य समाप्त हो गया था, उनका सर्वाभीष्ट सिद्ध हो गया था, अब वे दण्ड-त्याग करके, निश्चिन्त होकर सर्वेन्द्रियद्वारा श्रीगौर-भगवान्‌के सेवा-कार्यमें लग गये। अब वे प्रकृत वैष्णव-संन्यासी हो गये।

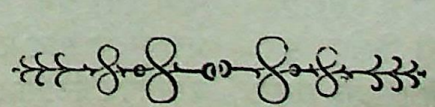

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तेतीसवाँ अध्याय

श्रीअद्वैतप्रभु-प्रोक्त श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व

कलियुगे भक्तिमूर्ति देवी विष्णुप्रिया।
श्रीअद्वैत प्रभु कहे ताहा प्रकाशिया॥

श्रीविष्णुप्रियामङ्गल

श्रीनवद्वीपमें प्रभुके आत्मप्रकाशके बाद नदिया-युगल-भजन-निष्ठ गौर-भक्तवृन्दकी मनोकामना पूर्ण करनेके लिए श्रीश्रीविष्णुप्रिया-वल्लभने ही श्रीअद्वैत-प्रभुके श्रीमुखसे अब श्रीश्रीविष्णुप्रिया-तत्त्वको प्रकट किया। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व अत्यन्त गूढ़ है। श्रीश्रीमन्महाप्रभु कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं, अपनेको प्रच्छन्न रखनेमें वे कितने सावधान रहते थे, इससे सभी गौर-भक्त अवगत हैं। प्रभु जब अपने तत्त्व और स्वरूपके प्रकाशनमें इतने सावधान थे तो उनकी वक्षविलासिनी श्रीविष्णु-प्रियादेवीका तत्त्व-प्रकाश होना कैसे सम्भव हो सकता था ? तथापि नदिया-युगल-भजननिष्ठ नित्यदासगण इसे कब छोड़नेवाले थे ? उनकी एकान्त इच्छा तथा दृढ़ अनुरोधसे श्रीअद्वैतप्रभुने एक दिन श्रीवासके आँगनमें बैठकर प्रभुके साथ रहस्यकी बातें करते-करते प्रियाजीके तत्त्वको प्रकट कर दिया। श्रीनित्यानन्दप्रभु स्वयं इन निगूढ़-तत्त्वान्वेषक नदिया-युगल-भजननिष्ठ साधक गौर-भक्तवृन्दके अग्रणी थे। ये सारी बातें श्रीकवि-कर्णपूरगोस्वामी अपने श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकमें लिख गये हैं।

इस समय श्रीशान्तिपुरनाथ श्रीश्रीमन्महाप्रभुके आदेशसे शान्तिपुरसे नवद्वीपमें आ गये थे। नदियामें आकर उन्होंने किस प्रकार प्रभुकी विशेष कृपा प्राप्त की, यह पहले कहा जा चुका है। उस समय नदियामें निमाईपण्डित एक नवीन युवक थे। नदियाके ये ब्राह्मणकुमार उस युगमें बंगालके अद्वितीय पण्डित थे। उनके पिताके समवयस्क नदिया-शान्तिपुरकी ब्राह्मण-मण्डलीमें अधिकांशके दीक्षा और शिक्षागुरु श्रीअद्वैताचार्यके सिरपर श्रीचरण प्रदानकर किस प्रकार उन्होंने कृपा की थी, उससे सभी लोग अवगत थे। इस प्रकारकी अद्भुत कृपावृष्टिका अवश्य ही कुछ निगूढ़ रहस्य था। श्रीअद्वैतप्रभु हमारे गौर-आना-गोसाईं थे। जो गोलोकपतिको गोलोकसे भूलोकमें ला सकते थे, वे उनकी स्वरूप-शक्ति साक्षात् भक्तिस्वरूपिणी श्रीविष्णुप्रियादेवीका तत्त्व प्रकट करनेके उपयुक्त पात्र थे, सम्भवतः इस बातको कोई अस्वीकार न करेगा। श्रीनित्यानन्दप्रभु और अद्वैतप्रभु दोनों ही श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके युगल-भजननिष्ठ साधक थे। श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्वके प्रकट करनेमें श्रीशान्तिपुर-नाथके नदिया-युगल-भजनका आभास मिलता है तथा शची-आँगनमें श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्गके युगल-विलास-दर्शनमें श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभुका प्रेमानन्द-भाव ही उनके नदियायुगल-भजनका प्रकृष्ट परिचायक है। वह सब मधुर लीला-कथा इस ग्रन्थमें यथास्थान विस्तारपूर्वक वर्णित होगी।

श्रीअद्वैतप्रभुके नवद्वीपमें पुनरागमनके कुछ दिन बाद उन्होंने एक दिन श्रीवास-आँगनमें देखा कि श्रीविष्णुप्रियावल्लभ भक्तगणके साथ कृष्ण-कथा-रसरङ्गमें विभोर हैं। सीतानाथको देखकर भक्तवृन्दके साथ प्रभुने उठकर सम्मानपूर्वक उन्हें आसनपर बैठाया। श्रीअद्वैतप्रभुने जब गौरसुन्दरको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रणाम किया तो उन्होंने भी नियमपूर्वक नमस्कार किया। तब दोनोंमें वार्तालाप प्रारम्भ हुआ। यह रसमय वार्तालाप श्रीपाद कविकर्णपूर गोस्वामी संस्कृत भाषामें लिख गये हैं। उसका अनुवाद नीचे दिया जाता है।

रसिकशेखर प्रभु पहले ही हँसकर बोले—"यहाँ सीतापति आये हैं।* अब हमको यमका डर नहीं है।" प्रभुके श्रीमुखसे यह बात सुनते ही उपस्थित भक्तवृन्द विशेष आनन्दित होकर हरिध्वनि करने लगे। श्रीसीतानाथने श्रीश्रीविष्णुप्रिया-वल्लभकी बात उलटा करके कौतुकमें ही मृदु मुस्कानके साथ कहा—"रघुपति तो यहाँ नहीं दिखलायी दे रहे हैं, उनके स्थानमें मैं यदुपतिको देखता हूँ।" प्रभुके मुँहपर मृदु मुस्कानकी रेखा दिखलायी दी, उन्होंने और कुछ उत्तर न दिया। दूसरी बात उठाकर उन्होंने उनसे कहा—"आप शान्तिपुरमें रहते हैं, इससे मेरे मनमें बड़ा दुःख होता हैं।" श्रीअद्वैतप्रभुके उत्तर देनेके पहले ही श्रीवासपण्डित बोले—"प्रभो! शान्तिपुरमें रहना श्रीअद्वैताचार्यके लिए उपयोगी है, तथापि सर्वविधि भक्तिरसके आकर श्रीनवद्वीपधामके प्रति आपके आविर्भावके बाद उनका विशेष अनुराग पैदा हुआ है। इसी कारण सर्वव्यापक नित्यानन्दप्रभु भी यहीं है।"

नारद-अवतार श्रीवासपण्डितकी इस बातका तात्पर्य यह है कि श्रीअद्वैतप्रभु पहले शान्त और दास्य-भावके साधक थे, अब प्रभुकी कृपा। नवद्वीपधाममें आकर वे रसिक भक्त होकर नवद्वीप-रसका नित्यानन्द भोग कर रहे हैं।

श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीवासपण्डितकी तत्त्वपूर्ण सरस बात मनोयोगपूर्वक सुनी। प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर देखकर उन्होंने उत्तर दिया—"इसी कारण श्रीवास भी यहाँ हैं।" परमपण्डित और वाग्मी श्रीवासपण्डित उनको तुरन्त पकड़कर बैठ गये।

श्रीअद्वैतप्रभुके यह बात बोलनेका तात्पर्य यह था कि जहाँ 'श्री' अर्थात् लक्ष्मीजी वास करती हैं, वहाँ सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। श्रीवासपण्डित हँसते और परिहास करते हुए श्रीअद्वैतप्रभुसे बोले—"ठाकुर! आप जिस लक्ष्मीजीकी बात करते हैं, वे तो तिरोहित हो चुकी हैं।"

प्रभु अब तक श्रीअद्वैतप्रभु और श्रीवास-पण्डितका कथोपकथन ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। अपनी प्रथम स्त्रीके अन्तर्धानका प्रसङ्ग सुनकर वे कुछ व्याकुल हुए। इस बातका सदुत्तर दिये बिना वे रह नहीं सकते थे। नित्यधाम नवद्वीपसे श्रीगौर-भगवान्‌की नित्यदासी श्रीलक्ष्मीदेवीका अन्तर्धान हो ही नही सकता। इसी कारण प्रभुने कहा—"हे हे श्रीवासपण्डित! 'श्री' शब्दका अर्थ 'भक्ति' है। तुम भक्तलोग जहाँ विद्यमान् हो, वहाँसे भक्तिदेवी अन्तर्धान हो जायँ, यह सम्भव नहीं। उनका वास तुमलोगोके पास ही है।"

इसी समय महाविष्णुके अवतार सर्वज्ञ श्रीअद्वैताचार्य प्रभुके मनोभावको समझकर उनकी प्रेरणासे श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्वको प्रकट करनेका निश्चय किया। उनके हृदयमें श्रीगौराङ्ग-भगवान्‌ने श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्वकी स्फूर्ति कर दी। वे श्रीविष्णुप्रियावल्लभकी ओर सप्रेम दृष्टिसे देखकर बोले—"अवश्य ही 'श्री' अर्थात् 'भक्ति' नवद्वीपमें ही है और वे ही भक्तिदेवी इस समय श्रीविष्णुप्रिया-देवी हैं।" श्रीविष्णुप्रियावल्लभ यह बात सुनकर मनमें बहुत प्रसन्न हुए। कलिके प्रच्छन्न अवतारने अपने मनके भावको छिपाकर श्रीअद्वैतप्रभुको लक्ष्य करके गम्भीर भावसे उत्तर दिया—"सो तो ठीक है; ज्ञानादि अनेक उपायोंके रहते हुए भक्ति ही विष्णुकी प्रिया हैं।" अर्थात् श्रीभगवान्‌की स्वरूप-

* अद्वैत-गृहिणीका नाम श्रीसीतादेवी था।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शक्ति ही 'भक्ति' है और वे सर्वापेक्षा भक्तिको ही प्रिय मानते हैं ।

प्रभुका उत्तर सुनकर श्रीअद्वैतप्रभु आनन्दसे अधीर होकर प्रेमानन्दमें नृत्य करने लगे । उपस्थित भक्तवृन्दने उसमें योग दिया । उसके बाद शान्तिपुरनाथने सबके सामने हँसते हुए कहा—"प्रभो ! इसी कारण तुमने सनातन मिश्रकी दुहिता श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको अपने अङ्कमें स्थान दिया है । वे मूर्तिमती भक्तिदेवी हैं, वे ही तुम्हारी संवित्, सन्धिनी और ह्लादिनी-शक्तिकी सारभूता हैं । वे ही तुम्हारी स्वरूप-शक्ति हैं । उनकी शक्तिको लेकर ही तुम शक्तिमान् हो ।"

सर्वज्ञ श्रीअद्वैताचार्य सर्वशास्त्रोंके ज्ञाता, वृद्ध ब्राह्मण हैं और सबलोगोंके सम्मानार्ह हैं । उम्रमें प्रभु उनके पुत्रकी अपेक्षा भी छोटे हैं । श्रीअद्वैतप्रभु पहले कभी उनके साथ ऐसा कौतुक नहीं करते थे । उनके मुखसे श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व सुनकर भक्तवृन्द आनन्दसे अधीर होकर हरिध्वनि करने लगे । चतुर-चूड़ामणि श्रीविष्णुप्रियानाथ लज्जासे अवनत सिर करके बैठे रहे उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है । गृहिणीकी प्रशंसासे किसके मनमें आनन्द नहीं होता ? श्रीअद्वैताचार्यकी ओर प्रभु एक-एक बार सिर झुकाये तिरछे नेत्रोंसे देख लेते हैं और आँखें मिलते ही लज्जासे मुखचन्द्रको झुका लेते हैं । शान्तिपुरनाथ प्रभुकी सलज्ज भावपूर्ण अपरूप-रूपराशिको देखकर आनन्दसे अपने-आपमें नहीं रहते । भक्तवृन्द आनन्दसे उत्फुल्ल होकर श्रीअद्वैत-प्रभुका जय-जयकार कर रहे हैं । श्रीवासके आँगनमें आज एक अभिनव आनन्दका स्रोत बह रहा है । उस स्रोतकी तरङ्गमें नदियाके बाल-वृद्ध-नारी निमज्जित हो रहे हैं ।

श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्वको लुका-चोरी नहीं कहा, सबके सामने इस निगूढ़ तत्त्वको प्रकट करके उन्होंने कलिग्रस्त जीवोंका अत्यन्त कल्याण किया । गृहकी आड़में खड़े होकर वैष्णव-गृहिणीगणने श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्वको सुना । मालिनीदेवी झटपट जाकर शचीमाताके कानोंमें यह बात कह आयीं । यह सुनकर शचीमाताके आनन्दकी सीमा न रही । प्रभुके मनमें जो आनन्दकी तरङ्ग आज उठी, उसका घात-प्रतिघात शचीमाताके हृदयमें हुआ ।

आनन्दकी अधिकताके कारण श्रीअद्वैतप्रभुको अपने घर निमन्त्रित करनेके लिए शचीमाताने तत्काल पुत्रके पास आदमी भेजा । किसीके शुभ संवाद देनेसे स्त्री-जनके मनमें जब विशेष आनन्द होता है, तब उनको उस परम सुहृद—जनको भोजन करानेकी इच्छा होती है । शचीमाताको रसोई बनानेका कार्य अतिशय प्रिय है । इस कार्यमें वे अति निपुण हैं । लोगोंको खिलाने-पिलानेमें उनको जितना सुख मिलता है, उतना और किसी कार्यमें नहीं मिलता । श्रीअद्वैतप्रभुने उनकी पुत्रवधूकी प्रशंसा की है, इससे उनका मन आज आनन्दसे उत्फुल्ल हो गया है । अतएव उन्होंने आज उनको अपने घरपर निमन्त्रित किया है । मनके प्रबल आनन्दकी अधिकतासे वे भूल गयीं कि अबतक श्रीअद्वैताचार्यने उनके हाथसे कभी अन्न-ग्रहण नहीं किया था । वे वारेन्द्र-श्रेणीके ब्राह्मण थे और प्रभु वैदिक श्रेणीके । इन दोनों श्रेणीके ब्राह्मणोंमें सामाजिक नियमके अनुसार परस्पर अन्न-ग्रहण करनेकी विधि न थी । पक्वान्न, फल-मूल आदिका व्यवहार चलता था । श्रीअद्वैताचार्य नैष्ठिक ब्राह्मण थे । वे वैदिक श्रेणीके ब्राह्मणकी कन्याके हाथसे पाकया हुआ अन्न-ग्रहण नहीं करेंगे, यह बात शचीमाताके मनमें उदय न हुई । पुत्रके पास आदमी भेजनेके बाद यह बात उनके मनमें आयी, तब वे सोचने लगीं ।

इधर प्रभुके पास जाकर जब शचीमाताके आदमीने श्रीअद्वैतप्रभुके निमन्त्रणकी बात कही,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तब वे परम आनन्दसे शचीमाताका निमन्त्रण ग्रहण करते हुए बोले—"जगज्जननी शचीमाताने आज आदर करके मुझे आमन्त्रित किया है, मेरा परम सौभाग्य है। उनके हाथका तैयार किया हुआ व्यञ्जन-प्रसाद पाकर आज मैं कृतार्थ हो जाऊँगा।"

रँगीले प्रभुने समझ लिया कि श्रीअद्वैताचार्य अब वे नैष्ठिक ब्राह्मण नहीं हैं। तथापि चतुरचूड़ामणि प्रभुने उनके मनको जाँचनेके लिए खोलकर कहा—"आचार्य! आज मेरी कुटीमें आपको कष्ट करके भोजन बनाना पड़ेगा, यह माताजीका विशेष अनुरोध है। श्रीवासपण्डितने मुझको विशेषरूपसे पकड़ा है, वह भी आज आपके हाथका अन्न-व्यञ्जन प्रसाद मेरी कुटीमें पायेंगे और मैं भी वञ्चित न रहूँगा। आपको विशेष कष्ट न होगा, मेरी माताजी सारा प्रबन्ध कर देंगी।"

चतुरचूड़ामणिकी चतुराई देखकर श्रीअद्वैतप्रभु मन-ही-मन खूब हँसे। प्रभुके परिवारके साथ उनका आहार-व्यवहार नहीं है, इसी कारण प्रभुने उनको यह बात कही है—यह समझकर वे लज्जित होकर मृदु वाणीमें बोले—'प्रभो! कृपा करके जब तुमने एक बार इस अधमको अपने चरणोंमें स्थान दिया है, तब अपने अधरामृत-प्रसादसे मुझे वञ्चित न करना।" उनकी यह मृदु वाणी प्रभुके सिवा और कोई नहीं सुन सका। प्रभुने मुस्कुराकर एक बार हँसकर श्रीअद्वैतप्रभुकी ओर करुणदृष्टिसे देखा। इससे वे उनके मनके भावको ताड़ गये और अधिक व्यर्थ बातें न बढ़ाकर वे श्रीवासपण्डितके सहित प्रभुके साथ अपने घर गये। प्रभुने मातासे कहा—"माँ! आज श्रीअद्वैताचार्य तुम्हारे हाथकी रसोई भोजन करेंगे।" शचीमाता यह सुनकर आनन्दसे गद्‌गद हो गयीं।

शचीमाताने नाना प्रकारके शाक-व्यञ्जन, अम्ल-मिष्टान्न तैयार करके श्रीअद्वैतप्रभुको स्वयं परोस करके परम आदर, अतिशय श्रद्धाके साथ भोजन कराया। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने सब बातोंमें उनकी सहायता की थी। वे भी रसोईके काममें पटु हैं। इनमें-से अनेकों व्यञ्जन उन्होंने भी बनाये हैं। श्रीअद्वैतप्रभु परम परितोषपूर्वक भोजन करके शचीमातासे उनकी पुत्रवधूकी बहुत प्रशंसा और बड़ाई करने लगे।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी यह सुनकर लज्जासे घरके भीतर भाग गयीं। शचीनन्दन एक क्षणके लिए उस घरमें जाकर प्रियाजीके कानोंमें कुछ कहने लगे। वे लज्जावश उस घरसे भी दूसरे घरमें चली गयीं।

श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाके इस युगल-लीलारङ्गको अपनी आँखोंसे देखा। रसिक-चूड़ामणि प्रभुने कौशलसे अपने रसिक भक्त अद्वैतप्रभुको यह मधुमय युगल-लीलारङ्ग दिखला-कर कृतार्थ किया। इस प्रकारका युगल-लीलारङ्ग उन्होंने श्रीनित्यानन्दप्रभुको भी दिखलाया था। यह कथा आगे कही जायगी।

उसी दिन श्रीअद्वैताचार्यपर कृपा करके प्रभुने अपना गौर-कृष्णरूप दिखलाया। गौर-कृष्ण अभेद-तत्त्व हैं, यह प्रभुने उस दिन श्रीअद्वैतप्रभुको स्पष्टरूपसे समझा दिया। श्रीवासपण्डित इस कार्यके मध्यस्थ थे। वे नारदके अवतार थे। श्रीगौर-भगवान्‌के प्रिय पार्षद थे। श्रीअद्वैतप्रभुके मनमें "क्या ये ही वे हैं?"—यह संदेह बहुत दिनोंतक रहा। उनका यह संदेह भी प्रभुका एक लीलारङ्ग था। ये सारी लीला-कथाएँ यथा-स्थान विचार करनेकी चेष्टा की जायगी।

पूज्यपाद महाजनगण श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्वको प्रकट कर गये हैं। यह प्रभुकी इच्छासे गुप्त था, अब क्रमशः व्यक्त हो रहा है। प्रभुकी प्रकटावस्थामें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनको गुप्त रखनेका प्रभुका आदेश था। उनके अन्तर्धान होनेके बाद उनके भक्त महाजन-ऋषिगण उनको प्रकट करते हैं, उनके तत्त्वपर विचार करते हैं, जगत्में श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्वको प्रकट करने और विचार करनेका अब समय आ गया है। क्योंकि श्रीविष्णुप्रियादेवीकी इच्छासे अब गौर-भक्तवृन्दके मनमें यह जाननेकी एक प्रबल वासना हो गयी है। श्रीराधा-तत्त्व, श्रीकृष्ण-तत्त्वके प्रकट होनेके बहुत बाद प्रचरित हुआ था। श्रीगौराङ्गप्रभु स्वयं इसके प्रचारक हैं। श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व उनके अत्यन्त निजजनके द्वारा प्रचरित होगा। भक्तोंके भगवान् भक्ति-तत्त्वके प्रचारमें सहायता करते हैं। श्रीविष्णु-प्रिया-तत्त्व भक्ति-तत्त्व है। यह स्वयंप्रकाश वस्तु है। स्वयं भगवान् इसके प्रकाशक हैं। भक्त केवल उपलक्ष्य मात्र हैं।

चौतीसवाँ अध्याय

पुण्डरीक विद्यानिधि और गदाधरपण्डित

पुण्डरीक-गदाधर दुइर मिलन।
जे पड़े जे शुने तारे मिले प्रेमधन॥

चै. भा. म. ७.१५४

प्रभुद्वारा पुण्डरीकका आकर्षण

श्रीगौर-भगवान्ने जब नदियामें आत्मप्रकाश करना प्रारम्भ किया, श्रीवासके आँगनमें जब उन्होंने भुवनमङ्गल युगधर्म श्रीहरि-संकीर्तन-यज्ञ आरम्भ किया तो उनके नित्यपार्षद्गण एक-एक करके नवद्वीपमें आकर प्रभुके चरणोंमें आत्मसमर्पण करने लगे। श्रीअद्वैतप्रभु, हरिदास ठाकुर, श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीश्रीमन्महाप्रभुके साथ नदियामें एकत्रित हो गये हैं। प्रभुके परमभक्त चट्टगाँव-निवासी पुण्डरीक विद्यानिधिको इसी समय श्रीगौर-भगवान्ने निजधाममें आकर्षित किया। श्रीवासके आँगनमें प्रभु एक दिन नृत्य-कीर्तनानन्दमें मत्त थे। उनके नदियाके सारे भक्तगण वहाँ उपस्थित थे। अचानक उस दिन प्रेमावेशमें विह्वल होकर वे रोते-रोते कहने लगे—

"पुण्डरीक आरे मोर बाप्रे बन्धु-रे।
कबे तोमा देखिब आरे-रे बापरे॥"

चै. भा. म. ७.१३

भक्तवृन्द प्रभुके इस प्रेम-क्रन्दनका मर्म न समझकर व्याकुल हो उठे। पुण्डरीक नाम लेकर प्रभु इतने रोते क्यों है—यह कोई समझ न पाया। भक्तवृन्दने समझा कि पुण्डरीक प्रभुका कोई प्रिय भक्त होगा। प्रभु बाह्य ज्ञानशून्य होकर "बाप पुण्डरीक! तुम कहाँ हो? एकबार आकर दर्शन दो!"—कहकर व्याकुलचित्त हो क्रन्दन कर रहे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हैं। सभी उनके कारण व्याकुल हैं। बाह्य ज्ञान हुए बिना उनसे कुछ पूछ भी नहीं सकते। सभी प्रभुके प्रेम-विह्वल मुखचन्द्रकी ओर देख रहे हैं। गदाधरपण्डित प्रभुको गोदमें लेकर बैठे हैं। कुछ देरके बाद प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। उनके स्वस्थ होनेपर भक्तवृन्दने पूछा—"प्रभो! आप किसके लिए क्रन्दन कर रहे हैं, हमें बताइये! वे कहाँ रहते हैं!"

प्रभुने रोते-रोते मधुर वचनोंसे उत्तर दिया—"तुमलोग सब बड़े भाग्यशाली हो! उनके बारेमें जाननेकी तुम लोगोंकी जिज्ञासा हुई है। उनका बड़ा अद्‌भुत चरित्र है। उनका नाम सुनकर संसार पवित्र होता है। वे देखनेमें तो विषयी-जैसे लगते हैं, उनको कोई पहचान नहीं सकता कि वे वैष्णव हैं। परमपण्डित ब्राह्मण हैं, परम सदाचारी हैं। कृष्णभक्ति-सिन्धुमें डूबे रहते हैं। उनका अश्रु-कम्प-पुलकत-पूरित देह रहता है। गङ्गा-स्नान इस डरसे नहीं करते कि पाद-स्पर्श होगा।

गङ्गामें लोग दतुअन-कुल्ले करते हैं, साबुन लगाते हैं, इन सबको देखकर उनको बड़ी व्यथा होती हैं। इसलिये गङ्गा-दर्शन भी रातके समय करते हैं। उनके विचित्र विश्वासकी एक बात और सुनो! वे देवार्चनके पूर्व गङ्गाजल-पान करके तब देवार्चन आदि नित्यकर्म करते हैं। चटग्राममें रहते हैं, लेकिन यहाँ भी उनका घर है। उनको देखकर जल्दी पहचान नहीं सकोगे। देखनेसे विषयी-जैसे लगेगे। उनको देखे बिना मुझे चैन नहीं पड़ता है। तुमलोग सब उनका आकर्षण करके यहाँ बुलाओ!"

—यह बात कहते-कहते प्रभु पुनः आविष्ट हो गये। "पुण्डरीक! बाप् पुण्डरीक!" कहकर पुनः उच्च स्वरसे रुदन करने लगे।

प्रभुने पुण्डरीक विद्यानिधिको 'बाप्' कहकर क्यों सम्बोधन किया? इसका निगूढ़ तत्त्व है। प्रभु जब श्रीराधिकाके भावसे विभावित होते थे, तब इस प्रकार कहा करते थे। पुण्डरीक विद्यानिधि पूर्वलीलाके राजा वृषभानु थे। यथा—'श्रीगौर गणोद्देशयदीपिका' में—

वृषभानुतया ख्यातः पुरा यो व्रजमण्डले।
अधुना पुण्डरीकाक्ष विद्यानिधि महाशयः॥

प्रभुने पूर्वलीलाके सम्बन्धसे उनको 'पितृ' सम्बोधन किया। भक्तवृन्द इस बातको कैसे समझते? प्रभुके आकर्षणसे पुण्डरीक विद्यानिधि नवद्वीपमें आये।

वे बड़े आदमी, ऐश्वर्य और सम्पत्तिशाली थे। हाथी, घोड़ा, नौकर-चाकर, ब्राह्मण-वैष्णव तथा नाना प्रकारकी द्रव्य-सामग्री साथ लेकर श्रीपुण्डरीक विद्यानिधि नवद्वीपमें आकर गङ्गाके किनारे एक बड़ा मकान किरायेमें लेकर बड़े विलासी पुरुषके समान वहाँ रहने लगे। उनके साथ बहुत-से ब्राह्मण-शिष्य थे, दास-दासी थे। उनको नदियाके लोग परम विषयी और भोग-परायणके रूपमें जानते थे। वे वैष्णव-समाजमें परिचित न थे। केवल प्रभुके परम भक्त सुकण्ठ मुकुन्ददत्त पुण्डरीक विद्यानिधिको जानते थे; क्योंकि उनका निवास-स्थान भी चट्टगाँवमें ही था। दोनोंमें पहले-से परिचय भी था।

विद्यानिधि महाशय नवद्वीपमें आकर विषयी-विलासी पुरुषके समान रहने लगे। उनके आनेका समाचार सुनकर प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। मुकुन्ददत्त प्रभुके अन्तरङ्ग भक्त थे, विशेष कृपापात्र थे। इनका पुण्डरीक विद्यानिधिसे परिचय था। मुकुन्द और वासुदेवदत्त दोनों मिलकर उनका सङ्ग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करते थे। वे विद्यानिधि ठाकुरकी प्रेमभक्तिकी बात विशेषरूपसे जानते थे।

गदाधर और पुण्डरीक

गदाधरपण्डितके साथ मुकुन्दकी मैत्री थी। मुकुन्द उनके नित्य-सहचर, प्रिय मित्र तथा श्रीगौराङ्ग-भजनके प्रधान सहायक थे। मुकुन्द दासके समान गदाधरपण्डितकी सेवा करते थे। नवद्वीपमें जहाँ जो कुछ अच्छा देखते थे या सुनते थे, सबसे पहले आकर गदाधरपण्डितको बतलाते थे। पुण्डरीक विद्यानिधिके नदियामें आनेकी बात मुकुन्दने जाकर हँसते-हँसते अपने प्रिय मित्र गदाधरसे कही—"पण्डित ! यहाँ एक अति अद्‌भुत वैष्णव आये हैं। यदि तुम्हारी इच्छा उनका दर्शन करनेकी हो तो मैं तुमको आज वहाँ ले चलूँ।" —यह सुनकर वैष्णवशिरोमणि गदाधर आनन्दसे गद्‌गद होकर तत्काल मुकुन्दके साथ उस अद्‌भुत वैष्णवको देखने चल पड़े। श्रीकृष्ण-स्मरण करके दोनों आदमी घरसे बाहर निकले।

पुण्डरीक विद्यानिधि धनी-विषयी आदमीके रहनेयोग्य एक उत्तम अट्टालिकाके सुसज्जित कमरेमें राजपुत्रके समान विलासरसमें मग्न होकर बैठे थे। उनकी आकृति और वेष-भूषा परम विलासी धनीके समान थे। बहुत आदमी, दास-दासी, कर्मचारीगणसे परिवेष्टित होकर वे दिव्य पलंगके ऊपर बैठे सुखपूर्वक पान चबा रहे थे। ग्रीष्मकाल था, दोनों ओरसे दो आदमी मयूरपंखके व्यजनसे हवा कर रहे थे।

गदाधरपण्डित गृही-वैष्णवकी संतान होकर भी बचपनसे ही संसारसे विरक्त रहते थे। नदियाके विशुद्ध विप्रकुलभूषण आचार्य माधव मिश्र उनके पिता थे। गदाधरको शैशवसे ही संसारसे वैराग्य था। वे भक्ति-पथके साधक थे। भक्ति-शास्त्रमें पारंगत गदाधरपण्डितके संसारसे विरक्त रहनेकी बात नदियामें सब लोग जानते थे। श्रीपुण्डरीक विद्यानिधि महाशयके बाह्य व्यवहारको देखकर आजन्म-विरक्त गदाधरपण्डितके मनमें उनके प्रति कुछ संदेह उत्पन्न हुआ। मुकुन्द पास ही बैठे थे। उनको गदाधरपण्डितके मनका भाव समझते देर न लगी।

विद्यानिधि ठाकुर महाशयने गदाधरपण्डितके मुखकी ओर देखकर मुकुन्दसे हँसते हुए पूछा—"मुकुन्द ! इनका क्या नाम है ? कहाँ निवास-स्थान है ? इनकी परम सुन्दर आकृति-प्रकृति देखकर जान पड़ता है कि ये कोई परम भगवद्‌भक्त हैं। इनका शरीर वैष्णव-तेजसे पूर्ण है।"

मुकुन्दने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—"इनका नाम श्रीगदाधरपण्डित है। ये श्रीमाधवाचार्य मिश्रजीके पुत्र हैं। ये भाग्यवान् पुरुषरत्न शैशवसे ही संसार-विरक्त हैं। भक्तिमार्गके साधक हैं। नदियाके सारे वैष्णव इनसे विशेष प्रीति करते हैं। आपका नाम सुनकर आपका दर्शन करनेके लिए ये मेरे साथ आये हैं।" पुण्डरीक विद्यानिधिने गदाधरपण्डितका परिचय प्राप्तकर अत्यन्त आनन्दित होकर उनसे आदरपूर्वक सम्भाषण करके पास बैठाया।

गदाधरपण्डितके मनका संदेह मनमें ही रह गया। वे सोचने लगे—"ये कैसे वैष्णव हैं। विषयी लोगोंका-सा दिव्य वेश और दिव्य भोग, केशोंमें दिव्य गन्ध है। इनके प्रति जो भक्तिभाव था, वह सब इनको देखकर नष्ट हो गया।"

बुद्धिमान् मुकुन्द अपने प्रिय मित्र गदाधरके मनकी बात ताड़ गये। उनका मुख देखकर वे मित्रके मनोभावको समझ गये। तब मुकुन्दने भक्त-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चूड़ामणि पुण्डरीक विद्यानिधिको प्रकाशमें लानेकी इच्छा की।

पुण्डरीककी प्रेमविह्वलता

मुकुन्दका कण्ठस्वर सुन्दर है, प्रभुके कृष्ण-कीर्तनके वे प्रधान गायक हैं; वे भक्ति-शास्त्रके भी अच्छे पण्डित हैं। मुकुन्दने सुर-तालके साथ श्रीमद्भागवतका निम्नलिखित श्लोक मधुर स्वरमें पाठ किया।

अहो बकी यं स्तनकालकूटं
जिघांसया पायदप्ययसाध्वी।
लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं
कं वा दयालुं शरणं व्रजेम॥*

भा. ३.२.२३

अर्थ—"अहो! बकासुरकी बहन पूतनाने जिसको मार डालनेकी इच्छासे अपने स्तन-युगलमें काटकूट विष लगाकर पान कराया था, परन्तु तिसपर भी वह कुबुद्धि-परायणा, असाध्वी जिसके द्वारा धात्रीपदके योग्य गतिको प्राप्त हुई। बतलाओ, उसके सिवा अन्य किसकी शरणमें जावें।"

निश्छल कृष्ण-भक्तिपूर्ण इस श्रीभागवतीय पुण्य श्लोकको सुनते ही विद्यानिधि महाशयकी दोनों आँखोंमें मुक्ताकी मालाके समान अपूर्व प्रेमाश्रुधारा दिखलायी पड़ी। वे प्रेमविह्वलभावसे अजस्र आँसू बहाते हुए रोने लगे। उनकी दोनों आँखोंमें मानो गङ्गाजीका आविर्भाव हो गया। उनके अङ्गमें एकवारगी अष्ट सात्त्विक भाव-तरङ्गें उदय हो गयीं। हुंकार-गर्जन करके मुकुन्दकी ओर देखकर वे 'बोलो, बोलो' कहकर जोरसे चिल्लाने लगे। वे दिव्य पलंगके ऊपर बैठे थे। अब वहाँ स्थिर न रहकर भूतलपर जा गिरे और प्रेममें भरकर "हा कृष्ण! हा कृष्ण" कहकर धूलमें लोटने लगे और करुण स्वरमें क्रन्दन करने लगे। मुकुन्द भी प्रेमानन्दमें विभोर होकर उस उत्तम श्लोकका पुनः-पुनः पाठ करने लगे। वे जितना ही पाठ करते, विद्यानिधि महाशय उतना ही विह्वल होकर पछाड़ खाकर क्रन्दन करते हैं। कृष्णप्रेममें उन्मत्त होकर उन्होंने पहने हुए वस्त्रको फाड़कर दो-टूक कर दिया और पैरोंसे ठोकर मारकर दिव्य पानदान, दिव्य ताम्बूल और जलकी झारी आदि घरके सारे सामान दूर फेंकने लगे। बहुमूल्य वस्तुएँ टूटकर चूर-चूर हो गयीं, किसी ओर उनका ध्यान न था। वे कभी-कभी मुकुन्दके मुँहकी ओर देखते हैं और उच्च स्वरमें 'बोलो-बोलो' कह रहे हैं एवं करुण स्वरमें विलाप कर रहे हैं—

कृष्ण रे! ठाकुर रे! कृष्ण मोर प्राण।
मोरे से करिला काष्ठ पाषाण समान॥

चै. भा. म. ७.८४

वे प्रेमविह्वलभावमें एक बार उठते हैं और फिर भूतलपर पछाड़ खाकर गिर पड़ते हैं। सभी उपस्थित लोगोंके मनमें हो रहा है कि उनके शरीरकी अस्थियाँ चूर-चूर हो गयीं। वे लोग भी रोने लगे। घोर अनुतापकी अग्निमें दग्ध होकर आर्त स्वरसे रो-रोकर वे मुकुन्दसे कहते हैं—

"मुञि से बञ्चित हैलूँ हेन अवतारे।"

चै. भा. म. ७.८५

उनकी प्रेमविह्वलता देखकर मुकुन्द और गदाधरपण्डित जड़वत् स्तम्भित हो गये हैं।

---

* अपिच दशमस्कन्धे—
पूतना लोकबालघ्नी राक्षसी रुधिराशना।
जिघांसयापि हरये स्तनं दत्त्वाऽऽप सद्गतिम्॥
भा. १०.६.३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विद्यानिधि महाशय अब मूर्च्छित होकर भूतलपर पड़े हैं। वे परमानन्दमें मग्न होकर निश्चेष्ट हो गये हैं।

गदाधरपण्डित विद्यानिधि महाशयकी प्रेम-विह्वलताको देखकर अतिशय विस्मित हुए। उनके मनमें विषम पश्चात्तापकी व्यथा उत्पन्न हुई—"ऐसे महान् आत्माकी मैंने अवज्ञा की।" मुकुन्दको गोदमें लेकर गदाधर भी अजस्र-नयन क्रन्दन करने लगे। उनके नयन-जलसे मुकुन्दके सारे अङ्ग सिञ्चित हो गये। गदाधरपण्डितके मनमें हुआ कि वे विद्यानिधि महाशयके सामने विषम वैष्णवापराधके अपराधी हैं। किस प्रकार उनका यह अपराध-मार्जन होगा, इसका उपाय मन-ही-मन निश्चय करके मुकुन्दको सम्बोधन करके वे रोते हुए बोले—"मुकुन्द! इनके प्रति मेरे मनके दुर्भावको जानकर तुमने इनकी त्रैलोक्य-पावन भक्तिके दर्शन कराकर मित्रके कर्तव्यका पालन किया है। मेरे वैष्णवापराधका यही मार्जन हो सकता है कि मैं इनसे मन्त्रदीक्षा लेकर इनका शिष्य बन जाऊँ।"

गदाधरका मन्त्रदीक्षाके लिए संकल्प

गदाधरपण्डितने अभी मन्त्रदीक्षा नहीं ली थी। विद्यानिधि महाशयको उपयुक्त सद्गुरु जानकर तथा उनके पास निजकृत इस अपराधको नष्ट करनेकी इच्छासे गदाधरपण्डितने उनसे मन्त्र लेनेका संकल्प किया। मुकुन्द अपने प्रिय मित्रके मुखसे यह साधु-संकल्प सुनकर अतिशय आनन्दित हुए। दोनों आदमियोंमें जब यह हार्दिक वार्तालाप चल रहा था, विद्यानिधि महाशय उस समय भी प्रेमानन्दमें बेहोश थे। दो प्रहरके बाद उनको बाह्य ज्ञान हुआ। गदाधरपण्डित और मुकुन्द दोनों आदमी उनके पदतलमें बैठकर सेवा-शुश्रूषा कर रहे थे। गदाधर-पण्डितके अश्रुजलसे उनका सारा अङ्ग आप्लावित हो रहा था।

श्रीपुण्डरीक विद्यानिधिने कुछ देरके बाद आत्मसंवरण करके गदाधरपण्डितको छातीसे लगाकर प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान किया। इससे भक्तिप्राण गदाधरके हृदयका प्रेमानन्दावेग दूना बढ़ गया, उनकी आँखोंसे नदीके स्रोतके समान प्रेमाश्रुधारा बह चली। अत्यन्त आदरपूर्वक उन्होंने विद्यानिधि महाशयके प्रेमालिङ्गनको ग्रहण किया।

हृदयावेगके कारण गदाधरके मुँहसे बात न निकल सकी। वे अपने मनके भावको प्रकट न कर सके। मुकुन्द उनकी ओरसे विद्यानिधि ठाकुरसे विनयपूर्वक बोले—"आपका बाह्य जीवन देखकर इनका मन आपके प्रति दूषित हो गया था। अब ये उसके प्रायश्चित्तके रूपमें आपसे मन्त्रदीक्षा लेना चाहते हैं। ये शैशवकालसे ही विरक्त विष्णुभक्त हैं। आपके शिष्य होनेके योग्य हैं। कोई शुभ दिन देखकर इनको मन्त्रदीक्षा देनेका अनुग्रह करें।"

मुकुन्दकी बात सुनकर पुण्डरीक विद्यानिधि हँसने लगे। गदाधरपण्डितके समान शिष्य प्रभुने उनको प्राप्त करा दिया—यह सोचकर उनका मन आनन्दरससे आप्लावित हो उठा। वे प्रभुकी कृपासे गदाधर-तत्त्व कुछ-कुछ जानते थे। प्रभुकी कृपाकी बात स्मरण करके, आनन्दसे गद्गद होकर मुकुन्दसे बोले—"मुकुन्द! तुमने आज मुझे एक महान् रत्नसे भेंट करा दी। बड़े भाग्यसे ऐसा शिष्य प्राप्त होता है। तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी। आगामी शुक्ल द्वादशी तिथिको बड़ा मङ्गलमय मुहूर्त है। उस शुभ दिनको गदाधरका संकल्प सिद्ध होगा।"

बिद्यानिधि महाशयकी आश्वासन-वाणी सुनकर गदाधरपण्डित आनन्दसे गद्गद होकर उनको प्रणाम करके एवं उनकी चरण-धूलि लेकर वहाँसे विदा हुए। मुकुन्दऔर गदाधरपण्डित विद्यानिधि ठाकुरके घरसे निकलकर उनकी ही बातें करते हुए गङ्गाके तीरपर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आये। वहाँ बैठकर कुछ देरतक इन सब विषयोंकी आलोचना करते रहे। पश्चात् मुकुन्दके घर गये। गदाधर प्रभुके श्रीमन्दिरमें आये। उस समय रात हो गयी थी। प्रभुसे उन्होंने विद्यानिधिकी बात कही। प्रभु सुनकर कुछ मुस्कुरा दिये।

पुण्डरीकद्वारा प्रभु-दर्शन

उसी दिन रातमें भक्तचूड़ामणि पुण्डरीक विद्यानिधि अति दीनवेषमें अकेले ही प्रभुके दर्शनके लिए आये। प्रभुकी उनसे यह पहले-पहल भेंट है। उन्होंने नदियाके अवतारकी बात सुनी है। उनको विश्वास है कि नदियाके अवतार शचीनन्दन पूर्णब्रह्म सनातन स्वयं-भगवान् हैं। आज वे उसी कलि-पावनावतार श्रीश्रीगौर-भगवान्‌के दर्शनके लिए जा रहे हैं। उनके मनमें कितनी भाव-तरङ्गें उठ रही हैं, वे भावग्राही प्रभु ही जानते हैं। वे सोच रहे हैं—"अहा! मेरे-जैसे अभागेको श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त होगा? मैंने ऐसी कौन-सी सुकृति की है?"

–इस प्रकार सोचते-सोचते पुण्डरीक विद्यानिधि आनन्दमें विभोर होकर निमाईपण्डितके द्वारपर आकर उपस्थित हुए। बाहरी घरके द्वारको देखकर सोचने लगे—"क्या यही वह वैकुण्ठपुरी है? इसी स्थानमें लक्ष्मीनारायण विराजते हैं?"

नदियाके अवतार प्रेममय श्रीगौरसुन्दर राधाशक्ति गदाधरके साथ अपने मन्दिरमें आनन्द-विहार कर रहे हैं। पुण्डरीक विद्यानिधि सिर झुकाये प्रभुके सामने जाकर खड़े हो गये। उनकी दृष्टि प्रभुके श्रीचरण-युगलपर थी, केवल एक वार मुख-चन्द्रकी ओर ताकते ही विद्यानिधिको मूर्च्छा आ गयी। वे प्रभुको दण्डवत्-प्रणामतक न कर सके। प्रेमानन्दमें मूर्च्छित होकर वे भूतलपर गिर पड़े। प्रभुकी इच्छासे क्षणमात्रमें उनकी मूर्च्छा-भङ्ग हो गयी। तब उन्होंने हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें दीनतापूर्वक निवेदन किया—

कृष्ण रे! पराण मोर, कृष्ण मोर बाप।
मुञि अपराधीके कतेक देह ताप॥
सर्व जगतेरे बाप! उद्धार करिला।
सबे मात्र मोरे तुमि एकेला बञ्चिला॥

चै. भा. म. ७.१२५,१२६

प्रभुके श्रीमन्दिरमें उस समय कोई-कोई अन्यान्य अन्तरङ्ग भक्तवृन्द भी उपस्थित थे। पुण्डरीक विद्यानिधिकी दीनता और आर्त विलाप-ध्वनि सुनकर वे सबलोग प्रेममें भरकर आकुलतापूर्वक क्रन्दन करने लगे।

करुणामय श्रीगौराङ्गप्रभु दिव्य आसनपर उपविष्ट थे। भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌का हृदय भक्तके करुण आर्तनादसे उन्मथित हो उठा। वे धीरे-धीरे उठकर विद्यानिधिके पास आकर अतिशय स्नेहपूर्वक सादर उन्हें गोदमें लेकर बैठ गये। अपना श्रीहस्त पुण्डरीक विद्यानिधिके शरीरपर रखकर रोते हुए प्रेमभरे मधुर शब्दोंमें बोले—"बाप पुण्डरीक! आज तुमको देखकर मेरा हृदय शीतल हो गया। नयन जुड़ा गये। बहुत दिनोंके बाद आज मैंने अपने बापको देखा"—इतना कहकर दोनों प्रेमालिङ्गनमें बद्ध होकर प्रेमाविष्ट हो गये।

विद्यानिधिका यह जो प्रभुका पितृ-सम्बोधन करना तथा स्त्रीजनके समान 'बाप' कहकर करुण-क्रन्दन करना है, इसका मर्मभाव अति निगूढ़ है। प्रभु जब राधाभावमें विभावित होते थे, तब पुण्डरीक विद्यानिधिको पितृ-सम्बोधन करके उनकी दर्शनाकाङ्क्षासे आकुल होकर रोते थे। पुण्डरीक विद्यानिधि राजा वृषभानुके अवतार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थे। वे भी प्रभुके दर्शनकी लालसासे कातर और विह्वल हो उठते थे। यह सब अत्यन्त गूढ़ बात है। कृपासिद्ध और नित्यदास भावुक साधक-भक्तके विना और कोई इन सब बातोंका तात्पर्य और मर्म पकड़नेमें समर्थ नहीं हो सकता। जिन्होंने सद्गुरुकी कृपाके बलसे पुण्डरीक विद्यानिधि-तत्त्व और प्रभु-तत्त्व दोनोंको भली-भाँति समझा है, वे ही इन सब निगूढ़ रहस्योंका मर्म हृदयंगम कर सकेंगे।

श्रीगौराङ्गप्रभुने विद्यानिधिको वक्षःस्थलमें धारण करके अपने कमल-नयनके प्रेमजलसे उनके सर्वाङ्गको सींच दिया।

इधर विद्यानिधि महाशय भी प्रभुको हृदयसे छोड़ नहीं रहे हैं। प्रभु मानो उनके अङ्गमें लीन हो गये। दुलारभरे पुत्र-कन्या जिस प्रकार स्नेहभरे माता-पिताके अङ्गमें समा जाते हैं, उसी प्रकार दोनों हो गये।

गदाधरपण्डित आदि प्रभुके अन्तरङ्ग भक्तोंने तब समझा कि पुण्डरीक विद्यानिधि प्रभुके एकान्त अनुरक्त भक्त हैं और निजजन हैं। सबलोग उन दोनोंके इस अपूर्व प्रेम-रङ्गको परम प्रीतियुक्त नेत्रोंसे देखने लगे। भक्त और भगवान् एकाङ्गीभूत होकर एक प्रहरतक निश्चेष्टभावसे रहे।

उसके बाद प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। पुण्डरीक विद्यानिधिके मुखकी ओर देखकर सजलनयन होकर प्रभुने कहा—

आजि कृष्ण वाञ्छा सिद्धि कैलेन आमार।
आजि पाइलाङ सर्व-मनोरथ-सार॥

चै. भा. म. ७.१३६

तब प्रभुने एक-एक करके सबके साथ पुण्डरीक विद्यानिधिका परिचय कराया और सबसे बोले—"आजसे इनकी पदवी हुई। 'प्रेमनिधि'। विधाताने इनको प्रेमनिधि-वितरण करनेके लिए ही जगत्में भेजा है।" इतना कहकर भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान् विद्यानिधि महाशयके यश और गुणका वर्णन करके आजानुलम्बित दोनों भुजाओंको ऊपर उठाकर उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे। वे ऊर्ध्वबाहु होकर प्रेमानन्दमें विह्वलभावसे भक्तवृन्दको सम्बोधन करके प्रेमसे गद्गद वाणीमें बोले—

—"**आजि सुप्रभात आमार।**
आजि महामङ्गल बासिये आपनार॥
निद्रा हैते आजि उठिलाङ् शुभ क्षणे।
देखिलाङ् प्रेमनिधि साक्षाते नयने॥"

चै. भा. म. ७.१४०.१४१

विद्यानिधि ठाकुर बाह्यज्ञान-शून्य हो गये हैं। प्रभु जो कुछ कह गये, वह उनके कानोंमें नहीं पहुँचा। वे उस समय प्रभुकी अपरूप-रूप-सुधाको पान करनेमें विभोर थे। प्रभुकी कृपासे उनकी आत्मस्तुति उनके कानोंमें नहीं पहुँची। उनको बाह्य ज्ञान होता तो वे लज्जा से मर जाते।

पुण्डरीक विद्यानिधिको बाह्य ज्ञान हुआ, तब वे अपने अभीष्टदेवके चरणोंमें लोट गये। वहाँ श्रीअद्वैतप्रभु भी थे। उन्हें पहले प्रणाम करके अन्यान्य सभी भक्तवृन्दकी यथायोग्य प्रणाम-नमस्कार और वन्दना की। नदियाके भक्तवृन्द पुण्डरीक विद्यानिधिको पाकर आनन्दसे अपने-आपको भूल गये। प्रभुके मन्दिरमें आज जो आनन्द-स्रोत प्रवाहित हुआ, उसकी तरङ्गोंके आघातसे समस्त नदियावासी भक्तवृन्दके प्राणोंमें प्रेम-उत्स उमड़ उठा। उस प्रेम-उत्सके प्रेम-सलिलसे नदियावासी नर-नारियोंकी सारी कामनाएँ और वासनाएँ धुल गयीं। सारी नदियावासी वैष्णव-मण्डली पुण्डरीक विद्यानिधि महाशयकी भक्ति-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूर्वक प्रेमपूजा करने लगी । उनके सत्त्वगुणसे बहुतसे कृष्ण-बहिर्मुख जीव भक्तिपथके पथिक हो गये ।

सबके अन्तमें गदाधरपण्डितने पुण्डरीकके प्रति अपने मनमें उदित हुए दूषित भाव तथा अपने मन्त्र-ग्रहणके संकल्पकी बात प्रभुसे कही । वे विद्यानिधि महाशयसे मन्त्रग्रहण करेंगे—इस शुभ संकल्पको कार्यमें परिणत करनेमें प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया ।

सर्वज्ञ प्रभु हँसकर बोले "गदाधर ! इस शुभ कर्मको शीघ्र सम्पन्न करो ! कदापि देर न करना ।" प्रभुकी अनुमति पाकर गदाधरपण्डित ज्येष्ठ मासके शुक्लपक्षकी द्वादशी तिथिको श्रीपुण्डरीक विद्यानिधि महाशयसे मन्त्रदीक्षा-ग्रहण करके कृतार्थ हुए । पुण्डरीक विद्यानिधि ठाकुरकी अपार महिमा है । उनकी महिमाका अन्त नहीं है । श्रीवृन्दावनदास ठाकुर एक वाक्यमें अति सुन्दरतापूर्वक उनकी महिमा-कीर्तन कर गये हैं—

कि कहिब आर पुण्डरीकेर महिमा ।
गदाधर शिष्य ताँर—भक्तिर एइ सीमा ॥

चै. भा. म. ७.१५१

गौर-गदाधर-तत्त्वज्ञ कृपालु पाठकवृन्दके सामने विद्यानिधि ठाकुरकी महिमा और कुछ विशेषरूपसे नहीं कहनी पड़ेगी । प्रभुने स्वयं जिनको 'प्रेमनिधि' पदवी प्रदान की है, उन प्रेमनिधिका पुण्य चरित्र यत्किंचित् वर्णन करके मैंने केवल आत्मशोधन किया है । प्रभुकी कृपासे ये प्रेमनिधि हमको प्राप्त हुए हैं । वे हमा हृदयके धन हैं, प्राणकी निधि हैं । सर्वदा हृदयमें उनका ध्यान करनेकी इच्छा होती है और दयामय प्रभुका गुणगान करके जीवन सार्थक करनेकी कामना होती है । कृपालु पाठक-वृन्द ! आइये, सब मिलकर विद्यानिधि ठाकुरके साथ प्रभुका जय-जयगान करें—

जय जय पुण्डरीक बिद्यानिधि प्रेमधन ।
जय जय गौरचन्द्र श्रीशची-जीवन ॥

श्रीपुण्डरीक विद्यानिधिको नवद्वीपमें प्रभुने यह पहले-पहल प्रकट किया । नीलाचल-लीलामें प्रभुने अपने इस प्रियतम अन्तरङ्ग भक्तको पुरुषोत्तम-धाममें आकर्षण कर लिया था । वहाँ उन्होंने प्रेमनिधि ठाकुरके साथ जो लीलारङ्ग किया था, उसका वर्णन नीलाचल-लीला श्रीग्रन्थमें किया जायगा ।

पुण्डरीक विद्यानिधिका पूर्व वृतान्त

श्रीपुण्डरीक विद्यानिधि ठाकुरका पूर्व-वृत्तान्त, जो-कुछ हस्तलिखित प्रतिसे मैं संग्रह कर पाया हूँ, गौर-भक्त पाठकोंकी जानकारीके लिए उसमें-से कुछका वर्णन यहाँ नीचे किया जाता है—

कहा जाता है कि श्रीविद्यानिधि ठाकुरके पिता परम शाक्त थे । पुत्रके पैदा होनेके बाद उनके घरमें वैष्णवता दिखायी देने लगी थी । पुण्डरीक विद्यानिधि बोलना सीख जानेके बाद सदा "हरि-बोल-हरिबोल" की बोली बोलते रहते थे । इससे उनके शक्ति-उपासक माता-पिताके हृदयमें हरि-भक्ति उत्पन्न हुई । चट्टगाँवके मेखलाग्राममें उनका जन्म हुआ था । पुण्डरीक विद्यानिधिके पितृ पुरुषका आदि निवास ढाका जिलाके अन्तर्गत बाघियाग्राममें था । मेखलाग्रामके जमींदार राजाराम चौधरीकी वदान्यतामें विद्यानिधि ठाकुरके पिता बालेश्वर ब्रह्मचारी मेखलाग्राममें वृत्तिके लिए भूमि पाकर वहाँ बस गये । आज भी उनके वंशज इस मेखलाग्राममें बसते हैं । उनके द्वारा प्रतिष्ठित श्रीश्रीलक्ष्मीगोविन्दजीका श्रीविग्रह आज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भी श्रीपाट् मेखलायें उनके वंशजोंके द्वारा पूजित हो रहा है।*

श्रीपुण्डरीक विद्यानिधि ठाकुर श्रीपाद माधवेन्द्रपुरीके शिष्य थे तथा श्रीअद्वैतप्रभु, हरिदास ठाकुर आदि नदियाकी प्रमुख भक्तमण्डलीमें-से एक थे। विद्यानिधि-तत्त्व मैंने पहले कुछ लिखा है। वे श्रीगौराङ्ग-लीलामें राजा वृषभानुके अवतार थे। श्रीश्रीमन्महाप्रभुने श्रीमती राधिकाके भाव और कान्तिको लेकर नदियामें अवतार ग्रहण किया था, अतएव विद्यानिधि ठाकुर उनके पितृस्थानीय थे। इसी कारण वे उनको प्रेममें भरकर "बाप विद्यानिधि, बाप पुण्डरीक" कहकर पुकारते थे। पुण्डरीक विद्यानिधि-तत्त्व-बोधक एक श्लोक बृहन्नारदीप पुराणमें भी देखनेमें आता है।** इस प्राचीन श्लोकसे स्पष्ट प्रमाणित होता है कि जो पूर्व अवतारमें श्रीमती राधिकाके पिता वृषभानु थे, वे ही श्रीगौराङ्ग अवतारमें चन्द्रशेखर पर्वतके समीप मेखलाग्राममें पुण्डरीक विद्यानिधि-रूपमें अवतीर्ण हुए हैं।

श्रीगदाधरपण्डितने श्रीविद्यानिधि ठाकुरके द्वारा मन्त्रदीक्षा ग्रहण करके अपना अभीष्ट लाभ किया। गुरु-शिष्य एकत्र होकर अब नदियाके अवतार श्रीगौर-भगवान्‌की सेवा-परिचर्यामें लग गये। प्रभुके आत्मप्रकाशके साथ-साथ नदियामें उनके नित्य पार्षदगण भी प्रकट होने लगे। विद्यानिधि ठाकुरके नदियामें वास करनेके बाद उनके बहुत-से शिष्य बने। वे उनको श्रीगौराङ्ग-भजनका उपदेश देते रहे। विद्यानिधि ठाकुर भी गौरधर्म-प्रचारक थे। पुण्डरीक विद्यानिधिका विचित्र चरित्र अनुशीलन करनेपर श्रीकृष्ण-पाद-पद्ममें रति होती है और श्रीगौराङ्ग-भजनमें अधिकार प्राप्त होता है। ठाकुर वृन्दावनदासने लिखा है—

पुण्डरीक विद्यानिधिर चरित्र शुनिले।
अवश्य ताहारे कृष्ण-पाद-पद्म मिले॥

चै. भा. अं. ११.१८०

श्रीराधाष्टमी-महोत्सव

अब विद्यानिधि ठाकुर नदियामें वास करने लगे। वे बड़े सम्पत्तिशाली धनवान् पुरुष थे। उनके घरमें नित्य ही उत्सव-आनन्द होता था। नदियाके भक्तवृन्द उनके घर जाकर आनन्दोत्सवमें योगदान करते थे। वैष्णवोंके नित्य क्रिया—कलाप तथा सारे उत्सव-पर्व आदि उनके घर पर अनुष्ठित होते थे। प्रभु स्वजनके सङ्ग उनके घर जाकर आनन्द लेते थे।

श्रीराधिकाकी जन्मोत्सव-लीला पुण्डरीक विद्यानिधिके घरमें बड़े समारोहके साथ मनायी जाती है, इसे सर्वज्ञ प्रभु जानते थे। नदियाके कृष्णभक्त वैष्णवगण श्रीश्रीराधाष्टमी-पुण्यतिथिका उत्सव मनानेकी आशामें उत्कण्ठित होकर बैठे हुए हैं। वह शुभ दिन आ ही गया। नदियावासी सब वैष्णवोंके मनमें अपार आनन्द है। कल श्रीश्रीवृषभानु-नन्दिनीकी जन्मोत्सव-लीला है। नदियामें उत्सवके आनन्दकी तरङ्ग उठ रही है।

श्रीवासके आँगनमें बैठकर श्रीगौराङ्गप्रभु इस शुभ उत्सवके अनुष्ठानकी बात कहते-कहते पुण्डरीक विद्यानिधिकी ओर देखकर हँसते हुए बोले—

---

*भारतका विभाजन होकर पाकिस्तान होनेके बाद इसका कोई अनुसंधान नहीं मिलता।

**कलेः प्रथमसंध्यायां पुण्डरीको भविष्यति।
विद्यानिधीति विख्यातो बङ्गस्थे पूर्वचट्टले॥
कर्मख्ये भारते वर्षे चन्द्रशेखर संनिधौ।
वृषभानुः पुरेदानीं धीमतीजनकस्तु सः॥
बृहन्नारदीप पुराण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"विद्यानिधि ! तुम्हारे घर कल श्रीराधिकाका जन्मोत्सव होगा।" प्रभुके श्रीमुखसे यह बात सुनकर पुण्डरीक विद्यानिधिका हृदय आनन्दसे नाच उठा। वे प्रभुके चरणोंमें गिरकर मनमें आनन्दित होकर प्रेमाश्रु-वर्षण करने लगे। प्रभु हाथ पकड़कर विद्यानिधिको उठाकर बोले—"तुम घर जाकर सब प्रबन्ध करो, कल भक्तोंके साथ मैं तुम्हारे घर उत्सवमें योगदान करूँगा।"

विद्यानिधि महोदय मनमें उल्लसित होकर अपने घर गये। उनके पास अर्थका अभाव न था, जन-बल भी पर्याप्त था। श्रीराधिकाके जन्मोत्सवकी तैयारी बड़े समारोहके साथ हुई। पत्र-पुष्पसे गृहद्वार सुशोभित हुआ, संगीतका आयोजन किया गया। अन्तरङ्ग भक्तवृन्द आमन्त्रित किये गये। आज विद्यानिधिके घरमें महा आनन्द है। विद्यानिधि स्वयं याज्ञिक हैं। नदियाके भक्तवृन्द तैयारीमें लगे हैं।

सारी तैयारी हो जानेपर श्रीगौराङ्ग-सुन्दर गोप-वेषधारी अन्तरङ्ग गणोंके साथ नृत्य करते हुए विद्यानिधिके घरपर आ पहुँचे। रसिकशेखर श्रीगौराङ्ग भी आज गोप-वेषमें हैं, साथमें गदाधर हैं। प्रभु गदाधरके मुँहकी ओर देखकर मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। दोनोंकी आँखोंसे मानो आनन्दका फव्वारा छूट रहा है। शनैः-शनैः प्रभुके हृदयके व्रज-रससमूह उमड़ आया। मुकुन्द, माधव, वासु घोष मधुर स्वरमें समयोचित गान गाकर आनन्दवर्द्धन कर रहे हैं। खोल-करताल और मृदङ्गकी मधुर ध्वनिसे विद्यानिधिका घर मुखरित हो रहा है।

गदाधरको वामभागमें लेकर श्रीगौराङ्ग-सुन्दर मधुर नृत्य कर रहे हैं; नृत्यावेशमें प्रभुके अङ्गकी नव-नव शोभा देखकर भक्तवृन्दके मनमें आनन्द नहीं समाता। प्रभुके अङ्गकी शोभा अतुलनीय है। भुवन-मङ्गल खोल-करतालकी ध्वनिसे विद्यानिधिका घर मुखरित है। प्रेमावेशमें प्रभुके मधुर नृत्यसे धरणी डोल रही है।

गौरीदास पण्डितके कंधेपर दही-दूधका भार है। वे भी गोप-वेषमें नृत्य कर रहे हैं; पुण्डरीक विद्यानिधि भी नाना भावसे प्रभुके साथ नृत्य कर रहे हैं। बीच-बीचमें दधि-हरिद्रा लेकर वे भक्तवृन्दके मस्तकपर छिड़क रहे हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभु, अद्वैताचार्य, श्रीवास आदि सभी प्रभुका रङ्ग देखकर आनन्द-सागरमें निमज्जित हो रहे हैं। प्रभुके श्रीअङ्गोंकी कान्तिसे वे आँखें फिरा नहीं पा रहे हैं। पुण्डरीक विद्यानिधिके सुविस्तृत प्राङ्गणमें नदियावासी नर-नारीवृन्द आज एकत्रित हुए हैं। आँगनके चारों ओर खड़े होकर वे लोग एकटक नवद्वीपचन्द्रकी अपूर्व रूप-माधुरी-दर्शन करके मन-प्राणको शीतल कर रहे हैं।

पुण्डरीक विद्यानिधिके आनन्दकी सीमा नहीं है। उनके घर आज श्रीराधिकाका जन्मोत्सव है। प्रभु भक्तगणके साथ गोप-वेषमें नृत्य कर रहे हैं, भक्तगण घूँट-घूँट प्रभुकी अपरूप-रूप-सुधा-पान कर रहे हैं। सभी व्रजरसमें उन्मत्त हैं। श्रीराधिकाके जन्मोत्सवके अनुष्ठानमें गदाधरके मनमें आज बड़ा आनन्द है। उनसे भी अधिक आनन्द प्रभुके मनमें है। इसी कारण वे शनैः-शनैः व्रजरसमें मतवाले हो रहे हैं।

वे गदाधरके मुख-चन्द्रकी ओर एक-एक बार चञ्चल दृष्टिसे देखते हैं और मन्द-मन्द मुसकाते हैं। गदाधर लज्जासे मुख-चन्द्रको अवनत करके प्रभुके वामभागमें खड़े हैं। दोनोंकी आँखोंसे प्रेमाश्रुधारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बह रही है। उनके नयनद्वय मानो सजल जलद हैं, अविश्रान्त धारा गिर रही है।

भक्तवृन्द देखते हैं कि प्रभु व्रज-भावावेशमें बाह्य ज्ञानशून्य हैं। गदाधर राधाभावमें विभोर हैं। गौरीदासपण्डित गौरी-भावमें अपने-आपको भूल गये हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु महाप्रभुका रङ्ग देखकर प्रेमानन्दमें हुंकार कर रहे हैं। अद्वैताचार्य एकटक प्रभुकी श्रीअङ्ग-कान्तिका दर्शन करते-करते जड़वत् होकर भूमिपर बैठ गये हैं। श्रीवासपण्डित दधि और हल्दीसे लिप्त कलेवरसे भूमिमें लोट रहे हैं। मुकुन्दके कीर्तनसे भक्तवृन्द मन्त्रमुग्ध हैं। पुण्डरीक विद्यानिधि आनन्दसे बेसुध होकर अजस्र अश्रु बहाते हुए क्रन्दन कर रहे हैं और प्रेमानन्दमें नृत्य कर रहे हैं। प्रभु जो कर रहे हैं, वह वर्णनातीत है। ठाकुर नरहरिने लिखा है—

श्रीराधिका जन्म अभिषेक एथा हैल।
कि बलिब प्रभु भावावेशे जाहा कैल॥

पदकर्ता घनश्यामदास एक पदमें प्रभुके इस मधुमय लीलारङ्गका अति सुन्दर मधुर भाषामें कीर्तन कर गये हैं—

आजु कि आनन्द, विद्यानिधि घरे,
राधिका जन्म चरित गाने।
नाचे से आवेशे, शचीसुत गोरा,
से नव भङ्गि कि उपमा आने॥

चारि पाशे गोप— वेषे परिकर,
काँधे भार फिरे अङ्गने रङ्गे।
नवनीत-दधि, हरिद्रादि देइ,
हासि हासि सभे सभार अङ्गे॥

मृदङ्ग-मंजिरा, शङ्ख-करताल,
नाना वाद्य वाय वादक ताले।
सुमधुर ध्वनि, भेदये गगन,
के ना नाचे धिग् धिग् धेन्नाना ताले॥

विविध मङ्गल, करे नारीकुल,
पुलकित चित उलूलू दिया।
वृषभानुपुर, सम शोभा भणे,
घनश्याम सुखे उथले हिया॥

वासुदेव घोष अपने भाई माधवके साथ इस आनन्दोत्सवमें उपस्थित थे। श्रीराधिका-जन्मोत्सवके इस अपूर्व दृश्य और श्रीश्रीगौरकिशोरके नृत्य-कालीन अपरूप-रूप-लावण्यका दर्शन करके उन्होंने मुग्ध होकर लिखा था—

"गोरारूपे कि दिब तुलना।
तुलना नहिल रे कषित वाण सोना॥

मेघेर बिजुरी नहे, रूपेर समान।
तुलना नहिल रूपे चम्पकेर दाम॥

तुलना नहिल रूपे केतकीर दल।
तुलना नहिल गोरोचना निरमल॥

कुंकुम जिनिया रूप अति मनोहरा।
कहे वासु कि दिया गड़िला विधि गोरा॥"

श्रीराधिकाके जन्मोत्सवके बाद श्रीश्रीगौराङ्ग-सुन्दर पूर्वलीलाका स्मरण करके त्रिभङ्ग भावमें विद्यानिधिके आँगनमें खड़े हो गये। गदाधर प्रभुके वामभागमें खड़े हैं। पुण्डरीक विद्यानिधिने व्रज-रसमें विभोर होकर वंशी लाकर प्रभुके श्रीहस्तमें दे दी। रसिकशेखर श्रीगौराङ्गने अधरपर मुरली रखकर वंशीके छेदमें एक फूँक लगायी। अपनी कनक-चम्पकरूप अँगुलियोंके द्वारा सुललित गान प्रारम्भ कर दिया। व्रजरस-विभोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदियावासी नर-नारीके मनको निमज्जितकर श्रीगौराङ्ग-सुन्दरकी मधुर मुरलीकी गीतध्वनिने विद्यानिधिके आँगनको मुखरित कर दिया। सारी नदिया व्रजभावमें उन्मत्त हो उठी। पशु-पक्षी, तरु-लतापर्यन्त पुलकित हो उठे। श्रीगौराङ्गके अन्तरङ्ग मर्मी भक्त वासुदेव घोष अपनी आँखों उस सुमधुर नयनानन्द-नवद्वीप-लीलाका दर्शन करके पद-रचना करके अङ्कित कर गये हैं—

"सोङरि पूरब लीला त्रिभंग हइला।
मोहन-मुरली गोरा अधरे धरिला॥

मुरलीर रन्ध्रे फूँक दिला गोरा चाँद।
अंगुलि चालाया करे सुललित गान॥

नगरेर जत लोक शुनिया मोहित।
सुरधुनि-तीरे तरु-लता पुलकित॥

वासुदेव घोष ताहा कि बलिते जाने।
भुवन मोहिल गोरा मुरलीर गाने॥"

विद्यानिधिके घरमें उस दिन जो आनन्द हुआ, उसको लिख करके वर्णन करनेकी भाषा ही अभी नहीं सृष्ट हुई है। श्रीगौरकिशोर व्रजकिशोर-वेषमें व्रजलीलाके प्रत्येक अङ्गका अभिनय करके नवद्वीपवासी अन्तरङ्ग भक्तवृन्दके मनमें नित्य अभिनय सुख-प्रदानकर व्रजभावको स्फुरित करते थे। व्रज-रसास्वादनमें उन्मत्त होकर नदियावासी भक्तगण अनुरागमें भरकर श्रीगौराङ्गसुन्दरका व्रजकिशोर श्रीनन्द-नन्दनके भावमें भजन करते थे—

"व्रजेन्द्र नन्दन जेइ, शचीसुत हैल सेइ।"

इसी विश्वाससे वे मनकी साधसे प्राण-गौराङ्गको लेकर नित्य अभिनव व्रजलीलाके माधुर्यमें मग्न रहते थे। इस प्रकार नवद्वीप-रस धीरे-धीरे व्रज-रसमें मिल गया। इस अपूर्व संमिश्रणसे जो सार निकला, उससे विभावित होकर महानुभाव गौर-भक्तवृन्दने नाना भावमें अनेक प्रकारके नदिया-नागरी पदोंकी रचना की है। इसी कारण महाजनगण नवद्वीपधामका 'नव-वृन्दावन' नाम रखे गये हैं।

पुण्डरीक विद्यानिधि महाशय वृषभानुके अवतार थे। इसी कारण प्रभुने वृषभानु-नन्दिनीके जन्मोत्सवका अनुष्ठान उनके घर कराकर नदिया-वासियोंके हृदयमें व्रजरसकी तरङ्गें उठायीं।

विद्यानिधिके घरमें आज नदिया-माधवने जो मधुर लीलारङ्ग प्रकट किया, उसका आभास साधक-श्रेष्ठ अमर कवि चण्डीदासको बहुत पहले मिल गया था। वे सर्वज्ञ थे। अस्सी वर्ष पहले उन्होंने दिव्यचक्षुसे श्रीगौराङ्ग-अवतारके स्वरूप और लीलाका दर्शन किया था। उसे वे अति मधुर भाषामें लिख गये हैं। उनका वह अपूर्व मधुमय पदरत्न यहाँ उद्धृत किया जाता है—

आजु के गो मुरली बाजाय।
एत नहे कभू श्यामराय॥

इहार गौर वरणे करे आल।
चूड़ाटि बाँधिया केवा दिल॥

ताँहार इन्द्र-नीलमणिकान्त तनु।
एत नहे नन्दसुत कानु॥

इहार रूप देखि नवीन आकृति।
नटवर वेश पाइल कान्ति॥

वनमाला गले दोले भाल।
हेन वेश कोन देशे छिल॥

कुञ्जे छिल कानू-कमलिनी।
कोथा गेल किछुइ ना जानि॥

आजु केन देखि विपरीत।
हबे बूझि दोंहार चरित॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चण्डीदास मने मने हासे।
ए रूप आर हबे कोन देशे ॥

दयाके अवतार श्रीगौराङ्गप्रभु साधक भक्तके मनकी साध पूर्ण करके श्रीधाम नवद्वीपमें अवतीर्ण होकर श्रीगौराङ्ग-रूपमें प्रकट हुए और वहाँ नये भावमें व्रज-लीला प्रकट की।

प्रभुकी यह नवद्वीप-लीला बड़ी मधुर है इसमें व्रज-लीलाके सारे अङ्ग वर्तमान हैं। नवद्वीप-रस व्रज-रसके साथ मिलकर अपूर्व उपादेय वस्तु बन गया है। इसके आस्वादनसे उभय रसके रसिक भक्तवृन्दके मनःप्राण प्रेमानन्दसे भरपूर हो जाते हैं। कृपालु गौरभक्तवृन्द! नवद्वीप-रस-सम्भार आप ही लोगोंका निजस्व धन है। आपलोगोंकी कृपाके भिखारी, जीवाधम ग्रन्थकारका केश पकड़कर आपलोग ही यह अखण्ड-खण्डसार इसके द्वारा वितरण करा रहे हैं। पूर्णतः अयोग्य पात्रको यह गुरुतर भार सौंपकर आपलोगोंने इसको विषम स्थितिमें डाल दिया है। सर्वविपद्हारी श्रीगौराङ्ग-हरि इस विपद्से बचावेंगे। उत्तम वस्तुके प्रचारकको पद-पदपर विपत्ति आती है। यदि प्रचारक लोभरहित न हो तो और भी विपद् है। और इस कार्यमें लोभ-शून्य होनेपर विपद्की सीमा नहीं होती; अतएव दोनों ओरसे संकट है।

ए शङ्कटे तार गौरहरि।
तोमार दूहि राँगा चरणे धरि ॥

पैंतीसवाँ अध्याय

श्रीश्रीनित्यानन्द-माहात्म्य श्रीवासपंडितकी परीक्षा और आइका स्वप्न।

प्रभु वाक्य—
तिलार्द्धेको इहाने जाहार द्वेष रहे।
भक्त हइलेओ से आमार प्रिय नहे ॥
चै. भा. म. १२.५६

नित्यानन्दप्रभुके रूपके प्रति आकर्षण

सारी नदियामें अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु प्रेमानन्दमें परिभ्रमण करते हैं। सब जगहोंमें वे आते-जाते हैं। सभी उनकी भक्ति और सम्मान करते हैं। बालस्वभाव नित्यानन्द नदियाके बालक-वृन्दके प्राण हैं। वे जब नदियाके रास्तेपर निकलते हैं तो अनगिनत नदिया-बालक उनके साथ स्वच्छन्द और परम आनन्दपूर्वक क्रीड़ा करते हैं। वे बालकोंको कंधेपर चढ़ाकर रास्तेमें मधुर नृत्य करते हैं। उनको स्नेहपूर्वक मिठाई खिलाते हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु सदा ही बालभावमें प्रेमानन्दमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मत्त रहते हैं। कभी गङ्गाजलमें तैरते हुए जल-विहार-लीलामें मत्त हैं। कभी नदियाके मार्गमें बालवृन्दके साथ कौतुकपूर्ण बाल्य क्रीड़ामें रत हैं। कभी प्रभुके मन्दिरमें जाकर आइके साथ बाल-भाषा और बाल्यभावमें नाना प्रकारकी लीलाएँ करते हैं। कभी मुरारिगुप्त या गङ्गादासपण्डितके घर जाकर उनके साथ रसमय हास-परिहास करते हैं।

शचीमाता उनको पुत्रवत् स्नेह करती हैं, परन्तु जब वे बाल्य भावमें आइका चरण पकड़ने जाते हैं तो श्रीगौराङ्ग-जननी लजाकर भाग जाती हैं।

नदियाके पथपर जब गौर-निताई दोनों भाई एक साथ निकलते हैं तो जान पड़ता है, मानो दिनमें चन्द्र और सूर्य एक साथ उदय हुए हैं। नदियाका मार्ग आलोकित करके दोनों भाई हाथ-में-हाथ मिलाये रङ्ग-ढङ्गमें प्रेमरङ्गमें नाना प्रकारके कौतुकरसमें मग्न होकर चलते हैं। नदियावासी नर-नारी निर्निमेष नेत्रोंसे उनकी अपरूप-रूप-राशिका दर्शन करके जीवन सार्थक करते हैं।

इतना रूपवान् मनुष्य तो नदियावासी लोगोंके देखनेमें कभी नहीं आया; इतने दिनोंतक वे शचीनन्दनके रूप-सागरमें निमग्न थे। अब देखते हैं कि यह अपरूप रूप-सागरका एक प्रबल प्रवाह आ गया। वह रूपका प्रवाह यहाँ नवद्वीपमें आकर उनके हृदयमें प्रवेश कर गया। वे गौर-नित्यानन्द-रूप-सागर-संगममें कूद पड़े। वे तैरनेमें पटु नहीं है; रूप-सागरकी तरङ्गमें पड़कर अब वे दोनों कूलको डुबाकर गोते खा रहे हैं।

सौभाग्यवान् सारे नदियावासी नर-नारी उनके रूपसे मुग्ध हो गये। रूपके सागर गौर-निताईके अपरूप-रूपके-आकर्षणमें उनका मन दोनों भ्राताओंके चरणोंमें दृढ़रूपसे आकृष्ट हो गया। रूपका आकर्षण अति तीव्र होता है। गौर-निताईको एक दण्ड बिना देखे नदियावासियोंको सारा जगत् शून्य लगता है, सारा धर्म-कर्म त्यागकर वे सारे दिन गौर-निताईके साथ-साथ घूमते हैं। रातमें घरपर सोते हैं तो स्वप्नमें श्रीश्रीगौर-नित्यानन्दकी अपूर्व रूप-राशिका दर्शन करते हैं।

अहा! श्रीभगवान्‌के रूपमें इतना आकर्षण है! जगत्‌के जीवोंका उद्धार-कार्य रूपनिधि श्रीभगवान्‌के अपरूप-रूपके प्रभावसे ही संसिद्ध होता है। इसीके लिए अरूप ब्रह्म सरूप होकर भूतलमें अवतार ग्रहण करते हैं। अरूप भगवान् अज, निर्गुण, निर्विकार, निर्लिप्त परम ब्रह्म हैं। सरूप भगवान् अवताररूपी जन्मधारी, सगुण, मायाधीश, अपने सृष्ट जीवोंके अत्यन्त आत्मीय जन हैं। वे हमारे बीच हमारे-जैसा बनकर आते हैं, मनुष्यके समान संसारमें लिप्त होते हैं, अपनी अपरूप मायामें सब लोगोंको वशीभूत करते हैं, अपरूप-रूप-छटासे सबका चित्त आकर्षण करते हैं।

शचीनन्दन स्वयं-भगवान् नन्दनन्दन श्रीकृष्ण हैं। वे स्वयं-भगवान् होकर भी अपने आत्मीय जनोंमें परम आत्मीय, परम स्नेहमय, परम प्रीतिकी वस्तु हैं। वे नदियावासी पुरुषके लिए पुत्रसे भी अधिक प्रिय हैं, स्त्रीके लिए पतिसे भी अधिक प्रिय हैं। पति-पुत्रमें उनकी जो प्रीति होती है, उससे सौ-गुनी अधिक प्रीति शचीनन्दन श्रीगौर-हरिके प्रति होती है। भगवान्‌में इसी गुणके कारण भगवत्ता है, सर्वश्रेष्ठत्व है। उनके रूप-गुण ही उनकी महिमाके प्रकाशक यन्त्र हैं। इसी कारण वे इतना रूप और गुण लेकर भूतलमें अवतार ग्रहण करते हैं।

नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गप्रभु केवल रूपके अवतार नहीं हैं, वे गुणके अवतार हैं, दयाके अवतार हैं और करुणाके अवतार हैं। इतना रूप, इतना गुण, इतनी दया, इतनी करुणा किसी भी अवतारमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने प्रकट नहीं की। इस कारण श्रीगौराङ्ग-अवतार सर्वश्रेष्ठ अवतार है।

अधम कलिग्रस्त जीवकी दुर्गतिका अन्त नहीं है, उनके दुःख-हाहाकारका अन्त नहीं है, उनके त्रितापकी ज्वालाकी सीमा नहीं है। अंश या कलावतारके द्वारा उनके उद्धारका कार्य सिद्ध न होगा, इसी कारण स्वयं-भगवान् श्रीगौराङ्ग-रूपमें नदियामें अवतीर्ण हुए थे। कलिग्रस्त जीवके एकमात्र उपास्य श्रीगौराङ्गप्रभु हैं। उनके लिए युगानुवर्ती भजन श्रीगौराङ्ग-भजन है।

गौर-निताई दोनों भाई एक ओर तो अपने अपरूप-रूप-लावण्यकी छटासे आकर्षण करके, सारे नदियावासी जीवोंका मन हरण करके उनको अपने चरणोंमें खींच रहे हैं और दूसरी ओर सर्वलोकपूज्य श्रीअद्वैतप्रभु उनकी गुण-गरिमाका गान करके, सुकृतिवान् नदियावासियोंका चित्त-विनोदन करके उनको श्रीगौराङ्ग-भजनके मार्गमें खींचकर ला रहे हैं। ठाकुर हरिदास उनके इस कार्यमें प्रधान सहायक हैं, अद्वैत-सभा इस कार्यका केन्द्र स्थान है। और नदियाकी भक्तमण्डली इसकी कार्यकारिणी सभा है। अद्वैत-सभामें कृष्ण-कीर्तन होता है, श्रीमद्भागवत-पाठ होता है, भक्ति-तत्त्वकी आलोचना होती है, भक्त-चरितपर व्याख्यान होते हैं और सबके अन्तमें गौर-नित्यानन्द-तत्त्वपर उपदेश दिया जाता है।

स्वयं श्रीगौर-भगवान्ने अवधूत श्रीनित्यानन्द-प्रभुको प्रकट करनेका संकल्प किया है। भक्तवृन्दके द्वारा यह कार्य संसिद्ध होते न देख प्रभुने स्वयं इसका भार अपने ऊपर लिया है।

श्रीनित्यानन्दप्रभु अवधूत संन्यासी हैं। उनका निरन्तर बाल्यभाव रहता है, सर्वदा हँसता हुआ मुख-मण्डल, प्रेमानन्दमें उनके सारे अङ्ग आप्लावित होते हैं। वे मुँहमें हाथसे उठाकर अन्न नहीं खा पाते। श्रीवासपण्डितके घर रहते हैं। श्रीवास-पत्नी मालिनीदेवी उनको पुत्रवत् स्नेह करती हैं। बालकके समान उनका लालन-पालन करती हैं। उनके मुँहमें अन्न-ग्रास डालकर प्रेमसे खिला देती हैं। इस प्रकार पुत्रभावमें पतिव्रता मालिनीदेवी श्रीनित्यानन्दप्रभुकी सेवा करती हैं।

श्रीवासपण्डितकी परीक्षा

श्रीवास-मन्दिरमें बैठकर एक दिन प्रभु श्रीवासपण्डितके साथ कृष्ण-कथा कह रहे थे। प्रभुके मनमें श्रीबलराम-अवतार श्रीनित्यानन्दकी महिमा प्रकट करनेका भाव उदित हुआ। उन्होंने श्रीवासपण्डितकी परीक्षा करनेका संकल्प किया। श्रीभगवान्की परीक्षामें किसीका निस्तार नहीं, श्रीगौर-भगवान् अपनी स्नेहमयी जननीको भी परीक्षा लिए बिना नही छोड़ते।

चतुर-चूड़ामणि रँगीले प्रभु श्रीवासपण्डितकी ओर बनावटी कोपदृष्टिसे देखकर गम्भीरतापूर्वक बोले—"पण्डित ! तुमने इस अवधूतको अपने घर क्यों स्थान दिया है ? तुम तो गृहस्थ ब्राह्मण हो, परम उदार प्रकृतिके हो, इस अवधूतकी जाति-कुल कुछ भी तुम नहीं जानते। यदि तुम अपने जाति-कुलकी रक्षा करना चाहते हो तो अतिशीघ्र इस अज्ञात कुल-शील अवधूतको अपने घरसे हटा दो। मैंने तुम्हें सावधान कर दिया।"

श्रीवास-पण्डितने प्रभुकी बात सुनकर हाथ जोड़कर उत्तर दिया—"हे प्रभो ! इस दीन-हीन दरिद्र ब्राह्मणकी क्या इस प्रकार परीक्षा करना तुम्हारे लिए उचित है ? जो तुम्हारा एक दिन भी भजन करता है, वह मुझे प्राणसे भी बढ़कर प्रिय है। नित्यानन्दप्रभु और तुम अभिन्न हृदय हो, क्या यह मैं नहीं जानता ? नित्यानन्द प्रभु यदि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मदिराका सेवन करें, यवनीका सङ्ग करें, मेरे जाति-धन-प्राण-नाश करें, तब भी मेरे मनमें उनके प्रति अन्यथा भावना नहीं हो सकती, यह मैं सत्य कह रहा हूँ।"

प्रभु आसनपर बैठे थे। श्रीवासपण्डितकी बात सुनकर वे आनन्दसे विभोर होकर प्रेम-हुंकार-गर्जन करते-करते कूदकर उनकी छातीपर बैठ गये। श्रीवासपण्डित प्रभुके पद-रजके स्पर्शसे कृतार्थ हो गये। प्रेमानन्दमें गद्गद होकर प्रभुने सिंहनाद करते हुए श्रीवाससे कहा—"पण्डित श्रीवास! तुमने क्या कहा? नित्यानन्दके प्रति तुम्हारा विश्वास है। मेरी गोप्यवस्तु नित्यानन्दको तुमने जाना, इससे मैं प्रसन्न होकर तुमको वरदान देता हूँ—'यदि लक्ष्मीको घर-घर भिक्षा करनी पड़े, तो भी तुम्हारे घरमें कभी दरिद्रता नहीं होगी! तुम्हारे घरके बिल्ली-कुत्तेमें भी मेरे प्रति भक्ति होगी! मैं नित्यानन्दको तुमको समर्पण करता हूँ। इसकी सब प्रकारसे सँभाल रखना'।"

प्रभुकी बातपर अब कुछ विचार कीजिये। प्रभुने श्रीवासपण्डितसे कहा कि उनके हृदयकी गोप्य वस्तु श्रीनित्यानन्दप्रभुके मर्मसे वे अवगत हो गये हैं, अतएव उनसे संतुष्ट होकर प्रभुने यह वरदान दिया है। श्रीनित्यानन्दतत्त्व वेद-गोप्य वस्तु है। प्रभु स्वयं इस तत्त्वको न बतावें तो कोई इसे नहीं जान सकता। श्रीवासपण्डितके हृदयमें प्रवेश करके प्रभुने उनके मुखसे श्रीनित्यानन्दकी महिमा प्रकट की।

श्रीनित्यानन्द-गौराङ्ग अभेद-तत्त्व हैं, यह श्रीवासपण्डित प्रभुकी कृपासे जानते थे। इसी कारण सपरिवार उन्होंने श्रीनित्यानन्दकी सेवाका व्रत लिया था, उनके मुखसे प्रभुने यह बात भी प्रकट करा दी। इसका भी कुछ तात्पर्य है। श्रीवास-पण्डित नारदके अवतार थे। नारदमुनि कोई बात मनमें छिपाकर नहीं रख सकते थे। उनके मनमें जब, जो बात आती थी, जिसके मुँहसे जब, जो बात सुनते थे, तत्काल ढोल बजाकर जगत्में उसे प्रकट कर देते थे। यह जो श्रीनित्यानन्दप्रभुके सम्बन्धमें उनका मनोभाव था तथा प्रभुके श्रीमुखसे श्रीनित्यानन्दकी जो महिमा प्रकट हुई, ये सारी बातें श्रीवासपण्डितने एक-एक करके नदियाके लोगोंके कानों तकमें पहुँचा दी। प्रभु जैसे ही उनके घरसे निकलकर अपने मन्दिरकी ओर चले, श्रीवासपण्डित भी अपने घरसे निकल पड़े। भक्तवृन्दके घर-घर जाकर प्रभुके मुखसे निःसृत श्रीनित्यानन्दप्रभुकी महिमाकी बात उन्होंने सर्वत्र घोषित कर दी। नदियावासी भक्तोंके सामने सर्व-प्रथम उन्होंने ही इसे प्रकट किया। उस समय प्रभु नदियामें आत्मप्रकाश कर चुके थे। नदियाके अधिकांश लोग उनको भगवद्भावमें पूजने लगे थे। श्रीवासपण्डितके मुखसे यह बात सुनकर वे लोग श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ओर अधिकतर आकृष्ट और भक्तिमान् हो गये। प्रभुने इस प्रकार श्रीवासपण्डितकी परीक्षाके बहाने उनके द्वारा श्रीनित्यानन्दकी महिमाका प्रचार नदियामें किया। जब उन्होंने स्वयं अपनेको प्रकट कर दिया है तो अपने अभिन्नहृदय श्रीनित्यानन्दप्रभुको प्रकट किये बिना वे कैसे रह सकते थे?

ठीक उसी समय एक और अद्भुत घटना संघटित हुई। शचीमाता श्रीनित्यानन्दप्रभुको पुत्रवत् स्नेह करती थीं; उनको देखते ही जगज्जननी शचीमाताके मनमें प्रभुके अग्रज श्रीश्रीमद्विश्वरूप-प्रभु की बात याद आयी। गौर-निताई दोनों भाई जब एक साथ रहते हैं तो शचीमाताके मनमें होता है, मानो विश्वम्भर-विश्वरूपका एकत्र मिलन हो गया है। नदियावासी गौर-निताईको देखते तो उनके मनमें होता, मानो वे व्रजके राम-कृष्ण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हैं। शचीमाताके मनमें भी बीच-बीचमें यह भाव उदित होता था। परन्तु वात्सल्य प्रेमकी अधिकताके कारण बहुत देरतक यह ऐश्वर्यभाव उनके मनमें स्थान नहीं पाता।

शचीमाताका स्वप्न

एक दिन शचीमाताने एक अपूर्व स्वप्न देखा। अकेले निमाई-चाँदको निकट बुलाकर आनन्दमें गद्‌गद होकर उन्होंने उस अद्‌भुत स्वप्नका वृत्तान्त सुनाया—"आज मैंने रात्रिके शेषमें स्वप्न देखा कि तुम और नित्यानन्द—दोनों पाँच-पाँच वर्षके बालक होकर आपसमें लड़ते-झगड़ते हुए दौड़ते फिर रहे हो। तुम दोनों श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें घुस गये और राम-कृष्णको लेकर बाहर निकले। नित्यानन्दके हाथमें कृष्ण और तुम्हारे हाथमें बलराम थे। फिर मेरे सामने ही तुम चारोंमें लड़ाई-झगड़ा होने लगा। ठाकुर श्रीराम-कृष्ण क्रोधमें भरकर बोले—'तुम दो ढोंगी कौन हो? निकल जाओ बाहर! यह घर-बार, यह सन्देश-दूध-दही आदि सब उपहार हम दोनोंके हैं।' तब नित्यानन्दने कहा—'वे दिन बीत गये, जब तुमने दूध-दही-मक्खन लूट-लूटकर खाया था। अब ग्वालोंका राज्य गया, अब तो ब्राह्मणोंका अधिकार है, इसलिये अपनेको पहचानो और छोड़ो हमारी इन सब भेंट-पूजाको। यदि खुशीसे नहीं छोड़ोगे तो मार खाओगे! हम तुमको लूट खायँगे—देखेंगे कौन बचाता है।' इसपर गरजकर बलराम बोले—'अच्छा, अब हमारा दोष नहीं है। तुम दोनों ढोंगियोंको अब हम यहीं बाँधकर छोड़ेंगे। मुझे कृष्णकी दुहाई है जो ऐसा न करूँ तो।' इसपर नित्यानन्दने कहा—'तेरे कृष्णका मुझे क्या डर है? मेरे ईश्वर तो गौरचन्द्र विश्वम्भर हैं।'—इस प्रकार चारों जने लड़ते-झगड़ते रहे और एक-दूसरेसे छीन-छीनकर भोजन करते रहे। कोई किसीके हाथसे छीन-झपटकर ले जा रहा था और कोई किसीके मुखमें-मुख मिलाकर खा रहा था। फिर नित्यानन्दने पुकारकर मुझको कहा—'माँ। मुझे खाने को दो, बड़ी भूख लगी है।' उसके इतना कहनेपर मैं जाग पड़ी।" शचीमाताने कहा कि मेरे तो यह स्वप्न कुछ समझमें आया नहीं, इसलिये तुमको बताया है।

माताके इस अपूर्व स्वप्न-वृत्तान्तको सुनकर प्रभु दिल खोलकर उच्च स्वरसे हँसे। वे स्वयं शचीमाताके स्वप्नोपदेशकर्ता थे। इस स्वप्नके द्वारा उन्होंने माताको समझाया कि उनके गृह-देवता राम-कृष्ण जाग्रत् मूर्ति हैं। वे अचलरूपमें तो घरपर रहते हैं, परन्तु सचल भावमें नदियामें भ्रमण करते हैं। उनके प्रियतम गौर-निताई-ये दोनों ही सचल श्रीविग्रह-मूर्ति हैं। अचल देवता भक्तिके वश सचल हो सकते हैं। स्नेहके वश होकर अचल मूर्ति श्रीभगवान् सचल होकर भक्तोंकी मनोकामना पूरी करते हैं। इस स्वप्नद्वारा प्रभुने जननीको श्रीनित्यानन्दप्रभुकी वाणीसे समझा दिया कि कलिके जीवोंके एकमात्र उपास्य वे ही हैं। युगावतार‌रूपमें युगधर्म-प्रवर्त्तन करनेके लिए वे शुद्ध विप्रकुलमें नदियामें अवतीर्ण हुए हैं। युगानुवर्ती-भजन श्रीगौराङ्ग-भजन है। इसी कारण श्रीनित्यानन्दप्रभुने कहा है—"अब ग्वालोंका राज्य गया, अब तो ब्राह्मणोंका अधिकार है।"

श्रीनित्यानन्दप्रभु बलरामके अवतार हैं। उन्होंने बलरामरूपी अपनेको सम्बोधन करके कहा—"तेरे कृष्णका मुझे क्या डर है? मेरे ईश्वर तो गौरचन्द्र विश्वम्भर हैं।"

इस बातसे कोई यह न समझे कि श्रीनित्यानन्द-प्रभु श्रीकृष्ण-भजनके विरोधी थे। नन्दनन्दन और शचीनन्दनको एक वस्तुके रूपमें वे जानते थे, अतएव उन्होंने यह बात कही। वे नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गप्रभुको स्वयं-भगवान् कृष्णके रूपमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जानते थे । नदियामें आकर श्रीनित्यानन्दप्रभु जिस दिन श्रीगौर-भगवान्‌से मिले, उस दिनसे ही उन्होंने कलिपावनावतार श्रीश्रीगौरचन्द्रको प्रकाशित करना शुरू किया । वे सबको लेकर श्रीकृष्णचैतन्य-संकीर्तन कराया करते थे । उनके जीवनका एकमात्र कार्य था श्रीगौर-नाम-प्रचार और श्रीगौराङ्ग-महिमा-कीर्तन ।

भज गौराङ्ग कह गौराङ्ग लह गौराङ्गेर नाम रे ।
जो जन गौराङ्ग भजे सेइ आमार प्राण रे ।।

ये उनके श्रीमुखसे निःसृत वाक्य हैं, श्रीनित्यानन्दप्रभु कृष्णभक्त वैष्णव-संन्यासी थे । श्रीश्रीगौर-कृष्णको उन्होंने एक रूपमें लिया था, दोनोंमें अन्तर नहीं मानते थे । इसी कारण श्रीगौर-भगवान्‌ने प्रचार-कार्यका सारा भार उनके ऊपर अर्पण किया था । श्रीश्रीगौर-कृष्णमें भेदज्ञान होनेसे इष्टमें एकनिष्ठताका अभाव हो जाता है । इसी कारण कलिग्रस्त जीवके लिए श्रीगौराङ्गमें एकनिष्ठताकी परमावश्यकता समझकर श्रीश्रीअद्वैतप्रभु, श्रीपाद प्रबोधानन्द सरस्वती, सार्वभौम भट्टाचार्य, श्रीवास और गदाधरपण्डित, शिवानन्द सेन, नरहरि सरकार आदि प्रभुके नित्य पार्षदवृन्द युगानुवर्ती श्रीगौराङ्ग-भजनकी प्रणाली स्वयं आचरणमें ला करके कलिके जीवोंको शिक्षा दे गये हैं । ये सारी तत्त्वकी बातें यथा-स्थान विस्तृतरूपसे लिखी जायँगी ।

श्रीवृन्दावनदास ठाकुरद्वारा वर्णित जगज्जननी शचीमाताकी जो यह स्वप्न-दर्शन-कथा है, इसमें भी गूढ़ रहस्य निहित है । श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतारके द्वारा लिखित पयार श्लोकमें भी व्यासकूट दृष्टिगोचर होते हैं । अधिकारी गौर-भक्त पाठकोंके हृदयमें प्रभुकी इच्छासे ये सारे गूढ़ार्थ-बोधक व्यासकूट साधन-बलसे परिस्फुट होते देखे गये हैं । श्रीधाम वृन्दावनमें कुछ गौर-भक्त साधक वैष्णवोंके मुखसे जीवाधम ग्रन्थकारने इन सब कूटार्थोंकी जो कुछ व्याख्या सुनी है, वही इस स्थानमें विवृत की गयी है ।

विचार-स्रोतमें पड़नेपर लीलारसका प्रवाह आबद्ध हो जाता है, रसभङ्ग हो जाता है, यह मैं खूब समझ रहा हूँ; परन्तु ये सब निगूढ़ भजन-रहस्यकी बातें किये बिना भी तो नहीं रहा जाता । लोग पागल कहें, इससे कुछ आता-जाता नहीं; लोग विश्वास न करें, इससे रञ्चमात्रभी क्षोभ नहीं होता ।

पहले कह चुका हूँ कि प्रभु अपनी स्नेहमयी जननीके मुखसे स्वप्नकी कथा सुनकर खूब हँसे । उन्होंने हँसते-हँसते कहा—"माँ ! तुमने बड़ा अच्छा स्वप्न देखा है । दूसरे किसीके सामने इस स्वप्नकी बात प्रकट न करना । मेरे मनमें होता है कि तुम्हारे गृह-देवता प्रत्यक्ष जाग्रत् श्रीमूर्ति हैं । मैंने भी बारंबार देखा है कि ठाकुरका नैवेद्य आधा-आधा गायब रहता है; पता नहीं, कौन खा जाता है ? तुम्हारी बहूके ऊपर मुझको संदेह होता था । आज वह संदेह दूर हो गया । आज समझमें आया कि तुम्हारे घरके ठाकुर प्रत्यक्ष और जाग्रत् श्रीमूर्ति हैं । वे ही तुम्हारी सेवासे कृपा-परवश होकर सचल भावसे भोजनादि सब कर्म करते हैं ।"

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी आड़में खड़ी होकर यह अपूर्व स्वप्न-कथा सुन रही थीं । प्रभुके श्रीमुखसे अपने सम्बन्धमें माताके समीप वह कौतुक-रहस्यकी बात सुनकर वे हँसती-हँसती लोट-पोट हो गयीं ।

प्रियाजीके मनमें प्रभुका यह कौतुकरङ्ग सुनकर लज्जा हुई और प्राणवल्लभके ऊपर रोष भी हुआ । उनकी ओर उन्होंने एक कुटिल कटाक्षपात किया । रसिक-चूड़ामणि प्रभुने मुस्कुराकर आँखोंके इशारेसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसका उत्तर दे दिया। शचीमाताने पुत्रको इस बातके लिए मृदु-स्नेहमय शब्दोंमें डाँटा। प्रियाजी इससे संतुष्ट हो गयीं।

शचीमाताको प्रभुने जो कुछ कहा, उस सम्बन्धमें दो-एक बातका विचार करना है। प्रभुने कहा कि उनके घरमें सचल देवता हैं, वे भोगका नैवेद्य भोजन करते हैं और उपहास करते हुए बोले कि प्रियाजीके ऊपर उनको संदेह था। प्रभुका संदेह निराधार न था, अब यहाँ यही विचार करना है। प्रभु स्वयं सचल नारायणमूर्ति हैं, उनकी अङ्ग-लक्ष्मी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी सचला श्रीलक्ष्मीमूर्ति हैं। शचीमाता लक्ष्मी-नारायणकी पूजा करती हैं, भोग लगाती हैं। जिनको भोग लगाती हैं, वे ही उनके घरमें अधिष्ठित हैं, वे ही भोजन करते हैं, प्रभुने उपहासके बहाने माताको यही समझाया। युगल-सेवामें रत रहनेवाली शचीमाताके मनकी साध पूर्ण करके श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-विग्रह उनके घरमें सचल रूपमें विराजते हैं, श्रीगौर-भगवान्‌ने यही माताको समझाया। उन्होंने प्रियाजीकी बात क्यों उठायी? इसका भी तात्पर्य है। श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व और भक्ति-तत्त्व एक वस्तु है। गौर-वक्षविलासिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी साक्षात् भक्तिस्वरूपिणी हैं। 'मद्भक्तपूजाभ्यधिका' प्रभुके श्रीमुखसे निःसृत श्रीमद्भागवतीय (११.१९.२०) वाणी है। उन्होंने अपने श्रीमुखसे कहा था—

"आमार भक्तेर पूजा आमा हैते बड़।"

चै. भा. आ. १.३

इसी कारण प्रभुने प्रियाजीका नाम लिया। भगवत्पूजाका नैवेद्य, भोगकी सामग्री सबसे पहले भक्त-भोग्य है। भक्तके मुखसे श्रीभगवान् भोजन करते हैं, यह भी भागवतीय कथा है। इसी कारण चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌ने प्रियाजीका नाम लेकर माताके साथ इस परम आश्चर्यजनक कौतुक, रहस्य-लीलारङ्गको प्रकट किया।

शची-माँके घर नित्यानन्दकी भिक्षा

शचीमाताने स्वप्न देखा था कि श्रीनित्यानन्दप्रभु उनके पास अन्न-भिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसी कारण प्रभुने मातासे कहा—"माँ! तुमने स्वप्नमें देखा है कि श्रीनित्यानन्द तुम्हारे पास अन्न-भिक्षा कर रहे हैं, अतएव आज उनको निमन्त्रण देकर उत्तम भोजन कराओ! मैं उनको निमन्त्रित करने जा रहा हूँ।" इतना कहकर प्रभु घरसे बाहर निकले। शचीमाता परम आनन्दपूर्वक भोजनकी सामग्री तैयार करने लगीं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी पाकशालामें शचीमाताकी प्रधान सहकारिणी हैं। पुत्रवधू और सास-दोनों मिलकर रसोई बनाने लगीं।

श्रीवासके आँगनमें जाकर श्रीनित्यानन्दप्रभुको माताका निमन्त्रण देकर प्रभु बोले—"श्रीपाद! मेरी कुटियामें आज आपकी भिक्षा है। वहाँ आप चाञ्चल्य नहीं दिखावेंगे।" अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु कानोंपर हाथ रखकर हँसते हुए बोले—"विष्णु! विष्णु! चाञ्चल्य पागल करता है। तुम मुझको चञ्चल—पागल समझते हो; क्योंकि तुम अपने ही समान सबको देखते हो।"

इस प्रकार हास्य-कौतुक-रङ्गमें दोनों भाई हँसते-हँसते परमानन्दमें नदियाके रास्तेपर निकले। सङ्गमें गदाधरपण्डित आदि अन्तरङ्ग भक्तगण थे। दोनों भाई हाथमें-हाथ मिलाये लीलारङ्गसे नदियाके निवासियोंके मन-प्राण आकर्षित करते हुए शचीके आँगनमें जा पहुँचे।

पुराने नौकर ईशानने यत्नपूर्वक दोनों भाइयोंके श्रीचरणोंको धो दिया। भोग प्रस्तुत था। ठाकुरको भोग प्रभुने स्वयं लगाया। गौर-निताई दोनों भाई भोजन करने बैठे। स्नेहमयी शचीमाता परोसने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लगीं। गौर-निताई दोनों भाई भोजन करने बैठे हैं, जान पड़ता है, मानो कौसल्या रानीके घरमें श्रीराम-लक्ष्मण दोनों भाई एक-साथ भोजन कर रहे हैं।

इसी समय शचीमाताने एक अलौकिक घटना देखी। उन्होंने दो आदमियोंकी भोजन-सामग्री दो पात्रोंमें सजा दी थी। उन्होंने देखा कि उसके तीन भाग हो गये। दो आदमियोंके स्थानमें तीनका भोजन घरमें देखा गौर-निताई शचीमाताको देखकर हँस रहे थे। शचीमाता विस्मित और स्तम्भित होकर क्षणमात्रके लिए जड़वत खड़ी हो गयीं। फिर देखा कि दोनों आदमी भोजनविलासमें रत हैं। उन्होंने यह भी देखा कि पाँच वर्षका एक कृष्णवर्ण और दूसरा शुक्लवर्ण, दो अपूर्व सौन्दर्य-शाली शिशु उस घरमें विराजमान हैं। दोनों चतुर्भुज हैं, दोनों ही दिगम्बर हैं। उनके हाथमें शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म, हल-मूसल हैं, कानोंमें मकराकृत कुण्डल हैं, वक्षःस्थलपर श्रीवत्स-कौस्तुभ सुशोभित हो रहे हैं। जगज्जननी शचीमाताने यह भी देखा कि उनकी पुत्रवधू उनके पुत्रके अङ्गमें अवस्थित हैं। चतुर्भुज शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी उनका पुत्र है और उसके वक्षःस्थलपर श्रीवत्स-कौस्तुभ और उसके ऊपर साक्षात् लक्ष्मी-स्वरूपिणी श्रीविष्णुप्रियादेवी शोभा पा रही हैं। यह देखकर शचीमाता मूर्छित होकर भूतलपर गिर पड़ीं। उनके नेत्रोंकी प्रेमाश्रुधारासे पहना हुआ वस्त्र भीग गया। इसी समय शचीमाताने देखा कि सारा घर मानो अन्नमय हो रहा है। घरके भीतर अपूर्व ज्योति फैली हुई है।

माताको मूर्छित देखकर प्रभुने अपना ऐश्वर्यभाव संवरण किया। उन्होंने अपनी स्नेहमयी जननीको भूतलसे गोदमें उठाया—"माता! अपने चित्तको स्थिर करके उठो! तुम पृथ्वीपर क्यों पड़ी हुई हो?"

प्रभुके श्रीकरके स्पर्शसे शचीमाताको बाह्य ज्ञान हुआ। वे घबराकर उठीं, वस्त्र सँभालकर केश बाँधे। उनके मुँहसे बात नहीं निकल रही थी। घरके भीतर बैठे-बैठे वे अजस्र आँसू बहाने लगीं। एक-एक बार लम्बी साँस छोड़ती हैं। उनका सारा अङ्ग थर-थर काँप रहा है। प्रेमानन्द-रससे उनका हृदय पूर्ण है। किसी ओर उनका ध्यान नहीं है। उनकी दृष्टि केवल पुत्रके मुखचन्द्रकी ओर है। मुँहसे कोई बात नहीं निकल रही है। वे पुत्रके चन्द्रवदनकी ओर देख रही है। प्रभु जननीके सामने लज्जासे अवनतमुख होकर बैठे हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु घरके एक कोनेमें खड़े होकर मृदु-मृदु मुस्कुरा रहे हैं। वे प्रेम-विह्वलभावसे माता और पुत्रके लीलारङ्गको देख रहे हैं। माता और पुत्रके बीच कोई बात नहीं हुई।

प्रभुकी यह अपूर्व और अलौकिक लीलारङ्गकी कथा निगूढ़ रहस्यपूर्ण है। पहले प्रभुने अपनी मातासे कहा था कि उनकी बहू ठाकुरका नैवेद्य और भोगकी सामग्री चोरी करके खाती है, ऐसा उनका संदेह था। शचीमाता गौर-निताई-दोनों भाइयोंको एक-साथ भोजन करा रही हैं। दोनोंको भोजनके पात्रोंमें खाद्य-सामग्री सजाकर दी है। उन्होंने देखा कि उसके तीन भाग हो गये। उसके बाद फिर देखा कि पुत्रके वक्षःस्थलपर उनकी पुत्रवधू विराज रही है। यह जो तीन भागकी बात कही गयी है, इसका भी मर्म है। शचीमाताने लक्ष्मीका भोग दिया नहीं है, नारायणका भोग दिया है और उसके साथ ही अनन्तदेवका भोग दिया है। शचीगृहमें प्रभु लक्ष्मी-नारायणरूपमें युगल-विलास करते हैं। श्रीविष्णुप्रियादेवी साक्षात् लक्ष्मीदेवी हैं उनका तत्त्व पहले कह चुका हूँ। वे साक्षात् भक्तिदेवी हैं। श्रीगौर-भगवान्‌की वे पूर्णशक्ति हैं। भगवत्-शक्ति भक्तिस्वरूपिणी है। भक्त या भक्तिकी पूजा सबसे पहले होनी चाहिये। पहले श्रीराधा, पश्चात् श्रीभगवान् हैं, पहले लक्ष्मी, पश्चात् श्रीनारायण हैं। इस प्रकार चिरकालसे श्रीभगवान् भक्तका सम्मान बढ़ाते आ रहे हैं। शचीमाता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वात्सल्यरसाश्रिता प्रेममयी गौराङ्ग-जननी हैं। चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌का ऐश्वर्यभाव वे अपनी आँखोंसे देखकर भी विश्वास नहीं करती हैं। प्रभुने जननीको अपना ऐश्वर्य दिखलाया। भोगकी सामग्रीके तीन भाग करके माताको समझा दिया कि 'मद्भक्तपूजाभ्यधिका'

(श्रीम. भा. ११.१९.२०)

मायामुग्ध जननीकी मायाका भ्रम दूर कर दिया। शचीमाताने अपने पुत्रके हृदयमें बहूको देखा। इससे प्रभुने जननीको समझाया कि गौर-वक्षविलासिनी भक्तिस्वरूपिणी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी उनकी सर्वश्रेष्ठ भक्त हैं; वे भक्त-परिवारकी शिरोमणि हैं। अतएव उनका स्थान प्रभुके हृदयके ऊपर है। उनकी पूजा पहले है। श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व समझानेके लिए ही प्रभुने यह लीलारङ्ग किया। ये सब वेदगोप्य वस्तुएँ हैं। अधिकारी गौर-भक्तके सिवा इन सब कथाओंका मर्म कोई समझ नहीं सकता। प्रभुकी कृपादृष्टि होनेपर इन सब निगूढ़ तत्त्वोंका ज्ञान होता है। साध करके पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है—

चैतन्यचन्द्रेर लीला अगाध गम्भीर।
प्रवेश करिते नारि स्पर्शि रहि तीर॥

चै. च. म. ९.३३५

भाग्यवान् ईशान प्रभुके घरके पुराने सेवक हैं। वे निरन्तर श्रीगौराङ्ग-परिवारकी सेवा करते आ रहे हैं। प्रभुके संन्यास लेनेके बाद शोक-संतप्त शचीमाता और विरह-विधुरा श्रीविष्णुप्रियादेवीकी सेवाके कार्यमें परम सुकृतिवान् ईशानने अपना जीवन बिता डाला। प्रभुको उन्होंने गोदमें खिलाकर बड़ा बनाया था। उसके भाग्यका पारावार नहीं। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

सेविलेन सर्वकाल आइरे ईशान।
चतुर्दश लोक मध्ये महा भाग्यवान्॥

चै. भा. म. ६.७४

पहले कह चुका हूँ कि शचीमाताने देखा कि भोजन-गृह अन्नमय हो गया है। श्रीश्रीगौर-नित्यानन्द आचमन करके जब बाहर निकले, तब भाग्यवान् ईशानने जाकर प्रभुकी शेष भोजन-लीलाका दर्शन किया। उन्होंने देखा कि सचमुच ही गृह अन्नमय हो गया है। उन्होंने परमभक्ति-पूर्वक गृहद्वारको प्रणाम करके समस्त प्रसादान्न चुन-चुन करके पा लिया। उसके बाद गृहको धोकर परिष्कृत किया।

ईशान तुम्हारे चरणोंमें कोटि कोटि प्रणिपात!

तुम्हारे जैसा महाभाग्यवान् पुरुष चतुर्दश भुवनमें दूसरा कोई नहीं है। तुम हमारे प्रभुके नित्य दास हो! तुम्हारे कृपा करनेपर प्रभुकी कृपा होगी, यह बात निश्चित है। अन्तरङ्ग भगवद्दासके अनुग्रहके बलसे ही भगवत्कृपा प्राप्त होती है, श्रीभगवान्‌के साथ परिचय हो जाता है। तुम प्रभुके अतिशय प्रियतम और विश्वासी पुराने नौकर हो। तुम प्रभुके चिह्नित दास हो, नित्य-परिकर और पार्षदगणमें तुम्हारा स्थान है। मैं अतिदीन-हीन-अकृती जीवाधम हूँ। मैं तुम्हारे चरणोंकी शरण लेता हूँ। तुम्हारे-जैसे महाजन ही मेरे-जैसे अभागोंके लिए श्रीगौराङ्ग-भजनके प्रधान सहायक और पथ-प्रदर्शक हो सकते हैं। इस जीवाधमकी ओर तुम एक बार कृपादृष्टिसे देखो! तुम प्रभुभक्त हो, तुम प्रभुके घरके अन्तःपुरकी सारी खबर रखते हो! श्रीविष्णुप्रियादेवीके तुम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृपापात्र हो ! तुम्हारे कृपा करनेसे मेरी मनोकामना पूर्ण होगी। श्रीगौराङ्ग-भजनमें मुझे अधिकार प्राप्त होगा। इस जीवाधमके ऊपर तुम्हें कृपा करनी पड़ेगी। तुम निश्चय जान लो कि यह तुम्हारा चरण छोड़नेवाला नहीं है। तुम श्रीविष्णुप्रियाके दास हो, तुम्हारी कृपासे कलिग्रस्त जीव श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-उपासनाका अधिकारी होता है। तुम कृपा करके एक बार कलिग्रस्त जीवके प्रति शुभ दृष्टिपात करो ! तुम्हारी जय हो !

यथा राग।

जय जय श्रीईशान श्रीगौराङ्ग दास।
गौराङ्ग मन्दिरे जाँर चिर दिन वास॥
जगन्नाथ शचीमाता जाँरे करेन स्नेह।
गौर-गोष्ठीर पदे जिंहो बिकाइल देह॥

गौर-विष्णुप्रियार श्रीचरण-रेणु।
जाँहार देहेर हय अणु-परमाणु॥

श्रीगौराङ्ग पादोदक जिंहो पान निति।
ताँहार चरणे मोर कोटि-कोटि नति॥

चतुर्दश लोक मध्ये महाभाग्यवान्।
दास हरिदासे तुमि कर परित्राण॥

छत्तीसवाँ अध्याय

आत्मप्रकाशके बाद नदियामें प्रभुके अलौकिक लीलारङ्ग

अलौकिक लीलाते जार ना जन्में विश्वास।
इहलोक परलोक तार हय नाश॥

चै. च. म. ७.१०८

संकीर्तन-यज्ञेश्वर श्रीगौराङ्गप्रभुने युगधर्म हरिनाम-संकीर्तनके आरम्भमें नदियामें आत्म-प्रकाशके बाद कई अलौकिक लीलाएँ की थीं। इस अध्यायमें वे सारी अलौकिक लीला-कथाएँ वर्णन की जायँगीं। श्रीभगवान्‌के अलौकिक लीलारङ्ग उनके ऐश्वर्यके परिचायक हैं। जो श्रीभगवान्‌के अवतारमें विश्वास करते हैं, वे उनकी अलौकिक लीला-कथामें भी भक्तिपूर्वक विश्वास करेंगे। श्रीभगवान्‌के अवतारमें जिनका विश्वास नहीं है, उनके-जैसा अभागा संसारमें और कोई नहीं है। इन सब अलौकिक निगूढ़ लीला-कथाओंमें श्रीभगवान्‌की कृपाके बिना सबको विश्वास नहीं होता। तर्क और विचारसे इसका मर्म नहीं समझा जा सकता। इसीलिये पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है—

अलौकिक लीला एइ परम निगूढ़।
विश्वासे पाइये—तर्के हय बहु दूर॥

चै. च. म. ८.२६०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरिनाम-महिमा

प्रभु एक दिन श्रीवासके आँगनमें भक्तवृन्दके साथ हरिनाम-संकीर्तनमें उन्मत्त होकर—

"हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ।।

बृहन्नारदीयवचनं ३८.१२६

इस पौराणिक श्लोकका अर्थ करके समझा रहे हैं। भक्तवृन्द भक्तिसे गद्‌गद होकर प्रभुके श्रीमुखसे इस श्लोकका अपूर्व भक्ति-उद्दीपक अर्थ सुनकर विस्मित हो उठे। इन कतिपय शब्दोंमें इतना निगूढ़ अर्थ छिपा है, यह वे लोग स्वप्नमें भी कभी नहीं सोच सकते थे। प्रभुने कहा—'भुवन-मङ्गल हरिनाम स्वयं नामरूपी भगवान् है। नाम-ब्रह्मकी उपासना कलिग्रस्त जीवके भवरोगकी एकमात्र औषधि और उपाय है। नाम-ब्रह्म वेदोक्त आदि-पुरुष हैं। वे सदा जगत्‌में उदय नहीं होते। कलियुगमें जीवकी दुर्गति देखकर कृपा-परवश होकर वे अवतरित हुए हैं। नाम-ब्रह्म हरिनामके सिवा अन्य कोई देव-देवी कलिग्रस्त जीवका उद्धार नहीं कर सकता। इसी कारण 'केवल' शब्द इस श्लोकमें व्यवहृत हुआ है। तीन बार 'नास्त्येव' शब्द का प्रयोग करनेका अर्थ है—कलिग्रस्त जीवके लिए हरिनामके सिवा अन्य गति नहीं—यह सर्वशास्त्रोंका सार-सिद्धान्त समझाया। हरिनाम-संकीर्तन युगधर्म है। नाम-ब्रह्मकी उपासना और हरिनाम-संकीर्तन कलिग्रस्त जीवके लिये युगानुवर्ती भजन है—

कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ।।

श्रीम. भा. १२.३.५२

युगधर्मपालक श्रीगौर-भगवान्‌ने नदियाके भक्तोंको हरिनामका माहात्म्य समझाया। हरिनामका माहात्म्य-कीर्तन करते-करते प्रभु स्वयं कीर्तन-रङ्गमें मत्त हो गये। वे प्रेमावेशमें मधुर नृत्य करने लगे। प्रेमानन्दमें भूतलपर लोटने लगे। उनके कमल-नयन-द्वयसे अविरल प्रेमाश्रुधारा बहने लगी।

आम्रवृक्ष-लीला

अचानक प्रभुने उठकर ताली बजाते हुए भक्तोंसे कहा—"देखो, मैंने आमका बीज बोया था, वह वृक्ष बन गया।"

भक्तवृन्दने देखा कि आँगनमें प्रभुके द्वारा एक आम्र-बीज-रोपण करते ही, तत्काल वह बीज अंकुरित हो गया और एक नया वृक्ष उत्पन्न हो आया। देखते-देखते उसमें शाखा-प्रशाखाएँ निकल आयीं, नयी आम्र-मञ्जरी मुकुलित हो उठीं, सुन्दर आमके फल लग गये, वे फल सुपक्व हो गये। यह देखकर सभी विस्मयान्वित हुए। थोड़ी देरके बाद आम्रवृक्ष गायब हो गया। केवल उसके फल रह गये। उस आम्रवृक्षमें प्रायः दो-सौ पके आमके फल लगे थे। भक्तोंके द्वारा प्रभुने उन फलोंको गिराकर उस दिन आम्र-महोत्सव किया।

प्रभुने हँसकर भक्तोंको समझा दिया—"तुमने मेरी मायाका प्रभाव देखा? जैसे ही आम्रवृक्षमें फल लगे, वह बिल्कुल अदृश्य हो गया, केवल फल रह गये। तुमलोगोंने इसका अर्थ समझा? प्रेमधनके सिवा जगत्‌में सब अनित्य वस्तु है। प्रेमधन श्रीभगवान्‌के द्वारा प्रदत्त नित्य वस्तु है। इस अनित्य संसारका सब-कुछ चला जाता है, प्रेमधन बना रहता है। उसके द्वारा श्रीकृष्ण-सेवा की जाती है।" यह जो प्रभुने आम्र-महोत्सव किया, इसमें श्रीकृष्णको भोग लगा, वैष्णव-सेवा हुई। भक्तगण प्रभुके उपदेशका तात्पर्य अनुभव करके,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आनन्दमें गद्‌गद होकर उनके चरणोंमें जा गिरे। प्रभुका यह अलौकिक लीलारङ्ग श्रीमुरारिगुप्तने अपने करचामें भी लिखा है।

किंवदन्ति हैं कि प्रभुकी यह आम्र-महोत्सव-लीला अलोकानन्दाके तीरपर गङ्गावास और श्रीहरिहरक्षेत्रके निकट आम्रघट्ट-आधुनिक आम-घाटा गाँवमें प्रकटित हुई थी। कीर्तनसे थके भक्तोंको उन्होंने इसी स्थानमें आम्र-महोत्सवमें असमय पके आमके फल खिलाकर उनकी भूख और थकावट दूर की थी। इसी कारण इस स्थानका नाम 'आमघाटा' है। इस गाँवमें आजतक बहुत-से गोप-जातिके लोग रहते हैं। परन्तु दुःखकी बात हैं कि श्रीमन्महाप्रभुकी इस लीलाके उद्‌देश्यसे यहाँ आम्र-महोत्सवका अनुष्ठान नहीं होता। यह पुण्य स्थान गोद्रुमद्वीपके अन्तर्गत मायापुरधामके निकट है। प्रभुकी दूसरी अद्वितीय लीला-कथा नीचे वर्णित है।

शुक्लाम्बरके घर प्रसाद-ग्रहण

शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी प्रभुके अन्तरङ्ग भक्त थे। वे भिक्षुक ब्राह्मण थे। नवद्वीपमें उनका वासस्थान था। श्रीवासके आँगनमें एक दिन प्रभुने उनकी भिक्षाकी झोलीसे चावल निकालकर खाया था। यह तण्डुल-भोजन-लीलारङ्ग-कथा आगे वर्णन की जायगी। उस भिक्षुक ब्राह्मणके प्रति प्रभुकी अतिशय कृपा थी। एक दिन प्रभुने उनको पास बुलाकर कहा—"तुम्हारा अन्न खानेकी बड़ी इच्छा हो रही है। इससे तुम डरना मत।"

भिक्षुक दरिद्र ब्रह्मचारी शुक्लाम्बर प्रभुकी यह बात सुनकर बहुत खुशामद और विनती करके दीनभावसे हाथ जोड़कर बोले—"मैं तो अधम, पापी, घृणित भिक्षुक हूँ। आप सनातनधर्मी मुझ पापीके घर अपनी चरण-छाया कहाँ देंगे!"

—इतनी बात कहते-कहते वह ब्राह्मण रो पड़ा। प्रभुकी कृपाकी बात मनमें आते ही उनके हृदयमें प्रेमानन्दका आवेग उठा। भक्तवत्सल प्रभु भक्तके मनोभावको समझकर बोले—"ऐसी बात मत कहो। तुम्हारे घरका रन्धन खानेकी इच्छा है। शीघ्र अपने घर जाकर नैवेद्य तैयार करो, मैं आज मध्याह्नमें निश्चय तुम्हारे यहाँ जाऊँगा।"

शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी बड़ी ही विपद्‌में पड़े। प्रभुने उस समय नदियामें आत्मप्रकाश किया था। उनके भक्तवृन्द उनकी भगवान् मानकर पूजा करते थे। वे कहते हैं कि प्रभु दरिद्र भिखारी ब्राह्मणके घर जाकर भोजन करेंगे—यह उनको बहुत आश्चर्यकी बात जान पड़ी। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके मनमें बड़ा भय हुआ। प्रभुके चले जानेके बाद वे इस विषयको लेकर भक्तवृन्दके साथ परामर्श करने लगे। उन सबोंने ब्रह्मचारीजीको समझाकर कहा—"तुम भय क्यों करते हो! जो भगवान्‌का सर्वभावसे भजन करते हैं, उनका अन्न तो भगवान् खोजते ही फिरते हैं। शूद्र-पुत्र विदुरके घर भी उन्होंने माँगकर खाया। भक्तके घर माँगकर खानेका तो उनका स्वभाव ही है। तुम प्रेमपूर्वक उनको खिलाओ! तथापि यदि तुमको डर लगता है तो उनके लिए अलगसे रन्धन कर लो!"

भक्तवृन्दकी बातपर विश्वास करके शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी घर जाकर गङ्गा-स्नान करके पवित्रता-पूर्वक रसोई बनाने लगे। उनका सम्बल भिक्षाका मोटा चावल और एक गर्भ केलेका धड़ मात्र था। पानी गर्म होनेपर उन्होंने रसोईके पात्रमें चावल और केलेका गर्भ ऊपरसे ही चढ़ा दिया तथा "जय कृष्ण गोविन्द गोपाल वनमाली" कहकर प्रभुके चरणोंका स्मरण करके कीर्तनका सुर पकड़ा। जैसे समय उस रसोईके पात्रमें लक्ष्मीस्वरूपिणी श्रीमती श्रीविष्णुप्रियादेवीकी शुभ दृष्टि पड़ी, उसी समय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रसोईके वर्तनकी सारी भोजन-सामग्री अमृतके रूपमें परिणत हो गयी।

उसी समय शचीनन्दन गङ्गा-स्नान करके श्रीनित्यानन्दप्रभु तथा कुछ अन्तरङ्ग भक्तजनोंके साथ शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके घरपर आकर उपस्थित हो गये। गीला वस्त्र त्याग करके प्रभुने अपने हाथसे भोजन उतारा। भक्तके भगवान्‌ने भक्तकी मनोकामना पूरी की, यह देखकर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी आनन्दसे गद्‌गद होकर प्रभुके सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

गङ्गाके तीरपर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीका घर था। प्रभुने गङ्गा-दर्शन करते हुए परम आनन्दपूर्वक ठाकुरको भोग लगाया। भोग लगानेके बाद भक्तवत्सल प्रभु भोजन करने बैठे। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी हाथ जोड़कर खड़े रहे। भक्तवृन्द नयन भरकर प्रभुके इस आनन्द-भोजन-विलासका दर्शन करने लगे।

भोजन करते-करते शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके प्रति शुभ दृष्टिपात करके प्रभु बोले—"जीवनमें आज तक ऐसा सुस्वादु भोजन कहीं नहीं मिला।"

प्रभुके श्रीमुखसे उनकी अपार कृपाकी बात सुनकर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी तथा उपस्थित भक्तवृन्द आकुल होकर रो पड़े। प्रभु प्रेमानन्दमें बार-बार यह बात बोलते हैं और मनके साधसे भोजन करते हैं। भक्तवृन्द नेत्र भरकर प्रभुका भोजन-विलास-दर्शन कर कृतार्थ हो गये।

शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीने अपने हाथसे पान लगाकर प्रभुकी सेवामें अर्पण किया। शचीनन्दनने कुछ देर भक्तगणके साथ कृष्ण-कथा कहकर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके घरमें उस दिन विश्राम किया। दरिद्र भिखारी ब्राह्मणने भक्तवृन्दके साथ प्रभुका पात्रावशेष प्रसाद पाकर जन्म सार्थक किया। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

जे प्रसाद पायेन भिक्षुक शुक्लाम्बर।
देखूक अभक्त सब पापी कोटीश्वर॥
धने-जने-पाण्डित्ये चैतन्य नाहि पाइ।
'भक्तिरसे वश प्रभु' चारि वेदे गाइ॥

चै. भा. म. २५.१२१,१२२

विजय लिपिक

प्रभुके सो जानेपर भक्तवृन्द उनके श्रीचरणतलपर वहाँ ही सो गये। उनमें कायस्थ-कुल-तिलक विजय नामक प्रभुके एक भक्त भी थे। विजयका घर नवद्वीपमें था। उनके समान लिपिक, अर्थात् पुस्तक नकल करके लिखनेवाला नवद्वीपमें कोई दूसरा आदमी न था। भाग्यवान् विजयने प्रभुको अनेक पुस्तकें लिखकर दी थीं। श्रीगौर-भगवान्‌के वे बड़े प्रिय पात्र थे।

सब लोग सो रहे थे, उसी समय श्रीगौर-भगवान्‌ने अपना श्रीहस्त विजयकी छातीपर रखा। भाग्यवान् विजयको अपूर्व दृश्य दिखाई दिया—स्वर्ण-निर्मित स्तम्भके जैसे प्रभुके दीर्घ सुगठित, रत्नालंकारसे पूर्ण हस्त हैं, अँगुलीमें रत्नजटित अँगूठी है, जो कोटि सूर्य-चन्द्रकी तरह चमक रही है। भूलोकसे लेकर ब्रह्मलोकपर्यन्त सब ज्योतिर्मय दीख रहा है।"

विजय प्रभुके इस अपूर्व ऐश्वर्यभावको देखकर प्रेमानन्दमें मग्न होकर जैसे ही उठकर किसीको पुकारनेकी चेष्टा करने लगे,* वैसे ही प्रभुने उनके

---

* विजय उद्योग मात्र करिला डाकिते।
श्रीहस्त दिलेन प्रभु ताहार मुखेते॥

चै० भा० म० २५.१३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुँहको श्रीहस्तसे दबाकर मधुर स्वरमें हँसकर कहा—"जबतक मैं यहाँ प्रकटरूपमें हूँ, तबतक इस बातको किसीसे नहीं कहना।"

विजय प्रेमानन्दमें अपने-आपको भूल गये। उनको बाह्य ज्ञान न रहा। प्रभुके श्रीकरके स्पर्शसे उनको चेतना तो आयी, पर कोई बात बोल न सके। वे प्रेमानन्दमें केवल हुंकार-गर्जन करते थे। प्रभु यह देखकर हँसते रहे। विजयके हुंकार-गर्जन-शब्दसे भक्तगण जाग उठे। सबलोग विजयकी वह अवस्था देखकर उनको पकड़ने गये, परन्तु पकड़ न सके। विजय प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर हुंकार-गर्जन और उद्दण्ड नृत्य करने लगे। यह देखकर भक्तवृन्दने समझा कि प्रभुने उसके ऊपर कृपा करके कुछ विभूति दिखलायी है। विजयके ऊपर प्रभुकी कृपा देखकर वे प्रेमानन्दमें रोने लगे। भाग्यवान् विजय परमानन्द प्राप्तकर उन्मत्त हो रहे हैं; वे आनन्द-स्वरूप हो मूर्छित होकर भूतलपर पड़े हैं। चतुरचूड़ामणि प्रभुने तब सबसे पूछा—"अचानक विजयको इतना हुंकार-गर्जन क्यों होने लगा?" भक्तगण प्रभुके श्रीमुखकी ओर देखकर अजस्र आँसू बहा रहे थे। उनके मुँहसे बात नहीं निकल रही थी। रँगीले प्रभु तब स्वयं बोले—"इसमें गङ्गाका प्रभाव लगता है, विजयका गङ्गाके प्रति विशेष अनुराग है। अथवा शुक्लाम्बरके घरमें जिस देवताका अधिष्ठान है, उसका प्रभाव है। भगवान् जाने क्या बात है?"

इतनी बात कहकर श्रीगौर-भगवान्ने विजयके शरीरपर पुनः श्रीहस्तसे स्पर्श कर दिया और तत्काल उनको चेतना हो गयी। बहुत कष्टसे वे उठे, परन्तु जड़प्राय हो गये।

प्रभुकी कृपासे वे धीरे-धीरे प्रकृतिस्थ हुए। आहार-निद्रा आदि देहधर्मको छोड़कर सात दिनतक विजय सारी नदियामें उन्मत्तके समान घूमते रहे। कोई आदमी इसका कुछ कारण न समझ सका। भक्तवृन्दने समझा कि विजय प्रभुके किसी ऐश्वर्यका दर्शन करके ऐसे प्रेमोन्मत्त हो गये हैं। कुछ दिनके बाद विजय प्रकृतिस्थ हुए।

ज्योतिर्मय दिव्य तेजपूर्ण श्रीभगवान्की ऐश्वर्यमूर्तिके दर्शन करके दुर्बल जीव स्थिर नहीं रह सकता। लोग कहते हैं कि ध्यान-धारणाके द्वारा श्रीभगवान्की विभूतिमयी श्रीमूर्तिका दर्शन प्राप्त होता है। इसका अर्थ समझनेकी शक्ति अधम ग्रन्थकारमें नहीं है। विजयकी जो दशा हुई, योगी-ऋषिगणकी भी वही दशा होती होगी, इसमें संदेह नहीं है। इस लीलारङ्गके बहाने प्रभुने दिखलाया है कि श्रीभगवान्के तेजका दर्शन करना दुर्बल जीवके लिए दुष्कर है। उनका ऐश्वर्यमय लीलारङ्ग जीवके लिए दर्शनीय नहीं है; उनकी मधुर नर-लीला ही सर्वोत्तम है और यह लीलारस ही जीवके लिए आस्वादनीय है, अनुशीलनीय और उपभोग्य है। श्रीभगवान् जब नर-वपु धारण करके धरा-धाममें अवतीर्ण होते हैं तो उनका अपूर्व लीलारङ्ग जीव अपनी आँखोंसे देखते हैं। उनकी मधुर कथा अपने कानोंसे सुनते हैं। उनकी भुवन-मोहन मधुर मूर्तिको अपनी चर्म-चक्षुओंसे देखकर ज्ञान और बुद्धिको भुलाकर जड़ प्रकृति बन जाते हैं। श्रीभगवान्के साथ उनकी मधुर और सर्वोत्तम नर-लीलाके सूत्रमें आबद्ध होकर जीव उनके साथ प्रेम-सम्बन्ध-स्थापन करके निर्मल आनन्द-रसका उपभोग करता है। श्रीभगवान्की ऐश्वर्यपूर्ण श्रीमूर्तिके साथ, उनके तेजोमय ज्योतिपूर्ण श्रीविग्रहके साथ जीवका घनिष्ठ और आत्मीय सम्बन्ध नहीं हो सकता। इसी कारण सर्वमङ्गलमय जीव-बन्धु श्रीभगवान्का नर-वपु ग्रहण करके भूतलमें अवतार-रूपमें आविर्भाव होता है। अवतार-तत्त्वके इस मूल कारणको जिन्होंने भली-भाँति समझा है, वे श्रीभगवान्के ऐश्वर्यभावमें मुग्ध नहीं होते। वे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीभगवान्‌को ऐश्वर्यभावसे नहीं भजते। श्रीभगवान्‌की माधुर्य-लीलाके रसमें वे सदा मग्न-रहकर माधुर्यभावमें उनका भजन करके भक्तोत्तम पदको प्राप्त होते हैं।

प्रेम पञ्चम पुरुषार्थ है। श्रीभगवान्‌को प्रेमदृष्टिसे देखना, उनकी प्रेमभावसे पूजा करना, प्रेमभक्ति-द्वारा उनका आवाहन करना—ये भगवत्प्रेमी रसिक भक्तके साधनाङ्ग हैं। उनके ऐश्वर्यका दर्शन, उनके पास ऐश्वर्यकी भिक्षाकी याचना करना प्रेम-भक्ति-याजक रसिक भक्तका लक्षण नहीं है। श्रीभगवान् चतुर-शिरोमणि हैं। प्रेमधन उनका 'निज गुप्त वित्त' है। यह सम्पत्ति वे सहज ही किसीको देना नहीं चाहते। ऐश्यर्यका मोह दिखाकर वे नाना प्रकारसे अपने भक्तोंको भुलावेमें डालनेकी चेष्टा करते हैं। श्रीभगवान्‌के ऐश्वर्यका दर्शन करना दुर्बल जीवके लिए हितकर नहीं जान पड़ता; क्योंकि दुर्बल जीव श्रीभगवान्‌के ऐश्वर्यको देखकर मुग्ध होकर मूलतत्त्वको गँवा देता है। चतुर-चूड़ामणिकी चातुरीके जालमें पड़कर अबोध जीव उनसे ऐश्वर्यकी याचना करता है। ऐश्वर्यको पाते ही वह उनको भूल जाता है।

श्रीभगवान् अतिशय कृपालु हैं, परम दयालु हैं। जो मनुष्य जिस वस्तुको चाहता है, उसको वे वही वस्तु देते हैं। उनके प्रियतम अन्तरङ्ग भक्त विजय उनके ऐश्वर्यको देखकर भूले नहीं, प्रभुसे उन्होंने कुछ माँगा नहीं, केवल आनन्दमें उन्मत्त होकर सारी नदियामें नृत्य करते हुए भटकते रहे।

प्रभुका ऐश्वर्य देखकर दासके मनमें बड़ा आनन्द होता है; परन्तु वह ऐश्वर्यका अंश लेनेकी कभी इच्छा नहीं करता। जो दास प्रभुके ऐश्वर्यके अंशकी याचना करता है, वह श्रेष्ठ दास नहीं है। प्रभु-भक्त दास प्रभुके ऐश्वर्यको देखकर अपनेको गौरवान्वित समझता है। सौभाग्यवान् विजय प्रभुके ऐश्वर्यको देखकर आनन्दसे उन्मत्त हो गये। ऐश्वर्यके गौरवसे उन्होंने अपनेको गौरवान्वित समझा। यही प्रकृत दासका लक्षण है। इस लीलारङ्ग-कथाकी फलश्रुति श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखी है—

विजयेरे कृपा, शुक्लाम्बरान्न-भोजन।
इहार श्रवणे मात्र मिले प्रेमधन॥

चै.भा.म. २५-१५०

प्रभुने विजयका नाम रखा 'रत्नबाहु-विजय'। इसी नामसे वे गौराङ्ग-लीलामें प्रसिद्ध हैं। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि नमस्कार। लीलारस-विग्रह श्रीगौर-भगवान्‌की और एक अलौकिक लीला-कथा सुनिये!

मुसलमान दर्जी

श्रीवासपण्डितके घरमें एक मुसलमान दर्जी कपड़ेकी सिलाईका काम करता था। श्रीवासके आँगनमें प्रभु नित्य जाते थे। वह भाग्यवान् मुसलमान नित्य उनके चरणोंका दर्शन प्राप्तकर कृतार्थ होता था। वह मुसलमान दर्जी भक्त-प्रधान श्रीवासपण्डितके घरका काम करता था, अतएव वह प्रभुको प्रिय था। भक्तके दास प्रभुको अपने दासकी अपेक्षा भी प्रिय होते हैं।

मुसलमान दर्जी श्रीवासपण्डितके घरमें कार्य करता था, इसी गुणसे वह प्रभुका कृपापात्र बना। प्रभुने एक दिन उस मुसलमान दर्जीको कुछ अपनी विभूति दिखलायी। श्रीभगवान्‌के षडैश्वर्यपूर्ण स्वरूपको दिखलाया। कदाचारी म्लेच्छ श्रीवास-पण्डितके अनुग्रहसे प्रभुके ऐश्वर्यरूपको देखकर सारी नदियामें रास्ते-रास्ते 'देखा, देखा' कहकर ऊर्ध्वबाहु होकर, प्रेमानन्दमें विभोर होकर नृत्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करने लगा। क्या देखा, यह वह किसीको नहीं बताता था। किन्तु दोनों बाहु ऊपर उठाकर प्रेममें भरकर उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगा। कदाचारी यवन परम वैष्णव बन गया। उसमें यवनत्व नहीं रहा। प्रभुकी कृपासे वह इसलाम-धर्म छोड़कर वैष्णव होकर नवद्वीपमें भक्त-सेवाका व्रती बना।

इस प्रकारकी अपूर्व अहैतुकी भगवत्कृपाकी बात क्या कभी किसीने सुनी है? यह लीलारङ्ग प्रकट करके भक्तवत्सल हमारे प्रभुने जगत्में भक्त-महिमाका प्रचार किया। उन्होंने कलिके जीवको दिखलाया कि भगवद्भक्तका सङ्ग और उनकी सेवा करनेपर परम दयालु प्रभु मनुष्यको शिव-विरञ्चि-अभिवाञ्छित उच्चपद प्रदान करते हैं। इस भाग्यवान् दर्जीने भक्तचूड़ामणि श्रीवासपण्डितका दासत्व करके जिस परम वस्तुको प्राप्त किया, परम शुद्धाचारी, ध्यान-धारणारत योगी-ऋषिगण अनन्त कालतक योग-याग और ध्यान-धारणा करके भी उसे प्राप्त नहीं कर पाते।

प्रभुकी एक और अलौकिक लीला-कथा कहकर यह अध्याय समाप्त करूँगा।

एक दिन ग्रीष्मकालमें संध्यासे पूर्व भक्तवृन्द श्रीवासके आँगनमें संकीर्तन-यज्ञका अनुष्ठान कर रहे थे; उसी समय आकाशमें घनी घटा घिर आयी। यह देखकर भक्तगणके मनमें एक साथ भय और दुःखका उद्रेक हुआ; क्योंकि इससे उनके कीर्तनमें विघ्न पड़ता। भक्तोंका दुःख दूर करनेके लिए श्रीगौर-भगवान् सदा तयार रहते हैं। वे भक्तवृन्दको अभय-प्रदान करके एक जोड़ी मंजीरा हाथमें लेकर बाहर निकल पड़े। मेघाच्छन्न आकाशकी ओर ऊपर शुभ दृष्टिपात करके प्रभु मंजीरा बजाते हुए मधुर कीर्तन करने लगे। तत्काल वह मेघजाल फटने लगा और थोड़ी देरमें आकाश निरभ्र हो गया। भक्तवृन्दके आनन्दका पारावार न रहा। शुभ संकीर्तन आरम्भ हो गया। प्रभुके इस अलौकिक लीलारङ्गको देखकर नदियावासी भक्तवृन्द चकित होकर उनके मुख-चन्द्रकी ओर ताकने लगे। उनके चरण-कमलमें अपने सिर अवनत कर दिये। आत्मप्रकाशके समय कुछ-कुछ ऐश्वर्य-प्रदर्शन आवश्यक समझकर श्रीगौर-भगवान्ने उस समय किसीको चतुर्भुज मूर्ति, किसीको षड्भुज मूर्ति का दर्शन कराकर अपनी भगवत्ताका प्रचार किया था। जिनपर प्रभुने कृपा करके अपने ऐश्वर्यका प्रदर्शन किया था, उनको ही उसे प्रकट करनेका निषेध कर दिया था; क्योंकि वे कलिके प्रच्छन्न अवतार थे।

प्रभुकी अनेक अलौकिक लीला-कथाएँ हैं। वे यथास्थान वर्णित होंगी। श्रीभगवान्की अलौकिक लीलाका निगूढ़ तात्पर्य है। उनके भक्तगण भी कभी-कभी अलौकिक कार्य करते देखे जाते हैं। प्रभुकी कृपासे वे भी ऐश्वर्य-प्रदर्शन करनेमें समर्थ होते हैं; परन्तु गौर-भक्तवृन्द सहज ही ऐश्वर्य-प्रदर्शन नहीं करते। दीन-हीन करङ्ग-कन्था-कौपीनधारी वैष्णव-विग्रह वृन्द, एक-एक आदमी श्रीगौराङ्गप्रभुकी कृपाके बलसे जगत्से उद्धार करनेकी शक्ति धारण करते हैं। एक-एक गौर-भक्त एक-एक ध्रुव-प्रह्लाद हैं। गौर-भक्तवृन्दके चरित्रका अनुशीलन करनेपर कृपालु पाठकवृन्दके मनमें गौर-भक्तकी महिमा क्रमशः स्फुरित होगी। गौर-भक्तका सङ्ग करनेपर श्रीगौराङ्गके चरणोंमें रति-मति प्राप्त होगी। कृपालु पाठकवृन्द! आइये, सब मिलकर प्रभु और उनके भक्तवृन्दका जयगान करके जीवन सार्थक करें—

जय जय जगन्नाथपुत्र विप्रराज।
जय हओ तोर जन श्रीभक्त-समाज॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सैंतीसवाँ अध्याय

संकीर्तन-महारास-लीला

आरम्भिला महाप्रभु कीर्तन-बिलास।
सर्व वैष्णवेर हैल शुनिया उल्लास॥

चै.भा.म. ८.११०

संकीर्तन-महारासमें गदाधर और नरहरि सरकार

संकीर्तन-रास-रसिक श्रीश्रीगौर-गोविन्दने युगधर्म हरिनाम-संकीर्तनके आरम्भमें जब पुण्यधाम नदियामें आत्मप्रकाश किया तो उनके नित्य पार्षदगण, जहाँपर जिसने जन्म लिया था, वहाँ-वहाँसे आकर श्रीधाम नवद्वीपमें प्रभुके साथ मिले। अब सबको पता चल गया कि प्रभुने नदियामें अवतार ग्रहण किया है। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने श्रीवासके आँगनमें इकट्ठे होनेवाले भक्तोंमें प्रभुके कुछ अन्तरङ्ग भक्तोंके नामका उल्लेख करते हुए लिखा है—

"अनन्त चैतन्य-भृत्य—नाम जानि कत।"

चै.भा.म. ८.११६

श्रीवासका आँगन नदियाके प्रेमावतार श्रीश्रीगौर-गोविन्दकी रास-लीला-स्थली थी। श्रीवृन्दावनस्थ श्रीश्रीराधाकृष्णकी रास-लीला-स्थली और श्रीनवद्वीपस्थ श्रीश्रीगौर-गोविन्दकी रासलीला-स्थली एक वस्तु है, एक तत्त्व है। भक्त और भगवान्‌के अबाध एवं निःसंकोच-मिलन स्थानका नाम है—रासलीला-स्थली और इस अपूर्व शुभ मिलनका नाम है—महारास। यह महारास ही श्रीगौराङ्ग-लीलाकी हरिनाम-संकीर्तन-लीला है।

पूर्वलीलामें व्रज-गोपिकाओंके साथ श्रीकृष्णका जैसा अबाध और निःसंकोच सम्मिश्रण तथा मिलन हुआ था एवं उस अपूर्व मिलनमें जिस प्रकार प्रेमरसोद्‌गारकी तरङ्ग उठी थी, भक्त और भगवान्‌में जिस प्रकार एक नवीन अपरूप प्रेमभाव-की सृष्टि हुई थी, श्रीगौराङ्ग-लीलाके महासंकीर्तनमें भी ठीक वैसा ही हुआ था।

श्रीश्रीगौर-गोविन्द राधाशक्ति गदाधरपण्डितका हाथ धारण करके, उनकी व्रजसखी मधुमती नरहरि सरकार ठाकुरके कंधेपर श्रीभुज-वेष्टन करके श्रीवास-आँगनमें रासस्थलीमें नदिया-नागररूपमें रसिक भक्तवृन्दके साथ जब भुवन-विमोहन-वेषमें क्षीण-कटि डुलाते हुए मधुर नृत्य-कीर्तन करते हैं तो वहाँ व्रजसुन्दरी गोपिकागण-परिवेष्टित श्रीश्रीराधा-गोविन्दकी श्रीवृन्दावनस्थ नित्य रासस्थलीका पूर्ण प्रकाश होता है। राधाशक्ति गदाधरपण्डित प्रेमविह्वल-भावमें सहास्य-वदन प्रभुके सामने जाकर जब सुमधुर वचनमें सुधा-मिश्रित प्रेमकी बातें करते हैं, तब रासविहारी रसिकशेखर श्रीश्रीगौर-गोविन्दके मनमें किस प्रकारके भाव होते हैं, यह ठाकुर लोचनदासकी भाषामें सुनिये—

ताँहार अमिया बोल सिञ्चिल अन्तर।
नाचिवारे जाय प्रभु धरि ताँर कर॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नरहरि भुजे आर भुज आरोपिया।
श्रीवासेर घरे नाचे रास विनोदिया॥
गौरदेहे श्यामतनु देखे भक्तगण।
गदाधर राधारूप हैला तखन॥
मधुमति नरहरि हैला सेइ काले।
देखिया वैष्णव सब हरि-हरि बोले॥
वृन्दावन प्रकाश हैल सेइ स्थाने।
गो-गोपी-गोपाल सङ्गे शचीर नन्दने॥
पूर्व सखा सखिगण जे रूपे आछिला।
रस आस्वादने प्रभु सङ्गे भक्त हैला॥
अभिनव कामदेव श्रीरघुनन्दन।
अप्राकृत मदन बलिया जे गगन॥
तारा सबे पूर्वदेह धरि प्रभु काछे।
आवरण क्रमे तारा प्रभु बेड़ि नाचे॥
देखि अन्य अवतार सङ्गी सदे काँदे।
नवद्वीप उदय हइल व्रजचाँदे॥
क्षणे गौरलीला गदाधर करि संगे।
क्षणे श्यामलीला राधा रास-रसरंगे॥
चमत्कार लीला देखि सब भक्तगण।
हरि-हरि जय-जय बोले घने घन॥

गदाधर और नरहरि नदिया-नागर श्रीगौराङ्ग-सुन्दरके अति प्रिय अन्तरङ्ग रसिक भक्त थे। पहले कह चुका हूँ कि गदाधर राधाशक्ति और नरहरि व्रजकी मधुमती थे। दोनोंका व्रजका मधुरभाव था। गदाधर प्रभुकी वेष-रचना करते थे, उनके लिए पान लगाते थे, रात-दिन उनके पास रहते थे। नरहरि और गदाधरमें बड़ी प्रीति थी। नरहरि गदाधरकी श्रीगौराङ्ग-सेवाके प्रधान सहायक थे। वे प्रभुको चँवर डुलाते थे, दोनों मिलकर प्रेम-सेवा करते थे, इससे प्रेममय प्रभु उनके ऊपर विशेष संतुष्ट रहते थे। नरहरि और गदाधर-दोनों ही बालब्रह्मचारी थे। श्रीगौराङ्गसुन्दरको वे लोग पतिभावमें भजते थे। श्रीगौर-नागर-वर उनके प्राणनाथ, प्राणवल्लभ और हृदयेश्वर थे। उनके इस प्रेम-भजनसे श्रीगौर-गोविन्द परम प्रसन्न होकर उनको भजन-राज्यका उच्चाधिकार तथा अति उच्च आसन दे गये हैं।

गदाधर अति सुन्दर पुरुष थे, बड़े लजीले थे; वे मुँह ऊपर उठाकर प्रभुके साथ भलीभाँति बातें नहीं कर सकते थे। प्रभुकी बात किसीको कह नहीं सकते थे। उनका श्रीगौराङ्ग-प्रेम उनके मन ही में रहता था; गौर-प्रेम-लहरी उनके हृदय-सिंधुमें निरन्तर हिलोरें मारती थी। प्रेमिक पुरुष गदाधरका हृदय-समुद्र बड़ा गम्भीर, अगाध और अतलस्पर्शी था। उनके हृदयका प्रेम-भाव प्रभुके सिवा और कोई नहीं समझ पाता था। गदाधरकी प्रकृति लज्जाशील रसिक स्त्रीके समान थी; अतः मधुर नागरीभाव उनमें विशेषरूपसे परिस्फुटित हुआ था। वे अपने मनके भाव किसीको खोलकर नहीं कहते थे। अतएव कोई पद या श्लोक लिखकर अपनी श्रीगौराङ्ग-प्रीतिको उन्होंने प्रकट नहीं किया। उनकी प्रेमचेष्टा और क्रिया देखकर, मनका भाव समझकर श्रीगौराङ्गसुन्दर उनके साथ प्रेमलीला-रङ्ग करते थे। गदाधरमें जो विशिष्ट श्रीगोराङ्ग-प्रीति थी, प्रभुके साथ उनका जो विशिष्ट प्रेम-सम्बन्ध था, उसे उनके साथी भक्तगण सभी समझते थे।

सारे सुकवि-भक्त-महाजनगण अनेक पदोंकी रचना करके नाना भावमें श्रीश्रीगौर-गदाधरके मधुरभावके प्रेमलीला-रङ्गका वर्णन कर गये हैं, उन सब पदोंका निगूढ़ भाव रसिक भक्तगण ही समझ पाते हैं। आजतक गौर-भक्तगण संकीर्तनके प्रारम्भमें श्रीगौराङ्ग-सुन्दरका आह्वान करते हैं। यथा, प्राचीन पद—

—"एस एस हे!
गदाधरेर प्राणनाथ श्रीगौराङ्ग हे!
नरहरिर चित-चोरा श्रीगौराङ्ग हे!"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इन सब पदोंकी संख्या बहुत है; ये मधुररसके विभिन्न भावोंके उद्दीपक हैं। गदाधरके हृदयमें* गौराङ्ग-प्रेमकी लहरी अन्तर्मुखी होकर प्रेमरङ्गमें खेल करती थी; नरहरिके हृदय-समुद्रमें वह उछलती थी, बहिर्मुखी होती थी; दोनों तटोंको डुबोती हुई उसकी धारा बहती थी। उस मधुर प्रेमकी धाराके स्रोतमें रसिक भक्तजन प्रेमानन्दमें बहने लगते थे।

नरहरि सरकारका गौराङ्गाष्टक

ठाकुर नरहरि सरकारके द्वारा रचित** गौराङ्ग-विषयक मधुररसकी पदावली और उनका लिखा हुआ श्रीगौराङ्ग-अष्टक मधुररसका अक्षय स्रोत है। व्रज-रस-सिंधु-मन्थन करके उन्होंने इस अपूर्व स्रोतका सृजन किया है। पहले कह चुका हूँ कि पूर्वलीलामें वे व्रजकी रास-रसिका श्रेष्ठा मधुमती सखी थे। श्रीगौराङ्ग-सुन्दरका नदिया-नागर माधुर्यभाव और उनका संन्यासका ऐश्वर्यभाव—इन दोनों भावोंका एकत्र समावेश करके उन्होंने जो एक अपूर्व 'श्रीगौराङ्गाष्टक' लिखा है, उसके प्रथम श्लोकमें ही रसिक भक्तकविने अपने चित्तचोर नागरमणिके कपट-संन्यासका प्रकृत परिचय प्रदान किया है। यथा—

गोपीनां कुचकुंकुमेन निचितं वासः किमस्यारुणं
निन्दत् काञ्चनकान्तिरासरसिकाश्लेषेण गौरं वपुः।
तासां गाढ़कराभिबन्धनवशाल्लोमोद्गमो दृश्यते
आश्चर्यं सखि पश्य लम्पटगुरो संन्यासिवेषं क्षितौ॥

अर्थ—हे सखि! पृथिवीपर इस लम्पट-गुरु गौरनागरके अद्भुत संन्यास-वेषको देखो! यह जो उनका अरुण-वस्त्र-परिधान देखती हो, वह व्रज-गोपिका-वृन्दके कुच-कुंकुमके द्वारा खचित होकर अरुणवर्ण धारण कर रहा है। जो यह कषित-काञ्चन-निन्दित गौरवर्णकी कान्ति देखती हो, वह रास-रसिका व्रजसुन्दरीगणके सुवलित बाहु-बन्धनके द्वारा गाढ़ालिङ्गनसे उत्पन्न हुई है, यह निश्चय जानो! यह जो गौराङ्ग-शरीरमें पुलकानन्दजनित रोमाञ्च हो रहा है, यह भी व्रज-युवती-वृन्दके गाढ़ प्रेमालिङ्गन-सुखमूलक हैं; सखि! इसे निश्चयपूर्वक जान लो!

अष्टकका द्वितीय श्लोक यह है—

यः पूर्वं व्रजसुन्दरीरतिरसैरुल्लासितः प्रत्यहं
कालिन्दीपुलिने ननर्त्त रभसात् श्रीरासगोष्ठ्यां विभुः।
सोऽयं सम्प्रति सर्वलोकनिहितप्रेमानुरागः कलौ
प्रेमान् नृत्यति नर्त्तयत्यपि जगत् भूदेवचड़ामणिः॥

---

*अनुमानतः १४०८ शकाब्दके वैसाख मासकी अमावास्यातिथिमें गदाधरपण्डितने वारेन्द्र श्रेणीके ब्राह्मणवंशमें जन्म-ग्रहण किया था। उनके पूज्यपाद पिताका नाम माधव मिश्र तथा माताका नाम रत्नावती था। ये लोग गौराङ्ग-परिवारसे विशेष परिचित थे। बाल्यकालसे ही गदाधर कृष्ण-भक्त थे। गदाधरके कनिष्ठ भ्राताका नाम वाणीनाथ था। गदाधरने विवाह नही किया। वे पुण्डरीक विद्यानिधिके मन्त्रशिष्य थे। वे श्रीमन्महाप्रभुकी अपेक्षा उम्रमें एक वर्ष छोटे थे। अनुमानतः १४५५ शकाब्दमें ४७ वर्षकी अवस्थामें ज्येष्ठ मासकी अमावास्या तिथिमें गदाधरपण्डितका तिरोभाव हुआ।

** ठाकुर नरहरि सरकारने १४०० शकाब्दमें वैद्यवंशमें जन्म-ग्रहण किया। उनके पिताका नाम नारायणदेव सरकार था। वर्दवान जिलाके श्रीखण्ड ग्राममें ठाकुर नरहरिका जन्म हुआ था। वे श्रीमन्महाप्रभुके मन्त्रशिष्य थे। श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थके प्रणेता लोचनदास उनके मन्त्र-शिष्य थे। नरहरि सरकार ठाकुरने 'भक्तिचन्द्रिका-पटल' 'भक्तामृताष्टक' 'नामामृत-समुद्र' 'भजनामृत', 'श्रीगौराङ्गाष्टक' आदि ग्रन्थ तथा कुछ पदावलियोंकी रचना की है। १४६३ शकाब्दमें कार्तिककृष्णद्वादशीको उनका देहान्त हुआ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्थ—हे सखि ! जो रसिकचूड़ामणि प्रभु पूर्वकालमें श्रीवृन्दावनमें व्रजयुवतियोंके रति-रस-आस्वादनमें उन्मत्त होकर प्रतिदिन यमुनाके तीर तथा श्रीरासस्थली-मण्डलमें प्रेमानन्दके आवेगमें भरकर नृत्य करते थे, वे ही अब कलियुगमें विप्रचूड़ामणि-रूपमें सब जीवोंके प्रति सदय होकर प्रेम-धन-अर्पण करके प्रेमानुरागमें स्वयं मधुर नृत्य करते हैं तथा समस्त जगत्के जीवोंको प्रेमसे नचाते हैं।

प्रथम और द्वितीय श्लोकमें ठाकुर नरहरिने अपने श्रीगौराङ्ग-नागरकी पूर्वलीलाका परिचय दिया है तथा उनके प्रकृत-तत्त्वको प्रकट किया है। तृतीय श्लोकमें वे उनकी महामहिमाके प्रकाशक दो-एक सार तथ्योंको कहकर जय-जयकार मनाते हैं। यथा,

वेदान्तागम-वेद-शास्त्रपटली दुर्गम्यपादाम्बुजः
श्रीश्रीनन्दकिशोरलास्यलहरी विद्योतकालूग्रहः।
तत्कालस्मृतिमात्रतत्क्षणबलात् प्रेमप्रवाहाम्बुधिः
भूदेवाङ्गणमङ्गलो विजयते श्रीश्रीशचीनन्दनः॥

अर्थ—वेदान्त, आगम और वेद-शास्त्र, सब-के-सब जिनके पादाम्बुजकी महिमा समझनेमें असमर्थ हैं तथा जिनकी कृपासे श्रीश्रीनन्दकिशोरके लीला-तरङ्गरूपी विद्या जीवके हृदयमें प्रकाशित होती है और जिनके नामके स्मरणमात्रसे तत्काल जीवके हृदयमें प्रेम-समुद्रका प्रबल प्रवाह उठता है, वे द्विजकुलचूड़ामणि 'शचीनन्दन' नामसे श्रीजगन्नाथ-मिश्र ब्राह्मणके प्राङ्गणमें चिरमङ्गल-स्वरूपमें विजयको प्राप्त हों।

चतुर्थ श्लोकमें ठाकुर नरहरि नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गसुन्दरकी पूर्वलीलाका स्मरण कराकर, उनको सर्वावतार-सार रूप बतलाते हैं। यथा,

मोहोन्मादरसेनगोपयुवतिसिक्तेन वृन्दावनं
यः पूर्वं जगदेकमङ्गलमलंचक्रे घनश्यामलः।
सोऽयं गौरहरिः समस्तजगतां प्रेम्णा समुल्लासयन्
कारुण्यैक निकेतनो विजयते गौड़ावलीमण्डलें॥

अर्थ—जिन्होंने मेघके समान श्यामवर्णका ही अपरूप-रूप-धारण करके व्रजकी गोप-युवतियोंके द्वारा सिंचित मोह-रूपी उन्मादक रससे श्रीवृन्दावनको एकमात्र जगन्मङ्गलका आधार बनाया था, वे वृन्दावन-चन्द्र इस करुणासागर गौरहरि-रूपमें केवल करुणाके वश होकर स्व-प्रेम-माधुरीके द्वारा आज समस्त जगत्को उल्लसित करके गौड़रूप-भूमण्डलमें विजयको प्राप्त हो रहे हैं। अर्थात् पूर्वलीलामें उन्होंने श्रीवृन्दावनको व्रज-रसका आधार बनाया था, अब समस्त जगत्में इस सर्वश्रेष्ठ रसको वितरण कर रहे हैं और समस्त जगत्के जीव उस अपूर्व रसका आस्वादन करके उन्मत्त हो रहे हैं। अब जगत्में व्रज-रसका छिड़काव हो रहा है। अतएव सर्वावतार-सार करुणासिंधु श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी जय हो !

पञ्चम श्लोकमें श्रीगौरनागरवरके रूपका वर्णन किया गया है। श्रीरास-मण्डलस्थ रसिकशेखर व्रजेन्द्रनन्दनकी जो अपरूप-रूप-माधुरी है, संकीर्तन-मध्यवर्ती नदिया-नागर शचीनन्दनकी भी वैसी ही रूप-माधुरी देखकर मुग्ध होकर ठाकुर नरहरिने यह श्लोक लिखा है। यथा,

नृत्यावेशमहोल्लसत्-सुमधुरं प्रत्यङ्गवेशोज्ज्वलं
श्रीखण्डागुरुकुंकुमादिनिचितं श्रीमद्बृहद्वक्षसम्।
कर्पूरोद्भटपूगपुञ्जविलसत् प्रारक्तविम्बाधरं
श्रीचैतन्यमहाप्रभोर्विजयते लावण्यसारं वपुः॥

अर्थ—नृत्यावेशसे अधिकतर उल्लासयुक्त होकर उनके प्रत्येक अङ्गके माधुर्यसे उज्ज्वल वेष दीप्त हो रहा है, उनके परमशोभायुक्त वृहद् वक्षःस्थलपर मलयज, अगुरु, कुकुंम आदि अनुलिप्त हैं, उनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर्पूररसयुक्त और पुंगीफल-मिश्रित ताम्बूलसे रञ्जित बिम्बाफलके समान रक्तवर्णके अधरोंकी शोभा भक्तजनोंके मनको हरण करती है, सर्वसौन्दर्यके एकमात्र आधाररूप शरीरको धारण करके श्रीगौराङ्ग महाप्रभु संकीर्तनमें भक्त-मण्डलीके साथ विराजते हैं।

षष्ठ श्लोकमें भी श्रीमन्महाप्रभुके अपरूप-रूपका वर्णन है। यथा,

प्रतप्तकनकप्रभं विमलपूर्णचन्द्राननं
गलन्नयनवारिभिः सपदि सिक्तभूमितलम्।
सगद्गदगिरा मुदा सकलदेवचूड़ामणि
शचीसुतमहं भजे करुणासागरं नागरम्॥

अर्थ—उनका वर्ण उत्तप्त काञ्चनके समान विमल है, उनके मुखकी शोभाके सामने पूर्णचन्द्र भी मलिन जान पड़ते हैं, प्रेमानन्दमें जब उनकी आँखोंसे आँसू बहते हैं तो वे सारे शरीरको सिक्त करते हुए भूतलपर गिरते हैं, उनकी गद्गद-वाणी सब भक्तोंके मनको उन्मत्त करती है, उन सर्वदेव-चूड़ामणि, करुणासागर तथा नागरेन्द्र शचीनन्दनको मैं भजता हूँ।

सप्तम श्लोकमें भी उस नागर-चूड़ामणिकी अपूर्व रूप-माधुरी वर्णित है। गौराङ्ग-रूप-मुग्ध नदिया-नागरी-भावापन्न नरहरि ठाकुरने व्रज-भावावेशमें इन सब श्लोकोंको लिखा है। उनके हृदयमें महारासलीलाकी स्फूर्ति हुई थी। इन सब श्लोकोंमें उन्होंने रास-रसिक श्रीश्रीगौरांगसुन्दरकी रास-मण्डलस्थ रसराज मूर्त्तिका वर्णन किया है। सप्तम श्लोक यह है—

कदम्बकुसुमोल्लसत् पुलकपुञ्ज-पुञ्जोज्ज्वलं
झलझञ्झलदिति स्खलन्नयनवारिभिर्निर्झरम्।
वयं दमदमायते हृदिदरस्फुरन्माधुरी
मधून्मदमहानटं किमपि धाम वन्दामहे॥

अर्थ—कदम्ब-कुसुमके समान विकसित पुञ्ज-पुञ्ज पुलकावलीके द्वारा समुज्ज्वल जिसका सुन्दर शरीर है, झल-मल रूपमें निर्झरकी वारि-धाराके समान जिसके नेत्रोंसे जल बहता रहता है, हृदयकी स्फूर्ति बाहर प्रकाशित होकर जिनके अङ्गकी कान्ति-माधुरीको अतिशय दीप्त करती है, उस वसन्तकालीन मदोन्मत्त महानटके स्वरूपवाले अपूर्व तेजोमय श्रीगौराङ्गसुन्दरकी हम वन्दना करते हैं।

वसन्तपूर्णिमा ही रासपूर्णिमा है। इसकी परम शोभामयी रजनीमें श्रीवृन्दावनमें श्रीकृष्णने गोपी-जन-वल्लभ-वेषमें रासलीला की थी। अतएव सिद्ध महाजन कविने लिखा है—'मधून्मद महानटम्'। श्रीभगवान्की रसराज मूर्तिका पूर्ण विकास हुआ है, श्रीरास-मण्डलमें। श्रीगौरनागरका परिपूर्ण नागरत्व तथा पूर्णतम माधुर्यका प्रकाश उनके श्रीसंकीर्तन-यज्ञमें हुआ है। यह संकीर्तन-यज्ञ ही महारास है। श्रीगौराङ्ग-लीला-समुद्रमें जो डूब चुके हैं, उन्होंने ही इस अति निगूढ़ और सूक्ष्म भजनतत्त्वको समझा है।

ठाकुर नरहरिने अपने इस अपूर्व अष्टकके अन्तिम श्लोकमें महारासमें श्रीश्रीमन्नित्यानन्दप्रभुके साथ श्रीगौर-नागरकी मिलन-प्रीतिका गान किया है। यथा,

उच्चैर्लोलभुजद्वयेन परितः स्वर्लोकमाह्लादयन्
प्रेमापूरितकण्ठगद्गदहरिर्ध्वन्येर्भुवं मोहयन्।
चञ्चलपादविहारनूपुररवैर्नागान्मुदा मीलयन्
नित्यानन्दमहाप्रभुर्विजयते श्रीमल्लवेशोज्ज्वलः॥

अर्थ—चञ्चल आजानुलम्बित सुवलित दोनों भुजाओंको ऊपर उठाकर सर्वतोभावेन देवलोकको आनन्द-प्रदान करते हुए, प्रेम-परिपूरित कण्ठसे,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गद्‌गद स्वरमें जगन्मङ्गल हरिध्वनिका उच्चारण करते हुए जगत्‌को उन्मत्त करके, चञ्चल चारुपाद-विक्षेपके द्वारा चरणोंके नूपुरकी सुमधुर ध्वनिसे नागलोकको आनन्द-प्रदान करते महामल्ल वेषमें शोभायमान श्रीनित्यानन्दमहाप्रभु जयको प्राप्त हों !

यहाँ प्रश्न हो सकता है कि महारास-लीलामें रोहिणीनन्दन बलरामजीका प्रवेश कैसा ? ऐसी स्थितिमें रसभङ्ग-दोष आ सकता है। इसके उत्तरमें पहले श्रीश्रीनित्यानन्द-तत्त्वको समझना आवश्यक है। गोस्वामि-शास्त्रके मतसे वे व्रजकी अनङ्गमञ्जरी सखी है । पूज्यपाद सार्वभौम भट्टाचार्यने अपने 'नित्यानन्दाष्टक' में लिखा है—

अनङ्गमञ्जरीस्वरूप राधिकानुजापकं
पीयूषवाद्यकृष्णसेवरागतालगायकम् ।
गौराङ्गसङ्गे राढ़-रङ्गे कीर्तनप्रकाशकं
नमामि नित्य नित्यानन्द रोहिणीकुमारकम् ।।*

अनङ्गमञ्जरी श्रीराधिकाजीकी प्रधान सखी हैं, वे गीतवाद्यमें परम निपुण हैं, अपनी मधुर-वाणीसे श्रीकृष्णका मन हर लेती हैं। वे सर्वदा श्रीवृषभानु-नन्दिनीके साथ रहती हैं, अतएव महारास-लीलाकी वे प्रधान सहायक हैं। अतएव रसिकभक्त नरहरि ठाकुरने श्रीश्रीनित्यानन्दमहाप्रभुको महारासमें श्रीगौर-नागरके साथ पहले ही मिला दिया है। श्रीसंकीर्तन-महायज्ञमें श्रीनित्यानन्दप्रभु ही श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके प्रधान सहायक थे।

---

* प्रभुके श्रीमुखकी वाणी—

नित्यानन्द प्रसादे से हय विष्णुभक्ति।
जानिह कृष्णेर नित्यानन्द पूर्ण-शक्ति ।।
कृष्णेर द्वितीय नित्यानन्द बइ नाइ।
सखि, सखा, शयन, भूषण, बन्धु, भाइ ।।
चै. भा. म. १२.२५,२६

अब उपर्युक्त श्लोकोंमें वर्णित श्रीगौराङ्गसुन्दरके रास-रसिक भाव तथा रसराज-मूर्तिको हृदयमें दृढ़ रूपसे अङ्कित करके तथा उनके रसिक भक्तवृन्दके सर्वविघ्न-विनाशक चरणोंकी वन्दना करके श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी संकीर्तन-महारास-लीलाके वर्णनमें प्रवृत्त होनेकी चेष्टा करूँगा। कृपालु पाठकवृन्द कृपा करके शुभ आशीर्वाद प्रदान करें !

पार्षदोंद्वारा संकीर्तन-महारासका वर्णन

गयासे श्रीश्रीगौराङ्गसुन्दर नवद्वीपमें आकर अपना प्रेमप्रकाश करते हैं। इसी समय वे स्वयं निरन्तर कृष्णप्रेमोन्मत्त-भावमें व्रजरसका सम्भोग करते हैं तथा अपने अन्तरङ्ग सखागणको पूर्ण-मात्रामें व्रजरस-सुधाका पान कराते हैं। पहले कह चुका हूँ कि श्रीगौराङ्गप्रभुकी संकीर्तन-लीला ही महारास-लीला है। इस रास-लीलाके रसास्वादनमें उन्मत्त होकर जिन गौराङ्ग-पार्षदगणने प्रभुकी इस मधुरलीलाका वर्णन करके प्राचीन पद लिखे हैं, उनमें वासुदेव घोष एक प्रधान पुरुष थे। वे श्रीगौराङ्गप्रभुकी इस रासलीलाके सङ्गी थे। उन्होंने एक दिनकी रासलीलाका वर्णन करके जो सुन्दर पद लिखा है, उसकी भणितामें उन्होंने यह संकेत किया है कि इस लीलारङ्ग-स्थलीमें वे स्वयं उपस्थित थे। पद यह है—

वृन्दावन लीला गोरार मने ते पड़िल ।
यमुनार भाव सुरधुनिरे करिल ।।
फूल बन देखि वृन्दावनेर समान ।
सखागण करे गोपीगण अनुमान ।।
खोल-करताल गोरा सुमेलि करिया ।
तार माँझे नाचे गोरा जय जय दिया ।।
ढल ढल गोर तनु काञ्चन जिनिया ।
आजानुलम्बित भुज नव कमनिया ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वासुदेव घोष ताहे करये विलास।
रासरस गोरा पँहू करये प्रकाश॥

पद-कल्पतरु।

श्रीगौर-नागरका यह रास-विलास बड़ी ही अद्‌भुत वस्तु है। प्रस्फुटित कुसुमवनसे सुशोभित, शीतल-मन्द-सुगन्ध पवनसे आसेवित, पक्षिकुल और आलिकुलके द्वारा शब्दायमान सुरसरिके पुलिनपर श्रीगौराङ्गसुन्दर अपने प्रियतम सखा, राधाशक्ति गदाधरका हाथ पकड़कर अपूर्व हाव-भावमें डोलते हुए प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य करने लगे। गदाधरका सलज्ज भाव था; वे व्रजरसमें उन्मत्त होकर पूर्णरूपेण अपने-आपको भूल गये। उनके शरीरमें पूर्णतः राधाभाव विकसित हो रहा था। वे सोचते थे कि वे ही श्रीवृषभानुनन्दिनी हैं और वे जिसके साथ नृत्य कर रहे हैं, वह दूसरा कोई नहीं है—उनके जीवन-सर्वस्व, प्राण-वल्लभ व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण हैं और यह जो सुरसरि है, सो यमुना है। प्रभुका भी यही भाव है। भक्तगण भी प्रेमाविष्ट होकर स्व-स्व-व्रजभावमें विभावित होकर अपूर्व ताल-लयके साथ समयोचित सुललित गीत गाने लगे। वे व्रजसुन्दरीवृन्द हैं, उनमें-से प्रत्येक यह सोच रहे हैं कि श्रीश्रीराधागोविन्दकी इस रास-लीलामें उनकी कृपाके बलसे प्रवेशाधिकार प्राप्त हुआ है; आज उनका भाग्य बड़ा उज्ज्वल है। अपने-अपने भावके अनुसार कार्य करके वे सब इस अपूर्व लीलामें सहायता कर रही हैं। नृत्य-कीर्तन अबाधगतिसे चल रहा है। उस मधुर-नृत्यके हाव-भावको क्या पूछना! उस कीर्तनका माधुर्य भी क्या है! वह अद्‌भुत मृदङ्ग-करतालकी ध्वनि कैसी मधुर है! कैसी हृदयस्पर्शी है! पदकर्ता नयनानन्द, गदाधरके भतीजे और शिष्य हैं। उन्होंने एक पदमें इस भावका अतिशय सुन्दर वर्णन किया है। यथा,

नाचये गौराङ्ग मोर गदाधर रसे।
गदाधर नाचे पुन गौराङ्ग-विलासे॥
पुरुष-प्रकृति किवा रति देव काम।
राधा कानू केलि किवा जानकी श्रीराम॥
अनङ्ग अनङ्ग जिनि अङ्गेर वलनि।
उपमा महिमा सीमा कि बलिते जानि॥

इत्यादि

यह संकीर्तन रासलीला-रङ्ग जो प्रभुने प्रकट किया, वह पहले श्रीवासके आँगनमें और उसके बाद गङ्गातीरपर उपवनके बीच हुआ। यह मनोरम स्थान अति निर्जन प्रदेशमें लता-वृक्षसे मण्डित, श्यामल तृणराजिसे आच्छादित कुसुमकाननके बीचमें है। श्रीगौराङ्गसुन्दरने कुछ अन्तरङ्ग पार्षदोंके साथ यह अति अद्‌भुत और अति गोपनीय लीला प्रकट की थी। परन्तु सब व्रजसुन्दरियोंको अभीतक इस मधुर लीलाभिनयका समाचार नहीं मिला था; क्योंकि वे आकर मिल नहीं सकतीं। रसिकशेखर श्रीगौराङ्ग राय अपने रसिक भक्तोंके प्रति बड़े सदय हैं। किसीको भी वे अपने इस अपूर्व लीलारङ्गसे वञ्चित न करेंगे—यही उनकी प्रतिज्ञा है। महासंकीर्तन-यज्ञमें अपूर्व नृत्य करते-करते उन्होंने क्या किया, मन लगाकर सुनिये—

सङरि पूरब लील त्रिभङ्ग हइया।
मोहन मुरलि गोरा अधरे लइया॥
मुरलीर रन्ध्रे फूँक दिला गोरा चाँद।
अंगुलि नाचाइया करे सुललित गान॥

वासु घोष

यह हुई श्यामकी वंशी। अपर पक्षमें मृदङ्ग-करतालकी ध्वनि ही वंशीध्वनि है। संकीर्तनके खोल-करतालकी सुमधुर ध्वनि कानमें प्रवेश करनेपर कोई घरपर नहीं रह सकता, ऐसी ही इसकी मादकता-शक्ति है। प्राचीन महाजन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तकविने नागरीभावमें गाया है—

आपना आपनि खाइनु, घरेर बाहिर हैनु,
शुनि खोल करतालेर नाद।
लक्ष्मीकान्त दासे कय, मरमे जारे लागय,
(तार) कि करिबे कुल-परिवाद॥

यह वंशीध्वनि बड़ी भयानक वस्तु है। श्यामकी बाँसुरीके गानसे मुग्ध होकर व्रज-बालाओंने लज्जा-भय, कुल-शील-मान-सब-कुछ त्याग दिया था। यहाँ भी वही हुआ; क्योंकि वस्तु एक है, स्थान एक है और लीला एक है। व्रजमें जो कुछ हुआ था, यहाँ भी वही हुआ। व्रज-गोपिकाओंकी जो अवस्था हुई थी, नदियाके भक्तवृन्दकी भी वही अवस्था हुई। उपर्युक्त पदके अन्तिम दो चरणोंमें इस लीलाके प्रत्यक्ष दर्शक पदकर्ता वासुदेव घोषने इसका आभासमात्र दिया है। यथा,

नगरेर लोक जत शुनिया मोहित।
सुरधुनी तीरे तरु-लता पुलकित॥
भुवनमोहन गोरा मुरलीर स्वरे।
वासुदेव घोष इथे कि बलिते पारे॥

पदकल्पतरु

श्रीगौराङ्ग-नागरका यह संकेत वंशीका मधुर स्वर नदियाके भक्तवृन्दके घर-घरमें पहुँच गया। नदिया-नागरी-भावापन्न भक्तवृन्दके कानोंमें प्रवेश करके यह हृदय-मन-प्राणको उन्मत्त करनेवाली वंशीकी ध्वनि मर्ममें प्रवेश कर गयी। अब वे घरपर न रह सकीं। सर्वकर्मपरित्याग करके गङ्गातीरकी ओर लम्बी साँसें लेती चल पड़ीं। रास्तेमें जिसको देखती हैं, उसीका हाथ पकड़कर कहती हैं—

सजनि अपरूप देख गिया।
नाचये गौराङ्ग चाँद हरिबोल बलिया॥
सुगन्धि चन्दन सार, कुन्द-करबीर-माल,
गोरा अङ्गे दोले हिल्लोलिया।
पुरुष परोक्ष भाव, परतेक देख लाभ,
सेइ एइ गोरा विनोदिया॥
त्रिभङ्ग हइया रहे, मधुर मुरली चाहे,
बाँधे चूड़ा चाँचर चिकुरे।
कृष्ण कृष्ण बलि डाके, मालसाट मारे बुके,
क्षणे बले मुञि सेइ ठाकुरे॥
जाह्नवी यमुना भ्रम, तीरे तरु वृन्दावन,
नवद्वीपे गोकुल-मथुरा।
कहये नयनानन्द, सेइ सखा-सखि-वृन्द,
काला तनु एबे हैल गोरा॥

श्रीगौराङ्गसुन्दरकी संकीर्तन-रासलीला इन्होंने अपनी आँखोंसे देखी है, अतएव सबको स्मरण करा देते हैं। पूर्णिमाकी रात्रिमें सुरसरिके तीरपर कुसुमित उपवनमें श्रीगौराङ्ग यह अपूर्व रासलीला करते हैं। पदकर्ता सिद्धकवि महाजन नयनानन्द भी नदियावासी भक्तगणके साथ जा रहे हैं। उन्होंने गङ्गाके तीरपर जाकर क्या देखा, उनकी ही भाषामें सुनिये—

मधुऋतु यामिनी, सुरधुनि तीर।
उज्जोरल सुधाकर मलय समीर॥
सहचर सङ्गे गौर नटराज।
विहरये निरुपम कीर्तन माँझ॥
खोल-करताल-ध्वनि नटन हिल्लोल।
भुज तुलि घन-घन हरि-हरि बोल॥
नरहरि-गदाधर विहरइ सङ्ग।
नाचत गावोत कतहूँ विभङ्ग॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोकिल मधुकर पञ्चस भास।
नयनानन्द पहूँ करये विलास॥
—पदकल्पतरु

नदियाके भक्तवृन्द गङ्गातीरस्थ उपवनमें जाकर अपने जीवन-सर्वस्व नदिया-नागर शचीनन्दनके साथ जुट गये। उनमें मुकुन्द, गोविन्द, जगदानन्द आदि सभी हैं। गोविन्ददास भी एक पदकर्ता हैं। वे भी एक सुन्दर पदमें प्रभुकी इस लीलाका व्रजभाषाकी तर्जमें वर्णन कर गये हैं। वह पद इस प्रकार है—

देखत बेकत गौरचन्द्र बेड़ल भगत नखत बृन्द,
अखिल भुवन उजोरकारी कुन्द कनक काँतिया।
गति पतित कुमुद वन्धु, हेरि उछल रसिक सिंधु,
हृदय कुहर तिमिरहारी, उदित दिनहुँ रातिया॥
सहजे सुन्दर मधुर देह, आनन्दे आनन्दे ना बाँधे खेह,
मत्त करिवर भाँतिया।
नटन घटन भँगेल भोर, मुकुन्द माधव गोविन्द रोल,
रोयत हँसत धरणी खसत, शोहत पुलक पाँतिया॥
महिम महिमा को कहूँ ओर, निज पर धरि करई कोर,
प्रेम अमिया हरषि बरषि तरखित महि मातिया।
जो रसे उत्तम-अधम भास, बञ्चित एकलि गोविंददास,
को जाने कि खेने कोन गड़ल, काठ कठिन छातिया॥
—पदकल्पतरु

प्रभुके इस संकीर्तन-रास-विलासके बहुत-से प्राचीन पद हैं। और भी दो-एक पद यहाँ उद्धृत करनेकी लालसा मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। महाजन कवि उद्धवदासने लिखा है—

मधु ऋतु विहरइ गौर किशोर।
गदाधर मुख हेरि, आनन्दे नरहरि,
पूरब प्रेमे भेल भोर।
नवीन लता नव, पल्लव तरुकुल,
नवल नवद्वीप धाम॥
फुल्ल कुसुम चय, झंकृत मधुकर,
सुखोदय ऋतुपति नाम॥
मुकुलित चूत, गहन अति सुललित,
कोकिल काकलि राव।
सुरधुनि-तीर, समीर सुगन्धित,
घरे-घरे मङ्गल गाव॥
मन्मथ-राज, साज लइ फिरये,
वन फूल-फल अति शोभा।
समय वसन्त, नदिया-पुरन्दर,
उद्धवदास मनो लोभा॥
—पदकल्पतरु

प्रभुके रसिकभक्त जगदानन्दने लिखा है—

देख देख गोराचाँद नदिया नगरे।
गदाधर सङ्गे रङ्गे सदाइ विहरे॥
बामे गदाधर, दक्षिणे नरहरि।
सुरधुनि तीरे दुहुँ नाचे फिरि-फिरि॥
किवा से विनोद वेष विनोद-चातुरी।
विनोद रूपेर छटा विनोद माधुरी॥
देखिते-देखिते हियाय साध लागे हेन।
नयने अञ्जन करि सदा राखि जेन॥
कहिये जगदानन्द गोरा प्रेमकथा।
सोङरिते हृदय उथलि जाय तथा॥
—पदकल्पतरु

प्राचीन महाजन कवि कविशेखरने लिखा है—

ताता थेइ थेइ, मृदङ्ग बाजइ,
झनर झनर करताल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तन तन तम्बूर वीणा सुमधुर,
बाजत यन्त्र रसाल।
भमक थमक कत, रराव बाजत,
पदतल ताल सुमेलि।
नाचत गौर, सङ्गे प्रिय गदाधर,
सोङरिया पूरबक केलि॥
तीरे तीरे फुलवन, जेन वृन्दावन,
जाह्नवी यमुना भाले।
कीर्तन मण्डल, शोभा अति भेल,
चौदिके भगत करु गाने॥
पूरबक लालस विलास रास रस,
सोइ सखिगण सङ्ग।
ए कवि शेखर होयल फाँफर,
ना बुझिया गौराङ्ग रङ्ग॥

नयनानन्दने एक और पदमें लिखा है—

देख देख गोरा नट रङ्ग।
कीर्तन मण्डल, महारस मण्डल,
उपजिल पूरब प्रसङ्ग।
नाचे पँहु नित्यानन्द ठाकुर अद्वैतचन्द्र,
श्रीनिवास मुकुन्द मुरारि।
रामानन्द वक्त्रेश्वर, आर जत सहचर,
प्रेमसिन्धु आनन्द लहरी॥
ठाकुर पण्डित गाय, गोविन्द आनन्दे राय,
नाचे गोरा गदाधर सङ्गे।
द्रिमिक द्रिमिक धैया, ताथैया ताथैया थैया,
बाजत मोहन मृदङ्गे॥
जत धृत अवतारे, सुखमय सुख सारे,
एइ मोर नवद्वीप नाथे।
जार जेइ निजभाव, परतेखे देख सब,
नयनानन्देर रहु चित्ते॥

श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावन-दास ठाकुरने एक पदमें लिखा है—

नाचे नाचे निताइ गौर द्विजमणिया।
वामे प्रिय गदाधर श्रीवास अद्वैतवर,
परिषद तारागण जिनिया॥
बाजे खोल-खरताल, मधुर सङ्गीत भाल,
गगन भरिल हरि ध्वनिया।
चन्दन चर्चित गाय, फागु बिन्दु बिन्दु ताय,
बनमाला दोले भाल ध्वनिया॥
गले शुभ्र उपवीत, रूप कोटि काम जीत,
चरणे नूपुर रणरणिया।
दुइ भाइ नाचि जाय, सहचरगण गाय,
गदाधर अङ्गे पड़े ढलिया॥
पूरब रभस-लीला, एबे पहूँ प्रकाशिला,
सेइ बृन्दाबन एइ नदिया।
बिहरे गङ्गार तीरे, सेइ धीर समीरे,
बृन्दाबनदास कहे जनिया॥

पद-कल्पतरु

पदकी भणितामें पदकर्ता श्रीवृन्दावनदास ठाकुर कह रहे हैं कि श्रीगौराङ्गसुन्दरकी संकीर्तन-रासलीला अपने हृदयमें अत्यन्त स्पष्टरूपसे अनुभव करके तथा मन-ही-मन निश्चितरूपको समझ करके उन्होंने सर्वसाधारणके सामने प्रकट की है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पहले कह चुका हूँ कि वे गौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार हैं। उनका रचा हुआ श्रीचैतन्य-भागवत गौड़ीय वैष्णव-समाजमें श्रीमद्भागवतके तुल्य आदृत और पूजित है। उसकी कथाको वैष्णवगण वेदकी अपेक्षा भी अधिक सम्मानकी दृष्टिसे देखते हैं। श्रीगौराङ्गसुन्दरकी रासलीलाके सम्बन्धमें उन्होंने जो कुछ लिखा है, उसमें मतभेद होनेका कोई कारण नहीं हैं।

यह रासलीला या संकीर्तन-लीला एक दिन या एक रातकी नहीं है। इसका विचार श्रीमद्-भागवतके पूज्यपाद टीकाकारगण कर गये हैं। भागवत-शास्त्र-ज्ञाता पाठक इसे जानते हैं। इसकी विस्तृत व्याख्या यहाँ आवश्यक नहीं है। शारदीय पूर्णिमाकी रातमें रासलीला एक उपलक्षणमात्र है, दूसरी रातोंमें तथा दूसरी ऋतुओंमें भी यह लीला श्रीकृष्णभगवान्ने प्रकट की थी। दिनमें, रातमें, चाँदनी या अँधेरी रातमें भी यह अपूर्व लीला प्रकट हुई थी। वैष्णवतोषिणीकार तथा पूज्यपाद विश्वनाथ चक्रवर्तीजी यह बात अपनी-अपनी टीकाओंमें लिख गये हैं।

श्रीगौराङ्गसुन्दरकी संकीर्तन-रास-लीला भी पूर्व-लीलाके काल और भावके अनुसार है तथा तदनुरूप माधुरी और प्रभावसे युक्त है। रासलीलाके स्थान और कालका प्रभाव अविचिन्त्य है, यह भी शास्त्रवचन है। अतः महासंकीर्तन-यज्ञ-रूप रासलीला श्रीश्रीगौराङ्गसुन्दरने जब जहाँ उनकी इच्छा हुई, तब वहाँ प्रकट करके रासलीला-रस-लोलुप रसिक भक्तवृन्दका मनोरञ्जन किया था।

श्रीभगवान्की नर-लीला सर्वोत्तम लीला है। वे नरवपु धारण करके सर्वसौन्दर्यकी खानि होकर आते हैं; सर्वोत्तम नर-लीलाके अनुरूप सर्वोत्कृष्ट रूपमाधुरी प्रकट करनेकी आवश्यकता होती है। श्रीभगवान् रसिकशेखर हैं, उनका नरवपु सर्वसौन्दर्य, सर्वमाधुर्य, सर्वरससे परिपूर्ण है, यह बात श्रीगौराङ्गप्रभुने स्वयं सनातन गोस्वामीसे कही थी। यथा, श्रीचैतन्यचरितामृतमें—

कृष्णेर जतेक खेला, सर्व्वोत्तम नर-लीला,
नरवपु ताहार स्वरूप ।
गोपवेष वेणु कर, नवकिशोर नटवर,
नरलीलार हय अनुरूप ।।
से रूपेर एक कण, डुबाय सब त्रिभुवन,
सर्व्व प्राणी करे आकर्षण ।
योगमाया चिच्छक्ति, विशुद्ध सत्त्व परिणति,
ताँर शक्ति लोके देखाइते ।।
एइ रूप-रतन, भक्तगणेर गूढ़ धन,
प्रकट कैल नित्यलीला हैते ।।

चै. च. म. ११.८३—८५

यह नर-लीला केवल श्रीभगवान्की अपार कृपाका परिचयमात्र है। वे जो हमारे समान होकर, हमारे बीच आकर, हमारे साथ सम्बन्ध जोड़कर लीला-खेल करते हैं, यह उनकी दयाकी सीमा समझनी चाहिये। सब प्रकारसे सब जीवोंका मनोरञ्जन करनेके लिए वे नर-लीला प्रकट करते हैं। जो आदमी उनसे जो कुछ माँगता है, वही वे उसको देते हैं। जिस भावसे जीव उनका भजन करता है, वह भी उसको उसी भावसे भजते हैं, यह उनके श्रीमुखकी वाणी है।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।

(गीता ४।११)

व्रज-गोपिकाओंने श्रीकृष्णके अपरूप-रूपसे मुग्ध होकर उनको उपपतिके रूपमें वरण किया था; भक्तवाञ्छा-कल्पतरुने उसे ही स्वीकार किया और उसी भावमें अपनी आश्रिता व्रजाङ्गनाओंकी मनोकामना पूर्ण की। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें नित्य-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सिद्धा व्रज-गोपिकाएँ भक्तभावमें अपने प्राणवल्लभके साथ नवद्वीपमें आविभूति हुईं। पूर्वलीलाके भाव उनके हृदयमें नित्यबद्ध थे, उन्हीं भावोंसे विभावित होकर अपरूप-रूप-सम्पन्न श्रीगौर-नागरको उन्होंने वही अपूर्व रासलीला पुनः प्रकट करनेके लिए अनुरोध किया। श्रीभगवान् पूर्णतः भक्तके अधीन हैं। भक्त-वाञ्छा-कल्पतरु श्रीगौराङ्गसुन्दरने अपने भक्तोंके मनोरञ्जनके लिए महासंकीर्तन-रासलीला नवद्वीपमें प्रकट की। नित्यसिद्धा व्रज-सुन्दरीगण सदा ही अपने प्राणवल्लभ श्रीनन्द-नन्दनके रूपपर मुग्ध रहती हैं। नदियाके भक्तवृन्द भी शचीनन्दनके अपरूप-रूपपर एकबारगी मुग्ध हो गये। उनको लज्जा, मान, प्रतिष्ठा, जाति, कुल शील—किसीका भी विचार न रहा। उन्होंने हृदय खोलकर सबके सामने अपने प्राणवल्लभके हाथमें जीवन, यौवन, कुल, मान, देह, प्राण-सब कुछ समर्पण कर दिया और हाथ जोड़कर अति कातरभावसे बोले—

गौराङ्ग तुमि मोरे दया ना छाड़िह।
आपना करिया राङ्गा-चरणे राखिह॥
तोमार चरण लागि सब तेयागिनू।
शीतल चरण पाइया शरण लइनू॥
ऐ कुले ओकुले मुञि दिलाम तिलाञ्जलि।
राखिह चरणे मोरे आपनार बलि॥

—वासु घोष

इस प्रकारका आत्म समर्पण भक्तिकी पराकाष्टा है। इस प्रकारका आत्मनिवेदन करना वैष्णवलोग जानते हैं। उपर्युक्त पद-रचयिताके नव्यानुरागका एक अति सुन्दर पद यहाँ उद्धृत किया जाता है—

निरमल गोरा तनु, कषित काञ्चन जनु,
हेरइते पड़िगेनु भोर।
भाङ भुजङ्गमे, दंशल मञ्जु मन,
अन्तर काँपये मोर॥
सजनि वर हम पेखनु गोरा।
आकुल दिग् विदिक्, नाहि पाइये,
मदन लालसे मन भोरा॥
अरुणित नयने, तेरछ अवलोकने,
बरिखें कुसुम शर साधे।
जिनइते जीवने, थेह नाहि पाइनु,
डूबलुँ गङ्गा अगाधे॥
मन्त्र महौषधि, तुहूँ जानसि यदि,
मञ्जु लागि करसि उपाय।
वासुदेव घोष कहे, शुन शुन ए सखि,
गोरा लागि प्राण मोर जाय॥

—पद-कल्पतरु

तब पूर्वरसके रसिक भक्तगणने दिव्य-दृष्टिसे देखा—

राइ अङ्ग छटाय, उदित भेल दशदिक्,
श्याम भेल गौर आकार।
गौर भेल सखिगण, गौर निकुञ्ज सम,
राइ रूपे चौदिके पाथार॥
गौर भेल शुक-सारी, गौर भ्रमर-भ्रमरी,
गौर पाखी हेरि डाले-डाले।
गौर कोकिलगण, गौर भेल बृन्दावन,
गौर तरु, गौर फल-फूले॥
गौर यमुनार जल, गौर भेल जलचर,
गौर सारस-चक्रवाक।
गौर आकाश देखि, गौर चांद तार साथी,
गौर तारा बेड़ि लागे लाख॥
गौर अवनी हैल, गौरमय सब भेल,
गौर रूपे चौदिके यापित।
नरोत्तम दास कय, अपरूप-रूपमय,
दुहूँ तनु एकइ मिलित॥

नवद्वीप रस-भाण्डारको महाजन गणने पूर्ण कर रखा है। मधुररस सर्वश्रेष्ठ रस है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगौराङ्ग-लीलाके मधुर रसके रसिक भक्तोंकी संख्या भी कम नहीं है। उनका व्रजभाव है और यह व्रजभाव ही नदिया-नागरीभाव है। यह अति शुद्ध भाव है तथा गोस्वामि-शास्त्र-सम्मत है। यदि ऐसा न होता तो श्रीगौराङ्गप्रभुके पार्षदगण नदिया-नागरीभावके पदोंकी रचना क्यों करते? नदिया-नागरीभाव और गोपी-भजन एक तत्त्व है। नदिया-नागरीभावके रसिक भक्तवृन्द भजनानन्दमें विभोर होकर अनेक पद लिख गये हैं; वे पद उनके अनुयायी शिष्योंके भजनमें सहायक हैं। श्रीगौराङ्ग-प्रभुका युगल-भजन उनके रसिक भक्तवृन्दका निजस्व धन है; यह उनका प्राण है, कोई गौर-नित्यानन्द-रसमें मग्न हैं, कोई गौर-गदाधर-लीला-रस-सागरमें देह-मन-प्राण निमज्जित कर चुका है, कोई श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाके युगल-भजनानन्दमें विभोर होकर परमानन्द प्राप्त कर रहा है।

अब एक जातिका आधुनिक शिक्षित सुरुचि-सम्पन्न वैष्णव-सम्प्रदाय देखनेमें आता है। वे लोग नदिया-नागरीभावके बड़े विरोधी हैं। वे निर्बोध नहीं हैं, अपनेको गौराङ्गका शुद्ध भक्त कहकर अपना परिचय देते हैं; परन्तु परचर्चा उनके भजनका एक अङ्ग हो गयी है। अन्य लोगोंके साधन-भजनमें किसी प्रकारकी चर्चा करना किसीके लिए उचित नहीं है। भजन-राज्यका अधिकार स्वयं भगवान्‌के द्वारा प्रदत्त होता है, इस विषयमें तर्क-वितर्क करना या सभा-समिति अथवा पत्र-पत्रिकाओंके द्वारा समालोचना करनेका अधिकार किसीको नहीं है। यदि कोई ऐसा करता है तो वह दुःसाहस करता है तथा भगवान् और उनके भक्तोंके सामने अपराधी बनता है। ये शुद्ध हैं, वे अशुद्ध हैं; ये पतित हैं, वे पाखण्डी हैं—इस प्रकारकी बातें वैष्णवके मुखसे शोभा नहीं देती। वैष्णव अपनेको सदा ही नीच, पतित और अधम घोषित करता है। स्वयं श्रीनित्यानन्दप्रभुने अपनेको 'पतित' कहकर परिचय दिया है। यथा, श्रीचैतन्यभागवतमें,

पतितेर त्राण बड़ शुनि नदियाय।
शुनिआ आइलु मुजि पातकी एथाय॥
चै. भा. म. ४.५३

इसके आगे और क्या कहें? मैं शुद्ध भक्त हूँ और तुम अशुद्ध भक्त हो—यह भाव जिनके मनमें जागरूक है, वे कैसे अपनेको 'वैष्णव' कहकर परिचय देते हैं, यह समझ इस जीवाधम ग्रन्थकार-की क्षुद्र बुद्धिकी पहुँचसे परे है।

अतएव हे गौर-भक्तगण! कोई किसीके भजन-साधनमें बाधा न दो! गोवर्धनवासी सिद्ध कृष्ण-दास बाबाजी तथा नवद्वीपवासी सिद्ध चैतन्यदास बाबाजी-दोनोंका ही नदिया-नागरीभाव था तथा गौराङ्गप्रभुके इस मधुर भजनसे ही वे लोग सिद्ध हुए थे। ये दोनों महापुरुष श्रीगौराङ्ग-पार्षद ठाकुर नरहरिके गण थे। उनकी भजन-प्रणाली नवद्वीपरस-सम्भूत थी और यह नवद्वीपरस व्रजरसका सारभूत है। ये दोनों महापुरुष जिस भजनपथपर चले थे, इन्होंने जिस साधन-पथका अवलम्बन किया था, उसका अनुसरण करनेमें जिसको आपत्ति है, उनके दुर्भाग्यको देखकर मनमें बड़ा दुःख होता है। इन महापुरुषोंके साथ यदि नरकमें भी जाना पड़े तो मैं उसको भी अपना सौभाग्य समझता हूँ।

लीलारसास्वादन बड़े भाग्यकी बात है। जीवाधम ग्रन्थकारका तर्कनिष्ठ मन श्रीगौराङ्गप्रभुकी सर्वश्रेष्ठ संकीर्तन-रासलीलाका आस्वादन करते-करते शुष्क तर्करूपी पुरीष-गर्तमें आ गिरा है। कृपालु गौर-भक्त पाठकवृन्द! कृपा करके केश पकड़कर इसका उद्धार करें, आपलोगोंका यही कार्य है। इसी कार्यसे आपलोगोंके गुण और महत्त्व-का मैं पूर्ण परिचय प्राप्त करता हूँ। पतनोन्मुख

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जीवको केश पकड़कर उद्धार करना ही आपका कार्य है और इस कार्यको आपलोग बहुत पसंद करते हैं। इसी कारण आपलोगोंके चरणोंमें जीवाधमका यह विनीत निवेदन है। आपलोगोंकी महिमा समझनेकी शक्ति मुझमें नहीं है। पूज्यपाद श्रीनरोत्तम ठाकुर जो लिख गये हैं, उसीकी पुनरुक्ति करते हुए आपकी चरण-वन्दना करके अपनेको कृतार्थ करता हूँ—

एइ वार करुणा कर वैष्णव गोसाईं।
पतितपावन तोमा बिने केह नाईं॥
जाँहार निकटे गेले पाप दूरे जाय।
एमन दयाल प्रभु केवा कोथा पाय॥
गङ्गार परश हइले पश्चाते पावन।
दर्शने पवित्र कर ए तोमार गुण॥
हरि ठामे अपराधे तारे हरिनाम।
तोमा ठामे अपराधे नाहि परित्राण॥
तोमा सभा हृदयेते गोविन्द-विश्राम।
गोविन्द कहेन मोर वैष्णव पराण॥
प्रति जन्मे करि आशा चरणेर धूलि।
नरोत्तमे कर दया आपनार बलि॥

श्रीगौराङ्गसुन्दरकी महासंकीर्तन-रासलीला परिपूर्ण रसका भाण्डार है। इस भाण्डारके भण्डारीगण अनेक जन्मोंके साधन-सिद्ध ऋषिगण हैं। नित्यसिद्धा व्रज-गोपिकाएँ, श्रुति-चतुष्टय भक्तभावका अवलम्बन करके नवद्वीपमें अवतीर्ण हुई थीं। वे ही श्रीभगवान्‌की ह्लादिनी शक्ति, मधुररसकी प्रकाशिका और परिवर्धनकारिणी हैं। इसी कारण वैष्णवशास्त्र कहते हैं—

यद्यपि कृष्ण सौन्दर्य-माधुर्य्येर धूर्य्य।
व्रजदेवीर सङ्गे ताँर बाड़ये माधुर्य्य॥
चै. च. म. ८.७२

ये 'शुद्ध-प्रेम-रस-गुण-प्रवीण गोपिकाएँ'—रास-रसिका व्रज-बालाएँ नदियाके कीर्तन-रास-रसिक भक्तवृन्द हैं। रसिक-भक्तगणके साथ श्रीगौराङ्ग-प्रभुकी इस संकीर्तन-रासलीलाको पदकर्ता नित्य पार्षदवन्दने कलिग्रस्त पतित जीवोंके उद्धारके लिए बहुत विस्तृत और सुन्दररूपमें वर्णन करके जीवोंका महान् उपकार किया है। श्रीमद्भागवतमें जो श्रीकृष्णकी रासलीला वर्णित है, वह अधूरी तथा अति गुप्तभावमें संक्षेपमें कही गयी है। श्रीपाद प्रकाशानन्द सरस्वतीने लिखा है—

श्रीमद्भागवतस्य यत्र परमं तात्पर्यमुद्भङ्कितं
श्रीवैयासकिना दुरन्वयतया रासप्रसङ्गेऽपि यत्।
यद्राधारतिकेलिनागररसास्वादैकसद्भाजनं
तद्वस्तुप्रथनाय गौरवपुषा लोकेऽवतीर्णो हरिः॥
श्रीचैतन्यचन्द्रामृत १२२

अर्थात्—श्रीमद्भागवतका परम तात्पर्य श्रीव्यासपुत्र श्रीशुकदेवजीद्वारा रास-प्रसंगमें केवल उत्पादित हुआ है; परन्तु विस्तृत रूपमें वर्णित नहीं हुआ; क्योंकि श्रीभगवान्‌की इस अपूर्व मधुर रासलीलाका अनुशीलन और आस्वादन किये बिना इसमें प्रवेशाधिकार प्राप्त करना अति दुष्कर है। और उस समय इस सर्वोत्तम लीलाके आस्वादन और अनुशीलन करनेवाले पात्रोंका अभाव था, अतः श्रीराधाके रतिकेलि-नागर श्रीकृष्ण स्वयं उस अपूर्व रासलीलास्वाद-प्रेम-माधुरीका विस्तार करनेके लिए इस कलियुगमें इहलोकमें श्रीगौर-विग्रहके रूपमें अवतीर्ण हुए हैं।

श्रीशुकदेवजीने जिस समय महाराज परीक्षित्‌से श्रीकृष्णकी रासलीलाका वर्णन किया था, उस समय श्रीकृष्ण अन्तर्धान हो चुके थे, व्रजवासीगण और व्रज-गोपिकाएँ भी गोलोकधाम जा चुकी थीं, अतएव 'दुरन्वयता' के कारण श्रीमद्भागवतमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व्यासनन्दन श्रीशुकदेवजीने इस अत्युद्भुत और अपूर्व रासलीला-प्रसङ्गको 'उट्टङ्कित' मात्र किया है। सम्पूर्णरूपमें विस्तारपूर्वक वर्णन नहीं किया। श्रीकृष्णकी इस रासलीलाकी प्रधान सहायिका वृष-भानुनन्दिनी श्रीराधिकाका नामतक श्रीमद्भागवतमें उल्लिखित नहीं हुआ। श्रीराधिकाका शास्त्रमें इस प्रकार वर्णन किया गया है—

देवी कृष्णमयी प्रोक्ता राधिका परदेवता।
सर्वलक्ष्मीमयी सर्वकान्तिः सम्मोहिनी परा॥
(बृहद्गोतमीतन्त्र)

इस देवी कृष्णमयीको लेकर ही श्रीकृष्णकी रासलीला है। शास्त्रकारने 'कृष्णमयी'का अर्थ करते हुए कहा है कि जिस प्रकार सुवर्णमयी प्रतिमा कहनेपर अंदर और बाहर सर्वत्र सुवर्णरूप होता है, उसी प्रकार श्रीराधिकाजीको अंदर और बाहर—सर्वत्र श्रीकृष्णरूप विराजित है, इसी कारण वे 'कृष्णमयी' हैं। ये 'प्रेममयी' और 'कृष्णमयी' नामतक श्रीमद्भागवतमें नहीं हैं।

श्रीगौराङ्ग-अवतारमें श्रीभगवान् श्रीश्रीराधा-कृष्णमिलित वपु धारण करके नवद्वीपमें शचीगर्भमें उदित हुए थे। उनके अवतारके तीन उद्देश्य थे। प्रथम—श्रीराधिकाके गम्भीर प्रेमकी महिमाको स्वयं राधा बनकर देखना और समझना; द्वितीय-तत्सम्बन्धी प्रणयके द्वारा श्रीकृष्णकी जिस अद्भुत मधुरिमाको श्रीराधिकाजीने आस्वादन किया था, उसके स्वरूपको देखना; तृतीय—उसके अनुभवमें श्रीराधिकाजीको जो सुखातिशय होता है, उसको जानना तथा स्वयं अनुभव करना।* इस कारण वे श्रीराधिकाके भाव और कान्तिको लेकर श्रीगौराङ्गरूपमें भूतलपर अवतीर्ण हुए। अतएव जीवको महा-रासलीलाका प्रकृत तात्पर्य और उद्देश्य समझानेके लिए ही श्रीगौराङ्ग-अवतारकी आवश्यकता हुई। श्रीमद्भागवतमें जो रासलीला गुप्त भावमें वर्णित है, उसको व्यक्त करनेके लिए ही स्वयं भगवान् श्रीगौराङ्ग-रूपमें नवद्वीपमें उदित हुए। केवल मौखिक वर्णन या व्याख्या करनेके लिए नहीं, बल्कि स्वयं उस मधुर रासलीलाको प्रकट करके स्वयं उसका रसास्वादन करना तथा उस अपूर्व रस-भाण्डारको बिना किसी भेदभावके निज-जनोंमें लुटाना ही उनकी इच्छा थी। उन्होंने इसे ही कार्यमें भी परिणत किया। श्रीगौराङ्ग-सुन्दर राधाभावमें विभावित होकर, श्रीराधिकाके रूप-सागरमें डूबकर श्रीगौराङ्ग बने। उन्होंने एक ही साथ शक्ति और शक्तिमान्के रूपमें तथा दूसरी जगह राधाशक्ति गदाधरकी सहायतासे, ललिता सखी (स्वरूप दामोदर), विशाखा सखी (राय रामानन्द), अन्यान्य सखियाँ तथा उपसखियाँ, गोस्वामी और महन्तगणके साथ स्वयं आचरण करके महासंकीर्तन-यज्ञकी आयोजना करके अपने अन्तरङ्ग भक्तोंको बतलाया कि रासलीलाका प्रकृत तात्पर्य है—श्रीवृन्दावनका मधुर भजन। साथ ही उनको इस मधुर भजनके प्रचारके विषयमें उपदेश और आदेश दिया। इस उपदेशके फलस्वरूप नदिया-नागर श्रीगौराङ्गके मधुर भजनका सूत्रपात हुआ। परिणामतः नदिया-नागरीभावकी असंख्य पद्यावलीका सृजन हुआ, जो अधिकारी गौर-भक्तवृन्दके भजनका अङ्ग है। अतएव पूज्यपाद प्रकाशानन्द सरस्वतीजी लिख गये हैं—

प्रेम्नामाद्भुतार्थः श्रवणपथगतः
कस्य नाम्नां महिम्नः
को वेत्ता कस्य वृन्दावनविपिन महा-
माधुरीषु प्रवेशः।

श्रीराधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैर्वा-
स्वाद्यो येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशो वा मदीयः।
सौख्यं चास्याः मदनुभवतः कीदृशं वेति लोभात्
तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भसिन्धौ रवीन्दुः॥
चै. च. आ. ६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

को वा जानाति राधां परमरसचमत्कारमाधुर्य सीमा
मेकश्चैतन्यचन्द्रः परमकरुणया सर्वमादिश्चकार ॥
श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम् १३०

अर्थ—प्रेम-नामक परम पुरुषार्थ, जो पहले किसीके श्रवणगोचर नहीं हुआ था, भगवान्‌का नाम और उसकी महिमा, जिसे पहले कोई जानता न था, श्रीवृन्दावन-विपिनकी परम आश्चर्यजनक माधुरी, जिसमें किसीका प्रवेश न हुआ था तथा परम अद्‌भुत माधुर्यरसकी पराकाष्ठास्वरूपा श्रीश्रीराधिकाजी, जिनका नामतक पहले लोग नहीं जानते थे—केवल श्रीश्रीगौराङ्ग महाप्रभुने परम करुणार्द्र होकर इन सबका आविष्कार किया।

अब गौर-भक्त कृपालु पाठकवृन्द इसके द्वारा समझ सकते हैं कि केवल श्रीमद्‌भागवतकी सहायतासे रासलीलाका प्रकृत तात्पर्य उद्‌घाटित नहीं हो सकता। पूज्यपाद श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने श्रीश्रीमन्महाप्रभुके दिव्योन्मादका वर्णन करते समय इसका आभास दिया है, अतएव यह जीवाधम ग्रन्थकारकी कपोल-कल्पित कथा नहीं है। कविराज गोस्वामी कहते हैं—

पूर्व्वे ब्रजविलासे, जेइ तिन अभिलाषे,
यत्नेह आस्वाद ना हइल।
श्रीराधार भावसार, आपने करि अङ्गीकार,
सेइ तिन वस्तु आस्वादिल ॥
चै. च. म. २.६९

ये तीन वस्तुएं क्या हैं?—यह पहले बता चुका हूँ। फिर कहता हूँ, सुनिये! श्रीराधिकाकी प्रणय-महिमा, स्वमाधुर्य तथा उसके आस्वादनमें श्रीराधिका सुख—इन तीन वस्तुओंका अनुशीलन, विचार और आस्वादन रासलीलाका मूलमन्त्र है। इन तीन वस्तुओंको हृदयमें रखकर श्रीभगवान्‌के नामगानमें उन्मत्त होकर नृत्य-गीत और वाद्यकी सहायतासे प्रेमानन्दोत्सवमें देह-मन-प्राणको ढाल देनेका नाम है—श्रीगौराङ्ग-लीलामें संकीर्तन-रासलीला। सारे वैष्णव-ग्रन्थोंमें, वैष्णव महाजनकी पदावलीमें तथा श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी समस्त चरितावलीमें श्रीमद्‌भागवतोक्त 'उद्‌घृङ्कित' रासलीलाके प्रसङ्गके विशद और विस्तृत वर्णन प्राप्त होते हैं। इनका पठन-पाठन, श्रवण, अनुशीलन और आस्वादन मधुरभजनके अङ्ग हैं तथा इनकी परिपुष्टिमें ही भजनका अवसान होता है। सिद्ध चैतन्यदास बाबाजी कह गये हैं—

गौरेर कान्ता आमि, कान्त आमार गोरा,
आमार भजन हलो सारा।

यह अत्यन्त सार बात है और यही सर्वश्रेष्ठ भजन है। यह भजन करने में—

"गञ्जे गञ्जूक गुरुजन ताहे ना डराइ।
छाड़े छाड़ूक निजपति आपद एड़ाइ॥
बले बलूक पाड़ार लोक ताहे नाहि डर।
ना बलूक ना डाकूक ना जाव कार घर॥
धरम-करम जाउक ताहे ना डराइ।
मनेर भरमे पाछे बँधूरे हाराइ॥"

श्रीवासके आँगनमें संकीर्तन-महारास

अब श्रीश्रीगौराङ्ग-सुन्दरकी श्रीवासके आँगनकी महासंकीर्तन-रासलीलाका वर्णन होगा। नदिया-नागर श्रीगौर-गोविन्दने सर्वप्रथम श्रीवासके आँगनमें ही अपना संकीर्तन-रासलीला-रङ्ग प्रकट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किया। यह अपूर्व लीलारङ्ग अपनी पूर्वलीलाके नित्य परिकर-वृन्दको साथ लेकर निशाकालमें श्रीवासके आँगनमें द्वार वन्द करके अभिनीत हुआ था। अन्तरङ्ग एकान्त रसिक भक्तोंके सिवा अन्य कोई श्रीवासके आँगनमें प्रवेश नहीं प्राप्त कर सकता था। श्रीवासपण्डितको इस सम्बन्धमें प्रभुने विशेष सावधान कर दिया था। नदियामें इस अद्भुत संकीर्तन-रासलीला-रङ्गको प्रकट करनेके पूर्व रास-रसिक श्रीश्रीगौर-गोविन्दने एक दिन भक्तवृन्दको सम्बोधित करके कहा—

—"भाई सब सुन मन्त्र सार।
रात्रि केने मिथ्या जाय आमा सभाकार॥
आजि हैते निर्वन्धित करह सकल।
निशाय करिब सभे कीर्तन मङ्गल॥
संकीर्तन करिया सकल गण सने।
भक्ति-स्वरूपिणी गङ्गा करिब मज्जने॥
जगत् उद्धार हऊ शुनि कृष्णनाम।
परार्थे से जे तोमार सभार धन-प्राण॥

चै. भा. म. ८.१०६-१०९

प्रभुके इस अपूर्व मधुमय संदेशको सुनकर भक्तगणके आनन्दकी सीमा न रही। उसी दिन शुभ मुहूर्तमें और शुभ रात्रिमें इच्छामय प्रभुने श्रीवासके आँगनमें भुवनमङ्गल-संकीर्तन-रासलीला प्रकट की। सारे भक्तवृन्द व्रजभावमें विभावित होकर व्रजरसका आनन्द अनुभव करने लगे। प्रेमानन्दमें प्रभुके श्रीवदनसे निःसृत बारम्बार हुंकार-गर्जन-ध्वनि तथा उसके साथ भक्तोंके कण्ठसे निःसृत गगनभेदी उच्च हरिध्वनिने मिलकर निशाभागमें पड़ोसियोंको जगा दिया। वे लोग परस्पर बातें करने लगे—"ये लोग रातमें मदिरा लाकर पीते हैं और रात्रिमें मन्त्र पढ़कर पञ्च-कन्याको ले आते हैं। हम रात्रिके चारों प्रहरमें सोने नहीं पाते और केवल 'बोलो, बोलो' और 'हुंकार' ही रातभर सुन पाते हैं।"

किसी-किसी दिन सारी रात प्रभु अपने अन्तरङ्ग भक्तवृन्दके साथ श्रीवासके आँगनमें संकीर्तन-लीलारङ्ग अभिनय करते हैं। शचीमाता अपनी पुत्रवधूके साथ पुत्रके इस अभिनय-लीलारङ्गको देखनेके लिए रातमें श्रीवासके आँगनमें जाती हैं। वैष्णव-गृहिणीगण भी वहाँ रहती हैं। जब प्रेमानन्दमें प्रभु पछाड़ खाकर भूतलपर मूर्च्छित होकर गिरते हैं तो जान पड़ता है, मानो पृथिवी खण्ड-खण्ड हो गयी। परन्तु प्रभुके कुसुम-कोमल श्रीअङ्गमें नाममात्रकी भी चोट नहीं लगती। उस समय पृथिवीदेवी पुष्प-शैयाके समान कोमलावस्थाको प्राप्त हो जाती हैं।

स्नेहमयी माता पुत्रकी ऐसी अवस्था देखकर मनमें वहुत व्यथित हो जाती हैं। गोविन्द-स्मरण करते हुए वे दोनों आँखें मूँद लेती हैं। वे इस दृश्यको आँखोंसे देख नहीं पातीं, उनकी छाती फटने लगती है, उनके नयन-जलसे वक्षःस्थल भीग जाता है। वे हाथ जोड़कर अभीष्ट देवतासे प्रार्थना करती हैं—"हे कृष्ण! मेरे ऊपर कृपा करो और यही वर दो कि जिस समय मेरा विश्वम्भर पछाड़ खाय, उस समय मुझे उसके गिरनेका पता ही न चले—बस, इतनी कृपा करो। प्रभो! यद्यपि उसको तो परमानन्दमें डूबे रहनेके कारण कोई दुःख नहीं होता; परन्तु फिर भी मैं उसके गिरनेको न जान पाऊँ तो बड़ा सुख मानूँ।"

सर्वान्तर्यामी भक्तवत्सल प्रभुने अपनी जननीके चित्तके भावको जानकर उनकी इच्छा पूर्ण की। जबतक प्रभु नृत्य करते रहते थे, तबतक शचीमाताको बाह्य ज्ञान नहीं रहता था। जगन्माता गौराङ्ग-जननी परमानन्दमें विभोर होकर पुत्रके इस अपूर्व संकीर्तन-रास-लीलारङ्गको देखती हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीएकादशी हरिवासरके दिन एकबार उषाकालसे ही प्रभु श्रीवासके आँगनमें कीर्तनानन्दमें मत्त हो गये। झुण्ड-के-झुण्ड भक्तगणोंने आकर उनके साथ महासंकीर्तन-यज्ञमें योगदान किया। 'गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन'—इस कीर्तनकी गगनभेदी ध्वनिसे श्रीवासका आँगन प्रकम्पित हो उठा। सुमधुर मृदङ्ग-करतालकी ध्वनिसे नदियावासी लोगोंके हृदयोंमें एक अद्‌भुत और अपूर्व आनन्द-रसका स्रोत प्रवाहित हो उठा। श्रीवासके आँगनमें आनन्दकी तरङ्ग उठी। दल बाँधकर एक-एक गोष्ठीके लोग कीर्तन करने लगे। श्रीवासपण्डित एक दल, मुकुन्ददत्त एक दल तथा गोविन्द घोष एक दल लेकर कीर्तन करने लगे। प्रभु सब दलोंमें रहते हैं। वे प्रेमावेशमें नयन-रञ्जन हाव-भावके साथ मधुर नृत्य कर रहे थे। श्रीनित्यानन्दप्रभु उनको पकड़कर कीर्तनके बीचमें ले जाकर घूमते रहते थे। प्रभु नित्यानन्द बाह्य ज्ञान-शून्य थे। श्रीअद्वैतप्रभु चुपके-से प्रभुकी पद-धूलि ले लेते थे। गदाधर-पण्डितकी आँखोंसे प्रेमाश्रुधारा बहकर उनके वक्षः-स्थलको प्रवाहित कर रही थी।

प्रेमोन्मत्त प्रभुका नृत्य-विलास धीरे-धीरे पूर्णताको प्राप्त हुआ। उनके श्रीअङ्गोंमें एक साथ अष्ट सात्त्विक भाव उदय हुए। अश्रु, कम्प, पुलक, कदम्ब, मूर्च्छा, हुंकार-गर्जन आदि प्रभुके श्रीअङ्गमें एक साथ दृष्ट हुए। प्रभु जब करुण स्वरमें क्रन्दन करते हैं, तो एक प्रहरतक भूतलमें गिरकर अपने नयन-जलसे धरातलको सींचते हैं। उनके भ्रमरके समान काले कुञ्चित केशपाश धूलि-धूसरित हो जाते हैं। यह देखकर भक्तगणोंके हृदय विदीर्ण हो जाते हैं।

उनकी करुण क्रन्दन-ध्वनि सुनकर काष्ठ और पत्थर भी द्रवित हो जाते हैं और जब वे अट्टहास करके हँसने लगते हैं तो एक प्रहरतक आनन्द-विलास-रसमें मग्न हो जाते हैं। कभी-कभी ब्रह्माण्ड-भेदी हरिध्वनि करके पृथिवीको कम्पित करते हैं। कभी श्रीअङ्गोंमें विश्व-ब्रह्माण्डका भार ग्रहण करके वे इस प्रकार भूतलपर लेट जाते हैं कि कोई उनके एक अङ्गको भी नहीं उठा सकता। कभी रुईसे भी हल्के होकर अपने अनुयायी भक्तोंके कंधेपर चढ़ जाते हैं। कंधेपर प्रभुको लेकर भक्तगण परमानन्दपूर्वक आँगनमें डोलते हैं और नृत्य करते हैं। जब वे प्रेमानन्दमें मूर्च्छित हो जाते हैं, तब उनके कानोंमें 'हरे कृष्ण' नामोच्चारण करते ही उनकी मूर्च्छा टूट जाती हैं। कभी महाशीतसे उनके सारे अङ्ग काँपने लगते हैं, दाँत लग जाते हैं। कभी शरीरसे इतना पसीना निकलता है कि जान पड़ता है, मूर्तिमती गङ्गाजी उनके शरीरसे निकल रही है। कभी प्रभुके श्रीअङ्ग जलते हुए अङ्गारके समान उत्तप्त हो जाते हैं और कभी चन्दन-तुल्य शीतल हो जाते हैं। कभी प्रभु इतने प्रबल वेगसे दीर्घ श्वास छोड़ते हैं कि भक्तगण भयभीत होकर उनके सामने-से एक बगल हो जाते हैं। कभी वे अति दीन-हीनभावसे वैष्णवोंके चरण पकड़ने जाते हैं और वैष्णवलोग भागने लगते हैं। कभी वे श्रीनित्यानन्दप्रभुके अङ्गमें श्रीअङ्ग लगाकर दोनों रक्त-कमल-चरणोंको ऊपर उठाकर मधुर हास्य करते हैं। भक्तवृन्द प्रभुके मनोभावको इशारेसे समझकर नित्यानन्दकी पद-धूलिमें लोटते हैं और आनन्दसे हरिध्वनि करते हैं। इनमें श्रीअद्वैतप्रभु प्रधान हैं। उन्होंने प्रभुकी ओर ताककर हँसते हुए कहा—

—"आरे आरे चोरा।
भाँगिल सकल तोर भारि भूरि मोरा॥"

चै. भा. म. ८.१६४

प्रभु यह सुनकर प्रेमानन्दके कारण धूलिमें लोटने लगे। उनको घेरकर भक्तवृन्द कीर्तन करने लगे। कुछ देरके बाद प्रभु उठकर गदाधरपण्डितका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गला पकड़कर करुण-स्वरसे रुदन करने लगे। पश्चात् कूदकर मुरारिगुप्तके कंधेपर चढ़ गये। प्रेमानन्दमें मत्त होकर कभी प्रभु घुटनेके बल चलते हैं, कभी चन्द्राकृति होकर एक प्रहरतक भूतलपर चक्कर देते रहते हैं; इसमें अपने चरणसे अपने सिरको स्वयं स्पर्श करते हैं। प्रभुके धूलि-धूसरित श्रीअङ्गकी कान्ति क्षण-क्षणमें परिवर्तित होती है। उनके विशाल कमल-लोचन अधिकतर विशाल जान पड़ते हैं।

सहज अवस्थामें वे जिसको 'प्रभु' कहकर सम्मान करते थे, इस समय उन्हींको 'हे बेटा हमारे दास' कहकर केश पकड़कर खींचकर पास ले आते हैं। पहले जिस वैष्णवको देखकर प्रभु उनके चरणोंमें भूमिष्ठ होकर गिरते थे, अब उनके वक्षः-स्थलपर चरण रखनेमें भी नहीं हिचकते। श्रीगौर-भगवान् कीर्तनानन्दमें उन्मत्त होकर इस प्रकार अलौकिक लीलारङ्ग करके भक्तोंके मनको आनन्द-रसमें मग्न कर देते हैं। सभी प्रेमानन्दमें विभोर होकर श्रीकृष्ण-कीर्तन करते हैं।

मृदङ्ग, मंजीरा, शङ्ख और करताल-ध्वनिसे चतुर्दिक् अमङ्गलका नाश होता है। भुवनमङ्गल हरिनाम-संकीर्तनसे सारे विघ्नोंका नाश होता है। उसी सर्वापद-विनाशी, सर्व-अमङ्गलनाशी, भुवन-मङ्गल हरिनाम-संकीर्तनमें नदियाके प्रेममय अवतार श्रीश्रीगौर-गोविन्द निज नामगानमें मत्त होकर अपूर्व नयन-रञ्जन नृत्य करने लगे। वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था। भाग्यवान् नदियावासियोंका अदृष्ट अत्यन्त सुखमय है, इसी कारण उनको शिव-विरञ्चि-अभिवाञ्छित अपूर्व आनन्द-रस उपभोग करनेका शुभ सुयोग और सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बड़े दुःखसे श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

हइल पापिष्ठ, जन्म तखने ना हैल।
हेन महामहोत्सव देखिते ना पाइल॥

चै. भा. म. ८.१९८

इस महासंकीर्तन-लीला-यज्ञमें प्रेमके देवता प्रेममय श्रीगौर-गोविन्द भुवनमोहन वेषमें मधुर नृत्य करते हैं। उनके आवेशका अन्त नहीं है, भावकी सीमा नहीं है। वे अष्ट सात्त्विक भावोंके ऊपर भी चले जाते हैं। उनके अलौकिक भाव-विकारको देखकर भक्तगण मनमें सोचते हैं—

जाहा नाहि देखि शुनि श्रीभागवते।
हेन सब विकार प्रकाशे शचीसुते॥

चै. भा. म. ८.२१९

श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतारने प्रभुके इस अलौकिक भाव-विकारका इस प्रकार वर्णन किया है—

क्षणे-क्षणे सर्व्व अङ्ग हय स्तम्भाकृति।
तिलार्द्धेको ओङाइते नाहिक शकति॥
सेइ अङ्ग क्षणे-क्षणे हेन मत हय।
अस्थिमात्र नाहि जेन नवनीतमय॥
कखनो देखिये अङ्ग—गुण दुइ तिन।
कखनो स्वभाव हैते अतिशय क्षीण॥
कखनो वा मत्त जेन ढुलि ढुलि जाय।
हासिया दोलाय अङ्ग आनन्दे सदाय॥

चै. भा. म. ८.२२०–२२३

भावावेशमें प्रभु भक्तवृन्दको पूर्वलीलाका नाम ले-लेकर पुकारते हैं। जो भक्त जैसी वस्तु है, जिसका जो तत्त्व है, इस स्थानमें प्रभुने उसे प्रकट कर दिया। परन्तु प्रभुकी मायाके वश होकर कोई इसको समझ नहीं पा रहा है।

श्रीवासके आँगनमें इस महासंकीर्तन-रास-लीलाका अनुष्ठान हुआ है। प्रभुके आदेशसे बहिर्द्वार बंद है। पहले जो प्रवेश कर चुके हैं, वे ही प्रभुके इस अपूर्व ओर अभिनव संकीर्तन-लीलारङ्गको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखकर धन्य हो रहे हैं। उच्च कीर्तन-ध्वनि सुनकर नदियाके लोग श्रीवासपण्डितके घरपर एकत्रित हो रहे हैं। सबकी इच्छा हो रही है कि घरके भीतर जो कुछ हो रहा हैं, उसे देखें। सबलोग खूब शोर मचा रहे हैं और कह रहे हैं—"द्वार खोलो, हम भीं कीर्तन देखेंगे !"

वैष्णवलोग आँगनमें कीर्तन-रसमें मग्न हैं, प्रेमानन्दमें मतवाले हो रहे हैं; उनको देहकी सुध-बुध नहीं है। कोई बात वे सुन नहीं पा रहे हैं। इन लोगोंमें बहिर्मुख पाखण्डियोंका दल भी है। वे बाहर खड़े होकर अनेक प्रकासे निन्दा कर रहे हैं और बुरा-भला कह रहे हैं; क्योंकि उनको द्वार खुला नहीं मिल रहा है।

प्रभुके गण प्रेमानन्दमें विभोर हैं। पाखण्डियोंकी ये बातें उनके कानोंमें प्रवेश नहीं करतीं। वे प्रभुके नित्य दास हैं; शुद्धभक्त सिद्धपुरुष हैं, उनके लिए स्तुति-निन्दा-दोनों ही बराबर हैं। उनके कार्य लोक-निन्दाके परे हैं। वे लोकापेक्षा नहीं करते।

कृष्ण-प्रेम-रसमें विभोर होकर वे प्रभुके साथ कपाट बंद करके श्रीवासके आँगनमें मधुर कीर्तनानन्दमें उन्मत्त हैं। उषाकालमें कीर्तन शुरु हो गया है; रात बीतनेमें एक प्रहर है; अबतक किसीने विश्राम नहीं किया, किसीने भोजन नहीं किया, देहधर्म छोड़कर सभी कीर्तनानन्दमें विभोर हैं। श्रीवासके आँगनमें प्रेमानन्दका स्रोत वह रहा है, भक्तवृन्द मधुर कीर्तनानन्द-तरङ्गके भँवरमें गोते खा रहे हैं।

ऐश्वर्यभाव-महाप्रकाश

एक प्रहर रात रहते प्रभुको श्रीभगवान्‌का आवेश हुआ। श्रीवासके बाहरी आँगनमें विष्णु-सिंहासन सजा था। उसपर शालग्राम-शिला विराज रही थीं। प्रेमोन्मत्त प्रभु उन सब शालग्राम-शिलाओंको गोदमें लेकर विष्णु-सिंहासनके ऊपर ऐश्वर्य-भावसे बैठगये। श्रीविश्वम्भरदेवके गुरुभारसे विष्णु-सिंहासन मरमरा उठा। अनन्त अवतार श्रीनित्यानन्दप्रभुने तुरन्त जाकर विष्णु-सिंहासन को स्पर्श किया, तत्काल उसमें धरणीधर श्रीअनन्त-भगवान्‌का अधिष्ठान हो गया, सिंहासन टूटा नहीं। श्रीश्रीगौराङ्गसुन्दर, मदन-मोहन, रास-रसिक नागरेन्द्ररूपमें श्रीवासके मन्दिरमें विष्णु-सिंहासनपर बैठकर धीं-धीरे झूलने लगे।* श्रीवासके आँगनकी अपूर्व शोभा हो गयी। प्रभुकी आज्ञासे तब संकीर्तन बंद हुआ। प्रभु अब हुंकार-गर्जन करके भगवान्‌के भावावेशमें निज-तत्त्व कहने लगे।

प्रभुकी श्रीमुखसे निकली वाणी, जैसे श्रीचैतन्य-भागवतमें—

"कलियुगे कृष्ण आमि, आमि नारायण।
आमि सेइ भगवान् देवकीनन्दन॥
अनन्त ब्रह्माण्ड कोटि माझे आमि नाथ।
जत गावो सेइ आमि, तोरा मोर दास॥
तोमा सभा लागिया आमार अवतार।
तोरा जेइ देह, सेइ आमार आहार॥"

चै. भा. म. ८.२८७-२८९

प्रभुके सामने श्रीवासपण्डित हाथ जोड़कर खड़े हैं, श्रीअद्वैतप्रभु भी उसी प्रकार पास ही हैं, श्रीनित्यानन्दप्रभु छत्र लिये हैं, ठाकुर नरहरि चँवर डुला रहे हैं, गदाधरपण्डित प्रभुको पान खिला रहे हैं, इस समय प्रभुका पूर्ण ऐश्वर्यभाव है। प्रभु जैसे ही बोले कि—

---

*एइ मत नाचे महाप्रभु विश्वम्भर।
निशि अवशेषे मात्र से एक प्रहर॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"तोरा जेइ देह, सेइ आमार आहार।"

वैसे ही श्रीवासपण्डित रोते-रोते बोले—"हे प्रभो! सब तो तुम्हारा ही है; तुम आनन्दपूर्वक भोजन करो! हम नयनभर तुम्हारे भोजन-विलास-का दर्शनकर कृतार्थ हो जायँ।" प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"दो, मैं सब खाऊँगा।" श्रीअद्वैत-प्रभुने रोते-रोते कहा—"प्रभो! यह बड़े ही आनन्दकी बात है, हमारे लिये यह परममङ्गल है।" यह कहकर सबहाथों-हाथ पूर्ण ब्रह्म सनातन षडैश्वर्यपूर्ण श्रीगौर-भगवान्‌को नाना प्रकारके भोजन-द्रव्य जुटाने लगे।

प्रभु आनन्दावेशमें हँसते-हँसते सब भोजन करने लगे। दूध, दही, नवनीत सब खाकर 'वे और जो कुछ हो, सो ले आओ' कहने लगे। शक्कर-मिश्रित संदेश आदि विविध प्रकारकी मिठाइयाँ, मूँग, नारियलका जल गिरी-सहित, केला, चिउड़ा, खील आदि सब-कुछ खाकर कहते रहे—"और लाओ, क्या है।" दो सौ आदमियोंके लायक भोजन-सामग्री खाकर और मांगते रहे। भक्तगण डरकर भगवान्‌का स्मरण करने लगे और हाथ जोड़कर डरते हुए बोले—"प्रभो! तुम्हारी महिमा हमलोग क्या जानें; अनन्त ब्रह्माण्ड जिसके उदरमें हों, उनके लिए हमारी इस तुच्छ भेंटसे क्या हो सकता है।" भक्तवत्सल प्रभुने यह बात सुनकर मृदु-मधुर-मुस्कानके साथ उत्तर दिया—"भक्तका उपहार क्षुद्र नहीं होता और जो कुछ हो, सो जल्दी ले आओ!"

भक्तके भगवान्‌ने यहाँ भक्त-वात्सल्यका पूर्ण परिचय दिया। भक्तके उपहारको भगवान् छोटा नहीं समझते—

भक्तेर पदार्थ प्रभु छले-बले खाय।
कोटि हैले अभक्तेर उलटि ना चाय॥

चै. भा. म. ९.१८५

तब प्रभुने सारी सामग्रीका धीरे-धीरे भोजन कर लिया। वहाँ अब कुछ न बचा। तब सबने हाथ जोड़कर प्रभुसे निवेदन किया—"कर्पूर-ताम्बूल और हैं।" प्रभुने हँसकर कहा—"कोई चिन्ता नहीं, वही दो!"

यह सुनकर भक्तगणोंके मनमें बड़ा आनन्द हुआ; वे सब मिलकर प्रभुकी ताम्बूल-सेवा करने लगे। नदियाके निमाईपण्डित बड़े ताम्बूल-प्रिय थे। गदाधरपण्डित उनको बराबर ताम्बूल जुटाते थे। सबलोग प्रभुको ताम्बूल-भोग लगाने लगे। वे मधुर मुसकानके साथ हाथ पसारकर भक्तवृन्दके हाथसे ताम्बूल लेकर आनन्दसे उनकी सेवा-ग्रहण करने लगे। इससे भक्तवृन्दके मनमें अपार आनन्द होने लगा।

सबलोग अब निर्भय होकर प्रभुसे बातें करते रहे। इस बीच अचानक प्रभुने एक बार कुछ गम्भीर भाव धारण किया। उनके विशाल कमल-नयन नाचने लगे। वे हुंकार-गर्जन करने लगे। बार-बार 'नाड़ा नाड़ा' कहकर चिल्लाने लगे। भक्तवृन्द प्रभुकी उग्र श्रीमूर्ति को देखकर भयभीत हो उठे। सभी डरकर उनसे दूर जाकर खड़े हो गये। श्रीनित्यानन्दप्रभुने पुनः श्रीगौर-भगवान्‌के सिरपर छत्र धारण किया। श्रीअद्वैतप्रभु सामने आकर हाथ जोड़कर प्रभुकी स्तुति करने लगे। सब भक्त-गण सिर झुकाकर हाथ जोड़कर प्रभुके चरण-कमलोंकी ओर देखते हुए एक स्थानपर स्थिर होकर खड़े हैं; जो जहाँ था, वह वहाँ ही स्तम्भित होकर खड़ा है। सभी प्रभुके आदेशकी अपेक्षा कर रहे हैं।

प्रभुका इस समय पूर्ण भगवान्-भाव है। वे श्रीअद्वैतप्रभुके मुखकी ओर देखकर गम्भीर स्वरमें बोले—"वर माँग!" दूसरे ही क्षण मृदु-मधुर-मुसकानके साथ वे बोले—"तुम्हारे लिए ही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदियामें मैंने यह अवतार-ग्रहण किया है।" सब भक्तवृन्दके प्रति शुभ दृष्टिपात करके करुणामय प्रभु अब हँसकर सबसे बोले—'वर माँगो !'

भक्तगण प्रभुकी करुणा देखकर आनन्द-सागरमें निमग्न हो गये। बार-बार प्रभुके श्रीमुखका भाव और आकार बदलने लगा। वे ऐश्वर्य-भावमें आविष्ट थे। अब वह भाव बदल गया। वे रोते-रोते विष्णु-सिंहासनसे उतरकर व्याकुल होकर पृथिवीपर गिर पड़े और मूर्च्छित हो गये। भक्तगण घबराकर उनको घेरकर हरिनाम-संकीर्तन करने लगे। इससे उनकी मूर्च्छा-भङ्ग हुई। प्रभुको बाह्य ज्ञान होते ही वे उठकर सब भक्तोंका गला पकड़कर करुण-स्वरमें रुदन करने लगे। सब वैष्णवोंको 'भाई,' 'मित्र'—कहकर मधुर वचनसे सम्भाषण करके उनके हृदयोंको शीतल किया।

प्रभुको पुनः मूर्च्छा आ गयी। वे संज्ञा-शून्य होकर पृथ्वीपर गिर पड़े। इससे सब पार्षदगण चारों ओर रोने लगे।

भक्तवृन्दमें करुण-क्रन्दनकी चीत्कार उठी; क्योंकि ऐसी मूर्च्छा प्रभुको पहले कभी नहीं हुई थी। हरिनाम-संकीर्तनसे इस बार उनकी मूर्च्छा भङ्ग न हुई, यह देखकर भक्तवृन्द विशेष भयभीत हुए। तब उन सबने मिलकर निश्चय किया कि यदि प्रभु हमको छोड़कर चले गये तो हम सब भी इसी क्षण शरीर छोड़ देंगे।

भक्तवत्सल प्रभु स्थिर न रह सके। भक्त-दुःखसे कातर होकर उन्होंने आत्म-संवरण किया। प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। वे उच्च हरिध्वनि करके भूतलसे उठकर मृदु-मधुर नृत्य करने लगे। भक्तवृन्दके आनन्दकी सीमा न रही। वे प्रेमानन्दमें विह्वल होकर एक-दूसरेके ऊपर लुढ़ककर गिरने लगे। आनन्द-कोलाहलसे पुनः श्रीवासका आँगन भर गया।

उस दिन हरि-संकीर्तनकी समाप्तिके साथ श्रीहरिवासर, एकादशी समाप्त हुई। दिन-रात इस प्रकार परिश्रम करनेपर भी भक्तोंको किसी प्रकारकी थकावट या परेशानी नहीं जान पड़ी। वे लोग परानन्दका उपभोग कर रहे थे। श्रीवासके आँगनमें उस दिन जो आनन्दोच्छ्वास उठा, जो प्रेमतरङ्ग छूटा, उसमें सारी नदिया गोते खाने लगी।

नदियामें प्रभुके ऐश्वर्यभावमें सप्त प्रहर महा-प्रकाशलीलाका यह पूर्वाभासमात्र है। श्रीहरिवासर-के दिन प्रभुने भगवान्-भावमें एक प्रहरतक श्रीवासके आँगनमें विष्णु-सिंहासनके ऊपर बैठकर ऐश्वर्य प्रकट किया। वे क्रमशः इसी प्रकार नदियामें आत्मप्रकाश करने लगे। यह जो श्रीएकादशी और श्रीहरिवासरके दिन प्रभुने भगवान्-भावमें भोजन-विलास-लीला-रङ्ग दिखलाया, इसका गूढ़ मर्म है। प्रभुने भगवान्-भावमें विष्णु-सिंहासनपर बैठकर भक्तवृन्दसे भोजन-सामग्री माँगी। भक्तवृन्दने आनन्दमें उन्मत्त होकर प्रभुके श्रीकर-कमलोंमें दही, दूध, नवनीत, मिष्टान्न, ताम्बूल आदि सब-कुछ दिये। विश्व-ब्रह्माण्डपति पूर्णब्रह्म सनातन स्वयं-भगवान् हाथ फैलाकर भक्तोंके आगे भोजन-सामग्री माँग रहे हैं; भक्तवृन्द निःसंकोच चित्तसे अपने हृदयमें स्थित पुराण-पुरुषको सामने प्रत्यक्ष देखकर प्राण भरकर प्रेमानन्दमें उनको अपने हाथोंसे भोजन करा रहे हैं, इससे बढ़कर सौभाग्य उनके लिए और क्या हो सकता है? जगत्के जीवके लिए ऐसा शुभ संयोग कदाचित् ही प्राप्त होता है। श्रीगौर-भगवान्ने उस दिन दो सौ आदमियोंकी भोजन-सामग्री क्षणभरमें अकेले ही पा ली। श्रीभगवान्के लिए कुछ भी असाध्य कर्म नहीं है। अनन्त ब्रह्माण्ड जिसके उदरके भीतर विराजमान है, उनके लिए यह कार्य कुछ भी असम्भव नहीं है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तवृन्दकी मनस्तुष्टिके लिए भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने असाध्य-साधन-कार्य किया। श्रीगौराङ्गने भगवान्-भावमें श्रीएकादशी तिथिमें यह भोजन-लीला-रङ्ग दिखलाया। इसके द्वारा उन्होंने भक्तवृन्दको दिखलाया कि श्रीभगवान्‌के कार्य विधि-निषेधसे अतीत हैं, शास्त्र-युक्ति से परे हैं। भगवान्-भावसे उन्होंने जो कार्य किया, भक्त-भावमें उसे कभी नहीं कर सकते थे। श्रीएकादशी हरिवासरव्रतके उपास्य देवता स्वयं श्रीहरि हैं। नेवेद्य आदि श्रीहरिके उद्देश्यसे निवेदित होते हैं, श्रीगौराङ्ग-श्रीहरि वहाँ स्वयं उपस्थित थे; उन्होंने भक्तवृन्दके द्वारा निवेदित विष्णु-नैवेद्य और सारे उपहार अपने हाथोंसे ग्रहणकर उनके व्रतको सफल किया। बाल्यलीलामें उन्होंने श्रीएकादशी हरिवासरमें नदियाके विप्रकुमार हिरण्य और जगदीशपण्डितके विष्णु-नैवेद्यका भोग लगाया था। प्रभुके इस अद्‌भुत लीलारङ्गमें एक और भी गुप्त रहस्य है। उन्होंने भगवान्-भावमें श्रीएकादशी तिथिमें निशाभागमें भोजन-लीला-रङ्ग प्रकट किया; परन्तु भक्तवृन्दको प्रसाद नहीं बाँटा। हमारे धर्म-संस्थापक प्रभुने सदा ही शास्त्र-मर्यादाकी रक्षा की है। श्रीएकादशीके दिन भक्तवृन्दको उन्होंने प्रसाद नहीं दिया। भक्तवृन्दके मनमें उस दिन प्रभुकी इच्छासे प्रसाद-ग्रहण करनेकी इच्छा ही नहीं उत्पन्न हुई। यह बात किसीके मनमें उदय नहीं हुई। दूसरा समय होता तो प्रभुका प्रसाद सब लूट खाते। आज भक्तवृन्द अपने इष्टदेवको भोग लगाकर ही शान्त हुए। प्रभुका भगवान्-भाव उनकी इस श्रीएकादशी तिथिकी भोजन-लीलामें अति सुन्दरता-पूर्वक अभिव्यक्त हुआ है। श्रीभगवान्‌के सिवा दूसरा कोई यह कार्य नहीं कर सकता।

श्रीवासका आँगन श्रीगौर-गोविन्दकी रासलीला-स्थली है, यह बात मैं पहले ही कह चुका हूँ। इस पुण्यस्थानमें प्रभुने एक वर्षतक नित्य संकीर्तन-महारास-लीलारङ्गका अभिनय किया था। श्रीवासका आँगन प्रभुकी नवद्वीप-लीलाका केन्द्रस्थल था। श्रीनित्यानन्दप्रभुके नवद्वीप आनेपर प्रभुकी इच्छासे श्रीवासके आँगनमें ही प्रभुके कीर्तन-विलासका प्रथम विकास हुआ था। श्रीवासके आँगनकी महिमा सभी महाजनगण गा गये हैं। श्रीवासपण्डित श्रीमन्महाप्रभुके एक प्रधान अन्तरङ्ग भक्त थे, वे पञ्च-तत्त्वके एक तत्त्व थे। श्रीवास-पण्डितके आनन्दकी सीमा न थी; उन्हींके आँगनमें प्रभुकी संकीर्तन-महारासलीला प्रारम्भ हुई। श्रीचैतन्यभागवतमें श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने श्रीवासपण्डितकी महिमाका कीर्तन करते हुए लिखा है—

चारि वेदे जाँरे देखिबारे अभिलाष।
ताहा देखे श्रीवासेर जत दासी दास॥
कि बलिब श्रीवासेर उदार चरित्र।
जाँहार चरण-धूले संसार पवित्र॥
कृष्ण अवतार जेन वसुदेव घरे।
जतेक विहार सब नन्देर मन्दिरे॥
जगन्नाथ घरे हैल एइ अवतार।
श्रीवास पण्डित गृहे जतेक विहार॥
सर्व वैष्णवेर प्रिय पण्डित श्रीवास॥
ताँर बाड़ी गेले मात्र सवार उल्लास॥
अनुभावे जाँरे स्तव करे वेद मुखे।
श्रीवासेर दास दासी ताहा देखे सुखे॥

चै. भा. म. २.३२८–३३३

श्रीवासपण्डित! तुम्हारे चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात! तुम्हारे परमपवित्र नामको स्मरण करनेसे श्रीगौराङ्ग-प्रीति स्वतः ही हृदयमें उदित होती है। गौराङ्ग-प्रेमसे हृदय भर उठता है। तुम गौर-भक्त-गोष्ठीके शिरोमणि हो! तुम्हारा जय-गान करते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुए मैं प्राणत्याग करूँ, यही तुमसे मैं भीख माँगता हूँ—

जय जय भक्तराज श्रीवास पण्डित।
उद्धारह केशे धरि मू-हेन पतित॥
गौराङ्ग तोमार प्रभु, तुमि गौर दास।
गौर अभिमाने तुमि सतत उल्लास॥
गौराङ्ग-भजन बिना नाहिं जान आन।
गौर भक्ति मू अधमे कर किछू दान॥
हरिदासेर ए मिनति तोमार चरणे।
गौर नाम ना भूलि जेन जीवने-मरणे॥

श्रीवासपण्डितके प्रसङ्गमें उनके प्रति प्रभुके एक उपदेशकी बात याद आ गयी। उसे यहाँ विवृत करते हैं।

प्रभु अध्यात्म-चर्चाके विरोधी थे। एक दिन श्रीवासके आँगनमें बैठकर प्रभु भक्तिकी बात करते-करते श्रीवासपण्डितसे गम्भीरतापूर्वक बोले—"हे श्रीवास! तुम्हारे-जैसा आदमी क्षणमात्रके लिए भी अध्यात्मविषयक बात मुँहसे नहीं बोलता। यदि तुम अध्यात्मतत्त्वकी बात मुँहसे बोलते हो तो निश्चय जानो कि मैं तुमको अतिदुर्लभ कृष्णभक्ति नहीं प्रदान करूँगा।" उपस्थित भक्तगणने इसका समर्थन किया।

यहाँ प्रश्न हो सकता है कि प्रभुने अध्यात्म-चर्चाको इतना दूषित क्यों समझा? पहले समझना चाहिये कि अध्यात्म चर्चा है क्या वस्तु? श्रीभगवान्‌के विषयको लेकर वाद-विवाद करना, निराकार हैं या साकार, इस विषयमें खण्डन-मण्डन करना इसीका नाम अध्यात्म-चर्चा है। श्रीभगवान् और उनके लीलारसका आस्वादन करनेका नाम है—'भक्ति' या 'प्रेम-चर्चा'। जो लोग भगवान्‌के विषयमें तर्क करने बैठते हैं, उनको लाभ तो कुछ होता नहीं, बल्कि उनका हृदय शुष्क हो जाता है, मन कठिन हो जाता हैं; उसमें श्रीभगवान्‌का आसन नहीं लगता। जो लोग ऐसा करते हैं, वे प्रायः नास्तिक होते हैं। श्रीभगवान् रसिकशेखर हैं; इन सब ज्ञानाभिमानी दाम्भिक पण्डितोंके साथ वे लीला करते हैं। श्रीभगवान्‌का एक नाम है—'रङ्गलाल'। उनको रङ्ग करना बहुत अच्छा लगता है, अतएव रँगीले श्रीभगवान् इन सब पण्डितोंके साथ रङ्ग करते हैं; परन्तु वे इनके इस रङ्गको नहीं समझ पाते। अवाङ्मनसागोचर श्रीभगवान्‌के विषयमें तर्क-विचार करना, बड़ी विषम बात है। इसी कारण प्रभुने श्रीवासपण्डितको उपलक्ष्य करके अपने भक्तोंको सावधान कर दिया था। प्रभु अध्यात्म-चर्चाका बिल्कुल ही निषेध कर गये हैं, यह प्रभुके श्रीमुखकी बातसे ही सुस्पष्ट हो जाता है। इस समय वैष्णवधर्ममें अध्यात्म-चर्चा प्रबल हो गयी है, इसी कारण प्रेमभक्तिका ह्रास हो गया है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अड़तीसवाँ अध्याय

नदियामें श्रीनिताई-चाँदका लीलारङ्ग

नित्यानन्द राय प्रभुर स्वरूप-प्रकाश।
ताँहार चरण वन्दौं जाँर मुञि दास॥
चै. च. आ. ३.२२

नदियाके अवतार श्रीश्रीगौर-भगवान्‌को प्रकट करनेके लिए श्रीनिताई-चाँदका नदियामें शुभागमन हुआ। हमारे प्रच्छन्न अवतार प्रभु स्वयं आत्मप्रकाश करनेमें हिचक रहे थे; परन्तु उनके अभिन्न हृदय श्रीनिताई-चाँदने अब मुयोग देखकर उनको प्रकट करनेका संकल्प किया। अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुको अब नदियामें सबलोग पहचानते हैं, सिद्ध महापुरुष समझकर सभी उनका सम्मान करते हैं। श्रीनिताई-चाँदका बाल्यभाव है, सदा हँसते रहते हैं. कोपीन पहनते हैं, कभी दिगम्बर वेषमें प्रेमानन्दमें मस्त रहते हैं; उनके नयनोंसे सदा आनन्दाश्रु बहते रहते हैं। नदियाके रास्ते-रास्ते वे प्रेमानन्दमें भ्रमण करते हैं और हुंकार-गर्जन करते हुए सबसे कहते हैं—"मेरे तो नदियाके पण्डित निमाई ही प्रभु हैं" और जिसको सामने देखते हैं, उसीको ही दीनभावसे हाथ पकड़कर कहते हैं—

भज गौराङ्ग, कह गौराङ्ग, लह गौराङ्ग नाम।
जे जन गौराङ्ग भजे से हय आमार प्राण॥

प्रभु कहते हैं—
"कह कृष्ण, भज कृष्ण, लह कृष्ण नाम"
श्रीनिताई-चाँद उनके पीछेबोलते हैं—

"कह गौराङ्ग, भज गौराङ्ग, लह गौराङ्ग नाम"
प्रभु बाहु ऊपर उठाकर उच्च स्वरसे कहते हैं—
"हरि बोल, बोल हरि बोल।"

श्रीनिताई-चाँद कहते हैं—
"गौरहरि बोल, बोल गौरहरि बोल।"

कलिके प्रच्छन्न अवतार प्रच्छन्न रहनेकी चेष्टा करते हैं; परन्तु श्रीनिताई-चाँद उनको प्रच्छन्न नहीं रहने देना चाहते। सर्वज्ञ और सर्वद्रष्टा प्रभु इसे समझते हैं, देखते हैं, लोगोंके सामने प्रकटरूपमें तथा गुप्तरूपमें ऐसा करनेकी मनाही करते हैं, ऐसा न करनेके लिए अनुरोध भी करते हैं; परन्तु अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु इसे नहीं सुनते; बल्कि प्रभुकी बात सुनकर मन्द-मन्द मुस्कुराते हैं। उस हँसीका मर्म प्रभु न समझते हों, ऐसी बात नहीं है; परन्तु समझ करके भी विशेष कुछ कर नहीं पाते, अथवा करते नहीं। कभी चुप रहते हैं, कभी नाराजगी दिखलाते हैं; कभी स्वयँ हँसकर उड़ा देते हैं। दूसरे भक्तगण यह देखकर कभी चकित होते है और कभी आनन्द प्राप्त करते हैं। रँगीले दोनों भाइयोंका लीलारङ्ग देखकर कभी-कभी वे जो बातें करते हैं, वे भी दोनों भाई न सुनते हों, ऐसी बात नहीं। इस प्रकार निताईचाँदने अपने भाई कन्हाईको नदियामें प्रकट करनेका दृढ़ संकल्प कर लिया।

इधर श्रीगौराङ्गसुन्दर भी विधिपूर्वक श्रीनित्यानन्दप्रभुको प्रकट करने लगे; क्योंकि श्रीनिताई-चाँद उनके बड़े भाई थे। बड़े भाईको पहले प्रकट होना चाहिये, उसके बाद छोटे भाईको। प्रभु नर-वपु धारण करके सर्वोत्तम नर-लीला अभिनय करनेके लिए नदियामें अवतीर्ण हुए हैं। लौकिक धर्मको वे क्यों छोड़ेंगे? श्रीमद्विश्वरूप-तत्त्व और श्रीनित्यानन्द-तत्त्व एक वस्तु हैं, यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विस्तारपूर्वक मत्प्रणीत 'श्रीमद्विश्वरूपचरित'में लिखा गया है—

"व्रजेन्द्र नन्दन जेइ, शचीसुत हैल सेइ,
बलराम हैल निताइ।"

—यह ऋषि-महाजन-वाक्य है। श्रीनित्यानन्दप्रभु साक्षात् बलराम हैं, इसे बहुतेरे भक्तोंने प्रत्यक्ष किया है और स्वयं प्रभुने श्रीमुखसे उन लोगोंको कहा है। जिस प्रकार बड़ा भाई अपने छोटे भाई कन्हाईको प्रकट करनेमें व्यस्त है, छोटा भी उसी प्रकार भैया बलाईको प्रकट करनेमें उससे भी अधिक व्यस्त हैं। यह जो दोनोंकी एक-दूसरेको प्रकट करनेकी आत्यन्तिक चेष्टा है, यह सैकड़ों शास्त्र-तत्त्वकी अपेक्षा श्रेष्ठ है— प्रभुके श्रीमुखका एक वाक्य वेद-वाक्यसे बढ़कर है, उनका एक पाद-क्षेप शत-शत शास्त्र और तत्त्वोपदेशसे श्रेष्ठ है। उनके एक-एक लीलारङ्गमें पृथिवीके सारे शास्त्र निहित हैं।

श्रीनिताई-चाँद अवधूत वैष्णव संन्यासी हैं, गौर-प्रेममें उन्मत्त हैं, सारी नदिया उनके अपूर्व प्रेम-लीलारङ्गसे समुद्भासित है। पतितपावनी सुरसरिके तीरपर वे प्रेमानन्दमें उन्मत्तके समान भ्रमण करते हैं। उनकी गौर-प्रेमोन्माद-दशा देखकर नदियाके लोग विस्मित हैं, भक्तवृन्द आनन्दित हैं, स्वयं प्रभु भी चकित होते हैं।

आकर्णविस्तृत नीलोत्पलके सदृश उनके नयन रोते-रोते रक्तवर्ण हो गये हैं। प्रेमोन्मत्त भावमें उच्च स्वरसे नाम-कीर्तन करनेसे, प्रेमानन्दमें हुंकार-गर्जन करनेसे उनका गला फट गया है। उन्होंने अपूर्व प्रेमावेशमें गङ्गाके तीरपर खड़े होकर सुमधुर तानमें गानका सुर पकड़ा—

(पापेर) जत बोझा आछे निये आय।*

नदियाके बहुत-से लोग गङ्गाके तीरपर एकत्रित हुए हैं। सबलोग एकाग्र चित्तसे सब-कुछ भूलकर गौराङ्ग-प्रेमोन्मत्त श्रीनिताई-चाँदके विश्व-विमुग्धकारी, रुदन-भरे मुखचन्द्रकी ओर एकटक देखते हुए इस अपूर्व गानको सुन रहे हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभुके कमल-नयनके द्वारा प्रेमाश्रुधारा प्रवाहित होकर उनके विशाल वक्षःस्थलको डुबाती हुई भूतलको कीचड़मय कर रही है। विपुल संख्यामें जन-समूह उनको घेरकर उच्च स्वरमें हरिध्वनि कर रहा है। परन्तु गौर-प्रेमोन्मत्त निताई-चाँदका ध्यान इस ओर नहीं है; वे अपने मनसे प्रेमानन्दमें गान गा रहे हैं और बीच-बीचमें दोनों भुजाएँ ऊपर

---

* एक गान (रचयिताका नाम नहीं है)।

ओ के पागलेर पारा, हये दिशे हारा,
सुरधूनी कूल दिये जाय।
आय-आय बलि, दिये कर तालि,
बले 'जत बोझा आछे' निये आय॥
कँदे-कँदे बूझि आँखि राङ्गा राङ्गा,
डेके-डेके बूझि गला भाङ्गा भाङ्गा,
गोरा-गोरा बले नाचे बाहु तूले,
क्षणेके चेतना क्षणे हाराय।
धूलि माखा गाय धेइ धेइ नाचे,
हासे कभू, कभु कँदे प्रेमे याचे,
बले—'भय नाइ, एल रे कानाइ,
बला' येर साथे नदीयाय।
सुधाब ना कारेओ जाति नाम धाम,
लब पाप ताप, दिब हरिनाम,
गोलकेर धन तोदेरइ कारण
बिलाते एनेछि नदीयाय॥
आय-आय तोरा चोखे देखिबि रे,
जगन्नाथ आज फेरे द्वारे-द्वारे,
आय हरि बले फिराबि रे तारे,
गौरहरि हरि बल सबाइ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उठाकर उच्चस्वरसे कह रहे हैं—

'गौरहरि बोल, बोल गौरहरि बोल।'

नदियाके सब लोग एकटक श्रीनिताई-चाँदके मुख-चन्द्रकी ओर देख रहे हैं; सब देख रहे हैं कि उनके सर्वाङ्गसे एक अपूर्व ज्योति निकल रही है। सबलोग मन-ही-मन सोच रहे हैं,'क्या ये मनुष्य हैं? मनुष्यके तो इतना रूप नहीं होता, मनुष्यके अङ्गमें तो इतनी ज्योति नहीं देखी जाती। ये अपनेको निमाईपण्डितका बड़ा भाई कहकर परिचय देते हैं, यह सम्भव है।' इस धारणाके वश होकर नदियाके लोग अवधूत श्रीनिताई-चाँदको प्रभुका बड़ा भाई समझकर उनकी भगवान्-भावसे भक्ति और श्रद्धापूर्वक सम्मान और पूजा करते हैं।

एक दिन प्रभु श्रीवासके आँगनमें बैठे थे। भक्तवृन्दके साथ कृष्णकथा-रस-रङ्गमें प्रभुका मन उन्मत्त था। उसी समय दिगम्बर-मूर्ति अवधूत श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभु बाल्यभावमें हँसते-हँसते प्रेमानन्दमें मस्त हुए वहाँ आकर उपस्थित हो गये। उनके प्रत्येक अङ्गसे दिव्य ज्योति निकल रही है। भक्तवृन्दके साथ सम्मानपूर्वक उठकर झटपट प्रभुने अपने सिरका वस्त्र अपने हाथसे उनको पहना दिया। सदानन्द अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु हँसने लगे। प्रभुने अपने हाथसे अपने अग्रजके श्रीअङ्गको चन्दन-चर्चित करके गलेमें पुष्पमाला पहना दी। अपने सामने एक दिव्य आसनपर उनको बैठा दिया। । अवधूत श्रीनिताई-चाँद केवल हँस रहे हैं और प्रभुके मुख-चन्द्रकी ओर एकटक देखते हैं। उनकी आँखोंके पलक नहीं गिर रहे हैं। वे बाह्य ज्ञान-शून्य हैं। प्राण-कन्हाईके अपरूप-रूपसे मुग्ध होकर वे आत्मविस्मृत हो रहे हैं। तब प्रभु अपने बलराम-भैयाकी स्तुति करने लगे—

"नामें नित्यानन्द तुमि रूपे नित्यानन्द।
एइ तुमि नित्यानन्द—राम मूर्तिमन्त॥
नित्यानन्द—पर्यटन भोजन व्यवहार।
नित्यानन्द बिने किछू नाहिक तोमार॥
तोमारे बूझिते—शक्ति मनुष्येर कोथा?
परम सुसत्य—तुमि यथा कृष्ण तथा॥

चै. भा. म. १२.१७–१९

अवधूत निताई-चाँद गौराङ्ग-रूप-सागरमें मग्न होकर बाह्य ज्ञान-शून्य हो रहे हैं। प्रभु जो बोलते हैं, जो करते हैं, उसीमें वे सम्मति प्रदान कर रहे हैं।

प्रभुके द्वारा नित्यानन्दका कोपीन-खण्ड और पादोदक-वितरण

प्रभुने सुयोग देखकर श्रीनित्यानन्दकी महिमा प्रकट करनेके लिए छल करके उनसे एक कोपीन माँगी। अवधूत निताई-चाँदकी किसी भी बातमें असम्मति नहीं है। प्रभुने उनका एक कोपीन लेकर उसे फाड़-फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। उपस्थित भक्तवृन्दको उसमें-से एक-एक टुकड़ा प्रेमोपहार देते हुए कहा—"यह वस्त्र-खण्ड सब-लोग अपने-अपने सिरपर बाँध लें। औरोंकी तो बात ही क्या है, इसकी वाञ्छा योगेश्वरगण भी करते हैं। नित्यानन्दकी कृपासे विष्णुभक्ति उत्पन्न हो सकती है। इनको श्रीकृष्णकी पूर्ण शक्ति समझना। नित्यानन्दके अतिरिक्त श्रीकृष्णका द्वितीय-स्थानीय संगी-सखा, भाई-बन्धु और कोई नही है। नित्यानन्दका चरित वेदके लिए अगम्य है। ये सब जीवोंके जनक, रक्षक और मित्र हैं। इनका सब व्यवहार कृष्ण-प्रेम-रसमय है। इनके सेवनसे कृष्णमें प्रेम-भक्ति होती है। इस कोपीन-खण्डकी घर जाकर पूजा करना।"

(चै. भा. मा. १२.२४–२९)

प्रभुकी आज्ञा पाते ही भक्तवृन्दने श्रीनित्यानन्द-प्रभुकी प्रसादी कोपीनके टुकड़े भक्तिभावसे अपने-अपने मस्तकपर बाँधे और आनन्दसे हरिध्वनि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करने लगे। इससे प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। अवधूत निताई-चाँद दिव्य आसनपर बैठकर मधुर-मधुर मुस्कुरा रहे थे; परन्तु उनकी दृष्टि अबतक प्राण-कन्हाईके चन्द्रमुखकी ओर थी।

प्रभुने पुनः एक और लीलारङ्ग प्रकट किया। श्रीनित्यानन्दकी महिमा प्रकट करनेका शुभ सुयोग देखकर भक्तवृन्दको सम्बोधन करके बोले—"भक्त-गण! नित्यानन्दका पादोदक ग्रहण करो! इनका पादोदक पान करनेसे श्रीकृष्णमें दृढ़ भक्ति होती है, इसमें कोई संशय नहीं।"

प्रभुका आदेश पाते ही भक्तगणने एक साथ मिलकर श्रीनित्यानन्दप्रभुका चरण धोकर पाँच-सात वार उनका चरणोदक पान किया। श्रीनित्यानन्दप्रभुको अब भी बाह्य ज्ञान नहीं है। वे केवल हँस रहे हैं। उनकी हँसीसे मानो सुधा-वृष्टि हो रही है। प्रभु उनके पदतलमें बैठकर उनका चरणोदक सब भक्तोंमें लुटा रहे हैं। भक्तवृन्द आनन्दसे वारम्बार हरिध्वनि कर रहे हैं। पादोदक-पान करके वे कृष्ण-प्रेम-रसमें उन्मत्त हो गये। भक्तवृन्द आनन्द-विह्वल होकर कहने लगे—

"आज हमारा जीवन धन्य हो गया और हमारे सब बन्धन टूट गये। आज हम 'कृष्ण-दास' बन गये। आजका हमारा दिन धन्य है।"

उन्होंने और भी कहा—"यह पादोदक बड़ा स्वादिष्ट है। मुखकी मधुरता किसी तरह भी मिट नहीं रही है।"

अवधूत श्रीनिताई-चाँदके पादोदकका ऐसा प्रभाव था कि उसको पान करते ही सबमें चञ्चलता आ गयी। कोई प्रेमानन्दमें नृत्य करने लगा, किसीने कृष्ण-संगीतका सुर पकड़ा, कोई धूलिमें लोट-पोट करने लगा, कोई हुंकार-गर्जन करके हरिध्वनि करने लगा। प्रभुके आदेशसे तब कीर्तन आरम्भ हुआ। प्रेमानन्दमें विह्वल होकर भक्तवृन्द नृत्य करने लगे। प्रभुने भी हुंकार-गर्जन करके कीर्तनमें मधुर नृत्य प्रारम्भ किया। श्रीवासका आँगन वारम्बार हरिध्वनिसे मुखरित हो उठा।

श्रीनित्यानन्दप्रभु आसनपर उपविष्ट होकर अबतक प्रभुके मुख-चन्द्रकी ओर ताक रहे थे और मृदु मधुर मुस्कुरा रहे थे। अब प्रभुके मधुर-नृत्य-विलासको देखकर वे स्थिर न रह सके। वे भी उठकर प्रभुके सङ्ग उद्दण्ड नृत्य करने लगे। गौर-निताई-दोनों भाई नृत्यावेशमें मग्न हो गये। भक्त-वृन्द उनको घेरकर कीर्तन और नृत्य कर रहे हैं। सभी प्रेमानन्दमें उन्मत्त हैं। प्रेमावेशमें कोई किसीके अङ्ग-से-अङ्ग लगाकर मधुर हाव-भावसे नाचता है, कोई किसीकी चरण-धूलि ले रहा है, कोई किसीका गला जकड़कर 'हा गौराङ्ग! हा नित्यानन्द'! कहकर रोता हुआ आकुल हो रहा है।

प्रभु और सेवक एक-साथ नृत्य कर रहे हैं। प्रभु जानकर किसीके मनमें तनिक भी भय या शङ्का नहीं है। भक्त और भगवान्‌का यहाँ अबाध मिलन है। यही 'माधुर्य-भजन' है। इसमें ऐश्वर्यका लेश भी नहीं है। श्रीभगवान्‌के प्रीत्यर्थ भक्त सब-कुछ कर सकते हैं, श्रीभगवान् भी भक्तके चित्तके विनोदार्थ सब-कुछ कर सकते हैं। भक्त और भगवान्‌का सम्बन्ध केवल ऐश्वर्य-सम्बन्ध नहीं है। माधुर्यरसाश्रित प्रेमिक और रसिक भक्तके साथ श्रीभगवान्‌का प्रीति-सम्बन्ध है। प्रेमभक्ति इस सम्बन्धका मूलमन्त्र है। ऐश्वर्य-भजनसे ऐश्वर्य-की प्राप्ति होती है, माधुर्य-भजनसे पञ्चम पुरुषार्थ प्रेमधन मिलता है। गौर-भक्तवृन्द गोलोकके धन इसी प्रेमके भिखारी हैं। गौर-भगवान् प्रेमदान-कार्य करते हैं, दोनों भाई नदियाके भाग्यवान् भक्तवृन्दको दोनों हाथोंसे प्रेम बाँट रहे हैं। भक्त-वृन्दके सारे दुःख दूर हो गये हैं। वे आनन्दस्वरूप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होकर श्रीश्रीगौर-नित्यानन्दके अपूर्व विलास और संकीर्तन-लीलारङ्गको देख रहे हैं और उनकी अपरूप-रूप-सुधाका पान कर रहे हैं।

अब प्रेममय दोनों भाईयोंको साथ लेकर प्रेमानन्दमें भक्तगण प्रेम-नृत्य कर रहे हैं। अबतक दोनों भाई एक-दूसरेका हाथ पकड़कर मधुर, नयन-रञ्जन और मन-मोहन नृत्य कर रहे थे, अब दोनों जने गाढ़ प्रेमालिङ्गनमें बँध गये। गौर-निताई मानो एक होकर मिल गये। दोनों परस्पर छाती-से-छाती मिलाकर प्रेमालिङ्गनमें दृढ़ आ-बद्ध हो गये। कोई किसीको छोड़ना नहीं चाहता। इसी प्रकार बहुत समय बीत गया। प्रभुके प्रेमालिङ्गनसे मुक्त होकर अवधूत श्रीनिताई-चाँद उद्दण्ड नृत्य करने लगे। उनके चरणोंके भारसे पृथ्वी काँपने लगी। भक्तवृन्द बारंबार उच्च हरिध्वनि करने लगे।

प्रभुके इशारेसे कीर्तन बन्द हो गया। तब उन्होंने अवधूत निताई-चाँदको हाथ पकड़कर आसनपर बैठाया और आप भी उनके पास बैठे। प्रभुके आदेशसे भक्तवृन्द भी उनके सामने बैठे। तब प्रभुने हाथसे तीन ताली देकर मधुरभावमें सब भक्तगणोंको सम्बोधन करके कहा—"इस नित्यानन्दस्वरूपकी जो भक्ति-श्रद्धा करेगा, वह मेरे प्रति ही भक्ति-श्रद्धा होगी। इनके चरण ब्रह्मा-शिवद्वारा भी वन्दित हैं। अतएव सबलोग इनसे प्रीति करें। कोई आधे क्षणके लिए भी इनसे द्वेष करेगा, वह भक्त होनेपर भी मुझे प्रिय नहीं होगा। इनकी वायु जिसके शरीरको स्पर्श करेगी, उसको श्रीकृष्ण अवश्य अपनायेंगे।"

चै.भा.म. १२.५४-५७

प्रभुके श्रीमुखसे निःसृत श्रीनित्यानन्दकी यह महिमा-वाणी-श्रवण करके सब भक्तलोग एक साथ जयध्वनि करने लगे। उच्च हरिध्वनिसे श्रीवासका आँगन मुखरित हो उठा।

श्रीनित्यानन्दप्रभु सब सुनते हैं और बाल्य-भावमें प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर देखकर केवल हँसते हैं। सब भक्तवृन्दके ऊपर शुभ दृष्टिपात करके वे वहाँसे उठे। तब प्रभु उन सबलोगोंको साथ लेकर नगर-भ्रमणके लिए चले।

नित्यानन्दप्रभुका मालिनीदेवीके प्रति मातृभाव

श्रीनित्यानन्द-चरित्र अत्यन्त गम्भीर है। उनकी लीला उससे भी अधिक गम्भीर है। नवद्वीपमें आकर अवधूत श्रीनिताई-चाँदने अनेकों लीला-रङ्ग दिखलाये। भाग्यवान् श्रीवासपण्डितकी परम सौभाग्यवती गृहिणी मालिनीदेवी उनको पुत्रवत् स्नेह करती थीं तथा उनका लालन-पालन करती थीं। श्रीवासपण्डितको वे 'बाबा' कहकर पुकारते थे और मालिनीदेवीको मातृ-सम्बोधन करके तुष्ट करते थे। श्रीनित्यानन्दकी सेवासे प्रसन्न होकर श्रीवास-परिवारके प्रति प्रभु बहुत सदय रहते थे।

मालिनीदेवी वयस्का रमणी थीं। अवधूत निताई-चाँद बाल्यभावमें उनका स्तन-पान करते थे। बहुत दिनोंसे उनके स्तनोंमें दूध न था; परन्तु श्रीनित्यानन्दप्रभुके स्पर्श करते ही उनके स्तनसे दुग्ध स्रवित होने लगता था। प्रभु नित्यानन्दकी यह अलौकिक और अचिन्त्य शक्ति केवल मालिनी-देवी ही देख पाती थीं। श्रीगौराङ्गप्रभुके आदेशसे वे किसीके सामने यह बात प्रकट नहीं करती थीं। मालिनीदेवीको श्रीनिताई-चाँद बीच-बीचमें ऐश्वर्य दिखलाते थे। पुत्र-वात्सल्य-स्नेहकी अधिकताके कारण श्रीवास-गृहिणी उसे देखकर भी अनदेखा कर देती थी। अवधूत श्रीनिताई-चाँद अपने हाथसे उठाकर अन्न नहीं खाते थे, श्रीवास-गृहिणी वात्सल्यभावमें जननीके समान उनको हाथसे उठाकर खिलाती थीं। श्रीनित्यानन्द-प्रभुका तत्त्व और मर्म प्रभुकी इच्छासे वे भली भाँति जानती थीं। इसी कारण पुत्रभावमें वे इस प्रकार श्रीनित्यानन्दकी सेवा करती है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक दिन श्रीवासके घर एक कौआ आया; ठाकुरकी एक छोटी पीतलकी कटोरी, (घृत-पात्र) मुँहमें लेकर वह कहीं उड़ गया। मालिनीदेवी उसको खोजकर पा न सकी। इससे श्रीवासकी गृहिणीके मनमें बड़ी चिन्ता हुई; क्योंकि वह देव-सेवाकी वस्तु थी। श्रीवासपण्डितको देव-सेवाकी वस्तुमें विशेष अनुराग था। वह इस बातको सुनकर रुष्ट होंगे, इस चिन्तासे उनकी ब्राह्मणी विशेष आकुल होकर इधर-उधर उस कौएकी खोजमें लग गयी। उन्होने देखा कि वह कौआ फिर आकर घरपर बैठ गया; परन्तु उसके मुँहसें कटोरी नहीं है। यह देखकर और स्वामीकी फटकारके भयसे ब्राह्मणकन्याकी आँखोंमें आँसू आ गये।

सांसारिक व्यवहार कार्यमें श्रीवासपण्डित अति उग्र स्वभावके थे। उनके भयसे परिवारके लोग सर्वदा काँपते रहते थे। मालिनीदेवी इस पीतलकी कटोरी-जैसी साधारण वस्तुके लिए रो पड़ीं। उसी समय सर्वज्ञ श्रीनित्यानन्दप्रभु आकर उपस्थित हो गये। स्नेहमयी मालिनीदेवीकी आँखोंमें आँसू देखकर उन्होंने पूछा—"माँ! तुम रो क्यों रही हो? तुम्हें क्या दुःख है?" मालिनी-देवीने रोते-रोते सारी बात कह सुनायी, तब अवधूत श्रीनिताई-चाँद हँसकर बोले,—"माँ! चिन्ता छोड़ दो! तुम रोओ मत! मैं तुम्हारी कटोरी लाकर दूँगा।"

—इतना कहकर उन्होंने कौएकी ओर केवल एक बार शुभ दृष्टिपात करके उसको कटोरी लानेका आदेश दिया। श्रीनित्यानन्दप्रभु सबके हृदयमें वास करते हैं, उनकी आज्ञा का उल्लङ्घन करनेकी किसकी मजाल! आज्ञा पाते ही कौआ वहाँसे उड़ा और वह कटोरी मुँहमें दाबकर पुनः लाकर वहाँ रख दी। आकुल मालिनीदेवी अवधूत नित्यानन्दप्रभुकी आदेश-वाणीके प्रभावको देखकर आनन्दसे गद्‌गद होकर वहाँ ही मूर्छित होकर गिर पड़ीं। दयालु श्रीनिताई-चाँदके श्रीकर-स्पर्शसे तत्काल उनकी मूर्च्छा भङ्ग हुई और वे खड़ी होकर हाथ जोड़कर बलराम-अवतार श्रीमन्नित्यानन्दप्रभुकी भक्तिभावसे स्तुति करने लगीं—

जे जन आनिल मृत गुरुर नन्दन।
जे जन पालन करे सकल भुवन॥
यमेर घरेते हैते जे आनिते पारे।
काक स्थाने वाटि आने कि महत्त्व ताँरे॥
जाँहार मस्तकोपरि अनन्त भुवन।
लीलाय ना जाने भाव करये पालन॥
अनादि-अविद्या-ध्वंस हय जाँर नामे।
कि महत्त्व ताँर—बाटि आने काक स्थाने॥
जे तुमि लक्ष्मण रूपे छिले वनवासे।
निरवधि रक्षक आछिला सीता पाशे॥
तथापिह मात्र तुमि सीतार चरण।
इहा बइ सीता नाहि देखिले केमन॥
तोमार से वाणे रावणेर वंश नाश।
से तुमि जे बाटि आन—केमन प्रकाश॥
जाहार चरणे पूर्वे कालिन्दी आसिया।
स्तवन करिल महाप्रभाव देखिया॥
चतुर्दश भुवन-पालन-शक्ति जाँर।
काक स्थाने बाटि आने कि महत्त्व ताँर॥
तथापि तोमार कर्म अल्प नाहि हये।
जेइ कर, सेइ सत्य चारि वेदे कहे॥

चै. भा. म. ११.४७-५६

मालिनीदेवकी स्तुतिको सुनकर अवधूत श्रीनिताई-चाँद हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। बाल्यभावमें वे श्रीवासगृहिणीको सम्बोधन करके हँसते हुए बोले—"माँ! अब मुझे बड़ी भूख लगी है, कुछ खानेको दो।" श्रीनित्यानन्दकी इच्छासे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मालिनीदेवीका ऐश्वर्य-भाव तत्काल दूर हो गया। ऐश्वर्यभावके हटे बिना माधुर्यभाव प्रकट नहीं होता। वे उसी समय पूर्ववत् वात्सल्य स्नेहके वशीभूत होकर घरसे भोजन-सामग्री लाकर अपने अवधूत पुत्रको खिलानेके लिए बैठीं। माता और पुत्रमें इस प्रकार श्रीवासके आँगनमें नित्य कौतुक लीलारङ्ग होता था; भाग्यवती मालिनीदेवी श्रीनित्यानन्द-तत्त्वसे पूर्ण परिचित थीं। कृपा करके प्रभुने उनको दिव्य ज्ञान देकर श्रीनित्यानन्दकी सेवाका व्रती बनाया था।

दोनों प्रभुओंके द्वारा एक-दूसरेका तत्त्व-प्रचार

नदियामें सबलोगोंको गौर-तत्त्व समझाने और श्रीगौराङ्ग-भजनकी शिक्षा देनेका कार्य ही श्रीनित्यानन्दप्रभुका सर्वप्रधान कार्य था। पहले प्रभुके आदेशसे वे और हरिदास ठाकुर नदियामें घर-घर जाकर हरिनाम-प्रचार करने लगे। वे लोग हरिनाम और श्रीकृष्णनाम-प्रचारके साथ-साथ श्रीगौर-नामका भी प्रचार करते थे। श्रीनित्यानन्द-प्रभु हरिनामके पूर्व गौरहरि-नाम जोड़ते थे, यह पहले कह चुका हूँ। अतिशय दैन्यपूर्वक नदियावासी जन-जनका हाथ पकड़कर वे कातरभावसे कहते थे—"गौर-हरि नाम बोलकर मुझको खरीद लो!"

वे सबको श्रीगौराङ्ग-तत्त्व अति सुस्पष्ट भाषामें कहते थे—"तुम सबके लिए ही श्रीकृष्ण नदियामें गौराङ्गसुन्दर-रूपमें प्रकट हुए हैं।"

पहले ही कह चुका हूँ कि प्रभुको प्रकट करनेके लिए श्रीनिताई-चाँदका नदियामें शुभागमन हुआ। अपना उद्देश्य वे इस प्रकार नाना उपायोंसे पूर्ण करने लगे।

इधर प्रभु भी श्रीनित्यानन्द-तत्त्व और महिमाका सर्वतोभावेन प्रचार करनेके लिए सहस्र-मुख हो रहे हैं। दोनों ही एक-दूसरेकी पूर्वलीलाके तत्त्व और सम्बन्धसे परिचित हैं। नदियामें अवतार ग्रहण करके दोनों ही अपना-अपना कार्य-साधन कर रहे हैं। यह उनकी लीलामात्र है। प्रभुका एक नाम है—स्वनामगाथक। वे कृष्ण नाम-प्रचारक हैं। जो कृष्ण हैं, वे ही गौर हैं और जो गौर हैं, वे ही श्रीकृष्ण हैं। तथापि प्रभु जो अपना नाम लेते हैं और महाजनगणने उनका एक नाम जो 'स्वनामगायक' रखा है, इसका कारण है। प्रभु कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं, इसी कारण वे 'स्वनाम गान' करते हैं, अपने नामानन्दमें उन्मत्त रहते हैं। उनका भक्तभाव है। वे भक्तावतार हैं।

नदियामें गौर-नाम प्रचार करनेका प्रभुके सामने किसीको साहस नहीं होता था; परन्तु श्रीनिताई-चाँद मना करनेपर भी नहीं मानते थे। श्रीनित्यानन्दप्रभु गौर-नाम और गौर-धर्म-प्रचारक थे। श्रीअद्वैतप्रभु भी गौर-कीर्तनके प्रचारक थे। नीलाचल-लीलामें ये सारी बातें विस्तृतरूपसे वर्णन की जायँगी। श्रीअद्वैतप्रभुके श्रीमुखसे निःसृत गौर-कीर्तनका आदि पद यहाँ उद्धृत किया जाता है—

श्रीचैतन्य नारायण करुणासागर।
दीन-दुःखितेर बन्धु! मोरे दया कर॥

चै. भा. अं. १०.१६३

श्रीनिताई-चाँदका अपूर्व लीलारङ्ग बड़ा ही मधुर है। वे भी श्रीश्रीनदिया-युगल-विलास-रसोन्मत्त श्रीगौराङ्गप्रभुके रसिक भक्त थे। एक दिन वे श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगलरूप-दर्शनकी लालसासे उन्मत्त होकर दिगम्बर वेषमें प्रभुके श्रीमन्दिरकी ओर दौड़े। गौर-प्रेमानन्दमें उनको पूर्व-पश्चिमका भी ज्ञान न था।

अपराह्णकालमें श्रीगौराङ्गसुन्दर प्रियाजीको साथ लेकर अपने मन्दिरमें रसरङ्ग-लीला कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रहे हैं। प्रेममें भरकर प्रियाजी अपने प्राणवल्लभके श्रीमुखमें ताम्बूल दे रही हैं।

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया जब इस प्रकार युगल-विलास-रसमें मग्न थे, परम चञ्चल अवधूत श्रीनिताई-चाँद अकस्मात् शचीके आँगनमें आकर बाल्य भावमें दिगम्बर वेषमें एकबारगी मन्दिरके द्वारपर जाकर उनके सामने खड़े होकर उद्दण्ड नृत्य करने लगे। उनको बाह्य ज्ञान नहीं है। वे श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाका युगलरूप देखकर उन्मत्त हैं। श्रीविष्णुप्रियादेवी लज्जासे वहाँसे उठकर भाग गयीं।

प्रभुने भी लज्जितभावमें उठकर अवधूत श्रीनिताई-चाँदके पास जाकर मधुर भाषामें पूछा—"श्रीपाद! आप यहाँ ऐसे दिगम्बर वेषमें क्यों हैं?" इस बातके उत्तरमें प्रेमोन्मत्त श्रीनिताई-चाँदने प्रभुको जो कुछ कहा और दोनोंके बीच जिस प्रकारका असंलग्न और अप्रासङ्गिक उत्तर-प्रत्युत्तर हुआ, वह हमारे 'पागल-निताई' के पूर्ण अनुरूप था।

प्रभुने पूछा—"नित्यानन्दजी! दिगम्बर कैसे हो?" नित्यानन्दने उत्तरमें 'हाँ-हाँ कह दिया'।

प्रभुने कहा—"नित्यानन्दजी! वस्त्र पहनो।" तब नित्यानन्दने कहा—"आज मैं जाऊँगा।"

प्रभुने पूछा—"नित्यानन्दजी! ऐसा क्यों कहते हो?" उन्होंने उत्तर दिया—"अब और खा नहीं सकता।"

प्रभुने कहा—"एक बात छोड़कर दूसरी क्यों करते हो?" उन्होंने उत्तर दिया—"मैं दस बार गया।"

प्रभुने नाराज होकर कहा—"मेरा दोष नहीं है।" नित्यानन्दजीने कहा—"यहाँ मा नहीं है।"

फिर प्रभु बोले—"कृपा करके वस्त्र तो पहनिये!" उनने कहा—"मैं भोजन करूँगा।"

यह अपूर्व रसमय प्रेमचित्र कृपालु गौर-भक्तवृन्द अपने-अपने हृदयमें अङ्कित करें। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

चैतन्येर भावे मत्त नित्यानन्द राय।
एक शुने, आर कहे, हासिया बेड़ाय॥

चै. भा. म. ११.७८

यह श्रीगौराङ्गसुन्दरका युगल-विलासरङ्ग सर्वोत्तम नरलीला है। श्रीनिताई-चाँदने नवद्वीपमें आकर जाना कि उनके प्रभुने अपनी पराशक्ति भक्तिस्वरूपिणी श्रीविष्णुप्रियादेवीको निज वक्ष-विलासिनी रूपमें अङ्गीकार किया है, परन्तु उनके दुर्भाग्यसे प्रभुका युगलविलास-दर्शन प्राप्त नहीं होता। उस सर्वोत्तम मधुरलीला श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-विलास-लीला-रङ्ग-दर्शनकी लाल-सासे ही श्रीनिताई-चाँदका शचीके आँगनमें असमय और अकस्मात् आगमन हुआ। उनका मनोरथ सिद्ध हो गया, वे प्रेमानन्दमें विभोर होकर पागलके समान न-जाने क्या-क्या बोल रहे हैं, जिसका कोई अर्थ नहीं है। यह प्रेमोन्माद-दशाका प्रलापमात्र है।

प्रभु बहुत चेष्टा करके भी श्रीनिताई-चाँदको वस्त्र न पहना सके, तब अपने हाथसे उन्होंने उनको अपने वस्त्रसे ढका। अवधूत श्रीनिताई-चाँदको उस समय भी बाह्य ज्ञान नहीं था। वे प्रेमानन्दमें विभोर होकर केवल हँसते थे और नृत्य करते थे।

अपने 'पागल-निताई' के श्रीश्रीनदिया-युगल-विलासरङ्ग-दर्शनकी स्मृति लेकर मैंने एक पद लिखा था, उसे नीचे उद्धृत करता हूँ।

मन-प्राण-समर्पिया, भज गौर-विष्णुप्रिया,
नित्यानन्द पद हृदे धरि।
प्राण गौर-नित्यानन्द, पाहिबेन प्रेमानन्द
युगले भजिले गौरहरि॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदिया युगले हेरि, निज वास परिहरि,
नाचे निताई शची आङ्गिनाय।
निज वस्त्र दिया गोरा, तुषिलेन गृह चोरा,
लाज भये प्रियाजी पलाय ॥
शची माता मृदु हासि, सुखेर सागरे भासि,
दूर हते हेरे नवरङ्ग।
मालिनीरे डाकि आनि, कहिलेन रस बानी,
निमाइर प्रेम परसङ्ग ॥
नित्यानन्द करे रङ्ग, नदिया नागर सङ्ग,
देखि सबे पुरनारी हासे।
अन्तराले विष्णुप्रिया, हइया तरल हिया,
मने-मने सुखनीरे भासे ॥
गौराङ्ग निताइ सने, कि कहिला काने-काने,
दु,जनार मुखभरा हासि।
दीन हरिदासे कहे, कि आनन्द शचीगृहे,
सबे मिले देखे जाओ आसि ॥

शचीमाता घरमें आड़से ही पागल निताईका यह अपूर्व लीलारङ्ग देखकर मृदु-मन्द हँस रही हैं। मालिनीदेवी आदि वैष्णव-गृहिणीगण भी वहाँ हैं। शचीमाता आज निताई-चाँदको ठीक अपने संसार-त्यागी पुत्र विश्वरूपके समान देख रही हैं। विश्वरूपका वह अपरूप-रूप, वह सरल बाल्यभाव, वह हाव भावकी समानता शचीमाता आज श्रीनिताई-चाँदके देहमें देख रही हैं और अपनी अन्तरङ्गा सखी श्रीवासगृहिणी मालिनीदेवीको दिखला रही हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभुके देहमें श्रीमद्विश्वरूपप्रभुका आविर्भाव होता था। गोस्वामि-शास्त्रमें लिखा है कि श्रीमद्विश्वरूपप्रभु जब अन्तर्धान हो गये तो उनका तेज और ज्योति निताई-चाँदकी देहमें प्रवेश कर गयी। इसी कारण उनके शरीरमें श्रीमद्-विश्वरूपप्रभुका स्वरूप और स्वभाव विकसित होता था। शचीमाताके मनमें आज बड़ा आनन्द हो रहा है। वे प्राण भरकर श्रीनित्यानन्दप्रभुके शरीरमें पुत्र विश्वरूपका दर्शन कर रही हैं।

शचीमाताके द्वारा श्रीनित्यानन्दके देहमें विश्वरूपका दर्शन एक गूढ़ रहस्य है। श्रीनित्यानन्द-प्रभु और श्रीश्रीमद्विश्वरूपप्रभु एक तत्त्व हैं, यह मत्प्रणीत श्रीश्रीमद्विश्वरूपचरित-श्रीग्रन्थमें विस्तारपूर्वक वर्णित है। शचीमाता श्रीमद्विश्वरूप-प्रभुके शोकमें कातर हैं। प्रभुने माताके पुत्र-विरह-दुःखको निवारण करनेके लिए यह लीला-रङ्ग प्रकट किया। श्रीनित्यानन्दप्रभु उनकी इच्छाशक्ति हैं। प्रभुके हृदयमें जब जो इच्छा उत्पन्न होती है, श्रीनित्यानन्दप्रभु तब उसको पूर्ण करते हैं। शोकाकुल माताको उनके संन्यासी पुत्र विश्वरूप-प्रभुके संन्यासके अपरूप-रूपको दिखलानेकी वासना जैसे-ही प्रभुके हृदयमें उत्पन्न हुई, वैसे-ही उनकी इच्छाशक्ति श्रीबलराम-अवतार श्रीश्रीनित्यानन्ददेवने प्रभुकी वह इच्छा पूर्ण कर दी। इससे प्रभुके मनमें आनन्द हुआ। उनकी माताके मनमें भी आनन्द हुआ। प्रभुको आनन्द-प्रदान करना श्रीनित्यानन्दप्रभुका कार्य है।

कुछ देरके बाद अवधूत निताई-चाँदको बाह्य ज्ञान हुआ। तब उन्होंने ठीकसे वस्त्र पहना। तब शचीमाताने बाहर आकर प्रेमपूर्वक उनको उत्तम चार-पाँच सन्देश मिष्टान्न खानेके लिए दिये। रँगीले निताई-चाँदने उनमें-से एकको खा कर शेष चारको आँगनमें धूलमें बिखेर दिया। यह देखकर स्नेहमयी शचीमाता दुःखसे 'हाय हाय' करने लगीं और उनसे पूछने लगीं "बेटा! तुमने सन्देशको क्यों इस प्रकार फेंक दिया?" श्रीनिताई-चाँदने हँसकर उत्तर दिया—"इतना एक साथ क्यों दिया?" माताने कहा—"अब तो मेरे घरमें सन्देश नहीं हैं, बेटा! क्या खाओगे?" रँगीले निताई-चाँद हँसकर बोले—"तुम घरमें देखो, अवश्य सन्देश पाओगी।" शचीमाताने घरमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जाकर जो देखा, उससे आश्चर्यसे विह्वल हो उठीं। अवधूत श्रीनिताई-चाँदने जो सन्देश आँगनमें फेंक रखा था, वह घरके भीतर आश्चर्यजनक रीतिसे रखा हुआ था; परन्तु धूल लगा हुआ। माताने धूल झाड़कर वही सन्देश पुनः श्रीनिताई-चाँदको खानेको दिया। शचीमाताने पूछा—"बेटा निताई ! तुमने कहाँसे इसे फिर ला दिया ?" मधुर हँसी हँसकर निताई-चाँद बोले—"जो मैंने फेंक दिया था, उससे तुमको दुःख हुआ, तब उसको मैंने वापस रख दिया।"

श्रीगौराङ्ग-जननी नित्यानन्दका प्रभाव देखकर आश्चर्यचकित हो गयीं। उन्होंने सोचा—'निताई मनुष्य नहीं हैं। ये सब अलौकिक कार्य क्या मनुष्य कर सकता है ?" उनके मनमें ऐश्वर्यभाव आ गया। तब शचीमाताने उनको भक्तिभावसे कहा—"नित्यानन्द ! तुम मुझे क्यों भुलाते हो। मैं जान गयी कि तुम ईश्वर हो। अब मेरे सामने माया मत चलाओ !" (चै. भा. म. ११.९३)

मायाधीश श्रीनिताई-चाँद बाल्यभावमें मधुर हँसी हसकर माताका पैर पकड़नेके लिए झपटे। शचीमाता कोई उपाय न देखकर भाग खड़ी हुईं। अवधूत नित्यानन्द उनके पीछे-पीछे दौड़े।

श्रीनित्यानन्दकी वैष्णवी मायाके प्रभावसे शचीमाताका ऐश्वर्यभाव दूर हो गया। उन्होंने वात्सल्य-स्नेहकी अधिकताके कारण अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुको पुत्र जानकर चरण-धूलि देनेसे वञ्चित नहीं किया। श्रीनित्यानन्दप्रभुने श्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगलरूप-दर्शन करके प्रेमानन्दमें मतवाले होकर जगज्जननी शचीमाताकी पद-धूलि ले ली।

प्रभुने उनको युगल-विलास-रूप दिखलाया, परन्तु अति गुप्त-रीतिसे। प्रभुने यह युगल-विलास-तत्त्व प्रकट न करनेके लिए उनको सावधान कर दिया। शचीमाता, श्रीविष्णुप्रियादेवी और श्रीप्रभुके सिवा इसे और कोई जान न सका। श्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-विलास-तत्त्व अत्यन्त गूढ़ है। श्रीनित्यानन्द-प्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌की सर्वतोभावेन सेवा की है। श्रीश्रीनदिया-युगल-सेवाके श्रीनिमाई-चाँद प्रकृत अधिकारी हैं। प्रभुकी यह युगल-सेवा नवद्वीप-रस-रसिक भक्तोंको उन्होंने दान कर दी है। क्योंकि वह,

सखा, भाइ, व्यजन, शयन, आवाहन।
गृह, छत्र, वस्त्र, जत भूषण आसन॥
आपने सकल रूपे सेवेन आपने।
जारे अनुग्रह करे पाय सेइ जने॥

चै. भा. आ. १.३१,३२

श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंका आश्रय लेकर नदियामें प्रभुकी युगल-सेवाकी भिक्षा माँगनी पड़ती है। उनकी कृपाके बिना यह सौभाग्य किसीको प्राप्त नहीं होता।

श्रीनित्यानन्दप्रभु परम आनन्दपूर्वक नदियामें सर्वत्र भ्रमण करते हैं। श्रीवासपण्डितके घरमें नाममात्रके लिए उनका वासस्थान है। वे सर्वत्र विराजते हैं। सदा ही उनका बाल्यभाव रहता है। प्रभुके साथ उनका नित्य कौतुक रहस्य-लीलारङ्ग होता है। प्रभुकी आज्ञासे श्रीवासपण्डितने अपने घरमें अवधूतको स्थान दिया है। दुष्टलोग इसके लिए उनको बुरा-भला कहते हैं, परन्तु श्रीवासपण्डित उसपर ध्यान नहीं देते। प्रभु सब जानते हैं; क्योंकि वे अन्तर्यामी भगवान् हैं।

एक दिन प्रभुने श्रीनित्यानन्दप्रभुको पास बुलाकर कहा—"श्रीपाद ! आप श्रीवासपण्डितके घर चञ्चलता न करें, इसके लिए मैं आपको सावधान करता हूँ।" निताई-चाँद प्रभुकी बात सुनकर 'विष्णु-विष्णु' कहकर कानपर हाथ देकर हँसते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुए बोले—"तुम मुझमें कभी चञ्चलता नहीं पाओगे ! तुम अपना-जैसा किसीको मत समझो !"

प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"श्रीपाद मैं आपको विशेषरूपसे जानता हूँ, इसीसे यह बात कह रहा हूँ।" अवधूत नित्यानन्द क्रोधित होकर बोले—"मेरा क्या दोष है, बोलो तो !" प्रभुने हँसकर कहा—"आप भोजन करते समय अन्न छींटते हैं, उच्छिष्टसे सब एकाकार कर देते हैं। लोगोंके देखनेमें इससे बढ़कर और क्या दोष गृहस्थके घरमें हो सकता है ?" निताई-चाँद तब हँसकर बोले—"यह तो पागल करता है। तुम मुझको पागल कहते हो ? इसी बहाने जान पड़ता है कि तुम मुझको अन्न न दोगे। मुझको एक मुठ्ठी अन्न दिये बिना यदि तुम सुखसे भोजन करो तो इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु मेरी बदनामी क्यों करते हो ? प्रभुने हँसकर कहा—"तुम्हारी अपकीर्ति मेरे सुननेमें आती है, इसीलिए तुमको बता रहा हूँ।"

यह सुनकर श्रीनित्यानन्दप्रभु "बहुत अच्छा, बहुत अच्छा" कहकर ठहाका मारकर हँस पड़े। आनन्दविह्वल होकर परिधानका वस्त्र खोलकर सिरपर पगड़ी बाँधकर दिगम्बर वेषमें श्रीवासके आँगनमें दोनों पैरोंपर कूद-कूदकर उद्धत नृत्य करने लगे। वहाँ सबलोग थे। गदाधरपण्डित, हरिदास ठाकुर, श्रीवासपण्डित आदि भक्तगण अवधूत निताई-चाँदका यह अद्भुत काण्ड देखकर हंसने लगे। प्रभुने जब उनके पास जाकर हाथ पकड़कर विनीतभावसे कहा—"श्रीपाद ! क्या कर रहे हैं ? यह गृहस्थका घर है। यहाँ क्या ऐसा कर्म किया जाता है ?" श्रीनिताई-चाँदने तब हँसकर प्रभुसे कहा—"तुमने अभी मुझको 'पागल' कहा है और फिर क्यों अपनी बात पलटते हो !" प्रभुने मधुर हँसीके साथ उनको अपने हाथसे वस्त्र पहना दिया।

प्रभुके साथ श्रीनिताई-चाँद इस प्रकार रसरङ्ग-लीला करते थे। वे किसीकी बात नहीं सुनते थे, अपने भावमें आप विह्वल रहते थे। कभी-कभी असाधारण दुःसाहसिक कार्य करते थे। बीच गङ्गामें कूदकर मगरको पकड़ने जाते थे। रास्तेमें बैल देखते तो कूदकर उसके ऊपर बैठ जाते। दुधारू गाय देखते तो उसको पकड़कर उसके थनमें मुँह लगाकर दूध पीते थे। सदा ही उनका बाल्यभाव था। कोई उनको इन सब कार्योंसे निवृत्त नहीं कर सकता था।

प्रभुके कानोंमें ये सब बातें पहुँचती हैं। वे बीच-बीचमें श्रीनित्यानन्दप्रभुको भलीभाँति समझाते हैं और कहते हैं कि इन सब कार्योंमें विपत्ति है। कभी स्वयं उनकी इस लीलास्थलीमें उपस्थित होकर मना करते हैं। अवधूत श्रीनिताई-चाँद चैतन्यकी बात अंकुशके समान मानते हैं। अवधूत श्रीनिताई-चाँद इसी प्रकार अद्भुत लीलारस-रङ्गमें मत्त रहते हैं। भक्तगण उनके इस प्रकारके अद्भुत चरित्रको देखकर विस्मित होते हैं। बहिरङ्ग लोग नाना प्रकारकी बातें करते हैं। वे लोक-निन्दाके परे हैं। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

नित्यानन्द निन्दा करे जे पापिष्ठ जन।
गङ्गाओ ताहारे देखि करे पलायन॥

चै. भा. म. ११.९६

इस बातमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। श्रीनित्यानन्दप्रभु अवधूत संन्यासी वेषमें श्रीगौराङ्ग-लीलारस-समुद्रमें सर्वदा मग्न रहते थे। उन्हींकी कृपासे तथा उन्हींके कृपादेशमें श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने मधुर श्रीगौराङ्ग-लीलाका वर्णन करके श्रीचैतन्यभागवत-श्रीग्रन्थ लिखा है। प्रभुकी विशेष कृपापात्री श्रीवासपण्डितकी भतीजी नारायणीदेवीके गर्भसे श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरका आविर्भाव हुआ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीनित्यानन्दप्रभुने कृपा करके उनको अपनाया और शक्ति-संचार करके उनके द्वारा इस अपूर्व श्रीग्रन्थकी रचना करायी। श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीमुखसे श्रीगौराङ्ग-लीला-कथा श्रवण करके वृन्दावनदास ठाकुरने इस अपुर्व गौराङ्ग-लीला-श्रीग्रन्थकी रचना की थी। यह श्रीगौराङ्ग-लीलाका विस्तृत आदि-ग्रन्थ है। पूज्यपाद कविराज गोस्वामी त्रिकालज्ञ ऋषि थे। उन्होंने श्रीचैतन्यचरितामृतमें लिखा है—

मनुष्ये रचिते नारे ऐछे ग्रन्थ धन्य।
वृन्दावनदास मुखे वक्ता श्रीचैतन्य॥

चै. च. आ. ८.३५

ऋषिवाक्य अभ्रान्त हैं। ऋषिवाक्य और साधुचरित्रमें जो विश्वास नहीं करते, उनके लिए यह ग्रन्थ नहीं लिखा गया है।

श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीअङ्गमें दिव्य ज्योति प्रकाश करती थी। सारी नदियामें वे भावावेशमें परिभ्रमण करते थे। कोई उनको 'योगी' कहता था, कोई 'संन्यासी' कहता, कोई 'ज्ञानी' अथवा 'सिद्धपुरुष' कहकर उनका सम्मान करता था। नदियाके भक्तवृन्दके वे प्राणस्वरूप थे। श्रीनित्यानन्द-प्रभु श्रीगौराङ्ग-भावमें सदा विभावित रहते थे। उनकी प्रेमोन्मादावस्थाके भाव अत्यन्त निगूढ़ हैं—

"शयने गौर, स्वप्ने गौर, गौर नयनेर तारा।
जीवने गौर, मरणे गौर, गौर गलार हारा॥"

श्रीनित्यानन्दप्रभु चतुर्दिक् गौरमय देखते थे। व्रजके प्राण-कन्हाई उनके नदियाके प्राण-गौराङ्ग होकर आये हैं। अभिनव नवद्वीप-लीलाकी अपूर्व रस-माधुरी उपभोग करनेकी लालसासे उनके बलराम-भैया चौदह भुवन खोजकर उनको नवद्वीपमें पाकर कृतार्थ हो रहे हैं। नवद्वीपमें वे वृन्दावन-रस उपभोग करते हैं। गौर-निताई, दोनों भाइयोंने नदियामें जो अपूर्व लीला-रङ्ग प्रकट किया था, उसका प्रभाव अखिल ब्रह्माण्डमें व्याप्त हो रहा है। श्रीगौराङ्ग-नाम और धर्मके सर्वप्रथम प्रचारक श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभु हैं। वे मार खाकर भी गौर-नामका प्रचार कर गये हैं—

मार खेये दया करे दयाल निताइ।
एमन दयाल दाता कोथा देखि नाइ॥

जगाई-माधाई उद्धार-लीलामें श्रीनित्यानन्दप्रभुका परम उदार चरित्र अति सुन्दररूपमें अभिव्यक्त हुआ है। वे सब अपूर्व लीला-कथा आगे कही जायँगी। हृदयके आवेगसे एक दिन एक पद लिखकर परम दयालु श्रीनिताई-चाँदके चरणोंमें निवेदन किया था—

ओ मोर निताइ चाँद।
मधुर मोहन, रुपटि देखाये, पुराओ मनेर साध।
जगत जुड़िया, पातियाछ तुमि, विमल प्रेमेर फाँद।
से फाँदे पड़िया, भूले गेछि आमि, जीवनेर अवसाद॥

ओ मोर नित्यानन्द।
करुणा करिया, प्राण बँधूया, देखाओ गौरचन्द्र।
पाषाण हृदये, ऊषर पराणे, नाहिक प्रेम गन्ध॥
तोमार कृपाय, यदि प्रिय हय, मू बड़ भाग्यमन्द॥

ओ मोर दयाल गुरु।
सरस कर हे, करुणा करिये, ए मोर हृदय-मरु॥
तुमि हे दयाल, पतितपावन, प्रेम भगति-तरु।
छाया दाने कर, सुशीतल हिया, ओ मोर जगदगुरु॥

ओ मोर गुणेर सिन्धु।
अधम बलिया, अभिमान करि, याचि जे करुणा-बिन्दु।
पतितेर प्रति, चा' बे कि हे तुमि, प्रेम-जगत-इन्दु॥
तोमा बिने आर, हरिदासियार, जगते नाहिक बन्धु॥

—*—*—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उन्चालीसवाँ अध्याय

श्रीपाद मुरारिगुप्त और प्रभु

प्रभु बोले मुरारि आमार प्रिय तुमि ।
अतएव तोमारे भाङ्गिल मर्म्म आमि ।।
चै. भा. म. २०.२६

मुरारिगुप्त-महिमा

श्रीपाद मुरारिगुप्तने अपनी आँखों श्रीगौराङ्ग-लीला-दर्शन करके अपने रचित करचामें सहज संस्कृत श्लोकमें सूत्ररूपमें प्रभुकी आद्यन्त लीला-कथाका वर्णन किया है। इस श्रीग्रन्थका नाम 'श्रीकृष्णचैतन्यचरितामृत' है। आत्मशोधनके लिए इन महापुरुषका संक्षिप्त परिचय पहले कुछ लिख चुका हूँ। वैष्णव महाजनगणने इनको 'हनुमान्'के अवतारके रूपमें वर्णन किया है। इनका दास्यभाव अति अद्भुत था। ये श्रीरामचन्द्रोपासक थे। प्रभुकी अपेक्षा उम्रमें कुछ बड़े थे। नदियामें मुरारिगुप्त एक विशिष्ट पण्डितके रूपमें प्रसिद्ध थे। बाल्य लीलामें श्रीगौराङ्गप्रभुने इनके ऊपर विशेषरूपसे कृपा की थी। यह सब लीला-कथा पहले वर्णित हो चुकी है। मुरारिगुप्त प्रभुके चिह्नित दास और नित्य पार्षद थे।

श्रीपाद मुरारिगुप्तने अपने श्रीग्रन्थके प्रथम दो श्लोकोंमें यह कहकर श्रीगौराङ्गप्रभुका जय-गान किया है—

स जयत्यतिशुद्धविक्रमः
कनकाभः कमलायतेक्षणः ।
वरजानुविलम्बिसद्भुजो
बहुधा भक्तिरसाभिनर्तकः ।।

जगन्नाथसुतो जगत्पति-
र्जगदार्त्तिजगदार्त्तिहा विभुः ।
कलिपाता कलिभारहारको-
ऽजनि शच्यां निजभक्तिमुद्वहन् ।।

और यह कहकर प्रणाम किया है—

नमामि चैतन्यमजं पुरातनं
चतुर्भुजं शङ्खगदाब्जचक्रिणम् ।
श्रीवत्सलक्ष्माङ्कितवक्षसं हरिं
सद्भालसंलग्नमणिं सुवाससम् ।।

वदामि किंचित् भगवत्कथां सतां
हर्षाय किंचित् खलनं यदा भवेत् ।
तदात्र संशोधयितुं महत्तमा
प्रमाणमेवात्र परोपकारिणः ।।

श्रीगौर-भगवान्ने श्रीपाद मुरारिगुप्तको अनेक बार अपना ऐश्वर्य-दर्शन कराया था। प्रभुकी ऐश्वर्यमयी चतुर्भुज मूर्तिका उन्होंने अपनी आँखोंसे दर्शन किया था; अतएव परम भाग्यवान् मुरारिगुप्तने प्रभुकी ऐश्वर्य-मूर्तिको प्रणाम किया है। उनके घर श्रीगौर-भगवान्का प्रायः शुभागमन होता था। उनकी परम वैष्णवी पतिव्रता गृहिणी गौराङ्ग-गतप्राणा थीं। उनकी वृद्धा माता गौराङ्गके सिवा और किसीको नहीं जानती थीं। वे सदा शचीके आँगनमें रहती थीं और सब कामोंमें शचीमाताकी सहायता करके श्रीगौराङ्गकी सेवा करती थीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवृन्दावनदास ठाकुर श्रीमुरारिगुप्तका प्रभाव वर्णन करके अन्तमें लिखते हैं—

मुरारि गुप्तेर दासे जे प्रसाद पाइल ।
सेइ नदियाय भट्टाचार्य ता ना देखिल ।।

चै. भा. म. २०.७३

परम सौभाग्यवान् मुरारिगुप्तका आख्यान अतिशय मधुर और अद्‌भुत है, जिसको सुननेसे भक्ति प्राप्त होती है। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार यह बात लिख गये हैं—

शुन-शुन मुरारिर अद्‌भुत आख्यान ।
शुनिले मुरारिर कथा, पाइ भक्ति दान ।।

चै. भा. म. २०.७७

मुरारिगुप्तके साथ प्रभुकी लीलारङ्ग-कहानी इस अध्यायमें वर्णित होगी ।

मुरारिगुप्तको वाराह-दर्शन

श्रीपाद मुरारिगुप्तके घरमें श्रीगौर-भगवान्‌ने एक दिन उनको अपूर्व वाराह-मूर्ति दिखलायी थी। एक दिन प्रातःकाल अकस्मात् मुरारिगुप्तके घर प्रभु गये। मुरारिगुप्तने उनको सत्कार पूर्वक दिव्यासनपर बैठाकर पाद्य-अर्घ्य प्रदानकर पूजा की। प्रभुको यह कहकर आवाहन किया—

आजि मोर घर द्वार सम्पूर्ण हइल ।
आजि से मुरारि नाम सफल धरिल ।।
आजि सुप्रभात हैल आमार रजनी ।
आमार संधि आइला द्विज-शिरोमणि ।।

चै. म.

इस प्रकार श्रीगौर-भगवान्‌को आवाहन करके, गन्ध-माल्य-चन्दनसे भूषित करके, दिव्य वस्त्र पहनाकर मुरारिगुप्तने प्रभुको इच्छानुसार सजाया। गुप्त-गृहिणीने कर्पूर-पानके द्वारा सेवा की। ठाकुर-गृहमें प्रभु निद्राके बहाने सो गये। प्रभुके सामने बैठकर मुरारिगुप्त इष्टमन्त्र जप करने लगे।

कुछ देरके बाद प्रभु वाराह-आवेशमें हुंकार-गर्जन कर उठे। उनका कण्ठस्वर वाराहके समान जान पड़ता था। वे जानु और करके द्वारा देवगृहमें इधर-उधर भ्रमण करने लगे। नासिकाके घर्घर-शब्दसे मुरारिगुप्त चकित होकर प्रभुके श्रीअङ्गकी ओर देखने लगे। वे मानो वाराह-मूर्ति धारण करके ठाकुर-मन्दिरके जलपूर्ण ताम्र-घटको दशनाग्रपर उठाकर उच्च प्राचीरको लाँघ रहे हैं। स्वर्गमें देवगण जयध्वनि करके उनके सिरपर पुष्पवृष्टि कर रहे हैं। परम ऐश्वर्यपूर्ण प्रभुके इस अपूर्व वाराह-भावको देखकर मुरारिगुप्त मूर्च्छित हो गये। प्रभुने तब ऐश्वर्य-संवरण किया। उनके श्रीअङ्गके स्पर्शसे मुरारिगुप्तकी मूर्च्छा भङ्ग हुई। वे प्रणाम करके प्रभुकी स्तुति करने लगे। जैसा कि उन्होंने अपने करचामें लिखा है—

स प्रोवाच नमन् भूमौ विस्मितो दृश्य ईश्वरः ।
नाहं वेद्मि स्वरूपं ते भगवान् वनजेक्षण ।।
स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।

प्रभु मुरारिगुप्तकी स्तुतिसे संतुष्ट होकर आत्म-संवरण करके बोले—"मुरारि ! तुम परम आप्त हो ! तुमको देखकर मैं घरमें स्थिर नहीं रह सकता।"

सपरिवार मुरारिगुप्तके ऊपर कृपा करके प्रभु अपने मन्दिरमें आये। मुरारिगुप्त और उनकी पतिव्रता गृहिणी प्रभुकी अयाचित कृपा देखकर आनन्द-विह्वल होकर अजस्र आँसू बहाते हुए रुदन करने लगे।

श्रीचैतन्यभागवतमें लिखा है कि प्रभुने वाराह-आवेशमें वेदके प्रति क्रुद्ध होकर काशीके प्रकाशानन्द

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सरस्वतीका प्रसङ्ग उठाकर कहा था—"मेरे हाथ, पैर, मुख, आँख नहीं हैं—यह कहकर वेद मेरी विडम्बना करते हैं। काशीमें बेटा प्रकाशानन्द वेद पढ़ाता है। पढ़ाता क्या है, मेरे शरीरके टुकड़े-टुकड़े करता है।" (चै. भा. म. ३.३६-३७)

जिन प्रकाशानन्दका यहाँ प्रभुने उल्लेख किया है, वे काशी-वासी मायावादी संन्यासी थे; श्रीभगवान्‌की मूर्तिको नहीं मानते थे। अतएव प्रभुने कहा था—

सेइ बेटा करे मोर अङ्ग खण्ड-खण्ड ।

चै. भा. म. ३.३७

वे वेदोक्त निराकार परब्रह्मके उपासक थे। वेदमें निराकार ब्रह्मकी बात लिखी है, अतएव उन्होंने कहा—

हस्त-पाद-मुख मोर नाहिक लोचन ।
वेद मोरे एइ मत करे विडम्बन ।।

चै. भा. म. ३.३६

प्रकाशानन्दका दूसरा नाम प्रबोधानन्द था। सरस्वती उनकी उपाधि थी। वे वेदान्त-शास्त्रके परम पण्डित थे। काशीमें उनका बहुत बड़ा मठ था। वे दस हजार संन्यासियोंके गुरु थे। श्रीगौराङ्गप्रभुने जब संन्यासाश्रम ग्रहण किया तो प्रकाशानन्द सरस्वती उनकी निन्दा करने लगे; क्योंकि वे संन्यासी होकर उनके समान संन्यासीके धर्मका पालन नहीं करते थे। नृत्य, गीत, उच्च संकीर्तन, प्रसाद-भोजन आदि भक्तिके अङ्ग हैं; मायावादी संन्यास-धर्मके अङ्ग नहीं हैं। अतएव प्रकाशानन्द सरस्वती प्रभुके द्वारा आचरित भक्ति-धर्मकी निन्दा करते थे। पश्चात् प्रभुकी कृपासे इन वेदान्ती संन्यासीको दिव्य ज्ञानकी प्राप्ति हुई, तब वे स्वयं श्रीगौराङ्गप्रभुको भगवान् मानकर विश्वास करने लगे और उनके चरणोंका आश्रय लेकर श्रीधाम वृन्दावन जाकर श्रीगौराङ्ग-भजनमें शेष जीवन बिता डाला। इन महापुरुषके साथ प्रभुकी लीलारङ्गकी बात आगे यथास्थान वर्णन की जायगी। प्रसङ्गवश यहाँ उनका साधारण परिचय दिया गया है।

मुरारिगुप्त प्रभुके सर्वप्रधान भक्त और नित्य-पार्षद थे, इसी कारण प्रभुने उनके सामने ऐसा ऐश्वर्यभाव प्रकट किया। उन्होंने जब उनको अधरामृत-चर्वित पान प्रसादके रूपमें देनेकी कृपा की थी, उस समय भी उन्होंने प्रकाशानन्दकी बात उठाकर इसी प्रकारकी बात कही थी।

प्रभुने वाराह-आवेशमें मुरारिगुप्तके घरमें बैठकर भक्त-महिमा-कीर्तन करके मुरारिगुप्तसे कहा—"अरे मुरारि ! वेदमें भी जो गुप्त है, उसे मैं तुमको कहता हूँ। मैं यज्ञ-वाराह सब वेदोंका सार हूँ। मैंने ही पूर्वकालमें पृथ्वीका उद्धार किया था। यह मेरा अवतार संकीर्तन-प्रचारके लिए हुआ है। मैं भक्तजनोंकी रक्षा करके दुष्टोंका संहार करूँगा। मेरे सेवकसे द्रोह मैं सह नहीं सकता। वह मेरा पुत्र हो तो उसे भी मैं मार डालता हूँ। अपने सेवकके लिए पुत्रको भी काट डालता हूँ। मुरारि ! यह मैं मिथ्या नहीं कहता। ध्यान देकर सुनो ! जिस समय मैंने पृथ्वीका उद्धार किया था, उस समय मेरे स्पर्शसे पृथ्वीदेवीको गर्भ रह गया था। उससे नरक नामका एक बड़ा बलवान् पुत्र उत्पन्न हुआ था। उस अपने पुत्रको मैंने धर्मका सब तत्त्व समझा दिया था। पीछे जाकर वह मेरा पुत्र महाराजा बना और देव, द्विज, गुरु और भक्तोंका पालन करने लगा। परन्तु दुर्भाग्यवश दुष्ट-वाणासुरके संगसे उसपर भक्त-द्रोहका रंग चढ़ गया। इससे अपने सेवकोंकी रक्षाके लिए मैंने अपने पुत्र नरकासुरको भी मार डाला। तुमने जन्म-जन्ममें मेरी सेवा की है, इसीलिये मैं यह सब तत्त्व तुमको सुना रहा हूँ।" (चै. भा. म. ३.४१-५०)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुरारिको स्वप्नमें नित्यानन्द-स्वरूप-दर्शन

प्रभु मुरारिगुप्तपर विशेष कृपा रखते थे, इसका परिचय उनके साथ उनकी अपूर्व लीलारङ्ग-कथासे मिलता है। नित्यानन्दप्रभु बलरामके अवतार थे, यह बात अनेकों भक्तोंने उनके श्रीमुखसे सुनी थी। परन्तु श्रीश्रीनिताई-चाँदका स्वरूप देखनेका सौभाग्य प्रभुके विशेष कृपापात्र भाग्यवान् मुरारि-गुप्तको प्राप्त हुआ था। वह अपूर्व लीला-कथा यहाँ वर्णन की जायगी।

एक दिन श्रीमन्महाप्रभु श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ श्रीवासके आँगनमें बैठकर भक्तगोष्ठीके साथ कृष्ण-कथा कह रहे थे। उसी समय मुरारीगुप्तने आकर पहले प्रभुकी चरण-वन्दना करके पश्चात् श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंमें दण्डवत्-प्रणाम किया। प्रणाम करके हाथ जोड़कर वे प्रभुके सामने खड़े हो गये। यह देखकर प्रभुने उनको गम्भीरतापूर्वक कहा—"मुरारि ! तुमने जो किया, वह उचित व्यवहार नहीं हुआ। नमस्कार करनेमें तुमने व्यतिक्रम किया है। तुमको तो व्यवहार सिखाना चाहिये। तुमने स्वयं उसका उल्लंघन क्यों किया ?"

(चै.भा.म. २.९-१०)

श्रीनित्यानन्द प्रभुके अग्रज थे, अतएव पहले उनको प्रणाम करके पश्चात् प्रभुको प्रणाम करना मुरारिगुप्तके लिए उचित था। यह बात उठाकर प्रभुने मुरारिगुप्तको डाँट-फटकार बतलायी—"कहाँ तो तुम दूसरेको नीति-धर्म सिखाते हो, तुम स्वयं ही इसका उल्लङ्घन करते हो। यह कैसी बात है ?"

मुरारिगुप्त प्रभुकी बात सुनकर विशेष लज्जित और अनुतप्त होकर सिर अवनत करके कहने लगे—"प्रभो ! मैं क्या जानूँ ? तुम मेरे चित्तको जैसा प्रेरित करते हो, मैं वैसा ही करता हूँ।" प्रभुने पूर्ववत् गम्भीर स्वरमें कहा—"अच्छा, आज तुम घर जाओ, कल तुमको ज्ञात होगा।"

मुरारिगुप्त प्रभुकी बातका मर्म समझकर मन-ही-मन बहुत चिन्तित हुए। मनमें भय भी हुआ। वे सोचते-सोचते घर गये। उस दिन उनका मन बड़ा हो उद्विग्न हो गया। रातमें सोनेपर उन्होंने स्वप्न देखा—"नित्यानन्दजी मल्लवेषमें चले जा रहे है। उनके सिरपर बड़ा भारी नागफणि और हाथोंमें हल-मूसल और तालके चिह्नवाली पताका है। नित्यानन्दकी मूर्ति हलधर-जैसी है। उनके पीछे मोर-पंख धारण किये विश्वम्भर जा रहे हैं। प्रभु कह रहे हैं—"मुरारि ! जान गये न, मैं छोटा हूँ; अब विचारकर देखो, तुम्हारा व्यवहार ठीक हुआ या नहीं।" स्वप्नमें दोनों प्रभु मुरारिको देखकर हँसे और इस प्रकार शिक्षा देकर अन्तर्धान हो गये।

नींद टूटनेपर मुरारिगुप्त "हा नित्यानन्द ! हा नित्यानन्द ! हा नित्यानन्द !" कहकर बारंबार दीर्घश्वास छोड़ने लगे। यह सुनकर उनकी साध्वी गृहिणीकी नींद अचानक टूट गयी। वह 'कृष्ण-कृष्ण' कहती हुई उठ बैठी। पति-पत्नी दोनों बैठकर प्रेमानन्दमें रोते हुए इस अपूर्व स्वप्न-कथाके विषयमें विचार करने लगे। तब मुरारि-गुप्तने प्रातःकाल प्रभुके साथ जो बातें हुई थी, वे सब गृहिणीको कह सुनायीं। प्रभुकी इस अयाचित कृपाका स्मरण करके दोनों प्रेमानन्दमें अजस्त्र आँसू बहाने लगे। उनके नयन-जलसे शैया-वस्त्रादि—सब भीग गये।

प्रातः उठकर मुरारिगुप्त प्रभुके श्रीमन्दिरकी ओर गये। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि कमलनयन महाप्रभु विराजमान हैं। उनके दक्षिणकी ओर प्रफुल्लवदन नित्यानन्द विराज रहे हैं। उन्होंने इस बार पहले श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंकी वन्दना करके पश्चात् महाप्रभुके चरणोंकी वन्दना की। रँगीले प्रभुने हँसकर मुरारिगुप्तकी ओर देखकर कहा—"आज यह क्या किया ?" मुरारि-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गुप्तने आदरपूर्वक पहलेके समान उत्तर दिया, "प्रभो ! तुमने जैसा कराया।" तब चतुर-चूड़ामणि श्रीगौराङ्गप्रभुने हँसकर मधुर वचनोंमें उनसे चुपकेसे कहा—"मुरारि ! तुम मेरे अति प्रिय हो, इसी कारण मैंने तुम्हारे सामने श्रीपाद नित्यानन्दके गूढ़ मर्मको खोल दिया।" मुरारिगुप्तने आनन्दसे गद्‌गद होकर प्रभुके श्रीचरणोंकी धूलि लेकर अपने सिरपर लगा ली।

प्रभुका चर्वित ताम्बूल और प्रकाशानन्दके प्रति आक्रोश

प्रभु मुरारिगुप्तके साथ मधुर वचनसे बातें करने लगे। वहाँ गदाधरपण्डित भी थे। वे प्रभुके लिए पान लगा रहे थे। भक्तवत्सल प्रभुने प्रेमावेशमें मुरारिगुप्तकी ओर करुण-दृष्टिसे देखकर कहा—"मुरारि ! तुम मेरे प्रधान भक्त हो।"—यह कहकर दयामय प्रभुने अपना अधरामृत-चर्वित ताम्बूल मुरारिके हाथमें दिया। भाग्यवान् मुरारि दोनों हाथ बढ़ाकर प्रभुके अधरामृत-प्रसादको ग्रहण करके तत्काल उसे खाकर प्रेमानन्दमें उन्मत्त हो गये। "प्राप्तमात्रेण भोक्तव्यम्" वाक्यको सार्थक करके वे आनन्दसे नृत्य करने लगे।

प्रभुने हँसकर कहा—"मुरारि ! हाथ धो लो ! तुम्हारे हाथ उच्छिष्ट हो गये।" मुरारिने यह सुनकर दोनों हाथोंसे शिर-स्पर्श किया और सारे अङ्गोंमें प्रसादसे पवित्र उन हाथोंको फेर दिया। प्रेमानन्दमें अधीर होकर वे भुजाएँ ऊपर उठाकर उद्धत नृत्य करने लगे। श्रीगौर-भगवान्‌ने मुरारिगुप्तकी अवस्था देखकर बनावटी रोष दिखलाते हुए उनसे कहा—"तुम्हारी जाति चली गयी, तुम्हारा सारा अङ्ग उच्छिष्ट हो गया।"

यह बात कहते-कहते प्रभुको भगवान्-भावका आवेश हुआ। वे दाँत किटकिटाते हुए हुंकार-गर्जन-पूर्वक आविष्टभावमें मुरारिगुप्तको लक्ष्य करके व्रज-गम्भीर स्वरमें बोले—

"काशीमें प्रकाशानन्द संन्यासी रहता है। वह बेटा अच्छी तरहसे मेरे टुकड़े-टुकड़े करता है। वह वेदान्त पढ़ाता है और मेरे विग्रहको नहीं मानता है। मैंने उसके शरीरमें कोढ़ पैदा कर दिया तो भी वह नहीं समझता है। मेरे जिस देहमें अनन्त ब्रह्माण्डोंका वास है, उसे वह बेटा किस साहससे मिथ्या कहता है ? मुरारि ! तुम मेरे दास हो ! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जो मेरे देहको नहीं मानता, वह नष्ट हो जाता है। ब्रह्मा, शिव आदि जिस विग्रहकी सेवा बड़े आनन्दसे करते हैं, सब देवता अपना प्राण समझकर जिस विग्रहकी पूजा करते हैं, जिस अङ्गके स्पर्शसे पुण्य और पवित्रता प्राप्त होती है, उसे किस साहससे वह बेटा मिथ्या कहता है। मैं तुम्हारे निकट यह सत्य-सत्य प्रकाश कर रहा हूँ कि मैं सत्य हूँ, मेरे दास सत्य है और मेरे दासके दास सत्य है। मेरी लीला, मेरे कर्म सत्य है, मेरा धाम सत्य है। जो इनको मिथ्या कहता है, वह मेरे टुकड़े-टुकड़े करता है। मेरे जिस यशके श्रवणसे मूल अविद्याका नाश होता है, उस विलासको वह पापी अध्यापक मिथ्या कहता है। जिस यशके श्रवणरूपी रससे शिवजी दिगम्बर हैं, जिसको स्वयं महीधर अनन्तदेव गाते रहते हैं, जिस यशके श्रवणमें शुकदेव-नारदादि मतवाले बने रहते हैं, चारों वेद जिस यशके महत्वको बखानते हैं, ऐसा जो मेरा पुण्य यश है उसके प्रति जिसका निरादर-भाव है, वह मेरे अवतारको कभी समझ नहीं सकता।" (चै. भा. म. २०.३३-४४)

प्रभुके मनमें इस समय काशीके प्रकाशानन्दकी बात कैसे आयी ? निराकार ब्रह्मतत्त्वका विचार क्यों उठा ? मुरारिगुप्त पहले अत्यन्त आध्यात्मिक चर्चा करते थे, अतिशय वेदान्तनिष्ठ थे। वे वेदान्तके अनुयायी थे। मायावादी संन्यासियोंके मतसे पहले मुरारिगुप्त सहमत थे। प्रभुके मनमें यह बात

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उठनेपर उन्होंने काशीके प्रकाशानन्दकी बात उठाकर मुरारिगुप्तको शिक्षा दी। वेदमें श्रीभगवान्‌की श्रीमूर्तिकी पूजाकी व्यवस्था नहीं है। वाराह-आवेशमें प्रभुने मुरारिगुप्तसे कहा था कि वेद अन्धे हैं। काशीमें बैठकर प्रकाशानन्द सरस्वती मायावादकी शिक्षा देते हैं, श्रीभगवान्‌के रसमय श्रीविग्रहको नहीं मानते हैं। उनको रास्तेपर लाना है। सर्वज्ञ प्रभुने अपनी पर-लीलाका यहाँ आभास दिया है। उन्होंने मुरारिगुप्तको लक्ष्य करके सब लोगोंको शिक्षा दी है कि उनका श्रीविग्रह सत्य है, उनके सेवक नित्यदास हैं, उनकी लीलास्थली नित्य चिन्तामणिभूमि है।

यह संन्यासी-गुरु प्रकाशानन्द सरस्वती पश्चात् प्रभुकी कृपासे एकान्त गौरभक्त हुए थे। पहले वे प्रभुकी निन्दा करते थे, पश्चात् जब प्रभुने उनपर कृपा करके उनका केश पकड़कर उद्धार किया तो पूर्व प्रसङ्गको स्मरण करके उनका हृदय अनुतापानलमें दग्ध होने लगा। उन्होंने श्रीमन्महाप्रभुकी निन्दाके प्रायश्चित्त-स्वरूप श्रीचैतन्य-चरितामृत-श्रीग्रन्थकी रचना की। इस श्रीग्रन्थमें उन्होंने अपनी निष्कपट गौर-भक्ति तथा सुदृढ़ गौराङ्गैकनिष्ठाका पूर्ण परिचय दिया है। सर्वज्ञ प्रभुने नवद्वीपमें बैठकर उनको स्मरण किया, उनकी बात भक्तवृन्दको कह सुनायी, इससे प्रकाशानन्द सरस्वतीके प्रति उनकी कृपाका परिचय मिलता है। प्रकाशानन्द-उद्धार-लीला अति मधुर है। प्रभुकी नीलाचल-लीलामें इसका विस्तारपूर्वक वर्णन होगा।

प्रभुने जिस समय मुरारिगुप्तसे ये सब बातें कहीं, उस समय वे भगवान्-भावमें आविष्ट थे। उनका उस समय ऐश्वर्यभाव था। कुछ देरके बाद प्रभुने अपने ऐश्वर्यभावको संवरण किया। मुरारि-गुप्त अबतक हाथ जोड़कर प्रभुके सामने जड़वत् निःस्पन्द होकर खड़े हुए सुन रहे थे। प्रभु धीरे-धीरे आये और स्नेहपूर्वक उनको प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान करके कृतार्थ करते हुए मधुर वचन बोले—

"मुरारि! तुम सचमुचमें मेरे शुद्ध दास हो। तुमने ही नित्यानन्दके प्रकाशको जाना है। श्रीनित्यानन्दसे जिसका तिलमात्र भी द्वेष रहता है, वह दास होनेपर भी मेरा प्रिय नहीं है। तुम अब घर जाओ। तुमने मुझे खरीद लिया है, तुमने ही नित्यानन्द-तत्त्वको जाना है।"

'चै. भा. म. २०.४९-५१'

मुरारिकी भाव-विह्वलता और प्रेमसेवा

आज मुरारिगुप्तके आनन्दकी सीमा नहीं है। गौर-निताई दोनों भाई युगल-भावमें उनके हृदयमें प्रवेश कर गये हैं। वे चतुर्दिक् गौर-निताईमय देख रहे हैं। वे प्रेमानन्दमें विह्वल होकर घर लौटे। नदियाके मार्गमें मुरारिगुप्त पागलके समान कुछ बोलते जा रहे हैं। उनका किसी ओर ध्यान नहीं है। "हा प्राण गौर-नित्यानन्द!" कहकर एक-एक बार लंबी साँस ले रहे हैं। प्रेममें भरे उनके अङ्ग पुलकायमान हो रहे हैं। उन्मत्त भावमें घर आये। वे कहते हैं। कुछ हैं और करते कुछ हैं, उच्चस्वरसे खिल-खिलाकर हँसते हैं और इधर-उधर ताकते हैं। उनकी परम भक्तिमती पतिव्रता गृहिणी पतिके इस प्रेमविह्वलभावके गूढ़ मर्मको जानती है। मुरारिगुप्तने घर आते ही गृहिणीसे कहा—"मैं भोजन करूँगा।" परमा वैष्णवी गुप्त-गृहिणीने अन्न प्रस्तुत करके ठाकुरको भोग लगाया। मुरारिगुप्त भोजन करने बैठे और एक-एक ग्रास अन्न भोजनके पात्रसे निकालकर "खाओ, खाओ"—कहकर भूतलपर फेंकने लगे। यह देखकर उनकी गृहिणी हँसने लगीं। पुनः उनको घृत-मिश्रित अन्न-प्रसाद लाकर दिया। उसे भी मुरारिगुप्तने पहलेके समान श्रीगौर-भगवान्‌को निवेदन किया। मुरारिगुप्तकी गृहिणी अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रतिकी प्रकृतिको भली-भाँति जानती हैं। वे देख रही हैं कि उनके पतिदेवता प्रेमानन्दमें विभोर होकर खाओ, खाओ' कहकर अपने प्रेमके ठाकुरको भोग लगा रहे हैं। इसी कारण वे कुछ बोल नहीं रही हैं। बीच-बीचमें कृष्ण-नाम-स्मरण करके पतिको सावधानीसे भोग लगानेका संकेत कर रही हैं।

इसी प्रकार मुरारिगुप्त प्रभुकी प्रेम-सेवा करते थे। इस प्रेम-सेवामें मन्त्र-तन्त्रका प्रयोजन नहीं होता, आचारनिष्ठाका प्रयोजन नहीं होता। मुरारिगुप्त वैद्य हैं, प्रभु द्विजकुल-चूड़ामणि हैं। प्रेम-पूजामें जातिका विचार नहीं होता, प्रेम-सेवामें ऊँच-नीचका भेद नहीं होता। मुरारिगुप्त और उनकी परम सौभाग्यवती गृहिणीने श्रीगौर-भगवान्‌को प्रेमसेवासे तुष्ट किया। प्रेममय प्रभुने आकर परमानन्दसे भक्तके दिये हुए सारे अन्न-व्यञ्जनको खाया। निश्चय ही इसको कोई चर्मचक्षुसे न देख सका। भक्तके भगवान् भक्तके प्रीति-उपहारको ग्रहण करते हैं, यही समझानेके लिए प्रभु दूसरे दिन प्रातः मुरारि गुप्तके घर पधारे।

प्रातःकाल शैयासे उठकर प्रातःकृत्य—शौचादि करके मुरारिगुप्त अपने घर भजनमें बैठे थे। वे ध्यानानन्दमें मग्न थे। श्रीगौराङ्ग-चरण-चिन्तन कर रहे थे। उसी समय उनके मन्दिरमें भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌का आविर्भाव हुआ। मुरारिने अपने ध्यानकी वस्तुको सामने पाकर आनन्दसे आत्मविस्मृत होकर पूछा—"प्रभो! इस दीनकी कुटियापर आज असमय कैसे पधारे?" चतुर-चूड़ामणि प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"मुरारि! तुम वैद्यराज हो; पेट चलनेकी दवा कराने मैं तुम्हारे पास आया हूँ।" मुरारिने आश्चर्यचकित होकर कहा—"प्रभो! आपके इस अजीर्णरोगका कारण क्या है? कल आपने क्या भोजन किया था?" तब प्रभु अपने मनका भाव छिपा न सके। उन्होंने स्नेहपूर्वक मुरारिगुप्तसे कहा—"अरे मुरारि! तुम कैसे जानोगे। 'खाओ-खाओ' कहते हुए तुमने कितना अन्न फेंका था। उसको तुम तो भूल गये, लेकिन तुम्हारी पत्नी सब जानती है। तुमने खानेको दिया तो मैं कैसे नहीं खाता।" मुरारिने पूछा—"चिकित्सा किसलिये आवश्यक है?" प्रभुने उत्तर दिया—'जल पीनेसे अजीर्ण जोर नही करता, तेरे अन्नसे अजीर्ण हुआ है और औषधि भी तेरा ही जल है।"

इतना कहकर भक्तके भगवान् श्रीगौरचन्द्रने भक्तके भक्ति-रसपूर्ण जलपात्रसे जलपान किया।

प्रभुकी यह अयाचित कृपा देखकर मुरारि प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर बाह्य ज्ञान-शून्य हो गये। प्रेमानन्दमें विभोर होकर गुप्त-परिवार आकुल होकर रो उठा। मुरारिगुप्तका भवन आनन्द-धाम हो गया। भक्तवत्सल भगवान्‌का भक्तोंके सारे द्रव्योंपर पूर्णाधिकार होता है। भक्तके भगवान् भक्तके सहित एकत्र भोजन करते हैं, एकत्र विहार करते हैं, एकत्र शयन करते हैं। अतएव शास्त्र कहते हैं कि भक्त और भगवान्‌में भेद नहीं है। भक्तके मुखसे भगवान् भोजन करते हैं, भक्तके हृदयमें प्रवेश करके परमानन्दपूर्वक भक्तके भावके अनुसार कार्य करते हैं। भक्तके भावको लेकर श्रीभगवान् तद्‌भावग्राही जनार्दनके रूपमें परिकीर्तित होते हैं। भक्त श्रीभगवान्‌का प्राण है। प्रभुने मुरारिगुप्तसे कहा था—

सत्य तुमि मुरारि! आमार शुद्ध दास।

चै. भा. म.२०.४९

शुद्ध दास होनेके कारण उनके दिये हुए अन्न-जलको ग्रहण करके प्रभुने उनको कृतार्थ किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने इसी कारण लिखा है—

हेन प्रभु, हेन भक्तियोग, हेन दास ।
चैतन्य प्रसादे हैल भक्तिर प्रकाश ॥

चै. भा. म. २०.७२

भक्तके मुखसे भगवान् भोजन करते हैं, यह शास्त्र-वचन है—

नैवेद्यं पुरतो न्यस्तं दृष्टो वै स्वीकृतं मया ।
भक्तस्य रसनाग्रेण रसमश्नामि पद्मज ॥

ब्रह्मपुराण

श्रीभगवान् ब्रह्मासे कह रहे हैं—"हे पद्मज ! आगे रखे हुए नैवेद्यको दर्शनमात्रसे मैं स्वीकार करता हूँ। परन्तु भक्तके जिह्वाग्रके द्वारा मैं रसास्वादन करता हूँ।" मुरारिगुप्तको उनकी स्त्री प्रेमसे भोजन करा रही थीं।भक्तके मुखसे श्रीभगवान् आहार कर रहे थे। भक्तके मुखसे आहार करके परितृप्त होकर श्रीभगवान्ने भक्तकी महिमाका गुणानुवाद किया। भक्तके भगवान् बड़े दयालु हैं, बड़े मायामय हैं, बड़े प्रेममय हैं। श्रीगौर भगवान् हैं। भक्तरूप धारण करके, भक्तभाव अङ्गीकार करके वे प्रेमभक्तिका रसास्वादन करनेके लिए नदियामें अवतीर्ण हुए थे। भक्तकी प्रेम-सेवासे वे वशीभूत हो गये थे।

मुरारिगुप्तमें गरुड़-भाव

मुरारिगुप्तको प्रभुने अनेक बार ऐश्वर्य-दर्शन कराया था। उनकी कृपाशक्तिसे बीच-बीचमें मुरारिगुप्तको अपूर्व भाव-विकार लक्षित होते रहे। एक दिन प्रभु श्रीवासके आँगनमें भगवान्-भावमें शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी चतुर्भुज मूर्ति धारण करके 'गरुड़ ! गरुड़ !' कहकर उच्चस्वरसे अपने वाहनको स्मरण करने लगे। भक्तगण विस्मित होकर तथा किंकर्तव्यविमूढ़ होकर प्रभुके सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उनके बीच मुरारिगुप्त भी थे। देखते-देखते उनके अङ्गमें वैनतेय-भाव उदय हुआ। वे प्रभुके सामने जाकर आविष्ट-भावसे बोले—"प्रभो ! मैं ही तुम्हारा पुरातन भृत्य गरुड़ हूँ।" प्रभुने हँसकर कहा—"बेटा ! तू मेरा बाहन है।" मुरारीने प्रेमानन्दमें मत्त होकर हुंकार-गर्जन करके पूर्वलीलाकी बात याद करायी ओर हाथ जोड़कर निवेदन किया—"प्रभो ! मैं ही तुम्हारा वाहन हूँ, तुम मेरे कंधेपर आरोहण करो। जहाँ जानेका आदेश करो, वहाँ मैं तुम्हें ले जाऊँ।" प्रेमाविष्ट होकर परम कौतुकपूर्वक कूदकर प्रभु मुरारिके कंधैपर चढ़ गये। भक्तवृन्द जय-जय-ध्वनि करने लगे। मुरारिगुप्त प्रभुके श्रीअङ्गके स्पर्शसे प्रेमानन्दमें विह्वल होकर उनके रक्त-कमल-चरणको दृढ़तापूर्वक हृदयमें धारण करके श्रीवासके सारे आँगनमें प्रेमावेगसे दौड़ने लगे। प्रभुको कन्धेपर लेकर मुरारिको मधुर प्रेम-नृत्य करते देखकर अन्तःपुरमें पतिव्रता-वैष्णव-गृहिणीगण आनन्दसे 'हुलू' ध्वनि करने लगीं। श्रीवासके आँगनमें आनन्दका स्रोत बहने लगा। प्रेमानन्द-सागरमें मग्न होकर भक्तगण प्रेमाश्रुधारासे अपना वक्षःस्थल निमज्जित करने लगे। प्रेमानन्दमें मत्त होकर कोई जय-जय-शब्द, कोई हरि-हरि-ध्वनि करने लगे। कोई कहने लगा—"ऐसा गुणनिधि प्रभु जीवन-मरणमें कभी भी हमारी स्मृतिसे दूर न हो।" कोई 'भले मेरे ठाकुर' कहकर आनन्दसे हँसने लगा ! कोई दोनों बाहु ऊपर उठाकर उच्चस्वरसे प्रभुकी स्तुति करने लगा—"**जय जय मुरारि-वाहन विश्वम्भर।**" प्रभु मुरारिके कंधेपर चढ़कर मृदु-मन्द मुस्कुरा रहे थे और धीरे-धीरे डोल रहे थे। मनके उल्लाससे मुरारिगुप्त श्रीवासके आँगनके चारों ओर मधुर नृत्यावेशमें घूम रहे थे।

नदियावासी भक्तवृन्द प्रभुके नित्यदास थे। प्रभुका यह अपूर्व लीलारङ्ग अन्तरङ्ग भक्तोंके सिवा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रति और कोई न देख सका। नवद्वीपमें लाखों आदमी रहते थे; परन्तु प्रभुके एकान्त अन्तरङ्ग भक्तके सिवा अन्य किसीको यह लीलारङ्ग देखनेका अधिकार न था।

भक्तवृन्द मुरारिगुप्तके भाग्यको 'धन्य-धन्य' कहने लगे। प्रभु अपने भावको संवरण करके लज्जितभावमें मुरारिगुप्तके स्कन्धसे अवतीर्ण हुए। मुरारिका गरुड़भाव भी तिरोहित हो गया। मुरारिगुप्तकी इस असाधारण शक्तिका कारण यह था कि वे हनूमान्‌के अवतार थे। उनके प्रति प्रभुकी अपार कृपा देखकर भक्तलोग विस्मित हो उठे। प्रभुके विशाल वदन, उनकी विश्वम्भर-मूर्तिको मुरारिगुप्त अनायास वहन करते हुए सारे आँगनमें बहुत देरतक नृत्य करते रहे। श्रीमुरारिगुप्तके तत्त्वको जो लोग जानते हैं, वे इससे विस्मित न होंगे। रामावतारमें वे अपनी पीठपर गन्धमादन-पर्वत उठाकर लाये थे। सब अवतारोंमें मुरारि श्रीभगवान्‌के प्रधान सेवक रहे। उनके अपूर्व दास्यभावकी कोई तुलना नहीं है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है--

"सर्ब्ब-अवतारे गुप्त सेवक-प्रधान।"

चै. भा. म. २०.६८

मुरारिका प्राण-विसर्जन-संकल्प

मुरारिगुप्तके साथ प्रभुकी एक और लीला-कथाका वर्णन करूँगा। यह लीला-कथा अतिशय मधुर है और मुरारिगुप्तकी प्रभुके प्रति प्रगाढ़ प्रेमभक्तिका ज्वलन्त उदाहरण है। एक दिन मुरारिगुप्त घरपर बैठकर मन-ही-मन सोच रहे थे—"श्रीभगवान्‌का अवतार तो अनेक बार हुआ है। अवतार-तत्त्वकी आलोचना करनेपर ज्ञात होता है कि श्रीभगवान्‌के अवतारकी स्थितिके विषयमें कुछ निश्चय नहीं है। श्रीकृष्णकी लीला अचिन्त्य है। कब, क्या होता है, कहा नहीं जा सकता। लीलासूत्रमें सपार्षद भगवान्‌का आविर्भाव होता है। जिस सीताजीके लिए श्रीरामचन्द्रजीने रावणको कुलके साथ नष्ट किया, उसी सीताजीको उन्होंने अन्तमें परित्याग किया था। श्रीकृष्णने अपने प्राण-तुल्य यदुकुलको अपने अवतारकालमें ही स्वेच्छासे निर्मूल किया था। नदियामें हमारे गौराङ्गने जो ऐसा विशिष्ट अवतार ग्रहण किया है, वे कब कैसा लीलारङ्ग प्रकट करेंगे, कहा नहीं जा सकता। अतएव प्रभुकी इस अवतार-लीलाके भीतर ही जिससे मेरा यह नश्वर देह समाप्त हो, वह उपाय करना चाहिये। प्रभुके चरण-युगलका दर्शन करते-करते देह-त्याग कर सकें तो हमारे लिए परम मङ्गल हो।" इस प्रकार मनमें कल्पना करते हुए मुरारिगुप्तने एक धारवाला छूरा अकेले घरमें लाकर रखा। उनका विचार था कि रातमें आत्मघात करके श्रीगौराङ्गके चरणोंमें प्राण-विसर्जन कर दूँगा।

मुरारि परमपण्डित, शास्त्रज्ञ, भक्त-चूड़ामणि थे; उन्होंने इस प्रकार आत्मघात-महापापमें लिप्त होनेकी वासना क्यों की? उनको यह कुबुद्धि कैसे हुई? वे भगवद्भक्त थे, श्रीगौराङ्गप्रभुके एकान्त अनुरक्त निजजन थे। उनके मनमें जब श्रीभगवान्‌के अवतारकी लीलाके अवसानकी बात आयी तो उनको दारुण व्यथा हुई। पूर्ण अवतारोंके अभ्युदय और लीलाके अवसानकी बात सोचते-सोचते उनका हृदय उन्मथित हो गया। वे श्रीगौराङ्ग-अवतारकी बात स्मरण करके मनको आश्वस्त न कर सके। प्रभुके अदर्शनरूपी दुःखकी अग्नि उनके हृदयमें प्रज्वलित हो उठी। उसी ज्वालासे संतप्त होकर उन्होंने देह-त्याग करनेका संकल्प किया। प्रभुके चन्द्रमुखको बिना देखे जो क्षणमात्र भी स्थिर नहीं रह सकता, उसके लिए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुकी चिरकालके लिए अदर्शनकी चिन्ता कैसी मर्मंतुद और हृदय-विदारक हो सकती है, यह कृपालु पाठकगण विचार कर लेंगे। आत्महत्या-महापापसे उनको कुछ भी भय न लगा। अपने जीवन-सर्वस्व प्रभुको देखकर मर सकेंगे, इसी आनन्दसे वे उन्मत्त हो उठे। मुरारिगुप्तका यह कार्य उनकी ऐकान्तिक गौर-भक्तिका परिचायक है, निष्कपट प्रेमभक्तिका ज्वलन्त उदाहरण है।

अन्तर्यामी गौर-भगवान्‌के सामने मुरारिकी चित्तवृत्ति कुछ अज्ञात न रही। भक्तवत्सल प्रभु भक्तके सारे मनोभावोंको घर बैठे जान लेते हैं। वे स्थिर न रह सके। प्रभु तत्काल मुरारिगुप्तके घर पहुँचे। मुरारिने नम्रतापूर्वक उनकी चरण-वन्दना करके बैठनेके लिए दिव्य आसन दिया। प्रभु मुरारिके साथ कृष्ण-कथा कहते-कहते उनसे बोले—"मुरारि ! तुम एक बात मानोगे ?" मुरारि प्रभुकी बात सुनकर विस्मित होकर कहने लगे—"प्रभो ! मैं तुम्हारा दासानुदास हूँ; यह शरीर तुम्हारा है; जो कहोगे, वही करूँगा।" प्रभु बोले—"सचमुच जो कहूँगा, वही करोगे ?" मुरारिने निष्कपट भावसे उत्तर दिया—"निश्चय ही; इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।" तब प्रभुने मुरारिगुप्तके कानोंमें कहा—"तुमने आत्मघात करनेके लिए तीक्ष्णधारका छूरा जो घरमें लाकर रखा है, वह अस्त्र लाकर मुझे दो तो !"

मुरारि विस्मित होकर प्रभुके मुखकी ओर देख न सके। लज्जासे सिर झुकाकर मृदु स्वरमें बोले—"ये सब झूठी बातें हैं; आपसे किसने कही ?" प्रभुने हँसकर कहा—"मुरारि ! मेरे साथ छल न करना। मुझको दूसरा कौन ये सब बातें बतलायेगा ? मैं सब-कुछ जानता हूँ। किसने वह अस्त्र तैयार करके तुम्हें दिया है और तुमने उसे कहाँ रखा है, यह भी मैं जानता हूँ।"—इतना कहकर प्रभु घरके भीतर जाकर अस्त्र बाहर निकाल लाये। मुरारिगुप्त सर्वज्ञ प्रभुका लीलारङ्ग देखकर और अपने प्रति यह अयाचित कृपा-वृष्टि देखकर सलज्ज प्रेमानन्द-भावमें गद्‌गद हो गये। अब उनके मुँहसे कोई बात नहीं निकल सकी। वे प्रभुके चरण-कमलकी ओर देखते हुए सिर झुकाये उनके सामने हाथ जोड़कर जड़वत् खड़े हो गये।

तब भक्तवत्सल प्रभुने मुरारिका हाथ पकड़कर आँसूभरे नेत्रोंसे कातर स्वरमें कहा—"मुरारि ! तुम्हारा यह व्यवहार ! किस दोषके कारण मुझको छोड़कर जाना चाहते हो ? तुम्हारे चले जानेपर मैं किसके साथ लीला करूँगा ! तुमने ऐसी बुद्धि किससे सीखी ? मुरारि ! अब मुझे यह भिक्षा दो कि ऐसी बुद्धि फिर कभी नहीं करोगे।"

प्रभुके श्रीमुखसे यह बात सुनकर मुरारि एकबारगी लज्जा और दुःखसे मर्माहत हो उठे। प्रभुकी निष्कपट स्नेहपूर्ण कातरोक्तिके प्रत्येक अक्षर उनके हृदयके अन्तस्तलमें शूलके समान चुभने लगे। वे पूर्ववत् निश्चेष्ट होकर जड़वत् सिर नीचा किये खड़े रहे। भक्तवत्सल प्रभुने मुरारिके मनोभावको समझा। उनको स्नेहपूर्वक खींचकर कलेजेसे लगाकर, अपना पद्महस्त उनके सिरपर रखकर कातर स्वरमें पुनः बोले "मुरारि ! तुमको मेरी कसम है, जो तुम फिर कभी देह छोड़नेकी इच्छा करो !"

मुरारि अब स्थिर होकर खड़े न रह सके। वे पछाड़ खाकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े, स्त्रियोंके समान फुफकार मारकर रोने लगे, नयन-जलसे प्रभुके चरणोंको धोने लगे। प्रभु भी मुरारिको दृढ़ आलिङ्गनमें बाँधकर अजस्र आँसू बहाने लगे।

प्रभु और सेवक दोनों ही बहुत देरतक मनके आवेगसे रोते रहे। अविराम नयन-जलकी धारासे उनका हृदयावेग धीरे-धीरे शमन हुआ। भक्तवत्सल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दयालु प्रभुकी इस अपूर्व कृपाकी बात स्मरण करके श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने यथार्थ ही अपने हृदयको खोलकर रख दिया है—

चैतन्य चरणे जार आछे रति मति।
जन्म-जन्म हय जेन ताँहार संहति॥
अष्ट-सिद्धि-युत चैतन्येते भक्ति शून्य।
कभू जेन ना देखो से पापी हीन पुण्य॥

चै. भा. म. २०.१४६,१५०

श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार त्रिकालज्ञ ऋषि थे। इस कथामें उन्होंने अपनी गौराङ्गैक-निष्ठताका पूर्ण परिचय दिया है। इष्टमें एकनिष्ठता-भक्ति ही साधनाकी सिद्धिका एकमात्र उपाय है। एकनिष्ठ एकान्त भक्त श्रीभगवान्‌को बड़े प्रिय लगते हैं। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें श्रीगौर-भगवान्‌के पार्षदगण इष्टमें अपनी एकनिष्ठताका प्रभूत परिचय प्रदान कर गये हैं। श्रीपाद प्रबोधानन्द सरस्वती ठाकुरने श्रीचैतन्यचरितामृत-श्रीग्रन्थमें यही बात लिखी है—

वासो मे वरमस्तु घोरदहनज्वालावलीपञ्जरे
श्रीचैतन्यपदारविन्दविमुखैर्मा कुत्रचित् संगमः।
वैकुण्ठादिपदं स्वयं च मिलितं को मे मनो लिप्सते
पदाम्भोजरजश्छटा यदि मनाक् गौरस्य नो रस्यते॥

अर्थ—यदि भयंकर अग्नि-शिखा-पञ्जरमें मेरा वास हो तो वह भी मेरे लिए अच्छा है, परन्तु श्रीचैतन्य-पदारविन्द-विमुख व्यक्तिका सङ्ग मुझे कभी प्राप्त न हो। मेरा मन श्रीगौराङ्गप्रभुकी पाद-पद्म-रजकणकी छटाका तनिक भी आस्वादन कर सके तो स्वयँ प्राप्त होनेवाली वैकुण्ठादि सम्पत्‌को उपभोग करनेकी मेरे मनमें तनिक भी इच्छा न होगी।

यह बात किसने कही है? सारे भारतवर्षमें सुप्रसिद्ध उस युगके सर्वशास्त्र-विशारद, परम विद्वान्, दस सहस्र संन्यासियोंके गुरु काशीके यतिराज प्रकाशानन्द सरस्वतीने। यह ऐसे-वैसे लोगोंका कथन नहीं है। इष्टमें इस प्रकार गाढ़ एकनिष्ठता साधन-सिद्धिका मूलमन्त्र है। गौर-भक्तगण इस मूलमन्त्रको जानते थे, तभी उन्होंने साधन-चिन्तामणि श्रीगौर-भगवान्‌की ऐसी कृपा प्राप्त की।

श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने एक जगह और लिखा है—

पक्षी मात्र यदि बोले चैतन्येर नाम।
सेहो सत्य जाइबेक चैतन्येर धाम॥
संन्यासीओ यदि नाहि माने गौरचन्द्र।
जानिह से दुष्टगण जन्म-जन्म अन्ध॥

चै. भा म. २०.१३६,१३७

प्रभु मुरारिगुप्तको सान्त्वना और उपदेश देकर अपने घर गये। मुरारिगुप्तने उसी दिनसे फिर कभी आत्महत्याकी बात मनमें नहीं लायी।

मुरारिगुप्तके साथ प्रभुकी यह अपूर्व लीला-कथा श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीमुखसे सुनकर श्रीवृन्दावनदास ठाकुर अपने 'श्रीचैतन्यभागवत' में लिख गये हैं। मुरारिगुप्तकी महिमाका वर्णन करते हुए श्रीपाद श्रीकविकर्णपूर गोस्वामीने अपने चैतन्यचरित-महाकाव्यमें लिखा है—

बद्धाञ्जलिशिरसि निर्भरकाकुवादै
र्भूयो नमाम्यहमसौ स मुरारिसंज्ञः।
तत् मुग्धकोमलधियं ननु यत्प्रसादात्
चैतन्यचन्द्रचरितामृतमक्षिपीतम्॥

श्रीपाद मुरारिगुप्तका करचा श्रीगौराङ्ग-लीलाका आदि-ग्रन्थ है। इस ग्रन्थका अवलम्बन करके श्रीचैतन्यभागवत, श्रीचैतन्यमङ्गल तथा श्रीचैतन्यचरितामृत-श्रीग्रन्थ लिखे गये हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चालीसवाँ अध्याय

श्रीमन्महाप्रभुकी महाप्रकाश-लीला

एबे शुन चैतन्येर महा परकाश।
जाते सर्व वैष्णवेर सिद्ध अभिलाष॥
सात प्रहरिया भाव लोके ख्याति जार।
यहि प्रभु हइलेन सर्व अवतार॥
चै. भा. म. ९.८९

श्रीगौराङ्ग-अवतार सब अवतारोंका सार है; क्योंकि श्रीगौराङ्ग महावतारी स्वयं-भगवान् हैं। वे वेदोक्त अनादि रुक्माङ्ग-पुरुष हैं। उनका श्रीविश्वम्भर नाम वेदोक्त नाम है। उनकी उस आदि श्रीमूर्तिसे ही सब अवतारोंकी सृष्टि है। नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग अंश, कला या गुणावतार नहीं हैं। वे परिपूर्णावतार तथा महावतारी हैं, श्रीगौराङ्ग-नाम, उनका धाम तथा उनके समस्त परिकर नित्य, आदि और अनन्त हैं। वे विभिन्न स्थानोंमें श्रीभगवान्‌के अवतारके समय अपनी अंशकलाका विस्तार करके विभिन्न लीलाएँ प्रकट करते हैं। प्रयोजन समझकर कलिकालमें वे लोग परिपूर्ण रूपमें तथा स्वयं-भावमें नदियाधाममें अवतीर्ण हुए थे। जिन लोगोंने अपने सुकृत और सद्‌गुरुकी कृपाके बलसे श्रीगौराङ्ग-तत्त्वको यथार्थ-रूपमें समझा है, वे मिश्र पुरन्दर-पुत्र, नदियाके उस ब्राह्मण-बालकको अवश्य ही स्वयं-भगवान्‌के रूपमें स्वीकार करेंगे। नन्दनन्दन और शचीनन्दन एक वस्तु और एक तत्त्व हैं, तथापि दोनोंके अवतार-तत्त्वमें पूर्णतः पार्थक्य दीख पड़ता है। व्रजराज-नन्दन श्रीकृष्ण और श्रीवृषभानुनन्दिनी श्रीराधिका इन दोनोंकी समृद्धिमान् सम्भोगावस्था (अर्थात् जिस समय कान्त कान्ताके भावमें तन्मय हो जाते हैं, वह अवस्था) 'राधाभावद्युतिसुवलित' श्रीगौराङ्ग हैं। वृन्दावन-लीलामें वे लीलाके उद्देश्यसे पृथक्-पृथक् हैं; परन्तु नवद्वीप-लीलामें वे तदुद्देश्यसे श्रीराधाकृष्णमिलित-वपु रसराज श्रीगौराङ्ग-मूर्ति हैं। अतएव उनके लीलारसमें अधिक माधुर्य है। श्रीराधाभावद्युतिसुवलित श्रीगौराङ्ग-मूर्ति अवतार-तत्त्ववादीके लिए दुर्ज्ञेय वस्तु होनेपर भी सर्वज्ञ गौर-भक्तवृन्द प्रभुकी कृपासे उनको सर्व-अवतार-साररूपमें ही विश्वास करते हैं। श्रीगौर-भगवान् स्वयं अपने पार्षदगणके मनमें यह विश्वास सुदृढ़ कर गये हैं। उनकी महाप्रकाश-लीलाके समय नदियाके परम सुकृतिमान् भक्तवृन्दको उन्होंने अपनी एक श्रीगौराङ्ग-मूर्तिमें ही वेदोक्त सारी अवतार-मूर्तियोंको दिखलाकर यह स्पष्टरूपसे समझा दिया था कि वे महा अवतारी, परम नारायणरूप अनादि रुक्माङ्गपुरुष हैं—

सात प्रहरिया भाव लोके ख्याति जाँर।
यहि प्रभु हइलेन सर्व अवतार॥
चै. भा. म. ९.९

श्रीमन्महाप्रभुकी महामहिमामय महाप्रकाश-लीला उनका परिपूर्ण आत्म-प्रकाश-लीलारङ्ग है। उस युगमें नवद्वीपनगरी आधुनिक कलकत्ता नगरकी अपेक्षा भी समृद्धिशाली नगरी थी। सहस्रों महामहोपाध्याय दिग्विजयी पण्डित नवद्वीपमें वास करते थे, लाखों-लाखों धनी और बुद्धिजीवी लोग नदियावासी होनेमें गौरव अनुभव करते थे। इस महान् नगरीमें दक्षिणपाड़ामें गङ्गाके किनारे श्रीवासके आँगनमें पूरे सात प्रहरतक प्रकाश्यभावमें शचीनन्दन श्रीभगवान्‌के पीछे-पीछे सारी नगरी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुलू-ध्वनि करती रही; उन्होंने लाखों नर-नारियोंके मनको हर लिया। श्रीभगवान्‌का अनुकरण क्या जैसे-तैसे लोग कर सकते हैं? उस समय शचीनन्दनकी अवस्था बाईस-तेईस वर्षमात्र थी। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें श्रीगौर-भगवान्‌ने कलिग्रस्त भजन-साधन-विहीन अधम जीवोंपर विशेषरूपसे कृपा की थी। उनका यह सात प्रहर महाप्रकाश-लीलारङ्ग इसका प्रकृत प्रकाश है। परम नारायण श्रीभगवान् अपने उपासक भक्तवृन्दपर कृपा करके, क्षणमात्रके लिए उन्हें दर्शन प्रदान करके कृतार्थ करते हैं। कदाचित् एक बात कहकर उनके प्यासे कानोंको शीतल करते हैं। दुर्बल जीव श्रीभगवान्‌के महामहिमापूर्ण तेज और परमाद्‌भुत ऐश्वर्यको अधिक देरतक सहन नहीं कर सकते। अतएव श्रीभगवान्‌की ऐसी इच्छा और शास्त्रकारगणकी व्यवस्था होती है। परन्तु कलिके जीव बड़े ही भाग्यवान् हैं; कलिके अवतार श्रीगौराङ्गसुन्दर बड़े ही दयामय हैं; अतएव पूरे सात प्रहरतक उन्होंने अपने अनुगत निजजनको तथा भाग्यवान् नदियावासियोंको अपने अपूर्व तेज और ऐश्वर्यके दर्शन करनेकी शक्ति प्रदान करके अपनी अपार करुणाका परिचय दिया था।

श्रीवासके आँगनमें अभिषेककी तैयारी

एक दिन शचीनन्दन श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ अपने मन्दिरसे श्रीवासके आँगनमें जानेके लिए निकले। प्रभुके मनमें उस दिन बड़ा आनन्द था। उनकी अपरूप-रूपराशि मानो उमड़ी पड़ती थी। आनन्दमें विह्वल होकर नदियावासी उनके अपूर्व ज्योतिपूर्ण चन्द्र-वदनकी ओर एकटक देख रहे थे। नदियाके राजपथसे नदियाके चाँद प्रेमानन्दमें मत्त होकर श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीअङ्गमें अपना श्रीअङ्ग भिड़ाते हुए श्रीवासके आँगनमें आकर उपस्थित हुए। नदियाके सब भक्तगण उस दिन श्रीवासके आँगनमें एकत्रित हुए। प्रभुने परम आविष्टभावमें सब भक्तगणकी ओर एक बार शुभ दृष्टिपात किया। सबने देखा कि प्रभुकी श्रीमूर्ति परम ऐश्वर्यमय और दिव्य तेजपूर्ण है। प्रभुका आविष्टभाव देखकर अन्तरङ्ग भक्तवृन्दने समझा कि उनकी श्रीमूर्तिमें भगवान्-भावका आवेश हुआ है। प्रभुके इशारेसे भक्तवृन्दने उच्च नाम-संकीर्तन आरम्भ कर दिया। दूसरे दिन वे दास्यभावमें कीर्तनानन्दका उपभोग करके भक्त-भावमें मधुर नृत्य करते थे। आज उनका भाव बदल गया। अन्य दिन प्रभु भगवान्-भावमें विभावित होकर आविष्टभावको मानो न जानते हुए विष्णु-सिंहासनपर आरोहण करके बैठते थे; आज वे कीर्तन आरम्भ होते ही ऐश्वर्य-भावमें एकबारगी विष्णु-सिंहासनपर जा बैठे। प्रभुकी अपरूप परम अद्‌भुत ऐश्वर्य-मूर्ति देखकर भक्तवृन्द हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े हो गये। श्रीवास-मन्दिर मानो वैकुण्ठ-निवास-सा लगने लगा। श्रीअद्वैतप्रभु आदि नदियाके भक्तवृन्द प्रभुकी जयगीति गाने लगे। सुसज्जित विष्णु-सिंहासनपर बैठकर प्रभुने हँसते हुए आज्ञा दी—"मुझे अभिषेक-गीत गाते हुए गङ्गाजलसे अभिषेक कराओ।" तुरंत मृदङ्ग, मंजीरा, करताल, शङ्ख, घण्टा, कांस्य, झाँझ एक साथ बज उठे। मुकुन्दने बाजा, वासुघोषने गान और नरहरिने ताल पकड़ा—

मुकुन्द बाजाय, वासुघोष गाय,
नरहरि दासे धरये तान।
करि उतरोल, उठे हरिबोल,
बाजे मरदल, बाजे करताल॥

श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीवासपण्डित आदि सभीने श्रीश्रीमन्महाप्रभुके अभिषेक-गीत-कीर्तनमें योगदान दिया। प्रभुके परम ज्योतिर्मय चन्द्र-वदनकी ओर सभी एकटक देख रहे थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नयनोंकी प्रेमाश्रुधारासे सबके वक्षःस्थल डूब रहे थे। श्रीवासके मन्दिरमें प्रेमानन्दका तरङ्ग उठा। सब भक्तगणोंने मिलकर एक स्वरमें प्रभुके अभिषेक-गीतका सुर पकड़ा—

आजु शचीनन्दन नव अभिषेक।
आनन्दकन्द नयन भरि देख॥
नित्यानन्द-अद्वैत मिलि रङ्गे।
गावोत उन्मत्त भकतहि सङ्गे॥
हेरइते निरुपम काञ्चन देहा।
वरिषये सबहूँ नयने घन मेहा॥
पुनः पुनः निरखिते गोरामुख-इन्दु।
उछलल प्रेम-सुधारस-सिंधु॥
जगभरि पूरल प्रेम तरङ्गे।
वञ्चित गोविन्द दास परसङ्गे॥

ये गोविन्ददास वासुघोषके भाई थे। महाप्रकाश-लीलाका अभिषेक अपनी आँखोंसे देखकर उन्होंने यह पद लिखा था। भक्तवृन्द अभिषेकका गीत गा रहे थे, श्रीगौर-भगवान् ऐश्वर्य-भावमें विष्णु-सिंहासनपर बैठकर परम आविष्ट-भावमें सिर हिला रहे थे।

शुभ समय समझकर श्रीनित्यानन्दप्रभुके इशारेसे श्रीवास आदि भक्तवृन्द नये मिट्टीके वर्तन लेकर गङ्गाजल लाने लगे। कंधेपर गङ्गाजलका बड़ा घड़ा लेकर, मुखसे मधुर हरिध्वनि करते हुए झुण्डके-झुण्ड भक्तवृन्द श्रीवास-मन्दिरमें प्रवेश कर रहे हैं। कुछ लोग पूर्णकुम्भ आँगनमें एक-एक पंक्तिमें सजा रहे हैं। कुछ लोग नये वस्त्रसे गङ्गाजल छान रहे हैं। तत्पश्चात् उसमें कर्पूर आदि सुगन्धित द्रव्य डाल रहे हैं। चारों ओर महा आनन्दपूर्ण कोलाहल हो रहा है। नदिया-सुन्दरी-वृन्द भी प्रभुके इस शुभ अभिषेक-कार्यमें व्यापृत है। वे भी कोखमें कलसी लेकर बड़े आनन्दसे गङ्गा-तीरसे जल ला रही हैं और उसमें कपूर, अगुरु आदि सुगन्धित द्रव्य डाल रही हैं।

महाभिषेक आरम्भ

श्रीवासके आँगनके बीचमें धवलाकार गम्भारीके पीढ़ेपर श्रीगौर-भगवान् उपविष्ट हैं। उस समय वे क्षीरसागरके मध्यमें स्थित सुमेरुके समान सुशोभित हो रहे थे। भक्तवृन्द उनको घेरकर आँगनमें खड़े हैं। श्रीवासपण्डित और उनके चारों भाइयोंने इस बीच प्रभुके शुभाभिषेकका सारा प्रबन्ध कर लिया है। भक्तवृन्दने मधुर-कीर्तन आरम्भ कर दिया। सभी उपस्थित भक्तवृन्द अभिषेकका मन्त्र पढ़ने लगे तथा श्रीगौर-भगवान्के श्रीअङ्गमें सुवासित गङ्गाजल ढालने लगे।

सर्वप्रथम श्रीनित्यानन्दप्रभुने 'जय श्रीगौर-गोविन्दकी जय, जय जय श्रीनवद्वीपचन्द्रकी जय' कहकर प्रभुके श्रीसिरके ऊपर गङ्गाजल ढाला।

प्रभु मृदु-मन्द हँस रहे हैं और सारे भक्तवृन्दके प्रति शुभ दृष्टिपात कर रहे हैं। इसके पश्चात् श्रीअद्वैतप्रभुने वेदमन्त्र पढ़कर प्रभुको स्नान कराकर अभिषेक कराया। तत्पश्चात् श्रीवासपण्डित, गदाधरपण्डित आदि प्रमुख भक्तोंने एक-एक करके विधिपूर्वक अभिषेक-मन्त्र पढ़कर श्रीगौर-भगवान्के श्रीअङ्गपर सुवासित गङ्गाजल डाला। अभिषेक-जलकी धाराएँ श्रीश्रीगौर-गोविन्दके गौरवर्ण श्रीअङ्गको धोकर भूतलपर गिरते समय उज्ज्वल गौरवर्णकी जान पड़ती थीं। इससे अभिषेक-स्थलकी अतिशय शोभा-वृद्धि हुई। श्रीगौर-भगवान्के श्रीअङ्गके ऊपरसे द्रवित अभिषेककी वारिधारा भूतलपर गिरकर पृथिवीदेवीके मनोरथको पूर्ण कर रही थी। धरित्रीदेवी प्रभुपद-धौत सलिलसे सिञ्चित होकर मानो पट्टवस्त्रपरिधान करती-सी जान पड़ती थी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुकुन्द आदि भक्तगण अभिषेक-गीति गा रहे थे। पतिव्रता नदियाकी कुलनारियाँ आनन्दसूचक शुभ हुलू-ध्वनि देकर श्रीगौराङ्ग सुन्दरकी जय-मङ्गल-गीति गा रही थीं। श्रीवासके आँगनमें आनन्दका स्रोत प्रवाहित हो उठा। सभी भक्तवृन्द मानो आनन्दस्वरूप हो गये। केवल एक-सौ आठ गङ्गाजलसे पूर्णकलसोंकी व्यवस्था की गयी थी। परन्तु कार्यमें सहस्रों गङ्गाजलसे पूर्ण कलसोंसे प्रभुके शुभ अभिषेकका कार्य सुसम्पन्न हुआ।

आज श्रीवासके आँगनका द्वार खुला था। किसीका प्रवेश निषिद्ध न था। भाग्यवान् नदियावासी श्रीश्रीगौर-गोविन्दजीके इस महाभिषेकके शुभ कार्यमें योगदान करनेका अधिकार प्राप्तकर अपनेको कृतार्थ समझ रहे थे। श्रीपाद कविकर्णपूर गोस्वामीने यथार्थ ही लिखा है—

कैश्चिद्वा परिपिपिषे न गन्धसार-
स्ताम्बूलं नहि कति सज्जितं प्रचक्रे।
आजह्रे कुसुमशतं तदा न कैश्चित्
पूर्णा भूः किमिव महोत्सवैस्तदानीम् ॥
कर्पूरैर्मरिचसिताभिरप्यखण्डा-
नन्दस्यानुभवसहोदरं समन्तात्।
कर्नो वा सपदि पयोविभावनादि-
व्यापारै रस इव सन्मदात् प्रसस्रे ॥

"श्रीगौर-गोविन्दके इस महा-अभिषेकोत्सवमें किस आदमीने चन्दन नहीं घिसा? किस आदमीने असंख्य ताम्बूल नहीं सजाया? किस-आदमीने शत-शत पुष्प आहरण नहीं किया? किस आदमीने अति आनन्दपूर्वक कपूर, मिर्च, चीनी और दुग्धकी विभावना आदि व्यापारके द्वारा सर्वतोभावेन अखण्ड आनन्दरसका विस्तार नहीं किया? अर्थात् उस समय विविध महोत्सवसे पृथिवी पूर्ण हो गयी थी।"

ऐसा शुभ सुयोग, ऐसा शुभ दिन नदिया-वासियोंको और कभी देखनेको नहीं मिला। श्रीवासके आँगनमें रातके समय प्रभुका गुप्त नृत्य-संकीर्तन-लीलारङ्ग होता था। आज वे आत्मप्रकाश करके पूर्णतः व्यक्तरूपमें श्रीवास-आँगनमें बैठकर दिनमें परम ऐश्वर्यमय अपूर्व लीलारङ्ग दिखला रहे हैं। आज उनके श्रीअङ्गपर सुवासित गङ्गाजल डालने, उनके श्रीअङ्गको स्पर्श करनेका निषेध किसीको नहीं है। विश्व-विमोहन, सर्वमनोरञ्जनरूपमें वे परम अद्भुत और परम ऐश्वर्यमय विश्वेश्वर-मूर्ति धारण करके सर्व जीवोंके सम्मुख महाभिषेक-पूजा-ग्रहण करने बैठे हैं। नदियाके बहुतेरे बिना जाने-पहचाने आदमी आकर आज उनकी पूजा और अभ्यर्थना कर रहे हैं। ऐसे लोगोंकी कोई गिनती नहीं है। देव-देवियाँ नररूप धारण करके अलक्ष्य-भावमें श्रीश्रीगौर-गोविन्दके महाभिषेकमें योगदान कर रही हैं।

श्रीवासपण्डितके घरके भाग्यवान् दास-दासीके ऊपर प्रभुकी अपार कृपा है। वे भी गङ्गाजल ला रहे हैं। उनमें-से एक दासीका नाम 'दुःखी' था। वह अतिशय भक्तिमती थी। गौराङ्ग-गत-प्राणा परम भाग्यवती दुःखी इस अभिषेक-कार्यमें प्राणपनसे परिश्रम कर रही थी, यह देखकर भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्की शुभ कृपादृष्टि उसके ऊपर पड़ी। दुःखी परम आनन्दपूर्वक गङ्गा-तीरसे घड़ा भर-भरकर जल ला रही थी। उसका मन आज बड़ा ही आनन्दित था। प्रभुने उसकी यह दृढ़ भक्ति देखकर परम परितुष्ट होकर उसको और भी गङ्गाजल लाने लिए स्वयं आदेश दिया और उसका 'दुःखी' नाम हटाकर 'सुखी' नाम रखा। इस भाग्यवती रमणीके ऊपर प्रभुकी अबाध कृपादृष्टि देखकर भक्तवृन्द आनन्दसे हरि-ध्वनि करने लगे। दुःखी आनन्दसे विभोर होकर अजस्र आँसू बहाने लगी तथा सब वैष्णवोंकी चरण-धूलि लेकर उसने अपने सिरसे लगा ली।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभिषेकके पश्चात्

श्रीगौर-गोविन्दका स्नानाभिषेक-कार्य समाप्त होनेपर श्रीनित्यानन्दप्रभु और श्रीवासपण्डित दोनोंने मिलकर उत्कृष्ट सूक्ष्म दिव्य वस्त्रसे प्रभुके श्रीअङ्गका मार्जन कर दिया। तब श्रीवासपण्डितने प्रभुको बहुमूल्य सूक्ष्म उत्तम वस्त्र पहनाया। गदाधरपण्डितने प्रभुके श्रीअङ्गको चन्दन-चर्चित किया।

प्रभुने तब पुनः देवगृहमें प्रवेश किया। विष्णु-सिंहासन पुनः सुसज्जित हुआ। उसके ऊपर दुग्ध-फेनके सदृश मनोहर शैया प्रस्तुत की गयी। उसके ऊपर नवनीतके पिण्डके समान सर्वोत्तम मखमलका सुन्दर उपधान (तकिया) रखा गया। नाना प्रकारकी पुष्पमालिकाएँ और नवपल्लवसे विष्णु-सिंहासन सुशोभित किया गया। महाज्योतिर्मय श्रीअङ्गकी शोभासे देवगृह आलोकित करके श्रीगौर-गोविन्द परम आनन्दपूर्वक दिव्य पर्यङ्कके ऊपर जब बैठे तो उनकी श्रीमूर्तिकी अपूर्व शोभा देखकर सब भक्तगण उनको त्रिलोकीनाथ विश्व-ब्रह्माण्डपतिके रूपमें अनुभव करके आनन्दसिंधुमें मग्न हो गये। चारों ओरसे बारम्बार 'जय, जय' और आनन्द-ध्वनि उत्थित होकर नदिया-गगनमें व्याप्त हो गयी। श्रीगौर-भगवान् श्रीगौर-गोविन्दजीके रूपमें जब सुसज्जित पर्यङ्कपर महामहिमान्वित ऐश्वर्यभावमें बैठे तो उनके श्रीअङ्गका अपूर्व ज्योतिपुञ्ज प्रजापति-सृष्ट इलावृतवर्षकी शोभाको मलिन करता हुआ प्रदीप्त हो उठा। श्रीनित्यानन्दप्रभुने सिरके ऊपर छत्र धारण किया, नरहरि प्रेमानन्दमें चँवर डुलाने लगे।

गदाधरने तत्काल स्वयं अतिशय प्रेमपूर्वक तथा उत्साहपूर्वक अपने प्राणवल्लभके लिए नाना प्रकारकी सुगन्धित पुष्पोंकी माला बनायी। प्रेमानन्दमें गदाधरका मन उस समय पुष्पके समान आमोदित और प्रफुल्लित था, इसी कारण वे इतनी शीघ्र इतनी सुन्दर मालाओंकी रचना कर सके। उन्होंने मानो मनके सूत्रमें मालाओंको गूँथा। उन्होंने प्रभुके कुटिल, घने और काले केशोंके उपयुक्त पुष्पोंका शिरोभूषण, सुन्दर कर्णयुगलके उपयुक्त कर्णभूषण, कम्बुकण्ठके उपयुक्त कण्ठभूषण, सुन्दर चौड़े ललाटके उपयुक्त ललाटिका, अर्थात् ललाट-भूषण अत्यन्त निपुणताके साथ नाना प्रकारके सुगन्धित और मनोहर पुष्पोंके द्वारा तैयार किये। उन्होंने अत्यन्त सुकोमल पुष्पोंके हार गूँथे, पुष्पोंके ताटङ्क, वलय, कंकण ओर अँगुलियोंके उपयुक्त अतिशय शोभा-सम्पन्न पुष्पांगुलीयककी रचना की। तत्पश्चात् सुन्दर काञ्ची, पाद-पद्मके लिए मनोहर पुष्पोंके नूपुर और अन्तमें सारे अँगुलियोंके आभूषण क्षण-कालमें तैयार करके अतिशय उत्कण्ठा और प्रीतिपूर्वक प्रभुके श्रीअङ्गोंमें एक-एक करके परम प्रेमपूर्वक पहना दिये।

पुष्पोंके साजसे श्रीगौर-गोविन्दजीकी अपूर्व शोभा हुई। भक्तवृन्द प्रभुको पुष्पोंमें सज्जित देखकर आनन्दमें अधीर होकर जय-ध्वनि करने लगे। प्रभु सुसज्जित पत्र-पुष्पोंके सुशोभित दिव्य पर्यङ्कके ऊपर बैठकर मृदु-मन्द-मधुर मुसकाने लगे।

भाग्यवान् गदाधरने प्रभुके पाद-पद्मकी अँगुलीसे लेकर चौड़े सुन्दर ललाटतक चन्दन, अगुरु, कर्पूर और कुंकुम-पङ्कके द्वारा श्रीगौराङ्गसुन्दरके गौर-अङ्गको अतिशय उत्कण्ठा और परमाविष्टताके साथ परमानन्दपूर्वक सुन्दररूपसे चर्चित किया। प्रभुकी अपरूप-रूपराशि तब मानो निखर गयी। वे मानो पूर्णतः नये श्रीश्रीगौर-गोविन्दके रूपमें दीखने लगे।

श्रीअद्वैतप्रभु और श्रीवासपण्डित-दोनों मिलकर श्रीगौर-गोविन्दकी पूजाकी तैयारी करने लगे। पाद्य, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध, पुष्प, वस्त्र, आचमनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आदि पूजाकी द्रव्य-सामग्री लेकर श्रीअद्वैताचार्यने विधिपूर्वक श्रीश्रीगौर-गोविन्दजीकी पूजा की। एक-एक करके सारे भक्तवृन्द प्रभुके चरणोंकी पूजा करके अपनेको कृतार्थ समझने लगे। सुगन्धित चन्दनसे लिप्त तुलसीदल अर्पित करके दशाक्षर गोपालमन्त्रसे श्रीगौराङ्गकी पूजा हुई। सब भक्तगण चन्दन-लिप्त नवीन मञ्जरीके साथ तुलसीपत्र प्रभुके चरण-कमलमें बारम्बार अर्पण करने लगे। **'एष सचन्दनतुलसीपत्रं नमस्ते बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने स्वाहा।'**—यह मन्त्र पढ़कर लोग प्रभुके चरणोंमें तुलसी-चन्दन देने लगे। उस समय प्रभुका महामहिमामय पूर्ण ऐश्वर्यभाव था। वे मन्द-मन्द मधुर मुस्कुरा रहे थे और आविष्टभावमें सिर हिला रहे थे।

पूजा समाप्त हो जानेपर सब भक्तगण मिलकर हाथ जोड़कर श्रीगौर-भगवान्‌की स्तुति करने लगे। यथा,

जय जय जय सर्व्व जगतेर नाथ।
तप्त जगतेरे कर शुभ दृष्टिपात॥
जय आदि हेतु जय अनन्त सभार।
जय जय संकीर्तनारम्भ अवतार॥
जय जय वेद-धर्म-साधुजन-त्राण।
जय जय आब्रह्मस्तम्बेर मूल प्राण॥
जय जय पतितपावन गुणसिंधु।
जय जय परम शरण दीनबन्धु॥
जय जय क्षीर सिंधु-मध्ये गुप्त वासी।
जय जय भक्तहेतु प्रकट विलासी॥
जय जय अचिन्त्य अगम्य आदि-तत्त्व।
जय जय परम कोमल शुद्ध-सत्त्व॥
जय जय विप्रकुल-पावन-भूषण।
जय वेद धर्म आदि सभार जीवन॥
जय जय अजामिल-पतित-पावन।
जय जय पूतना-दुष्कृति-विमोचन॥
जय जय अदोषदरशी रमाकान्त।
एइ मत स्तुति करे सकल महान्त॥

चै. भा. म. ९.५३-६१

प्रभु मन्द-मन्द-मधुर मुस्कुरा रहे थे और परमानन्दपूर्वक श्रीचरण बढ़ाकर भक्तवृन्दसे पूजा ग्रहण कर रहे थे। अहा! क्या अपरूप दृश्य था! नदियावासियोंका कैसा सौभाग्य था!

स्त्रियोंपर कृपा

श्रीवासपण्डितके घर पुर-नारियाँ तथा वैष्णव-गृहिणीगण श्रीगौर-भगवान्‌का यह महाभिषेक-दर्शन करनेके लिए एकत्रित हुई हैं। वे घरमें हैं। प्रभुके विष्णु-सिंहासनके निकट स्त्रियोंके जानेका आदेश नहीं था। द्वारपर आँगनकी भूमिमें नाना प्रकारके रँगीले वस्त्रोंके आवरण झूल रहे थे। प्रभुकी श्रीमूर्तिके सामने आकर पुर-नारियाँ उनके अपरूप-रूपका दर्शन नहीं कर पा रही हैं। आड़से देख रही हैं। इससे उनके मनमें बड़ा दुःख हो रहा है। अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान्‌ने भक्तोंके मनके दुःखको जान लिया। भक्तवत्सल प्रभु श्रीवासपण्डितको पास बुलाकर मृदु-मधुर स्वरमें बोले—"स्त्रीजनको यहाँ आने दो!"

प्रभुका आदेश सुनकर श्रीवासपण्डितके मनमें अतिशय आनन्द हुआ; क्योंकि उनकी गृहिणी आदि पुरकी नारियाँ इस सम्बन्धमें उनसे बारम्बार अनुरोध कर रही थीं। श्रीवासपण्डितने दौड़कर अन्तःपुरमें कुल-ललनाओंके पास प्रभुके कृपादेशको पहुँचाया तथा श्रीगौर-गोविन्दके दर्शनके लिए उनको बुलाया। पुर-नारीवृन्दने आनन्दसे उत्फुल्ल होकर लज्जासे सिर झुकाये परम हृष्ट चित्तसे देवगृहमें प्रवेश किया। श्रीश्रीगौर-गोविन्दजीका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपूर्व रूप और उनकी दिव्य शोभाका दर्शन कर कुल-कामिनीवृन्दने प्रेमानन्दमें गद्गद होकर गलेमें वस्त्र डालकर उनके चरणारविन्दमें गिरकर प्रणाम किया।*

कृपानिधि सर्वेश्वर श्रीगौर-गोविन्दने कृपा-परवश होकर उनके मस्तकपर अपने कमला-सेवित और शिव विरजि-बाञ्छित पाद-पद्मको अर्पण करके मधुर शब्दोंमें कहा—"तुम सब मत्परायणा बनो!"

प्रभुकी इस लीला-कथाके विषयमें कुछ विचार करूँगा। इससे लीला-रस-भङ्ग होगा, यह मैं जानता हूँ। कृपालु पाठकवृन्द कृपा करके अपराध ग्रहण न करेंगे।

श्रीश्रीगौर-भगवान्‌की यह महाप्रकाश-लीला ही उनकी ऐश्वर्यलीला है। उन्होंने भगवान्-भावमें नदियामें श्रीवासके आँगनमें यह अपूर्व लीलारङ्ग प्रकट किया। सब भक्तवृन्द वहाँ उपस्थित थे। नदियावासी सब नर-नारियोंने प्रभुके इस परम आश्चर्यमय लीला-उत्सवमें योग दिया था। सबके सामने उन्होंने नदियाकी कुल-नारियोंके मस्तकपर पदार्पण करके कहा था—"तुमलोगोंका चित्त मेरी ओर आकृष्ट हो" केवल स्वयं श्रीभगवान्‌के सिवा यह बात और किसीके मुखसे शोभा नहीं पाती। केवल एक इसी बातसे श्रीगौराङ्गप्रभुकी भगवत्ता प्रमाणित हो सकती है। श्रीभगवान्‌के सामने स्त्री-पुरुषका भेद-भाव नहीं होता। भक्त-पुरुष या स्त्री समानरूपसे उनके सामने आदरणीय हैं। श्रीगौर-भगवान्‌ने जब श्रीअद्वैतप्रभुके मस्तकपर पदार्पण करके उन्हें कृतार्थ किया, तब भक्तवात्सल्य-भावसे प्रणोदित होकर ही उन्होंने यह कार्य किया था। अब कुलनारीवृन्दके मस्तकपर पदार्पण करते समय जो बात कहकर उन्होंने उनको आशीर्वाद दिया, उसमें भी उन्होंने उसी भक्तवात्सल्यभावका परिचय दिया है। श्रीगौर-भगवान्‌ने यह लीलारङ्ग प्रकट करके अपने भक्तोंको समझाया है कि श्रीभगवान्‌का भक्त, पुरुष हो या स्त्री हो, सब समानरूपेण उनके कृपापात्र हैं।

श्रीभगवान् सर्वचित्ताकर्षक हैं। प्रभुके इस लीलारङ्गमें कुछ निगूढ़ तत्त्व हैं। उसको समझने-समझानेकी चेष्टा करूँगा। भक्त और भगवान्‌का सम्बन्ध सारे मायिक सम्बन्धोंकी अपेक्षा मधुर होता है। जीवका चित्त सदा अपने प्रियजनोंके प्रति दृढ़रूपसे आकृष्ट देखा जाता है। विशेषतः स्त्रियोंका चित्त सर्वदा अपने-अपने प्रियतम पति-देवताके प्रति विशेषरूपसे आकृष्ट होता है। पतिव्रता नारीका चित्त पतिके चरणोंके सिवा अन्यत्र कहीं भी आकृष्ट नहीं हो सकता। पतिदेवताके सिवा कोई दूसरा जगत्‌में उनके लिए प्रिय या पूज्य है, अथवा हो सकता है—यह वे नहीं जानतीं और न जानना चाहती हैं।

वैष्णव-गृहिणीगण परम पतिव्रता कुलनारियाँ हैं। पतिव्रता-धर्मके आचरणका फल श्रीभगवान्‌के चरणोंकी प्राप्ति है। नदियाकी भाग्यवती वैष्णव-स्त्री-गणने अपने पतिव्रता-धर्मके आचरणके फल-स्वरूप प्रभुकी कृपा और आशीर्वाद आज हाथों-हाथ प्राप्त कर लिया। उनका नारी-जन्म आज सफल हो गया। पतिके ऊपर जगत्पति हैं, जिनके चरणोंमें आत्मसमर्पण करनेपर जीव भव-बन्धनसे मुक्त हो जाता है, नदियाकी वैष्णव गृहिणीगणमें प्रभुकी कृपासे आज इसे उत्तमरूपसे जान लिया। पतिसेवाके फलस्वरूप जगत्पतिके

---

*गौराङ्गः सपदि तथाविधा विदित्वा
ताः सर्वाः कृतसुकृता द्विजातिपत्नीः।
एताः किं गृहमेधिनो विशन्ति
सर्वा आगच्छत्विति निदिदेश तत्र पश्चात्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चरणोंकी सेवा प्राप्त होती है, यह आज उन्होंने समझा।

श्रीगौराङ्गप्रभुने यह लीलारङ्ग प्रकट करके पातिव्रत-धर्मके आचरणका फल साक्षात् दिखला दिया। नारी-जातिको पातिव्रत-धर्मके आचरणका पुरस्कार दिया।

एक आदमीसे प्रेम करना सीखे बिना दूसरेसे प्रेम नहीं किया जा सकता। एक आदमीकी सेवा करनेकी शिक्षा प्राप्त किये बिना दूसरेकी सेवा नहीं की जा सकती। सभी बातोंमें शिक्षाकी आवश्यकता है। श्रीभगवान्‌में चित्त लगानेके सम्बन्धमें भी यही विधि है। पतिदेवताके चरणोंमें दृढ़ अनुराग हुए बिना, एकाग्रतापूर्वक उनकी सेवा किये बिना, नारी-जातिके हृदयमें ईश्वर-प्रेम उदय होनेकी कम सम्भावना है। पतिदेवताके पदमें चित्त स्थिर करके एकनिष्ठभावसे उनकी सेवा और भजन किये बिना, उनसे प्रेम करनेकी शिक्षा प्राप्त किए बिना नारीजातिके लिए श्रीभगवान्‌के प्रति चित्त आकृष्ट होना सम्भव नहीं। इसीलिये पातिव्रत-धर्मकी विधि और अनुष्ठान विहित है। धर्म-मर्यादारक्षक श्रीगौराङ्ग-सुन्दरने नदियाकी वैष्णव-गृहिणीगणके एकनिष्ठ पातिव्रत-धर्मके अनुष्ठानसे संतुष्ट होकर, उनके प्रति सदय होकर आज जो वरदान दिया, वह वरदान वे शिव-विरञ्चिको भी नहीं देते।

यहाँ एक प्रश्न उठ सकता है, वैष्णव-शास्त्रमें देखा जाता है कि श्रीभगवान्‌की प्राप्तिके लिए कुल, शील, मान, स्वजन (पति आदि) आदिका त्याग करनेपर उनकी कृपा प्राप्त होती है। यहाँ व्रज-गोपिकाओंका दृष्टान्त दिया जा सकता है। इसके उत्तरमें यही कह सकते हैं कि उनकी बात और ही है। श्रीगौराङ्गप्रभुने कुलस्त्रीगणको जो वरदान दिया, उसके साथ इस प्रश्नका कोई लगाव नहीं है। वह मार्ग ही ओर है; विधि और राग-मार्गका भजन बिल्कुल ही विभिन्न है। यहाँ ऐश्वर्यभावमें श्रीश्रीगौर-भगवान्‌ने नदियामें प्रकट होकर वैधी भक्तिका उपदेश दिया। परन्तु वे सर्वैश्वर्यपूर्ण परमपुरुष स्वयं-भगवान् हैं, यह बात नदियावासिनी कुलनारियोंके प्रति उनके इस अपर्व वरदान-वाक्यसे पूर्णतः अभिव्यक्त हो जाती है। नदियामें निमाईपण्डित कभी यह बात मुँहसे नहीं कह सकते थे। भगवान्-भावमें नदियाके निमाई-पण्डितने अनेक कार्य किये हैं, या अनेक बातें कही हैं, जिनसे उनके भक्तोंके मनमें उनका भगवान्-भाव पूर्णतः परिस्फुटित हुआ है; यहाँ भी वही हुआ। उपस्थित भक्तवृन्द प्रभुके श्रीमुखसे नदियाकी कुलनारियोंके प्रति यह शुभ आशीर्वाद-वचन सुनकर परम आनन्दित होकर उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे तथा सब प्रेमानन्दमें नृत्य करने लगे।

परम सौभाग्यवती नदियाकी पुरनारियाँ प्रभुकी कृपा प्राप्तकर आनन्दसे गद्‌गद होकर भक्तिभावसे उनके चरणोंमें बहुमूल्य स्वर्णाभरण अर्पण करके कृतार्थ हो गयीं। प्रभुका पर्यङ्क नदिया-सुन्दरीगणके द्वारा दिये गये स्वर्ण, मणि-मुक्ता, प्रवाल आदि बहुमूल्य द्रव्योंसे परिशोभित हो उठा। पुर-नारियाँ गलेमें वस्त्र डालकर प्रभुके चरणोंमें दण्डवत्-प्रणाम करके हाथ जोड़कर एक ओर खड़ी हो गयीं।

भक्तोंद्वारा अर्चना

नदियावासी भक्तोंने एक-एक करके प्रभुके चरण-कमलकी पूजा की। किसीने चन्दनसे उनके श्रीचरण-कमलको चर्चित किया, किसीने नवीन तुलसी और पुष्पके द्वारा चरण-पूजा की, किसीने प्रभुके पाद-पद्ममें रत्नालंकार अर्पण करके दण्डवत्-प्रणाम किया, किसीने सूक्ष्म वस्त्र, किसीने नाना वर्णोंके रञ्जित दिव्य पट्टवस्त्र देकर प्रणाम किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किसीने नाना प्रकारके धातुके पात्र लाकर प्रभुके सामने रखकर उनके चरणोंकी वन्दना की। वस्त्रालङ्कार-धातुपात्र आदि द्रव्योंसे श्रीवासका गृह भर गया। जिसके घरमें जो नयी वस्तु थी, उसे लाकर उसने प्रभुके चरण-कमलमें उत्सर्ग कर दिया। धान्य, दूर्वा, फल, मूल, पत्र, पुष्प, गन्ध, चन्दन, धूप, दीप और नैवेद्यसे श्रीवासका मन्दिर भर गया। कोई पञ्चोपचारसे, कोई षडङ्ग-मतसे, कोई षोडशोपचारसे श्रीगौराङ्ग-भगवान्‌की पूजाका आयोजन करके उनके अज-भव-वन्दित, कमला-सेवित चरण-कमलकी पूजा कर रहा है। कस्तूरी, कुङ्कुम, कर्पूरकी गन्धसे श्रीवासका मन्दिर आमोदित हो रहा है। चम्पक, मल्लिका, मालती, कुन्द, कदम्ब, शेफालिका, गन्धराज, नागेश्वर आदि सुगन्धित पुष्पोंसे विभूषित प्रभुके चरण-कमलोंकी आज अति अपूर्व शोभा है।

प्रभुके आदेशसे उनकी प्रसादी दो सूती वस्त्र ब्राह्मण-वनिताओंको प्रदान किये गये। उसके बाद उन्होंने श्रीवासादि भक्तगणोंको भी प्रसादी वस्त्र वितरण किये।

अब वे वस्त्रालंकारसे भूषित होकर नव-नटवर नदिया-नागरवेषमें पत्र-पुष्प-शोभित दिव्य पर्यङ्कके ऊपर विराजमान हैं। गदाधरपण्डित आदि अन्तरङ्ग भक्तगण पुनः-पुनः उनका अभिनव वेष परिवर्तन कर देते हैं। प्रभु निरन्तर सुगन्धित ताम्बूल-चर्वण कर रहे हैं और अपनी अधरामृत-चर्वित प्रसादी ताम्बूल आदि पीकदानमें फेंकते हैं। विप्रपत्नीगण उस पीकदानको साफ करती हैं। वे प्रभुका प्रसादी ताम्बूल ग्रहण करके प्रेमानन्दमें पुलकित हो रही हैं। उनके भाग्यकी कामना शिव-विरञ्चि भी करते हैं।

इस प्रकार श्रीगौर-भगवान् विष्णु-सिंहासन-पर बैठकर श्रीवास-मन्दिरमें परम अद्‌भुत ऐश्वर्य-विलास-रङ्ग कर रहे हैं और भक्तवृन्द नाना प्रकारके उपचारोंसे उनकी पूजा करके भोग लगा रहे हैं।

पूजा समाप्त होनेपर हँसते हुए श्रीगौराङ्गप्रभुने श्रीकर-कमलको फैलाकर भक्तवृन्दके प्रति शुभ-दृष्टि करके स्नेहपूर्वक मधुर शब्दोंमें कहा—'और कुछ दो, खाऊँ।' भक्तवृन्दने परमानन्दपूर्वक उनके अभीप्सित श्रेष्ठ भोजनके पदार्थ प्रभुके कर-कमलोंमें अर्पण किये और प्रभु परमप्रीति पूर्वक अपने हाथोंमें उसे पाने लगे।

प्रभुकी कृपा देखकर भक्तगण आनन्दसे विह्वल हो रहे हैं। आनन्दोन्मत्त होकर कोई बाजारकी ओर दौड़ा, कोई घरकी ओर दौड़ा। बाजारसे उत्तमोत्तम भोजनका सामान क्रय करके लाये और घरसे भी भोजनका सामान ले आये। नाना प्रकारके सन्देश, मिष्टान्न, मेवा, खीर, फल-मूल, शर्करा आदिका श्रीवास-मन्दिरके द्वारपर ढेर लग गया। श्रीगौर-भगवान् अपने श्रीहस्तको फैलाकर आज सब भक्तोंसे प्रीति-उपहार ग्रहण करके परम-प्रीतिपूर्वक भोजन कर रहे हैं। सहस्त्रों दही और दूधके पात्र, सैकड़ों मन सन्देश, मिष्टान्न, सहस्त्रों पके केलोंकी पौद, राशि-राशि कर्पूर-ताम्बूल, ब्रह्माण्ड-भाण्डोदर श्रीगौर-भगवान् अलौकिक शक्ति प्रकट करते हुए अनायास भोजन कर रहे हैं। सब लोग चकित होकर प्रभुके भोजन-विलास-रङ्गको देख रहे हैं; भक्तके भगवान् भक्तकी दी हुई वस्तु, प्रेमोपहार त्याग नहीं सकते। भक्तकी मनस्तुष्टिके लिए वे सब कर्म कर सकते हैं; इस प्रकारका भोजन-विलास तो सामान्य बात है।

श्रीपाद कविकर्णपूर गोस्वामीने लिखा है—

आघ्रेयं सपदि विजिघ्रतिस्म नाथो
भोगं च प्रतिवुभुजे कृपासमुद्रः।
आदेयं यदपि दधार सर्वमेवं
गौराङ्गः सविलसितं चकार भूयः॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्थात्—"दयाके सागर श्रीगौराङ्गप्रभुने आघ्राणोपयोगी सब वस्तुओंका आघ्राण किया, भोजन करनेयोग्य सब वस्तुओंका भोजन कर लिया, ग्रहण करनेयोग्य सब वस्तुओंका ग्रहण किया; इससे भक्तवृन्दके मनमें अपार आनन्द हुआ। इस प्रकारके लीलारङ्ग प्रभु पुनः-पुनः करने लगे।"

प्रभुने भगवान्-भावमें श्रीवास-मन्दिरमें सुसज्जित पर्यङ्कपर बैठकर इस परम अद्भुत ऐश्वर्य-लीलाको प्रकट किया। सुगन्धित माल्य-चन्दनसे उनके सारे अङ्ग विभूषित थे। वे दिव्य रेशमी वस्त्र पहने थे। उनके श्रीमुखकी मधुर वाणीसे अमृतवर्षा हो रही थी। उनके चन्द्र-वदनकी सुधामयी मधुर हँसी दसों दिशाओंको आलोकित कर रही थी। उनकी श्रीअङ्ग-ज्योतिसे श्रीवास-मन्दिर मुखरित हो रहा था। इतनी रूपकी प्रभा, इतनी सौन्दर्यकी छटा, इतनी द्रव्य-सम्भारकी घटा, इतना माधुर्यका विकास, इतने ऐश्वर्यका प्रकाश इससे पहले किसीने कभी नहीं देखा। नदियाके भक्तवृन्दके हृदयमें आज आनन्दका स्त्रोत उमड़ पड़ा है। भगवान्का आज क्या अपूर्व मिलन है! नदियावासी सब भक्तोंकी मनोवाञ्छा भक्त-वाञ्छा-कल्पतरु आज पूर्ण करने बैठे हैं। कोई भी आज प्रभुकी कृपासे वञ्चित न होगा। आज वे स्पष्टतः भक्तवृन्दको ऐश्वर्य दिखलाकर अपने मनकी बात कहेंगे।

श्रीवासपण्डितकी प्राचीन घटनाका प्रभुद्वारा उद्घाटन

श्रीवासपण्डित हाथ जोड़कर प्रभुके सामने खड़े होकर अतृप्त नेत्रोंसे उनकी रूपसुधा-पान करते थे। उनकी प्रेमाश्रुधारा झर-झर बहती हुई भूतलको सींच रही थी। भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्ने उनको पास बुलाकर कहा—

"अरे श्रीवास! तुमको याद है कि तुमने देवानन्दपण्डितके स्थानपर भागवत सुनी थी। श्रीभागवत पद-पदपर प्रेमरसमय है। उसको सुनकर तुम्हारा हृदय अत्यन्त ही पिघल चला था। तुम ऊँचे स्वरसे रोने लगे थे और विह्वल होकर भूमिपर गिर गये थे। अबोध विद्यार्थीगण भला भक्तिभावको क्या समझें! वे कहने लगे-'यह इतना रोता-पीटता क्यों हैं—कुछ समझमें नहीं आता? तुम तो भावकी तरंगोंमें पड़े बाहर-से बेसुध थे। विद्यार्थी लोग तुमको घसीटते हुए बाहर ले गये। इसपर देवानन्दने उनको मना नहीं किया। गुरु जैसे अज्ञ, वैसे ही विद्यार्थीगण भी अज्ञ। उन्होंने तुमको घसीटकर बाहर द्वारपर छोड़ दिया। तब तुम वहाँसे बड़े दुःखित होकर घर लौटे। मनमें दुःख पाकर तुम एकान्तमें जा बैठे और श्रीमद्-भागवतको उठाकर देखने लगे। तब मैं तुम्हारा दुःख देखकर वैकुण्ठसे आकर तुम्हारी देहमें प्रकट हो गया। तब मैंने तुम्हारे हृदयमें बैठकर निज प्रेमयोग देकर तुमको रुलाया था। तब तुमको भागवत सुनकर बड़ा ही आनन्द हुआ और तुम्हारे नेत्रोंके जलसे वह सारा स्थान भीग गया, मानो बर्षा हुई हो।"

देवानन्दपण्डित नवद्वीपके अन्तर्गत विद्यानगरमें रहते थे। वे उदासीन साधु थे। भागवत-शास्त्रके अच्छे ज्ञाता थे; परन्तु भक्तिपथके पथिक न थे। प्रभुके आविर्भावके बहुत दिन पहले एक दिन वे अपने शिष्योंको भागवत पढ़ा रहे थे, उसी समय परमभागवत श्रीवासपण्डित वहाँ आकर उपस्थित हुए। भक्ति-कथा सुनकर वे प्रेमानन्दमें विह्वल होकर रोने लगे। देवानन्दपण्डितके छात्रोंने यह देखकर अप्रसन्न हो श्रीवासपण्डितको पकड़कर घरसे बाहर कर दिया; क्योंकि उनके इस प्रकार अकारण क्रन्दन करनेसे छात्रोंके अध्ययनमें बाधा पड़ती थी। देवानन्दपण्डितने यह देखकर अपने छात्रोंको कुछ न कहा। श्रीवासपण्डित मनमें दुःखित होकर और अपमानसे मृतवत् होकर अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

घर आकर सारी रात रोते रहे। अबतक यह बात उन्होंने किसीसे नहीं कही थी। अन्तर्यामी गौर-भगवान्‌ने वही बहुत दिन पहलेकी गुप्त बात चलाकर श्रीवासपण्डितको अपनी सर्वज्ञताका परिचय दिया। पश्चात् प्रभुने देवानन्दपण्डितका वैष्णवापराध दूरकर उनको समुचित दण्ड दिया था। यह सब लीला-कथा यथास्थान वर्णन की जायगी।

श्रीवासपण्डित प्रभुके श्रीमुखसे पहलेकी बात सुनकर आनन्दमें विह्वल होकर उनके चरणोंमें गिरकर रोते-रोते धूलमें लोटने लगे। उनके सारे अङ्ग पुलकायमान हो गये। बारम्बार श्वास आने लगी और मुँहसे वाणी न निकल सकी।

प्रभु स्वानुभवानन्दमें सुसज्जित पर्यङ्कपर बैठकर गरज-गरजकर ताम्बूल-सेवन कर रहे थे और मृदु-मन्द मुस्कुरा रहे थे। श्रीवासपण्डित प्रभुकी इच्छासे प्रकृतिस्थ हुए। तब प्रभु उनको सम्बोधन करके बोले—"श्रीवास ! स्मरसि विनिर्यतस्तवासू-नारौत्सं यदिह चपेटपाटवेन—श्रीवास ! तुम्हारा जीवनान्त-काल उपस्थित होनेपर मैंने चपेटा मारकर तुम्हारे बहिर्गमनोद्यत प्राणोंको रोक दिया था, तुम्हें स्मरण है न ?" श्रीवासपण्डितने परम आश्चर्यपूर्वक प्रभुके श्रीमुखचन्द्रकी ओर देखकर रोते-रोते कहा—"(स्मृतिमभिनीय) आँ वेद्मि प्रभुवर मोचितोऽस्मि मृत्योः केनापि प्रसभमिति स्मृतिर्ममास्ते।—प्रभो ! मुझे अब स्मरण हो रहा हैं, किसी अलौकिक व्यापारसे मेरी मृत्युके मुखसे रक्षा हुई थी।" *

यह सब बात सुनकर उपस्थित भक्तवृन्द अतिशय चकित होकर आमूल वृत्तान्त सुननेके लिए उत्कण्ठित हो उठे। भक्तवत्सल अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान् तब हँसकर श्रीवासपण्डितसे बोले—"श्रीवास ! आमूलं कथय ! सर्वे शृण्वन्तु।—श्रीवास ! तुम शुरूसे सारी बातें कहो। सब सुनें।"

प्रभुका कृपादेश पाकर तब श्रीवासपण्डितने हाथ जोड़कर निवेदन किया—"प्रभो ! आपके भूतलमें अवतीर्ण होनेके पूर्व मैं बाल्यकालमें सोलह वर्षकी उम्रतक बड़े ही उद्दण्ड स्वभावका था। देवता, ब्राह्मण, गुरु आदि पूज्य लोगोंके सामने सैकड़ों अपराध किये। मेरा चित्त कुपथगामी था, अतएव मनमें शान्तिका लेश भी न था। मेरा हृदय काष्ठवत् नीरस और दयाहीन था। व्यर्थके कलह और परनिन्दा आदि दूषित बातोंमें लगे रहनेके कारण मेरी बुद्धि अभिमानसे पूर्ण रहती थी। मैं अत्यन्त चञ्चल स्वभावका था। कदापि मन स्थिर न कर पाता था। स्वप्नमें भी कभी भगवत्-कथा सुनने या कीर्तन करनेकी अभिलाषा नहीं होती थी। एक दिन निद्रावस्थामें जब इन्द्रियोंकी सारी बाह्य वृत्तियाँ सुप्त थीं, पूर्वजन्मके संचित् पुण्यके फलसे कोई महात्मा स्वप्नावस्थामें मेरे सामने उपस्थित होकर करुणा करके मुझको इस प्रकार उपदेश देने लगे—'अरे ब्राह्मणाधम ! अरे चञ्चलहृदय !! यद्यपि तुझको शिक्षा देना ठीक नहीं है, तथापि तेरे कल्याणके लिए कहता हूँ, तेरी परमायु एक वर्षमात्र रह गयी है। अतएव अब वृथा कार्यमें कालक्षेप न कर।'—यह कहकर वे स्वप्नदृष्ट महात्मा अन्तर्द्धान हो गये। मेरी भी नींद टूट गयी। उस समय प्रभात हो गया था। रातका स्वप्न-वृत्तान्त स्पष्टरूपसे मेरी स्मृतिमें उदित होनेके कारण मेरे मनमें मृत्युका भय उत्पन्न हुआ। एक वर्षसे अधिक अब मैं जीता न रहूँगा—यह सोचकर मैं अत्यन्त शङ्कित और भीत हो उठा। मेरा भोजन और मेरी नींद हराम हो

* चैतन्यचन्द्रोदयनाटक १.५१.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गयी। किसके पास जाकर उपदेश ग्रहण करूँ? इस प्रकारकी अवस्थामें जीवके लिए क्या कर्त्तव्य है? किस उपायसे मेरा कल्याण होगा?—इस प्रकारकी चिन्तामें कातर होकर मैं दिन काटने लगा। इस प्रकारकी मानसिक दशामें एक दिन नारदीय पुराण (पूर्वभाग ४१.११५) खोजते-खोजते यह श्लोक पाया—

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

"तत्पश्चात् मैंने इस श्लोकको साक्षात् श्रीहरिके उपदेशके समान समझकर सर्वकर्म-परित्याग करके एकमात्र हरिनामकी शरण ली। अब गृहस्थीके जंजालसे मेरा मन हट गया। सब मेरी हँसी उड़ाने लगे। उससे मेरे मनमें क्रोध न हुआ। मधुर हरिनामके प्रभावसे तनिक भी अन्य विषयोंमें अन्तःकरणके लिप्त न होनेके कारण मेरा गृहस्थाश्रममें अनुराग न रहा। केवल हरिनाम-कीर्तन करने लगा और मनमें यही दुःख बना रहता कि इतने दिनोंतक मैं ऐसे मधुर हरिनामके लेनेसे वञ्चित क्यों हुआ? दुःखित और उद्विग्न चित्तसे मैं अपनी मृत्युके दिन गिनने लगा। दिनके बाद दिन, मासके बाद मास बीतते गये। अपनी मृत्युका दिन समीप आया जानकर परममङ्गल श्रीमद्भागवतके अध्यापक देवानन्दपण्डितके घर भागवतकी कथा सुननेके लिए गया। उस समय भक्तवीर प्रह्लादका चरित्र चल रहा था। उसी दिन मेरी मृत्युका निर्धारित काल था। प्रह्लाद-चरित्र सुनते-सुनते प्रेमावेशमें मैं देवानन्दके भवनके चौंतरेसे आँगनमें जा गिरा। उस समय मुझको बाह्य ज्ञान न था। किसी करुणहृदय महात्माने पुनः परमायु प्रदानकर मुझको मृत्युके हाथसे बचाया, यह मैं खूब समझ रहा था। यह समझकर मैं विवश होकर आँगनसे उठा। उसके बाद सबलोग मुझको पकड़कर घर ले आये।"

श्रीवासपण्डितकी बात समाप्त होनेपर श्रीगौर-भगवान् मृदु-मधुर मुसकानके साथ उनसे बोले—"रातके समय मैंने ही आपको स्वप्न दिया था और मृत्युकालमें मैंने ही जीवन-दान करके आपकी रक्षा की है।"

श्रीवासपण्डितकी यह अपूर्व कथा सुनकर सभी विस्मय-सागरमें डूब गये। सब भक्तगण मिलकर बारम्बार हरिध्वनि करने लगे। श्रीवासका आँगन आनन्द-कोलाहलसे भर गया। कुछ देरके बाद प्रभु पुनः श्रीवासपण्डितको लक्ष्य करके बोले—"जैसे स्पर्शमणिके स्पर्शसे लोहा काञ्चनके भावको धारण करता है, उसी प्रकार तुम्हारे इस शरीरमें नारदकी शक्तिका प्रवेश होते ही यह उनके अवान्तर-शरीरके समान हो गया है।" इस बातसे प्रभुने श्रीवासपण्डितकी पूर्वलीलाका परिचय दिया। श्रीवासपण्डित नारदके अवतार हैं, यह बात प्रभुने संकेतद्वारा बतला दी।

श्रीअद्वैताचार्य आदि सब भक्तगण अबतक चुपचाप श्रीवासपण्डितकी अपूर्व जीवन-कथा सुन रहे थे। अब सुयोग पाकर श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौर-भगवान्से कहा—"प्रभो! आपने सत्य ही कहा है। बिना इसके मृत-पुरुष कैसे पुनर्जीवित हो सकता है? श्रीवासके साथ आपने जो लीलारङ्ग किया था, उसका मर्म हमने समझा है। आपका भजन करनेपर मनुष्यका शरीर अवान्तर-शरीरके समान पूर्णस्वभावसे मुक्त हो जाता है, यही उपदेश प्रदान करनेके अभिप्रायसे आपने ऐसी ऐश्वर्य-लीला प्रदर्शित की है। वस्तुतः आपकी भक्ति-सम्पद्के आलय-स्वरूप भक्तचूड़ामणि श्रीवासपण्डितकी अद्भुत महिमा है।" प्रभुने हँसकर उत्तर दिया -"अद्वैत! सत्यमेतत्।"

श्रीवासपण्डित प्रेमानन्दमें विह्वल होकर हाथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जोड़कर प्रभुके सामने खड़े हैं। श्रीअद्वैतप्रभुके मुखसे अपनी आत्मप्रशंसा सुनकर उनके हृदयमें विषम आत्मग्लानिका भाव उदय हो गया। वे रोते-रोते प्रभुके चरणोंमें गिरकर धूलमें लोटने लगे।

गङ्गादासपण्डितकी घटनाका उद्घाटन

श्रीगौर-भगवान् परमानन्दसे सुसज्जित पलंगपर बैठकर सब भक्तोंके ऊपर शुभ दृष्टिपात कर रहे हैं। जिसको अनुपस्थित देखते हैं, उसको बुला भेजते हैं। उनका परिपूर्ण ऐश्वर्यभाव है।

प्रभुने अपने विद्यागुरु प्राचीन अध्यापक गङ्गादासपण्डितको सामने देखकर उनको पुकारकर कहा—"तुमको याद होगा, जब तुम राज-भयसे रातमें भाग निकले थे और कुटुम्बसहित नौका-घाटपर आये, तब वहाँ कहीं भी नैया नहीं मिली और तुम संकटमें पड़ गये थे। रात बीत चली और नैया न मिलनेसे तुम दुःखित होकर रोने लगे थे। इस भयसे कि तुम्हारी आँखोंके सामने राजाके यवन-सिपाही तुम्हारे परिजनोंको स्पर्श करेंगे, तुम दुःखित होकर गङ्गामें डूब मरनेको तैयार हो गये थे, तब मैं ही मल्लाहके रूपमें नाव लेकर तुम्हारे पास आया था। नाव मिल जानेसे तुम बहुत प्रसन्न हुए और अतिशय प्रीतिपूर्वक कहने लगे—'अरे भाई! अबकी बार मेरी रक्षा कर दो! यह मेरी जाति, प्राण, धन, देह—सब तुम्हारे ही हैं। परिवारसहित पार कर दो! यह एक रुपया और एक जोड़ा धोती तुमको दूँगा।' तब मैं ही तुमको परिवारसहित पार करके बैकुण्ठ चला गया था।" (चै. भा. म. ९.१०९–११७)

वृद्ध गङ्गादासपण्डितको पहलेकी बात याद आयी। वे श्रीगौर-भगवान्‌की कृपाकी बात याद आते ही आनन्दसे विह्वल हो उठे। वे प्रभुके अध्यापक-गुरु थे। प्रभुके पिताके समवयस्क थे, वृद्ध ब्राह्मण थे। वे प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर मूर्च्छित हो प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। उनके ऊपर श्रीगौर-भगवान्‌ने एक बार कृपादृष्टि की और तत्काल उनकी प्रेममूर्च्छा भङ्ग हो गयी। वे प्रेमानन्दमें आकुल होकर जड़वत् प्रभुके सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

गङ्गादासपण्डित भक्तिविह्वलचित्तसे प्रभुके मुख-चन्द्रकी ओर एकटक देखते रह गये। उनके मुँहसे बात नहीं निकल रही है, नयनोंके पलक नहीं गिरते हैं। चित्रलिखित पुतलीके समान वे जड़वत् खड़े हैं। श्रीगौर-भगवान् बीच-बीचमें उनके ऊपर करुण कटाक्ष करते हैं और मृदु-मधुर मुस्कुरा रहे है।

शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीपर कृपा

शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीने श्रीगौर-भगवान्‌के सामने आकर हाथ जोड़कर खड़े होकर अति दीनभावसे निवेदन किया—

तप्तानि भूरिणि तपांसि नाथ
वहूनि तीर्थानि च सेवितानि।
तथापि चेतो नहि मे प्रसन्नं
कृपाकटाक्षं कुरु मे प्रसीद॥

श्रीचैतन्यचन्द्रोदयनाटक १.५७

अर्थ—"हे देव! मेंने बहुत तपस्या की, बहुत तीर्थ-पर्यटन किया, तथापि मेरा चित्त प्रसन्न नहीं हुआ। अतएव आप मेरे ऊपर प्रसन्न होइये और एक बार कृपाकटाक्ष कीजिये।"—यह कहकर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी निर्भय और निःसंकोचभावसे सबके सामने प्रभुके चरणोंपर अपना मस्तक अर्पण करके अजस्र अश्रु-प्रवाह करने लगे। यह देखकर श्रीवासपण्डितने गदाधरको एकान्तमें बुलाकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इशारेसे कहा—

कठिनतरतपस्योज्जृम्भदम्भप्रलम्भा-
दशनिशनिकठोरं चित्तमस्य द्विजस्य ।
सपदि भगवदङ्घ्रिस्पर्शनादेव भूत्वा
द्रुतमिव नयनाभ्यां रोमभिश्चोज्जिहीते ।।

श्रीचैतन्यचन्द्रोदयनाटक १.५८

"गदाधर ! देखो, देखो ! इस ब्राह्मणका चित्त कठोर तपस्याजनित उत्कट अहंकारमें वज्रसे भी कठिन हो गया है। अब श्रीगौर-भगवान्‌के चरण-कमलोंके स्पर्शमात्रसे ही इसका कठिन हृदय द्रवित हो गया है और नेत्रोंसे प्रेमाश्रुधारा बह रही है तथा शरीर रोमाञ्चित हो रहा है।" श्रीगौर-भगवान् शिव-विरञ्चि-अभिवाञ्छित अपने चरण-कमलोंको उठाकर शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके सिरपर रखकर मृदु-मधुर मुस्कुराने लगे। शुक्लाम्बर ब्रह्मचारीके भाग्यको देखकर भक्तवृन्द आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे।

संध्या-आरती

श्रीगौर-भगवान् अपने पूर्ण ऐश्वर्यभावको विकसित करके भगवान्-भावमें श्रीवास-मन्दिरमें विराज रहे हैं। कोई वेष-विन्यास कर रहा है, कोई चँवर डुला रहा है, कोई पैर दबा रहा है, कोई पान लगा रहा है। सारी नदियाके लोगोंने श्रीवासके आँगनमें प्रभुके इस महान् ऐश्वर्यपूर्ण सप्तप्रहरव्यापी महाप्रकाश-लीलाकी बात सुनी। दिनभर प्रभु भगवान्-भावमें आविष्ट होकर परम ज्योतिर्मयरूपमें विष्णु-सिंहासनपर बैठे हैं। भक्तवृन्द पूजा-पाठ और गीत-कीर्तनमें उन्मत्त हैं। अविराम संकीर्तन चल रहा है। कीर्तनानन्दमें उन्मत्त होकर भक्तवृन्द मधुर नृत्य कर रहे हैं। सारी नदियाके लोग श्रीवासके आँगनमें एकत्रित हुए हैं।

सूर्यदेव अस्त हुए। संध्यादेवी नील-वसन परिधान करके धीरे-धीरे आकर श्रीगौर-भगवान्‌के पाद-पद्मोंकी वन्दना करने लगी। आरतीका समय उपस्थित हो गया। श्रीवास आदि भक्तवृन्दने श्रीगौर-भगवान्‌की संध्या-आरतीका प्रबन्ध किया। धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध, चन्दन, पुष्प-माल्य लेकर सभी प्रभुके सामने खड़े हो गये। शङ्ख, घण्टा, मृदङ्ग, मंजीरा, करताल आदि मधुर वाद्योंके साथ आरती प्रारम्भ हुई। गौर-आना-गोसाईं (गौरको लानेवाले प्रभु) श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌की आरती की। चतुर्दश प्रदीपकी आरतीके आलोकसे श्रीवास-मन्दिरकी अपूर्व शोभा-वृद्धि हुई। पुरनारियोंकी शुभ हुलु-ध्वनिसे आँगन भर गया। सब भक्तलोग पुष्पवृष्टि करने लगे। देव और देवियाँ अन्तरिक्षसे अलक्ष्यरूपमें श्रीगौर-भगवान्‌की आरती देखने आयी हैं। देव और मानवोंका शुभ सम्मिश्रण हुआ है। सबके मुखपर "जय शचीनन्दन, जय गौरहरि" ध्वनि है। प्रभुके युगल-भजननिष्ठ रसिक भक्तोंने सुर पकड़ा—

जय शचीनन्दन जय गौरहरि ।
विष्णुप्रियार प्राणधन नदिया-विहारी ।।

"त्राहि प्रभो !' 'रक्ष प्रभो !' शब्दसे नदियाका गगन प्रकम्पित हो उठा। भक्तवृन्द आरतीकी जय-गीति गाने लगे—

जय नन्दनन्दन, गोपीजन-वल्लभ,
राधा-नायक नागर श्याम ।
सो शचीनन्दन, नदिया पुरन्दर,
सुर-मुनिगण मनमोहन श्याम ।।
जय निज कान्ता, कान्ति कलेवर,
जय जय प्रेयसी-भाव विनोद ।
जय व्रज-सहचरी, लोचन-मङ्गल,
जय नदिया-वधू-नयन-आमोद ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जय जय श्रीदाम, सुदाम, सुवलार्जुन,
प्रेमवर्द्धन नवघन रूप।
जय रामादि सुन्दर, प्रिय सहचर,
जय जगमोहन गौर अनूप॥
जय अतिबल, वलराम-प्रियानुज,
जय जय श्रीनित्यानन्द आनन्द।
जय जय सज्जन, गण-भय-भञ्जन,
गोविन्ददास आश अनुबन्ध॥

श्रीवासके आँगनमें बड़ी धूम-धामसे प्रभुकी आरती हुई। लम्बे-चौड़े आँगनमें आज तिल धरनेकी जगह नहीं रही। जो भी देखता है, वही सोचता है कि श्रीवासका आँगन मानो साक्षात् वैकुण्ठधाम है। अब रात हो गयी हैं। श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीअङ्गकी ज्योतिसे श्रीवास-मन्दिर आलोकित हो गया है।

आरतीके बाद सब भक्तगणोंने प्रभुकी पाद-वन्दना की। प्रभुके आदेशसे वे उनके पदतलमें हाथ जोड़कर बैठ गये। करुणामय श्रीगौर-भगवान्‌ने करुणा करके लीलाके आवेशमें भक्तवृन्दके अङ्गसे-अङ्ग मिलाकर अपने कमला-सेवित और शिव-विरञ्चि-वन्दित रक्त पद-पद्मोंको फैला दिया। श्रीअद्वैतप्रभु सबसे पहले जाकर श्रीगौराङ्गके युगल-पाद-पद्मको परम भक्तिभावसे गोदमें लेकर बैठ गये। अपने नयन-जलसे प्रभुके रक्त श्रीचरण-कमलोंको धो डाला। प्रेमानन्दमें अधीर होकर भक्तवृन्द बारम्बार हरिध्वनि करने लगे और श्रीनित्यानन्दप्रभुने गौर-भगवान्‌के सिरके ऊपर छत्र धारण किया।

अद्वैताचार्यकी स्वप्न घटना

श्रीगौर-भगवान् आज सम्पूर्णरूपमें आत्मप्रकाश करने बैठे हैं। आज वे दिल खोलकर अपने मनकी बात भक्तोंसे कह रहे हैं। श्रीअद्वैताचार्यके प्रति कृपादृष्टि करके सर्वज्ञ प्रभुने मधुर हँसी हँसकर कहा—

शुन शुन आचार्य! तोमारे निशाभागे।
भोजन कराइल आमि ताहा मने जागे॥
जखन आमार नाहि हय अवतार।
आमारे आनिते श्रम करिते अपार॥
गीताशास्त्र पड़ाओ बाखान भक्ति मात्र।
बूझिते तोमार व्याख्या केवा आछे पात्र॥
जे श्लोकेर व्याख्याय नहिं पाओ भक्तिगोग।
श्लोकेर ना देह दोष छाड़ सर्व भोग॥
दुःख पाई शुनि थाक करि उपवास।
तबे आमि तोमार स्थाने हई परकाश॥
तोमार उपासे मुञि मानो उपबास।
तुमि मोरे जेई देह सेई मोर प्राण॥
तिलार्द्धं तोमार दुःख आमि नाहिं सहि।
स्वप्ने आमि तोमार सहित कथा कहि॥
उठ उठ आचार्य श्लोकेर अर्थं शुन।
एई अर्थ एई पाठ निःसंदेहे जान॥
उठिया भोजन कर ना कर उपास।
तोमार लागिया आमि करिब प्रकाश॥
संतोषे उठिया तुमि करह भोजन।
आमि बलि तुमि जेन मानह स्वपन॥
प्रभु बोले सर्व पाठ कहिल तोमारे।
एक पाठ नाहि कहि आजि कहि तोरे॥
सम्प्रदाय अनुरोधे सभे मन्द पड़े।
"सर्वतः पाणिपादं तत्" एइ मात्र नड़े॥
आजि तोरे सत्य कहि छाड़िया कपट।
"सर्वत्र पाणिपादंतत्" ईई सत्य पाठ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अति गुप्त पाठ आमि कहिल तोमारे।
तोमा बई पात्र केबा आछे कहिबारे॥

चै. भा. म. १०.११४-१२३; १२७-१३०

"हे आचार्य ! मैंने तुमको रात्रि-कालमें भोजन कराया था, वह याद है ? जब मेरा अवतार नहीं हुआ था, तब तुमने मुझे प्रकट करनेके लिए अपार परिश्रम किया था। तुम गीता-शास्त्र पढ़ाया करते थे और उसकी केवल भक्ति-मूलक व्याख्या किया करते थे। तुम्हारी व्याख्याको समझनेवाला पात्र भला कौन है। जब किसी श्लोककी व्याख्यामें तुमको भक्तियोग नहीं मिलता था, तब तुम श्लोकको दोष नहीं देते थे, परन्तु दुःखी होकर खान-पान छोड़कर सो जाते थे। तब तुम्हारे सामने मेरा प्रकाश प्रकट होता था। तुम्हारे उपवासमें मैं अपना उपवास मानता था; कारण, तुम मुझे जो देते, उसीसे मैं प्राण-धारण करता था। तुम्हारा जरा-सा भी दुःख मैं सहन नहीं कर सकता और स्वप्नमें तुमसे बात करके श्लोकका ठीक अर्थ बताया करता था और तुमसे कहता था कि उठकर भोजन करो; तुम्हारे लिए मैं अपनेको प्रकट करूँगा। जो मैं तुमको कहता था, तुम उसको स्वप्न मानते थे। मैंने तुमको और सब पाठ तो बता दिया था, एक पाठ नहीं बताया था, वह आज बताता हूँ : सम्प्रदायका पक्ष लेकर सब ही (गीता १३-१३ का)* "सर्वतः पाणिपादं तत्'—ऐसा अशुद्ध पाठ करते हैं। आज मैं कपट छोड़कर तुमको सत्य कहता हूँ कि 'सर्वत्र* पाणिपादं तत्' ही सत्य पाठ है। यह मैंने तुमको अति गुप्त पाठ बतलाया। एक तुमको छोड़कर और कौन पात्र हैं कि जिसको यह कहा जा सके।"

---

* गीता १३-१३ श्लोकके प्रथम चरणका पाठ प्रायः सभी प्रचलित संस्करणोंमें 'सर्वतः पाणिपादं तत्' ही देखनेमें आता है। 'सर्वतः' की जगह 'सर्वत्र' पाठ कहीं भी देखनेमें नहीं आया। यह श्लोक श्वेताश्वतर उपनिषद् ३-१६ में भी इसी प्रकार है। श्रीमन् महाप्रभुके निजी परिकर श्रीपाद जीवगोस्वामीने, जो 'षट्संदर्भ' लिखा है, उसके अन्तर्गत 'भगवत्संदर्भ' में भी 'सर्वतः पाणिपादं तत्' पाठ ही उद्धृत किया है (भगवत्संदर्भ, अनुच्छेद, पृष्ठ २०१, बरहमपुर संस्करण, १२८९ माघ)। इससे यही समझा गया है कि 'सर्वतः' पाठ ही सर्वत्र प्रचलित है।

'सर्व' शब्दके उत्तर 'तसिल्' प्रत्यय लगनेसे ही 'सर्वतः' शब्द निष्पन्न होता है। यह 'तसिल्' प्रत्यय पञ्चमी विभक्तिमें भी होता है और सप्तमी विभक्तिमें भी। **'पञ्चम्यां च तसिल् सप्तम्यां च।'** इस स्थानपर पञ्चमी विभक्तिकी संगति देखनेमें नहीं आती; क्योंकि पञ्चमी-विभक्ति ग्रहण करनेसे 'सर्वतः' शब्दका अर्थ होगा—सर्व (सब) के द्वारा अर्थात् जगत्में पाणि-पाद (कर-चरण)-विशिष्ट जो सब जीव हैं, उन-सबके द्वारा ही **'पाणिपादं तत्—तत्** (ब्रह्म), **पाणिपादम्** (पाणि-पाद-विशिष्ट है)' अर्थात् ब्रह्मके अपने कोई भी **पाणि** (कर—हस्त) एवं **पाद** (चरण) नहीं हैं, जीव-समूहके कर-चरणके द्वारा ही ब्रह्मके कर-चरणकी कल्पना की जाती हैं और **'पञ्चमी हेतौ'**—इस पाणिनी-सूत्रके अनुसार हेतु अर्थमें पञ्चमी स्वीकार करनेसे 'सर्वतः' शब्दका अर्थ होगा—**जीवादि सर्व-वस्तु** (अर्थात् पाणि-पाद-विशिष्ट या कर-चरण-विशिष्ट सब वस्तु) ही ब्रह्मके पाणि-पादत्व या कर-चरण-विशिष्टताका हेतु है। तात्पर्य यह है कि ब्रह्मके अपने कर-चरण नहीं हैं, कर-चरण-विशिष्ट जीवके कर-चरण होनेके कारण ही ब्रह्मके कर-चरण हैं—ऐसा कहा जाता है. जीवके कर-चरण ही ब्रह्ममें आरोपित होते हैं। किन्तु यह श्रुति स्मृति-सम्मत नहीं हैं। इसलिये यहाँपर जो 'सर्व' शब्दके उत्तर पञ्चमी विभक्तिके अर्थमें 'तसिल्' प्रत्यय लगाया गया है अथवा जो **'हेतौ'** पञ्चमी हुआ है, वह स्वीकार नहीं किया जा सकता। सप्तमी विभक्तिके अर्थमें ही 'तसिल्' प्रयुक्त हुआ है। सप्तमी विभक्तिके अर्थमें 'सर्वतः' शब्दका अर्थ होगा—सर्व-अधिकरणे, सब स्थलोंमें, सर्वत्र। आलोच्य गीता-श्लोककी

(टिप्पणीका शेष पृष्ठ ५७९ पर)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गीताके भक्तियोगकी व्याख्या करते समय श्रीअद्वैतप्रभुको जब किसी श्लोकके अर्थमें संदेह होता तो वे मनसे दु:खी होकर उपवास करते थे। रातमें स्वप्न देखते थे कि शचींनन्दन गौरहरि उनके सिरहाने बैठकर संदेह दूर कर रहे हैं। यह स्वप्नकी बात उन्होंने एक बार भक्तोंसे कही थी। यह बहुत दिनकी बात थी, परन्तु श्रीअद्वैतप्रभु स्वप्नकी बातमें विश्वास नहीं करते थे। शचीनन्दन उनके इष्टदेव हैं और वे ये हीं हैं, इस बातको जानते हुए भी वे जान नहीं पाते थे। इच्छामय श्रीगौर-भगवान्‌ने इच्छा करके उनके मनमें यह संदेह बहुत दिनोंतक पोषण कर रखा था। क्यों रखा था, यह लीलारसविग्रह, रँगीले श्रीगौराङ्गप्रभु ही जानें।

(पृष्ठ ५७८ की टिप्पणीका शेष)

टीकामें श्रीपाद शंकराचार्य, श्रीपाद श्रीधरस्वामी एवं श्रीपाद मधुसूदन सरस्वतीने भी 'सर्वत:' शब्दका अर्थ 'सर्वत्र' ही लिखा है। अर्थात् 'सर्व' शब्दके उत्तर 'तसिल्' प्रत्यय सप्तमी विभक्तिमें ही प्रयुक्त हुआ है, यह बात उन सबने भी बतायी है।

अब यह प्रश्न उठ सकता है कि 'सर्वत:' शब्दका अर्थ यदि 'सर्वत्र' ही होता है तो महाप्रभुने 'सर्वत:' शब्दको 'मन्द' पाठ क्यों कहा एवं 'सर्वत्र' को ही सत्य पाठ क्यों बताया ?

इस प्रश्नका उत्तर यही हो सकता है कि 'सर्वत:' पाठ रहनेसे कोई-कोई पञ्चमी विभक्तिमें 'तसिल्' प्रत्यय हुआ है, मानकर उल्लिखित गीता-वाक्यका श्रुति-स्मृतिके विरुद्ध अर्थके प्रतिपादनके लिए चेष्टा कर सकते हैं। इसलिये ही महाप्रभुने कहा है, 'सर्वत्र' पाठ ही सत्य यानी यथार्थ पाठ है। इन्हीं महाप्रभुने श्रीकृष्ण-रूपसे अर्जुनके प्रति गीताका उपदेश किया है, अतएव गीताके किस श्लोकका, किस वाक्यका या किस शब्दका उनका अभीष्ट अर्थ क्या है, यह वे ही जानते हैं। उन्हींने इस समय अद्वैताचार्यको कहा है—'सर्वत्र' पाठ ही सत्य पाठ (अर्थात् 'सर्वत:' की जगह 'सर्वत्र' पाठ ग्रहण करनेसे ही उनका अभीष्ट अर्थ मिल पायगा)। अतएव महाप्रभुकी उक्तिके सम्बन्धमें तर्क-वितर्क समीचीन नहीं लगाता।

—डा० श्रीराधागोविन्द नाथ श्रीचैतन्यभागवत, मध्य खण्ड, अध्याय १०, पयार-संख्या १२८, १२९ की टीकामें।

प्रभुके श्रीमुखसे निकली सुधामिश्रित अपूर्व रसमय वाणी सुनकर श्रीअद्वैताचार्य प्रेमानन्दमें विह्वल होकर रोने लगे। आज उनका सारा संदेह दूर हो गया, इसीसे वे आनन्दित हो उठे। वे रोते-रोते प्रभुके चरण-कमलमें सिर रखकर गद्‌गद स्वरमें बोले—"मैं और क्या कहूँ, मेरा बड़प्पन है तो यही कि तुम मेरे नाथ हो !" (चै. भा. म. १०.१३३) इतनी बात कहते-कहते वे बाह्य ज्ञान-शून्य हो गये और परमानन्दमें मग्न होकर मूर्च्छित हो गये। प्रभुकी कृपासे वे क्षणमात्रमें प्रकृतिस्थ हो गये।

मुरारि और मुकुन्दपर कृपा

मुरारिगुप्त और मुकुन्दने श्रीअद्वैतप्रभुकी सेवा-शुश्रूषा करके उनकी मूर्च्छाभङ्ग की। शान्तिपुरनाथ उनकी ओर करुण दृष्टिसे देखकर हाथ जोड़कर श्रीगौर-भगवान्‌से निवेदन करने लगे—"प्रभो ! आप भक्तवत्सल हैं। आपकी कृपाके बलसे इन मुरारि और मुकुन्द आदि भक्तोंका हृदय दास्य-भावसे निर्मल हो गया है।" श्रीगौर-भगवान्‌ने मधुर हँसी हँसकर उत्तर दिया—"अद्वैत ! तुम नहीं जानते, मुरारि और मुकुन्दके अन्त:करणमें कुमति रहती है।" प्रभुकी यह बात सुनकर मुरारि और मुकुन्दका हृदय वज्राहतके समान काँप उठा। श्रीअद्वैतप्रभुने विस्मित होकर पुन: प्रभुसे पूछा—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"देव ! इनका दोष क्या है ?" प्रभुने उत्तर दिया—"मुरारिके अन्तःकरणमें भक्तिदेवीका अधिष्ठान नहीं हो पाता; क्योंकि पलाण्डुकी दुर्गन्धके समान अति-कटु अध्यात्म-चिन्तनमें अब भी इसका अत्यन्त आग्रह है। आज भी योगवासिष्ठ-शास्त्रमें इसका अत्यन्त उत्साह दीख पड़ता है।"

श्रीअद्वैतप्रभुने उत्तर दिया—"प्रभो ! अध्यात्म-चिन्तनमें दोष क्या है ?" श्रीगौर-भगवान्‌ने हँसकर कहा—"अद्वैत ! तुम ऐसा क्यों कह रहे हो ? जो आदमी निरन्तर अमृत-समुद्रमें विचरण करता है, उसको जैसे क्षुद्र गर्तके जलकी स्पृहा नहीं होती, उसी प्रकार सर्वमङ्गलमय भगवान् श्रीहरिमें जिसकी भक्ति है, उसकी कभी अध्यात्मकी बातोंमें रुचि नहीं होती।"

प्रभुकी बात सुनकर श्रीअद्वैतप्रभु चुप हो गये। मुरारिगुप्तका मुँह सूख गया। मुकुन्द म्रियमाण हो गये। थोड़ी देरके बाद श्रीअद्वैतप्रभुने पुनः श्रीभगवान्‌से पूछा—"प्रभो ! मुकुन्दने क्या अपराध किया है ?" प्रभुने मुकुन्दकी ओर ताककर हँसते हुए उत्तर दिया—"अद्वैत ! तुम नहीं जानते हो ?" मुकुन्दने यह सिद्धान्त बना लिया है कि भगवान्‌की श्रीमूर्ति चतुर्भुज है और भक्तिपूर्वक उसीकी उपासना करता है।"

श्रीअद्वैतप्रभुने उत्तर दिया—"प्रभो ! इस विषयमें आपका विचार क्या है ?" प्रभु बोले—"भगवान्‌की श्रीमूर्ति स्वभावतः द्विभुज है, परन्तु वह इच्छानुसार चतुर्भुज मूर्ति भी प्रकट कर सकते हैं; शास्त्रके मतसे नराकृति परम ब्रह्म मनुष्य-लक्षणसे आक्रान्त परमेश्वर गूढ़भावमें अवस्थित रहते हैं। परमात्मा मनुष्यके समान आकार-विशिष्ट हैं। शास्त्रमें परमेश्वरको 'नराकृति' कहकर उनके द्विभुजत्वको ही सिद्ध किया है।"

श्रीअद्वैतप्रभु यह उपदेश-वाणी सुनकर आनन्दसे विह्वल हो उठे। प्रभुके चरण-कमलोंमें प्रणिपात करके हाथ जोड़कर बोले—"हे पुरुषोत्तम ! हे देव !! आप ही अपना तत्त्व जानते हैं। आपने कृपा करके जो उपदेश दिया है, उससे हम कृतार्थ हो गये। अपने रूपके तत्त्वके विषयमें और भी उपदेश दीजिये !" प्रभुने हँसकर कहा—"अद्वैत ! तुमको अपने स्वरूपका दर्शन कराऊँगा।" यह सुनकर श्रीअद्वैतप्रभु आनन्दसे गद्‌गद हो गये। उनकी दोनों आँखोंसे झर-झर अश्रुधारा बह चली। उनके मुखसे फिर कोई बात न निकल सकी।

मुरारिगुप्त और मुकुन्द मनःकष्टसे प्रभुके सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उनका मुख शुष्क और मलिन हो गया। शत-अपराधीके समान दोनों दीनभावसे हाथ जोड़कर खड़े रहे। श्रीअद्वैतप्रभु प्रकृतिस्थ होकर श्रीगौर-भगवान्‌से बोले—"प्रभो ! मुरारि और मुकुन्द गुरुतर अपराधसे मर्मान्तिक व्यथा पा रहे हैं। आप भक्तवत्सल दयामय हैं। कृपा करके इनके प्रति प्रसन्न होइये। हे भगवन् ! दुर्धर्ष विषय-वासनारूपी कालकूटसे जर्जरित अङ्ग जिनकी शीतल छायासे शीतल होता है तथा जिनसे निरन्तर करुणा-मकरन्द स्रवित होता रहता है, उन कमल-विनिन्दित अपने अपूर्व चरणरूपी छत्रको कृपा करके इन दोनोंके मस्तकपर धारण करें।"

श्रीअद्वैतप्रभु जैसे ही मुरारि और मुकुन्दका पक्ष लेकर प्रभुके साथ बातें करने लगे, वैसे ही वे दोनों अश्रु-भरे नयनोंसे साष्टाङ्ग श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें जा गिरे। दारुण मनःकष्टसे वे फुफकार मारकर रोने लगे। प्रभुने हँसते-हँसते अपने अज-भव-वन्दित चरण-कमलको दोनोंके सिरपर रख दिया। भक्तगण प्रेमानन्दमें हरिध्वनि करने लगे। मुकुन्द और मुरारिके सारे मनके दुःख दूर हो गये। वे प्रभुकी कृपा प्राप्त करके आनन्दस्वरूप हो गये। श्रीगौर-भगवान्‌ने मुरारि और मुकुन्दके सिरपर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपने पाद-पद्म रखकर श्रीमद्भागवतका यह श्लोक पढ़ा—

नायं सुखापो भगवान् देहिनां गोपिकासुतः।
ज्ञानिनां चात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह॥

श्रीम. भा. १०.९.२१

—इस प्रकार उनको मधुर वचनोंसे सम्बोधन करके कहा—"हे मुरारि! हे मुकुन्द! तुमलोग अब अधिक इस प्रकारकी विजातीय वासनाका पोषण अपने मनमें न करना।"

मुरारि और मुकुन्द तब रोते-रोते अनुतप्त हृदयसे भागवतके इस श्लोकका पाठ करने लगे—

अहं हरे तव पादैकमूल-
दासानुदासो भवितास्मि भूयः।
मनः स्मरेतासुपतेर्गुणांस्ते
गृणीत वाक् कर्म करोतु कायः॥

श्रीम. भा. ६.११.२४

"हे भगवन्! जिनको एकमात्र तुम्हारे चरण-युगलका आश्रय है, मैं उन सब भाग्यवान् भक्तजनोंका पुनः दासानुदास बनूँगा और अब भी हूँ। अतएव तुम हमारे प्राणपति हो! मेरा मन निरन्तर तुम्हारे गुणोंका स्मरण करे, मेरी वाणी तुम्हारा गुण-कीर्तन करे, मेरा शरीर तुम्हारे कामोंमें रत रहे।"

श्रीगौर-भगवान्ने हँसकर उत्तर दिया—'तथास्तु।' मुरारि और मुकुन्द प्रेमानन्दमें अधीर होकर प्रभुके सामने मधुर नृत्य करने लगे। मुकुन्दने मधुर स्वरसे कीर्तनका सुर पकड़ा—

जय जय महाप्रभु जय गौरचन्द्र।
जय जय विश्वम्भर करुणार सिंधु॥
जय शचीसुत जय पण्डित निमाइ।
जय मिश्र पुरन्दर जय शची माइ॥
जय जय नवद्वीप जय सुरधुनी।
जय लक्ष्मी विष्णुप्रिया प्रभुर घरणी॥
जय जय नवद्वीपवासी भक्तगण।
जय जय नित्यानन्द अद्वैतचरण॥

श्रीवासादि भक्तवृन्द कीर्तनमें मत्त हो गये। श्रीगौर-भगवान् सुसज्जित पलंगपर बैठकर अपना गुण-गान सुन रहे हैं और स्वानुभवानन्दमें सिर हिला रहे हैं। उन्होंने मृदु-मधुर हँसीके साथ मुरारिको पास बुलाया। मुरारि हाथ जोड़कर अतिशय दीनभावमें प्रभुके सामने आकर खड़े हो गये। प्रभु बोले—"मुरारि! तुम मेरा रूप देखो।" मुरारि राम-भक्त साधक थे। उन्होंने देखा कि श्रीवासके आँगनमें सुसज्जित विष्णु-सिंहासनपर साक्षात् श्रीराम-जानकीकी युगल-मूर्ति विराज रही है। श्रीलक्ष्मण दाहिने हाथमें छत्र लेकर खड़े हैं। वानरगण स्तुति कर रहे हैं। श्रीगौराङ्ग-मूर्तिमें मुरारिगुप्तने अपने इष्टदेवका आविर्भाव देखा। देखते ही उनको आनन्द-मूर्च्छा हो गयी। महाजनगण मुरारिगुप्तको हनूमान्का अवतार कह गये हैं। प्रभु हुंकार-गर्जन करके मुरारिको पुकारकर बोले—

"अरे बंदर! भूल गया क्या? सीताचोर रावणने तुमको जलाना चाहा था, किन्तु तुमने तो उसकी पुरीको जलाकर उसके वंशका ही नाश कर दिया था। वही प्रभु मैं हूँ—यह मैं तुमको अपना परिचय दे रहा हूँ। मुरारि! उठो, तुम तो मेरे प्राण हो। मैं वही राघवेन्द्र हूँ और तुम वही हनूमान् हो। अपने जीवन-स्वरूप सुमित्रानन्दनको देखो, जिनके प्राणोंकी रक्षा तुमने गन्धमादन पर्वत लाकर की थी। और जिनके दुःखको देखकर तुम बहुत रोये थे। उन जानकीके चरणोंमें प्रणाम करो।"

(चै. भा. म. १०.११-१५)

प्रभुकी कृपावाणी सुनकर मुरारिकी मूर्च्छा भङ्ग हुई। वे उनके चरणोंमें लोटकर प्रेमानन्दमें आकुल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होकर रो पड़े। मुरारिके करुण-क्रन्दनकी रोरसे शुष्क काष्ठ भी द्रवित हो उठे। भक्तवृन्द मुरारिकी अवस्था देखकर उच्च स्वरसे रोने लगे। तब श्रीगौर भगवान्‌का कृपादेश हुआ—"मुरारि ! तुम अभीष्ट वर माँगो !" मुरारिने प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर हाथ जोड़कर कातर स्वरसे प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—

"प्रभो ! मैं और कुछ नहीं चाहता; बस, ऐसा करो कि मैं तुम्हारा गुण गाया करूँ। जहाँ-कहीं भी मेरा जन्म हो, वहाँ तुम्हारी स्मृति बनी रहे। तुम्हारे दास जहाँ हों, उन्हींके साथ मेरा वास हो। 'तुम प्रभु और मैं दास'—ऐसी भावना जहाँ न हो, वहाँ मुझे मत पटक देना। पार्षदोंसहित जहाँ-तहाँ आप अवतार लें, वहाँ मैं आपका दास बनूँ।"

(चै. भा. म. १०.१९-२३)

श्रीगौर-भगवान्‌ने 'तथास्तु' कहकर मुरारिके प्रति शुभ दृष्टिपात किया। भक्तवृन्द आनन्दसे जय-जयध्वनि करने लगे। मुरारिगुप्त प्रभुके शुद्ध दास थे। उनका दासाभिमान अतिशय प्रबल था। 'तुम प्रभु, मैं दास'—यह सर्वोत्तम दास्यभक्तिभाव है। 'चाहे किसी भी योनिमें जन्म क्यों न हो, भगवान्‌के चरणोंमें अचला भक्ति बनी रहे' दासाभिमानी भगवद्‌भक्तकी यह प्रार्थना श्रीभगवान्‌को अतिप्रिय है। भक्तचूड़ामणि प्रह्लादने श्रीभगवान्‌से यही प्रार्थना की थी।[1] महर्षि नारदने भी यही वर माँगा था।[2] भक्तगण ऐश्वर्य नहीं चाहते; श्रीभगवान्‌के चरण-कमलोंकी धूलिका-कण होकर उनका गुण-गान करनेसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है, ऐसा वे समझते हैं। मुरारिगुप्तके शुद्ध दास्यभावसे श्रीगौर-भगवान्‌ने परम संतुष्ट होकर उनको उनके अभीष्टदेव श्रीरामचन्द्रकी मूर्तिमें दर्शन देकर कृतार्थ किया था। इस बार उनको उनके इष्टदेवकी मूर्तिमें दर्शन देकर यह बतलाया कि वे सब अवतारोंके अवतारी हैं। पहले प्रभुने उनको वाराह-मूर्तिमें दर्शन देकर कृतार्थ किया था। इस बार उनके इष्टदेवकी मूर्तिमें दर्शन देकर उनको एकवारगी अपना लिया। मुरारि जड़वत् प्रभुके सामने हाथ जोड़कर खड़े हैं और अजस्र आँसू बहा रहे हैं। भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान् भक्तकी महिमा-कीर्तन करनेमें शतमुख हो जाते हैं। उन्होंने सब भक्तोंको सम्बोधन करके हुंकार-गर्जनपूर्वक कहा—

"सब लोग सुनो। एक बार भी जो मुरारिकी निन्दा करता है, उसका निस्तार कोटि गङ्गा-स्नानसे भी नहीं होगा। गङ्गा और हरिनाम ही उसका नाश कर देंगे। इसके हृदयमें गुप्तरूपसे मुरारि निवास करते हैं, इससे इसका 'मुरारिगुप्त' नाम योग्य है।" (चै. भा. म. १०.२८-३०)

श्रीगौर-भगवान्‌ने भक्तकी महिमा स्वमुखसे वर्णन करके सब लोगोंको भक्तियोगका माहात्म्य और उत्कर्ष समझा दिया। भक्तकी निन्दा करना महापाप है। श्रीभगवान्‌के भक्तकी निन्दा करनेपर स्वयं श्रीभगवान्‌की निन्दा होती है; क्योंकि भक्त और भगवान्‌में कोई भेद नहीं है। भक्तको भगवान्‌ने स्वयं बड़ा बनाया है। महाप्रकाश-लीलामें भगवान्-भावमें प्रभुने भक्तोंको भक्तकी महिमा बतलायी। मुरारिगुप्त उपलक्ष्यमात्र थे।

हरिदासपर कृपा

मुरारिगुप्तके प्रति प्रभुकी यह अपूर्व कृपा देखकर 'हा कृष्ण करुणासिन्धु ! हा गौराङ्ग

---

[1] नाथ योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम् ।
तेषु तेष्वच्युता भक्तिरच्युतास्तु सदा त्वयि ।।
—विष्णुपुराण १.२०.१८

[2] जनिर्भवतु मे ब्रह्मन् यासु यासु च योनिषु ।
न जहातुर्हरेर्भक्तिर्मामैष देहि मे वरम् ।।
—ब्रह्मवैवर्तपुराण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गुणनिधि'—कहकर भक्तवृन्द आकुलचित्त हो प्रेमाश्रु बहाने लगे। प्रभु परम आनन्दपूर्वक सुसज्जित पलंगपर बैठकर गरज-गरजकर पान चबा रहे थे और सब भक्तोंके ऊपर शुभ दृष्टिपात कर रहे थे। हरिदासके ऊपर प्रभुकी कृपादृष्टि हुई। उन्होंने हरिदासको अपने पास बुलाया। इन महापुरुषका परिचय पहले दे चुका हूँ। वे 'यवन हरिदास' के नामसे प्रसिद्ध थे। वे दैन्यके अवतार थे. प्रतिदिन तीन लाख हरिनाम-जप किये बिना हरिदास ठाकुर जल नहीं ग्रहण करते थे। उच्च हरि-संकीर्तनके आनन्दमें वे दिन-रात मग्न रहते थे। उनको विधर्मी यवनराजके द्वारा विशेषरूपसे उत्पीड़ित होना पड़ा। बाईस-बाजारमें बेंतसे मारकर उनका वध करनेका आदेश हुआ था। हरिनाम-माहात्म्यके बलसे ठाकुर हरिदासने इस कठिन उत्पीड़नको सहन करके भगवान्‌के नामकी महिमाका प्रचार-प्रसार किया था।

प्रभुने हरिदासको पास बुलाकर हँसते हुए आदरपूर्वक कहा—"हरिदास ! मेरा रूप देखो ! तुमलोगोंके लिए ही मैंने नदियामें अवतार लिया है।" हरिदास हाथ जोड़कर बड़े संकोचपूर्वक दूर ही खड़े रहे। उनके दोनों नेत्रोंसे अविरल प्रेमाश्रुधारा बह रही थी। श्रीगौर-भगवान् पूर्व कथा याद करके हरिदासको सम्बोधन करके मधुर वचन बोले—

"हरिदास ! मेरे इस देहसे तुम्हारा देह बड़ा है। तुम्हारी जो जाति है, मेरी भी निश्चय वही जाति है। पापी यवनोंने तुमको बड़ा दुःख दिया था, जिसका स्मरण करके मेरा हृदय फटा जाता है। जिस समय यवनलोग तुमको मुहल्ले-मुहल्लेमें मारते हुए घूम रहे थे, उस समय तुम्हारे दुःखको देखकर उन यवनोंको काट डालनेके लिए मैं वैकुण्ठसे चक्र लिये उतरा था। वे लोग तुमको प्राणान्त मार रहे थे; परन्तु तुम अपने मनमें उनकी मङ्गल-कामना कर रहे थे। अपनी मारकी तुमको चिन्ता नहीं थी। उस समय भी तुम उनका भला चिन्तन कर रहे थे। तुमको उनका भला सोचते देखकर मैं भी अपने बलसे काम नहीं ले पा रहा था। मैं चक्र उठाता, वह तुम्हारे कारण बिना चले व्यर्थ हो जाता। तुम्हारे ऊपर मार पड़ती देखकर मैं तुम्हारी पीठपर पड़ गया था और तुमपर पड़नेवाली मारको मैंने अपनी पीठपर ले लिया था। मैं मिथ्या नहीं कह रहा हूँ, ये देखो मारके चिह्न ! मेरी इच्छा अभी प्रकट होनेकी नहीं थी, परन्तु तुम्हारा दुःख न सह सकनेके कारण मुझे जल्दी प्रकट होना पड़ा। मेरे नाड़ा अद्वैतने तुमको भली-भाँति पहचाना है और उसने सब प्रकारसे मुझे बंदी बना लिया है।"

—इतना कहकर प्रभुने अपनी पीठपर कोड़ोंकी बेंतकी मारके निशान दिखाये।—प्रभुने हरिदासको जो बात कही, उसका कुछ विचार करूँगा। पहले श्रीगौर-भगवान् बोले—'मेरी इस देहसे तुम्हारी देह बड़ी है।' श्रीभगवान् भक्तकी देहमें विराजते हैं। भक्तके शरीरमें कष्ट हो तो उनको शारीरिक कष्टकी अनुभूति होती है। हरिदासकी पीठपर जब दुराचारी यवन-लोग बेंत मार रहे थे, प्रभु कहते हैं कि वह सारी बेंतकी चोट प्रभुने अपने श्रीअङ्गपर ले ली। उन्होंने अपने श्रीअङ्गको खोलकर हरिदासको आघातके सारे चिह्न दिखलाये। इसी कारण प्रभु बोले—'इस देहसे तुम्हारी देह बड़ी है।' भक्तद्रोही पाखण्डियोंको शिक्षा देनेके लिए भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने यह कहकर भक्तकी महिमाका प्रचार किया।

इसके बाद ही प्रभु बोले—"हरिदास ! तुम्हारी जो जाति है, उसीको मैं बड़ा मानता हूँ।" हरिदास

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यवनके अन्नसे पले होनेके कारण अपनेको सदा अतिहीन और नीच मानते थे। प्रभुने हरिदासको उपलक्ष्य करके भक्तवृन्दको विशुद्ध भागवतीय धर्म-तत्त्व समझाया। * भगवद्भक्तको यदि कोई शूद्र, व्याध अथवा चाण्डाल आदि सामान्य जातिरूप समझता है, वह निश्चय ही नरकगामी होता है। यह शास्त्रका उपदेश है।** इसी कारण प्रभुने हरिदासकी जातिकी बात चलाकर भक्तवृन्दको समझाया कि भक्त चाहे किसी जातिका क्यों न हो, वह सर्वापेक्षा महान् और सर्वपूज्य है।

उसके बाद प्रभु बोले कि भक्तद्रोहीको उपयुक्त दण्ड देनेके लिए वैकुण्ठसे वे भूतलपर अवतीर्ण हुए हैं। उनका सुदर्शनचक्र हरिदासको पीड़ा पहुँचानेवाले पाखण्डी यवनोंको दण्ड देनेमें असमर्थ हो गया; क्योंकि भक्त हरिदास उन पीड़ित करनेवालोंका किसी प्रकारसे भी अमङ्गल नहीं चाहते थे। भक्तके मनका भाव समझकर भक्तवाञ्छा-कल्पतरु श्रीभगवान्‌को कार्य करना पड़ता है। भक्त हरिदास अपने ऊपर अत्याचार करनेवालोंके ऊपर किसी प्रकारका उत्पीड़न देखना नहीं चाहते थे। उनके सामने सुख-दुःख, मानापमान—सब बराबर है। शत्रुके उत्पीड़न को खुशी-खुशी सहन करना उन्होंने सीखा है। वे नहीं चाहते थे कि उनको उत्पीड़ित करनेवालोंको भगवान् दण्ड दें। इसी कारण श्रीभगवान्‌का सुदर्शन-चक्र यहाँ विफल हो गया। तब वे क्या करें? अपने प्राणोंसे भी प्रिय भक्तका उत्पीड़न जब उनसे देखा न गया तो वे स्वयं जाकर उनके पीछे आविर्भूत हुए। भक्तके लिए श्रीभगवान् सब-कुछ कर सकते हैं, जलते हुए अनलका पान कर सकते हैं। स्वेच्छासे उनके किंकर बन सकते है। भक्तको छोड़कर भगवान् और कुछ नहीं जानते। भक्तके समान अनन्त भुवनोंमें और कोई नहीं है। (चै. भा. म. १०.४७,४८)

साधु-भक्तोंका इस प्रकार उत्पीड़न होनेपर श्रीभगवान्‌का आविर्भाव होता है। दुर्जन पाखण्डी-लोगोंके द्वारा उनका जब इस प्रकार उत्पीड़न होता है, तब पाखण्डियोंका दलन करनेके लिए श्रीभगवान्‌को भूतलमें अवतीर्ण होना पड़ता है—

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

गीता. ४.८

—यह श्रीभगवान्‌के श्रीमुखसे निकली वाणी है। अतएव प्रभुने हरिदाससे कहा—

जे वा गौण छिल मोर प्रकाश करिते।
शीघ्र आइलुँ तोर दुःख ना पारों सहिते॥

चै. भा. म. १०.४४

दयामय भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीमुखसे ये सब करुणापूर्ण बातें सुनकर भक्त हरिदासके हृदयमें महान् आत्मग्लानि उत्पन्न हुई। वे हाहाकार करते हुए छाती पीट-पीटकर रोते हुए पृथ्वीपर

---

* विप्राद् द्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभ-
पादारविन्दविमुखात् श्वपचं वरिष्ठम्।
मन्ये तदर्पितमनोवचने हितार्थ-
प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः॥

श्रीमद्भागवत ७.९.१०

** शूद्रं वा भगवद्भक्तं निषादं श्वपचं तथा।
वीक्षते जातिसामान्यात् स याति नरकं ध्रुवम्॥

—ब्रह्मवैवर्त्तपुराण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गिर पड़े और एकबारगी मृतवत् निस्सपन्द हो गये। उनके शरीरकी श्वास-प्रश्वास-क्रिया बंद हो गयी। चेहरेका रङ्ग बदल गया। भक्तवृन्द बहुत भयभीत होकर उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे। तब प्रभु अपने प्रिय भक्त हरिदासकी धूलि-धूसरित देहकी ओर एक बार शुभ दृष्टिपात करके मधुर वचन बोले—"हरिदास ! उठो, जी-भरकर मेरे प्रकाशको देखो !"

प्रभुके कृपादेशसे हरिदासको बाह्य ज्ञान हुआ। परन्तु वे फिर प्रभुके श्रीवदनकी ओर ताक न सके। उनके क्षुद्र जीवनके लिए दयामय प्रभुने इतना कष्ट सहन किया है—यह सोचकर विषम अनुपातकी अग्निमें उनका हृदय धक्-धक् जल उठा। वे फुफकार मारकर रोते हुए श्रीवासके आँगनकी धूलिमें लोटने लगे। उनको क्षण-क्षणमें मूर्च्छा आने लगी। उनका अङ्ग-प्रत्यङ्ग कम्पित हो उठा, सारी इन्द्रियाँ शिथिल जान पड़ने लगीं। वे प्रभुके अपरूप-रूपके दर्शनानन्द और सुखसे भी वञ्चित हो गये। वे रोते-रोते बिल्कुल अन्धेके समान हो गये। भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्ने उनको शक्ति प्रदान की। प्रभुकी कृपासे हरिदास बहुत कष्टपूर्वक उठकर बैठे। बैठकर सिर नीचा करके फिर रोने लगे। करुणामय प्रभुने करुणा करके हरिदासके ऊपर शुभ दृष्टिपात किया। हरिदास अब जोर लगाकर धूलि-धूसरित कम्पित कलेवरमें उठ खड़े हुए। दयामय प्रभुके चरणोंमें उनको अपने मनकी अनेक बातें निवेदन करनेकी साध थी; परन्तु मुखसे बात न निकली। मनोवेदनासे वे अजस्र आँसू बहाने लगे। अन्तर्यामी प्रभुने भक्तके मनोभावको देखकर उनके हृदयमें बल प्रदान किया। तब हरिदासका मुँह खुला। वे रोते-रोते गद्गद स्वरमें करुणामय प्रभुके चरणोंमें अतिशय दीनभावसे हाथ जोड़कर निवेदन करने लगे—

"हे मेरे बाप ! हे प्रभो !! हे जगन्नाथ !!! मुझ पातकीके ऊपर कृपा करो; मैं तुम्हारे चरणोंमें पड़ा हूँ। मैं गुणहीन, अधम, जातिसे बाहर हूँ। मैं भला, तुम्हारे चरित्रका क्या वर्णन कर सकता हूँ। मुझे देख लेनेसे पाप लगता है, छू लेनेसे स्नान करना पड़ता है। ऐसा मैं तुम्हारे चरित्रका क्या वर्णन करूँ। परन्तु आप अपने श्रीमुखके एक वचनको सदा सत्य करते आये हैं कि जो जन तुम्हारे श्रीचरणोंका स्मरण करता है, वह चाहे कीटके समान ही हो, तब भी तुम उसको कभी नहीं छोड़ते; परन्तु विपरीत चलनेवाला चाहे राजा भी क्यों न हो, उसे भी तुम नीचे गिरा देते हो। केवल स्मरणमात्र करनेसे तुम दीनकी रक्षा कर देते हो; परन्तु स्मरण-विहीन मुझमें तो यह बल भी नहीं है। सभाके बीच द्रौपदीको नग्न करनेके लिए पापी दुर्योधन और दुःशासन उसे ले आये थे; उस समय संकटमें पड़ी द्रौपदीने तुम्हारा स्मरण किया था। उसके प्रभावसे तुम उसके वस्त्रमें प्रवेश कर गये, जिससे उसका वस्त्र अनन्त हो गया। तब भी वे दुष्ट इस रहस्यको नहीं समझ सके। किसी समय पार्वतीको डाकिनियोंने घेर लिया और उसे खाना चाहा। पार्वतीने तुम्हारा स्मरण किया, तब तुमने प्रकट होकर डाकिनियोंको दण्ड देकर वैष्णवी पार्वतीकी रक्षा की। ऐसा जो तुम्हारा स्मरण है, मैं पापी तुमसे विहीन हूँ। हे बापजी ! मुझे अपने चरणोंकी शरण दो ! दुष्ट हिरण्यकशिपुने प्रह्लादको विष दिया, सर्पसे डँसवाया, अग्निमें जलाया, पत्थर बाँधकर जलमें डुबाया। तुम्हारे चरणोंके स्मरणके प्रभावसे प्रह्लाद सब आपदाओंसे मुक्त हो गया। पाण्डवोंने दुर्वासाके भयसे तुमको स्मरण किया, तब तुमने प्रकट होकर हँडियामें साग़का एक तिनका मात्र कहीं शेष था, उसको खाकर उनकी रक्षा की थी। ये सब भक्त तुम्हारा स्मरण निरन्तर करते थे, अतएव इनका उद्धार हुआ तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अजामिलके स्मरणकी महिमा तो अपार है। वह धर्मसे सर्वथा शून्य था। उसने यमदूतोंके भयसे पुत्रके स्नेहमें पुत्रका नाम 'नारायण' पुकारा; उस स्मरणसे ही उसकी सब आपदाएँ दूर हो गयीं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। हरि-स्मरण ही भक्तकी सम्पदा है। ऐसा जो आपका चरण-स्मरण है, उससे तो मैं शून्य हूँ। तुम्हारे दर्शन पानेका मेरा क्या अधिकार है! तथापि हे प्रभो! तुम मुझे नहीं छोड़ना। इस एक बात को छोड़कर मैं और कुछ नहीं चाहता।" (चै. भा. म. १०.५७-८२)

श्रीगौर-भगवान् प्रेमभावमें परम आविष्ट होकर सिर हिलाते हुए हरिदासकी आवेगपूर्ण आत्मनिवेदन-स्तुतिको सुन रहे हैं और प्रेमानन्दमें अधीर होकर बीच-बीचमें हुंकार-गर्जन कर रहे हैं। सब भक्तवृन्द चुपचाप हाथ जोड़कर खड़े-खड़े हरिदासके द्वारा प्रभुकी स्तुति सुन रहे हैं। सभी मानो मन्त्र-मुग्ध हैं। हरिदासने रोते-रोते श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें निवेदन किया—"हे प्रभो! तुम्हारा दर्शन करनेका अधिकार मुझको नहीं है। मैं केवल एक वर तुमसे माँगता हूँ और कुछ नहीं चाहता।"

इतनी बात कहकर दैन्यके अवतार हरिदास हाथ जोड़कर प्रभुकी अनुमतिकी प्रतीक्षा करने लगे। श्रीगौर-भगवान् प्रेमानन्दमें अधीर होकर हुंकार-गर्जन करते हुए बोले—

"हरिदास! मेरा 'सब कुछ तुम्हारा है' तुम्हारे लिए कुछ भी मुझे अदेय नहीं है।"

साहस पाकर हरिदासने तब कातर स्वरसे हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—

"हे प्रभो! मैं तो अल्प-भाग्य हूँ, लेकिन आशा बहुत बड़ी करता हूँ। मैं यही चाहता हूँ कि जो सब दास तुम्हारे श्रीचरणका भजन करते हैं, उनका शेस उच्छिष्ट प्रसाद मेरा भोजन हो! मेरे प्रत्येक जन्ममें यही एक भोजन हो और वही शेष प्रसाद ही मेरी क्रिया, मेरा कुल और मेरा धर्म हो! तुम्हारे स्मरणसे शून्य यह मेरा पाप-जन्म है। इसको अपने दासोंका उच्छिष्ट प्रसाद देकर सफल करो! मुझे ऐसा लगता है कि यह मेरा अपराध है कि मैं परम पदको चाहता हूँ कि जिसके मैं योग्य नहीं हूँ। हे नाथ! हे मेरे बाप विश्वम्भर! मैं तो मरा हुआ हूँ, मेरे अपराधोंको क्षमा करना। हे शचीनन्दन! मुझपर कृपा करो, मुझे कुत्ता बनाकर भक्तोंके घरमें रख दो!"

(चै. भा. म. १०.८४-९०)

भक्तचूड़ामणि हरिदास दैन्यके अवतार थे। उनकी यह वर-प्रार्थना जगत्‌में अतुलनीय है। उन्होंने प्रभुसे कहा—"मैं अत्यन्त अभागा क्षुद्र जीव हूँ, कीटसे बदतर हूँ। मेरे लिए तुम्हारे चरणोंकी प्राप्तिकी आशा दुराशामात्र है। तुम्हारे दासानुदासका उच्छिष्ट भोजन-पात्र पाकर ही मैं कृतार्थ हो जाऊँगा; मेरी सारी आशा पूर्ण होगी। अपने भक्तके द्वारका मुझे कुत्ता बनाकर रखो, यही मेरी एकान्त प्रार्थना है।" भक्तकी महिमाके प्रकाशनका ऐसा समुज्ज्वल दृष्टान्त धर्म-जगत्‌के इतिहासमें कहीं भी देखनेमें नहीं आता। जैसे करुणाके अवतार, दयाके सागर हमारे भक्तवत्सल गौरहरि हैं, उसी प्रकार उनके प्रियतम भक्त दैन्यके अवतार हरिदास ठाकुर हैं। जैसे हमारे प्रभु परम करुणामय हैं, वैसे ही उनके परम निरभिमानी भक्त हैं। करुणामय श्रीगौर-भगवान्‌का करुण-हृदय हरिदासकी दैन्योक्ति सुनकर मानो विदीर्ण हो गया। वे भक्त-प्रेमाधिकताके कारण परम विह्वल हो गये। जब हरिदास बारम्बार विनती करके अपनी इस अपूर्व प्रार्थनाको दुहराने लगे तो भक्तवत्सल प्रभु अब अधिक स्थिर न रह सके। वे गद्‌गद स्वरमें मधुर भाषामें अत्यन्त स्नेह-पूर्वक हरिदाससे बोले—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"मेरे हरिदास ! सुनो ! एक दिनके लिए भी जिसने तुम्हारे साथ वास किया अथवा तिलार्द्ध समयके लिए भी तुम जिससे बात कर लो, वह अवश्य ही मुझे प्राप्त करेगा, यह बात अन्यथा नहीं हो सकती। तुम्हारी जो श्रद्धा-भक्ति करेगा, वह मेरी करेगा। मैं निरन्तर तुम्हारे शरीरमें स्थित हूँ। तुम-जैसे सेवकोंसे ही मेरी ठकुराई है। तुमने सदाके लिए मुझे अपने हृदयमें बाँध लिया है। मेरे और मेरे भक्तोंके प्रति तुम्हारा कोई अपराध नहीं है। मैं तुमको प्रेम-भक्ति-दान करता हूँ।"

(चै.भा.म. १०-९२-९६०)

सारे भक्तवृन्द हरिदासके प्रति प्रभुकी यह अपूर्व वरदान-वाणी सुनकर बड़े आनन्दसे जय-ध्वनि करने लगे। इससे हरिदासका दैन्य और आर्तभाव चौगुना बढ़ता देखकर भक्तवत्सल कमल-लोचन प्रभुके करुण नयनोंमें अश्रुधारा दीख पड़ी। हरिदास उसे न देख सके; क्योंकि वे सिर नीचा करके प्रभुके चरणोंमें गिरकर धूलि-धूसरित होकर अजस्त्र आँसू बहा रहे थे। कृपानिधि प्रभुकी इस अयाचित अपार करुणाको यादकर आत्मग्लानिसे वे आकुलचित्त हो आर्तनाद कर रहे थे। प्रभुके श्रीवदनकी ओर उनका ध्यान न था। यदि वे प्रभुके इस समयके श्रीमुखका कातर भाव देखते, उनके कमल-नयनकी अश्रुधारा देखते तो उनके लिए जीना दूभर हो जाता। ठाकुर वृन्दावनदासने लिखा है—"जाति, कुल, क्रिया, धन इत्यादिसे कुछ नहीं होता, प्रेम-धन और आर्तिके बिना श्रीकृष्ण नहीं मिलते।" (चै.भा.म. १०.९८)

दैन्य और आर्तिभाव प्रेमभक्ति-साधनका प्रधान अङ्ग है। इसी कारण प्रभुने 'शिक्षाष्टक' में '**तृणादपि सुनीचेन**' श्लोककी अवतारणा करके अपने भक्तवृन्दको वैष्णवोचित दैन्यकी शिक्षा दी है। उन्होंने कलिके जीवोंको स्वयं आचरण करके इस सर्वश्रेष्ठ साधनाङ्गकी शिक्षा दी हैं।

हरिदास ठाकुरके तत्त्व और पुण्य-जीवनकी कथा पहले कुछ कह चुका हूँ। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावन ठाकुर अति स्पष्ट शब्दोंमें हरिदास ठाकुरकी महिमा लिख गये हैं। उसे नीचे उद्धृत करते हैं।

महाभक्त हरिदास जय जय जय।
हरिदास-स्मरणे सकल पाप क्षय॥
केहो बोले 'चतुर्मुख जेन हरिदास'।
केह बोले 'प्रह्लादेर जेन परकाश'॥
सर्वमते महाभागवत हरिदास।
चैतन्य-गोष्ठीर सहित जाँहार विलास॥
ब्रह्मा शिव हरिदास हेन भक्त-सङ्ग।
निरवधि करिते चित्तेर बड़ रङ्ग॥
हरिदास स्पर्श-वाञ्छा करे देवगण।
गङ्गाओ वाञ्छेन हरिदासेर मज्जन॥
स्पर्शेर कि दाय, देखिलेइ हरिदास।
छिण्डे सर्वजीवेर अनादि कर्मपाश॥

(चै.भा.म. १०-१०४-१०९)

हरिदासपर अयाचित कृपा

हरिदासके प्रति कृपावृष्टि करके महा-महिमामय श्रीगौर-भगवान्‌ने आँगनके चारों ओर शुभ दृष्टिपात किया। उस समय एक पहर रात बीत गयी थी। नदियाके सारे भक्तगण आज श्रीवासके आँगनमें उपस्थित थे। उनमें श्रीधरको न देखकर प्रभुने व्याकुलतापूर्वक भक्तोंको आज्ञा दी—

"श्रीधरको जल्दी बुलाकर लाओ, वह आकर मेरा प्रकाश-विधान देखे। वह बड़ा दुःख पाता हुआ भी निरन्तर मेरा चिन्तन करता है।"

इसके साथ ही करुणानिधि श्रीगौर-भगवान्‌ने एक और विशेष आज्ञावाणी प्रकट की। वह कृपादेश-वाणी है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"तुम लोग नगरके अन्तमें जाकर रहो; वहाँ जिसको भी मुझे बुलाते पाओ, उसको पकड़ लाना।"

कुछ भक्तलोग प्रभुकी प्रथम आदेश-वाणी सुनते ही श्रीधरकी कुटीकी ओर दौड़े। दूसरे कुछ लोग परम आनन्दचित्तसे प्रभुके द्वितीय कृपादेश-का पालन करनेके लिए नगरके चारों ओर चल पड़े।

यहाँ करुणा-सागर श्रीगौराङ्गप्रभुकी अपार कृपाकी बात कुछ विचारणीय है। कृपालु पाठक-वृन्द कृपा करके थोड़ी देरके लिए धैर्य धारण करें।

पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है—

मोरे ना मानिले सब लोक हबे नाश।
एइ लागि कृपार्द्र प्रभु करिला संन्यास॥
संन्यासि बुद्धि ये मोरे करिबे नमस्कार।
तथापि खण्डिबे दुःख पाइबे निस्तार॥
हेन कृपामय चैतन्य ना भजे जेइ जन।
सर्वोत्तम हइलेओ तार असुरे गणन॥
अतएव पुनः कहों ऊर्ध्वबाहु हैया।
चैतन्य-नित्यानन्द भज कुतर्क छाड़िया॥
यदि वा तार्किक कहे—तर्क से प्रमाण।
तर्कशास्त्रे सिद्ध जेइ, सेइ सेव्यमान॥
श्रीकृष्णचैतन्य दया करह विचार।
विचार करिले चित्ते पाबे चमत्कार॥
बहु जन्म करे यदि श्रवण-कीर्तन।
तबू नाहि पाय कृष्णपदे प्रेमधन॥
कृष्ण यदि छूटे भक्ते भुक्ति-मुक्ति दिया।
कभू प्रेमभक्ति ना देन राखे लुकाइया॥
हेन प्रेम श्रीचैतन्य दिल यथा-तथा।
जगाइ-माधाइ पर्यन्त अन्येर का कथा॥
स्वतन्त्र ईश्वर—प्रेम निगूढ़ भाण्डार।
विलाइल जारे तारे, ना कैल विचार॥
अद्यापिह देख—चैतन्य नाम जेइ लय।
कृष्ण प्रेमे पुलकाश्रु विह्वल से हय॥
'नित्यानन्द' बलिते हय कृष्ण प्रेमोदय।
*आउलाय सकल अङ्ग अश्रुगङ्गा बय॥
कृष्णनाम करे अपराधेर विचार।
'कृष्ण' बलिते अपराधीर ना हय विकार॥
एक कृष्णनामे करे सर्व पाप नाश।
प्रेमेर कारण भक्ति करेन प्रकाश॥
प्रेमेर उदये हय प्रेमेर विकार।
स्वेद-कम्प-पुलकादि गद्गदाश्रुधार॥
अनायासे भवक्षय, कृष्णेर सेवन।
एक कृष्णनामेर फले पाइ एत धन॥
हेन कृष्ण नाम यदि लय बहुबार।
तबू यदि प्रेम नहे, नहे अश्रुधार॥
तबे जानि अपराध ताहाते प्रचुर।
कृष्ण नाम बीज ताँहा ना हय अङ्कुर॥
चैतन्य-नित्यानन्दे नाहि ए सब विचार।
नाम लैते प्रेम देन, बहे अश्रुधार॥
स्वतन्त्र ईश्वर प्रभु अत्यन्त उदार।
ताँरे ना भजिले कभू ना हय निस्तार॥
अरे मूढ़ लोक! शुन चैतन्यमङ्गल।*
चैतन्य महिमा जाते जानिबे सकल॥
कृष्णलीला भागवते कहे वेदव्यास।
चैतन्यलीलार व्यास—वृन्दावनदास॥
वृन्दावनदास कैल चैतन्यमङ्गल।**
जाहार श्रवणे नाशे सर्व्व अमङ्गल॥

---

* आउलाय=प्रेम-विकार होनेपर

** श्रीश्रीचैतन्यभागवतका नाम ही पहले श्रीचैतन्य-मङ्गल था।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चैतन्य-निताइर जाते जानिये महिमा।
जाते जानि कृष्णभक्ति सिद्धान्तेर सीमा॥
भागवते जत भक्तिसिद्धान्तेर सार।
लिखियाछेन इहा जानि करिया उद्धार॥
चैतन्यमङ्गल शुने यदि पाखण्डी यवन।
सेह महावैष्णव हय ततक्षण॥
मनुष्य रचिते नारे ऐछे ग्रन्थ धन्य।
वृन्दावनदास मुखे वक्ता श्रीचैतन्य॥
वृन्दावनदास पदे कोटि नमस्कार।
ऐछे ग्रन्थ करि जेंहो तारिल संसार॥

चै. भा. आ. ८.९-३६

श्रीगौराङ्ग-अवतार कृपाका अवतार है, करुणाका अवतार है, दयाका अवतार है। जीवके प्रति इतनी कृपा, इतनी दया, इतनी करुणा श्रीभगवान्‌ने किसी भी अवतारमें नहीं की। ऋषि-महात्मागण श्रीगौराङ्गप्रभुकी वन्दना कर गये हैं—

विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ,
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ॥

करुणाके अवतार, दयाके महासागर श्रीगौर-भगवान्‌ने देखा कि उनका प्रियतम भक्त खोला बेचनेवाला दरिद्र ब्राह्मण श्रीधर उनकी महा-प्रकाश-लीला का दर्शन करने नहीं आया। उसको यह परम अद्‌भुत अपूर्व लीलारङ्ग दिखलाना पड़ेगा। श्रीधर बड़ा दुःखी, बड़ा ही दीन-हीन कंगाल है। कंगालके प्रभुने अपने कंगाल भक्तको स्मरण किया। दीनदयाल प्रभुने अपने दीन-हीन-कंगाल भक्तको स्मरण करके अपने दीनदयाल-नामको पूर्णतः सार्थक किया। भक्तवृन्दके प्रति प्रभुका कृपादेश हुआ कि—"मेरे श्रीधरको ले आओ! वह मेरा दर्शन करके कृतार्थ हो जाय।" इसीको अयाचित कृपा, अहैतुकी करुणा कहते हैं।

करुणाके अवतार श्रीगौर-भगवान्‌की दयापर यहाँ कुछ विचार करें। श्रीधर दरिद्र ब्राह्मण थे, खोला-पत्ता बेचकर उदरपूर्त्तिका जुगाड़ करते थे और अपनी कुटियामें बैठकर भगवान्‌के नामका कीर्तन करते थे। परम नारायण, गोलोकके स्वामी श्रीवासके आँगनमें आज पूर्णरूपसे आत्मप्रकाश करनेके लिए बैठे हैं, पूर्ण ऐश्वर्य दिखला रहे हैं। उनके सभी भक्तलोग मनकी साधसे आँखें भरकर उनके परम अद्‌भुत अपरूप-रूपका दर्शन करके जीवन सार्थक कर रहे हैं। श्रीगौर-भगवान्‌ने देखा कि उनका दीन-हीन परम प्रियतम निजजन इनमें नहीं है, खोला बेचनेवाला उनका दरिद्र भक्त श्रीधर अभी नहीं आया। ऐसे दयाके अवतार, करुणाके महासागर हमारे प्रभुने अपने उस दीन-हीन परम भक्तको स्मरण किया। उनको पकड़ लानेके लिए कृपादेश किया। उसके साथ ही कह दिया कि नदियानगरमें वह जहाँ उनका नाम जप रहा हो, उसे पकड़कर लाओ और उनकी, परम अद्‌भुत अपूर्व स्वयं रूपका प्रकाश, श्रीमूर्तिका वह दर्शन करे।

ऐसा कंगालका ईश्वर, ऐसा दयालु ईश्वर, ऐसा दीनोंको शरण देनेवाला, अनाथोंको शरण देनेवाला, पतित-पावन, कृपावतार क्या और कहीं देखा है? इस अनन्त जगत्‌में षडैश्वर्यपूर्ण श्रीभगवान्‌के सब अवतारोंकी लीला-कथा खोज-खोजकर देखें, उनकी दयाके ऊपर विचार करके देखें, पूज्यपाद कविराज गोस्वामीका अक्षर-अक्षर आपको ध्रुव सत्य प्रतीत होगा। इस साधक-चूड़ामणि, इस भक्त-शिरोमणिने कहा है कि अनेक जन्म तक श्रीभगवान्‌का नाम-श्रवण-कीर्तन करनेपर भी प्रेमधन नहीं मिलता, श्रीकृष्णके चरणोंमें प्रेमभक्तिका उदय नहीं होता। प्रेमधन गोलोककी सम्पत्ति है, श्रीभगवान्‌का निज गुप्त वित्त है। अबतक अर्थात् सत्ययुग, त्रेता और द्वापर-पर्यन्त उन्होंने इसको यत्नसे गुप्त रखा था। प्रभुने श्रीगौराङ्ग-अवतारमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कलिके जीवोंके प्रति कृपा-परवश होकर अपने इस गुप्त वित्तको बुला-बुलाकर जिस-तिसको दे डाला–*

हेन प्रेम श्रीचैतन्य दिल यथा तथा ।
जगाइ-माधाइ पर्यन्त अन्येर कि कथा ।।

चै. च. आ. ८.१७

अतएव वैष्णव महाजनगण लिख गये हैं—

एमन दयाल ठाकुर हय नाइ, हबे नाइ ।
कि साधने ताँहार चरणे स्थान पाइ ।।

श्रीगौराङ्गके चरणोंके आश्रयके बिना गोलोककी सम्पत्ति प्रेमभक्ति प्राप्त नहीं होती। भक्ति मिल सकती है, परन्तु प्रेमभक्ति प्राप्त नहीं होती। इस प्रेमभक्तिके दाता एकमात्र नदियाके अवतार श्रीश्रीमन्महाप्रभु और उनके नित्य परिकरवर्ग हैं। श्रीगौर-नित्यानन्द नाममें नामापराधका विचार नहीं है—

नाम लैते प्रेम देन बहे अश्रुधारा ।

चै. च. आ. ८.२७

यह प्रत्यक्ष प्रमाणित बात है। 'हा गौराङ्ग ! हा निताई !!' कहकर एकबार निष्कपटभावसे दिल खोलकर श्रीगौर-नित्यानन्दको पुकारनेपर वे लोग वही **'अनर्पितचरी'** गोलोककी गुप्त सम्पत्ति प्रेमधन अकातर भावसे प्रदान करते हैं। हृदयमें प्रेम न होनेपर हृदय द्रवित नहीं होता, हृदय द्रवित हुए बिना नयनोंसे प्रेमाश्रुधारा प्रवाहित नहीं होती और हृदय सरस हुए बिना उसमें श्रीभगवान्का आसन नहीं होता।

श्रीगौर-भगवान्की अन्तिम कृपादेश-वाणी उनके करुणावतार नामकी पूर्ण परिचायिका है। उन्होंने भक्तवृन्दको कहा—

नगरेर प्रान्ते गिया थाकह बसिया ।
जे मोरे डाकये ताहे आनह धरिया ।।

चै. भा. म. ९.१३७

इसे ही कहते हैं केश पकड़कर जीवोद्धार करना। प्रभुने कहा कि जो उनको पुकारता हो, उसे पकड़कर ले आओ ! इस अपूर्व कृपादेशके प्रचारमें युगधर्मप्रचारक श्रीगौराङ्गप्रभुने युगधर्म हरिनाम-संकीर्तनकी मर्यादा रखी। उन्होंने आदेश दिया कि नगरमें जो लोग हरिनाम-संकीर्तन करते हैं, अर्थात् जो महात्मागण युगधर्मका पालन करते हैं, उनको ले आओ ! नवद्वीपमें योगी, तपस्वी, ब्रह्मचारी अनेक थे। प्रभुने उनको नहीं बुलाया, बल्कि उनका नामतक न लिया।

श्रीगौर-भगवान्की यह कृपा पूर्णतः अयाचित और अहैतुकी थी। श्रीधर आदि दीन-हीन कंगाल भक्तोंने मनमें भी न सोचा होगा कि प्रभु इस समय इस प्रकार उनको स्मरण करेंगे; परन्तु हमारे दयालु प्रभुने वही किया। श्रीगौराङ्गप्रभुने स्वयं आचरण करके अपने नित्य पार्षदोंको सर्वधर्मशिक्षा दी थी। यहाँ भी दीन-हीन भक्तवृन्दको अयाचित भावसे कृपा करके अपने नित्य पार्षदोंको कलिग्रस्त जीवोंके उद्धार-कार्यकी प्रणाली सिखलायी। प्रभुकी इस शिक्षाके बलसे अबतक गौरभक्त कृपालु साधकवृन्द कृपा करके कलिग्रस्त जीवका केश पकड़कर इसी प्रकार उद्धार करते हैं। उनके

---

*द्वापरमें श्रीकृष्ण भगवान्ने केवल मुट्ठीभर व्रजाङ्गनाओंको अपना निज गुप्त प्रेमधन प्रदान किया था। परन्तु वे नित्यसिद्धा थीं। कलिके जीव साधन भजन-रहित, दुर्बल, असहाय हैं, श्रीभगवान्से क्या लेना चाहिये—यह भी नहीं जानते; अतएव दीनदयाल श्रीगौर-भगवान्ने इस युगमें बुला-बुलाकर प्रेमदान किया।

—ग्रन्थकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात। श्रीगौर-भगवान् पतितपावन, अधम-उधारण हैं। जिसका कोई नहीं, जिसका सब अनादर करते हैं, जिसके पापोंका अन्त नहीं है, दुष्कृतिकी सीमा नहीं है, उसको श्रीगौर-भगवान्ने आदर करके गोदमें लेकर हरिनाम-महामन्त्रका उपदेश देकर ऋषि-मुनि-तुल्य पूज्यास्पद बना दिया है। इसके साक्षी जगाइ-माधाइ हैं। कविराज गोस्वामीने लिखा है—

महाकृपापात्र प्रभुर जगाइ-माधाइ।
पतितपावन गुणेर साक्षी दुइ भाइ॥

चै. च. आ. १०.११८

युगानुवर्ती भजनसे पराङ्मुख दुर्भाग्य-कलिग्रस्त जीवके आध्यात्मिक मङ्गलके लिए इतनी बात कही गयी। कृपालु पाठकवृन्द! अपराध क्षमा करके अब लीलारसका आस्वादन करें।

श्रीधरपर कृपा

खोला बेचनेवाले श्रीधरकी बात कह रहा हूँ। इन भक्तचूड़ामणिका विशेष परिचय पहले कुछ-कुछ दे चुका हूँ। वे नदियाके निवासी थे। वे चार प्रहर-रात जागकर उच्च स्वरसे मधुर हरिनाम-संकीर्तन करते थे। नदियाके पाखण्डीलोगोंको इससे रातको नींद नहीं आती थी। वे लोग इन महापुरुषको कटु भाषामें अनेक गालियाँ देते थे। अन्तमें रातके तीसरे प्रहरमें प्रेमानन्दमें विभोर होकर श्रीधर जब उच्च स्वरसे मधुर हरिनाम-कीर्तन कर रहे थे, उसी समय प्रभुका कृपादेश प्राप्त किये भक्तगण उनकी कुटीके द्वारपर जोरसे धक्का मारकर बोले—

चल चल महाशय! प्रभु देख गिया।
आमरा कृतार्थ हइ तोमा परशिया॥

चै. भा. म. ९.१५३

प्रभुका नाम सुनते ही प्रेमानन्दमें श्रीधर एकबारगी मूर्च्छित हो गये। वे नाम और नामीका अभेद जानकर परम आनन्दसे श्रीभगवान् नाम ले रहे थे। श्रीगौर-भगवान्के कानोंमें भक्तका करुण आह्वान पहुँचा था, इसी कारण उन्होंने यह कृपादेश प्रसारित किया। भक्तचूड़ामणि श्रीधर प्रभुकी इस कृपानुभूतिका आभास पाकर ही मानो आनन्दसे मूर्च्छित हो गये। श्रीधरको मूर्च्छित देखकर भक्तवृन्द उनको उसी अवस्थामें हाथों-हाथ उठाकर श्रीवासके आँगनमें ले चले। नदियाके राजपथसे उस रात वे हरि-संकीर्तन करते-करते उसी अवस्थामें श्रीधरको लेकर प्रभुके सामने उपस्थित हुए।

भक्तवर श्रीधरको देखकर प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। 'आओ, आओ'—कहकर उन्होंने आदरपूर्वक श्रीधरको पास बुलाया। श्रीधर प्रभुके चरणतलपर बाह्य ज्ञानशून्य होकर निश्चेष्टभावसे पड़े हैं। प्रभु पुनः मधुर हँसी हँसकर बोले—"श्रीधर! उठो, उठो, मेरा अपरूप-रूप देखो!" श्रीगौर-भगवान्के कृपा-दृष्टिपातसे श्रीधरकी प्रेम-मूर्च्छा भङ्ग हुई। धी-धीरे वे उठकर हाथ जोड़कर प्रभुके सामने खड़े हो गये। उनकी दोनों आखोंसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा गिरने लगी। प्रभुका पुनः आदेश हुआ—"श्रीधर! तुम मेरी स्तुति करो!" श्रीधर कातर-कण्ठसे रोते-रोते प्रभुके चरणोंमें अति दीनभावसे निवेदन करने लगे—

—"नाथ! मुञि मूढ़मति।
कोन स्तुति जानो मुञि छारेर शकति॥

चै. भा. म. ९.१९७,१९८

कमल-लोचन श्रीगौर-भगवान्ने मधुर हँसी हँसकर कहा—"श्रीधर! तुम्हारे मुँहसे जो निकलेगा, उसीको मेरी सर्वोत्कृष्ट स्तुति जानना।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुकी आज्ञासे श्रीधरकी जिह्वापर उसी समय शुद्ध सरस्वतीका अधिष्ठान हुआ। वे श्रीगौर-भगवान्‌की जो स्तुति करने लगे, वह इस प्रकार थी—

जय जय जय महाप्रभु विश्वम्भर ।
जय जय जय नवद्वीप-पुरन्दर ।।
जय जय जय अनन्त ब्रह्माण्ड-कोटि नाथ ।
जय जय शची-पुण्यवती-गर्भजात ।।
जय महावेद-गोप्य जय विप्रराज ।
युगे युगे 'धर्मपाल' करि नाना काज ।।
गूढ़ रूपे बेड़ाइल नगरे-नगरे ।
विनि तुमि जानाइले के जानिते पारे ।।
तुमि धर्म, तुमि कर्म, तुमि भक्ति-ज्ञान ।
तुमि शास्त्र, तुमि वेद, तुमि सर्व ध्यान ।।
तुमि ऋद्धि, तुमि सिद्धि, तुमि योग-भोग ।
तुमि श्रद्धा, तुमि दया, तुमि मोह-लोभ ।।
तुमि इन्द्र, तुमि चन्द्र, तुमि अग्नि-जल ।
तुमि सूर्य, तुमि वायु, तुमि धन-बल ।।
तुमि भक्ति, तुमि मुक्ति, तुमि अज-भव ।
तुमि वा हइवे केने तोमारि ए सब ।।
पूर्वे मोर स्थाने तुमि अपने बलिला ।
तोर गङ्गा देख मोर चरण-सलिला ।।
तभू मोर पाप चित्ते नहिल स्मरण ।
ना जानिलुँ तुया दुइ अमूल्य चरण ।।
जे तुमि करिला धन्य गोकुल नगरे ।
एखने हइला नवद्वीप-पुरन्दरे ।।
राखिया बेड़ाओ भक्ति शरीर-भीतरे ।
हेन मने नवद्वीपे हइला बाहिरे ।।
भक्तियोगे भीष्म तोमा जिनिल समरे ।
भक्तियोगे यशोदाय बाँधिल तोमारे ।।
भक्तियोगे तोमारे बेचिल सत्यभामा ।
भक्तिवशे तुमि काँधे कैले गोप-रामा ।।
अनन्त-ब्रह्माण्ड-कोटि बहे जार मने ।
से तुमि श्रीदाम गोप बहिला आपने ।।
जाहा हैते आपनार पराभव हये ।
सेइ बड़ गोप्य लोक काहारे ना कहे ।।
भक्ति लागि सर्व्व स्थाने पराभव पाइया ।
जिनिआ बेड़ाओ तुमि भक्ति लुकाइया ।।
से माया हइल चूर्ण—आर नाहि लागे ।
हेर-देख सकल-भुवने भक्ति मागे ।।
सेकाले हारिला जन-दुई-चारि स्थाने ।
एकाले बाँधिव तोमा सर्व्व जने-जने ।।

चै. भा. म. ९.२००-२१८

सब भक्तलोग श्रीधरकी इस अपूर्व स्तुतिको सुनकर विस्मित हो उठे। खोला बेचनेवाले दरिद्र मूर्ख ब्राह्मणके कण्ठसे शुद्ध सरस्वतीका आविर्भाव देखकर वे लोग चकित हो गये। सबने उनको वैष्णवाग्रगण्य परम भक्तके रूपमें पहचाना। सरस्वतीपति प्रभुकी कृपासे श्रीधरके कण्ठमें सरस्वतीका आविर्भाव हुआ। ऐसा हुए बिना इस प्रकारकी सुन्दर स्तुतिकी रचना वे तत्काल कैसे कर लेते? भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने श्रीधरकी स्तुतिसे संतुष्ट होकर उनको वर देना चाहा। चतुरचूड़ामणि प्रभु मधुर मुस्कानके साथ श्रीधरसे बोले—

—"श्रीधर! बाछिया माग वर ।
अष्टसिद्धि दिब आजि तोमार गोचर ।।

चै, भा. म. ९.२२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्त-चूड़ामणि श्रीधरने रोते-रोते हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—

—"प्रभो ! आरो भाण्डाइबा ।
निश्चिन्ते थाकह तुमि आर ना पारिबा ।।

चै. भा. म. ९.२२१

श्रीधरकी निष्काम प्रेमभक्ति-साधना थी। सर्वज्ञ प्रभु इसको जानते थे। उन्होंने उनकी परीक्षा करनेके लिए ही यह बात चलायी थी। चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌को चतुर भक्तके द्वारा उपयुक्त ही उत्तर मिला; किन्तु श्रीभगवान् छोड़ने-वाले कब थे ? उनके द्वारा अपने निजजनकी परीक्षाका कोई अन्त नहीं है। श्रीधरको प्रभुने हँसकर कहा—

—"दरशन मोर कभू व्यर्थ नहे ।
अवश्य पाइबा वर जेई चित्ते लये ।।

चै. भा. म. ९.२२२

परम ऐश्वर्यमय श्रीभगवान् जब पुनः-पुनः अपने अनुगत भक्तको अभीष्ट वर माँगनेका आदेश देने लगे, तब उनका दासानुदास भक्त और क्या कह सकता था ? श्रीधरने रोते-रोते हाथ जोड़कर एक अपूर्व निवेदन किया।

—प्रभु ! देह एइ वर ।
जे ब्राह्मण काढ़िलेन मोर खोला पात ।
से ब्राह्मण हओ मोर जन्मे-जन्मे नाथ ।।
जो ब्राह्मण मोर सङ्गे करिल कन्दल ।
मोर प्रभु हऊ तान चरण-युगल ।।

चै. भा. म. ९.२२३-२२५

यह बात बोलते-बोलते प्रेमावेगमें श्रीधरका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। वे दोनों भुजाएँ ऊपर उठाकर उच्च स्वरसे बालकके समान रोने लगे। झर-झर आँसुओंकी धारासे उनका वक्षःस्थल भीग गया। वे लम्बायमान होकर प्रभुके चरणोंमें जा गिरे और नयन-जलसे उनके रक्तचरण-कमलको धो डाला। श्रीधरकी अपूर्व प्रेमभक्ति देखकर सारे भक्तगण प्रेमानन्दमें आकुल होकर रो पड़े।

श्रीगोर-भगवान् सुसज्जित पलंगपर बैठकर मधुर-मधुर मुस्कुरा रहे हैं और श्रीधरके साथ कौतुक-रङ्ग कर रहे हैं, पहले कह चुका हूँ कि श्रीभगवान्‌के द्वारा भक्तकी परीक्षाका अन्त नहीं है। भगवान् भक्तकी विधिपूर्वक परीक्षा लेते हैं। विशेषरूपसे परीक्षा लिए बिना वे किसीको भक्तकी पदवी नहीं देते। श्रीधरको इस बार प्रभुने सारूप्य मुक्तिका प्रलोभन देकर कहा—"श्रीधर ! तुमको मैं एक महाराज्यका ईश्वर कर दूंगा।" श्रीभगवान्‌के परीक्षा-वाणसे दरिद्र ब्राह्मण जर्जरित होकर और अधिक उच्च स्वरसे रोने लगे। क्षणभरके बाद प्रभुकी कृपासे प्रकृतिस्थ होकर उन्होंने उनके चरणोंमें निवेदन किया—

—प्रभु आमि किछुइ ना चाइ ।
हेन कर प्रभु ! जेन तोर नाम गाइ ।।

चै. भा. म. ९.२२९

श्रीभगवान्‌के शुद्ध दासके लिए उनके नाम-गानके सुख और आनन्दके सिवा और कुछ प्रार्थनीय नहीं है। इसी कारण प्रभुके नित्यदास भक्तवर श्रीधरने यह अपूर्व प्रार्थना की। नाम-माहात्म्यका प्रचार करनेके लिए प्रभुने नदियामें अवतार लिया। उनके नित्यदास और पार्षद श्रीभगवान्‌के नाम-गानसे आनन्दके सिवा अन्य सुखकी प्रार्थना क्यों करेंगे ? नामकी महिमासे खोला बेचनेवाले श्रीधर प्रभुकी कृपासे सम्यक् परिचित थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नामचिन्तामणिः कृष्ण चैतन्यरसविग्रहः।
पूर्णःशुद्धो नित्यमुक्तोऽभिन्नात्वान्नामनामिनो॥

भ. र. सिं. १.२.२३३; पद्मपुराणवचनम्
ह. भा. वि. ११.५०३; चै. च. म. १७.५

अर्थात् नाम और नामी अभेदतत्त्व हैं। श्रीकृष्ण ही नाम-रूपमें आविर्भूत होते हैं। भगवन्नाम ही श्रीगौराङ्ग-रसमयमूर्ति, षडैश्वर्यपूर्ण, माया-गन्धशून्य, नित्ययुक्त है तथा चिन्तामणिके समान सर्वाभीष्टप्रद है। यहाँतक कि शास्त्रमें नामीकी अपेक्षा नामकी शक्तिको श्रेष्ठ बतलाया गया है। श्रीकृष्ण-प्रेयसी सत्यभामाके व्रतकालीन नाम और नामीकी पूर्ण परीक्षा हो गयी है। तुलादण्डके एक ओर श्रीकृष्ण बैठे और दूसरी ओर श्रीकृष्णनामाङ्कित तुलसीपत्र रखे गये। नामीकी अपेक्षा नामका गुरुत्व ही सब प्रकारसे दृष्टिगत हुआ। दीन-हीन, दरिद्र ब्राह्मण श्रीधरको ये सब शास्त्रीय कथाएँ ज्ञात थीं। वे चतुरचूड़ामणि श्रीभगवान्‌की चातुरीके जालमें क्यों पड़ते ?

श्रीधरने जब कहा—"प्रभो ! मैं और कुछ नहीं चाहता, केवल यही वर दो कि मैं तुम्हारे नाम-गानमें दिन-रात मत्त रहूँ।" तब प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। भक्तके मुखसे इसी बातको बाहर करनेके लिए चतुरचूड़ामणि प्रभुकी यह चतुराई थी। युगधर्म नाम-संकीर्तनके माहात्म्यका प्रचार करनेके लिए ही भक्तप्रवर श्रीधरके मुखसे प्रभुने कौशलपूर्वक यह बात निकलवा ली। श्रीगौर-भगवान्‌को और कुछ कहनेको न रहा। वे जिससे संतुष्ट होते हैं, श्रीधरने वही माँगा। श्रीधरकी परीक्षा यहाँ ही समाप्त हो गयी। तब प्रभुने हँसते-हँसते उनसे कहा—

—श्रीधर आमार तुमि दास।
एतेक देखिले तुमि आमार प्रकाश॥
एतेके तोमार मति-भेद ना हइल।
वेद-गोप्य भक्तियोग तोरे आमि दिल॥

चै. भा. म. ९.२३०,२३१

अर्थात् प्रभुने कहा—"इतनी परीक्षामें भी तुम्हारी शुद्ध मति ज्यों की-त्यों बनी रही; अतएव मैंने तुमसे संतुष्ट होकर तुमको सर्वोत्तम प्रेमभक्ति प्रदान की।" पहले कह चुके हैं कि श्रीगौर-भगवान्‌की परीक्षा बड़ी कठिन होती है। उन्होंने अपनी मातातकको परीक्षा किये बिना न छोड़ा। ये सारी लीला-कथाएँ आगे कही जायँगी।

दरिद्र श्रीधरके प्रति प्रभुका यह अपूर्व कृपा-वैभव देखकर भक्तवृन्द आनन्दसे जय-ध्वनि करने लगे। श्रीधर दरिद्र ब्राह्मण थे। केलेका खम्भ, शाक-पत्ती आदि बेचकर किसी प्रकार उदर-पोषण करते थे। शुद्धा प्रेमभक्तिके बलसे उन्होंने आज प्रभुसे जो अतुल सम्पत्ति प्राप्त की, महाराज राजेश्वर भी कोटि कल्पोंमें उसे प्राप्त नहीं कर सकते। वह शिव-विरिञ्चिके लिए भी दुष्प्राप्य है।

श्रीधरने अष्ट-सिद्धिकी उपेक्षा करके, चतुर्विध मुक्तिपदको तुच्छ समझकर श्रीभगवान्‌के चरणोंमें भक्तिकी भीख माँगी। भक्तप्राण हमारे प्रभु ने दिल खोलकर उन्हें प्रेमभक्ति प्रदान की। वैष्णवके लिए भक्तिकी भीख माँगना ही एकमात्र वरदान मांगना है। वे अन्य कोई वर नहीं माँगते। श्रीधर प्रभुके नित्यदास हैं, शुद्ध भक्त हैं। शुद्धा भक्तिकी याचना करके उन्होंने प्रभुका मनोरञ्जन किया। श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें स्थान पानेपर ही उनके भक्तोंको सर्वार्थसिद्धि प्राप्त हो जाती है। गौर-भक्तको कोई सहज ही पहचान नहीं सकता। उनकी भजन-प्रणाली और कार्य-कलापकी पर्यालोचना करनेपर ही वे पहचानमें आते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धन नाहि जन नाहि नाहिक पाण्डित्य।
के चिनिबे एइ सब चैतन्येर भृत्य॥

चै. भा. म. ९.२३३

श्रीधरके द्वारा श्रीगौर-भगवान्‌की स्तुति और उनकी यह अद्‌भुत वर-प्रार्थनाकी कथा श्रवण करनेकी फलश्रुति श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखी है—

श्रीधर पाइला वर करिया स्तवन।
इहा जेइ शुने तारे मिले प्रेमधन॥

चै. भा. म. ९२४३

अन्य भक्तोंकी वर-याचना

श्रीधरपर कृपा करके प्रभु नदियाके सब भक्तोंके ऊपर शुभ दृष्टिपात करके अपनी आजानुलम्बित श्रीभुजाओंको प्रेमानन्दमें ऊपर उठाकर हुंकार-गर्जन करते हुए बोले—

सभे मोरे देख माग जार जेइ बर।

चै. भा. म. १०.१६५

प्रभुका यह कृपादेश सुनकर सब भक्तवृन्दके मनमें आनन्दकी तरङ्ग उठी। सर्वप्रथम अद्वैताचार्यने प्रभुके सामने खड़े होकर हाथ जोड़कर निवेदन किया—"प्रभो! मुझे यह वर देवें, मूर्ख, नीच, दरिद्रपर आप अनुग्रह करें।"

उन्होंने इससे पहले प्रभुके चरणोंमें एक और इसी प्रकारका अद्‌भुत वर माँगा था। उन्होंने कहा था—"हे प्रभो! यदि तुम भक्ति-वितरण करते हो तो मेरा एक निवेदन सुन लो! स्त्री-शूद्र और मूर्खोंको सबसे पहले भक्ति-दान करना।" पतित-पावन, अधम-उधारण, अनाथ-शरण श्रीगौर-भगवान्‌के सामने इसके सिवा और दूसरा कौन वर माँगते? कलिके अधम जीवकी दुर्गति देखकर ही उन्होंने श्रीगौर-भगवान्‌को नदियामें अवतीर्ण कराया था। वे हमारे गौर-आना-गोसाईं (गौरको लानेवाले प्रभु) हैं। श्रीगौराङ्ग-अवतारके मूलाधार श्रीअद्वैत-प्रभु हैं। उनकी यह वर-प्रार्थना गौर-आना-गोसाईके उपयुक्त ही वर-प्रार्थना है। प्रभुने 'तथास्तु' कहकर वरदान दिया। भक्तवृन्द आनन्दसे अधीर होकर बारम्बार हरिध्वनि करने लगे।

अन्यान्य भक्तोंने प्रभुसे किस प्रकारके वर माँगे, सुनिये! "पुत्र देहि, धनं देहि, रूपं देहि, भार्यां देहि' आदि 'देहि-देहि' शब्द गौर-भक्तके मुखसे आप नहीं सुनेंगे; उनको दुःख था केवल गौर-भक्ति-बहिर्मुख आत्मीय स्वजनोंके लिए। जिससे उनकी श्रीगौराङ्ग-चरणोंमें रति-मति हो, यही वर उन्होंने प्रभुसे माँगे। यथा,

श्रीचैतन्यभागवतमें—

केह बोले मोर बापे आसिते ना दे।
तार चित्त भाल हओ तोमार प्रसादे॥
केहो बोले शिष्य प्रति, केह पुत्र प्रति।
केहो भार्या, केहो भृत्ये जार यथारिति॥
केहो बोले आमार हउक गुरुभक्ति।
एइ मत वर मागे जार जेन शक्ति॥

चै. भा. म. १०.१६८–१७०

गौर-भक्तवृन्दकी इस प्रकारकी वर माँगनेकी प्रणाली अत्यन्त ऊँची भक्तिकी भावनासे पूर्ण थी। श्रीगौराङ्गसुन्दर उनके हृदयके सर्वस्वधन थे। श्रीगौराङ्गके चरणोंमें उन्होंने सर्वस्व अर्पण किया था। उनके आत्मीय स्वजन उनकी इस अपूर्व गौराङ्गैकनिष्ठता देखकर चिन्तित रहते थे। निमाईपण्डित पागल हो गये हैं, उनके साथ-साथ ये लोग भी पागल हो गये, ऐसा सोचकर वे लोग श्रीगौराङ्गका सङ्ग न करनेकी शिक्षा अपने पुत्र-परिजन आदिको करते थे, इसी दुःखसे गौराङ्ग-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तवृन्दके हृदयमें मानो शूल-सा चुभता था। इसकी चोट बड़ी कष्टप्रद थी। इसी कारण उन्होंने सुयोग पाकर इस समय प्रभुके चरणोंमें अपने-अपने हृदयकी बात खोलकर अपने अभीष्ट वरकी प्रार्थना की। इन सब वर-प्रार्थनाओंमें महत्त्व और मधुरत्व, दोनों ही हैं। इष्टमें एकनिष्ठता इस वर-प्रार्थनाका मूलमन्त्र है। इष्टमें एकनिष्ठता ही साधनामें सिद्धिका सर्वश्रेष्ठ उपाय है, गौर-भक्तवृन्द इसको विशेषरूपसे जानते हैं।

भक्तवाञ्छा-कल्पतरु श्रीगौर-भगवान्‌ने हँस-हँसकर सबको उनका अभीष्ट वर प्रदान किया। भक्तगण बारम्बार जय-ध्वनि करने लगे। सभी प्रेमानन्दमें उन्मत्त हैं।

मुकुन्ददत्तके साथ लीला

इसी समय हमारे रँगीले प्रभुने अपने अन्तरङ्ग प्रियतम भक्त मुकुन्ददत्तके साथ कुछ लीला-रङ्ग करना चाहा।

सब भक्तोंने एक-एक करके प्रभुके सामने आकर वरदान माँगा। बहुतोंको प्रभुने बुला-बुलाकर वरदान दिया। मुकुन्दको प्रभुने पहले चतुर्भुज-मूर्तिका उपासक कहकर तिरस्कार किया था। मुरारिको बुलाकर प्रभुने कृपा की; परन्तु अबतक उन्होंने मुकुन्दका नाम नहीं लिया था। सब भक्तोंको बुलाकर उन्होंने वरदान दिया; परन्तु मुकुन्दको प्रभुने नहीं बुलाया। मुकुन्द श्रीवासके आँगनके बरामदेमें अन्तःपटके बाहर खड़े होकर अजस्र आँसू बहा रहे थे। प्रभुके सामने जानेमें उनका साहस नहीं हो रहा था। वे प्रभुके प्रधान कीर्तनिया तथा अतिप्रिय भक्त हैं। उनको इस प्रकार उदास और रोते हुए देखकर सब भक्तोंका ध्यान उनकी ओर गया। प्रभु उनको अपने सामने आनेका कृपादेश नहीं कर रहे थे, इसी कारण वे दूर खड़े होकर दुःखसे आँसू बहा रहे थे। मुकुन्दकी अवस्था देखकर श्रीवासपण्डितके मनमें बड़ा दुःख हुआ। वे साहसपूर्वक प्रभुके आगे जाकर हाथ जोड़कर बोले—

"हे जगत्‌के नाथ! मुकुन्दने आपका क्या अपराध किया है? मुकुन्द तो आपका बड़ा प्यारा है और हम-सबका प्राण है। उसके गायनको सुनकर किसका हृदय नहीं पिघल जाता है। वह भक्ति-परायण है, सब ओरसे सावधान रहता है। उसका अपराध भी कुछ नहीं है, फिर उसकी अवहेलना क्यों? यदि कोई अपराध हुआ है तो उसका दण्ड दें; लेकिन अपने दासको दूर न करें। आपके बुलाये बिना वह आपके सम्मुख नहीं हो सकता। उसको भली प्रकारसे बुलावें, वह भी आपका दर्शन करे।"

श्रीगौर-भगवान् मुकुन्दकी जो परीक्षा कर रहे हैं, उसको श्रीवासपण्डित नहीं समझ पाते। इसी कारण अभिमानपूर्वक प्रभुसे बोले—"उन्होंने बिना अपराध ही मुकुन्दका अपमान किया है।" श्रीवास-पण्डितकी यह बात सुनकर चतुर-चूड़ामणि प्रभुने बनावटी क्रोध प्रकट करते हुए उनसे कहा—

"ऐसी बात फिर कभी न कहना। उस बेटाके लिए मुझसे कोई भी प्रार्थना न करे। तुमलोगोंने सुना होगा कि एक प्रकारके मनुष्य होते हैं, जो कभी दाँतोंमें तिनका पकड़ते हैं तो कभी हाथमें लाठी सँभालते हैं। यह बेटा मुकुन्द भी वैसा ही है। इसको किसीने पहचाना नहीं है यह क्षणमें तो दाँतोंमें तृण ले लेता है और क्षणमें लाठी चलाता है। ऐसा 'तृण-लाठी' बेटा तो मुझे नहीं देख पायगा। उसकी मति स्थिर नहीं है। वह जब जिस दलके लोगोंमें जाता है, तब उसी दलके लोगोंके समान बातें करता है। इस प्रकारके कपटाचारी व्यक्तिको निश्चय ही मेरा दर्शन प्राप्त न होगा, इसमें संदेह नहीं है।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवासपण्डितने प्रभुको बहुतेरा समझाया; परन्तु प्रभुका मन कदापि न माना। मुकुन्दने बाहरके बरामदेमें खड़े होकर प्रभुकी सारी बातें सुनीं। प्रत्यक्ष श्रीभगवान्‌की श्रीमूर्तिका दर्शन प्राप्त न होनेकी अपेक्षा अधिक दुःखकी बात भगवद्दासके लिए और क्या हो सकती है? मुकुन्दने मन-ही-मन सोचा—"पहले मैंने गुरुके समझानेपर भी भक्तिको नहीं माना, मेरी इस बातको महाप्रभु श्रीचैतन्यकी ज्ञानशक्ति सब जानती है।"

मुकुन्दने ज्ञानमार्गी गुरुसे मन्त्र-ग्रहण किया था। वे पहले भक्तिकी श्रेष्ठता स्वीकार नहीं करते थे।

मुकुन्दने मन-ही-मन सोचा कि इस देहको रखनेसे अब लाभ ही क्या है? अपने इस महापराधी देहको त्यागना ही पड़ेगा। हमारे दयामय प्रभुने मेरे अपराधके अनुरूप ही दण्ड-विधान किया है। इस भजनविहीन शरीरको त्याग करनेके पूर्व प्रभुके श्रीमुखकी एक बात सुनना चाहता हूँ।—इतना सोचकर बरामदेसे श्रीवास-पण्डितको उच्च स्वरसे पुकारकर रोते हुए रुद्ध स्वरसे बोला—"अजी पण्डितजी! मेरी ओरसे प्रभुसे एक बात पूछो! मुझे कब उनका दर्शन प्राप्त होगा?"

यह बात कहते-कहते मुकुन्द व्याकुल होकर रोने लगे। उनकी वाक्-शक्ति अवरुद्ध हो गयी। उनके नयन-जलसे भूमि सिक्त हो उठी। श्रीगौर-भगवान्‌ने विष्णु-सिंहासनपर बैठकर मुकुन्दकी सारी बातें सुनीं। भक्तवत्सल प्रभुका कोमल हृदय भक्तके दुःखसे व्यथित हो उठा। उनके कमल-नयनोंसे अश्रुधारा बहने लगी; परन्तु उन्होंने अपने मनोभावको मनहीमें छिपाये रखा। भक्तवत्सल श्रीभगवान् भक्तकी परीक्षा करने बैठे हैं। परीक्षकको स्वभावतः कठोर बनना पड़ता है। प्रभुका अन्तःकरण मुकुन्दके दुःखसे रो रहा है, परन्तु वे मुँहसे कुछ नहीं बोलते हैं।

श्रीवासपण्डितने रोते हुए मुकुन्दका कातर निवेदन प्रभुके चरणोंमें पहुँचाया। प्रभुने गम्भीरता-पूर्वक उत्तर दिया—"जब उसके कोटि-जन्म बीत जायँगे, तब वह मेरा दर्शन पायगा।"

प्रभुके श्रीमुखसे यह बात सुननेके लिए मुकुन्दने अपने कान खड़े कर लिये थे। उन्होंने जब सुना कि अपने अभीष्टदेवका दर्शन प्राप्त करूँगा, तब उनके आनन्दकी सीमा न रही। प्रभुने कहा कि कोटि-जन्मके बाद उनको 'निश्चय दर्शन प्राप्त होगा।' 'निश्चय दर्शन-प्राप्ति'की बात प्रभुके श्रीमुखसे सुनते ही मुकुन्द परमानन्दमें, वहीं खड़े होकर दोनों भुजाएँ ऊपर उठाकर नृत्य करने लगे। 'पाऊँगा तो, पाऊँगा तो'—कहते हुए प्रेमानन्दमें बारम्बार हुंकार-गर्जन करने लगे। अब उनको कोई दुःख न रहा। कोटि-जन्मके बाद तो प्रभुका दर्शन मिलेगा, इसीसे उनको आनन्द प्राप्त हो गया है। उनका प्रयोजन दर्शनसे है। कोटि-जन्मके बाद हो, या लक्ष-कोटि-जन्मके बाद हो, प्रभुका दर्शन तो मिलेगा। प्रभुकी बात अन्यथा नहीं हो सकती, इसी आनन्दसे मुकुन्द उन्मत्त हो उठे।

मुकुन्दकी भाव-भक्तिकी प्रगाढ़ता देखकर तथा प्रभुके प्रति उनकी प्रेमभक्तिकी सीमा देखकर चतुरचूड़ामणि भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने हँसकर आज्ञा दी—"मुकुन्दको शीघ्र मेरे सामने लाओ!" तब श्रीवास आदि भक्तगण मुकुन्दके पास जाकर बोले—"मुकुन्द! अब प्रभुका दर्शन करके कृतार्थ हो जाओ! उनका कृपादेश हो गया है।" मुकुन्द आनन्दस्वरूप होकर मधुर नृत्य कर रहे थे। पहले तो उनके कानोंमें कोई बात न पहुँची। जब सबने मिलकर उनका हाथ पकड़कर नृत्यावेशसे उनको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निवृत्त किया तथा पुनः प्रभुका कृपादेश सुस्पष्ट भाषामें कह सुनाया तो मुकुन्दको उस बातपर विश्वास न हुआ; क्योंकि वे प्रभुके चरणोंमें अपराधी थे। कुछ ही देर पहले प्रभुने उनका तिरस्कार करके कहा था कि कोटि-जन्मके बाद उनको दर्शन प्राप्त होगा। मुकुन्द श्रीवासपण्डितके मुखकी ओर देखकर बालकके समान रोने लगे। तब सबलोग उनको पकड़कर प्रभुके सामने ले गये। मुकुन्दको देखते ही कमल-लोचन श्रीगौर-भगवान्‌ने हंसकर कहा—"मुकुन्द ! तुम्हारा सारा अपराध भञ्जन हो गया है। आओ, मेरे इस अपरूप-रूपको देखो; मेरा प्रसाद ग्रहण करो !" मुकुन्दको अब विश्वास हुआ कि प्रभुने कृपा करके उनको याद किया है। वे प्रेमानन्दमें विह्वल होकर श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें एकवारगी लम्बायमान होकर गिर पड़े। उनके नयन-जलसे प्रभुके चरण-कमल धुल गये। प्रेम-गद्‌गद वाणीमें, स्नेहके साथ, हंसते हुए श्रीगौर-भगवान्‌ने तब मुकुन्दसे कहा—

"मेरे मुकुन्द ! उठो, उठो ! तुम्हारा आधा तिलभर भी अपराध नहीं है। तुम्हारा सङ्ग-दोष सब क्षय हो गया और तुम्हारे निकट मेरी पराजय हुई। मैंने जो कहा कि 'कोटि-जन्ममें पाओगे'—और तुमने कोटि-जन्म क्षणकालमें ही पूरे कर लिये। 'मेरे वचन अव्यर्थ हैं'— यह तुमने निश्चय करके पकड़ लिया। इसीसे तुमने सदाके लिए अपने हृदयमें मुझे बाँध लिया। तुम तो मेरे गायक (कीर्तनिया) हो, सदा मेरे साथ रहते हो, हँसी-विनोदके साथी हो, इसलिये मैंने तुम्हारे साथ कौतुक-खेल किया था। यदि तुम सचमुचमें कोटि अपराध भी कर डालो तो भी वे सब मिथ्या हैं। तुम मेरे अत्यन्त प्रिय हो ! तुम्हारा भक्तिमय शरीर मेरा दास है और तुम्हारी जिह्वापर निरन्तर मेरा वास है।" (चै. भा. म. १०.२०५-२११)

भक्तवत्सल प्रभुके श्रीमुखसे स्नेहसनी करुणा-भरी सुमधुर वाणी सुनकर मुकुन्दको आत्मग्लानि हुई। वे अपनेको शत-शत धिक्कार देकर रोते-रोते प्रभुके सामने अपने गालपर चपेटा मारने लगे। भक्तोंने उनका हाथ पकड़ लिया। करुणामय प्रभुके करुण दृष्टिपातसे मुकुन्द तत्काल सुस्थिर हुए। वे रोते हुए दीनभावसे हाथ जोड़कर प्रभुकी महामहिमामयी परम अद्‌भुत ऐश्वर्यमूर्तिके सम्मुख निवेदन करने लगे—

"मैंने इस नीच मुखसे भक्तिको नहीं माना। भक्तिशून्य मैं प्रभुके दर्शन करके भी क्या सुख पाऊँगा ! दुर्योधनने भी तो आपके उस विश्वरूपको देखा था, जिसको देखनेको वेद निरन्तर ढूँढ़ते फिरते हैं। विराट् रूप देखकर भी दुर्योधन वंश-सहित नष्ट हो गया। भक्तिशून्य होनेके कारण वह दर्शन-सुखसे वञ्चित ही रहा। मैंने ऐसी सुखदायिनी भक्तिको अपने इस अधम मुखसे नहीं माना। अतएव आपके दर्शन करनेपर भी मुझे क्या सुख मिलेगा ! आप जिस समय रुक्मिणीको हरण करने गये थे, उस समय गरुड़-वाहन आपको सब राजाओंने भी देखा था। फिर अभिषेकके समय आपका राज-राजेश्वर नाम हुआ, उस समय भी सब राजाओंने आपका महा-ज्योतिर्मय रूप देखा था। ब्रह्मादि भी जिस रूपके दर्शन करनेकी अभिलाषा करते हैं, वह रूप आपने विदर्भनगरमें प्रकाशित किया; परन्तु उस रूपको देखकर सब राजालोग जल मरे और सुखसे वञ्चित रह गये; क्योंकि वे भक्तिशून्य थे। और एक बार आप सर्वयज्ञमय, कारणस्वरूप शूकर-रूपमें भी तो जलके भीतर प्रकट हुए थे; अनन्त विशाल पृथ्वी आपके दाँतोंके ऊपर थी। ऐसा जो आपका अपूर्व रूप-प्रकाश था कि जिसके दर्शनके लिए देवतालोग भी खोजते फिरते हैं, उसका दर्शन हिरण्याक्षने किया। परन्तु भक्तिशून्य होनेके कारण सुख उसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भी नहीं मिला। और एक महाप्रकाशको उसके भाई (हिरण्यकशिपु) ने देखा था, जो लक्ष्मीदेवीके लिए भी गोप्य था। जिसको त्रिभुवनमें नृसिंहका अपूर्व रूप कहते हैं, उसको देखकर भी भक्तिशून्य होनेके कारण वह मर ही गया। ऐसी भक्तिको मेरे नीच मुखने स्वीकार नहीं की तो भी यह कैसी अद्भुत बात है कि उस समय मेरी जीभ कटकर नहीं गिरी। दूसरी ओर) कुब्जा, यज्ञपत्नीगण, मथुरा-नारीगण, मथुराके माली आदिने आपका कोई अद्भुत प्रकाश कहाँ देखा था; परन्तु उनमें भक्ति थी। उस भक्तियोगके कारण ही उन्होंने आपको प्राप्त कर लिया और मथुरामें कंस आदि आपको देखकर भी मृत्युको ही प्राप्त हुए। ऐसी भक्तिको मेरे नीच मुखने नहीं माना। इतना होनेपर भी यही आपकी बड़ी कृपा है कि मैं जीवित हूँ। जिस भक्तिके प्रभावसे महाबली अनन्तदेव विनोदमें ही अनन्त ब्रह्माण्डोंको ऐसे धारण किये हुए हैं, मानो उनके सहस्र फणोंमें-से एक फणके ऊपर एक बूँद पड़ी हो; प्रभुके यश-गानमें वे ऐसे मत्त हैं कि उनके फणपर भी कुछ है, इसकी उनको कुछ भी प्रतीति नहीं है। वे स्वयं निराधार हैं, परन्तु सबको ऐसे धारणकर पालन कर रहे हैं—यह अधिकार उनको भक्तियोगके प्रभावसे ही प्राप्त है। ऐसे भक्तियोगको मुझ पाप-मतिने नहीं माना; अतएव अनेक जन्मोंमें भी मेरी सद्गति नहीं होगी। भक्तियोगके प्रभावसे ही शंकर गौरी-पति हुए और भक्तियोगके प्रभावसे ही नारद मुनिश्रेष्ठ बने। व्यासजीने वेद, धर्मशास्त्र, योगशास्त्र आदि अनेक शास्त्रोंकी रचना करके भी अपने चित्तमें तिलभर भी प्रसन्नताका अनुभव नहीं किया। उनके चित्त-विक्षेपका केवल यही एक अपराध था कि उन्होंने भक्तिको महागोप्य समझकर उसका संक्षेपमें वर्णन किया। फिर नारदजीके कहनेपर जब उन्होंने भक्तिका विस्तारपूर्वक वर्णन किया, तब उनका दुःख दूर हुआ और संसारका भी उद्धार हुआ। एक कीट-तुल्य होकर भी मैंने ऐसी भक्तिको नहीं माना तो भी आपके दर्शन करनेकी मुझमें सामर्थ्य हुई।" (चै. भा. म. १०.२१३-२३८)

इस प्रकारके भावसे मुकुन्दने प्रभुके चरणोंमें आत्मनिवेदन किया। क्या श्रीभगवान्‌के सामने भक्तका इससे बढ़कर उच्चभावपूर्ण आत्मनिवेदन आपने भक्ति-जगत्‌में कहीं देखा है? चतुरचूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌ने अपने सुचतुर भक्तवर मुकुन्दके सामने पराजय स्वीकार की। तथापि सुचतुर भक्तने भगवान्‌को न छोड़ा। मुकुन्द प्रभुके शुद्ध दास हैं, सुचतुर भक्त हैं। आत्मग्लानि-विषसे जर्जरित होकर उन्होंने प्रभुके चरणोंमें जो निवेदन किया, उससे उनके मनमें लज्जाका उद्रेक हुआ। प्रभुने आदेश किया—"मुकुन्द! तुम मेरा दर्शन करो; मेरा रूप देखो!" मुकुन्दने हाथ जोड़कर निवेदन किया—"प्रभो! मैं अति हीन और तुच्छ हूँ; मैं भक्तिहीन हूँ; मेरा हृदय भक्तिशून्य है; मैं भक्तिको नहीं मानता। अतएव तुम्हारा दर्शन करनेका मुझे अधिकार नहीं है और तुम्हारा दर्शन करनेसे ही मेरे-जैसे भक्तिशून्यहृदय, कीट-तुल्य अधम जीवको क्या लाभ होगा? भक्तिमान् होकर तुम्हारा दर्शन करनेपर दर्शनका फल मिलता है। हिरण्यकशिपु, कंस, दुर्योधन आदि भक्ति-वहिर्मुख राजालोगोंको तुम्हारी परम अद्भुत, ऐश्वर्यपूर्ण प्रकाशमूर्तिको देखकर भी आनन्द न मिला; वे अपने कुलके साथ नाशको प्राप्त हो गये; क्योंकि वे भक्तिशून्य थे। अतएव भक्ति ही सर्वप्रधान वस्तु है। तुम एकमात्र भक्तिके वशीभूत हो! तुम्हारा रूप-दर्शन और तज्जनित प्रेमानन्दकी प्राप्ति भक्तिहीनके भाग्यमें नहीं घटती। मैं भक्तिहीन मूढ़मति हूँ। मैं कैसे तुम्हारा रूप देखूँगा?" चतुर भक्तचूड़ामणिने भक्तावतार चतुर श्रीभगवान्‌को समझा दिया कि भक्ति ही मूलाधार है; भक्ति न होनेपर भगवत्कृपा प्राप्त नहीं होती।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीभगवान्‌की पूर्ण प्रकाश्य मूर्ति भक्तके बिना दूसरा कोई देखे तो उसे आनन्दकी प्राप्ति न होगी। भक्तिके बलसे ही भक्तके हृदयमें भगवान्‌की श्रीमूर्ति प्रकट होती है। भगवद्-दर्शनका आनन्द भक्तकी भक्तिका फल है, उसकी निजी वस्तु हैं।

मुकुन्दकी आर्त, निष्कपट खेदोक्ति सुनकर भक्तवत्सल प्रभु लज्जित हो गये। भक्ति और भक्तकी महिमा प्रकट करनेके लिए ही उन्होंने यह महामहिमामय महाप्रकाश-लीलारङ्ग प्रकट किया है। सबके सामने वे भक्तप्रवर मुकुन्दका गुण गाने लगे। मुकुन्दके प्रति करुण दृष्टिपात करके प्रभुने मधुर वचन कहे—

"मुकुन्द ! तुम्हारी भक्ति मुझे बड़ी प्रिय हैं। तुम जहाँ गाते हो, मैं वहीं प्रकट होता हूँ। तुमने जो कुछ कहा, वह सत्य है। भक्तिके बिना मेरा दर्शन मिल जानेपर भी कुछ हाथ नहीं लगता। तुम मेरे बड़े प्रिय हो, यह मैं सत्य कहता हूँ। मैंने जो कुछ भी वेदके मुखसे कहा है कि जिन-जिन कर्मोंके करनेसे जो-जो दिव्य गति प्राप्त होती है, उसको मिटानेकी भला किसमें सामर्थ्य हैं। परन्तु सब-कुछ उलट सकता हूँ। सब विधि-विधानपर मेरा अधिकार हैं। मैंने अपने ही मुखसे यह सत्य घोषणा कर रखी है कि मेरी भक्तिके बिना किसी भी कर्मका कुछ भी सार नहीं है। भक्तिके न माननेसे मुझे मार्मिक दुःख होता है। मेरे दुःखके कारण उसको दर्शनका सुख नहीं मिलता है। कंसके धोबीने मेरा दर्शन किया, मैंने उससे वस्त्र भी माँगे, पर फिर भी वह दर्शनके आनन्द-सुखसे वञ्चित ही रहा; कारण कि उसमें प्रेम-भक्ति नहीं थी। मेरे दशनके लिए उसने कितना तो तप किया था और कितने करोड़ देह उस धोवीने छोड़े थे। महाभाग्यसे उसे मेरा दर्शन तो मिला, परन्तु भक्तिशून्य होनेके कारण दर्शनका सुख न मिला। मेरे सेवकके निकट जिसका अपराध होता है, उसकी भक्ति मिट जाती है और भक्तिके अभावमें दर्शन करनेकी शक्ति चली जाती है। तुमने जो कुछ कहा, वह सब मेरी ही बातें थीं। तुम्हारे मुखसे दूसरी बातें आ भी कैसे सकती हैं। मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं भक्तिका वितरण करूँगा और मैं सबसे पहले तुम्हारे कण्ठ-स्वरमें प्रेमभक्ति देता हूँ। देखो, जितने भी मेरे वैष्णव-मण्डल हैं, वे सब तुम्हारे गायनको सुनकर द्रवीभूत हो जायँगे। जैसे तुम मेरे अत्यन्त प्रिय हो, वैसे ही तुम और-सब महानुभावोंके भी प्रिय होगे और जहाँ मेरा अवतार होगा, वहाँ-वहाँ तुम मेरे गायक बनोगे।" (चै. भा. म. १०,२४२–२५८)

भक्तचूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌ने सुचतुर भक्तकी बातका उत्तर कैसा दिया, यह चतुर पाठकवृन्द समझ लें। प्रभुने मुकुन्दसे कहा—"तुम जो कहोगे, सत्य होगा; परन्तु मैं सब विधि-नियमके ऊपर हूँ। मेरा कार्य विधि-नियमके परे है। मैंने सब प्रकारसे खण्डन करके तुमको भक्ति-दान किया। मैं भक्तिहीनको भी भक्ति देकर अपनी इस श्रीमूर्तिके दर्शनका आनन्द प्रदान कर सकता हूँ।" मुकुन्दने दैन्य प्रकट करके अपनेको भक्तिहीन कहकर बहुत धिक्कारा है। भक्तिशून्य जीव श्रीभगवान्‌का साक्षात् दर्शन पाकर भी आनन्द प्राप्त नहीं करता, यह बात उन्होंने बारम्बार कही है, इसी कारण प्रभु इतनी बात बोल गये। स्वतन्त्र ईश्वर श्रीगौर-भगवान्‌ने इस बातके द्वारा अपने सृष्ट जीवोंके प्रति अपनी असीम दयाका परिचय दिया।

मुकुन्दके प्रति प्रभुकी यह अपूर्व कृपा देखकर सब भक्तलोग हरि-ध्वनि करने लगे। श्रीवास-मन्दिर आनन्द-ध्वनिसे परिपूर्ण हो गया। मुकुन्दने प्रभुकी कृपाश्वासन-वाणी सुनकर आनन्द-विह्वल होकर प्रभुके सामने मधुर नृत्य करके गानका धूहा पकड़ा—

कि कहब शत शत तुया अवतार।
एकेला गौराङ्गचाँद जीवन आमार॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सब भक्तोंने इस कीर्तनमें योगदान किया। श्रीवासके मन्दिरमें आनन्दका स्रोत बहने लगा। सकल भक्तगण यह कीर्तन गाते-गाते प्रेमानन्दमें विभोर होकर एक-एक करके प्रभुके चरण-कमलोंमें लोट-पोट हो गये। दयामय श्रीगौर-भगवान्‌ने हँसते हुए सब भक्तोंके मस्तकपर श्रीचरण-अर्पण करके उनको कृतार्थ किया।

सबको प्रभुसे अपना अभीष्ट वर प्राप्त हुआ। भक्तवृन्द आज प्रभुकी श्रीमूर्तिमें अपने-अपने इष्टदेवका प्रकाश देख रहे हैं।

श्रीश्रीगौर-भगवान्‌का यही महामहिमामय महाप्रकाश-लीलारङ्ग है। वे सब अवतारोंके अवतारी, अनादि परमपुरुष हैं, यह बात अपनी इस सात-पहरिया अपूर्व महाप्रकाश-लीलामें नदियाके भक्तवृन्दको उन्होंने दिखला दिया। नदियाके भक्तवृन्द स्वयं-भगवान् श्रीगौराङ्गप्रभुके नित्य परिकर, अन्तरङ्ग भक्त, प्राणप्रियतम हैं; अतएव उनको यह सौभाग्य प्रदान किया। वे सपत्नीक, दास-दासीके साथ प्रभुके इस अपूर्व लीलारङ्गका दर्शन करनेका सौभाग्य पाकर कृतार्थ हो गये। नवद्वीप बहुत बड़ा संस्थान था। वहाँ पण्डित, तपस्वी, संन्यासी, ज्ञानी, योगी, कर्मी बहुत-से लोग रहते थे; परन्तु उनके भाग्यमें प्रभुकी इस परम अद्‌भुत महाप्रकाश ऐश्वर्य-लीलाका दर्शन घटित न हुआ; क्योंकि वे वृथाभिमानी और भक्तिशून्य थे।

शचीमातापर कृपा

सात पहरतक इस प्रकार भगवान्-भावमें प्रभुने श्रीवास-मन्दिरमें विष्णु-सिंहासनपर बैठकर नदियाके भक्तोंको अपना ऐश्वर्यमय अपरूप-रूप दिखलाकर विमोहित किया। इसके बाद श्रीश्रीनित्यानन्द और अद्वैतप्रभुके साथ परामर्श करके श्रीवासपण्डित शचीमाताको प्रभुके पास लाये।

शचीमाताका विशुद्ध वात्सल्यभाव था। प्रभुके प्रति उनका शुद्ध वात्सल्यमय पुत्रभाव था। वात्सल्यभावमें विभोर होकर वे कभी-कभी कहती थीं कि उनके पुत्रको श्रीवास आदि भक्तगणने पागल बना दिया है। श्रीअद्वैतप्रभुको कहती थीं कि इन्होंने ही मेरे ज्येष्ठ पुत्र विश्वरूपको गृह-त्यागी बनाया है और निमाई-चाँदको भी उसी पथका पथिक बनावेंगे।

श्रीअद्वैतप्रभु और श्रीवास आदि भक्तवृन्दने परामर्श किया कि ऐसा काम किया जाय, जिससे श्रीगौर-भगवान्‌के प्रति शचीमाताका पुत्रभाव दूर हो जाय। वे यदि इस समय एकबार प्रभुकी इस महान् ऐश्वर्यमय महामहिमान्वित प्रकाशमूर्तिका दर्शन करें तो इससे उनका सारा संदेह दूर हो जाय। यह सोचकर वे लोग शचीमाताको इसी समय श्रीवासके आँगनमें लाये। श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौराङ्ग-जननीको साथ लेकर प्रभुके सामने उपस्थित होकर हाथ जोड़कर निवेदन किया—"हे देव! पूर्वकालमें भगवान् कपिलजीने स्वयं अपनी माता देवहूतिको ज्ञान और भक्तियोग प्रदानकर कृतार्थ किया था। अब अपनी नीतिपरायणा माता शचीदेवीको आप प्रेमानन्द प्रदानकर कृतार्थ करें। वे आपके सामने खड़ी हैं।

प्रभुने सुसज्जित पर्यङ्कके ऊपर बैठे-बैठे अपनी माताके ऊपर एक बार शुभ कृपादृष्टि डाली। शचीमाता अपने पुत्रके महामहिमामय ऐश्वर्यभावको देखकर विस्मित होकर आनन्द-रसमें मग्न हो गयीं। पुत्रका ऐसा अपरूप-रूप इससे पहले उन्होंने कभी देखा न था। इतनी ज्योति, इतना तेज, इतना माधुर्य, ऐसा सौन्दर्य, इतनी ऐश्वर्यमय अपरूप-रूप छटा एकमात्र श्रीभगवान्‌को छोड़कर अन्य किसीके भी श्रीअङ्गमें नहीं दीखती। शचीमाताने समझा कि उनका पुत्र साक्षात् भगवान् है, पूर्णब्रह्म

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सनातन है। उनका उनके प्रति पुत्रभाव तत्काल हृदयसे दूर हो गया। शचीमाताके शरीरमें अष्ट सात्त्विक भाव उदय हो गये। वे प्रेमानन्दमें विह्वल होकर पुत्ररूपी स्वयं-भगवान्‌के सामने खड़ी होकर थर-थर काँपने लगीं। उनको वे उस समय अपूर्व ज्योति और प्रतिभासम्पन्न जान पड़ने लगे। उनकी जिह्वामें वाग्देवीका आविर्भाव हुआ। उन्होंने हाथ जोड़कर श्रीगौर-भगवान्‌की ऐश्वर्य-मूर्तिका स्तवन किया—.

विश्वं यदेतत् स्वतनौ निशान्ते
यथावकाशं पुरुषः परो भवान् ।
बिभर्त्ति सोऽयं मम गर्भगोऽभू-
दहो नृलोकस्य विडम्बनं हि तत् ॥

श्रीचैतन्यचरित

"हे प्रभो ! प्रलयके समय यह समस्त विश्व जिसके उदरमें अनायास अवस्थित होता है, वही साक्षात् परमेश्वर आप हमारे गर्भसे उत्पन्न हुए हैं, यह सुनकर सब मेरा परिहास करेंगे।"—यह श्लोक पढ़कर शचीमाताने ग्रहग्रस्तके समान अत्यन्त विह्वलचित्त होकर बलपूर्वक पुत्रके चरण-कमलको धारण करनेकी इच्छा की। श्रीअद्वैतप्रभु विस्मय-पूर्वक निषेध करके मन-ही-मन सोचने लगे—"यह क्या ? भगवान् श्रीकृष्णके आविर्भावके समय देवकीजीने उनकी जैसी स्तुति की थी, शचीदेवीने भी वैसी ही स्तुति की; अतएव इनका मातृभाव स्वभावसिद्ध है। पूर्वभाव जन्मान्तरमें भी मनुष्यके मनमें उदय होता है।"

श्रीगौर-भगवान् सुसज्जित विष्णु-सिंहासनपर बैठकर सब-कुछ देख रहे हैं और स्वानुभावानन्दमें सिर हिला रहे हैं। इतनी देरतक उनके मुँहसे कोई बात नहीं निकली है। अब वे माताको सम्बोधन करके गम्भीर भावसे बोले—"देवि ! यद्यपि आप जगज्जननी हैं, तथापि श्रीवास आदि भक्तवृन्दके सामने जो आपसे अपराध हो गये हैं, उनकी जबतक निवृत्ति नहीं होती, तबतक आप कदापि परमेश्वरके अनुग्रहकी पात्र नहीं हो सकतीं; क्योंकि भगवद्भक्तोंके सामने जो अपराध होता है, वह सारे शुभकर्मोंका नाशक हो जाता है—"

श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌की इस बातको काटते हुए कहा—"प्रभो ! ऐसी बात न कहें। आप जगत्पति हैं। जिसके उदर-से आप उदित हुए हैं, वे सर्वाराध्या जगज्जननी हैं। उनसे किसी प्रकारका अपराध हो ही नहीं सकता। संतान माताके सामने अपराधी होती है, यह तो सत्य है; परन्तु माता कभी पुत्रके सामने अपराधिनी नहीं होती।"

शचीमाता जड़वत् खड़ी हैं। ये सब बातें उनके कानोंमें नहीं पहुँची। वे श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें गिरकर अजस्त्र आँसू बहाने लगीं।

श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीवासपण्डितको अकेले बुलाकर चुपके-से कहा—"श्रीवास ! एक अद्भुत बात सुनो ! पूर्वकालमें श्रीकृष्णकी माता देवकीने यद्यपि श्रीकृष्णको ईश्वररूप माना था, तथापि उनके भाग्यमें ऐसी दृढ़ भक्तिका शुभ संयोग उदय नहीं हुआ था। देखो, शचीदेवीने प्रगाढ़ भक्तिके बलसे अपने पुत्रके चरण-युगलको धारण कर रखा है।"

श्रीअद्वैतप्रभु महाविष्णुके अवतार हैं। उन्होंने शचीमाताको देवकीजीसे बढ़कर भक्तिमती और सौभाग्यवती बतलाया। शचीमाताकी भक्तिकी तुलना नहीं है। वे साक्षात् विष्णुभक्तिस्वरूपिणी हैं। उनकी महिमा अपार है। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने क्या ही साधपूर्वक लिखा है—

प्राकृत शब्देओ जो वा बलिबेक 'आइ'।
आइ शब्द प्रभावे तार कोन दुःख नाइ ॥

चै. भा. म. १३.३७२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह भी श्रीअद्वैतप्रभुके श्रीमुखकी वाणी है। प्रभुके चरणतलमें उनकी परम पूजनीया जननी भूमिपर लेटी हुई पड़ी हैं। कृपानिधि श्रीगौर-भगवान्‌ने उनके मस्तकपर पैर रखकर उनको प्रेमभक्ति प्रदान की। शचीमाताका वैष्णवापराध खण्डन हो गया। प्रभुके इस अपूर्व लीलारङ्गकी विस्तृत व्याख्या यथास्थान की जायगी। प्रभुने भगवान्-भावमें माताके सिरपर पैर रखा। ईश्वरावेशमें शचीदेवीके प्रति प्रभुका मातृभाव दूर हो गया और शचीमाताके मनसे उनके प्रति पुत्रभाव कुछ समयके लिए दूर हो गया। भक्त-वत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने अपने भक्तोंकी मनोवाञ्छा पूर्ण की तथा कौशलपूर्वक माताके वैष्णवापराधका भी भञ्जन किया।

ऐश्वर्य-भाव-संवरण

अब सब भक्तोंने एकत्र होकर परामर्श किया कि जिससे प्रभुका ऐश्वर्य-भाव दूर हो, वही करना चाहिये। श्रीअद्वैतप्रभु सबके आगे होकर प्रभुके सामने जाकर हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे—

"हे नाथ! हे देव! ह्लादिनी, संधिनी और संवित्-नामसे श्रीभगवान्‌की तीन शक्तियाँ तथा षट् ऐश्वर्य यद्यपि अविच्छिन्नभावसे उनका आश्रय लेते हैं, तथापि स्वेच्छावश वे जब जिस शरीरको धारण करते हैं, तब उसी प्रकारकी प्रकृति अभिव्यक्त होती है। अतएव हे प्रभो! हमारे ऊपर कृपा करो! आपने भक्त-भाव स्वीकार करके, शैशवसे ही हमारे सौभाग्यसे परम रमणीय नररूप धारण करके आपने भक्तोंके सारे दुःख दूर करके जो परमानन्द प्रदान किया था, अब उसी माधुर्यमय नररूपको पुनः प्रकट कीजिये! पूर्वकालमें श्रीकृष्ण-भगवान्‌ने अर्जुनको अपनी ऐश्वर्यमयी विराट् विश्वरूपमूर्ति दर्शन करायी थी। अर्जुनने उनकी महामहिमामयी ऐश्वर्यमूर्तिके तेज और ज्योतिको सहन न कर सकनेके कारण श्रीभगवान्‌को उस रूपको संवरण करनेका अनुरोध किया था (गीता १.५१)। पुनः उनके माधुर्यमय मनुष्यरूपका दर्शन करके अर्जुनके मनमें शान्ति प्राप्त हुई थी। हमारी आज ठीक वही दशा हुई है। प्रभो! तुम्हारे नररूपमें भी ऐश्वर्यकी त्रुटि नहीं है। सामान्य मणिके सूत्रमें गुँथे जानेपर भी जैसे चिन्तामणिकी उत्कृष्टतामें कमी नहीं आती, उसी प्रकार इन्द्रियादिके अगोचर परम वस्तु परमेश्वरमें सामान्य मानवके समान व्यवहार करनेपर भी तनिक भी ऐश्वर्यमें कमी नहीं होती।"

श्रीगौर-भगवान् परम गम्भीरभावसे अद्वैत-प्रभुके मुखसे ये सब बातें सुनकर क्रमशः अपने ऐश्वर्य-भावको संवरण करने लगे। उन्होंने प्रसादी पुष्पमालिका अपने गलेसे उतारकर अपने हाथसे भक्तवृन्दको वितरण कर दी। चर्वित अधरामृत-ताम्बूल-प्रसाद सबको वितरण किया। भक्तवृन्द हाथ बढ़ाकर प्रभुका अधरामृत-प्रसाद लेकर परमानन्दमें भोजन करके पुलकित हो उठे तथा अपनेको कृतार्थ समझने लगे। प्रभुसे इतना आदर, इतना प्रेम, इतना स्नेह उनको पहले कभी नहीं मिला था। भक्तवत्सल महाप्रभुके निष्कपट भक्त-वात्सल्यसे भक्तवृन्दका हृदय एकबारगी गल गया। वे लोग सारा दुःख भूल गये। करुणामय प्रभुके कारुण्यरसपूर्ण श्रीमुखकी ओर देखकर सभी प्रेमानन्दमें अजस्र आँसू बहाने लगे।

सबके अन्तमें प्रभुने अपने प्रसादका अवशेष पात्र श्रीवासपण्डितकी परम सौभाग्यवती भ्रातृसुता नारायणीदेवीको दिया। ये परमसौभाग्यवती बालिका श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरकी गर्भधारिणी माता हैं। नारायणीदेवी उस समय बालिका थी। परम आनन्दपूर्वक नारायणीदेवीने प्रभुका अधरामृत-प्रसाद और चर्वित-ताम्बूल भक्षण किया। सब वैष्णवलोग बालिकाको आशीर्वाद देने लगे—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धन्य धन्य एइ से सेविला नारायण।
बालिका स्वभावे धन्य इहार जीवन॥

चै. भा. म. १०.२९१

प्रभुने उससे हँसकर कहा, "नारायणि ! कृष्ण बोल !" पाँच वर्षकी बालिका नारायणी "हा कृष्ण ! हा कृष्ण" कहकर प्रेममे आत्म-विस्मृत होकर व्याकुलतापूर्वक क्रन्दन करने लगी।

हेन प्रभु चैतन्येर आज्ञार प्रभाव।
'कृष्ण' बलि काँदे अति बालिका स्वभाव॥
अद्यापिओ वैष्णव-मण्डले जाँर ध्वनि।
'गौराङ्गेर अवशेष पात्र नारायणी'॥

चै. भा. म. १०.२९३,२९४

श्रीगौराङ्ग-भगवान्‌ने अब अपने इस महान् ऐश्वर्य भावका पूर्णतः संवरण किया। परम मधुमय माधुर्यभावमें अपने भक्तगणके साथ मिलकर श्रीवासके आँगनमें वे मधुर लीला-रङ्ग करने लगे। उनका जब ऐश्वर्य भाव था, भक्तवृन्द ऐश्वर्यभावमें मुग्ध होकर उनकी ऐश्वर्यभावमें भक्ति करते थे, भयसे दूर खड़े होकर हाथ जोड़कर उनसे बातें करते थे, दीन-भावमें आत्मनिवेदन करते थे तथा वर माँगते थे। प्रभुने जब अपना ऐश्वर्यभाव-संवरण किया तो भक्तगणने मानो लम्बी साँस छोड़ी।

प्रभु अब भी उसी सुसज्जित पलंगपर बैठे हैं। सब भक्तोंको उन्होंने अपने संनिकट आकर्षित किया। भक्तवृन्द उनको घेरकर मधुर नृत्य करने लगे और साथ-साथ मधुर गीत गाने लगे। अब सब-लोग प्रभुके श्रीअङ्गके स्पर्शका आनन्द अनुभव कर रहे हैं। इसी समय प्रभुने पुनः सबको अपना अधरामृत-चर्वित ताम्बूल-प्रसाद दिया। पलंगसे उठकर भक्तवृन्दको प्रेममें भरकर प्रेमालिङ्गन प्रदान किया। किसी-किसी अन्तरङ्ग भक्तको प्रेममें भरकर स्नेहसे चुम्बन प्रदान किया। प्रेममय श्रीगौराङ्गप्रभुने इस प्रकार मधुमय प्रेम-लीला प्रकट करके सब भक्तजनको परम परितृप्त किया।

भक्तवृन्दके मनमें आज आनन्दकी सीमा नहीं हैं। कोई प्रभुके सुन्दर मुख-चन्द्रको एकटक देख रहा है, कोई उनके श्रीअङ्गके स्पर्शके आनन्दको अनुभव करके परमविह्वल हो रहा है, कोई मनकी साधसे उनके कमला-सेवित पादकी सेवा कर रहा है, कोई आनन्दित मनसे उनके भ्रमरके समान काले घुँघराले बालोंको सँवार रहा है, कोई हृदयावेगमें प्रभुके शिव-विरञ्चि-वन्दित पाद-पद्मके मधुको चाट रहा है। आज निःसंकोच सब भक्तगण प्रेमसे प्रभुकी प्रेम-सेवा सब इन्द्रियोंके द्वारा कर रहे हैं।

श्रीवासके आँगनमें आज भक्त और भगवान्‌का निर्बाध और निःसंकोच प्रेम-मिलन हुआ है। श्रीवृन्दावनमें श्रीरास-मण्डलमें श्रीकृष्णने व्रजाङ्गनाओंके साथ जैसे स्वच्छन्द विहार किया था, श्रीवासके आँगनमें श्रीगौराङ्गप्रभु आज उसी प्रकार भक्तरूपी गोपीवृन्दके साथ महासंकीर्तन-रासलीला-रङ्ग कर रहे हैं। प्रभुकी मदन-मोहन अपरूप—रूप छटासे, सर्वाङ्गके अपूर्व माधुर्यभावसे, नयन-रञ्जन अङ्ग-भङ्गीसे, विलोल कटाक्षसे और सर्वोपरि उनके प्रेमरस-सिञ्चित मधुर भाषणसे भक्तवृन्दके मन प्रेमानन्द-रसमें उन्मत्त हो रहे हैं। भक्त और भगवान्‌के बीच प्रेमका स्वच्छन्द आदान-प्रदान चल रहा है, स्नेहका सराबोर मिश्रण हो रहा है। प्रेममय प्रभु प्रेमावेशमें अपने अन्तरङ्ग भक्तवृन्दको पकड़कर किसीको प्रेम-चुम्बन-आलिङ्गन प्रदान कर रहे हैं, किसीको कलेजेसे लगा रहे हैं, किसीका हाथ पकड़कर नयन-रञ्जन मधुर नृत्य कर रहे हैं, किसीके गलेमें बाहु लपेटकर स्नेहपूर्वक मस्तकको सूँघकर भक्तरूपी गोपीवृन्दको प्रेमोन्मत्त कर रहे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीकृष्णने रासमण्डलमें अपनी एकान्त अनुरक्त गोपाङ्गनाओंके साथ इसी प्रकार प्रेम-लीलारङ्ग किया था (श्रीम. भा. १०.४७.६०)। रास-क्रीड़ाके समय श्रीकृष्णके बाहुदण्डमें आलिङ्गित-कण्ठ सर्वाह्लादिनी शक्तिकी ललामभूता व्रजवनितावृन्दके साथ नदियाके इन गौर-भक्तोंका पूर्ण सादृश्यभाव लक्षित होता है। श्रीगौराङ्ग-लीलामें व्रजाङ्गनाएँ नवद्वीपमें भक्तरूपमें उदय हुई थीं। पहले कह चुका हूँ कि श्रीगौराङ्ग-अवतारमें श्रीहरिनाम-संकीर्तन-यज्ञ ही रासलीला है। भक्तवृन्द व्रज-गोपिकाएँ हैं, श्रीवासका आँगन श्रीरासमण्डल है। इतना प्रीतिका सम्बन्ध, इतना स्नेह, इतनी ऐकान्तिक प्रेमरति, इतना मेल-मिलापका भाव श्रीभगवान्‌की वक्ष-विलासिनी लक्ष्मीजीके भाग्यमें भी नहीं बदा था। व्रजाङ्गनाएँ श्रीकृष्णकी अत्यन्त वल्लभाके रूपमें प्रसिद्ध हैं; नदियाके भक्तगण उसी प्रकार श्रीगौराङ्गप्रभुके एकान्त प्रेम-पात्र थे।

लौकिक व्यवहारमें श्रीश्रीलक्ष्मी-विष्णुप्रिया-देवीकी अपेक्षा भी भक्तगण प्रभुके अधिक प्रिय थे। श्रीवासके आँगनमें प्रभु प्रेमके रङ्गमें संकीर्तनके आनन्दमें भक्तगणके साथ सारी रात बिताकर प्रातःकाल घर जाते थे। श्रीविष्णुप्रियादेवीके भाग्यमें स्वामीका सङ्ग कदाचित् ही कभी प्राप्त होता। और भक्तगण सदा ही प्रभुके सङ्गकी प्राप्तिका सौभाग्य-सुख भोगते।

श्रीगौराङ्गप्रभुने इस प्रकार श्रीवासके आँगनमें उस दिन सारी रात आनन्द-विहार किया। रात प्रायः बीतनेको आयी। भक्तवृन्द सारी रात नाम-संकीर्तन करके क्लान्त और श्रान्त हो गये। इस प्रकारकी ऐश्वर्यपूर्ण भगवच्छक्तिका प्रभाव सामान्य मनुष्य सहन करनेमें सर्वथा असमर्थ थे। प्रभुकी कृपाके बलसे सात पहरतक नदियाके भक्तोंने परम अद्‌भुत ऐश्वर्यमय श्रीभगवान्‌का सङ्ग किया, लीलामें सहायता की। शक्तिशाली ऋषिगण भी एक क्षणमात्रके लिए भी श्रीभगवान्‌के इस प्रकारके तेज और ऐश्वर्यभावको सहन नहीं कर सकते।

श्रीअद्वैतप्रभुने इसी कारण इससे पूर्व श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें निवेदन किया था—"प्रभो! अपने इस परम अद्‌भुत ऐश्वर्यभावरूपको संवरण करो!" उनके कथनके अनुसार भक्तवत्सल प्रभुने ऐश्वर्यभावको संवरण करके माधुर्यभावमें भक्तोंका चित्तानुरञ्जन किया।

पुनः एक वार और प्रभुका ऐश्वर्य-भाव आया। वे भगवान्-भावमें पुनः विष्णु-सिंहासनपर बैठ गये। भक्तोंकी आँखें मानो श्रीगौर-भगवान्‌की श्रीअङ्गकी ज्योतिसे झुलस गयीं। शङ्कित होकर सबलोग श्रीअद्वैतप्रभुके मुखकी ओर देखने लगे। उन्होंने पुनः हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें कातरभावसे निवेदन किया—"हे प्रभो! अब हम तुम्हारी ऐश्वर्यप्रकाशरूप ज्योतिको नहीं सहन कर पाते हैं। दयामय! कृपा करके माधुर्यमय नररूप धारण करो!"

यह बात सुनकर श्रीगौर-भगवान् हँसकर बोले—"तुमलोगोंकी इच्छा पूर्ण हो! में शीघ्र जा रहा हूँ।"* तब श्रीअद्वैतप्रभु आदि नदियाके सब भक्तवृन्द अत्यन्त दुःखित होकर बोले—"प्रभो! आप यदि ऐसी बात करते हैं तो हम-सब गलेमें

---

*इत्येवं बहु विलसन् कृतप्रकाशो
भूयोऽपि प्रभुरधिगम्य देवगेहम्।
तान् सर्वान् वददलं विलम्बितै-
स्तच्छामीत्यतिकमनीयगौरदेहः॥
तच्छ्रुत्वा वचनममुष्य ते समस्ता
अद्वैतप्रभृतय एवमेवमूचुः।
एवं चेद्यमपि तद् गले कृपाणं
बद्धैवतत् सपदि शरीरमाजहीमः॥

श्रीचैतन्यचरितामृत महाकाव्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रस्सी बाँधकर मर जायँगे।" यह सुनकर कृपानिधि प्रभुने मधुर मुस्कुराते हुए कहा—"तुम लोग यह क्या कह रहे हो ?"

प्रभुकी दारुण मूर्च्छा

श्रीगौर-भगवान् हुंकार-गर्जन करके भूतलपर गिर पड़े और नितान्त ज्ञानशून्य अवस्थामें निश्चेष्ट होकर पड़ गये।

भक्तवृन्द दुःख और शोकसे निर्जीव हो उठे। बहुत चेष्टा करके भी वे प्रभुको सचेत न कर सके, तब वे प्रभुको घेरकर बैठ गये और भयानक आर्तनाद तथा हाहाकार करने लगे। श्रीअद्वैतप्रभु हुंकार-गर्जन करके अत्यन्त उच्च स्वरसे प्रभुका नाम लेकर पुकारने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभुके आकुल क्रन्दनके उच्च आह्वानसे भी श्रीगौर-भगवान्‌को चेतनता न आ सकी। भक्तवृन्दके आर्तनादके रवसे श्रीवासका आँगन भर गया। उनके दुःखकी सीमा न रही। इतना आनन्द, इतना सुख, मानो क्षणमात्रमें कहाँ लुप्त हो गया ? सबलोग दुःखके समुद्रमें निमज्जित होने लगे।

रात दो दण्ड हैं, प्रभु निश्चेष्ट होकर मूर्च्छित पड़े हैं; सूर्योदय हो गया, परन्तु उनको चेतना नहीं आयी। भक्तोंने प्रभुकी ऐसी विषम मूर्च्छावस्था कभी नहीं देखी थी। उनके मनमें बड़ा भय उत्पन्न हुआ। अब वे उच्च स्वरसे क्रन्दन नहीं करते, भीषण आर्तनाद नहीं करते; सभी शोकार्त होकर अजस्र आँसू बहा रहे हैं और गालपर हाथ रखकर निःसंज्ञ प्रभुके पास बैठकर गम्भीर चिन्तामें मग्न हैं ! अद्वैतप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌के नासिकाके अग्रभागमें रुई लगाकर देखते हैं कि उनकी श्वास-क्रिया चल रही है या नहीं। उनमें जीवनका कोई लक्षण दिखलायी नहीं दे रहा है।

भक्तोंने मन-ही-मन निश्चय किया कि यदि प्रभु इसी प्रकार उनको दुःख-समुद्रमें डुबाकर चले जाते हैं तो वे अब प्राण-त्याग देंगे। सब एक साथ गङ्गामें कूदकर प्राण-त्याग कर देंगे। ऐसा संकल्प करके सब चुप-चाप रो रहे हैं। ऐसी अवस्थामें बहुत देरतक प्रभुके निश्चेष्ट मुख-चन्द्रको देखते देखते दारुण मर्म-वेदनासे भक्तवृन्द पसीने-पसीने होकर मोहको प्राप्त हो गये। प्रभुकी कृपासे जब उनका मोह टूटा तो वे विलाप करने लगे—

यातैषा सपदि निशा समुद्गतोऽर्कः
सम्पन्नोऽपि च घटिकार्ध एव सोऽपै।
यामार्धस्तदनु च याम एष भूतो
हा हा किं तदपि मुखो नैव नाथः॥

श्रीचैतन्यचरित

"रात तो देखते-देखते बीत गयी। सूर्यदेव भी उदय हो गये, आधी घड़ी समय भी चला गया, आधा पहर—क्रमशः एक पहर दिन निकल गया। हा अदृष्ट ! अब भी हमारे जीवन-सर्वस्व श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रको चेतना नहीं आयी।"

सब भक्तलोग इस प्रकार परस्पर करुण-विलाप करने लगे। उन्होंने समझा कि प्रभु उनकी मायाका बन्धन तोड़कर सदाके लिए चले गये। यह बात मनमें आते ही भक्तवृन्दका हृदय टूक-टूक हो गया। भक्तोंके मनमें प्रभुकी इच्छासे इस प्रकारका भाव उदय होते ही वे शोकानलमें दग्ध होने लगे। श्रीवासके आँगनका द्वार बंद करके सब मिलकर धर-पकड़ करके बाह्य ज्ञान-शून्य अचेतन प्रभुको आँगनसे घरमें ले आये। घरके भीतर बैठकर सबलोग प्रभुके प्रफुल्ल और निश्चेष्ट मुखचन्द्रकी ओर देखकर आकुलहृदयसे चुपचाप आँसू बहाने लगे। श्रीअद्वैतप्रभु अतिशय कातर-कण्ठसे शत-शत हुंकार-गर्जन करके हाथमें शीतल जल लेकर प्रभुके मुखचन्द्रपर बारम्बार छींटा देने लगे; परन्तु किसी भी उपायसे उनकी चेतना नहीं लौटी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबने परामर्श करके बहुत धैर्यपूर्वक अतीव कातर स्वरमें प्रभुके कानोंके पास मृदु-मृदु नाम-कीर्तन करना शुरू किया। बहुत देरतक इस प्रकार कीर्तन करनेपर भी उसे सुनकर प्रभु होशमें न आये। श्रीवास आदि भक्तवृन्दने तब बिल्कुल हताश होकर करुण-क्रन्दनके स्वरमें 'कुञ्जभङ्ग-गीत' प्रारम्भ किया। मुकुन्दने मधुरकण्ठसे सुर पकड़ा—

यथा राग।

उठ उठ आजि एकि अद्भुत
घूम घुमायेछ चतुर ओहे।
एरूप कथन ना देखिये,
तुया रीति आर कत बुझाब तोहे॥
ए असमये एत अलसे कि सुख,
आने हासि करे तोमार काजे॥

नरहरि

मूर्च्छा-भङ्ग

इस प्रकार मधुर-कीर्तन-सुधारस जब क्रमशः निरन्तर प्रभुके श्रवण-पथके द्वारा चित्तमें प्रविष्ट हुआ, तब उनके श्रीअङ्गकी रोमावलि पुलकित होती हुई दीख पड़ी। यह देखकर भक्तोंके मनमें आशाका संचार हुआ, हर्षका उदय हुआ, देहमें जान आयी। तब भी सबलोग कीर्तन करते रहे।

दोपहर दिन बीत गया। प्रभुको रोमहर्षके साथ-साथ चेतना आ गयी। उन्होंने अत्यन्त कष्टपूर्वक उसी स्थानपर धीरे-धीरे करवट बदली। उस समय भी धीरे-धीरे मधुर कीर्तन चल रहा था। प्रभुको करवट बदलते देखकर भक्तवृन्द आनन्दित होकर उच्च स्वरसे कीर्तन करने लगे। उच्च संकीर्तनकी ध्वनिसे श्रीवासका आँगन प्रकम्पित हो उठा। अन्तःपुरसे पुर-नारीवृन्द बारम्बार हुलु-ध्वनि देने लगीं। एक साथ सैकड़ों शुभ शङ्ख बज उठे। प्रभुको घेरकर सबलोग कीर्तनानन्दमें नृत्य करने लगे।

अखिलरसामृतसिंधु भक्तवाञ्छा-कल्पतरु श्रीगौर-भगवान् धीरे-धीरे उठे। तब भक्तवृन्द एकबारगी आनन्दसे उन्मत्त हो गये। कोई प्रभुके श्रीमस्तकपर सुशीतल जल ढालने लगा, कोई उनको धीरे-धीरे पंखा झलने लगा, कोई श्रीअङ्गकी धूलि झाड़ने लगा। किसीने वस्त्र पहना दिया।

आनन्द-कोलाहलसे श्रीवास-मन्दिर पूर्ण हो गया। इसी आनन्द-कोलाहलके बीच कमल-नयन प्रभुके नेत्र-कमल उन्मीलित हो गये। निद्रा-भङ्ग होनेके बाद जैसे लोग जमुहाई लेते हैं, प्रभुने भी उसी प्रकार दो-एक विक्षोभजनक जमुहाइयाँ लीं। भक्तवृन्द अब प्रभुको उठानेकी चेष्टा करने लगे; परन्तु प्रभु स्वयं ही उठकर पलंगपर बैठे।

उनके श्रीअङ्गकी कान्तिकी छटासे घर आलोकित हो गया। शारदीय चन्द्रमाके समान वे सुशोभित होने लगे। भक्तवृन्दके आनन्दकी सीमा न रही।

पलंगपर बैठकर परमचकित-से होकर प्रभु इधर-उधर ताकने लगे। उन्होंने देखा कि उनका अपना शरीर तथा सब भक्तोंका शरीर धूलि-धूसरित है। दिनका तृतीय प्रहर बीत गया हैं; उनको लज्जा लगने लगी। वे मुँह नीचा करके दन्तपुष्पसे अधरोष्ठ विभिन्न करके निद्रित व्यक्तिके समान अलसभावसे दो-एक बातें करने लगे। धीरे-धीरे उनका अलस-भाव दूर हो गया। वे बहुत धैर्यपूर्वक भक्तोंको सम्बोधन करके बोले—"हे भक्तगण! आज यह क्या हुआ? मैं क्या इतनी दीर्घकालतक निद्राग्रस्त था? यहाँ इतनी बेलातक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैं क्यों बैठा हूँ ? प्रातःकाल छात्रोंको पढ़ाया था, वह भी ठीक याद आ रहा है।"

श्रीवासपण्डितने तब हँसकर उत्तर दिया—"प्रभो ! इस बार चोर पकड़ा गया है। हमलोगोंने तुमको पहचान लिया है। अब तुम हमारे ऊपर प्रभुत्व नहीं चला सकोगे।"

चतुर-चूड़ामणि प्रभुने विस्मित-से होकर श्रीवासके मुँहकी ओर देखकर पूछा—"कौन चोर है ? कौन पकड़ा गया है ? किसके द्वारा पकड़ा गया है ? किसके घर किसने चोरी की ? किसने चोरको पहचाना ?—मैं तो यह कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ। तुमलोग क्या मेरी हँसी उड़ा रहे हो ?" चतुर भक्तने चतुर-चूड़ामणि भगवान्‌के मनका भाव समझा और मन-ही-मन खूब हँसे।

श्रीवासपण्डितने समझा कि प्रभुका अब भगवान्-भाव नहीं रह गया है। उनके साथ अब पूर्वभावके सम्बन्धमें कोई बात कहना आवश्यक है। श्रीवासपण्डितने प्रभुको समझाकर कहा—"प्रभो ! आपको मूर्च्छा लग गयी थी। बहुत देरतक आप अचेत अवस्थामें भूतलपर पड़े रहे, इससे हमारे मनमें बड़ा भय हो गया था। इसी कारण आपको लेकर हम इतनी देर बैठे रहे। इसी कारण इतनी बेला हो गयी है।"

श्रीवासकी बात सुनकर प्रभु लज्जित हो गये। उन्होंने भक्तोंके मनको दुःखित किया है, अतएव सबके सामने हाथ जोड़कर क्षमा-प्रार्थना की। प्रभुके तत्कालीन भावको देखकर श्रीवास आदि भक्तवृन्द हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

पूर्व दिनका आठों पहर काल और दूसरे दिनका तीन पहर काल, कुल ग्यारह पहरतक भक्तलोगोंको स्नान-भोजन, निद्रा-गृहकार्य—यहाँतक कि देह-धर्मका भी कुछ ज्ञान न रहा। उनको यह लम्बा ग्यारह पहरका काल मानो क्षणके समान जान पड़ा। भक्तवृन्दकी तात्कालिक कायिक और मानसिक अवस्था कैसी थी, श्रीपाद कविकर्णपूर गोस्वामी-रचित निम्नलिखित श्लोक पाठ करनेसे समझा जा सकता है—

नेत्राभ्यां चिरमुपवाससस्पृहाभ्यां
श्रोत्राभ्यां बधिरतया विवर्जिताभ्याम् ।
स्वान्तेन प्रथमसमुद्गतेन लोका
निस्स्पन्दा इव सततं बभूवुरेते ॥

'एकादश पहरतक भक्तोंके आँख और कान एकमात्र प्रभुके अपूर्व रूप-दर्शन और उनके श्रीवदनकी मधुर वाणीके श्रवणके सिवा और कोई कार्य नहीं करते। उनके अन्तःकरण बिल्कुल ही शिशुभावापन्न हो गये थे। वे लोग आनन्दस्वरूप होकर निस्स्पन्दभावमें प्रभुकी अपरूप-रूप-सुधाके पानमें मत्त थे।"

वैष्णव-गृहिणीगणकी अवस्था भी वैसी ही थी। श्रीपाद कविकर्णपूर गोस्वामीने लिखा है—

अश्रान्तं गतनिमिषं विलोकयन्त्यो
गौराङ्गाहितपरमप्रसादमुग्धाः ।
देहादि क्षणमपि नैवमस्मरुस्ताः
बाह्यान्तः प्रमोदभरेण विप्रपत्न्यः ॥

"वैष्णव-गृहिणीगण निरन्तर निर्निमेष दृष्टिसे प्रभुका दर्शन करके और प्रभुके अपूर्व कृपा-प्रसादसे मुग्ध होकर भीतर-बाहर हर्षयुक्त होकर सभी देहधर्मको भूल गयी थीं। क्षणभरके लिए भी उनका मन दूसरी ओर नहीं जाता था।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुकी सर्वचित्ताकर्षक महामहिमामय ऐश्वर्य-रूप-प्रकटन-लीलाको देखनेमें सब भक्तोंकी आहार-निद्रा, क्षुत्पिपासा आदि देहधर्म दो दिनके लिए बिल्कुल ही लुप्त हो गये थे। प्रभुकी कृपाके बलसे उन्होंने इस प्रकार देहधर्म त्यागकर एकान्तभावसे इतनी देर भगवद्दर्शनानन्दमें मग्न रहनेकी शक्ति प्राप्त की थी। यही प्रभुका अलौकिक लीलारङ्ग है। यही श्रीभगवान्‌का लीला-रहस्य है। कृपासिंधु भक्तवृन्द ही भक्तके भगवान् श्रीश्रीगौराङ्गचन्द्रके इस लीला-रहस्यको समझ सकते हैं।

सर्वज्ञ श्रीगौर-भगवान् सब कुछ जानते हैं। ग्यारह पहरतक भक्तवृन्द उपवासी हैं; उनको बड़ी थकावट आ गयी है, भूख-प्याससे उनका शरीर अवसन्न हो गया है। भक्तवत्सल इच्छामय प्रभुके मनमें गङ्गा-स्नानकी इच्छा हुई। उन्होंने स्नान करनेकी इच्छा प्रकट की। श्रीनित्यानन्दप्रभु उनकी इच्छाशक्ति हैं। वे प्रभुके सामने हँसते हुए बोले—"हम सबलोग भूखसे मर रहे हैं, कलसे पेटमें एक बूँद पानी भी नहीं पड़ा है। हमलोग अब तुम्हारे साथ बैठ नहीं सकते। व्यर्थ बोलनेकी आवश्यकता नहीं है, चलो, अब स्नान करके भोजनादिकी व्यवस्था की जाय।" श्रीअद्वैतप्रभुने हँसकर कहा—"आज अधिक बेला हो गयी है। शचीमाता भोजन बनाकर बैठी हैं। चलो, सबलोग आज वहीं चलकर प्रसाद पावें।" श्रीवासपण्डितने तत्काल शचीमाताके पास यह संवाद देकर आदमी भेजा।

गङ्गा-स्नानकी तैयारी होने लगी। भक्तवृन्दने प्रभुके स्नानके वस्त्र आदि सब पदार्थ ले लिये। प्रभुके श्रीअङ्गमें सुगन्धित तेल लगाया। सब भक्तवृन्दके साथ प्रभु गङ्गा-स्नानके लिए चले।

प्रभुने गङ्गा-स्नान करके पुनः श्रीवासके आँगनमें आकर गन्ध-माल्य-चन्दनसे भूषित होकर अपरूप शोभा धारण की। श्रीवासपण्डितने सपरिवार आकर प्रभुकी पूजा की। उनको श्रेष्ठ रेशमी वस्त्र पहनाया। अगरु-चन्दनसे उनका सर्वाङ्ग चर्चित करके उन्होंने अतुल आनन्दका अनुभव किया।

अन्यान्य भक्तवृन्दके अपने-अपने घर जानेपर श्रीगौराङ्गसुन्दर श्रीअद्वैत और नित्यानन्दप्रभु तथा श्रीवास आदि अन्तरङ्ग भक्तगणोंको साथ लेकर अपने घर आये। शचीमाता पुत्रका मुख-चन्द्र देखकर आनन्द-सागरमें डूब गयीं। प्रभुके घरपर उस दिन भक्तवृन्दने प्रसाद पाया। शचीमाताने श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीअद्वैतप्रभु तथा श्रीवास आदि भक्तवृन्दको परम यत्नपूर्वक स्वयं भोजन परसकर खिलाया। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी पाक-कार्यमें शचीमाताका दाहिना हाथ हैं। उन्होंने बड़े आनन्दसे वैष्णव-भोजनोत्सवमें सहायता की।

उपसंहार

प्रभुका यह महामहिमामय परम अद्‌भुत महाप्रकाश-लीलारङ्ग एक आश्चर्यजनक व्यापार है। श्रीभगवान्‌का रूप धारणकर सात पहरतक एक भावमें ऐश्वर्य-प्रदर्शन करके सुसज्जित विष्णु-सिंहासनपर बैठकर नदियाकी भक्त-मण्डलीके पास भगवान्-भावमें पूजा, भोग, नैवेद्य आदि ग्रहण करना, भक्तवृन्दको वरदान देना, उनके मुखसे स्तुति—स्तवन सुनना, वयोवृद्ध ब्राह्मणोंके सिरपर पैर रखना, पूजनीया माताके मस्तकपर पाद-पद्म अर्पण करना—ये सारे व्यापार क्या साधारण मनुष्य कर सकते हैं? किस महापुरुषने यह किया है? कहीं ऐसा अद्‌भुत काण्ड आपने सुना है? इसके बाद प्रभुने अपनी सर्वज्ञताका परिचय देकर भक्तोंके मनमें अपनी भगवत्ताके सम्बन्धमें दृढ़ विश्वास पैदा कर दिया। बहुत दिनकी गुप्त बात, अपने आविर्भावसे बहुत दिन पहलेकी कथा एक-एक करके भक्तोंको कह सुनायी। कुलकामिनीगणके मस्तकपर पदार्पण करके बोले—"तुमलोगोंका चित्त मेरी ओर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आसक्त हो !" यह बात क्या मनुष्य बोल सकता है ? एक भगवान्‌के सिवा अन्य किसीके मुखसे ऐसी बात शोभा नहीं पाती। इसी एक बातसे श्रीगौराङ्ग-प्रभुकी भगवत्ता प्रमाणित हो सकती है।

भक्तिविहीन कलिके जीवोंको श्रीभगवान्‌की ऐश्वर्य-मूर्ति-प्रदर्शन कराकर अपने चरण-कमलमें आकृष्ट करानेके लिए ही प्रभुका यह महाप्रकाश-लीलारङ्ग हुआ था। प्रकाश्य भावसे सबके सामने भक्तवृन्दको अपना चरण-मधुदान करके उनको अभीष्ट वरदान देकर भगवच्चरण-मधुसे बहिर्मुख जीवमें लोभ उत्पन्न करनेके लिए प्रभुका यह अपूर्व-लीलारङ्ग हुआ था। श्रीगौर-भगवान्‌ने दिखलाया कि वे स्वतन्त्र पुरुष होकर भी, उनकी ऐश्वर्यपूर्ण श्रीमूर्ति ध्यान-धारणाकी वस्तु होनेपर भी, उनका साक्षात् दर्शन जीवके लिए असम्भव होनेपर भी कलिके दुर्बल जीवके लिए हरिनाम-संकीर्तन युगधर्माचरणसे यह सब सम्भव है। एकमात्र भक्तिपथ ही कलिमें जीवके साधन-भजनमें उपयोगी है, युगधर्म हरिनाम-संकीर्तनसे उनको सर्वसिद्धि प्राप्त हो सकती है और इसीसे श्रीभगवान्‌का साक्षात् दर्शन प्राप्त हो सकता है। हरि-संकीर्तन महा-यज्ञानुष्ठानमें परम दयालु श्रीभगवान्‌को दिल खोलकर निष्कपट भावसे पुकारनेपर वे आकर भक्तगणको साक्षात् दर्शन देते हैं। हरिनाम-संकीर्तन-युगधर्मका अनुष्ठान करनेवाले सभी भक्त भक्तिपथके पथिक हैं। श्रीभगवान्‌की प्रकाश-मूर्तिके दर्शनसे वे कभी वञ्चित नहीं होते।

नवद्वीपमें तो अनेकों योगी, संन्यासी, कर्मी और ज्ञानी थे। उनको तो प्रभुके इस अपूर्व और परम अद्‌भुत महाप्रकाश-लीलारङ्गका दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। भक्तके सिवा और कोई श्रीभगवान्‌की ऐश्वर्य-प्रकाशमूर्तिका दर्शन प्राप्त नहीं कर सकता। श्रीगौर-भगवान्‌ने इस महाप्रकाश-लीलारङ्गके बहाने नवद्वीपमें परिपूर्ण भावमें आत्मप्रकाश किया था। उनकी भगवत्ताके सम्बन्धमें जिनके मनमें जो संदेह था, वह यहाँ एकबारगी दूर हो गया।

नदियाके सब भक्तोंने एक स्वरसे प्रभुका जय-गान किया—

जयति जयति देव श्रीशचीगर्भजन्मा
जयति जयति देव प्रेमदानैकधर्मा।
जयति जयति मेरुस्पर्द्धि गौराङ्गनामा
जयति जयति धन्य कृष्णचैतन्यनामा॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इकतालीसवाँ अध्याय

शान्तिपुरमें श्रीअद्वैताचार्यके साथ प्रभुका लीलारङ्ग

यदि लुकाइबि भक्ति तोर चित्ते आछे ।
तबे मोरे प्रकाश करिलि कोन काजे ।।

चै. भा. म. ११.१४२

—अद्वैताचार्यके प्रति प्रभुवाक्य

महाप्रकाशके पश्चात्

नदियाके प्रभुने जब महाप्रकाश-लीलारङ्गमें आत्मप्रकाश किया, तब उनकी अवस्था तेईस वर्षमात्र थी। इस नयी उम्रमें श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने नवद्वीपके अधिकांश लोगोंको श्रीभगवान्-भावमें आत्मसात् कर लिया। पहले नदियावासी पण्डित-मण्डली तथा अन्यान्य गण्यमान्य लोग उनको अध्यापकराज और पण्डित-शिरोमणिके रूपमें ही जानते थे; अब उन लोगोंने जाना कि निमाई-पण्डित केवल विद्या-गौरवमें और पाण्डित्य-प्रतिभामें ही जगत्पूज्य नहीं हैं, बल्कि उनमें एक ऐसी अलौकिक शक्ति है, जो मनुष्यमें सम्भव नहीं है तथा जिस असाधारण शक्तिके बलसे वे सब-लोगोंके हृदयमें अधिकार करनेमें समर्थ हैं। उनका अपरूप-रूप सर्वचित्ताकर्षक है; वे सर्वगुणोंके गुणमणि हैं। उनके असाधारण गुणोंसे सब उनके वशीभूत हैं।

सारी नदियामें यह खबर फैल गयी कि निमाईपण्डित श्रीवासके आँगनमें भगवान्-भावमें अपने सब भक्तोंके द्वारा पूजित हुए हैं। पूजा, आरती, नैवेद्य, भोग, स्तवन-स्तुति, वन्दना, वर-प्रार्थना आदि सब अनुष्ठान विधिपूर्वक हुए हैं। उनकी श्रीअद्वैताचार्य, श्रीवासपण्डित आदि वृद्ध इष्टनिष्ठ ब्राह्मणोंने शास्त्रोक्त मन्त्रपाठ करके साक्षात् भगवान्-रूपमें पूजा की है। नदियावासी नर-नारी स्वभावतः श्रीगौराङ्गप्रभुके रूपसे आकृष्ट तथा गुणपर मुग्ध हैं; परन्तु उनकी भगवत्तामें बहुतोंको विश्वास नहीं होता था। प्रभुकी महाप्रकाश-लीलामें गौर-भक्तवृन्दने ही उनकी ऐश्वर्य-प्रकाश-मूर्तिका दर्शन किया था। साधारण लोग प्रभुके भगवान्-भावके दर्शनके अनाधिकारी हैं। साक्षात् श्रीभगवान्की प्रकाश-लीला-रसास्वादनके अधिकारी भक्तोंकी संख्या बहुत कम है। नदियाके सब बहिरङ्ग लोगोंने जब श्रीगौराङ्गप्रभुकी महा-प्रकाश-लीलारङ्गकी बात सुनी तो वे चकित हो उठे। उनमें योगी और ज्ञानी पण्डितोंकी संख्या अधिक थी। वे निमाईपण्डितको विशेषरूपसे जानते थे। उनकी पाण्डित्य-प्रतिभा और विद्या-गौरवसे वे निष्प्रभ हो गये थे। विद्या-गौरवमें नदियाके निमाईपण्डित अद्वितीय हैं, यह वे स्वीकार करते थे; परन्तु उनको श्रीभगवान्का आसन देनेके लिए वे कदापि तैयार न थे।

इन सब पाण्डित्याभिमानी, ज्ञानगर्वी, भक्ति-बहिर्मुख लोगोंके उद्धारके लिए ही प्रभुने गृह-त्याग और संन्यास-ग्रहण किया। जब वे संन्यास-ग्रहण करके भिखारीके वेषमें कुलिया ग्राममें आये, उस समय उनकी अपूर्व ऐश्वर्यपूर्ण महामहिमामय संन्यास-मूर्तिका दर्शन करके, उनके परम अद्भुत वैष्णवविशिष्ट भगवत्-प्रभावका अनुभव करके वे सब भक्ति-बहिर्मुख लोग उनको श्रीभगवान्का अवतार स्वीकार करनेके लिये बाध्य हुए थे। ये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सब लीला-कथाएँ आगे विस्तारपूर्वक कही जायँगी।

श्रीअद्वैताचार्यको श्रीगौराङ्गप्रभु आकर्षित करके शान्तिपुरसे नवद्वीप ले आये प्रभुके आदेशके अनुसार उन्होंने दो वर्ष नवद्वीपमें वास किया। प्रभु जब भगवान्-भावमें आविष्ट होते थे, तब श्रीअद्वैतप्रभुको वे चरण-धूलि देते थे, उनकी पूजा होती थी, उनका प्रसाद बटता था; परन्तु जब वे आत्मगोपन करते थे, तब भक्त-भावमें उनका गुरुतुल्य सम्मान करते थे, उनकी पद-धूलि लेते थे। व्यवहारमें प्रभुके इस रूपसे श्रीअद्वैतप्रभुके मनमें बड़ा कष्ट होता था। वे इस महाविपद्से कैसे उद्धार प्राप्त करेंगे, यह सोचकर उनका चित्त व्याकुल हो उठता था। श्रीअद्वैतप्रभुका चरित्र अतिशय गम्भीर था। उसको समझनेकी शक्ति किसीमें न थी। उन्होंने सोच-समझकर इसका एक उपाय खोज निकाला और उसको कार्यान्वित करनेका संकल्प किया।

अद्वैतप्रभुके इस संकल्पका गूढ़ मर्म है। प्रभु अद्वैताचार्यमें गुरुबुद्धि रखते थे और उनकी पद-धूलि ग्रहण करते थे, यह स्वाभाविक था। लौकिक आचारमें श्रीअद्वैताचार्य शचीनन्दनके सामने सब विषयोंमें पूज्य और वन्दनीय थे; परन्तु शचीनन्दन क्या वस्तु . इनका क्या तत्त्व है, यह अद्वैताचार्य अब विधिपूर्वक जान गये हैं। इसी कारण वे प्रभुके इन सब कार्योंको देखकर मर्मान्तिक दुःख पाते हैं। प्रभु परमसुन्दर युवक हैं, अतिशय बलवान् हैं और वे वृद्ध हैं। बलपूर्वक प्रभु उनकी चरण-धूलि ग्रहण करते हैं। श्रीगौर-भगवान्की यह उलटी लीला देखकर अद्वैताचार्यने मन-ही-मन संकल्प किया कि वे अब नदियामें नही रहेंगे, प्रभुके साथ भेंट न करेंगे। भक्तिधर्मका प्रचार करनेके लिए प्रभुने नदियामें जन्म-ग्रहण किया है। श्रीअद्वैताचार्यने संकल्प किया कि वे भक्ति-विरोधी मतका प्रचार करेंगे, जिससे प्रभुको क्रोध होगा और वे उनका इस प्रकार सम्मान नहीं करेंगे और केश पकड़कर अपने हाथों उपयुक्त दण्ड देंगे।

श्रीभगवान् जिसको दण्ड देते हैं, वह बड़ा भाग्यशाली होता है—इस सौभाग्यकी प्राप्तिके लिए श्रीअद्वैतप्रभुने मन-ही-मन संकल्प किया और किसी कार्यके बहाने नवद्वीपसे अपने निवासस्थान शान्तिपुरमें आये। उन्होंने हरिदास ठाकुरको साथ ले लिया। यह एक पक्षकी बात है।

दूसरा पक्ष कहता है कि श्री अद्वैतप्रभुके मनका संदेह अभी पूरा-पूरा दूर नहीं हुआ था। रँगीले प्रभुका लीलारङ्ग जैसे जीव-बुद्धिके लिए अगम्य है, श्रीअद्वैतप्रभुका गम्भीर चरित्र भी उसी प्रकार महासमुद्रके समान अथाह है। श्रीभगवान् जैसे विधिपूर्वक भक्तकी परीक्षा करके उसे निजजन बना लेते हैं, भक्त भी उसी प्रकार श्रीभगवान्की परीक्षा करके उन्हे निजाङ्ग बना लेता है। श्रीअद्वैतप्रभुका यह कार्य इसका ज्वलन्त दृष्टान्त है। वे नदियाके अवतार शचीनन्दनकी परीक्षा करनेके लिए शान्तिपुर चले। प्रभु यदि सचमुच उनके अभीष्ट-देव हैं और वे यदि प्रभुके निजजन हैं तो अवश्य केश पकड़ करके उनको पुनः नवद्वीपमें खींच लेंगे। अपने अपराधके लिए दण्ड देकर कृतार्थ करेंगे—यह सोचकर चतुरचूड़ामणि श्रीअद्वैतप्रभु शान्तिपुरमें जाकर योगवासिष्ठकी व्याख्या करने लगे। भक्तिकी अपेक्षा ज्ञानकी प्रधानता योगवासिष्ठ-शास्त्रका मूल-मन्त्र है।

श्रीअद्वैताचार्यद्वारा ज्ञानका प्रचार

अद्भुतचरित श्रीअद्वैताचार्य व्यास-आसनपर बैठकर भावावेशमें उन्मत्त होकर भक्तिकी अपेक्षा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ज्ञानकी श्रेष्ठता प्रतिपादन करके लोगोंको समझाने लगे—"ज्ञानके बिना विष्णु-भक्तिमें भला क्या शक्ति रह जाती है; इसलिये सबका प्राण, सबकी शक्ति 'ज्ञान' ही है। ऐसे ज्ञानके बिना कोई-कोई मनुष्य बाहर अन्य चेष्टा करते हैं, मानो वे अपने घरके धनको भूलकर वनमें जाकर उसको ढूँढ़ते हैं। विष्णु-भक्ति तो दर्पण है और ज्ञान नेत्र हैं। नेत्रहीन जनको दर्पणसे क्या मतलब? मैंने सब शास्त्र आदिसे अन्ततक पढ़े हैं और उससे यही समझा है कि सब शास्त्रोंका अभिप्राय ज्ञान ही है।"

हरिदास ठाकुर भक्तावतार श्रीअद्वैताचार्यकृत यह व्याख्या सुनकर मन-ही-मन हँसते हैं। वे अद्वैतके चरित्रसे भली-भाँति परिचित हैं। यह ज्ञानका-श्रेष्ठत्व प्रतिपादन उनका आन्तरिक भाव नहीं है, इस बातको हरिदास ठाकुर विशेषरूपसे जानते हैं। श्रीअद्वैतप्रभुके इस बाह्य भावको प्रकट करनेका उद्देश्य भी वे जानते हैं। इसी कारण वे उनकी यह व्याख्या सुनकर हँसते हैं।

शान्तिपुरके बहुत-से लोग श्रीअद्वैतप्रभुके मुखसे ज्ञानकी श्रेष्ठत्व-बोधक व्याख्या सुनकर भक्तिपथको छोड़कर ज्ञान-मार्गका अवलम्बन करने लगे।

प्रभुका शान्तिपुर-गमन और मार्गमें वामाचारी संन्यासीका उद्धार

अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान्‌ने नवद्वीपमें रहकर श्रीअद्वैताचार्यके इस अद्‌भुत कार्यको देखा। उनके मनका संकल्प समझनेमें प्रभुको अब कुछ बाकी न रहा। भक्तवाञ्छा-कल्पद्रुम श्रीगौर-भगवान्‌ने एक दिन नदिया-भ्रमण करते समय श्रीनित्यानन्द-प्रभुसे कहा—"श्रीपाद! चलो, एक रात शान्तिपुर चलकर आचार्यके साथ भेंट कर आवें। उनको नदिया छोड़े बहुत दिन हो गये।" अवधूत श्रीनिताई-चाँद भी यही चाहते थे। श्रीअद्वैताचार्यके साथ हँसी-मजाक करनेमें वे बड़ा मजा लेते हैं। उन्होंने हँसकर प्रभुसे कहा—"यह बड़ा अच्छा परामर्श है; प्रभो! अभी चलो!"

दोनों प्रभु नदियाके उसी रास्ते शान्तिपुरकी ओर चल पड़े। किसीसे भी कुछ न कहा। शान्तिपुर और नवद्वीपके बीच पाँच कोसकी दूरी है। गङ्गाके किनारे-किनारे सुन्दर चौड़ा रास्ता है। रास्तेके किनारे-किनारे वृक्षोंकी पंक्तियाँ विराजती हैं; बीच-बीचमें लता-कुञ्ज हैं। प्रेमोन्मत्त दोनों प्रभु शान्तिपुरके रास्तेके बीचों-बीच गङ्गाके किनारे एक गाँवमें शीघ्र पहुँचे। उस गाँवका नाम था, ललितपुर।

ललितपुर-ग्राममें रास्तेके किनारे एक कुटीमें एक वामाचारी संन्यासी सपत्नीक वास करते थे। उनका निवासस्थान देखकर श्रीगौर-भगवान्‌ने नित्यानन्दप्रभुसे पूछा—"श्रीपाद! यह वासस्थान किसका है?" श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभु इस मार्गसे अनेक बार आते-जाते थे; सब बातोंका पता रखते थे। उन्होंने उत्तर दिया—"प्रभो! इस स्थानमें एक संन्यासी वास करते हैं।" यह सुनकर श्रीगौराङ्गप्रभु कुछ हँसकर बोले—"श्रीपाद! यदि एक बार संन्यासीका दर्शन मिल जाय तो भाग्य खुल जाय।"

सर्वज्ञ नित्यानन्दप्रभु मृदु-मन्द मुसकानके साथ प्रभुको उस वामाचारी संन्यासीके आश्रममें ले गये। इसको कहते हैं, श्रीभगवान्‌की अयाचित कृपा, अहैतुकी करुणा। वामाचारी संन्यासीको श्रीनित्यानन्दप्रभु विशेषरूपसे जानते थे। उनके कुत्सित आचार-व्यवहार सब-कुछ उनको विदित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थे। अधमतारण प्रभुद्वय पतितोद्धार करने वामाचारी संन्यासीके घर उदित हुए।

श्रीगौराङ्गप्रभुने संन्यासीको देखकर प्रणाम किया। संन्यासीने प्रभुके सर्वाङ्गसुन्दर देहका गठन, कषित-काञ्चन-कान्ति, भुवनमोहन अपरूप-रूपराशि तथा प्रफुल्ल मुख-कमल देखकर अत्यन्त आनन्दित होकर आशीर्वाद दिया—

संतोषे संन्यासी करे बहु आशीर्वाद।
धन-वंश-सुविवाह हओ विद्यालाभ॥

चै. भा. म. १९.४७

संन्यासीका आशीर्वाद सुनकर मन्द मुसकानके साथ प्रभु हँसकर हाथ जोड़कर उनसे बोले—

—गोसाञि! ए नहे आशीर्वाद।
हेन बोल तोर हउ कृष्णेर प्रसाद॥
विष्णु-भक्ति आशीर्वाद अक्षय-अव्यय।
जे बलिला गोसाञि तोमार योग्य नय॥

चै. भा. म. १९.४९,५०

वामाचारी संन्यासी प्रभुकी इन सब भक्ति-तत्त्वकी बातोंका मर्म क्या जाने? वह मुस्कुराकर मन-ही-मन सोचने लगा—"यह कलिकाल है। इस विप्रकुमारको मैंने जो 'विद्याधन और सुन्दरी भार्या प्राप्त हो' कहकर आशीवाँद दिया, इससे कहाँ तो इसे मेरे प्रति कृतज्ञ होना चाहिये, कहाँ यह मेरी ही निन्दा करने लगा। कलि-कालका मर्म ही ऐसा है; विप्र-बालकका क्या दोष?" यह सोचकर कुछ देर वह प्रभुके ज्योतिर्मय मुख-चन्द्रकी ओर देखता रहा। प्रभुकी तरुण अवस्था देखकर उनको कुछ हितोपदेश देनेकी संन्यासीकी इच्छा हुई। वह मनके भावको छिपा न सकनेके कारण कुछ विरक्तिके साथ बोला—

"ब्राह्मणकुमार! तुमने मेरे आशीर्वादकी निन्दा क्यों की, उसे बुरा कैसे बताया? अरे! पृथ्वीपर जन्म लेकर जिसने भोग-विलास नहीं किया, उत्तम कामिनी जिसके पास न हुई, धन न हुआ, उसके जीवनसे क्या लाभ? ऐसा धनका वरदान लेनेमें तुमको लज्जा लगती है। अच्छा, तुम विष्णु-भक्त हो भी गये तो धनके बिना क्या खाओगे?"

संन्यासीकी बात सुनकर प्रभु ठहाका मारकर हँस पड़े। कलिग्रस्त जीवकी दुर्दशा देखकर 'हा दुर्दैव!' कहकर धर्मरक्षक हमारे प्रभुने अपने मस्तकपर हाथ दे मारा। इस प्रसङ्गके बहाने प्रभुने शिक्षा दी कि भक्तिके अतिरिक्त कोई कुछ भी न चाहे।

सर्वज्ञ प्रभु अब संन्यासी महाशयको भक्तिधर्म समझानेके लिए बैठ गये। श्रीनित्यानन्दप्रभु निकट बैठकर सब देख रहे थे और मृदु-मृदु मुस्कुरा रहे थे। प्रभुने संन्यासीको समझाया—

"संन्यासी महाराज! अपने भाग्यमें जो है, वह अपने-आप मिल जायगा; उसे ही खाऊँगा। धन और वंशके लिए सभी कामना करते हैं, फिर उनका धन और वंश नाश क्यों हो जाता है? ज्वरको कोई भी नहीं चाहता तो भी ज्वर आकर शरीरको पीड़ा क्यों देता है? महाराज! इसका कारण है, कर्म। इसका मर्म कोई-कोई ही समझता है। वेद भी स्वर्गकी बात कहते हैं; और लोग भी सब यही कहते हैं; परन्तु इसको मूर्खोंके प्रति वेदकी करुणा ही समझो! लोगोंको विषय-सुखमें बड़ा ही संतोष है—इस चित्त-वृत्तिको समझकर ही वेद स्वर्गकी चर्चा करते हैं, इसमें वेदका क्या दोष! वेदने कहा कि गङ्गा-स्नानसे और हरि-नामसे धन-पुत्र मिलते हैं। यह सुनकर सब इसपर चलने लगते हैं। किसी भी बहाने गङ्गा-स्नान करनेसे और हरिनाम लेनेसे वस्तु-शक्तिके प्रभावसे सहजमें ही भक्ति आ जायगी—वेदके इस अभिप्रायको मूर्खलोग नहीं समझते और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीकृष्ण-भक्तिको छोड़कर विषय-सुखको भजते हैं। महाराज ! सोच-विचारकर बुरा-भला समझो। कृष्ण-भक्तिके अतिरिक्त और कुछ भी काम्य नहीं है।" (चै. भा. म. ६०-६९)

वामाचारी संन्यासीको लक्ष्य करके शिक्षागुरु श्रीगौर-भगवान्‌ने कलिके जीवोंको वेद प्रतिपाद्य भक्तियोगकी शिक्षा दी। भोगविलासी वामाचारी संन्यासी प्रभुके उपदेशका मर्म क्या समझे ? प्रभुके श्रीमुखसे भक्तितत्त्वका व्याख्यान सुनकर संन्यासी अपने मनमें हँसा। अल्पवयस्क विप्र-बालकके मुँहसे वृद्धके समान उपदेशकी बातें संन्यासीको विषवत् लगीं। उसके मनमें दुःख और क्रोध—एक साथ पैदा हुआ। वह प्रभुके ऊपर तीखी नजरोंसे देखकर दुःख और क्रोधमिश्रित रूखे स्वरमें कटु भाषामें बोला—

"देखो ! कैसा जमाना आया है कि यह बालक मुझे शिक्षा दे रहा है। मैं दुनियामें घूमा हूँ। अयोध्या, मथुरा, मायापुरी(हरिद्वार), बदरिकाश्रम, गुजरात, काशी, गया, विजयनगर, सिंहलद्वीप आदि सब जगहोंमें गया हूँ तो भी मुझे भले-बुरेका ज्ञान नहीं हुआ, यह दूध-मुँहा बालक मुझे ज्ञान सिखा रहा है।"

श्रीनित्यानन्दप्रभु अबतक कोई बात न बोले। वे स्थिर होकर सब-कुछ सुन रहे थे। अब देखा कि संन्यासी क्रुद्ध हो गया है। प्रभुकी बातोंसे उसके मनमें कष्ट हुआ है। अवधूत नित्यानन्दप्रभुने सोचा कि श्रीगौर-भगवान् इसको समझाये बिना न छोड़ेंगे और यह वामाचारी संन्यासी प्रारब्धवश कदापि भक्तितत्त्व न समझेगा। व्यर्थ समय नष्ट होगा और एक गड़बड़ीके सिवा कुछ न होगा। अन्तमें वामाचारी संन्यासी क्रोधके वश होकर एक काण्ड कर ही डालेगा—यह सोचकर चतुर-चूड़ामणि श्रीनित्यानन्दप्रभुने संन्यासीको समझाकर कहा—"संन्यासी महाशय ! बालकके साथ तर्क-वितर्क करनेसे क्या लाभ ? मैं आपकी महिमा अच्छी तरह जानता हूँ। आपने जो कहा, सब सत्य कहा। मेरे कहनेपर आप इस अबोध विप्र-बालकको क्षमा कीजिये।"

संन्यासी महाशय श्रीनित्यानन्दप्रभुके मुखसे आत्मश्लाघाकी बात सुनकर बहुत संतुष्ट हुए। अब उनका क्रोध और दुःख जाता रहा। आत्मप्रशंसा सुनकर आनन्दसे उत्फुल्ल होकर संन्यासीने दोनों प्रभुओंसे अपने आश्रममें भिक्षा-ग्रहण करनेके लिए अनुरोध किया। श्रीनित्यानन्दप्रभुको वहाँ अब क्षणमात्र ठहरनेकी इच्छा न थी। वे नम्रतापूर्वक मधुर शब्दोंमें संन्यासीसे बोले—"हमलोग विशेष कार्यवश शान्तिपुर जा रहे हैं, कुछ भिक्षा दीजिये, स्नान करके खायेंगे।" सर्वज्ञ प्रभु अब और कोई बात नहीं बोल रहे हैं; वे चुपचाप बैठे हैं। परन्तु उनकी इच्छा हो रही है कि किसी भी उपायसे इस वामाचारी भक्ति-बहिर्मुख जीवका उद्धार करना होगा। पतितपावन अयाचित भावसे स्वयं इच्छा करके पतितोद्धार करनेके लिए इस वामाचारी संन्यासीकी कुटियापर आये हैं। स्वतन्त्र ईश्वर इच्छामय महाप्रभुके साथ उनकी इच्छाशक्ति श्रीनित्यानन्दप्रभुने मिलकर इस भक्ति-बहिर्मुख वामाचारी संन्यासीकी कुटियापर शुभ पदार्पण किया है। उनके मुखसे दयामय पतितपावन प्रभुद्वयका आवाहन-गीति-मन्त्र उच्चारण कराया। संन्यासीने प्रभुद्वयसे कहा—"यहीं स्नान कर लो; कुछ खा-पीकर ठंडे होकर चले जाना।"

कलिग्रस्त पतित जीवोंके उद्धारके लिए पतित-पावन प्रभुने नदियामें अवतार लिया है। उनको ललितपुर गाँवमें एक पतित मिला है, उसका उद्धार किये बिना वे कैसे जायँ ? पतित-उद्धार ही तो उनका कार्य है ! उनका यह कार्य सब कार्योंसे बढ़कर हैं। अतएव ललितपुरमें पतित वामाचारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संन्यासीके घर उनको भिक्षा-ग्रहण करनी पड़ी। गङ्गा-स्नान करके प्रभुद्वय संन्यासीके घर फलाहार करने बैठे। दूध, आम, कटहल आदि फल-मूल संन्यासीने लाकर दिये। कृष्णको भोग लगाकर प्रभुद्वय भोजन करने बैठे।

वामाचारी संन्यासी मद्यपी था। श्रीनित्यानन्द-प्रभुको उसने इशारेसे मदिरा-पानके लिए अनुरोध किया। उन्होंने पहले तो इसे हँसीमें उड़ा दिया; परन्तु इससे मद्यपी संन्यासी छोड़नेवाला नहीं था। उसने स्पष्ट खोलकर कहा—"श्रीपाद! कुछ 'आनन्द' लाऊँ? तुम-जैसे अतिथि फिर कहाँ मिलेंगे?"

'आनन्द' शब्दका अर्थ 'मदिरा' है, यह प्रभु नहीं ज़ानते थे। श्रीनित्यानन्दप्रभु तीर्थ-भ्रमणके उपलक्ष्यमें अनेकों देशोंमें घूम चुके हैं। इस प्रकारके अनेकों संन्यासियोंसे मिल चुके हैं। वे बातसे ही समझ गये कि यह संन्यासी मद्यपी है। उन्होंने हँसकर उत्तर दिया—"संन्यासी महाशय! वह बात मुँहपर लानेसे तुम्हारे साथ मेरी लड़ाई हो जायगी।"

मद्यपी संन्यासी तथापि 'आनन्द लो, आनन्द लो'—कहकर बड़ा आग्रह करने लगा। उसकी आश्रिता स्त्रियाँ श्रीश्रीगौर-नित्यानन्दके रूपसे मुग्ध होकर स्वामीको बारम्बार मना करने लगीं—"वे लोग भोजन करने बैठे हैं, क्यों तुम विरुद्धाचारसे उनके भोजनमें बाधा डालकर परेशान करना चाहते हो?"

प्रभु इन सब बातोंका कुछ मर्म न समझकर श्रीनित्यानन्दप्रभुसे बोले—"श्रीपाद! संन्यासी महाशय आनन्दकी बात बारम्बार क्या बोल रहे हैं?" तब श्रीनित्यानन्दप्रभुने चुपके-से प्रभुके कानोंमें सारी बातें कह दीं। प्रभुने मदिराकी बात सुनते ही कानोंमें अँगुली डालकर 'विष्णु'-स्मरण किया और उन्होंने भोजनसे उठकर विना आचमन किये फौरन वहाँसे प्रस्थान कर दिया। दोनों प्रभु तब एक साथ गङ्गामें कूदकर तैरते हुए शान्तिपुरकी ओर चले।

यह ललितपुरमें मद्यपी वामाचारी संन्यासीपर प्रभुद्वयने जो अयाचित भावसे कृपा की, उसके घरमें अपूर्व भोजन-लीलारङ्ग किया, ऐसी सुकृति बहुत पुण्यके फलसे कहीं-किसीको प्राप्त होती है। पतितपावन प्रभुकी यह अयाचित कृपा प्राप्तकर संन्यासीका विचार बदल गया। पारसमणिके संसर्गसे वह सोना हो गया। लोग इस बातको समझ न सके। दयामय प्रभुकी अयाचित कृपाका मर्म समझना बड़ा कठिन हैं।

यह संन्यासी कदाचारी और मद्यप होनेपर भी वैष्णव-निन्दक नहीं था। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें वैष्णव-निन्दकका निस्तार नहीं है, उद्धार नहीं है। वैष्णवापराधसे अपराधी व्यक्तिको प्रभु, जिनके साथ वह अपराध किये रहता है, उसीके द्वारा अपराध-भञ्जनकी व्यवस्था करते हैं। प्रभु स्वयं इन सबलोगोंका अपराध-भञ्जन नहीं करते। इस विषयमें उनका कठोर आदेश था। प्रभुने अपनी जननीतकको वैष्णवापराधमें दण्डित करके श्रीअद्वैतप्रभुके द्वारा अपराध-भञ्जन कराया था।

दोनों प्रभु महाबलवान् और तैराक हैं। गङ्गामें तैरते हुए वे लोग शान्तिपुर चले। नवद्वीपसे इतनी दूर पैदल आकर अब गङ्गामें तैरते हुए प्रभुद्वय शान्तिपुर क्यों जा रहे हैं? प्रभुद्वयके इस लीला-रङ्गका भी मर्म है। मद्यपी संन्यासीका सङ्ग करके, उसके घर भोजन-पान आदि करके उन्होंने सर्वपाप-नाशक गङ्गा-स्नानसे संसर्गजनित पापको धोकर लोक-शिक्षा प्रदान की है। धर्मसंस्थापक श्रीगौराङ्गप्रभुने सब प्रकारसे धर्मकी मर्यादा और शास्त्रकी मर्यादाकी सदा रक्षा की है। यहाँ भी उसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शास्त्रमर्यादाकी रक्षा की है। इसका नाम है—लौकिकी लीला।

पतित-पावनी गङ्गाजी अपूर्व तरङ्ग-रङ्गमें प्रभुद्वयको वक्षःस्थलपर धारण करके प्रेमानन्दमें नृत्य कर रही है। प्रभु तैर रहे हैं और 'मैं वही हूँ, मैं वही हूँ' कहकर हुंकार-गर्जन करते हैं। गङ्गाके वक्षःस्थलपर विभासमान प्रभु कह रहे हैं—

"मेरी निद्रा-भङ्ग करके नाड़ा मुझे ले आया और अब वह भक्तिको दबाकर ज्ञान छाँट रहा है। तुम देख लेना, मैं आज उसे प्रत्यक्षमें दण्ड दूँगा। देखूँ, ज्ञानयोग आज कैसे उसको बचाता हैं।"

प्रभु इतना कहकर जलके भीतर ही हुंकार-गर्जन कर रहे हैं; सर्वश्रीनित्यानन्दप्रभु तैरते हुए चुपचाप सब सुनते जा रहे हैं और मन-ही-मन हँस रहे हैं।

इधर शान्तिपुरमें सर्वज्ञ श्रीअद्वैतप्रभु अपने घरमें बैठकर महाभक्तियोगके बलसे देख रहे हैं कि उनके अभीष्टदेव श्रीगौराङ्गप्रभु क्रोधावेशमें उनपर कृपा करने उनकी कुटीपर आ रहे हैं। उनके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। वे प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर अधिकतर उत्साहके साथ भक्तिके विरुद्ध ज्ञानयोगका व्याख्यान करने लगे।

हरिदास ठाकुर श्रोता हैं, दूसरे लोग भी वहाँ हैं। अद्वैत-गृहिणी परमा भक्तिमती सीताठकुरानी, उनके पुत्र अच्युतानन्द—सभी वहाँ बैठकर पाठ सुन रहे हैं। उसी समय श्रीगौर-भगवान् अवधूत निताई-चाँदको साथ लेकर मल्लवेषमें अकस्मात् वहाँ जा पहुँचे। प्रभुकी मूर्ति क्रोधसे रक्तवर्ण हो रही थी। श्रीअद्वैताचार्य प्रभुको देखते ही समझ गये कि वे उनके ऊपर आज विशेषरूपसे कृपा करने आये हैं। ज्ञानानन्दमें विभोर होकर वे व्यासासनपर बैठकर झूम-झूमकर योगवासिष्ठके ज्ञानयोगकी व्याख्या करने लगे।

हरिदास ठाकुर झटपट उठकर प्रभुके श्रीचरणोंमें लम्बायमान होकर गिर पड़े। सीताठकुरानीने अत्यन्त आनन्दित होकर उनको मन-ही-मन प्रणाम किया। अद्वैत-तनय बालक श्रीअच्युतानन्दने प्रभुको देखते ही दौड़कर पास जाकर प्रभुके श्रीचरणोंकी धूलि ले ली।

प्रभुकी क्रोधावेशमयी श्रीमूर्ति देखकर सबके मनमें दारुण भयका उद्रेक हुआ। सभी चिन्तित हो गये। कोटि सूर्यके समान अपूर्व तेज और ज्योति प्रभुके श्रीअङ्गमें झलक रही थी। क्रोधसे उनके कमल-नयनसे मानो ज्वलन्त अङ्गार बरस रहा था। गम्भीर वज्र-निनादमें हुंकार-गर्जन करते हुए प्रभुने श्रीअद्वैतप्रभुसे कहा—"अरे नाड़ा! बताओ तो सही, ज्ञान और भक्तिमें कौन बड़ा है?"

सर्वज्ञ श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌के मनके भावको समझा। प्रभुका क्रोध और भी बढ़ानेके लिए वे हँसकर बोले—"ज्ञान सदा ही बड़ा है। जिसको ज्ञान नहीं, उसको भक्तिसे क्या लाभ?"

'ज्ञान बड़ा है या भक्ति?'—इस बातको लेकर साधकगण बहुत दिनसे विवाद करते आ रहे हैं और आज भी करते हैं। श्रीगौराङ्गप्रभु स्वयं-भगवान् हैं। वे स्वयं आचरण करके कलिके जीवोंको धर्मकी शिक्षा दे गये हैं। 'ज्ञान बड़ा है या भक्ति'—इस बातकी मीमांसा अनेकों ग्रन्थोंमें है। ये ग्रन्थ विचार-ग्रन्थ नहीं हैं, लीला-ग्रन्थ हैं।

श्रीअद्वैताचार्यके मुखसे 'ज्ञान बड़ा है'—यह बात सुनते ही क्रोधसे अधीर होकर प्रभुका बाह्य ज्ञान जाता रहा। वे कूदकर वृद्ध ब्राह्मणको व्यासासनसे केश पकड़कर आँगनमें खींचकर अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हाथोंसे घसीटने लगे। श्रीअद्वैतप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीकर-कमलके आघातसे प्रपीड़ित होकर 'बापरे-बाप' चिल्लाने लगे। पतिकी दुर्गति देखकर पति-प्राणा सीताठकुरानी स्थिर न रह सकीं। वे साक्षात् योगमाया हैं, सब तत्त्व जानती हैं, तथापि सबके सामने अपने पूजनीय पतिदेवताके प्रति प्रभुके द्वारा इस प्रकार विषम अत्याचार और अविचार देखकर अत्यन्त व्यथित होकर प्रभुके पास जाकर कातर स्वरमें बोलीं—

"ये बूढ़े ब्राह्मण हैं, इनके प्राणोंको मत लो! किसके सिखानेसे तुम इनका इतना अपमान कर रहे हो? इनको छोड़ दो! कहीं कुछ हो गया तो तुम भी पछताओगे।"

स्त्री-जातिका प्राण पतिके दुःखसे सहज ही कातर हो जाता है। अकारण प्रभुके हाथसे पतिका ऐसा निर्यातन, अपमान और लाञ्छना देखकर पतिप्राणा सीताठकुरानीका हृदय व्यथित हो उठा। हृदयमें व्यथा, प्राणमें चोट लगनेपर गुरु हों अथवा साक्षात् भगवान् ही क्यों न हों, उस समय किसीकी मर्यादाकी रक्षा करना बड़ा कठिन हो जाता है। विशेषतः पतिव्रता स्त्रियोंके सामने उनके पतिदेवताका अपमान अत्यन्त असह्य होता है। अतएव सीताठकुरानी प्रभुको कड़वी बात कहनेके लिए बाध्य हो गयीं। वे स्त्रीजाति-सुलभ क्रोध मिश्रित, साभिमान प्रभुके प्रति क्रुद्ध दृष्टिसे देखकर बोलीं—"किसकी बात सुनकर तुम इस वृद्ध ब्राह्मणका इतना अपमान कर रहे हो? यदि इस बूढ़े ब्राह्मणको कुछ हो गया तो मैं समझ लूँगी।"

भक्तिमती अद्वैत-गृहिणी सीताठकुरानीकी इस बातमें कुछ रहस्य है। उन्होंने ऐसा कहकर प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"हे प्रभो! तुम कृपा करके बूढ़े ब्राह्मणका इस प्रकार यदि उद्धार करते हो तो इसके साथ-साथ मेरा भी उद्धार करना होगा। तब स्त्री-जाति कहकर नहीं बचोगे।" श्रीनित्यानन्दप्रभु सीताठकुरानीकी बात सुनकर हँसने लगे। हरिदास ठाकुर यह अपूर्व लीलारङ्ग देखकर कृष्ण-स्मरण करने लगे।

क्रोधान्ध प्रभुके कानोंमें सीताठकुरानीकी कोई बात घुस न सकी। आँगनमें पटककर उन्होंने अद्वैताचार्यके वक्षःस्थलके ऊपर अपना आसन जमा लिया। इस समय प्रभुका पूर्ण आविष्ट भाव है। आविष्ट भावमें हुंकार-गर्जन करके उन्होंने अद्वैतप्रभुसे कहा—"अरे नाड़ा! मैं क्षीर-सागरमें सो रहा था। तेरे लिए ही मेरी निद्रा-भङ्ग हुई। तू तो मुझे लाकर भक्ति प्रकाशित करना चाहता था, परन्तु अब ज्ञान बखान रहा है। यदि भक्तिको गुप्त करनेकी ही तेरे मनमें थी तो फिर मुझे किस लिये प्रकट कराया। मैं तो तेरा संकल्प कभी मिथ्या नहीं करता, लेकिन तू मेरे साथ विड़म्बना ही करता है।"

यह भक्तके प्रति श्रीभगवान्‌का अभिमान-वाक्य है। भक्त जिस प्रकार प्रेमके बलसे श्रीभगवान्‌के प्रति अभिमान-प्रदर्शन करके उनके हृदयमें आनन्द-प्रदान करता है, श्रीभगवान् भी उसी प्रकार भक्तके ऊपर अभिमान करके उनके मनकी बात कह डालते हैं। यहाँ चतुरचूड़ामणि हमारे गौर-आना-गोसाईं श्रीभगवान्‌के प्रेम-पाशमें फँसे हैं। गोलोककी सुख-सम्पत्ति छोड़कर स्वयं-भगवान् नदियामें अवतीर्ण हुए थे, केवल अद्वैतप्रभुके प्रबल प्रेमयोग तथा प्रेम-हुँकारके कारण कलिग्रस्त जीवोंकी दुर्गति देखकर, भक्तिदेवीकी दुरवस्था देखकर, कलिग्रस्त जीवकी मङ्गल-कामनासे भक्तिका माहात्म्य प्रचारित करनेके लिए श्रीगौर-भगवान्‌को श्रीअद्वैतप्रभुने नदियामें शचीके गर्भसे अवतीर्ण कराया था। इसी कारण उनका नाम 'गौर-आना-गोसाईं' है। अब वे भक्तिके विरोधी बनकर ज्ञान-चर्चा करते हैं, योगवासिष्ठके अनुसार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ज्ञानकी शिक्षा दे रहे हैं, इसी कारण महाप्रभुको इतना अभिमान और क्रोध हो रहा है। नखपुधारी श्रीभगवान्‌को क्रोध या अभिमान होनेपर ही आत्मप्रकाश होता है। भक्त यही चाहता है, इसी कारण हमारे गौर-आना-गोसाईंने यह फंदा डाला है। इसीको कहते हैं, चतुर-चूड़ामणि श्रीभगवान्‌को पकड़नेकी प्रेम-फाँस।

अभिमानमें चूर होकर क्रोधान्ध हमारे प्रभु श्रीअद्वैताचार्यको ये सब बातें कहकर उनको छोड़कर घरके द्वारपर बैठ गये। श्रीअद्वैतप्रभुके मनमें आज बड़ा आनन्द है। वे प्रभुकी पद-धूलिसे धूसरित अपने अङ्गोंको देखकर प्रेमानन्दमें आँगनमें योगासनपर बैठ गये। कमल-लोचना प्रभु द्वारपर बैठकर सबके प्रति शुभ दृष्टिपात करके वज्र-गम्भीर नादसे श्रीमुखसे आत्मतत्त्व प्रकट करते हुए श्रीभगवान्-भावमें बोले—

"अरे ! अरे !! कंसको जिसने मारा था, वह मैं ही हूँ। अरे नाड़ा ! तू तो यह सब जानता है। ब्रह्मा, शिव, शेष, रमा मेरी सेवा करते हैं। मेरे सुदर्शनचक्रने ही शृगाल-वासुदेवको मारा था। मेरे चक्रने ही उसकी सारी काशीको जला डाला था। मेरे वाणने ही महावली रावणको मारा था। मेरे चक्रने ही वाणासुरकी बाहुओंको काटा था। मेरे चक्रने ही नरकासुरको मारा था। मैंने ही बायें हाथसे गिरिराजको धारण किया था। मैं ही स्वर्गसे पारिजत-वृक्ष ले आया था। मैंने ही राजा बलिको छला था और उसपर कृपा की थी। मैंने ही हिरण्यकशिपुको मारकर प्रह्लादकी रक्षा की थी।" (चै. भा. म. १४५-१४९)

प्रभुको ऐश्वर्य प्रकट करते देखकर श्रीअद्वैताचार्यके मनमें बड़ा आनन्द है। वे प्रभुके श्रीहाथोंसे दण्डित होकर कृतार्थ हो रहे हैं। उनके आनन्दकी सीमा नहीं है। अब वे आँगनमें खड़े होकर हाथसे ताली देकर सबके सामने कमर हिला-हिलाकर प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य करने लगे। वृद्ध ब्राह्मणका इतने अपमान और दण्डके बाद सदानन्द, सहास्य वदन और प्रेमनृत्य देखकर शान्तिपुरवासी उपस्थित जनमण्डली विस्मित हो उठी। प्रेमोन्मत्त अद्वैताचार्य नृत्यावेशमें विभोर होकर हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें निवेदन करने लगे—"हे प्रभो ! अपराधके उपयुक्त दण्ड देकर तुमने मुझको कृतार्थ किया। मेरा बड़ा भाग्य है कि भृत्य समझकर तुमने अपने हाथसे मुझे दण्ड दिया है। प्रभुकी इस प्रकार अयाचित कृपा प्रकट करनेपर ही सेवकके मनमें भजन-बल होता है।"

—इतना कहकर प्रेमानन्दमें शान्तिपुरनाथ सारे आँगनमें नृत्य करते हुए घूमने लगे। श्रीगौराङ्गप्रभु द्वारदेशपर बैठकर श्रीअद्वैताचार्यका नृत्यरङ्ग देख रहे हैं और मृदु-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। अब उनका क्रोधावेश नष्ट हो गया है, केवल कुछ अभिमान है; क्योंकि अभीतक वे सहज प्रेमके साथ अपने नाड़ासे बातें नहीं कर रहे हैं।

सर्वज्ञ श्रीअद्वैतप्रभुने अपने अभीष्टदेवके मनका भाव समझकर प्रभुके सामने जाकर कमर डुलाकर अपूर्व नृत्यभङ्गी दिखलाकर तिरछे नेत्रोंसे उनके चरणोंमें निवेदन किया—

"इस समय मेरे प्रति तुम्हारी सब स्तुति कहाँ चली गयी ? वह सब ढोंग कहाँ चला गया ? मैं दुर्वासा नहीं हूँ कि जिसकी विडम्बना कर लोगे और जिसके जूठेको अपने सब अङ्गोंमें लगा लोगे। मैं तो भृगुमुनि ही हूँ कि जिसकी पद-धूलिको वक्षःस्थलपर धारणकर कौतुकी श्रीवत्सधारी बन जाओगे ! मेरा नाम है 'अद्वैत' —तुम्हारा शुद्ध दास। तुम्हारा उच्छिष्ट ही जन्म-जन्ममें मेरा आहार है। उस उच्छिष्टके प्रभावसे मैं तुम्हारी मायाको कुछ भी नहीं समझता। अच्छा प्रभो ! दण्ड तो दे चुके, अब अपने पदकी छाया भी तो दो।"

(चै. भा. म. १९.१५७-१६१)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

—इतना कहकर रोते हुए श्रीअद्वैतप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें लम्बे होकर साष्टाङ्ग पड़ गये और उनके दोनों रक्तकमल-चरणोंको अपने दोनों हाथोंमें कसकर पकड़ करके अपने सिरके ऊपर रख लिया। प्रभुका अब वह भगवान्-भाव न था, उन्हें बाह्य ज्ञान हो गया था। उन्होंने झटपट उठकर श्रीअद्वैतप्रभुको श्रीहस्तसे पकड़कर उठाया और दृढ़ प्रेमालिङ्गन-प्रदान कर कृतार्थ किया। दोनोंके नेत्रोंके जलसे दोनोंके वक्षःस्थल बह चले। उनको गोदमें लेकर श्रीगौर-भगवान् बैठकर व्याकुल होकर रोने लगे। उनका सारा अभिमान और क्रोध एकबारगी दूर हो गया। भक्तके मनका भाव भगवान्‌ने समझा, भगवान्‌के मनका भाव भी भक्तने समझा। दोनोंके मनमें कोई बात छिपी न रही।

श्रीअद्वैतप्रभुकी श्रीगौराङ्ग-प्रीति और प्रेम-भक्तिका यह अपूर्व उच्छ्वास देखकर श्रीनित्यानन्द-प्रभुके कमल-नयनमें प्रेम-नदी बहने लगी। हरिदास ठाकुर-भूतलपर गिरकर प्रेमानन्दमें आकुल होकर क्रन्दन करने लगे। अद्वैत-गृहिणी सीतादेवी श्रीमन्महाप्रभुकी इस अपूर्व कृपाको देखकर आनन्दसे अधीर होकर रोने लगीं। प्रेममय बालक श्रीअच्युतानन्द प्रेमानन्दमें रोने लगे। सब दास-दासियोंके प्रेमाश्रुके जलसे अद्वैतका प्राङ्गण सिक्त हो गया।

आनन्द-रस-विग्रह श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र श्रीअद्वैत-भवनको आलोकित करके अभीतक द्वारदेशपर बैठे हैं। उन्होंने अब भगवान्-भाव-संवरण किया है। वृद्ध ब्राह्मणको अकारण घसीटने तथा अपमान करनेसे उनको बड़ी लज्जा हो रही है। अतएव वे अब अवनत सिर बैठकर मन-ही-मन कुछ सोच रहे हैं। कुछ देरतक इसी प्रकार रहकर अपना चन्द्र-वदन उन्नत करके वे प्रेमाश्रुमय नयनोंसे करुण स्वरमें श्रीअद्वैतप्रभुके मुँहकी ओर देखकर धीरे-धीरे बोले—

"जो तिलार्ध भी तुम्हारा आश्रय लेगा, वह चाहे पतंग, कीट, पशु, पक्षी-कोई भी क्यों न हो, यदि मेरे निकट सौ-सौ अपराध भी करे, तब भी मैं उसपर कृपा करूँगा।"

(चै. भा. म. १९.१६८,१६९)

प्रभुके श्रीमुखकी यह अपूर्व वाणी सुनकर श्रीअद्वैतकी प्रेमभक्तिका स्रोत दूना हो गया। उनके मनमें विशुद्ध प्रेमानन्दकी तरङ्ग-पर-तरङ्ग उठने लगीं। कमलाक्षके दोनों कमल-नयनसे सहस्र-धाराओंमें प्रेमाश्रु बहने लगा। उन्होंने हृदयावेगमें प्रभुका चरण पकड़कर रोते-रोते निवेदन किया—

"जे तुमि बलिला प्रभु कभू मिथ्या नय।
मोर एक प्रतिज्ञा शुनह महाशय॥
यदि तोरे ना मानिया मोरे भक्ति करे।
सेई मोर भक्ति तबे ताहारे संहारे॥
तोर पाद-पद्म जार ना पशिबे मन।
तोरे ना माबिले कभू नहे मोर जन॥
से तोमारे सेवे प्रभु से मोर जीवन।
ना पारों सहिते मुई तोमार लङ्घन॥
यदि मोर पुत्र हय हय वा किङ्कर।
वैष्णवापराधी मुई ना देखो गोचर॥
तोमारे लङ्घिया यदि कोटि देव भजे।
सेई देव ताँहारे संहारे कोन व्यजे॥

चै. भा. म. १९.१७१-१७६

"प्रभो! जो तुमने कहा, वह कभी मिथ्या नहीं है; परन्तु मेरी भी एक प्रतिज्ञा सुन लो—'जो कोई तुमको न मानकर मेरी भक्ति करेगा तो वही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मेरी भक्ति ही उसका नाश कर देगी। तुम्हारे चरण-कमलोंमें उसका मन नहीं लगेगा। वह तुम्हें न माननेके कारण मेरा भी भक्त कभी नहीं हो सकेगा। मेरा पुत्र हो अथवा मेरा दास, यदि वह वैष्णवापराधी है तो मैं उसको आँखोंसे कभी नहीं देख सकता। तुम्हारी अवहेलना करके जो कोई करोड़ों देवताओंको भजता है तो वे ही देवता किसी-न-किसी बहानेसे उसका नाश कर देते हैं।"

श्रीअद्वैतप्रभुके मनकी बात अभी समाप्त नहीं हुई थी। उनकी इन बातोंपर विचार करूँगा, पीछे दूसरी बातें कहूँगा।

प्रभुके श्रीमुखके स्नेहाशीर्वादको सुनकर श्रीअद्वैतप्रभुके मनमें आज बड़ा आनन्द है। मनके आनन्दसे वे आज मनकी बात दिल खोलकर निष्कपटभावसे अपने अभीष्टदेवके चरणोंमें निवेदन कर रहे हैं। श्रीअद्वैतप्रभु तत्कालीन बङ्ग-देशीय कृष्णभक्त वैष्णव-समाजके सर्वश्रेष्ठ आचार्य थे। वे सब शास्त्रोंमें निष्णात थे। भक्तिशास्त्रमें उनका विशेष अधिकार था। सारे देशमें वे सर्वलोकपूज्य थे। उनके शिष्य-प्रशिष्यगणमें बहुतेरे गण्यमान्य कुलीन ब्राह्मण और धनी लोग थे। वे जब ज्ञानमिश्रित भक्तियोगका उपदेश करते थे तो ज्ञानमार्गी बहुतेरे लोग उनमें अनुरक्त होकर उनको गुरुरूपमें वरण कर लेते थे; और जब वे शुद्धा भक्तितत्त्वका व्याख्यान करते थे तो भक्तिमार्गावलम्बी बहुत-से लोग उनके चरणोंमें आत्मसमर्पण करते थे। उनके शिष्योंमें इस प्रकारके ज्ञान और भक्तिमार्गी बहुत-से शिष्य थे। उनके ज्ञानगर्वी शिष्योंमें बहुतेरे श्रीगौराङ्गप्रभुके अवतार-तत्त्व और भगवत्तामें विश्वास नहीं करते थे। वे श्रीअद्वैतका ही साक्षात् ईश्वर-रूपमें विश्वास करते थे। प्रभुके संन्यास-ग्रहणके बाद भी इस श्रेणीके लोगोंका आविर्भाव देखनेमें आता था। नीलाचलमें रहते हुए भी प्रभुको इन लोगोंका पता था।

श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌को जो बातें कहीं, वे इन सब ज्ञानमार्गी शिष्योंके लिए प्रयुक्त होनेयोग्य थीं। शिष्य तो दूर रहे, श्रीअद्वैतप्रभुके पुत्रोंमें भी कोई-कोई ऐसे गौर-विरोधी थे। अद्वैतप्रभुने उनको 'कुपुत्र' कहकर फटकारा था। कविराज गोस्वामीने श्रीअद्वैतप्रभुकी वंशावलीके वर्णनमें उनके नामतक नहीं लिखे, उनको नगण्य समझकर उसका नामतक नहीं लिया है—

असारेर नाम इहा नाहि प्रयोजन।
भेद जानिबारे करि एकत्रे गणन॥

चै. च. आ. १२.९

श्रीअद्वैतप्रभुने भक्तिसे ज्ञानकी श्रेष्ठता प्रतिपादन करके अपने शिष्योंको ज्ञानमार्गका अवलम्बन करनेका उपदेश दिया था, इसी कारण प्रभुने उनको अपने हाथों दण्ड दिया। इसके बाद श्रीअद्वैतप्रभुने फिर ज्ञानका श्रेष्ठत्व प्रतिपादन करनेकी चेष्टा नहीं की; अपने शिष्योंको ज्ञानमार्ग छोड़कर भक्तिमार्ग-अवलम्बन करनेकी शिक्षा दी। उनका आदेश सुनकर भी शंकरानन्द आदि शिष्यगण ज्ञानयोगकी श्रेष्ठता तथा श्रीअद्वैतचन्द्रमें 'परमेश्वर-बुद्धि'का त्याग न कर सके। उन लोगोंने आसाममें जाकर अपने मतका प्रचार किया। वे लोग श्रीगौराङ्गप्रभुकी भगवत्तामें विश्वास नहीं करते थे। श्रीअद्वैतप्रभुने उनको त्याग दिया था।

श्रीअद्वैतप्रभुका आत्म-निवेदन अभी समाप्त नहीं हुआ था। वे प्रभुसे निवेदन करते रहे—

तोमारे लङ्घिया यदि कोटि देव भजे।
सेई देव ताहारे संहारे कोन व्याजे॥

चै. भा. म. १९.१७६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार भक्तिके प्रमाणस्वरूप उन्होंने प्रभुको एक पौराणिक कहानी सुनायी। प्राचीन-कालमें सुदक्षिण नामक काशिराजका एक पुत्र था। वह अत्यन्त शिवभक्त था। उसकी नैष्ठिक उपासना और ऐकान्तिक भक्तिसे संतुष्ट होकर एक दिन महादेवने दर्शन देकर उससे कहा—"तुम अभिचार-यज्ञानुष्ठान करो, तुमको अभीष्ट वर प्राप्त होगा। परन्तु यदि उस यज्ञमें विष्णुभक्तकी कोई अवमानना होगी तो उससे तुम्हारा प्राण-नाश हो जायगा।" राजपुत्र सुदक्षिण शिवजीके वचनका मर्म न समझ सका। उसका विश्वास था कि महादेव सर्वेश्वर हैं और काशीधाम सर्वश्रेष्ठ धाम है, द्वारका आदि धाम इनके समान नहीं हैं, अतएव उनकी महिमा घटानी चाहिये। महादेवकी आज्ञासे राजपुत्र सुदक्षिणने अभिचार-यज्ञ किया। उस यज्ञसे एक बड़ा भयंकर त्रिशिर, त्रिकर-चरणयुक्त, ताल-जंघा मूर्तिका आविर्भाव हुआ। उस भयंकर मूर्तिने राजपुत्रको वर माँगनेके लिए कहा। राजपुत्र सुदक्षिणने वर माँगा—"द्वारका नगरी अग्निदाहसे भस्मीभूत कर दो!" महाशैवमूर्ति दुःखित अन्तःकरणसे राजपुत्रके कार्यको सम्पन्न करनेके लिए द्वारकाकी ओर चल पड़ी। द्वारका-रक्षक सुदर्शन-चक्र उनको देखते ही उनके पीछे दौड़ा। महाशैव-मूर्ति सुदर्शनचक्रको देखकर उसके तेजको सहन न कर सकनेके कारण बहुत स्तुति करने लगी। इससे सुदर्शनचक्रने प्रसन्न होकर कहा—"तुमसे जिस राजपुत्रने द्वारकापुरी भस्म करनेका अनुरोध किया है, तुम उसीको भस्म करो!" महाशैव-शक्तिने वही किया। राजपुत्र सुदक्षिण अपनी विष्णुपूजाहीन यज्ञके फलसे भस्मसात् हो गया।

(श्रीचैतन्यभागवत, मध्य खण्ड, १९.१७७–१९३)

प्रभु बैठे हुए अद्वैताचार्यकी बातें सुन रहे हैं। अद्वैताचार्यने और भी उदाहरण दिये—'सत्राजित् सूर्यदेवको प्रसन्न करके, दुर्योधन बलदेवजीका शिष्यत्व प्राप्त करके, हिरण्यकशिपु ब्रह्माजीका वरप्राप्त करके, रावण अपने मस्तकोंको चढ़ाकर शिवजीको प्रसन्न करके, तुम्हारी अवहेलना करके वंशसहित नाशको प्राप्त हो गये।'

श्रीअद्वैतप्रभुकी बात सुनकर श्रीगौर-भगवान् परम आनन्दित हुए। प्रभुकी महिमाका गुण-गान करके श्रीअद्वैताचार्यके मनमें जो आनन्द हुआ, उसकी तुलना नहीं है। श्रीभगवान्का गुण-गान करके भक्तके मनमें जो सुख होता है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसी प्रकार भक्त-महिमाका गान करके भी श्रीभगवान्के मनमें बड़ा आनन्द होता है। अब प्रभु अपने सेवकका गुण गाने लगे। सबके सामने भक्तवत्सल प्रभु ऊर्ध्वबाहु होकर हुंकार-गर्जन करके कहने लगे—"जो मेरे सेवकको उल्लङ्घन करके मेरी पूजा करता है, वह अधम मेरे अङ्गोंके टुकड़े-टुकड़े करता है; उसकी पूजा मेरे शरीरपर अग्निके समान पड़ती है। जो मेरे दासकी एक बार भी निन्दा करता है तो मेरा 'कल्पतरु' नाम उसका संहार कर देता है। जितने अनन्त ब्रह्माण्ड हैं, वे सब मेरे दास हैं। इसी कारण जो दूसरेकी हिंसा करते हैं, वे नष्ट हो जाते हैं। तुम तो मेरी देहसे भी बड़े हो; तुम्हारी अवहेलना करनेसे अपने कर्मवश अवहेलना करनेवाला निश्चय ही नष्ट हो जाता है। संन्यासी भी कभी निन्दा न करनेवाले व्यक्तिकी निन्दा करता है तो उसका अधःपतन हो जाता है, उसके सब धर्म नष्ट हो जाते हैं।"

(चै. भा. म. २०७–२१२)

भक्त-गुण-गान करते-करते भक्तवत्सल प्रभु प्रेमाविष्ट हो गये। तब उनका फिर भगवान्-भाव हुआ। वे दोनों भुजाएँ ऊपर उठाकर भगवान्-भावमें सब जगत्के जीवोंको सम्बोधन करके जलद-गम्भीर निनादमें बोले—"तुम सब अनिन्दक होकर कृष्ण-नाम कहो! अनिन्दक होकर जो एक बार भी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'कृष्ण' कहेगा, उसका मैं सहज ही उद्धार करूँगा—यह निश्चय सत्य है।"

(चै भा. म. १९.२१३,२१४)

प्रभुके मुखसे यह आश्वासन-वाणी सुनकर भक्तवृन्द आनन्दसे जय-ध्वनि करने लगे। श्रीअद्वैतप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌का चरण पकड़कर रोने लगे। भक्त और भगवान्‌का यह प्रेमभक्ति-मिश्रित निःसंकोच मेल-मिलाप, यह दिल खोलकर बातचीत अतिशय मधुर और मनोज्ञ है। माधुर्यमय श्रीभगवान् भक्तके दास हैं। वे भक्तके लिए सब-कुछ कर सकते हैं। भक्त और भगवान्‌का सम्बन्ध अतिशय मधुरसे भी मधुर है। भक्तके गुण अनन्त हैं, भक्तकी महिमा अनन्त है। श्रीभगवान् सहस्र मुखसे भक्तका गुण-गान करके भी तृप्त नहीं होते। वे भक्तवत्सल हैं; भक्तवाञ्छा-कल्पतरु हैं। प्रेमानन्दमें भक्त-महिमाका कीर्तन करते-करते वे अपनी महिमा भूल जाते हैं, अपने-आपको भूल जाते हैं। भक्तकी महिमासे ही भगवान्‌की महिमा है। भक्तके गौरवमें ही भगवान्‌का गौरव है। श्रीगौर-भगवान् नदियामें आत्मप्रकाश करनेके पूर्व भक्ति-तत्त्व और भक्त-महिमाका क्रमशः प्रकाश और प्रचार करते रहे। श्रीअद्वैत-भवनमें आकर प्रभुने जो लीलारङ्ग प्रकट किया, वह मूलतः भक्तिका परिपोषक था। भक्ति और भक्तको लेकर ही श्रीगौर-भगवान्‌का अवतार हुआ, भक्त-महिमाका प्राकट्य और प्रचार ही उनकी लीलाका उद्देश्य था।

श्रीगौराङ्गप्रभुने भाव-संवरण किया। बाह्य ज्ञान होनेपर उन्होंने देखा कि श्रीअद्वैतप्रभु उनका चरण पकड़कर रो रहे हैं। उन्होने झटपट उनको उठाया और दोनों भुजाएँ फैलाकर उनको सुदृढ़ प्रेमालिङ्गनसे आबद्ध कर लिया। इस अवस्थामें दोनों जने बहुत देरतक अजस्र अश्रु बहाते रहे।

श्रीअद्वैताचार्यकी अपूर्व प्रेम-भक्ति और प्रभुकी अपार करुणा देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभु, हरिदास ठाकुर और श्रीवास आदि भक्तवृन्द व्याकुल होकर रोने लगे।

प्रभुको जब बाह्य ज्ञान हुआ तो वे लज्जित-भावसे अद्वैतप्रभुकी ओर देखकर मधुर वचन बोले—"आचार्य! मैंने क्या कोई धृष्टता की है?" श्रीअद्वैतप्रभुने हँसकर कहा—"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं हैं।" प्रभु तब श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ओर देखकर बोले—"श्रीपाद! यदि मैं कभी कोई धृष्टता करूँ तो आप सर्वथा मेरी रक्षा करें!" रँगीले प्रभुकी बातका ढंग देखकर सब एक-दूसरेका मुँह ताकते हुए ठहाका मारकर हँस पड़े। प्रभु इससे विशेष लज्जित हुए, किन्तु कुछ बोल न सके। भक्तवृन्दने भी पहली बातोंकी पुनः चर्चा नहीं की।

अद्वैत-गृहिणी सीताठकुरानीका प्रभु मातृतुल्य सम्मान करते थे। उनको 'माँ!' कहकर सम्बोधन करते थे। प्रभुने बाल्यभावमें मधुर वाणीमें उनको कहा—"माँ! शीघ्र जाकर रसोई तैयार करके श्रीकृष्णको भोग लगाओ, बड़ी भूख लगी है। तुम्हारे घर आज महोत्सवमें प्रसाद पाऊँगा।" सीताठकुरानी आनन्दमें गद्‌गद होकर तत्काल रसोईके काममें लग गयीं। श्रीमन्महाप्रभु श्रीअद्वैताचार्य, श्रीनित्यान्दप्रभु, हरिदास ठाकुर आदि भक्तोंको साथ लेकर गङ्गास्नानके लिए चले। स्नानके बाद घर लौटकर आनेपर अद्वैत-भवनमें सब आनन्दोत्सव मनाने लगे। श्रीअद्वैताचार्य प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। हरिदास ठाकुरने श्रीअद्वैतप्रभुके चरणोंमें सिर झुकाया। प्रभु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अद्वैताचार्यको अपने चरणोंमें गिरते देखकर 'विष्णु-विष्णु' कहते हुए कूदकर दस हाथ दूर भाग गये। श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌का लीलारङ्ग देखकर खिल-खिलाकर हँस पड़े। अद्वैत-भवनमें आनन्दका स्रोत बहने लगा।

वहाँ आज महा-महोत्सव होनेवाला है। सभी प्रेमानन्दमें मत्त हो रहे हैं। प्रभुने अद्वैताचार्यका हाथ पकड़कर तथा निताई-चाँदको साथ लेकर हँसते-हँसते भोजन-गृहमें प्रवेश किया। ठाकुरको भोग लग गया था, प्रसाद प्रस्तुत था। प्रभुत्रय एकत्र भोजन-विलास-रङ्गमें मत्त हो गये। हरिदास ठाकुर द्वारदेशपर भोजनके लिए बैठे। अद्वैत-गृहिणी सीताठकुरानी श्रीहरिस्मरण करके भोजन परोसने लगी। नाना प्रकारके शाक-व्यञ्जनका अति सुन्दर पाक हुआ है। घृत, अन्न, व्यञ्जन, दुग्ध, पायस, और मिष्टान्न यथेष्ट परिमाणमें सबने भोजन किया।

भोजन-विलास समाप्त होनेपर अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीअद्वैताचार्यके मुँहकी ओर देखकर भौंएँ टेढ़ी करके हँसने लगे। उनका सदा ही बाल्यभाव रहा। बाल्यभावमें प्रेमानन्दमें उन्होंने भोजनावशिष्ट अन्न-प्रसाद सारे घरमें बिखेर दिया और हँसने लगे। प्रभु यह देखकर 'हाय-हाय' करने लगे। हरिदास ठाकुर मृदु-मन्द मुस्कुराने लगे और श्रीअद्वैताचार्य क्रोधमें अग्निशर्मा हो उठे। श्रीअद्वैतप्रभु और नित्यानन्दप्रभुके एकत्र होनेपर इस प्रकारका रस-रङ्ग प्रायः मचा करता था। यह कलह, प्रेम-कलहके सिवा और कुछ न था। श्रीअद्वैतप्रभु क्रोधावेशमें निन्दाके बहाने श्रीनित्यानन्द-तत्त्व प्रकट करते हुए ठाकुर हरिदासको लक्ष्य करके बोले—

"इस नित्यानन्दने तो हमारी जाति बिगाड़ दी। न-जाने कहाँसे इस शराबीका सङ्ग हुआ। न कोई इसका गुरु है, अपनेको संन्यासी बताता है। जन्म भी न-जाने किस गाँवका है, कोई इसे पहचानता भी नहीं। न-जाने इसकी कौन-सी जाति है। मतवाले हाथीकी तरह झूमता-झामता फिरा करता है। इसने पश्चिम देशवासियोंके घर-घरमें भात खाया है। यहाँ आकर अब ब्राह्मणोंमें मिल गया है। यह मद्यप अब सर्वनाश करेगा—यह निश्चय सत्य है।"

क्रोधावेशमें श्रीअद्वैतप्रभुका परिधान-वस्त्र सरककर गिर पड़ा। क्रोध होनेपर शंकरावतार श्रीअद्वैतप्रभुका परिधेय वस्त्र कमरसे गिर पड़ता था। वे हाथसे ताली देकर ठहाका मारकर हँसने लगे और कमर हिलाकर मधुर नृत्य करने लगे। श्रीगौराङ्गप्रभु तब अपनी हँसी रोक न सके। श्रीनित्यानन्दप्रभु अँगुली हिलाकर सबको दिखलाते हैं और मृदु-मृदु मुसकाते हैं। श्रीअद्वैतप्रभुका क्रोध बनावटी है। उनका इस प्रकारका क्रोध देखकर सभी हँस रहे हैं। श्रीअद्वैत-नित्यानन्द-लीलारङ्ग वस्तुतः बड़ा ही आनन्दप्रद होता था। दोनोंके बीच जैसे अटूट प्रीति-बन्धन था, वैसे ही प्रीति-कलह-वासनाकी प्रियता भी दीख पड़ती थी। लीलारङ्गप्रिय महाप्रभु उनकी रस-कलहकी बातें सुनना बहुत पसंद करते थे। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर अपने श्रीग्रन्थ श्रीचैतन्यभागवतमें अनेक स्थलोंपर श्रीअद्वैत-नित्यानन्द-प्रेमलीला-रस-रङ्गको जो विस्तारपूर्वक लिख गये हैं, उसका यथास्थान वर्णन किया जायगा।

कुछ देरके बाद श्रीअद्वैत-नित्यानन्दका यह प्रेम-रस-कलह शान्त हुआ। तब सबने आचमन-क्रिया पूरी की। श्रीअद्वैतप्रभुने प्रेममें भरकर श्रीनित्यानन्दप्रभुको गाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान किया।

प्रभुगणके भोजन-विलास-लीलारङ्गके बाद अद्वैत-भवनमें महा-महोत्सव हुआ। शान्तिपुरके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सभी भक्तवृन्द एकत्रित हुए थे। अपराह्नमें अद्वैत-भवनमें महासंकीर्तन-यज्ञका अनुष्ठान हुआ। शान्तिपुरके सबलोग वहाँ एकत्रित हुए। प्रभुने प्रेमानन्दमें श्रीनित्यानन्द और अद्वैतप्रभुको साथ लेकर मधुर नृत्य-कीर्तन-विहार-लीलारङ्ग किया।

कुछ दिन प्रभु अद्वैत-भवनमें रहकर उनको साथ लेकर नवद्वीप आये। हरिदास ठाकुरको भी साथ लेते आये। श्रीनित्यानन्दप्रभु भी उनके साथ थे। प्रभु शान्तिपुरमें कुछ दिन क्यों रहे? घर-परिवार तथा स्नेहमयी माताको छोड़कर विदेशमें रहे, इसका कुछ मर्म है। श्रीअद्वैतप्रभु ज्ञानमिश्रित भक्तिकी शिक्षा देते थे, शान्तिपुरवासी जन-साधारणको शुद्धा भक्तिके मार्गमें लानेके लिए ही प्रभुने घर-द्वार छोड़कर कुछ दिन वहाँ बिताये। जबतक प्रभु शान्तिपुरमें रहे, वे सर्वदा भक्तितत्त्वके व्याख्यान तथा नाम-संकीर्तन-यज्ञानुष्ठानके द्वारा भक्ति-बहिर्मुख शान्तिपुरवासियोंको भक्ति-पथमें लानेकी चेष्टा करते रहे और श्रीअद्वैतप्रभुको भी वे केश पकड़कर अपने धाम ले आये। अद्वैतप्रभुके दण्डकी सीमा यहाँ हो गयी।

श्रीअद्वैताचार्यको लेकर प्रभुके नवद्वीप आनेपर भक्तवृन्द आनन्द-सागरमें गोते खाने लगे। प्रभुका कुछ दिनका वियोग उनको सैकड़ों युगोंके समान जान पड़ता था।

नवद्वीपमें प्रभुके आते ही सब भक्तगण उनका चरण पकड़कर क्रन्दन करने लगे। प्रभुने हाथ पकड़कर उठाकर एक-एक करके सबको स्नेहपूर्ण प्रेमालिङ्गन प्रदान कर संतुष्ट किया।

शचीमाता पुत्र-विरहमें अत्यन्त कातर थीं। वे पुत्रमुख-दर्शनके आनन्दसे अधीर होकर रो पड़ीं। प्रभु माताको बिना कुछ कहे शान्तिपुर चले गये थे। बीच-बीचमें वे इसी प्रकार प्रेम-लीलारङ्ग करते रहे। श्रीविष्णुप्रियादेवी पति-विरह-समुद्रमें निमग्न थीं। प्राणवल्लभको पाकर उनको असीम आनन्द प्राप्त हुआ।

श्रीअद्वैतप्रभुने नवद्वीपमें आकर वास किया। प्रभुके गृहत्यागके पूर्व इनको छोड़कर वे शान्तिपुर नहीं गये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बयालीसवाँ अध्याय

प्रभुकी गृहस्थी

पुत्र देखि आइ हइला आनन्द-विह्वल।
वधू-सङ्गे गृहे करे आनन्द-मङ्गल॥
चै. भा. म. १९.२७०

प्रभुकी गृहस्थी

कृपालु पाठकवृन्द! प्रभुकी गार्हस्थ्य-लीलाकी बातें बहुत दिनोंसे आपने नहीं सुनीं। शचीमाता अपने प्राणाधिक पुत्र और पुत्रवधूको लेकर कैसे संसार कर रही हैं, सर्वमङ्गला श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अपने प्राणवल्लभके साथ कैसे गृहस्थाश्रम चला रही हैं, इन सब बातोंको कहनेका सुयोग और सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। प्रभु गयाधामसे आनेके बाद गृहस्थाश्रममें मन नहीं लगाते। कृष्ण-प्रेमानन्दमें, व्रज-रसरङ्गमें प्रमत्त होकर वे गृहस्थाश्रमके सुखको एकबारगी भूल गये हैं, यह बात पहले कह चुका हूँ। गयाधामसे घर आनेके बाद उनका विषयोंसे पूर्ण वैराग्य हो गया। नवीना प्रियाजीके साथ प्रभुकी भेंट बहुत थोड़े समयके लिए होती थी। जब श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाका युगल-मिलन होता था, तब चतुर-चूड़ामणि प्रभु मधुर कृष्ण-कथाका प्रसङ्ग उठाकर प्रियाजीको भक्ति और वैराग्यकी शिक्षा देते थे। प्रभुके श्रीमुखसे प्रियाजी सदा ही उनका स्वरचित यह श्लोक सुनती थीं—

न धनं न जनं न सुन्दरीं
कवितां वा जगदीश कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे-
भवताद् भक्तिरहैतुकी त्वयि॥

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीकी अवस्था इस समय तेरह वर्षकी है। उन्होंने अभी यौवनमें पदार्पण किया है। प्रियाजी राजपण्डितकी कन्या, सुशिक्षिता, सुचारिता और सुपण्डिता हैं। प्रभुके श्लोकका मर्म समझनेमें उनको कुछ बाकी न रहा। इस अल्पावस्थामें श्रीविष्णुप्रियादेवी सब-कुछ समझ सकती हैं। अपने प्राणवल्लभकी कृष्ण-प्रेमोन्माद-दशा देखकर पहले उनके मनमें बड़ा भय होता था, पर अब वैसा नहीं होता। प्रभुकी भक्तिके विषयकी शिक्षासे नवीना प्रियाजी अब सब-कुछ समझती हैं।

शचीमाता भी उनको धर्मोपदेशकी शिक्षा देती हैं। गृहस्थाश्रममें रहकर कैसे श्रीभगवान्‌के चरणोंमें आत्मसमर्पण किया जाता है, अपना संसार किस प्रकार भगवत्-संसारके रूपमें परिणत किया जाता है, पति-भक्ति नारी-जातिका सर्वश्रेष्ठ धर्म है, पतिदेवताकी सेवामें स्त्री-जातिको सर्वार्थ-सिद्धि प्राप्त होती है—ये सारे उपदेश प्रियाजीको उनकी भक्तिमती साससे प्राप्त होते थे।

प्रभुके उपदेश और उनकी माताके उपदेशका मर्म विभिन्न प्रकारका था। प्रभु कहते थे कि श्रीकृष्ण-भजन करो, कृष्ण-प्रेममें उन्मत्त रहो। श्रीकृष्ण-भजनके आनन्दकी तुलनामें सांसारिक सुख अति तुच्छ पदार्थ हैं। पति-पुत्र, गृह और परिजन, कोई किसीका नहीं है। एकमात्र वे परमपुरुष श्रीकृष्ण ही भजन करनेयोग्य हैं, स्मरण करनेयोग्य हैं और सेवन करनेयोग्य हैं। सब सुख, सब आनन्दका आधार, सब सम्पद्‌में श्रेष्ठ सम्पद् श्रीकृष्णके चरणोंका आश्रय है। इसके सिवा जीवकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कोई गति नहीं है, नहीं है, नहीं है। स्त्रीजनके लिए एकमात्र पति परमपुरुष श्रीकृष्ण हैं। उनका द्वितीय पति कोई नहीं है*।

शचीमाता उपदेश देती थीं कि स्वामी ही स्त्रीके लिए साक्षात् भगवान् है, स्वामी परमगुरु है। स्वामी सचल देवता है, पति-सेवा स्त्रीका परम धर्म है; इसके सिवा स्त्रीका और कोई धर्म नहीं है। स्त्रीको पतिके चरणोंकी सेवा बड़े भाग्यसे मिलती है। पतिदेवताके घरमें रहते नारी-जातिके लिए देव-पूजाका अधिकार नहीं है। नारी-जातिके लिए पतिका संसार ही सर्वयोगाश्रम है।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अभी बालिका हैं। वे पति और साससे इस प्रकार विभिन्न प्रकारका उपदेश प्राप्त करती हैं। इससे उनके मनमें बीच-बीचमें संदेह उत्पन्न होता है। प्रभु कहते हैं—"कृष्ण-भजन करो; पति-पुत्र. आत्मीय-स्वजन, बन्धु-बान्धव कोई सङ्गका साथी नहीं है, एकमात्र जगत्पति परमपुरुष श्रीकृष्ण ही निजजन हैं।" शचीमाता कहती थीं—"पति ही स्त्रियोंके लिए सर्वदेवता है, पतिकी मनस्तुष्टिमें ही सब देवताओंकी मनस्तुष्टि होती है।

---

* स्त्रियो व्रतैस्त्वा हृषिकेश्वरं स्वतो
ह्याराध्य लोके पतिमाशासतेऽन्यत्।
तासां न ते वै परिपान्त्यपत्यं
प्रियं धनायंषि यतोऽस्वतन्त्राः॥
स वै यतिः स्यादकुलोभयः स्वयं
समन्ततः पाति भयातुरं जनम्।
स एक एवेतरथा मिथो भयं
नैवात्मलाभादधि मन्यते परम्॥

श्रीमद्भागवत ५. १८. १६,२०

नवीना प्रियाजी शचीमाताके उपदेशका मर्म समझते हुए भी नहीं समझ पा रही हैं। शचीमाता जानती हैं कि उनका पुत्र क्या वस्तु है। श्रीकृष्ण-भजन और उनके पुत्रका भजन एक ही तत्त्व है। प्रभु कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। भगवान्-भावमें वे जो बातें बोलते हैं, सहजभावमें वही उनका खण्डन-मण्डन करते हैं।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने अपने प्राणवल्लभके भगवान्-भावकी कुछ बातें सुनी हैं; क्योंकि शचीमाताके साथ वे श्रीवासके आँगनमें प्रभुका कीर्तन-विलासरङ्ग देखने जाती थीं। प्रियाजीके मनमें संदेह है, लोग उनके प्राणवल्लभको बहुवल्लभ श्रीकृष्णका पूर्णावतार कहते हैं, वे भी विष्णु-सिंहासनपर बैठकर भगवान्-भावमें 'मैं वही हूँ, मैं वही हूँ' कहकर अनेकों बार आत्मप्रकाश कर चुके हैं; फिर वे क्यों मुझे श्रीकृष्ण-भजनका उपदेश देते हैं? उनका भजन करनेसे ही श्रीकृष्ण-भजन होता है, उनकी सेवा करनेसे ही श्रीकृष्णकी सेवा होती है। फिर वे क्यों स्त्री-जातिके सर्वश्रेष्ठ धर्म पति-सेवाका विरोधी भाव प्रकट करते हैं?

प्रियाजी अपने मनकी यह बात किसीसे प्रकट नहीं करतीं; वे प्राणपनसे पतिकी सेवा, पतिकी जननीकी सेवा तथा पतिके गृहस्थाश्रमके कर्म करती आ रही हैं। क्या उनके प्राणवल्लभने सेवामें कोई त्रुटि देखी है? पतिकी सेवामें क्या उनसे कोई अपराध हो गया है?—इस चिन्तामें नवीना प्रियाजी कभी-कभी कातर हो उठती हैं। अपने प्राणवल्लभसे भेंट होनेपर वे केवल कृष्ण-कथा, कृष्ण-भजन और कृष्ण-सेवाके उपदेशपूर्ण तत्त्वकी व्याख्या करते हैं। प्रियाजी अपने मनकी बात खुलकर पूछनेका अवसर ही नहीं पाती हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अतिशय धीर प्रकृति, लज्जाशीला और बुद्धिमती हैं। पतिमें भगवद्बुद्धि करके वे सासके उपदेशके समान पति-सेवा-व्रतकी व्रती हुई हैं। परन्तु बाल-बुद्धिके वश उनके मनमें एक विषम कौतूहल उत्पन्न हो गया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। यह बात एक बार वे अपने प्राणवल्लभसे पूछेंगी; परन्तु कोई सुविधा और सुयोग नहीं मिलता।

प्रभु शान्तिपुरसे आकर पुनः कीर्तनके रणमें मत्त हो उठे। नवद्वीपके सारे भक्तगण अब प्रभुके घर आकर नित्य कीर्तन करते हैं। संकीर्तन-रणवीर श्रीगौराङ्गप्रभु कीर्तन-रण-रङ्गमें नदियावासियोंके मनको हर रहे हैं। दिनमें प्रभुके अपने मन्दिरमें संकीर्तन-लीलारङ्ग होता हैं, रातमें श्रीवासके आँगनमें सारी रात संकीर्तन-लीला-रङ्गमें प्रभु मत्त रहते हैं। आहार-निद्रा-पर्यन्त वे भूल जाते हैं। उनको देहकी भी सुध-बुध नही रहती। संसारके किसी कार्यमें उनकी दृष्टि नहीं जाती, संसारकी किसी बातपर भी वे कान नहीं देते। घरपर जब भोजन करने आते हैं तो भोजनके समय भी माताके साथ मधुर कृष्ण-कथाकी चर्चा करते हैं। प्रियाजी आड़में खड़ी होकर सुनती हैं।

कीर्तनमें थककर जब घर आते हैं तो गदाधर, नरहरि आदि उनके अन्तरङ्ग भक्तलोग घरपर आकर उनकी सेवा करते हैं; भक्तवृन्दके द्वारा प्रभुकी सेवामें किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं होती। प्रभुके शयनगृहमें गदाधर, नरहरि आदि अन्तरङ्ग भक्तगण उनके सङ्ग कभी-कभी सोते हैं। पद-सेवा, ताम्बूल-सेवा आदि प्रियाजीकी निजस्व सेवाएँ भी भक्तगण एक-एक करके अधिकृत कर बैठे हैं, यह शचीमाताको अच्छा नहीं लगता। इससे प्रियाजीके मनमें बीब-बीचमें दुःख और रोष होता है, अभिमान भी होता है। शचीमाता इसको समझती हैं; परन्तु भक्तवृन्दको कुछ कह नहीं पातीं।

अन्तर्यामी प्रभुने माताके इस प्रकारके मनोभावको जानकर ही उनको वैष्णवापराधका अपराधी बनाया था। स्वयं न्यायाधीश होकर श्रीवासके आँगनमें महाप्रकाशके समय प्रकटरूपमें उन्होंने माताके लिए सब भक्तोंके सामने दण्डका विधान किया था। शचीमाता श्रीअद्वैतप्रभुके सामने जिस कारणसे वैष्णवापराधकी अपराधिनी हुई थीं, इसका विस्तृत वर्णन यथास्थान किया जायगा।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी इस प्रकार क्रमशः पतिकी सेवासे वञ्चित होने लगीं, यह देखकर शचीमाताके मनमें बड़ा दुःख हुआ। यह दुःख वे पुत्र या पुत्र-वधूके सामने प्रकाश्य रूपमें बोल नहीं सकतीं। शचीमाता भीतर-ही-भीतर मनकी अग्निमें दग्ध होती रहती हैं। वृद्धा गौराङ्ग-जननीके मनस्तापकी सीमा नहीं है। उनकी सोनेकी पुतली पुत्रवधू पतिके सुहाग, आदर और सेवासे वञ्चित हो रही हैं। यह दुःख उनको वज्र-सा लग रहा है। उनके सोनेके निमाई-चाँदको नदियाके लोगोंने पागल बना रखा है। निमाई एक-दण्ड भी घरपर स्थिर होकर नहीं बैठता, गृहस्थीकी एक भी बात नहीं करता, सांसारिक व्यवहारमें उसका मन बिल्कुल ही नहीं लगता, ऐसी परमसुन्दरी, सर्वगुणवती नवीना युवती गृहिणीके प्रति उनका कोई आकर्षण नहीं है—यह देखकर स्नेहमयी जननीके प्राण कैसे स्थिर रह सकते हैं? शचीमाता दिन-प्रतिदिन जीर्ण-शीर्ण होती जा रही हैं। इस दुःखसे उनका वदन मलिनसे-भी-मलिनतर दीखने लगा। उनके भीतर मानो एक विषम उद्वेगकी तरङ्ग उठी है, हृदयमें भयानक चिन्ता-वह्नि प्रज्वलित हो गयी है, यह उनकी मुख-श्री देखनेसे सहज ही ज्ञात होता है।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अतिशय बुद्धिमती हैं। सासके मनोभावको समझकर वे उनके सेवा-कार्यमें अधिक मन लगाती हैं। शचीमाताने पुत्र-वधूके कार्य-कलापको देखकर उनके मनके भावको जान लिया। इससे उनके मनका दुःख दूना हो गया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किसीने किसीके मनके भावको प्रकट नहीं किया, परन्तु अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान्‌के सामने उनकी माता और गृहिणीके भाव गुप्त न रहे। भक्तवत्सल प्रभुने भक्तके मनःकष्टको देखकर उनकी मनस्तुष्टिके लिए कुछ दिन गृहस्थाश्रममें मन लगाया। पुत्र-वत्सला जननी तथा पतिप्राणा गृहिणीके संतोषके लिए प्रभु अब सांसारिक कार्योंमें पूर्वापेक्षा अधिक रुचि दिखलाने लगे।

प्रभु अब माताके पास बैठकर हँसते हुए प्रतिदिन कुछ देर सांसारिक बातचीत करते हैं। अपराह्णमें प्रियाजीके साथ बैठकर घरमें रसकी बातें करते हैं। प्रभु माताकी मनस्तुष्टिके लिए अब घर बनने-बिगड़नेपर ध्यान देते हैं। स्नेहमयी जननीके पास बैठकर प्रेममयी प्रियाजीके सम्बन्धमें दो-चार बातें करते हैं; इससे शचीमाताके मनमें आनन्दकी तरङ्ग उठती है। श्रीमती भी मनमें बड़ा सुख पाती हैं।

प्रभुके मन्दिरमें नित्य एक छोटा-बड़ा महोत्सव होता रहता है। भक्तवृन्द, अतिथि-अभ्यागत, दीन, दरिद्र नित्य उनके घर प्रसाद पाते हैं, शचीमाता और प्रियाजी अपने हाथों रसोई बनाती हैं। प्रभुके घरमें लक्ष्मीका भाण्डार है। किसी वस्तुका अभाव नहीं है। सारी नदियाके लोग प्रभुके घर भोज्य वस्तु और वस्त्रादिके साथ सीधा भेजते हैं। ऐसा सीधा प्रतिदिन कितना आता है, इसका हिसाब कौन करे?

शचीमाता इतनी वृद्धा हो गयी हैं, परन्तु उनके शरीरमें किसी प्रकारके आलस्य या विरक्तिका चिह्न भी नहीं दीख पड़ता। दिनभर वे परिश्रम करके सांसारिक कार्य करती हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी उनके सब कार्योंमें उनकी सहायता करती हैं। दामोदरपण्डित प्रभुके घरकी देख-भाल करते हैं। शचीमाताकी गृहस्थीमें जो कुछ आवश्यकता होती हैं, दामोदरपण्डितसे कहनेपर तत्काल उसका बंदोवस्त हो जाता है।

श्रीगौराङ्ग-सेवा दामोदरपण्डितको प्राणसे भी अधिक प्रिय है। प्रभु उनका बहुत सम्मान करते हैं, उनपर विशेष श्रद्धा करते हैं। दामोदरपण्डितने प्रभुको वाक्यदण्ड दिया था। प्रभुके गृह-त्याग करके संन्यास-ग्रहण करनेपर उन्होंने प्रभुके साथ जाकर नीलाचलपर वास किया था। उसी समय एक सुन्दरी विधवा ब्राह्मणीके शिशु-पुत्रके प्रति प्रभुका अनुराग देखकर निरपेक्ष और स्पष्टवक्ता दामोदरपण्डितने प्रभुको वाक्यदण्ड दिया था। प्रभुने इससे उनके ऊपर संतुष्ट होकर अपनी माता और गृहिणीकी देख-भाल करनेके लिए उनको नीलाचलसे नवद्वीपमें भेजा था। यह सब अपूर्व लीला-कथा विस्तारपूर्वक प्रभुकी नीलाचल-लीलामें वर्णित होगी। प्रभुकी नवद्वीप-लीलामें भी दामोदरपण्डितको उनके घरकी देख-भालका भार दिया गया था। दामोदरपण्डितके भाग्यकी सीमा नहीं है।

प्रभु इस समय सांसारिक गृहस्थ थे। माताके संतोषके लिए वे स्वयं उत्तम-उत्तम द्रव्य खरीदकर लाते और उनके हाथोंमें देते थे। इससे शचीमाताके मनमें बड़ा आनन्द होता था। शचीमाताको अब और कोई दुःख न था।

भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान् भक्तोंका दुःख दूर करनेके लिए संसारी बनकर संसार चला रहे हैं, इससे बढ़कर और क्या कृपा हो सकती है? हम संसारी जीव हैं। हमारे मनमें होता है कि श्रीभगवान् जब गृहस्थाश्रम-ग्रहण करके स्वयं आचरण करके गृहस्थ-धर्मकी शिक्षा दे गये हैं, तब गृहस्थाश्रममें रहकर उनको निष्कपटभावसे पुकारनेपर वे अवश्य कृपा करेंगे।

संसारी जीव अत्यन्त मायाबद्ध हैं। उनको माया-बन्धनसे छुड़ानेके लिए श्रीगौर-भगवान्‌ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वयं गृहस्थाश्रम-ग्रहण किया था। श्रीभगवान्‌का गृहस्थाश्रम विश्व-ब्रह्माण्डव्यापी है। जगत्‌के जीव उनके निजजन हैं, आत्मीय-स्वजन हैं। उन्होंने गृहस्थका वाना धारणकर गृहस्थी करके संसारके जीवोंको दिखला दिया कि संसारी होकर भी अनासक्तभावमें रहकर श्रीकृष्ण-भजन होता है।

प्रभु इस समय जैसे पूर्ण गृहस्थ हैं, वैसे ही आदर्श कृष्ण-प्रेमी हैं, महाभक्तियोगी हैं। प्रभुका संसार यथार्थ ही श्रीभगवान्‌का संसार है। देवपूजा, अतिथि सेवा, उत्सव, एवं आनन्द प्रभुके घरमें नित्य अनुष्ठित होते थे। दुःखी, दीन-दरिद्र और साधु-संन्यासीको देखकर शचीमाता आदर करके अपने पुत्रके समान निकट बैठकर उनको पूर्ण परितृप्त करके भोजन कराती हैं।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अपनी झाँपी खोलकर दीन-दरिद्रोंको उत्तम-उत्तम वस्तु-दान करती हैं। प्रभु भी अपने हाथसे घरकी जो सामग्री दान करनेकी इच्छा होती है, दान करते हैं। हमारे दीनदयालु प्रभु दुःखी और संतप्त मनुष्यको देखते ही मधुरवाणीमें उनके साथ बातें करते हैं, आदरपूर्वक घरपर बुलाकर ले आते हैं। शचीमाता रसोई बनाकर उनको परम संतोषपूर्वक भोजन कराती हैं। प्रियाजी प्रसन्नतापूर्वक अन्न-वस्त्र-दान करती हैं, भोजनकी सामग्रीके साथ भोजनका पात्र दान करती हैं। दयामयी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी दीन-दुःखियोंकी माता हैं। प्रभु उनका 'वैष्णव-जननी' कहकर सत्कार करते थे।

शचीमाताके मनके दुःखको प्रभुने दूर कर दिया है। भक्तवत्सल प्रभुने प्रियाजीके मनःकष्टको दूर किया है। अब दिनमें और रातमें रसराज रसिकशेखर हमारे प्रभु नित्य कुछ समयतक युगल-विलास-रसरङ्गमें मग्न रहते हैं। भक्तवृन्दके मनमें इससे बड़ा आनन्द होता है। शचीमाताके आनन्दकी सीमा नहीं रहती। नवीना प्रियाजी प्राणवल्लभकी कृपा-प्राप्त करके अपनेको कृतार्थ समझती हैं। शचीमाता और प्रियाजी सारी पहली बातें भूल गयी हैं। सुख होनेपर हमारे मनमें दुःख नहीं होता।

स्वामी-सुहागिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने पतिकी चरण-सेवाका अधिकार प्राप्त किया है, इस जीवनमें इससे अधिक सुख उनको और क्या हो सकता है? चरणोंकी दासीने अपने प्राणवल्लभके चरणोंकी सेवाका सुख पाया है। उनको और किसी सुखकी आकांक्षा नहीं होती। पति-सेवाके आनन्दमें पति-सुहागिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी सारे दुःख एकबारगी भूल गयी हैं। चतुरचूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌की यह चतुराई है। श्रीभगवान्‌की मायासे मुग्ध जीव उनके अपूर्व कौशल मायाजालमें इस प्रकार फँस जाता है।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अब रसोई बनानेमें विशेष पटु हो गयी हैं। शचीमाताने प्रभुके आदेशसे रसोईका भार एक प्रकारसे पुत्र-वधूके ऊपर दे तो दिया है, परन्तु रसोईघरमें गये बिना उनको रातमें नींद नहीं आती। श्रीमती प्रियाजीको उन्होंने रसोईका काम भलीभाँति सिखा दिया है। किसी-किसी दिन शचीमाता पुत्रवधूके ऊपर ठाकुरके भोगका सारा भार दे देती थीं। यथा श्रीगौराङ्ग-लीलामृतमें—

विष्णुप्रिया देवीरे कहये शची आइ।
बेलाधिक हय मागो पाक-घरे जाइ॥
आज्ञा पाइ हरषिता मने विष्णुप्रिया।
शीघ्र पाक करिबारे बसिलेन गिया॥
विष्णुप्रियादेवी तबे समापि रन्धने।
शचीर आदेशे गेला भोगेर सदने॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हमारे सोनाके गौराङ्गके सोनेके संसारपर सारी नदियाके लोगोंकी दृष्टि पड़ती थी। ऐसा सोनेका संसार, ऐसी देवपूजाकी परिपाटी, इतना आतिथ्य-सेवाका सुन्दर बंदोवस्त, साधु-संन्यासियोंके प्रति इतनी भक्ति, दीन-दरिद्रके प्रति इतनी दया, संसारी जीवके घरमें कहीं-किसीने देखी नहीं। शचीमाताके पास जो एक-घड़ी बैठता, प्रियाजीके साथ कुछ बातें करता, उसके प्राण जुड़ा जाते; उसका सारा संताप दूर हो जाता। शचीमाताका सब-लोगोंके प्रति स्नेहसे भरा आदर, प्रियाजीका सलज्ज मधुर सम्भाषण, प्रभुका सुधा-मधुर सर्वचित्ताकर्षक प्रेमालाप नदियावासी सब-लोगोंके प्राणोंको मधुरसे भी मधुर बना देता था।

प्रभुका वास-मन्दिर मानो आनन्दधाम-सा जान पड़ता था। सब प्रकारका आनन्द मूर्तिमान् होकर श्रीगौराङ्ग-मन्दिरमें मानो सर्वदा विराजमान रहता था। हमारे आनन्दमय प्रभु आनन्दमयी प्रियाजीके साथ जब रस-रङ्ग करते तो शचीके आँगनमें मानो मधुवर्षा होती थी।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीकी सखी काञ्चना या काञ्चनमाला सदा-सर्वदा प्रियाजीके पास रहती थी। वह ब्राह्मण-कन्या थी, प्रियाजीकी अन्तरङ्गा सखी थी। प्रियाजी उससे सारी बातें करती थीं। शचीमाता उसे अपनी कन्याके समान प्यार करती थीं तथा स्नेह करती थीं। प्रभु उसके ऊपर कृपा करते थे। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-सेवा-रसमें काञ्चना दिन-रात मत्त रहती।*

प्रभुके पड़ौसी आत्मीय स्वजन पुर-नारियाँ शचीके आँगनमें प्रतिदिन इकठ्ठी होती थीं। शचीमाता उनको आदरपूर्वक बैठाती थीं और खिलाती-पिलाती थीं। उनके सामने सैकड़ों मुखसे अपनी स्वर्णप्रतिमा पुत्र-वधूकी प्रशंसा करती थीं। प्रभुके सोनेके संसारमें किसी वस्तुका अभाव न था। नदियाके सबलोग प्रभुमें अनुरक्त थे। किसीके घरमें चाहे जो यज्ञ-प्रयोजन हो, निमाईपण्डितके घर सबसे पहले सर्वाङ्गसुन्दर भोजन-वस्त्रादि भेजे जाते थे।

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न शचीमाताके बहनोई थे, प्रभुके मौसा थे। प्रभु उनका पिताके समान सम्मान करते थे। शचीमाताकी बहनका नाथ था—सर्वजयादेवी। वह सदा बहनके घर रहती थी। प्रभुके पितृ-वियोगके बाद श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न उनके अभिभावुक नियुक्त हुए थे। वे प्रभुको पुत्रवत् स्नेह करते थे, प्राणतुल्य मानते थे। प्रभु जब भगवान्-भावमें आविष्ट होते थे और आत्मप्रकाश करते थे तो आचार्यरत्न वात्सल्यप्रेम-रसमें विह्वल होकर रो पड़ते थे। प्रभुका ऐश्वर्यभाव उनको तनिक भी अच्छा नहीं लगता था। दयामय प्रभु उनको ही संन्यास-ग्रहणके समय साथ ले गये थे, तथा कटोया नगरमें इनके ही ऊपर अपने संन्यास-ग्रहणका सारा कार्यभार अर्पण किया था। नवद्वीपमें इन महापुरुषके समान प्रभुका आत्मीय दूसरा कोई न था। यह सारे लीला-रहस्य क्रमशः आगे प्रकट किये जायँगे।

प्रभुके घरमें दासी-दासीकी कमी न थी। किसीको भी किसी कामके लिए बुलाना न पड़ता

---

*'श्रीमती विष्णुप्रियादेवीकी प्रधान अष्ट सखियोंके नाम थे—काञ्चना, मनोहरा, सुकेशी, चन्द्रकला, अमिता, सुरसुन्दरी, प्रेमलतिका और सखी विष्णुप्रिया। इनके एक-एक यूथमें आठ-आठ सखियाँ थीं। यह नदिया-युगल-भजनकी बात मत्प्रणीत श्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्गकी अष्टकालीय लीला-स्मरण-मनन-पद्धति नामक श्रीग्रन्थमें विस्तारपूर्वक लिखी गयी हैं। नवद्वीप-रस-रसिक गौरभक्त-वृन्दको यह श्रीग्रन्थ पाठ करनेका मैं अनुरोध करता हूँ।'

—ग्रन्थकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

था। स्वयं आकर सब अपना-अपना कार्य कर जाते थे। वेतनभोगी भृत्य कोई नहीं था।

ईशान प्रभुके पुराने भृत्य थे। प्रभुको इस महापुरुषने गोदमें लेकर मनुष्य बनाया था। पूज्यपाद जगन्नाथमिश्र पुरन्दर ईशानको भृत्य नहीं समझते। भाग्यवान् ईशानके कंधेपर चढ़कर प्रभु बचपनमें नदियामें घूमा करते थे। क्रोध होनेपर ईशानके बाल नोचने लगते थे, उनके वक्षःस्थलपर लात मारकर कृपानिधि प्रभु अपनी कृपावृष्टि करते थे। ईशानके समान सौभाग्वान् इस जगत्में दूसरा कोई पुरुष नहीं है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने यथार्थ ही लिखा है—

सेविलेन सर्वकाल आइरे ईशान।
चतुर्दश लोकमध्ये महाभाग्यवान्॥

चै. भा. म. ८.७४

प्रभुके संन्यास-ग्रहणके बाद शची-विष्णुप्रियाकी सेवामें इस महापुरुषने अपना शेष जीवन न्यौछावर कर दिया था।

वस्तुतः ईशानके समान भाग्यवान् पुरुष चौदहों भुवनोंमें दूसरा कोई नहीं है। प्रभुके गृहस्थ-आश्रमके परम विश्वासी भृत्य ईशान और संन्यास-आश्रमके एकान्त अनुगत भृत्य गोविन्द, इन दोनों महापुरुषोंके भाग्यका वर्णन नहीं किया जा सकता। तुलना करते समय ईशानके भाग्यकी ही प्रशंसा करनी पड़ती है। ईशान नवद्वीपमें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-सेवाका भार प्राप्तकर कृतार्थ हुए थे, श्रीगौराङ्ग-गोष्ठीकी चरण-सेवाका अधिकार पाकर धन्य हुए थे; गोविन्द केवल नीलाचलमें प्रभुकी श्रीअङ्ग-सेवाका भार पाकर कृतार्थ हुए थे। ईशानका परम पवित्र चरित्र, उनका श्रीविष्णुप्रिया गौराङ्ग-युगल-सेवाका अधिकार, शोक-संतप्ता वृद्धा श्रीगौराङ्ग-जननीकी सेवा और देख-भाल-जिसकिसी-को लेकर विचार करें, सबके लिए हमारे दयामय प्रभुने उपयुक्त पात्र समझकर, पुराने विश्वासी भृत्यको देखकर ईशानके ऊपर भार देकर वे निश्चिन्त हो गये। ईशान भी काय-मन-वचनसे इच्छामय प्रभुकी इच्छा पूर्ण करके उनके विशेष कृपापात्र बन गये थे।

इन महापुरुषकी पुण्य चरित-कथा प्राण भरकर गानेकी इच्छा होती है, उनका गुण-गान दिन-रात करनेकी इच्छा होती है। उनके परम पवित्र उन्नत चरित-सुधाकी आलोचना करके आत्मशुद्धि करनेकी बड़ी अभिलाषा होती है। परन्तु दुःखकी बात है कि महाजनगणने इन महापुरुषका पुण्य जीवनचरित विशेषरूपमें नहीं लिखा है। सूत्ररूपमें जो कुछ दो-चार पयार श्लोकोंमें लिख रखा है, उन्हींका आश्रय लेकर जीवाधम ग्रन्थकारने अपने भावमें आप मत्त होकर कुछ पद-रचना करके आत्मशोधन किया है। यह बहुतोंके लिए आदरणीय नहीं हो सकता है, परन्तु जीवाधम ग्रन्थकारके लिए यह श्रीगौराङ्ग-साधनाका फल है।

मत्प्रणीत श्रीविष्णुप्रिया नाटक*में श्रीगौराङ्ग-प्रभुके नित्यदास श्रीईशानके पुण्यचरितको विश्लेषण करनेका मैंने प्रयास किया है। कृपालु गौर-भक्त पाठकवृन्द! अभिरुचि होनेपर इस श्रीग्रन्थका पाठ कर सकते हैं। इस श्रीग्रन्थमें गौर-वक्ष-विलासिनी श्रीविष्णुप्रियादेवीकी विरह-कथा ज्वलन्त भाषामें वर्णित हुई है। इस प्रकारका करुणरसात्मक नाटक पहले कभी प्रकाशित नहीं हुआ—यह बात अनेकों गौर-भक्त वैष्णव विद्वानोंने कही है। यह बात जीवाधम ग्रन्थकारकी नहीं है। इस श्रीग्रन्थका पाठ बहुत लोगोंने किया है।

---

* इसका हिन्दी संस्करण श्रीकृष्ण-जन्मस्थानसे प्राप्त है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुकी यह गृहस्थ-लीला भी उनकी भगवत्ताकी परिचायिका है। उनके श्रीमुखसे निःसृत गीतावाक्य **'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।'**—उनके इस गार्हस्थ्य लीला-रङ्गका पूर्ण परिचायक है। उन्होंने इस मधुर लीलाभिनयमें पग-पगपर अपने वाक्यको सफल किया है। भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान् भक्तकी मनोकामना पूर्ण करनेके लिए सतत तैयार रहते हैं, यह उनका गार्हस्थ्य लीलारङ्ग, उनका अपूर्व संसार-भाव—यह सब भक्तकी मनोकामना पूर्ण करनेके लिए उन्होंने अङ्गीकार किया है। वे भक्तके भगवान् हैं, भक्तके मनके अनुसार भाव धारण करना ही उनका धर्म है।

श्रीभगवान्‌का भी धर्म है, कर्म है—कारण, वे नरवपु ग्रहण करके जगत्‌में अवतीर्ण हुए हैं। स्नेहमयी शचीमाताने उनको पुत्ररूपमें पाकर अटूट वात्सल्य-प्रेमकी रज्जुमें बाँध रखा है, श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने उनको पतिभावमें पाकर परम प्रीति-बन्धनमें आबद्ध किया है। अतएव उनको उनके मनोगत होकर कर्त्तव्यपरायण मातृभक्त पुत्ररूपमें तथा रसमयरसिक परमपुरुषके प्रेमिका रूपमें उनकी मनोकामनापूर्ण करनी पड़ी। भावग्राही श्रीभगवान् भक्तके भावको लेकर तदनुरूप लीला-रङ्ग करते हैं। ठाकुर लोचनदासने लिखा है—

ऐछन ठाकुर गौर करुणार सिन्धु।
अनुरागे प्रेमार भिखारी दीनबन्धु॥
एहेन करुणानिधि आर आछे के।
आपना ना धरे निज प्रेम अनुरागे॥
एइ से कारण बिष्णुप्रियारे प्रसाद।
एत जानि मने केहो ना कर प्रमाद॥

गार्हस्थ्य लीलारङ्गके साथ-साथ नदियाके रसिक भक्तवृन्दके सहित प्रभु व्रजलीला-रसास्वादनमें भी उन्मत्त थे, इसका यथेष्ट प्रमाण ग्रन्थमें पाया जाता है। पहले कह चुका हूँ कि श्रीकृष्णलीलाके सारे अङ्गोंका प्रभु अपनी नवद्वीप-लीलामें अभिनय करके व्रजलीला और नवद्वीप-लीलाके एकत्व और नित्यत्वका प्रदर्शन कर गये हैं। नवद्वीप साक्षात् वृन्दावन है, यह शास्त्र-वचन है।* व्रजरस और नवद्वीप-रस एक वस्तु हैं; क्योंकि **'व्रजेन्द्रनन्दन जेई शचीसुत हैल सेई।'**—यह महाजन और ऋषिका वचन तथा शास्त्रवाक्य है। इसमें अविश्वास करनेका कोई कारण नहीं है।

व्रजलीला-रङ्ग-वसन्तोत्सव

प्रियतम पाठकवृन्द! कृपालु गौर-भक्तगण! अबतक आप प्रभुकी गार्हस्थ्यलीलाका रसास्वादन करके मन-प्राणको शीतल कर रहे थे। अब उनके नित्य परिषद-वृन्दके साथ व्रजलीला-रसरङ्गका मनश्चक्षुसे दर्शन करें; नवद्वीप-रसके साथ व्रज-रसका आस्वादन करके हृदय, मन और प्राणोंको व्रजरसमें विभावित करें।**

इस समय वसन्त काल है, ऋतुराज मनोरम साजमें नवद्वीपचन्द्रकी वसन्त-लीलाकी सम्पूर्ण सामग्री साथमें लेकर नवद्वीपमें आकर उपस्थित हुए हैं। नवद्वीपकी अपेक्षा श्रेष्ठ स्थान जगत्‌में दूसरा कोई नहीं है; क्योंकि सर्व-सौन्दर्यके आकर सर्व-माधुर्यके विलासस्थल, सर्व-सौन्दर्यके मूल स्रोत, सर्वेश्वर, सर्व-अवतार-सार श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र नदियामें

---

*अवतीर्णः कलौ सत्यं लोकनिस्तारकारणः।
वृन्दावनं नवद्वीपं साङ्गोपाङ्गं यथाक्रमम्॥
सि० च०

** अन्तःकृष्णं बहिःगौरं दर्शिताङ्गादिवैभवम्।
कलौ संकीर्तनाद्यैः स्मः कृष्णचैतन्यमाश्रिताः॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आविर्भूत हुए हैं। नदियामें नित्य वसन्त विराजमान है। चिरसुन्दर श्रीगौराङ्गसुन्दरके चिर-सहचर नित्य परिकरवृन्द नवद्वीपमें उनको साथ लेकर आज वसन्त-लीला-उत्सवमें मस्त हैं। उनके बीचमें पदकर्त्ता वासुदेव घोष भी हैं।

उन्होंने गौराङ्ग-लीला अपनी आँखों देखकर नाना भावयुत मधुर पद-रचना करके नवद्वीप-लीलारस-लोलुप गौर-भक्तवृन्दके हृदयमें नाना भावोंकी जो तरङ्ग उठायी हैं, उसके घात-प्रतिघातसे अबतक निरन्तर परानन्दकी वृष्टि हो रही है। इस मधुर-रसधारामें जो मज्जन करते हैं, वे त्रितापकी ज्वालासे मुक्त होकर परानन्दके समुद्रमें डूबने लगते हैं। जो लोग इन महाभाग्यवान् लीलारस-रसिक भक्तोंका सङ्ग करते हैं, उनका भव-ताप दूर हो जाता है। पदकर्ता वासुघोषने नवद्वीपमें श्रीगौराङ्गप्रभुकी वसन्त-लीलाका वर्णन करते हुए एक अति सुन्दर पद लिखा है। यह पदरत्न गौराङ्ग-लीलारस-लोलुप भक्त-मधुप-वृन्दको मैं प्रेमोपहार देता हूँ। वह पद है—

देख देख ऋतुराज वसन्त समय।
सहचर सङ्गे विहरे गौर राय॥
फागु खेले गौरचाँद नदिया नगरे।
युवतीर चित्त हरे नयनेर शरे॥
सहचरी मेलि फागु देय गोरा गाय।
कुंकुम पिचूका लेई केह केह खाय॥
नाना यन्त्रे सुमेलि करिया श्रीनिवास।
गदाधर आदि सङ्गे करये विलास॥
हरि बलि बाहु तुलि नाचे हरिदास।
वासुदेव घोषे रस करिल प्रकाश॥

यह मधुररसकी गीत है। श्रीगौराङ्गसुन्दर नागर नहीं, जो ऐसा कहते हैं, वे रसिक-भक्त नहीं हैं; वे व्रजरसके रसिक नहीं हैं, वे माधुर्य-भजनके अधिकारी नहीं हैं। अपने अधिकारके अनुसार श्रीभगवान्‌का ऐश्वर्य-भजन करनेपर जब वे संतुष्ट होते हैं, तभी जगत्‌के जीवका मङ्गल होता है। उनसे मेरी इतनी प्रार्थना है कि वे कृपया व्रजसुन्दरी और नदिया-नागरीके प्रति कटाक्ष करके अपराध न करें।

पूर्वकालके महाजनगणके मनमें सुमधुर नदिया-नागरीभाव इतना अधिक प्रबल था कि वे अपने इस गुप्त मधुररसके भजनको मनमें छिपाकर न रख सकनेके कारण नाना भावोंमें नाना प्रकारकी पद-रचना करके, अपने-अपने मनके भाव व्यक्त करके श्रीगौराङ्गप्रभुके मधुर-भजनके अधिकारी, भाग्यवान् कलिके जीवको मधुर-भजनकी शिक्षा दे गये हैं।

इन सब महाजन पदकर्ताओंमें सर्वश्रेष्ठ थे, श्रीखण्डके ठाकुर नरहरि। वे व्रजकी मधुमती थे, अतएव व्रजरसमें सराबोर थे। उन्होंने नवद्वीप-रसके भाण्डारमें व्रजरसका कलस फोड़कर मधुररसका विस्तार किया। इस अनुपम रस-मिश्रणसे जो अमृतका स्रोत उमड़ा, उसमें मधुररस-लोलुप भक्त-भृङ्गगण बिल्कुल डूब गये और निकल न सके। उनका ऐश्वर्य-भजन एकबारगी बह गया। श्रीगौर-भगवान्‌के माधुर्य-भजनके आनन्दमें वे सदाके लिए निमग्न हो गये। वे ही श्रीगौराङ्ग-प्रभुके सर्वप्रधान अन्तरङ्ग पार्षद बने। वे ही श्रीगौराङ्गके मधुर-भजनके अधिकारी जीवको शिक्षा देने लगे और ये सब महाभाग्यवान् जीव एक-एक श्रीगौराङ्गप्रभुके भक्त-शूर बने। लीला-ग्रन्थमें इन सब विषयोंकी अवतारणा करनेसे लीलारस-भङ्ग होता है, इसी कारण यहाँ और कुछ लिखनेका प्रयास नहीं करूँगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उपर्युक्त मधुररसका पद पदकर्त्ता वासुदेव घोषद्वारा रचित है। श्रीगौराङ्गसुन्दरकी यह वसन्त-लीला, फाग खेल, यह सुन्दर लीला उन्होंने अपनी आँखोंसे देखी थी तथा पदकी भणितामें यह उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है। इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है। नवद्वीप रसकी इस उत्कृष्ट लीलाके प्रकाशक वे ही हैं। वसन्त-कालमें फाल्गुनी पूर्णिमामें श्रीकृष्णकी दोलयात्राके उपलक्ष्यमें श्रीगौराङ्गसुन्दरने यह लीलारङ्ग नदियामें प्रकट किया था। सुखद वसन्तके चिर-सहचर पिककुलके कल-नादमें नदियावासी नर-नारीका हृदय-मन प्रफुल्लित है। सुगन्धित मृदु-मन्द समीरणके मृदुल हिल्लोलसे नव-पल्लवित तरु-लता आनन्दसे झूम रहे हैं। नवीन घनश्यामल तृण-क्षेत्रोंके बीचमें कुसुमित तरु-लताएँ फल-पुष्पोंके भारसे अवनत हैं।

वसन्तके समागमसे मदनोत्सवमें मत्त नदियाकी सुन्दरियाँ नदियाकी खुली अटारियोंके झरोखोंसे नदिया-नागर श्रीगौराङ्गके मुख-चन्द्रके दर्शनके लिए लोलुप होकर चञ्चल दृष्टिसे इतस्ततः देख रही हैं। आज दोलपूर्णिमा है। नदियाके पथमें लोगोंकी भारी भीड़ है। सभी लोग प्रेमोन्मत्त हैं। सबके हाथमें अबीरकी पिचकारी है। चारों ओर लाल-ही-लाल रङ्ग हैं। जो जिसको देखता है, उसे ही लाल रङ्गसे रँग देता है।

इनके बीचमें जग-मनमोहन-रूपमें नदियाके चाँद दो कच्छा बाँध हल्दीके पीले वस्त्र पहने निजजनको साथ लिए मल्लके वेषमें पिचकारी हाथमें लिये राजपथपर खड़े हैं। उनका सारा अङ्ग लाल-ही-लाल है, श्रीवदनके ऊपरी भागमें घने श्यामवर्णके कुञ्चित केश आज रक्तवर्ण धारण कर रहे हैं, मानो आकाशमें सिन्दूरसे ढके मेघ दिखलायी दे रहे हैं। साथमें नरहरि, गदाधर, गौरीदास, जगदानन्द. वासुघोष, श्रीवासपण्डित, श्रीनित्यानन्द, श्रीअद्वैत आदि सभी फाग-कीर्तन रण-भङ्गमें उन्मत्त हैं। हरिदास ठाकुर आगे-आगे दोनों भुजाएँ ऊपर उठाये नृत्य कर रहे हैं। उनकी बारम्बार हरि-ध्वनिसे आकाश शब्दायमान हो रहा है। मृदङ्ग-मंजीरा, करताल आदि वाद्य-यन्त्रोंमें सुर-तालके साथ भक्तगण समयोचित गीत गा रहे हैं।

श्रीवासपण्डित इस दलके नेता हैं। नदिया-नागर श्रीगौराङ्गसुन्दर स्वयं पिचकारी हाथमें लेकर होली खेल रहे हैं और सब जीवोंके प्रति शुभ दृष्टिपात करके उनके गात्रमें लाल रंग डाल रहे हैं। ऐसा कोई जीव नहीं है, जो उनके सर्वमन-प्राणहारी नयन-वाणोंसे विद्ध नहीं होता। नदियाकी सुन्दरियाँ उन्मुक्त वातायनके भीतरसे रंगसे मिश्रित पुष्प-चन्दन नदिया-नागर श्रीगौराङ्ग-सुन्दरके श्रीअङ्गपर डाल रही हैं। कोई-कोई उन्हीं झरोखोंसे दूरसे ही पिचकारी मार रही हैं। सारी नदियामें आज आनन्दकी तरङ्ग उठी है। ऐसा कोई आदमी नहीं है, जो उस प्रेम-तरङ्गमें न डूबता हो। इसी भावमें श्रीगौराङ्गसुन्दर निज-जनको साथ लेकर रङ्ग-भङ्गमें गङ्गाके तीरकी ओर जा रहे हैं। उनके साथ लाखों आदमी चल रहे हैं। गङ्गाके तीरपर सब भक्तवृन्द एकत्रित हुए हैं। प्राचीन पदमें महाजन कविने प्रभुकी इस भावमें गङ्गा-तीर-गमन-लीलाका अति सुन्दर वर्णन किया है। यथा,

देख देख अपरूप गौराङ्गेर लीला।
ऋतु वसन्ते, सकल प्रियगण मेलि,
जलनिधि तीरे चलिला॥
एक दिके गदाधर, सङ्गे स्वरूप दामोदर,
वासुघोष गोविन्दादि मिलि।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गौरिदास आदि करि, चन्दन पिचूका भरि,
गदाधरेर अङ्गे देय फेलि ॥

स्वरूप निजगण साथे, आबिर लइया हाते,
सघने फेलाय गोरा गाय ।
गौरीदास खेलि खेलि, गौराङ्ग जितिल बलि,
करतालि दिया आगे धाय ॥

रूषिया स्वरूप कय, हारिला गौराङ्ग राय,
जितिल आमार गदाधर ।
कक्ष तालि देय केह, नाचे गाय ऊर्ध्व बाहु,
ए दास मोहन मनोहर ॥

—पद-कल्पतरु

इस प्रकार कीर्तन-रणरङ्गमें मत्त होकर होली खेलते-खेलते दल-बलके साथ श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र गङ्गाके तीरपर पहुँचे। गङ्गाजीके किनारे सुरम्य उपवन था। उस उपवनमें नाना प्रकारके फूल खिले थे। कुसुम-सौरभसे गङ्गाका तट आमोदित हो रहा था। श्रीगौराङ्गसुन्दर निजजनके साथ कीर्तनमें मत्त होकर होली खेलते-खेलते उसी उपवनमें प्रविष्ट हुए। श्रीनिताई-चाँद भी प्रभुके सङ्ग थे। उनका मन आज बड़ा आनन्दित हो रहा था।

श्रीअद्वैतप्रभुको उन्होंने आज खूब परेशान कर रखा था। वे उनकी आँखोंमें बराबर अबीर फेंकते थे और वृद्ध ब्राह्मण क्रोधमें उन्मत्त होकर उनपर गालीकी बौछार कर रहे थे। दोनों हाथोंसे आँखें मल रहे थे, परिधानका वस्त्र अबीरसे लाल हो रहा था। क्रोध होनेपर हमारे गौर-आना-गोसाईं एकबारगी दिगम्बर बन जाते थे। यहाँ भी वही हो गया। भक्तवृन्द देखकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। दोनों प्रभुओंकी रसकेलि और परिहास देखकर महाप्रभु मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे थे।

झूलन-लीला

इस प्रकार वे सबलोग परानन्दमें मग्न होकर गङ्गाके तीर पर उपवनमें आकर बैठे। वहाँ वृक्षके नीचे परम सुन्दर वेदीके ऊपर फूलोंका झूला सजाया गया था। भक्तवृन्दने पहलेसे ही उसे प्रस्तुत कर रखा था। श्रीगौराङ्ग-नागरको वे लोग अपने शौकसे आज फूलोंसे सजावेंगे। पुष्पोंसे सज्जित झूलेपर झुलावेंगे। यही उनकी मनकी अभिलाषा है। भक्त-वाञ्छा-कल्पतरु श्रीगौराङ्ग-सुन्दरने भक्तोंकी मनोकामना पूर्ण की। गदाधर, नरहरि, जगदानन्द आदि सबने मिलकर श्रीगौराङ्ग-नागरको भली-भाँति फूलोंसे सजाया। गदाधर और नरहरि प्रभुको सजानेमें सिद्धहस्त थे। प्रभुके भुवनमोहन रूपसे नदियावासी नर-नारीके मन-प्राण एकबारगी मात उठे हैं।

फूलोंके झूलेपर श्रीगौराङ्गसुन्दर अपूर्व फूलोंके साजमें गङ्गातीरके उपवनमें विहार कर रहे हैं, यह समाचार विद्युद् गतिसे सारी नदियामें फैल गया। सबलोग उनका दर्शन करनेके लिए दौड़ पड़े। गङ्गातीरके उपवनमें लोगोंकी भीड़ लग गयी। स्त्री-पुरुषके भेदाभेदका ज्ञान न रहा। सब लोग प्रेमानन्दमें उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे। भक्तवृन्द मधुर कीर्तन कर रहे हैं, सब अन्तरङ्ग निजजन प्रभुके श्रीअङ्गोंसे होली खेल रहे हैं और एकटक उनकी अपरूप रूप-माधुरीका दर्शन करके आनन्दमें विभोर हो रहे हैं। यह अपूर्व लीलारङ्ग गदाधरपण्डितने अपनी आँखों देखकर अपने प्रियतम शिष्य नयनानन्दसे कहा था। उन्होंने निम्नलिखित पदमें इसका आभास दिया है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

के कहूँ आजुक आनन्द और।
फूलबने दोलत गौर किशोर॥
नित्यानन्द गदाधर सङ्गे।
शान्तिपुर नाथ गायइ रङ्गे॥
सहचर फागु लेपइ गोरा गाय।
धावइ शुनि सब लोक नदियाय॥
खोल-करताल-ध्वनि हरि-हरि बोल।
नयनानन्द आनन्दे विभोर॥

—पद-कल्पतरु

नौका-विहार

श्रीश्रीगौराङ्गप्रभुने नवद्वीपमें व्रजलीलाके अनुरूप नौका-विलास-लीला-रङ्ग प्रकट करके भक्तोंका मनोरञ्जन किया था। वासुदेव घोष प्रभुके अन्तरङ्ग भक्त थे। प्रभुका अधिकांश लीला-रङ्ग उन्होंने अपनी आँखों देखकर लिखा है। उन्होंने निम्नलिखित पदमें लिखा है—

ना जानिये गोरा चाँदेर कोन भाव मने।
सुरधुनि-तीरे गेला सहचर सने॥
प्रिय गदाधर आदि सङ्गे ते करिया।
नौकाय चड़िया गौर प्रेमावेश हैया॥
आपनि कान्तारि हैया वाय नौका खानि।
डूबिल-डूबिल बलि सिञ्चे सबे पानि॥
पारिषद-सङ्गे हरि-हरि बोले।
पुरुष सोङरि केह भासे प्रेम-जले॥
गदाधर मुख हेरि मृदु-मृदु हासे।
वासुदेव घोष कहे मनेर उल्लासे॥

—पद-कल्पतरु

यह लीला नन्दनन्दन श्रीकृष्णने यमुनाके तीर श्रीराधिका आदि व्रज-गोपिकाओंके साथ प्रकट की थी। गदाधरका राधाभाव है। पूर्वलीला-स्मरण करके प्रभु गदाधरके मुखकी ओर प्रेम-पूर्वक देखकर मृदु-मृदु मुस्कुरा रहे थे। उनके अन्यान्य पार्षदगण (उनके मनमें भी व्रजभाव उदय हुआ था, इसलिये वे भी पूर्वलीला-स्मरण करके प्रेमानन्दमें डूब रहे थे। शचीनन्दन यशोदानन्दन हैं, यह बात वे भली-भाँति समझते हैं। प्रभु अपने मुखसे कुछ नहीं कहते हैं, परन्तु उनके लीलारङ्गसे ही सब प्रकट हो जाता है।

एक और प्राचीन पदमें प्रभुका यह नौका-विलास लीलारङ्ग अति सुन्दर भावमें वर्णित है। वह पद यहाँ उद्धृत किया जाता है। यह मधुर पद वसु रामानन्दद्वारा रचित है—

आरे मोर आरे मोर गौराङ्ग-राय।
सुरधुनि माझे जाइया, नवीन नाविक हइया,
सहचर लइया खेलाय॥
प्रिय गदाधर सङ्गे, पूरब रभस रङ्गे,
नौकाय बसिया करे केलि।
डुबू डुबू करे ना, बहये विषम वा
देखि हासे गोरा बनमाली॥
केह करे उतरोल, घन-घन हरि-बोल,
दुकूले नदियार लोक देखे।
भुवन-मोहन नाय्या, देखिया विवश हैया,
युवती भूलिल लाखे लाखे॥
जगजन चितचोर, गौर-सुन्दर मोर,
जे करे ताहाइ परतेख।
कहे दीन रामानन्दे, ए हेन आनन्द-कंदे,
बञ्चित हइल मुञि एक॥

—पद-कल्पतरु

नवद्वीपमें श्रीगौराङ्गप्रभुका नौका-विलास-लीलारङ्ग नित्य ही होता था। गङ्गाके किनारे उनको बड़ा अच्छा लगता था, गङ्गाके जलसे बड़ा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रेम था, गङ्गामें जल-केलि करना उन्हें बहुत पसंद था। वे तैरनेमें बहुत पटु थे। श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ एक दिन नवद्वीपसे गङ्गामें तैरते-तैरते वे शान्तिपुर गये। गङ्गाजीके मनमें बड़ी साध थी कि यमुनाके भाग्यमें पूर्वलीलामें जो सुख प्राप्त हुआ, वही सुख उनके भाग्यमें भी होता। भक्त-वत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने उनकी इस साधको पूर्णरूपसे पूरा किया। प्रभुकी गङ्गा-तीरकी लीला विस्तारपूर्वक पहले वर्णन की जा चुकी है। महाजन कवि परमानन्द लिख गये हैं—

"गोरा मोर दयार अवधि गुणनिधि।
नदिया नगरे सुरधुनि तीरे,
गौराङ्ग विहरे निरवधि॥"

वासकसज्जा

वासकसज्जा-लीला व्रजलीलाका अङ्ग है। श्रीराधिकाजी निभृत निकुञ्जमें जाकर रसिक-शेखर श्रीकृष्णके आगमनकी प्रतिक्षण प्रतीक्षा करती थीं। वे अपने अङ्गोंको वेषभूषासे विभूषित करती थीं। केलि-गृहको सजाती थीं, प्राणकान्तके आगमनकी प्रतीक्षामें कुञ्जके द्वारपर सतृष्ण-नयनसे बाट जोहती थीं। इसका नाम है—वासकसज्जा लीला। सखीके सङ्ग वृन्दावनके कुञ्जमें यह मधुर लीला प्रकट की थी व्रजकी किशोरी श्रीराधिकाजीने। महाजन कविने लिखा है—

"अपरूप राइक चरित।
निभृत निकुञ्ज माझे धनी साजये,
पुनः पुन उठये चकित।"

नवद्वीपमें श्रीगौराङ्गसुन्दरने व्रजकी यह वासकसज्जा-लीला भी प्रकट की थी। गयासे लौटनेपर उनकी कृष्णप्रेमोन्माद दशा होती है। इस अवस्थामें वे एक दिन एकान्तमें बैठकर अकेले सिर झुकाये आँसू बहा रहे थे; अपनी छाया देखकर चकित हो उठते थे। कभी कभी भूतलपर लोट-पोट करने लगते थे, मानो किसीके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहे हों। यह एक दिनकी बात नहीं, बैठे-बैठे श्रीगौराङ्गसुन्दरके मनमें इस वासकसज्जा-लीलाका भाव बीच-बीचमें उठता था। उनके मर्मी अन्तरङ्ग भक्त वासुदेवघोषने प्रभुके मनोभावको समझकर एक पदमें लिखा है—

अरुण नयने धारा बहे।
अवनत माथे गोरा रहे॥
छाया देखि चमकित मगे।
भूमि गड़ि जाय क्षणे-क्षणे॥
विरले बसिया एकेश्वरे।
वासकसज्जार भाव करे॥
वासुदेव घोष ता देखिया।
बले किछु चरणे धरिया॥

एक दिन और उन्होंने सुरसरिके किनारे प्रभुके इस रस-रङ्गकी लीला देखकर एक और सुन्दर पद लिखा है। वह पद मधुसे भी मधुर है—

सुरधुनि-तीरे नवभाण्डीर तले।
बसियाछे गोरा-चाँद निजगणे मिले॥
रजनी कौमुदी आर हिमऋतु ताप।
हिम सह पवन बहाय मन्द बाय॥
तँहि बैठहि पँहू ललित शयने।
हेरइ दश-दिशि चकित नयने॥
आपन अङ्गेर छाया देखिया उठये।
वासकसज्जार भाव वासुघोष कहे॥

सुरसरिके तीर कुसुम-काननमें, ज्योत्स्नावती रजनीमें श्रीगौराङ्गप्रभुके भक्तगण उनको घेरकर बैठे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हैं। अगहनका महीना है; मन्द-मन्द जाड़ा पड़ रहा है; नदीके तीर मृदु-मन्द समीरण वह रहा है; शीत-वायुसे शरीरमें ठंडक लग रही है। प्रभु अङ्ग-विन्यास करके कुसुमित कुञ्ज-वनकी वेदीके ऊपर शयनावस्थामें इधर-उधर ताक रहे हैं। उनको शीत या हिमका अनुभव नहीं हो रहा है; क्योंकि वे अपने भावमें विभोर हैं। वे उस समय वस्तुतः श्रीराधा बन रहे हैं या हो गये हैं; भक्तवृन्द-को वे सखी समझ रहे हैं। सुरसरिको यमुना और कुसुमवनको वृन्दावन समझकर उनके मनमें अपार आनन्द हो रहा है। परन्तु इस आनन्दके बीच एक भयानक उत्कण्ठा मौजूद है। वे अपने जीवन-कान्त, प्राणबल्लभ, नाग-शिरोमणि श्रीकृष्णके आगमनकी प्रतीक्षामें हैं। एक एक वार कुसुम-शैयासे उठकर बैठ जाते हैं और सतृष्ण नयनोंसे इधर-उधर देखने लगते हैं। जब खड़े होते हैं तो उनके अङ्गोंकी छाया भूतलपर पड़तीं है, उसे देखकर अपने प्राणवल्लभ आ रहे हैं, यह सोचकर चकित हो उठते हैं।

व्रजभावमें विभावित भक्तगण प्रभुकी अवस्था देखकर उद्विग्न हो गये हैं। वे भी श्यामसुन्दरके आगमनजी प्रतीक्षा करते हुए एक-एक बार दूर पथकी ओर देख लेते हैं। पदकर्ता वासुदेवघोष भी उनमेंसे-एक हैं। वे व्रजभावमें विभोर होकर श्रीमद्भावतमें वर्णित यह अपूर्व रसलीला मानो अपनी आँखोंसे देख रहे हैं और प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर अपने मनके भाव लिपिबद्ध करके रख गये हैं।

इन सब सिद्ध महाजनोंके द्वारा रचित पदावलीमें वर्णित श्रीगौराङ्गप्रभुकी लीला-मधु ही इस समय गौर-भक्तोंका प्राण है। यदि यह अपूर्व मधु-भाण्डार वे नहीं रख जाते तो गौर-भक्तोंकी क्या अवस्था होती, कहा नहीं जा सकता। गौराङ्ग-लीला-मधु-भाण्डारमें प्रवेश करनेका पथ ये पदा-वली हैं। लीला-मधुलोलुप भक्त-भृङ्गगण अनन्त काल इन सब पूज्यपाद नित्यसिद्ध महाजन कवियोंके प्रेमऋणमैं आबद्ध रहेंगे। वे नित्यसिद्ध ऋषि महाजन थे। श्रीगौराङ्गप्रभुके नित्य पार्षदरूपमें वे भूतलपर अवतीर्ण हुए थे। उनके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात।

पाशा-क्रीड़ा

व्रजलीलामें श्रीकृष्णने अपनी प्राणप्रियतमा श्रीराधिकाजीके साथ पाशा-क्रीड़ा-लीलारङ्ग किया था। श्रीगौराङ्गसुन्दरके मनमें एक दिन पूर्वलीलाकी यह अपूर्व स्मृति उदय हुई और उन्होंने व्रजभावमें विभावित होकर गदाधरको स्मरण किया। तब गदाधर आकर प्रभुके श्रीमन्दिरमें उपस्थित हुए। दूसरे भक्तगण भी आये। सबके मनमें पूर्ण व्रजभाव था। प्रभु व्रजभावमें विभोर होकर पाशा लेकर गदाधरके साथ खेलने लगे।

गदाधरका भाव सदासे ही लज्जाशील था। सुन्दर मुख-चन्द्रको अवनत करके वे प्रभुके साथ पाशा खेलने बैठे। भक्तवृन्द गदाधरका अपूर्व भाव देखकर हँस रहे थे, लज्जाशील गदाधर इससे और लजाने लगे। प्रभु प्रेमानन्दमें खेल रहे हैं। लज्जासे गदाधरका हाथ उठ नहीं रहा है। वे हाथको समेटकर अपने प्राणवल्लभके सुन्दर हास्यमय मुख-चन्द्रकी ओर एकटक देख रहे हैं। रसिकशेखर प्रभुने तब जोर करके उनका हाथ पकड़ा। गदाधर लज्जासे मानो मर गये। परन्तु क्या करें, सिर नीचा किये पाशा हाथमें उठाया और प्राणनाथके चन्द्र-वदनकी ओर सलज्ज नयनोंसे देखकर धीरे-धीरे मृदु-मधुर स्वरमें 'छःतीन' कहकर पाशा फेंक दिया। रसिकचूड़ामणि प्रभुने हँसकर पाशा उठा लिया और उच्च स्वरमें "पाँच-तीन" कहकर पुनः पाशा फेंक दिया।

इस प्रकार गौर-गदाधरका पाशा-क्रीड़ा-लीला-रङ्ग चलने लगा। दोनों ही इस अपूर्व लीलारसमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मग्न हो गये। अन्यान्य भक्तगण भी व्रजरसमें मग्न होकर गौर-गदाधरकी पाश-क्रीड़ा-लीलाका रसास्वादन करने लगे। कोई हारता है, कोई जीतता है। प्रेमानन्दमें पाशा-क्रीडा-लीलारङ्गमें सभी मग्न हैं! प्रभु जब खेलमें हारते हैं तो सब गदाधरकी जय-जयकार मनाते हैं और जब गदाधर हारते हैं तो सब गौराङ्गकी जय मनाते हैं। इनमें प्रभुके अन्तरङ्ग रसिक भक्त वासुदेवघोष भी थे। उन्होंने अपनी आँखोंसे प्रभुकी यह लीला देखकर व्रजभावमें विभावित होकर एक पद लिखा है, उसी पदका अवलम्बन करके यह अपूर्व लीलारस-मधु वितरण किया गया है। वह पदरत्न नीचे उद्धृत है—

गौराङ्ग चाँदेर मने कि भाव हइल।
पाशा सारि लइया गोरा खेला सिरजिल॥
प्रिय गदाधर सङ्गे खेले पाशा सारि।
खेलिते लागिल दान हारि जिनि करि॥
छया चारि दान फेले प्रिय गदाधर।
पञ्च तिन बलि डाके गौराङ्ग सुन्दर॥
दुजने मगन भेल नव पाशा रसे।
जय जय दिया गाय वासुदेव घोषे॥

—पद-कल्पतरु

जल-केलि

पाशा-क्रीड़ा-लीला समाप्त करके अपराह्णमें प्रभु सुरसरिके तीर भ्रमण करने चले। सङ्गमें गदाधर और अन्य पार्षदगण थे। प्रभुके मनमें आज बड़ा आनन्द है; क्योंकि पाशेके खेलमें वे आज गदाधरसे हार गये हैं। प्रियतमासे हारनेमें ही आनन्द है, जीतनेमें आनन्द नहीं है। प्रभुके मनमें उस समय भी व्रजभाव जागरूक था। भक्तगण भी व्रजभावमें विभावित थे। यमुनाकी जल-केलि-लीलारङ्ग प्रभुको याद आयी और तत्काल नित्यसिद्ध भक्तोंके साथ वे गङ्गाजीमें प्रविष्ट हुए। जलक्रीड़ा-लीलारङ्ग प्रारम्भ हो गया। सभी प्रेमोन्मत्त हैं, सब एक-दूसरेके वदनपर जल डाल रहे हैं; परन्तु रसिक-चूड़ामणि प्रभु अपने गदाधरको लेकर अपूर्व जलकेलि-लीलारङ्ग कर रहे हैं। वे गदाधरकी आँखोंमें जोरसे जलका छींटा मार रहे हैं। गदाधर लज्जासे मरे जा रहे हैं। दोनों आँखोंपर हाथ दे रखा है, तथापि प्रभु उनको नहीं छोड़ रहे हैं। भक्तवृन्द गोर-गदाधर-लीलारङ्ग देखकर दिलभर हँस रहे हैं और बातें कर रहे हैं—"अहा! हम लोगोंने ठीक आज यमुनाकी राधाकृष्णकी जलकेलि देख ली।" इस लीलाका वर्णन भी पदकर्ता वासुदेव-घोषने किया है। यथा,

जलकेलि गोराचाँदेर मनेते पड़िल।
पारिषदगण सङ्गे जलेते नामिल॥
कार अङ्गे केह केह जल फेलि मारे।
गौराङ्ग फेलिगा जल मारे गदाधरे॥
जलक्रीड़ा करे गोरा हरषित मने।
हुलाहुलि बुलाबुलि करे जने जने॥
गौराङ्ग चाँदेर लीला कहने ना जाय।
वासुदेव घोष ताहे गोरा-गुण गाय॥

—पद-कल्पद्रुम

नदियाधाममें श्रीगौराङ्गसुन्दरने श्रीकृष्ण-लीलाके सारे अङ्गोंका अभिनय किया था। एक दिन गङ्गाके तीरपर बैठकर संध्याकालमें प्रभुके मनमें पूर्वलीलाकी स्मृति उदय हुई। वे व्रजभावमें विभावित होकर परम प्रेममें भरकर उपस्थित भक्तवृन्दसे बोले—"आज वस्त्र-हरण-लीलाभिनय होगा।"—इतना कहकर प्रभुने प्रेमानन्दमें हुंकार-गर्जन करके भक्तवृन्दको गङ्गा-स्नान करनेका आदेश दिया। प्रभुका उस समय भगवान्-भाव था। उनकी ऐश्वर्यमयी श्रीमूर्तिकी ओर देखकर कोई उनसे बात न कर सका। उनलोगोंमें श्रीअद्वैताचार्य, श्रीनित्यानन्द, हरिदास, श्रीवासपण्डित आदि वयोज्येष्ठ भव्य-भव्य भक्तवृन्द थे पहले शान्तिपुर-नाथ गङ्गा-जलमें कूद पड़े। उनकी देखा-देखी दूसरे सबलोगोंने उनका अनुगमन किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रँगीले प्रभु तब हँसते-हँसते उनके परिधानके वस्त्रोंको लेकर गङ्गाके तीर एक कदम्ववृक्षपर चढ़कर रहस्य देखने लगे। भक्तवृन्द जलकेलि करके एक-एक करके वृक्षके नीचे आकर हाथ जोड़कर प्रभुसे अपना-अपना वस्त्र माँगने लगे। उन्होंने सबके वस्त्र दे डाले और स्वयं वृक्षसे उतरकर भागवतीय पूर्वलीलाकी वस्त्रग्रहण-लीलाकी व्याख्या करने लगे। भक्तगण प्रेमानन्दमें उत्फुल्ल प्रभुके श्रीमुख-चन्द्रकी ओर देखते रहे, मानो उन्होंने श्रीकृष्ण-लीलारङ्ग अपनी आँखों प्रत्यक्ष देख लिया। इस मधुर-लीलाको श्रीचैतन्यचरित महाकाव्यमें श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामी लिपिबद्ध कर गये हैं—

अथ कर्हिचिद्बहुविलासनिधि
रजनीमुखे सुखमयाम्बुनिधिः।
अवकृष्य भक्तजनवस्त्रचयं
परितो विलस्य पुनरेव ददौ॥

"पश्चात् आनन्दसिंधु और बहुविलासनिधि श्रीश्रीगौरचन्द्र एक दिन संध्याकालमें भक्तोंके सारे वस्त्र आकर्षण करुके कुछ देरतक सर्वतोभावेन पूर्वलीलारङ्गका विलास करते हुए पुनः उनको वापस कर दिया।"

आधुनिक शिक्षित कोई-कोई भक्त इस लीलारङ्गका पाठ करके कुरुचि प्रकाशित करते हुए नाक-भौं सिकोड़ेंगे। परन्तु पूज्यपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने स्वरचित श्रीग्रन्थमें लिखा है—

यस्योच्छिष्टप्रसादादयमजनि मम
प्रौढ़िमा काव्यरूपी
वाग्देव्याः यः कृतार्थीकृत इह समयोत-
कीर्त्य तस्यावतारम्।
यत्कर्त्तव्यं ममैतत्कृतमिह सुधियो
येऽनुरज्यन्ति तेऽमी
शृण्वन्त्वन्यान्नमामश्चरित मिदमयी
कल्पितं नोविदम्भू॥

"अहा! जिनका उच्छिष्ट भोजनकर इस काव्यका रचयिता वाग्वादिनीके अनुग्रहका भाजन बना है, उन भगवान् गौरचन्द्रकी गुणावलीका कीर्तन करके मेरा जो कर्त्तव्य है, वही मैंने किया है। इन लीला-कथाओंका जो पण्डित लोग अनुबाद करेंगे, वे सुन लें, मैं इस अपूर्व श्रीगौराङ्ग-चरित्रकी निरन्तर वन्दना करता हूँ। वे मेरे ग्रन्थमें लिखी हुई लीलाओंको कपोलकल्पित न समझें, केवल यही मेरी प्रार्थना हैं।"

उन्होंने और भी लिखा है—

श्रीचैतन्यकथा यथामतियथा-
दृष्टं यथाऽऽकर्णितं
जग्रन्थे कियती तदीयकृपया
बालेन येयं मया।
एतां तत्प्रियमण्डले शिव शिव
स्मृत्यैकशेषंगते
को जानातु शृणोतु कस्तदनया
कृष्णः स्वयं प्रीयताम्॥

"मैंने जैसा देखा है, सुना है, तदनुसार श्रीगौराङ्गप्रभुकी पवित्र लीला-कथा यथामति ग्रन्थरूपमें निबद्ध कर रहा हूँ। परन्तु दुःखकी बात यह है कि उनकी प्रिय भक्तमण्डली बिल्कुल ही अन्तर्हित हो गयी, अतएव इसे कौन जानेगा और कौन सुनेगा। परन्तु प्रार्थना यह है कि इस गौराङ्ग-लीला-कथाके कीर्तनके गुणसे स्वयं भगवान् गौर-कृष्ण मेरे ऊपर प्रसन्न हों।"

महाकवि कर्णपूर

महाकवि कर्णपूर गोस्वामी श्रीगौराङ्गप्रभुके अन्तरङ्ग भक्त शिवानन्दसेनके पुत्र थे। १४४९ शकाब्दमें काँचड़ापाड़ामें उनका जन्म हुआ था। उनके अन्य दो भाइयोंका नाम था—चैतन्यदास और रामदास। इन महापुरुषका पितृदत्त नाम था,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परमानन्द। परमानन्द जब ६-७ वर्षके बालक थे तो उनके माता-पिता उनको साथ लेकर श्रीक्षेत्र गये थे। श्रीश्रीमन् महाप्रभुके श्रीचरणतलमें उनको अर्पण करनेपर उन्होंने कर्ण और जिह्वाके द्वारा प्रभुके श्रीचरणोंका अँगूठा स्पर्श किया। इससे उनको अपूर्व कवित्वशक्ति प्राप्त हुई। तब उन्होंने निम्नलिखित श्लोक प्रभुके सामने पढ़ा—

श्रवसोः कुवलयमक्ष्णोरञ्जनमुरसो महेन्द्रमणिदाम।
वृन्दावनरमणीनां मण्डनमखिलं हरिर्जयति॥

चै. च. अं. १६.७

सात वत्सरेर बालक, नाहिं अध्ययन।
ऐछे श्लोक करे, लोके चमत्कार हन॥

चै. च. अं. १६.६९

प्रभुने प्रसन्न होकर इस परमानन्द सेनको 'कवि कर्णपूर' की उपाधि प्रदान की। परन्तु वे उनको 'पुरीदास' कहकर पुकारते थे। कवि कर्णपूर गोस्वामीने अनेकों संस्कृत ग्रन्थोंकी रचना की। जैसे, (१) श्रीचैतन्यचरित महाकाव्य, (२) श्रीचैतन्य-चन्द्रोदय नाटक (३) अलंकारकौस्तुभ, (४) आनन्द-वृन्दावनचम्पू, (५) कृष्णगणोद्देशदीपिका, (६) श्रीचैतन्यशतक और (७) स्तवावली।

प्रभुकी नवद्वीप-लीला अनन्त और अखण्ड खण्डसार है। लीलासिंधुके एक-एक विन्दुसे शत-धाराएँ निकलकर विश्व-ब्रह्माण्डको प्लावित कर सकती हैं—

श्रीकृष्णचैतन्य लीला अमृतेर सार।
एक लीला प्रवाहे बहे शत-शत धार॥

चै. च. अं. ५.१५३

पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है—

अनन्त चैतन्य कथा कहिते ना जानि।
लोभे लज्जा खाइया तार करि टानाटानि॥

चै. च. म. ९.३३१

यह बात अक्षरशः सत्य है। कलिका धर्म ही गौर-कीर्तन, गौर-कथा-श्रवण, गौर-भक्तका सङ्ग करना तथा श्रीगौराङ्गके श्रीमुखसे निःसृत हरिनाम-महामन्त्रका साधन हैं। कविराज गोस्वामीने अति सुस्पष्ट शब्दोंमें यह उपदेश दिया है। जैसे,

चैतन्यचरित शुन श्रद्धा-भक्ति करि।
मात्सर्य छाड़िया मुखे बल हरि-हरि॥

एइ कलिकाले आर नाहिं अन्य धर्म।
वैष्णव वैष्णव-शास्त्रे कहे एइ मर्म॥

चै. च. म. ३३३,३३४

गौर-कथा और गौर-लीलाका कहकर या लिखकर पार पाना कठिन है। कविराज गोस्वामीने लिखा है—

कोटि युग पर्यन्त यदि लिखये गणेश।
एक दिनेर लीलार तबू नाहि पाय शेष॥

चै. च, अं. १८.१३

इसको कोई अतिरञ्जित बात समझकर अपराध-अर्जन न करे, यह मेरी विनती है।

यदि भाग्यमें है और इस वृद्धावस्थामें कृपालु प्रभु यदि कृपा करके शक्ति-प्रदान करें, नित्यसिद्ध श्रीगौराङ्गके दासलोग यदि कृपा करें तो गौर-कथा लिखनेकी वासना अतृप्त न रहेगी, यह मेरा ध्रुव विश्वास है। जय गौर!

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तैतालीसवाँ अध्याय

श्रीकृष्णलीला-अभिनय

आपने हइला प्रभु जगत-जननी ।
चै. भा. म. १८.२०३

श्रीवासके द्वारा वृन्दावन-लीला-वर्णन

गार्हस्थ्यलीलारङ्गमें प्रभुने अपनी माता और गृहिणीको कुछ दिन आनन्दसिंधुमें निमग्न किया। नदियाके भक्तवृन्दके मनमें यह देखकर बड़ा आनन्द हुआ। प्रभुकी गार्हस्थ्य-लीला लोकशिक्षाके लिए थी। वे कृष्ण-प्रेमी थे। कृष्ण-कथा, कृष्ण-लीलारङ्ग, कृष्ण-कीर्तन प्रभुके प्राण थे। संसार-सुखमें विभोर होकर क्या वे इसे भूल सकते थे ?

श्रीवासके आँगनमें एक दिन प्रभु भक्तवृन्दके साथ बैठे थे। उनके मनमें अचानक श्रीवृन्दावन-लीलाकी स्मृति उदय हुई। वे प्रेमाविष्ट-भावमें श्रीवासपण्डितसे बोले—"श्रीवास ! मेरी मुरली कहाँ है ? शीघ्र लाकर दो !" सुचतुर भक्तप्रवर श्रीवासपण्डितने प्रभुके मनका भाव समझकर हँसते हुए उत्तर दिया—"प्रभो ! गोपीगणने आपकी वंशी चुरा रखी है।"

वृन्दावन-भावमें विभावित होकर प्रभुने कुछ देर मौनावलम्बन किया। प्रेमावेशमें उनके सारे अङ्ग पुलकित हो उठे। उन्होंने प्रेमानन्दमें अधीर होकर श्रीवासपण्डितको अपनी पूर्वलीला-कीर्तन करनेका आदेश दिया। श्रीवासपण्डित अपने स्वभावसिद्ध प्रेमानुरागमें भरकर श्रीकृष्णकी मधुर वृन्दावन-लीला, व्रज-गोपाङ्गनाओंके साथ व्रजेन्द्र-नन्दनकी प्रेम-क्रीड़ा, कालिन्दीतटपर व्रजवनिताओंके साथ जल-विहार-लीलारङ्ग आदि एक-एक करके अतिविस्तारपूर्वक वर्णन करने लगे। प्रभु आविष्ट होकर अपनी पूर्वलीला-कथा सुनने लगे।

श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने अपने श्रीचैतन्यचरित महाकाव्यके नवम और दशम सर्गमें श्रीवासपण्डितकृत इस मधुर वृन्दावन-लीलाका अतिशय विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। मधुररसकी लीलाका वर्णन सुमधुर भाषामें तथा सुललित छन्दोंमें अति रसमय हो गया है। अधिकारी रसिक भक्तवृन्द कृपा करके इस श्रीग्रन्थके उपर्युक्त दो सर्ग पाठ कर लें। ग्रन्थविस्तार-वाहुल्यके भयसे यहाँ मैं उद्धृत न कर सका।

श्रीवासपण्डित प्रेमोन्माद दशामें वृन्दावन-लीला वर्णन कर रहे हैं; प्रभु प्रेमानन्दमें अधीर होकर चुपचाप श्रवण कर रहे हैं। बीच-बीचमें प्रेम-हुंकार-गर्जन और केवल 'बोलो-बोलो' धुनि सुन पड़ती है। प्रभुके कमल-लोचन-द्वयसे निःसृत प्रेमाश्रुधारासे मानो श्रीवासके आँगनमें प्रेमकी नदी बह रही है। अन्तरङ्ग अधिकारी भक्तवृन्द प्रभुको घेरकर कृष्ण-लीला-कथाका मधु-पान करके मत्त हो गये हैं। प्रभुके श्रीअङ्गमें बारंबार अष्ट सात्त्विक भावोंका उदय हो रहा है। श्रीवास-मन्दिरका द्वार बंद है। प्रभुको तथा उपस्थित भक्तवृन्दमें किसीको वाह्य ज्ञान नहीं है। व्रजभावमें विभावित होकर सभी एकबारगी तन्मय हो गये हैं।*

[टिप्पणीका शेष अगले पृष्ठ पर]

* श्रीवृन्दावन-धाममें रहते समय जीवाधम ग्रन्थकारको भाग्यवश एक दिन श्रीश्रीराधा-कृष्णकी रहो-लीलाविषयक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीकृष्ण-लीला-अभिनयकी तैयारी

प्रभुने श्रीवासपण्डितको श्रीकृष्णकी यह मधुर वृन्दावन-लीला वर्णन करनेका आदेश दिया। प्रभुका आत्यन्तिक आग्रह देखकर रसिकभक्त श्रीवासपण्डितने अतिशय विस्तारपूर्वक प्रभुकी श्रीवृन्दावन-विहार-लीलाका वर्णन करके उनको सुनाया। श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने वृन्दावन-भावमें विभावित होकर नवद्वीपमें भक्तगणके साथ पूर्व-लीला-अभिनय करनेकी कामना की। इस उद्देश्यसे श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नके गृहके प्राङ्गणमें अभिनयका स्थान निश्चित हुआ। प्रभुके आदेशसे ही इस अपूर्व मधुर कृष्ण-लीलाभिनयका स्थान यहाँ ही तय हो गया।

प्रभुने इस कार्यके लिए श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नका गृह क्यों चुना? इसका एक गूढ़ मर्म है। नवद्वीपमें इतनी जगहोंके रहते, श्रीवासके आँगनके रहते प्रभुने अपने परम आत्मीयके घर लीला-अभिनय करनेका निर्देश क्यों किया? यह अतिगुह्य कथा है। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यका घर प्रभुके निवासस्थानके समीप था। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको जिससे श्रीकृष्ण-लीलाभिनय देखनेका सुयोग मिले, इसी हेतु रसिक-चूड़ामणि श्रीगौराङ्गसुन्दरने अपने मन्दिरके अत्यन्त समीप निरापद स्थानमें अभिनय करनेका निश्चय किया। प्रभु स्वयं त्रिभुवन-मोहिनी लक्ष्मीके वेषमें मधुर नृत्य करेंगे, भक्तवृन्दमें कोई रमणी, कोई पुरुषवेष धारण करके लीलाभिनय करेगा। यह लीलारङ्ग विशेष कौतुकप्रद होगा। प्रभुकी आन्तरिक इच्छा है कि नवीना प्रियाजी इसे देखें। इसी कारण उन्होंने अत्यन्त चतुराईसे अनुकूल स्थान चुन लिया है। चतुर-चूड़ामणिके मनके भावको चतुर भक्तवृन्दने समझ लिया। वे मन-ही-मन खूब हँसे। किसी-किसीने कहा कि श्रीवासका आँगन ही इस मधुर लीलाभिनयके उपयुक्त है; परन्तु प्रभुने उसे नहीं सुना।

इच्छामय प्रभुकी इच्छाशक्ति श्रीनित्यानन्द-प्रभुको बुलाकर श्रीगौर-भगवान्‌ने कहा—"आज हमलोग श्रीचन्द्रशेखर आचार्यरत्नके घर कृष्ण-लीलाभिनय करेंगे। सबको लीलाके अनुरूप सज्जामें सज्जित होना पड़ेगा। श्रीकृष्णभगवान्‌के लीलारसके आस्वादनके लिए इस प्रकारका अभिनय आवश्यक है और यह भजनका अङ्ग भी है।" श्रीनित्यानन्दप्रभुने हँसकर कहा—"प्रभो! तुम्हारी

[पृष्ठ ६४३ की टिप्पणीका शेष]

मधुर कीर्तन सुननेका सुयोग मिला। व्रजयुगल-भजननिष्ठ कुछ रसिक भक्तोंने एक निर्जन कुञ्जमें इस उज्ज्वल रस-कीर्तनका प्रबन्ध किया था। अधिकारी और अनधिकारी, दोनोंही श्रेणीके रसिक भक्त इस रस-कीर्तनमें उपस्थित थे। अनधिकारियोंमें विशेष उल्लेखनीय यह अधम ग्रन्थकार भी था। ग्रन्थकारके परमश्रद्धास्पद मित्र श्रीकृष्णपददास बाबाजीके विशेष अनुरोधसे मैं और मेरे अभिन्नहृदय परम-प्रेमास्पद श्रीनृत्यगोपाल गोस्वामी उस रस-कीर्तनके श्रवणार्थ आमन्त्रित थे। श्रीश्रीराधागोविन्द-लीला-रस-मधुप युगल-भजननिष्ठ परम रसिक भक्त श्रीकृष्णपददास बाबाजी यह रस-कीर्तन सुनते-सुनते विह्वलभावमें प्रेमाश्रु बहाने लगे। उनके शरीरमें स्वेद, कम्प, वैवर्ण्य आदि सात्त्विक भाव दिखलायी देने लगे। वह दृश्य आज भी हमारी आँखोंमें स्पष्ट भासित होता है। प्रभुकी यह अपूर्व मधुर लीला-कथा-श्रवणका वृत्तान्त लिखते समय मेरे मनमें उस दिनकी स्मृति उदय हो गयी। आजतक अधिकारी रसिक-भक्तवृन्द श्रीधामको अलंकृत कर रहे हैं। उनकी शक्ति असीम है, महिमा अपार है। वे महापुरुष हैं। श्रीश्रीराधाकृष्णकी युगल-विलास-लीलाका मधु वे पान करते हैं।

—ग्रन्थकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब इच्छा हो गयी है तो यह कार्य आज ही होगा।

प्रभुने बुद्धिमन्त खाँ और सदाशिव कविराजको बुलानेका आदेश दिया। बुद्धिमन्त खाँ नदियाके कायस्थ जमींदार थे, प्रभुके परम भक्त थे। सदाशिव कविराज प्रभुके प्रिय भक्त थे। उनके आनेपर प्रभुने कहा—"आपलोग आज श्रीचन्द्रशेखर आचार्यरत्नके घर कृष्ण लीला-अभिनयका सारा प्रबन्ध करें; आज रातको अभिनय होगा। अभिनयके लिए उपयोगी सब वस्त्रालंकारादि वस्तुओंका प्रबन्ध शीघ्र करें।"

यह कहकर प्रभुने उनको विदा किया और सब भक्तोंको बुलाकर किसे क्या बनना होगा, यह उन्हें बतला दिया—

जैसे—

गदाधर—रुक्मिणी, लक्ष्मी
ब्रह्मानन्द—सखी सुभद्रा, रुक्मिणीकी रक्षक सखी
श्रीवास—नारद
श्रीराम—स्नातक
हरिदास—कोतवाल एवं सूत्रधार
मुकुन्द—पारिपार्श्वक
वासुदेव—वेश-विन्यासकारी
नित्यानन्द—श्रीराधाकृष्णको मिलानेवाली भगवती योगमाया वृद्धा
स्वयं प्रभु—आदिशक्ति जगज्जननी

नवद्वीपमें इस प्रकारकी कृष्ण-लीला यह प्रथम ही अभिनीत हो रही थी। वैष्णववृन्द आनन्दमें उन्मत्त हो उठे। बुद्धिमन्त खाँ और सदाशिव कविराजने श्रीपाद आचार्यरत्नके घरपर कृष्ण-लीलाभिनयका सारा प्रबन्ध किया। बड़े-बड़े चन्द्रातप लाकर आँगनमें टाँगे गये। दरी, गलीचा, सतरंजी आदि लाकर बिछा दी गयीं। वस्त्र-अलंकार, कृत्रिम दाढ़ी, मूँछ, कञ्चुकी, शङ्ख, चँवर आदि नाटकोपयोगी नाना प्रकारकी सामग्रियाँ संग्रह की गयीं। पत्र-पुष्पसे गृह-द्वार सजाया गया। संध्याकालमें दीपालोकका प्रबन्ध किया गया। प्रभुने स्वयं आचार्यरत्नके घरपर जाकर सब विषयकी देख-भाल की। सारा प्रबन्ध ठीक देखकर वे प्रबन्धकद्वयके ऊपर बहुत प्रसन्न हुए।

प्रभुके साथ श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीवासपण्डित आदि भक्तगण थे। प्रभु भक्तवृन्दकी ओर देखकर हँसकर बोले—"नारी (लक्ष्मी) रूपमें मेरा नृत्य होगा। जो जितेन्द्रिय हैं, उनको ही उसे देखनेका अधिकार होगा। अतएव अभिनय-स्थलीमें वे ही जायँ, जो इन्द्रियोंको वशमें रखनेमें समर्थ हों।" अर्थात् प्रभुने कहा कि वे भुवनमोहिनी लक्ष्मी रूपमें नृत्य करेंगे—रसिकचूड़ामणि श्रीअद्वैत-प्रभुकी ओर देखकर बोले। इसका एक मर्म है। श्रीअद्वैतप्रभु शिवके अवतार हैं। वे श्रीभगवान्‌की मोहिनी मूर्ति देखकर उन्मत्त हुए थे। प्रभुने इसी कारण इशारेसे श्रीअद्वैताचार्यके साथ एक रङ्ग और रहस्य किया। उस रहस्यका मर्म भक्तोंने नहीं समझा। वे प्रभुके इस आदेशको सुनकर असंतुष्ट हुए; क्योंकि जितेन्द्रियके सिवा अन्य किसीको भी प्रभुके मोहिनी वेशके नृत्य-विलासका दर्शन करनेका अधिकार न था। जितेन्द्रिय होनेका कोई दावा नहीं कर सकता था। सर्वप्रथम श्रीअद्वैताचार्यने श्रीगौराङ्गप्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"हे प्रभो! तुम्हारा यह अपूर्व नृत्यविलास-दर्शन करनेका लाभ तो हमारे भाग्यमें नहीं होगा; क्योंकि मैं जितेन्द्रिय नहीं हूँ।" श्रीवासपण्डितने कहा—"मेरी भी यही बात है।" दूसरे भक्तगण भी निराश बैठे रहे; वे कोई बात न बोल सके।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हमारे रँगीले प्रभु केवल भक्तोंके साथ परिहास कर रहे थे। श्रीअद्वैतप्रभु और श्रीवासपण्डितकी बात सुनकर वे कुछ लज्जापूर्वक बोले—"यदि तुम-लोगोंमें-से कोई नहीं जायगा तो किसको लेकर मैं यह लीला करूँगा ?" यह कहकर प्रभु कुछ देर-तक कुछ सोचते रहे। फिर मधुर हँसी हँसकर बोले—"अच्छा, इसका एक उपाय करता हूँ। आपलोग कोई चिन्ता न करें। आज आपलोग कृष्णकी इच्छासे महायोगेश्वर हो जायँगे। मेरी मोहिनी मूर्त्ति देखकर मोहको प्राप्त न होंगे।" अद्वैतप्रभु और श्रीवासादि भक्तवृन्द प्रभुकी बात सुनकर परम आनन्दित हुए।

इस कृष्ण-लीला-अभिनयमें कौन क्या बनेगा, यह प्रभुने पहले ही निश्चय कर रखा था। श्रीअद्वैतप्रभु क्या बनेंगे, यह प्रभुने नहीं बतलाया। जब संध्याके समय भक्तवृन्द श्रीपाद आचार्यरत्न चन्द्रशेखरके आँगनमें एकत्रित हुए तो श्रीअद्वैताचार्यने प्रभुसे पूछा—"प्रभो ! मेरे लिए कौन-सा वेष सजनेकी आज्ञा है।" प्रभुने उनकी ओर तिरछी नजरसे देखकर मधुर मुसकानके साथ उत्तर दिया—"आचार्य ! सब तुम्हारा है। सभी तुम हो। तुम्हीं इस कृष्ण लीला-अभिनयके मूलमन्त्र हो। तुम श्रीकृष्ण बनोगे और मैं बनूँगा श्रीराधा।* गदाधरपण्डित श्रीललिता बनेंगे।"

श्रीअद्वैतप्रभुने यह बात सुनकर लज्जासे सिर अवनत कर लिया। वृद्ध ब्राह्मणको लेकर रँगीले प्रभु आज क्या रंग करनेवाले हैं, यह देखनेके लिए भक्तलोगोंके मनमें बड़ी उत्सुकता है।

अभिनय-आरम्भ

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नके घरमें क्रमशः सारे भक्त आकर एकत्रित हुए। वैष्णव-गृहिणीगण कृष्ण-लीला देखनेके लिए चलीं। शचीमाता श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको लेकर अपनी बहनके घर चलीं। सीताठकुरानी, मालिनीदेवी, मुरारिगुप्तकी गृहिणी मालती आदि सबलोग आये। अभिनय-आँगन भक्तोंसे परिपूर्ण हो गया। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नका अन्तःपुर स्त्रियोंसे भर गया। तब प्रभुके आदेशसे बहिर्द्वार बंद कर दिया गया।

वासुदेव आचार्यके ऊपर अभिनय-स्थलको सजानेका भार दिया गया था। उन्होंने पत्र-पुष्पके द्वारा गृह-प्राङ्गण उत्तमरूपसे सजाया है। ध्वजा-पताकाके द्वारा गृह-तोरण सुशोभित किया है। रङ्गगृहमें अभिनय करनेवालोंको सजानेका प्रबन्ध किया गया है। इस कृष्ण-लीलामें पाँच आदमी सुकण्ठ गायक नियुक्त हुए। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्य स्वयं प्रधान गायक थे। अन्यान्य गायक थे—पुण्डरीक विद्यानिधि और श्रीवासपण्डितके तीन भाई। मुकुन्द वादक और गायक, दोनों कार्योंके व्रती हुए। प्रभुके आदेशसे आचार्यरत्नके गृहका वहिर्द्वार बंद हो गया।

---

* अद्वैतमापादयतदीशविशं
स्वयं च राधाकृतिमग्रहीत् सः ॥
इति प्रतीतिः किल वस्तुतस्तु
स एव देवो द्विविधो बभूव ॥
चैतन्य चन्द्रोदय नाटक ३.१०

श्रीगौर-भगवान्‌ने रुद्ररूपी श्रीअद्वैतप्रभुको श्रीकृष्णसे अभिन्न समझकर तथा अतीव गोपनीय श्रीराधाका रूप धारण करनेमें दूसरोंको अयोग्य समझकर उनको श्रीकृष्णके रूपमें सजाया और आप श्रीराधाके रूपमें सजे। फलतः श्रीअद्वैतप्रभु श्रीकृष्ण बने थे, यह प्रवाद-मात्र है। प्रभुने उभय-मूर्ति धारण की थी।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्वप्रथम मुकुन्दके दलने मृदङ्ग, मंजीरा आदि बाजोंके साथ सुमधुर संगीत आरम्भ किया। सुमधुर वाद्य-निनादसे श्रोतृवर्गके मन-प्राण प्रफुल्लित हो उठे। प्रेमानन्दमें सभी हरि-ध्वनि करने लगे।

संगीत हो जानेपर गायकगणने समस्वरसे उत्कृष्ट सुर-ताल-लयके साथ श्रीश्रीराधाकृष्णकी निम्नलिखित दो स्तव-गीति गाकर मङ्गलाचरण किया—

जयति जननिवासो देवकीजन्मवादो
यदुवरपरिषद्‌त्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्मम्‌।
स्थिरचरवृजिनघ्नः सुस्मितश्रीमुखेन
ब्रजपुरवनितानां वर्धयन्‌ कामदेवम्‌॥

सम्पूर्णेन्दुमुखी सरोजनयना कोकस्तनी कैरव-
स्माया कम्बुशिरोधिरम्बुधिभुवो गर्वस्य सर्वंकषा।
मङ्गल्यैरिह वस्तुभिर्विरचिता नान्दीय वृन्दावन-
क्रीड़ाकौतुकनाटकस्य, दिशतु श्रीराधिका वः शुभम्‌॥

चै. च. ना. ३.१५,१६

उसके बाद मुकुन्दने कीर्तनका सुर पकड़ा। सुमधुर मृदङ्ग-मंजीरा-करतालके योगसे कृष्ण-कीर्तनका शुभारम्भ हुआ—

कीर्तनेर शुभारम्भ करिला मुकुन्द।
'रामकृष्ण नरहरि गोपाल गोविन्द'॥

चै. भा. म. १८.३८

श्रीरङ्गमञ्चपर कोतवालके वेषमें श्रीहरिदास और नारद-वेषमें श्रीवास

कीर्तन समाप्त होनेपर हरिदास ठाकुर रङ्गभूमिमें वैकुण्ठके कोतवालके रूपमें उपस्थित हुए। उनके मुँहपर लम्बी-लम्बी मूँछें सुशोभित थीं, गलेमें माला थी, कंधेपर बड़ी लाठी थी, सिरपर एक बड़ी पगड़ी थी, कानोंमें कुण्डल थे, धोती पहने थे और पैरोंमें नूपुर थे। उन्होंने सबको सावधान करते हुए कहा—

आरे आरे भाइ सब हओ सावधान।
नाचिबे लक्ष्मीर वेषे जगतेर प्राण॥

चै. भा. म. १८.४१

—इतना कहकर हाथमें लाठी लेकर ठाकुर हरिदास प्रेममें भरकर सारे आँगनमें भ्रमण करने लगे और सबको उच्च स्वरसे बारम्बार कहने लगे—

कृष्ण भज, कृष्ण सेव, बोल कृष्ण नाम।

चै. भा. म. १८.४३

प्रेमाश्रु-जलसे उनका वक्षःस्थल डूब रहा था, सारे अङ्गमें रोमाञ्च हो रहा था। वे प्रेमानन्दमें मत्त होकर आँगनमें चारों ओर घूम रहे थे। हरिदास ठाकुरकी वेष-भूषा देखकर उपस्थित दर्शक-मण्डली प्रेमानन्दमें हँस रही थी। सब उनसे परिहास करके पूछ रहे थे—

"तुम कौन हो? तुम यहाँ कैसे आये?" हरिदासने लाठी घुमाते हुए गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया—"मैं वैकुण्ठ कोतवाल हूँ। मैं 'कृष्ण-कृष्ण' जगाता हुआ सब समय घूमता रहता हूँ। वैकुण्ठ छोड़कर प्रभु यहाँ आये हैं और वे सब प्रकारसे प्रेम-भक्ति लुटायँगे। आगे वे स्वयं लक्ष्मी-वेषमें नृत्य करेंगे, अतएव तुम सब सावधान होकर प्रेम-भक्ति लूटो!"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इतना कहकर वे दोनों हाथोंसे दोनों मूँछोंपर ताव देते हुए मुरारिगुप्तके साथ दम्भपूर्वक रङ्गभूमिमें चारों ओर घूमने लगे। मुरारिगुप्त और हरिदास ठाकुर दोनों ही प्रभुके अन्तरङ्ग प्रिय दास थे। दोनोंके शरीरमें प्रभु विलास करते थे। प्रेमानन्दमें ये दोनों आदमी रङ्गभूमिमें चारों ओर पहरा देते थे।

कुछ देरके बाद नारदके वेषमें श्रीवासपण्डित रङ्गभूमिमें उपस्थित हुए। उनकी लम्बी सफेद दाढ़ी, सर्वाङ्गमें हरि-नामाङ्कित छाप तथा प्रशस्त ललाटपर चन्दनका लम्बा तिलक विराजमान था; कंधेपर वीणा और हाथमें कुश था। उनके साथ रामाईपण्डित थे। उनकी कोखमें कुशासन था, हाथमें कमण्डलु था। रङ्गभूमिमें रामाईपण्डितने आसन बिछा दिया। नारदवेषी श्रीवासपण्डित सुमधुर हरिगुण-गान करते-करते आसनपर उपविष्ट होकर सभामें स्थित सबलोगोंके प्रति शुभ दृष्टिपात करने लगे। उनका वेष देखकर सब हँसने लगे। श्रीवासपण्डित साक्षात् नारदके समान दीख पड़ते थे।

श्रीअद्वैतप्रभुने प्रेमानन्दमें हुंकार करते हुए कहा—"तुम कौन हो ? यहाँ क्यों आये हो ?"

श्रीवासपण्डितने गम्भीर स्वरमें उत्तर दिया—"मैं हूँ नारद ! श्रीकृष्णका गायक हूँ और अनन्त ब्रह्माण्डोंमें भ्रमण करता रहता हूँ। श्रीकृष्णका दर्शन करने वैकुण्ठ गया तो वहाँ जाकर सुना कि श्रीकृष्ण तो नदिया-नगरमें गये हैं। वैकुण्ठके घर-द्वार-सब सूने पड़े थे। वहाँ न गृहिणी है, न परिवार। शून्य वैकुण्ठको देखकर मैं वहाँ नहीं रह सका; अतएव अपने प्रभुका स्मरण करता हुआ यहाँ चला आया। प्रभु आज लक्ष्मीके वेषमें यहाँ नृत्य करेंगे, अतएव मैं इस सभामें आया हूँ।"

श्रोतृवृन्दने यह सुनकर परम आनन्दसे जय-ध्वनि की। रङ्गभूमि बारंबार हरि-ध्वनिके परिपूर्ण हो गयी। भक्तवृन्दके प्राणोंमें आज आनन्द नहीं समाता। वैष्णव-गृहिणीगण श्रीवासपण्डितको देखकर पहचान नहीं रही हैं। यहाँतक कि शचीमातातक उनको नहीं पहचान पातीं। उन्होंने मालिनीदेवीसे पूछा—"क्या ये पण्डित हैं ?" श्रीवास-गृहिणीने हँसकर उत्तर दिया—"निश्चय ही वे ही हैं।"

श्रीवासपण्डितका नारदका वेष देखकर शचीमाता विस्मित होकर आनन्दसे बेसुध हो गयीं। उनका बाह्य ज्ञान लुप्त हो गया। जीवनका कोई लक्षण न देखकर पुर-नारियाँ भयभीत होकर उनके कानके पास कृष्ण-नाम लेने लगीं, तब शचीमाताको चेतना हुई। वे गोविन्द-स्मरण करके प्रेमानन्दमें अजस्र आँसू बहाने लगीं। वैष्णव-गृहिणीगण उनको घेरकर बैठ गयीं।

रङ्गगृहमें प्रभु

रङ्ग-गृहमें रँगीले प्रभु भुवनमोहिनी वेषमें स्वयं लक्ष्मी बन रहे हैं। गदाधरपण्डित उनको इस कार्यमें सहायता कर रहे हैं। प्रभुका जब जगन्मोहिनी नारीवेष पूर्ण हो गया तो उनको देखकर उपस्थित भक्तवृन्द मन-ही-मन सोचने लगे—"क्या वे साक्षात् लक्ष्मी हैं या पार्वती हैं ? ऐसी रूपवाली रूपवती कामिनी तो कभी किसीने नहीं देखी।" सभी आनन्दमें विभोर होकर अतृप्त नयनोंसे प्रभुकी भुवनमोहिनी अपूर्व लक्ष्मीके-वेषका दर्शन करने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु भुवनमोहिनी लक्ष्मी-वेषमें सजकर अचानक रुक्मिणीभावमें आविष्ट हो गये। रङ्गगृहमें बैठकर वे अपनेको पूर्वलीलाकी विदर्भसुता मानकर कृष्ण-विरहमें अश्रुजलसे वक्षःस्थल डुबाने लगे। नयन-जलरूपी मसिके द्वारा अँगुलीकी लेखनीसे पृथ्वीतलपर अपने मनचोर यदुकुलपतिको प्रेमपत्र लिखने बैठे और भागवतकी सप्तश्लोक (श्रीम. भा. १०.५२.३७-४३)—समन्वित रुक्मिणी-विलाप-गीति पाठ करते-करते रोने लगे।

प्रभु रुक्मिणीके भावमें आविष्ट होकर भागवतीय श्लोक पाठ कर रहे हैं और नयनोंके प्रेमजलमें वक्षःस्थल डुबा रहे हैं। प्रभुका प्रेमभाव देखकर भक्तवृन्द कोई रो रहा है, कोई हँस रहा है, कोई जडवत् निःस्पन्द होकर खड़ा है। प्रभुके मनके भावको जिन्होंने समझा है, वे रो रहे हैं। जो लोग प्रभुके केवल भुवनमोहन अपरूप-रूपको देखते हैं, वे हँसे बिना नहीं रह सकते। प्रभुके प्रेमभावको देखकर कोई-कोई जड़वत् होकर आनन्दस्वरूप हो रहे हैं। सभी प्रेमोन्मत्त होकर परमानन्दका अनुभव कर रहे हैं।

इधर हरिदास ठाकुरकी प्रेमलिप्त उच्च हरि-ध्वनिके साथ 'जाग-जाग' शब्दसे रङ्गमञ्च प्रकम्पित हो रहा है। नारदके वेषमें श्रीवासपण्डित-का मधुर हरि-गुणगान श्रोताओंके प्राणमें मानो प्रेमसुधा-वर्षण कर रहा है।

रङ्गमञ्चपर रुक्मिणीवेषमें गदाधर; आदिशक्ति जगज्जननीरूपमें स्वयं प्रभु

रात्रिके प्रथम पहरमें हरिदास ठाकुर और नारदकी लीला अभिनीत हो जानेपर, दूसरे पहरमें गदाधरपण्डितने भुवनमोहिनी वेषमें सुप्रभा-सखी (ब्रह्मानन्द) के अङ्गपर भार देकर धीरे-धीरे रङ्ग-भूमिमें प्रवेश किया।

गदाधरपण्डित प्रभुके समान रूपके सागर हैं। उसपर त्रिभुवनमोहिनी रमणीके वेषमें रत्नालंकारमें भूषित होकर उनका रूप-सिंधु मानो उमड़ा पड़ता है। उनकी अपूर्व रूप-छटा देखकर सभी विस्मित हो गये। गदाधरपण्डितके साथ बड़ी-बूढ़ी स्त्रीके वेषमें कमर टेढ़ी किये, हाथमें घड़ी और काखमें डलिया लिए ब्रह्मानन्दने रङ्गभूमिमें प्रवेश किया।

हरिदास ठाकुर कन्धेपर लाठी लिये अपनी बड़ी-बड़ी मूँछोंपर ताव देते हुए अभिनयके प्राङ्गण-में चारों ओर गश्त लगा रहे थे। उनके मुँहपर मधुर हरि-नामकी ध्वनि थी, दोनों आँखोंसे अविरल आनन्दाश्रुधारा बह रही थी। सुन्दरी स्त्रियोंको आते देखकर हरिदास ठाकुरने उनके पास जाकर पूछा—"तुमलोग कौन हो ?"

बड़ी-बूढ़ी स्त्रीने हँसकर उत्तर दिया—"हम मथुरा जा रही हैं।"

श्रीवासपण्डित "तुम दोनों कितनी प्रिया हो ?"

बड़ी-बूढ़ी—"यह बात क्यों पूछ रहे हो ?"

श्रीवासपण्डित—"हाँ री ! यह जाननेकी क्या इच्छा न करें ?"

बड़ी-बूढ़ी स्त्रीने तिरछी नजरसे सिर हिलाते हुए 'हाँ-हाँ' कहकर मुस्कुरा दिया। इसी समय गङ्गादासपण्डितके साथ श्रीअद्वैतप्रभुने रङ्गभूमिमें पदार्पण किया।

श्रीअद्वैतप्रभुका मदनमोहन श्रीकृष्णका वेष था। उनके दोनों हाथोंमें मुरली, परिधानवस्त्र पीताम्बर, कानोंमें मणिमय कुण्डल, गलेमें वैजयन्ती माला और चरणोंमें नूपुर थे। उन्होंने श्रीकृष्णके मनमोहन-वेष और अपूर्व चरित्रका अविकल अनुकरण करके दोनों हाथोंमें मुरली धारण करके रङ्ग-भूमिमें प्रवेश किया। श्रीअद्वैतप्रभुको देखकर सभाके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबलोगोंने उठकर अभिवादन किया और जय-ध्वनि करने लगे।

बड़ी-बूढ़ी स्वयं श्रीनित्यानन्दप्रभु बने थे। वे श्रीकृष्ण-वेषधारी श्रीअद्वैतप्रभुको देखकर मनमें बहुत आनन्दित हुए। सतृष्णभावसे तिरछी आँखोंसे गर्दन टेढ़ी करके एक वार बड़ी-बूढ़ीने उनकी अपूर्व रूप-राशि देख ली। बड़ी-बूढ़ी स्त्रीके साथ दो परपसुन्दरी युवती स्त्रियोंको देखकर गङ्गादास-पण्डितने पूछा—"तुमलोग आज रातमें कहाँ रहोगी ?" यह सुनकर बड़ी-बूढ़ी स्त्रीके मनमें वड़ा क्रोध हुआ। उसने सोचा, जान पड़ता है, स्त्री-जनको देखकर ये लोग परिहास कर रहे हैं।

बड़ी-बूड़ी स्त्री (नित्यानन्दप्रभु) परमरिसका थीं। रस-पुष्टिके लिए ही उसका आना हुआ था। रसके भाण्डारको लेकर वे रसिया बनी हैं। श्रीवृन्दावन-लीलामें उसने घड़ों व्रज-रस बाँट दिया है। बूढ़ी होनेपर भी वे पूर्ण युवतीके समान रसवती है। गङ्गादासपण्डितकी बातपर जो रोष उसने प्रकट किया, वह बनावटी था। भीतरसे आनन्दका अनुभव करके वे गङ्गादासपण्डितके पास जाकर हँसकर बोलीं—"तुम क्या अपने घर हमको रहनेकी जगह दोगे !"

ललिताके वेषमें गदाधरपण्डित सुप्रभा-सखीके साथ एक ओर खड़े हैं। बड़ी-बूढ़ीकी बात सुनकर उन्होंने घूँघट डालकर मधुर मुस्कान भरी। वृद्ध गङ्गादासपण्डित रसिक पुरुष नहीं हैं। बड़ी-बूढ़ीकी इस रसकी बात सुनकर उनके मनमें क्रोध आ गया। उन्होंने रूखे शब्दोंमें अरसिकके समान उत्तर दिया—"तुम बूढ़ी हो गयी हो। तुमको अच्छी बात कहनेपर तुम उलटा समझती हो। तुम्हारे साथ अब मेरी बात करनेका कोई प्रयोजन नहीं। अब तुम शीघ्र यहाँसे चलती बनो।" बड़ी-बूढ़ी स्त्री यह सुनकर क्रुद्ध होकर गङ्गादासपण्डितको खरी-खोटी सुनाने लगीं। दोनोंमें कलह छिड़ गया।

श्रीअद्वैतप्रभु रसिक चूड़ामणि हैं। इस कलहको मिटानेके लिए वे वहाँ जा पहुँचे। बड़ी-बूढ़ीकी ओर देखकर वे गङ्गादासपण्डितकी ओर लक्ष्य करके बोले—"इतने विचारका क्या काम है ? पर-नारी माताके समान होती है। इनको लज्जित क्यों करते हो।"

सुप्रभा सखी "(ब्रह्मानन्द की ओर देखकर) देखो, हमारे प्रभुको नृत्य-गीत बड़ा प्रिय है, अतएव यहीं नाचो, खूब धन मिलेगा।"

यह बात सुनकर बड़ी-बूढ़ी स्त्री क्रोधमें जल उठी और श्रीअद्वैतप्रभुको भी नाना प्रकारकी कटु बातें सुनाकर गाली देने लगी। यह देखकर सब भक्तवृन्द ठहाका मारकर हँस पड़े। रङ्ग-भूमिमें हँसीके फौव्बारे छूटने लगे। प्रेमानन्दमें सब जय-ध्वनि करने लगे।

उसके बाद गदाधरपण्डितने मोहिनी-रूपमें प्रेमावेशमें मधुर नयन-रञ्जन नृत्य आरम्भ किया। भक्तवृन्दने समय और भावके अनुसार गीत गाना प्रारम्भ किया। गदाधरका प्रेम-नृत्य देखकर भक्तवृन्द आनन्दसे विह्वल हो उठे। श्रीराधाशक्ति गदाधरके दोनों नेत्रोंसे प्रेमाश्रुधारा प्रवाहित होकर भूतलको सिक्त करने लगीं बारंबार हरि-ध्वनिसे रङ्गस्थल गूँज उठा। चारों ओर आनन्दकी कोला-हल-ध्वनि सुन पड़ने लगी। गदाधरने मधुर नृत्य करते-करते गीतके सुरको पकड़ लिया। उससे मानो अमृतकी वर्षा होने लगी*।

---

* तदा नृत्यत्यस्मिन्धृतमधुरवेशो ज्ज्वलरुचौ
मृगङ्गालीभङ्गी शतमधुरसंगीतकलया।
जनै भूयो भूयः सुखजलधिमग्नैर्निनिमिषैः
समन्तादासेदे जड़िमजड़िताङ्गैः किममृतम्॥

—श्रीचैतन्यचरित महाकाव्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसी समय प्रभुने अपनी आद्याशक्तिके त्रिभुवन-मोहन वेषको धारण करके धीरे-धीरे रङ्गभूमिमें पदार्पण किया। बड़ी-बूढ़ीके वेषमें श्रीनित्यानन्दप्रभु उनके आगे आकर खड़े हो गये। सभाके सबलोग प्रभुकी त्रिभुवनमोहिनी अपरूप स्त्री-मूर्ति देखकर विमोहित हो गये। ठाकुर लोचनदासने प्रभुकी इस मोहिनी मूर्तिका सुन्दर वर्णन किया है— यथा,

एखने कहिये शुन, सावधान सर्वजन,
गोपिका आवेश वश प्रभु।
हृदये काँचलि परे, शङ्ख-कङ्कण करे,
दुटि आँखि रसे डुबू डुबू॥
पट्ट वसन परे, नूपुर चरण तले,
मूठे पाइ क्षीण माझा खानि।
रूपे त्रिजगत मोहे, उपमा कि दिब काहे,
गोपीवेष ठाकुर आपनि॥
आलोक अङ्गेर तेजे, वायु बहे मलयजे,
ताहे नव मालतीर माला।
सुमेरु शिखरे जेन, सुरनदी धारा हेन।
गोरा अङ्गे बहे दुइ धारा॥

श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने निम्नलिखित कतिपय श्लोकोंमें प्रभुकी इस भुवनमोहिनी मूर्तिका अति सुन्दर चित्रण किया है—

विलोलभ्रूभङ्गीनटनजितभृङ्गी विलसिता
स्मितापाङ्गी राजत् कुवलयदला लोलनयना।
वहन्ती सत्ताभ्रस्फुरदधरवीथी विलुठितां
रदच्छायां ज्योत्स्नामिव नवदिनेशांशुमिलिताम्॥
स्फुरत् कम्बुग्रीवा परिसरविलासप्रणयिना
उरोजद्वन्द्वोपरि घनविलोनत्वमयता।
गिरेरुच्चैःपाताहित भयनिवृत्तेन स्वर्धुनी-
प्रवाहेणेवाति श्रियममलहारेण दयती॥
वहन्त्यूरुद्वन्द्वं कनककदली काण्डमसृणं
पदे रक्ताम्भोज प्रथमसदवस्था प्रणयिनी।
तनू क्षौमं वासः परिहितवती तत्र ललितं
प्रभो श्रीमन्मूर्तिर्लघुपदमथैषा निविविशे॥
—श्रीचैतन्यचरितामृत महाकाव्य

श्रीगौर-भगवान्‌की इस ऐश्वर्यमयी अपरूप भुवनमोहिनी मूर्तिकी तुलना नहीं है। इस अपरूप-रूप-माधुर्यकी छटाका वर्णन वाणीके द्वारा करनेको चेष्टा व्यर्थ है। स्वयं आत्माराम साक्षात् महेश्वर जब श्रीभगवान्‌की मोहिनी-मूर्तिको देखकर विह्वल हो गये थे, तब अन्यकी क्या बात?

मोहिन्येष बभूव यः स्वकलया देवद्विषो मोहयन्
आत्मारामपीश्वरेश्वरमपि श्रीशंकरं लोभयन्।
तस्याश्चर्यमिदं न किञ्चिदपि यत् कृष्णावतारोऽपिसन्
श्रीराधाकृतिमग्रहीत् स्ववपुषा देवः स विश्वम्भरः॥
—श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटक ३.४२

प्रभुने जब मोहिनी-वेषमें रङ्गभूमिमें प्रवेश किया तो जान पड़ा कि एकादश-कला-विशिष्ट पूर्ण शशधर उनकी विलासिनी श्रीमूर्तिमें प्रतिफलित होकर परम शोभा विस्तार कर रहे हैं। उनके क्षौम-वसनके अञ्चलको आन्दोलित करता हुआ सुगन्धवाही समीरण मृदु-मन्द प्रवाहित होने लगा। उससे सबलोगोंके मन और प्राण आमोदित हो उठे।

प्रेम-नदी बहे गदाधरेर नयने।
पृथिवी हईया सिक्त धन्य हेन माने॥
गदाधर हैला जेन गङ्गा मूर्तिमती।
सत्य सत्य गदाधर कृष्णेर प्रकृति॥
आपने चैतन्य बलियाछ बारे बार।
गदाधर मोर बैकुण्ठेर परिवार॥
चै. भा. म. १८.११३—११५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु जब मोहिनी-वेषमें मृदु-मन्द गतिसे रङ्ग-भूमिमें नृत्य-गीतमें रत अभिनायक भक्तोंके साथ लघु-लघु मृदङ्ग-ध्वनि तथा ताल-सुर और लयके साथ मधुर हाव-भाव प्रकट करते हुए नयन-रञ्जन मधुर नृत्य-विलासरङ्गमें मग्न हो गये, तब दर्शकों और श्रोताओंका बाह्य ज्ञान लुप्त हो गया। उनकी धीर तथा दृढ़ मन्द-मन्द पद-विन्यासके साथ सुमधुर अपूर्व नूपुर-ध्वनि सुनायी देने लगी। उनके चन्द्र-वदनपर स्वेद-विन्दु दिखलायी दिये। मुक्ता-फलके समान वे स्वेद-विन्दु श्रीवदनमें चतुर्दिक् सुशोभित हो उठे। उनके कुटिल चारु कुन्तलसे शोभित दिव्य सुन्दर ललाटमें सिन्दूर-विन्दु अस्ताचल-चूड़ावलम्बी स्निग्ध किरणके समान दीखने लगे। वे जब नृत्यावेशमें कङ्कण वलययुक्त हस्तद्वय परिचालित करते थे—तो सुमधुर कङ्कण-वलय-ध्वनि सुन पड़ती थी। उनके कर-कमल ऊपर उठनेपर उसके अग्रभागमें पद्मके भ्रमसे मधुपानकी आशासे उन्मत्त होकर अलिकुल भ्रमण करने लगे। उनकी कुटिल भ्रू-भङ्गिमासे जगत्-ब्रह्माण्डके जीव मुग्ध होकर उन्मत्त हो गये। उनकी मधुर मनमोहन नृत्य-भङ्गिमा देखकर स्थावर-जङ्गम भी मतवाले हो गये। नृत्य करते-करते प्रभुका नीवी-बन्धन शिथिल पड़ने लगा और घर्माक्त जघनदेशकी अपरूप शोभा दीख पड़ी। वे जब नृत्योल्लासमें चक्रवत् भ्रमण करने लगे तो उनके सुरञ्जित केशपाशसे सुगन्धमय कुसुमोंके गुच्छे चारों ओर बिखरने लगे। भ्रमरोंके समूह उनके ऊपर बैठकर 'गुन-गुन' स्वरमें सुमधुर गीत गाने लगे। सुगन्धित परिमलवाही समीरण उन कुसुमोंके सौरभसे परम सुस्निग्ध लगने लगा। सुस्वर संकीर्तन-तरङ्गसे रङ्गभूमि शब्दायमान हो उठी। प्रभुकी मोहिनी मूर्तिकी कान्ति-छटाके आलोकमें रङ्गभूमिकी आलोकमाला निष्प्रभ हो उठी।

प्रभुकी भुवनमोहिनी परमसुन्दरी नारीकी वेषभूषा देखकर कोई उनको पहचान न सका। यहाँतक कि शचीमाता भी अपने पुत्रको पहचान न सकीं।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी प्रभुकी मोहिनी मूर्ति देखकर उनको पहचान रही हैं या नहीं, यह बात किसी ग्रन्थमें नहीं है। जब शचीमाता अपने पुत्रको पहचान न सकीं तो नवीना प्रियाजी कैसे पहचान सकतीं? श्रीगौर-भगवान्की भुवनमोहिनी कान्तिसे सब मोह-मुग्ध हो गये। सबका बाह्य ज्ञान लुप्त हो गया। पहले प्रभुने जो साहस दिया था, उसी साहस और कृपाके बलसे भक्तवृन्द पूर्णतः मोहको प्राप्त नहीं हुए, यह उनका सौभाग्य था।

प्रभुकी कृपासे उनकी यह भुवनमोहिनी श्रीमूर्ति देखकर सबके मनमें उनके प्रति जगज्जननी-भाव उदय हो गया। उन्होने देखा कि जगज्जननी जगत्के उद्धारके लिए, जगत्के जीवोंके शोक-तापका निवारण करनेके लिए, त्रितापदग्ध जीवोंके अन्तरकी ज्वालाकी निवृत्तिके लिए मधुर नृत्य-विलासरङ्ग कर रही हैं।

अपूर्व भुवनमोहिनी वेषमें प्रभुने जब मधुर नृत्य आरम्भ कर दिया तो भक्तवृन्दके मनमें मानो प्रेमसिंधु उमड़ आया। गायकगण समयोचित गीत गाने लगे। बाजा बजानेवाले सुमधुर ध्वनिमें बाजे बजाने लगे। प्रभु जगज्जननी-भावमें आविष्ट होकर परम आनन्दमें नृत्य कर रहे हैं। श्रीमान् पण्डित सामने प्रदीप लेकर खड़े हैं; हरिदास ठाकुर दर्शक-वृन्दको सावधान कर रहे हैं। क्षण-क्षणमें प्रभुका भाव-परिवर्तन हो रहा है।

कभी तो वे कहते हैं—"ब्राह्मण! क्या श्रीकृष्ण आ गये?" उस समय वे रुक्मिणी-जैसे लगते हैं और नेत्रोंमें आनन्दकी धाराओंको देखकर मूर्तिमती गङ्गाजी-जैसे समझमें आते हैं। और जब भावावेषमें अट्टहास करते हैं तो सब यही समझते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हैं कि महाचण्डीका प्रकाश हुआ है। और जब प्रभु झूम-झूमकर नाचने लगते हैं तो कादम्बरी-पान किये रेवती-जैसे लगते हैं। फिर क्षणभरमें कहते हैं—"चल बूढ़ी ! वृन्दावनको चलें।" तब गोकुल-सुन्दरी गोपीका भाव समझमें आता है। क्षणमें प्रभु वीरासनमें बैठकर ध्यान करते हैं, तब सबको कोटि महायोगेश्वरी-जैसे लगते हैं।

(चै. भा. म. १८.१३६—१५४)

श्रीभगवान्‌की जितनी प्रकारकी शक्तियाँ हैं, प्रभुने इस अपूर्व मोहिनी मूर्तिको धारण करके एक-एक करके उन सबका भाव प्रकट करके कलिके जीवोंको शिक्षा दी। श्रीभगवान्‌की कोई भी शक्ति निन्दनीय नहीं है। श्रीकृष्णमें दृढ़ भक्ति होनेपर जीव सब प्रकारकी भगवत्-शक्तिका सम्मान करता है। प्रभुने दिखला दिया कि वे स्वयं भगवान् हैं, उनमें सब प्रकारकी अनन्त शक्ति निहित हैं, श्रीभगवान्‌की सब शक्तियाँ सम्मान करनेयोग्य हैं, पूज्य हैं।

प्रभुने यह लीलारङ्ग प्रकट करके शक्ति और वैष्णवोंके द्वन्द्वका निराकरण किया। आद्याशक्तिके रूपमें प्रभुने श्रीभगवान्‌की सब प्रकारकी शक्तियोंका भाव प्रकटकर भगवत्-शक्तिकी महिमा व्यक्त की। मनमोहिनी वेषमें प्रभुकी यह मधुर नयन-रञ्जन, मन-मोहन नृत्य-विलास-रङ्गकी लीला शक्ति-उपासकोंको परम-प्रीतिप्रद होगी। जो मातृभावमें भगवद्-उपासना करते हैं, वे प्रभुकी इस लीलाके रहस्यको समझकर उनके चरणोंका आश्रय लेकर देखेंगे कि इससे उनको कितना आनन्द मिलता है। शक्ति-उपासनाके प्रकृत फलको प्राप्त करके वे कृतार्थ हो जायँगे।

अब प्रभु मोहिनी-वेषमें बड़ी-बूढ़ीका हाथ पकड़कर मधुर नृत्य कर रहे हैं। प्रभुके नयन-रञ्जन नृत्य और मधुमय प्रेम-कटाक्षको देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभु प्रेमानन्दमें मूर्च्छित होकर भूतलपर गिर पड़े। उनकी वह बड़ी-बूढ़ीकी साज-सज्जा सब दूर हो गयी। वे कृष्ण-प्रेमरसमें विह्वल होकर प्रेमानन्दमें भूतलपर लोटने लगे। भक्तवृन्द श्रीनित्यानन्दप्रभुके अपूर्व प्रेम-भावको देखकर रोते हुए प्रेमानन्दमें व्याकुल हो उठे।

श्रीअद्वैतप्रभु श्रीकृष्ण बने थे। वे भी श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ भूतलपर गिरकर प्रेमानन्दमें धूलमें लोट-पोट करने लगे। उनकी भी भुवनमोहन सारी साज-सज्जा दूर हो गयी। कवि कर्णपूर गोस्वामीने लिखा है कि श्रीगौराङ्ग-प्रभुने श्रीराधाभाव लेकर अपूर्व मोहिनी मूर्ति धारण की तथा श्रीकृष्णके रूपमें वे श्रीअद्वैतप्रभुके शरीरमें प्रवेश कर गये। (श्रीचैतन्यचन्द्रोदय-नाटक ३.१३) श्रीनित्यानन्दप्रभु जब प्रेमानन्दमें भूतलपर लोट-पोट कर रहे थे, उस समय वे बड़ी-बूढ़ी नहीं रह सके। श्रीअद्वैतप्रभु भी जब प्रेम-विह्वलभावमें प्रभुके चरणोंमें गिरे, तब वे भी श्रीकृष्ण नहीं रहे। प्रभुने जो यह कृष्ण-लीला की थी, वह लोगोंके देखनेमें कौतुकरङ्ग होनेपर भी प्रकृतपक्षमें अभिनय न था। जिसने जिसका वेष धारण किया था, उसके शरीरमें उस समय वस्तुतः वही प्रवेश कर गये थे। ऐसा हुए बिना इतनी प्रगाढ़ प्रेमोन्मत्तता, ऐसी प्रगाढ़ मादकता, ऐसा अपूर्व प्रेमाविष्टभाव सबके मन, प्राण और देहमें आता कैसे ? इन सब कार्योंकी शिक्षा उनको किसीने नहीं दी। एक ही दिनमें इस अपूर्व अभिनयका सारा प्रबन्ध हो गया था। प्रभुने जैसा आदेश दिया, तत्काल सब प्रस्तुत हो गया। यह अभिनयकी लीला है, यह अभिनयकी रङ्गभूमि है—इस बातको दर्शकलोग एकबारगी भूल गये थे। प्रभुकी कृपासे उन्होंने देहात्मबोध खोकर अभिनेता और अभिनेत्रीके प्रकृत-तत्त्व और स्वरूपका अवलम्बन किया था। इस कारण कोई उनको पहचान न सका।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार श्रीनित्यानन्दप्रभु और श्रीअद्वैतप्रभु जब अपने-अपने लौकिक रूपमें रङ्गभूमिमें प्रकट हो गये तो अन्यान्य भक्तवृन्द भी उनके साथ-साथ अपनी-अपनी प्रकृतिको प्राप्त हो गये। वे सब मिलकर प्रेमानन्दमें आँगनकी धूलमें लोट-पोट करने लगे। कोई किसीका चरण पकड़कर रोने लगा, कोई किसीका गला पकड़कर रोने लगा। श्रीवासपण्डित और हरिदास ठाकुर अपनी-अपनी वेष-भूषा दूर फेंककर प्रभुके चरणोंमें गिरकर रोने लगे। इस समय सबलोग एकमात्र प्रभुकी अपरूप भुवनमोहिनी श्रीमूर्ति एकटक देख रहे थे। सबने देखा कि परम स्नेहमयी जगज्जननीके वेषमें स्नेह और करुणाका पारावार लेकर प्रभु उनके सामने खड़े हैं। प्रभुको देखकर सबके मनमें परम पवित्र मातृभाव जाग उठा। उनके आनन्दकी सीमा न रही।

जगज्जननी-रूपमें प्रभुकी स्तुति

प्रभु परमाविष्टभावमें बहुत धीरे-धीरे मृदु पाद-विक्षेप करते हुए ठाकुरबाड़ीके भीतर चले। चन्द्रशेखर आचार्यरत्नकी ठाकुरबाड़ीमें गोपीनाथदेव विराजते हैं। प्रभु उनको गोदमें लेकर परम ऐश्वर्यमयी महालक्ष्मीजीके भावमें एकबारगी विष्णु-सिंहासनपर जा बैठे। उनके सामने भक्तवृन्द हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उनका इस समय पूर्ण ऐश्वर्यभाव था। प्रभुने स्नेहयुक्त मधुर शब्दोंमें उनको आदेश दिया—"तुमलोग मेरी स्तुति करो!" भक्तवृन्द जगज्जननीरूप प्रभुकी यह कहकर स्तुति करने लगे—

जय जय जगत-जननी महामाया।
दुःखित-जीवेरे देह-चरणेर छाया॥
जय जय अनन्त ब्रह्माण्ड-कोटीश्वरि।
तुमि युगे युगे धर्म्म राख अवतरि॥
ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर तोमार महिमा।
बलिते ना पारे, अन्य के दिबक सीमा॥
जगत-स्वरूपा तुमि, तुमि सर्व-शक्ति।
तुमि ब्रह्मा, दया, लज्जा, तुमि विष्णु-भक्ति॥
जत विद्या—सकल तोमार मूर्ति-भेद।
'सर्व्व प्रकृतिर शक्ति तुमि' कहे वेद॥
निखिल ब्रह्माण्ड-परिपूर्ण तुमि माता।
के तोमार स्वरूप कहिते पारे कथा॥
तुमि त्रिजगत-हेतु गुणत्रयमयी।
ब्रह्मादि तोमारे नाहि जाने, जाने कोइ॥
सर्वाश्रया तुमि, सर्व्वजीवेर वसति।
तुमि आद्या अविकारा परम प्रकृति॥
जगत-आधार तुमि द्वितीया-रहिता।
महीरूपे तुमि सर्व्व जीव पालयिता॥
जल-रूपे तुमि सर्व्व-जीवेर-जीवन।
तोमा स्मरिले खण्डे अशेष-बन्धन॥
साधुगण-गृहे तुमि लक्ष्मी मूर्तिमती॥
असाधुर घरे तुमि कालरूपाकृति॥
तुमि से कराह त्रिजगते सृष्टि-स्थिति।
तोमा ना भजिले पाय त्रिविध दुर्गति॥
तुमि श्रद्धा वैष्णवेर सर्वत्र उदया।
राखह जननि! चरणेर दिया छाया॥
तोमार मायाय मग्न सकल संसार।
तुमि ना राखिले माता! के राखिबे आर॥
सभार उद्धार लागि तोमार प्रकाश।
दुःखित जीवेरे माता कर निज दास॥
ब्रह्मादिर वन्द्य तुमि सर्व-भूत-बुद्धि।
तोमाय स्मरिले सर्व्व मन्त्रादिर शुद्धि॥
सभे हइलाङ माता तोमार शरण।
शुभदृष्टि कर, तोर पदे रहु मन॥

चै. भा. म. १८.१६६–१८१,१८४

इस प्रकार सब भक्तोंने जगज्जननी-मातृभावमें श्रीगौराङ्गप्रभुकी स्तुति की; किसीने पुराणोक्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लक्ष्मी-स्तोत्रका पाठ किया। सभी हाथ जोड़कर प्रभुके सामने खड़े होकर स्तुति करने लगे। जगज्जननी-वेषमें महाप्रभु श्रीगोपीनाथदेवको गोदमें लेकर विष्णु-सिंहासनपर बैठकर मृदु-मन्द हँस रहे थे और भक्तवृन्दके मुखसे अपनी स्तुति सुन रहे थे। भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें भुजाएँ ऊपर उठाकर प्रेम-क्रन्दन करने लगे। घरके भीतर वैष्णव-गृहिणीगण प्रभूके जगज्जननी-भावका दर्शन करके आनन्दसे प्रेमाश्रु-विसर्जन करने लगीं। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नका घर मानो आनन्दधाम वैकुण्ठके रूपमें परिणित हो गया।

उस समय रात्रिका अवसान हुआ। सवेरा हुआ। किस प्रकार वह मधुमय रात्रि चली गयी, भक्तवृन्दमें किसीको पता न लगा। वे लोग प्रेमानन्दमें विभोर होकर बेसुध हो रहे हैं। अब रातको सवेरा होते देखकर उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ। उनके हृदयमें मानो शूल चुभने लगा; क्योंकि रात्रिके अवसानके साथ ही प्रभुके इस मधुर लीलारङ्गका अवसान हुआ।

सूर्यको उदय होते देखकर सबलोग उच्च स्वरसे रो उठे। कोटि पुत्रशोकके साथ भी उनके इस दुर्दैवकी तुलना नहीं की जा सकती। ऐसी सुखमयी रातका प्रभात क्यों हुआ, इसीका उनको दुःख था। सब वैष्णवलोग क्षोभ और दुःखसे अधीर होकर प्रातः उदय होते हुए सूर्यनारायणकी ओर बारंबार देखने लगे। वैष्णवोंके कोपसे गिरकर सूर्यनारायण टुकड़े-टुकड़े हो जाते, केवल सर्वेश्वर प्रभुकी अपार कृपासे उनकी रक्षा हुई।

सब वैष्णव-गृहिणीगण साक्षात् नारायणकी शक्तियाँ हैं। वे शचीमाताका चरण पकड़कर रोने लगीं। शचीमाताकी कृपासे आज उन्होने जो देखा, उसका दर्शन कोटीश्वर भाग्यवान्‌के भाग्यमें कहाँ? सब रोते-रोते कहने लगीं—"आजकी रात्रिका शेष क्यों हुआ? ऐसे रससे भगवान्‌ने वञ्चित क्यों कर दिया?"

इस समय सबका पुत्र-भाव है, प्रभुका मातृ-भाव है। मातृभावमें प्रभु पहले हरिदास ठाकुरको गोदमें लेकर विष्णु-सिंहासनपर बैठकर स्तन-पान कराने लगे। हरिदास शिशुके समान प्रभुकी गोदमें प्रेमानन्दमें सोये हुए हैं; पूर्ण प्रेमानन्दमें वे गद्‌गद होकर आँसू बहा रहे हैं। भक्तवृन्द "जय माँ जगज्जननि! जय माँ जगज्जननि!" कहकर उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे। हरिदासको प्रभु मातृभावमें स्तन-पान कराकर एक-एक करके सब भक्तोंको स्नेहपूर्वक गोदमें लेकर स्तन-पान कराया।

मातृभावे विश्वम्भर सभारे धारिया।
स्तन-पान कराय परम स्निग्ध हैया॥

चै. भा. म. १८.२०२

सभी भक्तगण शिशुभावापन्न थे। कोई जगज्जननीरूपिणी प्रभुका आँचल पकड़कर 'माँ! गोदमें ले ले' कहकर क्रन्दन कर रहा है, कोई दूसरेको जननीकी गोदमें चढ़कर स्तन-पान करते देखकर उसको खींचकर दूर हटा रहा है, कोई प्रेममें भरकर जननीका सुख-चुम्बन कर रहा है। जगज्जननीके रूपमें प्रभु सबको मातृभावमें स्नेह और प्यार प्रदान कर रहे हैं।

श्रीपाद आचार्यरत्नके घरमें आज आनन्दका तूफान उठा है। वैष्णव-गृहिणीगण प्रभुके मातृ-भावको देखकर परमानन्दमें बारंबार हुलू-ध्वनि कर रही हैं। भक्तवृन्द प्रभुकी कृपाके बलसे परम आनन्द प्राप्त कर रहे हैं। उनका सारा दुःख आज दूर हो गया। कोई आनन्दमें नृत्य करने लगा, कोई मनमें अत्यधिक आनन्दित हो, गुन-गुन करके मधुर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रेम-संगीतकी तान देने लगा। इसके बाद मधुर कीर्तनके आनन्दमें भक्तवृन्द मत्त हो गये।

यह लीलारङ्ग दिखलाकर श्रीगौर-भगवान्‌ने अपने गीतोक्त (९.१७) वाक्य "**पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः**।" को सफल कर दिखाया। जो लोग जगज्जननीके रूपमें ऐश्वर्यमयी भगवत्-शक्तिकी उपासना करते हैं, प्रभुका यह लीलारहस्य उनके लिए विशेष शिक्षाप्रद होगा। भक्तके भगवान् भक्तके भावके अनुसार रूप धारण करते हैं। श्रीगौराङ्गप्रभुने जगज्जननीका रूप धारण करके दिखला दिया कि वे सब जीवोंके पूज्य हैं। शाक्त, वैष्णव, सौर, गाणपत्य, हिन्दू, मुसलमान—सभी उनकी उपासनाके अधिकारी हैं। वे महावतारी हैं, वे सर्वेश्वर हैं। उन्हींसे सब अवतारोंकी सृष्टि है, उन्हींसे सब देवी-देवताओंकी उत्पत्ति है। वे ही मूल प्रकृति हैं। वे आदि हैं और वे अनन्त हैं। वे अनादि होकर भी आदि, सर्व कारणके कारण, सच्चिदानन्द-विग्रह हैं।* उनका पूर्वनाम श्रीकृष्ण है, तथा वे स्वयं-भगवान् हैं और जो-कुछ है, उनकी अंश-कला मात्र है।

श्रीगौराङ्गप्रभु स्वयं-भगवान् हैं, अतएव आद्याशक्ति उनकी पूर्ण शक्ति है, अंश-कला नहीं है। वे सर्वशक्तिमान् हैं, उनमें सर्वशक्ति निहित है, आद्याशक्ति-भावमें प्रकट होकर श्रीगौर-भगवान्‌ने कलिके जीवोंको यह शास्त्र-तत्त्व समझाया। कलिग्रस्त अधम जीव इस सार-तत्त्वको समझकर श्रीगौराङ्गप्रभुके चरणोंमें यदि आत्मसमर्पण करे तो उसका परममङ्गल होगा, उसके जीवनका हाहाकार दूर हो जायगा। परन्तु इस निगूढ़ तत्त्वको समझेगा कौन? श्रीगौर-भगवान्‌की कृपा बिना, गौर-भक्तका सङ्ग पाये बिना इन सब तत्त्वोंका अनुभव नहीं होता। इसी कारण श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

"के बूझिबे इहा जार अनुभव नाइ।"

चै. भा. म. १८.२१७

आगे फिर लिखा है—

"कृष्ण अनुग्रहे से एसब मर्म जानि।"

चै. भा. म. १८.२१८

इस अद्‌भुत गोपिका-वेषमें प्रभुकी नृत्य-विलास-रङ्गकी लीलाकी फलश्रुतिमें लिखा है—

अद्‌भुत गोपिका-नृत्य चारि वेद धन।
कृष्ण भक्ति हय इहा करिले श्रवण॥

चै. भा. म. १८.२१९

प्रभातकालमें यह अपूर्व कृष्णाभिनय-लीला समाप्त होनेपर सबलोग अपने-अपने घर गये। इस लीलासूत्रमें परम ऐश्वर्यमय प्रभुने नवद्वीपमें कुछ ऐश्वर्य दिखाया है। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्य-रत्नके जिस घरमें प्रभुने इस जगज्जननी-भावमें अधिष्ठान किया था, उस स्थानमें सात दिनतक एक अद्‌भुत ज्योति प्रकाशित हुई थी। ऐसा जान पड़ता था, मानो घरमें एक विद्युत्-छटा प्रज्वलित हो रही है। कोई आँखें मिलाकर उस स्थानको देख नहीं सकता था।

प्रभु जब भगवान्-भावमें ऐश्वर्य प्रकट करते थे, तब उनके श्रीअङ्गमें ऐसा ही अपूर्व तेज और ज्योति दीखती थी। प्रभुके भाव-संवरणके बाद वह अदृश्य हो जाती थी। यहाँ एक सप्ताहतक वह अपूर्व शीतल तेज-पुञ्ज रह गया। सबलोगोंने उसे देखा। यह देखकर भक्तवृन्द आनन्द-सागरमें डूबने

---

*ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः।
अनादिरादिः गोविन्दः सर्वकारण कारणः॥
ब्रह्मसंहिता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लगे। किसीने किसीको कुछ न कहा। मन-ही-मन सब इसका कारण समझते रहे। सात दिनतक अविच्छिन्न भावसे उस घरमें वह अपूर्व तेज पुञ्ज दिन-रात समानरूपसे दिखलायी पड़ता रहा। दिन-रात अनुभव करनेकी शक्ति किसीमें न रही।

यह प्रभुका अलौकिक लीलारङ्ग, ईश्वर-लीला है। इसमें अविश्वासका कोई कारण नहीं है। सर्वशक्तिमान् ईश्वर सब-कुछ कर सकते हैं। उनकी लौकिक और अलौकिक लीलाकी कथापर जो सरल मनसे विश्वास नहीं कर सकते, वे बड़े ही अभागे हैं। ठाकुर लोचनदासने लिखा है—

हेन अपरूप कथा, शुनिया संसार व्यथा,
ना घूचये जाहार अन्तरे।
ना घूचिबे कोन काले, जे इथे विस्मय धरे,
तारे धिक नाहिक पामरे॥
युक्ति अनुभव शास्त्र, तिने एक कहे मात्र,
साक्षाते ना देखे परचार।
विचार ना करे इहा, छिल कि हइल गिया,
केमने निस्तार हइ तार॥
गोरा अवतार हेन, करुणा प्रकाश जेन,
नाहि हय,—ना हइबे आर।
जे बलू जे बलू लोके, अनुभव कहि ताके,
मने मने करुक विचार॥
एइ मात्र मोर चिन्ता, अन्तरे मरम व्यथा,
हेन अवतार जाय पाछे।
ता लागि काँदये हिया, काहारे कहिब इहा,
गुण गाय ए लोचन दासे॥

श्रीमन्महाप्रभुका अपूर्व लीला-रहस्य अत्यन्त निगूढ़ है। करुणाके अवतार श्रीगौराङ्गप्रभुकी करुणाकी सीमा नहीं है। उनके लीला-रहस्य तथा दयाकी बातपर विचार करके देखनेसे स्पष्ट जान पड़ता है कि नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गमहाप्रभु सर्व अवतारोंके अवतारी थे, सर्वशक्ति-समन्वित थे, सब लोकोंके कारण-के-कारण थे, निखिल ब्रह्माण्डपति, सर्वेश्वर स्वयं-भगवान् थे। पूज्यपाद श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने क्या साधसे लिखा है—

यदद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि तदप्यस्य तनुभा
य आत्मान्तर्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः।
षडैश्वर्यैः पूर्णो य इह भगवान् स स्वयमयं
न चैतन्यात् कृष्णात् जगति परतत्त्वं परमिह॥

चै. च. आ. १.३

अर्थ—"उपनिषद्में अद्वैतवादीगण जिनको 'अद्वैत-ब्रह्म' कहते हैं, वे भी इन (श्रीकृष्णचैतन्य) की अङ्ग-कान्ति हैं। योगशास्त्रमें जिन पुरुषको 'अन्तर्यामी आत्मा' कहते हैं, वे भी इनके अंशविभव हैं। तत्त्वविचारमें जिनको 'षडैश्वर्यपूर्ण भगवान्' कहा जाता है, वे भी स्वयं ये ही हैं—इन श्रीकृष्ण-चैतन्यके अभिन्नस्वरूप हैं। इस जगत्में श्रीकृष्ण-चैतन्यसे भिन्न परतत्त्व और कोई नहीं है।"

श्रीगौराङ्ग-लीला आद्योपान्त अलौकिक है। प्रभुकी सारी लीला-रीति अलौकिक है। श्रीगौराङ्ग-चरित और लीला-कथा परमश्रद्धापूर्वक श्रवण करनी चाहिये तथा उनको ध्रुव सत्य मानना चाहिये। जो ऐसा नहीं करते, वे अपने सिरपर स्वयं वज्रपात करते हैं, यह पूज्यपाद कविराज गोस्वामीका कथन है। यथा, श्रीचैतन्यचरितामृतमें—

अलौकिक लीला प्रभुर अलौकिक रीति।
शुनितेओ भाग्यहीनेर ना हय प्रतीति॥
आद्योपान्त चैतन्यलीला अलौकिक जान।
श्रद्धा करि शुन इहा सत्य करि मान॥
जेइ तर्क करे इहा सेइ मूर्खराज।
आपनार मुण्डे सेइ आपनि पाड़े वाज॥

चै. च. म. १८.२१५-२१७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नके घर प्रभुने जो कृष्ण-लीला-नाटकका अभिनय किया था, इसका पूर्ण वृत्तान्त श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकमें मिलता है। कृपालु नाट्यरसामोदी पाठकवृन्द इस श्रीग्रन्थसे इस अपूर्व अभिनय-लीलारङ्गकी कथा पाठ कर लें। ग्रन्थ-विस्तारके भयसे वह यहाँ उद्धृत नहीं किया जाता। यह कृष्ण-लीला-अभिनय मधुसे-भी मधुर है। सामान्य नाट्यकारगणके अभिनयमें श्रीकृष्ण-लीलाकी अपूर्व माधुरी प्रकट होती है। स्वयं-भगवान्‌ने जब अपने नित्य पार्षदवृन्दके साथ यह लीलाभिनय किया था तो उसकी माधुरीके विषयमें क्या कहना? रसिक भक्त पाठकवृन्द अवश्य इस श्रीग्रन्थका पाठ करेंगे।

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नके घर इस अपूर्व कृष्ण-लीला-अभिनयको देखनेका अधिकार एकमात्र प्रभुके अन्तरङ्ग भक्तवृन्दको ही प्राप्त था। प्रभुके आदेशसे बहिरङ्ग लोगोंके लिए रङ्गभूमिमें प्रवेशका अधिकार निषिद्ध था। श्रीवासपण्डितके घर जब रातमें प्रभु कीर्तन-विलास-लीलाका अभिनय करते थे, तब भी बहिरङ्ग कोई आदमी वहाँ नहीं जा पाता था। बहिरङ्ग लोगोंमें वैष्णव-द्वेषी पाखण्डियोंका एक दल था। वे संकीर्तन-विरोधी थे। श्रीवासपण्डितके ऊपर ये पाखण्डीलोग बहुत क्रुद्ध थे; क्योंकि श्रीगौराङ्गप्रभु उनके आँगनमें कीर्तन-लीला करते थे। उनको कष्ट देनेके लिए पाखण्डियोंका दल निरन्तर चेष्टा करता था। उनके नामपर नाना प्रकारकी निन्दनीय बातोंका प्रचार करके उनके मनको दुःख पहुँचाता था।

वैष्णव-विरोधी चापालगोपाल

चापालगोपाल नामक एक नदियावासी ब्राह्मणको श्रीवासपण्डितके ऊपर विशेष क्रोध हुआ। वह कट्टर शाक्त था; वैष्णवधर्मका परम विरोधी था। वह नदियाका एक दम्भी ब्राह्मण पण्डित था। भगवान्‌के नामपर नृत्य, गीत, कीर्तन आदिसे उसको विशेष घृणा थी। वह अत्यन्त कटुभाषी भी था।

श्रीगौराङ्गप्रभु उस समय श्रीवास-मन्दिरमें नित्य रातको कीर्तन-विलास करते थे। ज्येष्ठ माससे पौषतक आठ महीने प्रभु श्रीवासके आँगनमें रातमें निरन्तर कीर्तन-रास-लीलामें मत्त रहते थे। गोष्ठी-सहित श्रीवासपण्डित और भक्तवृन्द कीर्तन-सुधा-पान करके परमानन्दमें दिन यापन करते थे। पाखण्डियोंसे कुछ कहने या उनकी बात सुननेका श्रीवासपण्डितको अवसर ही नहीं मिलता था।

प्रभु जब रातको श्रीवासके आँगनमें कीर्तन-विलासमें उन्मत्त रहते थे, भक्तवृन्द द्वार बंद करके आँगनमें कीर्तनानन्दमें मग्न रहते थे। उस समय चापालगोपाल श्रीवासपण्डितके मनमें दुःख देनेके निमित्त उनके द्वारपर चुपचाप केलेके पत्तेपर जवाफूल, हरिद्रा सिंदूर, रक्तचन्दन, चावल और मदिरा-पात्र रखकर अपने घर चला गया।

चतुर श्रीवासपण्डितने यह देखकर समझा कि यह पाखण्डीलोगोंका काम है। उन्होंने सबको पुकारकर दिखलाया और हँसकर कौतूहलपूर्वक कहा—"देखो भाई, मेरी महिमा।"

भक्तवृन्द यह देखकर दुःखसे हाहाकार करने लगे। श्रीवासपण्डितने मेहतरको बुलाकर उस स्थानको साफ करवाकर गोबरसे लिपवा दिया। प्रभुके कानोंमें भी यह बात गयी। वे उस समय कुछ नहीं बोले।

इसके तीन दिनके बाद चापालगोपालके सर्वाङ्गमें कुष्ठके लक्षण दीख पड़े। उनके विद्यालयके छात्रगण उसे देखकर आपसमें इशारेसे उस महारोगके विषयमें नाना प्रकारके तर्क-वितर्क करने लगे। अध्यापककी अँगुलीमें सूजन देखकर उन्होंने एक दिन उनसे इसका कारण पूछा। दम्भी विप्रने उत्तर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दिया—"तुमलोग जो सोच रहे हो, यह वह नहीं है। मैं नित्य शिवपूजा करके संध्या-तर्पण करता हूँ, मुझे क्या महारोग हो सकता है ?" छात्रोंने फिर कुछ न कहा।

क्रमशः वह महारोग चापालगोपालके सर्वाङ्गमें व्याप्त हो गया। उनके स्त्री-पुत्रोंने यह दुर्दशा देखकर घरसे बाहर एक पर्णकुटी बनाकर उसमें उसको रख दिया। महारोगकी दुर्गन्धसे कोई उनके पास नहीं जाता। चापालगोपालकी स्त्रीतक उनके पास नहीं जाती। नाकमें वस्त्र दाबकर दूरसे ही अन्न-जल देकर भाग जाती थी।

विप्र निरुपाय होकर लाठीके सहारे धीरे-धीरे गङ्गाके तीर वृक्षके नीचे जाकर बैठा करता था। नदियाके सबलोग उसकी दुर्दशा देखकर मर्मान्तिक कष्ट पाते थे। बहुत लोगोंने उनको परामर्श दिया कि "तुम निमाईपण्डितके शरणापन्न हो जाओ।" चापालगोपालका दम्भ अभी पूर्णतः दूर नहीं हुआ था। गाँवके नाते प्रभुको वह 'भगिना' कहकर सम्बोधन करते हुए एक दिन बोला—"गाँवके नाते मैं तुम्हारा मामा हूँ, तुम मेरे भगिना हो। मैं कुष्ठ-रोगसे व्याकुल हूँ। तुमने सबका उद्धार करनेके लिए अवतार लिया है। मैं दुःखी हूँ। मेरा भी उद्धार करो !"

प्रभुको उन्होंने 'भगिना' सम्बोधन करके दम्भ प्रकट किया, अतः स्वतः वह प्रभुकी कोप-दृष्टिमें पड़ गया। प्रभु स्वयं-भगवान् हैं; उनकी भगवत्तामें यदि इस महारोगग्रस्त विप्रको विश्वास होता तो वह इस समय प्रभुको इस प्रकार सम्बोधन नही करता। नवानुरागी भक्त भगवान्‌के सामने इस रूपमें आत्मनिवेदन नहीं कर सकते। चापालगोपाल प्रभुके भक्त नहीं हैं। प्रभुकी भगवत्तामें उनका विश्वास नहीं है। लोगोंके कहनेसे प्रभुसे उन्होंने अपना दुःख निवेदन किया। वह घोरतर वैष्णवापराधका अपराधी था। प्रभुकी संकीर्तन-लीलाको उन्होंने घृणाकी आँखोंसे देखा था। चापालगोपालकी प्रार्थनाका मर्म यह था—"निमाईपण्डित ! सुना है कि तुम भगवान्‌के अवतार हो। गाँवके नाते तुम मेरे 'भगिना' हो। तुम दैव-बलसे रोग दूर कर सकते हो, यह भी मुझे ज्ञात हुआ है। इस रोगको दूर करके तुम मेरा उपकार करो ! इस उपकारके लिए मैं तुमसे आशा करता हूँ।" इसको श्रीभगवान्‌के चरणोंमें आत्म-निवेदन नहीं कहते, यह कृपा-प्रार्थना नहीं है। श्रीगौराङ्गप्रभु चापालगोपालकी बात सुनकर क्रोधित हो उठे। उनका पूर्वापराध प्रभुको स्मरण हो आया। उन्होंने भक्तद्रोहीको देखकर भगवान्-भावमें आविष्ट होकर क्रुद्ध होकर कहा—"अरे पापी ! तू भक्तद्वेषी है। तेरा उद्धार नहीं हो सकता। कोटि जन्मोंतक ये कुष्ठके कीड़े तुमको खाते रहेंगे। तुमने श्रीवासको झूठमूठ बदनाम किया है। पाखण्डियोंका संहार करनेको और भक्तिका प्रचार करने मैं आया हूँ।"

(चै. च. आ. १७.४७–४९)

इतनी बात कहकर भक्तवत्सल प्रभुने कम्पित-कलेवर, आरक्त-लोचन हो चापालगोपालकी ओर एक बार देखा। कुष्ट-व्याधिसे ग्रस्त वह विप्र भयसे स्तब्ध हो उठा। उनके वैष्णवापराधकी बात नदियामें कोई आदमी नहीं जानता था। उन्होंने चुपचाप रातमें श्रीवासपण्डितके घरमें पूजाकी अस्पृश्य सामग्री रखकर जो अपराध किया था, उसको उनके सिवा और कोई नहीं जानता था। अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान्‌ने जब यह बात प्रकट की, तब नदियाके लोगोंने समझा कि चापाल-गोपालकी इस महाव्याधिका करण क्या है।

श्रीवासपण्डितने भी यह बात सुनी। उनके मनमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बड़ा दुःख हुआ। विप्रके ऊपर प्रभुकी कृपा न होती देखकर वे अतिशय चिन्तित हुए।

इस दुराचारी चापालगोपालकी घटनासे प्रभुने भक्तकी महिमाका प्रचार किया। वैष्णवापराध कैसा भयानक अपराध है, यह कलिके जीवको समझा दिया। जिसके सामने अपराध होता है, उसके सिवा और कोई वैष्णवापराधको दूर नहीं कर सकता। यहाँतक कि स्वयं श्रीभगवान् भी भक्तद्रोहीका उद्धार करनेमें असमर्थ हैं, लीलामय श्रीगौराङ्गप्रभुने इस लीलाराङ्गके द्वारा यही दिखलाया है। जैसा पाप था, वैसी ही उसकी प्रायश्चित्त विधि थी। इच्छा होनेपर प्रभु नदियामें रहकर चापालगोपालके अपराधको दूर कर सकते थे; परन्तु यह उन्होंने नहीं किया; क्योंकि अपराधीके मनमें उस समय भी दम्भकथा और अपराध करनेके कारण हृदयमें प्रकृत अनुताप नहीं था। इसी कारण प्रभु उनके ऊपर क्रुद्ध होकर ये सब बातें कह गये थे।

चापालगोपाल तब प्रभुके द्वारा तिरस्कृत होकर, निराश होकर, मनमें दुःखी होकर घर छोड़कर काशीधाम चला गया। वहाँ उसने श्रीविश्वनाथजीके मन्दिरमें धरना दिया था। विश्वनाथजीने उनको स्वप्नादेश दिया—"नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग स्वयं भगवान् हैं। उनके श्रीचरणोंके आश्रयके बिना इस रोगकी शान्ति न होगी।" चापालगोपाल पुनः घर लौट आये और प्रभुके दर्शनकी प्रतीक्षा करने लगे।*

इस घटनाके कुछ वर्षोंके बाद प्रभु जब संन्यास-ग्रहण करके नीलाचलसे जननी और जन्मभूमिके दर्शनकी अभिलाषासे कुलिया-ग्राममें आये थे तो इस चापालगोपालने प्रभुके श्रीचरणोंमें पुनः शरण ली थी। रोग-भोगमें और पश्चात्तापकी अग्निमें दग्ध होकर इतने दिनोंमें उनके वैष्णवापराधका पूर्ण प्रायश्चित्त हो गया था। तब उसमें किसी प्रकारका दम्भ नहीं रह गया। प्रभुकी परम ऐश्वर्यमयी संन्यासी-मूर्त्तिका दर्शन करके उसने भगवान्-भावमें उनसे कातर स्वरमें रोते-रोते अपना दुःख-निवेदन किया था। पतितपावन दयामय प्रभुने तब उनको उद्धारका मार्ग बतलाया था—"तुमने श्रीवासपण्डितके प्रति अपराध किया है। उन्हींके पास जाओ। वे यदि कृपा करेंगे, तो ही तुम्हारा पाप-विमोचन होगा।"

(चै. च. आ. १७.५३,५४)

श्रीवासपण्डितकी शरण लेकर उस विप्रने कुष्ठ-रोगसे परित्राण पाया था। परम उदार श्रीवासपण्डितने उनके सारे अपराधोंको क्षमा करके अपनी उदार प्रकृतिका परिचय दिया था।

उनके देह-रोगसे मुक्त होनेके साथ ही उनको भवरोगसे भी मुक्ति मिल गयी। वे प्रभुके परमभक्त होकर गौर-नाम-प्रचार-कार्यके व्रती बन गये।

श्रीगौराङ्ग-लीला-रस-सिंधु अनन्त और अपार है। यह सब वेद-वाक्य है; इसमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। श्रीगौराङ्ग-लीला मधुसे भी मधुर है। इस सुमधुर लीला-समुद्रमें जिसने एक बार डुबकी

---

* एक प्राचीन गीतमें चापालगोपालकी उक्तिमें वर्णित है—

परम करुण हे प्रभु ! निताइ गौर तोमरा दुइ भाइ।
आमि गियाछिनु काशीपुरे, आमाय करे दिलेन विश्वेश्वरे,
पूर्णब्रह्म शचीर घरे;
आमि पीड़ा ज्वालाय ज्वले मरि; आमार उद्धार कर गौरहरि॥

पतित-पावन तोमरा दुभाइ गौर-निताइ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लगायी है, उसको फिर निकलनेकी शक्ति या क्षमता नहीं रह जाती। वे सदा इस लीलामृत-प्रवाहमें गोते खाते रहते हैं और इस गोते खानेमें उनको परम आनन्द प्राप्त होता हैं। पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है—

कृष्णलीलामृत सार, तार शत शत धार,
दश दिक बहे जाहा हैते।
से चैतन्यलीला हय, सरोवर अक्षय,
मनोहंस चराओ ताहाते॥

चै. च. म. २५.२२३

यह सुमधुर श्रीगौराङ्ग-लीला कलिग्रस्त जीवोंका प्राण है। इस लीलामृत-रसके आस्वादनसे उनके मनमें पूर्ण परितुष्टि होती है। इस परम मधुमय लीलाके गानेके सुखसे उनके देहकी पुष्टि होती है। इस अपूर्व लीलाकी तरङ्गको समझनेकी शक्ति किसमें है? पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है—

मधुर चैतन्य लीला समुद्र गम्भीर।
लोके नाहि बूझे, बूझे जेइ भक्तवीर॥

चै. च. अं. २.१६८

गौराङ्ग-भक्त-महाजनगण श्रीगौराङ्ग-लीलाका मर्म समझेंगे और कोई नहीं समझ सकता।

श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

एको दिवसेर जत चैतन्य-विहार।
कोटि वत्सरे ओ ताहा नाहि वर्णिवार॥

चै. भा. अं. ४.५१०

कृपालु गौरभक्तवृन्द! जीवाधम ग्रन्थकारका दुःसाहस क्षमा करें; इसकी धृष्टतापर ध्यान न दें। यह वामन होकर चाँदको पकड़ना चाहता है, पंगु होकर पहाड़को लाँघना चाहता है। आपलोगोंकी कृपा होनेपर यह असम्भवको भी सम्भव कर सकेगा, असाध्य कार्यको भी सिद्ध कर सकेगा। परन्तु अपनी असमर्थताको यह जितना समझता है, उतना और कोई नहीं समझेगा। इसके हृदयकी आवाज है कि—

आत्म शोधिवार तरे दुःसाहस कैनु।
लीलासिंधुर एक तिन्दु स्पर्शिते नारिनु॥

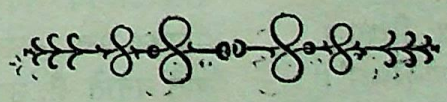

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौवालीसवाँ अध्याय

जगाई-माधाई-उद्धार-लीला

प्रथमे बन्दिब आमि जगाई माधाइ।
पतित पावन नामेर साक्षी दुइ भाइ॥

नाम-प्रचार

श्रीगौर-भगवान्‌की पतितोद्धार-लीला बड़ी ही माधुर्यमयी है। श्रीभगवान्‌का पतितपावन नाम जैसे मधुर है, उनकी पतितोद्धार-लीला-कथा भी वैसी ही मधुमयी है। पतितपावन श्रीगौराङ्गप्रभुने अबतक नदियामें पतितोद्धार-लीला नहीं प्रकट की थी। उन्होंने आत्मप्रकाश किया था, भगवान्-भावमें ऐश्वर्य-विकास किया था; परन्तु अबतक पतितोद्धार-लीलारङ्ग प्रकट नहीं किया था। श्रीगौर-भगवान्‌की यह पतितोद्धार-लीला ही उनके अवतारके श्रेष्ठत्वकी बोधक है। इच्छामय प्रभुकी इच्छा हुई कि नदियामें इस अपूर्व और श्रेष्ठ लीलाका एक अभिनय करूँ। अपनी इच्छाशक्ति श्रीनित्यानन्द-प्रभु तथा अन्तरङ्ग भक्त हरिदास ठाकुरको बुलाकर प्रभुने एक दिन अचानक भगवान्-भावमें आविष्ट होकर हुंकार-गर्जन करते हुए वज्र-गम्भीर स्वरमें कहा—

शुन शुन नित्यानन्द ! शुन हरिदास।
सर्वत्र आमार आज्ञा करह प्रकाश॥
प्रति घरे-घरे गिया कर एइ भिक्षा।
'कृष्ण-भज, कृष्ण बोल, कर कृष्ण-शिक्षा'॥
इहा वै आर ना बलिबा-बोलाइबा।
दिन-अवसाने आसि आमारे कहिबा॥
तोमरा करिले भिक्षा, जेइ ना बलिब।
तबे आमि चक्रहस्ते सभारे काटिब॥

चै. भा. म. १३.६—९

नदियामें सब भक्तोंके सामने प्रभुने इस आदेश-का प्रचार किया। प्रभुने जब अन्तिम बात कही तो भक्तोंने देखा कि उनके श्रीअङ्गसे अपूर्व ज्योति और तेज निकल रहा है; उन प्रशान्त श्रीमुख-मण्डलमें उज्ज्वल दीप्ति प्रकट हो रही है। उनके मनमें बड़ा भय हुआ। श्रीनित्यानन्दप्रभु और हरिदास ठाकुर प्रभुका आदेश शिरोधार्य करके प्रतिदिन नदियामें घर-घर जाकर सबको कहने लगे—

बोल कृष्ण, गाओ कृष्ण, भजह कृष्णरे॥
कृष्ण प्राण, कृष्ण धन, कृष्ण से जीवन।
हेन कृष्ण बोल भाइ ! हइ एक मन॥

चै. भा. म. १३.१४,१५

दोनों आदमियोंका वैष्णव-संन्यासीका वेष है। वे भुजा ऊपर उठाकर प्रेमानन्दमें नाम-कीर्तन करते हैं और नदियावासियोंको युगधर्मकी शिक्षा देते हैं। जो लोग सज्जन हैं, वे इनके उपदेशको मनोयोग-पूर्वक श्रवण करते हैं; मनमें आनन्दित होते हैं और युगधर्मका आचरण करनेकी प्रतिज्ञा करते हैं—तब श्रीनिताई-चाँद उनको छोड़ते हैं। परन्तु दुष्ट और पाखण्डीलोग उनको इस प्रकार नदियामें नाम-ब्रह्मका प्रचार-कार्य करते देखकर नाना प्रकारकी बातें बनाते हैं, उपहास करते हैं। कोई कहता है कि कुमन्त्रणाके दोषसे ये दोनों संन्यासी विक्षिप्त हो गये हैं और लोगोंको पागल बना रहे हैं।

श्रीवासके आँगनमें द्वार बंद करके प्रभु नृत्य करते हैं। उनके आदेशसे कोई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बहिरङ्ग आदमी वहाँ प्रवेश नहीं कर पाता। श्रीनित्यानन्दप्रभु और हरिदास ठाकुर जब नाम-ब्रह्मके प्रचार-कार्यके व्रती हुए तो जिन बहिरङ्ग भक्ति-बहिर्मुख पाखण्डीलोगोंके लिए प्रभुके संकीर्तन-रास-लीलारङ्ग-दर्शनका द्वार बंद था, उनके द्वारपर जाते ही पाखण्डीलोग 'मार-मार' कहकर उन्हें भगानेके लिए तैयार हो जाते। कुछ लोग स्पष्ट कहने लगे कि निमाईपण्डितने अच्छे-अच्छे लोगोंको पागल बना दिया। कोई-कोई बोलते कि "ये दोनों चोरके आदमी है। कपट-वेषमें लोगोंके घर-घर घूमते हैं। इनको कोतवालसे गिरफ्तार करा देना चाहिये।" इन सबलोगोंकी बात सुनकर अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु और हरिदास ठाकुर तनिक भी भयभीत नहीं होते थे। इन सब बातोंको वे लोग हँसकर उड़ा देते थे।

इस प्रकार ये दोनों महापुरुष प्रभुका आदेश नित्य पालन करते थे। एक दिन नदियाके रास्तेमें उनकी दो उद्दण्ड नशेबाजोंसे भेंट हो गयी। उनका नाम था—जगाई-माधाई। संसारके सारे पाप उनके शरीरमें संचित थे, केवल वैष्णव-निन्दा-महापापने उनको अबतक स्पर्श नहीं किया। वे दिन-रात नशेबाजोंमें रहते थे, इसीकारण उनसे वैष्णव-निन्दारूपी पापाचरणका दुर्योग नहीं घटा था। यह उनका सौभाग्य था और इस सौभाग्यके बलसे ही वे पतितपावन श्रीगौराङ्गप्रभुके कृपाभाजन बने।

वैष्णव-निन्दा और परचर्चा महापाप है। सब प्रकारके पापका प्रायश्चित्त है. वैष्णव-निन्दाके पापका प्रायश्चित्त नहीं है। जिसके प्रति यह पाप हुआ हो, उसे छोड़कर दूसरा कोई इस पापसे निष्कृति नहीं प्रदान कर सकता, चापालगोपालकी कथामें प्रभुने यह बात खोलकर कह दी है।

जगाई-माधाई जब वैष्णव-निन्दा-अपराधके अपराधी नहीं है, तब उनका उद्धार-कार्य उतना कठिन नहीं है। उन्होंने पाप किया था, उनके पापका अन्त नहीं था, किन्तु श्रीभगवान्‌के नामाभासमें पुञ्जीकृत पापराशि तत्काल भस्मीभूत हो जाती है। पापके नाशका अति सुन्दर उपाय प्रभुने सृजन किया है। 'भगवन्नाम लेते ही सारे पाप नष्ट हो जाते हैं'—यह शास्त्र-वचन है, यह श्रीभगवान्‌के श्रीमुखकी वाणी है।

पतितपावन श्रीनित्यानन्दप्रभुने स्वयं जगाई-माधाईके उद्धारका भार लिया है। प्रभुकी इच्छासे वे इस कार्यके व्रती हुए हैं। स्वयं-भगवान् श्रीगौराङ्ग-प्रभुकी कृपादृष्टि इनके ऊपर पड़ी है। कृपानिधि प्रभुकी कृपाके आदेशसे श्रीनित्यानन्दप्रभु और हरिदास ठाकुरने नदियामें हरिनाम-प्रचार-कार्यका व्रत लिया है।

श्रीगौराङ्ग-लीलाका जगाई-माधाई-उद्धार पर्व जगत्‌में एक अपूर्व वस्तु है। श्रीगौराङ्गसुन्दरकी सारी लीला-कथाएँ मधुमयी और माधुर्यपूर्ण हैं; परन्तु उनकी पतितोद्धार-लीला मधुसे भी मधुर है। इन सब लीला-कथाओंको सुनकर, पतित-अधमके प्रति श्रीगौर-भगवान्‌की अपार दया और अनन्त करुणाका परिचय पाकर कलिग्रस्त अधम जीव उनके शरणापन्न होता है; उनके शीतल चरणोंमें प्राण-समर्पण करता है। पतित-पाखण्डी और दुराचारीको दण्ड देनेके लिए ही श्रीभगवान्‌ने भूमण्डलमें अवतार लिया हैं, यह बात उन्होंने स्वयं कही है। **'विनाशाय च दुष्कृताम्'**—उनके ही श्रीमुखकी बात है। जगाई-माधाई-उद्धार श्रीगौराङ्ग-प्रभुकी नवद्वीप-लीलाका प्रधान अङ्ग हैं। कलिके भगवान् परम दयालु श्रीगौराङ्गप्रभुने दुर्जन और पाखण्डीलोगोंको दण्ड देनेके लिए शस्त्र नहीं धारण किया, किसीका बध नहीं किया—

दुरमति अति, पतित पाखण्डी,
प्राणे ना मारिल कारे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरिनाम दिये, हृदय शोधिल,
याचि गिया घरे-घरे ॥

इसी कारण महाजनगण गा गये हैं—

अवतार शिरोमणि गौराङ्ग आमार ।
एमन दयाल हय नाइ हबे नाइ ।
कि साधने ताँहार चरणे स्थान पाइ ॥

वैकुण्ठके द्वारपाल जय और विजयने शाप-भ्रष्ट होकर शत्रुभावसे रहकर तीन जन्मोंमें मुक्ति प्राप्त की। कलियुगमें श्रीगौराङ्ग-अवतारमें उन्होंने स्वेच्छासे जगाई-माधाई-रूप धारण करके नदिया-धाममें जन्म ग्रहण किया। जैसे, 'प्रेमविलास' में—

जगाइ-माधाइ हइल भक्त अतिशय ।
दुइ प्रभुर शाखा मध्ये गणना जे हय ॥
शापभ्रष्ट वैकुण्ठेर द्वारपाल श्रीजय-विजय ।
शत्रुभावे तिन-जन्मे मुक्त शास्त्रे इहा कय ॥
कलियुगे निज इच्छाय जनम लभिल ।
महापापी हइयाओ प्रभुर कृपा हइल ॥

श्रीगौर-भगवान् करुणाके अवतार हैं। वे कारुण्य रसके कल्पतरु हैं। अपने भक्तजनोंके प्रति उनकी करुणाकी सीमा नहीं है। उनका निजी कार्य पतितोद्धार है। यदि उनके भक्तलोग भी पापकर्म करते हैं तो परम दयालु श्रीगौर-भगवान् केश पकड़कर भी पाप-पङ्कसे उनका उद्धार करते हैं। अपने हाथसे उनको नरक-कुण्डसे निकालकर कृपा प्रदान करते हैं—

भकत जन यदि पापेते मज्जय ।
कृपा डोरे बाँधि तारे स्वहस्ते तोलय ॥

महापापी जगाई-माधाईका उद्धार करके श्रीगौराङ्गप्रभुने इस महाजनवाक्यकी सत्यताका पूर्ण परिचय प्रदान किया है। इस जगाई-माधाई-उद्धार-लीलाकी पुण्यकथा वर्णन करके आत्मशुद्धि करना चाहता हूँ। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

जगाइ-माधाइ उद्धार-कथा शुने जेइ जन ।
अनायासे पाय सेइ चैतन्य-चरण ॥

जगाई-माधाईका परिचय

नवद्वीपमें शुभानन्द नामके एक परम कुलीन ब्राह्मण रहते थे; राढ़ी-श्रेणीके ब्राह्मणवंशमें उनका जन्म था। शुभानन्द राय नवद्वीपके जमींदार थे। उस कालके लोग उनको 'राजा' कहते थे। देश-विदेशमें शुभानन्द रायका यश और नाम फैला था; क्योंकि वे प्रजाके बड़े ही हितकारी मित्र थे; उनको संतानके समान मानते-जानते थे। दुःखी-दरिद्रके प्रति उनकी अतिशय करुणा थी। दिल्लीके बादशाहके साथ शुभानन्द रायकी मित्रता थी। गौड़देशमें सर्वत्र उनका नाम प्रचरित था।

शुभानन्द रायके दो पुत्र थे। रूप और गुणमें दोनों ही सर्वजनप्रिय थे। सद्वंशमें जन्म लेकर सत्पिताके सदुपदेशसे वे बञ्चित न थे। अति बाल्यकालसे ही शुभानन्द रायने दोनों पुत्रोंको धर्मशिक्षा दी थी। पिताके सद्गुण दोनों ही पुत्रोंको प्राप्त थे। नदियावासी प्रजाजन उनको पितृवत् भक्ति और आदरसे देखते थे। राजा शुभानन्दके इन दोनों पुत्रोंका नाम था—रघुनाथ और जनार्दन। रघुनाथ ज्येष्ठ थे और जनार्दन छोटे थे। रघुनाथका एकमात्र पुत्र था—जगन्नाथ। जनार्दनके पुत्रका नाम था—माधव। नदियाके विप्रसुत जगन्नाथ और माधव श्रीगौराङ्ग-लीलाके जगाई और माधाई हैं।* ये दोनों भाई राजा शुभानन्द रायके वंशके

* उस जगाई-माधाईका वंश अब भी नवद्वीपमें वर्तमान है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुलाङ्गार हुए। दस्यु-वृत्ति उनके जीवनका प्रधान व्रत हो गया—

नदियार राजा एइ दुइ महाशय।
यौवनेते हैला तारा दस्यु अतिशय॥

प्रे. वि.

श्रीचैतन्यभागवतकारने इन दोनों दुराचारी दस्युओंका परिचय इस प्रकार दिया है—

से दुइ जनेर कथा कहिते अपार।
तारा नाहि करे हेन पाप नाहि आर॥
ब्राह्मण हइया मद्य गोमांस-भक्षण।
डाका-चूरि, परगृह-दाहे सर्वक्षण॥
देयाने नाहिक देखा बोलाय कोटाल।
मद्यपान बिने आर नाहि जाय काल॥

चै. भा. म. १३.३०—३२

श्रीचैतन्यमङ्गलमें उनका परिचय इस प्रकार दिया गया है—

महापापी ब्राह्मण से आछे दुइ भाइ।
नवद्वीपेर ठाकुर से जागाइ-माधाइ॥
ब्राह्मणी-यवनी-गुर्वाङ्गना नाहि एड़े।
सुरापान पाइले सकल कर्म छाड़े॥
देव-गुरु-ब्राह्मण हिंसये निरन्तर।
बाहिर हइले बिनि बधे ना जाय घर॥
गोवध-स्त्रीवध-ब्रह्मवध शत-शत।
लिखिते ना पारि नरबध कैल कत॥
गङ्गा-कूले-वास गङ्गा-स्नान नाहि करे।
देवता पूजये नाहिं आजन्म भितरे॥

प्रभु नित्यानन्द और हरिदास ठाकुर जब हरि-नामका प्रचार करते हुए नदियाके मार्गसे बाहर निकले तो उनके सामने एक दिन जगाई-माधाई मद पीकर उन्मत्त अवस्थामें नदियावासियोंके ऊपर अत्याचार करते हुए मिले। श्रीनित्यानन्दप्रभुने रास्तेके लोगोंसे पूछा—"ये दोनों कौन हैं? इनकी जाति क्या है? क्यों ऐसे दुराचारी बन गये?"

नदियावासी एक आदमीने उत्तर दिया—"गुसाईंजी! ये दोनों ब्राह्मण हैं। उच्च कुलमें उत्पन्न उत्तम मात-पिताकी संतान हैं। इनके पूर्व पुरुष चिरकालसे नदियामें निवास करने आये हैं। इनके वंशमें किसीमें भी तिलभर दोष नहीं था, किन्तु ये दोनों ऐसे गुणवान् निकले कि अपना धर्म-कर्म—सब भूल गये। ये बचपनसे ही ऐसे कुकर्म करते आये हैं। इनको दुष्ट-दुर्जन देखकर इनके बन्धु-बान्धवोंने भी इनको छोड़ दिया है। अब ये परम स्वतन्त्र हो शराबियोंके साथ धूमते-फिरते हैं। इन दोनोंको देखकर सारे नदियाके लोग डरते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि किसी दिन हमारा घर जला दें। ऐसा कोई पाप नहीं, जो ये दोनों न करते हों। डकैती, चोरी, मद्य-मांसका सेवन करते रहते हैं।"

नित्यानन्द और हरिदासकी मन्त्रणा

जगाई-माधाईका वंश-परिचय तथा उसके साथ-साथ उनके दुष्कर्मोंका विवरण सुनकर परमदयालु श्रीनित्यानन्दप्रभुका दयार्द्र हृदय कातर हो उठा। उन्होंने मनमें सोचा—"पापीके उद्धारके लिए ही श्रीगौराङ्गप्रभुका अवतार है। हमारे पतितपावन प्रभुको जगाई-माधाईके समान महापापी और कहाँ मिलेंगे?"

श्रीनित्यानन्दप्रभुने एक और बात सोचकर हरिदास ठाकुरसे कहा—"लोगोंसे छिपाकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु अपनी प्रकाशलीला करते हैं और लोगोंको प्रभुका प्रत्यक्ष प्रभाव देखनेको न मिलनेसे वे प्रभुका उपहास करते हैं। इन दोनोंपर प्रभु कृपा करें, तभी प्रभुके प्रभावको संसार देख पायगा।"

श्रीनित्यानन्दप्रभुके मनमें इस समय एक विशेष दुःख उत्पन्न हुआ है। दयालु निताई-चाँदने हरिदास ठाकुरको लक्ष्य करके दुःखपूर्ण दम्भके साथ कहा—"मैं भी तभी श्रीचैतन्यका दास होऊँगा, जब मैं इन दोनोंके हृदयमें चैतन्यका प्रकाश कर दूँगा। इस समय जो मदिरामें मतवाले बने अपने-आपको भूले हुए हैं, ऐसे ही यदि श्रीकृष्णके नाममें मतवाले हो जायँ और 'हे मेरे प्रभो!' कहकर रोने लग जायँ, तभी मेरा यह नगर-भ्रमण सार्थक होगा। जिन-जिनने इनकी छायाका स्पर्श पाकर गङ्गामें वस्त्र-सहित स्नान किया है, वे ही लोग इन दोनोंके दर्शनसे ही अपना गङ्गा-स्नान मानेंगे, तभी मेरा नाम 'नित्यानन्द' जानना।"

(चै. भा. म. १३.४५—५०)

इस प्रकार जगाई-माधाईके प्रति श्रीनित्यानन्दप्रभुकी कृपा हुई। ठाकुर हरिदासके साथ परामर्श करके उन्होंने उनके उद्धारका कार्य प्रारम्भ किया।

श्रीनित्यानन्दप्रभुका अवतार अधम ओर पतित जीवोंके त्राणके लिए था। भक्तकी महिमाके प्रचारके उद्देश्यसे उन्होंने ठाकुर हरिदाससे कहा—"देखो हरिदास! इन दोनों दुराचारी विप्रकुमारोंकी दुर्गतिके प्रतीकारका उपाय करना पड़ेगा। तुम यदि इनके ऊपर एक बार भी कृपादृष्टि डालो तो इनका उद्धार हो जाय। दुष्ट यवनोंने तुम्हारा प्राण ले लिया था, तथापि तुमने उनके कल्याणकी इच्छा की थी। तुम्हारा अनुरोध प्रभु अन्यथा नहीं कर सकते। तुम्हारी कृपा यदि इन दोनों ब्राह्मण-दस्युओंके ऊपर हो जाय तो प्रभुके अधम-उधारण, पतित-पावन, दयामय आदि नामोंकी महिमा संसारमें प्रसिद्ध हो जाय। पुराणमें अजामिलके उद्धारकी कथा भी वर्णित है, परन्तु उसे किसीने आँखों नहीं देखा। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें प्रभु अपने पतितपावन नामका साक्षात् परिचय देंगे। सबके सामने यदि प्रभु इन दो दुर्वृत्त विप्रकुमारोंका केश पकड़कर उद्धार करते हैं तो उनके अवतारकी महिमा कलिके जीवोंके हृदयमें सुदृढ़ रूपमें बद्धमूल हो जायगी। तुम यदि कृपा करके इस कार्यका भार ग्रहण करो तो श्रीगौराङ्ग-अवतारमें कलिग्रस्त जीव जगाई-माधाई-उद्धार-लीलामें साक्षात् दर्शन करके कृतार्थ हो जायँगे।

दैन्यके अवतार ठाकुर हरिदास श्रीनित्यानन्द-प्रभुके मुखसे आत्मप्रशंसा सुनकर बहुत दुःखित हुए। वे श्रीनित्यानन्द-तत्त्वसे भली-भाँति अवगत थे। जगाई-माधाईके प्रति उनकी ऐसी कृपादृष्टि देखकर उन्होंने अपने मनमें निश्चय किया कि इन दोनों विप्रकुमारोंका उद्धार हो गया; क्योंकि पतितके बन्धुकी कृपादृष्टि इनके ऊपर पड़ी है। अति दीनभावसे हरिदास ठाकुरने श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंमें हाथ जोड़कर निवेदन किया—"महाशयजी! जो आपकी इच्छा है, वही प्रभुका निश्चय है। जैसे लोग पशुको भुलाते हैं, वैसे ही आप मुझे क्यों भुलाते हैं? मैं भूलनेवाला नहीं हूँ। मेरी आप बार-बार परीक्षा लेते हैं।"

हरिदास ठाकुरकी दैन्योक्ति सुनकर अवधूत श्रीनित्यानन्दने हँसकर उनको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। अति मृदुवाणीमें उनसे कहा—"हरिदास! प्रभुका आदेश है—'सर्वापेक्षा विशेष पापीको हरि-नाम-प्रदान करना, कृष्ण-नाम सुनाना कृष्ण-भजनका उपदेश देना'। चलो, जगाई-माधाईके पास जाकर प्रभुका आदेश सुनावें। हमारे ऊपर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने अपना आदेश प्रचारित करनेका भार दिया है। अपना कार्य हम करें। यदि ये लोग कृष्ण-नाम नहीं लेते तो प्रभु इसका उपाय करेंगे।" इतना कहकर दोनों आदमी कृष्ण-स्मरण करके जगाई-माधाईके पास चले।

जगाई-माधाईके पास गमन

सबने नित्यानन्द और हरिदासको जगाई-माधाईके पास जानेसे मना किया, परन्तु उन्होंने लोगोंकी बात नहीं सुनी। जगाई-माधाई मद्यपानमें उन्मत्त होकर नदियाके राजपथपर पड़े-पड़े शृगाल-कुत्तेके समान मारामारी और गाली-गलौज कर रहे थे। जिसको सामने देखते थे, उसीको मारते थे और अंट-शंट गाली बकते थे। सबलोग उनसे डरकर भाग जाते थे। बहुत-से लोग दूर-ही-से खड़े-खड़े यह तमाशा देखते थे। इसी समय पतितपावन श्रीनित्यानन्दप्रभुने हरिदास ठाकुरको साथ लेकर उनके सामने उपस्थित होकर आदरपूर्वक पुकारकर उनको प्रभुका आदेश सुनाया—

बोल कृष्ण, भज कृष्ण, लह कृष्ण-नाम।
कृष्ण माता, कृष्ण पिता कृष्ण धन-प्राण॥
तोमा सभा लागिया कृष्णेर अवतार।
हेन कृष्ण भज सब छाड़ अनाचार॥

चै. भा. म. १३.८१,८२

श्रीनित्यानन्दप्रभुकी बात सुनकर जगाई-माधाईने सिर उठाकर एक बार उनकी ओर क्रोधभरी दृष्टिसे देखा। उनके मदसे लाल और विघूर्णित नेत्र अधिक रक्तवर्ण हो रहे थे। क्रोधसे उन्मत्त होकर दोनों आदमी पृथिवीपरसे उठे और 'पकड़ो, पकड़ो' कहकर श्रीनित्यानन्दप्रभु और हरिदास ठाकुरके पीछे दौड़े। उनके वीभत्स और भीषण गाली-गलौजसे डरकर दोनों आदमी उलटे साँस भाग खड़े हुए; परन्तु जगाई-माधाई भी उनके पीछे दौड़े। सज्जनलोग यह देखकर संन्यासीद्वयकी विपद्की आशङ्कासे बहुत चिन्तित हुए। पाखण्डियोंका दल मन-ही-मन हँसने लगा। कोई उनकी सहायताके लिए नहीं गया। आगे-आगे श्रीनित्यानन्दप्रभु और पीछे हरिदास ठाकुर, दोनों व्यक्ति प्राणपनसे उलटे साँस दौड़ रहे हैं। जगाई-माधाई बड़े बलवान् हैं। मद्य-पानसे उन्मत्त-से होकर उन्होंने प्राणपनसे भागते हुए दोनों प्रभुओंके पास पहुँचकर उन्हें पकड़नेकी चेष्टा की। तब प्राणके भयसे भयभीत होकर श्रीनित्यानन्द हाँफते-हाँफते बोले—"वैष्णव होनेका अच्छा फल मिला। यदि आज प्राणरक्षा हुई तो समझूँगा कि प्रभुकी दया है।" हरिदासने कहा—"ठाकुर! क्या बोलते हो? तुम्हारी बुद्धिके दोषसे ही आज जान पड़ता है, मद्यपीके हाथोंसे हमारी अपमृत्यु होगी। ठाकुर! तुमने मद्यपीको कृष्ण-नाम लेनेका उपदेश देकर ही यह सर्वनाश उपस्थित किया; अब इनका दण्ड भोगो! इनका दण्ड प्राणान्त है।"

दोनों प्रभुओंके मनमें तब बड़ा भय उत्पन्न हुआ। हरिदास ठाकुरकी बात सुनकर श्रीनित्यानन्द-प्रभु इतने कष्टमें भी हँसे बिना न रह सके। दोनों ही आदमी स्थूल देहके भारसे पीड़ित थे, दौड़ते-दौड़ते उनके प्राण कण्ठगत आ गये; तथापि जगाई-माधाईने उनका पीछा न छोड़ा। जगाई-माधाईने उनको पुकारकर भयके ऊपर और भी भय दिखाते हुए उच्च स्वरसे कहा—"भागकर कहाँ जाओगे? आज जगाई-माधाईके हाथसे कैसे छूट पाओगे? तुम नहीं जानते, ये कौन है? जरा ठहरकर पीछे मुड़कर तो देखो!"

—इतना कहकर दोनों दुष्ट गर्जना करते उनके पीछे दौड़े।

हरिदास ठाकुर और श्रीनित्यानन्दप्रभु प्राणभयसे 'कृष्ण! रक्षा करो!!—गोविन्द! रक्षा करो!!'—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहते हुए प्राण लेकर भाग रहे हैं। कुछ दूर जानेपर हरिदास ठाकुर आगे दौड़ न सके और श्रीनित्यानन्द-प्रभुको लक्ष्य करके बोले—"हा कृष्ण ! मैं अब अधिक दौड़ नहीं सकता। इस चञ्चल अवधूत प्रभुके सङ्ग आनेसे मेरा प्राण गया। कालयवनके हाथोंसे कृष्णकी कृपाके बलसे मैंने त्राण पाया, परन्तु इस चञ्चल अवधूत प्रभुके हाथोंमें पड़कर जान पड़ता है कि अब प्राण जायँगे।" श्रीनित्यानन्दप्रभु हरिदास ठाकुरकी आर्त और कातर वाणी सुनकर दुःखित हुए, परन्तु मनका भाव छिपाकर गम्भीरता-पूर्वक बोले—

"मैं चञ्चल नहीं हूँ। मनमें जरा विचार करके तो देखो, चञ्चल तो तुम्हारे प्रभु ही हैं कि जो ब्राह्मण होकर राजाज्ञा-सी देते हैं। उन्हींकी आज्ञासे तो हम घर-घर सुनाते फिर रहे हैं। उनकी आज्ञा भी ऐसी अनोखी है कि कहीं सुनी नहीं गयी। इसीलिए लोग हमको 'चोर-ढोंगी' कहते रहते हैं। हम उनकी आज्ञा न मानें तो भी मुश्किल और उसका पालन करते हैं तो ऐसा फल मिलता है। अपने प्रभुके दोष तो तुम देखते नहीं। इनको हम-दोनोंने ही प्रभुकी आज्ञा सुनायी और दोष तुम मुझ अकेलेको देते हो।"

प्रभुके ऊपर अभिमान करके श्रीनित्यानन्दप्रभु हरिदास ठाकुरके साथ इस प्रकार मजाक करते हुए दीर्घ-श्वास लेते नदियाके रास्तेपर भागे जा रहे हैं और एक-एक बार भयसे पीछे देख लेते हैं। इस प्रकार जब वे प्रभुके निवासस्थानके पास पहुँचे तो देखा कि उन विप्र-दस्युओंने उनका पीछा करना छोड़ दिया है। यह देखकर दोनों आदमियोंकी जान-में-जान आयी।

जगाई-माधाई मद्यके नशेमें चूर होकर जमीन-पर गिरकर धरा-धरी और ठेला-ठेली करते हुए पड़ गये। मद्यके नशेमें उनको यह ज्ञान न रहा कि कहाँ थे और कहाँ आ गये।

प्रभुके पास प्रत्यागमन

नित्यानन्दप्रभु और हरिदास ठाकुर स्थिर होकर प्रेमानन्दसे गले-गले मिलकर हँसते-हँसते प्रभुके मन्दिरमें आकर उपस्थित हुए। प्रभु उस समय अपने मन्दिरमें भक्तगणोंसे वेष्टित होकर कृष्ण-कथारसमें मग्न थे। उसी समय श्रीनित्यानन्दप्रभु हरिदास ठाकुरके साथ प्रभुके सामने जाकर अपने प्रति दिनके कार्यका विवरण देते हुए बोले—"आज दो अनोखे ही व्यक्ति मिले, पूरे शराबी, कहनेको ब्राह्मण। उनके भलेके लिए हमने उनको कृष्ण-नाम लेनेको कहा तो वे हमपर टूट पड़े। हम किसी प्रकार प्राण बचाकर आये हैं।"

प्रभुने इस समाचारको सुनकर चकित होकर पूछा—"उन दोनोंका नाम क्या है ? ब्राह्मण संतान होकर वे ऐसी दुर्गतिको क्यों प्राप्त हुए ?" सर्वज्ञ प्रभु सब जानते हैं। श्रीनित्यानन्दकी महिमाका जगत्में प्रचार करनेके लिए उन्होंने ही यह लीला की है। जगाई-माधाई-उद्धार श्रीश्रीमहाप्रभुकी नवद्वीप-लीलाका प्रधान अङ्ग है। श्रीनित्यानन्दप्रभुके द्वारा श्रीगौर-भगवान् पतितोद्धार-कार्य कर गये हैं। जगाई-माधाई-उद्धारका कार्य प्रभुने स्वयं क्यों लिया, यह श्रीनित्यानन्दप्रभुकी बातसे आगे स्पष्ट हो जायगा।

श्रीवास और गङ्गादासपण्डित प्रभुके सामने बैठे थे। उन्होंने जगाई-माधाईकी गुण-कीर्तिकी व्याख्या करते हुए प्रभुसे कहा—

"इन दोनोंका नाम जगाई-माधाई है। दोनों ब्राह्मणपुत्र हैं। सङ्ग-दोषसे उनकी ऐसी मति हो गयी है कि जन्मसे ही मदिराके अतिरिक्त और कुछ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं जानते। उन दोनोंसे नदियाके सबलोग डरते हैं। ऐसा कोई नहीं,जिनके यहाँ ये चोरी नहीं करते। इन दोनोंके पापोंका वर्णन नहीं हो सकता। आपको तो सब मालूम ही है।"

प्रभु यह बात सुनकर क्रोधाविष्ट हो गये। चतुरचूड़ामणि प्रभुने मनके भावको छिपाकर कहा—"उन दोनोंको मैं जानता हूँ। मेरे पास आनेपर मैं उनको खण्ड-खण्ड कर दूँगा।" श्रीनित्यानन्दप्रभु सामने खड़े थे। जगाई-माधाई-उद्धार-साधन-कार्य उनके मनमें सदा जाग्रत रहा। समय देखकर अभिमानपूर्वक उन्होंने प्रभुसे कहा—"धार्मिक लोग तो कृष्ण-नाम लेते ही हैं, यदि तुम इन दोनों दुराचारी धर्मज्ञान-शून्य मद्यपी ब्राह्मण-पुत्रोंको केश पकड़कर कृष्ण-नाम जपा सको तो तुम्हारा 'पतितपावन' नाम धारण करना सार्थक हो जायगा।"

श्रीनित्यानन्दप्रभुकी अन्तिम बात बहुत मधुर है। स्वंयं गौराङ्गप्रभु दैन्यके अवतार हैं, उनके पार्षद दीनभावकी खानि हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभुने वैष्णवके सर्वप्रधान गुण इस अपूर्व दीनताका पूर्ण परिचय देते हुए कहा—

आमारे तारिया जत तोमार महिमा।
ततोधिक ए दोंहार उद्धारेर सीमा॥

चै. भा. म. १३.१२९

श्रीनित्यानन्दप्रभुकी बात सुनकर हँसते हुए सर्वज्ञ प्रभु बोले—"श्रीपाद! उनका उद्धार हो गया है। तुमने जब कृपा करके उनको दर्शन दे दिया है और उनकी मङ्गल-कामना करते हो तो कृष्ण शीघ्र उनपर कृपा करेंगे।" प्रभुकी यह बात सुनकर भक्तवृन्द आनन्दसे हरि-ध्वनि करने लगे। सबने समझ लिया कि अब जगाई-माधाईका उद्धार हो गया। इतने दिनोंमें अब उनके पाप नष्ट हो गये। श्रीश्रीगोर-नित्यानन्दने उनपर कृपा की है।

जगाई-माधाईका घर गङ्गाके तीरपर था। वे बड़े लोग थे। अर्थ देकर नवद्वीपके मुसलमान काजीको अपने हाथमें करके वे लोग नदियाके आदमियोंके ऊपर बड़ा अत्याचार करते थे। एक-एक मुहल्लेमें वे दोनों भाई अपने दल-बलके साथ अड्डा जमाते थे। जिस मुहल्लेमें जिस दिन वे इस प्रकार रहते थे, उस दिन उस मुहल्लेके लोग घरसे बाहर नहीं निकलते थे। विशेषतः रातमें घरसे बाहर निकलना विशेष विपत्ति-जनक था।

जगाई-माधाई-उद्धारकी तैयारी

श्रीवासपण्डितका घर गङ्गाके किनारे था। जिस घाटपर प्रभु कीर्तनसे श्रान्त होनेपर दल-बलके साथ वे नैश-स्नान करते थे, उसी घाटपर जगाई-माधाईने दल-बलके साथ एक दिन अड्डा जमाया। वह घाट श्रीवासके आँगनके बहुत समीप था। मुहल्लेके लोग सशङ्कित हो गये। प्रभुने नियमपूर्वक रातमें श्रीवासके आँगनमें भक्तोंको लेकर कीर्तन आरम्भ किया। बारम्बार हरि-ध्वनिसे श्रीवासका आँगन ध्वनित हो उठा। मृदङ्ग, मंजीरा, करताल और शङ्खकी ध्वनिसे चतुर्दिक् ध्वनित हो उठा। जगाई-माधाई मद्यपानमें उन्मत्त होकर कीर्तनका वाद्य सुनकर रङ्गमें आकर नृत्य करने लगे। दूरसे कीर्तनकी ध्वनि सुनकर उनके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। प्रभु कभी-कभी सारी रात कीर्तनानन्दमें मग्न रहते थे।

श्रीवासके आँगनका द्वार खोलकर भोरमें जब वे उस दिन भक्तलोगोंको साथ लेकर गङ्गा-स्नानके लिए बाहर निकले तो सामने देखा कि दो मद्यपी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ब्राह्मण-संतान नाना प्रकारसे कुत्सित अङ्ग-संचालन कर रहे हैं। जगाई-माधाई प्रभुको पहचानते थे। उनको सामने देखकर उन्होंने कहा—"निमाई-पण्डित! तुमने यहाँ रातमें जो मङ्गलचण्डीका प्रीति-गान किया, वह हमको बहुत अच्छा लगा। हम घरपर सब प्रबन्ध करके एक दिन तुम्हारा प्रीति-गान करावेंगे।" भक्तगण जगाई-माधाईको देखकर भयसे दूर भाग गये। प्रभु उन दुर्वृत्त लोगोंकी बातपर ध्यान न देकर दूसरे रास्तेसे गङ्गाके तीर चले गये।

उस दिन भक्तगणको प्रभुकी कृपासे विपद्से छुटकारा मिला। जगाई-माधाईने न-जाने क्या सोचकर उस दिन किसीको कुछ नहीं कहा।

प्रभुकी जगाई-माधाई-उद्धार-लीला श्रीचैतन्य-भागवत और श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थोंमें विभिन्न प्रकारसे वर्णित है। मूल लीला-कथामें कोई विभिन्नता नही है; परन्तु जगाई-माधाईके उद्धारके दिन प्रभुके आदेशसे महासंकीर्तन-यज्ञका अनुष्ठान और समस्त भक्तवृन्दके साथ प्रभुका स्वयं श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ जगाई-माधाईके घर जानेके सम्बन्धमें उपर्युक्त दोनों ग्रन्थोंमें मतैक्य नहीं है। श्रीचैतन्यभागवतकार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है कि "श्रीवासके आँगनके द्वारपर जगाई-माधाईने जिस दिन प्रभुकी नैश-कीर्तन-लीला-श्रवण करनेके बाद कहा था कि 'तुम्हारा मङ्गल-चण्डीका गान हमको बहुत अच्छा लगा है, हमारे घर तुम्हें एक दिन यह गान गाना पड़ेगा।' उसके दो-एक दिनके बाद श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ नदियाके मार्गमें संध्याकालमें उन दोनों नशेबाजोंने अत्याचार किया था। नित्यानन्दके श्रीअङ्गपर आघात किया था और उससे रक्तपात हुआ था। प्रभुके पास जब लोगोंने जाकर यह समाचार दिया, तब वे क्रोधाविष्ट होकर तत्काल सुदर्शनचक्रको स्मरण करने लगे।"

श्रीचैतन्यमङ्गलमें ठाकुर लोचनदासने लिखा है—"प्रभु सब भक्तोंको अपने मन्दिरमें एकत्रित करके महासंकीर्तनके साथ जगाई-माधाईका उद्धार करनेके लिए उनके घरकी ओर चले। उस समय जगाई-माधाई अपने घरमें सोये थे। कीर्तन-ध्वनि सुनकर वे जाग पड़े और प्रभुके दलके लोगोंके साथ युद्ध करने लगे। उनको कटु वचन कहकर गाली देने लगे। इस युद्धमें श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीअङ्गमें माधाईने कलसीके किनारेसे आघात किया; उससे उनके श्रीअङ्गसे खून बहने लगा। यह देखकर प्रभुने क्रुद्ध होकर सुदर्शन-चक्रको स्मरण किया।"

श्रीचैतन्य-भागवतकार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर श्रीनित्यानन्दप्रभुके कृपापात्र थे; उनके मन्त्रशिष्य थे। उन्होंने उनके श्रीमुखसे श्रीगौराङ्ग-लीला-श्रवण करके लिखी है। दूसरी ओर श्रीचैतन्य-मङ्गलके रचयिता ठाकुर लोचनदास श्रीनरहरि सरकार ठाकुरके मन्त्रशिष्य तथा कृपापात्र थे। श्रीनरहरि सरकार ठाकुरने अपनी आँखों गौराङ्ग-लीला-दर्शन करके अपने प्रिय शिष्यके द्वारा उसको लिपिवद्ध कराया है। अतएव उभय श्रीग्रन्थोक्त वर्णन प्रामाणिक और सत्य हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। परन्तु जिसने जिस भावमें सुना, उसने उसी भावमें लीलाका वर्णन किया है। श्रीचैतन्यमङ्गल श्रीपाद मुरारिगुप्तके करचाके अनुसार लिखा गया है। मुरारिगुप्तका करचा श्रीगौराङ्ग-लीलाका आदि-ग्रन्थ है। कृपालु पाठक देखेंगे कि जगाई-माधाई-उद्धार-लीलाकी मूल घटनाके विषयमें कोई अनैक्य नहीं है। परमदयालु श्रीनित्यानन्द-प्रभुने मार खाकर दया की थी; जगाई-माधाईने उनको और प्रभुको साक्षात् भगवान्के अवतारके रूपमें देखकर उनके श्रीचरणोंमें तत्काल आत्म-समर्पण किया था—इन सब मूल तत्त्वोंमें सब एकमत हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीचैतन्यभागवतमें लिखा है कि जगाई-माधाईने श्रीवास-आँगनके द्वारपर प्रभुको देखकर परम आनन्दपूर्वक उनको अपने घरपर गीत गानेके लिए निमन्त्रित किया था। करुणामय भक्तवत्सल प्रभु इसी कारण करुणा करके उनके अनुरोधकी रक्षा करके जगाई-माधाईके घरपर जाकर उपस्थित हुए। जगाई-माधाई कौन थे ? वे श्रीगौराङ्ग-भगवान्‌के नित्यपार्षद वैकुण्ठके द्वारपाल थे। भक्तके भगवान्‌ने भक्तकी मनोकामना पूर्ण की। जगाई-माधाईने मङ्गलचण्डी-गीत सुननेकी इच्छा प्रकट की थी, दयामय प्रभुने उनके घर जाकर उसके बदलेमें मधुर हरिनाम सुनाया। जगाई-माधाई-उद्धार-लीला गूढ़ रहस्यसे भरी है। इन रहस्योंका उद्‌घाटनकर जो लोग इस लीलाका अनुशीलन और रसास्वादन करेंगे, वे प्रभुकी अयाचित कृपाका अनुभव करके परम प्रेमाकुल होकर रो पड़ेंगे। प्रभुके पतितपावन नामके साक्षी जगाई-माधाई हैं। पतितपावन प्रभुकी कृपासे इन महापापी जगाई-माधाईकी कलिके ऋषि-मुनियोंके रूपमें गणना हो गयी है। स्वयं श्रीगौराङ्गप्रभु कृपा करके उनको निज-शक्ति प्रदान करके जगत्-पूज्य कर गये हैं।

दयामय प्रभुकी दया अपरम्पार है। ऐसे दयामय, ऐसे करुणामय प्रभुको छोड़कर और किसको भजें ? ठाकुर नरोत्तमदासने यथार्थ ही लिखा है—

अरे भाइ भज मोर गौराङ्ग-चरण।
ना भजिया मैनु दुःखे, डूबि गृह विष-कूपे,
दग्ध कैल ए पाँच पराण॥
तापत्रय विषानले, दिवा-निशि हिया ज्वले,
देह सदा हैल अचेतन।
रिपुवशेन्द्रिय हलो, गोरापद पाशरिल,
विमुख हैल हेन धन॥
हेन प्रभु दयामय, छाड़ि सब लाज भय,
काय मन लओरे शरण।
पतित-पाखण्डी छिल, तारे गोरा उद्धारिल,
तारा हल पतितपावन॥
गोरा द्विज नटराजे, बाँधह हृदय माझे,
कि करिबे संसार-शमन।
नरोत्तमदासे कय, गोरा सम केह नय,
ना भजिते देन प्रेमधन॥

उद्धार-लीला

अब चैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थके अनुसार प्रभुकी जगाई-माधाई-उद्धार-लीलाका वर्णन किया जा रहा है—

एक दिन नदियाके सब भक्तगण परामर्श करके प्रभुके घर जाकर अपराह्णमें उनके चरणोंमें दुराचारी जगाई-माधाईके अत्याचारकी कथा निवेदन करके उनके उद्धारके लिए प्रार्थना करने लगे तो दयामय, पतितपावन प्रभुने उनसे कहा—'प्राचीन कालमें अजामिल नामका एक महापापी ब्राह्मण था, जगाई-माधाई उससे भी बढ़कर पापी हैं। इनके उद्धारका उपाय निश्चित न कर सकनेके कारण मैं बहुत चिन्तित हो रहा हूँ। इनके उद्धारका एकमात्र उपाय है—इनको हरिनाम-महामन्त्र प्रदान करना। आओ ! सब मिलकर आज हरिनाम-संकीर्तन करते हुए उनके घर जाकर हरिनाम-महामन्त्रके बलसे इन दोनों दस्युओंका उद्धार करके हरि-नामके माहात्म्यका प्रचार करेंगे।'

प्रभुका कृपादेश सुनकर भक्तवृन्द आनन्दसे उन्मत्त हो गये। श्रीनित्यानन्दप्रभुके उद्योगसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदियाकी भक्तमण्डलीने प्रभुके सामने जगाई-माधाईके उद्धारकी बात उठायी। वे प्रेमानन्दमें दोनों बाहु ऊपर उठाकर उद्धत्त नृत्य करने लगे। श्रीअद्वैतप्रभु, हरिदास ठाकुर, श्रीवासपण्डित और उनके चारों भाई, मुरारिगुप्त, मुकुन्ददत्त, चन्द्रशेखर आचार्यरत्न, गदाधरपण्डित, ठाकुर नरहरि, शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी आदि-आदि सभी मन्दिरमें एकत्रित हुए। जहाँ जो भक्त थे, सब आये।

प्रभुके श्रीमन्दिरमें महासंकीर्तन-यज्ञका अनुष्ठान हुआ। सभी कीर्तनानन्दमें मत्त हो गये। बारंबार हरि-ध्वनिसे नदिया-गगन ध्वनित हो उठा। गगन-भेदी जय-ध्वनिसे नदिया-निवासियोंके हृदयमें आनन्दकी तरङ्गें उठने लगीं। प्रेम लहराने लगा। मृदङ्ग और करतालके मधुर निनादसे सबके प्राण मत्त हो उठे। चतुर्दिक् केवल हरि-ध्वनि सुनायी देने लगी। संकीर्तनके आरम्भमें जगाई और माधाई-उद्धार-पर्वके शुभ उद्बोधन बने। प्रभु स्वयं कीर्तनमें आगे-आगे मधुर नृत्य करते हुए जा रहे थे। उनके साथ श्रीनित्यानन्दप्रभु उद्दण्ड नृत्य कर रहे थे। उनके पीछे श्रीअद्वैतप्रभु और हरिदास ठाकुर थे।

हरि-संकीर्तनके आगे-आगे नदिया-नागर श्रीगौराङ्गसुन्दर मधुर भुवनमोहन वेषमें मधुर नृत्य करते चल रहे हैं उनके गलेमें सुन्दर मालती-की माला है, चरणोंमें नूपुर है। वे लाल पाढ़की धोती पहने हैं। नदिया-विनोद श्रीगौराङ्ग राय हिलते-डुलते, राग-रङ्गमें कमर हिलाते, मधुर नयन-रञ्जन नृत्य-विलास करते हुए नदियाके राज-पथपर जा रहे हैं। प्रेमावेशमें एक-एक वार गदाधरके अङ्गपर प्रेमसेलुढ़क पड़ते हैं। भक्तवृन्द एकटक प्रभुकी अपरूप-रूप-सुधाका पान करके मन और प्राणको शीतल कर रहे हैं। वे भावावेशमें मत्त होकर मानो अपनी आँखोंको खोल नहीं पाते हैं। कभी आजानुलम्बित दोनों भुजाओंको डुलाते हैं, कभी ऊपर उठाकर उच्च स्वरसे हरि-ध्वनि करते हैं। उनके प्रत्येक हाव-भावमें अपूर्व शोभा दृष्टिगोचर हो रही है। कीर्तनसे श्रान्त शरीरमें पसीनेकी बूँदोंसे मानो अमृत स्रवित हो रहा है।

अब प्रेममय नित्यानन्दप्रभुकी बातें सुनिये। वे प्रभुके साथ थे; प्रभु आगे थे और वे पीछे थे। अब वे आगे-आगे दौड़ते हुए चल रहे हैं; उनके मनमें आज बड़ा आनन्द है। जगाई-माधाईका उद्धार करनेके लिए परमदयाल पतित-पावन निताई-चाँदने आज कमर कस ली है। सबके आगे उद्दण्ड नृत्य करते हुए वे चल रहे हैं; कोपीन पहने हैं; सिरपर नाना प्रकारके वस्त्रोंकी लटपटी पाग है, गलेमें नाना वर्णोंकी माला है। मुखमें मधुर हरि-नाम है। जगाई-माधाईका घर समीप देखकर निताई-चाँदने अपना उण्दड नृत्य बंद कर दिया; वे तब धीरे-धीरे चलने लगे। भावावेशमें उनके अङ्ग काबूमें नहीं हैं।

अपने घरमें सोकर जगाई-माधाई उस समय नींद ले रहे थे। हरि-संकीर्तनके उच्च नादसे दोनों भाइयोंकी नींद टूट गयी। जो दिन-रात मद्यपानमें रत रहते हैं, उनके लिए नींदका कोई निश्चित समय नहीं रहता। उस समय अपराह्न-काल था; संध्या होनेवाली थी। जगाई-माधाईने सारी रात जागकर मद्यपान किया था, अबतक उनकी नींद नहीं टूटी थी। कीर्तनका उच्च नाद सुनकर उनकी निद्रा भङ्ग होनेपर वे क्रुद्ध हो उठे; दोनों भाइयोंने चारपाईपर सोये-सोये नौकरोंको आदेश दिया कि "इनको दूसरे रास्तेसे चुपचाप जानेके लिए कह दो! यदि प्राण प्यारा है तो शोरगुल न करें। इस आदेशपर ध्यान नहीं देनेपर वे जाति, कुल, प्राण—सबसे हाथ धो बैठेंगे!"

जगाई-माधाईका दूत आकर प्रभुके सामने दम्भपूर्वक सारी बातें कह गया। प्रभुने मधुर हँसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हँसकर तथा भोंहें टेढ़ी करके प्रेमानन्दमें विभोर होकर दोनों बाहु ऊपर उठाकर वज्र-गम्भीर स्वरमें हरि-हरि-ध्वनि करके भक्तवृन्दको और अधिक उत्साहित किया। सबलोग दूने उत्साह और अनुरागके साथ बारंबार हरि-ध्वनि करने लगे। तब जगाई-माधाई इसको अधिक सहन न कर सके। दोनों भाई तब चारपाई छोड़कर घरसे बाहर आये। मद्यपानके कारण उनका सारा अङ्ग अलसाया था। पहना वस्त्र गिर-गिर पड़ता था; दोनोंकी आँखें लाल-लाल थीं। क्रोधसे बेसुध होकर वे घरके द्वारपर खड़े होकर सबको क्रुद्ध दृष्टिसे देखने लगे। चारों ओर देखकर बीभत्स और भीषण तर्जन-गर्जन करते हुए कीर्तन-स्थलकी ओर अग्रसर होकर बोले—"आज नदियाके सब वैष्णवों-को हम मार डालेंगे!" सबको कटु वचन कहकर गालियाँ देने लगे। यह देखकर भक्तगण बहुत भयभीत हुए। परन्तु संकीर्तन दूने उत्साहसे चलने लगा। बारंबार हरि-ध्वनिसे नदिया-नगर प्रकम्पित हो उठा।

जगाई-माधाई भुवनमङ्गल हरि-ध्वनिको सहन न करके दौड़कर भक्तोंको मारनेके लिए तैयार हो गये। वहाँ सभी थे। परमदयालु निताई-चाँदके कोमल प्राण जगाई-माधाईके उद्धारके लिए रो पड़े। उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे दोनों भाइयोंके प्रति शुभ दृष्टिपात किया और आकर उनके सामने खड़े हो गये।

महापापियोंका हृदय बड़ा कठिन होता है। श्रीनित्यानन्दप्रभुके आर्तिपूर्ण अश्रु-सिक्त वदन-कमलको देखकर भी जगाई-माधाईका कठिन प्राण द्रवित न हुआ। उन्होंने देखा कि उनका वही पूर्व-परिचित संन्यासी लोगोंको इकट्ठा करके कीर्तन करते हुए उनको पकड़ने आया है। अवधूत संन्यासीकी आँखोंमें अश्रुधारा क्यों हैं—वे दोनों पाखण्डी यह कैसे समझेंगे? जीवकी दुर्गति देखकर परमदयालु निताई-चाँद रोते-रोते व्याकुल हो रहे हैं। उनके मर्मकी बात महापापी जगाई-माधाई क्या समझेंगे? रोते-रोते प्रेममें भरे श्रीनित्यानन्दप्रभु धीरे-धीरे जगाई-माधाईके सामने अग्रसर हो रहे थे, यह देखकर उनका क्रोध चौगुना बढ़ गया। वे क्रुद्ध होकर उनके सामने आये।

जगाई-माधाई दोनों भाइयोंमें जगाई अपेक्षाकृत कुछ अच्छे थे। उन्होंने अवधूत नित्यानन्दप्रभुके सामने आकर देखा कि वे रो रहे हैं। नयनाश्रुओंसे उनका वक्षःस्थल बहा जा रहा है। उनके प्रसन्नमुख और प्रशान्त आकृतिमें वैरभाव लेशमात्र भी नहीं हैं। जीवकी दुर्गति देखकर पतितपावन परम-दयालु निमाई-चाँद रो-रोकर व्याकुल हो रहे थे। यह देखकर जगाईका कठिन हृदय कुछ द्रवित हुआ। वह स्तम्भित होकर उनके सामने कुछ देरतक खड़ा रहा। करुणाके अवतार परमदयालु पद्मावती-नन्दन श्रीनिताई-चाँद तब रोते-रोते जगाईसे बोले—

"आय रे जाह्नवी तीरे दुटि भाइ।
आज तोदेर हरिनाम दिब रे जगाइ-माधाइ॥"

जगाईने निःस्तब्ध होकर श्रीनित्यानन्दप्रभुकी यह आकुल प्रेमाह्वानकी बात सुनी; परन्तु दुष्ट माधाईने क्रोधोन्मत्त होकर सामने कुछ न पाकर एक फूटे घड़ेका ठीकरा लेकर दयालु निताई-चाँदके सिरको लक्ष्य करके जोरसे चलाया। वह श्रीनित्या-नन्दप्रभुके श्रीमस्तकपर बहुत जोरसे लगा।

चोट बहुत जोरसे लगी; उनके मस्तकसे रक्तकी धारा बह चली। सदानन्द परमदयालु निताई-चाँदने उसपर ध्यान नहीं दिया। वे प्रेमानन्दमें "गौर-गौर" कहते हुए मधुर-नृत्य करने लगे। उपस्थित भक्तवृन्द यह देखकर हाहाकार करने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीनित्यानन्दप्रभु मार खाकर आनन्दसे नृत्य करने लगे, इसमें भी निगूढ़ मर्म है। वे जगाई-माधाईके उद्धारके लिए उद्योगकर्ता थे। यह कार्य सहज-साध्य न था, इस कारण उन्होंने स्वयं इसका सारा भार अपने ऊपर ले लिया है। उनको माधाईने मारा, उनके श्रीअङ्गसे रक्तपात होने लगा, इससे उनको तनिक भी दुःख न हुआ। जगाई-माधाईका शत्रुभावमें ही प्रभुके इस कार्यके द्वारा उद्धार होगा, यह सोचकर ही दयाके सागर श्रीनित्यानन्दप्रभु आनन्दसे विभोर होकर प्रेमावेशमें नृत्य करने लगे। उन्होंने 'गौर-गौर' कहकर नृत्य क्यों किया, इसका भी रहस्य है। श्रीगौराङ्गप्रभु उनके जीवनसर्वस्व धन हैं। वे गौरके सिवा और किसीको नहीं जानते थे। भारी चोट लगनेसे उनको शारीरिक क्लेश अवश्य हुआ था। कष्टके समय, विपद्के समय अतिप्रिय पात्र पहले याद आता है। श्रीगौराङ्गसुन्दर अवधूत नित्यानन्दप्रभुके प्राण थे। पिता-मातासे भी बढ़कर थे। प्रियतम प्राणके आधारको उन्होंने विपद्के समय पुकारकर अपने अभीष्ट कार्यकी सिद्धिके लिए उनकी सहायताकी प्रार्थना की।

माधाईका क्रोध दूर न हुआ, वह पुनः घड़ेके एक टुकड़ेको हाथमें लेकर दयालु निताई-चाँदको मारनेके लिए उठा। तब जगाईने जोरसे उसके दोनों हाथ पकड़कर विनती करते हुए कहा—

"तुम बड़े निर्दय हो; तुमने ऐसा क्यों किया? परदेशीको मारकर क्या तुम बड़े बन जाओगे? बस, अवधूतको अब और नहीं मारना। संन्यासीको मारकर तुम्हें क्या लाभ होगा!"

जगाईने इस प्रकार पुनः माधाईको श्रीनित्यानन्द-प्रभुके ऊपर अत्याचार नहीं करने दिया; परन्तु परमदयालु निताई-चाँदका इधर कोई ध्यान ही न था। वे अब भी प्रेमानन्दमें विभोर होकर मधुर-नृत्य कर रहे थे। उनके मनमें आज बड़ा आनन्द था। मार खाकर परमदयालु निताई-चाँदने दोनों भाइयोंको सम्बोधन करके मधुर शब्दोंमें कहा—

"मारिलि कलसीर काना सहिबारे पारि।
तोदेर दुर्गति आमि सहिबारे नारि॥
मेरेछिस् मेरेछिस् तोरा ताहे क्षति नाइ।
(एकबार) सुमधुर हरिनाम मुखे बल भाइ॥

चै. म.

दयामय प्रभु पीछे खड़े होकर सब-कुछ देख रहे हैं, परन्तु आगे नहीं आ रहे हैं। श्रीनित्यानन्द-प्रभुके श्रीअङ्गपर जो रक्तधारा बह रही है, उसको देखकर भी मानो वे नहीं देख रहे हैं। श्रीनित्यानन्द-प्रभुकी महिमा जगत्में प्रकट करनेके लिए वे बहाना करके नृत्यानन्दमें मग्न हैं। एक भक्तने जाकर जब प्रभुसे यह खून बहनेकी बात कही, तब वे पार्षदगणके साथ दौड़कर वहाँ आये—

आथे ब्यथे लोक गिया प्रभुरे कहिला।
सङ्गे सङ्गे ततक्षण ठाकुर आइला॥

चै. भा. म. १३.१८१

आते ही खूनसे लथपथ अपने बलाईदादाको उनके भाई प्राण-कन्हाईने प्रेममें भरकर गोदमें ले लिया और अपने वस्त्रसे कपालके रक्तको पोंछ दिया। प्रभुका कोमल हृदय बड़ा व्यथित हुआ; उनके मनमें अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ। वे क्रोधाविष्ट होकर जगाई-माधाईको सम्बोधन करते हुए बोले—"रे मूढ़! तेरे समान दुराचारी जगत्में दूसरा कोई नहीं है। अवधूत संन्यासीको मारकर तुमने क्या नाम कमाया? आज प्रत्यक्ष देख, तुझे क्या दण्ड मिलता है।"—इतना कहते-कहते जब प्रभुकी क्रोधाग्नि दूनी बढ़ गयी, तब वे भगवान्-भावमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आविष्ट होकर 'चक्र-चक्र' कहकर हुंकार-गर्जन करते हुए उच्च स्वरसे चिल्ला उठे।

क्रोधसे काँपता हुआ प्रभुका शरीर, लाल-लाल दोनों कमल-नयन तथा क्रुद्ध मुख-मण्डल देखकर भक्तलोग अत्यन्त भयभीत हो उठे। श्रीनित्यानन्द-प्रभु तव महाप्रभुकी गोदसे निकल सामने आकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये। श्रीअद्वैतप्रभु, हरिदास ठाकुर, श्रीवास आदि भक्तगण प्रभुके भगवान्-भावावेशको देखकर हाथ जोड़कर सामने आकर खड़े हो गये। मुरारिगुप्त हनूमान्‌के आवेशमें हुंकार-गर्जन करके प्रभुसे बोले—"मेरे रहते आपने सुदर्शनचक्रको क्यों स्मरण किया? आदेश कीजिये, अभी तुरन्त जगाई-माधाईको यमके घर भेज दूँ।

परमदयालु श्रीनित्यानन्दप्रभुने यह सुनकर मुरारिगुप्तका हाथ पकड़ लिया। दयालु निताई-चाँद अपने सिरकी चोट एकदम भूल गये हैं। प्रभुका क्रोध और मुरारिका गर्जन-तर्जन देखकर उन्होंने समझ लिया है कि जगाई-माधाईका अब कल्याण नहीं है। अतएव मुरारिका हाथ पकड़कर विनती करके उन्होंने उनको मना लिया। इधर श्रीगौर-भगवान्‌के आह्वानसे सुदर्शनचक्र आकर प्रभुके सामने उपस्थित हो गया और हाथ जोड़कर प्रभुके आदेशके लिए प्रार्थना करने लगा। प्रभुका इस समय महामहिमामय भगवान्-भाव था। उनकी रुद्रमूर्ति हो गयी थी; उन्होंने अपने सुदर्शनचक्रको दुष्ट जगाई-माधाईका संहार करनेके लिए आदेश दे दिया। तब परमदयालु श्रीनित्यानन्दप्रभुने श्रीगौर-भगवान्‌का चरण पकड़कर रोते हुए निवेदन किया—

"प्रभो! माधाई मार रहा था, उसको जगाईने रोका है। मेरे दैवसे थोड़ा रक्त निकल आया, मुझे कोई कष्ट नहीं है। इन दोनों शरीरोंकी मुझे भिक्षा दो मुझे कोई दुःख नहीं है। तुम स्थिर होओ!"

परमदयालु निताई-चाँदने मार खाकर जगाई-माधाईके प्राणोंकी भिक्षा माँगी। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रभुको समझाते हुए कहा—"हे प्रभो! तुमने तो युग-युगमें प्राणवध करके अनेकों दैत्यों-दानवोंका उद्धार किया है। कलियुगके इन दो ब्रह्मराक्षसोंका कृपा करके सशरीर उद्धार करो! सभी कलिग्रस्त जीव पाखण्डी और धृष्ट हैं। उनको यदि इस प्रकार मार डालोगे तो जीवका निस्तार कैसे होगा? संकीर्तनके आरम्भमें तुम्हारा अवतार है, हरिनाम महा अस्त्रके द्वारा इनकी पापराशिका नाश करके इनका उद्धार करो! प्राणवध करके उद्धार करनेपर तुम्हारे पतितपावन नामकी सार्थकता न होगी, कलिग्रस्त जीवका प्रकृत उद्धार न होगा।"

श्रीगौर-भगवान्‌ने श्रीनित्यानन्दप्रभुकी बात स्थिरचित्तसे एक-एक करके सुन ली। जगाईने अपने भाई माधाईके हाथसे श्रीनित्यानन्दप्रभुकी रक्षा की है, यह सुनकर प्रभुने आनन्दसे गद्‌गद होकर भाव-संवरण किया। वे मानो सारी बातें भूल गये। जगाई उनके पास ही था; उसको कलेजेसे लगाकर करुणामय प्रभुने दृढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदानकर उसे कृतार्थ किया। प्रभुके श्रीअङ्गके स्पर्शसे उसके सारे पाप तत्काल दूर हो गये, सारी कुप्रवृत्तियाँ निवृत्त हो गयीं। वह निःस्पन्द होकर जड़वत् प्रभुके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। जगाईको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके ही हमारे करुणासिंधु प्रभु शान्त न हुए, उसको अयाचित कृपा-वर प्रदान करके कृतार्थ किया। वे जगाईसे बोले—"कृष्ण तुमपर कृपा करें! नित्यानन्दको बचाकर तुमने मुझे खरीद लिया है। जो तुम्हारी इच्छा हो, सो माँग लो। आजसे ही तुमको प्रेमभक्ति प्राप्त हो!"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जगाई प्रभुका यह अयाचित कृपा-वर प्राप्तकर प्रेमसे मूर्च्छित हो पड़े। भक्तवृन्द आनन्दसे हरि-ध्वनि करने लगे। जगाईके प्रति प्रभुकी यह अयाचित कृपावृष्टि देखकर उपस्थित वैष्णव-मण्डली व्याकुलता-पूर्वक रो पड़ी।

जगाई प्रेमानन्दमें मूर्च्छित होकर प्रभुके श्रीचरणोंमें पड़े हुए हैं। जैसे-ही प्रेमावतार प्रभुने कहा कि तुमको प्रेमभक्ति प्राप्त हो, वैसे ही जगाईके सारे अङ्ग प्रेम-पुलकित हो उठे। उनको प्रेममूर्च्छा लग गयी। श्रीभगवान्‌की कृपाके बलसे क्या नहीं हो सकता? जगाईके प्रति इस समय प्रभुको प्रेमभाव हो गया है; क्योंकि उसने माधाईके हाथसे उनके बलरामभैयाकी रक्षा की है। उनको मूर्च्छित देखकर प्रभुका कोमल हृदय द्रवित हो गया। उसके साथ ही उनको अपनी महामहिमामयी ऐश्वर्य-श्रीमूर्ति दिखलानेकी इच्छा हुई। इच्छामय प्रभुने स्नेहपूर्वक जगाईके अङ्गपर पद्म-हस्त फेरते हुए कहा—"जगाई! उठो और मेरी ओर देखो! मैंने सचमुच तुमको प्रेम-भक्ति दान दी है।"

श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीकर-कमलके स्पर्शसे जगाईकी प्रेम-मूर्च्छा भङ्ग हुई। आँखें खोलकर उन्होंने देखा कि शङ्ख, चक्र, गदा और पद्मधारी चतुर्भुज मूर्ति उसके सामने है।

जगाई पुनः मूर्च्छित होकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। दयामय श्रीगौर-भगवान्‌की कृपाका पारावार नहीं है। करुणाके अवतार हमारे प्रभु जगाईको अपना ऐश्वर्यरूप दिखलाकर ही परितृप्त न हुए और भी कुछ अपनी अपार कृपाका चिह्न दिखलानेकी उनकी प्रबल इच्छा हुई। जगाई प्रेमानन्दमें मूर्च्छित होकर प्रभुके चरणोमें पड़े थे। तब कृपानिधि प्रभुने क्या किया? अपना अज-भव-वन्दित, कमला-सेवित श्रीचरण-पद्म जगाईके वक्षःस्थलपर उठाकर रख दिया। उनके शीतल पाद-पद्मके स्पर्शसे जगाईकी मूर्च्छा दूर हो गयी। तब वे उठ बैठे ओर प्रभुके चरणोंको पकड़कर प्रेममें भरकर रोने लगे। भक्तवृन्द यह देखकर प्रेमानन्दमें बारम्बार हरि-ध्वनि करने लगे। लोग प्रभुका जय-जयकार करने लगे।

इधर माधाई कुछ दूर खड़ा होकर सब-कुछ देख रहा था। उसके मुँहसे बात नहीं निकल रही थी। माधाईके मुखका भाव देखकर स्पष्ट बोध होता था कि उसका पापसे कलुषित चित्त शुद्ध हो गया है। श्रीभगवान्‌के साक्षात्कारसे यदि जीवका चित्त प्रसन्न या शुद्ध नहीं होता है तो फिर कैसे होगा? जगाई-माधाई नदियाके राजा हैं, दुष्ट-शिरोमणि हैं, महापापी हैं। जबसे जन्म लिया है, 'भय' किसे कहते हैं—वे नहीं जानते। कभी किसीके मुखसे उच्च बातें नहीं सुनते, कोई उनको दण्ड देनेका साहस नहीं करता। आज अचानक जगाई नदियाके निमाईपण्डितके पैरोंमें पड़कर महान् अपराधीके समान फुफकार मारकर रो रहा है। यह देखकर माधाईके मनका भाव बदल गया। उसको चेतनता प्राप्त हुई। उसने सोचा, निमाईपण्डित तो साधारण आदमी नहीं हैं; उसने उनके अपरूप-रूपके विषयमें सोचा, उनकी असाधारण शक्तिके विषयमें सोचा, उनके असीम गुणोंके विषयमें सोचा। यह सब सोचते-सोचते उसका मन निर्मल हो गया, चित्त प्रसन्न हो गया। श्रीभगवान्‌के रूप, गुण और शक्तिकी बात सोचते रहनेसे यदि चित्त निर्मल न होगा तो फिर कैसे होगा?

माधाई जड़वत् निःस्पन्दभावसे खड़ा होकर प्रभुकी अपरूप-रूप-राशिका दर्शन कर रहा है; उनकी रूप-सुधा-पान कर रहा है तथा उनकी असीम शक्ति और अनन्त गुणराशिकी बात सोचता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। वह मानो ध्यानमग्न है। वस्तुतः है भी यही बात। श्रीभगवान्‌के रूप-गुणका स्मरण, मनन और चिन्तनका नाम ही 'ध्यान' है। माधाई वस्तुतः ध्यान-मग्न है।

कृपालु पाठकवृन्द! अब एक बार परमदयालु श्रीनिताई-चाँदके पास आवें। उन्होंने जब प्रभुका चरण पकड़कर सुदर्शनचक्रके हाथसे जगाई-माधाईके प्राणोंकी रक्षाकी भीख माँगी तो करुणामय प्रभु प्रेमावेगमें श्रीनित्यानन्दप्रभुको गोदमें लेकर अजस्र आँसू बहाने लगे। प्रभुने श्रीनित्यानन्दकी महिमाका प्रचार करनेके लिए इस लीलाका अभिनय किया। वे रोते-रोते श्रीनित्यानन्दप्रभुसे बोले—"पतित-पावन नित्यानन्द! तुमको भजनेसे जीव प्रेमधन पाता हैं। तुमसे ही कलिके जीवोंका उद्धार होगा। तुमसे बढ़कर कृपाका समुद्र और कोई नहीं है। मैं तुम्हारे वशमें हूँ। जो तुमने कहा, वहीं मैं निश्चयपूर्वक करूँगा। जो जन्म लेकर एक बार नित्यानन्दका स्मरण करता है वह पवित्र हो जाता है और मेरा बन जाता हैं।"

चै. म.

—इतना कहकर प्रभुने अपने वस्त्रके द्वारा श्रीनित्यानन्दप्रभुके रक्त बहते हुए सिरको बाँध दिया। श्रीनित्यानन्दप्रभु अनन्तदेव हैं, धरणीधर हैं। उनके शरीरका रक्त यदि एक बूँद भी पृथ्वीपर गिरता है तो उससे जगत्‌का अमङ्गल होगा, सृष्टिका नाश हो जायगा; इसी कारण सर्वज्ञ प्रभुने यह कार्य किया। इसके बाद कृपानिधि प्रभुने जगाईपर कृपा की।

अब माधाईकी बात सुनिये! माधाई जड़वत् खड़ा है। उसके दुष्कर्मका जीवनभरका साथी, उसका आजन्म पाप-सहचर, उसका भाई नदियाके निमाईपण्डितके दोनों रक्तकमल-चरणको वक्षःस्थलपर धारण करके नदियाके राजपथपर धूलिमें लोटकर रो रहा है—यह देखकर माधाईका कठिन प्राण द्रवित हो गया। मन-प्राण और हृदयके द्रवित हुए बिना भक्तिरस नहीं मिलता। प्रभुके दर्शनसे माधाईकी भी चित्तशुद्धि हुई है। उसका भी सारा पाप नष्ट हो गया है। वह भी तब अपने भाईके समान प्रभुके चरणोंमें आत्मसमर्पण करनेके लिए उद्यत हुआ; परन्तु प्रभुने उनकी ओर नहीं देखा। माधाई, जब 'मेरी रक्षा करो! मैं महापापी हूँ'—इतना कहकर दौड़कर प्रभुके चरणोंमें धड़ामसे जा गिरा, तब क्रोधका नाट्य करके प्रभु कुछ पीछे हटे। यह देखकर दयाके सागर अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुके कोमल हृदयको बड़ा आघात लगा। परमदयालु, पतितबन्धु, दीनदयाल श्रीनिताई-चाँद तब झटपट उठकर प्रभुके चरणोंको पकड़कर रोते-रोते बोले—"प्रभो! दोनोंने एक साथ पाप किया है, अब अनुग्रह में विषमता क्यों की जा रही है?"

—यह बात कहते-कहते प्रेमावेगमें आँखोंकी अश्रुधारासे उनका वक्षःस्थल बह चला। तब दयामय महाप्रभुने श्रीनित्यानन्दप्रभुको हाथ पकड़कर उठाया और प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन-प्रदान किया। इस अवसरपर माधाई प्रभुके चरणोंपर गिरकर रोते-रोते कहने लगा—"प्रभो! मुझपर कृपा करनी ही पड़ेगी; तुम्हारे बिना मेरी और कोई गति नहीं है।"

प्रभुने तब इस लीलारङ्गके बहाने श्रीनित्यानन्द-की महिमा जगत्‌में प्रचार करनेका अवसर पाकर माधाईको क्रोधित होकर कहा—"तुम्हारा त्राण नहीं हो सकता। नित्यानन्दके श्रीअङ्गमें तुमने ही आघात किया हैं।" (चै. भा. म. १३.२.३)

मद्यपी और आजन्म महापापी माधाईको तब प्रभुकी कृपासे दिव्य ज्ञान प्राप्त हो गया। उसको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवजीवन मिला। शत्रुभावमें भी श्रीभगवान्‌की कृपा होती है, यह बात उस समय उसके हृदयमें प्रभुकी कृपासे स्फुरित हुई। उसने तब रोते-रोते प्रभुके चरण पकड़कर निवेदन किया—"तुम यह बात नहीं कह सकते। असुरोंने तुमको बाणोंसे बींधा, तब उन सबको क्यों अपना पद दिया।"

माधाईने प्रभुको स्पष्ट कहा—"हे प्रभो ! पतितोद्धार-कार्य तुम्हारा स्वधर्म है। इसको तुम छोड़ नहीं सकते। मैं पतित हूँ, मैं महापातकी हूँ, मेरा उद्धार तुम्हें करना ही पड़ेगा।" पतिताभिमानमें उसने श्रीगौर-भगवान्‌को जो बात कही, उससे प्रभु मन-ही-मन बहुत संतुष्ट हुए; परन्तु चतुर-चूड़ामणि प्रभुने मुखसे वह भाव प्रकट नही होने दिया। इसका कारण कृपालु पाठकवृन्द अवश्य समझते होंगे। श्रीनित्यानन्दकी महिमाका प्रचार करनेके लिए भक्तवत्सल प्रभु दृढ़-संकल्प हैं। उन्होंने माधाईकी बातके उत्तरमें भगवान्-भावमें आविष्ट होकर कहा—"दैत्योंने मुझे जो बाणोंसे बींध दिया था, उसकी अपेक्षा तुम्हारा अपराध गुरुतर है; क्योंकि उन्होंने मुझको मारा था, तुमने तो मेरे प्राणसे भी बढ़कर प्रिय नित्यानन्दके अङ्गसे रक्तपात किया है। मेरे भक्तकी पूजा मेरी पूजासे बड़ी हैं—इस बातको वेद और भागवत पुष्ट करते हैं।" (चै.भा.आ. १.३)

माधाईने अब समझा है कि नदियाके ब्राह्मण-कुमार क्या वस्तु हैं। प्रभुकी कृपासे उनको दिव्य ज्ञान प्राप्त हो गया है। वे अब प्रभुको छोड़नेवाले पात्र नहीं हैं। चतुर-चूड़ामणि प्रभुने उनको फटकारे बिना न छोड़ा। उनका क्रन्दन और आर्तभाव देखकर प्रभु हँसते हुए बोले—"तुम दोनों तो नवद्वीपके राजा हो; चतुर होकर भी इस प्रकार क्यों रोते हो ?"

प्रभुने जब विधिपूर्वक माधाईकी परीक्षा ली और बोले—'मेरेद्वारा तुम्हारा उद्धार न होगा'—तब माधाई निरुपाय होकर प्रभुके चरण पकड़कर रोते-रोते फिर निवेदन करने लगे—"ठाकुर ! मैंने तुम्हारी कृपासे तुमको पहचान लिया है। मेरे साथ अधिक छल न करो ! तुम जगत्‌के नाथ हो, मैं पतित, अधम, महापापी, क्षुद्र जीव हूँ। मेरे विषयमें इतनी दृढ़ता, इतनी कठोरता प्रकट करना तुम्हे शोभा नहीं देता। मेरा उद्धार तुम्हें करना ही पड़ेगा। यदि स्वयं न करोगे तो उद्धारका उपाय बतला दो। मैं तुमको छोड़ूँगा नहीं। तुम जो भी कहो, तुम्हारे चरणोंमें अपना सिर अर्पण कर दिया।"

यह सब तत्त्वकी बातें माधाईके दिव्य ज्ञानकी परिचायिका हैं; आजीवन तपस्या करके योगी और ऋषिगणके मुखसे जो बात नहीं सुनी जाती, आजीवन ज्ञान-चर्चा और शास्त्रालोचन करके जो तत्त्व शास्त्रवेत्ता, विज्ञ, पण्डितोंको अवगत नहीं होता, श्रीगौर-भगवान्‌की कृपासे आजन्म पापाचारी मोहान्ध माधाईने आज वही परम भजन-तत्त्व, वही अति सुन्दर आत्मनिवेदन प्रभुकी कृपासे कलिके जीवोंको सिखलाया; सबसे अधम होकर माधाई प्रभुकी कृपासे सर्वोत्तम हो गये। क्षणभरमें उनकी आजन्म संचित पापराशि रूईके ढेरके समान न-जाने कहाँ उड़ गयी। प्रभुकी कृपासे दुराचारी, महापापी, मद्यपी मुनिश्रेष्ठ हो गया, महापाखण्डी ऋषिवर हो गया, नराधम देवता हो गया। साधके साथ कविराज गोस्वामी कैसा लिख गये हैं—

तं श्रीमत् कृष्णचैतन्यदेवं वन्दे जगद्गुरुम्।
यस्यानुकम्पया श्वाऽपि महाब्धिं संतरेत् सुखम्॥

चै. च. आ. ९.१

श्रीचैतन्यप्रसादेन तद्रूपस्य विनिर्णयः।
बालोऽपि कुरुते शास्त्रं दृष्ट्वा व्रजविलासिनम्॥

चै. च. आ. ४.१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भवरोग-वैद्य-चूड़ामणि हमारे प्रभुने तब कृपा करके माधाईको उनके दुष्कृति-रोगकी औषध बतला दी, उद्धारका उपाय बतला दिया। प्रभुने माधाईसे कहा—"तुमने बहुत बड़ा अपराध किया है। तुम नित्यानन्दके चरणोंमें पड़ो!'

प्रभुका कृपादेश पाते ही छिन्नमूल पादपके समान माधाई लम्बा होकर श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंमें गिर पड़ा। उनके अभय-चरणोंका आश्रय लेकर उच्च स्वरसे रोने लगा। माधाईके पापका अब पूर्ण प्रायश्चित्त हो गया, वह निष्पाप हो गया।

माधाईको श्रीनित्यानन्दप्रभुका चरणाश्रय लेते देखकर प्रभुके मनमें वड़ा आनन्द हुआ। वे श्रीनित्यानन्दप्रभुको सम्बोधन करके बोले—"नित्यानन्द! यह तुम्हारे चरणोंमें गिर पड़ा है; इसपर कृपा करनी चाहिये। जिसने तुम्हारे अङ्गमें घात किया है, उसको तुम्हीं क्षमा कर सकते हो।"

प्रभुने अब श्रीनित्यानन्दप्रभुको उपलक्ष करके आदर्श साधुचरित्रका उज्ज्वल दृष्टान्त दिखलाया। साधु वैष्णवगण कभी किसीका अपराध ग्रहण नहीं करते; वे सदा शरणागतोंके आश्रयदाता हैं। अनुतप्त और दुःखीके अपराधका वैष्णवगण विचार नहीं करते। प्रभुके मधुमय वचन सुनकर श्रीनित्यानन्दप्रभु आनन्दसे गद्गद होकर रो पड़े।

श्रीनित्यानन्दप्रभुके मनमें आज आनन्दका तूफान उठा है। नित्यानन्द आज पूर्णानन्दमें विभोर होकर मनकी साधसे सब कारणोंके कारण श्रीश्रीगौर-भगवान्का गुण-गान कर रहे हैं। उन्होंने कहा—"हे प्रभो! तुम सबके मूल आधार हो! मुझको उपलक्ष्य करके तुम आज जो इन दो महा-पापियोंका उद्धार करोगे, इसे मैं खूब समझ रहा हूँ। तुम मुझे जो इनको क्षमा करनेके लिए कहते हो, इसका मर्म भी मैं समझता हूँ। तुम इच्छामय हो, तुम स्वतन्त्र ईश्वर हो। तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो! माधाईको मैंने निष्कपट होकर क्षमा कर दिया। केवल क्षमा करनेसे ही हमारी आशा नहीं पूरी होती। ये दोनों भाई बड़े पापी हैं। मेरी बड़ी आशा है कि इनके ऊपर तुम सबसे अधिक कृपा करके इनको सबकी अपेक्षा बड़ा बनाओ; इससे मेरे मनमें बड़ा सुख होगा। हे प्रभो! तुमको मैं सत्य कहता हूँ, यदि किसी जन्ममें मैंने सुकृति-अर्जन किया है तो वह मैंने आज निष्कपट-भावसे सब माधाईको दिया। हे प्रभो! तुम अब अधिक मायाजाल न दिखाओ! इन महापातकी दुःखी जीवोंको अपने रक्तकमल-चरणमें आश्रय देकर मुझे कृतार्थ करो! तुम्हारा पतितपावन नाम सार्थक हो, तुम्हारे नामका जय-डङ्का बजे।" इतना कहकर श्रीनित्यानन्दप्रभु व्याकुल होकर रो पड़े और प्रभुके चरणोंमें जा गिरे।

भक्तवत्सल प्रभु आज भक्त-महिमा-प्रचार करने बैठे हैं। वे सहज ही छोड़नेवाले पात्र नहीं हैं। भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्ने भक्तवत्सल श्रीनित्यानन्दप्रभुका हाथ पकड़कर उठाया और उनको प्रगाढ़ आलिङ्गन प्रदान करके तुष्ट करते हुए कहा—"श्रीपाद! यदि तुमने माधाईके सब अपराध क्षमा कर दिये तो एक बार उनको प्रेमा-लिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ करो! उनको बड़ा पश्चाताप हो रहा है, पापानलमें उनका सारा शरीर दग्ध हो रहा है। तुम्हारे सुशीतल अङ्ग-स्पर्शके सुखसे उनका शरीर, मन और प्राण सब शीतल हो जायगा।"

प्रभुने स्वयं जगाईको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया है। उन्होंने माधाईको प्रेमालिङ्गन प्रदान करनेका श्रीनित्यानन्दप्रभुको आदेश दिया। इस कृपादेशका भी मर्म है। जगाई-माधाई सर्व-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रेष्ठ पापी हैं; उनके पापका अन्त नहीं है, दुष्कृति-की सीमा नहीं है। साक्षात् ईश्वरकी शक्तिकी कृपा-साहाय्यके बिना उनका पाप क्षय नहीं हो सकता। भक्तके प्रेमालिङ्गनसे शक्ति-संचार होता है। श्रीभगवान् अथवा उनके प्रिय भक्तके सङ्ग या अङ्ग-स्पर्शके गुणसे शक्ति-संचार-क्रिया पूर्णरूपसे सिद्ध होती है। श्रीनित्यानन्दप्रभुने महापापी माधाईको शक्तिसम्पन्न ऋषि-मुनियोंके समान पूज्य बनाना चाहा है, इसी कारण प्रभुने उनको कहा कि प्रेमालिङ्गन-दान करके ही तुम उनमें शक्ति-संचार करके ऋषि-मुनि-तुल्य बनाओगे। अर्थात् प्रभुने कौशलपूर्वक कहा कि "मैंने जगाईको जो किया है, तुम माधाईको वही करो।"

श्रीनित्यानन्दप्रभुने अत्यन्त आनन्दपूर्वक दोनों भुजाओंको फैलाकर माधाईको वक्षःस्थलसे पकड़कर प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान किया। तत्काल उनका सारा पाप ध्वंस हो गया, सारे बन्धन टूट गये। श्रीनित्यानन्दप्रभुने माधाईके शरीरमें प्रवेश किया और वह तब सर्वशक्ति-समन्वित नव-जीवनको प्राप्त हो गया। माधाई मूर्च्छित होकर श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंमें छिन्नमूल-पादपके समान गिर पड़ा। उसको बाह्य ज्ञान न रहा, शरीर निःस्पन्द हो गया, नयन अपलक हो गये। प्रेमानन्दमें वह जड़वत् भूतलपर पड़ा रहा। भक्त-वृन्द आनन्दसे हरि-ध्वनि करने लगे।

जगाई-माधाई दोनों भाई इस समय नदियाके राजपथमें धूलि-धूसरित अङ्गमें पड़े हुए हैं। भक्तवृन्द उनको घेरकर प्रभुकी आज्ञासे कीर्तन करने लगे। बारम्बार हरिध्वनिसे दोनों भाइयोंकी मूर्च्छा भङ्ग हो गयी और वे लोग उठकर दीनातिदीनके समान हाथ जोड़कर प्रभुके सामने खड़े हो गये। अब वे वह जगाई-माधाई नहीं हैं! इनका भवरोग दूर हो गया हैं, इनका भव-बन्धन छूट गया है, इनको दिव्य ज्ञान प्राप्त हो गया है। दोनों भाइयोंकी आँखोंसे झर-झर प्रेमके आँसू बह रहे हैं। दोनों आदमी एकत्र होकर हाथ जोड़कर दोनों प्रभुओंकी स्तुति करने लगे।

प्रभु इस समय पूर्णानन्दमय रूपमें नदियाके राजपथमें जगाई-माधाईके सामने खड़े होकर मधुर मुस्कराते हुए दोनोंसे बोले—"भैया जगाई-माधाई! अब तुमलोग पापाचरण न करना। तुम्हारे कोटि जन्मकी पापराशि मैं लेलूँगा, यदि तुम अब पाप-कार्य न करो! तुमलोगोंको लोग निष्पाप समझकर सम्मान करेंगे, तुम्हारी भक्ति करेंगे। तुम्हारे मुखसे मैं आहार करूँगा, तुम्हारे शरीरमें मेरा अधिष्ठान होगा।"

जगाई-माधाई प्रभुके रक्तकमल-चरणोंमें पड़े कातर स्वरसे रोते-रोते बोले—"हे पतितपावन गौरहरि! हे दीनबन्धु शचीनन्दन! तुम्हारा चरण-स्पर्श करके हम कहते हैं कि फिर हम पाप-कार्य न करेंगे।"—इतना कहते-कहते प्रेमानन्दमें अधीर होकर जगाई-माधाई मूर्च्छित होकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े।

प्रभुके मनमें आज बड़ा आनन्द है, श्रीनित्यानन्द-प्रभुके मनमें उससे भी अधिक आनन्द है। इच्छामय प्रभुने मनमें सोचा—"अब यहाँ अधिक बातें करनेकी आवश्यकता नहीं है। यहाँका कार्य समाप्त हुआ, अब जगाई-माधाईने नवजीवन प्राप्त किया है। अब ये हमारे निजजन हैं। मैं जगाई-माधाईको अपने घर ले जाकर इनको साथ करके मनकी साधसे हरि-नाम-संकीर्तन करूँगा। माता और गृहिणीको एक बार इन्हें दिखलाऊँगा कि ये लोग क्या थे, क्या हो गये? जगाई-माधाईको मैं सर्वोत्तम साधु-वैष्णव बनाऊँगा। ब्रह्माका दुर्लभ प्रेम-धन इनको प्रदान करूँगा। इनको स्पर्श करके जो लोग गङ्गा-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्नान करते थे, वे अब इनके स्पर्शमें अपनेको गङ्गाके समान पवित्र हुआ मानेंगे। श्रीपाद नित्यानन्दकी इच्छा पूर्ण करूँगा।"—इतना कहकर प्रभुने भक्तवृन्दको आदेश दिया कि "जगाई-माधाईको तुमलोग मेरे घर ले आओ !"

श्रीचैतन्यमङ्गलके वर्णनमें देखनेमें आता है कि इस अवस्थामें जगाई-माधाईको वहाँ रखकर प्रभु पार्षदोंके साथ अपने घर लौटे। जगाई-माधाई दोनों भाई स्तम्भित होकर रास्तेके किनारे खड़े रह गये। उनको ऐसी अवस्थामें देखकर सारे नदियावासी नर-नारियोंको बड़ा आश्चर्य हुआ।

दीनातिदीनके समान नदियाके राजपथमें खड़े होकर संतप्त जगाई और माधाई मन-ही-मन निमाईपण्डितके रूप, गुण और शक्तिकी बात सोचने लगे और मन-ही-मन इस परम आश्चर्यमयी घटनापर आद्योपान्त विचार करने लगे। विशेषत: करुणामय प्रभुकी अपार करुणाकी बातोंका विचार करके उन्होंने देखा कि उनके समान महापापी त्रिलोकीमें दूसरा कोई नहीं है और श्रीगौराङ्गप्रभुके समान दयाका सागर, करुणाका अवतार, पतितका बन्धु निखिल ब्रह्माण्डमें दूसरा कोई नहीं है। उनके पाद-पद्मके आश्रयके बिना जगाई-माधाईकी दूसरी गति नहीं है। अतएव वे रोते हुए प्रभुके मन्दिरकी ओर चल पड़े। सारी नदियाके लोग जगाई-माधाईकी ऐसी अवस्था देखकर चकित हो गये। उन्होंने सोचा कि "यह क्या हुआ ? जगाई-माधाई इतने कातर होकर निमाईपण्डितके घरकी ओर क्यों बढ़े जा रहे हैं।"

श्रीचैतन्यभागवतोक्त वर्णनमें ये सब बातें नहीं हैं। प्रभुने अपने भक्तवृन्दको आदेश दिया—"जगाई-माधाईको मेरे घर ले आओ !"—इतना कहकर वे पहले घर लौटे, पश्चात् भक्तलोग जगाई-माधाईको लेकर प्रभुके घर पहुँचे।

प्रभु अपने मन्दिरमें आकर निजजनके साथ बैठे थे। उनके दोनों पार्श्वमें श्रीनित्यानन्दप्रभु और गदाधरपण्डित थे, सामने श्रीअद्वैतप्रभु थे, चारों ओर वैष्णव-मण्डली थी। उनमें थे ठाकुर हरिदास, श्रीवास, गङ्गादास, वक्त्रेश्वर, रामाईपण्डित, पुण्डरीक विद्यानिधि तथा चन्द्रशेखर आचार्य। वहाँ मुरारिगुप्त भी हैं। संध्याकाल बीत गया है। ऐसे समय प्रभुके बहिर्द्वारपर 'ठाकुर ! हमारी रक्षा करो !' कहकर जगाई-माधाई उच्च स्वरसे आर्तनाद करने लगे। प्रभुके कानोंमें उनकी कातर क्रन्दन-ध्वनि पहुँची। उन्होंने मुरारिको आदेश दिया—"मुरारि ! बहिर्द्वारपर कौन मुझको पुकार रहा है; देखो ! उनको मेरे सामने ले आओ !" मुरारिका हनूमान्-भाव है। उनमें असीम बल है। तत्काल जगाई-माधाईको गोदमें उठाकर उन्होंने प्रभुके सामने उपस्थित किया।

पतित-पावन प्रभुको देखते ही जगाई-माधाई अश्रुपूर्ण कातर नेत्रोंसे उनके श्रीचरण-सुधाका पान करनेकी अभिलाषासे लम्बे होकर भूतलपर गिर पड़े। उनके मुखसे केवल यही निकला—"हे पतितपावन गौरहरि ! हे कृपासिंधु शचीनन्दन ! हे अधमतरण श्रीगौराङ्ग ! पतितके प्रति एक बार कृपादृष्टि करो।" वे इस प्रकार करुण आर्तनाद करने लगे। उनकी आँखोंमें शतधारा बह रही थी। भीषण पश्चात्तापकी अग्निमें उनका हृदय धक्-धक् जल उठा।

करुणामय प्रभुने जगाई-माधाईको स्वयं हाथ पकड़कर उठाया और मधुर शब्दोंमें उनसे कहा—"जगाई-माधाई ! तुम रोते क्यों हो? हमसे तुम क्या चाहते हो ? खुलकर बोलो, मैं तुम्हारी मनोकामना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पूर्ण करूँगा।" तब जगाई-माधाईने उठकर हाथ जोड़कर रोते-रोते प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"दयामय पतितपावन प्रभो ! तुम्हारी अपार कृपाके गुणसे हमने तुम्हारे मन्दिरतक आनेका साहस किया है; हमारे पापका अन्त नहीं है। गोवध, स्त्री-वध, ब्रह्महत्या, गुरु-हत्या, गुरु-पत्नीगमन आदि सारे पाप हमारेद्वारा हुए हैं। हमारे सिरके केशोंकी गणना तो हो सकती है, परन्तु हमारे किये पापोंकी गिनती नहीं हो सकती। पुराणमें अजामिलको बड़ा पापी कहा गया है, परन्तु हमारी पापराशिके सामने उसके पापकी तुलना नहीं हो सकती। हमारा ऐसा कोई गुण नहीं है कि तुम उसे देखकर करुणा करोगे। परन्तु तुम करुणासागर हो, तुम्हारी कृपा अहैतुकी है, इच्छा होनेपर तुम केश पकड़कर हमारे समान पापियोंका भी उद्धार कर सकते हो। यह सामर्थ्य तुम्हारेमें ही है। तुमने कृपा करके साहस दिया है, इसी कारण हमको तुम्हारे घर आनेका साहस हुआ है। हे कृपानिधि ! कृपा करके इन रक्त चरणोंमें स्थान देकर अब कृतार्थ करो !"

दयाके महासागर श्रीगौराङ्गप्रभुने जगाई-माधाईकी अनुतापसे भरी आर्तवाणी सुनकर परम संतुष्ट होकर दोनों भाइयोंको बारी बारीसे प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें बारम्बार हरिध्वनि करने लगे। शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवी जगाई-माधाईके प्रति प्रभुकी कृपादृष्टि देखकर प्रेमानन्दमें आकुल होकर आँसू बहाने लगीं और उनको शुभाशीर्वाद देने लगीं। वैष्णव-गृहिणीगण घरके भीतर बैठी आनन्द-ध्वनि करने लगीं। श्रीगौर-भगवान् और अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु तब भक्तवृन्दके साथ एक जगह बैठ गये।

गौर-निताईको युगलरूपमें एक साथ बैठे देखकर उनके अपूर्व युगलरूपसे मुग्ध होकर जगाई-माधाई दोनों भाई हाथ जोड़कर श्रीगौर-नित्यानन्दकी युगल-स्तुति-गान करने लगे। प्रभुकी कृपासे उनकी जिह्वापर शुद्ध सरस्वतीका अधिष्ठान हुआ। तत्काल जगाई-माधाईके हृदयमें श्रीगौर-नित्यानन्द-तत्त्वकी स्फूर्ति हुई। उसी भावमें उन दोनोंने बड़ी सुन्दर स्तुति की, जो श्रीचैतन्यभागवत, मध्यखण्ड, अध्याय १३ में २४८ से २८३ तकके पयार छन्दोंमें वर्णित है।

इस प्रकार जगाई-माधाईने प्रभुके अपने घर, उनके सामने खड़े होकर उनके एकान्त निजजनके सामने श्रीगौर-नित्यानन्द-युगल-विग्रहकी जो तत्त्वपूर्ण स्तुति की, उसे सुनकर उपस्थित सब भक्तगण स्तम्भित और चकित हो गये। जगाई-माधाईके द्वारा इस प्रकार सर्वतत्त्वपूर्ण श्रीमन्महा-प्रभुके अवतारके श्रेष्ठत्वका बोधक सुन्दर स्तवपाठ नितान्त असम्भवरूपमें होकर भक्तगणोंके लिए विस्मयका कारण बना। एक साथ आनन्द और विस्मयसे अभिभूत होकर वे सबलोग प्रभुके सामने खड़े होकर, हाथ जोड़कर निवेदन करने लगे—"प्रभो ! इन दोनों मद्यपोंने जो स्तुति की, वह तुम्हारी कृपाके बिना कोई नहीं जान सकता। तुम्हारी अचिन्त्य-शक्तिको जाननेकी सामर्थ्य किसमें है कि तुम किस रूपमें, किस समय, किसपर, किस प्रकार कृपा करोगे !"

जगाई-माधाई अब वे जगाई-माधाई नहीं हैं। प्रभुके आदेशसे शुद्धा सरस्वतीने उनके जिह्वाग्रपर अधिष्ठित होकर उसके द्वारा यह अपूर्व तत्त्वपूर्ण प्रभुकी स्तुति-पाठ कराकर भक्तवृन्दको दिखला दिया कि श्रीभगवान्‌की कृपासे सब कुछ सम्भव है। जगाई-माधाई अब श्रीगौर-भगवान्‌के कृपासिद्ध महापुरुष हैं। उनको प्रभुकी कृपासे सारे तत्त्व अवगत हो गये हैं; यह प्रभुकी स्तुति, जो उन्होंने सबके सामने पाठ की है, श्रीमन्महाप्रभुकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्वोत्कृष्ट स्तुति है। इसका नाम 'स्तवराज' है। नदियाके अवतारके श्रेष्ठत्वका बोध करानेवाली ऐसी सुन्दर स्तुतिकी रचना प्रभुके किसी अन्य भक्तने नहीं की है। ऐसा आर्त्त और कपटहीन आत्मनिवेदन भक्ति-जगत्के साहित्य-भाण्डारमें विरल ही है। इसमें सब तत्त्व निहित हैं, भक्ति-साधनाकी सारी बातें हैं।

जगाई-माधाईने इस स्तुतिमें एक स्थानमें प्रभुको **'राजपण्डित-दुहिता-प्राणेश्वर'** (चै. भा. म. १३.२५२) कहकर सम्बोधन किया है। इस बातमें कुछ गूढ़ रहस्य है। इसमें एक अति गुह्य बात भी है। प्रभुने जगाई माधाईको अपने घर क्यों बुलाया? घरपर बुलाकर अन्तरङ्ग भक्तवृन्दके सामने, शचीमाता और श्रीमती प्रियाजीके सामने उनके सारे पाप ग्रहण करके कालियावरण श्रीगोकुलचन्द्रका रूप धारण किया। उनके साथ परम आनन्दपूर्वक कीर्तन-नृत्य किया। प्रियाजीके साथ शचीमाता घरमें बैठकर प्रभुके इस पतितोद्धार-लीलारङ्गको देखकर आनन्द-सागरमें निमग्न हो गयीं।

जगाई-माधाई मद्यपि, दुर्वृत्त और दुराचारी हैं; उनको गृहस्थके घरके भीतर अन्तःपुरमें प्रभु क्यों ले आये, इसका भी गूढ़ रहस्य है।

जगाई-माधाईने प्रभुकी कृपासे उनके तत्त्वको समझकर उनके श्रीचरणोंमें आत्मसमर्पण किया है। पतितपावन कृपानिधि प्रभुने भी पूर्व-सम्बन्धसे जगाई-माधाईको निजजन कर लिया है। दण्ड-भरमें यह परम अद्भुत और दुरूह कार्य इच्छामय प्रभुकी इच्छासे सम्पन्न हो गया। जगाई-माधाई अब प्रभुके परिवार-भुक्त निजजनमें गिने जाने लगे। नदियाके दुर्धर्ष राजा परम दुष्कृतिपरायण और दुराचारी जगाई-माधाईका कैसा आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है, यह माता और गृहिणीको दिखलानेके लिए चतुरचूड़ामणि प्रभुने उनको कौशलपूर्वक बुलाया था।

इसके भीतर और भी निगूढ़ रहस्य है। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी साक्षात् 'भक्तिदेवी' हैं। वे श्रीगौर-भगवान्‌की स्वरूप शक्ति है। इस शक्तिके बलसे प्रभुने जीवोद्धार-कार्य किया था। जगाई-माधाई-उद्धार-कार्यमें भी भक्तिस्वरूपिणी श्रीमती विष्णुप्रिया-देवीकी सहायताकी आवश्यकता हुई थी—यह दिखलानेके लिए रँगीले प्रभुने इस लीलारङ्गका अपने आँगनमें अभिनय किया। प्रभुने जगाई-माधाई-को अपना प्रेम-दान किया। श्रीमती विष्णुप्रिया-देवीने उनको भक्ति प्रदान की, तब वे प्रेम-भक्ति प्राप्त करके सब पापोंसे मुक्त हो गये। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाकी अहैतुकी कृपा-प्राप्त करके वे धन्य हो गये। प्रभुकी कृपासे जगाई-माधाईने यह समझ-कर प्रभुकी स्तुति की—

'जय जय राजपण्डित-दुहिता-प्राणेश्वर।"

चै.भा.म. १३-२५२

स्तुतिको श्रीमती विष्णुप्रियादेवीमें अपने कानोंसे सुना। यह सुनकर उनके प्रति प्रियाजीके मनमें करुणा उत्पन्न हुई। दयामयी नवद्वीपेश्वरीकी करुणाके बलसे जगाई-माधाईको वह प्राप्त हुआ, जो ब्रह्मा आदिक देवताओंको भी दुष्प्राप्य है। उनके सारे पाप नष्ट हो गये। भक्तिदेवीकी कृपा-दृष्टि उनके ऊपर पड़ी। प्रभुका उद्देश्य सफल हो गया। यह सब अत्यन्त गूढ़ बातें हैं। प्रभुके एकान्त भक्तवृन्दके सिवा और कोई इसके मर्मको नहीं समझ सकता।

जगाई-माधाई जब प्रभुकी स्तुति करके उनके सामने अति दीनभावमें हाथ जोड़कर खड़े हुए और क्रन्दन करने लगे तो उनको देखकर सब भक्तोंके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनमें दयाका उद्रेक हुआ, शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने घरके अन्तरालसे उनपर कृपा-दृष्टि की। तब कृपानिधि श्रीगौराङ्गप्रभुने भक्त-वृन्दको सम्बोधित करके कहा—"अब ये दोनों मद्यप नहीं रहे, आजसे ये दोनों मेरे सेवक हैं। सब मिलकर इनपर अनुग्रह करो कि अब जन्म-जन्ममें ये मुझको नहीं भूलें। इन्होंने जिस-किसीका भी, जैसा भी अपराध किया हो, वे सब क्षमा करके इनपर कृपा करें।" (चै.भा.म. १३.२८८-२९०)

भक्तवृन्दसे दीनदयाल हमारे पतितपावन प्रभुने अपने नित्यदास जगाई-माधाईके सारे अपराध क्षमा करा दिये। सेवकके लिए श्रीभगवान् क्या नहीं कर सकते? शरणागत-जनके लिए श्रीभगवान् सब-कुछ कर सकते हैं। प्रभुकी मधुमयी कृपावाणी सुनकर जगाई-माधाई रोते हुए उपस्थित सब भक्तोंके चरणोंमें नतमस्तक हो गये। उन्होंने रो-रोकर अति दीनभावसे सबसे क्षमा-प्रार्थना की। उनकी आत्मग्लानिकी अब सीमा न रही। सबने उनको शुभाशीर्वाद दिया। महापापी जगाई-माधाई-के इस प्रकार सारे अपराध-भञ्जन हो गये। वे सब वैष्णवोंके कृपापात्र हो गये।

जगाई-माधाई भक्तवृन्दके चरण पकड़कर भूतलपर लोटकर क्रन्दन कर रहे हैं। प्रभुने उनका हाथ पकड़कर स्नेहसे उठाकर मधुर शब्दोंमें कहा—"जगाई-माधाई! उठो! अब तुम मेरे दास हो गये हो; अब कोई चिन्ता नहीं है।"

जगाई-माधाई प्रभुकी कृपा-आश्वासन-वाणी सुनकर भूतलसे उठकर हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े हो गये। प्रभुका तब भगवान्-भाव उदय हो गया। प्रेमानन्दमें गद्गद होकर भक्तवत्सल पतित-पावन श्रीगौर-भगवान्ने जगाई-माधाईसे फिर कहा—"तुम दोनोंने जो स्तुति की, वह परम सत्य है। उसमें खण्डनीय कुछ भी नहीं है। शरीरको नष्ट किये बिना, इसी शरीरमें ऐसा कभी नहीं होता, जैसा तुम्हारे साथ हुआ है। निश्चय ही यह श्रीनित्यानन्दकी कृपाका फल है। तुम्हारे जितने भी पाप हैं, वे सब मैंने ले लिये है। भैया! तुम इसको प्रत्यक्ष अपनी आँखोंसे देख लो!" (चै.भा.म. १३.२९४-२९६)

जगाई-माधाई मनमें सोच रहे हैं कि वे महापापी हैं, उनकी पाप-राशिका अन्त नहीं है। यह सोचकर पश्चात्तापकी आग्निमें उन दोनोंके प्राण दग्ध होने लगे। उनके हृदयकी उस ज्वालाको शमन करनेके लिए चतुरचूड़ामणि प्रभुने एक जाल रचा। वे सबके सामने बोले—"जगाई-माधाईका सारा पाप-भार मैंने अपने ऊपर ले लिया।" दयामय पतितपावन श्रीगौराङ्गप्रभुने देखा कि उनके श्रीमुखकी बातसेजगाई-माधाईके हृदयकी पश्चात्ताप-की अग्नि प्रशमित नहीं हो रही है। यह सोचकर हमारे भक्तवत्सल, भक्तके भगवान् प्रभुने कालिया-आकार धारण किया, अर्थात् प्रभुका गौरवर्ण श्याम हो गया।

प्रभुको कृष्णवर्ण देखकर भक्तवृन्द चकित हो गये। घरके भीतर शची-विष्णुप्रिया स्तम्भित हो उठीं। प्रभुने हँसकर भक्तवृन्दके प्रति शुभ दृष्टिपात करके पूछा—"मुझको कैसा देख रहे हो, बतलाओ तो?" श्रीअद्वैतप्रभुने उत्तर दिया—"हे प्रभो! तुम गोकुलचन्द्र श्रीकृष्णके समान दीख रहे हो।"

जगाई-माधाई प्रभुका कालिया-आकार देखकर स्तम्भितभावमें जड़वत् एक ओर खड़े हो गये और अजस्र आँसू बहाने लगे तथा मन-ही-मन सोचने लगे—"अहा! प्रभुका कैसा सोनेका रङ्ग हमारे लिए कालिया-आकार बन गया। कितने लोग प्रभुको कितने भावोंमें देखते हैं, अभागे हमलोग प्रभुको अपनी आजन्म-संचित पापराशिके रूपमें देख रहे हैं। धिक्कार है हमारे जीवनको! धिक्कार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है हमारे अदृष्टको !! इस क्षुद्र जीवनको अब हम नहीं रखेंगे।" मन-ही-मन यह सोचकर जगाई-माधाई दोनों भाई छिन्नमूल-तरुके समान भहराकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े।

कृपानिधि सर्वज्ञ प्रभुने उनके मनके भावको समझकर उनको हाथसे पकड़कर उठाया और भक्तवृन्दको कीर्तन करनेका आदेश दिया। अपने आँगनमें प्रभु स्वयं मधुर नृत्य करने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभुने उनके साथ योग दिया। भक्त-वृन्दको लेकर अद्वैताचार्य भी नृत्य करने लगे। कीर्तनानन्दमें सभी उन्मत्त हो गये। बारंबार हरि-ध्वनिसे शचीका आँगन मुखरित हो उठा। जगाई-माधाईने भी प्रभुकी प्रेरणासे उस कीर्तनमें योग दिया। कीर्तनानन्दमें वे भी नृत्य करने लगे।

वह अतीव सुन्दर दृश्य था; अब उनके मनमें कोई दुःख न रहा। कीर्तनके आनन्दमें उनके सारे दुःख, सारे अनुताप, उनकी सारी ज्वाला विस्मृत हो गयी। चतुर-चूड़ामणि अन्तर्यामी प्रभुने उनके मनके भावको समझकर इस समय यह कीर्तन-लीलारङ्ग प्रकट किया। अब प्रभुके आदेशसे बहिर्द्वार उन्मुक्त हुआ। अनेकों आदमी प्रभुके आँगनमें आकर संकीर्तन-यज्ञमें शामिल हो गये। सबलोगोंने देखा कि जगाई-माधाई हरि-नाममें मत्त होकर ऊपर भुजा उठाये प्रभुके साथ नृत्य कर रहे हैं।

प्रेमानन्दमें नृत्य करते-करते सबलोग एक-एक करके प्रभुके आँगनमें लोटने लगे। उनके साथ ही जगाई और माधाई भी धूलमें लोट रहे हैं। उनके शरीरपर चार अङ्गुल धूल चढ़ गयी है।

प्रभुके मनमें आज बड़ा आनन्द है। श्रीनित्यानन्दप्रभुके मनमें उससे भी अधिक आनन्द है। दोनों हाथमें-हाथ मिलाकर परमानन्दसे कीर्तन कर रहे हैं। प्रभुका इस समय आविष्टभाव है। कीर्तन करते-करते वे क्लान्त-भावमें आँगनके बीचमें खड़े हो गये। चारों ओरसे भक्तवृन्द उनको घेरकर खड़े हो गये। उनके बीचमें जगाई और माधाई भी थे। प्रभुने उनके ऊपर शुभ दृष्टिपात करके उनको पास बुलाया। वे आकर हाथ जोड़कर प्रभुके सामने खड़े हो गये। उनके सारे अङ्ग धूलि-धूसरित थे, नयन-जलसे वक्षःस्थल डूब रहा था।

कृपानिधि प्रभुने भक्तवृन्दको सम्बोधन करके जीव-तत्त्वके साथ ईश्वर-तत्त्वके सम्बन्धको समझाते हुए कहा—"इन दोनोंको अब कोई पापी न मानें। इन दोनोंके सारे पाप स्वयं मैंने ले लिये हैं। सबकी देहमें मैं ही बोलता, चलता, खाता हूँ। इसलिये जब मैं चला जाता हूँ, तब देह गिर जाता है। जिस देहमें जरा-सा दुःख होते ही जीव चिल्लाने लगता है, वही देह मेरे बिना जलायी जानेपर भी हिलती तक नहीं। तब फिर जीवके दुःखमें हेतु है—अहंकार। 'मैं करता हूँ, मैं बोलता हूँ'—ऐसा अहंकार करनेसे ही उसपर मार पड़ती है। इसलिये इन दोनोंने जो कुछ किया, वह मैंने ही किया है और मैंने ही मिटाया है—ऐसा समझकर इन दोनोंको तुम सब वैष्णवलोग अभेद दृष्टिसे देखना; अपनी ही भाँति ममझना। जो मेरे हैं, वे मेरी इस आज्ञाको सुन लें—'इन दोनोंको जो श्रद्धापूर्वक भोजन देंगे तो अनन्त ब्रह्माण्डोंमें जितना भी मधु है, उसे प्रेमपूर्वक श्रीकृष्णके मुखमें देनेसे जो फल होता है, वही फल इन दोनोंको वटके बीजके बराकर अन्न देनेसे होगा। और जो इन दोनोंका उपहास करेगा, वह इन दोनोंका अपराधी बनकर सर्वनाशको प्राप्त होगा'।" (चै.भा.म. १३.३१५-३२४)

प्रभुका यह उपदेश जीव-तत्त्वकी अन्तिम सीमा है तथा पूर्ण मीमांसा है। जीवके द्वारा कृत-कर्म ईश्वरकी इच्छासे सम्पन्न होता है। यदि कर्तापनका अहंकार न रखे तो जीव अपने कर्मके लिए जबाब देह नहीं है। भगवदिच्छा और कर्म-फलके अनुसार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जीवको श्रीभगवान् जिस कर्ममें नियुक्त करते हैं, जीव वही करता है। ईश्वरसे जीव स्वतन्त्र नहीं है। जीवात्मा परमात्माका अंश है; अतएव श्रीगौर-भगवान्‌की इच्छासे ही जगाई-माधाई इतने दिनोंतक दुष्कर्मोंमें रत रहे और अब उनकी कृपाके बलसे प्रवृत्तिमार्गसे निवृत्तिमार्गमें आये। वे दुर्जन होते हुए भी भगवत्कृपाके बलसे अब सज्जन हैं, पापी होकर भी अब निष्पाप हो गये हैं।

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति-
र्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया हृषीकेश हृदि स्थितेन
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥

—इस शास्त्रवाक्यका मर्म समझाकर धर्म-संस्थापक प्रभुने शास्त्रकी मर्यादाकी रक्षा की। जगाई-माधाईसे नदियाके सबलोगोंको घृणा थी। वे उनका मुँह देखना भी पाप समझते थे। अब प्रभुकी कृपासे वे दीनातिदीन हो गये हैं, उनका सारा अभिमान चूर्ण हो गया है—यह देखकर लोग यदि उनकी हँसी उड़ावें तो इससे उनके मनमें कष्ट होगा, यह समझकर भक्तवत्सल प्रभुने सबको सावधान कर दिया। श्रीभगवान् सब-कुछ कर सकते हैं। उन्होंने अधमाधमको सर्वोत्तम बना दिया, सबसे निकृष्टको सर्वोत्तम बना दिया। प्रभुने सबके सामने मुक्तकण्ठसे कहा—"इन दोनों आदमियोंको जो भोजन देगा, वह साक्षात् श्रीकृष्णके मुखमें मधु-दान करेगा।" इससे बढ़कर प्रशंसाकी बात, उच्च सम्मानकी बात और क्या हो सकती है? भक्तका मान बढ़ानेके लिए भक्तवत्सल श्रीभगवान् सदा व्यग्र रहते हैं; परन्तु जिस प्रकार श्रीगौराङ्गप्रभुने जगाई-माधाईका उद्धार किया और स्वयं उनका सम्मान बढ़ाया, ऐसा अपूर्व दृष्टान्त भक्ति-जगत्‌में कहीं भी देखनेमें नहीं आता।

अब भक्तोंने क्या किया, सुनिये! प्रभुके मन्दिरमें सब भक्तगण उपस्थित थे। उनमें श्रीनित्यानन्दप्रभु एवं श्रीअद्वैतप्रभु भी थे। प्रभुकी कृपावाणी सुनकर प्रेमानन्दमें विह्वल होकर सब क्रन्दन करने लगे। केवल रोकर ही वे आश्वस्त न हो सके, उनके हृदयका आवेग केवल नेत्रके जलसे ही नहीं गया, उन सबने एक-एक करके जगाई-माधाईको दण्डवत्-प्रणाम किया।

जगाई-माधाई जड़वत् निःस्पन्द होकर प्रभुके चरणोंमें पड़े रहे। उनको बाह्य ज्ञान न था। भक्तोंने जो उनको प्रणाम किया, यह भी वे जान न सके। इस समय जगाई-माधाईकी यह प्रेममूर्च्छा, उनका बाह्यज्ञान-लोप, यह सब भी प्रभुकी इच्छासे हुआ। यदि ऐसा न होता तो नदियाके भक्तवृन्दको अपने चरणोंमें प्रणाम करते देखकर जगाई-माधाई तत्काल गङ्गामें कूदकर प्राण दे देते। प्रभुकी कृपाके बलसे नर-पिशाच, महापापी भी पूज्य हो गये। एक दिन मैंने हृदयके आवेगमें लिखा था—

अवतार-शिरोमणि गौराङ्ग आमार।
पापी-तापी-उद्धारिते तव अवतार॥
करुणार निधि तुमि दयाल ठाकुर।
पतितेर प्रति तब करुणा प्रचुर॥
सर्व अवतार-सार गौराङ्ग आमार।
पापी-तापी-उद्धारिते एस हे आवार॥

पतित-अधमके प्रति इतनी दया श्रीभगवान्‌ने किसी अवतारमें नहीं दिखलायी। श्रीभगवान्‌का सर्वश्रेष्ठ नाम है—पतितपावन। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें ही श्रीभगवान्‌के इस पतितपावन नामकी पूर्ण सार्थकता हुई थी।

प्रभुने हाथसे पकड़कर जगाई-माधाईको फिर पृथ्वीपरसे ऊपर उठाया। श्रीगौर-भगवान्‌को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जगाई-माधाई किस प्रकार देख रहे हैं, सुनिये ! वे देखते हैं कि शचीका आँगन साक्षात् वैकुण्ठलोक है। शचीनन्दन गौरहरिको वे देख रहे हैं कि आनन्द-लीलारस विग्रह-मूर्त्ति साक्षात् नर-नारायण हैं। उनके भक्तवृन्दको देखते हैं कि मानो ब्रह्मादि देवगण श्रीवैकुण्ठपति-नारायणको घेरकर बैठे हैं। प्रभुका श्रीमन्दिर मानो मनोरमा श्रीवैकुण्ठपुरी है। यद्यपि वैकुण्ठकी लक्ष्मी आड़में बैठी हैं, पर जगाई-माधाई देखते हैं कि मानो प्रभु वैकुण्ठके सिंहासनपर लक्ष्मीके साथ युगल होकर बैठे हैं और देवगण प्रभुका युगल-वन्दना-गीत गा रहे हैं। जगाई-माधाईको श्रीगौर-विष्णुप्रिया, दोनोंने कृपा करके इस अपूर्व रसराज-युगल गौर-गोविन्द-श्रीमूर्तिको दिलाया। पहले प्रभुने उनको अपनी ऐश्वर्यमयी चतुर्भुज मूर्ति भी दिखलायी थी।

उस समय चार दण्ड रात हो गयी थी। ज्योत्स्नाके आलोकमें नदियाके पथ-घाट साफ-सुथरे जान पड़ते थे। जगाई-माधाई उद्धारकी कथा विद्युत्-गतिके समान नदियामें सब जगह फैल गयी। पूर्णतः नवजीवनको प्राप्त जगाई-माधाईको बहुतोंने प्रभुके घरके द्वारपर दीनभावमें खड़े क्रन्दन करते देखा था। प्रभु उनको अपने मन्दिरके भीतर ले गये हैं, उनके साथ नृत्य-कीर्तन किया है, यह भी बहुतोंने देखा है, अथवा जानते हैं। सारी नदियामें घोषित हो गया कि निमाईपण्डितने आज एक अद्भुत काण्ड किया तथा सबलोग यह जाननेके लिए उत्सुक थे कि वे अब और क्या करना चाहते हैं?

प्रभुने भक्तवृन्दको आदेश दिया—'जगाई-माधाईको लेकर अब गङ्गा-तटपर चलो !'

प्रभुने श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ओर करुण नयनोंसे देखकर कहा—"श्रीपाद! जगाई-माधाई अब आजसे तुम्हारे हो गये। अब अपनी वस्तु तुम सँभालो ! तुम इनको गङ्गा-स्नान कराकर हरिनाम-महामन्त्र प्रदान करो !" श्रीनित्यानन्दप्रभु परम आनन्दपूर्वक जगाई-माधाईको सङ्ग लेकर गङ्गा-तटकी ओर चल पड़े। प्रभु साथ चले। भक्तवृन्द भी साथ ही हैं। कीर्तन करते-करते नदियाके राजपथसे श्रीगौर-नित्यानन्द जगाई-माधाईको साथ लिए गङ्गाके तटपर जा पहुँचे। नदियाके असंख्य लोग उनके साथ गये। भीड़ क्रमशः बढ़ती हो गयी। श्रीनित्यानन्दकी उक्तिका इस प्रसङ्गका एक प्राचीन पद है। इस पदमें जगाई-माधाईको उद्देश्य करके श्रीनिताई-चाँद कह रहे हैं—

आय रे जाह्नवीतीरे दुटि भाइ।
आज तोदेर हरिनाम दिब रे जगाइ-माधाइ॥
माधाइ मारलि मारलि करलि भाल रे।
एखन हरि बोले नेचे आय।
तुइ मेरेछिस् कलसीर खण्ड,
आज हरिनाम दिये करिब दण्ड,
सुमधुर हरि-नाम मुखे बल भाइ !

गङ्गाके तीरपर नदियाके सबलोग एकत्रित हो गये। कीर्तनसे श्रान्त भक्तवृन्दके साथ प्रभुने परम आनन्दपूर्वक गङ्गा-स्नान किया। मनमें आनन्दित होकर प्रभुने उस दिन भक्तगणके साथ जल-क्रीड़ा की। जल-क्रीड़ाके रङ्गमें श्रीअद्वैतप्रभु और श्रीनित्यानन्दप्रभुमें हास-परिहास होने लगा। शान्तिपुरनाथने अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुको पूर्ववत् परमप्रीतिपूर्ण कटूक्तिसे प्रसन्न किया। श्रीनित्यानन्दप्रभुने वृद्ध ब्राह्मणकी आँखोंमें जलके छींटे मार-मारकर प्रायः उनको अन्धा कर दिया।

रँगीले प्रभु गङ्गाजलमें खड़े होकर यह रङ्ग देख रहे थे। उन्होंने हँसकर कहा—"एक बारमें हार-जीत नहीं मानी जाती। तीन बार होनेपर हार-जीत मानी जायगी।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अद्वैत और नित्यानन्दमें फिर घोरतर जलयुद्ध होने लगा। इस बार श्रीनित्यानन्दप्रभुने वृद्ध ब्राह्मणको जलकी उठती हुई लहरोंमें बड़ी ही संकटापन्न अवस्थामें फेंक दिया। श्रीअद्वैतप्रभुने दु:खसे क्रुद्ध होकर कहा—"यह पागल आज ब्रह्महत्या करेगा। पश्चिमदेशमें घर-घरका भात खाकर यह इतना बलिष्ठ हो गया है। इसकी न जाति है, न कुल। इसके माता-पिता नहीं है, न जाने इसका गुरु कैसा है। घर-घर खाता घूमता है, फिर भी अवधूत कहलाता है।"—इतना कहकर अद्वैतप्रभु क्रोधित होकर गङ्गाजलमें कूद पड़े। सभी भक्तवृन्द हँसने लगे।

श्रीअद्वैत-नित्यानन्दकी हँसी-मजाककी कथा बड़ी ही मधुर है। प्राय: दोनोंमें इसी प्रकार हँसी-मजाक होता रहता था। रँगीले प्रभु यह कौतुक देखना पसंद करते थे। आज जगाई-माधाई-उद्धारके उपलक्ष्यमें उनके मनमें बड़ा आनन्द है, इसी कारण इन लोगोंके हृदयमें यह गङ्गास्नान-रस-रङ्गलीलाकी तरङ्गें उठ रही हैं। भक्तगण इस लीला-रसके स्रोतमें बहे जा रहे हैं, उनमें जगाई-माधाई भी हैं।

गङ्गास्नान-लीलारङ्ग समाप्त होनेपर प्रभु भक्तवृन्दके साथ गङ्गाके जलसे बाहर निकले। उन्होंने जगाई-माधाईको फिर अपने पास बुलाया। वे लोग हाथ जोड़कर प्रभुके सामने आ खड़े हुए। श्रीगौर-भगवान्‌ने श्रीनित्यानन्दप्रभुको आदेश दिया—"श्रीपाद ! जगाई-माधाईने गङ्गास्नान किया है। इनका सारा पाप ध्वंस हो गया है। अब इनको हरिनाम-महामन्त्र प्रदान करें।" गङ्गातटपर सबके सामने जगाई-माधाईको श्रीनित्यानन्दप्रभुने हरिनाम-महामन्त्रमें दीक्षित किया। सबलोग हरि-ध्वनि करने लगे।

जगाई-माधाई श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंमें गिरकर अजस्र आँसू बहाने लगे। श्रीगौराङ्गप्रभुने उनको हाथ पकड़कर उठाया। जगाई-माधाई रोते-रोते प्रभुसे बोले--"ठाकुर ! हम बड़े पापी हैं; हमारा कैसे उद्धार होगा ?" प्रभु यह बात सुनकर मधुर वचनसे जगाई-माधाईसे कहने लगे—"जगाई-माधाई ! तुम्हारा सारा पाप-भार मैंने स्वयं ग्रहण किया है। यदि इसमें तुमलोगोंको संदेह हो तो एक काम करो। इस गङ्गातटपर गङ्गाजल और तुलसी देकर अपनी पापराशि पुन: मुझको उत्सर्ग करो ! मैं सबके सामने तुम्हारे सारे पाप ग्रहण कर लूँगा।" —इतना कहकर प्रभुने तुलसी-गङ्गाजलके लिए जगाई-माधाईके सामने अञ्जलि फैला दी।

जगाई-माधाई, अपनी पापराशि प्रभुको कैसे उत्सर्ग करें, यह विचारकर काँपने लगे। प्रभुकी आज्ञाका भी उल्लङ्घन नहीं कर सकते थे; दोनों भाई बड़े संकटमें पड़ गये। प्रभुने अपने मन्दिरमें केवल इसी बातको लेकर कालिया-आकार धारण किया था; अब उसे वे कार्यमें परिणत करना चाहते हैं, यह देखकर जगाई-माधाईके प्राण बड़े ही कातर हो उठे। दोनों भाइयोंने रोते-रोते हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें इस कार्यके लिए पूरी असमर्थता निवेदन कर दी। तब प्रभुने गम्भीर भाव धारण कर लिया। दूसरे ही क्षण हुंकार-गर्जन करके वज्रनादमें 'हरिबोल' कहकर उनके सामने अञ्जलि फैलाकर पाप-भिक्षा माँगी। प्रभुके दोनों कमल-नयन रक्तवर्ण थे और छलछला आये थे। जगाई-माधाईने अत्यन्त भयभीत होकर तुलसी-गङ्गाजल देकर इच्छा न होते हुए भी श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीकर-कमलोंमें स्वकृत पापराशिको उत्सर्ग कर दिया। तब प्रभुने उनको प्रेमालिङ्गन प्रदान किया। चारों ओर सबलोग हरि-ध्वनि करने लगे।

गङ्गा-तीर 'जय गौर हरि', 'जय शचीनन्दन'-ध्वनिसे मुखरित हो गया। श्रीनित्यानन्दप्रभुने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जगाई-माधाईके इस पापोत्सर्ग-कार्यमें पुरोहितका कार्य किया। वे जगाई-माधाईके गुरु और पुरोहित दोनों ही बने। जगाई-माधाई-उद्धारपर्व यहाँ समाप्त हो गया।

'श्रीचैतन्यभागवत'के अनुसार जगाई-माधाईके पापभार-ग्रहण-लीलारङ्गको प्रभुने अपने मन्दिरमें बैठकर किया था। 'श्रीचैतन्यमङ्गल' के अनुसार इस लीलारङ्गका अभिनय प्रभुने गङ्गातटपर किया था। श्रीग्रन्थोक्त ये दोनों लीला-कथाएँ प्रामाणिक हैं। लीलारङ्गमय प्रभुने अपने मन्दिरमें और गङ्गाके तटपर, दोनों स्थानोंमें यह लीलारङ्ग-अभिनय किया था। अपने मन्दिरमें प्रभुने श्रीमुख-निःसृत वाणीके द्वारा जगाई-माधाईके समस्त पापभारको स्वीकार करके कालीया-आकार धारण किया था; गङ्गाके तीर जगाई-माधाईके हाथ तुलसी-गङ्गाजल देकर उनकी पापराशिको विधिपूर्वक उत्सर्ग कराया था और स्वयं अञ्जलि फैलाकर सबके सामने उसे ग्रहण किया था। कालिया-आकार धारण करके अन्तरङ्ग भक्तवृन्दको प्रभुने अपना ऐश्वर्य दिखलाया। गङ्गाके तटपर सबके सासने निमाईपण्डितने गङ्गाजल और तुलसी-स्पर्श करके जो पापराशि ग्रहण की, इसके द्वारा अपनी अलौकिक लीलाका परिचय दिया। नदियाके लोग और पण्डित-मण्डली द्विजकुल-शिरोमणि प्रभुके इस अद्‌भुत कार्य-कलापको देखकर आश्चर्य-चकित होकर मन-ही-मन सोचने लगे—"क्या निमाईपण्डित मनुष्य हैं? मनुष्य तो ऐसा कर्म कभी नहीं कर सकता।"

तत्पश्चात् उसी दिन रातमें प्रभु नेस्वजनवृन्दके साथ महासंकीर्तन आरम्भ किया। जगाई-माधाईने सबके साथ उस संकीर्तन-महायज्ञमें प्रेमानन्दसे नृत्य किया। श्रीचैतन्यमङ्गल-ग्रन्थमें ठाकुर लोचनदासने लिखा हैं—

ए कि ठाकुराल? ए जे माधाइ नाचे।
जगाइ नाचिले पारे, आवार माधाइ नाचे,
नाचे आर 'हरिबोल हरिबोल हरिबोल' बले॥

नदियाके लोगोंने आज गङ्गाके तीरपर जो अद्‌भुत दृश्य देखा, उसे वे जीवनमें कभी भूल नहीं सके। जो जगाई-माधाई हरिनाम कानसे सुनते नहीं थे; जो हरिनाम बोलता था, उसका सर्वनाश करते थे, वे ही जगाई-माधाई आज हरिनाम-सुधारसमें सिक्त होकर मत्त-मतङ्गके समान नृत्य कर रहे हैं। संध्याकालसे एक पहर राततक निमाईपण्डितकी कृपासे उनके चरित्रमें कैसा अद्‌भुत परिवर्तन हुआ, यह सबको स्पष्ट समझमें आ गया और समझनेके कारण ही उनके मुखसे बारम्बार **'जय शचीनन्दन, जय गौरहरि'**—ध्वनि सुन पड़ने लगी।

सारे नवद्वीपमें आज आनन्द-ध्वनि हो रही है। सबके मुँहपर यही एक बात है। नदियाके घाट-बाटपर आनन्दका स्रोत बह रहा है। जगाई-माधाईके भयसे नदियावासी सर्वदा सशङ्कित रहते थे, आज अत्यन्त आश्चर्यजनक रीतिसे उनका उद्धार देखकर नदियावासी आवाल-वृद्ध-वनिता आनन्दसे उत्फुल्ल हो गये हैं। वे सपरिकर श्रीगौर-नित्यानन्द-प्रभुका जय-गान कर रहे हैं। उनके मनमें श्रीगौराङ्गप्रभुकी भगवत्ताके सम्बन्धमें जो कुछ संदेह था, जगाई-माधाई-उद्धार-लीलारङ्ग अपनी आँखों देखकर वह आज दूर हो गया।

प्रभुके आदेशसे गङ्गाके तीरपर संकीर्तन-यज्ञ बड़े आनन्दसे सम्पन्न हुआ। उस समय गगन-भेदी हरि-ध्वनिसे गङ्गाका तट परिपूरित हो गया। देवी सुरसरिने प्रेमानन्दमें अपूर्व तरङ्ग-भङ्गिमाके द्वारा अपने मनके भावको प्रकट किया। आज पतितपावनी गङ्गादेवीके मनमें बड़ा आनन्द है। नदियामें वास करके जगाई-माधाई कभी गङ्गा-स्नान नहीं करते थे। प्रभुकी कृपा प्राप्तकर सर्वपाप-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विमुक्त होकर आज जगाई-माधाईने मनके साधसे गङ्गा-स्नान किया है,इसी कारण श्रीगौर-भगवान्‌के कृपापात्रके अङ्ग-स्पर्शके सुखके आनन्दसे गङ्गादेवी प्रेमानन्दमें तरङ्गके बहाने आज नृत्य कर रही हैं। प्रभुने कहा है—"इन दोनोंके स्पर्श होनेपर लोग गङ्गा-स्नान करते थे, अब इन दोनोंको वे गङ्गाके समान पवित्र मानेंगे।"

अब प्रभुकी वाणी सफल हुई। कीर्तनके अन्तमें प्रभुने स्वयं सबको माल्य-चन्दनसे आभूषित किया। उन्होंने जगाई-माधाईको मधुर वाणीसे आदरपूर्वक सामने बुलाया। वे आकर दीनभावसे हाथ जोड़कर प्रभुके सामने खड़े हुए। प्रभुने अपने गलेसे दो प्रसादी मालाएँ उतारकर दोनों भाइयोंके गलेमें पहना दीं। भक्तवृन्द आनन्दसे हरिध्वनि करने लगे। उसके बाद वे अपने अन्तरङ्ग भक्तोंके हाथमें जगाई-माधाईको सौंपकर अपने मन्दिरको लौट आये। भक्तवृन्द भी अपने-अपने घर भोजन करने गये।

उस समय रात डेढ़ पहर चली गयी थी। जगाई-माधाई अपने घर नहीं गये। उस रात श्रीवासपण्डितके आँगनमें पड़कर रोते-रोते सारी रात जागते रहे। श्रीनित्यानन्दप्रभु तथा श्रीवास-पण्डित उनको लेकर बड़ी विपद्‌में पड़े।

श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने प्रभुकी जगाई-माधाई-उद्धार-लीलाकी फलश्रुति लिखी है—

जेइ शुने दुइ महादस्युर उद्धार।
तारें उद्धारिबे गौरचन्द्र अवतार॥

चै. भा. म. १३.३९०

ठाकुर लोचनदासने लिखा है—

ए हेन दयार निधि के आछे ठाकुर।
दोष ना देखये दया करे एत दूर॥

चै. म.

अदोषदर्शी हमारे प्रभुने जगाई-माधाईका कोई दोष नहीं देखा। माता-पिता यदि संतानके दोष देखें, तो उनका उद्धार कैसे होगा ? श्रीभगवान् जगत्-पिता हैं, वे यदि जीवके दोष खोजते फिरें तो उनका फिर उद्धार ही न हो। श्रीगौर-भगवान्‌के इस अदोषदर्शिता-गुणके कारण ही जीव उनके चरणोंमें आकृष्ट होते हैं और यह आकर्षण ही उनके उद्धारका कारण बनता है।

श्रीपाद रूपगोस्वामीने प्रभुको यही कहकर उनकी स्तुति की थी—

अहं कनककेतकीकुसुमगौरदृष्टः क्षितौ
न दोषलवदर्शिता विविधदोषपूर्णेऽपि ते।
अतः प्रवणय धिया कृपणवत्सल त्वां भजे
शचीसुत मयि प्रभो कुरु मुकुन्द मन्दे कृपाम्॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पैंतालीसवाँ अध्याय

उद्धारके बाद जगाई-माधाई

जगाइ माधाइ दुइ चैतन्य कृपाय।
परम धार्मिक रूपे बैसे नदियाय॥
उषाकाले गङ्गास्नान करिया निर्जने।
दुइ लक्ष हरिनाम लय प्रतिदिने॥
आपनारे धिक्कार करये अनुक्षण।
निरवधि कृष्ण बलि करये क्रन्दन॥

चै. भा. म. १५.३—५

श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने अपने श्रीचैतन्यभागवत-श्रीग्रन्थमें जगाई-माधाई-उद्धारके प्रसङ्गमें देवगणके आनन्द और यमराजके संकीर्तनका वर्णन किया है। जिनके हृदयमें गौर-भक्त साधकोंकी कृपासे श्रीगौराङ्ग-तत्त्वकी स्फूर्ति हुई है, वे यह बात सुनकर आश्चर्य नहीं करेंगे।

प्रभु जब जगाई-माधाईका उद्धार करके अपने घर आये, तब शचीमाताने परम आनन्दित हो, पुत्रको उत्तम भोजन बनाकर खिलाया। शचीदेवी और श्रीमती विष्णुप्रियादेवी प्रभुको आज देख रही हैं। सब जीवोंके उद्धारकर्ता, सारे विघ्नोंका नाश करनेवाले एवं सारे पापोंको ध्वंस करनेवाले परम-पुरुष श्रीभगवान्‌की मूर्ति सामने है। जगाई-माधाई-उद्धार-लीला उन्होंने अपनी आँखों-देखी है। शचीमाता पुत्रके मुख-चन्द्रकी ओर एकटक देख रही हैं। वे सोच रही हैं कि निमाई क्या मेरा पुत्र है? श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अन्तरालमें खड़ी होकर अपने प्राणवल्लभकी अपरूप-रूप-सुधाका पान कर रही हैं और मन-ही-मन सोच रही हैं कि ये तो मनुष्य नहीं हैं; मनुष्य ऐसा काम नहीं कर सकता! तो क्या मेरे प्राणवल्लभ स्वयं श्रीभगवान् हैं? सास-बहू मन-ही-मन इस प्रकारके तर्क-वितर्क कर रही हैं और नयन भरकर प्रभुके अपरूप-रूपका दर्शन कर आनन्द-सागरमें डूब रही हैं।

देवगणका उल्लास

प्रभु भोजनोपरान्त शयन-गृहमें गये। गुप्तरूपमें देवगण प्रभुके साथ रहते हैं; उनकी अपूर्व नवद्वीप-लीलाका दर्शन करते हैं और उनकी सेवा करते हैं। श्रीगौर-भगवान्‌के शयन करनेपर देवगण चले जाते हैं, कोई उनको देख नहीं पाता।

जगाई-माधाई, इन दो ब्रह्मदैत्योंके उद्धारकी लीला देखकर देवगण आज बड़े आनन्दसे मनमें विचार करने लगे—

एमत कारुण्य आछे चैतन्येर घरे।
एमत जनेरे प्रभु करये उद्धारे॥
आजि बड़ चित्ते प्रभु दिलेन भरसा।
अवश्य पाइब पार धरिलाङ आशा॥

चै. भा. म. १४.५,६

इन सब देवताओंमें यमराज भी हैं। उन्होंने जगाई-माधाई-उद्धार-लीला अपनी आँखोंसे देखकर चित्रगुप्तसे पूछा—"जगाई-माधाईके पापका हिसाब एक बार बताओ तो!" चित्रगुप्तने विनीत स्वरसे उत्तर दिया—"धर्मराज! व्यर्थका परिश्रम करनेसे अब क्या लाभ? तीन लाख कायस्थ एक महीने परिश्रम करके इनकी पापराशिकी गणना करके पार नहीं पा सकते। आप एक लाख सुनकर भी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसको जाननेमें समर्थ न होंगे। इनके पापोंका ढेर पर्वतके समान है; परन्तु नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गप्रभुने क्षणमात्रमें इनकी पापराशिको भस्मीभूत कर दिया है। अब पापका हिसाब-किताब व्यर्थ रखनेसे क्या लाभ ?"

(चै. भा. म. १४.१०.१८)

धर्मराज यम परमवैष्णव हैं। चित्रगुप्तकी बात सुनकर उनके मनमें बड़ा आनन्द हुआ; प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर वे रथसे भूतलपर गिर पड़े और मूर्च्छित हो गये। ब्रह्मादि देवगण उनको घेरकर श्रीगौराङ्ग-गुण-कीर्तन करने लगे। इनमें नारदादि ऋषिगण भी थे। सभी धर्मराज यमकी मूर्छाका कारण चित्रगुप्तके मुखसे सुनकर उनके कानके पास कृष्ण-नाम-कीर्तन करने लगे। यमराजकी मूर्छा-भङ्ग होनेपर वे देवताओंके साथ प्रेमानन्दमें नृत्य करने लगे*।

कीर्तनके अन्तमें देवताओंने श्रीगौराङ्गप्रभुकी स्तुति की—

जय जगत मङ्गल, प्रभु गौरचन्दर,
जय सर्वजीवलोक नाथ।
उद्धारिला करुणाते, ब्रह्मदैत्य जेन मते,
सभा प्रति कर दृष्टिपात ॥

चै. भा. म. १४.५५

देवताओंका यह आनन्द-नृत्य अति गोपनीय वस्तु है। साधारण लोगोंमें इसके देखने या समझने-की शक्ति नहीं होती। प्रभुके कृपादेशके बिना इसे कोई देख नहीं पाता। यदि वे किसीके प्रति अनुग्रह करके उसे कहते हैं, तभी वह भाग्यवान् इस वेद-गोप्य बातको सुन पाता है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुर श्रीनित्यानन्दप्रभुके कृपापात्र तथा उनके पादश्रित चिह्नित दास थे। श्रीगौराङ्ग-नित्यानन्द अभेदात्मा हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीमुखसे श्रीगौराङ्ग-लीला-श्रवण करके श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने श्रीचैतन्यभागवत-श्रीग्रन्थ लिखा है। यह देवताओंका नृत्य-कीर्तन-लीलारङ्ग भी श्रीगौराङ्ग-

---

*नाचे प्रभु शंकर, हइया दिगम्बर,
कृष्णावेशे वसन ना जाने।
वैष्णवेर अग्रगण्य जगत करये धन्य,
कहिया तारक राम नामे ॥

चै. भा. म. १४.३९

× × ×

नाचये चतुरानन, भक्ति जार प्राणधन,
लइया सकल परिवार।
कश्यप-कर्दम-दक्ष, मनु-भृगु महामुख्य,
पाछे नाचे सकल ब्रह्मार ॥

चै. भा. म. १३.४१

चैतन्येर प्रिय भृत्य, शुकदेव करे नृत्य,
भक्तिर महिमा शुक जाने।
लोटाइया पड़े धूलि, जगाइ माधाइ बलि
करे बहु दण्ड परण मे ॥

चै. भा. म. १४.४४

× × ×

केहो काँदे. केहो हासे, देखि महा परकाशे,
केहो मूर्च्छा पाय सेइ ठाँई।
केहो बले भाल-भाल, गौरचन्द्र ठाकुराल,
धन्य पापी जगाइ-माधाइ ॥

चै. भा. म. १४-५२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लीलाके व्यासावतारने श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीमुखसे सुनकर लिखा है, यह बात वे सुस्पष्ट भाषामें लिख गये हैं—

देखिते ना पाय इहा केहो आज्ञा बिने।
सेइ प्रभु अनुग्रहे बोले कारो स्थाने॥

चै. भा. म. १३.३७६

उन्होंने एक और स्थानमें लिखा है—

देवगण नृत्य शुन सावधान हैया।
अति गुह्य वेदे व्यक्त करिबेन इहा॥

चै. भा. म. १४.३५

श्रीभगवान्‌की अलौकिक लीला-कथामें सुदृढ़ विश्वास परम सुकृतिका फल है। महाजन और ऋषिगण-वर्णित श्रीभगवान्‌की लीला-कथामें अविश्वास भक्तिमार्गमें भारी विघ्नस्वरूप है। श्रीभगवान्‌की अलौकिक लीला-कथाओंमें जिसको विश्वास नहीं होता, उसका इहलोक-परलोक दोनों नष्ट हो जाता है; यह महाजनकी उक्ति है—

अलौकिक लीलाय जार ना हय विश्वास।
इहलोक परलोक तार हय नाश॥

चै. च. म. ७.१०८

× × ×

अद्‌भुत चैतन्यलीलाय जाहार विश्वास।
सेइ जन जाय चैतन्येर पद पाश॥

चै. च. आ. १७.२९९

जगाई-माधाईकी हालत

पहले कह चुका हूँ कि जिस दिन दयानिधि प्रभुकी कृपासे जगाई-माधाईका उद्धार हुआ, उस दिनसे वे घर नहीं गये। उनके प्रत्येक कार्यमें वैराग्यके लक्षण दीख पड़े। उन्होंने घर छोड़कर गौर-भक्तवृन्दके चरणोंका आश्रय ग्रहण किया। आज इसके घर, कल उसके घर भिक्षा करते हैं और अति दीनभावसे नदियाके रास्तेपर और गङ्गाके तीरपर रोते फिरते हैं। उषाकालमें उठकर गङ्गास्नान करके एकान्तमें बैठकर दो लाख हरिनामका जप करते हैं और 'हा गौराङ्ग! हा प्रभु नित्यानन्द!!' कहकर जहाँ-तहाँ भूमिपर पड़कर लोटते हैं और व्याकुलतापूर्वक क्रन्दन करते है। सब जीवोंमें ईश्वरका दर्शन करते हैं, सबलोगों का सम्मान करते हैं और पहलेकी बातें याद करके विषम अनुतापकी अग्निमें दग्ध होते हैं, आहार-निद्राकी कोई चेष्टा वे नहीं करते। प्रभु स्वयं तथा भक्तोंके द्वारा उनको बहुत समझाते हैं। बहुत उपदेश देते हैं, अपने पास बैठाकर भोजन कराते हैं, आदर करते हैं, तथापि वे चित्तमें सुख नहीं पाते।

विशेषत: माधाई सर्वदा म्रियमाण रहते हैं। उन्होंने श्रीनित्यानन्दप्रभुके शरीरपर चोट पहुँचायी थी, यह स्मरण करके आत्मग्लानिसे वे सदा ही रोते हैं। परमदयालु निताई-चाँद उनका अपराध नहीं गिनते, यह बात बारंबार कहनेपर भी उनके चित्तमें आत्मतुष्टि नहीं होती। वे केवल यही कहते हैं—"मैंने श्रीनित्यानन्दप्रभुके अङ्गपर प्रहारकर रक्तपात किया है, मेरा कैसे उद्धार होगा?"—यह कहकर माधाई निरन्तर अपने शरीरपर आप आघात करते हैं। हृदयके संतापसे वे अपने गालपर, मुँहपर तमाचे लगाते हैं और छाती पीटकर बोलते हैं—

जे अङ्गे चैतन्यचन्द्र करये बिहार।
हेन अङ्गे मुञि पापी करिलुँ प्रहार॥

चै. भा. म. १५.१५

—यह कहते-कहते वे कभी-कभी मूर्छित हो जाते हैं। माधाईकी अवस्था अतीव सोचनीय है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीनित्यानन्द और माधाई

श्रीनित्यानन्दप्रभुका सदा बाल्यभाव रहता है। सारी नदियामें वे परम आनन्दपूर्वक घूमा करते हैं।

वे सर्वज्ञ हैं, माधाईके मनकी अवस्था वे जानते हैं। प्रभुके साथ माधाईके सम्बन्धमें उनकी बातें होती हैं। इच्छामय प्रभु श्रीनित्यानन्दकी महिमाका कुछ और प्रचार करेंगे, ऐसी उनकी इच्छा हुई। माधाईके द्वारा वे इस कार्यको करायेंगे, यह भी मन-ही-मन उन्होंने स्थिर कर लिया। पतितोद्धार-का कार्य प्रभुका स्व-कार्य है। जगाई-माधाई-उद्धार तो उन्होंने स्वयं किया ही, साथ ही कौशलपूर्वक इस कार्यके द्वारा उन्होंने श्रीनित्यानन्दकी महिमा-का जगत्में प्रचार भी किया। श्रीनित्यानन्दप्रभु भी श्रीगौर-भगवान्के मनके भावको समझकर माधाई-को पुनः कृपा-उपदेश देनेके लिए चले। उन्होंने इसके पहले प्रभुके आदेशसे जगाई-माधाईको हरिनाम-महामन्त्रका उपदेश दिया था, अब उनको गौर-मन्त्रमें दीक्षित करनेकी वासना उनके उदित हुई।

इसी उद्देश्यसे श्रीनित्यानन्दप्रभुने नदिया-भ्रमण करते हुए एक दिन गङ्गाके तीरपर जाकर माधाईको दर्शन प्रदान करके कृतार्थ किया। माधाई गङ्गाके तीरपर एकान्तमें अकेला बैठकर अजस्त्र आँसू बहा रहे थे। श्रीनित्यानन्दप्रभुको सामने देखकर उनके हृदयका अनुतापानल द्विगुण हो उठा। उन्होंने उनके अभय चरणोंमें गिरकर नयन-जलसे श्रीचरणोंको धो दिया। गङ्गाके किनारे अति निर्जन स्थानमें माधाई बैठे थे। अपराह्ण-काल था। मृदु-मन्द, स्निग्ध समीरण बह रहा था। सूर्यदेव अस्तंगामी हो रहे थे। गङ्गाके जलमें अस्तगमनोन्मुख सूर्यकी शीतल किरणोंकी छाया पड़कर अपूर्व शोभा धारण कर रही थी। श्रीनित्यानन्दप्रभु गङ्गातटपर बैठ गये। माधाई उनके सामने खड़े होकर हाथ जोड़कर श्रीनित्यानन्द-स्तुतिपाठ करने लगे। माधाईकी जिह्वापर प्रभुकी कृपासे शुद्धा सरस्वतीका आविर्भाव हुआ तथा उनके हृदयमें नित्यानन्द-तत्त्वकी स्फूर्ति हुई। नयन-जलसे माधाईका वक्षःस्थल भीग गया। प्रेम-गद्गद स्वरमें उन्होंने हाथ जोड़कर नित्यानन्दप्रभु-की स्तुति की, जो श्रीचैतन्यभागवत, मध्यखण्ड, अध्याय १५ के २१ से ५५ तकके पयार छन्दोंमें वर्णित है।

इस प्रकार रोते-रोते माधाई कातरकण्ठसे श्रीनित्यानन्दप्रभुकी अपार महिमा-कीर्तन करते-करते उनके चरणोंमें गिर पड़े। दयालु निताईने तब प्रेमानन्दमें अधीर होकर अपने शिव-विरञ्चि-अभिवाञ्छित रक्त-पाद-पद्मद्वयको माधाईके वक्षःस्थलपर रख दिया। परम सुकृतिवान् माधाई श्रीनित्यानन्द-पादपद्मको हृदयमें धारण करके हृदयावेगसे पुनः स्तुति करने लगे—

जे चरण धरिले, ना जाइ कभू नाश।
पतितेर त्राण लागि जाँहार प्रकाश॥
शरणागतेरे बाप कर परित्राण।
माधाइर तुमि से जीवन-धन-प्राण॥
जय जय जय श्रीपद्मावतीर नन्दन।
जय नित्यानन्द सर्व वैष्णवेर धन॥
जय जय अक्रोध परमानन्द राय।
शरणागतेर दोष क्षमिते जुयार॥
दारुण चण्डाल मुञि कृतघ्न गो-खर।
सर्व अपराध प्रभु मोर क्षमा कर॥

चै. भा. म. १५.५७-६१

माधाईकी स्तुतिसे दयाके सागर श्रीनित्यानन्द-प्रभुने संतुष्ट होकर उनको हाथसे पकड़कर उठाया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और कहा—"उठो माधाई, उठो ! तुम तो मेरे दास हो; तुम्हारे शरीरमें मेरा प्रकाश हुआ है। बालक-पुत्रके मार देनेसे क्या पिताको दुःख होता है ? मेरे शरीरपर तुम्हारा प्रहार भी ऐसा ही है। तुमने जो मेरी स्तुति की है, उसे जो सुनेगा, वह मेरे चरणोंका भक्त बनेगा। मेरे प्रभुके तुम कृपापात्र हो। मेरे निकट तुम्हारा तिल-भर भी दोष नहीं है। जो जन श्रीचैतन्यका भजन करते हैं, वे ही मेरे प्राण हैं और मैं उनकी युग-युगमें रक्षा करता हूँ। जो श्रीचैतन्यचन्द्रको न भजकर मुझको भजता और गाता है–तो उससे मुझे जो दुःख होता है, उससे वह भी जन्म-जन्ममें दुःख पाता है।"

(चै. भा. म. १५.६३-६८)

श्रीनित्यानन्दप्रभुकी अपार दयाके विषयमें यहाँ कुछ विचार करूँगा । कृपालु पाठकवृन्द थोड़ा धैर्य धारण करेंगे । माधाई परमदयालु निताई-चाँदके श्रीअङ्गमें रङ्गपात करके उनके चरणोंमें अपराधी है। प्रभुने स्वयं उनपर कृपा की है, सबके सामने उनका सारा पापभार ग्रहण किया है। श्रीनित्यानन्दप्रभुके द्वारा उनको हरिनाम-महामन्त्रका उपदेश दिलाया है, तथापि माधाईका मनस्ताप क्यों नहीं दूर हुआ ? स्वयं-भगवान् श्रीगौराङ्गप्रभुकी स्वमुखनि सृत वाणीमें क्या उसका विश्वास नहीं है ?—नहीं, ऐसी बात नहीं है। माधाईको जो मनस्ताप है, वह उसका अन्तर्दाह है; प्रभुका कृपापात्र होकर भी जो उसको श्रीनित्यानन्द-प्रभुकी चरण-चिन्ता या प्रसादाकांक्षा है, यह भी रँगीले प्रभुका लीलारङ्ग है। श्रीभगवान् सर्व-शक्तिमान् हैं, परन्तु अपने निर्दिष्ट नियमोंकी मर्यादाका उल्लङ्घन वे कभी नहीं करते। माधाई श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंमें अपराधी है। श्रीनित्यानन्दप्रभु ही उसे शान्ति प्रदान करेंगे। पाप-ध्वंस होनेपर भी अनुतापानल हृदयको दग्ध करता रहता है। प्रभुकी कृपासे माधाईका पाप ध्वंस हो गया है, यह विश्वास माधाईके मनमें उत्पन्न करनेपर भी उत्पन्न नहीं हो रहा है। अत एव परमदयालु निताई-चाँद उसे समझाकर कहते हैं—"छोटा बालक यदि बापको मारता है तो क्या वह बापके शरीरमें लगता है ? तुमने जो मुझको मारा है, इससे मुझे तनिक भी दुःख नहीं है; क्योंकि तुम मेरे पुत्रस्थानीय हो । तुम श्रीगौराङ्गके कृपापात्र हो, अतएव मेरे प्राण हो। तुम्हारे लिए मैं सब-कुछ कर सकता हूँ। तुम क्या चाहते हो, कपट छोड़कर बोलो; मैं वही करूँगा।" इतना कहकर श्रीनित्यानन्दप्रभुने माधाईको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके कृतार्थ किया।

तब माधाईने रोते-रोते श्रीनित्यानन्दप्रभुके चरणोंमें पड़कर उनसे निवेदन किया—"हे प्रभो ! सब जीवोंके हृदयमें तुम्ही निवास करते हो, ऐसे बहुतसे जीवोंके प्रति हिंसा करके मैंने उनको सताया है; परन्तु मैं उनको पहचानता नहीं हूँ। यदि पहचानता होता तो मैं अपने-आप उनसे अपराधोंकी क्षमा मांगता । जिनके प्रति मैंने अपराध किये हैं, वे किस प्रकार मेरेपर प्रसन्न होंगे ? हे प्रभो ! आप मुझपर दया करते हैं तो मुझे इसका उपाय बताइये !"

मनुष्यके शरीरमें जब पापरूप सर्प प्रवेश करता है तो उसका दाह बहुत दिनोंतक रहता है। अनुतापानलमें पापराशि गलकर नेत्रोंके द्वारा बाहर निकलकर हृदयको द्रवित करती है। हृदयके द्रवित होनेपर शरीर पवित्र हो जाता है। माधाई-का हृदय प्रभुकी कृपासे द्रवित और पवित्र हो गया है; परन्तु धर्म-मर्यादा-रक्षक श्रीगौर-भगवान् यह उसे समझने न देंगे, इसी कारण माधाईकी श्रीनित्यानन्दसे यह विनती और स्तुति है । श्रीनित्यानन्दप्रभु भी धर्मकी मर्यादाके रक्षक हैं। उन्होंने माधाईकी बातसे संतुष्ट होकर सुयोग देखकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गाके तीरपर बैठकर उसे गौर-मन्त्रका उपदेश दिया। श्रीनित्यानन्दप्रभुका मूलमन्त्र है—

भज गौराङ्ग कह गौराङ्ग लह गौराङ्ग नाम।
जे जन चैतन्य भजे सेइ मोर प्राण॥

यह भी माधाईको भली-भाँति समझा दिया। उसके बाद उसके प्रश्नोंका उत्तर देते हुए। उन्होंने माधाईको उपदेश दिया—

"इसका उपाय सुनो! तुम सदा गङ्गाजीके घाटोंकी सफाई किया करो! गङ्गाजीकी सेवा सब अपराधोंका भञ्जन करनेवाली है। उससे लोगोंको गङ्गा-स्नान करनेमें सुख होगा तो सब तुम्हारा कल्याण करेंगे। अति विनयपूर्वक सबको नमस्कार करना। इससे तुम्हारे सब पापोंका शमन हो जायगा।" (चै. भा. म. १५.७५-७८)

माधाईके प्रति श्रीनित्यानन्दप्रभुका यह उपदेश गम्भीर तत्त्वसे भरा है। नवद्वीपके सबलोगोंके साथ जगाई-माधाईने अत्याचार और उपद्रव किया है, सबलोगोंके सामने वे अपराधी हैं। नदियाके सबलोग गङ्गा-स्नान करने आते हैं, इसी कारण सर्वतत्त्वज्ञ, दयालु निताई-चाँदने माधाईको उपदेश दिया कि सबलोगोंके सामने अपने अपराधोंके लिए विनती और क्षमा-प्रार्थना करो! गङ्गाके घाटोंको साफ-सुथरा करनेसे साधारण लोगोंके लिए स्नानमें सुविधा होगी, उनका उपकार होगा। इसी कारण उन्होंने कहा कि तुमलोग गङ्गाके घाटको साफ-सुथरा करो और आत्मशुद्धिके लिए सबको नमस्कार करनेका उपदेश दिया। दीनभाव हुए बिना अपराध क्षम्य नहीं होता। अहंकारसे अपराध बढ़ता है। अनुताप और दैन्य-प्रकाश करना पापक्षय-की प्रधान औषधि है।

गङ्गाघाटपर जगाई-माधाई

श्रीनित्यानन्दप्रभु माधाईको गौर-मन्त्रोपदेश तथा उनके भविष्य-जीवनके लिए उपदेश देकर वहाँसे चल दिये। माधाईने रोते-रोते उनकी बारंबार प्रदक्षिणा करके चरण-धूलि ली और उसी दिनसे अपने हाथमें कुदाल लेकर गङ्गाके घाटकी सफाई करने लगे। पीछे जगाईने भी उनके इस मङ्गल-कार्यमें योगदान किया। इस प्रकार माधाई जिस घाटकी सफाई करने लगे, उसका नाम हुआ—'माधाईका घाट'। अबतक नवद्वीपमें यह माधाईका घाट प्रसिद्ध है।

माधाईका दीनातिदीन वेष, हाथमें कुदाल, मुँहमें अविरत 'हरे कृष्ण' नाम और आँखोंसे अविरत अश्रुधार रहता था। वे नित्य गङ्गाके घाटकी सफाई करते थे। सबलोग उनके इस कार्यको देखकर चकित थे। जिसको वे गङ्गाके घाटपर स्नान करनेके लिए आते देखते—क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या बालक, क्या वृद्ध—माधाई सबको दण्डवत्-प्रणाम करते थे और रोते-रोते हाथ जोड़कर निवेदन करते थे—

ज्ञाने अज्ञाने जत कैनू अपराध।
सकल क्षमिया मोरे करह प्रसाद॥

चै. भा. म. १५.८२

माधाईके दैन्य और अनुतापका क्रन्दन देखकर उनके प्रति सब नदियावासियोंका हृदय प्रसन्न हो गया। ऐसा कोई आदमी न था, जो माधाईको देखकर रो न पड़ता हो। प्रभुने कहा था—"जो इन दोनोंका उपहास करेगा, उसका सर्वनाश हो जायगा।"

प्रभुकी कृपावाणीके प्रभावसे सारे नवद्वीपमें जगाई-माधाईका परिहास करनेवाला कोई न था। माधाईके क्रन्दनको देखकर सबको रोना आता था और सब आनन्दपूर्वक भगवत्-स्मरण करते थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जगाई-माधाईके इस उद्धारकार्यसे श्रीगौराङ्ग-प्रभुकी भगवत्ताके सम्बन्धमें बहुत लोगोंका संदेह दूर हो गया। श्रीनित्यानन्दप्रभुकी अपार करुणा और अचिन्त्य शक्ति देखकर उनके प्रति परम पाखण्डीलोग भी श्रद्धावान् हो गये। सारी नदियामें शान्ति विराजने लगी। सबलोग श्रीगौराङ्ग और श्रीनित्यानन्दप्रभुका जय-गान करने लगे। सबके मुँहपर एक यही बात थी कि निमाईपण्डित मनुष्य नहीं हैं। बहुतेरे पाखण्डीलोग प्रभुमें अनुरक्त हो गये। युगधर्म भुवनमङ्गल हरिनाम-संकीर्तनके फलसे जगाई-माधाईका उद्धार हुआ, यह सबके मनमें दृढ़ विश्वास हो गया। हरिनाम-संकीर्तन-महायज्ञके अनुष्ठानके प्रति सभी श्रद्धावान् हो गये। नदियामें आनन्दकी धारा बह चली। इस कार्यके द्वारा प्रभुने नवद्वीपमें अपनी आत्मप्रकाश-लीलाका पूर्ण परिचय दिया।

माधाई परम तपस्वी हो गये। दिन-रात गङ्गाके घाटपर बैठकर हरिनाम जप करते थे और अजस्र प्रेमाश्रुवर्षण करते थे। नदियाके लोगोंने उनको 'ब्रह्मचारी' नामसे प्रसिद्ध कर दिया।

जगाई-माधाई-उद्धार-लीलाका प्रभाव

जगाई-माधाई-उद्धार-लीलामें प्रभुने कुछ ऐश्वर्य दिखलाया था। उन्होंने पहले जगाईको अपनी चतुर्भुज मूर्ति दिखलायी थी। उनके आह्वानसे सुदर्शनचक्र आकर उपस्थित हुआ था। जगाई-माधाई-जैसे महापापीका उद्धार करनेमें करुणामय श्रीगौर-भगवान्‌ने जो ऐश्वर्य-प्रदर्शन किया था, उसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है। करुणा-प्रकाश करनेसे जब कार्य-सिद्धि नहीं होती है, तब मङ्गलमय श्रीभगवान्‌को कुछ कठोर नीति अवलम्बन करनी पड़ती है। सुदर्शनचक्रसे भयभीत होकर जगाई प्रभुके शरणापन्न हुए थे। प्रभुकी चतुर्भुज मूर्ति-दर्शन करके माधाईने उनको श्रीभगवान्‌के रूपमें जाना था। आत्मप्रकाश किये बिना जब कार्यसिद्धि नहीं होती, तभी श्रीभगवान् आत्मप्रकाश करते हैं और ऐश्वर्य दिखलाते हैं।

प्रभुके इस लीलारङ्गमें और एक अलौकिक निगूढ़ रहस्य निहित है। जगाई-माधाईका सर्वपाप-ग्रहण करके उन्होंने कालिया-आकार धारण किया था। यह मनुष्यका काम नहीं था। यह भी प्रभुका ऐश्वर्य-प्रदर्शन-लीलारङ्ग था। श्रीगौराङ्गप्रभुने यह कार्य क्यों किया, इसपर कुछ विचार करूँगा।

नदियाके लोगोंकी तबतक युगधर्म-हरिनाम-संकीर्तनमें श्रद्धा नहीं हुई थी; पाखण्डियोंका दल वैष्णवोंको देखकर उपहास करनेसे विरत नहीं होता था। नाम-संकीर्तनसे पापक्षय होता है, इसमें उनको विश्वास नहीं था। नाम-माहात्म्य-प्रचार करनेके लिए श्रीगौराङ्गप्रभु नदियामें भक्तरूपमें अवतीर्ण हुए थे। जगाई-माधाई-उद्धार करने अपने मन्दिरसे संकीर्तनके साथ सारे परिकरोंको सङ्ग लेकर वे उनके घर गये थे। नदियाके सबलोगोंने यह अपनी आँखोंसे देखा था। फिर किस प्रकार, किस उपायसे जगाई-माधाईका उद्धार हुआ, यह भी उनलोगोंने अपनी आँखोंसे देखा और यह देखकर युगधर्म संकीर्तन-महायज्ञानुष्ठान-धर्मकी महिमा और प्रभावको समझा। तब वे सुक्तकण्ठसे कहने लगे—

निमाई पण्डित सत्य करये कीर्तन।

चै. भा. म. १५.८६

जगाई-माधाई-उद्धार-लीलामें युगधर्म संकीर्तनके माहात्म्यमें पतिततोद्धार-कार्य किस प्रकार अत्यन्त आश्चर्यरूपमें सुसिद्ध होते हैं, यह नदियावासियोंको प्रभुने दिखला दिया। संकीर्तन-यज्ञेश्वर, युगधर्म-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रचारक श्रीगौर-भगवान् सर्वशक्तिसम्पन्न हैं, अधम और पतित जीवोंके सारे पाप हरण करके उनको निष्पाप करनेकी शक्ति उनमें निहित है—यह दिखलानेके लिए प्रभुने सबके सामने अञ्जलि फैलाकर जगाई-माधाईके पर्वतके समान पापकी राशि-ग्रहण करके क्षणभरके लिए कालिया-रूप धारण किया। हरिनाम-कीर्तन करने, हरिनाम-श्रवण करने और हरि-संकीर्तनयज्ञमें नृत्य करनेसे जीवके सब पापोंका नाश होता है—जगाई-माधाईके द्वारा कलिपावनावतार श्रीगौराङ्गप्रभुने यह भी दिखा दिया। यह पापग्रहण-लीलारङ्ग उनकी ऐश्वर्य-लीला है। नवद्वीपमें वे जब आत्मप्रकाश करने बैठे हैं, तब यदि वे यह ऐश्वर्य-लीलारङ्ग दिखलाकर पतित पाखण्डीके मनको हरण करके उनको आत्मसात् करते हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? महाकौतुकी श्रीभगवान्के महाकौशलमय जीवोद्धार-कार्यमें कौशल-जाल फैलानेकी आवश्यकता थी, इसी कारण उन्होंने यह सब ऐश्वर्य-प्रदर्शन किया।

महाजनगण प्रभुकी जगाई-माधाई उद्धार-लीलाके सम्बन्धमें बहुत पद-रचना कर गये हैं। उनमें-से एक मधुर-से-मधुर पद (माधाईके प्रति जगाईकी उक्तिका) यहाँ उद्धृत किया जाता हैं। जगाई कह रहा है—

चल रे चल रे माधा चल रे त्वराय।
लुटाइया पड़ि गिया दुइ भाइर पाय॥
माइर खेये दया करे ओइ दयाल निताइ।
एमन दयाल दाता आर तो कोथा देखि नाइ॥
कि करिबे धने-जने विषय-वैभवे।
मोदेर पापेर भागी केह त ना हबे॥
गौराङ्ग-निताई भजि पूर्ण हबे काम।
काङ्गालेर ठाकुर दोंहे कहे नन्दराम॥

दयाके अवतार, करुणाके सागर श्रीश्रीगौर-नित्यानन्दप्रभुकी कृपासे कलिके बहुत-से अधम जीव आजतक इसी प्रकारके भावमें उद्धार पा रहे हैं। वे दोनों भाई कैसी परम वस्तु हैं, यह वे धीरे-धीरे जानने लगे हैं। जिसको यह सौभाग्य प्राप्त नहीं होता, वे बड़े अभागे हैं; गौर-भक्तगणकी कृपासे उनका यह दुर्भाग्य क्रमशः दूर हो रहा है। क्रमशः श्रीगौर-नित्यानन्दके चरणोंमें कलिग्रस्त जीव आकृष्ट हो रहे हैं। जिन्होंने एकबार श्रीगौराङ्ग-लीला-रसका आस्वादन किया है, वे उसमें एकबारगी निमग्न हो गये हैं। पहले उनको यह सौभाग्य क्यों नहीं प्राप्त हुआ, इस दुःखसे वे मर्माहत होते रहते हैं। यह सब देख-सुनकर गौर-भक्तके मनमें बड़ा आनन्द होता है। जिनको अबतक श्रीगौराङ्ग-लीलारसको आस्वादन करनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, उनके प्रति इस अधम ग्रन्थकारका विनीत निवेदन है कि वे अविलम्ब श्रीगौराङ्ग लीलाके ग्रन्थोंका पाठ प्रारम्भ कर दें, गौर-कथा-श्रवण करें। समय बीत जानेपर विशेष पश्चात्ताप होगा। परम गौर-भक्त महाजनगण भी इस अनुतापकी अग्निसे दग्ध हो गये हैं। उनके रचित पद इसमें प्रमाण हैं। पदकर्ता गोविन्ददासने लिखा है—

व्रजेन्द्रनन्दन जेइ, शचीसुत हईल सेइ,
बलराम हइल निताई।
दीन-हीन जत छिल, हरिनामे उद्धारिल,
तार साक्षी जगाई-माधाइ॥
हेन प्रभुर श्रीचरणे, रति ना जन्मिल केने,
ना भजिलाम हेन अवतार।
दारुण विषय-विषे, सतत मजिया रहिनु,
मुखे दिये ज्वलन्त अङ्गार॥
हरि हरि बड़ दुःख रइल मरमे।
गौर-कीर्तन-रसे, जग-जन-मातिल,
बञ्चित मो हेन अधमे॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एमन दयाल दाता, आर ना पाइब कोथा,
पाइया हेलाय हाराइनु।
गोविन्द दासिया कय, अनले पड़िनु नय,
सहजेइ आघात पाइनु॥

जीवाधम ग्रन्थकारके पूज्यपाद पूर्वपुरुष प्रसिद्ध पदकर्ता श्रीबलरामदास ठाकुरने लिखा है—

सब अवतार सार गोरा अवतार।
एमन करुणा कभू ना देखिये आर॥
दीन हीन अधम पतित जने जने।
याचिया याचिया प्रभु दिया प्रेम धने॥
एमन दयाल निधि जेवा ना भजिल।
आपनार हाते तुलि गरल खाइल॥
जे जन बञ्चित हैल हेन अवतारे।
कोटि कोटि कल्पे तार नाहिक उद्धारे॥
मुञि से अधम हेन प्रभु ना भजिया।
कहे बलराम एबे मारिनु पुड़िया॥

जीवाधम ग्रन्थकार इस महापुरुषके वंशका कुलाङ्गार हैं। परमदयालु श्रीनिताई-चाँद हमारा पूर्व सम्बन्ध मानते हैं। ठाकुर बलरामदासपर कृपा करके उनको जिस प्रकारसे उन्होंने आत्मसात् किया था, यह विस्तारपूर्वक जीवाधम ग्रन्थकार-प्रणीत 'द्विज बलरामदास ठाकुरकी जीवनी और पदावली' नामक ग्रन्थमें वर्णित है। वंश-परिचय देनेमें जीवाधम ग्रन्थकारको स्वभावतः लज्जा लगती है। एक पदमें यह बात लिखकर आत्मशुद्धि करता हूँ। वह पद है—

हाहा प्रभु बलराम ठाकुर गोसाञि।
तोमार कृपाते पाइ दयाल निताइ॥
दिले दिते पार तुमि नित्यानन्द धन।
तुमि श्रेष्ठ परिकर ताँर निज जन॥
मुञि बड़ अभाजन दुष्ट दुराचार।
वंशेर कुक्कुर मुञि पापी कुलाङ्गार॥
दया कर अधमेरे केशे धरि एबे।
पतितपावन नाम भुवने घोषिबे॥
चरण आघात दिये कुलाङ्गार शिरे।
उद्धारह दुराचार पापी अभागारे॥
हाहा प्रभु बलराम दयाल ठाकुर।
तोमार पवित्र वंशे जन्मिला कुक्कुर॥
कुलाङ्गार हरिदासेर मुण्डे पड़ु बाज।
वंश परिचय दिते नाहि बासे लाज॥

और एक बात कहकर इस अपूर्व जगाई-माधाई-लीलाका उपसंहार करूँगा। उद्धारके बाद जगाई-माधाईकी आध्यात्मिक अवस्था कैसी हुई, श्रीश्रीगोर-नित्यानन्द-तत्त्व किस प्रकार उनके हृदयमें परिस्फुटित हुआ, यह कृपालु पाठकवृन्द अवश्य समझ गये होंगे। अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुको साथ लेकर कृपासिन्धु श्रीगौराङ्गसुन्दर गङ्गाके घाटपर बीच-बीचमें साधु जगाई-माधाईको देखने जाते थे। जगाई-माधाई उनका दर्शन करके प्रेमानन्दमें दोनों आदमी दोनों प्रभुओंके श्रीचरण-कमलोंमें लोटकर व्याकुल होकर क्रन्दन करते थे। उनके करुण क्रन्दनकी ध्वनिसे दोनों प्रभुओंका हृदय फटने लगता था। वे लोग भी जगाई-माधाईके साथ बैठकर गङ्गाके तीरपर अश्रुजलसे वक्षःस्थल निमज्जित करते थे। उस अद्भुत प्रेम-दृश्यको जो देखता, वह भी रोते-रोते व्याकुल हो जाता। नदियाके भक्तगण नित्य जाकर जगाई-माधाईका दर्शन कर आते थे। नवद्वीप-निवासिनी पुरनारियाँ गङ्गा-स्नान करके दूरसे ही जगाई-माधाईको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रणाम करती थीं; क्योंकि यह प्रभुका आदेश था।

श्रीमन्महाप्रभु जब संन्यास-ग्रहणके पाँच वर्ष बाद कुलियानगरमें आये तो जगाई-माधाई उनका दर्शन करने गये। प्रभुका संन्यास-वेष देखकर जगाईने अपने भाई माधाईसे जो कहा था, वह प्राचीन पदकर्ताकी भाषामें सुनिये—

धानसी राग।

माधा देखरे! एत शुधू गौर नय।
उहार गोरारूपेर माझे माझे
काल बरण झलक देय॥
अरुण वसन परा जेन
पीत धड़ा प्राय।
उहार माथार चाँचर केश
चूड़ार मत देखा जाय॥
तुलसीर माला जेन
वनमाला शोभा पाय।
करेते जे दण्ड धरे
वंशी जेन देखि ताय॥
हरि हरि बले मुखे
राधा राधा शुना जाय।
दीन नन्दराम कहे
ब्रजेर रतन नदियाय॥

जगाईके मनमें श्रीगौराङ्ग-तत्त्वकी स्फूर्ति परमदयालु निताई-चाँदने कर दी थी। 'ब्रजके रत्न' को नदियाके निताई-चाँदमें खोजकर बाहर कर दिया था।

जगाई-माधाई-उद्धार लीलारङ्गमें हमारे दयामय पतितपावन प्रभुने महापापी कलिके अधम जीवोंको यह शिक्षा दी कि जो महापापी होते हुए भी 'अब पाप कर्म न करूँगा'—यह कहकर अनुतप्त होकर निष्कपट श्रीभगवान्‌के चरणोंकी शरण लेता है तथा निष्कपट अपना पाप स्वीकार करके क्षमा प्रार्थना करता है, उसका सारा पाप परमदयालु श्रीभगवान् ग्रहण करके उसका उद्धार करते हैं। जीवाधम ग्रन्थकारने प्रभुकी इस लीलाका अनुशीलन करते-करते हृदयावेगमें एक पद लिखा था, वह यहाँ उद्धृत किया जाता है—

आर ना करिब, जा किछु करेछि,
प्राण ज्वले गेल ताते॥
स्वकृत पापेर, अनुशोचनाय
मरि गेनु वेदनाते॥
'आर नारे बाप', ना जाइब कभू
कुवासना त्रिसीमाय।
माथा जे बेचेछि, पतित पावन,
गौराङ्गेर राङ्गा पाय॥
'आर ना' बलिले, कोले लये जिनि,
जूड़ान जीवेर ताप।
हेन कृपावाणी, आश्वास पेये,
के आर करिबे पाप॥
जगाइ-माधाइ, उद्धार ह'ल.
'आर नारे बाप्' बले।
पड़े थाक केन, तबे कलि जीव,
ताइ बले एस चले॥
अनुतापानले, जल आर बल
'आर नारे बाप' बुलि।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काँदिया-काँदिया, अकपटे लह
वैष्णवेर पद-धूलि ॥
काँद आर बल, गौरहरि बोल,
गौर-दास कर सङ्ग ।
हयो ना चञ्चल, नाच आर बल,
जय निताइ-गौराङ्ग ॥
सबे मिले बसि, छाड़ि खूटि नाटि,
नाम कर परचार ।
गौराङ्ग कृपाय, ज्ञान वा अज्ञान,
जाबे जत पापभार ॥
'आर नारे बाप्', एइ मन्त्र हय,
प्रायश्चित्तसार विधि ।
दियाछेन जाहा, कलिर जीवेर,
गौराङ्ग गुणनिधि ॥
एइ बिधि लये, सर्व जीव हेल,
उद्धार विधिमते ।
बञ्चित सुधू, दास हरिदास,
काँदे ताइ दिने राते ॥

दयालु पाठकवृन्द ! अब सब मिलकर एकबार प्रेमानन्दसे बोलो--

जय जय श्रीगौराङ्ग पतित पावन ।
जय जय नित्यानन्द भक्तेर जीवन ॥
जगाइ-माधाइ जय—जय नवद्वीप ।
जय जय कलिकाल, जय कलि-जीव ॥
जय जय श्रीगौराङ्ग विष्णुप्रिया-नाथ ।
जीव प्रति कर प्रभु शुभ दृष्टिपात ॥
जय जय नित्यानन्द अनाथेर नाथ ।
पापी हरिदासे कर झाट् आत्मसात् ॥
"गाओ रे गौराङ्ग गुण जाओ ।
गेये देख, केमन जुड़ाओ ॥"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छियालीसवाँ अध्याय

शचीमाता और उनका वैष्णवापराध

प्राकृत शब्दे ओ जेवा बलिबेक 'आइ'।
'आइ' शब्द प्रभावे ताहार कोन दुःख नाइ॥
चै. भा. म. १३ ३७२

शचीमाता-परिचय और माहात्म्य

श्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप-लीला उनकी गार्हस्थ्य-लीला है। इस गार्हस्थ्यलीलामें प्रधान सहायक शचीमाता और श्रीविष्णुप्रियादेवी हैं। शचीमाताका तत्त्व प्रभु स्वयं स्पष्ट कर गये हैं, यह पहले कह चुका हूँ। श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामी 'श्रीगौर-गणोद्देशदीपिका' में लिखते हैं—

पुरा यशोदा व्रजराज नन्दौ
वृन्दावने प्रेमरसाकरौ यौ।
शचीजगन्नाथ-पुरन्दराभिधेय
बभूवतुस्तौ न च संशयोऽत्र॥

शचीमाता जगज्जननी हैं, अतएव उनको प्रभुके भक्तवृन्द 'आई' कहकर पुकारते थे। 'आई' शब्द स्नेहमयी माँका बोधक है। साधारण लोग दादीको 'आई माँ' कहते हैं। आई नदियावासियोंकी प्रेममयी-जननी है, आई पापी-तापीकी दुःखहारिणी जननी है, आई भक्तवृन्दकी भक्तिदायिनी शक्तिरूपा जननी है। शचीमाता साक्षात् जगज्जननी हैं, भक्तिस्वरूपिणी हैं।*

---

* सर्वमय तत्त्व जगन्नाथ मिश्र चन्द्र।
कि कश्यप दशरथ वसुदेव नन्द॥

श्रीपाद लीलाम्बर चक्रवर्ती नवद्वीपमें सर्वशास्त्र-विशारद प्रधान पण्डित थे। ज्योतिषशास्त्रमें उनका असाधारण अधिकार था। षड्-दर्शनके भी वे अद्वितीय पण्डित थे। उनकी चक्रवर्ती उपाधि विद्यामूलक थी। नवद्वीपके अन्तर्गत बिल्वपुष्करिणी ग्राममें वे रहते थे।

श्रीपाद लीलाम्बर चक्रवर्तीके दो पुत्र और दो कन्याएँ थीं। उनके ज्येष्ठ पुत्रका नाम योगेश्वर था और कनिष्ठका नाम रत्नगर्भ था। श्रीशचीदेवी उनकी कनिष्ठ बहन थीं। उनकी एक और बहन थीं। उनका नाम सर्वजया था। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नके साथ इनका विवाह हुआ था। प्रभुके पितृ-वियोगके बाद आचार्यरत्न उनके अभिभावक बने। श्रीपाद जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर शचीदेवीका पाणिग्रहण करके धन्य हो गये। शचीदेवी और सर्वजयादेवी-दोनोंका विवाह नवद्वीपमें हुआ। दोनों बहनें नवद्वीपके दक्षिणपाड़ामें रहती थीं। मिश्र पुरन्दर ठाकुर तथा आचार्यरत्न, दोनोंमें परम मैत्री

तान पत्नी शची नाम महा पतिव्रता।
मूर्तिमती विष्णुभक्ति सेई जगन्माता॥
चै. भा. आ. २.१३४,१३५

जननी जगतीत्रयस्य सा
पृथिवो कोटिसहिष्णुरञ्जसा।
सुरनद्यधिकातिपावनी
सतत स्नेहमयी महाशया॥
—चैतन्यचरित महाकाव्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थी। वे सर्वदा एकत्र वास करके शास्त्रालोचन और कृष्ण-कथा-प्रसङ्गमें आनन्दसे काल-यापन करते थे। श्रीशचीदेवीके भाई पण्डित रत्नगर्भके पुत्र लोकनाथ थे। ये लोकनाथ प्रभुके बड़े भाई श्रीमद्विश्वरूपप्रभुके बाल्य सहचर और सहाध्यायी थे। उनके गृह-त्यागके समय लोकनाथ उनके साथ गये थे।

शचीमाताका माहात्म्य हमारे मातृभक्त-शिरोमणि प्रभु स्वयं अपने श्रीमुखसे वर्णन कर गये हैं। वे नीलाचलमें बैठकर एक दिन दामोदरपण्डितसे बोले थे—

जत किछु विष्णुभक्ति सम्पत्ति आमार।
आइर प्रसादे सब द्विधा नाहि तार॥
ताहान इच्छाय मुञि आछो पृथिवीते।
ताङ् गुण आमि कभू ना पारि शुधिते॥

चै. भा. अं. १०.१०६,१०७

इससे बढ़कर शचीमाताके माहात्म्यको प्रकट करनेवाली और कोई बात नहीं है। शचीमाताकी महिमाकी सीमा प्रभुके इस श्रीमुखके वचनसे निर्दिष्ट हो जाती है। कविराज गोस्वामी साध करके क्या लिख गये हैं—

वन्दे तं कृष्णचैतन्यं मातृभक्तिशिरोमणिम्।

श्रीगौर-भगवान्‌ने शचीमाताको जिस प्रकार ऐश्वर्य दिखलाकर परीक्षा की थी, किसी अवतारमें अन्य किसीकी उन्होंने ऐसी विषम परीक्षा नहीं की। कौसल्या माता, यशोदा माता श्रीभगवान्‌को पुत्ररूपमें प्राप्त करके शचीमाताके समान इस प्रकार परीक्षित और लाञ्छित नहीं हुईं। श्रीगौराङ्ग-जननी अपना सुख-दुःख कुछ भी नहीं समझती थीं; पुत्रको जिसको जिससे सुख हो, पुत्रके मनमें जिससे आनन्द हो, वही उनका अपना सुख था।

इसको ही 'प्रकृत वात्सल्यभाव' कहते हैं। इसी भावमें भावित होकर शचीमाताने पुत्ररूपी श्रीगौर-भगवान्‌की सेवा करके उनको स्नेह-बन्धनमें बाँध रखा था; मातृभक्त प्रभुने यह बात स्वयं अपने मुखसे स्वीकार की है—

आइ स्थाने बद्ध आमि शुन दामोदर।
आइरे देखिते आमि आछि निरन्तर॥

चै. भा. अं. १०:१०८

प्रभुने अपनी परम भक्तिमती दोनों गृहिणियोंको माताकी सेवामें लगाया। जब उन्होंने संन्यास-आश्रम ग्रहण करके गृह-त्याग किया तो वृद्धा माताकी सेवाके लिए श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको घरपर रख दिया। प्रियाजीको उपदेश दिया—

आमार वचन सति कर अवधान।
तोमार शाशुड़ी जेन दुःख नाहि पान॥

ज. चै. म.

षडैश्वर्यपूर्ण श्रीगौर-भगवान्‌ने अपनी माताको सब ऐश्वर्य दिखलाया था। वे साक्षात् नन्दनन्दन श्रीकृष्ण हैं; नरलीलाके उद्देश्यसे कलिग्रस्त जीवोंके उद्धारके लिए वे नदियामें शची-गर्भसे उत्पन्न हुए हैं, यह बात आनन्द-लीला-रसमय हमारे प्रभुने लीलारङ्गमें जननीको अनेक बार समझायी थी। प्रभुकी एक दिनकी ऐश्वर्य-लीलाकी बात सुनिये!

शचीमाताको ऐश्वर्य-दर्शन

शचीमाता घरमें हैं। प्रभु नदिया-विहार करके बाहरी घरमें बैठे विश्राम कर रहे हैं। उस दिन पूर्णिमा तिथि थी। शरत्कालके पूर्णचन्द्र नदियाके आकाशमें उदय हो गये हैं। श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रूपके आलोकमें चन्द्रलोक मलिन-सा जान पड़ता है। मृदु-मन्द-समीरण बह रहा है। प्रभु चन्द्रोदय देखकर प्रेमानन्दमें विह्वल हो रहे हैं। उनका हृदय श्रीवृन्दावन-भावमें विभावित हुआ; भावावेशमें मधुर मुरली-ध्वनि बजी। जिस वंशी-ध्वनिको सुनकर व्रज-कामिनीवृन्द घरमें नहीं रह सकती थीं, जिस मधुर मुरली-ध्वनिको सुनकर व्रजके पशु-पक्षी, कीट-पतङ्गतक आनन्दसे अधीर होकर नृत्य करते थे, श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने अपने मन्दिरमें बैठकर वही मनको मग्न करनेवाली, हृदयको मुग्ध करनेवाली वंशी बजायी। उस हृत्कर्णरसायन मधुर वंशी-ध्वनिको और कोई सुन न सका, केवल एकमात्र परम सौभाग्यवती श्रीगौराङ्ग-जननीके कानोंमें वह पहुँची।

उस त्रिभुवन-मोहन वंशी-ध्वनिको सुनकर शचीमाताको मूर्छा आ गयी; वह भी क्षणमात्रके लिए। मूर्छा-भङ्ग होनेपर उन्होंने पुनः वह अपूर्व वंशी-ध्वनि सुनी। उन्होंने मन स्थिर करके कान लगाकर सुनाकि यह मधुर ध्वनि कहाँसे आरही है? उन्होंने समझा कि यह अपूर्व ध्वनि बाहरी घरसे आ रही हैं, तब उन्होंने जाकर देखा, उनके जीवनका जीवन-सर्वस्व-धन निताई-चाँद जहाँ बैठे हैं, उसी स्थानसे यह मधुर ध्वनि आ रही है। पुनः देखा कि प्रभु विष्णु-गृहके द्वारपर बैठे हैं। उनका आविष्टभाव है, मानो उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें पूर्णानन्द विराजमान है। अब शचीमाता वंशी-ध्वनि न सुन सकीं। शचीमाताने देखा कि उनके पुत्रके सर्वाङ्गसे दिव्य उज्ज्वल ज्योति विकीर्ण हो रही है। उनके सुन्दर विशाल वक्षःस्थलपर मानो आकाशका पूर्णचन्द्र विराज रहा है, साक्षात् चन्द्रमण्डल मानो पुत्रके वक्षःस्थलपर प्रतिष्ठित है। पुत्रका ऐसा अपरूप शीतल तेजोमय ज्योतिपूर्ण शरीर शचीमाताने पहले कभी नहीं देखा था। उन्होंने प्राण भरकर पुत्रकी इस अपरूप-रूप-सुधाका पान किया और विस्मित होकर चारों ओर देखने लगीं। परन्तु इसका कारण कुछ न समझकर वे घरमें बैठकर सोचने लगीं।

शचीमाताके पक्षमें श्रीभगवान्‌का यह सब ऐश्वर्य-विभूति-दर्शन कुछ भी विचित्र नहीं है; क्योंकि उनकी कृपा होनेपर अधम जीव भी श्रीगौर-भगवान्‌के ऐश्वर्य और विभूतिके दर्शनका अधिकारी हो सकता है।

मानसिक वैष्णवापराध

पहले कहा जा चुका हूँ कि श्रीगौर-भगवान्‌ने अपनी माताकी विशेषरूपसे परीक्षा ली थी। श्रीभगवान्‌की परीक्षा कितनी कठोर होती है, शचीमाताकी वेष्णवापराध-खण्डन-कथा इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। हमारे धर्मसंस्थापक प्रभुने अपनी माताको वैष्णवापराधसे अपराधी करके भक्तवृन्दको यह समझा दिया कि वैष्णवापराध महान् गुरुतर अपराध हैं। श्रीभगवान् जीवोंको सब अपराधोंसे मुक्त कर सकते हैं, परन्तु भक्तके प्रति किया गया अपराध भक्तके सिवा दूसरा कोई भञ्जन नहीं कर सकता। जिसके प्रति अपराध अर्जन होता है, वही उस अपराधसे मुक्त कर सकता हैं, यह तत्त्व प्रभुने अनेक बार भक्तवृन्दको समझाया था। सबके अन्तमें प्रभुने अपनी माताके द्वारा इस महान् तत्त्वकी शिक्षा विशेषरूपसे दी थी।

शचीमाता श्रीअद्वैतप्रभुके समक्ष वैष्णवापराधकी अपराधिनी थीं। प्रभुके अग्रज श्रीमद्विश्वरूपप्रभु श्रीअद्वैताचार्यके बड़े प्रियपात्र थे। वे सदा अद्वैत-सभामें रहा करते थे। श्रीअद्वैतप्रभु बालक विश्वरूपको यदि क्षणभर न देखते तो उनको जगत् सूना-सा लगता था। श्रीमद्विश्वरूपप्रभु भी उनको छोड़कर एक दण्ड घरपर नहीं रह सकते थे। केवल भोजन और शयनके लिए वे घरपर जाते थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नवद्वीपमें और किसी स्थानमें जाकर बालक विश्वरूपके मनको सुख नहीं मिलता था; क्योंकि नदियामें एक अद्वैत-सभाके सिवा अन्य किसी स्थानमें उनको भक्ति-चर्चा या मधुर कृष्ण-कथा सुननेको नहीं मिलती थी। वे बाल्यकालसे ही परम कृष्ण-भक्त थे। कृष्णकथा सुननेके लिए मिल जाय तो उनको और कोई आकांक्षा नहीं होती थी। अद्वैत-सभामें कृष्ण-कथा होती थी। वे आहार-निद्रा त्याग करके दिन-रात वही सुनते थे। सारे नवद्वीपमें वे किसीके मुखसे भक्तिकी बात नहीं सुन पाते थे, इससे बालक विश्वरूपके मनमें बड़ा दुःख होता था। श्रीमद्विश्वरूप प्रभुने जब गृह-त्याग करके संन्यासाश्रम-ग्रहण किया तो पुत्रवत्सला स्नेहमयी माताके हृदयमें मानो शूल चुभ गया। उन्होंने समझा कि श्रीअद्वैताचार्यके कारण ही उनके पुत्रने गृह-त्याग किया है। किन्तु बुद्धिमती शचीदेवीने यह मनकी बात मनमें ही रखी; किसीके सामने प्रकट नहीं की। बाल-विग्रह सोनाके निमाई-चाँदका मुख देखकर वे इस दुःखको भूल तो गयीं, किन्तु इस कारण उनके हृदयमें उस समय वैष्णवापराधका बीज अंकुरित हो गया। प्रभु उस समय सात वर्षके सुन्दर बालक थे। उनके चन्द्रमुखको देखकर शचीमाता विश्वरूपप्रभुके शोकको भूल गयीं।

इसके कुछ समय बाद उनके निमाई-चाँदकी भी अद्वैताचार्यके साथ घनिष्ठता हो गयी। वे भी अद्वैत-सभामें आने-जाने लगे। यह देखकर स्नेहमयी शचीमाताके मनमें विश्वरूपके गृह-त्यागकी बात याद आ गयी। उन्होंने मनमें सोचा कि श्रीअद्वैताचार्य आगे चलकर इस पुत्रको भी गृह-त्यागका परामर्श दे सकते हैं। पुत्रवत्सला स्नेहमयी शचीमाताके लिए इस प्रकारकी चिन्ता अति स्वाभाविक थी; क्योंकि पहले एक बार उनको ऐसी दारुण व्यथा मनमें हो चुकी थी।

पुत्रस्नेहपरायणा जननी संतानके प्रति वात्सल्यकी अधिकतासे ऐसा सोच सकती हैं। इससे शचीमाताको दोष नहीं दिया जा सकता; विशेषतः इस अवस्थामें जब उनका जीवन-सर्वस्व निमाई-चाँद द्वितीय बार विवाहित हुआ है। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको वे इसी समय ब्याह कर लाये थे। श्रीअद्वैतप्रभुके साथ पुत्रकी ऐसी घनिष्ठता देखकर स्नेहमयी शचीमाताके मनमें पूर्ववत् संदेह हुआ। इस संदेहके फलस्वरूप वे मनमें ही अद्वैतप्रभुके विषयमें नाना प्रकारका दोषारोपण करने लगीं। इस कार्यमें शचीमाता वैष्णवापराधमें पड़ गयीं, यह उनके मनका अपराध था। श्रीअद्वैत-प्रभुका कार्य स्मरण कर शचीमाता मन-ही-मन सोचने लगीं —

चन्द्र सम एक पुत्र करिया बाहिर।
एहो पुत्र ना दिलेन करिबारे स्थिर॥
अनाथिनी मोरे त काहारो नाहि दया।
जगतेर अद्वैत मोरे से द्वैत-माया॥

चै. भा. म. २२.११४,११५

यही हुआ शचीमाताका वैष्णवापराध। जननीके मनमें इस अपराधके सृजनकर्ता प्रभु स्वयं थे और उसके खण्डनकर्ता भी वे ही थे। परन्तु लीलामयकी इस लीलाका मर्म कौन समझेगा?

शचीमाताका वैष्णवापराध-भञ्जन कैसे हुआ, यह कहनेके पूर्व एक बातका विचार आवश्यक है। शचीमाताने अपने मनकी बात किसीसे नहीं कही। उनका वैष्णवापराध मानसिक अपराध था। अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान्‌ने माताके हृदयकी बात जानकर उनको अपराधका दण्ड दिया था। वह दण्ड भी बहुत भारी था। शचीमाता यदि मुँहसे कुछ अद्वैतप्रभुको कहतीं, अथवा किसीसे उनकी निन्दा करतीं तो दयामय प्रभु क्या करते, कहा नहीं जा सकता। कलिके जीवके मनका पाप, पाप नहीं माना जाता और उस पापका फल भोगना नहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पड़ता—यह भागवतकी बात है।* तब शचीमाताको प्रभुने इसके लिए ऐसा दण्ड क्यों दिया? शचीमाताके मानसिक अपराधके लिए कलि-पावनावतार श्रीगौराङ्गप्रभुने क्यों अपनी पूजनीया जननीको इतना लाञ्छित किया, इसका उत्तर देनेकी चेष्टा करूँगा।

शचीमाता नरवपु धारण करनेपर भी पूर्वलीलाकी स्मृतिको पूर्णतः नहीं खोती हैं। उनको कलिका जीव कहनेसे उनका महत्व कम होता है। कलिके जीवके धर्म उनका आश्रय करनेका साहस नहीं कर सकते। वे जो हैं, वही रहेंगी। अतएव कलिके जीवधर्मका तत्त्वोपदेश, जो महामुनि वेदव्यासने भागवतमें लिखा है, वह शचीमाताके पक्षमें प्रयुज्य नहीं है। त्रिकाल-धर्म उनका धर्म हैं, अत. मानसिक अपराध या पापके लिए वे वास्तविक अपराधिनी हैं। इसी कारण धर्मरक्षक प्रभुने अपनी माताको इस मानसिक अपराधके लिए दण्ड दिया। इसके द्वारा अपने नित्य-परिकर भक्तवृन्दको शिक्षा दी।

एक और बात है; प्रभु स्वयं-भगवान् हैं। उनके माता-पिता-गुरुजन—सभी उनके नित्य-दास हैं। महाप्रकाशके समय प्रभुने भगवान्-भावमें श्रीवासके आँगनमें विष्णु-सिंहासनपर बैठकर शचीमाताके वैष्णवापराधका भञ्जन किया था। श्रीभगवान् जब ऐश्वर्य-प्रदर्शन करते हैं, तब वे किसीकी मायासे मुग्ध नहीं होते। श्रीभगवान्की ऐश्वर्यलीला जगत्के जीवोंको शासन देनेके लिए होती है। उनकी माधुर्य-लीला मायामय, प्रेममय, स्नेह और दुलारसे भरी होती है। इस माधुर्य-लीलासे श्रीभगवान् अपने भक्तोंको पतिभावमें, पुत्रभावमें, सखाभावमें मायाधीश होकर भी माया-मुग्ध करते हैं तथा स्वयं मायामय होकर उनके साथ स्नेह-सम्बन्ध जोड़कर सुखपूर्वक संसार-लीला करते हैं। उस दशामें वे माता-पिताकी पूजा करते हैं, उनकी चरण-वन्दना करते हैं।

श्रीगौराङ्गप्रभुने जब अपनी माताको वैष्णवापराधमें दण्डित किया था, तब उनका पूर्ण भगवान्-भाव था। तब ऐश्वर्य-भावमें उन्होंने अपने प्रभुत्व, कर्तृत्व तथा सबलोगोंके लिए प्रीतिप्रद अपूर्व विचार-क्षमताको प्रदर्शित किया था। श्रीभगवान् समदर्शी थे। उनके सामने माता और पथकी भिखारिणी एक थी; उनमें कुछ भी अन्तर न था। श्रीभगवान्-भावमें अन्तर्यामी श्रीगौराङ्गप्रभुने अपनी माताके मानसिक अपराधको जानकर ही उनके लिए ऐसा कठोर दण्ड-विधान किया था।

उस समय शचीमाताको यह भान न था कि वे उनके पुत्र हैं। साक्षात् श्रीभगवान्के सामने अपराधिनीके समान हाथ जोड़कर उन्होंने काँपते हुए दण्ड-ग्रहण किया था; उनके चरणोंमें गिरकर कातर स्वरसे रुदन किया था। प्रभुके महाप्रकाश-लीलाके समय श्रीवासके आँगनमें सबके सामने शचीमाताका वैष्णवापराध-भञ्जन हुआ था। प्रभुका वह लीला-रङ्ग यहाँ विस्तारपूर्वक वर्णन किया जा रहा है। महाप्रकाश-लीलाके वर्णनके समय शचीमाताका वैष्णवापराध-लीलारङ्ग संक्षेपमें वर्णन किया गया था। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने पृथक्-रूपमें प्रभुके इस लीलारङ्गका वर्णन किया है। महाप्रकाश-लीलाके भीतर रसका वर्णन नहीं किया है। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरका पदानुसरण करके प्रभुका यह अपूर्व लीलारङ्ग पृथक्-रूपमें विस्तारपूर्वक लिखा जा रहा है।

अपराध-भञ्जन

इच्छामय प्रभुकी इच्छा हुई श्रीअद्वैतप्रभुके द्वारा अपनी माताकी महिमा-कीर्तन कराने की।

---

*तानुद्वेष्टि कलिं सम्राट् सारङ्ग इव सारभुक्।
कुशलान्याशु सिध्यन्ति नेतराणि कृतानि यत्॥
श्रीमद्भागवत १.१८.७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जननीका वैष्णवापराध खण्डन तो एक बहाना था। प्रभुने जब भगवान्-भावमें महाप्रकाशके समय श्रीवासके आँगनमें विष्णु-सिंहासनपर बैठकर निज मूर्ति नारायण-शिलाको गोदमें लेकर श्रीवास-पण्डित और अद्वैतप्रभुको वज्र-गम्भीर स्वरमें सम्बोधन करते हुए कहा—

मुञि कलियुगे कृष्ण मुञि नारायण।
मुञि रामरूपे कैनु सागर-बन्धन॥
शुतिया आछिनु क्षीर सागरेर तीरे।
मोर निद्रा भाङ्गिलेक नाड़ार हुंकारे॥
प्रेमभक्तिबिलाइते मोहर प्रकाश।
माग माग आरे नाड़ा माग श्रीनिवास॥

चै. भा. म. २२.१४—१६

श्रीगौर-भगवान्के श्रीमुखसे यह अपूर्व कृपा-श्वास-वाणी सुनकर भक्तवृन्द पुलकितहृदयसे "हे प्रभो! हे करुणामय!! मैं और कुछ वरदान नहीं चाहता; मुझको प्रेमभक्ति प्रदानकर कृतार्थ करो!"—यह कहकर वर-प्रार्थना करने लगे। भक्तवत्सल प्रेमावतार श्रीगौराङ्गप्रभुने सबको हँस-हँसकर प्रेमभक्तिका वरदान दिया। तब श्रीवास-पण्डितने श्रीअद्वैतप्रभुके साथ परामर्श करके श्रीगौर-भगवान्के चरणोंमें हाथ जोड़कर प्रार्थना की—"हे प्रभो! यहाँ जगज्जननी आईको एक बार हम ले आते हैं। उनको भी आप प्रेमभक्ति प्रदानकर कृतार्थ करें।"

श्रीवास श्रीगौराङ्गप्रभुके एकान्त अनुरक्त अन्तरङ्ग भक्त थे। श्रीवासके ऊपर प्रभुकी बड़ी कृपा थी। श्रीवासपण्डितके सिवा अन्य किसीको प्रभुके सामने यह बात कहनेका साहस नहीं हो सकता था। प्रभुकी जननी सर्वलोकपूज्या हैं। उनको प्रभुने पूर्वसे ही भक्तिदान कर रखा है। प्रभुने स्वयं कहा है कि उनमें जो कुछ विष्णुभक्ति है, वह केवल उनकी माताका प्रसाद है। ऐसी अवस्थामें उनकी जननीको भक्तिदान देनेकी प्रार्थना करना भक्तके लिए असंगत जान पड़ता है। इस प्रकारकी प्रार्थना धृष्टताबोधक है। किंतु भक्तचूड़ामणि श्रीवास-पण्डितने प्रभुके चरणोंमें ऐसी प्रार्थना की क्यों, इसमें एक रहस्य है।

प्रभुने श्रीभगवान्-भावमें श्रीवासके आँगनमें विष्णु-सिंहासनपर बैठकर सब भक्तोंके सामने 'प्रेमभक्ति' बाँटनेकी इच्छा प्रकट की। 'प्रेम-भक्ति' प्रभुका निज गुप्त धन है।* अबतक उन्होंने यह गुप्त धन किसीको दान नहीं किया था। भक्ति उन्होंने बहुत भक्तोंको प्रदान की है; परन्तु पञ्चम पुरुषार्थ जो प्रेमधन है, उसे प्रभुने किसी अवतारमें किसीको प्रदान नहीं किया। श्रीगौराङ्ग-अवतारके लिए श्रीभगवान्की यह प्रेमभक्ति-दान करनेकी इच्छा उनके हृदयमें गुप्तभावसे छिपी थी। कलिग्रस्त जीवकी दुर्गति देखकर श्रीगौराङ्गप्रभुने भगवान्-भावमें जब अपने हृदयकी गुप्त वासना सबके सामने प्रकट की और श्रीवासके आँगनमें बैठकर जब उन्होंने यह भुवन-मङ्गल प्रेमदान-कार्य प्रारम्भ किया, तब नारदावतार सर्वज्ञ श्रीवासपण्डितके मनमें प्रभुकी स्नेहमयी जननीकी बात याद आ गयी।

इच्छामय प्रभुकी इच्छासे श्रीवासपण्डितके मनमें उस समय श्रीगौराङ्ग-जननीको उनके पुत्रके भगवान्-भावको दिखानेकी इच्छा हुई। प्रभुके

---

* चिराददत्त निजगुप्तवित्तं
स्वप्रेमनामामृतमत्युदारः।
आपामरं यो वितनार गौर-
कृष्णो जनेभ्यस्तमह प्रपद्ये॥

चै. च. म. २३.१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रति शचीमाताका पुत्रभाव श्रीवासपण्डितको अच्छा नहीं लगता था। यह बात उन्होंने स्पष्टतः प्रभुके चरणोंमें निवेदन की थी। यथा, श्रीचैतन्यचरितामृत महाकाव्यमें—

कारुण्यं कुरु भगवन् प्रभो तदस्यै
येनेयं त्वयि न करोति पुत्रभावम्।
येनेयं तव चरणे भवेत् प्रपन्ना
तेनैव प्रभवति निर्वृत्तिर्ममापि॥

उनका पुत्र क्या वस्तु है, यह समझानेके लिए ही नारदावतार श्रीवासपण्डितने यह जाल रचा था। देवर्षि सदा ही इस प्रकारके जाल लिये फिरते हैं। श्रीगौराङ्गावतारमें वे श्रीवासपण्डित होकर प्रभुकी नवद्वीप-लीलाका रसास्वादन कर रहे हैं। उनका पूर्व-स्वभाव कुछ भी बदला नहीं है; बदलेगा क्यों ?

श्रीवासपण्डितने जब आईको प्रेमभक्ति प्रदान करनेकी बात प्रभुके सामने उठायी तो चतुर-चूड़ामणि प्रभु बोले—"श्रीनिवास ! ऐसा मत कहो ! मैं प्रेमभक्तिका विलास उनको नहीं दूँगा। वैष्णवके प्रति उन्होंने अपराध किया है; अतएव उनके लिए प्रेमभक्तिका निषेध है।" (चै. भा. म. २२.२४,२५)

प्रभुके मुखसे इस समय यह दारुण विषम बात सुनकर श्रीवासपण्डित एकदम हतप्रभ हो गये। इसका उत्तर प्रभुको वे क्या दें, कुछ स्थिर न कर सकनेके कारण बहुत देरतक अवाक् बैठे रहे। वे महावक्ता और परमपण्डित थे। शचीमाताके प्रति उनकी अचला भक्ति थी। उन्होंने रोते-रोते प्रभुके चरणोंमें हाथ जोड़कर निवेदन किया—

"प्रभो ! आपकी इस बातसे हमारा देह-त्याग होगा। जिनके गर्भसे आप-जैसे पुत्रका अवतार हो, उनका प्रेमभक्तिमें क्या अधिकार नहीं ? शचीमाता सबकी जीवन हैं, जगत्-जननी हैं आप कपट त्याग करके उनके लिए भक्तिदाता बनें। पुत्रके प्रति क्या माताका कोई अपराध गिना जाता है ? यदि उनका किसी वैष्णवके प्रति कोई अपराध हो तो भी आप उसका खण्डन करके उनपर कृपा करें !"

हमारे रँगीले प्रभुने इस समय भी रङ्ग करना न छोड़ा। वे इस समय भगवान्-भावमें अपना पूर्ण ऐश्वर्य प्रकट करके विष्णु-सिंहासनपर बैठे हैं। वे श्रीवासपण्डितको गम्भीर भावसे बोले—"उनका वैष्णवापराध है। जिनके सामने वे अपराधिनी हैं, वही उनके अपराधको खण्डन कर सकता है; मैं नहीं कर सकता। श्रीअद्वैताचार्यके सामने वे अपराधिनी हैं। उनके क्षमा करनेसे उनको प्रेमभक्ति प्राप्त होगी।" प्रभुके मुखसे यह बात सुनते ही श्रीवासपण्डित आदि भक्तोंने श्रीअद्वैतप्रभुसे सारी बातें कहीं। शान्तिपुरनाथने यह बात सुनते ही कानोंमें अँगुली डालकर श्रीविष्णु-स्मरण करके बहुत दुःखी होकर कहा—"तुमलोग क्या मेरा प्राण लेना चाहते हो ? जिनके गर्भसे प्रभुका अवतार है, वे तो मेरी जननी हैं, मैं उनका पुत्र हूँ। जिन अम्बाकी चरण-धूलिकी मैं अभिलाषा करता हूँ, उन अम्बाका प्रभाव मैं तिलभर भी नहीं जानता। जगन्माता शची तो विष्णुभक्तिस्वरूपिणी है; तुमलोग मुखमें ऐसी बात क्यों लाते हो ? प्राकृत भाषामें भी जो 'आई' (अम्मा) कहेंगे तो उस 'आई' शब्दके प्रभावसे उसका दुःख नहीं रहेगा। जैसी गङ्गाजी हैं, वैसी ही 'आई' हैं। इनमें कोई भेद नहीं है। जो देवकी-यशोदा हैं, वे ही 'आई' हैं।"
(चै. भा. २२.३७—४२)

इस प्रकार गौराङ्ग-जननीका तत्त्व कहते-कहते वृद्ध ब्राह्मण भक्तिभावमें आविष्ट हो गये और उनको बाह्य ज्ञान न रहा। इसी बीचमें श्रीवास-पण्डितके संकेतसे कुछ भक्त शचीमाताको वहाँ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ले आये। श्रीवासपण्डितने तब शचीमाताको सारी बातें खोलकर कह दीं। श्रीअद्वैतप्रभु बाह्य ज्ञान-शून्य होकर प्रभुके सामने हाथ जोड़कर खड़े थे। शचीमाताने आकर समय और सुयोग देखकर उनकी पद-धूलि अपने मस्तकपर लगायी।

अद्वैतप्रभुकी चरण-धूलिके प्रभावसे शचीमाता प्रेमानन्दमें विह्वल होकर बाह्य ज्ञानशून्य हो गयीं। दोनों परस्पर एक-दूसरेके प्रभावसे और अनुरागसे प्रेमविह्वल हीकर प्रेमानन्दमें विभोर होकर जड़वत् हो गये हैं। श्रीअद्वैतप्रभु महाशक्तिमान् महाविष्णुके अवतार हैं, शचीमाता साक्षात् विष्णु-भक्ति हैं। दोनोंकी शक्तिने दोनोंको विह्वल कर दिया। दोनों ही प्रभुके सामने अजस्र आँसू बहा रहे हैं—यह देखकर श्रीवास आदि भक्तोंके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। वे सब मिलकर उच्च स्वरसे हरि-ध्वनि करने लगे।

शचीमाता पुत्ररूपी श्रीगौर-भगवान्‌के सामने भयसे काँपती हुई खड़ी हैं। प्रभुने माताको सामने देखकर पहले अपने मुख-चन्द्रको फेर लिया था; श्रीअद्वैतप्रभुकी चरण-धूलि लेते देखकर अब वे उनके ऊपर प्रसन्न हुए। श्रीवासपण्डित तब शचीमाताको सम्बोधन करके बोले—"माता! श्रीगौर-भगवान्‌को साष्टाङ्ग प्रणाम करो!" शचीमाताको असमञ्जसमें पड़ा देखकर उन्होंने पुनः कहा—"माता! ये आपके पुत्र नहीं हैं। ये पूर्णब्रह्म सनातन साक्षात् श्रीभगवान् हैं। इनको साष्टाङ्ग प्रणाम करो!" तब शचीमाताने अपने पुत्रके अपूर्व ऐश्वर्यको देखा और भक्तिभावसे उनके चरणोंमें गिरकर प्रणाम किया।

श्रीवासपण्डितने यह देखकर डरते-डरते प्रभुके चरणोंमें हाथ जोड़कर निवेदन किया—"हे प्रभो! हे भगवन्!! आप शचीदेवीके ऊपर कृपादृष्टि करें, जिससे ये आपके प्रति पुत्रभाव न करें तथा जिससे ये आपके चरणोंमें भक्तिभावसे प्रसन्न हों।"

श्रीगौर-भगवान्‌ने श्रीवासपण्डितकी यह बात सुनकर शचीमाताके प्रति प्रसन्न होकर उनके मस्तकपर अपने अज-भव-वन्दित कमला-सेवित पाद-पद्मका स्पर्श करा दिया। शचीमाता पुलकित होकर प्रेमानन्दमें गद्‌गद भावमें आवेगमय नयनोंसे अश्रु बहाने लगीं। उनका आज बड़ा शुभ दिन था। प्रभुके प्रति अब उनका वह पुत्रभाव न रहा। उन्होंने देखा कि महामहिमामय सर्वेश्वर त्रिलोकनाथ स्वयं-भगवान् उनके सामने विराज रहे हैं। उनके प्रति कृपा करके श्रीभगवान्‌ने उनके मस्तकपर श्रीचरण-अर्पण करके उनको कृतार्थ किया है। इस आनन्दको वे हृदयमें छिपा न सकीं; उनका हृदय-समुद्र प्रेमानन्द-तरङ्गसे उद्वेलित हो उठा। वे सबके सामने निर्लज्जके समान प्रेमानन्दमें नृत्य करने लगीं। यह देखकर प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। वे प्रेमानन्दमें गद्‌गद होकर श्रीवास आदि भक्तवृन्दके ऊपर शुभ दृष्टिपात करके बोले—"कैसा आश्चर्य है! शचीदेवी मेरा चरण-स्पर्श करते ही प्रेमको प्राप्त हो गयीं और पुलकित-शरीरसे निर्लज्जके समान प्रेमोन्मत्त भावमें नृत्य करने लगीं।" श्रीवास आदि भक्तोंने शचीमाताको प्रेमोन्मत्त भावमें देखकर बहुत चेष्टा करके उनको सुस्थिर किया। श्रीगौर-भगवान् तब प्रसन्न होकर जननीको सम्बोधन करके बोले—"अबसे तुमको विष्णुभक्ति प्राप्त हुई; अद्वैताचार्यके प्रति अब तुम्हारा कोई अपराध नहीं रहा।"

प्रभुके श्रीमुखसे यह बात सुनकर शचीमाता आनन्दमें अधीर होकर वहाँ मूर्छित हो गिर पड़ीं। भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें हरि-ध्वनि करते हुए शचीमाताको घरके भीतर ले गये और जब वे प्रकृतिस्थ हुईं तो उनके घर उन्हें पहुँचाया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने जो यह लीलारङ्ग प्रकट किया, अपनी माताको वैष्णवापराधसे दण्डितकर लोक-दृष्टिमें उनको लज्जित किया, वह केवल लोक-शिक्षाके लिए किया। इसके द्वारा प्रभुने भक्तोंको वैष्णवापराधका गुरुत्व समझा दिया। श्रीभगवान्‌का दण्ड-विधान अधिकतर उनके कृपापात्रके ऊपर ही देखनेमें आता है। छोटे हरिदासको प्रभु बहुत मानते थे, अतएव उनके साधारण-से अपराधपर भी गुरुतर दण्ड-विधान करते थे। प्रभुके दण्डको उनके भक्तवृन्द महान् कृपाके रूपमें ग्रहण करते थे। श्रीअद्वैतप्रभुने बड़ी साधसे प्रभुकी सुकोमल कर-पल्लवकी मुष्टिका आघात सहा था। भक्तिमती शचीमाताके मनमें बड़ी साध थी कि एक बार श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीचरणकी धूलि मस्तकपर धारण करके जीवनको कृतार्थ करतीं। मातृभावमें वे अपने मनकी इस वासनाको पूर्ण नहीं कर सकती थीं। भक्तवत्सल प्रभुने ऐश्वयभावमें भक्तकी मनोवाञ्छा पूर्ण की। शचीमाताने यह दण्ड पाकर अपनेको कृतार्थ माना। प्रभुदत्त दण्डकी महिमा समझनेकी शक्ति किसमें है?

माताके साथ अन्य लीलारङ्ग

शचीमाताके साथ हमारे रँगीले प्रभुने अनेक लीलारङ्ग किये थे। महाप्रकाश-लीलाके बाद एक दिन प्रभु कृष्ण-भावावेशमें रातमें सो रहे थे। अचानक उनको निद्रितावस्थामें करुण स्वरमें रुदन करते सुनकर शचीमाता घबरायी हुई पुत्रके पास गयीं और उनके श्रीअङ्गको स्नेहपूर्वक स्पर्श करके आदर करते हुए सस्नेह पूछा—"बेटा निमाई! तुम रोते क्यों हो?" प्रभुने रोते-रोते उत्तर दिया—"माँ! मैंने निद्रितावस्थामें आज एक अपूर्व सुमधुर मूर्तिका दर्शन किया है। उस अपूर्व रूप-लावण्यपूर्ण मूर्तिकी मनोहर शोभाकी बात कहता हूँ, सुनो!"—यह कहते-कहते प्रेमाश्रु-नयनसे कृष्ण-प्रेमानन्दमें विभोर होकर प्रभु द्विभुज मुरलीधर नन्दनन्दन श्रीकृष्णके रूपका वर्णन करने लगे। यथा, श्रीचैतन्यचरित महाकाव्यमें—

नवनीलनीरदसमूहरुचि-
नंवनीलकण्ठदलमण्डनकः।
घनमेदुरातिकुटिलप्रसरत्-
कचसंचयप्रसुभभालतलः॥
सुरसूनसंचयवतंसरस-
प्रमदभ्रमद्भ्रमरविभ्रमभृत्।
अलसोल्लसन्मधुरचिल्ललितः
श्रवणान्तसंचरितनेत्रयुगः॥
अरुणारुणाक्षिकमलःप्रमदो
घनसान्द्रदृष्टिलहरीभधुरः।
सदपाङ्गभङ्गिमजगन्मदनः
स्मितगण्डमण्डललसन्मुकुरः॥
तपनीयकुण्डलविलालस-
च्छ्रवणद्वषीहृतजगद्धृदयः।
नवविद्रुमद्रुमकदम्बलस-
मधुराधरद्युतिसुधामधुरः॥
दशनप्रसूनरुचिमञ्जरिका-
धरपल्लवारुणिमकञ्चमुखः।
मधुमाधुरीमधुरसच्चिबुकः
शुचिकम्बुकण्ठतटहारधरः॥
नवमौक्तिकप्रकरहारलता
विलासद्गलो विलसदंसतटः।
तपनीयसूत्रपरिकल्पितलसद्
वरकौस्तुभस्फुरदुरः सरणिः॥
अमरप्रसूननवमाल्यकला-
ललितोरुपीनसदुरो मधुरः।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वरजगन्नुलम्बिमृदुपीन भुजा-
विलसद्वराङ्गदसुकङ्कणकः ॥
करमेयमध्यमविलासलसद्-
वरबन्धुरोदरकटीरतटः ।
अभिनाभिवीततपनीयधटी-
लसदञ्चलाञ्चितपदाग्रतटः ॥
स्मितदीधितिस्नपितदिग्वलयः
करुणाकटाक्षमधुरः कमलः ।
इति तं विलोक्य सहसाऽऽविरभूत्
सुखसंचयैर्मम सुविह्वलता ॥

चै. च. म. ९.३—११

रूपनिधि श्रीकृष्णचन्द्रके रूपका वर्णन करते-करते प्रभुके कमल-नयनद्वयमें अश्रु-समुद्रका आविर्भाव हुआ। दोनों नेत्रोंके जलसे उनका वक्षःस्थल डूब गया। शचीमाता एकटकसे पुत्रकी अपरूप-रूप-सुधा पान कर रही थीं और उनके श्रीमुखसे मधुसे-भी-मधुर श्रीकृष्णके रूपका वर्णन सुन रही थीं। श्रीगौराङ्ग-जननीका सर्वाङ्ग पुलकायमान हो रहा था। वे पुत्रको गोदमें लेकर बैठ गयीं। मातृक्रोड़में बैठकर प्रभु प्रेमानन्दमें अजस्त्र अश्रु बहा रहे थे। माता भी प्रेमसमुद्रमें निमग्न थीं। इस प्रकार अतुल प्रेमानन्दमें वह रात कट गयी। प्रभुका इस प्रकारका कृष्ण-प्रेमोन्माद देखकर शचीमाताके मनमें नाना प्रकारकी चिन्ताएँ उठने लगीं। वे पुत्रको और कुछ न कह सकीं।

चतुर-चूड़ामणि प्रभुने इस लीलासूत्रमें अपनी स्नेहमयी माताको श्रीकृष्णका अपरूप-रूप-दर्शन कराकर कृतार्थ किया। प्रभु जब श्रीश्रीवृन्दावनचन्द्रका अपरूप-रूप वर्णन कर रहे थे, उस समय शचीमाता स्पष्ट देख रही थीं कि वे सब गुणराशि उनके पुत्रके रूपमें विद्यमान हैं; केवल वर्णका तारतम्य है। शचीमाता जो देख रही थीं और पुत्रके श्रीमुखसे जो सुन रही थीं, उसमें अत्यद्भुत ऐक्य-भाव था। यहाँ भी प्रभुने कौशलपूर्वक अपनी माताको अपना ऐश्वर्यभाव दिखलाया था। शचीमाताका शुद्ध वात्सल्यभाव था। उसमें ऐश्वर्यकी गन्ध भी नहीं थी। इसी कारण उनके मनमें चिन्ता उत्पन्न हुई। वे सोचने लगीं—"आज मैंने श्रीकृष्णकी समस्त अपरूप-रूपराशि अपने सोनेके वच्छामें क्यों देखी? इससे इसका कोई अमङ्गल तो न होगा?"—यह शुद्ध वात्सल्यभाव है। इस शुद्ध वात्सल्य-भावमें श्रीगौर-भगवान् शचीमाताके वशीभूत थे।

शचीमाताकी कथा अनन्त है। प्रभुकी नवद्वीप-लीलामें उनका सर्वोच्च स्थान है। वे श्रीगौराङ्ग-जननी हैं। स्नेहमयी माताके समान प्रिय वस्तु संसारमें और कोई नहीं है। मातृभक्त प्रभु संन्यासाश्रम-ग्रहण करके भी माताके प्रति किस प्रकार अनुरक्त थे, यह उनकी श्रीमुखसे निःसृत वाणीसे प्रकट होता है। श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने लिखा है—

मातृभक्तगणेर प्रभु हन शिरोमणि।
संन्यास करिया सदा सेवेन जननी ॥

चै. च. अं. १९.१५

प्रभुने नीलाचलमें बैठकर मातृ-दुःखसे व्याकुल होकर एक दिन जगदानन्दपण्डितके द्वारा माताको कहला भेजा था। यथा, श्रीचैतन्यचरितामृतमें जननीके प्रति प्रभुवाक्य—

तोमार सेवा छाड़ि आमि करिल संन्यास।
बातुल हइया आमि कैल धर्मनाश ॥
एइ अपराध तुमि ना लइह आमार।
तोमार अधीन आमि तनय तोमार ॥

चै. च. अं. १९.८,९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संसार-त्याग करके प्रभुके मनमें कितना दुःख हुआ, इसको प्रभु ही जानते हैं। माता और गृहिणी-के हृदयमें शूल मारकर प्रभुने संन्यास-ग्रहण किया था। इस दुःखको वे जीवन भर न भूल सके।

प्रभु रोते-रोते जगदानन्दपण्डितका हाथ पकड़कर पुनः बोले—

नदिया चलह, मातारे कहिओ नमस्कार।
मोर नामे पाद-पद्म धरिह ताँहार॥
कहिओ मातारे तुमि करह स्मरण।
नित्य आसि आमि तोमार बन्दिये चरण॥
जे दिन तोमार इच्छा कराइते भोजन।
से दिने अवश्य आमि करिबे भक्षण॥

चै च. अं १९.५—७

प्रभुकी इन बातोंका गूढ़ मर्म है। उन्होंने कहा —"जननी जैसे ही स्मरण करती हैं, वैसे ही वे नदियामें जाकर उनके चरणोंकी वन्दना करते हैं। और जिस दिन वे उनको खिलाना चाहती हैं, उस दिन वहाँ जाकर माताके दिये हुए अन्न-व्यञ्जनको भोजन करते हैं।

श्रीचैतन्यचरितामृतमें प्रभुके श्रीमुखसे निःसृत वाणीके प्रमाणस्वरूप एक अपूर्व लीलारङ्ग वर्णित है। एक दिन शचीमाताने ठाकुरके भोगके लिए अन्न-व्यञ्जन-शाक आदि राँधा था। पुत्रके लिए प्रिय भोजन-द्रव्य प्रस्तुत देखकर उनको संन्यासी-पुत्रकी याद आयी। वे ठाकुरजीको भोग लगाकर आँख मूँदकर पुत्रके मुख-चन्द्रका चिन्तन करने लगीं और अजस्त्र आँसू बहाने लगीं। भक्तवत्सल प्रभुके पास जननीके मनका दुःख पहुँचा। वे तत्काल नदियामें आकर माताकी दी हुई सारी भोजन-सामग्री चट कर गये। शचीमाताने आँखें खोलकर देखा कि भोगका सारा अन्न-व्यञ्जन कोई चट कर गया है। वे मनमें सोचने लगीं कि जान पड़ता है, कोई जीव आकर ठाकुरजीका भोग नष्ट कर गया है। यह सोचकर उन्होंने दुःखित चित्तसे पुनः रसोई तैयार करके ठाकुरजीको भोग लगाया। प्रभुने नीलाचलसे श्रीवासपण्डितके द्वारा यह घटना माताको कहला भेजी थी। विजयादशमी तिथिमें यह घटना घटित हुई थी। प्रभु जब नदियाके भक्तोंको विदा करने लगे तो दोनों भुजाओंसे श्रीवासपण्डितके गलेको धारण करके उन्होंने मातृस्नेहके वशीभूत हो रोते-रोते यह बात अपनी स्नेहमयी मातासे कहनेके लिए कहा था।

पुत्र-वियोगको सहन करके शचीमाताने जो जीवन धारण किया, उसका एकमात्र कारण उनके प्रति प्रभुकी इस प्रकारकी अद्भुत और अलौकिक कृपादृष्टि थी। उन्होंने संन्यासके पूर्व मातासे कहा था—

जे दिन देखिते मोरे चाह अनुरागे।
सेइ क्षण तुमि मोर दरशन पाबे॥

शचीमाताके मनसे क्षणभरके लिए भी श्रीगौराङ्गका स्मरण हटता नहीं था। प्रभु भी अपनी स्नेहमयी मातासे क्षणभरके लिए भी पृथक् नहीं होते थे। केवल लोगोंके देखनेमें प्रभुने गृह-त्याग किया था। नवद्वीप नित्यधाम है, प्रभुके परिकर-वृन्द उनके नित्य दास-दासी हैं। प्रभु श्रीनवद्वीपधाममें नित्य लीला करते हैं; वे नित्यानन्दमें मग्न रहते हैं। वे कपट-संन्यासी हैं, यह उन्होंने अपने श्रीमुखसे स्वीकार किया है। उनके महाजन भक्तोंने सैकड़ों बार इसे दुहराया है। जीवोद्धारके लिए उन्होंने संन्यास-वेष धारण किया था। वे संन्यास-वेष धारण न करते तो अधम कलिके जीवों का उद्धार न होता।

पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है—

"संन्यास करिया सदा सेवेन जननी।"

चै. च. अं. १९.१३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह बात ध्रुव सत्य है; क्योंकि नित्य लीला नित्यधाम नवद्वीपमें नित्य प्रकट है। हमारे मातृ-भक्त प्रभुने केवल कलिग्रस्त जीवोंके उद्धारके लिए वृद्धा माता और तरुणा भार्याकी छातीमें शूल मारकर संन्यासाश्रम-ग्रहण किया था। कलिके जीव बड़े ही अकृतज्ञ हैं, इसी कारण ऐसे दयाके सागर प्रभुके श्रीचरणोंका आश्रय न लेकर पितृद्रोही पुत्रके समान आचरण करते हैं।

गाओ रे मन, गौराङ्ग गुण,
गौर नाम कर सार।
जने जने धरि, जाति ना विचारि
(गौर) नाम कर परचार॥

(गौर-गीतिका)

सैंतालीसवाँ अध्याय

श्रीवासके आँगनमें प्रभुकी अपूर्व लीलाएँ

अवतारो एमत कि आछे अदभुत।
जाहा प्रकाशिलेन हइया शचीसुत॥

चै. भा. म. २३.१५४

तत्कालीन नदियानगरी

जगाई-माधाईकी उद्धार-लीलाके बाद प्रभुका नवद्वीप-लीला-रसरङ्ग भक्तवृन्दकी आँखोंमें गाढ़से-गाढ़तर होने लगा। श्रीगौराङ्गप्रभु अब निज-प्रेममें उन्मत्त हैं। वे कभी भगवान्-भावमें, कभी भक्त-भावमें विभोर होकर, कभी ऐश्वर्य, कभी माधुर्यका विकास करके नदियाके भक्तवृन्दका चित्त-विनोदन करते हैं। नदियावासी भक्तवृन्द प्रभुकी कृपासे अभिनव सुख और आनन्दका अनुभव करते हैं। नदियामें घर-घर भुवनमङ्गल कीर्तना-नन्दका प्रसार हो रहा है। वैष्णवोंके आनन्दकी सीमा नहीं है। उनके घरमें मानो लक्ष्मीदेवीका अधिष्ठान हो गया है। दुःख, कष्ट, शोक, भय, दरिद्रता—सब दूर हो गये हैं। नदियानगरी सब सुखोंकी खानि हो गयी है। श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने निम्नलिखित कतिपय श्लोकोंमें तत्कालीन नदियावासी भक्तोंकी आध्यात्मिक और पारिवारिक अबस्था अति सुन्दरतापूर्वक वर्णन की है—

इत्थं चक्रे परमरभसं श्रीनवद्वीपभूमौ
गन्धैर्माल्यैर्मलयजरसैर्भूरिकर्पूरपूरैः।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमद्वेशोद्गतमधुरिमाप्लाविताशेषदेशः
स्वैस्वैर्लोकैर्नटनकलया स्वैरमेषप्रकामम् ॥
गेहे गेहे समजनि सदा मूर्तिमत्येव लक्ष्मीः
स्थाने स्थाने सुखसमुदयो मूर्तिमानेव भूतः ।
नित्यं नित्यं नव नवमभूत् प्रेमसर्वस्य नाथे
स्वैरं स्वैरं विलसति तदा श्रीनवद्वीपभूमौ ॥
नासीन्निद्रा न भयमभवत् नाभवत् क्षुत्पिपासा
न स्वैरत्यं न च यमगताकालदण्डादिभीतिः ।
एकस्यापि प्रभुकरुणया यस्य कस्यापि तस्मि-
न्नेवं क्रीडत्यतिसुललितं श्रीनवद्वीपभूमौ ॥

भावाथ—गन्ध, माल्य, चन्दन-रस और भूरि-भूरि कपूँरसे चर्चित तथा सुशोभित श्रीअङ्गके वेष-माधुर्य-रसमें जो देशको प्लावित करते हैं, वे ही द्विजकुलमणि श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र अपने भक्तगणके साथ अपरूप नृत्य-कीर्तन-कौशलका जाल फैलाकर श्रीधाम नवद्वीपमें अपूर्व प्रेमानन्दकी वृष्टि कर रहे हैं। भक्तके वशमें रहनेवाले श्रीगौराङ्गसुन्दर इस प्रकार अपनी इच्छासे श्रीधाम नवद्वीपमें जब अपूर्व विलास करते थे, उस समय श्रीश्रीलक्ष्मीदेवी मूर्तिमती होकर सर्वदा नदियावासियोंके घर-घर विराजती थी। स्थान-स्थानपर सुख-समूह मूर्तिमान् होकर सबलोगोंको आनन्द-प्रदान करते थे तथा नित्य नव-नव प्रेमभाव आविभूँत होकर नवद्वीप-वासियोंके मन-प्राणको हर लेते थे। और भी आश्चर्यकी बात यह थी कि श्रीधाम नवद्वीपमें श्रीगौराङ्गसुन्दरका अपूर्व विलास विभावित होने-पर उनकी कृपाके बलसे किसीको निद्रा-भय क्षुधा-पिपासा, स्वेच्छाचारिता तथा यमराजतकका भय न था।

श्रीवासके आँगनमें जब प्रभु अपूर्व नृत्य-विलास-में लीलारङ्ग करते थे तो आहार-निद्रा त्यागकर भक्तवृन्द प्रभुके उस नयन-रञ्जन, चित्त-विनोदन और मन-मोहन अपूर्व अङ्ग-भङ्गिमाका दर्शन करके प्रेमानन्दमें मत्त हो जाते थे। श्रीवासके आँगनमें लीलामय श्रीश्रीमन्महाप्रभु नाना प्रकारकी लीलाएँ प्रदर्शित करते थे। अन्तरङ्ग भक्तवृन्दके सिवा और कोई श्रीवासके आँगनमें प्रभुकी संकीर्तन-रासलीला देखनेका अधिकारी न था। श्रीवास-पण्डित पञ्च-तत्त्वमें* एक तत्त्व थे। प्रभुके साथ वे गौर-भक्तवृन्दके द्वारा आजतक नित्य पूजे जाते हैं और चिरकालतक पूजे जायँगे। कलिका युगधर्म हरिनाम-संकीर्तन-महायज्ञ श्रीवासपण्डितके घरमें ही प्रथम अनुष्ठित हुआ था। प्रभुके नित्यपार्षद श्रीवासपण्डित भक्तशिरोमणि थे; वे कलिके देवर्षि नारद थे।

जगाई-माधाई-उद्धार-लीलाके बाद प्रभुके नवद्वीप-लीलारङ्गके ऊपर नदियावासी भक्तोंका विशेष ध्यान रहा। श्रीगौराङ्गप्रभु इसी समयसे पूर्णरूपसे आत्मप्रकाश करने लगे। परन्तु उनकी वैष्णवी मायाके प्रभावसे भक्तगण उनको पहचानते हुए भी पहचान न सके। ऐश्वर्य और माधुर्य-रस-मिश्रित प्रभुकी तत्कालीन अपूर्व लीलाएँ देखकर नदियाके भक्तोंके मनमें नाना प्रकारके संदेह उठने लगे। कभी प्रभु भगवान्-भावमें किसीको निज स्वरूपका ऐश्वर्य दिखलाते, कभी किसीको अपनी चरणधूलि लेते देखकर दुःखसे गङ्गामें कूद पड़ते थे। इस प्रकार एक ओर कभी भगवान् और कभी भक्त-भावमें प्रभुने इस समय नवद्वीपमें जो लीलारङ्ग दिखलाये थे, वे ही यहाँ वर्णित होंगे।

वनमाली विप्रपर कृपा

एक दिन प्रभु अपने मन्दिरमें बैठे भक्तगणके साथ कृष्ण-कथाके रङ्गमें मस्त थे। उनके श्रीमुखसे

---

* पञ्चतत्व—१. श्रीचैतन्य महाप्रभु, २. श्रीनित्यानन्द, २. श्रीअद्वैताचार्य, ४. पं० श्रीवास और ५. पं० श्रीगदाधर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निःसृत मधुमिश्रित कृष्ण-कथा सुनकर भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें पुलकाश्रु-विसर्जन करने लगे। उनके नयनोसे मानो प्रेम-नदी बहने लगी। प्रभुके मुख-कमलसे मानो अमृतका प्रबल प्रवाह निकल रहा था। सभी कृष्ण-गुणगानमें उन्मत्त थे। उसी समय पूर्ववङ्गका निवासी एक दरिद्र भिखारी ब्राह्मण अपने बालक पुत्रको साथ लेकर वहाँ आकर उपस्थित हुआ। इस अभ्यागत भाग्यवान् विप्रका नाम था—वनमाली। अपने पार्षदोंके द्वारा आवेष्टित श्रीगौर-भगवान्‌का दर्शन करते ही तत्काल उनके मनमें यह भाव उदित हुआ कि ये तो साक्षात् श्रीभगवान् हैं। वे दरिद्र विप्र परम निष्ठावान् भगवद्भक्त थे। अपने बालक सुपुत्रको भक्तिका उपदेश प्रदानकर उसके अन्तःकरणको भी उन्होंने भक्तिरसमय बना दिया था। प्रभुका दर्शन करते ही पिता-पुत्र, दोनोंने अनुमान कर लिया कि ये ही साक्षात् भगवान् हैं। दोनों ही प्रेमानन्दमें गद्‌गद हो गये। प्रेमावेशमें उनके मुँहसे बात न निकल सकी। वे भिखारी ब्राह्मण मन-ही-मन सोचने लगे—

भालइ हइल मुञि हइल दरिद्र।
दरिद्र हइया आइनु हइनु पवित्र॥
निश्चय जानिनु गौरचन्द्र भगवान्।
अनुभवे जानिनु ए कभू नहे आन॥
जनम सफल आजि हैल हेन बासि।
देखिनु नयने विश्वम्भर गुणराशि॥
देखिते नयान-हिया जुड़ाल आमार।
निभाइल दुरन्त दारिद्र ज्वाला छार॥
अमिया आहारे जेन संतोष अन्तर।
विश्वम्भर देखि मोर सिञ्चिल कलेवर॥

चै. म.

अन्तर्यामी प्रभुने एक बार करुण-नयनोंसे उन विप्र और उसके पुत्रके प्रति शुभ दृष्टिपात किया। वे मधुर हरिनामके गानसे उन्मत्त होकर नृत्य करने लगे। उनकी सारी दुःख-दरिद्रताका भार बिल्कुल दूर हो गया। वे संसार-बन्धनसे मुक्त हो गये। उनको क्षणमात्रमें प्रभुकी कृपासे अज-भव-वाञ्छित गोलोककी सम्पत्ति, अमूल्य प्रेम-धन प्राप्त हुआ। प्रेमानन्दमें पिता-पुत्र मधुर नृत्य करने लगे। उसी समय इच्छामय प्रभुके मनमें नृत्य-विलास-लीला-रसरङ्गका उदय हुआ। पार्षदवृन्दके साथ वे अपने मन्दिरमें मधुर नृत्य-कीर्तनमें मत्त हो गये।

परम सौभाग्यवान् विप्र-बालक और विप्रने आनन्द-विह्वल होकर संकीर्तन-यज्ञेश्वर प्रभुके कीर्तन-विलासका दर्शन करते-करते एक बालकको देखा। प्रभु गौर-शरीरमें श्याम-तनु हो गये हैं। इन्दनीलमणि जैसी-कान्ति, हाथमें सुन्दर वेणु, वायुमें फहराता मयूरपंखका चूड़ा है। वे वृन्दावनके बीच राधाके सङ्ग गायोंसे घिरे हुए श्याम-कलेवर नटराज हैं। वहीं यमुना और गोवर्द्धनगिरि हैं। वहीं भाण्डीरवन, मधुवन, तालवन एवं गोपी-ग्वाल आदि सब हैं। इस तरह नवद्वीपमें उन्होंने ही सब-कुछ देखा।

प्रभुने कृपा करके इन दरिद्र ब्राह्मणको जब अपना ऐश्वर्य दिखलाया, तब उनकी क्या दशा हुई, उसे सुनिये—

देखिया मूर्च्छित हइया पड़िल ब्राह्मण।
पुलकित सब अङ्ग सजल लोचन॥
घन-घन हुंकार मारे माल साट्।
'एइ कृष्ण, एइ कृष्ण' बलि पाताइल हाट॥*

---

*चिरमुत्थितस्तु स जगाद तदा
किमहो विलकितमहो किमिति।

(टिप्पणीका शेष अगले पृष्ठपर)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने तब विवश देखकर नृत्य-संवरण किया। अपने हाथसे प्रभुने विप्र-पुत्र और विप्रको प्रसादी चन्दन-माल्य देकर कृतार्थ किया। भाग्यवान् विप्र तभीसे नवद्वीपमें रहने लगे और प्रभुके चरण-कमलके भ्रमर बन गये। विप्रने जो कुछ देखा, वह किसीको न कहा। प्रभुने उनको मना कर दिया था। प्रच्छन्न अवतार श्रीगौर-भगवान्‌की यही प्रच्छन्न लीला है। इसका तत्त्व समझनेकी शक्ति किसीमें नहीं है। ठाकुर लोचनदासने इस लीला-कथाका वर्णन करके अन्तमें लिखा है—

ए हेन ठाकुर आर नाहि प्रेमदाता।
कहये लोचन भज नवीन विधाता॥

प्रभु हमारे नवीन विधाता ही हैं। ऐसा करुणा-सिंधु नवीन विधाता और कहीं नहीं देखा गया। ऐसे दीन-बन्धु,पतित-पावन,भक्तके भगवान् कहीं-किसीने क्या देखा होगा? साध करके ठाकुर नरोत्तमदासने कहा है कि हमारे परम दयालु प्रभु "बिना माँगे प्रेम-धन देते हैं।" ठाकुर लोचनदासने लिखा है—

ए हेन करुणा सिंधु मोर गोरा राय।
अनायासे सब जन प्रेम-धन पाय॥

यह लीलारङ्ग प्रकट करके अवतारशिरोमणि श्रीगौराङ्गसुन्दरने दिखलाया कि उनका एक बार भी यदि दर्शन हो तो जीवका उद्धार हो जाता है; भजन-साधनकी कोई आवश्यकता नहीं रहती।

नदियाके तो अनेक आदमियोंने प्रभुका दर्शन किया था, फिर उन सबका उद्धार क्यों नहीं हुआ? पाखण्डी-लोग क्यों वञ्चित हुए? इसका उत्तर यह है कि वे प्रभुकी निन्दा करते थे, प्रभुके चरणोंमें वे आत्मसमर्पण करनेसे हिचकते थे। शरणापन्न होकर श्रीभगवान्‌के चरणोंमें शरण लेनी पड़ती है। प्रभुकी कृपासे दुष्ट और पाखण्डीलोगोंने भी प्रपन्न होकर आत्मसमर्पण करना सीखा था। जगाई-माधाई इसके दृष्टान्त हैं। जगाई-माधाईको वैष्णव-निन्दाका पाप नहीं लगा था। वैष्णव-निन्दक दुराचारीके सिवा प्रभुने सबका कृपा करके केश पकड़कर उद्धार किया था। प्रभुने उनकी निन्दा करनेवालेको निज दास बना लिया, परन्तु वैष्णव-निन्दक या भक्तद्वेषी पाखण्डीको उनके चरणोंमें स्थान न मिला।

नृसिंहावेश

श्रीवासपण्डितके घरमें प्रभुके सारे ऐश्वर्य-विषयक लीलारङ्ग प्रकट हुए थे। श्रीवासपण्डित एक दिन पितृकर्म करके विष्णुसहस्रनामका पाठ करने बैठे। प्रभुका श्रीमन्दिर श्रीवासपण्डितके घरके बहुत संनिकट था। अपने घरपर बैठकर प्रभु श्रीवासपण्डितका सहस्रनाम-स्तोत्रपाठ सुन रहे थे। वे उच्च स्वरसे सुर-तालके साथ सहस्रनाम-स्तोत्र-गीताका पाठ कर रहे थे। नृसिंहदेवका नाम श्रवण करते ही प्रभुको नृसिंहावेश हो गया। वे दोनों हाथोंमें दो गदा लेकर पदके भारसे पृथ्वीको कम्पित करके हुंकार-गर्जन करते हुए श्रीवास-मन्दिरकी ओर चले। नदियाके मार्गमें सबलोग उनकी ऐश्वर्य-प्रदीप्त श्रीमूर्तिको देखकर भयभीत होकर इधर-उधर भाग

(पृष्ठ ७१५ की टिप्पणीका शेष)

तदनन्तरं च सह तैर्मुदितः
समकीर्तयन् ललित गीतिकलाम्॥
इति भिक्षुरेव विपुलैः पुलकै-
र्द्विगुणी भवत्तनुरतीव सुखी।
नयनाम्बुभिः सततधौततनु
रससागरे परिममज्ज भृशम्॥
—श्रीचैतन्यचरित महाकाव्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चले। यह देखकर प्रभुने आत्म-संवरण करके गदाको छोड़ दिया।

श्रीवासके घरमें जाकर प्रभु अत्यन्त लज्जित भावसे बोले—"न जाने मुझसे क्या अपराध हो गया।"

तब श्रीवास आदि भक्तवृन्दने प्रभुको समझाकर कहा—

नहि ते कदापि भगवन् भविता
निखिलापराधशमनस्य विभोः।
अपराध एव करुणाविभव-
स्तव सत्यमित्थमवदत् स्वजनः॥

चै. च. महाकाव्य

अर्थात्—"हे भगवन्! किसी कार्यमें किसी प्रकारसे आपका अपराध नहीं हो सकता; क्योंकि आप निखिल अपराधके दण्ड-विधायक हैं। परन्तु आप जो अपराध स्वीकार करते हैं, यह केवल आपका कृपा-वैभव है।" प्रभु यह सुनकर मृदु-मधुर मुसकान करने लगे। उस मुसकानसे अमृत-वर्षा हो रही थी।

प्रभुका नृसिंहावेशमें यह जो नदियाके मार्गमें सबके सामने ऐश्वर्य-प्रदर्शन हुआ, इसका निगूढ़ मर्म था। रास्तेमें, घाटपर सबके सामने अबतक प्रभुने ऐश्वर्य-भाव-प्रदर्शन नहीं किया था। वे जब दोनों हाथोंमें गदा धारणकर नदियाके मार्गपर बाहर निकले. तब सबलोग उनके प्रदीप्त तेजोपूर्ण नृसिंह-मूर्ति देखकर भयभीत होकर भाग खड़े हुए। नृसिंह-नाम सुनते ही घर-बैठे प्रभुको यह नृसिंह-भाव-उदय हुआ था। उसको वे संवरण न कर सके और अपने मन्दिरसे श्रीवासके आँगनमें उसी भगवान्-भावमें उन्होंने गमन किया था। नदियाके सबलोग प्रभुका यह ऐश्वर्य-भाव देखकर विस्मित और भीत होकर दूर भाग गये थे। श्रीवासके आँगनमें जानेपर भी प्रभुका यह भगवान्-भाव था। वे सब भाग्यवान् नदिया-निवासी प्रभुके इस अपूर्व भगवान्-भावका दर्शनकर कृतार्थ हो गये; जन्मभर प्रभुकी वह ऐश्वर्यमय, तेजोपूर्ण प्रदीप्त मूर्ति न भूले। प्रभुको देखकर उनको ऐसा लगा, मानो साक्षात् नृसिंहदेव नदियाके मार्गमें प्रकट हुए हैं।

शिवावेश

इसके दूसरे दिन उसी श्रीवासके आँगनमें प्रभुने एक और अद्भुत लीलारङ्गका अभिनय किया। प्रभु भक्तवृन्दके साथ श्रीवासके आँगनमें प्रेमानन्दमें कृष्ण-कथा कह रहे थे। उसी समय वहाँ एक शिवभक्तगायक आकर प्रभुके संतोषार्थ उनकी चरण-वन्दना करके सुललित कण्ठसे शिव-संगीत गाने लगा। शिवभक्तगायक मनके उल्लासमें 'शिव-शिव' कहकर जब शिव-गुण गाने लगा, तब मङ्गलमय प्रभु आनन्दमें विभोर होकर श्रीवासके आँगनमें शिवावेशमें मधुर नृत्य करने लगे। प्रेमानन्दमें नृत्य करते-करते विह्वल होकर वे शिवभक्त गायकके कन्धेपर चढ़कर हुंकार-गर्जन करने लगे। भाग्यवान् गायक प्रभुके श्रीचरणोंके स्पर्शसे पुलकिताङ्ग होकर उनको कंधेपर लेकर नयन-रञ्जन मधुर नृत्य करने लगे। उस समय,

आवेशे हइल प्रभुर रकत लोचन।
शिवेर आवेशे करे शिवेर कथन।
खटक डमरु मुखे शिङ्गार गर्जन।
राम-कृष्ण बलिया काँदे डाके हासे।
क्षणेक काँदये गोरा शिवेर आवेशे॥

चै. म.

प्रभुका उस समय प्रकृत शिवभाव था। श्रीवासपण्डित प्रभुके एकान्त अनुरक्त भक्त और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्व-तत्त्वज्ञ थे। उन्होंने 'गिरीशस्तोत्र' और 'मुकुन्द-महिम्नस्तोत्र' पाठ करके प्रभुकी स्तुति की।* स्तुतिसे संतुष्ट होकर प्रभु शिवभक्त गायकके कंधेसे उतरे। गायक प्रेमानन्दमें प्रभुके चरणोंमें मूर्छित होकर गिर पड़ा। तब प्रभु भाव-संवरण करके दिव्यासनपर बैठ गये। भक्तवृन्द उनको घेरकर हरि-संकीर्तन करने लगे। शिवभक्त गायक इस कीर्तनमें योग देकर परमानन्दमें नृत्य करने लगा। अब उसके मुखसे केवल 'रामकृष्ण' 'हरे राम' और आँखोंसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा निकल रही थी। प्रभुकी कृपा प्राप्तकर शैव गायक परम वैष्णव हो गया—

राम-कृष्ण बलिया से काँदे हासे डाके।

यह लीलारङ्ग प्रकट करके प्रभुने दिखलाया कि शैव और वैष्णवोंमें कोई विवाद नहीं है। परम मङ्गलमय शिवमूर्ति प्रभुकी श्रीमूर्तिमें अन्तर्निविष्ट रहती है। सर्वदेव-शिरोमणि श्रीगौराङ्गप्रभुका चरणाश्रय लेनेपर सवदेवोंकी आराधना सिद्ध होती है। मङ्गलमय शिव समान परम-वैष्णव दूसरा कौन है? गायकके मुखसे भक्तका गुण-गान सुनकर भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्ने आनन्दमें विह्वल होकर अपने भक्त-सेवी गायकको प्रेम-दानकर कृतार्थ किया। शिवभक्त गायक अब परम गौर-भक्त हो गया और वह प्रभुके चरणोंको त्यागकर कहीं नहीं गया। शैवों और वैष्णवोंमें प्रेम बढ़ानेके लिए श्रीगौराङ्गप्रभुने बहुतेरे लीलारङ्ग प्रकट किये थे। वे सब लीला-कथाएँ यथास्थान विस्तारपूर्वक वर्णन की जायँगी। यदि भाग्यमें लिखा होगा तो यह सौभाग्य भी प्राप्त हो जायगा।

श्रीवासके आँगनमें प्रभुके असंख्य लीलारङ्गोंकी मधुर कथाएँ ग्रन्थोंमें वर्णित है। श्रीवासका आँगन नवद्वीप-लीलाका रासमण्डल है। प्रभुका जो कुछ गुप्त लीलारङ्ग है, वह श्रीवासके आँगनमें ही प्रकट हुआ था। श्रीगौराङ्ग-लीलास्थली श्रीधाम नवद्वीपका श्रीवास-आँगन गुप्त वृन्दावन है। श्रीवृन्दावनकी रासलीला-स्थलीके समान यह पुण्यभूमि सर्वतीर्थ-शिरोमणि है। कलिका युगधर्म संकीर्तन-रास प्रभुने इसी श्रीवास-आँगनमें प्रारम्भ किया था।

ब्राह्मणीद्वारा चरण-धूलि

प्रभु एक दिन कीर्तनसे श्रान्त होकर श्रीवासके आँगनमें बैठे थे। कीर्तनके अन्तमें जब वे भूतलपर श्रीअङ्गको लम्बा करके प्रणाम कर रहे थे, उसी समय एक वृद्धा ब्राह्मणीने आकर उनकी चरण-धूलि ले ली। प्रभु ब्राह्मणीको ऐसा कार्य करते देखकर अत्यन्त दुःखित होकर संतप्तचित्तसे उदासमुख होकर बैठ गये। उनके मनमें बड़ा दुःख था। वे नासिकासे बारंबार निःश्वास छोड़ रहे थे। किसीको कुछ भी न कहकर अचानक प्रभु उठकर दौड़ते हुए गये और गङ्गाजलमें कूद पड़े। भक्तवृन्द भी साथ-साथ दौड़े, परन्तु प्रभुको देख न पाये। तब सभी गङ्गाजलमें कूद पड़े और प्रभुका पता लगाने लगे;

---

*निशमय्य गीतमतिधीरपदं
ललितं बभूव भगवान्मुदितः।
अधिरुह्य तस्य लसदंसतटं
नटनं चकार स च धूर्जटिवत्॥
मदघूर्णिताक्षियुगलो विपुलैः
पुलकैरतीवरुचिरो रुचिमान्।
स तदंसमूलमधिरुह्य तदा
शिववन्ननर्त्त करुणाम्बुनिधिः॥
भुवि यस्तु नारद इति प्रथितः
स पपाठ तत्र गिरिशस्तवनम्।
अतिसुस्वरः स तु मुकुन्दभिषक्-
स्तवनं महिम्न इह हन्त जगौ॥
चै. च. महा, ७.८७—८९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

परन्तु कहीं उनका पता न पाकर सबलोग दुःखके समुद्रमें निमग्न हो गये। शचीमाताके कानोंमें यह बात पहुँची। वे पागलके समान रोती हुई गङ्गाके किनारे आकर धूलमें पड़कर हाहाकार करने लगीं।

इस प्रकारका प्रमाद देखकर अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु हुंकार-गर्जन करके गङ्गामें कूदकर बलपूर्वक प्रभुको हाथ पकड़कर तीरपर ले आये। प्रभुका श्रीअङ्ग निःस्पन्द था। बहुत कठिनाईसे भक्तवृन्दने उनको सचेत किया।

उस दिन प्रभु मुरारिगुप्तके घर गये। उनके मनमें आनन्द न था और न मुँहसे बात निकलती थी। द्विज हरिदासके घरमें उस दिन प्रभु रात बिताकर पुनः सवेरे उठकर गङ्गाके किनारे गये। गङ्गा-पार जाकर अन्यमनस्क होकर वे गङ्गाके किनारे बालूपर भ्रमण करने लगे। उनकी आँखोंसे झर-झर आँसूओंकी धारा बह रही थी। भक्तवृन्द उनके साथ ही थे। कोई उनके मनका भाव समझ नहीं पा रहा था, सबके मनमें विषम भय उत्पन्न हुआ। श्रीवास आदि भक्तवृन्द तब प्रभुसे अनुनय-विनय करते हुए कहने लगे—

परसन्न हओ प्रभु गौर गुणनिधि।
कातर हइया बोले सब अपराधी॥
कृपा कर महाप्रभु छाड़ अभिरोष।
एमन कतेक लबे बालकेर रोष॥
करुणा-सागर प्रभु करुणा-विग्रह।
करुणार-अवतार लोक-अनुग्रह॥
एखन विमुख केने हओ त आपने।
आमरा कि जानि तोर चित आचरणे॥
घरेते आइसह प्रभु घुचाह प्रमाद।
निज अनुगत देखि करह प्रसाद॥

चै० म०

तब करुणामय प्रभुका करुण हृदय भक्तके दुःखसे द्रवित हो गया। तब वे प्रसन्नचित्त घर लौटे।*

प्रभुके इस लीलारङ्गके दो भाव हैं। जब वे भक्त-भावमें थे तो वृद्धा ब्राह्मणीने उनकी पद-धूलि ली; अतएव यह उनको अच्छा न लगा। दूसरा भाव यह है कि प्रभु स्त्री-जातिको देखते ही दस हाथ दूर हटकर खड़े हो जाते थे। ब्राह्मणीने अनजाने उनको स्पर्श किया था, अतएव प्रभुके मनमें बड़ा दुःख हुआ। इसी कारण वे किसीसे बिना कुछ कहे द्रुतगतिसे गङ्गामें जाकर कूद पड़े। स्त्री-जातिके स्पर्शसे यदि कोई पाप-स्पर्श होता हो तो गङ्गास्नानसे उसका नाश हो जायगा, इसी उद्देश्यसे उन्होंने गङ्गामें डुबकी लगायी। प्रभुके मनमें बड़ा दुःख हुआ था; क्योंकि उस समय उनका पूर्ण भक्त-भाव था। उस समय सब प्रकारसे निर्दोष होकर भक्त-भावमें नदियामें वे लोकशिक्षा और धर्मशिक्षा प्रदान कर रहे थे; अतएव उनको सब बातोंमें सावधान होकर आदर्श भक्त-भावमें चलना पड़ता था।

---

* नटनावसानसमयेऽस्य दिने
पुरतः समेत्य बिनिपत्य भुवि।
भृशमग्रहीत् पदपयोजरजां-
स्यथ काचन द्विजवधूप्रवरा॥
तदिदं विलोक्य सहसैव तया
विहितं बभार बहुदुःखतरम्।
द्युनदीजलेऽथ निपपात तदा
चपलं प्रसृत्य बहुधा विकलः॥
तममुं तथाविधमवेक्ष्य बली
सममुद्धार पयसोऽतिबलात्।
अवधूतदेव इह गौरविभुं
गुरुदोर्द्वयेन सहसा विकतः॥

चै. च. महा. ७.९१.—९३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गृहत्याग-संकेत

प्रभुका जब मन स्थिर हुआ, तब वे श्रीवासके आँगनमें आकर बैठे और भीतरकी बात भक्तवृन्द-को कहने लगे। प्रभुके मनमें उस समय वैराग्य-भाव उपस्थित हुआ था। उस समय वे कृष्ण-प्रेममें तल्लीन थे। कृष्णविरह-सागरमें उस समय प्रभुने डुबकी लगायी थी; और-कुछ उनको अच्छा न लगता था। श्रीवास आदि भक्तवृन्द वहाँ थे। सभी प्रभुके अश्रुपूर्ण चन्द्र-वदनकी ओर देख रहे थे। प्रभुके हृदयमें कृष्ण-विरहाग्नि उस समय धू-धू करके जल रही थी। उन्होंने तब रोते-रोते अन्तरङ्ग भक्तवृन्दके सामने मनका दुःख प्रकट करते हुए कहा। यथा, श्रीचैतन्यमङ्गलमें—

धन जन यौवन सकल अकारण।
ना भजिनु सत्य वस्तु कृष्णेर चरण॥
निरन्तर दगधे संसारे मोर हिया।
ना करिनु कृष्ण कर्म हेन देह पाइया॥
संसार दुर्लभ एइ मनुष्य-शरीर।
श्रीकृष्ण भजये जे मायाय हय धीर॥
कृष्ण ना भजिले एइ मिछा सब देह।
पति-सुत-पिता-माता मिछा सब गेह॥

यह बात बोलते-बोलते प्रभुके मनमें संसारसे वैराग्यका भाव उदय हुआ। वे सबके सामने मनके आवेगमें अपने हृदयकी बात बोल उठे—

मायेरे छाड़िया आमि जाब दिगन्तर।
कहिल सभारे एइ मरण उत्तर॥

चै० म०

यह बात बोलकर चतुर-चूड़ामणि हमारे प्रभु तत्काल अपने मनके भावको छिपानेकी चेष्टा करने लगे।

उन्होंने कहा—"यदि मैं माताको परित्याग करके जाता हूँ तो लोग मुझे अकृतज्ञ कहेंगे—मैं ऐसा नहीं करूँगा।" वहाँ मुरारिगुप्त भी थे। वे बोले—"हे प्रभो! आपके पाद-पद्मका स्मरण करनेसे प्रेम-भक्ति प्राप्त होती है। आपके कार्यकी कोई निन्दा नहीं करेगा।" यह बात सुनते ही प्रभु प्रेमसे गद्गद हो उठे और उन्होंने मुरारिको प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदान किया। मुरारिगुप्तने प्रेम। पुलकित हो भागवतके एक श्लोकका पाठ किया।

क्वाहं दरिद्रः पापीयान् क्व कृष्णः श्रीनिकेतनः।
ब्रह्मबन्धुरिति स्माहं बाहुभ्यां परिरम्भितः॥

श्रीम. भा. १०.८१.१६

—यह श्लोक सुनकर प्रभुके मनमें भगवान्-भावका उदय हुआ। कोटि सूर्यके समान उनके श्रीअङ्गसे ज्योति निकलने लगी। वे विष्णु-सिंहासन-पर उठ बैठे। भक्तगण हाथ जोड़कर प्रभुके सामने खड़े होकर उनकी स्तुति करने लगे। तब प्रभु भगवान्-भावमें भक्तवृन्दको सम्बोधन करके बोले—

इदं शरीरं परमं मनोज्ञं
सच्चिद्घनानन्दमयं ममैव।
जानीत यूयं नहि किंचिदन्य-
द्विनास्ति भूमौ स इतीदमूचे॥

श्री चै. च. महा. ७.१०२

अर्थात्—प्रभुने कहा—"मेरा यह शरीर परम मनोज्ञ, नित्य, चिद्घन, और आनन्दमय है। तुम निश्चय जानो कि मेरे इस शरीरके सिवा भूमण्डल-में और कुछ नहीं है।" प्रभुने अपने भक्तोंको निज-तत्त्व समझा दिया। श्रीवास आदि भक्तवृन्द प्रभुके श्रीमुखसे निःसृत निज-तत्त्वकी बात सुनकर पुलकित होकर अश्रु-विसर्जन करने लगे। पश्चात् सबने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मिलकर प्रभुका विधिपूर्वक अभिषेक और उनकी पूजा की। प्रभु तब भाव-संवरण करके भक्तवृन्दके साथ श्रीवासके आँगनमें नृत्य-कीर्तन आदिके आनन्दमें मत्त हो गये। भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें मत्त होकर उच्च हरि-संकीर्तन करने लगे।

प्रभुकी यह लीला पूर्वलीलासे संलग्न थी। स्त्री-जातिके स्पर्शसे प्रभुका मन अतिशय सतप्त हुआ था। उन्होंने भक्त-भावमें मनके दुःखसे गङ्गामें गोता लगाया था। उनके मनका भाव यह था कि यदि कुछ पाप हुआ होगा तो गङ्गा-स्नानसे दूर हो जायगा। भक्तवृन्दको उन्होंने भक्त-भावमें इस लीलारङ्गके द्वारा जो समझाया, उनका भगवान्-भाव उसके ठीक विपरीत था। श्रीभगवान्का श्रीअङ्ग चिन्मय और नित्य है। उसको पाप स्पर्श नहीं कर सकता। प्रभुने यही बात भगवान्-भावमें भक्तवृन्दको कही तथा यह लीलारङ्ग दिखलाकर उसे समझा दिया। श्रीगौराङ्ग-लीला अत्यन्त गम्भीर है। प्रभुकी एक-एक लीलाके प्रवाहमें सैकड़ों धाराएँ प्रवाहित होती हैं। वे सब अमृतकी धाराएँ हैं। कविराज गोस्वामीने साधपूर्वक लिखा है—

श्रीकृष्णचैतन्य-लीला अमृतेर सार।
एक लीला प्रवाहे हे शत-शत धार॥

चै. च. अं. ५.१५३

देव-मन्दिर-मार्जन

इस लीलारङ्गके अभिनयके बाद दूसरे दिन लीला-रसमय-विग्रह श्रीगौराङ्गप्रभुने भक्त-भावमें एक और लीलारङ्ग प्रकट किया। धर्मरक्षक भक्तावतार जगद्गुरु श्रीगौर-भगवान् भागवतीय भक्तितत्त्वकी शिक्षा देनेके लिए नदियामें अवतीर्ण हुए थे। भक्त-भावका अवलम्बन करके, स्वयं आचरण करके वे अपने निज-जनको भागवतोक्त भक्तिधर्मकी शिक्षा दे गये हैं। उन्होंने जो कुछ किया है, सब लोकशिक्षाके लिए। उस दिन प्रभुने श्रीवास-मन्दिरमें सब भक्तोंको एकत्रित करके कहा—"आज सबको विष्णु-मन्दिरकी सफाई करनी पड़ेगी।" श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीवासपण्डित, हरिदास ठाकुर, मुरारिगुप्त, गदाधरपण्डित, मुकुन्द दत्त, मुकुन्द दास, शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी, वासु घोष, जगदानन्दपण्डित, नरहरि ठाकुर, रघुनन्दन, रामाईपण्डित आदि सबलोग प्रभुके साथ चले।

प्रभुने मल्ल-वेषमें धोती कस ली, कंधेपर कुदाल ले ली; उनके हाथमें झाड़ू थी। उन्होंने भ्रमरके समान काले केश-पाशको ऊपर उठाकर बाँध लिया था। इस अपूर्व वेषमें प्रभु श्रीवासके आँगनसे नदियाके रास्तेमें निकले। भक्तवृन्दने भी ऐसा ही वेष धारण किया। रास्तेमें जब पार्षदवृन्दके साथ प्रभु इस प्रकार बाहर निकले तो दूसरे वैष्णवोंने उनका साथ दिया; सबके हाथमें झाड़ू थी। प्रभुने जहाँ देवमन्दिर देखा, वहीं दल-बलके साथ श्रीमन्दिरकी सफाईमें लग गये। प्राङ्गणको झाड़ना-बुहारना शुरू किया। प्रभु मुखसे मधुर कृष्णनाम लेते थे, भक्तवृन्द बारंबार हरि-ध्वनि कर रहे थे और हाथसे मन्दिरकी सफाई कर रहे थे। यह अति अपूर्व दृश्य था। सारे नवद्वीपमें प्रभुने उस दिन श्रीमन्दिरके द्वारपर, देव-गृहके द्वारपर भक्तवृन्दके साथ जा-जाकर इस प्रकार अपने हाथों-से मन्दिर-मार्जना-लीलारङ्ग प्रकट किया।

यह प्रभुकी भक्त-भावकी लीला है। कलिग्रस्त जीवको भक्तितत्त्व समझानेके लिए प्रभु अपने कंधेपर कुदाल और हाथमें झाड़ू लेकर देव-मन्दिरोंके द्वार-द्वार घूमे, स्वयं आचरण करके भक्तिभावसे यथार्थ भक्तिका यथार्थ भाव दिखलाया। भक्त महाजन कवि साध करके क्या लिख गये हैं—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आर केहो नाहि करे हेन ठाकुराल ।
भक्ति बूझाबारे करे काँधेते कोदाल ।।
चै. म.

अत एव--

गोरापद भज भाइ ना करिह हेला ।
संसार तरिते सबे एइ मात्र भेला ।।
चै. म,

नीलाचलमें प्रभुने भक्तवृन्दके साथ इसी प्रकार श्रीजगन्नाथ-गुण्डिचा-मन्दिरकी मार्जना की थी ।

ब्रह्मशाप-लीला

इसी समय प्रभुने अपने ब्रह्मशाप-लीलारङ्गका अभिनय किया था । यह घटना प्रभुके गृहत्यागके एक वर्ष पहले घटित हुई थी । प्रभुकी अवस्था इस समय तेईस वर्षकी थी । वे नित्य श्रीवास-मन्दिरमें कीर्तन-विलास-लीलारङ्गमें मत्त रहते थे । उसमें केवल उनके अन्तरङ्ग भक्तवृन्दको जानेका अधिकार मिलता था । प्रभुकी कीर्तन-लीला रास-लीला थी । बहिरङ्ग आदमीको वहाँ जानेका प्रभुने निषेध कर दिया था । उनके इशारेसे संकीर्तनके प्रारम्भमें श्रीवासके आँगनका बहिर्द्वार बंद हो जाता था । द्वारदेशमें दो-एक भक्तजन प्रहरीके रूपमें खड़े रहते थे । यदि किसी भक्तके कीर्तनमें योगदान करनेमें विलम्ब होता तो द्वार खोलकर उसको भीतर ले लेते थे ।

नदियावासी एक ब्राह्मणको एक दिन प्रभुका कीर्तन-विलास देखनेकी बड़ी इच्छा हुई । उन्होंने संध्याके बाद श्रीवास-मन्दिरके द्वारपर जाकर देखा कि द्वार बंद है, भीतर कीर्तन हो रहा है । एक अन्तरङ्ग भक्तको द्वार खोलकर भीतर ले लिया गया; परन्तु उसको कोई अंदर जाने नहीं देता था । इससे विप्र अत्यन्त दुःखी और क्रुद्ध होकर लौट गया । वह विप्र भगवद्भक्त था, परन्तु बड़ा दुर्मुख था । प्रभुके साथ उसका परिचय भी था । विप्र मनमें बड़ा दुःख पाकर घर लौट गया । प्रभु नृत्यानन्दमें विभोर थे ।

प्रभुको इसका कुछ पता न चला हो, ऐसी कोई बात नहीं थी । वे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, अन्तर्यामी परम पुरुष हैं । उनको कोई बात अज्ञात नहीं रह सकती । ब्राह्मण दुःखित चित्तसे लौट गया है, प्रभु इसको जानते हैं । उनकी प्रेरणासे ही उनके भक्तोंने उस ब्राह्मणको श्रीवासके आँगनमें प्रवेश नहीं करने दिया । यह सब प्रभुका लीलारङ्ग था । यही ब्रह्मशाप-लीला थी, यह प्रभुको अभिप्रेत था, विप्र तो केवल उपलक्ष्य मात्र था ।

उस रातमें प्रभुने भक्तवृन्दके साथ प्रेमानन्दमें श्रीवास-मन्दिरमें नृत्य-कीर्तन किया । दूसरे दिन प्रातःकाल वे गङ्गा-स्नान करनेके लिए गये । वहाँ उस दुर्मुख विप्रने प्रभुको देखकर क्रोधोन्मत्त होकर अपने यज्ञोपवीतको हाथमें लेकर उनको अभिशाप दिया—'निमाईपण्डित ! बड़ी साध करके कल रातमें श्रीवासके घर तुम्हारा कीर्तन देखने गया था; तुम्हारे एक भक्तने तुम्हारे ही आदेशसे मुझको घरमें प्रवेश नहीं करने दिया । इससे मुझे बड़ा अपमानित और दुःखित होना पड़ा है । मैं अभिशाप देता हूँ, तुम्हारे संसार-सुखका नाश हो जाय ।"

—यह ब्रह्मशाप सुनकर प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ । वे विप्रके प्रति तनिक भी असंतुष्ट न होकर उसके ब्रह्मशापको अङ्गीकार करके हँसकर बोले —"यह शाप तो मेरे लिए सुन्दर वरदान है ।"

प्रभुके आनन्दको देखकर तथा उनकी सुमधुर वाणी सुनकर विप्रके मनमें बड़ा दुःख हुआ, भय भी हुआ । अब उसका वह क्रोध न रह गया था । मनमें विषम अनुताप उपस्थित हो गया । प्रभुके सुन्दर मुखचन्द्रकी ओर देखकर मनके दुःखसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ब्राह्मण रो पड़ा। प्रभुके सामने खड़ा होकर वह तब हाथ जोड़कर बोला—"प्रभो! मुझे तो पता नहीं, मैं क्या बोल गया। जो तुमने कहलाना चाहा, वही मेरे मुँहसे निकल गया।"

—इतना कहकर अनुतप्त विप्र प्रभुके चरणोंमें गिर पड़ा। कृपानिधि प्रभुने उसका हाथ पकड़कर उठाया और उसको सान्त्वना देकर प्रेमालिङ्गन-प्रदानकर कृतार्थ किया। विप्रके हृदयमें प्रेमका संचार हुआ, वह कृष्ण-प्रेममें प्रमत्त हो उठा।

श्रीनित्यानन्दप्रभुने मार खाकर जगाई-माधाई-को प्रेम-दान किया था, श्रीगौराङ्गप्रभुने ब्रह्मशाप अङ्गीकार करके इस विप्रको प्रेम-दान किया। करुणावतार प्रभुकी अपार करुणा देखकर विप्र अनुताप और लज्जासे मृतवत् होकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़ा। गङ्गातटपर यह अपूर्व दृश्य देखकर नदियावासी सारे नर-नारी स्तम्भित और विस्मित हो उठे। क्रोधान्ध और दुर्मुख विप्रने उनको व्यर्थ ही शाप दिया और प्रभुने उनको कुछ न कहकर गोलोककी सम्पत्ति प्रेमधन दान किया।

प्रभुकी इस अपूर्व दयाकी बात नदियामें सर्वत्र प्रचारित हो गयी। उनके ब्रह्मशापका वृत्तान्त जिसने सुना, उसीका हृदय काँप उठा। स्नेहमयी शचीमाताके कानोंमें भी यह बात पहुँची; यह बात सुनकर उनकी दोनों आँखोंके सामने अँधेरा दीखने लगा। उनका सारा शरीर महा आतङ्कसे काँप उठा। वे मूर्छित होकर भूतलपर गिर पड़ीं; उनकी आँखोंसे झर-झर अश्रुधार बहने लगे। वे रास्तेमें यह दारुण संवाद सुनकर रोती हुई सबसे पूछती-पूछती घर आयीं। प्रभु उस समय गङ्गास्नान करके घर आ गये थे। पुत्रके मुख-कमलको देखकर शचीमाताका दुःख-सिंधु उमड़ उठा। उन्होंने रोते-रोते प्रभुसे पूछा—"बेटा निमाई! में क्या सुन रही हूँ। क्या ब्राह्मणने तुमको कोई शाप दिया है? तुमने उसके प्रति क्या अपराध किया था? वह ब्राह्मण कैसा कठोर है कि तेरा मुख देखकर भी उसको दया नहीं आयी। वह कौन है, जो मेरे वधका भागी हुआ? मेरा तो सारा संसार तुमको ही लेकर है। तुम सबके दुलारे और मेरी आँखोंके तारे हो। कहीं तुमको मैं खो न बैठूँ! तेरा मुख देखकर जीती हूँ। ऐसी दारुण बात सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है। पता नहीं, मुझ अभागिनी भाग्यमें क्या लिखा है! तेरा अमङ्गल हुआ तो मेरे प्राण नहीं टिकेंगे।"

स्नेहमयी जननीके शोकपूर्ण वचनोंको सुनकर प्रभुका मन द्रवित हो गया। उन्होंने माताको प्रबोध करते हुए समझाया—"मैया! व्यर्थ क्यों दुःख करती हो? मैंने कोई अपराध नहीं किया है। विप्रने मुझे अकारण शाप दिया है। बिना अपराधके शाप फलीभूत क्यों होगा!"

चतुरशिरोमणि प्रभुने जननीके साथ चतुराई की। ब्रह्मशापकी प्राप्तिसे उनके मनमें जो आनन्द हुआ था, उसे शठ-शिरोमणि श्रीगौर-भगवान्‌ने अपने हृदयमें छिपाकर मुँहसे ये सारी बातें कहकर माताको प्रबोध दिया। शचीमाताने लोगोंके मुखसे पुत्रके ऊपर ब्रह्मशापका कारण भी सुना था। उस बातको वे प्रभुके सामने नहीं उठा सकीं। स्नेहमयी जननी पुत्रके मधुमय प्रबोध-वचनको सुनकर सब-कुछ भूल गयीं। प्रभु मधुर हँसी हँसकर माताके अङ्गमें श्रीअङ्गको मिलाकर बालकके समान उनकी गोदमें बैठ गये। शचीमाताके संतप्त प्राण शीतल हो गये। उनके सब दुःख दूर हो गये। माता सब दुःख-संताप भूलकर पुत्रके चन्द्र-वदनका दर्शनकर परितृप्त हो गयीं। श्रीभगवान्‌का मायाजाल ही ऐसा है।

प्रभुने अपने इस लीलारङ्गसे जगत्‌को दिखला दिया कि वे पूर्णब्रह्म सनातन होते हुए भी नदियाके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ब्राह्मणकुमार शचीनन्दन हैं। सर्वोत्तम नरलीलाके सारे अङ्ग प्रभुने पूर्णरूपसे अनुष्ठित और अभिनीत किये हैं। इस लीलारङ्गमें प्रभुने अपने संन्यास-आश्रम-ग्रहण करनेका आभास दिया है। ब्रह्मशाप सामान्य वस्तु नहीं है, यह भक्तोंको समझाया है; और दिखला दिया है कि कर्मफल या अदृष्ट फल होकर रहता है। अभिशापदाताका कोई दोष नहीं है। उन्होंने अभिशाप देनेवाले विप्रको प्रेमालिङ्गन-दानके द्वारा संतुष्ट करके यह दिखलाया कि श्रीभगवान् हिंसा, राग-द्वेष और भयके परे हैं। ब्राह्मणको अपने प्रति प्रसन्न करके दिखलाया है कि श्रीभगवान् सब कारणोंके कारण हैं, उनके प्रति राग-द्वेष आदि भाव भी उनके संतोषके कारण बनते हैं। शत्रु-भावमें भी वे प्राप्त होते हैं। विप्रने श्रीगौराङ्गप्रभुके साथ शत्रुता करके उनकी कृपा प्राप्त की; क्योंकि उनका मन प्रभुके प्रति अनुरक्त था। ऐसा न होता तो वे प्रभुका कीर्तन देखनेके लिए इतने व्यग्र क्यों होते? इतनी लाञ्छना और अपमान सहन क्यों करते?

श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने प्रभुके ब्रह्मशापकी फलश्रुति लिखी है—

इति श्रुत्वा हरौ पापं ब्रह्मशापाद् विमुच्यते।
तदिदं श्रद्धया लोकैः श्रोतव्यं शुद्धबुद्धिभिः॥

कविराज गोस्वामीने इसका अर्थ लिखा है—

प्रभुर शाप-वार्त्ता जेवा शुने श्रद्धावान्।
ब्रह्मशाप हैते तार हय परित्राण॥

चै. च. आ. १७.६०

प्रभुकी एक दूसरी शापलीलाके सम्बन्धमें वासुदेवघोष-रचित 'श्रीगौराङ्ग-संन्यास' नामक ग्रन्थमें निम्नलिखित वर्णन मिलता है—

एक त्रिकालज्ञ वृद्ध ब्राह्मण गङ्गाके किनारे बैठकर यह कहकर रुदन कर रहे थे और प्रभुके आनेका मार्ग देख रहे थे। वे कह रहे थे—

प्रेम दिबे बाछा बोलेछिले।
मायेर कोल पाइया बाछा भूले रहिले॥

वे पुनः रो-रोकर कह रहे हैं—

कर्ता त्वमेव गोविन्द मम सर्वं निवेदितम्।
अहं यन्त्र त्वं च यन्त्री न मे दोषाः न मे गुणाः॥

आसि यन्त्र तुमि यन्त्री।
जेमम्बाजाओ तेमनि बाजि॥
आमार दशा देखे भारि।
दया ना हइल ब्रजेर हरि॥
दीन हीन काङ्गालेर पाने।
हेर गौर नयान कोने॥
नाम शुने आइल धाइया।
दया नाइ काङ्गाल जानिया॥
कि कर मायेर कोले थाकि।
भजन हीन काङ्गाले डाकि॥

वे और भी कह रहे हैं—

प्रेम दिबे बलि बाछा गेलि रे बलिया।
छेला बुद्धि निमाई केने रहिले भूलिया॥
ब्राह्मण ओरसे आमि यदि हइ ब्राह्मण।
संध्या-गायत्री ते यदि आमि हइ उपासन॥
तबे निमाइ ब्रह्मशाप दिलाम अखन।
प्रातःकाले चले जाओ ब्रज भुवन॥
एइ शाप दिल आमि।
नदेर बाहिर हओ तुमि॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वृद्ध ब्राह्मण प्रभुको केवल शाप देकर ही शान्त न हुआ, उसने दुःखिनी शचीमाताको शाप दिया। यथा,

निमाइ के शाधिया पुनि भावे मने मन।
पुनरपि शचीके बोले शापेर वचन॥
एइ शाप दिलाम तोरे।
केन्दे फेरो घरे घरे॥

उस समय श्रीवास-गृहिणी मालिनीदेवी जल लानेके लिए गङ्गाके तटपर गयी थीं; उन्होंने विप्रके मुखसे यह दारुण वचन सुना और बहुत दुःखित होकर विप्रको कहा—

अहे विप्र कि बलिले।
शची बधेर भागी हइले।

—इतना कहकर मालिनीदेवी रोते हुए घर चली गयीं। तत्पश्चात् अपनी प्रिय सखी शचीमाताको उन्होंने ब्रह्मशापकी बात कही।

यह दारुण वार्ता सुनकर दुःखिनी शचीमाता आँगनमें गिरकर पछाड़ खाकर रोने लगीं और मालिनीदेवीकी ओर देखकर बोलीं—

मालिनी सइ कि बोलिले।
हृदय अनल ज्वले दिले॥

शचीमाताके सिरपर मानो वज्राघात पड़ा। अब वे चीत्कार करके रोते-रोते सबको कहने लगीं—

ओ नदे वासी रे।
अद्य निमाइर ब्रह्मशाप हयेछे गो।
आमारे अनाथ करि,ब्रजे निमाइ जाबे चलि॥

—इतना कहकर वे रोते-रोते नदियाके मार्गपर बाहर निकलीं। सब नदियावासी लोगोंने सुना कि प्रभुको ब्रह्मशाप लग गया है। भक्तगण व्याकुल हो उठे। पाखण्डियोंको आनन्द हुआ। परन्तु प्रभुने शान्तचित्तसे सबको सान्त्वना दी; उन्होंने दुःखिनी माताको शान्त किया।

यह सब प्रभुका लीलारङ्ग था। वे लीलामय हैं। उनके लीलारसमें भक्तगण दिवा-निशि डूबे रहते हैं। गौराङ्ग-लीला-रस लोलुप भक्तरूपी भ्रमरोंके लिए उनका सुमधुर लीलारस ही प्राण है। यह लीला-रहस्य श्रीभगवान्‌की नरलीलाका पूर्ण परिचय प्रदान करता है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

"के बूझिते पारे विष्णु-वैष्णवेर लीला।"

यह ध्रुव सत्य है। भगवत्-लीला-रहस्य मनुष्यकी बुद्धिके लिए अगम्य है।

बलरामावेश

एक दिन प्रभुने बलराम-भावमें आविष्ट होकर सारे दिन मुरारिगुप्तके घरमें अद्‌भुत लीलारङ्ग किया था (चै. च. महा. २३)। एक महाप्रकाशके सिवा इतनी देरतक प्रभुने भगवान्-भावमें पहले कभी नदियामें लीलारङ्ग नहीं किया। प्रातःकाल प्रभु बलराम-भावमें आविष्ट हुए। संध्याकालमें उन्होंने यह भाव-संवरण करके गङ्गा-स्नान किया।

(चै. च. महा. ८.२८)

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यने इसी समय प्रभुका साक्षात् बलराम-रूपमें दर्शन किया था और भाग्यवान् विप्र वनमाली महामहिमामय और महैश्वर्यपूर्ण पर्वताकार स्वर्णलागूंल देखकर मूर्छित हुए थे। (चै. च. महा. ८.४६,४७)

बलभद्रके वेषमें प्रभुने श्रीवासके आँगनमें उस दिन जो अद्‌भुत नृत्य-विलासरङ्ग प्रकट किया था,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसको देखकर नदियाके भक्तवृन्दने विमोहित होकर उनके चरण-कमलमें गिरकर श्रीबलदेवजीकी स्तुति की थी। देवताओंने आकाशसे पुष्प-वृष्टि करके प्रभुकी वन्दना की थी। (चै. च. म. ८.४८,४९)

श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीश्रीमन्महाप्रभुको बलराम-भावमें मदसे घूर्णित नेत्रोंमें 'मद लाओ, मद लाओ' कहकर उद्दण्ड नृत्य करते देखकर अपनी सारी शक्ति प्रभुके चरणोंमें अर्पित करके जड़वत् निश्चेष्ट भावमें प्रेमानन्द अनुभव करते रहे। वे प्रभुकी इच्छाशक्ति थे। प्रभुकी जब इच्छा हुई, नित्यानन्द-शक्ति उनसे प्रकट हुई और वे नित्यानन्द-भावमें विभावित होकर बलरामावेशमें मधुर नृत्य करने लगे। प्रभुने भक्तवृन्दको दिखला दिया कि वे और नित्यानन्दप्रभु अभेदात्मा हैं तथा अभेद मूर्ति और अभिन्न कलेवर हैं।

प्रभुने जब वलराम-भावावेशमें उन्मत्त होकर मुरारिगुप्तके घर बैठकर इस प्रकार अद्भुत लीलारङ्ग किया, उस समय नदियाके सारे भक्तवृन्द वहाँ एकत्रित होकर उनकी स्तुति-वन्दना करते रहे। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न प्रभुके मौसा थे। प्रभु उनको पिताके समान मानते थे। उन्होंने प्रभुको साक्षात् बलभद्ररूपमें देखकर उनकी स्तुति की। उस दिन प्रभुने सारा दिन बलरामभावमें नृत्य-विलासरङ्गमें व्यतीत किया। भक्तवृन्दने भोजन-पान त्याग करके उस दिन मुरारिगुप्तके घर जो आनन्दका उपभोग किया, उसके साथ वैकुण्ट-भूखकी भी तुलना नहीं हो सकती। सबने उस दिन देख लिया कि मुरारिगुप्तका गृह-प्राङ्गण, वायु, आकाश-सब कस्तूरीकी गन्धसे भर गया है और उस गन्धके आघ्राणके लिए लोलुप होकर भ्रमर-गण आकस्मिक मेघमालाके समान आकाशको आच्छन्न कर रहे हैं। (चै. च. महा. ८.४१)। देवताओंने पुष्पवृष्टि करके प्रभुकी वन्दना की थी (चै. च. महा. ८.४९)।

उस समय श्रीराम-नामक एक भाग्यवान् विप्रने नदियाके आकाशमें देवगणकी दिव्य मूर्तिका दर्शन करके आनन्दमें विभोर होकर सबके सामने नृत्य किया था। (चै. च. महा. ४१—४४) उसी समय भक्तश्रेष्ठ वनमाली मिश्र स्वर्णमय पर्वताकार हलका दर्शन करके प्रेमानन्दमें मूर्छित होकर गिर पड़े थे। उन्होंने पहले भी एकबार इसी प्रकार ऐश्वर्य-दर्शन किया था (चै.च. महा. ८.४६,४७)।

प्रभुके कीर्तन-विलास-लीलारङ्गके प्रेमी सभी भक्तगण श्रीवासके आँगनमें एकत्रित होते थे। युगधर्म हरि-संकीर्तनकी महिमा समझानेके लिए प्रभुके आदेशसे श्रीनित्यानन्दप्रभु और हरिदास ठाकुर नदियावासियोंके द्वार-द्वार जाकर बहुत लाञ्छना सहन करते थे, प्रभुकी बहुत निन्दा सुनते थे। तथापि वे लोग अपने जीवनके इस महान् व्रतको छोड़ते न थे; क्योंकि यह प्रभुका आदेश था। गोलोककी सम्पत्ति प्रेम-धन-वितरण करनेके लिए प्रभुने नदियामें अवतार लिया था। युगधर्म हरि-संकीर्तन-प्रचार करनेके लिए उन्होंने नरवपु धारण किया था—यह उनके अन्तरङ्ग भक्तगणने भली-भाँति हृदयंगम किया था। पाखण्डियोंका दल अब भी नदियामें वर्तमान था। जगाई-माधाई-उद्धार तथा महाप्रकाश-लीलाके अभिनयके बाद भी बहुतेरे महा अभागे पाखण्डीलोगोंका दुष्ट मन प्रभुकी भगवत्तामें विश्वास स्थापित न कर सका। वे सबको कहते-फिरते थे—"कलियुगमें वैष्णव कहाँ हैं? ये लोग केवल पेट भरनेके लिए वैष्णव हुए हैं। इनको गङ्गामें डुबा करके मार डालना चाहिये। निमाईपण्डित इनके द्वारा इतना सुन्दर नदियानगर लुटा देंगे।"

उस समय नदियामें प्रभुका प्रवल प्रताप था। नदियाके लोग उनका सम्मान करते थे; वे उन्हें साक्षात् भगवान् मानकर उनको पूजते थे। यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखकर पाखण्डीलोगोंके मनमें बड़ी ईर्ष्या होती थी। वे छिपेतौरपर प्रभुकी तथा उनके भक्तोंकी इस प्रकार निन्दा किया करते थे। सामने कुछ भी बोलनेका साहस उनका नहीं होता था। इन सब पतित-पाखण्डीलोगोंकी चित्तवृत्तिको शुद्ध करनेके लिए ही प्रभुने भुवनमङ्गल युगधर्म संकीर्तन-यज्ञका अनुष्ठान किया। प्रभुके इस भुवनमङ्गल कार्यको देखने-समझनेकी शक्ति किसीमें नहीं है; परन्तु सज्जन लोग इसको स्पष्ट अनुभव करते हैं और मङ्गलमय प्रभुका जय-जयकार करते हैं। परन्तु वे लोग भी प्रभुका कीर्तन-विलास देख न पानेके कारण अपने भाग्यको कोसते हैं।

किसी-किसीके मनमें छिपेतौरपर प्रभुकी कीर्तन-विलास-लीला देखनेकी अभिलाषा होती और इसी उद्देश्यसे वे भक्तोंके साथ परामर्श करके प्रभुकी संकीर्तन-रास-लीलास्थली श्रीवासके आँगनमें प्रवेशाधिकार प्राप्त करनेकी चेष्टा करते हैं। अनुनय-विनय, स्तव-स्तुतिके द्वारा वे श्रीवासादि भक्तगणको संतुष्ट करके प्रभुके नृत्य-विलास-लीलारङ्गका दर्शन प्राप्त करनेके लिए लालायित रहते हैं। उनके प्रति प्रभुकी बड़ी कृपा रहती है।

ब्रह्मचारी विप्र

नदियामें एक ब्रह्मचारी विप्र वास करते थे। वे परम तपस्वी और निष्ठावान् थे। वे अन्नग्रहण नहीं करते थे। गङ्गा-स्नान करके कठोर साधना करते थे। प्रभुका अपूर्व कीर्तन-विलास-लीलारङ्ग देखनेके लिए उन ब्रह्मचारी विप्रके मनमें बड़ी इच्छा हुई। उन्होंने एक दिन श्रीवासपण्डितसे अनुनय-विनय करते हुए कहा—

तुमि यदि एक दिन कृपा कर मोरे।
आपने लइया जाओ बाड़ीर भितरे॥
तबे से देखिते पाङ् पण्डितेर नृत्य।
लोचन सफल करों हङ् कृतकृत्य॥
चै. भा. म. २३.२१,२२

श्रीवासपण्डितने उत्तर दिया—"आपने ब्रह्मचर्य-व्रतका अवलम्बन करके जीवन व्यतीत किया है, आपका शरीर निष्पाप है; प्रभुका नृत्य-विलास देखनेमें आपका अवश्य अधिकार है; परन्तु प्रभुने मना कर रखा है। अन्तरङ्ग भक्तोंके सिवा कोई दूसरा उनकी कीर्तन-विलास-स्थलीमें प्रवेश नहीं कर सकता। आपको मैं ले जाऊँगा, परन्तु आप वहाँ गुप्तरूपसे रहेंगे, जिससे प्रभुकी दृष्टिमें न पड़ें।" ब्रह्मचारी विप्र इससे सहमत होकर एक दिन रातमें श्रीवासके आँगनमें छिपेतौरपर प्रविष्ट हो गये और सबके पीछे एक ओर छिपकर बैठ गये।

चतुर्दशभुवनके स्वामीकी भुवनमङ्गल मधुर नृत्य-विलास-लीला प्रारम्भ हुई। सब भक्तवृन्द कीर्तनानन्दमें उन्मत्त हो उठे। श्रीनित्यानन्दप्रभु, गदाधरपण्डित, वक्त्रेश्वरपण्डित आदि सभी मधुर नृत्य करने लगे। प्रभु नयन-रञ्जन अङ्ग-भङ्गिमाके साथ मधुर नृत्य करते-करते श्रीवासपण्डितकी ओर देखकर बोले—"श्रीवास! आज मेरे नृत्यमें प्रेमका संचार क्यों नहीं हो रहा है? घरके भीतर कोई बहिरङ्ग आदमी तो नहीं है? मैं कुछ नहीं समझ पा रहा हूँ। तुम लोग देखो तो!" तब श्रीवास-पण्डितका मुख सूख गया। वे स्वयं दोषी थे; अन्तर्यामी प्रभुसे क्या छिपाते? उन्होंने डरते हुए हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"प्रभो! यहाँ कोई पाखण्डी नहीं आया है। एक निष्पाप-जीवन-वाले, सर्वदा पयःपान करनेवाले ब्राह्मण ब्रह्मचारी आपका नृत्य-दर्शन करना चाहते थे, उनकी बड़ी श्रद्धा है, वे एकान्तमें छिपे हैं।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह बात सुनकर प्रभु क्रुद्ध होकर श्रीवास-पण्डितसे भगवान्-भावमें बोले—"उनको घरसे बाहर करो ! मेरा नृत्य देखनेमें उनका अधिकार नहीं है। पयः-पान करनेसे ही क्या भक्ति हो जाती है ? शरणागतिके बिना केवल पयः-पानद्वारा कोई मुझको प्राप्त नहीं कर सकता। चाण्डाल भी मेरे शरणागत हो तो वह मेरा हो जाता है और मैं उसका। संन्यासी भी यदि शरणागत नहीं है तो उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। गजेन्द्र, वानर और गायोंने क्या किसी तपके बलपर मुझको प्राप्त किया था ? असुरोंने तो बहुत तप किया था, उससे उनको क्या मिला ? बिना शरणागतिके कोई पार नहीं हो सकता।" (चै. भा. म. २३.४२—४६)

प्रभुका इस समय पूर्ण भगवान-भाव था। उनके श्रीअङ्गमें अपूर्व ज्योति लक्षित हो रही है। इस बार ब्रह्मचारी विप्रकी ओर देखकर उन्होंने हुंकार-गर्जन करते हुए कहा—"पयः-पानके द्वारा मुझे कोई नहीं पा सकता, मैं अभी पयः-पानका सारा गर्व चूर्ण कर दूँगा।"

ब्रह्मचारी विप्र भयसे काँपते हुए वहाँसे धीरे-धीरे बाहर चले। चलते-चलते मनमें सोचने लगे—"मेरे बड़े भाग्य हैं, जो इतना दर्शन कर पाया। जैसा मेरा अपराध था, वैसा ही मुझे दण्ड मिला। क्या अद्भुत नृत्य और क्रन्दन था प्रभुका !"

वे ब्रह्मचारी विप्र भी प्रभुके भक्त थे। ऐसा हुए बिना ऐसी बुद्धि कैसे होती ? प्रभुके दिये दण्डको उन्होंने कृपा-आशीर्वादके रूपमें ग्रहण किया। अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान्ने ब्रह्मचारी विप्रके मनका भाव जानकर उनको पुनः बुलाकर ले आनेका आदेश दिया। ब्रह्मचारी विप्र आकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। प्रभुने उसके मस्तकको अपने पाद-पद्मसे स्पर्श करके उसपर कृपा की—

प्रभुका उस समय पूर्ण भगवान्-भाव था। ब्रह्मचारी विप्रके प्रति उन्होंने जिस प्रकार कृपा-प्रदर्शन की, उसे देखकर भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें हरि-ध्वनि करने लगे। ब्रह्मचारी विप्रके आनन्दकी सीमा न रही। वे प्रभुकी चरण-रजके स्पर्शसे प्रेमविह्वल होकर अजस्र आँसू बहाने लगे। करुणामय प्रभुने स्वयं हाथ पकड़कर उन्हें उठाया और उपदेश देते हुए कहा—"तपके बलके अभिमान नहीं करना; विष्णु-भक्तिको ही सर्वश्रेष्ठ समझना।" (चै. भा. म. २३.५४)

प्रभुके श्रीमुखसे यह उपदेश-वाणी सुनकर ब्रह्मचारी विप्रको चेतना हुई। उनके मनमें बड़ा अभिमान था कि वे बड़े तपस्वी हैं, कठोर संयम करते हैं, जप-तप करते हैं; उनके समान तपस्वी नवद्वीपमें दूसरा कोई नहीं है। यह अभिमान ही उनके भगवत्कृपाके मार्गमें विघ्न बन गया था। अन्तर्यामी दर्पहारी श्रीगौराङ्गप्रभुने इसी कारण उनके साथ यह लीलारङ्ग किया। चतुर ब्रह्मचारी विप्रने अपना दोष समझकर ही, प्रभुके दण्डको कृपा समझकर उनके चरणोंमें आत्मसमर्पण किया। प्रभुकी इस उपदेश-वाणीमें निगूढ़ मर्म निहित है। उन्होंने कहा था—"**तप करि ना करहि बल।**" इसका अर्थ क्या है ? जप-तप करना अच्छा है, परन्तु मैं जप-तप करता हूँ—यह सोचकर मनमें या लोगोंके सामने अभिमान न करना, यही प्रभुके उपदेशका सार मर्म है।

ब्रह्मचारी विप्रके प्रति इस प्रकार कृपा-प्रदर्शित करके प्रभु प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य करने लगे। भाग्यवान् विप्रने तब आँखें भरकर प्रभुकी मधुर नृत्य-विलास-लीलाको देखकर जीवन सार्थक किया। भक्तवाञ्छा-कल्पतरु प्रभुने भक्तकी मनोवाञ्छा पूर्ण की। ठाकुर वृन्दावनदासने लिखा है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रद्धा करि जे जन शुनये ए रहस्य।
गौरचन्द्र प्रभु तारे मिलिबे अवश्य॥
चै. भा. म. २३.५६

कृपालु पाठकवृन्द कृपा करके यह 'श्रद्धा करि' पद पर ध्यान रक्खें। श्रद्धापूर्वक श्रीभगवान्‌की लीला कथा श्रवण करनेसे-ही सर्व सिद्धि प्राप्त होती है। गोस्वामी शास्त्रमें इसी कारण लिखा है कि 'आदौ श्रद्धा'—सबसे पहले श्रद्धा आवश्यक है।

पं० श्रीवासकी सास

दूसरे एक दिनकी एक और लीला-कथाका वर्णन सुनिये। श्रीवासके आँगनमें एक दिन प्रभु कीर्तनके रङ्गमें नृत्य कर रहें थे; परन्तु नृत्य-विलासमें उनके मनमें उत्साह नहीं आ रहा था। प्रभु चारों ओर उदासचित्तसे देखने लगे और किसी-को कुछ नहीं बोले। गृहके भीतर एक कोनेमें श्रीवासपण्डितकी वृद्धा सास छिपकर प्रभुका नृत्य-विलासरङ्ग देख रही थीं। अन्तर्यामी प्रभु इसे जानते थे। श्रीवासपण्डितके साथ परिहास करनेके लिए नृत्यावेशमें कभी कभी उनकी ओर प्रेमभरी दृष्टिसे देखकर कहने लगे—"श्रीवास ! मेरे मनमें आज उल्लास क्यों नहीं होता है ?"

श्रीवास आदि भक्तवृन्द प्रभुकी यह बात सुनकर व्याकुलता-पूर्वक चारों ओर अनुसंधान करने लगे। सभी चिन्तित हो उठे। सर्वज्ञ प्रभुने पुनः नृत्य करते-करते कहा—"आनन्द नहीं मिल रहा है; मालूम होता है कि कोई कहीं छिपा हुआ है।"

प्रभुके श्रीवदनसे इस वार स्पष्ट बात सुनकर श्रीवासपण्डित चारों ओर अन्वेषण करके आकर उनके चरणोंमें निवेदन करने लगे—"प्रभो ! आपके भक्तके सिवा और कोई तो यहाँ नहीं है। आप स्वच्छन्द कीर्तन करें।" प्रभु यह बात सुनकर आनन्दमें विभोर होकर फिर बोले—"आज सुख नहीं मिल रहा है, मालूम होता है श्रीकृष्णकी कृपा नहीं है।"

—यह बात सुनकर श्रीवास आदि भक्तोंके मनमें विषम त्रास उत्पन्न हुआ। तब वे सब मन-ही-मन सोचने लगे हमारे द्वारा ही कोई अपराध हुआ लगता है, इसीसे प्रभुको आनन्द नहीं आ रहा है।"

अब श्रीवासपण्डितने घरके भीतर जाकर चारों ओर खोज करते-करते देखा कि उनकी सास घरके एक कोनेमें छिपकर बैठी हुई प्रभुका नृत्य-विलासरङ्ग दर्शन कर रही हैं। श्रीवासपण्डित कृष्ण-प्रेममें उन्मत्त थे, उस समय उनको बाह्य ज्ञान नहीं था; विशेषतः प्रभुके श्रीमुखकी बात सुनकर वे क्रोधसे थर-थर काँपते हुए बहिरङ्ग आदमीका पता लगाने लगे। सासको घरमें उस अवस्थामें छिपा देखकर उन्होंने आज्ञा देकर उन्हें केश पकड़कर घरसे बाहर निकलवा दिया। यह बात और कोई न जान सका। श्रीवासपण्डितने आकर पुनः कीर्तनमें योग दिया।

प्रभु अब परम उल्लासपूर्वक मधुर प्रेम-नृत्य कर रहे हैं और कह रहे हैं—"अब मेरे मनमें बड़ा उल्लास हो गया है।" श्रीवासपण्डित यह बात सुनकर मन-ही-मन हँस रहे हैं और प्रभुके साथ कीर्तन कर रहे हैं। सब भक्तगण हँसते-हँसते लोट-पोट हो रहे हैं; परन्तु उस हँसीका प्रकृत मर्म कोई नहीं जान सका। श्रीवासके आँगनमें आनन्दमय कोलाहल मच गया। श्रीगौराङ्गप्रभु आनन्दमें मधुर-भङ्गिमाके साथ नृत्य करने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभु उनको पकड़कर सारे आँगनमें नृत्य कर रहे हैं। श्रीअद्वैतप्रभु भी नृत्यानन्दमें विभोर होकर एकटक प्रभुके चन्द्रवदनकी ओर देख रहे हैं। सभी भक्तवृन्द परमानन्दमें कीर्तनके आनन्दका उपभोग कर रहे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगौर-भगवान्‌ने इस लीलारङ्गके द्वारा दिखलाया कि अत्यन्त आत्मीय स्वजन भी यदि बहिरङ्ग है तो इष्टगोष्ठी या रस-कीर्तनके समय उसकी उपस्थिति वाञ्छनीय नहीं है। वह स्त्री हो या पुरुष, इष्टगोष्ठीके बीचसे उसको निकाल बाहर करना ही श्रेयस्कर है। श्रीवासपण्डितने प्रभुके प्रति प्रेमाधिक्यसे वश अपनी वृद्धा सासको केश पकड़कर घरसे बाहर निकालकर अपनी श्रीगौराङ्गैक-निष्ठताका परिचय दिया। उन्होंने जो कुछ किया, उसे प्रभुने, उन्होंने तथा उनकी सासने केवल जाना और कोई न जान सका। श्रीगौराङ्गप्रभुका नृत्य-विलासरङ्ग ही रासलीला है। अनधिकारी पुरुषको यह लीलारङ्ग देखनेकी मनाही थी। यह लीलारङ्ग प्रकट करके प्रभुने यह भी दिखला दिया कि—चैतन्य-लीला वही देख सकता है, जिसको प्रभु अधिकार देंगे।

पञ्चत्वको प्राप्त श्रीवास-शिशु

श्रीवासके आँगनकी लीला-कथा मधुसे भी मधुर थी, इस लीला-कथाका अन्त नहीं है। श्रीवासके आँगनमें एक दिन और प्रभु रात्रिमें कीर्तन-विलास कर रहे थे। प्रभुकी संकीर्तन-रास-लीला श्रीवासके आँगनमें रातके समय ही अभिनीत होती थी। प्रभु नृत्यावेशमें प्रेम-विह्वलभावमें विभोर हो गये हैं। श्रीवासपण्डित आदि भक्तवृन्द प्रभुके साथ नृत्य-कीर्तन कर रहे हैं।

दैवयोगसे व्याधिग्रस्त होकर उसी रात श्रीवास-पण्डितका एक शिशु पञ्चत्वको प्राप्त हो गया। अन्तःपुरमें क्रन्दनका हाहाकार उठा। श्रीवास-पण्डितने यह सुनते ही छिपेतौरपर घरमें आकर देखा कि उनके प्रिय पुत्रका देहान्त हो गया है। वे परम गम्भीर थे, बड़े तत्त्वज्ञ थे, सुख-दुःख, शोक-ताप उनके हृदयको अभिभूत नहीं कर सकते थे। उन्होंने इस असह्य पुत्रशोकको तृणवत् समझ-कर क्षणमात्र चिन्ता करके घरकी स्त्रियोंको समझाते हुए कहा—"तुम लोग तो सब श्रीकृष्ण-की महिमा जानती हो। क्रन्दन बंद करो, चित्तको शान्त करो। अन्तकालमें जिनका नाम सुननेसे महापातकी भी श्रीकृष्ण-धाममें पहुँच जाता है, वे ही प्रभु साक्षात्‌में यहाँ नृत्य कर रहे हैं; उनका ब्रह्मादि अनुचरगण भी गीत गाते रहते हैं। ऐसे कालमें जिसका परलोक हुआ, उसका क्या शोक करना उचित है? इस शिशु-जैसा भाग्य यदि मिले तो मैं अपनेको कृतार्थ समझूँगा।" (चै. भा. म. २५.२९—३३)

श्रीवासपण्डितने स्त्रियोंको समझाकर अन्तमें कहा—"यदि तुमलोग क्रन्दनको नितान्त संवरण न कर सको तो प्रभुका नृत्यविलास-लीलारङ्ग समाप्त हो जाने दो, तब क्रन्दन करना। तुमलोगोंके क्रन्दनसे यदि हमारे प्रभुकी बाह्य दशा हुई तो मैं निश्चय पूर्वक कहता हूँ कि गङ्गामें डूबकर आत्म-हत्या का लूँगा।

धन्य हो श्रीवासपण्डित! धन्य है तुम्हारी श्रीगौराङ्गभक्ति! धन्य है तुम्हारी गौराङ्गैक-निष्ठता! तुमने ही प्रभुके प्रकृत मर्म को समझा है। दुःसह पुत्रशोकको तुमने तृणवत् समझकर अपने परिवारके लोगोंको जो बात कही, जो उपदेश दिया, वह तुम्हारे ही उपयुक्त था। सार्वभौम भट्टाचार्यने एक दिन प्रभुसे कहा था—

शिरे वज्र पड़े यदि पुत्र मरि जाय।
ताहा सहि, तोमार विच्छेद सहन न जाय॥

चै. च. म. ७.४७

तुमने आज कार्यरूपमें उसे करके दिखा दिया। तुम्हारे इस गुणसे ही श्रीगौर-भगवान्‌ने तुम्हारे वशीभूत होकर तुम्हारे घरमें अपनी अपूर्व नवद्वीप-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लीला प्रकट की थी। तुम्हारे ही आँगनको उन्होंने रासलीला-स्थली बनाया था। तुम्हारे चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणिपात। तुम्हारी चरण-धूलि अतिशय दुर्लभ वस्तु है। प्रभुके संन्यास-ग्रहण करके नीलाचलमें रहते समय तुम जब उनका दर्शन करनेके लिए भक्तगणके साथ वहाँ गये थे, तब पूर्णब्रह्म सनातन स्वय भगवान् श्रीश्रीगौरचन्द्रने तुम्हारे चरण पकड़कर भक्तभावमें तुम्हारी स्तुति की थी। यथा,

ततो महाप्रभुः धृत्वा श्रीवासस्य पदाम्बुजम्।
वहधा विह्वलो भूत्वा चकार स्तुतिमुत्तमाम्॥

चै. च. महा. १४.९५

बाल्य-लीलामें वे तुम्हारी गङ्गास्नानकी लिया और धोती लेकर गये हैं; अतएव तुम सामान्य वस्तु नहीं हो! तुम्हारा मर्म, तुम्हारा महात्म्य हमारे-जैसे क्षुद्र जीव क्या जाने? तुम साक्षात् भक्तिके अवतार नारद हो। स्वयं आचरण करके भक्तितत्त्व और भक्तधर्मकी शिक्षा देनेके लिए नदियामें तुम्हारा अवतार-ग्रहण है। तुम्हारे इस निष्कपट एकनिष्ठ भक्तिके प्रभावसे ही त्रिलोकीनाथ प्रभु तुम्हारे घरमें प्रेमभक्तिकी डोरीसे सदा बँधे रहे। नीलाचलसे जननी और जन्मभूमिका दर्शन करनेके लिए जब आये तो कुमारहट्टमें वे तुम्हारे घर जाकर तुमसे भेंट कर आये। तुम्हा. प्रति प्रभुकी बड़ी कृपा थी। तुम्हारा परम पवित्र नाम स्मरण करनेपर कलिके जीवके प्राणमें गौर-भक्तिका उच्छ्वास उठता है। तुम पञ्चतत्त्वमें एक तत्त्व हो। श्रीश्रीमन्महाप्रभुके भक्त गौड़ीय वैष्णवगण नित्य तुम्हारी पूजा करते हैं। तुम गौर-भक्तिदाता हो। जीवाधम ग्रन्थकारके प्रति करुणा करके एक वार कृपादृष्टि करो! हे कृपानिधि श्रीवास! कृपा करके यह प्रार्थना एक वार सुन लो, श्रीगौराङ्गके चरणोंमें जिससे मेरी रति-मति हो, गौर-भक्तोंके चरणोंमें जिससे मेरी भक्ति हो तथा मरणकालमें 'हा गौराङ्ग' कहकर देह-त्याग कर सकूँ। तुम वैष्णव-शिरोमणि हो, वाञ्छा-कल्पतरु हो! इस जीवाधमकी मनोवाञ्छा पूर्ण करके इसे कृतार्थ करो! तुम कृपासिन्धु हो, तुम पतित पावन हो। तुम सब कर सकते हो। रस जीवाधमका केश पकड़ कर उद्धार करो। मूल विषयको छोड़कर मैं बहुत दूर आ गया हूँ। कृपालु पाठकवृन्द कृपा करके क्षमा करेंगे!

श्रीवासपण्डितकी बात सुनकर उनके घरकी शोकाकुल भक्तिमती स्त्रियोंने रोना-पीटना बंद कर दिया और सुस्थिर हो गयीं श्रीवासपण्डितने आकर पुनः प्रभुके साथ कीर्तनमें योग दिया। इतने बड़े असह्य पुत्रशोकको तृणवत् समझकर श्रीवासपण्डित कीर्तनानन्दमें प्रभुके साथ उन्मत्त हो गये, अधिकाधिक उल्लास और उत्साहके साथ वे उस दिन प्रेमानन्दमें नृत्य और कीर्तन करते रहे।

प्रभु मनके आनन्दमें नृत्य कर रहे हैं, भक्तवृन्द उनके साथ कीर्तन कर रहे हैं। इस शोकमयी घटना का तनिक भी किसीको पता न चला। धीरे-धीरे रात अधिक हो गयी। भक्तगणके कानोंमें श्रीवासपण्डितके पुत्र-वियोगकी बात पहुँची, परन्तु कोई खुलकर कुछ बोल न सका। सभी मर्माहत हो उठे; परन्तु श्रीवासपण्डितके मुखपर विषादकी कोई रेखा न देखकर उनको अत्यन्त आश्चर्य हुआ। सर्वज्ञ प्रभुने सब कुछ जान लिया। वे नृत्य करते-करते श्रीवासपण्डितकी ओर देखकर दुःखितभावसे बोले—"आज मेरे चित्तमें विक्षेप क्यों हुआ? जान पड़ता है पण्डितके घरमें कोई विपद् आ पड़ी है।" तब श्रीवासपण्डितने उत्तर दिया—"हे प्रभो! मुझे कोई दुःख नहीं है। तुम्हारे सुप्रसन्न श्रीमुखको देखते ही हमारे सब दुःख दूर हो जाते हैं। जब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम मेरे घरमें सर्व अमङ्गलोंका नाश करनेवाला नृत्य करते हो, तब फिर हमको क्या दुख होगा ?"

भक्तवृन्दने इसके बाद श्रीवासपण्डितके पुत्र-वियोगकी बात प्रभुके चरणोंमें निवेदन कर दी। प्रभुने आश्चर्यपूर्वक पूछा—"अभी यह घटना दुर्दैव ने घटायी ?" सबने उत्तर दिया—"आज चार दण्ड रात रहते पण्डितका शिशु-पुत्र परलोक सिधार गया है। आपके नृत्यानन्दमें बाधा आयेगी, यह सोचकर श्रीवासपण्डितने यह बात प्रकट नहीं की। अढ़ाई प्रहरतक मृतदेह घरमें पड़ा रहा है। अब संस्कार करनेका आदेश दीजिये।"

प्रभु यह दुःखकी बात सुनकर गोविन्द-स्मरण करते हुए बालकके समान रोने लगे। दुःखसे आकुल होकर क्रन्दन करने लगे और श्रीवासके आँगनकी धूलिमें लोटने लगे। करुणामय भक्तवत्सल प्रभुके मनमें आज बड़ा दुःख हुआ। भक्तका पुत्रशोक उनको अपने पुत्रशोकसे भी अधिक जान पड़ा। प्रभुके मनके दुःखका एक और भी निगूढ़ कारण था। प्रभुने रोते-रोते कहा—"मेरे प्रेममें मत्त होकर जो दुःसह पुत्रशोकको तृणवत् समझता है, उसका सङ्ग छोड़कर मैं कैसे जा सकता हूँ ?" (चै. भा. म. २५.५२)

प्रभुने अपने मनमें अभीसे संन्यासका दृढ़ सकल्प कर लिया। इस बातमें उन्होंने इसका सर्व प्रथम संकेत किया, परन्तु इसे मनहीमें रखा, किसीके सामने अपने मनकी बात प्रकट नहीं की। गृह-त्याग करके संन्यास-ग्रहण करनेपर श्रीवास-पण्डितका सङ्ग छूटेगा, यह दुःख अब प्रभुके मनको विह्वल करने लगा। वे व्याकुल होकर बालकके समान रोने लगे। भक्तके प्रति भगवान्‌की कैसी माया होती है, भक्तके सङ्गसे उनके मनमें कैसा सुख उदय होता है, प्रभुके इस लीलारङ्गसे इसका सहज ही अनुभव हो जाता है। भक्तके भगवान् श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने मन-ही-मन संकल्प कर लिया है कि वे गृहस्थाश्रमको त्याग करके संन्यास-ग्रहण करेंगे। परन्तु भक्तके सङ्गके सुखको त्यागना पड़ेगा, इस चिन्तासे वे कातर हो उठे। इससे फिर श्रीवास-पण्डितके समान भक्तसे वियुक्त होनेकी चिन्ता प्रभुको भीषण लगने लगी। अतएव वे रोते हुए कहने लगे—"ऐसा सङ्ग मैं कैसे छोड़ूँगा ?" भक्त लोग प्रभुके बिषादयुक्त भावको देखकर चिन्तित हो उठे। प्रभुने जो बात कही, उसे सुनकर उनका मन अत्यन्त उद्विग्न हो उठा। वे सोचने लगे—"तो क्या प्रभु सचमुच हमको छोड़कर चले जायँगे ?"

कुछ देरके बाद इच्छामय प्रभु अपनी इच्छासे स्थिर हुए। तब सबलोगोंने मिलकर संस्कार करनेके लिए मृतशिशुको घरसे बाहर किया। प्रभुके पाद-पद्मके सामने शिशुका मृत शरीर रखा गया। श्रीगौर-भगवान्‌ने इस समय एक अलौकिक लीला-रङ्ग प्रकट किया। उन्होंने मृत-शिशुकी ओर शुभ-दृष्टिपात करके स्नेहपूर्वक पूछा—"श्रीवासका घर छोड़कर क्यों जा रहे हो ?" तब सबको महान् आश्चर्य हुआ, जब श्रीवासके मृत-पुत्रने यह कहकर प्रभुके प्रश्नका उत्तर दिया—"प्रभो ! आपके विधि-विधानको भला उलटनेकी शक्ति किसमें है ?"

मृत-शिशु बातें कर रहा है, यह देखकर सब-लोग चकित होकर सुनने लगे। श्रीवासपण्डितका मृतपुत्र और भी तत्त्वकी बातें करने लगा—"इस देहमें जितने दिनका संयोग था, उसका सुख भोग लिया। वह संयोग पूरा हो गया, अतः अब और टिक नहीं सकता। अब मैं कर्म-बन्धनसे मुक्त अन्य लोकमें जा रहा हूँ। प्रभो ! कौन किसका बाप है और कौन किसका पुत्र ? अपने-अपने कर्मोंका भोग भोगते हैं। जितने दिनके लिए इस घरमें रहनेका भाग्य था, उतने दिन रहा, अब अन्य लोकको जा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रहा हूँ। सपार्षद आपके श्रीचरणों में नमस्कार है। मेरा अपराध क्षमा करें, विदा लेता हूँ।"

(चै. भा. म. २५.६०—६४)

इतना कहकर प्रभुके चरणप्रान्तमें पड़कर शिशु चुप हो गया। उसका मृत-शरीर पूर्ववत् पड़ गया। यह श्रीवासपण्डिका शिशु साधारण बालक न था, वह प्रभुका नित्यदास था। प्रभुने इस मृत-पुत्रके मुखसे जीवतत्त्व, धर्मतत्त्व, आदि परमतत्त्व-की बात कहलायी। इच्छा होनेपर हमारे इच्छामय प्रभु उस अपूर्व शिशुको जीवनदान कर सकते थे; परन्तु यह उन्होंने नहीं किया। जितना ऐश्वर्य दिखलानेका प्रयोजन था, यहाँ प्रभुने उतना ही दिखलाया। मृत-शिशुके मुखसे आत्मतत्त्वकी बात प्रकट कराकर प्रभुने श्रीवासपण्डित और उनके परिवारका शोक निवारण किया। उनको कृष्णप्रेम-के आनन्दमें निमग्न कर दिया।

भक्तके दुःखको दूर करना ही श्रीभगवान्‌का उद्देश्य है। श्रीगौर-भगवान्‌ने यह लीलारङ्ग प्रकट करके वही कार्म किया है।

श्रीवासपण्डित अब तक स्थिरता पूर्वक एक ओर हाथ जोड़कर खड़े-खड़े प्रभुका अपूर्व लीला-रङ्ग देख रहे थे। अब भगवान्‌की अपने प्रति अपूर्व कृपा देखकर श्रीगौर-भगवान्‌के चरणोंमें गिरकर रोते हुए निवेदन करने लगे "प्रभो! मेरे जन्म-जन्मके पिता-माता, पुत्र, भाई-बन्धु-सब-कुछ तुम्हीं हो, तुम्हारे चरणोंको मैं कभी न भूलूँ। मेरा कहीं भी जन्म हो, तुम्हारे चरणोंमें मेरी भक्ति बनी रहे।" (चै. भा. म. २५.६९,७०)

श्रीवासपण्डित अपने चारों भाइयोंके साथ प्रभुके चरणोंमें गिरकर रोने लगे। चारों ओर भक्तवृन्द और वैष्णव-गृहिणीगण उच्च स्वरसे क्रन्दन करने लगे। प्रेम-क्रन्दनके रवसे रातमें श्रीवासका आँगन भर गया। श्रीवास-परिवार और भक्तवृन्दके सारे दुःख दूर हो गये।

तब प्रभु श्रीवासपण्डितको पास बुलाकर मधुर वचनसे सान्त्वना देते हुए बोले—"श्रीवासपण्डित! सुनो! तुम तो संसारकी लीला जानते हो। संसार-के इन दुःखोंसे तुम्हारी क्या हानि हो सकती है! हानि तो उसकी भी नहीं है, जो तुम्हारा दर्शन मात्र कर लेता है। देखो, मैं और नित्यानन्द-दोनों तुम्हारे पुत्र हैं, तुम अपने चित्तमें कुछ शोक नहीं करना।" (चै०भा०म० २५.७३—७५)

—सुन सुन श्रीवासपण्डित।
तुमित सकल जान सँसार चरित॥
ए सब संसार दुःख तोमार कि दाय।

चै. भा. २५.७३,७४

दयामय प्रभुने श्रीवासपण्डितसे कहा—"मैं और नित्यानन्द तुम्हारे दो पुत्र हैं। अब पुत्रशोक न करो।" करुणावतार श्रीगौराङ्गप्रभुकी श्रीवास-पण्डितके प्रति उनकी अपार करुणाका निदर्शन रूप यह आश्वासन-वाक्य सुनकर भक्तवृन्द उच्च-स्वरसे हरि-ध्वनि करने लगे। तब प्रभु उसी रातमें भक्तगणके साथ कीर्तन करते-करते श्रीवासके मृत-शिशुको लेकर गङ्गाके किनारे संस्कार करनेके लिए चले। विधिपूर्वक संस्कार करके गङ्गा-स्नान करके प्रभु घर आये, भक्तगण अपने-अपने घर चले गये।

श्रीवासके परिवारने प्रभुकी कृपासे दुःसह पुत्रशोकको भूलकर बड़े आनन्दमे मनको दृढ़ करके श्रीगौराङ्गभजनमें चित्त लगाया। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

श्रीवास-चरणे मोर रहुक नमस्कार।
गौरचन्द्र-नित्यानन्द नन्दन जाँहार॥

चै. भा. म. २५.८१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निताई-गौर पुत्रद्वयको लेकर श्रीवासका परिवार आनन्दके सागरमें निमग्न हो गया। श्रीनित्यानन्दप्रभु तो उनके पुत्र ही थे, अब श्रीगौर-चन्द्र भी उनके पुत्र हो गये।

इस लीलारङ्गमें प्रभुने एक ओर श्रीवास-पण्डितकी एकनिष्ठ गौराङ्ग-भक्तिका उज्ज्वल दृष्टान्त दिखलाया; उनकी गौराङ्गैकनिष्ठताका पूर्ण परिचय दिया; दूसरी ओर प्रभुने अपने प्रगाढ़ भक्त-वात्सल्यका पूर्ण परिचय देकर अपने 'भक्त-वत्सल' नामकी गौरव-वृद्धि की। भक्त और भक्तिके माहात्म्यका प्रचार करनेके लिए प्रभुका नदियामें आविर्भाव हुआ था; उनके प्रत्येक लीलारङ्गसे ही इसका पर्याप्त प्रमाण मिलता है। श्रीवासपण्डितकी उनके प्रति जो दृढ़ और अचल भक्ति थी, उनका श्रीवासपण्डितके प्रति जो विशेष स्नेहानुराग था, भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌ने वही इस लीलारङ्गके द्वारा भक्तवृन्दको दिखलाया। श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीवासपण्डितको पितृ-सम्बोधनसे सतुष्ट करते थे तथा उनकी पतिव्रता पत्नी मालतीदेवीको मातृ-सम्बोधनसे आनन्दित करते थे –

"व्रजेन्द्रनन्दन जेइ, शची सुत हैल सेइ,
बलराम हरल निताइ।"

व्रजके प्राण-कन्हाई और बलरामभैया जिनको माता-पिता कहकर पुकारते हैं, वे व्रजेन्द्रनन्दन श्रीश्रीगौरचन्द्र उनके पुत्र नहीं होंगे तो किसके पुत्र होंगे ? अतएव प्रभुने श्रीवासपण्डितका पुत्रत्व स्वीकार करके पूर्वलीलाके क्रमको ठीक रखा।

—❀—

अड़तालीसवाँ अध्याय

(काजी-उद्धार लीला)

अन्येर कि दाय विष्णुद्रोही जे यवन।
ताहाराओ ए शिशुर भजिबे चरण॥
चै. भा. आ. २.२५०

ग्रामवासियोंको महामन्त्र-प्रदान

प्रकाश्य स्थानमें प्रभुके कीर्तन-विलास-लीला-रङ्गके दर्शनोत्सुक नदियावासी सज्जनलोग मन-ही-मन अपने-अपने अभीष्टदेवसे प्रार्थना करने लगे—"कब हमारा भाग्य उज्ज्वल होगा; जो निमाईपण्डितका मधुर नृत्यविलास-दर्शन करके हम जीवन सार्थक करेंगे, उनके मधुमय स्वरमें मधुर कीर्तनको श्रवण करके हम अपने प्राणोंको कब शीतल करेंगे। वे भक्तशिरोमणि हैं, परमवैष्णव हैं। हम सबलोगोंकी यदि उनके प्रति भक्ति बनी रहेगी तो एक-न-एक दिन भगवान् हमारी मनोवाञ्छा पूरी करेंगे।" प्रभुके प्रकृत तत्त्वको अब नदियाके निवासी सज्जनवृन्द भली-भाँति समझने लगे थे। वे परम वस्तु हैं—यह बात अब बहुतोंको ज्ञात हो गयी थी। जब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुके कीर्तन-विलास-लीलारङ्गके सम्बन्धमें प्रसङ्ग उठता था, तब उनलोगोंमें-से कोई-कोई कहते थे—"हे भाइयो ! चुपचाप क्यों बैठे हो ? यहाँ इसी नदियाके राजपथमें निमाईपण्डितका अपूर्व कीर्तन और नृत्य-विलास-रङ्ग देखनेको मिलेगा। संकीर्तनके द्वारा संसारका उद्धार करनेके लिए उनका शची-गर्भसे आविर्भाव हुआ है। तुम देखोगे कि वे नदिया-में घर घर कीर्तन-विलास-रङ्ग करते हुए घूम रहे हैं।"—यह सुनकर सबको अपार आनन्द होता है। प्रतिदिन वे लोग प्रभुके मन्दिरमें जाकर उनका दर्शन करके आते हैं। जिसके घरमें जो अच्छी वस्तु रहती है, प्रभुकी सेवाके लिए उस वस्तुको वे शचीमाताके पास भेज देते हैं। सबलोग प्रभुको दण्डवत्-प्रणाम करके हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं। प्रभु मधुर मुसकानके साथ उनको आशीर्वाद देते हैं "तुम सबको कृष्ण-भक्ति प्राप्त हो। श्रीकृष्णके गुण-नामके अतिरिक्त और कुछ मत कहा करो !"

(चै. भा. म. २३.७३)

इस शुभाशीर्वादके साथ-साथ श्रीगौराङ्गप्रभु सबको हरिनाम-महामन्त्र प्रदान करते हैं—

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥"

चै. भा. म. २३.७५

—इस सोलह नाम एवं बत्तीस अक्षरोंके महामन्त्रको समस्त नदियावासियोंको प्रदान करके प्रभु उन्हें उपदेश देते थे।

प्रभुकी इस उपदेश-वाणीमें नाम-माहात्म्यके सारे तत्त्व निहित हैं। उन्होंने कहा—'तुम सब-लोग नियमित रूपसे हरिनाम-महामन्त्रका जप करो ! इससे तुमको सब सिद्धियाँ प्राप्त होंगी। सर्वदा हरिनाम-जप करो। इसमें कोई विधि-नियम नहीं है। इष्टमन्त्रका जप और साधन अकेले बैठकर एकान्तमें किया जाता है। यह हरिनाम-महामन्त्रका साधन पाँच-सात आदमी एक साथकर सकते हैं। आनन्द-कोलाहल तथा नृत्य-गीत-वाद्यके साथ हरिनाम-महामन्त्रका कीर्तन करो ! इसका अनुष्ठान स्त्री-पुत्र, कन्या तथा माता-पिताके साथ एकत्र घरमें बैठकर कर सकते हो ! इसमें लज्जा-शर्म या भय—कुछ नहीं करना चाहिये।"

प्रभुने इन दो-चार बातोंके साथ नदियाके निवासियोंको जो उपदेश दिया. यह सब शास्त्रोंका सारतत्त्व है। प्रभुकी एक बातमें, उनके एक पद विक्षेपमें, उनके एक कार्यमें जो निगूढ़ तत्त्व निहित है, सब शास्त्रोंका मन्थन करके भी उसका कण-मात्र भी उपयब्ध नहीं हो सकता है। यहाँ प्रश्न हो सकता है कि क्या हरिनाम-महामन्त्र जप्य हो सकता है ! प्रभुके उपदेशके अनुसार हरिनाम-महामन्त्र जप्य और कीर्तनीय-दोनों ही है। "सर्व क्षण बोल, इथे विधि नाहि आर" (चै भा.म. २३.७७) —इस बातके द्वारा प्रभुने अपने भक्तवृन्दको समझा दिया है कि यह भुवनमङ्गल हरिनाम-महामन्त्र मुखसे सर्वदा कीर्तन करना चाहिये। इसके अगले पदमें प्रभुने अति सुस्पष्ट भाषामें कहा है कि इस हरिनाम-महामन्त्रका 'कीर्तन करह सभे हाथ ताली दिया।' (चै. भा. म. २३.७८)

—हरिनाम-कीर्तन सबको ताली बजाकर करना चाहिए। उसके बाद अपनी आदि कृष्ण-कीर्तनकी बात कहते हुए बोले—

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन॥
कीर्तन कहिल एइ तोमा सभाकारे।
स्त्रीये पुत्रे बापे मिलि कर गिया घरे॥

चै.भा.म. २३.७९,८०

अर्थात् उनके मुँहसे उच्चारित यह आदि-कीर्तन भी करना पड़ेगा। यह साधारण कीर्तन है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तथा पारिवारिक वैष्णव-धर्मके आचरणकी प्रथम शिक्षा है। स्त्री-पुत्र-सबको एक साथ इस हरिनाम-महामन्त्रका कीर्तन और आदि-कीर्तन घरपर बैठकर करना चाहिये। हरिनाम-महामन्त्रके जपके फलकी अपेक्षा उच्चकीर्तनका फल अधिक होता है यह बृहन्नारदीप पुराणका शास्त्र-वाक्य श्रीचैतन्य भागवतके आदिखण्डके ११ वें अध्यायमें पयार संख्या २७७ के बाद उद्धत है, यथा—

जयतो हरिनामानि स्थाने शत गुणधिकः।
आत्मानं च पुनात्युच्चेर्जपन् श्रोतृन् पुनाति च॥

अतएव हरिनाम-महामन्त्र जप और कीर्तनीय दोनों ही हैं। यह साधारण मन्त्र नहीं है, महामन्त्र है। अन्यान्य मन्त्रोंके समान एकान्तमें ही केवल जप्य नहीं है, यही इस महामन्त्रकी विशेषता और महत्त्व है। श्रीश्रीमन्महाप्रभुने इस हरिनाम-महामन्त्रका उपदेश सबके सामने अनेकों भक्तोंको दिया है। स्थान-काल-पात्रका विचार उन्होंने नहीं किया। दक्षिण-देशमें भ्रमण करते समय प्रभुने यह भुवनभङ्गल हरिनाम-महामन्त्र कीर्तन करके सब लोगोंको प्रदान किया। इसका प्रमाण अनेक स्थलोंमें पाया जाता है।

प्रभुका उपदेश सुनकर नदियावासी सज्जनगण उनको दण्डवत्-प्रणाम करके अपने-अपने घर जाकर भुवनमङ्गल हरिनाम-संकीर्तन करते हैं और प्रभुका चरण-चिन्तन करते हैं। इन सब भाग्यवान् नदियावासी सज्जनोंको प्रभु प्रेमालिङ्गन प्रदानकर तुष्ट करते हैं, अपने गलेकी प्रसादी माला देकर कृतार्थ करते हैं।

उस समय नदियामें तीन श्रेणीके आदमी थे। प्रभुके भक्तवृन्द, सज्जनवृन्द और पाखण्डियोंका दल। प्रभुके भक्तवृन्द उनकी कृपासे सत्सङ्ग पाकर परम आनन्दपूर्वक हैं। कीर्तनके आनन्दमें विभोर होकर वे आहार-निद्राका त्याग करते हैं। सदा ही वे प्रभुके सङ्ग रहते हैं। वे प्रभुको साक्षात् भगवान्-रूप मानते हैं। सज्जनगण श्रीगौराङ्गप्रभुसे रूप और गुणोंसे आकृष्ट होकर, उनके श्रीमुखसे मधुर कृष्ण-कथा सुनकर, उनकी अपूर्व भाव-भक्ति देखकर उनको भक्तशिरोमणि समझकर उनमें प्रगाढ़ भक्ति करते हैं, उनका और उनके भक्तोंका सङ्ग प्राप्त करनेके लिए लालायित होते हैं और पाखण्डीलोग ईर्ष्यासे जल-भुन जाते हैं। श्रीगौराङ्गप्रभुकी ठकुराई देखकर उनको जलन होती है। उच्च कीर्तनानन्दको वे विषम उत्पात समझते हैं, वैष्णवको देखकर उपहास करते हैं। वैष्णव-निन्दामें उनका इतना अधःपतन हो गया है। इन सब पाखण्डियोंका उद्धार करनेके लिए ही प्रभुको संन्यास-ग्रहण करना पड़ा था।

प्रभुके आदेशसे उनके भक्तवृन्द तथा नदियाके सज्जनवृन्द प्रतिदिन अपने-अपने घर संध्याकालमें बैठकर कीर्तन करने लगे। प्रभु स्वयं उनलोगोंके घर जाकर सर्व मङ्गलमय हरिनामके प्रचारमें सबको उत्साहित करते थे। कहीं श्रीनित्यानन्दप्रभुको भेजते थे, कहीं हरिदास ठाकुर जाते थे। नदियावासी भक्तिमान सज्जनलोगोंने इस प्रकार प्रभुकी कृपासे काय-मन और वचनसे भुवनमङ्गल युगधर्म हरिनाम-संकीर्तनको ग्रहण किया संकीर्तन-यज्ञेश्वर प्रभुको देखते ही वे आनन्दमें विभोर होकर प्रेमाश्रु-विसर्जन करते थे।

इस प्रकार नदियाके घर-घरमें संध्याकालमें सर्वमङ्गलमय मृदङ्ग-मंजीरा, करताल और शङ्ख-ध्वनि होने लगी। दुर्गोत्सवमें जो-जो बाजे व्यवहृत होते थे, अब वे सब बाजे हरि-संकीर्तनमें व्यवहृत होने लगे। नृत्य-गीत तथा कीर्तनके आनन्दमें नदियावासी सज्जनवृन्द वैकुण्ठ-सुखका उपभोग करने लगे। नदियामें भुवनमङ्गल युगधर्म नाम-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ब्रह्मका उदय हुआ। रास्तेमें घाटपर, मैदानमें, सब स्थानोंमें जहाँ पाँच-सात आदमी एकत्रित होते थे, हाथसे ताली देकर कीर्तन करने लगते थे—

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन॥

चै. भा. म. २३.७९

खोला बेचनेवाले श्रीधरका नाम सब जानते हैं, वे प्रभुके अतिशय कृपापात्र थे। एक दिन श्रीधर उच्च स्वरसे हरिनाम लेते हुए उस रास्तेसे जा रहे थे। कीर्तन होते देखकर वे आनन्दमें विभोर होकर नृत्य करने लगे। सबने मिलकर श्रीधरको घेरकर अपूर्व हरि-संकीर्तन प्रारम्भ कर दिया। प्रेमानन्दमें विह्वल होकर श्रीधर नदियाके पथमें धूलमें लोट रहे हैं, यह देखकर पाखण्डीलोग उपहास करके कहने लगे—"देखो, देखो! यह खोला बेचनेवाला भी वैष्णव बना है। घरमें खाने-पहननेको अन्न-वस्त्र भी नहीं है, लोगोंको दिखाता है कि मेरेमें भी भाव है।"

इस वैष्णव-निन्दासे उनका सर्वनाश हो गया। श्रीधर परम वैष्णव थे, प्रभुके एकान्त अनुरक्त भक्त थे, ध्रुव-प्रह्लादकी अपेक्षा भी श्रीधर बड़े थे। उनकी भाव-भक्तिका मर्म पाखण्डीलोग क्या समझेंगे?

श्रीधरको लेकर उस दिन नदियाके सज्जन और भक्तवृन्द सभीने मनकी साधसे सड़कपर कीर्तन किया। इस प्रकार सारी नदियाके निवासियोंके घर कीर्तनानन्दका स्रोत बह उठा घर-घरका आनन्द-स्रोत नदियाके पथपर बहने लगा। सारी नदियाके लोग इस आनन्द-स्रोतमें डूबने लगे।

चाँद काजीके अत्याचार और उसका उद्धार

उसी समय चाँद काजी नबद्वीपमें मुसलमान बादशाहका प्रधान न्यायाधीश बना। वह बादशाहका भानजा था। उसके प्रबल प्रतापसे नदियावासी काँपते थे। एक दिन संध्याके समय चाँद काजी नदिया-भ्रमण करनेके लिए बाहर निकला। इसके पहले उसने नदियामें इस अपूर्व कीर्तनके प्रभावकी बात सुनी थी। नदियाके दुष्टलोगोंने निमाईपण्डितके विरुद्ध उसके खूब कान भरे थे। नदियाके मार्गमें बाहर निकलते ही काजीके कानोंमें उच्च हरिनाम-संकीर्तनका कोलाहल प्रविष्ट हुआ। हरि-संकीर्तनकी मधुर ध्वनि हिन्दूधर्म-द्वेषी यवनके कानोंको कष्टप्रद प्रतीत हुई। उसने अपने आदमियोंके द्वारा संकीर्तनका मृदङ्ग-मंजीरा नष्ट करा दिया। कीर्तनकारी वैष्णवोंको पकड़कर दण्ड देकर ढिंढोरा पिटवा दिया कि यह कर्म फिर कोई न करे। उसके लोगोंने घर-घर अत्याचार करना प्रारम्भ किया। नदिया नगरमें राजकर्मचारियोंके द्वारा यह राजाज्ञा प्रचारित करा दी गयी—"पुनः इस प्रकार कीर्तन करनेसे कीर्तन करनेवालेकी जाति नष्ट कर दी जायगी।" नदियानगरमें हलचल मच गयी।

निमाईपण्डितके ऊपर काजी बड़ा रुष्ट था; क्योंकि उसने सुना था कि इस संकीर्तनके मूल वे ही हैं। इस संकीर्तन-दलनके कार्यमें काजीने प्रभुके प्रति द्वेष प्रकट करके सब कीर्तनकारियोंको सुनाकर दर्पपूर्वक कहा था, "पकड़ो इन सबको, देखूँ, इनका आचार्य निमाई क्या करता हैं।"

उसने यह भी कहा था—"ओह नदिया तो हिन्दुओंका राज्य होता जा रहा है। इनको पकड़ कर अच्छी तरह दण्ड देना होगा। आज तो रात हो चली। अब फिर इनको ऐसा करते देखूँगा तो इनकी जाति नष्ट करके छोड़ूँगा।"

नदियावासी भक्तगण काजीके भयसे बाहर रास्तेमें कीर्तन न कर सके; क्योंकि काजीने चारों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ओर गुप्तचर रख छोड़े थे और वह स्वयं प्रतिदिन दुष्टलोगोंके साथ नगर-भ्रमणके लिए बाहर निकलकर इस विषयमें पूछ-ताछ करता था। इससे नगर-निवासियोंके मनमें बड़ा दुःख था। वे घरमें छिपे रहते थे और मन-ही मन हरिनाम-जप करते थे। दुराचारी यवनराजके भयसे वे लोग सशङ्कित होकर प्रभुके सामने रोते-रोते अपना मनका दुःख निवेदन करने लगे—"हम लोग काजीके डरके मारे कीर्तन नहीं करते हैं। वह प्रतिदिन हजारों सिपाहियोंको लिये घूमता रहता है। हमको तो अब नवद्वीप छोड़कर अन्यत्र जाना पड़ेगा आपके चरणोंमें जो बात थी, निवेदन कर दी।"

—ये दो बातें उन्होंने प्रभुके चरणोंमें निवेदन की। प्रथमतः काजीके भयसे नदियामें कीर्तन बन्द होना और द्वितीयतः अब वे नदियामें वास नहीं कर सकते।

प्रभुका रोष और काजीके निरोधकी योजना

यह बात सुनकर प्रभु एकबारगी क्रोधसे रुद्ररूप हो उठे।

श्रीनित्यानन्दप्रभु वही थे। हमारे प्रभु क्रोधसे वज्रनाद और हुंकार गर्जन करने लगे। यह सुनकर भक्तवृन्दने भयसे विह्वल होकर श्रीहरि-स्मरण करते हुए कानोंपर हाथ रखा। प्रभुके प्रबल हुंकार-शब्दसे सबके कानोंमें मानो ताला लग गया। पहले तो उन्होंने सबको कीर्तन करनेकी आज्ञा दी। फिर क्रोधाविष्ट होकर बोले—"आज मैं नदिया यवन-सून्य कर डालूँगा।" वे कम्पित शरीर आरक्त लोचन श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ओर देखकर वज्रनिनाद करते हुए बोले—"श्रीपाद! अब सावधान हो जाओ! आज प्रेम-भक्तिकी विशाल वृष्टि होगी। पाखण्डियोंके लिए मैं काल बन जाऊँगा। तुमलोग सब जाकर घर-घर मेरा यह संवाद सुना दो कि जो आज श्रीकृष्णका रहस्य देखना चाहें, वे भोजन करके सायंकाल हाथमें बड़-सा दीपक (मशाल) लेकर आवे। आज काजीके द्वारपर कीर्तन होगा। उसके घर-द्वार तोड़-फोड़कर आग लगा दी जायगी। मेरे रहते कोई जरा भी डरे नहीं।"

प्रभुकी इस आदेश-वाणीमें अनेक गूढ़ रहस्यकी बातें हैं। उन्होंने पहले श्रीनिायानन्दप्रभुको सम्बोधन करके काजी-उद्धारकी बात उठायी। जीवोद्धार-कार्यमें श्रीनित्यानन्दप्रभु उनके प्रधान सहायक थे। इसी कारण प्रभुने सबसे पहले उनको सावधान कर दिया। प्रभु यवनको वैष्णव बनायेंगे, यह अति कठिन कार्य है। उन्होंने जगाई-माधाईका उद्धार किया है, वे हिन्दू थे। नदियाके लोग अब प्रभुके एक अद्भुत लीलारङ्गको देखेंगे। यवन हरिनाम-संकीर्तन करेगा, हरिभक्त बनेगा। यवन राजकर्मचारी युगधर्म हरि-संकीर्तनमें सहायक बनेंगे। अपने वंशजोंको आदेश देंगे कि कभी कोई कीर्तनमें बाधा न डाले। प्रभुका यह सब अपूर्व लीलारङ्ग देखकर नदियावासी पाखण्डी वर्गमें चेतना आयेगी; वे संकीर्तनका मर्म समझेंगे, युगधर्म पालनका धर्म जानेंगे, इसी उद्देश्यसे हमारे रँगीले प्रभुने यह लीला प्रकट की। इस कार्यमें प्रेमभक्ति-रसकी वृष्टि होगी। आचाण्डाल—सभीलोग महासंकीर्तन-यज्ञमें योगदान करके हरिनाम-कीर्तनद्वारा अपना उद्धार करेंगे। पाखण्डियोंके मनमें महाभय होगा। ये सब बातें कहते-कहते प्रभुको भगवान्-भाव हो गया। तत्काल ऐश्वर्य-प्रदर्शन करते हुए वे बोले—"अनन्त ब्रह्माण्ड मेरे सेवकका दास है। मेरे रहते भय किस बातका?" (चै. भा. म. २३.१२६)

नदियाके भक्तवृन्द काजीके भयसे बहुत डर गये थे। सर्वभयहारी प्रभुने आत्मप्रकाश करके इस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बातसे उनके सारे भय दूर कर दिये। विपद्-भञ्जन श्रीगौर-भगवान् भक्तकी विपदा देखकर यहाँ आत्मप्रकाश करनेके लिए बाध्य हुए। अब वे अपनेको छिपाये न रख सके। प्रभुने अपने भक्तवृन्दको आश्वासन देते हुए कहा—"मेरे रहते तुमलोगोंको क्या भय है?" तत्काल भक्तोंके सारे भय दूर हो गये। प्रेमानन्दमें नृत्य करते-करते सारी नदियामें डुग्गीपीटकर उन्होंने प्रभुके आदेशका प्रचार किया।

प्रभुका आदेश था—"सभी नदियावासी कम-से-कम एक मशाल-दीप लेकर कीर्तनमें आवें।" उस समयकी नदियानगरी आजके कलकत्ता शहरकी अपेक्षा भी बड़ी थी। कोटि-कोटि लोग नदियामें रहते थे। उनमें बहुतेरे धनी थे, बड़े आदमी थे, बड़े-बड़े लोग सहस्रों मशाल सैकड़ों दीप जलाकर आदमियोंको साथ लेकर संध्याकालमें प्रभुके श्रीमन्दिरके द्वारपर आकर उपस्थित हो गये। जिस घर में पिता-पुत्र दो आदमी थे, उस घरसे दो मशाल बाहर निकली, जिसके घर में चार आदमी थे वे चार मशाल लेकर आये। बहुतोंके हाथमें बड़े-बड़े तेलसे पूर्ण भाण्ड थे।

प्रभुका आदेश था कि भोजनके बाद सायंकालमें सब एकत्रित होकर कीर्तन करते-करते काजी-उद्धार करने जायँगे।

नदियानगरी दीपमालासे आलोकित होगी। बाला, वृद्धा और युवा, सब स्त्रियाँ युगधर्म हरिनाम-महायज्ञके अनुष्ठानमें प्रवृत्त हो गयीं। शचीके आँगनमें बड़ी भीड़ लग गयी, रास्तेमें तिल रखनेको जगह न रही। उनके मुखमें हरिनामके सिवा और कोई बात नहीं थी। गगनभेदी हरि-ध्वनिसे नदिया-नगरी प्रकम्पित हो उठी। ब्रह्माण्डको भेदती हुई हरिध्वनि गरज उठी।

सब लोग प्रभुके द्वारपर खड़े होकर बारंबार उच्च हरिध्वनि कर रहे हैं। भक्तवृन्द प्रभुके आँगनमें खड़े होकर उनके शुभागमनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। प्रभु घरके भीतर बैठे हैं। गदाधर-पण्डित और ठाकुर नरहरि उनकी वेष रचना कर रहे हैं, यह उनका निजी काम है। उन्होंने प्रभुको कैसे सजाया और प्रभुका तब कैसा अपरूप-रूप हो गया, यह श्रीवृन्दावनदास ठाकुरकी भाषामें सुनिये—"श्रीगौरचन्द्रका देह ज्योतिर्मय सुवर्ण-विग्रह है। उनके अङ्ग चन्दनसे चर्चित हैं, घुँघराले केशोंपर मालतीकी माला शोभा दे रही है। वे अपने मधुर हास्यसे कलाके सौन्दर्य-माधुर्यको पराजित कर रहे हैं। उनके ललाटपर चन्दनके मध्य कुंकुम-विन्दु शोभायमान है। दोनों भुजाओंको ऊपर उठाये उनके मुखसे 'हरि बोल' ध्वनि निकल रही है। आजानु-लम्बित माला अङ्गोंपर झूल रहीं हैं। कमल-नयनोंके जलसे अङ्ग भीज रहे हैं। उनकी दोनों भुजाएँ मानो स्वर्णके स्तम्भ हैं। उनके अङ्गोंके पुलककी शोभा स्वर्ण-कदम्बके सुमनोंके समान हैं। उनका अधर लाल-लाल सुरङ्ग हैं। दन्त-पंक्ति और भृकुटीका कर्ण पर्यन्त विस्तार निराली शोभा दे रहे है। उनका स्कन्ध-प्रदेश गजेन्दको परास्त करता है। उनके उन्नत-पुष्ट वक्षस्थलपर सूक्ष्म शुभ्र यज्ञोपवीत शोभित है। श्रीचरणारविन्द लक्ष्मी एवं तुलसीके निवास-स्थान हैं। वे परम स्वच्छ और सूक्ष्म वस्त्र धारण किये हैं। उन्नत नासिका और सिंह-जैसी ग्रीवा अत्यन्त मनोहर हैं। उपस्थित सबलोगोंसे अधिक गौरवर्ण और दीर्घ कलेवरकी शोभा देखते ही बनती है।

(चै. भा. म. २३.१७५—१८३)।"

गदाधर और नरहरिने प्रभुके चरणोंमें नूपुर पहना दिया, श्रीअङ्गोंमें पुष्पोंका आभरण दे दिया। प्रभुके गलेमें उत्तम काँची महीन चादर झूलती है। उनके भ्रमरके समान काले केशपाशके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बीच नाना प्रकारके सुगन्धित पुष्प सुशोभित हो रहे हैं।

कीर्तन-रण-वीर श्रीगौराङ्गप्रभु इस प्रकार नव-नटवर-नागरवेषमें घरसे हँसते-हँसते आँगनमें आकार खड़े हो गये। उनकी मधुर-सर्वचिताकर्षक प्रशान्त श्रीमूर्तिको देखकर सबलोग आनन्दसे जय-ध्वनि करने लगे।

प्रभु सहस्त्रों लोगोंके बीचमें आँगनमें खड़े हैं, उनको सब देख पा रहे हैं; क्योंकि वे सबकी अपेक्षा उँचाईमें बड़े हैं। उनका लम्बा शरीर चन्दन-चर्चित है। सिरकी केशराजि पुष्पमयी है। यह देखकर दूरस्थ सब लोग (जो दूरसे उनके केवल श्रीमस्तका दर्शन कर पा रहे हैं) आनन्द-विह्वल होकर ऊर्ध्व कण्ठसे बोल उठे—

अइ ठाकुरेर केश शोभे नाना फूले।

चै. भा. म. २३.१८४

प्रभुके घरके आँगनमें बाहरी दालानके सामने रास्तेमें इतने आदमी इकट्ठे हैं कि एक सरसो भी गिरे तो वह जमीनपर नहीं जा सकेगी।

प्रभुके अन्तःपुरमें वैष्णव-गृहिणीगण तथा नदिया-सुन्दरी वृन्द एकत्रित हुई हैं। आज उनके आनन्दकी सीमा नहीं है। प्रभुके अपरूप-रूपको देखकर, उनके मदन-मोहन वेषको देखकर वे प्रेमानन्दमें विभोर होकर बारंबार हुलूध्वनि कर रही हैं।

प्रभुने आँगनमें खड़े होकर सबके प्रति शुभ-दृष्टिपात किया। उनके श्रीअङ्ग प्रेममें उन्मत्त हैं, कमल-नयनसे झर-झर प्रेमाश्रु-धारा बह रही हैं, सर्वाङ्ग पुलकसे परिपूर्ण है। आनन्दमय प्रभुका आनन्दोच्छ्वास धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

अपराह्णकाल है, भक्तवृन्द प्रभुको देखकर आनन्द-सागरमें मग्न हो गये हैं। उनके सारे दुःख दूर हो गये हैं। उनके मनमें आज इतना आनन्द क्यों है ? नगरके भीतर प्रकटरूपमें आज प्रभु नृत्य-विलास-रङ्ग प्रकट करेंगे। सबलोग उनकी अपूर्व नृत्य-विलासलीला देखकर नयनोंको सफल बनावेंगे, उनके सारे दुःख दूर हो जायँगे, उनका भव-बन्धन छूट जायगा—यही भक्तवृन्दके इस आनन्दका कारण है।

इसी कारण भक्तवृन्दके मनमें आज इतना आनन्द है। इतने दिनतक प्रभु श्रीवासके आँगनमें अन्तरङ्ग भक्तोंको लेकर कीर्तन-विलास-लीला करते रहे। इसे बहिरङ्ग लोग नहीं देख पाते थे। आज सारी नदियाके लोग प्रभुके मधुर नृत्य-विलासरङ्गको देखकर नयन सफल करेंगे। इसी कारण भक्तवृन्दको इतना उच्छ्वास है, इतना आग्रह है, इतना आनन्द है। प्रेमानन्दमें उनका बाह्यज्ञान लुप्त हो रहा है।

क्रमशः गो-धूलिका समय आकर उपस्थित हो गया। प्रभुने आँगनमें खड़े होकर—कीर्तनमें कौन, किस दलमें नृत्य करेगा, जिसके पीछे कौन दल जायगा—यह भक्तवृन्दको पास बुलाकर एक-एक करके समझा दिया। प्रभुने आदेश दिया—"सबसे आगे अद्वैताचार्य गोसाई एक सम्प्रदायके साथ रहेंगे। बीचमें हरिदास अपनी टोलीके साथ रहेंगे। उनके पीछे पं० श्रीवास अपने साथियोंके साथ नृत्य-गीत कीर्तन करते रहेंगे।"

—इतना कहकर प्रभुने एक बार सजल-नयनसे श्रीनित्यानन्दप्रभुको ओर देखा। देखते ही सदानन्द अवधूत निताई-चाँदने प्रभुके चरणोंमें हाथ जोड़कर निवेदन किया—"हे प्रभो! तुम्हें मैं छोड़ नहीं सकता। मेरा काम है, कीर्तनमें तुम्हें पकड़कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

घूमनेका, क्षणभरके लिए जिससे तुम्हारे चरण न छूटने पावें। स्वतन्त्ररूपसे नाचनेकी मुझमें शक्ति नहीं है। तुम जहाँ रहो, मैं वहाँ रहूँगा। यही मेरी भक्ति है।" इतनी बात बोलते-बोलते श्रीनित्यानन्दप्रभु प्रेमानन्दमें आकुल होकर रो उठे। प्रभुने प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन-प्रदानकर उनको संतुष्ट करके अपने साथ रख लिया।

इस कीर्तनमें सभी भक्तगण थे। गदाधरपण्डित वक्त्रेश्वरपण्डित, मुरारिगुप्त, गोपीनाथ और जगदीशपण्डित गङ्गादासपण्डित, रामाईपण्डित, गोविन्दानन्द, चन्द्रशेखर आचार्यरत्न, वासुदेव घोष, श्रीगर्भ, मुकुन्ददत्त, श्रीधर, गोविन्द, जगदानन्दपण्डित, शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी, नन्दन आचार्य आदि सभी हैं।

प्रायः संध्याकाल आनेको है। आँगनसे प्रचण्ड हुंकारगर्जन करके प्रभुने हरि-ध्वनि करते हुए दीप जलाने का संकेत किया। करोड़ों कण्ठोंसे गगन-भेदी हरि-ध्वनि उठने लगी। साथ-साथ लक्ष-कोटि दीप एक साथ जल उठे। नदियानगरी क्षणमात्रमें दीपोंके आलोकसे दीप्त होकर अपूर्व शोभा धारण कर उठी।

प्रभुका सदल-बल प्रस्थान

प्रभु अपने मन्दिरसे दल-बलके साथ परिवेष्टित होकर नदियाके राजपथसे बाहर निकले। तब सब भक्तगणने मिलकर प्रभुको घेरकर कीर्तन आरम्भ किया। सबके हाथोंमें करताल और मंजीरा शोभा दे रहे थे। शत-शत मृदङ्ग-करताल एक साथ बज उठे। श्रीवासपण्डितने सबको माला-चन्दनसे विभूषित किया। नदियाका मार्ग आनन्द-कोलाहल-से पूर्ण हो गया। संकीर्तनके विरोधी काजीका दमन करनेके लिए नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग-प्रभु हरि-संकीर्तन-रणका आयोजन करने लगे। हरिनाम-महास्त्र धारण करके, भक्तोंकी सेना साथमें लेकर वे सेनापतिके साथ नदियाके रास्तेपर निकले।

चाँद काजी मुसलमान बादशाहका प्रतिनिधि था। उसके अनेको सैन्य-सामन्त थे। उसको अस्त्र-शस्त्रकी भी कमी न थी। नदियाके निमाईपण्डित-को भी सैन्य-सामन्तकी कमी न थी, सेनापतिका भी अभाव न था, अस्त्रकी भी कमी न थी। कलियुगावतार युगधर्मका—प्रचारका शस्त्र-अस्त्र लेकर ससैन्य जीवोद्धार-युद्धमें उतरे। प्रभुका युद्धका वेष अत्यन्त सुन्दर था। वे कीर्तन-रणवीर थे, गलेमें लम्बी मालतीकी माल और प्रशस्त ललाटमें सुन्दर तिलक शोभा दे रहा था; उसके मध्यमें लाल विन्दु था। कमल-नयनोंमें कज्जलकी रेखा थी। सिरपर पुष्पोंकी चूड़ा बँधी थी। केश-पाश भ्रमरके समान काले और कुञ्चित थे, उसके ऊपर नाना जातिके सुगन्धित पुष्प थे, उनका सर्वाङ्ग चन्दन-चर्चित था, सुन्दर पट्टवस्त्र पहने थे, उनके गलेमें कोंची हुई चादर थी, चरणोंमें नूपुर थे।

इस प्रकारके मनोहर नवीन नटवर मदन-मोहन नागर वेषमें प्रभु काजीके साथ युद्ध करने चले। उनकी भक्तसेनाका कितना पराक्रम है, हरिनाममहामन्त्रमें कितना तेज है, कितना बल है, यह आज काजी-दमनके द्वारा वे नदिया-वासियों-को दिखलावेंगे। सुदर्शनचक्रकी अपेक्षा भी हरिनाम-महामन्त्रका बल अधिक है। सुदर्शनचक्र जीवोंके शरीरका नाश करता है, उनका प्राण हर लेता है; हरिनाम-महामन्त्र उनके देहगत पापोंका नाश करता है, उनका प्राण-हरण नहीं करता; परन्तु उनकी दुष्कृतिकी राशिको एकबारगी निर्मूल कर देता है। कलियुगावतारने कलिग्रस्त जीवोंके लिए इस हरिनाम-महामन्त्रका प्रयोग किया था।

प्रभु अपने मन्दिरसे नदियाके राजपथमें बाहर निकले नदियावासी भक्तों और सज्जनलोगोंने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुके इस महासंकीर्तनके उपलक्ष्यमें अपने-अपने गृहद्वारपर माङ्गलिक घटकी स्थापना की है, उनके ऊपर आम्र-पल्लव और नारिकेल सुशोभित हो रहा है। केलेकी घौदके साथ कदलीवृक्ष द्वार-द्वार-पर रोपे गये हैं। गृह-द्वारपर घृतका दीप जल रहा है। माङ्गलिक अनुष्ठानमें कोई त्रुटि नहीं दीख रही है। दिव्य थालके ऊपर दधि, दूर्वा, धान्य रखा गया है। पुरनारीवृन्द आनन्दसे उत्फुल्ल होकर नदिया-नागट प्रभुके शुभागमनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। सारी नदिया आज आलोक-मालासे विभूषित हो रही है। सबके मुखमें मधुर हरिनाम-ध्वनि है। चोर-लम्पट आदि दुर्जनलोग भी आज अपने दुष्कर्मकी चिन्ता भूलकर हरिनामके गानमें मत्त हो गये हैं। नदियाके पथमें खील और कौड़ी लुटायीं जा रही है।

प्रभुने अपने मन्दिरसे निकलकर कीर्तन करते हुए गङ्गाके तीरका रास्ता पकड़ा। वे इस रास्तेसे होकर काजीके भवनकी ओर चले। प्रभु आज मनमें आनन्दित होकर सबके सामने नव-नव भावमें मधुर नृत्य-विलासरङ्ग करते-करते जा रहे हैं और उनके पीछे-पीछे लाखों-लाखों आदमी हरि-ध्वनि करते हुए जा रहे हैं। प्रभुके आगे कीर्तनका दल चल रहा है। श्रीअद्वैताचार्य सबके आगे है, उनके पीछे हरिदास ठाकुर हैं, उनके बाद श्रीनिवास-पण्डितका दल है, इस प्रकार सारे भक्तवृन्दके दलके साथ पीछे-पीछे प्रभु चल रहे है। उनके साथ गदाधरपण्डित और श्रीनित्यानन्द प्रभु हैं।

मधुर कण्ठसे मधुर हरि-ध्वनिके द्वारा सारी नदियामें मानों मधुवृष्टि हो रही है। जो कभी गाना नहीं गाते थे, वे भी प्रभुकी कृपासे आज मधुरकण्ठ हो रहे हैं।

प्रभुको देखनेके लिए सारी नदियाके लोग उत्कण्ठित होकर रास्तेकी ओर दौड़ चले हैं। पुरकी नारियाँ अटारीके ऊपर, खुले झरोखोंसे झुण्ड-की-झुण्ड एकत्रित होकर श्रीगौराङ्गका रूप देखनेके लिए गर्दन उठाये हुए हैं।

मूल सम्प्रदायको छोड़कर असंख्य कीर्तनदल रास्तेमें जाते-जाते पुनः गठित होने लगे। कीर्तन-सम्प्रदायकी अब गणना नहीं हो सकती। इस प्रकार लाखों-लाखों कीर्तन-सम्प्रदाय सारे नवद्वीपमें आनन्द-कीर्तन करते हुए प्रभुके सुवृहद् महासंकीर्तन-यज्ञमें योग देने लगे। नदियानगरी हरि-ध्वनिसे और आनन्द-कोलाहलसे परिपूर्ण हो गयी। इतने दिनोंतक नदियाके लोगोंने प्रभुके श्रीवास-आँगनमें कीर्तन-विलास-लीलारङ्गकी बात केवल सुनी थी, आज प्रभुके मधुर नृत्य-कीर्तन-लीलारङ्गको अपनी आँखों देखकर वे आनन्दसे देहधर्म भूलकर महा-संकीर्तन-यज्ञमें योग दे रहे हैं। इतना बड़ा आनन्दोत्सव इसके पहले नदियामें कभी नहीं हुआ था।

तत्कालीन नवद्वीपके ऐश्वर्यका वर्णन करते हुए श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

नदियार सम्पत्ति वर्णिते शक्ति कार।
असंख्य नगर घर चत्वर जाहार॥
एको जाति लोक जाथे अर्बुद अर्बुद।
इहा संख्या करिबेक केमन अबुध॥
अवतरिबेन प्रभु जानिया विधाता।
सकल एकत्र करि थूइलेन तथा॥

चै. भा. म. २३.२५१—२५३

यहाँ नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गप्रभुकी एक अद्भुत ऐश्वर्यकी बात सुनिये! कीर्तनानन्दी वैष्णवमात्र जानते हैं कि मृदङ्ग-करतालका मधुर शब्द सुनते ही वैष्णवोंके प्राण किस प्रकार उन्मत्त हो जाते हैं। इस सुमधुर मृदङ्ग-करतालके योगसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मधुर हरिनाम-संकीर्तन हो रहा है। सबकी मन-ही-मन हाथसे ताली देकर प्रेमनृत्य करनेकी वासना हो रही है। परन्तु उनके एक हाथमें मशाल और दूसरे हाथमें तैलभाण्ड है। किस प्रकार हाथसे ताली दें? कैसे नृत्य करें? हाथसे ताली न दे सकने-के कारण वे बहुत दुःखित हुए। नृत्यानन्दका उपभोग न कर पानेके कारण उनके मनमें बड़ा कष्ट हुआ। भक्तवाञ्छा-कल्पतरु अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान्‌ने उनके मनकी दशाको समझकर एक अद्‌भुत ऐश्वर्य-लीलारङ्ग प्रकट किया। सर्व-शक्तिमान् प्रभुने सबको चतुर्भुज बना दिया।

(चै. भा. म. २३.२२५,२२६)

प्रभुके इस ऐश्वर्य-प्रदर्शन लीलारङ्गको निश्चय पूर्वक कोई देख न पाया, कोई जान न सका। जो लोग प्रभुकी कृपासे चतुर्भुजी हो गये, वैकुण्ठ-स्वभावको प्राप्त हुए, वे भी नहीं जान सके; परन्तु उनको हाथसे ताली देने या नृत्य करनेके लिए कोई बाधा न रही। इससे उन्होंने समझ लिया कि प्रभुकी कृपासे उनकी मनोवाञ्छा पूर्ण हो गयी है।

प्रभुकी इस अलौकिक लीलाकी बातमें किसीको अविश्वास नहीं करना चाहिये। श्रीभगवान्‌के लिए जगत्‌में कौन-सा कार्य असाध्य है? वे सब-कुछ कर सकते हैं। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने अपने चैतन्य-भागवतमें प्रभुकी इस लीलाके विषयमें लिखा है। श्रीनित्यानन्दप्रभुके श्रीमुखसे श्रीगौराङ्ग-लीलाका श्रवण करके कलिके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुर अपने इस परम-मङ्गल श्रीचैतन्यभागवत ग्रन्थकी रचना करते हैं। संकीर्तनकारी नदिया-वासियोंने प्रभुकी इच्छासे इस समय जो चतुर्भुज-रूप धारण किया, श्रीगौर-भगवान्‌की इच्छाशक्ति श्रीनित्यानन्दप्रभुने इसे देखा। दोनों प्रभुओंने इसे देखकर काफी आनन्द लिया। श्रीवृन्दावनदास ठाकुर श्रीनित्यानन्दप्रभुके विशेष कृपापात्र थे। उन्हींकी कृपाके प्रसादसे वे श्रीगौराङ्ग-लीला विस्तारपूर्वक वर्णन करनेमें समर्थ हुए थे। प्रभुकी यह ऐश्वर्य लीला श्रीनित्यानन्दप्रभुने अपने अनुगत दास श्रीवृन्दावनदासको बतलायी थी। प्रिय पाठकवृन्द! श्रीभगवान्‌की अलौकिक लीलाकी कथाओंमें कदापि अविश्वास न करें। इसमें दोष लगता है।

पवित्र सलिला सुरसरिके तीरसे होते हुए प्रभु नृत्य कीर्तन करते दल-वलके साथ काजीके घरकी ओर जा रहे हैं। नदियाके लोग प्रेमानन्दमें उन्मत्त हैं। वे लोग सुख-दुःख आदि सारे देह-धर्म भूल गये हैं। कोई काजीके नामपर हजारों गालियाँ दे रहा है, कोई कहता है—"काजी बेटा गया कहाँ? आज उसका सिर काट लेंगे।" कोई पाखण्डियोंका नाम लेकर भूतलपर दृढ़ मुष्टिकाघात कर रहा है। कोई रास्तेमें दौड़कर किसी पाखण्डीको पकड़ने जा रहा है। कोई धूलिमें लोटता हुआ आनन्दमें जय-ध्वनि कर रहा है।

संकीर्तन-रणवीरोंका दल

प्रभुके आगे-पीछे बहुत-से सम्प्रदाय कीर्तन कर रहे हैं। प्रभुके अपने सम्प्रदायमें, जिसमें श्रीनित्यानन्द प्रभु और गदाधरपण्डित भी हैं, उनके स्वरचित आदि-कीर्तन-संगीतका गान हो रहा है। यथा,

"तुया चरणे मन लागहुँ रे।
शारङ्गधर! तुया चरणें मन लागहुँ रे॥

चै. भा. म. २३.२४०

श्रीअद्वैतप्रभुका सम्प्रदाय गाता है—

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन॥

हरिदास ठाकुरका सम्प्रदाय गा रहा है—

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवासपण्डितका सम्प्रदाय गा रहा है—

"हरि ओ राम राम हरि ओ राम राम।"

मुकुन्दका दल गा रहा है—

कृष्ण राम मुकुन्द मुरारि वनमाली।

और एक दल गा रहा है—

"हरि बोल मुगधा हरि बोल रे।
जाहे नाहि हय शमन भय रे॥"

सर्वसाधारण गा रहे हैं—

हरि बोल हरि बोल हरि बल भाइ।

(मधुर) हरि नामे उद्धारिवे
(आजि) काजि रे निमाइ॥"

प्रभु मत्तसिंहके समान हुंकार-गर्जन करके आजानुलम्बित दोनों बाहुओंको ऊपर उठाकर बारम्बार हरि-ध्वनि करते-करते गङ्गाके किनारे-किनारे मधुर नृत्य करते चले जा रहे हैं। नदियाके भक्तवृन्द उनको इस समय किस रूपमें देख रहे हैं—

विजय करिल जेन नन्द घोषेर वाला।
वाम हाते वांशी, गले कदम्बेर माला॥

चै. भा. म. २३.२२८

जैसा देखते हैं उसी भावमें विभावित होकर भक्तवृन्द कीर्तनका सुर पकड़ रहे हैं। उन्होंने आनन्दमें उन्मत्त होकर हाथसे ताली देकर नृत्य करते-करते कीर्तनका सुर पकड़ा—

विजय करिला जेन नन्द घोषेर वाला।
वाम हाथे वाँशी, गले कदम्बेर माला॥

श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

एइ मत कीर्तन करिया सर्वलोक।
पासरिल देह धर्म जत दुःख शोक॥

चै. भा. म. २३.२२९

नदियामें प्रभुने जो यह युगधर्म महासंकीर्तन-यज्ञ किया, उसमें देवताओंका आविर्भाव हुआ था। श्रीगौर-भगवान्‌का संकीर्तन-लीलारङ्ग देखनेके लिए देवगण नररूप धारण करके नित्यधाम नवद्वीपमें आये। वे मनुष्योंके साथ मिलकर कीर्तन करने लगे। यथा, श्रीचैतन्यभागवतमें—

अज-भव - वरुण - कुवेर-देवराज।
यम-सोम आदि जत देवेर समाज॥
ब्रह्मसुखस्वरूप अपूर्व देखि रङ्ग।
सभे हैल नररूपे चैतन्येर सङ्ग॥
देवे-नरे एशत्र हइया हरि बोले।
आकाश पूरिया सव महीदीप ज्वले॥

चै. भा. म. २३. २४७—२४९

प्रभुके सर्वाङ्गमें अष्ट सात्त्विक भावोंका प्रकाश हो रहा है। करुणामय प्रभु प्रेमानन्दमें अजस्र आँसू बहा रहे हैं, उनका करुणापूर्ण अश्रुपूर्ण चन्द्रवदन देखनेसे महापाखण्डीका पाषाण-हृदय भी द्रवित हो जाता है। नगरके सबलोग प्रभुके मस्तकके ऊपर पुष्पमालाएँ अर्पण कर रहे हैं। पुरनारियाँ अट्टालिकाके ऊपरसे संकीर्तनके बीच पुष्पवृष्टि कर रही हैं। प्रभुका सर्वाङ्ग पुष्पमालासे विभूषित है। वे अपूर्व अङ्ग-भङ्गिमा करके मधुर नृत्य कर रहे उनके श्रीमुखसे केवल 'बोल बोल' शब्द उच्चारित हो रहा है।

प्रभुके इस समयके अपरूप-रूपकी बात उठाकर श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—"प्रभुके स्कन्ध-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देशपर यज्ञोपवीत शोभायमान है, उनकी कटिमें नटवर-जैसा त्रिकच्छ-वसन है, उनके कमल-नयन धूलसे धूसर बने हैं, नयनोंसे मन्दाकिनी-धारा बह रही है, उनकी सुन्दर नासिकासे निरन्तर पतली-सी धार बह रही है जो हृदयपर मोतीके हारके समान शोभा दे रही है उनके श्रीमुखकी शोभाके आगे चन्द्रमा भी तुच्छ लग रहा है, सुन्दर घुँघराले केश विचित्र रूपसे बँधे हुए हैं, उनपर मालतीकी माला अत्यन्त शोभायमान है।"

(चै. भा. म. २३.२५८—२६१

प्रेमानन्दमें विह्वल होकर प्रभु प्रेम-नृत्य करते-करते काजीके भवनकी ओर जा रहे हैं। भाग्यवान् नदियवासी भक्तवृन्द नयन भरकर प्रभुके इस अपूर्व नृत्य-विलास-लीलारङ्गका दर्शन कर रहे हैं और प्रभुके चरणोंमें रोते हुए आत्मनिवेदन कर रहे हैं—

"हे प्रभो ! हम यही वरदान माँगते हैं कि जन्म-जन्ममें आपकी यह लीला हमारे हृदयमें निरन्तर बनी रहे।" (चै. भा. म. २३.२९३)

प्रभु अपने घाटपर खड़े होकर बहुत देरतक नृत्य करते रहे। पश्चात् माधाईके घाटपर गये। वहाँ भी अपूर्व नृत्य-विलास-लीलारङ्ग किया। उसके बाद वारकोना घाट होकर सिमूलियाकी ओर चले। नदियाके समस्त लोग प्रभुके साथ चले जा रहे हैं। गङ्गाके घाटका रास्ता खूब चौड़ा है। तीर-तीरपर नृत्य करते हुए प्रभु काजीके भवनकी ओर जा रहे हैं। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने प्रभुकी इस अपूर्व नृत्य-विलास-लीलाकी कथा अतिसुन्दर भाषामें वर्णन की है। श्रीचैतन्यभागवतका वह अपूर्व सम्पूर्ण पदरत्न यहाँ उद्धृत करनेका लोभ मैं संवरण न कर सका !

पाहिड़ा राग।

आमार गौराङ्ग सुन्दर नाचे रे।
ताता थैया थैया बाजे रे॥
नाचे विश्वम्भर, सभार ईश्वर, भागीरथी तीरे तीरे।
जार पद-धूलि, हइ कतूहली, सभेइ धरये शिरे॥
शिव शिव नाचे विश्वम्भर।
अपूर्व विकार, नयने सुधार, हुंकार-गर्जन शुनि।
हासिया-हासिया, श्रीभुज तूलिया, बोले हरि-हरि वाणी॥
वदन सुन्दर, गौर कलेवर, दिव्य वास परिधान।
चाँचर चिकुरे, माला मनोहरे, जेन देखि पाँच वाण॥
चन्दन चर्चित, श्रीअङ्ग शोभित, गले दोले वनमाला।
तूलिया पड़ये, प्रेमे थिर नहे, आनन्दे शचीर वाला॥
काम शरासन, भ्रू युग पत्तन, भाले मलयज-बिन्दु।
मुकुता दशन, श्रीयुत वदन प्रकृति करुणा-सिंधु॥
क्षणे शत शत, विकार अद्भुत, कत करिब निश्चय।
अश्रु-कम्प-घर्म-पुलक-वैवर्ण, ना जानि कतेक हय॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्रिभङ्ग हइया कबहूँ रहिया अंगुलि मुरलि बाय।
जिनि मत्त गज, चलइ सहज, देखि नयन जुड़ाय॥
अति मनोहर यज्ञसूत्रवर, सदय हृदये शोभे।
ए बूझि अनन्त, हइ गुणवन्त, रहिला परम लोभे॥
नित्यानन्द-चन्द, माधव-नन्दन, शोभा करे दुइ पाशे।
जत प्रिय जन करये कीर्तन, सभा चाहि-चाहि हासे॥
जाँहार कीर्तन करि अनुक्षण, शिव दिगम्बर भोला।
से प्रभु विहरे नगरे-नगरे, करिया कीर्तन खेला॥
जे करये वेष जे अङ्गे जे केश, कमला-लालसा करे।
से प्रभु धूलाय, गड़ागड़ि जाय, प्रति नगरे-नगरे॥
लाख कोटि दीपे, चन्द्रेर आलोके ना जानि कि भेल सुखे।
सकल संसार हरि बइ आर ना बोलइ कारो मुखे॥
अपूर्व कौतुक, देखि सर्वलोक, आनन्दे हेल भोर।
सभेइ सभार, चाहिया वदन, बोले भाइ हरि बोल॥
प्रभुर आनन्द, जाने नित्यानन्द, जखन जे रूप हय।
पड़िवार बेले, दुइ बाहु मेले, जेन अङ्गे प्रभु रय॥
नित्यानन्द धरि, वीरासन करि, क्षणे महाप्रभु बैसे।
वाम कक्षे तालि, दिया कुतूहली हरि-हरि बलि हासे॥
अकपटे क्षणे, कहये आपने, मुञि देव नारायण।
कंसासुर मारि, मुञि कंसारि, बलि छलिया वामन॥
सेतु बद्ध करि, रावण संहारि, मुञि से राघव राय।
करिया हुङ्कार, तत्त्व आपनार, कहि चारि दिके चाय॥
के बूझे से तत्त्व, अचिन्त्य महत्त्व, सेइ क्षणे कहे आन।
दन्ते तृण करि, प्रभु-प्रभु बलि, मागये भकति-दान॥
जखने जे करे गौराङ्ग सुन्दरे, सब मनोहर लीला।
आपन वदने, आपन चरणे, अंगुलि धरिये खेला॥
वैकुण्ठ ईश्वर, प्रभु विश्वम्भर, सब नवद्वीपे नाचे।
श्वेतद्वीप नाम. नवद्वीप ग्राम, वेदे प्रकाशिब पाछे॥
मंजिरा मृदङ्ग, करताल-शङ्ख ना जानि कतेक बाजे।
महा हरिध्वनि, चतुर्दिके शुनि, माझे शोभे द्विजराजे॥
जय जय जय, नगर-कीर्तन, जय विश्वम्भर-नृत्य।
विंश पद गीत, चैतन्य चरित, जय चैतन्येर भृत्य॥
जेइ दिके चाय, विश्वम्भर राय, सेइ दिक प्रेमे भासे।
श्रीकृष्णचैतन्य, नित्यानन्द-चन्द, गाय वृन्दावन दासे॥

चै. भा. म. २३.२७०—२८२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस महासंकीर्तनमें संकीर्तन-यज्ञेश्वर श्रीगौराङ्गप्रभु 'शिव-शिव' कहकर नृत्य कर रहे हैं—

शिव शिव नाचे विश्वम्भर।
अति सुमङ्गलं शिव-शिवोच्चारणम् ॥

चै. भा. म. २३.९३

अविच्छिन्न हरि-ध्वनिसे नदियानगरी परिपूर्ण हो उठी। सबके घरके द्वारपर माङ्गलिक कलश स्थापित हैं, उनके ऊपर आम्रके पल्लवके ऊपर दीप जल रहे हैं। चन्द्रालोकमें दीपालोक मिलनेसे रात्रिकी शोभा अपूर्व बन गयी है। दिन है या रात, किसीको भी कुछ सूझ-बूझ नहीं है। नदियाके पथ पुष्पमय हो रहे हैं, अन्तरिक्षसे देव-देवियाँ पुष्प-वर्षा कर रही हैं। अट्टालिकाके ऊपर तथा गवाक्षसे नदिया-सुन्दरियाँ पुष्प-वृष्टि कर रही हैं, चम्पक और मल्लिका-पुष्पकी सुगन्धिसे सारे नदियाके पथ आमोदित हो गये हैं। जान पड़ता है, मानो पृथ्वीदेवी पुष्परूपी हृदय फैलाकर नदियाके अवतार प्रभुके सुकोमल पादपद्मको धारणकर आनन्दमें विभोर हो रही हैं। नदियाके सबलोग आज आनन्दमें उन्मत्त हो रहे हैं। कुलनारियाँ, पति-पुत्र, गृह, धन-जन—सब भूल गयी हैं। वे बारम्बार शुभ हुलू-ध्वनि दे रही हैं और उच्च स्वरसे हरि-ध्वनि कर रही हैं।

पुरुषगणमें कोई नाचता-गाता है, कोई 'हरि-हरि' बोल रहा है, कोई अपनी सुध-बुध खोकर लोट-पोट हो रहा है, कोई मुखसे विभिन्न प्रकारके वाद्यके सुर निकाल रहा है, कोई आनन्दके मारे किसीके कन्धेपर चढ़ जाता है, कोई किसीका चरण पकड़कर विह्वल हो रहा है। कोई किसीके चरणों-पर दण्डवत्-प्रणाम करता है, कोई आपसमें एक-दूसरेको आलिङ्गन कर रहा है।

(चै. भा. म. २३.३१३—३१६)

नदियाके भव्य-भव्य सभी लोगोंकी आज यही अवस्था है। क्रोध चाँद काजी और पाखण्डियोंके प्रति है; क्योंकि वे संकीर्तनके विरोधी हैं, निमाई-पण्डितके शत्रु हैं। अतएव उनकी इस प्रकारकी दुर्गति अवश्यम्भावी है।

नदियाके भक्तवृन्द महासंकीर्तन-लीलारसमें मग्न हो गये हैं। वे आज नवद्वीपमें श्रीवृन्दावनकी रासलीला मानो प्रत्यक्ष देख रहे हैं! वे प्रभुके नित्यदास हैं। रासमण्डल-मध्यस्थ वृन्दावन-धन श्रीकृष्णका दर्शन करके व्रजगोपिकाएँ जैसे परानन्दका अनुभव करती थीं, आज नदियाके भक्तवृन्द शचीनन्दनको संकीर्तन-मध्यस्थ देखकर तद्रूप प्रेमानन्दका उपभोग कर रहे हैं।

नदियाके सबलोग आनन्दमें उन्मत्त होकर काजी और पाखण्डीके नामसे अलौकिक शब्द उच्चारण करके चिल्ला-चिल्लाकर गाली देते हैं। आज उनके मनमें भय नहीं है। प्रभुकी आज्ञा मिलनेपर आज वे लोग यमराजको भी बाँधकर लानेके लिए प्रस्तुत हैं।

कोई आवेशमें भरकर मानो सामने यमदूतको देख रहा है और उसको सम्बोधन करके कह रहा है—"अरे यमदूत! जाकर अपने मालिक सूर्यपुत्र यमसे कह दे कि वैकुण्ठ-नायक प्रभु शचीके गृहमें अवतीर्ण होकर नगर-नगरमें कीर्तन कर रहे हैं। जिस नामके प्रभावसे तुम्हारे धर्मराज यमराज बने हैं, जिस नामके प्रभावसे अजामिल-जैसे विप्राधम तर गये, उसी नामको प्रभुने सबके मुखसे बुलवाया है। जो बोल नहीं सकते, उन्होंने वह नाम सुना है। इसलिए यदि तुम इन प्राणिमात्रमें अपना अधिकार दिखाओगे तो मैं तुम्हें मार डालूँगा; इसमें मेरा दोष नहीं है। अतएव शीघ्र ही जाकर चित्रगुप्तको कह दो कि वह ऐसे लोगोंके पापका लेखा-जोखा सब रद्द कर दें। जिस नामके प्रभावसे बाराणसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तीर्थराज बना, जिस नामको शुद्ध सत्त्वदेहधारी श्वेतद्वीप-निवासी गाते हैं, जिस नामके प्रभावसे महेश्वर शिव सबके वन्दनीय बने हुए हैं, ऐसे नामको अब सबलोग कहने-सुनने लगे हैं; तुम भी ऐसा नाम-गान करो; छोड़ो पर-अपकार करना और विश्वम्भरका भजन करो, नहीं तो मैं तुम्हारा संहार कर डालूँगा।" (चै. भा. म. २३.३२४—३३२)

कृपालु पाठकवृन्द! कृपा करके नदियावासियोंकी अन्तिम बातके ऊपर ध्यान दें। वे कहते हैं—

"भज विश्वम्भर नहे करिमु संहार।"

चै. भा. म. २३.३३२

अर्थात् तुमलोग गौराङ्ग-भजन करो! यदि नहीं करते हो तो तुमको हम मार डालेंगे। यह बड़ी गूढ़ तत्त्वकी बात है। साधारण कारणसे इतनी बड़ी बात लोगोंके मुँहसे नहीं निकल सकती। साधारण उत्तेजनासे ऐसी बात कोई नहीं बोलता। प्रभुके कीर्तन-विलास-लीलारस-रङ्गमें वे मत्त हैं। उनका रास-रसिक नटवर परमसुन्दर नदियानागर-वेष देखकर, उनके श्रीमुखसे मधुर हरिनाम-कीर्तन सुनकर, उनकी अमानुषिक शक्ति देखकर नदियाके सबलोग अब उनका साक्षात् नारायणके रूपमें विश्वास कर रहे हैं। यह बात वे सबको अब खुल-कर कह रहे हैं—

सभेइ बोलेन ए पुरुष नारायण।

चै. भा. म. २३.३५४

इस विश्वासके बलसे ही वे बहिर्मुख लोगों और पाखण्डियोंको भय दिखाकर कहते हैं—"गौराङ्गका भजन करो, नहीं तो मैं प्राण हर लूँगा।" नदिया-वासियोंका यह क्रोध, यह उन्मत्तता उनके भजनका ही अङ्ग है। वे सोचते हैं और कहते हैं—"जिसने ऐसे सोनेके गौराङ्गका भजन नहीं किया, उसके जीनेसे क्या लाभ? उसका मरना ही मङ्गलकर है।" इस प्रकार भगवद्भावमें विभावित होकर वे सुदृढ़ प्रेमानुरागमें भरकर कहते हैं—

"भज विश्वम्भर नहे करिमु संहार।"

पाखण्डीलोग भी यह युगधर्म महासंकीर्तन-यज्ञ अपनी आँखोंसे देखते हैं, परन्तु वैष्णव-निन्दाके पापसे लिप्त कलुषित हृदय होनेके कारण, उनको यह सब-कुछ अच्छा नहीं लगता। वे हिंसा-द्वेषसे मानो जल-भुन रहे हैं।

यह पाखण्डियोंका दल उस समय भी था, अब भी है और सदा रहेगा। इनका अस्तित्व न रहनेपर श्रीभगवान्के लीला-रङ्गरसकी पुष्टि नहीं होती। जिस प्रकार श्रीकृष्ण-लीलारसकी पुष्टिके लिए जटिला-कुटिलाका प्रयोजन हुआ था, उसी प्रकार श्रीगौराङ्गकी लीला-रसकी पुष्टिके लिए नदियामें पाखण्डियोंके दलकी सृष्टि हुई थी। यही इच्छामय प्रभुकी इच्छा थी। यही लीलारसमय-विग्रह श्रीगौराङ्गप्रभुकी लीलाका रहस्य है।

पाखण्डियोंका दल प्रभुके इस महासंकीर्तन-यज्ञानुष्ठानको देखकर मन-ही-मन अवश्य भयभीत हुआ है; परन्तु उनके हृदयमें पूर्ण द्वेषभाव है। वे मन-ही-मन नाना प्रकारकी कल्पना करने लगे। कोई सोचता है कि यदि काजी इसी समय सेना-सामन्तके साथ यहाँ आ जाय तो अच्छा हो। कोई सोचता है कि इस समय जाकर काजीको संवाद दे आना ठीक होगा। कोई कहता है कि काजी आकर गलेमें रस्सी बाँधकर इन लोगोंको गङ्गाके जलमें फेंक देता तो अच्छा होता। कोई कहता है कि एक बहुत अच्छी युक्ति है, सब भाई सुनो—चलो हम-सब इस समय निमाईपण्डितके पास चलकर कहें कि काजी आ रहा है—देखें, कैसा रङ्ग रहता है। उनके पास एक आदमी भी नहीं रहेगा, काजीके भयसे सब प्राण लेकर भागेंगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काजीके घरकी ओर प्रस्थान

दल-बलके साथ सिमूलिया गाँवको पीछे छोड़कर प्रभुने काजीके घरका रास्ता पकड़ा और सबलोग "काजीको मारो, काजीको मारो" उछल-कूद मचाते, चिल्लाते जाते थे। लाखों आदमियोंके कण्ठकी उच्च हरि-ध्वनिमें वह चिल्लाहट सहज ही विलीन हो जाती थी।

काजीके घरका रास्ता पकड़ते ही श्रीगौराङ्ग-प्रभुके नृत्य-विलास-भावमें एक अद्भुत परिवर्तन देखा गया। प्रेमानन्दमें वे बार-बार मूर्छित होने लगे; उनकी आँखोंसे मानो नदी बहने लगी। बारम्बार कम्प उठनेसे उनके प्रत्येक अङ्गकी संधि मानो शिथिल जान पड़ने लगीं; वे मार्गमें मूर्छित होकर गिर पड़े। एक पहरतक जीवनका कुछ भी चिह्न न रहा। श्रीनित्यानन्दप्रभु व्याकुल होकर रोने लगे। बीच-बीचमें प्रभु प्रचण्ड हुंकार-गर्जन करके उद्दण्ड नृत्य करते थे। जान पड़ता था, मानो वे अन्तरिक्षसे भूतलपर गिर रहे हों। लोग देखते हैं कि उनका अस्थि-पञ्जर चूर-चूर हो रहा है। उन्होंने प्रभुका ऐसा प्रेमविह्वल भाव इसके पूर्व और कभी नहीं देखा था। भीत और चकित होकर वे आकुल-क्रन्दन करते हैं और कहते हैं—"ये साक्षात् नारायण हैं।" कोई कहता है—"ये नारद हैं, प्रह्लाद हैं या शुकदेव हैं।" कोई कहता है—"ये चाहे जो हों, मनुष्य नहीं है" जो अत्यन्त तार्किक हैं, वे कहते हैं—"ये परम वैष्णव हैं।"

इस प्रकार नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गसुन्दर अपने गणके साथ काजीके घरकी ओर जा रहे हैं। उनको बाह्य ज्ञान नहीं है। केवल आजानुलम्बित दोनों भुजाएँ उठाकर बारंबार 'हरि बोल, बोल हरि बोल' कह रहे हैं और मधुर नृत्य-विलास कर रहे हैं। प्रभुका सर्वाङ्ग धूलि-धूसरित है। कमल-नयन-द्वयसे प्रेम-नदी वह रही है। वे जिस ओर शुभ दृष्टि डालते हैं, उस ओरके सबलोग उन्मत्त होकर उनके अपूर्व प्रेमोन्मत्तभावपूर्ण कीर्तन-रणवीर-वेशको देखते हैं और सोचते हैं—"ऐसा अपरूप-रूप तो उन्होंने कभी देखा नहीं, ऐसा प्रचण्ड हुंकार-गर्जनका शब्द तो कहीं सुना नहीं, ऐसी अलौकिक युद्धकी तैयारी तो कहीं देखी नहीं। नदियाके राजा काजी नहीं, नदियाके राजा निमाईपण्डित हैं।"

प्रभु कीर्तन-सेनाके दलके सेनापतियोंकी आज्ञासे क्रमशः काजीके घरके समीप पहुँचने लगे। कीर्तन-रणवीर नदियासे राजा श्रीगौराङ्गप्रभु सबके पीछे हैं। वाद्य-कोलाहल काजीके कानोंमें पहुँच गया है।

चाँद काजी नदियाके राजा हैं। उनके पास सैन्य-सामन्त हैं। प्रधान राज-प्रतिनिधिके रूपमें वे अट्टालिकापर रहते हैं। यह सब वाद्य-कोलाहल और आलोकमाला देखकर काजीने अपने लोगोंसे पूछा—"भाई! ये कैसे गीत और बाजे हैं? क्या किसीके यहाँ विवाह है, या हिन्दू-भूतोंका कीर्तन है? मेरे फरमानका उल्लङ्घन करके क्या हिन्दूपन दिखाया जा रहा हैं? पता लगाओ तो, मैं खुद चलूँगा।"

(चै. भा. म. २३.३६१—३६२

काजीके आदेशसे उनके सैनिक उस ओर दौड़ पड़े। कुछ दूर जाकर उन्होंने जो देखा, उनके प्राण उड़ गये। वे झटपट लौटकर काजीसे बोले—"हुजूर! अब हमारी खैर नहीं। निमाईपण्डित कोटि-कोटि लोगोंके साथ लाठी-सोटा लेकर हमारे साथ युद्ध करने आ रहे हैं। लाखों दीप-मशाल लेकर लोग 'मारो काजी, मारो काजी' बोल रहे हैं। नदियाके मार्ग पुष्पमय हो गये हैं, खील और कौड़ीसे नदियाका राजपथ परिपूर्ण है, बाजोंका शब्द सुनकर कान बहरे हो जाते हैं। निमाईपण्डित युद्धवेषमें प्रबल हुंकार-गर्जन कर रहे हैं। वे हिन्दूके भूत-जैसे जान पड़ते हैं। यह सब कार्य भूतका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कार्य है, मनुष्यका नहीं। अतएव चलिये, हमलोग शीघ्र भाग चलें। नहीं तो आज प्राणोंसे हाथ धोना पड़ेगा।"

काजीने देखा कि वाद्य-कोलाहल क्रमशः उसके घरके समीप आता जा रहा है। उसने डरकर बहुसंख्यक सैनिक भेजे। जो सुना, उससे उसका प्राण उड़ गया। काजीके पास जो सैन्यबल था, वह तैयार हुआ। सब दलोंमें विभक्त होकर वे प्रभुके संकीर्तन-दलके सामने आये। काजीका सैन्यबल प्रभुके कीर्तनदलकी तुलनामें समुद्रमें पाद्य-अर्घ्यके समान था। सामने जल-समुद्र देखकर काजीके सैनिकोंको आगे बढ़नेका साहस नहीं हुआ। वे भागनेके लिए तैयार होकर इधर-उधर चल पड़े; परन्तु किसी ओर भागनेके लिए स्थान न था। सारी नदिया प्रभुके लोगोंसे घिरी है। काजी प्राण-भयसे शङ्कित होकर, साँपके भयसे जैसे चूहा बिलमें भागता है,उसी प्रकार घरके अन्तःपुरकी तरफ भागा।

प्रभुके कीर्तन-सैन्यदलने काजीके गृह-प्राङ्गणपर घेरा डाल दिया।कीर्तन-दलके अधिपति सेनापतियोंने सारी घाटीपर अधिकार कर लिया।

यवन-सैन्य प्राण-भयसे अपनी पगड़ी फेंककर हिन्दुओंमें मिलकर हरि-संकीर्तनमें जुट गये। जिसके दाढ़ी थी, वह मुँह नीचा करके नाचने लगा, उसने सिर ऊपर नहीं उठाया। उनको युद्ध करनेका साहस नहीं हुआ। कोटि-कोटि जन-सिंधुकी तरङ्गमें यवन-सेनाका कहीं पता न लगा। काजीने जब देखा कि उनके सैनिक लौट नहीं रहे हैं तो वह भयसे अन्तःपुरमें जाकर छिप गया।

काजीके घर-द्वारपर प्रभुके कीर्तन-सैनिकोंने घेरा डाल दिया। संकीर्तन-यज्ञेश्वर प्रभु आकर कीर्तन-रण-वेषमें काजीके द्वारपर खड़े हो गये। क्रोधावेगमें उन्मत्त होकर वे हुंकार-गर्जन करते हुए बोले—"अरे! काजी बेटा कहाँ है? उसको झट ले आओ! मैं आज उसका सिर उड़ा दूँगा। सब लोकोंको उसी प्रकार यवन-शून्य बना दूँगा, जिस प्रकार मैंने कालयवनको मारा था।"

काजी द्वार बन्द करके घरमें छिपा था। बाहर क्या काण्ड हो रहा है, इसकी उसे खबरतक न थी। प्रभुके आदेशको उल्लङ्घन करनेकी शक्ति किसमें थी?

आदेश पाते ही मतवाले होकर लोगोंने धावा बोल दिया। किसीने आमकी तो किसीने कटहलकी डाली तोड़-मरोड़ डाली, किसीने केलेका वन तहस-नहस कर दिया और हरि-ध्वनि करने लगे। बहुत-से लोग फुलवाड़ीमें घुसकर पौधे उखाड़ने लगे। सारा बाग-बगीचा छिन्न-भिन्न कर डाला और वे हरि-ध्वनि करते हुए नाचने लगे।

प्रभुने क्रोधमें आज महारुद्रावतार धारण किया है। वे देखनेमें मानो महाकालरूप लगते हैं। क्रोधाविष्ट प्रभुने भगवान्-भावमें वज्रगम्भीर नादमें आदेश दिया—"घरको घेरकर चारों ओरसे घरमें आग लगा दो, जिससे काजी अपने सब गणोंके सहित जल मरे। देखूँ, आज उसका राजा मेरा क्या बिगाड़ता है और कौन उसको बचाता है। यम,काल, मृत्यु-सब मेरे सेवक हैं। मेरे दृष्टिपातसे ही सबको प्रकाश प्राप्त होता है। संकीर्तनके लिए ही मेरा अवतार है। संकीर्तनका विरोध करनेवाले पापियोंका मैं संहार करूँगा। यदि तपस्वी, संन्यासी, ज्ञानी, योगी जो भी कीर्तन नहीं करेंगे, उन सबका भी मैं संहार कर डालूँगा।"

महारुद्रावतार प्रभु भगवान्-भावमें ये सारी बातें कर गये। कलियुगावतारने कलिके जीवोंको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

युगधर्मकी शिक्षा दी, हरि-संकीर्तनका माहात्म्य प्रकट किया और संकीर्तन-विरोधी पाखण्डियोंको सतर्क कर दिया।

प्रभुकी महारुद्रावतार-श्रीमूर्ति देखकर भक्तोंके मनमें बड़ा भय हुआ। वे प्रभुके क्रोधकी शान्तिके लिए अपने गलेमें वस्त्र डालकर एक-एक करके उनके चरणोंमें जा गिरे और कीर्तन बंद करके ऊर्ध्वबाहु होकर महाकाल-मूर्ति प्रभुका स्तवन करने लगे। इनमें श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु और श्रीवास आदि सब भक्तवृन्द हैं। भक्तोके भगवान् श्रीगौराङ्गप्रभुने भक्तोंके मुखसे स्तुति सुनकर अपने महाकालभावको संवरण किया। अब उनके श्रीवदनपर हँसी दिखलायी दी। करुणासे भरे कमल-लोचनमें झर-झर अश्रुप्रवाह दीख पड़ा। प्रभुकी प्रशान्त मूर्तिका दर्शन करके क्रोधान्वित लाखों मनुष्योंने शान्तभाव धारण किया, सब स्थिर होकर प्रभुकी अपरूप-रूप-सुधाका पान करने लगे।

काजीसे मिलन और वार्तालाप

प्रभु क्रोध-संवरण करके अपने गणोंके साथ काजीके बाहरी दालानमें बैठे। अब वह नृत्य-विलास न रहा, प्रेमानन्दमें उन्मत्त भाव न रहा; प्रभुने वे सारे भाव संवरण कर लिये हैं। परम पण्डितके समान गम्भीर भावसे अन्तरङ्ग भक्तोंके साथ काजीके घरमें बैठकर कतिपय भव्य पुरुषोंके द्वारा अन्तःपुरसे उन्होंने काजीको बुलवाया।

काजीके मनमें बड़ा भय था कि आज सारे हिन्दू मिलकर मुझे मार डालेंगे; क्योंकि वह जानता था कि उसने हिन्दुओंके साथ बड़ा अत्याचार किया है। उसी अत्याचारसे पीड़ित होकर हिन्दुओंने उसके घरको घेर लिया है। अब उसको जीनेकी आशा नहीं रही है। काजीने जब सुना कि निमाईपण्डित उसको बुला रहे हैं, तब उसके मनमें साहस हुआ; क्योंकि वह जानता था कि निमाईपण्डित कभी किसीका अनिष्ट नहीं करते और इस समय अब वैसा गोलमाल भी नहीं है। वह डरते-डरते प्रभुके सामने आया और दूरहीसे सिर नवाकर आदरपूर्वक सलाम किया तथा एक ओर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। कृपानिधि प्रभुने उसको सम्मान करके पास बैठाया।

हमारे चतुर-चूड़ामणि प्रभुने पहले कौतुकपूर्वक हँसते-हँसते काजीसे पूछा—"काजी साहब ! मैं आज आपके घर अतिथिके रूपमें आया हूँ और आप हैं कि घरमें छिपे बैठे हैं, यह कैसी बात है ? यह कौन धर्म है ? ऐसी भद्रता तो मैंने कहीं नहीं देखी ?"

काजी प्राणके भयसे काँप रहा था। प्रभुके श्रीमुखकी हँसी देखकर और उनके श्रीमुखकी आश्वासन-वाणी सुनकर काजीके देहमें मानो प्राण आ गये। प्रभुके प्रशस्त मुख-चन्द्रकी ओर देखकर और उनकी सुधामयी वाणी सुनकर काजी बहुत ही चकित और प्रसन्न हुआ। उसने सोचा—"निमाईपण्डितका इतना क्रोध, दर्प और अहंकार कहाँ चला गया ? क्रोधका तो चिह्न भी नहीं दीखता।" इतना बड़ा काण्ड काजीको स्वप्नके समान जान पड़ा। प्रभुकी अपरूप-रूप-राशिको देखकर, उनके श्रीमुखकी सुधामयी वाणी सुनकर चाँद काजी श्रीगौराङ्गके चरणोंमें आकृष्ट हुआ। प्रभुने कृपा करके उसको अपने चरण-कमलमें आकर्षित किया।

प्रभुने कौतुकपूर्वक काजीसे जो कुछ कहा, उससे उसका कठिन हृदय द्रवित हो गया। अब काजीको भय नहीं रहा; क्योंकि प्रभुकी शान्तमूर्ति देखकर, उनके श्रीमुखके मधुर वचन सुनकर वह आत्मस्थ हो गया था। प्रभुकी बातका उत्तर देते हुए उसने नम्रतापूर्वक कहा—"निमाईपण्डित !

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम क्रुद्ध होकर मेरे घर आये, इसी कारण मैं भयसे घरमें छिप रहा। तुमलोगोंके कीर्तनमें बाधा देकर मैं तुम सबलोगोंका शत्रु हो गया हूँ। तुमको जब शान्त देखा, तुम्हारे लोगोंको जब स्थिर देखा, तुमने जब बुला भेजा तो मैं तुम्हारे पास आया। मेरा आज बड़ा सौभाग्य है कि तुम्हारे समान अतिथि पाया। मैं गाँवके सम्बन्धसे तुम्हारा मामा हूँ, तुम मेरे भानजे हो; क्योंकि तुम्हारे नाना नीलाम्बर चक्रवर्ती गाँवके सम्बन्धसे मेरे चाचा लगते थे। देह-सम्बन्धसे ग्राम-सम्बन्ध बड़ा होता है। मामाके अपराधपर भानजेको ध्यान नहीं देना चाहिये और भानजेके क्रोध और दोषको मामाको सहन करना पड़ता है। तुम मुझे क्षमा करके अपना बना लो! मेरा यह सब घर-द्वार तुम्हारा है; मुझको भी अपना समझो!"

काजीकी इस प्रकारकी सरल भावकी दैन्योक्ति सुनकर प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। वे काजीकी बात सुनकर हँसने लगे। काजीके साथ प्रभुकी जो यह कथा-वार्ता हुई, इसका गूढ़ मर्म है, जिसे दूसरा कोई न समझ सका। काजीने कहा—"मैं तुम्हारा हूँ"—इस बातके द्वारा उन्होंने पूर्वलीलाका संकेत दिया। कंस श्रीकृष्णके मामा थे। शत्रुभावमें श्रीकृष्णका भजन करके उनके हाथसे मृत्युको प्राप्त होकर उनका उद्धार हुआ था। श्रीगौराङ्ग-अवतारकी काजी-उद्धार-लीला और श्रीकृष्ण-अवतारकी कंस-वध-लीला एक वस्तु है। चाँद काजी शत्रुभावमें श्रीगौराङ्गका भजन करता था। संकीर्तन-विरोधी होकर उसने अपने शत्रुभावके भजनकी समाप्ति की। वह शत्रुभावमें श्रीगौर-भगवान्‌का कृपापात्र बना।

प्रभुने काजीसे कहा—"देखिये काजी साहब! आपसे दो प्रश्न करनेके लिए मैं आपके घर आया हूँ। इनका ठीक-ठीक उत्तर देंगे।" काजीने उत्तर दिया—"आप जो आज्ञा देंगे, मैं वही करूँगा।" प्रभुने तब काजीसे पूछा—"गायका दूध पिया जाता है, अतएव गाय हुई माता। वृषभ अन्न उपजाता है, अतः वह हुआ पिता। पिता-माताको मारकर खाना कौन-सा धर्म है?" (चै. च. आ. १७.१४७,१४८)

काजीने उत्तर दिया—"जैसे वेद-पुराण तुम्हारे शास्त्र हैं, वैसे ही हमारा शास्त्र कुरान है। कुरानमें भी प्रवृत्ति और निवृत्ति-मार्ग हैं। निवृत्ति-मार्गमें जीवमात्रकी हिंसा वर्जित है। प्रवृत्ति-मार्गमें गोवधका विधान है। शास्त्राज्ञासे वध करनेमें पापका भय नहीं है।" तुम्हारे वेदोंमें भी गो-वधकी बात मिलती है, अतएव बड़े-बड़े मुनिलोग गो-वध किया करते थे।

प्रभुने उत्तर दिया—"वेदमें गो-वधका निषेध है, अतएव हिन्दूमात्र गो-वध नहीं करते। जो जीवन दे सकता है, वही प्राणीको मार सकता है, ऐसी वेद-पुराणमें आज्ञा मिलती है। इसलिये यह वध नहीं होता था, बल्कि उपकार ही होता था। कलिकालमें ब्राह्मणोंमें वह शक्ति नहीं रही, इसलिये अब गौ वध नहीं करते। तुमलोग जीवन तो दे नहीं सकते, केवल वध करते हो, इसलिए तुम लोगोंका नरकसे निस्तार नहीं होगा। गायके शरीरमें जितने रोम हैं, उतने हजार वर्षोंतक गो-वध करनेवालेको नरकमें पचना पड़ता है तुम्हारे शास्त्र-निर्माताको भ्रम हो गया। शास्त्रके मर्मको समझे बिना ऐसा विधान बना दिया।"

(चै. भा. आ. १७.१५३–१६०)

प्रभुके श्रीमुखसे इस प्रकार युक्तिपूर्ण शास्त्र-चर्चा सुनकर चाँद काजीके मुँहसे फिर बात न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निकली। उन्होंने पराजय स्वीकार करते हुए कहा—"निमाईपण्डित ! आपने जो कहा, वही सत्य है। हमारे शास्त्र आधुनिक हैं, यह मैं जानता हूँ; परन्तु जातिके अनुसार हमको यही मानकर चलना है।"

प्रभु काजीकी बात सुनकर हँसने लगे। काजीने कपट छोड़कर मनकी बात प्रभुके सामने प्रकट की, इससे प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ।

अब प्रभुने काजीसे दूसरा प्रश्न किया। उन्होने हँसते हुए पूछा—"काजी साहब ! आपसे मैं एक और बात पूछूँगा। आप ठीक उत्तर देंगे; किसी प्रकारका छल न करेंगे। आपके इस नगरमें जो इतना नृत्य-गीत-कोलाहल होता है, हरि-संकीर्तन-की उच्च ध्वनिसे नदियानगर कम्पित होता है—आप यवन-राजके प्रतिनिधि है, हिन्दूधर्ममें बाधा देनेके अधिकारी हैं, आप इस सब गड़बड़ीको दूर क्यों नहीं करते ?" सर्वज्ञ प्रभु सब जानते हैं, परन्तु वे चतुर-चूड़ामणि हैं। छलपूर्वक परीक्षा लेनेके लिए उन्होंने चाँद काजीसे यह प्रश्न किया। काजी-को छल करनेसे मना किया; परन्तु प्रभुने स्वयं उनके साथ इस प्रकार छल किया।

काजीने प्रभुकी बात सुनकर प्रसन्नमुखसे उत्तर दिया—"निमाईपण्डित ! आपको सब-कोई 'गौर-हरि' कहकर पुकारते हैं। आपका यह नाम मुझको बहुत अच्छा लगता है। आज मैं अपने मनकी बात आपसे कहूँगा। देखो गौरहरि ! जरा एकान्तमें चलो, आपसे सारी बातें मैं कहूँ।" प्रभुने कहा—"ये सबलोग मेरे अन्तरङ्ग भक्त हैं, एकान्त निजजन हैं। इनके सामने हमारी कोई बात छिपानेयोग्य नहीं है। आप सबके सामने स्पष्टतः निष्कपटभावसे सारी बातें हमसे कहें।" तब काजी सबके सामने अपने मनकी बात कहने लगा। यह कथा बड़ी ही अद्‌भुत है। चतुर-चूड़ामणि प्रभुने काजीके मुखसे युगधर्म हरि-संकीर्तन-माहात्म्य प्रकट करानेके अभिप्रायसे यह लीलारङ्ग प्रकट किया।

काजी कहने लगा—"जब मैंने हिन्दुओंके घर-पर जाकर मृदङ्ग तोड़कर कीर्तनके लिए मना किया, उसी रातको एक भयानक सिंह नरसिंहरूपमें गर्जना करता हुआ मुझ सोये हुएपर चढ़ बैठा और दाँत कड़मड़ाकर अट्टहास करने लगा। मेरी छातीपर नख लगाकर घोर स्वरमें कहने लगा-'मृदङ्ग फोड़नेका बदला लेनेको मैं तुम्हारा हृदय चीर डालूँगा' तुम मेरे कीर्तनका विरोध करते हो, तुम्हारा नाश कर डालूँगा।' मेरी आँख मुँद गयी, बड़ा डर लगने लगा। मुझे डरा हुआ देखकर सिंह सदय होकर बोला—'तुमको शिक्षा देनेके लिए ही मैंने ऐसा किया हैं।' उसने और कोई उत्पात नहीं किया और मुझे क्षमा करके मेरे प्राण नहीं लिये। उसने कहा कि फिर कभी ऐसा उत्पात किया तो तुम्हारे वंशसहित तुम्हारा नाश कर डालूंगा।"

यह बात कहते-कहते काजीके दोनों नेत्रोंसे झर-झर अश्रुधारा बहने लगी। रोते-रोते प्रभुके पास आकर उन्होंने सबके सामने अपना वक्षःस्थल खोलकर दिखला दिया। उन नरसिंहका नख-चिह्न अब भी उनके हृदयपर अङ्कित था। प्रभु यह देखकर मृदु-मधुर मुस्कुराये। सबलोग आश्चर्य-चकित हो गये। काजीने यह बात पहले किसीसे नहीं कही थी। प्रभुके सामने पहले-पहल मनकी बात खोलकर रख दी।

इतनी बात कहकर काजी पुनः कहने लगा—"उसी दिन मेरा एक प्यादा आया और मुझसे बोला—'वह कीर्तन बंद कराने गया था। कहींसे उल्कापातके समान आग अचानक आकर उसकी दाढ़ी-मूँछमें लगी और उसे जला डाला। मुँहमें दग्ध-व्रण कर दिया।' उसने मुझको यह सब दिखलाया। मैंने भयभीत होकर उसको मना कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दिया कि अब कीर्तनका निषेध मत करना। उसके बाद कुछ मेरे जाति-भाई आये और बोले—'नगरमें हिंदूधर्मका बड़ा प्रताप बढ़ रहा है। चारों ओर केवल हरिध्वनि हो रही है। 'कृष्ण-कृष्ण' बोलते हुए हिंदू लोग सड़कपर चलने लगे हैं, चारों ओर केवल 'हरि-बोल' शब्द होता है. नगरमें कान बहरा हो जाता है। बादशाहको यह समाचार मिले तो बहुत मुश्किल कर देंगे।' मैंने उनसे कहा 'हिंदूका धर्म है—'हरि-बोल' बोलना। तुम मुसलमान होकर कैसे हिंदूके देवताका नाम ले रहे हो?' उन्होंने उत्तर दिया—"हिंदुओंके नाम होते हैं–रामदास, हरिदास, कृष्णदास। हम उनका नाम लेकर हंसी उड़ाते हैं और वह हरिनाम हमारी जिह्वासे दूर नहीं हो रहा है। न जाने, हिंदू कौन-सा भूत-मन्त्र जानते हैं कि हम किसी भी उपायसे हरिनाम नहीं छोड़ पाते।"

"मैंने यह सुनकर उनको तो कीर्तनका विरोध करनेसे मनाकर दिया; लेकिन उसके बाद आपके जात-भाई हिंदू चार-पाँच आदमियोंने आकर आपके विरुद्ध नालिश की। उन्होंने कहा—'निमाईपण्डित पहले तो बहुत अच्छा था, गयासे लौटनेके वाद उसका विपरीत आचरण हो गया है। मङ्गल-चण्डीका नृत्य-गीत-वाद्यके साथ रात्रि-जागरण तो योग्य आचरण है, लेकिन ऐसे ही करताली देकर मृदङ्गके साथ जोर-जोरसे गाना-नाचना बहुत बुरा है। पता नहीं, ये लोग क्या खाकर मत्त होकर सारी रात नाचते-गाते हैं। हिंदू-धर्ममें ईश्वरका नाम-महामन्त्र है; लेकिन सबके सुननेसे उस मन्त्र-की शक्तिका नाश हो जाता है। और ये लोग तो 'गौरहरि' बोलकर चिल्लाते, नाचते, गाते हैं। इससे सारा नवद्वीप उजड़ जायगा। आप गाँवके मालिक हैं, सबलोग आपकी प्रजा है; आप निमाई-को बुलाकर उसको डाँटिये'।"

काजीने कहा—"मैंने उनलोगोंको तो मधुर वचनोंद्वारा समझा-बुझाकर विदा किया; परन्तु हमारे मनमें दृढ़ विश्वास हो गया है कि आप ही हिंदुओंके नारायण हैं।" (चै. च. आ. १७.२०८)

इतनी देरके बाद काजीकी बात समाप्त हुई। काजीने अपने मनमें कोई बात छिपायी नहीं। वे प्रभुको हिंदुओंके पूर्णब्रह्म सनातनके रूपमें विश्वास करने लगे थे, अब उसे खोलकर सबके सामने प्रकट कर दिया।

सर्वज्ञ प्रभु सब-कुछ जानते हैं; वे चतुर-चूड़ामणि हैं। काजीको लक्ष्य करके उनके द्वारा कीर्तनके माहात्म्यका उन्होंने प्रचार किया, नाम-माहात्म्यको प्रकट किया। हरि, कृष्ण, नारायण-ये तीन नाम बारंबार यवन काजीके मुखसे कहलाकर उसके सारे पापोंको छुड़ा दिया। अब प्रभुके मनमें परम आनन्द हुआ। काजीके मुखसे हरि, कृष्ण, नारायण-नामका श्रवण करके प्रभुके प्राणोंमें बड़ा सुख प्राप्त हुआ। वे यवन काजीका अङ्ग-स्पर्श करके हँसते हुए बोले—

तोमार मुखे कृष्ण नाम ए बड़ विचित्र।
पाप क्षय गेला हैला परम पवित्र॥
हरि कृष्ण नारायण लैले तिन नाम।
बड़ भाग्यवान् तुमि बड़ पुण्यवान्॥

चै. च. आ. १७.२१०,२११

प्रभुके श्रीअङ्गके स्पर्शसे काजीकी उस समय क्या दशा हुई? काजी प्रेमानन्दमें आकुल होकर रो पड़ा। उसकी दोनों आँखोंसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा बहने लगी। वह प्रभुके श्रीचरणोंका स्पर्शकर भूतलपर लोट गया और बोला—

तोमार प्रसादे मोर घूचिल कुमति।
एइ कृपा करु जेन तोमाते रहु भक्ति॥

चै. च. आ. १७.२१३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काजी नदियाका राजा म्लेच्छधर्मावलम्बी प्रभुका परम शत्रु था। उसने आज सबके सामने प्रभुके श्रीचरणोंको पकड़कर जो आत्मनिवेदन किया, उसकी अपेक्षा उच्चभावका आत्म-निवेदन दूसरा नहीं हो सकता। काजीने कहा—"आप साक्षात् भगवान् हैं। आपकी अयाचित कृपाप्राप्तिसे मेरी कुमति दूर हो गयी है। आप मेरे ऊपर कृपा करेंगे, यह स्वप्नमें भी मैंने नहीं सोचा था। अब आपके चरणोंमें मेरा यही निवेदन है कि जब आपने अपने गुणसे कृपा की है तो यह वर दीजिये, जिससे आपके चरणोंमें सदा हमारी भक्ति रहे!"

मुसलमान काजीकी जिह्वापर शुद्ध वाणी आविर्भूत हुई। एकान्तिक भक्तके समान यवन-राजप्रतिनिधि चाँद काजीने अपने अभीष्ट देवके सामने अपना अभिमत वर माँगा। काजी उस समय यवन न रह गया था; उसकी सारी पाप-राशि दग्ध हो गयी थी। प्रभुके श्रीचरणोंके स्पर्शसे वह पवित्र हो गया, वैष्णव हो गया। प्रभुके चरणोंमें काजीका आत्मनिवेदन यवनका आत्म-निवेदन न था, वह वैष्णवका आत्मनिवेदन था।

प्रभुने काजीको हाथ पकड़कर उठाया, परम आदरपूर्वक पुनः निकट बैठाया। काजी प्रभुके करुणापूर्ण चन्द्रवदनकी ओर देख रहा था और अजस्र आँसू बहा रहा था। अत्यन्त सम्मानपूर्वक प्रभुने उसको कहा—"काजी साहब! आपसे मेरी एक भिक्षा है। नदियामें अब आप संकीर्तनमें बाधा न दें।" तब काजीने हाथ जोड़कर प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"हे प्रभो! यह बात कहकर आप मुझे लज्जित न करें। मैंने जो कुकर्म किया है, उसके अनुतापसे दिन-रात मैं दग्ध होता रहता हूँ। बाप रे बाप! अब मैं ऐसा कुकर्म करूँगा? प्राण-रहते नहीं कर सकता। किसीको करने भी नहीं दूँगा। मैं अपनी जातिके लोगोंको कसम देकर मना कर दूँगा कि वे कोई कभी कीर्तनमें बाधा न डालें।"

काजीके मुखसे यह बात सुनकर प्रभु बहुत आनन्दित हुए। वे उच्च स्वरसे 'हरि-हरि' कहकर काजीके घरसे उठ खड़े हुए। भक्तवृन्द प्रेमानन्दमें उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे।

काजीके बाहरी दालानमें खड़े होकर प्रभु पुनः नृत्य-कीर्तन करने लगे। सारे भक्तगण पुनः कीर्तनानन्दमें मग्न हो गये। काजी भी उनके साथ ही 'हरि बोल, हरि बोल' कहते हुए भक्तवृन्दके साथ कीर्तनमें योग देकर प्रभुके साथ चले। प्रभुने उसको मीठे वचनोंसे संतुष्ट करके घर जानेके लिए कहा।

श्रीकृष्णावतारमें कंस-उद्धार और श्रीगौराङ्ग-अवतारमें काजी-उद्धार-लीला-दोनों अपरूप लीलाएँ हैं। श्रीकृष्ण-भगवान्ने अपने मामा कंस महाराजको जानसे मार डाला था, श्रीगौर-भगवान्ने अपने ग्राम-सम्बन्धके मामा चाँद काजीको गोलोककी सम्पत्ति प्रेमधन-दान करके उनके यवनत्व और आसुरी भावका नाश करके उनका उद्धार किया। उनका फिर यवनाचार-व्यवहार कुछ न रहा। चाँद काजीके वंशके लोग गौर-भक्त हैं। नदियाके मायापुरमें आज भी चाँद काजीका समाधि-स्थल विद्यमान् है। गौर-भक्तगण उसका दर्शन करने जाते हैं और इस पवित्र स्थानके दर्शनकर अपनेको धन्य मानते हैं। चाँद काजीकी उद्धार-कथा सुननेसे सारे अपराध नष्ट हो जाते हैं, ऐसा कविराज गोस्वामीने कहा है—

एइ मते काजीरे प्रभु करिला प्रसाद।
इहा जेइ शुने तार खण्डे अपराध॥

चै. च. आ. १७.२१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

काजीके घरसे प्रत्यावर्तन और श्रीधरके घर आगमन

पुनः उसी प्रकार कीर्तन-दल लेकर प्रभु कीर्तन करते-करते काजीके घरसे दूसरे रास्ते नदियानगरके भीतर आये। साथमें उसी प्रकार असंख्य जनसंघट्ट था, वैसी ही आलोक-मालिका थी। रात प्रायः डेढ़ पहर बीत चुकी थी। काजी-दमन हो गया, नदियानगर निष्कण्टक हो गया, प्रेममय संकीर्तनमें बाधा देनेवाला कोई न रहा—इसी आनन्दमें प्रभुके भक्तवृन्द तथा नदियावासी सज्जनवृन्द शचीनन्दनका जय-जयकार करने लगे। सारी नदियाके लोगोंके मनमें आज बड़ा आनन्द है। वे लोग आनन्दसे प्रभुके उद्देश्यसे 'जय कृष्ण मुकुन्द मुरारी बनमाली' कहकर कीर्तन करने लगे और हाथसे ताली देकर नृत्य करने लगे।

नदियामें घर-घर आनन्दकी कोलाहल-ध्वनि होने लगी—यह देखकर पाखण्डीलोगोंके मनमें विशेष कष्ट हुआ। उनका हृदय चूर-चूर हो गया; क्योंकि उन्होंने बड़ी आशा रखकर काजीके पास जाकर निमाईपण्डितके विरुद्ध नालिश की थी और यवन काजीको 'ग्रामका ठाकुर' कहकर सम्बोधन करके उनके शरणापन्न हुए थे। अतएव अब काजी स्वयं निमाईपण्डितका चेला बन गया तथा उसने हिंदुओंके धर्म, संकीर्तनमें योग दिया, यह देखकर उनका मन बड़ा खिन्न हो गया—नदियाके वैष्णवोंकी कीर्ति देखकर उनको आश्चर्य हुआ।

प्रभु कीर्तन करते-करते दल-बलके साथ शङ्ख-वणिकोंके मुहल्लेमें जा पहुँचे। हरि-हरि-ध्वनिसे नदियाका गगन पूर्ण हो गया। सबलोग पुष्प-वृष्टि करने लगे। पुर-नारियाँ शुभ हुलूध्वनि करने लगीं। नदियाका पथ पुष्पमय हो गया। नदियानगर आज आलोक-मालासे विभूषित है। नवद्वीपचन्द्र आज नदियाके राज-प्रतिनिधि चाँद काजीको दमन करके घर लौट रहे हैं। नदियावासी नर-नारी आनन्दमें उन्मत्त होकर पुष्पवृष्टि कर रहे हैं और प्रभु उसी पुष्पमय पथसे मधुर नृत्य करते हुए जा रहे हैं।

शङ्ख-वणिकोंके मुहल्लेको पार करके प्रभु जुलाहोंके मुहल्लेमें जा पहुँचे। तत्कालीन नवद्वीपका एक-एक मुहल्ला एक-एक बृहत् बाजार था। आधुनिक कलकत्तेके समान लाखों आदमी एक-एक मुहल्लेमें रहते थे। जुलाहोंने शङ्ख बेचनेवालोंके समान आनन्दमें उन्मत्त होकर कीर्तनमें योग दिया। **'जय कृष्ण मुकुन्द मुरारि बनमाली'** कहकर कीर्तन शुरू कर दिया। उसी प्रकार रास्तेमें पुष्प-वृष्टि होने लगी। सबके मुँहमें मधुर हरिनाम था। इससे प्रभुके मनमें आज बड़ा आनन्द था। वे प्रेमानन्दमें नृत्य कर रहे और मधुर-मधुर मुस्कुरा रहे थे।

अन्तमें दो-पहर रातके समय प्रभु दल-बलके साथ नाचते-नाचते खोला बेचनेवाले श्रीधरकी कुटियापर जा पहुँचे। सड़कके किनारे श्रीधरकी कुटिया थी। प्रभु बीच रास्तेमें कीर्तन करते-करते श्रीधरके आँगनमें घुस गये। दरिद्र ब्राह्मणके लिये एकमात्र टूटा-फूटा घरही सहारा था। द्वारपर सैकड़ों छेदवाला एक लोहेका जलपात्र पड़ा था। उसमें सैकड़ों जगह चिप्पी जोड़कर वे जल रखते थे। उसमें बाहरी व्यवहारके लिए अपवित्र जल था। इतनी रातको प्रभुको घरके भीतर देखकर श्रीधर घबरा गये। प्रभुकी दृष्टि पड़ी आँगनमें उसी जलपात्रके ऊपर। उन्होंने भक्त-महिमा और भक्त-प्रेम समझानेके लिए उस लोहेके पात्रको श्रीहस्तसे उठाकर उससे जल-पान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर लिया; क्योंकि वे कीर्तनसे थक गये थे, उनको प्यास लग गयी थी।

प्रभुने बाहरी अपवित्र जलको पान किया, यह देखकर श्रीधरके दुःखकी सीमा न रही। वे हाय-हाय करने लगे और 'मैं मरा मैं, मरा' कहकर चिल्लाते हुए मूर्छित होकर भूतलपर गिर पड़े। भक्तवत्सल प्रभुने हँसते हुए श्रीधरके अङ्गमें पद्म-हस्त लगाकर उनको होशमें लाकर मधुर शब्दोंमें कहा—"आज मेरा शरीर शुद्ध हो गया, श्रीधरका जल-पान करके आज मेरा जीवन सार्थक हो गया, कृष्णमें दृढ़ मेरी भक्ति हो गयी।" इतनी बात कहते हुए प्रभु प्रेमानन्दमें आकुल होकर रो पड़े।

वैष्णवका जल-पान करनेपर विष्णुभक्ति होती है, यह समझानेके लिए धर्मरक्षक प्रभुने स्वयं आचरण करके शास्त्र-वचनकी मर्यादाकी रक्षा की। पद्मपुराणमें लिखा है—

प्रार्थयेद् वैष्णवस्यान्नं प्रयत्नेन विचक्षणः।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं तदभावे जलं पिबेत्॥

अर्थात्—विचक्षण पुरुष समस्त पापोंसे निष्पाप होकर पवित्र होनेकी इच्छासे श्रद्धा और यत्नपूर्वक वैष्णवान्नकी याचना करे। उसके अभावमें वैष्णवका जल-पान करना चाहिये। प्रभुने इस शास्त्रवचनकी मर्यादाकी रक्षा करके भक्तवृन्दको वैष्णव-माहात्म्यकी शिक्षा दी।

प्रभुके इस अपूर्व भक्तवात्सल्यभावको देखकर सब भक्तवृन्दमें आनन्द-क्रन्दन होने लगा। नित्यानन्द, गदाधर, अद्वैताचार्य, श्रीवास, हरिदास, गङ्गादास, वक्त्रेश्वर, मुरारि, मुकुन्द, चन्द्रशेखर, गोविन्द, गोविन्दानन्द, श्रीगर्भ, काशीश्वर, जगदानन्द, जगदीश, गोपीनाथ, शुक्लाम्बर—इन सबकी आँखोंसे आनन्दाश्रु बहने लगे।

श्रीधरके कुटीरमें आज जो अपूर्व प्रेमभक्तिका प्रकाश हुआ, जो अपूर्व आनन्दका स्रोत प्रवाहित हुआ, उसे पहले कभी किसीने नहीं देखा था और न कभी किसीने सुना ही था। ब्रह्मादि देवगण इस अभूतपूर्व आनन्दरसकी कामना करके भी इसे प्राप्त नहीं कर पाते। श्रीगौर-भगवान्‌ने इस कार्यके द्वारा अपने भक्त-वात्सल्यकी सीमा प्रदर्शित की है। श्रीधरके लौहपात्रका जल अशुद्ध था; परमार्थ-भावमें जब प्रभुने उसको ही पान करनेकी इच्छा प्रकट की, तब वह शुद्ध अमृत हो गया।

वैष्णवकी सारी वस्तुएं परमार्थभावमें निर्मल होती हैं, यही प्रभुने इस लीलारङ्गद्वारा भक्तोंको बताया है।

प्रभुके भक्तवात्सल्य-भावको देखकर सब भक्तगण प्रेमानन्दमें आकुल होकर रो पड़े। रोते-रोते कितने ही श्रीधरके आँगनकी धूलमें लोटने लगे। श्रीधर भी दाँतों-तले तृण दबाकर अति दीन भावसे रोते हुए बोले—"हाय-हाय! त्रिभुवन नाथने कैसा जल-पान कर लिया!"

प्रभु श्रीधरका जल-पान करके प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर मधुर नृत्य कर रहे हैं; चारों ओरसे अन्तरङ्ग भक्तगण उनके साथ नृत्य कर रहे हैं। श्रीधर भी उनके साथ ऊर्ध्वबाहु होकर उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे और नृत्य करने लगे। उनकी आँखोंसे प्रेमनदी प्रवाहित हो रही थी। प्रभुके दोनों ओर श्रीनित्यानन्दप्रभु और गदाधर-पण्डित उनको घेरकर मधुर नृत्य कर रहे हैं।

श्रीधरका भाग्य देखकर भक्तवृन्द उनको धन्य-धन्य कहने लगे—

खोला-बेंचा श्रीधरेर देख भाग्य सीमा।
ब्रह्मा शिव काँदे जार देखिया महिमा॥

चै. भा. म. २३.४९१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने यथार्थ ही कहा है कि धन और पाण्डित्यसे श्रीकृष्ण नहीं मिलते; वे तो केवल भक्तिके वशमें हैं—

उन्होंने और भी लिखा है—

धन नाइ जन नाइ नाहिक पाण्डित्य।
के चिनिबे ए सकल चैतन्येर भृत्य॥

चै. भा. म. २३.४९२

जल-पानसे श्रीधरपर अनुग्रह करके श्रीगौर-भगवान् कीर्तनानन्दमें नृत्य करते-करते नदियाके भीतर होकर अपने मन्दिरकी ओर चले। अबतक नदियाके सबलोग उनके साथ थे। उस दिन रातमें प्रभु सारी नदियामें कीर्तनानन्दमें नाचते हुए घूमते रहे। गादि गाछा, परडाङ्गा आदि स्थानोंमें भी वे गये।

श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावन-दास ठाकुरने श्रीनित्यानन्दप्रभुके मुखसे इस महासंकीर्तन-लीलाकी कथा सुनकर श्रीचैतन्य-भागवत-श्रीग्रन्थमें जो लिखा है, वही यहाँ वर्णन किया गया है। श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीने श्रीचैतन्यचरितामृत-श्रीग्रन्थमें इस लीलाके सम्बन्धमें जो लिपिबद्ध किया है, वह भी यहाँ संकलित है। कृपालु पाठकवृन्द ! इसे भी सूत्ररूपमें ग्रहण करेंगे। सर्वशक्तिमान् श्रीगौराङ्गप्रभुने एक रातमें जो किया, कोटि-कल्प-युगमें वह कोई नहीं कर सकता।

श्रीभगवान्का लीलारङ्ग इस प्रकार अलौकिक रूपमें प्रकट होता है। यह लीलारङ्ग तर्क और विचार-बुद्धिवाले कलुषित मनके गोचर नहीं होता।

प्रभु जब रातके तीसरे पहर स्वानुभवके आनन्दमें कीर्तन-विहार करके अपने घर लौटे, उस समय उनकी अपूर्व मदनमोहन नृत्य-विलासपूर्ण श्रीमूर्तिका दर्शन करके नदियाके स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध-युवा क्या कहने तथा करने लगे, इसे सुनिये—

केहो बोले शचीर चरणे नमस्कार।
हेन महापुरुष जन्मिल गर्भे जाँर॥
केहो बोले जगन्नाथ मिश्र पुण्यवन्त।
केहो बोले नदियार भाग्येर नाहि अन्त॥
एइ मत बलि सभे देय जयकार।
सर्वलोके हरि बइ ना बोलये आर॥
प्रभु देखि सर्वलोक दण्डवत् हैया।
पड़ये पुरुष स्त्रीये बालक लइया॥

चै. भा. म. २३.५०३—५०६

श्रीगौर-भगवान् सबके प्रति शुभ दृष्टिपात करके, कीर्तन-भङ्ग करके, भक्तवृन्दको बिदा करके अपने घर आये। भक्तवृन्दको एक-एक करके उन्होंने प्रेमालिङ्गन-प्रदान किया। नदियामें सब-लोगोंने देखा कि शचीनन्दन असम्भवको भी सम्भव कर सकते हैं; उनके भ्रूभङ्गसे जगत्का संहार हो सकता है, उनकी शुभ दृष्टिसे सारा अमङ्गल नष्ट हो जाता है। नदियाके ब्राह्मणकुमार शचीनन्दन सामान्य वस्तु नहीं हैं। वे त्रिलोकीके नाथ हैं, वे दुर्बलके सहायक हैं, दुर्जनको दण्ड देनेवाले हैं तथा दरिद्रके पिता हैं।

प्रभु कीर्तनसे श्रान्त हो गये हैं। गदाधर, नरहरि आदि भक्तवृन्द प्रभुकी सेवामें रह गये हैं। अन्यान्य भक्तवृन्द तथा नदियाके सबलोग अपने-अपने घर चले गये।

रात बीतनेके बाद प्रातःकाल लोगोंने देखा कि चाँद काजी नदियाके घाटपर गङ्गा-स्नान कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रहा है और मुखसे **'गौरहरि गौर हरि, कृष्ण कृष्ण' राम राम, नारायण'** आदि शब्द उच्चारण कर रहा है। वह सबके साथ अति नम्र भावसे मधुर बातचीत करता है। काजीका यह अद्‌भुत परिवर्तन देखकर सबलोगोंने यह निश्चय कर लिया कि निमाईपण्डित साक्षात् भगवान् हैं, उनके लिए कोई कार्य असाध्य नहीं है। उन्होंने मुसलमानको हिंदू बना दिया। अब श्रीश्रीगौरचन्द्र नदियाके राजा हो गये। सारे नदियावासी लोग अब निडर होकर युगधर्मका पालन करने लगे, और प्रभुको देखते ही प्रेमानन्दमें विभोर होकर हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे—

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ
संकीर्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ॥

उनचासवाँ अध्याय

विश्वरूप-प्रदर्शन-लीला

दुइ ठाकुरेर विश्वरूप दरशन।
इहा जे शुनये तारे मिले कृष्ण-धन॥

चै. भा. म. २४.७५

श्रीकृष्ण-भगवान्‌ने अर्जुनको विश्वरूप-दर्शन कराया था। नदियाके अवतार श्रीगौर-भगवान्‌ने श्रीनित्यानन्दप्रभु और श्रीअद्वैतप्रभुको इसी प्रकार अपने विराट् महामहिमामय विश्वरूपका दर्शन कराया था। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें प्रभुने अपने अन्तरङ्ग भक्तवृन्दको श्रीभगवान्‌के विविध ऐश्वर्य-रूप दिखलाये थे। महाप्रकाशलीलाके समय भक्तवृन्दने श्रीवासके आँगनमें विष्णु-सिंहासनके ऊपर समासीन शचीनन्दनका अपने-अपने अभीष्टदेव-के रूपमें दर्शन किया था। श्रीअद्वैतप्रभुने उनको नन्द-नन्दन श्रीकृष्णके रूपमें देखा था, मुरारिगुप्तने उनको सीतापति श्रीरामचन्द्रके रूपमें देखा था। दूसरे भक्तगणमें किसीने नरसिंहरूपमें, किसीने चतुर्भुज विष्णुरूपमें तथा किसीने राधाकृष्ण-युगल-रूपमें उनको देखा था। श्रीगौराङ्गप्रभुको महाजन-गणने सर्व-अवतारके अवतारी तथा सर्व-अवतार-सार कहा है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मत्स्य कूर्म नरसिंह वराह वामन।
रघुसिंह बौद्ध कल्कि श्रीनन्दनन्दन॥
एइ मत जत अवतार से सकल।
सब रूप हय प्रभु करि भाव छल॥

चै. भा. २५.१५४,१५५

भक्त-भावमें स्वयं आचरण करके भक्तजनको प्रभु धर्मकी शिक्षा देते हैं और भगवान्-भावमें उनके सामने अपने तत्त्वका प्रकाश करते हैं। भक्तवृन्द इससे प्रभुके प्रकृतभाव और तत्त्वको कुछ समझ नहीं पाते। कलिके प्रच्छन्न अवतार प्रच्छन्न-भावसे अपने ऐश्वर्यको दिखलाते हैं और सबको निषेध करते हैं कि यह बात किसीसे प्रकट न करना।

श्रीवासके आँगनमें प्रभुका कीर्तन-विलास-लीला-रसरङ्ग अब परिपूर्णभावमें परिपुष्ट हो गया है। प्रभुके भावके साथ भक्तोंके भावका सम्मिश्रण होनेसे अपूर्व रस-विकास होता है। रसमय रास-रसिक श्रीगौराङ्गसुन्दर श्रीवासके आँगनमें भक्तवृन्दके साथ नित्य रासलीला-रङ्ग करते हैं।

श्रीअद्वैतप्रभुको विश्वरूप-दर्शन

एक दिन श्रीअद्वैतप्रभु परम अनुरागके साथ श्रीवासके आँगनमें गोपीभावमें मधुर नृत्य कर रहे थे। प्रभुका मुखचन्द्र-दर्शन कर रहे थे और दाँतोंमें तृण लेकर बारंबार उनके चरणोंकी धूलिमें लोट-पोट करते थे। वे प्रेमानन्दमें विभोर थे और उनका बाह्य ज्ञान लुप्त हो गया था। अन्यान्य भक्तवृन्द उनको घेरकर नृत्य कर रहे थे। दोपहरतक श्रीअद्वैतप्रभु इसी प्रकार मधुर प्रेमनृत्य करनेके बाद थककर बैठ गये। उनके मनका आवेग और नृत्यावेश अभी शान्त नहीं हुआ था। वे पुनः उठकर नृत्य करने लगे। उस समय सबने मिलकर उन वृद्ध ब्राह्मणको पकड़ लिया और बहुत प्रयत्न करके उनको सुस्थिर किया। उनके सुस्थिर होनेपर श्रीवासपण्डित आदि भक्तगण स्नान करनेके लिए चले। श्रीअद्वैतप्रभु नहीं गये। वे अकेले श्रीवासके आँगनमें बैठे रहे।

जब सबलोग चले गये तो अद्वैतप्रभुका भाव-समुद्र पुनः उमड़ा। वे अकेले करुण-स्वरमें रोते हुए अत्यन्त आर्तभावमें श्रीवासके आँगनमें धूलमें लोटने लगे। उनके मुखसे केवल 'हा गौराङ्ग ! हा विश्वम्भर !! हा शचीनन्दन!!!' निकलता था। प्रभु अपने मन्दिरमें थे। भक्तवत्सल अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान्‌के कानोंमें भक्तोंकी करुण-क्रन्दन-ध्वनि पहुँची। वे अब स्थिर न रह सके, तत्काल श्रीवासके आँगनमें आये। प्रभु वृद्ध ब्राह्मणका हाथ पकड़कर विष्णुगृहमें ले जाकर बैठ गये और गृहका द्वार बंद कर दिया। अति मधुर शब्दोंमें प्रभुने उनसे पूछा—"आचार्य ! तुम क्या चाहते हो, बोलो !" श्रीअद्वैतप्रभुने रोते हुए प्रभुके चरणोंमें गिरकर उत्तर दिया—"प्रभो ! मैं तुमको चाहता हूँ। तुम्हीं सर्ववेदसार परमतत्त्व हो। तुम्हारे सिवा मैं और कुछ नहीं चाहता।" यह बात सुनकर प्रभु हँसते हुए बोले—"मैं तो आपके सामने ही रहता हूँ। आप और क्या चाहते हैं ?" श्रीअद्वैतप्रभुने पुनः निवेदन किया—"हे प्रभो ! तुमने जो कहा है, वह सब सत्य है। परन्तु मैं तुम्हारा कुछ वैभव देखना चाहता हूँ।" प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"आचार्य ! खुलकर बोलिये, आप क्या चाहते हैं ?" तब श्रीअद्वैतप्रभुने कहा—"हे प्रभो ! तुमने अर्जुनको अपने विराट्-रूपका दर्शन कराया था; यदि कृपा करके मुझे अपनी उसी महा-महिमामय विराट्-मूर्तिका एक बार दर्शन करा दें तो मैं कृतार्थ हो जाऊँ। मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम्हारी उस विश्वरूप-मूर्तिका एक बार दर्शन करूँ।" इतना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहते-कहते अद्वैतप्रभुने क्या देखा ? सुनिये—

बलिते अद्वैत मात्र देखे एक रथ।
चतुर्दिके सैन्य देखे महायुद्ध पथ॥
रथेर ऊपरे देखे श्यामाङ्ग-सुन्दर।
चतुर्भुज शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधर॥
अनन्त ब्रह्माण्ड रूप देखे सेइ क्षणे।
चन्द्र सूर्य सिंधु गिरि नदी उपवने॥
कोटि चक्षु बाहु मुख देखे पुनः पुनः।
सम्मुखे देखये स्तुति करये अर्जुन॥
महा अग्नि जेन ज्वले सकल वदन।
पोड़े जत पतङ्ग पाखण्ड दुष्टगण॥

चै. भा. म. २४४८—५२

श्रीअद्वैतप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌के महा-महिमामय विश्वरूपका दर्शन करके प्रेमानन्दमें अभिभूत होकर हाथ जोड़कर अर्जुनके समान प्रभुका श्रीमद्भगवद्गीतोक्त श्लोक (११. १५—३१) का पाठ करके स्तुति करने लगे। वे देखते हैं कि विश्व-ब्रह्माण्डकी समस्त सृष्ट वस्तुएँ—पर्वत, नद-नदी, वृक्ष आदि प्रभुके श्रीवदनके भीतर शोभा पाने लगे। स्थान-स्थानपर महा-अग्नि दीप्तमान् थी। नदियाके पाखण्डीलोग प्रभुके विराट् श्रीवदनके भीतर महा-अग्निमें जलकर भस्म हो रहे थे।

प्रभुकी इस विराट् महामहिमामय विश्वरूप श्रीमूर्तिका विशेष शक्तिशाली विशिष्ट अनुगृहीत भक्तके सिवा दूसरा कोई दर्शन करनेका अधिकारी नहीं है। इसी कारण प्रभुने अकेले श्रीअद्वैतप्रभुको विष्णुगृहमें ले जाकर अपनी यह विराट् ऐश्वर्य-मूर्ति दिखलायी। अद्वैतप्रभु महाविष्णुके अवतार थे। प्रभुकी इस विश्वरूप विराट्-मूर्तिके तेज और ज्योतिको सहन करनेकी शक्ति उनमें थी। अर्जुनमें यह शक्ति न थी, इसीसे वह भीत होकर श्रीकृष्णकी स्तुति करके इस विराट्-मूर्तिको संवरण करनेके लिए बोले थे। श्रीअद्वैतप्रभु धैर्य धारण करके श्रीगौर-भगवान्‌की इस विराट् विश्वरूप ऐश्वर्यमूर्ति-का दर्शन करके प्रेमानन्दमें रोते-रोते व्याकुल हो गये। दाँतमें तृण धारणकर प्रभुके सामने भूतलपर गिरकर अपनेको कृतकृत्य मानने लगे।

श्रीनित्यानन्दप्रभुको विश्वरूप दर्शन

इसी समय नदिया भ्रमण करके श्रीनित्यानन्द-प्रभु श्रीवासके आँगनमें आकर उपस्थित हुए। उनकी भी मनकी अभिलाषा थी कि एक बार प्रभुकी उस विराट् महा-महिमामय ऐश्वर्यपूर्ण विश्वरूप-श्रीमूर्तिका दर्शन करके नयनको सार्थक करें। वे प्रभुकी इच्छाशक्ति हैं। प्रभुकी भी यही इच्छा हुई। इसी समय श्रीनित्यानन्दप्रभुने वहाँ आकर उनकी विराट्-मूर्तिका दर्शन किया। इच्छामात्रसे इच्छाशक्तिका कार्य हुआ। श्रीनित्यानन्दप्रभुने आकर देखा कि विष्णुगृहका द्वार बंद है। प्रभु घरके भीतर विशाल हुंकार-गर्जन कर रहे हैं। अवधूत श्रीनिताई-चाँदका आना जानकर प्रभुने द्वार खोल दिया। श्रीनित्यानन्दप्रभुने घरमें प्रवेश करके देखा कि अनन्त ब्रह्माण्डरूपी श्रीगौर-भगवान् उनके सामने परमैश्वर्यमय विराट् विश्वरूप-मूर्तिमें दण्डायमान हैं। कोटि सूर्यके तेजसे मानो उनकी आँखें झुलस गयीं। आँखें मूँदकर प्रेमानन्दमें वे प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। प्रभुने उनको हाथ पकड़-कर उठाया और हँसते हुए बोले—

—**"उठ नित्यानन्द मोर प्राण।**
तुमि जे जानह मोर सकल आख्यान॥
जे तोमारे प्रीति करे मुञि सत्य तार।
तोमा बई प्रियतम नाहिक आमार॥
तुमि आर अद्वैते जे करे भेद-बुद्धि।
भाल मते ना जाने से अवतार-शुद्धि॥

चै. भा. म. २४,६१—६३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीनित्यानन्दप्रभु उठे। प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर पुनः प्रेममें भरकर देखा। देखा, वही परम ज्योतिर्मय विराट्-मूर्ति है, वही अनन्त ब्रह्माण्डरूप विश्व-विमोहन विश्वरूप-मूर्ति है। श्रीअद्वैतप्रभुको वहाँ देखकर प्रेमानन्दमें विह्वल होकर दोनों आदमी श्रीगौर-भगवान्‌के चरण-तलमें गिरकर प्रेमानन्दमें रोने लगे। दोनों आदमियोंने एक साथ प्रभुकी विराट् विश्वरूप-मूर्तिकी स्तुति की। प्रभु विष्णु-सिंहासनपर बैठकर 'देख-देख' कहकर हुंकार-गर्जन कर रहे थे। यहाँ और कोई नहीं है, केवल तीन व्यक्ति हैं। श्रीमन् महाप्रभु अपनी विश्व-ब्रह्माण्डरूप विराट्-श्रीमूर्तिको प्रकट करके विष्णु-सिंहासनपर आसीन हैं और श्रीअद्वैत-नित्यानन्द, दोनों प्रभु उनके सामने खड़े हाथ जोड़कर स्तुति कर रहे हैं। स्तुति करके वे प्रभुके चरणोंमें गिरकर धूलिमें लोट-पोट करने लगे। श्रीवासके आँगनमें प्रभुका यह अपूर्व लीलारङ्ग कोई दूसरा न देख सका।

कुछ देरके बाद प्रभुने आत्म-संवरण किया। तब अन्याय भक्तवृन्द आकर वहाँ उपस्थित हो गये। श्रीवासपण्डित आये। सबने देखा कि प्रभु प्रेमानन्दमें बैठे हैं और श्रीनित्यानन्द और श्रीअद्वैतप्रभु आँगनमें धूलमें लोट-पोट कर रहे हैं। वे लोग इसका मर्म कुछ समझ न सके। श्रीनित्यानन्दप्रभु प्रेमानन्दमें उद्दण्ड नृत्य कर रहे हैं। श्रीअद्वैतप्रभु हिल-डुलकर, कमर हिला-हिलाकर,ताली बजाकर मधुर प्रेम-नृत्य कर रहे हैं। साथ ही दोनोंने मधुर कण्ठसे कीर्तनका सुर पकड़ा है। भक्तवृन्दने उनके साथ कीर्तनमें योग दिया। श्रीवासके आँगनमें आनन्दकी तरङ्गें उठीं। तब प्रभु भी कीर्तनमें उतरे। पहरभरतक कीर्तन करके प्रभु भक्तवृन्दके साथ अपने मन्दिरमें गये।

अद्वैतप्रभु और नित्यानन्दप्रभुका प्रेम-कलह

इस आनन्द-कोलाहलके बीच श्रीअद्वैतप्रभु और श्रीनित्यानन्दप्रभुमें हास-परिहास शुरू हुआ। दोनों प्रभुओंने इकट्ठे होनेपर इस प्रकारका हास-परिहास मचा करता था और वे वाग्युद्धमें लग जाते थे। आज दोनों ही प्रभुकी विराट्-मूर्ति देखकर प्रेमानन्दमें मतवाले हो रहे हैं। श्रीवासके आँगनमें नृत्य करते-करते अन्तमें दोनों आदमियोंमें रस-कलह शुरू हो गया।

श्रीअद्वैतप्रभु अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुसे बोले—"अरे मतवाले अवधूत! यहाँ तेरेको कौन ले आया? दरवाजा तोड़कर भीतर क्यों घुस आया? तुमको संन्यासी कौन बताता है? न जाने, किस-किस जातिके घरका तुमने खाया-पीया है। तुम्हारी जात-पाँतका भी कोई पता नहीं। भाग जा यहाँसे, नहीं तो अच्छा नहीं होगा।"

यह सुनकर अवधूत नित्यानन्दप्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"अरे नाड़ा! चुपचाप बैठा रह, नहीं तो मरम्मत करके जमीनपर पटककर अपना प्रताप दिखाऊँगा। अरे बूढ़े! तू जानता नहीं क्या कि मैं मतवाला अवधूत प्रभुका भाई हूँ। तुम स्त्री-पुत्र-सहित संसारी हो और मैं परमहंस-पथका अधिकारी हूँ। मेरे मारनेपर भी तुमको कुछ कहनेका अधिकार नहीं है। व्यर्थ ही तुम गर्व दिखाते हो।"

इस प्रकार दोनों प्रभुओंमें हास-परिहास होने लगा। श्रीगौराङ्गप्रभु और भक्तवृन्द हँसने लगे। वैष्णवोंका यह प्रेम-कलह देखकर जो एक पक्षका अवलम्बन करके अन्य पक्षकी निन्दा करते हैं, उनका सर्वनाश हो जाता है। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने यह बात बारम्बार कही है—

हेन प्रेम कलहेर मर्म ना जानिया।
एक निन्दे आर बन्दे से मरे पूड़िया॥

चै. भा. म. २४.६८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्योंकि इसका नाम प्रेम-कलह है। वैष्णवका प्रेम-कलह बड़ा ही मधुर होता है। श्रीअद्वैत-नित्यानन्दका प्रेम-कलह मधुसे भी मधुर था। बालस्वभाव श्रीनित्यानन्दप्रभु वृद्ध ब्राह्मण श्रीअद्वैताचार्यको लेकर प्रेमानन्दमें नाना प्रकारके रस-कौतुक करते थे। इससे दोनोंके हृदयमें लीलारस-कौतूहल उद्दीप्त होता था। विशुद्ध प्रेमानन्दका उपभोग और निष्कपट प्रेमरस-सम्भोगके सिवा इस प्रकारके प्रेम-कलहका दूसरा और क्या उद्देश्य हो सकता है ?

यह प्रभुके विश्वरूप-दर्शनकी बात श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने श्रीअद्वैतप्रभुके श्रीमुखसे सुनकर लिखी है। यह बात उन्होने अपने श्रीग्रन्थमें लिखी है—

अद्वैतेर श्रीमुखेर ए सकल कथा।
इहा जे ना मानये से दुष्कृति सर्वथा॥

चै. भा. म. २४.६८

श्रीगौराङ्गप्रभु पूर्णब्रह्म सनातन थे। सर्व-अवतार-शिरोमणि और सब अवतारोंके अवतारी थे। श्रीगौराङ्ग-लीलाकी पर्यालोचना करनेपर यह देखा जाता है कि प्रभु गुप्तभावसे सब अवतारों और सब देवताओंका लीलारङ्ग प्रकट करके अपने अन्तरङ्ग भक्तों और पार्षदवृन्दके मनके सारे संदेह दूर कर गये हैं। वे सब अवतारोंके अवतारी वेदोक्त रुक्माङ्ग आदिपुरुष थे। शक्तिरूप होकर उन्होंने मातृभावमें भक्तवृन्दको स्तनपान कराया था। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, इन्द्र,चन्द्र, वायु और वरुण उनके अंशमात्र थे। वे इच्छामय स्वतन्त्र परमेश्वर थे। जब जो भाव उनके मनमें उदित होता था, उसी भावमें विभावित होकर वे लीलारङ्ग करते थे। उनका आवेशभाव देखते ही उनके नित्य-पार्षदगण समझ जाते थे कि लीलामय प्रभु लीलारङ्ग करेंगे। कौन-सी लीला करेंगे—यह भी वे लोग भावमय प्रभुकी भाव-भङ्गिमा देखकर समझ जाते थे।

श्रीगौर-भगवान्‌का प्रकृत तत्त्व जाने बिना इन सब अलौकिक लीलाओंका गूढ़ रहस्य हृदयंगम नहीं किया जा सकता। श्रीभगवान्‌के अवतारमें विश्वास बहुत पुण्योंके फलसे होता है। उनका तत्त्व-परिज्ञात होना बहुत साधनोंका फल है। जिनको अवतारमें विश्वास नहीं, जिनको भगवत्तत्त्वका ज्ञान नहीं, उनके लिए लीलाग्रन्थ लिखे गये हैं। श्रीभगवान्‌की अपूर्व लीलाकथा पढ़ने या सुननेसे अवतारमें विश्वास पैदा होता है, भगवत्तत्त्वका ज्ञान होता है। यह भी समझमें आता है कि श्रीभगवान् जीवके अपने हैं। अवतार-तत्त्व समझनेमें सबसे पहले श्रीभगवान्‌के लीलारस-तत्त्वका अनुसंधान करना पड़ता है। श्रीभगवान् मनुष्यके समान हमारे बीच आकर अपना परिचय देते हैं, ऐश्वर्य दिखलाते हैं और उपदेश प्रदान करते हैं। इसमें अविश्वासका कोई कारण नहीं है। नवद्वीप-लीलामें श्रीगौर-भगवान्‌ने सब प्रकारसे अपने सृष्ट-जीवोंके साथ सम्बन्ध जोड़कर परिचय करके उनको प्रेमानन्द-प्रदान किया था। केवल इतना ही नहीं, किस प्रकार प्रेममय जीव-बन्धु श्रीभगवान् प्राप्त होते हैं, उनके साथ जीवका मिलन होता है, स्वयं आचरण करके वे इसका प्रकृष्ट उपाय दिखला गये हैं। भगवान्-भावकी अपेक्षा भक्त-भावमें जीवने उनसे प्रेम करना सीखा था। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें भक्त और भगवान्‌में निःसंकोच अबाध गतिसे मिलन हुआ था। विश्व-ब्रह्माण्डपति श्रीभगवान्‌के साथ जीवका साक्षात् दर्शन उनकी प्रत्यक्ष सेवा-परिचर्या, स्वयंभ-गवान्‌से उपदेश-ग्रहण—यह सब उनके सृष्ट-जीवके लिए बड़े सौभाग्यकी बातें हैं, जो बहुत बड़े पुण्योंका फल है। कलिका जीव बड़ा भाग्यवान् है, इसी कारण उसे यह शुभ सुयोग तथा सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भगवान्-भावमें जब प्रभु लीलारङ्ग करते थे, भक्तवृन्दको जब वे स्वरूप-वैभव दिखलाते थे, तब उनके प्रति भक्तोंका ऐश्वर्यभाव नहीं रहता था। वे प्रभुको निजजनके रूपमें जानते थे, प्राण भरकर उनसे प्रेम करते थे; उनका ऐश्वर्यभाव होनेपर भी भक्तोंके मनमें वे सदा माधुर्यभावमें विराजते थे। अपना ऐश्वर्य-लीलारङ्ग दिखलाकर भक्तवृन्दको मोहित करते थे। यह भी केवल आत्मपरिचय-प्रदान करनेके लिए। नवद्वीप-लीलामें श्रीगौर-भगवान् जीवके सामने आत्मपरिचय-प्रदान करनेके लिए जितने उत्सुक दिखलायी देते, अन्यान्य अवतारोंमें उतने उत्सुक नहीं हुए थे। ऐश्वर्यभावमें आत्मपरिचय दिये विना उनकी भगवत्तामें विश्वास न होगा, यही सोचकर प्रभुने ये अपूर्व ऐश्वर्य-लीलारङ्ग दिखलाये। श्रीभगवान् मनुष्य होकर आये हैं, यह जब कलिग्रस्त जीवको ज्ञात हो गया, तब उसके आनन्दकी सीमा न रही। यह आनन्द ही उनकी भगवान्-प्राप्तिका मूलभूत कारण बना, आनन्दमय श्रीभगवान्के प्रेमराज्यमें उनका प्रवेश हुआ, नदियामें बसते हुए उन्होने गोलोकका सुख प्राप्त किया।

श्रीभगवान्के अवतार-ग्रहणके नाना प्रकारके उद्देश्य हैं। उनमें एक उद्देश्य है—भक्त और भगवान्-का मिलन। जीवके साथ भगवान्का साक्षात् परिचय। यह मिलन और परिचय हुए बिना जीवोद्धारका कार्य सुचारुरूपसे सम्पन्न नहीं होता। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें जीवके साथ श्रीभगवान्का विशिष्टभावमें परिचय हुआ था, इसी कारण जीवोद्धार-कार्य इतने सहजरूपमें सुसम्पन्न हुआ।

एक गूढ़ बात कहकर यह अध्याय समाप्त करूँगा। श्रीगौर-भगवान्ने श्रीअद्वैतप्रभुको अपनी महा-महिमामय विराट्-विश्वरूप-मूर्ति क्यों दिखलायी? और उन्होंने ही क्यों देखना चाहा? श्रीअद्वैतप्रभुके मनके संदेहको प्रभु इतना करके भी दूर न कर सके कि क्या ये वे ही हैं? इसी संदेहमें शान्तिपुरनाथका मन कभी-कभी संशयमें पड़कर विचलित हो उठता था। प्रभुने जब उनसे पूछा—"आचार्य! आप क्या चाहते हैं?" तब श्रीअद्वैत-प्रभुने अपने मनकी बात प्रभुको खोलकर कह दी—"हे प्रभो! तुमने अर्जुनको जो रूप दिखलाया था, वही रूप एक बार मुझको दिखलाओ!" भगवान् और भक्त, दोनोंने यहाँ अपनी अपनी चतुराई दिखलायी। चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर भगवान्ने श्रीअद्वैतप्रभुके इस मनःकल्पित संदेहको दूर करनेके लिए उनको विश्वरूप-विराट्-मूर्ति दिखलायी। चतुराग्रगण्य श्रीअद्वैतप्रभुने सुयोग देखकर इस बार अपने मनके चिरकालके संदेहको दूर करा लिया। इसके बाद उनका संदेह अब नहीं रहा। उन्होंने आगे श्रीमुखसे कहा था—

सर्व प्रभु गौरचन्द्र इथे द्विधा जार।
कभू शुद्ध भक्त नहे सेई दुराचार॥

चै. भा. म. १७११

श्रीचैतन्यभागवतकारने लिखा है—

चैतन्येर भक्त बलि नाहि जार नाम।
यदि से वा वस्तु तबे तृणेर समान॥

चै. भा. म. १०.२९९

इन सब बातोंमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। साधक भक्तकवि गोदिन्ददासने गाया है—

कि कहब शत-शत तुया अवतार।
एकेला गौराङ्ग-चाँद जीवन आमार॥

ये सब बातें गौराङ्गकनिष्ठताकी परिचायिका है। इष्टमें प्रगाढ़ निष्ठा उत्पन्न हुए बिना एकनिष्ठ भक्ति प्राप्त नहीं होती और इष्टमें एकनिष्ठ भक्ति हुए बिना इष्टकी प्राप्ति नहीं होती। ये सब बातें पागलपन नहीं हैं। जय गौर!

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पचासवाँ अध्याय

प्रभुके प्रेम-विकार-लक्षण और संसारसे वैराग्य

"प्रेमरसे प्रभुर संसार नाहिं स्फुरे।"
चै. भा. म. २५.८५

अब प्रभुकी प्रेम-विकारावस्था है। भगवत्-प्रेमभावमें उनके नयनद्वयकी प्रेमाश्रुधारा सूखती नहीं है—

कि नगरे कि चत्वरे कि जले कि वने।
निरवधि अश्रुधारा बहे श्रीनयने॥
चै. भा. म. २४.१

प्रेमानन्दमें विभोर होकर वे देहधर्म एकबारगी भूल गये। उद्दण्ड कीर्तन करनेकी अब उनमें शक्ति नहीं है, तथापि भक्तगणके साथ कीर्तनमें योग देना वे नहीं छोड़ते; परन्तु कानमें हरिध्वनि पड़ते ही मूर्च्छित होकर वे भूतलपर गिर पड़ते हैं। उनके कारण नदियाके भक्तगण व्याकुल रहते हैं, उस प्रकार अब संकीर्तन करना नहीं बनता है। रास्ते चलते-चलते यदि किसीने हरिध्वनि की तो तत्काल प्रभु भावावेशमें रास्तेमें अचेतन होकर गिर पड़े। प्रभुकी उस समयकी अवस्था इसी प्रकारकी थी।

भक्तगण प्रभुको धर-पकड़ करके घर लाते थे। शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके उद्वेग और चिन्ताकी सीमा नहीं रहती। गयासे घर आते ही प्रभुके शरीरमें एक बार इसी प्रकार प्रेम-विकारभाव लक्षित हुआ था। कुछ दिन बाद उनका वह भाव बदल गया। उन्होंने गृहस्थीके विषयोंमें पुनः मन तो लगाया, परन्तु स्वेच्छासे नहीं, केवल माता और गृहिणीकी मनस्तुष्टिके लिए। पुनः पुत्रका उसी प्रकार भाव देखकर स्नेहमयी शचीमाता-के मनमें विषम चिन्ता उत्पन्न हुई। नवीना प्रियाजीका चन्द्रवदन सूख गया। वे लोग क्या करें? प्रभुके साथ निरन्तर उनके अनुगत भक्तगण रहते हैं।

नदियामें कीर्तन अब एक प्रकारसे बंद है; क्योंकि प्रभुको लेकर सभी परेशान हैं। प्रभुने नदियामें युगधर्म संकीर्तन-लीलारङ्ग प्रायः समाप्त कर दिया है। युगधर्माचरणका फल है—भक्ति-प्राप्ति। नदियाके प्रायः सबलोगोंके भाग्यमें प्रभुकी कृपासे यह भक्ति प्राप्त हुई। नदियावासियोंको भक्तिप्रदान करनेका प्रभुका कार्य प्रायः समाप्त हो गया है। उपयुक्त अधिकारी भक्तोंको उन्होंने अपने गोलोककी सम्पत्ति, प्रेमधन प्रदान किया है। वे अब अपने प्रेममें आप तन्मय होकर अपने मन्दिरमें बैठकर स्वप्रेमानन्द-रसमें मग्न रहते हैं। वे अब विष्णुपूजा भी नहीं कर पाते। पूजामें बैठनेपर नयन-जलसे उनका परिधान-वस्त्र भीग जाता था। वे एक बार, दो बार, तीन बार वस्त्र-परिवर्तन करते हैं तथा श्रीमुख-मण्डल और श्रीअङ्ग-प्रक्षालन करते हैं। वे कदापि पूजा समाप्त नहीं कर पाते।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक दिन रोते-रोते गदाधरसे बोले—"भाई गदाधर ! तुम पूजा करो ! मेरे भाग्यमें यह बदी नहीं है; आज मैं पूजा कर न सका।" गदाधर, नरहरि, श्रीनित्यानन्दप्रभु, पुरुषोत्तम आदि सबलोग सर्वदा प्रभुके साथ उनके घरपर रहते थे। प्रभु अब श्रीवासके आँगनमें नहीं जा पाते हैं। श्रीअद्वतप्रभु तथा श्रीनित्यानन्दप्रभु कभी-कभी वहाँ जाकर कीर्तन करते हैं। प्रभुका अपने मन्दिरमें द्वार बंद करके अब रस-कीर्तन होता है। उस कीर्तनानन्दका वर्णन करना मनुष्यके लिए साध्य नहीं है।

पहले कह चुका हूँ कि प्रभुकी इस समय प्रेम-विकारावस्था है। वे कभी कहते हैं—**'मैं ही गोपीजनवल्लभ मदन गोपाल'**—फिर कहते हैं, **'मैं चिरकाल रहा श्रीकृष्ण दास।'** किसी-किसी दिन केवल गोपीनाम-जप करते हैं तथा गोपीभावमें विभावित होकर कृष्ण-विरहाग्निमें शठचूड़ामणि श्रीकृष्णका नाम सुनकर जल उठते हैं और क्रोधमें कमल-नयनद्वय रक्तवर्ण करके कहते हैं—"तेरा कृष्ण तो महा डाकू, शठ, धृष्ट, कपटी है। एक स्त्रीके वशमें होकर दूसरी (शूर्पनखा) के नाक-कान काटता है, व्याधकी भाँति वालिके प्राण हर लिये। ऐसे चोरकी बात मेरे सामने मत करो।" जो कृष्णका नाम लेता है उसको मारने दौड़ते हैं।

इसको ही 'प्रेमोन्माद दशा' कहते हैं। कृष्ण-विरहिणी व्रजगोपियोंकी कृष्ण-विरहमें इसी प्रकारकी दशा होती है। प्रभुने स्वयं आचरण करके भक्तवृन्दको दिखला दिया कि व्रजका गोपीभाव क्या है।

कभी-कभी वे 'गोकुल, गोकुल' कहकर चिल्ला उठते हैं, कभी-कभी वृन्दावनका नाम लेकर व्याकुल होकर रो पड़ते हैं, कभी मथुराका नाम लेकर हँसते हैं, भूतलपर बैठकर नख-कमलसे त्रिभङ्गाकृति श्रीकृष्णकी श्रीमूर्ति लिखते हैं और उसी मूर्तिकी ओर देखकर अजस्त्र आँसू बहाते हैं। उनके कमल-नयनद्वयसे प्रेमनदीकी धारा बहती है। उससे भूमि भीग जाती है। कभी चिल्लाकर बोलते है—"भाई ! एक बड़ा भारीवन दिखायी देता है; उसमें झुंडके-झुंड सिंह-व्याघ्र-भालुओंका दल है।"

इस प्रकार प्रेमविह्वल-भावमें प्रेमोन्मत्त प्रभुका दिन-रात-ज्ञान लुप्त रहता है—

दिवसेरे बोले रात्रि रात्रिते दिवस।
एइ मत प्रभु हइतेन भक्ति रस॥

चै. भा. म. २४.२४

सब भक्तोंका गला पकड़कर प्रेमावेशमें प्रभु करुण-स्वरमें रुदन करते हैं। उस करुण-क्रन्दनको सुनकर हृदय विदीर्ण हो जाता है। कभी-कभी प्रभु अपने मन्दिरको छोड़कर पाँच-सात दिन किसी भक्तके घर जाकर रहते हैं। कभी-कभी माताके साथ उनकी तुष्टिके लिए सांसारिक व्यवहारकी बातें भी करते हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभु सुयोग पाते ही प्रेमानन्दमें नदियामें सर्वत्र भ्रमण करते थे। घर-घर जाकर प्रेमदाता निताई-चाँद पूछ-पूछकर प्रेम-दान करते थे। श्रीअद्वैतप्रभुको लेकर श्रीवास आदि भक्तवृन्द कीर्तनानन्द करते थे। गदाधर सर्वदा प्रभुके साथ रहते थे। क्षणभरके लिए भी वे प्रभुका सङ्ग नहीं छोड़ते थे। गदाधरकी श्रीगौराङ्ग-सेवा अतुलनीय थी।

इसी समय प्रभुके मनमें नाना प्रकारकी तरङ्गें उठने लगीं। तरङ्गके ऊपर तरङ्ग आकर उनके हृदयको मथने लगीं। इन सब भाव-तरङ्गोंका कुछ-कुछ परिचय ठाकुर लोचनदासने अपने श्रीचैतन्य-मङ्गल-श्रीग्रन्थमें लिखा है। यथा—

एइ मने आनन्दे आनन्दे दिन जाय।
आचम्बिते खेद उठे प्रभुर हियाय॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नारिल नारिल एथा रसिबारे आमि।
देखिबारे जाब श्रील वृन्दावन भूमि॥
कति मोर कालिन्दी यमुना वृन्दावन।
कति मोर बेहुला भाण्डीर गोवर्द्धन॥
कति गेला आरे मोर ललितादि राधा।
कति गेला आरे मोर ए नन्द-यशोदा॥
श्रीदाम सुदाम मोर रहिला कोथाय।
धवली साङली बलि अनुरागे धाय॥
क्षणे दन्ते तृण धरि करुणा करिया।
फुकारि फुकारि काँदे चौदिके हेरिया॥
ए भव-संसार आमि केमने तरिब।
से नन्दनन्दन-पद कोथा गेले पाब॥
इहा बलि छिण्डल गलार उपवीत।
कृष्णेर विरहे दुःख भेल विपरीत॥
हरि हरि बलि डाके छाड़ये निःश्वास।
अश्रुधारा गले किछु ना कहे विशेष॥

भावनिधि प्रभुकी भावतरङ्ग-राजिने उनके हृदय-सिंधुको आलोडित कर दिया। प्रभुके प्रत्येक अङ्गमें भावतरङ्गका भावपूर्ण प्रेमोच्छ्वास-फेन-पुञ्जका उद्‌गम हुआ। उनके श्रीअङ्ग पसीने-पसीने हो गये। वे बेसुध हो गये, अपने-आपका ज्ञान न रहा। उनका कभी राधा-भाव होता था और कभी श्रीकृष्ण-भाव। श्रीगौराङ्गप्रभु राधाकृष्ण-मिलित-वपु धारण करके शचीके गर्भसे नदियामें अवतीर्ण हुए थे। ये दोनों भाव उनमें सर्वप्रधान भावके रूपमें विद्यमान थे। प्रभु जब राधा-भावमें विभावित रहते तो उनकी श्रीकृष्णविरहोत्कण्ठाकी सीमा नहीं रहती थी। प्रभुके अन्तरङ्ग भक्त पदकर्ता वासुदेव घोषने उनकी श्रीकृष्ण-भावमें राधाविरह-दशा अपनी आँखोंसे देखकर एक पदमें लिखा है—

हरि हरि गोरा केन काँदे।
निज सहचर गण, पुहइ कारण,
हेरइ गोरामुख चाँदे॥
अरुणित लोचन, प्रेमभरे टलमल,
झर-झर झरे प्रेम-वारि।
ऐछन शिथिल, गाँथिल मति फल,
खसये ऊपरि ऊपरि॥
सोङरि वृन्दावन, निश्वासइ पुनः पुनः,
आपनार अङ्ग निरखिया।
दुइ हात बुके धरि, राइ-राइ करि,
धरनी पड़िल मुरछिया॥
ताहे प्रिय गदाधर, बसिया करिल कोर,
कहये श्रवणे मुख दिया।
पुन अट्ट अट्ट हासे, जग जन मने तोषे,
वासु घोष मरम बूझिया॥

वासुघोषका एक और पद सुनिये—

आरे मोर गोरा द्विजमणि।
राधा-राधा बलि काँदे लोटाय धरणी॥
राधा-नाम जपे गोरा परम जतने।
कत सुरधुनी बहे अरुण नयाने॥
क्षणे-क्षणे गोरा अङ्ग भूमे गड़ि जाय।
राधा-नाम बलि क्षणे-क्षणे मुरुछाय॥
पुलके पूरल तनु गद गद बोल।
बासु कहे गोरा केन एत उतरोल॥

राधाभावमें प्रभुकी विरह-उत्कण्ठा और भी अधिक हो जाती है। वे किसीको भी कुछ नहीं कहते, केवल अजस्र आँसू बहाते हैं। उनका चन्द्र-वदन मलिन और शुष्क हो जाता है। सारा अङ्ग अलस, अवश और शिथिल हो जाता है। भूतलसे वे उठ नहीं पाते। उठनेपर पैर बढ़ाते ही लड़खड़ाकर गिर पड़ते हैं। वासुदेव घोषने एक और पदमें प्रभुके इस श्रीकृष्ण-विरह-भावका अति सुन्दर वर्णन किया है—

आजि केने गौराङ्ग चाँदेर विरस नयान।
कि भाव पड़ेछे मने सजल नयान॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चाँद मुखे शुकायेछे किसेर कारणे।
अरुण अधर केन हइयाछे मलिने॥
अलसे अवश अङ्ग धरणे ना जाय।
ढूलिया ढूलिया पड़े बाड़ाइते पाय॥
वासुघोष बले गोरा कोथा वा आछिल।
कि वा रस आशोयासे निशि पोहाइल॥

कभी-कभी प्रभु मानमयी राधा-भावमें विभावित होकर 'कृष्ण-कृष्ण' कहकर उच्च स्वरसे रुदन करते हैं। उनके कमल-नयनसे शतधारा प्रवाहित होती है, चन्दन-चर्चित देहसे धूलि-धूसरित होकर भूतलपर लोटते हैं, भूमि-शैयापर शयनकर छटपटाते हैं, मानो उनको कुछ अच्छा नहीं लगता। दिन-रात उनके लिए एक-सा है, आँखोंमें निद्राका लेश भी नहीं है, क्षण-क्षणमें चकित हो उठते हैं। वासुदेव घोषद्वारा रचित इस प्रकारका श्रीकृष्ण-विरह-भावपूर्ण एक और पद यहाँ उद्धृत किया जाता है--

कृष्ण-कृष्ण बलि गोरा काँदे घने घने।
कत सुरधुनी बहे अरुण नयने॥
सुगन्धि चन्दन गोरा नाहि माखे गाय।
धूलाय धूसर तनु भूमे गड़ि जाय॥
माने मलिन मुख किछुई ना भाय।
रजनी-दिवस गोरा जागिया गोङाय॥
क्षणे चमकित अङ्ग धरण ना जाय।
मान भाव गोरा-चाँदेर वासुदेव गाय॥

कभी प्रभु तरुतले बैठकर रोते हुए श्रीकृष्ण-नाम जप करते हैं, मुँहसे बात नहीं निकलती, नयन-जलसे वक्षःस्थल डूब जाता है; परन्तु कृष्ण-नाम-मधु उनके मुखचन्द्रसे अविच्छिन्नभावसे निरन्तर झरता रहता है। उस समय उनके साथ कोई नहीं रहता, अकेले जाकर एकान्तमें पेड़के नीचे बैठ जाते हैं। भक्तलोग भाव-निधि प्रभुके भावको समझकर दूर खड़े रहते हैं; उनकी यह अपूर्व विरहोन्माद-दशा देखकर प्रेमभावमें रोते हैं। वासुदेव घोष उनके बीचमें थे। उनका रचा एक और पद सुनिये--

रोइ रोइ जपे गोरा कृष्ण-नाम-मधु।
अमिया झरये जेन सुविमल विधु॥
शिव-बिहि नाहि पाय जार पद भजि।
तरु तले बैठल सब सङ्ग तेजि॥
छाड़िया सकल सुख गेल अशकति।
सातकुम्भ-कलेवर भाव विभूति॥
देखिया सकल लोक अनुक्षण काँदे।
वासुदेव घोष हिया थिर नाहि बाँधे॥

प्रभुको रात-दिनका ज्ञान नहीं रहता है। सिर नीचा करके जमीनपर बैठे रहते हैं। कभी बाँयी हथेलीपर मस्तक रखकर नयन-जलसे धरातलको सिक्त करते हैं, कभी दाहिने हाथके नखके द्वारा भूतलपर कुछ लिखते हैं और सोचते हैं। दूसरे ही क्षण धूलिमें लोट-पोट करके व्याकुल होकर रोते हैं। वासुदेव घोषद्वारा रचित प्रभुकी विरह-दशाका यह पद बड़ा ही करुणरसात्मक है--

अवनत माथे गोरा रहे।
अरुण नयने धारा बहे॥
खेने शिर करतले राखि।
खेने क्षितितले नखे लिखि॥
काँदिया आकुल गोरा राय।
सोनार अङ्ग धूलाय लोटाय॥
वासुदेव घोषे गुण गाय।
निशि दिशि आन नहि भाय॥

प्रभुके मनमें जब वृन्दावन-लीलाकी स्मृति होती है, तब वे क्या करते हैं ?--यह बात भी वासुदेव घोषने लिख रखी है। वे गङ्गाके किनारे जाते हैं, गङ्गा-तटके पुष्प-वनमें विहार करते हैं। कीर्तन-रास लीलारङ्ग करते हैं। भक्तगणके साथ मधुर नृत्य-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विलासरङ्ग करते हैं। सुरसरिको यमुना और उसके तटके पुष्प-वनको वृन्दावन समझते हैं—

वृन्दावन-लीला गोरार मनेते पड़िल।
यमुनार भाव सुरधुनिरे करिल॥
फूलवन देखि वृन्दावनेर समाने।
सहचरगण गोपीगण अनुमाने॥
खोल करताल गोरा सुमेलि करिया।
तार माझे नाचे गोरा जय-जय दिया॥
वासुदेव घोष ताहे करये विलास।
रास-रस गोरा-चाँद करिला प्रकाश॥

और प्रभु क्या करते हैं, यह भी वासु घोषके पदमें सुनिये—

सोङरि पूरब लीला त्रिभङ्ग हइला।
मोहन मुरलि गोरा अधरे लइला॥
मुरलीर रन्ध्रे फूँक दिला गोरा-चाँद।
अंगुलि नाचाइया करे सुललित गान॥
नगरेर लोक जत शुनिया मोहित।
सुरधुनि तीरे तरु-लता पुलकित॥
भुवनमोहन गोरा मुरलीर स्वरे।
वासुदेव घोष इत्थे कि बलिते पारे॥

वृन्दावन-लीलामें सखी-सखागणकी आवश्यकता है। गोप-गोपीगण चाहिये, प्रेमनृत्य चाहिये, मधुर नयन-भङ्गिमा और हाव-भाव चाहिये—ये सब प्रभुकी नवद्वीप-लीलामें भी हैं। भक्तरूपी गोपीगण प्रभुकी इस संकीर्तन-रासलीलाके सहायक हैं। व्रजाङ्गनाओंके बिना रासलीला नहीं हो सकती। नदियाके भक्तवृन्द एक-एक व्रजगोपी हैं, उनमें श्रेष्ठ गदाधर हैं। वे राधाशक्ति और राधा-स्वरूपिणी हैं। नरहरि-मधुमति हैं। इन सब रास-रसिका भक्तरूपी व्रज-नागरीगणको लेकर प्रभु किस प्रकार रासलीला करते थे, यह बात रसिक भक्त ठाकुर लोचनदास लिख गये हैं—

नरहरि भुजे आर भुज आरोपिया।
श्रीनिवास घरे नाचे रास विनोदिया॥
गौर-देह श्याम-तनु देखे भक्तगण।
गदाधर राधारूप हइला तखन॥
नरहरि मधुमति हैल सेइ काले।
देखिया वैष्णवगण हरि-हरि बोले॥
वृन्दावन-प्रकाश हइल सेइ स्थाने।
गो गोपी-गोपाल सङ्गे शचीर नन्दने॥

चै. म.

इस प्रकार प्रभुके प्रेम-विकार-भाव-लक्षण क्रमशः एक-एक करके परिस्फुट होने लगे। वे अपने रसमें आप विह्वल होकर अपने-आपेमें न रहे, सबका गला पकड़-पकड़कर आकुल-प्राणसे क्रन्दन करने लगे, जिसे सुनकर पाषाण-हृदय भी विदीर्ण हो जाते थे। व्रज-गोपीभावमें प्रभुका हृदय अब पूर्णरूपसे विभावित रहने लगा। अपार कृष्ण-विरह-सिंधुमें वे अब निमग्न रहते। उनको पूर्ण आत्मविस्मृति हो जाती थी।

भावनिधि प्रभु अपने मन्दिरमें बैठकर इन सब व्रज-भावोंका सुन्दर चित्र प्रकाशित कर रहे हैं। उनकी प्रेमविह्वलता देखकर शचीमाता केवल रुदन करती हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी एकवारगी हताश हैं। वे दोनों एक जगह बैठकर दिन-रात प्रभुकी इस प्रेमविह्वलताके भावको लेकर तरह-तरहके तर्क-वितर्क करती रहती हैं। उनकी चिन्ता-की सीमा नहीं रहती। नवीना प्रियाजीके मलिन चन्द्र-वदनको देखकर शचीमाताके मनमें बड़ा दुःख होता है। वे उनको समझाती-बुझाती हैं, परन्तु प्रियाजीका मन कदापि आश्वस्त नहीं होता।

विषम चिन्ता और उद्वेगसे प्रियाजीका सोनेका वर्ण काला हो गया है, चन्द्र-वदन शुष्क हो गया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। उनको आहार-निद्राका खयाल नहीं रहता। वे मुँह खोलकर कुछ नहीं बोलती हैं, किसीके साथ कोई बात नहीं करतीं। हृदयाग्निसे उनका अन्तःकरण धक्-धक् जलता रहता है। उनकी एकमात्र प्रिय सखी काञ्चना है। वे ब्राह्मणकी कन्या हैं, शचीमाताकी पड़ोसी हैं; सर्वदा प्रियाजीके समीप रहती हैं और अनेक प्रकारकी बातोंसे उनके मनको संतुष्ट करनेकी चेष्टा करती हैं। प्रियाजी कभी-कभी निर्जनमें बैठकर दो-एक मनकी बातें सखी काञ्चनासे करती हैं।

शचीमाताका दुःख-संताप उनके शरीरके मर्म-स्थलमें प्रविष्ट होकर उनको दग्ध करता रहता है। वे मन-ही-मन समझती हैं कि उनके ज्येष्ठ पुत्र विश्वरूपने जो किया है, निमाई-चाँद भी वही करेगा। पुत्रके सब लक्षण उनको बिल्कुल ही अच्छे नहीं लगते। पुत्रवधूके मुखकी ओर देखकर वे किसीके सामने मुँह खोलकर कुछ नहीं कह पातीं। वे भी हृदयाग्निमें जलकर दग्ध हो रही हैं। उनके सोनेके संसारमें किसी वस्तुका अभाव नहीं है; निमाईके कल्याणमें शचीमाताका अक्षय-भाण्डार खुला है। गृहस्थीका सुख भोगनेका उनका यही प्रकृत समय है। उपयुक्त पुत्रवधू मिली है, रूपमें, गुणमें साक्षात् लक्ष्मी है, उनके गृह-द्वारको आलोकित कर रही है। सर्वगुण-सम्पन्न पुत्रके यश-सौरभसे दिग्दिगन्त परिव्याप्त है। विभिन्न देशोंसे विभिन्न प्रकारके लोग आकर नाना प्रकारकी सामग्री देकर उनसे पुत्रकी सेवा करते हैं। नदियाके लोग उनके पुत्रको प्राणसे भी बढ़कर मानते हैं; अपनी-अपनी घर-गृहस्थी छोड़कर, स्त्री-पुत्र छोड़कर दिन-रात उनके साथ रहते हैं, क्षणभरके लिए भी उनको आँखोंसे ओझल नहीं होने देते।

शचीमाता बुद्धिमती हैं। पुत्रमें संसारसे वैराग्यका भाव देखकर उनके मनमें बड़ा भय हुआ है। प्रियाजीके सामने वे मनके भावको छिपाती हैं। बुद्धिमती प्रियाजी यह समझती हैं। दोनों एक-दूसरेके मनके भावको समझकर कार्य करती हैं, जिससे सांसारिक कार्यमें कोई विशेष गड़बड़ी नहीं होती। प्रभुके घरमें श्रीविग्रह-सेवा, वैष्णव-सेवा, अतिथि-सेवा, सब-कुछ होता है। ऐसा कोई दिन नहीं जाता, जिस दिन उनके घर बीस-पचीस आदमियोंका भोजन न होना हो। शचीमाता और विष्णुप्रियादेवी दोनों मिलकर रसोई बनाती हैं। मन प्रसन्न न रहनेपर भी देव-सेवा या वैष्णव-सेवामें कोई त्रुटि नहीं होती। प्रभुका अक्षय-भाण्डार है। अतिथि-अभ्यागतके लिए उनका द्वार सदा उन्मुक्त रहता है, कभी बंद नहीं होता। दीन-दरिद्रका भरण-पोषण करनेमें शचीमाता सदा मुक्तहस्त रहती हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी मुक्तहस्तसे अन्न-वस्त्र-दान करती हैं। प्रभु उनको 'वैष्णव-जननी' कहते हैं।

प्रभुका यह वैराग्यभाव भी जीवकी शिक्षाके लिए है। श्रीभगवान्‌की प्राप्तिके विषयमें वैराग्य-योग शिक्षाकी वस्तु है। प्रभु स्वयं आचरण करके कलिके जीवोंको सब विषयोंकी शिक्षा दे गये हैं; फिर वैराग्य-विद्याकी शिक्षा क्यों नहीं देते? अपनी नवीना प्रियतमातकको प्रभुने इस सर्वोत्तम विद्याकी शिक्षा दी थी।

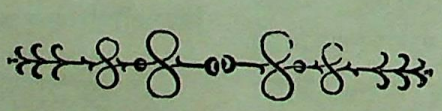

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इक्यावनवाँ अध्याय

प्रभु और प्रियाजी—वैराग्य-शिक्षा

गौराङ्ग बलेन आमार वैराग्य स्वधर्म।
वैराग्य छाड़िया आमा नाहि कोन कर्म॥

ज० श्रीचैतन्यमङ्गल

भक्तोंको वैराग्य-शिक्षा

पहले कह चुका हूँ कि प्रभु अब कृष्ण-प्रेमोन्माद-दशा-ग्रस्त होकर अपने मन्दिरमें सर्वदा प्रेम-विह्वलभावमें विराजते हैं। श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु तथा श्रीवास आदि भक्तगण प्रभुके मन्दिरमें आकर उनके श्रीचरणोंका दर्शन कर जाते हैं। प्रभुकी इस समय प्रेमोन्माद दशा है, अतल-अगाध कृष्ण-विरह-सागरमें गोते लगा रहे हैं, संसारसे उनको तीव्र वैराग्य है। संसार-सुख उनको विषवत् लगता है। इसी समय एक दिन श्रीमन्महाप्रभुने श्रीअद्वैतप्रभुको अपने घरके अंदर महलकी छतपर बुलाया। आज प्रभु सबको वैराग्य-विद्याकी शिक्षा देंगे, इसी कारण यह आयोजन है। सार्वभौम भट्टाचार्यने प्रभुके संन्यासके पश्चात् निम्नलिखित श्लोककी रचना करके उनकी स्तुति की थी—

वैराग्यविद्या निजभक्तियोग-
शिक्षार्थमेकः पुरुषः पुराणः।
श्रीकृष्णचैतन्यशरीरधारी
कृपाम्बुधिर्यस्तमहं प्रपद्ये॥

संन्यास-ग्रहण करनेके पूर्व परम नारायण श्रीगौर-भगवान्‌ने इस वैराग्य-विद्यायोगकी शिक्षा घरपर बैठकर किस प्रकार अपने भक्तगण तथा नवीना प्रियाजीको दी थी, यही इस अध्यायमें वर्णित होगा।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अब चतुर्दशवर्षीया नवीना बाला हैं। वे अपने प्राणवल्लभके प्रेम-विह्वलभाव और संसारसे वैराग्यके भावको देखकर अत्यन्त संतप्त और व्यग्र हो उठी हैं। उनको इस नयी उम्रमें वैराग्यकी शिक्षा देनेके लिए ही चतुर-चूड़ामणि कौतुकी प्रभुने यह कौशल-जाल फैलाया था। प्रभु स्वयं वैराग्यके अवतार हैं। गौर-वक्ष-विलासिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने भी प्रभुके उपदेशसे तीव्र वैराग्ययोगका साधन किया था। उस वैराग्ययोगको समझानेके लिए ही प्रभुने अपने मन्दिरमें यह गुप्त सभा करके विशिष्ट अन्तरङ्ग भक्तोंको बुलाया।

ये सब बातें ठाकुर जयानन्दने अपने चैतन्य-मङ्गल-श्रीग्रन्थमें विशेषरूपसे वर्णन की हैं। इस गुप्त सभामें कौन-कौन लोग उपस्थित थे, यह भी उस श्रीग्रन्थमें लिखा है। उनके नाम हैं—पं० श्रीवासादि चारों भाई, गदाधर, ठाकुर हरिदास, जगदानन्द, गोपीनाथ, रामदास, मुरारिगुप्त, स्वरूप दामोदर, गदाधर दास, आचार्यरत्न, राघवपण्डित, और वक्रेश्वर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तवृन्द प्रभुके मनका भाव कुछ भी नहीं जानते । प्रभु अपने घरके बाहरी दालानमें ही भक्तगोष्ठी करते थे, आज यह विपरीत नियम क्यों हुआ ? वे लोग अन्तःपुरके भीतर बुलाये गये। इस भक्तगोष्ठीमें प्रभुके ससुर सनातन मिश्र भी थे, उनके मौसा महाशय आचार्यरत्न भी थे, खोला बेचनेवाले श्रीधर भी थे, और प्रभुके घरके पुरोहित महाशय भी थे।

प्रभुकी तत्कालीन प्रेमविकारावस्थाका वर्णन करके ठाकुर जयानन्दने अपने ग्रन्थमें जो लिखा है, उसको पढ़नेसे पाषाण-हृदय भी द्रवित हो जाता है । शचीमाता और विष्णुप्रियादेवीको किस प्रकारका मानसिक कष्ट था, कृपालु पाठकवृन्द इस वर्णनको पढ़कर सहज ही समझ जायँगे ।

ना लय चन्दन माला ना परे वसन ।
निगमे वसिया थाके, काँदे सर्वक्षण ।।
चाँचर केश ना बाँधे, ना शुने कारो कथा ।
भोर दूपुर बेला गौर जाय यथा तथा ।।
गजेन्द्र गमने जाये उलटि ना चाये ।
आउलाइल माथार केश, शची पाछू धाये ।।
कर्पूर-ताम्बूल छाड़ि प्रिय कृष्ण-केलि ।
कनक कुण्डल, हार, हिरण्य, मादुलि ।।
छाड़िया पालङ्की-शैया भूमे निद्रा जाये ।
किरे किरे करि घन डाके ऊर्ध्व बाये ।।
ना करे स्नान गौर, ना करे भोजन ।
ना करे श्रीअङ्गे वेश, तेल-उद्वर्त्तन ।।
दूर गेल, संध्या-तर्पण-देवार्चना ।
दूर गेल मन्त्र-जप्य, तुलसी-बन्दना ।।

ज. चै. म.

प्रभुका ऐसा विकट वैराग्य देखकर पुत्र-वत्सला स्नेहमयी शचीमाता तथा पतिप्राणा श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके मनमें कैसा दुःख होता होगा, भाषामें वर्णन नहीं किया जा सकता है । वह अनुभव करनेयोग्य है, वर्णनीय नहीं । प्रियाजी दूरसे प्राणवल्लभके श्रीचरणोंके उद्देश्यसे भूमिमें लोटकर रोते हुए प्रणाम करके कहतीं—"प्राणनाथ ! जीवनधन !! जीवनसर्वस्व !!! आप ऐसा क्यों करते हैं ? इस दासीको छोड़कर आप कहाँ जायँगे ? इस दासीने आपके चरणोंमें क्या अपराध किया है ?"

शचीमाताकी अवस्था बहुत सोचनीय है । उनको देखकर मालिनीदेवी, सर्वजयादेवी, नारायणी-देवी आदि आत्मीयगण व्याकुल होकर रो पड़ीं।

प्रभुकी तात्कालिक मानसिक अवस्था ऐसी हो थी । श्रीअद्वैतप्रभु आदि भक्तवृन्द प्रभुको घेरकर उनके शयन-मन्दिरमें भूतलपर बैठे हैं। प्रभुने स्वयं उनको वहाँ आज बुलाया है। किसलिए बुलाया है, यह वे लोग कुछ भी नहीं जानते। वे सब प्रभुके करुणाभरे सजल-मलिन मुखचन्द्रकी ओर देख रहे हैं। कोई कुछ बोल नहीं पा रहा है। प्रभु भी कुछ नहीं बोल रहे हैं। उनका मुखचन्द्र मलिन है, गम्भीर है और वैराग्य-भावोद्दीपक है।

श्रीअद्वैतप्रभु उनके सामने ही बैठे हैं। वे अधिक देरतक चुप न रह सके। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रभुसे पूछा—"हे प्रभो ! एक बात पूछता हूँ, बतलाओगे ? ईश्वरको वैराग्यभाव क्यों हुआ है ? स्वयं-भगवान्‌का वैराग्य देखकर क्या भक्तको सुख हो सकता है ? आनन्दमय भगवान् आनन्द-प्रदान करेंगे, वे वैराग्य क्यों करेंगे ?"

श्रीअद्वैतप्रभुकी इस बातका कुछ मर्म समझनेकी चेष्टा करें। वे महाविष्णुके अवतार हैं, सर्वज्ञ हैं। उनको कुछ भी अज्ञात नहीं है। वे प्रभुके अन्तः-करणको जानते हैं, प्रभु भी उनके अन्तःकरणको जानते हैं। उन्होंने प्रभुको स्पष्ट ही कहा—"तुम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साक्षात् भगवान् हो। तुम स्वयं सच्चिदानन्द-स्वरूप हो ! तुम सर्वानन्द, सदानन्द, नित्यानन्द तथा सर्वसुखकी खानि हो ! तुम क्यों वैराग्य करोगे ? तुम्हारे सुखमें ही सेवकको सुख है। तुम्हारे दुःखमें ही भक्तको दुःख है। भक्तके मनको सुख देना ही तुम्हारा कार्य है। तुम उनके मनको दुःख क्यों दोगे ? उन्होंने तो तुम्हारे सामने कोई अपराध नहीं किया है। तुम यदि उनसे विमुख होते हो तो उनका इस संसारसे क्या प्रयोजन रहेगा ? तुम तो सब-कुछ जानते हो ! जान-बूझकर यह कार्य क्यों करते हो ? हमारे भाग्यसे तुम नदियामें अवतीर्ण हुए हो। तुम्हें प्राप्तकर हम बड़े सुखसे हैं, हमारे मनको व्यथित मत करना। हमलोगोंको लेकर तुम जैसे आनन्द कर रहे थे, उसी प्रकार आनन्द करो।"

श्रीअद्वैतप्रभुकी बातोंका यही मर्म है। इसमें कुछ और भी निगूढ़ तत्त्व हैं। श्रीमती विष्णुप्रिया-देवीकी मर्म-व्यथासे वे अवगत हैं, शचीमाताके कष्टको विशेषरूपसे जानते हैं। प्रभुके इस वैराग्य-भावको देखकर प्रियाजी किस प्रकार व्यथित हुई हैं, उनके कोमल हृदयको कैसी चोट लगी है, यह सब सर्वज्ञ शान्तिपुरनाथ समझते हैं। शचीमाताकी हृदयाग्नि किस प्रकार उनकी देह-यष्टिको शनैः-शनैः भस्मीभूत कर रही है, यह भी उन्होंने अपनी आँखोंसे देखा है। इसी कारण आज उन्होंने समय और सुयोग पाकर प्रभुको वैराग्यसे लौटानेके लिए इतनी बात कही है।

इच्छामय प्रभुकी इच्छासे श्रीअद्वैतप्रभुके मुखसे ये सारी बातें प्रकट हुईं। इसका भी कुछ गूढ़ रहस्य है। प्रभुके सब कार्योंका निगूढ़ रहस्य होता है। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी उनकी पूर्ण शक्ति हैं, श्रीगौर-भगवान्‌की स्वरूपशक्ति हैं। प्रभु उनके सामने कुछ छिपा नहीं सकते और न ही छिपावेंगे। वे स्वतन्त्र ईश्वर हैं, इच्छामय हैं। उनकी जो इच्छा होगी, वही वे करेंगे। इसे कोई रोक नहीं सकता। इस वैराग्यके बारेमें श्रीअद्वैतप्रभुकी बात श्रीगौर-भगवान् नहीं सुनेंगे, यह समझ लेनेपर ही श्रीमती विष्णुप्रियादेवी प्रभुको इस कार्यसे विरत करनेसे क्षान्त हो जायँगी, यह समझानेके लिए ही लीलामय श्रीगौराङ्गप्रभुका यह लीलारङ्ग है। श्रीअद्वैतप्रभुको वे गुरुके समान जानते थे, इस बात-को शचीमाता और श्रीविष्णुप्रियादेवी विशेषरूपसे जानती थीं। उनकी बात प्रभु कदापि अस्वीकार नहीं करेंगे, यह उनका दृढ़ विश्वास था। शचीमाता बीच-बीचमें श्रीअद्वैतप्रभुको अपने पुत्रके संसार-वैराग्यकी बात कहकर उनको उपदेश देनेके लिए अनुरोध करती थीं, इसके फलस्वरूप ही शान्तिपुर-नाथ आज समय और सुयोग पाकर इतनी बात कह गये।

इच्छामय प्रभुकी इच्छा—वे जगत्‌को दिखलामेंगे कि वे स्वतन्त्र ईश्वर हैं, सम्पूर्ण स्वाधीन हैं; अपनी इच्छाके अनुसार कर्म करेंगे, कोई उसमें बाधक न हो सकेगा। भगवान्‌का कार्य, उनका उद्देश्य जीवकी आलोचनाका विषय नहीं बन सकता। प्रभुका उद्देश्य था, उन्होंने वैराग्य-तत्त्व भक्तवृन्दको भली-भाँति समझा दिया। श्रीअद्वैत-प्रभुकी बातसे उनका हृदय द्रवित हो गया। भक्त-सङ्ग त्याग करना पड़ेगा, यह सोचकर भक्तवत्सल हमारे प्रभु अतिशय कातर हो उठे। दो शब्दोंमें प्रभुने शान्तिपुरनाथकी इन सब बातोंका उत्तर दे दिया—

गौराङ्ग बलेन आमार वैराग्य स्वधर्म।
वैराग्य छाड़िया आमार नाहि कोन कर्म॥
ज. चै. म.

इन दो शब्दोंमें चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌ने अपने निर्विकार परम ब्रह्मभावका परिचय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दिया। उनके लिए जैसा वैराग्य था, वैसा ही संसार-सुख-भोग था। वे सुख-दुःखसे अतीत हैं, भोगवासनासे निर्लिप्त हैं। प्रभुने कहा है—"वैराग्य मेरा स्वधर्म है।" इस बातपर कुछ विचार करना आवश्यक है। वैराग्य श्रीभगवान्‌के षडैश्वर्यमें एक ऐश्वर्य है। यथा,

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसः श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा॥

विष्णुपुराण

अतएव वैराग्य श्रीभगवान्‌का धर्म है। केवल धर्म ही नहीं, यह उनका स्वधर्म है। श्रीभगवान्‌के इस वैराग्य-ऐश्वर्यका पूर्ण विकास श्रीगौराङ्ग-अवतारमें ही दिखलायी देता है, अन्य किसी भी अवतारमें उन्होंने इसको पूर्ण प्रकाशित नहीं किया है। महाजनगण कह गये हैं कि अन्यान्य अवतारोंकी अपेक्षा श्रीगौराङ्ग-अवतार श्रेष्ठ है—यही इसका प्रधान कारण है। वैराग्य श्रीभगवान्‌का सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य है; क्योंकि षडैश्वर्यमय भगवान्‌का वैराग्य-भाव एक विल्कुल नवीन वस्तु है। श्रीभगवान्‌के वैराग्यको देखकर सब जीवोंका हृदय द्रवित हो जाता है; स्थावर-जङ्गम, पशु-पक्षी-पर्यन्त भगवद्-भावमें विह्वल होकर श्रीभगवान्‌के चरणोंमें आत्म-समर्पण करते हैं। श्रीभगवान् स्वयं आचरण करके जीवको वैराग्य-धर्मकी शिक्षा देते हैं। वे भी स्वधर्म-का पालन करते हैं। अतएव वैराग्य उनकी एक आकांक्षाकी वस्तु है और अति प्रिय वस्तु है। इसी कारण यह उनके श्रेष्ठ ऐश्वर्यमें परिगणित है।

प्रभु अपने मन्दिरमें बैठकर अपनी चतुर्दश-वर्षीया त्रैलोक्यसुन्दरी तरुणी भार्याके सामने शोकातुरा वृद्धा स्नेहमयी जननीको सुना-सुनाकर ये सब वैराग्यकी बातें कह रहे हैं, यह देखकर भक्तोंके मनमें बड़ा दुःख हुआ। वे मन-ही-मन सोचने लगे कि ये सब बातें प्रभु अपने घर बैठकर न बोलते तो अच्छा रहता। श्रीअद्वैतप्रभु और अन्यान्य भक्तवृन्द प्रभुकी बातें चुपचाप सुन रहे हैं। जब प्रभु बोले—

"वैराग्य छाड़िया आमार नाहि कोन कर्म।"

—तब श्रीमती विष्णुप्रियादेवी चौंक पड़ीं; उनके सिरपर मानो वज्रपात हो गया। प्रियाजी और शचीमाता बगलके घरमें बैठीं ये सारी बातें सुन रही थीं। देवी मूर्च्छित होकर शचीमाताकी गोदमें गिर पड़ीं। शचीमाता पुत्रवधूको लेकर व्याकुल हो उठीं। बहुत यत्नसे उनकी मूर्च्छा दूर की गयी। वहाँसे वे उनको घरके भीतर ले जानेकी विशेष चेष्टा करने लगीं। प्रियाजी इसमें सहमत न हुईं। वे स्थिर होकर बैठ गयीं और पुनः प्रभुके श्रीमुखकी बात सुनने लगीं।

अब प्रभु गम्भीर भावसे उपस्थित भक्तगणको वैराग्ययोगकी शिक्षा देने लगे। उन्होंने जड़भरतकी बात उठाकर श्रीमद्भागवतीय श्लोकोंकी व्याख्या करके अपने प्रस्तुत विषयको समझाया। ऋषभदेवके वैराग्यकी बात उठाकर वैराग्ययोगको उन्होंने विशदरूपसे समझाया। पश्चात् सबको लक्ष्य करके बोले—

सेइ निद्रा सिंहासन पालङ्क उपरे।
सेइ निद्रा तृण-काष्ठ-कुटीर भितरे॥
देह माझे करङ्गेते करे जल-पान।
दुइ जले तृषा खण्डे संतोष समान॥
अल्प भाग्ये नहे देहे वैराग्य प्रकाशे।
अल्प भाग्ये नहे गुरु-चरण-प्रवेशे॥

चै. ज. म.

प्रभुकी ये सारी बातें सुनकर श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने समझा कि उनका भाग्य फूट गया। प्रभुके मनका भाव समझकर प्रियाजी विशेष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उत्कण्ठित हुईं। उन्होंने अब समझा कि ये सब तीव्र वैराग्यकी बातें उनको समझानेके लिए ही उनके प्राणवल्लभने यह कौशल-जाल फैलाया है। उनको लक्ष्य करके ही प्रभु वैराग्ययोगकी शिक्षा भक्तवृन्दको देंगे। उन्होंने यह भी समझा कि उनके प्राणवल्लभ वैराग्यके अवतार हैं। वैराग्य-अवतारकी नारी होनेके कारण उनको भी तीव्र वैराग्ययोगका अनुष्ठान करना पड़ेगा। प्रभुके उपदेशका लक्ष्य भी यही है। उन्होंने उनको वैराग्यकी शिक्षा देनेके लिए ही यह जाल फैलाया है। बुद्धिमती सनातन-नन्दिनी इस बातको खूब समझ गयीं।

श्रीअद्वैतप्रभु और भक्तवृन्दने सब सुना। प्रभु स्वतन्त्र ईश्वर हैं, इच्छामय हैं। उनकी बातका उल्लङ्घन कौन करेगा? एक पहर रात जानेपर भक्तवृन्द अपने-अपने घर गये। प्रभुका विषम वैराग्यभाव देखकर सभी मनके दुःखसे हाय-हाय करने लगे। दुःखिनी प्रियाजीकी बातका स्मरण करके, वृद्धा शचीमाताका दुःख याद करके सभी अश्रु बहाने लगे। श्रीपाद सनातनमिश्र दुःखसे अभिभूत होकर बालकके समान उच्च स्वरसे रो पड़े। घर आनेके समय एक वार कन्यासे भेंट भी न कर सके। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न घरसे बाहर आकर सिर पीटकर रास्तेमें बैठ गये। सब-लोग हाथ पकड़कर उनको घर ले गये।

प्रियाजी और प्रभु

उस दिन रातमें प्रभुकी इच्छासे प्रियाजीके साथ उनका मिलन हुआ। प्रभुने परम गम्भीरता-पूर्वक अति सुस्पष्ट भाषामें प्रियाजीको तीव्र वैराग्य-योगकी शिक्षा दी। वह बड़ी विषम कथा है।

प्रभु अपने मन्दिरमें भूतलपर सोये हैं। वे अब पलंगपर नहीं सोते। शचीमाताकी मनस्तुष्टिके लिए प्रभु यथासाध्य चेष्टा करते हैं; परन्तु कुछ भी कर नहीं पाते। उनका मन वशीभूत नहीं होता, देह अपना कार्य नहीं कर पाती। जिस दिन प्रभुने वैराग्यकी बातें कीं, उसी दिन प्रियाजीने प्रभुके शयन-मन्दिरमें जाकर देखा कि उनके प्राणबल्लभ भूमि-शैयापर सोकर अजस्र आँसू बहा रहे हैं। यह देखकर सरला पतिप्राणा श्रीविष्णुप्रियादेवीके मनमें कैसी विषम व्यथा हुई होगी, यह कृपालु पाठक सहज ही विचारकर देख सकते हैं।

यह दारुण मनःकष्ट और भीषण मर्मवेदनाका विवरण कल्पनातीत होनेपर भी गौर-भक्तके ध्यान-का विषय है। दुःखिनी प्रियाजीकी तात्कालिक मनकी अवस्थाकी बात दो दण्ड स्थिर होकर चिन्तन और अनुशीलन करनेसे मलिन हृदय निर्मल हो जायगा, चिरशुष्क नयनमें वारिधारा प्रवाहित हो जायगी, पाषाण-हृदय भी द्रवित हो जायगा। प्रिय पाठकवृन्द! कृपा करके मन स्थिर करके देवीकी तात्कालिक अवस्था एक बार ध्यान देकर देखें। श्रीभगवान्‌की आनन्दमय श्रीमूर्तिका ध्यान तो सभी करते हैं। सच्चिदानन्द श्रीभगवान्‌की आनन्दमय लीलाका ध्यान करनेसे चित्त आनन्दमय होता है, मन प्रफुल्ल होता है, इसमें संदेह नहीं है; किन्तु श्रीभगवान्‌की सर्वोत्तम लीलाकी दुःखमय कथा, उनके निजजन तथा भक्तोंके विरह-ज्वालामय उच्छ्वास-तरङ्ग, उनकी लीलाकी प्रधान सहायिका अन्तरङ्ग शक्तिरूपा लक्ष्मी-गणकी प्राणस्पर्शी विरहोन्माद-दशा भी भक्तवृन्दके ध्यानका विषय हैं। इन सब दुःखपूर्ण भगवल्लीलाओंका अनुशीलन या ध्यान करनेपर मनमें जो प्रेमावेगका उदय होता है, हृदयमें जो कातरभावकी सृष्टि होती है, उसका फल प्रत्येक इन्द्रियके द्वारा लक्षित होता है। अश्रु कम्प, पुलक, रोमाञ्च, स्वेद, घर्म आदि अष्ट सात्त्विक भाव उदय होकर जीवके मनकी मलिनताको नष्ट कर देते हैं, उनके मनके सारे अवसाद दूर करके चित्तमें प्रसाद उत्पन्न करते हैं। श्रीभगवान्‌की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नर-लीलाके सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम होनेका प्रकृष्ट प्रमाण इन सब करुण-रसात्मक लीलाओंका अनुशीलन और आस्वादन करनेसे प्राप्त होता है। कृपालु पाठकवृन्द ! गौरवक्षविलासिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके मनःकष्टको मन-ही-मन समझ लें और इसे समझकर निर्जनमें बैठकर चुपचाप दो बूंद अश्रु-विसर्जन करें। इससे आपका हृदय निर्मल हो जायगा, आपको चित्त-शुद्धि होगी, और आपके प्राणोंमें भगवत्प्रेमका उदय होगा।

प्रियाजी धीरे-धीरे जाकर प्रभुके पादमूलमें बैठ गयीं। प्राणवल्लभकी कृष्ण-विरहोन्माद-दशा देखकर उनका सिर चकराने लगा। वे अधिक देर स्थिर रहकर खड़ी न रह सकीं। प्रभु भूतलपर अजस्र अश्रु बहा रहे हैं; उनको यह खबर नहीं है कि प्रियाजी उनके पदतलमें बैठी हुई हैं। श्रीमती विष्णुप्रिया चुपचाप कुछ देरतक अपने प्राणवल्लभके सब अङ्गोंकी ओर करुण दृष्टिसे देखती रहीं, पश्चात् कातर-कण्ठसे उनका चरण पकड़कर रोते हुए कहने लगीं—"स्वामिन् ! प्राणवल्लभ !! हृदय-देवता !!! आपने जो कहा है कि वैराग्य आपका स्वधर्म है तो क्या आप इस दासीको छोड़कर चले जायँगे ? हृदयरत्न ! आप चाहे जहाँ जायँ, मैं आपका साथ न छोड़ूँगी। पति-सेवा ही स्त्रीका प्रधान धर्म है, यह धर्म मैं नहीं छोड़ सकती। लोग चाहे जो कहें, मैं आपके साथ जाऊँगी।"

प्रभु उस समय मस्तक अवनत करके बैठे थे। प्रियाजीकी बात उनके कानोंमें पहुँची या नहीं, वे ही जानें। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी पुनः कहने लगीं—"प्राणवल्लभ ! मेरे जीवन-सर्वस्व !! तुम्हारे इस प्रकारसे सिर नीचा करके रोनेसे काम न चलेगा। मेरी बातका उत्तर दो। रामायणमें मैंने पढ़ा है कि श्रीरामचन्द्रजीने जब वन-गमन किया तो अपनी प्रियतमा श्रीजानकीजीको भी साथ ले गये। महाभारतमें पढ़ा है कि धर्मपुत्र युधिष्ठिर जब जूएमें हारकर अज्ञातवासमें गये थे तो द्रौपदीको भी साथ ले गये थे। आपके ही श्रीमुखसे नल-दमयन्तीकी कथा तथा श्रीवत्स राजाकी कथा सुनी है। वे लोग जो कर गये हैं, आप भी वही करें। आप यदि वैराग्य करते हैं तो मैं भी आपके साथ वैराग्य करूँगी। आप इस दासीको छोड़कर कहीं जा नहीं सकते।"

प्रभुको इतनी देरके बाद बाह्य ज्ञान हुआ। प्रियाजीकी हृदय-विदारक मर्म-व्यथाकी बात उन्होंने एक-एक करके सब सुनीं। इच्छामय प्रभुकी इच्छा हुई कि देवीको वैराग्यका कुछ उपदेश दें। उन्होंने परोक्षमें यह शिक्षा दी है, अब प्रत्यक्ष रूपसे दो-एक अति गुह्य बातें कहेंगे, इसीलिए हमारे चतुर-चूड़ामणि प्रभु यह जाल बिछाकर शयन-गृहमें बैठे हैं। उन्होंने अपने मुखचन्द्रको अवनत कर रखा था, अब धीरे-धीरे उठाया। प्रियतमाके अश्रुपूर्ण दुःख-कातर मुखचन्द्रकी ओर गम्भीर भावसे एक बार देखा और फिर देख न सके। पुनः मुखचन्द्रको अवनत कर लिया। अब प्रभुने धीरे-धीरे मुँह नीचा करके प्रियाजीको वैराग्यका उपदेश देना प्रारम्भ किया—"देखो, माता-पिता, पुत्र-कन्या, पति-पत्नी कोई किसीका नहीं है। सभी अपने अपने कर्मफलको भोग रहे हैं। कृष्ण-भजनके बिना जीवकी अन्य गति नहीं है। संसारकी मायासे मुग्ध होकर कृष्ण-भजन मत भूलना। जो कुछ संसारमें देख रही हो, वह सब पद्म-पत्र-स्थित जलके समान क्षण-स्थायी है। जीवन-यौवन, जन-धन—सब विनाशशील हैं, संसार मिथ्या है। यहाँ कोई किसीका आत्मीय नहीं है। एकमात्र परम पुरुष श्रीकृष्ण ही परम आत्मीय हैं। प्रियतमे ! विष्णुप्रिये !! मैंने सार वस्तु तुमसे कह दी है। तुम अपनी मर्यादाकी रक्षा करना। स्त्रीके साथ संन्यास नहीं होता, अतएव मैं तुमको साथ न ले जा सकूँगा। अतः इसके लिए तुम दुःख न मानना।" (ज० चैतन्यमङ्गल)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुकी यह अन्तिम बात सुनकर प्रियाजी चकित हो उठीं। उनके सिरपर मानो वज्रपात हुआ। प्रभुकी इस अन्तिम बातका यहाँ कुछ विचार किया जाय।

प्रभुने अबतक यह बात किसीसे नहीं कही है कि वे संन्यास लेंगे। उनकी कृष्ण-प्रेमोन्माद-दशा और संसारके प्रति वैराग्य-भाव देखकर बहुत-से लोग यह सोचते हैं कि वे संसारमें नहीं रहेंगे; परन्तु प्रभुने स्वयं अपने मनकी बात अपने मुखसे अबतक किसीसे भी नहीं कही है। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी प्रभुकी अन्तरङ्ग स्वरूप-शक्ति हैं। शक्ति और शक्तिमान् अभेदात्मा हैं। शक्तिके बिना शक्तिमान्का अस्तित्व नहीं रहता। प्रभुने जो मनमें संकल्प कर रखा है, उसको उनकी अन्तरङ्गा स्वरूप-शक्ति जान रही हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके सामने कुछ छिपानेकी चीज नहीं है और उससे कुछ छिपाना भी नहीं चाहते। अतएव उन्होंने अपना गुप्त संकल्प सर्वप्रथम अपने सर्वश्रेष्ठ निजजन प्रियाजीके सामने प्रकट किया। उन्होंने स्पष्ट कहा—"वैराग्य मेरा स्वधर्म है। मुझे इसका पालन करना ही पड़ेगा। वैराग्यका अवश्यम्भावी फल है—संन्यास-ग्रहण। स्त्री-सङ्गमें संन्यास नहीं होता।" (ज. चै. मं.)

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने यह सर्वप्रथम अपने प्राणवल्लभके मुखसे सुना कि वे गृह-त्याग करके संन्यास-ग्रहण करेंगे। नवीना प्रियाजीका सिर चक्कर काटने लगा। उनके कमल-नयनद्वयसे झर-झर अश्रुधारा बहने लगी। चक्षु-जलसे उनका वक्षःस्थल भीग गया। उनको चतुर्दिक् अन्धकार दीखने लगा। प्रभुने पुनः एक बार वदन उठाकर प्रियतमाकी ओर प्रेमपूर्ण दृष्टिसे देखा। प्रियाजीके प्रति उनका वैराग्यका उपदेश अभी समाप्त नहीं हुआ था।

वे पुनः सिर नीचा करके बोले—"प्रियतमे! विष्णुप्रिये!! तुम नवद्वीपमें रहोगी। नवद्वीप तुम्हारे स्वामीकी जन्मभूमि है। सस्त्रीक वैराग्य-धर्मकी साधना नहीं होती, इस कारण मैं तुमको साथ न रख सकूंगा। इसके कारण मैं दुःखित हूँ। तुम ब्राह्म मुहूर्तमें उठकर नित्य अलकनन्दाके जलमें स्नान करना, मेरे त्यागे हुए वस्त्रोंको पहनना। मेरे इस मन्दिरमें बैठकर "**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे हरे। राम हरे राम राम राम हरे हरे॥**" इस सोलह नाम एवं बत्तीस अक्षरके हरिनाम-महामन्त्रका संख्यापूर्वक जप करना। सूखे चावल कुछ जमीनपर रखना। प्रत्येक नामजपके साथ-साथ एक-एक सूखा चावल उठाकर दूसरे स्थानमें रखना। इस प्रकार दो पहरतक हरिनाम-जप करके उन चावलोंको राँधकर तुलसी-मञ्जरी डालकर श्रीकृष्णको भोग लगाना। वह महाप्रसाद वैष्णवोंको बाँटकर शेष तुम भोजन करना। हरिनाम-संकीर्तन कराना तथा वैष्णवोंको अन्न-दान करना। मेरे इस उपदेशका पालन करना, इससे मुझे संतोष होगा।"

प्रभुकी इन बातोंपर कुछ और विचार किया जाय। उन्होंने प्रियाजीसे कहा—"तुम नवद्वीपमें रहो, नवद्वीपमें तुम्हारे पतिका घर है, तुमको मैं सङ्ग न ले जा सकूँगा, स्त्री-सङ्गसे धर्मकी हानि होती है।" यहाँ प्रभुने प्रियाजीको तीन बातें कही हैं। पहली बात यह है कि 'तुम नवद्वीपमें रहो।' इस बातका गूढ़ अर्थ है। प्रभु जानते हैं कि संन्यास-ग्रहण करनेके बाद वे नवद्वीप न आ सकेंगे। नवद्वीप उनकी नित्य लीलास्थली है। वे इस नित्यधाममें नित्य युगल-विलास करते हैं। उनका कपट-संन्यास है, यह बात खोलकर वे प्रियाजीसे बोल न सके; क्योंकि वे कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। 'तुम नवद्वीपमें रहो।'—इसका अर्थ यह है कि तुम जहाँ हो, मैं भी वहाँ ही हूँ। तुम्हारे नवद्वीपमें रहनेसे मैं भी नवद्वीपमें रहता हूँ। दूसरी बात यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है कि, नवद्वीप तुम्हारे पतिका गृह है। पतिके घरमें ही स्त्रीको सदा रहना चाहिये। पतिके घरमें वास ही स्त्री-जातिके लिए स्वर्गमें वास है, तीर्थमें वास है—इत्यादि। नदिया नित्यधाम है, श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाकी युगल-विलास-लीलास्थली है। यह नित्यधाम छोड़कर वे कहीं जा नहीं सकते, यही प्रभुके मनका भाव है। तीसरी बात है—'**सस्त्रीकं धर्ममाचरेत्**'—इस महाजन-वाक्यका विरोध। यहाँ 'धर्म' शब्दका अर्थ विभिन्न रूपोंमें समझना पड़ेगा। प्रियाजीने प्रभुसे पहले श्रीरामचन्द्र, युधिष्ठिर, राजा नल, राजा श्रीवत्स आदिके सस्त्रीक धर्माचरणकी बात उठाकर इस कार्यको 'वेद-विहित लोकाचार' कहा है। प्रभुने इसका उत्तर देते हुए कहा है कि सस्त्रीक धर्म कभी नहीं होता। यहाँ 'धर्म' शब्दका अर्थ संन्यास-धर्म समझना होगा। श्रीभगवान्‌के षडैश्वर्यमें एक ऐश्वर्यको 'वैराग्य' नाम दिया गया है। यह वैराग्य-धर्म, जिसका प्रभुने स्वयं आचरण करके जीवको शिक्षा दी है, सस्त्रीक आचरणीय नहीं है। यह गार्हस्थ्य धर्मके अन्तर्गत नहीं है। यह सम्पूर्ण स्वतन्त्र वस्तु है। श्रीगदाधरपण्डित, स्वरूप दामोदर, हरिदास ठाकुर, जगदानन्द पण्डित आदि प्रभुके अन्तरङ्ग पार्षदगण प्रभुकी कृपासे इस वैराग्य-विद्याकी शिक्षा-ग्रहण करके स्वधर्मका आचरण कर रहे हैं। इस धर्ममें प्रकृतिका मुख-दर्शन भी निषिद्ध है। प्रभु लोकशिक्षाके लिए, कलिके जीवोंके उद्धारके लिए इस प्रकारका वैष्णव-संन्यास-ग्रहण करेंगे। इसी कारण कहा है कि '**सस्त्रीक धर्म कभू नहे।**'

प्रभु प्रियाजीको कठोर वैराग्य करनेके लिए कहकर मन-ही-मन कुछ संतप्त हो गये। प्रियाजीका नवीन वय, नव यौवनका प्रारम्भमात्र था। इस अल्पावस्थामें कठोर वैराग्य-साधन उनके लिए सम्भव न था। इसको विचक्षण प्रभु खूब जानते थे। प्रियाजीका मलिन मुख, नीरव क्रन्दन, उदास भाव देखकर चतुर-चूड़ामणि प्रभुने समझा कि जो उनको बतलाया है, उसीसे कार्य हो जायगा। अब उनको सतीधर्मके विषयमें कुछ उपदेश देनेकी इच्छा हुई। साध्वी स्त्रियोंके लिए सतीधर्म ही परम धर्म है, सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ धर्म है। उन्होंने प्रियाजीको जिस कठोर वैराग्यव्रतका अनुष्ठान करनेकी आज्ञा दी, उस आज्ञाका पालन करना ही उनका सर्वश्रेष्ठ धर्म था। पतिव्रता नारीके लिए पतिकी आज्ञा-पालन करनेके सिवा अन्य कोई धर्म-कर्म नहीं है—इसी कारण प्रभुने यह बात उठायी। उन्होंने रोती हुई प्रियतमासे कहा—

पति-धर्म रक्षा करे सेइ पतिव्रता।
नवद्वीपे विष्णुप्रिया तुमि कल्पलता॥
शुन शुन विष्णुप्रिया न कर क्रन्दन।
पति आज्ञा लंघिले कि धर्मे प्रयोजन॥

ज. चै. म.

अन्तिम वाक्यमें हमारे प्रभुने पतिभक्तिकी अन्तिम व्याख्या कर दी। उसे श्रीमती विष्णुप्रिया-देवीने स्थिरतापूर्वक सुन लिया। अबतक उन्होंने सिर उठाकर एक भी बात नहीं कही थी। उनके दोनों नेत्र प्रभुके चरण-कमलके ऊपर न्यस्त हैं और अश्रु-जलसे वक्षःस्थल प्लावित होकर भूतलको सिक्त कर रहा है। सर्वज्ञ प्रभु कर्तव्यनिष्ठ गुरुके समान सामने बैठकर अपनी प्रियतमाको कठोर वैराग्यका उपदेश दे रहे हैं; प्रियाजी उसको ध्यान-पूर्वक सुन रही हैं। प्रभुने स्वयं प्रियाजीको पहले हरिनाम-महामन्त्र प्रदान किया है, गुरुका कर्तव्य वे पालन कर रहे हैं। उन्होंने पुनः उसी कठोर वैराग्य-व्रतके अनुष्ठानकी बात उठाकर प्रियाजीको गम्भीर भावसे उपदेश किया—

अरुण उदय काले गङ्गास्नान करि।
मन्दिरे आसिया दिव्य धौत वस्त्र परि॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक मुष्टि आतप तण्डुल भूमे फेलि।
एकटि तण्डुल लैया हरे कृष्ण बलि॥
हरिनाम बत्रिश अक्षर हैले।
सेइ तण्डुल गुलि थूबे गङ्गाजले॥
एइ मत तिन प्रहर जत पार।
रन्धन करिया कृष्णे निवेदन कर॥
से अन्न-भक्षण कर देह-रक्षा—हेतु।
तोमार चरित्र लोके धर्म-शिक्षा-सेतु॥

ज. चै. म.

गुरुके कठिन आदेशको उपयुक्त शिष्यने स्थिर होकर सुना। प्रभुने इस कठोर आदेशकी पुनरुक्ति क्यों की, बुद्धिमती श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको यह समझनेमें कुछ बाकी न रहा। उन्होंने मन-ही-मन समझ लिया कि प्रभुको उनकी कर्तव्यनिष्ठामें संदेह हो गया है। यह सोचकर प्रियाजीके मनमें बड़ा दुःख हुआ। वे दुःख किसको कहें? मनके दुःखको मनमें ही दबाकर रखनेकी चेष्टा करनेसे नयनोंकी अश्रुधाराके द्वारा वह प्रकट हो जाता है। यहाँ प्रियाजीकी भी वही दशा हुई। उनके नयनद्वयसे प्रबल वेगसे झर-झर अश्रुधारा प्रवाहित होकर भूतलको सिक्त करने लगीं। जगज्जननीके उष्ण अश्रुजलसे जगद्गुरु श्रीगौराङ्गप्रभुके रक्त पाद-पद्म धुल गये। प्रभुने देखा कि देवी बड़ी कातर हो रही हैं, यहाँ कुछ सान्त्वना देनेकी आवश्यकता है। यह सोचकर प्रियतमाको 'वैष्णव-जननी' कहकर सम्बोधन करते हुए नवद्वीपके वैष्णव-धर्मकी रक्षाका गुरुतर भार प्रियाजीके ऊपर समर्पित कर दिया। प्रभुने कहा—

शुन सती विष्णुप्रिया वैष्णव-जननी।
नवद्वीप रक्षा कर चिन्त मने शुनि॥
कलिकाल सर्पे दंशिबे सर्व जीवे।
सकीर्तन बिना किछू न करल सबे॥
तुमि ना थाकिले हबे संकीर्तन वाद।
नवद्वीप लैया हबे बड़इ प्रमाद॥
महान्त-वैष्णव-उदासीने हब द्वन्द्व।
तुमि सभार मा पुत्रे कराबे आनन्द॥
बाप शून्य पुत्र जीये, माय शून्य मरे।
इहा जानि थाक सती नवद्वीप पुरे॥
आमार वचन सती कर अवधान।
तोमार शाशुड़ी जेन दुःख नाइ पान॥

ज. चै. म.

कृपालु पाठकवृन्द! प्रभुकी उपर्युक्त बातोंपर कुछ विचार कीजिये। हमारे सर्वज्ञ प्रभु सर्वदर्शी हैं। उन्होंने प्रियाजीको 'वैष्णव-जननी' कहकर सम्बोधन किया है; क्योंकि वे साक्षात् भक्तिदेवी हैं। भक्ति ही वैष्णवकी जननी है। जननी जैसे संतानको प्रिय होती है, भक्ति भी उसी प्रकार वैष्णवको प्रिय होती है। नवद्वीपमें अब भी अनेकों पाखण्डी हैं, जिन्होंने प्रभुसे मधुर हरिनाम नहीं लिया है। उनके ही उद्धारके लिए प्रभुने संन्यासका संकल्प किया है। वे तो नवद्वीप छोड़कर चले जायँगे; इन सब पाखण्डी पण्डितोंका उद्धार कौन करेगा, इसी कारण उन्होंने यह गुरुतर भार अपनी भक्तिस्वरूपिणी प्रियाजीके ऊपर दे दिया।

कलियुगावतार श्रीगौराङ्गप्रभुने इसके बाद युगधर्म संकीर्तनकी बात उठायी। '**कलौ तद्धरि-कीर्तनात्।**'—इस शास्त्र-वचनकी मार्मिक व्याख्या करके प्रियाजीसे कहा—"तुम्हारे नवद्वीपमें न रहनेसे मेरा इतनी साधका हरि-संकीर्तन बंद हो जायगा। ऐसा होनेपर नवद्वीपमें बड़ी विपज्जनक अवस्था हो जायगी; क्योंकि नवद्वीपके लोगोंमें जो कुछ भक्ति हुई है, वह केवल युगधर्म-पालनके कारण हुई है।" हमारे प्रभु संकीर्तनके पिता हैं और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीविष्णुप्रिया, हमारी माँ संकीर्तनकी जननी हैं। पिता उपयुक्त माताके ऊपर पुत्रके लालन-पालनका भार देकर निश्चिन्त हो गये। प्रभु एक और बड़ी मधुर बात बोले। वैष्णव, उदासीन, गृहस्थ, महन्त आदिमें जब धर्मके सम्बन्धमें कोई विवाद खड़ा होगा, तब श्रीविष्णुप्रियादेवी मध्यस्थ होकर उनके विवादको दूर करेंगी और वैष्णव-धर्मके सम्मान और मर्यादाकी रक्षा करेंगी। यह भी अत्यन्त गुरुतर भार है। प्रभु प्रियाजीकी शक्तिसे अवगत हैं, इसी कारण ऐसे गुरुतर कार्यका भार उनके ऊपर अर्पण कर दिया।

प्रभुने प्रियाजीको पुनः समझाकर कहा—"विष्णुप्रिये! तुम नवद्वीप छोड़ न सकोगी। नदियावासी मुझे पुत्रसे भी अधिक प्रिय हैं। पितृहीन बालक मातृ-स्नेहसे पालित होता है; परन्तु मातृहीन बालक मातु-स्नेहके अभावमें प्राण-त्याग करता है। मैं नदिया छोड़कर जा रहा हूँ। तुम यदि यहाँ न रहोगी तो मेरे नदियावासी भक्तवृन्द जीवित न रहेंगे। उनके सामने तुम मेरी अपेक्षा भी महान् हो।" प्रभुने यहाँ भागवतीय श्लोक "**मद्भक्तपूजाभ्यधिका**, (भा. ११.१९.२१) इस भक्ति-वाक्यकी व्याख्या की है।

इसके बाद प्रभुने मन-ही-मन सोचा कि उन्होंने प्रियतमाको कठोर वैराग्यकी शिक्षा दी है। उनकी वृद्धा माता अभी जीवित हैं। उनके कलेजेका शूल बनकर प्रियाजी घरपर रहेंगी। इस नवीन वयसमें यदि वे उनके उपदेशके अनुसार कठोर वैराग्य-साधना करती हैं तो इससे वृद्धा जननीके कष्टका पार न रहेगा। मृत देहपर तलवारकी चोट पड़नेसे उनके प्राण-पखेरु उड़ जायँगे। यह सोचकर प्रभुने प्रियाजीको इशारेसे कहा—"इस समय यह वैराग्यकी शिक्षा, जो मैं तुझे दे रहा हूँ, करणीय नहीं है। जबतक मेरी वृद्धा माता जीवित हैं, तबतक यह आचरणीय नहीं है"—

आमार वचन सति कर अवधान।
तोमार शाशुड़ी जेन दुःख नाहिं पान॥

प्रियाजी अत्यन्त चतुर और बुद्धिमती हैं। प्रभुका इशारा समझनेमें उनको देर न लगी। उन्होंने हृदयवल्लभकी बातका मर्म समझकर चुपचाप उनके उपदेशको स्वीकार कर लिया। जितने दिन शचीमाता जीवित रहीं, प्रियाजीने कोई कठोरता जीवनमें आने न दी।

प्रभुने प्रियाजीको इतनी बातें कहीं, परन्तु उन्होंने एक बातका भी उत्तर न दिया। वे चुपचाप प्रभुकी उपदेश-वाणी सुनती रहीं और आँखोंसे अविरल अश्रुधारा विसर्जित करती रहीं। यह देखकर प्रभुके मनमें साहस हुआ। उन्होंने और भी दो-एक बातें कहनेका सुयोग देखकर भक्तपूजाका प्रसङ्ग उठाया। उन्होंने अपनी प्रियतमासे कहा—"देखो! मेरे भक्तगण मुझसे भी बड़े हैं। इस नवद्वीपमें मेरे अनगिनत भक्त विराजते हैं। गङ्गास्नान, विष्णुपूजा, भागवत-श्रवण, हरि-संकीर्तन, इन सब धर्मोंका आचरण और भक्तपूजा समान फलप्रद है। मेरे भक्त नित्यानन्द, हरिदास ठाकुर, पं० श्रीवास, गदाधर, रामदास, जगदानन्द, वक्रेश्वर आदि एक-एक वैष्णव श्रीविग्रह हैं। मुझसे उनको बड़ा समझकर उनकी पूजा करना। उनकी पूजा करना और मेरी पूजा उनके बाद करना।"

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने प्रभुके श्रीमुखके सब उपदेशोंको कण्ठका हार बना लिया; परन्तु किसी बातका उत्तर उन्होंने नहीं दिया। वे चुपचाप आँसू बहाती रहीं। यह देखकर प्रभुके मनमें निश्चय ही बड़ा कष्ट हुआ। उनका दुःख वे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जानते थे। कर्त्ताव्यके अनुरोधसे उन्होंने नवीना प्रियाजीको कठोर व्रत-पालन करनेका उपदेश दिया; परन्तु वे मन-ही-मन बहुत दुःखी हुए। इस बातको इस समय कैसे खुलकर कहें ? वे जानते हैं कि उनके विरहमें देवीकी क्या अवस्था होगी ! इसी कारण उन्होंने प्रियाजीको सान्त्वना देते हुए दो-चार बातें कहीं। प्रभुने इसबार प्रियाजीके मुखचन्द्रकी ओर करुण नयनसे देखकर गद्‌गद स्वरमें कहा—"प्रियतमे ! विष्णुप्रिये !! तुम सोच मत करो ! तुमको छोड़कर जाना पड़ेगा, यह हमारे लिए बड़ा ही विषम दुःख है। परन्तु में क्या करूँ ? यदि मैं वैराग्य नहीं करता तो कलिके अधम जीवोंका उद्धार कैसे होगा ? वैराग्य मेरा स्वधर्म है। मैं स्वयं आचरण करके यदि जीवको शिक्षा न दूँगा तो और कौन देगा ? इसका विचार तुम्हीं करो।"

यहाँ श्रीगौर-भगवान्‌ने कुछ निज-तत्त्वको प्रकट कर दिया। उनका यह भाव ऐश्वर्य और माधुर्य-मिश्रित है। श्रीभगवान् जब केवल ऐश्वर्य-प्रकाश करते हैं तो जीव उनके पास जानेका साहस नहीं करता, दूरसे ही साष्टाङ्ग प्रणाम करता है; और जब वे माधुर्यभाव प्रकट करते हैं, तब जीव साहस करके उनके पास जाता है और उनका सङ्ग करनेका साहस करता है। प्रभु पहलेसे ही कर्त्ताव्यनिष्ठ गुरुके समान प्रियाजीको वैराग्यका उपदेश देते आ रहे थे, प्रियाजी सुनती आ रही थीं। उपदेशके वचनका उत्तर क्या दें ? धर्मोपदेष्टाके उपदेश और आदेशके ऊपर जो तर्क करते हैं, उनको सुबुद्धि नहीं होती; इसी कारण बुद्धिमती प्रियाजीने अबतक कोई बात नहीं कही। अब जब उन्होंने प्रभुके श्रीमुखमें माधुर्यका विकास देखा, उनकी आँखोंमें आँसू देखे, उनके मनकी बात सुनी तो उनके हृदयका दुःख समझमें आया। तब उनका दुःख-भार दूना बढ़ गया। तब वे हृदयके आवेगको रोक न सकीं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी छिन्नमूल पादपके समान प्रभुके चरणतलमें गिर पड़ीं ओर उच्च स्वरसे रुदन करने लगीं। उनकी लज्जा और सम्भ्रमका बाँध टूट गया। शचीमाता पास ही दूसरे घरमें हैं। वे रातमें उच्च स्वरसे उनका रुदन सुनकर क्या सोचेंगी—यह चिन्ता भी दुःख-विह्वला प्रियाजीके मनमें स्थान न पा सकी। प्रभु तब बड़ी ही विपदमें पड़े। उन्होंने प्रियतमाको अपने मनकी बात खोलकर कह दी है, अपने दुःखकी बात कही है, निज कर्तव्य-कार्य समझा दिया है—इसीसे श्रीमती विष्णुप्रियादेवीका दुःख सिंधु उमड़ उठा है। उन्होंने कहा है—

विष्णुप्रिया मने किछु ना भाविह आर।
तोमारे छाड़िते जेन विषम संसार॥

ज. चै. म.

प्रभुके इस प्रिय वचनसे प्रियाजीका हृदय-सिंधु आलोडित होकर उसमें दुःखका प्रबल उच्छ्वास उठा है। श्रीगौर-भगवान्‌के इस माधुर्यभावका आभास पाकर प्रियाजीके मनमें इतने दुःखके बीच भी आनन्दकी एक रेखा दिखलायी दी है। अतएव उन्होंने उच्च स्वरसे रुदन करके हृदयावेगको कुछ शान्त किया। प्रभुने तब हाथ पकड़कर भूमि-शैयासे रोती हुई प्रियतमाको धीरे-धीरे उठाया, उनसे प्रेमपूर्वक बातें कीं, मधुर वचनोंसे उनको बहुत समझाया। स्वामी-सोहागिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी स्वामीके आदरसे अपना सारा दुःख भूल गयीं।

ठाकुर जयानन्द अपने श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थके वैराग्य-खण्डमें इन सब बातोंका आभास दे गये हैं। उन सब सूत्रोंको लेकर प्रभुका यह लीलारङ्ग विस्तारपूर्वक लिखा गया है। ठाकुर जयानन्दने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिखा है—

वैराग्य खण्ड विचारिते जत बाड़े सुख।
से सुख वैष्णद भुञ्जे पाखण्डी वैमुख॥
आगम निगम वेद पुराणेर सार।
वैराग्य शुनिले सर्व जीवेर निस्तार॥

प्रभुकी वैराग्य-विषयक बातें बड़ी विषम हैं, वड़ी ही हृदय-विदारक हैं; परन्तु महाजनगण इन सब बातोंका विचार करके आनन्द प्राप्त करते हैं। हम अधम जीव हैं। इन सब विषयोंका जितना ही चिन्तन करते हैं, जितनी ही आलोचना करते हैं, उतना ही आकुल होकर रो पड़ते हैं। कलिका भजन ही रुदन है। भगवत्कथा-श्रवण करनेसे यदि हृदय द्रवित होकर एक विन्दु भी अश्रुजल गिरता है तो प्राणीके सारे पाप धुल जायँगे और मन निर्मल हो जायगा। यह भी महाजन-वाक्य है—

नयनेर जल जाह्नवी-यमुना।
स्नान कैले आर त्रिताप थाके ना॥

भगवल्लीला-श्रवण करनेपर यह प्रेमाश्रुधार जब जीवके हृदयको द्रवित करके आँखोंसे निकल जाती है तो उसके सारे पाप धुल जाते हैं, त्रितापकी ज्वाला दूर हो जाती है, अन्तर निर्मल हो जाता है। कृपालु पाठकवृन्द! श्रीविष्णुप्रिया-देवीके पाद-पद्मका स्मरण करके, उनके उद्देश्यसे दो बिन्दु अश्रुपात करके हृदयको निर्मल कर लें। इस प्रकारके करुण चित्रको देखकर जिनका हृदय द्रवित नहीं होता, आँखोंमें जल नहीं आता, उनका मनुष्य-जीवन व्यर्थ है। महाजन कवि लिख गये हैं—

किं काव्येन कवेस्तस्य किं काण्डेन धनुष्मतः।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥

श्रीचैतन्यभागवतकारने लिखा है—

ए सकल लीला जीव उद्धार कारणे।
महाकाष्ठे द्रवे जेन इहार श्रवणे॥

चै. भा.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बावनवाँ अध्याय

(प्रभुके संन्यासकी सूचना)

बड़ साध छिल मने नदीया वसति।
काल हये एलो मोर केशव भारती॥

प्राचीन पद

—(शचीमाताकी उक्ति)

नवद्वीपमें केशव भारती

प्रभु इस समय वृन्दावन-भावमें उन्मत्त हैं, व्रजरसमें मतवाले हैं, व्रज-गोपी-भावमें सर्वदा विभावित रहते हैं। भक्तको देखते ही उन्हें बहुत आदरपूर्वक घर बुला लेते हैं; अति दीनभावसे उनसे कहते हैं—"आइये! आज हमारा सुप्रभात हुआ, कृष्णकी कृपासे आपका सङ्ग-लाभ हुआ, श्रीकृष्ण-कथामृत-पान कराकर मेरे प्राणोंको शीतल करें।"

प्रभुका दर्शन करनेके लिए नाना देशोंसे साधु-भक्त आते थे। केशव भारती एक वैष्णव-संन्यासी थे। काण्टकपुर ग्राममें कुटी बनाकर निर्जनमें भजन करते थे। वे प्रभुका नाम सुनकर नवद्वीपमें उनके साथ साक्षात्कार करने आये। एक दिन अकस्मात् वे प्रभुके मन्दिरमें आकर उपस्थित हुए। प्रभुको देखते ही उनको परमानन्द प्राप्त हुआ। प्रभुने आदरपूर्वक उठकर इन संन्यासीकी चरण-वन्दना करके बैठनेके लिए आसन उनको दिया। संन्यासीको देखकर प्रेमानन्दमें प्रभुके दोनों कमल-नयनोंसे प्रेमाश्रुधारा प्रवाहित हो उठी। केशव भारती प्रभुके प्रत्येक अङ्गके प्रति सतृष्ण नयनोंसे बहुत देरतक देखते रहे। उनकी अपरूप-रूप-राशि देखकर वे एकबारगी मोहित हो गये।

प्रभुके अङ्ग-प्रत्यङ्गसे अपूर्व दिव्य ज्योति प्रकट हो रही थी। केशव भारतीने देखा कि वे सामान्य पुरुष नहीं हैं। मनका भाव मनमें ही रखकर उन्होंने प्रभुको सम्बोधन करके कहा—"बाबा! तुमको देखकर आज मुझे बड़ा आनन्द मिला। मेरे मनमें हो रहा है कि तुम साक्षात् शुकदेव या प्रह्लाद हो।" संन्यासीप्रवर केशव भारतीके मुखसे आत्मस्तुति सुनकर प्रभु अतिशय विह्वलभावमें करुण-स्वरमें रोने लगे। उनकी आँखोंसे प्रेमधारा दुगुनी गतिसे प्रवाहित होने लगी।

केशव भारतीके चरण पकड़कर प्रभु अति दीनभावसे रोने लगे। यह देखकर संन्यासीप्रवरका मन एकबारगी भक्तिरससे द्रवित हो उठा। उन्होंने प्रभुका हाथ पकड़कर उठाया और उनके अश्रुपूर्ण मुखचन्द्रकी ओर अनिमेष नयनोंसे देखने लगे। केशव भारतीने देखा कि ये सामान्य मनुष्य नहीं हैं। मनुष्यके तो इतना रूप नहीं होता। इस प्रकारका अपरूप विश्वविमोहन रूप तो मनुष्यमें सम्भव नहीं है। ये निश्चय ही साक्षात् भगवान् हैं।

संन्यासीवर परम भक्त, महाभागवत थे। पूर्वजन्ममें अर्जित पुण्यके बलसे श्रीगौर-भगवान्का साक्षात् दर्शन प्राप्तकर वे मनका भाव छिपा न सके। तब वे स्पष्ट शब्दोंमें प्रभुके मुखचन्द्रकी ओर देखकर बोले—

तुमि देव भगवान् जानिल निश्चय।
सर्वलोक प्राण इथे नाहिक संशय॥

चै. म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुका उस समय भक्त-भाव था। दीनातिदीन भावमें वे केशव भारतीके सामने हाथ जोड़कर खड़े रहे। पहले उनके मुखसे आत्मप्रशंसा सुनकर अधीर होकर रो पड़े थे, अब फिर उनको भगवान् कहनेसे, प्रभुका उद्वेलित हृदय-सिंधु एकबारगी उमड़ उठा। उनकी आँखोंसे प्रेम-सरिता बह चली; परन्तु वे चतुर-चूड़ामणि हैं। केशव भारतीने उनको पहचान लिया है। प्रच्छन्न अवतारका प्रच्छन्नत्व अक्षुण्ण रखना होगा। भक्तके सामने भगवान् गुप्त नहीं रह सकते; परन्तु वे विधिपूर्वक गुप्त रहनेकी चेष्टा करते हैं। भक्त उनको प्रकट करते हैं। श्रीगौर-भगवान्‌ने केशव भारतीके साथ इतनी देरके बाद बहुत कष्टपूर्वक बातें कीं। अबतक वे केवल रुदन करते रहे। उनका रुदन रुकता ही न था। वे रोते-रोते बोले—"संन्यासीजी! आप श्रीकृष्णभक्त हैं। श्रीकृष्णमें आपका दृढ़ अनुराग है। इसी कारण आप सर्वदा, सर्वत्र और सर्ववस्तु श्रीकृष्णमय देखते हैं। मेरे भाग्यमें कितने दिनोंमें श्रीकृष्णके चरणोंके दर्शनकी प्राप्ति लिखी है, यह श्रीकृष्ण ही जानें। मैं तो सोच रहा हूँ कि आपके समान वेष धारण करके मैं कब देश-विदेश श्रीकृष्णके उद्देश्यसे भ्रमण करूँगा? कहाँ जानेपर मुझे मेरे प्राण-वल्लभ कृष्ण मिलेंगे, मुझपर कृपा करके आप यह बतलाइये।" यह बात कहते-कहते प्रेमावेगमें प्रभुका कण्ठावरोध हो गया। वे और कोई बात न कर सके। नयनोंके जलसे उनका वक्षःस्थल डूब गया। प्रभुके इस करुणभावका अति सुन्दर वर्णन श्रीपाद मुरारिगुप्तने अपने करचामें किया है—

प्रशंसां स्वां श्रुत्वा द्विगुणविकलोऽसौ पुनरपि
प्रकामं चक्रन्दायमपि पुनराहातिचकितः।
भवान् देवो विष्णुर्विदितमिदमेवं खलु मये-
त्युपाकर्ण्य श्रीमान्न्यसनमिह कर्त्तुं स चक्रमे॥

प्रभुका संसारसे वैराग्यका भाव पहले-से ही दृष्ट हो रहा था; अब केशव भारतीको देखते ही उनके मनमें संन्यास-ग्रहणकी वासना बलवती हो उठी। प्रभुने केशव भारतीको उस दिन अपने घरमें स्थान दिया। संन्यासी प्रवर प्रभुके घरमें अतिथि बने। पश्चात् प्रभुने श्रीवासपण्डितसे कहा—"श्रीवासपण्डित! आप आज रातमें इनकी सेवा करें।" श्रीवासपण्डित केशव भारतीको लेकर अपने घर गये और परम आदरपूर्वक अतिथि-सेवा की।

प्रभुके घर जब केशव भारती अतिथि हुए तो प्रभुने उनके साथ एकान्तमें बैठकर बहुत देरतक कृष्ण-चर्चा करके अपने प्राण जुड़ाये। संन्यासीको देखते ही शचीमाताके प्राण उड़ गये। आज फिर वही संन्यासी उनके घर अतिथि हुआ। उसके साथ एकान्तमें बैठकर निमाई-चाँद क्या वार्तालाप करता है? शचीमाता व्याकुल हो उठीं। विश्वरूपकी बात उनको याद आयी। वे चिन्तामें पड़कर घबरा उठीं। शचीमाताने अपने बहनोईको बुला भेजा। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नकी पत्नी सर्वजयादेवी शचीमाताकी कनिष्ठा भगिनी हैं। वे तत्काल आ गयीं। शचीमाताने रोते-रोते उनको सारी बातें कह सुनायीं। दोनों बहनोंने बहुत देरतक परामर्श करके निश्चय किया कि निमाई-चाँदसे पूछना चाहिये कि संन्यासीसे उसकी क्या बातें हुई हैं। शचीमाताने अपनी बहनके ऊपर इस कार्यका भार दिया।

इच्छामय प्रभु उसी समय वहाँ आकर उपस्थित हो गये। उनका मुँह उदास था; वे मानो कुछ अन्यमनस्क थे। सर्वजयादेवी और माताको एक साथ देखकर प्रभुने दोनोंको प्रणाम किया। सर्वजयादेवीने तब प्रभुसे पूछा—'बेटा निमाई! यह संन्यासी कौन है? तुम एकान्तमें उनसे क्या परामर्श कर रहे थे? तुम्हारी गति-विधि देखकर तुम्हारी माताके मनमें बड़ा दुःख हो रहा है। विश्वरूपने तुम्हारी माताके हृदयमें शूल मारकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संन्यास-ग्रहण किया था। सांन्यासीको देखते ही हमारे मनमें बड़ा भय होता है।"

प्रभुका उदास मुँह और भी उदास हो गया; वे सिर झुकाये अपराधीके समान माताके सामने खड़े रहे। कुछ देरके बाद माताको सम्बोधन करके बोले—"माँ! इन संन्यासीका नाम केशव भारती है। कण्टकपुरमें इनका आश्रम है; ये परम कृष्णभक्त हैं। इनके साथ मैं श्रीकृष्ण-कथा कह रहा था। इनका सङ्ग प्राप्तकर मैं कृतार्थ हो गया हूँ। माँ! इनकी कृष्णप्रेममयी श्रीमूर्तिको देखकर मैं मुग्ध हो गया हूँ। मैं तुम्हारी अनुमति लिये बिना कोई कार्य न करूँगा। इस विषयमें तुम निश्चिन्त रहो!"

निमाई-चाँदकी बात सुनकर शचीमाता और उनकी बहनका मन कुछ शान्त तो हुआ, परन्तु उनके मनमें एक विषम खटका पैदा हो गया। प्रभु चले गये, शचीमाता अपनी बहनका गला पकड़कर रोने लगीं। सर्वजयादेवीने उनको सान्त्वना देते हुए कहा—"दीदी! तुम चिन्ता न करो! तुम्हारा निमाई बड़ा मातृभक्त है; तुमको छोड़कर वह कहीं जा न सकेगा। ऐसा काम करो, जिससे उसका मन संसारमें लगे।" शचीमाता रोकर बोलीं—"बहन! तुम इसकी व्यवस्था करो, मैं अपने आपेमें नहीं हूँ।"

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी इस समय दो-एक दिनके लिए मैके गयी थीं। सर्वजयादेवीने उनको उसी दिन घर बुलाया।

केशव भारती नवद्वीपमें केवल एक दिन रहे। उनका इस समय नवद्वीपमें आगमन प्रभुकी इच्छासे और आकर्षणसे ही हुआ था। श्रीगौर-भगवान्‌का दर्शन पाकर वे कृतार्थ हो गये। प्रभुने इशारेसे केशव भारतीको बतला दिया कि उनको क्या करना है। केशव भारतीने भी अपना कार्य समझ लिया। यह गुरुतर कार्य-भार लेकर वे अपने स्थानमें जाकर इस विषम दिनकी प्रतीक्षा करने लगे।

वासुदेव घोष-रचित श्रीगौराङ्ग-संन्यास-श्रीग्रन्थमें नवद्वीपमें केशव भारतीके आगमन तथा प्रभुके घर उनके अतिथि-सत्कारके सम्बन्धमें अनेक बातें लिखी हैं। इस श्रीग्रन्थके मतसे केशव भारतीने ध्यानमें देखा कि उनके-अभीष्ट देव श्रीहरि नदिया-नगरमें शचीके घर उत्पन्न हो गये हैं। उनका दर्शन करनेके लिए वे शचीके घर जाकर अतिथि बने। द्वारपर खड़े होकर "निमाई-माँ! निमाई-माँ!!" कहकर उन्होंने श्रीगौराङ्ग-जननीको बुलाया। इससे कोई उत्तर न पाकर उन्होंने "शची, शची" कहकर पुकारा।

तब शचीमाता द्वारपर आकर संन्यासी महाशयको देखकर काँपने लगीं। वे संन्यासीको देखते ही डर जाती थीं; क्योंकि उनका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमद्विश्वरूपप्रभु संन्यास-ग्रहण करके कह गया था कि वह अपने छोटे भाईको भी साथ ले जायेगा। शचीमाता केशव भारतीको देखते ही रोने लगीं। उस समय मन-ही-मन उनको आशङ्का हो गयी। उन्होंने मनमें सोचा कि यह तो संन्यासीका रूप धरकर भगवान् ही निमाईको ले जानेके लिए आये हैं। परन्तु करें क्या? एक तो संन्यासी और दूसरे अतिथि; शचीमाताने बहुत भयभीत होकर केशव भारतीका सम्मान करके बैठनेके लिए आसन दिया। उनके चरण धोकर बैठनेके लिए कहा।

उस दिन द्वादशी तिथि थी। उस समय प्रभु शयन-मन्दिरमें सोये थे। केशव भारतीने शचीके घर आसन-ग्रहण करके कहा—"मैं एकादशीका उपवासी है, निमाईसे मिलकर पारण करूंगा।" शची माँने कहा—"महाराज! निमाई सोया है। पहले आप पारण कर लें, उसके बाद निमाईको बुला दूँगी।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शचीमाताकी यह बात सुनकर संन्यासीजीके मनमें क्रोधका उद्रेक हुआ। उन्होंने क्रुद्ध होकर शचीमातासे कहा—"तुमको ब्रह्म-शापका डर नहीं लगता ? मैं नदियाको भस्म कर दूँगा।"

तब स्नेहमयी शचीमाता भयसे काँपती हुई बाहरी दालानसे अन्तःपुरमें आयीं। घरमें आकर पुत्र-स्नेहके वशीभूत होकर उन्होंने मन-ही-मन इस उपस्थित महाविपद्से उद्धार पानेके लिए एक प्रवञ्चनाका मार्ग निश्चित किया। वे निमाईके बदले नदियाके एक दूसरे बालकको अञ्चलसे ढककर संन्यासीजीके सामने लाकर पुनः उपस्थित हो गयीं।

केशव भारती तब 'राधे-राधे' कहकर उच्च स्वरसे कीर्तन करने लगे और ध्यानस्थ होकर देखा कि वह लड़का शचीनन्दन नहीं है। तब पुनः कोपाविष्ट होकर शचीमातासे उन्होंने यह बात कही। तब शचीमाताने महाशङ्कित होकर निमाई-चाँदको लाकर संन्यासीजीके सामने हाजिर किया। केशव भारती आजानुबाहु शचीनन्दनका दर्शन करते ही अपने गलेमें वस्त्र डालकर उनके चरणोंमें गिर पड़े। पुनः 'राधे-राधे' कहते हुए उच्च संकीर्तन करने लगे।

राधाका नाम सुनते ही प्रभुको प्रेम-मूर्च्छा आ गयी। कुछ देरके बाद उन्होंने भाव-संवरण करके भारती गोसाईंसे श्रीवृन्दावनकी बात पूछी, श्रीराधिकाका कुशल पूछा। प्रभुके नयनद्वयसे प्रेमाश्रुधारा बहने लगी।

तब भारती गोसाईंने शचीनन्दनका दर्शन करके परमानन्द प्राप्त किया तथा शचीमाताके प्रति प्रसन्न होकर द्वादशीका पारण किया और उसके बाद प्रभुके साथ कथा-वार्ता हुई। श्रीगौराङ्ग-संन्यास-श्रीग्रन्थके मतसे उपर्युक्त प्रभुका लीलारङ्ग वर्णित हुआ।

वासुदेव घोष प्रभुके अन्तरङ्ग भक्त और नित्य दास थे। महाजनगणके द्वारा वर्णित प्रभुकी सारी लीला-कथा सत्य और अभ्रान्त है। लीला-कथा तर्क और विवादका विषय नहीं है। जिन्होंने जिस भावमें लीला-दर्शन और श्रवण किया है, उन्होंने उसी भावसे उसका वर्णन भी किया है, इसमें संदेह करनेका कोई कारण नहीं है। श्रद्धापूर्वक इन सब लीलाओंका पाठ और श्रवण कलिग्रस्त जीवका भजनाङ्ग है। महाजन-वाक्यमें विश्वासका नाम है श्रद्धा।

केशव भारतीके साथ प्रभुके साक्षात्कारके बाद उनकी कृष्णप्रेमोन्माद-दशा अधिकाधिक बढ़ने लगी। अब वे अपने मन्दिरमें ही सर्वदा कृष्ण-विरहमें मग्न रहते हैं। गोपीभावमें वे सर्वदा विभावित रहते हैं। शठ-शिरोमणि गोपीजन-वल्लभ श्रीकृष्णके ऊपर कभी वे रुष्ट होते हैं, कभी मान करते हैं; क्योंकि व्रज-गोपिकाओंके प्रति उन्होंने निर्दय व्यवहार किया था। वे गोपीभावमें विभावित होकर श्रीकृष्णको निठुर बतलाते हैं, कपटी कहते हैं। मनमें सोचते हैं कि इस प्रकारके निष्ठुर और निर्दय श्रीकृष्णको भजनेसे क्या लाभ ? अबमें उनकी भक्ति नहीं करूँगा, उनका नाम भी न लूँगा—ऐसा संकल्प करके उन्होंने गोपी-भजन आरम्भ किया। मुँहसे सदा 'गोपी-गोपी' कहने लगे।

कृष्णानन्द आगमवागीश

प्रभुकी आँखोंसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा बह रही है, मुँहसे अनवरत गोपी नाम लेते हैं, मन सदा उदास रहता है। इस भावमें एक दिन प्रभु अपने मन्दिरमें बैठे थे। उसी समय उनके सहाध्यायी और मित्र कृष्णानन्द आगमवागीश वहाँ आकर उपस्थित हुए। वे गङ्गादासपण्डितकी पाठशालामें प्रभुके साथ एकत्र पाठाभ्यास कर चुके थे। निमाई-पण्डितको वे भली-भाँति जानते थे। प्रभुका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाण्डित्य और प्रतिभा देखकर उनको डाह होता था। कृष्णानन्द आगमवागीश एक सुबृहत् तन्त्र-शास्त्रके रचयिता थे तथा स्मृतिमूलक कर्मकाण्डके परम मतवादी थे। उनको ज्ञात हो गया था कि प्रभुने अध्ययन-अध्यापन सब-कुछ छोड़कर भक्तिपथ-का अवलम्बन किया है; परन्तु पाण्डित्याभिमानी कृष्णानन्द आगमवागीशकी दृष्टिमें प्रभुके लिए इस उम्रमें भक्तिपथका अवलम्बन करना ठीक नहीं जचता था। वे कर्मानुयायी थे। उनके मतसे कर्मकाण्ड ही धर्म था, हरि-संकीर्तन, नृत्य-गीत उनकी दृष्टिमें मूढ़का कार्य था। पण्डित लोगोंमें ऐसा कार्य करनेपर उसे समाजमें अपदस्थ होना पड़ता था। इन सब कार्योंसे धर्म-साधन नहीं होता। यही आगमवागीशका मत था। वे निमाईपण्डितको देखने आये; क्योंकि लोग उनको 'महाभक्त' कहते थे; कोई-कोई उनको भगवान् भी कहते थे। वे प्रभुके घर उनसे इन विषयोंमें तर्क-वितर्क करनेके लिए आये थे। उनके मनमें बड़ा भारी कुतूहल पैदा हो गया था। उसी कुतूहलको चरितार्थ करनेके लिए कृष्णानन्द आगमवागीश प्रभुको देखने आये।

उन्होंने देखा कि उनके सहपाठी निमाईपण्डित अपने घरमें पीढ़ेपर बैठे हैं। उनके दोनों नेत्रोंसे झर झर अश्रुधारा बह रही है। उनका परमसुन्दर मुख-मण्डल मलिन हो गया है, तथापि वे परम ज्योतिर्मय हैं। उनके दुःखसे कातर श्रीमुखके भाव माना महामहिमामय हैं। भक्तगण चुपचाप उनको घेरकर बैठे हैं। सभी मानो ध्यानमग्न हैं, सबकी दृष्टि प्रभुके मुखचन्द्रके ऊपर है। प्रभुके अधर और ओष्ठ स्पन्दित हो रहे हैं और वे धीरे-धीरे 'गोपी-गोपी' नामजप कर रहे हैं। कभी-कभी उच्च स्वरसे 'गोपी-गोपी' कहकर चिल्ला उठते हैं, हुंकार-गर्जन करते हैं, जिसके शब्दसे घर काँप उठता है। प्रभु किस भावमें विभावित हैं, उनके मनमें किस भावकी तरङ्ग उठ रही है, इसका मर्म न समझकर कृष्णानन्द आगमवागीश प्रभुसे बोले—"निमाई-पण्डित! 'गोपी-गोपी' क्या चिल्लाते हो? 'कृष्ण-कृष्ण' कहो! 'गोपी-गोपी' नाम लेनेसे क्या लाभ? 'कृष्ण-कृष्ण' कहनेसे पुण्य होता है, ऐसा वेदोंका मत है।"

प्रभु अपने भावमें मग्न थे, कृष्णानन्द आगम-वागीश उनके घर आये हैं, इस ओर उनका लक्ष्य नहीं है। उनके मुँहसे जब कृष्णका नाम सुना, तब उन्होंने एक बार केवल मुँह उठाकर आगमवागीशके मुँहकी ओर देखा। वे उनके सहपाठी कृष्णानन्द हैं, इसका ज्ञान प्रभुको नहीं है। वे गोपीभावमें उन्मत्त हैं। प्रभुने सोचा, "जान पड़ता है, यह उसी शठ-शिरोमणि गोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णके आदमी हैं। श्रीकृष्ण मथुरा गये हैं, ये मथुराके आदमी होंगे!" यह सोचकर कृष्णानन्द आगमवागीशके मुखकी ओर देखकर क्रोधपूर्वक प्रभु तीव्र भर्त्सनाके स्वरमें बोले—"चोर कृष्णको कौन भजे। वह तो बिना दोषके बलि चढ़ा देनेवाला कृतघ्न है, बेचारी अबला स्त्रीके नाक-कान काटनेवाला है। बेचारे बलिका सर्वस्व हरण करके उसको पातालमें भेज दिया। ऐसेका नाम लेनेसे क्या लाभ?"

(चै. भा. म. २५.१८२,१८३)

श्रीकृष्णप्रेमका गुह्य भाव भावभक्तिहीन, तर्कजड़, पण्डिताभिमानी आगमवागीश क्या समझें? प्रभुका गोपीभाव है, वे एक व्रजगोपी हैं, कृष्णविरह-बाणसे जर्जरित होकर प्रियतमके प्रति अभिमानभरी कटूक्ति बोल रहे हैं। वे सोच रहे हैं कि निष्ठुर शठ, नटवर नागरवर कृष्णने उनको धोखा देनेके लिए आदमी भेजा है। शठको मन-प्राण-समर्पण करके वे दग्ध हो रहे हैं। अब क्या? उस शठका प्रलोभन न चलेगा। उसके दूतको दूर भगा दूँगा—इस प्रकार गोपीभावमें विभावित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होकर प्रभु सामने रखे हुए एक डंडेको उठाकर आगमवागीशको घरसे मार भगानेके लिए उद्यत हो गये।

आगमवागीशने देखा कि निमाईपण्डित उन्मत्तके समान लाठी हाथमें लेकर उनकी ओर लपक रहे हैं। निमाईपण्डितकी शक्ति और बलको वह विशेष-रूपसे जानता था। नवद्वीपमें इतना बड़ा शक्तिशाली, बलवान् और दीर्घाकार पुरुष और कोई नहीं था। आगमवागीशको प्राण जानेका भय हो गया। वह प्रभुके भावावेशको तनिक भी न समझ सका; क्योंकि वह उस भावका भावुक न था। आगमवागीश विवश होकर प्राणभयसे लम्बी साँस लेते हुए भागा। प्रभु भी 'पकड़ो-पकड़ो' कहते हुए उसके पीछे-पीछे कुछ दूरतक दौड़े। आगमवागीशने भागकर जान बचायी। सारे भक्तवृन्दने प्रभुको पकड़कर शान्त किया।

आगमवागीश प्राण-भयसे दौड़ते-दौड़ते नदियाके राजपथपर निकल गया। उसके बारंबार लम्बी साँस आ रही थी, तथापि वह प्राणपनसे भागा जा रहा था; पीछे फिरकर देखनेका उसका साहस नहीं होता था। जब अपने दलके लोगोंके बीच आ पहुँचा, तब उसने लम्बी साँस लेकर दम लिया। वहाँ बहुत-से लोग एकत्रित हुए थे। सबके मनमें कौतूहल हो रहा था कि आगमवागीश आज इस प्रकार प्राण लेकर नदियाके पथपर क्यों भागा आ रहा है? उसके सब सहपाठियोंने जब व्यग्रता-पूर्वक उससे इसका कारण पूछा तो आगमवागीश क्रुद्ध होकर कहने लगा—"क्या पूछते हो? आज तो भाग्यसे प्राण बच गये। सबलोग निमाईपण्डितको भला आदमी बताते हैं। आज उसके घर उससे मिलने चला गया था। वहाँ जाकर देखा कि वह बैठा हुआ गोपी-नाम जप रहा है। और कुछ मुँहसे बोलता ही नहीं। मैंने उसको कहा—'शास्त्र-विहित कृष्ण नाम जपो!'—यह सुनकर वह क्रोधसे अग्नि-शर्मा बनकर डंडा हाथमें लेकर मुझे मारने दौड़ा। उसने कृष्णको कितने कुवाक्य कहे, जो मैं मुँहसे बोल नहीं सकता। भाग्यसे ही मैं आज बच गया।"

आगमवागीशके दलके विद्यार्थी यह बात सुनकर प्रभुके ऊपर असंख्य गाली-वर्षा करने लगे। वे प्रभुकी प्रेमचेष्टा और गोपीभावकी बात क्या समझेंगे? कोई-कोई हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया।

ये सबलोग कृष्णानन्द आगम वागीशके दलके लोग थे। वे सभी विद्याभिमानी पण्डित थे। अधिकांश प्रभुके सहपाठी थे। आगमवागीशका दल प्रभुका बड़ा विरोधी था। उनके द्वारा प्रचारित युगधर्म संकीर्तनके प्रति उनका बड़ा द्वेष था। प्रभुका तथा उनके भक्तोंका दोष देखना ही उनका काम था। वैष्णव-निन्दामें तथा परचर्चामें वे सब ज्ञानगर्वित पण्डितलोग बड़ा आनन्द लेते थे। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने उनको 'महामूर्ख' और 'महापापी' कहा है।

नदियाके अवतार श्रीगौराङ्गप्रभु दयाके अवतार थे, करुणाके अवतार थे, अधम और पतितोंके त्राणकर्ता थे; परन्तु वैष्णव-निन्दक दुराचारियोंके प्रति उनकी करुणा देखनेमें नहीं आती थी। विद्याके गर्वसे गर्वित होकर पण्डितलोग वैष्णव-निन्दा करते थे, वैष्णवधर्मके प्रति अश्रद्धा रखते थे। इन सब पण्डितोंके दलके अधिनायक थे कृष्णानन्द आगम-वागीश। इन आगमवागीश आदि पाखण्डी पण्डितों-का वैष्णव-द्वेष ही था, जिसके कारण प्रभुको गृह-त्याग करना पड़ा।

वे लोग प्रभुको आन्तरिक अश्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। उनको जब आगमवागीशके दलके लोग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मारनेके लिए तैयार हो गये, तब श्रीगौर-भगवान्‌ने सोचा कि अब इनके उद्धारका कोई उपाय नहीं है। श्रीभगवान्‌का ऐश्वर्य देखकर जब उनके सृष्ट-जीवके मनमें हिंसा या द्वेषका उद्रेक होता है तो वे बन्धनमें पड़ते हैं; उनके उद्धारकी बात दूर चली जाती है। प्रभुने नवद्वीपमें आत्मप्रकाश किया है, उनकी महिमा तथा रूप और गुणसे सज्जनलोग उनके प्रति आकृष्ट हुए हैं, यह देखकर ज्ञानगर्वित तर्क-वितर्क-प्रेमी पण्डितोंके मनमें ईर्ष्या उत्पन्न हो गयी। सबलोग प्रभुका सम्मान करते हैं, जिसके घरमें जो उत्तम वस्तु होती है, सबसे पहले उसे निमाईपण्डितको बिना दिये कोई नहीं खाता; पुष्प-चन्दन-गन्धसे आभूषित होकर जब प्रभु नदियाके रास्तेमें निकलते हैं तो सबलोग उनको दण्डवत्-प्रणाम करते हैं, स्तुति-वन्दना करते हैं, यह उनके सहपाठी पण्डितोंकी आँखोंमें अच्छा नहीं लगता। उनको ईर्ष्या होती है। यह हिंसा-द्वेष उनके उद्धारके मार्गमें कण्टक बन जाता है। इसके फलस्वरूप वे लोग प्रभुकी कृपासे वञ्चित हो जाते हैं।

प्रभु गोपीभावमें उन्मत्त होकर आगमवागीशको आदमी समझकर और कृष्णका दूत मानकर लाठी उठाकर मारने गये थे। आगमवागीशको प्राण बचाकर भागते देख प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ। उनका कृष्णविरहरस-भङ्ग हो गया। बहिरङ्ग लोगोंका साथ होनेसे ऐसा ही होता है। इसी कारण प्रभुने कहा है "अन्तरङ्गके सङ्ग ही रसास्वादन करना चाहिये।"

आगमवागीश यदि प्रभुके गोपीभावका मर्म समझते तो भयसे भाग न जाते और तब प्रभुका यह अपूर्व भाव छूटता नहीं तथा उनको रसभङ्ग-जनित दुःख भी नहीं होता। प्रभुको तब अपनी अवस्था समझमें आयी। वे लाठी हाथमें लेकर आगम-वागीशको मारने गये थे और आगमवागीश उनको देखकर प्राणके भयसे भाग खड़े हुए, यह बात जब उनके ध्यानमें आयी, तब उनको बड़ी लज्जा हुई; दुःख भी हुआ। सबसे बढ़कर प्रभुको यह दुःख हुआ कि वे गोपीभावमें कृष्ण-भजन-रस-सिंधुकी तरङ्गमें डूब रहे थे, उनका वह भजन-सुख-रसभङ्ग हो गया। इससे उनके हृदयमें बड़ा कष्ट हुआ। प्रभु मलिन-मुख होकर भूतलपर बैठ गये और मनके दुःखसे अजस्र आँसू बहाने लगे। भक्तवृन्द उनके चरणोंमें बैठे थे। प्रभुका इस प्रकार नीरव रुदन देखकर भक्तगणके मनमें बड़ी व्यथा हुई। वह दिन इसी प्रकार बीता। प्रभुने किसीको कोई बात न कही। अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान् आगमवागीशके दलके लोगोंकी मन्त्रणा जान गये। यह बात किसीने उनसे न कही। प्रभुके श्रीअङ्गपर पाखण्डीलोग प्रहार करेंगे, यह बात उनसे कहनेका साहस कौन करेगा? सर्वेश्वर सर्वज्ञ प्रभु सर्वजीवोंके अन्तः-करणमें विराजते हैं; उनसे छिपाकर कोई काम किया नहीं जा सकता। वे सर्वभूत-अन्तर्यामी श्रीभगवान् हैं। वे पाखण्डीलोगोंके हृदयकी बात जान गये, उनके संकल्पसे अवगत हो गये।

संन्यासकी सूचना

दूसरे दिन प्रभु गङ्गाके किनारे भक्तगणसे आवेष्टित होकर बैठे थे। श्रीनित्यानन्दप्रभु भी उनके पास बैठे। प्रभुका मुख-चन्द्र मलिन, श्रीमुखका भाव गम्भीर तथा गम्भीर चिन्ताव्यञ्जक था। उन्होंने अकस्मात् अट्टहास करके एक आश्चर्यकी बात कही—"कफ-निवारणके लिए पीपलका सेवन किया, लेकिन कफ और बढ़ गया।" (चै. भा. म. २५.२१२)

उपस्थित भक्तवृन्द प्रभुकी बातका मर्म न समझकर विस्मित और चिन्तित हो उठे। प्रभुका यह अट्टहास आनन्दकी हँसी न थी, यह भक्तगण प्रभुके श्रीमुखके भावको देखकर ही समझ गये। सभी मन-ही-मन सोचने लगे कि प्रभु यह क्या बोल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गये ? प्रभुकी गति-विधिको देखकर उनके मनमें बड़ा संदेह हुआ। एक-दूसरेके मुँहकी ओर देखकर आँखोंके इशारेसे अपने-अपने मनके भाव प्रकट करने लगे। प्रभुने कहा था कि कफ निवारण करनेके लिए पिप्पलीखण्ड औषधिका प्रयोग किया, परन्तु उससे रोग-निवारण होना तो दूर रहा, बल्कि और बढ़ गया। भक्तवृन्द इस बातको लेकर मन-ही-मन नाना प्रकारके विचार करने लगे।

सर्वज्ञ नित्यानन्दप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌के अभिन्न कलेवर हैं, इच्छाशक्ति हैं। वे तत्काल प्रभुके भीतर-का भाव समझ गये; उनकी बातका मर्म जान गये। उन्होंने दिव्य दृष्टिसे देखा कि प्रभु अब घरपर नहीं रहेंगे। उनके मनमें आज जो खेद उठा है, यही उनके गृह-त्यागका कारण बनेगा—यह सोचकर श्रीनित्यानन्दप्रभु बहुत कातर हो उठे। उनके चन्द्र-वदनपर विषादकी रेखा दिखलायी दी। मनके दुःखसे उनके प्राण व्याकुल हो उठे।

सर्वज्ञ प्रभु श्रीगौर-भगवान्‌ने श्रीनित्यानन्दप्रभु-की मनोव्यथा जान ली। अपने मनका भाव उनसे खोलकर बतलानेका निश्चय करके वे श्रीनित्यानन्द-प्रभुका हाथ पकड़कर एकान्त स्थानमें ले गये। भक्तवृन्द वहीं रहे। उनके मनका संदेह और भी बढ़ गया। प्रभुकी बातका मर्म वे लोग समझ न सके; किन्तु उनके मलिन श्रीवदन और विषण्ण-भावको देखकर उन्होंने समझ लिया कि प्रभुके मनमें आज बड़ा दुःख है।

एकान्तमें बैठकर श्रीगौर-भगवान्‌ने श्रीनित्यानन्दप्रभुसे कहा—"प्यारे नित्यानन्द ! मैं अब तुमको अपने हृदयकी बात कहता हूँ। आया था कलिके जीवोंका उद्धार करने; वह तो हुआ नहीं और उनको अधिक बन्धनमें डालने लगा। जब लोगोंने मुझे मारनेका निश्चय किया, तभी बेचारे अनन्त बन्धनोंमें फँस गये। अब मैंने यह निश्चय किया है कि शिखा-सूत्र त्यागकर, सिर मुँडाकर भिक्षुक संन्यासी बनूँगा और घर-घरमें भिक्षा करूँगा। तब देखना, मुझे कोई नहीं मारेगा और सब नमस्कार करेंगे। इस प्रकार मेरे कारण बन्धनमें पड़नेवाले लोग बेचारे बन्धनमें पड़नेसे बच जायँगे। अब मैं गृहस्थाश्रम छोड़ूँगा। इसमें तुम कोई दुःख न मानना। तुम मुझे इसके लिए अनुमति दो। तुम जो कराते हो, वही मैं करता हूँ। जगत्‌के उद्धारके लिए तुम मुझे रोकना मत। तुम तो मेरे आनेका कारण जानते ही हो।" (चै. भा. म. २१८—२३२)

प्रभुकी इस गूढ़ वार्ताके विषयमें कुछ विचार करना चाहिये। प्रभुने पहले ही नित्यानन्दप्रभुसे अपने मनकी बात खोलकर कह दी। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको इससे पहले ही प्रभुने अपने संन्यास-संकल्पकी बात कह दी थी; परन्तु उसके कारणका निर्देश अन्य ही प्रकारसे किया था। उन्होंने प्रियाजीको समझाया था कि 'वैराग्य' उनका स्वधर्म है, उसका पालन उनको करना ही पड़ेगा। वे स्वयं आचरण करके वैराग्यधर्मकी शिक्षा कलिके जीवको देंगे, यह बात भी बोले थे। श्रीनित्यानन्द-प्रभुको उन्होंने अपने संसार-त्यागका जो कारण बतलाया, उसे सुनकर उनके भक्तोंका हृदय विदीर्ण हो गया। यह बात उनको अपनी प्रियतमासे नहीं कहनी थी और न अन्य भक्तोंसे कहनी थी। अतएव उन्होंने श्रीनित्यानन्दप्रभुको एकान्तमें बुलाकर अपने प्राणोंकी बात और वेदनाको खोलकर प्रकट कर दिया।

श्रीभगवान्‌का गार्हस्थ्य लीलारङ्ग, उनकी ऐश्वर्य-सम्भोग-लीला अभागे कठोर हृदयवाले कलिके पाखण्डियोंको अच्छी न लगी। वे लोग ईर्ष्याके वशीभूत होकर श्रीभगवान्‌के संसार-सुखमें बाधक बने, इससे बढ़कर दुःखकी बात और क्या हो सकती है ? श्रीभगवान् जगत्‌के पिता हैं, सर्व-भूतोंके ईश्वर हैं। उनके सुखमें ही जीव-जगत्‌का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सुख है, उनके आनन्दमें ही जीवका आनन्द है। वे सच्चिदानन्द-विग्रह हैं, षडैश्वर्यपूर्ण पूर्णब्रह्म सनातन हैं; उनकी ऐश्वर्य-विभूति देखकर किसके हृदयमें आनन्द नहीं होता ? किसके प्राणमें सुखका उदय नहीं होता ? किन्तु कलिके जीव इतने अधम हैं, उनका हृदय इतना कठोर है कि श्रीभगवान्‌की सर्वोत्तम नरलीला देखकर भी उनका कलुषित मन मुग्ध न हुआ, कठोर हृदय द्रवित न हुआ। श्रीभगवान्‌का संसार-सुख-ऐश्वर्य उनके कलुषित प्राणोंमें सह्य न हुआ।

पुत्र-पुत्री यदि माता-पिताके सुखमें बाधक होते हैं तो उससे उनके मनमें जैसे कष्टका अनुभव होता है, आज जगत्-पिता प्रभुके मनमें भी वैसे ही दुःखका उदय हुआ है। इसी कारण उन्होंने श्रीनित्यानन्द-प्रभुसे कहा—"श्रीपाद ! मैंने यह क्या किया ? जगत्‌का उद्धार करनेके लिए आकर मैं उसके नाश-का कारण बन गया !"

प्रभुकी इस बातका प्रकृत मर्म अनुभव करनेकी चेष्टा कीजिये ! श्रीभगवान्‌के प्रति हिंसा-द्वेष करना, उनके सुखैश्वर्यको देखकर ईर्ष्यान्वित होना—इसकी अपेक्षा दुष्कृत और पाप संसारमें और कुछ नहीं है। नदियाके जीवाधम पाखण्डीलोग हिंसाके वशवर्ती होकर श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीअङ्गमें आघात करनेके लिए उद्यत हुए थे, इससे उनका सर्वनाश और अनिष्ट अनिवार्य था। श्रीभगवान्‌के साक्षात् नररूपके दर्शनसे कहाँ तो जीवकी चित्तशुद्धि होती, भव-बन्धनका नाश होता—उलटे उनका चित्त अधिकतर कलुषित हो गया, भव-बन्धन कोटिगुना दृढ़ हो गया और उनके उद्धारका कोई उपाय न रहा। यह कृपामय श्रीभगवान्‌की कृपाका परिचायक नहीं है, उनके अवताररूपमें प्रकट होनेकी महिमाका सूचक नहीं है।

श्रीगौराङ्गप्रभु कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। उनकी भगवत्तामें जो विश्वास स्थापित नहीं कर पाते, वे उनकी नरलीलाके ऐश्वर्यको देखकर, उनकी अपरूप-रूप-कान्तिकी अपूर्व छटा देखकर, उनके अमानवी कार्यकलापको देखकर विस्मित और ईर्ष्यान्वित होते थे। वे मन-ही-मन सोचते और मुखसे भी बोलते थे कि जो हमारे साथ पढ़ रहा था, वह आज इतना गोसाईं कैसे बन गया !

इच्छामय प्रभुकी इच्छासे उनके मनमें इस प्रकारके भाव उदित होते थे। प्रभुकी इच्छासे ही वे उनको असम्मानसूचक बातें बोलते थे; उनके श्रीअङ्गपर हाथ उठानेका संकल्प भी करते थे। प्रच्छन्न अवतार-तत्त्वका यही गूढ़ रहस्य है। दुर्बुद्धि कलिग्रस्त जीव श्रीभगवान्‌के सुखैश्वर्यको देखकर ईर्ष्यालु हो गया। संतान माता-पिताके संसार-सुखमें बाधक हो गयी; परन्तु इसी कारणसे दयामय जगत्पिता अपने सृष्ट जीवके प्रति असंतुष्ट होकर उनकी मङ्गल-कामनासे निवृत्त नहीं हो सकते। जैसे माता-पिता अपने निजी सुख-दुःखको तुच्छ समझ-कर सतत संतानकी मङ्गल-कामना करते हैं, श्रीभगवान् भी उसी प्रकार अपने सृष्ट-जीवके इन सब कठिन और कुटिल कार्य-कलापोंको याद करके उनका उद्धार करनेके कार्यमें उदासीन नहीं होते। वे मनुष्यके समान क्षुद्र नहीं हो सकते।

कलिग्रस्त जीवोंके उद्धारके लिए ही नदियामें प्रभुने अवतार ग्रहण किया। कलिग्रस्त जीवकी दुर्गतिकी सीमा श्रीभगवान्‌ने अपनी आँखोसे देखनेके लिए ही नरवपु धारण किया था। नदियामें विद्याभिमानी पाखण्डी पण्डितोंके कार्य उन्होंने पूर्णमात्रामें देखे; देखकर उनका करुण-हृदय उन्मथित हो गया। उन्होंने अपने सृष्ट-जीवकी मङ्गल-कामनासे अपने संसार-सुखको तिलाञ्जलि देनेसे मुँह न मोड़ा। श्रीगौराङ्गप्रभुने इस कार्यसे दिखला दिया कि श्रीभगवान् जीवका कल्याण-साधन करनेमें कैसे व्यग्र रहते हैं, कितने यत्नशील और कितने उत्सुक रहते हैं। इच्छामय प्रभुकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इच्छासे ही इन सब पाखण्डियोंका मन इतना दुष्टभावापन्न हुआ था । साक्षात् श्रीभगवान्‌की सर्वश्रेष्ठ अवतारमूर्ति-दर्शन करके भी जब उनका कलुषित मन निर्मल नहीं हुआ, उनका कुतर्कपरायण नीरस हृदय जब सरस नहीं हुआ, तब इसको श्रीभगवान्‌की इच्छा नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे ?

श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षित्‌से कहा था कि कुटिल सर्प जैसे अमृतोपम दुग्धपान करके हालाहल उत्पादन करता है, उसी प्रकार कलिग्रस्त जीव अपने-अपने दुर्भाग्यके वश होकर श्रीभगवान्‌के अनुपम अवतारनिष्ठ आचारको देखकर भी अपनी प्रवृत्तिके अनुरूप पाखण्डके मार्गका अनुसरण करते हैं और पाखण्डी भावको उत्तेजित करते हैं। कलिके जीवका यही लक्षण है । ये सारे पाखण्डीलोग परस्पर अन्धेके समान आचरण करते हुए वेदप्रमाण-शून्य अपने स्वेच्छाचारके ऊपर दृढ़ विश्वास स्थापित करके पाखण्ड-प्रवृतिके अनुसार घोर अज्ञानान्धकारमें क्रमशः अन्धे होकर परिणामस्वरूप अनन्त-दुःखार्णवरूपी नरकमें गिरते हैं। वहाँसे उद्धार पानेका कोई उपाय वे खोज करके भी नहीं पा सकेंगे ।

इन सब कलिग्रस्त अभागे जीवोंके उद्धारके लिए ही गोलोकके सुखैश्वर्यको छोड़कर श्रीगौर-भगवान्‌ने नदियामें अवतार ग्रहण किया था । वे संसार सुखको तुच्छ कर दें तो इसमें आश्चर्यकी क्या बात हो सकती है ? श्रीभगवान् भिखारीके वेषमें द्वार-द्वार करङ्क-कौपीन धारण करके भिक्षा करेंगे । संन्यासी समझकर भी यदि उनका दर्शन करके ये सब कुबुद्धि और कुतर्कपरायण पाखण्डी-लोग सिर झुका करके एक वार भी प्रणाम करते हैं तो वे तत्काल भव-बन्धनसे मुक्त हो जायँगे । श्रीगौर-भगवान्‌ने इसी कारण श्रीनित्यानन्दप्रभुसे कहा था—

संन्यासीरे सर्व्वलोके करे नमस्कार ।
संन्यासीरे केहो आर ना करे प्रहार ।।

करुणामय जीव-बन्धु श्रीगौर-भगवान् इसी कारण आज संन्यासी बनेंगे, कलिग्रस्त जीवकी मङ्गलकामनासे अपने सुन्दर घुँघराले बालोंको मुँड़ायेंगे, शिखा-सूत्र त्यागकर कौपीन धारण करेंगे, रास्ते-रास्ते भिखारीके वेषमें भिक्षा करते फिरेंगे— इसी कारण श्रीनित्यानन्दप्रभुको एकान्तमें बुलाकर, उनके दोनों हाथ पकड़कर प्रभुने कहा—

जगत-उद्धार यदि चाह करिबारे ।
इहाते निषेध नाहि करिबे आमारे ।।

चै. भा. म. २५.२३१

प्रभुका संकल्प सुदृढ़ और ध्रुव है, यह श्रीनित्यानन्दप्रभु विशेषरूपसे जानते हैं । प्रभुने अपने संन्यास-ग्रहणका जो कारण बतलाया है, उससे उनके अभिन्नहृदय नित्यानन्दप्रभुको कुछ भी कहनेके लिए नहीं रह जाता । प्रभुने कहा—"मेरी संसार करनेकी बड़ी साध थी। नदियामें रहकर सुखैश्वर्यका भोग करना मेरे भाग्यमें नहीं है । मैं जानता हूँ कि मेरे निजजन और मेरे भक्तजन मेरे इस कार्यसे मर्मान्तिक दुःख पावेंगे । इस दुःखसे बहुतेरे प्राणतक त्यागनेके लिए उद्यत हो जायँगे । इस नदियामें मेरे विरहमें जो अग्निशिखा प्रज्वलित होगी, उसमें चिरकालतक मेरे निजजन और भक्तजन भी दग्ध होते रहेंगे । यह मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ; परन्तु करूँ क्या ? जिनकी मनस्तुष्टिके लिए, जिनके मङ्गलके लिए मैं संसारी बनकर संसार-सुख-भोग कर रहा था, वे ही जब मेरे सुखमें बाधक बन गये, तब यह सुख-भोग मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझको भिखारीके वेषमें देखकर यदि उनके मनमें सुख होता है तो मैं वही करूँगा । उनके सुखसे ही मुझे सुख है । उनके मनमें आनन्द होनेसे ही मुझे आनन्द होगा ।"

श्रीगौर-भगवान्‌की इस बातका और कोई उत्तर नहीं है । भगवान्‌की दयाका जैसे अन्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं है, करुणाकी जिस प्रकार अवधि नहीं है, उनके युक्तिपूर्ण मधुर वचनका भी उसी प्रकार कोई उत्तर नही। चतुर-चूड़ामणि प्रभु भक्तका मान बढ़ानेके लिए सदा तत्पर रहते हैं। भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्ने तब श्रीनित्यानन्दप्रभुका हाथ पकड़कर करुण शब्दोंमें कहा—

"विधि देह तुमि मोर संन्यास करणे।"
चै. भा. म. २५.२२९

वह उनका छलमात्र था। वे स्वतन्त्र ईश्वर हैं, इच्छामय हैं। उनको विधि कौन देगा? श्रीनित्यानन्दप्रभुका हृदय विदीर्ण होने लगा। प्रभु संन्यास-ग्रहण करेंगे, इनकी श्रीशिखा अन्तर्हित हो जायगी इस चिन्तासे वे कातर हैं। क्या उत्तर दें सोचकर भी निश्चय नहीं कर सके—

"कोन विधि दिब किछु ना आइसे वदने।"
चै. भा. म. २५.२२४

श्रीनित्यानन्दप्रभु कुछ देर निस्तब्ध होकर बैठे रहे। पश्चात् हाथ जोड़कर प्रभुके चरण-कमलमें निवेदन करते हुए बोले—"प्रभो! तुम इच्छामय हो। जो तुम्हारी इच्छा है वही निश्चय है। तुमको विधि या निषेध कौन दे सकता है! तुम त्रिलोकीनाथ हो; जिसमें सबका भला हो, उसको तुम जानते हो। जिस प्रकार जगत्का उद्धार होगा, उसको तुम जानते हो;दूसरा कोई क्या जानेगा! तुम्हारा चरित्र परमानन्दमय स्वतन्त्र है। तुम जो करना चाहोगे वह निश्चयपूर्वक होगा,तथापि अपनी मन्त्रणा सबको बता दो! कौन क्या कहता है, वह भी सुन लो। इसके बाद जो तुम्हारी इच्छा होगी, सबलोग वही करेंगे तुम्हारी इच्छाके विरुद्ध कौन जा सकता है।" (चै. भा. म. २५.२३५—२४१)

श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीगौर-भगवान्का तत्त्व और लीला विशेषरूपसे जानते हैं। उनका उत्तर सर्वतत्त्वज्ञ साधुपुरुषके उपयुक्त है। प्रभु उनकी बातसे विशेष सतुष्ट हुए तथा प्रेमानन्दमें उनको बारंबार प्रेमालिङ्गन-प्रदानकर कृतार्थ किया।

प्रभुकी ये सारी बातें श्रीनित्यानन्दप्रभुके साथ एकान्तमें हुईं। अन्यान्य भक्तवृन्द यह कुछ भी न जान सके। श्रीनित्यानन्दप्रभु भी किसीको कुछ न कह सके। दोनों प्रभुओंमें एकान्तमें बैठकर जो परामर्श हुआ, वह उनके मनमें ही रह गया।

गङ्गाके किनारे बैठकर उस दिन प्रभु भक्त-सङ्ग कर रहे थे। उसी समय भावनिधि प्रभुके मनमें यह भावतरङ्ग उठी। इस समय चतुर-चूड़ामणि प्रभु अपने मनके भावको छिपाकर भक्तगणके बीचमें आकर एक स्वप्नकी बात बोले। प्रभु हँसते-हँसते कहने लगे—"गत रात्रिमें मैंने एक अपूर्व स्वप्न देखा है। एक ब्राह्मणने आकर अकस्मात् मेरे कानोंमें संन्यास-मन्त्र दिया है। वह मन्त्र अबतक मेरे कानोंमें गूँज रहा हैं। उस मन्त्रके मेरे कानोंमें प्रवेश होनेके बादसे मेरे प्राण व्याकुल हो गये हैं। मैं अब चैन नहीं पा रहा हूँ।" यह कहकर प्रभु व्याकुल होकर रोने लगे। भक्तगणने उनको समझाते हुए कहा—"प्रभो! इसमें आपको इतना दुःख करनेका क्या कारण है, यह तो हमारी समझमें कुछ नहीं आता। आप इतना रो क्यों रहे हैं? प्रभुने उत्तर दिया—"उस मन्त्रका गूढ़ अर्थ है। इसका अर्थ है—**'तत्त्वमसि'**—अर्थात् तुम वही हो। मैं और श्रीभगवान् यदि एक हैं तो अपने प्राणवल्लभ श्रीकृष्णको मुझे छोड़ना पड़ेगा; परन्तु यह मुझसे न होगा। प्राणवल्लभ श्रीकृष्णको त्यागकर मैं क्या कार्य करूँगा? मुझे भगवान् बननेका कोई प्रयोजन नहीं है।"

मुरारिगुप्त यह सुनकर हँसते हुए प्रभुसे बोले—"हे प्रभो! इसमें इतना दुःख क्या है? आप उस मन्त्रको षष्ठी-तत्पुरुष समास कर लें तो कोई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गड़बड़ी न रहेगी। अर्थात् 'तुम्हीं वह हो' के स्थानमें 'तुम उनके हो !'—इस प्रकार समझ लें।" सर्वज्ञ प्रभुने मुरारिके मुखसे **'तत्त्वमसि'** वेदवाक्यका वास्तविक अर्थ प्रकट किया। **'तत्त्वमसि'** शब्दके अर्थकी व्याख्या करनेके लिए ही प्रभुका यह लीलारङ्ग था। साधारणलोग **'तत्त्वमसि'** का अर्थ 'तुम वही हो !' अथवा 'वही तुम हो !'—यही समझते थे; परन्तु वास्तविक अर्थ वह नहीं था। मुरारिगुप्तने जो कहा, वही इसका वास्तविक अर्थ है, अर्थात् 'तुम उसके हो ?—यहाँ सेव्य-सेवक-सम्बन्धभाव है।

प्रभु मुरारिगुप्तकी बात सुनकर आनन्दित हो उठे। प्रभुने मुरारिसे कहा—"तुमने ठीक कहा है, परन्तु मेरा मन व्याकुल है, कदापि स्वस्थ नहीं हो रहा है।"

तत्रोवाच प्रभुर्वाचं तथापि खिद्यते मनः।
शब्दशक्त्या करिष्यामि किमित्युक्त्वा रुरोद सः॥

—मुरारिगुप्त कड़चा २.१८.५

इतना कहकर गङ्गाके तीरसे उठकर प्रभु मुकुन्दके घर आये। मुकुन्द प्रभुके अतिप्रिय मर्मी भक्त थे। यद्यपि प्रभुने मुकुन्दसे अपने संन्यासके विषयमें कुछ नहीं कहा, तथापि उन्होंने प्रभुके रंग-ढंगसे समझ लिया कि वे निश्चय ही गृह-त्याग करेंगे और यह बात उन्होंने स्पष्टरूपसे सबको कह दी। केशव भारतीको जिस दिन प्रभु विदा करके विषण्ण मनसे घर जा रहे थे,उसी दिन मुकुन्दने प्रभुके मनका भाव ताड़ लिया था। ठाकुर लोचनदास श्रीचैतन्यमङ्गलमें यह बात लिख गये हैं।

प्रभु जो सबसे पहले अपने मनकी बात कहनेके लिए मुकुन्दके घर गये, इसका भी यही गूढ़ कारण है। मुकुन्दने सब समझ लिया है, अतएव यह विषम कथा भक्तवृन्दको वही भलीभाँति समझा देंगे—इसी आशासे प्रभु पहले उसके पास गये। मुकुन्दने प्रभुको देखकर आनन्दविह्वल होकर उनके चरणोंकी वन्दना की, बैठनेके लिए दिव्य आसन दिया। प्रभुने उनको श्रीकृष्णके मङ्गलगीत गानेके लिए कहा। मधुर स्वरसे मुकुन्दका मधुर श्रीकृष्णकीर्तन सुनकर प्रभु प्रेमानन्दमें विह्वल होकर प्रेम-हुंकार करने लगे। कुछ देरके बाद वे अपना भाव-संवरण करके मुकुन्दको पास बुलाकर मृदु स्वरमें बोले—"मुकुन्द ! तुमको आज एक अति गुह्य बात कहने आया हूँ। मैं गृहत्याग करके संन्यास-ग्रहण करूँगा। भिखारीके वेषमें मैं देश-देशमें भ्रमण करूँगा—यह मैंने संकल्प किया है।"

मुकुन्द यह बात जानते थे, अतएव प्रभुकी इस बातको सुनकर उनको आश्चर्य न हुआ; परन्तु प्रभुके श्रीमुखसे उनके गृहत्यागकी बात सुनकर एवं उनके विषण्ण वदनको देखकर मुकुन्दके हृदयमें मानो शूल बिंध गया। वे यह भी जानते थे कि प्रभुको संकल्प-च्युत करना बड़ा दुष्कर कार्य है; यह किसीके लिए भी साध्य नहीं है; अतएव वे रोते-रोते प्रभुसे चरणोंमें गिरकर बहुत अनुनय-विनयपूर्वक कहने लगे—"प्रभो ! तुम इच्छामय हो, स्वतन्त्र ईश्वर हो। तुम्हारी जो इच्छा होगी, वही करोगे; तथापि कुछ दिन और नवद्वीपमें रहकर हमको कीर्तनानन्द प्रदान करो ! उसके बाद तुम्हा मनमें जो आवे वही करना।"

मुकुन्दके मनका भाव यह था कि प्रभुका अभी नव-वयस है, घरमें नवीना भार्या हैं; वृद्धा माता हैं। इस समय इनका गृहत्याग कदापि युक्तिसंगत नहीं है। प्रभु यदि उनकी बात मानकर कुछ दिन और घरपर रह जायँ तो चारों ओर मङ्गल हो जायगा अर्थात् उनकी माता वृद्धा हो गयी हैं; उनके देहान्तके बाद यदि प्रभु गृहत्याग करते हैं तो वह उतना दुःखप्रद न होगा। प्रभुकी नवीना गृहिणी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने अभी यौवनमें पदार्पण किया हैं। कुछ दिनोंमें उनको एक पुत्र हो जानेपर प्रभु यदि गृहत्याग करते हैं तो भी प्रियाजीको सान्त्वना देनेका एक उपाय रहेगा। मुकुन्दने यही सब सोच-विचारकर प्रभुका चरण पकड़कर रोते-रोते कहा—"प्रभो! दया करके तुम कुछ दिन और घर रह जाओ, यह हमारी ऐकान्तिक अभिलाषा है।" प्रभुने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया। सर्वज्ञ प्रभु मुस्कुराकर वहाँसे चल दिये।

प्रभु वहाँसे गदाधरपण्डितके घर आये। गौर-गदाधर एकात्मा थे। उनको प्रभुके गृहत्यागके संकल्पकी बातका कुछ-कुछ आभास मुकुन्दके मुखसे प्राप्त हो चुका था; परन्तु उस बातपर वे सहसा विश्वास नहीं करते थे। नदियाके सुखैश्वर्यको छोड़कर प्रभु संन्यास-ग्रहण करेंगे, यह बात वे स्वप्नमें भी नहीं सोच सकते थे। गदाधरके घरपर पदार्पण करते ही उन्होंने झटपट उठकर चरण-वन्दना करके प्रभुको दिव्य आसनपर बैठाया। प्रभु उस दिन और कोई बात न उठाकर एकबारगी अपने मनकी बात बोल उठे। प्रभु गदाधरको अपने प्राणके समान प्रिय मानते थे। उनके सामने यह विषम चर्चा करनेमें प्रभुका हृदय विदीर्ण हो गया। नेत्रोंके कोनोंसे प्रबल अश्रुधारा बह चली; तथापि वे बोले—

ना रहिब गदाधर! आमि गृह वासे।
जे ते दिगे चलिवाङ कृष्णेर उद्देशे॥
शिखा-सूत्र सर्वथाय आमि न राखिब।
माथा मुण्डाइया जे ते दिगे चलि जाब॥

चै. भा. म. २५.२५९.२६०

गदाधरके मस्तकपर अचानक मानो वज्रपात हो गया। वे आजन्म संसार-विरक्त होकर भी प्रभुको लेकर सुखसे संसार कर रहे थे। प्रभु ही उनके भाई-बन्धु, माता-पिता, स्त्री-पुत्र-परिवार—सब-कुछ थे। प्रभु ही उनके सर्वस्व थे। वे ही प्रभु गृह-त्याग करके देश-देश भिखारीके वेषमें भ्रमण करेंगे यह गदाधरके प्राणोंमें कैसे सह्य होगा? वे मनके दुःखसे बालकके समान उच्च स्वरसे रो पड़े। उनके मनमें बड़ा क्षोभ हुआ, क्षुब्ध होकर रोते-रोते प्रभुसे बोले—"क्या शिखा-सूत्र छोड़नेसे ही श्रीकृष्ण मिलते हैं? तुम्हारे मतसे क्या गृहस्थ वैष्णव नहीं है? मस्तक मुंडानेसे ही सब-कुछ होता है, ऐसा तुम्हारा मत वेद-सम्मत नहीं है। अनाथिनी माँको छोड़कर कैसे जाओगे? तुम्हारे जानेसे वे कैसे जीवित रहेंगी? तुमको उनके वधका भागी होना पड़ेगा। घरमें रहकर क्या भगवान्‌से प्रीति नहीं हो सकती? गृहस्थमें सबसे प्रीति होती है। तो भी मस्तक मुंडानेमें ही तुमको सुख मिलता है तो जैसी तुम्हारी इच्छा हो करो।"

दयालु पाठकवृन्द! गदाधरकी बातपर तनिक ध्यान देकर विचार करें। वे प्रभुसे बड़ी प्रीति रखते हैं, इसी कारण श्रीगौराङ्गप्रभुके संन्यास-संकल्पको सुनकर उनको बड़ा क्षोभ हुआ। बड़े प्रेम-पात्रको सब-कुछ कहनेका अधिकार हैं। जो लोग गदाधर-तत्त्वको जानते हैं, उनको इस क्षोभके सम्बन्धमें कुछ विशेष समझाना नहीं है। गदाधर प्रभुको गुरूसे भी बढ़कर मानते हैं; मुँह उठाकर वे उनके साथ बातें करनेका साहस भी नहीं करते। प्रभुके सामने उनका सदा सलज्जभाव रहता है। प्रभुकी प्रेम-सेवाके सिवा वे और कुछ नहीं जानते। आज प्रभुको गदाधरने क्षुब्ध होकर दो-चार बातें सुना दीं। प्रभुने चुपचाप सारी बातें सुन लीं, कोई उत्तर न दिया। भावग्राही श्रीगौर-भगवान् गदाधरके मनका भाव समझ गये। वे आज केवल अपने मनकी वात गदाधरको कहने आये थे, किसी प्रकारका उत्तर देने नहीं आये थे। स्पष्टवादी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गदाधरके मुखसे उचित बात सुनकर प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। उन्होंने गदाधरको प्रेमालिङ्गन-प्रदानकर संतुष्ट करनेकी चेष्टा की; परन्तु कर न सके। गदाधरके नयनाश्रुसे उनका वक्षःस्थल डूब गया, सारा शरीर थर-थर काँपने लगा; वे और कोई बात न बोल सके। इस अवस्थामें प्रभु गदाधरको उनके घर छोड़कर वहाँसे चले।

वे आज़ अन्तरङ्ग भक्तवृन्दके घर जाकर सबको अपने मनकी बात कहनेके लिए बाहर निकले हैं। सबके यहाँ जाकर उन्होंने अपना संकल्प प्रकट किया। भक्तवृन्द उनके इस संन्यास-संकल्पको सुनकर दुःखसे मृतवत् हो गये, कोई कोई मूर्च्छित हो पड़े।

गदाधर प्रकृतिस्थ होकर अपने प्रियमित्र मुकुन्दके घर गये। वहाँ जाकर देखा कि वासु घोष और उनके भाई गोविन्द मुकुन्दके पास बैठे हैं। गदाधरने रोते-रोते मुकुन्दसे जो कहा पदकर्ता गोविन्द घोषने उसे अपने कानों सुनकर अपने रचित एक पदमें लिख रखा है।

प्राणेर मुकुन्द हे ! आज शुनिनू आचम्बित।
कहिते पराण जार, मुखे नाहि बाहिराय,
श्रीगौराङ्ग छाड़िबे नवद्वीप॥

इहा त जानि मोरा, सकले मिलिनु गोरा,
अवनत माथे आछि बसि।
निझरे नयन झोरे बुक बाहि धारा पड़े,
मलिन हये छे मुख-शशी॥

देखिया तखन प्राण, सदा करे आन् चान्,
शुधाइते नाहि अवसर।
क्षणेक संवित हइल, तबे मुञि निवेदिल,
शुनिया दिलेन उत्तर॥

आमि त विवश हइया, तारे किछु ना कहिया,
जाइया आइलुँ तव पाश।
एइ त कहिनु आमि, जे कहिते पार तुमि,
मोर नाहिं जीवेनेर आश॥

शुनिया मुकुन्द काँदे, हिया थिर नाहिं बाँधे,
गदाधरेर वदन हेरिया।
गोविन्द घोष कहय, इहा जेन नाहिं हय,
तबे मुञि जाइब मरिया।

गदाधरने जो प्रभुको दो बातें सुना दी थीं, वे और किसीसे नहीं कही। प्रभुको उन्होंने जो कठोर बातें कही हैं, उन बातोंको याद करके अब वे संतप्त हो रहे हैं। वासु घोष, गोविन्द तथा गदाधर-तीनों व्यक्ति मिलकर अजस्र आँसू बहाते हैं।

इसके बाद प्रभु श्रीवासपण्डितके घर आये। श्रीवासको भी मनकी बात खोलकर समझा दी—"पण्डित श्रीवास ! यदि दुःख नहीं मानो तो तुमको एक बात कहता हूँ। मैं तुमलोगोंके लिए प्रेमका उपार्जन करने देशान्तर जाऊँगा। जैसे धन उपार्जनके लिए नाना प्रकारके क्लेश सहकर लोग दूर देशोंमें जाते हैं और धन लाकर बन्धु-बान्धवोंका पोषण करते हैं, इस प्रकार मैं भी तुमलोगोंको प्रेम-धन लाकर दूँगा।"

प्रभुकी बातसे श्रीवासपण्डितके मनमें बड़ा क्षोभ हुआ। दुःखसे मनुष्यको क्षोभ होता है। प्रभु संन्यास-ग्रहण करके गृहत्याग करेंगे, उनका शिखा-सूत्र अन्तर्धान हो जायगा—यह बात सुनकर वृद्ध ब्राह्मणका हृदय काँपने लगा। क्रोध और अभिमानमें भरकर उन्होंने प्रभुकी बातका अति सुन्दर उत्तर दिया। उन्होंने कहा—"हे प्रभु ! जबतक प्राण रहता है, तब तक लोग अपने आत्मीय बन्धुजनका प्रतिपालन करते हैं; उनका देहावसान होनेपर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनका श्रद्धादि कार्य करते हैं। तुम्हारे विरहमें तुम्हारे निजजन जीवित न रहेंगे, यह निश्चय समझो। तुम्हारे विरहमें जो जीता रहेगा, उसको तुम अपना प्रेमधन देना। जो प्राण-त्याग करेंगे, वे तुम्हारा प्रेमधन लेकर क्या करेंगे? जीते-जी तुम हमलोगोंको मार डालनेका जाल बिछा रहे हो।" प्रभु चुप रहे, मन-ही-मन कुछ सोचते रहे, पर और कोई बात न बोल सके।

श्रीवासपण्डितके घरसे धीरे-धीरे उठकर वे मुरारिगुप्तके घर आये। मुरारिको भी अपने मनकी बात बोले; मुरारिके सिरपर मानो वज्रपात हुआ! प्रभुके श्रीमुखसे ही यह विषम बात सुननी पड़ी, इस दुःखसे वे मर्माहत हो उठे। उन्होंने सोचा कि प्रभुके मनमें ऐसा कौन-सा आघात लगा, जिससे गृह-त्याग करनेका संकल्प कर लिया? भीतरी बात वे कुछ भी नहीं जानते थे। प्रभुके मलिन मुख-चन्द्रको देखकर मुरारिके प्राण आकुल हो उठे। वे कुछ भी सोच न सके कि प्रभुको क्या उत्तर दें। प्रभुके चरणोंमें गिरकर अति कष्टपूर्वक रोने हुए बोले—

शुन शुन ओहे प्रभु गौर-भगवान्।
अधम मुरारि बले कर अवधान॥
रुइले अपूर्व वृक्ष अंगुलि धरिया।
बाड़ाइले दिवा निशि सिञ्चिया कूड़िया॥
तिले तिले राखिले ढाकिले बहु यत्ने।
बाँधिले तरुर मूल दिया नाना रत्ने॥
फल-फूल काले गाछ फेलाह काटिया।
मरिब आमरा सब हृदय फाटिया॥
निरन्तर दिवा-निशि आन नाहिं जानि।
स्वप्नेह देखों तोर चाँद मुख खानि॥

चै. म,

प्रिय पाठकवृन्द! मुरारिगुप्तकी बातोंके मर्मकी आलोचना की जाय। नदियामें प्रभुने भक्ति-वृक्ष रोपण किया है। उसमें यत्नपूर्वक जल-सिञ्चन किया है। भक्ति-तरुके मूलदेशमें नाना प्रकारके रत्न बाँधे हैं। अब उस भक्ति-तरुमें फल लगनेका समय हो गया है। इसी समय वे अपने हाथसे रोपे भक्ति-तरुको स्वयं काटनेके लिए तैयार हो गये हैं। उनके गृहत्याग करते ही नदियाके सारे भक्त प्राण-त्या। कर देंगे। प्रभुके रोपे हुए भक्ति-तरुके फल, नदियाके भक्तवृन्द हैं। प्रभुके श्रीमुखसे निःसृत उपदेश-वाणी उनका मूल है, प्रभुके अन्तरङ्ग पार्षदगण उनकी शाखा-प्रशाखा हैं। प्रभुके नवद्वीप छोड़ते ही यह भक्ति-तरु समूल उत्पाटित हो जायगा, यह बात मुरारिगुप्तके समान विचक्षण भक्तचूड़ामणिको समझनेसे बाकी न रही। अतएव उन्होंने भी प्रभुसे अपने मनकी बात कह दी—

निरन्तर दिवा निशि आन नाहि जानि।
स्वपनेह देखों तोर चाँद मुख खानि॥

यह मुरारिके अन्तःकरणकी बात थी। श्रीगौराङ्गके सिवा वे और कुछ नहीं जानते, गौर-कथाके सिवा और कोई बात नहीं कहते। श्रीगौराङ्गप्रभु उनके जीवन सर्वस्व धन हैं। प्रभुकी कृपासे वे गौराङ्ग-तत्त्वको विशिष्टरूपसे जानते हैं। अपने करचामें उन्होने प्रभुकी स्तुति की है—

नमामि चैतन्यमजं पुरातनं
चतुर्भुजं शङ्खगदाब्जचक्रिणम्।
श्रीवत्सलक्ष्माङ्कित वक्षसं हरिं
सद्भालसंलग्नमणिं सुबाससम्॥

मुरारिगुप्त कड़चा १.१.१४

मुरारि रामभक्त साधक थे। श्रीगौराङ्गचन्द्र श्रीरामचन्द्र हैं, यह भलीभाँति समझकर उन्होंने यह वन्दना की है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुने सब भक्तोंके सामने अपने मनके भावको व्यक्त किया, उनकी दुःख-कथा सुनी; परन्तु किसीको कोई उत्तर न दिया। चुपचाप सिर झुकाकर वे भक्तवृन्दकी हृदय-विदारक मर्म वेदनाकी उच्छ्वास-पूर्ण कथा कानोंसे केवल सुनते गये, उसका कोई उत्तर नहीं दिया; प्रभुका कोमल हृदय उन्मथित हो रहा है; भक्तवृन्दके आर्त्तनादसे उनका चित्त व्याकुल है; वे अब बात नहीं कर पा रहे हैं।

भक्तवृन्द देख रहे हैं कि उनके उज्ज्वल कमल-नयनसे अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। प्रभुके मलिन वदन और विषण्णभावको देखकर उन्होंने मन-ही-मन जान लिया कि प्रभु नवद्वीपको छोड़कर जाते समय विषम वेदना अनुभव कर रहे हैं; भक्तसङ्गके सुखसे बञ्चित होना पड़ेगा, इस चिन्तासे अत्यन्त कातर हो रहे हैं। प्रभुके मलिन मुख-चन्द्रको देखकर उनका दुःख दूना हो गया वे दुःखके समुद्रमें डूब रहे हैं। कोई-कोई मनके आवेगमें इस समय भी प्रभुको कठोर बातें कहनेसे नहीं रुकते हैं।

मुकुन्द प्रभुके साथ ही हैं, गदाधर भी हैं और श्रीवासपण्डित भी। मुकुन्द प्रभुके अतिप्रिय अन्तरङ्ग भक्त हैं। प्रभुके मलिन मुख-चन्द्रको देखकर उनके मनमें बड़ा दुःख हो रहा है और उनके ऊपर बहुत रोष भी हो रहा है। दुःखसे अभिभूत तथा प्रभुके भावी विरह-वाणसे जर्जरित होकर उनके समक्ष ही उनको शठ-कपटी आदि कटु वाक्य कहते जा रहे हैं और रो रहे हैं।

प्रभुने मुकुन्दके मुखकी ओर एक बार देखा, फिर तत्काल सिर अवनत कर लिया। नयनजलसे प्रभुका वक्षःस्थल भीग गया। प्रभुके पदतलमें मुकुन्द पछाड़ खाकर गिरे और बालकके समान क्रन्दन करने लगे। प्रभु स्थिरतापूर्वक खड़े थे। सब भक्तवृन्द प्रभुको घेरकर खड़े हैं और सबके नेत्रोंमें जल है। कोई दाँत-तले तृण धारण करके हाथ जोड़कर प्रभुसे अनुनय-विनय कर रहा है, कोई भुजा ऊपर उठाकर उच्च स्वरसे बारंबार आर्त्तनाद कर रहा है।

प्रभुको अब बोलना पड़ा, वे बिना बोले न रह सके। बात करते समय जैसेही उन्होंने सिर उठाया, सबने देखा कि उनका मलिन वदन मलिनतर हो रहा है, मनका आवेग अदम्य जान पड़ता है, तथापि वे गद्गद स्वरमें अर्द्धस्फुटित अस्पष्ट भाषामें बोले—"तुम लोग मेरे अनुगत निजजन हो; तुम-लोगोंको मैं मनकी बात कहता हूँ, सुनो।" यह बात बोलते-बोलते प्रभुका गला रुँध गया, कमल-नयनसे झर-झर अश्रुप्रवाह होने लगा, वे कुछ देरतक चुप हो गये।

प्रभु अबतक चुपचाप भक्तवृन्दका अनुयोग-अभियोग, आक्षेप और आर्तनाद सुन रहे थे। जब उन्होंने देखा कि ये लोग कदापि शान्त न होंगे तो उनको और भी स्पष्ट करके अपने मनका भाव व्यक्त करना पड़ा। प्रभुने कहा—"तुमलोग अपने स्वार्थके लिए मेरे परमार्थके मार्गमें बाधा डाल रहे हो। श्रीकृष्ण-विरहानलमें मेरा मन-प्राण-देह जर्जर हो रहा है, मुझे और कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। तुमलोगोंकी बात मुझे विषवत् जान पड़ती है। मेरी ऐसी स्नेहमयी जननी और प्रेममयी गृहिणी भी मुझे अग्निके समान जान पड़ती हैं। मैं अपने प्राणवल्लभ श्रीकृष्णके अनुसंधानमें देश-देश भिखारीके वेषमें भ्रमण करूँगा; देखता हूँ उनका पता मिलता है या नहीं।"—इतना कहकर श्रीकृष्ण-प्रेमोन्मत्त प्रभु श्रीकृष्ण-विरह दुःखमें ज्ञान-शून्य होकर धूलमें लोट-पोट करने लगे तथा करुण-स्वरमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रुदन करते हुए उन्होंने प्रेमावेगमें अपना यज्ञोपवीत उतारकर फेंक दिया।

भक्तवृन्द प्रभुकी बात सुनकर और उनकी कृष्ण प्रेमोन्माद-दशा देखकर जड़वत् स्तम्भित हो रहे। अब उनलोगोंको बोलनेके लिए कुछ न रहा, वे एकबारगी हताश हो गये। भक्तवृन्द दुःखके समुद्रमें डूबने लगे।

सबने मिलकर प्रभुको उठाया; किसीके मुँहसे कोई बात नहीं निकल रही थी। सबकी आँखोंसे झर-झर अश्रुधारा बह रही थी। सब सोच रहे थे कि प्रभुको किस प्रकार घर ले जायँ। बीच-बीचमें प्रभु करुण-स्वरमें 'हा कृष्ण! हा कृष्ण!!' कहकर रुदन करते हैं। कुछ देरके बाद इच्छामय प्रभुने अपना भाव-संवरण किया। पुनः गङ्गाके तीरपर जाकर स्थिर होकर बैठ गये। उस समय एक पहर रात बीत चुकी थी। सभी भक्तवृन्द साथमें थे। शुक्लपक्षकी रात थी। ज्योत्स्नाके आलोकमें गङ्गातट उद्भासित था। मृदु-मन्द-समीरण बह रहा था। गङ्गाकी तरङ्ग-भङ्गिमा देखते-देखते प्रभुने अपने भक्तोंको सम्बोधन करके उपदेश देते हुए कहा—"भाइयो! इस दारुण संसारके विषमय विषय मुझे भीतर-ही-भीतर जलाये दे रहे हैं। यह मनुष्य-जन्म बड़ा दुर्लभ है और श्रीकृष्णका भजन करनेके लिए है। ऐसा अवसर पाकर भी श्रीकृष्णको छोड़कर मिथ्या संसारके पीछे दौड़ना बुद्धिमानी नहीं है आप सबलोग मुझे आशीर्वाद दें, जिससे श्रीकृष्णमें मेरी रति-मति हो, मैं अविरल श्रीकृष्ण गुण-गान करता रहूँ, मेरा मन श्रीकृष्णके मुख-कमल और चरणोंमें लगा रहे, इस प्रकार मेरा संसार दुःख दूर हो जाय—यही मैं आप सबसे वरदान माँगता हूँ। क्या बताऊँ, श्रीकृष्णको देखे बिना विरह-ज्वालासे मरा जा रहा हूँ। वे ही सच्चे माता-पिता, भाई-बन्धु, गुरु-देवता हैं, जो श्रीकृष्ण-कथा कहें और श्रीकृष्ण भजनमें लगावें। आपलोग परमवैष्णव और सच्चे बांधवहैं; मुझपर दया बनायी रखें। मैं सबके हितमें संन्यास-ग्रहण करूँगा और प्रेमका वितरण करूँगा।"

यह बात कहते-कहते प्रभु आकुल होकर रोते हुए पुनः भूतलपर गिर पड़े। उनका सोनेका अङ्ग धूलि-धूसरित हो गया। भक्तगणने पुनः उनको उठाकर बैठाया। तब सुचतुर मुरारिगुप्तने साहस करके उनके मनके अनुरूप दो-एक बातें कहीं। उन्होंने हाथ जोड़कर निवेदन किया—"हे प्रभो! तुम इच्छामय स्वतन्त्र ईश्वर हो। तुम्हारा यह श्रीकृष्ण-विरहभाव लोकशिक्षाके लिए है। तुम स्वेच्छासे जो करोगे, वही हमारे लिए शिरोधार्य है। तुम सब-कुछ जानते हो; जिससे हमारा मङ्गल हो, तुम वही करो। हम क्षुद्र जीव कीट-पिपीलिका सदृश हैं। तुम अनन्त जगत्के ईश्वर हो, दयासिंधु हो, सब जीवोंके बन्धु हो। तुम जो अच्छा समझो, वही करो।

मुरारिगुप्तकी बात सुनकर प्रभुका मन बड़ा आनन्दित हुआ। इतनी देरके बाद उनके श्रीमुखमें ईषत् हँसीकी रेखा दीख पड़ी। प्रेमानन्दमें विभोर होकर एक-एक करके सब भक्तवृन्दको प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन-प्रदानकर कृतार्थ किया और अति मधुर स्वरमें बोले—

"शुन सब जन, आमार वचन,
सँदेह ना कर केहो।
यथा तथा जाइ, तोमा सभा ठाँइ,
आछिये जानिह ऐहो॥"

चै. म.

भक्तवृन्द प्रभुके स्नेह-वचनसे कथंचित् शान्त हुए। सब प्रभुको साथ लेकर उनके मन्दिरमें पहुँचा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आये। प्रभुने आनन्दित चित्तसे सबको विदा किया। शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवी प्रभुके इस संन्यास-संकल्प-लीलारङ्गके वृत्तान्तको कुछ भी नहीं जानतीं।

प्रभुके दुःखका कारण यह था कि नदियाके भक्तिबहिर्मुख विद्याभिमानी पण्डितलोग युगधर्म संकीर्तनके विरोधी थे, मधुर हरिनाम नहीं लेते थे। इसी कारण उनको सुखैश्वर्य छोड़कर भिखारी बनकर उनके द्वार-द्वार जाकर उन्हे हरिनाम देना पड़ा। यह पण्डितमण्डली विद्याके गर्वमें चूर थी, ज्ञानके गर्वमें उन्मत्त होकर भक्तिपथको माननेके लिए तैयार न थी। प्रभुके प्रकट कालमें ही जब ये कुतर्कपरायण कुबुद्धि पण्डितगण प्रभुका उपदेश ग्रहण नहीं करते, हरिनाम नहीं लेते, तब आज यदि वे श्रीगौराङ्ग-धर्ममें उदासीन हों तो इसमें आश्चर्यकी बात क्या है?

नदियाके सर्वप्रधान न्यायशास्त्रके पण्डित प्रभुके प्रधान भक्त थे, उन्होंने एकदिन बड़े दुःखसे कहा था—

बन्दी करियाछ मोरे अशेष बन्धने।
विद्या धने कुले-तोमा जानिब केमने॥

अर्थात्—विद्या, धन और कुलके कठोर बन्धनसे तुमने मुझे बंदी बना लिया है, ऐसी हालतमें तुमको किस प्रकार पहचानूँ।

तिरेपनवाँ अध्याय

माता और पुत्र

धर्म बुझाइते बाप! तोर अवतार।
जननी छाड़िया कोन धर्म वा विचार॥
तुमि धर्ममय यदि जननी छाड़िबा।
केमनेते जगते तुमि धर्म बुझाइबा॥
चै. भा. म. २६.२५,२६

भक्तगणमें एक-एक करके सबने प्रभुके इस महादुःखदायी संन्यास-संकल्पको सुना। जिसने ही यह दारुण समाचार सुना, वही 'हा अदृष्ट! हा विधाता!! कहकर सिर पीटकर आर्तनाद करने लगा। भक्तोंके दुःखके ऊपर दुःख यह था कि शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवी प्रभुके गृह-त्यागका संवाद सुनकर कैसे प्राण धारण करेंगी—इस विषम चिन्तासे उनका हृदय उन्मथित होने लगा। यह संवाद प्रभुकी वृद्धा जननी और नवीना प्रियाजीके कानोंमें न पहुँचने पाये, वे जानने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

न पावें—इसके लिए सबको सावधान कर दिया गया। किन्तु प्रभुने स्वयं यह उनके सामने प्रकट करके बहादुरी दिखायी थी; अतएव यह संवाद गुप्त न रह सका।

सारी नदियामें विद्युत्-गतिसे यह समाचार फैल गया। सभी हाहाकार कर रहे हैं। सबके मुँहमें एक ही बात है—"आहा! वृद्धा शचीदेवीके अदृष्टमें क्या इतना दुःख लिखा था! सोलह वर्षका नवयुवक पुत्र संन्यास लेकर उनके हृदयमें शूल मारकर गृह-त्याग कर चुका है। फिर यह चौबीस वर्षका संसारी-पुत्र सुन्दरी युवती भार्याको घरपर रखकर संन्यास करेगा? मुँहा-मुँही शचीमाताने पुत्रके संन्यास-संकल्पकी बात सुनी। सुनते ही उनके देहसे मानो प्राण निकलने लगे, वे यह बात बोलकर मूर्च्छित होकर भूतलपर गिर पड़ीं—

बड़ साध छिल मने नदीया वसति।
काल हैया एल मोर केशव भारती॥

नवीना प्रियाजी घरपर थीं। दौड़कर उन्होंने सासुके मुँह और आँखोंपर जल-सिञ्चन करके उनकी मूर्च्छा-भङ्ग की। पड़ोसकी स्त्रियाँ आकर उपस्थित हो गयीं। शचीमाता जिसको देखती हैं, उससे ही उन्मादिनीके समान पूछती हैं—"अरे! क्या तुमलोग जानते हो? मेरा निमाई अब विश्वरूपके समान गृह-त्याग करेगा।" इस बातका कौन उत्तर देता? शचीमाताके सिरपर मानो आकाश टूटकर गिर गया। वे पागलिनीके समान नदियाके रास्तेपर निकल आयीं और सबसे यही प्रश्न करने लगीं। शचीमाताकी अवस्था देखकर पाषाणहृदय भी द्रवित हो जाता था। यह देखकर नदियामें हाहाकार मच गया।

शचीमाता रोती हुई सारी नदियामें पुत्रकी खोजमें निकल पड़ीं। उस समय प्रभु गङ्गाके तीर-पर बैठे थे। वे जब घर आये, उस समय शचीमाता घर लौट आयी थीं। सोनेका बच्छा निमाई-चाँदको अवलोकन करते ही उनका दुःख-समुद्र एकबारगी उमड़ पड़ा। वे पुत्रके पास जाकर सिर पीटकर बैठ गयीं। उनकी अवस्था देखकर प्रभु समझ गये कि उनको यह संवाद मिल गया है। प्रभु अवनत सिर किये पीढ़ेपर बैठे हैं, रातका समय है। स्नेहमयी शचीमाताने हो पहले रोते-रोते पूछा—"बेटा निमाई! तू क्या मुझको छोड़कर चला जायगा? तुम्हारे चन्द्र-मुखको देख-देखकर मैंने यह पाप-जीवन बचाये रखा है। तुमको देखे बिना मेरे ये प्राण कैसे बचेंगे?"

प्रभु कुछ बोल न सके; वे चुपचाप बैठे रहे; उनका मुँह नीचेकी ओर था और उनकी आँखोंसे अश्रुधारा बह रही थी। शचीमाता यह देख रही थी। प्रभु बीच-बीचमें दीर्घ-श्वास छोड़ते थे। शचीमाता उसे भी सुन पाती थी। उनका हृदय मानो टुकड़े-टुकड़े हो रहा था। उन्होंने समझ लिया कि, लोग जो कहते हैं, वह सत्य है। वैसा न होता तो मेरा पुत्र चुप क्यों रहता? इतना रोता क्यों? **मौनं सम्मतिलक्षणम्।** शचीमाताकी आँखोंमें अँधेरा छा गया। अपनी वृद्धावस्थाकी सारी शक्ति लगाकर अत्यन्त कष्ट पूर्वक रोते-रोते उन्होंने अपने पुत्रसे कहा—"बेटा निमाई! सुना है कि तुम संन्यास लोगो;। मेरी तो एकमात्र तुम्हीं आँख हो! तुम्हारे बिना सब अंधेरा दीखता है। सात कन्याओंके मरने बाद तुमसे मेरी गोद भरी थी। न मालुम विधाताने भाग्यमें क्या लिखा है? तुम्हारे ही कारण मुझे लोग 'भाग्यवती' कहते हैं। तुम्हारे बिना कोई मेरा मुँह भी नहीं देखेगा। मेरा यह सौभाग्य मत छीनना। तुम मुझे छोड़कर चले गये तो मैं गङ्गामें प्रवेश करके प्राण त्याग दूँगी। विष्णुप्रिया भी तुम्हारे बिना जीवित नहीं रहेगी। तुम्हारे भक्त भी कैसे जीवित रहेंगे! मैं तो तुम्हारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सामने ही विष खाकर प्राण त्याग देती हूँ जिससे मुझे तुम्हारे संन्यासकी बात न सुननी पड़े। नवनीत-की-सी पुतली तुम धूपमें कैसे भटकोगे, भूख-प्यास लगेगी तब कहाँ माँगते फिरोगे ? अपने भक्तोंको छोड़कर तुमसे कैसे रहा जायगा ? बेटा ! तरुण अवस्थामें संन्यास नहीं लिया जाता है। अभी तो गृहस्थमें रहो, जिससे मुझे तुम्हारी संतति देखनेका सौभाग्य मिल सके। विश्वरूप जब घर छोड़कर चला गया था, तब तुमने क्या कहा था, उसको याद करो।"

जगज्जननी शचीमाताने पुत्रको सारी बातें समझाकर कह दी। लोकनिन्दा, धर्मनाश, स्वजन-त्याग, जननी-वध, स्त्री-हत्या आदि सब भय उन्होंने एक-एक करके पुत्रको दिखलाये। स्नेहमयी जननी-के लिए जो उपयुक्त था, वह उन्होंने कहा। प्रभुने चुपचाप सारी बातें सुन ली; परन्तु कोई उत्तर नहीं दिया। वे जिस भावमें बैठे थे, स्थिर-संकल्प होकर उसी भावमें बैठे रहे और अवनत सिर होकर माताकी दुःख-विलाप-कथा सुनते रहे। पुत्रके मुखसे कोई उत्तर न पाकर शचीमाताने समझ लिया कि उनका भाग्य निश्चय ही फूट गया है। उनका शोकावेग दूना बढ़ गया। वे मनके आवेगमें रोती-रोती पुनः कहने लगी—"मेरे लाल ! तुम्हारा चन्द्र-वदन, कमल-नयन, सुन्दर अधर मुक्ता-दर्शन, अमृत बरसानेवाले मधुर बचन, गजेन्द्र-गमन देखे बिना मैं कैसे बच पाऊँगी ? अद्वैताचार्य, नित्यानन्द, श्रीवास, गदाधर आदि कीर्तन करते हुए तुम घरमें ही रहो। तुमतो धर्मका आचरण करनेको आये हो, वृद्धाजननीको छोड़कर जानेमें कौन-सा धर्म है ? तुम्हारा भाई मुझे छोड़कर चला गया, तुम्हारे बाप वैकुण्ठ चले गये, तुमको देखकर किसी प्रकार मैंने ये सारे संन्यास भुला दिये; अब तुम्हारे चले जाने पर मैं कैसे बचूँगी।" *

मातृभक्त—शिरोमणि प्रभु माताके बचन सुनकर स्थिर न रह सके। उनके कोमल हृदयमें एक साथ पितृशोक और भ्रातृशोककी सारी स्मृति उदय हो उठी। उन्होंने मातासे कुछ कहना चाहा, परन्तु उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। वे कुछ भी बोल न सके। वे मुँह उठाकर माताकी एक बातका भी उत्तर न दे सके।

प्रभु उस दिन माताके साथ कोई बात न कर सके। एक तो शचीमाता वृद्धा हो गयी है; शोक-दुःखसे उनका शरीर अस्थि-चर्मावशिष्ट रह गया है, शरीर विवर्ण हो गया है। प्रभुने देखा कि उनका जीवन संकटमें है। तब इच्छामय प्रभुने अपनी माताको दुःख सहनेकी शक्ति प्रदान करनेका संकल्प किया। दूसरे दिन माताको एकान्तमें बुलाकर उनको अपना तत्त्व और उनका तत्त्व समझाया। प्रभुने यहाँ जननीके सामने भगवान्-भावमें आत्म-प्रकाश करके कहा—

(करुण भटियारी राग)

प्राणेर गौराङ्ग हेर बाप !
अनाथिनी छाड़िते ना जुयाय।
सभा लइया कर, निज अङ्गने कीर्तन,
नित्यानन्द आछेन सहाय॥
(तोमार) प्रेममय दुटि आँखि, दीर्घ भुज दुइ देखि,
वचनेते अमिया वरिषे हे।
विनि दीपे घर मोर, तोमार अङ्गेते उजोर,
राङ्गा पाये कत मधु वैसे हे॥
प्रेमशोके कहे शची, विश्वम्भर शुने बसि,
(जेन) रघुनाथे कौशल्या बुझाय।
श्रीचैतन्य-नित्यानन्द, सुखदाता सदानन्द,
वृन्दावन दास रस गाय॥

चै भा. म. २६.३२—३४

---

* श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने शचीमाताकी उक्तिको इस प्रसङ्गका एक बड़ा ही करुणरसात्मक पद लिखा है। यथा,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"माता ! तुमि स्थिर कर मन।
शुन जत जन्म आमि तोमार नन्दन॥
चित्त दिया शुनह आपन गुण ग्राम।
कोन काले आछिल तोमार पृश्नि-नाम॥
तथाय आछिला तुमि आमार जननी।
तबे तुमि स्वर्गे हैला अदिति आपनि॥
तबे आमि हैला वामन-अवतार।
तथाओ आछिला तुमि जननी आमार॥
तबे तुमि देवहूति हैला आर वार।
तथाओ कपिल आमि नन्दन तोमार॥
तबे त कौशल्या हैला आर बार तुमि।
तथाओ तोमार पुत्र रामचन्द्र आमि॥
तबे तुमि मथुराय देवकी हइला।
कंसासुर अन्तः पुरे बन्धने आछिला॥
तथाय आमार तुमि आछिला जननी।
तुमि सेइ देवकी, देवकी-पुत्र आमि॥
आरो दुइ जन्म एइ संकीर्तनारम्भे।
हइब तोमार पुत्र आमि अविलम्बे॥*
एइ मत तुमि मोर माता जन्मे जन्मे।
तोमाय आमाय कभू त्याग नाहि मर्मे॥
आमायाय एइ सब कहिलाङ कथा।
आर तुमि मने दुःख ना भाव सर्वथा॥
चै. भा. म. २६.३८—४८

---

* प्रभुने अत्यन्त सुस्पष्ट वाणीमें अपनी माताके ऐश्वर्यभावमें कहा—

आरो दुइ जन्म एइ सकीर्तनारम्भे।
हइब तोमार पुत्र आमि अविलम्बे॥
चै. भा. म. २६.४६

उन्होंने इस समय भक्तोंको भी कहा था—

एइ मत आरो आछे दुइ अवतार।
संकीर्तन आनन्द रूप हइबे आमार॥
ताहातेओ तुमि सब एइ मत रङ्गे।
कीर्तन करिया महासुखे आमा सङ्गे॥
चै. भा. म. २६.५१,५२

अबतक प्रभुने अपनी वह प्रतिज्ञा पूर्ण की है या नहीं, इस बातको लेकर गौर-भक्तगण बहुधा विचार किया करते हैं। साधु-वैष्णवोंके सुख से इस सम्बन्धमें जो सुना है, वही यहाँ कृपालु पाठकवृन्दसे निवेदन किया है।

श्रीग्रन्थमें देखा जाता है कि श्रीगौराङ्ग, श्रीनित्यानन्द और श्रीअद्वैत—ये तीनों आदमी क्रमशः श्रीनिवासाचार्य, श्रीनरोत्तमठाकुर और श्रीश्यामानन्द ठाकुरके रूपमें पुनः अवतीर्ण हुए थे। साधु-वैष्णव महाजनगण इनको श्रीमन्महाप्रभु तथा दो प्रभुओंकी प्रकाशमूर्ति कहते है। इससे समझना चाहिये कि प्रभुके अङ्गीकृत दो अवतारोंमें एक अवतार तो हो गया है तथा एक और अवतार बाकी है। परन्तु बहुत-से लोग अपने-अपने नवीन सम्प्रदायोंके आचार्य गुरु महाराजको तथा शक्तिशाली गुरुदेवको प्रभुका द्वितीय अवतार बतलाते हैं। इन सब पूज्यपाद महात्माओं-का नामोल्लेख करनेका यहाँ प्रयोजन नहीं है। वे श्रीमन्महाप्रभुके भक्तवीर तथा भक्तशिरोमणि हैं, अतएव हम उनके चरणोंमें सदा मस्तक अवनत करेंगे; परन्तु श्रीमन्महाप्रभुका अवतार नहीं मानेंगे, इसके अनेक कारण है; उसकी आलोचना करनेके लिए इस ग्रन्थमें स्थान नहीं है।

प्रभु अवतीर्ण होनेके पूर्व अपने पार्षद नित्यदास भक्तोंको पहले भेजते हैं, अन्तमें वे स्वयं अवतीर्ण होते हैं। इस विषयमें श्रीचैतन्य-चरितामृत प्रमाण है। यथा,

किशोर शेखर धर्म व्रजेन्द्र नन्दन।
प्रकट लीला करिबार जबे हय मन॥

(टिप्पणी का शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शचीमाताको प्रभुने यहाँ अपना ऐश्वर्यभाव दिखलाया। यह भी समझा दिया कि वे ब्रह्म, सनातन, त्रिजगत्पति हैं और उनकी माता जगन्माता, विश्वब्रह्माण्डपतिकी जननी हैं। ये सब बातें प्रभुने अपनी माताको गुप्त भावसे कहीं। शचीमाताका शुद्ध वात्सल्यभाव है। वे श्रीगौर-भगवान्‌की बातोंमें भूलनेवाली नहीं हैं। वे केवल प्रभुकी बातों-को सुनती गयीं, परन्तु उससे उनके मनका दुःख दूर न हुआ।

अन्तर्यामी प्रभुने जननीके मनके भावको समझकर अपना ऐश्वर्यभाव-संवरण किया। वे भावग्राही हैं, भाव और भक्तिके वे पूर्ण वशीभूत हैं परन्तु वे शठ-शिरोमणि हैं। अपनी माताको भी वे परीक्षा लेनेसे नहीं छोड़ते। अब ऐश्वर्यभाव-संवरण करके प्रभु परम ज्ञानी और धर्मोपदेष्टा गुरुके समान जननीको भी धर्मोपदेश देने बैठे। उनको जीवतत्त्व, भक्ति और आध्यात्मिक सारे तत्त्वोंकी शिक्षा देने लगे। प्रभु कहने लगे—

के तुमि तोमार पुत्र, केवा तोर बाप।
मिछा तोर-मोर करि कर अनुताप॥
कि नारी, पुरुष किया, केवा कार पति।
श्रीकृष्ण-चरण बहि अन्य नाहि गति॥
सेइ माता, सेइ पिता, सेइ बन्धुजन।
सेइ हर्त्ता, सेइ कर्त्ता, सेइ मात्र धन॥
ता बिनु सकल मिछा, कहिल ए तत्त्व।
ता बिनु सकल मिथ्या सकल जगत्॥
विष्णु माया बन्धे सब लोक सुयन्त्रित।
निज मद अहंकारे केवल पीड़ित॥
निज भाल बलि जेइ जेइ करे कर्म।
परकाले बन्दी हय सेइ सब धर्म॥
कर्मा सूत्रे बन्दी हइया बूलये भ्रमिया।
आपना ना जाने जीव कृष्ण पासरिया॥
चतुर्दश लोक माझे मानुषेर जन्म।
दुर्लभ करिया मानि कहिल ए मर्म॥
विषय विपाके इथि आछये अपार।
क्षणेक भंगुर एइ अनित्य संसार॥
तबह दुर्लभ जानि मनुष्य शरीर।
श्रीकृष्ण भजये जे मायाय हैये स्थिर॥
श्रीकृष्ण-भजन सबे मात्र एइ देहे।
मुक्त बद्ध हय, यदि कृष्णे करे नेहे॥

(शेष टिप्पणी का)

आगे प्रकट कराय माता पिता भक्तगणे।
शेषे प्रकट हय जन्मादिक लीला क्रमे॥
चै. च. म. २०.३१३,३१४

हमको देखना है कि क्या उसी प्रकार इस समय प्रभुके नित्य पार्षदगण प्रकट हुए हैं? उस प्रकारके तेजस्वी, निर्भीक, भक्तिप्राण शुद्ध गौराङ्ग-दास क्या वर्तमान समयमें भी आविर्भूत हुए है? शचीमाताके समान भक्तिमती, मिश्र पुरन्दरके समान उदारचरित भक्तिमान् महापुरुषने क्या जन्म लिया है? यही सर्व प्रथम आलोच्य और अन्वेषणीय है। पश्चात् श्रीगौराङ्गप्रभुके द्वितीय अवतारका विचार किया जायगा। समय तो इस समय शुभ है, श्रीगौराङ्ग-धर्म-चर्चा, श्रीगौराङ्ग-लीलास्वादन, प्राचीन ग्रन्थोंका प्रकाशन, वैष्णवदर्शन-शिक्षा—आदि शुभ कार्य उसी शुभ दिनके आगमनकी घोषणाकर रहे हैं। वैष्णवधर्मका महानह्रास भी समुपस्थित है। श्रीगौराङ्ग-धर्मकी नाना शाखा-प्रशाखाओंकी सृष्टि हो गयी है, उपधर्म प्रचलित हो रहे हैं। प्रकृत गौराङ्ग धर्माचार निष्ठ आचार्योंका अभाव हो गया है। इस समय प्रभुके द्वितीय अवतारका प्रयोजन हो गया है। वे आवेंगे। उस शुभ दिनका उदय कब होगा—इसी आशामें भक्तगण बैठे हैं।

—ग्रन्थकर्ता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पुत्र-स्नेहे कर मोरे जत बड़ भाव।
श्रीकृष्ण-चरणे हैले कत हैत लाभ॥
संसारे-आरति करि मरिबार तरे।
श्रीकृष्णे-आरति करि भव तरिबारे॥
सेइ से परम बन्धु, सेइ माता-पिता।
श्रीकृष्णेर चरणे जेइ प्रेमभक्ति दाता॥
कृष्णेर विरहे मोर थोड़ये अन्तर।
चरणें पड़िया बोल वचन कातर॥
विस्तर पिरीति मोरे करियाछ तुमि।
तोमार आज्ञाय चित्ते शुद्ध हइ आमि॥
आमार निस्तार आर तोर परित्राण।
श्रीकृष्ण-चरण भज छाड़ पुत्र-ज्ञान॥
संन्यास करिब कृष्ण-प्रेमार कारणे।
देशे देशे हैते आनि दिब प्रेम धने॥
आनेर तनय आने रजत सुवर्ण।
जाइले विनाश पाय नहे कोन धर्म॥
धन-उपार्जन करे आने बड़ दुःख।
धनइ जाऊक किवा आपनि मरुक॥
इहलोके परलोके अविनाशी प्रेमा।
आज्ञा देह वेदनी मा चित्ते देह क्षमा॥
सकल जनमे सभे पिता-माता पाय।
कृष्ण-गुरु नाहि मिले बूझिबे हियाय॥
मनुष्य जनमें कृष्ण गुरु समे जानि।
जेइ गुरु नाहिं करे पशु-पक्षि मानि॥

चै. म,

प्रभुकी यह उपदेश-वाणी ऐश्वर्य और माधुर्य-मिश्रित है। प्रभुने जब मातासे कहा—"माँ! तुम मुझे जितना प्यार करती हो, उतना यदि कृष्णको प्यार करतीं तो तुमको बहुत लाभ होता।" यह माधुर्यभावकी बात है। चतुर-चूड़ामणि प्रभुने कौशलपूर्वक मातासे कहा—"तुमको सर्वार्थसिद्धि प्राप्त हो गयी है; क्योंकि तुम मुझको पुत्रभावमें जितना स्नेह करती हो, ऐसी ही प्रीति और स्नेहसे श्रीकृष्ण वशीभूत होते हैं। मैं तुम्हारे स्नेह और प्रीतिसे पूर्ण आबद्ध हूँ।" प्रभुकी इस बातके भीतर ऐश्वर्यभाव और बाहर माधुर्यभाव लक्षित होता है।

प्रभुकी एक और बातमें पूर्ण ऐश्वर्यभाव देखा जाता है। वे मातासे बोले—"माँ! तुम्हारे परित्राणके लिए मैं तुमसे कहता हूँ कि मुझमें पुत्र-भाव न करना; श्रीकृष्णका भजन करना।" यहाँ चतुर-चूड़ामणि श्रीगौराङ्गप्रभुने ऐश्वर्यभावमें मातासे बातें कीं। स्नेहमयी शचीमाता पुत्रके मुख-चन्द्रकी ओर एकटक देख रही हैं और उनकी उपदेश-वाणी सुन रही हैं; परन्तु उनके मनसे कदापि प्रभुके प्रति वात्सल्यभाव दूर नहीं हो रहा है। वे सोच रही हैं,—"मेरे निमाईको लोग चाहे जो कहें, निमाई-चाँद अपने मुखसे अपने सम्बन्धमें चाहे जो बोलें, यह मेरा पुत्र है, यह मेरा हृदयधन है, सोनेका बाछा है। मैं इन बातोंपर कदापि विश्वास नहीं कर सकती।"

अन्तर्यामी प्रभुने माताके मनकी बात समझ ली। और वे यह भीं समझ गये कि केवल उनकी ऐश्वर्यमिश्रित मौखिक बातसे उनके प्रति माताकी पुत्र-बुद्धि दूर न होगी। उनके प्रति शुद्ध वात्सल्य भाव नहीं जायगा। महाप्रकासके समय श्रीगौर-भगवान्‌के प्रति शचीमाताके इस भावको दूर करनेके लिए ही श्रीवास आदि भक्तोंने उनको श्रीवासके आँगनमें ले जाकर प्रभुकी ऐश्वर्यमूर्ति दिखलायी थी। वात्सल्य-रसकी अधिकताके कारण स्नेहमयी शचीमाता वे सारी बातें इस समय भूल गयी हैं! प्रभुकी पुनः-पुनः कठिन परीक्षामें वे उत्तीर्ण हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गयी हैं, सर्वज्ञ प्रभुने यह जानकर तथा जननीके तात्कालिक मनोभावको समझकर एक लीलारङ्ग प्रकट किया। पहले कहा जा चुका हूँ कि प्रभुने माताको एकान्तमें बुलाकर ये सारी बातें की थीं। शचीमाता एक टक पुत्रके अपूर्व मुखचन्द्रकी ओर देखती हुई उनके श्रीमुखसे निःसृत उपदेश-वाणी सुन रही थीं। उनके नेत्रोंके पलक गिरते नहीं थे। वे सोच रही थीं—"निमाई कौन है? क्या निमाई मेरा पुत्र नहीं है?" अकस्मात् इसी समय प्रभुने माताको अपनी स्वरूप श्रीमूर्ति दिखलायी। शचीमाताने देखा—

नवमेघ जिनि द्युति श्याम कलेवर।
त्रिभङ्ग मुरलीधर वर पीताम्बर॥
गोप-गोपी-गो-गोपाल सने वृन्दावने।
देखिल आपन पुत्र चकित नयने॥

चै. म.

शचीमाताके सर्वाङ्गमें अष्ट सात्विक भावोंका उदय हुआ, वे प्रेमानन्दमें विह्वल होकर थर-थर काँपने लगीं और मूर्छित हो गयीं। श्रीगौर-भगवान्‌की वैष्णवी मायासे उनकी पुत्रमें तब कृष्णबुद्धि हुई, उनका पुत्रभाव दूर हो गया।

मूर्च्छा-भङ्ग होनेपर शचीमाताने सोचा, श्रीकृष्ण स्वतन्त्र ईश्वर हैं। उसका पुत्र भी स्वयं श्रीकृष्ण-भगवान् है। वह इच्छामय है। इतने दिनतक पुत्रभावमें उनके वशीभूत था, यही उनका सौभाग्य है। उसकी अब संन्यास करनेकी इच्छा हो रही है। मैं इसमें क्या करूँगी? यह सोचकर उन्होंने पुत्ररूपी भगवान्‌को रोते रोते कहा—

स्वतन्त्र ईश्वर तुमि पुरुष रतन॥
मोर भाग्ये एत दिन छिला मोर वश।
एखर आपन सुखे करगे संन्यास॥

चै. म.

इतनी बात कहते-कहते शचीमाता पुनः मूर्छित होकर भूतलपर गिर पड़ीं। प्रभु भी ऐश्वर्य-संवरण करके माताको हाथ पकड़कर मधुर वचन बोले—"माँ! मैं तुम्हारा स्नेह, प्यार कदापि नहीं भूल सकता। मैं चाहे कहीं भी रहूँ, प्रेमपूर्वक पुकारनेपर तुम मेरा दर्शन प्राप्त कर सकोगी"—

जे दिन देखिबे मोरे चाह अनुरागे।
सेइ क्षणे तुमि मोरे दरशन पाबे॥

चै. म.

शचीमाता उच्च स्वरसे रो पड़ीं। सारी बातें उनको स्वप्नके समान जान पड़ीं। उन्होंने सोचा—"कृष्णने ही यदि मेरे भाग्यसे मेरे गर्भसे पुत्ररूपमें जन्म लिया है तो मैं अपना सम्बन्ध क्यों छोड़ूँ? उसको घरमें रखूँगी, छोड़ूंगी क्यों?" अब फिर शचीमाताके हृदयमें प्रभुके प्रति वात्सल्यभाव उद्दीपित हुआ। वे आकुल होकर रो पड़ीं। उनका सोनेका संसार है, सोनेका पुत्र और पुत्रवधू हैं। वे सर्वजनपूजिता है; उनके पास अक्षय लक्ष्मीका भाण्डार है। किस कारणसे उनका संसार-सुख जायगा? यह सोचकर श्रीगौराङ्ग-जननी व्याकुल होकर रो पड़ीं।

अब प्रभुका ऐश्वर्यभाव दूर हो गया था। शचीमाता भी प्रकृतिस्थ हो गयी थीं। पहलेकी बातें स्वप्नवत् समझकर पुत्रके चन्द्र-वदनकी ओर देखकर स्नेहमयी शचीमाताने उनको कहा—"बेटा निमाई! तुमसे एक बात पूछूँगी। तुमको लेकर यह जो मेरा संसार-सुख है, इसमें तुम बाधक क्यों बनना चाहते हो? मैं तो समझती हूँ कि तुमको लेकर संसार करनेमें मुझे जो सुख मिल रहा है, इसके बराबर कोई सुख ही नहीं है। उस आनन्दकी तुलनामें ब्रह्मानन्द तुच्छ जान पड़ता है। तुम्हारी दुःखिनी जननीका यह संसार-सुख क्यों जायेगा?"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह बात कहते-कहते शचीमाता फुफकार मारकर रो उठीं। प्रभु माताका करुण-क्रन्दन सुनकर सिर नीचा करके वहीं बैठे रहे।

सर्वशक्तिमान् श्रीगौर-भगवान्ने सब विषयोंमें अपनी माताकी परीक्षा करके देख लीं; उनकी शुद्ध वात्सल्यभावमयी जननी ऐश्वर्यभावमें मुग्ध होनेवाली न थीं। उनको माधुर्य-भावमें ही मुग्ध करना पड़ेगा। तब शठ-शिरोमणि प्रभु अपनी स्नेहमयी माताकी गोदमें आकर सटकर बैठ गये। स्नेहमें भरकर माँके गलेको जकड़ लिया और मधुर वचनोंमें बोले—"माँ! तुझे छोड़कर क्या मैं कहीं जा सकता हूँ? तुम्हारा स्नेह और प्यार जीवनमें मैं कभी भूल नहीं सकता। माँ! तुम निश्चिन्त रहो; तुमको बिना कहे मैं कहीं न जाऊँगा।"

कृपालु पाठकवृन्द! प्रभुकी इस बातपर विचार करें। वे संन्यास-ग्रहण करेंगे, दण्ड-कमण्डलु लेकर, घुँघराले बाल मुँड़ाकर भिखारी बनेंगे, सोनेके अङ्गमें धूल मलेंगे, कौपीन पहनेंगे। इस कार्यमें वे माताकी अनुमति लेंगे। माताकी अनुमति लेकर वे गृह-त्याग करेंगे, यह कम साहसकी बात नहीं है। और वह माता कौन? जो पुत्र-स्नेहके बिना और कुछ नहीं जानतीं। शुद्ध वात्सल्यरसाश्रिता शचीमाताकी अनुमति लेकर प्रभु संन्यास-ग्रहण करेंगे, यह कार्य बड़ा कठिन है। परन्तु वे सर्वशक्तिमान् हैं। श्रीगौर-भगवान्के लिए असाध्य कार्य कुछ भी नहीं है। किस प्रकार वे इस विषम कार्यसे उद्धार पावेंगे, यह बात आगे कही जायगी। मायाधीश प्रभु शचीमाताकी माया हर लेंगे, उनको निर्माया कर देंगे, तब उनका यह संकल्प सिद्ध होगा। सहज अवस्थामें शचीमाता कदापि इस कार्यमें अनुमति न दे सकेंगी।

शचीमाता प्रभुकी बात सुनकर कुछ अश्वस्त तो हुईं, परन्तु उनके मनमें कदापि शान्ति न आयी। सर्वज्ञ प्रभुने यह समझकर पुनः माताको स्नेह भरे शब्दोंमें कहा—"माँ! मैं अब कुछ दिन संसार करूँगा। तुम निश्चिन्त रहो, तुम्हारी बिना अनुमतिके मैं कोई कार्य न करूँगा।" शचीमाता चुप नहीं। इस प्रकार उस रात्रि प्रभुने जननीके पाससे विदा ग्रहण की।

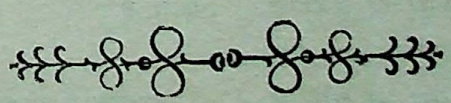

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चौवनवाँ अध्याय

प्रभु और प्रियाजी

शुन शुन प्राणनाथ, मोर शिरे दिये हाय,
संन्यास करिबे नाकि तुमि ?
लोक मुखे शुनि इहा, विदरिते चाहे हिया,
आगुनिते प्रवेशिब आमि ॥

श्रीचैतन्य मङ्गल

शची माताके साथ प्रभुकी जो कथा-वार्ता हुई, उसके विषयमें श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको कुछ भी ज्ञात न हुआ; क्योंकि प्रभुने माताको एकान्तमें बुलाकर चुपके-से ये सब बातें कीं। प्रभुका उद्देश्य यह था कि बाला विष्णुप्रिया इस विषम वार्तालापके विषयमें कुछ न जान सकें।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी इस समय चौदह वर्षकी नवबाला हैं। उनके यौवनोद्गमका प्रारम्भ है। प्रियाजीके रूपकी सीमा नहीं है। वे कुछ दिनसे पितृगृह गयी हुई हैं। पहले कहा जा चुका है कि केशव भारती नवद्वीपमें आकर जिस समय प्रभुके घरमें अतिथि बने, तभी शचीमाताके मनमें विषम आशङ्का उत्पन्न हुई थी पुत्रका संसारसे वैराग्य-भाव देखकर उन्होंने झटपट पुत्रबधूको घर बुलाया। नवीना प्रियाजी प्राणपनसे पतिकी सेवा करती हैं, वृद्धा सासुकी सेवा करती हैं, गृहके सारे काम करती हैं, ठाकुर बाड़ीको सजाती हैं, शचीमाताके पीछे-पीछे रहकर संसारके कार्योंमें उनकी सहायता करती हैं। सखी काञ्चनमाला सदा उनके पास रहती हैं। दोनों सखियाँ एकत्र निर्जनमें बैठकर मनकी बातें करती हैं। दोनोंमें परस्पर बड़ी प्रीति है। शचीमाता काञ्चनमालाको अपनी कन्याके समान मानती हैं। श्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-सेवामें काञ्चनमालाने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया है। उनके समान सौभाग्यवती रमणी जगत्में और कौन है ?

नदियाके सब भक्तोंने सुना है कि प्रभु गृह-त्याग करेंगे। पुरकी स्त्रियाँ इस बातको लेकर कानाफूंसी करती हैं, कोई किसीको कुछ खोलकर कहनेका साहस नहीं करती। शचीमाताके कानमें यह समाचार पहुँचा है। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको यह विषम संवाद कौन दे ? सखी काञ्चनाके सिवा और किसीके साथ वह मुँह खोलकर बातें नही करतीं। पहले प्राणवल्लभके मुखसे यह वात सुन चुकी हैं, परन्तु प्रभुकी वैष्णवी मायाके बलसे बाला विष्णुप्रिया यह बात भूल गयी हैं। चतुर-चूड़ामणि प्रभु अब उतना वैराग्य-भाव नहीं दिखलाते। प्रियाजी सोचती हैं कि ऐसा कोई कारण तो नहीं दीखता, जिससे वे संसार-सुखको एकबारगी त्याग दें।

प्रभुके गृहत्यागकी वह विषम घड़ी जितनी हो निकट होती गयी, उतना ही प्रियाजीका मन उदास होने लगा। उनको चतुर्दिक् नाना प्रकारके अमङ्गलके चिह्न दीखने लगे। उनका दाहिना अङ्ग फड़कने लगा, कानके आभूषण अकस्मात् भूतलपर गिर पड़े। उन्होंने एक दिन काञ्चनमालाको बुलाकर ये सारी बातें कहीं। पदकर्ता वासुघोषने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीगौराङ्ग-लीला अपने आँखों देखी थी तथा प्रियाजीकी उस समयकी अवस्थासे भी विशेष परिचित थे। अपने रचे हुए एक पदमें उन्होंने प्रियाजी मनके भावको अति सुन्दरतापूर्वक वर्णन किया है।

धनाश्री।

विष्णुप्रिया सङ्गिनीरे पाइया विरले।
व्याकुल हियाय गदगद किछू बिले॥
केन आज नदिया उदास लागे मोरे।
अङ्गे नाहिं पाइ सुख, दुटि आँखि झरे॥
नाचिछे दक्षिण अङ्ग, दक्षिण नयन।
खसिया पड़िल मोर कर्णेर भूषण॥
सुरधुनी-पुलिने मलिन तरु-लता।
भ्रमर ना खाय मधु शुकाइल पाता॥
स्थगित हइल केन जाह्नवीर धारा।
कोकिलेर रव नाहिं हैल मूक पारा॥
एइ बड़ भय लागे बासुर हिया माझे।
नवद्वीप छाड़े पाछे गोरा द्विज राजे॥

इस सम्बन्धमें वासुघोषके भ्राता माधव-घोषद्वारा रचित एक पद और यहाँ उद्धृत किया जाता है।

धनाश्री।

विष्णुप्रिया सखी सने कहे धीरे-धीरे।
आज केन प्राण मोर अकारण झूरे॥
काँपिछे दक्षिण आँखि जेन स्फुरे अङ्ग।
ना जानिये विधि किरे करे सुख भङ्ग॥
आर कत स्फुरान स्फुरये सदाय।
मनेर वेदन कहिवारे पाइ भय॥
आरे सखि पाछे मोर गौराङ्ग छाड़िबे।
माधव एमन हैले पराणे मरिबे॥

प्रियाजी अपनी अन्तरङ्गा सखी काञ्चनमालाके पास बैठकर इस प्रकार मनके भाव प्रकट कर रही हैं। प्रभुके गृहत्यागकी बात उन्होंने लोगोंके मुखसे सुनी है, किन्तु उसपर उनको विश्वास नहीं होता। प्रियाजीके मुखसे ये सब बातें सुनकर सखी काञ्चनाके मनमें दारुण व्यथा हो रही है। वे मनके दुःखको मनमें ही दबाकर अपनी प्रिय सखीको नाना प्रकारकी बातें करके सान्त्वना देती हैं; परन्तु प्रियाजीका मन कदापि शान्त नहीं हो रहा है। स्वर्णकमल प्रियाजी मानो दिनों-दिन सूखती जा रही हैं। कच्चे सोनेके समान उनका कोमल वर्ण मलिन हो गया है। विषादपूर्ण वदनसे वे सदा चुप रहती हैं। किसीके साथ अच्छीतरह बातें नहीं करतीं, मानो उनका मर्मस्थल विदीर्ण हो रहा है।

इस समय प्रभु दिन-रात भक्तोंसे घिरे रहते हैं। रात्रिके समय भी गदाधर, नरहरि आदि अन्तरङ्ग भक्तगण प्रभुके घर शयन करते हैं, इस कारण श्रीमती विष्णुप्रियादेवी रातमें भी स्वामीके सङ्ग-सुखसे वञ्चित ही रहती हैं। अपने प्राणवल्लभकी चरण-सेवासे वञ्चित होकर वे मर्मान्तिक दुःख भोगती हैं। शचीमाताको प्रियाजीकी अपेक्षा सौ-गुना अधिक दुःख है। वे पुत्रको कुछ कह नहीं पा रही हैं; उनके अनुगत भक्तगणको भी कुछ नहीं कह पा रही हैं, मनके दुखसे वृद्धाका हृदय दग्ध हो रहा है। प्रभुके ऊपर काञ्चना बहुत असंतुष्ट है, परन्तु वह भी मनके रोषको मनमें ही रखती है।

एक दिन प्रभु रातके समय अकेले शयन-गृहमें सो रहे थे। प्रभुकी इच्छासे उस दिन उनका कोई भक्त उनके घर रात्रिके समय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं आया। वे नींदका बहाना करके पड़े हुए हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको उनकी सखी काञ्चनाने रत्नालंकार पहना दिया तब उन्होंने धीरे-धीरे प्रभुके शयन-मन्दिरमें प्रवेश किया। प्रियाजीके मनमें तनिक भी सुख नहीं है। प्राणवल्लभके निद्रित मुखचन्द्रका दर्शनकर नवीना प्रियाजीका दुःख-समुद्र एकबारगी उमड़ उठा, उनके कमल-नयनसे झर-झर अश्रुधारा बह चली। वे धीरे-धीरे प्राणवल्लभके पैरोंके नीचे बैठ गयीं और एक लम्बी साँस छोड़ी। उनके कमल-नयनसे दो बिन्दु उष्ण अश्रुजल प्रभुके चरणोंके ऊपर गिरा। जैसे ही निद्रित पतिके युगल चरण-कमलको दुःखिनी प्रियाजीने अपने हृदयमें धारण किया, वैसे ही प्रभुकी कपट-निद्रा भङ्ग हो गयी। वे उठ बैठे।* प्रियाजीकी आँखोंके जलसे प्रभुके पाद-पद्म धुल गये। उनके श्रीचरणपर देवीकी अश्रुधारा बह रही है, यह देखकर प्रभुका कोमल हृदय अतिशय द्रवित हो उठा। उस समय उनका वैराग्य-भाव कुछ रह नहीं गया। प्रियाजीके नयनके जलसे उनके चरणोंके धुलनेके साथ-साथ उनके भीतरका वैराग्य-भाव भी धुल गया। भक्तके नयन-जलसे भगवान्‌के सांकल्पकी रक्षा न हुई। भीष्मने कृष्णभगवान्‌की प्रतिज्ञा भङ्ग की थी, श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने श्रीगौर भगवान्‌को अपने सांकल्पसे च्युत कर दिया। श्रीभगवान् पूर्णतः भक्तके वशीभूत हैं। यदि भक्त उनको सङ्कल्पच्युत करता है तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

तब वैराग्यप्रिय प्रभुने क्या किया? वे प्रियतमाको अपनी गोदमें खींचकर आदरपूर्वक दाहिने हाथसे उनका चिबुक पकड़कर रस-कथा कहने लगे, तथा अति व्यस्तभावसे क्रन्दनका कारण पूछने लगे।* प्रियाजीने कोई उत्तर न दिया, वे केवल रोती रहीं। मर्म-वेदनासे उनका हृदय दग्ध हो रहा था, मुँहसे बात नहीं निकल पा रही थी। वे अजस्र आँसू बहा रही थीं। प्रभु जितना ही आदर करके पूछते हैं, उतना ही वे उनका चरण पकड़कर रो रही हैं।**

नवीना प्रियाजीका रोना रुक नहीं रहा है। अपने हृदयके दुःखके भारको वे मुँहसे कहकर कहकर प्रकाशित नहीं कर पा रही हैं। उनके आवेगपूर्ण हृदय-समुद्रमें दुःखकी प्रबल तरङ्ग उठी है। उस तरङ्गाघातसे नववाला विष्णुप्रियाका कोमल हृदय चूर-चूर हो रहा है। प्रभु बड़े विपद्में

---

* चरण कमल पाशे, निश्वास छाड़िया वैसे,
नेहार रे कातर नयाने।
हृदय उपरे थुइयाँ, बान्धे भुजलता दिया,
प्रिय प्राण नाथेर चरणे॥
दु नयने झरे नीर, भिजिल हियार चीर,
चरण बहिया पड़े धारा।
चेतन पाइया चिते, उठे प्रभु आचम्बिते,
विष्णु प्रियार पूछे अभिपारा॥
चै, म.

* मोर प्रियतमा तुमि, काँद कि कारणे जानि,
कह कह इहार उत्तर।
थूइया उरुर परे, चिबूक दक्षिण करे,
पूछे वाणी मधुर अक्षर॥
चै. म.

**कांदे देवी विष्णुप्रिया, शुनिते विदरे हिया,
कहिले ना कहे किछु वाणी।
अन्तरे गुमरे प्राण, देहे नाहिं संविधान,
नयाने गलये जाय पानी॥
चै म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पड़ गये। प्रियतमाके क्रन्दनसे उनका चित्त बड़ा अस्थिर हो उठा। उनका मलिन वदन और आँखोंमें अश्रुप्रवाह देखकर प्रभुका कोमल हृदय उन्मथित हो गया; परन्तु वे पुरुष थे, बहुत बातें जानते थे, बहुत छल जानते थे। नाना प्रकारके उपायोंसे प्रेम और रसकी बातें कहकर प्रभुने प्रियाजीको शान्त करनेकी चेष्टा की। उन्होंने अपने शरीरके वस्त्रसे आदरपूर्वक प्रियाजीके मुखचन्द्रको पोंछ दिया और नाना प्रकारकी करुणरसकी बातें करने लगे, जिसे सुनकर पाषाणहृदय भी द्रवित हो जाता।*

प्राणवल्लभकी इतनी कातरता और व्यग्रता देखकर प्रियाजी और स्थिर न रह सकी। उन्होंने कुछ धैर्य धारण किया। मुँह उठाकर प्राणवल्लभके चन्द्र-वदनकी ओर देखकर मृदु स्वरसे रो-रोकर कहने लगीं—"प्राणवल्लभ! हृदयेश्वर!! अधनीके जीवनसर्वस्व धन!!! आज मैं तुमसे एक बात पूछने आयी हूँ। तुम सत्य-सत्य बोलो!" सर्वज्ञ प्रभु प्रियतमाके मनकी सारी बातें जानते हैं प्रियाजी आज जिस विषम प्रश्नको पूछेंगी, वे उसको समझ गये हैं। प्रभु सिर हिलाते हुए कुछ अन्य-मनस्कभावसे बोले—"प्रियतमें तुम्हारे सामने मेरी कोई बात गुप्त नहीं रह सकती। तुम्हारे सामने मैं सत्य-सत्य बोलूँगा।" प्रियाजीने तब रोते-रोते प्राणवल्लभसे कहा—"प्राणनाथ! मेरे सिरपर हाथ रखकर बतलाओ, क्या तुम भी अपने बड़े भाईके समान ....।"

प्रियाजी आगे बोल न सकीं मनके आवेगसे वे फुफकार मारकर रोती हुई प्रभुके चरणोंमें गिर पड़ीं। दारुण 'संन्यास' शब्द उनके मुँहसे नहीं निकल सका। सर्वज्ञ प्रभु सब-कुछ जानते हैं, सबकुछ समझते हैं, उन्होंने दुःखसे संतप्त प्रियतमाको उठाकर हृदयसे लगाया और अपने शरीरके वस्त्रसे उनके दोनों कमल-नयन पोंछ दिये। प्रभुके भी कमल-नयनसे झर-झर अश्रुधारा बहने लगी। वे भी बातें कर नहीं पाते थे।

श्रीमती विष्णुप्रिया देवी प्राणवल्लभके वक्षःस्थलमें अपना मुख-चन्द्र छिपाकर फुफकार मारकर रो रही हैं, प्रभुके नयन-कमलके उष्ण अश्रुजलसे प्रियाजीका वस्त्राञ्चल सिक्त हो रहा है। विष्णुप्रियादेवीने समझा कि नदियाके लोग जो कहते हैं, वह सत्य है। अपने प्राणवल्लभके कातर मुखचन्द्रके विषण्णभावको देखकर ही सुचतुर प्रियाजी उनके मनके भावको समझ गयीं। उनके दुःख-सागरका कहीं अन्त नहीं है। उनके हृदयसिंधुमें तरङ्गके उपर तरङ्ग उठ रहीं हैं तथा उसके आघातसे उनका हृदय चूर-चूर हो रहा है। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी कलेजा थामकर रोते-रोते अपने प्राणवल्लभसे कहने लगी—

शुन शुन प्राणनाथ, मोर शिरे दिये हात,
संन्यास करिबे नाकि तुमि।
लोक मुखे शुनि इहा, विदरिते चाहे हिया,
आगुनिते प्रवेशिब आमि॥
तो लागि जीवनधन, रूप नव यौवन,
वेष विलास भाव कला।

---

* पुनः पुनः पूछे पहुँ, सुमति ना देइ तभू,
कान्दे मात्र चरणे धरिया।
प्रभु सर्वकला जाने, पूछे नाना विधाने,
अङ्ग वासे नयान मुछाइया॥
नाना रङ्ग परथार, करिया बाड़ाय, भाव,
से कथाय पाषाण मुञ्जरे।
प्रभुर व्यग्रता देखि, विष्णुप्रिया चन्द्रमुखी,
कहे किछु गद्गद स्वरे॥

चै. म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुमि जबे छाड़ि जाबे, कि काज ए छार जीवे
हिया पोड़े जेन विष ज्वाला ॥
आमा हेन भाग्यवती, नाहि कोन युवती,
तुमि मोर प्रिय प्राणनाथ ।
बड़ प्रति आशा छिल, देह-मन समर्पिल,
ए नव यौवने दिल हाथ ॥
धिक् रहु मोर देहे, एक निवेदन तोहे,
केमने हाँटिया जाबे पथे ।
शिरीष कुसुम जेन, सुकोमल चरण,
परशिते डर लागे हाते ॥
भूमिते दाँड़ाओ जबे, डरे प्राण हाले तवे,
सिञ्चिड़ा पड़ये सर्व्व गाय ।
अरण्य फण्टक बने, कोथा जाबे कोन स्थाने,
केमने हाँटिबे राङ्गा पाय ॥
सुधामय सुख इन्दु, ताहे घर्म विन्दु-विन्दु,
अल्प आयासे मात्र देखि ।
बरिषा बादल बेला, क्षणे वा विषम खरा,
संन्यास करये महा दुःखी ॥
तोमार चरण विनि, आर नाहि किछु जानि,
आमारे फेलाह कार ठाँई ।
धर्म भय नाहि तोरा, शची वृद्धा आध मरा,
केमने छाड़िबे हेन माय ॥
मुरारि मुकुन्द दत्त, हेन सब भकत,
श्रीनिवास आर हरिदास ।
अद्वैत आचार्य आदि, छाड़िया कि कार्य साधि,
केने तुमि करिबे संन्यास ॥
तुमि प्रभु गुणराशि, जगजने हेन वासि,
विपरीत चरित आशय ।
तुमि जबे छाड़ि जाबे, शुनिले मरिबे सभे,
अरजिबे अपयश मय ॥
कि कहिब मुञि छार, मुञि तोमार संसार,
संन्यास करिबे मोर तबे ।
तोमार निछनि लज्जा, मरि जाइ विष खाञा,
सुखे निवसह निज घरे ॥
(प्रभु) ना जाइह देशान्तरे, केहो नाहि ए संसारे,
वदन चाहिते पोड़े हिया ।
कहिते ना पारे कथा, अन्तरे मरम व्यथा,
काँदे मात्र चरण धरिया ॥

चै. म.

प्रियाजी एक-एक करके अपनी मनकी सारी बातें प्रभुसे कह गयीं। स्त्रियोंका दुःख समुद्र जब उमड़ता है तथा जब वे दुःखकी बातें कहने लगती हैं तो उसका फिर अन्त नहीं होता। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी निरन्तर रो रही है। स्वामी-सुहागिनी बाला विष्णुप्रिया स्वामीके आदर-सुहागसे इतने दुःखमें भी सुखानुभव करती हैं। मनके दुःखको खोलकर प्रकट किये बिना वह हलका नहीं होता। नवीना प्रियतमाके मुखमे इतनी बातें सुननी पड़ेंगी, ऐसी आशा प्रभुको न थी। प्रियतमाके मुखसे एक बात सुननेके लिए हमारे प्रेममुग्ध प्रभु लालायित थे। जब प्रियाजीने उनको इतनी बातें सुना दीं, तब प्रभुके मनमें दुःखके बीच भी आनन्दकी तरङ्ग उठी। उनके श्रीमुखमें इस समय भी हँसीकी रेखा दिखलायी दी। उन्होंने प्रियतमाको प्रेमपूर्वक गोदमें बैठाकर अपने अङ्गके वस्त्रसे उनका मुँह पोंछकर मधुर-मधुर हँसते हुए आदरके साथ कहा—"प्रियतमें ! विष्णुप्रिये !! तुम झूठ-मूठमें क्यों शोक कर रही हो ? तुमको छोड़कर मैं संन्यास लूँगा, यह बात तुमसे कही किसने ? तुम्हारी अनुमतिके बिना क्या मैं कोई कार्य कर सकता हूँ ? तुम व्यर्थ शोक करके क्यों रोती-रोती मर रही हो ? मैं समझता था कि तुम बड़ी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बुद्धिमती हो । अब देखता हूँ, तुम बड़ी बुद्धिहीन हो ।*

शठ-शिरोमणि श्रीगौर-भगवान् सदासे भक्तके साथ इसी प्रकार चतुरता करते आ रहे हैं । यही उनका स्वभाव है । अपना स्वभाव क्या कोई त्याग सकता है ? श्रीभगवान्‌तक स्वभावके अधीन हैं । श्रीभगवान् शठ-शिरोमणि हैं । सब प्रकारकी चतुराईमें वे पारदर्शी हैं ।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी नववाला हैं । वालिका होते हुए भी वे सुचतुरा और बुद्धिमती हैं । प्राणवल्लभके इतना आदर-सुहागपर भी उनके मनका संदेह दूर नहीं हो रहा है । वैराग्यप्रिय हमारे प्रभुने प्रियतमाको संतुष्ट करनेके लिए यह चातुरीका जाल फैलाया है, श्रीगौराङ्ग-गृहिणीको समझनेसे यह वाकी न रहा । प्रभुका प्रियाजीके साथ यह रस-विस्तार आन्तरिक नहीं है, बाहरी है । वे कृष्णप्रेममें विभोर हैं, उनका हृदय कृष्ण-विरह-वाणसे जर्जरित है इस समय प्रियाजीके साथ उनकी यह रस-रङ्गलीला चतुर-चूड़ामणिके चातुरी-जालके विस्तारके सिवा और कुछ नहीं है । प्रियतमाकी मनस्तुष्टिके लिए ही प्रभुका यह बाह्य प्रेमविलास-रङ्ग है । प्रियाजीको शान्त करनेके लिए ही प्रभुने उस दिन अपूर्व युगल-विलास-लीलारङ्गका विस्तार किया था, उस लीलाकी सीमा नहीं । रसिक भक्त ठाकुर लोचनदासने लिखा है—

इहा बलि गौरहरि, आश्लेष चुम्बन करि,
नानारस कौतुक विथारे ।
अनन्त विनोद क्रीड़ा, लीला लावण्येर सीमा,
विष्णुप्रिया तुषिला प्रकारे ॥

यह भक्तके प्रति श्रीभगवान्‌की आत्यन्तिक प्रीति और स्नेहका ज्वलन्त दृष्टान्त है । श्रीभगवान् भक्तकी मनस्तुष्टिके लिए सब कर सकते हैं । वैराग्यावतार श्रीगौराङ्गप्रभुने एक दिन वैराग्यमें भरकर मुकुन्दसे कहा था—

"अग्नि हेन लागे मोर से हेन जननी ।"

—उसी प्रभुने आज प्रियाजीके साथ विनोद-विलास-बहिरङ्गमें रात बितायी—

"विनोद विलास रसे, भै गेल रजनी शेषे ।"
चै. म.

इससे बढ़कर श्रीभगवान्‌का पूर्ण आत्मत्याग तथा आत्मविसर्जनका उत्कृष्ट और ज्वलन्त दृष्टान्त और क्या हो सकता है ? भक्त-वञ्छा-कल्पतरु श्रीगौर-भगवान्‌ने केवल भक्तकी मनस्तुष्टिके लिए, भक्तके हृदयमें शान्ति प्रदान करनेके लिए इस समय ऐसी रस-लीला प्रकट की । भक्तके भगवान् श्रीगौराङ्गप्रभुने भक्तके लिए क्या नहीं किया है और क्या नहीं करेंगे ?

पहले कहा जा चुका है कि श्रीमती विष्णुप्रिया-देवीके मनका संदेह दूर न हुआ । वे प्रभुके मुखचन्द्र-की ओर देखकर क्या सोच रही हैं ? दूसरे ही क्षण प्राणवल्लभके करपल्लवको अपने वक्षः स्थलमें धारण करके वारंवार पूछ रही हैं—"प्राणवल्लभ !

---

* शुनि विष्णुप्रिया वाणी. प्रभु गौर गुणमणि,
हासिया तुलिया लैल कोले ।
वसने मुछाय मुख, करे दाना कौतुक,
मिछा शोक ना करिह बोले ॥
आमि तोरे छाड़िया, संन्यास करिव गिया,
ए कथा वा के कहिल तोके ।
जे करि से करि जबे, तोमाके कहिव तबे,
एखन ना मर मिछा शोके ॥
चै. म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हृदयरत्न !! मेरे डरसे तुम मिथ्या न बोलना। मुझे ऐसा लगता है कि यह सब तुम्हारी चातुरीका जाल है। मेरी छातीपर हाथ रखकर कहो कि मुझको बिना कहे तुम कहीं नहीं जाओगे। तुम पुरुष हो, मैं अबला बालिका हूँ। तुम स्ववश हो, परवश क्यों होगे ? तुमको जिसमें सुख हो, वह कर सकते हो ! परन्तु मुझे निश्चय करके अपने मनकी बात कहो, जिससे मैं अपना मन स्थिर कर सकूँ।*

प्रभुने पहले प्रियाजीको वैराग्यशिक्षा देते समय उनको स्पष्टतः अपने संन्यास-संकल्पकी बात कही थी। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको वह सारी बात याद है। प्रभुने कहा--'वैराग्य मेरा स्वधर्म है'—यह भी उनको याद है। प्रभुके प्रति शचीमाताका जैसा शुद्ध वात्सल्यभाव है, श्रीमती विष्णुप्रियादेवीका भी उनके प्रति वैसा ही शुद्ध प्रेमभाव है। प्रभुको वे प्राणवल्लभके रूपमें ही जानती हैं। उनके मनमें भी ऐश्वर्य-भाव स्थान नहीं कर पाता। लोग कहते हैं कि उनके प्राणवल्लभ साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण हैं। वे देखती हैं, अपने जीवन-सर्वस्व-धन, अपने प्राणवल्लभको ! वह चाहे श्रीकृष्ण हों, चाहे श्रीभगवान् ही क्यों न हों, पतिप्राणा प्रियाजी उनमें अपने प्राणपति, प्राणवल्लभ, हृदयकान्त, जीवन-सर्वस्व-धनको देखती हैं। इस प्रकारके शुद्ध प्रेम और माधुर्यरसमें विभावित होकर पतिभावमें वे श्रीगौराङ्गका भजन करती हैं।

स्त्रीका पति ही सर्वस्व होता है। पतिके सङ्ग रहनेका सुख उनके लिए स्वर्ग-सुखसे भी बढ़कर है। प्रभु संन्यास लेंगे, यह सुनकर पतिप्राणा बाला विष्णुप्रियाका प्राण बड़ा ही कातर हो गया है। प्रभु जब इतनेपर भी उनके मनका संदेह दूर न कर सके, तब उन्होंने समझा कि विष्णुप्रिया अभी बालिका हैं, शुद्ध माधुर्यभावमें उनके मनको डुबाये रखनेपर उनकी कार्य-सिद्धि नहीं हो सकती; क्योंकि पहले वैराग्यके विषयमें उपदेश देते समय प्रभुने उनसे सारी बातें खोलकर कह दी थीं। प्रभुने सोचा कि अब प्रियाजीको कुछ तत्त्वकी बात कहकर पश्चात् ऐश्वर्य-भाव दिखलाकर निज-तत्त्व समझाना ठीक होगा। उन्होंने माताके साथ भी ऐसा ही लीलारङ्ग प्रकट किया था। प्रभुने अब प्रियाजीको क्या कहा ? सुनिये—

ए बोल शुनिया पहूँ, मुचकि हासिया लहूँ,
कहे शुन मोर प्राणप्रिया।
किछु ना करिह चिते, जे कहिये तोर हिते,
सावधाने शुन मन दिया॥
जगते जतेक देख, मिछा करि सब लेख,
मिछा करि करह गेयान।
मिछा पति-सुत-नारी, पिता-माता जत बलि,
परिणामे के हबे काहार।
श्रीकृष्ण-चरण बहि, आर त कुटुम्ब नाहि,
जत देख सब माया तार॥
कि नारी-पुरुष देख, सभारि से आत्मा एक,
मिछा माया बन्धे दुइ।
श्रीकृष्ण सभार पति, आर सब प्रकृति,
एइ कथा ना बूझये कोइ॥

---

* हियार आगुनि आछे, ते कारणे पुनः पूछे,
प्रिय प्राणनाथ मुख चाहिया।
प्रभु कर बुके निया, पूछे देवी विष्णुप्रिया,
मिछा ना बलिह मोर तरे॥
हेन अनुमान करि, जत कह से चातुरी,
पलाइबे मोर अगोचरे।
तुमि निज बल प्रभु, परवश नह कभू,
जे करिबे आपनार सुखे।
संन्यास करिबे तुमि, कि बलिते पारि आमि,
निश्चय करिया कह मोके॥

चै. म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रक्त-रेत-सम्मिलने, जन्म मूत्र-विष्ठा स्थाने,
भूमे पड़े हये अगेयान ।।
बाल युवा वृद्ध हइया, नाना दुःख कष्ट पाइया,
देहे गेहे करे अभिमान ।
बन्धु करि जारे पालि, तारा सब देइ गालि,
अभिमाने वृद्धकाल बञ्चे ।।
श्रवण नयान आँधे, विषाद भाविया काँदे,
तभू नाहि भजये गोविन्दे ।
कृष्ण भजिवार तरे, देह धरि ए संसारे,
माया बन्धे पासरे आपना ।।
अहंकारे मत्त हइया, निज प्रभु पासरिया,
शेषे मरे नरक-यन्त्रणा ।
तोर नाम विष्णुप्रिया, सार्थक करिह इहा,
मिछा शोक ना करिह चिते ।।
ए तोरे कहिलूँ कथा, दूर कर आन चिन्ता,
मन-देह कृष्णेर चरिते ।।

चै. म.

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने ध्यान पूर्वक प्राणवल्लभकी उपदेश-वाणी सुनी। उनको यह आशा न थी कि प्रभु उनसे इस समय यह तत्त्वकी बातें करेंगे। प्रियाजी देखती हैं कि प्रभुका मुख-मण्डल मलिन तथा गम्भीर है। उपदेष्टा गुरुके समान प्रभु इस समय भिन्न आसनपर आसीन है। श्रीमती विष्णूप्रियादेवी उनके पदतलमें बैठी हैं। प्रभुने प्रियाजीको श्रीकृष्ण-भजनका उपदेश दिया है। इस अन्तिम उपदेशको सुनकर प्रियाजीने अपने प्राणवल्लभसे केवल एक बात कही—"प्राणवल्लभ ! तुम जो मुझको कृष्ण-भजन करनेके लिए कह रहे हो, वह मुझसे न हो सकेगा। मैं तो एकमात्र तुमको जानती हूँ। मेरे कृष्ण तो तुम्हीं हो। तुम्हारा भजन करके, तुम्हारी सेवा करके मुझको जो सुख मिलता है, वह कृष्ण-भजनमें नहीं मिलेगा।"

प्रभुने देखा कि प्रियतमाको स्वरूप-ऐश्वर्य दिखलाये बिना उनका यह संदेह दूर न होगा। श्रीगौर-भगवान् तब अचानक अपने उसी शयन-गृहमें शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी चतुर्भुज ऐश्वर्यपूर्ण विष्णु-मूर्तिमें श्रीविष्णुप्रियादेवीकी आँखोंके सामने आविर्भूत हो गये। प्रियाजीकी सारी माया उन्होंने हर ली। क्षणमात्रके लिए श्रीभगवान्‌की ऐश्वर्यपूर्ण चतुर्भुज मूर्ति दर्शन करके वे कृतार्थ हो गयीं। उनका चित्त प्रसन्न हो गया, क्षणमात्रके लिए प्रभुकी कृपासे देवीके सारे दुःख दूर हो गये। परन्तु दूसरे ही क्षण अपने प्राणवल्लभको सामने न देखकर वे बहुत चिन्तित और विषण्ण हो गयीं। उस समय उनको वह चतुर्भुज मूर्ति क्षणमात्रके लिए भी अच्छी न लगी। तब वे गलेमें वस्त्र डालकर और हाथ जोड़कर चतुर्भुज-मूर्तिरूपी श्रीभगवान्‌की विष्णुमूर्तिको प्रणाम करके बोलीं—"हे जगत्पते ! अपना यह चतुर्भुजरूप संवरण करो। आपका यह रूप मुझको कुछ भी नहीं रुचता। मेरे स्वामीको ला दो। दयामय ! दया करके बतलाओ, मेरे स्वामी कहाँ गये ?" इतना कहकर प्रियाजी उनके पैरोंमें गिरकर रोने लगीं। श्रीभगवान् भक्तके सामने पराजित हो गये। भक्त जीत गया भगवान् हार गये। प्रभुने हारकर अपना ऐश्वर्य-संवरण किया। प्रियाजीने अचानक देखा कि वे अपने प्राणवल्लभके अङ्कमें पूर्ववत् सोयी हुई हैं। वे उनको आदर-सुहाग कर रहे हैं। उनके पतिदेवताके नयन-जलसे उनका वक्षःस्थल मज्जित हो रहा है—यह देखकर प्रियाजीका कोमल हृदय टूक-टूक हो गया। भक्तके दुःखके साथ भगवान्‌के दुःखका सम्मिश्रण हुआ। पारस्परिक दुःखसे दोनोंका हृदय द्रवीभूत हो गया। तब प्रभु प्रियाजीसे कातर-स्वरमें बोले—

शुन देवी विष्णुप्रिया, तोमारे कहिल इहा,
जखन जे तुमि मने कर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आमि यथा तथा जाइ, थाकिब तोमार ठाँइ,
एइ सत्य करिलाम दढ़ ॥

चै. म.

प्रभुने जननीको भी कहा था—"तुम्हारे अनुराग-पूर्वक पुकारते ही मुझको तुम सामने पाओगी।" प्रियाजीसे भी कहा—"मैं चाहे जहाँ जाऊँ तुम्हारे पास रहूँगा, यह प्रतिज्ञा करता हूँ।" ये दोनों बातें अतिशय गूढ़ तत्त्वपूर्ण हैं। श्रीभगवान्‌के सिवा अन्य कोई किसीको ऐसी बात नहीं बोल सकता। अनुराग पूर्वक पुकारनेपर श्रीभगवान् भक्तको दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं। श्रीभगवान् भक्तके पास रहते हैं, यह भागवतका कथन है। सब आदमी इन वाक्योंको प्रयोगमें नहीं ला सकते।

प्रभु भगवान्-भावमें ऐश्वर्य दिखलाकर जब जननी और गृहिणीको भुला न सके, तब उन्होंने अपने माधुर्यभावके साथ ऐश्वर्यभावको मिश्रित कर दिया। माधुर्य और ऐश्वर्य-भावके एकत्र सम्मिश्रणसे जो एक नया भाव उत्पन्न हुआ, वह अति अपूर्व था। पहले श्रीगौराङ्गप्रभुने यह भाव अन्य किसीके सामने प्रकट नहीं किया। शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवी जो प्रभुके संन्यास-ग्रहण करनेमें अनुमति देनेके लिए बाध्य हुई थीं, उसका कारण केवल प्रभुकी इस नवीन भाव-चातुरी इस नवीन भाव-कलाका प्रभाव था।

प्राणवल्लभके कातर मुखचन्द्रको देखकर प्रियाजीके मनमें बड़ी व्यथा हुई। वे अपनी बात भूल गयीं। किस प्रकार प्राणवल्लभके विषाद-पूर्ण मुख-मण्डलमें प्रसन्नता आवे, यही वे सोचने लगीं। बहुत देरतक सोचकर उन्होंने मन-ही-मन कहा—"प्रभो! तुम स्वतन्त्र ईश्वर हो। अपने सुखके लिए तुम जो कुछ करोगे, उसमें मैं क्यों बाधक बनूँगी? अब एक बात मैं तुम्हारे चरणोंमें निवेदन कर देती हूँ, दासीके रूपमें इस अभागिनीको अपने चरणोंमें स्थान देना।" यह बात वे मुँहपर लाकर भी बोल न सकी। अन्तर्यामी श्रीगौर-भगवान् अपनी प्रियतमासे कौशलपूर्वक प्रेमचातुरी-जाल फैलाकर इस प्रकार अपने संन्यास-कार्यमें प्रियतमाकी मानसिक अनुमति ले ली। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी मुख अवनत करके रो रही हैं और मन-ही-मन सोच रही हैं—"क्यों आज मेरे मनमें इस प्रकारके भाव आ गये? पाप मनसे मैंने ऐसा क्यों सोचा? मुझको ऐसी कुबुद्धि हुई क्यों?" सर्वज्ञ प्रभुने प्रियतमाके मनके भावको समझकर उनके साथ सरस प्रेम-सम्भाषण करके उनको भुलावेमें टाल दिया। सरला प्रियाजीके प्रति शठ-शिरोमणि प्रभुके इस प्रकारके आचरणसे भक्तोंके मनमें बड़ी व्यथा हुई। ठाकुर लोचनदास मनमें दारुण व्यथा पाकर लिखते हैं—

विष्णुप्रिया हेट मुखी, छल-छल करे आँखि,
देखि प्रभु सरस सम्भाषे।
प्रभु आचरण कथा, शुनिते मरमे व्यथा,
गुण गाय ए लोचन दासे ॥

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल निद्राग्रस्त हो गये। प्राणवल्लभके प्रेमालिङ्गनमें बद्ध होकर श्रीमती विष्णुप्रियादेवी सारे दुःख भूल गयीं।

जय गौर-विष्णुप्रिया।
प्राण गौर-विष्णुप्रिया ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पचपनवाँ अध्याय

(वैराग्य-धर्म और संसार-पालन)

वैराग्य आवेश प्रभु परित्याग करि।
मायेर संतोष करे मनेते विचारि॥

चै. म.

प्रभुका सत्यपालन

प्रभु मातृभक्तशिरोमणि थे। उन्होंने स्नेहमयी मातासे स्वीकार किया था कि कुछ दिन संसारमें रहकर वे उनको सुखी करेंगे। माताको उपलक्ष्य करके नवीना प्रियाजीको प्रभु सुखी करेंगे, उनकी बातसे यह भी आभास मिलता है। वे अपने वैराग्य-भावको मनमें छिपाये रखकर लोकदृष्टिमें माता और गृहिणीकी मनस्तुष्टिके लिए कुछ दिन इस समय संसार-सुखमें मग्न हो गये। ठाकुर लोचन-दासने अपने श्रीचैतन्यमङ्गलमें लिखा है—

मायेर संतोष करे हृदये जानिया।
जे कथाये थाकये अन्तर सुस्थ हैया॥
पूरजने परितोषे जार जे उचित।
एइ मते सभाकारे करये पिरीत॥
वैराग्य-आवेश प्रभु परित्याग करि।
घरे घरे निज प्रेम-परकाश करि॥
कारु घरे हास्य-परिहास कथा कहे।
जार जेन हिया तेन मते सब मोहे॥
नाना आभरण परे श्रीअङ्गे चन्दन।
हास-विलास-रसमय अनुक्षण॥
सब लोक जानिलेक नहिब संन्यास।
स्वच्छन्द हइल सब लोक निज दास॥

श्रीगौर-भगवान् चतुर-चूड़ामणि हैं। वृद्धा जननी और नवीना गृहिणीको माया-मुग्ध करके, भक्तगणके मनको भुलावेमें डालकर वे पुनः संसारी हो गये। यह चतुर-कौशलीका कौशल-जाल था। नदियाके भक्तवृन्द प्रभुका संन्यासका संकल्प सुनकर मृतप्राय हो गये थे। प्रभुने स्वयं उनसे अपने मनकी बात कही थी। वे लोग दुःखिनी शची-विष्णुप्रियाकी अवस्था सोचकर मृतप्राय हो रहे थे। उन सब भक्तोंने भी संकल्प कर लिया था कि वे संसार-त्याग करके प्रभुके साथ-साथ संन्यास-ग्रहण करेंगे; परन्तु प्रभुके इस कपट-संसारी-भावसे मुग्ध होकर उन्होंने अपना संकल्प त्याग दिया।

प्रभुने अब सांसारिक कार्योंमें मन लगाया। संसारकी सारी खबर वे रखने लगे। सांसारिक कार्योंमें प्रीति दिखलाकर अब वे माता और गृहिणीका मन हरण कर रहे हैं, भक्तोंके मनको आनन्दित कर रहे हैं। स्नेहमयी शचीमाताने पुत्रके इस आकस्मिक भाव-परिवर्तनको देखकर सोचा कि उनकी गृहलक्ष्मी वधूके गुणोंसे ही निमाईमें यह आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। वे पुत्रवधूको नित्य नये अलंकारोंसे विभूषित करने लगीं, नित्य नयी भोजन-सामग्री बनवाकर उनको भोजन कराने लगीं। शचीमाता अब वृद्धा हो गयी थीं। इस वृद्धावस्थामें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनके निमाईका संसारमें अब पूर्वापेक्षा अधिक दृढ़ अनुराग दीखने लगा। वे पड़ोसकी पुरनारियोंसे भेंट होनेपर कहती थीं—"अजी! तुमलोग आशीर्वाद दो कि मैं अपने निमाईका एक सोनेका-सा चाँद पुत्र देखकर मरूँ।"

शचीमाताके मनमें बड़ी साध है कि निमाईको शीघ्र एक पुत्र-सन्तान हो जाय। परन्तु इच्छामय श्रीगौर-भगवान्‌की और ही इच्छा थी। शचीमाताकी मनकी अभिलाषा मन-ही-में रह गयी। श्रीभगवान् रामावतार और कृष्णावतारमें नरवपु धारण करके, संसारी होकर अपनी संतान छोड़ गये थे। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें कलिके कठिन हृदय अधम जीवने उनके संसार-सुखमें बाधक होकर उनको नयी उम्रमें गृह-त्यागी कर दिया। श्रीगौराङ्गप्रभुका वंशधर था उनका प्रियपुत्र—'हरि-संकीर्तन'। इसी कारण महाजनगणने उनको 'संकीर्तनैक पितरो' कहकर स्तवन किया है। हरि-संकीर्तन नित्यवस्तु है, जगत्‌में यह सदा विराजती रहेगी। श्रीगौर-भगवान्‌के वंशका यह कुलप्रदीप श्रीहरि-संकीर्तन चिरकालतक जगत्‌के जीवके मनके अन्धकारको दूर करता रहेगा—जगत्पति श्रीविश्वम्भरमिश्रके कुलको उज्ज्वल करेगा।

प्रभु जब इस प्रकार संसारी हुए तो नदियावासी भक्तोंके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। जिसके घरमें जब जो उत्तम वस्तु आती थी, उसे सबसे पहले वे लोग प्रभुके घर पहुँचाते थे। भाग्यवान् नदियाके लोग यह सुयोग पाकर नदियायुगल श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाको नाना प्रकारके वस्त्रालंकारसे विभूषित करने लगे। कृपानिधि प्रभुने अपने अनुगत नदियाके भक्तवृन्दको इस समय अपनी युगल-सेवाका पूर्ण सुयोग और अधिकार प्रदानकर संतुष्ट किया। पहले यह अधिकार सबको न था, अब उनको प्राप्त हो गया। इसका कारण है। उन्होंने देखा कि उनकी प्रकटावस्थामें भक्तवृन्दको उनकी युगल-सेवाका सुयोग और सौभाग्य अधिक दिन न मिलेगा। सर्वज्ञ प्रभु जानते थे कि नदियावासी भक्तगण उनकी नदिया-युगल-सेवाके भिखारी हैं। भक्तवाञ्छा-कल्पतरु हमारे प्रभुने भक्तकी मनोवांछा पूर्ण कर दी। महाकौशली प्रभुने कुशलतापूर्वक यह कार्य सम्पन्न किया।

नदिया-नागर श्रीविष्णुप्रिया-वल्लभ जब अपने नदिया-भवनमें इस प्रकार संसार-सुखमें मग्न होकर पूर्णतः युगल-विलास अपूर्व लीलारङ्गमें लीन थे तो नदियाके पाखण्डियोंके मनमें यह देखकर और अधिक हिंसा और द्वेष भर गया। प्रभुकी यह अपूर्व ऐश्वर्य-लीला देखकर वे द्वेषसे जल-भुन गये। उनकी पहलेकी मन्त्रणा-सभा पुनः जाग्रत हो गयी। नदियाके पाखण्डीलोग राह-घाटमें प्रभुकी निन्दा करने लगे। प्रभुको नकली तपस्वी कहनेसे भी वे कुण्ठित नहीं होते थे। इन सब बातोंसे भक्तोंके मनमें दारुण व्यथा होती थी। परन्तु कोई प्रभुको कुछ कहनेका साहस नहीं करता था। किन्तु सर्वज्ञ प्रभु सब कुछ जान गये। वृद्धा जननी और नवीना गृहिणीकी मनस्तुष्टिके लिए भक्तवत्सल प्रभुने सब-कुछ सहन कर लिया; क्योंकि वे शचीमाताके सामने कुछ दिन संसार करनेके लिए वचनबद्ध थे। प्रभुको संसार करनेकी बड़ी साध थी, यह बात उन्होंने नित्यानन्द-प्रभुसे कही थी और इसीके लिए उन्होंने नरवपु धारण किया था। परन्तु पाषाणहृदय कलिके जीवोंने इसको नहीं समझा। यदि वे लोग मधुर हरिनाम सहज ही लेते तो श्रीगौराङ्गप्रभु कभी गृह-त्याग नहीं करते। शचीमाताके सोनेके संसारमें आग नहीं लगती।

प्रभुको संसारमें किसी वस्तुका अभाव न था। शचीमाताके पास लक्ष्मीका भाण्डार था। दयामयी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी दीन-दरिद्रको अकातरभावसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अन्न-वस्त्र दान करती थीं। शचीमाता इतनी वृद्धा हो गयी थीं, तथापि रसोई बनानेका काम स्वयं करती थीं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने इस अल्पावस्थामें गृहस्थीका सारा भार अपने ऊपर ले लिया है, तथापि शचीमाताने रसोईके कार्यका भार उनके ऊपर पूर्णतः नहीं छोड़ा है। पुत्रको रसोई बना करके खिलानेमें उनको सुख मिलता था, वैसा सुख और किसी बातमें नहीं मिलता। इसीसे वे नित्य रसोईघरमें जाती थीं। और भी एक बात है। उनकी पुत्रवधू बालिका थी, उनके ऊपर यह गुरु-भार देकर वे निश्चिन्त नहीं रह सकती थीं। ऐसा कोई दिन नहीं होता था, जिसदिन दस-बीस अतिथि-अभ्यागत प्रभुके घर न आवें; अनुगत भक्तवृन्दकी बात ही क्या ? दोनों बेला प्रभुके घर सौसे अधिक आदमी भोजन करते थे। सास-बहू मिलकर यह सारा रसोईका काम करती थीं।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी रन्धनकार्यमें विशेष निपुत्र हो गयी थीं। प्रभुको इसमें बड़ा आनन्द मिलता था। वे माताके पास बैठकर वधूके रसोईके कार्यके सम्बन्धमें नाना कौतुक करते रहते थे। प्रियाजीको साथ लेकर अपराह्नमें घरमें बैठकर रसालाप करते थे। यह देखकर शचीमाताके मनमें अपार आनन्द होता था।

दामोदरपण्डित उस समय प्रभुके घरके कर्ता थे। वे शचीशाताके बड़े प्रिय थे। गृहस्थीके प्रयोजनकी जो वस्तुएँ होती थीं, दामोदरपण्डित सब ला दिया करते थे। प्रभु उनका सम्मान करते। श्रीगौराङ्गकी सेवामें दामोदरपण्डितने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था। इसी कारण उन्होंने अपना घर-द्वार नहीं बाँधा। दामोदरपण्डित स्पष्ट वक्ता थे। उन्होंने नीलाचलमें रहते समय एक बार प्रभुको वाग्दण्ड दिया था, इससे संतुष्ट होकर प्रभुने उनके ऊपर नवद्वीपमें शची-विष्णुप्रियाकी सेवाका भार दिया। ये सारी बातें प्रभुकी नीलाचल-लीलामें विस्तारपूर्वक वर्णित होंगी।

शचीमाताको अब मन-ही-मन विश्वास हो गया है कि उसके पुत्रने संसारमें मन लगाया है, अब वह गृहत्याग नहीं करेगा। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी भी चतुर-चूड़ामणि प्रभुकी प्रेम-चातुरीके जालमें फँसकर पहलेकी सारी बातें भूल गयीं। वे अपने पतिके साथ सुखसे संसार कर रही हैं। संसारी जीव सुख पानेपर दुःखको एकबारगी भूल जाता है, चतुर-चूड़ामणि प्रभुने अपनी जननी और गृहिणीको सुख देकर यह दिखला दिया।

इस प्रकार छः महीनेतक प्रभु परम आनन्दपूर्वक माता और गृहिणीके साथ संसार-सुखमें मग्न रहे। सबके मनमें दृढ़ विश्वास हो गया कि प्रभु अब गृहत्याग न करेंगे।

निमाईके लिए दी हुई विश्वरूपकी पुस्तक

एक दिन संध्याकालमें बैठकर माता-पुत्रमें घरगृहस्थीके विषयमें बहुत बातें हुई। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी पास बैठकर सब बातें सुन रही थीं। वे घरके कामसे जब कहीं अन्यत्र जाते थे तो शचीमाताके मनमें अचानक केशव भारतीकी बात याद आ जाती थी। प्रभुने अब संसारमें मन लगाया था, साधु-संन्यासी देखकर अब प्रभु उनके साथ एकबारगी उन्मत्त नहीं होते थे तथा उस प्रकार उनको लेकर एकान्तमें परामर्श नहीं करते थे, इससे शचीमाताके मनका भय बहुत कुछ दूर हो गया था।

शचीमाता केशव भारतीकी बात एकबारगी भूलती नहीं हैं, यह बात उनके मनमें काँटेके समान चुभती है। आज न जाने क्या मनमें सोचकर उन्होंने निमाइ-चाँदसे संदेह पूछा—"बेटा निमाई! तुम सत्य-सत्य बतलाओ कि संन्यासीके प्रति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम्हारा इतना अनुराग क्यों है ? केशव भारती जब नदियामें आये थे तो मैंने उनके प्रति तुम्हारा बड़ा अनुराग देखा था।" प्रभुने मुस्कुराकर उत्तर दिया—"माँ ! संन्यासीलोग परम भागवत होते हैं। मुझे उनसे बड़ा प्रेम है।" शचीमाताने आग्रह और स्नेहपूर्वक पुत्रसे पूछा—"बेटा निमाई ! तुम्हारा भैया मेरी छातीमें शूल मारकर संन्यासी होकर चला गया। बेटा ! तुम वैसा न करना।" शठ-चूड़ामणि प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"माँ ! क्या तुम पागल हो गयी हो ? तुम्हारे मनमें ऐसा संदेह हुआ क्यों ? क्या ऐसा भी हो सकता है ?"

शचीमाता पुत्रकी बात सुनकर मन-ही-मन अत्यन्त आनन्दित हुईं। हृदयावेगसे उन्होंने बहुत दिनोंकी मनकी गुप्त बात प्रभुको कह डाली। उन्होंने हँसकर प्रभुसे कहा—"बेटा निमाई ! इसी कारण तुम्हारे भैयाकी एक पुस्तक मैंने चूल्हेकी आगमें जला दी थी।" पुस्तक जलानेकी बात सुनकर प्रभु चौंक उठे। तब तो वह पुस्तक भैयाकी लिखी थी। उन्होंने अतिशय कौतूहलके वश होकर मातासे पूछा—"माँ ! वह कौन पुस्तक थी ? और क्यों आपने उसे आगमें जलाया ?" शचीमाता गुप्त बात प्रकट करके बड़ी विपद्में पड़ी। प्रभु भीतरी बात और खींचकर निकालना चाहते हैं, यह देखकर शचीमाता इधर-उधर करने लगीं; परन्तु प्रभुने उनको नहीं छोड़ा। तब शचीमाताने पुत्रको सारी बातें खोलकर कह दी। वे बोलीं—"बेटा निमाई ! तुम्हारे भैयाने गृह-त्यागके कुछ दिन पहले मुझको एक पुस्तक देकर कहा था—'माँ ! विश्वम्भर बड़ा और विज्ञ हो जाय, तब यह पोथी उसको देना।" उस समय तुम नितान्त बालक थे। मैंने अति यत्न पूर्वक वह पुस्तक रखी थी, परन्तु जब तुम्हारा भैया गृह त्याग करके, मेरी छातीमें शूल मारकर संन्यासी होकर देशत्यागी हो गया, तब मैंने सोचा कि पीछे कहीं पुस्तक पढ़कर तुम भी वैसा ही न कर बैठो—इसी आशङ्कासे मैंने उसे अग्निमें जला डाला।"

माताकी बात सुनकर प्रभु क्षणभरके लिए चुप हो गये। पुस्तकके नष्ट हो जानेपर प्रभुके मनमें विशेष अनुताप हुआ। परन्तु वे मनके भावको छिपाकर मातासे बोले—'माँ आप बुद्धिमती हैं, परन्तु पुत्रस्नेहसे विह्वल होकर मूढ़के समान आपने बड़ा ही अन्यायका कार्य कर डाला।" शचीमाता पुत्रकी बातसे लज्जित होकर बोलीं—"बेटा निमाई ! इसमें यदि मुझसे अपराध हो गया तो तुम उसे भूल जाओ।"

प्रभु शचीमाताके इस विनम्र वचनसे विशेष लज्जित हुए। वे स्नेहमयी जननीका चरण पकड़कर बोले—"माँ ! पुत्रके सामने माताका क्या अपराध हो सकता ? आपने यह क्या कहा ? बल्कि यदि मेरा कोई अपराध हुआ हो तो उसे क्षमा करके आप मेरे ऊपर प्रसन्न हों।" स्नेहमयी माता पुत्रके मुखचन्द्रपर स्नेह चुम्बन देकर आदर पूर्वक बोलीं—"बेटा ! मैं तेरा कोई अपराध अपराध नहीं गिनती हूँ। तुम्हारा अपराध ही क्या है ?" प्रभुका मन तब तुष्ट हो गया। माता-पुत्रमें तब दूसरी बात शुरु हो गयी।

प्रियाजीका नकवेसर खोना

श्रीमद्विश्वरूपप्रभुको गृहत्याग किये दस वर्ष हो गये थे। शचीमाताने यह गुप्त बात इतने दिनोंतक मनमें छिपाये रखी। अब अचानक उनके मनमें यह बात उदय कैसे हुई ? प्रभुके संन्यासकी बात शचीमाता एकबारगी भूल गयी थीं, अब फिर नये ढंगसे उनके मनमें यह बात उदय कैसे हुई ? इसमें कुछ रहस्य है। जिस दिन प्रभुके साथ शचीमाताकी ये सब बातें हुईं, उस दिन प्रातः काल श्रीमती विष्णुप्रियादेवी गङ्गास्नान करके घर आकर सासको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देखते ही रोने लगी। उनके मुँहसे बात नहीं निकल रही थी। उनका अङ्ग काँप रहा था। शचीमाताने पुत्रवधूकी आँखोंमें आँसू देखकर झटपट उनके पास जाकर अपने वस्त्रके अञ्चलसे उनका मुखचन्द्र पोंछकर घबराती हुई बोली—"बहू ! तुम रो क्यों रही हो ? क्या हुआ है, शीघ्र बोलो। तुम्हारी आँखोंमें आँसू देखकर मेरी छाती फट रही है। मेरी सोनेकी बछिया ! बोल तो, तुझे क्या हो गया ?" इतनी बात कहते-कहते शचीमाता भी रो पड़ीं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने तबतक स्नानका वस्त्र भी नहीं बदला था। उनका वस्त्र गीला था, केश विखरे थे, त्रिभुवन-मोहिनी रूपमें जगत्को आलोकित करके आँगनमें खड़ी होकर वे रोती हुई साससे बोलीं—"माँ ! मैं क्या बोलूँ, अपना सिर ? आज मुझे चारों ओर अमङ्गलके लक्षण दिखलायी दे रहे है। स्नान करते समय मेरी नाकका बेसर गङ्गाजलमें गिर गया। सोनेका खोजाना बड़ा अमङ्गल सूचक है। मेरी दाहिनी आँख फड़क रही है, आते समय दाहिनी ओर सर्प देखा है। यह भी सुनती हूँ कि यह बड़ा ही अमङ्गलका चिह्न है। माँ ! मेरे प्राण छटपटा रहे हैं ! न जाने, मेरे भाग्यमें क्या लिखा है; मेरा भाग्य बड़ा मन्द है !" इतना कहकर नवीना प्रियाजी व्याकुल होकर रोने लगीं। शचीमाता उनको सान्त्वना देती हुई घरमें ले गयीं। बहुत आदर-सुहाग किया, बहुत समझाया-बुझाया। पहने हुए गीले वस्त्रोंको बदलवाया, और उनके केश बाँध दिये। परन्तु प्रियाजीका मन कदापि स्थिर नहीं होता था। वे बुद्धिमती थी, वृद्धा सासके मनमें कष्ट न हो जाय, यह सोचकर प्रियाजी कुछ शान्त हुईं; परन्तु उनके मनमें बड़ी ही व्याकुलता थी। प्रियाजीके तत्कालीन भावका पदकर्ता वासुदेव घोषने एक पदमें अति सुन्दरतापूर्वक वर्णन किया है। वासुघोष श्रीगौराङ्ग-लीला अपनी आँखों देखकर पद लिख गये हैं। प्रियाजीका यह भाव अपनी आँखों उन्होंने न देखा हो, पर निश्चयपूर्वक शचीमातासे पूछकर लिखा होगा। वह हृदय-विदारक करुण-रसात्मक पद नीचे उद्धत किया जाता है।

राग धनाश्री।

पागलिनी विष्णुप्रिया भिजा वस्त्र चूले।
त्वरा करि बाड़ी आसि शाशुड़ीरे बले॥
बलिते ना पारे किछु काँदिया फाँफर।
शची बोले मागो ! एत कि लागि कातर॥
विष्णुप्रिया बले आर कि कर जननी।
चारि दिके अमङ्गल काँपिछे पराणि॥
नाहिते पड़िल जले नाकेर बेशर।
भाङ्गिबे कपाल माथे पड़िबे बजर॥
थाकि थाकि प्राण काँदे नाचे डान आँखि।
दक्षिणे भुजङ्ग जेन रहि रहि देखि॥
काँदि कहे वासु घोष कि कहिब सति।
आजि नवद्वीप छाड़ि जाबे प्राणपति॥

शचीमाताने पुत्रवधूको सान्त्वना तो प्रदान की, परन्तु स्वयं मनमें विषम अशान्ति भोगने लगीं। उनके मनमें यह बैठता ही नहीं है कि "उनका निमाई यह सुखका संसार छोड़कर, सोनेकी प्रतिमा विष्णुप्रियाको अनाथिनी बनाकर इस वृद्धावस्थामें उनके हृदयमें शूल मारकर गृहत्याग करेगा। उनका पुत्र इस समय घोर संसारी हो गया है; उसमें वैराग्यका कोई चिह्न नहीं दीखता, कैसे वह पुत्रके गृहत्यागकी इस अमङ्गलजनक भावनाको अपने मनमें स्थान दें ? फिर पुत्रवधूके मुखसे अमङ्गलसूचक बात सुनकर उनके मनमें भारी खटका पैदा हो गया। मेरी बछियाको क्यों अकस्मात् ये सब अमङ्गल सूचक चिह्न दिखलायी पड़े ? इसका मन अचानक क्यों घबरा गया ? इसको आँखोंमें जल क्यों आया ? सामान्य कारणसे तो मेरी सोनेकी बहू कभी मुझको कुछ नहीं बोलती।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आज इसको कौन-सा दुःख आनेवाला है, जो मुझसे इतनी बातें बोल गयीं। इसका निश्चय ही कुछ कारण है। तो क्या मेरा निमाई हमको धोखा देकर चुपचाप चला जायगा? यह क्या मुझको धोखा देगा?"—इन सब चिन्ताओंसे शचीमाताका मन उन्मथित हो उठा। उन्होंने मन-ही-मन सोचा कि पुत्रसे एक वार पूछकर देखें। पहलेकी सारी बातें एक-एक करके उनके मनमें उदय हुईं। केशव भारतीकी बात याद आयी ; इसीकारण पुत्रके सामने बात-ही-बातमें उन्होंने केशव भारतीका उल्लेख किया और उसी सिलसिलेमें श्रीमद्विश्वरूप-प्रभुके संन्यास और पुस्तक देनेकी बात कह डाली। यह भी रँगीले प्रभुका लीलारङ्ग था। शठ-शिरोमणि श्रीगौर-भगवान्‌ने पहले मातासे अपने गृहत्यागकी बात कही थी। उनकी सारी मायाहर करके, संन्यास-धर्म-ग्रहण करनेमें कौशलपूर्वक उनकी अनुमति लेकर अपना कार्य सिद्ध कर लिया था। इस वार फिर परम कौशली श्रीगौराङ्ग-भगवान्‌ने कौशल पूर्वक माताको अपनी वैष्णवी मायामें भुलाकर शान्त कर दिया। इसी प्रकार वे मर्म-पीड़िता श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको भी कौशलपूर्वक शान्त करके अपना कार्य-साधन करेंगे—यह बात आगे कही जायगी। '**स्वकार्यं साधयेत् बुधः**'—चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर-भगवान् इस महाजन वाक्य-की सफलता प्रदर्शन कर रहे हैं।

पुत्रसे संतोषजनक उत्तर पाकर शचीमाताका मन स्थिर हो गया। उन्होंने श्रीमती विष्णुप्रियादेवी-को सारी बातें कहीं, उनको समझाया और विशेष रूपसे निश्चिन्त रहनेके लिए अनुरोध किया। अमङ्गल-शकुनके लिए शान्ति-स्वस्त्ययनकी व्यवस्था कर दी। ठाकुर-मन्दिरमें जाकर गलेमें बस्त्र डालकर शतशः सिर रगड़ा। वृद्धा शचीमाताका सिर फूल गया—यह देखकर प्रियाजीके मनमें बड़ा कष्ट हुआ। वे मन-ही-मन अपनेको शत-शत धिक्कार देने लगीं। उन्होंने एकान्तमें बैठकर नयन-जलसे वक्ष स्थलको मज्जित कर दिया। प्रभुने भी यह सब अपनी आँखोंसे देखा और इसका मर्म समझा। उन्होंने मातासे स्नेह-पूर्वक पूछा—"माँ! तेरे सिरमें क्या हो गया?" शचीमाताने उत्तर दिया—"बेटा! कुछ नहीं।" सर्वज्ञ प्रभु सब-कुछ जानते थे। कुछ उदास हो उठे। शचीमाताके शान्तिमय सोनेके संसारमें अशान्तिकी सृष्टि हुई, आग लगने का उपक्रम हो गया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छप्पनवाँ अध्याय

(युगल-विलास-लीलारङ्ग)

वैराग्य समये प्रेम उभारे अधिक।
संन्यास करिव बलि उनुमत चित॥
ए समये विथारये रङ्गरस भाव।
इहार कारण किछु शुन लाभालाभ॥

श्रीचैतन्यमङ्गल

गृहत्यागकी तैयारी

माघमासके उत्तरायण संक्रान्तिके दिन, रात्रिके अवसानमें श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने संन्यासके लिए नवद्वीपका त्याग किया। गृहत्याग करना पड़ेगा, इसका प्रभुके मनमें जितना आनन्द था, उतना ही दुःख था; परन्तु प्रकट नहीं हुआ, आनन्दका पूर्ण विकास दृष्टिगोचर हुआ। उन्होंने स्थिर कर लिया था कि अन्तरङ्ग भक्तोंमें-से किसको-किसको अपने साथ लेंगे। उनको चुपचाप तैयार रहनेके लिए कह दिया था। उस रात वे लोग प्रभुके बाहरी दालानमें सोये रहे।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी गङ्गा-स्नानके अवसर-पर नकवेशर खोनेका अशकुन देखकर मनमें बहुत व्यथित थीं; शचीमाताके मनमें विषम संदेह हो गया था, वे चिन्तामें व्याकुल हो रही थी, सर्वज्ञ प्रभु सब जानते हैं। माताके साथ उस दिन संध्या-कालमें केशव भारतीके सम्बन्धमें बातचीतके बाद प्रभुने हँसते हुए उनसे कहा—"माँ! आजकी रात्रि उत्तम भोजन बनाकर ठाकुरको भोग लगाओ; मुझे बड़ी भूख लग रही है।" स्नेहमयी माता शचीदेवी पुत्रके मुखसे इस प्रकारकी प्रेमपूर्ण स्नेहकी बात सुनकर सारा दुःख भूल गयीं। झटपट-पुत्र-वधूको साथ लेकर रसोईघरमें गयीं। सास-बहू-दोनों मिलकर रसोईके काममें लग गयीं।

प्रभु यह सुयोग पाकर एकवार नदियाके भक्तोंके साथ अन्तिम विदा लेनेके लिए नगरभ्रमण करनेके लिए बाहर निकले, उसी समय उनके परम भक्त खोला बेंचनेवाले श्रीधरने एक ताजो कद्दू हाथमें लेकर प्रभुके चरणोंमें प्रणाम करके शचीमाताके पास जाकर हाथ जोड़कर कहा—"माँ! मैं बड़ा दरिद्र हूँ। मैं अपने घरकी यह लौकी प्रभुकी सेवाके लिए लाया हूँ।"

शचीमाताने आदरपूर्वक श्रीधरके हाथसे लौकी ले ली। उसी समय एक और भक्त आकर प्रभुकी सेवामें कुछ दुग्ध दे गया। प्रभुने मातासे हँसते-हँसते कहा—माँ! अच्छा हुआ। आज श्रीधरकी लौकी इस दूधके साथ पकाओ, अच्छा रहेगा।" प्रभुभक्त दरिद्र श्रीधर यह सुनकर परम सुखी हुए।

शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवी रसोई बनानेमें लग गयीं, प्रभु नगरभ्रमणके लिए बाहर निकले। रात केवल चार दण्ड गयी थी। प्रभुने उस दिन सब भक्तवृन्दके घर जाकर परम हास-परिहास-लीलारङ्गके साथ सबका मन हर लिया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुके मधुर वचन आज कानोंमें मानो अमृतका प्रवाह ढाल रहे हैं, नदियाके भक्तवृन्द उसको घूँट-घूँट पान कर रहे हैं और हृदयको परितृप्त कर रहे हैं। उस दिन डेढ़ पहर राततक गङ्गाके तीरपर बैठकर प्रभुने भक्तोंका सङ्ग किया। उसके बाद घर आये। उनको घर पहुँचाकर भक्तवृन्द अपने-अपने घर गये। प्रभुकी गति-विधिको देखकर भक्तगण कुछ भाँप न सके। उन्होंने जो उस रात गृहत्याग करनेका संकल्प किया था, यह उनकी किसी बात या चेष्टासे प्रकट न हो सका। उनके बाहरी कपटमय आनन्दका भाव देखकर भक्तगण निश्चिन्त होकर अपने घर गये।

प्रभुके हृदयमें आज बड़ा दुःख है। उन्होंने आज आँखें भरकर द्रवब्रह्ममयी गङ्गाका दर्शन किया। बड़ी श्रद्धासे युक्त होकर नवद्वीपकी ओर उन्होंने अन्तिम शुभदृष्टिपात किया, भक्तगणके साथ अन्तिम प्रेमालिङ्गन किया। प्रभुकी आँखोंमें अश्रुप्रवाह दीख पड़ा; उन्होंने अति कष्टपूर्वक आँखें फेर लीं, कोई उसे देख न सका। उनकी मर्म-वेदनाके अश्रुजल आँखोंके कोनोंमें ही रह गये।

भक्तवृन्दको विदा करके प्रभु सीधे घर आये और रसोईघरमें माताके पास जाकर बैठ गये। पुराने सेवक ईशानने उनके पैर धो डाले। ईशान क्या जानता था कि यह उसकी अन्तिम प्रभु-चरण-सेवा थी।

माताके पास बैठकर प्रभुने पहले नाना प्रकारकी सांसारिक बातें कीं। भोजनके विषयमें प्रियाजीका प्रसङ्ग उठाकर माताके साथ नाना प्रकारके कौतुक किये। प्रभु बोले—"माँ! तुम्हारी बहू इतनी बड़ी हो गयी, तथापि रसोई बनाना नहीं सीखा। तुम इसको भली-भाँति रसोई बनाना सिखला दो। अब तुम कितने दिन जियोगी? तुम्हारे हाथका बना भोजन-व्यञ्जन खाकर हमको और किसीके हाथका भोजन अच्छा नहीं लगता।" शचीमाता पुत्रकी पीठपर हाथ देकर स्नेहपूर्वक बोलीं—"बेटा निमाई! तू क्या दिन-पर-दिन बालक बनता जा रहा है? 'बहू इतनी बड़ी हो गयी'—यह बात भी क्या बोलने की है? मेरी बहू तो अभी दुधमुँही बच्ची है। इस छोटी उम्रमें इसने मुझसे भी अच्छी रसोई बनाना सीख लिया है। मैंने इसको सब-कुछ सिखला दिया है। तुम ऐसी बात फिर न बोलना। मेरी सोनेकी बछियाको उससे बड़ा दुःख होगा।"

प्रियाजी घरके भीतर खड़ी होकर प्राणवल्लभके मुख-चन्द्रको प्राण भरकर देख रही थीं। प्रभुने और कोई बात नहीं कही। इस प्रकार हास्य-कौतुकके रङ्गमें प्रभु रातका भोजन करने बैठे। परम परितोषपूर्वक उस दिन रातको भोजन करके प्रभु शयन-मन्दिरमें गये। प्रियाजी प्रभुका प्रसाद ग्रहण कर चुकीं; तब शचीमाता प्रसन्न चित्तसे निश्चिन्त होकर अपने घर सोने गयीं। भोजनके अन्तमें प्रियाजी पानवट्टा, चन्दन, फूलोंकी माला आदि द्रव्य लेकर वस्त्रालंकारसे विभूषित होकर धीरे-धीरे प्रभुके शयन-गृहमें गयीं।

युगल-विलास-लीला

श्रीगौराङ्ग लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरकी माता श्रीनारायणीदेवी उस रात प्रभुके घर सोयी रहीं। इस महाभाग्यवती रमणीको गौड़ीय वैष्णवमण्डलीने 'श्रीगौराङ्ग महाप्रभुका कृपाकी अवशेषपात्री' नाम दिया है—

अद्यापिह वैष्णव मण्डले जाँर ध्वनि।
गौराङ्गेर अवशेष पात्र-नारायणी॥

चै. भा. म. २.३१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नारायणीदेवी श्रीमतीविष्णुप्रियादेवीसे अत्यन्त स्नेह करती थी। वे प्रभुकी युगल-भजन-निष्ठा दासी थीं। नारायणीदेवीने उस रात अपने हाथसे प्रियाजीकी युगल-विलासकी उपयोगी वेष-भूषा कर दी थी।*

प्रभु नवीन-नागर वेषमें दिव्य पलंगके ऊपर बैठकर अपनी प्राण-प्रियतमाके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रियतमाको देखकर श्रीगौराङ्गसुन्दरने प्रसन्नतापूर्वक हाथ पकड़कर परम आदरपूर्वक उनको अपने अंकमें स्थान दिया।

प्राणवल्लभके आदर-सुहागसे श्रीमतीविष्णु-प्रियादेवी द्रवित हो उठीं। वे प्रातःकालके अमङ्गलकी बातें प्रभुसे करनेके लिए मनमें सोचकर आयी थीं, परन्तु श्रीगौर-भगवान्‌की वैष्णवी मायासे अभिभूत होकर वे इसे एकबारगी भूल गयीं। पतिका आदर पाकर स्त्रियाँ आनन्दमें अपने-आपको भूल जाती हैं। प्रियाजीकी भी यही दशा हुई। उन्होंने सब-कुछ भूलकर प्राणवल्लभके सुन्दर प्रेममय दीप्त मुख-चन्द्रका दर्शन करके अपने प्राणोंको शीतल किया। उनके अमृतमय मधुर वचनको सुनकर मनको शान्त किया।

आज प्रभुका मन अत्यन्त प्रफुल्ल देखकर श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके मनमें बड़ी साध हुई कि आज प्राणवल्लभको मनमाना सजावें। वे मनके भावको छिपा न सकीं। अपने मनकी साध प्राणवल्लभके सामने व्यक्त कर दी। रसराज रसिकशेखर प्रभु सानन्द सम्मति देकर हँसते हुए बोले—"प्रियतमे! विष्णुप्रिये! तुम पहले मुझको सजाओ, पश्चात् मैं भी तुमको आज मनकी साधसे सजाऊँगा।" प्रियाजी प्रभुकी यह रस-रङ्ग-मधुमय-वार्ता सुनकर कुछ लज्जित हुईं। प्रियाजीका यह सलज्ज मधुर भाव प्रभुके नयनोंमें बहुत सुन्दर लगा। उन्होंने प्रेमविह्वल चित्तसे प्रियाजीके सुदीप्त, सलज्ज, सुन्दर मुखचन्द्रपर एक सरस प्रेम-चुम्बन प्रदान किया। इससे प्रियाजीके मनमें अपार आनन्द हुआ; परन्तु उनको और अधिक लज्जा लगने लगी। वे मुँहसे कोई बात बोल न सकीं। मन-ही-मन कहने लगीं—"प्राणनाथ! हृदय-सर्वस्व!! यह दासी तुम्हारी है।"

अब श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अपने प्राण-वल्लभको मनकी साधसे सजाने बैठीं। चन्दन,

---

* श्रीवृन्दावनदास ठाकुरकी माताका ऐसा सौभाग्य न होगा तो किसका होगा? वे प्रभुकी नित्यदासी थीं, इसी कारण कृपा करके प्रभुने उनको यह सौभाग्य प्रदान किया था। ठाकुर वृन्दावनदास और ठाकुर लोचनदास समसामयिक लोग थे। ठाकुर लोचनदासने अपने श्रीचैतन्य मङ्गल श्रीग्रन्थमें गृहत्यागकी रातमें श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके साथ प्रभुके युगल-विलास-लीला-रङ्गका वर्णन किया है। ठाकुर वृन्दावनदासके श्रीचैतन्यभागवत लिखे जानेके बाद ठाकुर लोचनदासने अपने गुरुदेव ठाकुर नरहरिदासकी आज्ञासे श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थकी रचना की। ठाकुर लोचनदासने वृन्दावनदास ठाकुरको स्वरचित ग्रन्थ देखनेके लिए दिया। उस श्रीग्रन्थको पढ़कर बृन्दावनदास ठाकुरके मनमें एक संदेह उत्पन्न हुआ, प्रभुके गृहत्यागके दिन प्रियाजीके साथ उनकी युगल-विलास-लीला-विहार-रङ्गकी बात उन्हें ज्ञात न थी तथा इसी कारणसे इस विषयमें अपने ग्रन्थमें उन्होंने कुछ लिखा न था। संदेह दूर करनेके लिए उन्होंने अपनी मातासे इस विषयमें पूछ ताछ की। नारायणीदेवीने उनको उत्तर देते हुए कहा—"लोचनकी कोई भी बात काल्पनिक नही है। मैं उस रात प्रभुके घर उपस्थित थी और अपनी आँखोंसे श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-विलास-लीलारङ्ग-दर्शन करके कृतार्थ हुई थी। मैंने ही श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको भूषण-वसनसे सज्जित किया था।" माताकी बात सुनकर ठाकुर वृन्दावनदासका सारा संदेह दूर हो गया। (श्रीविष्णुप्रिया कार्यालय' से प्रकाशित श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थसे संग्रहीत)।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुंकुम, कस्तूरी, फूलमाला आदि बिलासोपयोगी सामग्री साथ लेकर वे स्वामीके शयनगृहमें आयीं। दिल खोलकर प्राणवल्लभके अंगको सुगन्धितचन्दनसे चर्चित किया, ऊपरसे कुंकुम-कस्तूरी-गन्ध लेपन किया। गलेमें मालतीकी माला पहना दी, बाहुमूलमें सुगन्धित पुष्पोंका हार बाँध दिया, करमें पुष्पोंका वलय गाँथ दिया, प्रभुके कानोंमें दो कदम्ब-कुसुम पहना दिये, मस्तकपर घुँघराले केश पाशके बीच मालतीकी मालासे जड़ित एक कृष्णचूड़ा फूल बैठा दिया, चरणोंमें अशोक पुष्प-कलिका नूपुर गाँथकर पहना दिया, सुन्दर प्रशस्त ललाट-देशमें कुंकुम-कस्तूरी-मिश्रित चन्दनकी तिलक-रचना कर दी, कपोल देशमें अलकावली रञ्जित कर दी। प्रभुको पान बहुत प्रिय था, अपने हाथसे सज्जित सुगन्धित सरस पान उन्होंने प्राणवल्लभके श्रीमुखमें रख दिया। प्रभुके भ्रमर-सदृश काले घुँघराले केश-पाशको अपने हाथोंसे सुन्दरतापूर्वक सजा दिया। अपने वस्त्रके अञ्चलसे प्राणवल्लभके रक्तकमल-चरणको पोंछ दिया। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने आज मनचाहा अपने प्राणवल्लभका शृङ्गार कर दिया।

प्रियाजीने दर्पण लाकर उनके सामने रख दिया। प्रभु अपनी मदनमोहन रसराज मूर्ति दर्पणमें देखकर अपने प्रेममें आप विभोर होकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। नदियानागर नवनटवर रसराज रसिकशेखर श्रीगौराङ्गसुन्दर आज रासबिहारीरूपमें अपनी प्रियतमाको अपने अङ्कमें बैठाकर रास-रसिकभावमें प्रेममें विभोर हो रहे हैं। प्रभु और प्रियाजी दोनों ही आज सुख-सागरमें प्रेमानन्दमें संतरण कर रहे हैं।

रसिक शिरोमणि प्रभु तब हँस करके प्रियाजीसे बोले—"विष्णुप्रिये ! अब मेरी सजानेकी पारी है। आओ, तुमको मैं आज मनकी साधसे सजाऊँगा।" इतना कहकर रसिक-शेखर गौराङ्गसुन्दर प्रियाजीको अपने हाथोंसे सजाने बैठे।

प्रियाजी लज्जासे कुण्ठित होकर पलंगपर एक ओर बैठ गयीं। रसिकराज प्रभुने उनको प्रेममें भरकर अपनी ओर खींच लिया। उनके पीछे वे स्वयं बैठ गये। सबसे पहले उन्होंने प्रियतमाकी कबरी बाँध दी। कबरीके चारों ओर सुन्दर मालतीपुष्पोंकी माला जड़ित कर दी। प्रियाजीका सुदीर्घ भ्रमर-कृष्ण केशपाश मालतीकी मालासे आबद्ध होकर ऐसा लगता था, मानो चन्द्रके आलोकमें मेघावली उद्भासित हो रही है। प्रियतमाके सुन्दर ललाटमें रसिकशेखर प्रभुने चन्दनकी अलका-तिलक रचना कर दी, उसके शुभ सिंदूरका एक सुन्दर बिन्दु लगा दिया। उनके कमल-नयनद्वयमें अञ्जनकी रेखा खींच दी। उनके सारे अङ्गोंमें सुगन्धित कुंकुम-कस्तूरी-गन्ध-चन्दन-लेपन कर दिया। उन्हे दिव्य वस्त्रकी चोली पहना दी। सारे अङ्गोंमें नाना प्रकारके अलङ्कार-रत्न पहना दिये। बीच-बीचमें पुष्पोंका हार जड़ित कर दिया। अपने हाथसे प्रियतमाके मुँहमें ताम्बूल देकर नयन भरकर उनकी रूप-माधुरी देखते रहे। प्रियाजीके त्रैलोक्यविमोहन अपरूप-रूपसे विमोहित होकर वे प्रेमानन्दमें विभोर हो गये। प्रियाजीके अपरूप-रूपसे मुग्ध रसराज श्रीगौराङ्गसुन्दर प्रेम-रस-रङ्गमें उन्मत्त होकर अतिशय प्रेमविह्वल भावमें प्रियतमाकी अधर-सुधा-माधुरीकी आशासे उनको वक्षःस्थलपर धारण करके प्रियतमाका मुख-चुम्बन करके उनको प्रगाढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। गौर-वक्ष-विलासिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी प्रेमानन्दमें विभोर होकर प्राण-वल्लभके वक्षःस्थलपर विराजने लगीं।

प्रभुके रसिक भक्त श्रीगौर-विष्णुप्रियाके युगल-भजन-निष्ठ साधक कवि ठाकुर लोचनदासने श्रीगौर-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भगवान्‌के इस रस लीला-रङ्गकी सारी बातें प्रकाशित कर दी हैं। उन्होंने अपने श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थमें ये सब बातें लिखी हैं। श्रीश्रीराधाकृष्णके युगल-विलास-लीलारङ्गका वर्णन जिस भावमें व्रजरसलोलुप मधुर-भजन-निष्ठ साधक प्राचीन कवियोंने किया है, उसी भावमें श्रीगौराङ्गप्रभुके रसिक भक्त नवद्वीप-रस-लोलुप ठाकुर लोचन-दासने भी ठीक उसी प्रकार श्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-विलास-लीला-माधुरीका वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है—

नाना रस विथारये विनोद नागर।
आछुक आनेर काज काम अगोचर॥
सुमेरुर कोले जेन विजूरि प्रकाश।
मदन मुगधे देखि रतिर विलास॥
हृदय उपरे थोय ना छुयाये शय्या।
पाश पालटिते नारे दोंहे एक मज्जा॥
बुके बुके मुखे मुखे रजनी गोङाय।
रस अनसादे दोंहे सुखे निद्रा जाय॥

शची-मन्दिरमें श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल शयन कर रहे हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी प्राणवल्लभके साथ एकाङ्ग होकर मानो एकीभूत हो गयी हैं। श्रीश्रीराधाकृष्ण-युगल-तत्त्व-मिलित-वपु श्रीगौराङ्ग हैं। श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग एकीभूत क्या तत्त्व और बस्तु हैं, यह तत्त्वज्ञ पाठकवृन्दको ज्ञात है। यह रसिक भक्तवृन्दके अनुभवका विषय हैं, शास्त्रकारोंकी व्याख्याका विषय है। यह श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्गका युगल-मिलन ही नवद्वीप-लीलाकी परिपक्वावस्था है। यहाँ नवद्वीप-लीलारसकी परिपूर्णावस्थामें शक्ति-शक्तिमान् दोनों एकाङ्गीभूत हो गये हैं। लीलारस जब परिपूर्ण होता है, तब फिर शक्ति और शक्तिमान्‌का देहभेद नहीं रहता। लीलाके उद्‌देश्यसे ही वे नरवपु धारण करते हैं तथा देह-भेदको स्वीकार करते हैं। श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप-लीलाका सर्वोत्तम भाव उनकी इस युगल-विलास-माधुरीमें परिलक्षित होता है। नवद्वीप-लीला-रसका परिपूर्ण परिपुष्ट भाव दिखलाकर श्रीगौर-भगवान् नीलाचल-लीलामें प्रवेश करते हैं। वह अति विशुद्ध तथा परिपूर्ण परिपुष्ट भाव, श्रीभगवान्‌का यह सर्वोत्तम युगल-विलास-लीलारङ्ग उनके रसिक भक्तोंकी साधनाका धन है, ध्यानकी वस्तु है। श्रीभगवान्‌के भजन-तत्त्वमें मधुररस ही सर्वोत्कृष्ट और सर्वश्रेष्ठ है।

श्रीगौराङ्गका मधुर भजन पूज्यपाद साधक महाजन ऋषिगणके द्वारा अनुमोदित और गोस्वामि शास्त्र-सम्मत है। प्रभुके प्रिय पार्षद ठाकुर नरहरिदासके आदेशसे उनके प्रिय शिष्य ठाकुर लोचनदासने श्रीश्रीमन्महाप्रभुके इस पुगल-विलास-लीलारङ्गका वर्णन किया है। श्रीश्रीनदिया-युगल-भजनके प्रकृत अधिकारी बहुत कम हैं। नवद्वीप-रसानन्दी श्रीगोवर्द्धन-वासी सिद्ध कृष्णदास बाबाजी, श्रीधाम नवद्वीपवासी सिद्ध चैतन्यदास बाबाजी, जियड़ नृसिंह भागवत-भूषण आदि गौर-भक्त महात्मागण, जिनके दर्शनमात्रसे बहुतोंको अमूल्य प्रेमधन प्राप्त हुआ था तथा जो श्रीगौराङ्गप्रभुके रसिक भक्त थे, उन्होंने श्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-भजन करके सिद्धि प्राप्त की थी। सिद्ध चैतन्यदास बाबाजी प्रभुको 'श्रीविष्णुप्रियावल्लभ' कहकर प्रेम सम्भाषण करते थे। श्रीकृष्णका एक नाम जैसे श्रीराधा-वल्लभ है, उसी प्रकार श्रीगौराङ्गका एक नाम 'श्रीविष्णुप्रिया-वल्लभ' है। और इस श्रीविष्णु-प्रिया-वल्लभ नाममें ही नदिया-नागर श्रीगौराङ्ग-सुन्दरको नागरत्व उपलब्ध होता है। सिद्ध चैतन्यदास बाबाजीने अपने शिष्यका नाम रखा था—'श्रीविष्णुप्रियादास।' व्रजरस और नवद्वीप-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रस एक वस्तु है, एक तत्त्व है। उनमें कुछ भी भेद नहीं है।

किसी-किसी दुर्मति जीवके मनमें इस प्रकारका प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि कृष्ण-प्रेमोन्मत्त श्रीगौराङ्गप्रभुने अपनी उस उत्कट वैराग्यावस्थामें तथा संन्यास-ग्रहणके समय इस प्रकार प्राकृत रसरङ्ग-लीला क्यों प्रकट की ? इसका उत्तर ठाकुर लोचनदासने दिया है। यथा—

वैराग्य समये प्रेमा उभारे अधिक।
संन्यास करिब बलि उनुमत चित॥
ए समये विथारये रङ्ग रसभाव।
इहार कारण किछु शुन लाभालाभ॥
जे जन जे रूपे भजे तारे तेन प्रभु।
भजन अधिक न्यून ना करये कभु॥
ताहाते विशेष आछे अधिकारी भेद।
अमाया समाया भक्तिए वेद निर्वेद॥
भक्ति बिनु कृष्ण भजिवारे नारे केहो।
अमाया निश्चला प्रेमभक्ति हय सेहो॥
बिनि अनुरागे प्रेमभक्ति हय जबे।
कृष्णे बन्दी करिबारे नारे केहो तबे॥
ऐछन ठाकुर गौर करुणार सिंधु।
अनुरागी प्रेमार भिखारी दीनबन्धु॥
करुणार प्रकाशये निज अनुराग।
बिच्छेद हृदये जेन बाड़े तार तार॥
भावसङ्गे जे जन देखये मोर अङ्ग।
तार सह मोर भाव कभू नहे भङ्ग॥
एहेन करुणानिधि आर आछे के।
आपना न धरे निज प्रेम अनुरागे॥
एइ से कारण विष्णुप्रियाके प्रसाद।
एत जानि मने केहो ना कर प्रमाद॥

चै. म.

श्रीभगवान्‌ने अपने श्रीमुखसे कहा है—

"मद्भक्तानां विनोदार्थं करोमि विविध क्रियाः।"

उन्होंने और भी कहा है—

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।"

गीता ४.११

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने पतिभावमें प्रभुका भजन किया था। भक्तवत्सल प्रभुने उनको कान्ताभावमें प्रसन्न किया था। इसीको मधुररसका भजन कहते हैं। परम पुरुष श्रीभगवान्‌के प्रति मधुर भावमें रति उदय होनेपर वह सर्वश्रेष्ठ भजन होता है। इस मधुर रतिमें श्रीभगवान्‌के प्रति केवल प्रीतियुक्त आत्मसमर्पण होता है और कुछ नहीं। इससे बढ़कर न कोई रति है, न कोई रस है। यही सब रसोंमें श्रेष्ठ रस है। श्रीचैतन्यचरितामृतमें लिखा है—

"कान्त भावे श्रीअङ्ग दिया करेन सेवन।"

चै. च. म. १९.१९०

भावग्राही श्रीभगवान् भक्तके भावमें भक्तके सामने आत्म-समर्पण करते हैं। उस समय निज भाव कुछ नहीं रह जाता। ठाकुर लोचनदासने इसी कारण लिखा है—

"आपना ना धरे निज प्रेम अनुरागे।"

श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग एकाङ्गीभूत होकर युगलरूपमें शची-मन्दिरमें सोये हैं, नवद्वीपवासी प्रभुके भक्तवृन्द निश्चिन्त-भावसे अपने-अपने घरमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शयन करके नवद्वीप-लीलाकी परिपक्वावस्था नदिया-युगल-विलास-लीलारङ्गका अपूर्व सुस्वप्न देख रहे हैं, स्नेहमयी शचीमाता अपने बड़े आदर-दुलार वाले निमाई-चाँदके घरमें सोनेकी बहूको देकर निश्चिन्त मनसे अपने कमरेमें सो रही हैं। नदियावासी पशु-पक्षी, कीट-मतङ्ग, स्थावर-जङ्गम सभी परमानन्दमें श्रीश्रीनदिया-युगलका परिपूर्ण लीलारस अनुभव करके निस्तब्धभाव अवलम्बन कर रहे हैं। ऐसे समयमें लीलामय पुरुषोत्तम श्रीगौराङ्गसुन्दरने अपनी नवद्वीप-लीलाका शेषाङ्क अभिनय करनेकी चेष्टा की।

यहाँ ही श्रीगौराङ्गसुन्दरकी लौकिक नवद्वीप-लीला समाप्त हो गयी। श्रीश्रीविष्णुप्रिया-गौराङ्ग एकीभूत होकर शची-मन्दिरमें सुखसे नींद ले रहे हैं। गौर-भक्तगण परमानन्दमें प्रभुकी इस निशान्त-कालीन लीला (रातके अवशेषका दो दण्ड) स्मरण करके भजनानन्दमें विभोर हैं। इस समय वे लोग इस अपूर्व अप्रकृत भजनान्दनमें विभोर हैं। इस समय वे लोग इस अपूर्व अप्राकृत भजनानन्दमें ही रहें तथा प्रभुकी निशान्तकालीन लीलाका गान करें। यथा,

अलस अङ्गे, प्रियाजी सङ्गे,
शुति आछे गौर हरि।
रजनी जागिया, सह विष्णुप्रिया,
बहु रति-रण करि॥
मन नाहि चाय, उठाइते ताय,
अपरूप दरशन।
भुजे भुज दिये, अङ्ग एलाइये,
शुति आछे दुइ जन॥
हिया पर हिया, अमिया मथिया,
वदने वदन शोभे।
चरणे चरण, चारु सुशोभन,
मदन मरये लोभे॥
हइये एकाङ्ग, प्रियाजी सङ्ग,
शुति आछे शची-सुत।
(हेरि) युगल विलास, उपजिल हास,
कि आनन्द अद्भुत॥
नदीयानन्द गौरचन्द,
प्रेमेते आत्महारा।
नदियार राइ, विष्णुप्रिया,
व्रजेर कानाइ गोरा॥
उठ-उठ धनि, गौर-सोहागिनी,
उठ-उठ गोरा राय।
सोनार वरण, प्रभात अरुण,
ए देख देखा जाय॥

—ग्रन्थकार।

जय श्रीविष्णुप्रिया गौराङ्ग।

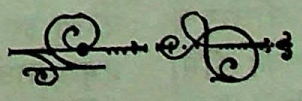

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सत्तावनवाँ अध्याय

प्रभुका गृह-त्याग और संन्यास-ग्रहण

शुन शुन आरे भाइ ! प्रभुर संन्यास ।
जे कथा शुनिले कर्मबन्ध जाय नाश ॥

चै. भा. म. २६.११२

श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी सुमधुर नवद्वीप-लीलाका परिपूर्णभाव उनके गृह-त्यागकी रात्रिमें विशेष रूपसे परिलक्षित हुआ है। नदिया-युगल-विलास नवद्वीप-लीलाका परिपूर्ण भाव है। पहले इस विषयमें विस्तृतरूपमें लिखा जा चुका है। श्रीमन्महाप्रभु स्वयं-भगवान् हैं। युगलरूपमें श्रीभगवान्‌की स्वरूप-शक्तिका पूर्ण विकास होता है। **'रसराज महाभाव दुइ एकरूप।'** यही श्रीभगवान्‌की स्वरूप-शक्तिका परिपूर्णतम भाव है। युगल-माधुरीमें ही जीव हृदयमें श्रीभगवान्‌की नरलीलाके उत्कर्षकी सम्पूर्णभावमें उपलब्धि होती है और उनके उस सर्वमहिमामय, सर्व-माधुर्यसे परिपूर्ण युगल-सेवामें ही जीवको सर्वार्थसिद्धि प्राप्त होती है। षड़ैश्वर्यमय श्रीभगवान् सर्वविधि सौन्दर्य और माधुर्यकी खानि हैं, इसका सर्वोत्कृष्ट प्रमाण उनकी अपूर्व और अनुपम युगलरूप-माधुरी है। नवद्वीप-लीलाका परिपूर्णतम भाव श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाका युगल-विलास है। अतएव श्रीगौर-भगवान्‌ने संन्यास-ग्रहणके पूर्व दिवस, रातमें श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके साथ यह अपूर्व माधुयमय युगल-विलास-लीलारङ्ग प्रकट करके नवद्वीपमें अपनी माधुर्य-लीलाकी सीमा दिखला दी। लौकिकी नवद्वीप-लीलाके अन्तिम दिन श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने अपनी अनुपम और सर्वोत्कृष्ट युगल-विलास-माधुर्य-लीलाकी अन्तिम सीमा दिखला दी।

श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व अतिशय निगूढ़ है। देवीकी लीला-कथा भी दुर्बोध्य है। उनकी कृपाके बिना उनका तत्त्व, उनका लीला-रहस्य, उनकी महिमा समझने-समझानेकी शक्ति किसीमें नहीं है। प्रियाजीकी कृपा अतिशय दुर्लभ वस्तु है। श्रीगौराङ्गप्रभुकी कृपाकी अपेक्षा भी प्रियाजीकी कृपा दुर्लभ वस्तु है। ठाकुर वंशीबदन, श्रीईशान, दामोदरपण्डित प्रियाजीका कृपाकटाक्ष प्राप्तकर कृतार्थ हो गये थे। काञ्चनादि सखियाँ देवीकी कृपाकी पूर्णपात्री थीं।

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-भजन-निष्ठ साधकोंके सौभाग्यकी सीमा नहीं है। अनेक जन्मोंके पुण्योंके फलस्वरूप जीव श्रीभगवान्‌के मधुर भजनका अधिकारी बनता है, जो श्रीकृष्ण या श्रीगौराङ्गका भजन करते हैं, वे निश्चय ही भाग्यवान् हैं; परन्तु जो श्रीश्रीराधागोविन्द या श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगलका भजन करते हैं, वे परम भाग्यवान् हैं, श्रीश्रीराधागोविन्दका युगल-भजन जैसे व्रजलीलाका मूलमन्त्र है, श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-भजन भी उसी प्रकार नवद्वीप-लीलाका मूलमन्त्र है। परन्तु इस युगल-भजनका अधिकारी बननेके लिए प्रभूत साधनाकी आवश्यकता है। अनेक जन्मोंके अर्जित पुण्यके बलसे इस प्रकारका साधन-बल प्राप्त होता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृपालु पाठकवृन्द ! तत्त्वकी बात छोड़कर अब एक बार लीलामय प्रभुके लीला-तरङ्गमें डुबकी लगावें। तत्त्वकी बातको पूर्णतः छोड़ा नहीं जा सकता। पूज्यपाद कविराज गोस्वामीने लिखा है—

सिद्धान्त बलिया चित्ते ना कर अलस।
इहा हैते कृष्णे लागे सुदृढ़ मानस॥

चै. च. आ. १.२.९९

काल-रात्रि—गृह-त्याग

उस काल-रात्रिकी बात याद करिये। श्रीमती विष्णूप्रियादेवीको चतुर-चूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्‌ने रस-रङ्गके भुलावेमें डालकर निद्राग्रस्तकर दिया है। वे अपने प्राणवल्लभके प्रेमालिङ्गनमें आबद्ध होकर सुखसे नींद ले रही है; उनके मनका भाव कुछ भी नहीं जानतीं। कालरात्रिके बीतते-बीतते प्रभु धीरे-धीरे युगलभङ्ग करके उठे। किस प्रकार उठे—यह भी ग्रन्थमें लिखा है। यथा,

निद्रिता विष्णुप्रिया श्रीवामचरण।
पार्श्वे उपाधानोपरि करिया रक्षण॥
वक्षः स्थले निजगण्ड उपाधान दिया।
बाहिर हइला गोरा द्वार उद्‌घाटिया॥

(वंशी-शिक्षा)

निद्राभिभूता प्रियतमाके सुप्त सुन्दर मुखकी शोभाका प्रभुने आँखें भरकर एकवार अन्तिम दर्शन किया। प्रियाके निद्रित सुन्दर मुख-कमलकी ओर वे कुछ देर तक अन्यमनस्कभावसे देखते रहे। उसके बाद उन्होंने अपनी वक्ष-विलासिनीके निद्रित चन्द्र-वदनपर एक नीरव प्रेम-चुम्बन दान करके चुपचाप उनसे अन्तिम बिदा ले ली। नदियाके अवतार श्रीश्रीगौराङ्गसुन्दरके कमल-नयनके प्रान्तमें अश्रुप्रवाह दीख पड़ा। कहीं उनके आँसूके उष्ण-बिन्दु प्रियतमाके अङ्गपर गिरकर उनकी निद्रा-भङ्ग न कर दें, इस भयसे उन्होंने इच्छा न होते हुए भी अपना मुँह फेर लिया। शैयापर किनारे कुछ देर बैठकर मन-ही-मन कुछ सोचने लगे। थोड़ीही देरमें श्रीगौराङ्गसुन्दर पलंगसे चुपकेसे धीरे-धीरे उतरे उन्होंने पुनः एक बार निद्रित प्रियतमाके मुखचन्द्रकी ओर सतृष्ण नेत्रोंसे देखा। श्रीविष्णुप्रियादेवीके निद्रित मुखकी शोभामें अपूर्व सौन्दर्यराशि मानो उमड़ रही थी। उनकी अलस-श्रीअङ्ग-माधुरी, शिथिल-कवरी-शोभा. कमनीय पक्व-विम्बाधरकी अस्फुट निद्रित मुसकान, लज्जाहीन अवश श्रीअङ्ग-भङ्गिमा—प्रभुके गृहत्यागोन्मुख मनमें सदाके लिए दृढ़ अङ्कित हो गये। निद्रिता प्रियतमाकी अनन्त निद्रित-सौन्दर्यकी अपूर्व मधुरोज्ज्वल स्मृति लेकर श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र धीरे-धीरे शयन-कक्षका द्वार खोलकर घरसे बाहर निकले। आँगनमें खड़े होकर रातके वस्त्र उतार दिये। श्रीविष्णुका स्मरण करके गृह-देवताको साष्टाङ्ग प्रणाम किया और मृदु स्वरसे ताली बजाते हुए घरसे बाहर निकले। वहाँ आकर जननी और जन्मभूमिके उद्देश्यसे पुनः प्रणाम करके वे शीघ्रतापूर्वक गङ्गातटकी ओर चल पड़े।*

---

* कलिके निष्ठुर जीव प्रभुके इतने साधके गृहस्थाश्रमके सुखमें बाधक बन गये। बड़े दुःखके साथ हतभाग्य कलिके जीवको लक्ष्य करके ग्रन्थकारने एक पद लिखा था, उसे यहाँ उद्धृत किया जाता है।।

तोदेर लागिया, सोनार गौराङ्ग, यति वेषे बाहिरिल।
तोदेर कारणे, विषादित मने, गृह सुख तेयागिल॥
वृद्धा जननी, नवीना घरणी, सोनार से संसार।
तोदेर ज्वालाय, शची दुलालिया, करिल रे छार खार॥
हरिनाम यदि, लइतिस तोरा, ए काज कभू ना हत।
नदिया छाड़िया, कौपीन परिया, कभू नाहि गोरा जेत॥

(टिप्पणीका शेष अगले पृष्ठपर)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुके श्रीमन्दिरके बाहर उनके आदेशके अनुसार श्रीनित्यानन्दप्रभु तथा श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न प्रतीक्षा कर रहे थे। गृहत्यागके पश्चात् ये दोनों आदमी प्रभुके साथ रहे, यह बात श्रीपाद-कवि कर्णपुर गोस्वामी लिख गये हैं। श्रीश्रीनवद्वीप-चन्द्रके गृह-त्यागका समाचार सुनकर दूसरे दिन प्रातः काल जब शचीके आँगनमें नदियाके सब भक्तवृन्द एकत्रित हुए तो देखा गया कि उनमें ये ही दो आदमी अनुपस्थित थे। उस समय इनको न देखकर भक्तवृन्दने स्थिर किया कि निश्चय ही ये लोग प्रभुके साथ गये हैं। (श्रीचै. चन्द्रोदय नाटक चतूर्थाअङ्क)।

प्रभु अपने ज्येष्ठ भ्राता श्रीश्रीमद्विश्वरूपको स्मरण करते हुए ताली बजाते-बजाते गङ्गातटकी ओर चले। श्रीनित्यानन्दप्रभु और आचार्यरत्न चुपचाप श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके साथ हो लिये। किसीके मुँहसे कोई बात न निकली। गङ्गातटपर जाकर प्रभुने भक्तिभावसे गङ्गादेवीको प्रणाम करके श्रीहरिका स्मरण करते हुए गङ्गामें डुबकी लगायी। दोनों साथियोंने भी प्रभुका अनुगमन किया।

ठाकुर जयानन्दने लिखा है कि श्रीनित्यानन्द-प्रभु पहले गङ्गा पार करके प्रभुके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

"गङ्गा पार हैया आगे रैल नित्यानन्द।"

ज. चै. म.

श्रीवृन्दावन ठाकुरके मतानुसार प्रभुके साथ-साथ कोई नहीं गया था; अन्य लोग पीछे जाकर पहुँचे है यथा—

जारे जारे आज्ञा प्रभु करिया आछिला।
ताँहाराओ अल्पे अल्पे आसिया मिलिला॥
अवधूतचन्द्र, गदाधर, श्रीमुकुन्द।
श्रीचन्द्रशेखर-आचार्य, आर ब्रह्मानन्द॥

चै. भा. मध्य खण्ड, २६.१४५,१४६

कविराज गोस्वामीके मतानुसार केवल नित्यानन्द, चन्द्रशेखर आचार्य और मुकुन्द दत्त—ये तीन जन ही उस समय उपस्थित थे। यथा—

सङ्गे नित्यानन्द चन्द्रशेखर-आचार्य्य।
मुकुन्द दत्त—एइ तिन कैला सर्व्वकार्य्य॥

चै. च. आदि. १७.२६३

ठाकुर लोचनदासके मतसे भी ये सब लोग पीछे पहुँचे थे। यथा—

तबे नित्यानन्द लैआ जत भक्तगण।
युक्ति करे कोथा गेले पाब दर्शन॥
श्रीचन्द्रशेखर आचार्य पण्डित दामोदर।
वक्त्रेश्वर आदि करि चलिला सत्वर॥

(पिछले पृष्ठकी टिप्पणीका शेष)

सोनार संसारे, आगुन ज्वालिया, काँदाइया निज जन।
चले गेल दुःखे, गृह तेयागिये, दयामय भगवन्॥
चिनिल ना मूढ़! शचीर दुलाल, कलिकाल अवतार।
नदियार लीला, बुझिलि ना तोरा, नराधम दुराचार॥
ओरे रे मूढ़!
यदि से गौर, यतिना साजिया, करित नदिया-लीला।
भाग्गे तोदेर, दरशन हत, कत ना प्रेमेर खेला॥
देखतिस् तोरा, सोनार कमल, विष्णुप्रियार छेले।
गौरेर कोले, गौर-बालक किवा अपरूप खेले॥
नयन-आनन्द- नवद्वीप-लीला, अङ्कुरे घुचालि तोरा।
ताइ भेवे भेवे, दुःखी हरिदास, जीयन्ते हयेछे मरा॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एह सब लज्जा नित्यानन्द चलि जाय।
प्रबोधिया शची विष्णुप्रियार हियाय॥

चै. म. मध्यखण्ड

श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र नदिया-गगनको अन्धकारमय करके छिप गये। नदियावासी भक्तोंमें किसीको पता न लगा। अभी भी वह कालरात्रि समाप्त नहीं हुई थी। प्रभुने माघमासमें उत्तरायण मकर-संक्रान्तिके दिन गृह-त्याग किया था। गौर-भक्तवृन्दके लिए वह दिन बड़ा विषम दिन था। श्रीगौराङ्गप्रभुने स्वयं यह दिन निश्चय करके श्रीनित्यानन्दप्रभुको चुपकेसे बतला दिया था।

मध्ये पौषमास आछे माघ शुक्लपक्षे।
तृतीय दिवसे संन्यास करिब जेन देखे॥

प्रेमविलास

श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रने नवद्वीपमें अन्धकार करके, भक्तवृन्दको रुलाकर, शची-विष्णुप्रियाके कलेजेमें शूल मारकर गृह-त्याग किया था। उन्होंने जिस घाटसे गङ्गा-पार किया था, उसको 'निर्दय घाट' कहते हैं, नवद्वीपमें आज भी वह घाट वर्तमान है। इस गङ्गाघाटको यही नाम नवद्वीपके भक्तोंने दिया था।

गङ्गापार होकर प्रभु उन्मत्तकी भाँति कण्टक-नगरके रास्तेसे चले। ठाकुर जयानन्दने लिखा है कि प्रभुने मुकुन्ददत्त और गोविन्द कर्मकारको अपने सङ्ग चलनेका आदेश दिया था। मुकुन्ददत्त प्रभुके अति प्रियपात्र थे, उनके अन्तरङ्ग भक्त थे। प्रभुने उनसे गृह-त्यागके विषयमें सारी बातें कही थीं। गोविन्द कर्मकार प्रभुके निजी सेवक थे। प्रभु उनके ऊपर बड़ी कृपा करते थे। मुकुन्ददत्तको प्रभुने आदेश दिया था कि गोविन्दको साथ ले आना। गोविन्द कर्मकारने अपने करचामें लिखा है—

मुइ सङ्गी दास इव शुनिनू श्रवणे।
हृदय फाटिया जेन हैल दुइ खाने॥

गोविन्द कर्मकार

गोविन्द कर्मकारका यहाँ कुछ परिचय सुनिये। गोविन्दका बासस्थान जिलेके काञ्चननगरमें था। पिताका नाम श्यामदास था और माताका नाम माधवी। उन्होंने विवाह किया था। स्त्रीका नाम शशीमुखी था। वह बड़ी मुखरा थी। एक दिन पति-पत्नीमें सांसारिक बातको लेकर झगड़ा हो गया। उनकी मुखर स्त्रीने कटु वचन कहकर उनको गाली दे डाली। स्त्रीसे अपमानित होकर गोविन्दने १४२७ शकमें गृह-त्याग किया था। गोविन्द गृह-त्याग करके कण्टकनगरमें आये। वहाँ उन्होंने नदियाके अवतार श्रीगौराङ्ग प्रभुका नाम सुनकर उनके श्रीचरणोंके दर्शनका अभिलाषी बनकर नवद्वीपमें पदार्पण किया। गङ्गाके पारसे नदियाके घाटपर श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रको पार्षदोंके साथ स्नान करते देखकर उनके अपरूप रूपसे वे मुग्ध हो गये तथा उनके चरण-कमलमें आत्मसमर्पण किया। दयाके सागर श्रीगौराङ्गप्रभुने कृपा करके उनको अपने दासके रूपमें अङ्गीकार किया। तभीसे गोविन्द ईशानके साथ प्रभुके गृहकार्यमें लग गये प्रभुकी सेवा, उनके गृहकार्यको सँभालना, उनकी माता और गृहिणीकी देखभाल, अतिथि-अभ्यागतकी सेवा-परिचर्या—ये ही गोविन्दके काम थे। प्रभुके मन्दिरमें जानेपर शचीमाता और श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको उन्होंने किस रूपमें देखा था? इसका वर्णन करते हुए वे अपने करचामें लिखते हैं—

शान्त मूर्त्ति शची देवी अति खर्वकाय।
निमाइ निमाइ बलि सदा फुकारय॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विष्णुप्रिया देवी हेन प्रभुर घरनी।
प्रभुर सेवाय व्यस्त दिवस-रजनी॥
लज्जावती विनयनी मृदु-मृदु आस।
मुञि हइलाम गिया चरणेर दास॥
एइ रूपे शचीगृहे दास हइया थाकि।
ना बलिते सर्व्वकर्म समापिया राखि॥

यह गोविन्द कर्मकार प्रभुके दक्षिण-देश-भ्रमणके समय उनके साथ रहे। श्रीश्रीमन्महाप्रभुकी दक्षिणदेशकी भ्रमण-कथा उन्होंने अति सुन्दरभावसे अपने करचामें वर्णनकी है। वे सब लीला-कथाएँ विस्तृतरूपसे यथास्थान वर्णित होंगी।

कण्टकनगरकी ओर

गङ्गा-पार करके श्रीगौराङ्गप्रभु बहुत तड़के कण्टकनगरी*की ओर चल पड़े। साथमें नित्यानन्द प्रभु, चन्द्रशेखर आचार्यरत्न, मुकुन्ददत्त और गोविन्द कर्मकार चार आदमी थे। माघ महीनेकी कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही थी। गोविन्दके पास शुष्क वस्त्र, गमछा आदि सब-कुछ था। प्रभुके गङ्गापार होते ही गोविन्द शुष्क वस्त्र लेकर उनके सामने खड़े हो गये। प्रेमोन्मत्त प्रभु इसपर कुछ ध्यान न देकर रास्तेकी ओर बढ़े। माघमासकी कड़ाकेकी सर्दीमें गीला वस्त्र पहने, खुले गीले केशमें, कनक-कान्ति श्रीगौराङ्गसुन्दर कृष्ण-प्रेमानन्दमें ऊर्ध्वबाहु होकर उच्च स्वरसे 'हरे कृष्ण' नाम-कीर्तन करते हुए कण्टकनगरके मार्ग पर चले जा रहे हैं।

रास्तेके दोनों ओर विस्तीर्ण श्यामल शस्यक्षेत्रमें प्रकृतिकी अपरूप शोभा देखते-देखते प्रभुके मनमें श्रीवृन्दावनकी स्मृति जाग उठी। वे कृष्णप्रेममें विह्वल हो उठे। उनकी द्रुतगति देखकर साथी लोग पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं। कोई बात करनेका साहस नहीं कर रहा है। प्रभुने अब अपने भ्रमर-कृष्ण कुटिल-कुन्तल-राशिको समेट करके झूँटी बाँध ली; घने काले घुँघराले केश सामने मुँहपर गिरकर उनकी दोनों आँखोंको ढक लेते थे, इससे तेज चलनेमें बाधा पड़ती थी। अपनी आजानुलम्बित दोनों भुजाएँ कभी ऊपर उठाते थे, कभी निम्न-भागमें झुलाते हुए बारंबार आन्दोलित करते हुए जाते थे। कभी अतिशय सावधानीसे चौड़े वक्षः-स्थलकी रक्षा करते थे। प्रभुका वेष मानो मथुराके मल्लके समान था। मदमत्त हाथीके समान पैरोंके भारसे पृथिवीको कम्पित करते हुए वे द्रुतगतिसे रास्तेपर जा रहे थे। प्रेममें भरकर अविरल अश्रु वर्षण हो रहा था। वे श्रीराधिकाके विरहभावमें विभोर थे। उनको कुछ भी बाह्य ज्ञान न था। इस प्रकार अपूर्व प्रेमावेशमें श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र कण्टक-नगरके रास्तेपर जा रहे थे।

क्रमशः बाल-सूर्यकी तरुण-अरुण किरणोंसे पृथ्वी अनुरञ्जित हो उठी। श्यामल शस्यक्षेत्रमें तथा तरु-राजिमें पत्ते-पत्तेपर अरुणवर्ण चित्रित हो गया। सूर्योदय होनेपर जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, कीट-पतङ्ग-सभी जागकर अपने-अपने कण्ठस्वरसे प्रेमभरे सर्वनियन्ता परमेश्वरकी जय-गीति गाने लगे। समस्त जगके जीवोंको प्रेममें निमज्जित करके मधुर कण्ठसे प्रभुने कीर्तनका सुर पकड़ा—

हरि हरये नमः कृष्ण यादराय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन॥

श्रीनित्यानन्दप्रभु, आचार्यरत्न, मुकुन्ददत्त आदि सभीने प्रभुके सहित कीर्तनमें योगदान किया। प्रभात गगनको भेदकर उच्चकीर्तनकी ध्वनि दिगन्तमें फैल गयी। रास्तेमें गाँवोंके आबाल-वृद्ध-वनिता

---

* बंगालके वर्द्धमान जिलेमें वर्तमान कटवा (बंगालीमें काटोया) नगर। इसीको कण्टकनगर अथवा काञ्चननगर भी कहते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभाती-कीर्तनकी ध्वनि सुनकर आकृष्ट हो-होकर दलके-दल प्रभुके पास मैदानके रास्तेसे आ-आकर उपस्थित हो गये। पशु-पक्षी-सब स्थिर होकर मधुर कीर्तन सुनने लगे। सबलोग श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रके अपरूप-रूपका दर्शन करके, मुग्ध होकर एकटकसे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गका निरीक्षण करने लगे। ऐसा रूपवान् मनुष्य उन्होंने कभी देखा न था; ऐसा अपूर्व सौन्दर्यपूर्ण, सर्वलक्षणयुक्त, सुगठित अङ्ग-प्रत्यङ्ग मनुष्यको होता है, यह उनको पता न था। मनुष्यकी इस प्रकारकी कनक-कान्ति, इस प्रकारका अङ्ग-सौष्ठव, ऐसी अपूर्व केशकी शोभा, ऐसी नयन-भङ्गिमा, इस प्रकारकी सुन्दर कण्ठध्वनि, उन्होंने जीवनमें कभी नहीं देखी थी, न कभी सुनी थी। श्रीगौराङ्गप्रभु अपने मनसे प्रेमोन्मत्तभावमें चले जा रहे थे। उनके श्रीमुखसे अविराम हरि-ध्वनि हो रही थी, आँखोंसे अविरल प्रेमाश्रु प्रवाहित हो रहा था, किसी ओर उनकी दृष्टि न थी।

नाम-गानमें मत्त होकर वे ऊर्ध्ववाहु हो द्रुतगतिसे कण्टकनगरकी ओर जा रहे थे। आस-पासके गाँवोंके अधिकांश लोग प्रभुके साथ-साथ चलने लगे थे। पशु-पक्षी भी उनके साथ जा रहे हैं; श्रीभगवान्‌के रूपमें इतना आकर्षण है। कोई प्रभुको छोड़कर अपने घर लौटना नहीं चाहता। सभी अपना कार्य भूलकर, देहधर्म भूलकर, वाह्य ज्ञानशून्य होकर प्रभुका अनुसरण कर रहे हैं।

जन-समूह क्रमशः बढ़ने लगा। गाँव-गाँवके लोग आकर कण्टकनगरके रास्तेमें एकत्रित हो गये। सबके मुँहसे हरिध्वनि हो रही थी, सब आज मानो किसी नये भावमें मतवाले हो रहे थे। श्रीश्रीनवद्वीप-चन्द्र सबके आगे अपने सङ्गी-साथियोंको लेकर आजानुलम्बित सुवलित दोनों भुजाएँ ऊपर उठाये वाह्य ज्ञानशून्य होकर उच्च संकीर्तन करते हुए मधुर नृत्यावेशमें चले जा रहे हैं। उनके पीछे-पीछे सहस्रों नर-नारी उन्मत्त होकर जा रहे हैं। सबकी दृष्टि प्रभुकी सुदीर्घ सुन्दर श्रीमूर्तिकी ओर है। सभी मन्त्र-मुग्धवत् आत्मविस्मृत हो पीछे-पीछे चले जा रहे हैं।

कण्टकनगरमें

उस दिन मध्याह्नकालमें नदियावासियोंके प्राण-गौराङ्ग कण्टकनगरमें जा पहुँचे। ब्रह्मानन्द और गदाधरपण्डितको भी प्रभुने वहाँ आनेका आदेश दिया था। सब मिलाकर पाँच साथियोंको लेकर नदियाके अवतार संन्यास-ग्रहण करनेके लिए कण्टक-नगरमें जा पहुँचे। गोविन्द कर्मकार इनके साथ भृत्यके रूपमें आये थे। यह नगर गङ्गाके तटपर अवस्थित है। उन दिनों यह स्थान वहुत जनाकीर्ण था।

प्रभु माघमासकी शुक्लपक्षत्रयोदशी तिथिमें कण्टकनगरमें आकर उपस्थित हुए थे। वे गङ्गाके तटपर एक वटवृक्षके तले छायामें बैठ गये। श्रीनित्यानन्दप्रभु आदि उनके साक्षी प्रभुके पादमूलमें बैठकर उनके पथ-श्रम-क्लान्त अश्रु-सिक्त श्रीमुखचन्दका अवलोकर करने लगे। वे लोग सोच रहे थे कि नवद्वीपमें शची-विष्णुप्रिया आज किस अवस्थामें होंगी? शचीमाताके अञ्चलकी निधि, विष्णुप्रियाका प्राणधन, नदियावासियोंका जीवन-सर्वस्व-धन आज पथका भिखारी है, वृक्षतलवासी है। प्रभुके श्रीवदनकी ओर वे भली-भाँति ताक भी नहीं सकते हैं, दुःखसे उनका हृदय फटा जा रहा है।

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न वदन अवनत करके अजस्र आँसू बहा रहे हैं। वे प्रभुके मौसा हैं। पुत्र समझकर पितृहीन प्रभुका उन्होंने लालन-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पालन किया है। वे प्रभुके श्रीवदनकी ओर और भी नहीं देख पा रहे हैं।

प्रभु चतुर्दिक दृष्टिपात कर रहे हैं। उनके कमल-नयनद्वयसे झर-झर प्रेमश्रुधारा बहती जा रही है। गङ्गाके घाटपर काञ्चननगरवासी सहस्रों नर-नारी स्नान करने आये हैं। वृक्षके नीचे बैठे हुए प्रेमाश्रुसे परिलुप्त शरीर श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी अपरूप-रूप-माधुरी देखकर वे विस्मयसे आँखें फाड़-फाड़कर उनके चन्द्र-वदनकी ओर एकटक देख रहे हैं। ऐसा सर्वचित्तहारी अपरूप-रूप उन्होंने कभी देखा न था। ऐसे अनिन्दित सुन्दर अङ्ग-सौष्ठवसे युक्त रूपवान् मनुष्य तथा ऐसी कषित-काञ्चनको भी मात करनेवाली अपरूप अङ्गकान्ति उन्होंने पहले कहीं देखी न थी। वे लोग देखते हैं, मानो कोटि सूर्यके समान तेजस्वी, कोटिचन्द्रके समान माधुर्यपूर्ण किसी अपूर्व ज्योतिर्मय दिव्य-मूर्तिका वृक्षके तले अधिष्ठान हुआ है।

कोखमें कलसी लिये घूँघटवाली पुरनारियाँ रूपनिधि श्रीगौराङ्गसुन्दरकी अपरूप-रूप-माधुरी अनिमेष लोचनसे देख रही हैं। वे रूपसे मुग्ध होकर मानो जड़वत् हो गयी हैं। कलसी कोखमें लिये खड़ी हैं, एक डग भी चल नहीं पाती हैं। वे अपरूप-श्रीगौराङ्ग-रूप-सागरमें डूब रही हैं। उनको बाह्य ज्ञान नहीं है। घूँघट हट गया है, परपुरुषके अङ्गसे उनका अङ्गस्पर्श हो रहा है, इस ओर उनका कुछ भी ध्यान नहीं है, कुछ परवाह भी नहीं है। उनकी दृष्टि केवल प्रभुके अश्रुसिक्त सुन्दर मुख-चन्द्रकी ओर है।

कोई अति मृदु स्वरमें सङ्गकी सखीसे कह रही है—"ऐसा रूपवान् पुरुष तो कभी देखा नहीं।" कोई कह रहा है—"धन्य है वह देश जहाँ इन्होंने जन्म-ग्रहण किया है।" कोई कहता है—"बहुत भाग्यवती इनकी वक्षविलासिनी नारी है। बहुत जन्मोंकी सुकृतिके बलसे उन्होंने ऐसा स्वामीरत्न प्राप्त किया है। धन्य हैं इनके माता-पिता।

सबने सुन लिया है कि यह गृह-त्याग करके संन्यास-ग्रहण करने आये हैं। माता-पिताको वध करके, नारीके कलेजेमें चाकू मार करके जान पड़ता है, ये लुक-छिपकर भाग आये हैं।"

बड़ी-बूढ़ी स्त्रियाँ प्रभुके सामने जाकर स्नेहपूर्वक उनसे बातें करके अपने हृदयका संताप मिटाती हैं। वे रोती-रोती प्रभुका हाथ पकड़कर कहती हैं—"बेटा! तुम घर लौट जाओ। ऐसे सुन्दर केशपाश मुँड़ाकर संन्यासी न होना बेटा!"

अश्रुसिक्त नयनोंसे प्रभु हाथ जोड़कर उत्तर देते हैं—"माताओ! आशीर्वाद दें कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो! मनमें बड़ी साध है कि अपने जीवनधन श्रीकृष्णके चरणोंमें यह मस्तक विक्रय कर दूँ।" यह बात कहकर प्रभु अजस्र अश्रु बहाने लगे। किसीने फिर और कोई बात कहनेका साहस नहीं किया।

केशवभारतीकी कुटियापर

वृक्षतले कुछ देर विश्राम करसे प्रभु चकित-से होकर उठे। उनके साथी भी साथ-साथ उठे। मत्तसिंहके समान द्रुत-गतिसे प्रभु केशव भारतीकी कुटीके पास जा उपस्थित हुए।

भारती महाशयको देखते ही प्रभुने उनको दण्डवत्-प्रणाम किया। उन्होंने झटपट उठकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नारायणस्मरणपूर्वक प्रभुको आदरके साथ बैठनेके लिए आसन दिया। इस महापुरुषके साथ नवद्वीपमें ही प्रभुका परिचय हुआ था; दोनों एक-दूसरेको देखकर प्रसन्न हो गये। प्रभुने भारती महाशयको कोई बात कहनेका अवसर न देकर प्रेमाश्रुनयनसे हाथ जोड़कर उनके सामने अपने मनकी बात निवेदन की—"महाराज! आप पतितपावन और महाकृपामय हैं, मुझपर अनुग्रह कीजिये, मेरे प्राणनाथ श्रीकृष्णको मिला देनेमें आप समर्थ हैं, श्रीकृष्ण तो सदा ही आपके साथ रहते हैं। मुझे ऐसा उपदेश दीजिये जिससे मैं सब-कुछ छोड़कर श्रीकृष्णका ही दास बन जाऊँ।"

यह बात बोलते-बोलते प्रभुके हृदयसिंधुमें कृष्ण-विरहकी प्रबल तरङ्ग उठी। वे अब स्थिर न रह सके। हुंकार-गर्जन करके प्रेमावेशमें वे उद्दण्ड नृत्य करने लगे। मुकुन्द आदि भक्तोंने कीर्तनका सुर पकड़ा—

'गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन।'

श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्रकी मधुर नयन-रञ्जन नृत्य-भङ्गिमा देखनेके लिए कटोयावासी आबाल-वृद्ध-वनिता भारती महाशयकी कुटियाके सामने इकट्ठे हो गये। भीड़ धीरे-धीरे बढ़ने लगी। प्रभुका भुवनमङ्गल अद्भुत प्रेम-नृत्य-दर्शन करके सबका चित्त प्रेमरससे आप्लुत हो गया। प्रभुके अश्रुपूर्ण चन्द्र-वदनसे वे दृष्टि हटा नहीं पाते थे, अतृप्त नयनोंसे उनकी रूपसुधाका पान करने लगे। प्रभु घूम-घूमकर अपनी क्षीण कटि डुलाकर प्रेममग्न हो मधुर नृत्य कर रहे हैं; उनके अङ्ग प्रत्यङ्गकी माधुरीसे दर्शकवृन्दका मन आकर्षित हो रहा है। उनके कमल-नयन-द्वयसे जो अविरल प्रेमाश्रुधारा बह रही है, उसमें सबलोग मज्जित हो रहे हैं। प्रभुके नयनोंसे प्रेम-मन्दाकिनीकी अविश्रान्त धारा प्रवाहित हो रही है। भीषण भीड़की उच्च हरि-ध्वनिसे गगन-मण्डल विदीर्ण हो रहा है।

अकथ्य अद्भुत धारा प्रभुर नयने।
ताहा कि कहिते पारे अनन्त वदने॥
पाक दिया नृत्य करिते जे छूटे जल।
ताहातेइ लोक स्नान करिल सकल॥
सर्वलोक तितिल प्रभुर प्रेमजले।
स्त्री-पुरुषे, बाल-वृद्धे 'हरिहरि' बले॥

चै. भा. म. २६.१५७—१५९

अन्तिम पयारका मार्मिक अर्थ है। प्रभुके नयनके प्रेम-जलसे सबलोग मज्जित हो गये, इस बातका गूढ़ मर्म है। प्रभुके प्रेमनृत्यको देखकर, उनके कमल-नयनमें अविरल अश्रुधारा देखकर उपस्थित नर-नारीवृन्द प्रेममें भरकर आकुलतापूर्वक रोने लगे। प्रेममय श्रीगौर-भगवान्‌की कृपादृष्टिसे उनको अमूल्य प्रेमधन प्राप्त हुआ। नयन-जलसे उनका वक्षःस्थल भीग गया। प्रेममय श्रीगौर-भगवान्‌की अपूर्व प्रेममूर्ति दर्शन करके उनके हृदयमें निर्मल प्रेमभाव उदय हुआ। हृदयमें प्रेमभावके उदय हुए बिना नयनोंसे प्रेमाश्रुधारा प्रवाहित नहीं होती। उपस्थित नर-नारीवृन्द प्रेममें भरकर आकुल होकर रोने लगे। उन्होंने अपने नयन-जलसे आप स्नान कर लिया। प्रभुके कमल-नयन-जलकी तरङ्गके साथ उनके नयन-जलकी तरङ्गें मिलनेसे प्रेम-मन्दाकिनी बह चली। उससे सब प्रेमानन्दमें स्नान करने लगे।

उनके रोनेका एक और भी कारण था। प्रभुके आत्यन्तिक आर्तिपूर्ण दास्यभावसे वे पूर्णतः मुग्ध थे। अनन्तब्रह्माण्डनाथ दास्यभावमें सबलोगोंके सामने रो-रोकर भक्तिकी भिक्षा माँग रहे हैं, यह करुण दृश्य देखकर किसका मन स्थिर रह सकता था? काटोयावासी नर-नारीके सौभाग्यकी सीमा न थी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस नयन-जलसे ही उनको सर्वसिद्धि प्राप्त हो गयी। प्रेमभक्तियोगका यही लक्षण है।

प्रभु संन्यास-ग्रहण करेंगे, उनकी नयी उम्र है। उन्होने सुना कि प्रभुकी वृद्धा माता और नवीना गृहिणी वर्तमान हैं। यह सुनकर उनके दुःखकी सीमा न रही। महा शोकाकुल होकर वे लोग परस्पर बातें करने लगे—"इनकी माँ कैसे प्राण रख सकेंगी। क्या उस बेचारीकी कालरात्रि आ पहुँची? वह कौन पुण्यवती होगी, जिसको ऐसी निधि प्राप्त हुई? उस बेचारीका ऐसा क्या दारुण दोष हुआ कि विधाताने उससे इनको अलग कर दिया? जब इनको देखकर हमारे ही प्राण विदीर्ण हो रहे हैं, तब इनकी भार्या और जननीके प्राण कैसे टिकेंगे?"

कुछ देरके बाद प्रभुने नृत्य-संवरण किया। प्रेमभावमें गद्‌गद होकर वे भारतीके सामने बैठ गये। उनके दोनों ओर सङ्गी लोग बैठे। तब भारतीजी प्रेममें गद्‌गद होकर प्रभुको सम्बोधन करके कहने लगे—"मैं तुम्हारी जो स्थिति देख रहा हूं, ऐसी ईश्वरके बिना किसीमें होनी सम्भव नहीं है। निश्चय ही तुम जगद्‌गुरु हो, तुम्हारा गुरु बननेकी योग्यता किसीमें नहीं हो सकती। तो भी तुम लोक-शिक्षाके लिए मुझे गुरु बनाना चाहते हो, ऐसा प्रतीत होता है।"

प्रभुका दास्यभाव है। वे अत्यन्त विनीतभावसे हाथ जोड़कर रोते-रोते कहने लगे—

माया ना करिह मोरे कराह संन्यास।
तोर परसादे मुञि हङ कृष्ण-दास॥

चै. म.

यह बात कहते-कहते प्रभुके कमल-नयन-द्वयसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा बहने लगी। उनका प्रशस्त वक्षःस्थल नयन-जलमें डूब गया उनके सारे अङ्ग भावमय दीखने लगे। भावनिधि श्रीगौराङ्गसुन्दर श्रीकृष्णप्रेममें उन्मत्त हो गये। उनके नयन-द्वयसे एक अपूर्व ज्योति निकलने लगी। वे बैठे थे, हुंकार गर्जन करके उठे, मेघ-गर्जनके स्वरमें बारम्बार हरिध्वनि करने लगे। क्षण-क्षणमें भावनिधि प्रभुके भाव बदलने लगे। कभी वे श्रीवृन्दावनभावमें विभावित होकर त्रिभङ्ग-भावसे खड़े होकर 'वंशी-वंशी' कहकर उच्च स्वरसे आह्वान करते हैं; तत्काल पुनः मानो गोपीभावमें विभावित होकर रासमण्डलके बीच गोपीजन-वल्लभ श्रीकृष्णके दर्शनाभिलाषी होकर इतस्ततः देखते हैं। कभी श्रीगोवर्द्धन या श्रीराधाकुण्डका नाम लेकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो रहे हैं।

भारतीजी भावनिधि प्रभुके ये समस्त प्रेम-विकार-भाव लक्षण देखकर विस्मित हो उठे। उनके मनमें एक विषमचिन्ताका स्रोत प्रवाहित हो उठा। वे मन-ही-मय सोचने लगे—"मेरे मनमें हो रहा है, ये तरुण, कनक-कान्ति, नदियाके ब्राह्मण-बालक प्राकृत मनुष्य नहीं हैं। ये जगद्‌गुरु साक्षात् श्रीकृष्ण हैं। मुझको ठगनेके लिए यहाँ आये हैं।"

मनकी बात मनमें ही छिपाकर भारतीजी स्नेहपूर्वक बोले—"विश्वम्भर! तुम्हारा यह सुन्दर शरीर, यह तरुण वयस् जीवनमें कभी दुःख-क्लेश नहीं देखा, अभी कोई संतान भी नहीं हैं, तुमको संन्यास देते मेरा हृदय काँपता है। पचास वर्षकी अवस्थाके पश्चात् रागकी निवृत्ति हो जायगी, तब संन्यास युक्ति-मुक्त हो सकता है, अभी नहीं।"

भारतीजीकी यह बात सुनकर प्रभु अत्यन्त दुःखित हुए। वे सर्वज्ञ हैं, भारती महाशयके मनका भाव जान गये। दास्यभावमें आर्तिपूर्ण, अश्रुयुक्त नयनोंसे प्रभु हाथ जोड़कर भारतीजीके चरणोंमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कातर स्वरसे निवेदन करने लगे—"हे न्यासी शिरोमणे ! ऐसी बात मत कहिये। आपके बिना धर्माधर्म-तत्त्व कौन जानता है। संसारमें मनुष्य-जन्म अत्यन्त दुर्लभ है। उसमें भी परमधर्म श्रीकृष्ण-भक्ति और भी दुर्लभ है। भक्तजनोंका सङ्ग भी अत्यन्त दुर्लभ है। मनुष्य-देह क्षणभरमें नाशको प्राप्त हो सकता है। यदि संन्यासमें विलम्ब किया गया और तबतक यह शरीर चला गया तो फिर वैष्णव-सङ्ग कहाँ मिलेगा ?"

प्रभु भारती महाशयका चरण पकड़कर रोते-रोते पुनः कहने लगे—"भगवन् ! आपके सामने मैं क्या बोल सकता हूँ। आप तो सब-कुछ जानते हैं। कृपा करके मुझको भव-बन्धनसे मुक्त कर दीजिये। मुझको संन्यास-मन्त्रमें दीक्षित करके कृतार्थ कीजिये।"

भारतीजी बड़ी विपद्में पड़ गये। उनको बड़ी चिन्ता हो गयी—"ये जगद्गुरु, जगत्के नाथ मुझे गुरु बनाकर मेरे आगे हाथ जोड़ेंगे, यह तो अच्छी बात नहीं है।" अवनतसिर होकर कुछ देरतक चिन्तन करके भारतीजीने स्नेहपूर्वक प्रभुसे कहा—"बापू ! यदि तुमने संन्यास-आश्रम ग्रहण करनेका दृढ़ संकल्प कर लिया है तो एक बार घर जाकर सबके सामने अपनी वृद्धा माता और नवीना गृहिणीसे विदा लेकर आओ ! सबको समझा-बुझाकर मेरे पास आओ ! तब मैं तुम्हें संन्यास-मन्त्रमें दीक्षित करूँगा।"

भारतीजीने मनके सोचा कि प्रभुको किसी भी प्रकारसे एक बार काटोयासे विदा करके मैं यहाँसे कहीं अन्यत्र चला जाऊँगा। इसके सिवा इस विपद्से उद्धार पानेका और कोई उपाय नहीं है। प्रभुको संन्यास देनेके लिए पहले भारतजीके मनमें नहीं हो रहा है; अतएव मन-ही-मन आसन त्यागनेका संकल्प करके प्रभुको एक बार नदिया हो आनेका परामर्श दे रहे हैं। सर्वान्तर्यामी श्रीगौर-भगवान् उनके मनकी बात जानकर मुस्कुराते हुए बोले—"भारतीजी ! आपके आदेशका पालन मैं करूँगा। आप मुझपर कृपा करके भव-बन्धनसे मुक्त करिये।" इतना कहकर प्रभु तत्काल वहाँसे उठे और भारतीजीको प्रणाम करके नदियाके पथकी ओर दौड़ चले।

प्रभुको नदिया भेजनेका एक और कारण था। भारतीजीने सोचा कि कदाचित् घरपर जाकर वृद्धा माता और तरुणी भार्याकी दारुण अवस्था देखकर प्रभुका मन फिर जाय। प्रभुको घरपर रखनेके लिए ही भारतीजीने ऐसा आदेश दिया।

प्रभुको नवद्वीप लोटते हुए देखकर भारतीजी फिर मन-ही-मन सोचने लगे—"जिनके लोमकूपमें अनन्त ब्रह्माण्ड रहते हैं, उसको भगाकर मैं किस देशमें जाऊँगा। मैं कितना भ्रान्त-मति हूँ कि मुझे वास्तविकता भी नहीं दीखती। सभीके जीवन तो ये ही हैं, ये ही तो सबके साथी हैं।" यह सोचकर आसनसे उठकर द्रुतगतिसे बाहर जाकर उन्होंने प्रभुको पुनः पुकारा। सर्वज्ञ-चूड़ामणि प्रभु तत्काल लौट आये। भारतीजीकी कुटीके द्वारपर आकर उनको प्रणाम करके उन्होंने पुनः आसन ग्रहण किया। तब भारतीजी प्रभुको एकान्तमें बुलाकर अनुनय-विनय करते हुए बोले—"बाप विश्वम्भर ! तुमको संन्यास देते बड़ा डर लगता है, तुम जगत्के गुरु हो, तुम्हारा गुरु कौन हो सकता है ? यह झूठी विडम्बना क्यों करते हो ?"

नदियाके ब्राह्मणकुमार क्या वस्तु हैं, यह प्रभुकी कृपासे भारतीजी जानते थे; इसी कारण उन्होंने उनको अति स्पष्ट भाषामें अपने मनके भाव निष्कपट होकर कह डाले।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्वज्ञ गौराङ्गप्रभु सब-कुछ जानते थे। वे कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं, भक्त-भाव अङ्गीकार करके नदियामें शचीके गर्भसे आविर्भूत हुए हैं। बीच-बीचमें प्रयोजन होनेपर वे भगवान्‌भाव तो प्रकट करते थे, परन्तु उसको वे अङ्गीकार नहीं करते थे। इस समय प्रभुका पूर्ण भक्त-भाव था। भारतीजीकी बात सुनकर व्याकुलभावमें रोते हुए प्रभु उनके चरण पकड़कर कहने लगे—"भगवन्! मैं आपका शरणागत दास हूँ। आप मुझको ऐसी बात क्यों कहते हैं? मैंने आपके चरणोंमें अपना सिर बेच दिया है। प्राण चला जाय तो भी मैं आपके चरणोंका आश्रय नहीं छोड़ूँगा। आपकी सेवामें मेरा एक निवेदन हैं, सुनिये! एक दिन रातमें मैंने स्वप्न देखा कि किसी ब्राह्मणने मेरे कानमें संन्यास-मन्त्र प्रदान किया है।" इतना कहकर श्रीगौर-भगवान्‌ने भारतीजीके कानमें चुपके-से वह मन्त्र कह सुनाया। प्रकारान्तरसे प्रभु इस प्रकार स्वयं पहले श्रीपाद केशव भारतीके मन्त्रगुरु हो गये।

भारतीजीके कानोंमें सिद्धमन्त्र प्रविष्ट होते ही उनके सारे अङ्ग पुलकित हो उठे! नयनोंसे प्रेमाश्रुधारा बह चली। वे प्रेमोन्मत्त होकर श्रीश्रीराधागोविन्द, श्रीवृन्दावन और श्रीयमुनाका नाम लेकर उच्च स्वरसे क्रन्दन करने लगे। उनके मनमें श्रीवृन्दावनका भाव उदय हुआ। भारतीजीने देखा कि नदियाके ये ब्राह्मणकुमार साक्षात् ब्रजेन्द्रनन्दन हैं। यह भी समझ लिया कि प्रभु अपनी लीलाके उद्देश्यसे कलिके जीवोंके उद्धारके लिए संन्यास-ग्रहण करेंगे। इन्हें कोई निवारण नहीं कर सकता। तब भारतीजीने अपना कर्तव्य समझा और प्रभुको सम्बोधन करके बोले—

"संन्यास कराब तोमा शुनइ निमाइ।"

प्रभु यह बात सुनकर प्रेमानन्दमें हरिध्वनि करके नृत्य करने लगे। उनके श्रीअङ्ग पुलकसे पूर्ण हो गये, कमल-नयन-द्वयसे प्रबल वेगसे पुलकाश्रु-धारा प्रवाहित हो उठी। वे आनन्दमें विह्वल होकर मधुर नृत्य करने लगे। साथियोंने कीर्तनका सुर पकड़ा। प्रभुके नृत्य प्रारम्भ करते ही भक्तवृन्द कीर्तनका सुर पकड़ते थे। बारंबार हरिध्वनिसे भारतीजीकी कुटिया भर गयी।

इसी समय नवद्वीपसे नरहरि ठाकुर आकर गदाधरपण्डितसे मिले। श्रीगौराङ्गके विरहमें विह्वल होकर रोते-रोते वे नवद्वीपसे भागकर गौराङ्गके अन्वेषणके लिए बाहर निकले हैं। वे रोते-रोते प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। प्रभु नृत्य-संवरण करके, उनको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके, कृतार्थ करते हुए मधुर वचन बोले—"तुम आ गये, अच्छा हुआ। श्रीकृष्णके अनुग्रह-हेतु ही तुमलोग आ मिले हो। तुमलोग सदा मेरे साथ रहे हो, तुमलोगोंको देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।"

गदाधर और नरहरि, इन दोनोंको लक्ष्य करके प्रभुने यह बात कही। परम करुणामय श्रीगौर-भगवान्‌के मुख-चन्द्रकी ओर देखकर गदाधर और नरहरि व्याकुल होकर रो पड़े।

प्रभुने उनके पास जाकर अपना पद्म-हस्त उनके शरीरपर फेरकर उनको सान्त्वना दी। तब दोनों आदमी प्रभुके दोनो बगल बैठ गये। भारतीजीकी कुटियामें आज अपूर्व शोभा हुई। श्रीगौरसुन्दरके बाँये बगलमें गदाधर, दाहिनी ओर नरहरि सामने श्रीनित्यानन्दप्रभु तथा अन्यान्य भक्तवृन्द बैठे थे। गदाधर साक्षात् श्रीराधा-शक्ति थे और नरहरि ब्रजकी मधुमति। ब्रज-माधुरी वहाँ सुस्पष्टभावमें परिलक्षित हुई। सबके नयनोंमें प्रेमाश्रुधारा थी। सभीके मुखके भाव मलिन थे। श्रीकृष्ण-विरहमें श्रीमती वृषभानुनन्दिनी सखियोंके साथ मानो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुञ्जमें अपने नागरमणिके आगमनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। रसिकशेखर नागरमणि नन्दनन्दनको न देखकर सभी एक साथ अजस्र आँसू बहाती हुई रुदन कर रही हैं। सभी सखियाँ श्रीराधिकाजीके दुःखसे म्रियमाणा हो रही हैं। भारतीजीकी कुटियामें मानो आज उसी श्रीवृन्दावनस्थ निभृत संकेत-केलि-कुञ्जका मधुमय दृश्य परिलक्षित हो रहा है। प्रभु राधाभावमें विभावित होकर भक्तवृन्दके साथ मर्मकी बातें कर रहे हैं। श्रीकृष्ण-विरहमें उनका हृदय जर्जरित हैं, मन उदास हैं और प्राण छटपटा रहे हैं। उनको कदापि शान्ति नहीं प्राप्त हो रही है।

कण्टकनगरवासी सहस्रों नर-नारी वहाँ आकर उपस्थित हो गये हैं; उन्होंने ऐसा करुण दृश्य कभी देखा नहीं। वे लोग सोच रहे हैं कि भारतीजी ऐसे तरुणवयस्क परम सुन्दर ब्राह्मणकुमारको किस कलेजेसे दण्ड-कमण्डलु देंगे? इनके क्या हृदय नहीं है? सबके मनमें यही एक भाव है। वे सभी भारतीजीको खुलकर गालियाँ देने लगे। ठाकुर लोचनदासने लिखा है—

कण्टक नगरेर लोक देखिवारे धाय।
जे देखये तार हिया नयन जुड़ाय॥
किवा वृद्ध किवा अन्ध कि नारी-पुरुष।
किवा पण्डितजन ए गण्ड मुरुख॥
शिशुगण धाय आर कुलेर युवती।
निज छाया नाहिं देखे हेन रूपवती॥
काँखे कुम्भ करि केहो दाँड़ाइया चाहे।
नड़िते ना पारे सेह नड़ि धरि धाये॥
पंगु आतुर आर गर्भवती नारी।
श्रीअङ्ग देखिये संन्यासीरे पाड़े गालि॥
एमन बालक केहो कराय संन्यास।
संन्यासेर धर्म नहे लोके उपहास॥
कठिन अन्तर इहार दयाहीन जन।
नगरे ना राखि इहार कहिल कथन॥
चै. म,

सब कहने लगे कि नगरसे इस संन्यासीको अभी निकाल बाहर करो! करुणामय प्रभुके श्रीकृष्ण-विरह-कातर सुन्दर मुख-चन्द्रको देखकर सबके मनमें अपार आनन्द अनुभव हो रहा है। वे जितनी बार प्रभुका चन्द्र-वदन देख रहे हैं, उतनी ही बार संन्यासी ठाकुर (केशव भारती) को गाली देते हैं।

प्रभुका मुख-चन्द्र ठीक मानो विरहिणी नवबालाके समान जान पड़ता है। उनके श्रीवदनको देखनेपर नहीं लगता कि वे पुरुष हैं।

प्रभुके अपरूप-रूपको देखकर कण्टकवासी नर-नारीवृन्द अतिशय मुग्ध हो रहे हैं। उनको छोड़कर कोई घर नहीं जा रहा है, सभी दुःखके भारसे चिन्तित और व्याकुल हैं। कैसे वे लोग इस रूपके सागर विप्रकुमारको संन्यासी होते अपनी आँखोंसे देखेंगे? यह देखकर कैसे वे जीते रह सकेंगे?

प्रभुकी कृपासे उनके मनमें प्रभुका तत्त्व स्फुरित हो गया। नदियाके ब्राह्मणकुमार क्या वस्तु हैं, यह उनकी समझमें आ गया। यही समझनेके लिए वे लोग इतने व्याकुल थे। श्रीगौर-भगवान् आर्त-बन्धु हैं। कण्टकनगरवासियोंकी निष्कपट आर्ति देखकर उनके प्रति उन्होंने कृपा की, तब उनके मनमें अपना तत्त्व स्फुरित कर दिया।

नर-नारीवृन्दने प्रभुके अपरूप विश्वविमोहन-रूप तथा अपूर्व और अद्भुत प्रेमभाव देखकर मन-ही-मन स्थिर कर लिया—

वृन्दावन माझे किवा राधा हाराइया।
तार अन्वेषणे बूले काँदिया काँदिया॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

से विरह भेल इहार सांन्यास-कारण।
निश्चय जानिल एइ नन्देर नन्दन॥
चै. म.

जब उनके मनका भाव ऐसा हुआ, तब चतुर-चूड़ामणि प्रभुने एक बार श्रीवदनको ऊपर उठाकर उनके ऊपर शुभ दृष्टिपात किया। सबलोग यह देखकर अपनेको कृतार्थ अनुभव करने लगे। सबलोग बारंबार हरिध्वनि करने लगे। प्रभुके कमल-नयनसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा बह रही थी। वे कुछ आगे बढ़कर अतिशय कातर काण्ठसे मधुर वचनसे सम्बोधन करते हुए बोले—

"आप ही लोग मेरे माता-पिता, भाई-बहन हैं, आप लोग शोक न करें। आशीर्वाद दें कि मैं श्रीकृष्ण-भजनका सौभाग्य और सुयोग प्राप्त कर सकूँ। श्रीकृष्ण मेरे प्राणपति हैं, उनका भजन किये बिना मेरे लिए यह देह-भार-बहन करना व्यर्थ है, जीवन धारण करना व्यर्थ है। सती-साध्वी स्त्रीका रूप-यौवन सब पतिकी सेवाके लिए होता है। यदि वह पति-सेवामें न लगा तो उसका प्रयोजन क्या हैं? मेरा मन संसारकी वासनाओंसे कलुषित है। श्रीकृष्ण-चरणके प्रसादके बिना मेरी अन्य गति नहीं है। अपने प्राणवल्लभ श्रीकृष्णका मैं अपने इस प्रकारके यौवनको लगाकर भजन करूँगा। अपना अङ्ग देकर प्राणपतिकी सेवा करूँगा। यदि इस देहके द्वारा श्रीकृष्णसेवा न हुई तो इस देहका क्या प्रयोजन? आप सब मिलकर मुझको आशीर्वाद दें, जिससे श्रीकृष्ण मेरी मनोकामना पूरी करें। आपलोगोंकी कृपा होनेपर मुझको सर्वसिद्धि प्राप्त होगी।"

यह बात कहते-कहते प्रभुके हृदय-समुद्रके आलोडित होनेसे प्रेम तरङ्ग उठने लगी। वे रोते हुए आकुल हो उठे, उनके नयन-जलसे प्रशस्त वक्षःस्थल प्लावित हो गया। उपस्थित समस्त कुल-नारियाँ प्रभुको उस अवस्थामें देखकर वस्त्रसे मुँह ढककर फुफकार मारकर रोने लगीं। अन्यान्य सब लोग उच्च स्वरसे हाहाकार करके क्रन्दन करने लगे। चारोंओर हाहाकार ध्वनि उत्थित हुई।

उस समय दिन प्रायः डूबने जा रहा था। प्रभुने कुछ देरके बाद आत्मसंवरण करके सबको अपने-अपने घर जानेके लिए कहा। वह रात प्रभुने भारतीजीके साथ कृष्ण-कथामें बितायी। श्रीनित्यानन्दप्रभु, आचार्यरत्न आदि सबलोग प्रभुके साथ ही रहे। उस दिन किसीका खाना-पीना और सोना न हुआ।

सांन्यासकर्म-विधिका भार

प्रभात होते ही प्रभुने श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नको पास बुलाकर कहा—"आचार्यरत्न! मैंने आपको ही अपने इस संन्यास-कर्मकी विधिका प्रतिनिधि नियुक्त किया। शास्त्र-विधिके अनुसार सब कार्योंका आप अनुष्ठान करें।"

चन्द्रशेखर आचार्य प्रभुके मौसा हैं। पुत्रके समान प्रभुका उन्होंने अतिशैशवसे ही लालन-पालन किया है। प्रभुके इस संन्यास-कर्मका भार उनके ऊपर पड़ा—यह बात कानसे सुननेपर भी हृदय काँप उठता है। परन्तु इच्छामयकी इच्छाको कौन निवारण कर सकता है? आचार्यरत्नके सिरपर मानो बज्र गिर पड़ा। वे चुप हो रहे। प्रभु उनके मनका भाव समझकर उनको समझाकर बोले—"आचार्यरत्न! आप सब-कुछ जानते हैं, सब-कुछ समझते हैं। इस शुभ कार्यमें यथाशक्ति सहायता करके मुझको सदाके लिए खरीद लीजिये। उपयुक्त समझकर ही मैंने आपके ऊपर इस शुभ कार्यका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भार अर्पण किया है। प्रकृत आत्मीयका कार्य करके आप मेरा उद्धार कीजिये।" आचार्यरत्न कुछ जबाव न देकर रोते-रोते प्रभुके इस आदेशका पालन करनेके लिए प्रस्तुत हो गये। प्रभुकी आज्ञा पालन करना ही उनका कार्य था।

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्नने प्रभुके आदेशसे उनके संन्यास-कर्मका सारा आयोजन किया। किसीको कुछ कहना न पड़ा। कहाँसे किसने सब द्रव्यादि लाकर भारतीजीके आश्रमकी कुटियामें उपस्थित कर दिया, कोई इसे समझ न पाया। डेढ़ पहर बेला चढ़ते चढ़ते दही, दूध, घृत, पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, यज्ञसूत्र, वस्त्र तथा नाना प्रकारके फल-मूल-भक्ष्यद्रव्यादि सब इकठ्ठे हो गये। समीपके गाँवोंके लोगोंने भार-भार-द्रव्यादि लाकर प्रभके सामने उपस्थित कर दिये। आचार्यरत्न यह देखकर परम विस्मित हुए। शुभारम्भमें उन्होंने स्वयं श्रीकृष्णकी पूजा की। भक्तगण उच्च संकीर्तन करने लगे।

भारतीं महाशय दिव्यासनपर बैठे हैं। उनके प्रशान्त मुखमण्डलने आज गम्भीर भाव धारण कर लिया है। प्रभु उनके सामने हाथ जोड़कर बैठे हैं। उनके दोनों नेत्रोंसे प्रेमाश्रुधारा-वर्षण हो रहा है।

पूर्व दिन रातके समय प्रभुके संन्यास-कर्मका अधिवास हो गया है। श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्य-रत्नने छातीपर पत्थर बाँधकर यह कार्य सम्पन्न कराया है। अधिवासके कीर्तसमें श्रीनित्यानन्दप्रभु आदि सबने योग दिया है। भारतीजीके आश्रमके कुटीरमें उस समय करुण-क्रन्दनका रोल उठा। इस बातको विस्तारपूर्वक लिखनेकी इच्छा नहीं होती।

ठाकुर जयानन्दने प्रभुके संन्यास-कर्मके अधिवासके कीर्तनानन्दको 'गोप्यानन्द'नाम दिया है। इस नामकी कुछ व्याख्या करना आवश्यक है। गोपीजनका जो आनन्द है, उसे 'गोप्यानन्द' कहते हैं। वह किस प्रकारका आनन्द है, यह व्रजभावके सभी रसिकवृन्दको ज्ञात है। श्रीकृष्णके साथ श्रीराधिकाके मिलनमें गोपियोंको आनन्द था। श्रीराधिकाका भाव लेकर कभु नदियामें उदय हुए थे। राधाभावमें विभावित होकर वे प्रेमावेगमें श्रीकृष्णकी खोजमें निकल पड़े हैं। उनका पागलिनीका वेष है। उनके मनका भाव है—

बन्धुर लागिया योगिनी हइब, कुण्डल परिब काने।
जाब देशे देशे बन्धुर उद्देशे, सुधाइब जने जने॥

राजनन्दिनी योगिनी बनेगी। सखियाँ व्याकुल होकर क्रन्दन कर रही हैं। प्राणवल्लभके लिए वृषभानु-नन्दिनी श्रीराधिका योगिनी बनकर रास्ते-रास्ते प्रियतमकी खोजमें निकलेंगी, इसमें आनन्द क्या है? इसका अधिवास कैसा? इसमें इतनी चहल-पहल क्यों है? श्रीराधिकाने सखियोंको समझाया कि इसमें उनको आनन्द है। उन्होंने कहा—"सखियो! इस शुभकार्यके लिए तुमलोग अधिवासकी आयोजना करो!" सखियाँ क्या करें? लाचार होकर रोते-रोते सारा आयोजन किया। जिसमें श्रीराधिकाको सुख है, उसीमें सखियोंको सुख है।

यहाँ भी उसी प्रकार समझना चाहिये। प्रभु संन्यास-ग्रहण क्यों करते हैं—यह बात समझना भक्तगणके लिए बाकी नहीं है। वे जो कार्य करते हैं, वह सर्वमङ्गलकर है, सर्वजीवके लिए हितकर कर्म है। इस मङ्गलमय शुभ कर्मके लिए अधिवासकी आवश्यकता है। इसी कारण नदियाके भक्तगणने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नयनके जलसे प्रभुके संन्यास-कर्मका शुभ अधिवास अधिष्ठान किया।

प्रभुके संन्यास-कर्मके अनुष्ठानमें कोई त्रुटि न हुई। वे सब धर्मोंकी मर्यादाके रक्षक हैं। शास्त्र-विधिके अनुसार उन्होंने इस शुभ कर्मके उपलक्ष्यमें पितरोंके श्राद्धतर्पण आदि सारे क्रिया-कर्म किये। प्रातःकाल गङ्गास्नान करके प्रभुने श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यको साथ लेकर सारे पितृकर्म एक-एक करके सम्पन्न किये। देवता और पितरलोग सभी अलक्षितरूपमें अन्तरिक्षमें आकर इस शुभ कार्यको देखते रहे। प्रभुने अपने पिता जगन्नाथ मिश्र पुरन्दरको अन्तरिक्षमें देखकर उनको दण्डवत्-प्रणाम करके उनके कृपाशीर्वादकी याचना की। दूसरा कोई इसे देख न सका।

गङ्गातटपर भारतीजीके आश्रममें कुटियाके सामने मैदानमें सोलह वेदिकाएँ निर्मित हुईं। वेदियोंसे सुसज्जित चन्द्रातपके नीचे घट, पल्लव, घृत, मधु, क्षीर, धान्य, तिल, यव, शिखिपिच्छ और चामर आदि द्रव्य सुशोभित हो गये। शत-शत सन्यासी चारों ओर बैठकर वेदमन्त्र पाठ करने लगे।

प्रभुने पितृ-श्राद्ध-तर्पण आदि करके भारतीजीके पास वेदीके सामने यज्ञस्थलमें बैठकर गुरुकी आज्ञाके लिए प्रार्थना की। प्रभुको घेरकर सब सन्यासीलोग बैठ गये। उनके बीच अवधूत नित्यानन्दप्रभु भी थे। श्रीपाद केशव भारतीजीके आदेशसे सब संन्यासियोंने मिलकर श्रीगौराङ्गसुन्दरके संन्यासका अभिषेक किया।

ठाकुर जयानन्दने प्रभुके इस संन्यासके अभिषेक-कर्मको उपलक्ष्य करके एक अतिसुन्दर पद लिखा है। यथा,

नृसिंह भारती सङ्गे, केशव भारती रङ्गे,
बसिल सम्मुखे नित्यानन्द।

गोविन्द भारती आदि, षोल वेदि मध्ये बसि,
षड़ङ्गे पूजिल गौरचन्द्र॥

रामगिरि, ब्रह्म गिरि, महेन्द्र, प्रद्युम्न गिरि,
ब्रह्मगिरि सत्य गिरि नामे।

गरुडावधूत मति, भार्गव सरस्वती,
आनन्दे-आनन्दे बसिल प्रभु वामे।

विष्णुपुरी, ईश्वरपुरी, रघुनाथ पुरी रामचन्द्रपुरी,
गोपालपुरी, ब्रह्मानन्दपुरी,
हरिनन्दि सुखानन्द परमानन्दपुरी।
बसिला गोराङ्गेर वाम पाशे॥

कृष्ण-बलराम उद्धव अक्रूर षोल वेदी गौराङ्ग प्रकाशे॥

मुकुन्द प्रकाशे दाशरथी, प्रकाश रामचन्द्र,
प्रकाश यज्ञ स्थान।

अनन्त विश्राम रङ्गे, शिष्य प्रशिष्य बहु सङ्गे
करिल संन्यास मुक्त गान॥

गोसाञि शङ्करारण्य, अच्युतानन्द धन्य धन्य,
रामारण्य काशीपुरानण्य।

नृसिंह प्राचीन यति, शुद्धानन्द सरस्वती,
बसिला संन्यासी अग्रगण्य॥

केह ब्रह्मा हर-इन्द्र, कुवेर-वरुण-चन्द्र,
गौराङ्ग करिल अभिषेक।

अन्तरीक्षे देवगण, करे पुष्प वरिषण,
दिव्यांगना लक्ष्मीर आलेख॥

चौदिक संन्यासी वृन्दे, स्तुति करे गौरचन्द्रे,
सर्वलोके बले हरि हरि।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अभिराम गोसाञि दास, मिश्र गोसाञि सुत,
सर्व सुख काटोया नगरी ॥

मुण्डन कार्य

गुरुकी आज्ञा और सबकी अनुमति लेकर प्रभु तब ब्रह्मवेदीके पास जाकर बैठे। उसी समय उनके घुँघराले बालोंसे मण्डित श्रीसिरके मुण्डनका काल निदिष्ट हुआ। नाईका नाम सुनते ही उपस्थित सबलोगोंका कलेजा काँप उठा। सभी वस्त्रद्वारा मुँह ढककर रोने लगे। कोई फिर सिर ऊपर न उठा सका।

सब विषण्ण मनसे सोचने लगे—

कमला-लालित केश त्रैलोक्यसुन्दर।
मालार सहिते नाम्बे ए गज कन्धर ॥
पुरुबे चूड़ार वेषे मोहिल जगत।
जाहार धेयाने जीये सकल जगत ॥
गोपवधू जार लागि छाड़िलेक लाज।
जाति-कुल-शील भये पड़िलेक बाज ॥
जार गुण गाय शिव-विरञ्चि-नारद।
आपनारे धन्य माने सकल सम्पद ॥
हेन केश मुण्डन करिते चाहे पहूँ।
काँदिये सकल लोक नाहि तुले मुहू ॥

चै. म.

कलाधर नाई हाथ जोड़कर प्रभुके सामने आकर खड़ा हो गया।* प्रभुने एक बार कलाधरकी ओर करुण दृष्टि डालकर उसको इशारेसे समयोचित कार्य सम्पादन करनेकी आज्ञा दी। नाईने पृथ्वीपर पड़कर दण्डवत्-प्रणाम करके रोते-रोते हाथ जोड़कर निवेदन किया—"प्रभो ! यह कार्य मुझसे न होगा। भले ही मेरा भाग्य फूट जाय, मुझे गलितकुष्ट हो जाय, मेरा वंश नरकमें चला जाय। प्रभो ! आपके जिन त्रैलोक्य-मोहन सुन्दर कुञ्चित केशोंको देखकर हृदय और नयन शीतल होते हैं; उनका मुण्डन नहीं कराओ ! देखो, ये सारे लोग किस प्रकार क्रन्दन कर रहे हैं। मुझसे यह काम किसी प्रकार नहीं होगा "

प्रभु कलाधरकी बात सुनकर कुछ असंतुष्ट हुए। उनके मुँहके भावको देखते ही कलाधर यह बात ताड़ गया। उनकी असंतोष-व्यञ्जक श्रीमूर्तिको देखकर कलाधरके मनमें बड़ा भय हुआ। उसका सारा अङ्ग थर-थर काँपने लगा। कलाधरने पुनः रोते-रोते प्रभुके चरणोंमें निवेदन किया—"प्रभो ! तुम्हारे मुण्डन करनेके अपराधके भयसे मेरा सारा शरीर काँप रहा है। तुम्हारे सिरको स्पर्श करने वाले हाथोंसे मैं दूसरोंके पैर कैसे स्पर्श करूँगा ?"

प्रभु नाईकी बात सुनकर बहुत ही संतुष्ट होकर बोले—"कलाधर ! तुमको अपनी वृत्ति नहीं करनी पड़ेगी। कृष्णकी कृपासे तुम्हारे दिन सुखसे बीतेंगे। अन्तकालमें तुम स्वर्गमें वास करोगे। मेरा सिर मुण्डन करके तुम अपने अस्त्रादि गङ्गाजलमें समर्पण करके श्रीकृष्णका भजन करो। तुम्हारा भव-बन्धन छूट जायगा। श्रीकृष्ण तुम्हारे ऊपर कृपा करेंगे। आजसे तुम्हारा नाम 'हरिदास' हो गया।

प्रभुकी बात सुनकर नाई मन-ही-मन सोचने लगा—"इधर कूआ, उधर खाई। मुण्डन करूँ तो

---

* ठाकुर लोचनदासने अपने श्रीचैतन्यमङ्गलमें नाईका नाम हरिदास लिखा है। प्रभुने मस्तक मुण्डनके बाद कलाधरका नाम हरिदास रखा था।

—ग्रन्थकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भी मेरा नाश निश्चित है और न करूँ तो भी मेरा नाश है। जो होगा, सो होगा, जिसमें इनकी प्रसन्नता है उसमें धर्म हो चाहे अधर्म, मुझे तो वही करना पड़ेगा।"

ऐसा सोचकर नाई रोते-रोते अपना अस्त्र-शस्त्र लेकर प्रभुका मस्तक मुण्डन करने बैठा। यह देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभु तथा नदियाके भक्तगण भूमिपर पछाड़ खाकर पड़कर उच्च स्वरसे क्रन्दन करने लगे। उनके क्रन्दनकी ध्वनिसे काष्ठ-पाषाण भी द्रवित हो जाते थे। उपस्थित दर्शकवृन्द सभी रोकर व्याकुल हो उठे। नाईका चित्त पुनः चञ्चल हो उठा। वह फिर प्रभुके श्रीमस्तकपर हाथ न रख सका, केवल रोने लगा। प्रभु गम्भीरभावमें बैठे रहे। भारती महाशय भी अपनी आँखोंके आँसू रोक न सके। श्रीनित्यानन्दप्रभुके क्रन्दनसे प्रभुका मन किंचित् विचलित हुआ। उन्होंने नाईको और कोई बात न कही। कुलनारियाँ वस्त्रके आँचलसे मुँह ढककर फुफकार मारकर रो रही हैं। हाय-हाय और दीर्घ निःश्वाससे यज्ञभूमि परिपूर्ण हो गयी। क्रन्दनकी करुण ध्वनिसे भारतीजीकी आश्रम-कुटीर भर गयी। ऐसा करुण दृश्य इससे पहले कभी किसीने नहीं देखा था। क्रन्दनध्वनिसे ब्रह्माण्ड भर गया।

यह प्रभुकी संन्यास-लीला केवल जीवोद्धारके लिए थी। ये लाखों-लाखों आदमी प्रभुके जिस कपट-संन्यास-ग्रहणके उद्योग आयोजनको देखकर व्याकुल होकर रोने लगे थे, वह केवल उनके मङ्गलके लिए था। यह उनका नयन-जल, आर्तनाद, दीर्घ निःश्वास और हाय-हाय—सब उन्हींके भव-बन्धनसे मुक्तिके लिए था। श्रीगौर-भगवान् कलिग्रस्त जीवके उद्धारके लिए नदियामें अवतीर्ण हुए थे। उनके गृहस्थाश्रमके सुखैश्वर्यको देखकर जिनका कलुषित मन उनके चरण-कमलमें आकृष्ट नहीं हुआ, उनके उद्धारके लिए प्रभुका यह कपट-संन्यास-वेष-धारण, केश-मुण्डन, दण्ड-कमण्डलु-धारण, कोपीन-परिधान आदि था। श्रीरामावतारमें श्रीभगवान्‌ने जगत्‌के जीवको रुलाया है, श्रीकृष्णावतारमें उन्होंने अपने अनुगत जनको रुलाया है, श्रीगौराङ्गावतारमें भी श्रीभगवान्‌ने उस चिरन्तन प्रथाको नहीं छोड़ा। जीवोद्धारका यही सर्वोत्कृष्ट उपाय हैं। श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने यथार्थ ही लिखा है –

ए सकल लीला जीव उद्धार कारण।
एइ तार साक्षी देख काँदे सर्वजन॥

चै. भा. म. २६.१८९

श्रीनित्यानन्दप्रभुके क्रन्दनसे प्रभुका मन विचलित हो गया था। वे बैठे थे, उठकर खड़े हो गये। कलाधर नाई दूर हटकर खड़ा हो गया, भावनिधि श्रीगौराङ्गसुन्दरके मनमें भावका स्रोत उमड़ पड़ा। प्रेमरसमें उन्मत्त होकर वे व्याकुल हो उठे। उनके श्रीअङ्गमें एकबारगी अश्रु, कम्प, पुलक, रोमाञ्च, हर्ष आदि अष्ट सात्त्विक भाव उदय हो गये। वे अब स्थिर न रह सके। यज्ञस्थलमें उद्दण्ड नृत्य प्रारम्भ कर दिया। उनके श्रीमुखसे केवल 'बोल-बोल' शब्द सुनायी देने लगा। बारंबार हरि-ध्वनिसे गगनमण्डल परिपूर्ण हो गया। आजानु-लम्बित सुवलित बाहु-युगल ऊपर उठाकर उन्होंने उच्च कीर्तनका सुर पकड़ा—

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन॥

चै. भा. म. २३.२२१

श्रीनित्यनन्दप्रभु अभीतक पृथ्वीपर पड़े-पड़े क्रन्दन कर रहे थे। अब उनसे नहीं रहा गया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धूलि-धूसरित अङ्गोंसे उठकर उन्होंने प्रभुके साथ कीर्तनमें योगदान किया। मुकुन्दने गीत गाना प्रारम्भ किया, प्रभु मधुर मनमोहन नृत्य करने लगे। नदियाके सभी भक्तवृन्द प्रभुके साथ नृत्य-कीर्तनमें मत्त हो गये। प्रभुके श्रीवदनकी ओर ताक कर उन्होंने देखा कि उस घुँघराले बालसे सुशोभित सुन्दर मुखमण्डलपर त्रिभुवनको मुग्ध करनेवाली हँसी विराजमान है। यह देखकर उनके सारे दुःख दूर हो गये। इस प्रकार नृत्य-कीर्तन संध्याकालतक चलता रहा तबतक क्षौरकर्म बन्द रहा। भारतीजी भी कीर्तनानन्दमें मग्न हो गये। उपस्थित संन्यासी और भक्तगण सभी अपने आपेसे बाहर होकर प्रभुके मधुर नृत्यविलासका दर्शन कर रहे हैं। संन्यास-यज्ञकर्मका सारा आयोजन प्रस्तुत है। केवल प्रभुके क्षौरकर्मकी अपेक्षा है। संध्या होनेही वाली है, किसकी मजाल है, जो प्रभुको कीर्तन-भङ्ग करके यह कार्य करनेके लिए कहे? सभी अत्यन्त उत्कण्ठा-पूर्वक देख रहे हैं कि प्रभु क्या-क्या करते हैं? प्रभुके श्रीवदनपर केवल 'बोल-बोल' हुंकार-शब्द है।

कलाधर नाई एक ओर हाथ जोड़कर खड़ा है। संध्या आती हुई देखकर भारतीजीने कलाधरको इशारा किया। चतुरचूड़ामणि सर्वज्ञ प्रभु यह समझकर आसनपर बैठ गये और नाईको इशारेसे क्षौरकर्म करनेका आदेश दिया। कलाधरने रोते-रोते किसी प्रकारसे इस हृदय-विदारक कार्यको सम्पन्न किया।

ठाकुर जयानन्दने प्रभुकी श्रीशिखा-अन्तर्द्धानकी लीला-कथा कुछ विस्तारपूर्वक लिखी है। उस कथाका पाठ करनेसे हृदय विदीर्ण हो जाता है। प्रभुने नाईसे कहा—

आमारे परश करि छाड़ह संसार।
संसारेर क्षौरकर्म ना करिह आर॥

तब कलाधरने प्रभुको प्रणाम करके—

पञ्च कषाय पञ्चगव्य पञ्चामृत जले।
चाँचर केश भिजाइल निम्ब वृक्षतले॥
जय-जय शब्द करि शिरे दिल क्षुर।
हाहाकार करि चक्षु बूजे देवासुर॥
चन्द्र-सूर्य लुकाइल गगन-मण्डले।
प्रेमे आकुल हैया धरणी आन्दोले॥
कोकिल-भ्रमर सब नीरव हैल।
इन्द्रादि अमर चित्रार्पित हैया रैल॥

ज. चै. म.

संन्यास-वेष धारण, मन्त्र दीक्षा और नामकरण

उपस्थित दर्शकवृन्दको प्रभुकी श्रीशिखाका अन्तर्धान देखकर मनमें जो कष्ट हुआ; उसका वर्णन भाषामें लिखकर नहीं किया जा सकता। नदियाके भक्तवृन्द हाहाकार करके पछाड़ खाकर भूतलपर गिर पड़े। श्रीनित्यानन्दप्रभुको मूर्च्छा आ गयी। प्रभुकी इच्छासे आचार्यरत्न बेहोश नहीं हुए; परन्तु जड़वत् निश्चेष्ट हो गये। बहुत कष्ट करके भी भारतीजी उनको उठा न सके। वे कर्मकर्ता थे। इस समय उनकी आवश्यकता थी। वे जड़वत् निश्चेष्ट होकर बैठ गये और उठ न सके।

क्षौरकर्म समाप्त हो जानेके बाद प्रभुके गङ्गा-स्नान किया। स्नान करके रक्तवस्त्र धारण किया। सर्वाङ्ग श्रीचन्दनसे लिप्त किया। श्रीहस्तमें दण्ड-कमण्डलु धारण किया। गङ्गातटपर खड़े होकर प्रभुने इस प्रकार अपूर्व संन्यास-वेषमें* सब जीवोंके

---

* यदि कलिके निष्ठुर जीव गौराङ्गदेवकी बात मानकर हरिनाम-ग्रहण करके उनके संसार-सुखमें बाधक

(टिप्पणीका शेष अगले पृष्ठपर)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रति शुभदृष्टिपात किया। उनके प्रत्येक अङ्गसे दिव्य तेज और ज्योति निकलने लगी। उस समय उनके अपूर्व संन्यास-वेषका पूर्ण विकास हुआ।

महाभारतमें श्रीविष्णुके सहस्रनाम स्तोत्रमें महामुनि वेदव्यासजीने लिखा है—**"संन्यासकृत् शमः शान्तो निष्ठा शान्तिपरायण'** अर्थात् श्रीविष्णु सन्यासकारी; **शमः**—श्रीहरिके रहस्यकीं आलोचना करते हैं; **शान्तः**—श्रीकृष्णके सिवा अन्य विषयसे उपरत हैं; **निष्ठा**—हरिकीर्तन-प्रधान भक्तियज्ञ-समूह उनमें ही अवस्थान करते हैं, **शान्ति**—उनके ही प्रभावमें केवलाद्वैती आदि विरोधियोंका दल समताको प्राप्त होता है; **परायण**—अर्थात् महाभाव-पर्यन्त सभी भाव उनके आश्रय हैं। श्रीगौराङ्ग-अवतारमें श्रीभगवान्‌ने संन्यास-ग्रहण करके महामुनि वेदव्यासकी उक्तिको सफल किया है।

प्रभु संन्यास-वेषमें यज्ञस्थानमें यथाविधि आसनपर बैठ गये। ठाकुर जयानन्दने मनमें अति दुःखित होकर लिखा है—

दिव्य धौतवस्त्र छाड़ि रक्तवस्त्र परि।
शिखा-सूत्रे अग्नि दिया हैला दण्डधारी॥

(पिछले पृष्ठकी टिप्पणीका शेष)

न होते तो उनको संन्यास-ग्रहण करना नहीं पड़ता। बड़े दुःखसे हतभाग्य कलिके जीवोंको लक्ष्य करके ग्रन्थकारने एक पद लिखा था जो यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

तोदेर लागिया, सोनार गौराङ्ग,
यतिवेषे बाहिरिल।
तोदेर कारणे, बिषादित मने,
गृह सुख तेयागिल॥
वृद्धा जननी, नदिया घरणी,
सोनार से संसार।
तोदेर ज्वालाय, शची दुलालिया,
करिल रे छार-खार॥
हरिनाम यदि, लइतिस तोरा,
ए काज कभु ना हत।
नदीया छाड़िया, कौपीन परिया,
कभु नाहि गोरा जेत॥
सोनार संसारे, आगुन ज्वालिया,
काँदाइया निज जन।
चले गेल दुःखे, गृह तेयागिये.
दयामय भगवन्॥
चिनिल ना मूढ़, शचीर दुलाल,
कलिकाल अवतार।
नदियार लोला, बुझिलि ना तोरा,
नराधम दुराचार॥

ओरे रे मूढ़—

यदि से गौर, यति ना साजिया,
करित नदेर लीला।
भाग्ये तोदेर, दरशन हत,
कत ना प्रेमेर खेला॥
देरक्तिस् तोरा, सोनार कमल,
विष्णुप्रियार छेले।
गौरेर कोले, गौर बालक,
किवा अपरूप खेले॥
नयन-आनन्द, नवद्वीप-लीला,
अंकुरे घुचालि तोरा।
ताइ भेवे भेवे, दुःखी हरिदास,
जीयन्ते हयेछे मरा॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देवासुर-नर काँदे, काँदे मृग-पाखी।
उजान धरिल गङ्गा न्यासी-वेश देखि॥
जय-जय शब्द चतुर्मुखे स्तुति करे।
काँदिया विकल जत गन्धर्व किन्नरे॥

भारतीजीने तब प्रभुके आदेशसे उनको संन्यास-मन्त्र प्रदान किया। प्रभुने पहले जो मन्त्र उनको दिया था, वही मन्त्र उन्होंने प्रभुको दिया।

चारों ओर लाखों आदमी हरि-ध्वनि करने लगे। वैष्णवगणके उच्च संकीर्तनसे गङ्गातट ध्वनित हो उठा। गगनभेदी हरिध्वनिसे दशों दिशाएँ पूर्ण हो गयीं।

मन्त्र प्राप्त करके प्रभुका श्रीअङ्ग प्रेमानन्दमें पुलकित हो उठा। उनके हृदय-समुद्रमें स्थित कृष्ण-प्रेम-तरङ्ग एकबारगी उच्छल्लिक हो उठी। वे अब स्थिर न रह सके, हुंकार-गर्जन करके उद्दण्ड नृत्य करने लगे। उनके कमल-नयनोंकी अश्रुधारामें उनका प्रशस्त वक्षःस्थल डूब गया। उनके मुख-कमलमें अट्टहास था, उनका सर्वाङ्ग चन्दन-चर्चित था, वे अरुण वस्त्र पहने थे, उनके गलेमें पुष्प-माला सुशोभित थी। कण्टकपुरवासी सबलोग प्रभुकी इस अपरूप-रूप-छटाको देखकर एकबारगी मुग्ध हो उठे। वे सोचने लगे, "क्या यही वे रास-रसिक नन्द-नन्दन श्रीकृष्ण हैं? इसमें कोई संदेहकी बात नहीं है।"

श्रीनित्यानन्दप्रभु आत्मसंवरण करके प्रभुके साथ नृत्यानन्दमें मत्त हो गये। गदाधर और नरहरि प्रभुके आस-पास नृत्य कर रहे हैं। सब भक्तोंके द्वारा आवेष्टित होकर श्रीगौराङ्गसुन्दर मधुर गतिसे नृत्य कर रहे हैं। मुकुन्दके कीर्तनसे पाषाणतक द्रवित हो जाते हैं। करताल और मृदङ्गके मधुर बोलमें सबलोगोंकी हृत्तन्त्री बज उठी। सबकी दृष्टि प्रभुके श्रीवदनकी ओर है। कुछ देरतक इस प्रकार अपूर्व नृत्यानन्द लेनेके बाद श्रीपाद केशव भारती प्रभुके पास जाकर स्नेहपूर्वक पूछने लगे—"निमाई! तुम्हें क्या नाम दें?"

भारतीजी प्रभुको निमाई-नामसे सम्बोधन करके यह बात बोले, इससे नदियाके भक्तोंके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। प्रभुने हाथ जोड़कर एक बार अपने संन्यास-गुरुकी ओर प्रेमदृष्टिसे देखा। उसी समय आकाशवाणी हुई, इनका नाम 'श्रीकृष्ण-चैतन्य' है। तब भारतीजी प्रभुके वक्षःस्थलपर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए बोले—

जत जगतेर तुमि कृष्ण बुलाइया।
कराइला चैतन्य कीर्तन प्रकाशिया॥
एतेके तोमार नाम 'श्रीकृष्णचैतन्य'।
सर्वलोक तोमा हैते जाते हैल धन्य॥

चै. भा, म. २६.२१६,२१७

'श्रीकृष्ण चैतन्य' नाम सुनते ही चारों ओरसे लोग बाररंबार हरिध्वनि करने लगे। भक्तवृन्द जय-जयकार करने लगे। देवगण आकाशसे अन्तर्हित होकर पुष्पवृष्टि करने लगे। चारो ओर आनन्द-कोलाहल भर गया।

तब सब भक्तगणोंने आकर पहले भारतीजीको प्रणाम किया। प्रभु यह अपूर्व नाम पाकर आनन्दमें गद्गद होकर अजस्र अश्रु बहाने लगे। सबलोग आकर प्रभुके चरणोंमें दण्डवत्-प्रणाम करने लगे।

प्रभुने पुनः नृत्य-कीर्तन प्रारम्भ कर दिया। वे प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर आजानुलम्बित दोनों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भुजाओंको ऊपर उठाकर बारंबार हरिध्वनि करने लगे। सबलोग प्रेमानन्दमें उन्मत्त हो उठे। मुकुन्दके मधुर कीर्तनमें, श्रीनित्यानन्दप्रभुके उद्दण्ड प्रेमनृत्यमें, नदियाके भक्तोंके प्रेम-क्रन्दनमें सौभाग्यवान् कण्टकनगरवासी वैकुण्ठका सुख अनुभव करने लगे। भारतीजी प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर अपने सङ्गके संन्यासियोंको लेकर प्रभुके साथ नृत्य-कीर्तनके आनन्दमें विभोर हो गये।

कीर्तनानन्दके सामने ब्रह्मानन्द तुच्छ पदार्थ है, आज प्रभुकी कृपासे संन्यासियोंके दलने इस बातको विशेषरूपसे समझ लिया। ऐसा आनन्द उनको जीवनमें कभी नहीं मिला था। वे प्रेमानन्दमें अपने-आपको भूलकर नृत्य कर रहे हैं। उनकी सारी गम्भीरता सारा अहंकार आज दूर हो गया है। दण्ड-कमण्डलु दूर फेंककर दोनों भुजाएँ उठाकर वे प्रभुके साथ मधुर नृत्य कर रहे हैं। प्रेमाश्रु-धारामें उनका वक्षःस्थल डूब रहा है। कण्टकनगर-वासियोंको एक अपूर्व दृश्य दृष्टिगोचर हुआ। पहले उन्होंने कभी इन संन्यासियोंको नृत्य करते नहीं देखा था, वे लोग सदा ध्यान-धारणा और तपमें रत रहते थे और वेदान्त पढ़ते थे। कभी हाथसे दण्ड हटाते न थे। आज उनके संन्यास-जीवनका सम्बल दण्ड कहाँ पड़ा है, इसकी उनको सुध नहीं है। वे प्रेमानन्दमें सब-कुछ भूल गये हैं। अपने अस्तित्व-तकको वे भूल गये हैं।

प्रभु उस दिन सारी रात नृत्य-कीर्तन करते रहे। उस महासंकीर्तन-यज्ञमें सबलोगोंने मन, प्राण और देहकी आहुति दे दी। इस प्रकार प्रभुके श्रीकृष्णचैतन्य नामका जगतमें प्रचार हुआ।

नृत्य-कीर्तन करते-करते प्रभु अपने संन्यास-गुरु श्रीपाद केशवभारतीकी प्रदक्षिणा और उनको प्रणाम करके जानेके लिए तैयार हो गये। वे ऊर्ध्वबाहु होकर कीर्तनानन्दमें मत्त थे, उस समय उनके मनमें दूसरी कोई बात न थी। भारतीने उनको बुलाकर दण्ड धारण करनेके लिए आदेश दिया। गुरुके आदेशसे प्रभु लौटे। तब भारतीजीने उनके हाथमें संन्यासीका सर्वस्व-धन दण्ड दे दिया। प्रभुने थोड़ा मुसकराकर गुरुको प्रणाम करके दण्ड-ग्रहण किया दण्डकी ओर देखकर बड़े गम्भीरभावसे वे मन-ही-मन सोचने लगे—

आमि जे सकल छाड़ि करिनु संन्यास।
तुमि ना छाड़िले मोरे जन्म-जन्म बाँश॥
राम अवतारे तुमि धनुक हइया।
रहिले आमर हाते दुष्टेर लागिया॥
कृष्ण अवतारे बंशी हैया मोर करे।
मोहित करिले सर्व अखिल संसारे॥
इबे दण्ड हइया मोर आइला करेते।
कलियुगे पाखण्ड-दलन-हेतु रूपे॥

चै. म.

श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभुके द्वारा श्रीमन्महाप्रभुका दण्ड-भग्न हो जाता है। श्रीश्रीनवद्वीपलीला-ग्रन्थमें प्रभुकी इस दण्डभङ्ग-लीलाका कुछ उल्लेख पहले किया जा चुका है।

संन्यासके दूसरे दिन प्रभु गुरुकी आज्ञासे कण्टक-नगरमें रहे। प्रभुने सारा दिन गुरु और गुरु-गोष्ठीके साथ नृत्य-कीर्तन तथा कृष्ण-कथाके रङ्गमें रहकर बिताया। भारतीजीने प्रेमोन्मत्त होकर प्रभुके साथ हाथ पकड़ करके नृत्य-कीर्तन किया। गुरु-शिष्यका इस प्रकारका आनन्द-नृत्य देखकर सबलोग हरिध्वनि करने लगे। वैष्णवगणके अपूर्व कीर्तनमें दर्शकवृन्दका मन मुग्ध हो गया। वे सभी लोग आत्महारा होकर गुरु-शिष्यके इस अद्भुत प्रेमनृत्यको देख रहे हैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और क्षुधा-तृषा, आहार-निद्रा भूल गये हैं। भारतीजीको इस प्रकार प्रेमोन्मत्त-भावमें नृत्य करते उन्होंने पहले कभी न देखा था।

बिदाई

इस प्रकार प्रेमानन्दमें सारी रात बीत गयी। प्रभातकालमें प्रभुने गुरुसे विदा माँगी। भारतीजीसे प्रभुने श्रीनीलाचलधाममें जानेकी अपनी इच्छा प्रकट की। भारतीजी रो पड़े। उनका हृदय व्याकुल हो उठा। श्रीगौराङ्ग-विरह-शोकानलमें उनका हृदय मानो दग्ध होने लगा वे प्रभुको गोदमें लेकर रोने लगे। प्रभु गुरुके शीतल वक्षःस्थलमें श्रीवदनको छिपाकर अजस्र आँसू बहाने लगे। चारों ओर क्रन्दनकी ध्वनि उठी। गुरु-शिष्यकी करुण बिदाईका दृश्य देखकर सबलोगोंका हृदय द्रवित हो उठा। भारतीजी प्रेमावेगमें रुद्धकण्ठसे प्रभुसे बोले—

स्वतन्त्र ईश्वर तुमि आपनार सुखे।
करुणा कारणे पद व्रजे बुल लोके॥
गुरुभक्ति लओयावारे कर विधि कर्म।
संस्थापन करिबारे संकीर्तन-धर्म॥
सर्वलोक निस्तारिते करुणा प्रकाश।
आमा विडम्बिते कैले एइत संन्यास॥
आमार निस्तार जेन हय विश्वम्भर।
एइ मोर वाक्य तुमि पालिह अन्तर॥

चै. म.

गुरुके मुखसे ये सब बातें सुनकर प्रभुका मन बड़ा लज्जित हुआ। वे और कोई उत्तर न देकर गुरुकी प्रदक्षिणा करके उनकी पद-धूलि लेकर विदा हुए।

प्रभु प्रेमानन्दमें आकुल होकर पहले गजेन्द्रके समान धीरे-धीरे चले, पश्चात् प्रेमावेशमें दौड़ने लगे। किसी ओर किसीके प्रति उनकी दृष्टि न थी, हरिनामके सिवा और कोई बात वे सुनते नहीं थे, उनका सोनेका अङ्ग धूल-धूसरित था, उनके कोमल रक्त कमल चरणोंमें कुशांकुर चुभ रहे हैं, पर उनको उसकी तनिक भी परवाह नहीं है। प्रेमानन्दमें आकुल होकर प्रभु रोते-रोते रास्तेमें चले जा रहे हैं।

ठाकुर जयानन्दने लिखा है कि प्रभुके साथ गोविन्द कर्मकार थे। उनके कंधेपर कतिपय पुस्तकें थीं, जिनको उन्होंने प्रभुके करङ्ग-कोपीन, कटिसूत्रके द्वारा बाँध रखा था। ठाकुर जयानन्दका यह पद पाठ करनेपर कष्ठ-पाषाण भी द्रवित हो जाते हैं—

आगम-निगम-गीता गोविन्देर काँधे।
करङ्ग कोपीन कटिसूत्र ताहे बाँधे॥
कनक-कुण्डल-हार हिरण्य-मादुली।
सकल सम्पद सुखे दिया तिलाञ्जलि॥
चलिला संन्यासे गौर गजेन्द्र गमने।
नाम-संकीर्तन बिनु ना शुने श्रवणे॥
जे अङ्गे सतत लागे सुगन्धि-पराग।
से अङ्ग कीर्तन धूला लागे तिन भाग॥
कर्पूर-ताम्बूल जार मुखे निरवधि।
से मुखे गोविन्द-ध्वनि करे गुणनिधि॥
ध्वज-वज्राांकुश जार राङ्गा पाये साजे।
हेन राङ्गा पाये कुश-कण्टक वाजे॥
काँचा सोना जिनिया गौराङ्ग डगमगी।
ना धरे संसार वेष ना जानि कि लागि॥
पथे पथिकेर सने जबे देखा हये।
काँदिया विकल लोक मर्म-कथा लये॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कारे किछु ना बोले ठाकुर गौरचन्द्र ।
आनन्दे संन्यास-खण्ड गाये जयानन्द ।।

प्रभुके साथ असंख्य लोग जा रहे हैं। सभी पीछे हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु, आचार्यरत्न आदि नदियाके भक्तवृन्द प्रभुके साथ-साथ दौड़ रहे हैं; परन्तु प्रभुका साथ नहीं दे पा रहे हैं। प्रभु किस प्रकार जा रहे हैं, इसका अति सुन्दर वर्णन ठाकुर लोचनदासकी भाषामें सुनिये—

कृष्ण कृष्ण बलि डाके प्रेमार उल्लास ।
क्षणेक रोदन क्षणे अट्ट अट्ट हास ।।
बुक बाइया पड़े धारा नयनेर जले ।
सुर-नदी-धारा जेन सुमेरु-शिखरे ।।
कदम्ब-केशर जिनि एकटि पुलक ।
कण्टकित सब अङ्ग आपाद-मस्तक ।।
मत्त करिवर जेन रङ्गे चलि जाय ।
निर्भर प्रेमाय क्षणे कृष्ण-गुण गाय ।।
क्षणेके पड़ये भूमि रहे स्तब्ध हइया ।
क्षणे लम्फ दिया उठे हरि-बोल बलिया ।।
क्षणे गोपीकार भाव, क्षणे दास्य भाव ।
क्षणे धीरे-धीरे चले, क्षणे शीघ्र धाव ।।

चै. म.

श्रीचैतन्यभागवतके अनुसार भारतीजी भी प्रभुके सङ्ग जा रहे हैं। गुरुको साथ लेकर प्रभु वनको जा रहे हैं। प्रभुने उनको आगे कर लिया है। भारतीजीकी ओर देखकर प्रभुने रोते-रोते कहा—

अरण्ये प्रविष्ट मुञि हइब सर्वथा ।
प्राणनाथ मोरे कृष्णचन्द्र पाङ यथा ।।

चै. भा अ. १.२१

भारतीजी रोते-रोते प्रभुके चन्द्र-वदनकी ओर देखकर बोले—

—"आमिह चलिब तोमा सङ्गे ।
थाकिब तोमार सङ्गे संकीर्तन रङ्गे ।।

चै. भा. अं. १.१२

प्रभुने गुरुको साथ ले लिया। गुरु-शिष्य एक साथ वनकी ओर लपके। भारतीजी शिष्यका साथ न पकड़ सके, पीछे पड़ गये। वे वृद्ध हो गये थे, प्रभुके साथ तेज दौड़ न सके। रास्तेमें बैठकर दूसरे सङ्गी-साथियोंके सहित रोने लगे। पश्चात् अपने आश्रममें लौट आये।

प्रभुके साथ अवधूत नित्यानन्द थे। चन्द्रशेखर आचार्यरत्न थे, मुकुन्द कुछ पीछे पड़ गये थे। प्रभुने एक बार पीछे घूमकर देखा, आचार्यरत्नको देखकर चकित होकर खड़े हो गये। चन्द्रशेखर आचार्यरत्न दौड़कर आये और प्रभुको गोदमें उठा लिया। प्रभुने उनको सुदृढ़ प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया और रोते-रोते बोले—

गृहे चल तुमि सर्व वैष्णवेर स्थाने ।
कहिओ सभारे आमि चलिलाङ बने ।।
गृहे चल तुमि दुःख ना भाविह मने ।
तोमार हृदये आमि बन्दी सर्वक्षणे ।।
तुमि मोर पिता मुञि नन्दन तोमार ।
जन्म-जन्म तुमि मोर प्रेम-संहति आमार ।।

चै. भा. अं १.२५ २७

ये ही कुछ बातें बोलकर और उत्तरकी कुछ प्रतीक्षा किये बिना प्रभु पुनः प्रेमोन्मत्तभावमें हरि-हरि-ध्वनि करते हुए लम्बी साँस लेकर आगे बढ़े। श्रीनित्यानन्दप्रभु और गदाधर उनके साथ थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्य भी वृद्ध हो गये थे, प्रभुके साथ दौड़ न सके। प्रभुकी बात सुनकर वे रास्तेमें मूर्च्छित होकर गिर पड़े। प्रभुकी इच्छासे उनकी प्राण-रक्षा हुई।

आचार्यरत्नके साथ बातें करनेमें प्रभुको जो थोड़ी देर हुई, इस बीचमें मुकुन्द आकर उनसे मिल गये। गोविन्द बराबर प्रभुके साथ रहे। वे प्रभुका करङ्ग-कौपीन, बहिर्वास लेकर चल रहे थे। अब प्रभु पश्चिमकी ओर चले। अब भी उनके साथ बहुत-से लोग थे। कण्टकपुरवासी उनको छोड़कर घर जा नहीं पा रहे थे। दूरहीसे प्रभुने उनके प्रति शुभ दृष्टिपात किया। वहाँ थोड़ी देर रुक गये। लोग दौड़कर प्रभुके समीप आ गये। सभी व्याकुल होकर रो रहे थे। प्रभुने बहुत आदरपूर्वक मधुर शब्दोंमें उनसे कहा—

सभे घर जाह लह गिया हरिनाम।
सभार हउक कृष्ण चन्द्र धन-प्राण॥
ब्रह्मा-शिव-शुकादि जे रस वाञ्छा करे।
हेन रस हओ तोमा सभार शरीरे॥

चै. भा. अं. १.५२,५३

प्रभुके श्रीमुखसे यह शुभाशीर्वादकी वाणी सुनकर सबलोग उच्च स्वरसे रोने लगे। प्रभु फिर उनकी ओर देख न सके। वे 'हरि-हरि', 'कृष्ण-कृष्ण' ध्वनि करते हुए पुनः चल पड़े! जन-समूह उनका साथ न दे सका। अन्ततोगत्वा वे लोग रोते हुए अपने घर लौट आये। ठाकुर वृन्दावनदासने लिखा है—

"परवश प्राय सभे आइलेन घरे।"

चै. भा. अ. १.५४

प्रभुके साथ रह गये थे श्रीनित्यानन्दप्रभु, गदाधर, मुकुन्द और गोविन्द कर्मकार।

ठाकुर जयानन्दने अपने श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थमें श्रीविष्णुप्रियादेवीके सम्बन्धमें बहुत-सी बातें लिखी हैं। ठाकुर लोचनदास और ठाकुर जयानन्द—दोनों ही प्रभुके रसिक भक्त थे। ठाकुर जयानन्दने एक स्थानमें अपनेको श्रीविष्णुप्रियादास कहकर परिचय दिया है। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया युगल-भजनके अधिकारी अतिविरल हैं। बहुत सुकृतिके फलसे श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-युगल-भजन-रसमें रति होती है। श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाकी लीला-कथा गौर-भक्तोंका गुप्तधन है। यह गुप्तधन ठाकुर जयानन्द कृपा करके कलिके अधम जीवोंको कुछ दान कर गये हैं। उसी गुप्तधनसे धनी होकर गौर-भक्तवृन्द आज प्रेमानन्दमें मत्त होकर श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रियाका जय-गान गाकर, लीला-कथा लिखकर कलिग्रस्त अधम जीवके शुष्क प्राणमें अमृत-षर्षण कर रहे हैं।

प्रभुकी संन्यास-कथा लिखते-लिखते ठाकुर जयानन्दने एक स्थानमें लिखा है—

नूतन गामछा दियाछिला विष्णुप्रिया।
स्तुति कैल नित्यानन्दे से गामछा दिया॥

प्रभुने जब गृह-त्याग किया तो आँगनमें खड़े होकर रात्रिके वस्त्र भी विसर्जित किये थे। एक नवीन कृष्ण-केलि वस्त्र पहनकर और एक नया गमछा लेकर उन्होंने घर छोड़ा था। वह अति सुन्दर नया गमछा श्रीमती विष्णुप्रियादेवीका दिया हुआ था। संन्यासके दिन प्रभुने यह गमछा श्रीनित्यानन्दप्रभुको दिया था। सर्वज्ञ श्रीनित्यानन्दप्रभुने समझा कि प्रभुको इस गमछेसे बड़ी प्रीति है, इसी कारण इसे मुझे दिया है। प्रभु जब सारी प्रीतिकी वस्तु त्याग कर, नदियाके सुखैश्वर्यको छोड़कर पथके भिखारी बन गये हैं तो इस तुच्छ गमछेकी माया लेकर क्या करेंगे? यह सोचकर श्रीनित्यानन्दप्रभुने उस गमछेको गङ्गाके समर्पण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कर दिया। भीतरी बात उनकी समझमें आ गयीं, परन्तु उन्होंने किसीको कहा नहीं।

से गामछा नित्यानन्द गङ्गाये सर्मापत।
विष्णुप्रियार अनुभव किछु ना प्रकाशिल॥

ज. चै. म.

प्रभुने कण्टकनगरमें आकर संन्यासके दिन अब अपनी वेष-भूषा बदल दी तो उसे श्रीनित्यानन्द-प्रभुको दे डाला। प्रभुके मनका भाव यह था कि श्रीनित्यानन्दप्रभु उसे ले जाकर नवद्वीपमें शची-विष्णुप्रियाको दे देंगे। यह देखकर उनका गौर-विरह और अधिक बढ़ जायगा। विरहकी वृद्धि होनेपर ही वे लोग उनको प्राप्त कर सकेंगे। वे कौन-से वस्त्रादि थे, इसका वर्णन भी ठाकुर जयानन्दने किया है—

कनक कुण्डल हार हिरण्य मादुलि।
नित्यानन्द सर्मापल वस्त्र कृष्ण-केलि॥

श्रीनित्यानन्दप्रभुने गोविन्द कर्मकारके हाथमें ये वस्त्रादि सर्मापत करके चुपके-से कहा—"मैं जब नवद्वीप जाऊँगा, तब ये वस्तुएँ मुझको देना।" गोविन्द उन वस्तुओंको अति यत्नपूर्वक प्रभुके करङ्ग-कौपीनके साथ बाँधकर ले चले। श्रीनित्यानन्दप्रभु जब शचीमाताको शान्तिपुर लाने नवद्वीप गये थे, तब ये सब वस्तुएँ—

"नवद्वीपे शची-विष्णुप्रिया सर्मापल।"

श्रीविष्णुप्रियादेवी उन्हें देखकर व्याकुल होकर रोने लगीं, और शचीमाताको मूर्च्छा आ गयी। गौर-विरह-उद्दीपित करनेके लिए ही यह प्रभुका लीलारङ्ग था। श्रीविष्णुप्रियादेवी अतिशय यत्न और भक्तिके साथ प्रभुकी शैया, आसन, नदियाकी वेष-भूषा आदि अपने मन्दिरमें रखकर उनकी नित्य पूजा करती थी, ये सब बातें ठाकुर जयानन्द अपने श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थमें लिख गये हैं।

प्रभुने संन्यास-ग्रहणके दूसरे दिन कण्टकनगरमें वास किया। उसके बाद पश्चिमकी ओर होकर वनके रास्तेसे राढ़देशमें प्रविष्ट हुए।

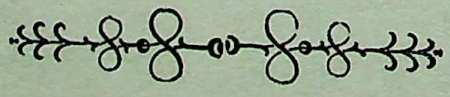

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अट्ठावनवाँ अध्याय

प्रभुका राढ़ देश भ्रमण

राढ़े आसि गौरचन्द्र हइला प्रवेश।
अद्यापिह सेइ भाग्ये धन्य राढ़ देश॥
चै. भा. अं. १.५१

राढ़ देशमें भ्रमण

संन्यास-वेषमें प्रभु प्रेमोन्मत्तभावमें दिग्-विदिग्-ज्ञानशून्य होकर रास्तेपर जा रहे हैं। सारे मार्गमें वे नृत्य करते हुए जा रहे हैं। वे अब कण्टकनगर से बहुत दूर आ गये हैं। कण्टकनगर वासी सबलोग निराश होकर घर लौट गये हैं। केवल प्रभुके सङ्गीलोग उनके साथ हैं। उन्होंने क्रमशः राढ़देशके भीतर प्रवेश किया। राढ़देशकी भूमि देखनेमें अत्यन्त सुन्दर है। चारों ओर अश्वत्थ वृक्षोंकी पङ्क्तियाँ शोभा दे रही हैं। उनके बीच-बीचमें लताओंसे सुशोभित सुरम्य कुञ्ज दीख पड़ते हैं। दूर वनमें जीव निर्भय होकर स्वच्छन्द विचरण करते हैं। स्वभाव-सुन्दर मनोरम विस्तृत शस्यक्षेत्र अपूर्व शोभा धारण कर रहा है। गायें पूँछ उठाकर आनन्दित होकर चारों ओर दौड़ रही हैं। बछड़े हम्बा-रव करते हुए उनके पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं। प्रभु आविष्ट होकर यह अपूर्व वन-शोभा देखते जा रहे हैं तथा प्रेमावेशमें अपूर्व हाव-भावके साथ नृत्य कर रहे हैं! उनके साथियोंने कीर्तनका सुर पकड़ा है। प्रभु बीच-बीचमें प्रेमानन्दमें हुंकार-गर्जन करते हैं और दोनों भुजाएँ उठाकर 'हरि बोल' ध्वनि कर रहे हैं। उनके इस अपूर्व प्रेमभावको देखकर वनके पशु-पक्षी, जीव-जन्तुतक मुग्ध होकर उनके पास आकर एक-टकसे प्रभुके मुख-चन्द्रकी ओर ताक रहे हैं। श्रीभगवान्‌का अपरूप-रूप सर्वचित्ताकर्षक है। स्थावर-जङ्गमतक श्रीभगवान्‌के रूपपर मुग्ध हैं।

प्रभु वनके रास्ते जाते-जाते श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ओर देखकर कातर स्वरसे कहने लगे—"जिस वनमें वक्त्रेश्वर महादेव हैं, मैं उसी जगह जाकर निर्जनमें रहूँगा।"

यह बात कहते-कहते प्रभु चल दिये। वे कहीं भी क्षण—मात्रके लिए भी स्थिर होकर खड़े नहीं हो रहे हैं, प्रेमावेगमें अतिद्रुतगतिसे पश्चिमकी ओर जा रहे हैं। श्रीनित्यानन्दप्रभु आदि साथी-लोग प्रभुके पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं। रास्तेमें जो लोग प्रभुको देखते हैं, वे दण्डवत् प्रणाम करते हैं। नयनजलसे प्रभुका वक्षः स्थल भीग रहा है। सबलोग पूछते हैं कि संन्यासीजी इतना रो क्यों रहे हैं? वे लोग प्रभुके प्रेम-क्रन्दनका मर्म नहीं समझते। प्रभुका अद्‌भुत नृत्य-कीर्तन, अद्‌भुत क्रन्दन और अद्‌भुत त्रिभुवन-मोहन अपरूप-रूप देखकर सबलोग विस्मित हो रहे हैं। दयामय प्रभु उनकी ओर देखकर उच्च स्वरसे कहते हैं—**'बोल हरि बोल, बोल हरि बोल'**। उनकी कण्ठध्वनि गगनभेदी है। बहुत दूरके लोग उसे सुनकर दौड़े हुए प्रभुके पास आकर उनको प्रणाम करते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसी प्रकारसे प्रभु उस दिन सारे दिन दौड़ते रहे विश्रामका नामतक नहीं लिया। संध्या हो गयी, उस समय वे भक्तगणके साथ राढ़देशके एक गाँवमें जा पहुँचे। उन्होंने वहाँ रात्रि-विश्राम किया।

एक पहर रात रहते प्रभु उठकर सबको सोये छोड़कर एकाकी चल दिये। प्रातः काल उठकर सबने देखा कि प्रभु नहीं है। भक्तगण आकुलचित्तसे रोते-रोते सारे गाँवमें खोजते रहे। कहीं भी प्रभुको न पाकर वे उस गाँवके बाहर एकान्त स्थानमें जाकर बैठ गये और उच्च स्वरसे रोते-रोते प्रभुको पुकारने लगे।

उस प्रान्तर भूमिमें बहुत दूरसे उच्च रुदन-ध्वनि सुननेमें आती थी। इधर भक्तोंकी कातर-कण्ठकी रुदन-ध्वनि भक्तवत्सल प्रभुके कानोंमें पहुँची उधर भक्तगणने सुना—'हे कृष्ण! हे प्रभो!! हे मेरे पिता कृष्ण!!!' कहकर प्रभु रुदन कर रहे हैं। प्रभुको वे लोग देख नहीं पाते थे; परन्तु उनके कण्ठकी ध्वनिको लक्ष्य बनाकर वे लोग उसी ओर दौड़े। वहाँ जाकर सबने देखा कि प्रेमावेगमें प्रभु रो रहे हैं और धूलमें लोट-पोट कर रहे हैं।

श्रीनित्यानन्दप्रभु उनको गोदमें लेकर बैठ गये। साथीलोग व्याकुल होकर रोने लगे। मुकुन्दने तब कीर्तनका सुर पकड़ा। कीर्तन सुनकर प्रभु उठकर प्रेमानन्दमें मधुर नृत्य करने लगे। भक्तगण उनको घेरकर कीर्तन करने लगे। प्रभु नृत्य और कीर्तनके आनन्दमें पुनः रास्तेकी ओर भागे। भक्तगण उनके साथ-साथ चले। प्रभु अब भी पश्चिमकी ओर जा रहे थे। वक्रेश्वर वहाँसे केवल चार कोस दूर था।

शान्तिपुरकी ओर

उस स्थानसे स्वतन्त्र ईश्वर श्रीगौर-भगवान् अट्टहास करते हुए पूर्वकी ओर लौटे। उनके हृदयमें बड़ा आनन्द था। अब-तक प्रभु कृष्ण-विरहमें रो रहे थे, दुःखसे भूमिपर लोट रहे थे, अब अचानक उनका ऐसा भाव-परिवर्तन क्यों हुआ, इसमें कुछ रहस्य है।

पूर्व दिशाकी ओर शान्तिपुर है। सर्वज्ञ प्रभु जानते हैं कि उनके विरहमें नदियाके भक्तोंकी क्या दशा हो रही है? वे भक्तवत्सल हैं, भक्त-दुःखहारी हैं। अपने सुखके लिए वे लालायित नहीं हैं। उनके मनमें अचानक आया कि शान्तिपुरमें चलकर अद्वैतभवनमें ठहरें; वहाँ नदियाके भक्तोंको बुलवाएं, दुःखिनी माताको दर्शन दें, सगोष्ठी अद्वैतप्रभुको आनन्द दें—यही सोचकर प्रभु पश्चिम-दिशाका मार्ग छोड़कर पूर्वाभिमुख गङ्गाके तटकी ओर मुड़े।

श्रीनित्यानन्दप्रभु उनकी इच्छाशक्ति हैं। वे भी सर्वज्ञ हैं। उन्होंने प्रभुके मनकी बात समझकर कार्य किया। किसीने किसीसे कोई बात न की। मनका भाव मनमें ही छिपाकर चतुरचूड़ामणि प्रभुने बाहरी प्रकटरूपमें श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ओर प्रेमभरी दृष्टि डालकर कहा—"मैं नीलाचल जा रहा हूँ, श्रीजगन्नाथप्रभुकी ऐसी ही आज्ञा हुई है। तुम भी शीघ्र ही वहाँ पहुँच जाना।"

—इतनी बात कहकर वे पूर्वकी ओर चल पड़े। प्रभुकी बात सुनकर भक्तगणके मनमें बड़ा आनन्द हुआ; क्योंकि उन्होंने समझा कि प्रभु शान्तिपुरकी ओर जा रहे हैं। प्रभु प्रेमानन्दमें नृत्य-कीर्तन करते हुए गङ्गाकी ओर चल पड़े।

राढ़देश भक्तिशून्य देश था। उस देशमें किसीके मुखसे कृष्ण-नाम नहीं सुन पड़ा। कोई कृष्ण-कीर्तन नहीं करता था। इससे प्रभु अत्यन्त दुःखी होकर साथियोंकी ओर करुण दृष्टिसे देखकर रोते-बोले—"इस भक्तिशून्य देशमें मैं कैसे आया?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

किसीके मुखसे एक बार भी मधुर कृष्ण-नाम नहीं सुन पा रहा हूँ। यहाँ मैं आया क्यों ? अब मैं यह प्राण त्याग दूँगा।"—यह बात कहते-कहते प्रभु उन्मत्तके समान भाग चले। तीन दिन उनको अन्नाहार लिये हो गया था। शरीर दुर्बल हो गया था। दौड़ते-दौड़ते कभी पृथ्वीपर बैठकर लेट जाते थे। रास्तेकी धूलिमें भक्तगणसे आवेष्टित होकर कभी अचेतके समान सो जाते थे। इस प्रकार प्रभु सारे राढ़देशका भ्रमण करके शान्तिपुरके दूसरी ओर चार-पाँच कोसके भीतर आ पहुँचे। तब श्रीनित्यानन्दप्रभु आदि भक्तोंके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। आशा हुई कि अब प्रभुको शान्तिपुर ले जा सकेंगे।

प्रभु एक मैदानमें अचेतनके समान पड़कर सो गये। भक्तगण उनको घेरकर बैठ गये। प्रभुके मुँहसे केवल यही निकल रहा था—"ऐसे भक्ति-विहीन देशमें मैं क्यों आया ? इस देशमें कोई आदमी मेरे जीवन-सर्वस्व कृष्णधनका नाम नहीं लेता। इनके मुँहमें मधुर हरिनाम नहीं है।"

गोप-बालकोंसे मिलन

इसी समय उस मैदानमें शिशुके कण्ठसे प्रभु मधुर हरिध्वनि सुनने लगे। वे चकित हरिणीके समान उत्कण्ठित होकर उठ खड़े हुए। उस मैदानमें ग्वाल-बालक गौएँ चरा रहे थे। उनमें-से एक सुकृतिवान् बालक 'हरि-बोल, हरि-बोल' कहता हुआ उच्चस्वरमें कीर्तन करता हुए प्रभुकी ओर आ रहा था। उसके साथ-साथ दूसरे बालकवृन्द मधुर हरिध्वनि कर रहे थे।

श्रीगौराङ्गप्रभुके वहाँ अधिष्ठानके कारण ग्वाल-बालोंके मनमें मधुर हरिनामकी स्फूर्ति हुई थी। प्रभुकी कृपासे उनको प्रेमानन्द प्राप्त हुआ था। गौराङ्ग श्रीहरिके दर्शनार्थ वे लोग प्रेमानन्दमें चल पड़े थे। उनके मनमें आज बड़ा आनन्द था। आनन्दमय लीलाविग्रह साक्षात् श्रीहरिके चरणोंके दर्शनकी प्राप्ति आज उनके भाग्यमें लिखी थी, इसी कारण वे लोग प्रेमानन्दमें उन्मत्त होकर मधुर हरिनाम-कीर्तन कर रहे थे, और नृत्य कर रहे थे।

प्रभु ग्वाल-बालोंके मुखसे मधुर हरिध्वनि सुनकर आनन्दसे विह्वल हो उठे। वे मन-ही-मन सोचने लगे कि तीन दिनतक मैं सारे राढ़देशमें भ्रमण करता रहा, परन्तु किसीके मुखसे एकवार भी मधुर हरिनाम नहीं सुनायी पड़ा। आज अकस्मात् बाल-वृन्दके मुखसे मधुर हरिनाम सुनायी दिया, इसका क्या कारण है ? इस प्रकार मनमें सोचते-सोचते प्रभु साथियोंकी ओर करुण-नयनसे देखकर बोले—"यहाँसे गङ्गा कितनी दूर है ?" श्रीनित्यानन्दप्रभुने उत्तर दिया—"गङ्गा यहाँसे एक पहरका रास्ता है।" यह सुनकर प्रभु हँसते हुए बोले—"यह गङ्गाकी ही महिमा है कि यहाँ हरिनाम सुननेको मिला है।"

गङ्गाकी महिमाकी बात कहते कहते भाव निधि प्रभुके हृदयमें भावतरङ्ग उठा। वे अब स्थिर न रह सके। दौड़कर ग्वाल-बालोंके बीच उपस्थित हो गये। ग्वाल-बालवृन्दने प्रभुको देखकर प्रणाम किया। भावनिधि प्रभुके मनमें वृन्दावन-भाव उदय हुआ। वे उनको सम्बोधन करके मधुर स्वरसे बोले—

ओ ब्रजेर राखालगण।
प्रणाम कोथाय पेलि, के शिखाले॥
आमि वृन्दावने जेतेछिलाम।
नाम शुने धेये एलाम॥
एइ जे आमि मरे छिलाम।
नाम शुने प्राण पेलाम॥
आमार कर्ण उपवासी छिल।
हरिनामे आवार प्राण एल॥

(प्राचीन पद)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ग्वाल-बालोंके साथ तब प्रभु नृत्य करने लगे। प्रभुने उनके मस्तकपर श्रीहस्तसे स्पर्श करके आशीर्वाद दिया—"तुम लोगोंने मुझको मधुर हरिनाम सुनाकर कृतार्थ किया है। कृष्ण तुम्हारे ऊपर कृपा करें। तुमलोग व्रजके बालक हो। बतलाओ तो बच्चों! वृन्दावन कितनी दूर है?"

प्रभुका इस समय पूर्ण वृन्दावन-भाव है। वे सोचते हैं कि व्रजके बालक मुझे मिल गये हैं, वृन्दावन अवश्य मिल जायगा। श्रीनित्यानन्दप्रभु साथ ही थे। उनके संकेतसे ग्वाल-बालवृन्दने प्रभुको वृन्दावनका रास्ता कहकर शान्तिपुरका रास्ता दिखला दिया। तत्काल प्रभु ऊर्ध्वश्वास लेकर भागे।

बीचमें एक बार उनको बाह्य ज्ञान हुआ। पहले जो गङ्गाकी महिमाकी बात कह रहे थे, वह स्मरण हो आयी। राढ़देशकी बात याद आयी। उन्होंने साथियोंकी ओर देखकर कहा—"आज मैं गङ्गा-स्नान करूँगा।" प्रभुका गङ्गानुराग इतना बढ़ गया कि वह दिशा-विदिशाका ज्ञान भूलकर गङ्गातीरकी ओर मत्तसिंहकी चालसे दौड़ने लगे। साथी लोग उनका साथ न पकड़ सके। एकमात्र श्रीनित्यानन्दप्रभु उनके साथ रहे।

उस दिन संध्याकालमें प्रभु शान्तिपुरके दूसरे पार गङ्गातटपर पहुँच गये। गङ्गाका दर्शन करके प्रभुके मनमें अपार आनन्द हुआ। श्रीनित्यानन्द-प्रभुके साथ वे बहुत देर तक गङ्गास्नान करते रहे। 'गङ्गा-गङ्गा' कहकर बहुत देरतक क्रन्दन करते रहे। भरपेट गङ्गाजल-पान करके परितृप्त हो गये। भक्तिपूर्वक गङ्गाजीको प्रणाम करके हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे—

प्रेमरस स्वरूप तोमार दिव्य जल।
शिव से तोमार तत्त्व जानेन सकल॥
सकृत् तोमार नाम करिले श्रवण।
तार विष्णुभक्ति हय कि पुनः भक्षण॥
तोमार प्रसादे से श्रीकृष्ण हेन नाम।
स्फुरये जीवेर मुखे इथे नाहि आन॥
कीट-पक्षी-शृगाल-कुकुर यदि लय।
तथापि तोमार यदि निकटे वसय॥
तथापि ताहार जत भाग्येर उपमा।
अन्यत्रेर कोटीश्वर नहे तार समा॥
पतित तारिते से तोमार अवतार।
तोमार समान तुमि बइ नाहि आर॥

चै. भा. अं.११२-११७

गङ्गादेवी प्रभुके श्रीचरणकी दासी हैं। वे प्रभुके श्रीमुखसे इस प्रकारकी आत्मस्तुति श्रवण करके बहुत लज्जित हुईं। उनकी सलज्ज तरङ्ग-भङ्गिया देखकर सर्वज्ञ प्रभु इसे ताड़ गये। श्रीगौर-भगवान् प्रच्छन्न अवतार हैं। सबसे अपने-आपको छिपाकर रखनेमें उनको सुख मिलता है। उनके सुखमें ही उनके सिरजे हुए जीव-जगत्को आनन्द मिलता है। इसी कारण कोई कुछ बोलनेका साहस नहीं करता है।

श्रीगौराङ्ग-लीलाके व्यासावतार श्रीवृन्दावन-दास ठाकुरने प्रभुकी इस गङ्गास्तुतिकी फलश्रुति लिखी है—

जे शुनये गौराङ्गेर गङ्गा प्रति स्तुति।
तार हय श्रीकृष्ण चैतन्ये रति-मति॥

चै. भा. अं. १.१२०

कृपालु पाठकवृन्द! कृपा करके भक्तिपूर्वक प्रभुकी इस गङ्गास्तुतिका पाठ करें। आपलोगोंसे जीवाधम ग्रन्थकारकी यही कर बद्ध प्रार्थना है।

गङ्गास्नान करके, गङ्गाके तीर बैठकर प्रभुने पुनः बाह्य ज्ञान खो दिया। वे गङ्गातटको श्रीयमुनातट समझ रहे हैं। प्रभु प्रेमानन्दमें गद्गद होकर वहाँ बैठे मन-ही-मन सोच रहे हैं कि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवृन्दावनमें यमुनातटपर वे मनकी साधसे श्रीकृष्ण-भजन करेंगे। उनके मनमें इसी समय निम्नलिखित भागवतीय श्लोक स्मरण हुआ—

एतां स आस्थाय परात्मनिष्ठा-
मध्यासितां पूर्वतमैर्महर्षिभि।
अहं तरिष्यामि दुरन्तपारं
तमो मुकुन्दाङ्घ्रिनिषेवयैव॥

श्रीम. भा. १ .२३.५८

अवन्तीनगरके भाग्यवान् विप्रके समान श्रीवृन्दावनमें रहकर वे एकान्तमें मुकुन्द-भजन करेंगे—इसी आनन्दमें प्रभु गद्गद हो रहे हैं। वे बैठे थे, सहसा चकितसे होकर उठे और गङ्गाके तीर-तीर भागने लगे।

नित्यानन्दजीका चन्द्रशेखर आचार्यरत्नको शान्तिपुर-नवद्वीप भेजना

उसी समय नित्यानन्दप्रभुने चन्द्रशेखर आचार्य-रत्नको पास बुलाकर चुपके-से कहा—"आप पहले पार होकर शान्तिपुर चलें। श्रीअद्वैताचार्यसे मिलकर उनसे कहें कि एक नौका लेकर शीघ्र इस पार आवें। मैं उसी नौकापर प्रभुको चढ़ाकर शान्तिपुर ले जाऊँगा। अद्वैत प्रभुका आगमन नितान्त आवश्यक समझकर मैं यह बात कह रहा हूँ। तत्पश्चात् नवद्वीप जाकर आप सबसे प्रभुके संन्यास-की बात कहकर शचीमाताके सहित भक्तोंको शान्तिपुर ले आवें।"

आचार्यरत्नेरे कहे नित्यानन्द गोसाञि।
शीघ्र जाह तुमि अद्वैत-आचार्येर ठाञि॥
प्रभु लेया जाब आमि ताँहार मन्दिरे।
सावधाने रहे जेन नौका लञा तीरे॥
तबे नवद्वीपे तुमि करिह गमन।
शची सह लञा आइस सब भक्तगण॥

चै. च. म. ३.१८—२०

चन्द्रशेखर आचार्यरत्नने श्रीनित्यानन्दप्रभुके आदेशका तत्काल पालन किया। प्रभुको इस अवस्थामें छोड़कर जानेमें उनको दारुण व्यथा हुई; परन्तु कार्यकी आवश्यकता समझकर वे बिना किसी हिचकिचाहटके गङ्गापार होकर शान्तिपुर चले। प्रभुके साथ श्रीनित्यानन्दप्रभु, मुकुन्द और गोविन्द रह गये।

प्रभु गङ्गाके किनारे-किनारे दौड़ते हुए पुनः एक स्थानपर बैठ गये। तीन दिन बिना कुछ खाये, बिना सोये तथा अत्यधिक भ्रमणके श्रमसे वे बड़े ही कातर हो गये थे। नित्यानन्दप्रभु अब किसी भी तरहसे उनको शान्तिपुरमें श्रीअद्वैतप्रभुके घर ले जा सकें तो प्राण बचें।

प्रभुको इस समय बाह्य ज्ञान बिल्कुल ही नहीं है। वे वृन्दावन-भावमें विभोर हैं। भावमें दोनों कमल-नयन तन्द्राग्रस्त हैं, श्रीअङ्ग शिथिल है, केवल रास्तेकी ओर देखते हैं और गङ्गाकी ओर देखकर मन-ही-मन समझ रहे हैं कि 'ये श्रीयमुनाजी हैं, वृन्दावन और कितनी दूर होगा?' मनके भाव मुहसे प्रकट हो गये। उन्होने कातर-कण्ठसे पूछा—"श्रीवृन्दावन कितनी दूर है?" श्रीनित्यानन्दप्रभु निकट ही थे, वे बोले—"श्रीवृन्दावनके निकट आ गये हैं, अब अधिक दूर नहीं है। यही श्रीयमुनाके उस पार वृन्दावन है।"

प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ; परन्तु किसने यह उत्तर दिया है, इसका लक्ष्य कुछ उन्होंने नहीं किया। उनका मन वृन्दावनके केलिकुञ्जमें चला गया था, उनकी बाह्य दृष्टि-शक्ति लोप हो गयी थी। देखनेपर भी किसीको पहचान नहीं रहे थे। सामने श्रीयमुनाका कृष्णवर्ण स्वच्छ सलिल देखकर वे खड़े होकर परम आनन्द पूर्वक यमुनाका स्तवन करने लगे—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चिदानन्दभानोः सदानन्दसूनोः
परप्रेमपात्री द्रवब्रह्मगात्री ।
अघानां लवित्री जगत् क्षेमधात्री
पवित्रीक्रियान्नो वपुर्मित्रपुत्री ।।
चै. चं. नाटक ५-१०

अर्थात्—ब्रह्म जिसकी अङ्ग-कान्ति है उस नन्दनन्दन श्रीकृष्णकी अत्यन्त प्रेमपात्री तथा ब्रह्ममय सलिलशरीरा, पापसमूहका नाश करने वाली और जगत्का मङ्गल करनेवाली सूर्यनन्दिनी श्रीयमुना हमारे शरीरको पवित्र करे !

श्रीनित्यानन्दप्रभुने समझा कि प्रभको शान्तिपुर ले जानेका यही प्रकृत समय है। प्रभुके सामने जाकर बोले—"प्रभो ! आप वृन्दावन जायँगे, यह सुनकर मैं भी श्रीवृन्दावन जानेके लिए आपका सङ्गी हो गया हूँ।" प्रभुका अब बाह्य भाव हो गया। पहले तो वे श्रीनित्यानन्दप्रभुको पहचान न सके। कुछ देरके बाद उनके वदनकी ओर देखकर विस्मयसे आँखें फाड़कर देखते हुए बोले—"यह क्या ? श्रीपाद नित्यानन्द ! आप कैसे यहाँ आ गये ?" प्रभुकी ऐसी बातको सुनकर श्रीनित्यानन्द रो पड़े। उन्होंने आँसूभरी आँखोंसे गद्गद स्वरमें उत्तर दिया—"प्रभो ! मैं आपका वही भृत्याधम नित्यानन्द हूँ।" प्रभु पुनः बोले—"तभी तो, आप यहाँ कैसे आये ?" तब श्रीनित्यानन्दने चतुराईसे उनको उत्तर दिया—"मैं आपके श्रीवृन्दावनका साथी हो गया हूँ।"

भावनिधि प्रभुने जब श्रीनित्यानन्दप्रभुको पहचाना, तब उनके हृदय-सिंधुमें वृन्दावन-भावकी प्रबल प्रेमतरङ्ग उठी। वे अब स्थिर न रह सके। परम स्नेहमें भरकर वे निताई-चाँदका हाथ पकड़कर रोते-रोते बोले—

निताइ ! बलरे कत दूर वृन्दावन ।
आमाय दिबेन कि कृष्ण दरशन ।।
कबे वृन्दावने जाबो, माधुकुरी करे खाबो,
जय राधे श्रीराधे बले राधाकुण्डे गड़ि दिव ।।

श्रीनित्यानन्दप्रभु गङ्गाके घाटपर श्रीअद्वैतप्रभुकी नौकाकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनके मनमें बड़ा भय है कि यदि प्रभुको बाह्य ज्ञान हुआ और वे जान पाये कि उनको भुलावा देकर वृन्दावनके भ्रममें हम शान्तिपुर ले जा रहे हैं तो इससे बड़ी विपद्का सामना करना पड़ेगा। हो सकता है कि प्रभु रुष्ट होकर कहीं भाग जायँ और उनका पता न लगे। उस अवस्थामें सबके प्राण संकटमें पड़ जायँगे। श्रीअद्वैतप्रभुको देखते ही श्रीनित्यानन्दप्रभुका साहस बढ़ गया। दोनों आदमी मिलकर किसी प्रकार प्रभुको शान्तिपुर ले जाकर उनके भोजनादि की व्यवस्था करेंगे। प्रभु आज तीन दिनसे उपवास कर रहे हैं, गौराङ्गगत प्राण निताई-चाँदका प्राण छटपटा रहा है। वे प्रभुके श्रमकातर शुष्क और मलिन श्रीवदनकी ओर देखा नहीं जाता।

अद्वैतप्रभुका आकर शान्तिपुर लेजाना

इसी समय गङ्गाके मध्य एक नौका दिखलायी दी। श्रीनित्यानन्दप्रभु उत्साहपूर्वक और उत्कण्ठित चित्तसे उस नौकाकी ओर सतृष्ण नयनोंसे देखने लगे। देखते-देखते श्रीअद्वैतप्रभुकी नौका आदमियोंको साथ लिये घाटपर आ लगी। प्रभु उस समय यमुनाके भ्रममें गङ्गा-स्नान करके आर्द्र कौपीन पहनकर तीरपर खड़े थे।

श्रीअद्वैताचार्य दूरसे प्रभुके संन्यास-वेषको तथा मुण्डित केशको देखकर उच्चस्वरसे हाहाकार करके क्रन्दन करने लगे। श्रीनित्यानन्दप्रभु उनके कण्ठ-स्वरको सुनतेही समझ गये कि आचार्य प्रभु आ रहे हैं। श्रीअद्वैतप्रभुकी हाहाकारकी बात कवि कर्णपूर गोस्वामीने अपने ग्रन्थमें लिखी है।

आशापाशद्विगुणवलितैस्तद्गुणैरेव बद्धाः
प्राणा नो यद्विरहविधुरा हन्त गन्तं न शेकुः ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सम्प्रत्येतैरुपकृतमहो तन्मुखं दर्शयद्भि-
र्दृष्टे होष्टे भवति सहसा हन्त वामोऽप्यवामः ।।

चै. चन्द्र. ना. ५.११

श्रीनित्यानन्दप्रभुने इसी समय आकुलचित्त होकर एक वार प्रभुके सलिलसिक्त श्रीअङ्ग-माधुरीपर दृष्टिपात किया। फिर गङ्गाके जलमें आभासित श्रीअद्वैतप्रभुकी नौकाकी ओर दृष्टिपात किया। उस समय प्रभुको उन्होंने किस रूपमें देखा था, इसका वर्णन भी कविकर्णपूर गोस्वामीने हृदय-विदारक भाषामें किया है। यथा—

अम्भः स्यन्दैस्तिमितवपुषं लज्जयाभ्यासहानेः
कौपीनाच्छादनमपि न निर्गल्य निःसारिताम्बुम् ।
देवं रक्ताम्बुजदलचयैश्छाद्यमानोत्तमाङ्गं
स्नानोत्तीर्णं करिवरमिव स्वर्णगोरं निरीक्षे ।।

चै. चन्द्र. ना. ५-१२

अर्थात्—जिनका कलेवर निरन्तर निपतित वारिविन्दु-समूहसे अतीव आर्द्र है तथा अनभ्यासवश लज्जासे जो अपने आर्द्र कोपीनाच्छादनको निचोड़े बिना ही धारण कर रहे हैं, उस कषित-काञ्चनके समान गौर वर्ण भगवान्‌को रक्तोत्पलावृत मस्तक तथा स्नानोत्थित करिवरके समान देख रहा हूँ।

प्रभुका ऐसा वेष देखकर श्रीनित्यानन्द प्रभुका हृदय विदीर्ण हो रहा है। कब श्रीअद्वैताचार्य आकर प्रभुके आर्द्र कौपीनको परिवर्तन करावेंगे, नया वहिर्वास पहनावेंगे, इसी चिन्तामें वे व्याकुल हैं, वे प्रभुके श्रीअङ्गकी ओर देख नहीं पा रहे हैं। इसी समय श्रीअद्वैतप्रभु नौकासे कूदकर तीर पर प्रभुके सामने आकर बोले—

अहो अयमयं देवः ।
चूड़ावियोगादरुणेन वाससा
दूरादसौ चेदनसाविवेक्ष्यते ।
तथापि प्रेमप्रतिमेन तेजसा
लावण्यभूम्नाऽपि स एव भाति नः ।।

अहो अतिरम्यम् !
रक्ताम्बरं कनकपीतमिदं तदेव
देवस्य पश्यत वपुः सदृशीकरोति ।
गौरारुणस्य परिपक्वमहारसस्य
वैराग्यसार-सहकार-फलस्य लक्ष्मीम् ।।

चै. च. नाटक ५.१३,१४

अर्थात्—अहा ! भगवान् सामने ही हैं ! इनकी शिखा अर्थात् कुञ्चित केश-पाशके न होते हुए भी और अरुण-वस्त्र पहनकर अन्य पुरुषके समान दिखलायी देनेपर भी अपनी सुवर्ण-सदृश तेजराशिसे तथा असीम लावण्यप्रभासे मेरे सामने यह प्रकाशित हो रहे हैं। यह अतीव रमणीय, रक्त वस्त्रसे समावृत कवित-काञ्चन-सदृश गौरवर्ण शरीर वैराग्य-साररूप सहकार-वृक्षके रसपूर्ण परिपक्व फलके समान सुशोभित हो रहा है।

प्रभु गङ्गाके किनारे आँखें मूँदे खड़े हैं। वे मानो ध्यानस्थ हैं। श्रीअद्वैतप्रभु उनके सामने जाकर चरणोंमें गिरकर उच्चस्वरसे रोने लगे। प्रभुने क्षणमात्रमें अपने कमल-नयनको उन्मीलित किया। वे श्रीअद्वैताचार्यको सामने देखकर पहचान गये। श्रीनित्यानन्दप्रभु पास ही खड़े थे। प्रभु उनकी ओर देखकर विस्मितके समान बोले—"क्या यहाँ श्रीअद्वैताचार्य आदि महानुभाव साधुवृन्द आये हैं ?" श्रीनित्यानन्दप्रभुने निवेदन किया—"प्रभो ! वे ही हैं।" तब प्रभुने श्रीअद्वैताचार्यको गाढ़ालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया और अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे गद्‌गद स्वरमें बोले—"आचार्य ! आपने कैसे समझा कि मैं वृन्दावन आ गया हूँ और कैसे आप सबलोग मेरे पीछे-पीछे आये ? मैं क्या स्वप्न देख रहा हूँ ?"*

---

* भगवान्—(सत्वरमक्षिणी समुन्मील्य) कथममी अद्वैताचार्यमहानुभावाः ।

(टिप्पणी का शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्या नित्यानन्दने गङ्गाजीको यमुनाजी बताकर मेरी वंचना की है ? आचार्य गोसाईंने उत्तर दिया—

तुमि जाहाँ सेइ वृन्दावन ।
मोर भाग्ये गङ्गातीरे तोमार आगमन ॥
मिथ्या नहे श्रीपाद वचन ।
यमुनाते स्नान तुमि करिला एखन ॥
(प्रयागे) गङ्गाय यमुना बहे—हञा एकधार ।
पश्चिमे यमुना बहे—पूर्वे गङ्गाधार ॥
पश्चिमधारे यमुना बहे, ताहाँ कैल स्नान ।
आर्द्र कोपीन छाड़ि शुष्क कर परिधान ॥

चै. च. म. ३.३०,३२—३४

प्रभु अब भी पूर्ण वृन्दावन-भावमें विभोर हैं। वे सोचते हैं कि श्रीवृन्दावनमें वे चुपचाप आये थे। इन लोगोंको कैसे इसका पता लगा ? श्रीअद्वैतप्रभुने समझा कि प्रभुको वाह्य ज्ञान नहीं है। तब उन्होंने उनके सामने खड़े होकर हाथ जोड़कर रोते-रोते निवेदन किया—"हे प्रभो ! जिसको तुम 'नाड़ा' कहकर पुकारनेमें परम प्रसन्न होते थे। मैं तुम्हारा वही अधम सेवक अद्वैत हूँ।" इतना कहकर वे व्याकुल होकर रोते हुए उनके चरणोंमें जा गिरे।

प्रभुने अपनी आजानुलम्बित दोनों कोमल भुजाओंके द्वारा श्रीअद्वैताचार्यको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके उठा लिया और आँसूभरे नेत्राँसे बोले—"हे अद्वैत ! तुममें भगवत्पदारविन्दका नित्य संयोग है, अतएव तुम्हीं मेरा वह वृन्दावन हो। अस्तु, बतलाओ, मैं कहाँ आया हूँ ?" अद्वैतप्रभु चित्त स्थिर करके प्रभुसे गम्भीर भावमें बोले—"यह पतितोद्धारिणी भगवती भागीरथी हैं और इसके दूसरे पार शान्तिपुर है। मैं प्रभुको अपने घर ले जानेके लिए आया हूँ।"

इतनी देरके बाद प्रभुका बाह्य ज्ञान उदय हुआ। अब सब-कुछ उनकी समझमें आ गया। उन्होंने एक वार श्रीनित्यानन्दप्रभुकी ओर करुण-नयनोंसे देखा और कातर स्वरमें बोले—"श्रीपाद ! यह कार्य आपने अच्छा नहीं किया। आपने मुझको नाट्यशालाका नट बना दिया है। वस्तुतः मैं आपके हाथकी कठपुतली हूँ।"

श्रीनित्यानन्दप्रभु यह बात सुनकर कुछ निरुत्तर हो गये और सिर अवनत करके हाथ जोड़कर प्रभुके सामने अपराधीके समान खड़े रहे। श्रीअद्वैतप्रभु आ गये थे, अतः उनको अब कोई भय नहीं था; यदि प्रभु रुष्ट होकर कुछ करते हैं तो वे उसकी व्यवस्था करेंगे। जबतक वे अकेले थे, तबतक भय था। अब 'गौर-आना-गोसाई' के हाथमें श्रीगौराङ्ग-धनको समर्पित करके श्रीनित्यानन्दप्रभु निश्चिन्त हो गये हैं। प्रभु भी तीन दिनके उपवासी हैं। उनको विशेष श्रम करना पड़ा है, भूख-प्याससे वे कातर हो रहे हैं। प्रभुके साथ तीन दिन वे जिस अवस्थामें रहे हैं, वह उन्हींको ज्ञात है।

श्रीअद्वैतप्रभुकी ओर तिरछी आँखोंसे देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभुने कहा—"हे अद्वैताचार्य ! प्रभुके दण्ड-ग्रहणतक मुझको विलक्षण दण्ड मिला है; इनको तो निजानन्दके भोगसे यथेष्ट परितृप्ति हुई है, परन्तु मुझे आज तीन दिनसे भोजन नहीं मिला है। भूख-प्याससे शरीर अवसन्न हो गया है। अब आप शीघ्र प्रभुको घर ले चलकर भोजनादिकी व्यवस्था करें।"

(टिप्पणो का शेष)

नित्यानन्द—भगवन्नेवमेव तत् ।

भगवान्—(गाढं परिष्वज्य) कथय कथमिहस्तोऽहं भवद्भिरवगतः ? कथं वा ममानुपदमेव भवानपि वृन्दावनमनु प्राप्तः । अथवा ममैवायं स्वप्नः ।

चै. चं. ना. ५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीअद्वैतप्रभु यह सुनकर मन-ही-मन मुस्कराये। इस समय हासपरिहासका अवसर नहीं था, अतएव उन्होंने इसका उत्तर नहीं दिया। श्रीनित्यानन्दप्रभु उनको चुप देखकर बोले—"इन सब बातोंकी क्या आवश्यकता है ?"

श्रीअद्वैतप्रभु अपने घरसे नवीन संन्यासीप्रभुके लिए दो नये बहिर्वास ले आये थे। प्रभुको गङ्गा-स्नान कराकर उन्होंने स्वयं एक वहिर्वासके द्वारा उनके श्रीअङ्गको पोंछ दिया और दूसरा उनको पहना दिया। प्रभुको यह बहिर्वास देते समय वृद्ध ब्राह्मण व्याकुल होकर रो पड़े। नयनजलसे उनका वक्षः स्थल भीग गया। वे रुँद्ध कण्ठ प्रभुसे बोले—

देवोचितं च परिधापितमस्ति पूर्वं
भिक्षूचितं च वसनं परिधापयामि।
लक्ष्मीः समा तव समश्च मुखप्रसादो
हा हन्त नो नयनयोर्विषम तदेतत् ॥

चै. चं. ना. ५.१५

अर्थात्—"हे प्रभो ! पहले तुम्हारे श्रीअङ्गमें मैंने देवोचित वसन-भूषण पहनाया था, अब तुम्हारे उसी सोनेके अङ्गमें वही मैं पुनः भिखारीके उपयुक्त वस्त्र पहना रहा हूँ। मेरा कैसा दुर्भाग्य है ! हे प्रभो ! यद्यपि तुम्हारी वही अपूर्व श्रीअङ्ग-शोभा, तुम्हारा वही सुन्दर श्रीमुखचन्द्र देख रहा हूँ, तथापि हमारी आँखोंमें यह विषम जान पड़ता है। अस्तु, समीप ही मेरी कुटिया है। वहाँ पदार्पण करके आप मुझे कृतार्थ करें।

प्रभुने सारी बातें चुपचाप सुन लीं। कुछ देरतक मन-ही-मन कुछ सोचते रहे। पश्चात् श्रीनित्यानन्दके मुखकी ओर देखकर प्रभु बोले—"इसीके लिए श्रीपाद नित्यानन्दके द्वारा मैं प्रहारित हुआ हूँ।"

श्रीअद्वैतप्रभु इतने दुःखके बीच भी प्रभुकी बात सुनकर थोड़े हँसे। चतुरचूड़ामणिकी चतुरता समझकर गौर-आना-गोसाईंने प्रभुको व्यक्त किये बिना न छोड़ा। वे प्रभुसे बोले—"हे प्रभो ! यह बात न कहो ! तुम्हें कोई प्रतारित नहीं कर सकता। कोई कहता है कि भगवान् जगदीश्वर भी स्वतन्त्र होकर भी संनिकृष्ट वस्तुके संयोगसे स्फटिकमणिके समान, अपनी मायाके बलसे सारे नैसर्गिक दुःखोंको भोगते हैं; किन्तु हम कहते हैं कि जगदीश्वरके सारे कार्य सत्य हैं; परन्तु उनकी सारी लीला बाल-क्रीड़ाके समान होती है। हे प्रभो ! दोनों ही मतोंसे तुम प्रतारित नहीं होते हो ! श्रीपाद नित्यानन्दने आपको यहाँ लाकर अपने श्रीपाद-नामको सार्थक किया है। 'श्रीपा' शब्दका अर्थ है—लक्ष्मी पति भगवान् श्रीकृष्ण, उनको जो सम्यक् रूपसे दान करता है, वह है—श्रीपाद। श्रीनित्यानन्दने तुमको लाकर हमारे हाथमें अर्पण किया है। अतएव आज इनका 'श्रीपाद' नाम सार्थक हो गया। यह नाम तुम्हींने इनको दिया है तथा इसी नामसे तुम इनको पुकारते हो ! प्रभो ! अब चलो, इस अधमकी कुटियापर आज तुम्हें प्रथम भिक्षा ग्रहण करनी पड़ेगी।"

(चै. चं ना. ५-१६)

इतना कहकर श्रीअद्वैतप्रभुने श्रीगौर-भगवान्का श्रीहस्त धारणकर उनको नौकापर बैठाया। साथमें उनके सङ्गीगण भी बैठे। श्रीअद्वैतप्रभु भी अपने गणके साथ जा बैठे। नौकापर चढ़कर गङ्गाकी तरल-तरङ्गोंको देखकर प्रभु प्रेमानन्दमें नौकाके ऊपर ही नृत्य करने लगे। मुकुन्दने कीर्तनका सुर पकड़ा। भक्तवृन्दने प्रेमानन्दमें विभोर होकर उच्च हरिनाम-कीर्तनके द्वारा गङ्गाके उभय कूलको ध्वनित कर दिया। गगन-मण्डलमें देवगण आकर गङ्गाके मध्यमें श्रीगौर-भगवान्के मधुर नयन-रञ्जन नृत्यविलासका दर्शन करने लगे। वे लोग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुके श्रीमस्तकपर पुष्प-वर्षाकर रहे हैं। धीरे-धीरे नौका गणके सहित प्रभुको लेकर शान्तिपुरके घाट पर लगी।

श्रीवृन्दावन ठाकुर और लोचनदास ठाकुरके शान्तिपुरके लिए प्रस्थान करनेके पूर्व भक्तों और माताको शान्तिपुर लानेके लिए महाप्रभुने नित्यानन्दजीको नवद्वीप जानेका आदेश दिया—

प्रभु बोले—"शुन नित्यानन्द महामति।
सत्वरे चलह तुमि नवद्वीप प्रति॥
श्रीवासादि जन आछे भागवतगण।
सभार करह गिया दुःख-विमोचन॥
एइ कथा तुमि गिया कहियो सभारे।
आमि जाइ नीलाचल चन्द्र देखि बारे॥
सभार अपेक्षा आमि करि शान्तिपुरे।
रहिवाङ श्रीअद्वैत-आचार्येर घरे॥
ता सभा लइया तुमि आसिबा सत्वरे।

चै. भा. अं. १.१२४—१२८

नित्यानन्द अङ्गे अङ्ग हेलाञा रहिला।
अझोर नयने प्रभु काँदिते लागिला॥
जाह नित्यानत्द नवद्वीपे आज तुमि।
शान्तिपुरे सभारे देखिब जेन आमि॥
नित्यानन्द सङ्गे प्रभु पथ चलि जाय।
हासिया ठाकुर तारे दिलेन विदाय॥
नवद्वीपे जाह तुमि शुनह वचन।
नदिया नगरे मोर जत बन्धु जन॥
सभारे कहिओ नमो नारायण वाणी।
अद्वैत आचार्य गृहे उत्तरिब आमी॥
ए बोल बलिया प्रभु चलिला सत्वर।
नित्यानन्द राय जान नदिया नगर॥

चै. म. मध्य खण्ड

श्रीनित्यानन्दके मना करनेपर भी श्रीअद्वैतप्रभु शान्तिपुरमें श्रीगौर-भगवान्‌के शुभागमनके संवादका नगारा बजा आये थे। शान्तिपुरके स्नान-घाटपर जहाँ प्रभुकी नौका लगी, भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। कुल-कामिनियाँ प्रभुको कोपीन पहने संन्यास-वेषमें देखकर मुँहपर कपड़ा देकर फुफकार मारकर क्रन्दन करने लगीं। दूसरे सबलोग भी हाहाकार कर रहे थे। बालक-बालिकावृन्द भी आकुल होकर क्रन्दन करने लगे। उसी शोकाकुल विपुल जन-समूहके बीच होकर प्रभु निजजनको साथ लिये श्रीअद्वैतप्रभुके घर जा पहुँचे। प्रशस्त राजपथके दोनों ओर लोग उनको दण्डवत्-प्रणाम करके हाथ जोड़कर खड़े थे। चारों ओर बारबार हरिध्वनि होने लगी। सारे शान्तिपुरके लोगोंने जान लिया कि श्रीअद्वैत-भवनमें प्रभुका शुभागमन हुआ है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनसठवाँ अध्याय

प्रभुके गृहत्यागके पश्चात् नदियाकी अवस्था

नदीया नगरेर लोक जीयन्तेइ मरा।
काटिले कुटिले रक्त-मांस नाहि तारा॥
उदरे नाहिक अन्न टलमल तनु।
सर्व अन्धकार तार गौराङ्ग-चाँद बिनु॥

श्रीचैतन्यमङ्गल

प्रियाजीकी निद्राभङ्ग और उनका हा-हाकार

पहले लिखा जा चुका है कि प्रभुने श्रीविष्णुप्रियादेवीको निद्रित दशामें पलंगपर सोयी छोड़कर चुपके-से गृहत्याग किया था। उस समय रात केवल चार दण्ड बाकी थी। प्रियाजी युगल-विलासके रसरङ्गमें शिथिलाङ्ग होकर अकातर निश्चिन्त भावसे प्राणबल्लभके अङ्गमें-अङ्ग मिलाकर सुखसे नींद ले रही थीं। प्रभु उनके कलेजेमें शूल मारकर सदाके लिए उनको अनाथिनी बनाकर उस दिन गृहत्याग करेंगे, इसके विषयमें अबोधिनी बाला विष्णुप्रियाको कुछ भी ज्ञान न था। परन्तु उनके मनमें बड़ा भय था कि उनके प्राणवल्लभ किसी दिन कोई काण्ड कर सकते हैं; क्योंकि उन्होंने पहले ही सारी बातें सुन रखी थी; परन्तु प्रभुकी वैष्णवी मायाके जालमें फँसकर सब कुछ भूल गयी थी।

उस कालरात्रिके दो दण्ड रहते प्रियाजीकी नींद टूटी। शय्यापर प्राणवल्लभको न देखकर वे चकित हो उठीं। पलंगपर बैठकर इधर-उधर हाथ फेरकर देखा कि प्राणवल्लभ शैयापर नहीं हैं। प्रियाजीके मस्तकपर मानो वज्रपात हुआ, सिर चक्कर काटने लगा। सारा अङ्ग शिथिल हो गया। उन्होंने पलंगपर बैठे-बैठे देखा कि घरका द्वार खुला है। अब वे स्थिर न रह सकीं। पलंगसे अति कष्टपूर्वक उतरकर शयनगृहके चारों ओर खोजने लगीं। पलंगके नीचे देखा—कहीं भी प्राण-वल्लभको देख न पाया। अब श्रीविष्णुप्रियादेवी सिर पीट-पीटकर आकुल होकर क्रन्दन करने लगीं। प्रियाजीकी तत्कालीन मनकी अवस्था का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। ठाकुर लोचनदासने लिखा है—

एथा विष्णुप्रिया, चमकि उठिया,
पालङ्के बसिया, बुलात हात।
प्रभुना देखिया, कान्दिया कान्दिया,
शिरे मारे कराघात॥
ए मोर प्रभुर सोनार नूपुर,
गलाय सोनार हार।
ए सब देखिया, मरिब झूरिया,
जीते ना पारिव आर॥
मुञि अभागिनी, सकल रजनी,
जागिल प्रभुके लैया।
प्रेमे ते बाँधिया, मोरे निद्रा दिया,
प्रभु गेल पलाइया॥

प्रियाजी बहुत कातर हो उठीं। उनके चरणद्वय उठ नहीं रहे थे। रोते-रोते अति कष्टपूर्वक सासुको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जाकर पुकारा। रात प्रायः बीत चुकी थी। शचीमाता जाग रही थीं। पुत्रवधूकी कण्ठध्वनिको सुनकर वे बिखरे केश व्याकुल होकर शयनगृहसे बाहर आयीं और स्नेहपूर्वक प्रियाका मुख-चुम्बन करके पूछा—"माँ ! तुम रो क्यों रही हो ? मेरा निमाई कहां है ? क्या हो गया ?" शचीमाताने पुत्रवधूको स्नेहपूर्वक गोदमें ले लिया; क्योंकि प्रियाजीका सर्वाङ्ग थर-थर काँप रहा था, वे खड़ी रहनेमें असमर्थ हो रही थीं

विष्णुप्रियादेवीने रोते-रोते कहा—"माँ ! तुम्हा पुत्र घरमें नहीं हैं। जान पड़ता है, मेरा कपाल फूट गया। शयनगृहसे न जाने वे कहाँ गये ? शचीमाताके मस्तकपर मानो आकाश टूट पड़ा। मानो एकबारगी सैकड़ों वज्र उनके सिरपर आ गिरे। एक-एक करके सारी पूर्वस्मृति उनके मनमें उदय हुई। निमाई-चाँद गृहत्याग करेगा, यह उनको ज्ञात था; परन्तु उन्होंने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि इस प्रकार उनको छोड़कर निमाई चुपचाप चला जायगा।

शचीमाताके मनमें आया कि निमाई जान पड़ता है, बधूके साथ हँसी करनेके लिए कहीं छिप गया है। यह सोचकर वे दौड़कर पहले पुत्रके शयनगृहमें घुसीं, घरमें सर्वत्र देखा। निमाईको कहीं न देखकर आँगनमें आकर पछाड़ खाकर गिर पड़ीं। श्रीविष्णुप्रियाजी चित्रलिखित-सी होकर सासके साथ-साथ घूम रही थीं। सास और पुत्रवधू आँगनमें बैठकर रोने लगीं।

स्नेहमयी शचीमाताके मनमें अब भी संदेह था कि उनका निमाई-चाँद कहीं छिपा हुआ है। वे कलेजेमें धैर्य धारण करके आँगनसे उठीं, प्रदीप जलाया। पुत्रवधूको साथ लेकर बाहरी दालानमें आकर पुत्रको खोजने लगीं, कहीं पुत्रका पता न पाकर "निमाई-निमाई ! निमाई रे !! बेटा रे !! तू कहाँ चला गया रे !" कहकर उच्च स्वरसे क्रन्दन करने लगीं।

शची-विष्णुप्रियाकी करुण क्रन्दन-ध्वनिसे पड़ौसी लोग जाग उठे। सबलोग अत्यन्त अस्त-व्यस्त होकर शचीके घर आ गये। प्रातःकाल गङ्गास्नान करनेके लिए नदियाके लोग प्रभुके गृहके द्वारसे होकर जा रहे थे। शचीमाताने रोते-रोते सबसे पूछा—"अरे ! तुमलोगोंने क्या मेरे निमाई-चाँदको देखा है ?" सब उत्तर देते हैं—'ना'। शचीमाताकी हालत देखकर कुछ लोग गङ्गास्नान करने न जा सके। सब शचीके आँगनमें इकट्ठे होकर रोने लगे। शचीमाताको प्रबोध करनेकी शक्ति किसीमें न रही।

अब सवेरा हो गया। शचीमाता पुत्रका कोई पता न पाकर जड़वत् होकर घरके द्वारपर बैठ गयीं। उनके मुखसे अब कोई बात नहीं निकल रही थी। दृष्टि केवल रास्तेकी ओर थी और मुखमें 'हाय-हाय'की ध्वनि थी। बीच-बीचमें दीर्घ-निःश्वासका हृदयविदारक अस्फुट शब्द केवल श्रुतिगोचर होता था। सबलोग उनको घेरकर खड़े-खड़े रो रहे थे। प्रभुका पुराना सेवक ईशान शचीमाताको पकड़कर बैठा हुआ चुप-चाप आँसू बहा रहा था। श्रीविष्णुप्रियादेवी अकेली घरमें भूतलपर पछाड़ खाकर रोती हुई निश्चेष्ट पड़ी थीं। पड़ोसकी कुल-स्त्रियाँ उनके पास हैं। सखी काञ्चनमाला प्रियाजीको जकड़कर पकड़े हुए पासमें पड़ी हैं। श्रीविष्णुप्रियादेवी मृतवत् निश्चेष्ट होकर भूतलपर पड़ी हैं।

नदियाके भक्तगण प्रतिदिन प्रातःकाल गङ्गास्नान करके, शचीके आँगनमें सबसे पहले प्रभुका चरण-दर्शन करके, उनको प्रणाम करके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपने घर जाते थे। श्रीवासपण्डितने प्रभुके घरके द्वारपर रोरुद्यमाना शचीमाताको देखते ही समझ लिया कि सर्वनाश हो गया। शचीके आँगनमें बड़ी भीड़ थी। सबका मुँह विषादग्रस्त था, आँखोंमें अश्रुधारा बहती थी।

श्रीवासपण्डित सर्वज्ञ हैं; उन्होंने समझ लिया, तथापि ईशानसे पूछा—"क्या हुआ है? माता बाहर द्वारपर क्यों बैठी हैं?" ईशान इसका उत्तर क्या देता? उसने एक बार श्रीवासपण्डितके मुँहकी ओर देखा। तत्काल उसकी आँखोंकी अश्रुधारासे वक्षःस्थल डूब गया। शचीमाता उन्मादिनीके समान काठ होकर सबकी ओर शून्य दृष्टिसे देख रही थी, उनको बाह्यज्ञान नहीं है। श्रीवासपण्डित सिरपर हाथ रखकर वहीं बैठ गये। वासुदेवघोष, मुरारिगुप्त हरिदास आदि एक-एक करके सभी भक्तवृन्द वहाँ आ गये। शचीके आँगनमें हाहाकार मच गया। सारी नदियामें प्रभुके गृहत्यागकी बात क्षणभरमें फैल गयी। सारी नदिया मानो शोक-समुद्रमें डूब गयी।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीकी अवस्था अतीव सोचनीय है। आँगनमें लोगोंकी भीड़ लगी है। वे घरके भीतर भूतलपर सोयी हुई हैं। उनके पास ही सखी काञ्चनमाला हैं। और भी कई पड़ोसकी पुरनारियाँ हैं। देवीका अब निश्चेष्ट भाव नहीं है। वे घरमें हृदयाग्निसे दग्ध होकर फुफकार मारकर रो रही हैं। जो उनको प्रबोध देनेके लिए गये हैं, वे भी व्याकुल होकर रो रहे हैं। ठाकुर लोचनदासने लिखा है—

विष्णुप्रियार काँदना ते पृथिवी विदरे।
पशु-पक्षी-लता-तरु ए पाषाण झुरे॥
चै. म.

वे एक बार उठती हैं, बैठती हैं और पुनः भूतलपर पछाड़ खाकर गिर पड़ती हैं और करुण-स्वरसे क्रन्दन करती हैं। देवीका केश-पाश विखरा हुआ है, शरीरके वस्त्रको सँभालना उनके लिए दुष्कर है। दारुण मर्म-व्यथासे वे कातर होकर केवल रो रही हैं। उनकी आँखोंसे आँसू नहीं रुकते; गृह कर्दम-मय हो गया है। उनका श्रीअङ्ग धूलि-धूसरित हो रहा है।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवीको गत रात प्रभुने अपने हाथोंसे फूलोंके साजसे सजाया था। प्रभुकी दी हुई प्रसादी श्रीअङ्गकी माला अबतक उन्होंने यत्नपूर्वक हृदयपर धारण कर रखी थी। गत रात्रिके विलासके सारे चिह्न अब भी श्रीमतीके अङ्गपर वर्तमान थे। प्रभुके श्रीहस्तका कबरी-बन्धन अभीतक शिथिल नहीं हुआ था, प्राणवल्लभके श्रीकरोंसे रञ्जित अलका-गुच्छ अभीतक श्रीमतीके कपोलदेशपर लक्षित हो रहा था। वे कुलवधू हैं, विलाप करके रो नहीं सकतीं। प्राणवल्लभके गुणोंका स्मरण करके वे हृदयाग्निसे दग्ध हो रही हैं। केवल यही बोल रही हैं—"क्या मेरे भाग्यमें यही बदा था?" गौर-वक्षविलासिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके दुःखका अन्त नहीं है। कल वे राजरानी थीं, आज अचानक पथकी भिखारिणी हो गयीं। एकमात्र श्रीगौराङ्ग-विहीन होकर वे सर्वसुख, सर्वसम्पद् खो चुकी हैं। प्राणवल्लभके बिना उनके नारी-जीवनका सारा सुख चला गया है; अब उनको जीवनसे क्या प्रयोजन? अतएव वे रोती हैं और कहती हैं—

"ज्वालह आगुनि आमि मरिब पूड़िया।"

बड़े दुःखसे देवी यह बात कह रही हैं। कोई उनको प्रबोध नहीं दे पा रहा है। उनको प्रबोध कैसे दिया जाय? शचीमाता एक-एक बार दौड़कर आती हैं और घरमें पुत्रवधूको गोदमें लेकर बैठ जाती हैं और श्रीमतीकी आँखके आँसूके साथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपनी आँखके आँसू मिलाकर अजस्र रुदन करती हैं—

"शची देवी काँदे कोले करि विष्णप्रिया।"

शचीमाता क्या कहकर रो रही हैं, इसको ठाकुर लोचनदास अति करुणभाषामें लिख गये हैं। यथा,

शून्य हैल दश दिक अन्धकारमय।
केमने बञ्चिब मुञि घर घोर मय॥
गिलिवारे आइसे मोरे ए घर करण।
विष जेन लागे इष्ट कुटुम्ब वचन॥
'मा' बलिया आर मोरे ना डाकिबे केहो।
आमारे नाहिक यम पासरिल सेहो॥
कि वा दुःख पाइ पुत्र छाड़िला आमारे।
हा पूति करिया पुत्र गेला कोथा कारे॥
हाय हाय निदारुण निमाइ लइया।
कोन देशे गेला पुत्र, के दिबे आनिया॥
बुक् फाटे तोर बाप् सोङरी माधुरी।
मा बलिया आर ना डाकिबे गौरहरि॥
अनाथिनी करिया कोथाय गेले बापू।
मने छिल जननीरे दिव आमि ताप॥
पड़िया शुनिया पुत्र इहाइ शिखिला।
अनाथिनी अभागिनी मायेरे करिला॥
कोथा विष्णुप्रिया एड़ि पलाइया गेला।
भकत जनार प्रेम किछु ना गणिला॥

चै. म. मध्यखण्ड.

श्रीविष्णुप्रियादेवी शचीमाताकी गोदमें मृतवत् पड़ी हैं। उनका सर्वाङ्ग वसनसे आवृत है, शरीर निःस्पन्द और निश्चेष्ट है। बीच-बीचमें करुण दीर्घश्वास छोड़ती हैं। शचीमाताका हृदय इससे दग्ध हो रहा है। वे वहाँ कब ठहर न सकीं, घरसे बाहर निकल आयीं, बहिर्द्वारपर जाकर पुनः जड़वत् बैठ गयीं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीके पास केवल उनकी सखियाँ रह गयीं। सखी काञ्चनमाला प्रियाजीको हृदयसे लगाकर बैठ गयीं। अङ्गसे वस्त्रको हटा दिया। सोनेके अङ्गसे धूलि झाड़ दी। श्रीमतीने जब देखा कि घरके भीतर कोई गुरुजन नहीं हैं, तब वे अपने प्राणवल्लभके गुण गिन-गिनकर विलाप करने लगीं। प्रिय सखीके गलेको अपने सुकोमल बाहुपाशसे जकड़कर श्रीमतीने रोते हुए जो विलाप किया था, उसे भी ठाकुर लोचनदास लिख गये हैं। यथा,

हाहा प्राणनाथ छाड़ि गेले हे नदिया।
अनाथिनी विष्णुप्रियाय निठुर हइया॥
श्रीवासादि भक्त सङ्गे कीर्तने बिहार।
नयन भरिया नृत्य ना देखिब आर॥
प्रेमावेशे गदगद बोल श्रीवदने।
ना शुनिया अभागिनी बाँचिब केमने॥
कोन देशे किरूपे आछह प्राणेश्वर।
स्मरिया-स्मरिया प्राण हैल ज्वर-ज्वर॥
हाय रे कठिन प्राण ना बेरह केने।
ज्वालह आगुनि आमि मरिब एक्षणे॥
उद्वेगे दिवस मोर हैल कोटि युग।
ना देखिया प्राणनाथ तोर विधुमुख॥
जीव मात्रे उद्वेग ना देय साधु जन।
तोर शोके शचीमाता छाड़ये जीवन॥
मुञि अभागिनी तोमार भगति ना जानि।
सेइ अपराधे बुझि हैनू अनाथिनी॥
चरण निकटे प्रभु बसिया तोमार।
रूप हेरि हेरि आमि ना जुड़ाब आर॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वदने तुलिया दिते कर्पूर-ताम्बूले।
दशन मुकुता-पाँति परशि अंगुले॥
अरुण नयने कोने करुणाय चाञा।
मधुर-मधुर कथा बलिते हासिञा॥
अधर अरुण आर ताम्बूलेर रागे।
दशन किरण मोर हिया माझे जागे॥
ताहाते अमिया माखा श्रीमुखेर हास।
श्रवण नयने मोर पित सेइ आश॥
अमिया अधिक प्रभु तोर जत गुण।
सोङरिते एवे सेइ भै गेल आगुन॥
विनोद-विलास-रस सुखमय शेजे।
से सब सोङरि विष्णु-प्रिया प्राण त्यजे॥
हाय हाय किवा दैव हैल आमारे।
गौर बिनु आमार सकल आँधियारे॥
से हास्य-लावण्य देह ना देखिब आर।
ना शुनिब वचन-चातुरी सुधासार॥
अनाथिनी करिया कोथाय गेला तुमि।
सोङरि तोमार गुण निवेदिये आमि॥
कौन भागवती सब तोमारे देखिया।
निन्दिल कतेक मोरे काँदिया कान्दिया॥
कोन अभागिनी कोल छाड़िया आइला।
खण्डव्रती अभागिनी केन ना मरिला॥
पूजिल तोमार सुख अनङ्ग नयने।
केमने धरिब हिया तोमा अदर्शने॥
विच्छेदे मरिल तोर जत नर-नारी।
आमि अभागिनी प्राण एत काल धरि॥
मरि मरि गौरसुन्दर कति गेला।
आमि नारी अभागिनी सहजे अबला॥
कोन देशे जाब लागि याब कोन ठाजि।
जाइते ना दिबे केहो मरिब एथाइ॥
माये अनाथिनी करि गेला कोन देशे।
केमने बञ्चिबे तेंहो तोमार हताशे॥
पापिष्ठ शरीर मोर प्राण नाहि जाय।
भूमिते ते पड़िया देवि करे हाय-हाय॥

सखी काञ्चनमालाका गला छोड़कर श्रीमतीजी अब भूतलपर पड़ गयीं। उनका सर्वाङ्ग थर-थर काँपने लगा है। पक्व-बिम्बाफल-विनिन्दित अधरोष्ठ शुष्क हो गये है। केशपाश विखर गये हैं। परिधान-वस्त्रकी सँभाल नहीं हैं। सोनेका अङ्ग धूलि-धूसरित हो गया है। कभी मूर्च्छित हो जाती हैं, कभी अतिकष्टसे होशमें आती हैं। जब होशमें आती हैं, तब प्रियाजी प्राणवल्लभका नाम लेकर आर्तनाद करने लगती हैं। सखियाँ प्रबोध क्या दें? श्रीमतीकी अवस्था देखकर सभी व्याकुल होकर क्रन्दन करती हैं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी जब मूर्च्छित होती हैं तो सब सखियाँ मिलकर उनके कानके पास उच्च स्वरसे श्रीगौराङ्गका नाम-कीर्तन करती हैं, तब उनको चेतना प्राप्त होती है। प्रियाजीकी ऐसी अवस्था देखकर सखियोंके मनमें दारुण भय उपस्थित हो गया। उन्होंने किंकर्तव्यविमूढ़ होकर शचीमाताको बुलाकर उनके पास बैठा दिया। श्रीमती विष्णुप्रियादेवी शचीमाताकी गोदमें वदन छिपाकर फुफकार मारकर रोने लगीं। तब शचीमाताकी सारी जड़ता दूर हो गयी। वे पुत्र-वधूको कलेजेसे लगाकर उच्च स्वरसे आर्तनाद करके क्रन्दन करने लगीं—

आमार द्वितीय केहो नाहि ए संसारे।
विष्णुप्रिया शेलमात्र रहिल अन्तरे॥

चै. म.

ठाकुर जयानन्दके शची-विलाप-पद-रत्न अतिशय हृदयविदारक हैं। कृपालु पाठकवृन्द!

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस गम्भीर दुःखपूर्ण पदका आस्वादन करें और प्राण भरकर रो लें । वह पद इस प्रकार है—

मराठी राग ।

कि हैल कि करिले, दारुण विधाता,
ना जानि कि आछे कपाले ।
मुञि अभागिनी, गौराङ्ग-जननी,
रहिलू मिछा माया जाले ।।
गौर आय आय आय ।
तोमारे देखिले, मोर पराण जुड़ाय,
रे गौर आय आय आय ।।
स्वपन गोचरे, क्षीरोद-सागरे,
पाइलूँ गौर निधि ।
पातान हाट खानि, बोसाइते ना पेलाम,
विवादे लागिलो विधि ।।
पालङ्क-सिंहासने, चामर चन्द्रातप,
शयन-मन्दिर खाटे ।
वसन-कृष्ण केलि, सोनार मादुलि,
देखिया पराण फाटे ।।
डाबर बाटा बाटि, सर्वाङ्ग थालि,
ए भोट पड़िवार यूथि ।
पोड़नी थूत्रा मोरे, गेला कोथा कारे,
कि कैल केशव भारती ।।
कोथा ना आछ बापू, कोपीन परिया,
कि कैले चाचर केशे ।
केमते देखिब, केमते शुनिब,
तोमार संयासी वेषे ।।
आँखिर पुतली, संकीर्तन-केलि,
सभार हा पूतिर वाछा ।
नदियार आनन्द, संसार मकरन्द,
अभागिनी शचीर कोलेर बाछा ।।
काँदे शचीदेवी, लोटाइया पृथिवी,
काहार प्रबोध ना शुनि ।
जयानन्द कहे, कत दुःख सहे,
पूड़िलाङ से आगुनि ।।

शचीमाता जान गयी थीं कि उनका पुत्र संन्यास लेने चला गया । और वह यह भी जानती थीं कि इसके मूल केशव भारती हैं । इसी कारण एक दिन उन्होंने कहा था—

बड़ साध छिल मने नदिया वसति ।
काल हैया एल मोर केशव भारती ।।

भक्तोंकी करुण दशा

शची-विष्णुप्रियाको यहाँ इसी रूपमें छोड़कर कृपालु पाठकवृन्द एक बार नदियाके भक्तवृन्दके पास चलें । श्रीगौराङ्ग-विरहमें उनकी क्या दशा हो गयी है, इसका अतिशय करुण भाषामें श्रीपाद कवि कर्णपूर गोस्वामीने अपने श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकमें वर्णन किया है । यह श्रीग्रन्थ संस्कृत-भाषामें रचा गया है । श्रीगौराङ्गप्रभुके अन्तर्धान होनेके बाद महाराजा प्रतापरुद्र जब गौर-विरह-शोकमें आकुल हो उठे, तब उनकी सान्त्वनाके लिए कवि कर्णपूर गोस्वामीने इस अपूर्व ग्रन्थकी रचना की थी । पूज्यपाद ग्रन्थकारने श्रीग्रन्थके अन्तमें लिखा है—

यस्योच्छिष्ट प्रसादादयमजनि मम
प्रौढ़िमा काव्यरूपी
दाग्देव्या यः कृतार्थीकृत इह समयोत्-
कीर्त्य तस्यावतारम् ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यत् कर्तव्यं ममैतत् कृतमिह सुधियो
मेऽनुरज्यन्ति तेऽमी
शृण्वन्त्वन्यान्नमामश्चरितमिदमयी
कल्पितं नो विदन्तु ॥
श्रीचैतन्यकथा यथामति यदादृष्टं यथाऽऽकर्णितं
जग्रन्थे कियती तदीयकृपया बालेन येयं मया।
एतां तत्प्रियमण्डले शिव शिव स्मृत्यैकशेषं गते
को जानातु शृणोतु कस्तदनया कृष्णः स्वयं प्रीयताम् ॥

"जिनके उच्छिष्टके प्रसादसे मैं काव्यरचनामें पारदर्शी हुआ हूँ तथा वाग्वादिनी सरस्वतीदेवीके अनुग्रहका पात्र बना हूँ, उन स्वयं भगवान् श्रीश्रीगौराङ्गचन्द्रकी लीला और गुणावली कीर्तन करके मेरा जो कर्तव्य था वही मैंने किया है। इससे सुधी पण्डितगण यह न समझें कि यह मेरा नाटक कपोलकल्पित है। वे अन्य विषयोंका श्रवण करें इसमें कोई हानि नहीं है; परन्तु इस अपूर्व श्रीगौराङ्ग-चरितकी निरन्तर स्तुति-वन्दना करता हूँ और मेरी केवल इतनी ही विनीत प्रार्थना है कि इस लीला-कथाको कोई मेरी कपोल-कल्पित वस्तु न समझे मैंने जैसा देखा जैसा सुना है, तदनुरूप ही इस अपूर्व श्रीगौराङ्ग-लीला-कथाका यथायथा वर्णन करके उसे ग्रन्थरूपमें निबद्ध किया है। किन्तु बड़े ही दुःखकी बात है कि प्रभुकी प्रिय पार्षदमण्डली अन्तर्हित हो गयी है, अतएव इन समस्त लीला-कथाओंको कौन जानेगा, कौन सुनेगा? तथापि मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि इन लीला-कथाओंके कीर्तन-गुणसे स्वयं भगवान् श्रीगौराङ्गरूपी श्रीकृष्ण मेरे ऊपर प्रसन्न हों।"

श्रीगौराङ्ग-विरहमें नदियाके भक्तवृन्दकी अवस्था तथा उनकी विलाप-कथा इसी श्रीग्रन्थसे संगृहीत हुई है।

पहले कह चुका हूँ कि सबसे पहले श्रीवास-पण्डितने प्रभुके गृहद्वारपर आकर जाना कि प्रभुने गृहत्याग किया है; श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र नवद्वीपको अन्धकारमय करके चले गये हैं। नदियाके सारे भक्तवृन्द शचीके आँगनमें एकत्रित हो गये। शची-विष्णुप्रियाकी अवस्था देखकर वे शोकके समुद्रमें डूब गये। वे फिर आँगनमें खड़े न रह सके। उस करुण दृश्यको वे लोग आँखोंसे देख न सके। वैष्णव-गृहिणीवृन्दके ऊपर शची-विष्णुप्रियाका भार देकर वे प्रभुके बाहरी दालानमें आकर एकत्रित होकर परामर्श करने लगे। उनमें श्रीअद्वैतप्रभु, श्रीवास-पण्डित, मुरारिगुप्त, वासुदेवघोष, माधवघोष, हरिदास, गङ्गादासपण्डित, वक्त्रेश्वर, शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी, दामोदरपण्डित, पुण्डरीक विद्यानिधि, जगदानन्द प्रभृति सब हैं। अनुपस्थित हैं केवल नित्यानन्दप्रभु, चन्द्रशेखर आचार्यरत्न और गोविन्ददास। उनको न देखकर सबने यह निश्चय कर लिया कि वे निश्चय ही प्रभुके साथ गये हैं। श्रीअद्वैताचार्य सबको सान्त्वना देते हुए बोले—"प्रभु अकेले नहीं हैं। यह परम मङ्गल है।" भक्तवृन्द शचीमाताको प्रबोध देते हुए बोले—"श्रीनित्यानन्दप्रभु और आचार्यरत्न जब आपके पुत्रके साथ गये हैं, तब विशेष आशङ्काकी कोई बात नहीं है। जान पड़ता है, वे किसी कार्यवश कहीं गये हैं।"

पुत्रशोकातुरा शचीमाताका मन इस बातसे सुस्थिर न हुआ। उन्होंने समझ लिया था कि उनका भाग्य फूट गया है। उनका निमाई-चाँद विश्वरूपके समान संन्यास लेकर गृहत्यागी हो गया है। वह अब घर न लौटेगा। शचीमाता केवल रुदन कर रही हैं। उनके नेत्रोंसे अविरल अश्रुप्रवाह हो रहा है उनके दुःखकी सीमा नहीं है।

दिनके तीसरे पहरतक उस दिन नदियाके भक्तवृन्द प्रभुके बाहरी दालानमें बैठकर हाहाकार और आर्तनाद करते रहें; उस भीषण आर्तनादका विस्तृत विवरण श्रीपाद कवि कर्णपूर हृदय-विदारक करुण-भाषामें लिख गये हैं। चैतन्यचन्द्रोदय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नाटकसे चौथे अङ्कसे यहाँ वह भीषण आर्तनाद-कथा उद्धृत की गयी है।

वृद्ध ब्राह्मण अद्वैताचार्यने गौराङ्ग-विरहमें एकबारगी धैर्य खो दिया है। उन्होंने स्वप्नमें भी यह नहीं सोचा था कि प्रभु इस प्रकार उनको रुलाकर चुपचाप गृहत्याग करेंगे। नयन-जलसे उनका वक्षःस्थल भीगा जा रहा है। सबको प्रबोध देनेके लिए आये और स्वयं व्याकुल होकर क्रन्दन कर रहे हैं—

हे विश्वम्भरदेव! हे गुणनिधे! हे प्रेमाबारांनिधे!
हे दीनोद्धरणावतार भगवन्! हे भक्तचिन्तामणे!
अन्धीकृत्य दृशो दिशोऽन्धतमसीकृत्याखिलप्राणिनाम्
शून्यीकृत्य मनांसि मुञ्चति भवान् केनापराधेन नः॥

चै. च. ना. ४.१७.

अर्थात् हे विश्वम्भर देव! हे गुणनिधे! हे प्रेम सिन्धो! हे भक्तचिन्तामणे! हे भगवन्! हे दीनबन्धो! किस अपराधसे नदियाको अन्धकारमय करके तुमने हमें परित्याग कर दिया? हे नाथ! तुम्हारे चले जानेसे नदियावासियोंका हृदय शून्यवत् हो रहा है। ये लोग अन्धेके समान हो रहे हैं।

समीप ही मुरारिगुप्त बैठे थे। वे अत्यन्त ही गम्भीर स्वभावके मनुष्य थे। मुँह नीचा करके बैठे-बैठे श्रीअद्वैतप्रभुकी विलाप-कथा सुन रहे थे और अजस्र आँसू बहा रहे थे। उनका हृदय शतधा विदीर्ण हो रहा था। अब उनसे रहा न गया; उठकर वृद्ध ब्राह्मणका हाथ पकड़कर क्रन्दन करते-करते उनको प्रबोध देते हुए कहने लगे—"आचार्य प्रभो! आप यह क्या कर रहे हैं? आप प्रकृतितः गम्भीर स्वभावके पुरुष हैं। अनिश्चित बातको लेकर क्यों इतना विलाप कर रहे हैं? आपका ऐसा भाव देखकर शचीमाता कैसे प्राणधारण करेंगी? आप सुस्थिर होइये।

श्रीवासपण्डित मुरारिगुप्तकी बातका समर्थन करके अतिशय कातरतापूर्वक क्षीण कण्ठ स्वरसे बोले—

तन्मात्रपुत्रा वत सा तदेक्
चक्षुस्तदेकस्वसुखानुभूतिः।
माताऽपि तस्मिन् गुरुदेव बुद्धि-
र्न तद्विना जीवति सा क्षणं च॥

श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटक ४.१८

"मुरारि ठीक कहते हैं, शचीमाता, जीवन-सर्वस्व-धन निमाई-चाँदको बिना देखे क्षणमात्र भी जीवन-धारण नहीं कर सकेंगी। अतएव अब हमको अपना दुःख-शोक दूर करके वही करना चाहिये, जिससे उनकी प्राण-रक्षा हो।"

मुरारिगुप्त और श्रीवासपण्डितकी युक्तिपूर्ण बातसे सबलोग किसी प्रकार शान्त हुए।

गदाधर कुछ दूर अकेले बैठे आँसू बहा रहे थे। अबतक उन्होंने किसीसे कोई बात नहीं की थी। केवल प्रभुके आशा-पथको देखते हुए बैठे-बैठे अनवरत रुदन कर रहे थे। धीरे-धीरे अपराह्णकाल आ उपस्थित हुआ। प्रभुके अन्वेषणमें चारों ओर वे लोग निकल गये थे। कोई प्रभुका संवाद देनेके लिए लौटकर नहीं आया। सभी उसदिन उपवासी थे। किसीके घर उस दिन भोजन नहीं बना था। वैष्णवगृहिणीगण सभी शचीके आँगनमें शची-विष्णुप्रियाको आगे करके बैठी थीं। उनके घरमें क्या हो रहा है, इसकी खोज-खबर लेनेका किसीको अवसर न था।

गदाधर अतिशय प्रभु भक्त थे। प्रभुका सङ्ग वे क्षणमात्र भी नहीं छोड़ते थे। प्रभु भी गदाधरका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सङ्ग नहीं छोड़ते थे। शचीमाता गदाधरको पुत्रतुल्य भावसे देखती थीं। उनको देखते ही उनका दुःख-समुद्र उमड़ उठा। वे उच्च स्वरसे आर्तनाद करती हुई बोलीं—"गदाधर! मेरा निमाई-चाँद कहाँ गया? तुम तो उसको छोड़कर क्षणभर भी नहीं रह सकते थे। दिन बीत गया। मेरा निमाई-चाँद तो आया नहीं।" शचीमाताके आर्तनादसे गदाधरके प्राणोंमें मानो शूल चुभ गया। वे दूर बैठे थे, उठकर खड़े हो गये और करुण स्वरसे आर्तनाद करते हुए बोले—

गतो यामो यामावहह गतवन्तौ बत गता
अमी यामा हा धिक् दिनमपि गतप्रायमभवत्।
क्रमादाशापाशस्त्रुटति बत हा सार्धमसुभि-
स्तथापि त्वद्वार्ता नहि गतवती श्रोत्रपदवीम्॥

चै. च. नाटक ४.१९

"हे नाथ! हे प्राणवल्लभ गौराङ्ग-सुन्दर! एक प्रहर बीत गया, द्वितीय प्रहर बीत गया, तृतीय प्रहर उत्तीर्ण हो गया, दिवस भी प्रायः गत हो रहा है, क्रमशः हमारे जीवनके साथ आशापाश टूट रही है, तथापि तुम्हारा कोई संवाद हमारे कर्णगोचर नहीं हो रहा है।"

गदाधरकी अवस्था देखकर उपस्थित भक्तवृन्द हाहाकार करने लगे। शचीमाताका हृदय विदीर्ण हो गया। वे उन्मादिनीके समान दौड़कर आँगनमें आयीं और मूर्च्छित होकर गिर पड़ीं। पड़ोसकी कुलनारियाँ उनकी सेवा-शुश्रूषामें लग गयीं।

गृहत्यागके दिन रातमें प्रभु श्रीवासके आँगनमें नृत्य-कीर्तनरङ्गमें भक्तवृन्दको उन्मत्त करके अपने मन्दिरमें आये थे। वक्त्रेश्वरपण्डितने प्रभुके साथ मनोहर नृत्य किया था। अबतक उनका वही नृत्यावेश बना था। गदाधरकी अवस्था देखकर वे भी उच्च स्वरसे आर्तनाद कर उठे। वे रोते-रोते सिर पीटकर बोले—

त्यक्त्वा नः किमु यास्यसीति करुणा-
सिंधो गतायां निशि
प्रेमाधिक्यपरिप्रकाशसरसां
नानानुकम्पां व्यधाः।
कारुण्यं तव तच्च कीदृशमहो
भूयस्युपेक्षा च वा
कीदृक् तें वत हृत्पते द्वयमिदं
हे नाथ लोकोत्तरम्॥

चै. चं. ना. ४.२०

—"हे करुणसिंधो! हे दयानिधे!! हमलोगोंको परित्याग करनेके विचारसे ही क्या तुमने गत रात प्रेमसहित विविध अनुकम्पा प्रकट की थी? हे नाथ! हे करुणानिधे!! तुम्हारी वह करुणा कैसी थी और तुम्हारी यह गुरुतर उपेक्षा कैसी है? हे हृदयेश! हे जीवनकान्त!! तुम्हारी करुणा और उपेक्षा, दोनों ही लोकातीत हैं।" इतनी बात कहते-कहते वक्त्रेश्वरपण्डित भी वहाँ मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

गदाधर और वक्त्रेश्वर पण्डितको मूर्च्छित होते देखकर मुरारिगुप्त व्याकुल होकर क्षोभके साथ रोते-रोते कहने लगे—

आहार्यं धैर्यं क्रियते बहिर्यत्
क्षिणोति तद्वाष्पभरोऽन्तरस्थः।
पुनः पुनर्बद्धमपि प्रवृद्धः
सेतुं यथा सैकतमम्बुपूरः॥

चै. चं. ना. ४.२१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"जिस प्रकार प्रबल जलस्त्रोतके वेगसे पुनर्वार निबद्ध बालुकामय सेतु भग्न हो जाता है, उसी प्रकार मैं यत्नपूर्वक वारंवार धैर्य धारण करके जो विविध उपाय करता हूँ, वे मेरे आभ्यन्तरिक वाष्प-समूहसे क्षणमात्रमें नष्ट हो जाते हैं।"

इतना कहते-कहते मुरारिगुप्त मर्म-वेदनासे कातर होकर उन्मादके समान वारंवार फूत्कार ध्वनि करते हुए भूतलपर गिर पड़े, और उनकी चेतना जाती रही। वे निस्पन्द होकर पड़ गये।

श्रीवासपण्डितने प्रभुके अन्तः पुरका द्वार बंद कर दिया है, इस भयसे कि कहीं शचीमाता पुनः आकर भक्तवृन्दकी इस दुरवस्थाको न देख लें। आँगनमें गम्भीर आर्तनादकी ध्वनि उठ रही है। शचीमाताके करुण-विलापसे नदियाके पशु-पक्षीतक रो रहे हैं। श्रीविष्णुप्रियादेवीके नीरव-क्रन्दनसे काष्ठ-पाषाणतक द्रवित हो रहे हैं। बाहरी दालानमें जो करुण-दृश्य है, उसे अन्तः पुरके लोग नहीं जान पा रहे हैं। पुरनारियाँ शची-विष्णुप्रियाको लेकर संकटापन्न हो रही हैं। दूसरी ओर मन लगानेका उनको अवसर ही नहीं है।

श्रीवासपण्डित बड़ेही गम्भीर प्रकृतिके आदमी हैं। वे अबतक धैर्य धारण करके सबको सान्त्वना दे रहे थे, अब उनसे नहीं रहा गया। संध्या होनेवाली थी। अबतक कोई आदमी प्रभुका समाचार लेकर नहीं आया था। नदियाके सबलोग शोक-सागरमें डूब रहे थे। उनके धैर्यका बाँध टूट गया था। सब शोकमें उन्मत्त थे, गौराङ्ग विरह-समुद्रमें दुःखकी प्रबल तरङ्गें उठ रही थीं, शोकका तूफान आ गया था। श्रीवासपण्डितने देखा कि अत्यन्त धीर स्वभाव, गम्भीर प्रकृतिके वक्त्रेश्वर आदि भक्तवृन्द चञ्चल-स्वभाव बालकके समान अति उच्चस्वरसे रुदन कर रहे हैं, भूतलपर पछाड़ खाकर गिरकर प्रभुका गुण-स्मरण करके स्त्रियोंके समान विलाप कर रहे हैं। तब उन्होंने मन-ही-मन सोचा—

पयः प्रपूरः स्थिर एव तावत्
करोति यावन्नहि सेतुभङ्गम्।
भग्ने तु सेतावतिदुर्निवारः
समस्तमाप्लावयितुं समर्थः॥
चै. चं. ना. ४.२२

जबतक सेतु टूटता नहीं, तभीतक जल स्थिर रहता है, सेतुके एकवार टूटजानेपर उस जलके प्रवल प्रवाहको किसी प्रकार भी निवारण नहीं किया जा सकता। परन्तु वह जल प्रवाह सारे देशको परिप्लावित कर डालता है।"

इस प्रकार सोचते-सोचते श्रीवासपण्डित उन्मत्तके समान अचानक उच्चस्वरसे क्रन्दन करने लगे—

भो नाथ विश्वम्भर ! क्वासि क्वासि ?
पूर्वं मृतः कथमहो बत जीवितोऽहम्
भूयोऽपि मारयसि किं बत जीवयित्वा।
दुर्लीलता तव विभो न मनोऽधिगम्या
नन्वीश्वरो भवति केवलबाललीलः॥
चै. चं. ना, ४.२३

"हे नाथ विश्वम्भर ! हे हृदयेश्वर !! तुम कहाँ हो, कहाँ हो ? तुमने पहले मृत्युके हाथसे क्यों मेरी रक्षा की थी ? जीवनदान करके अब उसका विनाश क्यों कर रहे हो ? हे प्रभो ! शरणागत-पालक !! तुम्हारे इस विषय लीलारङ्गका अभिप्राय मैंने कुछ भी नहीं समझा। क्या जगदीश्वर केवल बालकके समान लीला करते हैं ?"

उनके आर्तनादकी ध्वनि दूर-दूरतक चली गयी, प्रभुके अन्तःपुरमें भी पहुँची, शचीमाता चकित हो उठीं, श्रीविष्णुप्रियादेवी सिहर उठीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीवासके मर्ममेदी आर्तनादसे काष्ठ-पाषाणतक द्रवित हो रहे हैं, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु पर्यन्त रो रहे हैं। नदियावासियोंका हृदय विदीर्ण होकर दो-टूक हो रहा है। वृद्ध ब्राह्मण गौराङ्गविरहमें बाह्यज्ञानशून्य हो गये हैं। विषम शोकावेगको रोक न सकनेके कारण वे अपने वक्षः स्थलमें जोरसे कराघात कर रहे हैं और उच्चस्वरसे क्रन्दन कर रहे हैं। कोई उनको प्रबोध नहीं दे पा रहा है। श्रीव सपण्डितकी अवस्था अत्यन्त सोचनीय है।

मुकुन्द हाथपर कपोल रखकर गदाधरके पास बैठे हुए अश्रुजलसे धरातलको सिक्त कर रहे हैं। वे श्रीवासपण्डितकी अवस्था देखकर अब बैठे न रह सके। चीत्कार-स्वरमें आर्तस्वर करते हुए भूतलपर गिर पड़े। नयन-जलसे उनका वक्षः स्थल डूब गया; वे धूलिमें गिरकर पछाड़ खा-खाकर करुण स्वरमें विलाप करने लगे—

नालोक्यते तव मुखं नयनेन किं नो
ना कर्ण्य ते तब वचः श्रवणेन वा किम्।
हे प्राणनाथ भगवन् त्वदुपेक्षितानां
कष्टेन वा किममुना हतजीवितेन॥

चै. चं. ना. ४.२४

"हे प्राणगौराङ्ग ! हे प्राणबल्लभ !! अपनी इन पापयुक्त आँखोंसे क्या तुम्हारा मुख-चन्द्र कभी नहीं देख पाऊँगा ? इन पापयुक्त कानोंसे क्या तुम्हारी सुमधुर रसमयी वाणी न सुनूँगा ? हे भगवन् ! क्या तुमने एकबारगी हमको छोड़ दिया ? हमने तुम्हारे चरणोंमें क्या अपराध किया है ? तुम्हारे बिना अब हमारे इस व्यर्थ जीवनको रखनेकी क्या आवश्यकता है ?

इतना कहकर विलाप करते-करते मुकुन्द एकवारगी मूर्च्छित होकर गिर पड़े। उनका सर्वाङ्ग निस्पन्द और निश्चेष्ट-सा हो गया। मुरारिगुप्त तब उनके पास बैठे और उनके कानोंमें श्रीगौराङ्ग-नाम सुनाने लगे। तत्काल मुकुन्दको चेतना आ गयी। वे 'हा गौराङ्ग' कहकर अजस्त्र आँसू बहाने लगे।

पण्डित जगदानन्द प्रभुके अभिमानी भक्त थे। उनको बड़ा दुःख था कि प्रभुने उनसे कहे बिना गृहत्याग किया है। वे एकदम मौन होकर बाहरी आँगनके द्वारपर बैठे थे। उनके नयनोंसे शत-धाराएँ प्रवाहित हो रही थीं। बीच-बीचमें केवल एक दीर्घश्वास छोड़ते थे। उनके दुःखकी सीमा न थी। इस समय भी प्रभुके ऊपर उनको बड़ा क्रोध हो रहा था, उनके मुख मण्डलपर भयानक अभिमानका चिह्न दीख पड़ता था। वे मन-ही-मन सोच रहे थे—"प्रभुके चले जानेपर अब इस तुच्छ जीवनको धारण करना व्यर्थ है। प्रभु बिना कहे चुपचाप चले गये। मैं भी उनको बिना कहे गङ्गामें डूब मरूँगा। अबतक मैं मर क्यों नहीं गया ? प्राणगौराङ्गके बिना देहमें प्राण रह क्यों गये ? हम तो बड़े कपटी हैं। प्राणगौराङ्ग सदाके लिए नदिया छोड़कर चले गये, यह तुच्छ प्राण देहमें रुका हुआ क्यों है ? यह तो अच्छी बात नहीं है। मैं बड़ा निर्लज्ज हूँ। प्राणेश्वरने गृहत्याग किया है, तब फिर मेरे इस जीवनका प्रयोजन क्या ? वे तो कुछ कहकर नहीं गये, मैं क्यों उनकी आशामें प्राण रखूँ ? इस पापदेहको अब न रखूँगा।" वे अपने मनके भावको छिपाये न रख सके। उनका गौराङ्ग-विरह-सिंधु एकबारगी उमड़ उठा। वे बालकके समान रोते-रोते यह बात कहते हुए मूर्छित हो गये—

नास्माद्दृशैस्तव पदाम्बुज सङ्गहीनै-
र्जीविष्यते क्षणमपीति मनो न आसीत्।
लज्जामहे दयित हे तत एव देव
जीवाम एव दिवसाँस्त्वदनीक्षणेऽपि॥

चै. चं. ना. ४.२५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"हे नाथ ! प्राणरमण ! हम सोचते थे कि तुम्हारे पादारविन्दका दर्शन किये बिना क्षणमात्र भी हम जीवन-धारण न कर सकेंगे। परन्तु तुम्हारे चले जानेपर जो हम अबतक जीवित हैं, इससे हमें लज्जा-बोध हो रही है।"

प्रभुके बाहरी दालानके बहिर्द्वारपर पड़े भूमि-विलुण्ठित जगदानन्द पण्डित बाह्य ज्ञान शून्य हो गये। बीच-बीचमें उनके मँहसे फेन निकलता है, हाथ-पैर निस्पन्द और शरीर निश्चेष्ट है। सब उनको घेरकर बैठ गये श्रीवासपण्डितने धीरे-धीरे उनके कानके पास मुँह लगाकर गौराङ्ग-नामका स्मरण किया 'हा गौराङ्ग गुणनिधे ! हा प्राणवल्लभ गौरहरे !!' कहकर जगदानन्दपण्डित उठ बैठे।

दैन्यके अवतार हरिदास और दामोदरपण्डित एक साथ बाहरी आँगनमें एक बगलमें बैठे थे। हरिदास जड़वत् निश्चेष्ट भावमें बैठे थे, उनके हाथमें केवल हरिनामकी माला थी, परन्तु शोकावेगसे वे जप नहीं कर पा रहे थे। नयनद्वयसे झर-झर अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी। वे स्थविरके समान निश्चेष्ट होकर बैठे थे। दामोदरपण्डित हरिदासके मुँहकी ओर देखकर रो पड़े। सदानन्द हरिदासका ऐसा विषण्ण-वदन देखकर अब उनसे नहीं रहा गया। वे उच्च स्वरसे रोते हुए विलाप करते हुए बोले—

हा प्राणनाथ ! क्वासि क्वासि ?
प्राणा न किं व्रजत मुञ्चत जाड्यमुच्चैः
प्राणेश्वरश्चरति साम्प्रतमेक एव।
तत्पादपङ्कजमुपेत्य भजध्वमद्धा
प्रेमात्मनामहह मास्तु कुले कलङ्कः ॥
चै. चं. ना. ४.२६

"हे प्राण गौराङ्ग ! हे प्राणवल्लभ !! तुम कहाँ हो, कहाँ हो ? हे समस्त प्राण वायु !! तुम लोग क्यों नहीं जा रहे हो ? जड़ताका परित्याग करो ! हमारे जीवन-सर्वस्व श्रीश्रीगौराङ्गसुन्दर अकेले भ्रमण कर रहे हैं। तुमलोग यह देह परित्याग करके उनके समीप जाकर उनके चरणारविन्दका आश्रय लो, जिससे प्रेमीजनके कुलमें कलङ्क न लगने पावे।"

इतना कहकर दामोदरपण्डित मूर्च्छित हो गये। हरिदासकी प्रकृति अतिशय गम्भीर थी। वे भाव-समुद्रमें डूबे हुए थे, दामोदर पण्डितकी अवस्था देखकर क्षुब्ध होकर कहने लगे—अहो कष्टम्—

प्राणेश्वरेण सह चेत् सहसा न जग्मुः
प्राणाः पुनर्झटिति नैव भवन्ति गन्तुम्।
धिक्कारकोटिकटुतामनिशं सहन्ते
सीदन्ति नैव बहुतस्तवसादयन्ति ॥
भवतु क्षणमवगच्छामि—
यदि नयनयोः पन्थानं मे न याति स ईश्वरो
यदि करुणया नो दृक्पातं करोति स मद्विधे।
कुलिशकठिनानां वोऽसूनां सहस्रमपि क्षणात्
तृणमिव परित्यक्ष्याम्यङ्गस्तदाङ्घ्रिपरोप्सया ॥
चै. चं ना. ४.२७,२८

"हाय ! कैसा कष्ट है ! प्राणगौराङ्ग चले गये ! उनके साथ यदि अब भी प्राण नहीं जाते तो फिर कभी शीघ्र न जा सकेंगे। प्राण इस समय कोटि-कोटि कटु धिक्कार सहन कर रहे हैं, तथापि निर्लज्ज प्राण अवसन्न नहीं होते। परन्तु उसने अपने दुर्वह भारसे मुझको अतिशय कातर बना दिया है। अस्तु, मैं क्षणभर स्थिर होकर विचार करता हूँ। यदि मैं प्रभुको नहीं देख पाता, यदि वे करुण दृष्टिसे इस अभागेकी ओर नहीं देखते तो इन कठिन प्राणोंको मैं न रखूँगा। गौर-विरहकी व्यथामें व्याकुल होकर वज्रवत् कठिन सहस्रों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्राणोंको तृणवत् अनायास ही क्षण मात्रमें परित्याग कर दूँगा, यही मेरी प्रतिज्ञा है।"

इतना कहकर वे धैर्यावलम्बनपूर्वक चिन्तन करने लगे और मानो समाधिस्थ हो गये।

पुण्डरीक विद्यानिधि हरिदासके पास ही थे। उनके प्रतिज्ञाके वचन सुनकर वे स्तम्भित और चकित हो उठे। वे भूमिके आसनपर बैठकर गौराङ्ग-नाम-जप कर रहे थे और अश्रुजलसे भूतलको सिक्त कर रहे थे। हरिदासकी अवस्था देखकर उनका जपसे मन हट गया। वे कूदकर पागलके समान उठकर खड़े हो गये। उस समय सूर्यनारायण अस्ताचल-चूड़ावलम्बी हो गये थे। विद्यानिधि ठाकुर ऊर्ध्वमुख होकर दोनों हाथ अञ्जलिबद्ध होकर रोते-रोते क्षुब्ध होकर कहने लगे—

प्रेमन्नमोऽस्तु भवते यद कैतवेन
नोत्पद्यसे क्वचन हा बत किं ब्रवीमि।
तस्मिन्नकैतवकृपेऽपि सकैतवस्त्वं
नो चेत् कथं नु मम जीवनयोग एषः॥

चै. चं. ना. ४.२९

"हे प्रेम! तुमको और क्या कहे? तुम्हारे चरणोंमें नमस्कार। क्या तुम जगत्में किसी स्थानमें निष्कपट भावसे नहीं रह सकते? अस्तु, अन्य स्थानमें चाहे तुम जिस रूपमें रहो, परन्तु परम उदार प्रकृति और परम कारुणिक भगवान् विश्वम्भरदेवके साथ धूर्तता करना तुम्हारे लिए कभी उचित नहीं है। यदि तुम शठ और प्रतारक नहीं हो तो मेरा जीवन अबतक क्यों बचा है? गौराङ्ग-विहीन होकर ये प्राण क्यों रह गये हैं?"

इतना कहकर विद्यानिधि पण्डित भूतलपर गिरकर उच्चस्वरसे रोने लगे। तब नदियाके सब भक्तगणने एकत्रित होकर परामर्श किया कि यहाँ बैठकर और शोक प्रकट करना युक्तिसङ्गत नहीं है। संध्या होनेही वाली थी। उस दिन दिनमें किसीने भोजन नहीं किया। उस दिन नदियाके सारे भक्तगण उपवासी रहे; क्योंकि प्रभु उपवासी थे। किसीके घर हाँड़ी नहीं चढ़ी। सभी वैष्णव-गृहिणीगण शचीविष्णुप्रियाको सान्त्वना देने आयी थीं। उनमेंसे कोई घर लौटकर नहीं गयी थीं। कैसे लौटती? वृद्धा शचीमाताकी मर्मान्तिक आर्तनादसे उनका कोमल हृदय चूर-चूर हो गया। उस रातको वे प्रभुके घरपर ही रहीं। उस दिन शची विष्णुप्रियाने जलतक स्पर्श नहीं किया। श्रीवास आदि भक्तगण प्रभुके बाहरी दालानमें सो गये। प्रभुका गुण-गान करके सारी रात लोगोंने रोते हुए काटी।

सर्वज्ञ श्रीअद्वैतप्रभु सब-कुछ जानते थे। प्रभुके गृहत्यागके दूसरे दिन वे शान्तिपुर चले गये। वे जानते थे कि प्रभु उनके घर पदार्पण करेंगे।

इस प्रकार दो दिन बीत गये। नदियावासियोंके हाहाकार और आर्तनादसे दिङ्मण्डल परिपूर्ण हो गया। सुरसरिकी तरङ्ग-भङ्गिमा म्लान जान पड़ती थी। प्रखर स्त्रोतमें मानो सहसा गतिरोध हो गया था। कल-निनादिनी पतित-पावनी गङ्गाजी गौराङ्ग-विरहमें मानो स्तम्भित हो गयीं। निस्तरङ्ग सलिल-राशिने मानो नवद्वीपचन्द्रके विरह-दुःखमें अकस्मात् गम्भीर भाव धारण कर लिया। चन्द्र-सूर्यकी ज्योति मलिन जान पड़ने लगी। आकाश-मण्डलमें दिगन्ततक फैली विषादकी एक भीषण छाया पड़ गयी।

आचार्यरत्नका नवद्वीप आगमन

तीन दिनके बाद श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न शान्तिपुरसे श्रीनित्यानन्दप्रभुकी आज्ञासे प्रभुके संन्यासका संवाद लेकर नवद्वीप आये थे। नदियाके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भक्तवृन्दके सामने, विशेषतः शची-विष्णुप्रियाके सामने वे कैसे मुँह दिखलावेंगे, इस चिन्तासे व्याकुल होकर गङ्गाके किनारे एक निर्जन स्थानमें अकेले बैठकर मन-ही-मन अपनेको कोसते हुए कहने लगे—

हन्त भोः कष्टम् ।

हाधिक् कष्टमहो दिनत्रयमभूद् वार्तापि तैर्न श्रुता ।
ते जीवन्ति मृता नु किं किमथवा दत्ताश्रया मूर्छ्या ।
संत्यज्य प्रियमीश्वरं वत विधे दृष्ट्वा च तं तादृशं
प्रत्यावृत्तिपरं कथं नु पुरतस्तेषां भविष्याम्यहम् ।।
तदिहैव स्थित्वा शरीरत्याग एव यतनीयः ।

चै. चं. ना. ४.३२

"हाय आज तीन दिन प्रभुको गृहत्याग किये हो गये। नदियानगर अन्धकारमय दीख पड़ता है। श्रीअद्वैतप्रभु आदि नदियाके भक्तवृन्द जीवित हैं या नहीं, समझमें नहीं आता। प्रभुके उस कुञ्चित-केशके मुण्डनकी बात मैं कैसे उनके सामने बोलूँगा ? उसे मेरे ये कठिन प्राण कहाँतक सहन करेंगे ? इस गङ्गामें अपना प्राणत्याग कर देना ठीक है। माँ पतितोद्धारिणी गङ्गे ! अपने गर्भमें इस अभागेको थोड़ा स्थान प्रदान करो। इस निरर्थक जीवनको रखनेकी अब कोई आवश्यकता नहीं हैं।"

इतना कहकर आचार्यरत्न गङ्गाके तीर पड़कर पछाड़ खाकर आर्तनाद करने लगे। उस समय संध्याकाल हो गया था। श्रीवासपण्डित भक्तवृन्दके साथ गङ्गाके किनारे संध्या-वदन आदि करनेके लिए गये। आचार्यरत्नका कण्ठस्वर सुनकर वे विस्मित होकर उधर दोड़े, परन्तु किसीको देख न पाया। तब वे लोग कान लगाकर खड़े हो गये। पुनः उनको आचार्यरत्नका कण्ठस्वर स्पष्ट सुनायी पड़ा—

हन्त हन्त किमित पामरेण मया तत्सङ्गे न गतम् ।

अथवा

शिव शिव हठःकर्तुं शक्यो न हि प्रभुणा समं
निजमभिमतं स्वेषां चित्ते प्रवर्तयति प्रभुः ।
प्रकटयति हि स्वीयं सूर्यः स्वकान्तमणौ महो ।
न विघटयितुं न शक्नोत्येष स्वदाहकरंच तत् ।।

श्रीचै. चं ना ४.३३

हा कष्टं पामर एवास्मि । यतः—

पश्चात् पश्चात् कथमनुसृतं नैव हा हन्त दृष्ट्वा
तादृग् रूपं कथमिव दृशौ हन्त तापैर्न दग्धे ।
याहीत्युक्ते सति भगवता जीवितं किं न यातं
हा हा विश्वम्भर तव तया मायया वञ्चितोऽस्मि ।।

च. च. ना. ४.३३,३४

—"हाय ! मैं बड़ा पामर हूँ। मैं प्रभुके साथ क्यों नहीं रहा ? उनको शान्तिपुर रखकर यहाँ क्यों आया ? प्रभुके साथ हठ करके मैंने अच्छा न किया। मैं बड़ा ही अभागा हूँ। मेरी मृत्यु क्यों न हो गयी ?"

श्रीवास आदि भक्तवृन्द गङ्गाके तीर एकान्त स्थानमें चन्द्रशेखर आचार्यरत्नको देखकर समझ गये आचार्यरत्न उनको सामने देखकर उच्च स्वरसे रो उठे। पुनः वही एक बात कहते-कहते वे बालकके समान रुदन करने लगे।

श्रीवास आदि भक्तवृन्द चन्द्रशेखर आचार्यरत्नको तदवस्थ देखकर शोकसे एकबारगी विह्वल हो उठे। आचार्यरत्न उन्मत्तके समान करुण स्वरमें विलाप करने लगे। वे छाती पीट-पीटकर कहने लगे,

क्वचि स्निग्धश्यामः कुटिलकचपाशः क्व स विधिः ।
क्व च श्रोणी भारः क्व शिव शिव कौपीनमपि तत् ।।

चै. चं. ना. ४.३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

—"अहा ! कहाँ वह कुञ्चित-केश प्रभुका श्रीमस्तक और कहाँ वह भीषण संन्यासाश्रमकी मुण्डन विधि ! कहाँ प्रभुका कृष्ण केलि-वस्त्रसे शोभित सुरमणीय नितम्बदेश और कहाँ वह कुत्सित कोपीन-वसन ?"

नदियाके भक्तोंने समझ लिया कि उनके सर्वस्वधन नदियाके नागर, शचीमाताके अञ्चलके निधि, विष्णुप्रियाके प्राणधन श्रीगौराङ्गसुन्दरने सबकी छातीमें शूल मारकर श्रीशिखा-मुण्डन कराकर संन्यास-ग्रहण किया है और यह भी समझ लिया कि उनका यह कार्य श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न अपनी आँखोंसे देखकर पागल हो गये हैं। सबलोग आचार्यरत्नको पकड़कर गङ्गाके तीरपर बैठकर अजस्र आँसू बहाने लगे।

श्रीगौराङ्ग-विरह-ज्वालासे उन्मत्त होकर आचार्यरत्न उच्च स्वरसे विलाप करने लगे—

तास्ताः कीर्तन-नृत्य-कौतुककला
हा धिक् समाप्ति गता-
स्तास्ताः प्रेमविलास-हासमधुरा
वाचःस्थिता नो हृदि।
सा प्रीतिः करुणा च सा
शिव शिव स्मृत्येकशेषाभवत्
संन्यासेन तब प्रभो विरचितः
सर्वस्व नाशो हि नः॥

चै. चं. ना ४.३६

"हा प्रभो ! तुम्हारा वह भुवनमङ्गल हरिकीर्तन और नयनरञ्जन नृत्य-लीला-कौतुक क्या सब समाप्त हो गया ? परन्तु हमारे हृदयमें वह तुम्हारा प्रमभाव-विलास, तुम्हारे श्रीवदनका परम रमणीय हास्य और सुधा-मधुर रसमयी वाणी निरन्तर जागरूक रहती है। हे प्रभो ! वह तुम्हारा अकृत्रिम प्रणय और अपारकरुणाकी स्मृतिमात्र केवल अवशेष रह गयी है। तुम्हारे संन्यास-धर्म-ग्रहणसे हमारा सर्वनाश हो गया है।

आचार्यरत्नकी हृदय-विदारक विलाप-ध्वनिसे गङ्गातट पूर्ण हो गया। वहाँ बहुत-से लोग आकर एकत्रित हो गये। सबने सुना कि नदियाके राजा, शचीमाताके जीवनधन, विष्णुप्रियाके जीवन-सर्वस्व-धनने संसार-सुखको तिलाञ्जलि देकर, जननी और गृहिणीके वक्ष-स्थलपर शूल मारकर संन्यास-ग्रहण किया है। यह सुनकर सबलोग हाय-हाय करने लगे। गङ्गा-तटपर जो भीषण आर्तनादकी मर्मभेदी ध्वनि उठी, वह क्षणभरमें सारे नदिया-नगरमें फैल गयी। सारे नदियावासी शोक-समुद्रमें डूब गये।

आचार्यरत्नके साथ ही मुकुन्द नवद्वीप आये थे। वे अपने घर जाकर मृतवत् पड़ गये। जब गङ्गाके तीरपर भक्तवृन्द आचार्यरत्नको लेकर एकत्र बैठकर श्रीगौराङ्ग-विरहमें आँसू बहा रहे थे, उसी समय वहाँ श्रीगङ्गादासपण्डित आये। उन्होंने आचार्य-रत्नको देखते ही अश्रुपूर्ण लोचनोंमें गद्गद-कण्ठसे पूछा—"आचार्यरत्न ! शचीमाताने अपने पुत्रके कुशलादि पूछनेके लिए मुझको भेजा है। उन्होंने सुना है कि आप प्रभुके साथ थे।"

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न सिर नीचा करके चुप बैठे रहे। मानो जलेपर नमक पड़ गया हो। वे रुद्धकण्ठसे 'हा हतोऽस्मि' कहने लगे। कोई बात मुँहसे बोल न सके। कुछ देरके बाद वे वे अपनेको सँभालकर गङ्गादासपण्डितसे बोले—"हे गङ्गादास ! शचीदेवीसे कहिये कि श्रीअद्वैताचार्यने कहा है—'जिस प्रकार श्रीरामचन्द्रके वनवास और श्रीकृष्णके मथुरा-गमनसे उनकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

माताओंको अपार यन्त्रणा और क्लेश सहन करना पड़ा था, उसी प्रकार उनको भी प्रभुके संन्यास-ग्रहणकी यातना सहन करनी पड़ेगी।"

गङ्गादासपण्डितने सिर नीचा किये रोते-रोते उत्तर दिया—'हे आचार्यरत्न ! जगन्माता शची ठकुरानीने यह पहले ही अनुमान कर लिया है। यह बात उन्होंने स्वयं मुझसे कही है। शचीमाता परम धैर्यवती हैं। उनका चरित्र लोकातीत है। यदि ऐसा न होता तो स्वयं-भगवान् उनके गर्भसे पुत्ररूपमें कैसे अवतीर्ण होते ?"

इतना कहकर वे कुछ देर मन-ही-मन कुछ सोचते रहे। आचार्यरत्न सब शास्त्रोंके अच्छे पण्डित थे। इस समय अकस्मात् उनके मनमें प्रभुके अवतारकी बात उदय हुई। उनके स्मृति तटपर निम्नलिखित महाभारतीय विष्णुसहस्रनामस्तोत्रका श्लोक उदय हुआ—

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिपरायणः ॥

तब उन्होंने सोचाकि प्रभुका यह संन्यास जीवमात्रके लिए है। जगन्माता शचीदेवीने इसे समझा हैं। हम भी इसको समझनेकी चेष्टा करेंगे।

—ऐसा सोचकर आचार्यरत्नने अपने मनको कुछ प्रबोध दिया तत्पश्चात् प्रभुके संन्यास-ग्रहणका सारा वृत्तान्त आदिसे अन्ततक सब भक्तवृन्दको सुनाया। वे सब दुःखकी बातें यहाँ अधिक विस्तारसे नहीं कही जायँगी। कृपालु पाठकवृन्द उस ममाँन्तक दुःख-कथाकी अपने मनमें कल्पना कर लें।

श्रीपाद चन्द्रशेखर आचार्यरत्न उस रात श्रीवासपण्डितके घर रहे। सारे नवद्वीपमें प्रभुके संन्यासकी बात विद्युत्-गतिसे फैल गयी। मुकुन्द भी आचार्यरत्नके साथ आये थे। सारे नदियावासियोंके हृदयमें शोकका प्रबल श्रोत बह चला। प्रभुके सन्यास-ग्रहणके संवादसे नदियाकी कैसी दशा हुई, इसका अति सुन्दर वर्णन ठाकुर जयानन्दने एक पदमें किया है। वह पद इस प्रकार है—

सिन्धुरा राग।

आचम्बिते नवद्वीपे दुइपर बेला।
के कोथा डाकिया बले नदेर सम्पद् गेला ॥
मुकुन्देर मुखे शुनि शची ठाकुरानी।
आकाश भाँगिया पड़े ना निस्वरे वाणी ॥
काँदिया विकल जत नवद्वीपवासी।
कि लागि गौरचन्द्र हइला संन्यासी ॥
नाछे, बाटे, हाटे, घाटे, आन् नाहि शुनि।
कोलेर पो फेलाइया काँदेर नदेर रमणी ॥
कि हैल, कि हैल रे ठाकुर! कि हैल कि शुनि।
बाल-वृद्ध-युवा काँदे पड़िया धरणी ॥
मुक्त केशे गङ्गा मुखे जाय लोक धेये।
कोलेर छाओयाल काँदे माँ-बाप स्मरिये ॥
कि लागि गौरचन्द्र हइला संन्यासी ॥ध्रु०
हाम्बारव करि काँदे जत सब धेनु।
दिवसे आँधार गगन पूरिलेक रेणु ॥
स्थगित अलकानन्दा जल नाहि चले।
नदियार सम्पद् गेला सर्वलोके बले ॥
कोथा गेला कोथा आछ, ना देखिब आर।
विष्णुप्रिया ठाकुरानीर संसार आँधार ॥
रन्धन-भोजन-निद्रा नवद्वीपे नाञि।
शुनि मूर्च्छा गेल तबे अद्वैत गोसाञि ॥
मूर्च्छा गेला श्रीनिवास मुरारि, वक्त्रेश्वर।
गङ्गाय झाँप दिया पड़े श्रीगदाधर ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हरिदास ठाकुर शुनि लागिल समाधि।
काँदिया विह्वल आचार्यरत्न, विद्यानिधि॥
कुलबधू काँदे प्रभु रूप विनाइया।
शास्त्र-शाले पड़या काँदे पूँथि आछाड़िया॥
शारी-शुक शुनि काँदे कपोत-कूहरे।
शृगाल-कुक्कुर काँदे कोकिल-भ्रमरे॥
जत पुष्पोद्याने सब पुष्प नाहि फूटे।
उजान बहे सुरधुनि तरङ्ग टूटे॥
बने काँदे शाखामृग तरु-तले बसि।
कुलबधूजन काँदे परम रूपसी॥
नीलाचले जगन्नाथेर बाड़िल उल्लास।
जयानन्द बले प्रभुर कपट-संन्यास॥

शचीमाताके कानोंमें यह संवाद पहुँचा। वे आँगनमें पछाड़ खाकर मूर्छित हो गयीं। बहुत देरतक उनको चेतना न आयी। वैष्णव-गृहिणीगण उनको घेरकर आँगनमें बैठकर मुँहपर कपड़ा देकर फुफकार मारकर रोने लगीं। भक्तवृन्द बाहरी दालानमें हाहाकार और आर्तनाद करने लगे। गम्भीर शोकावेगसे हृदय चूर-चूर हो गया। कोई स्थिर होकर खड़ा न रह सका। सभी भूतलपर गिरकर पछाड़ खाकर उच्च स्वरसे रुदन करने लगे।

घरमें श्रीविष्णुप्रियादेवी मृतवत् पड़ी थीं। उन्होंने भी आज तीन दिनसे जलस्पर्श नहीं किया था। उनमें बोलनेकी शक्ति नहीं रह गयी थी। प्रभुके संन्यास-ग्रहणकी खबर उनके कानोंमें भी पहुँची। वे जोर-जोरसे छाती पीटने लगीं। सखियाँ और पुरनारियाँ किसी भी प्रकारसे उनको पकड़कर रख न सकीं। श्रीमतीजीके आर्तनादसे काष्ठ और पाषाण भी द्रवित हो उठे। ठाकुर जयानन्दने श्रीमतीजीकी मनः संतापकी उक्ति एक अतिशय करुणरसात्मक पदमें लिखी है। वह पद यहाँ उद्धृत किया जाता है—

राग पटमञ्जरी।

हरि हरि गौर प्राणनाथ
कि लागि हइला संन्यासी।
तोमा ना देखिलें बुक विदरे
ना जीये ए विष्णुप्रिया दासी॥
शङ्कर आराधिया, सागरे मरिया,
जन्म लइल नवद्वीपे।
हैलाम तोमार दासी, भाग्य हेन वासी,
जन्म लइल नवद्वीपे॥
जगत निस्तारिते, आइला दुटि भाइ,
गोलोक छाड़िया सम्प्रति।
कीर्तनानन्द रसे, अखिल जीव भासे,
आमारे छाड़िया हैले यति॥
भाल भाल भाल, केशव भारती,
ठेकिला विष्णुप्रियार बधे।
आमार ठाकुरे, संयासी कराइजे,
कौपीन कटि परिच्छदे॥
भाल-भाल-भाल, गोसाञि अवधूत,
आइरे कैले उदासिनी।
विनोद गृहवास, छाँड़िया संन्यास,
धरिले करङ्ग-कौपिनी॥
कि आर कहिब सभारे।
विष्णुप्रिया प्रति, सभार अनुग्रह,
जानिल कार्य अनुसारे॥
जत दूर जानि, संचारेण पाणि,
आमा हेन आछे के।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जयानन्द कहे, ए कथा मिछा नहे,
गौराङ्ग सत्य गोसाञि जे ।।

श्रीमतीजी एकबारगी उन्मादिनी हो गयीं। सखी काञ्चनमाला देवीके मुख-चन्द्रकी ओर देखकर भयभीत हो रही हैं। वे दौड़कर आँगनमें शचीमाताके पास गयी; जाकर जो कुछ देखा, उससे उनका भय दूना बढ़ गया। देखा कि शचीमाताका शरीर निःस्पन्द है; वे निश्चेष्टभावसे जड़वत् पड़ी हुई हैं; उनको बाह्य ज्ञान नहीं है। पुर स्त्रियाँ आँगनमें उनको घेरकर बैठी हैं। काञ्चना भयभीत होकर पुनः घरकी ओर आयी। घरमें जाकर देखा कि श्रीमतीजीने भूमि-शैया ग्रहण कर ली है। उनका सर्वाङ्ग थर-थर काँप रहा है। मुँहमें कोई बात नहीं है। बारंबार दीर्घश्वास ले रही हैं। बीच-बीचमें अतिशय क्षीण-कण्ठसे वे कह रही हैं—"हा अदृष्ट ! मैं मर क्यों न गयी ? मेरे प्राणवल्लभ कोपीनधारी हैं; क्या अब मेरा इस घरमें रहना शोभा देता है ? दारुण विधाताने क्या इस अभागिनोंके अदृष्टमें यही लिखा था ? जन्म लेनेके पहले ही मैं मर क्यों न गयी ?" सखी काञ्चना श्रीमतीजीको गोदमें लेकर बैठ गयी उसने अपने वसनाञ्चलसे उनके सुख-चन्द्रको पोंछ दिया। वे उनके मुखकी ओर देख नहीं पा रही हैं और न कोई बात कर पा रही है।

श्रीमतीविष्णुप्रियादेवीके मुखसे केवल 'हा गौराङ्ग हा गौराङ्ग' शब्द निकल रहा है। वे कोई और बात नहीं कह रही हैं, केवल रो रही हैं। आज तीन दिनसे उनकी आँखके आँसू सूखते नहीं हैं।

जो लोग श्रीमतीजीको प्रबोध देने गये, वे भी देवीकी ऐसी अवस्था देखकर व्याकुल होकर रोने लगे। अब श्रीमती पूर्णतः चेतना-शून्य हैं, क्षण-क्षणमें मूर्छित हो रही हैं, सब सखियाँ मिलकर देवीके कानके पास 'गौराङ्ग-गौराङ्ग' कहकर उच्च स्वरसे पुकारने लगीं, तब श्रीमतीको चेतना आयी।

सब सखियाँ मिलकर तब रोते-रोते प्रबोध देने लगीं—"सखि विष्णुप्रिये ! हम तुमको और क्या प्रबोध दें ! तुम्हारे प्राणबल्लभ तो पहले ही तुमको कह गये हैं कि वे चाहे जहाँ रहें, तुम अनुरागपूर्वक पुकारोगी तो वे आ जायँगे। सखि ! शान्त हो जा। वे चाहे जहाँ रहें, तुमको छोड़ नहीं सकते; यह बात उन्होंने तुमको कह दी है और तुमने ही यह हमको बतलाया है। तुम्हारे प्राणवल्लभका लीला-रङ्ग कुछ भी तुमसे अगोचर नहीं है। सखि ! तू स्वयं समझकर अपने मनको प्रबोध दे—इतना कहकर सब सखिया मिलकर गौराङ्ग-नाम लेने लगी।

शचीदेवीको उस समय बाह्यज्ञान हो गया था। वे बहुत देरसे पुत्र-वधूको देख न सकी थीं। पुरनारियोंके साथ वे पुत्रवधूके पास घरमें गयीं। जाकर देखा कि श्रीमतीजी सखियोंके साथ अनुरागमें भरकर गौराङ्ग-नाम ले रही हैं तथा प्राणके आवेगसे अपने प्राणवल्लभको पुकार रही हैं। शचीमाता और उनके साथकी वैष्णव-गृहिथीगणने भी प्रभुके नाम-गानमें योग दिया।

भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्‌के कानोंमें भक्तकी करुण पुकार पहुँची। वे मत्तसिंहकी चालसे राढ़देशका परिभ्रमण करते हुए उस दिन शान्तिपुरमें गङ्गाके उस पार आ गये थे। साथमें श्रीनित्यानन्द-प्रभु थे। अचानक प्रभु स्थिर होकर खड़े हो गये। उनकी गति रुक गयी। वे भक्तके नाम-पाशमें बद्ध हो गये।

नित्यानन्द प्रभुका नबद्वीप आगमन

करुणासिंधु प्रभु श्रीनित्यानन्दके श्रीअङ्गमें श्रीअङ्ग मिलाकर खड़ें हो गये। उनके करुण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कमल-नयनोंसे झर-झर अश्रुधारा बह रही थी। वे करुण स्वरमें रोते-रोते श्रीनित्यानन्दप्रभुसे बोले—"श्रीपाद! आप नवद्वीप जायँ; नदियाके सब भक्तोंको शान्तिपुर ले आवें। मैं उनको देखे बिना व्याकुल हो रहा हूँ।" भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान् भक्तकी पुकारपर स्थिर न रह सके। श्रीनित्यानन्द-प्रभुको आदेश दिया—

नवद्वीपे जाह तुमि शुनह वचन।
नदीया नगरे मोर जत बन्धु जन॥
सभारे कहियो 'नमो नारायण' वाणी।
अद्वैत आचार्य गृहे उत्तरिब आमि॥
सभारे लइया तुमि आइस तथाकारे।
एकत्र हइब सभे आचार्येर घरे॥

चै. म.

अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु आनन्दमें विह्वल होकर नदियाकी ओर चल पड़े। उन्होंने चन्द्रशेखर आचार्यरत्नको पहले ही वहाँ भेज दिया था। श्रीनित्यानन्दप्रभु जब चलने लगे तो प्रभुने उनको पास बुलाकर कानोंमें ही कुछ चुपके-से कहा। श्रीनित्यानन्दप्रभुने सिर नीचा कर लिया। उनकी सारी आशा-भरोसा, सारा आनन्द मानो दूर हो गया। उनके वदनपर निराशाकी छाया दीख पड़ी।

श्रीनित्यानन्दप्रभुने सोचा था कि विष्णुप्रिया-देवीको इसीके साथ शान्तिपुर ले आवेंगे; क्योंकि प्रभुका आदेश था—

'सभारे लइया तुमि आइस तथाकारे।'

सबके अन्तर्गत श्रीमतीजी भी थीं। इसी कारण प्रभुने उनको पहले ही सावधान कर दिया। प्रभु रोते-रोते अतिमृदु स्वरमें बोले—"श्रीपाद! एक व्यक्तिको छोड़कर सबको शान्तिपुर ले आवेंगे।" वह एक व्यक्ति कौन है? कृपालु पाठकवृन्दने समझा क्या?—वह हैं, गौरवक्षविलासिनी श्रीमती विष्णुप्रियादेवी। नदिया-नागर श्रीगौराङ्गसुन्दरने संन्यास-ग्रहण किया है। यति-संन्यासीके लिए स्त्रीका मुँह देखना निषिद्ध है। धर्मप्रतिपालक नदियाके अवतारने धर्मका पालन करके लोकशिक्षा दी। परन्तु इस यतिधर्मका पालन करनेमें उनका कोमल हृदय चूर-चूर हो गया। उनके प्राण शतधा विदीर्ण हो गये। उनके मनमें भीषण ज्वाला दहक उठी। लोकशिक्षाके लिए, कलिग्रस्त जीवके मङ्गलकी कामनासे करुणामय श्रीभगवान्‌ने स्वेच्छासे आत्मविसर्जन किया, आत्मसुखको तृणवत् तुच्छ माना, प्राण प्रियतमा पतिप्राणा सरला बाला विष्णुप्रियाके हृदयमें भीषण शूल मारा, सदाके लिए उसे दुःखिनी बना दिया। यही श्रीभगवान्‌का लीलारङ्ग है। श्रीभगवान् निर्विकार, निर्लेप, शुद्ध सत्त्व, परम पुरुष हैं। इससे उनको हानि-लाभ, वृद्धि-ह्रास, सुख-दुःख कुछ भी नहीं है; परन्तु भक्तके हृदयमें श्रीभगवान्‌का यह लीलारङ्ग बड़ा ही आघात करता है। उनका लीलारङ्ग मनुष्य-बुद्धिके लिए अगम्य है, अज्ञेय है। रँगीले श्रीगौराङ्गप्रभुने जो लीलारङ्ग किया, उससे उनके भक्तोंके हृदयमें बड़ी चोट लगी। श्रीनित्यानन्दप्रभु रोते-रोते नदियाकी ओर चले। प्रभुसे कुछ बोले नहीं। स्वतन्त्र ईश्वरका सारा कर्म स्वतन्त्र होता हैं; वे इच्छामय हैं, लीलामय हैं और रङ्गप्रिय हैं। उनको सब शोभा देता है। रँगीले श्रीगौराङ्गप्रभु श्रनित्यानन्दप्रभुको बिदा करते समय थोड़े मुस्कुराये।

"हासिया ठाकुर ताँरे दिलेन विदाय।"

चै. म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीनित्यानन्दप्रभुने समझा कि आनन्द-लीलामय-विग्रह श्रीश्रीगौराङ्गचन्द्रका यही लीलारङ्ग है।

श्रीगौराङ्गप्रभुकी इच्छाशक्ति थे अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभु। शचीनन्दन श्रीगौराङ्ग परमेश्वर थे। पद्मावतीनन्दन श्रीनित्यानन्द ईश्वर थे। श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने लिखा है—

ईश्वरे परमेश्वरे जे हइल कथा।
ताहार रहस्य केवा बूझिबे सर्वथा॥

चै. भा. अ.८.७३

श्रीनित्यानन्दप्रभु पहले शचीके आँगनमें जाकर उपस्थित हुए। शचीमाता जबसे प्रभु गये, तबसे उपवासी थीं, घरमें मृतवत् पड़ी थीं। प्रभुकी इच्छासे उनका प्राण बचा था। अपनेको सँभालकर नित्यानन्द शचीमाताके सामने जाकर खड़े हो गये। शचीमाताने एकबार उन्मादिनीके समान निताई-चाँदके श्रीवदनकी ओर देखा, मानो उनको पहचान न सकीं। आँखें फिर मूँद लीं।

अवधूत श्रीनित्यानन्दने शचीमाताको सम्बोधन करके कहा—"माँ! मैं तुम्हारा निमाई हूँ। तुम्हारे निमाईको शान्तिपुरमें लाया हूँ।" शचीमाता मानो चकित हो उठीं। वे अत्यन्त व्यस्त होकर उठ बैठीं। श्रीनित्यानन्दको पहचानकर आर्तनाद करके रो पड़ीं—"बेटा निताई! मेरा सर्वस्वधन निमाई-चाँद कहाँ है? उसको तू कहाँ रख आया?" उन्मादिनी गौराङ्ग-जननी ये बातें कहते-कहते अपनी छातीपर जोर-जोरसे कराघात करने लगी। उनका सारा अङ्ग थर-थर काँपने लगा। उनकी दृष्टि केवल पथकी ओर थी।

निताई-चाँद शचीमाताको गोदमें लेकर बैठ गये; श्रीनित्यानन्द प्रभुकी गोदमें उन्मादिनी शचीदेवीका मस्तक था। वे निताई-चाँदके मुखकी ओर अनिमेष नेत्रोंसे देख रही थीं और और मृदु स्वरमें कातर कण्ठसे कह रही थीं—"बेटा निताई! मेरा निताई-चाँद कहाँ है? तू उसको कहाँ रख आया?

श्रीनित्यानन्दप्रभुके कमल-नयनद्वय से अविरल अश्रु प्रवाहित हो रहे थे। उनके नयन-जलसे शचीमाताका वक्षःस्थल डूब गया। श्रीगौराङ्ग-जननीके नयन-जलमें अवधूत नित्यानन्दप्रभुका नयन-जल मिलकर घरको कर्दमाक्त कर दिया।

नदियाके भक्तवृन्दने सुना कि श्रीनित्यानन्दप्रभु आये हैं। सभी लम्बी साँस लेकर प्रभुके घरकी ओर दौड़ पड़े। शरीरमें बल नहीं था; क्योंकि प्रायः सभी उपवासी थे। अङ्ग शिथिल हो रहे थे, पैर डगमगाते थे, आँखोंमें आँसू भरे रहनेसे रास्ता नहीं सूझ रहा था। इसी अवस्थामें भक्तवृन्द प्रभुके मन्दिरकी ओर चले। वहाँ जाकर श्रीनित्यानन्द-प्रभुकी गोदमें शचीमाताको तदवस्थामें देखा। कोई कुछ पूछ न सका। वे केवल निताई-चाँदके मुँहकी ओर ताकते रहे। सारे भक्तवृन्द और वैष्णवगण श्रीनित्यानन्दके चरणोंमें गिरकर अजस्र आँसू बहाने लगे।

श्रीनित्यानन्दप्रभुने देखा कि वृद्धा शचीमाताकी अवस्था अत्यन्त सोचनीय है। जबसे प्रभु गये हैं, तबसे माता इतने दिनोंकी उपवासी थीं। श्रीमती विष्णुप्रियादेवीकी अवस्था भी वैसी ही थी। भक्तवृन्द जीते ही मृतवत् हो गये थे। अब इनको भोजनादि प्रदानकर स्वस्थ करना होगा, शचीमाताको खिलाना होगा, श्रीमती विष्णुप्रिया-देवीकी प्राण-रक्षा करनी होगी। ऐसा सोचकर सर्वज्ञ श्रीनित्यानन्दप्रभुने शचीमाताके अङ्गमें पद्महस्त फेरकर स्नेहपूर्वक कहा—"माँ! तेरे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

निमाईको पकड़कर मैं शान्तिपुर लाया हूँ। तुमलोगोंको आज ही वहाँ ले जाऊँगा। मुझे बहुत भूख लगी है, भक्तगण उपवासी हैं तुम्हारे हाथका पकाया श्रीकृष्णका प्रसाद भोजन करनेके लिए सबको बड़ा लोभ हो रहा है। तुम्हारे उपवाससे श्रीकृष्ण उपवासी हैं। माँ ! तुम उठो। श्रीकृष्णका नैवेद्य करके ठाकुरको भोग लगाओ। माँ ! तुम्हारे हाथका पकाया श्रीकृष्णका प्रसाद पानेकी मेरी बड़ी साध हो रही है।"

शचीमाता उठ बैठीं। अवधूत श्रीनित्यानन्द-प्रभुके मुँहको ओर चित्रवत् होकर देरतक देखती रहीं, उनके मुँहसे कोई बात नहीं निकली। वे यशोदाभावमें परम विह्वल थीं उनको बाह्य ज्ञान नहीं था। बीच-बीचमें वे अतिक्षीण स्वरमें कहती थीं—"तुमलोग क्या मथुराके आदमी हो ? मेरे राम-कृष्ण कैसे हैं ? यह सिङ्गा बज रहा है। जान पड़ता है, अक्रूर फिर गोष्ठमें आ गया है।" यशोदाके भावमें मैया एकबारगी विभोर हैं।

श्रीनित्यानन्दकी सारी बातें शचीमाताने सुनी हैं। उनकौ भूख लगी है, प्रसाद पावेंगे, आईको रसोई बनानेके लिए अनुरोध कर रहे हैं—ये सब बातें सुनकर शचीमाता भूमि-शैयासे उठकर बैठ गयीं। परन्तु अभीतक वे बाह्यज्ञानशून्य थीं। वे यशोदाके भावमें श्रीकृष्ण-विरह-सागरमें डूबी हैं—यह देखकर श्रीनित्यानन्दप्रभुने अतिशय भक्तिपूर्वक उनका चरण पकड़कर मधुर वचनमें कहा—"माँ श्रीकृष्णके कौन-से रहस्य तुमसे छिपे हैं ? मैं तुमको क्या बताऊँ ? चित्तमें जरा भी विषाद न करना। वेद जिनका अन्वेषण करते रहते हैं, फिर भी पार नहीं पाते, वे ही तुम्हारे पुत्र बने हैं, वे सभीके जीवन-सर्वस्व हैं। ऐसे प्रभुने छातीपर हाथ लगाकर तुम्हारा सारा भार ले लिया है। प्रभुने अनेक बार कहा है कि तुम्हारा व्यवहार-परमार्थ, जो कुछ भी है सबका दायित्व मेरे ऊपर है। तुम्हारी किसमें भलाई है—इसको प्रभु भली प्रकार जानते हैं। तुम तो उसको समर्पण होकर सुखपूर्वक रहो।" (चै. भा. अं. १.१६०—१६५)

शचीमाताको तब बाह्यज्ञान हुआ। परन्तु श्रीनित्यानन्दप्रभुने उनको क्या कहा, यह उनकी समझमें न आ सका। पहलेकी बात उनको याद आ गयी। निताई-चाँदको भूख लगी है, वे प्रसाद खाना चाहते हैं। शचीमाताके मनमें यह याद आते ही वे उठकर पाकशालाकी ओर चलीं। अनशनसे उनका शरीर क्लिष्ट था, थर-थर सारा अङ्ग काँप रहा था, तथापि शचीमाता उठकर भोजन बनाने गयीं, क्योंकि निताई-चाँदको भूख लगी है, भक्तगण प्रसाद पावेंगे। शचीमाताको और भी याद आया कि उनके खोये धन निमाई-चाँदको निताई शान्तिपुर रख आये हैं; उनको भी निताई वहाँ ले जायँगे, वे फिर पुत्रका मुँह देखेंगी, निमाई-चाँदके मुँहसे सुधामयी मधुर वाणी सुनेंगी। इस आशासे वे कलेजा बाँधकर उठीं उनके शरीरमें बल आ गया। उन्होंने रसोई बनाकर श्रीकृष्णको भोग लगाकर श्रीनित्यानन्दप्रभु और भक्तवृन्दको परम परितोषपूर्वक भोजन कराकर श्रीनिताई-चाँदके अनुरोधसे स्वयं किंचित्मात्र प्रसाद पाया। पुत्रवधूको भी जरा-सा खिलाया। आज इतने दिनोंके बाद शचीमाताके पेटमें नाममात्रका अन्न-जल पड़ा, यह देखकर भक्तोंके मनमें आनन्द हुआ। वे श्रीनित्यानन्दप्रभुको धन्य-धन्य कहने लगे।

अब नदियावासी भक्तवृन्द शान्तिपुर जानेकी तैयारी करने लगे। श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र संन्यासी हो गये हैं। उनका नाम हो गया हैं—श्रीश्रीकृष्ण चैतन्यप्रभु—यह बात नदियावासी नर-नारी बाल-वृद्ध-युवा सबने सुनी है। सभी प्रभुका दर्शन करनेके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिए शान्तिपुर जानेका उद्योग करने लगे। सभी भक्तगण प्रभुके अपूर्व सन्यास नाम 'श्रीकृष्णचैतन्य' की व्याख्या और विचार करने लगे। केशव भारती प्रभुके संन्यास-गुरु हो गये हैं। उनके नामके सम्बन्धमें भी विचार किया। उन्होंने प्रभुके श्रीकृष्ण-चैतन्य-नामकी इस प्रकार व्याख्या की।

कृष्णस्वरूपं चैतन्यं कृष्णचैतन्य संज्ञितः।
अतएव महावाक्यस्वार्थोऽपि फलवानिह॥

चैतन्यचन्द्रोदय नाटक ४.४.

"जो स्वयं श्रीकृष्ण हैं, वे ही चैतन्यरूपी हैं; अतएव यह नाम प्रभुके उपयुक्त ही है तथा इसमें 'तत्त्वमसि' महावाक्यकी लक्षणा व्यतिरेकसे सफल हुई है।" केशव भारती शब्दसे भी (केशवकी भारती) श्रुति ही बोधित होती है। इसका प्रमाण भागवतके एकादश स्कन्धमें भगवान्‌ने उद्धवको कहा है—

"मयाऽऽदौ ब्रह्मणे प्रोक्ता धर्मो यस्यां मदात्मक"

भा. ११. ४.३

अतएव प्रभुका श्रीकृष्णचैतन्य नाम श्रुतिप्रतिपाद्य है। इस प्रकार विचार करते-करते भक्तवृन्दने प्रभुका दर्शन करनेके लिए शान्तिपुर जानेकी सारी तैयारी कर ली। नदियावासी बालक-वृद्ध-युवा-सभी प्रभुके दर्शनके लिए चले। सारी नदियामें कोलाहल मच गया कि प्रभु संन्यासी-वेषमें श्रीअद्वैत-भवनमें विराज रहे हैं। पाखण्डीलोग, जो पहले प्रभुकी निन्दा करते थे, वे भी चले। वे लोग प्रभुका संन्यास-ग्रहण सुनकर मन-ही-मन बहुत संतप्त हुए। वे सभी आपसमें बातें करने लगे कि प्रभु—

गूढ़रूपे नवद्वीपे लइलेन जन्म।
ना जानिया निन्दा करिलाम ताँर धर्म॥
एबे लइ गिया तान चरणे शरण।
तबे सब अपराध हइबे खण्डन॥

चै. भा. अं १. १७९,१८०

शचीमाताका शान्तिपुर गमन

नदियाभरके लोग शान्तिपुर जा रहे हैं। शचीमाता डोलीपर जायँगी। प्रभुके गृह-द्वारपर डोली आकर लगी। शचीमाता पुत्रवधूको साथ लेकर शान्तिपुर जानेकी तैयारीमें हैं अपनी सोनेकी पुतली पुत्रवधूको इस समय किसके पास रखें? अनाथिनी विष्णुप्रिया अपने जीवन-सर्वस्व-धनको क्या एक बार देख न सकेंगी? इसी समय श्रीनित्यानन्दप्रभुने आकर उनसे कहा—"माँ! सब तैयार हो गये हैं, डोली द्वारपर तैयार है। चलो माँ! शान्तिपुर चलो। अपने निमाई-चाँदको देखने चलो।" शचीमाताने श्रीनित्यानन्दप्रभुसे अतिक्षीण स्वरमें कहा—"वधूको भी ले जाना होगा।"

अवधूत श्रीनित्यानन्दप्रभुके प्रशान्त मुखमण्डलने अकस्मात् गम्भीर-भाव धारण कर लिया। वे भौं टेढ़ी करके गम्भीर स्वरमें हाथ जोड़कर बोले—"माँ! इसके लिए प्रभुने निषेध किया है, माँ! तुम अकेली चलो।"

दुःखिनी शचीमाताकी सारी आशा चूर हो गयी। वे स्तम्भित होकर जड़वत् खड़ी हो गयीं। किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वे निमाई-चाँदके मुख-चन्द्रकी ओर एकटक देखती रह गयीं। उन्होंने कहा—"बेटा निमाई! मैं सोनेकी पुतली पुत्रवधूको इस समय यहाँ अकेलीं छोड़कर नहीं जाऊँगी? तुमलोगोंमें कुछ भी दया-माया नहीं है? तुमलोगोंने क्या कलेजेपर पत्थर बाँध रखा है? यदि वह नहीं जा सकती तो मैं भी नहीं जाऊँगी।" नित्यानन्दप्रभुने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सिर नीचा किये रखा। वे और कुछ उत्तर न दे सके।

घरमें श्रीमती विष्णुप्रियादेवी सखी काञ्चनमालाका गला जकड़कर अजस्र आँसू बहाती हुई रो रही हैं। उनके दुःखका अन्त नहीं है। उन्होंने सब-कुछ सुना है, सब-कुछ देखा है। उनको समझनेके लिए कुछ बाकी न रहा। वे छिन्नमूल लतिकाके समान भूतलपर गिरकर मर्मभेदी स्वरमें आर्तनाद करने लगीं। सखी काञ्चनाको सम्बोधन करके प्रियाजी रोते-रोते कहने लगीं—

आमा लागि प्रभु मोर करिल संन्यास।
फिरिया यद्यपि आइला अद्वैतेर वास॥
स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, युवती-युवक।
देखिते आनन्दे धाइया चले सब लोक॥
कोन अपराध कैनु मुञि अभागिनी।
देखिनेओ अधिकार ना धरे पापिनी॥
प्रभुर रमणी यदि ना करित विधि।
तथापि पाइत देखा प्रभु गुणनिधि॥

—यह बात बोलते-बोलते श्रीमती मूर्च्छित हो हो गयीं। काञ्चनादि सखियोंने उनके कानोंमें गौर-नामस्मरण करा दिया। तत्काल देवीकी मूर्च्छा भङ्ग हो गयी। तब वे प्राणवल्लभको उद्देश्य करके हृदय-विदारक करुण स्वरमें विलाप करने लगीं—

दासीर कपाले नाथ! एकि लिखिले।
पदसेवा अधिकारे केन बञ्चिले॥
बञ्चित दरशने, करिले दासीरे केने,
चरण दासीरे तुमि प्राणे मारिले॥
शान्तिपुरे एसे नाथ सबे डाकिले।
पापिनी बलिया बुझि मोरे छाड़िले॥
नित्यानन्दे निवेधिले, दुःखिनी पापिनी बले,
कि दोषे दासीरे तुमि पदे ठेलिले॥
ना ह' तास यदि आमि, तोमार रमणी मणि,
स्थान दिते अधिनीके चरण तले॥
(आमि) ए कथा भाबिया भासि आँखि सलिले॥
त्रिजगत नाथ तुमि, चरणेर दासि आमि,
कि सुख पाइले नाथ चरणे ठेले।
जगत तारिते एसे मोरे छाड़िले॥

(ग्रन्थकार)

श्रीविष्णुप्रियादेवीका मर्मतुद हृदयविदारक करुण विलाप शचीमाताने सुना; श्रीनित्यानन्दप्रभुने, उपस्थित भक्तवृन्दने सुना; सभी व्याकुल होकर क्रन्दन करने लगे। शचीमाताका मस्तिष्क चक्कर काटने लगा।

विष्णुप्रियाने माँसे अनुनय विनय की—"मेरे कारण तुम पुत्रको देखनेसे वंचित क्यों होती हो? माँ! तुम जरूर जाओ, नहीं तो मुझे और भी अधिक दुःख होगा।" माँ विवश होकर डोलीमें बैठकर शान्तिपुरकी ओर चल पड़ीं।*

---

* महात्मा शिशिरकुमार घोषद्वारा ग्रन्थित 'अमियनिमाइ-चरित' के तृतीय खण्डके प्रथम अध्यायमें उल्लेख है कि शास्त्रीय प्रमाण तो नहीं है लेकिन जनश्रुति है कि जब नदियाके लोग शान्तिपुर गये थे, तब उनमें से किसीके हाथ श्रीमती विष्णुप्रियादेवीने एक पत्र अपने प्राणनाथके पास प्रेरित किया था।

कदाचित उस अवस्थामें पत्र लिखनेकी सम्भावना न हो तो यह भी सम्भव हो सकता है कि शान्तिपुर जानेवालोंमें-से किसी मातृ स्थानीया रमणीकी मारफत प्रियाजीने संदेश भेजा हो। एक बार नीलाचलमें भी

(टिप्पणीका शेष अगले पृष्ठपर)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी सखियोंसे आवेष्टित हो घरमें उच्च स्वरसे विलाप करती हुई प्राणवल्लभके गुणोंका स्मरण करके क्रन्दन करती रहीं। पदकर्त्ता वासुदेव घोष प्रभुकी लीला अपनी आँखों देखकर पद रचना कर गये हैं। उस समय शचीके आँगनमें वे उपस्थित थे। यहाँ उनके रचे श्रीविष्णुप्रियादेवीकी उक्तिके दो पद उद्धृत करके इस अध्यायका उपसंहार किया जा रहा है—

काँदे देवी विष्णुप्रिया, निज अङ्ग आछाड़िया,
लोटाइया-लोटाइया क्षिति तले।

(टिप्पणी का शेष)

उन्होंने स्वामीको सदेश भेजा था जिसका उल्लेख यथास्थान होगा। प्रियाजीके भाव बड़े कारुणिक और मर्मस्पर्शी हैं। शिशिरबाबूकी रचित कविता पढ़िये और भावाश्र बहाइये—

जे अवधि गेछ तुमि ए घर छाड़िया।
से हते आछेन माना उपोस करिया॥
सदा ताँर सङ्गेते मालिनी ठाकुरानी।
नैले प्राणे एत दिन मरितेन तिनि॥
खाओयाइते करि जत साध्य साधन।
मोरे कोले करि करेन द्विगुन रोदन॥
मोर हाते मा राखिया चले गेले तुमि।
आकुल पाथारे देख पड़िलाम आमि॥
पिता चेयेछिलेन मोरे बाड़ि लइबारे।
ता कि आमि जेते पारि माके ऐका छेड़े॥
संन्यासी-घरणीर नियम किछुइ ना जानि।
कि खाइव, कि परिब लिखिबे आपनि॥
हातेर कङ्कण फेलिबारे हल भय।
पाछे वा तोमार किछु अमङ्गल हय॥
तोमार पाटेर जोड़ गलार चादर।
तोमार गलार हार चरण-नूपुर॥
कि करिब ए सकल सामग्री लइया।
राखिब कि गङ्गा माझे दिब भासाइया॥

ए सब वारता आमि काहारे सुधाइ।
माके सुधाइले निश्चय मरि जाइ॥
मार काछे थाक यदि बड़ भाल हय।
आमि काछे ना जाइब न करिह भय॥
ता हले से शान्त हबेन दुःखिनी जननी।
तारे बले दिओ नियम कि पालिब आमे॥
आपनि जे सब तुमि नियम पालिने।
ताहते कठोर नियम ए दासीरे दिबे॥
बाँचिब त्यजिया आमि भूषण भोजन।
सुखेते करिब आमि माटिते शयन॥
लोके वले तुमि नाकि आमार लागिया।
गार्हस्थ्य छाड़िया गेले संन्यासी हइया॥
केन आमि तोमार कि करिलाम क्षति।
कोन दिन संकीर्तने करेछि आपत्ति॥
आछाड़े तोमार सर्व्व अङ्गे लागे व्यथा।
बल देखि कोन दिन करियाछि कथा?
खाट हते भूमे गड़ागड़ि दिते तुमि।
बल कोन दिन राग करियाछे आमि?
षाषाण गलित तोमार करुण रोदने।
मोर दुःख राखिताम आपनार मने॥
आमारे देखिले यदि धर्म्म नष्ट हय।
आमि नय रहिताम बापेर आलय॥
विष्णुप्रिया पत्र लिखे कान्दिया कान्दिया।
बलराम देखे याछे थाकि दाँड़ाइया॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ओहे नाथ कि करिले, पाथारे भासाये गेले,
काँदिते काँन्दिते इहा बले ।।
ए घर जननि छाड़ि, मोरे अनाथिनी करि,
कार बोले करिला संन्यास ।
वेदे शुनि रघुनाथ, लइया जानकी साथ,
तबे से करिला वनवास ।।
पूरबे नन्देर बाला, जबे मधुपुरे गेला,
एड़िया सकल गोपीगणे ।
उद्धवेरे पाठाइया, निज तत्त्व जानाइया,
राखिलेन ता सबार प्राणे ।।
चाँद मुखे ना देखिबे, आर पद ना सेविब,
ना करिब से सुख-विलास ।
ए देह गङ्गाय दिब, तोमार शरण निब,
वासुर जीवने नहिं आस ।।

—※—

सांन्यासी हैया गेला, पुन यदि बाछड़िला,
ना आइला नदिया नगरे ।
हृदये-हृदये धरि, निज-पर एक करि,
चाँद मुख देखिबार तबे ।
हरि ! हरि ! गौराङ्ग एमन केने हैला ।।ध्रु०।।
सवारे सदय हैया, मुञि नारीरे बञ्चिया,
ए शोक-सागरे भासाइला ।
ए नव यौवन काले, मुड़ाइया चाँचर चूले,
ना जानि साधिल कोन सिद्धि ।।
कि छार पुरान से, पशुवत् पण्डित जे,
गौराङ्गेर संन्यास दिला विधि ।।
अक्रूर आछिल भाल, राजा बोले लैया गेल,
राखिला से मथुरा नगरी ।
निति लौक आइसे जाय, ताहाते संवाद पाय,
भारती करिला देशान्तरी ।।
एत बलि विष्णुप्रिया, मरमे वेदना पाइया,
धरणीरे मागये विदाय ।
वासुदेव घोष कय, मो सम पामर नाइ,
हिया नाहिं विदरिया जाय ।।

श्रीमती विष्णुप्रियादेवी अकेली घरपर रह गयीं। नदियाभरके लोगोंने प्रभुके दर्शनके लिए शान्तिपुरकी यात्रा की। श्रीमतीकी अन्तरङ्गा सखियाँ उनके पास रहीं। प्रभुके पुराने सेवक ईशान देवीकी देख-भालमें रहे। वे और वंशीवदन प्रभुके घर रहे।

गङ्गाको पार करके शान्तिपुर जाना पड़ता है। लाखों आदमी खेवा घाटपर जाकर पार होनेके लिए एकत्रित हो गये। नाविक (खेवटिया) विपद्में पड़ गया। वह सबको कैसे पार करता? तब लोग तैरकर पार जाने लगे। कोई केलेके पेड़का सहारा लेकर पार जा रहा है, कोई घड़ा बाँधकर तैरकर पार जा रहा है। कोई-कोई नाव बहुत भीड़के कारण बीचमें उलट गयो, तब भी कोई जानेसे रुका नहीं। 'हरि बोल' ध्वनि करके लोग तैरकर पार हो ही गये।

सारी नदियाके लोग इस प्रकार प्रभुके दर्शनके लिए शान्तिपुर चले। नदियानगर एकबारगी लोकशून्य हो गया। केवल श्रीविष्णुप्रियादेवी अपनी कुछ अन्तरङ्गा सखियोंके साथ प्रभुके आँगनमें धूलमें पड़ी हुई उनका ध्यान करके और गुणोंका स्मरण करके विलाप करती हुई क्रन्दन करने लगीं। भक्तकवि ठाकुर जयानन्दने लिखा है—

धरणी पड़िया काँदे काँदे विष्णूप्रिया ।
कोथा आछ प्राणनाथ आमारे एड़िया ।।
गौराङ्ग संन्यासी हैला मुकुन्दे कहिल ।
विष्णुप्रियार संसार आँधार प्राय रैल ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कपाले मारिया घा स्मरे हरि-हरि।
कि आर जीवने काज विष खेये मरि॥
से हेन चाँचर केशे कि कैले गोसाञि।
कोथा आछ प्राणनाथ आर देखा नाइ॥
सोनार अङ्गे राङ्गा वसन केमन शोभा करे।
सिन्दुरिया मेघ जेन सुमेरु शिखरे॥
आर ना देखिब तोमार सरु पैना काँधे।
आर ना देखिबे तोमार केशेर हेन छाँदे॥
आर ना देखिब तोमार मदन मोहन नाच।
आर ना शुनिब तोमार श्रीभागवत-पाठ॥
मायेर अनुरोधे वापरे सत्य पालिवारे।
आमा विभा कैले लोक भाण्डिवार तरै॥
जत दया प्रभु तोमार इहातेइ साक्षी।
बले जयानन्द मा ना जानेन कमलाक्षी॥

कृपालु पाठकवृन्द ! प्रियाजीको नवद्वीपमें इस प्रकार छोड़कर शान्तिपुरकी ओर क्या मन जाता है ?

—❀—

साठवाँ अध्याय

शान्तिपुरके श्रीअद्वैतभवनमें श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु और उनकी नीलाचलयात्रा।

सम्भ्रमे आचार्य देखि निज प्राणनाथ।
पाद-पद्मे पडिलेन हइ दण्डवत्॥
चै. भा. अं. १.२०३

प्रभु शान्तिपुरमें

पहले कहा जा चुका हूँ कि श्रीनित्यानन्दप्रभु श्रीगौर-भगवानको श्रीअद्वैतको सौंपकर प्रभुकी अनुमतिसे नवद्वीपकी ओर चल पड़े। प्रभु इस समय अद्वैत-भवनमें विराज रहे थे। उनका अपूर्व संन्यासी-वेष देखकर सबलोग विमुग्ध थे, लाखों-आदमियोंने आकर श्रीअद्वैतप्रभुके गृह-प्राङ्गणको घेर लिया। श्रीनित्यानन्दप्रभुने इस विषयमें श्रीअद्वैतप्रभुको सावधान कर दिया था। उनको द्वारपर द्वारपाल रखनेके लिए कहा था; क्योंकि ऐसा न करनेपर प्रभुको बड़ा कष्ट होगा। लोग उनको सुस्थिर न होने देंगे। वे तीन दिनके उपवासी हैं; रास्ता चलनेसे उनका शरीर अत्यन्त क्लान्त हो गया है, उनको विश्रामकी आवश्यकता है, इसी कारण श्रीनिताई-चाँदने यह बात कही थीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभु जब शान्तिपुरमें श्रीअद्वैत-भवनमें पहुँचे तो शान्तिपुरवासीं नर-नारी उनकी अपूर्व संन्यासमूर्ति देखकर एक साथ दुःख और आनन्दसे विह्वल होकर उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे। प्रभुके श्रीवदनमें सर्वदा ही 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे' नाम उच्चारित हो रहा था। कमल-नयनद्वयसे अविरल आनन्दाश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी। सारे अङ्गोंसे अपूर्व ज्योति प्रकाशित हो रही थी। सब लोग प्रभुकी अपूर्व संन्यासमूर्ति-दर्शन करके ऊर्द्धबाहु होकर 'त्राहि-त्राहि' कहकर प्रेमाश्रु-विसर्जन कर रहे थे। जिन्होंने उनको पहले कभी नहीं देखा था, उनको उनकी दिव्य ज्योतिपूर्ण प्रशान्त आकारकी संन्यास-मूर्ति देखकर मन-ही-मन परमानन्द प्राप्त हुआ।

आछिल अधिक कोटि गुण देह छटा।
आर ताहे उज्जल चन्दन दीर्घ फोटा॥
गोरा गाये अरुण वसन उजियार।
प्रातःकालेर सूर्य जिनि बरन ताँहार॥
दण्ड करे आइल मत्त सिंहेर गमने।
देखिया सकल जोक पड़िला चरणे॥
हिया जुड़ाइल देखि अङ्गेर छटाक्।
पासरिल सर्वजन दुःख लाखे लाख॥
आनन्दे भरल हिया नाहि शोक-दुःख।
एक दृष्टे चाहे सभे विश्वम्भर-मुख॥

चै. म.

प्रभुके प्रसन्न मुख-चन्द्रकी ओर सबलोग एकटक देख रहे हैं। उनके वदन-सुधाकरसे कोई आँखे हटा नहीं पा रहा है। उनकी आँखोंकी मणि मानो प्रभुके मुख-चन्द्रमें लिप्त हो गयी हैं।

प्रभुका नदिया-नागर सुन्दर नव नटवर-वेष जिन्होंने पहले देखा है, उनके मनमें उनकी संन्यास-मूर्तिका दर्शन करके दारुण दुःख अनुभव हो रहा है। मुण्डित मस्तक, कोपीन परिधान, दण्ड-कमण्डलुधारी श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुको देखकर वे व्याकुल होकर क्रन्दन कर रहे हैं। वे फिर प्रभुके मुखचन्द्रको भली-भाँति अवलोकन नहीं कर पा रहे हैं।

प्रभु अद्वैत-भवनमें जाकर ठहरे हैं। श्रीअद्वैत प्रभु निज जन सङ्ग लेकर प्रभुको अपने घर लाकर सत्कारपूर्वक उनके पादपद्म युगलको दोनों हाथोंसे दृढ़तापूर्वक धारण करके व्याकुल चित्तसे आर्तनाद करके क्रन्दन करने लगे। वे प्रभुके चरण कमलको छोड़ नहीं रहे है। उन्होंने नयन-जलसे प्रभुके श्रीकमल चरणका अभिषेक किया। प्रेमानन्दमें मूर्छित होकर श्रीअद्वैत प्रभु श्रीगौर-भगवान्के चरणतलमें गिर पड़े। प्रभुने उनको दोनों हाथोंसे उठाकर गोदमें लेते हुए प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। श्रीअद्वैत प्रभुका लम्बित-श्वश्रु-संलग्न वक्षःस्थल प्रभुके कमल-नयनकी प्रेमाश्रुधारासे सिक्त हो गया। उसके बाद दोनों स्थिर होकर बैठे। अद्वैत-भवनमें आनन्दका स्रोत बहने लगा।

अच्युतानन्द बालकके मुँहसे गूढ़तत्त्व

श्रीअद्वैतप्रभुके पञ्चवर्षीय पुत्र श्रीअच्युतानन्दने दिगम्बर-वेषमें धूलि-धूसरित अङ्गसे हँसते-हँसते प्रभुके चरण-कमलोंमें गिरकर उनको दण्डवत्-प्रणाम किया। अद्वैत-बालकके अङ्गकी ज्योतिसे चतुर्दिक् समुद्भासित हो उठा। सबकी आँख उस अपूर्व बालकके उपर पड़ी। प्रभु श्रीअच्युतानन्दको आदर करके गोदमें लेकर बोले—"भाई अच्युतानन्द! आचार्यप्रभु मेरे पिता हैं। उस सम्बन्धसे हम-तुम दोनों भाई हैं।" श्रीअच्युतानन्दने हँसकर उत्तर दिया—"प्रभो! तुम तो जीवमात्रके सखा हो; तुम्हारे पिता कौन हैं, यह तो कुछ भी पता नहीं।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अच्युतानन्दकी बात सुनकर प्रभु हँस पड़े। भक्तवृन्द बालकके मुखसे यह अपूर्व तत्त्वपूर्ण बात सुनकर आश्चर्य करने लगे। सब सोचने लगे—"ये सब गूढ़-तत्त्वकी बातें शिशुके मुँहसे कभी नहीं निकल सकती हैं। न जाने किस महापुरुषने अद्वैत-गृहमें आकर जन्म लिया है।"

दर्शनार्थियोंके दर्शन

श्रीअद्वैत-भवनमें प्रभुके पदार्पण करते ही उनके दर्शनकी आकांक्षासे सहस्रों लोग आकर द्वारदेशमें एकत्रित हो गये। श्रीअद्वैतप्रभुने द्वारपर द्वारपाल रख दिया था। वे जानते थे कि उनके घरपर बहुत बड़ी भीड़ लगेगी। प्रभु तीन दिनके उपवासी थे, उनके भिक्षा-ग्रहणमें बाधा पड़ेगी। द्वारपाल लोग अत्यन्त विनीतभावसे उपस्थित जन-संघट्टको कह रहे हैं—"आप लोग कोलाहल न करें, स्थिर होकर यहाँ बैठें, आपके ठाकुर संन्यास-ग्रहणके पश्चात् अबतक उपवासी हैं। आज यहाँ वे भिक्षा-ग्रहण करेंगे। उनके भोजनोपरान्त आपलोग उनका दर्शन प्राप्त करेंगे।"

विपुल जन-समूह प्रभुके दर्शनकी अभिलाषासे उन्मत्त हो गया है। उसमें अत्यन्त उत्कण्ठा है। यह बात उनके कानोंमें न पहुँच सकी। गृहद्वारपर अतिशय आग्रह देखकर घरकी छतके एक उच्च स्थानपर दयामय भक्तवत्सल प्रभुने स्वयं आकर उनको दर्शन दिया। उन्होंने अपूर्व संन्यास-वेषमें वहाँ खड़े होकर सबलोगोंके प्रति शुभ दृष्टिपात किया। सबने प्रभुका अपरूप-रूप देखा—

श्रीखण्ड-पङ्क-परिलिप्त-तनुर्नवीन
शोणाम्बरो धवल माल्य-विराजि-वक्षाः।
हेमद्युतिर्विजयते हिमसांध्यराग-
गङ्गाप्रवाहरुचिभागिव रत्नसानुः॥

चै. चै. ना. ५.२०

"स्वर्णविनिन्दित श्रीअङ्गमें चन्दन-विलेपन, रक्ताम्बर परिधान यथा वक्षःस्थलपर शुक्लवर्णकी माला धारण करते हुए श्रीगौर-भगवान् हिमोपरि संध्याराग और गङ्गाजीकी तरङ्गावलीकी शोभा धारण करनेवाले सुमेरुके समान अपूर्व श्रीधारण कर रहे हैं।"

सबलोग उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे। गगन-मण्डल जय-जय ध्वनिसे भर गया। उसी समय श्रीअद्वैतप्रभुने प्रभुके पास जाकर हाथ जोड़कर निवेदन किया—"हे प्रभो! आपने अद्वैतवादियोंके लिए प्रियतम संन्यासाश्रमको ग्रहण किया है। आपकी लीला मेरी समझमें नहीं आयी।" प्रभु मुस्कुराकर बोले—"हे अद्वैताचार्य! विचारकर देखिये, क्या हमलोग अद्वैतकी सेवा नहीं करते; क्योंकि आपमें और ईश्वरमें रूप और चिह्न आदिका केवल अन्तर है; वस्तुतः और तत्त्वतः और कोई अन्तर नहीं है।" श्रीअद्वैतप्रभु श्रीगौर-भगवान्‌की इस बातसे लज्जित होकर बोले—"प्रभो! आप तो वाक्पति हैं। आपके साथ बातें करनेमें कौन समर्थ होसकता है?" तब प्रभु गम्भीर भावसे श्रीअद्वैतप्रभुको सम्बोधन करके बोले—

बिना सर्वत्यागं भवति भजनं नंह्यसुपते—
रिति त्यागोऽस्माभिः कृत इह किमद्वैतकथया।
अयं दण्डो भूयान् प्रबलतरसो मानसपशो-
रितीवाहं दण्डग्रहणमविशेषादकरवम्॥

चै. चं ना. ५.२२

"अद्वैताचार्य! यथार्थ बात कहता हूँ—सुनो! सर्वत्यागी हुए बिना हृदय-वल्लभ प्राण-रमण श्रीकृष्णका भजन नहीं होता। इसी कारण मैं सर्वत्यागी हुआ हूँ। अतएव अद्वैत-वार्तासे मेरा कोई प्रयोजन नहीं है। तथापि केवल इस अति चञ्चल मनरूपी पशुको दण्ड देनेके लिए संन्यासियोंके समान यह दण्ड धारण किया है।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्रीअद्वैतप्रभु यह बात सुनकर बोले—"प्रभो ! मैं आपके इस कपट-संन्यासको ठीक समझता हूँ। मुझको अब आप अधिक धोखेमें नहीं डाल सकते।"

इस प्रकार कथोपकथनके बाद प्रभु और श्रीअद्वैताचार्य वहाँसे अन्तर्हित हो गये। जनसमूह पुनः उच्चस्वरसे हरि-ध्वनि करने लगा। श्रीअद्वैताचार्य प्रभुको लेकर घरमें गये।

प्रभुकी प्रथम भिक्षा

अद्वैत-गृहिणीद्वय सीतादेवी और श्रीठाकुरानी—दोनों मिलकर शीघ्रतापूर्वक प्रभुकी भिक्षाका प्रबन्ध करने लगीं। घरमें किसी वस्तुकी कमी न थी। रसोईघरमें जाकर प्रभुके प्रिय शाक-व्यञ्जनादिका रन्धन वे स्वयं करने लगीं। सीता ठकुरानीने नाना प्रकारके व्यञ्जन तैयार करके ठाकुरको भोग लगानेकी तैयारी की।

श्रीअद्वैतप्रभुके घरमें श्रीश्रीमदनगोपालकी पूजा होती थी। स्वर्णपात्रमें ठाकुरका भोग रखा गया, महाप्रभुके लिए विशिष्ट बड़े-से कदलीपत्रपर प्रसाद रखा गया। अनेक प्रकारके व्यञ्जन थे। बीचमें श्यालाल-भातका सूप गायके पीले घीसे सिक्त और चारों ओर अनेक प्रकारके अन्य व्यञ्जन। भोग-आरतीके दर्शन कराकर प्रभुको प्रथम भिक्षा करायी गयी, पीछे सब लोगोंने अवशिष्ट प्रसाद पाया।

भोजनके बाद कीर्तनानन्द

दोनों प्रभु कुछ देर विश्राम करके अपराह्नकालमें श्रीअद्वैतप्रभुके बाहरी गृहमें आकर दिव्यासन पर बैठे। शान्तिपुरके लोग आ-आकर बाहरी आँगनमें भर गये। भीड़ धीरे-धीरे बढ़ने लगी। सबके मुँहपर हरिध्वनि थी। प्रभुके अपूर्व संन्यास-रूपको देखकर सभी चकित होकर उनके चरण-कमलमें जा गिरे। बहुत लोग आ रहे थे और दर्शन करते जा रहे थे। इस प्रकार वह दिन बीत गया। संध्याकालमें श्रीअद्वैताचार्यने संकीर्तन प्रारम्भ किया। मृदङ्ग, मंजीरा, करतालके साथ सुमधुर कीर्तन शुरु हुआ। स्वयं अद्वैतप्रभु नाना प्रकारके हाव-भावके साथ प्रभुके सामने मधुर नृत्य करने लगे। श्रीनित्यानन्द-प्रभु प्रेमानन्दमें विभोर होकर श्रीअद्वैतप्रभुको पकड़कर घूमने लगे। हरिदास पीछे-पीछे नृत्य कर रहे हैं। श्रीअद्वैतप्रभुने कीर्तनका धूहा पकड़ा—

कि कहिब रे सखि ! आजुक आनन्द ओर।
चिर दिने माधव मन्दिरे मोर॥

चै. च. म. ३.१११

मुकुन्दने सुर पकड़ा। आज श्रीअद्वैतप्रभुके आनन्दकी सीमा नहीं है। प्रभु प्रेमानन्दमें विह्वल होकर शान्तिपुरनाथका कीर्तन सुन रहे हैं और नृत्य देख रहे हैं। श्रीअद्वैतप्रभुके सारे अङ्गमें अष्ट सात्विकभावके सारे लक्षण दीख रहे हैं। वे प्रेमानन्दमें हुंकार-गर्जन करके घूम-घूमकर प्रभुके पास जाकर उनके चरण-कमलको धारण करके मधुर वचन बोले—

अनेक दिन तुमि मोरे बेड़ाले भाँडिया।
घरेते पाइयाछि एबे राखिब बाँधिया॥

चै. च. म. ३.११४

इतना कहकर वे प्रेमानन्दमें अपूर्व भावभङ्गीके साथ प्रभुके सामने कमर डुलाकर मधुर नृत्य करने लगे। एक पहर रात बीत गयी, तथापि यह उनका अद्भुत आनन्द-कीर्तन बंद न हुआ।

इधर प्रभुके कृष्ण-विरहकी उत्कण्ठा बढ़ गयी। उनके विरह-व्याकुल चित्तमें कृष्ण-प्रेमकी तरङ्ग उठी। वे व्याकुल होकर रोते-रोते भूतलपर गिर पड़े। यह देखकर श्रीअद्वैतप्रभुने नृत्य बंद कर दिया। प्रभु प्रेमावेगमें मूर्च्छित होकर पड़े रहे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उनको वाह्यज्ञानशून्य देखकर मुकुन्दने उनके भावके अनुरूप एक पदका धूहा पकड़ा—

हा हा प्राणप्रिय सखि ! कि ना हैल मोरे ।
कानू प्रेमविषे मोर तनु मन जरे ।।
रात्रि दिन पोड़े मन सोयास्था ना पाऊ ।
जाँहा गेले कानू पाऊ ताँहाँ उड़ि जाऊ ।।

चै. च. म. ३.१२१.१२२

मुकुन्द कलकण्ठ थे। जैसे ही उन्होंने यह पद गाया, प्रभुका श्रीअङ्ग प्रेमसे भरकर थर-थर काँपने लगा। कोई उनको पकड़े रख न सका। श्रीअद्वैतप्रभुने तब उनको पकड़कर उठाया। उस समय वे भाव-सैन्यके साथ तुमुल युद्ध कर रहे थे। भाव-सेनापतिके कृष्ण-विरह-बाणसे उनके सारे अङ्ग जर्जरित हो रहे थे। वे एक बार भूतलपर गिर पड़ते हैं, फिर युद्ध करनेके लिए उठते हैं। हुंकार-गर्जन करते हुए उठकर प्रभुने उद्धत नृत्य आरम्भ किया। श्रीअद्वैताचार्य और श्रीनित्यानन्द-प्रभु दोनों आदमी उनको घेरे खड़े रहे। हरिदास और मुकुन्द पीछे खड़े होकर पूरे सावधान हैं कि प्रभु कहीं पछाड़ खाकर भूतलपर न गिरे। प्रभुने इस प्रकार एक पहरतक उद्दण्ड नृत्य किया।

तीन दिनके उपवासके बाद प्रभुने आज भोजन किया है। उद्दण्ड नृत्यसे उनको बहुत श्रम करना पड़ा है। प्रभुको प्रेमानन्दमें कुछ भी भान न हुआ। सभी उनके साथ कीर्तनानन्दमें उन्मत्त हैं। दो पहर रात बीती, तब श्रीअद्वैतप्रभुने प्रभुका कीर्तन स्थगित किया। नाना प्रकारसे सेवा शुश्रूषा करके उन्होंने कीर्तन-क्लान्त प्रभुको शयन कराया।

श्रीअद्वैतप्रभु अवसर देखकर इस समय प्रभुके पाद-संवाहन करनेके लिए गये। कीर्तन-श्रमसे थके हुए प्रभु सोते ही योगनिद्रासे अभिभूत हो गये। कौन उनका पाद-संवाहन कर रहा है, इसका उनको ध्यान न रहा। श्रीअद्वैतप्रभुको बड़ी साध थी कि प्रभुका पाद-संवाहन करते। एक बार चेष्टा की थी, परन्तु प्रभुके निषेधसे उनके मनकी साध पूर्ण न हुई। इस वार भक्तवत्सल श्रीगौर-भगवान्ने उनकी मनोकामना पूरी की। श्रीअद्वैतप्रभु कृतार्थ हो गये। जीवन सार्थक समझकर प्रेमानन्दमें विभोर होकर, प्रभुके चरण-कमलमें बैठकर अजस्र आँसू बहाने लगे। इस प्रकार अद्वैत-भवनमें प्रभुने कीर्तन और भोजन-विलास-रङ्गमें दस दिन बिताये। श्रीअद्वैतप्रभु सगोष्ठी दिन-रात प्रभुके सेवाकार्यमें लगे रहते थे।

माता और नदियाके भक्तगण शान्तिपुरमें

इसी समय नदियाके भक्तगण शचीमाताको साथ लेकर शान्तिपुरमें आ उपस्थित हुए। अद्वैत-भवनमें शान्तिपुरके लोगोंकी भीड़ लगी रहती थी। घरके द्वारसे भीतर घुसना किसीके सामर्थ्यकी बात न थी। शान्तिपुरके निवासियोंने जब देखा कि नदियावासी भक्तवृन्द प्रभुकी जननीको लेकर आये हैं तो उन्होंने आदरपूर्वक रास्ता छोड़ दिया।*

प्रभुकी जन्मलीला स्थली नदियाके भक्तवृन्दके प्रति शान्तिपुरवासी नर-नारियोंकी यह निश्छल श्रद्धाभक्ति देखकर श्रीअद्वैतप्रभु अतिशय आनन्दित हुए। उन्होंने इससे अपनेको धन्य माना। वे शान्तिपुरनाथ थे। शान्तिपुरके निवासी प्रायः सवलोग उनके शिष्य और अनुचर थे। अपनी नीतिशिक्षाको फलवती देखकर वे आनन्द गद्गद हो उठे।

---

* अहो ! अमी भगवज्जन्मस्थली निवासिनः सर्वे समागच्छन्ति तदधुना महता सम्वर्देन भवितव्यं वयमित इदानीमपसराम इति निष्क्रामन्ति।

चै. चं. नाटक ५. २४.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दूरसे नदियाके भक्तवृन्दके आगे-आगे भगवज्जननी शचीमाताको देखकर श्रीअद्वैतप्रभुका हृदय एक साथ हर्ष और विषादसे पूर्ण हो गया। उनके दोनों नेत्रोंसे प्रेमाश्रुधारा वह चली। वे प्रभुके मुख-चन्द्रकी ओर देखकर गद्‌गद होकर कहने लगे—

अग्रे निधाय भगवज्जननीं समीयुः
श्रीवासपण्डितमुखाः सुहृदस्त एते।
अन्ये च बाल तरुणस्थविराः किमन्य-
द्देशः स एष उदपादि स एष कालः॥
चै. च. नाटक ५.२६

"अहा! भगवज्जननी शचीदेवीको आगे करके पीछे-पीछे वे श्रीवास आदि सुहृद्‌गण आ रहे हैं। जान पड़ता है, मानो यह शान्तिपुरही वह नदिया-धाम है; वही सुखका समय पुनः आकर उपस्थित हो गया है।'

प्रभु उत्कण्ठित चित्तसे कुछ देरतक रास्तेकी ओर देखते रहे। शचीमाताकी डोली आकर अद्वैत-भवनके द्वारपर लग गयी। रास्तेमें बहुत बड़ी भीड़ लग गयी। प्रभु बाहरी दालानमें कीर्तन कर रहे थे। श्रीवासपण्डित शचीमाताको लेकर वहाँ जा उपस्थित हुए। पुत्र-प्रेममें पागलिनी स्नेहमयी वृद्धा जननीको देखतेही मातृभक्त-शिरोमणि हमारे प्रभुने कीर्तन छोड़कर उनके चरणोंमें गिरकर दण्डवत्-प्रणाम किया। शचीमाता क्रन्दन करती हुई अपने अञ्चलके खोये धन पुत्ररत्नको गोदमें लेकर बैठ गयीं। प्रियतम पुत्रके सिरके घुँघराले बालोंको गायब देखकर वे शोकसे विह्वल हो उठीं और अश्रुजलसे उनका वक्षःस्थल भीग गया। माता-पुत्र, दोनों ही प्रेमावेगमें विह्वल होकर कुछ देरतक चुप रहे। स्नेहमयी शचीमाता पुत्रके चन्द्र-वदनकी ओर एकटक देखने लगीं। उन्होंने अपने अञ्चलसे उनके श्रीअङ्गको पोंछ दिया, स्नेह पूर्वक उनका मुख चूम लिया। शचीमाताके नयन-जलसे प्रभुका सारा अङ्ग भीग गया। आँखोंमें आँसू भर जानेके कारण शचीमाताको कुछ दीखता नहीं है। वे केवल रो रही है और पुत्रके अङ्गपर हाथ फेर रही हैं। नदियाके भक्तवृन्द प्रभुको दण्डवत्-प्रणाम कर रहे हैं तथा प्रभ माताकी गोदमें बैठकर उनकी ओर शुभ दृष्टिपात कर रहे हैं। प्रभुका संन्यास-वेष देखकर सभीको मर्मान्तक दुःख हो रहा है। सबकी आँखोंमें अश्रुधारा दीख पड़ी।

प्रभुका संन्यास-वेष देखकर शचीमाताके मनमें एक साथ भय, भक्ति और वात्सल्यभावका उदय हुआ। पुत्रकी अपूर्व ज्योतिपूर्ण परम तेजस्वी संन्यास-मूर्ति देखकर उनके मनमें पहले भय और भक्तिभावका उद्रेक हुआ। तब पुनः उनके मनमें आया कि निमाई उनका पुत्र है, स्नेहकी वस्तु है, तत्काल उनके मनसे भय और भक्तिभाव दूर हो गया। वे स्नेहसे द्रवितचित्त होकर वात्सल्य-भावमें पुत्रके मुखचन्द्रकी ओर देखकर कहने लगीं—

वैराग्यमेव तव किं किमु वानुभूति-
र्भक्तिर्नु वा किमु रसः परमस्तनूभृत्।
तात स्तनंधय तयैव भवन्तमीक्षे
लब्धोऽधुनापि न कदापि पुनस्त्यजामि॥
चै. चं. ना ५.२७

"वत्स? यह कैसा तुम्हारा वैराग्य? कैसा आत्मानुभव? कैसी भक्ति? अथवा मूर्तिमान् कोई उत्कृष्ट रस है? जो हो, मैं तो तुमको अपना दुध-मुँहा बच्चा ही मानती हूँ। अब तुमको पा लिया है; तुझे कभी नहीं छोड़ूँगी।"

—इतना कहकर उन्होंने अतिशय स्नेहमें भरकर पुत्रको गोदमें खींचकर हृदयसे लगा लिया। माताके वक्षःस्थलमें मुँह छिपाकर प्रभु चुपचाप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देरतक रोते रहे। पश्चात् धीरे-धीरे मुँह उठाकर माताको सम्बोधन करके कहने लगे—

भगवति जगन्मातर्मातः परं फलमुत्तमं
किमपि फलितुं वात्सल्याख्या लता भवति क्षमा।
भवति भावती विश्वस्यैवानुपाधिसुवत्सले-
त्यथ भगवता नूनं चक्रे क्षमाऽपि शरीरिणी॥

चै. चं. ना ५.२५

"भगवति ! जगज्जननि ! वात्सल्य-नामक लताका इससे बढ़कर उत्तम दूसरा फल नहीं हो सकता। इसके द्वारा सारे विश्व-ब्रह्माण्डके जीवोंके प्रति तुम्हारे विशुद्ध स्नेहभावका उदय हुआ है। इसके लिए भगवानने निश्चयपूर्वक तुमको मूर्तिमती क्षमाके रूपमें सृजन किया है।"

—इतना कहकर प्रभुने उठकर पुनः जननीको दण्डवत्-प्रणाम किया। शचीमाताने भी वात्सल्य-रससे आप्लुत होकर पुत्रको पुनः स्नेहालिङ्गनदान किया। तब दोनों अजस्र आँसू बहाने लगे। शचीमाताको पुत्रका संन्यास-वेष देखकर मर्मान्तिक क्लेश हुआ है। ठाकुर लोचनदासने अपने चैतन्य-मङ्गल-श्रीग्रन्थमें शचीमाताकी उक्तिमें दो पयार छन्दोंमें अपने मनके भावको अति सुन्दरतापूर्वक व्यक्त किया है। यथा,

आइस-आइस बाप् मोर हापूतिर पूत्र।
अनाथिनी करि कोथा गियाछिला सूत॥
घरे लइया जाब तोरे राखिब सम्बरि।
संन्यासेर वेष तोर सब परिहरि॥

चै. म.

शचीमाताके वात्सल्यभावकी कहीं तुलना नहीं है। स्नेहमयी जननीने संन्यास-वेषधारी पुत्रको घर लौटा ले जानेके हेतु वही कहा, जो दूसरे लोग कहते और करते हैं। प्रभु इसका और क्या उत्तर देंगे ? वे चुपचाप माताकी गोदमें मुँह छिपाये शिशुके समान बैठे हैं। तब शचीमाताने पुनः रोते-रोते पुत्रसे कहा—

—"बाछारे निमाइ।
विश्वरूप सम ना करिह निठुराइ॥
संन्यासी हइया मोरे ना दिल दरशन।
तुमि तैछे हैले मोर हइबे मरण॥"

चै. च. म. ३ १४०,१४१

मातृभक्त-शिरोमणि प्रभु अपनी दुःखिनी माताके मुखसे वहुत दिनके बाद ज्येष्ठ भ्राताकी बात सुनकर दुःखसे अभिभूत होकर रो पड़े। वे माताके मुँहकी ओर देखकर सजल-नयन होकर बोले—

काँदिया बोलेन प्रभु शुन मोर आइ।
तोमार शरीर एइ मोर किछु नाइ॥
तोमार पालित देह जन्म तोमा हैते।
कोटि जन्मे तोमार ऋण नारिब शोधिते॥
जानि वा ना जानि यदि करिल संन्यास।
तथापि तोमारे कभू नहिब उदास॥
तुमि जाँहा कह आमि ताहाइ रहिब।
तुमि जेइ आज्ञा कर सेइ से करिब॥

चै. च. म. ३.१४२—१४५

—इतनी बात कहकर हमारे मातृभक्त प्रभु माताको बारम्बार प्रणाम और उनकी प्रदक्षिणा करने लगे। शचीमाताको पुत्रकी बातसे कुछ आश्वासन मिला। वे अपने जीवन-सर्वस्व निमाई-चाँदको बारम्बार गोदमें लेकर स्नेहमें भरकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुख-चुम्बन करने लगीं। प्रभुके इशारेसे श्रीअद्वैताचार्य शचीमाताको अपने अन्तःपुरमें ले गये।

अब प्रभु नदियाके अपने भक्तवृन्दके साथ एक-एक करके मिले। श्रीवासपण्डितसे आरम्भ करके एक-एक करके नदियाके भक्तोंके शरीरपर श्रीहस्त-स्पर्श करके उनमें-से प्रत्येकका वदन निरीक्षण करके हँसते-हँसते सबको प्रेमालिङ्गन प्रदान किया, सबको अति मधुर वचनसे संतुष्ट किया। नदियावासी सभी भक्त श्रीवासपण्डित, रामाईपण्डित, पुण्डरीक विद्यानिधि, दासगदाधर, गङ्गादासपण्डित, वक्त्रेश्वर, मुरारिगुप्त, शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी, बुद्धिमन्त खाँ, नन्दन आचार्य, खोला-बेचा श्रीधर, आँखरिया विजय, वासुदेव घोष, दामोदरपण्डित, मुकुन्ददत्त, सजय, वनमाली आचार्य वासुदेवघोष आदि सभी शान्तिपुर पहुँचे थे, श्रीवासपण्डित सबके अग्रणी थे। प्रभुने सबके साथ मधुर भाषण करके सबको सतृप्त किया। श्रीअद्वैतप्रभुने सभी नदियावासियोंके वासस्थान और आहारादिकी व्यवस्था कर दी। श्रीअद्वैतप्रभुका अक्षय भाण्डार उनकी सुख स्वच्छन्दताके लिए सदा खुला रहा।

आचार्य गोसाञिर भाण्डार अक्षय अव्यय।
जत द्रव्य व्यय करे तत द्रव्य हय॥

चै. च. म. ३.१५६

नदियाके भक्तगण दस दिनतक शान्तिपुरमें रहे। दिनमें वे प्रभुका दर्शन करते, उनके श्रीमुखसे मधुमय कृष्ण-कथा-श्रवण करते, रात्रिमें उनके अपूर्व नृत्य-कीर्तन-विलासका दर्शन करके कृतार्थ होते। शचीमाता पुत्रके उन्मत्त कीर्तन-विलासको देखकर मनमें भय पाती थीं। कीर्तन करते-करते प्रभुके श्रीअङ्गमें सब प्रकारके भावोद्गम होते थे। अश्रु, कम्प, पुलक, स्तम्भ, स्वेद, वैवर्ण्य, मूर्छा आदि आठ सात्त्विक भावोंमें विभावित होकर प्रभु प्रेमानन्दमें उन्मत्त कीर्तन करते-करते जब भूतलपर पछाड़ खाकर गिरते थे, तब स्नेहमयी श्रीगौराङ्ग-जननीके मनमें भय होता था, मानो उनके पुत्रके शरीरकी सारी अस्थिसंधियाँ चूर-चूर हो गयीं। वे आँखें मूँदकर गोविन्द-स्मरण करती थीं और अपने इष्टदेवसे वर माँगती थीं—

बाल्यकाल हैते तोमार जे कैलू सेवन।
तार एइ फल मोरे देह नारायण॥
जे काले निमाइ पड़े धरणी ऊपरे।
व्यथा जेन नाहि लागे निमाइ-शरीरे॥

चै. च. म. ३.१६२,१६३

शचीमाताका वात्सल्यभाव अतुलनीय था। इस अपूर्व वात्सल्यभावमें वे श्रीगौराङ्ग-भजन करती थीं। इसी कारण श्रीगौर-भगवान् उनके प्रेमपाशमें आबद्ध थे।

श्रीवास आदि नदियाके विप्रभक्तवृन्द सपरिवार शान्तिपुर आये थे। वैष्णव-गृहिणीगण भी प्रभुके दर्शनार्थ आयी थीं। श्रीअद्वैतप्रभुने उनके लिए उपयुक्त वासस्थान ठीक कर दिया था। सबकी इच्छा थी कि प्रभु उनके घर एक-एक दिन भिक्षा-ग्रहण करें। शचीमाताके कानमें यह बात पहुँची। उन्होंने सबसे विनयपूर्वक रोते-रोते कहा—"निमाईका दर्शन अब मुझको कहाँ मिलेगा? तुमलोग तो अन्यत्र इसका दर्शन पा सकती हो। मैं अभागिनी हूँ, पुत्रका मेरा यह अन्तिम दर्शन है। जबतक मेरा निमाई-चाँद आचार्य-गृहमें रहेगा, मुझसे ही यह भिक्षा-ग्रहण करेगा। इस अभागिनीकी यह प्रार्थना आपलोगोंको पूर्ण करनी पड़ेगी।" श्रीवास आदि भक्तवृन्द तथा वैष्णव-गृहिणीगण शचीमाताकी यह बात सुनकर और कुछ न बोल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सकी। उनको प्रणाम करके सब चली गयीं। सब कहने लगीं—

"मातार जे इच्छा सेइ सम्मत सबार।"

चै. च. म. ३.१६९

जननीका दुःख देखकर प्रभुका मन बड़ा अस्थिर हो उठा। उन्होंने नदियाके भक्तवृन्दको पास बुलाकर दीनतापूर्वक कहा—"आपलोगोंकी आज्ञा न लेकर मैं वृन्दावन जा रहा था; मेरे भाग्यमें श्रीवृन्दावन धामका दर्शन नहीं लिखा था, रास्तेमें विघ्न पड़ा, लौटकर शान्तिपुर आ गया। यद्यपि आपलोगोंसे बिना पूछे मैंने संन्यास-धर्म ग्रहण किया है, परन्तु आपलोगोंके प्रति मैं उदासीन न रहूँगा। आपलोग यह निश्चय जानिये कि जबतक यह शरीर रहेगा, आपलोगोंको मैं छोड़ नहीं सकता और न अपनी स्नेहमयी जननीको छोड़ सकूँगा। मैंने संन्यासाश्रम-ग्रहण किया है। कुटुम्ब-परिवारको लेकर अपने जन्मस्थानमें वास करना संन्यासीका धर्म नहीं है। यदि मैं यह करता हूँ तो लोकनिन्दा होगी। आप सबलोग माँसे परामर्श करके मुझको सद्-युक्ति प्रदान करें, जिससे मेरे इहलोक-परलोककी रक्षा हो! मैं आपलोगोंको भी प्राप्त कर सकूँ और मेरे संन्यास-धर्मकी भी रक्षा हो।"

चतुरचूड़ामणि श्रीगौर-भगवान्ने अपने श्रीनीलाचल-लीलारङ्गकी भूमिकामें इस प्रकार चातुरी-जाल फैला दिया। वे सर्वज्ञ हैं, उनके लिए कुछ भी अविदित नहीं है। वे स्वतन्त्र ईश्वर हैं, इच्छामय हैं, उनकी इच्छा श्रीनीलाचल-धाममें वास करने की है। परन्तु यह बात स्वयं न कहकर इस प्रकार वाक्-चातुरीका जाल फैलाकर अपनी माताके मुखसे अपने नीलाचल-वासका आदेश बाहर करा लेंगे—यही उनका मन्तव्य है।

प्रभुके श्रीमुखके मधुर वचनको सुनकर अद्वैताचार्य तथा नदियाके भक्तवृन्दने जगन्माता शचीमाताके पास जाकर उनके पुत्रकी सारी बात कह सुनायी। माताको यह भी स्मरण दिलाया कि प्रभु आपसे वचनबद्ध हैं, उनने आपको कहा था—

"तुमि जाँहा कह आमि ताहार रहिबा"

चै. च. म. ३.१४५

भक्तोंको बड़ी आशा थी कि मां प्रभुको शान्तिपुरमें ही रहनेको कहेंगी। किन्तु बुद्धिमती शचीमाताकी कर्तव्यबुद्धि बड़ी दृढ़ थी। वे पुत्रके धर्मकी रक्षा करनेके लिए यत्नशील हो गयीं। उनके मुखसे यदि एक बात निकल जाती तो प्रभु शान्तिपुरमें ही वास करते; किन्तु कर्त्तव्य-परायणा शचीमाता अपने स्वार्थके लिए पुत्रके धर्माचरणमें क्यों विघ्न डालें? वे कुछ देरतक मन-ही-मन कुछ सोचती रहीं। पश्चात् सब भक्तगणको सम्बोधन करके स्नेहपूर्वक बोलीं—

तिहों यदि इहाँ रहे तबे मोर सुख।
ताँर निन्दा हय यदि तबे मोर दुःख॥
ताते एइ युक्ति भाल मोर मने लय।
नीलाचले रहे यदि दुइ कार्य हय॥
नीलाचल नवद्वीपे जेन दुइ घर।
लोक गतागति वार्त्ता पाब निरन्तर॥
तुमि सब करिते पार गमना गमन।
गङ्गा-स्नाने कभू ताँर हबे आगमन॥
आपनार दुःख-सुख ताहा नाहि गनि।
तार जेइ सुख सेइ निज सुख मानि॥

चै. च. म. ३.१७८—१८२

"बच्छा सब! यदि निमाई यहाँ रहे तो मुझे सुख होगा; परन्तु यदि इससे उसकी निन्दा होती है तो इससे बढ़कर दुःखकी बात और नहीं है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुझको ऐसा लगता है कि निमाई यदि श्रीक्षेत्रमें वास करे तो दोनों कार्य सिद्ध होंगे उसके धर्मकी भी रक्षा होगी और हमको भी उसका संवाद सदा मिलता रहेगा। नीलाचल नवद्वीपसे बहुत दूर होनेपर भी सदा लोगोंका आना-जाना होता रहता है; तुम सबलोग तीर्थयात्राके उपलक्ष्यमें वहाँ आ-जा सकोगे। गङ्गा-स्नानके उपलक्ष्य मेरा निमाई भी कभी-कभी देश आ सकेगा। मैं अपना दुःख-सुख कुछ नहीं देखती। निमाईको जिसमें सुख हो, वही मेरा प्रकृत सुख है।"

शचीमाताकी अन्तिम बात श्रीगौर-भगवान्‌के प्रति उनके वात्सल्य और स्नेहकी पराकाष्ठाको प्रदर्शित करती है। स्नेहमयी शचीमाताके इस गुणसे ही उनके श्रीगर्भसे श्रीभगवान् उदय हुए थे। वे गौराङ्ग-जननीके अनुरूप ही बात कह गयीं।

शचीमाताकी बात सुनकर भक्तवृन्द आश्चर्य करने लगे। वे उनको दण्डवत्-प्रणाम करके हाथ जोड़कर कहने लगे—"माँ! तुम आदर्श माँ हो, तुम्हारी आज्ञा वेद वाक्य है; प्रभु अवश्य ही इसका पालन करेंगे। हम उनके पास जाकर तुम्हारा आदेश निवेदन करते हैं।"

इतना कहकर श्रीअद्वैताचार्य और नदियाके भक्तवृन्दने प्रभुके पास जाकर सारी बात उनके चरणोंमें निवेदन कर दी। माताकी आदेशवाणी सुनकर प्रभु मनमें बहुत आनन्दित हुए। उन्होंने बहुत सम्मानपूर्वक सब भक्तगणको पास बैठाया श्रीनवद्वीपचन्द्र अपूर्व संन्यास-वेषमें सब भक्तवृन्दके बीचमें बैठ गये। शरदपूर्णिमामें तारका-वेष्टित शशधरके समान प्रभु भक्तमण्डलीके बीचमें सुशोभित हो रहे थे। प्रभुके श्रीहस्तमें दण्ड शोभा पा रहा था वे अरुण-अस्त्र पहने थे, दिव्य तेजमय शरीर था। हमारे सर्वदेवमय प्रभु सर्वलोक पूज्य रूपमें सबके समक्ष प्रतीत हो रहे थे।

दण्ड करे जेन सर्व राजेर ईश्वर।
अरुण वसन अङ्गे करे झलमल॥

चै. म.

मधुर मुस्कानके साथ दीनतापूर्वक उन्होंने भक्तवृन्दको सम्बोधन करते हुए कहा—

तुमि सब लोक मोर परम बान्धव।
एइ भिक्षा मागो मोरे देह तुमि सब॥
घरे जाइया कर सदा कृष्ण-संकीर्तन।
कृष्ण-नाम, कृष्ण-कथा, कृष्ण-आराधन॥
आज्ञा देह नीलाचले करिये गमन।
मध्ये मध्ये आसि तोमाय दिब दरशन॥"

चै. च. म. ३. १८६—१८८

इतना कहकर उस दिन प्रभुने भक्तवृन्दको विदा किया। प्रभु सब मिलाकर दस दिन अद्वैत-भवनमें रहे। एक सप्ताह बीत गया था। प्रतिदिन शचीमाता अपने हाथसे नाना प्रकारके शाक व्यञ्जन आदि पाक करके पुत्रको पास बैठाकर भोजन कराती थीं। प्रभुको शाक पसंद था, मोचेका घण्ट अच्छा लगता था, कदली-गर्भका व्यञ्जन पसद था। श्रीअद्वैतप्रभुने इन सब वस्तुओंका प्रबन्ध कर दिया था। श्रीअच्युत-जननी सीता ठकुरानी सारा सामान तैयार कर देती थीं। शचीमाता बहुत यत्नपूर्वक रसोई बनाती थीं। प्रभु माताको सर्वथा संतुष्ट रखते थे। उनके साथ बहुत बातें करते थे। शचीमाताके मनमें अब उतना दुःख न था।

और तीन दिन प्रभु शान्तिपुरमें रहे। शान्तिपुर और नदियावासी भक्तगण एकत्र मिलकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रभुका दिन-रात गुणानुवाद करते थे, नित्य उनका दर्शन करके अपनेको कृतार्थ मानते थे, नित्य प्रभुके नृत्य-कीर्तनके दर्शनके आनन्दमें मत्त रहते थे।

नीलाचल-प्रस्थानकी तैयारी

प्रभुकी नीलाचल-यात्राका दिन आ गया। उसदिन वे प्रातःकाल प्रातःक्रिया समाप्त करके दिव्यासनपर बैठे। उनके श्रीअङ्गकी ज्योति चतुर्दिक् उद्भासित हो उठी। प्रभातकालके अरुणोदयके समान स्वर्णवर्णकी अङ्गच्छटासे दिङ्मण्डल आलोकित हो उठा। सब भक्तवृन्द एक-एक करके आकर प्रभुको दण्डवत्-प्रणाम करके तथा स्तुति-वन्दना करके उनकी अनुमति लेकर चतुर्दिक् बैठ गये। प्रभु सब भक्तगण और श्रीवासपण्डितकी ओर शुभ दृष्टिपात करके बोले—

श्रीनिवास आदि करि जत भक्तगण।
आपन आश्रमे सभे करह गमन॥
नीलाचल जाब जगन्नाथ देखिबारे।
प्रसन्न वदने यदि प्रभु दया करे॥
तोमरा थाकिबे आज्ञा करिबे पालन।
निरन्तर दिवानिशि करिबे कीर्तन॥
हरिनाम भक्त-सेवा करिबे स्थापन।
एइ धर्म करि जेन तरे सर्वजन॥
निर्मत्सर अन्तर हइबे सर्वजन।
सभे सभाकार मन कर आराधन॥

चै. म.

—इतना कहकर प्रभु उठ खड़े हुए। सबने देखा कि प्रभु चलनेके लिए तैयार हो गये हैं। प्रभुने हास्य-वदनसे अपनी आजानुलम्बित दोनों भुजाओंको फैलाकर एक-एक करके सबको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके कृतार्थ किया। उनके दोनों नेत्रोंसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा बह चली, कण्ठ-स्वर गद्गद हो गया। भक्तवृन्द व्याकुल होकर क्रन्दन करने लगे। इसी समय हरिदास ठाकुर अपनी सहज दीनता और आर्तभावके साथ उच्च स्वरसे क्रन्दन करते हुए दौड़कर आये और लम्बे होकर प्रभुके चरणोंमें गिर पड़े। हरिदासके मर्मभेदी आर्तनादसे काष्ठ-पाषाण भी द्रवित होने लगे। हरिदासकी दैन्य और आर्ति देखकर भक्तवृन्द व्याकुल होकर रोने लगे। पुरनारियाँ अपना वदन वस्त्राञ्चलसे ढककर फुफकार मार-मारकर रोने लगीं। प्रभु अब जा न सके, स्थिर होकर खड़े हो गये। उनका कोमल हृदय व्यथित हो उठा। वे सजल नयन गद्गद-कण्ठसे मृदु स्वरमें बोले—

एइ मत भाग्य मोर हबे कत दिने।
पड़िया काँदिब जगन्नाथेर चरणे॥
कहिब कातर वाणी पदाम्बुज पाइया।
सफल करिब आखि श्रीमुख देखिया॥

चै. म.

प्रभुके श्रीमुखसे इस प्रकारकी मर्मभेदी कातरोक्ति श्रवण करके उपस्थित भक्तवृन्द भूतलपर गिरकर पछाड़ खाकर कातर कण्ठसे क्रन्दन करने लगे। शचीमाता मूर्छित होकर घरमें पड़ी हैं। उनको चेतना नहीं है, अतएव रोना-पीटना भी नहीं है।

चेतन हरिल शची काँदिते ना पाय।

चै. म.

हरिदास भूतलपर पड़े तथा प्रभुके रक्त-कमल-चरणको वक्षःस्थलमें धारण करके रोते-रोते कहने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लगे--"प्रभो ! तुम तो नीलाचल जाओगे। हमारी गति क्या होगी ? वहाँ जानेकी मुझमें तो शक्ति नहीं है। मैं अधम, नीच, अस्पृश्य और दुराचारी हूँ। श्रीक्षेत्रमें जानेका मेरा अधिकार नहीं है। तुम्हारा दर्शन बिना किये यह मेरा पापी जीवन कैसे रहेगा ? इतना कहकर दैन्यावतार हरिदास बालक समान उच्च स्वरसे क्रन्दन करते हुए व्याकुल हो उठे।

भक्तवत्सल प्रभुका मन अस्थिर हो उठा, प्राण व्याकुल हो गया, हृदय मथित हो उठा। उन्होंने हरिदासको हाथ पकड़कर उठाया। उनके मस्तकपर श्रीहस्त देकर सजल-नयन हो स्नेहपूर्वक कहने लगे—"हरिदास ! तुम दैन्य संवरण करो ! तुम्हारा दैन्य देखकर मेरा कलेजा फटने लगता है, मन व्याकुल हो जाता है। तुम्हारे लिए मैं श्रीजगन्नाथजीके चरण कमलके निवेदन करूँगा और तुमको मैं पुरुषोत्तमधाममें ले जाऊँगा। तुम उठो, अब क्रन्दन मत करो।"

हरिदास करुणामय प्रभुकी अपार कृपाको स्मरण करके प्रेमावेगसे और अधिक विह्वल होकर पेटके बल पड़े-पड़े फुफ्कार मारकर रोने लगे। तब श्रीअद्वैताचार्यने प्रभुके सामने आकर हाथ जोड़कर निवेदन किया—"हे प्रभो ! कृपा करके दो-चार दिन और यहाँ रहकर अपनी दुःखिनी माता और भक्तवृन्दको संतोष प्रदान कीजिये। उसके बाद नीलाचल जाना।" श्रीअद्वैतप्रभुकी बात भक्तवत्सल प्रभु टाल न सके। उन्होंने उस दिन श्रीनीलाचल-यात्रा स्थगित कर दी। हरिदास आनन्दसे अधीर हो उठे, भक्तवृन्द किसी प्रकार शान्त हुए, शचीमाताके शरीरमें प्राण आया।

कुछ काल शान्तिपुरमें और रुकना

कुछ दिन और प्रभु अद्वैत-भवनमें रहे। भक्त वाञ्छा-कल्पतरु श्रीभगवान् भक्तकी मनस्तुष्टिके लिए सब-कुछ कर सकते हैं। यह तो अति तुच्छ बात है। श्रीअद्वैतप्रभुके घर प्रतिदिन महामहोत्सव होता था, दिन-रात कृष्ण-कथा और कीर्तनके रङ्गमें अतिवाहित होते थे। रात्रि-कालमें प्रभुका मधुर नृत्य-विलास-दर्शन करके भक्तवृन्द जीवन सार्थक करते थे। शचीमाता प्रतिदिन अपने हाथसे रसोई बनाकर पुत्रको परम परितोषपूर्वक भोजन कराकर मनमें बड़ा सुख पाती थीं; वे पुत्रके चन्द्र-वदनको देखकर आनन्दमें बेसुध हो जाती थीं सारे दुःख भूल जाती थी। प्रभु भक्तगणको साथ लेकर भोजन करते थे, उनके साथ हँस-हँसकर मधुर वचनमें कृष्ण-कथा कहते थे। इस प्रकार पुनः दो-तीन दिन बीत गये।

एक दिन प्रभु रातमें कीर्तनानन्दमें उन्मत्त होकर नृत्य कर रहे थे। भक्तवृन्द नामानन्दमें विभोर होकर बारबार हरिध्वनि कर रहे थे। हरिध्वनिके सिवा और कोई शब्द नहीं सुन पड़ता था। ऐसे समयमें प्रभुका भगवान्-भाव हुआ। वे स्वानुभावानन्दमें एकबारगी विष्णु-सिंहासनपर जा बैठे। भक्तवृन्द प्रभुका भाव समझकर हाथ जोड़कर उनके चारों ओर खड़े हो गये। तब प्रभुने हुंकार गर्जन करके अपने पूर्व अवतारोंकी लीलाओंका वर्णन करके निज तत्त्व प्रकट करने लगे। (चै. भा. अ. १.२४६—२६५)

भक्तवृन्द प्रभुके श्रीमुखसे उनके स्वरूप-तत्त्वको सुनकर प्रेमानन्दमें आकुल होकर क्रन्दन करने लगे। झर-झर प्रेमाश्रुधारासे उनका वक्षःस्थल भीग गया। धूलि-विलुण्ठित देहसे वे प्रभुके चरणोंमें बारंबार दण्डवत्-प्रणाम करने लगे। सब भक्तवृन्द एक साथ सर्वकारणोंके कारण पूर्णब्रह्म सनातन प्रभुकी स्तव-स्तुति करने लगे। अद्वैत-भवनमें उस दिन आनन्दका स्रोत बह उठा। उस प्रेमानन्दकी तरङ्गमें भक्तगण डूबने-उतराने लगे। नदियामें वे जिस अपूर्व प्रेम-रसका आस्वादन करते थे, आज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शान्तिपुरमें बैठकर उस मधुरसे भी मधुर नवद्वीप-रसका आस्वादन करके उनके प्राण परितृप्त हो गये। वे सारे पूर्व दुःखोंको एकबारगी भूल गये। भक्त-दुःखहारी श्रीगौर-भगवान्‌ने इस प्रकार भक्तोंका दुःख दूर करके अपने ऐश्वर्यको संवरण करके बाह्य रूप प्रकट किया। प्रभु जब सुस्थिर हुए तो भक्तवृन्द उनकी सेवामें लग गये।

वह रात परमानन्दमें कट गयी। प्रभातकालमें उठकर प्रभु भक्तगणके साथ गङ्गास्नान करने चले। जाह्नवीके जलमें नाना प्रकारकी जलक्रीड़ा करके भक्तवृन्दके साथ पुनः अद्वैत-भवनमें आकर विष्णुपूजा, तुलसीप्रदक्षिणा आदि नित्यकृत्य किया। स्नेहमयी शचीमाताने ठाकुरका भोग तैयार किया था। नाना प्रकारके शाक-व्यञ्जन, मिष्टान्न-पायस आदिके द्वारा श्रीअद्वैत-प्रभुने ठाकुरका भोग लगाकर प्रभुको भोजन करनेके लिए बैठाया। बीचमें प्रभु बैठे, उनके बगलमें श्रीनित्यानन्दप्रभु और चारों ओर भक्तवृन्द। ठाकुर वृन्दावनदासने प्रभुके भोजन विलास-लीला रङ्गका इस प्रकार वर्णन किया है—

मध्ये बसिलेन प्रभु नित्यानन्द सङ्गे।
चतुर्दिके सर्वगण बसिलेन रङ्गे॥
सर्वाङ्गे चन्दन प्रभुर प्रफुल्ल बदन।
भोजन करेन चतुर्दिके भक्तगण॥
वृन्दावन मध्ये जेन गोपगण सङ्गे।
राम-कृष्ण-भोजन करेन सेइ रङ्गे॥
सेइ सब कथा प्रभु सभारे कहिया।
भोजन करेन प्रभु हासिया-हासिया॥

चै. भा. अं. १.२७६—२७९

प्रभुके भोजन-विलास-रङ्गके समाप्त होते ही, सब भक्तगणने मिलकर उनके अधरामृत-प्रसादको लूटकर खाया। सब वृद्धलोग शिशुभावको प्राप्त हो गये। बाल-वृद्ध-युवा-सबने मिलकर धक्कम-धक्का करके प्रभुका प्रसाद लूटकर खाया। जिनको कणमात्र भी प्राप्त हो गया, उन्होंने अपनेको कृतार्थ समझा।

नीलाचल-प्रस्थानके लिए भक्तोंसे विदाई

इस प्रकार परमानन्द पूर्वक कुछ दिन और कट गये। एक दिन प्रातः काल प्रभुने भक्तवृन्दको पास बुलाकर कहा—"आज मैं नीलाचलकी यात्रा करूँगा; तुम लोग अपने-अपने घर जाकर कृष्ण-संकीर्तन करो। तुमलोगोंके साथ पुनः मेरा साक्षात्कार होगा। कभी-कभी तुमलोग श्रीक्षेत्रमें श्रीजगन्नाथ-मन्दिरमें आओगे, अथवा मैं कभी-कभी गङ्गा-स्नान करने तुम्हारे पास आऊँगा। अब तुम लोग कृपा करके मुझे जानेकी अनुमति दो।"

प्रभुकी यह बात सुनकर भक्त-मण्डलीमें करुण-क्रन्दनकी ध्वनि उठी। शचीमाताने सुना कि उनका संन्यासी-पुत्ररत्न आज ही श्रीनीलाचलकी यात्रा करेगा। वे मूर्च्छित होकर भूतलपर गिर पड़ीं। श्रीअद्वैतप्रभु सगोष्ठी शचीमाताकी सेवा-शुश्रूषामें लग गये। सब भक्तवृन्द रोते-रोते व्याकुलचित्त होकर प्रभुके चरण-कमलमें लोट गये। बहुत कष्ट-पूर्वक प्रभुने अपने-आपको सँभाला।

इस प्रकार सबको प्रबोध देकर एक-एकको प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया। इस बार श्रीवासपण्डित, हरिदास, मुरारिगुप्त तथा मुकुन्द इन चार आदमियोंने एकत्र मिलकर बालकके समान क्रन्दन करते हुए विलाप करके प्रभुके चरणोंमें हाथ जोड़कर निवेदन किया। यथा,

स्वतन्त्र ठाकुर तुमि मो छार अधीन।
दीन-दुराचार-पापी ताहे भक्तिहीन॥
कि बलिते परि प्रभु करिला संन्यास।
एखन छाड़िया जाह निज सब दास॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एकेश्वर केमने चलिया जाबे पथे।
क्षुधाय तृषाय अन्न चाहिबे काहाते॥
शचीर दुलाल तुमि दुल्लिल चरित।
दुखानि चरण विष्णुप्रियार सेवित॥
भक्तजन नयन अमिया दिठि पाते।
ए देह प्रेमार तरु बाड़े हाते हाते॥
अनेक आछिल प्रेम फल प्रति आशे।
संन्यास करिया शून्य कराइल आशे॥
पापिष्ठ शरीरे प्राण ना जाय छाड़िया।
घरे चलि जाब तोरे बिदाय करिया॥
एखने चलिब आमि मो छार अधम।
तोर धर्म नहे तुमि पतित-पावन॥
करुणा-कर्द्दमे तनु गड़ाइल विधि।
विनोद-विलास-लीला दिया नाना निधि॥
केवल परम प्रेमा ताहे जीव न्यास।
त्रैलोक्य अद्भुतरूप करिल प्रकाश॥
उपमा दिवार नाहि त्रैलोक्य भितरे।
तोमार निष्ठुर वाणी जगत कातरे॥
एमत करिते प्रभु ना जुड़ाय तोरे।
आपने रुइया वृक्ष काटे केन मूले॥
सुख वा ना हय केन देखि फल-फूले।
जे जाय ताहारे लह संहति करिया।
नहे वा मरिवे सभे आगुने पुड़िया॥
हेर देख तोर माता शची अनाथिनी।
काँदिनाते जाय उहार दिवस-रजनी॥
विष्णुप्रियार काँदिनाते पृथिवी विदरे।
जे देखिले, जे शुनिले, नदीया नगरे॥
शून्य जेन लागे सर्व वैष्णवेर घर।
सभारे सभार घर योजन अन्तर॥
जेखाने बसिया से कहिले निज कथा।
देखिले मरिब आर नाहि जाब तथा॥
नाचिबार बेले आर ना करिब कोले।
ना देखिब अरुण नयने प्रेमजले॥
रहस्य-विनोद-कथा ना शुनिब आर।
ना देखिब नृत्यावेश प्रेमार प्रचार॥
हुहुंकार शब्दामृत ना शुनिब आर।
के तोर रोधिल कर्ण नयन-दुयार॥
केमने ना देखि जीब तोर मुख-चन्द।
नयन थाकिते केवा करिलेक अन्ध॥
ना दिह बिदाय मोरे जाब तोर सङ्गे।
तोमार निष्ठुर वाणी पोड़े सब अङ्गे॥
आहिड़ी घण्टार रब जेमन करिया।
काछे मृगी आइसे तारे मारये धरिया॥
तेमनि तोमार प्रेम बूझिल एखन।
लोभ देखाइया पाछे मार कि कारण॥
तोमार विच्छेदे भक्त सबाइ मरिबे।
भकतवत्सल नाम केमने धरिबे॥
शचीरे बिदाय दिबे करि कोन युक्ति।
ताहार समीपे इहाँ आछे कोन व्यक्ति॥
विष्णुप्रिया मरिबे शब्द मात्र शुनि।
ए कथार सद्विधान करह आपनि॥

चै. म.

ठाकुर लोचनदास प्रभुके रसिकभक्त थे। श्रीविष्णुप्रियादेवीके दुःखसे उनका हृदय सदा उन्मथित होता था। प्रियाजीके वे चिह्नित दास थे। अपने श्रीचैतन्यमङ्गल-श्रीग्रन्थमें श्रीविष्णुप्रिया-देवीके विषयमें उन्होंने बहुत-सी बातें लिखी हैं। ठाकुर जयानन्द, ठाकुर लोचनदास और वासुदेव-घोषके सिवा और किसी महाजन कविने प्रियाजीके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सम्बन्धमें कुछ नहीं लिखा है। श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व अति निगूढ़ है। बहुत भाग्यसे कलिके जीवको गौरवक्ष-विलासिनी श्रीविष्णुप्रियाके चरणोंमें गति-मति होती है। श्रीविष्णुप्रियादेवी साक्षात् प्रेमभक्तिरूपिणी हैं तथा प्रभुकी अन्तरङ्गा स्वरूपा-शक्ति हैं। इसी शक्तिके बलसे वे नाम-प्रेम-दान करनेके कार्यमें सफल हुए थे। ठाकुर लोचनदास श्रीविष्णुप्रिया-दासाभिमानी परम गौर-भक्त थे। यह जो भक्तचतुष्टयकृत विलापगीति ऊपर लिखी गयी है, इससे भी ठाकुर लोचनदासकी श्रीविष्णुप्रिया-प्रीतिका पूर्ण परिचय मिलता है। नदियाके भक्तवृन्दके मुखसे उन्होंने प्रभुको सारी बातें कहला दीं, अन्तमें श्रीविष्णुप्रियाका नाम लेकर प्रभुके मर्मस्थलमें चोट करते हुए कह दिया—

विष्णुप्रिया मरिबे शब्द मात्र शुनि।
ए कथार संविधान करह आपनि॥

अन्तरङ्ग नित्य-पार्षद प्रियभक्तके बिना श्रीभगवान्‌के मर्ममें चोट पहुँचाकर इस प्रकारकी बात कहनेका अधिकार और किसीको नहीं है। श्रीगौर-भगवान्‌के श्रीमुखसे निःसृत वाणी है—

प्रिया यदि मान करि करये भर्त्सन।
वेदस्तुति हैते हरे सेइ मोर मन॥

चै. च. आ. ४-२३

प्रभुके मर्मी भक्तोंने जो इस प्रकार उनकी भर्त्सना करके कठोर बात कही, इससे उनके मनमें बड़ा आनन्द हुआ। भक्तकी बातसे भक्तवत्सल श्रीभगवान्‌को कभी क्रोध नहीं होता। वे कभी भक्तकी बातसे दुःखी नहीं होते। वे भक्तवशी, भक्तप्राण, भक्तवत्सल और भक्त-बन्धु हैं। श्रीवास-पण्डित, हरिदास, मुरारिगुप्त तथा मुकुन्दने जो कुछ कहा, उसे करुणामय भक्तवत्सलप्रभुने निविष्ट चित्तसे स्थिर होकर सुना। उनके श्रीमुखका भाव देखकर जान पड़ा कि वे बहुत कातर हो रहे हैं। अपने मनकी बात तो वेही जानें; परन्तु मुखसे भक्तवृन्दको संबोधन करके उन्होंने कहा—

शुनह सकल भक्त वचन प्रचुर।
कोन काले तो सभारे नहिब निष्ठुर॥
नीलाचले वास आमि करिब सर्वथा।
सर्वदा आसिबे जाबे देखा पावे तथा॥
आछिल अधिक सुख बाड़िबे अपार।
हरिनाम-संकीर्तने भासिबे संसार॥
काहारो हृदये ना राखिब दुःख-शोक।
संकीर्तन-समुद्रे डुबाब सर्वलोक॥
किवा भक्त किवा विष्णुप्रिया माता शची।
जे भजये कृष्ण तार कोले आमि आछि॥

चै. म.

प्रभुकी अन्तिम बात बड़ी ही मधुर है। वे अपने सब भक्तोंको निरन्तर कृष्ण-भजनका उपदेश देते आ रहे हैं। उन्होंने जननी और गृहिणीको भी यही उपदेश बारंबार दिया है। भक्तमात्र प्रभुको प्रिय हैं। सभी उनके लिए समान हैं। श्रीगौर-भगवान्‌की सब भक्तोंके ऊपर समदृष्टि, समान दया थी। अतएव उन्होंने अति स्पष्ट भाषामें सबके सामने कहा—

कि वा भक्त किवा विष्णुप्रिया माता शची।
जे भजये कृष्ण तार कोले आमि आछि॥

इसी एक वाक्यमें चतुरचूड़ामणि प्रभुने भक्तवृन्दकी सारी बातोंका उत्तर दे दिया। उन्होंने कहा—"कृष्णका भजन करके ही मुझे पा सकते हो।" प्रभु स्वयं श्रीकृष्णभगवान् कलिके प्रच्छन्न अवतार हैं। कौशलपूर्वक उन्होंने यहाँ अपने भजन-तत्त्व और भजन-मार्गको प्रकट कर दिया है। भक्तवृन्द प्रभुकी इस अन्तिम बातको सुनकर उनके चरण-कमलमें गिरकर क्रन्दन करते हुए बोले—

"सत्य कर प्रभु जेइ कहिला वचने।"

चै. म.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अर्थात् "हे प्रभो ! तुमने जो कहा है, वह अन्यथा न होने पावे।" प्रभुने हँसकर उत्तर दिया—"मैंने बारम्बार आपलोगोंसे कहा है कि मैंने जो कहा है, वह सत्य है, सत्य है, सत्य है"—

'सत्य सत्य वलि प्रभु बोले बारंबार।"

प्रभुकी आश्वास-वाणी सुनकर इतने दुःखके बीच भी भक्तोंके मनमें आशाका संचार हुआ। उन्होंने प्रभुके चरणतलमें गिरकर नयन-जलसे उनके भव-विरञ्चि-वन्दित और कमलासेवित पादपद्मको धो दिया।

मातासे बिदाई

अब शचीमातासे प्रभुको बिदा लेनेका समय आ गया। वे घरमें मूर्छित पड़ी थीं। प्रभुकी इच्छासे उनकी मूर्छा भङ्ग हो गयी। वे पुत्रके मुखका दर्शन करनेकी अभिलाषासे अत्यन्त कष्टपूर्वक उठकर खड़ी हो गयीं। श्रीअद्वैतप्रभुकी गृहिणीद्वय सीतादेवी और श्रीठाकुरानी शचीमाताके दोनों ओर दोनों बाहू पकड़कर खड़ी हो गयीं। इस प्रकार शचीमाता बहुत धीरे-धीरे प्रभुके सामने आकर स्थिरतापूर्वक खड़ी हो गयीं। उनका सर्वाङ्ग थर-थर काँप रहा था, नयन-जलसे वक्षःस्थल भीग रहा था, पागलिनीके समान केश बिखरे थे। प्रभुने माताको देखकर भूमिष्ठ होकर उनको दण्डवत्-प्रणाम किया। शचीमाताने स्नेहपूर्वक पुत्रके मस्तकको सूँघकर मुख-चुम्बन करके रोते-रोते कहा—

निदारुण हैया कोथाकारे जाबे तुमि।
तोमारे ना देखि एथा मरि जाब आमि॥
सभे तोर वदन देखिबे कत वार।
दुञि अभागिनी मुख ना देखिब आर॥
सभारे प्रबोध बाछा करिलि आपने।
आमार प्रबोध तुमि दिबे रे केमने॥
आमार द्वितीय केहो नाहि ए संसारे।
विष्णुप्रिया शेलमात्र रहिल अन्तरे॥

चै. म.

इतना कहकर उन्मादिनीके समान शचीमाता पुत्रका गला जकड़कर आकुलचित्त हो उच्च स्वरसे क्रन्दन करने लगीं। जननीकी अन्तिम-बात प्रभुके हृदयमें मानो शूलके समान चुभी। उनकी प्रियतमा विष्णुप्रिया माताके हृदयमें शूल बन गयी, यह अत्यन्त यथार्थ बात थी। सर्वज्ञ प्रभुने माताके दुःखको समझा। उनका कोमल हृदय उन्मथित हो उठा; परन्तु वे चतुरचूड़ामणि हैं, मनका भाव छिपानेमें बहुत ही दक्ष हैं। वे माताके अङ्कपर पद्म-हस्त देकर मुस्कुराते हुए समझाकर बोले—"माँ ! तुम मिथ्या शोक क्यों करती हो ? पहलेकी बातको याद करके चित्तको शान्त करो ! तुम कौन हो, मैं कौन हूँ, इसे स्मरण करो। वृथा शोकसे शरीरको क्लेश मत दो ! निर्मत्सर होकर यह सब दुःख-संताप सहन करो ! संसार असार है, वृथा है। एकमात्र कृष्ण-भजन ही भव-सागरकी तरणी है। माँ ! तुम घर जाकर कृष्ण-भजन करो ! तुम्हारे सब दुःख दूर हो जायँगे।"

इतना कहकर माताके उत्तरकी अपेक्षा न करके उनकी सात बार प्रदक्षिणा करके उनकी चरण-धूलि लेकर स्वतन्त्र पुरुष प्रभुने नीलाचलकी यात्रा की। शचीमाता पुनः मूर्च्छित होकर वहाँ ही भूतलपर गिर पड़ी। सीता ठकुरानी तथा सब वैष्णव-गृहिणीगण आकर उनको पकड़कर बैठ गयीं। अद्वैत-भवनमें करुण-क्रन्दनकी ध्वनि उठी। पुरनारियाँ आर्तनाद करके हाहाकार करने लगीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हमारे स्वतन्त्र पुरुष प्रभु निरपेक्षभावसे चले। श्रीअद्वैतप्रभुने तत्काल परामर्श करके श्रीनित्यानन्दप्रभु, जगदानन्दपण्डित, दामोदरपण्डित और मुकुन्ददत्तको प्रभुके साथ लगा दिया। वे भी प्रभुके साथ नीलाचल चले। लाखों आदमी प्रभुके साथ आर्तनाद करते हुए पीछे हो लिये। श्रीअद्वैताचार्य भी रोते-रोते प्रभुके साथ चले।

अद्वैतप्रभुसे बिदाई

दो दण्डके बाद प्रभुने पीछे फिरकर देखा, वृद्ध ब्राह्मणने अभी उनका साथ नहीं छोड़ा है। तब लौटकर एक बार वे रास्तेमें खड़े हो गये। आजानुलम्बित दोनों भुजाओंको ऊपर उठाकर वे उच्च कण्ठसे हरिध्वनि करने लगे। सबलोग उनके उस भुवन-मोहन अपरूप संन्यास-रूपको अन्तिम बार देखकर प्रेमानन्दमें उच्च स्वरसे हरिध्वनि करने लगे। बारंबार हरिध्वनिसे गगनमण्डल प्रकम्पित हो उठा।

प्रभु अद्वैताचार्यके मुँहकी ओर भलीभाँति देख नहीं पा रहे हैं। तब वे रास्तेमें लौटकर खड़े हो गये। सबलोग दौड़कर उनके चरणोंमें जा गिरे। अत्यन्त कष्टपूर्वक उन्होंने उन सबको मधुर वचनसे संतुष्ट करके श्रीअद्वैतप्रभुको पास बुलाया।

श्रीगौराङ्ग-विरह-वेदनासे वृद्ध ब्राह्मणके पञ्जरकी हड्डी टूट गयी है। वे कमरमें हाथ लगाकर बहुत कष्टपूर्वक प्रभुके सामने आकर खड़े हो गये। उनका मुख-मण्डल मलिन था; परन्तु आँखोंमें आँसू न थे। मार्गमें चलनेके कारण वे पसीने-पसीने हो रहे थे। करुणामय प्रभुने अतिशय दैन्यपूर्वक उनको एक ओर ले जाकर करुण वचन मृदु स्वरमें कहा—"आचार्य! तुम घर जाकर मेरी दुःखिनी माताको प्रबोध दो, भक्तवृन्दको सान्त्वना दो! तुम यदि इस प्रकार व्याकुल हो जाओगे तो किसीका प्राण नहीं बचेगा।" इतना कहकर प्रभुने उनको बारंबार प्रेमालिङ्गन प्रदानकर कृतार्थ किया।

प्रभु पुनः चलनेके लिए उद्यत हो गये तो श्रीअद्वैतप्रभुने उदास मुख हो हाथ जोड़कर उनसे निवेदन किया—"प्रभो! एक बात तुमसे पूछता हूँ। तुम हमलोगोंको छोड़कर विदेश जा रहे हो, इससे बढ़कर दुःख और क्या हो सकता है? इस दुःखसे मेरा अन्तःकरण संतप्त हो रहा है। तुम्हारे सब भक्तगण व्याकुल होकर रो रहे हैं। मेरा यह कठिन पाषाण-हृदय द्रवित क्यों नहीं होता, मेरे इस जले नयनमें आँसू क्यों नहीं आते, इस बातकी मीमांसा करके तुम जाओ! मैं दुराचारी और पापी हूँ, तुम्हारे विरहमें मेरे शुष्क प्राण द्रवित नहीं हुए, आँखोंमें एक बूँद प्रेमाश्रु नहीं दिखलायी दिया। यह दुःख और किससे कहूँ? हे प्रभो! तुमसे निष्कपटभावसे अपने हृदयकी व्यथा प्रकट कर दी, अब तुम इस बातका उत्तर देकर मेरे प्राणोंको शान्ति प्रदान करो! मैं बड़ी ही अशान्तिमें हूँ।"

श्रीअद्वैतप्रभुकी यह बात सुनकर रँगीले प्रभु कुछ मुस्कुराये; फिर उनको प्रेमालिङ्गन प्रदान करके बोले—"आचार्य! इसका तत्त्व बतलाता हूँ, सुनो! तुम्हारे प्रेमपाशमें आबद्ध होनेपर मैं जा न सकूँगा; अतएव तुम्हारे हृदयकी प्रेमराशिको मैंने चादरमें गाँठ देकर बाँध रखा है।"

इतना कहकर प्रभुने हँसते-हँसते अपने चादरकी गाँठ खोल दी। तत्काल श्रीअद्वैताचार्य प्रेमानन्दमें विह्वल होकर रोते-रोते व्याकुल हो गये। उनकी आँखोंसे झर-झर प्रेमाश्रुधारा बह चली। वे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रेमावेशमें बेसुध होकर 'हा गौराङ्ग ! हा चैतन्य !!' कहकर रास्तेकी धूलिमें लोट-पोट करने लगे। प्रभुने देखा कि वृद्ध ब्राह्मण प्रेममें पागल हो गये हैं। इस अवस्थामें वे घर लौटकर न जा सकेंगे। उनको साथ लेकर श्रीनीलाचल-गमन करनेपर शचीमाता और नदियाके भक्तवृन्दको कौन प्रबोध देगा ? सब प्राण त्याग देंगे—यह सोचकर व्यर्थ विलम्ब होते देखकर प्रभुने पुनः शान्तिपुरनाथकी प्रेम-राशिको खींचकर अपनी चादरमें गाँठ देकर बाँध लिया। तब अद्वैताचार्यने क्रमशः सुस्थिर होकर आत्मसवरण किया। प्रभुने तब श्रीअद्वैताचार्यके मुँहकी ओर सकरुण दृष्टिसे देखकर हँसते हुए कहा—

एइ त कारणे तोर प्रेमा उठे नाइ।
तोमार प्रेमार आमि चलिते ना पाइ॥
तोर प्रेमार वश आमि शुनह आचार्य।
पूर्व सोङरिया विचारह निज कार्य॥

चै. म.

—इतना कहकर स्वतन्त्र पुरुष प्रभु द्रुतगतिसे चले और किसीकी ओर नहीं देखा।

यह जो श्रीगौराङ्गप्रभुकी प्रेम-चोरी-रहस्य-लीला है, इसका तत्त्व अति गूढ़ है। श्रीअद्वैतप्रभु महाविष्णुके अवतार हैं। उनकी शक्ति भी अनन्त है। उन्होंने भी एक वार प्रभुकी प्रेमचोरी की थी। यह सब लीला-कथा मैंने यथास्थान लिखी है। प्रभुने इस समय उसी प्रेम-चोरीका पावना चुकाया। श्रीभगवान्‌का लीलारङ्ग अलौकिक है। इन सब अलौकिक लीलाओंके रङ्गमें श्रीभगवान्‌की भगवत्ता प्रकट होती है। श्रीभगवान्‌की अलौकिक लीलामें जिसको विश्वास नहीं होता, उसका इहलोक-परलोक, दोनों नष्ट हो जाता है—

अलौकिक लीलाय जार ना हय विश्वास।
इहलोक-परलोक तार हय नाश॥

चै. च. म. ७.१०८

श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु प्रेमानन्दमें विह्वल होकर रास्तेपर चले जा रहे हैं। गदाधरपण्डित, नरहरि और मुरारिगुप्त भी प्रभुके साथ चले। सब मिलाकर सात आदमी प्रभुके साथ-साथ गये। और भी बहुत-से लोग गये, जिनके नाम ग्रन्थोंमें नहीं हैं। गोविन्द कर्मकार भी प्रभुके साथ उनके कौपीन-चादर आदिको लेकर गये।

छत्रभोगके* मार्गसे प्रभु श्रीनीलाचल-धाम गये थे। वे जिस समय नीलाचल जा रहे थे, उस समय हिन्दू-मुसलमानोंमें भयंकर युद्ध चल रहा था। नीलाचलका मार्ग अतिशय विपद्-संकुल था। श्रीअद्वैताचार्य तथा श्रीवास आदि भक्तवृन्दने पहले ही उस समय नीलाचल जानेसे मना किया था, परन्तु स्वतन्त्र ईश्वर प्रभुने उसपर कान नहीं दिया।

प्रभु दक्षिण-दिशाकी ओर जा रहे थे। नदियावासी भक्तगण तथा शान्तिपुरके निवासी रोते-रोते घर वापस चले। रास्तेमें वे भूतलपर पछाड़ खा-खाकर गिरते-पड़ते और उठते चले जाते थे। उनकी अवस्था ठीक व्रज-पागलिनी गोपियों-जैसी जान पड़ती थी। श्रीकृष्ण

---

* छत्रभोग; २४ परगना जिलाके पूर्ववङ्ग-रेलकी दक्षिणशाखामें मगरा स्टेशन हैं। इस स्थानसे दक्षिण-पूर्व दिशामें ६।७ कोसपर जयनगरके समीप यह गाँव अवस्थित है। इस गाँवको कोई-कोई 'खाड़ी' कहते हैं। यहाँ वैर्जकानाथ शिवलिङ्ग है तथा चैत्र कृष्ण प्रतिपदाको नन्दा मेला लगता है। अब यहाँ गङ्गाजी नहीं हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब मथुरा गये तो व्रज-गोपाङ्गनाएँ ठीक इसी प्रकारकी अवस्थामें घर लौटी थीं। ठाकुर वृन्दावनदासने लिखा है—

काँदिया काँदिया प्रेमे सब भक्तगण।
उठेन-पड़ेन पृथिवीते अनुक्षण॥
जेन गोपीगण कृष्ण मथुरा चलिले।
डूबिलेन महाशोक-समुद्रेर जले॥
जे रूपे रहिल ताँहा सभार जीवन।
सेइ मत विरहे रहिला भक्तगण॥
दैवे सेइ प्रभु भक्तगण ओ सेइ सब।
उपमाओ सेइ सेइ सेइ अनुभव॥

चै. भा. म. २.२८ - ३१

नन्द-नन्दन श्रीकृष्ण और शचीनन्दन श्रीगौराङ्ग एक वस्तु हैं, एक तत्त्व हैं; फिर भला लीलाराङ्ग एक क्यों न हो? श्रीकृष्ण-लीलाके सकल अङ्ग श्रीगौराङ्ग-लीलामें अभिनीत हुए हैं। व्रजलीलाके परिपूर्ण अभिनय नवद्वीप-लीलामें पद-पदपर परिदृष्ट होते हैं। लीला-रस-लोलुप रसिक भक्तवृन्द नवद्वीप-लीलामें पद-पदपर व्रजरसका आस्वादन करते हैं।

उपसंहार

यहाँ श्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप-लीला पूर्ण हो जाती है। श्रीगौड़-मण्डलमें प्रभुने जो अपूर्व लीलाराङ्ग प्रकट किये थे, वे ही उनकी नवद्वीप-लीला श्रीग्रन्थमें संनिविष्ट हुए हैं।

श्रीमन्महाप्रभुकी नवद्वीप-लीला नवद्वीप-रस-रसिक भक्तवृन्दके लिए प्राणस्वरूप है। उनका नदियानागर नव-नटवर वेष, उनका अपूर्व नदिया-विलास—ये सब रसिक भक्तवृन्दके परम धन और चरम भजनीय वस्तु हैं। श्रीश्रीनवद्वीप-चन्द्रकी ऐश्वर्यमयी संन्यास-मूर्ति नवद्वीप-रस-रसिक भक्तवृन्द हृदयमें धारण नहीं कर सकते; उनका महामहिमामय श्रीकृष्णचैतन्यप्रभु नामतक कानमें पड़नेपर वे आतङ्कसे सिहर उठते हैं, उनके प्राण कम्पित और व्याकुल हो उठते हैं। इस प्रकारके शुद्ध नवद्वीप-रसके रसिक भक्त भी मिलते हैं। ये सब बातें जीवाधम ग्रन्थकारकी नहीं हैं। हमारे गौर-आना-गोसाईं श्रीश्रीअद्वैतप्रभुने भी श्रीमन्महाप्रभुके संन्यास-वेषको देखकर इसी भावको व्यक्त किया था—

सोऽहं त एते स भवान् स चैषां
प्रेमा तवेयं करुणापि सैव।
सर्वं तदेवास्ति सुखैकहेतु-
रन्यादृशं रूपमतोषहेतुः॥

चै. चं. ना. ५.२९

वे कहते हैं—"प्रभो! मैं वही अद्वैत हूँ और ये सब तुम्हारे वे ही अनुचरवृन्द हैं। तुम भी वही श्रीश्रीनवद्वीपचन्द्र हो। तुम्हारे इन भक्तोंका प्रेम और अनुराग भी वही है, तुम्हारी इनके प्रति करुणा और प्रीति भी उसी प्रकार आनन्दप्रद है। परन्तु हे नाथ! तुम्हारा यह अन्य प्रकारका रूप (संन्यास-रूप) हमारे हृदयको विषम दुःख प्रदान कर रहा है। तुम्हारा यह संन्यास-रूप हमको एकबारगी अच्छा नहीं लगता।"

प्रभुकी संन्यास-लीला ऐश्वर्य-लीला है और उनकी नवद्वीप-लीला माधुर्य-लीला है। नवद्वीप-रसके रसिक भक्तवृन्द प्रभुके नवद्वीप-लीलारसके लोलुप बनकर श्रीनवद्वीपधामका आश्रय करके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नदिया-नागर श्रीश्रीविष्णुप्रिया-वल्लभ श्रीगौराङ्ग-सुन्दरको उनके परिकरके साथ मधुरभावमें प्रेमसे भजते हैं। उनमें जिनका जो भाव होता है, उस भावके अनुसार सम्बन्ध जोड़कर श्रीगौराङ्गप्रभुके गार्हस्थ्य-लीलारसके अमृतका आस्वादन करते हैं, अनुशीलन करते हैं तथा परिवेशन भी करते हैं। अपूर्व नवद्वीप-रसके रसिक भक्तोंकी संख्या नितान्त विरल होनेपर भी, इस प्रकारकी विशुद्ध रागमार्गकी भजन-प्रणाली आज भी लुप्त नहीं हुई है। प्रभु और प्रियाजीके कृपासिद्ध भक्तवृन्द इस अपूर्व भजनके अधिकारी हैं।

कृपालु गौर-भक्तवृन्दके चरणोंमें साष्टाङ्ग प्रणिपात करके जीवाधम ग्रन्थकारका निवेदन है कि वे इस श्रीग्रन्थका पाठ और श्रवण करें। चैतन्यचरितामृतकार पूज्यपाद कविराज गोस्वामीके श्रीग्रन्थके अन्तमें उक्त अपूर्व दैन्योक्तिको पुनरावृत्ति करके जीवाधम ग्रन्थकार कृपालु पाठक-पाठिका-वृन्दसे अब बिदा लेता है—

सब श्रोतागणेर करि चरण-वन्दन।
जा सभार चरण-कृपा शुभेर कारण॥
चैतन्यचरितामृत जेइ जन शुने।
ताहार चरण धुइया करों मुजि पाने॥
श्रोतार पदरेणु कर मस्तक-भूषण।
तोमरा ए अमृत पिले सफल हैवे श्रम॥

चै. च. अं. २०.१८१–१८३

और एक बात मैं उनके चरणोंमें निवेदन करूँगा। श्रीगौराङ्ग-लीला-समुद्र अनन्त और अगाध है। इस अनन्त लीला-समुद्रका, इस अगाध लीला-पारावारका मैं एक बिन्दु भी स्पर्श न कर सका, मनमें यही बड़ा दुःख रह गया। महाजन भक्तकविके सुरमें सुर मिलाकर मैं भी कहता हूँ—

आत्म शोधिवार तरे दुःसाहस कैनु।
लीला सिंधुर एक बिन्दु छूइते नारिनु॥

प्रार्थना

हे प्राणगौराङ्ग! हे दीनबन्धु!! हे करुणासिन्धु!!! इस जीवाधमके प्रति, इस नर-पशुके प्रति तुम्हारी अपार कृपा और असीम करुणा देखकर तुम्हारी अहैतुकी कृपावृष्टि देखकर यह मन-ही-मन बड़ा लज्जित हो रहा है। इसमें भजन-साधन नहीं है, शास्त्रज्ञान नहीं है, इसके शुष्क प्राणमें प्रेमका लेश भी नहीं है, इसके ऊसर हृदयमें प्रेमांकुर उत्पन्न होनेकी तनिक भी आशा नहीं है। इस श्वान-वृत्तिधारी नरपशुको तुम कबतक नाच नचाओगे! लोग हँसते हैं; नाना कुवाक्य बोलते हैं; इस अयोग्य, निर्बोध, मूर्ख, लज्जाहीन नरक-कीटको लेकर तुम इतना रङ्ग क्यों कर रहे हो? हे प्राण-गौराङ्ग! हे विष्णुप्रियावल्लभ!! हे नवद्वीपचन्द्र!!! इतना मैंने क्रन्दन किया, तुम्हारे भक्तवृन्दको रुलाया, तुम्हारी प्राणप्रियतमा, सोनेकी पुतली नवबाला श्रीविष्णुप्रियादेवीको रुलाया, तुम्हारी दुःखिनी वृद्धा जननीको रुलाया, मर्मान्तक बातें कहकर तुम्हारे हृदयको चोट पहुँचायी, पर तुम कुछ भी न बोले, एक बार प्रकट होकर नयन भी नहीं तरेरा, बुरा-भला कुछ भी नहीं कहा। हे प्राणगौराङ्ग! हे विष्णुप्रियाके प्राणधन!! तुम्हारा एक बार दर्शन करनेके लिए, श्रीमुखसे एक मधुर वचन सुननेके लिए ही मैंने यह जाल बिछाया, इतना रो-रोकर पुकारा, विलाप करके मर्मव्यथा, मनके दुःखकी बातको पत्र लिख-लिखकर प्रकट किया, कितने ही आदमियोंको भेजकर तुमको बुलाया,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पर तुमने सुना नहीं। किसी पत्रका उत्तर भी नहीं दिया। तुम हो कहाँ--यह भी नहीं बताया। ऐसा कोई आदमी नहीं भेजा, जो तुम्हारा समाचार बतलाता! अब मैं क्या करूँ? हे प्राणगौराङ्ग! हे विष्णुप्रियावल्लभ!! तुमको आज यह अन्तिम पत्र लिख रहा हूँ, उत्तरकी आशामें बैठा बाट जोहता हूँ। उत्तर दो या न दो, कृपा करके एकबार आकर दर्शन दे जाओ। एक बार तुम्हारा दर्शन करूँगा। प्राण भरकर तुम्हारे मुखचन्द्रको एकबार देखूँगा। इच्छा हो तो बात करना, न हो तो मत करना; परन्तु हे प्राणगौराङ्ग! एक बार दया करके दर्शन दे जाओ--तुम्हारे चरणोंमें यही एक प्रार्थना है। हे बहुवल्लभ! यदि तुम्हें अभी समय नहीं मिलता तो उस दिन, उस अन्तिम दिन, उस मरणके दिन एक बार आना। एक बार आकर नदिया-नागर नव-नटवर-वेषमें अपनी वक्षविलासिनी श्रीविष्णुप्रियाको वामभागमें लेकर सामने खड़े हो जाना। श्रीश्रीनदियायुगलको आंखें भरकर अन्तिम बार देख लूँगा, प्राण भरकर आकुल प्राणसे युगल-चरणोंको पकड़कर अन्तिम बात कह लूँगा। वह अन्तिम बात क्या है, इसे यह प्रकट कर देता है--"विष्णुप्रियाके प्राणगौराङ्ग दया करो हे!" हे प्राणगौराङ्ग! उस समय तुम्हारी वैष्णवी मायासे अभिभूत होकर जिससे यह अन्तिम बात, अपने जीवन-मरणका एकमात्र लक्ष्य यह संकेत-वाक्य मैं भूलने न पाऊँ--तुम्हारे रक्तकमल-चरणमें तुम्हारे दीन-हीन, भजन-विहीन कङ्गाल हरिदासकी यही एकमात्र प्रार्थना है।

इति।

श्रीश्रीगौराङ्गचन्द्राय समर्पितमस्तु।

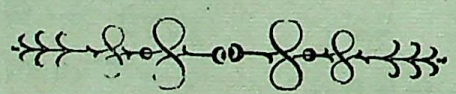

निवेदन

इन ग्रन्थोंमें कई जगह भगवान् एवं भक्तके द्वारा एक-दूसरेकी परीक्षाका उल्लेख जहाँ-तहाँ आया है। यह केवल लीलाके लिए है। वास्तवमें भगवान् कभी भक्तकी परीक्षा नहीं करते। जब एक-दूसरेको एक-दूसरेका महत्व प्रकट करना होता है, तब ऐसी कुछ लीलाकी जाती है। जब भगवान् भक्तकी परीक्षाकी-सी लीला करते हैं तो साथमें भक्तको उसमें पूर्णतया उत्तीर्ण होनेकी शक्ति भी देते हैं और इस प्रकार भक्तकी महिमा प्रकट करते हैं।

—प्रकाशक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

संदर्भ-ग्रन्थोंकी सूची

श्रीश्रीनवद्वीप-लीला और श्रीश्रीनीलाचल-लीलाके हिन्दी संस्करणमें बंगला पयार तथा अन्य छन्दोंके एवं संस्कृत श्लोकोंके संकेत-स्थल जिन ग्रन्थोंसे दिये गये हैं, उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

क्रम सं०	ग्रन्थ	प्रणेता	सम्पादक या टीकाकार	प्रकाशक	संक्षिप्त संकेत
१.	श्रीचैतन्यचरितामृत (चतुर्थ संस्करण)	कविराज श्रीकृष्णदास गोस्वामी	डा० राधागोविन्द नाथ	साधना प्रकाशनी, कलकत्ता	चै.च.
२.	श्रीचैतन्यभागवत	श्रीवृन्दावनदास ठाकुर	,,	,,	चै भा.
	उपर्युक्त दोनों ग्रन्थोंके आदिलीला/आदिखण्ड, मध्यलीला/मध्यखण्ड, अन्त्यलीला/अन्त्य खण्डके लिए क्रमशः				आ.,म.,अं
३.	श्रीगोविन्दलीलामृत	कविराज श्रीकृष्णदास गोस्वामी		श्रीकृष्णदास बाबा, कुसुम सरोवर	गो.ली.
४.	श्रीकृष्णचैतन्य-चरितामृत महाकाव्य	महाकवि श्रीकर्णपूर	श्रीप्राणकिशोर गोस्वामी	श्रीगौराङ्ग मन्दिर, कलकत्ता	चै.च.महा.
५.	श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटक	,,	श्रीपुरीदास महाशय	श्रीहरिदास शर्मा, वृन्दावन	चै.च.ना.
६.	श्रीललितमाधव नाटक	श्रीरूप गोस्वामी	,,	श्रीशचीनाथ चतुर्धरी, मैमनसिंह	ल.मा.ना.
७.	श्रीविदग्धमाधव नाटक	,,	पं० रमाकान्त झा	चौखम्भा संस्कृत सीरिज, वाराणसी	वि.मा.ना.
८.	श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु	,,		श्रीहरिबोल कुटीर, नवद्वीप	भ.र.सि.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्रम सं०	ग्रन्थ	प्रणेता	सम्पादक या टीकाकार	प्रकाशक	संक्षिप्त संकेत
९.	श्रीउज्ज्वलनीलमणि	श्रीरूप गोस्वामी	श्रीपुरीदास महाशय	श्रीहरिदास शर्मा, वृन्दावन	उ.नी.
१०.	श्रीलघुभागवतामृत (संक्षिप्त भागवतामृत)	,,	,,	श्रीशचीनाथ चतुर्धरी, मैमनसिंह	ल.भा.
११.	श्रीबृहद्भागवतामृत	श्रीसनातन गोस्वामी	,,	,,	बृ.भा.
१२.	श्रीहरिभक्तिविलास	,,	,,	,,	ह. भ.वि.
१३.	श्रीचैतन्यचन्द्रामृत (काव्य)	श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती	श्रीअनादिमोहन गोस्वामी	वैष्णव सम्मेलनी, कलकत्ता	चै.च.काव्य
१४.	श्रीभक्तिरत्नाकर (द्वितीय संस्करण)	श्रीनरहरि चक्रवर्ती	श्रीनन्दलाल विद्यासागर	गौड़ीय मिशन, कलकत्ता	भ. र.
१५.	श्रीभक्तमाल	श्रीलालदास बाबाजी	श्रीसुबोधचन्द्र मजुमदार	देव साहित्य-कुटीर, कलकत्ता	भक्तमाल
१६.	श्रीमद्भागवत	महर्षि वेदव्यास		गीताप्रेस, गोरखपुर	श्रीम.भा.या भा.
१७.	श्रीविष्णुपुराण	,,		,,	वि.पु
१८.	श्रीभगवद्गीता	,,		,,	गी.
१९.	महाभारत	,,		,,	म.भा.
२०.	श्रीचैतन्यमङ्गल	ठाकुर लोचनदास			चै.मं.
२१.	श्रीचैतन्यमङ्गल	श्रीजयानन्द			ज.चै.मं.
२२.	श्रीपद्यावली		श्रीरूप गोस्वामी	श्रीराघव चैतन्यदास, वृन्दावन	पद्यावली
२३.	श्रीकृष्णकर्णामृत	लीलाशुक श्रीबिल्वमङ्गल	श्रीविमानविहारी मजुमदार	श्रीश्रीशकुमार कुण्ड, कलकत्ता	कृ.क.
२४.	श्रीकृष्णचैतन्यचरितामृत (मुरारिगुप्तका कड़चा)	श्रीमुरारिगुप्त	श्रीहरिदास बाबाजी	श्रीमृणालकान्ति घोष, कलकत्ता	कृ. चै. च. अथवा मु. गु. करचा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative